Sankhipterson byakaranam. 1878

Librarian.

Uttarpara Joykushua Public Library
Govt. of West Bengal

| () ag: | | | |
|--------------------------------|--------------------------|------------------------|-------------|
| e : | ٠ وو | ৮৩ ডনিঃ | |
| ८७ উ५ : | 39 | ৮ 8 ह म् | |
| ৫৪ ডূৰ্য্য | | ৮৫ উস্ | |
| ৫৫ ডায়াঃ | <i>"</i> ≜ ≷≷ | ৮৬ বর্ট | |
| | | ৮१ नः | |
| ६० यः | 23 | ४५ इक् | • |
| ৮ উক: | 6 20 | S | • २ |
| ea चकः | 29 | ৮৯ 꽃: | À |
| ७० हेकः | ,, | ə• य <u>ू</u> : | Ę, |
| ৬ > ইনঃ | • 28 | ३५ ज्राः | _ |
| ७ २ कि | 73 | २२ थातू: | : |
| ৬৩ ডৌ: | • | ৯૭ ૧: | 1 |
| ♦8 देख: | 27 | ३८ हेकू. | *** |
| ৬ ৫ ডো: | " | ৯৫ মূ: | |
| ७१ (७): ७१ वि: | 3) | २ ७ डानू: · | 1 |
| ৯৮ অলি: | " 4 2 ¢ | २१ व्कः | , |
| ৬> ডোস্ | | क्ष है।कः | , |
| १• ड न: | ₿. | ৯৯ ឡុះ | • |
| | " | ১০০ জাকঃ | i de ide |
| ৭১ ইজ ্ ৭২ উরিঃ | 91 | >•> मजः | 40) |
| | 39 | २०२ चूत्रह | * |
| १७ कामः | " | ১০৩ উর: | 4 |
| 18,44: | 25 |) • 8 ७ क : | , |
| গং পড্" | 33 | >०७ दब्र | 7 |
| _{२8} ७ हेन ॰ (| ** | >•१ नक् | |
| ् १ वर्षे | 2) | 1 | |
| . ७ ^२ चनाष्ट् | 19 | 346 8: | 9: |
| ১৷.৯ আৰঃ | 10 | > ≈ 2 @#: | 746 |
| P+ 48 | 29 | ১১০ ডরঃ | A. 21 |
| ४ ७ छमः | | े ১১১ छत्र हेक देखनाव | 155 |

| | ひゃん | 54 | ,, |
|------------------------------|-----------|-------------------------|------------------------------|
| , 8 | 1) | ১৬৯ ইয়ঃ | 952 |
| ্ৰ, | 660 | ১৭১ द्वेगः | |
| क अंदाः नाषिः | 900 | ५१८ हेर्न | " 950 |
| ्ड _{िं} ६ वहे | 905 | ३१६ यद | |
| ং ড্প | १•२ | ১१७ जेतः | " 95 j |
| অন্তঃ ১ অকণ্ | 1) | ১৭৭ টিকণ্ | 958 |
| অন্: ৫ ধৃণ্ | ,, | ১৮০ অকণ্ | |
| ১২) টিকণ্ | 900 | , | 958 |
| ५७ [%] क्रेनः | 000 | ১৮১ বিধঃ ১৮২ ভক্তঃ | 9>6 |
| ३०० वर | 9 • 8 | 1 | " |
| ১০৬ ইন্ অ কড়াান্ড | 900 | ১৮৬ গঃ | 938 |
| ५७० हेन | ,, | ১৮৯ টিকণ্ | 959 |
| ५७५ ७६ | ,, | ३५६ इदः | 475 |
| ১৩৯ উলঃ | ,, | ১৯৬ টিক: | 920 |
| ১৪০ টেম্ব | , | ১৯৭ সকঃ | ,, |
| ১৪ <i>৬</i> पहें | 908 | : क्षेत्र | 23 |
| 56.1 ख ९ | | २०७ गांबनः | 928 |
| ১৪৫ কঃ | 9.9 | २১४ वर्छे | ५ २€ |
| ১৪৬ টকণ্ | yde i | २१८ वाः | ૧ ૨ ૭ |
| ১৪৯ जेयः | " 9 ob | ২ ২২ ডাণ্ | 929 |
| | 140 | ২২৩ ইন্ | 42,6 |
| প্রতি ডিৎ | ,• | २२६ भाषानः | 923 |
| >৫১ यः | 903 | २७) फक् | ৭৩% |
| ১৫৪ পট ্ ১৫৫ ইন | 1 | ২৩২ ইল | |
| ઽૡહ કન્ ઽૡ૭ ઉં વ ્ | » » | २० वु भाः | ", |
| ১৬০ শ্ব | 930 | ক ং ২৩৪ বারেন: | 9,55 |
| | | | ৭৩২ |
| ১৬১ ভেষণ্ | ,, | ২৩৮ রয়ণ্ ২৪৮ ইনেরণ্ | ৭৩৩ |
| ১७२ ^{हि} क्म | 422 | २०१ देशस्य | ୩ ୬ ୩ ୩ ୬ ୩ |
| >৬8 ଟି୩୍ | 1 1 | र्षः । १५७०।३। | 1∨1 |

| ∳ ०ऽऽ हेन् १ ०२० द्रः | 949 | ৩৮• গাহ: ৩৮১ টাব্বনণ্ |)) |
|--|------------------|--------------------------|------------------|
| ৩১৭ সঃ | 9 (4) | ৩৭৯ এত্যঃ | 9 90 |
| ७२२ वर्ष्ट् | 948 | ৩৭৪ ত্যঃ | 91 |
| ৩০৫ পায়ক্তঃ | 160 | ৩৭৩ ভ্যণ্ | 112 |
| ২৯১ পায়নঃ | 982 | ७१० (हेन्नुष् | 995 |
| र्रम्७ वास्तिः | 186 | ৩৬৫ পেয়ক: | 990 |
| २৮६ धन | 986 | ७७७ जेन: | ** |
| २५० यायटनी | 98¢ | ৩৬২ ইরঃ | (22) |
| ২৮০ অন্ণায়নী | ** | ৩৫৯ পট্ | 969 |
| २१२ च्रेयः | ₹\$8 | ৩৫৬ বঃ | 995 |
| ২৭৭ পিকঃ | " | ७३२ च्रेयः | 19 |
| ২৭৬ স্বাণ্ | ď١ | ৩৪১ বলঃ | " |
| ২৭৪ আয়নিঃ | 980 | ৩৪০ ডুল: | ৭৬৩ |
| >৬৮ ণায়নি | ,, | ৩০৭ মতু: | ,, |
| ২৬৭ সং | 980 | ৩৩৬ টণ নীম্বৌ | " ዓ৬ ২ |
| ২৬৬ ণিকঃ | <i>)</i>))) | ७७४ इनः | " |
| २७४ पट्षाःना २७४ ठेवः | "• | ৩০০ ক. | " |
| २७० / गन्नकः, २७८ वर्ष ाःनो | " | ৩৩৩ কঃ | T' |
| ২৬৩ পেয়ক; | 3 7 | ७७३ जग्ग् | 900 |
| २७२ जैनः | | ৩৩১ অকণ্ | |
| २७० (नग्नकः | <i>,,</i> ৩৩৯ | ৩৩০ টিকণ্ | 4 |
| २८৮ यः | " | ৩২৯ কণ্ | |
| ्रेट्र १९ ए ड्र म् | ,1 | ৩২৮ টিণ্ | |
| २८७ द्रेयः | ۶, | ৩২৭ ণায়নিঃ | |
| २०० वाः | - | ৩২৫ আয়নণ্ | |
| ২৫৪ ণেরঃ | ,, ৭৩৮ | ७२८ यः | |
| ২৫২ আরণ | | ७२२ नाः | |
| २०) रेनेतः | | | |

| | , | । 8৮8 ঈ य़: | |
|-----------------------|------|-----------------------------------|------------------|
| ' টিকণ্ | 996 | ৪৮৮ মৰ্মীয়ো | ъ |
| ; ^{ह.} तको: | 999 | 8to मिनग् | »· |
| ুচ্চত য়ঃ | 1) | 820 本: | n |
| ্, ৯৮ স্বৎ | 196 | ৪৯৩ ষঃ | b;+3 |
| १८० वर् | ,, | ৪৯৪ টিকণ্ | * •> |
| ^৭ ০ • ডিমঃ | ,, | ৫০০ টিক: | b.0 |
| 8) ১ ज्र: | " | ০০৩ টিকণ্ | b • 8 |
| 🔑 ॰ ७ वर्षे | ', | ৫०৫ यः | ,,, |
| 🎤 ৪০৬ নট্ | 995 | ৫০৬ অকণ্ | •, |
| 8 ॰ ৮ कः | 960 | ७०४ कथाः मग्रहे | p.c |
| ৪০৯ ণিকটিকণৌ | ۰, | ৫১০ যণ্ | •, |
| ৪১৩ অকণ্ | 965 | ৫>৪ छेगः | ৮০৬ |
| 8७२ जे यः | 96% | ८७७ द्वेष: | br • br |
| ৪৪৯ ইকঃ | 922 | ৫२० यन | 27 |
| ৪৫০ অকশ্ | 10 | ६,२५ ८७ेग्नन् | ,,, |
| ৪ ৫১ অবঃ | 40 | ६२२ जेव्रग् | 19 |
| ৪৫৩ টণ্ অভৌ. | 925 | ৫२८ हिंकन् | 29 |
| 808 करें। भी | ۶۱ ا | ৫২৬ অক: | ४० ७ |
| 8 थ ८ ६ युन् | ৭৯৩ | ৫২৭ অকণ্ | , |
| ইড়ি অকণ্ | 9>8 | ৫৩১ ঈश्रन् | & > 0 |
| 8৬৪ অক: | ,, | ৫৩২ ণেশ্বিন্ | ሁ ሉ\$ |
| ৪৬৫ জাকণ | ,, | ১৩ ৩ পিন্ | 1) |
| ৪৬ - টিকণ্ | 950 | ०५४ हेन् | 670 |
| ৪৭১ টিকণ্ | ৭৯৬ | ৫৪০ ভিসিঃ | " |
| 8 ৭ ৬ য ং | 929 | ৫৪৫ অকণ্ | F78 |
| 89२ (छेत्रन् | 926 | ८८० व र्ष | b . 6 |
| ৪৮০ টণ্ | y. | ৫৫२ हिंकन् | j' 29- |
| | | | 7 |

| AND WAR | | | |
|--------------------------|------------------------------------|----------------------------|------------------|
| ८४३ ञ क्ष | | ७२२ ें गः | |
| ৫৫ ৯ মণ্ | ४८४ | ५२० वहें,हरनी | |
| ৫৬ ০ অক: | ५ ५७ | ৬২৭ টিক: | |
| ৫৬২ যং | , , | ७२२ हैक: | Β ² . |
| ১ ও রণ্ | ٠, | ৬ ৩১ ষ্ | b ' : |
| ० ७ डे ए छ ज | ,, | ৬৩৪ ইক: | b (|
| ্ৰেগ্ড পট্ | ४ ३२ | ৬ েকে? | |
| ्र १४ महिन् | ₽÷.2 | ৬৩৭ টনঃ | 6 (1 |
| ° ६९२ ([∹] य॰् | ,, | ৬৩৮ টক: | |
| ८ ৮১ यर | b 2 8 | ৬৪২ ডঃ | P.OF. |
| ৫৮৩ বৰঃ | • ,, | ৬৪ ৩ ড ট ৬৪৪ ডণ্ | 19 |
| ৫৮৪ অকপ্ | 17 | \$86 T: | 1; |
| हु १५% कः | 11 | ७६७ किंग | ⊬७≽ |
| ्रिक्टा मग् छ | ৮০৫ | ७८७ । छन । ५६१ यभिटकी | ,, |
| 38 80 | b 2 4 | केट्टी वीवारका | 39 |
| എനേക இ [®] | ५ ५ ५ ५ ८ ५ . | ৬৫১ ইকঃ | tr 8 o |
| \$710 600 | 19 | į. | ı, ,, |
| ७०२ ही कथ् | | ৬৫৩ টিক: | F85 |
| ७०५ (छेन्नव | ৮৩০ | ৬৫৬ টণ্ | • |
| ७०१ ग्र | " | ७८१ गरे हिंकरनो | ٠ |
| word antifest | ٠,• | ७०৮ क्रेकः | " |
| ७०३ विंदन | 99 | ७७० ঈ सः | ₩ 8₹ |
| ৬) ০ মৃ: | 2 | ৬৬১ যঃ | 1) |
| ৬১১ ঈরঃ | ৮ ६ ५ | ৬৬৪ টণ্ | F80 |
| ७५२ यमिटयो | 1, | ৬৬৭ টণ্ | P88 |
| ४३ गीनः | ,, | క్రామ్ కే శాక | ונ |
| ्र वः | ४७३ । | ७१२ हिंकः | >> |
| | | | |

| | - 11 | 1 0°4 = | } eq. |
|----------------------------|-------------|-----------------------------------|----------------|
| अ ंग्र े | P80 | ৭২৯ ইকটিকণো | 669 |
| हेक: | 22 | ৭৩১ ইকঃ | 21 |
| ্ঞ টিকণ্ | " | ৭৩২ টিকঃ | n |
| ० हेव् | 21 | ৭৩৩ ণঃ | , t |
| ন্থ ইমঃ | ₩89 | ৭৩৬ টণ্ | W. 6 |
| ৮৩ কণ্ | 17 | ৭৪৭ টিকঃ | ८७५ |
| <i>€_{i</i> '8 ক : | '' | १ ५ वाः | b 58 |
| भूरिक हेन् | F 8F | ৭৬৩ টিক: |)) |
| किन हेन | •1 | १७६ हेन् | b ७ t |
| ৯১ যঃ | ৮৪৯ | ৭৭০ টিক: | ৮৬৬ |
| ১৯৩ ঈন: | ,, | ११२ हेक: | ٠, |
| ৬৯৬ ণীন: | 600 | । ११८ हेन् | 7) |
| ৬৯৭ খঃ | ٠, | ११० पर | ,, |
| | , | ৭৮১ টিক: | 969 |
| ৬৯৮ পাঃ | 462 | ৭।≰৪ টিণ্ | ৮৬ ৮ |
| ৬৯৯ টিকণ | 0.4.3 | ৭৯৬ টীকণ্ | ८७४ |
| ৭০০ যণিকৌ | , ,, | ৭৮৮ বঃ | ৮৬১ |
| ৭০> কঃ | ₽¢ঽ | ৭৯০ টণ্ | ৮ 9● |
| १०९ छेन् | ₽ ₹ | १६२ हेक: | 91 |
| a 40 a c c c | , | ৭৯৭ বৎ | ৮ 9১ |
| ৭০৭ সং | ,, | ৮०० (हेयुन | 497 |
| १५२ हेन | 660 | ४०३ छेन: | |
| ৭১৩ ডকডিনৌ | ** | ४०१ हेन | 19 |
| 45% ⁷⁷ % | P\$8 | | 37 |
| १५१ किंग् | 11 | Poc 1044 | ,,,,, |
| १०७ हैं | 466 | ৮০৫ টিকণ্ ৮১০ ণঃ ৮২৫ উণ্ ৮৩৩ ণীনঃ | 690 |
| ৰাম ও মাই ৰাম ও মাই | 16 | ५२६ हेन् | ታ ዓ.ር ሷ |
| 458 Fd. | 19 | । ৮৩७ वानः | ۶٦ ٦ . |
| 458 42 | | | |

| ৮ १९६ वर् |) | 251 W THE | |
|-------------------|--------------|------------------------|-------------|
| ৮৩৭ টিকণ্ | ۰, | २०० जेयः | |
| ৮৩৮ টেম্বণ্ | 64 6 | ১•১ प्रम् | k, |
| 8२ श्रेयः | ৮৭৯ | | |
| ৮৪৪ শঃ | 91 | তদ্ধিতপরিশিফ | ম্। |
| ५११ य ९ | n | ১ নণ্ | 631 |
| ৮৪৮ খ্যঃ | ₽₽• | ર ગીનઃ | نور وه |
| ৮৪२ जेनः | ,, | ७ ट्रिय़न् | |
| ৮৫> উকিণ্ | PP2 | 8 य: | ≠ 3 |
| ৮৫৩ টিকণ্ | • > | ১২ টণ্ সড†ক ~ চ | 9•2. |
| ৮৫৪ গীনঃ | ,, | > ४ जेनः | <i>)</i>) |
| ৮८८ ८ ेसन् | ৮৮২ 🏓 | ৩০ ষ্ | > 8 |
| ৮৫৭ টেয়ণ্ | ,, | ৩২ কৃণ: | " |
| ৮৫৮ বণ্ | (,, | ৩০ জাহ: | 1, |
| ৮৫৯ ণট্ | ७ ७७ | ৩৪ তিঃ | 37 |
| ৮৬২ টেমণ্ | " > | ७९ हुक्षृहस्नो | > 0 @ |
| ৮৬৩ যৎ | b b 8 | ৩৬ শাল শকটোঁ | ", |
| ४१२ यन | ७ ५४ | ৩৭ কটঃ | " |
| ৮৭৪ টেয়ণ্ | ,, | ৩৮ কুটার: | " |
| ৮৭৫ অকণ্ | ,, | ৭৯ জ -টাউনাটাঃ | 77 |
| ৮৭৬ তা, খুম্ | ,, | ৪০ বিভূবিবীয়ে | 27 |
| ५,९३ ईगन् । | ърр , | ৪১ কিলপিটক্কণাঃ | ,, |
| • ৮৮০ টাণ্ | ५ ५३ | ৪২ লঃ চুল্লচিল্লপিলাঃ | ,1 |
| ৮৮৫ নুম্ | ۶۵۶ . | ৪৩ পিঞ্জপেডেন | ,, |
| ৮৮৬ যঃ | 525 | 68 সোচদ্যমরীসাঃ | 9.6 |
| ৮৮৯ যণ্ | ,, | 80 किं: | ∂• € |
| ৮৯০ টেয়ণ | ७ ५७ | ৪৭ পটঃ | ,, |
| ुहे ३५ वर् | , | ८ ८११ है: | " |
| 1 | | | |

| | ,, | । २७ झेन: | |
|--------------------------|----------|---------------------------|------------------|
| , এবাঃ | 91 | ৯৪ উলঃ | " 3) 6 |
| ণকটঃ | ,, | ৯৫ শঃ | W 7 M |
| _শাক্তিনঃ | ٩٥۾ | ৯৬ নঃ | "! |
| 3 ঠ : | ,, | २०२ वः | " |
| ± ইত ঃ | ,, | ১०७ हेन | 92. |
| ৭ মাত্ৰট্ | ,, | २० <i>६</i> इह्न: | *\rightarrow 29 |
| জে যতৃঃ | 406 | ১০৬ বিন | " |
| ০/ বতুঃ | ,, | २०५ हेव | ,, |
| ∕ি ডিঃ | ,, | ১৭৫ আবিন | ,, |
| (७) पश्चित्रसम्हो | | ৃ১১০ উরঃ | b C C: |
| ७२ हेन | 2) | ্১১১ রঃ | " |
| ৩০ ছষদ্টুমা এটে) | ు సంస | 1 | " |
| ৬৪ ত্যট | | ১১৫ মঃ | ,, |
| ৬৫ অয়ট | ,, | ১ ৬ বঃ | " |
| ৬৭ মণ্ট ৬৭ মণ্ট | " | ১১৯ ইবঃ | 776 |
| wh 20: | ., ., | १ ३२० ऋतः | '' |
| ৬৯ ভীয়: | | ১২'১ বল: ১২৩ টনঃ | " |
| १२ य ॐ (ये) | " | ১२৪ छेमनः | • 1 |
| ৭২ থট | " |) २२० जनगः १२० हेनिएको | 72% |
| ५० महे |)) | 1 | 37 |
| 18 ডট | 625 | ১२२ हेनगढु | , c |
| 1০ ভচ্ 1€ ভম্চ | ٠, | , २०० ई.कब | 194 |
| | ,, | ১৩৩ যঃ | ** |
| १৮ डिगर्डे १२ डेगर्डे | *1 | ্১৩৫ আরকঃ | 9>2 |
| | " | ১৩৬ মিন্ | " |
| ৮০ নতু: | 325 | ১৩৭ আমিন্ |)1 |
| ৮৩ মৃহ্যো বঃ | ప్ప 9 | ১৩৮ তঃ | 7.1 |
| ৮৮ বৃঃ | 378 | ১৩৯ গ্মিন্ | ,, (|
| | | | <i>i'</i> |

| ১ ৪১ আ গু: | ,, | २८४ वहः | |
|----------------------------|-------------|------------------|--|
| ३४२ं घर | ננ | ২৪৯ র: | . |
| े 88 ड ेन् | ३ २२ | ২৫০ ডুপঃ | |
| ্ৰু১১ ব, ভ, ডি, ভূ, ভ, রাঃ | ৯২৩ | ২৫১ তরতমৌ | , |
| ্ব ব্ | ৯২,8 | २৫२ जाम् | 1 |
| ડ ે.ે હઃ | " | ২৫৩ ঈয়সিষ্ঠৌ | à 📆 |
| ১৬১ আৰুঃ | " | ২৫৬ জাতীয়ঃ | ************************************** |
| ১७৪ जेय: | " | २८१ कः | .(,, |
| ১৬৬ ট্ৰ | 356 | २७६ धन् | ခန |
| ১৬৭ অক: | ,, | ২৬৬ তবঃ | 2.7 |
| ১৬৯ অকঃ | , | ২৬৭ তমঃ | , |
| ১१० कः | ৯২৬ | ২৬৮ তর: | ,, |
| । ১৭৭ টिकन् | ,, | ২৬৯ তরঃ | ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,, |
| ১৮৭ ভ্যক: | 256 | ২৭১ তরট্ | ,, |
| ১৮৮ টিকণ্ | دو ا | २१७ (টेयन् | " ২ 8২ |
| ১৯৬ ণট্ | • >5 | | ,, |
| ১ ৯৭ डेन् | ,, | २१৮ यः | رر در |
| ২০৫ কাম্ | 200 | ২৮০ ঈয়ঃ | 9 |
| २७० इकः | ৯৩৪ | ২৮১ টণ্ | 12 |
| ২৩১ অ ডাকৌ | 22 | ২৮২ অ: | × , |
| ২০৯ প্ৰাশঃ | ৯৩৬ | ২৮৩ টিকণ্ | ৯৪৩ |
| २8॰ नः | ٠, | २५८ इंकः | , |
| २८२ कः | ود ان | २५६ क्रेकन् | 1, |
| ২৪৩ আকিন্ | أبط ود | २৮७ वाः | " |
| ২৪৪ চরট্ | ,, | भाग सन् | ,, |
| ্ব ৪৫ রূপ্যঃ |) , | ২৮৯ টেক্তৰ | 388 |
| ্ব ৪৬ ক্লপঃ | ۹۵۵ | २२० क्रेंबः | » |

| | 58€ ∫ | ৩৪৭ টণ্ | ·» ` |
|------------------|--------------|--------------------|-------------|
| ে আঁলুঃ | ৯8৫ | ৩৪৮ ব্যঃ | 39 |
| এলু: | ,, | ৩৪৯ ড্ৰ: | ر ' |
| ্ণ উল: | , , | ৩৫ ০ ডামহট্ | × |
| ৯৮ ইকঃ | ,, | ७৫२ नाः | |
| ু৯৯ ইন্ | 586 | ৩৫৩ স্তঃ | ა€ ೨ |
| ৩০৪ ডিন | ٠, | ৩৫৪ বৎ | 29 |
| ५०० डेस: | ,, | ৩৫৬ দা | " |
| t 10৮ অক: | 589 | ०৫१ मानीम् | |
| ७५० जेस: | ,, | তলে অধুনা | NA 0 |
| ৩১০ মষট্ | 284 | ৩৫৯ হি | 268 |
| ৩১৫ যণ্ | ٠,٠ | ৬ ৮১ হাস্ | .4 |
| ৩১৭ বেবঃ | ৯ 8৯ | ৩৬> দ্যঃ | n |
| ७ २% गंइ | . " | ১০৩ এনাবিঃ | 2* |
| ৩২০ টনতন্ত্রাঃ | y. | ি ৬৪ এখ্যাস্ | 79 . |
| ७३३ वं | ;, | তভৰ তাস্ | 37 |
| ৩১২ তঃ | ,, | ্তিদ্ৰু উদাবী | 19 |
| ৩২৩ টীকণ্ | ,1 | ্তিছুণ সম্সূণ | 306 |
| ৩২৭ টিকণ্ | ,, | ৩৬৮ শ্ৰনাণৌ | ** |
| ৩১৭ উণ্ | > 6 ⋅ | ৩৬৯ গা | w |
| ৩৩৪ টেমণ্ | 505 | ৩৭০ থম্ | , |
| ৩৩৬ তিক: | \$45 | ৩৭৩ পা | 12 |
| ৩৩৭ সম্লৌ | , | ७१० धाम्ग् | 569 |
| ৩০৮ কার: | ,, | 1 | * |
| ৩৪০ এক: | ,, | 1 | 30 |
| ৩৪১ প্যঃ | ,, | ৩৭৮ স্থাদসৌ | 33 |
| €৪২ ষঃ | ३ ६२ | ৩৮০ আৎ | 204 |
| ७ ८१ व्यः | , | ৩৮৩ অতস্ | 26. |

| きゅ マル | | | |
|----------------------|------------------------|----------------------------|-----------------------|
| किर जर | ,, | ঐ হিতীয়া বিভক্তিঃ | |
| ং৮৬ আচ্ আস্থি | ,, | ৭২ ভূতীয়া বিভক্তিঃ | ٠,, |
| জুণ এনপ্ | Seb | ৮১ চতুৰ্থী বিভক্তিঃ | 29 3 |
| • , | 1 | ১०৫ পঞ্চমা विভক্তिঃ | >084. |
| ত্ত্র ক্রস্ | " | ১০৯ ষষ্ঠী বিভক্তি: | 3008 |
| এন _্ স্থ: | " | ১৮৭ সপ্রমী বিভক্তিঃ | >0:64 |
| 927: | ८१८ | No opposition ratio est | |
| ৩৯৩ শস্ | " | স্থবন্তপাদঃ। | |
| ৩৯৫ চিৎ | ,, | ১ লুখিধানম্ | 3096 |
| ७३৮ मा९ | 200 | ৫ সম্বোধন প্রকরণম্ | > 0 4 0 |
| 800 ज ि | 2 47 | ৬ গুণঃ | >06> |
| ৪০২ ডাচ্ | ,, | ১০ হুসঃ: | > ० ४२ |
| ৪১৩ গুণঃ | 200 | ২২ স্বরান্তপুংলিকশকঃ | 5069 |
| ৪৭৮ লুখিধান প্রকরণম্ | 8%6 | ०२ वृक्तिः | 2606 |
| 8৮৮ ড: | 262 | િ પ્રાથમા | 3500 |
| १५३ हैं: | 95 ¶\ | ৬৫ স্বরান্তমীলিঙ্গশদঃ | >> >> |
| 8ו जेबः | ,,, | ১৬ স্বরান্তরীবলিদশকঃ | <i>>>></i> 0 |
| a > ७ ल्यियापिः | ৯৮৪ | ১২৮ ব্যলনান্তপদঃ | 3528 |
| ৫७० श् ंनर | ৯৮৮ | ১৬২ লুক্প্রকরণম্ | 3208 |
| ্¢৩৭ হুদ্বঃ | ৯৮ ৯ | ३३५ नीर्चः | >>58 |
| aleman offension | | ২২৩ ডদ্ভিঃ | 3205 |
| কারকপুদিঃ। | | ২৩৩ হুম্বিধানম্ | >>@@ |
| ১ কুঞ্ | 228 | ১৮৪ সর্জনাম | >>90 |
| २ क .श्र | 976 | OLA SOSITIATES MAGO | 25.0 |
| ১৬ করণম্ | #• • ¢ ; | | |
| ১৭ সম্প্রানম্ | , > 0 0 g | মমাদপাদঃ। | |
| ২৬ অপাদানন্ | 2022 | | **** |
| ্ত অধিকরণম্ | 2026 | | ১২১৩ |
| ্টক্তপ্রকরণম্ | , | , ৪ প্রথমতিৎপুক্যঃ | >२> ४ |
| | | | |

| | | | २ ७०५ |
|----------------------------------|-----------------|---------------------------|-----------------|
| . ়ুসং ব ঃ | >222 | ৩৪০ ক্লীব ত্বম ্ | >080 |
| , 'ঠুথীতৎপুৰুষঃ | ३ २२७ | ৩৫০ একস্বম্ | ১৩৪৬ |
| 'ती' भ्रमी उर्ल् क्राः | > २२१ | ৩৮৪ প্রাগ্ভাব: | 5063 |
| ইষ্ঠীতৎপুরুষঃ | ३ २२४ | ৪০৮ একশেষঃ | 2004 |
| 🤻 দথমীতৎপুরুষ: | ે ફર્સ્ટ | 8२२ शृश् त ९ | ३० ०१ |
| ু নিতাতংপুরুষঃ | ५ २७१ | ৪৪১ প্ৰভাব: | के अध्य |
| ্ৰ্ অব্যয়ীভাব: | >88 | ৪৪৬ কাদিঃ | २०४७ |
| ৮৬ কর্মধারয়: | >२ ৫२ | SCF अभ्य | १ <i>५७</i> ८ १ |
| र्र ३ विखः | >२७ ৮ | ৪৬০ অন্ | २ <i>७</i> ४४ |
| र्रे⇒> हन्छः | ३ २१० | 8७ ८ हे९ | ८४७८ |
| ১২২ বছ্রীটিঃ |)) | ४५° रेठ् | •606 |
| ১७१ लुक् टा कंड ंग | こくりゃ | Qualitati moster v | |
| ১৩৮ অল্থিধানম্ | ,, | প্রাকৃতপাদ: | ı |
| ১৭২ প্রাগ্ভাবঃ | 2520 | ১ শ্বর কার্য্যম্ | >8•8 |
| ১৭৫ পরভাব: | 2528 | | |
| २०० मीर्थः | ১৩০৩ | ১ হলকাগ্যম্ | >805 |
| ২২৮ হুস্বঃ | 2022 | ১ স্থ্ৰস্তকাৰ্যাম্ | >8२२ |
| २ ६२ छोनिः | 7074 | > ভিঙন্তকার্যাম্ | 5823 |
| ২৭২ আ ৎ | > ৩২8 | ১ অপদ্র'নারন্তঃ | >8 09 |
| (क्रा के | ১৩৩৬ | ১১৮ ছন্দোভেদা: | \$88 \$ |
| ৩২১ ডঃ | ১৩৩ ৭ | অ্লক্ষারভেদাঃ | 3862 |

সংক্ষিপ্তসারব্যাকরণ শ্

শিবং প্রণম্য সর্বেশং সর্বভাষাস্থ লক্ষণম্। সংক্ষিপ্রসারমাচষ্টে পণ্ডিতঃ ক্রমদীশ্বরঃ।

হরিহরহিরণাং ব্রিক্সা হেরস্বমন্বিকাঞ্চ গুরুম্।
সংক্ষিপ্রসারটাকাং খোগীচক্রঃ ক্ষুটাং কুরুতে ॥
দোষাপসারণপরাঃ পদার্থভেদাবধারণপ্রবণাঃ।
কবয়ো রবর ইহাহা মামন্থগৃহস্ত বিক্ষুর দ্রপাঃ ॥
বহুন্ পোষানপি ত্যক্ত্বা ক্যানেহিপি গুণে গ্রহম্।
সন্তাবয়ন্ত সন্তো মাং শিরস্তোষ ক্তোহগুলিঃ॥
মুকুরে করিনিকুরম্বপ্রতিবিদ্ধং দৃশুতে যদ্ধং।
তদ্বয়াকরণানাং সারমিহাল্লেহিপি দৃশ্রতাং সদ্ভিঃ॥

প্রত্যুহসমূহনিরাকরণকারণং নমস্কারমারন্তে বিধায় সার্গাারশবলসপ্রপঞ্চশান্ত্রান্তরবর্শনালসচেতসামিদানীস্তনজনানাং প্রবৃত্তিক্যবন্ধং গ্রন্থনাম চিরসময়স্থরপুরাব্স্থানহেতবে যশসে চ স্থনাম চ প্রথময়মাচার্য্যো
কর্শন্ত। শিবমিত্যাদি। সর্ব্বেশং শিবং প্রণন্য সর্ব্যভাষাস্থ সংস্কৃতপ্রাকৃতিপৈশান্তাদির সংক্ষিপ্রদাবং লক্ষণং ক্রমদীশ্বরনামা পণ্ডিত আচন্তে
ব্রীতি ইতি লোকার্থঃ। কল্যাণাশংসী স্ত্রকারঃ কুশলপদসদৃশার্থঃ
শিবপদমাদাবুপস্তস্তবান্। সর্বেশরো হি প্রণত্সাভাওসম্পাদনে তিরিক্ষনিরাক্রণে চ স্মর্গো ভবতি। নানীশ্বরো নাসর্বেশ্বরশ্চ ইতি এতাব্দ্রা
সর্বেশমিতি বিশেষণমূপস্তস্থবান্। প্রণম্যোতি প্রকর্ষার্থানাত্তকেস
প্রশব্দন ভক্তিশ্রাতিশয়যুক্তং ননস্কারমাবিশ্চকার এবংবিধা হি নম-

....। । । সম্পূর্ণসূচনার্থম । ভাষাগ্রহণেন ছান্দ্রলক্ষণপরিত্যাগ্রন্ড • ইচিতঃ। যতোহধ্যয়নপরম্পরাসমধিগতেষু ছান্দসেষু পদেষু লক্ষণকরণে ন কিমপি প্রয়োজনং ন হি তদন্ত্বারেণাগ্রাগ্রপি ছাল্দ।নি পদানি প্রয়োক্তব্যানি। শাস্তান্তরেষু সংস্বপি শাস্ত্রকরণফলমাহ সংক্ষিপ্রসার্মিতি সংক্ষিপ্তঞ্চ তৎ সারঞ্চেতি অথবা সংক্ষিপ্ত: সংগৃহীত: সারো মত্র তৎ সংক্ষিপ্তসারং অন্তত্র প্রকীর্ণমসারঞ্চ বিদ্যুতে তদধ্যয়নে মন্দ্রিয়াং কেবল মা মবঞ্চনমেব ফলং ন তু রহস্তপরিজ্ঞানম্। আচষ্টে ইতি আঙ্পূর্বচক্ষিঙ্-বাক্তাবাং বাচি ইত্যস্ত প্রয়োগঃ লক্ষণমেতদতিশমক টার্থমিতি স্থচিতবান। ব্দতএবাচার্য্যেণ বর্ণকৃতলাঘ্রমনঙ্গীকৃত্য ব্যাখ্যানকৃতলাঘ্রমেবাঙ্গীকৃত্ম। পণ্ডিত ইতি পণ্ডা বেলোজ্জ্বলা বৃদ্ধিঃ দা অস্ত সঞ্জাতা ভদস্ত সঞ্জাতং তারকানেরিত ইতি ইতঃ অত্রাতিশয়ার্থে তঁরিতঃ অতিশয়বুদ্ধিই কর্মনো-ভালনি প্রবর্ততে। গ্রন্থকতঃ সংসারে স্বনামপ্রসিদ্ধির্হি যশদে স্বর্গায় চ ভবতীতি স্বনামদংকীর্ত্তনমাচরিতম্। তথাচ, রুণদ্ধি রোদসীঞ্গাস্ত যাবৎ কীর্ত্তিরনশ্বরী। তাবং কিলায়মধান্তে স্থক্কতী বৈবৃধং পদমিতি। ক্রমদীশ্বর ইতি ক্রমঃ প্রথম শঙ্মতোদীর্ঘ ইতি দীর্ঘ্য কন্থার ভবতীতি পণ্ডিতম্মন্তা-শ্চেদেরন্তি তদসং ন হি লৌকিকসংজ্ঞাশবেষু প্রকৃতিপ্রত্যর্যবিভাগগরি-কল্পনায় ব্যবহারঃ কেনাপি ক্লভঃ কথং তৈঃ কুর্য্যাল্লোনস্থতোন্নতিং ন্ম ভর্বো তরণাত্ত্ত্ত্ত্বয়মিত্যাদিশিষ্ঠ প্রয়োগেরু সংজ্ঞাশনানাং বুয়ৎপ্র করণীয়া। কিঞ্চ প্রদিদ্ধবেতানাম তাবদেতং। তদমুকরণে নামি ুকেয়মজ্ঞানাং বিপ্রতিপত্তিঃ। নমস্কারাখ্যনম্ভরং সর্বভাষাপ্রধানতাৎ প্রথমং সপ্তভিঃ পাবেঃ সংস্কৃতভাষালক্ষণানি প্রক্রমমাণঃ সকলবিষদর্থ वालिक दार मिकार्याणीः उदिशानाम अध्यार मिक्निमातस्वान, उन्नस्तः ধাত্মলকত্বাৎ সকলপদানাং তণ্ধিকারবিহিতানাং তিঙাদীনাং ক্লতাঞ্চ বিধানায় দিতীয়ত্তীয়ে তিঙ্কৎপাদৌ, ত্বনস্তরং নাম চ ধাতুজমাহ নিক্তক্ত ব্যাকরণে শকটশু চ ভোকং যা পদার্থবিশেষসমূখং প্রতায়তঃ প্রক্তেশ্চ তচুত্মিতি ভানেন ধাতোঃ ক্রিপারমের নামেতি মতুমাশ্রিতঃ নামাধিকারবিহিতানাং তদ্ধিতানাং বিধানায় চতুর্থং তদ্ধিতপাদম, তম্মা-

नाकर वीम्कातः(क

শঙঃ স্থানে আই এটি শিন্ত শিশ্ তেচ্ছিত্ত ক্রমঃ ক্রমবতামঙ্গমিতি যথাক্রমং বৃদ্ধিঃ পরিভাষ্যস্ত ইতাধ্যাহীরঃ সংজ্ঞাপরিভাষাদেঃ সূত্রলক্ষণহামিত্যকথাদেরাদাবিত্যাদিনা য

দেব নামে বিহিতকর্ত্রাদিসংজ্ঞা উক্তথাদমুক্তথাচ্চ স্বাদীনাং বিধানায় ক্ষমং কারকপাদম্, নামঃ স্থপি বিহিতে বিশেষবিধানায় বর্ছং স্থবস্ত-পাদম্, স্বস্তানাঞ্চ সমাসাশ্রয়কার্য্যাদিবিধানায় সপ্তমং সমাসপাদমিতি। সংস্কৃতভাষালকণানি সমাপ্য অপ্তমেন পাদেন প্রাক্তাদিভাষালকণানি বিরচিতবান্। তেযাঞ্চ লক্ষণানাং ব্যাসশীলাদিপরিশীলনবিমলমতিরধিক্রতোমাপতিদত্তপ্রভৃতিসভাজনসভাজনপর উক্তাম্বক্তত্ত্বক্তবিচারচাক্তরা জুমরনদ্দী পরিশোধিতলক্ষণাং বৃত্তিং ক্রতবান্। তন্তাশ্চ নিগৃঢ্-নিবেশিতবত্তবিধপ্রমেগ্রায়াঃ ক্রুটীকরণায় কাপি কাপি সময়বশব্যাকুল-পাঠসমুদ্ধরণায় চ প্রতিলক্ষণবিহিতবিবরণা টীকা ময়া শিশুজনবোধনায বিধীয়তে।

(>)। বৃদ্ধিশন্ধং পরিভাষার্থং ক্রতোহিপি বর্দ্ধনং বৃদ্ধিরিতি শন্ধার্থান্থসারেণ মঙ্গলার্থমানে প্রযুক্তঃ। অঙঃ স্থানে আনৈজারালৈচঃ কিমন্থমণ ব্যতিক্রমেণ প্রত্যেকমভিসম্বন্ধেন বা ভক্তীতি নক্ষায়াং ব্যবস্থার্থফুল্মঃ, ক্রমবতামঙ্গমিতি যথাক্রমমিতি। ইতিশন্ধো হৈতৌ এতে
আনেশা যথাক্রমং ভবক্তি। যতঃ ক্রমং ক্রমবতামন্ত্রন্থযুক্তানাং ক্রমোহঙ্গম্। তথাচোক্তং, ভণনং পরিপাট্যা যৎ ক্রমং স পরিকীর্তিতঃ।
ভিত্তথা, তত্তাঃ প্রবৃদ্ধলীলাভিরালাপ্র্যিতদৃষ্টিভিঃ। জীয়ন্তে বল্লকীকুন্দঅগিন্দীবরসংপদ ইতি। তথাচ শহসে শ্রমা ইতি ক্রমবতামিতি বহবচনমতন্ত্রং ক্রমবতোরপি ক্রমোহঙ্গং যথা ঢোচ্লুক্ ইতি নিঃস্তর্ভাঃ
সামসেধসনীনামিত্যানে যক্র ক্রমো নেয়তে তত্ত্ব যন্ত্রান্তরং কিমপ্যান্থেয়েম্। ক্রমবতামিত্রক সমসংখ্যানামিত্যধ্যাহার্য্যম্। তেন স্বসিতয়োমিবিপরিভ্য ইত্যানে ক্রমবন্ত্ব স্ত্যপ্রসম্পংখ্যারান্ধ ক্রমেণ ব্যবস্থা সর্বং
হি বাক্যং ক্রির্যা পরিস্কাপ্যতে ক্রিরা চাত্র ন বিদ্যতে তত্মাদ্বশ্যং

ক্রিয়া কাপাধ্যাহরণীয়া। অত আহ পরিভাগান্ত ইতাধ্যাহার ইতি। নতু নানারপাস্থ জিগাস্থ বিদ্যমানাস্থ কথং পরিভাষণক্রিয়ায়া অধ্যাহার-নিশ্চয় অত আহ সংজ্ঞাপরিভাষাদেঃ স্ত্রলক্ষণরাণিতি। লক্ষণমাচার্ট্যাঃ পঠাতে। সংজ্ঞা চ পরিভালা চ বিধিনিয়ন এব চ। অতি-দেশোহধিকারশ্চ ষড়বিধং স্ত্রলক্ষণমিতি। তথাহি ব্যবহাবার্থং শাস্ত্রে কুতঃ সঙ্কেতঃ সঃজা; যথা লড়ি গ্রাদি । পরিতো ব্যাপৃতা ভাষা পরিভাষা; যথা ইক এঙরলো গুণ ইতি ইগিতি গৃহীতাঃ স্থানিন এঙ ্মর্ অল ভাদেশা শুণশকেন লিঙ্গেনোপতিষ্ঠন্তে। বিধানং বিধিঃ : কচিন্বর্ণোৎপাদনরূপঃ কচিদভাবরপত আদেশগ্রেমী চ ভব্তৈব ভেদৌ নিষেধো লোপতাভাবরপঃ সামান্ত প্রসঙ্গে সাবধারণমন্তুশাসনং নিয়মঃ; যথা তিঙাদিয়ু সামান্তপ্রসঙ্গেষু ভাবকর্মণোরাম্বনে ইতি। অন্তথর্মসান্তবাবোধন্মতিদেশঃ ; ম্থা লড়্-লু ডুং কচ্ছত্শানো ইতি। পূর্কস্থিততা পদত্ত উত্তরলকণোপস্থিতির্বিকারঃ ষ্থা প্রোরিত্যাদি। নধ্বেমপি কথং পরিভাষণক্রিয়া অন্যাহার এব নি চয়ং। অত' আছ ণিত্যকপাদেরাদে ইত্যাদি। এতেন পরিভাষাস্বরু ৪২% বিদ্যমানস্বাদুপরণক্ষণানামভাবত্বাৎ পরিভাগত্বমেবাস্ত ব্যবস্থিতবান্। ১৪৩৭, যত্র বৃদ্ধিপদং শ্রুতমন্ত্রবৃত্তং বা বিদ্যুতে তত্ত্ব তত্ত্ব অঙঃ স্থানে আনৈজীরা-লৈচো বিধেয়া উপতিষ্ঠত্তে। সংক্ষিপ্তদারত্বা দ্বাস্থ্য শান্তস্থ নেদং প্রপঞ্চেন বিবিচাতে। তকারো মুখস্থখার্গ ইতি এতেনৈতৎ প্রতিপাদিতং যত্র যত্র প্রত্যাদৌ পদসিদ্ধাবশ্রতশ্র বর্ণস্ত চিহু প্রয়োজনং ন দুখতে স মুগস্থার্থো দ্ৰষ্টব্যঃ। অন্ত ক্ৰৈচ্ইত্যলোকিকপদন্তাদ্বিদিতপদাৰ্থং প্ৰত্যাহ ইহ পূৰ্দ্বা-চার্যাবদিতি ষথা পূর্নাচার্টেয়ঃ আই উ পাদি লক্ষণচত্ত্রঃ প্রত্যাহারাৎ স্বরহলোককৌ স্বরহন্ভ্যামবচ্ছিরং স্বরমাত্রং গৃহতে ন তু হন্ তথেহাপি গৃহত ইতার্থ:। যথা চৈতৎ গৃহতত তথা অভিত্যুক্ত ইত্যাদি গ্রন্থেনৈর ব্যাচকার অনেনৈব ক্রমেণাগ্রেথপি প্রত্যাহারা গ্রাস্থাঃ। তে যথা ঢোট লুকু

শাৰ্ক বাদ্ৰারং ৮

उरश्राका नीर्धारित जैननकी जैन

২। ণিত্যকথাদেরাদো।

ণ ইপ্লেচ্ছতি যত্ম স ণিৎ তত্মিপ্পিতি প্রত্যায়ে পরে কথাদি-

ুর্মেণ্থ্ৰ দার্থন্চ ইতাত্রাণিতি, ইণ ঔদিণ্ ইত্যত্ত ইণিতি, স্বর্ণেনাগদীর্থ ইতাত্রা /তি, ইক এঙরলো গুণ ইত্যত্র ইগিতি এঙিতি চ. স্থট্যাণিৎ প্রত্যরাদেন্ত্র্ ইত্যত্র উগিনি, রোহচীচ ইত্যত্র অজিতি চ ইজিতি চ ঐজে-চোহতেতি ঐজিতি এজিতি চ। দ্বৌ দ্বৌ গুণাভ্যাং গৃহেতে ককারেণ ত্রয-স্থা। চকারেণ চ চত্তারঃ একাদশ ইমে মতাঃ॥ গ্রহণে হি পূর্ব্বচিংযোগ সহ ভূল্যতা ন হু তেন ঐ ঔচপথ্যস্তেন যাবস্তো বর্ণা গৃহীতাঃ তাবস্তো বর্ণা এবাত্র গুহুস্তে ইভি তুল্যতা এবং সতি অণিতি ইণিতি চ প্রত্যাহারধয়ং ন স্থাৎ। পূর্ন্ধাচার্টিগ্রনগোরগ্রহণাও। সমুদ্রবীরশূরশুক্ষকবারদেরশক্ষেতাস্থ খেদনিতি টণি ক্রতে বহুলং তদ্ধিত ইতি বুদ্ধা গোশনাচ্চ স্থপ্রতায়ে ক্রত গোদ্যবোর্বিতি বুদ্ধা যথাক্রমনাকারাদয়ো ভবন্তি। নুমু প্রত্যাহারে ইস্ব-वना विकारक कथर वीवन्त्रभक्तरानीवंद्य वृक्तितिकानकायामाह छिलाहदन-নাদিতাদি। যথা গুলায়াং থোষঃ প্রতিবস্তীতাত গুলানান্দেন তংশমীপ-ভ তারমুপলক্ষণতে তথা **হমেনাপি সমাপ**বভী সব[্]ঞৰ দীৰ্ঘ **উপলক্ষ**ণীয়ঃ। উপলক্ষণঞ্চ কাৰণেন বিনা ন সম্ভবতীতি অত হাহ উচ্চেরণদর্শনাদিতি। উদাহরণং নিষ্টোপনিবদ্ধ প্রয়োগস্তদ্ধনাথ ন তু সর্বত্ত অতএব নোমপাহি-ুঁপিভার্জ উপাদেশঃ সোমপাভাঃ ইভার এফং নদাহিত্যর ইণ ঔদিণিতি ইকারও ন স্তাৎ।

(২)। ণিত্য। ৭ ইণিত্যাদি ইন গ্রহাবিত্যশাং কিপ্ প্রায়োদীঘাদিশ্য বচাদেরিতি কিপি ক্লমাত্র্যরাদাবিতি তুকি চ ক্তেইদিতি অত আহ্ ইদ্যাজ্ঞতীতি ণিতি প্রত্যয় ইতি বাছলাগ্রক্তং ন তু নিগ্নমঃ তেন ভাবিষাস্ত ইত্যানৌ আগমেহপি ণিতি পরে রুদ্ধিনশনাং অকণাদেরিতি নঞ্তংপুরু-বেণ কথাদিব্যতিরিক্তারাঃ প্রকৃতেদ্বিতানাম্ন্য গ্রহণম্। বছলং তদ্ধিত ্রাধং সম্পর্যক্তে। প্রচয়তি পঠিয়তি। অকথাদে-ক্রিনাত কিম্ ? কথয়তি। কথ বর গণ শঠ শঠ পট রট রহ স্তন

ইতি লক্ষণং দ্বস্তৈব বছলবিধানার্থং প্রপঞ্চ। আদাবিতাধিকরণে সপ্তমী আতা ধারা বৃদ্ধির্ভবতীত্যর্থঃ। সপ্তমী চ পরে বাচো গমো চোপপদে কচি-দিতি বাহুল্যেনোক্তং ন তু নিয়মঃ। নমু যুগ্যানৌ বৃদ্ধির্ভবতি তনা আদয়তি আশ্বতীত্যাদৌ বৃদ্ধা ভাব্যং ন তু ভাব্যতি পাঠ্যণীত্যাদৌ অঙােহনাদি-স্বাদত আহ সম্রাতীয়াদাবিতি অঙা গৃহীতেমু য আদিরিতি নহি পাচয়তী-তাাদৌ বিপাতীয়েন হলা আদিত্ব ব্যাহন্ততে এবমপি ন প্রাপ্নোতি অণেক্ষাক্তং হাদিবন অণেক্ষণীয়সাপর্য স্গাতীয়স্তাভাবাৎ যত্র পুনঃ মজাতীবস্থাপরস্থাবস্থিতিকত্রানেকবর্ণব্যবহিত্তাদ্রদ্ধেরভাবঃ। অত্যোচাতে। আত্মন্তব্যেক্ষিতি বক্ষাতি। তেনেৰ স্থায়েনাত্রাপি একস্প্রেবাদিত্মশ্লীকরণীয়-মিত্যদোষ্য। নম্বাদাবিতি। কিমর্থং সন্নিহিতালাভে বিপ্রকৃষ্টং বিধিরপেক্ষ্যত ইতি স্থায়াৎ ভাবয়তীতাাদাবস্তেহপি বুদ্ধৌ নাস্তি বিরোধঃ। ,অনেকবর্ণ-ব্যবহিতাজিজুপান্তক ধাতুরিতি কথাদিমবিধানসামর্থ্যাদেকবর্ণব্যবধানেহপি পাচয় তীত্যানে । বৃদ্ধিরবিঞ্চদ্ধির। এবঞ্চ সতি উণু রিশ্বিচিরিজিরীণামনাদা-বিতি ন কুতং স্থাং। জাগুরিণ লিটোবিতি নিয়মার্থং লক্ষণম। অত্যো-চাতে। একং দংগ্রহরূপং লক্ষণং বিধায় তৎপ্রপঞ্চরূপৈর্ল ক্ষণাস্তরৈস্তদ^{্ ৪২}০ মেব ব্যাকুর্সাণোহয়মাচার্য্যঃ সংগ্রহবিবরণায়কং শাস্ত্রমারন্ধবান্। এত্রু ৪৩৭ ণিত্যকথাদেরাদাবিতি তদ্ধিতে ণিতি পরে বৃদ্ধিবিধানস্যাপ্যপদংগ্রাহকং লক্ষণম্। যদ্যত্রাদাবিতি ন ক্রিয়তে তদা আদৌ তদ্ধিতে বুদ্ধিন গৃহীতা স্তাৎ তত্র স্বাদাবিত্যবশ্যমেৰ করণীয়ম্। তত্মাদশ্মিয়াচার্য্যে প্রতির্জ্গতার্থ-নির্কাহ প্রবত্তে নৈবংবিধো হি দূরণলেশেহিবকাশমাদাদয়তি। গ্রন্থপঞ্চ-ভীরুভিরশ্বাভিরপোবংবিধঃ কুচোদ্যবিচারঃ প্রায়ো ন' কৃতঃ। নমু বৃদ্ধি-রনেন বিধীয়তে ন হৃত্র বুদ্ধিঃ শ্রায়তে অত আহ সর্ব্যত্তো দি সর্ব্যত্তেত ভং मर्समाञ्च वर्दे न्दः नृती वानरञ्चल यूठनार्थम् । निजि शेरवश्कर्णारम् त्रारमे किः ভবতীতি দাবণ্ডেক্স বাক্যে অবশ্রুং কিমপি আকাজ্জনীবং তৎ কিং দল্লি-হ্বিত্রমেব, কিমপ্যাকাঙ্গ্রিতস্তাসনিহিতস্ অত্র সনিহিতালাভে বিএক্স্থিং

A MARANAL OF

গায় ত্রণ ক্ষিপ বস গড় ফ টু জল ধরন শ্লথ পদ প্রথ অনুস্পস্গপথ পসানিত্যেকে।

বিধিরপেক্ষাত ইতি ভারেন সরিহিতমেবারুবর্ণত ইত্যচিতন্। তৎ কিং পূর্দোক্তমন্থবর্ত্তামনওরাভিধেরম্ বা। অত আহ পূর্দোক্তমিতি পূর্ব্বোক্তং জ্ঞাতত্বাৎ প্রথমবুদ্ধিসনিহি তমনস্তরাভিধেয়ঞ্চাজ্ঞেরতাক্তরমবুদ্ধিগোচর-মিত্যভিপ্রায়ঃ। পাচয়তীতি ড়পচ্য পাকে ডুকারো ডিতঃ ক্রিম ইতি চিত্রার্থঃ লুক্ চিত্রার্থ:শুতি ডুকাবলুক্ যিদ্বিদাদের।দিতি চিত্রার্থয়কারঃ প্রয়োজক ইতি ণিঙ্ ণকারল্ক্ ব্রার্থ্য একা লুক্ গুণার্থ্য। ভাদিদশগণা ণিঙ্মনাদ্যস্তাশ্চ ধাতৰ ইতি ধাতুমং হল ধাতোপ্তিঙ্ তদ্ অন্তি ইত্যাদিনা তিঙ্ চহুল ড়াদৌ শঙ্ভুণ্যাদৈবিত্যাদিনা শঙ্ শিতীতাদিনা চিহ্নার্থঃ শকারঃ জন্তিতোরপিবাদেরিত্যাদিনা গুণঃ ণ্যাদৌ চৈচোহয়বায়াব ইতি অয়াদেশঃ। দূজ্যাদীনাং ঘটাদিঅবিধানং জ্ঞাপয়তি ভাবয়তীত্যাদৌ জস্-ঙিতোরপিবাদেরিতি গুণং বাধিস্বা বৃদ্ধিরেব প্রবর্ততে দীর্ঘার্থং ঘটাদিশ্বং তেষাং বাচামিতি চেলৈবং তেকাং বাাপককার্গ্যাসম্ভরে হি স্বল্পকার্য্যার্থন! ব্যবস্থীয়ত ইতি ন কিঞ্চিদেতেং। কথ বাক্যপ্রবন্ধে বর ঈপ্সায়াং গণ ব্ৰীখানে শঠ শঠ সম্যণ্ভাষণে পট বট গ্ৰন্থে রহ ত্যাগে স্তন গদ দেব শব্দে ্রিত গতৌ অর্পদর্গপথপদৌ গতৌ স্বর আক্ষেপে রচ প্রতিযত্ত্বে চহ পরি-ক্ৰীৰনে পরিকন্ধনং দন্তঃ শাঠ্যঞ্চ মহ পূজায়াং বট বিভাৰনে অৰ্থতেদাৎ পুনঃ পাঠঃ লজ প্রকাশে রদ আসাদনম্বেহনয়োঃ ব্যয় বিত্তসমুংসর্গে ত্রণ গাত্র-ুবিচুর্ণনে ক্ষিপ^ইক্ষেপণে ধর্দ নিবানে গড় সেচনে ক্ষুট বিক্সান কল গতৌ ধ্বনশব্দে শ্লথ দৌর্বলো এতে পরস্থৈপদিনঃ। পদ গতাবাত্মনেপদী চুরাদি-গণস্থঃ কথাদিঃ পট গতৌ বট বেপ্তনে গদ ব্যক্তায়াং বাচি পত্গতৌ চহ পরি-কল্পনে মহ পূজায়াং রদ শব্দে বায় গভৌ বদ নিবাদে ধ্বন শব্দে এষাং ভাগীনাং পট গতৌ পদ গতাবিভাগু দিবাদেশ্চ পাটয়তীতাাদির্ভবতি। অনুপদর্গয়ো-রেব পথপদোঃ কথাদিয়াৎ সোপদর্গয়োঃ কথানিয়াভাবে চুরাদিয়মপি নাত্তি তেন প্রপথতি প্রপদতি ভাদেরসমাধ্যণজাৎ ণ্যাদিকাদা শঙ্গিতি তু

সংক্ষিপ্তসারব্যাকরণে

ু । চমকমবমবর্জ্জমিণ্কুতোঃ সেঙ্মান্তঃ। ব অশুমি শুমঃ কুমকঃ অতুমি তুমঃ তুমকঃ।

8। ভৌবাদিকোহ্য।

আমি অমঃ অমকঃ। চমকমবমাস্তা। অচামি চামঃ চামকঃ অকামি কামঃ কামকঃ। অবামি বামঃ বামকঃ। অনিণ্কুতোস্তা। আময়তি আমঃ আমকঃ।

প্রপাথয়তি প্রপাণক ইতি পতামুপদর্গপথপদানিত্যেক ইতি। অন্তে মেতকাতুত্রবং কথাদৌ ন পঠন্তি। এযাং চুরাদিকাভাবাং পূর্দ্বছছঙ্ পততি পদতি পথতি লুঙ্ভি তু অপতীদিতি পতুধাতোপ্ত অপপ্রদিতি রূপন্। যদি জনবধার্ণিতি বৃদ্ধাভাবস্থদা জঙ্গান জানয়তি ববাধ বাধয়তি ইতি কপং ন সিদ্ধাতি জন জননে ইতান্ত ছাল্দসত্বমপি আশ্বিনে সংধ্যার্জনীড়াশ্ভা ইতি হত্রং কুর্বাবেন বৃত্তিক্তা নাজীকৃতং তত্মাদস্তাত্র পাঠো লিপিকরপ্রমাদকৃত ইতি আচমক্ষবম ইতাস্তানস্তরং দুইবাঃ।

(৩।৪)। বর্জনিতি বুজা বজনে অস্বাদেন জ্ঞাপকাদ্ধনাগ্যাপি গম্
তৃতীয়ান্তশ্যেপদংশঃ সমাসো বেত্যতঃ সমাসো বেত্যগুরত্তা পাক্ষিকঃ সমাসঃ
কৃত্যাদিছেন গমন্তশারায়াই স্থলক। চমু অদনে ভালিঃ চমু ভক্ষণে আদিঃ
ধ্য়োরপি গ্রহণুন্। কমু কাজৌ টুব্ম উলিগেলে ইত্যোতান্ তাজা ইপ ইবক
কৃদ্ধিকারবিহ্নিতে চ গিতি প্রতায়ে পরে মকারাজঃ সেহুপাতুঃ কথা দিইবলি কুইবল আঙু পূর্মণামিঃ পাণিনিচন্দ্রোঃ স্ত্রে পঠাতে সর্কার্ম্মণা তু কেবলং পিউতঃ
হুর্গিষিংহেন ত্রোক্তম্ অভিধানানাই পূর্মণ্চমিনিতি ত্থাদিলাছু ব্র্তিত্থাটো
লিপিকরপ্রমাদকতঃ। অশ্যাতি শমু উপশ্যে ভাবক্মণোরায়্রন ইত্যামনেত পদং লুইসঙ্ চ ইতি সঙ্ সচ্সিজ্ভাক্ষ ভাবাদাবিতি ইপ লঙ্লুহুল্ গ্র্থনাত্রগানঃ শমঃ শমক ইতি ঘয়্কৌ। তম ইতি তমু অভিকাজায়াই ঘণ অনু গত্যপোঁ ভানেণ অম রোগে চ্বাদৌ চ পঠাতে ত্র
চ্রাদৌ অম রোগ ইতি ধাতো নিত্যণিত্র নিমিতা ব্রিঃ সর্ক্ষির প্রথমণ্ড্রেতি নাগার্ম্য বিষয়ঃ। অত আহে। ভৌনানিকোহমিতি। কমেরপি ধক্যচতুর্পি বেতি যদা ণিঙ্নান্তি ত্বা প্রস্কালপি নিবর্জতে।

ए। জनवदर्श ह।

অজনি জনঃ জনক?। বধঃ সোতো হিংসাৰ্থঃ অব্ধ্রি বধঃ বধকঃ। ভক্ষকশ্চেদিহ নাস্তি বধকোহিশি ন বিদ্যুতে।

৬। বেঃ শ্রম্বা।

ব্যশ্রমি ব্যশ্রামি বিভামঃ বিশ্রামঃ বিশ্রমকঃ বিশ্রামকঃ।

৭। উদোঘণিযম্। উল্লেখ্য

কামুক ইতি গমাদেণু ক ইতি গুকঃ। আময়তীতি চ্বাদিরাং ণিঙ্। আমঃ আমকঃ ইতি স্বার্থণিঙতাং ঘরকো ণিঙ লোপোহশিতাদ্যটাতি ণিঙ লোপাঃ। সেঙ ইতি কিম্। অয়ামি বামঃ বামকঃ। হনিমন্যতিযমিরমিণমিগ্নীংস্ক ষট্ পঞ্চমান্তাশ্চেতি অণিঙ্কারিকায়াং বক্ষামঃ।

- (৫)। ইণ কতোঃ প্রয়োঃ জনবদৌ ধাতৃ কথাদী ভবতঃ। জনী প্রাহ্ ভাবে জন জননে ছয়োরপি গ্রহণম্। অজনি জনঃ জনকঃ। অবধীতি জনো বিদ্বিভাশিষোরিতি বধাদ্ধেশঃ বধ বকনে বধঃ সৌত্রো হিংসার্থঃ ত্র্যাণা-মপি গ্রহণম্। বধকঃ তথাহি ভক্ষকশ্চেদিই নান্তি বধ্যকাইপি ন বিদ্বতে। কুর্থাদেরক ইত্যকপ্রভায়াস্তো বধক ইত্যুনাদিপাদে দর্শিতঃ। ইণ কতো-ক্রত্যের জন্ধান জানয়তি ববাধ বাধয়তি। জনয়তীতি তু জনী প্রাহ্রভাবে ইত্যুন্ত ঘটাদিত্যাকু স্বত্ম।
- (৬)। বেকত্বরঃ শ্রম্ তপদি খেদে চ ইত্যয়ং ধাতুরিণি কৃতি চ পরে
 কথাদির্বা ভবতি। পূর্বেণ প্রাপ্তে বিভাষেরং চল্রোহত্ত নিত্যাং বৃদ্ধিমাহ
 ভাগবৃত্তিকারন্ত নিতাং বৃদ্ধাভাবং। বেং শ্রমেবে তি বর্দ্ধমানং তথাচ, বিশ্রমার্থম্পগৃত্মজন্ত্রমিতি মাবং। বিশ্রামং লভতামিদঞ্চ পিথিলং জ্যাবদ্ধমন্ত্রিত কালিদাসঃ। স্বাক্তিশ্রীমা ভূমিরিতি বামনেনাপি দর্শিত্ম।
 - (१)। উদ উত্তরো যমু উপরমে ইত্যাং ধাতুর্ঘণি পরে কথাদির্ভবতি। উত্তরধোগে বা গ্রহণাদশু নিত্যতা। তথাহি উভ্যোর্বিকল্পন্নোর্দ্ধ্যে কে বিধয়ত্তে নিত্যাঃ।

্চ। উপাদ্রম্বা। উপরমঃ উপরামঃ।

ু কি ৯। অনেকবর্ণব্যবহিতাজিজুপাক্তশ্চ ধাতুঃ।
ু লম্বয়তি চকাসয়তি চেতয়তি কুজয়তি।

২০। নামধাতুশ্চ বহুলম্।
ফিং গৃহাতি ফচয়তি। বহুলগ্রহণাদহ্বাচঠে ভাবয়তি কর্তারমাচষ্টে কারয়তি।

- (৮)। উপাছত্তরো রমু ক্রীড়ায়ামিত্যয়ং ধাতুর্ঘণি পরে কথাদিবা ভবতি। অণিঙ্কাদপ্রাপ্তে বিভাবেয়ম্। উদ উন্থমে যমু উপরমে ইতি গণকারোক্তম্লমেতলক্ষণদর্ম।
- (৯) বর্ণপদেনাজ্ঝলনুষারবিসর্জনীয়া উচান্তে। অনেকবর্ণেন ব্যব-হিতোহচ্ যক্ত সোহনেকবর্ণব্যবহিতাচ্ ইচ্ উপান্তে যক্ত স ইজুপান্ততৌ কথাদী ভবতঃ। লম্বয়তীতি লবি অবিস্রংসনে ইম্বান্ন্ চকাস্যতীতি চকাস্থ দীপ্তৌ ব্রোহশাস্থাদেরিতি শাষাদ্যর্থ ঋকারলুক্ চেতন্বতীতি চিতী সংজ্ঞানে কৃজয়তীতি কীজকৃজগৃজি অব্যক্তশন্তে প্রয়েচকে ণিঙ্।
- (১০)। তিওন্তাদিতরং স্থপ্দুজং নাম বৃত্তিক্বক্ষাতি নাম চ তৎ ধাতৃকেতি নামধাতৃং নামো ধাতৃত্বাসন্তবাৎ বান্ধেকদেশে বাতৃশকপ্রয়োগ্^{১৯}
 অথবা নামো গাতৃনা মধাতৃং নামো নিম্পন্ন ইতার্যঃ। নামধাতৃশ্চ বছলু
 কথাদিং স্থাছ। ভচয়তীতি বচং গৃহণতীতি বচাদেগৃহণতাবিতি নিঙ্ বহলগ্রহণাৎ কচিদকথাদিস্থমিতি শেষঃ। ভাবয়তীতি বহুশকাং নামস্তৎকরোভাাদাবিতি নিঙ বহোভূ রিতি ভূভাবঃ। কার্য়তীতি কর্তৃশকাং শূর্কবর্থ
 নিঙ্ইনাদিস্থাৎ ভূত লুক্ কচিন্নিমিন্তাপায়ে নৈমিন্তিকস্থাপাপায় ইতি ক ইতি
 হিতে বৃদ্ধিঃ। একাচাং হলস্তানাং ইনাদেলুকি চ কতে সতি হলস্তানাক্ষ
 কথাদিসম্। একাচামজস্তানাং ভনাদিশুকি চ সতি ক্লম্ভানাক্ষ ন কথাদিস্থমিতি প্রায়েণ বহুলবাবস্থা। সা যথা তদয়তি যদয়তি হলয়তি ক্লম্ভি
 ম্বয়তি প্রজয়তি পটয়তি গবয়তি ভূবমাচতে ভাবয়তি রাজাচলনমাচতে রাজানং চালয়তি।

১১। **উণু রিক্ষিচিরিজিরীণামনাদৌ।** পুপ্রার্ণাবয়তি রিক্ষায়য়তি চিরায়ন্ততি জিরায়য়তি।

১২। जाश्वित्निए ।

অজাগারি জজাগার।

১०। (न) ष्ठोरमङ्खः।

স্বটয়তি হিড়য়তি। ষ্ট ব্যথ প্রথ অদ ঋদ কদি ক্রেসি ক্লিদি জি দক্ষ প্রস ক্রেপে কৃপ ঞিহরা জ্ব গড় হেড় বট ভট ৭ট ষ্টক চক কথে রুগে লগে হুগে লগে ষগে ষ্টগে কগে অক অগ বনু কণ রণ চুণ চল শৃণ শ্রাণ চল বল শ্রাথ শ্লাথ ক্রেথ ক্লথ

⁽১১)। ণিতি প্রের উর্কাদীনামনাদৌ বৃদ্ধির্ভবতি। প্রোণিবয়তীতি উর্কি আছোদনে বিক্ষিটিরিজিরিদাসক্রহ জিবাংসায়াং এভাঃ প্রমোজকে ণিঙ্। যদেতদ্পুরিক্ষিটিরিজিরীণামনাদাবিতি ক্বতং তদনেকাচামনাদাবিতি বক্তবাং তেন বিধুশকাদায় লুকি ণকে চ ক্বতে বিধায়কঃ।

⁽১২)। ইণ্লিটো্র্লিভো: পরয়ো: জাগু নিজাক্ষরে ইতান্তানানে বৃদ্ধিভবতি। অজাগারীতি রুঙ্ জ ঝদ্ধানানানে সিজিতি সিচ্ পূর্ব্বনিণ্
জ্জাগারেতি নিট্সংক্ষক স্থাণ্-নিল্লিড্স্ডেত্যাদিনা বিক্ষিক্ষ:। উত্তমপুক্ষৈকক্ষিন তৃ অনেনৈব বৃদ্ধৌ প্রাপ্তামাং বৃদ্ধিনে বেতি পাক্ষিকী বৃদ্ধি: ভূতকালক্ষিত্ত লিটঃ সাহচর্ব্যাৎ ইণপি ভূতকালবিহিতপ্রত্যয়াদেশ এব গৃহতে।
তিন জাগরিষীপ্ত ইত্যাদেশ ক্রন্শগ্রহাজস্তাদিত্যাদিনা ক্রতে ইণাগমে পরে
বৃদ্ধিন ভবতি। ইণ্লিটোরিতি কিম্। জাগরয়তি।

^{ু (}১০)। নৌ পরে ষটাদেশীর্ঘো ছবো ভবতি। ঘট চেপ্টায়াং ব্যথ ভবচলনয়াঃ প্রথ প্রাথানে এদ মর্কনে খদ খদনে খদনং ক্লেশোৎপাদনং স্থৈয়হিংসয়াঃ খদনমিত্যেকে ক্লি ক্রেদি ক্রেদ ক্লে বিক্লব্যে ক্লিজ গতিদানয়া দক্ষ গতিহিংসয়াঃ প্রদ বিস্তারে ক্রেপ রূপ রূপায়াং গতৌ চ ঞিখরা সম্ভ্রমে এতে আত্মনেপদিনঃ। ক্লের রোগে গড় সেচনে হেড় বেপ্টনে বটভট পরিভাষণে এট গভিনত্যোঃ ষ্টক প্রতিবাতে চক ভৃত্থো কথে হসনে রগে স্কারায়াং লগে সক্লে চ ছগে ফ্লেগে মগে প্রগে কগে সংবরণে ভাক অগ্

জ্বা ব্যব ক্ষাল দ্। চুরাছাদীনামঘটাদিয়াৎ। উদ্বাটয়তি প্রাথ-্যতি নাটয়তি চাকয়তি দারয়তি ইজ্যাদি।

১৪। ऋ वाधारन।

আধ্যানং স্মরণম্। স্মরণবিশেষ ইত্যেকে। স্মরয়তি। অন্তত্ত্র বিস্মারয়তি প্রস্মারয়তি। দ্বিতীয়পক্ষে ক্মরণমাত্রে স্মারয়তি , স্মারকঃ শব্ধঃ।

১৫। এবং নূ নয়ে। । নরয়ভি।

কুটিলায়াং গতৌ বন্ধু যাচনে কণ রণ চল গতৌ বণ শণ সংভক্তৌ শ্রণ দানে গতাবিত্যেকে চণ বল শ্রথ শ্লথ ক্রথ হ্লথ হিংলায়াং জ্বল দীপ্তৌ হবল স্বল দৃত্যে স্বত্যে বদস্তি দৃ বিদারণে যং ক্র্যাদৌ পঠাতে স এবাত্র ভয়ার্থো ঘটাদিকার্যায় পঠিত ইতি ভাল্পন্তর্গণস্থো ঘটাদিং! চুরাদ্যাদীনামিত্যাদি চূর্ আদির্যন্ত চুরাদিঃ চুরাদিরাদির্যেয়াং তে চুরাল্লাদয়ঃ তেয়াং গণান্তরে স্থানান্তরে পঠিতানামিত্যর্থঃ। উদ্যাটয়ঞ্চীত্যাদি। ঘট সংঘাতে প্রথ প্রথানে নট অবস্কলনে চ চুরাদয়ঃ নট নৃত্তৌ চক ভৃপ্তিপ্রতিসংঘাতয়োঃ ভালী দৃ বিদারণে ক্র্যাদিঃ। এমাং রূপাণি আদিশক্ষেন কণরণয়োঃ শক্ষ্যাত্মাঃ ভালী দৃ বিদারণে ক্র্যাদিঃ। এমাং রূপাণি আদিশক্ষেন কণরণয়োঃ শক্ষ্যাত্মাঃ ভালি দৃ বিদারণে ক্র্যাদিঃ। এমাং রূপাণি আদিশক্ষেন কণরণয়োঃ শক্ষ্যাত্মাঃ ত্যাভ্যাদের্যাঃ কাণয়তি বাণয়তি বহু যাচন ইত্যস্ত তনাদিকস্ত বণশণসম্ভক্ত্যাদিও ক্রিক্রদিকজীনাং স্থমি রুতে দক্ষধাতোশ্যানেকবর্ণ-ব্যবধানে বৃদ্ধেরভাবায় হ্রমার্থঃ পঠিঃ। ক্রিস্ত ণমির্ণোণৌ দীর্ঘ ইতি বিক্রেন দীর্ঘার্থঃ।

- (১৪)। স্মৃ চিম্ভারামিতায়ং ধাতুরাধ্যানে ঘটাদির্ভবতি। স্পক্ত ধাতো-নিন্দিতস্বরণার্থবাৎ যদা উপদর্গদম্মেনার্থান্তরে কৃত্তিন্তদা ন ঘটাদিম্মিতার্থঃ স্মরণবিশেষ ইত্যেক ইতি স্মরণক্ত বিশেষ উৎক্রপাসরণমিতার্থঃ।
- (১৫)। পূর্ব্বোক্ত প্রকারেণার্থবিশেষ ইত্যর্থঃ নধাতুর্নয়েহর্থে ঘটাদি-র্ববভি। নরম্বতীতি নৃ নয়ে জ্যোদিঃ অন্তর্জ নামমতি অজৈবামং ধাতুর্জ্বাদী পঠ্যত ইত্যক্তে।

১৬। শ্রা শ্রৈ পাকে। শ্রুপয়ন্তি।

১৭। জ্ঞা মারণতোষণাবলোকনের । জ্ঞপয়তি।

১৮। জ্ঞানে বা।

জ্ঞাপয়তি জ্ঞাপয়তি বিজ্ঞাপয়তি।

১৯। চল কম্পানে।

চলয়তি শাখাম্। অন্যত্ৰ চালয়তি সূত্ৰং স্বাৰ্থং বা।

(১৬)। প্রা পাকে ইতাদাদিঃ স্ত্রৈ পাকে ভ্রাদিঃ এতৌ পাকে ঘটাদী ভবতঃ। প্রপয়তীতি এচোংশিতীত্যাবে ক্ততে পৌ পুঞাদত্যাদেরিতি পুঙ্

অন্তত্ত প্রাপন্নতি ঘর্মঃ যেনয়তীভীর্থঃ।

(১৭)। জ্ঞা অববোধনে ক্র্যাদিঃ স মারণাদিম্বর্থেষু ঘটাদির্ভবতি। অব-লোকনং চক্ষুংসাধনং জ্ঞানম্। চান্দ্রাস্ত্রবলোকনস্থ:নে তেজনমিতি পঠন্তি। প্রজ্ঞাসম্ভি শুস্তং তীক্ষং করোতীত্যর্থঃ।

(১৮)। অপ্রাপ্তে বিভাবেয় দ এব ধাতৃত্তানেহর্ষে ঘটাদিবা ভবতি।
কথং জ্ঞপ্তিশক্ষা বুদ্ধিবাচী। উচ্যতে প্রয়োজকার্যাভাবাৎ অন্তেহপি
ক্রিং কচিদিতি বচনাৎ চুরাদিত্বাৎ স্বার্থিকোহত্ত পিঙ্ করণীয়: জ্ঞাপয়
ক্রিং বিজ্ঞাপয়তি স্বামিনমিতি প্রয়োগ: দর্কদমত এব। য়াঘঢ়ৢঙ্হাশপাং
ক্রীক্সামান ইতাত্র সত্রে জ্ঞীক্স্যমানো জ্ঞপয়তৃমিষ্যমাণো বোধয়তৃমভিপ্রেতমিতি জয়াদিত্য:। নিশামনশক্ষেন জ্ঞাপনমূচ্যতে ইতি জিনেক্রোহপি মতাস্বরমাহ। অতোহয়মাচার্য্যো জ্ঞানে বেতি লক্ষণং প্রণীতবান্। ছর্মীতপাণিনিমতানাং কুচোদ্যনিরাকরণায় প্রমাণভূতেহপ্যাচার্য্যলক্ষণে কাপি কাপি
প্রমাণাস্তরোপস্থানেশংস্বাকমনর্থক এব।

(১৯)। চলধাতৃ: কম্পনেহর্ষে ঘটাদির্ভবতি। মন্ত্রপি চল কম্পন ইতি ভ্রাদিগণে পঠিত্ত্রথাপ্যুর্গোপাদানাদর্থান্তরেহপ্যক্ত বৃদ্ধি: কম্পনং দেশা-স্তরাপ্রাপ্তা ভকতি। চালগতি ক্রম্ উদ্ভাবনমত্রার্থ: চালগতি স্বার্থং দেশা-স্তরপ্রাপ্রধার্থঃ। । ২০। ছদ বল প্রাণনয়োঃ।

ছদয়তি। অহাত ছাদয়তি গৃহম্।

২১। লড় জিহ্বামন্থনে।

লড়য়তি জিহবাম্। অন্তত্ত্ত লাড়য়তি বালকং মাতৃ।।

२२। मनौ इर्षद्राभनद्राः।

মদয়তি। অশুত্র মাদয়তি প্রমাদয়তি।

২৩। জনী জুষ ক্লস্থ রন্জশ্চ। জনয়তি জরয়তি কসয়তি রজয়তি মুগান।

২৪। চুরাদী চপপ্রাণনার্থবলো চ। চপয়তি বলয়তি।

- (২১)। লড় বিলাসে ভাুদিঃ স জিহ্নামন্তনেহর্থে ঘটাদির্ভবতি। মন্তনমিতস্ততঃ ক্ষেপণম্। লাড়য়তীতি ডো গ্রেগা বেতি লঙ্গে ক্তে লালয়তীতি চ। ইচ্ছানুবর্তনমত্রার্থঃ।
- (২২)। মদী হর্ষে দিবাদিঃ স হর্ষে গ্লেপনে চ মটাদির্ভবতি। শে বিজ্ঞ ইত্যক্ষাৎ ওনট্। গ্লেপনং দৈঞ্জম্। অগুত্র মাদয়তি বিকলনং করোজার্ক তার্থঃ। প্রান্ত অমবহিত্তং করোজীত্যর্থঃ। প্রান্ত উদন্তবন্ধকরণং মদর্শি হৃত্যিগ ইত্যস্থানিরাদার্থম্।
- (২০)। জনী প্রাহ্রভাবে জ্য ঝ্য বয়োহানৌ কয় ক্রণদীপ্যোরিতি দিবাদয়ঃ রন্জ রাগে ইতি ভাদিদিবাদিশ্চ এতে ঘটাদয়ো ভবস্তি। জ্যঃ বকারঃ জ্ণাদেরাঙিতি বিশেষণার্থঃ। ুরঞ্জাতীতি মুগক্ষীড়ায়াং রন্জোরজ্বেভি রজাদেশঃ। জুনাতে জারস্তি অনুম্।
- (২৪)। চপ কন্ধনে বল প্রাণনে এতৌ চুরাদী ঘটাদী ভবত:। কন্ধনং দন্ত: শাঠ্যঞ্চ চুরাদী ইতি বিশেষণং চপ সাম্বনে বল বল্ল সংবরণ ইতি ভৌবাদ্রিক্য়োর্নিরাসার্থং প্রাণনার্থ ইত্যর্থবিদেষত্ত প্রশ্চুরাদাবের

⁽২০)। ছদ অপবারণ ইতি চুরাগ্মন্তর্গণে বুজানে পঠ্যতে স বলে প্রাণনে চ ঘটাদির্ভবতি। বলং শক্তিঃ প্রাণনং জীবনম্ অপবারণে তু ছাদয়তি।

ই৫। অসার্থণো কন্যমচনবর্জন্মসন্তঃ।
গময়তি ভ্রময়তি ক্রময়তি। পুত্রঞাপুত্রবৎ কচিদিতি গান্তে
গমকঃ। সংক্রাময়তি কিভ্রাময়ত্যেতদতীব বিশ্বমিতি কেচিৎ।
কন্যমচনাস্ত্র। কাময়তি আময়তি চাময়তি। স্বার্থণো তু।
শমু শাময়তি শুমু শ্রাময়তি। ক্রম্বাকারবহুপাদানাদিহ ন শ্রাহ্

२७। भगू कां भरिन।

শময়তি রোগং মিশময়তি বচঃ। আঁশ্রেছপি ধাতবঃ কচিদিতি বল ভৃতাবিত্যস্থ নিরাসার্থঃ। যে তু চুরাদৌ বল ভৃতাবিতি ন পঠন্তি তেষামর্থকখনমাত্রম্।

(২৫)। অস্বার্থে বিহিতে দৌ পরে ক্যামচ্মান্ বর্জয়িছা অমস্তো
ধাতৃর্ঘটাদির্জবিত। গময়তীত্যাদি গমু স্থপু গতৌ অমু চলেন ক্রম্ম
পাদবিক্ষেপে এয়ু ভাদিরু প্রয়োজকে ণিঙ্গমক ইত্যত্র ণিঙস্তাং পকে
পিঙ্লোপে চ ক্রতে প্রর্কো চ ক্রতায়াং কথং হ্রমঃ ণিঙো ল্প্রছেনাভাবাং অত আহ ল্প্রঞাল্প্রবং কচিদিতি বৃদ্ধিরেব ন প্রাপ্নোতীত্যভিপ্রায়ঃ। সংক্রাময়তীত্যাদি বহুলকচনাদিতি তন্মতং ঘণস্তায়ায়ো ণিঙীত্যেত্র
সিদ্ধাতি আচমকমেত্যাদিনা কথাদিয়াং। চক্রস্ত সংক্রামস্তং করোতীতি
ক্রিজায়ায়ো ণিঙাশু সিদ্ধিমেছং। কাময়তীতি ক্রু কাস্তো বক্রাচতুর্ব পিবেতি
ক্রিকিণিঙোহভাবপক্ষে প্রয়োজকে ণিঙ্ আময়তি চাময়তীতি ভৌবাদিকয়োত্রথৈব ণিঙ্ স্বার্থনো ছিত্যাদি শম লক্ষ্ আলোচনে ক্রমু বিতর্কে
চুরাদিয়াং স্বার্শিকাহত্র ণিঙ্। নম্মু মক্ত ইত্যেবং লক্ষণং কিমিতি ন ক্রতং
মতে আই হস্মাকারবদিত্যাদি হস্মাকারযুক্তস্ত মকারস্তোপাদানাদত্র ন ভবতীতি। হ্রম্ব ইতি বিশেষণং মন্দ্রিয়াং স্ব্ধপ্রতীত্যর্থম্। ভায়য়তীত্যাদি
ভাম জ্যোধং ভাদিঃ।

(২৬)। ভাষার্থনী স্বার্থনী চ বিধানং শমু উপশম ইত্যরং ধাতৃ-বদর্শনেহর্থে ঘটাদির্ভবতি। শময়তি রোগমিতি উপশমনার্থোহয়মকর্মকঃ প্রয়োজকণিঙাভ সকর্মকত্বং নিশময়তি বচ ইত্যক্র শূণোতীত্যর্থঃ। শমেঃ কবং তর্হি প্রয়োজকার্যভাবাৎ নিঙ্গিবাদিদ্যাক্ষাক্ত স্বার্থিকো নিঙ্ ন সার্প্রণিভা শৃণোভীত্যর্থঃ। দর্শনে তু। নিশাময়তি রূপং পশ্য-তীত্যর্থঃ।

२१। यमू शतिदवस्ता।

যময়তি বিপ্রান্। অন্যত্র যাময়তি আয়াময়তি সংয়াময়তি নিয়া-ময়তি। সংয়ময়তি নিয়ময়তীতি তুনামণিঙা।

२৮। यगू अभितित्वधरण है टिउटिक ।

২৯। ন পর্য্যপাভ্যাং স্থাদঃ।

পরিস্থাদয়তি অপস্থাদয়তি ৷

সম্ভবতি। ত্মত আহ অন্তেহপীত্যাদি। চুরাদের্ণিঙ্কিতাত্র অন্যেহণি ধাতবং কচিদিতি বক্ষ্যতি তেন গণাস্তরে পঠিতানামপি চুরাদিথাৎ স্বার্থিকো ণিঙ্ অবিক্লম্বঃ। নিশাময়তি রূপমিত্যত্রাপি স্বার্থিক এব ণিঙ্।

- (২৭)। ষমু পরিবেষণে চুরাদিঃ ষমু উপবনে ভাদিরেতোঁ পরিবেষণে
 হপে ঘটাদী ভবতঃ। পরিবেষণমামন্ত্রণমাদ দ আয়াময়তে ইভি পাদিছেনাঙ্
 যমো বুধাদিছাভাবাৎ নিভোহবুধাদেরিত্যায়্রনেপদ্ম। আয়নেপদিপ্রভাদা
 হরণদর্শনেন ভাদিপঠিতভাপি গ্রহণমিতি দৃটীক্বতং যতঃ প্ররোজকনিওস্তাদ রায়্মনেপদ্বিধানমিতি মুখ্যঃ পক্ষঃ চৌরাদিকভা তু গ্রহণং গণকারেশ

 দর্শিত্রমান্তর্ম ধদি পরিবেনণব্যতিরেকে ঘটাদিছং নাস্তি তং কথং সংযময়তি

 নির্ময়তীতি চোভ্যমাহ সংযময়তীত্যাদি নাম উৎপত্নেন নিভেত্যর্থঃ। সংপ্রকাৎ নিপ্রবাচ্চ যমধাতোর্যমোনিসংব্যুপাচ্চেত্রি ভপ্রত্যয়াস্তাৎ নাম ইত্যাদিনা

 শিভ্ অনেকাচামিত্যাদিনা অকারনুক্ নামধাতৃণ্ট বহুলমিতি ক্রথাদিছাৎ
 বৃদ্ধ্যভাবঃ।
- (২৮)। অপরিবেষণেহর্থে ব্যুধাতুর্ঘটাদির্ভব তি ইত্যেকে চক্রায়ৈত্ব তন্মতম্। সংব্যায়তি নিয়ময়তীত্মাহরণমেব তহা।
- (২৯)। স্থদ স্থদন ইতি ঘটাদৌ পঠ্যতে স পরি অপ ইত্যেভাজ্যা-মুক্তরোন ঘটাদির্ভবতি। স্থদনং ক্লেশোংপাদনম্।

- ৩০। ত্বল হবল কাল ণমানুপদর্গে বা।
 ক্বলয়তি কালয়তি হবলয়তি কালয়তি কালয়তি নময়তি
 নাময়তি। উপসর্গে তু। প্রক্রলয়তি প্রহ্বলয়তি প্রক্রলয়তি প্রক্রলয়তি প্রক্রলয়তি।
- ৩১। গ্রাস্থাবন্ধবমশ্চ।

 গ্রপয়তি গ্রাপয়তি স্থপয়তি স্থাপয়তি বনয়তি বনয়তি বনয়তি

 গ্রুময়তি। উপসর্গে তু। প্রগ্রাপয়তি প্রস্থাপয়তি প্রবণয়তি
 প্রবন্য়তি।

৩২। ধ্বন শব্দে। ধ্বনযতি ধ্বানয়তি প্রধ্বনয়তি প্রধ্বানয়তি।

৩০। স্বন অবতং**দুনে।** স্থনযতি স্থানযতি।

⁽৩০)। জল দীপ্তৌ হবল হবল সঞ্চলনে পম প্রহন্তে শব্দে চ ইত্যেকে
ক্ষুপ্রস্থাত ঘটাদযো বা ভবস্তি। জলহ্বলহ্মলানাং ঘটাদিপাঠাৎ প্রেবমন্তব্যেন ঘটাদিত্তে সিদ্ধে বিকল্লার্থং বচনং প্রেণময়তীতি নাদিধাতোরস্তরিচেতি
ক্রিম্। উল্লামিতাধিলমহীধরকন্দরস্তেতি তু উল্লামশকাঃ ঘণস্তাৎ নামক্রিডা।

⁽৩১)। চকারো বেতাশ্ত অমুপদর্গ ইতাশ্ত চামুকর্ষণার্থঃ। গ্নৈ হর্যক্ষয়ে সা শৌচে বন্ধু যাচনে টুবম উদ্দিরণে ইত্যেতে অমুপদর্গে ঘটাদয়ে।
না ভবন্তি। আদি দর্যোরপ্রাপ্তে বনোর্ঘটাদিপাঠাৎ বমোহমন্তবাৎ প্রাপ্তে
বিভাষা।

⁽৩২ ' ষ্টন বণ ধ্বন শব্দে ইত্যয়ং ভাদিধাভূর্যটাদিবা ভবতি। সোপ-সর্বস্তাপ্যদাহরণমত্মপদর্বস্তানমুর্জিত্চনার্থম্। ধ্বন শব্দে ইজি চুরামন্তর্গণঃ কথাদিখ্যে ন গৃহতে।

⁽৩০)। স্বনধাজুরবজংসদেছর্থে ঘটাদিব। ভবতি। অবতংসনং কর্ণ-ভূষণং শিরোভূষণর্ফ।

৩৪। ফণ গতৌ।

ফণয়তি ফাণয়তি।

००। विष्तिर्गारकी नीर्वः।

ঘটং ঘটং ঘাটং ঘাটং অঘটি অঘাটি হিড়ং হিড়ং হীড়ং হীড়ং অহিড়ি অহীড়ি ক্ষপ্তং ক্ষপ্তং ক্ষাপ্তং ক্ষাপ্তং অক্ষপ্তি অক্ষাপ্তি শমং শমং শামং শামং অশমি অশামি। এবং সর্বত্র ঘটাদৌ।

৩৬। বহুলং তদ্ধিতে।

বহুলমিতি গল্পান্তোহধিকারঃ। ইতঃ প্রভৃতি বাহুল্যাৎ

⁽৩৪)। ফণধাত্র্টাদিবা ভবতি। গভাবিতি ধাত্ব্যাত্রস্ক্রনায নত্ব্যাত্রতার অস্তার্থান্তরত্তরমূপলন্তাং। অন্তে ত্বাহুঃ গভাবস্ত্র ফাণরতি অনধ্যনফণানাং ঘটাদিত্বং কেচিন্মস্তত্তে ধ্বেচিন্ন মন্তত্তে টুহু।ভয়মত দর্শনাং স্ত্রকৃষ্বিক্রমাহ।

⁽৩৫)। ণমি ইণি চ পরে ণিঙি সতি ঘটাদের স্বো দীর্ঘো বা ত 1তি।
ঘটং ঘটং ঘটং ঘটমিতি ণিঙি বৃদ্ধো ব্রন্ধার বৃদ্ধে চ কতে ক্ত্রা তস্তাঃ স্থানে ণম্বাভীক্ষ্যে ইতি গম্ পক্ষে দীর্ঘো ণিঙ লুক্ ণমস্তমতিহিতেইপ্যাতীক্ষ্যে ইতি দ্বি
অঘটি অঘাটি ইতি পূর্ব্বিদিণ ণমিণোর্ণাবিতি স্থতে কতেইপি ঘটাদিয়া
বিকল্পেনৈর ঘটং ঘটং ঘাটং ঘাটমিত্যাদি সিদ্ধাত্যেব। কিন্তু হেড় বেষ্টনে
ইত্যামাং পক্ষে হেড়ং হেড়মিত্যানিষ্টক্ষপং স্তাং। দীর্ঘবিধানে সতি এচ ইণ্
ক্রম্বে ইতি একারস্ত চ ক্রম্বে কতে ক্রম্বিধানানস্তরং দীর্ঘে কতে হীড়ং
হীড়মিত্যপি সিদ্ধাতি এতদর্থমেতহলাক্ষতং যত্র ঘটাদৌ ক্রম্বন্থং নাস্তি তত্র
দীর্ঘবিধানং প্রয়োজনমিতি দর্শনিত্বং ক্ষ্ক্রি গতিদানয়োরিত্যন্ত প্রয়োগো
দর্শিতঃ। বিশেষলক্ষণৈরপি ধেষাং ঘটাদিয়েং ত্রাপি দীর্ঘ ইতি লামং লামমিত্যনেন বৃত্তিক্রতা দর্শিত্বম্ অন্ত আহে। এবং সর্ব্যক্তেতিঃ।

⁽৩৬)। বছলমিতি গঙ্গান্তোহেবিকার ইতি ইহ গঙ্গান্তোহেধি-কারন্ ববরবে, হটীতাত্র মণ্ড্কপ্ল তাধিকারম্ সাহস্থারা নোহপ্রশান ইত্যত্র

সূত্রানুক্তঞ্চ সূত্রবং। প্রবৃত্তিশ্চ নিবৃত্তিশ্চ বিভাষোক্তবিধেঃ কচিৎ।
অপূর্ববস্থ বিধানঞ্চ বহুলং স্থাচ্চতুর্বিধম্। তদ্ধিতে ণিতি প্রত্যয়ে
পরে বহুলমাদো রৃদ্ধির্ভবতি। দাক্ষিঃ দৈবকী দৈগুণ্যম্ অভিশয়ে
ভবমাতিশয়িকম্। তথাচ;—"দত্তমান্তবদনং দয়িতেন ব্যাপ্তমাতিশয়িকেন রসেন" ইতি মাঘঃ। বহুলগ্রহণাদিহ ন স্থাং। জ্যোতিরিধিকত্য কৃতং শাস্ত্রং জ্যোতিষম্ অহিতুণ্ডেন ব্যবহরতি অহিতুণ্ডিক
ইত্যাদি।

সিংহাব লাকিতাধিকারং দর্শয়তা ত্রিবিধ এবাধিকারো ভবতীতি বাব-স্থিত্য। তথাহি কোহপি গঙ্গাসোতোবদভিব্যাপ্য প্রতিলক্ষণমুপতিষ্ঠতে। কোহপি মণ্ড্রুকপ্রতবৎ এক্স্নাদিলক্ষণমতিক্রমা লক্ষণাস্তরমুপতিষ্ঠতে। কোহপি সিংহাবলোকিতবৎ বহুনি লক্ষণানি অতিক্রমা লক্ষণান্তরমূপ-তিষ্ঠতে। অয়মর্থ: শব্দার্থামুসারেণের স্পন্তঃ প্রতিলক্ষণোপস্থানাৎ কিং সর্বামের প্রভাগ ভবতু কো বিরোধঃ প্রবৃত্তিমান্ত্রেণর বহুলবিধেঃ কুতার্যত্বাৎ এতেন বক্ষ্যমাণানি সর্কাণ্যেব লক্ষণানি বহুলবিধেঃ প্রপঞ্চ ইতি স্থচিত্ম। ইতঃ প্রভূতীতি প্রভূতিশৃদ আদার্যঃ অস্তাবধেরস্পন্যাসাং শাস্ত্রসমাধিং ুযাবদিতি শেষঃ। স্ত্ৰবদিতি বদাদিস্তদিবাদাবিতিবৎ স্কুত্ৰাম্বক্তমপি কাৰ্য্যং হব্রপ্তেব ভবতীতার্থ:। বহুন্ অর্থান্ লাতি দদাতীতি বছলং তদ্দর্গরিত প্রবৃত্তিশ্চেত্যাদি উক্তবিধেঃ কচিদিতি চতুর্বেব সমধ্যতে উক্তবিধানগু কচিৎ প্রবৃত্তিঃ ক্টিরিবৃত্তিঃ ক্টিরিভাষা ক্টিদপূর্বস্ত বিধানং চতুর্বিধং আছছল-মিতার্থ: বছদমিতি বৃদ্ধির্ভবনক্রিয়ায়া বিশেষণম্ অপৃথগ্রপক্রিয়ায়া বিশে-यन्य कर्षवः क्रीवचस्कि कर्षवः क्रीवचकः । माक्तिविधि नक्त्याभुखामेखार्थ অদস্তাচ্চেতি ইণ্ অদিল্ল, কিতি অকারলুক্ এবং দৈবকিশদাৎ স্তিরামিদস্তা-ন্মত্ববাজাতেরিতি সৈ দৈবকী। । বৈগুণামিতি দিগুণশু ভাব ইত্যর্থে ব্রান্ম-ণাদি গুণবচনান্ত দ্বাবক্রিয়ারিতি টাণ্। অভিশয়ে ভবমাতিশয়িকমিতি অধ্যাত্মাদেষ্টিক্শ্ ইতি টিকণ্ 🔒 জোতিষ্মিতি তদধিকৃতা কৃতে গ্ৰন্থে ইতি টণ্ অহিতৃতিক ইতি তেন জয়ত্যালাবিতি টিকণ্ আদিপদেন তীর্থিকাদয়ঃ ভীর্থং দেবামস্ভ্যেতি অদেশকালাদচেতনাদিতি টিকণ্।

ু ৩৭। গুরুলঘাদের ভরপদস্য। । গুরুলাঘৰং সংহতপারার্থাং পিতৃপৈতামহং বাতপিক্তস্ত সংযোগো। নিমিন্তং বাতপৈত্তিকং বাতলৈখিকম্ একপোরুষ্যমিত্যাদি।

७४।' अत्रीपृट्ठाः।'

পূর্ববিশ্বিন্ বর্ষাণাং ভবং পূর্ববার্ষিকং পূর্ববিষ্ঠিমনং অপরহৈমনম্ ।। অনকাত্ত্ব । পূর্ববাস্থ বর্ষাস্থ ভবং পৌর্ববর্ষিকম্।

(৩৭')। তদ্ধিতে ণিতি পরে গুরুলঘাদের তরপদক্তানী বৃদ্ধির্ভবতি। উত্তরস্ত্রে উভয়েরিতি পদোপাদানাৎ পূর্বপদক্তানো প্রাপ্তা বৃদ্ধিরপোতেঃ স্থানির্বাধ্যতে। গুরুলাঘর্বমিতি দলাং স্থিয়ামিতি পকং বাধিত্বা লঘুপান্ত - দিগন্তাট্রণিতি টণ্ সংহতপারার্থামিতি পরস্থার্থঃ পরার্থঃ সংহতপ্ত পরার্থঃ সংহতপরার্থস্ত ভাব ইত্যমির্ধে ব্রাহ্মণাদি গুণবচনাদিত্যাদিনা ট্যণ্। পিতৃ-শৈতামহ্মিতি তদ্যোদমিতি টণ্ বাতপৈত্তিক্মিতি বাতলৈপ্রক্মিতি চত্তিদ্ধের সংযোগোৎপাত্রোরিতি টিকণ্। বাতাদেন্তচ্ছমনকোপনয়েরি-তানেন তুটিকণ্ যতঃ কেবলেত্য এক বাতাদিশদ্বভোগ বিধীয়তে এক-শৌক্ষামিতি পূর্ম্বৎ ট্যণ্।

(৩৮)। তদ্ধিতে ণিতি পরে অপবাচিনঃ পূর্ব্রপদাৎ পরছ্ঠ ঋতৃবাচিনঃ শব্দুই উত্তরপদ্যাদৌ বৃদ্ধিত্বতি। ঋতোরিতি নেদং স্বরূপ্
গ্রহণং ন হি স্বরূপেহঙ্গং সম্ভাতি ফচাঙ্গং বর্ণাত্মকং ন তদ্বাভিচারি
উভরবৈধনাপানিতি পদোপাদানমনর্থকং স্তাৎ উভরবৈত্যব স্বরূপগ্রহণে তৃ
লক্ষণকরণমনর্থকং স্তাৎ পূর্ব্বস্ত্রগণপাঠাদেবা ক্বতার্থনাং। পূর্ব্বস্থিন
বর্ষাণাং ভবমিতি সমাসার্থং তদ্ধিতার্থক বাক্ষাং তন্ত্রেণ স্চিতং বর্ষাণাং
পূর্ব্বমিতি অংশিষ্ঠা। পূর্ব্বাদেরিত্যাদিনা তৎপূরুষং কথা তত্র ভব
ইত্যর্থে বর্ষাক্ষাভাগং টিকণিতি টকণ্। পূর্বহেমনমিতি হেমস্তাত্রদোপশ্চ
বৈতি টণ্ তলোপশ্চ বর্ষাশন্দে হেমস্তর্শকে চ বিহিত্তক্ত্বিতন্তদন্তহণি
ভবতি। উত্তরপদে বৃদ্ধিবিষয় এব ন স্তাং। নমু তন্তেদমিতি সামান্তবিহিত্তনৈব ভবিষ্যতি এবক্ষেত্রদা বর্ষস্তাভবিষ্যতীতি ভবিষ্যতিনিধে-

- ৩৯। স্থার্মবাদ্ধাজ্জনপদস্ত। স্থাঞ্চালকঃ সর্বাঞ্চালকঃ ।
- 80। দিশো মদ্রবর্জ্জম্। পূর্ববপাঞ্চালকঃ। মদ্রাণান্ত পূর্ববপাঞ্চালকঃ দক্ষিণপাঞ্চালকঃ উত্তরপাঞ্চালকঃ। মদ্রাণান্ত পোর্ববমদ্রঃ।

- (৩৯)। স্থ সর্ব্ধ অর্দ্ধ ইত্যেতেন্তা উত্তরস্য জনপদবাচিনঃ শক্ষস্য তদ্ধিতে ণিতি প্রত্যারে পরে উত্তরপদস্যাদৌ রৃদ্ধির্ভবিতি। অত্রাপি জনপদস্যাতি ন স্বরূপগ্রহণম্ উত্তরস্ত্রে মদ্রবর্জমিতি বচনাৎ তত্র এতদেব জনপদগ্রহণমন্থবর্ত্তে বত্যেত্বং স্বরূপমেব গৃহতে তদা মদ্রবর্জমিতানর্থকং স্যাৎ প্রাপ্তান্তাব। স্থপাঞ্চালক ইতি পঞ্চালাঃ ক্ষান্তিয়াং নিবাসো জনপদঃ ত্রিবাসে দেশনায়ীতি টুণ্ অবিনিশাদেন্তার্রবাসাদির দেশ ইতি টণ্ লুক্ প্রেরুতিবন্নিঙ্গবচনে চ। শোভনাঃ পঞ্চালা ইতি নিতাং ক্র্পান্টারিত সমাসঃ সর্ব্বপাঞ্চালক ইতি একাদীনাঞ্চেতি কর্ম্মধারয়ঃ মৃদ্ধপাঞ্চালক ইতি নপৃংসকার্দ্ধেত্যাদিনা তৎপুঞ্বঃ। আতিদেশিক্ষত্রে বহুষমাশ্রস্তেক্ত্রমিতি তেন নাংশিনোহনেকত্বে ইতি ন সমাসানিষেধঃ। জনপনাচ্চেত্যালুর্ক্তো জনাদিইয়্রোভন্ট নিত্যবহুবচনাদিতি অকণ্। পুর্বস্থান্তেন্ট্রিব হেতুনাত্রাপি তদ্প্তে তদ্ধিতঃ।
 - (৪০)। জনাদয়েত্যমুবর্কতে দিখাচিনং পরম্য জনপদবাচকস্য মদ্র-বর্জিতস্য তদ্ধিতে ণিজি পরে উত্তরপদস্য আদৌ রদ্ধির্ভবতি। পূর্ক-শাঞ্চালক ইতি পূর্বেষ্ পঞ্চালীের ভব ইতি দিশ উত্তরপদে তদ্ধিতার্থে চেতি বক্তব্যমিতি কর্ম্মধারয়ং। অক্র পূর্বাদিশকা অনংশবৃত্তয়ো দিশি রচাঃ পূর্ববদকণ পৌর্বমদ্র ইতি মাদ্রাগ্রড়িতি গট্। দিশ ইতি কিষ্? পূর্ববিদকণ পৌর্বমদ্র ইতি মাদ্রাগ্রড়িতি গট্। দিশ ইতি কিষ্? পূর্বিং পঞ্চালানাং পূর্বপঞ্চালঃ জঃশিব্দ্বোত্যাদিনা তৎপুরুষঃ তক্ত ভবঃ

[্]ৰীংনৰ্থকঃ স্থাৎ ন হি ভবিষাতি সামান্তবিহিতন্তদ্ধিতোহন্তি!
পৌৰ্ববৰ্ষিকমিতি একানীনাঞ্চেতি কৰ্ম্মধারয়ঃ। পূৰ্ব্বশন্ধোহত্ৰ প্ৰমন্তবব্যবহিতং বৰ্ষাকালমাহ অনিকশন্ধ্বাদ্দিশ উত্তৱপদে ভদ্ধিতাৰ্থে চেতি
বক্তবামিতি ন সমাসঃ।

৪১। প্রাচ্যপ্রামনগরয়োঃ।

পূর্ববস্থামিবুকামশর্মাং ভবং পূর্ববিষুকামশর্মা। অপরেষুকামশর্মা। পূর্ববিষ্ঠার প্রতিকম্। পূর্ববিশ্বন্ধ্য পাটলিপুত্তে ভবং পূর্ববিপাটলি-পুত্রকম্। পূর্ববিশাস্তকুজ্বম্।

পৌর্ব্ধপঞ্চালঃ অত্র হি কালে বর্ত্তিত্বা পূর্ব্বাদয়ং শব্দা অংশবিশেষে বর্ত্ততে , দিখাচিপুর্ব্বপদাদেব জনপদাদকণ্ ইয়তে তেন অকণপ্যত্র ন ভবতি।

(৪১)। প্রান্দেশীয়: প্রাচ্যঃ দিখাচকাৎ পরয়ো: প্রাচ্যগ্রামনগবরে: ক্তরপদয়োস্তদ্ধিতে ণিতি পরে আদৌ বৃদ্ধির্ভর্তি। পূর্টর্ক্রযুকামশ্মমিতি পূর্বনা চাসে ইযুকামশমী চেতি দিক্সংখ্যয়োনামীতি কর্মধাবয়ঃ দিক্-পূর্ব্মপদাদনামীতি ণ প্রতায়পরিতাক্তে বিষযে নামি শেষ ইতি টণ্। পূর্মপাটলিপুত্রকমিতি দিশ উত্তরপদে তদ্ধিতার্থে চেতি বক্তন্যমিতি কর্মধারক্ষ। ইদন্তবোপান্তাৎ প্রাচ্যাদিত্যকণ্। পূর্ম্বকান্তকুক্তমতি ত্ত্র ডব ইতি টণ্ রোপান্তছাভাবাদকণত্র নাপ্তি পূর্ব্বকান্যকুজনিতি প্রমাদপাঠঃ। পূর্মশক্তাংশবাচিতে তু পৌর্ব্নপাটলিপুত্র ইতি অদিয়াচি-**शृर्त्तिभनोनक्यां न एवछि। यमाभि मश्यात्रयक्रः नवःभवनायातिव** গ্রামনগররোরস্তি ভেদ: তথাপায়মাচার্যমে অক্টোদান্তাত্মনীচ্যগ্রামাধহরচ: আদিব্যৈজাতো বাহীকগ্রামাৎ উশীনরগ্রামান্তেলাদৌ সর্কত্ত গ্রামগ্রহণেন নগরমপ্যাপসংগৃহ্বাতি অস্তি চাজেদব্যবহারো যথা অভক্ষ্যো গ্রাম্যশৃক্ত ইত্যুক্তে নাগুরোহপি ন ভক্ষাতে। গ্রামে নাধ্যেতবাশ্ ইত্যুক্তে নগংহিপী নাধীয়তে শৈলী চাস্য বিদ্যতে যত্র নগরোপাদানং তত্ত্ব গ্রামো ন গৃহতে। তথাহি ভিন্নলিক্ষনদীনগরদেশা ইত্যত্র গ্রামস্য না গ্রহণম্ ইহ ভূ উভয়ো-क्र शामानः मधक एक एक जिल्ला क्रिक्न क् কামশ্য্যাদি গ্রাম্মাহ পাটলিপুত্রাদিঃ পুনকত্তরপদ্মেব নগর্মাহ তত্ত্র গ্রামবাচকদ্য সমূদায়দা পূর্দ্ধাব্যবাৎ পর্ন্য উত্তরপদন্যাদৌ বৃদ্ধির্ভবতি ইত্যেকং সম্বন্ধ:। পূর্দ্মপদাছত্তরস্য তু নগরবাচকস্য উত্তরপদস্যাদৌ বৃদ্ধিভবতীতি দিভায়: সম্বন্ধঃ। অরং চ পদন্বযোপাদানসাম্ব্যাদেব পবং বাকাার্থভেদো লক্ষাতে নহযমর্থ: শাক: যতুক্তং মহতা স্ক্রপ্রবন্ধেনাচার্যা-শামভিপ্রায়ো লক্ষ্যত ইতি।

- ৪২। সংখ্যায়াঃ সংবৎসরসংখ্যয়োঃ। বিসাংবৎসরিকং ত্রিসাপ্ততিকম্। অসংবৎসরসংখ্যয়োস্ত বৈমা-সিকং ত্রৈমাসিকম্।
- ৪৩। বর্ষস্থাভবিষ্যতি। বে বর্ষেহধীতো গ্রস্থঃ দিরার্ষিকঃ। ভবিষ্যতি তুবে রর্ষে ভাবি দৈবর্ষিকম্।
- ় ৪৪। পরিমাণস্থাশাণস্থাসংজ্ঞায়াম্। বে কুড়বে পরিমাণে প্রয়োজনসস্থ দিকোড়বিকং দ্বাভ্যাং নিন্ধাভ্যাং ক্রীতং দিনৈন্ধিকং দিসৌর্বর্ণিকম্।
- (৪২)। সংখ্যবিচ্ছাছন্তর্বস্য সংরৎসরশক্ষ্য সংখ্যাবাচক্ষ্য চ তদ্ধিতে ণিতি পরে উত্তরপদস্যাদৌ বৃদ্ধির্ভবতি। দ্বিসাংবৎসরিকমিতি দ্বৌ সংবৎসরাবধীষ্টং ভূতং ভাবি বৈতি তদ্ধিতার্থে দ্বিশুঃ রাত্র্যহংসংবৎ-সরবর্ষাচ্চেতি টিকণ্। ত্রিসাপ্ততিকমিতি তিশ্রঃ সপ্তত্তরঃ পরিমাণমস্য সংখ্যা সংখ্যারাঃ স্ক্রাদারিতি টিকণ্। দ্বৈমাসিকমিতি কালাত্তম-ধীষ্টাদাবিতি টিকণ্।
- (৪৩)। সংখ্যারাচকাৎ শর্ম্য বর্ষশক্ষ্য তদ্ধিতে ণিতি পরে উত্তরপদ্য্যাদৌ বৃদ্ধির্ভবতি অন্তবিষ্যাদর্থে চেত্তদ্ধিতো বিহিতঃ। দ্বিবার্ধিক শৈতি তু পূর্দ্রবং টিকণ্ বর্ষাস্তান্তমধীপ্রাদাবিতি পাক্ষিকো ছত্রালুক্। শ্যা ত্রৈবর্ষিকং ধাখং স সোমং পাতৃমহ্তীতি ভাব্যর্থেহত্র তদ্ধিতঃ। দে বর্ষেহধীপ্রো ভূতো বা কর্ম্ম করিষ্যতি দ্বিবার্ষিকো নরঃ অত্র হিশ্ভবিষ্যত্তা প্রতীয়ত এব ন তু ভবিষ্যদর্থে প্রত্যন্তঃ। অতো নিষেধো ন ভবতি।
- (৪৪)। সংখ্যাবাচকাৎ পরস্থ শাণবর্চ্জিতন্ত পরিমাণবাচকন্ত তদ্ধিতে ণিতি পরেহসংজ্ঞান্নামূত্তরপদ্য্যাদৌ বৃদ্ধির্ভবতি। দিকৌড়বিকমিতি অস্য তৎ প্রেরাজ্ঞনমিতি টিকণু তদর্হত্যাদ্যন্তবাদ পুক্। আরোহ-পরিণাহান্ত্যাং পরিছেদহেতৃত্যাং কুড়বশকঃ পরিমাণবাচী। দিনৈদ্ধিকং দিসৌবর্ণিকমিতি তেন ক্রীতে ম্ল্যাদিতি টিকণ্ দৈত্তিবহুপ্র্বাদিস্ত-নিক্ষান্তাদিতি কার্যাপণসহস্রশতমানস্বর্ণাস্তাদেতি লোপো বিকরঃ। নিক্ষ্বর্ণদক্ষী উন্মানবিশেষবাচকৌ। উন্মানমপ্যত্ত পরিমাণগ্রহণে গৃহতে

শাণস্থ তু ঘাভ্যাং শাণাভ্যাং ক্রীতং দৈশাণম্। সংজ্ঞায়ান্ত পঞ্চ লোহিত্যঃ পরিমাণমস্থ পাঞ্চলোহিতিকম্।

৪৫। কুলিজস্ম বা। দে কুলিজে পরিমাণে প্রয়োজনমস্ম দিকৌলিজিকম্ দৈকু-লিজিকম্।

৪৬। প্রোষ্ঠপদাভদ্রপদয়োর্জাতে। প্রোষ্ঠপদা নাম নক্ষত্রং তদ্যুক্তকালে জাতং প্রোষ্ঠপাদম্। ভর্ক্স শোভনং পদমশু ভদ্রপদঃ তদ্যুক্তকালে জাতং ভদ্রপাদম্।

ইতি শাণপ্রতিষেধেনৈব জ্ঞাপিতং যতঃ শাণশকো মাষচতুইয়বাচী উন্মানবচন এব দৈশাণমিতি দ্বিত্রিবহুপূর্বাট্রণ্চেতি ট্ব্। পাঞ্চলোহিতিফামিতি পঞ্চ লোহিন্যঃ পরিমাণমস্কেতি লোহিতশন্ধাজ্ঞাপ্তশুচ ন ইতি দ্রিয়ামীপ্রভায়ঃ তকারস্য চ নকারঃ তদস্য পরিমাণমিতি টিকণ্ যাজাদিরণের ইতি টিকণ্ স্তরাদিভাত্তপুংস্কান্ত্রীপুংবত্তরাদৌ ইতি পুংবন্তাবাদিকারনকার্য়োনি বৃত্তিঃ।

- (৪৫) সংখ্যাবাচকাৎ পরস্ত কুলিজস্ত তৃদ্ধিতে ণিতি পরে উত্তরপদস্তাদৌ বৃদ্ধির্বা ভবতি। কুলিজশব্দস্য পরিমাণবাচকৃত্বাৎ পূর্বেণ প্রাপ্তে বিভাষা। দিকোলিজিকমিতি অস্য তৎ প্রয়োজন ইতি টিকণ্ দৈকুলিজিকমিতি অনেন ত্যক্তপক্ষে পূর্ব্বপদস্যাদৌ বৃদ্ধির্ভবতি। কুলিজশব্দে কেচিৎ বৃদ্ধির্শি মিচ্ছুন্তি কেচিনেচ্ছন্তি ইতি মতদ্বয়দর্শনাদয়ং বিকল্পঃ।
- (৪৬)। প্রোষ্ঠপদাভদ্রপদয়োজাতেহর্থে বিহিতে ভদ্ধিতে ণিতি পরে উত্তরপদস্যাদৌ বৃদ্ধির্ভবতি। প্রোষ্ঠপদানতি প্রোষ্ঠপদান নক্ষত্রং তৎ-সমীপবর্ত্তী চন্দ্রং সামীপ্যাৎ প্রোষ্ঠপদানকেনাভিধীয়তে তদ্যুক্তকালে বাচ্যে ভাত্তদ্যুক্কাল ইতি টণ্ ভাত্তদ্যুক্কালেহবিশেষ ইতি টণ্ লুক্ প্রোষ্ঠ-পদানক্ষত্রযুক্তকালে জাতমিত্যর্থে ঋতুন ক্রাদিতি টণ্। জাত ইতি কিং প্রোষ্ঠপদান্দ্র ভবঃ প্রোষ্ঠপদা মেম্বঃ প্রোষ্ঠপদানক উত্তিক্তাবয়-বভেদং তারকাবিশেষাণাং সমুদায়মাচষ্টে অতো বহুত্বন্তঃ শ্বভাবাৎ স্ক্রীলিকঃ। ভদ্রপদশক্ষ ভিরোহিতাবয়বভেদং তারকাবিশেষাণাং

প্তশ। অমুহোড়াদেরভয়োঃ।

অপুহোড়েন ভরতি আপুহোঁড়িকম্ অপুসংবৎসরে দীয়তে আপুসাংবৎসরিকং পুকরসদোহপত্যং পৌকরসাদিঃ আস্তরহাতিঃ সোত্রনাড়িঃ উদকশোদ্ধিঃ আগারবৈণবঃ বাধ্যোগঃ কৌরুকাত্যঃ কুরুপঞ্চালয়োর্ভবঃ কৌরুপাঞ্চালঃ ঐহলোকিকঃ পারলোকিকঃ
আধিদৈবিকঃ আধিভোতিকঃ প্রায়োগিকঃ আসহাত্যঃ সর্ববলোকে
বিদিতঃ সার্ববলোকিকঃ সর্ববপুরুষাণামিদং সার্বপোরুষম্ আপুশাতিকং সর্বভূমেনি মিত্রং সংযোগ উৎপাতো বা সার্বভৌমঃ
অভিগমনইতি আভিগামিকঃ চতপ্রো বিদ্যাশ্চাতুর্বৈদ্যম্।

সমুদায়মাচার অত একসর্তিঃ স্বভাবাৎ পুং**লিঙ্গ ইতি** রক্ষিতেন -ব্যাপাতিম্।

চানৌ বৃদ্ধিভবিত। আনুহাড়াদেন্তক্ষিতে নিতি পরে পূর্ব্বপদশ্য উত্তরপদশ্য চানৌ বৃদ্ধিভবিত। আনুহাড়িকমিতি তেন তরতীতি টিকণ্ আনুসাংবৎসরিকমিতি তত্র কার্যাং দীয়তে বেতি ভাবার্থে. প্রত্যর ইতি অকিন্দেশন কালানিতি টিকণ্ পৌকরসাদিরিতি বাহুবাদেশ্চেতি ইণ্ আন্তরহাতিরিতি অন্তরহতোহপতাং বাহ্বাদিখাদিণ্ সৌত্রনাড়িরিতি উদক-শৌদ্ধিরিতি স্থানভ্দ্যাপতাম্ উদকগুদ্ধাপতাম্ অদন্তাচ্ছেতি ইণ্ আগার-বৈণব ইতি অগারবেণারপতাং তদ্যাপতা ইতি টণ্ বাচোক্ষমণ্ডণ ইতি প্রণ: বাধ্যোগ ইতি বধ্যোগদ্যাপতাং বিদাদের্শ ডিতি গট্ কৌককাতা ইতি ক্ষকভ্শকাৎ গর্গাদের্যণ্পৌলাদে ইতি ঘণ্ কৌকপাঞ্চাল ইতি তত্র ভবে ইতি টণ্ ঐহলৌকিকঃ পারলৌকিক ইতি ইহলোকপরলোকশকাভাং তত্র ভবেস্থে লোকান্তাচেতি টিকণ্ আধিলৈবিক আধিভৌতিক ইতি সপ্তমার্থেহবারীভাবঃ। অতোহাধিদের অধিভূত ইত্যেতাভ্যাং অধ্যাত্মান্তিকণিতি ভবার্থে টিকণ্ প্রাম্নোগিক ইতি প্রম্নোগশকাৎ তত্র ভবেহর্থে-হধ্যাত্মান্তেগিণ্ডাৎ টিকণ্ আনিহাতা ইতি হনোন লুক্ চ ক্রিয়ামিতি ক্যপ্রতান্তাগ্রাধ্যেহিনিহ্তাাশৃকভ্রমাৎ তত্র ভবে ইতি টণ্ নার্মনোকিক ইতি

৪৮। রাজপুরুষস্ত ভাবকর্মট্যাণ।

রাজপৌরুষ্যং কেচিদত্রাস্থহত্য অস্তহেতীতি পঠস্তি। অস্তহত্যশব্দোহন্মিন্ অধ্যায়েহস্তি আস্তহাত্যঃ। অস্তহেতিঃ প্রয়োজনমস্ত আস্তহিতিকম্। শতকুম্ভেতি চান্দ্রকালাপাঃ। শতকুম্ভপর্নতে ভবং শাতকোন্তং স্তবর্ণম্। অন্তহাড় অনুসংবৎসর পুক্ষরসদ্ অন্তরহৎ সূত্রনড় উদকশুদ্ধ অগারবেণু বধ্যোগ কুরুকত কুরু-পঞ্চাল ইহলোক পরলোক অধিদেব অধিভূত প্রয়োগ অসিহত্যুদ্ধি শতকুম্ভ সর্ববলোক সর্ববপুরুষ অনুশতিক সর্বভূমি অভিগম চতুর্বিদ্যা রাজপুরুষ অস্তহত্য অস্তহেতীত্যাদি।

তত্র প্রসিদ্ধে লোকসর্বলোকাদিতি টিকুণ্। সার্বপৌরুষমিতি তস্যেদমিতি টণ্ আনুশাতিকমিতি শতেন ক্রীত ইত্যর্থে শতাগুদিকৌ তদর্হত্যাদৌ
ইতি ইকঃ শতিকঃ অনুগতঃ শতিকো যেন সোহমূশতিকঃ অনুশতিকস্যোদমিতি তস্যাদমিতি টণ্ সার্কভৌম ইতি তদ্ধেষাঃ সংযোগোৎপাতয়োরিতানুর্ত্ত্রৌ পৃথিবীসর্বভূমিভ্যাং ণটণৌ তদীশ্বর তত্র বিদিতয়োশ্চেতি টণ্
আতিগামিক ইতি তদর্হত্যাদৌ টিকণিতি টিকণ্ চাতুর্বৈদ্যমিতি চতপ্রো
বিদ্যাণ্চতুর্বিদ্যাঃ দিক্সংখ্যায়োন্মীতি কর্ম্মধারয়ঃ চতুর্বেণিদিভাণ্চতি স্বার্থে
য়ণ্।

(৪৮)। রাজপুরুষশক্ষম ভাবে কর্ম্মণি চ বিহিতে টাণি পরে পূর্ক্রপদস্য উত্তরপদস্য চাদৌ বৃদ্ধির্ভবতি। রাজপৌরুষামিতি ব্রাহ্মণাদিগুণবচনাৎ তদ্ভাবক্রিয়য়োরিতি টাণ্। টাণীতি কিম্ ? রাজপুরুষম্যাপত্যাং
রাজপুরুষায়ণিঃ আদিহৈজাতোহনপত্যার্থাদ্বেতি গায়নিঃ ভাবকর্মণোরেব
রাজপুরুষশকাট্যণো বিধানে ভাবকর্মেতি বিশেষণং স্পান্ধার্থম্। কেচিদিত্যাদি। অস্যহত্য অস্যহেতীতি ভ অমুহোড়াদে কেচিৎ পঠারি
অস্যহতাশকোহম্মিয়ধ্যায়েহত্তি ইত্যর্থোপদর্শনম্যু। আস্যহাত্য ইত্তি
বিম্কাদেষ্টণিতি টণ্ আস্যহৈতিক্মিতি অস্যহেতিশকাৎ অস্য তৎ
প্রশোজন ইতি নিকণ্ অসাহত্য অস্তর্হীতি প্রাঠাৎ ষষ্ঠ্যা অনুক্।

৪৯। কংসিকুভগান্তস্য।

ইক্ষ ইদং সোহার্দ্ধং সোহার্দ্ধং। মিত্রবাচিত্রকচ্ছবত সোহাদং
সোহদামিত্যেকে। শক্তুসিকুর্ ভবং শাক্তুসৈকবং সোভাগ্যং
দোর্ভাগ্যম্।

৫০। প্রাচ্যে নগরান্তদ্য।

স্থ্যানগরে ভবং সোন্ধানাগরম্ পৌগুনাগরম্। উদীচ্যে তু মহগোরে ভবং মাহমগরম্।

শাতকোশুমিতি তত্র ভবে ইতি টণ্। অমুহোড়চতুর্বিদ্যা অস্তরহৎঘধ্যোগকৃদ্ধক তাহভিগমাঃ। অনুসংবৎসরপৃদ্ধসদস্যহতা প্রয়োগাশ্চ। কুকশঞ্চালারণ তিকস্তরনড়াঃ সর্কলোকপরলোকৌ। ইহলোকসর্বপৃদ্ধাধিভূতশতকুন্তরাজপুক্ষাশ্চ। অশ্বিহত্যোদকগুদ্ধাগারবেণবস্তথা স্যহেতিশ্চ।
অধিদেবসর্বভূমীতান্মহোড়াদয়োহপরেহপি জ্ঞেয়াঃ।

- (৪৯)। অন্তশক্ষ প্রত্যেকমভিদম্বয়্যতে ক্ষমন্ত্রসা দিক্কন্ত্রসা ভগান্তরসা চ তিনিতে ণিতি পরে উভয়ো: পদ্যোরাদে বুর্নিভবিত। স্কর্ন ইদং সৌহার্ন্নমিতি শোভনং ক্ষম্যমস্য ইতি বহুত্রীহৌ স্ক্রন্মিত্র ইতি নিপাতন দিন্ধাৎ স্কর্জকাৎ তদ্যোদমিতি টণ্ স্ক্র্ন্মশালাপি স্ক্রন্মস্য ভাব ইতার্থে যুবাদিহায়নান্তাজেতি টণি ক্লতে ক্ষম্যা ক্র্নাসাদাপিতি ক্ষাদেশে ক্রিতে সৌহার্দ্দমিতি। সৌহার্দ্দমিতি তু স্কর্জকাৎ ব্রাহ্মণানিগুলবাদিত্যা-দিনা টাণ্ প্রত্যরেন। মিত্রবাচীত্যাদি ক্রেষামিদং মতং মিত্রাভিধারি-স্ক্রন্দিতি পকং নিপাতাতে নাত্র পূর্ব্বোত্তরপদবিভাগোহত এব উত্তরপদর্কের্ত্রাভাবং সৌক্রন্থাক্র্রাজাক্রশালি ক্রিতাদিপ্রয়োগোহপাত এব কারণাৎ দৃষ্ঠতে। যৌরাদিং মতং তৈঃ স্ক্রন্থাক্রাম্বাদেব সৌহার্দ্দমিতি সাধনীয়ং ক্ষম্বসমানার্থ-ক্রন্থারা শাক্ত ক্রের্মিতি শক্ত প্রধানাঃ দিন্ধব ইতি শাক্পার্থিবাদিত্বাৎ কর্ম্মারয়ং তত্র ভবেহর্থে কচ্ছাদেশ্য দেশাদিতি টণ্ তদন্তাদপি তন্ধিতা ভবতীতি তবৈর ব্যাথ্যার্ম্যামঃ। সৌভাগ্যমিতি স্বভগন্য ভার ইত্যর্থে ব্রাহ্মণাদিত্বাৎ ট্যণ্।
 - (e•)। প্রাচ্যে দেশে বাচো নগরাস্তদা পদসা ভর্দ্বিতে ণিতি পরে

ে ৫১। দেবতাদ্বন্দে সূক্তহবিষোঃ।

আগ্নিমারুতীমনড্বাহীমালভেত আগ্নিমারুতং কর্ম্ম। অসূক্তহ্বিং যোস্ত স্বন্দবিশাখরোরিদং স্বান্দবিশাখং ব্রাক্ষপ্রভাপত্যম্।

৫২। নেক্রস্য পরত্ত্বে। সোমেক্রশ্চরুঃ আগ্নেক্সঃ।

৫৩। দীর্ঘাদ্ধরুণদ্য। ক্রন্ত্রকণং মৈত্রাবরুণম্।

উভয়ো: পদয়োরাদৌ বৃদ্ধির্ভবতি। মহানগর্মিতি আন্তোদাতাত্দীচ্যগ্রামান ছহরচ ইতি টণ্।

- (৫১)। স্ক্রস্য হবিষশ্চ সম্বন্ধী যো দৈবত'ছন্দ্রনাভ্রো: পদরো-রাদৌ র্ন্ধিভবিতি তদ্ধিতে ণিতি পরে। যং স্ক্রং ভজতে স স্ক্রসম্বন্ধী যবৈ হবিদীয়তে স হবিঃসম্বন্ধী। যো দেবতাদ্বন্ধ: স্ক্রে পঠাতে স স্ক্রসম্বন্ধী। যো দেবতাদ্বন্ধ: স্ক্রে পঠাতে স স্ক্রস্যা তবতি যশ্চ হবিদানে পঠাতে স হবিঃসম্বন্ধী অত এব আগ্রিমাকতীমন ডাহীনালভেত ইতি স্ক্রস্যায়ং দেবতাদ্বন্ধ: মাধ্রিমাকতং কর্মা ইত্যত্রাপ্যভ্যপদন্বন্ধি: তদৈবত ইতি টণ্। স্কন্ধবিশাখরোস্ত দেলোন স্ক্রস্যা নাপি হবিমশ্চ সম্বন্ধীতি ন তবঁত্যভ্যপদব্দ্ধি:। ব্রহ্মপ্রজাপত্যমিতি পত্যন্তাদনম্বত্যাদেরিতি গাঃ । ধর্মদাস্ত্র, স্ক্রে হবিষি চ বাচ্যে ইত্যাহ অগ্রিবারুণং স্ক্রম্বিবি ইত্যুদাজহার।
- (৫২)। পূর্নস্ত্রেণ বিহিতা বৃদ্ধিবিল্রশক্ষা পরত্বে সতি ন ভবতি। সৌমেক্স আথেক্র ইতি তদৈবত ইতি টণ্ আদস্তঃ পূর্কিয়া ইত্যাকারো গুণা। নমু ইক্রশক্ষা ইকারে একারে ক্রতে গুণেম পূর্মপদান্তম্বং গতে বৃদ্ধেঃ স্থানমেব নাস্তি কিং প্রতিমেধেন তদেতক্ত্রাপয়তি প্রথমং সন্ধিকার্যাং ন ভবতি তেন পূর্বেষুকামশম্মিত্য সন্ধিবিধানাৎ প্রাণেব বৃদ্ধিঃ। পরস্ব ইতি কিম্ ? এক্রাথঃ।
- (৫৩)। দীর্ঘান্তরসা বরুণশব্দসা পূর্দলক্ষণপ্রাাপ্তা বৃদ্ধিন ভবতি। উন্দ্রাবরুণমিত্যাদি আদস্তঃ পূর্কস্যোত্যাকারঃ। দীর্ঘাদিতি কিম্ আগ্লিন

৫৪। জঙ্গলধেনুবলজান্তদ্যোত্তরে বা পূর্বে নিত্যম্। কুরুজনল ভবং কোরুজান্সলং কোরুজনলং কাফ থৈনুকং কাফ ধেনুকম্ দৌশ্ধবালজং দৌশ্ধবলজম্।

৫৫। অর্দ্ধাৎ পরিমাণস্থা পূর্বের তু বা।
 অর্দ্ধদ্রোণেন ক্রীতং আর্দ্ধদ্রোণিকম্ অর্দ্ধদ্রোণিকম্।
 ৫৮। নার্দ্ধোত্তরপরিমাণাতঃ।
 অর্দ্ধপ্রস্থিকয়।

বাকণম্ অত্র অগ্নেরীৎ সোমবরুণয়োরিতি প্রাপ্তস্য ঈকারস্য নাদীতৌ রন্ধিমত্যবৈষ্ণবে ইতি প্রতিষেধঃ ▶

(৫৪)। জঙ্গল ধেনু বলজ ইত্যেবমন্তম্য তদ্ধিতে ণিতি পবে উত্তবপদে আদৌ বৃদ্ধির্বা ভবতি। পূর্ব্বপদে আদৌ নিত্যমৃ। উত্তরপদে আদাবিতি অধিকরণে স্থামী এবং পূর্ব্বপদে আদাবিতি চ যথা গ্রামে গৃহে বসতীতি অথবা বিভক্তি বিপরিণামাৎ ষষ্ঠার্থে সপ্তমী উত্তরপদস্যাদৌ বৃদ্ধির্বা ভবতি। পূর্ব্বপদস্যাদৌ নিত্যমৃ। কৌঞজাঙ্গলমিতি তত্র ভব ইতি টণ্ কাম্ণ- বৈত্বক্ষিতি কৃষ্ণধেন্নাং সমূহ ইতি ধেনোরনঞ ইতি টিকণ্ ইস্বস্থ লাস্ভা
শ্ব্রুদিকস্যেত ইতি ইকারলুক্।

(৫৫)। অর্দ্ধান্তরসা পরিমাণবাচকস্য তদ্ধিতে ণিতি পরে আদৌ বৃদ্ধিভবিতি। পূর্দ্ধপদস্যাদৌ বা। আর্দ্ধফৌণিকমিতি নপুংসকার্দ্ধেত্যাদিনা তৎুপুরুষঃ তেন ক্রীতে মৃল্যাদিতি ট্রুক্।

(৫৬)। অর্দ্ধশাহত্তরস্য পরিমাণবাচকস্য অকারস্য স্থানে ন বৃদ্ধিভবতি। পূর্বে তু বা ভবত্যেব। আর্দ্রপৃষ্টিকমিতি পূর্দ্ধবং টিকণ্। অত
ইতি হুখোক্তান দীর্ঘোহপাত্র ন গৃহতৈ তেন অর্দ্ধার্যাং ভবা অর্দ্ধধাবীত্যত্র
পূর্দিস্তত্ত্বেণ উত্তরপদে বৃদ্ধিভবত্যের। এবক সতি অর্দ্ধধারী ভার্যা অস্যোতি
আর্দ্ধারীভার্য্যঃ ইত্যত্র রুদ্ধার্থতদ্বিতাস্তোহরপ্রনিকারয়ারিত্যনেন পূংবদ্ধাবনিবেধা ভবতি। বৃদ্ধিনিমিত্তবাং ভদ্ধিতস্য অনেন তু যহাত্তরপদে বৃদ্ধিনিবেধা স্থাং তদা পূর্দ্ধপদস্য : বৃদ্ধিনিষেধপক্ষে অবৃদ্ধার্থতদ্বিতাস্তবাৎ
পূর্বস্থাবাং স্যাং । ধ্রা বৈয়াকর্ণভার্য্য ইত্যত্র

৫৭। প্রবাহণত্য এয়ণি। প্রবাহণত্যাপত্যং প্রবাহণেয়ঃ প্রাবাহণেয়ঃ।

৫৮। প্রবাহণেয়স্থ চ। প্রবাহণেয়িঃ প্রাবাহণেয়িঃ।

৫৯। নঞঃ শুচীশ্বকেত্রজকুশলনিপুণানাং নঞো বা। আশোচন্ আশোচন্ জনৈথ্য্যন্ আনৈথ্য্ন্ অফৈত্রজ্ঞন্ আলৈ ত্রজ্ঞন্ আনেপুণন্ আনেপুণন্।

- (৫৮)। প্রবাহণেয়শক্ষ্য চ তদ্ধিতে ণিতি পরে উত্তরপদ্স্যাদৌ বৃদ্ধির্ভবতি। পূর্কপদে তুবা প্রবাহণেয়ি ি প্রবাহণেয়্য্যাপ্ডাম্ অদ্যাত্ত চেচতি ইণ্ প্রবাহণেয়্য্য ব্রাহ্মণাদিত্বাৎ পৌজ্রঅস্তাদ্রাহ্মণাদ্যুনীতি ইণ্লুক্ ন ভবতি।
- (৫৯)। নঞ উত্তরেষাং শুচাাদিশকানাং তদ্ধিতে নিতি পরে আনে।
 বৃদ্ধিতিবতি। নঞ ইতাস্য বা। পুর্দে তু বেতারুর্ন্তৌ নঞঃ পরয়োঃ
 ক্ষেত্রজ্ঞকুশলশক য়োকত্তরপদস্যাকারস্য বৃদ্ধিতিবতি। পূর্বাপদয়োস্ত ক্ষেত্র
 কুশশক্ষোর্কেতি মন্দ্রিরাং শকা স্যাং। বৃদ্ধিবিধানসামর্থ্যাং অকারক্রোপোহিপি ন ভবিষ্যতি। নিপৃর্বাং পুণধালোনিপারস্য নিপুণশক্ষ্যাক্রের্প্রের্ন্ন পুণ ইত্যেত্র বৃদ্ধিতবতীতি শকানিরাসার্থং নঞো বেতি ক্ষুত্র্ম।

⁽৫৭)। প্রবাহণশদ ব্যবস্যোত্তরপদস্য এয়ণি পরে বৃদ্ধিরানৌ ভবতি।
পূর্ব্বপদে তুবা। প্রবাহণেয় ইতি বহেঃ প্রপূর্কাৎ ণিঙ্ প্রবাহয়তীতি
প্রবাহণং। বাচালিক্ষং কাপি কারকে চ কতি কর্বার ওনট্ নিতাং কুপ্রাদে-রিতি সমাসং ণৌ কত ইতি গতং শুলাদেরেয়ণ্ ইতি এয়ণ্। নত্ কিয়র্থ-য়ন্তরপদে বৃদ্ধিবিধীয়তে। যতো বৃদ্ধিদেবোত্তরপদং তৎ কিয়তে প্রবাহ-পেয়াভার্যা ইত্যত্র পংশ্বাবনিষেধ্যম্। এতক প্রক্রিত্র গব বাধ্যাতম্। নরস্তাপি তদ্বিত্র বৃদ্ধিমিষিভ্রে জাতিকেচ্যানেনির প্রবাহাবনিদ্রেশ ভবিষ্যতি। অত্যোবাত্র গোরঞ্চ চরণা সহেতি জাতিকম্। অত্যোবাত্র গোরঞ্চ চরণা সহেতি জাতিকম্। উত্তরপদেহপি প্রকরণান্তরেশেন বৃদ্ধি বিশ্বে। উত্তরপদস্য তু বৃদ্ধিবিধান প্রয়োজনমুভ্র ক্রিত্ত প্র।

৬০। যথাতথ্যথাপুরয়োশ্চ ক্রমেণ। অবাথাতথ্য আযথাতথ্য অ্যাথাপুর্যাং আযথাপূর্য্যম্।

অশৌচমিতি ন ওচিরওচিরিতি তৎপুরুষ: তস্যোদনিতি টণ্ ভাববিবক্ষায়াম্ভ ন্ধ্ৰঞস্তংপুৰুষাদিত্যনেন তাত্বং প্ৰত্যয়াবেৰ ভবতঃ ন তু লগুপান্তাদিগস্তা-দিতি টণ্। যদা তুন বিহাতে গুচিরস্যেতি বছবীহিস্তল তদ্যেদমিভার্থে চ ভাববিৰক্ষারাঞ্টন্। অনৈশ্ব্যমক্ষৈত্রজানিতি অনীশ্ববংক্তঞ্জকৌ নঞ্তংপ্রথমিদ্ধৌ বান্ধণানৌ পঠোতে অতো বান্ধণানি গুণবচনাং তদ্ভাব-ক্রি যোরিতি টাণ্। আকৌশলমানৈপুণমিতি তৎপুরুষে বছরীছে। চ তদ্যেদ-মিতি টণ্। যুবালো বাজণানে চ কুশলনিপুণশক্ষো পাটতৌ ভাভ্যাং তদস্ত-বিধ্যভাবাৎ ভাববিৰক্ষায়াঞ্চ টণ্ টাণৌ ন ভবতঃ। মেনলয়োস্ক টন্ট্যণি ক্লতে পশ্চান্নঞ্ সমাসে অকৌশলমকৌশল্যমিতি। অনৈস্ণান্নৈপুণানিত্যেব ভবতি। . (৬০ 👠 যথাতথ যথাপুর ইত্যেতয়োর্মঞ্জ উত্তরয়োর্মঞ্চ তদ্ধিতে ণিতি পরে ক্রমেণাদৌ বুদ্ধিউবতি। যদা যথাতথ যথাপুর ইত্যেতয়ো-व किन्नना नटका न मार। यहै। नटका विक्रिता एशेकथयथानुवरमान-ভবতি ইতি ক্রমার্থ:। আধবাতবাং আনবাপুর্যানিলানি। যথাতথা বথাপ্রাশকে। ৰুচিন্ম্ভ্রাপীতি ক্লততংপ্ক্ষসমায়ে। তুণাচ ভাষে উক্তম। অবণাত্রণাভাবঃ স্বায়থাত্রগামিতি। স্থাত্র তু ইস্বোচ্চারণং সৌত্রতাল্লিদেশসা। অথবা যথেতাস্যাসাদৃশ্রে ইভি রভাব্যয়ীভাবসমাসৌ অত্র সাদৃখ্যং লাবগম্যতে তথাহি যথাতথনিতি সত্য, চাতে যথাপ্ৰনিতি পুরাতনম্ অব্যয়াভাবেন ক্লীবন্ধান্দ্র:। প্নন্ঞা সমাসভয়োর কিণাদি-গণপাঠাৎ টাণ্ নত্ যাথা তথ্যথাপুর্যাশকাভ্যাং টাণডাভ্যাং নঞ্সমাসে অযাথাতথান্ অযাথাপুর্যামিতি। অযথাতথা অযথাপুরাশনাভ্যান্ত টানি ক্তে আয়ণাত্তগ্যমায়থাপুর্যানিতি ট সিদ্ধাত্যের। এবং চ লক্ষণমেতং কর্ত্ত্মশক্যং তৎক্তঃ গতাতুগতিকত্যা স্পষ্টার্থন্। বহলবিধেরপ্রসা বিধানাৎ ক্রচোহলি স্থানে ক্রজ, ভবঙি। ভেন রায়া ক্রীভো রৈক্রীতঃ তস্যাপতাং স্ত্রী রৈক্রীতী সা ভাষ্যা অসোতি রৈক্রীতীভাষ্য: এবং क्षीयनी जार्गः वृक्षार्थं जिक्कारखारत्रश्चनियात्राति (११वडावनिरम्धः

७)। यानानिबादमः।

স্ব আদে ভূতো যক্ত স সাদ্যন্তব্যাত্নতরক্ত ঈরাদেরাদে বৃদ্ধির্ভবিত। স্বৈরং স্বৈরী সৈরিণী অক্ষোহিণী সেনা।

৬২। ঋণপ্রবৎসরবৎসতরবসনদশকস্বলাদৃণস্তা।

ঋণার্ণং প্রার্ণং বৎসরার্ণং বৎসতরার্ণং বসনার্ণং দশার্ণং কম্বলার্ণম্

প্রয়োজনম্। ষত্র তু ঐয়োবৌ ক্রিয়তে তত্র যথা বৃদ্ধাভাবঃ তৎপরিশিষ্ট এবোক্তং তেন বৈয়াকরণভার্যঃ সৌবশ্বভার্যঃ।

(৬১)। স্ব আদেই ভূতো যদ্যেতি ব্যাকারেণ স্বান্থ ইতি দিবাদেবৃদ্ধবাদাবিতি যদস্ত ইত্যুক্তম্। স্থান্দ আছো যদ্য গণদ্যেতাপ্তপদার্থই
সৈরমিতি ঈর গতৌ ঈরণমারঃ পুংসি ঘণ্ কারকে চেতি ভাবে ঘণ্
স্বদ্যেরঃ সৈরঃ ক্রিয়াবিশেষণত্বাৎ স্বৈরমিতি নপুংসকত্বম্। ক্রিয়া চ
কাচিদধ্যাহরণীয়া। অথবা স্ব ঈরো যদ্য ইত্যপ্তপদার্থে নপুংসকত্বম্।
সৈরীতি স্বমীরিতুং শীলমস্তেতি নিন্ তর্জীলাদৌ স্প্রপীতি নিন্ স্বৈরিণীতি
শহুগিত্যাদিনা ঈু। স্বৈরশকামত্বর্থীয়ে ইনি ক্রতেহপি সেরাতি সিন্ধাতি
নিনি বৃদ্ধ্যর্পন্ত ঈরীতি গণে পাঠঃ অশুথা স্বেরীতি স্থাৎ। অক্ষোহিণীতি
উহ বিতর্কে উহনমূহঃ ভাবে ঘণ্ দোহস্থান্তীত্যর্থে অভোহনকাদেরিনিকাবিতি ইণ অক্ষাণামূহিনী অক্ষোহিণী দেনা অথবা অক্ষান্হিতুং শীলমস্থা
ইতি নিন্ স্ত্রীরাদী পূর্ব্বপদে চাবনস্তেতি গত্ম।

(৩২)। ঝণাদিতা উত্তরস্থ ঋণশক্ষাদৌ বৃদ্ধির্কতি। বংসত্তরশব্দো ভাষাদৌ দর্শিতঃ বংসরশক্ষ্য কাশিকাদৌ উভয়মতমাশ্রিত্য
উভয়েরের পাঠোহত্রাঙ্গীকৃতঃ। ঋণাণিছিতি ঋণে ঋণমিতি শৌগুদিছাৎ
সমাসঃ। অথবা ঋণস্থ ঋণমিতি ষষ্ঠীসমাসঃ। ঋণশোধনার্থমৃণমিত্যপ্থঃ
এবং বংসত্তরাণমিত্যাদিছিপ। প্রাণমিতি প্রকৃত্তমূণমিতি প্রাদেঃ কুটাদৌ
প্রথময়েতি সমাসঃ ঋদাদিধাতোক্রপসর্গাত ইতি প্রাপ্তা বৃদ্ধিঃ ন ধাত্বস্তরোপ্রস্পাত ইতি নিষিদ্ধা তদ্বাধনার্থং বচনম্। দশার্ণো দেশঃ দশার্ণা নদীতি
বহুত্রীইঃ। ঋণশব্দেনাত্র জলতুর্গভূমিক্রতে।

७०। প্রাদূঢ়োঢ়োটেষব্যাণাম্।

প্রোঢ়ঃ প্রোঢ়িঃ। প্রোঢ়ঃ প্রোঢ়িরিতি কাঙি। প্রৈকঃ প্রৈকাঃ। ক্রমহিংসাদর্শনয়োশ্চেতাস্থ দীর্ঘাদেস্ত্র প্রেকঃ প্রেকঃ।

৬৪। তৃতীরাসমাসাদন্তাদৃতস্থা। শীতেন ঋতঃ শীতার্কঃ ক্ষুধয়া ঋতঃ ক্ষুধার্কঃ।

ভিতা। প্রাত্তরেষাং উচ্ উচ্ এষ এষা ইত্যেতেধামানো বৃদ্ধির্বতি।
প্রেট্ ইতি প্রপূর্বাহ্নছে: ক্রং কিদানীর্ল্যোরিভ্যাদিনা বহ উহ হো চ্
ইত্যাদিনা হস্য চত্বং ধোধাতুর্ব্যাদিতি তদ্য ধং ষট্বর্গাদিত্যাদিনা ধস্য চং
চ্যেট্ ল্লিত্যাদিনা চল্ক্ দীর্ঘন্ত। প্রৌচ্রিত্তি ক্রিঃ ব্রিয়ামিতি ক্রিঃ।
প্রেষ ইতি ইষ গতৌ দিবাদিঃ প্ংসি ঘণিত্যাদিনা ঘণ্। প্রৈয় ইতি ঝহলো
লা ইতি লাং অনিনেধধাত্ত্বিও প্রাদেরিতি প্রশনাকারলোপে প্রেষঃ প্রেয় ইত্যানিইরপনিরাকরণার্থং বৃদ্ধিবিধানন্। উচ্চাদীনামব্যঃনাং সাহচর্যাৎ
ণিঙস্থাদিষের্বচাসিদ্ধে প্রেয়গত ইত্যত্র বৃদ্ধিন ভবতি। যভনেন বৃদ্ধিঃ কথং
ভিই্ প্রোচঃ প্রোচ্রিতি চোগুমাহ প্রোচ্ প্রোচ্রিতি ঘাঙীতি। প্রশন্ধান্তরের আঙ্বাপদে উচ্ ইতিরিত্যেতৌ শকৌ প্রশন্ধস্থিহিতাবের ন ভবতঃ
ভবে চ কতে ওচ্ ওচ্ রিতি রূপান্তরমাপন্নৌ অতো বৃদ্ধাতাবে ক্রাভাবঃ তন্মাদোমাদাবিতি আঙি পরে প্রশন্দাকারে লুয়ে প্রোচঃ প্রোচ্রিতি। উষ্ ইত্যাদি
চকারেণ উষ্ উদ্ধে ইত্যান্য চ ঈষ্ণাতোও রূপান্তরাৎ গুণাভাবে এয এষা
ইতি রূপমেব নান্তি কথং বৃদ্ধিশন্ধা অতঃ পূর্দাতা সহ গুণে কুতে প্রেষঃ
প্রেয় ইতি।

(৬৪)। তৃতীয়ায়াঃ সমাসঃ তৃতীয়াসমাসঃ তৃতীয়াসমাসেংদন্তঃ
তৃতীয়াসমাসাদন্তক্তপাত্তরস্য অতশন্দ্রসাদে। বৃদ্ধির্বতি। শীতার্ত ইতি
বাত ইতি ঝ গতৌ ঝগাতোর্গতিভুক্সর্থেত্যাদিনা ক্রঃ অথবা খণু হিংসায়াং
ক্রঃ তথোশ্চাভিত্যনিভ্তনাদ্যোদিত্যাদিনা পঞ্চমলুক্ কৃতাঃ কর্ভ্করণয়োবহলমিতি তৎপ্রসংঃ রুম্মোক্ত্যা দীর্যগ্রহণাৎ ক্র্যার্ত ইতি। ক্র্যেভি উঞ্জিহালেরিত্যেকে ইতি ক্রিবস্তাদাৎ। তথাত ভাগুরিঃ। টাপঞ্চাপি হলস্তানাং
ক্র্যা বাচা দিশা গিরেতি। আর্তশন্দেক সমাসে ক্রতে শীতার্ত্ত ইন্তানিইউল

্ ৬৫। ঋদাদিবাতোরুপসর্গাতঃ। প্রাক্তি পরাচ্ছতি।

৬৬। নাধাত্বতারাপদর্গাতা। প্রগতা ঋচ্চকা যম্মাৎ দ প্রচ্ছ কো দেশঃ।

৬৭। ঋদুদাদিনামধাতোর্কা। প্রর্মগ্রীয়তি প্রার্মগ্রিতি উপান্ধারীয়তি। দীর্ঘাদেস্ত উপ শ্লুকানীয়তি উপর্কানীয়তি।

- (৬৫)। ঋকাব আদির্যস্য ঋদাদিঃ উপসর্গসম্বন্ধিনোহকাবাহত্তবস্য ঋদাদের্থ তোবাদৌ বৃদ্ধিভবতি। ধাতুসম্বন্ধিনৈব প্রাদীনামুপসর্গত্বম্ অতএব ধাতৃগ্রহণে সিদ্ধে ধাতোবিতি ক্বতং ধাতত্তবস্যোপসর্গস্য নিবৃত্ত্যর্থম্। এতদেব ন ধাত্বস্তবোপসর্গতি ইত্যানেন স্পষ্টবিঘাতি। প্রাচ্চে তীতি ঋচ্চগতীক্রিব-প্রলযমূর্ত্তিভাবের্। ঋ গতাবিত্যস্য বা শিতিতিষ্ঠাদিস্থাদেবিতি ঋস্থানে ঋচ্চাদেশঃ। আঙ্পুর্ব্ধধাতোবপি অক্রেন বৃদ্ধা আর্ত্তঃ আর্তিবিতি চ। উপসর্গ ইতি কিম্প পুরা ঋচ্চতিপুর্বছ্তি।
- (৬৬)। ধাঁতস্তবোপসর্গস্য সন্ধাননাহকাবাহস্তরস্য ঋণাদিধাতোবাদো রন্ধিন ভবতি। প্রশ্নুক ইতি বছবীতিসমাসে প্রাদেঃ ক্লন্তস্য বেতি গতশন্দলোপ:। নায়মূজ্ধাতোকপসর্গঃ কিন্তু গমেবিতি যদা তৃ প্রচ্ছ ক ইতি প্রক্রইার্থেন প্রশন্দেন সহ নিত্যং কুপ্রাদেবিতি প্রাদিসুনাস: তদাপি প্রচ্ছিক ইতি প্রাদীনাং ক্রিয়াযোগে তু উপসর্গতম্ অত্র কর্ত্যোগেনামূপ-সর্গতাং।
- (৬৭)। উপসর্গাতঃ প্রস্য ধলালেঃ স্নাদেশ্চ নামধাতোরানে বৃদ্ধি-র্ভবিতি বা। প্রার্থভীয়ভীতি আত্মন প্রস্তমিচ্ছতি প্রয়ভমিবাচনতি বা তুল্যাচারে চামস্তাব্যরাদীর ইতি ঈর অন্নোরিত্যকারলুক্ পক্ষে ইক এঙরলো গুল ইতি গুল: নক্ষদাদিধাতৌ প্রাদ্যুক ইতি প্রতিবেধাৎ ঝদুভোরকো ক্রম্ব-শ্রুতি পক্ষেহদন্ধিন ভবিতি। প্রতাদ্যুকারামিতি প্রতশকাধীয়ে ক্তে প্রার্তী-

কপং স্যাৎ। তৃতীযাসমাস ইতি কিম্? প্রমর্ত্তঃ। আদন্তাদিতি কিম্? অগ্নিনা ঋতঃ আগ্নতঃ।

৬৮। এজেচোহতা।

এচঃ স্থানে অতা সহ ঐজ্ভবতি। তবৈষা জায়োদনং তত্ত্রৈক্রী সোপগবী। অভেতি সামান্যবিধিনা পরাতাপ্যৈচ্ প্রাপ্রোতি। প্যাদে চৈচোহয়বায়াব ইত্যাদিবিশেষবিধিনা বাধ্যতে। যথা ব্রাক্ষণেভ্যো দধি দীয়তাং তক্রং কোগুন্যায়েতি।

য়তি ইতাত্র বছলবচনাৎ নিত্যৈব বৃদ্ধিং ব্রম্বোক্ত্যা দীর্ঘোহত্র ন গৃহতে আ্তত-এবাহ দীর্ঘাদেশ্বিত্যাদি। ঝদুতোবিন্যাদিনা অসদ্ধিঃ পক্ষে গুলা। ন ঋদাদিধাতৌ প্রাদ্যত ইতি প্রতিষেধন্ত্বত্র ন ভবতি। তত্রাপি ব্রম্বোক্ত্যা দার্যসাগ্রহণাৎ।

(৬৮)। এচ্চ এচ্চ ইত্যেকশ্রেষে ক্লতে ঐশ্বিত্যনেন নুপ্তবিভক্তিকেন চন্বাবো বর্ণা গৃহস্তে। এজিভানেনাপি চন্দার: অতোহত্ত ক্রমোহবিরুদ্ধঃ। নতু যথা চৈত্রেণ সহ মৈত্র: ত্বল: ইত্যত্র উভয়োরেব তুলত্বং পৃথকু প্রতীয়তে তথেহাপি এচোহদক স্থানে এচা পৃথগেব ভবিতব্যং কথমূভয়োরেক এবাদেশো ভবতীতি লভ্যতে ইতি কেচিচ্চোদয়ন্তি তদসৎ সহোক্তো পৃথগ্-ভাব এব পরং লভ্যত ইতি নাখং নিশমঃ যতো বালুকাভিঃ সহ মুৎপিঞং ঘটং কবোতি দরা সহ ওদনং ভূঙ্জে ইত্যাদাবেকস্বমপি দ্বুভাত এব বত্র বেকত্বং নাস্তি তত্র পৃথগ্ভাবোহপি লক্ষ্যতে। অত ভূতয়ো: স্থানে একা-্'নেশস্য প্রতীতেঃ সম্ভবে হি পৃথগুৎপত্তিশঙ্কা ন ভবত্যেব। সন্নিহিতালাভে বিপ্রকৃষ্টিং বিধিরপেক্ষাত ইতি ক্সায়াং। সন্নিহিতেনৈবাতা সহিত্সা এচঃ স্থানিত্রং লভ্যত এব তচ্চ মালিধ্যং পূর্বেণ পরেণ চ সম্ভবতি অতঃ পূর্ব্বাতা সত উদাহরণানি প্রদর্শ্য নয়নং লবণং রায়া নাবা ইত্যাদে পরাতাপ্যৈচ্ প্রাপ্নোতীতি চোদ্যং দর্শয়তি। অভেজ্যাদি অত্র সিদ্ধান্তমাহ ণ্যাদৌ চৈচো-ষ্ববায়াব ইত্যাদি। আদিপদেন এডোহত ইত্যাদেগ্রহণম। যৎ প্রতি-বোগিবিষয়মভিব্যাপ্যাপরম্পি ব্যাগ্নোতি তৎ নামান্যং যঃ স্ববিষয়মভিব্যাপ্য তদিতরং ন ব্যাগ্রোভি স বিশেষঃ। সামান্যদ্য বিশেষেণ বাধঃ কস্য ন সম্মতঃ অত্রার্থে লৌকিকং চ প্রারং দর্শরভি ব্রান্ধণেন্ড্যো দধি দীয়ভামিত্যাদি। দ্ধিদানং হি কৌভিজ্ঞতরবিষয়সভিব্যাপ্য কৌভিস্তমণি ব্যাপ্নোতি ইতি

৬৯। ইক এঙরলো গুণঃ।

ইকঃস্থানে পূর্ববাতা সহ এঙ অর অল্ ইত্যেতে আদেশা ভবস্তি। গুণ ইতি যোগং বিভঙ্গা অতাপি বিনা পরিভাষ্যন্তে। সেহা ঘনোপমং বালচ্ছতি তবন্ধারঃ হে অগ্নে হে বায়ো হে পিতঃ।

৭০। জস্ঙিতোরপিবাদেঃ।

ক্ষ্ ঙিং ইতোত্যোঃ প্রয়োরপিবাদেগুণা ভবতি। ক্ষয়ং জাগরয়তি। অপিবাদেখিতি কিম্ গুপিবতি।

৭১। অজ্ব্যবহিত**শ্চ।** চিরায়যতি জিরায়য়তি।

সামান্তম্। তক্রনানন্ত কৌণ্ডিন্তমন্তিবাপ্য তদিতরং ন বলপ্রোতি ইতি ভবতি বিশেষঃ। ঐত্যেচাহতেতি পূর্বেল পবেণ চ প্রাপ্রোতি ইতি ভবতি সামান্তম। গ্যানাবিতি তু পরমাত্রমপেক্ষাতে, ইতি ভবতি বিশেষঃ। বিষ-মান্তবাভাবাত, সামান্তবিশেষজ্ঞায়োহত্র ন ঘটতে। ক্রম্মে পটবে রামি নাবি ইত্যানে গাদাবিত্যক্ত প্রবৃত্তিসম্ভবাৎ।

- (৩৯)। গুণ ইণীতি ইকএঙরল ইংতাকো যোগং। অতা সহ ইকঃ সানে এছ অব অলো ভাগি। গুণ ইতি দিতীয়যোগং স চ পরিভাষা অভেতি নাম্বর্গতে। যত্র যত্র গুণ ইতি ক্রায়তে তত্র তত্র ইকঃ স্থানে এঙরলো ভবস্তি। সেহেত্যাদি উনাহরণচভূষ্টয়মান্যক্ত শেষং দিতীয়ক্ত ভকারক্ত তু গুনু হেগনল ইতাত্র গুণঃ সাবিতি গুণঃ। অত্রাপি পরাতা সহ প্রাপ্তে গুণং যবরলোহচীত্যনেন বিশেষবিধিনা বাধ্যতে।
- (१०)। পিবতীতি পা পানে শিতীত্যাদিনা পিবাদেশঃ পিবাদেশ্ব প-নিষেধসামর্থ্যাৎ সন্নিহিতালাতে ইতি পরিভাষাত্র নাশ্রীয়তে তেন শোভত্ত ইভ্যাদৌ ব্যবহিত এব গুণঃ।
 - (१))। अहा वावहिन्तः अञ्चावहिन्तः मारुनीक् निवामिर्श्वविः।

१२१ मोर्गः चारमो। जनाः।

৭০। ঋন্তেত জিতাচোঃ । ধাত্রে কার্ল্র দ্।

৭৪। দার্ঘোপাতো যুক্তাত-চ ধাড়ঃ। কৃষতি কুনতি।

যথা পিবাদেরিকঃ স্থানে গুণো ন তবতি তথেছাপি ন তবতীদ্রার্থ:। চিবায়য়তীতি পূর্ম্বণ সাধনম।

- (৭০)। সানৌ তানিমিতে পরে দীর্ঘ ইক্ পিবানির্ভবতি। ঙে বাতপ্রমো। সানাবিতি কিম্? ভবতি। (২চেভি বক্তবাম্। ২কারণ্চ সানৌ
 পরে পিবানি ভবতি। ঙে গল্পে ঙদিঙদার্গন্ধ: ঙৌ গন্ধি)। অন্তে তৃ
 ঙদিঙদোঃ গম্রিতি ঙৌ গমলি কটি গমাগমলৌ গমলঃ গমলং গমলৌ ইভি
 বদন্তি তদসং বভন্তপরঃ স্বরূপশ্ত প্রাহকো ভবতি নম্প্রবর্ণস্তেতি ভাগরতিরুতা তুপরস্তংকালপ্রতাত্রান্তমর্থা বাবন্ধিতঃ। অতোহনঙ্গৌ ঋরুশনঃ
 প্রদংশোহনেহসাঞ্চেতি ঋতো ভিৎসর্কনামস্থানয়োরিতি ঋতো উনিতি
 ভারণের ন প্রবর্ত্তরে। অউরব ঋষ্বতাশ্চেতি স্বরানৌজসতোশ্তেতি
- (৭৩)। ঙে প্রত্যায়ে পরে ভঙিভাচি চ পরে ঋকার: পিবাদির্ভবতি।
 কাল মিতি কর্তৃপকাৎ টণ্ তদ্বুন্দাণাবিতি টণ্ যবরলোহটীতি বেকঃ আদৌ
 বৃদ্ধিঃ। নয় ভঙ্কিভাজিতি অজ্গ্রহণং কিবর্থং ঋকারাস্তাং পরো ডিং
 তদ্ধিতোহলাদিরের সম্ভবতি। তদেভজ্জাপয়তি ভদ্ধিতে ভিদ্চোর গুলো
 ভবতি নাজ্য তেন ধৈমুক্মিতি ধেনোরনঞ্ইতি টকণি ক্লতে ইয়ম্বত্তাদিকভেতি ইকাললুকি চ ক্লতে গুণো ন ভবতি।
- (१৪)। অন্তপ্ত সমীপমু উপান্তং দীর্ঘ উপান্তং যক্ত বীর্ঘোপান্তঃ
 বুক্তোহ আ মত স মৃত্যান্তঃ দীর্ঘোপান্তো যুক্তান্ত গাড়ঃ সিবানির্দ্ধনতি।
 ক্রতীতি কৃত্য কীল গুল গুলি অব্যক্তে শক্তি। ক্রতীতি কৃত্য বিকসনে।
 শাত্রিতি কিন্ ? ভেলা ভোন্সাতি। অব্যক্ত প্রায়তপ্রতামাত্যাং মুকারো
 ন শাত্র গুল্পান্তো শাত্রিতি ব হতং বৈচ্ছিলার্থন্।

, ৭৫। নাম্নো ব্যবহিতম্। কুলং করোতি কুলয়তি অগ্নিচিতঃ।

৭৬। ইঙাদ্যাগমঃ। ভবিভা ব্ৰবীতি রোদিভি।

৭৭। স্পৃহাদিশ্চ। স্পৃহযতি। স্পৃহ রূপ থিট কুমার কুশ্ল কুণ গুণ পুট গৃহ কুছ মুগ।

⁽ १४)। নামো ক্বহিতং গুণস্থানং পিবাদি ইবতি। ব্যবহিত্তমিতি । নমিত্তাঘ্যবহিতম্। কুলমজীতি কুলশকারামতং করো শ্রাণাকিত্যাদিনা বিজ্ অনেকাচামিত্যাদিনা অকাবলুকি ক্তে প্রাপ্তো গুণো ন ভবতি । অগ্নিচিত ইতি অগ্নিং চিত্তবান্ অগ্নেশ্চেনিতি কিণ্ প্রস্বাক্ত্যাদাবিতি তৃক্ অব্যবহিতে তু ভবত্যেব। বিশ্ববিশ্বাদ্যতি আমালুকি চ কতে বিধ্বতি।

⁽৭৬)। ইঙাঞ্চানঃ প্রিবাদিঃ স্থাৎ। আদিপদেন ইড়ানীনাং গ্রহণং তথাহি আপ্যলক্ষণং প্রকৃত প্রস্তাদ্দেশবিয়ে হৈ প্রতাতনাগছে জীত্যাগমঃ ইঙানীতি বিশেষণং কিমর্থম্ ? করে তি চিনোডি ইত্যানে মা ভূব। ভবিতেতি তৃঙ্তাঙ্বা ইঙ্চতৃর্বিত্যাদিনা ইঙ্ ব্বীতীতি ক্রঞ বাজানাং বাতি অনাদেশ ইত্যাদিন। ঈং রোদিতীতি ক্ষমির অশ্বিমোচনে ক্রো ডিভি গুণান্টেউ ইদ্গুণান্ট।

⁽११)। স্ভাদিক পিবাদিঃ স্তাং। তত্র স্থাদয়ঃ চুরাদিগণয়াঃ।
স্ত ইচ্ছায়াং রূপ থেকিল্যে খিট ভব্বংপ কুমার কুশ্ল ক্রীড়ায়াং কুণ গুণ
সামস্তবে পুট সংসর্গে পরবৈশদিনঃ। 'গৃহ প্রহণে কুছ বিমাপনে মৃগ্
সামস্তবে এতে আন্তনেপদিনঃ। সংপ্রতি প্রাইত্ত গ্রিন্থেনমেন মৃথ্যং
স্কৃত্যিদিকার্যাং পশ্লতির্বে ধাতবাহের রুত্ত্বী পরিস্কৃতাঃ তেহিপি স্পৃহাদৌ
বিখান্তে এতং কার্যাং তিপ্ত পানে মর্শমিব্যামঃ। শার সার দৌর্বল্যে ক্রেট
ভক্ষণে কোট কেপে কেন্ত প্রাম সামস্তবে রূপ রূপ ক্রিয়ায়াং পার তীর
কর্মসমাথ্যে পল্যালননগঞ্জনারে শীল উপধারণে বেল কালোগদেশে
প্রবেষ মার্গণে বাস উপনেশ্লালং নিবাস আছোদনে স্লচ প্রৈপ্তে কুট্ লাকে

१४। क्षेत्रमानानिक।

কুটনন্। ণিভি তৃ উৎকোটয়তি। কুট পুট পুঠ পুড কা টু মুট ভূট ক্ৰট চূট ছূট চূণ ছূর ঘূট জ ভূড় কড় কড় পুড় ভূড় পুড় বুড় ক্ষ্ বুড় ক্ৰড় কৃড় কড় কড় গুড় ঘূড় হড় ক্ৰড় কড় কা বু কা বুড় ক্ৰড় কৃড় কড় গুড় খুড় হড় ক্ৰড় ক্ৰড় বুড় কা বুড় কি কুচ গুজা ণূ ধু গু গু গুৱী গুঙ কুঙ কৃঙ।

৭৯। ভূছ ছক্তেরাঃ।

। অভূৎ অভূঃ।

বাতস্থাদেবনরো: বাস শ্বাধ জৈন টোবোঁ লাভ প্রেরণে ভাম ক্রোধে গোম উপলেপনে সাম সাধান জোম শ্লীগাঁথ ভাজ পূথ ক্করণে সভাজ প্রতি-সেবনয়ো: পববৈদপদিন:। শৃন্ন বীশ্ল বিক্রান্তো স্থল পরিবৃংহণে থোট ক্ষেপে আয়নেপদিন:। ভাগেশ্ব পোটুরভি ক্ষবীভমং।

- (१२)। হঙ্ হঙোঃ পরবাহ্ব ভ্ষাতৃঃ শিবাদির্ভবতি। অভ্য অভ্নিতি পূঙ্ সঙ্ চেতি পূঙ্চঙ্গটো সঙ্ চ সঙ্পুদিশাদের্ভিত সঙ্পুদ্ সনি-হিতালাতে বিপ্রকৃত্ব বিধিরপেক্ষাতে ইজি ভাঙেন স্বাধান অভ্য ইভি ন শিবাদিক পঙ্ব্যবধানাথ। এবং বন্দুক্তাল ডি আবোভুই ক্ষাবোভুঃ ইঙ্পক্ষে আবোভবীৰ অবোভবীরিটি চ।

. ৮०। निथिन्ता अनात्मी (नथनोवर्ण्डम्। ; निथनः (नथनः निथनीतः (नथनीतः निथाः (नथाम्।

५)। यवत्रत्नाक्ति।

মশুকপ্লুতাধিকারাদিকঃ স্থানেহ্চি পরে ষ ব র ল ইত্যেতে আদেশা ভবস্তি। নদ্যেষা মধ্বানীতং পিত্রর্থং লর্থম্।

৮২। প্লুতপূর্ববস্থা চ।

দীর্ঘাসন্ধাপবাদঃ। ভোত-ই-ইহ ভোত্তয়িহ।

৮৩। অষবলঞশাদিহল উতোহব্যরত বা। কিম্-উ-অত্র কিম্বত্র।

⁽৮০)। লেখনীশ্রং বর্জায়িত্বা গুনাদৌ পরে নিখিঃ পিবাদির্ভবতি বা। লিখনমিতি লিখ অক্ষরবিস্থাকে গুন্ট লেখ্যমিতি ধাহলো গ্য ইতি গ্যঃ। লেখনীতি স্ত্রীত্বটিতাদী।

⁽৮১)। বকারীদিনাহচর্ঘাৎ অবগীয়োহয়ং বকারঃ মঞ্কল্ল তাধিকারাদিতি ইক এওরলো গুণ ইত্যতোহস্বর্জতে ইতি শেষঃ। নঘনস্তরস্ত্রেহণি
ইবেব স্থানী তৎ কথং মঞ্কল্ল তাধিকারঃ ই উচ্যতে। ন তত্র ইক্
ইত্যান্বর্গতে কিন্তু গুণবিধানাৎ পরিভাষোগন্থিতিঃ। স্বর্ণে অচীতি দীর্ঘবিধানাৎ তাল্ভিরোহস্ত বিষয়ঃ। পিত্রর্থমিতি প্রয়োজনবাচ্যর্থেন নিত্যং বাচ্চালিক্ষতা চ ইতি চতুর্গীতৎপুক্ষাঃ।

⁽৮২)। প্লুড: পূর্বো বনাং স প্লুপ্র: তক্ত ইকঃ স্থানেহচি পরে যবরলো ভরমি। নমু পূর্বেণের সিধে কিমর্থোছরং বোগঃ অভ আছ্ দীর্ঘাসন্ধানবাদ ইতি। ভোত্ত ইহ ইতি কার্ক্ত: অক্তমণ বা ইতি দ্রে: সম্মুট্টো বর্তমানত ভো ইত্যক্ত প্লুড্ডা আনুষ্ঠাপি প্রমান্ত ভো ইত্যক্ত প্লুড্ডা আনুষ্ঠাপরাদঃ। বদা অব্যায়ং তদা অব্যায়ং কো আব্যায়ং কোলাব্যায়ে।

⁽৮০)। শাদি ইতানের শবনহানাং গ্রহণং যববাঞ্গাদিবাভিরিকাং হল উত্তরত অবায়ত উপদ্যাচি পরে পূর্বপক্ষববিহিতো বিধিকাঃ জবজি।

৮৪। ইতাবস্থত স্চ কেবলস্থা চ উ স্চ।

কিম্-উ-ইতি কিম্বিতি কিম্-ইতি শুভংয্-উ-ইতি শুভংঘ্
ভংগ্-ইতি ইউ-ইতি ইবিতি ইউ-ইতি উ-ইতি বিতি উ-ইতি।
উশব্দিস্থা সামুনাসিক বইত্যেকে। কিম্-উ-ইতি কিম্বিতি।

৮৫। मवर्णनांभीर्यः।

নবর্ণেন সহ অগদার্ঘো ভবতি। ব্লকারস্য দীর্ঘস্যাপ্রয়োগাদফা-

পূর্ব্জলক্ষণবিহিত চ বিধিক্ষকারশ্ত বকারঃ অব্যয়েৎ ইত্যাদিনাহদদ্ধেরপবাদঃ। পক্ষেহদন্ধিরেব উদব্যয়বকারে বেত্যকুষারঃ।

(৮৪)। ইতৌ পরে যবলঞ্শাদিবাতিরিক্তহল উত্তরস্থ যবলঞ্শাদেশ্চ
পরস্থ মচঃ পরসা কেবলসা চ উ ইতাস্যাব্যয়সা পূর্বলক্ষণবিহিতো বিধির্বা
ভবতি। পক্ষে উ শ্চাদেশঃ। উভয়ত্যক্তপক্ষে পূর্ববদসন্ধিরেব। ইতাবুশ্চেতি লক্ষণে কতে অয়বলঞ্শাদিহল ইত্যপ্যত্রামূবর্ত্ত ইতি শক্ষা স্যাৎ
তরিরাসার্থং স্পষ্টমেবংবিধং হত্রং কৃতম্। শুভংয ইতি শুভংযাশকাৎ নাম
ইত্যাদিনা ণিঙ্ অনেকাচামিত্যাদিনা আকারলুক্ ততঃ কিপ্ কিব্দুপোশেচতি ণিঙ্লোপঃ। শুভংয উ ইতি যকারাৎ পর উশকঃ। জুঙ্ উ
ইতি হিতেহপেক্ষিতবিধিত্বাৎ হ্রান্ডণনা দিঃ স্বরে ইতি দ্বিত্তং কৃত্বা পশ্চাফ্কারঃ করণীয়ঃ। জুঙিঙ্বিত।

(৮৫)। সমানো বর্ণঃ সবর্ণঃ সমানোদৃগাদাবিতি সমানসাঁ স্থানে সঃ সমানঃ সদৃশঃ অকারাদীনাং ক্রস্থানাং ক্রস্থাঃ সহ দীর্ঘাণাঞ্চ দীর্ঘাঃ সহ সমানতা বিদ্যতে এব। ক্রস্থানাং দীর্ঘাঃ সহ দীর্ঘাণাঞ্চ ক্রস্থাঃ সহ সবর্ণতা অন্তি ন বেতি সন্দেহনিরাসার্থমাহ >কারস্যেতাাদি। ক্রস্থােজাা দীর্ঘসাাত্র গ্রহণাৎ ঃকারস্যা দীর্ঘস্যাপ্রয়ােগাদ্ধ ইত্যুক্তম্। হিশ ইতি সংবৈধ্যকার্থাদীক্ষায়ামিতি শন্ দৌ বৌ ভূষা সবর্ণা ভবস্থি ইত্যর্থঃ। এতচ্চোপ-লক্ষণম্। উচ্চারণস্থানক্রতমেব সবর্ণঘম্পলক্ষণীয়ং তেন প্লুক্তরূপি সহ সবর্ণতা অবগস্তব্যা। এতচ্চ প্লুক্তনাচীতি সন্ধিনিধেধে ভাঃ প্রক্র্ আগচ্ছ ইত্যুদাহরণং দশ্মতা ব্রক্তিকা স্থিতিত্ব্। সিকাস্তান্তর্ক ভব্রেক

কারাদয়ো বিশঃ সবর্ণাঃ। আছি উ এ ও ঐ ওকারা দীর্ঘাঃ। কুশাগ্রাং নদীয়ং মধুপমং পিতৃণম্।

৮৬। ঋদৃতা রেফভাগদ্বয়যুক্তঋর্য্বা'। হোতৃ-ঋকার ইত্যত্র হোজুকারঃ হোতৃকারঃ।

৮৭।৮৮।৮৯। ঋদুতা ৯দৃতা চ লভাগদ্বয়যুক্ত ৯বা 🛒 হোতৃ-৯কার ইত্যত্র হোত্লুকারঃ হোতৃকারঃ গদ্ধকার ইত্যত্র গদ্লুকারঃ গদ্কারঃ।

ঋদুতোঃ সবর্ণপ্রায়ক্ষানীর্ঘঞ্কারঃ। ৯দুতোশ্চ। হোড়-৯কার ইত্যত্র হোতকারঃ গমু-ঋকার ইত্যত্র গমুকারঃ গমু-৯কার ইত্যত্র গমুকারঃ।

অভিধাস্যাম:। যদি সর্গন্থানেহগিতি ক্রিয়তে তদা স্কার্থকারুয়োঃ সবর্ণ-প্রায়ত্বাং বিধেয়ো দীর্ঘোহসংগৃহীত এব স্থাৎ। দীর্ঘোহনেন বিধীয়তে কে পুনস্তে দীর্ঘা অত আহ আ ঈ উ য় ইত্যাদি। হ্রস্বাধ্যা তু পরিশিষ্ট্রাং অ ই উ ঝ স্কারাণামবগস্তব্যা। একারাদীনান্ত দীর্ঘতে কতে তেচ্ছত্রং গোচ্ছায়েত্যাদৌ পদান্তদীর্ঘাদনাত্ত্ মাঙ্ইতি ছকারস্ত-দিত্ববিধানং পাক্ষিকং প্রয়েজনম্ণ। অগিতি কিন্ ? এধনত একঃ একারাদীনামেকারান্সঃ স্বর্ণা ভবস্ত্যের নম্বক্।

(৮৬)। ঋকার ঋকারেণ সহ রেফভাগদমযুক্তঞ্জকারো বা ভবতি। পূর্ব্বেণ দীর্ঘো বিহিতো হ্রস্থার্থং বচনম্।

(৮৭ ৮৮।৮৯)। ঋকার ১কারেণ সহ ১কারশ্চ ঝকারেণ সহ লভাগছয়মুক্ত ১কারো বা ভবতি। ঋদুতোরিতাদ্বিনা পক্ষান্তরং দর্শয়তি ১কারস্ত
দীর্ঘ্যপ্ররোগাৎ ঋকার এব দীর্ঘো ভবতীতাভিপ্রায়:। এতৎ প্রারো
বাছল্যেন যতঃ ঋদুদাদিনামধাতোর্ঘা ইত্যত্র ঋদ্গ্রহণেনৈব ১দ্গ্রহণে সিদ্ধে
১দ্গ্রহণং ঋদুতোঃ সবর্ণ ছভাসর্ঘবিষয়তাং জ্ঞাপয়তি। তেন গমুরিত,ত্র ঋত
খাৎ স্থনেতি আছেং প্রকৃপ্যমান ইত্যাদৌ আছেং গছঞ্চ ন ভবতি। চিক্ত

२०। गार्ता टेन्ट्राश्यवायां ।

কাচি ণ্যাদে চ পরে এচঃ স্থানে অয় অব্ আয় আব্ ইত্যেতে আদেশা ভবস্তি। কবয়ে গবা রায়া নাবর্থম্। ণ্যে। ভাব্যম্। যতি। হব্যম্।

৯১। তদ্ধিত্তযে চ। ব্যং বায়ব্যং ঋতব্যং নাব্যম্।

৯২। গেয্তী জোশযুগে। গৰ্যতিঃ।

প্রতীত্যাদৌ বদদিত্যম্ভবত্যেব। স্বৃত্তান্নিতি প্রমাদপাঠঃ। স্বরূপেরু যদিষ্টমিতি একশেষবিধের্নিত্যমাৎ ২তোরিতি জষ্টবাস্।

- (৯)। পাণে চেতি চকারেণ সমানবিভজেরেবাছবৃত্তির্ভেতি সপ্রমান্ত্রস্বার্তির্গান্ত ভাষানিতি উদন্তাদাবক্তকে ইভি পাঃ বৃদ্ধি। হ্যামিতি ছ দানে ইবঃ সহাদেইভিতি ষঙ্।
- (৯১)। তদ্ধিতবৈ পরে এচঃ স্থানেহর অব্ আয় আব্ ইত্যেতে আদেশা ভবস্তি। গব্যমিতি গোপন্ধসোর্থৎ ইতি যৎ বার্ব্যম্ অতব্যমিতি বায় বৃত্পিক্রমসো যদিতি যতি ক্ষতে বাচোক্রদ্পুণ ইতি গুণে চ অবাদেশঃ। নাব্যমিতি নাবস্তভার্য্যে ইতি যৎ। স্তেনশকাৎ স্তেনান্নলোপ্ষ্ণৈতি যে নলোপে চ ক্লড্রে স্তেন্মতাক্র ক্রস্যান্থ্যকাদ্যাদেশো ন ভবতি। একাইর্কাবাভ্যান্ত তদ্ধিত্যকারবিধানং ন দৃশুতে অথবা যদান্তি ভক্র বছলবচনাদ্যায়ে ন ক্রশীরো। তদ্ধিত ইতি বিশেষণং কিমর্থং স্থেয়াৎ।
- (৯২)। গোশকদা এচঃ স্থানে ঘৃতৌ যুতিশকে পরে ক্রোশযুগে বাচ্যেহবাদেশো ভবতি। গোবাতিরিতি গোয্তিরিতি যঞ্জীদমাদঃ যুতিরিতি বৃ মিত্রণে হিনোভ্যাদেগুলাদিশেতি জিঃ দীর্ঘশ অকাদৌ চেতি বসুক্ ন ভবতি। গোশ্চ যুতাবিতি নিবেধাং। ক্রোশযুগ ইতি কিম্ ং গোযুতিঃ।

- ৯০। শীঙোহঙিদেয়।
 শয্তে শাশয়তে। ঙিদ্যে তু শেয়ম।
- ৯৪। হ্রসোপান্তানিঙো যচি গুণশ্চ। বিঘটযা সংগমযা প্রবৈভিদযা।
- ৯৫। আপোতের্বা। প্রাপ্য প্রাপ্য ।
- (৯৩)। শীঙ্ স্বপ্নে ইত্যক্ত এচঃ স্থানে ঙিদ্বাতিরিক্তে যকারে পরেহয়াদেশো ভবতি। শব্যত ইতি শীঙো যকি ক্লতে শীঙঃ শের্যনি চেতি শেভাবঃ। শাশয্যত ইতি হলাদ্যেকাচ ইত্যাদিনা যন্ অয়াদেশে ক্লতে ক্লতকার্য্যোনিদন্ত ইতি শ ইত্যাদেন দ্বিক্জিঃ দীর্ঘোহনাগমাত ইতি দ্বিক্জৌ দীর্ঘঃ। শেয়মিতি পূর্ববিদ্যঙ্ নমু ভিদ্যকারো যঙেব সন্তবতি তন্মিন্ পরে প্রসারিতার্থ ইত্যাদিনা এব প্রতিষেধো ভবিম্যতি কিমিছি-দিত্যনেন? উচ্চতে। গ্যাদাবিত্যনেনৈব প্রাপ্তক্ত প্রসারিত্বার্থ ইত্যাদিনা নিষেধ এব শীঙক্ত বিশেষলক্ষণবিহিত আদেশঃ স্থাদেব ইতি সন্দেহঃ স্যাৎ অতঃ ভরিরাসার্থমিভিদিতি ক্লতম্।
- (৯৪)। ব্রুষোপান্তাত্ত্রস্য বিজঃ স্থানে যিট পরে গুণো ভবতি।
 এচঃ স্থানেইয়াদেশন্ট নিঙ্লোপোহনিতাদ্যটীতি নিঙ্লোপে প্রাপ্তের
 বিধানন্। পরিঘট্য ইতি নিঙ্র্নিঃ ঘটাদিসাদ্ধুস্থা কৈ ককর্ত্কয়োরিত্যাদিনা জ্বা প্রাদেশিট্ সমাদে ইতি জ্বাস্থানে যট্। প্রবিভিদ্যা ইতি
 প্রপ্রাভিদির বিদারণে যন্পুকি কতে প্রকৃতিবন্ধিগুণাদিন্টেতি দিলঃ
 গুণশ্চ নিঙ্হলম্বস্থাটি ন গুণশ্চ রফলোইনি চেতি প্রকৃতৌ গুণনিযেশঃ।
 ব্রুষোপান্তাদিতি কিম্? প্র্যাচ্য হ্রোপান্তামিঙোষচ্যুয় ইতি ন কৃতং
 বৈচিত্রার্থন্।
- (৯৫)। আপ্নোতের্বেতি পাঠঃ পূর্ব্ববিষ্টান্ধারালিপিকরপ্রমাদক্বতঃ।
 আপো বেতি দ্রন্থাং তেন আপু ঝাপ্থাবিতি অস্ত স্থাদেঃ আপ্লন্তন ইতি
 চুরাদেরপি গ্রহণং ভবতি। এতর্মাসকারস্ত চান্দ্রাদীনামপি সম্বত্তম। আপ
 উক্তরে বিহিত্ত পিঙঃ স্থানে যচি পরে গুণো বা ভবতি এচঃ স্থানেহয়া-

ab । ' शार्यामखायः भनामाठि ।

(गार्श्विनः (गा व्यक्तिनः गराविनम्। गटवचतः गरीचतः।

৯१। हैट्स निंज्या

भरवस्तः।

৯৮। অকে বাতায়নে।

গুবাকঃ ৷

२२। न शांगाला

গো অকং গোহকম্।

দেশদ। অধ্যাশ্যেতাক ৰ ভ্ৰতি। নাকাপো বিহিতো পিঙ্কিন্ত ইঙঃ ধাতোঃ। প্ৰাপ্য ইতি শিঙ্লোপোহশিতাদ্যটীতি শিঙ্লোপঃ।

- (৯৬)। গোশকন্ত ওতঃ স্থানে পদাদিভূতেই চি পরে অকারান্তাবা-দেশো বা ভবভি। অবৈশিদানাদেবা কার্মেরাইর্নাদেশ ইভি কভ্যত এব তথাপি স্টুত্তইদার্থ ইন্দ্র মন্দ্রিয়াং স্থপ্রতীত্যর্য্। অচীতামুর্ভৌ প্রাপ্তাবাং বদচীতি কৃতিং তৎ গাদাবিতামুর্ভিশকানিরাসার্থন্ এতদর্থনেব বাপদমপ্যত্র গৃত্তন্। গ্রাজিনমিতি ব্লীতংপুক্ষং গোর্কা সন্ধিন্দ পদাদ্য-তীতি পক্ষে অলুক অস্কিন্ট। পদাদ্যটীতি কিন্ ৪ গবি।
- (৯৭)। ইক্রেইন্রশবে পরে গোশকসা ওতঃ স্থানে নিতামদন্তা-বাদেশো ভবতি। আরপ্তসামব্যাদের নিতামে সিংদ্ধ নিতামিতি কতং স্পর্তার্থম।
- (৯৮)। অকশনে পরে গোলন্দা ওতঃ ছানে বাতাংনে বাচ্যে নিভামন রাবাদেশো ওবতিঃ। নিভামিবানাদেব গোর্বাসন্ধিত পনাদ্যতীতা-স্থাপায়ং বাধকঃ। গাবাক ইতি গোরকীব ইতি তথপুরুষঃ অনেত্রার্থাদক ইতাং।
- (৯%)। সাক্ষে পূর্বে, প্রাক্তরে বাচ্যে গোলবস্য ওক্তঃ স্থানেহদন্তা-বাদেলো ন ভবতি অবাদেশে নিবিদে গোর্কাসদিশ প্রাথানীতি বা অসমিঃ পক্ষে এভান্তে ইত্যাপুক্। নেমাঞ্চামিতি অকমিলিয়া অবমা গোরিবাক্ষি বন্যা ইতি সামান্তাং সম্বাক্ষিকামিতি বহুতীয়ে টাঃ প্রাণ্যক্ষ ইতি কিন্?

় ১০০। প্রদারিতার্থকী **শক্যার্থকিকিশ**ক্তরি ন যঙ্যেতঃ।

নেয়ম্। ক্র্যাদেন্ত। ক্রেড্ং প্রসারিতং ক্রম্যাং ক্রেড্র্থ শক্ষে ক্ষাঃ ক্রেড্রং ক্ষয়ঃ।

১০১। পদান্তে যবোলুখা।
হপ্তিঃন্তং পদম্। অচি পরে পদান্তে বর্ত্তমানয়োর্যকারবকার্য যোলুখা ভবতি। ও আহুঃ তয়াহুঃ তস্মা ইদং তস্মায়িদর্ম।
অব্যয়মার্চকাণঃ অব্য অন্তি অব্যয়ন্তি।

বদা অক্ষণকঃ শকটাদৌ বৰ্গতে তঞ্জ বিকল্প এক মধা সচাৎ গোহকঃ গো ক্ষকঃ গৰাকঃ।

(> ০০)। জি ইতি জয়ে জিল্ অতিভবে বা কি ইতি কি কয়ে কি
নিবাসগত্যোঃ কিব হিংসায়ামিতি বা। প্রসারিতার্থং জীধাতুং শক্যাথে ।
জিকী থাতু চ বর্জয়িষা বঙি পরে একারস্য স্থানে জয়াদেশোন ভবতি।
নেরমিতি বঙ্ জীঞো বিনিময়েছর্থঃ স চ জলজার্মানাদানাভ্যাদেব ভবতি।
বদা তু প্রসারিতার্থত ধাত্যাদের্কাচকভদ; জেয়ানিতি বদা তু স এবাদানস্য
তদা ক্রেয়ং ধাত্তমিতি। জব্যঃ কব্য ইত্যক্র 'শক্তমাতর্থকেরভ্তার্থঃ জিধাতুঃ
কিধাতুণ্চ অভএবাহ জেতুমিত্যাদি অক্তর তু কেলা দোবাঃ কেয়ং পাপন্।

বালাযা**নাচক্ষণঃ বালা অ**স্তি বালায়ন্তি বট ইদং বটবিদং অসা । ইন্দ্রঃ অসামিক্সঃ। স্থুক্ষবৃশ্চমাচকাণঃ বৃক্ষ অস্তি বৃক্ষবস্তি।

১০২। নিত্যমু অব্যয়ে। ক উ পশক্তি ছা উ পশুতঃ।

उंकी अकारनी ह।

ক্রারমাচকাণঃ অব্যহসতি বৃক্ষব্দচমাচকাণঃ বৃক্ষহসতি। কাদৌ তু। অব্যক্ষরোতি বৃক্ষব্করোতি।

নুগ্যাদেন সন্ধিরিতাসন্ধিঃ। তথা ইদমিতি খৈমাদিত্যাদিনা ওস্থানে খৈ গাাদাবিতি শ্রানন্তরম্ ইদং শ্রং তদ্বির এব ভবভীতি মন্দিয়াং শকানিবাসার্থম্ উদাহরণাস্তরাণি দর্শয়তি। অব্যবস্তীতি অব্যরশন্ধায় ইত্যাদিনা ণিঙ্ অকারপুক্ কিপ্ কিন্দোলেতি পিঙ্লুক্। বালায়ামাচক্ষাণ ইতি বালাং মাতীতি রালায়াশকাং পূর্ববিষ্কিঙ্ কিপ্। বট ইদমিতি বটুনন্ধাং স্থং শুণীং সাবিতি গুণঃ হুখৈও ভ্যামিত্যাদিনা স্পুক্। অসা ইক্র ইতি আদসোদঃ সং সোলোচ্চেতি অনসোদকারস্য সোভবৃত্তি সোঃ স্থানে
প্রকাবক্ট। বৃক্ষবৃশ্চমিত্যাদি বৃক্ষং বৃশ্চতীতি প্রস্টুচ্ছেদনে কিপ্ বশাদেকশাদিরিতি বৃশ্চাদেশঃ পিঙাদি পূর্ববং।

- (১০২)। উপলে অব্যয়ে গরে পদান্তে বর্তমানরোর্থক বিবার-রোনিতাং লুগ্ ভবতি। বিধানসামর্থাদের নিতাং লুকি সিদ্ধে নিতাগ্রহণং স্পান্তবিং ক্লায়বভাদ্ধি শলোহর্থং স্পান্তী ভবতি উত্তরার্থক্ত ন সম্ভবতি পৃথগ্-। বোধনামর্থ্যাদেবোর্ত্তমান্তি লক্ষণং নিতাং ভবিষাতি। বিকর্ববিধানে হি শলাক্তে ধবোরকানে চ লুমেতি স্তবং কুর্যাং। ছা উ পশুত ইতি বি-শক্ষাদে। বেরিদ্বিতীকারস্যাকারঃ।
- (১০৩)। বর্গানিছরশব্দাঃ কাছিঃ ন কাদিরকাদিঃ ইজি পর্নিল দানেন নঞা হলো গ্রহণং নম্বচঃ। পদান্তে বর্তনানরোর্থকারবকাররোঃ কাম্মিকতে স্থানি প্রে নিত্তাং মুগ্ভব্ডি। গাদাবিতি ন ক্তং বৈচিত্যার্থম্।

১০৪। অনতো ন ভাব। শুভংযামাচকাণঃ শুভংযন্তি গুভংযুহসতি। শুনীরুল্চমাচ-

কাণঃ শমীবস্তি শমীব্হসন্থি।
১০৫ । গোশ্চ যুতো।
গৰ্যুতিঃ।

১০৬। অনাদ্যোহলীতি কাতন্ত্রম্।
উমীশমধ্যারাড়ঃ অধ্যুঃ অধ্যুশ্চাসাবিন্দুশ্চেতি অধিবন্দুঃ। সাধোধা
ক্রীঃ সাধবী তত্তা উদয়ঃ সাধ্যুদয়ঃ পটো উ আগতঃ পটবাগতঃ।
আদ্যোস্তা। স্বিচ উশ্চ যূ তয়োরর্থঃ যুর্থঃ। উশ্চ স্বিচ ব্যোত্রের্থঃ ব্যথঃ।

১০৭। এঙেহিতঃ। পদা**ন্তে এঙ উত্তরস্থাতো লুগ্ভবতি।** তেহত্র কোহত্র

^{(&}gt; • ৪)। অদিতি হ্রেক্ষ্য দীর্বসাপি প্রহণম্ অক্রাবাদাকাবা-চ্চান্ততঃ পরমোর্থকারবকারমোল্গ্ন ভবতি। অতঃ পদাত্তে ধলোল্থেতি ন কৃতং বৈচিত্রার্থম্।

⁽১০৫)। গোশকসম্বন্ধিনে।বঁকাররকায়োয্তী পবভূতায়াং ন লুগ্ভবতি,।

⁽১০৬) । নৈতৎ কাতন্ত্রলক্ষণং কিন্ত তল্পবন্থিতমতোপদর্শনমেতৎ পদান্তে বর্তমানরোর্যকারবকাবয়োঃ পদস্যানাদিভূতরোর্থলি পরে লৃগ্ ভবতীতি কাতন্ত্রম্। সামান্তেলু বিধানেনাভোহনত চ পরয়ে। ইবোরনেন লৃথিধানং ভন্মতে অবাহসভীতাদাবপ্যনেনৈব লোপঃ অবায্করোভীভগাদে।
তুন ভবতি। অখোষে ন ভরতীতি নিবেধাৎ বর্গাণাং প্রথমন্থিতীয়ঃ
শবসাশ্চাবোষা ইতি কাতন্তব্যবস্থা। উমীশমিজ্ঞাদি উনিত্যস্যার্থং বাচন্
কার সশমিতি অধ্যুবিতি বিতীয়র্ম অভ্যাদেং ক্রোন্তানিতি তৎপুরুষঃ।
ভাধিবলুরিত্যত্র বকারো লুপ্তঃ সাধ্যুদয় ইভাত্র তুবকারঃ।

^{(&}gt;•१)। পদাত্তে ইতাত্ত্বর্ততে অর্বাদেশয়ো: প্রাপ্তয়োর্বিধানম্। তে২ত্তেতি অন্যানিসর্মনামবহুতা ইত্যাদিনা সপ্তম্যাঃ স্থানে আদেশঃ

১০৮। ঙদিঙসোশ্চ। ক্ষােং ধেনােঃ।

১০৯। গোর্কাসন্ধিশ্চ প্রদান্যতি। গো অশ্বো গোহসোঁ গবাশ্বম্।

১১०। अभारती।

ওমাদে পরে পদান্তেহতো লুগ্ভবতি। শিবায়োঁনমঃ জারো-ক্ষারঃ।

ইণাদিতি ইদমোহং। কোহত্রেতি কিং কস্তাদৌ কুশ্চেতি কঃ অপদান্তে তৃ জয়তি অত ইতি দীর্ঘস্যাগ্রহণং তেন তে আসত ইত্যত্র ন ভবতি প্রতিবিধানেহিপি পূর্কনিমিস্তকার্য্যং ভবতীতি পূর্কমেব ব্যবস্থিতং তেন হেন্ত্রিমিত্রেত্যত্র প্রবর্জাং গুরুক্রমেণ বেতি প্লুতেহিপি কৃতে দুগ্ভবতি।

(১০৮)। অপদান্তার্থং বচনমূ। এঙঃ পরসা ওসিঙ্সোরতো লুগ্-ভবতি। ওসিঙসোঃ সম্বন্ধিনা অতা সহ এঙঃ সম্বন্ধোন তু সাক্ষাদিতি ক্রমোহত্র ন ভবতি।

(১০৯)। পদান্যতি পরে গোশন্যা এঙাংসন্ধির্মা ভবতি। প্রে গোর্ঝানস্তারং পনান্যটাতি অনস্তাবাদেশঃ উভরতাক্তপক্ষে এঙাংওঁ ইত্য-কারলুক্ চকারস্ত লিপিকরপ্রমানাৎ ক্বতঃ। তিমন্ সতি অতো লুগণি বিকরেন স্যাৎ এবং হলস্তাবাদেশোহণি পক্ষে স্যাৎ। গোহবৌ গো অব্বৌ ইতি বাজনবৃত্ধপক্ষিমৃগপশুধাগুভ্নানি ইতি পাক্ষিকরীবদৈকঘাভাবপক্ষে পক্ষান্তরে তু গোহর্বং গো অব্বমিতি। অবাদেশপক্ষে তু গ্রামানির্ম ব ইতি নিতাং ক্লীবদৈকস্বরোবিধানাৎ গুরারং ন তু গ্রামানির্ম ব ইতি নিতাং ক্লীবদৈকস্বরোবিধানাৎ গুরারং ন তু গ্রামানির্ম ভালি ন নীর্ব-গ্রহণং তেন নিতাং গ্রাসনং পদান্ত ইত্যন্ত্রাবেবার্থাক্ষেপাল্লক্ষেং পদান্য-ভাতি ক্লন্তং স্বাসনং পদান্ত ইত্যন্ত্রাবেবার্থাক্ষেপালক্ষেং পদান্য-ভাতি ক্লন্তং স্বার্থন্।

(>>)। ঐলেচোংতেতি প্রায়ে বিধানন্।

['] ১১১। আঙি। কদা আ উঢ়া কদোঢ়া উপ আ ইহি উপেহি।

১১২। এবে চানিয়োগে। অদ্যেব ইহেব যথেব তথেব। নিয়োগে তু। অদ্যৈব গচ্ছ ইহৈব তিষ্ঠ। ইদমনাৰ্ধমিত্যেকে।

>>७। भकारमत्रक्षारमी।

শকস্তান্ধ্র: শকন্ধ্র: কর্কন্ধ্র: কুলট। সমর্থঃ সমনন্তরম্।

(১১১)। আঙি পরে পদান্তেহতো লুগ্ভবতি। কদেতি কিং বৎ দকৈকান্তাৎ কালে দা সো বা সর্মস্যেতি দা উঢ়েতি পূর্দ্বৰৎ আঙা সহ গুণেন ওঢ়েতি। উপেহাতি ইন্ গতৌ আঙ পূর্ম লোট্ হি তথৈব গুণ:। আঙহনাঙোরেকারোকারাদেশং আঙ পদেনৈব গ্রাহুং ক্তরিধানসাম-র্থ্যাৎ কেবলে আঙি অকারলোপে সতি স্থাবিধানমনর্থকং স্যাৎ। নত্র কিমর্থম্ আঙি পরে লুখিবানং পূর্দ্ধেণ সহ প্রথমং দীর্বে কতে অতঃ পরেণ সহ গুণ: করণীয়া নৈতৎ সম্ভবতি ধাভূপসূর্গয়োঃ সম্বন্ধঃ জুন্তরঙ্গ ইতি প্রথমং গুণেনৈব ভবিতব্যং তত ঐচঃ স্যাৎ অথবা আ উঢ়া ওঢ়েতি প্রথমং ব্যুৎপাদ্য মদা কদাশকেন সহ সম্বন্ধা বির্ধীয়তে তদা ঐক্তেব স্যাৎ।

(১১২)। এবশক-চাদিগণপাঠাৎ অব্যবং নাম্মপদার্থে শকামকরণে চিতি নিষ্ণেৎ স্থপোহবায়াদিতি ন বিভক্তিপুক্ নিয়োগো নিয়োজনং ততোহস্তত্ত্ব বর্ত্তমানে এবশকে পরে ক্ষতো পূগ্ তবি । ইদমনার্থমিতি ইদং লক্ষণং অনার্থমিতায়ে। অস্তে তু নিয়োগাদম্ভক্র সাদৃশ্র এব সম্ভাবনায়ামেব এবে পরেহতোলুগ্ তবতীতাচক্ষত্তে তথাচ উদ্ধাহরম্ভি সাদৃশ্রে চর্মেব ক্ষত্ত্ব; শালেব শাথেতি। সম্ভাবনায়াং তদদোবাভূৎ। অম্ভক্র তু। ইত্বেব বয়ং ধীয়াঃ অপদোবাইতর বিগুবসা গুণঃ। নক্ষ্ম নিয়োজনং প্রতীন্মতে বথা অদ্যৈবংগচ্ছেতাত্র গচ্ছেতি নিষুক্তো লোট্।

(১১০)। অন্ধানৌ পরে সকাদেরতো বুগ্ ভবতি। সকস্য অনুঃ পকল্প: কর্কস্তান্ত: কর্কন্প: কর্কপ্রনৌ স্পন্ধকৃতি রা। মথাকথঞ্চিছ হং-পত্তিরেষাং নম্বত্রাবয়বার্থাবগমঃ। কুলানি নানাগোত্রাণি অভিসারার্থা ক্রিকার্থাং বা অটতীতি কুল্টা প্চাদেরে তি ৬ঃ। কুট্বিশাদস্ভী ভিক্কী ১১৪। সীমন্তঃ কেশ এব। ইলস্ত ঈষা হলীয়া। লাঙ্গলস্ত ঈষা লাঙ্গলীয়া।

১১৫। মনসং সলোপশ্ট। মনস ঈষা গমনং মনীষা।

১১৬। অনিনেধধাত্তৈতি প্রাদেঃ। শ্রিজতি পর্যোখসি। ইনেধোস্তা তিপৈতি প্রৈধতে।

চোচাতে সমোহর্থোহস্যেতি সমর্থঃ। অপৃথগর্থ ইত্যর্থঃ। সমনস্তরহস্যোত সমনস্তরম্।

(১১৪)। সীমন্ত ইতি কেশবিষয় এব ভবতি। অন্যত্র সীমাস্তো আমস্য। ঈষেতি ঈবগৃতিহিংসাদ্ধনেরু শুর্কাদিহলস্তাদদীপাদেরিতি ক্রিয়া-মাৎ। তালবাশকারপাঠস্ত বছমু পুস্তকেরু প্রমাদক্কতঃ।

(১১৫)। ঈষাশকৈ পরে মনসং সকারস্যাত ক লুগ্ভবতি। মনীষাশব্দাদেব নাক্ষইত্যাদিনা পিঙ্ মনীষিতাদয়ঃ। অত্রৈব ধাতৌ হললাঙ্গলমনসামীষায়াং পররপং বক্তব্যম্। হুলীষা লাঙ্গলীষা মনীষেতি ভীমষেণঃ
শকদ্বং কর্কল্পঃ কুলটা সমর্থঃ সমনস্তরং সীমস্ত ইত্যেতানি উদাহরণানি
ভাষ্যে বামনরত্তৌ চ দর্শিতানি আকৃতিগণ্যাঞ্চান্ত নোক্তম্ অন্তে তু গদ্ধর্মশুদ্ধোদনসমশনাদ্যপাত্রোদাহরন্তি। বৃত্তিকারন্ত সংগতমশনেন সম্পন ইতি
তৎপুরুষে সংগতং সংপ্রাপ্তম্ অশ্বং যন্মিন্ কালে ইতি বহুবীহৌ চ
বক্ষাতি।

(১১৬)। শ্বন এধ ব্যতিরিক্তশ্র ধাতোরেন্ডি পরে প্রাদেরতো লুগ্-ভবতি প্রেজতি পরোধদীতি এজ কম্পনে ওয় নায় প্রায়্ বায়্ বায়্ বায় পালমর্থয়োঃ অথবা গতার্থক্ত উথধাতো রূপম্। উপৈতীতি ইন গড়ো প্রেম্বত ইতি এম বুদ্ধৌ অমুদান্তমাদান্তনেপদম্। উপেতব্যমিতি তু উপপূর্ব ইগতাবিতাস্য প্রয়োগ অনিনেধেন্ডি প্রাদেরিতি ক্তেম্পি ইনেধধান্তোঃ পর্মাসনকা সদৃশক্র ধান্তেন্তি পরেম্বর্গ ভবিষ্যতি। কিং ধাতুগ্রহণেন দ তৎ ক্বতং যেনেঙাদিধাতুনা প্রাদেঃ সম্বদ্ধঃ গ্রেরেন্ব পরে প্রাদেরল্গ্ মথা ক্রাৎ জেনেহ ন ভবতি। প্রগতা এককা ম্বাৎ স প্রৈমকঃ। ১১৭। নামধাত্বেঙি বা। উপেকীয়তি উপৈকীয়তি প্রোষধীয়তি প্রোষধীয়তি।

১১৮। ওচ্চোরে: সমাসে বা। বিষোষ্ঠঃ বিষোষ্ঠঃ জায়োষ্ঠঃ জায়োষ্ঠঃ স্থূলোতুঃ স্লোতুঃ।

১১৯। মোহনচ্যক্ষারঃ। পদাস্তে মকারস্ত স্থানেহচোহতাস্মিন্ পরেহকুষারো ভবতি। দেবং পশ্য। অনচীতি কিম্ ? দেবমিমম্।

১২০। হে নম্যবলপরে নম্যবলা বা।
কিং-হুতে কিন্হুতে কিং-কালয়তি কিম্কালয়তি কিং-ছঃ কিয্ছঃ
কিং-হ্বলয়তি কিংব্হবলয়তি কিংহলাদ্য়তি কিল্হলাদ্য়তি।

⁽১১৭)। নামধাতোরেঙি পরে প্রাদেররুখা ভবতি। উপেকীর-তীতি একমিচ্ছতি একমিবাচরতি বা তুল্যাচার ইত্যাদিনা ঈয় অয়োরিত্য-কারল্ক্। প্রোষধীয়তীতি ওষধীশব্দাদীয় হলিজ্ভ্যামিতাব্দিনা ঈকার-ল্ক্ সনীন্দীর্ঘ ইতি দীর্ঘঃ। প্রোন্ধারীয়তীভাত্র অনেন ত্যক্তপক্ষে ওমা-দাবিত্যকারল্ক্ অতঃ পৌক্ষারীয়তীতি ন ভবতি।

⁽১১৮)। ওর্ষ ওতু ইত্যেতরো: পররো: সমাদেহতো লুখা ভবতি।
অসমাদে তু তবোষ্ঠ: ছয়েতুল প্রিঃ প্রকৃষ্ঠ: ওর্ফোহতে প্রক্রেছিয়: প্রেমী
সফরী হাত্র তু নিতাম অকারলুক্ বছলবচনাৎ শকাদেরাক্রতিগণভাষা সন্নিহিতালাভে ইতি দক্তিবাকারাস্ত লুখিধেয়: তেনৈব ওঠোডো: সমাদে
বিধিরয়ম্। শ্রুভত্বন তদ্যৈব প্রথমবৃদ্ধিসন্নিহিত্থাৎ তেনেহ ন ভবতি হে
বিপ্রেষ্ট্রণস্তে, হে রাজভৃত্যোতুঃ শ্রেষ্ট্রেড।

⁽১১৯)। অনচীতি পর্যাদাদেন নঞা তেন আচ্সদৃশে হলি পরে ইভার্থ:। এতদেব ব্যক্তীকর্ত্বুং দেবং প্রপ্ত ইত্যাদাহতং হলীতি ন কতং বৈচিত্র্যার্থম্। দেবং পশু ইতি লোপোহণমোহত ইত্যকারলুক্ অধ্যাতুদ্ভো হেরিতি হিলুক্। ইমমিতি লোমোহচীতি দশু মঃ পদাস্ত ইত্যেব গম্যতে।

⁽১২০)। নম্যবলা: পর্ভূতা যদ্দিন্ ছকারে পরে প্রান্তিত মকারত স্থানে যথাক্রমং নম্যবলা বা ভবস্তি। হবলাং সাত্নাসিকা

>>>। श्रुरमाश्रमास्छ है। भूरमः श्रुरमा भूरकाम् श्रुरनिष्मः। .

১২২। त्राजमृशयाजातनी मञाहै।

১২৩। উদব্যয়বকারে বা।

্বিং বত্র কিংম্বত্র কিং বিভি কিম্বিভি।

নিরনুনাসিকাণ্চ ভবস্তি, ইহ তু সাম্নাসিকানেমের বিধানম্। কিং ক্তৃত ইতি হলশ্চামোলুগিতি স্থলোপঃ, ক্তৃঙ্ অপনয়নে। হবল হ্মল সঞ্লনে ঘটাদিঃ। ফ্ ইতাব্যয়ং গতদিনমুভিধতে। ফ্লাদী স্থপে চ।

(১২১)। পুমস্ ইত্যস্য পদান্তেহপদান্তে চ বর্ত্তমানস্যানিটি পরে মকারস্তাহ্পারো ভবতি। উত্তরস্ত্রে বাগ্রহণাৎ অত্র বেতি নামুবর্ততে, তথাচ উভয়োর্ন্সিকর্মরোর্মধ্যে যে বিধেয়ান্তে নিতাং। পুংস ইতি কাদৌনসাদাবিচিনত ইত্যকারলোপে রুতে অমুস্বারং। পদান্তে পূর্ক্সেণের সিছে বিধানসামর্থ্যাদেবাপদান্তে ভবিষ্যতি কিমপদান্তে চেত্যনেন তৎক্রতং স্পত্তার্থং ব্যাখ্যানগম্যাদ্ধি শান্দোহর্থং স্পত্তো ভবতি। চুকারং কিমর্থং পদান্তে পূর্কেণ সিদ্ধ এব অনেনাপদান্তে ভবিষ্যতি, কিন্তু পদান্তে, অনুস্বার-বিধিং বাধিছা অপদান্ত এব ভবিষ্যতীতি শহা স্যাৎ তর্মিরাসার্থন্টকারং তেন পুংশ্য্যা ইত্যাদাব্রপি ভবতি।

- (১২২)। রাজসুরং মাগবিশেষ: তেন ইষ্টবান্ রাজসুর্যাজী করণাদ্-যজ ইতি ণিনস্ত:। রাজসুর্যাজ্যাদৌ বাচ্যে সংপূর্বাৎ রাজ্ দীপ্তাবিত্যস্থাৎ কিপি সতি মকারক্তাসুষারাভাবো নিপাত্যতে। যেনেষ্টং রাজসুরেন মণ্ডল-সোধরণ্ট য:। শাস্তি মণ্ডাজ্রয়া রাজ্ঞ: স সম্রাড়্চাতে বুধৈ:। সম্রাড়িতি উপপদে প্রাদৌচেতি কিপ্ ভ্রম্জাদান্তেত্যাদিনা কন্ত মং বস্ত ইতি টঃ প্রথ-মৈকব্চনম্ত্রাতন্ত্রং তেন সম্রাজী সম্রাজঃ সাম্রাজ্যমিত্যাদি।
- (১২০)। উকারজাব্যুস্য স্থানে বকার: উপব্যর্থকার: তদ্মিন্ পরে মকারস্ত স্থানে অসুসারো বা ভর্তি। নিজ্যে প্রাপ্তে বিভাষেরমূ।

ঠ ২৪। কৃত্যাদে সমাসেহবশ্যমাদে:। সমাসে সতি কৃত্যান্তাদে পরে অবশ্যমাদেম কারত দুগ্ভবতি। কৃত্যান্তব্যঙ্ অনীয়ঙ্ণ্য যঙাদয়:। অবশ্যকর্তব্যং অবশ্যক্ত্যম্।

১২৫। প্রাদিপ্রাদ্ব্যবধানে চাবশ্রমঃ।

অবশ্যাভ্যুপগন্তব্যম্ অবশ্যপ্রাদ্রভাব্যম্ অবশ্যাক্সীকরণীয়ম্। সমাস্
ইতি কিম্ ? অবশ্যং কর্ত্ব্যম্ অবশ্যং বক্তব্যম্। তথাচ সম্বন্ধামু ।
ভবোহবশ্যমেষণীয়শ্চ লিঞ্জিন ইতি ভট্ট্বার্ত্তিকম্। ময়ুরব্যংসকাদিয়াৎ সমাসোহত্র বিকল্পঃ।

কিম্বিতীতাাদি পূর্বমেব সাধিতম্। অব্যয় ইতি কিম্? ওরাক্তির্বাক্কতিঃ কিং বাক্কতিঃ।

(১২৪)। যদি সন্নিহিতথাদমুখার ইতাদুবর্ততে তদা বিধানমনর্থকং স্যাৎ পূর্মবোগেণৈর দিন্ধান্তখান ও কল তাপিকারাল গোবালামবর্ততে। ধাতোঃ পরে কতাদীনাং বিধানাদবশ্যনাদেঃ কতাপরতা ন সম্ভবতীতি কতাাস্থাদাবিতি বাচকার। কতাসংজ্ঞায়া অলক্ষাৎ কে কতাাইত্যা-শক্ষামানহ কতাাস্ব্যাভ অনীয়ভ্ পা মন্তাদয়ঃ আদিপদেন ক্যপ্রতায়ক্ত গ্রহণং এতদর্থমের ক্যপ্রতায়ান্তং দিতীয়োদাহরণং দর্শিতবান্। অবশ্যকতামিতি হহাদের্কেতি কঃ।

(১২৫)। সমাসে প্রাদিভিঃ প্রাত্রাদিভিশ্চ ব্যবাদ্থেপি ক্বত্যাস্তাদৌ পরে অবশ্রমো মকারশু পুণ্ভবতি। প্রপনাঙিত্যাদি শ্লোকেন প্রদীন্ প্রাত্রাদীনপি প্রাত্রাদিভূ ক্ষঞ ইত্যত্র দর্শয়িষ্যতি। যত্র প্রাদিব্যবারে কার্যস্কং ভৎসংহতৈরপি প্রাদিভির্ভৃতীতি হচনার্থং অবশ্রাভাগগস্করা-মিত্যদাক্ষতং ধাত্মোনোহঙ্গ ইতি মদ্য নঃ অবশ্রাদীকরণীয়মিতি অভ্তত্তাবে কর্তির্বি নিগবাদী চেতি চিঃ ভৎসংযোগে ঈ চ চ্যুস্তোহপি প্রাত্রাদিগণে দর্শিতঃ সনিহিতালাতে বিপ্রকৃত্তীং বিধিরপেক্ষত ইতি পরিভাষারাঃ প্রজনেব শক্ষণং জ্ঞাপকন্। অত্র সমাসবিধানাভাবাদসমাস এবারং লোপ ১২৬। তুম্সমোঃ কামমনসোঃ I

পদ্ধকীম: হস্তুমনা: সকাম: সমনা:।

১২৭। সমস্ত তহিতয়োর্বা। সততং সম্ভতং সহিতং সংহিতম।

১২৮। মাংসস্থাতো ঙনঘণস্তে পচে বা। মাংসপচনং মাংস্পাচনং মাংসপাকঃ মাংস্পাকঃ। এতৎ বামন-রত্তো দৃশ্যতে।

ইতি কেণাঞ্চিত্ৰতং তদ্যুক্তম্ এতদৰ্থমেৰ বাৰ্ত্তিকোপন্তাসঃ কৃতঃ ময়ূৰবাংস-কাদিভাৎ সমাসো বিকল্পচাত্ৰ।

(১২৬)। সমাসে তুম্প্রতারাস্তম্ম সম উপসর্গস্য চ কামে মনসি চ পরে মকারম্ম লুগ্ভবতি। গস্ত কামোহস্যেতি হন্তং মনোহস্যেতি বহু-ব্রীহিঃ। অন্মাদেব সমাসে লুখিধানাৎ বিশেষণবিশেষ্যভাভাবেহপি বহু-ব্রীহিঃ। বত্র বত্র বিশেষণবিশেষ্যভাভাবেহপি বহুব্রীহি দূ ক্যতে তত্র তত্রাপোতর্দেব জ্ঞাপকম্। সংগতঃ সংপ্রাপ্তঃ কামোহস্যেতি সংগতঃ সংপ্রাপ্তঃ মনোহস্যেতি সংগতার্থেন সম্পক্ষেন বহুব্রীহিঃ সম্গর্থেন বা কামমনসোরিত্যত্র অন্ধান্যন্ত্রাক্তরাক্তলব্দ্দর্মিতি মনঃশব্দ প্রাণ্ডাবে প্রাপ্তে বদম্যথাকরণং তেনাত্র লক্ষণে কামিন ইত্যাচার্য্যভাতিপ্রায়ো লক্ষণীয়ঃ। অতঃ ক্রমঃ ক্রমবতামঙ্গমিত্যক্ষাপ্তির ব্যভিচারঃ। সিদ্ধান্তান্তর্ম ভিসিঙ্গো-শ্রেত্যবিত্রবাক্তম্।

(১২৭)। সমাসে সমো মকারস্থ ততে হিতে চ পরে লুখা ভবতি।
সত্তমিতি তর্শবিস্তারে ক্তঃ তথোল্ডেডাদিনা পঞ্চমলুক্। সহিতমিতি
ধাঞ্চধাতোঃ ক্তঃ ধাঞাদের্হ্যাদিঃ কিন্তে ইতি হিরাদেশঃ নিত্যং কুপ্রাদেরিতি সমাসঃ সত্তসহিতশকরোত্র ক্লিণাদিখাট্যবি ক্তে সাততাং সাহিত্যমিতি। সম্ভতসংহিতশকরোক্ত ভ্রাভিধানাৎ ট্যাণের ন সম্ভবতীতি
ভাষ্যম।

(;১২৮) সমাসে মাংসশক্তাকারসা ওনতে ঘণতে চ পচি ধাতৌ পরে পুয়া ভবতি। মাংস্পাক ইতি প্ংসিঘণ্ কারকে চেতি ঘণ্ অক-বর্গাদিত্যাদিনা চন্ত কঃ ক্যাদেরাফ্রতিগণছাৎ বিদর্গাভাবঃ ব্রিত্তপুক্ষঃ। ১২৯। স্থান্তজ্যেরুদঃ সম্<mark>ত।</mark> উথিতঃ উত্তত্তিতঃ।

১৩০। স্কন্দেশ্চ রোগে। উৎকন্দকো নাম রোগং।

১৩১। বর্গে বা তদ্বর্গান্তঃ। বর্গে পরে পদান্তে তকারস্থ স্থানে তদ্বর্গান্তো বা ভবতি। কাদয়েশ মাস্তাঃ পঞ্চ পঞ্চ বর্গাঃ। বং কর্ত্তা তঙ্কর্ত্তা বং ফেরুঃ হন্ফেরুঃ।

শ্বমাংসোলুক কপোতাৎ পচন্চ ক ইতি ণড়প্তে পাকশকে পরে মাংসপাক ইত্যেব ভবতি নতু মাংস্পাক ইতি। অবশ্বমাদেঃ ক্ত্যাদৌ লোপবিধানায় পাণিনিলক্ষণং বার্ত্তিকঞ্চ নান্তি কথমেতং প্রমাণমিতি চোছমাহ এতদামন-বৃত্তো দুখতে ইতি অপরস্পরাক্রিরাসাততা ইত্যেত্র স্ত্রে উপক্ষেপেণ বাম-নেন ক্সাপ্যাচার্য্যন্ত শ্লোকো দর্শিতঃ যথা, লুম্পেদবশুমঃ ক্তে তুম্ কাম-মনসোরপি সমো বা ততহিত্যোমাংসক্ত পচি যুড়্ঘঞোরিতিঃ বামনবৃত্তি-দর্শনাদেবাদৃষ্টাপি শ্বতিঃ প্রমাণ্ডেনাভ্যুপগস্তব্যেত্যভিপ্রায়ঃ। অতএব চন্দ্রোহপ্যেত্দর্থং লক্ষণানি প্রশীত্রান!

- (১২৯) ৮ উদ উত্তরজোঃ স্থান্ত ব্যুত্বতি। উথিত ইতি দোৰোমাস্থাং কিত্তেচেতি ইঙ্ ইঙালাকিলাকারলুক্। উত্তিত ইতি স্তম্ভঃ সোঁত্রো ধাতৃঃ প্ররোজকণিওস্তাং ক্তঃ। স্থান্তস্তোরিতি কিম্? উৎসাতা।
- (১৩•)। উন উত্তরত ফলির গতিশোষণরোরিভালা সপ্ত রোগে বাচ্যে লুগ্ভবতি। উৎকন্দক ইতি পক:।
- (১০১)। মকারস্ত স্থানে তদ্বর্গাস্তো বা ভবতি ইতি ব্যাকারো বছর্
 প্রকেষ্ দৃশুতে অনুস্থারবিধিং বাধিষা রিধিরয়মিতি ব্যাচক্ষতে তচ্চাযুক্তম্
 এবং সতি জংজপ্যতে চংচুর্যাতে ইত্যানৌ অপজতদহদন্শতন্জপশাহপান্তপঞ্চমান্তানামনুস্থারপদান্তবচ্চরফলোরহ্নচপ্রকৃতেরিতি দিরুকে। অনুস্থারে
 ক্বতে তন্ত বর্গপঞ্চমো ন স্থাৎ। তন্মাদনুস্থারম্ভদর্গাস্তো বা ভবতীতি স্কার্থো
 বৃক্তী ম্লপাঠিঃ। কে বর্গা ইত্যাশকার্যামাহ কাদ্যো মান্তা ইত্যাদি পঞ্চ পঞ্চ

३७२। नम्हिष्टर्श (न नम्हा

চবর্গ-টবর্গয়োঃ পরব্বোঃ পদাস্তে নকারক্ত স্থানে তদ্বর্গাস্তা ভবতি। লে পরে লশ্চ। প্রশাঞ্চিনোতি প্রশান্তীকতে ভবাঁ-ল্লুকঃ।

১৩৩। উপান্তস্থ বর্গে। , শঙ্কতে গুক্ষতি। অবর্গে তু। ইশ্বতি দিশ্বতি।

ইতি পদম্ভ শাক্ণ্যাভীক্ষয়োরিতি দ্বিক্ষক্তি:। কাদয়ো মাস্তা: পঞ্চ পঞ্চ ভূত্বা বর্গন্ংক্তকা ভবস্তি অর্থান্তদম্ভা এব বর্ণা বর্গাস্তা:।

(১০২)। প্রশাঞ্চনোতীতি প্রপূর্ম শমু উপশমে পঞ্চনান্তভাহন ইতি কিপ্ দীর্ঘ: ধারুমোনোহঙ্ঘে ইত্যাদিনা মস্ত নঃ চিনোতীতি চিঞ্ চয়নে বাদেম দিতি মং। দীকত ইতি দীক্ষ গতার্থ: অমুণান্তভাদাম্মনে-পদ্ম। ভ্রবাল্ল, ইতি ভ্রানিতি ভা দীপ্তো ডবতুর্ভাতেরিতি ডবতুঃ ডিবাদাকারলুক্ অহন্তাসন্তভাধাতোরিতি দীর্ঘ: মুট্টোত্যাদিনা মুম্ শুরু ইতি লুভ বিমোহনে জঃ ধোধাতুর্ঘাদিতি তথ্য ধঃ বর্গভাদিরিত্যাদিনা ভক্ত পঃ অপদান্তেত্যাদিনা পশ্ত বঃ।

(১৩০)। উপগতোহস্বাহপান্ত: ক্রান্তান্যর্থিত প্রানিস্মান: অব্যন্ত্রীভাবে তু ষষ্ঠাঃ স্থানে মঃ স্থাৎ। পদোপান্তস্ত নকারস্থ বর্গপুরন্ধানন্তবাৎ প্রকৃত্যপান্তস্থ গ্রহণম্। অস্তুসমীপস্ত নকারস্থ বর্গে পরে তদ্বর্গান্তা ভবতি। শক্ষত ইতি শক্ষি শক্ষান্নাই দিখার মৃ শুক্ততীতি গুনুক গুক্তে গুকি গ্রহে বাঁ। ইন্থতীতি ইনি ব্যাপ্তৌ অবং ব্যৱনীয়ন্ত্রান্তর্গান্তা বকারঃ বিন্বতীতি প্রমাদপাঠঃ। তত্র ধিঃ কৃষ্ঠ ধিনিক্রোান্তি ক্প্রভারে ধ্যাদেশে চ বিনোতীতি ভবতি ভক্মাং দিন্ব্ভাতি পাঠঃ ইনিদিবিধিনিজ্ঞাননার্থাঃ। নরাকাক্ষত ইত্যক্র কাক্ষিধাভোরিদিন্তার মি ক্রতেহস্তমনীপন্তাভাবাৎ নকারস্থ বর্গপঞ্চমো ন প্রাপ্রোতি। তত্মাত্রপান্তে ইত্যন্তর্গতিরিক্রোপলক্ষণং তেন উপাস্তাদ্যস্থাণি ভবতি অভএব উঞ্চিত্র্যতি ইত্যক্র নকারস্য ঞ্চকারঃ অথবা প্রথমং ঞ্কারং কৃষ্য স্থান্থাদেশাঃ স্থানিবং ক্র্পীতি ঞ্চকারস্য নকার

• ५७८। जनास्त्रयां भागातसूत्रातः। मःभनः ममःभि भिःखेः निःखं रःमि दःस्मः विवःमखं।

১৩৫। নিস্থপি। বিদি কিপ্ বিন্ম্ন তথা নিসি নিন্মু। অপৌক্ষিতবিধেরনপৌক্ষিত-বিধানং দুর্বলমিত্যমুম্বার প্রাপ্তে। সলোপং।

ষমত্যুপগমা উদ্বিশ্লেষ্ কথা ছীতানৈন বিশ্বক্তিঃ। উপান্তস্যেতি কিন্ ?

(১৩৪)। खर्णनांखमा नकांत्रमा भीको शंद्रश्च्याद्वा छवछि।

मःभनिमिछि मन्न मःभांत ममःभीछि ममानिम् मन्निमात्माछि ममात्नाविक ममानिम्न मन्निमात्माछि ममात्नाविक ममानिम्न माद्रशामिन्न क्ष्माद्र्या मुगानिविक ममानिम्न माद्रशामिन्न क्ष्माद्र्या क्ष्माक्ष्मा क्ष्माक्ष्मा क्ष्माक्ष्मा क्ष्माक्ष्मा क्ष्मा क्ष्माक्ष्मा क्ष्मा क्ष्माक्ष्मा क्ष्मा क्ष्माक्ष्मा क्ष्माक्ष्माक्ष्मा क्ष्माक्ष्मा क्ष्माक्ष्माक्ष्मा क्ष्माक्ष्माक्ष्माक्ष्मा

(১০%)। পূর্দ্ধলক্ষণেন প্রাপ্তোহন্ত্রার: স্থান পরে ন ভবতি বিন্ম নিন্ম ইতি বিদি অবরবে নিসি চ্মনে ইদিয়ায়্ম্ কিপ্ সপ্তমীবছবচনং মুপ্ লুগর্জোহন্ত ইতি দকারসকাররোলুক্ নক্ষ নিন্ম ইত্যত্র মাবৎ সকারলোপো ন ভবতি তাবদেব কিমিতায়মারো ন ভবতীতি চোল্যপরিহারার্ধমাহ অপেক্ষিতবিধেরিত্যাদিনা। নঘপেক্ষিতবিধিরেব কঃ যথাবিহিতে শিপ্তানাং পদানাং সিদ্ধির্ভবিত্ত সোহপেক্ষিতবিধিঃ অতএব শরম্ভি নহ্ছনিপ্রাণান্ত্র প্রক্রাপ্তিরিতি। বিন্ম ইত্যত্র স্প্রকাল্পর্বৎ কচিদিতি স্থায় দকারস্যাল্প্রব্রেহয়্মারো ন প্রাম্নোতি। নিন্ম ইতি সিদ্ধার্ম্ব করণীয়ং তদর্থক্রিয়মাণ্যেতদর্থমিপি ভবতি নোনাস্তম্যেতি নলুক্ ন ভবতি তত্র স্ভাবনাস্তম্য গ্রহণাৎ।

३०५। जन्हरी।

চবর্গ টকর্গায়েঃ পরয়োজকারত স্থানে চটো ভবতঃ। লে পরে লশ্চ। তচ্চকুঃ তচ্ছলং তজ্জিতং তজ বস্ধারঃ উদ্ব-উজ বৃত্তি উজ্জিবিষতি তট্টীকা তট্ঠকুরঃ তড্ডীনং অদ্ড-অড্ডতি অড্ডিডি, যতি তড্টোকতে তল্লুদ্ধঃ।

১৩৭। শণ্ডেচপঞাঃ। শণ্তে পরে তকারস্থ স্থানে চণতা ভবস্তি। তচ্ছেতে যাকছ: তন্তঃ তত্ত্বতঃ।

১৩৮। ত্রোর্বিসর্গোহ কস্কাদেঃ। অকস্কাদেঃ পদাত্তে সকাররেফয়োঃ স্থানে বিসর্গো ভবতি। পায়ঃ পুনঃ।

⁽১০৬)। তকারদ্য স্থানিনে। নির্দেশারকারঃ স্থানী নির্ভঃ চটরোরাদেশয়ের্বির্দেশাং তবর্গস্তাদেশোহপি নির্ভঃ লে লন্চেতাস্থর্বত
এব অত আহ প্রতিযোগিনং দৃষ্ট্র। প্রতিযোগী নির্বন্ধত ইতি পদাস্ত
ইতাস্থর্বত এব। উজ্ রতীত্যাদি প্রয়োগদর্শনাৎ তৎসাধনাকাজ্ঞারামপদাস্তয্যেতি চাম্থ্বর্ততে উভয়নির্ত্তৌ তৃত্তরত্র পদাস্ত ইতাস্থামুর্তিহ্ র্লভা
স্যাৎ। তচ্চক্রিতি ক্লীবে স্থনোরিত্যাদিনা প্রক্লতাবস্থানাৎ ন হল্রুক্
বর্গস্যাদিরিত্যাদিনা দদ্য তঃ তজ্জিতমিতি বর্গাদেরিত্যাদিনা চ্ন্যা জঃ
উজ্বতীতি উদ্ব উৎসর্গে অড্ডতীতি অদ্ভ অভিযোগে তভ্তীনমিতি
ভীঙ বিহারসাং গতে জঃ ক্লক্রেব্যোরিত্যাদিনা তদ্য নং প্রক্লত্যৈব ডকারঘর্ষবান্ অয়ং ধাতুরিতি শঙ্কানিরাসার্থম্ অড্ডিডিয়তীত্যুদাক্ষ্তং রবদনবর্জনমিতি নিরমাৎ সেঙ্নিঙ্ চাম্যোহজাদেরিতি দকারং বিপ্রিয়া ভীত্যনেম বিঃ
তড্তোকত ইতি ঢৌক গত্যর্থঃ। তুল্লুক্ল ইতি পূর্ববিৎ।

⁽১৩৭)। শণঞে পরে তকারদ্য স্থানে চণঞা ভবন্তি। ভচ্ছেতে ইতি শীঙ শ্বপ্নে শীঙঃ শের্থনিচেতি শে ভাবঃ। পক্ষে শশ্ছ ইতি ছকারোংশি স্যাৎ বাবছে ইতি বহুরার্থাৎ কারকত্বে শশ্ মাসল্যে ইতি শস্।

⁽ ১৩৮) ৷ ক্ষেত্যভাষ্টিতস্কাররহিত্তৈগ্রকণেশগাছিকরণৰ্ অভন্তৰ

১৩৯। ধশ্চ সজুষঃ।

জুবী কিপ্ সহ জুবা বর্ত্ত সজ্স্তাপস:। অকস্বাদেরিতি কিম্ ? কস্কঃ কুতঃ কুতঃ-আগতঃ কৌতস্কুতঃ তমস্বাণ্ডঃ অয়-স্বান্তঃ মেদস্পিণ্ডঃ ভ্রাতৃষ্পুত্রঃ শুনস্বর্ণ: দিবস্পতিঃ বাচস্পতিঃ বাস্তোম্পতিঃ।

১৪০। তমস্কাণ্ডাদিঃ সমাস এব। অস্বমাসে তু। অস্তি তমঃ কাণ্ডং পশ্য বাচঃ পতিঃ।

লুগ্যাদেন সন্ধিরিতি সাধিকার্যানিষেধাে ন ভবতি। কস্ক ইত্যাদৌ শ্বস্তাসকারস্য বিসর্গো ভবত্যেব তস্যাকস্থাদিস্থাৎ। অপদান্তে তু। অর্ক: গীযু

(১৩৯)। সজুষ: ধকারদা চ স্থানে প্লোপ্তে বিদর্গো ভবতি। সজু রিতি জুবী প্রীতিদেবনযোরিতাশাৎ কিপ্ সহ: সো বেতি সহ: স্থানে স: সজুষাশিষোশ্চেতি দীর্ঘঃ ষষ্ট ইতি প্রাপ্তে বিধানম্। কক্ষ ইতি কিম্শকাৎ यः किः कञ्चातो कूल्कि आत्मनः कत्र हेलातो अन्नार्रमार्थमः अथमः প্রাপ্তমণি বিদর্গং বাধিতা পদস্ত স্যাকল্যাভীক্ষ্যয়োরিতি দ্বিকৃক্তিঃ পশ্চাৎ অস্তাসকারস্য স্থানে বিদর্গঃ। কুতঃ কুত ইতি পঞ্চম্যান্তসিরিতি তসিঃ কিমঃ স্থানে কুরাদেশঃ পূর্ব্ববিদ্ধক্তিঃ কৌতস্কৃত ইতি কস্কাদিগণপাঠাৎ ভিন্নপদম্বেহপি আন্যপাদানাদাগতে ইতি টণুৎপত্তিঃ আদিপদে বুদ্ধিন্চ তদেশ্চেতাসনুক্ কৌতস্কৃত ইতি তদ্ধিতান্তম্য গণপাঠাৎ কৃত: কৃত আগত ইতি বাক্যে বিদর্গো ভবত্যেব। তমস্বাণ্ডাদিয়ু ষষ্ঠীদমাদঃ ভ্রাভুম্পুত্র ইতি খত পূর্ব্বোত্তরপদবিদ্যাযোনিসম্বন্ধ বাচিত্বে ইতি ষষ্ঠালুক্ কস্কাদেশেতি মুর্মন্তঃ। গুনস্কর্ণ ইতি ক্ষেপে যদ্যা ইত্যলুক্ নামি তু গুনংশেষপুচ্ছলাঞ্চল-ষেবালুথিধানাও। খকর্ণ ইতি ক্লকমিকংসেত্যাদিসতে কর্ণীশকোপাদানাৎ কর্বে পরে ন প্রাপ্নোতীত্যস্যাত্র পাঠ:। • বাচম্পতিরিত্যাদিত্রয়েহপি কচি-मञ्जाभीज्ञम्क् वाञ्चमकम्। भूरनिश्वरमाभिमानार नभूरमरक न निरंबधः बाजनः পতি:।

(১৪০)। তমন্ধাণ্ডাদিঃ সমাস এব কন্ধাদিঃ স্যাৎ। সাদ্যস্থ ইঙি ভক্ষ ভবে টণ্ অদির গিতীকারপুক্। ভান্তর ইতি নিশাদেঃ কঞ ইঙি কিবন্ত:। সভা ক্রী তত্র ভবঃ ক্রতুঃ সাভস্ক্রঃ। **অরক্ষীবঃ**• ভাক্ষরঃ কাংস্কান্।

১৪১। সংপুংশব্দে চ। সংস্কর্ত্তা পুংস্কাণ্ড: পুংস্কোকিল:।

১৪২। মুহুরিত্যেকে।

মুক্জামঃ।

টিঙ্। কাংশ্বানিতি দিতীয়াবহুবচ**নান্তন্য পূর্ন্নবিদ্দিরকৌ কানোদ্বিদ্বক্তে**-রিতি নকাবদ্য দান্ত্রারদকার:।

(১৪১)। সংপুংশকাবিতি হলি লুক্ পুংসোহস ইতাস্লুক্ সংপুংশকৌ চ কন্ধানী ভবতঃ। অসমাসেহপি বিধানাৎ স্প্রস্করোতি শব্দপোপাদানাৎ প্রকৃতিসন্ধন্ধিন এব সকারসা বিস্কৃতিবাহ প্রতায়সম্বন্ধিন দ্ধ ভবতোব প্রস্কৃতিসন্ধনিন এব সকারসা বিস্কৃতিবাহ প্রতায়সম্বন্ধিন দ্ধ ভবতোব প্রস্কৃতি সংপর্য পেলাঃ ক্লেজাভূষণে ইতি স্কৃতি তস্য ধাতুভক্তবাৎ পদা মুক্তাভাবেন বিস্কৃত্যপিরের নান্তি কিং প্রতিষেধন উচ্যতে সমো মং স্কৃতিলোকে। কেতি সকারে কতে বিস্কৃতি প্রতিষেধার্যং পাঠঃ। নকু ভবতু বিস্কৃতিথাপি শহসে শ্রমা ইতি স্কৃতিরা ভবিষাতি, নৈবং তস্য পাক্ষিকত্বন বিস্কৃতিথাপি শহসে শ্রমা ইতি স্কৃতিরা ভবিষাতি, নৈবং তস্য পাক্ষিকত্বন বিস্কৃতিথাপি শ্রমতে। প্রকৃতি স্কৃতিরা ভবিষাতি, নৈবং তস্য পাক্ষিকত্বন বিস্কৃতিথাকি শ্রমতে। প্রকৃতি স্কৃতিরা ভবিষাতি, নৈবং তস্য পাক্ষিকত্বন বিস্কৃতির কালো শ্রমানিক ইতি ক্রমার্যঃ কালো শ্রমানাবিচি চাত ইতি অকার্যকৃত্ব যথাক্ত লুগ্র্জোইন্ত ইতি সকারলুক্ ন ভবতি তৎ কাদৌ শ্রমানাবিচিত ইত্যক্তিব ব্যাক্ষাস্থানাম। অচঙ্গুপরে কালো প্রস্কার্যাপে অনুনাসিকো বেতি মকারস্যান্ত্রানাস্কৃত্তেঃ নায়ং কুসন্বন্যান্ত্রারঃ।

(১৪২)। মৃহ বৈচিত্তো ইত্যশাং বপাদের দৃষ্ট্রুস্প্রত্যরাক্তং মৃছরিতি পদং সাস্তমব্যমন্ মৃছদ্শব্দং কন্ধাদিরিত্যেকে। এক ইতি বিকরার্থং
তেন ইন্থসন্তো কথপফে ইতি নিত্যং কন্ধাদিত্বং ন ভবতীতি। ককারপপকারপরা এব পূর্বং কন্ধাদরে। দর্শিতাঃ তৎসাহচর্যাৎ মৃছঃশক্ষোহপি
ককারপরারপর এব কন্ধাদির্ভবিতি তেন মৃহর্গত ইত্যাদে। ন কন্ধাদিত্বম্।
মৃছ্ভান ইতি মৃহঃ কানোহস্যেতি বছবীহিঃ অথবা মৃহঃ কানরতে ইতি

্ ১৪০। অচ্যকাদো চ রাস্তঃ। পুনরিদং পিতর্যাহি।

২৪৪। ক্কমিকংসকুশাপাশকণীকুন্তপাত্রেষকুত্রপদস্থেনব্যয়াসন্তঃ সমাসে।
অয়কারঃ তেজকামঃ অয়কংসঃ কুশা বল্লা, অয়কুশা অয়স্পাশঃ
অয়কণী অয়কুন্তঃ অয়স্পাত্রম্। ব্রিয়াঞ্চ। অয়কুন্তী অয়স্পাত্রী ১
উত্তরপদস্তা পরমায়ংকারঃ। অব্যয়স্তা খাংকারঃ। অসমাসে
তু। পয়ং করোতি।

শীলিকামিভক্ষার্হিভ্যো বেতি ণঃ কন্ধাদেশ্তেতি মূর্দ্ধস্তঃ যে তু ন পঠন্তি তক্মতে বিদর্গে ক্বতে কথয়োর্জিহ্বামূলীয়ো বা বিশিগ ইতি জ্বিহ্বামূলীয়ঃ।

(১৪৩)। জাটি অকানৌ চ পরে রাস্তশৃদ্ধ: কম্বানির্ভবতি। পুনরিন-মিতি পুনরিতি রাস্তমব্যয়ম্। পিতর্মাহীতি পিতরিতি সমুদ্ধৌ ভুগংসাবিতি গুণ: শ্বকার: অর্। অচ্যকাদাবিতি কিম্? পিতঃ কুরু।

(১৪৪)। অনব্যয়েহসন্তো য উত্তলদহো ন ভবতি স সমাসে ক্রুকমিকংসকুশাপাশকর্লীকুন্তপাত্র ইত্যেতের পরেবু ক্যাদিঃ স্যাং। অর্কার ইতি কর্মণো পড়িতি পট্ এবং তেজজাম ইতি শীলাকানীত্যাদিনা তু গোহন্ত্র ন প্রাপ্তোতি কামীতি তত্র গিঙ্কুস্য গ্রহণাৎ অব তু ক্মীত্যণিঙ্কুস্পান্তং যকাচতুর্য পিবেতি যদা পাক্ষিকো গিঙ্নান্তি তলা কমেরণিঙ্কুতা। অর্কাংস ইতি ষ্টাতপ্রকাং কংসঃ চতুংষ্টিপলাত্মকমানবিশেষঃ। নতু ক্মেরের সো বলাদেরিতি সপ্রত্যেক্তর কংসাক্রেপলাত্মকমানবিশেষঃ। নতু ক্মেরের সো বলাদেরিতি সপ্রত্যেক্তর কংসাক্রেপলা ব্যুৎপাদিতঃ তৎ ক্মিগ্রহণেনের সিদ্ধে কিং কংস্থাহণেন হ তদেতজ্জাপয়তি উণাদরো ব্যুৎপরা অর্যুৎপরাশেত্তি অব্যুৎপত্তিপক্ষেক্ষাদিক্ষ ন স্যাৎ। কুশা বল্লা ইতি ব লোহবিকার ইত্যভিপ্রায়ঃ তত্ত্ব প্রেহক্ত্রাদিক্ষালয়ঃ-ক্ষাতি তবত্তি অর্ক্ণাতি অর ইব কুর্পবিসাা ইতি বৃদ্ধান্তি বৃদ্ধান্ত্যাদিনা জ্বিয়ামীপ্রত্যন্তঃ কর্ণাতি জীত্বিদ্ধান্ত পুংসি ক্

३५६। व्यथः नित्रमी शर्मः

ভাষস্পাদং শিরস্পাদম্। মৃয়ুরব্যংসকাদিহাৎ সমাস:। অসমাসে ভূ। অধ্য পদং পশ্য শির: পদে করোতি। উত্তরপদত্ত্বে ভূঁ। পরমাধঃপদং পরমশিরংপদম্।

১৪৬। ইম্রসন্তে কথপদে।

দির্পিকুণ্ডং যজুপাঠা। উত্তরপদক্ষে তু। পরমসর্পিঃকুণ্ডং পরম-বজুংপাঠা। অসমাসে তু। ভিষ্ঠতু সর্পিঃ পিক স্বমূদকম্ আস্তাং ষজু পঠ সৃক্তম্।

কয়াদিং অবংকর্ণ:। অরঙ্গুরু ইতি অন্যোবিকার: কুন্ত ইতি শাক-পার্থিবাদিয়াৎ সমাস: ষষ্ঠীসমাসো বা এবময়ম্পাক্রং। প্রায়ো নামগ্রহণে স্ত্রী-দিক্ষতাপি গ্রহণমিতি বক্ষাতি অত আহ স্তিয়াঞ্চেতি। অয়য়ুত্তী অয়ম্পা-ত্রীতি নদাদিয়াং প্রায়োহন্নবিবক্ষায়ামিতি বা ঈপ্রতায়:। পরমায়:কার ইতি পরমঞ্চ তৎ অয়েশ্চতি সদাদীনাং পূজামানৈরিতি কর্মধারয়: ততস্ত-দ্মিনিভোপপদস্ত চেতি তৎপুরুষ:। অসম্ভ ইতি কিন্ ং গী: কারঃ। নম্থ সম্ভ ইত্যেব ক্রিয়তান্ এবং সতি ভাংকরণমিতাক্রাণি স্তাৎ।

- (১৪৫)। সমাসে সতি পদশব্দে পরেহত্ত্বপদক্ষে অধঃ শিবসী শব্দে করাদী ভবতঃ। পদ ইতি স্বরূপসৈয়ে গ্রহণং ন পারিভাষিকস্য পারিভাষিকর্ত্রের পদগ্রহণুষনর্থকং স্যাৎ সমাসাত্রত্তেরের তস্য লক্ষ্মাৎ। উত্তরপদস্থ ইতি বৃত্তে প্রথমাদিবচনাস্তম্।
- (১৪৬)। ক থ প ফ ইতি পুরোহবায়মিতি যাবদন্থবর্ততে। ইসস্ত উসস্ত কাম্বরপদন্থ: কথপফে পরে সমাসে সতি কল্পানির্বতি। সর্পিক্ তং যজুপাঠ ইতি যন্তীসমাসঃ কলাদেন্দেতি সূর্দ্ধল্য:। তির্ভতু সর্পিঃ পিব ত্বমুদক্দিতি সর্পিরতি কর্ত্পদং তির্ভতু ইতি ক্রিয়াপদমপেক্ষাতে পিবেতি ক্রেয়াপদং উদক্মিতি কর্ম্বপদমপেক্ষাতে ন তু সর্পিঃ পিব ইত্যেতয়োঃ পরস্পারাপেক্ষাতি উত্তরস্ত্রেরাপি বিক্রো ন ভবতি।

১৪৭। পরস্পারাপেক্ষায়াং বা।
সর্পিন্ধুরু সর্পি: কুরু: যজুস্পঠ যজু: পঠ পরমসর্পিন্ধুরু পরমসর্পি-কুরু পরমযজুস্পঠ পরমযজু: পঠ।

১৪৮। দ্বিস্তিশ্চ তু: কুজোহর্থে।
দ্বিদ্ধবা দিঃ কুবা ত্রিদ্ধবা ত্রিঃ কুবা চতুকুবা চতুঃ কুবা অক্রোহর্থে
তু। চতুক্সালম্।

(১৪৭)। সমাস ইতি অমুক্তরপদস্থ ইতি চ নামুবর্ততে। প্রস্পারা-পেক্ষ'য়াং সত্যাং ইসম্ভ উসম্ভত কথপফে পরে কম্বানির্ম্না ভবতি পরস্পরা-পেক্ষা চ সরিহিতত্বাং যদ্য পদস্য কথপফা আদিভূতান্তেনৈব সহ ইসন্তদ্য উসন্তস্য গ্রাছা:। সর্পিষ্কুর্কিতি সাধ্যসাধনভাবেন ক্রিয়াকারকয়ো: সম্বন্ধ: পরস্পরাপেকা। নন্তরপদস্থারী সমাসে যত্র পূর্বেণ কস্কাদিত্বং মা ভূৎ তত্ত্ব কিমিতানেন ন ভবতি পরমসর্পিঃকু গুমিতি। উচাতে। হি একার্থীভাবলক্ষণঃ সম্বন্ধঃ নতু পরম্পরাপেকা সাহি ক্রিয়াকারকম্মেরেব ভৰতি সমাসাৰ্থে চ বাক্যে তথাহি সমাসে বিশেষণং স্বাৰ্থং পরিত্যজ্ঞা বিশে-যাৰ্থমেবাভিদ্বাতি অত একাৰ্থীভাবলকণ: সমন্তঃ এবং তৰ্হি জহৎস্বাৰ্থা বৃত্তিঃ স্বীক্ততেতি রাজপুরুষমানর ইত্যুক্তে পুরুষমাত্রে প্রতীতিঃ দ্যাৎ নৈত-দক্তি বিশেষণুমাত্রোপ্যোগিনোহর্থস্যাপরিত্যাগাৎ জন্দপি রাজ্শব্দ: স্বার্থং নাত্যস্তং জহাতি য়: প্রধানার্থবিরোধী স্বার্থ: তং জহ'তি যথা তক্ষা রাজক-র্মণি প্রবর্তমান: প্রধানার্থবিরোধি ভক্ষকর্ম জহাতি মতু হিঞ্জিতস্পিত্র রিতানি তথা রাজনবোহপি বিশেষ্যার্থবিরোধিনমর্থং জহাতি নতু বিশেষণ-ভাবম অথবা বাক্যে দুইস্য উপসর্জনার্থস্য রক্তৌ স এবায়মিত্যবগমাৎ তদর্থাবগমো ভবতি যথা মল্লিকাপুট-চম্পকপুট ইতি ব্যপনীতেইপি পুস্পে তদর্থাবগম:।

(>৪৮)। বিক্রিণ্ড্রিতি স্থপ্রতীয়াস্তামুকরণং ক্রম্বোর্গ্র ক্রিরাবার-গণনং দিক্তিণ্ড্রণকা যদা ক্রিয়াবারগণনে বর্তন্তে তদা কথপকে পরে কন্ধান্দরো বা ভবন্তি। বিক্রিণ্ড্রণকানাং স্থপ্রতারেনৈব ক্রমোহর্থে প্রাপ্তে ক্রমোহর্থগ্রহণং ।স্পাঠার্থম্। বিশ্বয়েতি বিশকাৎ দ্বিত্রিচ্ছুর্জ্ঞাঃ স্ক্রিজ্ঞ ১৪৯। তিরশ্চ।
তিরস্করোতি তিরঃ করেতি তিরস্কারঃ তিরঃ কারঃ।
১৫০। নমঃ কুঞ্যেক্তিন।
নমসকরোতি নমঃ করোতি। ক্তিনু ছু। নমঃ কুলা।
১৫১। সমাসে নিতাম্।

नमक्तिं। नमक् छा मूनिजयम्।

ক্রিভের্থে স্থ: কন্ধানেশ্রেতি মূর্দ্ধভাঃ। চতুদ্ধর্যতি চন্ধারশ্বাৎ স্থপ্রতায়ে ক্রতে চতুরনজ্হোরিত্যাদিনা বাকারস্যোকারঃ স্থ সকারলুগ্র্জোহস্ত ইতি লোপঃ। কন্ধাদিজালিসর্গাভাবপক্ষে হনিরিত্যাদিনা রেফস্য যঃ পক্ষে বিসর্জনীয় এব বিশেষবিহিত্যপি যক্ষ ন বিসর্গবিধানং বাধতে বিকল্পেন কন্ধাদিজবিধানসামর্থ্যপ্রসঙ্গাৎ। চতুকপাসমিতি নিতাং যক্ষং চজারি কপালাস্থ্যাইতি বছরীহিঃ ষ্ঠাতৎপ্রস্কঃ সমাহারে দ্বিগুর্কা পাত্রাদিগণপাঠাৎ স্ক্রীদিজরিত্যাদিনা ন প্রীলিক্ষতা।

- (১৪৯)। তিরংশকঃ কথপফে পরে কন্ধানির্বা স্যাৎ। তিরস্করোতীতি অন্তর্ধনী ইতার্থঃ তিরস্কার ইতি ভাবে ঘণ্ অভিভব ইতার্থঃ। তিরক্বয়া কন্টং গত ইতাত্রাপি কন্ধানিত্র । অত্র তিরসঃ তির্যাগর্থকেন অন্তর্ধানার্ধাভাবাৎ তিরো হস্তর্ধানে ইতি ন প্রদাদিত্বম্ অতো ন যচ্ ভাষাকারমতামুসারেণ স্ত্রকৃত ইদমেবাভীপ্টং ভাগরন্তিক্কতাপ্যোতাদৃশমের ব্যাথাতিম্।
 বামনাদিন্বরসেন তু অন্তর্ধান এব কন্ধাদিত্বং তিরম্বার ইত্যত্রাপার্থন্ধানমেবার্থঃ তিরম্বতো হি নাম্মানং প্রকাশয়তি। তিরঃ ক্বম্বা কন্টং গতা ইত্যত্র
 তু নান্তি সকারঃ।
- (১৫০)। •অবিদ্যমানক্ত্বাপ্রত্যরে কৃত্রি পরে নমংশকঃ কন্ধাদির্কা। ভরতি।
- (১৫১)। নম:শব্দ: কৃঞি পরে সমাদে নিত্যং কন্ধানির্ভবতি। নম-কর্ত্তেতি তৃঙ্ নমন্ধত্যেতি শ্রদানে:কৃতেতি নিতাং সমাস: শ্রদাদেশ্চেতি যচ্ অক্ত্রীতা কুর্ত্তিশকানিরাসার্থং নিতীয়োদাহরণং সাক্ষাদাদিরভূততভাবে বেতি: পাক্ষিকং শ্রদাদিত্বং যদা ন ভবতি তদা সমাসাভাবে নমন্ধর্তী নমঃ কর্তেতি: ৪ ভবতি। নমঃ কৃঞ্যক্রীতি পক্ষে কন্ধাদিয়াৎ অসমাসে নমন্ধর্তেতি চ না

১৫২। পুরোহব্য**রম্।** 'পুরস্কৃত্য পুরস্কারঃ।

১৫৩। কাম্যকল্পশিকপ্রত্যেষু পদান্তবদ্রাব্যয়সোঁ।
গীঃ কাম্যতি স্বঃ কাম্যতি স্বঃ কলঃ স্বঃ পাশঃ স্বঃ কম্। অধঃ
কাম্যতি অধঃ কলঃ অধঃ পাশঃ অধঃ কম্। অনব্যয়স্ত। প্রকাম্যতি প্রস্কলঃ প্রস্পাশঃ প্রস্কম্।

শাব্রাম্বরসিদ্ধং কিন্তু ভিন্নপদত্তে রূপভেদোহর্থভেদোহপি নাস্থি স্বরভেদে এব কেবলম্ এতাবতা বিশেষগ্রহোহত্র পরিস্থতঃ।

(১৫২)। পুরঃশব্দোহব্যয়ং কথপদে পরে নিত্তাং কন্ধাদির্ভবতি।
পুরস্কত্যেতি অন্যয়াবস্তংপুরদাবিতি শ্রদাদিত্বাৎ সমাদে জ্বা যচাদেশশ্চরুঞীত্যত্র নামুবর্ততে তেন পুরস্পীতমিতি চন্দ্রবৃত্তাবুদান্তম্। স্পনবায়ে তু।
পুরঃকরোতি পুরাণি করোতীতার্থঃ।

(১৫০)। কাম্যকল্পশিকপ্রতায় ইত্যেতেয়ু পরেয়ু রেফোহবায়সম্বন্ধী চ সকার: পদাস্তবন্ধতি। সোহমন্বর্ধে ভসোলেতি সকারস্য পদাস্তবর্ধে প্রাপ্তে অব্যাস ইতি নিয়মার্থং তেন প্রস্পাশ ইত্যাদৌ ন পদাস্তব্দ্
নীঃকামাতীতি গু শন্দে কিপ্ শ্লাদির ইতি ইর রাস্তাদেরিভ্যাদিনা দীর্ঘঃ
আত্মনা গির্মিচ্ছতীত্যর্থে কাম্য নাম ইত্যাদিনা কাম্যঃ স্বঃকল্প ইতি মনাগ্নে কল্লদেশীয়া ইতি কল্লঃ স্বংপাশ ইতি পাশো নিন্দ্যে ইতি পাশঃ
স্বঃকমিতি অল্লাদাবিতি কঃ এবং অধঃকাম্যতীত্যাদপি ভবতি। প্রতায়ত্রহণং স্পত্তার্থেম্ নাম্যাদিয়ু পরেয়্ বিভক্তেল্প্রাছাৎ পদাস্তবন্ধে সিদ্ধে পদাস্তবদ্বিধানমনর্থকং স্যাৎ অব্যায়ীভাবস্যাত্রবয়্যাৎ উপপরস্পাশমিত্যাদৌ ন বিদর্গঃ অত্র বিদর্গো ভবতীতি কেমাঞ্চিদেব স্বর্জং ন
তন্থাব্যস্থাতং যতেহিব্যয়ীভাবন্দেত্যক্র স্বক্রে:ভাষ্যে উক্তম্ ইছ লুগের প্রয়োজনং নাক্লাদিরিতি।

অনব্যয়রো নাকাম্যে সন্চেতি বক্তব্যম্। অনব্যয়স্য রেফঃ কাম্যব্যতি-রিক্তে পরে পদ স্তব্য ভবতি। তস্য চ স্থানে সন্চাদেশঃ গীক্ষাঃ শুল্লাঃ শিক্ষমিতাত ইচ্ক্রাদিত্যাদিনা বঙ্ম্।

১৫৪। দোহমন্তর্থে তদোল্ট।

भरतामग्रः भराङ्गाः भग्नः । सङ्ख् जू । भन्नत्रान् जभन्नी ।

१६। इन्हा

সজ্জাং সজুম রম্।

(১৫৪)। অমত্থ ইতি পর্যাদাদেন নঞা সমাসে চোত্তরপদার্থসদৃশপ্রতীতিঃ অতো মত্বর্থতিদ্ধিত্ব্য প্রতিষেধাৎ তদিতরতিদ্ধিত্ব্য প্রচণং
মক্র্যাতিরিক্তে তদ্ধিতে ভকারে সকারে চ পরে সকারঃ পদান্তবন্ধতি।
প্রেসহ্প্রতিষেধে তু মত্বর্থং তদ্ধিতং বিহায় সর্ক্রীতি ভপ্নাইচর্য্যাচ্চ যক্তাঃ
নর্থকং স্যাৎ অতএব অত্মি ত্বঃ ত্ব ইত্যত্র ন পদান্তবন্ধং তদ্ধিত্যাহচর্য্যাচ্চ যক্তাঃ
প্রক্রতেঃ পরস্তদ্ধিতঃ সম্ভবতি ভক্তা এব প্রক্রতেঃ সকারো ভ্যোক্ত পরয়োঃ
পদান্তবন্ধবিত তদ্ধিতক নাম এব পরঃ সম্ভবতি অতো নাম এব সকার্দ্য
ভ্যোঃ পরয়োঃ পদান্তবন্ধ্য। তেন শাস্সি ইত্যত্র ন পদান্তবন্ধ্য। পম্যোক্রমিতি মন্ত্রুণ্যাদিন্তদ্বিকারাদাবিতি মন্ত্রট্ ওরতাত্যকাদাবিতি ওকারঃ পরস্ত্রেইতি পক্ষে শ্রুণে ক্রিকারাদাবিতি সন্ত্রাক্রিন বা মত্রিতি সতুঃ অবশান্তাচ্চেতি মন্ত্র বঃ তপন্থীতি ভপ্নাইণ্ চেতি বিন্। স্ইতি কিম্? গীর্ষুণ্যুণ্য

নো মন্বর্থে চেতি বক্রবান্। মন্বর্থে অধন্বর্থে চ ভাসোন্চ পরয়োম কার:
পদান্তবদ্ধবতি। কং বং কঁম্বং কং ভঃ কন্তঃ কং বং কঁয়্যঃ কুংশংভ্যাং
ভবতি তু তয়া ইতি বকারভকারষকারাঃ। কিং বান্ কিমানিতি
মতু: অমন্তেতমাদিনা মন্ত বং চিরংতনঃ চিরস্তানঃ চিরসায়ায়ুক্তেতি তন্ট্
মুরাগমঃ সায়ং তনঃ সায়ন্তনঃ সায়মিত্যমাৎ কালাব্যয়াতনভিতি তন্ট্
পুংভ্যাং পুন্ভ্যান্।

(১,4 ¢) ৮ বকারঃ পদান্তবন্ত্র । সজ্পার্মতি মরটি ক্লতে সজ্বা-শিষোপ্টেডি দীর্ঘে ক্লতে পদান্তবন্ত্রাৎ যত সজ্য ইতি বিসর্গে ক্লতে রোহচীচ ইতি রেকঃ। অমন্তর্যে জ্লোপ্টেডি নাম্বর্তনীয়ম্। অতো মন্তর্যেইপি পরে পদান্তবন্ত্রাৎ সন্ধ র্মানিতি। an-

· ১৫৬। ন বিতি নভোহঙ্গিরোমসুষাম্। 'নজস্বৎ অঙ্গিরস্বৎ মনুষ্বৎ কস্কাদিরয়মাকৃতিগণঃ।

১৫৭। ওরতাত্যকাদে।

অতি অকাদে চ পরে পূর্ববাতা সহ বিসর্গ ওর্ভবতি। কোহত্র কোযাতি। অকাদাবিতি কিম্ ? কঃ করোতি। বর্গাদিদয়শ্যসাঃ কাদিঃ।

>৫৮। (तीश्वीठः।

4

(১৫৬)। বংপ্রতায়ে পরে নভদন্ধিরস্মন্স্ ইত্যেতেষাং সকারঃ
পদাস্তবন ভবতি। নভশ্বনিজ্ঞাদি বদাদিন্তদিবাদাবিতি বংপ্রতায়ঃ তত্তিতবদাদিখেনাখ্যয়খাং য়লুক্। মন্ধদিতি ইচ্ ক্রাদিত্যাদিনা ষথম্ অপ্রতায়াবয়বস্তা চেতি প্রতিষেধাে ন ভবতি অস্যা প্রতায়াবয়বয়াং। তথাহি মনধাতোর্বপাদেরুসিতি উস্প্রতায়াস্তোহয়ং ক্রাংপাদিতঃ। নভোহনিরোমন্থয়ামিতি কিম্
গুরোবং।

যাচোশ্চেতি বক্তবাম্। যকারেংচি চ' পরে সকারঃ পদান্তবন্ন ভবতি।' উরস্তাং উরসো যণ্ডেতি যাছেন্দ্সাং ছান্দ্সাং ছান্দ্সো যশ্চেতি খ্যা টণ্চ, সম্ভূয ইদং সাজুয়াম্।'

(১৫৭)। সাল্যারা নোহপ্রশান ইতি হাবং পদান্ত ইতি নামুবর্ততে অতএব তত্র বংগতি সিংহাবলোকিতাধিকারাদিতি। অতেতি অতীতি চ রুষোক্ত্যা দীর্ঘসাগ্রহণাৎ রুষা অত্র বৃক্ষ আন্ত ইত্যত্র চ ওবং ন ভবতি প্রুতবিধানেহপি পূর্কনিমিন্তং কার্যাং ভবতীতি ব্যবস্থিতম্। হে পয়হ অগ্রি-মিত্র ইত্যত্র শ্বর্জাং গুরুক্তমেণ বা ইতি প্লুতে ক্তে প্রাপ্ত ওকারো বহুল-বচনান্থাবর্তনীয়ঃ উরত্যকাদাবিতি স্তত্রে ক্তে অতি পরে অংগ প্রসজেং। বর্গেতি। কাদিপরিজ্ঞানে হি তম্নিমেধাদকাদিক্তামিতে অতঃ কঃ কাদিরিতি প্রেকারকং প্রত্যাহ বর্গাদিন্বমশ্বসাং কাদিরিতি। পঞ্চ পঞ্চ বর্ণাম্মকা বর্গা ইতি প্রতিপাদিতমের তেষাং পঞ্চাক্ষামের বর্গাণামাদিভূতং দ্বরং শব্দ কাদি কাদিরচাতে।

(১৮৮)। অচীতানেনৈব নিরাকাজ্জেইপি লক্ষণে অকাদাবিতাত্ব-বর্ততে। উত্তরহত্তে অরপাদাবিতি প্রতিষ্কোৎ বদ্যকাদানিতি নায়- ইচ উত্তরে। বিসর্গোহচি অকাদো চ পরে রেফো ভবতি। কবিরক্ত্র সাধুরান্তে বধূর্গচ্ছতি।

১৫৯। নার্পতাদির দোঁ। নৃপতেবিদং নার্পতং নার্কটং নার্কপালম্ আর্পতমিত্যাদি।

३५०। मुटकांश्क्रशास्ति।

অহন্শব্দত্য বিদর্গোহিচি পরে রূপাদিবর্চ্চিতে অকাদে চ পরে বৈফো ভবতি। অহরিদম্ অহর্যাতি। অরূপাদাবিতি কিন্ ? অহো রূপং পশ্য গতমহো রূপং গতমহোরাত্রিরাগতা অহোরাত্রঃ অহোরপন্তরং সাম।

বর্ত্ততে তদা অন্ধ্রপাদাবিতি নিষেধমনর্থকং সাৎ রেফবিধানসামর্থ্যাৎ পূন:
প্রাপ্তো বিসর্গোন ভবতি। তশ্বীচ্চক্রবদ্যাবস্থা নাশক্ষনীয়া। অচীতি কিম্ ?
কবিস্তরতি। ইচ ইতি কিম্ ? কোহত্ত ক আহ। নম্বত্র ওকারলোপয়োবেব বিধানাৎ বানকং ভবিষ্যতি কিমিজিত্যনেন তৎ ক্রিয়তে স্পষ্টার্থং সামাস্থাবিশেষন্যায়লভ্যাচ্ছাক্রোহার্থং স্পষ্টো ভবতি।

(১৫৯)। বৃদ্ধী সত্যাং শ্নিষ্পন্নো নার্পতাদির্নিপাত্যতে। নৃপতি
শব্দাং তন্তেদনিতি টণি ক্বতে বৃদ্ধী সত্যাং নিষ্পন্নে নার্পতশ্বেহস্তর্বভিনীং
বিভক্তিমান্তিতা পদাস্তঘাং প্রাপ্তস্ত বিদর্গস্যাভাবো বিদর্গে, ক্বতে বেকো
বা নিপাত্যত ইতার্থ:। এবং নৃকপালস্যেদং নার্কপালং ঋপতেরিদ্ন্ আর্পতিম্
ঋশব্দো দেবমাতৃবচনঃ যত্ত তৃ বৃদ্ধিং বিনাস্ত নিষ্পত্তিত্ত ন ভবতি। নারীশব্দান্নাম্ম ইত্যাবিনা গিঙ্ কিপ্ কিপি পরে পৃকি চ ক্বতে নারঃকপালমিতি
যন্তীসমাসে নাঃ কপালমিতি। নয়ত্ত মারীশব্দো নূনরাভ্যাং বৃদ্ধিশ্বেতং।
দক্তে বৃদ্ধ্যা আরি ক্বতে ক বিদর্গঃ প্রাপ্তোতি স নার্শতাদে স্তর্ব্যঃ।

(১৬•)। অহরিদমিতি অহনিতান্তাৎ হ্ব: সোহক্ষেত্ত ইতি নকারশু সকার: স্রোর্বিসর্গোহকস্বাদেনিতি বিসর্গ: অথবা অরু ইদ্ম ইতি ষষ্ঠীসমাস: সমাসেহচিচেতি নকারশু সকার: অভোভগোহবোভ্যোলৃগ্যোবেড্যাদিনা প্রাথে তদ্বাধনার্থম্। অহর্ণতীতাক্র প্রথবাধনার্থম্ অহারাক্র ইতি আইন্চ ১৬১। স্বাদিতে। অহোজ্যাং দীর্ঘাহোভিং।

১৬২। ন বহুত্রীহাবক্লীবে সংখাধনে। হে দীর্ঘাহো নিদাঘ হে দীর্ঘাহো তব হে দীর্ঘাহোছত।

১৬০। নএবৈয়ায়োহলি তদ্ধিতে চ। ু সহর্যাতি অহর্যাতে অহর্বং।

রাত্রিশ্চেতি তন্দ্র অক্টোরাত্রেবিতাৎ সমাসাক্তঃ অপ্রাণিদ্রব্যজ্ঞাতিরনিরতক্রব্যম্ব ইত্যেকত্বং বাত্রাস্তাদয়ঃ প্ংসীতি প্ংলিকত্বং রূপবাত্রিরওস্তরেষ পূসংখ্যানিমিতি বার্ত্তিককাবঃ। চন্দ্রস্ত বেফ এব পবে রেফং নেচ্ছতি তেন অহোবচনমিত্রাদ্যপি ভবত্যেব। বৃত্তিকতা তু প্রত্যুদাহরণত্ররমেব দর্শয়তা ইতরক্ত ব্যাবৃত্তিমকুর্বতা দনিগ্ধমেবেতি স্থচিতম্ অসমাদেহপি ভবতীতি স্চনার্থং গভমহো রূপং পশোত্যুদাগতম্।

- (১৬১)। স্বালিসম্বন্ধিনি জকারে পবে রূপান্দিগণপঠিতে উদাহরণ-মেতদিত্যর্থঃ। উত্তবস্থত্তে বহুরীহৌ নিষেধ।ভদত্তেহপি কার্যাং তবতীতি দীর্ঘাহোভিবিত্তি কর্ম্মধাবরঃ।
- (১৬২)। मत्याधन इंडि निशिकप्तथनामक्रंडम्। मीषीदा निषाय हैजुमाइवनक निशिकपथनामाए পতिउम्। खक्नीत्व वहवीदो भूर्सनक्रन-खारक्षा द्धारका न छवि । मीषीदा निषाय देखि मीषीगुहान्नरमाठि वहवीदिः माहरूंग्लेख देखि मकात्व कृत्व अवस्कुजामिना मीर्यः। कामाभाष द्र मीषीद्या निषाय देखीळ्छि। द्र मीषीद्रा अद्वि मीर्या न हनारमविछि मीषीन्द्रियाः। क्रीत्व कु मीषीहर्सनः दह मीषीहर्सनः।
- (১৬০)। ঈয়ায়েঃ পরমেঃ হলি তদ্ধিতে চ পরে অহন্ ইতাস্য নকার
 এব রেকো ভরত। বিসর্গন্তানিছেন প্রক্রান্তাহিত্তি তস্যাত্রাভাবাৎ কঃ
 স্থানীতি সন্দেহনিরাসার্থং নএবেতি র্কুতম্। অহর্যাতীতি তুল্যাচাব ইত্যাদিনা ঈয় অয়োরিতি নকারলোপে প্রান্তে রেকঃ হলিজভ্যামিত্যাদিনা ঈকারসূক্। অহর্যাত ইতি অহরিবাচবতি ইতি কর্তুরিত্যাদিনা আর আকারসূক্। অহর্মদিতি পূর্ববন্মতঃ মস্যা বঃ ন রীবে ইতি স্থ্নিবেশঃ

১৬৪। অহরাদে: পত্যাদে বা।.
 শহং পতিং অহর্পতিং গী: পতিং গার্পতিং গীপাতিরিত্যসাধুং। ধৃং
 পতিং ধর্পতিং উয়ো বুধং উয়র্বুধং।

সোহক্রোহস্ত ইতি সকাবে প্রাপ্তে নকাব এব বেকঃ যবি সকারঃ স্যান্তনা মন্বর্থেন পদান্তবত্বাভাবাৎ সকার ক্রীতিঃ স্যাৎ। অহর্বদিতি বৎপ্রত্যযান্তস্ক সকাবে বিসর্গে ক্বতে পুর্নিস্তন্ত্রেণাণি সিধ্যতীতি নোদাহ র্ভুঃ যুক্সতে।

(১৬৫)। অহবাদেবিদর্গঃ পত্যাদো পবে রেফো বা ভবতি। দর্করো-প্রাপ্তে বিভাষা উষর্ধাদন্তর পক্ষে উপধ্বানীয়োহপি ভবতি। অহপতি-বিত্যাদো ষটাদনাদঃ। গীপতিরিতি গুশবে ক্ষচিং কর্তরি চেতি কিপ্ শ্লাদিরিতি ইব রাস্তাদেরিত্যাদিনা দীর্ঘঃ। ধূপতিবিতি ধ্র্মী কিপ্ বলুক্ ব্যবস্থিতবিভাষরা উষর্ধ এবেতি কন্ডিং।

(২৬৫)। ভবং ভগবং অববং ইত্যেতেষাং ভবদাদের্কা নডোক্সিত্যুসাদেশে ক্বতে নিশানান্য অথবা অব্যয়ানাং ভোঃশকাদীনাং অত্করণমিদম্। ভোঃ শক এবাব্যমনিতি তু বৃত্তিক্তোংভীইম্। অতএব বক্ষাতি
তথাই ভাষ্যম্। অব্যয়মেই ভোঃশদো নৈষা ভবতঃ প্রকৃতিরিতি। অদিতি
অচীতি ইস্বোল্যা দীর্ঘস্যাপি গ্রহণমেতহদাহবণেনৈর স্পষ্টং ক্রভবান্।
আত্তে ইতি আস উপবেশনে লট্ তে। অত্রেতি এতদঃ সপ্তম্যাস্ত্রোবেতি
তঃ প্রভদ্রভয়্যোরদিত্যকারঃ অধীবা ইদমন্ত্রঃ হল্যদিত্যকারঃ। এইতি
আত্ত্ পূর্ব্ব ইন্ গতৌ লোট্ হি। কোহন্তীত্যত্র বিশেষবিধানাৎ ওরভাজ্যক্রাদাবিত্যেব ভবতি।

क्षेत्रप्म हेक्त्रण प्रकाश देकि काना मानुश्रम् का निरंदन ।

. ১৬৬। হলি তদেতৎ সৈধান্ত্যাম্।
হলি পরে ভদেতৎসম্বন্ধী স'এব ইত্যেতান্ত্যামূত্তরো বিদর্গো লুগ্ভবতি। স্বরাদক্ষো হল্। স কর্ত্তা এব গুণী।

১৬৭। আতো ভোভগোহঘোভ্যশ্চাকাদো। দেবা গচ্ছস্তি ভো যাহি ভগো ব্ৰঞ্জ অযো গচ্ছ।

১৬৮। নাগ্নঞ্সমাসয়োঃ। সকশ্চলতি এয়কো ব্ৰজতি অসম্ভিত্ততি অনেয়ো গচ্ছতি।

লঘুপ্রথত্মতা বিধীয়তে। ভোভগোহঘোভো যো যকারো বিহিত: স লঘুপ্রযত্মতর এবেতি লুখেতি কেচিং। এবকাবকরণাদকাবাছতরস্ক লঘু-প্রযত্মতবোহলঘুপ্রযত্মতক ভবতি। কেচিদিতি বচনাং ভো:প্রভৃতিভো দিধা ব্যবস্থা কিন্তু লক্ষণমেতক্মতভেলোপদর্শনং বৈচিত্রার্থম্ উচ্চাবনস্থান-করপরো: শৈথিলাং লঘুপ্রযত্মতরতা পদাস্তে যবোলুখেতি অস্য বিষরেহপি যবোবেষের ব্যবস্থা উহনীয়া।

- (১৬৬)। স কর্ত্তা এষ গুণীতি সৌতঃ সন্তদেতদ্তাদামিতি তকাবস্য সকাব:। গুণীতি অতোহনকার্দেরিনিকাবিতি ইন্। তদেতদিতি বিশে-ষণং কিম্প- এয়ো বর্ততে সো বর্ণঃ ইষ্ধাতোর্ঘপস্তস্য বর্ণবাচিনঃ সশব্দস্য চ রূপম্। হলীতি কিম্? সোহত্র সোহরষ্। নঞ্সমাসে নিষেধবিধানং জ্ঞাপকং সমাসেহপায়ং ভবতি ভেন পরমসকর্ত্তা।
- (১৬৭)। আকারাং ভোভগোহবোভাল্চ পরো বিসর্গোহকানৌ পরে লুগ্ভবতি গালবিতি ন কৃতং বৈচিত্র্যার্থম্। নতু অদ্রো ইত্যাদিস্ত্রা-নস্তরং অকাদৌ নিভামিতি ক্রিক্তাং অকারাহন্তরে বিসর্গে ওরতাভ্যকাল-বিত্যেব বাধকং ভবিষ্যতি তদেতন্ন কৃতং স্পষ্টার্থম্। সামান্তবিশেষভার লজ্যাং শাকোহর্থঃ স্পষ্টো ভবতি।
- (১৬৮)। হলি তদেতংগৈধাভ্যামিত্যনেন বিহিতো লুক্ অগাগমে নঞ্পমাসে চল ভবতি। সক ইতি এবক ইতি চ কুপায়ামিত্যাদিনা

১৬৯। **অত উ অ**ব্যয়ে। স উ একবিংশতিঃ দেবদত্ত উ একঃ।

১৭০। শ্বনে শ্বসাঃ।

শ্বসে পরে বিদর্গঃ শ্বসা বা ভবতি। কঃ শেতে কশ্শেতে।
কঃ ষষ্ঠঃ কর্ষষ্ঠঃ। কঃ সাধুঃ কস্সাধুঃ।

১৭১। কাদিযুক্তে শষদে লুখা।

ক শেচ্যাততি কশ্শেচ্যাততি কঃ শেচ্যাততি। ক স্থীবতি কৰ্ষ্ঠীবতি
ক: স্থীবতি। ক স্থাতা কস্ম্বাতা কঃ স্থাতা।

জন্তাম্বরাৎ পূর্কোহক। অস ইতি ন সোহয়: তৎপুরুষো বা নঞ:সমাস ইতি তৎপুরুষ: নঞোহণিত্যৎ অনৈষ ইতি জচ্যনিত্যন্। সমাস ইতি কিম্? ন স কর্তা নৈষ যাতি।

(১৬৯)। উ অব্যয় ইতি অব্যয়েৎকেবলাচোরচীত্যসন্ধি: উ ইন্ড্যশ্বিব্যয়ে পরে অত উত্তবো বিদর্গো লুগ ভবতি। অস্তো ইত্যাদিনা বিকরে
প্রাপ্তে নিত্যার্থসারস্ক:। অনবায়ে তু শিববাচিনি উপজে পরে অস্তো
ইত্যাদিনা বিকর এব। দেবউর্যাতি দেবযুর্যাতি।

(১৭•)। মণ্ডুকর্তাধিকারাদ্বেতার্বর্ততে। শেত ইতি শীঙ স্থে শীঙঃ শের্যনি চেতি শেভাবঃ। ষষ্ঠ ইতি ষষ্ইত্যন্থ ষট্কতি কৃতি পরে-ভাল্ড ষট্ ইতি ঘট্ ষ্টবর্গাদিত্যাদিনা থক্ত ঠঃ।

(১৭১)। • কাদিযুক্তে শবদে পরে বিসর্গো পুঝা ভবজি। শ্যোততীতি সঢ়াতির করণে সন্দেতি সদ্যা শং। ষ্টাবতীতি ষ্টিবু নিরসনে ন ষ্টিবুর্কোরিতি ব ইতাদ্য সন্ধনিবেধঃ দীর্ঘঃ ষ্টিবুরুমাচমামিতি দীর্ঘঃ। স্থাতেতি ঠা
পতিনিবৃত্তৌ পূট্ তাঙ্ তৃঙ্ বা পূর্ব্ব্বোগদ্যাপবাদেহিয়ং তেন এতক্স্কেপকে
বিসর্গ এব ভবতি। ন তু শব্দে শবদা ইতি রক্ষিতেন ব্যবস্থিতম্। এতচ্চ
ক্যোতিরাযুধঃ স্তোম ইতাদ্য স্থাদেনৈব বিক্ষাতে। চাক্রা অপ্যতরাঙ্গীকুর্বিত্বি ভন্মাক্রৈরপ্যমেব ভবতীতি যুক্তঃ পক্ষঃ।

১৭২। ঙণাভ্যামপদান্তেহপি কটো বা। প্রাঙ্শেতে প্রাক্শেতে। স্থগণ্শেতে স্থগন্শেতে। প্রাঙ্মকঃ প্রাক্ষকঃ। লঙ্লুঙ্লৃঙ্মু লঙ্লুঙ্ল্ভুকু।

১৭৩। টনাভ্যাং সে তুথা।

ষট্সাধবঃ ষট্ৎসাধবঃ। ষট্স্থ ষট্ৎস্থ। ভবান্ সাধ্যু ভবান্ৎসাধ্যুঃ।

১৭৪। ষে নিত্যাং সম্ম ষঃ।

পেস যন্লুক্ পেপেষ্বি।

(১৭২)। পদান্তেহপদান্তেহপি বর্ত্তমানান্তকারায়কারাচ্চ পরতঃ
শবদে পরে যথাক্রমং ককারটকারৌ বা ভবতঃ। প্রান্তিতি প্রপূর্বাদনচু গভিপ্জনযোঃ কিপ্ শসাদাবিত্যাদিনা নিয়মাৎ হলুপাস্তাহ্মোহসনীতি নলুক্ ন ভবতি স্থাকু চজােঃ ক ইতি চন্ত কঃ উপ্পেক্ত বর্গে ইতি নন্ত ঙঃ লুগ্ যুজােহজ্ব ইতি কলুক্। স্থামিতি গণসংখাানে ণিঙ্ কিপ্ পঞ্চমান্তস্তাহন ইতি দীর্বাধ্বর ব্যাখ্যাস্তামঃ। শক্ত ইতি ককারটকারাৎ পবঃ শকারক্তকারো বা ভবতি। এবং কপত্রয়ং টনাভ্যাং সে তুর্মা ইতি পক্ষেত্রক রতে স্থাপট প্রাধ্বরতি তৃতীয়মিতি, রূপং ভবতি। লঙ্লুঙ্লুঙ্লিভ ভাজেতি বত্তং স্বত্রশত্বেন সামীপ্যাৎ ভণমােবেব ভজেন কটে বিধীয়েতে তেন প্রান্ত সিঞ্চতীত্যর পদাদেক্তেতি বন্ধনিষেধা ভবতি। পদান্ত ইত্যক্তানস্থাতেরের সামান্তে সিদ্ধেহপদান্তেহপীতি কৃতং স্পষ্টার্থম্। পদান্ত ইত্যক্ত বর্ত্ততে ন বেতি সন্দেহং স্যাং।

(১৭০)। পদান্তেহপদান্তে চ বর্ত্তমানাৎ টকারাৎ নকারাক্ত উদ্ভৱে সে পরে তুথা ভবতি। ঘট্ৎসাধব ইভি ষম্পদাৎ জ্ঞস্পসোলু ক্ কভিপঞ্চা-দেরিতি জ্মলুক্ যই ইতি সন্থ টঃ অধাতোন স্যাদিতি নিষেধাে ন ভবিজ্ ষ্মস্থাতি নিষ্মাৎ। স্ত্রশ্রুত্তেন সামীপাাৎ সকারস্যৈব তুগ্ভক্তঃ তেন্ স্থান্তিবর্গাৎ যটবর্গাদিত্যাদিনা টো ন ভবিত। ক্রেন্থ্যাধ্বিতি পদান্ত-নকারত্বেহপি সাম্বারা নোহপ্রশান ইতি ন প্রবর্ততে অনুচ্ভ্যপরে ন

(১৭৪)। সত্ত স্থানে যে পরে নিত্যং যো ভবতি। পেপেষ্বীদ্ধি

১৭৫। চছে টঠে তথে।

চছে টঠে তথে পরে বিসর্গঃ শ্বসা ভবতি। কশ্চলতি কশ্চলতি
কণ্ডীকতে কণ্ঠকারঃ কন্তাপস্থী কন্থকারঃ।

११७। मन्हा

ওব্রস্চু ব্রশ্চকঃ স্চ্যুতির শেট্যাতকঃ স্টডিফ্টস্ততে উপফস্তঃ ঠিবু স্থীবতি।

পেন্দ গতে। যন্লুক্ প্রকৃতিবন্ধির্গু ণাদিশ্চৈতি দিবং গুণাদিশ্চ দিঙ্বন্ধনার-বিদর্গবদাং ব্যবাযেহপীতি যন্ত্ম।

(১৭৫)। বেত্যত্র নানুবর্ততে পদান্তস্যাননুবৃত্তিঃ সামান্তেন বিধানম্। অননুবৃত্তিপ্রয়োজনম্ব সন্দেত্যত্র জেম্ম্। কণ্চলতীত্যাদি চল কম্পনে ছল বঞ্চনার্থো জন্তব্যঃ টীক্যতার্থঃ কছুকার ইতি থ ইত্যাম্বাং বর্ণাৎ কাব ইতি কারঃ। তপস্থীতি তপস্প্রগ্রু চেতি বিন্।

(১৭৬)। চছে টঠে তথে পরে সকার: শবসা ভবতি। ব্রন্ড ইতি ওবস্চু ছেননৈ গক:। যদায়ং ধাতৃতালবাোপদেশ: স্যাত্তদা বৃক্ণ ইত্যত্র কোনি জাদ্যোবিতি সলুক্ ন স্যাঞ্জ্রস্চেতি ক্তঃ বশাদের-শাদাবিতি রস্চা-দেশ: সলুক্ ক্তক্তবথোরি ত্যাদিনা তস্য নঃ ওদিদাদেরিত্যাদিনা চস্য কঃ অজ্ব-শ্ববেত্যাদিনা গত্তম্। শ্রেয়াতক ইতি স্চ্যুতির ক্ষরণে যদায়ং ধাতৃঃ তাল্বনাপদেশ: স্যাত্তদা মধুগিত্যত্র সলুক্ ন স্যাৎ। মধুশ্চ্যোততীতি কিপ্ ভ্রমান্টঃ ইত্যর্থে বিঙ্ অনেকাচামিত্যাদিনা উত্তো স্ক্ প্নঃ কিপ্ ক্রিক্সেন্টারিতি গিঙ্ ল্ক্ চজোঃ ক ইতি চস্য কঃ কৌষ ইতি যলুক্ কোনিজাদ্যোরিতি সক্ক ব্রন্থ ইত্যত্র ঘণি ক্তে দন্তাশ্রতির্নি স্যাৎ। ইন্তত ইতি স্টেভি স্বন্ধি প্রাতিবন্ধে অয়ং ধাতৃঃ দন্ত্যোপদেশঃ টকারযুক্তঃ ভন্তধাতোরবাছত্তরস্য বৃহং বিহিত্রস্পাত্তরস্য ন প্রাথোতীতি বিত্তীয়োলাহরণোপজ্ঞাসঃ ঘণাদে। ইন্তানিদনে বাজে জনভিধানাং। জীবতীতি জিবু নিরসনে দীর্ঘ: জিবুরুমাচ্মামিতি দীর্ঘ: দন্ত্যাসকারোপদেশতা চাস্য নিশ্চিতা ঠকারোপদেশত্বস্তনার্ধা তেন টেন্টাব্যত ইতি সিদ্ধাতি মৃর্জ্যোপদেশস্য তৃ থকারোপদেশতা তত্মাৎ তেন্তীব্যত ইতি সিদ্ধাতি মৃর্জ্যোপদেশস্য তৃ থকারোপদেশতা তত্মাৎ তেন্তীব্যত ইতি সিদ্ধাতি মৃর্জ্যোপদেশস্য তৃ থকারোপদেশতা তত্মাৎ তেন্তীব্যত ইতি বিদ্ধাতি মৃর্জ্যোপদেশস্য ক্ থকারোপদেশতা তত্মাৎ তেন্তীব্যত ইতি বিদ্ধাতি মৃর্জ্যাপদেশস্য ন তিনুমুক্টোরিতি প্রতিবেশং । স্থিম্য-

১৭৭। র: সস্তর্সো তাদিতদ্বিতে চ।
 গীন্তঃ গীন্তঃ নিষ্ট্যম।

১৭০। তুর্নিরাবির্বহিঃপ্রান্থ কর্তারে বঃ কর্থপকে।

হক্কতং তুষ্ধং তুষ্ধিনী তুপ্পাঠঃ তুপানং নিক্ষলং নিপাঠঃ আবি
ক্কাং বহিক্তং প্রাত্তক্তং চতুক্পালম্।

তীত্যাদো সস্য সবিধানং পিইপেষণমিবাপ্রয়োজনমেতাকতা নোদাছতমন্ত্র র্থন্ত কৃতং স্ত্রং পর্জন্তপ্রবৃত্তিকায়েন প্রবর্গত এব।

(১৭৭)। তদিপ্রতায়ে তকারাদৌ তদ্ধিতে চ পরে রেকঃ সো
ভবতি। গীস্ত ইতি গিব ইত্যন্তাৎ ক্রহহাকোরিত্যাদিনা তদিঃ রাস্তাদেরিতদাদিনা দীর্যঃ। গীন্ধমিতি তদ্ভাবে তাছমিতি স্বং দোইম্মর্থে ভ্যোদেতি
পদাস্তবন্তাৎ বিদর্গঃ চছে ইত্যাদিনা সকাবঃ দীর্যপ্রবাৎ হস্বাজাদিতদ্বিতে
তদৌ চেতি ন বহুম্। নমু তদৌ তাদিতদ্বিতে চেতি কিমর্থং তাদিপ্রতায় এব ক্রিরতাম্। এবং মতি পূর্ত মৃতি ইত্যক্রাপি স্যাৎ গীশ্চরী
গীশ্চম্ পীশ্চন ইত্যত্র চরট্ প্রাগ্ড্ত ইতি তেন থ্যাতে চঞ্চুদীবিতি চরভাদৌ রতে কথং সকারঃ কর্তব্যোহর বত্তঃ। তে তদ্ধিত ইতি রুত্তেপি
তদ্ধিতে প্রাপ্তে রুদাদিগ্রহণং তহুণাস্তব্যহণার্থমিতি ব্যাধ্যেয়ং কেহিশ চরভাদিপ্রত্যয়স্যান্তিধান্মিক্তন্তি। নিষ্টামিতি নিরো ব্যান্তম্বহিন্ত ইতি
ভাঃ হুস্বাভাদিতদ্বিতে ভসে চিতি হত্তং মই্টুর্গাদিত্যাদিনা তস্য টঃ।

(১৭৮)। রং স ইত্যাল্বন্ততে কথপকে পার হর নিব্ আবিস্ বহিস্
প্রান্তব্য চতুর ইত্যেতেষাং রেকঃ সকারশ্চ যো ভবতি। বহিস্পাকস্য সকারাস্ততা বহিষ্টিকণ্ চেতি লক্ষণেনৈব প্রতিপাদিতা অতএব বহিস্ আরি
কতে বহিস্ত ইতি। হুম্বমিতি ধ্যু অবদারনেইভতোহিপি দৃষ্ঠতে ইতি
তঃ বহুলবচনাৎ পকে বছাভাবে হুঃখমিতি চ। তথাচ, কালে তড়িল্লতাআলে ঘনপীনপল্লোধরে। কাস্তঃ সর্বার্তগোপেতো বালেক্ষ্ণ থে ন লভাতে
ইতি ক্রান্তাস্যা বিক্তৃচ্তকং এতত্বু ধাতুপারার্গাদৌ ব্যবস্থিত্য। হুপানমিতি অদ্বিজ্ঞাদ্তাদিতি ভনঃ প্রদাদেঃ কৃতেতি স্মাসঃ। চতুক্পালমিতি
ক্রিস্মাসঃ বহুত্রীহিকা স্মাহারে বিশ্বে তু পাত্রাদিছাল শ্রীলিক্তঃ।

১৯। সামুম্বারো নোহপ্রশানং।

সিংহাবলোকিতাধিকারাৎ পদান্তেইপ্রশানো নকারশ্চছে টঠে তথে পরে সামুসারাঃ শ্বসা ভবতি। স্বরধর্মহাৎ প্রাগমুসারঃ। ভবাংশ্চলতি ভবাংশ্ছলতি প্রদাংশ্চিনোতি ভবাংফ্টলতি ভবাংষ্টী-কতে ভবাংষ্ঠকুরঃ ভবাংস্কপদ্বা তাংস্বং করোষি কুর্ববংস্থাং পশ্যতি ভবাংস্কনারঃ।

ু ১৮০। সামুনাসিকা বা।
ভবাশ্চলতি ভবাংশ্চলতি প্রদাশিচনোতি প্রদাশিচনোতি। অপ্রশান ইতি কিম্। প্রশাঞ্চারণ।

১৮১। অনচঙ্যুপরে ন স্থাঃ। ভবান্ৎসরতি।

(১৭৯)। অনেকপ্রাপ্তরিতস্য পদান্ত ইত্যসা কথমন্তর্তিবিতি শঙ্কায়ামাহ সিংহাবলাকিতাধিকাবাদিতি। কিং প্রাথর্তিনা পববর্তিনা বা অমুস্বারেণ সহিতত্বং শ্বসানামিতি সন্দেহে ত্বাহ স্ববধন্মতাং প্রাগম্পাব ইতি যোহি বস্য ধর্ম্মঃ স তৎসমীপ এব ভবন্তি প্রাথিধানে হুত্র স্ববসান্নহিতত্বং সম্ভব্তি নতু পববিধানে। ভবানিতি ভা দীপ্তৌ ভবতুর্ভাতেবিতি ভবতুঃ স্বট্টাগিদিত্যাদিনা নুষ্ অভ্যন্তেত্যাদিনা দীর্মঃ। প্রদানিতি দমু উপশ্যে পঞ্চমান্তসাহন ইতি কিপ্ দীর্ঘশ্চ ধাতুসো নোহঙ্বে ইতি মস্য না। চিনোভীতি চিঞ্চয়নে মুৎ টলভীতি টল ট্ল বৈক্লব্যে ক্রেরিতি ক্রঞঃ শহুঃ ক্রেরিভিত্যুদিতি উৎ ক্রেইঙিত্যুবিতি উব্। অন্তবসীত্যক্র সানুস্বাবসকারাদেশোন ভবতি যতে। নায়ং পদান্তে পদ্বিবানে বিদ্যানানা নকারঃ কিন্ত তকাবে পবে।

(১৮০) পূর্বাহত্রেণ যে শ্যম। বিশ্বিভান্তে সানুনাদিকা বা ভবন্তি। সানুষাবহং তেষাং বাধিত্বা সানুনাসি ১৫ং ভবতীতার্থঃ অনবোভেনঃ উচ্চা-বনক্বতো লোকপ্রাদিদ্ধ এব। প্রশাক্ষাবিতি শমু উপশ্যম কিবাদি পূর্বাহ্

(১৮১)। অনচপরেহত্যপবে চছে টঠে তথে পরে পুর্ববিহিতা

১৮২। নূনঃ পে সঃ।

নুংঃ পাহি নূঁঃ পাহি। নূন্পাহীতি কেচিং।

১৮০। কানো দ্বিক্তেঃ।

কাংসান্ কাঁসান্।

১৮৪। সমোমঃ স্টিলোপোবা।

শংস্ক্রা স্ক্রা স্স্করা। অজাদিহলস্থেইদীর্ঘাদিট্টি

দিহে ত্রাঃ সকারাঃ। সংস্ক্রা স্স্ক্রা। শ্বসাৎ কাদিরিতি

দিহে দ্বা ককারো। সংস্ক্রা স্স্ক্রা সংস্ক্রা স্স্ক্রা

শংস্স্ক্রা স্স্ক্রা।

ন্দাদেশা ন স্থ:। ৎদরতীতি ৎদব দ্ধানগতৌ চছে ইত্যাদিস্বন্দাপায়ং ৰাৰকঃ এতদৰ্থমেৰ স্থারিতি বছৰচননিদ্দেশোংপি ক্বতঃ। তেন কঃ ৎদর-তীত্যত্র বিদর্গদ্য দকারো ন ভবতি।

(১৮২)। নুন্ইতি দ্বিতীয়াবহুৰচনমন্ত্রতা ষষ্ঠান্তং প্রব কানিতি।
নুনঃ ইতাস্য নকারঃ পে পরে সাত্যারঃ সাল্নাধিকণ্চ সকারো ভবন্তি।
সকারেহকার উজারণার্থঃ। নুঁংপাহীতি সকারে ক্তে বিসর্থঃ তস্য স্থানে
পক্ষোরপ্রধানীয় ইতি পক্ষে উপধ্বানীয়োহপি। নুন্ পাহীতি কেচিদিতি
পূৰস্ত্রাধ্ব্যন্ত্রতে ইতি তেবাং মতম্।

(১৮৩)। বিক্রক্তেঃ কানো নকারঃ সাকুষারঃ সাকুনাসিক ত সকারো ভবতি। কাঁঝানিতি কিম্শদাৎ শদ্ কিংকজাদৌ কুণ্ডেতি কঃ সবর্ণো-হক্শস ইত্যাদিনা পূর্রসবর্গঃ সদ্য নঃ পদস্ত সাকল্যাভীক্ষ্যোত্মিতি দিফ্জিঃ। ক্ষাদিপাঠাৎ ন বিসর্গঃ। প্রাক্ষিত্রিতি বচনাদ্রিক্জিবাচাং পূর্বাপদনের েংনোত্রপদস্য কানো নকার্স্য নুষ্কারঃ। কানঃ কানীতি ন কৃতং ব্রু দিক্জিনকিতা তত্র সত্নির্ভার্থং বৃক্ষান্ কান্ক্যতি গ্রামান্।

(১৮৪)। স্বটি পরে সমো মকারঃ স্বায়ুস্বারুলা সুনাসিক চ সকারো ভবতি। তস্য লোপো বা। সংস্কৃতিতি সংপূর্বাৎ কুঞঃ ভৃঙ সংপর্গুপেভ্যঃ কুকো ধণে ইতি সুট অনুসারস্যানুনাসিক্স্য স্বরধর্ম্মনাদ্রাদিত্বত্ত্বের্ডু ১৮৫। অচ্ ঙ্রপরে কারে। পুংসোহলোপেহসুনাসিকো বা।
পুংশ্চলী পুশ্চলী পুংশ্বোকিলঃ পুংশ্বং পুঁড্ম।

১৮৬। বর্গাদেস্ত্তীয়োহজগাদের। বর্তীয়ো ভবতি।
কাদেরত্যে গাদিঃ। বাগত্র বাগ্গতা অজ্বাদী ষড়্ঘণীঃ মরুত্তবঃ
ক্ষাতম্।

সকারস্যের ভবতি দ্বিজ্ঞ দ্বিদকারমেকসকারং রূপত্রন্থং সামুস্থারসানুনাসিক-ভেদাৎ ষট্প্রকারং তবের দ্বিক্কারভেদাৎ দ্বাদশ প্রকারমেতদের ভাষোঁ দর্শিতম্। সংপুংশকৌ চেতি ক্ষাদিয়াদ্বিস্গাভাবঃ।

(১৮৫) অচ্পরে ভ্যপরে কানৌ পরে প্রদ্ ইত্যস্যাকারলোপে সতি
মকারোহয়ুনানিকো বা স্যাথ। পক্ষে পৃংসোইপদান্তে চেত্র কুরারঃ। পৃংশ্চনীতি চল কম্পনে চর চল ইত্যাদিনা অধ্যন নাদিখালী ষষ্ঠানমাসঃ কাদাবিত্যাদিনা অকার নুক্ ক্ষাদিখাবিস্পাভাবঃ সক্তেতি স্স্যা শঃ। কাদাবিত্যমির ক্তে লক্ষণস্য সাকাজ্জখাদচ্ভ্যপর ইত্যস্য বিশেষপথেন চ ছ
ইত্যাদীনাম সুবৃত্তিঃ স্যাথ এবং সতি পৃংক্রোকিল ইত্যর ন স্যাথ। অল্লোপ
ইতি কিং? পৃংশ্ব্যা। নমুহলি পুক্ পুংসোহস ইত্যস্য আেপে কৃতে
অত্রাপ্যল্লোপো ভূত এব নৈবং, বদ্যস্লোপোহপাল্লোপ গ্রহণেনব গৃহতে ভ্যাং
আল্লোপগ্রহণমন্থিকং স্যাথ বাাবৃত্ত্যভাবাথ তথাদল্লোপ গ্রহণমন্থিকং স্যাথ
ব শ্ব্ত্যভাবাথ তথাদল্লোপগ্রহণেন কেবলাল্লোপ এব গ্রাহ্ণ এবঞ্চ সর্ক্রোনচ্ত্রপ্রেক কাদৌ অল্লোপসাভাবাথ অভ্যুব্যর্গব্যহণমন্থিক্ষেব।

(১৮৮)। কে গান্য ইতি প্রশ্নকারমাহ কাদেরকো গাদিরিতি। কাদি: প্রাপ্তক্ত এব তন্মানকো গাঁদি:। অত্রাচ্পনোপাদানাৎ অভাপি স ইতর:। নতু অভাপি গাদিপদেন কন্মান গৃহতে এবং সতি অভিত্যবং ন কৃতং স্যাৎ নৈতদন্তি অপদান্তেংশি ধানাবিভানেন আদিমানক্তিমিভা-কাচি পরে দঃ স্যাৎ ভূতীয়ো ভবনু সানিধ্যাৎ স্থানিন এব ভূতীয়ো ভবতি ১৮৭। অপদাত্তেহিপ ধাদো তদ্ধিতগাদোঁ ট। দিনি বিশ্বাহি অদ্ভাং অদ্ভ অভ ভতি অভ ডিডিবভি উদ্ব্ উজ্ঞতি উজ্জিতি উজ্জিতি বিশ্বতি বাধং বাগ্জাতীয়ঃ।

১৮৮। বাবসানে হল্ দ্বিশ্ট।

याक् বাক্ বাগ্ বাগ্গূ বৃক্ষব্ বৃক্ষবৰ্ অব্যয়্ অব্যয়্য কিম্ কিশা ।

ষড় খণ্টা ই জি যয ইত্যাসাৎ জন্ জন্শনোল্ গিত্যাদিনা জন্তুক্ ষষ্ট ইতি যন্ত টা জব ইতি অপ্রাদেহ এ হতুব ইতি জঃ স্বব্দাতমিতি শোভনা আপঃ স্বাপঃ স্বাদেবৎ সর্মত্রেতি প্রাপ্তান্যাতঃ ন বছগ্রীহবর্জ্জং পূজার্থস্থতিভ্যামিতি নিষেধঃ স্বপ্ন জাতং স্বজ্ঞাতন্।

(১৮৭ । ধানৌ তহিতগানৌ চ শুরে পদান্তেহপদান্তেহপি বর্গানেঃ স্থানে তংগুতীয়া ভবতি। বর্গানাং ভূতীয়া ভতুর্থো থানিঃ। দেক্ষিতি ত্রহ প্রপূবণে তিঙ্ হোট ইত্যাদিনা হস্য বং ধোধাতুর্যাদিতি তস্য ধং বর্গস্যাদিরিত্যাদিনা ঘস্য কঃ। বাগ্ ভ্যামিতি বচ পরিভাষণে ক্লিপ্ দীর্ঘক বঁজােঃ ক ইতি চস্য কঃ অড্ড গ্রীত্যাদয়ঃ তণ্চটানিত্যক্র সাধিতাঃ বাগ্ বদিতি বদাদিন্তানিবাদানিতি কং। বাগ্ জাতীয় ইতি প্রকারকতিজাতীয় ইতি জাতীয়ঃ। অপীতি ক্লুংস্ পদান্ত ইত্যস্যান্ত্রতিস্কলার্থং বন্যপি পদান্তে পূর্বেস্ত্রেণ সিদ্ধে প্রকারকার নান্তি তথাপ্যত্তরত্র ক্রে পদান্ত ইত্য ক্রিঙ্কা ভবতি। অপদান্তেহিদি গাদাবিতি বদি ক্লুঙ্কা স্থাৎ তদা যত্নঃ ব্রপ্তঃ দান্তি ভতীয়ঃ স্যাৎ। তদিত্যাদিবিতি বদি ন ক্লুঙং স্যাৎ তদা বাগদিত্য ত্র ভূতীয়ে। ন স্যাৎ নায়ং পর্লীয়াঃ ব্রো বরলবীয়া ব্রারঃ।

(১৮৮)। বিরামোহবদানমিতি পূর্কাচার্যাস্য সংস্থা অথবা লোক-প্রাসিদ্ধ এবারমবদানশকঃ সমাপ্তিমভিগতে। অবদানে পদবিরতো বর্গা-দেস্থতীয়ো বা ভবতি। অবদানে বর্তমানা হল্চ দ্বির্লা ভবতি। বহৈত্রক ভূতীয়ো বিহিত্তত্বৈব দ্বিন্নমিতি শক্ষানির সার্থং হলিতি ক্লন্তম্। বৃক্ষবিত্যা-দীনাং সাধনং পদান্তে যবোলু থেত্যক কৃত্রম্। দিন্দবিধানসামর্থ্যাৎ লুগ্ন্ মুলোহস্ত ইতি বলুগ্ন ভবতি।

১৮৯। ন তোমকুর্থে। মকুরান্।

১৯০। বর্গান্তে তদ্বর্গান্তো-বা।
বর্গান্তে পরে পদান্তে বর্গাদেঃ স্থানে তদ্বর্গান্তো বা ভবতি। বাগ্ডঃ
বাঙ্ডঃ অজ্ঞঃ অঞ্ঞঃ বাগ্ঞঃ বাঙ্ঞঃ বাগঃ বাঙ্নঃ বাগ্ন
মুক্তি বাঙ্নয়তি বাগানসে বাধানসে মড্পঃ ব্যঃ অগ্নিচিদ্নর্ভি

১৯১। ময়ড়াদে নিত্যম্। বাৰ্যায়ং বাৰ্যাত্ৰম্।

অগ্রিচিন্নয়তি।

১৯২। তুর্ব্যো ই:। পদান্তে বর্গাদে: সম্বন্ধিনো হকারক্ত স্থানে তুর্য্যশ্চভূর্থো বা ভবতি।

(১৮১)। মন্বর্থে প্রত্যন্তে পরে তকারদ্য স্থানে তৃতীয়োন ভবতি। মরুরানিতি মুরুদিত্যন্তাৎ মতুঃ। অঙ্ধশাদ্যন্তাচ্চেতি মদ্য বঃ।

অণ্ সামুনাসিক ইতি বক্তব্যম্। অবসানে বর্তমানোংশ্ সামুনাসিকো বা ভবজি। দিধি দিধি মধু মধু নদী নদী। ব্যবস্থিতবিভাষয়াত্র
অসন্ধিবিষয়ে ন স্যাৎ অগ্নী বায়ু: অমী শ্বিচনসিদ্ধানামীদুদেতামিতি অদসো
মাদিণ ইত্যসন্ধেরশ্বং বিষয়:। অথবৈতর বক্তব্যম্ ছান্সস্থাৎ অতএব
ভাগবু:জৌ ভাষাভাগে নাস্থ্যেতং।

- (>>•)। বাঙ্ ভ্ ইত্যাদিষু ওকারাদিবর্ণাসুকরণং বাঙ্মনসে ইতি
 ছন্দ্রসমাসে বাচো মনস ইত্যৎসমাসান্ত:। ছিবচনমৌ ঔদীৎক্লীবাচেডি
 উকারস্য ঈকার: গুণ: অগ্নিচিদিডি অগ্নিং চিত্তবানিতি অগ্নেশ্রেতি কিপ্
 ভূক্ প.ক্ষ বর্গাদেরিত্যাদিনা তৃতীয়:। পদান্ত ইতি কিম্ ? বচ্মি।
- (১৯১)। ময়ড়াদৌ পরে বর্গাদেঃ স্থানে নিতাং তবর্গাস্তো ভবতি।
 আদিপদেন তদ্বিতাধিকারবিহিতা বর্গপঞ্চমাদয়: প্রত্যয়া গৃহস্তো। এতদেব স্চয়িত্রং বাঝাত্রমিত্যুদাহাতম্। বাঙ্ময়মিতি তৎপ্রাচুর্যোশ প্রস্তমিতি
 সমষ্ট। বাঙ্মাত্রমিতি মানে মাত্রডিতি মাত্রট।
 - (১৯২)। তুর্যা ইভি চথার ইতামান্তপুরো মেরৌচলোপত ইভি

ৰাগ্ৰীনঃ বাগ্ৰীনঃ অজ্হীনং অজ্বীমং বড়্হীনঃ বউট্টাৰঃ উদ্-

१३०। अवा

কর্গাদে: সম্বন্ধিনঃ শকারস্য স্থানৈ ছো বা ভবঙি। বাক্শ্রঃ বাক্ ছূরঃ অচ্প্রোকঃ অচছ্ লোকঃ ষট্শ্রীমাঃ ষট্ছ্যামাঃ তচ্শাঞা তচ্ছ শাঞা অপ্রামী অপ্রুমী যাবচ্শঃ যাবচছঃ নিচ্ত নিট্ছু।

১৯৭। অনচঙ্যপরস্থ ন দ্যাৎ। বাক্স্টোভতি।

>৯৫। লমপরস্থা নেতি কাতন্ত্রম্।

যাক্লক্ষা তচ্শাশানম্।

যকার দলোপশ্চ চতুলন ডুহোর্বেতা দিনাবিকারসা উকাবঃ। পদান্ত ইতি পদান্তে বর্ত্তমানসা বর্গাদেবি গর্থ: সম্বন্ধিন ইতি সমিধানলকণোহত্ত সম্বন্ধঃ। তুর্ব্য ইত্যাস্য বাকাবশ্চতুর্গেতি স চতুর্থো ভবন বর্গাদেরেব ভবুতি প্রকারা-স্কর্মসম্ভবে হি বিভক্তিবিপবিণামো যুক্তঃ এতাবভা বর্গাদেরত্তরসা হকাব-স্যোতি ব্যাকাবো ন কতঃ। হীন ইতি ওহাক্ ত্যাগৈ ক্তঃ ক্রক্তবভাবি-স্যোদিনা ত্যা নঃ কিত্তে চেত্যাকারসা ঈকারঃ।

(১৯৩)। পদান্ত ইতি নামুবর্ততে সামান্তেন বিধানম্। বর্গাদেবিতি
বর্গাদেঃ সম্বন্ধিন ইত্যর্থ:। স্বাবচ্শ ইতি সংখ্যেকার্থাদীক্ষাথামিতি শস্
শব্দে চণ্ডা ইতি তস্য চঃ পক্ষে ছকারে ক্তে তশ্চটাবিতি তস্য চঃ।
নিচ্পু ইতি নিশাশকাৎ সপ্মীবছবচনং অপ্ বা দঘাদির্দ্তাদেরিতি নিশাশক্ষ্যা নিশ্ আদেশঃ অভিবন্ত ইত্যাদিনা শকারস্য চঃ তত্ত উত্তর্স্য অপঃ
সকার্য্য তালবাশকারঃ।

(১৯৪)। অনচ্পরসাঙিষপরসা চ শকারসা স্থানে ছো ন ভবতি। আচ্পরসা ঙরপরভা এব শকারসা স্থানে ছো ভবতীতি পূর্বাস্ত্রসার্থঃ সম্পদ্ধতে। অচ্ঙ্যপরসা শব্দ ইতি ন ক্বতং বৈচিত্রার্থন্। বক্রোক্তিরিয়মান্
চার্যাসা শিয়বাপতিং জনয়তি।

(১৯৫)। नमनवर्गा निक्कि काउबिमिकि क्यारक शूर्वरहावश्रोकः

গঠা। ইসান্তণনাঃ বিঃ স্বরে।

- স্থাত্তরে পদাত্তে ওণনাঃ স্বরে পরে বির্ভবতি। ত্রয়োদশাকারাদয়ঃ স্বরাঃ। ক্রনুঙ্কত স্থানমং পচরেষঃ সন্নতঃ সন্নাদিঃ।

১৯१। क्ठिश।

শ্বরূপপ্রতায়ো নেফা: সনস্তান্ন সনিষ্যত ইতি ভট্টবার্ত্তিকম্। ডিঙ্কু ইুত্যাদি।

१७१। ८६/३०:।

ष्मठ উত্তরশ্ছকার: স্বরে পরে দির্ভবতি। রৃক্ষচছায়া চিচ্ছেদ।

তচ্ছাক্র ইতি ষছদাহাতং তৎ কাতব্রদ্যাসম্মতমিতি স্টিতং তল্লক্ষণং বর্গপ্রধ-মেভাঃ শকারঃ শ্বরধন্তরপরশহকাবো বেতি।

(১৯৬) একমাত্রো ভবেদ্বাল্বী দিমাত্রো দীঘ উচাতে। ত্রিমাত্রম্ব প্রা জেরো ব্যঞ্জনং চার্দ্ধমাত্রকমিতি। আ ই উ র ১ এতে বর্ণা প্রয়াঃ দীঘণিচ পূর্বাং বৃত্তিকৃত্রবাক্তাঃ। একারাল্বা ন ব্রহাঃ ম্য়ঃ ১কারো দীঘণিকিব্রঃ। হ্রম্বনির্মার্গ্রাং শেষা দাবিংশতিরিতি স্বরাঃ। ক্রেড্রিতি ক্রেন্ট্র্কোটাল্যারীজীবরোঃ ক্রিপ্ স্থঃ বহুলাধিকারাৎ হলুপান্তেত্যাদিনা ন বুক্ ন ভবতি চজােঃ ক ইতি চস্য কঃ উপাস্তস্য বর্ণে ইতি নস্য ঙঃ লুগ্যুজােহন্ত ইতি ককারসকারয়ালু ক্। স্বগ্রিম্বির্জাণ সংখ্যানে পূর্ববং কিবল্তঃ। পচন্নিতি ভূপচ্ব পাকে শত্রহাঃ। সন্নাদিরিতি সমাসে পূর্বাং বিভক্তিনাপ্রিত্য পদান্তস্বান্ত্রাণ কর্মানির্মার বিভক্তিনাপ্রিত্য পদান্তস্বান্ত্রাণ কর্মানে ক্রাং বিভক্তিনাপ্রিত্য পদান্তস্বান্ত্রাণ কর্মানে ক্রাং কর্মান ভবতি প্রনাপেতিবিধিন্তাং।

(১১৭)। এতদ্বিং কচিন ভবতীতি ভটুবার্ত্তিকমিতি এতেনাচা-র্ব্যোক্তিরত্রার্থে প্রমাণমিতি স্বচিত্তম্ । তিওন্ত ইত্যত্রাপি স্প্রপ্তিওন্তং পদ-মিতি পাণিনিলক্ষণং প্রমাণমৃ। এতেনৈতছকং প্রমাণভূত্তপুরুর্বাক্টেমবে-ভালশমুলাহরণীয়ং নতু বাবণিচ্ছেশ্।

4 २०४)। भनाकानभनावाद - इत्राक्तिकारनन विभागम्। अस्व

- ছুহি যাটি ক্লাধি প্ৰাছি জিক্ষি চিঞ ইড্যত্ৰ প্ৰাছীতি নিপাত-' নাম বিঃ।

১৯৯। বিশ্বজ্ঞনাদের্ব।।
বিশ্বজনচ্ছত্রং বিশ্বজনছত্রং নচ্ছায়া নছায়া দধিচ্ছত্রং দধিছত্রমিত্যাদি বৈদিকমিত্যেকে।

২০০। পদান্তদীর্ঘাদনাঙ্মাঙঃ। কুটীচছায়া কুটীছায়া। আঙ্মাঙস্ত । ঈষদর্থে আচ্ছায়া ক্রিরী-যোগে আচ্ছাদয়তি।

২০১। সীমায়ামজিব্যাপ্তো চ।

আচ্ছায়ম্। তথাচ, ঈষদর্থে ক্রিয়াযোগে মর্য্যাদাভিবিধো চ য:।

এতমাতং ভিতং বিভাগাক্যস্মরণয়োরভিৎ। মাচৈছৎসীৎ। অভিতোস্ত। আচ্ছায়া আছায়া প্রমান্টিয়: প্রমাছয়:।

শরে ইতি প্রবৃত্তো প্রমানপাঠঃ বতো নৈতৎ পাণিনিসর্ক্বর্শ্বচন্তাদিসক্ষতং এবং সতি ব্রীচ্ছাত ইত্যাদৌ বিজং ৰ স্যাৎ! চিচেছেদ ইতি ছিনির হৈধী-করণে লিট্ অণ্ বিশ্বক্তিঃ ক ধ ছানিশ্চানিরিতি ছায় চঃ বিজে ক্লতে বর্ম-স্যাদিরিত্যাদিনা চায় চঃ।

⁽১৯৯)। বিশ্বজনানেকত্তরং ছো দির্জা ভবতি। প্রাপ্তে বিভাষেরম্। বামনেনাস্য ছাক্সযমূক্তং চক্রেণাপি ভাষাভাগেনোক্তম্।

⁽২০০)। পদান্তবর্তিনো দীর্ঘাদাঙ্মাঙ্বর্জিভাত্তরুম্ছকারো দির্মা ছবতি। প্রাণ্ডে বিভাবেরম। ঈবদর্থাদৌ ছোহচ ইতি নিতাং বিতম।

⁽২০১) আছারমিতি সীমালিব্যাপ্যোরাঙ্ ইতি আরাদাদিবাৎ
পশ্মী অগপরিবহিরপ্রাঙঃ পশ্মমা বেতি অবারীভাবঃ অবারীভাবোহ
ব্যরবিশেষণক স্নীবমিতি ক্লীবক্ষম্ । কথা মর্যাদাভিবিধাবিতি একং
সমাহার ইতি ক্লীবক্ষাদটীকোহুরিতি কঃ প্রাপ্নোভি। উচাতে। করং
সম্পারো মর্যাদাবরবন্ধাৎ মর্যাদা অভিবিধাবরবন্ধাৎ অভিবিধিরিতি কর্মবাররঃ। তথাচোকৎ প্রস্থাধিপ্যুতাবরবন্ধাৎ সম্পালোহপি ক্লমীদ্প্র

২০২। বিভক্তাবয়বামিতাম্ 1
শাহ ইচ্ছত্রং পটাহু উচ্ছত্রম্।

২০৩। পরস্পরানপেক্ষায়াক্ষেত্যেকে। তিষ্ঠতু কুমাবী চছত্রং হর দেবদন্ত।

२०८। द्वान्त्रामनानिर्वा।

অচ উত্তরাভ্যাং হকাররেকাভ্যামুত্তবোহশাদিবর্গা দ্বির্বা ভবতি। লেক্ষি লেক্ষ্মি ব্রাক্ষ্যা ব্যাক্ষ্যা হর্ম্যং কুর্বঃ কুর্বঃ কুর্ম:

ইতি। মাকৈংসাদিতি মাঙ্পূর্নিছিদিব বৈধীকবণে সর্ক্রকালে মাঙ্যোগে ইতি লুঙ্ছঙ্ মঙ্মাঙ্যোগাদঙাগমাভাবঃ সঙকদাদীত্যাদিনা ঈঙ্ অনিঙ্-হলস্তস্যেতি বৃদ্ধিঃ। অভিতোশ্বিতি বাক্যে স্ববণে চ। আচ্ছায়েত্যত্র বিকল্পেনৈব দিশ্বং প্রসজেং। প্রামৃতি প্রপূর্ন ইতি মা মানে প্রাদেবাদস্তা-দিত্যং ক্লুদচাঙনাগবিত্যাকারলুক।

- (২০২)। বিভক্তোহবয়রের যন্ত পদান্তনীর্থন্ত তত্মাৎ পরশ্চো নিতাং বির্ভবতি। অগ্নান্থ ইচ্ছত্রং পটান্থ উচ্চত্রমিতি অগ্নিপট্ শক্ষোগুল: সাবিতি গুণে ক্ষতে ব্বৈড্ ল্যামিতি স্থান্দিক চ কতে বিচারপ্রশ্ন প্রত্যাভিবাদনপূজানেই: পূর্বস্তার্কসাহ ওবস্থান্তাবিতি একারোকাবয়োঃ পূর্বস্তার্কসারাদেশো ভবতি স চ প্রতঃ উত্তবস্তার্কস্য যথাক্রমমিকাবোকারো। নর্বয়ং দীর্ঘান্তর এব ছকাবো ন ভবতি অতো বিকরবাধনার্থেন কিমনেন বচনেন তৈদেতক্ত্রণপরতি প্রতিধানেহিপি পূর্বনিমিন্তমেবেতি কার্যাং ভবতীতি। তেন রিপ্রস্থাত্তেদয়িস্যামি বাং রিপ্রপ্রেপ্রের্কামি বামিতি সিদ্ধাতি অত হি ভংশনে বিক্রকং জ্যোণ্ডি প্রত্যাধ্য
- (২০৩)। পরম্পনাপেকা যত্র নাস্তি তত্রাপি পদান্তনীর্বাছন্তরক্ষে নিতাং বির্ভবতি ইত্যেকে। অত্রানেকার্যাণামসম্মতিরেব। তিঠক্ত্যাদি-নাত্র পরম্পরাপেকা বাক্যরোভিন্নতাং।
- (২০৪)। অশাদিরিতি পর্নাদেন নঞা হল্বর্ণো গৃহতে। লেক্সীর্তি শিহ আবাদনে মিঙ্। প্রাক্ষ্যেতি বন্ধন্শকান্তজনমিতি টণ্ অনীতিমিজাচ-বরোপ্তেতি নকারলুক্ অনপভাটণ্শাৎ জাতো বন্ধা ইতি নিষ্টো নৃ ছর্তি

কুর্মঃ অচ্যং অর্চ্যং বার্বাহং। অশাদিরিতি কিম্ 💡

২০৫। হ্বৰ্জ্জং শাদিশ্চ হলীষ্যতে দৰ্শ্যতে দৰ্শ শতে মৰ্ষ্যতে।

২০৬। রোন স্থাৎ। মহাহ্রদঃ অতিহ্রদঃ।

२०१। व्यक्तां पिरल खार मीर्घार।

দধ্যত্র দধ্ধ্যত্র মধ্বত মধ্ধবত্র পুত্রঃ পুত্রঃ শক্রঃ শজুঃ ধত্র শজ্

শ্বহণিদিত্যাদিনা ঈ তৃতীয়ায়াঃ টা হর্মামিতি ক্ষঞ্ছরণে মাদেশ্ছথাদাবিতি ষঙ্
বহুলবচনাৎ মকারাগমঃ। কুর্ম ইতি কঞো মদ্ ন কঞোয়েচেতি উঙ্ তোনি হেধঃ কতোহঙি ত্যারিতি উর্। অর্চ্যামিতি শ্বচ স্বতৌ শহলোগ্য ইতি
বাঃ। বার্মাহ ইতি কর্মণো ণড়িতি গট্রালান্তাদিপি ভবতীতি স্চনার্থামিদদুদাহরণম্। দদর্শ ইতি দৃশির প্রেক্ষণে লিট্ অব্ ছিফ্জিঃ ঝদদিতাৎ
গুণঃ। মর্বতীতি মৃষ সহনে মৃষ্ প্রতিজ্ঞায়াং বা। অর্হণ,মতি অর্হমহ
পূজায়াম্। অচ ইত্যেব। হ্রলয়তি।

(২০৫)। অচ উত্তরাজ্যাং হকারবেশজ্যামূন্তরো হকারবির্জিতঃ।
শাদিরপি হলি পরে বা দ্বিরিষাতে। দর্শ্যত ইতি ণিঙ্ গুণঃ যক্ ণিঙ্লোপঃ।
হ্বর্জমিতি কিন্ ? পর্হাতে গর্হ গর্হণে ণিঙ্ যক্। শ্বদা হলীতি ন কুতং
বৈচিত্রার্থম্।

(২০৬)। অচ উত্তরাভ্যাং হকাররেকাভ্যাস্তরো রেফো দিন ভবতি। মহাহুদ ইন্তি কর্মধারয়ঃ সমানাধিকরণোত্তরপদে চেতি মহতস্তলোপো দীর্ঘত্তধা
নতু মহাহ্রদ ইভ্যাদৌ রেফদ্য দিছে ঢ্রোরিভ্যাদিনা রস্য প্রভবিষাতি কিমনেন বচনেন তৎ ক্রিয়তে সামান্তেন দিঘবাধনার্থং এতদেব স্চমিত্রং
সর্ব্বোপসংগ্রহায় রো ন স্থাদিতি রুতং তেন হর্ম্মঃ কুর্ম ইভ্যাদৌ অভাদিহলস্ত ইভ্যাদিমা রেফদ্য বিত্বং ন ভবতি। অ্ব বিত্বে রলোপে চ ক্রতে
ঢ্রোরিভ্যাদিনা দীর্ঘত্বং প্রসম্বেৎ।

(২০৭)। অজাদিশাসৌ হনস্তশ্তে অকাদিহনতঃ অনীর্যাত্ত-বোহজাদিহনতোহশাদিঃ শাদিশ বিশ্বা কর্তি। অচঃ স্থানে স্বাসিঞ্জ তিট্র তাজ সৰং গছে লবং গছে সংবস্তা সঁব্যস্তা সংবৎসন্থ: সঁব্রথ-সরঃ পুংলিক পুঁলিক:। দীর্ঘাত্ত্ব। পাত্রং দাত্রং গোত্রং সেত্রং সূত্রম্।

২০৮। হোন সাং।

সংনহতে।

২০৯। শ্বসাৎ কাদিঃ।

শ্চোত্তি শ্চে চ্যাত্তি স্থাবতি ষ্ঠ্ সীবতি স্থালী।

२ ३०। कार्ष मधर्माः।

ক্শাতা ক্শ্শাতা ক্ষাবং ক্ষাবং ক্ষাবং বংসঃ বংস্সঃ ভবৎস্ভবৎস্ত অপ্সু অপুস্তু অপ্সবাঃ অপশ্সবাঃ।

ক্রতে উদাহর পদর্শনা ভাবাদেব হ্রেরাক্ত্যা দীর্ঘস্তাগ্রহণে সিদ্ধে বদদীর্ঘাদিতি ক্রতং তদেতজ্ব ভাপরতি প্রত্যাহাবে প্রশ্বেশ দীর্ঘোহিপি গৃহতে প্রাবেশেক্যুক্তং ইণ্প্রত্যাহাব এব ব্যক্তিচাবদশনাং। তথা ইণ্ উদিণ্ ইতি অত্র হ্রেরাক্ত্যা দীর্ঘস্যাগ্রহণং সংষ্যাস্থা ইত্যাদৌ পদাস্তেহসুস্বাবো যবল ইত্যাদিনা বকাবাদিয়ু ক্রতের দ্বিতং শাদেদ্বিতং যথা দৃশ্সতাং শিষ্যাঃ অস স্থি। পাত্রমিত্যাদি পা বক্ষণে দাপ লবণে ব্ প্রস্বে গুঙ্ব্যক্তে শক্ষে এভাোণ মাদেন্ত্রভিতি ত্রঙ্। স্ত্রমিত্যত্র বহুলবচনাং গুণাভাবং।

(২০৮)। ইকাবো দ্বিন স্যাৎ সংনহত ইতি নহ বন্ধনে দিবাদিঃ ইবৰ্জমিত্যস্যামূল্ভৌ হকাবনিবেধে সিদ্ধে ষৎ হো ন স্যাদিতি কৃতং তৎ পূৰ্ণক্তেহশাদিঃ শাদিৱিতি পদন্বয়ামূবৃত্তিস্চনার্থন্।

(২০৯)। শ্বসাৎ পবঃ কানি দ্বির্কা ভবতি।

(২১০)। কাদেঃ পরাঃ শবসা দ্বির্বা ভবস্তি। কৃশাতেতি চক্ষিত ব্যক্তারাং বাচি ব্যাঞ কৃশাঞো চৃক্ষিঞ ইতি কৃশাঞাদেশঃ। অন্সরা ইতি ক্ষমনোহতারোবদ্বাদের্কেতি বিক্রেনাত বহুবচনম্।

२>३। यवलामयवल्यनामिः।

সব্যয় করোতি সব্যয় করোতি বৃক্ষব্করোতি বৃক্ষব্করোতি উল্পা উল্লো বল্মীকঃ লল্লীকঃ। ববলঞ্শাদিস্ত। ময় বন্লুকি-মামবঃ গল জাগলঃ।

২১২। অয়বলঞাশাদের্ঘণলার। দধ্যক্র দধ্যক্র মধ্বত গম্বত গম্বত।

২১৩। বগাদি স্তদ্বিতীয়ঃ শষসে।
ক্শাতা খ্শাতা নিচ্ত নিছ্ত মধুলিট্স্ন মধুলিঠ্স ক্ষীবং ক্ষীবং
ক্ষারং খ্যারং ৰৎসঃ বধ্সঃ ভবৎস্থ ভবথস্থ অপদরাঃ অফ্সরাঃ।

২১৪। শ্বসে বর্গাদ্যাত্রন্থিতীয় ইত্যন্ত্পদকারঃ।
ক্শাতা ক্থ্শাতা নিচ্ভ নিচছ্ত মধুলিট্সু মধুলিট্ঠুসু কীরং
ক্থ্মীরং কারং ক্থ্যারং বৎসং বথ্সং ভবৎস্থ ভবথ্স অপসরঃ
অপ্ক্সরাঃ।

⁽২১১)। ববলাছন্তরো ববলঞাশবসহান্ ত্য ক্র্যা হল্ বির্বা ভবতি। অব্যর্বক্ষব্ইতি পদাস্ত ইত্যাদিস্ত্রে সাধিতন্। মামব্ইতি মবগতো আগব ইতি গল অদনে যন্লুকি বিক্ষিক্ত: দীর্ঘোহনাগমাত ইতি দীর্ঘঃ বদ্। এতৎ স্কেন্থানে যবলা এবহিতবর্গা ইতি ন কৃতং বৈচিত্যার্থন্।

⁽২১২)। যবলঞশাদিব্যভিরিক্তাহত্তরা ধবলা দ্বির্ক। ভবস্তি। যবল-ঞশাদেক ওভংযুলুনাতি শনীব্লুনাতি শনীব্যাতি।

⁽২১৩)। শ্বসে পরে বর্গানিবর্গস্তস্যৈব বর্গস্য দিতীয়ো বর্ণো বা: ভবতি।

⁽২১৪)। শবসে পরে বর্গাদ্যাছত্তরে তলৈয়ব দিতীয়ো বর্ণো বা ভবতি। দিতীয়বিধানসামর্থাৎ বর্গস্যাদিন ভবতি অভ্যথা দিক্তিমেন বিদ্যাৎ অস্তপদং প্রস্থবিশেষঃ।

২১৫। পুত্রাদিনঃ পুত্রপুত্রাদিনশ্চ তোহনাজোশে। পুত্রানতঃ শীলমস্তাঃ পুত্রাদিনী পুত্রপুত্রানতঃ শীল-মস্তাঃ পুত্রপুত্রাদিনী পুত্রপুত্রাদিনী পিশুমারী। আক্রোশে তু। পুত্রাদিস্তাঃ পুত্রঃ।

২১৬। জিহ্বাসূলীয়োপথানীয়ো। উরস্কেন উরস্কেন উবলপেন উবললপেন। ২১৭। বিদর্গ শ্চেত্যেক। উরঃকেন উরঃফেন।

২১৮। হল্ পর্যুক্।

- ২১৫)। পুরাদিনঃ পুরপুরাদিনণ্চ তকাবোহনাক্রোশে গম্মানে দির্মা ভবতি। বাক্যোপনশ্নং ক্রুজীলিকে নিন্ স্চনার্থম্। পুরপুত্রা-দিনীতার স্থানদয়স্তিততকাবলৈয়ব দিলং শিশুমাবীত্যুক্তম্। তদ্বাধানন্থ অজ্ঞান হৈছে অনাক্রোশ ইতি স্চনার্থম্। অজ্ঞানীত্যাদিনা হিছে দিরে নিম্নার্থন্যতৎ তেনাক্রোশে দিল্ল ন ভবতি। প্রাদিন্তাঃ প্রান্থঃ ইতি ক্ষেপে ষঠা। ইত্যস্ত্ত্রী পুত্রে বেতাল্ক্ পুত্রহতী পুত্রজ্মীতাত্র বিকরেন দিলং দিয়্বন্সক্শ্যন্ত্রি ন কৃত্য।
- (২১৬)। জিহ্বামূলাযোপথানীবে ধির্মা তবতঃ উরুৎকণেতি উরুদঃ ক ইতি যটাসমাসঃ। অথবা উবংকামতীতি উবংশকাদ্রাদাবিতি কঃ কপ্রত্যযে ক্লতেখনগ্রনকাবভাং পদান্তবত্বাভাবে বিদর্গপ্রীপ্তিরেব নাস্তি। এবং উব্যুপেণেতি কখবোজিহ্বামূলীযো বা বিদর্গঃ পফরোকপ-থানীর ইতি বিদর্গদ্য স্থানে পক্ষে জিহ্বামূলীযোপথানীয়ে এতয়ারপি স্বর-ধর্মছাৎ প্রকৃত্যকরবেত্যাদিনা পথ্য।
- (২১৭)। কাপ্যমন্তবাং কাপি ব্যভিচারাং অজাদিহলক্তং পদং পূর্ব্বলক্ষণেষত্পস্থিতমিহাত্ত্বর্ততে। " অপ্নাদিহলক্তো বিদর্গত দ্বির্বা। ভবতীতেকে।
- (২১৮)। যদি হল্বর্ণ: পরেণাচা পি সহ যুক্তো ভবতি তর্হি তপসা শরনীত্যাদাবপি লুগ্ যুগোহন্ত ইন্তান্তবর্গো লুক্ ভাৎ ভন্মাৎ হলপরযুদ্ধিভি

হল্বর্ণঃ পদ্রণ সহ যুক্তো ভবতি। বাগত্ত বাগ্ গতা বাগ্ ভ্যাম্ । ২১৯। চ্টোর্ড লুক্ পূর্ব্বোহণ, দীর্ঘশ্চ। ত্রাঃ পররোর্চকাররেফরোলু গ্ভবভি। পূর্ব্বাহণ, দীর্ঘশ্চ। লীড়ঃ পুনারমতে কবীরতঃ সাধুরাক্ষা।

২২০ ইচ্জাৎ সঃ মোহপদান্তে। ইচ্কর ইত্যেতেভ্য উত্তরতাপদান্তে সকারতা স্থানে যো ভবভি। অগ্নিযু নদীযু বায়ুষু কেষাং বক্ষি বার্ সিষ্টে স্থাপ।

পরশব্দেন সামীপ্যাৎ হলেব গ্রাহ্ম:। হল্বর্ণ: পরেব হলা সহ যুক্তো ভবতি তথাচ হলো হলস্করা: সংযোগ ইতি পাণিনীরঞ্চ লক্ষণং যদ্যেবং বাগ-ত্বেত্যত্র গকারাকাররো: কিং জাতং ন কিমপি কিন্তু স্বভাব এবার্দ্ধমাত্রি-কাণাং ব্যঞ্জনানাং যদমুনি কেবলানি অ্পপেষ্টোচ্চারপানি স্বরসহিতান্তেবোচ্চা-রণমইন্তি তত্মাদ্বাগত্রেতি লিপিকরপ্রমাদক্তঃ অথবা নৃপ্যুক্তোহন্ত ইত্যত্র হলিতি পদমন্ব্যঞ্জনীয়ন্।

(২১৯)। লীচ ইতি লিছ আশ্বাদনে ক্তঃ হোচ ইত্যাদিনা হস্ত চঃ ধা থাত্য্যাদিতি তস্য ধঃ ষট্বর্গাদিত্যাদিনা ধস্য চঃ চকারনিামন্তস্ত বর্গস্তা-দিরিত্যাদিনা টোইন ভবতি চলোপস্য বিষয়াস্তরাভাবাৎ শ্বনিভ্রেটাকত ইত্যাত্র ভূ ন' চকারনিমিন্তইকারঃ কিন্তু পদান্তনিবন্ধন ইতি তু ভবত্যেব। প্রনারমতে ইতি প্ররিত্যক্তরং অচ্যকাদাবিতি কন্ধাদিয়াদিসগাভাবঃ। রুচ্ছ ক্রন্থেনি প্রাত্তভাবে সর্ব্বং প্রবিবং রোহচীচ ইতি বিসর্গস্য রেকঃ সমিহিত-শ্বাদেব পূর্ব্বস্য দীর্ঘক ভবতীতি শবা স্যাৎ। অণ্ ইতি কিম্ ৪ জর্গ চঃ গ্রহ উপাদানে যন্পূক্ তস্।

(২২০)। কেবামিতি কিং ক্লাছাবিভি কঃ দিরামীতি দিঃ এতা ইত্যাদিনা এজন্। বক্ষীতি বচ পরিভাষণে লট্ দিঙ্ চজোঃ ক ইভি কঃ। দিষেচ ইভি দিচির ক্ষরণে লিট্ অণ্। স্থাপ ইভি ঞি ছপ্ করে যঃ স ইভি সঃ বন্ধজাদ্যোরিভি বিকজেঃ স্থ:। কথং দৃধ্যু ইভাত থাত্তরস্য ক্ষেম্? উচাতে। দৃশগাতোঃ কিপি স্পাচ ক্লতে কোহতো দৃশিভাদিনা ২২১। ভাল্ড। প্রাঙ্ধ্।

२२२। यैवनानिट्जुटक्।

व्यवाग्रभावकारणम् व्यवाग् म् त्रकत्म् विल्व् ।

২২০। স্বন্ধারবিসর্গবসাং ব্যবায়েহপি। সর্পীংষি সর্পিঃমু সর্পিষ্যু পেপেষ্ষি। অন্বন্ধারব্যবায়ে তু। পুংস্ত নিংস্সে।

শশু কে ক্লতে অপেক্ষিতাবিধিত্বাৎ প্রথমং যত্বং পণ্ডাদ্র্গাদিন্তদ্দ্বিতীয়: ইতি
কশু থকারে ক্লতে কচিদিতি বচনাৎ নিমিন্তাপায়েহপি ন যত্বনিবৃত্তিঃ।
অথবা ইচ্ক্রাদিতি ক্ত্রে ক ইতি কবর্গোপলক্ষণং তদা ভাচ্চেতি লক্ষণং
প্রপঞ্চার্থম্। ইচ্ক্রাদিতি কিম্? মালাস্থ্য

- (২২১)। ওকারাজোন্তর সাপদান্তে সম্ম স্থানে যো ভবতি। প্রাঙ্রু ইতি অন্চুগতিপূজনযো: কিপ্ স্থপ্ শসাদৌ লুগন্চোহপূজারামিতি নম্ম শুগভাব: চুজো: ক ইতি চম্ম ক: উপাস্তম্ম বর্গ ইতি নম্ম ও: ককারলুক্ ।
- (২২২)। যবলাহন্তর্মভাপুনাস্তে সকারস্তা খো ভবতি ইত্যেকে। অব্যয়্বিতি পূর্ব্ববৎ অস্তার্থস্ত পাণিনিসমত্তাৎ সর্ববর্মসমত্তাচ এক ইত্যুক্তম্।
- (২২৩)। স্থানীয়োহমুমার: বসুমার ব্যুমারশ্র বিদর্গন্ত বকারশ্র দকারশ্র চ ব্যবারেহিপি ইচ্ কর ইত্যেতেভা উত্তরশ্রাপদান্তে সভাবো ভবিতি। নমু মু ইত্যেবং ক্রিয়তাং নহি সকারে পরেহবমুমার: মুকার: কাপান্তি বদ্বার্ত্তার্থন্ অমুম্বারপদং তৎ ক্রিয়তে স্পটার্থন্। অত্যাপিশক্ষ: কিমর্থ: অব্যারেহিপি ভবতি ইতি চেৎ নৈতদন্তি পূর্কেশ্বৈবার্যান্তহিপি সিদ্ধাণ নিয়মার্থম্। ভর্তি বিজ্ঞায়তে এয়ামেব ব্যবারে ইচ্ ক্রাৎ সঃ যো ভবতীতি তদানীমেক-মেব বোগং কুর্যাৎ ইচ্ ক্রাৎ বমুমান্তবিদর্গবদাং ব্যবারে সঃ বোহপদান্ত ইতি তদাৎ বোগবিভাগসামর্থ্যাদেব পূর্কেষোগোহব্যবারার্থা বিজ্ঞায়তে নার্থোহিপি শবেন তদেবং প্রতিপত্তিগৌরবপরিহারার্থাহিপিশকঃ। সর্পাংবীভি অস্বসোমিতিশিঃ শাব্দ ইত্যাদিনা মুঃ দীর্ঘোমহৎ সাজ্যোনাবিতি দীর্ঘ:অপদান্তভেত্যাদিনা অমুম্বারঃ। স্পিঃবিতি সো সম্বর্ধে ইতি পদান্তব্বাহিশ্য: স্পির্বিতি শব্দেশ

২২৪। শাসিবসিঘসীনামেবানাদেশশু। শিষ্টা অশ্বশিষৎ উবিভঃ উবিদ্বা জক্ষতুঃ জক্ষুঃ। অহাত্র কুশুভি বুশুভি।

শ্বদা ইতি বিদর্গন্ত দকারে কতে তদ্বাবারে বন্ধং দে নির্তাং দক্ত য ইতি বন্ধং অত্র বিদর্গবারে এব বন্ধে কতে শ্বদে ইত্যাদিনা মূর্দ্ধক্তে দতি রূপমেতি দিয়াবোর এতাবতা পেপেয্ বীতি দিতীয়োদাহরণমূপন্তন্তং পিস্পেশ্রুণ কার্বাবারে যন্ধ্য হিছে মূর্দ্ধন্তবার দিপিক ইত্যাদিন চল্লোং ক ইত্যাহর্বে বন্ধং দন্তবিত । বতঃ পিয়ু সংচূর্ণন্দ ইত্যাদেন চল্লোং ক ইত্যাহর্বে বন্ধার কার্ত্রে বন্ধার করণর প্রতায় বিকারাগমন্তঃ দিঃ ষণ্চ মূবিদর্জনীয়দান্তবাহিপি। পুংপিতি হলি কুক্ পুংলোহদ ইত্যাদ্দ্র ইত্যাদ্দ্র ইত্যাদ্দ্র ইত্যাদ্দ্র ইত্যাদ্দ্র ক্রির্বার্বির ক্রির্বার নায়ং অন্ধ্রনী অনুস্বারং কিন্তু মকারদম্বন্ধী। নিংস্দ ইতি নিসিচুগনে ইণিয়ারু দ্বার্ট্রে দে নায়ং অসম্বন্ধী বিন্তুর ক্রির্বার্বির ক্রির্বার ক্রির্বার ক্রের্বির ক্রের্বির ক্রের্বির ক্রির্বার ক্রের্বির ক্রের্বার ক্রির্বার ক্রের্বির ক্রের্বার ক্রের্বির ক্রের্বার ক্রির্বার ক্রের্বার ক্রির্বার ক্রের্বার ক্রির্বার ক্রের্বার ক্রের্ব

(২২৪)। শাস্ত অন্ধনিটো আঙ্ শাস্ত ইচ্ছায়াং বস নিবাসে বস্
আদনে আদাদেশোহপি বস্রিতি কেচিং। অত্যে তু বসু আদন ইত্যাসা
বপাচায়ং মতভেদং সমণ্ লুঙ্ ডেয়ু চাদৌ বসুলিটি বেত্যকৈর ব্যাপ্যাতব্যঃ।
আবামেরানাদেশস্য ইচ্জাত্তরস্য সস্য বো ভরতি নান্যেয়ায়্। সমুদারস্যাদেশেহরম্বস্যানাদেশস্বমিতি বসেরপাদানাদবগস্তব্যং ন জ্নাদেশস্য বসেরিচ্জাত্তরং সকারং সন্তর্বভি সত্রব তিস্ভিরিতার ন
বস্ধ্। শিষ্ঠ ইতি ক্তঃ তস্ বা শাসোহচতুর্ধপীতি আকারদ্যেকারং
বটবর্গাদিত্যাদিনা তস্য টঃ। অর্থশিবদিতি লুঙ্ হঙ্ অনিজ্ঞার্পনাসোহ
শিশেতত্যগাগম্য শিসাদেশক। আঙ্শাসোম্ভ আশিষ্যে।
উলিতঃ উবিত্বা ইতি মৃড্ মৃদ শুর্থ কুল বদ্ বসঃ ক্তি চেতি ইট্ কিদাশীল্যোরিত্যাদিনা বস্ উদ্ ইট্। ক্ষ্মতুঃ ইতি লিট্ অতুস্ ঘণ লুঙ্ ডেম্
ইন্ডাদিনা বস্বাদেশঃ বিক্তিঃ হ্নাদেরনগিত্যকারলুক্। কুস্তীতি
ক্র্ম সংশ্রেষ্পে। বুস্তীতি বুস উৎসর্গে দিবাসৌ।

২২৫। স্তোতেরের সনঃ ষত্ত্ব। পুষ্ঠুষতি। অভাত্র। সিসিক্ষতি স্থস্বতি।

২২৮। সিঙ্সন্থসহস্থিদস্বদাম্। সিমঞ্জয়িষতি স্থাপয়িষ্ঠি। সহস্থিদসদান্ত। সিসাই**রিষ্টি সিম্থে**-দয়িষতি সিস্থাদয়িষ্টি।

২২৭। ব্রস্বাতাদি তদ্ধিতে তদো চ। সর্পিটরং সর্পিট্সং সর্পিট্যং সর্পিটা চতুষ্টরং দীর্ঘাযুষ্ট্যং

(২২৫)। সন্প্রত্যরস্য করে কুতে প্রক্তান্তঃ সকারস্য ইচ্ ক্রাদিত্যাদিনা প্রাপ্তং যত্বং স্টোতেরের ভবতি নাজস্য। তুই যতীতি ই ক্রু জতৌ

মূর্দ্ধশ্বসাৎ কাদিরিতি দিরুক্তিঃ। সিসিক্ষতীতি সিচির ক্ষরণে চজাঃ ক
ইতি চস্য কঃ। স্বস্থবতীতি স্থ জ্বেরণে পূর্বেণ প্রাপ্তে আরম্ভসামর্থাদের
নিয়মে দিন্ধে এবকারকরণমিইতোহবধারণার্থং অল্পথা জ্বোতঃ সনঃ যত্বে

এবেতি নিয়মাশকা স্যাৎ এবং সতি তুইার ইত্যান্ত যত্বং সনাং যদ্যেবং

বহু ইত্যনর্থকং স্যাৎ নহি ভৌতেঃ পরোহক্রত্যত্তমপি সমস্তি যদ্মার্ত্ত্যর্থং বছ
ইতি কৃতং তন্মাদিপরীতাশকা নীজ্যেব। কিমর্থমেবকারকরণমিতি ন

চোদ্যম্। তুই রিত্যান্ত সনস্তাৎ কিবস্তস্য পদান্তত্বে ষণ্ণাভাবেহকৃত্যত্বস্থাপি
জ্বোতঃ পরস্য সনো বিদ্যমান্তাৎ। যত্ব ইতি কিম্ ? স্কুমুক্ষতি তির্চাস্তীত্যান নিয়মেন ব্যব্যার্ত্তঃ স্যাৎ। ইচ্ক্রাদিত্যাদিনা প্রাপ্তং বছং নিয়মেনশ
ব্যার্ত্তাতে। অভিধিষিক্ষতীত্যান্ত স্থাদেরিত্যাদিনা বছং ভরত্যেব।:

(২২৬)। সহ মর্যণে দ্বিদা গারিপ্রক্রনে দিবাদি: ঞিবিদা স্নেছ-মোচনয়োর্জ্বাদির্ঘারপি গ্রহণং বদ আস্বাদনে এতথাতিরিক্তানাং থাতুনাং ণিঙঃ পরে সনি কতে সতি বত্বে সতি ইচ ক্রাছত্তরস্য সস্য স্থানে শ্বো ভবভি। পূর্বস্ত্রেণ নিরমাদপ্রাপ্তং বন্ধং বিধীয়তে। দিবঞ্জারবর্তি ক্র্বাপরিধ-ভীতি বন্ধ পরিবঙ্গে ক্রিম্বপশ্যে স্থঃ বাপেরম্বণাদাবিতি স্বাপের্ফিক্টে স্কঃ।

(২২৭)। হ্রমাদিচ উত্তরদ্য তাদিতদ্বিতে পরে তসৌ চ পরে দল্য হানে বো ভবন্তি। সম্ভব্যভিচারে হি বিশেষণমনর্থবস্তবতীতি হ্রমা-দিতি বিশেষণাদিচ ইতাস্যোধায়ন্তর্নাক্রেষাম্, ক্ষনমুন্ধতৌ ছু গদ্ধবান- আবিষ্ট্যঃ নিষ্ট্যঃ সর্পিষ্টঃ চতুষ্টা। দীর্ঘাত্ত সীস্তরাং ধৃস্তরাং। শীস্তঃ ধৃস্তঃ দোস্তঃ দোস্তা।

২২৮। ন তিঙঃ।

पश्राखदाः जिन्द्राखदाम्।

२२৯। श्रेमारिनण्ड। मिथ जिक्का मधु जिक्का

মিত্যাদৌ বহুং স্যাং। তাদিতদ্বিতে সো মহুথে ইতি পদান্তবন্ধাদিচ্কাদিত্যনেনাপ্রাপ্টে বিধানম্ তসে চ পরে পদান্তবন্ধাভাবাৎ প্রাপ্তে নিরমার্থং ক্লবাদেব তসৌ পরে যো ভবতীতি নাগুতঃ। সপিষ্টরং সপিষ্টমমিতি দ্বিক্তভ্যোহত্যর্থে তরতমানিতি ভরতমৌ। সপিষ্ট্রং সার্পিষ্টেতি তদ্ভাবে ভান্ধমিতি তাম্বপ্রভারৌ। চতুইরমিতি চম্বার ইত্যামাৎ তর্মজংশে সংখ্যায়া ইতি তর্মট্ চতুরনজ্হোর্কা উচ্চ্বু সাদাবিত্যাদিনা বাকার দ্বাকারঃ রঃ সন্তসাবিত্যাদিনা রস্যাধার ইতি কাদিভান্ত্য ইতি তাঃ। নিষ্ট্য ইতি নিরো বর্ণাপ্রমবহিন্ধত ইতি তাঃ রস্যা সঃ সর্ব্বতাধাতোর্ন স্যাদিতি প্রতিবেধার ষষ্টঃ ইতি তাদিতদ্বিতা এত এবাত্র গৃহুন্তে ইতি হুচনার্থং বহুদাহরণোপঞ্চাসঃ তেন তৎক্ষেত্র হৈলামিতি তৈলঃ আচ্ দেয়ে ইতি আচ্ ইত্যাদেরগ্রহণাৎ সপিষ্টিন্তলং যজুরাক্বরোতি ইত্যাদৌ ন ভবতি এতদিন্তং বহুলাধিকার।দথবা ভন্তাবে ভাস্ক্রাক্বরোতি ইত্যাদৌ ন ভবতি এতদিন্তং বহুলাধিকার।দথবা ভন্তাবে ভাস্ক্রাক্বরোতি ইত্যাদৌ ন ভবতি এতদিন্তং বহুলাধিকার।দথবা ভন্তাবে ভাস্ক্রাক্বরোতি ইত্যাদী ন ভবতি এতদিন্তং বহুলাধিকার।দথবা ভন্তাবে ভাস্ক্রাক্বরোত ইত্যাদী ন ভবতি এতদিন্তং বহুলাধিকার।দথবা ভন্তাবে ভাস্ক্রাক্রে বিহিত্যা তা ইত্যানাত্র গ্রহণং আদিশক্ষং প্রকারে প্রকারণেচাদাহরণেনৈবাবিন্ধতঃ। সপিষ্টঃ চতুর্ছ ইতি কহুহাকোরিত্যানিনা পঞ্চমানন্তি স্থাত্রের ব্রেরামাৎ গীন্তরাং ধ্ন্তরামিতি পাঠো বহুষ্
পৃত্তকের দুল্ভতে সঃ প্রমাদপাঠঃ ন হুত্রাম্বিধানমন্তি।

(২২৮)। তিঙ্কা সম্বন্ধিনা সকারশ্র তাদিতদ্বিতে পরে যো ন তবিতি।
দহাস্তরামিতি দাঞো লিঙ্ প্রথমপুরুষ্বইবচনং যুস্ ইবাদিয়াদ্বির্দ্ধিঃ।
ইবদেরাল্লুগ্লিঙ্ঘে ইত্যাকারলুক্ কিমেদন্তাব্যরতিঙ্ক্তদন্তাদামন্তব্যে তদবারমিত্যাদিনা তরন্তাদাম্। ভিন্দ্তরামিতি ক্লণাদেঃ শ্লমিতি শ্লম্লান্ত্যোরদিত্যকারশুক্।

(২২৯)। পদাদেশ্য সন্ত'বো ন ভবতি। দধি সিঞ্চতীতি হলকাসো দুলিতাশ্ৰুক্ তুমাদিখাৎ শং দ্ৰে মুশুচাদেরিতি হুম। ২০০। সাতশ্চ। স্পান্নিসাৎ দ্বিজাতিসাৎ।

২৩১। স্প্রত্যাবয়বস্থা চ। দ্বিস্তি মধুস্তি। স্পদাস্ত ইতি কিম্ ? স্থাস্তিত্র বায়স্তত্র।

(২৩•)। সাতঃ সদ্য ধোন ভবতি। অগ্নিদাদিতি সাদতি ব্যাপ্তেরী সম্পদ্যতো চেতি সাং। ধিলাতিসাদিতি তদধীন ইত্যমুর্ত্তৌ ত্রাচাদর ইতি সাং।

(২০১)। প্রত্যাধ্যম্ভীতি স্থপ্ তিঙ্ কুত্তদ্ধিতা: প্রত্যন্না ইতি ৰক্ষাতি। তিঙি তান্তোপলক্ষণত্বাৎ সনাদয়োহপি প্রতায়ান্তরতিরিক্তো-হপ্রত্যমন্ত্রন্থাবয়বদ্য দদ্য যে। ন ভবতি। নমু শাদিবদীত্যাদিনা নিয়-(भन जनारमश्रादिक पित्राजीजारिक) यह न जिवाजि किः नकालन সত্যং এতদপি নিয়মার্থং প্রভারাবয়বব্যতিরিক্তলৈয়ব বত্বং ন ভবচি। অনেন দিতীয়নিয়মেন প্রভাষাবম্বরদা ষত্বং ব্যবস্থিতং সমস্ত প্রভাষা-বয়বস্বমূপচারাৎ যথা রাছো: শিক্স: শিলাপুত্রস্য চারু শরীরম। দ্ধিস্য-তীতি তুল্যাচার ইত্যাদিনা ঈয়্। সিরসন্চাতিতৃষ্ধায়ানীয়ীতি সিরাগনঃ আগমলক্ষণম্ব প্রাগেবোক্তং তেনৈব প্রত্যমাদমীয়াং ভেদ:। যদেবেং তলা কেয়ামিত্যালো কথং যত্তং দিরামীতি সেরপ্যাগমত্বেনাপ্রত্যয়ত্তাৎ উচাতে এডা: সো: স্প্র ইতাত কর্চবো এডা: দামো:স্প্র ইতি মদেতৎ কৃতং তজ্জাপদতি খাদিষু পরেষু বিহিতা আগমাঃ খাদিভক্তা এব ভবন্তি তেন সেরাগমত্বেংপি তদবন্ধবতাদলোব:। অতএবাসুবৈয় ইত্যত্রাপি ষত্বে ভবিষাতী আনৌ চ মং দাঙ্বিধীয়তে দ লুট্ সংক্রক-সহচরিত এব ভবতি নতু পণ্চাৰতোহদৌ প্রতারাবয়ব এব। ইচ্ঞাদি-ভানেন প্রাপ্তং ষত্মভির্বাধ্যত ইভি জ্ঞাপনার্থং ষত্তবিধান্শেষবিহিত্যত্ত্ব-প্রতিষেধপ্রকরণেন এতানি বচনানি উদাহতানি। বক্ষামাণষত্বিধানে-हेनव थानी जन्मगीनि वांधारक यक्तवार्णविक्विनित्वधिनिक हार्खाएगाउ ।

२७२। जाशादमः खनादनी।

অগ্ন্যাদেরিচ ক্রান্থতরত স্তদাদো হিতত সত স্থানে বো ভবতি। বিশ্বিদ্ধ অগ্নিটোম: আগ্রেটাম: অলুলিষকঃ ক্রেল্বিকঃ অলুলীষকঃ অলুনিষকঃ অলুনীষকঃ অলুনীষকঃ অলুনীষকঃ অলুনীষকঃ ক্রেল্বিক। নোবেচিকা নোবেচনং প্রতিষ্ণিকা গোবিষক্থো নাম কন্চিৎ ভীক্লপ্তানং মাতৃস্থসা গবিষ্ঠিয়ঃ যুধিষ্ঠিরঃ।

(২৩২)। অত্র কেষাঞ্চিৎ পদাদিস্থাৎ কেষাঞ্চিদনাদেশতাদপ্রাপ্তে বিধানম। অমিষ্ট্রনিতি অধাবুপপদে ভৌতে: কিপ্ তুক্ তলিনিভোপপদস্য চেভি সমাস: অনিষ্টোমঃ জ্যোতিপ্টোম আযুদ্ধোম ইতি ষ্টুঞ স্বাদেম ইতি মঃ বহুলবচ-নাৎ গুণঃ স্থোমশক্ষেন ষষ্ঠীসমাসঃ। জে: তিবাযুংশক্ষো: সম্য বিসর্গঃ স্থোম-দকাবদ্য ধৰে কুতে শ্বদে ইত্যাদিনা বিদর্গদ্য যঃ অথবা কাদিগুক্ত ইত্যা-দিনা বিদর্গলুক্। অঙ্গুলিষঙ্গ ইতি সঞ্জনং সঙ্গুং সঞ্জপবিষঞ্গে ভাবে ঘণ্ অঙ্গুলে: দকোংগুলিবক ইতি ষ্ঠানমান: অঙ্গুলিব্দকোতি বছৱীহিব। वानाम्परन रिता वा देजापिना भरक तः देव द्वापकार्थापिक भरक मे। इन्द्र-ভিষেবনমিতি বন্তীদমাদঃ। যুবাদিখাৎ ন শহম্। নৌষেচিকেত্যতা বুত্তৌ চন্দ্ৰ-বুত্তৌ চ দুশুতে নৌষেচনমিতি তু জ্যাদিতার্ত্ত্যাদিযু বছষু গ্রন্থেষু দুশুতে। প্রতিফিকেতি প্রতিপূর্মিপাণোচে প্রতিফাতীতি প্রাদেরাদন্তাদিত্যৎ নাম ইত্যাদিনা আৎ ণক্ষ কোহলাদাবিতি কঃ পুনঃ লীঘবিবক্ষামাতি ক্লতে প্রতারে কে ণন ইতি হ্রম্বঃ অদিৎ জ্ঞাদস্তক ইতি ইম্বন্। গৌরিষ-ক্ৰ ইতি গৌৰীয়ক্ বীব সক্থাসোতি স্বান্ধান্থাং সক্থাকিতামিতি টঃ স্বাদ-ৰু দিতি ইকাবলুক্ ভণিত স্ত্ৰাতোঃ সংজ্ঞানাং বহুলমিতি পূৰ্ব্বপদ্যা হ্ৰম্মং नाम किन्हिल्लासन मरक्कामार यपर वहुबोहिनुमानक युष्टिकः। जैक्कान-মিতি স্থীয়তে হত্তে অধিকৰণে ভনট্ বঁচীদমাসঃ বটবৰ্গাদিত্যাদিনা থক্ক ঠঃ। মাভ্ৰদা পিতৃৰনেতি বন্ধীসমাদঃ পৰিটিরঃ বুধিটির ইতি মদাদেরিৰ ইতি শ্বাধাতোবিবঃ বনেকসেক্কাদিছাৎ স্থামীসমাসঃ গোহলন্তা ইত্যাদিনা সপ্তম্যা অনুক্। অভিচুৎ অঙ্গুনিবকো মাতৃষদা পিতৃষদা। নৌধেচনং

२७७। इक्तामनस्याविखेतः।

২৩৪। নিনদাভ্যাং সঃ কৌশলে।

নিষ্ণাতঃ কুশল ইত্যর্থ:। "আতিথ্যনিষ্ণা বনবাসিমুখ্যাং" ইতি ভটি:। নদীষ্ণঃ নতাং কুশল ইত্যর্থ:। "ততো নদীষ্ণান্ পথিকান্ গিরিজ্ঞান্" ইতি ভটি:।

২৩৫। কুতে ষত্বে দিঃ 1 নিধকো।

২০৬। সূত্রে প্রতিষ্ণাতম্।

গৌরিষক্থো ভীরুষ্ঠানং প্রতিঞ্চিকা। জ্যোতিরগ্নায়্যস্তোমং পরো ছুন্স্ভি-ষেবনম্। পরো গবিযুধিভ্যাঞ্ছিরোহন্তেহিপ প্রয়োগতঃ। অভএব শিষ্ট-প্রয়োগান্ত্রপ নিবিষৎ ত্রাষদিত্যান্ত্রাবিপি ষত্তম্।

(২০০)। বৃক্ষে আসনে চ বাঁচ্যে বিঠির ইতি ভবতি। বিস্তীর্যাতে ইতি স্বঙ্ক আচ্ছাদন ইত্যমাৎ ঋদুঙাদেও ইতি ওঃ সংজ্ঞাশন্দানাং মথা-কথঞ্জিৎ ব্যুৎপত্তিঃ ন হাত্র প্রকৃতি প্রত্যার্থাবগমঃ। অন্তত্র বাকাস্য বিস্তরঃ ছন্দো নামি ষত্বঞ্চ ইতি সুত্রে বিষ্টাত্র ইতি কুৎপাদে বক্ষাতি।

(২০৪ ২০৫)। নিনদীত্যেতাভ্যামুন্তরস্য স্নাতেঃ সকারস্য কোশলে গদ্যমানে যো ভবতি। নিঞ্চাত ইতি তঃ নাত্র ক্রিয়াকালয়োরর্থাবগমঃ ইতি স্থচিমুত্বং কুশল ইত্যর্থব্যাকারঃ নিঞ্চা ইতি প্রাদেরাদন্তাদিতাং। নদীক্ষা ইতি আদন্তাদমাদেরপ্রাদেরিতাঙ্ রুদ্চাঙনাদাবিত্যাকারলুক্। নিক্কাবিতি লিট্সংক্ষাকো হণ্ ঔদাতোলাণাবিতি ঔকারঃ দিকক্তিহেতাবচ্যানিচেন্ত্যাকারলুক্ কথমিই প্রক্রতৌ বছং দিক্তিব্যবধানাদত আহ ক্তে বছে ছিক্কিরিতি। কৌশল ইতি কিম্? নিরাতঃ নদীসাতঃ। নিস্নাতস্যৈব বছমিতি চাক্রাঃ তদনেকগ্রমাণদর্শনোপক্ষেপেণ দ্বিতম্।

(২০০)। প্রতিফাতমিতি ভরতি। হুরে বিশেষ্যে হুরে প্রতেরিতি বদি ক্রিবতে তদা সাতেরস্বতৌ প্রতিফাতমিতি সিদভোব কিছ প্রতারা-ভরেষণি প্রস্কঃ স্যাৎ। হুত্র ইতি কিন্? প্রতিসাজো বিগ্রঃ পরিভছ ইতার্থ:। २०१। चरामीर्घाट मामग्रा

অগ্রীসোমো। ব্রস্বান্ত্র—জ্যোতিরগ্নিঃ সোমো লভা তে আগ্নি-লোমো।

২০৮। অনিচ্ক্রাচ্চ সাহস্টত্তে।

তুরাষাট্ তুরাষাড় ভাাং ঋতীষাট্ ঋতীষাড় ভাাং জলাষাট্ জলান্

যাড় ভাাং পৃতনাষাট্ পৃতনাষাড় ভাাম। অটকে তু—"তুরাসাহং
পুরোধায় ধাম স্বায়ংভুবং যযুঃ ইতি কুমারঃ।

২৩৯। কচিদটত্বেহপি। জন্মাবাহং পৃতনাবাহম্ ঋতীয়াহম্।

(২৩৭)। অথেরিত্যবর্ষবাবয়বিসম্বন্ধে ষষ্ঠা অগ্নেরিতাবয়বদীর্থাৎ পরস্যানোসকারদা যো ভবতি। অগ্নীযোমাবিতি বন্দুসমাসে অগ্নেরীৎসোম-বরুণয়োরিতীকারঃ দেবতার্থানামেবেতি দিয়নাৎ লতাবাচকে সোমশন্দে পরে ঈশ্বং ন ভবতি। মদা অগ্নিশ্চ ইণ্চ সোমশ্চ ইতি বন্দুস্তদা অগ্নীসোমাবিতি তত্তাপি ন যতং নায়মগ্রেরবয়ব ঈকারঃ কিস্তৃতয়োঃ। অগ্নী ইতি বিচনাস্তাদ্পি পরস্য যো ন স্যাৎ। নায়মপ্যগ্রেরবয়ব ঈকারঃ কিন্তু প্রেকৃতিপ্রত্যায়রোঃ। অথবা নামো নাসমাসে ইতি যত্তনিষেধঃ।

(২০৮)। অনিচ্জাদিচ্জাচ্চ পরদা সাহ ইত্যাদ্য টতে সভি সকারস বো ভবতি। তুরাযাড়িতি তুরং নেগং সহতে ইতি কিপ্ প্রার ইত্যাদিনা ক্লিপ্ দীর্ঘণ্চ কিবস্তর্রুচাদাবিত্যাদিনা পূর্সপদে দীর্ঘঃ হোঢ় ইত্যাদিনা হৃদ্য ৮: বর্গস্যাদিরিত্যাদিনা চৃদ্য টঃ।

(২০৯)। অনিচ্জাণিচ্জাক্ত পরীস্য সাহ ইত্যস্যাটন্তে ক্বতে স্তাপি কচিং সম্য যো ভবতি। ভুরামাংং বিহায় ইত্রশকানামটন্ডেংপি বন্ধং ভবতীতি কচিদিতাস্য ব্যবস্থা। ভাগর্ত্তিকারস্ত প্তনাসাহমিত্যত্রাপি মুর্কস্থাং ' ক্লেক্ষ্তি। দর্শিতোদাহরণেভ্যোংগ্যক্ত নোদাহরণীয়ম্। ২৪০। শামিপরিবিক্ভ্যঃ স্থলস্ত। শমে: স্থলং শমিষ্ঠলং পরিষ্ঠলং বিষ্ঠলং কুষ্ঠলম্।

२४८। म मीर्घाए।

শমীच्लम्।

২৪২। কপৈর্গোত্তে।

ম্পিষ্ঠলো নাম ঋষিঃ।

२८०। निःञ्जूर्डाः नामरमधनकीनाम्।

নিঃযামা তুংযামা নিংবেধং স্কুবেধং তুঃবেধং নিঃযক্ষিং সুষক্ষিং তুংযক্ষিং।

⁽২৪০।২৪১)। শমিপরিবিকু ইত্যেতেতা উত্তরন্ত স্থলস্য সন্ত যো তবতি। স্থলমিতি স্থলস্থানে জন্মাদেশেতি ঙঃ অথবা অব্যুৎপল্লমেবেদম্। শমিষ্ঠলমিতি ষষ্ঠীসমাসনির্দ্দেশাৎ ব্রস্থান্ত এবায়ং শমিশব্দঃ অতএব বৃদ্ধৌ শমেস্থলমিতি বাক্যং দর্শিতবান্ অথবা তদ্ধিতেৎক্স্যাতোঃ সংজ্ঞায়াং বছল-মিতি পক্ষে ইস্থঃ স্থান্ত ব্রস্থনির্দ্দেশাৎ দীর্ঘপক্ষেহ্বত্বন্ এতদেব স্থাচিমিতৃং ন দীর্ঘাদিতৃয়ক্তম্। যদা বিকুশকৌ শক্ষিভূমিবাচকৌ তদা ষষ্ঠীসমাসঃ যদাযায়ে তদা নিতাং কুপ্রাদেরিতি সমাসঃ।

⁽২৪২)। কপিশকাত্ত্তরস্ত স্থলসা গোত্রে বাচ্যে সম্য থা ভবতি। কপিষ্ঠলো নাম ঋষিরিতি পৃংলিঙ্গতাম্য স্বভাবাং। তথাচ বক্ষতি নিক্ষ্ণ লোকত এব জ্বেয়মিতি। যৎপূর্মিকা সম্ভতিঃ স আদ্যপ্রবা গোত্রমূচাতে। অগোত্রে তু। কপেঃ স্থলং কপিস্থলম্।

⁽২৪৩)। বছদাধিকারাৎ ক্রমোহত নেষ্টঃ সর্বেজ্য এব সর্বেরাং বছবিধানং নিঃস্থল্জাঃ পরেরাং সামসেধসন্ধীনাং সস্য যো ভবতি। সামন্ শব্দঃ যোহস্তকর্মণীত্যক্ষাৎ প্রাদেশন্তিতি মন্তন্তঃ। সেধশ্চ বিধুসংরক্ষা-বিত্যক্ষাৎ ঘণজঃ। সন্ধিশ্চ সংপ্রাধীকেঃ ক্রকোদেরিতি ইপ্রত্যক্ষান্তঃ ক্লচ্চা-জনাদাবিতি আকারপূক্। নিঃবামেত্যাদৌ বছত্রীহিঃ মূর্দ্ধক্ষে ক্লভে শবসে শবসা ইত্যাদিনা পাক্ষিকং বছম্। সেধ ইতি বিধৃশান্তে মান্সল্যে চ ইতি যদা সাধ্যতে ভগা হাদেশিরগ্রন্যবামেহপি বিদ্ধান্তে বৃহৎ সিদ্ধং ন ধাছন্তরোপ-

২৪৪। বেশ্চ সৃতিসমন্ত্রপাম্।

নিংষ্তিং স্বষ্তিং দৃংষ্তিং বিষ্তিং নিংষমঃ স্বমঃ ছংষমঃ বিষম্প নিংষ্প্তঃ স্বষ্প্তং দৃংষ্প্তং বিষ্প্তং দ

২৪৫ ৷ স্থপঃ ষত্ত্বে দিঃ ৷

বিষ্যুপতু: বিষ্যুপু:। স্থপাদেশগ্রহণার ২প:। ছ:স্বপ্ন: স্থপ্ধর্ম বিস্থাপ।

২৪৬ । সয়সিতয়োনিবিপরিভ্যঃ। নিষয়া বিষয়া পরিষয়া নিষিতা বিষতা পরিষিতা।

দর্গন্তেতি যত্র বাধ্যতে তদ্বাধনার্থং বস্তবিধানং নির্গতঃ সেধো নিংমেধঃ হুর্গতঃ দেধো হৃংযেধঃ ইতি গমিধাতুং প্রত্যানয়োকপদর্গবং ন তু দেধং প্রতি। স্থায়েধ ইত্যক্র ভূ দোঃ পূজায়ামিতি প্রতিষেধবাধনার্থং ফ্লাভু বিধুগত্যামিত্তাত্র দেশ ইতি দিল্ধং তদাপি দেধতের্গভাবিত্যক্র প্রতিষেধবাধনার্থম্।

(২৪৪।২৪৫)। নিঃ সুত্রভাঃ বেশ্চ পরেষাং ক্তিমন স্পাং সদ্য বো ভবভি। পদাদেশ্চতি প্রতিষেধবাধনার্থন্। শুতিরিতি যুক্ত প্রাণিগর্জ-রিমোচনে আদাদিঃ যুক্ত প্রাণিপ্রদবে দিবাদিঃ আভ্যাং ক্রিঃ। যুপ্রেরণ-ইত্যাস্য তুদাদেস্ত উপসর্গকেত্যাদিনা এব ষত্বং সিদ্ধন্। অথবা পূর্মবিং ষত্র প্রতিষিদ্ধং তত্রাপি ষত্বমনেন বিধেয়ন্। সম ইতি বমন্ত্রমবৈক্লব্যে পচা-দেশ্চেতি তঃ ন সর্বনাম। স্তীতি শক্ষামুকরণাদক্ত্র ন বত্বং যদি তিঙা নির্দিষ্টঃ ধাত্রপেক্ষিতঃ স্যাৎ তদা সন্দেহনিরাসার্থং স্থ ইতেবং কুর্যাৎ। নিঃমুপ্ত ইতি ঞিষপ্ শরে ক্রঃ অদাদিবচন্দ্রপোক্ষচম্পাবিতি স্থাদেশঃ স্থবিতি হত্রে নির্দ্ধোৎ যক্র স্থবিতি রূপং তত্রৈব যত্ত্বন্। যদেশেং বির্দ্পত্-রিত্যত্র দিক্ষিপদ্দিনঃ স্থ ইত্যাস্য কথং বত্তকিত চোদ্যাপরিহার্যার্থমাহ স্থপঃ মতে দিরিতি প্রথমং ঘত্বং পশ্চাদ্দিরিত্যর্থা। স্বন্ধন্ন হতি ইণাদেন ইতি নঃ বিস্থাপ ইতি নিট্ অন্ বর্শফ্রাদ্যোরিত্যাদিনা স্থঃ ইত্যনেন বিঃ প্রক্রেডা ইচ্কাদিত্যাদিনা বন্ধন্।

(২৪৬)। নি বি পরি ইত্যেতেতা উত্তরে: সরসিতরো: সক্ত স্থানে বো তবতি। সর ইতি বিঞ্চবদ্ধনে ইণস্তত্বাৎ ক্লগৃঙালেও ইতি ও: সিস্ত ২৪৭। অহাবগোভূমিদব্যেংপ্দিক্রিক্শেক্শঙ্ক সুন্ত মঞ্জিপুঞ্জিপরমেবর্হিদিব্যগ্রিভঃ স্বস্থাস্থিন্স ৃগাম্। অস্বর্তঃ আন্বর্তঃ তার্যতঃ তার্যতঃ তার্যতঃ ক্রপ্তঃ বির্তঃ কুষ্ঠঃ শেকুষ্ঠঃ শঙ্কুষ্ঠঃ অঙ্কুষ্ঠঃ মঞ্জিষ্ঠঃ পুঞ্জিষ্ঠঃ পরমেষ্ঠা বহিষ্ঠা দিবিষ্ঠঃ অগ্নিষ্ঠাঃ সব্যেষ্ঠা সব্যেষ্ঠা সব্যেষ্ঠা পরমেষ্ঠিনো ব্যেষ্ঠনা সব্যেষ্ঠ ভিঃ।

ইতি অস্মাদেব ক্ত প্রত্যন্নান্তঃ অথবা বোহস্তকর্মণীত্যন্থাৎ দোষোমাস্থামিত্যা-দিনা ইঙি ক্লতে ইড়াদাবিতি অকারলোপে চ নিষ্পারঃ উপসর্গস্যেত্যাদিনা সাতেঃ ষত্বং সিদ্ধমেব নিয়মার্থং প্রহণং অক্সোপসর্গাৎ সিতশব্দশু মাভূৎ প্রতিসিত ইতি।

(২৪৭)। অম্বাদিভাঃ পরেষাং স্থাদীনাং সদা যো ভবতি। ষ্থিন্ত ইতি শকানামঞ্করণম্। অস্থারাং তিষ্ঠীতি অস্থায়ে। ধিজন্মনো জাতঃ তদ্ধিতেৎস্ত্রাতোঃ সংজ্ঞায়াং বছলমিতি হ্রসঃ আষষ্ঠ ইতি ক্ষচিনগুত্রাপীতি দীর্ঘ:। গাবন্তিষ্ঠস্কাত্রেতি গোষ্ঠ: ভূমৌ তিষ্ঠতীতি ভূমিষ্ঠ: এবং দব্যেষ্ঠঃ অপ্স্ত তিষ্ঠতীতি অপ্ষ্ঠঃ আপ্ষ্ঠ ইতাপি কচিৎ পাঠঃ ইতি স্থাসঃ তদা কচিদগুত্রাপীতি দীর্ঘঃ। ঘয়োস্তিষ্ঠতীতি ত্রিয়ু তিষ্ঠতীতি দিল্ল ত্রিষ্ঠা কৌ প্রিব্যাং তিষ্ঠতীতি কুষ্ঠা যদা কুশকোহব্যয়ং তদা কুৎসিতং তিষ্ঠতীতি কুষ্ঠঃ সর্ব্বত্র স্থোহধিকরণাব্যয়াভ্যামিত্যাদিনা অঙ্ শৌ্বোদাহরণে-দ্পি অধিকরণোপপদ্যাদঙ্ত্রিমিত্তোপপদ্সাতি সমাসঃ সব্যেষ্ঠঃ প্রমেষ্ঠঃ দিবিষ্ঠ: ইত্যত্র তৎপুরুষে ক্বতি বহুলমিতালুক্ সব্যেষ্ঠা ইতি কিবস্তঃ ক্ত-চাওঁনাদাবিত্যাকারলুক্। দোমপাশকবং সাধনম্। পরমেষ্ঠীতি অস্থিরেব সূত্রে স্থিনিতি পদোপাদানাৎ পরম উপপদে তিষ্ঠতেরৌণাদিক ইন্ প্রত্যয়: উহনীয়:। সব্যেঠেতি দিবাদেশ ডিতি শঙ্প্রত্যয়াত্তঃ ক্লচ্যঙনাদাবিতি আকারলোপ: স্থ: এত আৎ স্থনেতি আকার: ওজদোগুর্ণ: পিত্রাদেরিতি খুণঃ স্বান্থিন্ত্ ণামুজোদাহরণাতেব জেয়ানি নামুদ্হনীয়ম্। অপ্ঠঃ ছুঠুঃ শ্বষ্ঠুরিতাত্র বাদেরুণাদির্বাতাদাবিতি উণি রুতে বছলবচনাৎ ন যঃ স ইত্যক্ত প্রবৃত্তিঃ আকারলোপ চ।

২৪৮। **স্বন্দাদন্তত নে**ত্যেক। জিলে সলেজন হে সলেজন।

मरवायरतो मरवायतः एव मरकायः ।

২৪৯ ৷ প্রাপ্তাগে ছঃ ৷ প্রস্থা

২৫০। **অ**কাদেতি নামি। হরিষেণঃ মাতৃষেণঃ বায়ুষেণঃ স্থাষেণঃ ভূরিষেণঃ। কাতু — -বিষক্সেন:।

২৫১। নক্ষত্রাদা।
ভরণিষেণঃ ভরণিসেনঃ রোহিণিযেণঃ রোহিণিসেনঃ ।কান্তু—
শতভিষক্সেনঃ।

⁽২৪৮)। টুরিতাশ্র অনুদন্তক চ সদ্য অনাকারাক্ত করণ ন ভবতী-ত্যেকে। হে সব্যেন্থরিতি গুণঃ নাবিতি গুণঃ।

⁽২৪৯)। স্থ ইতি বিভক্তিবিপরিণামাৎ ষষ্ঠাং প্রথমা মন্মে গচ্ছতীত্যপ্রগং অন্তাহিপি দৃশুতে ইতি ডঃ এমিন্ বাচ্যে প্রাচন্তরক্ত স্থ ইতাক্ত সস্যা যো ভবতি। স্থ ইতি শক্ষাত্রায়করণং ন ধাতুরহণম্ অন্যা প্রস্থিত ইতাত্রাপি ক্তাৎ প্রতিষ্ঠিত ইতি প্রষ্ঠিং পূর্দিবনঙ্ স্থাগইতি কিন্? পর্যক্ত শিখা প্রস্থাঃ

⁽২৫০)। অবিদ্যমানককারাতি চ্জাত্তর্ম্ম একাবে নারি গ্যামানে সম্ম যো ভবতি। হরিষেণ ইতি হর্মঃ সেনা অম্মেতি বহুরীছিঃ সংজ্ঞা-শকানাং যথাকথঞ্জিং বৃংপত্তিরেরা অজ্বায়বেত্যাদিনা পদ্ধন্। বিষক্ষেন ইতি বিষ্ অঞ্চতীতি কিপ্ বাহঞ্ভরপদাদিতি ন্তিয়ামী শদাদাবিত্যাদিনা নকারলোপঃ আতোহচি প্রাক্ষিণ্টেতি ভূকারলোপঃ প্রাক্ষিণ্ট। বিষ্চী সর্ব্যাপিণী সেনা অস্যেতি সমাসে ক্রনিশেষণে চ বছ্রীহাবিতি পুংবজাবাংঃ গ্রীপ্রত্যয়নিবৃত্তিঃ। এতীতি কিন্ ? হরিসদ্ধিঃ। নামীতি কিন্ ? পৃথী সেনা আস্যেতি পৃথীকোনঃ। ইচ্কাদিত্যেৰ সর্বাসেনঃ।

⁽२६५)। ইচ্कानिতामा नक्कानिकि वित्नवनम् अकरमर् मम्मार्यान

२৫२। त्वः श्रीमिटमानीमाटर्थ। व वित्रु वित्रुवे वित्रुवः वित्रुवः।

२६०। ककारमण्डा

ভ্রাতৃপুত্র: বাস্তোপতি: মৃহকাম: সর্পিকুণ্ডং যজুপাঠ: পরমসর্পি-জুরু দ্বিকুষা সর্পিপানম্।

২৫৪। স্বস্থ্রবা মাতুঃপিতুর্ভ্যাম্।

মাতৃ: यम। মাতৃ: यम। পিতৃ: यम। ।

২৫৫। উপদর্গন্ত স্থনোতি স্থবতি স্থতি জৌতি স্থোভগীনামঙ্ব্যবায়েহপি।

অভিষুণোতি অভিষুবতি অসুঘ্যতি প্রতিকৌতি প্রতিফৌততে

পচারাং। নক্ষত্রবাচকারবিজ্ঞানীককারানিচ্জাং প্রস্য একারে পরে নামি গম্যমানে স্ব্যা বো বা ভবতি। পূর্দেণ নিজ্যে প্রাপ্তে বিভাষা। ভরণিষেণ ইত্যানৌ পূর্কবং হুস্থঃ।

- (২৫২)। বেজজরস্য প্রাদিগণপঠিতস্য স্থাক্ষা নানার্থে বাচ্যে বো ভবতি। স্থাত্নিরাসার্থং প্রাদীতি বিশেষণম্। বিদিত্যব্যয়ং স্থাপো-শ্বায়াদিতি স্থাক্। বিষুব্দিতি বিষু অস্যাতি তদস্যাস্থ্যস্থিন্ বা মতুরিতি মত্য: নামীতি মতুমো বং। বিষুব্দিতি কেশাদের্কো বেভি.মন্ধর্থে বং। বিষ্পিতি বিষু অঞ্জীতি কিপ্।
- (২৫৩)। ইচ্জাহত্তরস্য কম্বাদেং স্যা যো ভবতি। ভাতৃপুঞাদয়ঃ ক্ষাদিগণে ব্যুপানিতাং। পদান্তথাদিচ্জাদিতানেনাপ্রাপ্তে বিধানম্।
- (২৫৪)। বাড়ঃ পিতৃরিতি ষষ্ঠান্তারকরণং অনুকৃতথাৎ নৈতৎ স্বক্তং পদং ক্রিন্ত নাবান্তরম্ অতোহত্র বিভক্ত্যুপভিরবিক্ষা। মাড়ুঃ পিতৃরিত্যে-তাভ্যাং পর্য্য স্বস্থঃ সকাপ্ত্যা বা বা ভবতি। মাতৃরিতি বাভ্শকাৎ ওস্ ওসিওসোড় সিতি ভৃদ্ ডিতীভ্যাদিনা ঋকারলোপঃ বা স্ক্পভ্যোরিতি ষ্ঠাপুক্।
- (২৫৫)। উপসর্গনদান্ধিন ইচ্ক্রাহ্নরেয়াং মুঞ্ অভিযবে বৃ প্রেরণে বোহস্তকর্মণি ইুঞ্জতৌ ইুভড়জে ইভ্যেতেয়াং অঙ্ব্যবারে অব্যবারেহণি

্ সভাষুণোৎ পর্যাধৃৰৎ অশ্বয়ৎ প্রত্যকৌৎ প্রত্যকৌভত।

২৫৬। স্থাদেশ্বিরঙ্ব্যবায়েহিপি শ্বিককেশ্চ।

সেবপর্যান্তং স্থাদি:। অনুষ্ঠান্ততি প্রত্যন্তাৎ পরিতর্ফো সিধ্
নিবিবিৎসতি সিধু নিবিষেধিষতি অভাষেণায়ৎ পর্যাধীষিচৎ অনুবি
যক্তমতি প্রত্যবম্বঞ্বৎ প্রত্যকীভাৎ প্রত্যকীভৎ।

সদ্য যো ভবতি। অভিনুণোভীতি খাদেমু দিতি খুং ক্ষ্ৰতীতি শং বিকরণনির্দেশাং বৃঞ্প্রাণিগর্ত্তবিমাচনে ইত্যদ্যানাদিকদ্য বৃঞ্প্রাণিপ্রদ্রে ইত্যদ্য
দৈবাদিকদ্য ন গ্রহণম্। অনুষ্যতীতি এচোহশীত্যাত্বং দিবাদিত্বাং বং
ওল্লুগোন্তানামিতি ওকারস্থানীয়দ্যাকারদ্য লোপা। প্রতিষ্ঠোতীতি ভিদ্মন্যুধ্কিরিত্যাদিনা বৃদ্ধিঃ। প্রতিষ্ঠোভত প্রতি অনুদাত্তের্যানায়নেশদম্ এবানেব লণ্ডস্তানামভ্যবুণোদিত্যাদয়ঃ। অভ্ব্যবায়ে বছবিধানদামর্থ্যাৎ প্রথমং
যথং পশ্চাদ্যবরলোহটীতি যবৌ। নমু অভ্যনুণোদিত্যাদিনু প্রথমং যথং
ক্ষত্বা পশ্চাদ্ভাগমঃ ক্রিয়তাং কিমর্থমঙ্কার্যার্থইদীতি তদেতজ্ভাপয়তি
বছবিধানাৎ পূর্ব্বমেবাঙাগমঃ ক্রিয়তে তেন ব্যক্ষদং পর্যায়ন্দদিত্যাদিরু যথং
ন দ্যাৎ।

(২৫৬)। উপদর্গদম্বন ইচ্ক্রাৎ পরেষাং হানীনাং সকারদ্যান্তবারে বিরুক্তিবারারে অঙ্বারারে চ যো ভবতি। বিরুক্তেশ্চ সকারশ্ত অঙ্বারারেহপীতা তুর্ত্তৌ প্রাপ্তারাং যদজাঙ্গ্রহণং তৎ দিরঙোনিলিতরো-রিপি ব্যবারে যহং ভবতীতি স্চনার্থম্। সেবপর্যান্তং স্থাদিরিতি নিবিপরিত্যাং সেব ইতি বক্ষাতি। তৎপর্যান্তং যে ধাতব উক্তান্তেষাং দিরঙ্বারারেহিপি বিরুক্তেশ্চ যত্বং ভবতি। অনুষ্ঠাশ্রতীতি লটল ট্পুঙ্চেতি শুঙ্ প্রভাগাদিতি লৃঙ্ হঙ্ সঙ্ সঙ্লুগিনাদেরিতি সঙ্লুক্। পরিত্রীবিতি লিট্ অণ্ ঔলাতোণাণাবিতি অণ্ স্থানে ঔকারঃ মৃদ্ধিশ্বসাৎ কাদিরিতি থকারেণ দিরুক্তিং হবং ঠচপ্রেতাদিনা থক্ত তঃ বিরুক্তিহেতাবচানিচেতি আকারলোপঃ এতরোনিমিত্রবারানিচ্কোদিত্যাদিনা যথং ন প্রাপ্রোতীতি বিধানম্। নিবিবিৎসতীতি বিধুশালে মান্তব্য চ র্ধাদ্দিতোবেতি পক্ষে

२.६५। **खन्**रज्ज्ञेतानाव्यम्भिक्षेत्राः।

গ্রামনবর্ষভাব্তে অবাষ্টভৎ সেনা।

২৫৮। উর্জিত্যে চেতি চন্দ্রিঃ। অহো মল্লস্থাবন্টস্তঃ। অসত্র। শীতেনবিস্তর্কঃ জড়ীকুর্ত ইত্যর্থঃ।

ইতিহেভাবং অত্র প্রকৃতী ইচ্কাদিত্যাদিনাপি ষত্বং প্রাণ্গোতি দিককৌ ষত্ববিধানার্থন্। নিষিষেধিষতীতি অশকাদিত্যাদিভ, অত্র ভৌজেরের সনং বহে ইতি নিয়মাৎ প্রকৃতী ষত্বং ন প্রাণ্গোতি বিধানং ভালেং সিধৃ ইত্যন্ত দাহচর্যাৎ বিধু গত্যামিত্যন্ত ভালেগ্রহণং নতু বিধু সংরাজাকিত্যন্ত দিবাদেং। অভ্যয়েগদিতি সেনায়া অভিমুখন্ অয়াদিতি পাশাদেমোর্চনাদাবিতি পিঙ্লঙ্হঙ্ সঙ্ গুণাদয়ং অত্রীনাদেশসকারত্বায়িমিত্তব্বায়াচ্চাপ্রাপ্তিঃ। পর্যাবীবিচদিতি ষিচির করণে পিঙ্ গুণং লৃঙ্হঙ্ক্রিক্রক্র ইত্যাদিনা অন্ দিককিং প্রশৌহশাস্বাদেরিতি প্রস্থং অগুরাবিত্যাদিনা দিককৌ দীর্মঃ অত্র প্রকৃতীতি ইচ্কাদিত্যাদিনা ষত্বং প্রাণ্গোতি। অনুষিধক্রতীতি ইন্ক্র সক্রে অভ্যয়ম্প্রদিতি স্থান্ত পরিষক্ষে অত্র দিরঙোর্বাবয়েহপি ষত্রন্ত ক্রেডা ক্রেডা ক্রিক্র কর্ম। প্রত্যতি নাৎ হলুপান্তেত্যাদিনা নকারল্ক্। প্রত্যইভাদিতি স্থান্ত নাৎ হলুপান্তেত্যাদিনা নকারল্ক্। প্রত্যইভাদিতি স্থান্ত হঙ্ ইরিদ্যাচাদের্কেতি অগ্ অগি চেতি নকারল্ক্। স্থা সিধৃ সঞ্জ্ সঞ্ স্থান্ত সিধু সিঞ্চি। সণিঙ্বেনাশ্চ স্থান্মীং এতে গদিতাঃ শেষা অপি লক্ষণে ক্রেয়াঃ।

(२६१)। স্থন্ত সোত্রো ধাতৃঃ অবাহত্তরক্ত স্তন্ভেঃ সকারক্ত অব্যবারে দিরঙব্যবারে চ দিরুক্তেশ্চ আশ্রমে নিকটে চ বাচ্যে যো ভৰ্তি। নিমিত্রাভাবাৎ পূর্বেণাপ্রাপ্তে বিধানম্। অবষ্টভা ইতি প্রাদের্যচসমাসে ইতি জ্বাস্থানে যচ্ পূর্ববন্ধকারলোপীঃ আশ্রিত্যেত্যর্থঃ। অবাইভৎ সেনা ইতি নিকটীভূতেত্যর্থঃ।

(২০৮)। ঔর্জিত্যং প্রাণনং বলঞ্চ তথাচ অবানৌর্জিত্যাবলম্বনা-বিদ্রের ইতি চক্রস্ত্রম্। অবইন্ত ইতি ঘণতঃ অফিংক্ত শ্রামুশাসনে ২৫৯। বেশ্চ স্বনো ভোজনে। বিষণতি ভক্তং অবষয়াণ ব্যধিষণৎ ব্যষণৎ নরবিষ্ণো নাম কশ্চিত্র রাক্ষসঃ।

২৬০। সদৌহপ্রতিঃ।
নিষীদতি বিষসাদ অভ্যধীষদৎ নিষৎ নিষধরঃ। প্রতিস্ত—
প্রতিসীদতি।

২৬১। নিবিপরিভ্যঃ সেবঃ।

নিষেবৃতে ব্যবেবত পবিষিধেবে। অক্যত্র। কু অভিস্কৃস্বতি
অভিস্কুষাব সো অভিসিধাসতি অভিসসে।

•

ষ্টিভি শ্বভি প্রতিবকে ইত্যুশ্মাং টকাবোপদেশাৎ সাধনীয়ঃ পার্থিবাবষবো-পষ্টস্তাচ্চোপভোগসমর্থমিত্যাদিপদ্সিদ্ধিশ্যুশাদেব ধাতোঃ কর্মীয়া। অবস্তব্ধ ইতি ক্তঃ ধোহধাভূর্যাদিতি তম্ম ধঃ।

- (২৫৯)। চকাবোহবাদিতান্তকর্ষণার্থঃ। অবাধেশ্চোপদর্গান্তবন্ত বনোহবাবারে দিবঙ্বাবারে চ দিকজেশ্চ ভোজনে বাচো সশু বো ভবতি। বাষিধাদিতার ধাতোদিস্থ্যোপদেশখাদিস্কাদিতাদিনা প্রক্লভাবপ্রাপ্তিঃ। নরবিধা ইতি কর্মণা গট ইতি গট্ বছলবচনাদ্ধ্যভাবঃ অথবা পচাদিঘাৎ ওঃ ষ্টাদ্যাদঃ ভোজন ইত্যাননাভ্যবহাবক্রিথাবিশেষোহভিদীয়তে। ব্যব্দানমন্তীতি রভিপবস্পারা ধাতৃনামনেকার্থখাৎ ভোজনার্থ এবাত্র অনুনমন্তীতি রভিপবস্পারা ধাতৃনামনেকার্থখাৎ ভোজনার্থ এবাত্র অনুনেমন্তার্থান্য বৃত্তিকত ইষ্টম্ এতদেব অচ্যিত্রুং নববিধাণ ইত্যাদাক্ষার ন ছি সশক্ষভোজনমন্ত্রার্থঃ। ভোজন ইতি কিম্ ? বিশ্বনতি মৃদক্ষঃ।
- (২৬০)। প্রতিবর্জিত উপদর্গদম্বন্ধিন ইচ্কাত্ত্বস্য বদুনিসবণ-গভাবসাদনের ইত্যস্যাব্যবাবে বিরুক্তেশ্চ সস্য যো ভবতি। নির্মাদতীতি শদসদো: শীরসীদাবিতি সীদাদেশ:। বিষ্দাদ ইতি প্রকৃতেঃ সদিস্বঞ্জো-শিচীতি প্রকৃতৌ যথনিষেধঃ নিষ্দিতি কিবস্তঃ নিষ্দ্বব ইতি প্রাদেশ্ব র্মিতি ববট্।
- (২৬১)। নি বি পরিভাঃ প্রস্য সেবঃ সম্যাব্যবাষে দ্বিঙ ্ব্যবারে-থপি দ্বিকক্তেণ্চ যো ভবজি। এবং স্থাদিঃ সমাপ্তঃ। নতু স্থাদেদ্বিরিঙ ্

२७२। न धाञ्चद्धां भनर्गे छ।

বিগতাঃ সেবকা যশ্মাৎ স বিসেবকো দেশঃ। অভিসাবয়তি অভিসাবকীয়তি।

২৬০। নিবিভ্যাং সিবুসহস্তস্থপ্তাম্। নিষীব্যতি বিধীব্যতি নিষহতে বিষহতে নিফৌতি বিফৌতি নিষ-জাত বিষজতে।

ব্যবায়েৎপি দিকজেক মন্ববিধানং কিমর্থং মন্তে ক্কতে দিকজিবিধীয়তাং তদেতজ্ঞাপয়তি বিশেষবিধানেন বিনা ষত্তপ্রকরণে বিকজিবেব পূর্বাং বিধীয়তে তেনাত্র দিরঙ্বাবায়ে দিকজেক ষত্তং ন সিয়্যতীতি ষত্ববিধানম্ এতদেব কিমর্থং তৎ প্রয়োজনং দর্শয়ীত অন্যত্রেত্যাদি স্থাদেরক্তরোপসর্গনিমিত্তং মন্তং দির্বাবায়ে দিকজেক ন ভবতি। অভিস্কুষ্বতীতি মৃ প্রেয়ণ ইত্যয়্য রূপং ন তু স্থনোতেঃ স্কুঞ্জঃ স্থসনোরিত্যনেন তত্র যন্থনিষেধ্যয় দিছলাৎ ইচ্ক্রাদিত্যাদিনা সনঃ মন্তং ভৌতেরেবেতি নিয়মাৎ ন প্রয়তৌ। অভিস্ক্ষাবেতি মৃক্ত অভিষব ইত্যস্থাপি রূপম্ ইচ্ক্রাদিত্যাদিনা ন প্রস্কতৌ। মন্ত্রম্বাবেতি মৃক্ত অভিষব ইত্যস্থাপি রূপম্ ইচ্ক্রাদিত্যাদিনা ন প্রস্কতৌ। মন্ত্রম্বাবিতি বোহস্তকর্মণি ইচ্ক্রাদিত্যাদিনা মন্তম্।

(২৬২)। ধাজন্তরোপসর্গক্ত নিমিতাৎ পরস্ত সস্ত বো ন ভ্বতি।
বিগতা ইত্যাদি বাক্যেন ধাজন্তরং গমিং প্রতি বেরুপসর্গক্ষং দর্শিতং স্থাদিলাদত্র ষত্মপ্রাপ্রেমিনেধাঃ। অভিসাবয়তীতি স্ফঃ প্রয়োজকণিঙন্তন্তোপসর্গবোগঃ সাবয়তেরয়ম্পুসগোঁন ভূ স্থনোতেরিতি যত্মং ন ভবতি। যদা স্থ্
স্থনোতেরুপসর্গেণ প্রাণেব যোগম্পগম্য পশ্চাৎ ণিঙম্ৎপাদয়তি তদা মত্মং
ভবত্যেব। অভিসাবকীয়তীতি মৃ প্রেরণে পকঃ বৃদ্ধিঃ সাবকমিচ্ছতি ইন্ধি
ভূল্যাচার ইত্যাদিনা কয় অয়োরিত্যকারলুক্ সাবকীয়তীত্যস্তাভিনা বোগঃ
উপসর্গক্ত স্থনোতীত্যাদিনা বহুপ্রাপ্রিনিষিধাতে।

(২৬৩)। নি বি ইত্যেতাভ্যাং পরেষাং ধিবু তন্তসন্তানে বহ মর্বণে ফুঞ স্বতৌ খন্ত পরিবঙ্গে ইত্যেতেষাং সম্ভ বো ভবতি। বহমুহ শক্যার্থ ইত্যেত্র বিষয়তীতি বহমুক্তং ধাতুপ্রদীপাদৌ নিষীয়তীতি দস্কাবাস্তঃ ইঞ্চি

২৬৪। পরেঃ স্থটশ্ট। পরিষিব্যতি পরিষহতে পরিফৌতি পরিষক্ততে পরিকুরুতে।

২৬৫। সিবাদেরঙ্ব্যবায়ে বা।

শুষীব্যৎ শুসীব্যৎ ব্যধীব্যৎ ব্যসীব্যৎ শুষহত শুসহত শুফীবীৎ

শুস্তাবীৎ শুষজত শুস্তজত পর্যাধীব্যৎ পর্যাসীব্যৎ পর্যামহত পর্যাসহত পর্যাফীবীৎ পর্যাস্তাবীৎ পর্যাম্বজত ।

২৬৬। অমুনিবিপর্যাভিভ্যঃ স্তন্দোহপ্রাণিনি। অনুযানতে অনুস্থানতে নিয়ানতে নিস্থানতে বিয়ানতে বিস্থানতে পরিয়ানতে পরিস্থানতে অভিযানতে অভিস্থানতে। প্রাণিনি তু—অনুস্থানতে মৎস্য দ্বৈকে।

২৬৭। প্রাণ্যপ্রাণিসমুদায়েহপি। অনুষ্যন্দেতে অনুস্থান্দেতে মংস্যোদকে।

রাস্তাদিত্বাৎ রাস্তাদেরিত্যাদিনা দীর্ঘর। নিম্বন্ধত ইতি নোলুক্ সন্ত্র ইত্যাদিনা ন্কারপুক্ উপদর্গস্তেত্যাদিনা স্তৌতেঃ স্থাদেরিত্যাদিনা স্থন্জেন্ড রত্তে সিদ্ধে সিবাদেরগুরাবাদ্ধেবেতি অঙ্ব্যবায়ে বিকলার্থমিছ উপাদানম্।

(২৬৪)। পরেঃ পরেষাং দিবুপ্রভৃতীনাং স্কটণ্ট দদ্য যো ভবতি। পরিষুক্ত ইতি ক্লঞোহভিত্যদিত্যুৎক্তোহভিত্যুর ইত্যুর্ সংপর্যুপেজ্যঃ ক্লঞোভ্যণে ইতি স্কট।

(২৯৫)। পূর্দ্ধস্ত্রাভ্যাং সিবাদীনাং যৎ বহং বিহিতং ভদঙ্ব্যবারে বা স্থাৎ। স্পত্তাবীদিভি সভাখিলাগুরিত্যাদিনা বৃদ্ধিঃ স্বস্থ্ঞভাঃ পরকৈ-সম্ভীতি ইঙ্ সঙ্কদান্তক্তেরিত্যাদিনা ঈঙ্ ইঙাদেরীঙিতি সঙ্কুক্।

(২৬৮/২৬৭/২৬৮)। অর নি বি পরি অভি ইত্যেতেভা: পরক্ত সাম্পু অবণে ইত্যস্যাপ্রাণিনিবিরকে সক্ত যো বা ভবতি। অনুক্তনতে সংক্ত উদকে ইভি প্রাণিনি বিষয়েছত্র ক্তনতেরর্থ:। অপ্রাণিনীতি সুক্রা পর্যুদাস মাজিতঃ প্রাণিনোহক্তর ভবতি ইভি প্রাণ্যপ্রাণিকর্ ২৬৮। নেত্যেক।

२७३। श्रातः कमः।

পরিষদাতি পরিকল্প: পরিকল্প:।

२१०। (वज्रक्कवर्षाः।

বিদন্দতি বিস্কন্দতি। ক্তক্তবহোস্ত—বিস্কন্ধঃ বিস্কন্ধবান্। ২৭১। নিবি'নিভ্যঃ স্ফুরস্ফুলোঃ।

নিঃক্ষুরতি নিঃক্ষুরতি নিঃক্ষুলতি নিংক্ষুলতি বিক্ষুরতি বিক্ষুর রতি বিক্ষুলতি বিক্ষুলতি নিক্ষুরিত: নিক্ষুরিত: নিক্ষুলিতঃ নিক্ষুলিত:। নিঃক্ষার: নিঃক্ষারঃ বিক্ষারঃ বিক্ষারঃ নিক্ষালঃ।

দায়ক প্রাণিনোংক্তর বেতি ষত্বং এতদেব স্পষ্টিরিত্নাই প্রাণ্যপ্রাণিসমুদারেহপীতি। নেত্যেক ইতি তৈরপ্রাণিনীতি প্রসক্তপ্রতিষেধ আপ্রিতঃ
যত্র প্রাণিনঃ সম্বন্ধাহর্থোহপ্যস্তি তত্র ষত্বং ন স্থাৎ। অনুষ্ফুক্তে ইতি
এদঙিদিত্যাকারকৈকারঃ আফিদাদাবিত্যকারলোপঃ।

⁽২৬৯)। পরে: পরস্য স্থানির গতিশোষণয়োরিতাস্য সস্য ুরা বা ভবতি। পরিকণ্ণ ইতি ক্তঃ হলুপাস্তেত্যাদিনা নকারলুক্ অসদোদাদিল্যা-দিনা দস্য তস্য চ নঃ অজ্বয়বেত্যাদিনা শত্বং তবর্গযুক্তথার প্রাপ্রোতীতি চেং তব্রৈব প্রতিবিধাস্যাম: নশ্চ ণ ইতি নস্য শঃ।

⁽ ২৭০) বেঃ পরস্ত স্বন্দেরক্তক্তবছো: পরয়ো: সক্ত ৰো বা স্যাৎ।

⁽২৭১)। নির্কিনি ইত্যেতেভাঃ পররোঃ ক্রক্লোঃ সশু বো বা ভবতি। নিঃক্রভীতি ক্র ক্ল সংচলনে তুলাদিছাৎ শঃ। নিঃক্লিড ইতি জ্ঞাক্রছোরিগুপাস্তে গুর্ছ ইতি বাচাদিছাদিট্। বিকারঃ বিকাল ইতি জ্ঞারকালো চ ক্রক্লোরিতি ঘণি কারকালাদেশে চ ক্লে বস্ম।

২৭২। **অভিনিরস্তনো বিদর্গে।** অভিনিস্তানঃ অভিনিষ্টানো বিদর্গঃ।

২৭৩। বেঃ ক্ষভাতেনিত্যম্। বিক্তাতি বিক্জঃ।

২৭৪। সিবুসহস্বপ্রস্থানাস্কর্নাস্থা, রন্ধু লাস্কন্তাং কতে ।
নিবিধেব নিবিধেবিষতি বিধিষহিষতে বিধয়ঞ্জে অনুষ্ধানে

্বেন্ত্র)। অভি নির্ইত্যেভাভ্যাং পরস্ত স্তন বণ ধনন শদে ইত্যালা বিদ্যালে বাচ্যে যো বা ভবতি। অভিনিষ্টান ইতি কাদিযুক্তে শবদে লুথেতি বিদ্যালোপঃ। স্তনগদদেব শব্দ ইত্যালা চুবাদেন গ্রহণং তল্য কথাদিলাং ক্রিন ল্যাং। বিদর্গে বাচ্যে ইতি ভাগবৃত্তিক্ততো মতং বিদর্গে বর্গে চ বাজ্যে ইতি বামনদ্য মতম্। অভিনিষ্টালো বর্ণঃ ইতি চক্রমতম্। তথাচ নামঃ, বচস্পান্তাভিনিষ্টানমিদমাদার মাধব ইতি। অভিনিষ্টানশক্ষৈয়ব সংজ্ঞা-বিধানং প্রতিশক্তবাং মিলিতাভ্যামেবোপদ্যাভ্যাং পর্লা ঘণস্তবৈত্রব স্তনতেঃ ব্যাম্। বিদ্যা ইতি কিম্? অভিনিস্তানো মৃদক্ষ্যা।

(২৭৩)। বেরুত্তরস্য স্কভাতেঃ সম্যু যো নিডাং ভবতি। স্থন্ত্ সৌরো ধাতৃঃ। বিস্কভাতীতি স্তন্ত্ উন্তাদিনা নাৎ স্কভাতেরিতি নির্দেশাং বিস্কল্যেতীতি তত্ত্ব ন ষম্বং ভবৃতি সদৃশব্যাবর্তক্ষাৎ স্বিকরণ-নেব ব্যাবর্ত্তরতি তেন বিশ্বস্ক ইত্যত্ত যথং স্যাদেব ইতি কেচিং।

(২৭৪)। স্থাদেরিত্যাদিসতে ব্যবস্থিতং দিরুক্তিরেব পূর্বাং ভব-তাতি তঘাবনার্থং ব্যবস্থাস্ত্রমিদম্। যত্ত্ব নিবিত্যামিত্যাদিভিরন-স্তরোক্তলক্ষণৈরেব করণীয়ম্। নিষিষেবেতি যদ্যতা প্রথমং দিরুক্তিঃ প্রাং তদা স্থাদেরেব বিরুক্তেং যত্ত্ববিধানাৎ ইহ ন স্যাৎ প্রক্রতৌ তৃ ইচ্ফাদিত্যাদিনা স্যাদেব নিষিষেবিষতি নিষিষ্যহিষতে ইত্যত্র স্তৌতে-বেব সনং বত্তে ইতি নিয়মাৎ প্রক্রতাবপি যত্ত্বং ন স্যাৎ। নিবিত্যামিত্যা-দিনা তুবং যত্তং স্তৌতেরেবেতি নির্মেন ন বাধ্যতে। বিষম্পন্ন ইত্যত্ত্ব স্থাদেরিত্যাদিনা এব যত্ত্বং সিদ্ধং কিমর্থমিহ পাঠঃ স্থাদেরিত্যাদিনা প্রাপ্তঃ বৃহং প্রক্রতেঃ স্থিবপ্রোলিটি ইত্যনেন বাধ্যতে। নিবিত্যামিত্যাদিনা তৃবং যত্ত্বং বিশ্বীরতে ত্থাবস্থাবিহ বঞ্জেং পাঠঃ ইতি চেং? ন, প্রক্রতেঃ পরিচ্ছন্দ বিপুক্দুরিষতি বিপুক্ষোল বিচ্ছন্ত। নাহাত্র-অভিস্থাব নিতৃষ্টাব।

২৭৫। প্রাক্তপ্রাদেরস্তের্যাচোঃ। প্রাক্তঃষ্যাৎ নিষ্যাৎ বিষ্যাৎ অভিষ্যাৎ নিঃষস্তি বিষক্তি নিষক্তি মাস্ম ব্যতিষে ব্যতিষাণঃ।

২৭৬। নিরস্তপো সকুৎসেবনে। বিহ্নিং নিউপতি রাজা সকুৎ সেবতে ইতার্থঃ।

সদিবক্তোলিটীতান্ত সর্ক্ষোমের বাধকতাৎ তথাহি পরেঃ স্কুটালিত প্রাপ্তমাপি বজং তেন বাধ্যতে ইতি স্কুচয়িত্বুং বৃত্তিক্বতা তত্র পরিষ্প্রক্ষেই ইত্যালাক্ষতং দিককেই তু স্থানেরিত্যালিনা এব ষত্বং করণীয়ং তত্মালিই মঙ্গেঃ প্রামানকতঃ। পরিচয়ন্ধ ইত্বি মূর্দ্ধশ্বসাৎ কালিরিত্যালিনা ককারেণ বিরুক্তিঃ কথছালিশ্যালিনা কন্ত চঃ মত্র দিকক্তিব্যবায়েহপি ষত্বং ন তাং। বিপ্ত্রুরিষতীতি সন্ ইঙ্ কুটালয়শ্চালিতীতি পিবালিত্বাৎ গুণাভাবঃ। বিপ্ত্রেলাল ইত্রুরি নিত্তার গুণাভাবঃ। বিপ্ত্রেলাল ইত্রুরি নিত্তার গুণাভাবঃ। বিপ্ত্রেলাল ইত্রুরি নিত্তার গুণাভাবিঃ। বছার প্রথমং ষত্বং ন স্যাৎ তদা অন্ত্রেলাল ইত্রুরি কিন্তুরি ইত্রুরে ষদি প্রথমং যত্বং লাং বিরুক্তি প্রথমং বহুং ক্যাং ঘটবর্গালিত্যালিনা টকারে ক্তে মূর্দ্ধশ্বসাৎ কালিরিতি টকারেণ দিক্তিও তাৎ। নতু নিমিন্তাপান্ধাৎ উত্তনির্ভৌ তুকারেণৈর বিরুক্তির্ভিবি যাতি কিমনেন উল্লিভ্রেন চেৎ ন তদ্বাধ্যানগোরবপরিহার এব। •

(२ 9 ৫)। প্রাত্র ইত্যন্তাব্যরন্ত প্রাদেশ্চ সম্বন্ধিন ইচ্ক্রাৎ পরন্তান্তেঃ
সম্ভ বকারেইটি চ পরে বত্বং স্থাৎ। প্রাত্যাদিতি অস ভূবি লিঙ্ সংজ্ঞকবাং গ্লান্ত্যারদিতি অকারলুক্। বান্ধ ব্যতিবে ইতি মান্ধমাঙ্যোগে সর্ক্রকালে লুঙ্চেতি লুঙ্ কর্মব্যতিহারেইসাদেরিত্যান্ধনেপদোভ্রমপুরু বৈক্রচনন্। ব্যতিষাণ ইতি লড় লৃডুৎ ক্রচ্ছত্শানাবিতি শানঃ। প্রাত্তপ্রাদেরিতি
কিন্ ? দিধি স্থাৎ অন্তেরিতি কিন্ ? অমুস্তন্। যাচেরিতি কিন্ ? অভিতঃ।

(৯৭৬) নির: সকারস্য তপশ্পসস্তাপে ইতান্মিন্ থাতৌ পরে সরুৎ সেবনেহর্থে যো ভবতি। নিষ্টপতীতি ষটবর্গাদিতাদিনা তস্য **টঃ** সরুদিতি ২৭৭। অনকারান্তদনেতেক।
গোৰাঃ নৃষাঃ।

২৭৮। নামো নাস্মাসে প্রাযঃ। অঙ্গুলঃ সঙ্গঃ হে ভীরো স্থানং পশ্য হে জ্যোতিস্তোমং পশ্র মাতুঃ স্বসা পিতুঃ স্বসা।

১৭৯। সোঃ পূজায়াম্। স্বিক্তং পূজিতং স্কৃ্সিক্তমিতার্থঃ।

২৮০। অতেরতিপ্রবৃত্তে চ। অতিস্তৃত্য্

একবারং পুনঃ পুনঃ সেবনেস্কেবনে চ ন স্যাৎ। বহ্নিং নিস্তপতীত্যত্র বারং বারং সেবত ইত্যর্থঃ। নিস্তপতি স্ববর্ণং সুবর্ণকারঃ সম্ভপ্তং করোতীতার্থঃ।

- (২৭৭)। ন নকারাস্তোহনকারাস্তঃ ইচ্ক্রাহন্তরস্যানকারাস্তস্য বন্ত্র দানে ইন্তাস্য সম্য বো ভবতি। গোষা ইন্তি গাং সনোতীতি অবজ্ঞনা-দেরি ভ্যাদিনা কিপ্ নলুক্ দীর্ঘন্চ। অনকারাস্ত ইন্তি কিম্ ? পরিসনোতি। অনস্ত ইন্তি ন ক্বজং বৈচিত্র্যার্থম্ অপবা অনস্তম্য সনধাতোঃ শঙ্কানিরান্দার্থম্।
- (২৭৮)। পূর্বেলকণৈর্নায়ঃ সম্বন্ধিনং সম্য যদিহিতং তদসমাসে প্রান্ধান ম্যাং। অঙ্গুলেঃ সঙ্গ ইত্যাদি অগ্নাদেঃ স্কদাদাবিতি সামান্তেন বিধানং সমাসেহদমাসে চ প্রাপ্রোতীতি তত্তানেন ব্যবস্থা। মাতৃঃস্বসেতি স্বস্থবিত্যাদিনা ষত্বপ্রাপ্তিঃ। প্রান্ধোগ্রহণং কচিঘাভিচারার্থম্। তেন ক্ষাদেশ্চেতি বিহিতং যথং সর্পিকুক বিশ্বধা ইত্যাদাবিশমাসেহপি স্যাং।
- (২৭৯)। পূজারামর্থে বর্তমানাৎ স্থশকাৎ পরস্য সদ্য যো ন ভবতি। স্থানিকমিতি সিচেঃ ক্তঃ স্থানিষ্কাৎ বত্বপ্রাপ্তিঃ। সেক্স্যাতিশর এবাক্ত পূজা।
- (২৮°)। অতিপ্রবৃত্তী পূজায়াক বর্তমানাদতে: পরস্য সস্য যো ক ভবতি। নিষ্পরেহপি ফলে ক্রিয়াপ্রবৃত্তিরতিপ্রবৃত্তি:। অতিস্কৃতমিতি উপসর্বোত্যাদিনা যত্তপ্রাপ্তি:।

২৮১। অপের্গর্থাবনাভ্যসুজ্ঞাল্পসমুচ্চয়েষু।
অপিস্তায়াধ্যলম্ অশিসিঞ্চেশ্মূলসহস্রম্ অপিসিঞ্চ সর্পিষোহণি
ভাৎ সর্পিয় স্তোকমিত্যর্থঃ। অপিসিঞ্চ স্তাহি চ।

২৮২। দ্বিতীয়ার্থশ্বভিপ্রতিপরিভ্যশ্চ।
গঙ্গামনুস্থিতঃ বৃক্ষং বৃক্ষমভিসিঞ্চতি স্ত্রীং প্রতিস্থীয়তে। দ্বিতীয়ার্থ ইতি কিম্

প্রথম পরিষিঞ্চতি।

২৮০। পঞ্চম্যর্থপ্রতিপরিভ্যাঞ্চ। অভিমন্যুরর্জ্বনতঃ প্রতিস্থিতঃ ত্রিগর্টেভ্যঃ পরিসিঞ্চি।

(২৮০)। প্রুমার্থান্ড্যাং প্রতিশিক্ষিন্ডাং প্রস্যা সস্য যো, ন স্যাৎ।

⁽২৮১) গহ দিবথেঁবু বর্ত্তমানাৎ অপেঃ পরস্য সম্য যো ন স্যাৎ। অধিকার্থবচনে শক্তের প্রতিঘাতাবিকরণং সম্ভাবনা অভ্যন্তুক্তা কামচারাফ্র-মতিঃ। অপিস্তাদিতি লিঙ্ ন বিন্যাদিলিঙ্কুদ্য ইতি দীর্ঘনিয়েধঃ। উপস্বাদেলি লিঙ্কুদ্য ইতি দীর্ঘনিয়েধঃ। উপস্বাদেলীতি লিঙ্ শেহুমুচাদেরিতি ভুম্ অভ ইতি যাস্থানে একারঃ অকৈদানাবিত্যকারলুক্। অপিসিঞ্চেতি প্রৈষকামচারালুম্ভীত্যাদিনা লোট হি অমুগুত্দভ্যো হেরিতি হেলেপিঃ। স্থাদিতাৎ ষম্প্রাপ্তিঃ। সাপষোহপি স্যাদিতি প্রার্থনায়াং লিঙ্ প্রাহরিত্যাদিনা ষম্প্রাপ্তিঃ। অপিসিঞ্চ স্তাহিত নিযুক্তৌ লাট্।

⁽২৮২)। দিতীয়া অর্থ: প্রয়োজনং যেষাং তে দিতীরার্থাঃ দিতীযার্থেভ্যে হরু অভি প্রতি পরীত্যেতেভাঃ পরস্য সম্য ষো ন ভবতি। গঙ্গামন্ত্রপ্তিঃ স্ত্রীং প্রান্তিস্থীরতে ইতি লক্ষণেহভিপ্রতিপর্যানব ইতি হাদিজং বৃক্ষং
বৃক্ষমভিসিঞ্চতি ইতি বীপায়ামিতি হাদিজং হাদিযুকাদিতি দিতীয়া। ওদনং
পরিষিঞ্চতীত্যত্র লক্ষণান্তর্থাভাবাৎ ন পরিযোগেন দিতীয়া কিন্তু ক্রিয়াসমুদিষ্টত্বেনেতি ষত্বং ভবত্যেব। এবং যয়ামভিয়াদিত্যক্রাপি অভিবর্জ্জং বিভাগ
ইতি বিভাগার্থে অভেহাদিত্বাভাবীয় তদ্যোগে দিতীয়া কিন্তু ক্রিয়াসমুদিষ্টজেনেতি ভবতি ষত্বং তথাহি যয়াং ভলতে তদ্দীয়তামিতাস্যার্থঃ।

২৮০। সিচো যনি।

নেসিচ্যতে অভিসেসিচাতে। অযনিতৃ—অভিবিধিকতি।

२४৫। ञ्चाः स्थानाः।

অভিসোধ্যতি অভ্যমোধ্যৎ অভিস্কৃস্যতি অভিস্কৃস্ঃ।

২৮৬। দেধতেগতী।

অনুসেধতি গাম্। অগতো তু—নিষেধতি :

२৮१। उटा उत्र ति।

অভ্যতম্ভং।

অভিমন্তারর্জ্জনতঃ প্রতিস্থিত ইতি প্রতিদানে সাদৃশ্যে চ প্রতীত্যারাদিখাৎ আরাদাত্তৈরিতি পঞ্চনী প্রতিযোগে চ ইতি তসিং। ত্রিগর্ভেভাঃ পরিসিঞ্চ-তীতি বর্জনার্গণিপরী ইতি তথৈব পঞ্চনী।

- (২৮৪)। সিচঃ সদ্য যনি পরে র্মে। ন ল্যাং। সেসিচাতে ইতি ইচ্ক্রাদিত্যাদিনা বত্তপ্রাপ্তিঃ। অভিসেসিচাত ইতি স্থাদেরিত্যাদিনা বত্তপ্রাপ্তিঃ। যদ্যত্র ঘনীতি ন ক্রিয়তে তদা সামাক্রেন বিধানমেতদিচ্ক্রাদিত্যাদিনা বত্তমের বাধ্যতে স্থাদেরিত্যানেন তু বিশেষবিধিনা অন্নমপি বাধ্যতে তত্মাদভিষিবিক্ষতীতি প্রমানপাঠঃ অদীবিচদিতি প্রত্যাদাহরণীয়ম।
- (২৮৫)। সুনোতেঃ সদ্য দো দনি চ পরে যো না দ্যাং। অভিক্ষেত্রতীতি দনীণ্দীর্যঃ। নবত্র ভৌতেরেবেতি নিয়মাৎ দিকজিন্থনিমিতাঃ
 পরদ্য সদ্য ধরং ন প্রাপ্নোতি স্থাদেরিতি নিয়মাচ্চ উপদর্গ নিমিতাং পরদ্য
 দিদ্যা প্রকৃত্যে দিকজোঁ চ ষয়াপ্রাপ্তিঃ কিমত্র প্রতিষেধ্যং তথাসভিত্তক্তি
 ভূলাহরণম্ অভিস্কৃত্রতি দনস্তাৎ কিপ্ স্কৃত্যে পদাক্ষাং ষয়াভাগে
 ভৌতেরেবেতি নিয়মাভাবে প্রকৃত্যে প্রাপ্তঃ মভিস্কৃত্রতি
 ভূ অভিস্কৃত্যিয়াবার্থদর্শনার্থম্পান্থতম।
- (২৮%)। গতৌ বর্ত্তমানসা বিধুগত্যামিতাসা সসা যে নাস্যাৎ।

 , অফুসৈধতি গাম্ অফুগচ্ছতীত্যর্থঃ। সোপসর্গ স্যৈবাসা গতিবৃত্তিদ্দিতাকঃ

 তেন নিষেধ ইত্যার ইচাদিত্যনেন বৃত্তং ভবতেরক।
 - (২৮৭)। , অনি গতি গুল্পেঃ সদ্য যো ন ভবতি। অভ্যতগত্ত-

২৮৮। সিবুদহোদ্বিক্লক্তিদশু। পর্য্যদীষিবৎ ব্যসীষহৎ।

২৮৯। প্রকৃত্যে সদিস্বঞ্জোর্লিট।

ু অভিষসাদ পরিষম্বজে।

२२०। युःश्रातम्ह।

দ্রুষ্ণঃ স্বারস্থিতিঃ প্রতিস্তব্ধঃ নিস্তব্ধঃ।

দিতি ণিঙ্ লুঙ্ ছঙ্ প্রিক্রন্ন ইত্যাদিনা অন্ স্থাদেরিত্যাদিনা ষণ্ব-প্রাপ্তিঃ স্ত্রন্ধ্যন নিবিধ্যতে।

(২৮৮)। অনি সতি সিবু সহ ইত্যেতয়ো: সম্বন্ধিনাদি ক্লিস্সা যোন সাং। পর্যাসীযিবদিতি পরিপূর্ব্ব সিবু ণিঙ্ গুণঃ লুঙ্ তঙ্ অন্ অঙাগম: সিবু সহ ইত্যাদিনা ক্লিমেন সিবাদেরঙ্ব্যবায়ে বেতি প্রথমং বজং ততো দিকক্তি: হ্রেষংশাখাদেরিতি প্রকৃতৌ হুস্ব: অগুরাবিত্যাদিনা দিকক্তৌ দীর্ঘা দিকক্তসস্য বজং নিবর্ততে। যদেব প্রকৃতৌ প্রথমং দস্যাম্যানীং তুঁৎ ক্রিয়ত ইত্যর্থ:।

(২৮৯)। লিটি পরে দিশিজো: প্রক্রতে: সস্য যো ন ভবতি। অভিযসাদেতি সদোহপ্রতেরিতি প্রক্রতৌ প্রাপ্তং ষত্বং নিষিধ্যুতে দ্বিক্রতৌ ভবত্যের পরিষয়জ ইতি ইন্ধো লিটি চেত্যানুর্ন্তৌ স্বন্ধোবেতি পক্ষে নকারলোপঃ।

(২৯০)। গ্রংস্থাদেও সদ্যু দো ন দ্যাং। গ্রংস্থা সুস্থ ইতি স্থোহধিকরণাব্যয়াভ্যাং ভাবে প্ংসাল্লতভেতি অঙ্ ক্লদ্যঙনাদাবিত্যাকারলোপং। নায়ং দোঃ পূজায়ামিতি পূর্বেণ প্রতিষেধাভাবঃ। পরিস্থিতিরিতি ক্রিঃ গ্রিয়ামিতি ক্রিঃ দোষোমাস্থাংকিন্তেচেতি ইচ্ ইঙাদাবিত্যাকারলোপঃ। প্রতিস্তব্ধ ইতি ক্রঃ হলুপাস্তেত্যাদিনা নকারলুক্ ধোহধাভূর্যাদিতি তদ্য ধঃ বর্গদোভ্যাদিনা ভদ্যী পঃ অপদাস্তেহপীত্যাদিনা পদ্য বঃ
স্থাদিতি তদ্য ধঃ বর্গদোভ্যাদিনা ভদ্যী পঃ অপদাস্তেহপীত্যাদিনা পদ্য বঃ
স্থাদিরিত্যাদিনা ষদ্ধপ্রাপ্তিঃ। নিস্তব্ধ ইতি নি উপদর্গঃ। নির্দ্ধ নিস্তব্ধ:
কাদিযুক্ত ইত্যাদিনা বিদ্বর্গলুক্।

२৯১। मह ७एइ।

পরিসোঢ়ঃ পর্ন্ধিসোঢ়া পরিসোঢ়ং পরিসোঢ়ব্যম্।

২৯২। পরিস্কন্দো ঘণি প্রাচ্যভরতবিষয়ে ক্তে তলোপশ্চ।

পরিক্ষন্দঃ। অপ্রাচ্যভরতবিষয়েতু। পরিক্ষন্দঃ পরিক্ষাঃ।

২৯০। ঋষ্তেভ্যাহভতবর্গযুগ্নো ণঃ।

অপদান্তে ঋ ব র ইত্যেতেভ্য উত্তরো ভকারতবর্গযুগর্জ্জং নকারে। ণো ভবতি। ভিস্থণাং চতুস্থণাং পিতৃণাং পুফাতি দীর্ম :।

⁽২>১)। সহধাতোরোজে ক্তে, সম্ম যোন ম্যাৎ। পরিমোঢ় ইতি ক্রঃ হোঢ় ইত্যাদিনা হম্য ড়ঃ ধোহধাভূর্যাদিতি তম্য ধঃ ষটবর্গাদিত্যাদিনা ষম্য ড়ঃ চেহনোৎসহিষহোরিতি অকারম্যোকারঃ চলুক্। পরিমোঢ়া ইতি ভূঙ্তাঙ্বা। পরিমোঢ়মিতি ক্রিয়ার্থান্ত্মঙ্ভাব ইত্যাদিনা তুমঙ্। পরিমোঢ়ব্যমিতি তব্যঙ্ অনীয়ঙাবিতি তৃব্যঙ্। পরেঃ স্কটশ্চেতি ষম্বপ্রাপ্তিঃ। বিমোঢ় ইত্যাদৌ তু নিবিভ্যাং সিবুসহস্বস্থামিতি ষম্বপ্রাপ্তিঃ।

⁽২৯২ /। পরিপূর্ক্স্য স্থন্দধাতোঃ স্ম্য ঘণি সতি প্রাচ্যগোত্রাণাঃ ভরতগোত্রাণাঞ্চ বিষয়ে যো ভবতি। ক্তে চ সতি সম্য যো ন ভবতি তলোপণ্ট ভবতি। ক্ষথাক্ষেপাৎ ক্রেইমান তলোপঃ উভরথৈব পরিস্থন্দ ইতি উদাহরণম্। বিষয়ো নেশঃ যগুপি ভরতা অপি প্রাচ্যা এব তথাপি পূবগুপানানং জ্ঞাপন্থতি অন্তত্র প্রাচ্যাগ্রহণে ভরতানাং গ্রহণং ন ভবতি। এতংপ্রয়োজনং তদ্বিতপাদে দর্শয়িয়ামঃ। অপেক্ষিতবিধিতাং প্রথমং তলোপে কতে অচ্পর্যাৎ হলুপাস্তেত্যাদিনা ন নকারলুক্। পরিস্থন্দ ইতি পূর্ববিৎ পরেঃ স্কন্দ ইতি পাক্ষিকং যাসম্।

⁽২৯০)। তিন্দণামিতি ত্রিশকাদাম্ স্ত্রিয়াংত্রিচতুরোস্তিন্দচতস্রাবিতি তিন্দ্রাদেশঃ আম্যকোমুদ্দীর্ঘণেতি হঃ ন তিন্দচতস্রোবিতি দীর্ঘনিষেধঃ।
পুঞাতীতি পুষপুষ্টো জ্যোদেনাদিত্যাদিনা নাৎ ষ্টবর্গাদিত্যমুবুঁভৌ নাচ

২৯৪। কুৎসিতমূঢ়াপত্যার্থে মাণবে চ। মনোঃ কুৎসিতং মৃঢ়ং বাপত্যং মাণবঃ।

२२८। त्रमार्थं नवर्ग।

লবণঃ। অভতবর্গযুগিতি কিম্ ? ক্ষুভাভি ক্সতি। পদায়ে ভূ-পিতৃন্।

২৯৬। ব্লফো বস্বস্বয়োঃ পদান্তেহপি।

इत्या वस् वृष्णस् वृष्णयः।

- (২৯৪)। প্রতিসিদ্ধাচবণত্বাৎ কুৎসিতঃ অনধীতবেদত্বাৎ মৃঢ়ং তদ্মিন্
 অপত্যে বাট্টো মানবশব্দে বর্ত্তমানো নকারো গঃ স্যাৎ। ঋষাণামভাবাদপ্রাক্তে বিধানম্। মাণব ইতি শ্বযন্ধকেত্যাদিনা টণ্ ধাচোক্ষপাণ ইতি
 গুণঃ। অন্তত্ত্ব মানবো বাঞ্চা মানবো ধর্মঃ।
- ু (২৯৫)। বদবাচকে লবনশকে বর্ত্তমানো নকাবো নী স্যাৎ লবণ ইতি লুঞছেদনে কর্ত্তবি বমাদেও নি ইতি ওনং। অক্সত্র লবরা ছেদন-মিতার্থং। ক্ষুত্রাতীতি ক্ষুত্রসংচলনে ক্র্যাদিং তকাবযুক্তনকাবস্য ক্ষুত্রেভাঃ পরস্য সন্নিহিত্স্যাভাগছেরক্ত্র এব প্রযোজনম্ এতাবতা তস্যৈবেদং প্রত্যান্তবণনিতি দির্লিতম্। রুস্তরীতি ক্লতা ছেদনে তুলাদিয়াৎ লা ক্ষেত্রাদে বিভি ক্রম্ পিতৃন্ ইতি দিতীয়াবহবচনং শদ্ সবর্ণোহক্শসং সোলত প্রংমীতি অকারস্য পূর্ক্সবর্ণঃ স্যানঃ।
- ২৯৬)। ব্যন্ ইত্যাস্য নকারো ক্সেশকে অর্থনকে চ পরে পদান্তেথিপি লো ভবতি। বিধানদামগ্যাদেব পদান্তে নম্বমিতি লভ্যত এব তথাপি পদান্ত ইতি কতং স্পষ্টার্থন্। বৃষ্ণো বন্ধিতি বাক্যং ব্যবস্থ ইত্যুদাহরনং গছবিধান-সামর্থ্যাৎ নোনাপ্তস্যেতি নলুম্ ভবতি ব্যব্ধ ইতি কচিনেতি বচানার ছিন্ধ।

ণ ইত্যনেনৈব ণাত্তে দিছে ধগ্রহণমূত্তবার্থম্ অজ ঝাবাদিব্যবাযে যথা স্যাধ্ তদর্থং ক্রিয়নাণমেতদর্থমেব ভবতীতি ন বিবোবঃ। দীর্জ ইতি দু বিদাবণে জ্বঃ ক্লাদিবিতি ইব বাস্তাদেরিত্যাদিনা ক্লার্যঃ ত্বাদিব ইত্যকুর্ত্তৌ জ্বক্তবজো-রিত্যাদিনা তথ্য নঃ পত্বং ক্লাভ্যামিত্যাদিনা বিত্তম্।

२ २१। अञ्चायक भवर्गा छ एकी।

ঋষ্রেভ্যোহচ হকারযকারবর্কারকবর্গপবর্গাণামন্তর্কে। ব্যবায়েই পরীক্রিপদান্তে ভকারতবর্গযুগর্জ্জং নকারো ণো ভবতি। রুষেণ ক্ষীরেপ রুক্ষেণ গৃহ্লাতি মর্বেণ বর্ষেশ সূর্য্যেণ অর্কেণ মূর্থেণ বর্গেণ অর্থেণ শৃক্ষেণ সূর্পেণ রেফেণ গৃহ্র্বিণ দর্ভেণ

(২৯৭)। সরিহিতালাতে বিপ্রকৃত্তীং বিধিরপেক্ষত ইতি ক্রায়েন পূর্কোণাপ্রাপ্তে বিধানম্। কল্চ পশ্চ কপৌ তয়োর্বর্গ: কপবর্গঃ অজ্ র্রায়ব কপবর্গাণামিতি কর্ত্ত্র-ছাম্বাদিক্কভিরিতি কর্ত্তরি য়ষ্ঠা। অর্কেণেতি অর্চ্চ পূজায়াং দাদেঃ ক ইতি কে কতে ককারদ্যবান্ অথবা খণন্ত:। কর্ব্ব কর্দ গৰা দৰ্ব্ব ভৰ্বেতি যৱলবীয়েষু পঠ্যতে দণ্ডকে গৰ্ব্বগতৌ পঠ্যতে স প্ৰগীয়ঃ এতাৰতা গৰ্ক্ষেণেতি স্থানদক্ষে উদাস্তম্। অজাদিভিরেকৈকশো দ্যাদিভিক ব্যবায়ে পত্তং ভবতি নত্তেত্বৰ্গব্যতিবিক্তবৰ্ণসহিতৈন্যপ্যেত্ৰণ-ব্যতিরিকৈর্ব্যবায়েহপি ইতি বাক্যার্থঃ। যথা ব্রহ্মক্ষল্রিয়বিশাং পঙ্কৌ ভোক্তব্যমিত্যুক্তে মিলিতানাং ছয়োরেকস্য চ পঙ্ক্তো ভুঞ্জাতে নতু শূদ্রস্য নাপি শূদ্রসহিতানামনীবাম্। যভেত তৎ কথমুরঃকেণ বুংহণং দৃংহণ-মিতাত্র ণত্বং বিদর্গানুস্বারয়োঃ স্বরাদগুত্বাৎ অতএব স্বরাদগ্রো হল হল পরযুক্ দীর্ফো দীর্ঘযুক্ যুক্তান্তো গুরুরিতি গুরুষাৎ গুর্ফাদিহলন্তাদদীপা-দেরিতি অংসা ধ্বংদেত্যানে আং অত আত স্বর্ধপ্রাহিস্গানুস্বার্য্যো-রিতি যথা স্বরাদগ্রহমনয়োরভাপগতং তথা স্বরধর্ম মমপি যত্তং বিদর্গা-মুম্বারজিজ্বামূলীয়োপগ্নানীয়াশ্চত্বারোহমী যোগবাহাঃ স্বরধর্মা ইতি অত-এবামীবাং পৃথগবস্থানমূচ্চারণঞ্চ নান্তি যণ্ড যন্ধর্মঃ স'তৎকার্য্যাবিরোধীতি ভবতি অতএব উরxকেণ উরmপেণ ইত্যতাপি ণবম্। বৃংহণমিতি বুহি বুদ্ধৌ ইদিদ্ধাতোত্ম মিতি হুম্। দৃংহণমিতি দৃহষ্টি্হভুহদুহন্থ-হিংসায়াম অপদান্তস্যোগিনা ত্রমুম্বার:। নমু কাম্যকল্পেত্যাদিনা অব্যয়সকার্স্য পদান্তথাৎ উরঃকেণ ইত্যত্র কথং পদান্তবন্ধাভাবে বিদর্মঃ। উচাতে উর সঃ কঃ উরঃ কায়তীতি বা উরঃ ক ইতি কর্তবাং ন পুনুদ্ধকা কপ্রতায়ঃ অতোংস্তর্বর্তিনীং বিভক্তিমাশ্রিত্য পদান্তবাহিদর্গঃ

ির্মাণা উরংকেণ বংহণং, দৃংহণমিতি স্বরধর্ম্মহাদিসগাঁসুস্বারয়োঃ। অজ্থযবকপবর্গান্তর্দ্ধাবিতি কিম্ ? ত্রস্কুঃ।

२३४। क्षकारमी वनमा।

প্রক্ষাদে স্থিতেভা ঋষে ভা উত্তরোহজ্বযবকপর্গাস্তর্দ্ধে চ বন-স্থাপদাস্তে নকারো গো ভবতি। প্রক্ষবণম্ আত্রবণম্। ইক্ষু-পীৰ্ফাশরখদিরনির্প্রাস্তর কার্য্য।

তদা কথং ণক্কং আভ্যাং ষোগাভ্যাম্ একপদস্থ এব নিমিত্তে নিমিত্তিনি চ ণর্যবিধানাৎ ক এবমাহ অনেন যোগেন পক্ষং কিন্তেতদিকারে প্রকৃত্যৈকস্বরস্যেত্যাদিনা। নরাভ্যাং যোগাভ্যামেকপদস্থে নিমিত্তে নিমিত্তিনি চ শক্ষং বিধীয়তে ইতি কথং লভ্যতে। উচ্যতে। প্রক্ষাদৌ বনস্য ইত্যাদিযোগকরণাং। বদ্যাভ্যাং সামাক্রেন গত্বং বিধীয়তে তদা প্রক্ষাদৌ বনস্যেত্যদিলক্ষপকরণমনর্থকং স্যাৎ তত্মাদেকপদ এরাভ্যাং পত্তম্ অতএব অধিন্যতিটাদৌ ভিরপদত্বেন ন গত্বম্। অথবা সামান্তেন বিধানেনাপি প্রক্ষাদৌ বনস্যেতি লক্ষণং নিয়মার্থং ভিরপদস্থে নিমিত্তে নিমিত্তিনি চ গর্মং ভবং প্রক্ষাদিস্থনিমিত্তাত্ত্তরস্য বনাদিনকার্যস্যেব ভবতি নাষ্ট্রস্য এতেন পারিশিয়াদেকপদস্থ এবাভ্যাং পত্তম্। অভতবর্গগুগিত্যেব। গ্রন্থতি,ক্রেন্দতি কবং পরিক্ষাঃ ক্ষাঃ কর্তব্যাহ্ব বত্বঃ বহুলবচনাত্ত্বতের্বাবস্থিতবিভাষীয়া তথ্ববর্গ্রে পত্তং ন প্রবর্ততে নকারযুক্তে তু প্রবর্তত ইতি। ক্রম্বারিত ক্রমী উদ্বেগে স্থাক্র্যাদেশ্রিতি ক্রঃ। ইতঃ প্রভৃতি ন যুবাদেরিত্যতঃ প্রাগেতল্পক্ষণ-দ্বয়নপাদস্ত ইতি চ প্রতিযোগমস্থবর্ততে।

২৯৮)। প্রক্ষণরখনিরকার্ব্যান্তপ্রনির্বস্তর্ইক্ষুপীয়ক্ষা ইতি প্রক্ষাদিঃ
বেহত্র রক্ষোষধিবাচকান্তেভ্যা দিত্রাচ্ রক্ষোষধ্যোর্বা বনস্য ইতি বিক্তরে
প্রাপ্তে নিভ্যারিধানন্। প্রগতং বনং নির্গতং বনং ইতি নিভাং কুপ্রাদেরিভি
তৎপুরুষ:। প্রগতো বনাং নিষ্ণাস্তো বনাদিতি পঞ্চম্যা নিরাদেঃ
ক্রাস্তাদাবিতি বা তৎপুরুষ:। অস্তর্ক্রণ্নিভি কর্মধারয়োহবারীভাবো বা
ক্রোয়ালাং বনেন সহ ব্দীস্মাস:।

২৯৯। **অগ্রেমিশ্রকার্সিগ্রকাপ্রগাকোটরাত্ত**। সংস্থায়াম।

অত্যেবণং মিশ্রকাবণং সিধ্রকাবণং শারিকাবণং পুন্নগাবণং কোট-রাবণম্।

৩০০। পূর্ববিপদে চাবনক্ত।
শূর্পণিখা খরণাঃ খুরণাঃ খরণসঃ খুরণসঃ ক্রণসঃ ক্রণসং বাদ্ধ্রীণসঃ পদ্ধ

⁽২৯৯)। অগ্রেপ্রভূতিবৃ সিত্তে গ্লামের ভাং পরদ্য বন্দ্য নকাবোণে ভবতি সংজ্ঞানাং বিষয়ে। অগ্রেবণ্মিতি সংজ্ঞান্দানাং যথাকথঞ্চিৎ ব্যুৎপত্তিবিতি। অগ্রং বনমিত্যাদিবাক্যে সমাসং কথা নিপাতনাদেকারঃ এতদর্থমেব ক্রে অগ্রে ইত্যেকাবাস্তনির্দেশঃ জিনেক্রস্ত বনস্থাগ্রে ষষ্ঠীদমাদে রাজদন্তাদিখাৎ বনশক্ষ্য পরনিপাতঃ গোহলম্ভাদন্তানাং সংজ্ঞানাং সপ্তম্যা অলুগিত্যাহ। মিশ্রকাবণমিত্যাদী কোটরাদের্কন ইতি পূর্ব্বুপদে দীর্ঘঃ ব্যক্তিপ সংজ্ঞানাং বিষয় এব তথাপি মিশ্রকাপ্রভূতীনাং ক্রত্দীর্ঘাণাং নির্দ্ধেশা মন্দ্রিয়াং স্প্রটাবগমার্থঃ। পুরং গছেতীতি, পুরগ ইত্যাহ ক্রাসং। অগ্র ইত্যাদীতি কিন্। কুবেববন্দ।

⁽৩০০)। পূর্বাপনস্থিতেতা বব্রে উত্তবস্য বনব্যতিরিক্তস্য উত্তবপদস্য নকার: সংজ্ঞায়াং বিষয়ে গো তরতি। সম্বন্ধিশকাদবহুমেব পূর্বাপদেনোত্তরপদমপেক্ষাতে। শূর্পাথেতি শূর্পা ইব নথা যস্যা ইতি
বহুবীহিং। স্বাক্ষাদযুক্তোপান্তাদিত্যাদিনা প্রাপ্তঃ পাক্ষিক ঈপ্রত্যয়ঃ
নথমুখায়ায়ীতি নিবেরঃ। থুরণাঃ বরণস ইতি ঋংনাসিকা ইব
নাসিকা অস্যেতি বহুবীহিং পূর্বার্থেত্য,দিনা নাসিকাশকলোপঃ নামি
চালুলাদিতাৎ নসাদেশক। ধরপুরাজ্যাং প্রত্যয়লুঘেতি পক্ষেহল ক্
এবং জ্ঞানঃ জ্ঞাকত্তকবচনাং। বাদ্ধীণস ইতি রুধু বৃদ্ধী ক্ষামাদের ইতি
ব প্রত্যয়ঃ বহুলবচনাৎ গুণঃ বর্দ্ধঃ চর্ম্বভেদঃ তস্য বিকার ইতি টণ্ টিখাদী
বাদ্ধীব নাসিকা অস্যেতি বহুবীহিং বৃদ্ধার্থেত্যাদিনা পুংবন্ধাবনিবেধঃ
স্বন্সিতি অম্বরম্বগতেই ইনগতেই বা ওনটি পরং স্বরং যস্য স্ব প্রায়ণঃ

७०५। जमस्यर्क्छ।

প্রাহ্ন পূর্বাহ্ন অপরাহ্ন। অনদত্তে তু—নিরহন পরাজিতমহা পরাহ্ন। অনহস্ত তু—দীর্ঘাহী শর্ণ।

৩০২। ত্রিচতুরোর্বয়সি হায়নস্থ। ত্রিহায়ণো বৎস ত্রিহায়ণী গো: চতুর্হায়ণা চতুর্হায়ণী।

পাইং অরনং যদ্যেতি পারায়ণম্ এবমুভরায়ণম্। নারায়ণ ইতি আপো নারা ইতি প্রোক্তা আপো বৈ নবস্থনবঃ। অয়নং তস্ত তাঃ পূর্বং তেন নারায়ণঃ য়ৢতঃ। ইতি ব্যুংপত্তী অনেন গরম্। যনা নরশকাং অয়াদেশিয়ন ইতি নায়নপ্রতায়ান্তঃ কেনাপি সাধাতে তদা অজ্বয়বেতাদিনা গহম্। নহু অবনদোতি বনবাস্তিঃ কিনর্গং বিশেষবিধানাদেবাগ্রেপ্রভৃতিষেব বনস্য গহং ভবিষ্ঠি নাহার তং ক্রিয়তে স্পঠার্থং স্থায়গম্যাজ্ঞাকো বিষয় বিভাগঃ স্পঠো ভবতি। আগ্রহায়ণী অক্ষোইণীত্য,দাবপ্যনৈন গ্রম্।

(৩০১)। অদত্তে পূর্নপদে স্থিতেভাঃ ধাষ্ট্রভাঃ পরসাক্ষক্ষ্যা
নকারো পো ভ্রুবিত। অক্সোতি রুত্সমাসাস্ত্যানুকরণম্। প্রার ইতি
ক্রেক্তরমহরিতি প্রাদে রুট্রাদৌ প্রথময়া ইতি তংপ্রুষঃ। পূর্বার ইতি
অংশিষষ্ঠ্যা পূর্দ্রাদেরিত্যাদিনা তৎপুরুষঃ একপুণ্যেত্যাদিনা অৎ অহাদেশত। নিরহু ইতি নির্নাত্তাহহঃ পঞ্চয়া নিরাদেঃ ক্রান্তাদাবিতি
প্রাদিসমাসঃ। অদত্ত ইতি রুষোজ্যা দীর্ঘাগ্রহণাৎ। পরাহু ইতি অত্ত
ন ণত্তম্ অহঃ প্রীতি সর্ব্র প্রেলিজতা। দীর্ঘাহ্রাদ্র শরদিতি দীর্ঘাণাহাভ্রুভা ইতি বহুরীহিঃ। অদ্বিধৌ তংপুরুষাধিকারাদ্র ন সমাসান্তঃ স্কাভান ইতি স্থানাচ্যতোহযুগ্রম ইত্যমুক্তী দ্রিয়ামীতি চেতি অকারলোপঃ। নামোহন্তো বিভক্তিজ্যতেতি বিক্রোহ্র ন স্থানে যুবাদেরিতি
নিবেধাৎ যুবাদিনণপাঠাদেব হলস্বভাক্তা নিষেধে সিদ্ধে ইহাদস্যোপাদানং
স্পন্তার্থম্য

(৩০২)। ত্রিচন্তার ইত্যেত্রের হিতেডাঃ ধবে,ভাঃ পরো বয়পি গ্রামানে হারনভা নকারো গো ভবতি। ত্রিহায়ণীতি ত্রীপি হারনাভভা ইতি বছরীহিঃ বয়সি হায়নাদিতি ত্রিয়ামীপ্রতারঃ। বয়ঃ প্রাণিধক্ষ ভেনেই ন ভবতি ত্রিহায়না শালা।

৩০০। বাহে বাহনস্ত। ইক্ষুবাহণং শকটং শরবাহণং ধনুঃ দর্ভবাহণো বটুঃ। অবাহে তু। দাক্ষিবাহনং দাক্ষিস্বামিকং বাহনমিত্যর্থঃ।

৩০৪। দেশে পান্দ্য।

স্তরাপাণাঃ প্রাচ্যাঃ ক্ষীরপাণা উশীনরাঃ সৌবীরপাণা বাহনীকাঃ ক্ষায়পাণা গান্ধারাঃ।

৩০৫। প্রকৃত্যিকস্বরন্য কবর্গবতশ্চ নাম্নোহত্তে বিভক্তিজশ্চ।

⁽৩০৩)। বাংছ পূর্বপদে স্থিতেভাঃ ঋষ্যেভাঃ পবো বাহনস্থ নকারো ণো ভবতি। বাছং বহনীয়ং গাঃ উহাত্রে অনেনেতি বাহনং বাচালিঙ্গং কাপি কাবকে চেতি করণে এনট্ অন্ধাদেব নির্দেশাৎ দীর্ঘত্তক। ইক্ষূণাং বাহনমিতি কর্তৃশাভাদিকছিবিতি কর্মণি ষ্ঠী তস্তাঃ স্মানঃ। অনারো-পিতেবপি ইক্ষু ইক্ষব উহাত্তে যেন তদভিধীয়তে।

⁽৩০৪)। পূর্ব্বপদে স্থিতেভাঃ ঋষ্যেভাঃ শবং পানস্থ নকারো দেশে বাচ্যে গো ভবতি। পীয়ত ইতি পানং কর্মণি ভাবে বা ওনট স্থবা পানং বেষাং তে স্থবাশাণাঃ প্রাচ্যাঃ। স্থবাপাণাদয়ঃ শকাঃ প্রাচ্যাদিবিশেষণভূতাঃ বদাপি মন্ধুয়ো বর্তত্তে তথাপি দেশসম্বন্ধাবেণ চেৎ মন্থুযো প্রবৃত্তা এতাবতা দেশপদেনাভিধীয়স্তে অথবা স্থবা পানং যত্র ইতি বহুত্রীহিণা দেশ এব বাচ্যঃ। অদেশে তু। স্থবাপানাঃ শুদাঃ নাত্র দেশসম্বন্ধন শক্পাবৃত্তিঃ।

⁽৩০৫)। নামোহন্তো বিভক্তিজন্দেতি বিকল্পে প্রাপ্তে নিত্যবিধানম্। প্রকৃত্যা স্থভাবেন একসরঃ প্রকৃত্যিকস্ববঃ পূর্কাপদে স্থিতেভাঃ স্বন্ধেভাঃ উত্তরঃ প্রকৃত্যিকস্বরগ্ত নামঃ কবর্গবক্তক নামোহন্তো নকারো শো ভবতি। বৃত্তহণাবিতি বৃত্তাং হুতবস্তাবিতি ব্রন্ধ্রজাগর্ত্রাদ্ধন ইতি কিপ্। স্থীরপেণেতি স্থীরং পিবতি পাতি বা স্থীরপঃ আদন্তাদমাদের প্রাদেরিতাঙ্ কৃদচাঙনাদাবিত্যাকারলোপঃ টাভিস্ ইত্যাদিনা টাস্থানে ইনাদেশঃ বিভক্তিঃ স্থানে জাতশ্বাদ্ধং বিভক্তিঃ। বস্ত্রোগিণাবিতি

ইউইনো ক্ষীরপেণ ক্ষীরপাণিঃ প্রকামেণ প্রামুখেণ বস্ত্রযোগিণো শুক্ষগোময়েণ চক্রগোমিণা স্ত্রীভোগিণো বস্ত্রযুগাণি।

৩০৬। নিয়ো গ্রামাগ্রাভ্যীম্। গ্রামণীঃ অগ্রণীঃ।

্রতিব। অন্তর্য্যদশেহয়নস্য।

মন্তর্য়ণং বর্ততে। দেশে তু—অন্তর্য়নো দেশঃ।

১০৮। প্রাদেশি নসঃ।
প্রণসং মুখং পরিণসম্।

যুজাদের্থিনণিতি বিনণ্ অকবর্গাদীত্যাদিনা জকারস্য গং। চক্রগোমিণেতি গোদিন্ পূজা ইতি গোশকান্মিন্। বস্তব্গাণীতি জস্শসোরিত্যাদিনা শিং অদন্তপ্ত চেতি মুং অয়ং বিভক্তৌ পরভূতায়াং জাততাদিভক্তিজঃ। প্রক্ত্যেতি কিম্? ক্ষীরপীবা শসাদীত্যাদিনা অকারনুকি কতে অয়মেক-স্বরো নতু প্রকৃত্যা। অপদান্ত ইত্যেব। হে ব্রহ্মহন্।

- (৩০৬)। আরক্জমেণ প্রতীয়তে নিয়ো গ্রামাগ্রয়োরিতি লক্ষণং লিপিকরপ্রমাদাৎ নিয়োগ্রামাগ্রাভ্যামিতি জাতম্। গ্রামেখ্যে চ স্থিতেভাঃ ক্ষেত্র উত্তরো নিয়ো নকারো ণো ভবতি। গ্রামণীঃ অগ্রনীরিতি উপপদে প্রাদৌ চেতি কিপ্। নিয় ইতি কিবস্তমসূক্তং ন তু ধাতুমাত্রম্। তেনেহ ন স্থাৎ অগ্রনায়কঃ গ্রামনেতা।
- (৩০৭)। ক্লতোহচ উত্তর ইতি গত্তে সিদ্ধে দেশনিষেধার্থং বচনম্। অন্তর্তাতি সিন্ধ্ স্থিতেভাঃ ঋষে ভা উত্তরোহয়নস্য নকারো অদেশে বাচ্যে পো ভবতি। অয়নমিতি অব গতে ইন গতে বা ঙনট্।
- (৩০৮)। প্রাদৌ স্থিতেভাঃ ঝ্যেভাঃ পরো নসো নকারো পো ভবতি। প্রণদমিতি প্রগতা নাদিকা অসেতি উপসর্গান্নাসিকারা নস্ চেতি অং নসাদেশত প্রাদেরেবোত্তরস্য নসো বিধানাং প্রাদাবিতি ক্ষতং প্রাদিসম্বন্ধিবিহিতস্য নসাদেশস্য গ্রহণার্থং তেনেহ ন স্যাৎ প্রনঃ শ্রঃ প্রাদিসম্বন্ধিবহিতস্য নসাদেশস্য গ্রহণার্থং তেনেহ ন স্যাৎ প্রনঃ শ্রঃ প্রাদিসম্বন্ধিং মধ্যে শ্র ইত্যর্থঃ শস্ চতুর্থীভাস্ সামভিবে ন ইতি নসাদেশঃ প্রাদাবিতি উত্তর্যার্থক।

৩০৯। ণাদিধাতোরস্তরিচ। প্রণয়তি অন্তর্ণয়তি নির্ণয়তি নির্ণয়: অন্তর্ণয়:।

৩১০। ন ধাত্বন্তরোপসর্গে। প্রগতা নায়কা যম্মাৎ স প্রনায়কো দেশঃ প্রনিনংসতি প্রনিনীষতি।

৩১১। মীনাতিহিনোত্যোঃ। প্রমাণাতি প্রহিণোতি।

७)२। ७१८नः।

প্রবপাণি।

(৩০১)। প আদির্যাস পাদিঃ পাদিংগাসী ধার্কেতি পাদিধাতুঃ প্রানাবন্তরি চ হিতেভাঃ ঋষেভা উত্তরো পাদিধাতোর্কারো পো ভবতি। নির্থ ইতি পীঞো ধাষাদির্গোন ইতি প্যানঃ ইণস্ত ইতি দুঙানিরাং ঙঃ। পাদীতি কিম্ ? প্রনাথকঃ। নাথিরয়ং যদা পাদিগণে এঠাতে তদা প্রণাথকঃ।

(৩১০)। ধারতরোপদর্গে হিতেভাঃ ঋহ্বেভাঃ পরো ণাদিবাঁতোর্নকারো শোন ভবতি। প্রনায়কো দেশ ইতি প্রগতা নায়কা যথাদিতি বছব্রীইঃ প্রাদেঃ রুদন্তন্য বেতি গতশকলোপঃ অত্র প্রশক্ষা গমেরুপদর্গো নতু গীঞঃ। প্রনিংসতীতি নমেঃ সনস্তম্য ধাতুসংজায়ামিজাপ্রকর্ষজোভনে প্রশক্ষা দানত্যা ধাতোরুপদর্গো নতু নমেঃ। তেন ধারত্তরোপদর্গতাল গকারঃ। যত সনত্যো ধাতুঃ স ণাদিরেব ন ভবতীতি নান্তি গরপ্রাপ্রিঃ যদা পুনর্নমেন্ত্রে প্রথমং প্রশক্ষমন্ধা পশ্চাৎ সন্বিধানং তদা গতঃ ভবত্যের প্রানিংসতি।

(৩১১)। প্রাদাবন্তরি চ স্থিতেভ্য ধরে ভ্য উত্তরো মীনাতিহিনোভ্যো-র্মকারো ণো ভবতি। প্রমীণাতীতি মীঞ্ হিংসায়াং ক্যাদের্নাদিতি মাৎ। প্রহিণোভীতি হি গতৌ স্বাদের্নাতি মুৎ।

(৩১২)। ঙানীতি লোট্দংজ্ঞকন্য উত্তমপুরুষদ্যৈকবচনদ্যাস্করণম্। প্রাদাবস্তরি চ হিতেতা ঋষেভা উত্তরো ভানেন্কারো ণো ভ্রতি। প্রবর্গানীতি ভ্রপবীজ্ভস্কানে লোট্ডানি শঙ্। ৩১৩। অনিতেরস্তে চ। প্রাণিতি হে প্রাণ্।

৩১৪। ন পদান্তে পরেশ্চেত্যৈক। হে প্রান্ হে পর্যান্ পর্যানিতি কাতন্ত্রন্।

৩১৫। অদ্যৈব ক্তে ণত্নে দিঃ।
প্রাণিণিষতি প্রাণিণৎ। অক্তত্র—প্রণিনংসতি প্রণিনীষতে প্রণনাম প্রণিনায়।

- (৩১৩)। অনিতেরিতি অনশ্বসপ্রাণনে ইতাশ্বাৎ ধাতুকখনে বিহি-তেন তিপ্তা নির্দেশঃ ক্ষাদেরিদ্ধলায়ে ইতি ইং। প্রাদাবস্থরি চ স্থিতেভাঃ ঋষ্যেভা উত্তবাংনিতের্নকারো গো ভবতি অস্তে চ বর্তমানঃ। হে প্রাণিতি পঞ্চমাহস্তালন ইতি কিপ্ দীর্ঘণ্ড নৌ নাস্তস্তেতি প্রাপ্তো নকারলুক্ নোনাস্তস্ত নলুক্ চেতি প্রতিষ্ধাঃ। ংর্মত্র পথবিধো অপদান্ত ইত্যযুক্তো অস্তেন প্রাপ্রোতাত্তি অস্তে চেতি কৃতম্।
- (৩১৪)। পূর্বস্ত্রেণ বিহিন্তো নকারং পদান্তে ন স্থাং। পরেশ্চ পরস্থান ভবভাত্যেকে। অক্সিন্ ব্যাধ্যানে হে প্রানিতি রূপম্ অরমেব মুধ্যঃ স্ব্রার্থঃ। ভাগবৃত্তিরুতাপ্যেতদেব একদেশীমতং ব্যাধ্যাতম্। অথবা চকাবো ভিন্নক্রমঃ। পরেস্ত্রেস্থ পদান্তে বর্ত্তমানস্থানিত্র্নিকারো গো ভবতি। চকারাদপদান্তে চ। অক্সিন্ ব্যাধানে হে পর্যান্ত্রপর্বানিতীতি চাস্থোদাহরণং হে পর্যানিত্যে পূর্ববং ফিপ্ দীর্ঘণত। পূর্বস্ত্রেণ হে প্রাণিত্যের এক্ষ ভবভাবে এবমেকদেশীয়মতং বামনেনোক্তম্।
- (৩)৫)। অন্তেতানিতে: পরামর্ব: অনিতেরেব ক্লতে পথে বির্ত্তবিত্ত অত্যেবার বিরুক্তৌ কৃতারাং গছমিতি ব্যবস্থার্থ: লক্ষণম্। প্রাণিনিষতীতি সন্ ইঙ্ পথে ক্লতে সেঙ্ণিঙ্চাজ্যেইজাদেরিতি গীতানেন বিরুক্তিঃ। প্রাণিণদিতি ণিঙ্লুঙ্ছঙ্ অন্ শবং বিরুক্তিঃ বৃদ্ধিরিতি সাধনক্রমঃ। ন পিঙ্বিক্তেরিতি নিধেধার ধীর্বঃ। প্রাণিনংস্তীভাসি অত্র বিরুক্তেরিতি নিধেধার ধীর্বঃ। প্রাণিনংস্তীভাসি অত্র বিরুক্তেশ্রিকারিং। গাদিধাতোরিভাসিনা পথম্ একদেশবিক্তমন্তব্তব্তীতি বিরুক্তেশ্রেক্তির পাদিধাতোরিভাসিনা পথম্ একদেশবিক্তমন্তব্তব্তীতি বিরুক্তেশ্রেক্তির পাদিধাতোর্ভবত্যেব ইতি ন কোহপি চোভাবসরঃ।

৫১७। इन ४७।

উত্তরম্ভ—প্রভন্ন: প্রভূগঃ।

প্রহণ্যতে পরিহণ্যতে প্রহণনং পরিহণনম্।

७)१। अत्रर्शाप्तरम्।

অন্তর্হণ্যতে অন্তর্হণনম্। দেশে তু—অন্তর্হননো দেশঃ।

৩১৮। কুতোহচ উত্তরঃ। / প্রহাণং প্রহাণীয়ং পরিবহমাণঃ প্রহীণঃ পরিহাণিঃ। অনিচ

⁽৩১৬)। প্রাদাবস্তরি চ স্থিতেভা ঋষ্ডে: পরো হনশ্য নকারো ণো ভবতি। প্রহণ্যত ইতি কম্মণি দটিতে যক্। প্রহন্তীতাত্র তু অভত-বর্গায়ুগিতামুবুত্তৌ ন ণত্তম্।

⁽৩১৭)। পূর্কান্ত্রেণ গবে সিদ্ধে দেশবাবৈত্যর্থং বচুনম্। অন্তরি নিত্তভা ধাষ্ট্রেণ গরো অদেশে বাচো হনো নকারো গো ভবতি। অন্তর্গ্রনমিতি ভাবে ওনট্ অন্তরগ্রাতাবিতি প্রদাদিয়াৎ প্রদাদেঃ কতেতি সমাসঃ মধ্যে হননমিত্যর্থঃ। অন্তর্গনাইতি অন্তর্গাতেহিন্দিন্দেশে বাচালিকং কাপি কারকে চেতি অধিকরণে ওনট্ বাচ্যালিকতা চ। কথমন্তর্থগো দেশঃ ইতি প্রমৃথ অন্তরো দেশ ইতি ওবিধাবৃক্তং শহুমিত্যেক ইতি।

⁽৩১৮)। প্রাদাবস্তরি চ স্থিতেতাঃ শব্রেভাঃ পরঃ রুৎপ্রতায়দম্মী অচ উত্তরো নকারো পো ভবতি। প্রহাণনিতি ভহাকত্যাগে ঙনট্ প্রহাণীয়মিতি অনীয়ঙ্ পরিবহমাণ ইতি বহপ্রাপণে শানঃ শঙ্ শানেহত ইতি মঃ প্রহীণ ইতি ক্তঃ কিন্তে চেতি ঈকারঃ ক্তন্তবদ্ধারিত্যাদিনা তকার্দ্য নঃ। পরিহাণিরিতি যাদেনিরিতি নিঃ। প্রভগ্ন ইতি ভন্তো আমর্দনে ক্তঃ ওদিবাত্তভ নঃ হল্পান্তেত্যাদিনা নকার্লুক্ ওদিদাদেন দাবিতি ক্ল্যা গঃ। পরিমোহিশেত্যাদেন নাম্নেহত্যো বিভক্রিপ্রাণ্ড।

৩১৯। ইজাদেরেব মুপান্তস্থ।

প্রেম্বণং প্রেম্বণং প্রোন্তণম্। অক্তর-প্রমঙ্গনং প্রমঙ্কনম্।

৩২০। নিরো বিলে।

নিৰ্বিগ্নঃ।

- 👔 ৩২১। নেরঙ্ব্যবায়েহপি যাদোঁ।
- প্রণিযাতি প্রণ্যদৎ। যা বা দান দো পদ জা প্লা, গদ যো নদ চিঞ বহাঃ। পতৃ মাঙ্ শমু ধেট দা ধা, হন মেঙ্ বপ দেঙ্ দিহাঃ॥ মা মান ইতাপি চাক্রাঃ।

⁽৩১৯)। পূর্ব্বস্ত্রেণ বিহিতো ণকারে। রূপান্তস্থ ভবন্ ইজাদেপেব ভবতি নাস্তস্থ। এবকারেইস্থ নিয়মার্থতাস্চনার্থ: নিয়মণ্চ প্রাপ্তিপূর্ব্বক এব ভবতি এতাবতা ইবি ব্যাপ্তাবিত্যক্ষাং হৃমি কৃতে প্রেম্বনং
প্রেম্বনীয়মিতাত্র গল্পং ন স্থাং যতোহজ্ব্যবাদিব্যতিরিক্তবর্ণেন নকারেণ
ব্যবধানাং কৃতোহচ উত্তর ইতাস্য প্রাপ্তিরেব নান্তি। প্রেম্বণং প্রেম্বণমিতি ইথি ইগি ইত্যেতৌ গতার্থের্যু পঠোতে ইদিকাং কুম্ উপান্তস্ত বর্গ
ইতি নঙ্গা ভঃ। প্রোম্ভণমিতি উত্ত উদ্ভ পূরণে প্রমন্তনামূতি মিগ গতাপ্রের্থু পঠ্যতে। প্রমন্তনমিতি মিক মণ্ডনে মুপান্তয়োরিজাদিখাভাবাং নিয়মেন ব্যাবৃত্তিঃ।

⁽৩২০)। নির উত্তরে বিশ্লে স্থিতো নকারো ণো ভবতি। পূর্ব্বে গাপ্রাথ্যে বিধানম্। নির্বিন্ন ইতি সভাবিচারণলাভার্থানাং বিদীনাং রূপং বিদ্যতে বিস্তে বিন্দতীতি ত্রয়াণাম্ অনিঙকারিকায়াং পাঠাৎ অমদোদা-দিত্যাদিনা নম্ম।

⁽৩২১)। প্রাদাবস্তরি চ স্থিতেত্য: ঋষ্ট্রেভ্য: পরো নের্নকারো যাদে।
পরেহত্তব্যবায়েহপি পো ভবৃতি। যা প্রাপণে বা গতিবন্ধনয়োঃ প্রাভক্ষণে হন
হিংসাগত্যোঃ দিহ উপচয়ে প্রাকৃৎসায়াং গতৌ চ যড়নাদয়ঃ। দো অরথগুনে পদ গতৌ শমু উপশমে যোহস্তকর্মণি চত্বারো দিবাদয়ঃ। চিঞ্চ্রেদে
আদিঃ। গদ ব্যক্তায়াং বাচি পদ অব্যক্তে শব্দে পত গতৌ ভূবপ বীক্তক্ষ-

৩২২। ইরিকাভদ্রিকাতিমিরবর্জ্জং দ্বিত্র্যাচ রুকো- বিধ্যার্থ বনশু।

লোধৰনং লোধবণং শিরীষবনং শিরীষবণং দূর্বাবনং রক্ষাবনং বৃদ্ধাবনং রক্ষাবনম্। ফলী বনস্পতিজ্ঞে য়ো বৃক্ষাঃ পুস্পফলোপ-গাঃ। ওষধ্যঃ ফলপাকান্তা লতা গুল্মাশ্চ বীরুধঃ॥ ইতি কস্থ-চিদ্দর্শনম্। অহাত্র—মহীরুহঃ কুজো বৃক্ষো বনস্পতিরনোকহঃ।

সম্ভানে বহ প্রাপণে মেঙ প্রণিদানে দেঙ রক্ষণে দান দানে ধেট পানে নব ভাদয়ঃ। ভ্রণাঙ ধারণপোষণয়োঃ ভুদাঞ দানে মাঙ মানে ক্রয়ো হ্রাদয়ঃ ইতি ক্রয়োবিংশতির্যাদয়ঃ। পদ পত গতে চুরাদ্যস্তর্গণকথাদিপঠিতাবত্র ন গ্রেছতে গণাস্তর্রায়ের্বহভিজ্বাদিভিঃ ক্রিনিভিঃ সাহচর্যাৎ আদ্যেকাচ দ্বিক্রজাবিপ স এব ধাতুঃ পরভূত ইতি। প্রণিদ্যাতি প্রণিদিশিত ইত্যাদে গছম্ অন্তথা প্রণিদ্যাতা প্রতিমানতা ইত্যাদিরের গড়ং সাং মা মানেহদাদিঃ।

(৩২২)। প্রাদাবন্তরি চ ইতি নিরন্তং দ্বো চ অয়৺ ইতি দ্বন্ধঃ
দিত্রহোহচো যয়েত্তে দ্বিত্রচাবিতি বল্রাহিঃ রক্ষণ ওন্ধিশ্চ রক্ষোয়র্থাইতি দ্বন্ধঃ বিল্লাচী চ তে রক্ষোয়র্থী চেতি দিত্রচার্ক্রের্থাইতি দ্বন্ধঃ ইরিকাদীন বর্জনিয়া দ্বাচি ত্রাচি চ রক্ষরাচকে দ্বাচি ত্রাচি চ ওমবিরাচকে চ দ্বিতেভাঃ ঋষে ভা উত্তরো বনসপ্রশী নকারো গোষা ভবকি। বিভাবৌষধিবনস্পতিভা ইতি পাণিনীয়লক্ষণব্যাসক্তর্ক্রনা অনবহিত্তেন কেনাপি ফণীভ্যানিশ্লোকমনশ্বীক্রতা মহীকহ ইত্যাদিশ্লোকোহনাস্ত্রীক্রতঃ যতোহত্র ক্রে রক্ষপদোপাদানাং বিরোধো নাবতরতি বতঃ ফ্লীভ্যাদিশ্লোক্সায়মর্থঃ ফলমাত্রং যক্সাত্র নতু পূপাং স্বাসী বনস্পতিক্রেরঃ তে উড়্ম্রাদ্রঃ। রক্ষা ইত্যাদি যে পুন্সমুপ্রক্রিত কেঃপুন্সকলোপগাঃ। এবং বা বনস্পতিঃ দোহিন রক্ষো ভবতা নতু বো বৃক্ষঃ দোহিন্তং বনস্পতি-রিতি বিশেষঃ। ওমব্য ইত্যাদি প্রবিশক্ষাদিন্তাদ ক্রার্থাদিতি ক্ষিপ্রাদ্রঃ। ওমব্য ইত্যাদি প্রবিশক্ষাদিন্তাদ ক্রার্থাদিতি ক্ষিপ্রাদ্রঃ। ব্রহ্ম গোহন্তং বনস্পতি-রিতি বিশেষঃ। ওমব্য ইত্যাদি প্রবিশক্ষাদিন্তাদ ক্রার্থাদিতি ক্ষিপ্রাদিন্তঃ বিনাশো বাসাং তাঃ ফলপাকান্তা ওম্ব্যঃ তাড়ীপূর্কাদ্রঃ।

স্বাদ্যানগোহগমশৈচৰ শাখী ক্রশ্চ তরুঃ শ্বৃত ইতি ত্রিকাণ্ডম্। ক্রিকান্ত্রাধাদ্গৃহুতে। ইরিকাদেস্ত্র—ইরিকাবনং ভদ্রিকাবনং তিনিরবনম্। অন্বিত্রাচ্র্কোষধ্যোস্ত —দেবদারুবনং নাগকেশরবনং উড়ুশ্বরবনম্। অর্কোষধ্যোস্ত —বিদারীবনম্।

৩২৩। ভাবকরণয়োঃ পানস্ত। বিষপাণং বর্ত্ততে বিষপানং ক্ষীরপানঃ।

৩২৪। বক্রানিতম্বস্থা।

৩২৫। নদ্যা গিরেশ্চ।
বক্রণদী বক্রনদী গিরিনদী।

লতা ইত্যাদি লতা বিত্তিনত্যো জাতীমালত্যাদয়:। শুলাণ্ড ব্ৰহ্মন্থাখা বহুপত্ৰা: শাখোটাদয়:। ইতি। তথাং প্ৰথমমতাঙ্গীকারেংপি ন বিরোধ:। বিদারীবর্নমিতি বিদারী ভূমিকুষাগুঃ স লতাবিশেষঃ বদা শিরীষাণামদূরভবো গ্রাম ইত্যথে চাতুর্গিকিস্য টণো বরণাদেশেতি লোপঃ তদা পত্তং ন সাং শিরীষশক্ষ্য বৃক্ষবাচকত্বভোবাং। নহু প্লকাদৌ বনস্যেত্যসানুষ্ণরম্ অমিন্ লক্ষণে ক্তে বনস্যেতি শক্ষমকর্ত্ব্ং কিন্তু বিকল্পপ্রক্রাধেন্ প্নরক্র কৃতং যতে। লক্ষণলাঘ্বাং প্রক্রবান্ধ্রোধেংস্য শিষাহিতৈহিত্য বহুমত এব এবমপ্রভাপি জ্পুর্যম্।

- (৩২৩)। পুরুষোগ এব প্রাদাবিতি নিবৃত্তম্ অত্ত মণ্ডুকপ্প তন্তারেন পূর্বপদ ইত্যন্তবর্ততে। পূর্বপদে স্থিতেভাঃ ঋষে ভাঃ পরে। ভাবে করণে চ বর্ত্তনানস্য পানস্য নকারো গো ভবতি। বিষপাণমিতি ভাবে গুনট্। কীরপাণ ইতি ক্ষীরং পীয়তেহনেনেতি করণে গুণট্ বাচ্যলিক্ষমিতাাদিনা প্রংলিকতা। ভাবকরণযোৱিতি কিম্ বিশেশ পীয়তে নুপপানং পন্ন:।
- (৩২৪)। বক্রশকাৎ পরস্য নিতম্ব্য নকারো শে। বা ভবতি। অবভিধানাৎ পুংদি ন গ্ডম্। যথা বক্রনিতম:।
 - (७२६)। वळममार शिविमकाक खेखबगा नका नकारता ला वा

৩২৬। নামোহস্তো বিভক্তিজশ্চ।
মাষবাপিণঃ মাষবাপিনা মাষবাপানি
মাষবাপানি তন্ত্রবায়েন প্রভাবেন প্রভাবেন।

৩২৭। সুম্জশ্চ।

প্রহিণুনং প্রহিম্বনম্।

৩২৮। বমোঃ প্রাদাবস্তরি চ হনঃ। প্রহণঃ প্রহণঃ প্রহণ্যঃ অন্তর্হণ্যি অন্তর্হণ্মি।

তবত। এতাভ্যামন্তস্যা ন শহম্। স্বর্দী অথবা পদ্দত্রেয়তে তদা সংজ্ঞা-শক্ষোয়ং করণীয়ঃ তেন পূর্ব্বপদে চাবনস্যতি পৃথং স্যাৎ।

(৩২৬)। বিভক্তো জাতো বিভক্তিলঃ সপ্তমান্তাজনো ভূতে ইতি ডঃ। পূর্বপদে স্থিতেভাঃ ঋষে ভাঃ পরো নামাহন্তো বিভক্তিল চ নকারো ণো বা ভবতি। মাষবাপিণ ইতি পৌনঃপুতে ইতি ণিন্ মাষবাপিণীতি প্রথমং সমাসে কতে শশ্চাৎ স্ত্রীত্ববিক্ষায়ামীপ্রতায়ঃ অতো নাম এবায়মন্তো নকারঃ। মাষবাপাণীতি কর্মণো ণড়িতি ণট্ জস্শসোরিত্যাদিনা শিঃ অদন্তস্য ইতি মঃ বিভক্তো পরভ্তায়াং জাততাদয়ং বিভক্তিজঃ। অন্ত ইতি কিম্ ? মাষাণাং ৰাপিনী মাষবাপিনী বাপিনীশকেন সমাসে সতি নায়ং নায়েহন্তনকারঃ কিন্তু

(৩২৭)। অত্র স্থাত্রে জ ইতি লিপিকরপ্রমাদক্ষত ন হনেন ক্লকারেণ কোহপ্যত্রার্থবিশেষ ক্রিয়তে বরং বিরোধ এব। পূর্দ্রপদে স্থিতেভাঃ স্বান্ধ্রেভা উত্তরো হনো নকারো ণো বা ভবতি। প্রহিধনমিতি হিবি দিবি দিবি জিবি প্রীণনে অবর্গীয়ত্বাৎ উপ্লান্তস্য বর্গে ইত্যস্যায়মবিষয়:। ভর্তু-হরিসম্বত্মিদমুদাহরণং ভাগবৃত্তিক্তাপ্যদাহত্তম্। অত্র পত্তং বামনাদীনা-দস্যত্যম্।

(৩২৮)। প্রাদাবস্তরি চ স্থিতেভ্য ঋষ্মেভাঃ পরো হত্তের্নকারে। বস্কারে মকারে চ পরে গো বা ভবতি।

७२२। निःम्निन निङ्काम्।

শ্রীণিংস্তে প্রনিংস্তে প্রণিন্দতি প্রনিংসনং প্রনিংসনং প্রণিন্দনং প্রনিন্দনং প্রণিক্ষণং প্রনিক্ষণম্।

৩৩০। গৌ কৃতঃ।

প্রহাপণং প্রহাপনম্।

় ৩৩১। ইজুপান্তহলাদেরচ্পূর্বাঃ।

প্রকোপিনী প্রকোপিনী প্রকোপনং প্রকোপনম্। অনচ্পূর্বস্ত্র—প্রবিগ্নঃ প্রভূগ্নঃ।

⁽৩২৯)। প্রাদাবস্তরি চ স্থিতভাঃ ঋষ্যেভাঃ পরো নিসি চুম্বনে
নিদি কুৎসায়াং নিক্ষ চুম্বনে ইত্যেতেষাং নকারো গো বা ভবতি।
গাদিয়ানিত্যে প্রাপ্তে বিভাষা। প্রণিন্দতি প্রণিন্দকঃ প্রণিক্ষকঃ গাদিয়মেষাং
বৈচিত্র্যার্থম্। • ধাতুপারায়ণে তু ক্বত্যেষাং বা ণ্ডম্ অন্তর্ত্ত নিত্যমিতি
বাাধ্যাতম্ এতদর্থমেষাং গাদিজম্।

⁽৩০০)। প্রাদাবস্তরি চ স্থিতেভাঃ ঋষে ভাঃ পরো ণৌ বিহিতে ক্রৎসম্বন্ধী নকারো ণো বা ভবতি। ণাবিতি ক্রিম্মা তৎকাললক্ষণাদিতি সপ্তমী অথবা বিভক্তিবিপরিণামাৎ পঞ্চম্যর্থে সপ্তমী ণোর্বিহিতাদিতার্থঃ। প্রহাপণ-মিতি ওহাকত্যাণে হাকো হাঙো বা ণিঙি ণৌপুঙাদর্ত্যাদেরিতি পুঙ্।

⁽৩৩১)। ইজুপান্তশাসে। হলাদিকে জি ইজুপান্তহলাদিঃ অচ্পূর্বে।

যত্মাৎ মোহচ্পূর্বেঃ প্রাদাবন্তরি চ স্থিতেজ্যঃ ঋষে জ্যঃ ইজুপান্তহলা
দেখাতোর্বিহিতক্ত ক্রতোহচ্পূর্বে। নকারো গো বা ভবতি। ক্রতোহচ্

উত্তর ইতি নিত্যে প্রাপ্তে বিক্রঃ। প্রকোপিণীতি কুপ কোপে পিন্।

প্রবিশ্ন ইতি ওবিজী ভয়চলনরোঃ ক্তং, ক্রক্তরভোরিত্যাদিনা তদ্য নত্ম

ওদিদাদের্নাদাবিতি জন্ত গঃ। প্রভুগ ইতি ভুজো কৌটিল্যে ক্তঃ।

ইজুপান্ত ইতি কিম্ প প্রবপণন্। হলাদেরিতি কিম্ প প্রেহণন্।

নিত্যমনরোর্ণহন।

· ৩৩২। নেরঙ্ব্যবায়েহপি স্বভাবকখাদিয়ান্তবৰ্জনং যাদ্যঅধাতো।

প্রণিবিশতে প্রনিবিশতে প্রণিবেষ্টা প্রনিবেষ্টা প্রণিপশুতি প্রনিপশুতি প্রণাপশুৎ প্রশূপশুৎ। স্বভাবকখাদিযান্তয়োম্ব—প্রনিচক্রে প্রনিচখাদ প্রনিপিনপ্তি প্রনিপেক্ষ্যতি।

৩৩০। ন যুবানেঃ। অর্য্যুনা ক্ষত্রিয়্না পরিপকেন পরিপকানি দীর্ঘাহাঁী

(৩০২)। প্রানাবন্তরি চ স্থিতেতা খবেতা পরে নার্কারঃ স্বভাব-কথাদিং স্বভাবনান্তর্গ বর্জায়য়া যানেরল্লিন্ ধাতে গরে অঙ্বাবারে-হ্যানারে হিপ গো বা ভবতি। প্রণিনিশ্ব ইতি লালাদিশাদেরিলায়নে-পদন্। প্রণিবেটোত বিশপ্রবেশনে ভূত্বাঙ্বা লদ্ধে গ্রানিনা শভ মঃ। অরং স্বভাবতালব্যান্তঃ এতাবতা ম্প্রতেহপি রতে নামং নিমেধন্ত বিষয়ঃ। প্রণিচক্রে ইতি লিট্সংজ্ঞক এ স্বিক্তিঃ কথছাদিরিল্যাদিনা ক্যা চকারঃ অসমাদেশেন চাদিলাদক্যাদিনাকু স্বভাবেন এবং প্রণিচথাদ। প্রনির্দিন্ত্রা সভ্যানে প্রনির্দিন প্রানির্দিন প্রানির্দিন ক্যাভিল্যাদিনা বহুন্। চিলার্থনির্দিন প্রনির্দিন্ত্রা সভ্যাবের প্রবিশ্বানানন্ব্যব্যাং পির্ধান্তাঃ যাত্ত্রমান্ত্রানানন্ব্যব্যাং পির্ধান্তাঃ যাত্ত্রমান্ত্রানার্মির্প্রানার্মির্ল্যাভিল্যাভার্মির্ল্যালির্ল্যাভার্মির্ল্যাভার্মির্ল্যাভার্মির্ল্যালির

(৩৩০)। ঋবে ভাঃ পরো যুবাদেন কারো গো ন স্যাৎ। অর্যাস্থানিতি কর্মধারয়ঃ ব উদ্পাদেরিভ্যাদিনা বকারস্যোকারঃ সবর্ণেনাগ্দীর্ঘ ইতি দীর্ঘ: নামোহস্তরাল্লপ্রাপ্তিঃ। পরিপকেনেতি পচেঃ ক্তঃ শুধিপচিভ্যাং করাবিতি তকারস্য বকারঃ গুদিদাদেনাগিবিতি চস্য কঃ নিভ্যং কুপ্রাদেরিতি তংপুরুষঃ প্রাকৃত্যকেত্যাদিনা প্রপ্রাপ্তিঃ। দীর্ঘাক্তেতি দীর্ঘাণ্য-ছান্তস্যেতি বছ্বীহিঃ শ্যাদ্যচাত ইত্যাদিনা অকারলুক্। দীর্ঘাক্তীভি বিশ্বামীতি চেতি অকারলুক্ দীর্ঘাহনীতি বেঙ্যোরিত্যনেন পক্ষেত্তো-

मीवीद्री मीवीहनी मीवीहानि अधगामिनी फून्मू अविवनः ज्राथाि ।

৩৩৪। ণাদিধাতোঃ প্রাক্প্লক্ষাদৌ বনস্থেতিপর্য্যন্ত-

भगभारम । श्लरका वरन ।

৩৩৫। ছুরঃ।

তুৰ্নসঃ তুৰ্নামঃ।

৩৩৬। নশঃ ষত্ত্বো

প্রনিষ্টঃ প্রনঞ্জ্যতি।

লুক্ নারোহন্ত ইতি ণরপ্রাপ্তি:। পূর্ব্বোনাহরণেবৃত্তরপদানাং নিয়তজ্বং নতু পূর্বপদানামিতি হচনায় অনেকোদাহরণোপতাসং তেন বিপ্রযুদি পরা-প্রেন তারাঞা নিরহ্ন ইতাদৌ চন ভবতি। অগ্রগামিনীতি অস্কীলে ণিন্ কর্বপ্রভাং প্রাপ্তি: হুন্দুভিবেবনমিতি অগ্রাদেস্তদাদাবিতি ষত্বম্ অজ্ব্রুবেভাদিনা পত্রপ্রাপ্তি:। অগ্র পূর্ব্বোত্তরপদ্যোবেব নিয়ত্তম্। অগ্রহ্ণামিনীতার বিভ্রেরপি নিয়ত্তমিতি কেচিছদ্তি তেনাগ্রগামিণেতাদৌ পত্রং ভবতোবু। ভূপ্রোতীতি স্বাদের্শ্বিতি হুৎ অগ্র ধাত্বিকরণয়োনিয়তজ্বং তেন তপ্রিমিতাদৌ ভবতি প্রম্।

(৩০৪)। ণালিধাতোরস্তরি চেতি যল্লকণমুক্তং তত্মাৎ পূর্বাং প্লকাদৌ বনগোতি পর্যান্তং যধ্বমুক্তং তদসমাদে ন ভবতি। এবমেকাদশলকণানি নিয়মিতানি। যথেবমিরিকাদেরিত্যাদিমুম্জশ্চেতিপর্যানী লক্ষণানি অসমাদেহপি স্থাঃ নৈবং বাচাং পূর্বনিয়তলকলৈরেব যত্ত গত্তং বিহিতং তদিবর এবামাভির্ণ হং বিধীয়তে ন বিকল্লার্থং পৃথক্করণমনীযামতন্তত্মিনিয়সেন্ব স্ত্রাপ্রি নিয়মঃ।

(৩০৫)। হর উপদর্গাহতরদ্য প্রাপ্তং গদ্ধং ন ভরতি। হর্নস ইতি
পূর্ববরদাদেশং প্রাক্তি নদ ইতি গদ্ধ্রাপ্তিঃ। হর্নাম ইতি নমের্যণ্ নমেরনিঙ্ঘার কথানিত্বং হর্থার্থাহর ইতি তে ক্তে হর্নম ইতি হরঃ প্রাদিঘাৎ প্রাপ্তং গদ্মনেন প্রতিষিধ্যতে। তেন হর্গেণ ইত্যাদৌ ন নিষেধঃ।
ক্ষত্রবানেন নিষেধাসন্তবে পদাস্ক্রাদিত্যক্র হুম্পানং হর্থেন হৃষ্থিনীভূাদাক্ষহার।

(৩৩৯)। নশ অনুৰ্শনে ইত্যাস্য হতে কতে গছং ন ভব্জি। প্ৰনষ্ট

৩৩৭। হো ঘত্তে।

বৃত্ৰত্বঃ শক্ৰত্নঃ।

००৮। भागास्यार।

कुष्णानः निष्णानः क्रय्यम क्रय्यिनौ ।

৩০৯। পে চ কমিগমিবেপিখ্যাঞ্জিপ্যায়ীভাস্থ-প্রগম্।

ইতি ভ্রদ্কেত্যাদিনা শস্ত যঃ। প্রনক্ষ্যতীতি ওিত্যযে ইত্যাদিনা নংশাদেশঃ লদ্ভেত্যাদিনা শস্য যঃ যশ্চাস্থপে ক ইতি ষস্ত স্থানে কে ক্তেহিপি নশঃ ্বং ক্তমেবেতি নিষেধঃ। যয় ইতি কিম্? প্রণশুতি।

(৩০৭)। হক্যরমা ঘার ক্তে শ্লোন ভবতি। বৃত্তর ইক্তি ব্রন্ধান লব্দ্রতাদিনা কিপ্ হতঃ শস্ শমায়চ্যতাহের্থম ইতাকারল্ক্। অলু- গানৌ হনো হো ঘ ইতি ঘত্বং প্রকৃত্যক্ষরস্থেতাদিনা গত্বপ্রাপ্তিঃ। শক্তম ইতি গোব্রন্ধানক্ষতাহ্বর ইতি টঃ পূর্দ্পদে চাবনস্থেতি গত্বপ্রাপ্তিঃ। প্রস্থিতি গান্তি প্রস্থিতি অন্তর্যানীত্যাদৌ তু হনশ্চেতি অন্তর্যাদেশে চেতি গত্বপ্রাপ্তিঃ। কথং পরিঘেণেতি নাত্র হ্কার্থ ঘত্বং কিন্তু পরের্ঘণ্ডতি হত্তেরের মুদ্রিয়প্ত ঘঃ। ক্রন্থ ইত্যাদৌ তু পুরুং কুৎপাদে বৃদ্যুতি।

(৩২৮)। পদান্তধকারাহত্তরে প্রাপ্তং গহংন ভবতি। ছুল্পানং নিশানমিতি ছর্নিরাবিরিত্যাদিনা রেফ্স্য বং ভাবকবণ্যোঃ পানস্তেতি গছ-প্রোপ্তিঃ। ছষ্থেনেতি হর উত্তরন্ত থয় বিদারণে ইত্যন্ত ধাতোরন্ততোহিপি দৃশ্যতে ইতি ডঃ প্রকৃত্যৈকস্বরন্তেত্যাদিনা গছপ্রাপ্তিঃ। পদান্ত ইতি কিম্? স্থাপিকেণ কাম্যকন্ন ইত্যাদিনা নির্মেন পদান্তথাতাঃ।

(৩৯)। ক্ম্কান্তো গমুস্পু গতো ট্বেপ্ কম্পনে পঠাতে চক্ষি-ভাদেশ: প্যাঞ্জন্মনীপ্রপানীবৃদ্ধে ভং দীপ্রো ভূ সন্তান্ধাং পূঞ প্রনে ইত্যেতেরামণো ণৌ চ সন্তি প্রাপ্তং গন্ধং ন ভবতি। প্রগমনমিতি গাস্তু গুমো: ত্রপম্। অস্বার্থণাবিত্যাদিনা ঘটাদিন্বাদ্ধুন্ধঃ শিঙ্গোপ:। প্রসাপনমিতি গো পুভাদর্তাদেরিতি পুঙ্ ণৌ কৃত ইতি গন্ধপ্রাপ্তি:। প্রকর্মনীয়ং প্রকামনীয়ং প্রগমনং প্রবেপনং প্রখ্যানং প্রখ্যাপনং প্রভাবনং প্রভাবনং প্রপাবনম্।
পূভস্ত । প্রপবনং প্রপাবনম্।

^৩৪০। নৃতো ঘনি তল্পুকি চ। দরীনৃত্যতে নর্নতি।

৩৪১। আচার্য্যাদানঃ। আচার্য্যানী। আচার্যভোগিন ইতি চান্দাঃ।

७८२। यूर्नमनमा।

সর্ক্ষাথ্যানং থেষাং তানি সর্ক্ষাথ্যানি ইত্যাদৌ তু কবর্গবন্ধাং ণত্বপ্রাপ্তি-ক্ষিথ্যতে। খ্যাঞো বকার: শকারস্থামীয়: পত্বিধে তহ্যাসিদ্ধত্বাৎ তালব্য-শকারব্যবারে নান্তি পরপ্রাপ্তিরিতি পাণিনীয়া:। অত্যেহর থ্যাঞপ্রতি-বেধ উক্তঃ। যদাপি প্রথানান্ত্রী প্রকথনার্যন্তদাপ্যনেকার্যনার্ছনাং চক্ষিত্ত এব প্রয়োগো বাচ্যোন তু খ্যাপ্রকথনে ইত্যন্ত তদ্য নিয়তবিষয়ত্বা-দেতদেব ভাষাদৌ ব্যবস্থিতম্।

- (৩৪০) । নৃতী গাত্রবিক্ষেপ ইত্যক্ত যনি যন্নুকি চুণত্বং ন সাাং।
 নরীনৃত্যত ইতি দি: রীঝ তত ইতি দী: অজ্যাবেত্যাদিনা ণড্প্রাপ্তি:।
 নর্নতীতি ঋষিক্ষতৌ করিদীত ইতি ক্ষা ঋষ্ত্রেত্য ইত্যাদিনা ণড্প্রাপ্তি:।
- (৩৪১)। আচার্যাশকাদিছিতস্থানো নকারো ণোন ভবতি। আচার্যাননীতি ইল্রানেরানগেচাঢ়াদাবিতি আন ঈ চ। আচার্যাভোগিনইতি আচার্যানভোগায় হিত্রনিত্যর্থে ভোগোত্তরপদাদিতি ঈন: অজ্বয়বেত্যাদিনা পছ-প্রাপ্তি:। নবেকপদৃষ্টে নিমিন্তে নিমিন্তিনি চ তাভ্যাং যোগাভ্যাং পদ্ধনিতি ব্যবস্থিতং তৎ কথং ভিন্নপদস্থয়োর্গপ্রপ্রাপ্তিঃ। নৈবং বাচ্যম্। সমাসাহৎ-প্রোহরমীন প্রভায়ঃ সমাসে নৈকপদক্ষেব মতৃত্তরপদক্ষেতি গছপ্রাপ্তিঃ। অভএব গর্গাণাং ভগো গর্মভাগঃ সোহস্তান্তীতি অতাহনকাদেরিনিকাবিতি ইতি ক্তে গর্মভগিণীত্যক্র একপদনিমিন্ত্রমেব গ্রম্
- (৩৪২)। নৃশ্কাছত্ত্রশু নমন্স্য নকারো ণো ন ভবতি। নৃন্মনো নাম ক-িং ত্রভাপত্তাং নার্মনিরিতি জ্বস্থাচেতীন্। ইত জারভ্য স্কানায় ইতি যাবং পূর্কপদে চাবসস্যেতি গম্প্রাপ্তি:।

नुनमनमां পতाः नार्नमनिः।

৩৪৩। ঋচে হিয়নস্য।

श्राग्यनम् ।

৩৪৪। স্থমন্ত্রাদেনেত্রাদেঃ।

স্থমন্ত্রনেত্রঃ ত্রিনেত্রঃ ত্রিনয়নঃ স্বর্ভানুঃ।

৩৪৫। নরাহাহনদ্।

নরবাহন: কুবেরঃ।

৩৪৬। নন্দিনন্দননগরগহননিবেশনিবাসান্পাগ্নীনাম্। হরিনন্দী হরিনন্দনঃ গিরিনগরং পরিগছনং শরনিবেশঃ শরনিবাসঃ দর্জানূপঃ শরাগ্রিঃ।

৩৪৭। প্রাদেনর্ত্তননদনয়োঃ। পরিনর্ত্তনং পরিনদনম।

⁽৩৪০)। ঝচ উত্তরোহয়নস্থ নকারো গোন ভবতি। ঋগয়নমিতি ঋচোহয়নমিতি ষষ্ঠাসমাসঃ।

⁽ ८८४)। स्मजारमञ्ज्ञाता निजारमर्ने कारता ली न ज्विज ।

⁽৩৪৫)। নরাত্তরো বাহনভা নকারো পো ন ভবতি। ব্দ্ধান নর্মুক্তা শিবিকান্ত দত্তেতি নরবাহন: কুবের: বাসবদ্ভান্তক।

⁽৩৪৬)। ধ্রেন্ডাঃ পরো নন্যাদীনাং নকারো ণো ন ভবতীতি হরিনন্দীতি ভচ্ছীলে শীন্। হরিনন্দন ইতি ওনান্তেন ষষ্ঠীসমাসঃ। গিরিনগরমিতি স্ঠীসমাসঃ পরিগহনমিতি নিঁতাং কুপ্রোদেরিতি সমাসঃ। শরনিবেশাদিষু ষ্টীসমাসঃ। অফুগতা আপো যন্ত্রিতি অন্পো দেশঃ ধ্রগাদেরৎ
সর্ক্রেতি অং উপোহনোর্দেশ ইতি উপাদেশঃ।

⁽৩৪৭)। আদে: পরে। নর্তননদনয়োন কারো গো ন ভবতি।

৩৪৮। সর্বানাম:। সর্বনাম:।

৩৭৯। অনাঙ্পদব্যবায়েহিপ।
চতুরঙ্গবোগেন মাধকুস্তবাপেন পর্য্যবনন্ধ্। আঙ্পদব্যবায়ে তু।
পর্য্যাণদ্ধম্ আকৃতিগণোহয়ম্।

৩৫০। চবর্গাঞ্ঞঃ। চৰগাত্নতরোহপদাস্তে নকারো ঞো ভবতি। যাচ্ঞা রাজ্জঃ।

⁽ ७८৮)। नर्कनमाञ्च्यता नामा नकाता ला न उपि ।

⁽৩৪৯)। পূর্বাপদে স্থিতেভা গবেভা: পরে। নকারঃ আঙ্বাতি-রিক্তস্ত পদস্য ব্যবায়ে সতি পো ন ভবতি। চতুরঙ্গযোগেনেতি চন্দ্রা-ব্যঙ্গান্তপ্তেতি বহুত্রীহি:। চতুরঙ্গেণ যোগ ইতি ক্বতা কর্তৃকরণয়োবহুল-মিতি তংপুরুষ:। প্রকৃত্যৈকস্বরন্তেত্যাদিনা ণড্পপ্রাপ্তি:। মাষ্কুস্ত-শাপেন ইতি যুদা মাষাণাং কুম্ভো মাষকুম্ভঃ তদ্য বাপ ইতি ষষ্ঠীসমাসঃ তদা নামেহত্ত ইত্যাদিনা বিকল্পেন ণছপ্রাপ্তি:। যদা তু কুন্তস্য ৰাপ: কুন্তবাপ: মাবাণাং কুন্তবাপ ইতি সমাসন্তদা প্রক্রতাৈকস্বরস্যেত্যাদিনা নিত্যং শ্বপ্রাপ্তিঃ। যদা তু মাসকুন্তং বপতেতি তরিমিত্তোপদদ্যাত্ত-বস্তুদা কচিদিত্যেকে ইতি সমাসন্তদা পদব্যবায়াভাবাৎ ন ভবতি ণ্ড-নিষেধঃ। পর্যাবনদ্ধমিতি নহ বন্ধনে ক্তঃ নহোধোহঙ্ধ হাত হুদ্য ধঃ ধোহধাতুর্যাদিতি তদ্য ধঃ ণাদিধাতোরস্তরি চেতি ণম্বপ্রাপ্তি:। সোম-ছর্বে ভুগোন্ডেভানেন সকারদা পদাস্তকার্যার্থং পদাস্তত্বং বিধীয়ভে নতু দকারাস্তম্য পদম্বত-চারুপয়োময়েণ ইতাত্ত ন নিষেধঃ। আরুতি-গণোহয়মিতি তেন লক্ষণপ্রাপ্তং গদ্ধং শিষ্টপ্রয়োগে যত্র ন দৃষ্ঠাতে সোহত্র র্দ্ধপ্রা:। অতএব প্রকৃপামান: খ্রীবন: চিত্রভান্ন: শাস্ত্রবাক্যেন <u> भिर्जारगान भिर्जागितन इंड्यादनी न गर्षम्।</u>

⁽৩৫০)। যাচ্ঞা ইতি টুযাচ্ যাচ্ঞায়াম্ ইনাদেন হিজি ন:। রাজ্ঞ ইজি শসাদাচ্যত ইত্যাদিনা অকারপুক্।

৩৫১। শে কশ্চ।
শে পরে নকারো ঞো তব্তি। কশ্চ। তবাঞ্শেতে তবাক শেত

৩৫২। নাপদা**ত্ত**া

त्रपृश्चि पश्चनम्।

৩৫০। কেচি**ছেছে২ঙ** ইতি পঠস্তি। শে পরেহঙ উত্তরো **নকারো এে**গ ভবতি। ঞ্চন ভবাঞ্লে তে। ভবাঞ্শেতে। **অঙ** ইতি কিম্ণু হে সীর্গাতে।

७৫९। नाशनांद्य ।

সদৃংশি এতম্বহুনামস্থানে দৃষ্টম্।

৩৫৫। ষটবর্গা**ন্তথধাং ট**ঠিচাঃ। অপদাক্তে ষটবর্গাছতকে**মাং তথ**ধাং স্থানে টঠটা ভবস্তি। ছেটি দ্বিষ্ঠঃ ঈট্টে লীঢ়া বংভণ্টি।

⁽৩৫১)। শশ্হ ইত্যানেন চকাগ্রহত্তরদ্য পক্ষে শদ্য ছেঁ ক্বতে ভবা-থ্বেতে ইতি তৃতীয়মপি রূপম্।

⁽৩৫২)। অপনাত্তে পূর্কবিহিত্যবাদেশী ন ভবতঃ। সদৃশতি সদৃশপর্কাং অস্, জস্পসোরিত্যাদিনা শিং শাবচোহঙ্যান্তসোতি মং। নফ অপদারত শাদাবহুসার ইত্যামের বাধকো ভবিষাতি কিং নিষেধবিধানেন নৈবং তালবাশকারবাভিরিজে ক্লণর্থমন্ত্রারবিধানং শেঞ্চ ইত্যানেন বাধিতং স্যাৎ এতদপি পদান্তে ক্লতার্থমপি চেৎ এবুমপি সন্দেহং স্যাং ভরিরাসার্থং নিষেধবিধানমবশ্রমের করণীয়ম।

⁽৩৫৩)। হে স্বীর্ণ শৈতে ইতি স্থপুর্দর্শনগতৌ উপদেশে নকারা-স্থোহয়ং পঞ্চমান্ত্রসাহন ইতি কিপ্ দার্থান্চ গুতি চোপান্ত ইতি ইর রাজ্ঞাদেরি ত্যাদিনা দীর্ঘ: পদান্তথান্ত্রাতাবঃ রম্ন্দ্রাদন্ত্যবচ্ছসবর্জনিতি প্রতিবেশান নকারলুক্।

⁽०४४)। मर्सः भूकंवर।

⁽ skn)। দেখীতি দিব অপ্রীতৌ দিঠ ইতি দুয়ো**ন্তিঠভী**ন্তি:

अद्धाः सम्ह विश

कृतः कितः श्रियाके पश्चकार्छ पः v

৩৫৭। পদান্তান্নবতিনগর্য্যোঃ।

ষণ্ণবিতি: বঙ্গবিতি: বঙ্গবিতী বড্ণসরী শালিগবিতি: শালিড্ণবিতি: শালিগবি শালিড্ণসরী। ষণ্ণবিতিঃ বঙ্গবিতী নিত্যং বর্গপঞ্চম ইতি কাতন্ত্রম্।

স্থোহধিকরপাব্যয়াভ্যামিত্যাদিনা অঙ্ ক্লচ্যঙ্কনাদাবিত্যাকারলুক্। অন্ধানে স্থাদিনা ব্যম্। দিবেমধ্যমপুরুবিষ্ট্রকার থ্য বা। উট ইতি উভ স্থাতা লট্তে বর্গস্থাদিরিত্যাদিনা ডকারস্য টঃ। বংভন্টীতি ভণশকার্থ: বন্লুক্ বিশ্বজ্ঞিঃ জপছভেত্যাদিনা আক্ষারঃ। লীচে ি লিছ আ্যাদনে জ্যা ভোড় ইত্যাদিনা হস্য তম্বন্। ধোহধাতুর্যাদিতি তম্ভ ধঃ বটবর্গেত্যা-দিনা ধস্য তম্বং চ্যোরিত্যাদিনা চলুক্ দীর্ঘশ্ত।

(৩৫৯০)। অপদান্তে ধকারাৎ টবর্গাচোত্তরসা নকারস্য শ্লে ভবতি। ক্ষুণ্ণ ইতি ক্ষুদির সংপ্রেরণে ইত্যামাৎ ক্তঃ শকাদিখাদিওভাবঃ। ক্ষিণ্ণ ইতি ঞিক্ষিদা মেহনমোচনয়োঃ শ্বিঘুষেত্যাদিনা ইঙ্নিযেধঃ অম-দোদাদ্দেন ইতি দস্য তস্য চনঃ বছলবচনাত্ত্বর্গযোগেইলি অজ্ঝযবে-ত্যাদিনা শত্বং নস্য গঃ। প্রিয়াষ্ট্র ইতি প্রিয়া অন্তৌ অস্ম্যেটি বছত্রীহিঃ সর্সতঃ প্রিয়ো বেতি প্রিয়স্য প্রাগ্ভাবঃ শসাক্ষচ্যত ইত্যাদিনা অকারলুক্।

(৩৫৭)। পদাস্তাৎ ষ্টবর্গাৎ প্রদ্য নবভিনগর্য্যোর্নকার্স্য গোড়ভবভি। ব্যবতিরিভি ষড়ধিকা নবভি:। মর্রব্যংসকাদিছাৎ শাক-পার্ধিবাদিরাদা সমাস: তৎপুরুষাদৌ সংস্কৃতাদের্নিতামিতি অধিকশন্ধ-লোপ: ষষ্ট ইতি টকে ক্তে বর্গান্ত ইতি ট্যা গং পলে বর্গাদেরিত্যাদিনা ট্যা ডঃ। ব্যাং নগরাণাং সমাহার: ব্যগরী পঞ্চপুলীবৎ নগরাণাম্ একত্বপ্রাপণাভাবাৎ সমাহারোহত্যোপদারাৎ ক্রীদিগুরদক্ষোহণাত্রাদিরিভি ক্রীনিক্তা মুগোরিভি ক্রপ্রভাষ:।

৩৫৮। তদিতাদিতদ্ধিতয়োর্নানিসস্তোসস্তম্ম।

ইশাট্ত: হশ্মাট্তর:। ইসন্তোসস্তম্ম তু। সপিন্টা সপিন্টাসং

আয়ুন্টা আয়ুন্টামন্।

७৫৯। नृग्यादमर्न मिकः।

শুক্ বকারো যক্ত তদাদের্যঃ সন্ধিঃ প্রাপ্তঃ স ন ভবতি। বর্ণানাং ক্রুততরোচ্চারণং সন্ধিঃ উপচারাতৎকার্য্যঞ্চ। ত আহুঃ।

৩৬০। সুখ্যা।

अमा रेखः।

৩৬১। লুখিসর্গস্থা। ঘট ইহ।

⁽৩৫৮)। ইপজোসন্তব্যতিরিক্তন্ত ষ্কারাৎ ট্রন্গাচ্চোত্রস্য ত্রে-স্তাদিতদ্বিত্রস্য চ তথ্বাং স্থানে টঠটা ন ভবস্তি। হ্রন্ধাট্ত ইতি হ্রন্ধ-মন্নাতীতি কিপ্ অস্জান্তজ্বশামিতি শস্য বং ষষ্ট ইতি ক্স্য টঃ কহ-হাকোরিত্যাদিনা তসিঃ। হ্রন্ধাট্তর ইতি বিবছ্জ্যোহত্যর্থে তব্তমা-বিভি তরঃ। সর্লিষ্ট ইত্যাদৌ হ্রন্থান্তাদিতদ্বিতে তসৌ চেতি মূর্দ্ধতঃ সর্লিষ্টমমানুষ্ট্রমীমত্যাদৌ ইসস্কোসন্তপ্রতিবেধসামর্থাৎ প্রনান্তবেনাপ্রাপ্ত-মপি টবং ভ্রত্যেব।

⁽৩৫২। ৩৬০। ৩৬১)। নুপ্রস্যানুপ্রবিশ্বাদের সন্ধিনিষেধে সিদ্ধে
লক্ষণমেতজ্জাপয়তি সন্ধিকার্ধ্যেহলুপ্রবন্ধং ন ভবতি তেন অলাবীং
রাজাজা রাজজ্ঞমিত্যাদি। অনেনৈর সনিকার্য্যনিষেধপ্রকরণেন
পূর্কালক্ষণানাং সন্ধৌ বিধানং স্থাচিত্রম্ অতএবাঞ্জ পাদে বর্ণসন্ধিন
বিধৌ বিহিতানি কার্যাণি বর্ণানাং ক্রভতরোজারণসারিধ্যে সতি ভবন্তি।
নাজ্ঞথা। এতৈক লক্ষণৈক্রতভ্রেজাল্বনে প্রাপ্তং সন্ধিকার্যাং নিমিধাতে
নতু ক্রভতরোজারণম্। ভ আহরিতি গাাদাবিত্যাদিনা একারস্ভায়াদেশঃ
পদাও ইত্যাদিনা বলুক্ এবমসৌ ইন্দ্র ইতি স্থিতে অসা ইক্রং। ঘটইহেতি অন্তোভগো অংগাত্য ইত্যাদিনা বিসর্গনুক্। তনোতেডিপ্র

৩৬ই। ন তদঃ সম্ভ পাদপুরণে।

সৈষ দাশরথী রামঃ সৈব বাজা ধুধিষ্ঠির:। সৈব কর্ণো মহাত্যাক্ষ সৈব ভীমো মহাবল:॥

৩৬০ । দ্বিচনসিদ্ধানামীদূদৈতাম্ । কবী অত্ৰ সাধ্ এতো পচেতে ইহ।

७५८। व्यन्ता गानिनः।

অমী অশাঃ অদমু ঈচঃ। অদস্বীচ ইত্যেকে।

উরিত্যদক্ষিঃ প্রত্যমবিধানদামর্থ্যাদেব তিত অব ইত্ত্রাপ্যদক্ষিং বছলবচনাদা।

(৩৬২)। তদ্শক্ষমস্বন্ধিনঃ স ইত্যাস্য লুখিসর্গম্য পাদপূরণে সাধ্যে
হসন্ধিন ভবতি। সন্ধিরেব ভবতা ক্রার্থঃ। কস্তচ্ছক্ষমন্ধী সং যস্তত্ত্ব সিদ্ধঃ।

পাদঃ শ্লোকস্য চতুর্থোহংশঃ। যত্র তুপাদপূরণং সাধ্যং ন ভবতি পাদো বা
ন ভবতি তত্রাসন্ধিরেব। স এব পৃথিবীপালঃ পালয়ামাস মেদিনীম্। স
এবায়মিতি

(৩৬৩)। একদিবহুবর্চনমিত্যাদিনা একবর্চনাদিসংজ্ঞাং বক্ষ্যতি দ্বিবর্চনেন সিদ্ধস্য নিষ্পায়স্য ঈকারস্য উকারস্য একারস্য চ প্রাপ্তং সন্ধিকার্যাং ন ভবতি। কবী সাধ্ ইতি ইণ্ ঔদিণিতি ঔকারস্য স্থানে ইকারোকারৌ সবর্ণেনাদ্যীর্ঘঃ ইতি দীর্ঘঃ পরেন্তে ইতি আতে শঙ্ এদঞ্জিদিত্যেকারঃ আতি দাদাবিত্যকারলক।

(৩৬৪)। অদসং সম্মিনো মকারাহত্বস্ত ইণং স্থানে স্মিকার্যাং না ভবতি। অমী ইতি অদসো অস্ হল্লুক্ সর্কানাম ইতি হল্লুক্ অসিং প্ংসীতি জসং স্থানে ইৎ গুণঃ ঈদেতো বহুছে ইতি একারস্ত ঈকার্য়ঃ মংশেষে ইতি দক্ত মং। অদমু সূচ ইতি অমুমঞ্চতীতি কিপ্ বিশ্বস্থেব-সর্কাদেও জিরিতি অদস উভরো উল্লিউবতি ডিখাদস্লুক্ অদসোদোমুকা মুই-উদ্রেশ্চ ইতি মুখা ভাবপক্ষে ড্রেশ্চ মুইং যকরলোচীতি বকারঃ। অদমুমন্চ্ ইতি স্থিতে শস্ শসাদৌ লুগন্চোহপুজাষামিতি নকারলুক্ অভোহতি প্রাগ্-দীর্ঘন্টেভি অকারলুক্ নিমিভাপামেনোলস্থিতক্ষ ইকারস্ত নীর্থঃ উল্লোচ্চশো ৬৬৫। অব্যয়েশংকেবলাচোরটি।
না আন্তৈ অহা ইতি অ অবেহি ই ইন্দ্রং পশ্য উ উত্তিষ্ঠ ক্রী
এই। অনচি তু। অত্র ই অত্রে প্র উ প্রো। অকেবলগ্র

৩৬৬। **আঁতঃ শ্**তিবাক্যয়োঃ। আ এবং কিং মহাদৈ আ এবং কিলৈতং। অস্মৃতিবাক্যয়োস্ত্ৰ, আ উদকাস্তাৎ ওদকাস্তং প্ৰিয়ং প্ৰোথমসুত্ৰজেং।

ষ্ট্রদসো ভক্ত ইতি সন্ধিকার্য্যাভবিঃ উকারপ্ত বকারে কর্তব্যে পূর্ব্বত্রাসিদ্ধ-মিতাসিদ্ধথাৎ ভদ্যাদেশপ্ত বকারাভাব ৄইতি শাস্ত্রান্তরনাবস্থা। অদম্বীচ ইত্যেক ইতি মন্তএব রক্ষিতঃ, অত্র তুষবরলাদেশো দৃশ্পতে তদা কিঞ্চিৎ যক্ষান্তর্র্যাস্থ্যেম্।

(৩৬৫)। কেবলোহচ্ কেবলাচ্ ওচ্চ কেবলাচ্চ ইতি ক্ষ্যঃ পুনরব্যানের সহ কর্মধারয়ঃ কেবলাজিত্যনেনের ওতো গ্রহণে দিকে ওদিতি ওদ্ধার্থঃ পাঠঃ অবায়ৌদস্তস্ত অব্যয়স্ত কেবলসাচোহিচি পরে সন্ধিকার্যাঃ ন ভবতোব। অত্র-ই অত্রে ইতাত্র পূর্বেশাচা সন্ধিকার্যাঃ ভবতোব। এতদ্চীতি বিবচনসিদ্ধানামীদ্দেতামিত্যত্রাপান্যস্কানীয়৸। তেন ক্রবচকাৎ ইশকাৎ হরবাচকাত্শকান্ত বিবচনসিদ্ধরোরী উইত্যেত্যোঃ সন্ধিকার্যাঃ ভবতোব। দ্বি ঈ দ্বী শধু উ মধ্ কান্ত উ অস্তেত্যত্ত দীর্ঘে কতে পূর্নাং প্রকৃত্যস্তরঙ্গাৎ নায়মুক্শরঃ কেবলাজিতি সন্ধিকাত্যের জারস্ত্য

(৩৬৬)। পূর্বেণ সিদ্ধে নিয়মার্থং বচনম্। স্মতৌ বাক্যে চ বর্তুমান-ই স্থব আত ইতাস্থাব্যস্তাচি পরে সন্ধিকার্য্যং ন ভবতি। আ উদকান্তাদিতি দীনাভিব্যাপ্ত্যোরান্তিত্যারাদিখাৎ পঞ্চমী। উদকান্তমিতি অপপরিবহিরঞ্জাঙ্জঃ পঞ্চমা বা ইত্যবায়ীভাবং। প্রোথশকঃ প্রোষিতাভিধায়ী। ঈষদর্থে আ ইচ্ছা এচা ক্রিয়াযোগে আ ইহি এহি। আতোহঙিত ইত্যেব সিদ্ধে স্মৃতি-মাক্যমোরিতি স্কৃতং স্পষ্টার্থং স্থায়পভ্যাচ্ছাকোহর্থ: স্পষ্টো ভবতি।

৩৬৭। প্লুত্স্যাচি। জো: পুত্ৰs আগচ্ছ ভো বশিষ্ঠs আয়ুত্মান্ ভব।

(৩৬৭)। প্রক্রাচি পরে সন্ধিকার্য্যন ভবতি। চল্রেণাস্য কচিব্যাভিচারো দর্শিতঃ। অগ্নীহিও ইতাত্রবীৎ অগ্নীহীত্যব্রবীৎ। ভোঃ পুল্রও
কাগচ্ছ ইতাত্র সবর্ণেনাগ্দীর্ঘ ইতি দীর্ঘো ন ভবতি। নগন্ধাকারাদয়ো দ্বিশঃ
সবর্ণা ইত্যক্তং প্রত্স্য সবর্ণকাভাবাৎ কথং দীর্ঘপ্রাপ্তিঃ ? উচাতে—প্রত্ত্রিধীনেহিপি পূর্মনিমিত্তং কার্য্যং ভবতাতি প্রাগেব প্রতিপাদিত্রম্। অন্তর্ত্তাতি কিম্ ? আগচ্ছ অঃ আগচ্ছও হরিবাচকো অশন্দোহত্র প্রত্তঃ। অন্তর্ত্তাপি
প্রাপ্তেহচাতি মন্দ্রিয়াং স্বংপ্রতীতার্থম্। যথা পূর্মোচার্য্যবং প্রত্যাহারগ্রহণং তথা প্রত্তান্মপীতি যগপি স্ত্রক্তোহ্তিপ্রায়ঃ তথাপি শিষ্যহিতায়
প্রত্তাক্ষণানি ক্রিয়ত্তে।

দ্রে সধ্যুক্তী বাকাস্যাচামস্তাঃ প্রুতঃ ॥ > ॥ বাকাস্যাচামস্তাঃ প্রুত ইত্যবিকারঃ। বাকাস্যাচামস্তাে দ্রে সম্বুক্তা বর্তমানঃ প্রুতা ভবতি। ভোঃ পূজ্ব এহি। মছাপি দ্রমপেক্ষাভেদাদনবস্থিতঃ তথাপি স্বাভাবিকাং প্রেমাদধিকের প্রেম্বরিশেষেণ মজ দেশে শকঃ শ্রামতে সু ইছ দ্রশকেন গৃহতে। দূর ইতি কিন্ত্বি ভো মিত্রাগছে।

অনর্থ্যে চ হেছৈ॥ ২ ॥ হেছেশকৌ দূরে সম্বৃদ্ধা বর্তমানদ্য বাক্য-দ্যাচ:মস্ত্যভূতৌ অনস্ত্যো চ প্লুতৌ ভবতঃ। হেছ অম্ব অম্ব হেছে।

শ্বৰ্জং গুৰুক্ৰমণ বা॥ ৪॥ দ্বে সমৃদ্ধী বৰ্ত্তমানস্য বাকাসা শকারং বৰ্জনিয়া গুৰ্দ্বক্ষরং ক্রমেণ প্লুতং বা ভ্ৰবিত্ত। এহি দে-বদন্ত এহি দেবদন্ত হে দেবদন্ত হে দেবদন্ত। গুৰ্কিতি কিম্? বকারাং পরঃ প্লুতো মাভূং। শ্বৰ্জমিতি কিম্? ভোঃ ক্ষঃ।

শাস্থাৰ প্ৰত্যন্তিবাদে ॥ ৪ ॥ অভিবান্তস্য শুরোরাশীর্বচনং প্রত্যন্তিবাদে । স্ত্রীশুদ্রবর্জিতে প্রত্যন্তিবাদে (যদ্বাকাং বর্ততে তসাজ্যাচ্ প্রত্যন্তি। আয়ুপান্ গার্গান আগতোহিদ অস্ত্রীশৃদ্র ইতি কিম্ ? আয়ুপ্রতী ভব গার্গি। আয়ুপান্ ভব ডডদাদ।

হি প্রতিবচনে ॥ ৫॥ বেডাস্বর্ত্তে। পৃষ্টসা বচনং প্রতিবচনং ভক্ত বর্তমানো হিশবং প্রতো বা ভবতি। অকার্বীং কটং দেবদন্ত ইতি পৃষ্টস্য প্রতিবচনম্ অকার্বং হিঃ অকার্বং হি। প্রতিপ্রবোপালন্তরো: ॥ ৬ র প্রবণং প্রতি প্রবৃদ্ধিং প্রতিপ্রবাধ লপ্রতিকেপোহরুবোগ উপালন্তঃ তত্র মন্বাক্যং প্রবর্ত্তকে তদ্যান্ত্যাচ্ প্লুতো বিশ্বীলেও
ভবতি। বৈত্র ভোঃ কিমাচার্য্যঙ্গ মৈত্র ভোঃ কিমাচার্য্য। অদ্য প্রাদ্ধমন্ত্রীলেও
অন্ধ্য প্রাদ্ধমন্ত্রীলে। অন্ধ্য প্রাদ্ধমিত্যাপ্রও অন্ধ্য প্রাদ্ধমিত্যাপ্র।

ভৎসনে দ্বিকজং ক্রমেণ ॥ ৭ ॥ ভংসনেহর্থে বর্ত্তমানং বিকক্তং ক্রমেণ প্লুতং বা ভবতি । কর্ণত কর্ণাত ক গম্যতে কর্ণকর্ণও অতা ক গম্যতে পক্ষে কর্ণ কর্ণাত্ত কর্ণ কর্ণ ইতি বাক্যাদি সম্বোধনং সম্মত্যহয়াকোপ-কুৎসাভৎসনেম্বিতি দ্বিক্তিঃ।

পূর্বং সম্মত্যস্থাকোপকুৎসাস্থ ॥ ৮ ॥ সম্মত্যানিসু অর্থেসু দ্বিরুক্তং পূর্বং প্রতং বা ভবতি। অর্জুনঃ অর্জুন বীরঃ গহসি ইত্যাদ্যূহনীয়ম্।

অঙ্গযুক্তং তিওস্তাকাজ্ঞং তিওস্তম্ ॥ ৯॥ অঙ্গশক্ষেন যুক্তং তিওস্তং তিওস্তাকাজ্ঞং তিওস্তাপেক্ষং প্লুকং বা ভবতি অঙ্গ কৃত্যঃ ইদানীং জ্ঞাদাদি জালা। তিওস্তমিতি কিম্? অঙ্গ হৈনী নিগা পঠদি।

পৃথিতে॥ ১০॥ পৃথিতেংথে বাকাদ্যাচামস্যো বা পুতো ভ্ৰতি। শোভনঃ থ্ৰদি মৈত্ৰ- শোভনঃ ধ্ৰদি মৈত্ৰ।

विচার্যানানাং পূর্বম্॥ ১১॥ মনিংক্ত বস্তান প্রমাণে তথাবাক। বিচারঃ বিচার্যানাণানাং পূর্বং প্লুতং বা ভবতি। অহিনঌরজ্জু; অহিন রজ্জু:।

চিতীবার্থে প্রযুজামানে ॥ ১২ ॥ ইবার্থে চিংশকে প্রযুজামানে সভি বাকাস্থাচামস্তাঃ প্লুতো বা ভবতি। রাজাচিৎ ক্রতেঃ রাজাচিৎ ক্রতে রাজেব ক্রত ইত্যর্থ:।

নিন্দাণীঃপ্রৈষ্যের তিওস্তাকাক্ষাং তিওস্তা ১০॥ নিন্দাদির গমামানের মন্তিওস্তা তিওস্তালা প্রের তিওসামানের মন্তিওসাধ্যার তক্রং পার্রতে। পুরাংশ্চ প্রাপ্তালাক্ষমিতি কিন্ গ দীর্ঘণ ক্রায়রস্তা । তিওস্তাকাক্ষমিতি কিন্ গ দীর্ঘণ ক্রায়রস্তা।

অনন্তাস্যাপি প্রশ্নাধ্যানয়ে: ॥ ১৪ ॥ প্রশ্নে আখ্যানে চ যদ্বাক্যং বর্ততে তদ্যান্ত্যা অনন্তাস্য চ পদসান্তা: প্রতা ভবতি । আগমঃ পূর্বাঃন্ গ্রামাঃন্ অন্নিভ্তাঃ ইতি সর্কোশেব পদানামন্তাস্য প্রভূত্য আখ্যানে আগমঃ প্রামা ঃ নৃ ভৌঃ: ।

৩৬৮। মণীবাদের্ধা। মিণা ইব মণীব দম্পতা ইব দম্পতীব রোদগী ইব রোদগীব।

৩৬৯। ইতো সমুদ্ধ্যোতঃ। বাষো ইতি বাষবিতি।

০৭০। ঋদুতোরকো হ্রস্ক ।

সপ্ত ঋষযঃ সপ্তর্ষরঃ খট্ব ঋণং খটুর্ণং দিধ ঋচছতি দধ্যচছতি ঋক্থহাঁবি ঋণং দদ্যাৎ ঋক্থহাষ্ট্রণং দদ্যাৎ হোতৃ ঋষিঃ হোতৃষিঃ
গমু৯কাবঃ গমূকাবঃ।

বিচাব প্র ন তা ভবাৰপ্রাম্বেচঃ পূর্দার্কে স্যাহত্তবদ্যেহতে ॥ ১৫॥ বিচাবাদিল্ অর্পের্ যনেজ স্তং প ং ত্রমা পূর্দ্রসার্ক্রসাদ্ভবতি স চ প্র্তঃ উত্তর
স্যাদ্দরা ১৯: ছা ক্রমেণ ভবতঃ। ্রহাভবাং দাক্বিভস্য প্রাচ ই আগম
শৈলান্ অ্যান্তান ই আ আব্যান্ ভব পটাত উ শোভনঃ থবসি আ্যাত ই
ক্রেল আগছে অ্যান্তান দ্বা সম্বোধন মতেং।

এতো ন তিবচনগা। ১৬ একাবস্য বিবচনস্যায়ং বিধিন ভবতি।
কঞিং কুশলং ভবতোঃ কভো- প্রশ্নে পূকো ভবতি। এত ইতি
কিম্ ব্যাব্যক্তী গুলাস্থাং শেবদুৱা ড।

- । ১৬৮)। মণাবানে: সনিবিধানং বা ভবতি। করাদি গাদিতি-নি গ্রমেব সনিবহোক্তঃ অতৈপ্ত নিষিদ্ধঃ। উভর্মতদর্শনাৎ প্রকৃশ্বিকর-নাহ কভিদাহ ইবার্থে বশকোহপান্তি তেন রূপদ্বন্দ। তথাচ, কাদ্দশ্ভি-ভনলানিব পঞ্চলানি। ভূঙ্কে জনস্য গলকে বিনিধার পাদমিত্যাদি প্রবোগো দশু:৩।
- (১৮৯) সমুদেবোং সমুদ্ধােৎ তদ্য স্থানে ইতি শব্দে পরে সন্ধিকার্যং বা ভবচি। সমুদীতি বিশেষণং কিম্? গবিজ্ঞান্থ সর্ব্যমুক্তবণে বেতি গোশকার বিজ্জাুৎপত্তিঃ। ইতার্মিজ্ঞিকিম্? বায়োহত্ত।
- (৩१•)। ৠকারে ৯কাবে চ পরে হকো যা সন্ধিঃ প্রাপ্তাং দ বা ভব্তি। ক্রম্ব ৮। তদ্যাকা স্থানে ভব্তি। নিতাদমাদে অদ্যাসে পাক্ষিক্দমাদে চায় নিষেধ ইতি বামনচাক্রাদিমত্নালোকা বহুদাই গৈঃ স্টেডম্। সপ্ত

৩৭১। ন ঋদাদিধাতো প্রাদ্যতঃ। উপাচ্ছ তি উপার্যভীয়তি।

৩৭২। ইকশ্চাসবর্ণে নিত্যসমাসবর্জ্জম্।
দধি অত্র দধ্যত্র নারী অত্র নার্য্যত্র বধূ আগ্মনং বধ্বাগমনম্।
নিত্যসমাসে তু ন্যাকরণম্।

৩৭৩। অপদাত্তে ন স্থাৎ। নাৰ্য্যো নাৰ্য্যঃ বঞ্জো বঞ্জঃ।

শ্বব্য ইতি দিক্সংখ্যনোন গ্নিতি সংজ্ঞারাং নিত্যসমাসঃ। নিত্যসমাসে নারং
নিবেধ ইতি ক্স্যাপি সম্মতং তেন জন্ম ইব শুচ্ছতি কর্ত্তু কুপমান ইতি পিনি
ক্রতে তলিমিভোপপদস্য চেতি নিত্যসমাসে নিত্যমর্থচ্ছীত্যুক্তং হ্রম্মত বিক্লেন ভবতি। তেন ধটা গুণমিঞ্জি ভতীন্নমিপ রূপং কাতন্ত্রে ব্যবস্থিতম্।
নৈত্রামনচম্রাদিভির্বহতিরভাপগতমিতি বৃত্তিকারেণোপেক্ষিতম্।

(৩৭১)। ঝং আদির্যস্য স ঋদাদিঃ তন্মিন্ পরে প্রাদিসম্বন্ধিনোহ-ত উত্তরভূতেহসন্ধিন ভবতি। সন্ধিরের ভবতীত্যর্থঃ। উপার্চ্চতীতি ঋদাদিধাতোরিত্যাদিনা বৃদ্ধার্ সবর্ণেনাগদীর্ণ ইতি দীর্যঃ। উপার্যভীরতীতি ঋন্সাদিনামধাতোর্বেভি পক্ষে বৃদ্ধিঃ ঋদাদিধাতোরিভি হুত্রে পাঠো লিপি-কর প্রমাদকৃতঃ ঋদুদাদিধাতোরিতি ক্রপ্তবাং তেন উপান্ধারীয়তীত্যত্রাপাসন্ধিন ভবতি। ইম্বোক্তা দীর্ষস্যাগ্রহণাং উপশ্লকারীয়তীতি পূর্ব্বেণাসন্ধিঃ।

(৩৭২)। অসবর্ণেইচি পরে ইকোহসন্ধির্মা ভবতি। হ্রস্কণ্ড তস্য ইকঃ স্থানে ভবতি নিত্যসমাসং বর্জনিস্থা। বধু আগমনমিতি বাধিকারাং নামং নিতাসনাসঃ। ব্যাকরণমিতি নিতাং কুপ্রাদেরিতি সমাসঃ সমাস-মাত্রমেব বর্জনিস্বেতি তু সর্কবর্ষচন্দ্রাদিসম্মতং পূর্কবোগে বিহিতঃ সন্ধিপরি-ত্যজোহস্য বিষয়ং তেন কবা অত্ত্রোদৌ নামং প্রবর্ততে।

(৩৭০)। অন্নং সন্ধিনিষেধ্যেৎপদান্তে বর্ত্তমানস্য ইকো বা ন ভবতি।
স্বব্যরৌৎকেবলাচোরচীত্যাদিভিরচ্সন্ধিনিষেধলক্ষণৈর্বস্তভিঃ সাহচর্যাৎ
সামান্তলক্ষণান্তপ্যচ্সন্ধিনিষেধকান্তেব। তেন স চ্ছাত্র এব চ্ছাত্র ইত্যাদি
বিশ্বং ভবত্যেব।

্ ৩৭৪। পদান্তেহনুস্বারো যবলে দানুনাদিকযবলা বা।

भःयस्त्रा भैयास्त्रा भःवदभवः भैववदभवः भूः निक भू तिकः।

৩৭৫। কখয়ের্জিহ্বামূলীয়ো বা বিদর্গঃ। কঃ কামী কঃকামী কঃ খলতি কুমুখলতি।

৩৭৬। শর্ষপরয়োঃ খ্যাঞি চ ন স্থাৎ। কঃ ক্শাতা, বাসঃ কৌমং, ঘটঃ খ্যাতঃ।

৩৭৭। পফায়োরুপাথানীয়ঃ। কঃ পরঃ কামপরঃ কঃ ফলতি কামফলতি।

⁽৩৭৪)। প্রতি বর্ত্তমানোহনুস্থারো যবলে পরে সান্থনাসিক্যকলা ধা ভবতি। ধবলাঃ দিপ্রকারাঃ সান্ধনাসিকাঃ নিরন্থনাসিকাশ্চ। সংবংসর ইতি বসাদেঃ সর ইতি সরঃ সেতোহচভূদি তি সস্য ভঃ অয়মস্তঃস্থবকারবান্ সঁকাদিতি তু অস্য প্র্যায়ঃ বদাদিত্বাদবায়ং যদা বদবাকারাঃ
ঘাচীতাত্র তথা অস্তঃস্থবকারবং। যদা বদহৈর্ঘ্যে ইতাত্র তদা প্রর্গস্থবং।
স্থানিক ইতি প্রাংসং লিক্সনীতি গতার্থাৎ লিগিবাতোর্ঘণ্ হলিলুক্ প্রংসো২স ইতাস্লুক্ প্রংসোহপদাস্তে চেঙি অনুস্থারঃ। পদাস্তগ্রহণং ম্পটার্থম্।
ম হি যবলে পরে হপদাস্থেত্বস্থারঃ সম্ভবতি।

⁽৩৭৫)। পদান্তে বর্তমানো বিদর্গ: কথয়োঃ পরয়োর্জিহ্বামূলীয়ো বা ভবতি। অনুস্বারানুনাসিকসংজ্ঞাবৎ জিহ্বামূলীয়োপাশ্বানীয়সংক্ষাপি লোকপ্রসিদ্ধা এব জ্ঞাতব্যা।

⁽৩৭%)। শ্বপরয়ো: কথরো: থ্যাঞ্জি চ পরে জিহ্বাস্পীয়ো ন ভবতি। কংক্লাতা ইতি ভৃঙ্তাঙ্ বা থ্যাঞক্শাঞো চক্ষিভইতি ক্লাঞা দেশ:। ঘট: থাত ইতি জঃ যথা খ্যাপ্রকথন ইত্যসা গ্রহণং ন ভবছি তথ গৌ চ কমিগমি ইত্যাদিশ্র এব ব্যাখ্যাডং খ্যাপ্রকথন ইত্যসা তু ভর্বতোব। অর্থভেদক্ত ঘরোরস্কীতি নিবেশ: প্রকথনং হি বিস্তীর্ণতা গৌড়ীয়াল্ত খ্যাপ্রকথনে ইতি পঠন্তি তথাপ্যর্থভেদোহণ্যস্কোব।

⁽ ७११)। भनारस वर्डमात्ना विमर्गः भक्त्याक्रभाषानीत्रा वा ভविछ ।

৩৭৮। শ্বসগরয়োর্ন স্থাৎ।

অন্তিঃ পাতম্।

সন্ধিরেকপদে নিভ্যো নিভ্যো ধাতৃপসর্গরোঃ। সূত্রেদ্বপি তথা নিভাঃ সৈবান্যত্র বিভাষিতঃ॥ কিং ধনেন করিষ্যন্তি ঈশ্বরাঃ ক্ষণভঙ্গিনঃ। ভবান্ শ্রেডে ইত্যাদি।

ইতি বাদীক্রচক্রচূড়ামণিমহাপণ্ডিতশ্রীক্রমদীশরাচার্য্যকৃতে সংক্রিপ্ত
সারে মহারাজাধিরাজশ্রীমজ্মরনন্দিপরিশোধিতায়াং

বৃত্তো প্রথমঃ সন্ধিপাদঃ সমাপ্তঃ।

(৩৭৮)। শ্বসপরয়ো: পফরোফপাগ্যানীয়ো ন ভবজি।

সন্ধি। বর্ণানাং ক্রততরোজারণং সন্ধিরিতি প্রাণেব যত্তকং তথ্যবস্থাধমাহ সন্ধিরিত্যাদি একপদে নিত্যমেব ক্রততরোজারণাং তৎকার্য্যমপি নিত্যমেব ভবতি। তদ্বধা বুক্ষো ভবতঃ ভিরপদব্যবস্থার্থং লক্ষণমাহ নিত্য ইত্যাদি।
ধা হৃদ্ধ উপদর্গদ্ধ ধাতৃপদর্গে। তথােঃ দন্ধিঃ নিত্যং তদ্বধা প্রাণ্ডাতি স্ত্রেধপি তেনৈব প্রকারেন নিত্য ইতি কর্ম্মণান্ নিত্যকথাদেরাদাে দৈনেতি দ
এব দন্ধিঃ উক্রাদখিন্দিন্ বিভাষিতঃ বিক্রেন ভাষিত ইত্যথঃ দৈবেতি ন
তদঃ দস্য পাদপুরপ ইত্যদন্ধিনিবেবঃ ভবান্ দেভে ইত্যাদি পক্ষে ক্রততরোঃ
চারণাভ্যবাৎ শেক্ষান্তি কাদেশদ্ধ ন ভবতি। এবং ধনং তিইতি গ্রব্থঃ
বাজীত্যানে বা অক্সারঃ।

ইতি ৰহাপণ্ডিত শ্রীক্রমনাবরকতে সংক্রিপ্রসারে রস্বত্যাং বৃদ্ধৌ মহারাজাধির ক্রশ্রীমজুমরনন্দিপ শোধিতবৃত্তৌ ঔপাসনিক-শ্রীপোরীচক্রবিরচিতারাং বিবরণীনামটাকারাং প্রথমঃ সবিধানঃ সমাপ্রঃ।

তিওন্তপাদঃ।

১। ধাতোস্ভিত্তস্অন্তি সিঙ্থস্থ নিঙ্বস্ মদ্। তে আতে অন্তে সে আথে থেব এ বহে মহে লড্বৰ্তমানে।

যত্রারকা ফলাস্থৈকা ক্রিয়া কাল: স বর্ত্ততে। বর্ত্তমানে কালে ধাত্রোক্তরে লট্সংজ্ঞকাস্তিপ্রাদশ্যা ভবস্থি। প্রত্যেকত্তে লট্সং= জ্ঞকাশ্চ। কৃৎপর্য্যস্তং ধাত্রোরিত্যধিকাব:।

(১)। তিঙাদি মহে ইত সং পদং লুপু প্রথমাবছ চনান্তম্। ছলে বহু প্রাণি ভবন্ধীতি ছল্দির বছলং বিভক্তিলোপঃ শাস্তান্তরোক্ত থৈবাত্রাপে দুপ্তবাঃ। ক্রিয়া ক্রভাবচ্ছেদভেদোপচারাং নিত্যাদৈশ দা কালদা, বর্ত্তমান ইতি ভবিদারিতি ভূত ইতি চাথা তত্র বর্তমানশক্ষণমাহ—ব্রেত্যাদিণ। ঘর কালে ভারত্তা দুধ্বিতুং প্রস্তুতা ফলান্তা ফলপর্যাবসায়িনী ক্রিয়া একঃ এক প্রপা বিদ্যাতীয়য়া তদ্বিক দ্বয়া নাম্তরিতে তার্থঃ স কংলো বর্ততে বর্ত্ত-মানাখাঃ গভত ইত্যর্থঃ। স চ ধাঃধবিশেষণম্। কংপর্যান্তমিতি ক্লমিকার-সমাপ্তিং বাবং। নমু লাঘ্বার্থমারকে শাস্ত্রে কিমিত্যেকাক্ষরা এব লড়াদিসংজ্ঞান পাত্রতা প্রত্যান্ত শাস্তান্তরেক্ত্র প্রসিদ্ধানাং লড়ানীনাং প্রত্যান্তিভ্রানার্থং তত্র লড়াদমঃ স্থানিত্বেন উপক্রিতা ইহ ভূ সংজ্ঞান্তেনেতাবন্ধান্তং বিশেষঃ সার্থমেব সিদ্ধান্তঃ ধারাদীনাং সন্পত্রতানাক্ষ সংজ্ঞানাং কল্পিয়ঃ। অত এবানোচার্যোপ পূর্বাচার্যাসংজ্ঞান্তিনের গোয়েশ ব্রহিরতে।

- ২। ভ্রাদিদশগণা ণিঙ্সনাদ্যন্তাশ্চ ধাতবঃ।
 ভবতি ভবতঃ ভবন্ধি, ভবসি ভবথঃ ভবথ, ভবামি ভবাবঃ ভবামঃ।
 শচতে প চেতে পচন্তে, পচনে পচেথে পচন্দে, পচে পচাবহে পচামহে।
- । ভূতে চ নয়ি দ্যেঃ।
 নয়ি দ্যেঃ শকৈর্যোগে বর্ত্তমানে কালে ভূতে চ লড়্ভবতি।
- ৪। নমুনা পৃষ্টপ্রতিবচনে। অভূদৰটঃ কিং নমু ভবতি।
- (২)। ভূ আদির্ঘেবাং তে নশগণপঠিতা পিঙস্তাঃ সনাদান্তাশ্চ পাতৃসংজ্ঞকা ভবস্তি। ক্রিরাবাচকানামেবৃ দশগণপাঠাৎ স্বর দিবাচকানাং
 দিবাদীনাং ন ধাতৃষম্। সনাদেশেত্যুত্র উদাহরণেনৈব সনাদীন্ ঝাকবিযাতি তত্র পিছোহগুহণাদিহ ভূ পিঙিতি পৃথ গুলুং পিঙালান্তা ইতি ন ক্লভং
 বৈচিত্র্যার্থম্। পিঙালান্তা ইতি কতেহপি সনাদান্তানানিব গ্লহণে বিদ্ধে
 উভয়োকপাদানং পিঙস্তাদিপ সনি ক্লতে সনন্যাদপি পিঙি রুতে নায়োহপি
 পিঙ্নন্তমা ধাতৃসংজ্ঞা ভবতীতি সর্মোপসংগ্রহস্ক্রনার্থম্। অন্তথা দশগপপ্রতিতানামেব পিঙা দান্তানাং ধাতৃসংস্কা ভবতীতি মন্দ্রিয়াং শুদ্ধা স্তাৎ ইতি
 কেচিগ্রাচ্ন্নতে। প্রকৃতিপ্রত্যাব্রানিয়তস্থ্রেন সারিধাাং প্রথমবৃদ্ধিগ্রান্ত্রম্ব্যাদেরিত্যক্র যথা প্রথমগণকৈর গ্রহণং ভথাত্রাপি স্থাদিতি
 শক্ষানিরাসার্থং দশগণা ইতি ক্রতম।
- (৩)। চকারো বর্ণনান ইত্যক্তামুকর্ষণার্থঃ সামান্তবিধানমেত্ত্তরত্ত্ব বিশেষবিধানেন প্রপঞ্চয়িত্যতি অনেন ভূতে পূর্কস্ত্তেণ বর্ত্তনানে লড়িতি সিদ্ধে যচ্চকারেণ বর্ত্তমান ইত্যকুর্ন্য ভূতে বর্ত্তমানে চানেন বিধানং তন্মন্দ-ধিয়াং শঙ্কানিরাসার্থম্ অক্তথা বর্ত্তমানে লটং বাধিত্বা ভূতেহনেন বিধীয়তে ইতি শঙ্কা স্থাৎ।
 - (৪)। নমুনা যোগে প্রশ্নপ্রকিপ্রতিবচনে গ্রমানে বর্তমানে ছুতে চ লড্ভণতি। পৃষ্টমিতি ভাবে ক্তঃ প্রশ্নপূর্ব্কং প্রতিবচনং

- · ৫। বা মুনাভ্যাম্। অভূদঘট: কিং মু ভবতি না ভবতি শ্বভূৎ নাভূৎ।
 - ৬। স্থোন ভূতানদ্যতনপরোক্ষাপরোক্ষয়োঃ। স্মাশকো ভূতকালবচনঃ। ভবতি স্ম রামো রাঙ্গা বদত্তি স্ম মামিদং পিতা।
 - ৭। স্বাযুক্তপুরাযোগে ভূতানদ্যতনে বা লুঙ্চ।
 বসন্তীহ পুরা বিপ্রা: অবাৎস্থ: অবদন্। স্মযুক্তে তু। পুরা
 স্বাবসন্তি।

পৃষ্ঠপ্রতিবচনমিতি ম্যববংশকাদিয়াং শাকপার্থিবাদি স্বাদ্বা সমাস:। তংপুক্ষাদৌ সংস্কৃতাদেনি তামিতি পূর্ব্ধকুনকলোপঃ। অভ্নমচঃ কিমিতি প্রশ্নে
নক্ত ভবতীতি প্রতিবচনম্। নক্ প্রতিবচনং প্রশ্নেক্ষেব সম্ভবতি তং
কিং পৃষ্ঠশক্ষেন লেনে চাতে—প্রতিবচনশক্ষ্যার্থান্তবেছপি বৃত্তিবন্তি যথোচাতে ম্যা সক্রেডাক্রং পতিনিপ্ত ইতার্থঃ। কিঞ্চ বচনা বচনা প্রতি প্রতিব
বচনম্ ইতি বাঞাগামি তাবার্যভাবেনাপি প্রতিবচনশক্ষ্যা সিক্ষ্য এখা
দাং।

- (৫)। সনাভাগি বাণে পুলিবিচনে গমামানে ভূতে চ লড্বা ভবতি। পকে যথা কালবিহিত এব প্রতাবং সাচ বস্তমানে লড়েন ভূতে চ লুঙাদিং। নাভূদিতি ল্ড্ডঙ্লুঙ্সঙ্চেতি সঙ্সঙ্লুগিনাদেবিতি সঙ্লুক্লঙ্লুঙ্গুঙ মাধ্যাদিবিভাঙ।
- (৬)। মেন বাগে ভ্তানভতনপরেক্ষ লিটোহপবাক্ষে লভোহপন বাদে। লড় ভবতি। নাত্র বর্তনানে লট্ ভ্ত এবাসা প্রযোগাৎ অভএবাহ স্থানে ভ্তকালবচন ইতি। অভতনভ্তেহপি লুভ্ভবতোব। অবাদীৎ স্থাভবতি স্থানো রাজা বদতি স্থান্দিং পিতা ইত্যুদাহবণদ্বেন পরো-ক্ষাপরক্ষা স্পষ্টাবেব। ভ্তানভতন এবাক্তে পরোক্ষেহপরোক্ষে চ বিধানং লভ্যভ এব তৎপরোক্ষাপরোক্ষয়োবিতি ক্লতং স্পষ্টার্থম্। একস্মিন্ বিষয়ে সাবকাশেহধন্ অপর্মিন্ বিব্রে লিটা লঙা বা লড়্ বাধ্যত ইতি শক্ষা সাাং।
 - (१)। শ্বশকনাযুক্তদ্য প্রাশক্ষ্য যোগে ভ্তানভতনে লট্লুঙ

- ৮। কেবলাম্বর্ত্তমানপ্রায়ে।
 কদা আগতোহসি এব আগতহামি ইদানীমাগমমিতার্থঃ। "প্রত্যাহ
 কোশলপত্তিঃ প্রথমাপরাদ্ধঃ" ইতি রঘুং। আয়ামি লগ্নং আয়াস্থামীতার্থং। অস্ত্যাকাশমিত্যাদি।
- ৯। ভবিষ্যতিপুরাদ্যৈ। পুরাদ্যৈ: শদৈর্বোগে বর্ত্তমানে ভবিষ্যতি চলড্ ভবতি। পুরা যাতি অগ্রে যাস্ততীত্যর্থঃ। যাবত্তিষ্ঠতি স্থাস্থতীত্যর্থঃ। পুরা

চ বা স্যাৎ। এতাভাং ত্যক্তে পক্ষেহপরোক্ষে লঙ্ পরোক্ষে লিঙ্ ভবতি। তেন ভ্তসামান্তবিহি.তা লুঙ্ অনন্তহনে লঙা নিটা চ বাধিতত্বাৎ ন প্রাপ্নো-তীতি বিধানম্। অবাৎস্থারিতি বসনিবাসে লুঙ্ প্রথমপুরুষ হবচনম্ অন্ সঙ্ সঙ্জানভূবো নিতামিতি অন উস্ অনিঙ্হিল স্থান্তি বৃদ্ধি: সেতোহচতুর্বিতি সম্য তঃ। পুরা শ্ব বসন্তীতি স্থেনেত্যাদিনা লট্।

- (৮)। নধাদিযোগরহিতারাতোর র্তমানপ্রায়ে বর্তমানস্থিতিতে তৃত্তে ভবিষাতি চ কালে লড়্ ভবতি। উভয়োরের কালয়োর্বর্তমানস্থিতিত ছাং বর্তমানপ্রায়ত্বম্যা কলা আগতোহদীতি প্রশ্নে এব আগচ্ছামীতাত্র বর্তমানপ্রায়তাং হচিতবান্। অত এব ভূতার্থেন ব্যাকারঃ কৃতঃ। আহেতি পঞ্চায়ো জেলেতি ভিঙাহেণ্ ক্রঞ আহাদেশক। অবর্তমানপ্রায়ে তৃ পরুদগচ্ছঃ বর্বেণ সমিষ্যতি। অন্ত্যাকাশমিত্যুদাহরণেনৈবং হচিতং নিত্যানাং পদার্থানাং সদা সংসম্বন্ধবিভিজ্যায়াং সদৈব বর্তমানকালসম্বন্ধান্তর্ভাননবিভিত এব প্রত্যায়:। প্রযোজা তৃ কচিত্পচারেণ স্বস্তামন্তর্ভাঙ বা অবাধং রঙ্যা বৈকালিকান্ প্রত্যায়ান্ প্রস্থাতে তিইন্তি নগাং স্থায়তি ত্যুর্তে তি
- (>)। পুরাষাকছ দাববাঝে গৃহেতে। ভাবায়ানামের যোগে প্রারেণাত্র বিধেকপক্রাস্তত্বাং অভএবানঝারুনবায়নোর্যোগেলে ন ভরতি। যাবদান্যাতি তাবস্থোক্যতে করণভূত্রা পুরা যাস্যতি অল্পে যাস্যতীতি লৃড়স্তেনার্থাকিছারো লৃড়ত্র বাধিত ইতি স্ফনায় পুরা খো যাতীতাত্র ভূ লুঙ্গি বাধিতঃ ভাবিজ্ঞনজভনে লুড়্বিধানাং এতদের স্ফার্মড়ং খ ইত্যুগাহ্নতম্। যথা পৃক্ষিস্ত্রে বর্ত্রমান ইতামুক্র্বার্থশিক্ষারঃ তথাত্র ন কৃতঃ তল্পাহ্ন্তমান-

(या यांकि त्या यांकम्यांकि । यः भारका ভविषादकानविष्ठनः ।

- ১০। স্থৃতবিহিতাশ্য কর্হিকদাভাগং বা। কর্হি বাতি কদা যাতি অযাৎ যথো যাম্মতি যাতা।
- ১১। কিংকতরকতমৈর্লিপ্সাপ্রশ্নোন্তরে চ। ক লভে ভিক্ষাং ক লেভে ক লপ্স্যে কন্তে ভিক্ষাং দদাভি অদার্থ-দুদৌ দাস্যতি দাত।।

ইতাত্র নান্বর্গতে নহি ভবিষাৎ কালজোতকপুরাদিষোগে বভ্রমানকালঃ
সম্প্রতি। বর্লমানে তুথাতোরিতানেন লটু রুজৌ তু যম্বর্তমান ইতি দৃশুতে
স পুর্বাস্থ্যদর্শনা শ্লিপিকর প্রমাদক্ষতঃ ব্যক্তমান ভূতবিহিতা ত কহিকদ;ভাাং তেতানেন বর্তমানে চ ভূতবিহিতাঃ প্রত্যাঃ স্থাঃ তক্ত ন কুত্রাপি ব্যাকরণে দৃশুতে।

(১০)। কর্ফিশাভাং যোগে ভবিষ্যতি লট্ ভূতবিহিতাক প্রতায়া বা ভবিষ্ঠ প্রক্ষ যথাবিহিতাক প্রতায়াঃ। অযাদিতি বা প্রাপণে লঙ্ যযাবিতি লিট্ অণ বিরুক্তিঃ হ্রস্থা ঔদাতোণাণাবিতি ঔকারঃ আলুক্ ভূত-বিহিতা ইতি সামান্তবিধানাৎ লুঙপাত্র ভবতি অযাসীৎ অতএব কদা ভুক্ত-বান্ ইন্যপি ধর্মদাসেনোনাহ্বতম্।

আশংসারাং ভূতসামান্তবিহিতাণে তি বক্তব্যন্। আশংসনমাশংসা অপ্রাপ্তসা প্রার্থস্য প্রাপ্তীছা আশংসা তক্তাণ্ড ভবিষ্যৎকাল এব বিষয়ঃ। ভবিষ্যতি কালে আশ্-সারাং গম্যমানারাং লট্ ভূতসামান্তবিহিতাণ্ড প্রতারা বা ভবিষ্ট। এতে গুলু ভবিতি। গুরুশে দাগছেতি আগমৎ আগভঃ এতহ্যাকরণমধীমকে অধ্যগীত্মহি এতহ্যাকরণমধীতং পক্ষে গুরুশে দাগমিন্যতি ব্যাকরণমধ্যমামহে। সামান্তগ্রহণং কিমর্থং ভূতবিশেষবিহিতহ্যাল গ্লুলিটে.নিরাসার্থস্। এতরক্ষণং বৃত্তৌর্লিপিকরপ্রমানাং পতিতম্।

(>>)। লক্মিচ্ছা লিপা লিপায়: প্রশ্নে তছন্তরে চ প্রমায়ানে কিংক তরক তমৈর্থোগে ভবিবাতি লট্ ভূতবিহিতাশ্চ প্রত্যেয়া বা ভর্ত্তি। পক্ষে লুটু লুট্ চ। ক লভে ভিক্ষানিতি লক্ষ্ কামঃ পুচ্ছতি লভে ইতি

- ১২। প্ররোচনায়াঞ।
 যোভক্তং দদাতি অদাৎ দদো দাশুতি দাতা স স্বর্গং যাতি অয়াৎ
 যযৌ বাস্যতি যাত।।
- ১৩। গ**হাঁ**য়ামপিজাতুড্যাং ভূতে চ । অপি বং বুষলং যাজয়নি।
- ১৪। নবশঃ পরস্মায়াত্মনে লড়াদৌ। লড়াদৌ পূর্বের নব পরস্মৈপদং পরে মব আত্মনেপদং পরিভাষ্যস্তে।

ভূলভ্যপ্রাপ্তে লট্ এ শঙ্ আফৈলাদাবিত্যকারলুক। লেভে ইতি লিট্
এ বিশুক্তি: অনাদেশাভ্যাসস্যোদিদা অকারস্যৈকাব: বিশ্বকিলুক্ চ।
লপ্যে ইতি লট্ লট্ সাঙ্ চেতি ল্ট্ এ সাঙ্চ অদাদিতি লুঙ্ হঙ্ সঙ্
শঙ্লুগিনাদেরিতি সঙ্লুক্ কিম্শক্ষি ক্রিয়াগুণসংজ্ঞাভিত্তিয়েরেকস্য
পৃথকারে তরো বাত্যদাদেবিতি তর: বহনাধ জাতাা তম ইতি তম: কিমিত্যাদিনা কাদেশঃ। লিপাপ্রশ্লেতির ইতি কিম্ গুকো গ্রামং গমিবাতি।

- (১২)। প্ররোচনা প্রোংসাহনং তদ্যাং গম্যমানায়াং ভর্বিষ্যতি কালে

 দট্ ভূতবিহিতাশ্চ প্রভাষা বা ভবস্তি। বিনা বিক্ষাং প্ররোচনা ন সম্ভবতি

 তত্মাৎ পূর্বিযোগেনৈব সিদ্ধে কিংকতরকতমাযোগার্থং বচনম্। ন স্বর্গং

 যাতীতি স্বর্গামনোদ্ভাবনেন দাতুঃ প্রোৎশাহনং গমাতে।
- (১৩)। গ্রহায়াং গ্রমানারাম্ অপিজাতুত্যাং যোগে শুবিষাতি ভূতে চ লড় ভ্রতি। বিশেষবিহিতভাদয়ং সর্কেষামপ্রাদঃ। অপি দং বৃষলং যাজয়সীতি অবিবন্দিতকর্মজেন যজেরকর্মকথাৎ বৃষল্পিতি প্রযোজাং কর্ম।
- (১৪)। নবশ ইতি সংবৈধকাৰ্যাখীলি নৰশকাং শৃশ্।
 নমু পরবৈ আয়নে ইতি হত্রে ক্রমতে কথং পরবৈদ্যামানেপণমিতি
 ব্যাচকার অত আহ সম্পর্কানুপপতিত্যাং শক্ষকণা ইতি সম্বন্ধনামুপপত্যা বা শকান্তরং লক্ষাতে অনুয়া ইতি শক্ষকণা যথা মাতরি ভক্তাা
 প্রবিভিব্যমিত্যকে স্বস্যামিতি পদং সম্বন্ধনায়নো লক্ষাতে। যথা
 সঙ্গালাং ঘোৰং প্রতিবস্তীত্যে বাসাহয়মুপপত্যা গঙ্গায়ামিত্যনেন

শরশৈ পরশৈপদমিতি আত্মনে আত্মনেপদমিতি সম্বন্ধানুগপত্তিত্যাং শব্দলকণা।

- ১৫। শভ্বসূচ পরক্রৈ শানানো চাত্রনে।
- ১৬। ত্রিশঃ প্রথমমধ্যমোত্রমা নামযুদ্মদক্ষৎস্থ।
 পরদৈর চাত্মনে ত্রিশঃ ত্রীণি ত্রীণি নব ৰচনানি প্রথমপুরুষমধ্যমপুরুষোত্তমপুরুষাঃ পরিভাষিতাঃ সন্তো নাম যুদ্দক্ষংস্থ বাচ্যের ভবন্ধি। দেবো ভবতি দেবো ভবতঃ দেবা ভবন্তি, বং ভবসি যুবাং ভবথঃ যুয়ং ভবথ অহং ভবামি আবাং ভবাবঃ বয়ং ভবামঃ। এবমাল্পনে চ। পচতে পচেতে পচস্তে, পচ্নে পচেথে পচধ্বে পচাবহে পচাবহে পচাবহে গামহে।

শৃক্ষাতীবং লক্ষ্যতে তথেহাপি পরিশ্ব ইতানেন প্রবিশ্বপদমিতি লক্ষ্যতে অনরোঃ সন্থকো বিদ্যত এব। তথাহি ব্যাকরণাঝায়ামাত্মপরয়োল শতুর্থা। ইতি অলুমিধানেন পরিশ্বপদশক্ষ্যা ব্যাকরগাঝা স্থিচিতা। অতঃ সমাসপদৈকদেশেনাপরপদং লক্ষ্যতে। যথা ভীমো ভামসেনঃ সত্যা সত্যভামা ইতি। অলুপপত্তা চ। নহি পরিশ্বে ইতি চতুর্থা-স্থ্যা পরিভাষাত্মমুপলভাতে অতাহমূপপত্তা। পরিশ্বে ইতানেন প্রবৈশদদমিতি লক্ষ্যতে। নমু ব্যাঝামুগম্যায়াঃ শাকী প্রতীতিঃ স্থলভা ভবতীতি বছপঃ উক্তং তৎ কিমিতি পরিশ্বপদমিতাাত্মনেপদমিতি কৃত্য্। অলোচাতে—ন কেবলং শাল্পে মুথাশক্ষ এব ব্যবহারঃ কিন্তু লাক্ষ্পিকোহপীতি। শিয়্যাপাঃ ব্যংপজ্যুর্থমেবংবিধয়ুপঞ্জয়ঃ শিয়বারুংপত্তি-বের হি শাল্প্রা প্রধানক্ষম্।

^{(&}gt; 4)। भञ्चक ह भत्रदेवभार भागाती हाज्यत्नभार भत्रिकारबाटक ।

⁽১৬)। সামান্তেন তিঙাদিশ্রসঙ্গে প্রাপ্তে নিরমার্থং রচনং প্রথমে-জ্যাদিপদেনাত্রাপি ভীমে জীমসেনবং প্রথমপুরুষাদিঃ পরিভাষাতে। গোবলী-বর্দবং সামান্তবিশেষভাবেন যুম্মদম্মন্তবিক্তং নামাত্র গৃহুত্তে। দেবো ভ্রম্ভী-জ্যাদৌ নামাদেককত্বাৎ সম্বন্ধাকাৎ স্থা ও জসঃ ইতি স্থা ও জসঃ। 'মুম্মদ-

>৭। গম্যানেহিপ নামি প্রথমো যুক্সদশ্মদোক্ত মধ্যমোত্তমো।

পচতি পচসি পচামি।

১৮। সমাস প্রত্যয়ান্তবোশ্চ। প্রমন্থ ব্দ্রস্থ ব্রুবঃ ব্রুম: ব্থপাশঃ ব্থকল্লা,প্রচিন। প্রমাহং মজ্রপঃ মন্তরঃ মন্ত্রমঃ মথপাশঃ মথকল্লঃ প্রামি।

১৯। নাপ্রধানার্থয়োঃ। অতিহং পচতি অত্যহং পচতি অহং হং সম্পদ্যতে হস্তবতি অনহমহং

শ্বনোবর্ষ গ্রহণাৎ পতি হং বেৎসাসী ত্যানে। অসিযোগে মধ্যমঃ অসি কবোমি ইতি অস্মিবোগে উত্তমঃ কথং তর্হি যুশ্মনর্থ ভবদ্যোগে ধ্বা ভবান্ মন্ত:ত ইত্যত্র প্রথমঃ ভাষা প্রযোগাদেবাব। স্থাবাম্।

- (১৭)। অন্যার্থো ব্যক্ত এব মনেনৈতং স্পত্তীক্বতং নাম ধুম্মদমং-স্থিতি ন কেবলং বাচ্যে সপ্তমী কিন্তু গমানানেহণীতি প্রাযুদ্ধামানে তাৰ্ত্তঃ-ত্যেব অপ্রযুদ্ধামানমণি যদা গমাতে হদাপীতার্থঃ।
- (১৮)। পটো দগ্ধ ইতাত্র বধা পটাবনবে পটশন প্রবাগঃ তথা সমাসাধ্যবেহিপি সমাস প্রবাগঃ সমাসাব্যবয়োঃ প্রতায় স্বংশান্চ যুদ্ধান্ত্রাই মধ্যমোঞ্জমো ভবতঃ। সমাসাব্যবহাণু ক্মান্তর বন্ধান্তর মধ্যমা বন্ধ সমাসৌ। পরমন্ত্রমিভি পবমণাসৌ অঞ্চেতিবিশেষণসোত্যাদিনা কর্ম্মবিয়ঃ বিশেষজাৎ হমিতি প্রধানম্। অলপ ইতি কপস্ততৌ তিওলেতি ক্রগঃ। জন্তব ইতি দ্বিক্তভ্যোহতার্থে তরতমানিতি ভন্তঃ। জংগান্তি পাশো নিন্দে ইতি পাশঃ অম্বাবেক্ত্বে পদপ্রতান্ত্রাবিতি জ্বাদেশঃ অত্রাপি যুদ্ধার্থ এব প্রধানং সার্থিকপ্রতায়ানাং প্রকৃত্যর্থাভিধান ও। মুক্তর্থ ইত্যাদৌ তু ধদা যুদ্ধার্থ এব কিঞ্চিন্ন গুমার্থবিষ্ঠ প্রবাদ্যাধ্যমায়। যদা তু আবোপিত মুদ্ধার্থবিষ্ঠ এব কিঞ্চিন্ন ক্র্মবর্থব্য প্রধানত্বাহ্ম ব্যাপ্রধানতার ন মধ্যমঃ। সংক্রো দেবদক্তঃ পচতীতি।
 - (>>)। व्यथन नार्वद्वाय् यनवरनार्वाहारवाः मधारमाख्यमा न कवछः।

ŧ

সম্ভবতি ন ব্মহং ভবতি নাহমনহং ভবতি।

২০। পরিহাদে মন্তাত্তমন্তদ্মুক্তাচ্চ মধ্যম এক-বচ্চ।

অত্র হি মধ্যমে প্রাপ্তে উত্তমো বিধীয়তে উত্তমে চ মধ্যম:। এহি বং মন্তে ছ্ম্মহং পাশ্তসি কিং পাশ্তসি পীতং তত্তে ছ্ম্ ্বপিত্রা। লোড়াদাবপ্যেবম্।

• ২১। তেষাং পরঃ ক্রিয়াকালৈকত্ব।
ক্রিয়াকালয়োরেকত্বে সতি নামযুগদশ্মৎস্থ বাচ্যেয়ু তেষাং প্রথমমধ্যমোত্তমানাং যঃ পরঃ স ভবতি। স চ অঞ্চাহঞ্চ পচামঃ স চ অঞ্চ পচথঃ অহঞ্চ অঞ্চ স চ পচামঃ।

অতিষমিত সামতিকান্তঃ দিতীয় হৈ জাদিনা সমাসঃ অত যুম্ম থেছি প্রধানম্ অতিষমিতানে না ক্যাভিধানা ও দ্বৰ ভাতি সুমদ্শকাং অভ্তত ছাবে ইতাদিনা চিন্তুঃ অভাপি যুম্ম থেছি প্রধানঃ ওংপদেন মত্তঃ ন ভবতি ভ্যাভিধানাং। অত্যিতি ভংপুক্ষো বা নঞাং সমাস ইতি ভংপুক্ষঃ যদ্যপূত্রে পদার্থঃ প্রধানস্তংপুক্ষ ভ্রাপি অত্যমিতি পদেন সুমদ্য সদৃশ এবা ভোহভিধীয়তে ইতি যুম্ম থেছি প্রধানম্।

⁽২০)। মতা ইতি যধিকরণনির্দ্দোৎ মন জ্ঞানে ইতাতেবঁ দৈবাদিকতা গ্রহণং নতু তানাদিকতা মতু বোধন ইতাতা গ্রহণম্। পরিহাসে
গমামানে মত্রতম্বানে প্রাপ্তে উত্তমো ভবতি তদ্যুকাৎ ধাতোকত্তরে
ভিত্তমে প্রাপ্তে মধ্যমং স চৈকবঙ্গবিত। দিববহুদ্যোরপ্যেকবচনমিত্যুর্থং।
মতা ইতি উত্তমপুকারৈকবচনম্ এ। পাত্রসীতি মধ্যমপুকবৈকবচনং
সিঙ্। পরিহাসাদত্তর তু এহি ছং মত্তসে ছ্যুমহং পাতামি সাধু মত্তসে
এবং ক্রিয়তাম্।

⁽২১)। প্রথমমধ্যমোত্তমানাং স্ত্রপাঠক্রমেণ পরত্বমপেক্ষিত্রমিত্যাল দাহরণ এব ব্যক্তং লিঙ্গবিভক্ত্যোপ্ত শক্ষোপাদানক্রমেণ পরত্বমিতি। স গছতি বং পচসীতাত্র ক্রিব্রৈকরাভাবঃ স পচতি বং পক্ষাসি অভ্যুশচ-

२२। कि वित्रक्षिक्षिकाः।

ক্রিয়ো ধনং স্থতো যাতো।

২৩। ভাবকর্মণোরায়নে।

ভাবে কর্ম্মণি চ বাচ্যে ধাত্মোরুত্তরে আত্মনেপদং ভবতি। ধাহর্থঃ কেবলো ভাবঃ তদ্যৈকহাৎ প্রথমপুরুষৈকবচনম্। ভূয়তে ঘটেন অনুভূয়তে ঘটঃ।

মিতাত্র কালৈকত্বাভাবং অতো নাস্য বিষয়ং যদা ভু আধারে নিয়তে শক্তী অপেক্ষ্যেতে তথা আখ্যাত্মপি ভিন্যতে তং পচসি অহং পচসি যদা আধারানিয়তশক্ত্যণেক্ষা তদা শক্তিবয়াবিরোধাদেকমাখ্যাতং প্রযুক্তাতে তথাইঞ্চ পচাবঃ।

- (২২)। বিভক্তিগ্রহণমত্র বচনোপলক্ষণং কচিং ক্রিয়াকালরোরেকত্ত্বে সতি লিক্ষবিভক্তোয়াই পরহং স ভবতি। কচিদিতি পদেন স্ত্রিয়ো যাতাঃ ধনং যাতং স্থাতৌ ইত্যত্র স্থিয়ো ধনং স্থাতৌ যাতানাতি ক্লাবাক্লীবয়োঃ ক্লীবং স চৈক্বধেতি একশেষাদ্রবাতাক।
- (২৩)। ধাতোন্তাবর্ল্যানয়ঃ সামান্তেন বিহিতা বিদান্ত এব তত্র
 অনেন নিয়মঃ ক্রিয়তে। ভাবকম্পোরেষান্মনেপদং ভণ্ডীতি নরেবং
 নিয়মে দতি ভাবকর্মপোঃ পরক্রৈপদমপি দ্যাৎ নৈবং শেষাৎ পরক্রৈ ইত্যেভদপি নিয়মার্থমেব শেষাদেব কর্ত্তরি পরক্রেপ,দং ভবতীতি ধনি ভাবকর্মপো
 রাল্মনেপদমেব ভবতীতি নিয়মঃ স্পত্তনা কো লাভো ভেবতা লক ইত্যুত্র
 কর্মণি বণ্ তুর্লভঃ স্তাং। ধাত্তরিং কেবলো ভাব ইতি ক্রিয়ামারাল্যক
 ইত্যর্থঃ। নকু নামানির বাচ্যের প্রথমপ্রধাদনো বিহিত্য ভাবে বাচ্যে
 কিং ভবতীতি দলেহ মাহ তলৈ ক্রাদিতাদি। লক্ষণদামর্থ্যাৎ ভাবে
 বাচ্যে মাল্মনেপনং ভবিত্বামেব তলৈ ক্রাক্রাং প্রথমবৃদ্ধিগ্রহ্লান্ত প্রথমপ্রক্রেকবচনমেব যুক্তং কর্ম্মলক্রণক্র তৎসমৃদ্দিষ্ঠং কর্ম্ম ইত্যুনেনেব প্রতিপাদ্দিধাতি। স্বক্র্যুক্ত অপি ধাতবঃ উপ্সর্গর্জ্বন্ধ।

২৪। অকর্মকোহপি ক্রিয়ান্তরান্তর্ভাবে সকর্মক: ভাব।

আশুন্তে আসনিকাঃ শ্যান্তে শ্য়নিকাঃ আমিতুং শায়িতুং বাচ্যস্ত ইত্যৰ্পঃ।

২৫। কর্ত্র্যান্দাই ভিদ্যনীয়ান্। অনুদাত ভিদ্যনায় ইত্যেতে বাং ধাতৃনাং প্রায়োগে কর্ত্যাল্পনে পদ্ং ভবিতি। এধতে শেতে বোভ্যতে শ্যেনায়তে। অনুদাতাদয়ো

⁽২৪)। অকর্মকাংশীতি ন কেবলমেবাকর্মক উপদর্গসন্থছে সকশ্বকো ভবতীতি কিন্তু ক্রিয়ান্তরান্তর্ভাবেহিপি অয়মেবার্থোইপিশকেন সমুচ্চশ্বক্রে কৃষ্টিত: অপিশকোহয় ভিন্নক্রম: ক্রিয়ান্তবান্তর্ভাবেইপাকর্মক:
সকর্মক: স্তাং ইতি। আদান্ত ইতি আদ উপবেশনে শ্যান্ত ইতি শীঙ্
শ্বপ্নে যগ্ভাবকর্মণোরিতি যক্ শীঙ্ড: শের্যনিচেতি শেভাব: শীঙোইঙিদ্বে
ইতি অয়াদেশ: যদায়: প্রয়োগো ভাবে দ্যান্তন। একবচনং স্যান্ত্রাসাজ্ত আসমিকা: গিউন্তেনাপি দিধাতীতি শ্বান্তা: বিতী্মোনাহরণম্ গিঙ্ভাদিপ
শীঙ্ক: শ্বান্ত ইতি দ্যাং। সংগ্রামে স্পদ্ধতে ক্রক্ষমিত্যাদি অত্যান্তর্ভ্তপ্রাপ্তার্থঃ
স্পিদ্ধি: ক্রম্বং প্রাণ্য স্পদ্ধত ইত্যথঃ।

⁽২৫)। অনুদান্তণ্ট ঙ্টি ছন্ত্ৰদাসং ক্ষা তাবিভৌ যেয়াং তে অনুদান্তিতঃ ঘলাং পরঃ পূর্বো বা বং শ্রায়তে স লকতে প্রত্যেক্ষণকামিতি অনুদান্তিতাং তিতাক ধাতুনামিতার্থঃ। যনায়ে প্রভারে তে চ গ্রাত্ সম্বাভ ইতি ওলভানাং গ্রহণম্। বোভূয়তে ইতি হলাদ্যেকাচ ইত্যাদিনা যন্ নিক্তিঃ ওলাদিনিককে ইতি ওলঃ ঠচকথেতাদিনা ভস্য বং। শ্রেনায়ত ইতি কর্ত্রায় ইত্যাদিনা আয়ু অন্নোরিত্যকারলুক্। নমু অনুদান্ত এব কং অত অ.হ অনুদান্তাদর ইত্যাদি। সা চ প্রসিদ্ধিরেবং বিধার এথপ্রভূতীনামন্তে সরঃ পঠাতে সোহস্বাভ ইতি যশ্চ যক্তপ্রভূতীন নামন্তে স বরিত ইতি যন্ত্র শেষাপাং স উদান্ত ইতি দশগণধাতুপাঠে লিসিকর-প্রাধাণ্যাদেব জেরম্। এতেনৈতং প্রতিপাদিতং ভাষাবিষয়ে উচ্চারণান্তি-জানাং কথং সম্বেভঃ সম্বৃত্তি ইতি ন চোলাং দশপনপাঠে প্রসিট্ডোব সম্বৃত্ত

দশগণধাতুপাঠে প্রসিদ্ধা: বেদে তৃচ্চার্যান্তে। উচ্চৈক্রচ্চারণাত্ত-দাত্তঃ নীতৈত্বসুদাত্তঃ সমাহতঃ স্বরিতঃ।

২৬। কর্মব্যতীহারেহহসাদেঃ।

কর্মশব্দঃ ক্রিয়াবাচী ব্যতীহারে। :বিনিময়ো ব্যত্যাসঃ পরিবর্ত্তো বিপর্য্যয় ইত্যনর্থাস্তরম্। নির্জ্ঞাতাগু-

তাবগমাং। উজৈক্তারণাছদান্ত ইতি এতেনৈতছক্তং পদব্যংপত্তিশ্বারে-বৈবার্থোহবধাবনীয়ঃ। তথাহি উদুর্জনাদত্ত ইতি উদাত্ত ইতি উদাত্ত পুর্বা-দাঞ: ক্ত উচ্ছক উৰ্দ্ধবচন: অনুৰ্দ্ধমানত ইত্যক্ষদাত্ত:। নমু যদি ভিতে! ধাতোরায়নেপদং ভবতি তদা বিষ্কুজাদপি প্রাপ্রোতি বিষ্কুস্য ধাতোভিছাৎ। অত্রোচাতে—ঙিংপ্রতায়নিমিজ্য ধার্ডেরায়নেপদ্য ন ভবতি তম্ম একারম্ম গুণার্থবাং এতং সার্থে চায়নে কমেন্ডতৃষিতি ণিঙস্তাদাস্থনেপদবিধানে-নৈব বোধিতম অন্তথা আত্মনেপদ্বিধানমনর্থকং স্থাৎ। অথবা তরিয়মার্থং ণিঙ্ নিমিত্তমান্মনেপদং ভবৎ কমেরেব ভবতি নাক্তপ্ত। কর্ক্রায় ইত্যা-দিনা বিহিত্সায়োহ ভিতেনৈৰ স্চিত্ৰ। অক্তথা আয়ভমেৰ বিদধাাং। এতেনাত্রা য়নেপদার্থমায়গ্রহণং ন কুডং স্যাৎ। অথবা ণিঙোহবুধাদেরিভাত ণিঙিতি নির্মার্থ: নিওস্তাদায়নেপদ: ভবং কর্ত্রবিক্রয়াফল এব ভবতি নাক্তত্র অবুধাদেরিতি চ বুধাদেরা মনেপদবাধনার্থং চ লক্ষণম্। পূর্কংক্তরেশ ভাবে কর্ণ ি চ এতৈ: কর্ত্ব্যাঞ্জনেপদবিধানাৎ শেষাৎ কর্ত্তবি পরীমপদ-বিধানাৎ ত্রিছেবাস্থনেপদসংজ্ঞকা ভবস্তি। পরক্রৈপদসংজ্ঞকাস্ত কর্গর্য্যেব নাগুত্র ইতি ব্যবস্থিতম। নমু কর্তনীতি কিমর্থং ভাবে কর্মণি কর্তুরি চ সামাস্কেনৈবাত্মনেপদবিধানেহপি ন দোষঃ ভাবকর্মণোরপ্যাত্মনেপদসৈ্তে-ষ্টত্বাৎ তৎ ক্রিয়তে উত্তরার্থম্ উত্তরস্থমেণাপি সামান্তেন বিধানে অহসানে-রিতি ভাবকর্মণোরপ্যাত্মনেপদ প্রতিবেধ: স্থাৎ। ব্যতিহস্ততে দেবদত্তে-নেতি কিঞ্চ বোপদর্গাদুহান্তভ্যোরিতি বিকরণ্ড ভাবকর্মণোঃ দ্যাং।

(২৬)। কর্মশন্ধ ক্রিরাবাটীতি এতেন লৌ কিনমিই কর্ম গৃছতে মতু পারিভাষিকং তৎসমুদ্দিষ্টং কর্মেতি স্থচিতং এতদেব কথং প্রস্তান সম্বন্ধায়াঃ ক্রিয়ায়া বিপর্যায়োহতত্ত্ব দর্শনং কর্মব্যতীহারঃ। তদিশিষ্টক্রিয়াবচনান্ধসাদ্যস্তথাতোরুত্তরে কর্ম্ব্যাত্মনেপদং ভবতি।
ব্যতিলুনতে ধাতাং ক্ষকাঃ। "ধর্মোহত্তি সত্যং তব রাক্ষসায়মত্যো
ব্যতিস্তে তু মমাপি ধর্মাঃ। ত্রন্ধাদ্বিষত্তে প্রণিহিন্মি যেন রাজ্ঞতস্বত্তির্তকার্মকেষ্ণু" ইতি ভট্টিঃ। কর্মা ইতি কিম্ ? বিপ্রস্ত ধাতাং
বাতিলুনত্তি কৃষকাঃ। অত হি বিপ্রসম্বন্ধিনো ধাতাস্য কৃষকৈঃ
সহ সম্বন্ধাদ্দব্যস্থ ব্যতীহাবঃ। অহসাদেবিতি কিম্ ? ব্যতিহসন্তি।

সতে: বিষয়া থাছো: সম্বন্ধ: প্রাথানায়: সাধনাত্মককর্মান্তক্ত্র প্রম্পব্যা। দল্পেবং ক্রিয়ানা ঠীছাব ইত্যোবং ক্রীয়া ক্লতং শিলাবাৎপত্তিকবলার্থং বছ প্রকাবেশার্থাবগমে হি শিন্যাণাং বছবিষয়া ব্যুৎপত্তির্ভাষতে অন্তথ্ কেশ্বাণ ঘোষঃ প্রতিবদ নীতাানে লক্ষণারতেঃ শক্ষ প্রকরণাদিভিত্রদারণারাবনেষ্ফ 5 হিজমান্য ইত্যাদেবপ্রযোগ এব সাথে। নিজ্ঞাতান্ত্রসম্বদ্ধারা ই ত নিন্দ্রিক मस्तारा है ठार्थः। अञा हेनः माधनः हेर्यमम् मार्थाति निन्छितः मयकः। অনেকপ্ৰৈবাবিষ্কৃত্যপি বাতীহ্ বপদং ক্টাৰ্থেন ব্যাক্ৰোতি অভত্ৰ দশনং কর্মবাতীহাব ইতি ব্তিলুনতে ধান্তং ক্ষকা ইতি লঞ্ছেননে আয়নেহনত ইতি অন্তম্ভানে অৎ জ্যোদেনাদিত্যাদিনা নাং হ্রমণ্ট বুগ্রচীতি আকাবলুক। অন্তল্ম নিশ্চিতসমূলারা ব্যন্তিক্যায়াঃ স্লাভীযাং লংন-कियाः कृषकाः कृष्टुवि देशर्थः। এডেনৈবান্যক্রিয়ায়। অন্তেন কবণং न দম্ভবতীতি কুচোদার্মপি নিরস্তম। ধর্মোহস্তীত্যাদি। ভো বাক্ষস। তবায়ুং ধৰ্মো লোকহিংসাম্মক: সতাং নিভিতমন্তি কিন্তু মুমাপালো ধর্মো লোক-রক্ষাত্মক: ব্যতিত্তে। তব ধর্মাবস্থানক্রিয়াং নিশ্চিতাং মম ধর্ম: করুতে বেন ধৰ্ম্মেণ ব্ৰহ্মদিয়া তব কলিববুডিধু তিকামু ক,ত্ৰ: সন্ প্ৰণিহমি তে ইভি ক্মণি ষ্টা ব্যতিত ইতি অসভূৰি স্নাজ্যোৱদিত্যকারলুক কর্ম্মেতি কিমিছি কর্ম ইতি কিমর্থকং ক্রিয়তে কিমর্থংবা কর্মাশকঃ ক্রিয়াবাচী গৃছীতঃ ছিধানি প্রভাগরতম্। বিপ্রদা ধানাং বাতি নৈতি ক্ষক। ই ভার निर्द्धाः

२१। भकारी:

যাতিপঠন্তি ব্যতিজন্নন্তি।

২৮। গত্যর্থোহ্দংবিবহঃ।

ব্যতিগচ্ছন্তি। অসংবিবহ ইতি কিম্ ? ব্যতিসংবিবহুতে গৰ্গাঃ।

২৯। হিংদার্থোহদংপ্রহঞ্।

ব্যতিন্বস্তি। অসংপ্রসঞ্ইতি কিম্ ? ব্যতিসংপ্রহবন্তে যোধাঃ।

৩০। অত্যোহত্যেতরেতরপরস্পরোপপদঃ।

অত্যোহতাং বাতিলুনন্তি অত্যোহতাং লুনন্তীত্যর্থঃ। অত্যোহতাতা

তানাসহয়ত ধান্সা জবাস্যানাত দশনং নতু ক্রিয়াণাঃ অতএবা০ অত হীত্যাদি।

⁽২৭)। শব্দার্থো ধাতুর্হনাদির্শ্বতি। ব্যতিজন্নগুরীটি । জপজন্ধ-ব্যক্তাযাং বাচি ।

⁽২৮)। গতার্থা ধাতৃ: সংবিপ্র্ববিহিং তাজ্বা স্সাদিওবিত। বাহিগচ্নস্তীতি শিতীত্যাদিনা গচ্চাদেশঃ। ব্যতিসংবিবহন্তে গর্গা ইতি কন্যাণ ববক প্রস্পাবং প্রাপ্রস্তীত্যর্থঃ। বহুঃ প্রাপ্রদোপসর্জনীভূতগতার্থখাৎ হুসাদিজে প্রাপ্তে প্রতিষেধঃ। অসংবিবহু ইতি ভাষাদর্শনাত্রকুন্ অবমের নিষেধ্যে ক্লাপগতি প্রাপ্রণার্থস্থাপি গতার্থছেন নিষ্কেণ ইতি বাতিবহন্তি ব্যতিহর্ত্তি ভাবং কৃষকা ইতি। ধর্মদাসন্ত ভাষাার্থবিদ্ধান্তম্ব বাতিবহন্তে ভারং ব্যতিহর্ত্তে ভাবমিতি উদান্তহার।

⁽২৯)। হিংদার্থে। ধাতু: দংপ্রপূর্কহরতিং বর্জয়িছা হলাদির্ভবতি। বাতিয়ন্তীতি হলাবেরনগীতাকারলুক্ অলুগাদৌ হনো হো ঘ ইস্কি ২ন্ত ঘ:।

⁽৩০)। অন্যোহন্ত ইতরেতর পরস্পর ইত্যেবমূপপদো ধাতৃর্হনাদি-র্ভবতি। উপোচ্চাবিতং পদমূপপদং যত্যপপদগ্রহণং ন ক্রিয়তে ভদা প্রকাত্তনির্দেশে সচি তত্ত্ত্তরভৈব হসাদিখং স্যাৎ নতৃ ধাভোঃ পূর্ক-

বৃত্তিসুনস্তি অত্যে চান্তজ্যেত্যর্থঃ। এবনিতরেতবনিতরেতরক্ত পরস্পরং পরস্পারক্ত। "চুদোহ গাং স যজ্ঞায় শক্তায় মঘবা দিবম্। সম্যথিনিময়েনোত্রে দধ্যুতু বন্দ্রম্" ইতি রঘুং।

७)। कामग्राविभारमः।

স্থাদ্যাত্মন্তরন্মাদ্বিশাদেঃ কর্ত্ত্ব্যাত্মনেপদং ভবতি। নিবিশতে।

৩২। ব্যবপরিভ্যা জীঞা।

৩০। জেবিপরাভ্যাম্। বিজয়তে পৰাজয়তে।

- (৩১)। ধাতৃতিঃ সহ নিরমেনোপদর্গালাং সম্বন্ধাতৃপদর্গণামের গ্রাদীনাং প্রকাম অত উপদর্গাদের ভবতি নাজ্ঞজাং। তেন মধুন বিশন্তি ভ্রমরাঃ বছ বিজয়তি বনং পরাজয়তি দেনা দ্রীমন্থ যুনক্তি দ্রীং লক্ষীকৃতা যুনক্তি ই এথাঃ। অতিভাবীবিশনিতাাদৌ ণিঙপ্তপ্ত ধাহন্তবন্ধান্মনেপদং যদি প্রভাবনাদ্দি গঙ্গুপ্ত বিদান গৃহতে তদা পূর্ববিদ্যুত ইত্যাম্মানপদ্বিধানমন-ক্ষেং জ্ঞাং। প্রকাম ধাতোরূলদর্গেণ সহ সম্বন্ধঃ ততঃ আত্মনেপদং ততঃ অভান্যঃ ইতি প্রক্রিয়া। তথাচোক্তং, পূর্কং ধাতৃকপদর্গেণ সহ যুজাতে পশ্চাং সাধনেনেতি। নিবিশত ইতি শস্ক্ষাদেরিতি শঃ।
- (৩২)। বি অব পবি ইত্যেতেত্ব্য উত্তরশ্বাৎ ক্রীণাতেঃ কর্ত্ব্যাশ্বনেপদং ভবতি। অকর্ত্বক্রিযাফলে অনেনাশ্বনেপদার্থং বচনং কর্ত্বক্রিয়াফলে
 তু শ্বরিতক্রিতারিত্যাদিনৈব সিন্ধো। বিক্রীণীত ইতি ডুক্রীঞ প্রবাবিনিক্রেক্র্যানের্নাদিতাদিনা নাৎ নাহ্বাদেরিত্যাদিনা আকারম্ভেকাবঃ।
 - (৩৩)৷ জেরিতাত্মকরণং দর্মমত্মকরণে বেতি ইয়াদেশাভাব: বিশ্ব-

ৰঙিন:। ব্যতিলুনন্তি অন্তোহন্তমিতি ইতবেতবাদিশকানাং সৰ্বনামকৰ্মন্
ৰাতীখাৰ ইতি দিকজিং জন্মাণীয়াতে ইতি প্ৰকৰণে অন্তোভন্তপৰ্বস্পৰ্বশক্ষোঃ পাঠাৎ স্কৃ। স্মাণিতাদি এবংবিধা অন্প শিষ্টপ্ৰযোগাং হ্মান্টে
দ্ৰষ্টব্যা ইতাৰ্থং।

৩৪। সংপ্রব্যবেভাঃ সংঃ।

मः ভিষ্ঠতে।

৩৫। স্থ্যপদংবিভ্যোহ্বঃ।

নিহবয়তে।

৩৬। আত্তি স্পৰ্দ্ধায়াম।

আহ্বয়তে মল্লো মল্লং স্পৰ্কমান আহ্বানং করোতীভার্যঃ।

৩৭। আন্তি মুপ্রচেছাঃ। আমুতে শৃগালঃ উৎকণ্ঠিতঃ শব্দং করোতীত্যর্থঃ। আপুচ্ছতে 'শুরুন।

বাভাামুত্তবন্ধাৎ জি জয়ে ইত্যন্মার্নাতোঃ কর্ত্তগান্মনেপদং ভবতি। জিজ্ অভিতৰে ইত্যাস্যাপ্যত্র গ্রহণমিত্যাক্তঃ উপাধাাষদর্মবাদয় ইতি বি

- (৩৪) সম্প্র বি অব ইত্যেতে ভা উত্তবন্ধাং তিঠতেঃ কর্দ্রগাত্মনে-পদং ভবতি। সংতিঠতে ইতি শিতীত্যাদিনা তিঠাদেশঃ। অর্থপ্রকবণাত্ম-রোধেন তিঠতেঃ পুনবেবান্মনেপদং বক্ষাঙি।
- (৩৫)। নি উপ সম্ বি ইত্যৈতেভা উত্তরত্বাৎ হ্বেঞ্ ম্পর্কাশন্ধো-বিত্যত্বাৎ কর্ত্তগাত্মনেপদং ভণতি। এতদপ্যকর্ত্তিক্যাফলার্থম্। হব ইতি ক্ষেঞ্জান্ত্রবন্ধসাতে ক্রতে ধাতোরাল্লক শসাগ্রচীত্তি আকাবলোপঃ।
- (৩৬)। আঙ্গুপপদে হ্রয়তে: পর্দ্ধায়াং বিষয়ে কর্ত্যায়িনেপদং ভবতি। আঙ্পুর্কোহয়ং হ্রেঞ্ধাতু: শব্দার্থ এব স্বভাবাৎ প্রদান পুনরগু বিষয়: এতদেব স্ক্রমিতুমাহ স্পর্দ্ধান আহ্বানং করোতীত্যর্থ:।
- (৩৭)। সাঙি উপপদে শ্ব অতৌ প্রছঞ্জীপারামিত্যেতরোঃ কর্ত্ত-ধাা শ্বনেপদং ভবতি। আঙ্ পূর্বো মুধা চুক্তংক ঠাপুর্নকে শব্দে স্বভাবাদেব বর্ততে ইত্যুৎকণ্ডিত ইত্যাদিনা স্বচিত্তম্। আপুচ্ছতে ইতি ভুদাদিখাং শে ক্ষতে বশাদেকশাদিরিতি পূচ্ছাদেশঃ।

্রতিদ। সমঃ ক্লোডেঃ। সংক্ষুতে শত্রম্।

- ৩৯। অপ্রতীঘাতোৎসাহস্ফীতভাস্থ ক্রমঃ।
- ৪০। উপপরাজ্যামেব তাসূপদর্গে।

 যুদ্ধেয়ু ক্রমতে ন প্রতিহয়ত ইত্যর্থঃ। অধ্যয়নায় ক্রমতে বুক্তিক্রৎসহতে ইত্যর্থঃ। দেবদত্তঃ ক্রমতে স্ফীতো ভবতী গ্রপ্তঃ।
 উপক্রমতে পরাক্রমতে।
- 8১। আঙো জ্যোতিরুদ্গতো। আক্রমতে রবিরুদগচ্ছতীতার্থ:। অগ্নিরাক্রমতে দিবমুখার ব্যাপ্নো-তীতার্থ:। তগাচ, "দিবমাক্রমমাণেব কেতৃতারাভয়প্রদা" ইতি
- (৩৮)। সম উত্তরন্থাৎ ক্লু (জন ইতান্থাৎ কর্ত্তব্যাত্মনপদং ভবতি।
 অস্ত থাতোরকশ্বকত্বাতাবাৎ সমোহকশ্বগমাদেরিতারাপঠিতবাদিহ পৃথকরণং
 সংক্ষুতে শক্তং যোধাঃ।
- (৩৯)। অপ্রতীঘাতে উৎসাহে ক্ষততায়াঞ্চ বর্তমানাৎ ক্রমতেঃ কর্মগায়নেপদং ভবতি।
- (৪০)। উপদর্গে ইতি বর্গাজ্ঞাত্যাদিভিরিত্যাদিনা পৃথকরণে সপ্তনী উপদর্গের্ মধ্যের উপপরাভ্যামেবোত্তরাদপ্রতীঘাতাদির বর্তমানাং ক্রমতেঃ কর্ত্যগাত্মনেপদং ভবতি। এবকারেণ নিরমার্থতা হচিতা। বত্যপূপরাভ্যাস্বিত্যকেহিপি বিধানসামর্থ্যাদেব নিরমো গভ্যতে অপ্রতীঘাতাদীনামমুর্তিকরপ্যপদেশপরস্পরম্ভ্রা তথাপ্যেবংবিধং লক্ষণং স্পাষ্টার্থম্। এবং দতি বটিভাসংদিন্ধা প্রতীতির্জারতে।
- (৪১)। আঙ উত্তরন্থাৎ ক্রমতেকোঁতিবামূলাতৌ বর্ত্তমানাৎ কর্ত্তবান্ত্রন্থাণ অনেপদং ভবতি। উল্পাতিরন্ধিগমনমূচাতে উর্ধাণমনপূর্বিকা বাান্তিক্ত প্রথমেনথে বর্ত্তমানোহকর্পক: ক্রমি: বিতীয়ে তু সকর্পক: এতহবাহরপদ্মনেৰ ব্যাচকার। এতদর্থক ভটিপ্রয়োগো নিদর্শনং দর্শিতবান্। নজ: সমাক্রামতি ইতাসাধ্রিতি ভাশার্তিরতো মতমুপদর্শা স্বরসোধ্যে দর্শিতঃ। জ্যোতিরন্ধতাবিতি কিন্তু আক্রামতি ধুমো গলমন্।

ভট্টিঃ। "নভ: সমাক্রামতি কৃষ্ণবন্ধনা স্থিতৈকচক্রেণ রথেম ু ভাস্কর:" ইত্যসাধুরিতিভাগর্তিঃ।

8২। বেং পাদবিকেপে। বিক্রমতে হয়: শীমং গচ্ছতীত্যর্থঃ। 'জেলে বিক্রমমাণায়া" ইঙি ভট্টিঃ।

৪০। প্রোপাভ্যামারস্তে। প্রক্রমতে ভোক্তৃম্ উপক্রমতে।

৪৪। অনুপ্দর্গাদন্যভরস্থাম্ 1 ক্রমতে ক্রামন্ডি।

জ্যোতিষাং গ্রহমক্ষত্রাণামিতি ব্যাকাংরা ভাগর্ত্তী কতঃ ভাসেহপি জ্যোতিষাং গ্রহনক্ষত্রাদীনামিতি ব্যাকারঃ ভোগতিঃশকেনাত্রাদ্মিবপি গৃহীত ইত্যুদাহরণেন বৃত্তিকংশ্বরসো লক্ষ্যতে। উপমানেনাপি যত্রো-পমেরস্য জ্যোতীরূপতা প্রতীয়তে ত্রোপ্যায়নেপদমিতি শুচরিতৃং দিবমাক্রমমাণেবেতি ভট্টিপ্রয়োগো দর্শিতঃ। অতএব মাথেহপি, "দন্তা-লিকাধরণনিশ্চলপাণিযুগ্যমর্দ্ধোদিতো হরিরিবোদরশৈলম্ব্র্ণ্ন:। স্তোকেন নাক্রমত বল্লভপালমশঃ শ্রীকুক্লকীপুক্ষবিকোলমিতাগ্রকায়ং" ইতি।

- (৪২)। বেরুত্তরাং ক্রমতেঃ পাদবিক্ষেপেহর্থে বর্তমানাঞ্ কর্ত্তব্যামানেপদং ভবতি। অখানীনাং গতিবিশেষাে বিক্রমণমিতাত্তর্ব্যাপ্যাতং
 তত্ত্বাপরিতােবস্ট্রনার ভট্টিপ্ররোগাে দর্শিতঃ। যভগ্নি ক্রমিঃ পানবিক্রেপ এব পঠাতে তথাপি পাদবিক্রেপ ইতি রুত্রম্ অনেকার্থা ধাতব
 ইতি স্ট্রনার্থম্। পাদবিক্রেপ ইতি কিম্ ? অথবন বিক্রামতাজিনস্কিঃ
 ক্রিট্রত্তিত্যর্থাঃ।
- (৪০)। প্র উপ ইত্যেতাভ্যামৃত্তরাং ক্রমতেঃ আরম্ভে বর্তমানাৎ কর্তব্যাস্থনেপদং ভবতি। আরম্ভ ইতি কিমৃ ? পূর্কেছাঃ প্রক্রামতি গছতীভার্থঃ। আপরেছারপক্রামতি আগছতীভার্থঃ।
 - (৪৪)। অবিভ্যমানোপদর্গাৎ ক্রমতেঃ কর্ত্তগান্ধনেপদং ভবভি

৪৫। ক্রীড়োহয়াঙ্সংপরিভাঃ।
 ক্রিনিড়তে ক্রীড়তীতার্থঃ।

৪৬। সংপূর্বান্ন কুজনে। · সংক্রীড়ন্তি শকটানি।

३९। লকণাদ্যর্থা সুপরিভ্যাম্।
 স্ত্রীমমুক্রীড়ভি ক্রাং ক্লীং পরিক্রীড়ভি।

৪৮ ঘজ্ঞপাত্রাযোগেহসংনিত্রঃ প্রাদের্জঃ।
 উদ্যুঙ্ক্তে নিযুঙ্কে। যজ্ঞপাত্রযোগে তু। ছন্দং যজ্ঞপাত্রাণি
 প্রাযুনক্তি ধীরঃ।

অক্সতংস্যাং পর্য্যাযশকানাং গুরুলঘুচর্চা নাস্তীতি স্ক্রিয়ুই বেত্যক্র্যান্ত-তবস্যামিতি ক্রতম্। অপ্রতীঘাতাৠর্থব্যতিবিকোৎস্য বিষয়ঃ।

- (৪৫)। অমু আঙ্ সং পরি ইত্যেতেন্ডা উত্তরাৎ জীড়তে কর্ত্তগা-শ্বনেপদং ভবতি।
- (৪৬) । সংপূর্কাৎ ক্রীড়তেঃ ক্জনে গমামানে আয়নেপদ ন ভবতি। কুজনমব্যক্তধানিঃ।
- (৪৭)। লক্ষণান্তর্থভ্যামনুশবিত্যামুর্বন্ধাৎ ক্রীড়তে: কর্ত্যান্থনেপানং ন ভাবতি। লক্ষণাদীত্যনেন লক্ষণেহভিপ্রভিপর্যানব ইত্যাদিরু
 বোগের যে লক্ষণাদরোহর্ধা উক্তান্তে গৃহন্তে। স্ত্রীমহন্দীড়তি ইতি
 লক্ষণেহতীত্যাদিনা অথবা অনুর্হীনসহহেতৃদ্পি হাদিরিতি ইটি রাৎ
 বিজীয়া। স্ত্রীং পরিক্রীড়তি ইতি বীপায়ামিত্যর্থে বীপায়ামিত্তি
 হাদিত্বং পদক্ষ সাকল্যাভীক্ষরোরিতি বিক্ষক্তি: প্রতিবেধাহয়ং প্রকরণস্যৈব তেন ক্রক্ষোহমুপরাত্যামিত্যপি বাধ্যতে। গলামনুক্কতে তপঃ।
 বাতুনা সহ সম্বন্ধাভাবাদেবাত্র ন ভবিষ্যতীতি ব্যাধ্যানগৌরবপরিহাবান্ধ
 স্পত্তার্থং লক্ষণম্।
- (৪৮)। সংনিত্রি ইজ্যেতৈর্বজিতাৎ উপসর্গাহতরাৎ যুক্তঃ কর্তবাদ-ক্লনেপদং ভবতি। বজ্ঞপাত্রাবোগে সন্দি যুক্তসমাধাবিত্যত্রাহ্বদান্তবাদান্তবাদান্তবাদান্তবাদান্তবাদান্তবাদান্তবাদ্ধি পদং সিদ্ধমেব। যুক্তির্বোপে ইত্যত্রাক্তর্পক্রিয়াফলে আত্মনেপদার্থং

৪৯। অবাদ্ গিরতেঃ।

অবগিরতে।

৫০। সমঃ প্রতিজ্ঞায়াম্।

সংগিরতে। মধুরমুদিগরতে যথেকুরিতাসাধুঃ।

৫১। উচ্চরঃ সকর্মকাৎ।

৫২। সংচরস্তৃতীয়াযুক্তারু।

রাজাজামুচ্চরতে উল্লভ্যয়তীতার্থঃ। অশ্বেন সঞ্চরতে।

৫৩। উপাদ্যমঃ স্বীকরণে।

কক্সামুপযচ্ছতে শস্ত্রমুপযচ্ছতে শকটমুপযচ্ছতে ইঙি ভাষ্যম্।

- (৪৯)। অবাহত্তরাদ্গৃনিগবণে ইতাসাৎ আয়নেপদং ভবতি। গিরতেরিতি নির্দেশো গুশকে ইতাসা ক্র্যাদেনিবাসাথঃ অবপূর্ব্ধসা গৃণাতে-বনভিধানাৎ প্রয়োগ এব নাতাতি জয়াদিও্যাদযন্তমতে মন্দধিয়াং স্থ-প্রতীত্যর্থঃ।
- (৫০)। সম উত্তবাং গিবতে: প্রতিজ্ঞায়াং কর্ত্ত্যান্ত্রনেপদং ভবতি। প্রতিজ্ঞান্ অঙ্গীকরণমভাগগম ইতি পর্যায়:। প্রতিজ্ঞায়ামিতি কিম্? সংগিরকি গ্রামান্ দদাতীতার্থ:।
 - (৫১)। উৎপূর্বাৎচরতে: সৃকম্মকাৎ কর্ত্তগ্যাত্মণেপদং ভবতি।
- (৫২)। সংপূর্কাচ্চরস্থতীয়াস্তপদর্কাৎ কর্ত্যাপ্রনেপদং ভ্রতি। হেতৃত্তীয়ার্ক্তাদপি ভরতি। বৃদ্ধা সংচরতে নৃপ উচ্চরতে ইতি চর-গত্যর্থ:। অকর্মকান্ত্য উচ্চরতি পুম: সকর্মকাৎ অকর্মকাদপি সামান্তেন বিধানস্। তৃতীয়ায়ক্তাদিৃতি কিম্ ? উত্তো লোকো সঞ্চরতি ইনঞ্যামুঞ্চ দেবল:।
- (১৩)। উপপূর্জাৎ বম্পরমে ইত্যন্তাৎ স্বীকরণেহর্থে বর্তমানাৎ কর্ত্তব্যাক্সনেপদং ভবতি। অস্তং সং করোতীতি স্বীকরণম্। ক্ঞামূপ-

বচনম্। উদ্যুঙ্কে ইতি কথাদিত্বাৎ ধুম্ শ্লাস্ত্যোরদিতাকার্দুক্ উপাস্তত্ত-বর্গে ইতি নস্য ৩ঃ।

৫৪ ্**সাগ্ময়তেঃ কাল্ছরণে।** স্থাসময়ত্ব সাধুম্।

৫৫। প্রকাশনাদো বদঃ।
 প্রকাশনাদো সম্যানে বদতেঃ কর্ত্তিগাল্পনেপদং ভবতি। বদতে
মন্তঃ স্মৃত্তে প্রকাশমানোহর্থং প্রতিপাদয়তীত্যর্থঃ।

ু ৫৬। বিপ্রতিপত্তো। ক্ষেত্রে বিবদন্তে কৃষকাঃ। বিপ্রতিপদ্মানা বিচিত্রং বদস্তী-তার্থঃ।

৫৭। উৎসাহে।
 যুদ্ধে বদতে উৎসাহমানো বদতীত্যর্থঃ।

যচ্চতে ইতি পাণিগ্রহণমপি স্বীকরণমেৰ শস্ত্রমুপ্যচ্চতে ইতি শস্ত্রং স্থীকরোতীত্যর্থঃ। স্থাণিগ্রহণমিহ স্থীকরণং গৃহতে ন স্বীকরণমাত্রমিতি জ্বাদিত্যেনোক্তং সর্ম্বর্গচন্দ্রাদীনামপ্যেত্রতং তর্গতে অসম্বিত্তিহনায় শক্টমুপ্যচ্ছতে ভাষামিতি দর্শিতম্। যতো ন প্রত্যক্ষম্বিরমুমিতিশ্বতাা
বাধ্যতে। স্বীকরণশব্দ্র পাণিগ্রহণার্থতা ব্যাখ্যানগম্যা সাচ প্রত্যক্ষম্বতি
বিরুদ্ধেতি নাদ্রমুহতীতি।

(৫৪)। আঙ্পূর্বাদগমিধাতোর্ণিভন্তাং কালহরণে গল্মানন কর্ত্ত-য্যাত্মনেপদং ভবতি। কালহরণং কালপ্রতীক্ষণম্। আগময়স্ব সাধুমিতি ঝণশোধ্মকালপ্রতীক্ষণং সাধুং কার্ঘ ইত্যর্থঃ। আগময়স্বেতি গমের্ণিভ্ বৃদ্ধিঃ অস্বার্থণো ইত্যাদিনা ঘটাদিখাং হুস্বঃ তুঙ্গমন্বিত্যাদিনা লোট্সংক্ষকঃ স্ব শঙ্ গুণঃ।

(৫৫।৫৬।৫৭)। প্রকাশনাদী প্রমান ইত্যনেন ভাষণার্থ এবাত্র বিদিরিতি স্টিতং প্রকাশনাদিকত্ত সাধনবিশেষণছেন ভাষণহেতুঃ। অভঞ্জ প্রকাশমানোহর্থং প্রতিপাদরতীতি। বিপ্রতিপদ্যমানা বিচিত্রং বদৃষ্টি। উৎসাহ্যানো বদতীত্যর্থো ব্যাকারঃ হতঃ। ৫৮। উপসান্তনে বর্ত্তমানাৎ। ক্রিফামুপবদতে উপসান্ত্য়তীত্যর্থ:।

का खादन।

বদতে নৈয়ায়িকস্তর্কে বদিতুং জানাতীত্যর্থঃ।

৬০। রহস্ত্যপচ্ছন্দনে। পবদারামুপবদতে প্রলোভয়তীত্যর্থঃ।

৬১। অনুপূর্বাদকর্মকান্তকো ব্যক্তবাচাম্।

নাক্তবাচো হি মনুষ্যাঃ প্রসিদ্ধাঃ। অনুবদতে কঠঃ কালাপস্থ বথ।

কালাপেনোক্তং তথা কঠোহয়ং বদতীত্যর্থঃ। অকর্মকাদিতি,

কিম্ ? যজুরুদিতমনুবদতি। ব্যক্তবাচামিতি কিম্ ? অনুবদতি বীণা।

৬২। সহোক্তো চ। ।
সংপ্রবদন্তে বেদং ব্রাহ্মণাঃ সহ বদন্তী হার্থঃ। বাক্তবাঢামিতেক।
ববত্রসু সংপ্রবদন্তি কুরুটাঃ।

⁽৫০।৫৯ ৬০)। উপসায়নে জ্ঞানে বহুত্বাপচ্ছন্দনে চার্থে বর্তমানা দিতানেন বনতেরূপসায়নাদিকমেবার্থঃ। ভাষণস্ত ভর্মিশেষণমিতি স্চিত্রম্ অভএবোপসায়য়তি বদিতুং জানাতি প্রলোভয়তীতার্থো বাাকারঃ রতঃ। প্রকাশনাদেরভাত। বদতি কিঞ্ছিং।

^{(%)।} অনুপ্র্বিং বনতেরকর্মকাং ব্যক্তবাচামুক্তৌ ভাষণে বর্ত্তমানাং কর্ত্তগাত্মনেপদং ভবতি। ব্যক্তবাচো হি মন্থ্যাঃ প্রসিদ্ধাঃ ইতি
বোগন্ধঢ়িরিয়ং তথা ব্যক্তা বিভক্তাঃ স্পষ্টাঃ কাদিবর্ণাত্মিকা বাচো ফেনাং তে
ব্যক্তবাচঃ। যজুক্দিতমন্ত্রদতি ইতি অনুশকঃ প্রনিভ্যতার্থঃ অনুবৃদ্ধি
শীণা ইতাত্রাপি বংশক্তেত্যধ্যাহারেহপ্যক্র্মকত্বং যথা বংশত স্থনিতং তথা
বীণা বদতীত্যর্থঃ।

⁽৩২)! চকারো বাজবাচামিত্যমুকর্যণার্থ: ব্যক্তবাচাং সহোক্তো চ বর্জমানাং বদতে: কর্ত্তগাত্মনেপদং ভব্তি। স্কর্মকাদকন্ম কাচ্চানেন বিধানম্।

৬৩। । বাভোভাবিরুদ্ধায়াঞ।

বিপ্রবলন্তে মৌহূর্ত্তিকাঃ বিপ্রবদন্তি। ব্যক্তবাচামিত্যেব। বিপ্রব বদন্তি শক্নয়ঃ নানারুতং কুর্ববস্তীত্যর্থঃ। সহোক্তাবিত্যেব। ক্রমেণ মৌহুর্ত্তিকেন সহ বিপ্রবদন্তি।

৬৪। সাদৃশ্যে। অচিক্ষড়িকো ২ সংবদেতে ইতি ভাষ্যম্।

७৫। (उहा क्रम्राक्षनारमी।

সাভিপ্রায়াভিব্যঞ্জনাদাবর্থে বর্ত্তমানাত্রিষ্ঠতেঃ কর্ত্তগ্যাত্মনেপদং ভবতি। তিষ্ঠতে রগু। বিকর্মান্তেভাঃ সহৃদয়ং ব্যনক্রীত্যর্থঃ।

⁽৬০)। চকারঃ সংহাক্ত'বিত্যক্তান্ত্র্ব্রর্থঃ ব্যক্তবাচাং সহোক্তৌ বাচ্যারাং স্কন্যোহন্যবিক্ষারাং বর্তমানাৎ বদতেঃ কর্ত্র্যাাস্থনেপদং ভবতি বা সংগ্রেকী চেত্যনেন প্রাপ্তে বিভাষেয়ন্। একো যাদৃক্ বদতি তদ্বি ধন্ধ-মপনো বদতি ইত্যন্তোহন্তবিক্ষনা উক্তিঃ। নানাকতং কুর্ব্বন্তীত্যনেন অন্তোহন্তবিক্ষনতা প্রতিভা জাতিশক্তিভেদেন পরস্পরবিক্ষন্তাৎ কৃত্যানান্।

⁽৬৪)। সাদৃশ্যে বর্ত্তমানাৎ বদতেঃ কর্ত্ত্যাত্মনেপদঃ ভবতি।

শাচিকেত্যাদি এতদর্বং পাণিনীরলক্ষণাভাবাৎ অনার্বমেতদিতি বনি কন্চিক্রেপ্দরেং তদর্থমাছ ইতি ভাষাম্। বাগানীনত্তাৎ ষড়ক্লুলিদন্তাচ্চ একাচ্পৃত্পদাদনাদিপনস্থেতি ইকে অনাদিপদস্ত চলোপে ক্রতে মদা বর্গাদেস্কৃত্যাযো ভবতি ওদা বাচিক ইতিন ভবতি যদা, ন ভবতি তদা ধাড়ক
ইতিন সিদ্ধাতি। অত্রার্থে ভাষ্যকার আহ বাচিক্যড়িকৌ ন সংবদেতে ইতি।

⁽৬৫) অনেকার্থথাদাত্নাং তিষ্ঠতিরত্র হৃদাঞ্জনেহর্থে বর্ততে। তিষ্ঠত ইতি শিতীত্যাদিনা তিষ্ঠাদেশঃ বিকর্মন্তেড়া ইতি শাঘাদেশক্**জীলা ইতি** সম্পানান্।

७७। উদোহনূর্দ্বঘটনে।

ৰুটুম উত্তিষ্ঠতে তদৰ্থে মটত ইতাৰ্থ:। অনৃধি ইতি কিম্ ? আসনাজ্ঞিষ্ঠতি। ঘটন ইতি কিম্ ? গ্ৰামাচ্ছতমুভিষ্ঠিত উৎ-প্ৰতে ইতাৰ্থ:।

৬৭। উপাদেবপূজাগাম্। আদিত্যমুপতিষ্ঠতে পুজয়তীত্যর্থঃ।

৬৮। সঙ্গতি মৈত্রীকরণয়োশ্চ।
গঙ্গা যমুনামুপতিষ্ঠতে রথিকো রথিকানুপতিষ্ঠতে উপশ্লিষ্যতীদ্ ত্যর্থঃ। দূরস্থেহপীশ্রমুপতিষ্ঠতে মৈত্রাঁৎ করোতীত্যর্থঃ।

৬৯। মন্ত্রকরণে। "যে স্ব্যমুপতিষ্ঠতে মত্তিঃ সন্ধানেয়ং দিজাঃ" ইতি ভট্টিঃ। মন্ত্র-করণ ইতি কিম্ ? ভর্গারমুপতিষ্ঠতি যৌবনেন।

⁽৬৬)। উন উত্তর্গন্ধনতনে উর্জবাতিরিক্তে ঘটনেহর্থে বর্ত্তনানিত্তিতে কর্ত্তরায়েন্দ্রন্থন তবতি। অনুর্ধ্বটন ইতি প্র্যাণাসাপ্রেণান্দ্রপটনসদৃশী ইতন্ততো গমনাজ্যিকা চেষ্টেবাক্ত বিষয়ঃ। অতএবাহ্
প্রানাক্তত্ত্বতিটিটিত উৎপদ্মতে ইতার্থঃ এতেনারাঘটনার্থতা উক্তা
উৎপত্তেরচেষ্টারূপহাং তদর্থে ঘটত ইতার্থ ইতি তদর্থে তবিষয়ে অর্থশনোহয়ং বিষয়বাটা অতএব কটুম ইতাত্র বৈষয়িকাদ্যাধিকরণ্মিত্যধিকরশসংজ্ঞায়াং সপ্রমী।

⁽ ৬৭)। উপাত্তরাত্তিইতের্দেবপূজায়াং কর্ত্তয়ান্মনেপদং ভবতি।

⁽৬৮)। সঙ্গতিকরণে মৈত্রীকরণে চ বর্ত্তমান্ত্রপপূর্কান্তিইডেঃ কর্ত্তগায়নে পদ্ধ ভবতি। সঙ্গতিঃ দংশ্লেষঃ মৈত্রী দ্রস্থভাপি সংভব-তাঁতি সঙ্গতিমৈত্রীকরণয়োভেদঃ। এতদেব দ্রস্থোহপীত্যনের স্পষ্টঃ ক্রতবান্।

⁽৬৯)। মন্ত্র: করণং ক্রিয়াতিদাধনং যক্ত ভগারকরণং ভবিরুর্বে

ু ৭০। ে প্রতিজ্ঞায়াম্।

भक्तः নিত্যমাতিষ্ঠতে অভ্যূপগচন্থভীত্যর্থঃ।

१)। शर्मा विवामश्रमनिर्वातं ।

"ছয়ি মন্তিষ্ঠতে প্রীতিঃ ইতি" ভট্টি:। অম্মাকং প্রীতিস্থয়ি তিষ্ঠতী ছামেব প্রমাণং করোতীত্যর্থ:। এবং, "সংশয্য কর্ণাদিয়ু তিষ্ঠতে যঃ" ইতি ভারবি:।

१२। मार्गा

অয়ং পস্থাঃ শ্রম্পতিষ্ঠতে।

৭০। অকর্মকাৎ।

উপতিষ্ঠতে ভোকুম্।

98। লিপ্সায়াং বা। । ভিক্কো ব্রাহ্মণকুলমুপতিষ্ঠতে উপতিষ্ঠতি।

- (৭ ॰)। প্রতিছা অভ্যাপগমোহঙ্গীকরণমিতার্থ: প্রতিজ্ঞায়ামূর্থে বর্ত্তনীনান্তিষ্ঠতে: কর্ণ্যাগ্রনেপদং ভবতি। আঙ্রোয়মর্থো ছোতাতে।
- (१) । বিবাদপদখ্য বিবোধস্থানশ্য নির্ণয়ো বশ্মিন্ স বিবাদপদনির্ণ : মুনাস্থ উচ্চতে তশ্মিন্ গমো তিইতেঃ কর্ত্র্যাশ্মনেপদং ভবতি।
 তিইতেবজাবস্থানমেবার্থঃ। মধাস্থক্ক তদিষ্য এতছ্দাহ্রণেনৈব স্পৃষ্টইং
 ক্ষতবান।
 - (१२)। উপাত্তবান্তিঠতেঃ কর্ত্তব্যাত্মনেপদং-ভবতি মার্নে বাচ্যে।
- (৭০)। উপাত্তরান্তিঠতেরকর্ণাকক্রিয়াবচনাৎ কর্ত্তগা**স্থনেপদ্ধ** উবতি। সকর্ণান্ত্_য় রাজানমুপতিঠতি।
- (48)। উপাহত্তরাতিষ্ঠতের্শিপায়াং গম্যানায়াং কর্ত্তগান্ধনেপদং বা ধবতি। উপাদেবপুদায়াবিত্যারভা উপপূর্কাদেব তিষ্ঠতেরান্ধনে-

বর্তমানাত্পপৃষ্ঠান্তির্চনে: কর্ত্র্যান্তনেপদং ভবতি। মন্ত্রপদেন বেদার্মাতা ক্ষাহোহিত্তীয়ন্তে। যে হর্যানুপতিষ্ঠন্তে মন্ত্রৈরিতি ঋগভিবিতার্থ: নাত্র দেবপূজার্থ:। ভর্ত্তারমিত্যাদি অত্র যৌবনস্ত ক্বণত্বম্। ক্বণ ইতি কিম্? সাবিত্রীমৃপতিষ্ঠতি।

१८। लिङ्लूड्रमयू मृडः।

কচিদ্ভাব্যর্থো ভূতবদঙ্গীক্রিয়তে ইতি লিঙ্লুঙ্শের সংস্থ মৃঙঃ কন্তর্য্যাত্মনেপদং ভবতি। মৃধীষ্ট অমৃত দ্রিয়তে।

१५। छाप्तद्रशक्तापी।

অপহ্যবাদাবর্থে বর্ত্তমানাজ্জানাত্যাদেরুত্তরে কর্ত্ত্যাত্মনেপদং ভবতি। শতমপজানীতে অপহুত ইতার্থ:।

পদবিধানমেত্মধ্যে যত্তু প্রতিজ্ঞামিতি গম্যে বিবাদপদনির্ণয় ইতি লক্ষণছবমুক্তং তদসঙ্গতমিব প্রতিভাষতে তত্মাং স্থোক্ষয়ঞ্জনাদাবিত্যভানস্তরমেত্রজ্ঞপ্দয়ং পূর্বমাসীল্লিপিকর প্রমানাদিহাগতমিতি লক্ষ্যতে।

- (৭৫)। নতু অনেনাত্মনেপদে নিয়তে লিঙাদিভিভনৈতবাং লিঙাদিয়ু সংস্থ অনেনাত্মনেপন্নিয়ম ইতীতরেতবাপ্রমিবিরোধমাশক্ষমানমাহ্
 কচিন্নাব্যর্থা ভূতবদস্পাক্রিয়ত ইতি লিঙাদয়ো যত্র ভবিষান্তি তত্ত্বৈব ভূতা
 ইতি স্বীকৃতা ইতি নিয়মোহবিক্ষ এব ঙিখাদেবাত্মনেপদে সিদ্ধে
 আন্থনেপদবিধানং নিয়মার্থং লিঙাদিষেব মৃঙধাতোবাত্মনেপদং ভবতি
 নাল্লতা। তেন মরিষাতি অমরিষাৎ মুম্বতি। যথেবং ঙিৎকরণং
 কিমর্থমিনেবাত্মনেপদসিষ্ণেঃ সত্যং ভাষায়াং বিষয়েহনর্থকং কিন্তু গণ্কার এবাক্সপ্রয়াক্তব্যঃ। অরম্ভ স্ক্রকারো নতু গণকারঃ। মৃষীষ্ট
 ইতি ইচ্ক্রাদিত্যাদিনা বহম অমৃত্ততি ক্ষনশ্যত্মনে দিন্নিতি দিচ্।
 আঙ্য়াদদ্ভ্যাং স্থানীঙশ্চাঙেব ইতি সিচো লুক্। ফ্রিন্ত ইতি শৃক্তদাদেরিতি শঃ রিদ্তো যেচেতি ক্ষারশ্য রিকারঃ। খেব প্রবৃদ্ধে দম্বে ছিল্লে
 কর্পে সৈবেতি শ্রিভাষানিয়্মাৎ মৃঙ ক্ষতোরিয়েহপপি ধাতুয়মতোরুদ্ধান্ধিত্যাদিনা ইয়াদেশঃ।
- (१७)। অপ ছবো গোপনমপ নাপ: অপপূর্মন্ত জানাতের মির্থে বৃত্তিঃ। শত্মপজানীতে ইতি জ্ঞা অববোধনে ভ্রো ভাশ্চেডি নাৎ জাদেশত নাহ্বাদেরিত্যাদিনা ঈকার:। অনপছবে তু। ন তং কিঞ্ছি দ্বশি জানাদি।

ু ৭৭। সংপ্রতিভ্যামন্মরণে।

শতং সংজ্ঞানীতে ব্যবহরতীত্যর্থ:। , অস্মরণ ইতি কিম্ ? পুশ্রুং সংজ্ঞানাতি উৎকণ্ঠত ইত্যর্থঃ।

१४। जूनक्तित्रशान्त ।

ভক্তং ভূঙ্কে স্থমুপভূঙ্কে। "বুভূজে পৃথিবীপালঃ পৃথিবীমেব কেবলাম্" ইতি রযু:। উপভূক্তবানিত্যর্থ:। পালনে ভূ—ভূনক্তি পৃথিবীং রাজা পালয়তীত্যর্থ:।

৭৯। তপস্তপোহর্জ্ঞনে যক্ চ। তপস্তপ্যতে তাপসং তপোহর্জ্ঞয়তীত্যর্থ:।

- (११)। সম্ প্রতি ইত্যেতাভাাম্ত্রাজ্ঞানাতেরশ্বনেথর্থে বর্ত্তমানাৎ কর্ত্যাত্মনেপদং ভবতি। প্রং সংজ্ঞানাতীতি সংজ্ঞোরা কর্ম্প
 ইতি তৃতীয়া ভাবপক্ষে দ্বিতীয়া উৎকণ্ঠত ইত্যর্থ ইত্যনেন শ্বরণমিতি উৎকণ্ঠাশ্বরণমিতি স্টিতন্ অতাংহুৎকণ্ঠাশ্বরণে আয়নেপদং ভবত্যেব।
 শ্বরণমাত্র এবাশ্বনেপদং ন ভবতীতি বহুনাং সম্প্রম।
- (१৮)। ভ্নক্তেরিতি নির্দেশো ভুজ্পালনাভাবহার্রোরিতাঞ্চ রৌধাদিকত্য গ্রহণার্থ: তেন ভুজকৌটলা ইভ্যন্ত তৌদাদিকত্ম গ্রহণং ন ভবতি। পালনব্যতিরিকেহর্থে বর্তমানাদ্দকেরাম্বনেপদং ভবতি। ভক্তং ভূঙ্জে ইতি ভক্ষণার্থোহত্র ভূজিঃ স্থবমুপভূঙ্ক ইত্যাদাবুণ-ভোগার্থো ভূজিঃ।
- (৭৯)। তপ ধূপ সন্তাপে ইত্যস্মান্তপোহর্জনেহর্থে বর্তমানাদাত্মনেপ পদং ভবতি কর্ত্তরি বাচ্যে। তৎসন্নিযোগে যক্ চ। যকঃ ককারকরণং ষণ্ডাবকর্মণোরিতানেন বিহিত্ত যকো বিধানমেতদিতি হচনার্থং জেন চতুর্বে বগ্তবতি। অত্র কিথানক্ত চ প্রয়োজনমেতদেব কর্তনি, বক্ খণা স্থাৎ। তণোহর্জন ইতি কিম্? তপাংদি তাপসাংস্থপতি হঃশমন্তীদ ভার্থঃ। উত্তপতি স্বর্থাং স্বর্ণকারঃ তথ্য করোজীতার্থঃ।

৮০। নানোর্যগিত্যেকে। অমুতপতে।

৮)। मनः मन्द्रा

শপতে ।

৮২। নাথেরাশিষ।

পুত্ৰং নাথতে।

৮০। জোহকর্মকাৎ। মধুনো জানীতে জ্ঞাহা প্রবর্তত ইত্যর্থ:।

- (৮০)। অনুপূর্কাতপোহর্জনেহর্থে বর্তমানাত্তপতেঃ কর্ত্তগ্যান্থনে-পদং ভবতি : তৎসন্ধিযোগে যক ন ভবতীধ্যেকে বদস্কি।
- (৮১)। শপ আক্রোশ ইত্যক্ষাং শপথেহরে বর্ত্তমানানাম্বনেপদং ভবতি কর্ত্তরি বাচ্যে। বাচা শরীরম্পর্শনং শপথঃ। শপথ ইতি কিম্ট মিরং শপতি আক্রোশতীত্যর্থঃ।
- (৮২)। অন্তলাতে খালা খনেপদৈ সিন্ধে নিয়মার্থং বচনম্। নাথু
 নাধ্ যাচ্ ক্রোপতাপৈ গ্র্যানীঃ খিত্যে তথা লানি ব্যেবার্থে বর্ত্তমানাং কর্ত্ত্যান
 ন্মনেপদং ভবতি। ইপ্রাশংসনম্ আনীঃ। নাপত ইতি কিমপ্যেতদপে
 ক্ষিতং বৃস্ত মে ভূয়াদিত্যাশংসাং করোতী তার্থঃ। আশিষীতি কিম্
 ধ্বু নাথাতি যাচত ইতার্থঃ। যাচনে ২প্যান্ধনেপদং কচিদ্ শতে তং চিন্তাম্।
 তথাচ ভারবিঃ, "মার্গণৈরথ তব প্রয়োজনং নাখসে কিম্পতিং ন ভূত্তঃ"
- (৮০)। জ্ঞানেরপঞ্বালবি ন্সানন্তর্মেতল্লকণং ন কৃত্যু অর্থ্ বিশেষ্থেনের বিধানাভাকাদকর্মকলিয়াবচনাচ্ছানাতেঃ কর্ত্বসান্ধনেপদ জ্বতি। মধুনো জানীত ইতি জোহ প্রাদেরিত্যনের কর্ত্বজিয়াকে আন্ধনেপদং প্রাপ্তনের অকর্ত্বিভিন্নকলে অনেন বিধীয়তে। জাম প্রবর্তিত ইত্যর্থ ইত্যানেন সক্ষীক্তিব জানাতেবর্থবিশেষে অকর্মকতা দর্শিতা। তথাহি, জ্ঞানপ্রিবিশের প্রত্তিত বিদ্বাহী বদা জানাতির্বর্ততে তদা প্রবর্তনিজিয়ায়াং মধুনঃ ক্রণ্ডা ন ও কর্মতা অত্ত্রব জ্ঞানবার্থিত করণাদিত্যনেন করণে যতা ভ্রমণ নিজ্ঞান করণে যতা ভ্রমণ

দি । নাপ্রবর্ত্তনার্থাৎ।

"সংভবিধ্যাব একস্থামভিজানাসি মাতরি" ইতি ভট্টি:।

৮৫। শদশ্চতুরু ।

৮৬। বোপদগাদূহাস্মত্যোঃ।

সমূহতি সমূহতে উদস্যতি উদসাতে। অনহোরকর্মকর্ম বাজ্বনেপদমিতাল্যে তদযুক্তম্। তথাচ, ''সন্ততং তিমিরমিন্দুরুদাসে
ইতি" ভারবিঃ।

· ৮৭। দানেহশিউব্যবহারে গম্যে চতুর্থ্যর্থে ভৃতীয়াচ।

দাস্যা মালাং সংপ্রযক্ততে কামুকঃ দাস্যে মালাং দদাতীত্যর্থং।

⁽৮৪) শ অকর্মকাজ্ঞানাতেবিহিত্যায়নেপদম্ অপ্রবর্তনার্থার ভবতি প্রবর্তনার্থানে ভবতীতার্থঃ। সংভবিষ্যাব একস্থামভিজ্ঞানাসি মাতকীভাগ্রাকর্মকো জানাতিউবতোর নতু প্রবর্তনার্থঃ। তথাচ, ভাষ্য উক্তম্।
ভাজিজানাসি দেবদত্ত কাশ্মীরে নিবৎস্থাম ইতি।

⁽৮৫)। শদু শাতন ইতাশালড়াদিয় চতুর্ কর্তব্যের ক্রীয়াস্থনে-পদং ভবতি। শীয়ত হাত শদসদোঃ শীয়সাদাবিতি শীয়াদেশঃ। চতু-মিতি কিম্? শংস্কৃতি।

⁽৮%)। উপসর্গাহত্তরয়োরহ বিতর্কে অস্ত ক্ষেপণে ইত্যেতরো-য়াশ্বনেপদং বা ভবতি কর্ত্তরি বাচ্যে অস্ততীতি, নির্দেশোহস ভূবি ইতক্ত্য নিরাসার্থঃ। অনুযোরিভাদিনা চন্দ্রমতে দূর্যমাহ।

⁽৮৭)। দাণ দানে ইত্যাণশিপ্তব্যবহারে গ্রামানে আত্মনেশদং ভবতি কর্ত্তরি বাচ্যে। চতুর্থার্থে তৃতীয়া চ। দাভা মালাং সংপ্রথচ্ছতে কামুক ইতি কামুক: সন্ দাভৈ মালাং দদাতীত্যর্থ: দাভৈ মালাদানমশিপ্তব্যবহার:।

৮৮। অপাৎ কির*চতুম্পাৎপক্ষিহর্ষাদে হুট্ চ কৃত্যাপি। অপক্ষিরতে রুষভো ছান্টঃ।

৮৯। জীবিকায়াম্। অপস্কিরতে কুকুটো ভক্ষার্গী।

৯০। আশ্রয়করণে। অপস্কিরতে শ্বা শয়নার্থী। বুষভো হুম্টোহপক্ষীর্য্য গতঃ।

(৮৮।৮১।৯০)। অপাছত্তরশ্বং কৃবিক্ষেপ ইতস্বাচ্চতুপদাং পক্ষিণাং চ হর্ষে আদিপদেন জীবিকায়াম্ আত্রয়করণে চ বিষয়ে কর্ত্তগা-স্থানেপদং ভবতি। স্কুট্ চ ক্বত্যপি ইতি অপরো যোগঃ। অপান্তভরঃ কিরভেরাক্সনেপদবিষয়ে ক্লবিষয়ে চ চতুম্পাৎপক্ষিহর্যাদৌ বিষয়ে হছ-ভবতি। একযোগে তু সাম্মনেপদর্মৎ কিরতেরুত্তরঃ স্থড়পি ভবতাতি সন্দেহঃ তাৎ। চতুম্পাদিতি স্থসংখ্যাগূঢ়াচ্চেতি পাদফাল্লুক্। অপঞ্চিরতে বুনভো হাই ইতি কিরতের্বিকেপ এবার্থ: হর্ষাদিস্ত তহ্ম বিষয়: অপ্সত্তীর্যা গত ইতি কৈ কক্তিয়োরিত্যাদিনা জ্বা প্রাদেশচ্ সমাদে ইতি জ্বা যচ্ শ্পদির্ ইতি ইর্ রাস্তাদেরিত্যাদিনা দীর্ঘ:। চতুম্পাৎ পক্ষীতি কিম্ ? অপকিরতি মনুষ্য:। হর্ষাদাবিতি কিম্? অপকিরতি শ্বা ওদনপিতে मानिज्युश्वः जृत्था हि नित्रामन ऋष्टि। छवजीठि जृत्विकार्याः हार्या नक् সাক্ষাছ্লৈনোক্তঃ। স্থটপ্তকারো লিটি সস্ট্রুক্ত ইত্যত্র সন্দেহনিরা-সার্থ:। অভ্যথোপসর্গস্ত সোরপি গ্রহণমিতি শঙ্কা স্থাৎ এবঞ্চ সতি স্বচক্ষবেত্যত্র ইঙ্ স্থাৎ। পূর্দ্যং ধাতৃরূপসর্গেণ মৃদ্ধাতে পশ্চাৎ নাধ-নেনেতি অপাৎ কিরতে: অপস্কিরতে ইত্যাদৌ প্রথমং স্টু i সূত্যং ধাতোরবয়বো বিধীয়তে তেন অপচন্ধরে ইত্যাদৌ স্থট: প্রাক্ ধিক্জিঃ অপশ্বিরত ইত্যাদৌ স্টঃ প্রাক্ অভাগমঃ এতচ্চ লিভ্সিচোরাম্বনেপদে সংযোগাদদস্তত সম্ভট্কঞবর্জমিতি সম্ভটকঞ্পতিষেধেন জাপিতম্। यना स्रोधायवग्रदा न खर्बा जना धार्काः मः रागानिया जानारम्य রধাদিখাভাবে প্রাপ্তে সম্ভূকুঞ্চবর্জমিভানর্থকং স্থাৎ করোতি চ মং তঙ্গু প্রাপয়তি স্কুড়য়ং ধাত্তবয়ব ইতি।

- ৯১। ত্রাণম্চোপাল্ল্রর্থযোগে।
 ভিত্তিপস্কারং লুনাতি উপস্কারং ছিনত্তি। বিক্ষিপ্য লুনাতীত্যর্থঃ।
 - ৯২। প্রতেশ্চ হিংসামুবন্ধিবিক্ষেপে। উপস্কীর্ণং প্রতিস্কীর্ণম্।
 - ৯৩। অবস্করো বিষ্ঠায়াম।
 - ৯৪। অপস্করে। রথাঙ্গে।
 - ৯৫। বিষ্কিরঃ পক্ষিণি যত্ত্বপ্ধ বিকির*চ।
 - (৯২)। পূর্ব্বোক্তার্থাভাবাদপ্রাপ্তে বিধানম্। বর্থযোগে সভি উপাছত্তরঃ কিরতেঃ স্থভ্তবতি। তহ্য ক্রা ণম্চ সন্নিধোগশিষ্টং বিধান নম্। লবনং লাঃ লারবেং। ধেষাং ছতে বর্থাঃ। বর্থযোগ ইতি কিম্ ? উপকিরতি পুশুম্।
 - (১২)। চকার উপ ইত্যস্তামুকর্ষণার্থঃ হিংসামুবন্ধিনি বিক্ষেপে এইমানস্থ কির্টিতঃ উপাৎ প্রতেশ্চোত্তরঃ মুড্ ভবতি। উপশ্বীগমিতি জ্বান্তদিত্যাদিনা ইঙ্ ভাবঃ শ্পদির্ ইতি ইব্ রাস্তাদেরিত্যাদিনা দীর্ঘঃ। জ্বান্তব্যাদিনা ভ্রম্ম নং প্রম্। তথা বিক্ষিপ্তং যথা হিংসামন্ত্রগ্লতি। তথাচ, "উরোবিদারং প্রতিচ্প্তরে নথৈং" ইতি মাঘঃ।
 - (৯০)। অবস্থর ইতি নিপাতাতে বিষ্ঠায়াং বাচ্যায়াম্। **অবস্থর**-ইতি স্কদ্ভাদেও ইতি ক**শ্বৰি ৬ঃ অবাহত্তরঃ স্কট্ নিপাতাতে বিষ্ঠায়াম্।** অন্তর্জ্ঞ — অবক্রঃ।
 - (৯৪°)। অপস্কর ইতি নিগাতাতে রথাঙ্গে ৰাচ্যে। তথৈব কিরতেও র অপাহতত্ত্বঃ স্মট নিপাতাতে।
- (৯৫)। বিষ্ণির ইতি নিপাতাতে বিকিরণ্ট পক্ষিণি বাচ্যে ধরং
 চ ইজুপান্ত ইত্যাদিনা কর্ত্তরি বিহিতত্বাই প্রত্যায়ন্ত কিরতে: প্রয়োধে
 বেক্তরঃ স্মৃট্ নিপাতাতে তন্মিন্ মূর্দ্ধন্যাদেশণ্চ পরেই স্মৃটণ্টেতি যত্ত্বমুক্তমিহ ন প্রাদিতি বত্তবিধানম্। বিষ্ণির ইতি নির্দেশাদেব মূর্দ্ধন্যরিপাতনে সিদ্ধে বত্তকেতি কৃত্ত মন্দ্রিয়াং কটিতি প্রতিপত্যর্থম্।

- ৯৬। সংপর্গ্যপেভ্যঃ ক্রঞো ভূষণে। সংস্কর্ত্তা উপস্কর্তা। অভূষণে তু—সংকরোঙি পরিকর্ত্তী-তি উপকরোতি।
- ৯৭। সমোহভূষণেহপি কচিদিত্যেক। সংস্কৃত্মনিত্যম্।

৯৮। সমূহে চ। অস্মাকং সংস্কৃতং পরিক্তং উপস্কৃতং সমূহ ইত্যর্থঃ।

৯৯। উপাদ্গুণোৎকর্ষবিকৃতবাক্যাধ্যাহারেরু। পটস্থোপস্কুকতে গুণান্তরাধানং করোতীতার্থ: উপস্তং ভূঙ্কে উপস্তুমধীতে।

বিকির: পক্ষিণি মত্বঞ্চ বেতি ক্তেহপি পক্লিণি বিকির ইতি পভাত এব তথাপি বিকির ইতি কৃতং তদপি পক্ষিণোহন্যত্র ন ভবর্ত।তি স্ট্যনার্থব্।

- (৯৬)। সম্পরি উপ ইত্যেতেন্ডা উত্তনো দ্যণেংর্থে করোতে: স্কুত্নবতি। সংস্কর্তেতি সমোনঃ স্কুটি লোপো বেতি মকারত সাম্স্বার-স্কারঃ। পরিষ্ক্তেতি পরে: স্কুটিন্টেডি মুর্নিটাঃ।
- (৯৭)। সম উত্তরান ভূষণেহিপি করোতে: স্কৃত্বতি। কচিদিত্যেক ইতি বেহপি স্কটমিচ্ছস্তি তেহপানর্কবিষয়মিতি হচনার কচিদিন্তি
 কৃত্য্। নংকৃত্যনি তামিতি ফার্যাপর্য্যায়োহত্র সংকৃত্শকঃ কার্যাং জ্ব্যাপ্তনিত্যমিত্যর্থ:। অভূষণেহর্থাস্তরেহিপি দৃষ্যতে। তথাচ, দত উৎকর্যাধানং
 সংস্কার ইতি জ্যাদিত্যাদয়:।
- (৯৮)। সম্পরি উপ ইত্যেতেতা উত্তরঃ সমূহে চ করোতেঃ পুড্তবতি।
- (৯৯। ৫০০)। উপাত্তরো গুণোৎকর্যাদমর্থেনু করোতে: মুড্-ভরতি। লব্ধদত্তাকস্থার্থি পূর্মজালানামেব গুণানাং বৈশিষ্টাং গুণোৎ-কর্মণা বিকৃতং স্বরূপাদন্যথাভাব:। একদেশোদ্ভাবনেনৈব প্রাতীতি-সমুদার্যার্থপ্র বাক্যার্থপ্র স্থপ্রতিপত্তরে স্বরূপেণোপাদানং বাক্যাধ্যাহার:। পট্সোপস্কৃত ইতি কুঞাদে: সেবাদাবিতি প্রতিয়ত্ব ইত্যান্থনেপদম্।

- ্১০০। অস্ত্রাপীয়তে।
 - ১০১। আশ্চর্যামছুতে।
 - ১০২। স্বাম্পদং স্থানে প্রভুত্বে চ।
- ১০৩। গোপদমানগোদেবিত্তয়োঃ ষত্বঞ্গ গোপ্পদম্। গোপ্পদপ্রং রুফো দেবঃ গোপ্পদমাত্রং ক্ষেত্রং গোপ্পদং রাষ্ট্রং গাবঃ প্রপাতন্তেহিন্মিন্ রাষ্ট্রে।

১०८। क्ञुचूक्धनारक।

জ্ঞত্ত গুণোৎকর্ষে কৃঞ ইতি কর্মণি ষষ্টা। জ্ঞন্ত তাপীষাতে ইতি স্পষ্টমেব বির্ণোতি।

- (১০১)। আশ্চর্যামভীষ্টম্ ছ্বান্থতেংভিধেরে চর ভক্ষণে চ চরেরান্ত-শ্বাপ্তরো ইতি যঙ্আঙ্ উত্তরঃ স্কট্ নিপাত্যতে সম্প্তি সম্ভ শং। অত্ত ইতি কিম্ ? আচর্যাং কর্মশোভন্ম।
- (১০২)। আম্পদমভীষ্টং স্থানে প্রভূত্বে চাভিধেয়ে পদ গতৌ ক্লীবে-হপি পূজাদের্যন্তেতি হঃ ভো বা। আঙ উত্তরঃ স্বট্ নিপাতাতে।
- (১০০)। গোপদমানে গোদেবিতে চ বাচ্যে গোষ্পদমভাষ্টং কিনিছ নিপাত্যতে স্কট্ বহঞ্চ। গোষ্পদমাত্রং ক্ষেত্রং গোষ্পদপ্রং বৃষ্টো দেব ইজ্য-ভ্রাপি গোষ্পদশ্দেন পরিমানমভিনীয়তে অতএব তৎপূরণে বৃঃষ্টর্মন্মচাতে। গোষ্পদং রাষ্ট্রং গাবঃ প্রপদান্তেহয়িন্বাষ্ট্রইতি ততঃ গোভিঃ দেবিতং গোষ্পদমিত্যচাতে অবিদ্যুমানং গোষ্পদমিষ্ট্রিতি বছরীহিনাভাস্কাদস্তবেহপাগোষ্পদমিতি দিগতি।
- (১০৪)। কুস্তব্দুরবিত্যভীষ্টং ধন্তাকে বাচ্যে। তুম্কর্নাম ওবধি-ভেদং কুংনিতজ্বস্করিতি বথাকথঞ্জিং ব্যুৎপত্তিমাত্রেণ পলর্ত্তিঃ স্কৃত্র নিশীত্যতে। কুস্তব্দুর্বিতি ধন্তাকরামা ওবধিবিশেবং তৎকলমিতি কুস্তব্দুক্ পত্রে নির্দেশেন নপৃংসকলিক্ষমবিবক্ষিতং এতেনৌবধৌ বাচ্যায়াং পৃংলিক্ষ এব শব্দোহয়ং ফলে তু নপৃংসকলিক্ষঃ। যদা তু ভুস্কঃ কুৎসা বাচ্যা ওদা কুভুম্করিতি ভবতি।

১০৫। অপরস্পরাঃ ক্রিয়াসাততে। অপরস্পরা বহস্তি। সততঃ বহস্তীতার্থ:।

১०७। প্রস্কন্মহরিশ্চন্দ্রাবৃষ্টো।

১০৭। কান্ডীরমজন্তুন্দঞ্চ নগরে।

১০৮। কারস্করো রুকে।

১০৯। পারস্করো দেশে।

১४०। मक्रद्धा (वर्रा)।

১১১। মন্ধরী পরিব্রাজকে।

- ১০৬)। প্রকর ইতি হরিশ্চল ইত্যেতো ইয়োতে বথে বাচো।

 সভত্র নিপাভাতে। করং পাপং প্রগভং করমন্তেতি প্রস্কর ইতি হরিরিধ

 চলে হরিশ্চল: ইয়মপি যথাকথঞ্জিং ব্যুৎপত্তিঃ। ঋষাবিতি কিম্ ? প্রগভং
 করমন্যাদেশাৎ ব প্রকরঃ হরিচলো মাণবকঃ।
- (২০৭)। কান্তীরমিতি অজস্বন্দমিতি চেষাতে নগরে বাচ্যে ঈষজীর-মিতি বাক্যে ঈষদর্থেহলক্ষ্যাদৌ চেতি কুশকস্ত স্থানে কাদেশঃ। অজস্তের ভূলমস্তেতি ব্যুৎগত্তিরেব ক্রিয়তে নগরন্ত বাচাং স্কট্ নিপাত্যতে।
- (১০৮)। কারস্কর ইতীষ্তে বৃক্ষে বাচ্যে। কারং করোঙীতি নিশানেঃ ক্লঞ ইতি টঙ্স্বট্নিপাতাতে।
- (১০৯)। পারস্বর ইতীয়তে দেশে বাচ্যে। পারং করোজীকি হেমালবিত্যাদিনা কুঞ্জিঙে, ইতি স্কট্নিপাত্ত্তে।
- (১১০)। মন্তর ইতীব্যতে বেণো বাচ্যে। মকরশকো জলজন্ধবিশেষ-বাচকঃ তত্র স্কট্নিপাত্যতে।
 - (>>>)। मकतो हेलोगाउ পরিব্রাজকে বাচ্চে। मकत्रनकांतिन्

⁽১০৫)। অপরস্পরা ইতীয়তে ক্রিরাসাততো গ্রামানে। অপরে চ পরে চেতি দ্বদ্যমাসে স্থট্ নিপাতাড়ে। রহনক্রিরায়াং যাততাম্ক্রাভিধীরতে। ক্রিরাসাততা ইতি কিম্? অপরপরাং সার্থা গছন্তি অপরে পরে চ সার্থাঃ স্কুদ্রে গছন্তীতার্থঃ। দক্তে চেতি সার্মনামকসংখ্যানিষ্কেঃ।

- ३५३। जऋतत्कारत।
- ১১৩। ব্রহম্পতিগুরো তলোপশ্চ।
- ১১৪। প্রান্ত ম্পতে গবি কর্ত্তরি। শ্রস্তুম্পতি গোঁ হিনস্তীত্যর্থঃ। গবীতি কিম্ ? প্রতুম্পতি ব্যাগ্রঃ। কর্ত্তরীতি কিম্ ? প্রতুপাতে গোঃ।
- ১১৫। প্রতিষ্কান্য দূতভ্ত্যা এগেষু ষত্ত্ব। কশিরত্র সৌত্রন্তালবাস্তঃ।

১১৬। প্রায়শ্চিত্রম।

প্রভাগঃ তত্র স্কট্ নিপাত্যতে। কশ্চিদাহ মাঙ্যুপপদে করোতে: করণে গুপ্রতায়ো নিপাত্যতে স্কট্ মাঙো হ্রশ্বহং চ মা ক্রিয়তে প্রতিবিধাতে যেন দ মন্বরো বেণুঃ। বেণুগ্রহণঞ্চ অর্থপ্রদর্ম্মার্থম্ অন্তত্তাপি ভবতি। মন্বরো দণ্ডঃ। পরিব্রাজকেহপ্যর্থে তথৈব ইনত্র নিপাত্যতে ইতি বিশেষঃ। যো হি মাকরণশীলো ভবতি দ এবনাহ মা কুক্ত কণ্ডাণি শান্তিরেব প্রেয়দী ভবতি।

- (১১২)। তম্বর ইতীয়াতে চৌরে বাচ্যে। তৎ করোতীতি ভম্বরঃ 'নিশাদে: রুঞ ইতি উঙ্ স্থট্ তলোপণ্ড দিপাত্যতেহন্ত্রত তৎকরঃ।
- (১১৩)। বৃহস্পতিরিতীষ্টতে গুরৌ বাচ্যে। বৃহতাং পতির্হ-স্পতিরিতি স্কট্ তলুক্ চ মিপাতাতে।
- (১১৪)। প্রান্তরস্কল্পতৌ পরে স্কৃট্ নিপাতাতে পরি কর্তরি
 বাচ্যে। প্রস্পতীতি তুপ্ তুন্প্ ক্রপ্ ক্রন্প্ তুক্ তুন্ক্ ক্রেক্
 হিংসার্থা: ভাদিক্বদাদিশ্চ তিও্ তুদাদিখাৎ শঃ উপাস্তস্ত বর্গ ইতি নকারস্ত মঁকারঃ। প্রতুপাত ইতি ভাবকর্দগোরাত্মনে ইত্যাত্মনেপদং যগ্ভাবকর্মণোরিতি যক্ হলুপাস্তেত্যাদিনা নকারলুক্।
 - (>>e)। প্রতিকশ ইতি নিপাতাতে দৃতে ভৃত্যে দগ্রগে চ বাচ্যে।
 পচাদিয়াৎ ডে কৃতে স্নট্ নিপাতাতে ৰত্বক কস্ গতিশাতনয়ারিতি দন্তান্তো
 ভাদিগণে পঠাতেহত আহ কশিরত্র সৌত্রন্তালব্যান্ত ইতি। দৃতভৃত্যাগ্রগেমিতি কিম্
 গু প্রতিগতঃ কশাং প্রতিকশোহয়ঃ কশা বল্গা।
 - (১১৬)। প্রায়শ্চিত্তমিতীয়াতে প্রায়ংশকাচ্চিত্তশব্দে পরে স্কৃট্

- ১১৭। বনম্পতিঃ।
- ১১৮। রথষ্যা नদ্যাং ষত্বঞ্চ।
- ১১৯। কিন্ধুকিঞ্চিম্বয়োশ্চ।
- ১২০। পরাচ্ছতসহস্রয়োঃ।

পরিমাণং শতাদূর্দ্ধং পরশ্শতমুদাহৃতং পরস্বহস্রম্। "ব্রহ্মাদয়ো ব্রহ্মহিতায় তপ্তা পরস্বহস্রাঃ শরদস্তপাংসি" ইতি মহাবীরচবিতম্।

১২১। অন্যোহন্যঃ পরস্পরঃ।

নিপাত্যতে। চিত্তী সংস্থানে ক্রং চিত্তং প্রায় ইতি পুণাং চিত্তমিতি নিশ্চয়ং তদ্বেন জ্ঞাপয়তি তৎ প্রায়শিত্তমিতি প্রায় ইতি পাপং চিত্তং নিশ্চয়ং পাপম্ অপনয়তে যেন তৎ প্রায়শিত্তমিতি ধাতৃপারায়ণং, প্রায়োনাত তপং প্রোক্রং চিত্তং নিশ্চয় উন্যতে তপোনিশ্রসংযুক্তং প্রায়শ্চিত্তং বিছবুধা ইতি।

- (১১৭)। বনম্পতিরিতি নিপাত্যতে। বনজ পতির্বনম্পতি: বনা-ছত্তর: পতিশব্দে পরে স্কট্ নিপাত্যতে।
- (১১৮)। রণষা ইতীয়তে ষত্বঞ্জ নভামভিধেয়ায়াম্। রপং যাতীতি যা প্রাপণে আদন্তাদমাদেরপ্রাদেরিত্যঙ্কদচীত্যাদিনা আকারসুক্ স্লট্ ষত্বখ নিপাত্যতে।
- (১১৯)। চকার: বত্বানুকর্ষণার্থ: কিন্ধু কিনিক্রোণ্ড সুট্ বত্বঞ্চলপাত্তে। কিং শব্দ ক্ৎসায়াং কু: পৃথিব্যাং স্থট্ মলুক্ বত্বক্ষ নিপাত্তে। কিন্তু পরিমাণবিশেষ:। কিনিক্রেতি কিং কিংন্ধাতাতি আদস্তাদ্দাদেরপ্রাদেরিত্যত সুট্ মলুক্ বত্বক নিপাত্যতে কিনিকা গুহা।
- (১২০)। পরশকাত্তরঃ শতসহস্ররোঃ পররোঃ স্ট্ নিগাত্যতে। প শতাৎ পরং পরশ্শতং পরস্মহস্রমিতি মুক্তাদেরাকৃতিগণতাং পঞ্চমী-তৎপুক্ষা। রাজ্ঞদন্তাদিছাৎ পরনিশাতঃ পরোহযুতং পরোলকং পরঃ-কোটাতি চ রূপর্যাকরঃ।
- (১৯১)। অন্তোহগ্যং পরস্পর ইতি চেন্যতে সর্বান্য ইত্যাদিনা বিক্তিং বিক্তে হুট নিপাততে।

_ ১২২। অপ্রত্যক্ষে পরোহক্ষমিত্যাদি।

১২৩। সমোহকর্মগমাদেঃ।

দিংপূর্ববাদকর্ম্মকাদগমাদেঃ কর্ত্তগ্যান্থানেপদং ভবতি। সংগচ্ছতে দম্চছতে সংপৃচ্ছতে সংস্বরতে সংশৃণুতে সংবিত্তে সংপশ্যতে ঋ সম্বীষ্ট।

১২৪। স্বাঙ্গকর্মকান্সোদ্বিতপাং যমহনঃ। উত্তপতে রবিঃ বিভপতে স্বপাদম্ আযচ্ছতে আহতে স্থলির:।

(১২২)। অনতাকে পরোহক্ষমিতীবাতে। অক্ষাৎ পরং পরোহক্ষমিতি নিপাতাতে স্বট্ অপ্রতাক্ষে বাচ্যে। যৎ প্রত্যক্ষং ন ভবতি
পরমায়াদি তদভিধীয়তে পূর্ব্বৎ পঞ্চমীতৎপূরুষঃ পরনিপাত । অক্ষি
অক্ষি পরি পরোহক্ষমিতি পরেঃ পীরণ্ডেতাবায়ীভাবে অৎ সমাসাস্তঃ পরোহক্ষশনঃ সমাসপাদে বাৎপাদনীয়ঃ তেন তু যৎ প্রত্যক্ষমেবাক্ষা ন গৃহীতং
তদভিবায়তে। অমুমেবার্থভেদমুদ্ভাবয়িত্বং প্রত্যক্ষ পরোহক্ষমিতাক্তম্ ।
স্কটঃ উত্তরপদভক্তরেন পদাস্ত রাভাবাৎ সর্ব্বত্ত বিস্বর্গাভাবঃ । অত্যোহলুপরোহক্ষাদো তু বিসর্বোহপি নিপাতাতে ওরতাত্যকাদাবিতাাকারঃ ।
ইত্যপক্ষেপাদাগতং স্কুরিধানং সমাপ্য প্রক্রান্তমেবায়নেশদং দশ্রতি।

(১২৩)। সঙ্গদ্ধত ইতি শিতীত্যাদিনা গচ্ছাদেশঃ সম্চ্ছৃত ইতি প্রচ্ছ গতান্ত্রিরপ্রশাম্থিতাবেষু সংপৃচ্ছত ইতি প্রচ্ছ জীপায়াং বশাদের-শাদিরিতি পূজাদেশঃ সংস্বরত ইতি স্থাকাপতাপয়োঃ সংশৃণ্ত ইতি ক্র প্রবণে ক্রবঃ শ্বংগতি মুৎ শৃভাবঃ সংবিত্ত ইতি বিদ জ্ঞানে পরক্ষেপদিভিঃ সাহচ্যাৎ অবিকরণনির্দ্ধেশাৎ চান্তেষাং বিদীনামগ্রহণম্। সংপশ্তত ইতি দৃশির প্রেক্ষণে শিতীত্যাদিনা পশ্তাদেশঃ। ঋ ইতি ঋগতৌ শুপ্রাপণে চেতি ভাদিঃ ঋস্থ গতৌ হ্বাদিশ্ব গ্রোরপি গ্রহণম্। সমৃষীষ্ট-ইতি যাৎ যাস্তাং যাস্ত্রস্ক ইত্যাদিনাশীলিঙ্ সংজ্ঞকঃ সাষ্টঃ ইচ্কাদিত্যাদিনা বন্ধং লটি ঋচ্ছাদেশে ক্বতে ঋচ্থাত্না সহ প্রয়োগবিশেষাভাবাৎ আশীলিঙ্ উদাহতঃ। গমৃচ্ছি স্ব বেন্তি শ্রু দৃশি প্রচ্ছাগমাদয়ঃ।

(১২৪)। উংপূর্বাং বিপূর্বাৎ তপতেরাঙ্ পূর্বাদ্যমো ইন-চাকর্মকার

শাব্দী ছাকাঞ্জা শব্দেনৈব প্রপূর্যাতে ইত্যসুক্তে কর্ম্মণি ব্লুতে-২প্যকর্মক হম্। "গাণ্ডীবী কনকশিলানিভং ভুজাভ্যামাজত্বে বিষম-বিলোচনস্য বক্ষঃ" ইত্যসাধুরিতি ভাগর্ত্তিঃ।

১২৫। স্মানেঃ সন্যনমুজ্ঞাপ্রত্যাঙ্**শ্রত**। অমুজ্ঞাপ্রত্যাঙ্শবর্জ্জং সনি সতি স্মানেঃ কর্ত্ত্যায়ানেপদং

স্বাঙ্গকর্মকাচ্চ কর্ত্বগায়নেপদং ভবতি। উত্তপতে রবিরিতি দীপাত-ইতার্থঃ বিতপতে স্পান্মিতি স্বমৃত্যং স্বান্ধমিতি আগ্রীয়মঙ্গমিতার্থঃ হত্তপাদাদি গৃহতে। পরাঙ্গে অঙ্গব্যতিরিক্তে চ কর্মণি ন ভবতি। উত্তপতি মৈত্রতা পৃষ্ঠং চৈত্রঃ উত্তপতি স্থানাং স্বর্ণকারঃ। আখচ্ছত ইতি যমুপ্রমে লানবমোর্যজু ইতি য জাদেশঃ। আহত ইতি হন হিংসাগতে। अल्यान्ता हो जा दिना न का तल्ला । नसू इत्यः मकर्याकदार कथमकर्यक्षय অৰ্থভেনে>প্ৰেম্ব ন বিষ্ঠ এব স্বৰ্গ আহু শাদা ফাকাজন ইতি অস্ত ধাতোঃ সভাবদকর্মকয়াং অকর্মকতা ন সম্বতীতি নিয়তমেব কিছ শাকীয়মাকাক্ষা শব্দে ভবা শাকী শক্ষোপাত্ত যত্ৰ কৰ্ণান্তি স সকৰ্মকঃ যত্র নাত্তি দোহকর্মক ইতি ইয়মাকাঞা শকেনৈব প্রপূর্যতে শকো-পারেন কর্মণৈবাকাক্ষাবিরতিঃ বিগায়ত ইতার্থঃ। ইতি শক্ষো হেতৌ ঘতঃ হেতোঃ প্রিতে২পি কর্মণানুক্তে শলানুপাত্তে সতি অকর্মকত্বং কর্মণোছনিবক্ষয়েতাতি প্রায়:। তথাচেক্তং, ধাতোশ্চার্থান্তরে রুত্তের্থান্তর্থে নোপদংগ্রহাং। প্রসিদ্ধেরবিবক্ষাতঃ কর্ম্মণোহকর্মিকা ক্রিয়া। তথারি প্রাপণার্থস্ত সকর্মকস্ত বহে: স্তব্দনে অকর্মকতা যণা নদী বহতি প্রাণান ধার্মতি ইত্যন্তার্থে জীবতি ইতি পাছর্থেন উপসংগ্রহাদকর্মকতা। আন্তে শেতে ইত্যাদেঃ প্রসিদ্ধেঃ আহত ইত্যাদেঃ কর্মাবিবক্ষায়ামকর্মকতা ইতি। গাণ্ডীবী ইত্যাদৌ শ্লোকে আজন্ত্বে ইত্যসাধু: প**াঙ্গকৰ্ত্য**ক্ষাৎ বিষমবিলোচনক্ত বক্ষ ইতি প্রাক্তকর্মেতি আপেদে বিষমবিলোচনক্ত বন্ধ ইতি পাঠো ভাগবৃত্তিকৃতা ব্যবস্থিতঃ া

(১২৫)। স্থ চিস্তারাং জ্ঞা অববোধনে ক্র প্রবণে দৃশির প্রেক্ষণে স্থানিপদেন এতে চাররো ধাতবো গৃহ:স্ত অত্ত জানাতেজ্ঞাদেরপঞ্-বাদৌ সংপ্রতিভ্যানম্মরণে জ্ঞোহকর্মকাদিতি ত্রিভিঃ স্ট্রেঃ পূর্বাশ্বনে- ভবকু । স্বাৰ্ধতে জিজ্ঞাসতে শুক্রাষতে দিদৃক্ষতে। সদস্জা-প্রত্যাঙ্গ্রাব ইতি কিম্ ? সমুজিজ্ঞাসতি প্রতিশুক্রাষতি।

১২৬। পূর্ববদন্যতঃ। বুভূষতি পিস্পাধৰ্দ্ধিতে। জগুপাত ইত্যাদি।

পদং বিহিতন্। ফ্রন্থারপি সমোহকর্মগমাদেরিত্যনেন তথাং পূর্ব্ববন্নত ইতানেনৈব সনস্তাদায়নেপদং নিদ্ধং তথাতিরিক্রোহন্ত বিষয়ঃ
ক্রুত্বত ইতি সন্ উর্পবর্গানিতালুর্ভৌ সনি ঋতশ্চ ইতি সনি পরে উর্
রাপ্তাদেরিত্যাদিনা দীর্ঘঃ ক্রতকার্য্যোনিদম্ভ ইতি স্থ ইতান্ত বিক্রক্তিঃ
হস্বশ্চ সনঃ ষয়ং জিজ্ঞাসত ইতি ধিছে প্রশ্বে চ ক্রুতে ইদ্বির্নাদিত ইত্বং
শুক্রমত ইতি সনীণ্দীর্ঘঃ ইতি দীর্ঘঃ দিদৃক্ত ইতি অস্জান্তম্ভেত্যাদিনা
শন্ত যা বশ্চামুপেক ইতি বহা ক্রুং বছং বিশ্বক্তিঃ। ঋদ্দিতি অব্ন
অনেন হত্তেপ প্রাপ্তমান্ত্রনেপদম্ অমুপ্রকাজ্ঞানাতেঃ প্রতিপূর্বাৎ আঙ্বপূর্বাক্র শুণোতেন ভবতি। মন্ত্র্ কন্ধণান্তরৈঃ প্রাপ্রোতি তন্তরত্যের
উষধন্তামুজিজ্ঞাসত ইতি কত্র জ্যোহকর্মকাদিত্যায়নেপদং বিহিতঃ
পূর্ববিক্রায়াং ষট্যেবেতি ষঠ্যাং বিহিতায়াং অন্তাকর্মকর্মমিতি যদা ভূ
প্রতেধ ত্রিসম্বন্ধাভাবাত্রপদর্গন্তং নান্তি তদাপ্যায়নেপদম্। দেবদন্তং প্রতি
ক্রেম্বতে ইতি লক্ষণেহভিপ্রতিপর্যানৰ ইতি হাদিবাৎ দিতীয়া।

**

(১২৬)। শ্বানেরিতানেন যশাদান্তনেপদং বিহিতং তথাদন্তধাতোঃ
সনি সতি পূর্ববিদ্ধুবতি। পূর্বেণ তুলাং বর্ত্ত ইতি পূর্ববিং পূর্বেশকোহয়ং
সম্বিশক্ষাদ্বধিমপেক্ষতে স চাবধিঃ শ্রুত্তাৎ সন্নেব বিজ্ঞায়তে সন্বিধানাৎ
পূর্বং যন্ত পরবৈদ্ধানিতং তন্ত পরবৈদ্ধানিতি যন্তান্তনপদিষ্কম্ অন্বব্ধেনোশুদ্র্গস্ববিদ্ধার্থবিলেবেণ বা তন্তান্তনপদিষ্কমেবেতার্থঃ। বৃভ্যতীতি
অপুত্ যুনুতি ইত্যাদিনা ত্যাদিষাদিঙভাবঃ। পিস্পর্কিষত ইতি স্পর্কন
সংহর্বে অন্তন্তানান্তনেপদী তৃত গর্ভাদিছার্যমিতি সন্ মুর্কন্তসাৎ
কাদিরিতি বিক্তিং। জুক্তনত ইতি ক্রপগোপনকুৎসন্থাঃ সন্ গুপাদেনিন্দাদাবিতি সন্ অন্ত সনোনিত্যবিহিত্তাৎ সন্বিধানাৎ পূর্বমান্তনেপদং

১২৭। র্দাদেবা স্মঙাদৌ। শুঙাদৌ সতি র্ভুপ্রভৃতেঃ কর্ত্তগ্যাত্মনেপদং ভবতি। বর্ৎ শুভি বর্ত্তিষ্যতে অবর্ৎ শুৎ অবর্ত্তিষ্যতে। বৃতু, বৃধু শৃধু শুন্দু।

১२৮। मनिष्ठ।

বির্ৎসতি বিবর্তিষতে।

২২৯। কৃপো লুটি চ। কল্পতি কল্লিষ্যতে অকল্ল স্থং অকল্লিষ্যত চিঞ্জাতি চিকল্লিষ্ত কল্লাসি কল্লিভাসে।

বদি ন সন্তুক্ত তথাপি কারণে কার্য্যোপচারাদায়নেপদনিমিন্তপ্রৈবায়নেপদ প্রয়োগঃ তচ্চ নিমিত্তং সন্বিধানাৎ পূর্দ্ধমন্ত্যেব ইত্যায়নেপদম্। স্মাদিআদেব জুগুপত ইত্যায়নেপদমিতি কেচিদাদিশন্দেন নিবিবিক্ষত ইতি
ভান্যান্ধিশানেবিতি উপসর্গশু নিমিত্তবং তিগ্রাসতে রগু বিকর্মস্থেতা ইতার্থবিশেষনিমিত্তং অক্টি নীর্যান্তি ইতি ক্রপ্রেংগ্রাভ্যামিত্যায়নেপদ প্রতি
বেধাৎ পূর্দ্ধবৎ পর্বৈশ্রপদম্। মুম্র্যতীতি শিশংসতীতি মৃঙঃ শিশু নায়নেপদং যতো লিঙ কুঙ্, শেষে মৃঙ ইতি শদশু ক্রিতি আয়নেপদম্ অশু চ
নোপসর্বো নার্যবিশেষণাপি ধাতুবিশেষো নিমিত্তং কিন্তু লিঙা লুঙাগুলি
ভঙ্কাবাদায়নেপদনিমিত্তাভাবং।

- (>২৭)। অন্তুদাতেকাণাম্বনেপদে সিদ্ধে বিকরার্থং বচনং রতু বর্তনে র্ধু র্দ্ধে শৃধু শদকুৎসায়াং শুনু এবণে চ্ছারো র্ণাদয়ঃ। বং শু-তীতি শুঙ্ সঙ্লোপে ইত্যাদিনা ইঙভাবঃ অবং শ্রদিতি লঙ্ লুঙ্ ই ১৪৮-দিনা লুঙ্ সংজ্ঞাকে ছঙ্ শুঙ্ চ।
- (১২৮)। ইঙি সনি চ সতি বুদাদেঃ কর্ত্তগাত্মনেপদং দা ভুনতি। বিবর্ত্তিবত ইতি সনি ক্বতে আত্মনেপদশক্ষে ইঙ্ গুণঃ।
- (১২>)। ক্বপু সামর্থ্যে ইত্যন্ত্বাৎ শুঙ্ সনোর্ল্টি চাম্মনেপদং বা ভবতি। কর্শুতীত্যাদৌ আত্মনেপদাভাবপক্ষে শুঙ্লোপ ইত্যাদিন। ত্যাদিত্বাদিঙভাবঃ।

১৩০। লুঙি হ্রাতাদেঃ।

- শ দাত্যতিৎ ব্যাপ্তোতিষ্ট। ছ্যাতা স্বিদা থিতা ঞিনিদা ঞিক্ষিদ। ঞিমিদা রুচ ঘুট রুট লুট লুঠ শুভ ক্ষুভ অন্তু নভ তুভ অন্স্ অন্সং ধননম্ব রুতু রুধু শৃধু অন্দু রুপু।
 - ১৩১। শব্দাসুকরণলোহিতাদ্যোরায়ঃ। পটপটায়তি পটপটায়তে লোহিতায়তি লোহিতায়তে।
 - * ১৩২। স্বরিৎঞিতোঃ কর্ত্র থেঁ ক্রিয়াফলে। কর্ত্র থেঁ ক্রিয়াফলে বিবক্ষিতে স্বরিৎঞিতোর্ধায়োঃ প্রয়োগে কর্ত্ত গ্যাত্মনেপদং ভবতি। পচতে ধন্তে।

⁽১৩•)। গ্রাতাদেবু ভি কর্ত্ব্যাশ্বনেপদং ভবতি বা। গ্রাতা দীপ্তানি রূপু সামর্থে ইতান্তো ভালাশ্বর্গণো গ্রাতাদিস্তম্মাদমূলাভেমালায়নেপদে সিদ্ধে লুভি বিকলার্থং বচনম্। ব্যন্তাতদিতি গ্রাতাদ্যুক্তেতি গ্রাতাদীনাম্বিপ পুষাদিলাৎ পুষাদৃদিভোহগ্পরবৈশ্বদ ইত্যাগ্ আত্মনেপদপক্ষে তু লুভ্
সঙ্চ ইতি সঙ্ইভাগমঃ।

⁽১০১)। শকান্ত্করণে লোহিতাদে চ ব আরু বিহিতত্তদন্তাৎ কর্জ্যাব্যনেপদং ভবতি বা। কর্জ্যান্ত্রদান্তভিদ্যনায়ামিতি আত্মনেপদে প্রাপ্তে বিকল্পার্থাহরং বিধিঃ। শীঘ্রাদেরভূতত্ত্বাব ইত্যত্র লোহিতাদার উক্তা লোহিত বর্মন্ নিদ্রা হরিত ক্রপা ক্ষেন মন্দ ভদ্রান্ত কর্মণা মল্লো নীলান্তথাপরে লোহিতাদয়ে জ্বোঃ। পটপটায়ত ইতি পটৎকরোতীত্যর্থে অব্যক্তশক্ত্যোদিনা আরু উলুক্ নিতাং দিশ্টায়াদে ইতি ভকারলুক্ দিরুক্তিক। লোহিতায়ত ইতি অলোহিতো লোহিতো ভবতীতি শীঘ্রা-

⁽১৩২)। যদাপি সর্বাসামের ক্রিয়াণাং কলং কর্ত্থমের ভবতি ফলাকীজেনা বিনা কর্ত্ত; প্রবৃত্তাসম্ভবীৎ তথাপি ফলশন্দেনাত্র প্রধানং ফলমভিদেয়ং যদর্থমসৌ ক্রিয়া আরভাতে তদের প্রধানং ফলং বর্থা যাগ-ক্রিয়ায়াং যল্পমানস্ত স্বর্গপ্রাপ্তিঃ পাকক্রিয়ায়্য় ভোক্ত মৃষ্টিঃ। তদর্থমের ক্রিয়ারস্তাৎ। দক্ষিণাবেতনাদিপ্রাপ্তিম্ব ন প্রধানং ফলম্। স্বরিৎঞিতো-

১৩७। जार्शतम्ब्ह I

শক্রমপর্বদতে।

১৩৪। সমাঙুট্রো ইনোহতাছে।

ব্রীহীন্ সংবচহুতে। গ্রন্থে তু—সংঘচছতি মন্ত্রান্ উদ্যট্টি চিকিৎসাং বৈহাঃ।

১৩৫। জোহপ্রাদেঃ। গাং জানীতে।

র্ব্যাখানং অনুদান্তভিত্যাখানেনৈব স্পষ্টিং তেনাত্র ন ক্লন্তম্। বন্ধ ইতি ভূধাঞা । ধারণপোষণয়োঃ আত্মনেপদং তেন হ্বাদিছাৎ দিফুক্তিঃ ন ধাঞোহভিত্তথ সম্ব ইতি প্রতিষ্ণোৎ ঠচথধেত্যাদিনা ধন্ত দকারো ন তব্তি। দাধোর্হলি চেত্যাকারলুক বর্গস্থানিরিত্যাদিনা ধন্তী তঃ।

(১৩৩)। অপপূর্লাং বদতেঃ কর্ত্র প্রিক্রাফলে বিবক্ষিতে আঝনে-পদং ভবতি। অন্দরিংক্রিকাদপ্রাপ্তে বিধানম্। শত্রুমপবদতে ইতি শত্রোরপবাদেন রাষ্ট্রং গ্রহীখ্যামীতি কর্ত্র প্রিক্রাফলত্বমত্রান্তি। বদা তু নৈবং তদা অপবদতীতি।

(১৩৪)। সম্ আঙ্ উৎ ইত্যেতিতা উত্তরাৎ যম্ উপরম ইতাশাৎ কর্ত্র ক্রিয়াফলেহর্থে আশ্বনেপদং ভবতি। গ্রন্থ বিষয়ে চেৎ প্রয়োগো ন ভবতি স্বাঙ্গকর্মকাকোদ্বিতপাং যম্ হন ইত্যায়নেপদমকর্মকর্মণ স্বাঞ্চকর্মন করাক্র সিদ্ধমেব ওদিওরোহন্ত বিষয়া। সংখ্যনত ইত্যাদৌ শিতীত্যাদিনা বচ্ছাদেশঃ। সংখ্যনতি মন্ত্রান্ ইত্যাদি মন্ত্রান্ চিকিৎসাশাল্রঞ্চাবগৃত্ত মন্ত্রান্ ইত্যাদি মন্ত্রান্ চিকিৎসাশাল্রঞ্চাবগৃত্ত মৃদ্যান্থং করোজীত্যর্থঃ। ফলা তু বেজনাদিনা ব্রীহীন্ সংগৃহ্লাতি ওদা সংখ্যন্ত উত্তি ভবতি।

(১৩৫)। প্রাদিনজিতাজানাতে: কর্ত্রবিক্রয়াকলে বিবক্ষিতে কর্ত্রব্যাত্রনেপদং ভবতি। সক্ষত্রকার্থিদিং জ্যোহকর্মকাদিত্যনেনৈর্ব অক্যক্র সিন্ধেঃ। গাং জানীত ইতি স্লো জাশ্চেতি নাৎ জাদেশক নাহবাদেরিত্যাদিনা আকারশ্র দ্বকারঃ। অকর্ত্রবিক্রয়াক্ষ্যে তু গৃহিণো গাং জানাতি
গোরক্ষকঃ। ্ৰু০৬। উপপদাবগতে বা। শ্বং যজ্ঞং যজভি যজতে।

১৩৭। ন প্রবৃহপরিমৃষিভ্যাম্। প্রবৃহতি পরিমৃষ্যতি।

১৩৮। পরেবহুদেচতোকে। পরিবহুতি।

^{*}১৩৯। কুঞোহসুপরাভ্যাম্। অসুকরোতি পরাকরোতি।

১৪০। ক্ষিপোহভিপ্রত্যতিভ্যঃ। অভিক্ষিপতি।

⁽১৯৬)। স্বরিৎঞ্জো: কর্ত্র ক্রিয়াফলে ইত্যাদিভি: স্ক্র: উত্তর-স্বেগ চ কর্ত্র ক্রিয়াফলবিহিতমাত্মনেপদম্ উপপদাবগতে কর্ত্র ব্যক্রিয়াফলে সতি বা ভবতি। উপোচ্চাব্রিতং পদম্পপদং সমীপে ক্রয়মাণং শক্ষাস্তর-মিত্যর্থ: তদিহ স্বংযজ্ঞমিত্যাদি। স্বংশক্রমপবদতে অপবদতি বা স্বং ব্রীহিং সংযক্ত্রতে সংযক্ত্রতি বা স্বংগাং জানীতে জানাতি বা।

⁽১৩৭।১৩৮)। স্বরিতেশ্বাৎ ক্রের্থক্রিয়াফলে প্রাপ্তমান্মনেপদং প্রপূ-র্ব্বাদ্বহেঃ পরিপূর্ব্বাৎ মৃষ্যতেঃ কর্ত্ত্যান্মনেপদং ন ভবতি। পরিপূর্বাদিপি বর্হেনিবিধ ইতি চন্দ্রো ন তদ্বহুসমূতম্।

⁽১৩৯)। অ্নুপরাভ্যামৃত্রাং ক্রঞ: কর্ত্ব্যাম্বনেপদং ন ভবতি।
ক্রিধাং কর্ত্র্বিক্রিম্বাদলে প্রাপ্তত্ত ক্র্রেদে: দেবাদাবিত্যনেন অকর্ত্র্বিক্রিমান্দলে প্রাপ্তত চাত্মনেপদত্ত নিষেধ:। প্রস্থিন প্রকরণে পঠিতথাং কর্ত্বর্ধিক্রিমান্দলে প্রাপ্ততারং নিষেধ ইতি চন্দ্রাদিসম্বতম্। অত্যে থাহং নহত্ত প্রকরণনির্মোহপেক্ষিত্তথাহি রমে: স্বরিদিত্যাদিনা স্ত্রেণাপ্রাপ্তমেবান্থনেনপদং নিষিধ্যতে।

⁽১৪০)। ছাতি প্রতি অতি ইজ্যেতেতা উত্তরাং ক্ষিপ্ প্রেরণে ইত্তাত্মাৎ কর্ত্তয্যাত্মনেপদং ন ভবতি। দিবাদিরয়ং পরত্মৈপত্মেব তুদাদিশ্ব প্রবিতেয়াৎ প্রাপ্তমাত্মনেপদং নিষিধ্যতে।

১৪১। পর্য্যাঙ্বিভ্যোরমঃ। পরিরমতি আরমতি বিরমতি।

১৪২। উপাদ্রমঃ। দেবদত্তমুপরমতি উপরময়তীতার্থঃ।

১৪**০। অকর্মকাদ্বা।** উপরমতি উপরমতে।

১৪৪। ণিঙোহবুধাদেঃ। বুধাদ্যশুধাতৃনাং প্রয়োজকণিঙঃ প্রয়োগে কর্ত্রপি ক্রিয়া-ফলে বিবক্ষিতে কর্ত্র্যাত্মনেপদং ভবতি। স্বকাগ্যং

(১৪১)। পরি আঙ্বি ইতোতেভা উত্তরাৎ রমু ক্রীড়ায়ামিত্যস্থাৎ ধাতোঃ কর্ত্তব্যাস্থ্যনেপদং ন ভবতি। অমুদাঞ্জে রাৎ প্রাপ্তমায়নেপদং নির্বিধ্যতে।

(১৪২)। উপপূর্ব্বাৎ রমতে: কর্ত্বগ্যান্মনেপদং ন ভবতি।

(১৪০)। উপপূর্কাদকর্মকান্তমতেরাম্বনেপদং বা ভবতি। উপপূর্বেরা রমির্বিনাশে বর্ততে নিবর্ততে চ। যথা উপরতানি ধনানি নিব
র্তনে চ যথা অধ্যয়নাগপরতঃ উভয়পাপ্যকর্মকছে তথাদকর্মকাদিকি বিশেযণবলাদের বিপ্রমুপরমতীতাত তু প্রত্যাদাহরণে উপসংপ্রাপ্তিপূর্ম্বিকাষাং
রতৌ রমির্বর্ততে ইত্যবগস্তবাং পূর্বেস্ত্রাদের রম ইতান্তাম্বরতৌ প্রাপ্তায়াং
যদত্র রমতেরুপাদানং তজ্জ্মাদিতাচন্দ্রবাবস্থিতক্যার্থাস্তরক্তাপি স্বচনমিইহর
যথা স্তানিত্যেরমর্থং তন্মতাম্পারেণায়মর্থে ভবতি উপাত্তরাদ্রমতেঃ কর্দ্রর্যাাম্বনেপদং ন ভবতি। তন্মাদেরাকর্মকাদ্রা ভবতি ৷ দেবদন্তমুপরমতীতি
সকর্মকারিতাং নিষেধঃ। যাবস্কুক্রমুপরমতি উপরম্ভে ইতি অকর্মকাৎ
পাক্ষিক্রম্ অকর্মকন্তৈরাম্ভ ধাত্যেরস্তর্ভাবিণার্থবাং সকর্মকত্বং দেবদন্তমুপরময়তীত্যর্থঃ এতৎ সন্দির্থং শ্বতেরদর্শনাদিতি ভাগবৃত্তিক্বতা অভিধার প্রথম
এব পক্ষোহঙ্গীক্রতঃ।

(১৪৪।১৪৫।১৪৬)। স্বকার্য্য বাচরত ইতি প্রমাদপাঠঃ যত উপ-পদাবগতে বেতি অস্তায়ং বিষয়ঃ তন্মালাচয়ত ইভূাদাহার্য্যম্। বুধ্ শবগমনে যুধ্ সংপ্রহাবে নশ্ অদর্শনে জনী প্রায়ন্তাবে ইঙ্ অধ্যয়নে বাচয়তে ধনার্থ্ পাঠয়তে। অবুধাদেরিতি কিন্ ? বোধয়তি। নুব্ধ বুধ্ নশ্জন ইঙ্প্রাক্ত ক্রা

১৪৫। পানাশনচলনার্থান্তেতনকর্ত্রেহকর্মকাশ্চ পাদিবজ্জ বুধাদি। পাদিস্ত পা আঙ্যমু আঙ্যস্ পরিমুহ্ দমু রুচি নৃত্যদ্ ধেট্ বদ্ বস্তি।

১৪৬। চুরাদিণিঙোহপ্যালনে।
 চোরয়ত ইত্যেকে।

প্রভূ গতৌ পঠাতে হুক্তক গতৌ। পানার্থা অশনার্থসাহচ্য্যাৎ পা পানে ইত্যাদয়ো নতু রক্ষণার্থাঃ। অশনার্থা অশ্ভোজন ইত্যাদয়ঃ। ফ্রাপি পানমপ্যশনবিশেষ এব তথাপ্যভাষেক্সপাদানং বৈচিত্র্যার্থম অধবেত্যুহুং সামান্তবিশেবভারেনাপি প্রয়োগ: ক্রিয়ত এব যথা গামানয় বলীবন ক্ষৈতি পাধেট্বাতিরিক্ত: পানার্থ: পীঙ্পান ইতান্তি তৎপ্রতিষেধার্থং পানপদম। চলনার্থান্চ চল কম্পনে ইত্যাদয়:। বুধাদয়োহণিভস্তা এবোপাত। এয়া সাহচর্য্যাৎ চেতনকর্ত্তমে সভাকত্মকাশ্চাণিভস্তা এব গ্রাহ্যাঃ তেনারোংযতে গন্ধী স্বয়নেব তং আরোহয়মাণং প্রযুঙ্জে আরোহয়তে হস্তিনং হস্তিপক-ইত্যত্র চেতনকর্তৃত্বে ইত্যাদিনা বুধাদিত্বং ন ভবতি যতো হস্তিনং কুর্মাকর্তৃ-ত্বাৎ প্যস্তাবস্থায়ামেৰ আরোহয়তেরকর্ম্মকত্বং তত্মাৎ পুনণি ঙি ক্তে আত্ম-নেপদং ভবত্যেব। বুণ ্যুণ্ নশ্ জনামকর্মক্ষাদেব বুণাদিজে দিলেংচেতন-কর্ত্বার্থমুপাদানম্। বোধয়তি শাস্ত্রং যোধয়তি কাণ্ডং নাশয়তি ছংখং জনরতি স্থামিতি প্রজ্ঞকবান্ত চলনাথত্বেনৈব যুধাদিকে সিদ্ধে চলনব্যতি-রিক্তার্থানামমীষাং গ্রহণার্থমুপাদানম্। স্বর্গং প্রাপয়তীতার্থ: ঘতং দ্রাব-মৃতি বিশালয়তীত্যর্ণ:। কুণ্ডিকাং আবয়তি অন্যতীতাথ: পানাশনচল-নার্থানীম্ভ বুধাদিজং সকর্মকার্থমচেতনকর্তৃকার্থঞ। পাদিভিত্যাদি পা পানে আঙপূর্ব্য যমু উপরমে আঙ্পূর্ব্য ষম্ম প্রথত্নে পরিপূর্ব্য মুহ্ বৈচিত্তো দম্ উপরমে রুচ্ দীপ্তৌ নৃতী গাত্রবিক্ষেপে এদ্ভক্ষণে ধেট্ পানে বদু ব্যক্তায়াং ৰাচি বদ নিবাদে ইতি অত পাধেটোঃ পানাৰ্থছেন অদ্ধাতোৰশনাৰ্থছেন

১৪৭। প্রাক্কর্মকর্তৃত্বে২ধ্যার্থস্য।

ধ্যায়ত্যথাদন্তক ধাতোঃ প্রয়োজকণিঙঃ প্রয়োগে প্রান্ধর্শনংকর্তৃত্বে সতি কর্ত্ব্যাত্মনেপদং ভবতি। অকত্র থেছিয়মারস্তঃ। আরো-গতি হস্তিনং রাজা আরোহয়তে হস্তী স্বয়মেব রাজানম্। "করেণু-রারোহয়তে নিধাদিনম্" ইতি মাঘঃ। অধ্যার্থস্তৈতি কিম্ ? ধ্যায়তি গরিং বিপ্রঃ ধ্যাপয়তি বিপ্রং স্বয়মেব হরিঃ। স্মরয়তি কার্যাং বিপ্রঃ স্মরয়তি কার্যাং স্বয়মেব বিপ্রম্।

শেষাণামকর্মকাণাং চেতনকর্ত্ত্বন প্রাপ্তং বুধাদিস্বং প্রতিষিধাতে। বসভীতি গণে নির্দেশাং বস্ আচ্চাদন ইত্যস্ত নিরাসার্থঃ। চুরাদিণিঙোংপাদফনে ইতি ধাতুপারাস্থণীয়ং মতাস্তরং দর্শক্ষতা প্রয়োককণিঙএবাত্র গ্রহণনিতি সমতং স্কৃতিতম্ অভএবানেশি আত্মনেপদাপ্রাপ্তেটী লক্ষদশনাক্ষয়োরিত্যান্ত স্বরিতেস্বং কেচিদিচ্ছস্তি।

(১৪৭।১৪৮।১৪৯)। পূর্বস্তান্তি ইতান্বর্ততে। পিএডাদামনে-পদা ভবতি। প্রাক্তর্মণঃ কড়তে সতি প্রাগিতাবয়ং সদ্ধিশদোহপর মপেক্ষতে ভক্ষাদরমর্থো ভবতি পিঙ্ওব্যক্তঃ প্রাক্ষঃ কর্মা আসীৎ সা মদি সন্নিফিভাশাভে বিপ্রকৃষ্টং বিধিরপেক্ষত-ণিণ্ডি ক্লতে কৰ্মা ভবভীতি। ইতি ভাষাং যন্তা এব ক্রিয়ায়াঃ কর্ম আদীৎ তত্তাএব নিঙস্বায়াঃ কর্তৃতে সতি অল্ল বিষয়ঃ অভএবারোহয়তি ছন্তিনং রাজা আরোহয়নাণো হন্তী ভীভান মূত্রেণ সেচয়তি ইতারে সেচয়তেরাত্মনেপদং ন ভবতি ভিন্নস্থাৎ ক্রিরারা:। অকর থেতিরমারম্ভ ইতি কর্ত্থ ক্রিরানলে ণিঙোহবধা-*(मिचिटार्निदेनवाञ्च:नशप्रक मिकदार बार्ताहिक हिंदनः* রাক্তেভি প্রাক্ত্রনর্শনার্থমেতকজন। উদাহরণত্ত আরোহয়তে হুড়ী বয়মেব রাজা-নহিতি। নমু পাস্থাবস্থামাশি হতিন: কর্মাকর্ত্তাৎ কর্মাবৎ কর্মাকর্মেতা-तितेत क इंवदावाना श्वरत्न निष्ठे शास्त्रां हि गाउछ नमानिषाए कर्यक्हिति ন মধ্যমানেরিতি ধকনিষেধঃ নৈবং বাচাম। কর্মস্থাস্থাে জি ভল্প বিষয়ঃ কর্ত্তির ধার্ত্যে কর্ত্ত্বং কর্ত্ত্তিত তত্ত্বৈর বক্ষাতি। অযুদ্ধ কৃষ্টি: ক্ষুত্বার্থ ইতি ব্যাপি জুণ্ভবন্ত হতিনি কর্মণি সমবেতভাৎ কর্মছ-

১৪৮। অনভিধানাৎ প্রয়োজকণিঙঃ প্রয়োগে প্রাক্ত-"র্ম্মণঃ কর্তৃত্বে ন স্থাৎ।

হস্তিপকানারোহয়মাণং হস্তিনং প্রযুঙ্কে। আরোহয়তি হস্তিনা হস্তিপকান্ মহামাত্রঃ।

১৪৯। এবসাগ্মনশ্চ প্রাকর্মণঃ কর্তৃত্বে ন স্যাৎ। ঘাত্যত্যাত্মা স্থানেবাস্থানন্।

১৫০। গৃধিলীবঞ্চো বি**সংবাদে।** বটুং গৰ্দ্ধয়তে বিপ্ৰলাপয়তে বঞ্চয়তে।

ক্রিয়াত্মপাস্ত তথাপি স্তগ্ভাবনায়াঃ প্রধানক্রিয়ায়াঃ কর্তৃত্বক্রিয়াত্মেনাস্ত স্থাবাম। আনেন সূত্রেণ কর্মাক ব্রবিষয় এবাত্মনেপদং বিধীয়তে ইতি ন নিয়ম:। অত্তবারোহয়তে হস্তী স্বয়ামব রাজানং ক্রেণুরারোহয়তে নিষা-निर्नामञ्जानाश्वनास्वतम् भ्रम् स्व कर्ननाद्यः कर्ज्यः उठ नाषात्मभनम्। পশুতি ভ্তাাঃ প্রদীপেন দর্শয়তি প্রদীপে। ভূত্যান্ শ্বরয়তীতি শ্ব আধাান ইতি ঘটাৰিয়াৎ হস্তঃ প্ৰয়োজকণিঙ ইত্যাদি যদা প্ৰয়োজকণিঙস্তাদপি পুন-ণিঙ্বিধায়তে তদা প্রয়োজকণিঙস্তম্ম প্রাক্তমণঃ কর্তৃত্বং ভবত্যেব হতি-পকানারোহয়মাণং হস্তিনং প্রযুঙ্জে ইতি প্রথমে ণিঙি ক্লতে যন্তপি হস্তিন: কর্ম্মক গ্রন্থং তথাপি হস্তিপকস্থারোহণক্রিক্রয়ায়াং কর্তৃত্বমপি বিদ্যতে এব তত্মাথ দ্বিতীয়ে ণিঙি কতে আরোহয়তি হস্তিনা হস্তিপকান্ মহামানুঃ ইত্যত্র প্রারশ্বণঃ কর্ত্ত্বমিতি প্রাপ্তমাস্থনেপদমনভিধানাং প্রতিষেধঃ। প্রয়োজক ইতি বিশেষণাৎ চুরাদিণিঙম্বস্থ ক**র্মণ: কর্ত্ততে আম্মনেপদং ভ**বত্যেব। গণয়তি ঝাং গোপাৰ্কঃ গণয়তে গো: স্বয়মেব গোপালকম্ ইত্যত্তাত্মনেপদং ্ব্রুবত্যেবেতি বিনীডকীর্ত্যাদীনাং মতৃষ্। চুরাদিণিঙস্তাদপি ন ভবতীতি জয়াদিতাস্ত ৰতম্। এবমিত্যাদি আত্মনঃ শক্ত ণিঙঃ প্ৰাৰুশ্নণঃ কৰ্তৃত্বে সতি ষ্ক্রাম্বনেপদং ন ভবতি। মাতয়তীতি ণিঙি ক্তে ণিতীণ্ লিড্বৰ্জ-মিত্যাদিনা খাতাদেশঃ।

(১৫০)। এতে যোগা অকত্রর্থা:। গৃধু অভিকাজ্যায়াং লীতি লীঙল্লেষণে লীলেষণে ইভাভয়োগ্রহণম্। বঞ্ গতৌ ইত্যেতেষাং বিসং-বাদেহর্থে বর্তুমানাৎ ণিঙি আয়নেপদং ভবতি। বঞ্ প্রলম্ভনে ইতি ১৫১। সম্মানননাকরণয়োর্লিয়ঃ। গুরুমুল্লাপরতে পূজয়তীতার্থঃ। শেচনো বর্ত্তিকাং বিলাপয়তে। ১৫২। মিথ্যাযুক্তাৎ পৌনঃপুন্যে কুঞঃ। মিথ্যা কার্যতে।

১৫০। কুঞাদেঃ সেবাদো। সেবাদাবর্থে বর্তুমানাৎ কুঞাদেরুত্তরেহকত্র র্থে ক্রিয়াফলে বিব-ক্ষিতে কর্ত্ত্ব্যাত্মনেপদং ভদতি। বৈদ্যান্ প্রকুরুতে রাজা সেবত ইতার্থঃ।

১৫৪। ভৎ সনে। শ্যেনো বহিকাম্দাকুকুতে ভৎ সয়তীতার্থং।

১৫৫। অপকার প্রযুক্ত্যা হিংসাসূচনে। শক্রমুৎকুরুতে উদাক্রতে হিংসাং সূচয়তীত্যর্থং।

চুরাদেরপাত্র গ্রহণমিত্যাপ বছসম্বতম্। বটুং গর্দ্ধতে ইতি মিথ্যাফলা-ব্যানেন প্রপঞ্চরতীতার্থ:। বিপ্রালাপ্যতে ইতি লীলীঙোলা বা ইতাস্ত ব্যবস্থিতবিভাষরালাত্মনেপদবিষয়ে ণিঙি নিতাং লাজং ণৌপুঙাদর্জ্যাদেরিতি পুঙ্ এবমুভরস্কোদাহরণেম্পি। বিসংবাদ ইতি কিম্ ? স্থানং গর্দ্ধতি আকার্জেনস্থ জনমতীতার্থ:। বাদমুল্লাপ্যতি উর্দ্ধনীনং করোতীতার্থ:। অহিং বঞ্চরতি পরিহরতীতার্থঃ।

(>৫>)। সম্মাননে স্তক্তরণে চ বর্তমানাল্লিরো ণিওস্তাদাত্মনেপদং ভবতি। সম্মাননং পূজা। স্তক্তরণমভিত্তবঃ।

(১৫২)। মিথ্যাশকঃ সমীপে যক্ত স মিথ্যাযুক্তঃ। মিথ্যাযুক্তাৎ, পৌনঃপুন্তে বর্ত্তমানাৎ করোতের্ণিঙি আত্মনেপদং ভবতি। মিথ্যাকারয়ত-ইতি বারং বারং অন্তথারূপং কারুষতীত্যর্থঃ। আত্মনেপদেনৈব পৌনঃ-পুত্তক্ত দ্যোতিত্বাং পদন্ত সাকল্যাভীক্ষরোরিতি ন দিঃ। পৌনঃপুন্যইজি কিম্ পু প্রমানাৎ মিথ্যা কারয়তি।

(১৫৩। ১৫৪। ১৫৫। ১৫৬। ১৫৭। ১৫৮। ১৫৯)। ঞিবাৎ ক্সার্থে ক্রিয়াফলে সিন্ধায়নেপদম্ মত আহ অক্তর্থে ক্রিয়াফল ইতি। সেঝাদি- ३०७। माइरम।

ূপরদাব্রান্ প্রকুরুতে পরধনং প্রকুরুতে তত্র সাহসাৎ প্রবর্তত ইত্যর্থঃ।

२६१। धर्मामिनिनिरशारम।

শতং প্রকুরতে রাজা দেবকুলে বিনিযুঙ্ক্ত ইতার্থঃ।

२०४। श्रकश्रा।

গাগাঃ প্রকুরুতে প্রকর্ষেণ কথয়তীত্যর্থঃ।

১৫৯। প্রতিযত্ত্ব।

পটস্থোপস্কুরুতে। গুণাস্তরাধানং করোতীতার্থঃ।

১৬०। (तः भक्कभ्रांभः।

ক্রোন্টা বিক্রুতে স্বরান্।

১৬১। अकर्मकांका ।

বিকুরুতে সহায়শ্চেষ্টত ইত্যর্থ:।

১৬২। অধেরভিভবে।

শক্রমধিকুরুতে অভিভবতীত্যর্থঃ।

পদেন নেবা ভংসন অপকারপ্রাক্তিহিংসাম্চনসাঃসংখ্যানিরিমিয়াগছ-প্রকর্ষকথনগুণান্তরাধানানি সপ্ত গৃহত্তে। পটজোপদ্ধুকত ইতি উপদ্ভিণোৎকর্ষেত্যাদিনা স্বট্ন গুণোৎকর্ষে রুঞ্জ ইতি ষষ্ঠা।

(১৬০ । বেরুত্তরাং ক্বঞ্জঃ শত্তকর্মণ আশ্বনেপদং ভবতি। শব্দকন্মণ ইতার্থনারকং বিশেষণং শব্দঃ কর্মান্তেতি শব্দকর্মার্থঃ অর্থস্ত শব্দকন্মতাৎ তদ্বারেণ গাতুরপি শব্দকর্মার অন্তথা হি ক্রিয়াবাচিভাদ্ধাতোঃ কথং

শব্দকর্মান্তেতি সম্বন্ধ উপপপ্ততে। ক্রোপ্টা বিকুক্তে স্বরানিতি স্বরঃ শব্দস্বন্ধান্ত্রতি।

- ্র ১৬১)। চকারো বেরিভ্যস্তামুকর্ষণার্থঃ। বেরুত্তরাৎ ক্লঞ্ছেক-শ্রকক্রিয়াবচনাদায়নেপদং ভবতি।
- ্১৬২)। অধিপূর্দাং ক্লঞোংক্তিভবেহরে বর্তমানাং আত্মনেপ্রং ভর্বত

১৬০। উপেক্ষায়াঞ্চ। স্থামধিকুরুতে উপেক্ষত ইত্যর্থঃ। "ভবাদৃশার্শেচদধিকুর্ববতে'রতিং নিরাশ্রয়া হস্ত হতা মনস্বিতা" ইতি ভারবিঃ।

১৬৪। আদাক্রোহস্বাঙ্গবিক্ষেপে।
ধনমাদত্তে রাজার্থে। স্বাঙ্গবিক্ষেপে তু—মুখং ব্যাদদাতি পিপীলিকা। নদী কূলং ব্যাদদাতি। বিপাদিকাং ব্যাদদাতি।

১৬৫। নয়তেঃ প্রমেয়নিশ্চয়ে। নয়তে বেদে প্রমেয়ং নিশ্চনোতীতাঃর্থ।

⁽১৬০)। চকারোহ্ধেরত্কধং।থিঃ অধিপূর্কাং কঞঃ উপেকায়া-মপার্থে বর্তমানং আয়নেপদং ভবতি। অভিভবোপেকাভামেন্তর আধ-করেতি পয়ঃ।

⁽১৬৪)। আলা ক্র ইতি ক্রকারবতো নির্দেশিষ্ট্রেষাং দার্নপাণাং পরিহারার্থম্। আঙ্পুর্কান্দনাতেরস্বাঙ্গবিক্ষেপে বহুমানাদায়নেপদং ভবিতি। স্বাঞ্জ স্বর্গায়সঙ্গং মৃথাদি তথ্য বিক্ষেপো বিকাশনং স্বান্ধবিক্ষেপোল্ডঃ পথান্ধবিক্ষেপো ভবভাবিক্ষেপোষ্ঠপি পরান্ধবিক্ষেপে ব্যাদত্তে পিপালিকা পতন্তম্য মুখম্। অবিক্ষেপে তৃ। ধনমানত ইতি গৃহাতীতার্থঃ রাজার্থে ইত্যুক্তম্ অকর্ম্বিক্রিয়াকগভামতা হচরিত্ন্। তথাহায়মর্থঃ রাজার্থে বাজ্কার্য্যে উপরতে সতি ধনমানতে ন তু স্বপ্রয়োজনে। মুগং ঝাদলাতি বিভারয়তীতার্থঃ। নদী কৃলং বাবেলা হাতি কৃল্যপ্রাপচারাৎ নতাঃ স্বাঞ্জ ভবভোব। নতোকদেশবাৎ কৃল্ডা। অথবা নদীকৃলং কঞ্চ বাাদলাতি বিদীলীভবতীতার্থঃ। বিপাদিকাং ঝাদল্ভাতি পাদক্ষেটো বিপাদিকা। এ

⁽১৬৫)। গীঞ প্রাগণে ইতাত্মাং প্রমেয়নিশ্চয়েহর্থে বর্ত্তমানানান্তনে পদ ভবতি। অনেকার্থদ্বাদ্ধা চুনাং নয়তের্ত্ত প্রমেয়নিশ্চয়োহর্থঃ অত আহ্ প্রমেয় নিশ্চনাতীত্যর্থঃ।

১৬৬। উৎক্ষেপণে। ভারমুপনয়তে উৎক্ষিপতীত্যর্থঃ।

১৬१। श्रागित्गिष्टन।

ঋণং বিনয়তে করং বিনয়তে শোধয়তীত্যর্থ:।

১७৮। वार्य।

শতং বিনয়তে সহস্রং বিনয়তে বিনিযুঙ্ক্ত ইত্যর্থঃ।

১৬৯। কর্ত্থেংনঙ্গে কর্মণি।

ক্রোধং বিনয়তে। অঙ্গে তু---গড়ুং বিনয়তি।

১৭০। অনভিধানাদনপন্যনার্থস্থ ন স্থাৎ। ''বিগণ্যা নয়ন্তি পৌরুষং বিহিত্ত্রোধজয়া জিগীষবং'' ইতি ভারবিঃ। ক্রোধং শমং নয়তি প্রাপয়তীত্যর্থঃ।

⁽ ১৬৬)। উৎক্ষেপণেহর্থে বর্ত্তমানাৎ নয়তেরাত্মনেপদং ভবতি নয়তে-এর্থবিশেষে ইত্তিঃ পূর্য্যবিদ্যাপি।

⁽১৬৭)। নয়তে রুণাদিশোধনে হর্থে বর্তমানাদান্তনে পদং ভবতি। আদি শক্ষেন কঃ শুল্পানাং গ্রহণম্ মত্রাপি রুণাদিশোধনং নয়তের্থঃ।

⁽১৬৮) বাজে বর্গাদৌ বিনিয়োগঃ তত্রার্থে বর্তমানালয়তেঃ কর্ত্তথ্য-খনেপদং ভবতি।

⁽১৬৯।১৭০)। স্যাক্ষিথাৎ নয়তের্লড়াদিবাচ্যে কর্ত্ত্বেহনক্ষে কন্দ্রণি

নাঞ প্রাপণে ইতান্দ্রদান্ত্রনপদং ভবতি। ক্রোধং বিনয়তে ইতি নয়তেঃ

কর্ত্তি দেবদত্যদৌ ছিতোহন্ব্যতিরিক্তঃ ক্রোধঃ কর্ম্ম ভবতীতি। ক্রোধ
র্বিনয়ত কর্ম্বিক্রিয়াফলঘাৎ স্বারংক্তিতাঃ কর্ম্বর্থ ক্রিয়াফলে ইতানেনৈবা
ভানেপদং সিদ্ধন্। তৎ ক্রিয়তে নিয়মার্থম্। কর্তৃত্বেহনকে কন্মণোবান্ত্রনপদ্ম ভবতি নাত্তব। তেন গড়ং ক্রিয়তীতোব ন তাৎ। গড়ঃ কর্মস্থা রোগঃ গড়কঃ। স্ব কর্ত্ত্বিস্কং ভবতি। কর্তৃত্ব ইতি কিম্প দেবদত্যে ধর্মন
দত্তত্ত্ব সন্থাং নিয়তি। কন্মণীতি কিমর্থম্প বৃদ্ধা বিনয়তি। অনভিধানা
দনপন্যার্থপ্ত ন তাদিতি অপন্যনার্থ ক্রৈব ভবতীতি। অপন্যনং ধ্রুনং

১१२ । मन्त्रानत्न **ए** ।

নয়তে বুদ্ধিমাংস্তর্কে পদার্থান্ সম্যগ্রসময়ন্ সম্মানিতঃ পূজিতো ভবতীতার্থঃ।

১৭৩। বেতনে চ। কর্মকরানপনয়তে ভৃতিদানেনাত্মসমীপং প্রাশয়তীভ্যর্থঃ।

প্রশমনমিতার্থঃ। "বিগণয় নয়স্তি পৌরুষং বিহিতক্রোধন্যয়া জিগীষবং" ইতাএ পুক্ষন্ত কর্ম্ম পৌরুষং তচ্চানঙ্গমের কর্মকুর্তৃষ্মের ভবতীতি প্রাপ্তিরস্তোব কিন্তু নয়তিরক্র প্রাপণবচনঃ স চ দ্বিক্র্মকঃ। শিবমুপায়ং পৌরুষং নয়স্তি প্রাপয়স্তীতার্থঃ। ক্রোধং শমং নয়তীতারাপি ক্রোধম্পশমং প্রাপয়তীতার্থঃ। বিপ্রক্ত এব নয়তিঃ প্রশমনার্থঃ তত্রানেনা য়নেপদমিতি সংক্রেপার্থেছেবগ স্তবা ইতি।

- (১৭১)। আচার্যাক্রিয়া আচার্যাসমবেতো ব্যাপাবঃ। নয়তেরাচার্যাক্রিয়ারাং গ্যামানায়াম্ আন্থানেপদং তবতি। আচার্যাঃ সন্ নিষ্যমান্তস্মীপণ
 প্রাপেরতীভার্থঃ ইত্যানেনৈতং প্রতিপাদিতম্। নয়তেরক প্রাপণ্যেবার্পঃ
 তিনিন্ সমীপপ্রাপণে আচার্যাক্রিয়া গ্যাতে।
- (১৭২)। চকারাং গম্যায়ামিতায়্রতং বিশেষণতাং বিপর্যায়প্রপ্রিক্ষং জায়তে সম্মাননং পূজনং ণীঞঃ সম্মাননে প্রামানে আজ্নেপদং ভবতি। বুদ্ধিমাংস্তর্কে পদার্থান্ সমাগ্গময়িতি যথাব্যবস্থিতং সিদ্ধান্তং প্রজিতো ভবতীতার্থঃ এতেনৈতত্বক্রম্। অত্যাপি ণীঞঃ প্রাপন্মবার্থঃ পূজা তু ওিধিশ্বণীভূকা গম্যতে।
- (১৭৩)। বেতনং ভৃতি: তশ্মিন্ গম্যমানে নয়তেরাশ্মনেপদং ভবতি। ভৃতিদানেনাশ্মসমীপং প্রাপম্তীত্যর্থ: এতেনৈতৎ প্রতিপাদিতম্। ভাজাপি নয়তে: প্রাপণমেবার্থ: বেতনস্ক অত্র গম্যতে।

১৭৪। হাঞো গতিতাচ্ছীল্যে। পৈতৃকমশা অমুহরস্তে পিতুরিব গমনমেধামিতার্ধঃ।

১৭৫। শেষাৎ পরক্রৈ।

উক্তাচ্ছেষাদ্ধাতোরুত্তরে কর্ত্তরি বাচ্যে পরস্থৈপদং ভবতি। যাতি বাতি স্পর্দয়তীত্যাদি। আত্মনেপদসংপ্রাপ্তো পরস্মৈ কুত্রচিন্তবেং। পরিষক্ষতি পাঞ্চালী মধ্যমং পাণ্ডুনন্দনম্। স এবায়ং নাগঃ সহতি

⁽১৭৪)। কঞ হরণ ইতাশাং গতিতাচ্ছীলো গমো ছায়নেপদং ভবতি। গতেস্তাচ্ছীলাং গতিতাচ্ছীলাং তৎসভাবতা অত আহ পিতৃরিব গমনমেষামিতাথং। পৈতৃক্মিতি পিতৃরাগতমিতার্থে পিতৃর্বেণ্ডি
টিকণ্ ইমুম্কেম্ভানিকস্তেত ইতী শৈরলুক্। গতিগ্রহণং কিম্ ? পিতৃরাকারমমূহরতীতার্থং।

⁽১৭৫)। ধাতোত্তিভ তদ অস্তীত্য:দিভির্যোগেঃ সামাক্রেনৈর পরকৈ-পদে সিদ্ধে নিয়মার্থং ৰচনম্। শেষাদেব কর্তুরি প্রথমপদং ভবতি। এতদাবকর্মনোরায়নে ইত্যব্রৈব স্পষ্টং ব্যাখ্যাতম্। উক্তাদ্যঃ শেষঃ অনুবন্ধেনার্থবিশেষেণোপসর্বেণোপপদেন চ ঘতাস্থানেপদং নোব্রুং তত্র পরস্থৈপদমনেন ভবতি ইতার্থঃ। অসুৰদ্ধশেষে যাতি বাতীতি অর্থনেষে ম্পন্যাতীতাদি উপসর্গশেষে প্রবিশতীতি উপপদশেষে সতাং কারয়-তীতি। নমু যন্তাত্মনেপদশু চ পরশৈপদশু বিধানং নিয়তং তদা কথং পরিম্বক্তীত্যাদিপ্রয়োগঃ অত: আহ আন্তনেপদসংপ্রাপ্তাবিত্যাদি। পরিষজ্ঞীতি খনষ পরিষক্ষে ইতি ভাদিঃ অমুদাত্তেখাদাত্মনেপদী নো-मुक् मन्ब यन् वन्ब पन्नामिछि नकातन्क निविज्ञाः मित्मर अयन्बा-মিহ্যুন্নবৃত্তৌ পরেঃ স্কৃতশ্ভেতি বছম্। সহজীতি সহ মর্বণে ইতি ভূাবিট व्ययमारङ्घामाञ्चरनभनी युवामिभारठरेन्व मरुजैिङ मिस्को मिकासम् ক্রয়েংয়মুক্তঃ। মোদতি লভতীতি ব্লক্ষিতেন দর্শিতম্। আত্মনেশদ-মিত্যাদি। চুচুদ্ব ইতি চুবি বক্তু সংযোগে ভাৃদিঃ পরত্রৈপদী অণ্ অভুস্ উদ ইত্যাদিনা আত্মনেপদ্ম এ। অফুগচ্ছত ইতি অত গমে: পরবৈ-

কলভেভাঃ পরিভবমিতি। আত্মনেপদমিচছন্তি পরশ্বৈপদিনাং কচিং। প্রিযামুখং কিম্পুরুষশ্চুচ্ছে। মৃতমপ্যমুগচ্ছতে বিদ্যা। কদাচিং কুপ্যতে মাতা। যদা সংক্রমতে রবিঃ।

১৭৬। ধাত্মাদির্ণো নঃ। ধাত্মাদির্ণকারো নো ভবতি।গদ্ নদত।

পদিখাং সমোহকর্গমানেরিত্যানিভিবিশৈবৈরাজ্বনেপদ্ভাবিষয়ভাং পরকৈপদে প্রাপ্তে আগ্রনেপদ্বিধানম্। কুপাতে ইতি কুপ্ কোপে দিবাদিঃ পরকৈপদী। সংক্রমতে ইতি ক্রম্ পাদবিকেপে অপ্রতিঘাতোংসাহেত্যানি-ভির্মোগৈবিহিত্যাগ্রনেপদ্যাভাবাং পরকৈপদপ্রাপ্তাবাজ্বনেপদ্বিধানম্। এবমন্প্র্রিষ্বিহ্ধাতোঃ কর্ত্যাজ্বনে শ্রানঃ অন্চানঃ। এতদ্পাপ্ত-প্রোগদশনাং কৃতিং যথাকথঞ্জিং সমাধানমেতং নতু ব্বহাপরম্ ।

(১৭৬)। ধাত্তবিকারে সত্যের যদিহ ধাতুগ্রহণং তদ্শবণগঠিতধাতোরেবাত্ত গ্রহণমিতি স্চয়িত্ব অমুমের স্বায়লভামর্থং ন নামধাতোরিত্যনেন স্পষ্টং কৃতবান্। নমু কে ণোপদেশাং যে তথা গণে পঠান্তে
অথবা লক্ষণং ক্রিয়তে সর্কের্ম নানয়ো ণোপদেশাং। নিন্দ নিদ্ নাণ্
নৃত্তী নৃ দক্ষি নাটি বর্জম্। টু নিদ সমুদ্ধৌ নর্দ পর্দ শন্দে নাণ্
যাচ্জোপতাপৈর্য্যাশীঃমু ত্রেয়ো ভাদয়ঃ। ভাগরত্তী তু নাধ ধাতুরপি
ণোপদেশঃ পঠাতে। নৃতী গাত্রবিক্ষেপে দিবাদিঃ নৃ নয়ে ক্র্যাদিঃ নক
ধক্ষ নাশনে নট অবস্কলনে চুরাদী এতান্ বর্জ্জিয়া অপরে ধাতবে।
গাদয়ঃ। (নন্দতির্ন্দিতির্নাণ্ নৃ নৃতী নাটি নক্ষঃ। নাদয়ঃ সপ্ত বিথ্যাতা
গাদয়ঃ (নন্দতির্ন্দিতির্নাণ নৃ নৃতী নাটি নক্ষঃ। নাদয়ঃ সপ্ত বিথ্যাতা
গাদয়ত্তে পরে মতাঃ)॥ নাটাতি নির্দ্দেশাং পট নৃতাবিতি ভাদির্ণোপদেশ
ত্রব। নমু গাদ্বিমের কিমর্থং ণাদিধাতোরস্করি চেতি পদ্বিধানবাব্রুর্যার্থং
প্রণয়তীত্যাদৌ যথা স্থাং প্রনন্দতীত্যাদৌ মা ভূং। অগাদৌ তু।
ভণকি। নমু যন্ত্র নাদেশেন ভবিতব্যং তদা নকার্মেরোপদেশে পঠেৎ
ভন্মাঞ্জারপাঠসামর্থ্যাদেবাত্র নাদেশেন ন ভবিতব্যম্। তন্মান্তণধাতোঃ
কিপ্রন্নিতি প্রত্যানাহরণীয়ং পদান্তম্বাঞ্জাভাবে রন্নিতি স্থাং।

১৭৭। ন নামধাতোঃ। ণকারীয়তি।

১१४। यह मः।

ধাহাদিঃ যকারঃ সো ভবতি। ফটিভি স্তম্ভতে। কটিমিমিন্তাপায়ে নৈমিত্তিকস্থাপ্যপায় ইতি টস্থ তঃ।

⁽১৭৭)। নামা নিশারো ধাতুর্নামধাতুঃ অথবা পূর্বাং নাম পশ্চাভাতুরিতি পূর্বাকালভাপরকালেনেতি কর্মধারমঃ। নামধাভোর্ণকারো নো
ন ভবতি ণকারীয়তীতি ণ ইত্যামাৎ বর্গাৎ কার ইতি কারঃ কাম্যো নাম
ইচ্ছায়ামিতান্ত্রুভৌ তুল্যাচার ইত্যাদিনা ঈষ্।

^{(&}gt; १৮)। नम् (क (यान्राम्नाः य ज्यां नात् निर्मास व्यथां नक्ताः ক্রিয়তে। মঢ্তবর্গপর্যানয়ঃ যোপ দেশাঃ। মি মিনিম্বনি মন্কি ম্পয়ক ক্পু জৈ সের তন্ত তজ্তুঞ্তচ্তত তন সার সাম সভাজ তুল তেন স্তোমবর্জমিতি। অচপরস্তবর্গপর: ষকার: আদির্যেষাং তে জচ্তবর্গপরহা-**पत्रः। पिंड ঈ**यक्षत्रत्न ভাদিঃ ঞি বিদা মেহনমোচনয়োঃ ভাদিঃ বিদা গাত্র-প্রকরণে দিবাদিঃ ছয়োরপি গ্রহণং খদ স্বর্দ আস্বাদনে খন্ত্ পরিষঞ্চে ভানী ঞিষপশয়ে ঝদাদিঃ অচ্তবর্গপরব্যভিরিক্তা এতে বাদয়ঃ। গম্সপু গতৌ জ্যৈ জৈ শব্দগণাতয়ো: একেছিত্র মৃদ্ধন্তোপদেশ:। স্বেরু সেরু প্রকি সকি গতার্থা: অকি স্তন রণ ধান খবে চছারো ভাষয়:। স্ গতৌ হ্বাদি-ভূদিণ্ড কন্ত্রিমর্গে তুদাদিঃ স্বঙ্ আচ্ছাদনে স্বাদিং ক্র্যাদিশ্চ ক্ত পৈশুক্তে স্ত্র বেষ্টনে স্তন্ গদ দেব্ শবেদ সার্ক্লপ্ প্রথ্নৌর্কল্যে সাম সাম্বনে সভাস্ত পূজায়াং স্থল পরিবৃংহণে স্তেন চৌর্ঘ্যে স্তোম প্রাঘায়াং নব চুরাদয়: ৷ এতান্ বর্জন্তির এতে অচ্তবর্গপর। অপি সাদয়োন ষোপদেশা:। নন্পদেশে যাদিবং কিমর্থম। শাদিবসিন্নসীত্যাদিনা নিয়মেন নিয়তক্ত মুর্নজোপদেশ-সকারশ্র বাবস্থাবিজ্ঞাপনার্থম্। স্তম্ভত ইতি ইভি ইভি প্রভি প্রতিবন্ধে। কচি-দিত্যাদি ষটবর্গাদিত্যাদিনা যা তকারত টকার আগীং স নিমিত্তাপায়াদ্প-গতঃ অতএব তবর্গপরো মুর্জভাদিরয়ং ধাতুঃ দুস্তাাদেশস্ত স্টভিধাতোঃ সঙ্গেতানেন টে পরে যকারে মূর্দ্ধন্তে ক্রতে ইন্তত ইতি রূপম।

১৭৯। স ষ্ঠিবুষুকোঃ। ষ্ঠীৰতি যুক্তে।

১৮০। নামধাতো*চ। মোড়ীয়তি।

১৮১। ইদিন্ধাতোসুম্।
কেবলেদিন্ধাতোরুত্তরে নুস্তবতি। বদি বন্দতে।
১৮২। ন কম্পেঃ কায়বিকারে।

(১৮২.১৮৩)৷ কপি চলন ইত্যক্ত কামবিকারে লগি গভ্যবর্থ

⁽১৭৯)। স্তিবু নিরসনে ভাদির্দিবাদিশ্চ সুক গতে) দণ্ডকে পঠাতে এতয়োঃ যঃ সোন ভবতি। দস্তাদিঠকারগুক্তস্ত স্ঠেবুধাতোঃ যশ্চেতি স্কল্যকারে কৃতে ষ্ঠাবতীতি সিধাতোর মুর্কলাবিথকারগুক্তস্ত ষ্থিবুধাতোঃ ষ্টাবতীতি সিধাতোর শ্রহাদিথকারগুক্তস্ত ষ্থিবুধাতোঃ

⁽১৮০)। নামণাতোশ্চ ষঃ দোন ভবতি। বোড়ীরতীতাত্র বড়দস্তা অস্তেতি ব্তব্রীহৌ ক্তে ব্ত্রীহৌ বয়সি স্বসংখ্যাভাাং দম্বস্ত দ্তৃরিতি
দ্রাদেশঃ প্রকার উগিংকার্যার্থঃ দতরি চেতি যয় যো ভাবো দকারক্ষ
ড়ঃ বোড়স্তমাচপ্রে ইতি নাম ইত্যাদিনা নিঙ্ অনেকাচামিতাদিনা অতো
লুক প্রাদেশেন্ততি ছঃ নিঙ্লোপঃ যোড়মিচ্ছতি বোড়মিবাচরতি বা তুল্যাচার ইত্যাদিনা ইয় ধাতুসংক্ষায়াং সত্যাং তিঙাদিকার্যাম্।

⁽১৮১)। ইকার ইলাছতি যক্ত স ইদিং ইকারমাত্রক্ত গমনে ইদিবং নতু মিলিডক্ত ভিদিরাদেল্প ইরভাগগমনে ন ইদিব্দ ইরিং কার্যান্ত ভ্রাক্তনে। ন হি মৈত্রক্ত ছিলে হত্তে ছিল্লান্ত্র্ বিশ্বতি বাপ-দেশে ভবতি অভএব বাচকার কেবলেণিক্ষাতোরিতি। টুনদি-প্রভূতীনান্ত টুভাগোহপি পৃথগিতি ইদিবন্নিক্ষমেব। বন্দতে ইতি বদি অভিবাদনন্ত্রতোঃ মিদন্তাচঃ পর্যমিতি দকারপূর্বে হুম্। ধার্মধিকারেংপার পুন্ধ ভূগহণং ধাতূপদেশাবস্থায়ামেব হুম্ভবতীতি ইচনার্যে। তেন কুণ্ডাতুণ্ডেত্যাদে) গুর্মানিহলস্তাদদীপাদেরিত্যান্তরতি। অক্তথা জিং তাব।

১৮ । লঙ্গেরুপতাপে। বিক্ষিতো দেহবিকার ইত্যর্থঃ। বিলগিতো রোগ ইত্যর্থঃ।

১৮৪। জভাদেরচি।

অচি বিষয়ে জভাদেরতারে মুম্তবতি। জভ্জন্তারতি অপেক্ষিতবিধেরনপেক্ষিতবিধানং দুর্ববলমিতি ণিতি নৈব বৃদ্ধিঃ। জন্ততে জন্তা
রধ্ররক্ষিম রভ্ আরম্ভবং লভ্ আলম্ভবং।

পঠাতে তক্ত উপতাপার্থে স্থম্ন ভবতি। কায়বিকার ইত্যন্তার্থং ব্যাচকার দেহবিকার ইত্যর্থ ইত্যনেন উপতাপ ইত্যন্তার্থং রোগ ইত্যর্থ ইত্যনেন
দেহবিকারো রোগাদন্তা বোজবাঃ অল্পথা উভয়োজপাদানমনর্থকং লাং।
বিলগিত ইতি লগেসঙ্গে ইত্যত্রাপি সিধান্ত্যেব কিন্তু লগি গভাবিত্যক্ত বোলে
বিলঙ্গিত ইতি মানুং ইত্যেবমর্থং তুম্বিষেধবিধানম্। কায়বিকারোপতাপ্রোরন্ত্র বিকম্পিতঃ বিলঙ্গিতঃ।

(১৮৪)। ক্ত্রুভি গাত্রবিলাদে জত্ মৈথুনে হয়োরপি এইণন্
সত্র নিভি কতে বৃদ্ধিঃ প্রাপ্রেতি ধুনাগমণ্ড , অত আহ অপেক্ষিতবিধেরিভাদি। নমু অপেক্ষিতবিধিরের কঃ যমিন্ কতে মার্কং পদা
দিধাতি। তথাচোক্তং নহ্যনিষ্ঠার্থা শাস্ত্রে প্রকৃষ্টিরিভি। তুমি কতে
মনেকর্বব্যবহিতাজিজ্পান্তণ্ড পাতৃরিতি কথাদিছার বৃদ্ধিঃ। নমু
অচীতি বিষয়সপ্রমা অতঃ প্রথমমের মুমা ভবিতবাং ততো নির্দ্ধি কতে
বৃদ্ধিপ্রাপ্তিরের নাস্তি তৎ কথম্চাতে অপেক্ষিত্রিধেরনপেক্ষিত্রিধানং
হয়ামিতি নিতি নৈর বৃদ্ধিরিতি। অত্যোচাতে বিষয়সপ্রমীক্ষেপি
অপেক্ষিত্রিধিস্থীকার এব কারণং যতো জন্তেভাত্রাপেক্ষিত্রমান্থিনাং ন
প্রধানীতি বিষয়সপ্রদী স্বীকরণীয়েতি তন্তাৎ সর্বব্যবস্থায়ামিরমের পরিভাষা মুলমিতি তৎ কিনেতং স্বীকারপ্রদেষঃ। জন্তত ইতি অমুদান্তেরাদান্ত্রনেপদং ভরতি। জন্তেতি প্রথম্বং মুমি ক্রতে গুর্কাদিইলন্তাদিত্যাদিনা আৎ অতএবাহ অচি বিষয় ইতি। ররন্ধিম ইতি রধ্ হিংসাসংরাধ্যাঃ নিট্ ম রধাদিরিঙ্পক্ষে ব্যচাদিন্তাদিট্ অতএব রধোনেত্রীতি
ন প্রতিযেধঃ। আরম্ভক ইতি বভ্রাভন্তে। আলম্ভক ইতি ভুল্ভয়

১৮৫। রুধো নেঙ্কি। রধিষাতি।

১৮৬। শঙ্লিটোর্লভিরভিভ্যাম্। লভতে আরভতে লেভে আরেভে।

১৮৭। লভেব্নতি।

লভা তুরালভা।

১৮৮। **অনুপর্মান্যবি।** লাভঃ।

১৮৯। গমিণোর্কা।
লম্বং লম্বং ক্রতে লাভং লাভং অলম্বি অলাভি। সোপসর্গান্ত্র—
প্রলম্বং প্রলম্বং কুরুতে প্রালম্বি।

- (১৮৫)। ইঙি পরে রধো সুম্ম ভবতি। কথং রোধিবান্ ইঙি সহিক্ত্যেকাজিনম্বাদস্ভাবসাবিতি বদৌ ব্যচাদিছেন ইঙোহভাবে নিষেধা-ভাবাং কর্বোহত্র বছলাধিকারাদিতি যত্তঃ স্মত্র নিষেধঃ।
- (১৮৮)। শঙ্লিটোঃ প্রয়োঃ লভিরভিভাাং মুম্ ন ভবৃতি। ক্রমো-২ত্র নেব্যতে যদি ক্রমোহভিল্পিতঃ স্থান্তদা লিটি রভেঃ শঙাভোল ভিরিতি লক্ষণং কুর্যাং। আরেভে ইতি লিট্ এ শ্বিফক্তিঃ অনাদেশাভ্যাদক্ষেত্যাদিন। অকারস্ক্রেকারঃ শ্বিসু ক্ চ।
- (১৮৭)। আতি পরে লভেমুম্ন, ভবতি। লভা গুরালভা ইতি বিজিলাদেরাদিত্যাৎ।
 - (১৮৮)। অমুপ্দর্গাৎ লভতের্যণি পরে মুদ্ ন ভবতি।
- (১৮৯)। লভেরমুপনগাঁধনিগাং পরয়োঃ মুদ্বা ভবতি। গ্রীপ্রে বিভাবেরং লঙ্কং লঙ্কমিতি গ্রাভীক্ষো ইতি জ্বা পম্ পমস্তমভিহিতেহ-পার্টীক্ষো ইতি দ্বিসন্তিং। আন্তীতি লুঙ্ ত সঙ্সচ্সিক্স্থাক্ষ ক্রান্বাবিতি ইপ্।

প্রাপ্টে। অচীতি কিম্? জভাং রধবা। জভ্রভ্লভ্রধাশ্চখারে। জভালয়ং।

- ু৯। স্ত্রীষদ্যোহনভোপদর্গে ন ঘণ্ডায়ে। ইলভঃ স্থলাভঃ। অভোপদর্গে ভূ—সুপ্রলন্তঃ অভিতুর্লন্তঃ। অভিস্লভোহতিত্বলভে। বেভোকে।
- ১৯১। **আ**ঙো যভি স্থাৎ। আলম্ভ্যা গোঃ।
- ু ১৯২। উপাৎ স্তুতো। উপলন্তা বিদ্যা।
- ১৯০। চতুল ড়াদে শঙ্ভূণ্যাদেঃ। ক্রমাং কথামানের চতুর্ লট্ লোট্ লঙ্ বিধ্যাদিলিঙ্গু পরের
- (২৯০)। বিকরবিধানানন্তরিতো নিষেধ ইতি পুনর্নেতি কৃতং স্থ তর ঈষৎ ইত্যেতেতা উত্তরাৎ লইভূর্যণ্ প্রয়োং অল্যোপসর্গাভাবে সতি মুদ্ দ ভবতি। স্থলত ইতি সূত্রীষদ্ধাং কর্মাণি চেতি & অকষ্টার্থেযংস্থভাাং গুর্থার্থান্দ্র ইতি নিয়মাণের অবিকার্যন্ত সোর্যণের স্থলাভ ইতি অতি-স্থলভোহতিত্বভো বেত্যেক ইতি অতির্যনা পূজায়ামজিক্রমে চ বর্হতে তদোপসর্গন্থং নাস্ত্রীতাল্পোং মতং তেনাল্যোপসর্গযুক্ত মাভাবান্নিষেধ এব। অত্র তু স্থলভত্বভিশক্তো নিম্পান্ত পশ্চাদতিনা প্রান্তন্ত যোগে অতি-স্থাভঃ অতিত্বলিত ইতি সিদ্ধা কেবলেন্ডা ইতি কর্ত্রবো অনুভোপসর্গ ইতি কৃতং তদিতরোপসর্গবাার্ত্রার্থং তেন ক্রয়ে ক্রেমং স্কর্লভমিত্যা-দিনিষেণলক্ষণানামবিষরত্বাৎ অঙ্গলেথামকান্সীরসমালভনপিঞ্লরামিত্যাদি মহা-ক্রিপ্রয়োগ্যে হয়ার্ত্ত এব।
- (১৯১)। আঙ উত্তরাৎ লভতের্যন্তি পরে মুম্ গ্রাৎ। আলস্ভোতি
 পবর্গান্তাদলপাদেরিতি যত্। আঙ ইতি কিম্? লভাগ যত্তীতি কিম্? আলক্রবা। যতিতি ভকার: কিমর্থম্? আলভাতে স্থাদিতি কৃতং স্পান্তার্থম্।
 - (১৯২)। উপাছন্তরাং লড়তের্যীন্ত পরে সুম্ স্থাং স্বতৌ গম্যমানার্যাম্। উপলন্ত্যা বিহাং ইতি স্বতিরত্ত গম্যতে। স্বতাবিতি কিম্ ? উপ-লচ্যং ব্রলান্ধনম্।
 - (১৯৩)। ভাদিরিতানেন ভ্রাদির্যস্ত ইতি প্রথমগণো গৃহীত:

ভাদের্নিঙাদেশ্চোত্তরে শঙ্ভবতি। ভাবকর্মণোর্যাধিতাং, কর্জ-র্যোব শঙাদয়ঃ। ভবতি স্পদ্ধতাম্ অপচৎ পচেৎ ভাবয়তি চোর-য়তি বুভূষতি বোভূয়তে পুত্রকাম্যতীত্যাদি।

১৯৪। न्याञ्ह्रकारमः।

শঙাদেরুত্তরোহকারে। লুগ্ভবতি। ভবন্তি দীব্যন্তি তুদন্ পচ্যন্তে বক্ষ্যন্তি অপুষন্ অধুক্ষন্ত ইত্যাদি।

১৯৫। আচ্চৈদাদৌ এদাদো পরে স্থ সাচ্চ লুগ্ভবতি। পচে ব্যতিভে।

নতু দশগণাঃ। যদি সর্ব্বেভ্য এব শঙ্ ভবতীতি অপেক্ষিতং স্যাৎ তদা ভূণ্যাদেরিতাস্ত স্থানে ধাতোরিতি কুর্যাৎ অথবা অধিকারাদেব প্রাপ্তে তদর্পি ন কুর্যাৎ ভাবকর্মণোরায়নে কর্ত্ত্যান্ত ভিদ্যনায়ামিত্যাদিভির্বাবস্থিত স্থাৎ ভাবে কর্ম্মণি কর্ত্ত্ব্যের লডাদিসংজ্ঞকা ভবস্তীতি ব্যবস্থিতং তেয়ু পরেয়ু ধাতোকত্ত্বে বিধীয়মানাঃ শঙাদয়ঃ সামান্যেন প্রসক্তাঃ অত আহ ভাবকর্মনণোর্যাবিতাঃ কর্ত্ত্ব্যেব শঙাদয় ইত্যাদি পারিশিয়াৎ। আদিশকঃ প্রকারকান বচনঃ। কে চ শঙ্ প্রকারাঃ যে এবং বিধীয়ত্তে যথ মুথ শ শ্লম্ উঙ্ নাতঃ। পচেদিভিঞ্লিঙ্ যাৎ অত ইতি যা স্থানে একারঃ আদৈদাদাবিত্যকারলুক্। ব্রুহতীতি সন্ অপৃঙ্ যুর্ণভি সংস্তাদিরিভিত্যাদিত্যাদিঙ্ভাবঃ।

(১১৪)। বক্ষান্তীতি বচ্ পরিভাষণে লুট্ অন্তি শুঙ্ চজোঃ ক ইতি চম্ম কঃ ষত্ম। অপুষন্ ইতি পুর্পুঠো লুঙ্ অন্ প্যাদুদিতোহগ্পর-শৈপদ ইতি অগ্। অধুক্ষন্তেতি হহ্ প্রপুরণে দুঙ্ অন্ত সচ্ শাম্মঙাদনিঙি-শুপাস্তাদিদৃশ ইতি সচ্ হোঢ় ইত্যাদিনা হক্ম যঃ ভূগ্যান্তইত্যাদিনা দক্ষ ধঃ বর্গস্থাদিরিত্যাদিনা ঘক্ম কঃ যত্ম। আদিগ্রহণাৎ অবীভবন্ অদিভি ন দীর্ঘগ্রহণম্ উত্তরস্ত্রে আচেতি করণাৎ তেন অপি শাকং পচানস্যোদৌ ন লুক্ প্রকরণনিয়্মাৎ প্রাদের্ঘদেঃ শঙ্ ইত্যক্ষাগ্রহণং তেন উজ্জিল্লা ইত্যাদৌ জসোহলুক্ ন স্থাং।

(১৯৫))। পচে ইতি স্বরিদিশানাম্মনেপদং লট্ এ। ব্যক্তিক্ষে

১৯৬। উদি। অপু^{হা}।

১৯৭। ইড়া**দো।** ভস্থিব ভস্থিম সমস্থিত।

३ ३४। क्रम हा धनारमे।

ুগোদঃ গোপ্রদং। ভনাদে তু। দানং হুর্দানং দানীয়ম্।

১৯৯। দ্বিক্লক্তিহেতাবচ্যগি চ।

পপতুঃ অহ্বৎ।

ইতি ভা দীথোঁ কর্মব্যতীহারে ইত্যাদিনা আয়নেপদম্। আদিগৃহীতান্ দশ্যতি।

- ১৯৬। উদি পরে অং আক্র পুর্বতি। অপুরিতি পাধাতোল ঙ্
 অন্ বিদেরুস্থিবাদ থাছেতি উদ্ একপদবিধেরুপাক্রাপ্তত্তাং অশব্দাং সপ্তমা
 দিন্ধে এশব্দে পরে বদৈ ইত্যত্র কিনাশীলে গারিত্যাদিনা বদেরুবাদেশে চ ক্বতে
 প্রোষিত ইত্যত্র চ লুগ্ন ভবতি।
- (১৯৭)। ইড়াদাবিতি পাঠো লিপিকরপ্রমাদক্ত:। তদ্বি ইতি প্রথমং যতুদাক্তঃ তদপি প্রমাদপরম্পরাক্তম্। ইঙানাবিতি পাঠ:। ইঙো ছি মুখ্যত্বাং প্রথমমুপক্তানো যুক্ত: ইঙাদৌ পরে অং আচ্চ লুগ্ভরুতি। সম-ছিতেত সংপ্রব্যবেতা: স্থ ইত্যাম্বনেপদং লুঙ্ ত সঙ্ স্থাদাধাধেটদোদানদে-ক্রোমান্থনে সঙাতি ইঙ্ আরুক্ অঙ্যাদিত্যাদিনা সঙ্লুক্। তদ্বিবেতি লিটু ব মুদ্ধশ্বসাং কালেরিতি থা ইতাক্ত দিকক্তিঃ হক্ত ক্র স্থ ই ইত্যাদিনা বাচাদিত্বিট্। অনিঙাদৌ তু হাধাতোর্যন্লুকি ইনি ক্রতে অতা সহ গুণে চ ক্রতে জাহেতীতি।
- (১৯৮)। গুনাদিবর্জিতে ক্লাচ পরে অং আচ্চ লুগ্ভবতি। গোদ
 ইতি গাং দলাতাতি দঃ প্রাচেতি অঙ্। গুনাদৌ তু দানমিতি গুনট্ ক্লীবে
 ইতি গুনট্ ছর্দানমিতি অদ্রিক্রাদস্তাদিতি গুন আদিগ্রহণাং দানীয়ম্।
 - (১৯৯)। হিক্তিকিংহতৌ অচি অগি চপরে অং আচ্চ লুগ্ডৰতি।

२००। धमिंडिए।

শঙাদের ওরোহঙিদাদেশুবতি। পচেতে। অভিদাদিতি কিম্ 🏞 পচানি। অপি শাকং পচানস্যেত্যত্র বাকুল্যায় স্যাৎ।

২০১। অঙ্ম্যতমে।

অঙমি উত্তমে পরেহৎ আন্তবতি। ভবামি পচাবহে। অঙমীতি কিম্ ? অপচম্।

২০২। অভিত্রথোশ্চ পঞ্চমালুকি।

পপতৃরিতি পাধাতোর্নিট্ অতুন্ একদেশে সমুদায়োপচারাৎ অতোহত্ত দ্বিককিহেতৃত্বম্। অহ্বদিতি হেবঞ স্পর্দায়াম্ এচোহনীত্যাস্থং লুঙ্ হঙ্লিপ্ সিচ্হেঞ্গানিতি অগ্।

(২০০)। পচেতে ইতি এত্বে ক্বতে আকৈদাদাবিতি অকারলুক্।
পচানীতি লোট্ ঙানি। পচানস্তেতি শানঃ শঙ্ শানেহত ইতি
প্রাপ্তস্থা মকারস্ত কচিন্ন স্থাদিতি নিষেধঃ।

(২০১)। পচে ইত্যত্রানেনাত্ব চ ক্রতে আল্লোপে ন কন্চিন্বিরোধঃ। অপচমিতি ল্গাছ্ডগ্রাদেরিত্যকারলুক্। নন্ত্রাদানাবের গুমপি পঠাতাং তদা অপচমিত্রত অনেনাত্বে ক্রতেংপি অকৈদাদাবিতি ভবিষ্যতি নৈবম্। তদা অভানিত্রত লুক্ স্থাৎ। ভবেরমিত্রত যানিযায়ন্তেতি বিশেষবিধানাৎ এইনাম্বস্থা বাধকং ভবত্যেব। ভবের ভবেম ইত্যত্রাপেক্ষিতবিধিমাৎ প্রথমম্ অত ইতি যাস্থানে একারে ক্রতে পশ্চাদাম্ম আজৈদাদাবিত্যাকারলুক্ অথবা আছেং বাধিম্বা লুগের করণীয়ং আছে তু প্রথমং ক্রতে একারোল প্রাপ্রোতি তত্ত প্রযোক্তা দীর্ঘতা মহণাৎ।

(২০২)। পঞ্চমালুকীতি লুগিতানেনানবস্থানমুচান্তে তৎপ্রতিষেধাৎ পঞ্চমাবস্থানে সতি ইতি লভাতে। • সম্ভবরাভিচারে হি বিশেষগমনর্থ-বছবলীতি লামাৎ অত্রাবস্থিতভা পঞ্চমদা লুক্ অলুক্ চ সম্ভবতি তৎ গ্রাহং তক্ত ধারস্কস্থিতবৈত্ব সম্ভবতি। সনিহিতালাভে বিপ্রকৃষ্টং বিধি-স্বৈধিণাতে ইতি ভাষাব্যবহিতে বিধানং তেনায়মর্থো ভবতি। অভিতি

২০০। ক্তি_ৰক্তমোবা। শান্তঃ শংশান্তঃ ক্ৰান্তা ক্ৰন্তা।

২০৪। শিতি তিষ্ঠাদিঃ স্থাদেঃ। শিতি পরে স্থাদেঃ স্থানে তিষ্ঠাদির্ভবতি। স্থা তিষ্ঠতি পা পিবতি আ জিম্মতি শ্বা ধনতি শ্বা মনতি।

২০৫। দান্যমোর্যচ্ছঃ।

'২০৬। ধাখাচিছঃ।

२०१। मर्ज्डर्धादवा द्वरम ।

ধাবতি।

তকারে থকারে চ পরে পঞ্চমান্তস্য ধাতোঃ পঞ্চমস্থালুকি সতি তছ্য-ৰহিতো অং আন্তবতি।

(২০০)। ক্তিন পরস্যাং ক্রমুপাদবিক্ষেপে ইতাস্য অৎ আদ্ভবন্তি বা। শান্ত ইতি শমু উপশমে অস্যানিঙ্গণপাঠাভাবাৎ তথােশচাঙীতাাদিনা পঞ্চমলুগ্ ন ভবতি ক্রক্তবন্ধার্মিকলিতেঙাে ন স্যাদিতি ইঙভাবং।
ধাতুমানোহঙ্ঘ ইতি মস্ত নং শংশান্ত ইতি ঘন্লুকি বিক্জিং জপজভেত্যাদিনা অনুষারং। অভিতথােরিত্যভিদ্ভ্য ইতি বক্তবাম্।
তেন শংশাংহি বাতিশংশাংসে ইত্যাদি সিধাতি এবং শাস্ত্রান্তরেণ্ সহাবিরোধাে ভবতি। অভিদিতি কিম্ ? হন্তি। তথােরিতি কিম্ ? গম্যতে।
পঞ্চালুকীতি কিম্ ? হতঃ হধঃ।

(২০৪।২০৫-২০৬)। ষ্ঠা গতিনিবৃত্তী পা পানে আ গন্ধোপাদানে খ্যা শদাগ্নিসংযোগয়োঃ না অভ্যাদে দাণ্ দানে যম্পরমে ঋ গতৌ প্রাপণে ট এবাং যথাযথমাদেশা ভবস্তি। ঋ স্থ গতাবিত্যস্য তু হ্লাদেঃ শতরি ইযুচ্ছদিতি ঋশচ্ছোভূ দিয়াস্ত ঋচ্ছদিতি ভবিতব্যম্। যন্লুকি শিতো-হভাবদিন্নতে ভবস্তাদেশা অনভিধানাই শতুরভাবো যন্লুগস্তাদ্বেতি তব্য ইতি রক্ষিতেনোক্তম্।

(২০৭)। সং গতাবিভাসা শিতি পরে বেগে বাচো ধাবো ভবতি। অবেগে তু—সমুসরতি। ঋচ্ছ্যাতোঋ চ্ছতি ধার্থাতোধাবিতি ইতি २०৮। भाग्माताः भीयमीताः। पृभ् भणः भगः, भक्तः देव् देखः।

২০৯। নো লুক্ সন্জ্যন্জ্রন্জ্দন্শাম্। সম্বতি।

২১০। দীর্ঘঃ ষ্ঠিবুক্লমাচমাম্। নিষ্ঠাবতি ক্লামতি আচামতি।

২১১। গুপৃধ্প্বিচিছপনিপণেরায়ঙ্পরদৈ চ। । গোপায়তি ধ্পায়তি বিচ্ছায়তি বিচ্ছায়তী বিচ্ছায়ন্তী।

২১২। বিচ্ছের্বেত্যেকে। বিচ্ছতি বিচ্ছায়তি পনায়তি পণায়তি।

সিধ্যতেব কিন্তু ঋধাতোররতীতি র বেগেহপি সর্ত্তে: সরতীতি স্যাৎ ভরিরাসার্থং বচনম্।

(২০৮)। শদু শাতনে বদু বিশরণগত্যবদাদনেযু এতৌ ভাদী ভুদাদী চ এতয়োঃ শিতি পরে শীয়দীদৌ ভবতঃ। শীয়তে দীদতি। দুশির প্রেক্ষণে গম্বুপু গতৌ ইযু ইচ্ছায়াম্ এতেষামাদেশা উদ্দিষ্টা এব।

(২০৯)। সন্জ্সঙ্গে অন্জ্পরিষজে রন্জ্রাগে দন্শ্দংশনে এবাং ন্জার: শিতি পরে লুগ্ভবতি। অথবা ন ইতি ষষ্ঠা।

(২০০)। ছিবু স্টিবু নিরসনে সন্দেতি মুদ্ধতো ক্বতে ধরোরপি শ্রহণন্। ক্রম্মানৌ আঙ্পূর্ব চমু অদনে পঠ্যতে এবাং শিতি পরে শীর্ষো ভবতি। নিঠাবতীতি ন ছিবুযুকোরিতিঃ প্রতিষেধাৎ বং সো ন ভবতি। ক্রামতীতি ণ্যাদিগণপঠিতত্বাৎ শঙ্ যদা তু বা প্রাশ্ভাশ-ইত্যাদিনা যৎ ক্রিয়তে তদা ক্রাম্যতীত্যক্র শমাদেদীর্ঘ ইতি দীর্ঘোণি ভবতি। আঙ্পূর্বাদেশ্রক চমতি সংচমতি।

(২১১,২১২)। গুপু রক্ষণে ধৃপ্ সস্তাপে বিচ্ছি গতৌ পন্ শ্বতৌ পণ্ ব্যবহারে স্বতৌ চ এভা উত্তরে আয়ঙ্ভবতি পরশ্বৈপদঞ্। পণি-পনোরস্দাতেছেনায়ঙ্নিমিত্তেন চ শেষাণাঞ্জায়ঙনিমিত্তেনাশ্বনেপদে প্রাপ্তে পরশ্বৈপদবিধানম্। স্যায়ুক্তিছাৎ প্রকৃতিনিমিত্তমেবাল্পনেপদং ্২১৩। পণেব্যবহারে বা। শতং পণায়তি পণতে।

২১৪। যক্যচতুর্ম পি বা। গোপায্যতে গুপ্যতে গোপাময়তি গোপায়তি গোপায়িত: গুপ্তঃ গোপায্যাৎ গুপ্যাৎ।

পরিশ্বেপদেন বাধ্যতে। নতু ভাবকর্মনোরিত্যনেনায়নেপদম্। গোপার্র তীতি শঙ্ বিচ্ছারতীতি তুদাদিস্বাচ্ছঃ অতএব বিচ্ছাঃস্তীতাত্র শতৃ-প্রত্যয়ে ক্তে ঋত্নিদিত্যাদিনা ইপ্রত্যয়ঃ অভোবেতি পক্ষে মুম্-বিচ্ছের্কেভ্যেকে ইতি তন্মতে বিচ্ছতীতি শঃ।

⁽২১৩)। ব্যবহারেহর্থে বর্জ্মানাৎ পণেরায়ঙ্ বা ভবতি পরস্থৈ-পদঞ্চ। শতং পণায়তীতি ব্যবস্থ পণের্বহারে বেতি পক্ষে ফী অব্যব-হারে তু নিত্যমেব আয়ঙ্ দেবং পণায়তি স্তোতীত্যর্থঃ। ব্যবহারার্থে আয়ঙ্ন ভবতীতি জ্য়াদিত্যমতং ব্যবহারেহপায়ঙ্ভবতীতি ভাষ্যকার-মত্ম উভয়মতদর্শনাদ্বিকল্লবিধানং স্ত্রক্তা দর্শিতম্। ওথাচ, "ন চোপ-লেভে বণিজাং পণায়াম" ইতি ভটিঃ।

⁽২১৪)। গুপাদের্ঘকি অচতুর্ব পি আয়ঙ্বা ভবতি পরবৈশদক।
পূর্বস্ত্রাদাগ্রহণং পণিনা সহ সম্বন্ধ্ এতাবতা বাহও গ্রহণং গুপাদেরেব
বিকল্লার্থং প্যাদৌ সনাদৌ চ আয়ঙ্ কণ্ডাদিয়স্ত গ্রহণ্ম। তেন
গোপায়াঞ্চকার কণ্ডুয়াঞ্চকার ইন্যান্ত ভাম্। গোপায়াকণ্ডুয়েত্যক্র
সনাদেকেত্যনেন আন্তবতি যক্যচতুর্ব পি বেতি বিষয়সপ্তমী তেন গোপায়েত্যক্র প্রথমন্ আয়ঙ্ পরসপ্তম্যান্ত প্রথমং ক্রিঃ স্থাৎ ততঃ আরঙ্
ইতি। বিচ্ছায়তী বিচ্ছায়ন্তীত্যক্র প্যাদিশ্বাৎ প্রাপ্তং শঙং বাধিমা
বিচ্ছেম্বদাদিপাঠসামর্থাৎ শ এব ভব্তি। বে তু বিচ্ছের্বেভি বিকল্পেন
নায়ঙ্মিচ্ছন্তি তেবাং বিচ্ছতি বিচ্ছন্তীত্যক্রৈব শ বিধানং ক্রতার্থমিতি।
বিচ্ছায়ন্তীত্যক্র তু শঙেব ভবতীতি মন্সন্তে। গুপ্ত ইতি গুপু রক্ষণে
উদিয়ান্তিকল্লিতেঙ্গাৎ ক্রন্তবন্ধার্মকৈলিতেঙ্গে ন স্যাদিতি নিত্যমিঙ্
নিষ্কোঃ। স্বোপান্নিত ইত্যক্র তু আয়ঙ্কত্ত ধান্তব্যন্ধানিঙ্ ভবত্যবা।

২১৫। ক্রমঃ পরত্রৈ শঙ্বতোদীর্যঃ। ক্রামতি ক্রাম্যতি।

২১৬। গুহো ডিদটি। নিগৃহতি অজুগুহৎ অবগৃহক:।

२७१। क्खृ क्रारमर्थः।

কণ্ডুয়তি কণ্ডুয়তে কণ্ডুয়াতে কণ্ডুয়া। কণ্ডুঞ হুণীঙ মহীওঁ অস্ত্র মন্ত্র বন্ধ ধেট লোট তিরস্ উরস্ তাপস্ইবস্ উবস্ বিরস্ কুসুম মগধ মেধা স্থু গুষ্থ চরণ ভারণ ভূষণ অধর চরম সমর

যদি পরসপ্তমী স্থাৎ তদা গুপেরেবায়ং কো বিহিত ইতি ইঙ্ নিষেধঃ স্থাৎ। গুপ্যাদিতি আশীর্নিঙ্ যাৎ।

(২১৫)। ক্রমু পাদবিক্ষেপে ঠিতান্ত পরবৈশ্বদদশ্দিনোঃ শঙ্-যতোঃ পরয়োঃ দীর্ঘো ভবজি। ক্রামতি ক্রাম্যতি ইতি বা ভ্রাশ্ভ্রাশ ইত্যাদিনা পক্ষে যৎ তদভাবপক্ষে ভ্রাদিতাৎ শঙ্। আন্তর্নেপদশঙ্-যতোক্ত। যুদ্ধেরু ক্রমতে ক্রম্যতে অপ্রতীঘাতোৎসাহেত্যাদিনা আন্তর্নে-শদ্ম।

(২১৬)। শুহু সংবরণে ইত্যক্ত ভিদচি পরে দীর্ঘো ভবতি। নিগৃহতীতি ভিঙ্ক শঙ্ গুণহাধিতা দীর্ঘঃ ক্ষক শুহদিতি পিঙ্ক দীর্ঘঃ কৃঙ্ক ছঙ্
প্রি ক্র ক্র করেঃ কর্ত্রগন্ ইতি অন্ নিরিভ্তেত্যাদিনা বিক্রকিঃ ব্রহোহশাবাদেরিতি ব্রহা কঞ্জরাবপ্রথাদেরিত্যাদিনা দীর্ঘঃ লঙ্ পূঙ্ ইত্যাদিনা অঙ্।
অবগৃহক ইতি পকস্ত পিঘাৎ ভিত্বং দীর্ঘবিধানদামর্থ্যাৎ ব্রহোহশাস্থাদেরিতি
হবোহত্র ন ভবিষ্যতীতি কন্তাপ্যাশবিধাঃ নিরাকর্ত্র মৃ অক্স্ গুহদিত্যুদাক্তম্।
যতো দীর্ঘবিধানং নিগৃহতি ইত্যাদাবেব দৃষ্টপ্রেরোক্ষনং নান্যার্থং যুক্তাতে।
ভিতীতি কিন্? নিক্রেইড্:। অচীতি কিন্? নিগোচ্স্। এতৎ
লক্ষণহরং দীর্ঘবিধুক্তমানেমিত্যাদ্যনীত্রকানীৎ লিপিকরপ্রমাদাদিহ দৃষ্ঠতে
অতএব দীর্ঘ ইতি চপ্রমাদক্তম্।

(২১৭)। কণ্ডুঞ ইড্যেকমাদিভ্যো বং প্রভারো ভবঙি। কণ্ডু-ঞাদয়ো গণপঠিতা হিধা ধাতবো নামানি চ। তত্র ধাছধিকারাদ্বাভূভ্য- ভিদজ্ ত্রিষ্টু প্ বিষ্ণুজ ইষ উষ গৰ্দভ এলা মেলা বেলা কেলা খেলা উত্তম পস্পশ।

২১৮। কুপাদেঃ কুপাদিঃ। কুপাদীনাং স্থানে কুপাদির্ভবতি। চিকৃস্পতি কুপ্তঃ কুপাতে কল্পতে প্রকৃপ্য।

२००। शिद्रता यनि दृत्ता लः।दक्तिगढ्ड।

এবাদং প্রত্যায় নতু নামভাঃ। কণ্ডু ঞাদীনামন্থক আত্মনেপদার্থঃ তেন ব্যরিৎক্রিতোরিভাগ্মনেপদম্। কণ্ডু মতে। অকর্ত্র ক্রিয়াফলে তু —কণ্ডুমতি। কণ্ডু যেতাত্র সনাদেশেতভাপে হুণীঙ্ মহীঙোঙি ঘাদাস্থনেপদম্।
হুণীয়তে মহীয়তে। স্বস্থ মন্ত বন্ধ ইতাতেভাো বে কতে সনীণ্ দীর্থঃ ইতি
দীর্ষঃ। অস্থাতি মন্ত্র্যুতি বল্গুয়তি চান্দ্রান্ত গ্রেস্থানতোন্ পঠন্তি।
মগধহন্ধ স্থাদয়োহকারান্তাঃ বে গণে পঠান্তে তেবাং মগধ্যতীত্যাদি অকারলোপে পরবৈষ্ণদবিধানন্ত চিন্তাম্। বে তু নামানি কণ্ডু ঞাদয়ঃ তেবাং
থকারোন ভব্তি। কণ্ডঃ মন্তঃ বন্ধারিতি।

(২১৮)। চিকুপতীতি কপু সামর্থ্যে সন্ সঙ্লোগেৎধাংনাত্রনেসোর্ত্তা ইত্যাদিনা ত্যাদিঘাদিভভাব: বিকক্তিঃ ঝদুতোঃ সবর্ধপ্রারভাব
ক্যারেহিপি ঝদদিত্যকার: ইন্থিরদিতি ইকার: ক্পো লুটি চেতি পাক্ষিকমত্রাত্রনেপদন্। কৃথ ইতি উদিরেন বিকরিভেড্ ছাব ক্তক্তবড়োরিত্যাদিনা
ইঙ্নিধেষ:। করত ইতি অসুদাত্তেছাদাল্যনেপদং শঙ্ গুলেনাল্। প্রকৃপোতি ক্রা নিতাং কু পাদেরিতি সমাস: প্রাদেরিত্যাদিনা ক্রা ষচ্।
কপেতি তু ক্রপ্ কপায়াং গভাবিভ্যব্র ক্রপে: ক্রপ্ চ ইতি আংপ্রত্যারেন্ ডক্ত
কপেন গ্রহণম্। মদি ভ্রাপি কুপাদেশেন ভবিতবাং ওদা ক্রপেঃ কুপ্
চেতি স্ত্রং কুর্যাব হাদেরন্ ইত্যুনাদিলক্ষণেন ক্রপেঃ সিক্রোঃ ক্রপঞ্কুপানক্রম্ব্যাং কুপাদেশেন ভ্রতি বছলরচনাব।

২২০। স্বরে বা।

গিরতি গিল্তি গারয়তি গালয়তি।

২২১। কণ্ঠে নিত্যম্।

গলঃ।

२२२। न विस्।

গরঃ।

২২**৩।** স্থপি চ। গিরো গিরঃ।

२.२८। পर्याक्षारमर्का।

পর্য্যক্ষঃ পল্যক্ষঃ নিরয় নিলয়ঃ ছরয়ণং ছলয়নং পরিঘঃ পলিঘঃ পরিযোগঃ পলিযোগং প্রত্যয়ং প্রত্যুয়ঃ।

⁽২১৯)। গৃনিগরণে তুদ।দিঃ গৃশকে ক্র্যাদিঃ এতয়োরেফো যনি পরে লো ভবতি। জেগিলাতে ইতি লুপসদজপেত্যাদিনা ধাত্বগর্হায়াং যন্ শ্লাদির ইতি ইর্ লজে ক্রতে রাস্তবাভাবাপন্ন দীর্ঘঃ দ্বিকজিঃ গুণঃ। গৃশক ইত্যক্তানহিধানাৎ যনেব নাস্তীতি কেচিৎ। স্ত্রে গির ইতি নির্দেশন সৌত্রতাৎ ভিত্যপি শ্লাদির ইতি ইর্।

⁽২২°)। স্বরে পরে গিরো রেফো লো ভবতি বা। গিরতীতি শস্তদাদেরিতি শং। নিগাল্যত ইতি ণিঙ্ বৃদ্ধিঃ রেফফ লং যক্ ণিঙ্লোপ ইত্যয়ং ক্রমঃ। কচিদিতি বচনাৎ নিমিত্তাপায়েহপি লডফানিবৃত্তিঃ।

⁽২২১)। পূর্বাস্ত্রেণ বিকল্পে প্রাপ্তে ব্যবস্থার্থং লক্ষণদ্বয়ম্। কঠে বাচ্যে গিরো রেফো নিতাং লো ভবতি। গল ইতি শ্লদৃঙাদেও ইতি ভঃ।

⁽ ২२২)। বিষে বাচ্যে গিরো রেফো লো ন ভবতি।

⁽২২৩)। স্থাপি চ পরে গিরোধরফো লো ন ভবতি। কিবস্তা হি ধাতুরং ন জহতাতি ধাত্বধিকারেংপি প্রাপ্তিঃ।

⁽২২৪)। পর্যান্ধানে: রো লো বা ভবন্তি। পর্যান্ধ ইতি পরিপূর্বন-আকি লক্ষণে ইদিবানুম্ উপাত্তত বর্গে ইতি নস্ত ওঃ পুংসি্ ঘণ কারকে

≥२৫। (७। (ला वा लरू छः।

চুড়া চূলা বড়ভী বলভী জড়ং জলম্। "বং সমুদ্রশ্চ তুর্বারো মহাসদ্বো সতেজদো। অয়স্ত যুবয়োর্ভেদঃ স জড়াত্মা পটু-র্ভবান্" ইতি দণ্ডী।

২২৬। বালাদেলোঁ রো বা রশ্চ লঃ। বারঃ বালঃ মূরং মূলম্ অরম্ জলং রঘুঃ লঘুঃ অঙ্গুরিঃ অঙ্গুলিঃ অরিঃ অলিঃ।

২২৭। কপিরিকাদেনান্নি চ। কপিরিকা কপিলিকা ত্রিপুরিকং ত্রিপুলিকং রোম লোম পাংশুরম্ পাংশুলম্ কর্ম্ম কল্ম অস্ত্রি অস্ত্রিল অম্বরম্ অম্বলং শুক্রঃ।

২২৮। উপদর্গন্থায়ধার্ক। প্লায়তে।

চেতি ঘণ্। নিলয় ইতি নির্পূর্ম ইণ্ গতৌ শ্লদ্ভাদেও ইতি ইণ্স্বাং ৩ঃ। ছর্মণনিতি ভন্ট ক্লীব ইতি ভন্ট। পরিঘ ইতি পরিপূর্মান্দ্রেঃ পরিহ্ম্যানেন ইতি পরের্ঘশ্চেতি ওঃ খাদেশশ্চ পরিযোগ ইতি যুজ্রি যোগে ঘণ্। অকবর্গানাত্যাদিনা জন্ম গঃ।

- (২২৫)। ডকারো লো ভবতি লকারণ্চ ডো বা ভবতি। লশ্চ ড-ইতি লছবিধৌ চক্রস্ত্রং পাণিনীয়ে মুধ্যলক্ষণং নাস্তি ডলয়োরেকত্র স্বরণমিতি 'য়োকরণানাং প্রসিদ্ধিং অতঃ প্রমাণত্বেন দণ্ডিল্লোকোপস্থাসঃ।
- (২২৬)। বালাদের্লকারো রো বা ভবতি। রশ্চ লো বা ভবতে। কৈচিছদস্তাত্র ব্যবস্থিতবিভাষয়া বালঃ কচাদৌ বারঃ পরিপাটাং লঘুগুরি-বিপরীতে রঘুনুপতিবিশেষে অলং বৃশ্চিকুপুচ্ছে অরং চক্রান্তে।
- (২২৭)। চকারো বেত্যস্তামুকর্ষণার্থ:। কপিরিকাদে: শব্দস্ত সংজ্ঞারাং বিষয়ে রেফো লো বা ভবতি।
- (২২৮)। উপদর্গস্থ রেফো লো ভবতি অয়্ধাতৌ পরে। প্লায়তে ইতি স্বয়্ গতৌ পঠাতে পরাপূর্মাং পলায়তে পরিপূর্মাৎ পলায়তে

২২৯। কুপেদ্বি'ৰুক্তে। চলীক্প্যতে।

২৩০। ঙিদ্ধলুয়ে দ্বিশ্বতত্ত্ব দাদেঃ।
চতুর্ লড়াদির্ ঙিদ্ধলি পরে অদাদিগণপঠিতস্থাদ্দির্ভবতি।
রোতি স্তোতি।

২৩১। বোর্ণোলু ডি চ। প্রোর্ণোতি প্রোর্ণ তি প্রোর্ণবীৎ।

প্রতিপূর্বস্যায় ধাতোরনভিধানাদপ্রয়োগ:। প্রত্যয় ইতি ইণ্ ধাতোরূপং প্রাণেব দর্শিতম্। নিরয় ইতি লক্ষং ন ভবতি বহুলবচনাং।
নিলয়নমিতি তু নিপূর্দিয় লীঙ্ধাতোরপম্। উপসর্গস্যেতি সারিধাাদয়তেবেবোপসর্গো গৃহতে তেন প্রগতা আয়কা যক্ষাৎ স প্রায়কো দেশঃ
ইত্যত্র ন ভবতি।

(২২৯)। রূপ্ধাতোর্ধিরুক্তেধ্রফো লো ভবতি। অন্যত্র দিরুক্তে-রেফাভাবাৎ মনেবোদাহূত:। চগীকুপ্যত ইতি দিরুক্তি: ঋদদিতাৎ রীঋ্পিত ইতি রী:।

(২৩০)। চতুর্বিতি বিশেষণং সংখ্যেরং বিশেষামপেক্ষতে তচ্চ প্রক্রান্ততাৎ সন্নিচিত্তবাচ্চ লড়াদর ইত্যেব অন্তএবাহ চতুর্বু লড়াদিছিতি। অনেন
তু সাংকেচিকেন চতুঃশক্ষেনাগুরাপি ব্যবহরণীয়ন্। রোটীতি রু শঙ্কে।
ডিদিতি কিন্? রুক্তঃ। হলীতি কিন্? ষ্টুঞ্চ স্কতৌ গুনি স্ববানি।
উদিতি কিন্? ইণ্গতৌ এতি। চতুর্ব্বি কিন্? স্থ প্রসবৈশ্বয়য়োঃ লুট্
তাঙ্ সোতা। অদাদেরিতি কিন্? জুহোতি। হস্বোক্তা দীর্ঘ্যাগ্রহণাৎ
অপেক্ষিত্রবিধিকেন প্রথমং বিহিতেন স্বঙা ব্যবধানারা ব্রবীতীত্যত্র তু ন
বৃদ্ধি:। ক্রমাদিত্যত্র তোঝারাশির্মীতি তাদাদেশে চ রুতে স্থানিবন্ধাভাবেন
নাঙিন্তার বৃদ্ধি:। ধন্লুগক্ত স্থাদিকেনাদিকার্য্যাভাবাৎ রোরোতীত্যাদৌ ন
বৃদ্ধি:। উদিতি কর্ত্ববা বৃদ্ধিরিতি রুক্তমুক্তরার্থন্।

(২৩১)। উর্ণোতেশ্চতুরু পৃঙ্জি চ প্রাপ্তা রন্ধির্বা ভবতি। চতুষু পূর্দ্ধযোগেণ পৃঙ্জি চ সঙ্যাধিজাগুরুন্ধিরিগস্তক্ষেত্যনেন প্রাপ্তা বৃদ্ধিঃ ३% । न निष्ठि । १ श्रोर्लाट ।

২২০। মুজোইচতুর্ম পি। মান্তি মার্ক্যতি।

২৩৪। ঙিদচিচ। মার্ক্লয়ন্তি।

২৩৫। **সম্পীত্যেকে।** মিমাক্ষতি।

২৩৬। অভিদচি বা। মুজন্তি মাৰ্জ্জন্তি।

পাক্ষিকী ভবতীত্যর্থ:। যথনেন বৃদ্ধিবিধীয়তে তদা প্রোণবিষ্ট ইত্যত্রাথ্য-নেপদপ্রাপি বৃদ্ধি: স্থাৎ। প্রোণবিদিতি পুঙ্ হঙ্ সঙ্ উর্ণ এবৈতি বাচাদিয়াভাবপকে ইঙি বৈক্যাদিয়াহ ইত্যাভাবে পাক্ষিকী বৃদ্ধি: পক্ষেণ্ডণ: ইটি তু নোবর্ষ্য ইতি নিষেধাৎ বৃদ্ধাভাবে উবাদেশ: বৃদ্ধিরজাদেরিতি আদৌ বৃদ্ধি:।

(২৩২)। পূৰ্বাস্ত্ৰৰিহিতা বৃদ্ধিলঙি পরে ন ভবতি।

(২০০)। মৃজ শুদ্ধো ইত্যক্ত ভিদ্ধালি পরে চতুর্ব চতুর্ব পি রুকির্ভবতি।

মৃজো ভিতীতি কতে সামান্তবিধানেনৈৰ চতুর্ব চতুর্ব পি ভিদ্ধলি ভিদ্ধি চ

বৃদ্ধিঃ সিদ্ধা এতাদৃশ্রচতুর্ব পীতি ভিদ্ধি চেতি কতং স্পটার্থম্। স্থানমৃজ্বে

স্থানমৃত্ব ইত্যত্র ধার্থিকারার বৃদ্ধিঃ। ন হত্ত্ব ভিৎ ধার্থিকারাদিহিতঃ।

মার্গ্রিভ ভ্রস্কাদ্যক্তহেশামিতি জক্ত বং ষ্টবর্গাদিত্যাদিনা তক্ত টঃ। মার্ক্র্যুতীতি লুট্ ক্তভ্ চলোঃ ক ইতি জক্ত কঃ ব্যুষ্।

(২০৪)। ডিফচি চ পরে মুজো বুদ্ধির্ডবতি।

(২৩৫)। সম্রপি পরে মুজো বৃদ্ধির্ভবতীতি কেচিদাছ:। ডিতি বিহিতা বৃদ্ধি: সনি পরে ন প্রায়োতীতি বিধানম্।

(২৩৬)। অঙিদটি পরে চতুর্য চতুর্য পি মুক্সো বৃদ্ধির্ব। ভবতি। মমা-ব্রুত্ব: মমুক্ততুরিভ্যাদি। ২৩৭। নান্ত্যন্তোর্বচঃ প্রয়োগঃ।

২৩৮। ইঙিকোর্নিত্যম্ধিযোগঃ। অধীতে মধ্যেতি।

২৩৯। কৈশ্চিদদাদৌ ত্রা পঠ্যতে। ত্রাতি।

২৪০। শীঙঃ শের্যনি চ।
চতুরু যনি চ পরে শীঙঃ স্থানে শের্ভবভি। শেতে শ্যাতে
শাশ্যাতে।

২৪১। ক্যয়চোশ্চ। শ্যা সংশ্যা।

⁽২৩৭)। বচ্ভাষণে ইত্যক্ষি অস্তান্ত ইত্যেত্যোন প্রয়োগঃ। এতেনৈতৎ প্রতিপাদিতং সত্যপি লকণে২প্রযুক্তানাং প্রয়োগো ন করণীয়ঃ।

⁽২৩৮)। ইঙ্অধ্যানে ইক্ স্মরণে ইত্ত্তেরোনিত্যাধিনা উপ-সর্গেণ গোগঃ। এতেনাধিব্যতিরিক্তয়োরনরোরপ্যনভিধানাদের ন প্রয়োগ-ইতি হচিত্য।

⁽২০০)। তৈঙ্পালনে ইতি ভ্যাদিঃ কৈশ্চিদদানে পঠ্যতে স চ তৈ পালনে তা পালনে ইতি বা পরস্মৈপদী তেন আতীতি ভবতি। এতেনৈতং প্রতিপানিতং প্রয়োগদর্শনেন গণপাঠাৎ স্ত্রবিধানাচ্চাল্যথা
ক্রিয়তে করণানি বছলবচনাদীনি তত্রোপল্লস্থান্ত ন পুনরনভিহিতানাং
প্রয়োগঃ।

⁽২৪০)। শ্যাত ইতি ভাবে যক্ শাশ্যাত ইতি যন্ শে আদেশে কতে শীঙোহভিদ্য ইতি অয়াদেশঃ তুতো দিকজিঃ দীর্ঘোহনাগমাত ইতি দীর্ঘ:। অচতুরু তু—শিশ্যে।

⁽১৪১)। ক্যে যচি চ পরে শীঙঃ শের্ভবতি। শায়া ইতি অকর্জ্-কাবকে চ সমজাদেঃ সংজ্ঞায়ামিতি কাঃ সংশ্যোতি ক্তৃ । যচ্ শীঙঃ শের্ঘেচিতি ক্তে কায়চোশ্চতি শক্যমকর্জ্ব তৎ ক্রিয়তে স্পত্তার্থম্।

২৪২। অতি রুঃ।

চতুর্ম তি পরে শীঙ **উত্তরো** রুর্ভব্তি। শেরতে শেরতাম্ অশেরত।

২৪৩। বেত্তেরাত্মনে বা। সংবিদতে সংবিদ্রতে ব্যতিবিদতে ব্যতিবিদ্রতে।

• २८८। ऋमारमितिकालाय।

চতুর্ধ যে হলি পরে রুদাদেরুত্তরে ইন্তবতি। রুদিতঃ প্রাণিতু শসিতু শসিতি অস্বপিতাং জক্ষিতি। অয ইতি কিম্ রুভাঙে রুভাঙ।

সামাস্তাবগমাদ্ধি বিশেষাবগমঃ স্পষ্টো ভবতি। শীঙঃ শেরিতি শয়েহিঙিদ্য ইতি লক্ষণদ্বয়ে ক্লতে যনি চেতি ক্যয়চোশ্চেতি শীঙোহিঙিদ্য ইতি চ শকাম-কর্ত্বুং তন্ন ক্লতং বৈচিত্যার্থম্।

(২৪২)। শীঙ ইতি যদমুবৃত্তং বিভক্তিবিপরিণামাৎ তদিহ পদ্দ মান্তম্। অতাতি অন্তাদেশস্থ গ্রহণম্। শেরত ইতি আফ্রনেহনত ইতি আদানেশঃ শেরতামিতি লোট অন্তাম্। চহুর্ধিতি কিম্? আগরিষত। (২৪০)। বিদ্ঞানে ইত্যাআহত্তরে আত্মনেপদসন্দিক্তি পরে রুর্বা ভবতি। সংবিদ্রত ইতি সমোহকর্মাগমাদেরিতি আ মনেপদম্। ব্যতিবিদ্রত ইতি কর্মারতীহারে ইত্যাদিনা আত্মনেপদম্। বেভেরিতি নির্দেশং বিদ্বিচারণে ইত্যাদিনা আত্মনেপদম্। ক্রেরিতি নির্দেশং বিদ্বিচারণে ইত্যাদিনাত ইতি। আত্মন ইতি কিম্?

(২৪৪)। রুদির অঞাবিমোচনে অন্ শ্বস্ প্রাণনে ঞিশ্বপ্ শয়ে জক্ ভক্ষহসনয়োঃ এতে পঞ্চ রুদাদীয়ঃ অদাদৌ পঠান্তে। প্রাণিছিতি অনিতেরত্তে চেতি ণ্ডম্। অচতুর্তু—স্বপ্তা। হলীতি কিম্ পূ ক্ষণিতি। ভাদেন্ত অন্ শ্বস্ প্রাণনে ইত্যক্ত আশ্বসেয়্র্নিশাচরা ইতি ভটিপ্রয়োগঃ।

২৪৫। রুদো ঙিতি গুণশ্চ। রোদিতি।

২৪৬। আত্মনে সংধ্বার্জ্জনীড়ীশ্ভ্যঃ। ব্যতিজ্ঞিষে ব্যতিজ্ঞাপে ঈড়িষে ঈড়িধে ঈশিষে ঈশিধে।

২৪৭। ন লঙি। ঐড়চুম্।

২৪৮। অঙিত্যাদরিদ্রঃ। ট হুর্ম ঙিতি হলি পরে দরিদ্রাতেরাদিশুবতি। দরিদ্রিতঃ।

(২৪৫)। চতুর্ ভিদ্ধলি পরে রুদ্ধাতোরুত্তরে ইভবজি গুণশ্চ। রুদে। ভিতীঙ্ ইতি ন রুতম উত্তরত ইড়োহনুর্তিশঙ্কানিরাসার্থম্।

(২৪৬)। চতুর্ আয়নেপদ্ধানিনি সে ধ্বে চপরে জন জননে
ইড্ স্বতৌ ইশ্ এর্গের ইত্যেভোডা উত্তরে ইছবতি। ব্যতিজ্ঞিষে
লট্ সে ইতি জনেঃ পরস্থৈপিনিজাৎ কর্মব্যতীহারে উদায়তঃ হ্বাদিষাদিরুক্তিঃ হনাদেরনগীতাকারলুক্ চন্দাঞ্ঞ ইতি নকারস্ত এঃ জনী
প্রান্তভাবে ইতার দিবাদিষাৎ যতা বাবপানায় ভবতি। জন্সপে জন্মধ্বে
জারদে জায়ধ্বে লোট্ ব্যতিজ্ঞিষ ব্যতিজ্ঞিধ্বম্। আল্পনে ইতি স
ইতাস্ত বিশেষণমর্থবৎ ধ্ব ইত্যস্তায়নেপদাবাভিচারাৎ। আল্পনে ইতি
কিম্ গ জ্জানি জনেশ্চান্সম্বং নাপ্তানাং মতম্। তথাচ ইড্জনোঃ
সধ্বে চেতি কাতপ্রস্ত্রম্। জনীড়ীশ্ভাঃ সধ্ব ইতি চল্লস্ত্রম্।

(২৪৭)। লঙ্গদন্ধিনি সে পের চ পরে এভা ইন্ন ভবতি। ঐুড়্চ্ব মিতি সিশের্লিঙ্ধবং অস্জানীত্যাদিনা শস্ত যং ষ্টবর্গাদিত্যাদিনা ধস্ত চং যই ইতি ষস্ত টং অপনাত্তেংপীত্যাদিনা টস্ত ডং লঙ্লুঙ্ইত্যাদিনাও অঙ্বৃদ্ধিরজানেরিতি বৃদ্ধিঃ। ইড়ড্ইত্যস্তাপ্যেত্দের রূপং জনেস্থ ধাত্যজ্জন্ধ্বম্।

(২৪৮)। দরি:ত্রিত ইতি দরিজা তুর্গতৌ লট্ তদ্। অভিতীতি কিন্? দরিজাতি। অহলি তু—দরিজতি। অচতুমু তু—দরিজাণঃ দরিজাণবান্। ২৪৯। শাসোহচতুর পি। শিষ্টঃ শিষ্যতে শিষ্যঃ আর্যাশীঃ।

२००। न दर्ग।

শাধি।

২৫১। ইচ্ছার্যস্তাঙ্শাদোঃ কো। আশীঃ।

২৫২। লুগ্যেহচ্যণকাদে।।
যে পকান্তগ্রন্ধানি চ পরে দরিদ্রাতেরাল্লুগ্ভবতি। দরিদ্রাৎ
দরিদ্রয়তি দরিদ্রতি। অণকাদাবিতি কিম্ ? দরিদ্রায়কঃ দরিদ্রাণম্
অদরিদ্রাম্।

⁽২৪৯)। চতুরু অচতুর্থ বি অঙিতি হলি পরে শাস্থ অন্থলিপ্তানি বিতান্তাকার ইন্তনতি। ইচ্ছার্থন্তাঙ্শাদোঃ কৌ বিধানাৎ তন্তাত্র ন গ্রহণন্ অতন্ত্র আশান্তমান ইতি। শিষ্ট ইতি লট্ তদ্ শিষ্যত ইতি কর্মণি যক্ শিষ্য ইতি ইণ্শাস্থজ্যীদৃঙ্বুঞ্পুণ ইতি ক্যঃ সর্ক্র শাসিবিসীনামেবানাদেশন্তেতি মুর্ক্তঃ। আর্যশীরিতি আর্য্যান্ শান্তীতি কিপ্ সজুষাশিবানে তি চকার স্তান্ত্রসমুক্ত সমুক্ত দীর্ঘণ বিভাগ হলীতি কিম্? শাসতি। ঙিতি তু—শান্তি।

⁽২৫০)। হৌ পরে শাদোরাকারশ্র ইন্ন ভবতি। শাধীতি হবঙ্যা-দ্বিরিতি। হেধিঃ শাদস্যোধৌ লুগিতি সলুক্।

⁽২৫১)। আঙ্পূর্বশ্র শাদোরিক্ষার্যস্ত কৌ পরে আকার ইন্তবতি।
(২৫২)। দরিদ্রাদিতি আশীর্লিঙ্ যাৎ দরিদ্রয়তীতি ণিঙ্ পুঙি

প্রাপ্তে লুক্ দরিদ্রতীতি অস্তি অস্তোহদ্ধু জক্ষাদেরিতি অং। অপেক্ষিতবিধিত্বাদিত্বমনেন বাধ্যতে। দরিদ্রাতে। দরিদ্রাতেলুঙ্ ত ইণ্
অদরিদ্রীতি কেচিদস্ত ণকানিত্বমিচ্ছিত্তি অদরিদ্রায়ি এবং রূপদ্রমিষ্টম্।
দরিদ্রায়ক ইতি ণক যুর্ব্বেঞাদেরিত্যাদিনা যুঃ। দরিদ্রাণমিতি ভন্ট্
অদরিদ্রামিতি লঙ্ উত্তমপুরুষকবচনং ভন্ কর্তৃবিহিত্ত বিধিলিঙা

শকাদিস্বাৎ দরিদ্রিয়াৎ লুকোহভাবে ইদেব ভবতি।

२७०। वर्स्ना ह।

मनतिज्वान् मनतिजावानि । शङ्भातांश्वम् ।

২৫৪। শ্লান্ড্যোর্থ।

চতুর্ম ডিতি পরে শ্নমস্ত্যোরল্লুগ্ভবতি। রুদ্ধা স্তঃ সন্।

২৫৫। অমাস্মযুক্তাস্তেন লিঙি। আস্তাম্ আসন্।

२৫७। रनाप्ततनि ।

অনগ্যঙিতাটি পরে হনাদেরল্লুগ্ভবতি। দ্বস্তি চধ্মুঃ জং জজ্ঞুঃ জগ্মুঃ জক্ষুঃ। হন্খন্জন্ জনী গমু ঘসু অনগীতি কিম্ ? অগমং।

⁽২৫৩)। বসৌ পরে দরিদ্রাতেরাল্ল,গ্ভবতি। বসৌ বেত্যেক ইতি কচিৎ পাঠঃ তদনার্যজ্ঞদপ্রমাণমিতি স্চ্যিত্বং ধাতৃপারায়ণমিত্যুক্তং নতু মতান্তরস্চনার্যম্।

⁽২৫৪)। রুদ্ধ ইতি ক্ষিরাবরণে তদ্ শ্লম্ ধোহধাতুর্যাদিতি তপ্ত ধঃ সবর্গাদিত্যাদিনা পক্ষে ধকার লুক্। স্ত ইতি অস্ভূবি। সন্নিতি বহুলং প্রশ্লমাসমানাধিকরণে ইতি শতঃ। অভিতীতি কিম্? রুণদ্ধি অস্তি।

⁽২৫৫)। মাশ্বশক্ষোগেন রহিতস্তান্তের্লঙি পরেহতো লুগ্ন ভবতি। আন্তান্ আসন্নিতি বৃদ্ধিরজাদেরিতি বৃদ্ধিঃ। মাশ্বযোগে তু। মাশ্ব ভবত্তৌ স্তান্ সম্মাঙ্যোগে সর্কালে লুঙ্চেতি লঙ্। অমাশ্ব-যুক্তাদিতি বহুবু প্রতক্ষু লিপিকরপ্রমানাদৃষ্ঠতে।

⁽২৫৬)। দ্বন্তীতি হন্ হিংসাগত্যোঃ অলুগাদৌ হনো হো ঘ ইতি হন্ত ঘঃ। চথ্লুরিতি থকু অবদারণে লিট্ উস্ দ্বিরুক্তিঃ। জজ্ঞে ইতি জনী প্রাহ্রভাবে আয়নেপদী লিট্ এ দিকুকিঃ অলুক্ চবর্গাঞ্ঞ "ইতি নস্ত ঞঃ জজ্ঞুরিতি জন্ জননে পরবৈপদী ধাতৃষয়গ্রহণমিতি হচনার্থং প্রয়োপদ্যোপাদানম্। গমের্জগ্মুরিতি গম হপু গতৌ। ঘসুরিতি বসু অদনে ইতি অস্ত ঘণ্লুছ্ঙেষু চাদো বদ লিটি বা ইতঃস্ত ঘসাদেশশা চ

३৫१। वंशीरमङ्गामिः।

শঙিতি পরে বশাদেঃ স্থানে উশাদির্ভবতি। উষ্টঃ উশস্তি ওরস্চু রশ্চতি ব্যধ্ বিধ্যতি প্রচ্ছ পৃচ্ছতি প্রস্কু ভূজ্জতি গ্রহ্ গৃহ্লাতি জ্যা জী জিনাতি জীয়া ব্যচ্ বিচতি বিবিচিথ বিব্যাচিথ ইত্যাকে। ঙিতি তু। ব্যাচয়তি ব্যাকঃ ওরস্চু ব্রস্কঃ বাধ্ অব্যাৎসীৎ বাধঃ প্রচ্ছ প্রচ্ছয়তি প্রচ্ছনীয়ং পৃচ্ছনীয়মিতি কাতন্ত্রম্।

গ্রহণং কেচিনাছঃ অন্যে তুন দ্দু আদনে ইত্যন্ত থথায়ং মতভেদঃ ঘণ্
লুঙ্ভেছিতাইত্রব দর্শবিদ্যানঃ জকুরিতি। আগমদিতি গম্ধাতোর্ড্
হঙ্ প্যাদ্দিতোহগ্ প্রেমপদে হত্যাগ্। আভিতীতি কিম্ ? হননম্।
আচীতি কিম্ ? গ্যাতে।

(২৫৭)। বশ উশ্রদ্চো রুদ্চ বাধে বিধ্ প্রচ্ছ: পৃচ্ছ্ ভ্রদ্জো ভূসজ গ্রহো গৃহ্ জ্যো জী ব্যচো বিচ্ ভবতীতি স্কার্থ:। হলীতারীজি ধরমপি নামুবর্তুকে সামাজেন বিধানম্। উষ্ট ইতি বশ্কান্তৌ উদাদেশে কতে ভ্রদ্লাগুল্ডশামিতি শক্ত ষঃ ষটবর্গাদিত্যাদিনা তক্ত টঃ। রুণ্ডলীতি প্রস্চুচ্ছেদনে তুদাদিত্বাৎ শং সন্দেতি সক্ত শং।, বিধাতীতি বাধ্ তাড়নে দিবাদিত্বাৎ যৎ। পুচ্ছলীতি প্রচ্ছ্ জ্ঞীপায়াম্। ভূজ্জভীতি ভ্রদ্জ্ পাকে তুদাদী জগোর্জদাবিতি সক্ত জং। জিনাতীতি জ্যা বয়েরাহানৌ ক্র্যাদিপালাৎ জাভাবে কতেপাদিস্বাচ্চতুর্ হ্রমং। জীতি দীর্ঘবিধানক্ত কলং দর্শয়তি জীত্বেতি বিচ্তাতি বাচ্ব্যাজীকরণে বিবিচিথ ইতি বাচাদিত্বাদিনা চক্ত কঃ ব্রন্ধ ইতি পূর্ববদ্ধণ্কাদেশো। অব্যাৎসীদিতি লুঙ্ হঙ্ সঙ্ ঈঙ্ বর্গকাদিরিত্যাদিনা ধক্ত তঃ জনিঙ্হলন্তু-ক্রেতি বৃদ্ধি:। ব্যধ ইতি দৃঙাদিন্বাৎ ঙঃ। পৃচ্ছনীয়মিতি কাতন্ত্রমিতি মন্ত্রিপ তক্ত লক্ষণং নান্তি তথাপি ক্রাট্রাৎ পৃচ্ছনীয়মিতি কাতন্ত্রীয়া মৃদির্মি ৮

২৫৮। ভ্রস্জো ডিভি বা সন্লিটোগুণশ্র্ট। — ভর্মা ভর্জয়তি ভ্রজ্জয়তি ভাগাঃ ভ্রমগঃ বিভর্মতি বিভ্রমতি বভর্জ্জঃ বভ্রজ্জঃ।

২৫৯। ব্যধ্বস্চোর্ন সনি। বিব্যৎসতি বিব্রক্ষতি।

২৬০। জ্যোন যটি চ। জিজ্ঞাসতি প্রজায়।

২৬১। ব্যচোনাস।

উরুব্যচাঃ।

২৬২। বশোন যনি। বাবশ্যতে।

সংখ্যা ২৬০। ব্রস্চ্প্রচ্ছোর্ন লিটি।

২৬৪। যন্লুকি বশ্ব্যচ্ ভ্রস্জাঞ্চ।

⁽২৫৮)। ত্রস্জো ঙিতি সন্লিটোশ্চ পরয়োঃ ভূস্জাদেশো বা ভবতি খণশ্চ। ঙিতি পরে ভূস্জাদেশেহপ্রাপ্তে বিভাষয়া বিধীয়তে। সন্লিটোস্থ প্রাপ্তে। গুলস্তাস্তবেন অভিবেন চ সর্ক্রাপ্রাপ্ত এব নিতাং বিধীয়তে। ত্রেইতি ভূপ্ ক্লোর্নিকাফোরিতি সকারলুক্ ত্রস্কাদীত্যাদিনা জন্ত যং। ভঙি তি ভূস্জাদেশে ক্লতে সলুক্ জন্ত যং গুণেনার। ভর্জয়তীতি জগোর্কদাবিতি সন্ত জং ত্রদক্ষ ইতি ঘণ্ অকবর্গাদীত্যাদিনা জন্ত গং জগোর্জদাবিতি সন্ত দং বিক্রক্রীতি সন্ত সলুক্ জন্ত যং যস্ত কং।

⁽ १৫৯)। বাধ্রস্চোঃ সনি পরে বিধ্বুন্চাদেশোঁ ন ভবতঃ।

⁽ २७०)'। अप्रांशिष्ठाः मिन यि । १ श्राद्ध क्रीक्ष्यप्रमयात्मान ७ वि ।

⁽২৬১)। বাচ্ধাতোরসি পূরে বিচাদেশো ন ভবতি। উরুবাচা ইতি প্রাদেরস ইতাস বহুলবর্চনায় ভবিষাতীতি লক্ষণধণ্ডনং ন ফুদয়কমন্।

⁽२७२)। वटना यनि शरत जेनारमत्ना न खर्वि ।

⁽२७०)। उन्ह अध्यानिष्ठि भरत तुन्हभूकारमाने न ज्वजः।

⁽२५६)। उम्ह अध्यक्षिर्न् राह् अम्बाक वन्त्र्कि द्म्हानम आम्मा

বজ্রু পপ্রচ্ছু বারুষ্টঃ পাপ্রষ্টঃ বার্ষ্টঃ বার্ষ্টঃ বার্ষ্টঃ বাজ্য

২৬**ে। অন্তোহস্কুক্ষাদেঃ।** জুহোত্যাদে**র্জাদেশ্রে**চান্তরোহস্তোহস্তবতি। জুহ্বতি বিভ্যুক্তি জক্ষতি জাগ্রতি। জক্ষাগু চকাস্থাস্থ দরিদ্রাঃ।

২৬৬। হ্বাঙ্গিবদ্যন্লুগন্তঃ। বোভুবতি।

২৬৭। স্বাস্থ্যনেহনতঃ।

ব্রস্বাকারাদক্তস্মাত্ব্রস্থাত্মনেপদস্থাস্তোহন্তবতি। আন্নতে ব্যতি-ভাতাম্ অসূষত ষ্পক্রীণত অস্পর্দ্ধিষত। অনত ইতি কিম্? হন্যস্থে।

ন ভবন্তি। বত্র-চত্রিতি লিট্ অনুস্ বাত্রপ্ত ইতি ঘন্লুকি তদ্ সলুক্ ভ্রসা-দীত্যাদিনা চস্ত যঃ ষটবর্গাদিত্যাদিনা তম্ত টঃ প্রচ্ছেঃ পপ্রচ্ছতুঃ পাপ্রইঃ। বশ্বাচ্ ভ্রস্জান্ত বাবষ্ঠঃ বাব্যক্তঃ বাত্রপ্ত ইতি কর্ত্তরি কর্ম্মব্যতীহ্যরবর্জ্জং পর্যমে ইতি যন্লুগন্তম্ভ সর্ক্ষধাতোরেব প্রশ্নেপদিম্।

- (২৬৫)। সম্ভ ইতি প্রত্যায়ৈকদেশস্থানী ষষ্ঠান্তং পদমু। অথবা অকারোহস্তোচ্চারণার্থছাৎ প্রথমান্তং পদম্। জুহুবতীতি চতুর্দিণ্ জুহোতিশ্চেতি দ্বৈক্যাদিস্বাহ্ব ন ভবতি। বিভ্যতীতি ঞি ভী ভরে অভিদুচীত্যাদিনা বং। জক্ষ ভক্ষহসনয়োঃ জাগৃ নিজাক্ষয়ে দরিলা হুর্গতৌ চকাস্থ দীপ্রৌ শাস্থ অনুসিষ্টো এতে পঞ্চ জক্ষাদয়ঃ। হুয়ন্তে ইত্যত্র ন ভবতি যকারব্যবধানাৎ।
- (২৬৬)। যন্লুগন্তো ধাতৃজু হোত্যাদিবঙৰতি। ৰোভ্ৰতীতি ধন্-লুপন্তাদন্তি যন্লুগন্তক হবাদিখার শঙ্ অদাদেশগ্রেষালনং ক্ষাতৃরিত্যা-দিনা উব্।
- (২৬৭)। হ্রেজ্যা দীর্বস্থাগ্রহণমিতি স্চরিত্বুং হ্রাকারাদস্ত-ক্লাদিত্যক্তম্। স্বান্ধক ইতি স্থানকর্মকাদিতাানিনা আস্থানেপদং হনা-

২৬৮। বিদোহণাদিঃ পরস্মৈ বা।
বেত্তেরুত্তরো লট্ পরস্মৈ অণাদির্বা ভবতি। বেদ বিদতুঃ বিদ্বঃ
বেশ বিদ্যুঃ বিদ বেদ বিদ্ব বিদ্বা পক্ষে বেক্তীত্যাদি।

২৬৯। পঞ্চাহো ক্রেশ্চ। মস্য তথা ভাবে প্রান্তেষঃ কিং নিবন্ধন ইত্যাদি জ

প্রথমস্থ তথা ভাবে প্রদেষঃ কিং নিবন্ধন ইত্যাদি ভূতপঞ্চ লট্ পরশ্বৈ অণাদির্বা ভবতি। ব্রঞাহশ্চ। আহ আহতুঃ আহুঃ।

দেরনগীত্যকারপুক্ অরুগাদাবিত্যাদিনা হকারস্ত য:। বাতিভাতামিতি ভা দীপ্রৌ লোট্ অন্তাম্। অফ্বত ইতি স্ঞোলঙ্ অন্ত স্থ। অক্রাণত ইতি নাং লুগচীত্যাকারলুক্। অস্প্রিত ইতি লুঙ্ অন্ত সঙ্ ইঙ্। আয়ন ইতি কিম্। চিয়ন্তি?

(২৬৮)। পরবৈ ইত্যক্ষোপাদানারিয়তপরেবৈপদিনো বিদ্ জ্ঞানে ইত্যকৈ গ্রহণং যুক্তং নোভরপদিনঃ লাভার্যন্ত অত আহ বেত্তেরিতি। লট্পকরণকৈ প্রক্রান্তরাং স এব স্থানী যুক্তো নতু লোড়াদিঃ। অত-আহ লট্ পরবৈ অণাদিব। ভবতীতি অণাদীন্ লিট্সংজ্ঞকান্ বক্ষাতি তেষাময়মাদেশরপেণান্তবাদঃ। তেচ ক্রমেণ তদ্রপত্বেন নচৈবার ভবন্তীতি ক্রমনির্মাৎ পরবৈপ্রপরনির্মান্ত লভ্যতে অণাদীনাক্ষ বিধানং ন লিট্সংজ্ঞ্যা অতো নিল্লিড্ক ইত্যাদিনা ন বিক্তিঃ।

(২৬৯)। পঞ্চ লট্ পরশ্বৈ অণাদিবা ভবতীত্যুক্তে আদিভূতা, ইতি কথং লভ্যতে অত আহ প্রথমস্ত তথাভাবে ইত্যাদি। প্রথমবুদ্ধিগ্রাহ্যত্বাং আদিভূতানামেব পঞ্চানাং তথাভাবে তদ্রপদ্মেন লব্ধে প্রদেষঃ কিং
নিবন্ধনঃ কিং কারণকঃ প্রদেষকারণং তাবদ্বোপলভামহে অনুপলব্ধ কারণং কথং কার্য্যাধকং ভবতীত্যভিপ্রায়ঃ তম্মাদাদিভূতানামেব পঞ্চানাং স্থানিত্বং যুক্তম্। পঞ্চ ইত্যস্তাণাদিরিত্যনেন সম্বন্ধঃ করণীয়ন্চ তেন পঞ্চত্যঃ প্রেষাং শঙ্কা নিরন্তা ভবতি ক্রমনির্মন্চ স্থলতো ভবতি। আহাদেশস্ক
সৎসন্নিয়োগশিষ্ট এব।

২৭০। হস্ত তম্ব্রে। আম আহথুঃ।

২৭১। অনাদেশক্রবো ঙিদ্ধলি চতুর্ধীঙ্চ। ব্রবীতি ব্রবীতু অব্রবীৎ।

২৭২। তৃহো নমঃ পরে। তৃণেটি।

২৭৩। তুরুফু ভারা।
 তুর্বরণহিংসার্থেহিদাদো পঠনীয়:। উর্ত্তোতি
 মাম্পম্ উত্তবীতি।

(২৭০)। আহাদেশসম্বন্ধিনে হকারস ধঙি পরে তকারো ভবতি।
(২৭১)। অক্তাদেশাং ক্রঞো ডিতি হলি চ পরে চতুর্লীঙ্ ভবতি।
ডিতীতি কিম্ ? ক্রত:। হলীতি কিম্ ? ব্রবাণি। ক্রতাদেশক্রকো
নিষেধবিধানং জ্ঞাপয়তি স্থান্থাদেশাঃ স্থানিবং কাপীতি অতএব অস্তেভূ ছে২পি ক্রতে ধাতুয়াত্ব ভূনৌ ভূব ইতি।

(২৭২)। নম ইতি শকারাম্বদ্রহিতঃ মম্কুতঃ। তৃহ্ তৃন্ত্ হিসি হিংসায়ানিতাক চতুর্ ভিন্ধলি পরে নমঃ পরে ঈঙ্ তবতি। নম ইতি পঞ্চমান্তনির্দেশাদেব ততঃ পরে সিদ্ধে পর ইতি ক্লতং স্পষ্টার্থম্। নম ইতি বন্ধ্যন্তনিতি শকা ক্রাৎ। তৃণেটীতি মুম্ ঈঙ্ ইক এঙরেলো গুল ইতি গুলঃ হোঢ় ইত্যাদিনা হক্ষ ডঃ ধোহধাতুর্ঘ্যাদিতি তক্ষ ধঃ বটবর্গাদি-ত্যাদিনা ধক্ষ ডঃ ঢ়োরিত্যাদিনা ঢকারলুক্। ভিতীতি কিম্ ? তৃণ্ডঃ। ক্লীতি কিম্ ? তৃণহানি।

(২৭৩)। তু ইত্যামাৎ কটুকুশব্দে ষ্টুঞ্জতৌ ইত্যোতাভ্যাঞ্চ চতুৰ্ ডিন্দিল পরে ঈঙ্বা ভবতি । তু ইত্যাম্ভ দশস্বেব গণেষপাঠাৎ কথং ধার্যধিকারে বিহিতক্ত প্রাপ্তিরিত্যাশকায়ামাহ তুরিত্যাদি ব্রন্থ বৃতি:। উদ্রোতীতি ভিন্নপুদ্দিরিত্যাদিনা বৃদ্ধি:। রবীতু রৌতু অস্ত-বীৎ অস্তোৎ।

২৭৫। দ্বো লুক্ সেহস্তেরেতি হশ্চ।
সে পরেহস্তেঃ সকারো লুগ্ভবতি। লড়েতি পরে হশ্চ। অসি
ব্যতিসে ব্যতিহে।

২৭৬। ধে তোবা। ধে পরে সকারো লুগ্ভবভি। তোবা। ৰস্ ২**ংশ** ব**দ্ধে**।

২৭৭। সে ভোহচতুর্। বিবৎসতি অবান্তাং বৎসীষ্ট।

⁽২৭৪)। এভা ধাতৃভাশ তৃষ ডিম্বলি পরে ঈড় বা ভবতি। ব্যতিতৃবীধ্বমিতি কশ্ব্যতীহার ইত্যাদিনা আত্মনেপদং ধ্বং স্ববীধ্বমিতি ক্রিবাদাত্মনেপদম্।

⁽২৭৫)। স ইত্যক্ত অকার উচ্চারণার্থ: ক্লন্ড: বর্ণমাত্রগ্রহণাথ বাতিসে ইতি অকারে সকারে চ পুথে সে ইতি প্রত্যায়মাত্রং পদং তেন পদাদেশ্চেতি ষম্প্রতিষেধঃ লঙ্ স্থান্তি চ সঙ্কদান্তস্তেরিত্যাদিনা ঈঙা ব্যবধানার সলুক্ আসীরিতি। এতীতি একারস্তকারপরোহয়-কৃতঃ স যথাপি লড়ুত্তমপুরুবৈকবচনং লিট্প্রথমপুরুবৈকবচনমপি সম্ভবিভি তথাপি লট্ সংজ্ঞকস্যোব গ্রহণম্। লিটি পরে ভাদের্ঘকি চাস্ত্যাদেরিভি ভূভাবে ক্লতে অন্তেঃ সকারস্তাভাবাৎ অত আহ লড়েতি পরে হশ্চেতি। ব্যতিহ ইতি কর্মব্যতীহার ইত্যাদিনা আত্মনেপদং শ্লাস্তোরদিভি অকারলুক্।

⁽২৭৬)। সকারলাপে নিত্যে ক্তেইপি অজাদিহলজোইদীর্ঘাদিতি দ্বিদ্বে ক্তে বধ্বে বদ্ধের ইক্তি সিদ্ধান্ত্যেব। কিন্তু চকাধি চকান্ধি ইতি সিদ্ধার্থং তকারবিধানম্। পয়োধিরিতাক্র প্রকরণনিয়মান্ন লুক্!

⁽২৭৭)। আচতুর্ সে পরে সকারস্তো ভবতি। বিবৎসতীতি রুস্ নিবাসে সন্ শকাদিখাদিওভাবঃ অবান্তামিতি বসের্ভ তাঙ্ সঙ্

২ুণ্ট। জগোজ্জ দো। মন্ত্রো মজ্জতি মদগঃ মদগ্যঃ।

২৭৯। শাসস্ত্যোর্থো লুক্। শাধি এধি।

২৮০। তথাশ্চাঙিত্যনিঙ্তনাদ্যোঃ পঞ্মঃ।
অঙিতি সে ধে পরে তথোশ্চাঙিতোঃ পরয়োরনিঙ্গণপঠিতস্থ তনাদেশ্চ বর্গপঞ্জানা লুগ্ভবতি। হন্ আহসে আহনে হতঃ হথঃ
গম্ গতঃ তন্মু ততঃ উন্তধঃ মুণু মৃতং জম্ব্ তঃ। অঙিতীতি কিম্ ?
হক্তি হংসি।

বুদ্ধিঃ তকারে ক্তে অঙ্যাদিক্যাদিনা সঙ্লুগিতি ক্রম:। চতুরু তু। বস আচ্ছাদনে বস্সে।

(২৭৮)। সকারো জন্দারগকারনোঃ প্রস্নোর্যথাক্রমং জ্কারদকারৌ ভবতঃ। মজ্জতীতি টু মদ্জো ভদ্ধে তুদাদিঃ। মদ্প ইতি ঘণি ক্তে অকবর্গা-দীত্যাদিনা জস্তু গঃ মদ্যা ইতি ঝহলোণা ইতি গাঃ ণ্যোহনুচাদেরিতি জস্তু গঃ।

- (২৭৯)। শান্তেরস্তেশ্চ ধৌ পরে সকারো নুগ্ভবতি। শাধীতি হবঙ্যাদ্ধিরিতি হেধি: এধীতি দাধাস্তাদেদ্ধির্নুক্ চ ইতি অস্তেরকার-স্কোরঃ ধে তো বেতি বিকরে প্রাপ্তে নিত্যার্থং বচনম্।
- (২৮০)। হনি মন্ততি যমিনমিরমিগমীংক বট্পক্ষমান্তাংশেতানিঙ্গণকারিকায়াং বক্ষামাঃ। তেহল গৃহন্তে। আহদে ইতি বাজকণ্মকাচোদিতপাং বম হন ইতি আত্মনেপদম্। ধ্বে তৃ আহধ্বম্।
 তম্ম বিস্তারে কণ্ হিংসায়াং ঋণু গতৌ রুণু দীপ্তৌ তৃণু জদনে মন্ত্র
 বোধনে বন্ধু যাচনে কন্ম দানে ইত্যেত এবাজে তনাদয়ঃ পঞ্মান্তাঃ।
 মন্ম দানে ইত্যন্ত তু অভিন্তথোনিতামিতি আত্মবিধানমেৰ বাধকং সাত
 ইতি ভবতি। তস্তথ ইতি কন্মতি ইতি চ প্রমাদোদাহরণং কচিয়েতি
 প্রতিষেধাৎ যন্পুকি নলোপাভাবে তন্তাছঃ লন্মণি ইতি ভবতি। এবং
 হি শান্তান্তরে স্থান্তং বাবস্থিতম্। তত ইতি তম্ম বিতারে কঃ তত্তথ
 ইতি যন্পুকি দিককিঃ অপ্রভেত্যাদিনা অনুস্বারঃ। কর্মত ইতি

২৮১। বনতেশ্চ। ব্যতিবংৰসে।

२४२। यि हा

প্রহতা। "চতুর্দ্দিগীশানবমন্ত মানিনি" ইত্যপপাঠঃ। অথবা মন স্তম্ভন ইত্যস্ত চৌরাদিকস্ত প্রয়োগ ইতি রক্ষিতঃ।

২৮৩। মোবা।

আগত্য আগম্য।

২৮৪। কৌ গমাদেঃ। বনগৎ সংযৎ পরীতৎ।

ৰাষিককে) করিদ্রীত ইতি কং। তনাদৌ বন্দ্কি নলুক্ প্রকৃতিবদেব তবতি নতু নিষেধ ইতি স্চমিতৃং 'বন্দুগুলাক্তঃ। তথোশ্চাঙিতীতি কিন্? গমাতে। অনিঙ্তনাম্বোরিতি কিন্? শান্তঃ। নিতান্তমিতি তমু গ্রহোপকরণয়োরিতান্ত চুরাছান্তর্গনবুজাদিপঠিতন্ত রূপন্। ক্তক্ত-বদোরিত্যাদিনা ইঙ্ভাবঃ।

- (২৮১)। বনশব্দে পঠাতে বন্ মন্ সংভক্তৌ ভাদী ঘণোরপি গ্রহণং বন্থ যাচনে ইতাস্থ তু তনাদিখাদেব গ্রহণং সিদ্ধন্। বনতেন্তে থে সে ধে অভিতি পরে পঞ্চমো লুগ্ভবতি। ব্যতিবংবসে ইতি প্রমাদোদাহরণং পূর্ব্বোক্তপ্রকারেণ তস্তাঃ অপ্রসিদ্ধাৎ তন্মাৎ ক্তান্তং বতিরিত্যুদাহরণং দ্ধরিবাং ধন্লুগস্তাৎ কর্মব্যতীহারে ইত্যাদিনা আন্মনেপদং সে দ্বিক্কিঃ।
- (২৮২)। যচি পরে অনিঙ্তনাম্যোর্বনতেণ্চ পঞ্চমো লুগ্ভবতি। প্রহত্যেতি নকারলুকি ক্বতে হ্রমাত্র্যরাদাবিতি তুক্। অবমন্ত ইতি অপপাঠ: মন্জানে ইত্যন্তানিঙ্ঘাৎ। অধ্বেত্যাদি মন্ স্কলন ইত্যন্ত দেঙ্ঘাৎ নকারলোপাভাব: ইত্যভিপ্রার:।
- (২৮০)। অনিঙ্তনাভোবেঁ মকারাস্তান্তেবাং মকারো লুখা ভবতি বচি পরে।
- (২৮৪)। কৌ পরে গমাদে: পঞ্মো পূগ্ভবতি। বনগদিছি বনং গছতীতি কিপ্ সংযদিতি সংপূর্কাদ্যম্ধাডোঃ পরীতদিভি পরি-

२७०। नामीः टका मोर्थम ।

হস্তি: বস্তিঃ তস্তি:।

२५७। नमनि।

রিরংসতে।

২৮৭। ধোহধাতুর্যাৎ।

ধাঞ্বর্জঃ বর্গচতুর্থাত তরয়োস্তথোঃ স্থানে ধো ভবতি। দোগ্ধি অদুগ্ধাঃ বৃদ্ধঃ লব্ধঃ। অধেতি কিম্ ? ধতঃ।

२৮৮। निल्लिं एक स्वारित वारित कार्या विद्व ये ये ।

পূর্ন্ধান্তনোভেঃ কিবস্তরুচাদাবুপসর্গকারকপূর্ব্বস্থ চেতি দীর্ঘ:। ধাতুত্রর-মেব গমাদিরিতি প্রতিভাতি যতঃ শাস্তাস্তরেহপ্যেতাবন্মাত্রমুদাহতম্।

- (২৮৫)। আণীবি হিতকৌ শুরস্থাং অনিভ্তনাম্মোর্বনতেন্চ পঞ্মল্ক্ দীর্ঘন্ড ন ভবতি। পঞ্মলুগিতি প্রতিষিদ্ধে অভিভ্রেণান্ড পঞ্মালুকীতি প্রাপ্তমান্তঞ্চ ন ভবতি। আন্ধমেব দীর্ঘপদেনাভিধায় নিবিদ্ধং
 দীর্ঘপভাবাদাভ্রস্ত। হস্তিরিত্যাদি কাপ্যাশিষীতি ক্রিঃ। আশিষীতি কিম্
 ং হতিং ত্তিং বৃতিঃ।
- (২৮৬)। সনি পরেছনিঙ্তনাছোঃ পঞ্মোন লুগ্ভবতি। রিরং-সতে ইতি রমেঃ সন্ ধাতুমোনোছঙ্যে ইতি মশুনঃ অপদাস্কুইত্যাদিনা নশু অঞ্সারঃ।
- (২৮৭)। অধাত্র্যাদিতি ষ্টাসমাস: ধাব্যতিরিক্তন্ত ত্র্যাদিত্যর্থ:।
 দোষীতি ছহ্ প্রপ্রবে তিঙ্ হোঢ় ইত্যাদিনা হন্ত ম: ততন্তন্ত ধ:
 বর্গন্তাদিরিত্যাদিনা মন্ত ক: অপদান্তেহপীত্যাদিনা কন্ত গ:। অন্ধ্যা
 ইতি ছহ্ প্রপ্রবে লঙ্ থাস্ বৃদ্ধ ইতি বৃধ্ অবগমনে লব্ধ ইতি ভুলভ্রম
 প্রোপ্তে ধন্ত ইতি ধাঞো লট্ তস্ হ্রাদিম্বাদ্ধ্রক্তি: ঠচথধেত্যাদিনা
 ধক্ত দ্রাপ্তে নধাঞোহঙিত্তথদধ্যে ইতি প্রতিষেধ: দাধোইলিচেত্যাকারপুক্ পূর্দবদত্ত ধন্ত ত:। মিত্রশ্রক্ত্বা ইত্যানে ঘল ধকারো ন ভবতি
 তৎ স্ববন্তপাদে ধাতুমোনোহঙ্গে ইত্যক্ত ব্যাধান্তাম:।

(২৮৮)। একাঞ্জিতি বছরীহিঃ কর্মধারয়শ্চ বিবক্ষিত ইতি বছ-

নিদন্তক্ত লিড়ন্তক্ত জুহোত্যাদেশ্চাদির্ক্কোচ্বর্ণ: প্রাপ্ দ্বির্ভবর্তি
হসক্ত। একাজিতি বছত্রীহিং কর্ম্মধারয়ক্ত বিবক্ষিতঃ। তাৎপর্য্যভেদাঘাক্যভেদো লোকিকে ন দোবং। আদ্যন্তবদেকর্মিত্যেকঞ্চ দ্বিং। পিপাসতি পপাঠ ইয়র্ত্তি।

২৮৯। চতুরু কর্ত্রোবানিল্লিড়স্তস্থ হ্বাদেঃ। জুহোতি। অম্যত্র। হাবয়তি হুয়তে।

ব্ৰীহৌ একোহচ্ যন্ত বৰ্জেতি অৰ্চ্মহিত আছো বৰ্ণোহভিধীয়তে ইতি কর্মধারয়ে তু এক চাসে অচেতি আত্মেহচ্ অভিধীয়তে উভয়থৈব বিবক্ষিতত্বাৎ যথাসম্ভবং ব্যবস্থা। **নম্বেৰং সতি বাকো** ভেনে। জায়তে তাৎপর্য্যভেদাং যথা ইন্সশক্রং জহীহীতাত্র তাৎপর্য্যভেদাৎ বাক্যভেদেন ফলসিদ্ধৌ বৈপরীতাং জাতমত আৰু লৌকিকে ন দোষ ইতি বৈদিকে হি বাক্যে এবং সতি দোষো জায়তে নতু লৌকিকে। নগাদিছি ক্লজিৰ্ভবন্তি। আদি-চান্তাপেকঃ যত্র পুনরেক এব বর্ণস্তত্ত কঃ প্রতীকারং। তত্তাদির্ন সম্ভবতি অপেক্ষণীয়াস্তাভাবাৎ ৰপ্ৰাভৃতিধাতৃনাম্। অত আহ আছম্ভব-দেকমিতি একমসহায়মেবাদিবৎ অন্তব্যু ভবতি। আদাবিব অন্ত ইবাদহায়েহপি কার্যাং ভবতায়মতিদেশঃ নাপেক্ষাক্তমাদিঅমস্তত্তম্ অভ্যু-পগস্থবাং কিন্তু একস্মিন্নপায়ং ব্যবহারো বিধেয়:। পিপাসতীতি সন পা ইতাস্ত বিৰুক্তিঃ৷ পপাঠ ইতি লিট্ অণ্ আদিরেকাচ্ প ইতাস্ত দিৰুক্তিঃ। ইয়ন্ত্ৰীতি গগতৌ তিঙ্ হ্বাদিশ্বাৎ আদিরেকাট্ ঋ ইতাশু দ্বি: ঋপুহাত্মাত্ত্ঞামন্ত্রীদিতি ঋকারশ্র ঈকার: অসবর্ণে অভ্যাসন্তেতি ইয়াদেশ:। আত্মেকাচ সদৃশো বর্ণ: প্রান্দেশে দ্বিকচাতে ইতি প্রাগিতানেন স্থচিত্তম অন্তথা স্থানে দ্বিৰ্মচনে সতি ইন্দ্ৰিরদিতি উভয়ত্রাপীবং স্থাৎ। শুদ্ধান্তাহং চারু**শরীর: শিশাপুত্রক ই**ত্যাদাহতেদেহপি ভেদারোপণ্যাবছার: তথা ইয়তীতাদৌ বছবীহিণাপি আদিরেকাজিতি অভিগাতুং শক্যো ভৰ্তি: যথা গুর্মিকানেরিত্যত্র উদাহার্ ঈ গভৌ অমাঞ্কার ইতি কিম্বয়-মপি গক্ষঃ প্রবত্নাপেক এবেতি সমাসম্বরপকারীকার এব রুডঃ ।

(२४२)। निषमार्थः बठनम्। निष्यंति एखना छित्रेकमा छात्र-

্ৰু৯০। কৃতকাৰ্ব্যোনিদন্তঃ। শাশব্যতে চেক্ৰীয়তে।

২৯১। উৎ প্রকৃত্যেঙি **র্ণো চোদন্তঃ।** প্রোপু নবিষতি প্রোপু নাবয়িষতি।

২৯২। স্ফরশ্চ। পুষ্ণারয়িষতি পিষ্ণারয়িষতি। "অপুষ্ণুরচ্চ বন্ধূনাম্" ইতি ভট্টি: ।

দিবিচনং কর্ত্তরি বিহিতেষ্ চতুর্বেব ভবতি নাক্সত্র। চতুর্বেবিত নিয়মাৎ আচতুর্বুন ভবতি। চতুর্বপি কর্ত্তর্বোর্বেতি নিয়মাৎ ভাবকর্মণোন ভবতি। হাবয়তীত্যত্র আচতুর্বুন দ্বিস্বং হ্রাতে ইত্যত্র কর্মণি বিহিতে লটি ন দ্বিসম্। নিম্বতিদ্পুর্যোক্স নিয়মাভাবাৎ দ্বিভ্রত্ত্বের জুহ্বতি জুহাব।

- (২৯০)। কৃতকার্য্যো বিষ্টিভুপ্রকৃতিকার্য্যো নিদস্তো দিক্চাতে।
 শাশযাত ইতি শীঙ্ স্থপ্নে যদ্ শীঙঃ শের্যনি চেতি শেক্তাবঃ শীঙোহঙিদ্যে
 ইতি অয়াদেশঃ শ ইতান্ত দিকক্তিং দীর্ষোহনাগমাত ইতি দীর্ঘঃ। চেক্রীয়ত
 ইতি কৃঞো যনি রিদ্তো যে চেতি বিকারঃ সনীণ্ দীর্ঘ ইতি দীর্ঘঃ। ততঃ
 কী ইত্যন্ত দিকক্তিঃ ব্রস্থঃ গুণঃ। অপেক্ষিতবিধেরনপেক্ষিতবিধানং হর্মদমিতি অইন্যবার্থোহয়ং শাহার্যঃ প্রপঞ্চিতঃ।
- (২১১)। ইঙি ণিঙি চ পরে উকারান্তো ধাতুরুৎ প্রকৃত্যা সহ বিভবতি। ক্বতকার্যস্থ বিক্রকৌ প্রাপ্তার্মাং নিয়মঃ। প্রোণুনবিষতীতি উণুঞ্জঃ সন্ সনীবস্তেত্যাদিনা ইঙ্ গুণাবাদেশো তত উৎপ্রকৃত্যা মুস্ব-রূপেণ্ ধিক্রক্তিঃ। প্রোণুনাবিয়িষতীতাত্রাপি ণিঙ্ সনস্তাৎ উৎপ্রকৃত্যা সহ বিক্রিকঃ।
- (২৯২)। পৌ চেত্যন্থবর্ততে। ক্ষরোপৌ চ পরে উৎপ্রক্ষতা সহ দিউবৃতি। চকারাৎ স্বপ্রকৃত্যা চ ক্ষরতের্ত্যকৃত্যি সন্তব্তীতি সনীপলক্ষণরা ক্ষুর্তিল ক্ষাতে যথা গলারাং দোক ইতাত গলাশকেন তৎ-সনীপতীরম্। পুকার্মিবতীতি ক্ষরক্ষুর ক্ষুর্পে ণিঙ ক্ষুর্কারোবেতি কারাদেশঃ ততঃ সন্ উৎপ্রকৃত্যা দিঃ ণক্ষেৎপি ক্ষার্মিবতি ক্ষুর্তেভ পুকোর্মিবতীতি।

২৯০। প্রকৃত্যা বা সর্বাদেশো বা কৃতিজ্ঞারো বা লিড়স্তঃ।

२०४। कुछ्जामिर्वा ।

চিঞ্ চিচায় হ্বেঞ্ জুহাব ধেট্ দধে দু দিদীববান্ পৃ পুপূর্ববান্। ২৯৫। মূদ্ধশাষদাৎ কাদিঃ। চুশ্চোত চক্ষন।

⁽২৯৩)। লিড়স্তঃ প্রক্লত্যা বা দ্বিভবিতি। সর্বাদেশো বা কৃতিজাক্ষো বা। ক্রনেব এচ আত্বং যক্ত স কৃতিজাক্ষা।

⁽২৯৪)। বসৌ পরে ক্বতেরাদিদ্বির্ভবিত। ক্বত ইরাদির্যন্ত স ক্রতেরাদিঃ প্রক্রতাা বেতি সামান্তঃ সির্বাদেশো বেত্যাদিন্ত বিশেনঃ। চিচার ইতি ক্রতেহপ্যায়াদেশে প্রক্রতাা দিঃ। জ্হাবেতি হ্বেঞোছ-দির্ক্তিহেতাবিতি হ্বেঞো ছঃ প্রকৃতিস্থানে এবাদেশবিধানদরং সর্কা-দেশঃ আদেশাদেশস্ত ন সর্বাদেশস্তেন ইয়ার ইত্যুত্র নায়াদেশন্ত সর্কাদেশত্ব-মিতি ঐকারেণ দিক্তিং কৃত্যা হুস্মঃ। দধাবিতি ধেট্ পানে লিট্ অণ্ এচোহশিতীতি আবং ততো দিক্তিঃ উলাতোলাণাবিতি ঔকারঃ। দিলীবানিত্বি দু বিদারণে লিড্কস্থানাবিতি বস্থঃ ক্লাদির্ ইতীর্ রাস্তাদেরি-ভাাদিনা দীর্ঘঃ ততো দী ইতান্ত দিক্তিঃ। পৃপ্রানিতি পূ পালনপূরণয়োঃ উর্পর্বাদিত্বর্।

⁽২৯৫)। যুক্তবর্ণ প্রাগবন্থিতবর্ণো মুর্দ্ধশকেনোচাতে। মুর্দ্ধানঃ
শবদা যস্ত স মূর্দ্ধশবসঃ তদ্গুণসংবিজ্ঞানবছব্রীহিণা শবসগুক্তঃ কাদিরন্তপদার্থঃ নিম্নিড্সন্তব্যাদেমুর্দ্ধশবসাং প্রাক্তাদির্দ্ধিকচাতে নথাদিভূতাঃ
শবসাঃ বর্গাদিঘর্ষশবসাঃ কাদিঃ। চুংশচাত ইতি তালব্যাদেঃ উদাহরণম্উপত্যস্ততা শচ্যতির করণে ইতি তালব্যাদিরিতি স্বচিতঃ সন্দেত্যর্ত্ত তু
শ্চোতক ইত্যাদহরতা দস্ত্যাদিতা স্বচিতা তালব্যদস্ক্তোপদেশস্ত প্রয়োক্রম্। মধুড়িতি মধুগিতি প্রয়োগ্রয়ং তালব্যপক্ষেপি মধু শেচ্যাততীতি কিপ্ মধুণ্ডাৎশকাং নামন্তংকরোত্যাদাবিত্যাদিনা বিভ্

হু৯৬। ন সন্ধিরুক্তেঃ। চেক্রীয়িষতে।

২৯৭। দেঙ্ণিঙ্চাস্ডোইজাদেঃ।

লিড়স্তস্তাজাদের্ধাতোরস্তো বর্ণ: প্রকৃত্যৈকাচ্ প্রাগৃদ্ধি-র্ভবতি। নিদস্তস্ত সেঙ্ সণিঙ্চ। ভবতি হি কারণা-

কাচাত্যাদিনা অস্ত্যাচ্শেবরোপূর্ক্ পুন: কিপ্ কিম্বেশিকতি শিঙ্লুক্
যুক্তান্ত্যাদ্যকারে চকারে চ লুপ্তে ভ্রম্জাদীত্যাদিনা যে ক্তেত শার্ন্ত ইতি
টকারে চ কতে মধুড়িতি ভবতি। দস্ত্যপক্ষে তু চলো: ক ইতি কে
কতে নিমিন্তাপারেনাগভন্ত দস্ত্যসকারক্ত স্কোনিজাদ্যোরিতি লুক্ তদা
মধুগিতি ভবতি। চম্বন্দ ইতি স্কলিন্ত্যাধিণয়ো: মুর্দ্ধন্যাত্য নাহরণন্ত
তিঠেব লিট্ অণ্। কাদিরিতি কিম্ ? শিক্ষাসতি অক্তাবিষয়ত্বাৎ নিজ্ञিন্ত ইত্যাদিনা শ্বিক্তি:।

(২৯৬)। সহ দিকজনা বৰ্ততে ইতি সদিকজিং সদকজে দিন ভবতি। চেক্রীব্নিবতে ইতি ধনস্তাৎ চেক্রীয় ইতাত্মাৎ সনু সর্বাং পূর্ব্ববং। (২৯৭)। হ্বাদিগণাম্বরিতোহজাদিধাতোরসম্ভবঃ দেঙ্সনিঙ্ তা ন সম্ভবতি। অতঃ পারিশিয়াৎ নিদম্ভেনৈব সেঙ্সনিঙ্ ইতি সম্বধাতে এতদভিপ্রেতা বিষয়ভেদেন স্থার্থং ব্যাচকার। অত্রৈকা-জিতি বছবীহিরেব ভন্সাচা চ সহিতোহস্তভাগো স্থপ্রভৃতিরন্যপদার্থ: অন্যস্যাসম্ভবাৎ অতএব ফলিতার্থং ব্যাচকার অস্তো বর্ণ: গ্রক্নত্যৈকা-किंछि विट विद विश्वामात्माका है कि कि जानन वाधारण अथवा न म দ্বিকক্তেরিভ্যেনেন। রবদনবর্জ্জং মধ্যো যুক্তান্তস্যেতি বক্ষ্যমাণনিয়মাৎ অসংযুক্তাত্তো রবদনযুক্তান্তকাত বিষয়:। অতএব রবদনযুক্তান্যেবাদা হরণাম্যপন্যস্তানি অসংযুক্তান্তস্ত আটিটাইতি সচাস্তো বর্ণঃ প্রাগ্রিক্স্চা-মান: সন্নিহিতালাভে বিপ্রকৃষ্টং বিধিরপেক্ষাত ইতি স্থারাৎ সন্নিহিত-প্রান্দৈশ এব করণীয়: অতএবাহ ভবতি হি কারণাদতিক্রম ইতি অতি-ক্রমশব্দার্থং ব্যাচকার সংযোগবিশেষ ইতি। প্রোণুনাবোত উণুঞ काष्ट्रामत्न निष्टे वर्ग त्रक छै नात्रसांकित्यवः कृषा यू रेखा प्रकितिः ব্দত্র গম্ব। এবং প্রোর্শ নুষ্তীভাতাপি। উব্দিধ্যতীভাদি উদ্ধ

দতিক্রন্ধ সংযোগবিশ্লেষঃ। প্রোপুনার প্রোণুন্মতি প্রোণুন নবিষতি প্রোণুনাবয়িষতি উপ্র উজ্জিবিষতি অদ্ড অভিডেডিরঙি উছি উঞ্চিছ্র ।

২৯৮। রবদনবজ্জ ংমধ্যো যুক্তান্ত । উক্ উচিক্ষিতি ঈর্ ঐর্ধিয়ং। রবদনস্ত—অর্জ্ অর্জ্জিষতি উজ্ উজিজিষতি অদ্ড্ অভিডিডিষতি উন্দ্ উন্দিদিষতি।

২৯১। মূলপ্রকৃত্যন্তোইকায়াদেঃ প্রত্যয়াচা।

উৎসর্গে অদ্ভ্ অভিযোগে সন্ ইঙ্ ইঙ্ সহিতান্তবর্ণস্থ ছিক্নজ্ঞি বর্গস্থাদিক্রিত্যাদিনা দক্ত ডঃ তশ্চটাবিতি তস্য টঃ অপদান্তেহপীত্যাদিনা টক্ত ডঃ।
গুকিচ্চদিতি উছি উল্পে ইদিস্থান্ন্ন্ন্ দিঙ্ লুঙ্ ইঙ্ দি ক্রা ফ্রান্থ ইত্যাদিনা অন্
ণিঙ্ সহিতান্তক্ত ছিক্মজিঃ উপান্তক্ত বর্গ ইতি নস্য ঞঃ ছোহচ ইতি ছস্য
ছিল্পং বর্গন্যেত্যাদিনা চক্ত ছল্পং ণিঙ্লোপঃ বৃদ্ধিকলাদেবিতি বৃদ্ধিঃ। অজ্ঞাদেরস্থাে কর্ণঃ প্রকৃত্যৈকান্ত্ প্রাপ্রিভ্বতীতি মুখাঃ পক্ষঃ তদভাবে সতি
অজ্ঞানেঃ সেঙ্ ণিঙ্ চাল্ডো বর্ণো ছিক্সচ্যতে এতাবতা প্রোণ্নবিষতি
প্রোণ্নাবন্নিষতীত্যক্ত নাপি সেঙো নাপি সনিঙ্গে ছিক্সজিঃ কিন্তু স্ইত্যক্রিব ছিক্সজিঃ যদি সেঙ্ ণিঙ্ চ ইত্যেতল্লিড্স্ডেনাপি সম্বন্ধঃ স্যান্তদা
আরিথ আদিও ইত্যানৌ সেঙো ছিক্সজিঃ প্রসঞ্জেও।

অসেঙ নিভ্সনঃ প্রাক্ষিরিঙি কক্তব্যম্। অজ্ঞাদের্থাতোঃ সেঙ্সণিঙঃ সনঃ প্রাক্ষিভব্তি। ঈ গতৌ ঈ্ষির্যতি উঙ্ শব্দে উহিষ্তে।

(২৯৯)। অন্ধাদেরকায়াদের্স্ব প্রক্তেরতো বর্ণ: প্রত্যরাচা সহ প্রাক্ষিত্তবিত । প্রকৃতিপদেন যমাৎ প্রতারোৎপত্তিক্ত বিষয়গ্রহণে সিজে ম্বপ্রকৃতীতি কৃতং যমানাতোঃ শব্দো ব্যুৎপাদিতক্তদ্গ্রহণার্থং ধাতুরেব কি শব্দা ম্বপ্রকৃতিঃ ধাতুক্তাৎ সর্বশক্ষানান্। অর্চিকারিষতে ইতি অর্ক অর্কায়িত্মিচ্ছতি অর্চিকায়িষতে অগ্নিমাখ্যাতৃমিচ্ছতি অজিগ্নীয়বিত উঢ়মাখ্যাতবান্ ঔজচৎ উঢ়িমাখ্যাতবান্ ঔজিচ্ৎ।

৩০ । রাদির্য্যাদেং।

অর্থ্যমাখ্যাতবান্ আর্থ্যৎ অন্যমাখ্যাতবান্ আনন্যৎ।

৩০১। ঈর্থ্যতের্যং সনঃ প্রাক্ সিশ্চ।

ঈর্ষ্যিয়েষতি ঈর্ষ্যিষিষতি।

ইবাচরতি চেষ্টতে বা কর্ত্ত্রায়িত্যাদিনা আয় তদস্তাৎ সন্ ইঙ্ সেঙ্ ণিঙ্
চাস্তোহজাদেবিত্যনেন য়ি ইভাস্য দিককো প্রাপ্তায়াং ব্যবস্থার্থং বচনম্ ক্ষত্র
হি অর্চ্ ধাত্রের মূলপ্রকৃতিঃ অতএব ঘণ্প্রতায়েনার্কণকে সিদ্ধে তদস্তো
বর্ণশ্চকারঃ প্রত্যরাচাকারণে সহ প্রাণ্দির্ভবিতি। ক্ষম্প্রিয়তীতি নায়স্তংকরোত্যাদাবিত্যাদিনা পিঙ্ অনেকাচামিত্যাদিনা ইকারলুক্ ততঃ সন্
ইঙ্ গুণায়াদেশঃ অঘিরিষ ইতি হিত্তে কৃতকার্য্যো নিদস্ত ইতি নিয়্নাৎ
সেঙ্ ণিঙ্ ইত্যাদিনায়ীতাক্স দিককো প্রাপ্তায়াং ব্যবহেমন্। অগ্রাতোর্জ্যাদেনিরিতি নিপ্রতায়াস্তোহার্যাশকঃ ততো মূলপ্রকৃত্যন্তো পকারঃ প্রত্যা
রাচা ইকারেণ সহ প্রাণ্দিককিঃ। উল্লেদিতি উল্লেকাৎ ণিঙ্ অলুক্ লুঙ্
হঙ্ অন্ অত্যাপি উল্লেক্স মূলপ্রকৃত্যন্তো হকারঃ ক্রকারেণ সহ দিককিঃ
বতো বহতেরয়ং ক্রপ্রতায়ান্ত উল্লেকঃ দিককৌ ক্রতায়াং গ্রমু ্যামচেতি
প্রথাদিস্থাৎ সন্বদ্রাবাৎ ন ইয়্ম্ উল্লিকাৎ ণিঙ্জি অনি চ ক্লতে হি ইত্যনেন
দিককিঃ অতএব উল্লিদ্বিত।

- (৩০০)। অর্থানে র ইত্যাদিদ্বির্ন্ধচাতে রেফানীনাং প্রাক্ ক্ষকার-সহিতা বেফাদযোদ্বির্দ্ধান্তে ইতি ভাব:। আর্থানিতি পিঙ্ লুঙ্ হঙ্ অন্ অত্ত সেঙ্ পিঙ্ চান্তোহজানেরিতি রি ইত্যক্ত দিককৌ প্রাপ্তারাং ব্যবস্থেমন্। অথবা অর্থাশক্ষোহয়ং ঋথাতোঃ স্বামিবৈক্সরোরর্ভেরিতি যঙা সাধিজঃ মূল-প্রেক্সতাানেদির্নিকৌ প্রাপ্তারাং ব্যবস্থা র ইত্যাস্য দিক্ষজিঃ এব্যানন্যনিতি নকারক্ত দিক্ষজিঃ।
 - (७०>)। केव्यापात्काः प्रकातः। त्मढ् शिक्षः मनः व्याग् क्विंदिष्ठ । मनः

৩০২। যঃ কণ্ডূঞাদেঃ। কণ্ডুয়িয়িষতি অস্য়িয়িষতি।

৩০০। নামধাতৃনামাদ্যস্তমধ্যমিচ্ছয়া সনঃ প্রাকৃ সিশ্চ।

পুপুত্রীয়িষতি পুতিজ্রীয়িষতি পুত্রীয়িষিষতি।

৩০৪। অশীয়াদের্ন্মধ্যোহন্তো বা। অশিশীয়িষতি অশীয়িয়িষতি অশীয়িষিষতি।

৩০৫। পদন্ত শাকল্যাভীক্ষ্যয়োঃ। গৃহে গৃহে গীতং আঢ্যভরমান্যভুক্ত্বা ভূক্ত্বা ব্রজতি।

প্রাক্সিন্ট। রবদনবর্জ্ননিতি রেফবিশ্লেষং ক্লবা দেঙ্ণিঙ্কঃ যকারস্ত শ্বিহ্নকৌ প্রাপ্তায়াং ব্যবস্থার্থং বচনম্।

- (০০২) কণ্ডূঞানের্যকার: সেঙ্ ণিঙ্ সন: প্রাগ্দির্ভবিতি। কণ্ডূ-ঞানের্য ইতি যকারে ক্তে কণ্ডু ঞাদীনাং যকারবন্ত্রম্।
- (৩০৩)। নামধাজ্নামান্যস্তমধ্যমেকাচ্বর্ণ: প্রাগ্রির্জবতি ইচ্ছয়া সন: প্রাক্সির্জবতি। চতুর্ স্থানের মধ্যে ইচ্ছয়া যত্র কুত্রাপি একস্মিন্-স্থানে দ্বিক্ষণ্ডি: কর্ত্রবা ইত্যর্থঃ। স্থান্যসূত্রবা বৃক্তভাদেরেব। পুরীয়িষ ইতি স্থিতে পুইতান্ত তি ইত্যাসারি ইত্যাসা দি ইত্যাসাইচ্ছয়া এক এব দির্জবতি। নতু স্থানাস্তরে নস্বিক্ষক্রেরিতি প্রতিষ্ধোং।
- (৩০৪) অধীয়াদের্মধ্যাহস্তো বা একাচ্ প্রাগ্ বির্তবৃত্তি। আদেদ্ধিক্ষুক্তিরত্র প্রতিধিদ্ধা সনঃ প্রাক্ সিণ্ডেতি অত্রাপি কেচিদমুবর্ত্তরম্বীতি তেন
 অধীয়িষিবতীতি অশিখায়িষভীতি তুল্যাচার ইত্যাদিনা ঈয়্ অভাদিনামধাতৃনামধায়াদিত্বম্।
- (৩০৫)। দিকজিবিধানোপক্ষেপাগতং ধাতোরম্বতাপি দিকজিং দর্শরতি। অতএব তদহাত্বহুচনায় পুনরর্থস্তপদ্ধঃ। সাকল্যে আভীক্ষ্যে চ বর্ত্তমানং পদং দ্বিভবতি। পৃথক্সংখ্যাযুক্তানামিতরেভরমোগমপ্রাপ্তানাং সকলানাং পদার্থানাং সিদ্ধরূপাণাং ক্রিয়েয়া গুণেন দ্রব্যেণ বা যুগুপ্দ্যা-

ষ্ঠাাতিধানে সাকল্যমত্ৰ ধ্যাথানতো ৰিশেষপ্ৰতিপত্ত্যা গৃহতে। গৃহে গৃহে গীতমিত্যত পৃথক্ সংখ্যাযুক্তা অনন্তবোগমপ্রাপ্তাঃ সর্ব্ব এব গৃহাঃ সিদ্ধরূপাঃ গানক্রিয়ম যুগপদ্যাপ্ত্যা অভিহিতা ইতি সাকল্যে দিফ্কি: গুণেন তু গ্রামো প্রামো রমা: দ্রব্যেণ তু বনে বনে জলম্। অত্র গ্রহে গীতমত্র গ্রহে গীত-মিতাত্র 'তু ক্রমেণ সকলার্থাভিধানং নতু যুগপদিতি ন দ্বিস্কৃতিঃ। অত্র বনে ধ্বথদিরপ্লাশা রম্যা অত্রবনে কৃষ্ণা রম্যা ইত্যত্র তু অন্তোহগ্রযোগং প্রাপ্তা-নামেব দ্বন্দে একশেষে চাভিধানং কিঞ্চ কতিপদ্মানামেব বৃক্ষাণাং রম্যত্তে২গ্রুং প্রয়োগঃ ক্রিয়তে নতু সকলানামেবেতি সাকল্যাভাবার দ্বিরুক্তিঃ। যদা তু क्ररें कर ग्यांभाः वर् नात्मव वृष्णांभाः माकलाः विवक्तारक छना विक्रक्तिर्काता । বৃক্ষা বৃক্ষাঃ শোভনা ইতি আভীক্ষ্যং পুনঃ পুনঃ প্রবৃত্তিঃ তচ্চ সাধ্যরূপায়াঃ ক্রিয়ায়া এব সম্ভবতীতি তহ্যা এব ধর্ম: নতু দ্রব্যস্ত তহ্য সিদ্ধস্ত স্কুবস্তৈর্ভি-বানাং। সা চ ক্রিয়া তিঙাবায়কতা চ প্রায়েণাভিধীয়তে। যাং ক্রিয়াং প্রধান-ভূতাং নৈরম্বর্যোণ কর্ত্তা ভূয়োভয়ঃ ক্রেন্তি তস্তামাতীক্ষ্যং কাপি অবিচ্ছেদে নৈরন্তর্য্যং যথা জীবতি জীবতীতি কাপ্যস্তক্ষণান্তরিতেহপি গৌণং নৈরন্তর্য্যং যথা ভুকু। ব্রজতীতি ব্রজনক্ষণৈরত্রান্তরিতং পুন: পুনর্ভোজনম্। ষিককন্স ভিন্নপদ্বাৎ নেতরি নেতরীতাত্র ন গম্বম্ উদস্বিহৃদস্বিদিতাত্র বর্গা-দেস্থতীয়ঃ স্থবাক্ স্থবাগিত্যত্র কত্বঞ্চ সিদ্ধাতি পৌনংপুনামিত্যাদৌ তু নাদ্দি বিহিত্তত্ত্বিতো দ্বিরুক্তাৎ পদাদপি কচিম্ভবতীত্যাদৌ বুদ্ধিরবিরুদ্ধা। এতচ্চ কোতস্কৃতশব্দশ্ৰ তিমিতাস্তম্ম কুতাদিবুদ্ধেঃ কম্বাদিয়ু পাঠেন জ্ঞালিতং যদা এক্ষিনেব গৃহে গীতমেকবারং ভুক্তং তদা সাকল্যাভীক্ষ্যরোরভাব এব যদা গৃহদ্বরে গীতং বারদ্বয়ং ভুক্তং তদা গৃহে গৃহে ইতি ভুক্ত্বা ভুক্ত্বা ইতি যাবদর্থং শব্দপ্রয়োগাদের সিদ্ধং বছত্ববিষয়ে সাকল্যে আভীক্ষােচ দিঞ্জিরের ভুবতি ন বহুক্তিরিতি নিয়মার্থন্ত লক্ষণম্ অতএব জাতেরেকত্বাজ্জাতিশব্দানাং ন দিকক্তিঃ গৌরীহিরিতি। নতু যদি বহব এবার্থাছাভ্যামভিধীয়ত্তে তছছ-তাৰ্ছচ্চনং প্রাপ্নোতি কথমেকবচনং নৈতুনন্তি একবচনান্তেন পদেন ছিক্র-ক্তেন হি বহবোহর্থা অভিধীয়ন্তে তন্মিন বিভক্তান্তে বছবচনপ্রাপ্তিরিভি স্ববচো ব্যাহতমিতি কুচোদাম্। আভীক্ষাং প্রকর্ষন্চ বদা বিবন্ধিতত্তদা প্রথমং কিং ভবত্বিতি সন্দেহে আহ।

৩০৬। কৃতিদ্বিতিঙ্গুতিরতমো। পচতি পচতিত্রাম্।

००१। मश्रीमि छ।

প্রপচতি প্রপচতিতরাম্। ক্ষীরপায়ীতি ণিনোক্তমান্ন দিঃ।

০০৮। ণমন্তমভিহিতেহপ্যাভীক্ষ্যে।

গ্ৰেজং ভোজং ব্ৰজতি।

৩০৯। ত্রায়াং যাবদোধম।

গচ্ছ গচ্ছ গচ্ছ।

(৩০৬)। ক্নতবির্বচনাদেব তিঙ্গুাপতার্থে বিহিতৌ তরতমৌ ভবতঃ। তিঙ্গুাদিতি বচনাং ক্নতত্ঃ'তমস্থৈব স্থবস্তুম্ন দিক্লজির্ভবিতি অত-এব আঢ্যতরমাঢ্যতরমিত্যুদাজহার। আন্যেকাচো বিক্লজিনিবৃত্তার্থং পদ-মিতি ক্নতম। এবং সতি পদসমুদায়ে বাক্যেন প্রাপ্নোতীত্যাহ।

(৩০৭।৩০৮)। প্রাদিসহিতঞ্চ পদম্ আতীক্ষ্যে বির্ভবৃতি। নম্থ প্রনঃ প্রনঃ ক্ষীরং পিবতীতার্থে ক্ষীরপায়ীতি পদং ততঃ কথং দ্বির্ন ভবতীত্যত আহ ণিনোজন্তার দ্বিরিতি পৌনঃপুল্লে ইত্যনোত্র ণিন্বিহিতন্তেনৈব পৌনঃপ্রাল্রেলকার দ্বিরিতি অতএব পাপচাতে ইত্যত্রাপি যদা আতীক্ষ্যে বন্ তদা ন দ্বিক্ষক্রিঃ যদা ভূশার্থে যন্ তদা ভবত্যেব উক্তার্থস্বাভাবাং। নম্থ খদি উক্তার্থস্বার ভবতি কথং তর্হি ভোজং ভোজনিতি আভীক্ষ্যে এব ন্যবিধানাং অত আহ গমস্তমিত্যাদি। নম্ ক্তোহয়ং বিশেষঃ কাপি উক্তার্থস্বার ভবতি কাপি উক্তার্থস্বাদিপি ভবতীতি স্বভাবশক্রেবে ভিন্না ছি ভাবানাং শক্তয়ন্তথাহি কাঞ্চিং ক্রিয়াং ভারোম্বহনাদিকাং কশ্চিৎ সহায়নরপেক্ষ এব করোতি কশ্চিৎ সহায়সাপেকঃ গমস্তং পদমভিহিতেহপ্যাভীক্ষ্যে দ্বির্ভবৃত্তি।

(৩৭৯)। যাবদোধমিতি যাবতোহবধারণে ইতাবনীভাবসমাসঃ
দরান্নাং গোতাানাং দির্ভবতি। যাবদোধমিতি যাবদ্ধিঃ সোহর্থে।
মুধ্যতে যাবদোধমিতি প্দসামর্থ্যাৎ দিরিতি পদম্পলক্ষণং জ্বিকক্যাত্য-

৬১০। দ্বিরস্ক্রমে। জ্যেষ্ঠং জ্যৈষ্ঠং প্রবেশয়।

৬১১। বজ্জ নার্থপরিবর্বা।

পরিত্রিগর্ভেভো বৃষ্টো দেবং পরিপরিত্রিগর্ভেভাঃ পরিত্রিগর্ভ মিতি শমাসেনোক্তথার দিঃ।

৩১২। উপর্ধাধে ধ্য়ঃ সামীপো। উপর্বুপিরি গ্রামং উপর্বুপরি ছুষ্থম্। উপরি শিরসো ঘট ইত্যত্র সামীপ্যমবিবক্ষিতম্।

পলক্ষাতে। ত্বরা চ কাপ্যতিকার্য্যাতিযোগেণ কাপ্যতিভয়াদিনা ভবতি। অহিরহিরহিরিতি।

(৩১৯)। অমুক্রমে বর্ত্তমানং পদং দ্বিভিবতি। পুনদ্বিরিতি ক্বতং পূর্ব্বোপলক্ষিত ত্রিকজ্যাদিনিরাসার্থং ক্ষোষ্ঠং ক্ষোষ্ঠমিতি প্রথমং সর্ব্বজ্ঞোষ্টং পশ্চান্ততঃ কনীয়ান্ ইতরেভাো জ্যেষ্ঠ ইত্যকুক্রমেণ সর্ব্বে প্রবেশনীয়ানইত্যর্থং। গৃহে গৃহে গীতমিতাত্র যথা সর্বেষেব গৃহশব্দবাচ্যতান্তি ন তথা জ্যেষ্ঠং জ্যেষ্ঠং প্রবেশয়েত্যত্র সর্ক্রকনীয়সি জ্যেষ্ঠথাভাবাৎ অপেক্ষাকৃতং ক্ষোষ্ঠং কিঞ্চ প্রবেশেহপি অমুক্রমো ন স্থাৎ যথা গৃহে গৃহে গীতমিতাত্রিক অতঃ পূর্ব্বেণাপ্রাপ্তে বিধানম্। এবং মূলে মূলে ফুলাঃ অত্যে অত্যে ক্ষাইত্যান্তপি জ্ঞাতব্যম।

(৩১১)। বর্জনার্থে বর্ত্তমানং পরি দ্বিব্বা ভবতি। পরিত্রিগর্ত্তেভাইতি বর্জনার্থাপপরী ইত্যারাদ। দিম্বাৎ পঞ্চমী। নতু পরিত্রিগর্তমিতি অত্র
অপপরিবহিরঞ্চাঙঃ পঞ্চমা বেত্যবায়ী ভাবসমাসে ক্লতে দিকক্তিঃ প্রাপ্নোতি
অত আহ সমাসেনোক্তথার দিরিতি। ভহৎস্বার্থারাং রক্তৌ সমাস এবার্থং
প্রৈতিপাদরতি ভদবর্যবস্থানর্থকাম্। এবং সতি বর্জনার্থঃ সমাসেনোক্তঃ
ভদবর্যবস্থা পরিরনর্থক ইতি বর্জনার্থাভাবার দিক্ষচ্যতে। অবর্জনার্থে তৃ
গঙ্গাং পরিবস্তীত্যিত্র লক্ষণে পরি তদ্যেক্তর দিত্তীয়া।

(৩১২)। উপরি অধন অধি ইত্যোতে সামীপ্যে বিবক্ষিতে দির্ভবস্তি। সামীপাং প্রত্যাসতিঃ সা দেশকতা কালকতা বা। উপযুর্গপরি গ্রামমিতি দেশকতা উপযুর্গিরি তুর্থমিতি কালকতা। সামীপ্যমবিবক্ষিতমিতি ৩১৩। বাক্যাদিসমোধনং সম্মত্যসূয়াকোপকুৎসা-ভর্ৎসনেরু।

প্রাজ্ঞ প্রাজ্ঞ সাধু জানাসি।

৩১৪। পূর্ব্বপ্রথমাবত্যর্থে। পূর্ববং পূর্ববং যর্মো অতিপূর্ববমিত্যর্থঃ।

৩১৫। তরতমৌ চেয্যেতে। পূর্ববতরং পূর্ববতমম্।

যদাপি তত্র স্থিতঞ্চাপি তন্ন বিবক্ষিতং কিন্তু ঔত্তরাধর্যামাঞ্জন হি বস্তুনঃ সত্তৈব শব্দব্যুৎপত্তৌ প্রধানং কিন্তর্হি বিবক্ষা অসামীপ্যে তু ভূগোলকস্তো প্রি গ্রুবঃ।

(৩১৩)। সাথাতিং সাবায়ং সকায়কং সবিশেষণং বাক্যমিহাভিপ্রেত-মিতি যৎ প্রবস্তপাদে বক্ষাতি তদিহ গ্রাহ্মন্। সম্মত্যাদির্ যদ্ধাকাং তম্ভাদি-ভূতং সম্বোধনং দ্বিভবিতি। যন্মিন্ বাক্যে প্রযুজ্যমানে সম্মত্যাদির্মাতে তদ্বাক্যং সম্মতাদির্ ভবতি। বাক্যমাদির্বাক্যাদিরিতি সম্মত্যাদীনপেক্ষ-মাণ্যাপি বাক্যাশক্ষ গমক রাৎ সমাসঃ। গুণাবিদ্ধরণং সম্মতিঃ প্রাপ্তে-ত্যাদি বাক্যং সম্মত্তী। পরগুণানামসহন্মস্যা, যথার্জ্বনং অর্জ্কন ধিক্ তে বীর্যাম্। কোপঃ ক্রোধঃ, অঙ্গরাজ্য অঙ্গরাজ ক্ষণং রণমুথে স্থিরো ভব। কুৎসা নিন্দা, তুঃশাসনত তুঃশাসন ক তে দ্রৌপদীকেশবসনাকর্ষণেন শৌটা-রম্। অপকারশব্দেন ভয়োৎপাদনং ভর্মনাং চৌরঙ চৌর হনিয্যামি দ্বাম্। পূর্বাং সম্মত্যস্থাকোপক্ৎসাম্বিতি দিক্জক্ষ পূর্বস্থ প্রত্থম্। ভর্মনে দ্বিক্ষক্রং ক্রমেণেতি প্রত্থং প্রত্যানীতি অসদ্ধিঃ কর্ণ ও কর্ণ ক্র

(৩১৪।৩১৫)। অত্যর্থেছিতিশয়ন্তদ্বিবক্ষায়াং পূর্বপ্রথমে দির্ভবতঃ।
ক্ষতিপূর্মমিত্যর্থ ইতি ব্যাকারেণ পূর্বস্থাতিশয়ো ছোতিতঃ। এবং প্রথমং
প্রথমং পুরান্তি তরবং। দ্বিছভ্যোষ্ট্যর্থে তরতমানিতি অত্যর্থে তরতমাবশি
বিহিত্যে অত একবিষয়ন্তাং বিশেষবিহিত্যাদনেন তক্ত বাধা সম্ভবতীতাত
আহ তরতমৌ চেষ্যত ইতি। নতু ইষ্টোহপি কথং নোচ্যতে বহুলাধিকারাদ্দিতি বোদ্ধবাদ।

- ৩১৬। অবধারিতমনেকম্। সম্মাদ্রীশৈম হস্তং মহস্তং দেহি। একস্ত দ্বাভ্যামেকং মহস্তং দেহি।
- ৩১৭। ভাববিশেষণকতরাদি সমনিরূপণে। উভাবিমাবাঢ়ো কতরা কতরা অনয়োরাঢ়তা কীদৃশঃ কীদৃশোহন-য়োর্বিভবঃ।
- ৩১৮। অব্যক্তশব্দানুকরণস্থানেকাচোহল্লুথা বর্গা-দেন তৃতীয়শ্চেতো। ঘটিতি ঘটদিতি গঞ্জীরমন্দ্রশিত্ম।
- (৩১৬)। অবধারিতমেতাবদেবেতি নিশ্চিতং তত্র যথেকং ন ভবতি তদা বিভবতি। গৃহে গৃহে গীতনিতাত্র যথা সকলগৃহাণাং গীতেন সম্বদ্ধঃ ন তথা অব্যাসাধ্য বস্তুং মংস্তাং দেক্ষতাত্র সকলমংস্থানাং দানেনাসম্বদ্ধাং এতাবতা পদন্বিতাদিনা দিকজিন প্রাপ্রোতীতি বিধানম্। ছাতামেকং মংস্তাং দেহীতাত্র পূর্বোজমন্মাত্রাশেরিতি সম্বাতে। অবধারিতমিতি কিম্পু অন্যাদ্রাশেম ইস্তাং দাভাাং দেহীতাত্র দ্বৌ ত্রান্ বেতি নাবধাবিতং কিন্তু মংস্তানামাত্রমুক্তং ছাত্রামেকং মংস্তাং দেহীতি অবধারিতহমজ্যের কিন্তু তদনেকং ন ভবতি একস্তৈবোক্তম্বাত।
- ে (৩১৭)। ভাববাচী শব্দো ভাবপদেনোচাতে ভাবস্থা বিশেষণং ভাববিশেষণং ভাববিশেষণঞ্চ তৎ কতরাদি চেতি ভাববিশেষণকতরাদি তৎ
 দির্ভণতি সমনিরপণে গম্যে। কতরাদীতি আদিপদেন তরতমপ্রতায়ায়্যা
 গৃহত্তে কীদৃশাদরণ । উভাবিমাধাচ্যাবিতি উভরোরাচ্যতয়া সমহমভিহিতং
 কতরা কতরা অন্যোরাচ্যতা ইতি সাচ্যতায়া ভাবস্থা বিশেষণম্। কতবৈতি পদং সমনিরপণে প্রযুক্তম্ এবং কতমা কতমা এবাং আচ্যতা ইতি
 ক্রিয়া গুণসং লাভিদ্ব য়োরেকস্থা পৃথক্কারে তরো বা তদাদেরিভি তরঃ কিমঃ
 কার্দেশঃ। কীদৃশ ইতি সমানত্যদেশদেদৃশন্তনী চ কন্মোপমায়ামিতি
 টঃ ক্যাদিঃ কিমাদেরিভি কী।
 - (৩১৮)। স্মব্যক্রোহন্ট্রনর্ণ: অব্যক্তশ্চাসৌ শক্তেতি অব্যক্তশকঃ তদমুকরণমপ্যন্ট্রন্মেব সম্ভবতি তত্র সাদৃশ্যেনার্থাসম্ভবঃ তক্ষাৎ ধ্বনি-

৩১৯। অস্ততশ্চাভীক্ষ্যে।

ঘটদযটেতি ঘটদ্ঘটদিতি ঘটদঘটিতি।

৩২০। তলুগ্লিত্যং দ্বিশ্চায়াদৌ।
পটপটায়তে পটপটাকরোতি।

ভূল্যতামাত্রমাশ্রিত্য ক্ট্রেবৈরেব ভদন্করণীয়ন্। অব্যক্তশলামুকরণভানেকাচ ইতৌ পরে অলুপ্ বা ভাৎ অলুকি সতি বর্গাদেঃ প্রাপ্তস্তীয়ণ্চ
ন ভবতি। ঘটদিতি অব্যক্তশলামুকরণন্। অতো নামত্বাধিতক্যুৎপত্তৌ
পদত্বন্ অতোহলুকি কতে টকারশু বর্গাদেরিত্যাদিনা প্রাপ্তস্তৃতীয়ো ন
ভবতি। অধ্যক্তশলামুকরণশ্রেতি কিন্? জগৎ ইতি জগদিতি। অনেকাচ ইতি কিন্? অৎ ইতি অদিতি। অদিতি কিন্? মকট্ ইতি মকডিতি। ইতাবিতি কিন্? ঘটদত্ত বর্ততে। যন্ত্রাপি ছিক্তিপ্রকরণে
লক্ষণমেতদপ্রাস্কিকং তথাপ্যুত্তরলক্ষ্ণানাতীক্ষ্যবিধানাৎ তত্বপক্ষেপাদাগতমতেৎ।

(৩১৯)। চকারঃ পূর্ববিধেঃ সমৃচ্চয়ার্থ: অন্তথা প্রতিযোগিদর্শনেন প্রতিযোগিনিবৃত্তেম্ব অদিতি নামুবর্ত্তে। অব্যক্তশকামুকরণপ্রানেকাচ ইতৌ পরে আভীক্ষ্যে সতি অল্পুণ্ বা ভবতি অন্ততকারশ্র চ লুখা ভবতি। এবং সতি রূপদ্বং সম্পন্ধতে। অন্তত ইতি কৃতং তলুকি সতি দিকজিলিকানিবাসার্থন্। বদা তু শকামুকরণং তদাভীক্ষ্যাভাবাং পূর্বস্ত্তশ্রেক বিষয়ঃ পটিতি পটদিতি। কেচিছ্যাচক্ষতে চকারেণ অলুগপ্যমূবর্ততে ভেনাক্রৈব পটং পটিত্যুদাস্ক্তম্।

(৩২০)। অব্যক্তশনার করণস্থানেকাচ আয়াদৌ পরে বির্ভবতি।
তলুগ্ নিতাং ভবতি। অস্ততো লুগিতাস্থানুরক্তৌ প্রাপ্তায়াং যদত্র তলুগিতি
কতং তৎ তলুকি কতে বিরুক্তিরিতি ক্রমস্টনার্থন্। তেনোভয়য়ানে এব
তকারস্যাভাবো জায়তে। নিতাগ্রহণন্ত বায়ুর্তিশঙ্কানিরাসার্থন্। পটপটায়ত ইতি পটংশকাৎ অব্যক্তশনীমুকয়ণে চেতি আয়, বিরেক্তৌ চ সঁত্যাং
ভিচেতি বক্তবামিতি ভিত্তপলুক্ শকামুকয়ণলোহিতাদ্যোয়ায়্ ইতি পক্ষে
আর্থনেপদম্। পটপটাকরোতীতি অব্যক্তশনামুকয়ণাদনেকাচোহনিতৌ
ক্রভুক্তিবিতি ভাচ্ অত্তকারাদ্যস্যান লুক্ তেন মন্ধ্যায়ায়তে মন্ধ্যায়্রীকরোতি।

৩২১। গুণঃ দাদৃশ্যে দমাদবচ্চ। পটুপটুঃ পটুপট্বী ভীতভীতঃ।

৩২২। জাতীয়শ্চেষ্যতে।

পটুজাতীয়ঃ।

(৩২১।৩২২)। গুণবাচকঃ শব্দো গুণশব্দেনোচ্যতে গুণবাচকঃ শর্কঃ সাদৃশ্যে বর্ত্তমানো হির্ভবতি। সমাসবচ্চ। স চ দ্বিবিধঃ গুণমাত্র-বাচকো গুণমুপদৰ্জনীকৃত্য দ্ৰব্যে বৰ্ত্তমানশ্চ যো গুণমভিধায় তৰতি দ্ৰব্যে বর্ততে দ এবং পণ্ডিত:। পণ্ডিত ইতি পণ্ডা বৃদ্ধিন্তদ্যোগাৎ পুরুষে বর্তু-মানং পণ্ডিত শক্তো গুণবচনং গুণমাত্রবৃত্তিণ্চ গুণশব্দং গুরুগুরুমস্ত রূপ-মিত্যত্র গুণমাত্রবৃত্তিরেব দিকক্তি:। পটুপটুরিতি পটুস্বং গুণমুপসর্জনীকৃত্য পটুশনোহয়ং তদ্বতি দ্রব্যে বৃত্তঃ। ইসমাসবত্ত্বে সতি লুকুস্থপোহনোজ্ঞাদে-রিতি স্থলুক্ প্রসিদ্ধপাটবেন সদৃশ ইভার্থঃ। সমাসবচ্চেতি সামান্তেনোক্ত-মপি কর্মধারয়ঃ সমাসবচ্চেতি বিশেষোপসংস্কৃতমবগস্তব্যমিতি স্ফুনায় পটু-পট্রীত্যুদাহতম্। অতএব কর্মধারয়সমাসকার্য্যম্ উক্তপৃংস্কানৃস্ত্রীপুংবৎ দ্রিয়া-মিতি পুংবম্ভাবাৎ স্ত্রীপ্রতায়নিবৃত্তির্ভূতিতি সমাসাম্ভরকার্যাঞ্চাত্র ন ভবতি তেন কালককালিকেত্যত্র তদ্ধিতকোপান্ত ইতি প্রিয়াদিখাৎ পুংবদ্ধাবপ্রতিষেধা বছবীহিবিহিতো ন ভবতি। একৈকলৈ একৈকন্তা ইত্যাদৌ চাপ্ৰধানাৰ্থছে চেতি সর্ব্যনামসংজ্ঞাপ্রতিষেধক ন ভবতি। এতদর্থমেব একঞ্চ বীপ্সায়া-মিতাত্র একৈকলৈ ইত্যাদাহতম্। প্রকারবতি জাতীয় ইতাত্র প্রকারশব্দেন ভেদঃ সাদৃশ্যঞ্চোক্তং তত্র ভেদে কুতার্থো জাতীয়ঃ সাদৃশ্রে তু অনেন অত একবিষয়বিহিতত্বাৎ বাধ্যবাধকশকারামাহ জাতীয়শ্চেষ্যত ইতি ভাগবৃত্তিকারত্বাহ জাতীয়োষ্পি সাদৃশ্য এব ভবতি এতেন বিধিদ্বয়-সমাবেশ উক্ত:। গুণ ইতি কিম্? অগ্নির্দ্মাণবক: নৰগ্নিশব্দোহপি গুণবচন এব তৈক্ষাদীন্ গুণানুপাদায় মাণবকে তদ্বতি প্রবৃত্তথাৎ অগ্রথা সাদৃখ্যা-সম্ভবঃ স্থাৎ। অত্যোচ্যতে সাদৃশ্যে বর্তমানঃ সর্ব্ব এব শব্দো গুণ্বচনো ভৰতি তত্মাৎ সাদৃশ্যাভিধানাৎ প্ৰাগপি যো গুণৰচন: স এবাত্ৰ শ্বণৰকেন গহতে। অন্তণা গুণশকোপাদানমনর্থকং স্থাৎ ব্যারন্তাভাবাৎ। রূপরস- ৩২৩। পীড়ায়াঞ। গতগতা নম্টনফা। হা তাতেতি হাশব্দেনোক্তহান্ন দিঃ। '

৩২৪। একঞ্চ বীপ্সায়াম্।
একৈকস্মৈ একৈকস্মাঃ একৈকশাে বিনিম্নস্তীতি বহুবল্লার্থাদিতি
শস্। একমেকং প্রতীত্যসাধুঃ। প্রত্যেকমিতি সমাসেনাক্তদার দিঃ।

৩২৫। সর্কানাম কর্মাব্যতীহারে। ইতরেতরঃ পরস্পারঃ অন্যোহন্যঃ।

গলক্পশশিকানাং সামান্ত ওণবচনানাং সাদৃভারত্যভাবাৎ ন দিঞ্জি:। সাদৃভা ইতি কিম্াু পটুমানয়।

(৩২০)। গুণবিশেবং পীড়া সাদ্দাত্র প্রয়োক্তরি সম্বন্ধা প্রয়োক্তরুং পীড়ারাং গন্যমানায়াং দ্বিভবতি। সমাসবচ্চ। গতগতা নইনটা ইতাত্র গতনইশবাভাাং পীড়া গন্যতে। ক্রিয়য়া গমনাদিনা পীড়ামান এবমাহ ক্রৈকপন্তং পুংবদ্ভাবন্দ সমাসবব্বেহস্ত প্রয়োজনম্। নমু যদি পীড়ায়াং দ্বিক্রিস্তদা হা তাতেতাত্র প্রাপ্রোতি অত আহ হাশদেনোক্রপার দিরিতি হাশদ এব পীড়াবচনস্তেনৈব সা উক্তা উক্তার্থবাদপ্রয়োগ ইতি। নমুন ন করোতীত্যাদৌ পীড়ায়াং দ্বিকক্রো সমাসবদ্বেন নঞোহনিতি কন্মার ভবতি ইতি নথাদিপাঠঃ কর্তব্যাহত্র যহঃ।

(৩২৪)। একমিতি পদং দ্বিভ্বতি বীপ্দায়াং গম্যমানায়াম্। সমাসবচ্চ। ব্যাপ্ত মিছাে বীপা সকলাভিধানমিত্যর্থঃ। পদন্ত সাকল্যাভীক্ষায়োরিতি দ্বিকলিঃ সিদ্ধৈব সমাসবত্তার্থং বচনম্ একৈকমিত্যনেনৈব বীপায়াং
বােধিতায়াং কথমতাৎ সন্ধ্যৈকার্থাবীপায়ামিতি শসিত্যাশঙ্কায়ামাহ একৈকশ
ইত্যাদি নাত্র বীপ্দায়াং শস্ কিন্ত একৈকশন্ধস্পায়ার্থানাৎ বহলয়ার্থাৎ কারকত্বে
শস্ মাঙ্গল্যে ইত্যানেনৈব। একমেকং প্রতীত্যসাধুরিতি সমাসবত্বস্থ শিত্যবিহিত্বাদি হাভিপ্রায়ঃ। সমাসেনােভারা দ্বিরিতি প্রত্যেকমিত্যত্র
বীপ্রায়ামবায়ীভাবস্থেনৈব বীপ্রাভিহিতা ইত্যুক্তার্থানা দ্বিত্বম্

(৩২৫)। কর্মব্যতীহারে বাচ্যে দর্মনাম দ্বিভবতি। সমাসবচ্চ।

৩২৬। ততঃ স্থপোহপুংস্থাং বা।

অফেটিখাং পুত্রানিমে ব্রাহ্মণ্যো ভোজয়তঃ। অখ্যখা: পুত্রানম্মা ভোজয়তি অখ্যা চাশ্যখা ইত্যর্থঃ। অন্যোহশ্যখাঃ পুত্রানিতি বা। "বনানি ভোয়ানি চ নেত্রকল্পৈঃ পুত্রপাঃ সরোজৈশ্চ নিলীন-ভূকৈঃ। পরস্পরাং বিশায়বস্তি লক্ষীমালোকয়াঞ্চক্রুরিবাদরেণ" ইতি ভট্টিঃ। ইত্রেতরামিমে ব্রাহ্মণকুলে ভোজয়তঃ। ইত্রে-তর্মিত্যর্থঃ। ইত্রেতরম্ ইত্রেতরদ্বা অন্যোহশ্যাং অন্যোহশ্যদ্বা।

৩২৭। কশ্চিদত্র স্বমোস্তকং নেচ্ছতি। ইতরেতরম্ অক্যোহন্যম্।

বিপর্যায়েণ ক্রিয়াপ্রবর্ত্তনং কর্মবন্ধনীহার:। সর্বনাম ইতি সামান্তা-ভিধানেহপি ত্রয়াণামেব গ্রহণং পরিশিস্টেমু কর্মব্যতীহারাভিধানশক্ত্য-সম্ভবাৎ পরম্পরাক্তোহন্তয়োরক্তরাপীষ্যত ইতি পূর্ব্বপদে স্কট্ সর্ব্ব-বিভক্তিষেবামীষাং দ্বিচনবছবচনয়োরভাব ইতি বৃদ্ধাঃ। অতএব শাকটায়নেনোক্তম্ ইমে পরস্পরাদয়ঃ শকাঃ কর্মব্যতীহারৈকন্ধনিষয়াইতি। প্রথমায়া অপ্যভাবমপরে বদস্তি। ইতরেতরং ভোজয়তঃ। "অক্রোহন্ততঃ পথি বতাবিভীতামিভোক্ট্রো" ইতি মান্বঃ। পরস্পরস্থ ভোজনয়ন্তীতাদি চ।

(৩২৬)। তত ইতি কর্ম্মবাতীহারে ক্রতিদ্বিক্জেঃ সর্বনামোহপুংসি বিষয়ে স্থপঃ স্থানে আম্ বা ভবতি। অস্তোহস্তাঃ প্রানিমে ব্রাক্ষণাে ভাজয়ত ইতি ষ্টাপ্রানে আম্ অতএব অস্তোহস্তাঃ প্রানিতি বেতি পক্ষাস্তরমুদাক্তম্। পরস্পরাং বিম্ময়বন্তি লক্ষ্মীমালোকয়াঞ্চকুরিবাদ-বেণেতি এতদপি দর্চাস্তোদাহরণম্। ইতরেতরামিমে ব্রাঞ্ধপকুলে ভোজয়ত ইতি প্রথমাস্তঃ বিতীয়াস্তঞ্চ। ইতরেতরামেমে ব্রাঞ্ধপকুলে ভাজয়ত প্রানার্থায়া সমাস ইতি বিকল্পেন তুক্ আম্তুগ্ভ্যাং মুক্তে পক্ষে ইতরেতরমিতি তৃতীয়ং রূপম্।

(৩২৭:৩২৮)। यः স্বমোস্তকং নেচ্ছতি তন্মতে ইতরেতর্মিতি

৩২৮। স্ত্রিয়ামপি পুংবদিত্যেকে। শভোহন্যং স্ত্রিয়ো ভোজয়তঃ।

৩২৯। অকটে প্রিয়ন্তথো বা। প্রিয়প্রিয়েণ বাতি প্রিয়েণ বা। স্থুখস্থবেদ বাতি স্থাখন বা।

৩৩ । বাক্যঞ্জ যাবদিচছ্মাধিকো।

অহো দর্শনীয়া অহো দর্শনীয়া মহাং রোচতে মহাং রোচতে। অত্র দর্শনীয়হক্ত রুচেশ্চ শ্বিষেমাধিক্যং দ্যোজ্যতে। নমস্তব্যৈ নমস্তব্যৈ নমস্তব্যৈ নমো নমঃ।

७७३। श्राम् १।

ধিরুক্তেশ কারোহত্তবতি। খু জমুর্ত্তি তৃ ততার কৃ টকার।

সোর্দ্ম ইতি মকারঃ। স্তিয়ামপি পুংবদিতোকে ইতি তন্মতেংলোংগ্রুং পুজানিমে বান্ধণ্যৌ ভোলয়ত ইতি পক্ষেংলোংগ্রুখাঃ পুজানিমে বান্ধণ্যৌ ভোলয়ত ইতি।

- (৩২৯)। অকন্তমপ্রকাসঃ। অকন্তে কন্টবাতিরিক্তে গুণে বর্তমানৌ প্রিয়স্থশর্কৌ দির্বা ভবতঃ। সমাসবচ্চ। প্রিয়প্রিয়েণ যাতীতি অকন্তেন যাতীতার্থঃ। অকন্ত ইতি কিম্? প্রিয়াঃ প্রিয়ঃ অত্র প্রিয়শকোইভি-লম্বণীয়বচনো ম গুণবচনঃ।
- (৩৩॰)। আধিকো ভোতো বাকামপি ধাবদিছেং দিউবতি।

 যাবদিছামিতি পদোপাদানাৎ দিরিত্যুপলক্ষণং ত্রিরপি ভবতি। অহো

 দর্শনীয়া অহো দর্শনীরেতি স্বস্তচয়রূপং বাকাম্। মহুং রোচতে মহুং
 রোচত ইতি কারকাবিতক্রিয়ার্শম্। নমন্তক্তৈ ইত্যাদি ত্রিক্তিন
 ভক্রোধিকাং ভোততে।
- (৩৩১)। উপক্ষেপাগতং দ্বিকক্তিবিধানং সমাপ্য প্রক্রান্তং ধার্ড-সম্বন্ধিস্তাং দ্বিকক্তৌ বিধানমাহ। জঘর্তীতি দ্ব ক্ষরণদীপ্রোঃ তিঙ্কাদি-

७०२। कथछानि भागिः।

দ্বিরুক্তে: কখছাদিশ্চাদির্ভবতি। উক্তমুক্তেন যোগ্যং যেগ্যেন সহ সম্বধ্যতে ইতি। কখছাশ্চ—চকার চুখাদ চিচ্ছেদ।

৩৩০। গবঝহা জঃ। জগ্রাহ জঘাস জঝাম জহোঁ।

ত্বাং দ্বিকক্তিঃ। ততারেতি তৃপ্পবনসন্তরণয়োঃ ঋদুতোঃ সবর্ণপ্রায়ত্বমুক্ত-মেব অতএব ১কারোহপি অন্তবতি

তন চিক্পতি।

(৩০২)। কথছাদিরিত্যাদিপদসংগৃহীতা বহবো বর্ণাশ্চাদিরিত্যাদিপদসংগৃহীতাশ্চ বহবস্তম্মাৎ সম্বন্ধনিয়মঃ কথমমীধামিত্যত আহ। উক্তমুক্তেন যোগ্যং যোগ্যন সহ সম্বধ্যতে। কথছা উক্তা উক্তেনৈব চকারেণ
সহ সম্বধ্যতে। গঘনহা উক্তা উক্তেনেব জকারেণ সহ সম্বধ্যতে ঠ্যুথধফভঙা যোগ্যাঃ যোগ্যেরেব উজ্জ্তদপবকৈঃ সহ সম্বদ্ধাত্তে ঠ্যুথধফভঙা যোগ্যাঃ যোগ্যেরেব উজ্জ্জদপবকৈঃ সহ সম্বদ্ধাত্তে। যোগ্যতা
চামীষাং ক্রমঃ ক্রমবতামঙ্গমিত্যানেনৈব প্রতিপাদিতা সমানুর্বাত্ত্বেন চ
ঙকারঞ্জারয়াঃ সামুনাসিক্ত্বেন চ তথাহি টাদিবর্গাণাং ছিতীয়চতুর্থযোক্তর্গান্থা এব প্রথমত্তীয়ৌ ভবতঃ ঙক্কারশ্র চ ঞ্রকার:। চকারেত্যাদি ভূক্ত্রক্রণে থাদৃ জক্ষণে ছিদির ধৈষীকরণে লিট্ অণ্ ধিক্রক্তিঃ
সর্ববিত্রব চকার:।

(৩৭০)। গ্ৰহ উপাদানে ঘদু অদনে পঠ্যতে ৰামু অদনে ওহাক্ ত্যাগে সৰ্বত্তিব জকারঃ।

ু (৩০৪)। ছিবু নিরসনে ঢৌক গতৌ পঠাতে। ছা গতিনির্ক্তী ডু ধাঞ ধারণপোষণয়োঃ ফল নিষ্পত্তী ডু ভূঞ্ ধারণপোষণয়োঃ ঙুঙ্ শক্ষে পঠাতে এষাং ছিক্তেল যথায়থং টকারঠদয়ঃ। ঞোঙ্ রিতি মনস্তাৎ কিপ্ কৌয ইতি যলুক।

००৫। न शांट आक् छिख्यमरस्य। थलः थणः वर्षाम शक्ता

৩৩৬। যন্লুকি বেত্যেকে। দাত্তঃ ধাত্তঃ।

৩৩৭। কবতেন যনি। কোকৃয়তে।

৩৩৮। চতুরু নিজাদেগুণঃ।
চতুরু লড়াদিরু পরেরু নিজাদেশ্বি রুক্তেন গুণো ভবতি। নিজির্ নেনেক্তি বিজির বেবেক্তি বিষু অবেষেট্ বেবিষ্যাৎ।

⁽৩০৫)। ধাঞোহভিত্তথসধের পরে দিকজিণকারো দকারো ন ভবতি। ধত ইতি ডুধাঞ্ ধারণপোর্টণয়োং লট্ তদ্ হ্বাদিমাদ্ধিক্ষ ক্রিঃ দাধোর্হলি চেতি আকারলুক্ বর্গস্থাদিরিত্যাদিনা ধস্ম তঃ এবং ধংসে ধদ্ধে। তথসধ্ব ইতি কিম্ ? দধ্যাং। অঙিতীতি কিম্ ? দধ্যতি। ধংসে ধদ্ধে ইতাত্র দকারে ক্রতে আকারলোপে চ ক্কতে তুর্যান্ত ইত্যাদিনা ধকারে সিদ্ধে সধ্ব ইতি ক্রতমূত্রার্থম।

⁽৩৩৬)। গাঞো ধন্লুকি সতি অভিত্তপসংখ্য পরে দ্বিকজিধকারো দকারো বা ভ্রবতি। দাত ইতি ধন্লুকি দ্বিকজিছ স্বশুচ দীর্ঘোহনাগমাত ইতি দীর্ঘঃ আকারলুক।

⁽৩৩৭)। কুঙ্ শব্দে ইতাশ্য যনি পরে বিরুক্তিককারশ্চকারো ন ভবতি। কবতেরিতি শঙ্ বিকরণনির্দেশঃ কুঙ্ শব্দে ইতি তুদাদেঃ কু শব্দে ইত্যাদাদেনিরাসার্থঃ। তয়োশ্চোক্রতে ইত্যেব ভবতি। যখপি শব্দে ত্রয়ঃ পঠান্তে তথাপান্তি ভেদঃ ভাদিরব্যক্তে শব্দে আদাদিঃ শক্ষমাত্রে ভুদাদিরার্ত্তপ্রে। কৃচিয়েতি প্রতিবেধাৎ যন্ত্রিক চোক্রিতি কেচিৎ।

⁽৩০৮)। নিজির শৌচপোষণয়োঃ বিজির পৃথগ্তাবে বিষু ব্যাপ্তী এতে ত্রমো হ্বান্তর্জনা নিজাদয়ঃ। অবেবেড়িতি লঙ্ হঙ্ ষষ্ট ইতি ষস্ত টঃ সুক্ষান্তব্যত্ত্ব । চভূষি তি কিম্? নিনেজ।

৩৯। প্রকৃতের্ন ডিদচি। নেনিজীন অনেনিজম্।

৩৩০। ঋপৃহাঙ্মাঙ্ভ্ঞামজীৎ।

চড়্যু ঋপৃহাঙমাঙভ্ঞাং ছিক্তেরজীত্তবতি। ইয়র্তি পিপর্তি
বিভর্তি।

০৪১। নাহ্বাদেরাদ্ধল্যঙিতি।
চতুই ডিতি হলি পরে কচিৎ সাহচর্য্যাৎ কর্ত্তরি নাহ্বাদেরাদীন্তবতি। ক্রৌণীতঃ জিহীতে মিমীতে জাজ্ঞীতঃ।

⁽৩৩৯)। নিজাদেশত তুরু ভিদচি পরে প্রকৃতে গুণো ন ভবতি।
নেনিজানীতি লোট্ডানি। অনেনিজমিতি লঙ্ ভ্রম্ কস্ভিতোরপিবাদেরিতি প্রাপ্তো গুণ: প্রতিষিধ্যতে অভিতি গুণশু প্রাপ্তাভাবে ভিদিতি
কৃতং স্পত্তীর্থম্। জনচি জু—নেনেক্তি। অত্যাসুর্ভেন নিজাদেরিতানেন
কিৎ জ্ঞানে তুর্ স্বরণে বিষ্ শব্দে এতে হপি গ্রাহ্যা: তেন চিকিতানি অচিকিতমিতাদি সিধ্যতি। অনেন ঝাখ্যানেন পাণিনিস্ক্বির্ছাদিভিরবিরোধো ভবতি।

⁽৩৪০)। ঋ গতৌ পৃ পালনপ্রণয়োঃ ওহাঙ্ গতৌ মাঙ্ মানে
শব্দে চ ডু ভূঞ্ ধারণপোষণয়োঃ এষামিয়ন্তীত্যাদয়ঃ প্রয়োগাঃ। অসবর্ণেহত্যাদস্তেতি ইয়াদেশঃ পিপর্তি জিহীতে মিমীতে বিভর্তি। ইনিতি হস্ববিধানে যুক্তে দীর্ঘবিধানমুক্তরার্থম্। অচতুর্ তু—পপার বভার। হ্রাদেরেব চতুর্ বিরুক্তেী মাঙ্ভূঞোঃ সান্তব্ধনির্দেশঃ স্পষ্টার্থঃ হাঙক্ত গুহাকো
নির্ভার্থঃ তত্ত জহাতীতি যম্বাপি গণকারেণ ঋত গতাবিভাত ছান্দসম্মুক্তং
কিন্তু তথ্ প্রকারক্তান সম্মৃতম্।

⁽৩৪১)। যদি চতুৰ ভিতি হলি পরে নাহ্বাদেরানীয়বতি তদা ভহাভগতাবিত্যাদিয়ু যকি পরে হায়ভ ইত্যাদিম্বপি আদীৎ স্যাৎ অত আহ কচিৎ সাহচ্যাৎ কর্ত্তরীতি ক্র্যাদের্নাদিতি কর্ত্তরে বিহিতঃ অতন্তরে কর্ত্তোব ঈ্তমিতি নিয়তং তত্ত সাহচ্যাৎ হ্বাদেরপি কর্ত্তরে আদীত্তবিতি ন ভাবকর্মণোরিতি। ক্রীণীত ইতি জু ক্রীঞ্ ক্রবাবিনিময়ে। সাক্রীত

৩৪২। ভীহাকোরীদ্ধাবা।

বিভীতঃ বিভিতঃ জহীতঃ জহিতঃ।

৩৪৩। হে জহাহি চ।

জহিহি জহীহি জহাহি।

৩৪৪। লুগচি।

চ কৃষ ঙিত্যচি পরে কর্ত্তরি নাহ্বাদেরাল্লুগ্ভবতি। প্রুনস্তি জিহতে দদতি জাজ্ঞতি।

ইতি জ্ঞা অববোধনে যন্লুকি দিক্জি: হ্রম: ততো দীর্ঘ: হ্রাদিবদ্যন্লুগস্ত ইতি হ্রাদিঝাদীস্বম্। হলীতি কিম্ ? ক্রীণপ্তি। নমু লুগচীতানেন বাধা ভবিষ্যতি বিশেষবিধানাৎ। তহি হলীতি ক্তং স্পটার্থম্। আয়লভ্যাদ্ধি শাক্ষী প্রতীতি: স্থলভা ভবতি। সভিতীতি কিম্ ? ক্রীণাতি। অচতুষু ভ্—জিহাসতে।

(৩৪২)। ঞিত্তী ভয়ে ওহাক্ ত্যাগে ইত্যেতয়োশ্চতুর্ম ঙিতি হলি পরে ইন্ধুযো বা ভবতি। হাক ইতি নির্দেশ ওহাঙো নিরাসার্থ:। অচতুরু তু—জীতঃ। ঙিতি তু—বিভেতি। ঈদিদ্বেতি ন ক্লতং বৈচিত্র্যার্থম্।

(৩৪৩)'। হৌ পরে জহাতেরীনুষো বা ভবতি। জহাহি চ রূপং ভবতি। ঈশ্বমপি পক্ষে ভবতীতার্থং।

(৩৪৪)। জিহতে ইতি অস্তোহদ্দ্দ্দানেরিতি অং। জাজতীতি জ্ঞা অববোধনে জানাতের্যন্ত্রি দিক্ষ কিহেতাবচাগি চেতি হ্বাদেশ্চতুর্ আর্কি সিদ্ধেহরং নিয়মার্থ: চতুর্ম ভিত্যের লুগ্ভবতি নাম্রত্র তেন অজহামিতাত্র লুগ্ল ভবতি। অথবা হ্বাদেশ্চতুর্ণাং লড়াদীনাং ন দিক্ষজিহেতুতা কিন্তু হ্বাদিন্ত-মাত্রম্ম চতুর্ কর্ত্বের ইতি নিয়মেন চতুর্ ব্যতিরিজে পরে দিক্ষজিনিষেধঃ ক্রিয়তে অভিতীত্যেব অলুনাম্। অচাতি কিমর্থম্? হলি পরে ক্রম্বমেব্ বাধকং ভবিষ্যতি তৎ ক্লতং স্পন্তার্থম্। এতৎ প্রাগণি ব্যাখ্যাত্মেব্ চতুর্ ইত্যাহ্রত্বভ্রার্থম্। চতুর্বিতি কিম্প্ অলাতাম্ অধাতাম্। 🔌 ८ । मार्ट्शार्शन ह।

দতঃ ধতঃ।

७८७। श्लामित्।

অঙিতি পরে ৠকার ইর্ভবতি। কিরতি গিরতি তীর্ণঃ।

৩৭৭। ঙিতি চোপান্তঃ।

কীঠুঁয়তি কীৰ্ত্তাম্। স্থপূৰ্বন ঋণু কিপ্ স্বীন্ স্বীর্ণো স্বীর্ণঃ।

৩৭৮। ঋতশ্চ সনি।

চিকীর্ষতি তিতীর্ষতি।

৯। উর্পবর্গাৎ।

অঙিতি পরে পবর্গাত্বত্তরঞ্চকার উর্ভবত্তি। <mark>পৃ পিপূর্ক্ত</mark>

(৩৪৫)। দাধা ইত্যেতয়োশ্চতুর ঙিতি হলি পরে জ্বালুগ্ভবতি। নাংবাদেরিতামুরুভেঃ দাপ লবন ইত্যস্তাদাদেঃ দাত ইতি রূপম্। সাই-চর্য্যাদীয়তে ইত্যত্র ন ভবতি।

(৩৪৬)। অঙিতীতি কেবলমতামূবর্ততে। কিরতীতি কু বিক্রেপে তুদাদিলাচ্ছঃ। তীর্ণ ইতি তুপ্লবনতরণনোঃ ইর্ রাস্তাদেরিত্যাদিনা দীর্ঘঃ ক্রুক্তবেথারিত্যাদিনা তস্ত নঃ গত্বম্ তীর্ণ ইত্যাদাহতং চতুম্বিত্যসূত্রন্তিশক্ষানিরাসার্থম্। ঙিতি তু করণং গারয়তি গিরোমুদ্ধাং কিরো ধাজে ইত্যাদি নির্দেশসামর্থাৎ স্থপি ঙিতাপি ভবতি। কথং ট্রম্ উদ্দারণে ইতি ওনটো ডিবাৎ। উচাতে গণপাঠদামর্থ্যাদিত্যাচার্যাঃ অথবারং প্রমাদ্ধাঠিঃ। প্রকরণনিয়মাদ্ধাতোন ভবতি মাতৃণাং বছবুঃং ষ্টাবছবচনাস্কল্ত রূপ্র্। নাপ্রী প্রকৃতিদীর্ঘাদিতি কুম্নিষেধঃ।

(৩৪৭)। অঙিতি ডিভি চ পরে উপাস্তশ্নকার ইর্ডবতি। কীর্ত্তয়-তীতি কুৎ সংশব্দনে পিঙ খীর্ণ ইতি ঝুণু গতৌ পঞ্চমান্তস্তাহন ইতি কিপ্ দীর্ঘণ্ড উপদেশে গকারান্তোহয়ং অতঃ পদান্তখাপ্রভাবঃ রমূর্দ্ণ ইত্যাদিনা প্রতিষেধাৎ ন নকারপুক।

(৩৪৮)। সনি পরে ঋকারন্ত স্থানে ইর্ডবর্তি।

(০৪৯)। পিপুর্ত ইতি লটু তদ্ বিরুক্তিঃ ইবং ইবংচ। খাডো-

। পপুরতি পৃঃ। ধাতোবিভ্যধিকারাৎ সমীঃ সমীর্গ ইত্যত্ত ন স্থাৎ।

৩৫ । সনি ঋতশ্চ। মুমূৰ্ষতি পুপূৰ্ষতি।

৩৫১। দন্ত্যবকারাক। রঙ্বুবুর্বতে।

৩৫২। ন নামধাতোরিরুরো। অনুয়তি বহন্যতে।

রিত্যধিকারাদিতি এতেন ধাতুসম্বন্ধিনা পবর্গাছন্তরন্ত শ্লকারন্ত উবিধীয়তে ইতার্থো ভবতি। অতঃ সমীঃ সমীর্ণ ইত্যত্ত্ব ন স্তাৎ। সমীরিতি শ্ল গড়ৌ সংপূর্বা: ক্র্যাদি কিপ্ সমীগ্ল ইতি ক্রং নাত্র মকারো ধাতুসম্বন্ধী জুত্বান্ত-দিত্যাদিনা ইঙভাবঃ ইর্ দীর্ঘ: ক্রক্তবংগারিত্যাদিনা তক্ত নঃ পত্তং ব্রাভ্যামশাদির্বেতি দিল্লম্। ডিতি তু—নিপরণং নিপারকঃ।

- (৩৫০)। সনি পরে পবর্গাছত্তরক্ত ঋকারক্ত উর্জবিত। মুম্বলীতি
 মূঙ্ প্রাণত্যাগে সন্ ক্লতকার্য্যো নিদক্ত ইতি মূইত্যনেন বিক্ষিত্ত বিঙ্বুংশেষু মূঙ ইতি নিমিত্তাভাবারাস্থনেশ্বম্। পুপ্রতীতি পূর্বেশৈব উর্
 ধৃঙ্ বুঞ্ ক্লতশ্বেতি পক্ষেইঙ্ভাবঃ।
- (৩৫১)। দন্তাবকারাচ্চোত্তরক্ত সনি পরে কত উর্ত্ত। বৃঙ্ সংভক্তেন অন্ত দ্বোর কর্কার: বৃঞ্বরণে ইত্যক্ত পক্ষীর ওঠান্তর পূর্কে-নৈব উর্ত্তি।
- (৩৫২)। নামধাতোঃ পূর্বলক্ষণপ্রাথ্যে ইকরে ন ভবতঃ। অনুয়তীতি ন ৠঃ অনুঃ নঞ্সমাসঃ অচ্যন্ ইত্যন্ তুল্যাচার ইত্যাদিনা নর
 হলিজ্জ্যামিত্যাদিনা ঈকারলুক্। বহলুয়তে ইতি বহু ৠর্ষত্র স বহলুঃ
 ততঃ কর্ত্তরিত্যাদিনা আয় আর্ফারলুক্ যদি দীর্যঞ্কারাস্তাদয়ং তদা
 প্রক্পরভাতাবাদপ্রাথ্যঃ অথবা হ্রাৎ তথাপি দন্ত্যবকারাচ্চেত্যনেন সনি
 পরে বিধানাদপ্রাথ্যঃ তত্মাদয়ং প্রমাদপাঠঃ। অনুয়ত ইতি ডাইব্যম্।
 অপাম্ৠঃ অবুঃ প্রক্পর্মাৎ প্রাথিঃ।

৩৫০। হলুপাস্তাসুম্নোহদনি।

অসম্মন্তিতি হলি পরে হলন্তপ্রকৃত্যন্তসমীপে বর্ত্তমানো সুমোহন্তো নকারো লুগ্ভবতি। জন্শু শ্রম্মতে ধ্বন্ত্র ধ্বন্তঃ গ্রামধ্বৎ গ্রামধ্বসো গ্রামধ্বস:। হলুপান্ত ইতি কিম্ ? নীয়তে। অনুত্র ইতি কিম্ ? শক্ষ্যতে। অসনীতি কিম্ ? দন্শ্ দিদভক্তি।

৩৫৪। অগিচ। অভ্ৰশৎ অধ্যসং।

(৩৫০)। হল্বর্ণসোপান্তো হল্পান্তঃ যদা অন্তবর্ত্তী হল্ ভবতি তদিব পরনকারত হল্পান্ততা সম্ভবতীত্যত আহ হলন্তপ্রকৃত্যন্তসমীপে বর্তমান ইতি। ভশুতে ইতি অনুষ্থ ধনন্ত্র অনুষ্ঠ অবস্তঃসনে ধরম্ভ ইতি ক্রু ক্রুবেণারিত্যাদিনা ইওভাবঃ। গ্রামধ্বদিতি কিপ্ বস্থাদেও ইতি সম্যঃ তঃ কগং ক্রুঞ্জেং ক্রুঞ্জু ক্রুঞ্গে কর্ত্তমাহত্র যত্তঃ। শক্ষাত্ত ইতি শকি শক্ষায়াং ইদিখারুষ্ দিদঙ্ক্ষতীতি দনশ্ দংশনে শস্ত যঃ ব শচাস্ত্রপ্রে ক ইতি বস্তু কঃ বহম্। হলীত্যের। স্তংসা ধরংসা। ভিতি তু —প্রাক্থান্। গ্রন্থিয়ন্ত্রথিয়িত্বং হ্রদয়েশ ইতি মাঘে নলোপশ্চিপ্তাঃ। কুন্চ্ ক্রুন্চু কৌটিল্যাল্লীভাবয়োরিত্যক্ত সংকোচ ইতি শেষো বৃদ্ধ্যাদিতি বাচ্যম্ অথবা অনেকার্থা হি ধাতব ইতি কুচ্ শক্ষে ভারে চ ইত্যত্র সাধনীয়ম্।

আনে ককবিষ্টি চেতি বক্তব্যম্। আনে ককবিষ্টি চ পরে হলস্ত-প্রকৃতান্তসমীপে বর্তমানো মুমোহজ্যো নকারো লুগ্ভবতি। ববধান ইতি বদ্ধ বন্ধনে লিভ্রমানাবিতি আনঃ মথিতঃ মথিতবান্ শুধিতঃ শুনিতবান্ মুম্মন্তনে শুক্ত ক্রিতবান্ মন্থ মন্তনে শুক্ত ক্রেটিল্যালীভাবয়োঃ। নমু প্রথম্বং নলুকি ক্রতে পশ্চাদিভ্রক্তব্যঃ কিমনেন এবং সতি গ্রন্থি শুনিষ্বা ইত্যাদৌ চ লুক্ স্থাং। মুমন্ত বনিতঃ কথং তৃন্ত্র হিংসায়ামিত্যত্র শে কতে তৃহতীতি কর্তব্যাহত্র বন্ধঃ।

(৩৪৫)। অগি চ পরে হলগুপ্রফ্রতাভদমীপে বর্ত্তমানো হুমোইত্তা

७६६। श्रुदका वा।

আয়ুচৎ অয়ুঞ্বৎ।

৩৫৬। ইন্ধো নিটিচ।

०৫१। श्रन्दका वा।

সমীধে সম্বজে সম্বঞ্জে।

৩৫৯। সন্থপি দন্ভ্তৃন্হোঃ। ধিপ্সতি ডিড়ক্ষতি।

নকারো লুগ্ভবতি। **অত্রশং অধ্বসদিতি লুঙ্ হঙ**্ ছাতাদয়কেডি পুষাদিখাদগ্।

(৩৫৫)। গুন্চু গতৌ পঠাতে অগি পরে গুঞাে নকারো লুখা ভবতি। ইরিদগুচাদের্বেতি পক্ষেথগি ক্তেন লুক্ অগভাবপক্ষে অগ্লুফীনিতি অথিধাে গুচ্গুঞারুপাদানাৎ নলুগত্ত ন ভবতীতি পাণিনীয়াঃ
কেচিদ্যাচক্ষতে অতাথত্ত বিক্লবিধানস্।

(৩৫৬।৩৫৭)। আঙিতীত্যমূবর্ততে ঞি ইন্ধী দীপ্তাবিতাস্ত অঙিতি লিটি পরে নকারো লুগ্ভবতি। মন্ত্র পরিবঙ্গে ইতান্ত অঙিতি লিটি পরে নকারো লুগ্ভবতি বা। সমীধে ইতি লিট্ এ ইকারেণ দীর্ঘঃ। ডিতি ভূ—ইনাঞ্জে ইন্ধো বেতি পক্ষে ঙাম।

(৩৫৮)। প্রকৃতিবন্ধি গণিদি েতি যন্লুকি বিক্তি গুণাদিকার্যাং ব্যবস্থিতম্ অতো নল্পর্থং বচনম্। দন্শ দংশনে ইত্যন্ত নকারো যন্-লুকি সতি সর্বাত্ত বৃতি। সর্বাত্তি কৃতং ডিতাপি পরে লুগ্ভবতীতি স্পতিয়িতুম্। দংদ্যীতি লুপ্ সদ্ ৰূপ্জভেত্যাদিনা যন্ তল্লুকি কৃতে পক্ষে কৃত্ত শস্ত যং তম্ম টাঃ। দন্শ ইতি কিম্? সনী শ্রংসাং দনী ধ্বংসাঃ।

(৩৫৯)। দন্ত খড়ে ষ্টিন্হ দৃন্হ উন্হ হিংসার্থা ইভ্যেতয়োঃ সঁজাপি পরে নকারো বুগ্তবতি। অসনীতি প্রতিষেধাদপ্রাপ্তে বিধান নম্। ধিসভীতি দজেঃ সন্ বিককিঃ রভাদেরিরিত্যকারস্ত ইকারং ইয়া কৃত্যাত ইত্যাধিনী দকারত ধকারঃ ধর্মজাদিরিত্যাদিনা ভত ৩৬০। নাঞ্চেঃ পূজায়াম্। অঞ্চ্ছে অঙ্ক্ত্যা।

৩৬১। শ্বমোহলোপে। ভিন্তঃ।

७५२। यम् ऋत्माः कि_{न्}। युद्धा ऋद्या।

় ৩৬০। বাজান্তস্থা। ভক্তবা

প: দন্ভো বেতি ঈকারপকে ধীপাতীতি রূপম্। তিতৃক্ষতীতি হোঢ় ইত্যাদিনা হস্ত ঘ: বর্গস্তাদিরিত্যাদিনা বস্ত ক:।

- (৩৬০)। অঞে: প্রায়ামর্থি বর্তমানস্ত নলুক্ ন ভবতি। প্রায়া-মিতি বিশেষণাৎ অন্চু প্রায়ামিতাক্ত গ্রহণং নতু অন্চু গতিযাচনরো-রিতাক্ত। অঙ্ক্ত্রা ইতি উদিয়াৎ পক্ষে ইঙ্ তথাহি আসকারেণাপ্যদা-হতং গুকমঙ্ক্রা ইতি।
- (৩৬১)। অল্লোপে সতি ইমো নকারো ন লুগ্ভবতি। অয়মপি
 তথিব প্রাপ্তস্ত প্রতিষেধঃ। ভিন্ত ইতি ভিদির বিদারণে লট্ ওস্ কুম্
 রাস্ত্যোরদিত্যকারপুক্। নমু অল্লোপ ইতি কিমর্থম্? অল্লোপ এব হি
 ক্রেরে রমো নকারস্য লোপঃ প্রাপ্লোতি নাম্রপা তৎ ক্রিয়তে স্পষ্টার্থম্।
 রম ইতি ক্রতে পঞ্চমান্তলকাপি স্থাৎ হম উত্তরোহমুলো লুগ্ন ভবতি।
 এবঞ্চ সতি ভনক্তীতাত্র শ্লালো লুগিতি লুগ্ন স্থাৎ তক্ত তু হিনন্তীতাত্র
 স্থম এব বিষয়োহন্তি।
- (৩৬২)। স্থান্দ্ প্রবণে ক্ষনির গতিশোষণয়ো: জি, পরস্তাং নকার-লুগ্ন ভবতি। স্তব্তে রধাদাদিতো বেতি পক্ষে ইঙ্ভাব: ইঙ্পক্ষে হল্-পরছাভাবাদেবাপ্রাপ্তি:। স্বস্তেতি শকাদিছাদিঙ্ভাব: যচ্ আস্কল্য ইতি। (৩৬০)। জি, পরস্তাং জান্তস্ত নকারো বা লুগ্ভবতি। ছঙ্জেন্ত

তিভাগ । জি পরস্তাং জান্তক নকারো বা সুগ্ভবতি । ভঙ্জে তি ভন্জোঁ আমর্দনে শকাদিঘাদিভভাবঃ। ৩৬৪। বঞ্চিলুকোঃ ক্ট্রেডি বা।

७७৫। थकांखर्याम्ह।

বচিত্বা বঞ্চিত্রা লুফিত্রা গ্রাথিতা গ্রন্থিকা গুফিত্রা গুফিত্রা।

৩৬৬। রন্জো ঘিনণি। রাগী।

৩৬৭। ঘণি ভাবকরণয়োশ্চ। রাগঃ।

⁽৩৬৪।৩৬৫)। বন্চু গতৌ পঠ্যতে। অনেকার্থবাং বঞ্চেরত্র প্রলম্ভনমর্থঃ। বঞ্চু প্রলম্ভন ইত্যক্ত তু চুরাদিনিভক্তবাং গ্রহণমযুক্তং লুন্চ্ অপনয়নে রাজদন্তাদৌ ভৃষ্টলুচিতমিতি দর্শনাং অয়মকৃদিং তরোঃ জ্বাসম্বাদিনি ইঙি পরে নকারলুগাভবতি বা। থকারফকারাস্তরোশ্চ জ্বাসম্বাদিনি ইঙি পরে নকারলুগাভবতি। অপ্রাপ্তে বিভাবেয়ম্ বেতি তু ক্বতং স্পষ্টার্থন লুচিম্বেতি লুপ্তভালুপ্তবন্ধান্গুণাভাবং গ্রাধিবেতি গ্রন্থ সংদর্ভে শুন্দির্বেতি গুরু ক্রেছে। যক্তপি গুরু ধাতোরদন্তাব্যাদিনা ব্যচাদিকাদিটি বিকরিতে শুন্দিরা শুন্দ্ধাতোম্ভ শুন্দিরা ইতি সিদ্ধান্তাব তথাপি ফান্তগ্রহণং সন্ক্ধাতোঃ সফিলা সন্দিরা ইতি সিদ্ধার্থন্। স্কিধান্তাম্ভ নিতাং সন্দিরেতি ভবতি এভাব্যক্তর শ্রংসিলা ধ্রংসিলা।

⁽৩৬৬)। বেতি নাস্বর্ততে রন্জ্ রাগে ইত্যস্থ ঘিনণি পরে নকারো লুগ্ভবতি। রাগীতি যুজাদের্ঘিনণিতি ঘিনণ্ অন্তত্ত্ব রঞ্জনম্। কথং রঞ্জনী হাদেরন ইত্যানঃ বহলবচনার লোপঃ এবং রক্ষ ইতি অস্নলোপন্চ।

⁽৩৬৭)। ভাবে করণে চ বিহিতে ঘণি পরে রন্জো নকারো লুগ্-ভবতি। রাগ ইতি পুংসি ঘণ্ কারকে চেতি ঘণ্ রঞ্জনং রাগঃ রজ্যতৈহনে-নেতি বা। ভাবকরণাভ্যামন্তবা। রক্ষয়ামিরিতি রক্ষঃ।

ত্র্ড৮। ইন্ধ্যাদেও দিন। এধঃ উন্দী অবোদং ওদ্মঃ প্রত্রেথঃ হিমগ্রাথঃ। ৩৬৯। স্থান্দেত্রেবিধা।

श्रपः ।

৩৭০। ইনি ভঞ্চোবা। মৃভঞ্জি অভাজি।

ত্ব । দিবাদের্ঘদ্ধ ।

চতুর্ লড়াদির পরের দিবাদেরতেরে বস্তবতি । দীব্যতি সীব্যতি ।

৩৭২ । বা ভ্রাশ্ভ্রাশ্ভরমুক্রমুক্রসিক্রটিলমঃ ।

⁽৩৬৮)। ইক্যানের্ডানৌ পরে নকারো পুগ্ ভবতি। এধ ইতি ঞি ইক্নী দীপ্রৌ ওপ্রত্যমে পরে নকারলোপবিধানসামর্থ্যদত্ত ওঃ অথবা দৃঙাদি-ঘাৎ ওঃ ন লোপে ক্বতে গুণঃ। উন্দী ক্লেনে অবপূর্কঃ অবোদ ইতি পূর্কবং অথবা ঘণস্তঃ অনিণেধেত্যাদিনা অকারলোপঃ অস্মাদেব প্রাদেশ্যনিঙিতি মনঙ্ ওম ইতি ক্লীবং প্রশ্রথং হিমপ্রথ ইতি প্রন্থ মোচনপ্রতিহর্ষণয়োরি-ত্যস্ত প্রপূর্কস্ত হিমপূর্কস্ত চ ঙো ক্লপম্।

⁽৩৬১)। শুনের্বেগে ব্যাচ্যে ঙে পরে নকারে। পূণ্ভবৃতি। শুদ ইতি ঙ:। বেগ ইতি কিম্ ? তৈলসান্দ:।

⁽৩৭০)। ইণি পরে ভন্জে। নকারো নুগ্ বা তবতি। অভঞ্জীতি কর্মণি সূত্ত সত্সচ্সিজ্ভাঞ্জাবাদাবিতি তসঙোঃ স্থানে ইণ্।

⁽৩৭১)। যতন্তকারো জাদির্যজ্জনাদেরিতি চিহ্নার্থ: অন্তথা জন্তত-ইত্যক্ত বক্ষমনিনি যকারে চ পরে জাদেশঃ আং। দীবাতি সীবাতীজি দিবু ক্রীড়াদৌ পঠাতে বিবু তন্তসন্তানে। দন্তাবান্ত ইতি রাজাদিবাং রাজা-দেরিত্যাদিনা দীর্ঘঃ।

⁽৩৭২।৩৭৩)। চতুর্লজাদৌ পরে আশাদের্যথা ভবতি। উপসর্গনরিজাদ্বসং সংপূর্বাচ্চ। ত্রমু অনবস্থানে ত্রমু চলনে অবিশেষাদ্ধরো-রিপ গ্রহণন্। কর্তব্যবনবস্থিতো নিশ্চলোহপি আমাতীভূচ্যতে কার্যের

र्भेशिक्शमार्त्र गांक वर्दने

৩৭৩। ষদোহতুপদর্গাৎ সংপূর্ববাঞ্চ।

জ্ঞাশ্যতে ভ্রাশ্যতে ভ্রাদিরাৎ জ্ঞাশতে ভ্রাশতে ভ্রাম্যতি ভ্রোমিকিক্স স্থানে স্থান্যতি পক্ষে ভ্রমতি ক্রাম্যতি ক্রাম্যতি পক্ষে গ্যাদিরাৎ ক্লামতি ক্রমতি ক্রমতি ক্রটতি ক্রথমভিল্যবঁতি জনঃ অভিলয়তে। যাস্থান্তি যাসতি সংযাসতি সংক্ষাতি।

ষ্টিরোহপি চলন্ ল্মাতীভাচাতে ধাতোবর্ডেলাৎ প্রয়োগভেদ: ল্মেরন-বস্থানার্থস্থ ক্লমু মানৌ অঁসী উবেগে ইত্যেতয়োমশ্চ দৈবাদিকত্বাৎ যতি প্রাপ্তে বিকলার্থমুপাদানং ট্রাব্ ট্ড্রাব্ দীপ্তো ভ্রমু চলনে ক্রমু পাদ-বিক্ষেপে লষ্ কান্তো এভাো ভাদিভা: ক্রট্ ছেদনে ইত্যস্ত ভুদাদেশ্চাপ্রাপ্তৌ বিভাষা বস্থ প্রযন্ত্রে ইত্যক্তাপি দৈবাদিকত্বাৎ প্রাপ্তে বিভাষা যে গণাস্তবী-মান্তেষাং পক্ষে উৎদর্গদিদ্ধ বিকবণং প্রাপ্তমেব দিবাদেন্ত যতা তাক্তপক্ষে শঙ্ন প্রাপ্নোতীউতি স্বীহ ণ্যাদিজাদিতি স্বাদিগ্রহণেম অসাদীমাং গ্রহণাৎ পক্ষান্তরে শঙ্ভবতীতি শমাদেদিবাদ্যন্তর্গণত্বাৎ শমাদিকার্যার্থং ভ্রমুক্রমো-র্ববশ্রমেব দিবাদে। পাঠঃ করণীয়ঃ অসিস্ক ভাদেবেব কমান্ন পঠিতঃ। নারমাচার্যো ধাতুগণপাঠমন্তথাচকার পূর্ব্বপাঠেনৈবাভ यरश्चनः यत्माः भेड् कथः न्यानिचात्मव दृख्वी चमा পाঠো वहवू পूछत्कयू লিপিকরপ্রমাদাৎ পতিত:। প্রাশানীনপহার্য অভিপূর্বেরা ল্যিবত্রোদা-হৃত: শুর্দ্ধঞান্তো লবিরত্র গৃহীত ইতি প্রচনার্থম্। যতো অভিপূর্ক ভ লযে-মুর্দ্ধ প্রান্তন্তে। ক্লামাতীতি দীর্ঘ: প্রবুক্নমাচমামিতি দীর্ঘ: ভৌবাদিকভোত্যাদি তসা শমাদিঘাভাবার দীর্ঘ ইত্যভিপ্রায়:। সম্জ বিদর্গে ইন্ডি দিবাদিরাত্মনেপদী পঠাতে প্রদ্ধোপপন্নে কর্তুরি তস্য প্রারোগো ভবতি নতু স্তর্ বিদর্গে ইতাসা তুদাদে: পরস্মৈপদিনোহনতি-গানাৎ তেন স্বজাতে মালাং ধার্মিক ইত্যেব ভবতি নতু স্বজতি মালাং ধার্ম্মিক ইতি ক্ষাতি গালাং মালিক ইতি তু ভবত্যেব এতত ত্রিমুনিমতা-ভাষাদাচার্য্যেণোপেক্ষিতমপ্যস্থাস্কীকৃতদাদিবরমাত্রপরিজ্ঞানার লিথিতং নতু ख्यां गटश्यां भञ्च स् ।

७१८। जानिर्यञ्ज्यादिः।

রৎসম্বহ্মিক্সাদেঃ স্থানে জাদির্ভবৃতি। জায়তে।

७१८। मिरमा छनः।

মেদ্যতি।

७१७। भगारमर्नीर्घः।

भामाछि। भगु छम् मम् अम् अम् अम् कम् कम् मही।

৩৭৭ ওল্লুগোদন্তানাম্।

দো দ্যতি সো শুতি ছো ছ্যতি।

৩৭৮। স্বাদেমু ९।

চতৃষু স্বাদেকভবে মুম্ভবতি। স্থনোতি।

⁽৩৭৪)। স্বায়ত ইতি জ্নী প্রাছর্জাবে। যদিতি কিম্ । জন্ততে ভাবে যক্।

⁽৩৭৫)। ষৎসম্বন্ধিনো মিদো গুণো ভবতি। ইক এঙবলোগুণ ইতি ব্যবস্থা ইকাবস্য স্থানে একারঃ। মদিতি কিম্মিদ্যতে যকু।

⁽৩৭৬)। যৎসম্বিশ্মাদের্দীর্ঘো ভবতি। আকারাদরোহয়ে

নীর্ঘা ইতি প্রথমপাদে উক্তং তে ভবস্তঃ সবর্ধ সৈ্যব স্থানে ভবস্তীতি

যুক্তম্। অতোহকারশু স্থানে আকারো ভবতি। শমু উপশমে তমু

কাল্লায়াং দমু উপশমে শ্রমু তপসি থেদে চ ত্রমু অনবস্থানে ক্ষমুষ সহনে

ক্রমু প্রানৌ মদী হর্ষে দিবাদাস্তর্গনা অস্তৌ শমাদয়ঃ। যদিতি কিম্? ত্রমতি

ণ্যাদিরার্ছেত্র।

⁽৩৭৭)। ওকারাস্তানাং ধাতূনাং যৎসম্বন্ধিনামোকারো নুগ্ভবতি। গুতীতি দোহবর্থগুনেএচোহশিতীত্যনেনাশিতি বিষয়ে আবং প্রথমমেব বিধীয়তে প'চাৎ স্থানাদেশাঃ স্থানিবৎ কাশীতি আকারত্যৈব নুক্ বতোহস্য বিষয়াস্তরমেব নাস্থি।

⁽৩৫৮)। সুভস্তকারোষ্যুগুছ্দ্ধা হেবিভি চিহ্নার্থঃ ক্ষম্ভবা তত্ত্ব নু স্বভাবিতাস্য গ্রহণশঙ্কা স্যাৎ। স্বনোতীতি বৃঞ্জভিষবে।

৩৭৯। অক্ষোবা। অক্ষোতি অক্ষতি।

৩৮০। তন্করণে তক্ষঃ।
তক্ষেতি তক্ষতি কাষ্ঠম্। অহাত্র—সংতক্ষতি বাগ্ভিঃ সন্তাপয়তীত্যর্থঃ।

৩৮১। ধিঃ কৃশ্চ ধিবিকৃব্যোঃ। ধিনোতি কুণোতি।

৩৮২। শ্রুচবঃ শৃশ্চ। শৃণোতি।

৩৮৩। দীর্ঘো বাচমঃ। আচাম্লোভি আচম্লোভি।

⁽৩৭০। ৩৮০)। অক বাাপ্তাবস্য চতুর্ কুদ্বা ভবতি তক্ষ্ ক্ষ্
তন্করণে ইতাস্য তন্করণ ইতার্থে বর্তমানস্য চতুর্ কুদা ভবতি। ভৌবাদিকাবিমৌ অতাহপ্রাপ্তে বিভাষা পক্ষে শঙেব ভবতি। যন্তপি ধাতৃস্তন্করণ এব পঠাতে তথাপি তন্করণ ইতি কৃতং ধাতৃনামনেকার্থঅস্চনার্থম্।
অতএব সংতক্ষতি বাগ্ভিঃ সন্তাপয়তীতি প্রত্যাদাহত্য।

⁽৩৮১) বেতি নির্ত্তম্। ইবি দিবি ধিবি জিবি প্রীণনে ক্ববি গতি-করনব্যাঃ এতাভ্যামূত্তরে চতুর্মু স্কুবতি। এতয়োঃ স্থানে ধিঃ ক্ষশ্চাদেশঃ ইদিছাৎ প্রথমং মুম্ পশ্চাদাদেশঃ অনয়োর্ভাদি হাচ্ছঙি প্রাপ্যে বিধানঃ ধিবি-ক্রব্যোরিত্যানেশবিধানে ষষ্ঠী স্কুদ্বিধানে তু বিভক্তিবিপরিণামাৎ পঞ্চমী সম্প্রতে একম্তরত্ত ষোগেছপি।

⁽৩৮২)। এক প্রবংশ ইত্যন্মাত্তরে সুত্তবতি। ক্রবং স্থানে শৃক্ত। ভাদিয়াছঙি প্রাথে সুধিধানম্।

⁽৩৮৩)। চনু ভক্ষণে ইত্যন্তাঙ্ পূর্বাসা চতুর্ দীর্ঘো বা ভবতি। বাদিবাদস্য স্থংপ্রাপ্ত এব দীর্ঘার্থং বচনস্। ভাদেস্ক চম্ধাতোদীর্ঘঃ বিক্লমাচনামিতি নিত্যো দীর্ঘঃ। বাদেস্ক চম্ধাতোদীর্ঘয়ং কালাপা নে-

ত৮৪। বময়োরযুগ তুলুখা।
বময়ো: পরয়োরযুগ তুকারো লুখা ভবতি। স্থাবঃ স্থা: স্থান্থ স্থাঃ। অযুগ দিতি কিম্ ? প্রাপুবঃ প্রাপ্ত মার্থ। অদন্তবম-যোগ্রহণাৎ স্থানামীত্যতান স্থাৎ।

্চতুর্ তুদাদেরুত্তরে শো ভবতি। তুদতি।

° ৩৮৬। শে সুম্মুচাদেঃ। শে পরে মুচাদেরুত্তরে সুস্তবতি। মুঞ্তি। মুচু লুপু বিদ্ লিপ্ যিচ কৃতী স্বিদ্ পিশ্।

৩৮৭। রিদৃতো যে চ। শে যে চ পরে ঋতঃ স্থানে রিম্ভবৃতি। মিয়তে ক্রিয়তে ক্রিয়াৎ।

ছেন্তি যতন্তেষাং ষ্টিবুক্লনাচমামনীতি স্ক্রং বামনধর্মদাদবিনীতকীর্ভিভিঃ ষ্টিবুক্লমাচমাংশিতীত্যত্রাচামতীক্যুদাহাতং নতু তেষাং নতে আচামো-তীতি। অত্র চাবিশেষাং ভালেঃ স্বাদেশ্চ চমেগ্রহণং যুজ্যতে এতা-বতোভয়পক্ষদর্শনাং বিকল্পবিধানমত্র স্ক্রকারেণোপগ্রস্তম্।

- (৩৮৪)। স্থল্মঃ স্থাম ইত্যত্ত উকারলুগ ভবতি সাদিমতো-বিধানদা প্রক্রাস্তক্ষাৎ। অদস্তরময়োগ্রহণাদিতি। যদি বকারমকারয়োঃ কেবলয়োগ্রহণমপেক্ষিতং স্যাৎ তদা বমোরিত্যেবং স্তাং কুর্যাৎ।
- (৩৮৫)। শকার: শিভি তিষ্ঠাদিঃ স্থাদেরিতি চিহ্নার্থ: তেন তুদা-দিপঠিতয়ো: শদ্সদো: শীষ্সীদৌ ভবত:।
- (২৮৬)। মুচু মোক্ষণে লুণু ছেদনে বিদু লাভে লিপ্ উপদেহে
 বিচির্ ক্ষরণে ক্ষতী ছেদনে বিদ্ পরিঘাতে পিশ্ অবয়বে ইত্যেতে ছষ্ট
 মুচাদরঃ। শ ইতি কিন্ ? মুচাতে। শশ ভূফাদীনাং বিকল্পেন সুন্ধিধানমত্তৈক্ত তিহিন ক্তম্। ভূফ্ ভূন্ফাদির্ ভূফতি ভূক্ফতীত্যাদিসিক্ষেঃ।
- (৩৮৭)। দ্রিয়ত ইতি মৃঙ্ প্রাণত্যাগে একদেশবিক্কতমন্ন্যবন্ধব-তীতি কভোরিকেংপি ধাতৃতমেবেতি হন্ধাতৃরিত্যাদিনা ইয়্। ক্রিয়ত-

৩৮৮। তদ্ধিত্যে চ।

পিত্র্যম্।

७৮৯। न विधानिनि इत्य।

বিভয়াৎ।

७२०। न (य यन्ति। एक यम्

৩৯১। রুধাদেঃ শ্বম্।

চতুর্ রুধাদেরুত্তরে শ্বম্ ভবতি। রুণ্দ্ধি উত্দির্ তৃণত্তি উছ্দির্
ছণত্তি।

ইতি ডু কুঞ্করণে কর্মণি যক্ ক্রতোহিভিত্যুরিতি উর্ অনেন বাধাতে।
ক্রিয়া ইতাত্রাপি ক্রুজ্থেতি ক্যে ক্রতে রিং। শপ্রভারস্থ গুণবৃদ্ধিনিমিত্তরহিত এব রিকারনিমিত্তরহিত্য সাহচর্মাং যকারেহপি গুণবৃদ্ধিনিমিত্তরহিত এব রিকারবিধানং তেন বর্মা বৃদ্ধোহরোধে ই জি যঙ্ লাগ্র্মা ইত্যাদৌ গুণ এব
ভবতি কার্য্মিত্যাদৌ বৃদ্ধিরেব। অথবা অপেক্ষিত্রবিধিপরিভারাদ্দিকরণীয়েতি।

⁽৩৮৮)। তদ্ধিত্যে পরে শ্বতঃ স্থানে নিশ্ববৃতি। ধাষ্বধিকারার প্রাপ্রোতীতি বিধানন্। পিত্রানিতি ব**্রভূপিক্র**য়সো যদিতি যৎ অদিল্পুতিতীকারলুক্।

⁽৩৮৯)। বিধ্যাদাবর্থে বিহিত্স্য লিঙো ষে পরে ঋতঃ স্থানে বিকারো ন ভবতি। বিভ্যাদিতি ভ্ঞো হ্বাদিষাদ্দিকজিঃ ঋপৃহাঙা-মাঙ্ভ্ঞামদ্দীদিতাকারশু দকারঃ হস্ক। বিধ্যাদীতি কিম্ ? আশী-লিঙি প্রতিবেধাে মাভূৎ—ক্রিয়াৎ।

⁽৩৯৭)। যন্লোপে সতি যে পরে ঋকারস্ত স্থানে রিকারো ন ভবতি। চকু রমিতি কুঞো যন্তুকি দ্বিক্ত্যাদি শ্বছ্লোণ্য ইতি প্রঃ রন্লোপে গিন্ডামঙীদিত্যনেন অভিঘাদ্গুণাভাবঃ বৃদ্ধির্কেতি পক্ষে বুদ্ধাভাবঃ।

⁽৩৯১)। শকারঃ শাহস্তাবিদিতাত্র সন্দেহনিরাসার্থঃ জনাধা

ঠাই। শ্লামো লুক্। শ্লাম উত্তরো নকারো লুগ্ভবতি। হিসি হিনস্তি ভন্জো ভনক্তি।

৩৯০। সবর্গাৎ সবর্গে বা। সবর্গে পরে সবর্গাহতরত্ম সবর্গতা লুখা ভবতি। ছিন্তঃ ছিন্তঃ শিণ্ডি শিণ্ড্টি। অসবর্গে তু জন্মা।

• ৩৯৪। ন ঞে। প্রিয়পঞ্জঃ।

নান্ড্যারদিতি ক্বতে এগানের্নাদিত্যাদিনা বিহিত্ত নাদিত্যভাকারশ্ত লুগ্ভবতীতি সন্দেহঃ স্থাৎ তর্হি নমস্ত্যোরদিতি করণীয়ম্ এবঞ্চ সন্তি সন্দেহ এব নমধাতোরস্তেশ্চাকার্রা লুগ্ভবতীতি। তৃণজীতি উভ্দির্ হিংসানাদর্যোঃ উছ্দির্ দীপ্তিদেবনরোঃ।

(৩৯২)। হিনস্তীতি ভূহ হিদি হিংসায়াং ইদিমানু মুম্নকারম্বাং ভিমান্ত হলুপান্তেত্যাদিনা নাত্র প্রাপ্তিঃ। ভনক্রীতি ভন্জো আমর্দনে।

(৩৯৩)। এরো যত্রৈকবর্গীয়া মধ্যমস্তত্র লুপাতে ইত্যর্থঃ
সম্পদাতে। ছিন্ত ইতি ছিদির্ দ্বৈধীকরণে লট্ তদ্ শ্বন্ শ্বাস্ত্যোরদিত্যকারলুক্ তত্তো দকারলুক্ পক্ষে বর্গস্থাদিরিত্যাদিনা দদ্য
ত:। শিণ্টীতি শিবু বিষরণে লোট্ হি শ্বন্ অকারলুক্ হরঙ্যাদ্ধিরিতি
হের্ধি: যটবর্গাদিত্যাদিনা ধস্ত তঃ বস্ত ট: উপাস্তস্ত বর্গ ইতি নম্ভ ণঃ।
জম্বেতিজন্ম্শকাৎ টা যবরলোচীতি বকারঃ অয়ং যবরলীয়গার সবর্গীয়ঃ।

(৩৯৪)। ঞে সবর্গে পরে সবর্গাছন্তরক্ত সবর্গক্ত লোপো ন ভবতি। প্রিরপঞ্চক ইতি প্রিরা: পঞ্চ যেযাং তান্ প্রিরপঞ্চক্তঃ দ্বিতীয়াবছবচনং শস্ শসাদ্যচাতোহর্ষম ইত্যানেন অকারনুক্ চবর্গাক্ত্রুঞ্চ ইতি নকারক্ত ঞকার: এতদেব ঞ্চে পরে প্রতিষেধবিধানং জ্ঞাপকং ধাতোরধাতোশ্চ সামাক্তেনৈতদিধানং ন হি ধাতোক্তে পরে পুরু সন্তব-তীতি। তেন আস্যে ভবমক্তেমিতাক্র প্রাণ্যক্ষাদিতি যতি ক্তে হলো যে ভয়তেতি পক্ষে যনুক। ৩৯৫। সাচ্চ তঃ।

সংস্তি সংস্তিঃ।

৩৯৬। গাচ্চ ধঃ।

জগ্ধঃ জগ্ধ:।

৩৯৭। অনুস্থারাৎ সদ্য দে। নিংদে নিংস্দে।

৩৯৮। হলো যে ওয়স্ত।

অভ্যতে অভ্যতে ঈর্ব্যতে সর্ব্যাতে হস্মতে হস্মতে ফুল্যতে ফুল্যতে ইক্সতে ইক্সতে পাপচ্যতে পাপ-চ্যাতে

⁽৩৯৫)। সকারাত্ত্রদ্য ভকারক্ত সকর্পে গরে বা নুগ্ভবতি। সংস্থীতি যন্তি সংশরকান্তিকরণয়োগ্ন যদ্ যন্তি অপে ইতি পাণিনীয়াঃ পঠন্তি। ইনিহানুম্তিঙ্ অপদান্তক্তেত্যাদিনা অন্ধুস্বারঃ।

⁽৩৯৬)। গকারাত্তরক্ত ধকারক্ত সংর্থে গকে বা লুগ্তবতি। জগ্ধ-ইতি অদ্ ভক্ষণে ক্তঃ। যি চাদো জিম্বিনোদন ইতি জ্ঞানিদেশঃ গোহধাতুর্যাদিতি তস্য ধঃ।

⁽৩৯৭)। অনুসারাহন্তরক্ত সকারক্ত সকারে পরে পুথা ভবতি। নিংসে ইভি নিসি চুম্বনে আত্মনেপদী কট্ সে।

⁽৩৯৮)। হল উত্তরক্ত ওয়ক্ত যে পরে বা লুগ্ডৰতি। অভ্যত-ইতি অলু বল্ মল্ চর্ গতার্থাঃ ইবাত ইতি ক্ষা ইকা ইবার্থাঃ ভাবে তে যক্। হমাতে ইতি হম্ হম্য মী মুগতৌ। ফুলাতে ইতি ফুল্ল বিকসনে ইক্ত ইতি ইবি দিবি দিবি জিবি প্রীণনার্থাঃ ইদিবার মুম্ যবরলীয়োহয়ং বকারঃ। পাপচাত। ইতি পচ্ধাতোর্যন্ দিফ্জি: দীর্ঘো-হনাগমাত ইতি দীর্ঘ: ততঃ কর্মণি তে মক্। হলো হলঃ সমর্যে বৈতি কতে সাল্ভ ত ইতি গাল্ড ধ ইতি হলো যে ওবক্ষেতি চ শক্ষাক্ষর্ছ্ণ তদেত্তিকতান।

৩৯৯। উঙ্ তনাদেঃ।
চতুর্ তীনাদের তরে উঙ্ ভবতি। তনোতি তমুতে দ্বপু ঘর্ণোতি
মপুতি। তৃপু তর্ণোতি তপুতি।

৪০০। কুঞোহঙিত্যুৎ। কুরুতে।

৪০১। ক্ষিণো ডিভিচ। ক্ষিণোভি ক্ষিণুতে।

৪০২। ঋণোর্কা। কণোতি অর্ণোতি।

৪০০। বময়োকী। তমুবঃ তমঃ তমুমঃ তমঃ ক্ষিণুব: ক্ষিণুঃ।

⁽৩৯৯)। মর্ণোতীতি মৃণু দীপ্তৌ গুণঃ তর্ণোতীতি ভূণু অদনে।

⁽৪০০)। জুক্ ঞ করণ ইত্যশাং চতুর ভিতি পরে উদ্ভবতি। উঙ্-বাধকমুদ্ধিনা গুণপ্রতিষেধার্থান্। কুরুত ইতি ক্রঞ ইত্যাদিনা উব। অভিতীতি কিন্? করোতি।

⁽৪০১)। ক্ষিণু হিংসায়ামিতাস্থাৎ চতুর্ম ডিতি ডিতি চ পরে উদ্বর্তি।

^{• (}৪০২)। ঋণু গভাবিত্যক্ষাৎ চতুর্ম ডিডি ডিডি চ পরে উহু! ভবতি ।

অনেন ত্যক্তে পক্ষে উদ্ভেব। অর্ণোজীতি ঝণোজীতি ঋষেভ্যু ইত্যাদিনা

গণ্ধ আপ্তান্থেবং ব্যাচক্ষতে। ঝণিতি ক্ষতির্যক্রান্তি ভ্যাপি গ্রহণং ভেন

গ্রণ্ত্থোরপি বিকল্প: তথাচাপি শল্যাদিকেয়ু বিকরণে পরে ক্লঞ এব গুণ
মিচ্ছন্তি, তথাচা মুরারিঃ, আর্দ্রশ্রেত্রিরমক্ষনযক্তবেদিনেদিইমেব হরিণী

তৃণুতে তৃণঞ্চ। গোকুর্গতর্গকোহয়ং তর্ণোত্যুপকঠকচ্ছেরু।

⁽৪০৩)। বময়ো: পরয়োজনাদের স্তরে উঙ্তৌ বা ভবতঃ। তর্বঃ তবঃ ইত্যতে উঙ্ বিক্রিতঃ ক্ষিণুবঃ ক্ষিণঃ ইত্যতে তু উৎ ঝণোতে উ উভয়োরেব বিক্রেন রূপত্রস্থাপুবিঃ ঝণুবঃ ধ্বঃ। ব্যয়ের কার্বত্যোল প্রহিণাৎ তনোমীতাক ন বিক্রঃ।

৪০৪। ন কুঞো যে চ। কুৰ্বঃ কুৰ্মঃ কুৰ্য্যাৎ।

৪০৫। কুঞোহঙিত্যুর্।

চতুর্ম ডিতি পরে কৃঞ ঋত: স্থানে উর্ভবতি। কুরুতে।

८०७। क्यारनर्नाट श्वामिङ्क **सम्छ।**

চতুর্ ক্র্যাদেরুত্তরে নান্তবতি। তৎসন্ধিযোগাৎ প্রাদির্পিক। ক্রীণাতি পুনাতি খচ্ খচ্ঞাতি পক্ষে দন্ত্যবান্তবাৎ খুনাতি। ল্লীপর্যান্তং প্রাদিঃ। পক্ষে খোনাতি ক্ষিষ্ ক্ষিণাতি।

৪০৭। জো**জাশ্চ।** জানাতি।

⁽৪০৪)। ক্রঞো বমরোঃ পররোবেঁচ পরে উন্ন ভবতি। কুর্ব ইত্যাদৌ ডুকুঞ্ইতি ছুরাদিখাদ্রাস্তাদেরিত্যাদিনা ন দীর্ঘঃ।

^{(8}०१)। स्रशमम्।

⁽৪০৬)। পূঞ পবনে ল্ঞ্ ছেদনে স্ত্ৰু আচ্ছাদনে ক্ঞ্
হিংসায়াং ধ্ঞ্ কম্পনে পৃ পালনপ্রণয়োঃ বীবৃঞ্ যাচনবরণয়োঃ শৃ স্তু,
হিংসায়াং বৃ বরণে ভূ ভং সনে মৃ হিংসায়াং দৃ বিদারণে জ্ব বয়োহানো
নৃ নয়ে ৠ গতৌ গৃ শবে ভূ হিংসায়াং জাা বয়োহানো রী বরণে গতে।
চ রী গতিবেষণয়োঃ লীলী শ্লেমণে দ্বী গতৌ ত্রী ভয়ে থচ্ ভৃতিপ্রাছ্রভাবে
এতে পাদয়ঃ। খচ্ঞাভীতি চবর্গাঞ্ঞ ইতি নক্ত ঞঃ পক্ষে ইত্যাদি
কেচিদ্দস্তাবাস্তমেনং পঠন্তি। তন্মতে অতো বৃদ্ধিশেচতি বকারস্ত উকারে
ব্দ্ধো চ ক্লতায়াং হস্তঃ। লী ইত্যাদি কেচিং লীপর্যান্তঃ পৃাদিগণং পঠন্তি
ভদা ব্লাভাবাং ব্রীণাতি ক্ষোণাতি ত্রীণাতি ক্ষিষতি ক্ষিষ্ হিংসায়াং
বিদ্বিদাদেরাদিতি চিহ্নার্থঃ ধকারেছেন্ত ন দৃপ্যত ইতি ভ্রান্তানাং প্রমাদনিরাক্রণার্থনেত্র্দাস্বতম্।

⁽৪০৭)। জ্ঞা অববোধনে ইতাত্মাৎ নাম্ভবতি। তৎসন্ধিযোগে জ্ঞান্চ। যদি নাদিত্যস্ভামুবৃত্তার্থং চকারো ন স্থাৎ তদা সর্ক্ষত্তিক

- ৪০৮। স্তন্ভু স্তন্ভু কন্ভু ক্ন্ডু ক্তো কুচ। স্তভাতি সভাতি কৰুতি কুজোতি।
- ৪০৯। চুরাদেণিঙ্। চুরাদেরুত্তরে ণিঙ্ভবতি। জবিশেষাৎ সার্থে। চোরয়তি। যাবন্ধিন্ডিয়ার্থোহয়ং ণিঙ্ঙ্কারঃ। বোধকঃ।
- 8>০। যুজাদেঃ শঙ্বা

 যৌজয়তি যোজতি। যুজ্ পূচ্ অর্চ্ বহ্ ঈর্ লী বুঞ্
 জাদেশঃ প্রসজেৎ। অথবা চতুর্বিতামবর্তনীয়ঃ তদা ভাবেংপি জায়তে
 ইত্যত্র জাদেশঃ প্রসজেৎ। যে গ্রন্সমাপ্ত্যক্ত প্রাদিস্মিছ্নিড তন্মতেংপ্যস্থ ব্যবহং ন প্রাপ্রোতি জাবিধানসামর্থাৎ অন্তথা জকার্মেব বিদ্ধাৎ।
- (৪০৮)। স্তন্তু স্থন্তু স্থন্তু প্রতিবন্ধে এতে চম্বারঃ
 সৌত্রধাতবাে নকারােপাস্তাঃ কুঞ্ প্রাবরণে ইতি ক্রােদিন্চতুরু এভা
 উত্তরে নান্তবিতি কুচ্চ। স্তভাতি স্তভাতীতি হলুপাস্তেতাাদিনা নকারলুক্। সৌত্রাণামপ্যমীষাম্ উদিৎকরণসামর্থাৎ সর্ববিষয়তা জ্ঞাতব্যা। যদি নার দ্বিষয়তামাত্রমমীষাং স্থান্তদা জ্বাপ্রত্যমে পরে ইঙ্-বিকয়ার্থমুদিৎকরণমনর্থকং স্যাৎ।
- (৪০৯)। অবিশেষাৎ স্বার্থ ইতি যন্ত্রিন্ প্রতায়ে অর্থবিশেষাে নােদিন্ট: দ স্বার্থ এব ভবতি। স্বার্থ: স্বস্ত প্রক্রতেরর্থ: চ্রাদি স্ক্রোদিঃ চত্রিতি গ্রালান্তর্বেরপেক্ষণীয়ান্তরাভাষাৎ প্রথমমেব ণিঙ্ ততা গ্যাদিভাদ্ধাত্রসংজ্ঞায়াং প্রতায়ান্তরাৎপত্তিঃ বেদিতবাা এতাবতা মগাদিভিরস্ত
 বাধা নাশক্ষনীয়া। যাবিধন্ডিস্বার্থ ইত্যাদি যাবস্তা ণিতস্তে প্রতাভাদ্দিরীতি স্ক্রার্থং ণিঙ্ওকারাে জন্তবাঃ। ণিঙাে ওকারাহন্তরাহপরােভবন্তীতি স্ক্রার্থং ণিঙ্ওকারাে জন্তবাঃ। ণিঙাে ওকারাহন্তরাহপরােভকারঃ তদ্ধেণােপাতাে দ্রন্তবা ইত্যর্থঃ। স চ লুগ্রুজানেন ক্রার্থঃ কেচিরিঙ এব ওকারস্তৈতৎ প্রেরাজনং বর্ণয়ন্তি। তদ্যুক্তর্ব।
 উদ্ভং হি জ্ঞাপকং ভবতি ণিঙেণ ওকারস্ত চােরয়তীত্যাদৌ গুণ এব
 প্রয়োজনং বিস্ততে। অক্তেও ওকারে গুণ এব ন স্তাৎ। ণিতাে ভিৎপ্রয়োজনং দর্শয়তি বােধক ইতি গকে ক্তেত ণিতাে ভিরাদ্পাঃ।
 - (৪১০)। ণিঙিতারুবর্ত্ততে তেন সহ বেতাক্ত সম্বন্ধ:। युकारन-

ধ্ঞা প্রীঞ জি জ কিচ্ শিষ্ তপ্ দৃপ্ তৃপ্ চৃপ্ ছৃপ্ ছ্দী ছ্দ দৃতী দৃত্ প্রথ্ প্রথ্ কথ্ কথ্ কী সীক্ চীক্ অন্ হিসি আঙ্বদ শুক্ ছৃদ্ জুষ্ আছ্ প্রস্থাপু তকু বদ মান্ ভূ বচ্ গর্হার্দিঃ। হিংসার্থাশেচতি গণপাঠাদিংসার্থাশ্চ চুরাদয়ঃ। চকারতামুক্তসমুচ্চায়ার্থলাদগ্রেপি ধাতবং কচিদিতি। ইন্দিয়াদেরসামর্থাং বক্ষ্যাণমদীদিশদিতি ভট্রাত্তিক্ষ্। দশবর্ষসহ্রাণি রামো রাজ্যমকারয়দিতি ব্যাসঃ।

8>> । श्राचिक्त

প্রয়োজকে কর্ত্তরি সমবেতে প্রেম্বণাদ্যর্থে সর্ববধাতুভো ণিঙ্ ভবতি। পক্তবুং প্রযুদ্ধকে পাচয়তি চোরয়িতুং চোরয়তি।

ক্ষত্তরে স্বার্থে ণিঙ্ বা ভবতি। ণিঙ্তাক্তে পক্ষে শঙ্। ত্রাদিস্বণ্যাদিস্বাভাবাদপ্রাপ্তঃ শঙ্ অরং তদনুবাদরপো বিধায়তে। তেন চতুর্লড়াদৌ পর এব ভবতি নাগুত্র। ণিঙ্ তু সর্কাত্রেব বিকল্পেন ভবতীতি। অত্রন্যাপে বৃঞ্ধুঞ্জুলীঞোঞকারানুবন্ধাঃ পঠান্তে তেষাং ণিঙভাবপক্ষে আস্থানেশ্লক্ষ কৃতার্থন্। ণিঙস্তানাস্ত পরক্ষেপদমের যে তু নিঙেহিপুধাদেরিতি চুরাদিনিঙাহপ্যাত্মনেপদমিছন্তি তেষাং ণিঙস্তাদপ্যাত্মনেপদম্। ভূধাতুর্বাদ্নিঙাহপ্যাত্মনেপদমিছন্তি তেষাং ণিঙস্তাদপ্যাত্মনেপদম্। ভূধাতুর্বাদ্নিপদী শেষাঃ পদ্ধশিলঃ আঙ্মদ ইতি আঙ্পুদর্গপূর্কঃ বদ্ধাতুরিত্যর্থঃ। হিংসার্থান্দেতি গণপাঠাদিতি হিংসার্থান্দেতি চুরাদিগণে পঠান্তে অতো বত্র কুরাপি গণে পঠিছা হিংসার্থা ধাতবন্চুরাদ্য ইত্যর্থঃ। তেন ঘাতরতি হিংসম্বতীত্যাদি। চকারপ্তানুজনমুক্তরার্থজাদিতি হিংসার্থান্দেতিত কুরাপি গণান্তরে পঠিছা অপঠিতান্চ শিষ্টপ্রয়োগদর্শনাক্ষ রাদ্যে জেরাঃ। ইন্দ্রিয়াদেরিত্যাদি। দিশ্ অতিসর্জনে ডু কৃঞ্ ক্রন্থে হত্যাদয়ঃ পঠিছা অপঠিতান্চ তুপপ্রভৃত্যো ব্যাপ্তার্থাঃ। তথাচ নাবং পাংওদিশাং মুখ্মতুপ্রম্বহিত্যাহেছেরিতি।

(৪১১) ৮ ধাতৃতাকাবলিঙ্ তবতি ৮ তেবাঞার্বঃ ক্রিয়া সা চ

উক্তেহর্থে ধাতুনা লোটা শব্দেন বা নিছে। ন বিধিঃ। ধাতো-শ্চার্থান্তীরে রুর্ত্তো রুষলো বজতে বথা। বর্দ্ধন্তাং খ্রাং স্থান্তরুং প্রচ্ছতু মাং ভবান্ প্রেমিতঃ করোতি পঞ্চতিহলৈঃ কর্মতি প্রতিবিধন্ত ইত্যর্থঃ।

৪১২। স্বার্থে চাত্মনে কর্মশ্চতুরু। কন্তাং কাময়তে।

প্রকোদকপুরুষাদিরপা ন সম্ভবতীতি অর্থাৎ তৎসমবেতা ক্রিয়া অবেষণীয়া সা চ প্রেষণাদির্ব্নপৈর্বা অত আহ প্রয়োজকে কর্তন্তি সমবেতে প্রেষণাম্বর্থ ইতি। ভৃত্যাদেনিকৃষ্টক্ত কচিদর্থে নিয়োজনং প্রেষণং ষধা পাচয়তি স্প-कारतन । जानिभारकनारधायनज्ञ सम्बाह्यनाराज्ञ इनः । श्रुकीरान्यां वाधाय সংকারপূর্ব্যকং নিয়োজনমধ্যেয়ণং যথা ভোজয়তি গুরুষ্। তৎসম্বন্ধা-চরণং যথা ভিক্ষাং বাসয়তি। তচ্চুব্লেন যত্রার্থে বাসাদৌ প্রয়োজ্যা নিযু-ব্যতে সম্বন্ধতে তদভিধীয়তে। তত্ৰ বাসাদৌ বে সম্বন্ধ। যোগ্যা অমুকূলা-স্তৃপ্তিবিশেষাদয়ঃ তেষামাচরণন্দিব তৎসম্বন্ধাচরণম্। তথাচোক্তং প্রেষণাধ্যে-ষণে কুর্ম্বন্ তৎসম্বন্ধানিবাচরন। প্রয়োজকো ভবেৎ কর্ত্তা ক্রিয়া তম্ম ণিঙোচ্যতে। সর্কাধাতুপদেন ভাদিদশগণা ণিঙ্ সনাম্মন্তা অপি গৃহন্তে ইতি স্চ্যিতৃং চোরয়তীতাদাহতম। উক্তেথর্থে ইত্যাদি ধাতাদিভিক্তেথর্থে ণিঙে। ন বিধানম্ উক্তার্থানামপ্রয়োগ ইতি স্থায়াদিত্যর্থঃ। ধাতোভার্যস্তরে বুজাবিতি এতেন প্রেষণাম্ম্পাভাবাদিতাক্তমেৰ তছদাহরণেন 'স্পষ্টয়তি। বৰ্দ্ধস্তাং ত্বাং অধৃত্যু ইতি আশিষি লোট অত্ৰ ধাতুনৈৰ প্ৰেমণাদ্যৰ্থ উক্তঃ। অতএবাকর্মকস্তাপাস্থ সকর্মকত্বমেব। তত্তিব ফলমাধ্যায়তে। অন্তর্জাবি-ণ্যর্থো ধাঁডুরিতি। পুচ্ছতু মাং ভবানিতি অত্র প্রেষণা মর্মে লোড্ বিহিত-স্থেনৈর প্রেষণাদার্থ উক্তঃ। প্রেষিতঃ করোতীতাক্ত প্রেষিতশঙ্গেনের প্রেষণাদ্যর্থ উক্ত:। পঞ্চতিইলৈ: কর্ষতীতি পঞ্চতিইলৈ: কর্ষপক্রিয়ায়াং মুধাকর্ত্ত্বং ন সম্ভবতীতি অর্থাদেব প্রয়োজককর্ত্ত্বমন্থাপগস্তবামেব এবঞ্চ সতি ণিঙ্প্রাণ্নোতি অত আহ ধাতোশ্চার্থান্তরে বুতাবিতি নাত্র বিলেখনার্থঃ ক্লমি: কিন্তু প্রতিবিধানার্থ: অত্র চ প্রয়োজককর্তৃত্বং নাস্তীতি।

(৪১%)। চতুর্ধি তি বিষয়সপ্তমী ণিঙস্তাদাত্মনেপদবিধানাৎ কমু

৪১৩। যক্যচতুর্মপি বা। ক্ষাতে কামাতে কমিতা কাময়িতা।

8১৪। নাল্লস্তৎকরোত্যাদে পুর্ক্ চেনাদেঃ। তৎ করোভ্যাদাবর্থে বর্তমানান্ত্রাল্ল উত্তরে ণিঙ্ভবতি। ইনাদে-পুর্ক্চ। তিওস্তাদিতরৎ স্পৃশৃগ্যং নাম। সূত্রং করোতি

কান্তাবিত্যক্ষাৎ স্বার্থে চতুর্মু নিঙ্ ভবতি তত আত্মনেপদঞ্চ। কাময়তইতি স্বার্থে নিঙ্ অমন্তোহপদাং ন ঘটাদিঃ। উত্তরস্ত্রে যক্যচতুস্থা পিবেতি বিকল্পনালের চতুর্মু সিদ্ধে চতুন্ধি তি কৃতং স্পষ্টার্থম্। কমেরস্থানিত্রাদান্মনে-পদে দিক্ষেইপি নিঙি কৃতে ধান্তব্যব্যাৎ ন প্রায়োতীত্যাক্ষনেপদিবিধানম্। অনুদাত্তেরবিধানসামর্থ্যাদের ভবিষ্যতীতি চেন্ন অচতুর্ যত্র পাক্ষিকো নিঙ্
ভিৎপন্ধঃ তত্রৈর উৎপ্রয়োজনর্মন্তীতি।

(৪১৩) কমে: স্বার্থে যকি বিষয়ে অচতুর্ম পি বিষয়ভূতেরু পিঙ্ বা ভবতি। কাম্যত ইতি ণিঙ্গোপ ইত্যাদিনা ণিঙ্গোপঃ। কমিতা কাম-ফিতা ইতি লুটি তৃঙি বা রূপম্।

(৪১৪)। তদিতানেন যক্ষায়ায়ো শিও বিধেয়স্তংপরামুখ্যতে অতএব ব্যাচকার স্ক্রে করোজীতাদি। মৃও মিশ্র য়য় ধবল লবণেভ্যোহনেনৈব র শিঙি সিদ্ধে পাণিনেরেন্ডদর্থং পৃপগৃলক্ষণমনর্থকমিতি স্চয়িত্বং বহুদাহরণোপ্যাসঃ। নমু কিং নাম ইত্যত আহ ডিঙস্তাদিতরদিত্যাদি। নামেত্যবর্থ-সংজ্ঞা সা চ লোকপ্রসিদ্ধৈব অস্তেদং নামেতি এতেনাভিধেয়বদেব শব্দরপং ছাতিক্রিয়াগুণদ্রব্যান্তিধায়কং নামোচ্যতে। তিঙ অস্তো যত্যেতি বহুব্রীহিঃ স চ দ্বিবিধঃ তদ্গুণসংবিজ্ঞানোহতদ্গুণসংবিজ্ঞানন্ত। তথাহি, লম্বকর্ণোদেবদত্ত আনীয়তামিতাত্র তদ্গুণসংবিজ্ঞানালম্বর্কণিহিত এব দেবদত্ত আনীম্বত চিত্রগুরিত্যান্তিগুলসংবিজ্ঞানাহ গোসম্বন্ধমানোপ্রসিদ্ধান কর প্রস্কঃ ইহ তু তিগুক্ত ইত্যত্র উভয়পক্ষীয়ালার গণিতি তিগুক্পদেন তিগু-সহিতঃ সমৃদায়োহভিধীয়তে। তিগু পোত্তির্যোগ্যঃ কেবলা প্রধাত্রপি। অত-এব নোনাস্তর্ভেতি পদাক্তেহত্বে চ বিহিত্যা নকারলোপত্ত অনাম ইতি প্রতিধেধাৎ অহন্ হস্তি অভবন্ ইত্যাদৌ প্রতিবেধাৎ জায়তে। এতচ্চ

পূত্রয়তি মুগুয়তি মিশ্রয়তি শ্লক্ষয়তি লবণয়তি ধবলয়তি মলিনয়ঙি পবিত্রয় জিত্যাদি।

৪১৫। স্বচাদেগৃ হ্লাতো। স্বচং গৃহাতি স্চয়তি। হলি কলি বৰ্ণ কৃত স্বচাদিঃ।

৪১৬। ব্রতাক্তোজনাভোজনয়োঃ। পায়ে। ব্রতয়তি ভূঙ্ক ইতার্থঃ। ব্যলারং ব্রতয়তি ন ভূঙ্ক ইতার্থঃ।

৪১৭। পাশাদেমোচনাদো । পাশং বিমোচয়তি বিপাশয়তি লোমান্যসুমাষ্টি অনুলোময়ডি

তিওস্ত ইতি পদোপাদানসামর্থ্যদেব উভয়পক্ষাপ্রয়ণমভ্যুপগস্তব্যম্ এক-পক্ষাপ্রয়ণে হি তিঙ্ ইতি বা ধাতোরিতি বা বিদধ্যাং। স্পশ্সমিতি। এতচ দিবিধমন্থপরস্থবপি স্পশ্সং ভবতি স্বব্ ভাগরহিতমপি। অতএব নাম ইত্যধিকারবিহিতান্তদ্ধিতা অমুৎপরস্থপ্ এব ভবন্তি। রাজভ্যামিত্যক্র তু স্বব্ ভাগরহিতস্য নামন্বান্ধকারলুগ্ভবতি। আভিরিত্যক্র ইনমো ভিসিক্ষতে হলাদিতি চ ক্তে ব্রীম্ববিক্লায়াং স্ব্ভাগরহিত্য নামন্বাং নামোহতঃ ক্রিরামান্তদিত ইত্যাৎ বদ্যমুৎপরে স্থপি আৎ প্রান্তদা হল্যদিত্যাদেশো ন প্রাথ বিক্লার্যাণ করে বিল্লাল্যাদিনা অকারলুক্ মুণ্ডো, মুণ্ডিতঃ মিশ্রমণের্কেতান্ধাৎ চুরাদেঃ সিদ্ধে মিশ্রয়তীত্যাদীনামিপ করে তাথে বিঙ্ইতি প্রকারান্তরে মুণ্ডিতঃ প্রমান্ধ্রান্তরে মুণ্ডিতঃ প্রকারান্তরে মুণ্ডিতঃ প্রমান্ধ্রান্তরে মুণ্ডিতঃ প্রকারান্তরে মুণ্ডিতঃ প্রমান্ধ্রান্তরে মুণ্ডিতঃ প্রকারান্তরে মুণ্ডিতঃ প্রমান্ধ্রান্তর মুণ্ডিতঃ মুণ্ডিতঃ প্রমান্ধ্রান্তর মুণ্ডিতঃ প্রমান্ধ্রান্তর মুণ্ডিতঃ প্রমান্ধ্রান্তর মুণ্ডিতঃ প্রমান্ধ্রান্তর মুণ্ডিতঃ স্বান্ধ্র মুণ্ডিতঃ মুণ্ডিতঃ মুণ্ডিতঃ মুণ্ডিতঃ মুণ্ডিত মুণ্ডিতঃ মুণ্ডিত মুণ্ডিত মুণ্টিলিকার মুণ্ডিত ম

(৪২৫)। ঘচাদেগৃহাতাবর্থে ণিঙ্ভবতি। ঘচ্শকোহয়মকারাম্বঃ
অক্তথা বগাদেরিতি আং অথবা সৌত্রঘার চকারক্ত ককার:। গৃহাতাবিতি ইঙ্ধাতৃকথন ইত্যাদিন। তিঙ্। ঘচরতীতি নামধাতৃশ্চ বছলমিতি
কথাদিয়াদ্ দ্যভাব: হলয়তীতিপ্রভূতীনাং চতুর্ণাং গৃহাতীতার্থে ণিঙ্। ফুড্য়তীতাত্র নামো ব্যবহিতমিতি পিবাদিয়ার্ম গুণ:।

(৪১৬)। ব্রতশকান্তোজনেংভোজনে চার্থে ণিঙ্ভরতি।

(৪১৭।৪১৮।৪১৯।৪২০।৪২১।৪২২।৪২৩ ৪২৪।৪২৫)। পাশাদিজ্যো-মোচনাদাবর্থে বিঙ্ভবিত। যন্ত্রাৎ কর্মণঃ করণাদা বিদ্যর্থে প্রত্যয়ঃ চূর্বৈর্বধ্বংসতে অবচ্র্নয়তি রূপং পশুতি নিরূপয়তি। ভূস্তানি বিনিহন্তি বিভূস্তয়তি ভূস্তং পাপম্। বীপয়া উপগায়তি র্ভপবীণ-য়তি শ্লোকৈরুপস্তোতি উপশ্লোকয়তি ভূলৈরবকুষণাতি অবভূলয়তি সেনয়া অভিমূখং বাতি অভিযেণয়তি বর্ম্মণা সংনহতে সংবর্ময়তি বস্ত্রে সমাচ্ছাদয়তি সংবস্তয়তি বাস্থা সংছিনন্তি সংকাসয়তি।

৪১৮। ইন্লুক্। হস্তিনা অভিকামতি অভিহস্তয়তি।

৪১৯। মতুলুক।

ব্রুখন্তমাচক্টে ব্রুচয়তি।

৪২০। বন্লুক্।

শ্রম্বিনমাচষ্টে করোতি বা শ্রজয়তি। "উন্মৃচ্য শ্রজমান্সীয়াং মাং শ্রেজয়তি কো হসন্ ইতি ভট্টিঃ।

তৎ স্পষ্টমেব নাত্রোণপদনিরমঃ কিন্তু যেনোপপদেন উপদর্শিতাংর্থা দ্যোত্যতে স উপাদীয়তে বিশক্ষারিধাদেব পাশশকানোচনার্থাব্যমান্তহপাদানম্ এবং সর্বত্ত । অভিষেণয়তীতি স্থাদেরিত্যাদিনা ষত্তম্ ।
বিশ্বে ইতি বিতীয়াবিবচনান্তং সংবক্তরতীতি সামান্তত্ত কর্মণোহস্তভাবেহিপি বিশেষপ্রতিপত্তার্থং বিশেষকর্মপ্রয়োগো যুক্ত এব সংবক্তরতি প্রাবারী এবং সংবর্ময়তীতি অত্যাপি করণত্ত তথাচ মুরাবিঃ, সংবর্ময়তি ভাবেহি থৈবাং হি মহতাং মন ইতি । অসিনা ছিনভি অসয়তি হস্তেনাবিশ্বিপতি অবহন্তয়তি কর্মভিরববয়াতি অবকর্ময়তি তুলৈরবক্ষাতি
অবত্তারতীত্যাদয়ঃ প্রয়োগদর্শনাদ্হনীয়াঃ ৷ হন্তিনেতি করহন্তদন্তাদিতে ইতি ইন্ ক্রথন্তমিতি তদত্তান্তান্তির্বান্ত মান্তরিতি মতুঃ ৷
অঙ্বশাস্তরাচেতি মতুমো বঃ ৷ প্রথিনমিতি অসম্ভমায়ামেধাশ্রজােবিশ্বিতি বিন্ ৷ অনেকাচামিত্যনেন ল্থিধানে সিদ্ধে মদত্র ঘণ্ডরােল্ন্ ব্রিধীয়তে
বিশ্বানং পৃথক্কতম্ এত্তেনৈতৎ স্চিতঃ য়ত্র প্রতারোভ্রেদন ল্থিধীয়তে

৪২%। ডন লুক্। রাজাগমনমাচন্টে রাজানমাগময়তি সীতাহরণমাচন্টে সীতাং হারয়তি।

৪২২। জবতু লুক্। বাদিতবন্তঃ প্রযুক্তবান্ অবীবদদীণাম্।

- ৪২৩। তৃঙ্ লুক্। কতীরমাচন্টে কারম্বক্তি।

৪২৪। **ঘণ্ লুক্।** বলিবন্ধমাচফ্টে বলিং বন্ধয়তি।

৪২৫। **ও লুকু**। কংসবধমাচাঠে কংসং ঘাতয়তি ১

ততৈব নিমিন্তাপায়াৎ প্রকৃতিপ্রতাসন্তিঃ তত্যাঞ্চ সত্যাং ধাতুকেন নামত্বনির্ত্তী সমাসোহপি নিবর্ত্তি অতঃ কারকঞ্চ প্রকৃতিবছবতি। অতএব রাজানমাগমন্বতীতাত্র ভনলুকি গমিধাতোঃ প্রকৃতিপ্রতাসত্তৌ অত্থার্থণী ক্যামেত্যাদিনা ঘটাদিত্বাদ্ধুন্ধঃ সমাসে চ নির্ত্তে তৎসমুদ্দিষ্টং কর্মেতি ক্রিয়াসমুদ্দিষ্টবাৎ রাজ্ঞঃ কর্মত্বম্ । এবং বলিং বদ্ধাতি কংগং ঘাত্রমতি। আঝানে এব এতিহিধানমিতি নোক্তম্ অগ্রতাপি দর্শনাৎ অতএব গোনাবৌ করোতি গোনন্ধতীত্যত্র মান্থদোর্ডা-বিতি মুকাতোঃ ডৌপ্রতারেন সিদ্ধুন্ত নৌশন্ধ প্রতারোভেদেন বিনা ওলুকি কতে ন প্রকৃতিপ্রতাসন্তিঃ। অবীবদ্দিতি ক্রত্লুক্ সন্তি নিভ্লোপ ইআদিনা ণিঙ্লোপঃ লুঙ্ছঙ্ অন্ হ্যোহশাম্বাদেরিতি ভ্রমঃ সর্ভাবাদিকারো দার্ঘণ্ড। বলিষ্ক্রমিতি বন্ধ্ বন্ধনে পৃংনির্ণ্ কারক্ষে চেতি মণ্। কংস্বধ্যতি হন্ধাতোঃ অপ্রাদেশনির্ত্তী প্রতি ভঃ বধাদেশক তলুকি সতি নিমিত্তাপায়াঘধাদেশনির্ত্তী প্রতি বিজ্বর্জ্জং হনো ঘাত ইতি মাতাদেশঃ।

৪২৬। নক্ষত্রেণ যোগজ্ঞানে। পুষ্যেণ চন্দ্রযোগঃ জানাতি পুষ্যেণ যোজয়তি চন্দ্রম্।

৪২৭। শ্বেতাশ্বাদেরশ্বাদিলুথা লুক্যাত্মনে চ।
শ্বেতাশ্যাচন্টে শ্বেত্যতে শ্বেতাশ্যতি অশ্বত্তম্ অশ্বয়তে অশ্বত্তরয়তি গোলোহিত্যামানং গোলোহয়তে গোলোহিত্যতি
আহ্বরক্য্ আহ্বয়তে আহ্বরক্য়তি।

৪২৮। ভবাতাদেরানীলুক্ চ।
ভবানীমাচন্টে ভবয়ভি রুজ্রাণীমাচন্টে
ইক্সয়তি।

৪২৯। **অনেকাচামন্ত্যাচ্ছেষয়োলু ক্।** মালাং করোতি মালয়তি লঘুং ল্যয়তি মাতরং মাত-

⁽৪২৬)। নক্ষত্রেণেতি সহ্যোগে তৃতীয়া নক্ষত্রণ সহ যোগজ্ঞানেহর্থে ণিঙ্ভবতি। এবং সতি যোগশকাদেব জ্ঞানেহর্থে ণিঙ্জারতে
তইশুব প্রকান্তবাং যোগঃ সম্বন্ধঃ স যক্ষ জ্ঞেরঃ তশু কর্ত্সমুদ্ধিপ্রবাং
কর্মন্ধ অতণ্ট শ্রশ দান্দিতীয়া পুষ্যোগেতাত্র তৃ সহ্যোগে তৃতীয়েব
অত্রিপি শণ্লুক্।

⁽৪২৭)। বে তাখাদীনাং তংকরোত্যাদাবর্থে ণিঙি রুতে অখাদীনাং তদবয়বানাং লোপো বা ভবতি। লুকি সতি আ্যানেপদঞ্চ। বেতা-খশস্ত্র অখসুক্ অখতরশক্ষ্ম তরলুক্ গোলোহিতশক্ষ্ম ইতলুক্ আ্যাহ্বরকশক্ষ্ম রকলুক্ ভবতীতার্থঃ।

⁽৪২৮)। ভবাতাদেং লক্ষ্ম ণিঙি ক্তে ক্মানীলুণ্ডবতি। ভবানীতি ভবনকাৎ ইন্দ্রাদেরানশ্চোদাবিতি ঈ আনন্চ আদিশকেন্
ইন্দ্রাণাদরং আনসহিত ঈপ্রত্যায়ন্তাং সর্ব্ধ এর গ্রাহাঃ। ইন্দ্রাণাদ দেরানীলুক্ চেতি লক্ষণং যুক্তম্। এবং সতি তদ্ধিতপাদে দর্শিত-গণক্রম এব উপযাগৃহীতো ভব্তি ক্রিন্ত লিপিকরপ্রমাদাৎ প্রাঠোহয়-মন্তপাল্লাতে ইতি।

⁽ ৪২১)। অনেকালাং নামাং তৎক্রোত্যাদাবর্থে পিঙি ক্রতে অস্ত্যা-

য়ুঁড়ি গোনাবে গোনয়তি প্রাতঃ প্রাতয়তি মরুতং মর্যুতি।

৪৩০। স্থিতুষ্থিসংশ্রামীণামুপসর্গেণ সহৈক-প্রকৃতিত্বম্।

অত্থ্য অতুষ্থ্য অসংশ্রাময় সিসংশ্রাময়িষতি সংশ্রাময়িয়া। অভাত্র—পর্যাত্রতয়ৎ পরিব্রত্যা স্বমনায়ত

চামস্ত্যাচশেষাণাঞ্চলুগ্ভবতি। পূর্কস্টেত্র: পরিত্যক্তোইন্স বিষয়:। একাচাস্ত । স্রজং করোতি স্রজয়তি এবং স্রুচয়তি।

(৪০০)। স্থন্ত্রাম্বরাৎ থম অবদারণে ইত্যন্থাৎ অন্ততাহিপ দৃশ্রত ইতি ডপ্রতায়েন হনির্বাবিবহিরিত্যাদিনা যে ক্রতে স্থগুরুষ্ণাকৌ সাধিতৌ বিদর্গবানপি ছংখশনঃ তত্ত্বৈব ব্যুৎপাদিতঃ দংপূর্দ্বাৎ কেত্ত-আম কুণগুণআমন্ত্ৰণ ইতাুআং [©] ডেন ঘণা বা সংশ্ৰামিশক: সাধিত: এষাং ণিঙস্থানামুপদর্গেণ সহ এক প্রকৃতিতা ভবতি। এতেনোপদর্গস্থ ধার-বয়বম্বমেব ভবতি। তেনাম্বথয়দিত্যাদৌ লঙি অভাগম: বাদিতাঃ প্রাগ্ভবতি। সিদংশ্রাময়িষতাত্যত্র সনি হিন্দুক্তিশ্চ প্রাগ্ভবতি। সং-শ্রাময়িত্বেতার প্রাছাত্তরধার্ম্বরাভাবাৎ স্তান্ত্রা স্থানে যন্ত্রপি ন ভবতি। নরু নামে ণিঙি কতে সমুদায়ভা ধাতুসংজ্ঞায়ামেকপ্রকৃতিতা সিদৈর কিং লক্ষণেন' তদেতরিয়মার্থং তেনান্সেষাং নামধাতৃনামুপসর্থেণ সহৈকপ্রক্ত-তিত্বং ন ভবতি। প্রকৃতিশবৈনার ধাতুরভিধেয়া যতে। ধাতুরেব স্বিষাং প্রকৃতিঃ অতোহনীযাং নামধাতুষাভাবাৎ। দিসংশ্রাময়িনতী-ত্যত্র নামধাতৃনামাণ্যস্তমধামিচ্ছায়া সনঃ প্রাক্ সিন্চেতি দ্বিন ভবতি। ষ্ঠান্তত্যোদিনা নিয়মফলং দর্শরীত। পর্যাব্রচুম্নদিতি পরিবৃচ্মকরোদিতি ণিঙ্ হঙ্ ইষ্ঠবভাবাৎ বঢ়াদেশঃ পরিবঢ়িয়েতি জ্বাভত পরিণা সমাদে यह इत्वाशाखानिकानिना खनाबादम्लो । यमनाबक हैजारि स्थमन छनानम् ইত্যৈতাভাগি শীঘাদেরিত্যাদিনা আয় কচিদ্ল্লোপতেতি সৰুক্লঙ্ আস্থানেপদম্। ছরথায়ত ইতি আস্থানঃপ্রথাদেরমুক্তর ইত্যায় আশিবয়-তীতি ভিন্নছেনৈকাটবাৎ নাস্ত্যাচ্পেবয়োপুক্ এবং সম্যাচয়তীত্যাদি अंश्वृद्धानकरतः किन् जामो क्रोत्वरवात्रपष छि नकात्रमुक् जितःगृहः

উদমনায়ত তুরখায়ত তুরমনায়ত আশিবং দদাতি আচক্টে বা আশিষয়তি সমাক করোতি সমাচয়তি।

৪৩১। ইষ্ঠবৎ প্রেম্নাদেঃ। বহুলং করোভি বংহয়তি।

৪৩২। একাজদন্তাদাপুঃ। প্রিয়মাচষ্টে প্রাপয়তি স্থিরং স্থাপয়তি স্থপয়তীত্যেকে। কং কাপয়তি।

৪৩৩। বহোভূ[°]ঃ। ভাবয়তি ভূয়য়তীত্যেকে।

সমাং তিরিপঞ্জিময় ইত্যনেন সম্যাদেশ:। অঙাদিলক্ষণপ্রবৃত্ত্যর্থং হি প্রক্রিয়ামাত্রমুপদর্গবিভাগাঙ্গীকরণম্। বস্তুতস্তু দমুদায়া এবৈতদর্থা: অক্যা হি লৌকিকোহর্থোহক্রক প্রক্রিয়ামাত্রত্তঃ। তথাচোক্রম্, অড়াদীনাং ব্যবস্থার্থং পৃথক্ষেনোপবর্ণনন্। ধাতৃপদর্গয়োঃ শাস্কে, ধাতৃরেব হি তাদৃশঃ। কথমনিবাদয়ৎ নিনিরাদয়িয়তীত্যুচ্যতে নিবাদ আচ্ছাদনে ইত্যতক্ত্রাদের্ভবিষ্যতি।

(৪৩১)। প্রিয়াদেণিঙি ক্বতে ইষ্ঠবন কার্যাং ভবতি। প্রাদিঃ প্রিয়াদেরিমেষ্টেয়সাবিত্যাদিসুত্রৈরিষ্ঠে পরে যে স্থাদেশা। বিধেয়াস্তে ভবন্তীত্যর্থং। তেষামাদেশানাং সর্বেষামেক নামধাতৃশ্চ বহুলমিতি কথাদিংং
স্কুস্মাচন্টে গরম্বতি যুবানমাচন্টে যবম্বতি বহুলবচনাদ বহুরাচন্টে ভাবমতীভাত্র ন ভবতি। বংহয়তীতি বহুলশক স্থা বংহাদেশঃ।

(৪৩২)। একাচো যেহকারাস্তান্তেন্ডা উত্তরে নিজি পরে আপুর্ভবিত। প্রাপয়তীতি প্রিয়শকত প্রাদেশে ক্রতে আপু:। স্থাপয়তীতি
স্থিরশকত স্থাদেশঃ স্থপয়তীত্যেকে ইতি বছলকানাদ্র পাক্ষিকং হ্রত্বমিছন্তি। কাপয়তীতি কং ব্রহ্মাণমাচন্টে। প্রকান্ধিতি কিম্ ? ঘটয়তি। নম্ম অনেকাচামিত্যাদিনা অকারলোপে ক্রতে অদস্ততা নান্তি।
নৈবম্। অনদন্তে কৃতার্থলোপং বাদিখা আপু: প্রথমং ভবতীতি সন্দেহঃ
তাং। অদস্তাদিতি কিমু ? কুশকাং কাবয়তি। প্রাপয়তীত্যাদৌ
বুদ্ধৌ কৃতায়ামাদন্তাং পুত্তি সিদ্ধে বচনমিদং স্পত্তার্থম্।

(৪০০)। বহুশক্স স্থানে ণিডি ক্লতে ভূর্তবভি। ইষ্ট্রুরারাৎ

808। मृताका।

দূরয়িজ্জিদবয়তি। "দূরয়ত্যবনতে বিবস্বতি" ইতি কালিদাস:।

৪৩৫। বেদার্থসত্যাদাপুঃ।

বেদাপয়তি অর্থাপয়তি সত্যাপয়তি।

৪৩৬। আতশ্চ তেনাতিক্রামতি। প্রজ্ঞয়া অতিক্রামতি প্রজ্ঞাপয়তি।

৪০৭। পুজ্ছাদেরাত্মনে চ।
 পুজ্ছমুৎক্ষিপতি উৎপুজ্ছয়তে গোঃ পরিপুজ্ছয়তে ভাগুং
 সমাচিনোতি সংভাগুয়তে চাবরং সমর্জ্জয়তি পরিদ্ধাতি বা

সংচীবরয়তে ভিক্ষঃ।

- (৪৩৪)। দূরশদাং বিহিতো নিঙ্ ইঠবঙ্কতি বা। পক্ষে দবা-দেশঃ। আপ্রপ্রয়োগদর্শনমূলোহয়ং বিকল্পঃ। অভএব কালিদাসল্লোকৈক-দেশ উদাহৃতঃ।
- (৪৩৫)। বেদার্থদত্যেভ্যো ণিঙ্ ভবতি। আপুশ্চ। °ণিঙ্ সিদ্ধ এব আপুর্থং বচনম্। বেদমাচষ্ট ইত্যর্থে বেদাপয়তীত্যাদি। নিঙ্সন্নি-যোগশিষ্টে অন্তর্গুকি ক্বতে দার্থঞ্জ্যর্থং দার্যাপোর্বিধানম্।
- (৪৩৬)। আকারাস্তাক্ত নামস্তেনাতিক্রামতীতার্থে ণিঙ্ভবতি। আপুণ্চ। অত্রাপি ণৌপুঙার্শ্ত্যাদেরিতি পুঙি সিঙ্কে আপুবিধানং স্পষ্টার্থং ধাতুষেন পুঙ্দৃষ্টঃ নামো ভবতি ন বেতি মন্দিয়াং সন্দেহঃ স্থাৎ।
- (৪৩৭)। প্জাদের্ণিঙ্ ভবতি। আত্মনেপদঞ্চ। প্রিপ্জ্য়ত ইতি পরিতঃ ক্ষিপতীতার্থঃ। ভাগুং সমাচিনোতীতি সমাচয়নং রাশী-করণম্। চাবরং সমর্জ্য়তীতি অর্জ্জনমলম্ব লাভঃ পরিদ্ধাতি বৈতি পরিধানমাজ্ঞাদনম্ এতেখেবামীধামভিবানমিতি স্কচ্নিতুমর্থোপন্দ্রং

ইঠে ভূর্যন্চেতি ভূভাব: প্রাপ্নোত্যেব তৎ সন্নিযুক্তন যকারো মা ভবত্বিতি স্ত্রম্। অথবা নায়ং যোগঃ কিম্বন্ধবাদঃ যতঃ ইঠবদ্বাবাৎ। প্রিয়াদেঃ স্থানে যঃ প্রাদেশঃ সোহতিদিশুতে যকারম্বয়মাগমঃ। ভূয়য়তীত্যেক ইতি বহোভূর্ম ইতি লক্ষণং কেচিৎ পঠন্তি ন তম্বহুসম্বত্ম।

৪০৮ ! **অঙ্গান্ধ নিরদনে।** হস্তো নিরস্যতি **অভিহন্তরতে**।

৪০৯। **পুংবচ্ছ্যেন্সাদে** । শ্যেনীমাচষ্টে **শ্যেতয়তি** এনীম্ এতয়তি হরিণীং হরিতয়তি লোহিনীং **লোহিতয়তি**।

880। শে পুঙাদর্ত্তাদেঃ। গে পরে আদস্তাদর্ত্তাদেশ্চোত্তরে পুঞ্ ভবতি। স্থাপরতি অর্পয়তি হেপয়তি রেপয়তি বুেপয়তি।

স্বৃত্তিক্ত। কৃতন্। প্ৰানামৰ্থাভিধানশক্তিঃ স্বভাবসিদ্ধা কিং তত্ৰ লকণেন যত্ৰ দৃশুতে তং স্পষ্টাৰ্থম্।

(৪০৮)। অস্বাচকারায়ে নিরম্বনেহর্যে বিঙ্ভবতি। আহ্বনে-পদক। অস্বাদোহবর্বব্দনা তথাৎ প্রতামোহর ভব্যব্বিশাবের ভরি-রসনে ভবতি। অত্রবাহাহতো নির্মতাতি নির্দনং বিজেপণ্য।

(৪০৯)। শ্রেখানেনিত্তি সভি প্ংবংকার্যাং তাতি। গ্রেখানালার প্রেডি হারেজানিতি কি প্ংবংকার্যাং বাদিল্লারাজানিতালার তাপান্তারক ন ইতি দৈ তকারত চ নকারঃ অতো নিঙ্ প্ংবছাবানাকার নকারয়ানির্ত্তিঃ। অনেকাচানিত্যাদিনা তু দকারনির্ত্তিঃ তাং নতু নক্রিরিঙা। শের্ভানেরিতি পাঠো বছরু প্রকের দ্থাতে দ প্রনাদকতঃ ন হি বেভাগে দকারে তবতঃ। খেনা এনী হরিণী নোহিনা ইতি চত্ত্রো বন্প্রভারান্তাক শ্রেমানরং তেন বনঃ কাল্যজন্তবিহিতালোরকেতি বিহিত্রীপ্রভারান্তরে পীরহামানতেই পীরষ্টাতাদি ভবতি।

(৪৪০)। লাক্ষনিক সাপি আতো গ্রহণাৎ গৈ নাপরতি। অর্ত্তীতি বা গতের হ্বাদিঃ বাগতি প্রাপেশরোঃ ভাদিঃ উভরোরপি গ্রহণং ইঙ্ধাকুকথনে তিঙ্বন্তিঙ্বেতি তিঙ্কারি তিঙ্বদিতি প্রতিষেশাং কার্য্যান্তরাভাবঃ। অর্থিতাতি শিঙ্পুঙ্ ততো গুলঃ। পুঙো ডকারাম্বর্ধন-সামর্থাং প্রথমং ন রৃদ্ধিঃ। যদি প্রথমং বৃদ্ধিঃ ভাৎ তরা গুলার্থাং প্রকারক্রণমন্ধ্কং ভাবে। হ্বী লক্ষায়াং রী গতিগণেষণ্যাঃ ক্রাদিঃ

88)। জ্যাদেরিদার। জাপয়তি ইঙ্ অধ্যাপয়তি ভূক্রীঞ্ ক্রাপয়তি।

88২। চিঞোবা। চাপয়তি চায়য়তি।

৪৪০। ভাস্মোঃ প্রযোজকান্তমাশ্চর্যায়োরাত্মনে ভার্বা ভাষশ্চ।

প্রেতো মাং ভাপয়তে ভীষয়তে বিম্মাপয়তে। অপ্রয়োজকান্ত্র—
শত্পেন মাং ভায়য়তি রূপেণ মাং বিম্মায়য়তি'।

888। যুর্বেঞাদেরিধিৎকুদচো রাতশ্চ। গ্রে পরে বেঞাদেরুত্তরে যুর্ভবতি। ই**নিৎ কুদচোঃ**

রীঙ্ স্রবণে দিবাদিঃ ছরোরপি গ্রহণন্। ব্লীঙ্ করণে অর্থ্ডি ব্লী ব্লীডি চন্তারোহন্ত্যাদয়ঃ।

(৪৪১)। জি জয়ে জি জ অভিভবে বা ইউ অধ্যানে ডু জীঞ্ দ্বাবিনিময়ে এতে জ্যাদয়ঃ।

(৪৪২। ণৌ পরে চিঞ্ চয়নে ইতান্ত ইনাধা ওবতি। চপ্ সাম্বনে ইতামাদপি চাপয়তীতি সিদ্ধাতি কিং লক্ষণেনেতি ন বাচাম্। তন্তার্থাস্তবাং ধাতৃনামনেকার্থকৈ তু লক্ষণখণ্ডনং ন কৃত্যম্। এবমন্ত্রা-পূাহনীয়ম্।

(৪৪০)। ঞি ভা তয়ে শিঙ্ ঈয়ড়য়নে ইত্যেতয়োঃ প্রয়োজককর্ত্রগাশ্চর্যায়ের্বর্তমানয়োঃ ণৌ পরে ইদান্তবতি। ভীর্বা ভাষশ্চ
তয়োঝায়্মেপদঞ্চ। কর্ত্রপ্রিক্যাফলে আত্মনেপদং সিদ্ধমেক অকর্ত্রপ্রিক্যাফলে আত্মনেপদং সিদ্ধমেক অকর্ত্রপ্রিধানম্। প্রেতো মাং ভাগয়তে ইক্তি প্রেতঃ প্রয়েজকঃ কর্ত্রা ভরে।
ভরং ধাত্রপ্রঃ। ধর্জোন মাং ভায়য়তীতি নাজ প্রয়োজকাদ্বয়ং কিন্তু
বঞ্গাৎ করণাৎ। রূপেণ মাং বিত্রায়য়তীভাত্রাপি ন প্রয়োজকাদাশ্চর্যাং
কিন্তু রূপাৎ করণাৎ।

(৪৭৪)। অশিতীতাশু বিষয়সপ্তমীদাৎ প্রথমং বেঞাদেরেচো-

পরয়োরাতশ্চ । বায়য়তি অবায়ি বায়কঃ অদায়ি দায়কঃ। বেঞ শোছো যো ব্যেঞ্ হেবঞ পৈ পিবতি।

88৫। স্ফাবাদিঃ স্ফায়াদেঃ। গো পরে স্ফায়াদেং স্থানে স্ফাবাদির্ভবতি। স্ফায়ী স্ফাবয়তি ক্ষায়ী ক্ষাপয়তি কুয়ী ক্লোপয়তি।

৪৪৬। পাতেঃ পালঃ। পালয়তি।

88৭। রুইো রোপো বা'। রোহয়তি রোপয়তি।

হশিতীতাবে কতে গোঁ পরে পুঙি প্রাম্নোতি তদপবাদো বুর্বিধীয়তে : অবায়ীতি কর্মাণ লুঙ্ ত নঙ্ দচ্সিজ্ভ্যাক ভাবাদাবিতীণ যুং ইণ্ গ্রহণন হন্দৃশেতাদিনা নিহিত্ত্যাপীণো গ্রহণং তেন দায়িষ্যতে দায়ক ইতি ণকং। গিদিতি কিম্ ং দানীক্ষ্। ক্লিতি কিম্ ং দদৌ লিট্ অন্ উদাতো পাণাবিতি ঔকারঃ। অজ্গ্রহণং স্পষ্টার্থং ন হি হলাদিঃ পিংকুদাকারাস্ত্রত্তরং সম্ভক্তীতি। বেক্ত্র্তম্নস্তানে শো তন্করণে ছো ছেদনে যেহিস্তক্মিণি হ্রেঞ্ স্পর্কাশকয়োং ব্যঞ্ সংবরণে পৈ তু বৈ শোষণে পা পানে এতে অস্ত বেঞাদয়ং। পিবতীতি নির্দেশং পা কক্ষণ ইতাত্ত নিরাদার্থঃ। যঞ্জি গো পরে পাতেং পালাদেশং বক্ষাতি তথাপি যুরপি ভবতি পালাদেশংগতি সন্দেহং তাৎ যুরয়ং ধাত্তবম্বনে বিধীয়তে তেন স্থায়েতাতং কে কতে স্থায়িকেত্যত্ত অধাত্তম্বকাদত্যাণ-স্থাত ইতি বিকরেনেকারো ন ভবতি।

(৪৪৫)। স্ফাবরতীতি স্ফারী ওপ্যায়ী রুদ্ধৌ আদিসংগৃহীতান্
দর্শরতি। স্মায়ীতাদি স্মায়ী বিধ্নন ইতান্ত স্মাপঃ কুরী শব্দ ইতান্ত কোপঃ।

(৪৪৬)। পারক্ষণ ইত্যম্ম, পালো ভবতি। পাতেরিতি নির্দেশঃ পা পান ইত্যম্ম নিরাসার্থঃ। পল রক্ষণে ইত্যম্ম চুরাদেঃ পালয়তীতি ক্ষপং বিদ্যাত্যেব। পাতেঃ পুঙ্নির্ত্তার্থং বচনম্।

(৪৪৭)। বহু জন্মনি ইত্যস্ত স্থানে গৌ পরে রোপো বা ভবতি।

৪৪৮। নিথিবণ্টিলঞ্জাং নিথাপ বন্টাপলঞ্চাপা বা। নিখাপয়ীত নেখয়তি।

88৯। কম্পনার্থবা বাজঃ। বাজয়তি পক্ষে পক্ষী।

৪৫০। লীলীঙোৰ্লাবা তৃঙাদে চ। বিলাপয়তি বিলায়য়তি বিলাতা বিলেতা বিলায় বিলীয় ।

ফুরক্ষারো বেতি লক্ষণং লিপিকরপ্রমাদাদিহ বুজৌ পতিত্রম্। কুরিতশু স্থানে নৌ পরে কারো বা ভবতি। ফারম্বতি ক্ষোরম্বতি ফোরম্বতি ক্ষোরম্বতি ক্রোর্বা বিদ্ধুরোর্বা বিতি পার্বিনিচন্দ্ররোর্বাক্ষণমনর্থকমিতি বিচিন্তা ক্রেক্তা লক্ষণমত্র নিরন্তম্। মন্যেতল্লক্ষণং ন স্থান্তম্ ক্রেক্তা দক্ষণমত্র নিরন্তম্। মন্যেতলক্ষণং ন স্থান্তমা ক্রেক্তি দিক্তিবিধৌ লক্ষণমন্থকং শ্রাৎ বিষয়ান্তরাভাবাৎ।

- (৪৪৮)। লিখ বক্ষরবিস্তাদে তুলাদিং বটি বিভজনে লজি প্রকাশনে চুরাদিং এবাং স্থানে গৌ পরে লিখাপ-বন্টাপ-লঞ্জাপা বা তবস্তি। নিষ্ট-প্রয়োগদর্শনাল্লকণফেতং কতং নতার্যমেতদ্বাতুপারায়ণে ব্যবস্থিতম্।
- (৪৭৯)। বা গতিবন্ধনয়োরিত্যস্ত কম্পনার্থস্থা পের বাজাদেশো ভবতি। কম্পনার্থ ইতি কিম্ ? আবাপয়তি কেশান্ শোষয়তীত্যর্থঃ। পৈ তু বৈ শোষণ ইত্যাস্যা রূপম্।
- (৪৫০)। লী শ্লেষণে ক্র্যাদিং লী দ্রবীকরণেহদাদিং লীঙ্ বিশ্লেষণে
 দিবাদিং এবাং ণৌ ভ্ঙানৌ চ পরে লা বা ভবডি। বিলাপয়তীতি লাদেশে
 কতে প্র্পক্ষে বৃদ্ধায়াদেশে। চ বিসংবাদক্তরণয়োশৌ নিত্যমিতি বামনং।
 সন্মাননে নিত্যমিতি ধর্মদাসং। কন্তাম্মাপয়তে ভোনো বর্জিকাং বিলাপয়তে
 ভরুম্লাপয়তে। ভূঙাদিপদেন ওপ্রভায়বর্জিকা ভিতাে গৃহত্তে বজাদেশশেচতি। ওে তু ঈয়িলয়ং সহলীবভাঃ কর্মণি চেভি ওং বিলয়ো বর্ততে
 ইণম্ব ইতি দৃঙাদিবাং ওং। অভিতি তু—বিলীনং বিসংবাদক্তর্কায়োশৌ
 নিত্যমিতি লক্ষণং লিপিকরপ্রমাদাম্ব্রী গতিতম্। বিসংবাদে নায়্রবেশ
 ভ ণিতি পরে নিতাং লাদেশো ভবতি। বয়ুম্লাপয়তে ব্রক্ষরতীত্যর্থং।

र्श्वरं । नीननीत्मे त्यर्ज्यांजांवर्षे । क्रजः विनामग्रजिः विनीमग्रजि ।

8 दरं। वीर्वे श्रक्तं।

পুরোবাতো গাঃ প্রবাপয়তি প্রবায়য়তি গর্ভং গ্রাহয়তীতার্থঃ।

৪৫৩-। শদেরগতো শাতঃ।

শাভয়তি। গতো তু। শাদায়তি।

৪৫৪। সিধাতেঃ সাধোইপারিলোকিকে। সাধরতি ধনম্। পারলোকিকে তু। সেধরতি স্বর্গন্।

শ্রেনো বর্তিকামুলাপয়তে ভক্তরোতীত্যর্থ:। গৃথিলীবঞ্চো বিসংবাদে সন্মাননাকরণয়োলিয়িইত্যাত্মনেপদম্। বিসংবাদনাকবণাত্যামভ্রে — গুরুমুলাপয়ত গুরুমুলায়য়তে বিকল্প এব ভবতি সন্মাননার্থজাদায়নেপদং বালক্মুলাপয়্রতি বালকসুলায়য়তি উদ্ধৃলীনং করোতীত্যর্থ:। অঞাপি বিকল্প এব আদেশঃ আল্পনেপদং ন ভবতি।

- (৪৫১)। শ্বেহত্রবাদ্রাবণেহর্থে বর্তনানয়োলীলীঙোঃ স্থানে নো পরে লাললীনো বা ভবতঃ। যথাসংখ্যমত্র নেয়তে তেনোভয়োর্রপি উভয়-বিধানম্। এভাভ্যাং মুক্তে পক্ষে পুর্বেবজপদ্বয়মপি ভবতি। লাতেনিঙি প্তি বিলাপয়তীতি লীয়তেরপি সেহজব্যদ্রাবণে বিলাপয়তীতাকৈঃ সাধিতং তদিহ নোক্তমবিশেষার্থ।
- (৪৫২')। বী গতিপ্রজনকান্তাসনথাদনের অরং ধাড়: প্রজনেহর্থে বর্তমানো গৌ পরে বীর্বা ভবতি। ভাদির্ঘকি চান্ত্যাদেরিতানেনাজোবী-ভাবভাত্র গ্রহণমিতি ধাড়ুপারায়ণম্। চিঞো' বেতাভানস্তরং বেং প্রজন-ইতি ক্তে বেতি শক্যমকর্ত্যু তর ক্তরং বৈচিত্র্যার্থম্'।
 - (৪৫৬)। শদু শাতনেই তান্তাগতাৰর্থে বর্ত্তমানন্ত পৌ পরে" শাতো-ভবতি।
- (৪৫৫)। সিধু সংরাদ্ধাবিত্যভাপারলৌকিকেহর্পে বর্তমানক স্থানে থৌ পরে সাধো ভবতি । পারলৌকিকগ্রহণং জ্ঞানবিশেখোপলকণমিতি

৪৫৫। অবোধার্থে ণিকোর্গম্সনি হ। শেময়তি অধিজিগমিষতি কুলাচারম্। বোধাধেণিকোন্ত-প্রত্যায়য়তি ক্লায়য়তি।

৪৫%। প্রীধৃত্যাং প্রীণৃধৃনদূষাঃ । প্রীণয়তি ধৃনয়তি দূষয়তি।

৪৫৭। ছুযোবা চিত্তবিরাগে। চিত্তং দুষয়তি দোষয়তি।

(৪৫৫)। ইণ্ গতৌ ইকু স্বরণে ইত্যেতয়োরবোধার্থে বর্তমানরোর্ণে । পনি চু পরে গন্তবতি। গময়তীতি অমন্তবেন ঘটাদিয়াদুস্থা। অধিজি-গমিষতি কুলাচারমিতি ইক্ধাতোনিতামধিযোগা। অমুসন্ধা দুমিছে-তীতার্থা। প্রত্যায়য়তীতি প্রতিপূর্বাদিশো ণিঙ্ বৃদ্ধায়াদেশো। এবমব্যাপয়তীতি।

(৪৫৬)। প্রীধৃত্বাং শৌ পরে প্রীণধ্নদ্যা যথাক্রমং ভবন্তি। প্রীঞ্ তর্পণে কাকৌ চ ক্র্যাদিঃ প্রীঞ্ গতৌ দিবাদিঃ ধৃঞ্ কন্পনে ক্র্যাদিঃ স্বাদিশ্চ ধৃ বিধ্ননে তুদাদিঃ তুষ্ বৈক্তো দিবাদিঃ এষাং প্রীণমতীতাদি-রূপম্। ধৃঞ্ প্রীঞ্গেন বক্রবামিতি বার্জিং চক্রস্ত্রক। ধৃঞ্ প্রীণা-ত্যোন সর্ক্রশ্বা। প্রীঞ্ ধৃঞ্তোভ্যোগ্রহণং তক্র নিরন্তঃ তন্মদিহ নিরন্ধ-লন্দিশো লিপিকর এমানাদিহ লক্ষাতে।

(৪৫৭)। হ্যঃস্থানে চিন্তবিরাপেহর্থে দুষো বা ভ্রতি ণিঙি পরে।

৪৫৮। মৃগক্রীড়ায়াং রন্জো রজশ্চ। রজয়ভ়ি মৃগান্।

৪৫৯। পিতীণ্লিড়্বৰ্জ্জং হনো মাতঃ। যাতয়তি ঘাতকঃ। ইণ্লিটোস্ত। অঘানি ঘানিধীষ্ট জঘান।

এ৬০। যন্লোপে নিন্ঙামঙিৎ। নেম্ময়তি বোভুবয়তি চক্র্য়তি তাতিরয়তি নেম্যা-ঞ্চকার।

চিত্তবিরাগঃ চিত্তপ্রপ্রতিতা ছযো দৃষ ইতি পৃথক্ ক্বন্ধা চিত্তবিরাগে বা ইতি ন কৃতৎ বৈচিত্ত্যার্থম্।

- (৪৫৮)। রন্জ্রাগ ইতাস্ত গৌ পরে মৃগক্রীড়ায়াং বাচাায়াং রজা-দেশো ভবতি। রজষতীতি জনীজুষকস্কমন্জণ্ডেতি ঘটাদিঘাদ্ধুস্থঃ। ক্রীড়ডো মৃগান্ প্রযুঙ্কে ইত্যর্থঃ। অন্তত্ত্ব। বস্তুং রঞ্জাতি।
- (৪৫৯) ণিতি পরে ইণ্লিটো বর্জারতা হন্ধাতোঃ স্থানে ঘাতা-দেশো ভবতি। অধানীতি কর্মণি লুঙ্ত পদ্ধনশ্চাত্মনে সিজিতি সিট্ সচ্-সিজ্ভ্যাঞ্চ ভাবাদাবিতি ইণ্ ঘানিষীষ্ট ইতি আশীর্লিঙ্ কর্মণি সীষ্ট হন্দৃশ্-গ্রহাজস্তালিঙ্ লুঙ্ লুট্স্যেভাবকর্মণোরিণ্বেতি ইণ্ জ্ঘানেতি লিট্ অপ্ রুদ্ধির্দ্ধিক্তর্মের্থি ইতি সর্ব্র হকার্স্য ঘকারঃ। প্রক্রণনির্মাদধাত্বিহিতে ণিতি ন ভবতি। জ্ণুদ্বেহ্ণতাং ভৌণন্থঃ।
- (৪৬০)। যন্লাপে সতি ণিংঙাম্ চ অঙিবছবতি। নেশুয়তীতি
 নীঞাে যন্ল্কি দিককিঃ গুণা দিবিকিকাবিতি গুণঃ ততা পিঙ্ তস্যাঙিষাং অঙিদচ্যনেকাচোহযুক্তধাতােরিদ্ধ ইতি যকারঃ ততন্তিঙ্ শঙ্
 গুণায়াদেশে। বােভ্বয়তীতি মুদ্ধাতুরিতাাদিনা উব্। চক্রয়তীতি কঞাে
 যন্লুকি দিককিঃ কঃ ণিঙােইঙিছাদ্গুণাভাবে যবরলােহচীতি রেফঃ।
 তাতিরয়তীতি তৃ প্রবন্তরণয়ােঃ দিককিঃ ঋদদিত্যকারঃ ঋদিককে করীদীত ইতি ন প্রবর্ততে হুস্বোক্তাা দীর্ঘসাগ্রহণাৎ অয়ং দীর্ঘ: দীর্ঘাহনাগমাত
 ইতি দীর্ঘ: অঙিসাং ঝুদিরিতি ইর নেনাাঞ্চকার ইতি যন্লুকি লিট্ ণাাদেরিত্যাদিনা ঙাম্ সম্যাঙিছাৎ পূর্কবিদ্যকারঃ।

স্তে৬১ । বৃদ্ধিবাঁ। নেনায়য়ীত নেহায়তি বোভাবয়তি বোভ্বয়তি পাপাচয়তি পাপচয়তি।

৪৬২। হনো হতদতশাতাঃ। বংহতয়তি জংখতয়তি জংখাতয়তি।

८७। मन् छशारनिर्मिनारने। निन्नानांबर्य वर्डमानान्छशारनक्छत्त यन् छवछि।

৪৬৪। গুপো নিন্দায়াম্। জুগুপাতে।

⁽ ৪৬১)। ণিতীত্যস্বর্ততে যন্লোপে সতি ণিতি পরে বৃদ্ধির্বা ভবজি ণিতি বিহিতায়া এব বৃদ্ধেরয়মসূবাদঃ তেনানেকাচামনাদৌ বৃদ্ধির্ভবজি অনেকবর্ণব্যবহিতাজিজুপাস্তস্ত বৃদ্ধির্ন ভবজি। ব্যৱহিতালাভ ইজি ভাষাৎ অস্তাস্ত বৃদ্ধির্ভবতি।

⁽ ৪৬২)। যন্লোপে সতি হস্তে: স্থানে ণিতি পরে হত্যত্যাতাদেশা ভবস্তি। হস্তে: যনুলুকি সতি দিফক্তি: জপুজতেন্ডাদিনা অমুস্থার:।

⁽৪৬০)। স্বভাবাদেবানেকার্থা ধাতবা ভবস্তি। তত্র কোহপ্যর্থো-দ্যোতকেন বিনৈব প্রতীয়তে কোহপি ভোতকসন্নিধানেন যথা তিষ্ঠতের-বস্থানার্থতা ভোতকেন বিনৈব প্রতীয়তে। গমনার্থতা তু প্রশক্ত দ্যোত-কার্থন্য সন্নিধানেন যথা স্বার্থিকোহপি তরাদিঃ প্রকৃতিগতঃ প্রকর্ষমেবার্থং দ্যোতরতি তথেহাপি নিন্দানির্ভুপাদেরেবার্থঃ স্বার্থিকেন সনা দ্যোত্যতে এতদেব স্বর্ত্তিত্ব বৃত্তিক্বতোক্তং নিন্দাদাবর্থে বর্ত্তমানাদিতি ত্রেমবার্থং গ্রশো নিন্দায়ামিত্যাদিনা স্পষ্টয়তি।

⁽৪৬৪)। শুশ্ খোপনকুৎসনরোরিত্যন্ত্রাৎ নিন্দারামর্থে বর্ত্তরানিদ্বার্থাভাবাদকুন্ ভবতি। শুপ্ ঝাকুলত্বে শুপু «রক্ষণে ইত্যেত্রোনিন্দার্থাভাবাদগ্রহণম্। সনোহকার উচ্চারণার্থ:। জুগুসত ইতি শুণাদৌ চ শুহ্র্গ্রহাদ্
রিতি ত্যাদিয়াদিওভাব:। শুপে: পূর্ক্মকুদাত্তেয়াদান্ত্রনপদং পূর্ক্রদক্ত ইতি স্বাদিশ্বাধা নিন্দারামস্ক্রাপ্রথহিশ্বাৎ কেবলাদান্ত্রনপদং ন শুব্রত্যনন্তিন্

৪৬৫। তিজঃ ক্ষমায়াম।

তিতিক্ষতে।

৪৬৬। কিতঃ প্রতীকারে সংশয়ে চ। চিকিৎসতি ব্যাধিং বিচিকিৎসতি মে মনঃ।

৪৬৭। বধো বিক্লতে।

বীভৎসতে।

৪৬৮। মানো বিচারবিশেষে। শীমাংসতে।

ধানাং। যতুক্তং নৈতেভাঃ সনঃ প্রাগান্ধনেপদং পরবৈপদং বা পশ্চামঃ। নিন্দায়ামিতাস্য তৃ প্রত্যুদাক্তং গোপরতি গোপিতা গোপারিতা ইত্যাদোব-মৃত্রস্ত্রেম্পাৃহনীয়ম্।

- (৪৬৫)। ক্ষমায়ামর্থে বর্তমানান্তিজঃ সন্ ভবতি। তিতিক্ষত ইতি
 তিজ্ নিশামনে ক্ষমায়াঞ্চজোঃ ক ইতি জপ্ত কঃ পূর্ববিদান্ধনেপদঞ্চ।
 ক্ষমায়ামন্তত্র তেজনং তেজয়তি শস্ত্রম্।
- (৪৬৬)। প্রতীকারে সংশবে চার্থে বর্ত্তমানাং কিতঃ মন্ ভবতি।
 চিকিৎসতীতি কিৎ নিবাসে রোগাপনমনে চ পর্যম্পেদী হত্তে চকারোংফ্জসমুজ্যার্থঃ। তেনার্থাস্তরর্ত্তেরপি ভবতি। যথা ক্ষেত্রে জাতানি তৃণানি
 চিকিৎস্তানি বিনাশনীয়ানীতার্থঃ। প্রদারাঃ পরক্ষেত্রং ক্ষত্রিয়ঃ পারদারিকঃ
 ভব্র জাতঃ চিকিৎস্যো নিগ্রহীতব্য ইতার্থঃ। অথবা এতদপার্থদ্বয়ং প্রতীকারার্থ এবাম্প্রবিশতি অতএব স্বক্ষতা ব্যাধিপ্রতীকারার্থ ইতি নোক্তম্
 অর্থান্তরে তু সঙ্কেতয়তি নিকেতনমিত্যাদি।
- (৪৬৭)। বিরুতেহর্থে বর্ত্তমানাধ্য উত্তরে সন্ ভবৃতি। রীভংসত ইতি
 বধ্বদ্ধনে আত্মনেপদী সন্ তুর্যান্ত ইত্যাদিন। বস্ত ভঃ দিকক্তিঃ বধাদেরীদিতি
 অকারস্য ঈক্রিঃ। বক্ষ্যমাণোদাহরণেষপ্যনেনৈব ঈক্রিঃ বর্গস্তাদিরিক্ত্যাদিনা ধস্য তঃ। অস্তত্ত্ব। বৃধকঃ জন্বধোচেতি কথাদিখাদ্ধাভাবঃ।
- (৪৬৮)। বিচারবিশেষে বর্ত্তমানাৎ মান্ধাতোরুত্তরে সন্ ভবতি। দ্রব্যাগ্রহ্মদানমণি বিচার উচাতে অত আহ রিচারবিশেষ ইতি স চ্ বিচারবিশেষঃ অবস্বতভিরেকাভ্যামশেবদোষ্নিরাস্পুর্ককত্তাবপ্রমায় প্রা-

৪৬৯। দানশানোঃ স্বার্থে। দীদাংসতে শীশাংসতে।

৪৭০। তুংগভাদিচছায়াম্।

ইচ্ছায়াং গদ্যমানায়াং তুংগর্ভান্ধাতোরুত্তরে সন্ ভবতি। ভবিতু-দিচ্ছতি বুভূষতি দেবিতুং হুদূয়তি শ্রোতুং শুশ্রুষতে।

মর্ব:। মীমাংসতে ইতি মান্ পূজায়াং ভাদিরাল্মনেপদী অপদাস্তস্য শাদা-বিত্যাদিনা অনুস্থার:। মান্ পূজায়ামিতি চুরাদাবপি পঠ্যতে তস্য পরস্থৈ-পদিনো নাত্র গ্রহণমনভিধানাৎ অন্তথা মীমাংসতীত্যপি স্যাৎ তস্য তু মানয়তি মানতীতি রূপম্।

(৪৬৯)। দান্শানোঃ স্কার্থে পন্ ভবতি। বিনা দ্যোতকেন বোহর্থঃ
প্রতীয়তে স স্বার্থঃ। দীদাংসতে শীশাংসতে ইতি দান অবখণ্ডনে শান
তেজনে স্বরিতেবাহুভয়পদিনৌ তেন দীদাংসতি শীশাংসতীতাপি ভবতি।
দোহবক্ষণে শো তন্করণ ইত্যেতয়োর্ডনিটা সিদ্ধয়োর্দানশানয়োর্মামণিঙা
দানয়তি শানয়তি।

(৪৭০)। তুমন্তো গর্জো বস্য স তুংগর্জঃ অস্তর্ভ্রাৎ গর্জ ইব গর্জঃ অন্তর্ভ্রুমর্থ ইতার্থঃ। ভবিত্মিক্ষ্তীতি অর্থোপদর্শনিমিক্ষ্তীতৃ তন্ত্রণা-পরোদাহরণেষপাল্যঞ্জনীয়ন্। বুভ্রতীতি অপৃত্র্বৃতি সংস্ত্যাদিরিতি ত্যাদিরাদিওভাবঃ। হুদ্যবতীতি দিবু ক্রীড়ার্থঃ সন্ উর্লম্ভারাস্তস্যেতি বকা-রুম্যোক্যারঃ ক্রতকার্য্যো নিদস্ত ইতি দৃ ইত্যানেন বিক্ষক্তিঃ। শুক্রমত ইতি শ্রাদেঃ সক্তর্মপ্রত্যাঙ্গুল্ব ইত্যাক্সনেলম্। অতুংগর্জাহপাসনে ক্রব ইত্যান্তর্মযোগেন সন্বিধানাৎ তুংগর্জাৎ শৃণোতেঃ সন্ কিং ন ভবতীতি শক্ষানিরাসার্থমত্র শুক্রমত ইত্যান্ত্রুম্ন। কুলং পিপতিষতীত্যাদৌ অপ্রাণিনি স্থোপচারিকী ইচ্ছা স্বীকরণীয়া। সা মুমুর্যজীত্যাদৌ এবং বিধমত্ত হুর্থং যেন মর্চ্ মিক্ষ্তীত্যাশক্ষাতে। কিক্ষ মর্ণবিষয়াপি ইচ্ছা কদাপি শুবজ্যের যত উদৃশং নাম তৎ হুর্বং যেনাস্য মর্লং স্থং যদা তু তুম্প্রাক্ত এব তথা তুমোহতিব্যক্তরাৎ, তুংগর্জা নাতীতি সনোহবিষয়াধ বাক্যমের

৪৭১। অতুংগর্ভাচুপাসনে শ্রুবঃ। গুরুন্ শুশ্রুবতে।

৪৭২। সনস্তাদ্গুপাদেরের। জুগুপ্সিবতে।

৪৭৩। গামাদিঃ সনীঙাদেঃ। সনি পকে ইঙাদেঃ স্থানে গামাদি র্ভবতি। অধিজিগাংসতে।

৪৭৪। ইঙো গমৃ কৃতীঙ্ চেত্যেকে। অধিজিগমিবিতা।

- (৪৭১)। উপাসনে বাচ্যে অতুম্গর্জাৎ শূণোভে: সন্ ভবতি। গুরুন্ শুক্রমতে উপাস্ত ইতার্থ:। উপাসনার্মাভাবে তুম্গর্জাৎ ভবতি।
- (৪৭২-)। সনস্তাৎ সন্ ভবন্ গুপাদেরের ভবতি। নাক্তেজা গুপাদিব্যতিরিক্তধাত্তাঃ সনস্তেভাঃ সন্ ভবতীত্যর্থঃ। জুগুদিষত-ইতি পূর্মবদক্ত ইজায়নেপদম্। স্থন্তা। চিকীর্মিচ্ছতীতি বাক্য-মেব ভবতি।
- (৪৭৩)। অধিকিগাংসত ইতি অধিপূর্কাৎ ইঙ্ অধ্যয়নে সন্ গামা দেশে ক্তে দিককিঃ শকাদিফাদিঙভাবঃ গাড়ুমোনোহঙ্কে ইতি মস্য নঃ অপ্যান্তস্যোত্যাদিনা অমুস্বারঃ পূর্কবিদন্ত ইত্যাম্মনেশদম্।
- (৪৭৪)। ক্বতীতি বিষয়সগুমী, কৃষিবত্তে সনি পরে ইঙো গম্ভবিতি। ইঙ্চ। অধিনিগমিবিতেতি তৃঞ্পু একে এবং বদন্তি। মতান্তরে তৃ পূর্কস্ত্রেবৈর গানাদেশে ক্বতে অধিনিগাংসিতেতি। নমু ইঙ্বিধানা কিমর্থম্ দু গমাদেশে ক্বতে গমোহদাত্মনে দে ইঙ্কানেন ইঙ্ক্তিবিয়তি ভ্রাদেশস্যাপি: গমেগ্রহণমিতি ব্যাধ্যাস্যান্ত দু উচ্যতে । গমোহনাত্মনে সে ইড্যান্ত একেহনাত্মনে ইডি গমো বিশেষণা ক্বতা সংক্রিগমিতিভিত্র বৃহণ্যাদিতবক্তঃ ভক্ষতে অধিপূর্কাদিভাহণি গমাদেশে

ভবতি। ভবিত্মিছতীতি। তুংগৰ্ত্তাদিভি কিম্? কাৰ্য্যমিছতীতি। ইচ্ছায়ামিতি কিম্? কৰ্ত্তুং জাদাতি।

ষ্ট্ৰং । হনো খান্। জিলাংসভি।

৪৭৬। নশো নংশ্। নিনক্তৰতি।

৪৭৭। মস্জো মঞ্।
মিম্জকতি।

৪৭৮। সঁনেঃ স্বা'। সিসাসতি।

পূৰ্ম। তানেস্তান্ বা'।' তিতংগতি তিতাংগতি তিতনিষ্ঠি r

- (৪৭৬)। সনি পরে নশ্ অদর্শন ইতান্ত নন্শ্ ভবতি। সত্তে তু নংশ্ ইতি নির্দেশা নকারলাক্ষারং ক্ষা ক্তঃ অথবা নন্শ্ ইতি পাঠো লিপিকরপ্রমানান্ত্যাজাতঃ এবং মস্জো মঞ্জ ইত্যকাপি। নিনক্ষতীতি ল্রমান্তেত্যাদিনা শস্য বঃ ষশ্চান্ত্রপেক ইতি ষস্য কঃ উপান্তস্য বর্গ ইতি নশু ওকারঃ যন্ম।
- (৪৭৭)। সনি পরে টুমন্জো ভদ্ধাবিত্যস্য মন্জ্ ভবতি। নিমজ্জ-তীতি পূর্ব্বিং।
- (৪৭৮)। সনি পরে ষণু দান ইত্যন্ত বন্ ষণ্ সংভক্তাবিত্যসা চ সা ভবতি। সমিহিতালাভে বিপ্রকৃষ্টিং বিধিরপেক্ষত ইতি ন্তায়াৎ। সিসনিবতীতি অত ইঙা বিপ্রকৃষ্টি ছাব সাভাবো ন ভবতি। অত হি সনীবস্তর্কেত্যাদিনা রবাদিখাৎ পাক্ষিক ইঙ্।
- (৪৭৯)। সনি পরে তমু বিস্তান্থ ইত্যক্ত তান্ বা ভবতি। তিতাংস-তীতি অপদারক্তেত্যাদিনামুম্বারঃ ইঙ্পক্ষে তিতনিষ্তীতি সর্কাঃ পুর্মবং।

কতে ইঙভাবে কতে সতি অধি**জি**গংসিতেতি রূপং ভাৎ তচ্চানি**§**ম্ অতোহত্র ইঙ্বিধানম্।

⁽৪৭৫)। সনি পরে হস্তের্যান্ ভবতি।

৪৮০। দীঙো দা বা। উপদিদীয়তে উপদিদাসতে।

8৮)। (जिर्गिनिष्टि **ह**।

জিগীষতি জিগায়।

8४२। किः किर्या।

চিকীষতি চিচীষতি চিকায় চিচায়।

৪৮০। ঘণ্লুঙ্ঙেষু চাদো ঘদূর্লিটি বা । জিঘৎসতি যাসঃ অঘসৎ প্রঘসঃ জঘাস আদ।

৪৮৪। ইঙো ণিঙ্ সনি গা বা অনি চ। অধ্যাপিপয়িষতি অধিজিগাপয়িষতি অধ্যাপিপৎ অধ্যক্ষীগপৎ।

⁽৪৮•)। দীঙ্ ক্ষয় ইত্যন্ত সনি পরে দাদেশো বা ভবতি। কালাপা: সন্তাবং নিত্যমন্ত্রোদাহর্তি ন পাণিনীয়া: চাল্রান্চ। এতা-বতোভয়মতদর্শনাৎ স্ত্রকারো বিকল্প কতবান।

⁽ ৪৮১)। জি জায়ে জি জ অভিভবে ইন্সেত্রোঃ সনি লিটি চ পরে গির্ভবিত । জিগীযতীতি সন্ গ্যাদেশে ক্তে দ্বিক্তিঃ দীর্ঘসাগ্রহণাৎ জ্যাধাতোর্জীভাবে ক্তে গিন ভবতি । জিজাকুঃ জিজাঃ।

⁽৪৮২)। চিঞ্চয়ন ইত্যস্সাহানে সনি লিটি চ পরে কির্কা। ভবতি।

⁽৪৮৩)। অদ্ ভক্ষণ ইত্যস্ত স্থানে সনি পরে ঘণ্ লুঙ্ ঙেমু পরেমু চ

দসুর্ভবতি। লিটি পরে বা ভবতি। জিঘৎসতীতি সেতোহচতুদ্বিতি

সস্য ভ: অঘসদিতি >দিরাৎ পুযাদুদিতোহণ্ পরিশ্রপদ ইত্যগ্। প্রঘসইতি প্রাদেরদ ইতি ঙ: ঘসু অননে ইত্যস্ত জ্বাস। অদেস্ত—আদ
ইতি সিদ্ধে লিটি বেতি ক্লভং বৈচিত্রার্থম্। ন্যাসকার্ম্বাহ ঘসে:
প্রক্রতান্তরস্যাসর্কবিষয়তাক্রাপনার্থং লিটি বেতি বিকর্মবিধানং ভেন

দত্র লিঙ্গং নাস্তি ত্রোস্যাপ্রয়োগং। অত্রব শঙোহগঃ উণাদিকস্থ

মরপ্রতায়ন্ত চ বিধো ইঙো নিষেধে চান্ত প্রয়োগো নান্তস্য বিধো।

⁽ ३৮৪)। ইঙ্ অধ্যয়ন ইত্যশু ণিঙ্দনি অনি চ কর্তব্যে গালেশে।

8 bel इमित्र ।

শনি পারে দ্বিরুক্তেরদিন্তবতি। পিপক্ষতি।

८४७। वशास्त्रती ।

वीख्यात्। वर्षमान् मान्।

৪৮৭। উরত্বৎপবর্গযরলভৌ।

অকুরিবতি প্রবর্গরেজ পরে সনি সতি দ্বিরুক্তেরদিন্তবতি। অপীপবং পিপাবয়িষতি বিভাবয়িষ্
ি
যিযাবয়িষ্
ি রিরাবয়িষ্
ি লিলাবয়িষ্
ি জু সৌত্রো
ধাতুর্বেগার্থঃ জিজাবয়িষ্
ি ।

৪৮৮। শ্রুক্ত প্রত্তি গৈ প্রত্তি পিত্র বি । শুলাবয়িষতি শিশ্রাবয়িষতি।

বা ভবতি। অধ্যাপিপয়িষতীতি। অধিপূর্কানিঙাে নিঙ্জানেরিদা-দিতাাঝং পুঙ্সন্ সেঙ্নিঙ্ চাস্তোহজাদেরিতি পীত্যনেন বিরুক্তিঃ ইঙ্গুণায়াদেশাং। অধিজিগাপয়িষতীতি গাদেশে ক্তে পুঙ্ বিরুক্তিঃ অধ্যজীগপদিতি নিঙ্ পুঙ্লুঙ্হু অন্ বিরুক্তিঃ হ্রোহশাস্বাদেরিভি হুস্বঃ অগুরাবিত্যাদিনা দীর্ঘঃ।

(৪৮৫)। দ্বিক্ষিকসম্বন্ধী অদুণি দ্বিক্ষজিশবেনোচ্যতে। একদেশে ,সমুদায়োপচারাৎ।

(৪৮৬)। সনি পরে বধাদের্দিককেরদীন্তবতি। বধাদয়: প্রাপ্তকা:।

(- ৪৮৭)। অপীপবদিতি পূঙ্ পবনে নিঙ্বৃদ্ধিঃ শুঙ্ ছঙ্ অন্ উৎপ্রক্রত্যেঙিনো চোদন্ত ইতি উৎপ্রক্তাা দিকজিঃ। ব্রয়োগাযাদেরিতি
ক্রয়া। নন্বজাবাদিত্তে কতে দীর্ঘা। বিষাবয়িষতীতি যু মিশ্রণে রিয়াবিদিষতীতি ক শকে হুস্মোজন। দীর্ঘসাপি গ্রহণাৎ অকারষর্গং ছুদ্যাবিদ্বিষ্ঠীতি অন্ত ন ভবতি বিপ্রকৃষ্টিয়াৎ। অস্থাতি কিন্ পূ বৃভূষতি। প্রথমিষ্টাতি ইতি কিন্? জুহাবয়িষতি।

('৪৮৮)। অপ্রাপে বিভাষেয়ন্। শ্রু প্রবণে ছ জ বা পতো করে।
প্র চ্যুঙ্ পতৌ পঠ্যতে এবাং ণিঙি সনি ক্রতে বিককেকদিবা ভবতি।

৪৮৯। দাদেরজিস্ দ্বিলুক্ চ। সনি পরে দাদেরজিস্ ভবতি। বিলুক্ চ। দীঞ্দোদানাং দিংসতি দেঙ্ দিংসতে ধাধেটোঃ ধিংসতি
ভূমিঞ্ মিংসতি মীঙ্ মিংসতে মেঙ্মাঙোঃ উপমিৎসতে
মা মিংসতি।

৪৯০। রভাদেরিঃ । রভ্ আরিপ্সতে লভ্ আলিপ্সতে শক্ শিক্ষাকি পড়া পিৎসকি দন্ভ্ ধিপ্সতি-পদ্ পিৎসতি।

প্রনি সন্বভাবাৎ প্রনিদ্রবৎ অত্তর্বং। বিভিতি কিম্ ? গুলাষতে। সিনি ইতি তু স্পাঠার্থম্। নহি বিভিন্তাৎ সমনোর্গ্যক্র দিরুক্তিনিমিতং সম্ভবতি।

(৪৮৯)। দাঞ্দোদানামিতি তুদাঞ্ দানে দো অবথগনে দাশ্
দানে দেঙিতি দেঙ্ রক্ষণে ইতাস্থ তু দিংসতে ইতি পূর্মবদন্ত ইত্যাস্থানপদ্ম। সেতোহচতৃত্বি তি সম্থ তঃ দা ইত্যনেনামীয়ামেব গ্রহণং
নতু দাপলবনে দৈপ শোধনে ইত্যেতয়োর্গণেহপঠিতয়াং। ধাধেটোরিতি
তুদাঞ্ ধারণপোষণরোঃ ধেট পানে ইত্যেতয়োঃ তুমিঞ্ প্রক্ষেপণে
স্থাঞ্ ধারণপোষণরোঃ ধেট পানে ইত্যেতয়োঃ তুমিঞ্ প্রক্ষেপণে
স্থাঞ্ মীঞ্ নীঙ্ ইতি পাঠো দ্রন্থবাঃ। তেন মীঞ্ হিংসায়াং ক্র্যাদেঃ
মীঙ্ হিংসায়মিত্যক্ত দিবাদেশ্য গ্রহণম্। যুজাদেশ্ব—মী গতাবিত্যক্ত
মিমীষতীতি মেঙ্ মাজোরিতি মেঙ্ প্রশিদানে ত্বাদিঃ মাঙ্ মানে হ্রাদিদিবাদিশ্য মিংসতাতি মা মানে ইতি বিহতে ইসি সেতোহচতৃত্বি তি
স্কারক্ত তকারকরণেন প্রক্রিয়ালাব্যং ভবত্যেব। কিন্তু আপ্রোতেরীদিতি মধা তকারো মৃধস্থার্থং তথেহাপি ক্রতমিতি মন্দ্ধিয়াং সন্দেহঃ স্তাৎ।

(\$৯০)। সনি পরে রভাদেরচ্ ইর্ভবতি। দির্ক্ চ। রভ্ রাভস্তে ডুলভ্ ম: প্রাণ্ডৌ শক্ শক্তেন পত্ গতৌ দন্ভ দত্তে পদ্ গতৌ এতে রভাদয়:। ধিপ্সতীতি সম্মাপি দন্ভ্তৃণ্হোরিতি ন লুক্। তুর্যান্ত-ইত্যাদিনা দশু ধঃ পতেন্দ্ভেশ্চ সনীবস্তর্জ ইত্যাদিনা রধাদিখাদিঙ্ পাক্ষিক: ইত্রেরু শকাদিখাদিঙভাবঃ। সরিহিতালাভে বিপ্রকৃষ্টং ৪৯%। রাধো হিংসায়াম্।। প্রতিরিৎসতি।

৪৯২। আপ্রোতেরীং। ঈস্পতি।

৪৯০। দন্ভো বা । ধিপাতি ধীপাতি।

৪৯৪। জ্ঞাপের্নিঙ্লোপশ্চ।
 জ্ঞাশত।

৪৯৫। ঝধোরীর_্। ঈংসভি।

८०७। ताभार्थिनिटकात्रीयिः।

বিধিরশেকত ইতি পিপতিষতি দিদক্তিষতীতাক ইং ছিসুক্চন ভবতি বিদ্যামশিকত ইতি তু শিক্ষবিছোপাৰ্জনে ইত্যস্তাত্মনেপদিনো রূপম্।

- (৪৯১)। সনি পরে রাধ্ সাধ্ সংসিদ্ধাবিত্যক্ত হিংসায়ামর্থে বর্ত্ত-মানত অচ্ ইর্ভবিত। দ্বিলু ক্ চ। হিংসায়ামিতি কিম্ ? আরিয়াৎসতি।
 - (৪৯২)। সনি পরে আপু ব্যাপ্তাবিত্যক্ত অচ্ ঈত্তবতি। हिन् क् छ।
- (৪৯৩)। সানি পরে দন্ভোছজীয়া ভবতি। ছিলুক্ চ। এবং রাপত্রবম্।
- (৪৯৪)। জ্ঞা মারণতোষণাবলোকনেষু জ্ঞানে বেতি কটাদিঃ পিঙি পৃতি জ্ঞপীতি মির্দেশঃ তক্ত সনি পরে২চ্ ঈস্তবতি। ণিঙ্লোপো বিলুক্ চ। বদা সনীবস্তর্ধ ইত্যাদিনা পাক্ষিক ইঙ্ তদা জিজ্ঞাপয়িষতীতি রূপম্।
- (৪৯৫)। সনি পক্ষে ঋধু বৃদ্ধাবিত্যত অজীর্জবিভি। ছিনু ক্ চ। ইঙ্পক্ষে অদিধিবতি।
- (৪৯৬)। বোধার্থরোরিণ গতৌ ইক্ মরণে ইত্যেতরোঃ স্থানে সনি স্বিক্তিরতি। দ্বিন্ত্ত। ইকস্ত—অধীবিবতি। অবোধার্থরোক্ত— ক্রোধার্থেণিকোর্গন্ সনি চেতি গমাদেশে ক্লডে ক্রিকার্মিক্তি।

প্রভীষিষতি।

৪৯৭। কর্মকর্ত্তরি বা মুঠেরুর্দোৎ । মুমুক্ষতে বৎসঃ স্বয়মের মোক্ষতে।

৪৯৮। কাম্যো নাম্ন ইচ্ছায়াম্। আত্মনন্তদিচ্ছতীত্যর্থে নাম উত্তরে কার্ম্যো ভবতি। দিবমিচ্ছতি ছ্যকাম্যতি সংপু্ত্রকাম্যতি।

৪৯৯। নাসমন্তাপৈক্ষাৎ কাম্যাদিঃ। সন্তং পুত্রমিচ্ছতি।

(৪৯৭)। মৃচু মোকণ ইত্যন্ত কর্ম্মকর্ত্তরি বাচ্যে সনি পরে উদোধা ভবতি দ্বিন্ন্ চ। মুমুক্ষত ইতি কর্মকং কর্ম্মকর্তেতি কর্মবদ্ধাবাদাত্মনেপদং কর্ম্মকর্ত্তরীত্যাদিনা যুগ্ নিষেধঃ। কর্ম্মকর্ত্তরীতি কিমৃণ্ণ মুমুক্ষতি বংসং গোপঃ।

(৪৯৮)। নাকর্মণোহনেষিতৃকর্মণশ্চেতি উক্তাচ কর্মণ ইতি প্রতিবেধাৎ নাম বৎকর্ম তৎকর্ম যদি এষিতৃর্ভবতি এষিতৃসম্বন্ধি ভবতি এষিতৃরাম্বীয়ং তবজীতার্থালভাতে এতদেন স্পষ্টার্থেন বৃত্তিক্ষয়াচকার আত্মনতদিছতীতার্থ ইতি অতএব প্রতারেশৈব বিশিষ্টার্থসাভিধানাৎ কর্মাকারা অভাবে অকর্মকতা চ তবৈব ইচ্ছার্থামর্ত্তমানে বেতি ইচ্ছার্থমার্কবিহিতা ণিঙপাত্র ন ভবতি আত্মনঃ প্রকাম্যতীতি চ ন ভবতি। ছাকাম্যতীতি হলায ইতি বস্ত উঃ যবরগোহচীতি যম্ম্ আত্মনঃ সংপ্রমিচ্ছতীতার্থে সংপ্রকাম্যতি।

(৪৯৯)। অসমস্তমপেক্ষত ইতি অসমস্তাপেক্ষং তত্মারারো ন কাম্যাদির্ভবতি। সন্তং প্রমিচ্ছতীতি অত্র হি প্রশংলাংসমস্তং সন্তমিতি পদমপেক্ষতে। অসমস্তা চ যত্মারারঃ প্রতারোক্ষীইস্তেনৈব সহাবগন্তব্যা নতু পদান্তরেণ অভথা মহাশরং প্রমিচ্ছতীত্যক্ত কাম্যঃ স্তাৎ মহাশরশক্ষত সমস্ত্যাৎ উপলক্ষণমেতৎ স্থানান্তরেহপোধা ব্যবস্থা ক্ষেরা তেন কর্মণো পড়িতি গটু। অসমস্তাপেক্ষাৎ কর্মণ উত্তরার ভবতি। শিহাস্থং, কুন্তং করোতীতি। ৫০০। নাকর্মণোহনেষিত্**রুর্মণন্চ।** গাত্রেণেষ্ট্রতি রাজ্ঞঃ পুত্রমিষ্ট্রতি।

৫०)। खेळांक कर्माणः।

ইউঃ পুত্রঃ ইষ্যতে পুত্রঃ। ইত্যেবং সূত্রার্থো দর্শিতঃ।

৫০২। স্থুল্যাচারে চামস্তাব্যয়াদীয়ঃ। আত্মনস্তদিচ্ছতি ততুল্যমাচরতি চার্থেহমন্তব্যয়াদাম উত্তরে সয়ো-ভবর্তি। পুত্রমিচ্ছতি পুত্রীয়তি মাতরমিবাচরতি মহাতে বা মাত্রীয়তি পরস্ত্রিয়ম্।

⁽৫০০)। ন কর্ম অকর্ম বরাম কর্ম ন ভবতি। কর্মাপি বদেবিতৃঃ
সংক্ষিন ভবতি ততঃ কাম্যাদিন ভবতি। দাজেপেচ্ছতীকি দাজেপেডি
করণং নতু কর্ম রাজ্ঞঃ পুত্রমিচ্ছতি পুত্রমিতি কর্মণ এবিতৃঃ সংক্ষি কিন্ত রাজ্ঞঃ। নমু যথা স্প্রানেবিতৃকর্মতা বিদ্যুক্তে তথা অসমস্তাপেক্ষতা চ যত্র পুত্রশক্ষোহসমস্তঃ রাজানমপেক্ষতে। অভ্যোচ্যতে। বদা অর্থাৎ প্রকরণামা প্রশক্ষাগ্রসম্বন্ধঃ প্রতীয়তে তদা পুত্রমক্ষতীতি বহুদা-ভবতীতি কাম্যঃ প্রাপ্রোতি। বৃত্তিকতা তুরাজ্ঞঃ পুত্রমিচ্ছতীতি বহুদা-হতং তৎ পুত্রশক্ষাগ্রসম্বন্ধয়োজনার্থন্। মদা রাজসম্বন্ধিনি পুত্রে পুত্রমিচ্ছতীতি বাকাং ক্রিয়তে তদা পুত্রকাম্যভীতি ন ভবতীত্যভিঞারঃ।

⁽৫০১)। উজাদপ্তি কর্মণ: কাম্যোন ত্বতি। ইষ্ট: পুত্রঃ ইষ্যতে পুত্র ইত্যকর্মণি বিহিতেন জেন তিঙা চ কর্মোক্তমেবং স্ত্রার্থো দর্শিত:। অনেন প্রকারেণ প্রতিরেধবিধানব্যবস্থিতঃ স্ক্রার্থ: প্রথমং দর্শিত ইত্যর্থঃ।

⁽৫-২)। মাদৃশ্রথবিষরে বিহিতঃ কাম্যঃ তাদৃশ্রেব ঈরো তবতীতি চকারেন স্থচিক্তম্। নাম ঈরো তবতি তুল্যাচারে চ মা তুল্যাচারতা তবতী নাম এব যুজাতে অত আহ তত্ত্বামাচরতীতি বন্ধ নামজল্যমাচরতি কমপি তন্মানাম ঈরো তবতীতি লভ্যতে। ঈম্প্রাকার উচ্চারণার্থঃ। প্রীয়তীতি অন্নোরিত্যকারল্ক্রী। আঙ্পুর্ব-চরির্মননে বর্ত্তে। অত-এবাহ মাত্রীয়তীতি মাতরমিবাচরতি মন্ততে বেতি সামান্তকর্মনো মাত্র-রম্বর্জাবেহপি বিশেষকর্মনোহনতিহিত্যাৎ পর্রাম্বর্মনিতি কর্মপ্রাম্বার্মঃ।

৫०७। अधिकत्रगांक।

প্রাসাদ ইবাচরতি প্রাসাদীয়তি যঃ কুট্যাম্। সমস্তাক্যাদিতি কিম্ ? কিমিচ্ছতি স্বরিচ্ছতি।

৫০৪। 'নমশঃ প্রণামে। নমশুভি দেবম।

৫০৫। বরিবদঃ পরিচর্য্যায়াস্। বরিবস্থতি গুরুন্।

৫০৬। তপসস্তচ্চরণে। তপস্ততি ভাপসঃ।

৫০৭। চিত্রাদান্মনে চাশ্চর্য্যকরণে। চিত্রীয়তে।

৫০৮। ঋতাদ্য়ণায়াম্। শুতীয়তে।

- (৫,৪)। নমন্শকাৎ প্রণামে বাচ্যে ঈরো ভবতি। নমস্ভীতি হলিজু ভ্যামিত্যাদিনা ঈরস্তাদিলোপঃ। দেবমিত্যত্র উপপদ্বিভক্তেঃ কারকবিভক্তির্ণরীয়দীতি নমঃ স্বস্তি ইত্যাদিনা প্রাপ্তাঞ্চতুর্থীৎ বাধিত্বা দিতীয়া।
- (৫০৫)। বরিবস্শক্ষাৎ পরিচর্য্যারাং বাচ্যারামীয়ো ভবভি। বরি-বক্ততি গুরুনিতি শুক্সমত ইতার্থঃ।
- (৫০৬)। তৃপস্শকাবিজরণে রাচ্যে ঈরো ভ্বতি। তপশুতীতি তপশ্ববতীভার্থঃ।
 - (৫০१)। চিত্রশব্দাৎ আশ্চর্যাকরণে ঈরো ভবতি। আত্মনেপদ্ধ।
 - (৫০৮)। শতশ্বাৎ মুধায়াং বাচ্যারামীয়ো ভবন্তি। আত্মনেপদঞ্চ।

⁽৫০৩)। অধিকরণাচ্চ তত্ত্ব্যমাচরতীতার্থে ইরো ভবতি। যথাপি পূর্ব্বেণাত্র ইয়ঃ সিদ্ধাত্যেব কিশ্ব যক্ত তুল্যমাচরণং তত্ত্ব সপ্তমী ন স্থাৎ।

- ৫০৯। যক্যচতুর পি বা লুক্ চ।
 শাতীয়াতৈ শতাতে শতীয়তা শতিতা।
- ৫১০। নিরস্চাতিত্ঞায়ামীয়ি। দ্ধিস্থতি দ্ধাস্তি।
- ৫১১। সিঃ ক্ষীরলবণাভ্যাম্। ক্ষীরস্ততি লবণস্ততি।
- (৫০৯)। যকি বিষয়ে লট্টলোট্লঙ্ বিধ্যাদিলিঙ্ ব্যতিরিক্তবিষয়েংপি ঋতাদিহিতক্ষেয়ো লুখা ভবতি। ঈরোংব প্রাপ্ত এব চকারস্ত ঋতাদিত্যস্থাস্কর্মপার্থ:। তেনাগুত্র বিহিতস্তেরো লুখা ভবতীতি শঙ্কা নিরস্তা ভবতীতি। ঋতীয়াত ইতি ভাবে যক্ ঋতীয়িতেতি তৃঙা লুটা বা সাধনীয়ম
 ইঙচতুর্ষিত্যাদিনা ইঙ্ দীর্ঘোপাস্থেক্তাদিনা পিবাদিখার গুণ:। অর্ত্তিতেতি
 গুণেন ঋকারস্থ অব্।
- (৫১০)। নাম আত্মনস্তদিছ্কতীতার্থে ইচ্ছামাত্রে বিহিত ঈয়:। স্বাদা অতিত্ঞায়াং বিধীয়তে তিমিনীয়ি পরে নাম উত্তরে সির্ভবতি। অস্চ। চকারো বিকলার্থ:। অর্থাৎ নাম ইহারুর্ত্তং তৎষষ্ঠাস্তমবগস্তব্যং তেন প্রচান নামসম্বন্ধী ভবত: ন প্রত্যয়মম্বন্ধী অতএব অপ্রত্যয়াবয়বস্ত চেতি প্রতিষেধাৎ দ্বিস্ততীত্যর বহুং ন ভবতীতি এতৎ সিরস চাতিতৃঞ্য়ায়ীয়ীতি লক্ষণবিধানসামর্থাাদেবাবগস্তব্যম্। যদি প্রত্যয়াবয়বতা অনয়েয়ভীয়া স্থাৎ তদা অক্সন্তাবতিত্ঞায়ামিত্যেবং লক্ষণং কুর্যাৎ। নাম উত্তরে অতিতৃঞ্য়ায়ামিত্রতা দ্বাস্ত্রতা প্রত্যয়ৌ ভবত:। এবং সতি ঈয়ীতি ন কৃতং স্থাৎ দ্বিস্ততি দ্বাস্ত্রতীতি অতিতৃঞ্য়া অভ্যবজিহীর্যা লক্ষ্যতে নির্বাহার্থমতিতৃঞ্চায়াম্বন্ধীয়তীতি ভবতীতি ভাষাটীকা। তুলাচারার্থবিহিতে ঈয়ি অতিতৃঞ্চায়াম্মিতি বিশেষণং ন সঙ্গছ ত ইতি ন তদ্গাছম্।
- (৫১১)। ক্ষীরলবণাভ্যামীয়ি পরে অতিতৃষ্ণায়াং গম্মমানায়াং সির্ভবতি। পূর্ব্বেণ সিদ্ধে নিয়মার্থং বচনন্ অকারাস্তেমু মধ্যেষু এজাভ্যাং সিবেব ভবতি নাসিতি। কশ্চিদাই ক্ষীরলবণাভ্যামিত্যকারাস্তোপলক্ষণমূ অকারাস্তাৎ সিরেব নাসিতি।

- ৫১২। ব্যাশাভ্যাং মৈথুনে। ব্যশব্দোহত্র শুক্রলবচনঃ। ব্যস্ততি নারী। অশ্বস্ততি বড়বা অশ্বশব্দোহত্র পুংজাতিবচন ইতি কজ্জটঃ।
- ৫১৩। উদকস্যোদন্ পিপাসায়াম্। উদন্ততি জলং উদন্ততি ক্ষীরম্।
- ৫১৪। ধনাশনাভ্যামীদা তৃষ্ণাবুভূক্ষয়োঃ। ধনায়তি ধনম্। "অর্থিতস্ত্ত ন মহান্ সমীহতে জীবিতুং কিমু ধনং ধনায়িতুম্" ইতি ভারবিঃ।
- (৫১২)। ব্যাধাত্যামীয়ি পরে মৈগুনে বিষয়ে অতিকৃষ্ণায়ামর্থে সিভবতি। বৃষশুতি নারীতি শুক্রলং পুরুষমিচ্ছতীত্যর্থঃ। অতএব নারীতি পদম্পন্তস্তম্ এতচে লক্ষণং সী বৃষশুস্তী মহোক্ষং গৌবিবাগমাদিতি ভটিপ্রয়োগদর্শনাৎ বৃত্তিকৃতা ব্যাল্যাতম্। অধস্ততি বড়বেতি অতিকৃষ্ণায়াং হয়মিচ্ছতীত্যর্থঃ অধশক্ষেন চতুপ্পাজ্জাতিবশৈষ উক্তঃ বড়বাপদোপাদানাৎ বৃত্তিকৃতোহভীষ্টমেতছনাহরণং বামনতাগর্ভিকারাভ্যামপি দর্শিতম্ অধশক্ষোহত্র পুংজাতিবচন ইতি কজ্জট ইতি মতান্তরদর্শনম্। শশর্ষাধ্যাতিলক্ষণঞ্চ স্বরশাস্ত্রেপু প্রসিদ্ধের্য অতিকৃষ্ণায়াং মৈগুন্নমাত্রেছায়াই অধ্যতীত্যপি কেষাঞ্চিন্মতং তথাচ রবিরপহয়ানখ্যন্তরীতি শীহর্ষঃ।
- (৫১৩)। পিপাসায়ামর্থে ঈরি পরে উদকস্থোননাদেশো ভবতি। উদয়তীতি নকারবিধানদামর্থ্যাৎ অল্লোরিতি নকারলোপো ন ভবতি। তাক্তপ্রকৃতিপ্রত্যয়ার্থবিভাগোহরং পিপাসাবচনঃ। স্মতএব জলমিতি ক্ষীরমিতি কর্ম্মপদোপাদানং কৃতম্। অন্তত্ত—উদক্ষিচ্ছতি উদ-কীয়তি।
- (৫১৪)। তৃষ্ণারাং বুভুষ্ণারাঞ্চ বাচ্যারাং ধনাশনেত্যেতাভ্যামৃত্তরেম্ম ঈর্ম্ম ঈদাকারো ভবতি। ধনারতি অভিকাজ্ফাং করোতীত্যর্থ:।
 অতএব ধনমিতি কর্ম্মপদমত্রোপাদীরতে। অন্তএ। ধনীর্তি ধনমিচ্ছতীতি কর্ম্মপদম্বা ইচ্ছতিক্রিরবাক ধনীর্তীত্যম্পার্থ:। স্কতএর

৫১৫। তিঙপ্তিঙা সমাসঃ ক্রিয়াসাতত্যে ততন্তদি-স্থায়াম্। অশামি পিবামীয়তি।

৫১৬। কর্ত্ত্রায়ঃ স্ত্রী পুংবদা লুক্ চা।
তুল্যাচারে কর্ত্ত্রাম্ন উত্তরে আয়ো ভবতি। স্ত্রীলিঙ্গং পুংবচ্চ।
আয়ো বা লুক্ চা অশ্ব ইবাচরতি চেফতে বা অশ্বায়তে
রিপুয়তে ভিষজ্যতে শুনীব শায়তে নদীব মদায়তে।

নাত্র পৃথকশোজং অন্নর্শনায়তি বৃভূক্ষিতঃ অন্নং ভোজ মিছতীত্যর্থঃ।
বৃভূক্ষায়া অন্তর্ত্ত অশনীয়তি দানায় অশনমিছতি দাভূমিত্যর্থঃ। নামকরো বিহিতঃ কথম নামিপিবামীয়তীতাত্ত্ব তিওস্তাদ্ভবতু। তিওস্তাদিতরস্য
মামতাং অত আহ।

- (৫১৫)। তিঁওস্তিঙা সমাসঃ ক্রিয়াসাত্তা ইতি। ক্রিয়াসাত্তাহর্থে তিঙ্গুল সহ তিঙ্গুল সমাসে দ্বান্দেরং সমাসে চ সতি পদাস্তর্বাৎ নামৈত্ব তিঙ্গুল তু অস্য সমাসে গুণীভূলা তুত্তপিচ্ছায়ামশ্রমিপিবামীয়তীতি অতো হেতোস্তদিচ্ছায়ামর্থে অগ্রামিপিবামীয়তীত্যবিক্রমিত্যভিপ্রায়ঃ। অগ্রামি পিবামাতি যতাং ক্রিয়ায়াং সতত্মভিধীয়তে সা ক্রিয়া অশ্রামিপিবানীতি তিঙ্গিঙা ক্রিয়াসাত্র ইতি ময়্বব্যংসকাদিবাৎ সমাসঃ তামিচ্ছেতীত্যর্থে স্বয়ঃ স্কারলুক্ সনাণ্দার্য ইতি দার্যঃ।
- (৫১৬)। অনাচন্দিই: পুংবদ্ধাবো বিধীর্মতে আঙ্পুর্বাণ্ডরিরত্র চেষ্টার্মস্তাকর্মকর্মাৎ কর্মানুপস্থাসঃ অত্র তু চেষ্টার্যো গৃহীতঃ। অতএবা-কর্মকোনাহরণমুপস্থাসং চেষ্টত ইত্যর্থ:—ব্যাকারঃ ক্লতঃ। অস্বারত ইত্যাদৌ কর্ত্যান্থলান্তভিদ্বনায়ামিত্যান্থনেপদম্ অন্নোরিত্যকারসূক্। রিপুয়ত হতি হলিজ্ভ্যামিত্যাদিনা আকারসুক্ সনীণ্দীর্ঘ ইতি উকারস্থ দীর্ঘ: গুনীবেতি খন্শকাৎ ঝর্ছনিদিত্যাদিনা ঈকারঃ বউচ্ছা-দেরিত্যাদিনা বকারস্তোকারঃ তত্ত্ব আমি ক্লতে প্রবদ্ধান্দীপ্রত্যয়-নিবৃত্তিঃ—জাতিবাচকে হপ্যেত্মিন্ শব্দে ন জাতিনিবন্ধন ঈপ্রতায় ইতি জাতিশ্বেতি প্রবদ্ধাবনিষ্বেধা ন ভবতি। ক্লিমিন্তাপার ইত্যাদিনা উকারস্থ নিবৃত্তিঃ নকারলুক্।

৫১৭। অল্পুগ্বজ্জ নায়লোপে তমিমিত্তকার্য্য ।
অখতি নদয়তি স্তর্যতি খনতি শুনয়তি মালাতি।

৫১৮। সমাসেহপুংবদ্ধাবস্থা পুংবন্ধ স্থাৎ। তেন নিতাং কঠীয়তে।

৫১৯। হল্পরস্থাশঙ্কি লুখেয়শ্চ। ভিষজয়তি ভিষজ্যয়তি ভিষজ্ঞিতা ভিষজ্যিতা:।

৫২০। কণ্ড্ৰাদিযস্থ বেত্যেকে। ভিষজিতা ভিষজ্যিতা।

(৫১৭।৫১৮)। আর্লোশে সতি অকারলোপং বর্জয়িয়া আয়্নিমিত্তং কার্যাং ন ভবতি। ধাতৃসংজ্ঞা তু আয়্বিধানানস্তর্নেব করণীয়া পশ্চালায়্লুক্। তেন ধাতৃসংজ্ঞায়াং আয়্লোপে সতি তরিমিত্তকার্যাং ন ভবতি। লুপ্তঞালুপ্তবৃদিতি সর্ব্বকার্য্যপ্রাপ্তথাবারপ্রাপ্তৌ বা ব্যবস্থার্থার কচন্দ্। অশ্বতীতি আয়্লোপে সতি আয়্নেপদং ন ভবতি অয়ুগ্ভব-ত্যেব তিঙ্ শঙ্। ভাবে তু অশ্বাতে। শুনয়তীতি শুনীশন্ধায়ায়্লুকি কতে পুংবছাবো ন ভবতি শ্বনতীতি নলোপো ন ভবতি। অত্র হ্রশ্বোক্ত্যা দীর্ঘস্তাগ্রহণং তেন মালাতীতি আয়ুয় ভবতি। আয়্লোপে বিহিতোহয়ার ক্ বন্বিধাবল্পাবছবতি। অত একাচ্ছা লাবাদ্বোনিভ্য আয়্লুকি ন যন্। অত এব চারফালসিদ্ধিমায়্লুঙ্ মাত্রেণ ন কতবান্। যাগালতিদ্বিত্তিকবর্জ্জং স্থানাস্তরোক্তস্তাপি পুংবছাবস্থ নিষেধপ্রকরণমিদ্মিতি সম্মাসপাদে বক্ষাতি তমেবার্থাং ব্যাকরোভি সমাসেহপুংবঙ্ডাবস্থ পুংবয় স্থাদিতি তঞ্চ তত্রিব ব্যথাস্থামঃ।

(৫১৯)। হল: পরো হল্পর: হল্পরস্ত অশন্তি পরে ঈয় আয়শ্চ

দুখা ভবতি। ভিষজয়তীতি ঈয় আয়ো বা ঈকারাকারভোলুক্ ণিঙ্

একদেশবিক্বতস্যানভাবন্ধাৎ যলুক্ ভিষজয়তীতি ভিষজমিচ্ছতি ভিষজ ইবাচর

তীতি ঈয়ে আয়েহিণি ক্বতে এতদেবোদাহরশং কর্ত্রপ্রিয়াফ ল ণিঙো
হবুধাদেকিত্যনেনায়নেপদম্ অকর্ত্রপ্রিয়াফলে পরবৈপদমেব ভবতি।

অশন্তীতি কিম্পু ভিষজ্যতি।

(৫২০)। কণ্ডাদি যস্য বেত্যেক ইতি। কণ্ড্ঞাদের্থ ইভি

৫২)। গল্ ভাদেরায়্লোপেইপ্যাত্মনে চ।
অবগল্ভিতে অবগল্ভাঞ্জে ক্লীবতে হোড়তে। খাসঃ কৈরবকোরকীয়তি মুখং তন্তাঃ সরোজীয়তীত্যাদয়োইপশব্দা দৃশ্যস্থ
ইতি পশুপতিঃ।

বিহিত্স্য ধকারস্ত হল্পরস্তাশঙি পরে লুখা ভবতি। ভিষণিতি কণ্ট্যাদী পঠাছত পুত্রকামিষ্যতীত্যাদৌ কাম্যুষকারস্তাপি লুক্ স্তাসক্তা উদাহতঃ স ইহ নেষ্টো ভাষ্যবিরোধাৎ।

(৫২১)। অনুগর্জনিত্যাদিনা প্রতিষেধাৎ আত্মনেপদাপ্রাপ্তৌ তদর্থং বচনম্। গল্ভানের মি আয়্লোপেহপি কতে আত্মনেপদং ভবতি। অপি-শব্দো মন্দধিয়াং শকানিরাসার্থ: আয়্লোপে আত্মনেপদং ভবতি অলোপে তু আবানপদং ন ভবতীতি শক্ষা স্থাৎ অতএবাপীতি হতে রুতম্। গল্ভ্ ধাষ্ট্যে ক্লীবৃ ধাষ্ট্যে হোড় অনাদরে এতে আত্মনেপদিনঃ এবেবাবগলত ইত্যাদি ভবিষ্যতি। অবগল্ভাদিশব্দেত্যস্ত আয়্প্রত্যয়েন অবগল্ভায়ও ইত্যাদি ভবিষ্ঠি। আয়্**লোপপক্ত অ**বগল্ভ**ীত্যাদিপ্র**য়োগ**ন্তানভিশ**-নানেব ন ভবিষ্যতি কিমনেন যোগেন এতদর্থমুদাহরতি অবগল্ভাঞ্চক্রে ইতি। নহি গলভাদিধাতুভো ভাম্ সম্ভবতি আফ্লোপে তু রুতে গাদেলিভ্ঙাম কভুন্তারপ্রােগণেতি ভাদ্ভবতােব। অবগণ্ভাঞ্জ ইতি ভামি ক্তে ক্লঞারপ্রয়োগ ইতি। ন ভূরস্তেঙ্গাম্বদাত্মনে কর্তরি ভূবশ্চেতি ভাঁম্বদতিদে-শাং লিড়া মনেপদম্। শুর্কাদিহ লস্তাদদীপাদেরিত্যতো গল্ভাদিধাতুমপ্যেব অবগল্ভামিত্যাদিদিদ্ধৌ অবগল্ভাঞ্কারেত্যপি স্থাৎ। এতচ্চ ন ত্রিমূনি-সম্মতম । খাসঃ কৈরবকোরকীয় তীত্যাদৌ খাসঃ কৈরবকোরক ইব চেষ্টত-ইত্যর্থঃ। এবঞ্চ সতি কর্ত্ত্রিত্যাদিনা আয়ঃ প্রাপ্নোতীত্যভিপ্রায়ঃ। নুষু অ ইবাচরতি ইতি অশব্দাৎ বিষ্ণুবাচিনঃ আয়ি ক্বতে তল্লু কি চ অলু থৰ্জমি-ত্যাদিনা ব্যবস্থয়া অঞ্চারলুক্ প্রাপ্নোতি ত্রুৎ কম্মান্ন ভবতীতি চিস্তাম্। ন হি সাধ্যবিঘাতায় সাধন প্রযুক্তিবিধীয়তে ইত্যত্র প্রত্যম্বস্ত প্রক্তেশ্চ লোপে সাধাবিঘাত এব স্থাং তত্মালকণপ্রাপ্তোহপি প্রক্ততের্লেপঃ প্রথমং ন কর-শীর:। ততশ্চ তিভি শভি চ কতে বিধেয়ং তে**ন অতীতি রূপং ভবতি**।

८२२। असारमञ्जूबकरत्नान्त्रार्टा।

তৎকরোত্যাদাবর্থে শব্দাদেরত্তরে আয়ো ভবতি। শব্দং করোতি শব্দায়তে। শব্দয়তীতি তু শব্দশব্দক্রিয়ায়ামিত্যস্থ চৌরাদিকস্থ রূপম্। বৈরয়তীত্যাদি সাধিবতি কশ্চিৎ। শব্দ বৈর কলহ অন্ত কল্প মেঘ স্থাদিন ভুর্দিন নীহার অটা অট্রা কোটা শীকা টীকা পোটা মোটা প্লুষ্টা প্রভৃত্যঃ।

৫২৩। আত্মনঃ হথাদেরমুভবে।

স্থমসুভবতি স্থায়তে। স্থ চুষ্থ করণ কৃপণ ভৃপ্ত অলীক আত্র সোঢ় কৃচ্ছু অংশ প্রতীপ।

৫২৪। বাঙ্গাদেরুদ্বমনে।

বাষ্পমুদ্দাতি বাষ্পায়তে। বাঙ্গী উন্নত্কেন ধূম।

৫২৫। কন্টায় পাপকৰ্মণে ক্ৰামতি।

কফায়তে ক্রামতীত্যস্ত প্রবর্ত্ত ইত্যর্থঃ। এবং

⁽৫২২)। নামস্তংকরোত্যাদাবিত্যানিনা প্রাপ্তস্থ নিঙাহয়মপবাদঃ।
অতএবাহ শব্দপ্রতীতি তু শব্দ শব্দক্রিয়ায়ামিতান্ত চৌরাদিকন্ত রূপমিতি
চুরাদিক্ষক ণিঙ্। বৈরম্পতীত্যাদি সাধ্বিতি কশ্চিদিতানেন স্ফিতং
কচিনপ্রাাদবিষয়েহপ্যংসর্গোহভিনিবিশত ইতি।

⁽৫২৩)। আয়নঃ স্থাদেরস্থাবেরস্থাবের থাদেরত্বের আয়ে ভবতি। আয়ন ইতি কিম্? স্থমস্থাতি প্রদাধকো দেবত্ত। পরস্থাতা পার্ম্থালার মানিকোহস্তবো বিদ্যত এবেতি প্রাপ্তিঃ। স্থাত্ব থককণক্রপণাস্থালীকামদাত্বজ্ঞান অংশপ্রতীপদহিতা একাদশ বৈ স্থাদয়ো গদিতাঃ।

⁽৫২৪)। বাশাদেকত্তরে উদ্মনেহর্থে আয়ো ভবতি। ধূমস্ত পাঠোহত্র গণে বহুনামসম্মতোহপি শিষ্টপ্রয়োগদর্শনাৎ কৃতঃ। তথাচ, ধূশারস্ত ইবালিটিঃ প্রজলম্ভীৰ সংহতাঃ।

⁽ ६२৫)। ক' হাতে তদর্থানিতি চতুর্গী কণ্টনিমিতায় পাপকর্দ্রণে

মন্ত্রীয়তে কক্ষায়তে গহনায়তে ক্ষচ্ছু য়ৈতে। অপাপকর্মণে তু। ক্ষটায় তপদে ক্রামতি।

৫২৬। শীস্রাদেরভূততন্তাবে।

অশীত্রং শীত্রং শুবতি শীত্রায়তে। শীত্র ভূশ চপল উন্মনস্ স্থমনস্ চুর্মনস্ অভিমনস্ উৎস্থক বৃহৎ বর্চচস্ ওজস্ শুচি বেহৎ পণ্ডিত শশ্বৎ প্রতীপ লোহিত বর্মন্ নিদ্রা করুণা কুপা নীল মন্ত্র মন্দ ফেন হরিত ভদ্রেত্যাদি।

৫২৭। অব্যক্তশব্দাকুকরণে। পটপটায়তে।

ক্রামতি প্রবর্ত্ত ইত্যন্মিরর্থে কন্ট্রশক্ষাদায়ে। ভবতি। কন্টায়ত ইতি জন্মা-স্তরকষ্টনিমিন্তায় পাপকর্মণে প্রবর্ত্ত ইত্যর্থঃ। এবং মন্ত্রায়ত ইত্যাদি। এব-মিত্যনেন পূর্ব্বার্থ এব বিধানমিতি স্টিতম্। মন্ত্রকক্ষগছনক্কছে ভাশ্চ কন্ট-নিমিন্তায় পাপকর্মণে প্রবর্ত্ত ইত্যান্মির্যেথ আয়ো ভবতি।

(৫২৬)। শীঘাদিগণপঠিতাহতরে অভ্ততভাবেহর্থে আয়ো ভবতি। অভ্তত্তভাবং অভ্ততভাবং অভতভাবের অভ্ততভাবের পাঠ উপদর্গান্তরনিবৃত্তার্থং। অভ্যথা উন্মনায়েতাত্র দোপদর্গভায়ি ক্রতে ধাম্বরয়বস্থা সমাদাভাবাৎ যাহ ন ভাবে। উদমনায়ত ইতাত্র মনস্পলাৎ পূর্বমিঙ্ ন ভাবে। অন্মিন্ গণে যে লোহিতাদয়ং শলাং পঠান্তে তেবাং শলাম্বরগলোহিতাদ্যোরায়ইতি বিক্রেরনাম্মনেপদং লোহিতায়তি লোহিতায়তে অত্র গণে যে নিজাদয়ং শলাং পঠান্তে তে যভাপি ধর্মবিচনান্তথাপ্যত্র শলশক্তিশ্বভাবাত্রপচারাৎ তম্বতি জ্বের বর্ত্তন্তে নিজায়তে অনিজাবান্ নিলাবান্ ভবতীত্যর্থং। অভ্ততভাব ত্রব যদ। ক্রভ্রায়প্রয়োগং তদা চিবুঃ শীঘীভবতি। চ্যুন্তাদায়ো ন ভবতি। তম্তা শকান্তর্বাৎ চিনাক্রমান্তর ।

(৫২৭)। অব্যক্তশকামুকরণে নতি তদাচকানাম উত্তরে আয়ো-

৫২৮। রোমস্থাদ্ধসুচলনে। রোমস্থায়তে গৌঃ উদগীর্য্য চর্ববয়তীত্যর্থ:।

৫२३। र्शनिङ्ग्राभोशात्यातात्मः।

হল ইচশ্চোত্তরয়োরীয়ায়োরাদেলু গ্রুবতি। মরুত্যতি মরুত্যতে বিষম্ভতি বিষম্ভতে প্রার্ষ্যতি প্রার্ষ্যতে। শরদি প্রার্ষায়তে ইতি তু প্রার্ষায়তে আগচ্ছতীত্যর্থঃ। অগ্নীয়তে পট্যতে পিত্রীয়তে তেয়তি রৈয়তি।

ভবতি। পটপটায়ত ইতি পটৎ করো হীত্যায়ি ক্বতে তলুগ্নিত্যং দিশ্চায়া-দাবিতি ভকারলুক্ দিকক্তিশ্চ শব্দানুকরণ ইত্যাদিনা আত্মনেপদম্। অব্যক্ত ইতি কিম্ পূ ব্যক্তশব্দানুকরণে মাভূৎ। দৃশৎকরোতি যেষাং লোকে ব্যক্ত-বাচ্যবাচকদম্বৰুপ্রতীতিন্তে ব্যক্তশব্দাঃ

ডিচেতি বক্ত ব্যম্। অব্যক্তশন্ধান্ত করণে বিহিত আয়ো ডিচ্চ ভবতি।
পটপটায়তে মরুনারায়তে। নৈকাচ ইতৌ চেতি লক্ষণং লিপিকবশ্রমাদাং পতিতম্। অব্যক্তশন্ধান্তকরণে একাচ উত্তরে ইতৌ পরে চ
শারো ন ভবতি। ইতৌ চেতি কৃতং অনেকাঞ্র্যং স্থাতি করোতি ঘটদিতি করোতি।

(৫২৮,)। রোমস্থশকাত্ত্তরে হসুচলনে বিষয়ে আয়ো ভবতি। হসুচলন ইতি কিম্ ? কীটো রোমস্থং বর্ত্তয়তি উদ্গীর্ণং বহিনির্গতং অব-গীর্ণং বা পৃষ্ঠস্তনির্গতং রোমস্থাখ্যং দ্রব্যং বর্ত্তয়তি গুড়িকাং করোতীত্যর্থঃ।

(৫২৯)। প্রার্বায়ত ইতি অয়গতৌ আঙপূর্ব ইতি ইচ্ছতি ভাগুরি-রস্তমকারং প্রার্ডু শিকশবদাং দরদন্চতি আকারেণ প্রার্বারত ইতি সিদ্ধান্তা-স্তরমন্তে বদস্তি। তথাচ, কালঃ প্রভাতং শরদা প্রার্বাচ বনাগম ইতি ক্রিকাগুশেষঃ। উশিগিতি বশ কান্তৌ পণাদেরিজিতি ইজ্ অয়ীয়ত ইতি বে ইতাস্তান্তরতৌ সনীণ্ দীর্ঘ ইতি দীর্ঘঃ। পিত্রীয়ত ইতি রিদ্তো যে চেতি রিকারঃ পূর্ববদ্ধীর্ঘঃ। ইজ্ গ্রহণসামর্থ্যাদেব প্রথমমত্র সন্ধিকার্যোণ ন ভবিতবাং যদীহ স্তাৎ তদা ইজ্ গ্রহণমনর্থকং স্তাৎ। হলদ্বারেণেব লোপসিকেঃ এবঞ্চ সতি গ্রাতি নাব্যতি ইতি ন সিদ্ধাতীত্যত আছে।

৫৩০। ওদোতোঃ সত্যবাদেশে। গব্যতি নীব্যতি।

৫०५। जरमाः।

স্বয়ায়োঃ পরয়োরকারনকারয়োলু গ্ভবতি। র্ঘটায়তি **মালীয়তি** রাজীয়তি রাজায়তে।

৫৩২। ওজো২প্সরসোরায়ি সম্<mark>ত।</mark> ওজীয়তে অপ্সরায়তে।

(৫৩২)। ওজদ্ অপরদ্ এতজারায়ি পরে সকারস্থ লুগ্ভবতি। সন্নিহিভালাভে বিপ্রকৃষ্টং বিধিরপেক্ষাতে ইতি ন্যায়াৎ। অপরসিভাস্য পকারমুক্তসকারস্য লুক্ ন। আয়ীতি কিম্ ? ওল্পসাতি। ওজোঞ্জার-দোরিতি কিম্ ? বিদ্পস্ততে।

⁽৫০০)। ওকারস্থ ঔকারস্থ চ অবাবাদেশে ক্লতে ইয়ায়োরাদে-পুর্গ্ভবতি।

⁽৫৩১)। ক্রমং ক্রমবতামঙ্গমিতি ধথাক্রমব্যবন্থা পূর্ব্বোগেহব্রাপি নাঙ্গীকতা লক্ষ্যদর্শনবিরোধাৎ। , অথবা বহুলবচনাদিতি কিমপি যত্নাস্তর্মান্তেরম্। আয়ি পরে অকারলোপস্থ প্রয়োজনং নাস্তি। দীর্ঘবিধানেনাপি প্রয়োগমিদ্ধেঃ এতাবতা তর্মোদান্ত্রমত্র ব্রুয়োজ্যা দীর্ঘস্থাপি গ্রহণমিতি স্চয়িত্বং মালীয়তীত্যুদান্তরম্। নমু ঘটীয়তীত্যক্রাকারলোপে রাজীয়তীত্যক্র নকার্রাকারয়োর্লোপে ক্রন্তে হলস্তন্ধাৎ হলিজ্ভ্যামিত্যাদিনা ঈয়ায়োরাদিলোপঃ কন্মান্ন ভবতীতি
পূ অব্রোচ্যতে—
যক্ষত্রাপি লোপেন ভবিতব্যং তদা ইলিজ্ভ্যামিতি পদমনর্থকং স্থাৎ
সর্বব্রেব লোপপ্রসক্তেঃ কৃতঞ্চ তদেবং বোধয়তি অন্নোরিত্রস্প প্রয়ন্ত্রো
ন তম্ম বিধানম্। যনু যথা রাজীয়তীত্যক্র নকারলোপে ক্লতে অকারলোপোহভূৎ তথা বনীয়তীত্যক্রাকারলোপে ক্লতে নকারলোপঃ কন্মান্ন
স্থাৎ গৈ অক্রোচ্যতে। অপ্রাপ্তে বহুধায়েয়ো বিধিপ্রাপ্তে স্কর্থক ইতি
স্থায়াৎ বনীয়তীত্যক্রাকারলোপেনৈক সাধ্যপ্রাত্রে প্রবিধানং নারিষ্যুতে
রাজীয়তীত্যক্রাবিষ্যত এবেতি।

৫৩৩। পয়দো বা।

পরায়তে পয়স্ততে।

৫৩৪। কঁটিদ্ধল্লোপশ্ট। বেহায়তে শখায়তে দুৰ্মনায়তে।

৫৩৫। যস্ত যুক্তাপজ্যার্থস্থা। গার্গীয়তি গার্গায়তে।

৫০৬। न लाला नाधिकत्ररेनकरञ्च। त्राक्कणार्कि ठेक्टतः।

৫৩৭। হলাদ্যেকাচোহশুভরুচোহশাদেশ্চ উশ-ভীক্ষ্যযোগন্।

ভূশমতিশয়: আভীক্ষ্যং পৌনঃপুঁত্যম্। ভূশে আভীক্ষ্যে চ গম্যমানে হলাদ্যেকাচোঁহশুভ্রুচোহশাদেশ্চ ধাতো-

⁽ ৫৩০)। পয়স: সকারস্ত আয়ি পরে লুগা ভবতি।

⁽৫৩৪)। কুত্রাপি প্রক্রতৌ আরি ক্লতে হল্লৌপশ্চ ভবতি। ব্যবস্থা চাত্রৈবৈতাদৃশী প্রায়েশ শীঘাদিগণে যে শব্দা হলস্তাঃ পঠ্যস্তে তেষাং হল্-শুগ্ভবতি নান্যোম্।

⁽৫০৫)। যুক্তশ্চাসোঁ অপত্যার্থনৈততি যুক্তাপত্যার্থ: অপত্যার্থে বিহিতস্ত সংযুক্তস্ত যকারস্ত ঈর্মান্ধা: পরমোর্দ্ গৃভবতি। গার্গীয়তি ইতি গর্ম-স্তাপতাং গর্মানের্থণ পোত্রাদাবিতি যণ্। অযুক্তস্ত ভূ—সৌপর্ণেরীয়তি স্ত্রীবিবিহিতপ্রত্যয়ান্তাদিত্যেরণ্। অপত্যার্থস্যেতি কিন্ পু পব্যায়ত ইতি গোপ্যসোর্থদিতি মং।

⁽ ৫৩৬)। অধিকরণক্তৈকক্ষবিহিতে ঈিয় পরে নকারলোপো ন ভবতি। রাজন্যতি ঠকুকুরে ইতি অধিকরণাচেতি ঈয়ঃ।

⁽৫০৭)। একান্ধিতি একে হৈচ্ যক্তেতি বছবীহিঃ কর্মধারমক্ত ন সম্ভবতি হলাদীতি বিশেষণাং। অভিশয়ঃ পৌনঃপুন্যক ধাতোরেবার্যঃ ভত্মিন্ গম্যমানে যন্ ভবতি। যনা স ছোত্যতে। পাপচ্যত ইতি ক্রিয়া হি সর্বাত্রেব বিবিধা তথাহি বিক্লেদনর্বা প্রধানক্রিয়া অধিপ্রমান

ক্লন্তরে যন্ ভবতি। ভূশং পচতি পুনঃ পুনবা পাপচ্যতে পাপঠ্যতে অশ্ অশৃ বা অশাশ্যতে অট্ অটাট্যতে ঋ অরার্যতে অজ্ বেবীয়তে অস্ বোভূয়তে উণ্ঞ্ প্রোর্ণোন্য়তে।

৫৩৮। নিত্যণিঙ্ যোগে সূত্রিমৃত্রিসূচয়োহশাদিঃ। সোস্ত্রতে মোমৃত্রতে সোস্চ্যতে।

৫৩৯। হলাদ্যেক।চ্চুরাদিণ্যস্তশ্চেত্যেক। চোটোর্যাতে। অশুভ্রচ ইতি কিম্ ? ভূশং শোভতে।

দিরপা তু গুণক্রিয়া যদা তু প্রধানক্রিয়া সমাপ্তান্তরমেব ক্রিয়ান্তরমনারভা দৈবারভাতে তদা পৌনংপুগুল্পবতি। যদা তু গুণক্রিয়াণামেব ভুরোভুয়ঃ সমাচরণাৎ প্রধানক্রিয়ায়কামেব করোতি তদা ক্রিয়াতিশয়ো ভবতি। ফলাতিরেকেণাপি অতিশয়ো ভবতি ভদ্যথা লাজলাতে দীপ ইতি। ফলাভিরেকেণাপি অতিশয়ো ভবতি ভদ্যথা লাজলাতে দীপ ইতি। ফলাভিরেকেণাপি অতিশয়ো ভবতি ভদ্যথা লাজলাতে দীপ ইতি। ফলাভিরানপ্রাপ্তা অশাদের্যন্বিধানম্ অশ্ ভোজনে অশু ব্যপ্তৌ অট্ পট্ গতৌ ঝগতৌ অজ্ গতিক্ষেপণয়োঃ অস্ ভূবি উপু ক্রে আছাদনে এতে সপ্ত স্ব্রাান্ত্রণ অজ্বাহশাদয়ঃ। অশাশ্যতে অটাট্যতে ইতি অকারেণ দিরুক্তিঃ অশাদেঃ শাদিরিতি শকারটকারো। অরার্যাত ইতি অসারেণ দিরুক্তিঃ অশাদেরিত্যাদিনা রেক্ষা বেবীয়ত বোভ্রত ইতি ভাদির্যকি চান্ত্যাদেরিতি অজ্বা বীরিতি অল্বেভুঃ অলো বীঃ। বিষয়ন্তর্যাক্রপাদানং স্পষ্টার্থম্। প্রথমহলাদিত্রাদনর্যার্য্র ভবতীতি মন্দ্রিয়াং শক্ষা স্তাৎ। প্রোর্ণান্যত ইতি ভবতি হি কারণাদ্তিক্রম ইতি উরেক্ষং বিশ্রেষং কল্বা সেঙ্গু গিঙ্ চাস্ত ইত্যাদিনা তু ইত্যাদিনা গ্রম্।

(৫৩৮)। চুরাদিমাদিহিতো ণিঙ্ নিতাঃ নিতাণিঙ্যোগে সভি হত্ত বেষ্টনে মৃত্র প্রস্তবংশ হচ পৈশৃষ্ঠে ইতাশাদির্ভবিত। ণিঙি ক্তে-স্নেকাচ্তাং যন্ন প্রাপ্রোতীতাশাদিম্ম এভ্যো যদা প্ররোক্ষণিঙ্ বিধীয়তে তদা যন্ন প্রাপ্রোতীতি স্চনার্থং নিতাণিঙ্গ্রহণম্।

(৫०२)। श्नानिर्या धाजूरत्रकार्ह्यानिनिङ्खः द्रमार्श्नानिर्क्ति ।

- ৫৪০। গত্যর্থাদ্ গতিকোটিল্যে।
 কুটিলং ক্রামতি চংক্রমাতে। অন্তত্ত—ভূশং ক্রামতি পুনঃ
 পুনরটতি।
- ৫৪১। লুপ্সদ্জপ্জভ্দহ্দন্শ ্গৃচরিভ্যো ধাত্বৰ্থ-গৰ্হায়াম্। গৰ্হিতং লুম্পতি লোলুপ্যতে।

ইত্যেকে। তন্মতে স্থানীনাং পৃথগুপাদানং নান্তি অনেনৈব তত্রাপি দিন্ধে:। হলাদীতি কিম্? ভূশসূর্জ্যতি উর্জ্ব বলপ্রাণনয়োরিতি চুরাদে। পঠাতে। একাজিতি কিম্? পুনঃ পুনর্গবেষয়তি গবেষক মার্গণে চুরাদিঃ ভূশং শোভত ইত্যুপলক্ষণম্ আভীক্ষ্যং শোভত ইতি দ্রপ্তবাম্।

- (৫৪০)। গতার্থাদ্ধাতোর্গতিকে টিল্যে গমামানে যন্ ভবতি। ন ভ্রশাভীক্ষারোঃ। প্রক্রিরেরং স্ত্রকারশু বদা পূর্ব্বোক্তার্থেহিপি প্রতারো বিধীয়তে ভদা সমৃচ্চয়স্ট্রনায় চকারাদয়ঃ ক্রিয়ন্তে। কেটিল্যং হি ব্রিবিং ভবতি কুটিলং ক্রামতি কুটিলং বিষমদেশং ক্রামতি কুটিলচিত্তং বা ক্রামতি কুটিলগতিং বা ক্রামতীতি সংশয়নিরাদার্থং গতিকোটিল্যে ইতি রুতম্। বো শুল্লীয়দি দেশে গতাগতানি করোতি স কুটিলাং গতিমাসাদয়ন্ ক্রামতি। চংক্রমাত ইতি ক্রম্ পাদবিক্ষেপে দ্বিক্তিং জপজভেত্যাদিনা অনুস্বারঃ। ক্রামতীতি ক্রমঃ পরিষ্মে শঙ্যতোদীর্ঘ ইতি দীর্ঘঃ। পূর্বস্থ্রবিষয়েশুনেন বিধানমর্থভেদমাত্রং বিশেষঃ। তেন হলাজেকাচোহশুভ্রুচোহশাদেশ্য গত্যর্থাদগতিকোটিল্যে এব ফন্ ভবতি ন ভ্র্লাশ্বীক্ষায়োঃ এতদেব স্ক্রিভুং প্নঃপ্নরটতীতি প্রভ্রুদাস্বতম্। ফ্রাট্যত ইত্যক্ত ভু চংক্রমণ্মবার্থঃ।
- (৫৪১)। বুপু ছেননে যদু বিসরণগত্যবসাদনেষু জ্বপ্ জন্ন ব্যক্তায়াং বাচি জপ্ জ্ভী গাত্রখিনামে দহ্ ভঙ্গীকরণে দন্শ্ দংশনে পু নিগরণে অত্র মত্র বত্র চর গত্যবা এভ্যো ধাত্বব্যহায়াং গম্যমানায়াং বন্ ভবতি। ন ভূশাভীক্ষ্যয়োঃ। আনেন তক্ত বিধানাৎ গহিত্যিতি জিয়াবিশেষণমেতেন হি ধাত্বব্যহা গম্যতে গহিত্যং হি ছেনেক্স নির-

৫৪২। আদের্ঘনি ত্রাদিঃ। মনি পরে ত্রাদেং স্থানে ত্রা ইত্যেবমাদির্ভবতি। ক্ষেত্রীয়তে।

৫৪०। शाश्रीः।

দেখ্যীয়তে।

• ৫৪৪। ব্যেঞাে কীঃ।

বেবীয়তে।

- ৫৪৫ । স্থামুঃ দিম্।
- সেধিম্যতে।
- ৫৪**৬। হনো দ্বীর্হিংসায়াম্।**জেদ্বীয়তে।

র্ধকরাং দোবতু ইন্বান্ত। এরমপরতাপি। সাদগতে জংজপ্যতে দংদহতে দংদহতে জেগিল্যতে গুশক ইত্যস্তাপি গ্রহণং কেচিদিছান্তি চংচ্যাতে এতানি রূপাণি অনস্তরং সাধনীয়ানীতি। তেনেহ ন সাধ্যতে অগহায়ান্ত—সাধু জপতি ধার্থ ইতি বিশেষণং কিমৃ ? সাধনগর্হায়াং মা ভূৎ—গায়গ্রীং জপতি বুষলা গায়গ্রীজপে শুদ্রসানধিকারাৎ সাধনগর্হে গ্রম্।

- (৫৪২)। জেখ্রীয়ত ইতি ছা গজোপাদানে কুতকার্য্যে নিদস্ত—ইতি ছ্রীত্যন্ত দ্বিক্ষক্তি:। ছ্রীত্যন্ত হ্রম্ববে ক্রতে সনীপ্ দীর্ঘ ইতি দীর্ঘ: সিধ্যত্যেব তথাপি দীর্ঘবিধানং প্রক্রিয়াগোরবনিরাসার্থম্। জেছ্রীত ইত্যত্র যন্পুকি দীর্ঘশত্যর্থঞ্চ এবমুত্তরত্রাপি বোদ্ধবাস্।
- (৫৪০)। খ্রা শব্দাগ্রিসংযোগরোরিতাস্ত যনি পরে খ্রীর্ভবতি। দেখীয়তে।
 - (৫৪৪)। ব্যেঞ্সংবরণ ইত্যশু যনি পরে বীর্ডবতি। বেবীয়তে।
 - (৫৪৫)। শুমু স্থন ধান শব্দে ইতাশু যনি পরে দিন্তবতি। দেষিমাতে।
- (৫৪৬)। হিংসারামর্থে বর্ত্তমানস্ত হত্তের্থনি পরে **দ্বীর্জ্তবতি।** জেম্বীয়তে।

৫৪৭। খন্ গতে । জংঘগ্ৰে।

৫৪৮। চারঃ কীঃ।

চেকীয়তে।

৫৪৯। শ্বেঃ শূর্বা লিটি চ। শেখীয়তে শোশূয়তে শিখায় শুশাব।

৫৫০। সণিঙ্সননোশ্চ। শিশায়য়িষতি শুশাবয়িষতি অশিশ্বং অশূশবং।

⁽৫৪৭)। গতৌ বর্ত্তমানস্থ হস্তের্যনি পরে ঘন্ ভবতি। নৈতল্লক্ষণং কিন্তু স্পষ্টার্থং বিধীয়তে পদোপদর্শনমাত্রম্। অথবা প্রমাদপাঠিঃ যতো জংব-ক্তুত ইতি বৃদ্ধিহিক্ত্যুর্থ ইত্যনেনৈব হৃষ্ণু বঃ দিল্পঃ।

⁽ ৫৪৮) । চায্ পূজানিশামনগ্রোরিত্যশু ধনি পরে কীর্ভবতি। চেকীয়তে।

⁽৫৪৯)। টুওৰি গতিরুদ্ধোরিতাশ্র যনি লিটি চ পরে শূর্মা ভবতি। বেঞ্বর্জ্জালিটি ঢেতি অভিতি লিটি প্রাপ্তে অন্যতাপ্রাপ্তে বিভাবেরন্। চারা কীরিত্যস্থানস্তর্গ পীঃ প্যায়ো লিটি চেতি ক্লতেখ্তা লিটি চেতি শক্যম-কর্ত্ব্যুত্তন্তর ক্লতং বৈচিত্র্যার্থন্। শেশীয়তে ইতি সনীণ্দীর্ঘ ইতি দীর্ঘঃ দিক্জিঃ গুণাং। শোশ্রত ইতি ক্লতকার্য্যো নিদন্ত ইতি শৃ ইত্যানেনৈব দিক্জিঃ গুণারেতি শূভাবে বৃদ্ধিরাফাদেশঃ।

⁽৫৫০)। সহ ণিঙা বর্ত্তইতি সণিঙ্ নিঙসহিতে সনি ণিঙ্ সহিতেখনিচ বিবরে শ্বয়তে: শ্র্লা ভবতি। ণিঙউত্তরস্য সনোখন চ চিকার্যায়ামেব প্রথমং শৃভাবং। শুশাবিয়্রয়তীতি শ্বয়তের্ণিঙ্ শৃভাবে ক্বতে বৃদ্ধাবাদেশাবৃৎপ্রক্তোভিণো চোদস্তইতি শৃইতানেন দ্বিশ্বক্তিঃ অশিব্য়দিতি
পিঙ্ব্দ্ধ্যায়াদেশাং লুঙ্ হঙ্ অন্ দ্বিক্ত্যাদিং। অশৃশবদিতি ক্রম্বোহশাম্বাদেরিতি হ্রম্বং সণিঙিতানো বিশেবণং কিমর্থং কেবলে অনি মাভূৎ। অশিধ্য
মনিতি বিধেটোর্মেতানেন অন্ অনউত্তরস্য গিঙোহসম্ভবাৎ তৎসাহচর্য্যেপ
সন উত্তরে নিঙি নারং প্রবর্ততে তেন শিশ্বিষ্ঠীতি।

.৫৫২। পীঃ প্যায়ো লিটি চ। প্রপীয়তে পিপো।

৫৫০। হেবঞো হৃদ্বি রুক্তিহেতোঁ। জোইুনতে জুহুষতি জুহাব।

৫৫৪। ণিঙ্ব্যবায়ে২পি। জুহাবয়িষতি।

⁽৫৫১)। ঞিস্বপ্ শয়ে ইজীস্য যনি পরে সননোশ্চ পরয়োঃ স্বব্ভবতি। সোযুপ্যত ইতি ইচ্জাদিত্যাদিনা যত্বং স্বপঃ কেবলাছ-ভরোহন্ ন সম্ভবতীতি ণিঙঃ পরো গ্রাহ্য। অস্ব্রুপদিতি গুণঃ হ্রস্থাদি পূর্দ্ধবং।

⁽৫৫২)। ক্ষায়ী ওপ্যায়ী শ্বন্ধো ইত্যন্ত যনি পরে লিটি চ পরে পীর্ভবতি। পিপ্যে ইতি লিট্ এ প্রকৃত্যা বা সর্বাদেশো বেত্যাদিন। নিয়নাং পীভাবে ক্রতে দিক্ষক্তিঃ অঙিদচ্যনেকাচ ইত্যাদিনা ঈকারস্য যকারঃ।

⁽ ৫৫৩)। স্থেঞ স্পর্দাশকরোরিজ্ঞাসা দ্বিক্ষক্তিহেতৌ পরে হর্ভবতি। লিটি জুহাব জুহুরতুঃ।

⁽৫৫৪)। বিষয়সপ্তমীয়ন্। দিকজিছেতো পরে নিঙ্বা পূর্ণ করি কিন্তিত এব হেবঞো হর্ভবতি। অতো ণৌ পরে প্রথমং নাঞ্ছ-পতিনাশক্ষনীয়া। জুহাব্যিষতীতি উৎপ্রক্ত্যেত্যাদিনা নিয়মাৎ ছ ইত্যানন দিকজিঃ। অদিকজিতহেতো তু—হ্বায়য়াঞ্চকার হেবঞো ণিঙি বুর্বেঞাদেরিত্যাদিনা যুং নিট্ ণ্যাদেলিড্ঙাম্ ইত্যাদিনা ভাম্। ণিঙিছি কিন্? অভব্যবায়ে মা ভূৎ হ্বায়কমিছেতি হ্বায়কীয়তি ততঃ সন্ জিহ্বায়-ক্রীয়েয়ত।

ককে। গুণাদিছি ক্লকে।

মনি সতি দ্বিক্লকৈ গুণাদিষ্ঠবিতি। ভিদ্ ৰেভিদ্যতে পৃ
পোপূৰ্ব্যতে।

৫৫৬। দীর্ঘোহনাগমাতঃ। পাপচ্যতে শীঙ্শাশয়তে।

৫৫৭। অশাদেঃ শাদিঃ। অশাশ্যতে অটাট্যতে ঋ অরার্য্যতে।

৫৫৮। পদ্পত্কস্ফল্ অন্স্ জন্স্ বঞো নীঃ। পনীপদ্তে।

- (৫৫৬)। বক্ষামাণযোগৈছি কিকাবাগমা যে বিধেয়াঃ তে যত্র ন বিহিন্তাঃ নোহনাগমঃ অনাগমশ্চাসৌ অচ্চেতি অনাগমাৎ যনি সতি দ্বিকক্রৌ অনাগমাতঃ স্থানে দীর্ঘো ভবতি। শাশযাত ইতি শীঙঃ শের্যনি চেতি শেভাবঃ শীঙোহভিদ্য ইতি অয়াদেশঃ দ্বিকক্রিঃ। অনাগমাত ইতি কিন্? নরীন্তাতে জঞ্জপাতে অত্রাগমসহিতোহকারঃ।
- (৫৫৭)। অশাদের্যনি পরে দ্বিরুক্তী শাদিরাগমো ভর্তি।
 আশাগুত ইতি অশ্ ভোজনে অশৃ ঝাপ্তী বন্ধারপি গ্রহণম্। অটাট্যত
 ইতি অট্ পট্ গতৌ। অরার্যাত ইতি ছ গতৌ ঋসংযোগাদৃতো যনীতি
 শুণেনার্ দ্বিরুক্তিঃ এতে ব্রায়ো ধাতবোহশাদয়ঃ। এষাং শকারটকাররেফা
 ভবস্তি।
- (৫৫৮)। পদ গতৌ পতু গুতৌ কস্ গতৌ কন্দির্ গতিশোষণরোঃ অনস্থ অনুস্থ অবস্থাননে ধ্বন্য স্বতৌ চ বন্চু গতৌ পঠাতে এষাং যনি সতি দিকক্ষৌ নীরাগমো ভবতি। পনীপছতে পনীপতাতে চনীকভাতে চনীক্ষাতে সনীক্ষতে বনীক্ষতে দনীধ্বভাতে বনীবচাতে হসুপান্তেত্যাদিনা নকারপুক্। বালশ্বতে ইতি তু লগু অনুস্থ অধঃপজ্ঞান

⁽ ৫৫৫)। পোপূর্য্যত ইতি পূ পালনপূরণয়োঃ যন্ উর্ পবর্গাদিতি । অকারস্থ উর্ রাস্তাদেরিত্যাদিনা দীর্যঃ বিরুক্তিঃ।

৫৫৯। রীঋ ত্বতঃ।

নরীনৃত্যতে পরীপৃচ্ছাতে বরীবৃশ্চাতে মরীমৃজ্যতে মর্ম্জাতে মর্ম্জামান ইত্যেকে।

৫৬০। জপ্জভ্দহ্দন্শ্ভন্জ্পশাত্মপাত্তপঞ্মান্তা-নামনুস্থারঃ পদান্তবচ্চর্ ফলোরত্বচ প্রকৃতেঃ জঞ্জগ্যতে বস্তুণ্যতে পশঃ সোত্রো ধাতুঃ পম্পশ্যতে চঞ্গ্যতে পক্ষুল্যতে।

ইত্যস্ত সাহচর্য্যাৎ শ্রন্ত্র প্রমাদ ইত্যস্ত ন গ্রহণমিত্যাহঃ। তত্র শাশ্রহত-ইতি কেচিং।

(৫৫৯)। ঋত্বদিতি তদন্তান্তান্দিন্ বা মত্রিন্তি মতুঃ অঙ্থশাদ্যস্তাচেতি মন্ত বং নতোমত্ব ইতি প্রতিষেধাৎ বর্গাদেত্তীয়ো ন ভবতি।
ঝকারবতো যনি পরে দ্বিকক্রে রীরাগমো ভবতি। ঋদনিত্যকারে কতে
রীঃ রীঝ ত ইতি ন কতং বৈচিত্র্যার্থম্। দরীনৃত্যত ইতি নৃতী পাত্রবিক্ষেপে
পরীপুচ্ছাতে বরীর্ণ্ডাতে ইতি প্রচ্ছ্ ভীপায়াম্ ওব্রস্টু ছেদনে বশাদেকশানিরিতি পুচ্ছ্র্ণাদেশৌ আদেশেনাপি যো ধাতুঃ ঝকারবান্ তত্রাপি ভবতীতি স্চনার্থমেতত্বদাহরণদ্বয়্ম্। যত্র ছাদেশেন রিকারবত্বা বিহিতা ভব্ন

(৫৬০)। জপ্জয়্ব্যক্রায়াং বাচি জপ্য়ানদে চ জভ্জ্ভী গাত্রবিনামে দহ্ভস্মীকরণে দন্শ্দংশনে ভন্জো আমর্দ্ধনে পশ ইতি সোত্রো, পাতৃঃ এষামকারোপান্তপঞ্চনাস্তানাঞ্ধনি দতি দিকজে আর্স্বারাগমো ভবতি। স চ পদাস্তবং। চর্ সতৌ ভক্ষণে চ কল্নিশান্তো ক্রিকলা বিনবণে ঘয়োরপি গ্রহণম্ এতেষাং যনি সতি দ্বিকল্জো অন্স্বারো ভবতি।
স চ পদাস্তবং প্রক্তেরকারক উকারো-ভবতি। জ্ঞাপাতে ইতি পদাস্তব্যে সভি বর্গে বা তহ্বর্গান্ত ইতি পক্ষে বর্গান্তে। ক্রিলান্তে ইতি পদাস্তব্যে সভি বর্গে পঠাতে দন্শাতে বস্তজ্ঞাতে হলুপান্তেল্যাদিনা নকারলুক্। দ্বান্ত ইতি রাস্তাদেরিল্যাদিনা দীর্ষঃ। অন্তপান্ত ইতি কিম্
লু তেতিকানতে।
ত ইত্যান্ত্রেরর্থনানাদ্রপান্ত ইতি শব্যমকর্ত্রং ত্যেতংক্তরং স্প্রার্থম্।

৫৬১। চার ফালোরসুস্বারঃ।

চার ফাল নামণিঙ্ কিপ্ আয়্লুক্ যন্ চংচার্যতে পংফাল্যতে ।

৫৬২। ভামো বা। বাভামাতে বংভামাতে।

৫৬০। ছ্যুতেরুদিদ্দিরুক্তিহেতো।

৫৬৪। স্থঃ স্বাপেরঘণাদে।।

দেছ্যতাতে দিহ্যতে স্থসাপয়িষতি। ঘণাদো তু—সিমাপয়িষতি।

⁽৫৬১)। চার্ ফাল্ইত্যেতয়োর্যনি সন্তি দ্বিক্জে) অমুস্থারে। ভবতি। পদান্তবচ্চ। অনুস্থার ইতি পুনরত্র কৃত্য অহুচ্চ প্রক্তেরিতা-স্থান্তর্ত্তিশঙ্কানিরাসার্থন্। চার্ ফাল্ইতি প্রক্তেরেব নিম্পতিং দর্শরতি নামণিঙ্কিপ্ আয়্ল্গিতি চার্ ফাল ইতি ঘণস্তাং নামন্তং করোত্যাদা-বিত্যাদিনা ণিঙ্ অলুক্ কিপ্, কিন্দোশ্টেতি ণিঙ্লোপঃ কর্তুরায় ইত্যা-দিনা আয়্ তল্লুক্ চ।

⁽৫৬২)। ভাম্ ক্রোধে ইত্যস্ত থনি সতি ধিকক্রৌ অমুস্বারাগমো বা স্থাং। স চ পদান্তবচ্চ। পক্ষে দীর্ঘোহনাগমাত ইতি দীর্ঘঃ। স্থাস-কারঃ কলাপ্রটীকাক্ষার্শ্চ বাভাম্যতে ইত্যেব ভবতীতি ব্যাখ্যাতবান্ বস্তা-ম্যত ইতি বহুসম্বতমেতত্বভয়প্রামাণ্যাদিহ বিকল্প উক্তঃ।

⁽৫৬০)। ত্যুদাদীপ্তে ইতস্ত দ্বিজক্তিহেতৌ পরে দ্বিজক্তো বর্ত্তমান উকার ইঞারো ভরতি।

⁽৫৬৪)। স্বাপেশ্চ ঘণাদিরহিতে দিরুক্তিহেতৌ পরে দিরুক্তের স্থান্ধরিত। দেরুতাত ইতি যন্ ইকারে ক্ষতে গুণঃ দিরুতে ইতি লিটু এ সনি দিরুতিবতি অনুজ্যবাস্তহলাদিরিণুপাস্তো বা সেঙ্ সনি চেতি পক্ষে বাচাদিরুদ্ অনি বাদিরুতৎ স্ব্যাপরিষতীতি স্বপের্নিঙস্তাৎ সনি । ঘণাদে তু—সিম্বাপরিষতীতি স্বপ্ধাতোঃ ঘণ্ স্বাপঃ স্থাপঃ করোতীতি নিঙ্ স্বলুক্ এডদি স্বাপিরূপং ভবতীতি প্রাপ্তিঃ পরিস্থা আদিশকেন স্থাপ-স্বাতের্ণকঃ স্থাপকঃ স্থাপকমিছতি স্থাপকীয়তি ততঃ সন্ সিম্বাপ্ত

৫৬৫। যন্লুগ্বা ভিদ্ধলি চতুর্মীঙ্চ।

খাতুভ্যো যন্লুগা ভবতি। যন্লোপে সতি ভিদ্ধলি চতুর্মীঙ্
চ. বা ভবতি। বোভ্যতে বোভোতি বোভবীতি কণু চংক্ষস্তি
তৃণু তরিতন্দীত্যাদি।

৫৬৬। প্রকৃতিবদ্দিগুৰ্ণাদিশ্চ। জংঘন্তি জংঘনিতা জংঘনিতা অজংবধীৎ

কীরিষতি অত্রাপি স্বাপেদির্ক্নজিহেতুঃ সনিতি প্রাপ্তিঃ দিক্নজিহেতাবিতি কৃতং যনীত্যস্তান্তর্ভনিরাসার্থন। স্বাপের্বণাদৌ স্থনেষ্যতে হ্যতের্বণাদৌ উদিদ্ববত্যেব বিদিদ্যোতকীরিষতি বিদিদ্যোত্যিষতি রক্ষিতঃ।

(৫৬৫)। চকারো বেত্যস্থানুষকঃ অতএবাহ ঈঙ্ চ বেতি। বোভোতীত্যানে হ্বাদিকং যন্নুগীস্ত ইতি হ্বাদিস্বাছ্ঞানীনামভাবঃ। চংক্ষন্তীতি কণু হিংসায়াং জপ্জভেত্যাদিনামুস্বারঃ উপদেশেহস্ত নকারাই স্তত্বং তবর্গযুক্তভাগ্রহাভাবঃ। তরিতন্তীতি তৃণু অদনে উপদেশেহস্ত পকারাস্তবং যটবর্গেত্যাদিনা তম্ম টঃ ব্যবস্থিতবিভাষত্বাৎ ঈঙত্র ন ভব-ত্যেব এতদর্থমেবোদাহরণছয়োপস্থাসঃ এবং নর্নর্ভি চর্কর্তি বর্মন্তীত্যাদি কচিনীঙ্নিত্যমেব বাবদীতি লালপীত্যাদি।

(६৬৬)। যন্লুকি গতি প্রকৃতিবৎ কার্যাং ভবতি। নামুৎপত্তেঃ প্রাক্ কেবলায়াং প্রকৃতৌ বৎ কার্যাং বিহিতং তত্তদক্ ভবতীত্যর্থঃ। বিশুর্ণাদিকেতি যনি লুপ্তে বিশ্বক্তিগুর্ণাদিকং যন্কার্যমিপি ভবতি। এতেনায়াং যনকার্যাং নিরস্তম্। জংঘন্তীতি বিশ্বক্তিঃ জপ্জভেত্যাদিনা অনুস্বারঃ বৃদ্ধিদ্বক্তার্য ইতি হস্ত ঘঃ ন পুনরন্যৎ কার্যাং হনো খ্লীর্হিং-সায়াবিতি। জংঘনিতা জংঘনিতা ইতি হন্দৃশেত্যাদিনা প্রকৃতিকার্যাং পাক্ষিক ইণক্র ভূতঃ। অজংবধীদিতি জংঘন ইত্যেত্যাৎ যন্লুগন্তাল্লুঙি হঙিকতে হনো বধিরিত্যাদিনা প্রকৃতিকার্যাং হনো বধির্তিত। কন্দিদাহ কৃত্দিক্তেরেব হস্তেঃ স্থানে বিধিঃ স্থাৎ তন্মভেনাহ অবধীদিত্যেক ইতি। অশেষিয়দিতি টুন্ডির্যা গতির্দ্ধাঃ যন্লুকি দ্বিক্তিঃ খেঃ শুর্কা লিটি চেতি য়নুবৎ কার্যাং শুর্ল ভবতি। শেশীত্যক লুঙি কৃতে শ্বিধেটোর্কেডি

অবধীদিত্যেকে। অশেশিয়ৎ অশেশগ্রীৎ অবাবোচৎ অপা**শগুৎ** অদরিদর্শৎ অদরিদ্রাক্ষীৎ ধেট্ দাধীতবান্।

৫৬৭। কচিম।

শাস্থ অশাশাসীৎ অসরিসারীৎ শীঙ্ শেশেতি শেশীতঃ শেশ্যতি শেশীয়তে অপাপয়ৎ অতাস্থপৎ অজাত্মপৎ

প্রকৃতিকার্য্যত্র অন্ইয়াদেশক পক্ষে অশ্বেষয়ীদিতি ভবতি শ্বরতেঃ শংশ্চতি অগ্ শাদেশক পাফিকঃ প্রকৃতিকার্য্যাপি কচিয়েতি প্রতিবেধায় স্থাৎ। অবাবোচদিতি বাবচ ইতি যন্লুগন্তাৎ লুঙ্ বচো বোকেতি অগ্ বোচাদেশক। অপাপগুদিতি পাপত্যন্লুগন্তাৎ পতেঃ পপ্তশেচতি অগ্ পপ্তাদেশক। অদ্বিদর্শিতি দরিদৃশ ইত্যত্র লুঙ্ জুদৃশোর্শ্বতি অঙ্ পক্ষে অদ্বিদ্রাক্ষাদিতি ভবতি। দাধীতবানিতি ধেট্ পানে দা ধা ইত্যতো যন্লুগন্তাৎ ভূতে ক্রব-তুরিতি ক্রকুঃ কিত্তে চেতি প্রকৃতিকার্য্যাকারস্থ সং স্থাৎ।

(৫৬৭)। প্রকৃতিবং কার্যাং ক্রির ভবতি। তেন লক্ষ্যদর্শনাদত্র ব্যবস্থেতি স্টিতা তচ্চ লক্ষ্যং বহু দশিতমেব অন্তদপূত্য অভএব জংঘংইীতাত্রাপি হৌ হন জ ইতি জাদেশো ন স্থাং যন্লুক্ ছান্দস্থমনৈত্বকজং তত্র কেচিং প্রয়োগা ভাষায়ামপি প্রবুজ্ঞান্তে এতদিচিন্ত্রাত্র রভিক্রতা ন বহু প্রতিবিহিতং তত্মাদ্যতিদাবীত ইত্যাদৌ কিন্তে চেত্যনেনাপ্রাপ্রমীত্বং জংঘতীত্যাদৌ তথােণাঙীত্যাদিনা অপ্রাপ্তপক্ষমলােণাং প্রতিবিধেয়ঃ। এবনপরেহণি যন্লুক্প্রয়োগা বহুদ্যভিঃ প্রতিবিধেয়ঃ কাক্দন্তপরীক্ষান্মছান্দমাভিবপ্যপক্ষিতা। অশাশাসীদিতি শাস্ত্র অন্থশিন্তৌ শাশাস ইতি যন্ত্রগন্তাং অনিছার্যেত্যাদিনা অগ্ শিসাদেশন্ত ন স্থাং অসরিসারীদিতি ধাম্রারঙ্ ইত্যঙ্ ন ভূতঃ সঙ্যহিজাগুর্ছিরিগন্তস্যতি আর্। শেশীত ইতি শীঙ্র শের্ঘনি চেতি চতুর্পু পরে শেভাবােন ভূতঃ। শেশীয়ত ইতি ভাবে যক্ শেশেতীত্যক্র তু জস্ভিতােরিত্যাদিনা এব গুণঃ অতএব বাতিশেশুত ইত্যক্রান্তাে অতি ক্তে অতিক্রিতি ন স্থাং। ব্যতিসংবেবিদত্ত ইত্যক্র বেতেরাত্মনে বেত্যক্র কর্ন স্থাং। অপাপমদিতি পিবতের্মনিলুপ্তে পাণা ইত্যতে। নিঙ্ যুর্কেঞাদেরিত্যাদিনা যুং প্রকৃতিকার্যাং ভূতমেব লুঙ্

অপোপোষীৎ হেবঞ অজোহকং দো দাদতবান বো সাসীতবানু খাঞ্দাধীতবান্।

৫७५। यन्वर अभारमः।

সোষোপ্তি শুমু সেবেন্তি চায় চেকেতি প্যায়ী পেপেডি গ্ৰহ জগ্ৰতি জগুৰু জগুৰতি জ্যা জেজেতি জেজীক

ছঙ্ প্রিক্রফ ইত্যাদিনা অনু অল্লুক্ পিবতেঃ ক্রতেহভ্যাসকার্য্য ইতি অকার-লুকু ন ভূতঃ ব্ৰেষাংশাখাদেমিতি হুস্বঃ। অতাস্থপদিতি তিষ্ঠতেৰ্যনি লুপ্তে ণিঙ্ লুঙ্ হঙ্ পূঙ্ অন্ ইনাভন্থ ইত্যাকারস্থ ইকারো ম অজ্ঞাঘপদিতি অনি কৃতে ছো বেতি আকারশু ইকারো, ন ভূত: হ্রেখেশাখাদেরিতি হ্রম:। অপোপোষীদিতি পোপুষ ইত্য-শাং ঘন্লুগস্তাৎ লুঙ্ হঙ্ পুষাদুদিত ইত্যাদিনাগ্ ন ভূত: সঙ্ৰুদান্ত-**ন্তে**রিভ্যাদিনা ঈঙ্ ইঙ্ চতুর শকাদেরিভ্যাদিনা ইঙ্ ইঙাদেরীঙীতি সঙ্ লুক্। অজোহবদিতি যনি লুপ্তেংপি হেবঞোষ্টের্দ্ধিক্রক্তিহেতাবিতি হঃ তস্ত দিরুক্তি: জোহরিতাত্র ণিঙি ক্কতে যুর্ক্কেঞাদেরিতি যুর্ন ভূত:। দাদত্তবা-নিতি দোহবণগুনে ইতাশাৎ যন্লুকি দাদা ইতি স্থিতে ততঃ ক্তবতুঃ দোবো-মাস্থাং কিন্তে ইতি ইঙ্ ন ভূতঃ ছতের্যন্দুকীতি বক্তব্যমিতি দদাদেশঃ। সাসীতবানিতি ষোহস্তকর্মণি এচোহশিতীতি আবং যন্লুকি সাসা ইতি স্থিতে ক্তরতু: দোষোমান্থাং ক্ষিত্তে ইতীঙ্ ন ভ্রতি কিন্তে চেতি ঈকার:। দাধীত-বানিতি ধাঞাদেছ দি: কিন্তে চেতি ছাদেশো ন ভূত: কিন্তে চেতি আকারন্ত ঈকার: ওহাকত্যাগে ইত্যস্ত জ্বাপ্রতায়ে হাক:জুীতি ইঙ্ কিন্তে চেতি ক্সাকারস্ত ঈকারশ্চ ন স্থাৎ তেন জাহাত্বা ইতি।

(৫৬৮) প্রকৃতিবন্ধি ও ণাদিশেটত ব্যবস্থা দিও ণাদিব্যতিরিক্তং কার্যাং
ন প্রাপ্নেত্রীতি লক্ষণন্। ক্ষপাদের্যন্লুকাপি যন্বৎ কার্যাং স্থাৎ। সোধোপ্রীতি ত্বপঃ স্থপ্ সননোশ্চেতি স্থপাদেশীঃ। সেবেস্তি চেকেতি পেপেত্রীতি
ক্রম্ স্থন্ ধন্ শবে চায়্ পূজানিশামনয়োঃ কারীঃ প্রগায়ী বৃদ্ধৌ ইত্যেতেবাং
যন্লুকি স্থাদের্যনি ঘ্যাদিঃ স্তম্যুঃ সিষ্ চায়ঃ কীঃ পীঃ প্যায়ো লিটি চেতি
সেমাদয়ঃ দিক্তিঃ গুণাণ্চ জর্গ্রীতি গ্রহ্ উপাদানে যন্লুক্ রশাদের্শাদি-

জেজ্যতি ব্যধ্ বেৰেন্ধি বেৰিক্ষঃ বেৰিধতি। অত্যে তু—জাগ্ৰাট্টি জাগৃঢ়ঃ জাগৃহতীত্যাদি।

৫৬৯। হলস্তস্থাতি ন গুণশ্চর ফলোর্হলি চ। বেভিদীতি চংচূর্ত্তি চংচুরীতি।

৫৭০। কুদ্চি যন্লুগ্লিত্যম্। বেভিদিতা।

৫৭১। হলন্তস্থেত্যেব। লোক্য়িতা লোলুবিতা।

রিতি গ্রহ্ গৃহ্ বিফক্তিঃ ঋদদিত্যৎ ঋদিকক্তাবিত্যাদিনা কঃ তিঙ্ গুণঃ হোঢ় ইত্যাদিনা হস্ত চঃ ধোহণাত্র্যাদিতি তস্ত ধঃ ঘটবর্গাদিত্যাদিনা ধস্ত চঃ চ্যোরিত্যাদিনা চর্ক্। জেজেতীক্তি জ্ঞা বয়োহানৌ বশাদেরিত্যাদিনা জ্যা জীঃ। অসে দিতি যন্বজাবমন্তে দ্বত্র নেচ্ছপ্তি তদা জাগ্রহ ইতি স্থিতে চ্যোরিত্যাদিনা চলুক্ দার্ঘণ্ড জাগ্রাটিত। জাগৃঢ় ইত্যত্র তদ্নিমিত্ত এব গৃহাদেশঃ এবং জ্ঞা ইত্যাদেশ চ জাজ্ঞাতি জাজ্ঞীতঃ জাজ্ঞাতি অভিদচ্যনেকান্চোহযুক্তধাতোরিত্যাদিনা যঃ বাবদ্ধি বাবিদ্ধঃ বাবিধতীত্যাদি।

(৫৬৯)। যন্লুগন্তস্থ হলস্তপ্তাচি গরে চরফলোর্যন্লুগন্তরোরচি হলি চ পরে গুণো ন স্থাৎ চংচ্ছীতি চর্ ভক্ষণে জপ্জভেতাদিনা দ্বিক্তাবর্ম্বারঃ প্রেক্তেরকারস্থ চ উকারঃ গুণাভাবে সতি রান্তাদে-রিত্যাদিনা দীর্ঘঃ। চংচ্রীতীতি অত্রাপি অচি পরে ন গুণঃ। অচীতি কিন্পু বেভেন্তি। হলস্বস্থেতি কিন্পু বোভবীতি।

(৫৭০-৫৭.১)। হলস্তম্ম ধাতোঃ ক্রংসম্বন্ধিন অচি পরে যন্লুক্
নিতাং ভবতি। অচীতি পদোপাদানসামর্থাৎ কৃতি বিহিতে ইঙি চ
লোপঃ আং। যং কুদবয়বো যং কৃদিহিতশচ সোহপি ক্রংসম্বদ্ধাব
ভবতি। বেভিনিতেতাত্র ইঙি পশ্ম লুক্ ন গুণশ্চেত্যত্রাম্বর্তনীয়ম্।
হলস্তম্ম পূর্দ্দেবৈব দিদ্ধে অজস্তোহস্ত বিষয়ঃ। ক্রণচি পরে অজস্তম্ম
যন্লুগন্তম গুণো ন আং। তেন লোলুবিতা পচাদিয়াং ঙে ক্তে
লোলুব ইত্যানে গুণাভাবঃ। গুণ ইতি ভিৎকার্য্যোপলক্ষণং তেন ছিৎ-

৫৭২। কর্ত্তরি কর্ম্মব্যতীহারবর্জ্তং পরস্মৈ । শীঙ্ শেশৈতি শেশয়ীতি স্পর্ক্ পাস্পর্দ্ধি।

৫৭৩। ঋদ্ধিরু**ক্তেশ রুরিন্দীতঃ।** চর্কর্ত্তি চরিকর্ত্তি চরীকর্ত্তি বর্কর্দ্ধি বরিবর্দ্ধি বরীবর্দ্ধি ঋ অর**ত্তি**

চকাত্ত চারকাত্ত চরাকাত্ত বকাপ্ধ বারবাপ্ধ বরাবাপ্ধ স্থাতার অররীতি অশ্বতিঃ আরতি অরিয়র্ত্তি অরিয়রীতি অরিয়ৃতঃ অরিয়ুতি। দীর্যশৃদ্ধিকক্তেনি তু। তৃ তাতর্ত্তি গু জাগর্তি।

•৫৭৪। যগ্ভাবকর্মণোঃ।

চতৃর্ভাবে কর্মাণি চ কাচ্যে ধাভোরুত্তরে যগ্ভকতি। ভূয়তে
পুত্রেণ ক্রিয়তে কটঃ।

- (৫৭২)। যন্দ্কি সতি কর্মব্যতীহারং বর্জনিছা কর্ত্তরি সর্বধাতৃভাঃ
 পরসৈপদং ভবতি। কর্ত্যামদান্তভিদ্যনায়ামিত্যাদিলক্ষণৈবিহিতস্তাআনেপদক্ষ বাধনার্থন্। পাম্পর্কীতি তিঙ্ ধোহধাতৃ্য্যাদিতি তক্ত ধঃ
 সবর্গাদিত্যাদিনা ধলুক্। কর্মব্যতীহারে তু—ব্যতিলোল্বতে ধাঝাং
 ক্ষকাঃ। কর্ত্রীতি কিম্? বোভ্রতে দেবদত্তেন।
- (৫৭৩)। ঋকারশু দিরুকৌ সন্ত্যাং রুরিংরীং ইত্যেতে স্থাঃ। অররীতীতি পক্ষে ঈঙি রুতে গুণেনার। আরতীতি অন্তোহন জুক্ষাদেনিতি অনাদেশঃ যবরলোহচীতি ঋকারশ্র রেফঃ অভ্যাসাং রেফে রুতে চ্রোরিত্যাদিনা রলুক্ দীর্ঘণ্ড। অরিয়র্ত্তি অরিয়রীতি চ রুতেহভ্যাসে অসবর্ণেহভ্যাসশ্র ইয়াদেশে চ সমানমেব রূপম্। অত্র হুস্বোক্ত্যা দীর্ঘশ্রতাংশং রু ইত্যাদয়ো ন ভবস্তি। এতদেব স্ক্রিতুমাহ দীর্ঘশ্রিদ্বিক্রজৌ দিত্যাদি।
- (৫৭৪)। ভাবে কর্মণি চ বাচ্যে ইতি চতুর্মি ত্যনেন সম্বদ্ধাতে তেনারমর্থো ভবতি। ভাবে কর্মণি চ বাচ্যে বিহিতেরু চতুর্ পরে মু ধাতোক্তরে যগ্ভবতি। ভাবকর্মণোরাত্মনে ইত্যেনেনৈব ভাবে কর্মণি চ

কার্যাং যৈক্যাদিস্বমপি প্রতিষিধ্যতে। লোল্যতেতি ভৃঙ্যদা ডু পক্ষে যন্লুক্ তত্র লোলুবিতেতি। ক্লচীত্যুপলক্ষণং তেন লুটি বেভিদিতা লুটি বেভিদিয়তীত্যাদাবপি যন্লুক্ নিত্যং ভবতি।

৫৭৫। কর্মাবৎ কর্মাকর্ত্ত।।

ক্রিয়মাণস্ত যা কর্ম ক্ষামের হি সিধ্যতি। স্করেন্তদ্ওণৈর্বর্জাঃ কর্মকর্ত্তি তিছিছে। লুয়তে কেদারঃ স্থামের নৃষ্ণতে কেদারেশ। স্থামের ইত্যাপি ভাকে।

বাচ্যে আত্মনেপদবিধানাৎ ষগপি ভন্মিন্ বাচ্যে ভবভীতি সংগচ্ছতে। ক্রিয়তে ইতি রিদ্তো যে চেভি বিকার: ন ক্রতো যকি চেভি দীর্মন নিষেধ:।

(৫৭৫)। কর্ম চাসৌ কন্তা চেভি কর্মকর্ত্তী স কর্মক্ষরভি। যন্তা-মেব ক্রিয়ায়াং মং কর্মাসীৎ তভামেব ক্রিয়ায়াং যদি তক্ত কর্ত্বছং বিবক্যতে ৰ কৰ্ম্মকৰ্তা তম্ভ কৰ্ম্মৰত্বং বিধীয়তে। কৰ্মণি বিহিতানি যানি কাৰ্য্যাণি, ইণ্যগাত্মনেপদানি তানি তত্ৰ ভবস্তীত্যর্থই। নিমিন্তাতিদেশক্ত ন সম্ভবতি ন হি কর্মণো যরিমিত্তং কর্মুসমুদ্দিষ্টক্ষং তৎ কর্ত্ব্যতিদেষ্ট্ । শক্ততে। বন্ধ-স্তরধর্মাণাং বস্বস্তরেণ বিরুদ্ধর্মণা সহ সম্বন্ধাভাবাৎ। বড়াদিপ্রকরণপঠিত-দ্বাৎ কর্মবস্তাবস্থ এতদ্বিহিতমের কার্যাং স্থাৎ নতু প্রকরণাস্তরীক্ষ তৎসমু-ন্দিষ্টং কৰ্মেতি অতএব কেদারে কর্মাৰম্ভাবান্ন দিতীয়া। যন্তামেব ক্রিয়ায়াং যশু কর্মাত্বং তজ্জাতীয়ায়ামেৰ ক্রিয়ায়াংযদি তম্ম কর্তত্বং ভবতি তদা কর্ম্মবদ্ভাবঃ এতক্ত প্রত্যাসন্তিন্তায়াল্লভাতে। একদ্রব্যসমবায়িনী হি ক্রিয়া প্রত্যাসন্না দ্রব্যান্তর্দমবেতা তু বিপ্রকৃষ্টা। তথৈৰ যশ্মিন্ ধাতৌ কর্ম্মণ্ণ তশ্মিরেব কর্ত্তত্বং প্রত্যাসন্নম। একত্র ধাতৌ কর্ম্মত্বম অপরত্র কর্ত্তত্বনিত্যপি বিপ্রকৃষ্ট-মেব। অতএব ভিদ্যমান: কুশুল: পাত্রাণি ভিনত্তীত্যত্র ন ভবতি। যদ্যপি **ट्छमन**क्रिय़ा अरेक्टेक्ट किन्ह निक्यवानमध्या। भारतामनः यक्ष्मस्यः রাধ্যত্যোদনঃ স্বয়নেব ইত্যত্র চ যহৈন্তব কর্দাৎং তহ্যৈব কর্দ্ধণং ভবতি। কিন্ত ভিন্নমোর্ধান্বোরত্র প্রয়োগঃ। নমু কথমেতৎ সম্ভবতি একস্তামেব ক্রিয়ায়ামে-কশ্র কর্ম্মত্বং কর্ত্তবং চেতি। অত আহ ক্রিমাণস্থিত্যাদি। কর্ত্রা ক্রিয়মাণ্ং সাধ্যমানং বৎ কর্ম স্বয়মেব হি সিধ্যাতি আত্মনৈর নিষ্পদ্যতে এতদেব কথম্ অত আহ। স্থকরৈস্তঃদ গৈরিতি কর্মণো গুণৈ: কর্ত্তঃ স্থানিস্পাদনীয়ৈ:। এতেন সাধ্যমানছাৎ তম্ম কর্মমেখিপ স্থকরগুণছাৎ স্বতঃ দিদ্ধৌ তম্ম কর্ত্তু-অমৃ। নবেবমপি ন সম্ভবতি কর্মশক্তিকর্তৃশক্ত্যোঃ স্বভাবতো ভেদাৎ। অব্রো-

৫৭৬। কর্তৃত্বে ধাত্রর্থে কর্তৃবৎ কর্ম্মকর্তা। শচ্ছতি[®]গ্রামঃ স্বয়মেব নতু গম্যতে।

৫৭৭। কম'স্থেচ তব্যাদৌ।

পক্তব্যমোদনেন স্বয়মেব।

৫৭৮। কর্মকর্ত্তরি ন যগ্নাদেঃ।
নমতে দণ্ডঃ স্বয়মেব ছুমে ছ্মেং গৌঃ স্বয়মেব মুমুক্ষতে
চাতে। শক্ত্যাধারস্তৈকত্বাৎ কর্মকর্ত্ত্বং বিবক্ষিতমিত্যদোষ:। বৃদ্ধাঃ
কর্মকর্ত্তেতি তদ্বিত্বরিক্তি নৈতদম্মাজিরজিধীয়তে কিম্বাচার্যা এব এতাদৃশমভিদধতি বয়য় তদর্থামুবাদকা:। কর্বৃষ্কে ধার্মবে কর্তৃবদ্ধাবাৎ কর্মমুক্ত
ধার্মবি এবাল্ল বিষয়:। অতএব লুয়জে কেদারঃ স্বয়মেবেত্যদান্ততং
লবনক্রিয়ায়াঃ কেদারে কর্ম্মনি স্বিতস্বাৎ এবং পচ্যত ওদনঃ স্বয়মেব
অভেদি কার্ছং স্বয়মেব কারয়য়য়ায়তে ঘটঃ স্বয়মেব। লুয়তে কেদারে
স্বয়মেব ইত্যপি ভাব ইজি এতেন বৎকরণয় ফলমুপদর্শিতং কর্মবৎ
কার্যাং ভবতি নতু কর্মতিব জবতি। যদা তু ধাতোঃ সকর্ম্মকতা ন স্থাৎ
তদা ভাববিহিত্মপি যৎ কার্যাং জনপি ভবতীত্যুচিত্মের।

- (৫৭৬)। থাতোরর্থ: ক্রিয়া সাধ্ত কর্তৃত্বা ভবতি তম্ম কর্মকন্তা কর্বদ্ধবতি। কর্মবদ্ধাবন্ত নিরাসার্থ: বচনম্। গ্লছতি গ্রামং বিপ্রঃ ইনং গমনক্রিয়া কর্তৃত্বা তন্মিরেব তত্পলম্ভাৎ গ্রামম্ভ কর্মণ: স্করেঃ বৈশ্ব-শৈর্মনা তম্ভামের ক্রিয়ায়াং কর্তৃত্বং বিবক্ষাতে তদা গ্রামন্ত কর্মকর্তৃত্বে গছতি গ্রামঃ সম্মেবেতাপি ভবতি নতু গ্রমাত ইতি।
- (৫৭৭)। কর্মস্থে চ ধার্মর্থে তব্যাদৌ কর্তব্যে কর্ম্মকর্তা কর্ত্তব-ন্থবতি। অতএব পক্তব্যমোদনেন স্বয়মেবেত্যত্র ওদনস্য কর্ত্বস্তাবে পচেরকর্মকর্মাৎ ভাবোৎপন্নেন তব্যেনাস্কর্মাৎ ওদনেনেত্যত্র ভূতীয়া।
- (৫ ৭৮)। কর্মকর্ত্তরি নমাদের্থা তোর্যা তবতি। কর্মবন্ধাবপ্রাপ্ত-মান্মনেপদং তবত্যের। নমতে দণ্ডঃ শ্বন্ধমেবেতি গৃদ্ প্রহ্মন্ত্রে শব্দে ইত্যস্তর্জাবিণ্যর্থোহত্র নমির্বে দিতব্যঃ। এবং স কর্মস্থক্রিয়ঃ স্থাৎ। অস্তর্পা কর্জস্থাত্ম কর্জ্বন্ধ ধান্ধর্থে ইত্যাদিনা কর্জ্বন্ধাবাৎ যক্প্রাপ্তি-রেৰ নাস্তি। অস্তর্জাবিণার্থস্ত কর্মস্থক্রিয়ো ভবতি। নমতে দণ্ডং দেবদন্তঃ

বৎস: স্থামের উৎপুচ্ছরতে গোঃ স্বয়মের বিকুরুতে পরঃ স্বয় । মের। নম্ ছুহ্ স্থাস্ গ্রন্থ কা গান্তসনন্তাল্নেপদার্ক শাকাশ্চ নমাদয়:।

নমতে দণ্ড: স্বয়মেবেতাক্র যকি প্রতিধিদ্ধে সামান্তপ্রাপ্ত: শঙেব ভবতি। গাং ছগ্নং দোগ্নি কর্মস্থলিক এবান্ধ, ছহিং ছগ্ন ইতি লটু তে হোঢ় ইতা।-দিনা হস্ত বং ধোহধাতুর্য্যাদিতি তক্ত ধং বর্গস্থাদিরিত্যাদিনা বস্ত কং অপদান্তেংপীত্যাদিনা কশু গঃ। মুমুক্ষতে ইতি মুচ্ মোক্ষণে সন্ দ্বিরুক্তিঃ চজোঃ ক ইতি চস্ত কঃ ষত্ত্বমূ। ইচ্ছায়াঃ কর্তৃস্ববেহপি মুঞ্চতেঃ কর্মস্থক্রিয়ত্বাৎ তদাশ্রয়ঃ কর্মবন্তাবঃ। হহেত্যাদি ছহ্ প্রপূরণে স্ প্রস্বেশে শ্রন্ মোচনপ্রতিহর্ষ্ণকোঃ গ্রন্ত্র সংদর্জে ইতি ক্র্যাদী গ্রন্ত্র সংদর্থে ইতি চুরাদী তয়োর্যদা যুজাদিত্বাৎ ণিঙ্ন স্থাৎ তদা গ্রহণং ণিঙি क्रांड भारत्यात्मय व्यांडिएसधिमकः। धीर्ण मिथित्मा श्रीप कोरित्मा ज्ञीनी তয়োরপাত্র গ্রহণমিতি মৈত্রেয়:। ক্রঞ্ব্যক্তায়াং বাচি এতে ধাতবো ণ্যস্তাঃ সনস্তা আত্মনেপদাকর্মকাশ্চ নমাদয়ঃ। প্রস্কুতে গৌঃ স্বয়মেব । এবং শ্রথীতে মেথলা গ্রথীতে মালা ক্রতে ধর্ম: ণীতি সামান্তগ্রহণং কারয়তে কটঃ স্বয়নেব উৎপুচ্ছয়তে গৌঃ স্বয়নেব। আত্মনেপদস্থ নিমিত্তমকর্মকত্বং যেষাং তে আত্মনেপদাকর্মকাঃ। অতএব বিকুরুতে পরঃ স্বয়মেব ইত্যাদা-হৃতম্। অত্র হি অকর্মকাচ্চেত্যাত্মনেপদবিধানাদাত্মনেপদনিমিত্রমকর্মক-প্দ। কটং করোতি দেবদত্ত ইতাত্র করোতেনি পত্যপদর্জনীভূতে निष्णाहरून वर्त्वराज निष्णाहामानः कंटेंश स्ववहरता निष्णाहरू यहां खनरमो-কর্যান্দেরদত্তপ্র বাপার্পাবিবক্ষায়াং করোতিনিশিন্তিমাত্রে বর্ততে তদা কৰ্ম্বণঃ কটবৈত্ৰৰ কৰ্ত্ত্বাৎ ক্ৰিয়তে কটঃ সম্বেদেতি যদ। তত্মাদপি নিষ্পত্তি-শাত্রবৃত্তে: করোতে: প্রেষণে নিভ্রপেদ্যতে কারমতি কটং দেবদত্তঃ निष्णामामांनः करेः त्ववनत्वां निष्णामग्रजीकार्यः जमा करतां कि करेः त्ववमञ् हेजात्नन महाश ममानार्थेजा পूर्वेव ज्ञातोक्धात्मवन देश वालादिश-বিবৃক্ষিতে ণাম্ভোইপি নিষ্পত্তিমাজে বর্ততে কারয়তে কটঃ স্বয়মেবেতাশু চ ক্রিয়তে কট: স্বয়মেবেতানেন সমানার্থতেতাত্র কর্মস্থধাত্ত্র ভৈব ধ্ববি। কর্মকর্ত্তরীতি কিম্? ছহুতে গৌর্গোপেন।

৫৭৯ 1 ভূষার্থকিরাদিশ্চেত্যেকে।

মণ্ডতে বাঁলা স্বয়মেব বিকিরতে হস্তী স্বয়মেব।

৫৮০। কৃষিরন্জোর্যগ্রিত্যং পর সৈ বা।
কুষ্যতে পাদঃ স্বয়মেব কুষ্যতি রজ্যতে পাদঃ স্বয়মেব রজ্যতি।
অচতুর্ তু—চুকুষে পাদঃ স্বয়মেব।

•৫৮১। বেহ যুযচি স্থাদেরাদীৎ। অযুযচি যে চ পরে স্থাদেরাদীন্তবন্তি। স্থীয়তে তেন্ঠী-

(৫৮১)। যুপ্রতিষেধাৎ ব ইতি বর্ণ গ্রহণন্। অকার উচ্চারণার্থঃ।
তেষ্ঠীয়ত ইতি যন্ উত্তে ক্তে মৃদ্ধিশ্যসাৎ কাদিরিতি থী ইতানেন
বিক্তিঃ গুণাদিবিক্তাবিতি গুণঃ বীষ্ম্। অস্থায়ীতি লুঙ্ ত সঙ্
সচ্পিজ্ভামিত্যাদিনা ইণ্ যুর্বেক্জাদেরিত্যাদিনা যুঃ। আস্থায়েতি জ্বা প্রাদেবিত্যাদিনা যচ্। স্থাদীন্ দর্শয়তি স্ক্তোদি। ষ্ঠা গতিনিযুত্তী দুদাকে, দানে দোহবধগুনে দাণ দানে দেঙ্রক্ষণে দুধাক্রণপ্রায়ন্থায়ন

⁽৫৭৯)। ভূষার্থো ধাতু: কিবাদিণ্চ নমাদিরিত্যেকে। মণ্ডতে বালা স্বয়মেবেতি মড়ি ভূষায়াং হস্তিনং বিকিরতি হস্তিপকঃ বিকিবতে হস্তী স্বয়মেবেতি কু বিক্ষেপে তুদাদিস্বাৎ শঃশ্বাদিব্ ইতীব যে চাপরে শিপ্তপ্রযোগা এবংবিধা দৃষ্ঠতে তে কিরাদৌ জ্বইব্যাঃ।

⁽৫৮॰)। কুষ্ নিকোবে রন্জ রাগে ইত্যেতবোশ্চতুর্ কর্মকর্ত্রবি
বিষযে পবশৈপদং বা ভবতি। যায়িত্যম্। নমু যায়িত্যমিতি কিমর্থং
কর্মনিস্তাবাদেব যক্ নিজঃ ? উচ্যতে—বগ্বিষয় এব পবশৈপদং বা ভবতীতি
স্চনার্থং যক্ চতুর্ বিহিতঃ তত্ত্রব পরশৈপদং বা ভবতি অতএব ফলিতার্থং
দর্শিতবান্ অচতুর্যু চুকুষে পাদঃ স্বয়মেবেতি চতুর্যু ইত্যত্তাম্বর্ততে ইতি তু
বক্তৃং ন শক্যতে কর্মবং কর্মকর্তেত্যে অমুবৃত্তিঃ ভাং কর্মবস্তাবান্নিজ্যমেবাল্লনেপদং বাধিছা পবশৈপদং বা বিধীন্নতে। রক্ষ্যত ইতি রন্জ বাগে
ছলুপান্তেত্যাদিন। নকাবলোপঃ। চুকুষে পাদঃ স্বয়মেবেতি কর্মবং কর্মনকর্ত্তেতি কর্মবিস্তাবানিত্যমাল্মনেপদম্।

য়তে। অযুষ্চীতি কিম্ ? অস্থায়ি আস্থায়। স্থা দা দোদাশ্দেঙ্ধামামাঙ্মেঙ্ধো গৈ হাক্ পিবতি ধেঁট্। ৫৮২। কিতে চ। গীতম।

৫৮০। কিদাশীলে গ্রিঙিতীজাদির্ঘজাদে:।
কিদাশীর্লো রঙিতি পরে যজাদে: স্থানে ইজাদির্ভবিত।
ইজ্যতে ইফ্টঃ সমিজ্য ইজ্যাৎ উদিহা উদিহা উদিতঃ উবিতঃ।
যজ ইজ্বপ্উপ্বহ্ উহ্ বেঞ্ উ ব্যেঞ্বী হেবঞ্ হু বস্
উস্বদ্ উদ্ শি শূ।

ণয়োঃ মা মানেহদাদিঃ মাঙ্ মানে হ্বাদিদিবাদিশ্চ মেঙ্ প্রতিদানে ভাদিঃ বাহস্তকর্মণি কৈ গৈ রৈ শব্দে ওহাকু ত্যাগে পা পানে ধেট্ পানে এতে চতুর্দশ স্থাদয়ঃ। হাক্ ইতি নির্দেশঃ ওহাঙ্ গতাবিত্যস্ত নিরাসার্থঃ। পিবতীতি নির্দেশঃ পা রক্ষণ ইত্যস্ত নিরাসার্থঃ। তয়োহায়তে পায়তে ইতি রূপম্।

(৫৮২)। স্থাদীনাং কিন্তকারে পরে আগীন্তর্বাত। স্থাদোমামেঙ্যো ইত্যেতেযাং দোষমাস্থাং কিন্তে ইতি ইঙ্ব্যবধানাং দাদাণদেঙাং দদাণ নাঞ্ দেঙামিতি দদাদেশেন বাধনাং ধা ইত্যক্ত ধাঞাদে গ্লাদিং কিন্তে ইতি হি বিবানেন চ বাধনাং প্রয়োজনং কেবলধাতোন দৃশ্রতে ইতি এতান্ বিহায় গীতমিত্যুদাস্তম্। যন্দ্যি ধ্য়ে তু স্থাদি-ম্বাপি কার্যাং বিদ্যুত এব যন্দ্রিধা ধা দানী তবান্ধা দাধী তবানিত্যুদা-স্থাত্বান্ধে তু গৈ হাক্ পিবতি ধেটাং কিন্তে চেতি লক্ষণং পঠন্তি তেবাং ভ্রমপরম্পরাপঠিতানামুপদেশ উপেক্ষণীয় এব।

(৫৮৩/৫৮৪)। পদাগুবর্ণেনাপি পদং লক্ষ্যতে যথা আকামাবৈদ্বনন্তক্মিত্য ন আকামাদিবর্ণেরাষাড়ী কার্ত্তিকী মাদা বৈশাখ্যাব্য স্থেহাপি লিবর্ণেন লিঙ্ লক্ষ্যতে। ইজ্যাত ইতি যক্ ইপ্ট ইতি ক্তঃ নুস্জাগুভছুলামিতি জম্ম বং তম্ম টঃ সমিজ্য ইতি জ্বা যচ্ ইজ্যাদিতি লিঙ্বাৎ উদিবা উষিত ইতি মৃড় মিদ ইত্যাদিনা ব্যাদিবাদিট্ যজ্ ৫৮৪। অদাদিবচ্**সপোরুচ্সুপে)।** উচাতে স্থপাতে স্থপাৎ।

७००। दिवार्वकार निर्धि छ।

ইজতুঃ উচতুঃ। বেঞ্জ্ঞ। বকতুঃ।

৫৮७। वरम्रङ्यूरवी।

উয়তুঃ উবতুঃ।

দেবপূজাসংগতিকরণদানের ড্বপ্ বীঞ্ তন্ত্বসন্তানে বহ্ প্রাপণে বেঞ্ তন্ত্রসন্তানে ব্যেঞ্ সংবরণে হেরঞ্সার্জাশন্ধরোঃ বস্ নিবাসে বদ্ ব্যক্তারাং বাচি টুওখি গতিরজ্যোঃ এতে নব ফলাদরো ভাদ্যন্তর্গণপঠিতা এব। অদাদিবচ্ স্বপোরপি বঙাদিফাৎ উচ্ স্বপৌ বিহিতৌ অদাদীতি বিশেষণাৎ বুজাদিপঠিভন্তাগ্রহণম্। বচ্ ভাষণে ক্রঞাদেশন্তাপি বচো গ্রহণং ক্রিম্বপ্ শরে। কিদাশীর্লোরিতি কিম্ ? স্বপিতঃ। রুদাদেরিত্যাদিনা ইং। অভিতীতি কিম্ ? যক্ষীষ্ঠ অনুদন্তেত্যাদিনা আ্যানেপদন্ত ভিষাৎ সাষ্টিন্ত ভিত্বং বাহল্যাৎ ক্রচিন্ন ভবতি উদকেন শ্বন্নতি উদ্ধিৎ ক্রিপ্ তুক্ সংজ্ঞারামিত্যুদাদেশঃ।

- (৫৮৫)। বেঞং বর্জয়িয়া যজাদে: স্থানে অভিতি নিটি পরে ইজাদির্ভবতি। ঈজত্রিতি অতুস্ সর্ব্ধাদেশে। বেতি নিয়মাৎ ইজাদেশে কতে বিজক্তি:। আনপ্রতায়স্থ লিড্দতিদেশাৎ অমুপূর্কান্ত বচেরন্চান:। ববত্রিতি এচোহশিতীর্ত্যাবং বিজক্তিহেতাবচাগি চেত্যাকারলোপঃ। ইঙিতি তু—ইয়াজ বশ্মজাজোরিত্যাদিনা অভ্যাসম্ভ যকারদ্য ইকার:।
- (৫৮৬)। যজাদিবিধেঃ প্রক্রান্তবাং কেঞানেশক বরে গ্রহণ নকু বন্ধাতোর্গতার্থক বন্ধেরভিতি লিটি পারে উন্ক্রিক্টব্দ্ইত্যেতী ভবতঃ। উন্প্রিতি বেঞ্তপ্তানে বেঞ্বদ্ধিকৈতি বন্ধিরাদেশঃ। ভিতি জু— উবান।
 - (৫৮৭)) বেঞ্ব্যেঞ্ইত্যেত্রোর্ঘটি উ বী ইভ্যেকৌন ক্তবতঃ।

৫৮৮। ব্যেঞ্জঃ পর্যাদের্বা। পরিব্যায় পরিবীয়।

৫৮৯। গ্রাঃ শৃঃ ক্তে ক্ষীরহবিঃপাকে। শৃতং ক্ষীরং শৃতং হবিঃ।

৫৯০। জাগুর্গু গোহণিল্লিটি চ।

কিদাশীর্ল্যোর্যেহণিল্লিটি চ পরে জাগর্ত্তের্গুণো ভবতি। জাগ-র্যাতে জাগর্য্যাৎ জাগ্রিয়তে জাগ্রিয়াদিত্যেকে। উজ্জার্গ্য জজাগরতুঃ।

⁽৫৮৮)। পরি আদির্যা স পর্যাদিঃ পর্যাদেঃ শন্ধাত্তরস্য ব্যেঞাে যচি পরে বীর্কা ভবতি। তথাচ পাণিনীয়ং হুত্রেং বিভাষা পরের্কেতি। নম্ ব্যেঞ্জ পরের্কেত্যেবুং লক্ষণং কমান্ন রুত্রু ইচ্যতে—মতান্তরক্তাপি সংগ্রহণার্থনাদিপদেনােপসর্গান্তরক্ত সমােহপি গ্রহণন্। তথাচ কাতন্ত্রহুরেং, সংপরিক্তাং বেতি। এবমপ্যাদিপদােনমনর্থকং স্থাৎ সংপরিক্তাং ব্যেঞাে বেতি হুত্রং ক্রিম্বতাম্ ই উচ্যতে—বোধদ্যেন মতদ্যাপসংগ্রহকৌশলমেতৎ হুত্রকারশু অত্রুব বৃত্তিক্তাপি সংবাদ্য সংবীয় ইতি নােদাহতম্।

⁽৫৮৯)। শ্রা পাক ইত্যদাদিং শ্রৈ পাকে ইতি ভাদিং শ্র ইতি ছয়ো-রপি এহণং পাক ইত্যনেন বিক্লিতিরত্র বাচ্যা। শ্রঃ ক্তে পরে ক্ষীরহবিং-সম্বন্ধিনি পাকে বাচ্যে শৃঃ স্থাৎ। শৃতং ক্ষীরং শৃতং হবিরিতি চ পক্ষি-ভার্থং। অকর্দ্মকোহয়ং ধাতৃং কর্ম্মকর্ত্তরি বিষয়স্থ পচেরর্থে বর্ত্ততে। ক্ষীর-হবিংপাকাদস্যত্র—শ্রাণা যবাগৃং যুক্তযরলাতোহধ্যাখ্য ইতি তদ্য নং।

⁽৫৯০)। জাগণ্ড ইতি যক্। জাগণ্যাদিতি আশীলিঙ্ যাং।
বিধ্যাদিলিঙি তু—জাগ্রাদিতি রিদ্তো যে চেতি ন রিং ন বিধাদিলিঙ্ য ইতি প্রতিষেধাং। জাগ্রিমাং জাগ্রিহত ইত্যেকে। রিদ্তো—
যে চেতি রিকারঃ অত্র স্ত্রকারসা অস্বরস এব। গিলিটি তু—জ্জাগার
জা গুরিণ্লিটোরিতি বৃদ্ধিঃ। কিদাশীলোগারিত্যেব। জাজাগ্রীয়তে।
বিসোদিভুদতিদেশাং জ্জাগর্মানিতি। কেচিং জ্জাগ্রানিতীছেন্তি।

৫৯১। ঋদংযোগাদ্যতো যনি।

যনি কিদাশীর্ল্যোর্যেহণিল্লিটি চ পরে অর্ন্তে: সংযোগাদ্যতশ্চ গুণো বভতি। ঋ অরার্যাতে অর্য্যতে অর্য্যাৎ সাম্মর্যাতে স্মর্যাতে সম্মরতঃ সম্মরুঃ।

a २ । न गि ।

সংস্মৃত্য।

ু ৫৯০। সমৃত্_{কু}ঞোহণিল্লিট্যেব। সংচন্দ্ররে।

- (৫৯১)। রিদৃতো যে চেতি যবরলোহচীতি প্রাপ্তে বিধানম্। ঋ
 ইতি ঋ গতৌ প্রাপণে চেতি ভাদিঃ ঋ স্থ গতানিতি হ্যাদিঃ ছয়োরপি
 গ্রহণম্। অরার্য্যত ইতি অশাদিয়াদ্যনি গুণে দ্বিকক্রেট চ কতায়্মম্
 অশাদেঃ শাদিরিতি রঃ। আরতুঃ ক্লাকরিতি লিট্ অতুস্ উদ্। সম্মরতুঃ
 সম্মকরিতি ম্ব চিস্কায়াং বসোলি ভ্বদতিদেশাৎ সম্মর্কানিতি ভবতি। আতিদেশিকং কার্য্যং ন ভবতাপীতি সম্ম্বানিতি কেচিৎ। ণিল্লিটি তু--সম্মার।
 অসংযোগাদ্যতন্ত্র—ক্রিয়তে চক্রতুঃ।
- (৫৯২)। ব্যাখ্যানতো বিশেষপ্রতিপত্ত্যা সামান্ত গ্রতিষ্কেধাহম্। অর্ত্তেঃ সংযোগাদ্যতণত স্থানে বিহিতং কার্য্যং যিচি পরে ন ভবতি। সংস্থৃত্যেতি তুক্ স্থানিবছাবাদ্যতঃ কিবং গুণো রিকারশ্চ ন ভবতি। নমু, তুক্ ব্যবধানাং যকারপরত্বাভাবাদেব ন ভবিষ্যতি কিং প্রতিষেধেন তেদেতজ্জ্বলাপ্যতি অন্তবিধিষু ক্তেষেব তুগ্ভবতীতি অন্তব্যব উপকার্য্যেত্যাদৌ বিঙ্লাপ্যে ভূতঃ অত্যাপি তুক্ ন স্থাং।
- (৫৯৩)। সংযোগাদ্যতঘাৎ পূর্বেন প্রাপ্তে নিয়মার্থং বচনম্। স্রট্-সহিত্য ক্রঞাহণিলিটোর পরে গুণো ভরতি। সংচন্ধরে ইতি সংপর্গুপেভাঃ ক্রঞোহভূষণে ইতি স্কট্। নিয়ম: কিমর্থম্ অনিয়মে সতি সংস্ক্রিয়তে সং-স্ক্রিয়াদিতার গুণঃ আং। অণিলিড্চীতি পাঠে অচীতি প্রমাদাং পতিতম্। তেন বাসাবপি গুণো ন ভবতি। লিটি হলি তু সংচন্ধ্রান্ পূর্বেন প্রাপ্তি-রেব নিয়মেন বাধ্যতে নতু লক্ষণান্তরেণ প্রাপ্তিঃ অতএব সংস্করোতীতাক্রঃ গুণো, ভর্জ্যের।

৫৯৪। সনীণ্দীর্ঘঃ।
সনি যে চ পরে ধাতোরিণ্দীর্ঘো ভবতি। চীয়তে চেচীয়তে
চিচীয়তি হুয়তে জাহুয়তে জুহুয়তি।

৫৯৫। ন বিধ্যাদিলিঙ্কুদ্যে। জুহুয়াৎ রোরুয়ং ইতাং চিত্যঃ প্রচিত্য।

৫৯৬। দোপদর্গেণে। নাশীর্লিঙ্বে। অন্বিরাৎ।

৫৯৭। ন রিতো যকি চ। ক্রিয়তে ক্রিয়াৎ।

⁽৫৯৪)। চীয়তে হুয়তে ইতি চিঞ্চয়নে হু দানে চেচীয়তে ইতি যন্দ্বিক্জিগুণাদয়:। সনি চিচীয়তি জুহুখতীতি। ইণিতি রিদৃতে। যে চেতি ঋতণ্ড সনীতানেন সহ বিষয়বিভাগঃ স্পষ্টার্থঃ।

⁽৫৯৫)। বিধ্যাদিলিঙ: ক্বতণ্চ যে পরে ধাতোরিণ্ দীর্ঘোন ভবতি। রোক্ষমিতি ক শব্দে যন্লুকি উদন্তাদাবশ্যকে ইতি গাঁঃ যন্লোপে ণিন্ডাম-ভিদিতি অভিস্থাদ্গুণাভাবঃ। ইত্য ইতি ইণশাস্থজুষীদৃভ্রুঞ্পুণ ইত্যেনেন ক্যঃ।

⁽৫৯৬)। উপসর্গদহিতন্ত ইণ্ গ্রাবিত্যন্ত আশীর্লিঙ্ যে পরে দীর্ঘোন ভবঙি। বিধ্যাদিলিঙ্ যে পূর্বেণ প্রতিষেধে সিদ্ধে বিনাপ্যাশীর্গ্রহণেন আশীর্লিঙ্ ইতি লভ্যত এব কিমাশীঃপদেন। নমু ইণঃ সোপসর্গস্তৈব বিধ্যাদিলিঙি ন ভবতীতি নিয়নার্থতা স্তাৎ। এতদপি ন বাচ্যম্। বিধ্যর্থতাভাবে হি নিয়মার্থতা লক্ষণস্তাক্ষীক্রেরতে তদাশীর্লিঙি বিধ্যর্থতা এবাস্থ ভবিষ্যতি এবঞ্চ সতি আশীর্গ্রহণং স্পষ্টার্থং যকার এব পক্ষে পূর্বাস্থ্যে দীর্ঘবিধানাৎ লক্ষণদ্বরে যকারোপাদানমপি স্পষ্টার্থমেব। সোপসর্গপদং কিম ? ঈয়াং।

⁽৫২৭)। রিদ্তো যে চেডি ঝতঃ রুতশু রীত্যশাস্করণং রিসম্বনী ইণ্ আশীলি ঙ্যে যকি চ পরে দীর্ঘো ন স্থাৎ। ক্রিয়াৎ ক্রিয়তে ইতি রিদ্তোযে চেতি রিকারঃ। তেনাশ্রীয়তে ইত্যত্র তু দীর্ঘো ভবত্যেব। ধে ইত্যাসুর্বৌ যকি চেতি কিমর্থম্? যনি চ নিষেধঃ স্থাৎ। চেক্রীয়তে।

৫৯৮। ণিঙ্লোপোহশিদাদ্য চি।
শিদাদেরী অস্মির যে চ পরে ণিঙ্ললাশো ভবকি।
অচীকরৎ কারিকঃ কার্যতে প্রশাঠা। অশিদাদ্য চীতি
কিম্ ? কার্যতি জন্মেজয়ঃ কার্য়ামাস স্পৃহয়ালুঃ
স্তান্তিরুঃ গড়য়ন্তঃ স্পৃহয়ার্যাঃ বর্দ্ধায়্রায়্রঃ।

৫৯৯। **অক্তক্ত**বস্থি**ঙ।** কাৰয়িয়া।

৬০০। কিব্বস্বো**শ্চ।** ঘটকাঃ চুচোর্ববান্।

- (৫৯৮)। অচীকরনিতি ক্রঞো নিঙ্লুঙ্ছঙ্ অন্ র্যোহশাবাদেরিতি ক্রয়া দিকজিঃ অস্তরাবিত্যাদিনা সন্বছাভাবাৎ ইন্ধিরনিতি
 ইকারঃ ততো দীর্ম:। কারিত ইতি ইঙি ক্রতে নিঙ্লুক্। কার্যতীতি শঙ্
 জন্মজয় ইতি এজ কম্পনে নিঙ্থণঙ এজাদেরিতি থশঙ্ ওণায়াদেশৌ
 খিতানবায়াদমগ্ ক্রমণ্ডেতি জনশকাৎ মকারঃ। কার্যামাস ইতি
 গাদেরিত্যাদিনা ভাম্ অস্তেরম্প্ররোগঃ লিট্ অণ্ ভাদির্যকি চাস্ত্যাদেরিতি প্রাপ্তস্ত ভাদেশস্ত ন ভ্রত্তেরিত্যাদিনা প্রতিষেধঃ। স্পৃহয়ালুরিতি
 স্পৃহ্ ঈপারাং চুরানিছাঙিঙ্ স্পৃহাদিশ্চেতি পিরাদিদ্বার গুলং গাদেভাবাদিপ্রচ্ছীলাদাবিতি ভালুঃ। ভ্রনিয় রুরিতি স্তন্ বণ্ধন্ শঙ্কে পঠাতে
 স্বার্থে নিঙ্কথানিদার বৃদ্ধিঃ গাস্তরনাদেরিছ রুরিতি ইয়ঃ উনাদিমাদ্ভণঃ।
 গড়রস্ক ইতি গড় সেচনে নিঙ্ঘটাদিদ্বাৎ ক্রমঃ জ্যাদের্ড ইতি ভক্ষঃ।
 সভ্ররার্যা ইতি প্রাদেরার্যা ইতি আর্যাঃ চুরাদিমানিঙ্বা বিছ্লাণ্
 ভ্রার্যাইতি প্রাদেরার্যাইতি আর্যাঃ চুরাদিমানিঙ্বা বিছ্লাণ্
 ভ্রার্যাইতি প্রাদেরার্যাইতি আর্যাঃ চুরাদিমানিঙ্বা বিছলাণ্
 ভ্রার্যাইতি প্রাদেরার্যাইতি আর্যাঃ চুরাদিমানিঙ্বা বিছলাণ্
 ভ্রার্যাইতি প্রাদেরার্যাইতি ক্রাদেরিষ্কৃত্ত ইতীষ্কৃত্ব। ভানিস্কৃত্বান্দ্রিক্রার্থাং বট্ স্থাঃ শিলাদরঃ।
- (৫৯৯)। ক্তক্তবতূ বৰ্জনিয়া ইঙ্ শিদাদির্ভবতি। ইণুস্ত অশি-দাদিয়ারোপো ভবতোব। চোরিষ্যতে। ইঙ্পক্ষে তু। চোরম্বিষ্যতে।
- (৬০০)। কিপি বসৌ চপরে ণিঙ্লোপো ভবতি। ঘটকারিতি ঘটং কারয়তীতি কিপ্ ণিঙ্লুক্ স্থলুক্ রেক্স্থ বিদর্গং। চুচোর্কানিতি চুর

৬০১। রতোরিঙ্ভাধ্যয়নে ক্রেন গুণশ্চ। তং ব্যাকরণং বিশ্রেণ।

৬০২ণ **শ্রো হবি:ক্ষারপাকে** প্রয়োজকণ্ডাপ্রয়োন জাত্বে ৷

শৃতং ক্ষীরং শৃতং হবিশ্বজিজা। প্রয়োজকন্ত প্রয়োজ্যতে তু। শ্রাপিতং হরিশ্বজিজা যজমানেন।

স্তেরে ণিঙ্ লিড্বৰস্থানাৰিতি বস্থা দিককিঃ সহিক্ত্যেকাজিত্যাদিনা ব্যচাদিছাভাবাদিড়ভাবঃ। ততঃ স্ব্ট্যুগিদিত্যাদিনা কুম্ দীর্ঘোমহৎ সাজোনাবিতি দীর্ঘাঃ। ক্লাপি প্রতকে চকার্মানিতি পাঠঃ কুঞো ণিঙ্বস্থাদি পূর্ববিৎ।

(৬০১)। অধীয়তে ইত্যধায়নং কর্মসাধনোহধায়নশকঃ ক্তবিশেষণকৈতং। গাস্তস্ত বৃত্তোরধায়নে ক্তে পরে নিঙ্ ইঙ্ চ লোপঃ স্যাং। গুণশ্চ
ন ভর্মত। চকারঃ পূর্ক্ষবিধি মুম্কেয়ার্থঃ নতু নিঙ্ লোপার্থঃ নিঙ্ লোপস্য
পূর্ক্ষয়তেনৈর নিজ্ঞাং। বৃত্তং ব্যাক্ষরণং বিপ্রেণ অধীতমিত্যর্থঃ বৃত্তিরয়মকর্মকো গাস্তঃ সকর্মকো ভরতি। নমু অন্তর্ভাবিণার্থয়ানের বৃত্তেঃ প্রয়োগো
বিদ্যত এব তেন বৃত্তমিতি তথৈর সিদ্ধত্যের তং কিং লক্ষণেন ? নৈবং যদা
অন্তর্ভাবিণার্থতা ন স্যান্তদা নিঙি ক্কতে বর্তিতং ব্যাক্ষরণং বিপ্রেনেত্যপি
স্যাং তন্মরাক্ষরণার লক্ষণমেতং। ইত্যেকে বদন্তি বর্তিহমিত্যপি
প্ররোগো ভরত্যের ভন্মতে লক্ষণমেতং বৈচিত্র্যার্থম্। নিমিন্তাপায়েনাপি
গুণনিবৃত্তৌ প্রাপ্তার্মাণ গুণক্তি কৃতং নিঙ্লোপে ত্রিমিত্তনার্যাং ন
নিবর্তি ইতি জ্ঞাধনার্থং তেন কারিত ইত্যাদি সিদ্ধাতি। গুণ ইতি চ
নিঙ্নিমিত্তকার্যোপলক্ষণং তেনোক্রেযোগ্রোঃ শৃত্মিত্যক্র পুঙ্ নিবর্ততে
দক্ত ইত্যক্র পৃদ্ধিন্ত।

(৩০২)। শ্র ইতি প্রান্ত্রে পাকে ধাছোগ্রহণম্। শ্র ইঙো ণিঙশ্চ ক্রে পরে লোপো ভবতি। ন গুণ⁶চ। হবিষঃ ক্ষীরক্ত চ পাকে বাচ্যে প্রবোজকভাপ্রযোজ্যতে সতি। শৃতমিতি ণিঙ্ইঙশ্চ লোপে রুতে পুঙ্-নির্ত্তী শ্রঃ শৃঃ ক্রে ইত্যাদিনা শৃভাবঃ ধাতুরয়মকর্মকন্তর্নাহরণং প্রাপ্তক্রমেব শৃতং ক্ষীরমিতি যদ। গ্যন্তঃ সকর্মকন্তনা শৃতং হবিশ্তি- ৬০০। দম্ শম্ পূর্ দস্ স্পশ্ ছদ্ জ্ঞেপের্বা।
দান্তঃ দীনতঃ শান্তঃ শনিতঃ পূর্ণঃ পূরিতঃ দন্তঃ দসিতঃ স্পান্তঃ
স্পশিতঃ ছলঃ ছদিতঃ জ্ঞাঞ্জ জ্ঞাপিতঃ।

৬০৪। বজি পচি জ্বপেঃ কো। যাষ্টিঃ পাক্তিঃ জ্বপ্তিঃ।

জেতি শ্রপিতং হবিশ্ব জিলা যজমানেনেতি শ্রপিতমিতি প্রাধাতোর্ণিঙস্তাং পুনর্ণিঙি ক্লতে প্রযোজকস্ত শক্তিন: প্রযোজ্যখনিতি লোপাভাবঃ প্রযোজ্য-স্থা প্রযোজকত্বে ইতাপি পাঠো দৃষ্ঠতে স চ তথাবিধসঙ্গতার্থোন ভবতীত্বাপে-ক্ষিতঃ। হবিঃক্ষীরপাক ইতি কিম্? শ্রপিতা যবাগৃঃ।

(৬০০)। দমু উপরমে শমু উপশমে পূরী আপ্যায়নে দিবাদিশ্ রাদিশ্চ তম্ব দম্ব উংক্ষেপে স্পাশ্ ধার্মস্পর্নিয়োঃ ছদ্ অপবারণে ক্রপিরিতি
ভা মারণতোষণাবলোকনেদ্বিতি ঘটাদিদাশুসে রুতে নির্দেশঃ এষামিঙ্
নিঙ্ চ ক্রে পরে লুখা স্যাং। ন গুণশ্চ। দাস্ত ইতি নিঙ্ ইঙশ্চ লোপে
কতে অভিত্তথোশ্চেত্যাদিনা দীর্ঘঃ ধাতুমোনোহঙ্যে ইতি মস্য নঃ দমিত
ইতি পূর্মেণ নিঙ্লুক্ অস্বার্থনাবিত্যাদিনা ঘটাদিদ্বাদ্ধুম্বঃ গুণপদেন র্দ্ধিরূপক্ষ্যতে তেন দস্ত ইত্যাদৌ বৃদ্ধিনা স্বাং। নিমিন্তাপায়ায়িরভিরিতি বক্তৃং
ন শক্যতে পাঠিতঃ কারিত ইত্যাদৌ চ নিঙ্লোপে সতি বৃদ্ধিনিরুজিঃ স্যাং।
যদি বা নিমিন্তাপায়াদত্র নির্ভিস্তদা কিমর্থং পূর্বস্বত্তে ন গুণশ্চেতি শাস্তঃ
ইত্যাদৌ ন বৃদ্ধিবিধানং কিন্তু সত্ত আদিহিতঃ অত্তর্ব নিষেধা নাশন্ধনীয়ঃ। জ্বপেঃ সনীবস্তর্দ্ধ ইত্যাদিনা রধাদিছেন বিক্লিন্তেঙ্গাৎ ক্রেক্রবভোরিত্যাদিনা ইঙ্নিবেধে নিঙেব লুপ্যতে পক্ষে নিঙেব তির্ছতি জ্বপ্তঃ জ্বিপিড
ইতি জ্বামারণতোষণাবলোকনেশ্বিতি ঘটাদিছাদ্ধুমঃ।

(৬০৪)। যজি পচি জ্ঞপে: জেনী পরস্যাং পিড্ লোপঃ স্যাধ।
ত্যাদিখাদিঙেবাত্র নাস্তি অতো ন তল্লেশিবিধানমত্র ন গুণশ্চেতি নাম্বর্তকে
বৃদ্ধিনিষেধা ন বিধীয়তে উত্তরস্ত্রে ক্রম্বপদোপাদানাৎ অক্তথা তদনর্থকং
স্যাধ। বৃদ্ধিনিষেধেনৈব এতদর্ধসিদ্ধে: জ্ঞাপ্রিতি স্বার্থিকোণিঙ্জ জ্ঞানে
বেতি ঘটাদিখাদ্ধস্থ:।

৬০৫। ছদেক্রামে ব্রুক্ত। ছত্রং ছবা ছদিঃ ক্লিপ্তসুচ্ছং।

৬০৬। একোপদর্গে চ করণার্যঙঃ। দস্তচ্ছদঃ প্রচ্ছদঃ উরশ্চদঃ ছদঃ।

৫০৭। উপদর্গাদৃহো হ্রস্বঃ।

উপসর্গাত্বত্বস্থা উহতের্যে পরে ব্রস্থো ভবতি। প্রপরাঙ্গনিপ্রতি-নির্ব্যতিসংগ্রুরবাভ্যমুসূত্মপর্যাধয়ঃ। অপি বিংশত্তিকাঃ ক্রিয়গ্রামু-গতাঃ ক্রচিদর্থভিদোহপ্যুপসর্গতিয়া। অভ্যুহ্নতে অভ্যুহ্ন।

⁽৬০৫)। ছদেস্তাদৌ পরে পিঙ্ লোপো ভবতি এখন । ছত্রাতি ছদেশ নৃঙ্ ছত্রমিতি ছদেশ্ব রাণিণিঙস্তাৎ ণ্যাদেস্তঙিতি এঙ্। ছুমেতি প্রাদেম নৃঙ্ ইতি মন্ঙ্। ছদিরিতি স্পাদেরিসিতি ইম্ তরুং ছাদয়তীতি কিপ্ তম্পছং।

⁽৬০৬)। একোপদর্গে চেতি চকারঃ সমুচ্চয়ার্থঃ। একোপদর্গদ্য ভাবরূপরান্তাবরূপমেবৈকোপপদং সমুচ্চীয়তে নকভাবরূপমুপদর্গাভাবপদম্। অনেকোপদর্গ এব কিমিতি ন সমুচ্চীয়তে তদা উপদর্গে চ বিধানং লভ্যত এব অত একোপপদে একোপদর্গে চ দতি ছদেঃ করণার্থে বিহিত্যে ওস্তাদিঃ স্যাং। দস্তছেদ ইতি দস্তাশ্চাদ্যন্তেহনেনেতি করণে ওঃ এবং প্রছেদ্যান্তিহনেনেতি প্রছেদঃ ছাদ্যতেহনেনেতি ছদঃ পত্রম্। একোপদর্গ ইতি কিম্ দু সমুপচ্ছাদঃ। যুজাদিপাঠাদ্বিকল্পতে ণিঙি দস্তছেদ ইত্যাদ্যঃ সিদ্ধান্তোব দস্তচ্ছাদাদিনিরাদার্থন্ত লক্ষণম্। লক্ষণসাম্থ্যাদেবাত্র ঘণা ন ভবিতব্যমিতি লক্ষ্যতে।

⁽৬০৭)। নতু উদর্গা এব কে অত আহ প্রপরাত্তিত্যাদি। বিংশতিঃ
দংখ্যা এষামিতি বিংশতিকাঃ কতি বিংশতিক্রিংশতক্ষেতি কঃ এতেন
ন্যুনাধিকসংখ্যাপরিচ্ছেদো দর্শিতঃ এতে বিংশতিকা উপসর্গতয়া
হেতুভূতয়া ক্রিয়য়াত্মপতাঃ অনুশব্দঃ পশ্চাদর্থে অতএবেতি নিয়মেন
য়াতোঃ প্রাক্ প্রযুজ্যন্তে। এতেনোপদর্গপদদ্য যোগরাভৃষ্ণ ব্যাক্কতবান্
উপস্ক্যান্তে সমীপে সম্ধ্যন্তে ইত্যুপদর্গাঃ। সম্বন্ধশ্চ কেনাপি সহ

৬০৮। ন ণ্যে। অভ্যুকো^{\$}য়মর্থঃ।

৬০৯। অপেরল্লুশ্বাদো বা। অপিধতে পিধতে অপিধানং পিধানং অপিনদ্ধঃ পিনদ্ধঃ।

৬১০। নো জনাদেরাদ্বা। যে পরে জনাদের্নকার আদ্বা ভবতি। জায়তে জন্মতে জাজায়তে জংগ্রন্মতে।

ভবতি। স চ ধাৰ্থিকারাং ধারুনা সহেতি ধাতুনা সহ সম্বন্ধঃ দাক্ষার্ন ভবতাতি ধার্থেনেতি গম্যতে ধাতোশ্চার্থঃ ক্রিয়া অত আহ ক্রিয়ালুগতা ইতি ধার্থে সম্বন্ধা ইত্যুর্থঃ। মত্যেবং কথং প্রতিষ্ঠতে ইত্যানে উপসর্গব্দ-নাবাং ধার্থেবিক্রার্থন্যোতনেন তৎসম্বন্ধার্থবাভাবাৎ অত আহ কচিনর্থ-ভিলেহেণীতি অর্থং ভিন্দস্তি অর্থভেদং বোধয়স্তীত্যর্থভিদঃ। ধাতুনামনেকার্থবাং তিরোহিত্যপি ক্যপ্যর্থং প্রতিপাদয়স্তীত্যর্থঃ। যথা তেজন্তিমিরভিরোহিতং ভবনগত্যথমিতি এতেন ভ্রাপি ধার্থানুগভর্মেবামীবামিত্যুক্রম্। বত্র তু ধার্মন্তরার্থেন সহামীবাং সম্বার্থন্ধং তত্র তং ধাতুং প্রতিনামীবামুপ্দর্গহ্য অতএব প্রণারকো দেশঃ। অভ্যুহতে ইতি উহ্ বিতর্কে যক্ অভ্যুহতে জ্বুণ মচ্।

(৬০৮)। ণোপরে উহ্বিতর্কে ইতাস্ত **হ্রেখান ভবতি। অভ্যু**ষ্ ইতি শংলোণ্য ইতি গাং।

(৬০৯)। অপেরণসর্গস্থ ধাদে) পরেহকারলুখা ভবতি। অপিণত্ত ইতি ধাঞো লট্ট তে হ্বাদিখাদ্বিক কিঃ দাধোহলি চেতি আকারলুক্ বর্গস্থানিরিত্যাদিনা ধস্ত তঃ নধাঞ ইত্যাদিনা ধকারস্থ দকারনিষেধঃ। অপিধাননিতি ওনট্। অপিনন্ধ ইতি নহ্ বন্ধনে ক্তঃ নহোধোহঙ্য ইতি হস্ত বঃ ধোহধাতুর্গদিতি তক্ত ধঃ।

স্বাস্থাপ্যাল কু ক চিনিতি বক্তব্যম্। • স্ববতংসঃ বতংসঃ স্ববত্তরতি বত্ত-রতি। তথাচ, বৃষ্টি ভাগুরিরস্কোপমবাপ্যোক্তপসর্গয়োঃ।

(৬১০)। জন্ততে ইতি ভাবে যক্ যতি তু জাদির্যজ্ঞাদেরিতি জাদেশো নিত্যোহশু বাধকঃ। জাজায়তে ইতি যন্ পক্ষে জঞ্জনতে ७३३। न (वा।

জग्रः। जन्जनीयन्थन्।

৬১২। অঙিত্তথোর্নিত্যমূ।

জাতঃ জংজাগঃ।

৬১০। সনেরাশীংক্তো বা লুক্চ। সাতিঃ সতিঃ সস্তিঃ।

৬১५। তনোৰ্যকি বা। তায়তে তম্মতে।

জপ্জভেত্যাদিনা অনুস্বারঃ। আশীর্লিঙ্ জায়াৎ জ্ঞাৎ সায়তে সন্ততে সাদায়তে সংস্ঞাতে ধায়তে থক্ততে চাধায়তে চংথগ্যতে।

(৬১১)। জনাদেনকারো ণ্যে পরে আকারো ন ভবতি। জন্ম ইতি জনাঙ্পতেঃ কর্ত্তরি চেতি গাঃ। জন্জননে হ্লাণিঃ জনী প্রাহ্রভাবে পিবাদিঃ বন্দ্দ সংভক্তৌ ভাদিদ্যোরপি গ্রহণমিতি ভাষ্যগ্রে স্পৃষ্টিমের থকু অবদারণে এতে জনাদয়ঃ।

(৬১২)। অভিত্রথাঃ প্রয়োর্জনাদের্নকার আত্রিতাং স্থাং। নিত্য-মিতি ক্রতং বাহুর্ত্তিশঙ্কানিরাসার্থম্। জাত ইাত জনী প্রাছ্রভাবে ক্রঃ বিবুবানীদিতাং ক্রৌ ছাবিতি ইঙ্নিষেবঃ। জংজাথ ইতি জন্ জননে ইত্যস্থাপি যনলুকি রূপম্।

অভিন্ত থোনিত্য মিত্য ভিদঙ্যে ইতি বক্তব্যম্। তেন ব্যতিজংজাদে ইত্যানি সিন্ধাতি এবং শাস্ত্রান্তরেশ সহাবিরোধঃ স্থাৎ। অভিদিতি কিম্ শৃ জংজন্তি। অঙ্ধ ইতি কিম্ ? জংজনঃ জংজনঃ।

(৬১৩)। বন্ধন্ সংশুক্তাবিত্যস্থাক্র গ্রহণং ষম্ব দান ইত্যস্ত্রন্দীঃ ক্রেন দিবিছেতি প্রতিষেধাৎ সন্তিরেব ভবতি। সনেরাশীঃ ক্রেন প্রস্থাং নকার আহা ভবতি। বা লুক্চ। অতএব রূপত্রম্। কাপ্যাংশিবীতি ক্রিঃ। আশিষোহস্তর—নিত্যং সাতিরিতি।

(৬১৪)। তক বিস্তার ইতাস্থ থকি পরে নকার আদ্বা ভবতি। পূর্বাহারা ইতাকুর্ত্তী লুগকুর্ত্তিরপি স্থাৎ তন্নিরাদার্থমিছ বা গ্রহণম্। যকীতি কিম্ ? তংতভাতে। ৬১৫। এচোহশিতি।

৬১৬। ন ব্যেকো লিটি। সংবিব্যায়।

•৬১৭। ক্ষেঞো নাম্ব্যতি। তাহ্বয়ঃ।

७১৮। मोधोरवरनातील्लग्रयरजाः।

(৬১৫)। ধেট্ ইত্যাদি ধেট্ পানে দৈপ শোধনে দোহবথগুনে কৈ গৈ বৈ শব্দে ইত্যাভ্যাদি ধৌয়ত ইত্যাভ্যাদাহরণানি। অবদানমিতি ঙনট্ দাতেতি তৃঙ্ তাঙ্ বা গেমনিতি গায়তে: কর্ত্তিরি চেতি যঙ্ আকারস্ত চ একারঃ স্থনবার ইতি স্থনাদেশে ট ইতি খশঙ্। অশিতিবিষয় ইতি এতেন প্রত্যোপেজঃ প্রাণেবাত্বং ভবতীতি স্থচিতম্। এবং সতি শৈ পাকে শাক্র ইত্যত্র প্রথমনাকারে ক্তে আদন্তাদমাদেরপ্রাদেরিতি অঙ্ ভবতি। স্থানং ভবতা ইত্যত্র অদরিজ্রাদন্তাদিতি ঙনঃ। অধাতোম্ব—গোকা। বিপ্রকৃত্তিয়ালাকনমিত্যাদের মতে জ্যাদেরিত্যান্ত্রিধানং জ্ঞাপকং নামন্দেশে ভবতি। তেন চেতা চায়কঃ।

- (৬১৬)। ব্যেঞ্দংবরণে ইত্যস্ত লিটি পরে এত আর স্থাৎ।
 সংবিব্যাগেতি লিট্ অণ্ বৃদ্ধিঃ আরু দ্বিরুক্তেন বশ্যজাদ্যোরিত্যাদিনা বী
 ততাে হ্রস্কঃ। দ্বিচনবছবচনয়োস্ত কিদাশীলেগারিতি বীভাবে রুজে
 সংবিব্যক্তঃ সংবিব্যাঃ।
- (৬১৭)। হোঞ স্পাদ্ধা শদরোরিভাস্ত নামি বাচ্যেংতি পরে এত-আর ভবতি। আহ্বয় ইতি আহ্বয়স্তানেন সাদের্ভাবাকর্ত্বারকরো-গিতাং।
- (৬১৮)। ঈদিতানেন দীধীবেব্যোঃ সম্বন্ধ ইত ইত্যশুচ যেতো-রিতানেনেতি সাক্ষাৎসম্বন্ধাভাবাৎ ক্রমো নাস্তি। দীধীঙ্ দীপ্তিদের-

যকার ইকারয়োঃ পরয়োদীধীবেব্যোরীল্লুগ্ভবতি। আদীধ্যতে আনেব্যতে দীধিতিঃ বেবিতিঃ।

৬১৯। ডিদডিং।

৬২০। তুঙ্ তামস্ত হি তং ত ঙানি ঙাব ঙাম।

তামাতামন্তাং স্বাথাং ধ্বং ঙৈ ঙাবহৈ ঙামহৈ লোড়িপ্যাদে।

বিধাাদিবিশিন্টেষ্ কত্রাদিমর্থেষ্ ধাতোরুত্তরে লোট্সংজ্ঞকাস্ত
ঙাদয়ে। ভবস্থি। সর্বলকারাণামপ্রাদঃ। ভবতু ভবতাং ভবস্ত
ভব ভবতং ভবত ভবানি ভবাব ভবাম।

নরোঃ দেবীঙ্ বেতনাত্ত্লো এতয়োব ট্ তে যক্ আদীধাতে আবেবাভে ইতি দীধিতিরিতি ক্রিঃ ভণাদিঃ জাবিতি বাচাদিখদিটে ।

(৬১৯)। দীধীবেব্যোন্ডি দিঙ্ছিবতি। আদীধ্যৈ ইতি লোট্ হৈ অভিছে সতি অভিদ্যানেকাচ ইত্যাদিনা যঃ আদীধ্যক ইতি একঃ থিতোস্থানি ভিত্তে তথ্যাভিত্যাং যং অনাদিআদুদ্ধিবাপ্তত্র ন প্রাপ্যোতি যকাবেশ
বাধিত্রাং। দরিদ্রাজাগুদীধীনামিতি ইঙ্ ধাতুকপনে ইত্যাদিনা ইঙ্
দ্বিল্লাক কতে দীধিশকাদান্ আমাকোহন্দর্শির্যাণ তি কঃ দীর্ঘণ্ড। থিঙি
দ্বিল্লাক চকতে আদীধ্যতি আদীধক ইত্যোকে। অন্তে তু থিঙোহ্যাদেশে
কতে দ্বিকালাবাং নৈমিত্তিক দ্বিকার্ল্গপি নিবর্ততে তেন আদীধ্যয়তি
আদীধ্যক ইতীচ্ছন্তি।

(৬২০)। লড়াদীনাং বিধানং কর্ত্তবি কর্মণি ভাবে চেতি পূর্ন্থবিব বাবস্থিতং বিধ্যাদৌ ভূঙাদীনাং বিধানেন বিধ্যাদয়ঃ কর্ত্তাদার্থ স্থৈব বিশেষণত্বেনোপাত্তা ইতি অত আহ বিধ্যাদিবিশিষ্টেয়ু কর্ত্তাদিষর্থেদিতি। অর্থবিশেষবিহিতেন সামান্তবিহিতানাং বাধনমিতি যুক্তং কালবিশেষানভিধানাচ্চ সর্ক্রকাল এব বিধানমিত্যপি যুক্তমেব অত আহ সর্ক্রকারাণামপ বাদ ইতি। লকারপদেন চ যাসাং সংজ্ঞানাং লকারা আদিস্থা ভাতি-ধানতে তাশ্চাম্মিন্ পানে প্রক্রান্তবাং লট্ল ওঙাদ্যো গৃহস্তে। ভবন

শ্পর্কতাং স্পর্কেতাং স্পর্কন্তাং স্পর্কন্ত স্পর্কের্থাং স্পর্ক্ধন্বং স্পর্কির স্পর্কার্ক হৈ স্পর্কানহৈ। প্রৈয়াদির্বাথ সংকল্পভেদোহথেফাভা-পায়তা। শব্দব্যাপারভেদো বা কার্যভেদোহথবা বিধিঃ। নিযুক্তিং প্রেমণা ভূত্য বং গ্রামং গচ্ছ। সৎকারপূর্বকনিযুক্তিরধ্যেষণা গুরো! মামধ্যাপয়। কর্তুরমুমতিরভ্যমুজ্ঞা শ্রাদ্ধং কুরুষ। সংকল্পভেদাদিপক্ষেহপ্যেবমুদাহার্যাম্।

় ৬২১। নিরূপণায়াম্। বেদমধীতাং শাস্ত্রং বা বটুঃ কিং ভদ্রম্।

৬২২। প্রার্থনায়াম্। দেহি মে ভিক্ষান্।

৬২০। নিয়মেন করণে। সন্ধাং কুরু। •

৬২৪। প্রৈমকামচারাত্মতিপ্রাপ্তকালেয়ু কৃত্যাশ্চ। ভূতা হয়। গ্রামো গন্তব্যঃ। হং গ্রামং গচ্ছ হং প্রেমিতোহনু-মতঃ প্রাপ্তকাল ইতার্থঃ।

বিত্যাদি শঙ্ ভবেতি অযুগুত্দন্ত্যো হেরিতি হেলুক্। বৈথ্যাদির্কেতি প্রেযণমধ্যেরণমত্মতিশ্চ প্রৈব্যাদিপদেনোচাতে স বিধিঃ। সংক্রভেদাদি-পক্ষেহপ্যেনমূদাহার্যামিতি সংক্রভেদাদিপক্ষে ব্যাথ্যানন্ত অনতিপ্রয়োজনং প্রপঞ্চবহুলক্ষেত্যুপেক্ষিতম্।

(-৬২১।৬২২।৬২৩)। নিরূপণা সংপ্রধারণা। প্রার্থনায়াসিতি। প্রার্থনা: বাচ্ঞা। নিয়মেন করণ ইতি। অসত্যামপি তদিচ্ছায়ামকরণে স্ত্যুধ্যার্থাব্যুক্তিনিয়মেনাবশ্রং ভাবেন করণং নিয়মেন করণম্।

(৬২৪)। প্রেষণং প্রৈষঃ কামচারে ইচ্ছাপ্রবৃত্তাবকুমতিঃ কামচারাকুমতিঃ নিমিত্ত্তভাবসরঃ প্রাপ্তকালঃ। প্রেষণান্যর্থের গম্যমানের লোড্ভবতি। কত্যাশ্চ। বিশেষার্থবিহিতেন লোটা কত্যা বাণিতাঃ স্থ্যারিভি
স্মাবেশার্থং বচন্দ্। তব্যঙ্ অনীয়ঙ্ পা বঙ্ ক্যাঃ কত্যাঃ। গতব্য

৬২৫। আমন্ত্রণে চ। ইচ্ছরা করণমামন্ত্রণম্। ইহ ভুঙ্ক্তাং ভবান্ ভবতা ভো্ক্তব্যম্ ইচ্ছরা ভুঙ্ক্তে ইত্যর্থঃ।

৬২৬। অধ্যবসায় ইতি কাতন্ত্রম্। পর্ববতমুৎপাটয়ানি পর্ববত উৎপাটয়িতব্যো ময়া।

৬: ৭। লিঙ্চোদ্মুহূর্ত্যোগে প্রৈষাদে। তিপরিফীমুহূর্ত্ত ভ্তা হং কটং কুরু হয়া কটঃ কর্ত্তব্যঃ হং কৃটং কুর্নাঃ।

৬২৮। লোড়েব স্মোদ্ধিযুহূর্ত্তযোগে। স্মোপরিফীশ্বহার্ত্তর ভ্রুত্তর স্বং কটং কুরু।

७००। जाटशायनीयांक ८ऋांत्रिशतन ।

श्वादा भागभाभय या।

- ইতি চৰা গ্ৰীয়ঙাবিতি ভ্ৰাঙ্থাতুমোনোহঙ্বে ইতি ম্প্ৰানঃ এবং ভ্ৰত। কটঃ ক্ৰবিয়ঃ কাষ্টঃ কুতাঃ।
 - (৬২৫)। আমন্ত্রণবিশিষ্টেন্ন কর্ত্রাধিশ্বর্থেনু লোড্ভবতি। ক্রত্যাশ্চ। ইচ্চবা করন্মিতি অকরণে যন্ত্র লোখাভাবঃ ইচ্ছন্না গ্রেন্ট্রিতার্থঃ।
 - (৬২৮)। অধাবসায়বিশিত্যু কর্ত্তাদিষ্থেযু লোট্ স্থাৎ। ক্বত্যাশ্চ। অশক্যেন্সি কর্ম্মণি উৎসাহবিশেয়েহধ্যবসায়ঃ।
 - (৩২৭)। উদ্ধানুষ্ট্বোগে বৈধাদাবর্থে গম্যমানে ধাতোক্তরে লোট্ স্থাং। হৃত্যান্চ লিঙ্ চ প্রৈয়াদাবিত্যনেন প্রেষকামচারাত্মতি লোগুবালা গৃহত্যে। উদ্ধান্ত্রোগে বিধানাং প্রেয়াদ্যর্থানন্ত্তিঃ স্থাদিতি প্রানিবাদার্থং প্রেয়াদাবিতি কৃত্য্। অত্র প্রৈয়াদো লিঙ্নিষ্থেং ক্ষ্যু-ভীতি ভিশাধনার্থনিহ লিঙ্বিধান্য।
 - (৬২৮)। অশহসহিত্য উদ্ধায়হূর্ত্ত খোগে প্রৈযাদাবর্থে ধাতো-রুত্তবে লোড়েব ভবতি। স্থাপ্যোগে বিধানাৎ উদ্ধায়হূর্ত্তান্ত্র্যুর্তিন স্থাদিতি শঙ্কানিরাসার্থমিহ উদ্ধায়হূর্ত্তাহণং পূর্দ্বপ্রপ্রাপ্তানাং লিঙ্কত্যানাং ব্যাদার্থমিদ্য এক্ষারস্ত ক্রতোহস্থোবার্থ স্পত্তার্থঃ।
 - (७২৯)। স্মাকোপপদে অধ্যেষণায়াঞ্চ লোড়ের ভবতি। অধ্যেষণা

৬৩০। আশিষি।

চিরং জীৰ।

৬০১। ইচ্ছার্থোপপদে কামপ্রবেদনে। ইচ্ছা মে ভুঙ্ক্তাং ভাষান্ কামো মে শ্রদ্ধা মে।

৬০২। সূত্রেক্ত্রেমাইঙিৎ। স্থবৈ স্থবাবহৈ স্থবামহৈ

 ৩০০। হি স্বাত্তো দিস্তঙাদ্যতঃ পোনঃপুত্তভূশার্থ-য়োল ভাদ্যকুপ্রয়োগশ্চ তত্ত্র স্থাৎ পুরুষে হিভিঃ।

পূর্ববেব ব্যাপ্যাতা স্থোপপদমিতি ক্রন্থ্রিমূহুর্ন্ত প্রেষাদাবিতাক্ত চ নির্ভ্যার্থং তুঙ্ তামন্বিত্যাদিনা লোটি সিন্ধে প্রবিধানং লিঙ্বিধাননিবাসা-র্থম্। অস্যাশ্য স্মেতি ইঙ্পাতোর্গিঙি ক্রতে জ্যাদেরিদাদিত্যা হং নৌ প্ঙা-দ্র্যারে রিতি পঙ্।

- (৬০•)। ইটার্থসাশংসনমাশীঃ ইটার্থস্য প্রাপ্তৌ ইচ্ছা আশীর্বি-শিথেইর্থে নর্ড্মানার্ভাক্তরে লোড্ভবতি। আশিষি লিঙ্ বক্ষাতি তেনাস্য সম্বেশঃ।
- (৬৩১)। উজার্থে শলেষু উপপদেব কাম প্রবেদনে হর্থে গ্রামানে লোড্ভবতি। কামণ্ড ইচ্ছায়াঃ প্রাবেদনং প্রকাশনং কামপ্রবেদনম্। ভূঙ্জামিতি ভূজ বাভোপ্তাং এম্ শ্লান্তোরদিত।কারলুক্ চলোঃ ক.ইতি জন্ত কঃ উপান্তিভূপ বর্গ ইতি নস্য জঃ অর্থগ্রহণাৎ কামোনে ইত্যাদি।
- (৬৩২)। স্ত্রাণিগর্ভবিদোচনে ইতান্ত লোড়্ত্রমোর্জিন্তবিত। ঙিংকার্যামত ন ভারতার্ত্তার্ত্ত। উত্তম ইতি ক্বতং স্পর্থার্য্য ন হি স্থানের্যাণি টোহত্ত্বাে ডিদন্তি।
- (৬৮০)। তুণ্ডানিতানেন তুণ্ডাব্যোহপ্তালশ প্রত্যায়া গৃহন্তে তদন্তো ধাতৃঃ তৃণ্ডান্তন্তঃ স পৌনংপৃতার্থে ভূশার্থে চ হন্তঃ স্বান্তশ্চ ভবতি। ছিক্তিশ্য। এতেনায়মর্থঃ সম্পন্ততে কুণ্ডাদীনাং স্থানে হিস্কৌ ভবতঃ তদন্তশ্চ দিক্তিভ্বতীতি। ভূশমতিশায়ঃ আতীন্যং পৌনংপৃত্যং পৌনং-প্রভূশার্থয়োর্বর্তমান্ত তুণ্ডান্তম্বস্ত স্থানে হিস্বান্তবিধানসামর্গ্যাদেব স্পৌনংপুত্রে ভূশার্থে চ তুগ্ডাদীনাং বিধানং লক্ষণান্তরেণাবিহিত্মপি.

পুনীহি পুনীছয়ং পুনাতি পুনীতঃ পুনন্তি পুনাসি পুনীথঃ পুনীথ পুনামি পুনীবঃ পুনীমঃ। পুনাতু অপুনাৎ পুনীয়িদিত্যাদি। তথা অধীষ অধীষায়মধীতে অধ্যৈত অধ্যৈষ্যত ইত্যাদি। যদা পোনঃপুত্যে যন্ তদা ভূশার্থেহয়ং বিধিঃ। লোল্য়য় লোল্য়য়ায়ং লোল্য়তে।

৬০৪। মধ্যমানুপ্রয়োগে বা বস্তুত্বে তথ্বমে দিধা।
লুনীহি লুনীহীত্যেবং লুনীত লুনীতেত্যেবং বা যুয়ং লুনীথ।

পভাতে। অমুক্তেথপি বিশেষে সমানধর্মা সমানধর্মাণমপেক্ষাতে ইতি স্থায়াৎ পরশ্রৈপদা হস্তো ভবতি আত্মনেপদী স্বাস্তো ভবতীতি। লডাদান্ত্র-প্রয়োগদেতি লড়াদীনাং কেবলানামসম্ভবাৎ লড়াছন্তা ধাতবো গৃহন্তে। ভেন লড়াদীত্যাদিপদেন চ লোড়াদীনাং সংভাব্যমানকুৎপ্রত্যয়ানাঞ্চ গ্রহণম্। পুরুবৈস্তিভিরিতি তু সম্ভবপরমুক্তং নতু নিয়মঃ। লুনীহি লুনী-হীত্যেবং লুনবানিত্যাদিপ্রয়োগদর্শনাৎ। তত্র হিস্বাত্তে লড়াল্যনামমুপ্রয়োগণ্ট করণীয়ঃ স চাতুপ্রযুজ্যমানঃ প্রক্রান্তরাৎ যশ্বাং হিন্তৌ বিহিতৌ স এব ধাতুকপকরাতে। যশ্বিন্ কালে ৮ হিস্নৌ তথাদিহিতো তৎক নবিহিত এব প্রতামোহপ্রাপকল্লাতে হিস্বাস্থ্য কালানিভেদোহরূপ্র:মাগদর্শনানেব জ্ঞাতব্যঃ। অর্প্রয়োগ ইত্যনেন পশ্চাং প্রয়োগো ন বাচ্যঃ কিন্তু সহযোগমাত্রং তেন পূর্মযোগে ব্যবহিতে **চ** ভবতি। नुनाठि দেবনত্তো नुनीहि नुनीहीि অভিহিতেহপ্যাভীক্ষ্যে ষিক্তিদর্শনাৎ পরস্ত সাকল্যাভীক্ষায়োরিতানেন পৌনঃপুনো বিক্তি-র্লভাত এব ভূশার্থেখনেন দ্বিক্তিবিধানম। লুনীহীতি নাহবাদেরিতা।-निमा आ९ के दः अनुमानि वि वह नुमीयानि विह अरेगाट वह उ বুদ্ধিরজাদেরিতি বৃদ্ধি:। পৌদংপুত্তে ভৃশার্থে চ যনো বিধানেনোক্তার্থতাৎ কথমশু প্রবৃত্তিরিতি চোদ্য আহ এদেত্যাদি লোলুয়ম্বেতি গুণাদিদি কিকা-বিতি গুণঃ।

(৩৩৪)। যৌ হিস্বৌ পূর্ব্বযোগেন তুঙাদীনাং স্থানে বিহিতৌ তৌ বছত্বে বিহিত্ত মধ্যমস্যানুপ্রয়োগে সতি বা তথ্বমৌ ভবতঃ তৌ ৬০৫। হিম্বাদির্কা বিনা দ্বিস্থ ক্রিয়াণাস্ত সমুচ্চয়ে।
সজাতীয়ো বিজাতীয়ঃ সামালোহসুপ্রযুজ্যতে।
"খনট দ্যানটাটোর্কীমিত্যটন্ত্যোহতিপাবনাং। যুয়মাপো বিজানীত
মনোর্তিং শুভাং নম॥ রসান্ সংহর দীপাস ধ্বাস্তং জহি নভো
ভ্রম। ইতীহমানস্থিয়াংশো বৃত্তং জ্ঞাতুং ঘটস্ব মে" ইতি ভট্টিঃ।

দিধা ভবতঃ। তথ্বমন্তরোর্দিককির্ভবতীত্যর্থঃ। অধীষ অধীষেত্যেবং যুয়মণীধ্বং পক্ষেহধীধ্বমণীধ্বমিত্যেবং যুয়মণীধ্বমিত্যপি ভাইবাম।

(७०৫)। विवापिति ज्ञापितरान उक्तरमार्थ वनम्। लाहेनः इदकी হিপৌ ত্রবমৌ চ যৌ বিহিত্তো তয়োরেবা তুকরণমিদম্। ক্রিয়াণাং সমুস্করে নেনকে পুনঃ সতি লড়াদিসংজ্ঞকারাং তিগুদীনাং প্রথমপুরুষাদ্যেকবচ-নাণিভেনবতামপবাদকো হি: স্ব হ বা ভবতি। তয়োঃ স্থানে মধ্যমালু-প্রবোগে সতি বছজে তঞ্জমৌ বা স্থাতাম্। দ্বিজং বিনা দ্বিকন্ত্যা বিনেতার্থঃ। অনুপ্রবুজাতে অত্র তৎ সজাতীয়ো বিজাতীয়ো বা সামান্তঃ। ক্রিয়াণামিতি বজ্বদমতন্ত্রং ক্রিয়বোরপি সমুচ্চয়ে ভবতি। খনটেত্যাদি অবৈক্সা এব ক্রিয়ায়াঃ দাধনভেদাৎ ভিন্নায়াঃ দমুচ্চয়ে দলাতীয়া দামান্ত-ক্রিয়া অন্নপ্রযুক্তা। রসানিত্যাদি। অত ভিলানাং ক্রিয়াণাং সতি সমুক্তরে বিজাতীয়ং সামাভোহতৃপ্রযুক্ত:। সর্দান্তেব ক্রিয়াস্থ চেষ্টায়া অবস্তানাদিহ ক্রিয়া সামান্তা ভবতি। হিস্পরিত্যক্তপক্ষেত্ যথাকাল-বিহিতান্তিভাদয় এব। মধাসবছবচনে তু হিস্বৌ পক্ষে তথ্যমৌ উভয়-ত্যক্তপক্ষে যথাকালবিহিতান্তিঙাদয় এব প্রযোজ্যা:। व्याक वनमधीय निकल्क में शिष्ठि व्यवीत् । उक्ष्तिभी यथा थमरे शामरी हि। কীমিতি যুয়মটথ পক্ষে থমটত ভামটত উৰ্বীমটত ইতি যুয়মটথ অথবা থমটথ ভামটথ উন্নীমটথ ইতি যুৱনটথ। ছন্দোহধীয় ব্যাকরণমধীয় নিক্ত্মবীষ যুয়মধীৰে পক্ষে ছন্দোহ্ৰীধ্বং ব্যাক্রণম্বীধ্বং নিক্ত্ব-भशीस्त्रिणि गृत्रभशीस्त्र व्यथना इत्नाश्वीस्त्र नाकत्रनभशीस्त्र निक्चक-মধীধ্বে ইতি যুৱমধীধ্বে এবং লড়াদিশ্বপূহন্।

৩০৬। হৌ হন্ জঃ। হৌ পরে হন্ধাতুর্জো ভবতি। জহি। ৬০৭। হলো নাদানঃ।

হো পরে হল উত্তরো নাদানো ভবতি 1 সৃহাণ পুষাণ।

७१४। नाशास्त्राप्तिष्तू क् छ।

হো পরে দাধাস্তানামকার এন্তবতি। দ্বিলুক্ চ। দেহি ধেছি এধি।

৬০৯। অযুগ্রুদদ্যোহেঃ। অযুক্তমুত্তবিকরণাকারেভা উত্তরস্থ হেলুর্গ্ভবতি। স্থুমু তুমু পচদীব্য তুদ। যুগুদিতি কিম্ ? প্রাগুহি।

⁽७७७)। ऋगमम्।

⁽৬৩৭)। গৃহাণেতি গ্ৰহ উপাদানে নাৎ বশাদের শাদিরিতি গৃহা-দেশঃ ছায়া, দিতাাদিনা হিলুক্ অজ্বদবেতাদিনা গলং প্লাণেতি পূষ্ পুঠে। হল ইতি কিমৃ ? ক্রীণীহি।

⁽৬৩৮)। দাধান্তীনামং দাধান্তাদিতি ষষ্ঠীসমাসঃ। হৌ পরেহন্তেদির্নিক্রেভাবাং দ্বিলু গিতি অন্তিনা সহ ন সম্বদ্ধাতে কিন্তু দাধা ইতানেন। যজপি দোদাণ্দেঙামপি দা ইতি রূপং স্থাং ধেটোহিপি ধা ইতি রূপং তথাপি তেখাং নাত্র গহণং দিরুক্তেরভাবাং যথা সবংসা ধেমুরানীয়তা-মিত্যুক্তে গোবেনুয়ানীয়তে ন মহিষবেলঃ। অথবা সন্নিহিতালাভে বিপ্রক্রিং বিধিরপেক্ষত ইতি শঙা যতা ব্যবধানাং ন দোপ্রভূতীনাং গ্রহণম্। দেওস্বান্মনেপদিশ্বাং হিপরতৈব মান্তি। এধীতি হ্রঙ্যাদ্ধিরিতি হেধিঃ শাসন্ত্যাধৌ লুগিতি সলুক।

⁽৬৩৯)। ফুদিতি সাদের দিতি বিহিতক্ত মুতো গ্রহণম্। উদদিত্যেতদপি তৎ সাহচর্যাৎ উকারস্থ অকারস্থ চ বিকরণক্তৈব গ্রহণম্। তকারস্ত জারণার্থঃ তেন উঙ্ তনাদেঃ ক্রঞোহঙিত্যুদিতি বিহিত্যে ক্রডুতোর্ভ্ গ্যাদেরিতি বিহিত্স শঙো দিবাদের্বি হিত্স বতস্তদাদিবিহিত্য শস্ত চ গ্রহণম্। যদি উদিত্যকারমাত্রগ্রহণঃ স্থাৎ তদা

৬৭ । হ্বঙ্যাদ্ধিঃ।

জুহোতেরওয়াচ্চোতরস্থা হেঃ স্থানে ধির্ভবতি। জুহুধি ভিন্ধি। অঙ্যাদিতি কিম্ ? বংভণহি পিপূর্হি।

৬৪১। তোস্তাদ্বাশিষ।

আশিষি গদ্যমানায়াং তোঃ স্থানে তাম্বা ভবতি। হেশ্চ জীবসু জীবুতাৎ জয় জয়তাৎ।

ম্বিতানর্থকং স্থাৎ উদিতানেনৈব মুতোহপি গ্রহণস্থ সিদ্ধন্বাৎ অতএব কহি জহীতাানৌ নলুক্। মুজো মুং মুগুৎ কো মুকো মুং যো হল্পরঃ। সুধি লাগি স্থাঞ্ অভিষবে তল বিস্তাবে জুপচ্য পাকে দিবু ক্রীড়াদো পঠাতে তুদ্ বাধনে ইতোতে বাং রূপন্। প্রাপ্রীতি প্রপূর্ক আপু বাাপৌ।

(৬৪০) অঙ্য ইতানেন নঞ্জংপুক্ষেণ সদৃশপ্রতীতেঃ ঙ্যবাতিবিক্রম্ভ হলব আ গ্রহণং নাচঃ অত এব প্রাপ্ত রি পাহি ইত্যাদৌ ন বিভাবঃ।
জ্তবীতি হ্যাদিয়িকিজিঃ গ্যঝহাজ ইতি হস্ত জঃ ভিন্ধীতি ভিদিব্ বিদারণে শ্লম্ গ্রেটাবনি ত্যকারলুক্। বংভণই।তি ভণ্শ দার্থে পঠাতে যন্লুক্
প্রেকতিবদ্ধি গুণাদিশ্চেতি দিক্লিঃ জপ্শ ভেত্যাদিনা স্থারঃ পিপুর্হীতি পূ
পালনপ্রণয়োঃ হ্রাদিয়াদ্কিজিঃ ঋদদিত্যকারঃ অপ্হাঙ্মা,ভল্ঞামজীদিতি উইম্ ইকারস্ত ইপ্রথং উব্ প্রগাদিত্যর্ রাস্তাদেরিত্যাদিনা দীর্ষঃ।

(৬৪১)। হেরিতি পূর্কাস্থ্রাদম্বর্ততে। জীবছিন্যাদি জীব প্রাণধাননে দি জয়ে ইত্যেতয়ো রূপম্। আশিমীতি কিম্ ? গ্রামং গচ্ছত্ ভবান্ গচ্ছ অম্। জুত্তাং স্বং ভিন্দাং ঘমিত্যক্র তাদিধান-ব্যতিরক্তে পক্ষে ধিবিধানং কতার্গং তাদাদেশেন বাধ্যতে। ব্রুক্তাং ভানিতি স্থানিবছাবাদনাদেশক্রবো ভিদ্ধলি চতুর্ঘীঙ্ চেতি ঈঙ্ ন ভবতি। তন্তাদিতি জসভিতোরিত্যাদিনা গুণ ও ন ভবতি। দত্তাং ঘমিতি দাদোহলি চেতি আকারলুক্ উপ্লাদিত বশাদেকশাদিরিতি উশাদেশঃ লুনীতাদিতি নাহ্বাদেরিত্যাদিনা আনীং। তোশ্চ তাল্লা-দিয়ীতি লক্ষ্ণমেতল্লিপিকর্প্যাদাদক্রথা জাত্মিতি লক্ষ্ণতে এবং স্তি

৬৭২। ছঙ্তাম্ অন্ স্ত্তং ত ওম্ব মৃ। ত আতাম্ অন্থাস্ আথাং ধবম্ই বহি মহি লঙনদ্যতনে ভূতে।

পূর্যবাপরনিশাযামো দিনেনাদ্যতনং বিছ:। অনদ্যতনে ভূতকালে ধাতোরুত্তরে লঙ্শংজ্ঞক। ছঙাদয়ো ভবস্তি। অভবং অভবতাম্ অভবন্ অভব: অভবতম্ অভবত অভবং অভবাব অভবাম। অম্পর্ক র্কত অম্পর্কেতাং অম্পর্কন্ত অম্পর্ক্ষণাঃ অম্পর্কেথাং অম্পর্ক্ষণং অম্পর্ক্ষে অম্পর্ক্ষাবহি অম্পর্ক্ষামহি।

৬৪০। বক্তুর্দর্শনযোগ্যে চ লোকখ্যাতে পরো-ক্ষকে। অতারুণদ্বাটীম্।

হেরিত্যক্তাম্বৃত্তিঃ স্পষ্টা ভবতি এতাদৃশ্যেব প্রক্রিয়া হত্তকারস্ত প্রায়েশ দৃখ্যতে।

[।] ৬৪২)। পূর্ব্বাপরে ত্যাদি পূর্ব্বভাশ্চাপবস্তাশ্চ নিশারা যামৌ দিনেন সহিতাবত্যতনকালং বিহুর্জানন্তি আচার্য্যা ইতি শেষঃ। দিনস্ত সামিধাৎ পূর্ব্বস্তাশ্চর্ত্বের্য যামোহপরস্তাশ্চ প্রথমঃ। অভবনিতি ল্গচ্ছণ্ডাদেরিতি অকারল্ক তৃত্তিতি ন কতং মন্দবিয়াং লোট্সংস্ক্তক্ত্থাহস্ত ঝটিতি ভিন্নপ্রতীত্যর্থম্। হুঙাদীনাং গুকারঃ অভনোদিত্যাদৌ গুণার্গঃ ছঙ্ব্রের্কারঃ উচ্চারণার্থঃ। অম্পর্ক্বেতাং অম্পর্ক্বেথামিতি শঙ্ কৃতে এদ্ভিদ্তাকারস্ত একারঃ অম্পর্ক্বে ইতি ইক এঙ্রবো গুণ ইতি গুণঃ।

⁽৩৪০)। অন্ততনে ভূতকালে প্রোক্ষে লিই প্রাপ্নোতি অদ্যতনে ভূতে চ লুঙ্ তয়োবাধনার্থনিদম্। বক্তুঃ প্রয়োজ্যুর্বন ক্রিয়াপদং প্রযুক্তং তত্ত দর্শনযোগ্যে তৎকালাবস্থানাং। প্রোক্ষেণ কার্যাদিব্যাসঙ্গোদর্শনাং লোকখ্যাতে বহু প্রদিদ্ধে ভূতকালে লঙ্সংজ্ঞকা হঙাদয়ো
ভবস্থি। নর যং প্রোক্ষমপ্রতাক্ষমাকাশাদি তৎ কথং দর্শনযোগামিতি
বিরোধঃ। নৈব্যুর প্রোক্ষশ্রেন যং প্রতাক্ষমেব কার্ববশাং অক্ষা ন

৬৪৪। সম্মাঙ্বোগে সর্বিকালে লুঙ্চ। মাম্ম করে মাম্ম কার্ষীৎ। জুগুপ্সত স্মৈনমন্থ্রভাবং মৈবং ভবানক্ষতসাধুরত্তমিতি জানকীহরণম্।

৬৪৫। আসমুকালে প্রশ্নে ভূতানদ্যতনপরোক্ষে লিট্ চ। গতোহদো কিং অগ্তহ জগাম। অনাসন্ত্রালে তু—জ্বান কংসং কিল বাস্থদেবঃ।

গৃহীতং তনভিবেরময়ঞ্চ বিশেষঃ পরোক্ষণক্ষম দিলা ব্যুৎপাননাৎ লভ্যতে।
তথাহি অপ্রভ্যকে পরোক্ষমিতি ব্যুৎপাদনেনাকাশাদিকমূচ্যতে। পরেঃ
পরস্চেতি ব্যুৎপাদনেন তু অক্ষি অক্ষি পরি পরোক্ষং অক্ষা কারণবশাৎ
বির্জিতমূচ্যতে ইতি: অকণনিতি কবির্ত্ত আবরণে প্রম্ ণরম্ অন্তলুক্ বর্গস্তেত্যাদিনা ধস্ত তঃ। দর্শনযোগ্য ইতি কিম্ ? জ্থান কংসং কিল বাস্থদেব
ইতি বক্তস্ত্রংকালেহবিদ্যমানত্বাং। লোকথ্যাত ইতি কিম্ ? চকার
কটং পামরঃ। পরোক্ষ ইতি কিম্ ? উদগাদাদিত্যঃ।

(৬৪৪)। অসহিত্যু সাঞ্জিতায় যোগে সর্কালে লঙ্ভবতি। শুঙ চ। মাস্থ কার্যীদিতি সঙ্সঙ্জনাব্যস্তেরিত্যাদিনা উঙ্সঙাধিজাগুরুদ্ধি-রিত্যাদিনা বৃদ্ধিঃ মাঙ্যোগাবভ্জাবঃ। ব্যস্তয়োদ্রস্থয়োরপ্যনুষোর্যোগে বিধিরম্মতি স্চনার্থং জানকাত্রণপ্রয়োগদর্শনম্।

(৬৪৫)। যং পৃচ্চাতে তং প্রশ্নম্ আসন্নকালে পৃচ্চামানে ভূতানদ্যতনপ্রাক্ষে লঙ্ভবতি। লিট্চ। পরোক্ষে লিট্সিদ্ধ এব লঙ্সমাবেশার্থং বচনম্। কন্টিং পৃচ্ছিত কিং গতোহসাবিতি অগচ্ছদিন্তি
শিতীত্যাদিনা গচ্ছাদেশঃ জগতেতি দিকক্তিঃ গ্রথমা জ ইতি গস্য জঃ
জ্বানেতি বৃদ্ধিদ্ধিক্তার্থ ই গ্লেম্যানঃ
স চেদানীস্তনপ্রয়োজ রপের বিপ্রকৃত্তিকালঃ পঞ্চব্যান্যস্তর্গলঃ
আসন্নকাল ইতি নৈয়ায়িক। বিশ্ব গ্লেম্বর্গাতিক্ত বিপ্রকৃত্তিমাতি
ভাসকারেণাক্তম্।

৬৪৬। ইতিহশশ্বদ্যোগে ভূতানদ্যতনপরোকে চ ! ইতিহাকরোৎ ইতিহোবাচ।

৬৪৭। অদ্যতনানদ্যতনসমুদায়ে ন স্থাৎ। অদ্যখোহভুক্ষাহি।

৬৪৮। সঙ্কুদাদ্যক্তেরীঙ্ ছুস্বোঃ। ছুস্বোঃ পরয়োঃ সঙ উত্তরো লঙ্সম্বন্ধিরুদাদ্যন্তিভাাঞ্চ

(৬৪৬)। ইতিহশখদিত্যেতয়োর্যোগে ভূতানদ্যতনপরোক্ষে কালে
লঙ্ভবতি। লিট্চ। পরোক্ষে লিট্সিদ্ধ এব লঙ্সমাবেশার্থং বচনম্।
ভূতানদ্যতনপরেক্ষে ইতি পুনরিহ কৃতং আসন্ধাল ইত্যস্যামূর্ভেঃ সর্কান
কালামূর্ভের্মা শকানিরাসার্থম্। ইতিহেত্যবায়ং সমুদায়ঃ পুরার্ভবচনঃ।
উবাচেতি বশ্যজাদ্যোদ্যভিপ্রিট্কার্য্যায়াদিরিতি দ্বিক্তের্বকারস্য উকারঃ।

(%৪৭)। অদ্যতনানদ্যতনয়োঃ সম্লায়ে লঙ্ন ভবতি। অদ্যথোহতুক্ষহীতি নাল্ডনোহনদ্যতনঃ অদ্যতনানদ্যতনসম্লায়োহনদ্যতনো ভবত্যেব। বথা ব্রাহ্মণাব্রাহ্মণসম্লায়োহব্রাহ্মণো ভবতীডি লঙ্ প্রাপ্তো
নিষিদ্ধঃ। যদা তুন বিদ্যতেহদ্যতনো যত্র সোহনদ্যতন ইতি বহুব্রীহিঃ
তদা অদ্যতনানদ্যতনসম্লায়ে তু অদ্যতনসম্মা বিদ্যত এব ইতি প্রাপ্তা
ভাবে নিষেধবিধানমেতং স্পিপ্তার্থন্। তত্মাদ্বহুব্রীহিরয়ং ন তৎপুক্ষ ইতি
স্পেষ্টিরিত্মদ্যতনানদ্যতনসম্লায়ে ন স্যাদিতি পদম্পস্তস্তম্। স্তান্থলডাচ্ছাক্ষেহর্থঃ স্পটো ভবতি। অতএব ন স্থাদিতি ক্রতম্।

(৬৪৮)। অনুর্ত্ত্যা বা প্রকরণনিয়মাদা লভিছ সম্বদ্ধতে অতআহ লভ্সম্বিক্রণাণাস্তিত্যাকেতি। সভ্ইতানেন তু লভ্ন সম্বাতে
অসম্বাব। অকার্যানিতি ক্রপ্রোল্ড রঙ্ সভাবিজ্ঞান্তরিত্যাদিনা বৃদ্ধিঃ
অরোদীদিতি ক্রির অস্ত্র্বিমোচনে ক্রণাদেরিদ্ধল্যেই ইতি ইংপ্রাপ্তে
ক্রভ বিধানম্। অন্বাস্প্রোগনে ক্রিছপ্ শয়ে জন্ম ভন্ম হসনয়েঃ
অনাগ্তর্গণাঃ পঞ্চ করাদয়ঃ। অবোদীৎ অরোদীঃ অধসীং অস্বাধীং অস্বাধীং অস্বাধীং অস্বাধীং অজ্ঞ্জীৎ অক্সনীঃ আসীৎ আসীরিতি
ক্রিভি ক্তে বৃদ্ধিরজাদেরিতি বৃদ্ধিঃ। স্বাদিত্যাদে পৃর্বাং সঙ্লুক্

ঈঙ্ ভবতি। অকার্ষীৎঅকার্ষীঃ অরোদীৎ অরোদীংআসীৎ আসীঃ।

৬৪%। লুঙ্হুঙি মাভিয়ো বা।

না ভৈঃ মা ভৈষীঃ।

७८०। व्यत्मा २४।

লঙ্হুসোঃ পরধোরদ উক্তরে অঙ্ভবতি। আদৎ আদঃ।

७৫३। ऋमारमर्का।

অবেদিৎ অবেদিং অবেদিঃ অবেদিঃ অস্বপৎ অস্বপীৎ অস্বপঃ
অস্বপীঃ

৬৫২। লঙ্লুঙ্লৃঙ্ধমাঙ্ধাদে। মাঙ্সম্বিভিত্তিয় লঙ্লুঙ্লৃঙ্যু পরেষু পদাদাবঙ ভবতি। অভবৎ অভূৎ অভবিষ্ত। অমাঙ্দিতি কিম্ ?

পশারিমিন্তাভাবাদেব ঈঙ্ন ভবতি। অভূদিতাত অস্তে: ভ্রাদির্যকি চান্ত্যাদেরিতি প্রথমং ভূভাব: ততঃ সঙ্লুক্ পূর্ক্বদীঙভাবঃ লৃঙি অরোনিয়াদিতাত্র সত্যপি হুঙি স্তঙা ব্যবধানাদীঙ্ন ভবতি। অথবা প্রকরণমেবাত্র নিয়ামকম্। অতএবাহ লঙ্ সম্বিক্রদান্তিভ্যামিতি।

- (৬৪৯)। নৃঙ্দংজকে স্থাঙি পরে মাঙ্যুক্তাৎ ঞিজী ভয়ে ইত্যশ্বানীঙ্বা ভবতি। পূর্ব্বস্ত্রেণ নিত্যে প্রাপ্তে বিভাষা শিষ্টপ্রযোগদর্শনাৎ লক্ষণমেতৎ কৃতম্। মা ভৈরিতি নৃগ্যুজোহন্ত ইতি স্বলুকি ক্লতে
 বিসর্গঃ।
 - (৫৫ ॰)। আদদিতি অদ্ভক্ষণে অঙো ওকারাত্বদ্ধকরণমূত্রার্থম্ ।
- (৬৫১)। লঙ্ড্সো: পরয়ো: রুদাদেরুত্তরে অঙ্বা ভবতি।
 আঙভাবপক্ষে পূর্বস্ত্তেণ ঈঙ্। লক্ষণসামর্থ্যাদেব উভয়বিধানেংপি সিদ্ধে
 বাপদং স্পষ্টার্য্। ঈঙি রুতে তত্ত্বোঙ্ ভবতীতি মন্দিয়াং শহা
 ভাং।
- (৬৫২)। মাঙ্সম্বিবির্জিতেমিতি ব্যাকারেণ দ্রম্থেহপি মাঙি নিষেধ উক্তঃ। যতঃ সম্বন্ধো ব্যবধানেহপি ভবত্যেব। আদাবিতি পরস্থামী স্মাদাবঙ্ ভবন্ পূর্ফা এব ভবতীতি। অভূদিতি সঙ্পুণিণাদেরিতি সঙ্-

মা স্ম সং পচঃ মা সং পাক্ষীঃ। অভিন্মাযোগে তু—সময়ে তিষ্ঠ স্থ্যীৰ মা বালি পথমন্বগাঃ।

৬৫০। বৃদ্ধিরজাদেঃ।
মাঙ্সম্বন্ধিবর্জিতেমু লঙ্লুঙ্লুঙ্মু পরেমু অজাদের্ধাতোরাদৌ
বৃদ্ধিভ্ৰতি। অধ্যৈত অধ্যৈষ্ট অধ্যায়ত।

৬৫৭। অজাদিদ্বিক্কজ্যাদেশয়োঃ। ঋ ঐয়ঃ বশ্ ওফীং যজ্ ঐজ্যত।

লুক্ ভূত্ঁ জ্বভোরিতি পিবাদিখার গুণংমাশ খং পচ ইতি সশ্মাঙ্যোগে সর্দ্রকালে বুঙ্ হেঙ্ মা স্বং পাক্ষীরিতি সর্ব্যকালে মাঙ্যোগে ইতি লুঙ্ । বদ্য ডি নাযোগে মা বালিপথমন্বগা ইত্যতাঙ্ । কথং তহি নির্ব্যকালে মাঙ্ যোগে ইতি লুঙ্ ? উচ্যতে ক আশংসায়াং ভূতসামান্ত বিহিতাশেচতি বক্তব্যমিতি লুঙ্ অত্যে স্বত্থা বদন্তি । অয় ইতি সম্বোধনং পদং হে ইত্যসাথে বিহতে মাঙ্যোগে লুঙ্ অঙাগমাভাবশ্চতি ।

(৬৫০)। আদৌ বৃদ্ধিরিতি আন্যাধারা বৃদ্ধিরিত্যর্থ:। অধ্যৈতেতি অধিপূর্দ্দ ইঙ্ অধ্যানে লঙ্ ত বৃদ্ধিরিকারস্ত ঐকরে: পূর্দ্দত্ত্তেণ প্রাথমঙং বাধিতা বৃদ্ধি: ক্রিয়তে। অথবা বৃদ্ধে হুলামডি ক্রতে ঐজেচোহতেতি বৃদ্ধি: অধ্যৈষ্ঠেতি লুঙ্ ত সঙ্ অধ্যৈষ্যত ইতি লঙ্ লুঙ্ লৃঙ্হেতে ক্রত্যা-নিশ্পত্তে ভূতে চেতি লৃঙ্ তব্ প্রঙ্চ।

(৬৫৪)। যত্ত দিক্জি: প্রাণোতি আদেশত অজাদিকার্যঞ্চ তত্ত্র কিং প্রথমং ভবন্তিতি সন্দেহে ব্যবস্থার্থং লক্ষণমিদম্। দ্বিক্জেন আদেশে চ কতে অজাদিউবতি। এরারিতি ঋ গতেন লঙ্ হঙ্ আদৌ রুদ্ধিং বাধিম্বা দিক্জি: ঋদদিত্যকারঃ ঋপুহাঙ্যাঙিত্যাদিনা ক্রকারঃ অসবর্ধেই ভ্যাসস্যোতি ইয়াদেশঃ প্রক্তেন গুণেনার তদনন্তরং বৃদ্ধিঃ তলুক্। উষ্টা-মিতি বশ্ কাস্তো লঙ্ তাং অঙিস্বাজ্শাদেশঃ প্রস্কাদ্যন্তচ্ছশামিতি শস্ত যং তক্ত টঃ ততাে বৃদ্ধিঃ। ঐজ্যুতেতি যজ্ধাতােঃ কর্মান লঙ্ ত যক্ ইজাদেশঃ ততাে বৃদ্ধিঃ অঙাদিধিকক্যাদেশয়ােরিতি লক্ষণং বছরু পৃত্তকেরু দৃশ্যতে স্ লিপিকরস্ত জ্বারে ড্কারঃ প্রমাদপাঠঃ ক্তিক্ষিন্ ৬৫৫। দধোঃ স্থাঙ্জি সো বা। স্থাঙ্জি পরে দধোঃ স্থানে সো বা ভবতি। অভিনৎ অভিনং অরুণৎ অরুণঃ।

৬৫৬। তথে।

কৃতী অকৃণং অকৃণ>ব্যথ্ যন্লুকি বাব্যৎ অবাব্য:।

৬৫৭। রমূর্ণি প্রাগ্দীর্ষদ্।
নর্বন্লুকি অনানাঃ গৃধু অজর্বাঃ রতু অবর্বাঃ।

পাঠে রুচিরার্থসংগতিন লভাতে অস্মিন্ পাঠে দ্বিরুক্তাবাদেশে চ ক্তে ফর ধাতোরজাদিহং ভবৈত্রব বুদ্ধিবিধেয়া ইত্যর্থঃ।

- ্ (৬৫৫) অভিনদিতি ভিদেশ & স্কুঙ্ শ্ন্ যুক্তান্তস্থাৎ সলুক্ অভিন ইতাত্র সকারে ক্তে যুক্তান্তস্থাৎ সলুকি চ ক্তে বিসর্গঃ অক্ণদিতি অজ্-ব্যবেত্যাদিনা প্রম্।
- (৬৫৬)। স্থান্তি পাবে তথোশ্য স্থানে সোবা ভবতি। অরুণদিতি কৃতী বেষ্টনে ক্ধাদিঃ অবাব্য ইতি ব্যথ্ভয় চলনয়োঃ যন্লুকি দ্বিক্জিঃ দীর্ঘোহনাগমাত ইতি দীর্ঘঃ বাব্যথ্ইতি স্থিতে লঙ্ক্সঙ্ অঙ্সকারে স্ভে বিসর্ঘঃ। দ্বতগাং ক্ষান্তি সোবিতি ক্তব্যে পৃথগ্যোগকরণং বৈচিত্রার্থিম্।
- (৬৫৭)। বহুবচনং সর্কোপসংগ্রহণার্থং রম্দ্রাং তথদধাং স্থানে স্থান্তি পবে সো বা ভবতি। প্রাণ্টার্যন্ত। অনানারিতি নর্দ্ পর্দ শব্দে যন্সুকি দিকজিং দীর্যোহনাগমাত ইতি দার্য: লঙ্ স্থাঙ্ড্ দকাৰসা সকারে ক্রতে দীর্যে চ সকারয়োর্ ক্ রেফস্তা বিসর্গং। অন্ধর্যারিতি গৃধু আছিল্ডান্তারাং যন্পুক্ তুর্যান্ত ইত্যাদিনা গশু ঘং বিক্লজিং অদ্দিত্যকারঃ আরিকজ্যাবিত্যাদিনা কং অঙ্ গুণেনার দেবং পূর্ববিৎ এবং বৃতু বর্তনে ইত্যত্র অবর্লাং পক্ষে তু অনানর্ত ইতি সলুকি ক্লতে বর্ণস্তাদিরিত্যাদিনা দশু তং অন্ধর্ত অবর্লান্ত রুম্দ্রোদন্তারচ্ছসবর্জনিতি প্রতিষেধান্তকারদুগল্ভাবং। নত্ত স্থান্ত রোব্বেতি লক্ষণং ক্রিয়ভাং থকাৎস্য দ্বোশ্চ বর্ষ্ণ-স্থানিরত্যাদিনা তকারে ক্তে রেফং করণীয়ং। অনানারিত্যাদেন চ রেক্লেক্রাণ্ডারত্যাদিনা রেফলোপো দীর্যণ্ড করণীয়ং। উত্তরস্বত্যে সংক্রাণ্ডার্যাদিনা রেফলোপো দীর্যণ্ড করণীয়াং। উত্তরস্বত্যে সংক্রাণ্ডার্যাদিনা রেফলোপো

৬৫৮। তো ছঙি। ছঙি পরে সকারস্তো ভবতি।

৬৫৯। হৃতিবা।

অচকাৎ সঃ অচকান্তং অচকাৎ হম্।

৬৬০। ত্জকাদেরন্ ধুস্। •
জুহোত্যাদের্জকাদেশেচান্তরে। লঙ্ক্ ঙুস্ ভবতি। অজুহবুঃ
অবিভয়ু ঐয়কঃ অজকুঃ অশাস্তঃ অজাগকঃ।

৬৬১। বিদেরুস্ দ্বিষাদন্তাদা। অবিহঃ অদিষন্ অদিষুঃ অ্যান্ অ্যুঃ।

⁽৬৫৮)। অত্র স্থানী ন শ্রায়তে ইতামুব্তুসকার এব স্থানিজেন পরিকল্পিতঃ পূর্ব্বযোগাৎ স্থান্ধি সো বেতামুবর্ত্ততে তদ্য চ পৃধগোবার্থঃ পরিকল্পিতস্তেনাম্বমর্থো ভর্মতি। ছাঙ্কি পরে সকারস্থো ভবতি। স্থান্তি বেতি পৃথগোৰ অক্ষণমিতি কশ্চিৎ।

⁽৬৫৯)। স্থৃঙি পরে সকারস্তো বা ভবতি। অচকাদিতি চকান্থ দীপ্রৌ তকারে ক্তেহস্ত লুক্ স ইতি ঘমিতি চ হঙ্সুঙোরভিব্যক্তার্থ-মুদাহতম্।

⁽৬৬০)। লৃঙনো লুঙনশ্চ ব্যবহিত্ত্বাৎ প্রকরণনিয়নাচ্চ লঙন এব গ্রহণং যুক্তম্ অন্ত আহ লঙন ঙুদ্ ভবজীতি। অজুহবুরিতি হু দানে হ্বাদিয়াৎ দিরুকি:। অবিভয়ুরিতি ঞিভী ভরে ঐয়রুরিতি ঋস্থ গতৌ দিরুকি: ঝদদিত্যকারঃ ঝপু হাঙ্ মাঙ্ ভূঞামজীদিত্যনেন ঈকারঃ অসবর্ণেহভাসস্থ ইতি ইয়াদেশ: প্রকৃতৌ গুণেনার বৃদ্ধিরজাদেরিতি বৃদ্ধিঃ জক্ষ্ ভক্ষ্ হসনয়োঃ জাগু নিজাক্ষয়ে দরিদ্রা হুর্গইতৌ চকাস্থ দীপ্রৌ শাস্থ অনুশিষ্টো ইত্যাদাদিগণন্থাঃ পঞ্চ জক্ষাদয়ঃ। দরিজ্রাতেন্ত বিদেরুস্দিয়াদস্তা-ছেতি পাক্ষিকমুদং বাধিয়া অন্নমেবেষ্যতে তেন অদরিক্রঃ।

⁽ ১৬১)। বিদ্জান ইত্যমাহতরো লঙন্ উস্ভবতি। দ্বি অপ্রীতো ইত্যমাদাকারাম্বাকোত্তরো লঙন্ উস্বাভবতি। দ্বিষঃ সাহচ্যাৎ অদাদেবিদো গ্রহণম্। অথবা সন্তাবিচারণার্থয়োরাম্বনে-

৬৬২। সঙস্তাদভূবো নিত্যম্। অকার্ত্ত অস্ত্তঃ ভুবস্তঃ অভূবন্।

৬১০। যাৎ যাতাং যুস্ যাস্ যাতং যাত যাং যাব যাম। ঈত ঈয়াতাং ঈরন্ **ঈথান্ ঈয়াথাং ঈথবং** ঈয় ঈবহি ঈমহি লিঙ্লোড়র্থে।

লোড়র্থে গম্যমানে ধাতোরুত্তরে লিঙ্ সংজ্ঞকা যাদাদয়ো ভবস্তি। ভবেৎ ভবেতাং ভবেয়ং ভবেঃ ভবেতং ভবেত ভবেয়ং ভবেব ভবেম। স্পর্দ্ধেত স্পর্দ্ধেয়াতাং স্পর্দ্ধেরন্ প্রদ্ধেথাঃ স্পর্দ্ধেয়াথাং স্পর্দ্ধেবং স্পর্দ্ধেয় স্পর্দ্ধেবহি স্পর্দ্ধেমহি।

৬৬৪। আশংসার্থযুক্তাদলোড়র্থে চ। আশংসেহত্রাহমধীয়ীয় অবকল্পয়ে। আশংসা নহি নঃ প্রেতে জীবেম দশমুর্দ্ধনীতি ভটিঃ।

পদিত্বন অনোহভাবাল্লাভার্যন্ত বিকরণব্যবধানাদেবা গ্রহণম্ অ্যানিতি যা প্রাপণে নিত্যবিধানেন বিকল্পবিধানেন চ একযোগকরণং যদ্যপি ন যুক্তং তথাপি ক্লতং মতান্তরন্তাপ্যাপসংগ্রহণার্থং বিদ্দিষাদন্তাছন্তরো লঙ্ক্ উস্ভবতি বা। তথাহি বিদোহপি পাক্ষিকমুসমিচ্ছন্তি কালাপাঃ।

⁽৬৬২)। ভূধাতুবাতিরিক্তাৎ সঙ্স্তাদ্ধাতোলু এন্ ,উদ্ নিতাং ভবতি। নিত্যগ্রহণং বালুবৃত্তিশকানিরাসার্থং ভূবো নিষেধ এব জ্ঞাপরতি সঙ্লুকি কতেহিপি উস্ভবতি। অথবা লুক্ পূর্কং উস্ স্থাদিতি। অকার্বরিতি সঙাধিজা গুরিত্যাদিন। বৃদ্ধিঃ। অস্থ্রিতি সঙ্লুকিপাদেরিতি সঙ্লুক্ আচৈচদাদাবিত্যধিকতা উসীত্যাকারপুক্। অভ্বনিতি সঙ্লুক্ বুলুজনঙমোরিতি বৃং।

⁽৬৬৩)। নোড়র্থে ইতি বিধ্যাদিবিশিষ্টেয়ু কর্ত্রাদিমর্থেয়ু লোড়্-বিহিতো লিঙপি তত্ত্বভাতি।

⁽৬৬৪)। আশংসা অর্থো যেষাং তে আশংসার্থাঃ তদ্যুক্তাদ্ধাতোর-লোড়র্থে লিঙ্ ভবতি। লোড়র্থে লিঙ বিধিক্ষক্ত এব বিধানসামর্থাদেবা-

৬৬৫। শীত্রার্থবোগে চ।
আশংসেই ত্রাহং শীত্রসধীয়ীয়।

৬৬৬। পরক্রিয়াশংসায়াং লিঙ্লোটো।

আশংসে ভুঙ্ক্তাং ভবান্ ভুঞ্জীত।

৬৬৭। উতাপ্যোর্বাঢার্থয়োঃ।

উতাধীয়ীত অপ্যধীয়ীত অতিশয়মিতার্থ:।

৬৬৮। কামপ্রবেদনেহকচ্চিতি।

যায়াত্বনিতি কানো মে গন্ধমুৎসহসে ন চ। কামো-

লোড়র্গে বিধাননিতি লভাত এব তথাপালোড়র্থে ইতি ক্বতং মন্দধিরাং স্থপ্রতীত্যর্থন্। অধীয়াঁষেতি অধিপূর্লাদিঙঃ আ গ্রনেপদম্ উত্তমপুক্টনক-বচনম্ ঈর্ ছুদ্ধাভূরিত্যাদিনা ইয়াদেশঃ উপসর্গেণ সহ সবর্ণেনান্দীর্ঘ ইতি দার্যঃ অবকল্লর ইত্যাশংসার্থঞ্চ পদম্। ক্রুণু সামর্থ্যে ণিঙ্ ক্রপাদেঃ কুশানিরিতি কুপাদেশে ক্রুণ্ড গুণঃ লড় ভুনিকবচনম্ এ শঙ্ গুণায়াদেশো আশং-মেত্যাদি। প্রতে মৃতে। পরক্রিয়াশংসায়াং লিঙ্লোটো বক্ষাতি তথাং স্বক্রিয়াশংসায়াময়ং প্রবর্ততে অত্যোত্মপ্রুষ এব সম্ভবতীতি তদেবোদাহরশং ক্রুম্।

- (৬৬৫)। আশংসার্থ কুক্তাছী ছার্থবে গৈ চ লিঙ্ভবতি। শীদ্রার্থো-প্রপদে আশংসায়ামিতি লুটং বক্ষাতি তদ্ধনার্থং বচনং তেন হাশংসায়াং গ্রমানারাং শীদ্রার্থোপপদে লট্ বিধীয়তে। অনেন আশংসার্থস্থ শীদ্রার্থস্থ চ যোগে বিধীয়তে ইতি বিষয়ভেদঃ।
- (৬৬৬)। আশংসার্য ক্রাৎ পূর্বস্ত্রেণ লিঙ্ বিহিতঃ সা এবাশংসা যবা পরক্রিয়াবিষ্যাণী ভবতি তদা আশংসার্যস্ক্রাৎ লিঙ্লোটো ভবতঃ। পরক্রিয়াশংসায়াং লোড়্বেতি ন ক্রতমুত্রস্ত্রে লোড়য়ুবৃত্তিশঙ্কানিরাসার্যং তেনোত্তরত্র স্ত্রম্ভ প্রকান্ত্র লিঙ্ এবান্থবৃত্তিঃ।
- (৬৬৭)। উত অপি ইত্য়ে বোবাঢ়ার্থয়োর্যোগে লিঙ্ভবতি।
 সর্ম্বলকারাণামপবানঃ বাঢ়ার্থয়োন্থিতি কিম্ ? উত দণ্ডঃ পতিষ্যতি অপিধাত্তিতি ছার্মত্র উত্তেম প্রাঃ অপিনা প্রচ্ছাদনক গ্যাতে।
 - (৬৮৮)। অভীষ্ঠাবিকরণং কামপ্রবেদনং তক্ষিন্ গম্যমানে কচ্চি-

জনস্ত জহাত্ত্বং প্রমাদং নৈখাতাখিপ ইতি ভট্টিঃ। অভিপ্রায়ো
মে প্রান্ধা মে। কচিদ্যোগে তু—কচ্চিজ্জীবতি তে মাতা
কচিজ্জীবতি তে পিতা। মা বাবিদরাং পৃচ্ছামি কচিজ্জীবতি
পার্বিতী।

৬৬৯। ইচ্ছার্থোপপদে কামপ্রবেদনে লিঙ্লোটো। ইচ্ছা মে পরমানন্দেঃ কথং সং ব্রশক্রবদিতি ভট্টিঃ। ইচ্ছা মে ভুঙ্ক্লাং ভবান্ কচ্চিদ্ ভুঞ্জীত।

৬৭০। ইচ্ছার্থাদ্বর্ত্তমানে বা। ইচ্ছতি ইচ্ছেৎ উশ্যাৎ বস্তি।

চ্ছেন্দাযোগে ধাতোর্লিণ্ড্ ভবতি। যায়া ইতি যা প্রাপণে জহা ইতি ওহাক্ ত্যাগে ভাদেরাল্ল গ্লিঙ যে ইত্যাকাবলুক্ শ্লোকদ্বয় এব কামশকো ন ইচ্ছাবচনঃ কিন্তালোকবচনঃ অতএবাভিপ্রায়ো মে শ্রদ্ধা মে ইতি বাক্যেনাস্থার্থ ব্যাচকাব কামপ্রবেদনন্ত গম্মমেব অন্তথা উত্তর্যোগেন সহ বিষয়বিভাগোন স্থাৎ।

(৬৯)। ইচ্ছার্থোপপদে কামপ্রবেদনে গম্যমানে থাতোলি ঙ্লোটো লবতঃ। অনেনেচ্ছার্থোপদদম্ব বিধীয়তে। কচ্চিদ্যোগে
চেতি বিধীয়তে ইতি বিশেবঃ। ইচ্ছা মে প্রমানন্দেরিত্যাদি প্রমতিশয়ে কৃথং জমানন্দ্রিবাদি মধ্যমপুক্রৈকবন্ধনং যাদ্ শঙ্ অত ইতি যাস্থানে
এজন্। কামপ্রবেদন ইতি কিন্? ইচ্ছন্ করোতি। আনেনৈবেচ্ছার্থোন্দ্রদদে দিক্ষে ইচ্ছার্থোপদদে কামপ্রবেদনে ইতি লোড্বিধা যত্তাং তং
কিমর্থনিতি চিস্তান্।

(৬৭০)। ইজার্যনিতোর্বর্তনানে কালে লিঙ্বা ভরতি। লাটি প্রাপ্তে বিধানন্। ইচ্ছোদিতি ইয়ু ইচ্ছায়াং শিতীত্যাদিনা ইচ্ছাদেশঃ। উপ্তাদিতি বশ্ কাস্তাবদাদিঃ বশাদেরশাদিরিত্যশাদেশঃ। বঙ্ঠীতি প্রস্-কাদ্যক্তছশামিতি শশু যং যটবর্গাদিত্যাদিনা তম্ম টাঃ।

৬ । যথে স্ট দ স্ভাবনায়ামনলমি।

অপি পর্ববতং শিরদা ভিন্দ্যাৎ। অলংযোগে তু—অলং দেবদক্তা

হস্তিনং হনিষ্যতি।

৬৭২। প্রৈষাদে কালসময়বেলাক্র যদ্যোগে। কালোহয়ং যদ্ভুঞ্জীত ভবান্।

৬৭০। অবদ্যোগে তুমঙ্ঙনটো।

কালোহয়ং ভোক্ত^{ুং} কালোহয়ং ভোজনস্ত। অপ্রৈষাদৌ তু—কালো ভুঙ্ক্তে কালঃ পচতি ভূতানি কালঃ সংহরতি প্রজা:।

⁽৬৭১)। যথেষ্ঠং যথাভিল্যিতং তশু সম্ভাবনায়াং তংক্রিয়াযোগ্যা-নিশ্চিতৌ গ্যামানায়ামলংশক্ষাপ্রয়োগে ধাতোর্লিঙ্ ভবতি। ভিন্যা-দিতি হ্নম্ শ্লাস্ত্যোর্দিতাকারলুক্। হনিয্যতীতি হন্ হিংসাগত্যোঃ হন্তোঃ শ্রে ইতি ইঙ্।

⁽৬৭২)। কালাদিপদেষ পুপদেষ প্রৈষাদৌ গম্যমানে যছকক্ত প্রয়োগে লিঙ্ ভবতি। প্রৈষাদিপদেন প্রৈয়কামচারা ন্মতিপ্রাপ্তকালা গৃহস্তে। তে চ লোড্ বিধাবেব ব্যাখ্যাতাঃ অযদ্যোগে উত্তরস্ত্রেণ তুমঙ্-ঙনটো বিধেয়ো তন্মান্যতিরিকে যদ্যোগে এগান্ত বিষয়ো ভবিষ্যতি কিং যদ্যোগগ্রহণেন ? তৎ ক্রিয়তে স্পষ্টার্যম্। উৎসর্গাপঝাদক্তামলভ্যাদর্থা-দ্বিষ্যবিভাগব্যবস্থিতোহর্থঃ স্পষ্টো ভবতীতি।

⁽৬৭৩)। কালাদিষ্পপদেষ্ প্রৈষাদৌ গমামানে যক্তক্সাপ্রয়োগে তুমঙ্ঙনটো ভবতঃ। কালোহয়ং ভোক্তঃ কালোহয়ং ভোক্তঃ কালোহয়ং ভোক্তনস্ত তমাঙ্ঙ্কাং ভবান্ ইতি প্রেষাদিরত্র গমাতে। তুমঙ্ঙনটোরত্র বিধানং ক্রদধিকারবিহিতয়োরেবায়্বাদো নতু পৃথিধানম্। তেন কালোহয়ং ভোজনস্ত ভবত ইত্যত্র ক্রদ্যোগে ষঠা ভবতি। অষদ্যোগে তু তুমঙ্ঙনটাবিতি প্রভাবাহরণতামস্ত কেচিয়্বদন্তি তুশকোপাদানক্ষাত্র তেষামেব ভ্রমণোপকল্লিতং যদ্যে হল্লক্ষণং ন ভবতি তদা কেন তুমঙ্ঙনটোরত্র বিধানং নহি ক্রৎপাদীয়ে তুমঙ্ঙনট্বিধানপ্রকরণে কালাদিযোগে

ভিত্তপাদঃ।



৬৭৪। তৃঙ্কুত্যে চার্ছে। ভবান্ কীয়ামুদ্বহেৎ ভবান্ কয়ায়া উদ্বোঢ়া ভবতোদ্বোঢ়ব্যা কয়া।

৬৭৫। শক্তে লিঙ্কুত্যো। ভবান্ ভারমুধ্বহেৎ ভ্বতা ভার উদ্বোদব্য:।

৬৭৬। কথংযুক্তাদ্গর্হায়াং বা লিঙ্ লটো।
কথং নাম তত্রভবান্ ব্যলং যাজয়েৎ যাজয়তি। কথং
নাম ভবাংস্তত্র নাবৈতি হিতমাত্মন ইতি ভট্টিঃ। কথং

তুমঙ্ ভ্রনটোর্বিধায়কলক্ষণং দৃশ্রতে তত্মাৎ ভ্রমপরম্পরা উপেক্ষণীয়া। অত্রার্থে পাণিনীয়ঞ্চ স্ত্রং বিদ্যুতে কালসময়বেলাস্থ তুমন ইতি।

(৬৭৪)। অর্তীতার্থে যোগাঃ অর্থে কর্তনি গম্যমানে ধাতোকল্পরে লিঙ্ ভবতি। তৃঙ্ ক্রত্যে চ। ভবান্ ক্যামুদ্ধহেদিতি ভবান্
এবৈতদর্গ তি গমতে উ: ছাঢ়েতি উৎপূর্ব্বাদ্ধহেস্তৃঙ্ হোঢ় ইত্যাদিনা
হস্ত চঃ ধোহধার্থ্যাদিতি তক্ত ধঃ। বটবর্গাদিত্যাদিনা ধক্ত চঃ
চােরিত্যাদিনা চলুক্ দার্ঘদ্ধে প্রাপ্তে বিশেষবিধানাৎ চেনেংসহিবহােরিত্যকারক্ত ওকারঃ। লিঙ্বিধানেন তৃঙ্কত্যােরার্থা মা ভূহ
ভদর্থা ক্রিকাববিহিত্যােন্তৃঙ্কত্যােরার্যমন্ত্রাদাে নতু বিধানান্তরং তেন
বাে যাা্রার্থে বিহিতঃ স তথা ভবতি। তেন ভবান্ ক্যাায়া উদ্বাংচ্তি
কর্তরি তৃঙ্কের্থিনি ষষ্ঠী চ ভবতি।

(৬৭৫)। শক্তে কর্ত্তরি বাচ্চো ধাতোর্শিঙ্ ক্লত্যৌ ভবতঃ। ভবান্ ভারমুদ্ধহেদিতি ভবান্ ভারোদ্ধনে শক্ত ইত্যর্থঃ। অর্থবিশেষেধবিহিতাঃ কৃত্যা অস্মি:প্যর্থে লভান্ত এব কিন্তু বিশেষবিহিতেন িঙা বাধিতাঃ স্থাঃ এতদর্থমিহ তেষামপি বিধানম্।

(৬৭৬)। কপংশব্দেন যুক্তাৎ গর্হারাং গমামানারাং ধাতোর্লিঙ্ লটো বা ভবতঃ। কালদামান্তবিধানাৎ দর্জলকারাণামপবাদঃ। বাগ্রহণাৎ পক্ষে শ্বকালবিহিতা অনি প্রত্যয়া ভবন্তি। কথং নাম ভবাংস্তত্ত্ব ইত্যাদি আ মনোহপি হিতাপরিজ্ঞানাদ্রাপি গর্হা গমাতে। অবৈতীতি অবপূর্ক ইণ্ গতৌ গুণে কতে উপদর্গাকারেণ দহ বৃদ্ধিঃ। অবীষ্ক্রদিঙি

সংক্ষিপ্তসারব্যাকরণে



নাম তত্রভবান্ ব্যলং যাজয়িষ্যতি যাজয়িত। অযাজয়ৎ অ্যীয়জৎ যাজয়াঞ্কার।

৬৭৭। কিংক তরকত মৈর্গহায়াং লিঙ্লুটো। কোনাম ভবান্ র্যলং যাজয়েৎ যাজয়িয়াতি।

৬৭৮। অক্ষান্ত্যসন্তাবনযোশ্চ। নাবকল্পয়ামি ন শ্রুদ্ধেন সহে অপ্যেধং যাজয়েন্তবান্ যাজ-য়িয়াতি।

৬৭৯। লিঙেব জাতু্যদিযদাযৎস্ত চ। জাতু তত্রভবান্ রাজসূয়ং যাজয়েৎ নাবকল্লয়ামি ন শ্রদ্ধে।

যাজেলুঁঙ্ হুঙ্ শ্রিক্জ করেরি ত্যাদিনা অন্ হুষোহশাস্থাদেরিতি হুস্থঃ
নিশ্নিড়স্তেত্যাদিনা দিকজিঃ সনবদাযাৎ ইন্দিরদিতি অকারশ্র ইকারঃ
অন্তরাবপ্রথাদেরিত্যাদিনা দীর্ঘঃ। যাজয়াঞ্চকার ইতি গ্যাদের্গিড়্ডামিত্যাদিনা লিটঃ স্থানে ঙাম্ গুণায়াদেশৌ ক্রঞোহমুপ্রয়োগঃ অণ্রুদ্ধিঃ
দিক্তিঃ ঋদদিত্যকারঃ।

(৬৭৭)। কিংকতরকতিমৈয়ুক্তাৎ গর্হারাং গম্যমানারাং লিঙ্ল্টো ভবতঃ। সর্বলকারাণামপবাদঃ। পূর্হত্তান্তিতং গর্হারামিতি পদং বাশকসম্বদ্ধং তদস্থারুরত্তো বাসূর্ত্তিঃ স্থাত্তদর্থমিই গর্হাযামিতি পদং কৃতম্।

(৬৭৮)। অকাশ্যদন্তাবনয়োর্গ্যমানসোর্ধানেলিঙ্লুটো ভবতঃ। কিংকতরকতমৈরিতাত নাকবর্ততে তেন তৈপুঁকাদমুক্তাদিপ সামান্তোন বিধানম্। লক্ষণসামর্পাদেব লিঙ্লুটোরকস্ত্রে প্রাপ্তায়াং চকারকরণং ক্রমং ক্রমবতামক্ষমিতাশু নিরাসার্থম্। অক্ষান্তিস্চনার্থমাহ্ নাবকল্লয়ান্মীতি। অস্ভাবনাস্চনার্থন্ত ন শ্রদ্ধে ইতি।

(৬৭৯)। চকারোহর বহুর্ পুস্তকেরু দৃহ্যতে স প্রমাদক্তঃ।
জাতু যদি যদা যত ইত্যেতেষ্পপদের্ অকান্তাসম্ভাবনয়োর্গমামানয়োশিঙেৰ ভবতি। লিঙ্বিধানসামর্থাদেবান্থনির্ভৌ প্রাপ্তায়ামেবকার-

তিভক্তপানঃ।



৬৮০। গ্রহাশ্চর্যায়োশ্চ বচ্চবত্রয়োঃ।
বচ্চ ভবান্ রাজস্য়ং যাজ্ঞায়েৎ অনার্যামেতৎ আশ্চর্যামেতৎ ন
ক্ষমেন সম্ভাবয়ামি।

৬৮১। সজ্ঞাবনাবচনেহ্যদ্যোগে বা। অৰকল্পয়ানি ভূঞ্জীত ভবান্ সম্ভাবয়ামি শ্রহ্মধে ভোক্ষ্যতে। যদ্যোগে তু—সম্ভাবয়ামি যদ্ ভূঞ্জীত ভবান্।

৬৮২। হেতুহেতুমতোর্ভবিষ্যতি বা।

বদি দেবো ভূশং বর্ষেদ্ধান্তসম্পদ্ধবৈদ্ধাবম্। বর্ষিষ্যতি ভবিষ্যতি।
অভবিষ্যতি তু—বর্ষতীতি ধাবতি হস্তীতি পলায়তে।

করণং স্পষ্টার্থস্। যদিত্যব্যয়মিহ গুছতে সাহচর্ঘাৎ। তেন কো নাম বৃষলোহয়ং যাজয়েৎ ভবান্ যাজয়িষ্যতীতি পূর্ব্যোগে ন ভবতি।

- (৬৮০)। অক্ষাস্তাসন্তারিতালুর্ত্তার্থশ্চকার:। গহ রিমাশ্চর্য্যে হক্ষাস্তাবনারাঞ্চ গম্যমানারাং যদ্যযার্জপপদয়োর্লিঙের ভবতি। যদ্যশক্ষে যদ্যাক্ষিত্ত ততঃ পূর্বাস্ত্তেশ সিদ্ধে যদ্যাদিপদের এতদর্থচ্তুষ্টয়ং ব্যাচকার।
- (৬৮১)। সম্ভাবনা উচ্যতে যেন তৎসম্ভাবনাবচনং তৃশ্বন্ সম্ভানা বনাবচনে ধাতোকপপদে যদ্ধকাযোগাভাবে সতি লিঙ্ বা ভবতি। অবকল্লয়ামীতি সম্ভাবনাবচনং যদ্যোগে ভূঞ্জীতেত্যক্ৰ লিঙ্ যথেইসম্ভান্ন বনান্তামনলমীতি প্ৰাপ্তস্থ লিঙে! বিকল্লিডঃ অভএব প্ৰভ্যুদাহরণে তেনৈব লিঙ্ভবতি।
- (৬৮২)। হেতুঃ কারণং হেতুমং ফলং হেতুভূতে ফলভূতে চার্থে বর্ত্তমানাদ্ধার্থাক্তরে ভবিষাতি কালে লিঙ্ বা ভবতি। ধনি দেবো ভূশং বর্ষেলিতি বৃষ্টিরত্র হেতুঃ। ধান্তসম্পদ্ধবেদিতি ভবনং ফলম্। বর্ষতীতি ধাবতীতি বর্ত্তমানোহত্র কালঃ। ইহ কন্মান ভবতি হনিষ্যতীতি প্লামিষ্যত ইতি ইতিশব্দেনৈর হেতুফলভাবসা দ্যোতিতত্বাৎ যদ্যেবং বর্ষতীতি ধাবতীত্যত্রাপ্যত এব ন ভবিষ্যতি এওচ্চ লক্ষ্ণহেছোঃ

৬৮০। ন প্রৈষকামচারাসুমতিপ্রাপ্তকালাশীর্ভূশ-পোনঃপুন্যেষু।

७৮८। श्वारमताल्लूग्निङ्य।

विधानिनिঙ्दि भरत जूरराजास्त्राञ्चग् ७वि । कश्र निगा ।।

७७०। युवारम् ।

युषि পরেহদেশ্ভবতি। ভবেয়ুঃ পচেয়ুঃ।

৬৮৬। যামি যা যশ্চ।

ণমি পরেহদেন্তবতি। যা যশ্চ। পচেয়ম্।

৬৮৭। অতঃ।

মত উত্তরো যা এন্তবতি। পচেৎ দীব্যেতাম্। যজতি

ন্যায়া ইত্যত্র বৃত্তিক্বদভিধাস্যতি। তত্মাৎ করী হন্তি নরঃ পালায়ত ইতি ত্যুদাহার্য্যং হেতুক্লয়োর র্তুমানবিহিত এব লড়ত্র ভূতঃ।

(৬৮৫)৷ স্থামন্:

⁽৬৮৩)। লোড়র্থবাৎ প্রাপ্তো লিঙ্ নিষিধ্যতে। প্রৈবাদিশর্থের্ । নিনিবি লিঙে চার্থে ভূশার্থে পৌনঃপুত্তার্থে চ লিঙ্ ন ভবতি। বছবচ ন । বাদ্যর্থং তেন ক্রিয়াসমূচ্যে ন ভবতি।

⁽৬৮৪)। প্রকরণনিয়মালিঙিত্যনেন পূর্ব্যলক্ষণৈবি হিতে। লিঙ্
গৃহতে। অত আহ বিধ্যাদিলিঙ্য ইতি। জহাদিতি ওহাক্ ত্যাগে।
হ্বাদেরিতি কিম ? যায়াৎ।

⁽ ৬৮৬)। যায় ইতি বিধানং সন্নিয়োগশিষ্ঠং যৱৈবাৎ এন্তবতি যকা-বাদেশণ্ড তত্ত্বৈর। তেন বিভ্যামিত্যাদিরু ন ভবতি।

⁽৬৮৭)। পচেদিতি আচৈচদাদাবিত্যকারলুক্ দীব্যেতামিতি রাস্তাদেরিত্যসূত্তৌ দস্ভ্যবাস্ত ইতি রাস্তাদিম্বান্দীর্ঘ: পচেয়মিত্যত্র যামি বায়শ্চেতি বিশেষবিধিনা বাধিত্যাদত ইতি ন প্রবর্তত। এতেযু বোগেষু হ্রুষোক্ত্যা দীর্ঘস্তাহণাৎ যায়ঃ যায়াং যায়াদিত্যাদাবেরাদিন ভবতি। যজতি মঙ্গুতীত্যাদিপ্রয়োগাঃ কথং নোদাহ্বতা ইতি কোহপি



যজাতি শাসৈতে মদ্ধৈতে মদ্ধৈথে ৰোধিবং তারিবদিত্যাদি লোড়িবে ছন্দস্থেবেতি নোদাহৃত্য।

আশিষি গম্যমানায়াং ধাতোরুত্তরে লিঙ্সংজ্ঞকা যাদাদয়ো ভবস্তি। অগ্যথান্ন বিধ্যাদিলিঙ্কার্য্যম্। ভ্য়াৎ ভ্য়াস্তাং ভ্য়াস্তঃ শের্দ্ধিষীষ্ঠ স্পর্দ্ধিষীয়াস্তাঃ শের্দ্ধিষীরন্ স্পর্দ্ধিষীগ্রাস্তাঃ স্পর্দ্ধিষীয়াস্তাঃ শের্দ্ধিষীবহি শির্দ্ধিষীমহি।

৬৮৯। অন্দন্তেগুপাস্থাদাল্পনেপদ্ভিত্বার্থা মহিঙ্-ঙকারঃ।

চেনীন্ট। ঋদন্তেগুপাস্থাতু। কৃষীষ্ট তীৰ্ষীষ্ট ভিৎসীষ্ট ভুৎসীন্ট সক্ষীষ্ট।

চোদরতি তং প্রভাগে বজতাতাদি এতে প্রয়োগো লোড্বিধী ছন্দিসি বেদ এব নিম্পরা অতো নোদাস্থতাঃ এতেনৈতং প্রতিপাদিতং স্থান্দস-ব্যতিরিক্তানাং পদানাং ত্রিম্নিপ্রসাধিতানামত্র শাস্ত্রে সাধনং ন্যুনত্মিতি সর্ব্ধা নু সম্ভাবনীয়ন্।

⁽৬৮৮)। আশীরভিলমিতপ্রাপণেচ্ছা ফদ্যত্রাপি বিধ্যাদিলিঙ্কার্য্য-মপেক্ষিতং স্থান্তদা বিধ্যাদিলিঙ্বিধান্তরমিদমপি স্ত্রং বিদ্যাৎ। পৃথক্স্থানৈ চ কর্ম্যাতি ততোহস্যাস্তমত আহ অস্তম্ম বিধ্যাদিলিঙ্কার্য্যমিতি।

⁽১৮৯)। তাঙাদিওকারস্তের সর্কীধাতুনামান্মনেপদিওবোপলক্ষণত্বে প্রাপ্তে বিশেষব্যবস্থার্থ বচনম্ন ঋকারাস্তাদিগুপান্তাদ্ধাতোরক্ততো বিহি-ভ্রু সীষ্টাদেরাত্মনেপদসংজ্ঞকন্ত ভিত্বার্থা মহিঙ্ঙকার:। চেমীষ্টেতি ক্রিঞ্চয়নে ক্ষীষ্টেতি ভুক্তঞ্করণে তীর্মীষ্টেতি ভু প্রবন্তরণারেঞ্চ

৬৯০। গমেবা।

अ:शःशोधे अ:शमीखे ।

৬৯১। হনো বধিলু জাশিষোঃ।

नुडागीर्लिएडाः भत्राः इतः स्थात् विश्वविष् । व्यवधीय वधाय ।

C.

৬৯২। আত্মনে লুভি বা।

আহত আবধিষ্ট।

৬৯০। ন লিঙিণ।

যানিষীফ ।

হ্রপোক্রা দীর্যস্তাপি গ্রহণম্। শ্কুদিরিতি ইব্ রাস্তাদেরিত্যাদিনা দীর্যঃ। ভিংগীপ্ত ইতি বৃধ্ অবগমনে তুর্যাস্ত-ইত্যাদিনা ধকারে পরে বকাবস্ত ভকাবঃ। এতের প্তিয়ে সতি গুণঃ স্থাং। সক্ষীপ্তেতাত্র ভিত্তিয়ে হলীত্যাদিনা প্রজ্ঞানাং আং। সজ্বিসর্গৌল্যাদিনা জস্তায়ং মহং কর্ম্। ইণস্তাদাহনেপদ্ভিদ্বার্থা মহিঙ্ওকার ইতি কক্ষাত্র ক্রমিতি চিন্তান্

- (৯৯০): গনেরাম্বনেপদশ্র দীধাদের। ডিয়ার্গেইয়ং মহিত্তকাবঃ ডিংকার্যাং বা ভবতীতার্গঃ। নঙ্গণীপ্রেতি দ্যোহকর্মগমাদেরিত্যাম্বনে-পদন অস্তিংপকে তথোকাঙিতীতাাদিনা মকাবলুক।
- (৬৯১)। যদ্যপ্যাশীরিতি পদং স্ত্রে শ্বতে তথাপ্যাশীলিভিষ গৃহতে মরালীবিনিতো লোট্ প্রকবণ্যেবঃত্র নিয়ামক্মত আহ ল্ঙালী-লিঙােরিতি। অবধীনিতি লুঙ্ জঙ্ সঙ্সঙ্কদান্তেরিত্যাদিনা ঈঙ্সঙ্লুক্।
- (৬১২)। আয়নেপদসংজ্ঞাকে লুঙি পবে হনো বধিবা ভবতি। আছ-তেতি সাক্ষক স্কাজোধিতপাঙ্যম্ছন ইতি আয়নেপদং ঋদ্ধনশ্চ স্থানে দিজিতি সিচ তথোশেচত্যাদিনা নকাবলুক্ অঙ্ যানিত্যাদিনা সিচ্লুক্। লুঙীতি কিম্? আয়নেপদাশীলিঙি তৃ নিতা মব আবধিনীই।
 - (৬৯৩)। লিঙ্সপদ্ধিনি ইণি পবে হনো বধির্ন ভবতি। খানিং-

৬৯৪। লিটি চেকে। ধো ঢঃ। লুঙাশীলিভঙালিটি চ পরে ইক উত্তরো ধো ঢো ভৰতি। অধ্যগী-ঢুং কৃষীঢ়ং প্লোষীঢ়ং চেষীঢ়ং চকুঢ়ে।

৬৯৫। ইড়িঙ্কুন্তাদ্বা।

क़क़विद्व क़क़विद्ध व्यवविद्यम् व्यवविध्वः विविधेदः विविधेदम् ।

ষীষ্টেতি হন্দৃশেত্যাদিনা ইণ্ বৃদ্ধিঃ বৃদ্ধিদ্বিক্জ্যুর্থ ইতি হস্ত ঘঃ। লিঙিণীতি কিন্? অবধি।

(৬৯৪)। অধ্যগীত্বিতি অধিপূর্ব ইঙ্ অধ্যয়দে লুঙ্ ধ্বং সঙ্ লৃ ভি চেঙো গীরিতি গীরাদেশঃ ধাদে সিচশ্চেতি সঙ্লুক্ ধস্ত ঢঃ। ক্ষীত্বিতি ঝদস্তবেনাভিক্বাদ্গুণাভাবঃ। চেষীত্বিতি চিঞ্ চয়নে। প্রোষীত্বিতি প্রাণ্ড গতৌ পঠাতে অপেকিতবিধের নপেকিতবিধানং ত্বলিমিতি প্রথমং ঢবং ততো গুণঃ। অন্তথা আশীলিঙ্ ইক্পরতা ন স্তাং। চক্রত্ব ইতি ক্রেণা লিট্ ধ্বে দিক্তিঃ। ইক ইতি কিষ্? পক্ষীধ্বম্। এভ্যোহত্তর স্থান্। ইক উত্রোহত্ব লোট্।

(৬৯৫)। ইড়য়াদিঙয়াদিক উত্তরে লিটি লুঙাশিষোক পরয়োঃ
ধো ঢো বা ভবতি। রুক্বিঢ়ে ইতি রু শব্দে লিট্ ধের বিরুক্তিঃ রুক্
বৃভ্স্কক্র ইত্যাদিনা বাচাদিয়াৎ ইট্ ঢম্মং মুদ্ধাতু ইত্যাদিনা উবাদেশঃ।
কথং ররয়িধের রয়য়িঢ়ে রয় গতৌ ববয়িঢ়ে ববসিধের ববলিঢ়ে ববলিধের
যদেতদিড়িঙস্তাম্বতি তদ্যররলহাদিশ্রাদ্যস্তাম্বতি বক্তব্যম্। ইঞাদিপদেন
ইঙ্ইট্ ঈঙ্ ঈট্ ইণাং গ্রহণম্। লুঙাশিষোলিটি চ পরে ষবরলহাদিঙাদ্যস্তাহতরো ধো ঢো বা ভবতি। পরাপূর্ব্ব অয়্গতৌ লুঙ্
পলায়িধ্বং পলায়িচুম্ অদেবিধ্বম্ অদেবিচুম্ অলবিধ্বম্ অলবিদ্বম্ অলবিদ্বম্ রার্বীত্ব্দ্রাদ্রী
ত্তিত গঙ্বর্জমিতি ইঙ্। অগাহিন্ত্রম্ অগ্রহিত্বং হন্দৃশগ্রহেত্যাদিনা
ইণ্ পলায়িয়াধ্বং পলায়িষীঢ়ম্। যবরলহাদক্তর। অটোকিধ্বম্। ররিয়ীচুমিতি ইঙচভ্বিত্যাদিনা ইঙ্ চম্বং গুণঃ ষদ্বম্। ইক ইত্যেব। আদিমীদ্বং
নাক্র ইক্ব উত্তর ইঙ্ কিন্ত হল উত্তরং। উপদিদীয়িদে উপদিদীয়িধ্ব

সংক্ষিপ্তসারব্যাকরণে

क ७५५

৬৯৬। স্থাদেরেদাশীর্য্যে। আশীর্লিঙ্ঘে পরে স্থাদেরুত্তরে এন্তবতি। স্থেরাৎ ^{*}দেয়াৎ। স্থাদিঃ প্রাপ্তক্তঃ।

৬৯৭। স্থাবজ্জং যুক্তাদন্তাদা। . গ্লেয়াৎ গায়াৎ।

১৯৮। ঙিত্যায়ে হলি নংশাদির্নশাদেঃ।

যবর্জিতে ঙিতি হলি পরে নশাদেঃ স্থানে নংশাদির্ভকতি।
নঙ্কীষ্ট নংষ্টা নঙ্কাতি। মস্জো মন্জ্ স্থজ্ প্রজ্ দৃশ্ দ্রশ্।
অস ইতি কিম্ গু নাশ্যম্।

প্রথমং ধকারস্ত চে ন ক্লতে ইঙ্দীঙোর্গাদীয়াবিতি দীয়াদেশঃ তেনেই উত্তরত্র চয়নবাহিতমেব।

(৬৯৬)। স্থালিঃ প্রাপ্তক ইতি বেহ্য্যচিন্ধানে বাদীনি তাত্রেতি শেষঃ। দেয়াদিতি জুদাঞ দোদানাম্দাহরণং নতুদেওপ্সভান্তনেপদিজন যকার-পরস্বাভাবাৎ একারে কতে আজৈনাদাবিত্যাকারলুক্। আজিরিতি কিম্ ? স্বীয়তে। য ইতি কিম্ ? দাসীপ্ত।

(৬৯৭)। যুক্ত আং গুকাং সোহস্থো যন্ত দ যুক্তাদন্তঃ স্থাধাতুঃ বর্জ্জিয়া যুক্তাকারাস্তানাতাকভরে আনি ভিষে পরে এদা ভবতি। মারাদিতি । মৈ হর্ষক্ষরে এচোহশিতীতাান্ত্রন্। যুক্তবিশেষণং কিন্ গ্ যায়াং। যুক্তাদন্তাদিতি ধাতুবিশেষণন্। তেনেহ ন ভবতি নির্যায়াং। যুক্তাদন্তাদিতি ধাতুবিশেষণন্। তেনেহ ন ভবতি নির্যায়াং। যুক্তাদন্তাৎ স্থাধাতোরনেন প্রস্কের্ত্তিতং স্থাদিপদং চিত্ত্র-জ্বদ্তদ্ভণসংবিজ্ঞানবহুবীহিরিতি শক্ষানিরাসার্থং স্থাবজ্জিসিতি কুত্র্ম।

(৬৯৮)। নংশাদিরিতি ক্তান্থারো নির্দেশঃ আদেশস্ত নকার-বানেব বিধীযতে। অথবা নন্শাদিরিতি গঠো লিপিকর প্রমাদানংশাদি-রিতি জাতঃ। এবং মদ্রো মন্জ ইত্যাদাবিপি দ্রন্তবান্। নজ্জীপ্রেতি নশ্ অদর্শনে রধাদিরাদিওভাবং। তিন্দ্র ইত্যাদিনা ওিন্ধানংশাদেশে চ ক্তে ভ্রদ্জাদ্যস্ত্ত্যাদিনা শস্য যং চজোঃ ক ইত্যন্ত্রতী যশ্চাস্থপ্রেক ইন্ডি ষপ্ত কং যত্ত্ব। নংষ্টেতি পুট্ তাঙ্তৃত্ব বা যটবর্গাদিত্যাদিনা তস্ত্রা। নঙ্ক্যতীতি পুট্ তিঙ্কাঙ্ব। মদ্র্ইতি টুমদ্র্ভিদ্নে মন্ত্রাণ ৬১৯। অপাদিবা ত্পাদেঃ। অপ্সাধি। কৃষ্ ক্রম্মুন্ আন্স্পৃন্ স্প্রাপ্ত্প তাপ্দৃপ অপ্যুজ্ অজ ইতি লাকিড়াঃ।

৭০০। যনুল্কি তথসথের। সক্তঃ সাম্রপ্তঃ।

१०)। नभः ङिन्।

नः कृ । नक् ।।

৭০২। মিমী েঞার্মাদাদী ঙোই চিচ। মাসীফ নাপয়তি দানী ট দাপয়তি।

দেশে কতে মজাী ই মঙ্জু মঙ্জু মঙ্জবাস্। সজ্ ইতি স্জ্ বিসর্গে িবানিস্থলাদিশ্চ অজাদেশঃ অই। অক্ষাতি। লুঙি অআকীৎ অজাদেশে কতে অনিঙ্ হলস্তভোতি বৃদ্ধিঃ। দৃশ্ ইতি দৃশির প্রেকণে দশাদেশঃ। দ্রুলতি অদ্রাকীৎ। নাশ্রমিতি ঝহলো বা ইতি বাঃ বিজ্ঞা ভিত্তালংশাদেশঃ প্রাপ্রোতি। ভিতীতি কিম্ পুনষ্ঠঃ। স্কীষ্ট দৃক্ষী ই ইতি ইপ্রপান্তবাদিভিত্ত্ম। হলীতি কিম্ পুনর্শনং স্পর্শনম্।

(৬৯৯)। যবজিতে ডিতি হলি পরে স্পাদেশ তোঃ স্রপাদি ভবতি বা। গ্রু সপু গতৌ ক্ষ্ বিলেখনে ভাদিস্তদাদি চ দ্যোরপি ,গ্রহণম্ মৃশ্ আমর্শনে স্পৃশ্ সংস্পাদের তিপ্ প্রীণনে দৃপ্ হর্ণনোচনয়েরিতি দৈবাদিক্যোগ্রহণং স্পাদেরনিঙঃ সাহচ্য্যাৎ তৃপ্ তৃন্ফ্ তৃপ্রে দৃপ্ দৃন্ফ্ উৎকর্ষে যৌ তুলাদী তয়োর্ন গ্রহণং সেঙ্পাৎ। মৃজ্ ইতি মৃজু ওদ্ধী ভাবিড়া ইতি নাগ্রেষাশ্রতমিত্যর্থঃ।

- (৭০০)। যন্বুকি সতি তথসধ্বে পরে স্পাদেঃ স্থানে স্রপানির । ভবতি। অঙিদর্থং বচনম্। স্পৃপি ইতি যন্বুকি দিকজিঃ ঋদিকজেন করিদ্রীত ইতি ক্কারঃ। উকার উচ্চার্রার্থঃ। তস্থস্ স্পৃথঃ ব্যতি-স্মৃপ্পে ব্যতিস্পূর্ধের কর্ম্ব্যতীহার ইত্যাদিনা আত্মনেপদং সে ধ্বে।
- (৭০ ১ । নশঃ ক্তিব পরস্থাং নংশাদেশো বা ভবতি । নশিত্বেত্যত্র ন ভবতি ইঙা ব্যবধানাং ।
- 😬 (१०२)। বেতি নিবৃত্তং ডিত্যযে হলি পরেহচি চ ডুমিঞ্ প্রক্ষে-

৭০৩। যচিচ।

প্রমায় প্রদায়।

৭০৪। ইঙচতুর শকাদেরত্যাদে।

অবেহত্যাদে হিল পরে চতুর্লড়াদিবর্জ্জং শকীদেরগুন্মাদ্ধাতোরু-জরে ইঙ্ভবতি। স্পর্দ্ধিযীষ্ট পঠিতা পঠিতুম্। বেদিতা বিদ্যানাং পতিতং বেৎস্থাসি কিতাবিতি বেৎসি অসি স্থমিতি পদভঙ্গাদিতি বামনঃ। কালাপাস্থিমমনিটমান্তঃ। অচতুর্ম্বিতি কিম্ ? অগ্লাতি।

পণে মীঞ্ হিংসায়াম্ ইত্যেতয়োমা ভবতি। দীঙ্ ক্ষয় ইত্যক্ত দা ভবতি।
ক্রেল্বন্ধবতো নির্দেশার মীঙ্ হিংসায়ামিতি দিবাদেগ্রহণম্। মাপয়তীতি
লিঙ্ নৌ প্রাদর্জ্যাদেরিতি পুঙ্। অচীতি বিষয়সপ্তমী তেন প্রথমং
মানাদেশৌ ভবতঃ পশ্চাৎ প্রত্যয়ঃ অন্তথা উপদায়ো বর্তুত ইতি ইণস্ত ইতি
দৃঙাদিয়াৎ ওঃ স্থাৎ প্রথমং দাদেশে ক্রতে ভাবে বিণ সতি যুর্ব্বেঞাদেরিত্যাদিনা যুক্তবতি। ঈয়য়পাদানমিত্যত্রাপি অ্বর্নীয়য়ঃঃ কর্ম্মণি চেতি ওঃ
স্থাৎ। দাদেশে তু ক্রতে উপাদানমিত্যত্রাপি অপরিভাদস্তাদিতি ওনো
ভবতি। ভিতীত্যের। নিশ্রতঃ প্রদীতঃ :

(৭০০.)। যটি পরে মিমীঞোর্ম । দিঙো দা ইত্যয়নাদেশো ভবতি ।
মিনীঞোর্মঙে ইতি বক্তবাম্। নিময়ো বর্ততে ঈষরিষমঃ তথাচ মিমীনিনীয়ানিতি প্রতিষেধ ইতি বার্তি:ক মিফোরখনচীতি চাল্রে দৃষ্ঠতে।

(৭০৪)। বেদিতা বিজ্ঞানামিতি বিদ্ জ্ঞান ইত্যন্ত রূপমন্তাশকাদিদ্বাং যদি জ্ঞানার্থো বিদিঃ সেঙ্ কথং পতিতং বেংশুদি ক্ষিতাবিতি পতিতং
জ্ঞান্তদি ক্ষিতাবিতার্থঃ অত আহ বেংদি অসি সমিতি পদভঙ্গাদিতি অসীজ্যবায়ং দ্বমিত্যন্তার্থে বর্ততে পদভঙ্গাদিতি পদবিভাগাদিতার্থঃ। বেংশুদীজি নেদমেকপদং কিন্তু বিভক্তমিতি বামন ইতি বামনেন বৃত্তিক্বজা
কবিপ্রিয়ালক্ষারে বেংশুদীতি পদভঙ্গাদিত্যক্তম্। কালাপান্থিনমনিটমান্থরিতি ইমং বেংশুদীতি প্রয়োগম্ অনিটং বদন্তি নতু পদভঙ্গদিদ্বম্ । অন্তার্থশ্ত
নিধ্যে প্রয়োগে কাব্যার্থাসংগভেগ্রভাবিত্যিলানিটোহয়ং প্রয়োগ ইত্যভিপ্রারঃ ।

অশকাদেরিতি কিম্ ? শক্ষ্যতি। সর্ববর্থা জপ্তকিদ্যামাং বিদ্যা নাতি প্রসাদতি। চুফ্টঃ ভুষিত ইত্যক্ত চুফ্টঃ জপ্তাইত্যাদ্যোহসাধবঃ।

তথাচ, অদি তুদি মুদি স্থিত্যতি বিশ্বতি বিনতীত্যাদি তেয়াম-নিট্লক্ষণং কালাপা ইত্যুক্তং শাস্ত্রান্তরেষু লাভার্যস্তাপি সেট্ডাব। অন্নান তীতি অশ্ ভোজনে ক্র্যাদিখাক্লাৎ যদি শকাদেরের ইঙ্ন ভবতি ভদা কৰং জপু ইত্যত্রেভাবঃ জপ্ মানদে চেত্যক্ত শকান্দিপপাঠাং। জপিবদৌ চ ইত্যনেন চ ভাবারস্তয়োরের ধিকল্পিডেন ইঙ্কিশানং নাক্র ভাবারস্তরোঃ কো বিহিতঃ কথং বা চুঠঃ চুকিছ ইতি লোকপ্রয়োগে চুপ্ত ইতাত্রেজভাবঃ চুষ্ পানে ইত্যস্থাশকাদিয়াৎ অত আহ চুই জপ্ত ইত্যাদরোহলাধক ইতি। অস ইত্যেব। ভূয়াৎ প্রভূয়। শক্ষকীত্যাদি। শকু শক্তে স্থাদিঃ ৯কারাস্তনির্দ্দোৎ শক্মর্যণ ইতাক্ত দৈঝাদিকক্ষোভরপদিনোন্স গ্রহণ্ম বামনভাগবৃত্তিকারাভ্যাঞ্চারং বিশেষো ন ব্যাখ্যাতঃ কাতন্ত্রটীকাকারেণ তু উক্তং শক বিভাষিতো মৰ্যণ ইতাক্ত দৈবাদিকতা ন গ্ৰহণমিত্যক্তে মহাস্কে তেবাং শকিতা তদসঙ্গতমিহ বিশে**ষানির্দ্দেশাং**। তথাচ, শকিন্ত কান্তেয নিড়িষাত ইতি তথাং টীকাকারমতেন উভরোগ্রহণং প্রতিভাষতে যুক্তঞ তদেবং স্থাত্রহণি মকারবহিত এব নির্দেশঃ তন্মাৎ মকারপাঠঃ প্রমাদকতঃ। বঢ় ভাষণে ঘদ অদানে অদাদেশস্ত ত ঘদেঃ স্থানিবদ্ধাবাদেব নিধাতি যথা উঢ় ইত্যা: দী ক্র্কোপে মহাতীতি নির্দেশাৎ মহ জ্ঞানে ইতাস্থা দৈবা-দিকতা এহণং মড় বেধিনে ইত/ভা তনাদেন এহণং বভ্রভিনাে দন্শ্ দংশনে তুগভষ্প্রাপ্তৌ ক্র্ আহ্বানে রোদনে চ ওধ্পৌচে যভ্রৈথুনে বুধ অবগমনে দিবাদিঃ বুধাতীতি নির্দেশাৎ বুধ্ বোধনে ইভাক্ত ভালেন গ্রহণং হন্ হিংসাগতোঃ যমু উপরমে আপু বাাপ্তৌ রুহু জন্মনি প্রাত্রভাবে বমু ক্রী ছারাং রাধ সাধ সংগিন্ধৌ স্বাদিঃ অকর্মকো রাধ বৃদ্ধানের দিবাদ্ধি-দ্যোরপি এছণং গম্ প্রহাত্তে শব্দে বাধ্ তাড়নে যিধু সংরাদ্ধৌ সিধ্যতীক্তি নিদেশাৎ বিধুগত্যামিত্য ভাবেন গ্রহণং উদিবসভানার্যমিতি বামনচন্দ্র-ছিনের্মতং তেন সিধিতং অফ্রেষামত্রাপি সিদ্ধং বিধূ শাস্ত্রে মাঙ্গল্যে ইত্যত্র উ निशानन निकन्नि তে इंदर गूर् भः श्रदात नक्ष नक्षान क विज्ञान ग्रह

শক্ বক্তি যদি জুধি মন্যতয়ে।
রভি দংশি লভি জুশি শুধ্যতয়ঃ ।
যভি বুধ্যতি হন্তি যমাপু রুহোরমি রাধি নমি ব্যধি দিধ্যতয়ঃ ॥
যুধি বন্ধি রুধি ছিষি গম্স্পয়োদৃশি শুষাতি মেহতি পুষ্যতয়ঃ ।
ভজি ভঞ্জি যজি ত্যজি লুপ্ কৃষ্যোভূজি দঞ্জি ক্লজি স্বজি মজ্জি মুচঃ ॥

ক্ধাদিঃ ক্ষ্ কামে দিবাদিছ যোগপি গ্ৰহণং ত্বিষ্ দীপ্তেট গৃন্ স্পূপ্ গতৌ দৃশির প্রেক্ষণে শুষ্ শোষণে মিহ্ সেচছন পুষ্ পুষ্ঠো নিবানিঃ পুষ্তীতি নির্দেশাৎ পৃষ পৃষ্টাবিতাক্ত ভাূাদেং ক্র্যাদেশ্চ ন গ্রহণং গুয়াতি মেহতীত্যাদি-বিকরণবির্দেশস্ত ছন্দোহস্তবোধার্থঃ ন পুনরিতরব্যাবৃত্তয়ে ভজ সেনায়াং ভন্জে। আমর্দনে বজ্দেবপূজাদৌ তাজ্বয়োহানৌ লুপু ছেদনে কুম্ বিলেখনে ভার্দিক্তদাদিশ্চ দ্বরোরপি গ্রহণং ভুজ্ পালনাভাবহারয়োঃ রুধাদিঃ ভূজো কৌটিলো তুলাদির য়োরপি গ্রহণং ধন্জ্ পরিষকে কজো ভঙ্গে ধন্জ্ পরিষঙ্গে কুতনকারলোপভৈর নির্দ্ধেশে বুত্তভঙ্গপরিহারায় প্রাপ্তে। টুমস্জো গুদ্ধৌ মুচ্ মোক্ষণে ভিদির্ বিদারণে বিদ্ লাভে অস্তানিঙক্ষং কাতন্ত্রেহণীষ্টং বিন্দতীতি নির্দ্দেশাৎ বিদ্দ ব্রোন ইতাসা দেও অমু অনন্তর্ঞ নিদ্যতি বিনত্তীতি বক্ষ্যতি তেন তয়োঃ শকাদিজং কেচিম্বিচারশার্থমপি বিদিং ভুদাদৌ পঠন্তি তদ্যাত্র গ্রহণং তেন লাভার্থো ভবতি। জ্ঞানার্থলাভার্থয়োর্বি দোরিঙেব সেঙ্হেব জন্নদিভান্সিনে শ্বিনীতকীর্ত্তীনাং বামনভাগবৃদ্ধিক্বতো: **সতং** উদাহত্ত তাভাাং তত্র বেদিতা বিছানাং বেদিত। ধনস্যোতি। यमु विभावनभाष्ठाबनामरानयु ज्ञानिः यमु विभावर्ग ज्ञानिक र्याविश গ্रहन বিদ্ সত্তায়াং শিক্ষির্ শৌচপেষণয়োঃ রন্জ রাগে ভাদিদি বাদিশ্চ ম্মোরপি গ্রহণং সিচির করণে লিশ অরীভাবে দিবাদিঃ লিশ

তিওস্তপাদঃ।

ভিদি বিন্দতি সীদতি বিদ্যতয়ে।
নিজি রঞ্জি সিচো লিশি শক্ষভয়ঃ।
দিশি ত্যাতি তুষ্যতি পদ্যতয়স্তপতি স্তিপি ভৃজ্জি হদি কিপয়ঃ॥
শপতি চ্ছিদি পৃচ্ছি পিষি শ্লিষয়ে।
বপতি স্বপি সুদ্যদি খিদ্বহয়ঃ।

গতৌ তুদাদিদ্ব য়োরপি গ্রহণং শদু শাতনে ভ্রাদিস্তদাদিশ্চ দ্বয়োরপি গ্ৰহণং জভ্মৈথুনে ভা়াদিস্তদাদিশ্চ দ্যোগপি গ্ৰহণং জভ্জৃভী গাত্তবিনামে ইত্যয়ং ধাতুঃ সেঙেব দ্বয়োরপি গ্রহণং সেট্ডমিতি জিনেন্দ্রাদয়:। অভিসংজনে ছষ্ বৈক্তো ভুষ্ ভুঞ্চী পদ্ গতৌ তপ্ সংভাপে তপভীতি শঙা নির্দেশো নান্তব্যাবৃত্ত্যর্থঃ তেন •তপ**্ ঐশ্বর্যো ইত্যদ্য দিবাদেরপি গ্রহণং** ম্যাদকতা তু দ্বোরপি গ্রহণমিত্যুক্তং তস্মাৎ তপতীতি নির্দেশঃ ছন্দো-হন্নরোধেন ন অন্তনিরাদায়েতি প্রতীয়তে। তিপূক্ষরণার্থে ভ্রমজ্পাকে হদ্ পুরীষোংসর্গে কিপ্ প্রেরণে দিবাদিস্তদাদিশ্চ ছয়োরপি গ্রহণম্। শপ্ অাক্রোশে ভাদির্দিবাদিশ্চ ঘয়োরপি গ্রহণং শঙ্নির্দেশোহতন্ত্র: ছিদির্ বৈধীকরণে প্রচ্ছ্ জ্ঞীপায়াং পৃচ্ছীতি শ্লোকে নির্দেশ ইপ্রতায়ে ক্বতে পৃচ্ছা-দেশেন পিষ্ সংচূর্নে প্লিষ্ আলিঙ্গনে দিবাদিঃ শিষু প্লিষ্ প্রহু প্লাবু দাহে ভাদির স্নোরপি গ্রহণম্। অনিট্কারিকাব্যাখ্যানে স্থাসকারেণাপ্যেবমুক্তং প্লিয্তীতি নির্দেশাৎ ভারেনে গ্রহণমিতি কাতম্ভীকাকার: গ্রিষ্ আলিঙ্গনে ইত্যস্ত হতে গ্রাদকারেণৈর দাহার্থক্ত দেট্তমুদাছতং জুমরপরিশোধিতধাতৌ চ দাহার্থ: প্লিষ্ সেঙ্প্রকরণে পঠিত:। ডুবপ্ বীজতন্তসন্তানে ঞিষপ্ শয়ে বুদ্ প্রেরণে অদ্ ভক্ষণে থিদা দৈক্তে দিবাদীরুধাদিশ্চ থিদ্ পরি-ঘাতে তুলাদিঃ ত্রাণামপি গ্রহণং বহ্ প্রাপণে দহ্ ভক্ষীকরণে ছুপ্ সংস্পর্শে দিহ্উপচয়ে ড় পচ্ষ পা**ে** কঞ্ ব্যক্তায়াং বাচি **উপর্থাৎ** দেঙ্ঘে প্রাপ্তে অনিঙ্থার্থ: পাঠ: হলস্তপ্রকরণে তু নির্দেশোহচতুষ্ বচাদেশবিধানেনাস্ত হলস্তত্বাৎ বিষ্ ব্যাপ্তো ভ্ৰাদিঃ ১দিতি নির্দেশো-২স্ত প্রমানঃ বিষতিনির্দেশে ক্রষ্টবাঃ বিষ্ সেচনার্থো ভাবিস্তস্তাপি প্রহণং

দহতি ছুপি দেশ্বি পাঁচ ক্রবয়োবিষ্ লেঢ়ি নহি ক্ষুদি বিজ্পিপয়ঃ॥
বসতি স্পৃশি দেশ্বি তুদি ক্ষদয়ো
বিশি তৃপি দৃপি রুষাতি স্জুক্ষিদয়ঃ
ক্ষুবি সাধি রিণক্তি রিশি দ্বিয়ো
মুশতিশ্চ শিন্ষি বিনত্তি যুজঃ॥

স্থাসকতোক্তং বিষ বিপ্রোগে ক্যাদিঃ তস্থাপানিঙ্বং কেনাপি দর্শিতং তস্তাপি এহণং সামাত্তনির্দেশাদিতি গ্রন্থকারঃ লিহ্ আস্থাদনে নহ্ বন্ধনে কুদির সংপ্রেষণে বিজ্লিপয় ইতি শ্লিষ্টনির্দেশাৎ বিজির্ পৃথগ্ভাবে ভাূাদেঃ ক্ষাদেশ্চ গ্রহণম্ ওবিজী ভয়চলনয়োরিতাস্য চ ব্যচাদিপঠিতক্ত গ্রহণে২গ্রহণে চাবিশেষঃ কালাপাস্ত বিকলমত্র পঠন্তি। লিপ্ উপদেহে বন্দ নিবাসে ভাূদিঃ বদতীতি নির্দেশাৎ বদ্ আচ্ছাদনে ইতান্তাদাদেঃ সেঙ্তং স্পূশ্ সংস্পর্শে ছুছু প্রপুরণে তুদ্ ব্যথনে স্কন্দির্ গতিশোষণয়োঃ বিশ্ প্রবেশনে তুপ্ প্ৰীণনে দৃপ্ হৰ্ণমোচনয়োদি বাদী যস্ত তৃপ্ প্ৰীণনে স্বাদিঃ তৃপ্ তৃনফ্ তৃপ্তো দৃপ্ দৃন্ফ্ উৎকর্ষে ইতি তুদানী তেবাং নাত্র গ্রহণং রুষাতীতি পাঠ: প্রমাদকতঃ ক্ষু রোষে ইতান্ত দেঙ্খাৎ অন্ত মূর্দ্যভাত্তত দিবাদেঃ প্রয়োগঃ তদগ্রহণঞ্চন কন্তাপি সম্মতং যস্ত রুশ রিশ্ হিংসারামিতি তালবাান্তঃ সোহনিঙেব কিন্তুদো তুলানিঃ তত্মাদ্বিশি দুপাতি দুখাতি ইতি মূলপাঠঃ কিন্তু তপ্যতিদ্পাত্যোরনিঙগণে পাঠঃ শাস্তাম্তরানিট্কারিকাদর্শনাৎ গতামু-গতিকতন্ত্রা যতোহনয়ো রধাদিগণপাঠাৎ বিকল্পিতেও তং স্তজ্ বিনর্গে দিবাদি-স্তুদাদিশ্চ দ্ব্যোর্পি গ্রহণং ঞিঘিদা গাত্রপ্রকরণে দিবাদিঃ অক্তৈব গ্রহণং নত ঞিখিদা স্নেহনমোচনয়োরিতাভ ভাবে: তথাহি পাণিনায়ানা কালা-পানাঞ্বিদাতীতি বিকরণনির্দেশঃ কৃতঃ কৃষ্ বুভুক্ষারাং রাষ্ সাধ্ সংসিদ্ধৌ রিচির বিরেচনে রুশ্ রিশ্ হিংসায়াং দ্বিষ্ অপ্রীতৌ মূল আমর্শনে শিব হিংসার্থেয় ভানে পঠাতে শিষ্ বিশেষণে ইতি কথানো দ্বো-রুপি গ্রহণমিতি জিনেন্দ্রাদয়ঃ ইছ তু শিনষ্টীতি নির্দ্দেশাৎ একস্থোক্তং গণকারাণাং দল্মতং শিনষ্টীতি প্রমানপাঠঃ শিষণ্টেতি দ্রষ্টব্য: ডল্কাৎ मिलक्षाम्य । विष् विहातर्ग वृज्जित् ः योर्ग कथािकः यूक् मभार्थो

অনিঙো হলি দেও ইমেহচি পরং অর্মতি শ্বয়তি ক্ষু মু ক্ষু ক্রবঃ। তয়তি স্মু রণোতি রণাতি শিয়ো-দ্বিবহুস্বর উপত্ব শ্বপরকঃ।

অত:•সোহপান্তভাব্যং বিচির্ পৃথগ্ভাবে রুধাদিং কালাপান্ত পঠস্তি। অনিঙো হলীতি কেবলন্ত ধাতোরসম্ভবাৎ তদস্তক্ত গ্রহণং হলস্তে ধাতৌ পূর্ব্বোক্তা ধাতবোহনিভিত্যর্থঃ। সেঙ ইমে ইত্যাদি। অচীত্যনেন অজন্ত-ধাতো গ্রহণম্। অভত্তে ধাতো ইমে বক্ষ্যমাণাঃ সেঙঃ ভদ্বাতিরিক্তোহজ্ঞ : শকাদিরিতার্থ:। শ্রিঞ দেবাযাং টুওখি গতিনুক্ষো: টু রু কু শব্দে যু মিশ্রণে অদাদিঃ সাহচর্যাং ন ক্মিঞ্ যুক্র বন্ধনে ইত্যক্ত ক্র্যাদের্গ্রহণং মু স্ততৌ ক্ষু তেজনে ক শব্দে ডাঙ্ বিহারসাং গতৌ ডয়তীতি নির্দেশো ভাদে-গ্রহণার্ম্ঃ দিবানে বিশেষং বক্ষাতি ফু প্রস্তবে বৃঞ্বরূপে স্বাদিঃ বুণো-তীতি বুঙ্ সংভক্তৌ ক্র্যাদিপঠিতয়োদ্যোরপি গ্রহণং শীঙ্ স্বপ্নে। দ্বিছ-ব্যরা ইত্যাদি দিম্বরা বহুস্বরাঃ উকারপরাঃ গ্লাকারপরাশ্চ সেঙঃ দ্বিবহুস্বরত্বং চিহ্নার্থবিহিতানাং গ্রহণম্ অন্তথা ক্রিভীপ্রভূতীনামপি দেঙ্বং স্থাৎ দ্বিষ্বা উর্ণ ঞঃ প্রানৃত্যো গ্যস্তাশ্চ বহুস্বরা দরিদ্রাপ্রভূতয়ঃ উপরা ভূপভূতয়ঃ য় কারপরা গু প্রভৃতয়ঃ এতে সর্ক্ষে সেঙঃ। বেভিদিতেতাাদৌ যন্নুগম্ভন্ত ধাত্তরত্বাৎ ইঙ্ভবত্যেব। শীঘাবগমার অনেকগণপঠিতজ্ঞানার নিবত্রগণ-জ্ঞানায় চ বির্চিতা অনিভ্গণকারিকা লিখ্যতে। শক্নোতি শক্তী ন্ধৌ কান্তাছক্তিং ক্রবো বচিঞ্চ বিচি রিচি পচি সিচীংশ্চ মুচিমিতি চাস্তাৎ সথৈব পৃচ্ছতিং ছাস্তাৎ। যজি ভন্নতি স্থজতি স্বজাতি ভূবতি ভূনকীন নিজি কজি দঞ্জি যুজাতি যুনক্তি রক্তাতি রক্তীন শ্বঞ্জিং বিজিং ত্যজিং ভঞ্জিম। ভৃজ্জিং মজ্জিমথৈকোনবিংশতিং দিশ্চিতং জাস্তাৎ। স্বিদ্যতি হুদি कुनि जिनी निन जूनि रुनि अनि छिनि अनीन्। विদ্যতি विनछि विन्छि विमाछि थिनजीन् थिनखिकः। ज्रांनिजूनारमाः भनिमिनि भनिक नियसनाष्टाम्म देव দান্তাৎ। কৃধি শুধি রুণদ্ধি রুণাতি রাধাতি রাগ্নোতি বন্ধি বৃধি সাধীন।

मः किछमात्रवाक्त्रत

৭০৫। **অক্তক্তবত্বোর্ডীয়তিশ্চ।**ডিয়িয়া। অত্যানাবিতি কিম্ ? বিক্তিঃ।
, ৭০৬। অপৃঙ্যূর্ণ তি সংস্ত্যাদিঃ।
বিশ্ববিষ্ঠি।
বিশ্ববিষ্ঠি।

কু ব্যাতি দ সিবাতীতি ক্রুণী চ ধান্তাৎ ক্র্যোদদৈবৈতান্। হনি
মন্ততি যমি রমি নমি গমীংণ্চ ষট্পক্ষমন্তাক্ত। আপি তিপি তপতি
তপ্যতি শপ্যতি শপ্তীন্ ছুপি স্বপি লুপীংণ্ড। ক্ষিপতি ক্ষিপ্যতি বপি লিপি
স্পাংশ্চ চতুর্দদৈবৈতান্ পান্তাং। ক্ষুভি বভি লভি যভীংশ্চ ভান্তাং
ভাভিমেকে মৈখুনে নাতার্যঃ। দৃশি দংশি ক্রুণি মৃশি দিশি বিশি স্পুশীন্
লিশ্চাতি লিশভা চ বিশিম্প ক্ষিঞ্চ নিয়তং শান্তাদেকাদদৈবৈতান্। দিমি
পিনি শিন্তি শেষতি গুনি প্রাতি ক্রতি ক্রতি তুনি ছনীন্। দেটি নিয়াতি
বেষতি বেবেরীন্ বৈ চতুর্দশ তু যান্তাং। ঘদি বস্তী দ্বী সান্তাং। ক্রি
মিহি বহি ছহীন্ দিহিং লিহিং মহিমপি দহিমন্তাবিপ হাস্তাং। ক্রবতেহনিত্ত্বভেত্তাঃ ত্রি শ্রতি ভারতি প্রতি ক্রিডা ক্রুত্বভাহিতা। উদন্তান্দ্রান্ ত্যক্তাহনেকস্বর্গন্ অল্পাংশ্চ।

(१०৫)। ক্তক্তবভূ ত্যক্ত্বা ভাষতিশ্চ সেঙ্ভবতি। ভীঙ্ বিহায়সাং সতৌ ইতি দিবাদৌ পঠাতে তভ্তেবং গ্রহণম্। ভবিষা। ক্তক্বছোস্ত—ভানঃ ভীনবান্ ক্তক্বছোরোদিফ্যাদেশ্চেতি তভ্তা নঃ ভ্বাদেশ্ত ভয়িতঃ ভিন্নিতি বপুম্। বিভিন্নিতি বিশ্ জ্ঞানে ইত্যন্ত সেঙো কপং ক্তিঃ বিশ্বামিতি জ্ঞান

(१०७)। পূর্ পবনে যু মিশ্রণে উর্ণু আচ্চাদনে এতদাতি-রিক্তে উতি উকারাত্তে ধাতো বিহিতঃ সংস্ত্যাদির্ভবতি। অপূর্যুর্ণু-চাতি সঙ্গীপলক্ষরা ঔপপ্লেষকমধিকবণং বথা গঙ্গাবাং বোষং। করষ-তীত্যাদি ক' শঙ্গে লুঞ্ ছেদনে ক্ষারাত্ত্বজ্ঞ পুঙো নির্দেশাৎ পুঞ্ পবনে ইত্যপ্ত ক্র্যাদেঃ পুপৃষ্তীতি ভবতি। নমু যুর্ণুঞোঃ প্রতিষেধঃ কিমর্বং সনীবস্তব্দেত্যাদিনা বিশেষবিহিতেন বিক্লিতেঙা তত্র বাধা ভবি-ষ্যতি তবেত্তিস্তান্।



৭০৭'। গুপাদে চ গুহ্ আছো:। জুগুপ্^দতে জুযুক্ষতি জিম্বক্ষতি।

৭০৮। সঙ্লোপেহধোহনাত্মনে সো র্ভ্যন্তর্ব সলুটো কৃপঃ।•

জভূৎ অতথাঃ বর্ণ শতি বির্থসিতা বির্থসিতুং রুধু বির্থ্ শৃধুং শর্পতি স্থান্দ্ স্থান্ৎস্থতি রুপু কল্পতি চিকু সিতা চিকু শিকুং কল্পাসি। ধে তু সঞ্লোপে তু—অলবিঢ়ুম্।

(৭৯৭)। গুপাণীত্যনেন সন্ গুপাদেমিন্দানবিভামেন যত্ত্ব সন্ বিহিততভাৱ গ্রহণং গুপাদৌ গুহু সংবরণে গ্রহ উপাদানে ইত্যোভয়োক বিহিতঃ সংস্থাদির্ভবতি। জুগুপাত ইতি গুপ্ গোশনে মন্ পূর্বমদ্যাত ইত্যাগ্মনেপদম্। অপরোদাহরণানি সন্বিধাবেব প্রাপ্তপুদর্শিতানি। জুব্কতীতি রধাদ্যতিতো বেতি পক্ষে প্রাথে ইঙত্র নিষিধাতে হো দু ইত্যা-দিনা হন্ত ঘঃ তুর্যান্ত ইত্যাদিনা গশু ঘঃ বর্গশাদিরিত্যাদিনা ঘশু কঃ মধ্বং গ্রহেরশকাদিত্বাদিঙ্গাপ্তঃ প্রতিষ্ধ্যতে জিল্পকতীতি বশাদেকশাদিরিতি গৃহাদেশঃ।

(৭০৮)। সঙ্লোপে সতি অবিভ্যানধকারপ্রত্যরন্তাদির্ভবিত।
বৃদ্ধা ইতি বহুবচনমান্তর্য্ আত্মনেপদাভাবে বৃদাদিভা উত্তরঃ সকারন্ত্যাদির্ভবিত। তদিতানেনাত্মনেপদমিতি পরামূরতে আত্মনেপদাভাবে রুপ: সকাবল্টো ত্যাদী ভবত:। অভ্নিতি পৃত্ হঙ্ সঙ্
সঙ্লুগিণাদেরিতি সঙ্লুক্ সঙ্লোপে সতি ত্যাদিত্মবিধানসামর্থাৎ
সঙ্লোপাৎ প্রাগপি ইঙ্ন ভবতি ভূহ ভ্রত্তোবিতি শিবাদিতার ভাগঃ।
অতথা ইতি তয় বিতারে পৃত্ থাস্ সঙ্লোপাভাবপক্ষে ভূ ইঙ্বের
ভবতি অভনিষ্ঠা:। বৃভূ বর্ত্তনে বৃধু বৃদ্ধো শৃধু শক্রুৎসায়াং ভাল্ ভবনে
চত্বারো ভ্রাদান্ত প্রবিধার বৃত্তাদরঃ ত্রাদ্যানাং ত্রয়াণাং নিতামিতি প্রাপ্তে
ক্রেনেন্ত্রিভাবিত প্রতিবেধাহয়ম্। বংশ্ভতীতি ল্ট ভঙ্
স্থা: বৃদাদের্থা ভঙাদাবিতি পাক্ষিকমন্তান্তনেপদম্ আত্মনেপদ্বান্তিঃ

१०२। भिंचूयानीमिजाः एको (बी।

শূন: শূনবান্ ঘূষির্ ঘূটো পাদো স্ফুজা স্ফুগু: ত্রসী ত্রস্তঃ
যতী যতঃ যতিতমপি দৃশ্যতে। মূচ্ছালে মূর্ত্তমূচিছ তৌ।
স্বা ক্ষীরকণ্ঠকং বৎসং লক্ষয়স্তীব লজ্জিতেতি মূচ্ছালক্ষাভামিসপ্রতায়েন রূপন্।

ারক্ত গ্রহণাৎ কংপ্রয়োগেহপি ইঙভাব: বিরুৎসিতা বিরুৎসিত্মিতি কল্পতাতি কপ্ সামর্থ্যে উদিখাদিকল্লেন ইঙি প্রাপ্তে প্রতিষেধঃ কপো লুটি চেতি পাক্ষিকমত্রাশ্বনেপদং কপাদে: কুপাদিরিতি কুপাদেশে কতে গুণোনাল্। অলবিচ্মিতি লুঞ ছেদনে লুঙ্ ধ্বং সঙ্ ইঙ্
ইড়িঙস্তাদ্বা ইতি ধস্ত চঃ আত্মনেপদসকারে তু বর্ত্তিবীপ্ত বর্তিব্যতে শিশ্দিরত। স ইতি কিন্ ? বর্তিত্বং স্তম্ভা শুনিতা উদিহাদ্বিকল্লেন ইঙেব ভবতি।

(१०>)। আচ্চ উচ্চ আদীতৌ এতাবিতৌ যেষাং তে আদীদিতঃ র্শিঘুষোরার্দিতামীদিতাঞ্চ দৌ ক্রৌ ত্যাদী ভবতঃ। যথা আবামাগতা-বিত্যুক্তে দ্বিচনেন বক্তা তৎসহচরিত ত প্রতীয়তে। তথা ক্রৌ দাবিত্যুক্তে জ্ঞঃ তৎসহচরিতশ্চ ক্তবতু: প্রতীয়তে সাহচর্যাৎ ক্তবতুরপি ক্তো বাচ্যঃ। ষথা দক্রন্ট নাসত্যন্ত দক্রো প্রথমা চ দ্বিতীয়া চ প্রথময়োঃ পূর্ব্বস্বর্ণ ইতি। সহচরিতত্বঞ্চানয়োঃ ক্তক্তবতুলক্ষণয়োঃ সন্নিহিতস্থাৎ। অথবা ক্তক্তবন্ধোরো-দিজ্যাদেশে ভালিলকণসহচরিত যোরেক কার্যাদর্শনাৎ। শূনঃ শূনবানিভ টুওমি গতিবুদ্ধোঃ ওদিখাত্তকারশু নকারঃ কিদাশীলে গারিত্যাদিনা খেঃ শ্র্ভাব: ঘুষির্ শুদার্থ ইতি ভাবে: ঘ্ষির্ বিশব্দে ইতি চুরাদেরনিঙ্তপ্ত গ্রহণং নতু নিভক্তি ধাত্তরত্বাৎ যথা চাসৌ বিকল্লিতে ণিঙ্ভদনন্তরং বক্ষাতি ক্র্ণ ইতি টুওক্জা বজনিপেবে ওদিখাতকারশ্র নকার: ওদিদাদেনাদা-বিতি জকারস্থ পকারঃ অজ্ ঝঘবেত্যাদিনা গংং ত্রস্ত ইতি ত্রদী উদ্বেগে যত্ত-মিতি যতী প্রযন্ত্রে রতিভ্রমপি দুখতে ইতি অনিত্যত্যাদিত্বং কিমপি বত্নান্তর-মাস্থেম্মিত্যাভিপ্রায়ঃ। নমু যত্নঃ কম্মিরেব প্রয়োগে বিধীয়তে মূর্চ্ছিত লচ্ছি--ভাদিপ্রয়োগন্ত কথমিত্যত্রাহ মুর্চ্ছ লিজ্জাভ্যামিতপ্রভায়েন রূপমিতি তারকান-দেরাকুতিগণতান্তদুয়া সংজ্ঞাতং তারকাদেরিত ইতি ইত: ।

প্ত কৃচেছ গহনে চ কৰ:।

१४४। व्यक्तः मःनिविज्यहः।

৭১২। অভেঃ সনিধানে।

সমর ঃ সমর বান্ অভ্যর ঃ অভ্যর বান্।

৭১৩। ধূম্শসোঃ প্রাগল্ভ্যে।

ধৃষ্টঃ ধৃষ্টবান্ বিশস্তঃ বিশস্তবান্। অপ্রাগল্ভ্যে তু—ধর্ষিতঃ

ধর্ষিতবান্ বিশসিতঃ বিশসিতবান্।

(৭১১।৭১২)। সংনিবি ইত্যেতেতা উত্তরাং অর্দ্ধ গাতৌ বাচমে চেত্যস্থাৎ ক্তক্তবতূ ত্যাদী ভবতঃ। অভেরুত্তরাদর্দ্দেঃ সন্নিধানে বাচ্চো ক্তক্তবতূ ত্যাদী ভবতঃ। সমর্ম ইতি অমদোদাদক্ষ ন ইতি ক্তম্ম দ্যা চ.নঃ।

(१>৩)। ঞিধুমা প্রাগল্ভো শস্ক হিংসায়াম্ ইত্যেতয়োঃ জক্তবভূ ত্যাদী ভবতঃ প্রাগল্ভো বাচ্যে। ধ্যেরাদিল্বাৎ শসোশ্চ উদিক্ষেন বিকল্লিতেও্বাৎ জক্তবভোরিত্যাদিন। ইঙভাবে সিদ্ধে নিয়মার্থং বচনম্ এতয়োঃ প্রাগল্ভো এব ত্যাদিশ্বং নাক্সত্র। নকু ধ্যেঃ জক্তবভোরাদীন জ্যাবারস্তয়োরিতি বিকল্লিতেও্বাধনার্থমেব ক্ষেশ্রাল্ল ভবতি ? নৈবম্। ভাবাদিকত্মণোঃ প্রাগল্ভা ধ্যেরেরাপ্রয়োগোহনভিধানাদিতি বামন-দিনেক্রো। প্রাগল্ভাদক্সত্র ভাবাদিকর্মণোস্ক বিকল্লার্থং ধ্যেরাদিৎকরণং তেন ধৃষ্টং ধর্ষিভ্রমিতি।

⁽৭১০)। কক্ষে গছনে চার্থে বর্তমানাৎ কম্বঃ পরে জক্তবতূ তাদী ভবত:। কচ্ছু নিতি ছব্থমভিধীয়তে কট্টমিতি ক্ষ হিংসায়াং পঠাতে কট্টং ছব্থং কটোহনিঃ কট্টং ব্যাক্ষরণমিত্যাদৌ কারণে কার্যোপচারাৎ কট্টশক্সপ্রোগঃ অথবা কচ্ছু মতীতি ব্যুৎপজ্ঞা পচাদিছাৎ ভকারেণ নিষ্পন্নস্থাপি কচ্ছু শক্ষপাত্র গ্রহণম্। তেনোভয়ত্রৈব মুখাঃ শক্পর্যোগঃ বদ্যপি ক্রে দ্বিত্যন্ত্রে ক্রজবন্ধোরপি গ্রহণং প্রাপ্নোতি তথাপি ন তদ্গ্রহণং তত্রার্থবিশেষাভিধানশক্রেরভাষাৎ। কট্টানি বনানি কটাঃ পর্বতাঃ গহনা ইত্যর্থঃ অন্তত্র ক্ষিতং স্বংগ্র্য।

गरिकश्चिमात्रवाक्ष्रप

৭১৪। জুমান্তং কিদেকাজুগন্তোর্ ঞ্জিঞাম্। রুতঃ ভূতঃ বৃতঃ 👪 নির্ঘোধৈর্ভরিতদিগন্তরাণীত্যত্র ভরশব্দদিত-প্রত্যয়েন রূপম্। জীর্ণঃ জীর্ণবান্ দীর্ণর দীর্ণবান্ উপুরি। শ্রোতঃ। ্রাত্মনেকাজুগন্তস্ত তু--জাগরিতঃ জাগরিতবান্ন জুম্বা তু-জরিম্বা। ু ৭১৫। বদতের্যন্লুকি।

বাবস্তঃ।

৭১৬। ততুত্রথবরাদয়ঃ। হস্তঃ জন্তুঃ বন্ত্রং কুন্তম ঈশ্বরঃ দীপ্রঃ যাচ এগ ইত্যাদি।

⁽ ৭১৪)। জুধাতোঃ ক্ত্যা জুত্বা ততোংগ্যজভূত্বাগ্যৎ স্বমোঃ ক্লীবে তুগল্লাদেরিতি তুক্ একোংচ্ বস্তা স একাচ্ একাচ্চাসৌ উগন্তল্চেতি একাজুগন্তঃ একাজুগন্তস্ত ধাতোঃ উণুক্রিঃ শ্রিক্রক জৄবিহিতক্ত্বাল্যং কিৎ ত্যাদির্ভবতি। অশকাদিয়াদিনি প্রাপ্তে বিধানম্। কত ইতি ক শব্দে। ভূঞঃ শকাদিঘাৎ ভূত ইন্ডি ভবিতব্যং কথং ভবিত ইতি চোদ্যাহ নির্বোষৈরিত্যাদি তদশু সংজাতং তারকাদেরিত ইতি ইতপ্রতায়েন। জীর্ণ ইতি জৃষ্ ঝুষ্ বয়োহানৌ জু বয়োহানৌ ইত্যেতয়ে৷ রূপং জুডেতি জু: গ্রহণে জুষোহগ্রহণাৎ জীর্জা ইতি ভবতি। দীর্ণ ইতি দূ বিদারণে উগস্তবিহিত এবায়নিতি ক্তেহপীগাদেশে ইঙ্ন ভব্তি। সনীবস্ত-র্ক্কেত্যাদিনা বিকল্লিতেঙ্খাৎ। উণুতঃ শ্রিত ইত্যাদি ক্রক্রবন্বোরিত্যা-मिनां निरंशक निषारकार क्यार्थमनद्वाक भागानम्।

⁽ १১৫)। বদ্ নিবাদে ইতাস্ত যন্লুকি সতি কিৎ ত্যানির্ভবতি। মন্লুকি পুঙ্ চেতি বাচাদিমাদিট প্রাপ্তো নিষিধ্যতে। বাবস্ত ইতি यननुकि चिक्किः भीर्थः कः।

⁽ ৭১৬)। তাদয়স্ত্যানয়ো ধৰম্ভি। ওণাদিকৈঃ সাহচৰ্য্যাৎ ক্তস্তা-গ্রহণম্। হস্ত ইতি হস্ হসনে হসাদেস্ত ইতি তঃ। জন্তুরিতি জনী ·আহ্রেডাবে: তুস্তনাদেরিতি তুঃ। বস্ত্রমিতি বস্ আচ্ছাদনে তাদেস্ত্রঙিতি क्या कुर्क्र मिक कृष निकर्ष रनारमञ्जू रेजि थः यहेवर्गामिकाकिना अस्त्र ।

৭১৭¹ ন স্নোরিঙাত্মনেপদে ক্রমেরা**ক্স**নেপদার্হস্থ কর্তৃক্তি চ।

ব্যতিস্নোষ্যতে উপচিক্রংসতে উপক্রস্তা।

৭১৮। ঋ**ষি**ঙোরিঙ্**সনি।** অরিরিষতি সিম্মায়িষতি।

ঠঃ। ঈশ্বর ইতি দৃশ্ ঐশ্বর্যো স্থাদের্ম্বরট্ ইতি বরট্প্রত্যয়ঃ। দীপ্র ইতি
দীপী দীপ্রে দীপি নমি কপি হিংসি কমাজসম্মিঙাং ডচ্ছীলাদাবিতি রঃ
ঘারা। ইতি টু যাচ্ যাক্রায়াম্ ইণাদের্ন ইনি নঃ চবর্গাঞ্ঞ ইতি নস্ত ঞঃ
মাম ইত্যাদিনা আং। এতে সর্ব্ব এব পাতবোহশকাদিশ্বাৎ সেঙঃ এষাং
উণাদিপ্রত্যয়ানাং ত্যাদিজাদিঙভাবঃ যেম্বত্যমু উণাদিব্যৎপন্মেয়ু প্রয়োগেমু ইঙ্ভাবো দৃশ্ততে তেমানাদিপদেন সংগ্রহণং কর্ত্রাম্। কনেষ্ঠ ইতি
ঠঃ কঠঃ। মনস্তান্ড ইতি ডঃ মণ্ডঃ। গ্যাদের্গ ইতি গং পূর্গ ইত্যাদয়ঃ।

(৭১৭)। অশকাদিষাৎ প্রাপ্তস্থ প্রতিষেধঃ। ক্নু প্রস্রবাদ ইত্যাল্ড ব্যাল্ডনেপদে পরে ইঙ্ন ভবতি। ক্রমু পাদবিক্ষেপে ইত্যান্ত আত্মনেপদে পরে কর্ডকৃতি চ সতি ইঙ্ন ভবতি। ব্যতিমোন্যাতে ইতি কর্ম্বাতীহার ইত্যাদিনা আত্মনেপদম্। উপচিক্রংসতে ইতি প্রোপাভ্যামারস্ভে ইত্যাত্মনেপদার্হ্যাৎ ক্রমেরে। উপক্রান্তেওি আত্মনেপদার্হ্যাৎ ক্রমেরের। উপক্রান্তেওি আত্মনেপদার্হ্যাৎ ক্রমেণ কতৃঙ্জি কর্ত্তরীতি তৃঙ্ অনুপদর্গাদত্তরক্তামিতি বিক্রেনাম্মনেপদার্হ্যে ক্রম্ভা ক্রমিতা ইতি ভবিত্বাম্। আত্মনেপদ ইতি কিম্? প্রামার্বীৎ প্রস্নবিতা প্রম্বিত্বাম্। আত্মনেপদার্হত্তেতি কিম্? ক্রমিতা নিজ্মিতা। কর্তৃকৃতীতি কিম্? প্রক্রমিতং প্রক্রমিত্যাম্। আন্মনেপদার্হ্যমন্তান্ত্যের নতু কর্তৃকৃৎপরতা কথং, চিক্রংসদ্মা ক্রমিপত্রিপঙ্ক্রেনিটি মাঘঃ। আত্মনেপদক্ত কর্তৃকৃত্পরতা কথং, চিক্রংসদ্মা ক্রমিপত্রিপঙ্ক্রেনাটানাং প্রমাদপাঠিঃ প্রাচ্যান্ত জিঘৎসার্ঘেতি পঠন্তীতি ভাগর্ত্তিঃ কথং প্রস্ক্রম্বাতি প্রস্কৃত প্রতা ক্রম্বাত্তি ক্রম্বাত্ত ক্রম্বাত্র কর্ত্ব ক্রমের্বাতি পঠন্তীতি ভাগর্ত্তিঃ কথং প্রস্কৃত্বতি প্রস্কৃত প্রতাদিনা হঙ্নিষেধঃ কিন্তু অপৃঙ্ধু নুর্বিত ংস্ত্যাদিরিতি জ্বান্তংকিদেকাজিত্যাদিনা চ।

(.৭১৮.)। শ গতৌ শ প্রাপণে চেণ্ডি। ভ্যাদৌ শ স্থ গভাবিতি:

११२। कितारमण्डा

কৃ চিকরিষতি গৃ জিগরিষতি দৃঙ্ আদিদরিষতে ধৃঙ্ অনবস্থানে ।
আদিধরিষতে।

্^{ষ্ট্র}ষ্যতি অহনিষ্যৎ করিষ্য**ি অকরিষ্যৎ।**

৭২১। স্বরতেশ্চ।

স্বরিষ্যতি অস্বরিষ্যৎ।

হ্বাদৌ পঠ্যতে দ্বয়োরপি গ্রহণং শ্বিঙ্ ঈম্পদ্ধন ইন্ড্যেতয়োঃ সনি পরে ইঙ্ ভবিঙ । শকাদিস্বাং প্রতিষেধে প্রাপ্তে ইঙ্ বিধানাং পূর্ব্বস্ত্রা-দেবেঙাং মুর্বত্তী প্রাপ্তায়াং ইঙিতি কৃতং নিষেধামুর্তিশঙ্কানিরাসার্থম্ । নমু শকাদিস্বাং প্রতিষেধে সিদ্ধে প্রতিষেধবিধানমন্থকং স্থাৎ নৈবং নিয়মাশঙ্কা স্থাৎ ঋশিঙোঃ সম্ভেব ইঙ্ন ভবিতি অন্তত্র ভবত্যেব । অরিরিষ্ঠীতি সনি ইঙি গুণে চ কৃতে সেঙ্ ণিঙ্ চাস্তোহজাদেরিত্যানন রি ইত্যক্ত দিক্তিঃ শিঙ্জ্ব সিশ্বিষ্থতে ।

(৭১৯)। কু বিক্ষেপে ইত্যস্ত তুদাদেঃ শস্তদাদেরিতি শে কতে ইর্ কিরতি পদৈকদেশস্থাত্মকরণং কৃষা কিবাদেরিতি নির্দেশঃ তেন কৃ হিংসায়ামিভাস্ত ক্যাদের্ন গ্রহণং কিরাদেন সনি পরে ইঙ্ ভবতি। কু বিক্ষেপে গ্রু নিগরণে দৃঙ্ অনাদরে ধৃঙ্ অনবস্থানে চ্যারস্তদাদাস্তর্পাশ্যাং কিরাদয়ঃ তত্রাদ্যয়োর্ব্ড্ বৃঞ্ স্লাতশ্চেতি বিক্লে প্রাপ্তে নিত্যার্থং বচনং শেষয়োঃ শকাদিম্বাদপ্রাপ্তে বিধানন্। চিকরিয়তি জিগরিয়তীতাক্র বৃঞ্ বৃঞ্ প্রতামনিঙ্গলিট্শীঙ্বেতি প্রাপ্তস্ত ইঙ্বোহ্পানং বাধক ইতি বামনমতেন সঙ্পাত্র পক্ষে ভবতীতি বিনীত্তিমতেন চ।

(৭২ •)। হত্তের্ধ কারাস্তম্য ৮ ধাতোঃ স্ত্রে পরে ইঙ্ভবন্তি। হনিষ্যতি অকরিষ্যদিতি লৃট্লুঙ্্মুঙ্শকাদিত্বাদিঙভাবে বিধানং হ্রেজ্যা দীর্ঘ্তশাৎ পরিষ্যতি।

(৭২১)। স্ব্ শক্ষোপতাপরোম্ভিত্র শু পারে ইঙ্ ভৰভি।

পৃথ্য। গমেথিনাত্মনে সে।
গমিষ্যতি সংজিগমিষা। আত্মনে সে তু--সংজিগংসতে সংগংসতে
কমিষ্যতে সংজিগংসিতেত্যেকে।

৭২৩। লিট্টি সমূট্কুঞঃ। সংচক্ষরিব সংচক্ষরিম ।

ঋকারান্তত্বাৎ পূর্দ্বেণৈব সিদ্ধে বচনমিদং রধাদিকাদিকলিতেওো রাধনা-র্থম।

(৭০২-)। গম ইতি গম্. স্প্ গতৌ ইত্যন্তাধার্থেণিকোর্গম্সনি চেতানেন ইণ্ গতৌ ইক স্মারণে ইত্যেতয়োধি হিতম্ভ গমাদেশন্ত চ গ্রহ-ণম্। অবিগ্রমানান্মনেপদে দকারে পরে গমেরিঙ্ভবতি। ্গমিষা ীতি গমু ধাতোল ট্ শুঙ্ সংজিগমিষতি গমুধাতোরিণশ্চ রূপম্ ই বস্ত অধিজি-গমিষতি কুলাচারম্ অবোধার্থে ণিকে। র্গম্সনি চেতি গমানে । গমিধাতো-রাত্মনেপদনিমিত্তে সমুপসর্গে সত্যপ্যাত্মনেপদাভাবাদিঙ্ ভবভীতি স্ক্রার্থং সংপ্রব্যে গমিঃ প্রযুক্তঃ সমস্তাৎ সনাদেশ্চেতি স্তিয়ামাৎ। সংগংস্তত ইতি সমোহকর্মগুমানেরিত্যাত্মনেপদং সংজিগংসত ইতি সমোহকর্মগুমানেরিত্যা-ত্মনেপদং সংজিগংসত ইত্যত্র পরিষ্ণত্যাপবাদবিষয়মুৎসর্গোহভিনিবিশত ইতি স্থায়াৎ আত্মনেপদপরতা সনস্তান্তবিষ্ঠীতি প্রথমপ্রাপোহপি ইঙ্ন ভবতি গমিষ্যতে সংজিগংসিতেত্যেকে ইতি এতং পদং শ্লেষকারশু সন্মঃ তন্মত-মান্ত্রিতা এবং ব্যাথ্যেয়ন্। অনাত্মনেপদমিতি পর্যুদাসনঞা আত্মনে-পনসদৃশং পরবৈপদমুচ্যতে পরবৈষপদেরু যো গমিরুপলক্ষিতঃ তত্মাৎ সক্ষারে পরে ইঙ্ভবতি। গমিষ্যত ইত্যত্র গমিষাত্র: কেরলং পর্বৈপ্রপাপন কিতঃ তন্মাৎ কঁশ্বণি বিহিতেহপ্যাত্মনেপদে দতি ইঙ্ন ভবত্যের সংপৃর্কান্ধনে-পঢ়াপলক্ষিতঃ তম্মাৎ সংজিগংসিতেত্যত্রাসত্যা স্থনেপদে পরে ইঙ্ন ভরতি। (৭২৩)। সুটুদহিতত করোতেলি ট পরে ইঙ্ভরতি। সংচয়ক্তি-বেতি লিট্নংজ্ঞক ব সংপ্যুগপেভ্যঃ ক্তঞে ভ্ষণে ইতি স্বট্ ক্রাদিবৰ্জন্ অথঙি লিটাতি ইড়ি্ধানাৎ কুঞ: শকাদিত্বাৎ ইঙ্প্রাপ্তে বিধানং থঙি চ অনিভব্দণন্তয়োরধাদিছাৎ ধকাগান্তভ কৃঞ: শকাদিছাদেব ইঙ্কাঞাত্তে ৰিধানম্। সম্বড়িতি কিম্? চক্ব চক্ষ।

(৭২৪ । বৃঙ্সং**ভক্ষে** কৃঞ্বরণে ইত্যেতরোলিটি এঙ্বর্জন্ ইঙ্ ন ভবতি। বৃঙ্বুঞোঃ সেঙ্খাৎ প্রাপ্তৌ প্রতিষেধঃ।

(१२४)। আন্ ভক্ষণে ঝ গতৌ প্রাপণে চ ঋ ফ গতৌ ব্যেঞ্ সংবরণে ইভোতেষাং থিছি পরে ইঙ্ ভবতি। আনেরেব অনিওল্পন্তাবিভি রধানিছাৎ বিক্ষে প্রাপ্তে অর্প্তবের্যঞ্জনপ্রাপ্তে বিধানম্। আদিথ আরিথেতি গুণা দিরুক্তিঃ দীর্ঘ: সংবিবায়িথোত এচোহশিতীতাকারপ্রাপ্তে ন বোঞো লিটি চেতি প্রতিষধঃ ইঙ্ অয়াদেশঃ দিরুক্তিঃ বশ্ বজাদ্যো-রছিন্নিট্কার্যজ্ঞাদিরিতি যজাদিখাদিকিক্ত বীভাবক্সাদির্ভবতি। অজব-চিছ্নপ্রথমভাগ আদিঃ অনাদেব পিন্তর্জ্ঞাভাবাৎ আদিপদেন বী ইভোবোচ্যতে স এব ভবতি হ্রমঃ জালাদেশাঃ স্থানিবৎ ক্ষণীতি ঘণ্ লুঙ্ ভেষু চাদো ম্যুর্লিটি কেতি ঘল্লাকে শে ক্লতে ইঙ্ । জক্ষিও।

আদিজুপান্তবযোশেচতি বক্তব্যন্। আতপান্তব্যেজুপান্তত ব্যেশ্চ খডি পরে ইঙ্ভবতি। শকাদৌ রংগদীঙ্ভাক্তে পক্ষে চানেন বিধানম্। ররাধিথ বিভেদিও চুক্রোশিও চকর্ষিও উবরিও বেঞ্ তন্তবস্থানে বেঞো-বরির্দ্ধেতি ব্যাদেশে ক্লতে দিক্তিঃ বশ্যজাদ্যোরিভ্যাদিনা উকারঃ অনিভ্রদণন্তভাদিবর্জনিতি রধাদিঘাদিকল্পে প্রাপ্তে নিত্যার্থং বিশ্ব-গ্রহণম্।

(৩২৬)। মৃথ তিতিক্ষরামিতান্ত কান্তাবর্থে বর্তমানন্ত ক্তক-বংখাঃ পরয়োঃ ইঙ্ভবতি। অশকাদিখাদিঙত্র প্রাপ্ত এব ক্তক্তবংখারি-গুপাক্তেঙ্ছ ইতি ইড়ি,ধানেন বাধিতঃ তথাধনার্থমিদম্। অক্ষাক্তৌ তু— অপ্রমৃথিতঃ বা গুমাহ ইড়েবাত্র ভবতি। ৭২৭। অমৃত্ববাসনো বা। অভ্যমিতঃ অভ্যান্তঃ হরিতঃ তুরঃ আস্বনিকঃ আসাক্তঃ।

৭২৮। দোষোমাস্থাং কিতে।

দিতম্।

৭২৯। শো ব্রতে।

সংশিতো বিপ্রঃ সংশিতং ব্রতম্।

4001 শোচেছার্বা।

শাত: শিতঃ শাতি: শিতিঃ ছাতঃ ছিত: ছাতি: ছিতি:।

⁽৭২৭)। অম্ গতিশকসন্তক্তিবু ঞিছরা সংক্রমে আঙ্ পূর্বেশ্বন্ শব্দে পঠাতে ইত্যোতে হাং ক্তক্তবছোঃ প্রয়োবিঙ্ বা ভবতি। আদিশ্বাৎ দ্বরঃ ক্তক্তবছোবাদি দ্বাবাৰ দ্বগোরিতি বিকল্প: দিল এব তদিতবে নিষেধে প্রাপ্তে ব্যানন্দ্ অনেনৈন স্কাত্র বিকল্প: পাবাদিল্বন্ধ স্পটার্থম্। অভ্যান্ত ইতি অভিপূর্সান্দে: ক্তঃ অভিত্রেগান্ত পঞ্চমানুকাত্যাকারঃ ধাত্মোনাহঙ্ যে ইতি মকারশু নকারঃ তৃপ্পতিতি ক্তঃ কিবন্তন্ত চ ছরাবজর প্রিব্যবাং সাচ্ ইতি অচ্ সহিত্ত বকাবন্ত উকারঃ ক্তক্তবছোরোদিজাদেন্তেতি তকারশ্ত নঃ পত্ত প্রভামশাদিবে তি গশ্ত দিছম্।

⁽৭২৮)। দোহবপগুনে বোহস্তকর্মণি মা মানে মাঙ্ মানে মেঙ্
প্রাণিদানে ইত্যেতেবাং গ্রহণং গ্রা গতিনিবৃত্তো ইত্যেতেবাং কিন্তকারে পরে
ইঙ্ ভবতি। দিতমিতি ইঙাদাবিত্যাকারপুক্ অবসিতঃ অবসিতবান্ অবমিতঃ স্থিতা। কিদিতি কিম্? স্থাতা। ত ইতি কিম্!
অবদার। নকু অয় ইত্যমুবৃত্ত্যা ন ভবিষ্যতি তদেওজ্ঞাপরতি পূর্বাম্মবৃত্তিরত্র নাস্তীতি তেনাত্যাদাবিত্যস্তানমূবৃত্ত্যা দিতিরিত্যাদির্ভবতি.
ই
অতএব উত্তর্গত্রে শিতিরিত্যাদার্তবান্।

⁽৭২৯)। শো তন্করণে ইত্যক্ত কিন্তকারে পরে ব্রতে গম্ফে ইঙ্ ভবতি।

⁽ ৭৩০)। শো ধাতোঃ ছো ছেদনে ইতাক্স চ কিন্তকারে পরে ইঙ্বা ভৰতি। শোধাতোর তব্যতিরিক্তকাক্স বিষয়ং। শিঞ্নিশামনে

. ৭৩১। হাকঃ ক্তি_ৰ।

হিত্বা।

৭৩২। স্থানাধ্বধেট্দোদার্নদেশ্রামান্সনে সিঙি।

দমস্থিত সমস্থিয়াতান্।

৭০০। স্তম্পুঞ্জ্ঃ পরস্মৈ সঙি।

স্থানীক্ষাব্যাবীৎ অধাবীৎ।

ইত্যস্ত শিতমিতি ভবিষ্যতি কিং শো গ্রহণেন ইতি ন বাচ্যং তস্তান্তা-র্বতাং ধাতৃনামনেকার্থত্বেন ইষ্টার্থসিদ্ধিমভাপগন্তং চক্র এব পরং পরমণগুতঃ:

(৭৩১)। ওহাক্ ত্যাগে ইতান্ত জিনু পরভাম্ ইঙ ভবতি। হাক্ ইতি নির্দেশাং ওহাঙ্ গতাবিতান্ত নিরামার্থ: তত্ত হাত্বা গতঃ স ইতি।

(१৩২)। ইা গতিনিরতৌ ডুলাঞ্ দানে ডুবাঞ ধারণপোষণয়োঃ
বেট্ পানে দোহবথগুনে দাণ দানে দেঙ্রক্ষণে ইত্যতেষাম্ আম্বনেপদশু সঙি পরে ইঙ্ভবতি। সমন্তিত ইতি অঙ্যাদদৃদ্যাং স্থানাঙ*চাঙ্
যইতি সঙ্লুক্ ইঙাদাবিত্যাকারলুক্ ধাগ্রহণেন ধাঞ্ধেটোগ্রহণে দিছে
পৃথগুপাদানং স্পন্তার্থং দাগ্রহণেন দোদানদেঙাং গ্রহণে সিদ্ধে পৃথগুপাদানং দৈপদাপোরগ্রহণার্থম্। অদিত অধিত দীঙো দাদেশশু চাগ্রহণং
তেন উপাদাস্ত। আম্বন ইতি কিম্? অধানীং।

(৭৩০)। ষ্টু ঞ স্কু তে বুঞ্ অভিষবে ধুঞ্ কম্পনে ইত্যেতভাঃ
পরবৈশ্বপদশু সিঙ পরে ইঙ্ ভবতি। ত্রয়াণাং শকাদিঘাদ প্রাপ্তে বিধানম্।
অস্তাবীদিতি সঙ্যখিলাগুরিতাদিনা বৃদ্ধিঃ অসাবীং অধাবীং যস্ত
দীর্ঘাস্থা ধূঞ্ ক্র্যানে পঠাতে তস্য সেঙ্ছাৎ অধাবীদিতি সিধ্যত্যেব
কিন্তু ধুঞোহধৌষীদিতানিষ্ঠরূপং ভাদিতোবমর্থং ধুঞোহত্র গ্রহণম্।
সঙ্গেহস্তর ধাতৃষয়ে ধোতা ধবিতা ধোয়তি ধবিষ্যতীতি প্রয়োগাঃ
সিধ্যস্তোব অতএব ধুঙো বিকল্লিড্রেঙো বিধানং পাণিনীয়মতমত্যোপেক্ষিতম্। স্বাদৌ দীর্ঘাস্তোহপায়ং পঠাতে তস্যোদ্ধং ধুনোতি বায়ুরিত্যাদি।
হ্রমান্তপ্রয়োগন্ত দুশুত এব বিধুতা বিপিনরাজিরিত্যাদি। অধৌষীদিভাপিরপং ভবতীতি অবৈদ্ধক্ষণ তচিস্তামিতি কাত্রটীকাকারঃ।

৭ 9 । যম্রম্নমাদ ন্তাৎ সিঙ্ দরিক্রো বা।
আ্বংসিষ্টাম্ অরংসিষ্টাম্ অনংসিষ্টাম্ আ্বাসিষ্টাম্
আ্বরিক্রীৎ অদরিক্রাসীৎ।

৭৩৫। রধাদ্যদিতে। বা।
আচতুর্যে ত্যাদে হলি পরে রধাদেরদিতশেচাতরে ইঙ্
ভবতি। রধিষীফ রৎসীফ স্থান্ স্থানিতা স্বরেশ বিশ্ব

(१৩৪)। বমু উপরমে রমু ক্রীড়ায়াং ণম্ প্রহ্রে শব্দে ইতেলাঃ আকাবান্তেলাক ধাতৃলাঃ পরবৈপদশু সন্তি পরে সিঙ্ ভবতি। দরিদ্রা দ্র্গতাবিত্যমাৎ পববৈ সন্তি পরে সিঙ্ বা ভবতি। অবংসীদিত্য সন্তি কতে সিঙি চ সহ্ কণাণীত্যাদিনা কুঙ্ চ ইঙাদেবিভীতি সঙ্লুক্ অব্বি সিঙ্বিধানক উদ্দিষ্টং প্রয়োজনং নাস্তাতি দ্বিচনমুদান্তেং প্রয়োজনস্ত সিঙ্বিধানক অবংশীদিত্যবাপি বিদ্যুতে এব অক্সথা অনিঙ্হলস্তম্ভেতি বৃদ্ধিং আহা। ব্যরংসিষ্টামিতি পর্যাঙ্বিভাগে রম ইত্যাত্মনেপদনিষ্ণেঃ অনংসিষ্টাম্ অমাসিষ্টামিতি মৈ হর্ষক্ষের এচোহশিতীত্যাবং অদ্বিদ্রাদিতি বহুস্বর্জনান্দ্রাদিঙ্ শুর্ব্বেহ্চানকাদাবিত্যাকারলুক্। অদ্বিদ্রাদিত্যক্র সিংঙ্ব ভবতি ইঙ্পবাদঃ। পরবৈশ্ব ইতি কিমুণ অরংস্তা

(१৩৫)। রংগীষ্টেতি আশীলিঙ্ গীষ্ট বর্গন্তাদিনা ধন্ত ত:।

স্তুৱা স্থানিতেতি সুন্দু অবণে। রধ্ হিংসাসংবাদ্যো: গুন্ অদর্শনে মুহ্
বৈচিত্তো ক্রহ্ জিলাংসারাং সূহ্ উদিগরণে ফিহ্ আপ্রীতে তুপ্ প্রীণনে
দুপ্ হর্গন্মাচনযো: এতে দিবাদান্তর্গণন্থা: নিম্প্ স্পুন্তক্তেতি পৃথয়াক্যোনৈবং স্টিতং গণান্তবন্থা অপামী রধাদিষ্ দ্বন্ধবাা:। নির্পূর্ম কুষ্ নিকর্ষে
ক্যাদিঃ নিকোষ্টা নিকোষিতা ছনিরাবিব হিরিত্যাদিনা রেখন্ত ষ: স্থ শক্ষোপতাপরোরিতি ভাদি: ষ্ভ্ প্রাণিগর্ভনিমোচনেহদাদি: ষ্ভ্ প্রাণিশ্রসবে
দিবাদি: অবিশেষাৎ ধরোরপি গ্রহণং গুকারামুবক্করণং ষ্ প্রেরণে ইত্যা
নিবাদার্থম্ অন্নত্য এব ইঙ্। অভ্যাদাবিত্যন্তর্মুক্তির্যন্ত বন্ধ ভ্যাদিশ্বমুক্ৎ স নাক্ত বিষয়: তেন স্থা স্তিরিত্যাদে ইঙ্ ন ক্বতি।

সংক্রিপ্রসারকাকরণে

৭০৬। সহেচ্ছতিলুভ্রুষ্রিষস্তাদৌ।

সোতুং সহিতৃং সহেষ্ণাতীত্যেকে। অন্তেষ্ট্র্যুস্পর্ণাদিতি নির্দ্দোদিষ্ গতাবিতাস্থ রূপম্। অন্তেষ্টা। ৭০৭। কৃৎরূৎনৃৎতৃদ্ছ্দোহসঙি সে। ্সিতি কর্তিষ্যতি। সঙি তু—অকর্তীৎ। সনীবন্তর্দ্ধঅসন্ত্রায়ুণুভরতিজ্ঞপিসন্-

(१६८१**६) । अस्य अस्य गण्यम् श्**यापृत् अप्राच्छा गण्या जन्**श**र्णतिकाः ।

দিদেবিষতি তুদাষতি সন্দিধিষতি ঈৎ সতি।

(৭০৬)। বহুমর্ধণে ইয়ুইছ্ছায়াং লুড্ বিমোহনে তুলাদিঃ লুড্
গার্দ্ধ্য দিবাদিঃ দ্বয়ারপি গ্রহণং রুল্ রোবে রিয়্ হিংসায়াং দপ্তকো ধাতুরিত্যেতে তাদৌ পরে রপালয়ো ভবস্তি। সর্ব্ব এতেহশকালয় ইতি নিত্যমিঙি প্রাপ্তে বিক্লার্থনারস্তঃ। ইচ্ছ হীতি নির্দেশাদিষ্ গভাবিত্যক্ত দৈবাদ
দিকজা ইব্ মাভীক্রো ইতি জ্যাদেশ্য ন গ্রহণং তয়োনি হিট্ছি। সোচ্
মিতি ক্রিয়ার্থার্থাদি হ্যাদিনা ভুমঙ্ হোট ইত্যাদিনা হল্ম ৪০ বোহপাতুর্যাদ
দিতি তহ্ত ধঃ ষ্টবর্গাদি হ্যাদিনা প্রত্ত হোট্ ইত্যাদিনা চলুক্ দীর্মণ্ড ছেহদোহসহিবলোরিত্যাকারল ওকারঃ। ভাষ্যে তু শুন্ বিকরণল প্রতিষেধ
ইতি দৈবাদিকঃ প্রতিবিধাতে ভৌলাদিকশ্যনেব্যান্ তল্মাদিয়্ আভীক্ষো
ইত্যক্ত গ্রহণমত্তেতি ভাষ্যটাকাকারমতদশনত্তিম্। সহেঞ্চিত্যিকার্থইতি ক্রেমান্ত্রাদি ইব্ গভাবিত্যক্ত হ্রেহেরিত রূপং ন ইচ্ছতি ইফ্লান্ডোরিত্যের্ধবিশেষদর্শনানেবাবধারিত্য্। তথাহ্রেরি অক্গন্তা অভিপীয়তে নির্দেশ্যমর্যাহ অব্রেটিত এতদেব রূগং ভরতি। ন তু অফ্রেইব্যমিত্যাদাপি।
যদি ইষ্ গভাবিত্যক্তাপি বিকল্লিতেও্ অ্মপেন্দি হং কো। ত্রগণামের
গ্রহণার্থমিষ ইতি সামান্তনির্দেশনের বিদ্পাহ।

(৭৩৭)। কতী চ্চেদনে তুদাদিং কতী বেইনে কথাদিছ যোরপি প্রহণং বৃতী হিংসাগ্রন্থয়াঃ নৃতী গাত্রবিক্ষেপে উত্দির হিংসাগাদরয়ােঃ উচ্চেদ্র্দীপ্রিদেবনয়ােঃ ইত্যেতে অসীঙি গে পরে রথাদয়াে ভবন্তি। এভাাে নিত্রনিঙি প্রথে রথাদিস্বম্ অশকাদিসাং। কংগ্রতীতি লুট্ শুঙ্ গুণঃ অকর্তীদিতি লুঙ্ তৃঙ্ সঙ্ ইঙ্ ঈঙ্ সঙ্লুক্ গুণঃ।

(৭৩৮)। ইবন্তা দিবৃসিবৃপ্রভূতয়ঃ ঋধ বৃদ্ধৌ ভ্রম্জ পাকে দন্ভ

৭৩৯। রৃঙ্র্ঞ্রজ্গ তশ্চ। বিবরিষতে বুবুর্গতে তিতরিষতি তিতীর্যতি।

দত্তে শ্রেঞ্ সেবায়াং সু মিশ্রণে অদাদিসাহচর্যাৎ ন ষিঞ্ যুঞ্ বন্ধনে ইতাক্ত গ্রহণং উপুঞ্জাচ্ছাদনে ভূঞ্ভরণে জ্ঞা মারণতোষণাবলে কনেষু জ্ঞানে বেতি ঘটাদির্ণি ঙি পুঙি জ্ঞপীতি নির্দেশঃ অতএব ঘটার্থি ষাভাবপক্ষে নিতাং জিজ্ঞাপরিষতীতি বনু দানে বনু মনু সংভর্কে ইংরোরী গ্রহণী তমু বিস্তারে পত্ গতৌ দরিদ্রা ছগতৌ এতে সনি পরে রধাদয়ে। ভবস্তি। ভরতীতি নির্দেশাৎ ডুভূঞ্ ধারণপোষণয়োরিত্যস্ত হ্বাদেন গ্রহণম্। প্রচাষতীতি উর্দ্যাবাস্তদ্যেতি বকারস্যোকারঃ যবরলো-হচীতি যত্নং কুতকার্য্যো নিদন্ত ইতি নিয়মাৎ ছু ইত্যাস্য দ্বিক্জিঃ। ঈৎ-সতীতি ঋণঃ সন্দিঃ ঋণোরীর ইতি ঈর্ ছিলুক্ বর্গস্থাদিরিত্যাদিনা ধস্য তঃ। অদিধিষতীতি ইঙ্গুণঃ ভবতি হি কারণাদতিক্রমঃ সংযোগ-বিশ্লেয় ইতি রেফবিনেয়া সেঙ্ ণিঙ্ চান্তোহজাদে িতি বি ইত্যানন হি: ঠঢ়থপেত্যাদিনা ধদ্য দং যত্ম। বিভঙ্গিয়তি বিভক্ষতি বিভ্ৰক্ষতি ভ্ৰস্-জোঙি ীত্যাদিনা ভূমজাদেশো গুণা ভ্রমজেত্যাদিনা জস্ত যঃ চজোঃ ক ইতারবুত্তৌ দশ্চামুপেক ইতি ষদ্য কঃ। দিদন্তিষতি ধিপতি ধীপা-তীতি দন্তো বেতি অকারমা ঈ্কারঃ পক্ষে ইকারো দ্বিলুক্ চ তুর্যান্ত-ইত্যাদিনা দ্যা ধঃ। শিশ্ররিষতি শিশ্রীষতি সনীণ্দীর্ঘ ।ইতি দীর্ঘঃ যুদ্,ষতি বিষবিষতি প্রোর্ণ,নবিষতি প্রোর্ণ,ন্যতি বিভরিষতি বুভূর্ষতি সনি ঋতশ্চেত্যুর্ রাস্তাদেরিত্যাদিনা দীর্ঘ:। জিজ্ঞাপয়িষতি জ্ঞাপতীতি জপের্ণিঙ্লোপশ্চতি অকারশ্রেকারো দ্বিলুক্ চ ণিঙ্লোপশ্চ। সিসনি-ষতি সিষাসতি সনেঃ সা ইতি সাদেশঃ। তিতনিয়তি তিতাংসতি তিতংগতি তনেস্তান বা ইতি তানাদেশঃ। পিগতিষতি রভাদেরিরিতি ইঃ দ্বিলুক্ চ দিদরিন্দ্রাসতি দিদরিদ্রিত লুগ্যে২চানকা-দাবিতি ইঙাদাবিতি বা আকারলুক । স্থানান্তরে দর্শিতথাং প্রপঞ্চ-ভীরুলা বৃত্তিক্বতা অ প্রদর্শিতাক্তপি উদাহরণানি বহুবিষয়ত্বাৎ মন্দর্দ্ধিহিতৈ-মিজ্ঞাত পুনদ শিতানি।

(৭০৯)। বৃঙ্গন্তকৌ বৃঞ্বরণে ইত্যেতৌ ক্লকারাস্তান্ত সনিং

৭৪০। লিঙ্সিচোরাস্থনেপদে সংযোগান্যদ স্ত**ল্চ** সমস্ট্রুঞ্বজ্ব মৃ।

ের্ধীন্ট বরিধীন্ট অর্ত অবরিন্ট অতরিধাতান্ অতীর্ধাতান্
মন্তীন্ট অন্তরিন্ট অন্তরিধাতান্ অন্তরিধাতাং শৃধীন্ট শারিনীন্ট শুস্বাতাং অস্মরিতান্।
বিষ্ঠিত উদিৎ ক্তিয়া

র্ধু বৃদ্ধা বর্দিয়া।

৭५২। ক্তক্তবত্বোরাদিন্তাবারস্ভয়োয়।
 ক্রিমদা মিয়ং মেদিতং প্রমিয়ঃ প্রমেদিতঃ।

পনে রপাদরো ভবন্তি। বিবৰিষত ইত্যাদি পূর্মবং রঙ্ রঞ্ শ্কৃতামিত্যা-দিনা পাক্ষিক ঈঙ্পাত্র ভবতি। বিবরীষ্ঠ ইতি।

^{(98 ॰)।} লিঙ্দিচোঃ দম্ববিন্তা মনেপনে পবে বৃঙ্বৃঞ্ ক্ষকারান্তাঃ
দংযোগাদ্যদন্ত স্ট্দহিতং কঞং -জিমিলা বধাদিভবিতি। বৃদ্ধীষ্টেতি লিঙ্
দীই অবৃত্তি লৃঙ্ ক্ষন-চাপুনেসিজিতি সিচ্ কঙ্যাদদ্যামিত্যাদিনা
দিচ্লুক্। অস্তীপ্তৈ ভিছ্ আচ্ছাদনে পূর্ববিদর্দীর্ঘঃ। সম্ট্কঞন্ত -দংক্ষ্মীষ্ট সমন্ত সংপর্যাপেত্যঃ ক্রেণা ভূমণ ইতি স্ট্। অয ইত্যুত্বতে
লিঙ্পববৈশ্বদে অপ্রাপ্তে প্রক্ষৈপদে পবে সিচোহভাবাচ্চাপ্যনেপদ্মিতি ক্তং
স্পষ্টার্থম্।

⁽৭৪১)। ক্রি, পরস্থান্ উদিদ্ধাতূ রধাদির্ভবতি। রুদ্ধেতি রুধু রুদ্ধৌ।

^{(182)।} ভাবে আরস্তে চ বিহিতরোঃ ক্তক্তবন্ধোরাদিকাতৃ রধানি-ধ্বিতি। শ্বিঘ্রাণীনিতাং কৌ দাবিতানেন ত্যাদিকাদিঙাপ্রাপ্তে বিভাষেরম্। মিন্নমিতি ঞিমিদা স্নেহনে ভাবে ক্তঃ অমদোদাদশ্চন ইতি তম্ম দম্ম চ নঃ। প্রমিন্ন ইতি প্রশক আরম্ভদ্যোতকঃ আদ্য-ক্রিয়ারস্তঃ শ্বিভা বর্ণনে। ইতাম্ম ভূ শ্বিতিতং প্রশ্বিতিতমিতি শাস্থাস্তর-প্রসিদ্ধমিপি পাক্ষিকে ইঙি ন সিদ্ধাতি তম্মান্ত্রন্বচনশেযোর্দ্ধাদিনিক বাজা শরণম্।

্বঃ । জপিবমো চ। প্রজপিতঃ প্রজপ্তঃ প্রবমিতঃ প্রবাস্ত

⁹³⁸। ব্যাঙ্**র্যস**্। বিশ্বসিতঃ বিশ্বস্তঃ 🏴

৭৪৫। শক্সকর্মকঃ। শুক্তো ঘটঃ কর্ত্তঃ দেবদত্তেন শকিতঃ পারিত ইতার্থঃ।

৭৪**৬। পূ**ঙ**্ক্তিচ।** পবিতঃ পূতঃ পবিত্বা পূত্রা।

- (१८७)। জপ্ মানসে চ ট্রম্ উদিরণে ইত্যেতী ক্তর্বরোঃ প্রয়োভাবারস্থার রধাদী ভবতঃ। প্রবাস্ত ইতি ধাতুমোনোহঙ্যে ইতি মদ্য নঃ অভিত্রোশ্চ পঞ্মালুকী ক্রাকারঃ সামান্তেনৈত দ্বিধানং নতু ভাবা-রস্তরোরের ইত্যান্থাবিং ন তদিষ্ঠং বৃত্তিক্তঃ। যত উক্তবান্ চুইঃ জ্পু ইত্যান্যোহসাধ্র ইতি।
- (१८८)। বিপূর্ব আঙ্পূর্বণ খদ্ প্রাণনে ক্তক্তবছোঃ প্রয়োর্নাদির্ভবতি। এতাদৃশমেব লক্ষণদ্বং চক্রবর্মানয়োঃ পাণিনীয়াস্ক চকারস্থাস্ক্রসমুক্তরার্থছেন সাধ্যন্তি।
- (৭১৫)। শকু সকর্মকঃ জ্জকুবোঃ পরয়ো রধানির্ভবিত্তি। শক্তো ষটঃ কর্ত্ত্বমিতি কর্মনি ক্তঃ ঘট ইতি উক্তত্বাৎ প্রথমা অর্থবিশেষ এবাস্থ্য সক্ষমকত্বসূচনার্থমাহ পারিত ইত্যর্থ ইতি।
- (१८५)। ক্তক্তবয়েঃ পরয়েঃ ক্তি চ পরস্তাং পুঙ্ পথনে ইতায়ং ধাতৃঃ রধাদির্ভবতি। জুত্বান্তদিতাদিনা প্রাপ্তং ত্যাদিন্দং বাধ্যতে ওকারঃ পুঞো নিবৃত্তার্থঃ। তস্তাত্র গ্রহণে নাস্তি দোষো দ্বয়োরেকার্থকাদিতি ন চ বাচ্যং পুনাতেনাশে ইতি নাশেহপি পুঞো বৃত্তেঃ।

ক্লিশিতি বক্তব্যম্। ক্তকব্যোং পরয়োঃ ক্রি চ পরস্থাং ক্লিশ্ রুধাদির্ভবিতি। কুশ্ বিবাধন ইতাস্য উদিত্বাদিকল্লিতেওঃ ক্তকব্যো-নিব্যেস্থ বাধনার্থম্। ক্লিশ্ উপতাশে ইতাস্য নিত্যেওো বিকলার্থং ক্র-মৃ। ক্লিষ্ট্রা ক্লিশিয়া ক্লিশঃ ক্রিশ্রেক্ষ ইতি বাচাদিছং ক্লিইঃ ক্লিশিক্স প্রপ । থিঙি স্থজ্নৃশৌ ।
সম্রন্ধ সমর্জিথ দদ্রষ্ঠ দদর্শিথ ।

প্রথান আনিওস্কেন্দ্রে স্থাদিবর্জ্জম্ ।

বিষয় জঘনিথ ররঙ্ক্ষ্থ ররঞ্জিথ প্রপাথ প্রশ্নিথ চিচেথ চিচ্য়িথি ।

নথ নিনয়িথ তুদ্যোথ তুদ্যবিথ ।স্তদ্রুক্ত শ্রুকান্ত — তুদ্টোথ ।

জ্ঞেকবেদ্বানিগুপাত্তে ছই ইতি ব্যচাদিখন্। নকু ক্লিশ্ ক্লিশোবেব ক্লিষ্ট-ক্লিশিতো সিধ্যতঃ কিং লক্ষণেন ? উচাতে। অনঞঃ জ্ঞান্ত তেন-সনক্ষেত্রতা ক্লিষ্টা ক্লিশিতমিতি ষ্ঠদান্ত হ'ল সংগচ্ছতে যতনেতি প্রনং ক্রান্ত পরামনঃ তচ্চ ধাতুভেদেন প্রযোগভেদেন চন সম্বতি তথাত ক্লিশ্জ্বানিষ্ঠানোরিতি পানিনারে উদ্যুব্দঃ পুক্লিশোঃ জ্বিনিষ্ঠানা মিতাম্ব্রে প্রিশোর্কেতি চ কাত্রি প্রিশোঃ জ্বিচেতি চালেণ লক্ষণং দুখ্যতে।

(৭৪৭)। সূজ্ বিদর্গে তুদাদিঃ প্রবৈশ্পনী স্কল্পে। রধাদী ভবতঃ থাঙি পরে। আদিজুপান্তবনোশ্চেতি নি লামিঙি প্রাপ্তে বিকল্পঃ। স্প্রফেতি ভিতাব ইত্যাদিনা অজ্ঞাদেশঃ অস্ক্রেডাদিনা জন্ত যঃ যট-বর্গাদিতাদিনা গন্ত ঠঃ খিঃ এবং দ্রুষ্ঠ।

(৭৪৮)। অং যক্রান্তি দোহহান্ তদস্যান্তান্ত্রির মতুঃ অঙ্বশাদ্যন্তাচেতি নতোন বং খানীন্ বজ নিখা অথান্ অণন্ত গাতুরনিঙ্ গঙি পরে রমাদির্ভনিতি। জঘটেতি হন্ হিংসাগত্যোঃ বৃদ্ধির্দ্বিক্তর্যে ইতি হস্য ঘঃ বিক্তিঃ গঘনহাজ ইতি ঘ্যা জঃ ররস্কৃথ ইতি রন্জ রাগে চজাঃ ক ইতি জন্য কঃ উপাস্তস্য বর্গ ইতি নস্য ঙঃ প্রশাধ পরিথ ইতি ইঙি কতে ইঙাদাবিত্যাকারলুক্ চিচেপেতি চিঞ্চরনে নিনেথেতি ণীঞ্ প্রাপণে জ্যোক্ত্যা দীর্ঘস্যাপি গ্রহণাৎ ছদ্যোথ ক্ল্যবিথেতি হ্যা, অভিগমনে। অন্তদিত্যক্র হুযোক্ত্যা দীর্ঘস্যাগ্রহণাৎ ক্রাধিথ ইতি আনিজ্পান্তেত্যাদিনা ইঙ্ । যভাবান্ত্তাছ্র গ্রহণং ক্রেন্ত্র ন র্ধাদিতঃ ভবতি চকর্থ অণন্ত্র্যা জানিষ্ট্রস্যাপি গ্রহণং তেম ক্রোবিতি, বাভাবে খ্যাঞ্ক্রসাঞ্জে ইতি থাঞি চ ক্লেন্তে

ন্তুক। ক্তিবুত্তশ্চো নিত্যম্। ব্ৰশ্চিয়।

৭৫ । সর্তুমোতেরঞ্জেলুঙি চ। অশিশিষতে সঞ্জিজিধীতি সাঞ্জীৎ।

বিকৌ বিধয়িথ আচথ্যাথ আচ্বিষ্টুথ। স্কুচ্চক্রশ্রান্ত ইতি স্থাদিপদেনৈত এব গৃহত্তে ষ্টুক্ স্তা ছ ক্র ক্রানিজ্ শ্রানিজ্ ক্র ক্রানিজ্ কর্মানিজ্ কর্মানিজ্ কর্মানিজ্ কর্মানিজ্ কর্মানিজ্যা

(৭৪৯)। ওব্রস্চু চ্ছেদনে ইতাঝাৎ ক্তিবু গরস্থাং নিতামিঙ্ ভৰতি। নিতা গ্রহণাথ প্রক্রান্তমপি রধাদিজং তাজ্বা ব্যবহিতমিঙিতা বুবর্ততে অন্তথা সক্ষান আং উদিহাধিকলিতেঙো বাধনাথং বচনম্। ব্রক্তি-জ্বেতি সংক্রতি সম্ভাশঃ।

(৭৫০)। অশ্ ব্যাপ্তৌ সংঘাতে চেত্যস্থাৎ সনি পরে ইঙ্
ভবতি। অন্জ্ ব্যক্তিক্রকণকান্তিগতিষ্ ইত্যমাং সনি লুঙি চাইঙ্
ভবতি। অনুষার্মদিবাদিকলে প্রাপ্তে নিত্যং বচনম্। অশিশিষত
ইতি সেঙ্নিঙ্চান্তোহজাদেরিতি শি ইত্যক্ত দিঃ অন্মাতেরিতি
নির্দ্দেশাহশ্ ভোজন ইত্যক্ত ক্র্যাদেনিরাসার্থঃ। নম্ন তরিরাসক্ত কিং
ফলং ? যতো হশকাদিস্থাং তত্মাদপীঙ্ ভবত্যেব। অক্রোচ্যতে। নিরমশক্ষা ক্রাং অন্যাতেঃ সন্যেব ইঙ্ ভবতি নান্য । অপ্লিজিষতীতি ভবতি
হি কারণদেতিক্রমঃ সংযোগবিশ্রেষ্ ইতি অক্যারনকারয়োর্বিশ্লেষং রুষা
সেঙ্ণিঙ্চান্তোহজাদেরিতি জাত্যক্ত দ্বিরুক্তিঃ উপান্তক্ত বর্গ ইতি
নকারক্ত একবারঃ। আপ্লীদিতি লুঙ্ ইঙ্ সঙ্ ইঙ্ ঈঙ্ ইঙাদেরীপ্রীতি সঙ্লুক্। হাকঃ ক্র্বীতাস্যানন্তরং ব্রুষ্ট ইতি ক্তে প্রমিপ্তোরিঙ্দ সনীত্যকানন্তরম্ অন্যোতেরপ্রেজির্ডি চেতি ক্তে লক্ষণলাম্বং প্রেক্রণভব্বিণ্ড ভবতি তদিহ ক্রত্মনতিপ্রয়েজনম্।

मःकिछमात्रकाक्त्ररण

৭৫১। ক্তক্তবত্বোর্বিকল্লিতেঙো ন স্থাৎ।

^ই রক্ষ: স্থানঃ সোঢ়: লুকঃ । কৃতীনৃত্যোরীদিশ্বমস্থানিভ্যহজ্ঞাপনার্থম্ । মু তেন পতিভ্যনিতাদয়ঃ ।

१९२। व्याहीर मित्रे ।

স্থিত্ত্ব যেহত্যাদো হলি পরে ব্যচাদেরুত্তরে ইড়্ভবতি। বিচিতা উবিজী বিজ্ঞা।

৭৫৩। উণু ঞ্বা। প্রোণবিতা প্রোণু বিতা।

(৭৫১)। বিকল্পিত ইঙ্যক্ত স বিকল্পিতেঙ্যক্ত কচিনপি বিকল্পিত ইঙ্ ক্ষাং তত্মাং ক্তকবেয়াঃ প্রয়োরিঙ্ ন ভবতি। বদ্ধ ইতি রধ্ হিংনাযাং রধানি হাদিকলিতেঙ্যুন্। সার ইতি সান্দ্রপণে উনিয়াদসা বিকলিতেঙ্যুন্ অমনোনাদ ৮ ন ইতি তক্ত দক্ত চ নকাবঃ সোঢ়ঃ বৃদ্ধ-ইতা সংহছতীতাদিনা তাদাবিতাক্ত বিকল্পিতেঙ্যং ষহ মর্ঘণে হোঢ়ইতাদিনা হস্য চঃ ধোহধাতুর্যাদিতি ভস্য দঃ বটবর্গাদিতাদিনা ধস্য চঃ ঢ়োবিত্যাদিনা চলুক্ দার্য ৮ চেহদোং সহিবহোবিত্যাকার্য্য ওকারঃ লুভ্গার্দ্ধ্যে তস্য ধঃ বর্গদাদিরিত্যাদিনা ভক্ত পঃ অপদান্তেইপীত্যাদিনা প্রা বঃ । কতীনৃত্যারিত্যাদিঃ কতী চেদনে নৃতী গাত্রবিক্ষেপে ইত্যেত্য়োঃ কং রং নৃং ইত্যাদিনৈব বিকলিতেঙ্গাৎ ক্তক্তবন্ধোরিত্যাদিনা ইঙ্নিষেধঃ সিদ্ধঃ ইঙ্নিম্বেধর্থনীদিন্ত্যনিত্যাদির ইভি পতু গতৌ সনীবন্ধদিনা সিদ্ধি বিকলিতেঙ্গে কাত ক্তব্যোবিত্যনেন প্রতিব্যেধাহিনিতাঃ তেন পতিত্যনিতাদির ইভি পতু গতৌ সনীবন্ধদিনা সিদ্ধি বিকলিতেঙ্গেশ্যু বিকলিতেঙ্গেশ্যু বিকলিতেঙ্গেশ্যু বিকলিতেঙ্গেশ্যু বিকলিতেঙ্গেশ্যু বিকলিতেঙ্গেশ্যু বিকলিতেঙ্গেশ্যু বিকলিতেঙ্গ্রুণ্য বিকলিতেঙ্গ্রুণ্য বিকলিতেঙ্গ্রুণ্য বিকলিতেঙ্গুন্থ নির্মান কারিদিতাঃ দরিদিতবান্ সনীব-স্ক্রেত্যাদিনাক্ত বিকলিতেঙ্গুন্ধ।

(৭৫২)। বিচিতেতি ব্যচ্ ব্যাজীকরণে ভূঙ্ অশকাণি ফাণিঙি প্রাপ্তে বিধানন্। অভিযাদশাদের শাণিরিতি বিচাদেশঃ। ওবি ী ভয়চলনযোঃ বিজিতেত্যত্রাপি ইঙি প্রাপ্তে বিধানন্ ওবিজীতি পাঠাং বিজির্ পৃথগ্ভাব ইত্যত্র কেক্সা ভূঙ্ তাঙ্বা।

(৭৫৯)। উপুঞ্ ব্যচাদির্বা ভবতি। প্রোণবিতেতি কুটাদি-



৭৫৪। লিখিন্তব্যঙি।

লিখিতবাম্।

় ৭৫৫। মিলিশ্চ স্তঙি। লিখিষ্যতি মিলিষ্যতিঃ

৭৫৬। কুস্রভ্স্ত দ্রু ক্রাক্তর করে সর্বেহথ ডি লিটি। শেকিব শেকিম পাপিব পাপির জাহ্রির জাহ্রিম শিশ্রিয়িব শিশুরিরি লুলুবিব লুলু বিম। থিড তু—জহর্থ চুক্রোষ্ঠ শিশুয়িব লুলবিথ। ৭৫৭। রধাদিরিঙ পাক্ষে।

বৰ্জং ছিত্তিঙ কুদন্ত ইতি বৈৰুৱাদিস্ভাছৰ ন ভৰতি। প্ৰোপু ৰিভেতি ইটি কতেইঙিস্বাহৰ

(१৫৪)। লিখিন্তব্যঙি পরে ব্যচাদির্ভবতি।

ে (৭৫৫)। মিল্প্লেষণে লিখিশ্চ স্যাঙ্ভি পরে ব্যচাদির্ভবতি।

(१৫৬)। ক্রাদীন্ বর্জায়া সর্বে ধাতবাে ধঙ্বর্জিতে লিটি পরে
বাচাণয়া ভবন্তি। শেকিবেতি লিট্ব শকানিয়াদিঙাপ্রাপ্তে ইড় বিধানং
বিক্তি: অনাদেশা ভ্যাসভোত্যাদিনা অকার সৈকারে। দিলু ক্ চ পপিবেতি ইঙাদাবিত্যাকারলুক্। ভর্জিমেতি ইঙ্য প্রাপ্তে ইট্ যররলোহচীতি
রেফ: বিক্তি: গণ্ডরহাজ ইতি হস্ত জঃ শিশ্রিয়িব লুলুবিব ইতি শ্রিঞ্
সেবায়াং লুঞ্ ছেননেহশকানিয়াদিঙি প্রাপ্তে ইড়বিধানম্ অঙিমাদিমুবৌ। জহর্থ ইতি জ্ঞ হরণে থঙ্ শকানিয়াদিঙভাব: চুক্রোষ্ঠ ইতি
প্রমাদপাঠ: চুক্রোণিথ ইতি জন্তব্যম্। আনিজ্পান্তব্যেসশেচতি ইঙ্
গুণ: শিশ্রয়িথ ল্কবিথ ইতি অশকানিয়াদিঙ্ ক্রাদীনাম্ভ চক্রব চক্রম সম্প্র
শকানিয়ানিঙভাব: বর্ব নথঙ্বর্জং বুঙ বুক্রোরিতি অশকানিয়াছ
প্রাপ্তিগুঙো নিধেশ বভ্র তুপ্তুর হজ্বে শক্ষক্রব শ্রুক্রব শকানিয়াদিঙাদিঙভাব:।

(৭৫ ৭)। ইঙ্পক্ষে অথঙি লিটি পরে রধাদিব্যিচাদির্ভবতি। ম্মিন্ পক্ষে ইঙ্ বিহিতস্তামিন্ ইড্ভবতীত্যর্থ: রধাদিদিবাদ্যস্তর্গনঃ। রুরাহিবেতি জভাদেরটীতি কুম্ যুক্সার্ম্যদেশ্বঃ ছিলুক্ চ দ ভবতি। ররন্ধিব রেধ্ব ররন্ধিম রেগ্ন মুমুছিব মুমুছব। থঙি জুঁ। মুমোর্ছিশ মুমোঢ়।

৭৫৮। সন্ধিরুক্তেরকাজিণ্ঘসাদন্তা বর্মো।

৭৫৯। গম্হন্বিদুবিশ দৃশো বা ।। শৈচিবান্ ঈরিবান্ জফিবান্ তিন্থিবান্ জগরান্।

্রিন হিত্তি তাও তদা রধোনেগুতি মুম্নিষেধ: স্থাৎ মুমুহিবেত্যত্ত ইটি কতে গুণাভাব:। থিও তু—মুমোহিথ মুমোঢ় ইতি আদিজ্পান্তক:ব্যা-শেচতি প্রাপ্তমিন্তং বাধিকা রধানিকাৎ পাক্ষিক ইঙেব ভর্মতীতি। কেচিৎ মুমোহিথ মুমূহিব মমুহিমেতি নিত্যং ভবতীতি মন্তন্তে তক্মতমত্র নাঙ্গীকৃত-মিতি তৎকারণম্বপি নাম্মাভিব্যাখাতং রধাদিরিঙ্পক্ষে ব্যচাদিজাদূদিতোহনিঙ্পক্ষেহিপি ব্যচাদিকং তেন ধিধ্ ইত্যস্ত নিত্যং সিষিধিব।

(৭৫৮)। দিকক্তা সহ বর্ত্তমানঃ সদিকক্তিঃ একোহচ্ যস্য স একাচ সদ্দিকক্তিশ্চাসৌ একাচেতি সদ্দিকক্ত্যেকাচ্ ধাতুঃ ইণ্যসৌ আকারাস্তাশ্চ বসৌ পরে ব্যাসাদক্ষো ভবস্তিশ।

প্রেমণনে দৃশির্ প্রেক্ষণে ইত্যেতে বদৌ পরে বাচাদয়ো বা ভবন্তি।
সদিকক্রোকাচ্রাভাবাদপ্রাপ্রে ইনাগ্রাপাদানং লিজ্বদভিদেশাং পূর্বস্থানে ক্রাভাবাদপ্রাপ্রে ইনাগ্রাপাদানং লিজ্বদভিদেশাং পূর্বস্থানে ক্রাভাবাদপ্রাপ্রে ইনাগ্রাপাদানং লিজ্বদভিদেশাং পূর্বস্থানে ক্রাভাবাদপ্রাপ্রে ইঙ্বিয়য় অনিঙ্বিয়য় চ ইট্ প্রাপ্ত এব
ত্রায়ং নিয়মার্থ: সদিকক্রোকালাদয় এব দুদৌ পরে বাচাদয়ো ভবন্তি।
অনেনা নিয়মেন এতদ্যতিরিক্তেভা ইট্ ন ভবতি ইঙ্ তু পূর্বেশৈব
প্রতিক্রিপ্ত: অতঃ বিবিদ্বাস্ বভ্বান্ লুল্নানিত্যাদি ভবতি। পেচিবানিতি লিজ্বস্থানাবিতি বস্তঃ দিকক্রি: অনাদেশাভ্যাসস্যোত্যাদিনা এত্বং
দিলুক্ চ ততঃ স্বির্মান্ত্রে বাচ্বাদিট্ন ইয়িবানিতি ইণ্ গতৌ বস্তঃ
ইটি ক্রতে চতুর্বিণ জুহোতিক্রেতি অচতুর্বিক্যাদিজাভাধাদিয়াদেশঃ
ততঃ স্বাদেশো বেতি দিয়্রিল: দীর্ঘণ্ড দিয়্রক্রিবিধানাৎ প্রাণেব
ইজ্বানার্থম্ ইনুপাদানম। অভ্যথা দিয়ক্রে) দীর্ঘে চ ক্রতে ইটি চ সতি
ইয়াদেশে চ ইয়্রবানিত্যনিষ্ট্রপং স্যাৎ জ্বিক্রিটি বেতি দ্লাদেশঃ দ্বির্গ্তিঃ:

'৭৬০। ক্রক্তবে রেগুপান্তে ও হি:।
থিটিতঃ খিটিতবান্ কচিতঃ ক্রচিতবান্ হাষিতঃ হাষিতবান্। হন্টে।
বৃষত ইতি তু হৃষ্টিশকান্ম হুখীয়াৎ প্রত্যয়েন রূপম্।

ইট্ হনাদেরনগীত্যকারলুক্ বর্গস্যাদিরিত্যাদিনা ঘদ্য কঃ শাদিবদীর ত্যাদিনা নির্মাৎ ইত্কাদিত্যাদিনা ষদ্ম। তন্থিবানিতি স্বান্থিবতি পূর্বদকারলুক্ দদরিদ্র্বানিত্য বসৌ চেত্যাকারলুকের প্রথমন্ ইটি তুসতি ব্যবধানাভিনিবর এব ন স্যাৎ জগন্ধানিতি বমোশ্চেতি মস্য নকারঃ হন্তেজিখিবান্ জহন্ধান্ বৃদ্ধিধিক্ষত্যের্থ ইতি হস্য ঘঃ বিদুরিতি নির্দ্ধেশাৎ বিদ্দিন ইত্যায়াগ্রহণং তত্র বিবিদ্ধানিতি রূপং স্তাবিচারণার্থয়ান্ত বিদেরাভ্রমেপ্রদির্থ বস্তুরেব নাস্তি। স্থিকজ্যেকাজাদীনাম্ভ্রত্র বসৌ স্ব্রাত্ত্য এব ইড়িগ্রেভাবঃ পেচুম্ ইত্যাদে তু নিমিত্যপা্যাদিট্নবিত্তিঃ।

(৭৮০)। তল্কবন্ধেঃ প্রনােরিগুপান্তো ধাতুরিগুর্হের্য ব্যচাদিভাৰতি। কন্চেওছঃ যশাং পূর্বস্টেররিগুবিহিতঃ ইডিব্রানশ্র গুণনিষেধাদিকার্যান্। থিটিত ইত্যাদি কিট্থিট্ উচ্চ্রানন রুচ্ দীপ্রের্
ক্রমিত ইতি হার্ তুট্টো ক্রমির্বালােমীতি বিশ্বয়প্রতিঘাতয়ােন্টেতি ইড্বিধানং বক্ষাতি তদ্য নায়ং বিষয়ঃ তদর্থান্তয়াং তন্মাদশকাদিভাদিওয়মহতীতি ইড্র ভবতি। যস্ত ক্রয়্ আলীক্যে ইতি ভাদে পঠ্যতে ভদা
ক্রক্রবেডাবিকিমিতেঙাে ন দ্যাদিতি প্রতিষ্কোং ক্রয়্ট ইত্যেব ভবতি কিন্তু
র্মভা ইন্ত ইত্যর তুষ্টিরর্থঃ অতাে ক্রমিত ইতি প্রাণ্মাতি মত আহে
ক্রমিশে দামার্থীয়াৎ প্রতারেন ইতি ক্রান্টিরিতি ক্রিঃ ত্যাদিয়াদিওভাবঃ
ক্রমিণিভাদং। নয় ক্রক্রবেডারানিদ্যাবারস্তমােরিত্যা বিষয়ে কন্মাদ্রমং
ন ভবতি মেদিতং প্রানেদিভনিত্যর উচ্চতে যদি তিন্বিয়য়হপানেন প্রবর্ত্তন
নীয়ং তদা আদিজাবানস্তমােরিতি লক্ষণমিহৈব কুর্যাাৎ। করােভি চ
তর তল্পজাবাদিট্ট। উনিতঃ উনিত্রান্

৭৬১। ভাদিরুত্পান্তো বা ভাবারস্তয়ো: । ছাতিতং দ্যোতিতং প্রত্যাতিতঃ প্রদ্যোতিতঃ প্রত্যুতিতবান্ প্রদ্যোতিত। তিতবান্ ।

৭৬২। মৃজ্মৃদ্গুধ্কৃষ্ বদ্ বসঃ ক্তি চ।

৭৬০। ধাবুর্গতো।

মৃজ্তঃ মৃজ্তবান্ মৃজ্জা ধাবিতঃ ধাবিতবান্ ধাবিতা।

যন্নুকি শীঙ্ চেতি বক্তব্যম্। মন্নুকি সতি ক্তক্তবংখাঃ প্রয়োঃ শীঙ্ধাতুবর্গচাদির্ভবিক্তি। শেখিতঃ শেখিতবান্ অঙিদচ্যনেকাচ ইত্যাদিনা মকারঃ।

(৭৮১)। ভ্রাদিগণপঠিত উকারোপাস্থো ধারুরিওহোঁ ভাবে আরন্তে চ বিহিতে কে জবতো চ পরে বাচাদির্বা ভরতি। ক্রক্রবন্ধারি রাদিনা ইটি প্রাপ্তে বিভাষা। হাতিতমিতি ছাত দীপ্তো ভাবে কঃ ক্রব্রেভার্তির অনভিধানাৎ স নোদাস্বতঃ কর্ত্রি বিভিতেন ক্রব্রুনা আরস্তোহপি গম্যতে অতএব স উনাস্ততঃ। ভ্রাদিরিতি কিম্টু প্রিরিত গ্রেষ্ট্রের গুবিতং। প্লুষ্ দাহে শুর্ পরিবেইনে দিবাদা ইড়েবাত্র ভবতি।

(৭৬২।৭৬০)। মৃড্ প্রনে তুদািদিঃ ক্র্যাদিশ্চ মৃদ্ ক্ষোদে গুধ্
পরিবেষ্টনে দিবাদিঃ গুধ্ রোষে ক্র্যাদিঃ কুষ্ নিষ্ধে বদ্ ব্যক্তারাং বাচি
বদ্ নিবাসে ইত্যেতে ক্তক্রছাঃ পরয়োঃ ক্রি চ পরস্তাং ব্যচাদিয়া
ভবস্তি। ধার্রিতি ধার্ গতিশুক্রোরিত্যয়ং ধাতুর্যতাবর্থে বর্তমানঃ
ক্রক্তর্বছাঃ পরঝোঃ ক্রি চ পরস্তাং ব্যচাদির্ভবতি। বসেঃ শকাদিছাৎ
নির্পূর্বাৎ কুষেরপি র্থানিছাছিকল্লিতেঙঃ ক্রক্তর্বছারিঞ্জাপ্তের বিধান
নং শেষাণাস্ত ইঙ্পবাদঃ ক্রক্তর্বছারিগুপান্তেঙ্ক ইত্যনেন সিদ্ধে বদ্বদ্ব্যতিরিক্রানামনীযাম্পাদানং ক্রার্থং ধার্থাতোক্রদিরাছাদিৎক্রীতি র্ধাদিছাছিকল্লিতেঙোহপ্রাদঃ ক্রক্রবছোনিষ্যোদিঙাপ্রাপ্তে ইড্বিধানম্ ।
অগতৌ তু ন্থাতঃ থৌতবান্ গৌছা উদিক্রাৎ ধারিছেতি চ জ্বোন্
বৃদ্ধিতঃ কৃষিতঃ উদিতঃ উষিতঃ উষিত্রান্।

৭৬৪। **যন্লুকি পূঙ্চ।** পোপুবিত পোপুবিতবান্ পোপুবিহা মরীমৃড়িত: মরীমৃড়িতবান্ মরীমৃড়িহা।

৭৬৫। অঞ্চ পূজায়াম্।

৭৬৬। আকুলার্থো লুভিশ্চ। অঞ্চিতো শুরুঃ লুভিত্বা কেশান্।

[•]৭৬৭। রুদ্বৈত্তিমুষঃ সনি চ। রুদিয়া রুমুদিয়তি।

ক্ষিক্তে বক্তব্যম্। ক্ষ্ব্ৰুক্ষায়াং ক্তক্তব্য়োঃ ক্তি চ প্রস্থাং
- ব্যাচাদিভব্তি। শকাদি হাদিঙাপ্রাপ্তে বিধানম্। ক্ষিতঃ ক্ষিত্বান্
ক্ষিতা।

(৭৯৪ । যন্লুকি সতি মৃড়াদয়ঃ পূঙ্ধাতৃণ্চ ক্রক্তবন্ধাঃ ক্তি ক্রিজাং বাচাদয়ো ভবাস্তি। পোপুবিত ইতি প্রক্রতিবদ্ধিগুণাদিশ্চেতি দিফক্তিঃ গুণাদিঃ এবং মরীমৃত্তিত ইত্যাদি।

(१६८।१५७)। পূজায়ামর্থে বর্তমানোহন্চ্রাকুলার্থা লুভিন্চক্রক্রব্যাে: ক্তি, চ পরস্তাং বাচাদির্ভবতি। পূজায়ামিতি বিশেষণম্ অন্চ্
পূজায়ামিতাস্ত গ্রহণং নতু অন্চ্ গতিবাচনরােরিতাস্ত লুভে: সহেচ্ছতীত্যাদিনা ক্তি, বিকলিতেঙাে বাধনার্থং দ্রোরপি ক্রক্রব্যারিঙি প্রতিষ্ধে সিদ্ধে
বিধানন্ অন্চেপ্ত উদিল্বসামর্থাাদিঙ্গ বিকল্প এব ভবতি। অতএব নাক্ষেঃ
পূজায়ামিত্যর অঙ্কেলুত্যালাজহার স্তাসকারেণাপ্যালাহ্যতং গুরুমঙ্কেলুতি।
আ ফুলভাবিমোহনমিতি পর্যায়ঃ অতো লৃভ্ বিমোহন ইতাস্ত গ্রহণং নতু
নৃভ্ গাদ্ধাে ইতাস্ত ভস্ত লুকঃ লুন্। লােভিত্যা ইতি রূপং দ্রোরপি গ্রহণমিতি কন্চিং অঞ্চিতাে গুরুরিতি পূজেচ্ছাবুদ্ধার্থত্যাদিনা ক্তঃ। অপুঞান
য়ায়। উদক্রমুনকং কুপাং উদ্ধৃতমিত্যর্থং হলুপাত্তেত্যাদিনা নলুক্।

(१७१)। রুদিরশ্রবিমোচনে বিদ্ জ্ঞানে মুষ্ থণ্ডনে দিবাদিমুর্ স্তেরে ক্র্যাদিঃ ছয়োরপি গ্রহণং এতে স্থিন সনি চ পরে ব্যচাদয়ো ভবস্তি। ৭৬৮। সনি প্রছঃ।

পিপুচিছ্যতি।

৭৬৯। ক্লিশঃ ক্লীঙ্পকে।

ক্লিশিয়।।

ন্ ৭৭০। কুধ ইঙ্চ।

ক্ষ্ধিয়া কোধিয়া।

৭৭১। তৃষ্মৃষ্কুশো বা।

ত্ৰিহা তৰিহা মূৰিহা মৰ্ষিহা কুশিহা কৰ্শিহা।

৭৭২। অদন্ত্যবান্তহলাদিরিণুপান্তো বা সেঙ্সনিচ।

অদ্যাবায়েত্য কিনা পাঞ্চিকবাচাদিরবাধনার্থমিদ্য । বেভীতি নির্দেশোহ-পরবিদীনাং নিরাসার্থঃ।

(৭৬৮)। সনি পরে প্রচ্ছ জীপ্সায়ানিতি বাচালির্ভবতি। সনীতি ক্লতং জ্বালুর্ত্তিনিরাসার্থম্। পিপুচ্ছিষতীতি বশাদেরুশানিরিতি পুচ্ছাদেশঃ।

(৭৬৯)। ক্লিন্ড বিধানে ক্র্যাদিঃ ক্রিশ্ উপতাপে দিবাদিছ য়োরপি গ্রহণম্। ক্লিশঃ ক্রিপুরস্থাম্ইঙ্পক্ষে ব্যচাদির্ভবতি।

(৭৭০)। ক্ষা ক্রি পরস্থাম্টট্ ইঙ্চ ভবতি। ব্যচাদিত্বাদিটি প্রাপ্তে পক্ষেইঙ্ঃ

কুভেশ্চেতি বক্তবাম্। লুভেঃ ক্তিব পরস্তাম্ইট্ ইঙ্চ ভবতি। আকুলার্থো লুভিভেতি বাচাদিখাদিটি প্রাপ্তে পকে ইঙ্

(৭৭১) ঞিত্যা পিপাদায়াং মৃষ্ তিতিক্ষায়াং রুশ্ তন্করণে এতে ক্রিপরস্তাং ব্যচাদয়ো বা ভবস্তি। পক্ষে অশকাদিলাদিঙ্।

শত ইতি বক্তব্যন্। ঋতঃ ক্তিপুরস্তাং ব্যচাদির্বা ভবতি। ঝতাদ্-ত্বণায়ামিতি ঈয়স্ত বকাচতুর্মপি বা লুক্ চেতি পক্ষে লুক্ ঋতিস্বা অর্কিলা।

(१৭২)। দস্তাবাস্তব্তিরিকো হলাদিরিণুপান্তঃ দেঙ্ ধাতৃঃ

লিখিয়া লেখিয়া রুচিয়া রোচিয়া লিলিখিষতি লিলেখিষতি।
দন্ত্যবাস্তন্ত্রী—দেবিয়া।

৭৭৩। ঘূবিঃ ক্তক্তবেরোঃ প্রতিজ্ঞায়াম্।

ঘূষিরয়ং চুরাদিঃ। প্রিঙ্ পুনরস্থ কচিদনিত্যমিতীদমেব জ্ঞাপয়তীতি ন ণিঙ্ অবঘূষিতা কন্যা। তথাচ, মহীপালবচঃ শ্রুম্মুর্ণ পুষ্পমানবা ইতাত্র জুঘুযুঃ প্রতিজ্ঞাতবন্ত ইত্যর্থঃ।

•

৭৭ । হৃষিৰ্বা লোক্সি।

হৃষ্টাঃ কেশাঃ হৃষিতাঃ হৃষ্টাং লোমভিহ্ন বিতম্।

জিনু সনি চ পবে বাচাদিব। ভবতি। হলাদিরিতি কিম্ ? এবিম্বা এবিধিষতি। ইণুপাস্ত ইতি কিম্ ? বর্তিম্বা। বিবর্তিষতে। সেঙ্ ইতি কিম্ ? ভুজ্বা বৃভ্দ্ধতে। জিনু পরস্তাম্ ইণুপান্তফাল্ডো ব্যচাদির্ভবতি ভাসে ব্যবস্থিতম্। রেফি মান নতদিহে ইং ভাষাগ্রন্থপ গুতৈব হিভির্নিই মাৎ।

(११०)। বেতি নান্ত্র হতে উত্তরস্ত্রে বাগ্রহণাৎ। ক্তক্তবড়োঃ
পরয়োঃ প্রতিজ্ঞায়ামর্থে ঘূষির্ব্যচাদির্ভবিত। ঘূষি শব্দার্থ ইতি ভাদিঃ

য্বির্ বিশক্ষনে চ্রাদিঃ বিশব্দনং প্রতিজ্ঞা দয়োয়পি গ্রহণমিতি বামনঃ

মত্রাস্বরসস্চনায়াহ ঘূষিরয়ং চ্রানিরিতি সবংসা ধেয়য়ানীয়তামিত্যকে য়ধা

গোধেয়য়ানীয়তে নান্তা তথা চ্রাদেগ্রহণং লায়ামিতাভিপ্রায়ঃ অত্রার্থে
স্বরসো ভাষ্যকারানীনামস্তি। নকু চ্রাদের্নিত্যণিঙ্ক্তম্য ইটি ক্তেহরুতে
চ নান্তি বিশেষঃ বিং লক্ষণেনেত্যাহ ণিঙ্পুনরম্বেত্যাদি সামাল্লজাকপশ্চায়ং
তেন প্রয়োগান্তরেহপি ণিঙ্ ন ভবতীতি স্চয়িত্মাপ্রপ্রয়াগ উদায়্তঃ।
নম্ম ভাবেরের জ্বুমুরিতি সিধাতীতি চোদ্য আহ প্রতিজ্ঞাতবন্ত ইত্যর্থ ইতি
ন হি ভাবেরয়মর্থঃ স্থাদিতি। প্রতিজ্ঞায়ামিতি কিম্ পুরুষ্ঠা রজ্জুঃ ঘুষ্টো
পাদে শ্বিমুম্বত্যাদিনা ইঙ্ নিষেধঃ।

নিবঃ কুষ ইতি বক্তব্যম্। ক্তক্তিবজোঃ প্রয়োঃ নির উত্তরঃ কুষ্ ধাতুর চিদির্ভবতি। নিষ্কৃষিত ইতি ক্তক্তবজোবি ক্লিতেঙো ন স্থাদিছি ইঙ্নিষেধবাধনার্থম্।

(৭৭৪)। লোমি কর্তরি ক্তক্রবথোঃ পরয়োঃ ছবির্ব্যচাদিন্র

৭৭৫। বিশ্বয়প্রতিঘাতয়োশ্চ। হ্লেষ্টো: জনঃ হৃষিতো বিশ্বিতঃ প্রতিহতো বেতার্থঃ

৭৭৬। রুষ্সংঘুয়ো।

্বরুষ্টঃ রুষিতঃ সংযুষ্টঃ সংযুষিতঃ।।

৭৭৭। ভণাদিঃ কৌ।

জাণাত্র সঙ্কুচিতিঃ স্নিহিতিঃ পঠিতিঃ দীর্ঘিতিঃ উদিতিরিত্যাদি।

ভবতি। স্বৰু আলীকো ইতাক উদিস্থাদিকলিতেওঃ ক্তক্তবদোদ্ধি কলিতেওো ন স্থাদিতি ইঙ্ নিষেধে ইড়িধানম্। স্বৰ্ তুষ্টাবিতাক্ত তৃ সেঙঃ অনেন তাক্তেহপি বিষয়ে ক্ষক্তবদোৱিগুপান্তেওহ ইতি বাচাদিছেন ভবিতবাং তন্ধান্তদ্গ্ৰহণমনৰ্থকং স্থাৎ। স্বঠাঃ কেশা ইতি গতিতৃজাৰ্থে-ত্যাদিনা কৰ্ত্তবি ক্ৰঃ স্বঠাং লোমভিবিতি ভাবে ক্ৰঃ লোমশক্ত সামান্তবিষ্ঠিত নিষ্ঠিত ক্ৰাৰ্থে ক্ৰাণ্ডিবিতি ভাবে ক্ৰঃ লোমশক্ত সামান্তবিষ্ঠিতনাৰ কেশলোমভিবিত্যদান্ত সামান্তবিচন হাপ্যক্ত দৃশ্যত এব মথা অন্ত্যে নথলোমবাস্কাং ত্যাগ ইতি।

- (৭৭৫)। বিশ্বরে প্রতিঘাতে চ বর্ত্তমানো স্থায়ি ক্তক্তবড়োঃ প্রয়ো-ব্যচাদির্ভবতি বা। লোমকর্ত্কভাৎ বিশ্বয়প্রতিঘাতয়োশ্চান্তত্র আলীক্যাথন্ত হবেঃ হুটো বিপ্রঃ।
- (१৭৬)। রুষ্ রোষে সংপূর্কঃ ঘৃষির্ বিশ্বজনে ঘৃষির্ শক্ষার্থ ইত্তোতে ক্তক্তবন্ধাঃ প্রয়োব চাদয়ো বা ভবন্তি। রুষে সহেচ্ছতিলুভ্-রুষেত্যাদিনা বিকল্লিতেঙি ক্তক্তবন্ধোরিত্যাদিনা ইঙ্নিষিদ্ধে ইড্ধিনং ঘুষেরপি বিযুষাদীদিতাং ক্রৌদাবিতি ত্যাদিখাদিঙ্যপ্রাপ্তে ইড্বিধানম্। ঘুষিঃ ক্তক্তবন্ধোঃ প্রতিজ্ঞায়ামিত্যস্তায়ং বাধকঃ।
- (৭৭৭)। ক্রে পরস্থাং ভণাদির চাদির্ভবতি। ত্যাদির্ঘাদিঙি
 নিষিদ্ধে ইড়্বিধানম্। আদিশকঃ প্রকারবচনঃ যেষাং ক্রে পরস্থাম্
 ইড়ত্র দৃশতে তে ভণাদয়ঃ। ভণিতিত্যিত্যাদি ভণ্শকার্যঃ কুনচু এন্চু
 কৌটিল্যাল্লীভাবয়োঃ বহুলাধিকারায়কারলুক্ অথব। কুচ্ সংকোচ ইত্যস্থায়ং প্রয়োগঃ ফিহ আপ্রীতৌ পঠ্ ব্যক্তায়াং বাচি দীধিতিরিতি দীধীঙ্
 দীপ্তিদেবন্যোঃ ইটি ক্তে দীধীবেব্যারীল্ল গ্ষেতোরিতীকারলুক্ উদিতি-

তিওস্তপাদ:।

৭৭৮। ন ন এ পূর্বাদশাতের্দাবিঙ্চ। অনাধান্।

৭ ক। এহেরীঙ্ঙিতি থঙ্বর্জন্।
্মহীতা গ্রহীষ্তি অগ্রহাৎ। থঙি তু। জগ্রহিণ।

৭৮০। কিতি স্বাট্। শৃহীতঃ গৃহীতিঃ।

৭৮১। রঙ্রঞ্ৠতামলিঙ্সঙ্লিট্স্বীঙ্বা। 'র্বারীডা বরীতা তরিতা তরীতা। লিঙ্সঙ্লিট্স্তু। বরিষীষ্ট অবারিষ্টাং ববরিগ।

রিতি বদ্ ব্যক্তায়াং বাচি কিদাশীলের্গরিত্যাদিনা উদাদেশঃ আদিগ্রহণার মুদ্ হর্ষে মু'দ্ভিঃ।

(৭৭৮)। নঞ পূর্দাদশ্ ভোজন ইতাশ্বাৎ বদৌ পরে ইঙ ইট্ চ ন ভবতি। সাদকজেকাজিতাাশিনা প্রাপ্ত ইট্ প্রতিধিতে তন্মিন্ প্রতিয়েধে অণকাদিয়াৎ সামাল্লপ্রসক্ত ইঙ্গি নিষিধাতে। অনাশ্বানিতি লিড্বধ্বানাবিতি বস্তুঃ ধিকজিঃ স্নট্যাগিদিত্যাদিনা তুম্ দীর্ঘে। মহৎ সাজোনাবিতি দীর্ঘান আধান্ অনাশ্বানিতি তৎপুরুষোবা নঞঃ সমাস ইতি সমাসঃ। অভানিতি নঞ্ছেইনাদেশঃ।

(৭৭৯) গৃহ্ উপাদান ইতালাৎ গৃঙ্ভি বৰ্জিতে ভিতি পরে ঈছ্ ভবতি। সশকাদিলাং প্রাপ্ত ইঙে বাধকঃ।

(৭৮০)। কিন্তকারে পরে গ্রহেরীড্ ভরতি। গৃহীতিরিতি ক্তিও বশানেকশাদিরিতি গৃহানেশঃ ত্যাদিত্বাৎ প্রতিনেধে প্রাপ্তেহপায়ং ভরতীক্তি ক্তিপ্রয়োগেণ স্চিত্র,। অভিদকিতোক্তা: ভগৃহিব জগৃহিম।

পিছে সঙ্লিট্ ব্যতিরিক্তের অচতুর্ পরের ইঙ বা ভাতি । ঈভিজিপুনং কৃতম্ উড়করভিনিরাসার্গ্ ব্রিগাঁই ইভি লিঙ্গাঁই অবারিষ্টামিতি লুঙ্তাং সঙ্লুরিঃ বদা তু আত্মনিপদে লুঙি ঋরনশ্যাম্পনে সিজিকি
সিচ্ ক্রিয়তে তদা ঈঙ্বা ভ্যত্যেব অবরীয়াতাং বারিথেতি ন এঙ্র জ্বঃ
বৃঙ্কুরিতি পঙি প্রতিষেধা ভাবাদশকানিছাদিঙ্।

मश्किश्रमात्रवाकितर्ग-

৭৮২। হন্দৃশ্ গ্রহাজন্তা লিঙ্লুঙ্লুট্ন্যে ভারকর্মণোক রিণ্বা। বিধিষীফ ঘানিধীফ অহলাভান্ অম্বানিষাভাং দাভা দায়িভা ঘটয়ি-মতে ঘাটিষতে।

৭৮**ে। ভাদি**র্যকি চাস্ত্যাদেঃ। ও ভুদতুর্যু যিকি চ বিষয়ে অস্ত্যাদেঃ স্থানে ভ্রাদির্ভবতি।

(१৮২)। হন্ হিংশাগতোাঃ দৃশির্ প্রেক্ষণে গ্রন্থ উপাদানে ইত্যে-তেভ্যোহজস্তাচ্চ লিঙ্ লুঙ্লুট্ স্তে পরে ভাবে কর্মণি চ বিষয়ে ইণ্ শ যত্ৰ ইঙাদনঃ প্ৰাপুৰস্তি তত্ৰ তেষাং বাধকোহয়ং বিধিঃ যত্ৰ ন প্রাপ্নুবন্তি তত্তাবাধকো বিধিঃ। অচতুর্ ইত্যন্তর্তেন বিধ্যাদিলিভোহত্র গ্রহণম্। বধিষীষ্ট ইতি ভাবকর্মণোরাত্মনে ইত্যাত্মনেপদং হনো বধিলু ভা-শিষোরিতি বধ্যাদেশঃ ঘানিষীষ্টেতি ন লিঙিণীতি বধ্যাদেশনিষেধঃ বুদ্ধি-দ্বিকক্তাৰ্থে ইতি হস্ত **যঃ অহসাতামিতি লুঙ**্আ হাম্ ঋদ্ধন ইত্যাদিনা সিচ্ তথোশ্চান্তিতীত্যাদিনা। নকারলুক্ অঘানিষাতামিতি পূর্ব্ববং। আগ্ননে লুঙি বেতি বধাদেশে অবধিযাতামিতাপি জনবণৌ ঢোত কথানিপাল্দ্যা-ভাবঃ দায়িতেতি লুট্ তাঙ্ইণি ক্তে যুর্বেঞাদেরিত্যাদিনা যুঃ ঘটরিষ্ত ইতি ণিঙি কৃতে বৃদ্ধি: ণৌ ঘটাদের স্ব ইতি এসেঃ কর্মণি লুট্ তে ইঙি ক্বতে অক্তক্তবন্ধিভিতি শিদাদিশানিঙ,লোপাভাব:। ঘাটিয়াত ইতি ইণি ক্তে ণনিণোর্বে) দীর্ঘ ইতি পক্ষে দীর্ঘঃ পিঙ লোপঃ পক্ষে ঘটিয়তে পিঙক্ত ধাতৃনংজ্ঞানামন্মজন্তো ধাতু: দৃক্ষীষ্ট দশিষীষ্ট গ্রহিষীষ্ট গ্রাহিষীষ্ট গ্রহেরীঙ্ ঙিতিগঙ্বৰ্জমিতি **ঈঙ্চে গীষ্ঠ চায়িধীষ্ঠ লু**ঙি অদৃক্ষাতাম্ অনিঙিওপাস্তা-দিত্যকুর্ত্তৌ পূর্ব বং সিচ্ ইণি অদর্শিষাতামিত্যেবমাদয় উহনীয়াঃ লুঙি প্রথমৈকবচনে তু অবানি অদারীত্যাদি সচ্সিজ্ভ্যাঞ্চ ভাবাদাবিত্যনেন বিচ সহিত এব তকার ইণ্ করণীয়ঃ প্রথমমপেশিতবিধিত্বাৎ অনন্তরং চানেন ইণ্ন প্রাপ্লোভি-অবে হলি বিধানাং।

(৭৮০)। ন ভূরত্তেরিতাম্প্রয়োগ এবা স্তভূ ভাবো নিষিদ্ধঃ স কথ-মন্ত্রেয়োগে ভাদিতি চোম্বাহ্ন আস যত্ন ইতাস্ গতাবিতা ই

ডিভন্তপাদঃ ।

ভূয়তে ভূয়াৎ ভাবয়তি । লাবণ্য উৎপাদ্য ইবাস যত্ন ইত্যস্ত গতাবিত্যস্থা রূপম্।

৫৮৪। অজো বীঃ।

বীয়তে বিব্যতুঃ।

৭৮৫। ক্রে বচ্।

উচ্যতে বক্তা।

ু ৭৮৬। খ্যাঞ ক্শাঞো চক্ষিঙঃ। খ্যায়তে ক্শায়তে খ্যাতঃ ক্শাতঃ।

৭৮৭। লিটি বা। আচখ্যে আচচকে আচক্শে আচক্শো আচথো।

ন্ধপমিতি নাতেরিতাতি প্রায়ঃ অদ্ গ**ি** নীপ্ত্যানানেধিতি ভ্যাদিঃ লিট্ অণ্। লাবিণ্য উংপাল্যে বল্লে: দীপ্তোহভব্দিতার্থঃ অথবানেকার্যকাদ্ধাত্নাং যত্নোহভব্দিতায়মেবার্থঃ।

- (৭৮৪)। অজ্গতিকেপণ্যোরিতাক্ত অচতুর্ থকি চ বীর্ত্বতি। বী পতিপ্রজনকাপ্তাশন্ধাদনেম্বিতাত্র তু বীয়তে বিবাতুরিচ্যালি সিধা-তোব। অজ্যত ইত্যাদিনিরাসার্থন্ত লক্ষণম্। দীর্ঘবিধানাৎ বীহা বাতঃ বেবীয়তে ইতি বিষয়পপ্তমীদ্বাং প্রথমং বী দতো যন্।
- (৭৮৫)। ব্ৰঞ্বাক্তায়াং বাচী গ্ৰস্যাচতুৰ্ যকি চ বচ্ ভবতি। উচাত ইতি কিদাশীৰ্ণোৱিত্যাদিনা উচ বক্তেতি তঙ্ তাঙ্বা।
- (৭৮৬)। চঞ্চিঙ্বাক্তারাং বাটাতাস্যাচতুর্যিকি চ থাাঞ্ক্শাঞো ভবতঃ। ঞকারামূবন্ধকরণসামর্যাৎ স্থানিবন্তাবনিবন্ধনং ভিন্নান্মনেপদং বাধিয়া স্বরিংক্রিতারিত্যাদিনা মনেপদং তেন আথ্যাস্যতে আথ্যাস্যতি।
- (৭৮৭) লিটি পরে চঞ্চিতঃ খ্যাঞ্ক্শাঞৌ বা ভবতঃ। আচখ্যা-বিতি উনাতো ণাণাবিতি ওঁ। কর্থিক্রিয়াফলে তু—-আচথ্যে। অচতুছি-ত্যক্ত বিষয়সপ্রমীস্থাৎ সব এবামী প্রথমং বিধীয়ান্ত তেন গোসংখ্যা ইত্যাক্র সমঃখ্যাতেরিত্যঙ্ভথতি ।

নংকিপ্রসারব্যাকরণে

৭৮৮। ন বর্জনে। সংচক্ষ্যাঃ তুর্জনা বর্জনীয়া ইত্যর্থঃ।

१४२। अन्द्रनर्शाम्ह ।

সূচক্ষসো নাম রাক্ষসাঃ বিচক্ষণঃ পণ্ডিতঃ।

৯০। অতি বচিক্র বঃ।

বান্ধণব্ৰুবঃ।

4৯১। ঘণ্ডকোষু বীঃ। সমাজ: সমজঃ উদজঃ সমজা।

১৯২। ঙনঙিদ্ধলোর্বা। প্রাক্তনং প্রবয়ণং প্রাজিতা প্রবেতা।

⁽ ৭৮৮)। বজনিহর্থেবর্তমানস্থ চিক্ষিঙ্ক: থাাঞ্ক্শাঞৌন ভ্ৰতঃ। সংচক্ষা ইতি ঝহলোণা ইতি গাঃ লিটি সংচচক্ষে স্কুছজনান্।

⁽৭৮৯)। অস্ত্রয়োশ্চক্ষিত্তঃ খ্যাঞ্ক্শাঞোন ভবতঃ। নৃচক্ষদ ইতি গ্রাদেরস্ইতাস্ চক্ষিরত্র ভক্ষণাথঃ বিচক্ষণ ইতি তপানেঃ সংজ্যান্ মিতি জনঃ অত এবাহ পণ্ডিত ইতি। সংখ্যান্মিতি তু জনটা। সংপূর্বজ্ঞ খ্যা প্রকণ্ন ইতাজ্ঞাপ্রয়োগ ইতি সমং খ্যাতেরিতাত্র বৃত্তিঃ ব্যাখ্যান্মিতি তু খ্যাধাতোবপি ভবতি।

⁽৭৯০)। স্বতি পরে ক্রবো বচিন ভবতি। স্বতি পরে নিষেধ-বিধানাদের ক্লিধিকারবিহিংতাংদত্র ভবতীতি বোদ্ধন্যম্। স্বাদিধৌ ক্রঞো ২পঠিত হাং।

⁽৭৯১) ঘণ্ডকোয়ু বীন ভবতি। অজে। বীবিতি প্রাপ্তস্ত এতিষধঃ। সমাজ ইতি ঘন্ সমজ হীত সমুদ্রামজঃ পশুসংঘপ্রেরণরোরিতি ডঃ সম-জোতি স্ফুর্কারকে চসমজাদেঃ মুংজোয়ামিতি কাঃ সমজ্যা সভা কীর্তিক।

[্]ৰনং)। ধনভিদ্ধলোঃ প্রয়োরজো বীভাবো বা ভবতি অচতুরু।
আজো বীতিতি প্রায়ে বিভাষা। প্রাজননিতি তপাদেঃ সংক্রায়ামিতি
ধনঃ এ মণ্মিতি বীতাবে কতে গুণারাদেশৌ ক্রতাইচ

৭৯৩। আণ্ অতুস্ উস্ থও, অখুস্ আণ ব মা।

এ আতি ইরে সে আথে থেব এ বহে মহে লিড় ভূতানদ্যতনপরোক্ষে।

ভূতানদ্যতনপরোক্ষ্ণে কালে ধাভোক্তরে লিট্সংজ্ঞকা অগ্রাদয়ো ভবস্থি। বভূব বভূবভূঃ বভূব্ব বভূবিথ বভূবপুঃ বভূব বভূব বভূবিব বভূবিম। পস্পর্দ্ধে পস্পর্দ্ধিতে পস্পর্দ্ধিরে পস্পর্দ্ধিষে পস্পর্দ্ধিথে পস্পর্দ্ধির পস্পর্দ্ধিবহে পস্পর্দ্ধিমহে।

৭৯৪। বৃদ্ধির্গেবা। ১৯হঞ্চকার অহঞ্চকর।

উত্তর ইতি গবং প্রাজিতা প্রবৈতেতি তৃঙ্ তাঙ্বা ইঙ্বিধানাং প্রাগত্র ভিদ্ধলপ্রতেষ্ঠা অন্তথা ভিদ্ধলপ্রতৈব ন সন্তবতীতি বিধানমনর্থকং স্থাদিতি ব্যাদেশে ক্রতেহজন্তথাদিভভাবং ব্যাদেশে নিয়েধেনের ধাতুদ্বেন সিদ্ধে বিভি কৃতং কৈচিল্যার্থক্।

(৭৯০)। পরোক্ষ ইতি অক্ষি অক্ষি পরি পরোক্ষং পরের জ্বনার্থং বীপায়ামিত্যবায়ীভাবঃ পরেঃ পরস্চেতি সমাসান্তোহৎপ্রত্যয়ঃ পরেঃ পরসাদেশক পরোক্ষমিন্রিয়াপরিগৃহীতং অনদ্যতনে ভূতে বিহিতো লঙ্ অনেন বাধাতে কেহপি ক্রিয়াং সর্বামেব পরোক্ষাং মন্তন্তে তন্মতে পরোক্ষাইতি বিশেষণমনর্থকং ব্যাবৃত্তাভাবাৎ যেহপি ক্রিয়াং প্রত্যক্ষং মন্তন্তে তহংপ্যানিত্যাদিণতিক্রিয়াং দেশান্তরপ্রাপ্তান্তমেয়ামপ্রত্যক্ষামেব মন্তন্তে তন্মতে রবিরগচ্ছদিতি লঙা ন ভবিত্রবাং পরোক্ষয়াৎ গমনক্রিয়ায়াঃ। তন্মাদ্যক্র লোকে প্রত্যক্ষাভিমানন্তং প্রত্যক্ষং তদিতরং পরোক্ষং কুত্র চ লোকে প্রত্যক্ষাভিমানন্তং প্রত্যক্ষং তদিতরং পরোক্ষং কুত্র চ লোকে প্রত্যক্ষাভিমানত বির্বাধনানি প্রত্যক্ষাণি। এতদেবান্ত অনতিপ্রয়োজনখাৎ অন্মিন্ বিচারে বিরম্যতে। বভূবেত্যাদি দ্বিক্ষক্তিঃ ভূবো বুরিত্যাদিনা বুং দ্বিপ্রক্রেক্ষারস্থাকারঃ ।

(৭৯৪)। ণে পরে নিত্যকথাদেরাদাবিত্যনের যা প্রাপ্তা বৃদ্ধি: সৃ। বিকল্পেন ভবতি। ঘদ্যনেন বৃদ্ধি: স্থাৎ তদা ররক্ষেত্যাদাবিপি বৃদ্ধিঃ স্থাৎ। চকরেতি বৃদ্ধাভাবে গুণঃ।

নংকিন্তুগার্থা করণে

৭৯৫। অত্যন্তাপক্তের ভূতমাত্রে লিট্।

হং কলিঙ্গের্ দৃটোখনি নাহং কলিঙ্গান্ জগাম। কলিঙ্গশব্দো

হত্ত দেশবাচী নিতাবহুবচনান্ত ইতি রক্ষিতঃ।

় ৭৯৬। উত্তমে চিত্তবিক্ষেপে। **৫** প্রস্থুপ্রোহহং কিল বিললাপ মত্যোহহং কিল বিচচার।

৭৯৭। ভূবো বুদ্বি রুদচ্চ। লিটি পরে ভূধাতোরুত্তরে বুর্ভবতি। দিরুক্তেরুদচ্চ। বস্তূর্ব।

(৭৯৭)। ভূব ইতি ভূধাতোরস্যাদেশস্ত চ গ্রহণং স্কৃত্তভ্বেন স্মিহিত্থাদ্ব্রয়ং ধাতৃভক্তঃ ভেনামিন্ পরে ইড়্ন ভবতি। বৃদ্ধানি-দেশ গুণান্ বাবিতা অপেক্ষিত্বিধিয়াং প্রথমং ব্রেব প্রক্তিতে ব্রয়ং যরলবীয়া তেন ব্যতিবভূবিদ্বে ইত্যক্ত যবরলহাদিঙাদ্যস্তাদ্বতি বক্তব্য-মিতি পক্ষে ধস্ত চঃ বংসা বভূবানিত্যক্ত বৌ ক্তে লুথেতি বলুক্।

⁽৭৯৫।৭৯৬)। অত্যন্তাপক্ৰে গমামানে ভ্তমাত্ৰে লিড্ভবতি।
ভ্তমাত্ৰেইতি ক্বতং প্ৰোক্ষ ইতি নিৱানাৰ্থম্। যদি বিধাননামৰ্থ্যাৎ
প্ৰোকাত্ব্ভিন সন্তবতি তদা ভ্তকাৰ স্থান্ব্ৰভিন স্যাং। লিড়িতি ক্বতং
স্পঠাৰ্থম্। অপহ্ৰোহপলাপঃ যত্ৰ কাৱণাপ্ত্ৰপূৰ্বককাৰ্য্যাপত্ৰঃ
সোহতাত্তাপত্ৰঃ নাহং কলিজান্ জগাম ইত্যত্ৰ সন্থাপত্ৰঃ যতো ন কেবলং কলিজেযু দৰ্শনং প্ৰতিষিধ্যতে দৰ্শনস্থ কাৱণং তদ্দেশপ্ৰৱেশাহপি
প্ৰতিষ্ণিয়তে। অপ্ৰক্ৰেদসন্থাৰ যতাত্তমবিধানম্ আত্মসাধ্যা হি ক্ৰিয়া প্ৰোক্ষা
ম সন্তবতীতি লিট্ন প্ৰাপ্লোতাতি চোদ্যমাশঞ্চমান আহু। উত্তমে চিত্তবিক্ষেপে
ইতি। উত্তমে বিষয়ে চিত্তবিক্ষেপে সতি লিড্ভবতি চিত্তবিক্ষেপেণ ক্ৰিয়ায়া
অমুপলন্তাৎ প্ৰোক্ষতৈবেতাভিপ্ৰায়ঃ যদপি পূৰ্ব্বদৰ্শিতমন্ত্ৰমোদাহ্ৰণং তদপি
চিত্তবিক্ষেপবিষয় এবেতি বোদ্ধবাম্। স্বপ্তোহহং কিল বিললাপ ইতি কিলেতি
বাৰ্ত্তায়াং ব্যাচি উত্তম ইত্যুপলক্ষণং চিত্তবিক্ষেপে প্ৰোক্ষত্তমত্ৰ কাৱণং তেন
মত্তেন ময়া বিলেপে ইংযুল্যাপ লিড্ভবতি।

ণ্ডিঙস্তপাদঃ।

৭৯৮। ন যন্লুকি ভাম্চ। বোভাব।

৭৯৯। 'বুলু'ঙন্ঙমোঃ।' অভূবন্ অভূবম্।

৮০০। খাচ্ছীদে সুদীর্ঘশ্চ। লিটি সতি ঋচ্ছাদে পরে সুর্ভবতি। দ্বিরুক্তেরদ্বীর্ঘশ্চ। আনচ্ছ আনচ্ছব্রিঃ অশু আনশো।

বভূব্য ইত্যাদে। তু বস্থবাহোরিত্যাদিনা বকারস্থোকারে ক্তে কচিন্নিমিশো বিনি নিতিকস্থাপ্যপায় ইতি লুখিমিত্তস্থ বকারস্থাভাবে নৈমিত্তিকস্থ
লুকে'হপ্যভাবঃ যত্তেবং দিছায় ইত্যাদাবপি বকারস্থ লুকোহপ্যভাবঃ স্থাৎ
আত্র কচিনিতি বচনারাদ্ধীকরণীয়মিতি চেং একবিষয় এব ব্যবস্থাভেদেনায়মাপি বিন্ধান্ত প্রমাং প্রকারস্থান এ চিন্তাম্।
ভদযথা। —

ভূনোবুলু ভি*চাচিধিকদকেতি বক্তবাম্। ি বিটো লুঙ াচি পরে ভ্বঃ পরো বুর্তবিভি। ধিকদক বভূব বভূবুষঃ অভূবম্ অভূবন্ এবং লক্ষণদ্য-মকুতং স্থাৎ।

- (৭৯৮)। যন্লুকি সতি ভুবো বুদ্বি রুদৎ গ্রাম্চন ভবতি। গ্যাদি-স্থান্গ্রামঃ প্রকৃতিবন্ধাৎ বোদ্বি রুদত ত প্রাপ্তস্তা নিষেধঃ পক্ষে বৃদ্ধিবে তি বৃদ্ধিঃ।
- (৭৯৯)। লুঙ্মজ্ঞকে অনি ঙমি চ পরে ভ্বঃ পরো বুর্তবতি। ঙমি। অভবং বুরিত্যভারুর্তিনি যেধান্তরি চ্পাদম্পট্টা ভবতীতি বুরিত্যতা ক্রতম।
- (৮০০)। ঋছাদৌ পরে মুর্ভবন্ অর্থাং দিক তেক তর এব অদীর্ঘশ্চ আনছে আনছে তুনিতি ঋছে গতান্ত্রিপ্রপ্রস্থিতাবনের ছোহচ্ ইতি ছকারস্থা দিবং বর্গস্থাদিরিত্যাদিনা ছক্ত চঃ অণ্ অতুস্ ঋছে তোগুণ ইতি গুণঃ প্রকৃত্যা বেত্যাদিনা ঋকারেণ দ্বিকজিঃ ঋদদিত্যকারঃ মুঃ অভো দীর্ঘশ্চ। আনশ ইতি অশ্ব্যাপ্তো অশ্ ইতি গণে নির্দেশাদশ্ভোজন-ইত্যম্ম আশ্ আশত্রিতি ভবতি।

৮০১। ঋদাদিহলত্তোহদাদিযুগ্বলত দ্ব। বাধু আনৰ্দ্ধ অৰ্চ আনৰ্চ্চ।

৮০২ ! দেঙো দিগিদ্বি লু ক্চ। লিটি পরে দেঙো দিগির্ভবতি । দ্বিলু ক্চ। দিগেয়

৮০৩। অনাদেশা ভ্যাসস্থাযুক্পার্শ্বোহশস্বাদের দি ত্যেৎ।
অনাদেশোহভ্যাসো দ্বিকুক্তির্যস্ত জন্ত ধাজোরশস্বাদের দারোহ-যুক্পার্শোহণিতি লিটি পরে এস্কবতি। দ্বিলুক্ চ। পেচতৃঃ পেচুঃ পেচিথ। অনাদেশাভ্যাসম্ভেতি কিম্ণু বভণতুঃ। অযুক্-পার্গ ইতি কিম্ণু ততকুঃ। অশস্বাদেরিতি কিম্ণু শশসতুঃ দদদো

⁽৮০১)। ঋকারাদিহলস্তো ধাতুরকারা দিবুর্জীহলস্কণ ঋজাদিওবতি।
আনক্তি ঋরু বৃদ্ধৌ গুণে কতে অদাদিবুর্গ্রনস্তাদিশি হুঃ প্রাপ্নোন্তি
আন্ধতুঃ আনুধুরিত্যাদিশিল্পর্থম্ ঋদাদিহলস্ক গ্রহণমবশুমস্পীকরণায়ম্।
আনর্ফ ইতি অর্চ্চ পূজায়াম্। যুগ্র্লস্ত ইতি কিম্ ? আট আটতুঃ ।
ঋদাদিহলস্তথাদেব ঋচততেরপি গ্রহণে দিদ্ধে ঋচত্ গহলং স্পষ্টার্থম্। অদাদৌ
বুগ্রলস্তোপাদানাৎ ঝদাদৌ হলস্তপদেন একহলস্তাহেব গ্রহণং নতু বুক্তহলছপ্তেতি শক্ষা স্যাং। আদাদীতি হ্রস্বোক্ত্যা দীর্ঘোন গৃহতে ইতি কেচিৎ
তিন আছি আয়ামে আধ্রে অন্তে তু আনাক্ষে ইতীচ্ছন্তি।

⁽৮০২)। দিগ্যে ইতি দেও ্রক্ষণে অভিদচ্যনেকাচ ইত্যাদিনা যঃ।
(৮০৩)। হল্পরর্গিতি মিলিতহল এন বৃক্পদেনাতিধনম্। তহ্য
পর্গাদিসেন নঞা সমাসেহগুক্পদেনৈকহল্ উচাতে অযুক্তৌ পার্ধে যহা
ইতি সমাসেন একৈকহলৌ দর্নিহিতৌ যদ্যেতি সোহভিধীয়তে এবধ
নতি আটতুং আট্রিতি ততকুং ৎৎসক্রিত্যাদাবেরং ন ভবতি তকু বকু
তন্করণে ৎসর ছন্মগতৌ অত ইতি হুস্বোক্ত্যা দীর্ঘহ্যাহেশাৎ বব শতুরিত্যত্ত ন ভবতি বাশু শক্ষে অথবা হুস্বিধানগাম্প্রাদেবাভ্যাসন্তাদেশকা

৮০৪। 'দন্ত্যবকারাদিঃ কৃতগুণোহনিঙ্থভন্তশ্চ শাষাদিঃ।

ববনে দদরতুঃ পপক্থ। অণিতীতি কিম্ ? পপাঠ।

४०६। कुल्लारमः।

তরতেঃ ফলাদেশ্চাতোহণিতি লিটি পরে এস্কবতি। দ্বিসুক্ চ। তেরতুঃ ফেলতুঃ ফেলুঃ ভেজুঃ ত্রেপুঃ ত্রেপে।

বাচ্যা পেচিথেতি অনিঙ্ছদণস্তো স্থাদিবজ মিতি রধাদিস্বাৎ পক্ষে ইঙ্।
শশসভুরিতি শস্থ হিংসায়াং দদদে ইতি দদ্ দানে।

(৮০৪)। দস্তাবকারাদিঃ ক্তত্ত্বণ ইঙ্বর্জিতথঙন্তশ্চ ধাতৃঃ শস্বাদিভবতি। ববন ইতি বন্ন যাচনেহয়ং দস্তাঃ উন্ বন্ শব্দে বন্ যন্ সন্তত্ত্বী
দ্বাবপি দন্ত্যৌ ওঞ্চাবিত্যিতা তেন বেনতৃঃ বেমুরিতি বদ্ স্থৈয়ে বেদতৃঃ
টুবন্ উল্লিরণে ইত্যাস্য দন্ত্যবকারাদিখাং ববমতৃঃ ববমুঃ ধাতৃপারায়ণে
তু, উদ্বেমুক্তর ক্ষরিং রথিনোহত্যোহন্তবীক্ষিতা ইতি দর্শিতন্। দদরতুরিতি দ্বিদারণে প্লচ্ছ্তোগুল ইতি গুণে ক্তে প্রক্ত্যা বেত্যাদিনা
দিক্তিঃ হস্তঃ ঝদ্দিতি প্রকারস্ত অন্তন্য নহ্তাদেশাভাসেলাদেব ন
ভবিষ্যতি এবং সতি চিচয়িথেতি প্রত্যান্ত্রণীয়ং পপক্থ ইতি ইঙ্ভাবপক্ষে পপাঠেতি অন্ নম্ম হ্রেরাক্ত্যা দীর্মস্তাগ্রহণাদেবাত্র ন ভবিষ্যতি
তহি অহং পপঠেত্যক্র স্থাদেব তদর্থং ণিদ্গ্রহণং ক্রিয়মাণ্মেতদর্থমপি
ভবতি।

(৮০৫)। তেরত্রিত্যাদি তু প্রবনতরণয়োঃ কল্ নিশান্তৌ ঞিফলা বিসরণে ঘয়োরপি গ্রহণং ভঞ্ সেবায়াং অপূষ্ লজায়াং তরতেঃ কৃত-ঋণবেন কল্ভজারাদেশাভ্যাসবেন জনের্ক্পার্থনে চাপ্রাপ্তে বিধা-নম্। ফলাদাবিপি তরতেঃ পাঠে সিদ্ধে পৃথগুপাদানং বৈচিত্রার্থন্। অশ্বাদেরিভাত্রাম্বর্তনীয়ং তেনানিঙ্গঙ্কভ একাভ্যাসলোপৌ ন ভক্তঃ। বভক্ষ। ৮০৬। ব্লাধো হিংসায়াম্। অপরেধুঃ।

৮০৭। ফণাদেবা। ফোত্ঃ পফণতুঃ। ফণ**্**রাজৃ টু**ভাজৃ টুম্বাশৃ টুজাুস স্থামু** স্বন্।

৮০৮। জুভ্রমুত্রসাঞ্চ। জেরিথ জজরিথ।

৮০৯। দন্তিশ্রন্থিরীনাং নলোপশ্চ। দেভিগ দদন্তিগ শ্রেপুঃ শশ্রস্থুঃ ত্রেপুঃ জগ্রস্থুঃ।

⁽৮০৬)। হিংসায়ামর্থে বর্ত্তমানস্থ রাধোহণিতি লিটি পরে আদেদ্বতি দ্বিলুক্ চ। যদ্যপি রাধ্ সাধ্ সংসিদ্ধৌ ইতি রাধ্ধাতুঃ সংসিদ্ধৌ
বর্ত্ততে তথাপি ধাতৃনামনেকার্থজাৎ তস্ত হিংসার্থে বৃত্তিঃ পূর্দ্দহতে হ্রস্বোক্ত্যা
দীর্ঘসাগ্রহণাদভ্যাসস্থ হ্রস্বতে ক্তে আদেশাভ্যাসম্বাচ্চাপ্রাপ্তে বিধানম্।
অত্র হুস্কস্থাত্যোহসম্ভবানেব দীর্ঘস্ত গ্রহণম্।

⁽৮০৭)। ফণ্ গতৌ রাজ্ দীপ্রে টুল্রান্ট্ ভুন্স দীপ্তের শুমু স্বন্দকে এবাং ধাতৃনাম্ অণিতি লিটি সতি অৎ এদা ভবতি দিলুক্ চ। অপ্রাধ্যে বিভাষেয়ম্। যথা ন প্রাপ্রোতি তৎ প্রাগেবোক্তম্।

⁽৮০৮)। জুষ্ ঝুষ্ বয়োহানৌ ভ্রম্ অনবস্থানে দিবাদিঃ ভ্রম্ চলনে ভানিদ য়োরপি গ্রহণং ত্রদী উদ্বেগে এষামণিতি লিটি পরে অত এদা ভবতি দিপ্কি চ। ফণাদয়ঃ সপ্ত ভানাস্তর্গণাঃ একত্রৈব পঠিতাঃ অমী ত্রয়ো ভিশ্নস্থানেষু চ এতাবতা ভিন্নলকণারস্তঃ।

⁽৮০৯)। দনভ্দত্তে শ্রু মোচনপ্রতিহর্ষণয়োঃ প্রন্থ সন্দর্জে ক্রাদিঃ শ্রু গ্রু সন্দর্জে যুজাঞ্জিছাৎ বিকল্পিত বিষামিশিত লিটি পরে অৎ এরা ভবতি নলোপত ছিলুক্চ। সন্নিযোগশিষ্টার্থনিদং বিধানত্রম্। বামনেনাস্থ নিত্যসমূক্তং ভাগর্ত্তিকতা তু অনার্যসমূক্তম্ উভন্নত ন্র্নাৎ অত্র বিকল্পবিধি দক্তঃ। শ্রুথি শৈথিল্যে প্রথি কৌটিল্যে ইত্যেতরোক্ত শগ্রন্থে জগ্রন্থে।

৮১০। মনেরাশীঙ কে। মেনকী।

৮১১। নশো লুঙ্ঙিম।

अभिन्य ।

५७२। वाशामिवामिः।

লিটি পরে ব্যথাদেদ্রিককেঃ স্থানে বীত্যেবমাদির্ভবিতি। বিব্যথে।

৮১৩। বশ্যজাদ্যোরঙিল্লিট্কার্য্যস্থাদিঃ।
উনাশ বিবাধ ইয়াজ।

⁽৮১০)। মন্ জ্ঞানে ইতাস্থাশীর্বিহিতে ওকে পরে অং এন্তবক্তি দ্বিলুক্ চ ইতি নামুবর্ততে অসম্ভবাং। আশিথি সর্ক্ষাত্তা ইতি ওকঃ ক্ষিপকাদেরাক্তিগণ্ডাদিয়াভাবঃ।

⁽৮১১)। নশ্ অদর্শন ইতাস্থ লুঙ্সংজ্ঞকে ওমি পরে অং এছবতি। অনেশ্মিতি পুরাদিয়াদগ্লুগচ্ছঙাদেরিত্যকার্লুক্। লুঙিতি কিম্? অনস্থাং লঙ্ভুমো রূপম্।

⁽৮১২)। বিব্যথ ইতি ব্যথ্ ভয়চলনয়োঃ অয়দাত্তেরাদায়নেপদম্।
(৮১৩)। বশাদের্যজাদেশ্চ অঙিতি লিটি পরে যথ কার্যাং বিহিতং
তক্ত কার্যাক্সাদির্বিকজেঃ স্থানে লিটি পরে ভবতি। কিং তথ কার্যাং
বিহিতম্। বশাদেরুশাদির্যজাদেশ্চ ইজাদিঃ। আদিশদেন চাজবচ্ছিন্নঃ
প্রথমভাগ উল্বঃ যত্রাচ্মাত্রমাদিষ্ঠং তত্র তদেব ভবতি। উবাশেত্যাদৌ
বত্রাজবচ্ছিন্নগৃহীতন্তত্র স এব ভবতি। স্থাপেত্যাদৌ যত্র তু অজবচ্ছিন্নাদবশিপ্রৌ নান্তি তত্তৈবাদিব্যপদেশাৎ স এব ভবতি। জিজ্যৌ জিজ্যিথ
ইত্যাদৌ গ্রহাদৌ চ যদ্যপি বিশেষো ন দৃশ্যতে তথাপি লক্ষণমন্তীতি কার্যাং
করণীয়মেব একাজিতাত্র স্ত্রে কর্ত্বং গুঁজাতে এতেন ব্যাথ্যানার্থো লভাতে
অথবা ব্যাথ্যানাদেব বিশেষপ্রতিপন্তিঃ করণীয়া। লিট্কার্যান্তেতি কিন্ ?
ববৌ ববতুঃ ববুঃ বেঞ্বর্জং লিটি চেতি ইজাদিকার্যাভাবাদভ্যাদে।
উকারো ন স্থাৎ। ব্রশ্চপ্রচ্ছোর্ন লিটীতি রুশ্চপ্রছাদেশরোলিটি প্রতি-

্রু৮১৪। বেঞো বয়ির্বা। লিটি পরে বেঞা স্থানে বয়ির্বা ভবজি। বর্বো উবায় ববস্তুঃ উয়তুঃ উবস্থঃ।

৮১৫। ইঙ্দীঙোর্গাদীয়ে। লিটি পরে ইঙ্দীঙোঃ স্থানে গাদীয়ে ভবতঃ। অধিজ্ঞগে উপদিদীয়ে।

৮১৬। ওদাতো ণাণো। লিট্যাকারাত্বত্রের ণাণো ওদ্ভবতঃ। অহং তম্ছো স যর্যো।

৮১৭। ঋচছ ৄতোগুণঃ। লিটি পরে :ঋচছ ৄতোগুণো ভবতি। অনাচছ তুঃ নিজ গরতুঃ।

৮১৮। ঋতো ন ণিতি। প নিজগার।

বেধাং দিকজাবপি লিট্কার্যাং ন ভবতি। যদ্যপানয়োরেভিধিধানং ভবতু ন বেতি নান্তি বিশেষঃ তথাপি প্রক্রিয়েয়ং দর্শিন্তা। অভিত্যেব লিটি বিহিতং কার্যাং অভিল্লিট্কার্যাং তেন শিখায়েতাক্র শূর্ন ভবতি যতঃ খেঃ শূর্বা লিটি চৈতি লিটি নিহিতো ন ছভিত্যেব শিক্ষহিতায় পরিশিষ্টোদাণ্ হরণানি দর্শ্যস্তে। বভ্রজ্জ জগ্রাহ জিজ্যো বিব্যাধ উবাহ উবায় বিব্যায় জুহাব উবাদ উবাদ স্থাপ উবাচ।

- (৮১৪)। বরেরিকার উচ্চারণার্থ:। ববাবিক্তি এচোহশিতীজ্যাত্বং উবায়েতি বয়াদেশে ক্বতে বরেরুয়ুবাবিত্যস্য যজাদিকার্য্যত্বাৎ দ্বিরুক্তা-বুকারো ভবতি।
 - (৮১৫)। অধিজগ ইতি ইঙ্ অধ্যয়নে উপদিদীয় ইতি দীঙ্কয়ে।
- (৮১৬)। অহং তস্থে ইতি চিন্তবিক্ষেপে লিট্ বিক্লজিহেতাবচ্যগি চেতি আকারলুক্।
 - (৮১৭)। নিজগরতুরিতি গূ নিগরণে।
 - (৮১৮)। বিতি লিটি পরে শ্লকারাক্তম গুণো ন ভরতি। মিরু

ৡ৯। বসেচি। ঃ•ভাবান্।

৮২০। শৃদৃপূহ্মোবা। শশরতুঃ শশ্রতুঃ শিশীবান্ শশ্বান্।

৮২১। ণ্যাদেলি ড্ঙাম্ কৃভ্বত্তকুপ্রয়োগশ্চ। শ্যাদেকতরো লিড্ভান্তবতি। কৃভ্বতিভিলি ড্নুপ্রয়োগশ্চ।

গারেতি অণ্ বৃদ্ধিঃ। স্তুত ইত্যন্ত্রতী স্কুন্গ্রহণং শক্যমকর্ত্ত্র কিস্ক কচ্ছেরপান্বৃত্তিঃ স্থাৎ।

- (৮১৯)। বসৌ পরে শ্লাতো গুণোন ভবতি। অত্র বসাবতিদিষ্টনিট্কার্য্য প্রতায়োপলক্ষণং তেন আনুনেহিপি পরে প্রাপ্তা গুণোন ভবতি।
 ততিরাণঃ নিপপ্রাণঃ লিড্বছম্বানাবিতি আনঃ শ্লানিব্ ইতি ইর্ উর্পবর্গাদিত্যুর্ প্রক্রতা দিকজিঃ খাদনিত্যকারঃ ণত্তম্। তিভার্বানিতি ।াস্তাদেরিত্যাদিনা দীর্ঘঃ ক্রতেরাদির্বসাবিতি দিকজিঃ।
- (৮২০)। শৃদৃপৃইতি যঠাতং পদং ছন্দোবংস্তাণি ভবন্ধীতি বিভক্তিলুক্ শৃহিংসায়াং দৃ বিদারণে পৃ পালনপূরণায়াঃ এবাং নিটি পরে হ্রমো বা ভবত। পক্ষে গুণ এব ভবতি। শৃদৃইত্যেতদোহ্র স্ববিধানম্ স্থানিরিতান্ত নির্ভার্থং পৃইত্যন্ত উরপবর্গানিতি। নমু কিমর্থমেব ভন্তক্রণং শশ্রত্বিত্যাদিসিদ্ধার্ণমিতি চেৎ তৎ শ্রা পাকে জা কুংসায়াং গতৌ প্রাপ্রতাতেষেব ভবিষ্যতি ধাতুনামনেকার্থজাদর্থভেদো ন ভবিষ্যতি যতো লোকত এব প্লানামর্থবাবন্থ। এতদর্থম্দাহরতি শশ্বানিতি ব্যাবপানেন হ্রমো বিদীয়তে পক্ষে শিশীবানিতি।
- (৮২১)। অবিশেষালিট্সংজ্ঞকা যাবন্ত এবাণান্যন্তেয় গ্রাম্ ভবতি। সারিহিতালাতে বিপ্রকৃষ্টং বিধিরপেক্ষ্যতে ইতি স্থানে যাক্তবং হানে গ্রাম্ বিহিতঃ স এবার্প্রযুক্তেভাঃ কৃভ্বন্তিলো বিধীরতে। গ্যাদিপদেন যাকতাং গ্রহণং তদ্বদাহরণেনৈব স্পষ্টিয়িয়তি। গ্রামন্ত্র ছিল্লিবিধানেনৈব স্টিতম্ অথবা তারিয়মার্থং গ্রামন্তানাং ছপ্রভৃতীনামেবা বিক্লিভবতি নাল্যেমান্।

- ৮২২। ন ভূরতেও ম্বদাত্মনে কর্ত্তরি ভূবশ্চু। পাচয়াঞ্চনার পাচয়াম্বভূব পাচয়ামাস। তং পাডয়াংপ্রবমমাস। পপাত পশ্চাদিত্যসাধুঃ।
- ৮২০। সপ্রাদিক্ভ ক্তিভিশ্চ। •

 উক্ষাং প্রচক্র ন গরস্থ মার্গানিতি ভটি:। চিকীর্ষামাস্থঃ বোভ্যান্
 মাস্থঃ নেতাঞ্চকার পু্জীয়াঞ্চক্রতঃ গোপায়াম্বভূবিথ কণ্ডু য়াম্বভূবিথ মহীয়াঞ্চক্রে শ্রেনায়াঞ্চকু শকায়াম্বভূব অখায়ামাসিথেত্যাদি।
- ৮২৪। অনেকাচ্কাস্তদয়ায়াসিভ্যঃ। চকাসাঞ্চকার সোত্রশ্চুলুম্পধাতুর্বালপ্রত্যয়নার্থঃ চুলুম্পাঞ্চ-

⁽৮২২)। অনুপ্রযুক্ত শতে ভবতি। ভাম্বদন্তে ভবতে দ কর্ত্ত গান্ধনে পদং চন ভবতি পূর্বে জিন ভারেন প্রাপ্তমাত্মনে পদং নিষি-ধাতে। ভবতিনৈব প্রয়োগসিদ্ধাবস্তা নুপ্রয়োগসাম্থ্যাদেব অন্তেভূ ভাবে। ন ভবিষাতি কিং প্রতিষ্পেন তং ক্রিয়তে স্পষ্টার্থম্। তং পাত্রাং প্রথমমাস প্রাত পশ্চাদিত্য সাধুছেনৈব স্টিতম্। অনুপ্রয়োগ ইতা নুশকঃ পশ্চাদর্থে প্রয়োগশ্চ সামিধ্যক্ত হোহবগন্তব্যঃ।

⁽৮২০)। প্রাদিসহিতৈঃ ক্নভুম্তিভিশ্চাস্থ্রেরাগো ভবতীতি অথবা অয়মপ্যসাধুরিতি যো যপা বুগতে দ তথা ব্যাচন্ট ইতি সন্দির্মমেবোপগুত্রম্। যে উক্ষান্তে তে উক্ষাঃ তান্ দিক্তান্ প্রচক্রুরিতি ব্যাথ্য়া গ্রন্থকারাঃ সমাদ্বিরে। চিকীর্যামাস্থরিতি ঋত চসনীতি ইর্ বোভুয়ামাস্থরিতি খনস্ত- ভার্প্রেরোগস্তাপ্রকর্মান্ত্রিরি ঋত চসনীতি ইর্ বোভুয়ামাস্থরিতি খনস্ত- ভার্প্রেরোগস্তাপ্রামাস্থরিতি খনস্ত- ভবতি। নেলামিতি ঘন্লুক্ গোপায়া-মিতি গুপুধুপ্বিক্ষীত্যাদিনা আয়ঙ্, মহীয়াঞ্চকে ইতি কণ্ডুঞাদের্য ইতি খঃ মহীঙো ভিষেনাশ্রনেপদিষাৎ ক্ষক্র আত্মনেপদিষ্ম্। ভোনায়াঞ্চকতে ইতি শোনশকাদার্ক্রেরা ধের লিটি চেকো ধো ঢ় ইতি ধস্ত ঢঃ। অকর্ত্রের তুন চিকীর্ষামাসে বিপ্রেণ পাচয়াসভূবে স্বদৈঃ।

⁽৮২৪,)। অনেকাজ্ভ্যো ধাতৃত্য: কাস্থ শব্দুৎসায়াং দয় দান-

কার চির্যাঞ্চকার জিরয়াঞ্চকার কাস্থ শব্দকুৎসায়ামিত্যস্থানে-কার্যস্থান্দীপ্তিরর্থ:। তথাচ, অসীতো রাবণ: কাসাঞ্চক্রে শক্তৈ-নিরাকুল ইতি ভট্টি:। আসাঞ্চক্রে।

४२৫। छविं जारमतन्रह्मार्गिः।

·ক্টিহাঞ্চক্রে ঈ গতো অয়াঞ্চকার।

४२७। **ইस्ना** वा।

ইন্ধাঞ্চক্রে সমীধে।

গতিরক্ষণহিংসাদানেষু অষ্ গতৌ আস্ উপবেশনে ইত্যেতেভা উত্তরো লিট্ ঙাম্ ভবতি। কুভুস্তান্তপ্রয়োগুল্চ। চকাসাঞ্চলারেত্যাদি চকাস্থ দীপ্রৌ বিক্ষি চিরি জিরি দাস্ ক্রহ্ জিঘাংসায়াং অনেকাচ্ ত্বাদেব ণ্যাদেরপি ঙাম্সিদ্ধে পূর্ব স্থার ণ্যাদেরিতি একাচ্ ছং দিৎসাংচকার দিৎসাংবভূব।

৮২৫)। গুরুশাসাবিক্তেতি গুর্বি জাদির্যক্ত স গুর্বিজাদিঃ
ঋচিং উর্ণ কর্মনার গুর্বিজাদের্বি হিতো লিট্ প্রাম্ ভবতি। রুভ্যুম্প্রেরাগন্দ। ইংশ্বাঞ্জকে ইতি উহ চেষ্টায়াম্ ই গতাবিতি ভানে প্রাক্তেতং হ্রস্থং বদন্তি কেচিং তেষামিয়ায় ইয়তুঃ ইয়রিতি ভবতি। ইন্তিকারস্থা দীর্ঘোহয়মিতি স্বনসঃ অত আহ অয়াঞ্চকারেতি আগন্তবদেকমিত্যেকমিতি গুরিজাদিসমস্থা ইঙ্গ গতারিত্তান্তা দিবাদেঃ অয়াঞ্চকে ইতি। অন্চ্ছোর্ণো-রিতি কিম্? আনচ্ছ প্রোর্ণানাব। গুরিজিতি কিম্? ইণ্ গতৌ ইয়ঃইয়ি দিম্বে দীর্ঘে চর্তে কম্মান্ন ভবতীতি ন চোলং গুরিজাদেলিটো বিহিত্তাব্

(৮২৬)। ঞি ইন্ধী দীপ্তে ইত্যন্ত লিটি ভাম্ বা ভবতি। পূর্কেণ প্রাপে বিভাষা। সমীধে ইতি ইন্ধোলিটি চেতি নকারলুক্ ইকারেণ দিক্ষক্তি: ইন্ধাঞ্চক্রে ইত্যত্র তু নকারলুক্ ন ভবতি অভিতি তি দিখানাং। গুবিজাদেরিত্যস্থানিতাত্বাং ঈহে। শ্বজিধাতোরানুক্তে ইতি চ ভবতীতি দাতুপারায়ণাদৌ দর্শিত: ঈর্ গতাবিত্যস্থ সমীরে মর্ত্বুমারন্ধা ইতি ভট্ট-প্রবারো দৃশ্যতে তথাপি তদিহ নোক্তং ভাষ্যে অনিত্যস্থানভূপামাং। ৮২৭। দরিদ্রোজাগ্রাঞ। দরিদ্রাঞ্কার দদরিদ্রো জাগরাঞ্চকার জ্জাপার ওষাঞ্চকার উবোষ।

৮২৮। ত্ভীব্রীভৃঞাং দ্বিরু**ক্তিস্তদ্দিত্বঞ্চ।** জুহবাঞ্চকার জুহাব বিভরাঞ্চকার বিভার।

৮২৯। ন বস্থানো। চিকীৰ্দান্ চিকীৰ্যাণঃ।

৮৩°। কুঞ**ুপ্রয়োগো বেত্তেলে টিশ্চাম্ বা।** বিদাঞ্চকার বিবেদ বিদাশ্ধরোতু বেত্তু।

(৮২৭)। দরিদ্রা হুর্গতৌ জাগু নিদ্রাক্ষয়ে উষ্ দাহে ইত্যেতেষাং লিটি গুাম্বা ভবতি। দদবিদ্রাবিত্বি উনাতো গাণাবিতি ওকারে কতে লুগ ্যেহচানকাদাবিত্যাকাবলুক্। দরিদ্রাতের্গ্রাথা বিকল্পো ভাষাটাকারাং ধাতুপারায়ণে চ বাবস্থিতঃ রন্ধিতেন চ নিরুক্তঃ। উবোযেতি লিট্ অণ্ দ্বিরুক্তি গুণিঃ অসবর্ণেইভ্যাসভোতি উবাদেশঃ।

(৮২৮)। ছ দানে কি ভাঁ ভয়ে হাঁ লজায়াং ডুভ ঞ্ধারণপোষণয়োঃ এতেষাং লিট্ গোম্বা ভবতি। দিঞ্জিশ্চ দিঞ্জেরকারস্য ইম্বঞ্চ ভবতি। বিভারাঞ্চকার জিহ্রাঞ্কার জিহ্রায়। স্মদিতি কিম্
থ জুহবাঞ্চকার ইত্যত উকারস্থাপি ইয়ং স্থাৎ।

(৮২৯) করু কান্টো ছন্দস্থেব বিহিতাবিতি ভাস্যাগ্যাতৃভির্বাবন্তিক্ষু অতএব ভাষাভাগে ভাগ্যুত্তিক্ষ্টাযায়ত্তিকারশ্চ কম্মকান্চ্ বিধানলক্ষণং ন লিগিতবান্। অসাতস্ত্রোণ আভ্যাং মন্ত্র এব বিহিতঃ তথাচ কাস্প্রতারাণাম্মন্ত্রে লিটাতি পাণিনিস্ত্রম্ এতদেব মতমান্ত্রিতা ন বন্ধানাবিতি লক্ষণং বন্ধানো গ্রাম্ ন ভবতঃ যদি বন্ধানো ছান্দমো কথং তর্হি ভাষায়াং লক্ষণং কুরাণোহিপি লিড্ দন্ধানাবিতি লক্ষণং কুতবান্ ছান্দমানামপি প্রয়োগানাং ভাষান্ত্র দর্শনাং। কস্মকান্টো পরোকাবচ্চেত্যক্র পাচ্যাঞ্চক্রবানিতি ছর্গসিংছো বছনাজহার স্থাসকারোহিপি ভাষায়ামপি কস্মকান্টো ভবত ইতি ক্ষাবিস্থিতবান্ মতান্তরমান্ত্রিতা ন তদিহেপ্তং ভাষ্যবিরোধাং।

(৮৩•)। চকারেণ লিট্ ক্লন্ড স্তান্মপ্রয়োগশ্চেতি অমুবর্ত্ততে।।

৮০১। তাঙ্ তারো তারস্ তাসি তাস্স্ তাস্তাস্থি তাস্বিদ্ তাস্থা, তাঙ্ তারো তারস্ তাসে তাসে তাসে তাসে তাসে তাসেই অস্তাবিশ্বন্তাস

অনন্ততনে ভাবিনি ভবিষ্যক্তি কালে ধাতোরুত্তরে পুট্ সংজ্ঞকাস্তা-ভাদয়ে ভবস্তি। ভবিতা ভবিতারো ভবিতারঃ ভবিতাসি ভবিতাস্থঃ ভবিতাস্থ ভবিতাস্মি ভবিতাস্বঃ ভবিতাস্মঃ। স্পর্দ্ধিতা স্পর্দ্ধিতারঃ স্পর্দ্ধিতাসে স্পর্দ্ধিতাসাথে স্পর্দ্ধিতাশ্বে স্পর্দ্ধিতাহে স্পর্দ্ধিতাস্বহে স্পর্দ্ধিতাসাহে। ভদ্বয়ং পরস্মৈপদাত্মনেপদভিবা-র্থম্। শ্রোতারো চেতাসে।

৮৩২। পরিদেবনে চ।.° ইয়ং খলু কদা গন্তা থৈবং পাদে। দধাতি মে।

বিদ্ জ্ঞানে ইত্যন্ত নিট্ ঙাম্বা ভবতি। ক্বভ্ৰুত্যমুপ্ৰয়োগশ্চ লোটঃ স্থানে চান্বা ভবতি ক্ৰোহমুপ্ৰয়োগণ্চ। পূৰ্বে ক্ৰিলায়েনৈৰ যন্ত স্থানে ঙাম্বিহিতঃ দ এব ক্ৰোহপি ভবতি। বেভেদ্বিতি নিৰ্দেশো বিদ্ সন্তায়ামিত্যাদীনাং নিরাদার্থঃ।

⁽৮০১)। ভাবিনীতি ভূপাতোর্ভবিষ্যান্তি গমাদেরিতি গিন্ অভভবো অভতনঃ কালাব্যয়ান্তনভিতি তনট্। অভতনার্থশ্চ লঙ্বিধাবেব ব্যাথ্যাতঃ। ঙ্বন্ধমিত্যাদি। পরস্মৈপদসংজ্ঞকানামান্ধনেপদসংজ্ঞকানাঞ্চ নবানাং ঙ্কার-ছয়মাদৌ যৎ কৃতং তৎ সর্ফ্লেধামেব ভিত্তার্থং এতেনৈতছক্তং ভ্রকার্বন্ধমেত-ছপলক্ষণম্। উপলক্ষণঞ্চৈকত্মপি সর্ফ্লেমাপি চিহ্নং ভবতি বথা পতা-কিনো যাস্তীত্যেকৈব পতাকা সর্ফ্লেধামেব চিহ্নং ভবতি। ভিঙ্তৃঙাদী-নামপি ভ্রকারেণ ভিত্তমিতি নাশক্ষনীয়ং সিঙ্কুঙাদীনাং ভ্রকারোপাদানাং। ভিৎকৃলং দর্শন্ধতি। প্রোতারো চেতাস ইতি শ্রু শ্রবণে চিঞ্ চন্ধনে ইত্যক্ত;

৮৩৩। বাক্যগম্যে তু পরিদেবনে ন স্থাৎ। শ্বসায়ো ভবিষ্যামি ছুয্খস্থাস্থ কদা যহমিতি ভট্টিংগুল

৮০৪। অদ্যতনানদ্যতনসমুদায়ে ন স্থাৎ। অদ্য খোবা গমিষ্যতি।

৮৩৫। চেহদোৎ সহিবহোঃ। চে পরে সহিবহোরকার ওম্ভবতি। সোঢ়া অবোঢ়াম্।

৮০৬। লট্ ল্ট্ স্তঙ্ চ।

লড়েব ল্ট্সংজ্ঞকঃ সন্ ভাবিনি ভবিষ্যতি কালে ভবতি। তত্র

স্তঙ্ চ। ভবিষ্যতি স্পর্দ্ধিষ্যতে। পদসংস্কারমিদং শাস্ত্রমিত্য
স্মিন্ দর্শনে পদসংস্কারবেলায়ামনদ্যতনস্থাবিদ্যমানস্থাদাকাগম্যে
ইনদ্যতনেহপি ল্ট্। তথাচ শ্বং করিষ্যতি।

⁽৮৩২।৮৬০)। পরিদেবনমন্থশোচনম্। অশ্বিন্ বাচ্যে ভবিষাতি কালে লুড্ভবতি। ভবিষাতি অনদাতনে লুড্বিহিতঃ ভবিষাৎসাম।তো ন প্রাপ্রোতীতি বচনম্। বাক্যগম্যে তু পরিদেবনে ন স্যাদিতি লুড়িতি শেষঃ। অবসায় ইতি অবসায়োহন্তঃ ছষ্থাবসানসময়ঃ জিজ্ঞাসায়াঃ বাক্যবাচ্যখালত্র পরিদেবনং বাক্যবাচ্যং ন ভবতীতি ছষ্থনির্বিশ্লস্যৈ ভ্রাক্যমিতি পরিদেবনন্ত গ্যাং ভবতোব।

⁽৮০৪)। অস্তাভিপ্রায়ো লঙ্বিধাবেব ব্যাখ্যাতঃ। গমিষ্যতীতি গমোহনাস্থনে সে ইতি ইঙ্

⁽৮৩৫)। সোঢ়েতি সহ মর্বণে তাঙ্ হো ঢ় ইত্যাদিনা হস্ত ঢঃ ধোহবাতুর্ব্যাদিতি তন্ত ধঃ বটবর্গাদিত্যাদিনা ধস্ত ঢঃ ঢ্রেরিত্যাদিনা চলুক্ পূর্ব্বোহণ্ দীর্ঘশ্চতি দীর্ঘষে প্রাপ্তে বিশেষবিধিত্বাভ্রমধকো হয়মোকারঃ অথবা দীর্ঘস্থেদি ক্লতে ওকারঃ। অবোঢ়ামিতি বহ্ প্রাপণে লুভ্ তাঙ্ সঙ্ অঙ্যাদদৃদ্যাং স্থাদীঙশ্চাঙ্যে ইতি সঙ্লুক্ শেষং পূর্ববং।

⁽৮৩৬)। লড়িতানেন লট্সংজ্ঞকা যে তিঙাদয়ো বিহিতাত্তেহজ্ঞি-

৮৩৭। জ্ঞান্ম র্থোপপদেহ্যদ্যোগে ভূতানদ্যতনে।
জানাসি চৈত্রী মগধে রৎস্থানঃ বুধ্যসে স্মরদি। ষদ্যোগে তু
জানাসি যন্মগধেহবসাম।

ধীয়ন্তে। ভাবিনি ভবিষ্টিত কালে ত এব লুট্ সংজ্ঞকা ভবন্তীতার্থঃ। নম্বস্ত লুটো ভাবিনি কালে বিধানং লুটস্ক ভাবিত্যনদ্যতনে তৎ-সামান্তবিশেষল্যায়েন লুটান্ত বাধিতত্বাৎ কথং শ্বঃ করিষ্যতীতি অত পদসংস্কারকমিত্যাদি । পদসংস্কারকং শাস্ত্রমিতি আই ৷ पर्ननः वाकामः कात्रमि शूर्मियन पर्नात भाराख्य पृथक् किया अभाषाका-ঘটনেতি। নিম্পন্নঞ্চ পদং পশ্চাৰাক্যঘটনায়ামপি ন নিবৰ্ত্ততে নিম্পন্নত্বাৎ ভূতদামান্তে বিহিত্ত লুঙঃ পরোক্ষে লিটা সমাবেশেহপায়মেব দিদান্তঃ। তেন অভূন্নপো বিবুধদথ ইত্যাদ্যপি দিধাতি। এবঞ্চ পদসংস্থারেণৈব কদা আগতোহনি এয আগচ্ছামি ইত্যাদিনিদ্ধে কেবলাৰৰ্ত্তমানপ্ৰায়েহপীত্যা-দিবিশেষলক্ষণানি মন্দ্ধিয়াং স্পষ্টাবগমার্থান্তেব ক্রিয়াণাং সাতত্যান্ত্র্ছানে কালানাং তুল্যজাতীয়েন ব্যবধানেন চ গম্যমানে অনদ্যতনে বিহিত্তো লঙ্-नूरों न उरवः। यारब्बोरमन्नमना९ यारब्बीरमनः मनाश्रवि (यश्तः (शीर्ग-মাশুতিক্রান্তা এতস্থামুপাধায়োহিমমাধিত যেহয়ং পৌর্ণমাশ্রাগামিনী এত-স্থামুপাধ্যায়োহগ্নিমাধাদ্যতে ইত্যেবমাদিপ্রয়োগদিকার্থনকৈ: लक्षणानि श्रामश्कात्रश्का स्पष्टीशीरका गारिशशानीकाव्यामानार्याण न ক্লতানি গ্রন্থবিস্তরভয়াদমাভিরপি তংপ্রপঞ্চ উপেক্ষিতঃ। ভবিষাৎকাল-সামান্তবিহিতানামপি লুটুসংজ্ঞকানাং ক্রিয়ার্থার্থান্তবিষ্যতীত্যনেন বিহিতেন পকেন বাধা নভবতি। এতংকারণঞ্চ তাত্রেব বক্ষ্যতি। বিশেক্ষোপি সামান্তং বাধ্যতে ন কচিৎ কুতীতি কুদধিকাররিহিতেন বিশেষেণ বিহিত্ত বোধা নেষ্তে। তেন করিয়ামীতি ব্রঙ্গ হীত্যাদৌ লুড়পি ভবতি। (৮৩৭)! জ্ঞানার্থে সরণার্থে চ উপপনে যক্ত্রুযোগবর্জ্জিতাৎ ভূতানদাতনে কালে লুড্ভবতি। অস্মিন্ কালে বিহিতো লঙ্ অনেন বাধ্যতে। বংস্থাম ইতি বদ নিবাদে দেতোহচতুম্বিতি সম্ভ তঃ অঙ্কমান্তমে ইতি অকারস্থাকারঃ। যত্র বাসমাত্রং শ্বর্যাতে নাক্তং কিঞিং বেহিন্য বিষয়: যত্ৰ চাপরমপ্যপেক্ষতে দ উত্তরস্ত্ত জ্ঞানার্থো-

৮৩৮॥ সাকাডেক বা যদ্যোগে চ।
স্মরদি যন্মগধে বৎস্থামঃ তত্ত্রোদনং ভোক্যামটে। স্মরদি
যন্মগধেহবসাম তত্রোদনমভুঞ্জাহি।

৮০৯। শীস্ত্রার্থোপপদে আশিংস্যাম্। উপাধ্যায়শ্চেচ্ছীত্রমাগমিষ্যতি শীত্রমধ্যেয়ামহে তথা শঃ ক্ষিপ্র-মধ্যেয়ামহে ত্ররিতং ক্ষিপ্রমিত্যাদি।

৮৪০। কিংকিলাস্ত্যর্থোপপদে২ক্ষান্ত্যসম্ভাবনয়োঃ সর্বকালে।

কিং কিল ভবান্ ব্যলং যাজয়িষ্যতি অস্তি নাম ভবতি নাম বিদ্যতে নাম তত্ৰভবান্ বৃদলং যাজয়িষ্যতি।

(৮০৮)। আকাজ্জণমাকাজ্জা আকাজ্জ্যা সহ বর্ত্তে ইতি সাকাজ্জ্য আকাজ্জা চ প্রাণিধর্মঃ তত্মাৎ সাকাজ্জ্য ইতি প্রয়োক্ত্মবিশেষণং জ্ঞানম্মরণার্থে উপপদে যজ্জ্বযোগে যজ্জ্মযোগে চ ভূতানদাতনে কালে লৃত্বা,ভবতি। সাকাজ্জ্মণে-চং প্রয়োক্তা ভবতি। জ্ঞাপিতেনাপরজ্ঞাপনেচ্ছা আকাজ্জ্মা। ভোক্ষ্যামহে ইতি ভূনক্তেরপালনে ইত্যাম্মনেপদং মহে স্তঙ্ চজােঃ ক ইতি জ্ঞা কঃ ইচ্কােদিত্যাদিনা যম্ম। অভ্লাহীতি লঙ্
মহি শ্বম্ শ্লাস্ত্যোর্দিত্যকারলুক্ উপাস্কশ্র বর্গে ইতি নক্ষ ঞঃ।

(৮৩৯)। শীঘার্থোপপদে আশংসায়াং গম্যমানায়াং লৃড্ভবতি। আশংসনমাশংসা অপ্রাপ্ত প্রিয়ার্থস্ত প্রাপ্তীচ্ছা তস্যাশ্চ ভবিষ্যৎকালএব বিষয়ঃ। আশংসায়াং ভৃতসামান্তবিহিতাশ্চেতি বক্তব্যমিতি অনেন লট্ ভ্তসামান্তবিহিতাঃ পক্ষে ল্ট প্রাপ্নোতি শীঘার্থোপপদে লৃড়েব যথা স্যাৎ ইত্যেবমর্থং বচনম্। লৃড়পানেন বাধ্যতে ইতি স্চনার্থং শ্বঃ ক্ষিপ্রমধ্যে-ষ্যামহে ইত্যুদাজহার।

(৮৪•)। কিংকিলশকঃ সম্নায়োপপদং অক্ষান্ত্যসন্তাবনরোঃ সম্পায়স্যৈব বৃত্তিসন্তবাৎ অত্ৰ তৃ শক্ষশক্তিশ্বভাব এব হেতৃঃ। অক্তার্থা-

পানানেনৈব উভয়ার্থসিদ্ধে জ্ঞাশ্বর্থেত্যুভয়োরুপাদানং মন্দধিয়াং স্থ-প্রতীত্যর্থম।

৮৪১। আশ্চর্যার্থে চ মচ্চযত্রযদিবজ্জ মৃ।
ভাশ্চর্যার্থিবদমধ্যেয়তে মুকঃ। মচ্চ যত্র যদিযোগে তু—আশ্চর্যাং
যদি বেদমধীয়ীতু।

৮৪২। স্বঙ্কু লৃঙ্,লিঙ্হেতো ক্লত্যানিষ্পত্তো ভূতে চ।

লঙ্বে লৃঙ্সংজ্ঞকঃ সন্ লিঙ্হেন্তে ভাবিনি ভূতে চ ক্রিয়ায়া অনির্পত্তে গম্যমানায়াং ভবতি। তত্র শুঙ্চ। যদি মৎসমী-পমাগমিষ্যন্তনান্ তদা স্তেনাভোক্ষ্যত। হেভূহেভূমতোর্মৎসমী^ত পাগমনস্তভোজনয়োরনিপ্পত্তিরত্র বাক্যাৎ গম্যতে। যদ্যমার্থী পথিকোহত্র দৃট্টোহভবিষ্যৎ উতাভোক্ষ্যত অপ্যভোক্ষ্যত অন্যেন পথা স গতঃ ন ভুক্তবান্।

অন্তি ভবতি বিদ্যতয়ঃ কিং কিলশব্দেহস্তার্থে চোপপদে অক্ষান্তাসম্ভাবনরোর্গমানব্যাঃ লৃড্ভবতি। সর্ব্বকালেহক্ষাস্তাসম্ভাবনয়োশ্চেতি লিঙ্-ল্টৌ বিহিতাবত্র লৃট্ প্রাপ্ত এব লিঙ্বাধনার্থং বচনম্। অস্তি নাম ভবান্র্বলং বাজয়িয়য়তীত্যাদৌ ন ক্ষমে ন সম্ভাবয়ামীত্যেবং গম্যতে।

(৮৪১)। চকারঃ সর্ক্রকাল ইত্যনুবৃত্ত্যর্থঃ। আশ্চর্য্যে সমামানে বচ্চ যত্র যদিপদানাং সম্বন্ধং বর্জ্জমিত্বা সর্ক্রকালে লৃড্ভবতি। ষচ্চযত্র-বোগে গর্হাশ্চর্যায়েশ্চ যচ্চযত্রয়োরিতি বিশেষবিহিতেন লিভিবাভ বাধা-সিন্ধৌ ষচ্চযত্রয়োবর্জ্জনমত্র স্পষ্টার্থম্। আশ্চর্যাং যদি বেদমধীয়ীত ইত্যত্রাসম্ভাবনা আশ্চর্যাংশ ক্ষমতে। আশ্চর্যার্থনিমিত্তে লৃটি প্রতিষিদ্ধে অসম্ভাবনায়াং লিভেব ভবাৰ অধীয়ীতেতি ঈত ক্লাভ্যান্ত্রত্যাদিনা ইয়াদেশঃ।

(৮৪২)। যদি মংগ্রনার গ্রিয়ন্তবানু ইতি হেতুহেতুমতোর্ভবিষ্যতি বৈতি লিঙ্বিধানাৎ হেতুক্তের নিঙ্ হেতুক্ত ভবিষ্যতি কালে লৃঙ্ অব ুবিহিতঃ। যদ্যরাখা প্রিকোহর দৃষ্টোহভবিষ্যৎ উতাভোক্ষ্যত অপ্যভোক্ষ্যত ইতি উত্তাল্যেবাচান্তবাবীত লিঙ হেতুক্ত - ভূতকালে-হজুলঙ্। ৮৪০। কথং যুক্তাদিত্যাদিপঞ্চক ভূতে বা ভাবিনি তু সর্বত্র নিত্যম্।

৮৪৪। লুঙ্ সঙ্চ।

লাঙেব লুঙ্ সংজ্ঞকঃ সন্ ভূতকালে ভবতি। প্তিত্র সঙ্ চ। অচৈমীং অচৈফীম্ অচৈমুঃ অচৈমীঃ অচৈফীম্ অচৈফী অচৈমন্ অচৈম অচৈম্ব। অস্পর্দ্ধিট অস্পর্দ্ধিয়াতাম্ অস্পর্দ্ধিত অস্পর্দ্ধিতাঃ অস্পর্দ্ধিয়াতাম্ অস্পর্দ্ধিয়াতাম্ অস্পর্দ্ধিয়াই।

⁽৮৪০)। কথং সুক্তালগহারীং বা লিঙ্লটাবিতি লিঙ্বিধৌ লক্ষণসক্তং তদাদৌ পঞ্চকে লিঙ্হেতৌ ভূতকালে লৃঙ্বা ভবতি। ভবিষ্যতি
তু কালে সর্বা লিঙ্হেতৌ নিত্যং ভবাত পূর্বস্তাবৈ বিহিত্ত লৃঙ্।
ইয়ং ব্যবস্থা কথংযুক্তাৎ গহারীং লিঙ্ বিহিতঃ অতো লিঙ্হেতৌ
ভূতবিবক্ষায়াং ক্রিয়ায়া অনিষ্পত্তৌ লৃঙ্বা ভবতি। কথং নাম তত্রভবাংশ্চরমে বয়িস বনং নাগমিষ্যৎ পক্ষে লিঙ্লটাবেব ভবিষ্যৎকালে
তু নিত্যং লৃঙেব কিংতরকতনৈর্গহায়াং লিঙ্ বিহিতঃ তত্র ভূতে
ক্রিয়ায়া অনিষ্পত্তৌ লৃঙ্ বা ভবতি। কো নাম র্যলং তত্রভবান্
যাজ্যিতুমাগমিষ্যৎ নম্বাবিষ্টবান্। পক্ষে লিঙ্ল্টাবেব এবং অক্ষাস্তাসম্ভাবনয়োশ্চ লিঙেব যাতু্য্দিষ্ট্যানি। এতদেশ কথং যুক্তাদিতি
পঞ্চক্ষ্।

⁽৮৪৪)। পূর্ববাগালিঙিত্যতানুবর্ততে অত আহ লঙেবেত্যাদি।
বেষ ছঙাদিয়ু লঙ্সংজ্ঞা পূর্বাং ক্তেত্যর্থঃ ভূতকালবিহিতয়োর্লঙ্লুঙোরীদৃশো বিষয়বিভাগঃ তেন অনদ্যতনে ভূতে অনেন পুরস্তয়তিরিক্তে।
অচৈনীদিতি চিঞ্ চয়নে সঙ্গমিদদগুরিত্যাদিনা বুদ্ধিঃ সঙ্কদাদান্তেরিত্যাদিনা ঈঙ্ সঙ্ষম্ অচৈষ্টামিত্যাদে ঘটবর্গাদিত্যাদিনা তম্ন টঃ
অস্পদ্ধিষ্টেত্যাদি ইঙ্চতুম্বিত্যাদিনা ইঙ্ অস্পদ্ধিষত ইতি আম্মনেহনত
ইত্যাদাদেশঃ অস্পদ্ধিধ্বমিতি ধাদৌ সিচশ্চেতি সঙ্লুক্।

৮৪৫। বসেরবিচ্ছিন্ননক্তংজাগরে চ। অত্র অক্সেন্ম অত্র রাত্রো জাগরিতোহস্মীত্যর্থঃ।

৮৪৬। সর্বকালে মাঙ্যোগে। মা কার্যীৎ। অঙ্গ্রিযোগে তু—মা কুরু না করিষ্যসি।

৮৪৭। অনদ্যতনেহপি বাক্যগম্যে।

ৃঅভূন্ন পো বিবৃধসথঃ পরন্তপঃ" ইতি ভট্টিঃ।

 ৮৪৮। সচ্শাদ্যন্তাদনিঙিগুপান্তাদদৃশঃ।
 অনিঙগুপান্তাচ্ছযসহান্তাদ্দৃশ্বর্জিতাল্লুঙি সজ্ভবতি। সঙ্গেং-পবাদঃ সজাদিঃ। দিশ্ অদিক্ষৎ অদিক্ষৎ অলিক্ষৎ। অদৃশ ইতি কিম্ ? অদ্রাক্ষীৎ।

⁽৮৪৫)। বস নিবাস ইত্যুমাৎ অবচ্ছিন্নক্রংস্কাগরে চ বাচ্যে লঙেব লুঙ্ সংক্ষককো ভূতকালে ভবতি। অনদ্যতনে ভূতে লঙ্বিবরে লুঙ্বিধানার্থং বচনম্। দিবসঃ সকলোংভিক্রান্তায়াশ্চ রাক্রেশ্চতুর্থো যামঃ আগামিস্তাশ্চ প্রথমো যামঃ এবোহদ্যতনকালঃ:অম্মিতিক্রান্তে সকলাং রাক্রিং জাগরিতমাহ অতাবাৎসমিতি এবঞ্চ সতি লঙ্ প্রাপ্রোতি তদ্বিরে লুঙ্বিধীয়তে অর্থোহপ্যস্তা নিয়ত এব অত আহ অতা রাক্রে জাগরিতোহমাতার্থঃ। অবাৎসমিতি ঙম্ সঙ্ অনিঙ্ হলস্তম্যেতি বৃদ্ধিং দেতোহচতুর্দ্বিতি সম্ভ তঃ।

⁽৮৪৬)। মাঙ্শকবোগে সর্ককালে ধাতোরুত্তরে লুঙ্ ভবতি।
বদ্যপি বিশেষবিধানদেব ভূতসামান্তে বিধানং ন সম্ভবতি তথাপি পূর্বস্ত্রবং অনদ্যতনে ভূতে লঙ্বাধনার্থমেতদিতি শঙ্কা স্থাৎ ত্রিরাসার্থং
সর্ক্রবাল ইতি কৃত্যু।

⁽৮৪৭)। যত্রানদ্যতনঃ পদসংস্কারবেলায়াং ন প্রতীয়তে পশ্চাদ্বাক্যেন গম্যতে তত্রাপি লুঙ্ ভবতি। অনদ্যতনে বিহিতেন লঙা অত্র বাধা ন ভবতীত্যর্থঃ। এতত্ত্ব লৃড়্বিধাবেব স্পষ্টং ব্যাধ্যাতমিতি।

⁽৮৪৮)। সজাদিরিত্যাদিপদেন সিচ্ অন্ অগ্ অঙ্ ইত্যেতেষাং গ্রহণম্ অদিক্দিতি দিশ্ অভিসর্জনে লুস্জাদ্যন্তেত্যাদিনা শস্ত বঃ

৮৪৯। আলিঙ্গনে শ্লিষঃ। আশ্লিক্ডার্য্যাম্।

৮৫০। স্পৃশ্রুষ্মৃশ্তৃপ্দৃপো বা । অস্থাক্ষীৎ অস্কং অক্কং অক্রাক্ষীৎ অতাপ্সীৎ অতৃপ্সং অদ্রাপ্সীৎ অদৃপ্যৎ।

যশ্চাস্থপেক ইতি যশু কঃ ইচ্জাদিত্যাদিনা যন্ত্য অধিক্ষাদিতি দিয় অপ্রীতৌ অলিক্ষদিতি লিহ আশ্বাদনে হোঢ় ইত্যাদিনা হশু যঃ বর্গশুদিনি বিত্যাদিনা যশু কঃ অদাক্ষীদিতি দৃশির্ প্রেক্ষণে সঙ্ রুদাদান্তেরিত্যাদিনা উঙ্ ভিত্যযে ইত্যাদিনা দ্রশাদেশঃ অনিঙ্ হলস্তম্যেতি বৃদ্ধিঃ পক্ষে অদর্শং। অনিক্ষ্ অদিক্ষিতি ল্গদ্ধোদেরিত্যনেনাপি সিদ্ধে নাচ্যবহন্তে ইত্যমান্ত্রনেপদমেব বিষয়ঃ তংগ্রতিষেধবিধানং জ্ঞাপন্তি সিজপ্যনেনেব বাধ্যতে ইতি তেনাদিক্ষত্ত্যোদৌ সজেব ভবতি বিকল্পিতেঙাহেয়ং যদা ইঙ্ নাস্তি তদা অনিঙ্ক্র্জেম্। গুরু অব্ক্ষত। অনিঙিতি কিম্ ও অগৃহীৎ অকোন্যীৎ ইগুপান্তাদিতি কিম্ ও সংগ্রহাদিতি।

(৮৪৯)। িষ্ আলিজন ইত্যশ্বাং আলিজনেহর্পে সজ্ ভবতি। আলিজনং প্রাণিনাং ক্রিয়াবিশেষঃ অনালিজনে তু পুষাদিয়াদগ্। "ক্ষণমানিয়্রদ্যটিতিশৈলশিখন কঠিনাং সমগুলঃ। স্তস্তম্পহিত্বিধৃতমসাবধিকাব-ধৃনিতসমস্তসংসদম্" ইতি মাঘঃ। আলিষজ্জুকাষ্ঠঞ্চ আয়নেপদে তু সিচ্ব্যত্যালিই জতুকাষ্ঠঞ্চ সংযোগমাত্রনত্রার্থঃ শ্রেষ্ প্রুষু প্রুষ্ দাহে ইত্য-স্থাত্রাগ্রহণমালিজনার্থাভাবাং।

(৮৫০)। স্পৃশ্রুষ্মৃশিত্যাদি লক্ষণং লুঙ্ সঙ্ চেত্যস্থানন্তরং
যুক্তম্। লিপিকরপ্রমাদাং সচ্ শাদ্যন্তাদিত্যস্থানন্তরং দৃশুতে। অতএব সচোবিকল্লবিধাননেতদিতি ভ্রমাং কেনাপি অদৃশ্পদিত্যদাহরণমপ্যত্র
লিখিতং তচ্চ ন কুত্রাপি ব্যাকরণে সিধ্যতি। লক্ষণার্থো ব্যাক্তিরতে
স্পৃশ্ সংস্পর্শে রুষ্ বিলেখনে মৃশ্ আমর্ষণে তৃপ্ প্রীণনে দৃপ্ হর্ষণমোচনয়োরিভ্যেতেভ্যঃ লুঙি সঙ্বা ভবতি। স্পৃশ্রুষ্মৃশিভ্যঃ সচি নিত্যে
প্রাপ্রে তৃপ্দৃপোঃ পুষাদিত্বাদ্যি প্রাপ্তে সঙ্বিধানম্। অস্প্রাক্ষীদিতি
সঙ্ রুতে প্রপাদিবা স্পাদেরিতি স্পাশাদেশঃ অনিঙ্হলন্তয়েত বৃদ্ধঃ

৮৫**১।** নাচ্যবহুত্ত্বে। অদিক্ষাতাম্ অদিকি। বহুত্বে তু। অদিকস্তু।

৮৫২। লিহ্ দিহ্ ছহ্ গুহামাত্মনে দস্ত্যেবা। অলিকত অলীঢ়। কমদন্ত্যে তু। অধুক্ষামহি।

৮৫৩। ঋদ্ধনশ্চাত্মনে সিচ্।

আত্মুনেপদে লুঙি পরে অনিঙিগুপাস্তাদ্দৃদস্তাদ্ধনশ্চো-

কীঙ্ অস্জান্যতেত্যাদিনা শশু যঃ যশ্চাস্থপেক ইতি যশু কঃ পক্ষে আস্পৃক্ষদিতি সচ্ অস্পাৰ্ক্ষীৎ কৃষ্ অক্ৰাক্ষীৎ অকাৰ্ফ্ষীৎ অক্ষৰৎ মৃশ্ অমা-ক্ষীৎ অমাৰ্ক্ষীৎ অসুক্ষৎ তৃপ্ অত্ৰান্ধীৎ অত্ৰান্ধীৎ অত্ৰপৎ পুষাদিখাদৰ্শ্ দুপ্ অদ্ৰান্ধীৎ আদাৰ্ক্ষীৎ পক্ষে অদৃপৎ ।

(৮৫১)। সজিতানুবর্ততে শুঙ্সমন্ধিনি বছম্বর্জিতে অচি পরে সচ্ন ভবতি। অদিক্ষাতামিতি উৎসর্গপ্রাপ্তঃ সিজেব যদি সচ্ স্থান্তদা এদন্তিদিত্যাকারস্থ এবং স্থাৎ অদিক্ষীত্যত্রাপি শুণঃ অদিক্ষন্তেতি যদা-ত্রাপি সজ্নিনেধঃ স্যান্তদা সিচ উত্তরস্থান্ত ইত্যস্থান্থনেখনত ইত্যত্রা-দাদেশঃ স্থাৎ। সচি তুসতি লুগচ্ভাদেরিত্যকারলুক্।

(৮৫২)। লিহ্ আবাদনে দিহ্ উপচয়ে ছহ্ প্রপ্রাণ্ শুহু সংবরণে এষানা মনেপদসংক্ষকে দন্তো লুঙি পরে সজ্ বা ভবাত। অলীটোত সজভাবপক্ষে ঝদ্দশতামনে সিজিতি সিচি ক্ষতে অঙ্নাদদ্যামিত্যাদিনা সিচ্লুক্ হোঢ় ইত্যাদিনা হস্ত ঢঃ ধোহধাতু গ্রাদিত্যাদিনা ওস্ত ধঃ ইউবর্গাদিত্যাদিনা ধস্ত ঢঃ ঢোরিত্যাদিনা চলুক্ দীর্ঘশত তবর্গ ইত্যেব ক্ষতে স্পষ্টপ্রতীতৌ সিদ্ধায়াং যদন্ত্য ইতি ক্ষতং তদ্পন্তে মিঠ্যস্যাপি:
বকারস্ত দন্ত্যগ্রহণেন গ্রহণার্থং তেন অলিক্ষারহি অলিক্ষ্ হীতি সিধ্যতি আলক্ষ্ থাং থাদ্ অলীটো অলিক্ষ্ বেম্ অলীট্ম্ প্রেমপর্মপ্রাহ্ম্। ১কারতবর্গবলসকারা দন্তাঃ। আত্মন ইতি কিম্ ও অলিক্ষ্ নিত্যমের সচ্।

(৮৫০)। অভিৎসাতামিতি ভিদির বিদারণে সঙি সতি গুণঃ স্যাৎ তরিবৃত্তার্থং সিচ্ বিধানম্ অভ্ৎসতেতি বুধ্ অবগমনে আত্মনে হনত ইত্যাদাদেশঃ তুর্যাক্ষম্ভূতীয় ইত্যাদিনা সকারত ভূপিতাং বৃদ্ধান্ত ত্তরে সিজ্ভবতি। অভিৎসাতাম্ অভুৎসত অক্ষাতাম্ <mark>আহসা</mark>≑-তাম্।

৮৫৪। গমেবা।

সমগংসাতাং সমগসাতাম্।

৮৫৫। যমোহপকারসূচনে। উদায়সাতাম্।

৮৫৬। স্বীকরণে বা। উপাযসাতাং উপাযংসাতাম্।

৮৫৭। শ্রিদ্রেশ্রকম্ণেঃ কর্ত্র্যান্। লুঙি সতি শ্রিদ্রেশকম্ণিঙক্তেভা উত্তরে কর্ত্র্যান্ ভবতি। আশি শ্রোয়ৎ অচকমৎ।

ভকার: বর্গন্যাদিরিত্যাদিনা ধস্ত তঃ আহসাতামিতি আঙ্পূর্বাৎ হন্তে: স্বাঙ্গকর্মকাজোদিতপাং যম হন ইত্যাত্মনেপদং তথোশ্চাঙিতী ত্যাদিনা নলুক্ অভিত্ত অক্বত আহতেত্যাদি প্রয়োগান্ ধাদৌ সিচ-শ্চেত্যত্র বক্ষাতি এতাবতা ধিবচন প্রয়োগা ইহ দর্শিতাঃ 1

- (৮৫৪)। আত্মনেপদে লুঙি পরে গম্ধাতোঃ সিজ্বা ভবতি। সমগংসাতামিতি সমোহকর্মগানেরিত্যাত্মনেপদং ভবতি। সঙ্পক্ষে ঙিতার পঞ্মলুক সিচ্পক্ষে তু ভবত্যেব।
- (৮৫৫)। যমু উপরম ইত্যন্মাৎ অপকারস্ক্রনেহর্থে বর্ত্তমানাদা-অনেপদে লুঙি পরে সিজ্ ভবতি। উদায়দাতামিতি পূর্বদান্মনেপদম্। অপকারস্ক্রন ইতি কিম্ ? আয়ংস্ত পাদং আরুষ্টবানিত্যর্থঃ।
- (৮৫৬)। অসম্ সম্ করণং স্বীকরণং তশ্বির্থে বর্তমানাদ্যম আব্রনেপদে লুঙি পরে সিজ্ বা ভবতি। উপায়ংসাতামিতি উপাদ্যমঃ স্বীকরণে ইত্যাত্মনেপদম্। তথাচ, "নোপায়ংস্ত ভয়ং সীতাং নোপায়ংস্ত দশাননঃ" ইতি ভটিঃ। অপরিত্যাগোহত্রার্থঃ বিবাহে এতদ্বিধানমিতি জ্বাদিত্যঃ।
- ় (৮৫१।৮৫৮)। অশিশ্রিরদিতি শ্রিক্সেবারাম্ভানি ক্ত:

৮<u>৫৮</u>। গ্যন্তে। স্বশিশ্রয়ৎ অপীপচৎ।

৮৫৯। খিধেটোর্বা। অশিশ্বিয়ৎ অশ্বয়ীৎ অদধৎ অধাসীৎ।

৮৬০। অণিঙ্বদা ঋতুপাত্তস্থ ণিঙন্। অঝুবৰ্ত্তৎ অধীবৃত্তৎ অমমাৰ্জ্তৎ অমীমৃজ্ত।

ইয়াদেশঃ অচকমদিতি কমু কাস্তো ষক্যচতৃষ্পি বেতি ণিঙ্ভাবপক্ষে কম্পেটো চান্নিঙিতি প্রথাদিয়াৎ সন্বৎকার্য্যাভাবঃ। ণিঙি অনি কতে প্রনারচীকমদিতি রূপং ণিঙ্নিমিত্ত এবাত্রান্ ভবতোবং প্রিঞাদিছ্যে পিঙ্জেভ্যোহন্ ন ভবতীতি শঙ্কা স্থান্তনিরাসার্থন্ অপ্রিশ্রাদিত্যুদাহতং প্রাঞাদিভ্য এব ণিঙ্জেভ্যোহন্ ভবতীতি শঙ্কানিরাসার্থন্ অপীপচদিতি উদাহত্য্। পচেণিঙ্জাদন্ দিফ্জিঃ প্রকৃতেী হুস্বঃ দিফ্জাবিদ্ধং শীর্থন্চ চ্চ্চে শ্রু গতৌ অহ্জবং অভ্যাহ্বং। অকর্ত্রি তু। অকার্য্যিন্ধাহাং কটো মিত্রেণ।

(৮৫৯)। ট্ওমি গতির্দ্ধােঃ ধেট্ পানে আভ্যাম্তরে কর্ত্যান্
বা ভবতি। অশিধিয়দিতি অনি ক্তে ইয়াদেশঃ অয়য়ীদিতি লুঙ্ ছঙ্
সঙ্ সঙ্কদাদীতাাদিনা ঈঙ্ ইঙাদেরীঙিতি সঙ্লুক্ য়য়তেঃ য়শ্চতি
পক্ষে অগ্ য়াদেশক অয়দিতি রূপম্। অদধদিতি এচোশ্লিতীত্যাত্বম্
অন্ দিকক্তিঃ গ্রন্থঃ দিককিছেতাবচ্চগি চেতি অকারলুক্ অধাসীদিতি
খোছোশোঘাংধেটাংবেতি সঙ্লুগভাবপক্ষে য়ময়মেত্যাদিনা সিঙ্ ইঙাদেরীঙীতি সঙ্লুক্ পক্ষে অধাদিতি রূপম্। অকর্ত্রি তু। অধিষাতাং
গাবৌ বৎসেন।

(৮৬-)। শকারোপান্তক্ত ধাতোঃ নিঙ্যুক্তো হন্ অণিঙ্বলা ভবতি। বচনসামর্থাৎ ণিঙ প্রাপ্তং প্রথমমিপ কার্যাং ন ভবতি অববর্তনিতি ণিঙ্বভাবপক্ষে গুলঃ যুক্তান্তবেন গুরুবেন ন সন্বদ্ধাবঃ। অবীর্তদিতি অণিঙ্বভাবার গুলঃ। অমমার্জনিতি ভিদক্তিতি বৃদ্ধিঃ অনেকবর্ণব্যবহিতাচ্থেন শাসাদিয়ার হুস্কঃ। ৮৬১। ৠদ্ব স্থোহণিঙ বন্তাবে। অচীকৃতৎ অচিকীর্ত্ত।

৮৬২। পুষাদ্যদিতোহগ্ পরস্থৈপদে।

পরশৈপদে লুঙি পরে পুষ্তাদে দিতশোর র কর্ত্রাগ্ভবতি।
অপুবং। পুষ্ শুষ্ তুষ্ দুষ্ শ্লিষ্ শক্ ঞিষিদা ক্রেধ্ ক্র্ধ্
শুধ্ ষিধু রধ্ ণশ্ মুহ্ ক্রেহ্ ফুহ্ ফিহ্ তৃপ্ দৃপ্ শম্ তম্
দম্ শ্রম্ অমু ক্রম্ মদী ভৃশু ঞিতৃষা অন্শু রষ্ কৃশ্ পুষ্
পুষ্ ঋষ্ হয় ক্রয্ অস্ যস্ত জন্ম তম্ব দিয় বিষ্ কুশ্ কুষ্
বুস্ শ্রম্ মিদি উঠ্ লুট্ ঞিমিদা ঞিকিল্দা ক্রিদ্ ঋষু গৃধু
ডিপ্ কুপ্ গুপ্ রুপ্ কুপ্ লুপ্ ফুপ্ লুভ্ ণভ্ কুভ্ তুভ্।
ছাতাদয়শ্চ পুযাদিঃ।

৮৬৩। ৯দিতঃ থল্পণি। গমৃ অগমং।

৮৬৪। পতেঃ পগুশ্চ

অপপ্তং।

⁽৮৬১)। পূর্নস্তব্রেণাণিঙ্বস্থাবো যদা ভবতি তদা ৠকারো ছুমো ভবতি। অচিকীর্ত্তদিতি কৃৎ সংশব্দনে ণিঙ্ ঙিতিচোপাস্ত ইতি ইব্ রাস্তাদেরিত্যদিনা দীর্ঘঃ লুঙ্ হঙ্ অন্ দ্বিক্ষক্তিঃ অচীক্তদিতি হুমুম্বে তৃ অণিঙ্বস্তাবাৎ ন গুণঃ দ্বিক্ষক্তিঃ ধাদদিত্যকারে চ সন্বজ্ঞাবা-দিম্বং দীর্ঘণ্ড

⁽৮৬২।৮৬৩)। পুষ্ পুষ্টাবিতি দিবাদৌ ভ্বাদৌ ক্র্যাদৌ চ পঠাতে অত্র দিবাদাস্তর্গণো গৃহতে স চ দর্শিত এব ছাতাদয়শ্চেতি ছাৎ আদীপ্রৌ ইত্যাদি রুপূ সামর্থ্যে ইত্যস্তা ভাদ্যস্তর্গণপঠিতা অপি ছাতা-দয়শ্চ পুষাদিগণে দ্রন্থতাঃ। পরশ্বেপদ ইতি কিম্?, ব্যাদ্যোতিষ্ঠ লুঙি-ছাতাদেরিতি আত্মনেপদং পক্ষে।

⁽৮৬৪) । পতৃ গতৌ পঠাতে ১দিন্তাদগ্সিদ্ধ এব পপ্তবিধানার্থং বচনম। বৃদ্ভি পরে পক্তেঃ কর্ত্তব্যগ্ভবতি। পতেঃ পপ্তাদেশক।

৮৬৫। ইরিদ্গ্লুচাদেব।
৮৬৩ ব্যতঃ শ্বন্ত।

রুধির্ অরুধ অর্নেৎসীৎ অগ্লুচৎ অগ্নেচীৎ। গুচু গুন্চু মুচু মুন্চু স্তন্ভু। অশৃৎু অশ্বীং।

৮৬৭। খ্যাতেরাক্সনে চ।

আখ্যৎ আখ্যেতাম্।

ৰ্চিঙ্গ। অনিচ্ছাৰ্থশাসোঃ শিস্চ। অশিষৎ ব্যত্যশিষত।

⁽৮৬৫)। ইর্ ইন্গচ্ছতি যস্ত স ইরিৎইরিদ্ধাতোগ্লু চাদেশ্চ পরক্মৈন পদে লুঙি পরে কর্ত্তগ্রগ্ভবতি বা।

⁽৮৬৬)। শ্বরতেঃ কর্ত্রগ্র্প্রতি। তৎসন্নিগোগশিষ্টশাদেশ-চ হলস্তোহ্যমাদেশঃ। অরৌৎদীদিতি ক্ষিরাবরণে শকাদি শ্লাদিঙভাবঃ অনিষ্কর্পর রন্ধিঃ ঈঙ্ মৃচ্ প্রেরকরণে মৃচ্ মুন্টু মুন্টু গতি পঠাতে অনভ্রিতি সোত্রো ধাতৃঃ টুওবি গতির্দ্যোরিতি মুচাদিঃ মুচেরমুচৎ অমৌ-চীৎ। মুন্চেরগি কতে মুঞ্চো বেতি নকারলুক্। অমুচৎ অমুশ্রদিতি অগভাবপক্ষে অমুশ্রীদিতি মুঞ্জেরের অমুচদিতি সিদ্ধেঃ মুচেরম্বিধানমর্থভেদ প্রতিপত্তার্থং ধাতৃনামনে কার্থছাদেবার্থভেদপ্রতিপত্তিরপি ভবিষ্যতি কং মুচেরপাদানেনিতি চোদ্যন্ত ন হলমুশ্রম্ আল্লনেপদে তু স্বরিতেছাদাস্থনে-পদম্ ঋদ্ধন ইত্যাদিনা সিচ্ অঙ্যাদিত্যাদিনা সিচ্লুক্।

⁽৮৬৭)। খ্যাতীতি খ্যা প্রকণনে ইতাস্ত খ্যাঞ্ ক্শাঞোঃ
চিক্ষিঙ্ইতি খ্যাদেশস্য চ গ্রহণম্। খ্যাতেঃ প্রশৈপদে আস্থানেপদে
চ লুঙি পরে অগ্ভবতি। আখ্যাদিতি অগি ক্তে দিকজিহেতাবচাগি
চেতি আকারলুক্ আখ্যোতামিতি অগি ক্তে এদিঙিদিত্যাকারসৈকারঃঃ
আঠিচদাদিবিত্যাকারলুক্।

⁽৮৬৮)। আঙ্শাস্থ ইচ্ছারাং শাস্থ অন্ধশিষ্টো বরমদার্দৌ। পঠাতে প্রথমনির্ত্তার্থম্ অনিচ্ছার্থমিতি বিশেষণম্। অনিচ্ছার্থশাসোরান্ধনেপদে। পরস্থাবনে চ লুঙি পরেহগ্রুবতি। শাসোঃ স্থানে শিসাদেশত।

৮**১৯। অস্তেরস্চ।** আস্থপর্যান্থেতাম।

৮৭০। বচো বোচ্চ।

অবোচৎ অবোচত ধর্মঃ স্বয়মের ৷

৮৭১। লিপ্ সিচ্হেবঞাম্।

যলিপৎ অ**সিচৎ অহবৎ**।

৮৭২। আলুনে বা। অলিপ্ত অলিপত।

অশিষ্দিতি শাসিবসিঘ্দীত্যাদিনা যত্বং ব্যত্যশিষ্ততেতি কর্ম্ব্যতীহারে ইত্যাদিনা আত্মনেপদম্।

(৮৬৯)। অস্যতীতি নির্দেশ্যেষ্ ভূবীত্যন্ত নিরাসার্থঃ। অফ্-ক্ষেপণ ইত্যন্ধাং প্রন্মৈপদে আত্মনেপদে চ লুঙি পরে অগ্ভবতি। অস্যতেঃ স্থানে অস্থাদেশক। অন্ততঃ পুযাদিপাঠাদেব অগ্লিদ্ধ আত্মন-পদার্থম্ অস্থাদেশার্থক বচন্ম্। পর্যাস্থেতামিতি লুঙ্ আতাং বোপসগা-হুহাস্তত্যোরিতি আত্মনেপদং শেষং পূর্কবিং।

- (৮৭০)। বচ্ ভাষণ ইত্যম্মাৎ ক্রবো বচাদেশস্ত চ গ্রহণং বচেঃ পরসমিপদে আত্মনেপদে চ লুঙি পরে অগ্ভবতি। বচঃ স্থানে বোচাদেশন্চ। অবোচত ধর্মঃ স্বয়নেবেতি কর্মবিৎ কর্মকর্তেতি কর্মবন্ধাবাদাগ্রনেপদং গ্রন্থ শ্রন্থ ব্রাণায়েত্যাদিনা ইণ্ নিষেধঃ।
- (৮৭১)। লিপ্সিচ্হ্রেঞামিতি বিভক্তিবিপরিণামৎ পঞ্চ্যার্থে বজী। লিপ্ উপদাহে সিচির ক্ষরণে হ্রেঞ্ স্পর্দায়ামেতা উত্তরে পরবৈপদে লুঙি পরে অগ্ভবতি। উত্তরস্ত্রে আত্মনেপদে বিকল্পনামাৎ পরবৈপদে বিধিরয়ন্। অহ্বদিতি দিক্তিহেতাবচাগি চেতানেন আকারলুক।
- (৮৭২)। এতা উত্তরে আত্মনেপদে লুঙি পরে অধা ভবতি। আনিপ্ত ইতি স্বরিতেম্বাদান্মনেপদম্ ঋদন কাম্মনে সিজিতি সিচ্ অঙ্যাদিত্যা-দিনা সিচ্লুক্।

৮৭৩। ঋস্রোরঙ্। মা বিপ্রোহরৎ অসরৎ।

৭৭৪। আত্মনে বা।

সমারস্ত মমাভীষ্টা সংকল্পাস্থ্যুপাগত ইতি ভটি: । মা সম্যত।

৮৭৫। জুদৃশোব**া।** অজরৎ অজারীৎ অদর্শৎ অদ্রাক্ষীৎ।

৮৭৬। সঙ্যধিজাগুর দ্ধিরিগন্তস্থা। পরশ্মৈ সঙি সতি শিজাগৃবর্জনিগন্তস্থা ধাতোর দ্ধির্ভবতি।

⁽৮৭৩)। ঋ স্প গতৌ হ্বাদিঃ ঋ গতৌ প্রাপণে চ ভাদিঃ দ্বয়োরপি গ্রহণম্ আভ্যামুভরে লুঙি পরে২ঙ্ ভইতি। ভ্যাদেন গ্রহণমিতি চাক্রাঃ তত্র আর্ষীৎ মা বিপ্রোহরদিতি অঙি ক্বতে গুণঃ মাঙ্যোগাৎ বৃদ্ধিরজাদে-বিতানেন বুকাভাবঃ।

⁽৮৭৪)। ঋসভাামুন্তরে আগ্নেপদে লুঙি পরে অঙ্ভবতি বা। সমারস্তেতি সমোহকর্মগমাদেরিত্যাত্মনেপদম্ অঙি ক্তে গুণে চ বৃদ্ধির-জাদেরিতি বৃদ্ধিঃ। মা সম্ধতেতি ঋদ্ধন ইত্যাদিনা সিচ্ আগ্নেহনত ইত্যাৎ মাঙ্বোগে বৃদ্ধাভাবঃ।

⁽৮৭৫)। জুদূশিভাং পরশ্বৈপদে লুঙি পরে অঙ্বা ভবতি। অদ্রাক্ষীং অনুর্শিং দৃশির প্রেক্ষণে ইত্যন্ত ইরিতি শাস্তান্তরগণদর্শনাং প্রমাদক্ষতং যত ইরিং কার্য্যমত্র নান্তি দোষপ্রসঙ্গ এব পরম্ ইরিজ্বংপি সতি পক্ষেহিগি দ্যতি গুণনিষেধাইপি স্থাং।

⁽৮৭৬)। পরশ্বৈপদসম্বনিঃ সঙোহবস্থিতিরেৰ বৃদ্ধিনিমিত্তং নতু পরস্বমিতি স্চয়িত্বং দঙি সতীত্যুক্তং তেন ইঙ্ব্যবধানেহপি বৃদ্ধির্ভবতি। অথবা সঙি পরে বৃদ্ধৌ ন দোষঃ যদয়ং খিলাগ্রোঃ প্রতিষেধং করোতি তজ্জ্ঞাপয়তি ইঙ্ব্যবধানেহপি বৃদ্ধির্ভবতীতি। উত্তরস্ত্রে হলস্তম্ভ বৃদ্ধি-বিধানাৎ পারিশেষ্যাৎ অজস্তম্ভ অনেন বৃদ্ধির্ভবিষ্যতি কিমিগস্তম্ভেত্য-নেন এবঞ্চ সতি গৌরিবাচারীৎ অগবীৎ ইত্যুত্রাপি বৃদ্ধিঃ স্থাৎ অবাদেশে

অটেষীৎ অলাবীৎ অকার্যীৎ। অশ্বিজাগুরিতি কিম্ ? অশ্বয়ীৎ অজাগরীৎ।

৮৭৭। নোব**র্হস্ম।** শুধুবীৎ।

৮৭৮। অনিঙ্হলন্ত ।

পরস্মৈ সঙি সতি অনিঙ্হলন্তস্ত ধাতোর দ্বির্ভবতি। অপাক্ষীৎ অভাঙ্ক্ষীৎ অভৈৎসীৎ অরোৎসীৎ। অনিঙিতি কিম্ ? অকে।বীৎ।

৮৭৯। লান্তাদেরগুর্বতঃ। পরশ্মৈ মঙি সতি লান্তরান্তাদেরগুর্বতো বৃদ্ধির্ভবতি। অচালীৎ

কতে পাক্ষিকী বৃদ্ধিঃ। অটেঘাদিতি চিঞ্ চয়নে শকাদিত্বাদিঙ্নিষেধং সঙ্ ক্ষাদীত্যাদিনা ঈঙ্। অলাকীদিতি লৃঞ্ ছেদনে ইঙাদেরীঙীতি সঙ্লুক্। অজাগরীদিতি নিষেধসামর্থ্যাছত্তরলক্ষণপ্রাপ্তা বৃদ্ধিন স্থাৎ। আয়েনে তুচুাঙ্ অচ্যোষ্ট।

- (৮৭৭)। পূর্দ্রেণ প্রাপ্তা বৃদ্ধিকবর্ষ ন ভবতি। অর্থং যোগ্যতামাত্রং যত্র উব্ ন ভূতো যোগ্যতান্তি তথাপি প্রতিষেধঃ। অগুষীৎ অঞ্বীৎ। অধুবীদিতি ধ্বি ধ্ননে কুটাদিবর্জাং ডিভিঙ্কদন্ত ইতি কুটা-দিন্তেন বৈক্যাদিকাভাবাছব্।
- (৮৭৮)। অপাক্ষীদিতি ডুপচ্ব্ পাকে চজোঃ ক ইতি চ্ন্স কং ইগন্তক্য বৃদ্ধিক্তনা অতা হলস্কলৈব অনেন ভবিষ্যতি কিং হলস্তম্ভেত্য-নেন তং কৃতন্ অনেকহল্ব্যবধানেহপি বৃদ্ধার্থন্। অত্ত সন্ধিহিতালাভে ইতি পরিভাষা হি ন প্রবর্ততে অতএবোদাজহার অভাক্ষীদিতি। অভৈৎসীদিত্যাদিগুণে প্রাপ্তে গুণং বাধিষা বৃদ্ধিঃ। অকোষীদিতি কুষ্ নিক্মর্ষে ইঙিত্যুপলক্ষণন্ তেন ইটি অবিচাৎ সিঙি ব্যরংসাঁৎ আছানেপদে সঙি তু অপক্ষত অপক্ষাতান্। অপ্রাক্ষীদিত্যাদে প্রজাদেশে ক্তে বৃদ্ধিঃ।
- (৮৭৯)। ল্চর্চ লােু) তাবস্তো যশ্ন লাক্তঃ আদিপদেন বদ্-ব্রন্থার্হণম্। অচালীদিত্যাদি চল্কম্পনে চর্গত্যর্থঃ বদ্ ব্যক্তারাং কাতি বজ্বজ্গতৌ বিকল্পোধে নিতাং বৃদ্ধিঃ। মা ভবান্সীদিত্যব

স্মচারীৎ অবাদীৎ অব্রাজীৎ। ল্রাস্তাদেরিতি কিম্ ? মা ভবান-সীং। স্কুর্বত ইতি কিম্। অবল্রীং।

৮৮০। এদিদ্যমহান্তশ্বস্কণ্বধ্বর্জমিতি হলাদ্যেকাচাং বা।
অপঠীৎ অপাঠীৎ। অহলাদেস্তা। মা ভবানটীৎ। অনেকাচস্তা। অচকাসীৎ। এদিদাদেস্তা। ষ্ঠগে অস্থগীৎ। যান্ত,
অব্যায়ীৎ। মান্ত, অবমীৎ। হান্ত, অগ্রহীৎ। শ্বস্, অশ্বসীৎ।
ক্ষণ, অক্ষণীৎ, বধ্, অবধীৎ।

তু অপ্রাপ্তি: অবশ্রীদিতি অভ্বভ্মভ্চব্ গতার্থাঃ অনেকবর্ণবাবহিতেহপি বৃদ্ধির্বতীতি প্রতিপাদিকমেব।

(৮৮०)। ব্যাখ্যানতো বিশেষ প্লতিপত্ত্যা বধেতি আদেশস্ত্রৈব গ্রহণং মাগুল। একার ইদ্যল স এদিৎ এদিতে। যকারমকারহকাবাস্তান খুস প্রাণনে কণু হিংসাযামিত্যেতৌ বধাদেশঞ্চ বর্জ্জন্মিত্বা পরবৈ সঙ্ভি ইঙি চ পরে হলাদ্যেকাচাং ধাতৃনামগুর্বতো বৃদ্ধির্বা ভবতি। পূর্ববস্থুত্রেণ অনিত্তি বৃদ্ধৌ বিহিতায়াম্ অনেন দেঙ এব ভবিষ্যতি কিমিঙিতানেন তৎ ক্রিয়তে স্পষ্টার্থম্। মা ভবানটীদিতি অট্ গতৌ পঠ্যতে মাঙ্যোগা-দঙভাব: অভি সঙি রুদ্ধৌ কতায়াম্ অকতায়াঞ্ বিশেষো নাস্তীতি মাঙ্-যোগ উদাহতঃ অচকাদীদিতি চকাস্থ দীথ্যে চকারপবস্থাকাবস্থ বৃদ্ধিঃ স্থাৎ। নমু হলম্বগ্রহণেন অনেকহলব্যবধানেহপি বৃদ্ধির্ভবতীতি প্রতি-পাদিত্য অত্র পুনবচো হলক ব্যবধানেন ভবিষ্যতীতি কিমেকাচ্ গ্রহণেন তৎ ক্রিরতে স্পত্তীর্থম। অস্থগীদিত্যাদি ষ্ঠগে সংবরণে ব্যয়্ গতৌ টুক্ম উদিগরণে গ্রহ্ উপাদানে গ্রহেরীঙ্ঙিতি খঙ্ বর্জমিতি ঈঙি ক্লতে প্রাপ্তেরভাবাৎ অগ্রহীদিতি প্রত্যুদাহরণং প্রমানক্তম্। অবধীদিতি হনোবধিলু ভাশিঘোবিতি হজেব ধিরাদেশঃ বধবর্জনসামর্থ্যাৎ স্থানি-वद्यावात्र हेड निरवशः अज्ञथा अनिङ्घाद्य निरवर मिरक वशवर्कनम-मर्श्वकः छार। अधर्मिराज्यः। अत्रकोर तक्ष्मानान। अञ हेराज्यः। অকোষীৎ।

৮৮১। সঙ্লুগিণাদেঃ।
পরশৈরপদে লুঙি পরে ইণাদেরুত্তরঃ সঙ্লুগ্ভবতি। আগাৎ অধ্যগাৎ অগাতাম্ অগুঃ। ইণ্ ইক্দা ধাঞ্দো দান পিবতি স্থা ভূ ইণাদিঃ।

৮৮২। সেচ্ছোশোড্রাধেটাং বা। অসাৎ অসাসীৎ।

৮৮৩। ধাদৌ সিচশ্চ। ধাদৌ পরে সঙঃ সিচশ্চ লুগ্ভবতি। অলবিঢুম্।

৮৮৪। অঙ্যাদদৃদ্ত্যাং স্থাদীঙশ্চাঙ্যে। অভিত্ত অপাক্তাম্ আহত অকৃত সমস্থিত। ঙ্যাতু। অংমস্ত অকাঠিমি। ঙে্য ডু। অভিৎস্থহি অকৃস্থহি।

⁽৮৮২)। অগাদিতি ইণ্ গতো ইণিকোর্গা ইতি গাদেশঃ ইক্
শারণে ডুদা ঞ্দানে ডুধা ঞ্ধারণপোষণয়োঃ দোহবখগুনে দাণ দানে পা
পানে হা গতিনিবৃত্তো ভূ সন্তায়ামিতি ইণাদিঃ পিবতীতি গণে নির্দেশঃ পা
রক্ষণ ইতার্গ্ত নিরামার্থঃ আত্মনেপদে ডু অগাসাতাং গ্রামৌ দেবদত্তন।

⁽৮৮২)। যোহস্তকর্ষণি ছো ছেদনে শো তন্করণে ঘা গন্ধো-পাদানে পেঁট্ পানে ইত্যেতেভাঃ পরস্থৈপদে সঙ্লুথা ভবতি। অসাসীদিতি যন্রমিত্যাদিনা সিঙ্ইঙাদেরীঙিতি সঙ্লুক্ এবম্ অচ্ছাৎ অচ্ছাদীদি-ত্যাদি। আস্থানেপদে তু অসাসাতাং রিপু রাজ্ঞা।

⁽৮৮০)। অলবিচুমিতি সঙ্লুক্ ইড়িঙস্তাবেতি ধস্ত চঃ পক্ষে অলবিধ্বম্। ধেতোবেতি সলুগাপি দিধ্যত্যেব তন্নিরাসার্থস্ত লক্ষণম্। অধ্যগীচ্বমিতি লিটি চেকো ধো ঢ় ইতি ধস্ত চঃ পাক্ষিকতকারে অধ্যগী-জমিত্যপি স্তাৎ দিজ্গ্রহণমুক্তরার্থম্।

⁽৮৮৪)। ঙ্যব্যতিরিক্তাদ্ধলঃ অকারাৎ ঝকারাচ্চ স্থাদিসম্বিদ্ধিন ইঙ্ক্ষ পরস্ত সঙঃ সিচক্ষ ঙ্য্ব্যতিরিক্তে হলি পরে লুগ্ভবতি। অভিনেতি তিদির্ বিদারণে স্বরিৎঞিতোরিত্যাদিনাত্মনেপদম্ ঋদ্ধন-ক্ষাস্থনে সিন্ধিতি সিচ্ অপাক্তামিতি পচেলু্ঙ্তাঙ্ অনিঙ্হলস্তত্তি

৮৮৫। ইঙাদেরীঙি। অবাদীৎ বীবিচীৎ।

৮৮৬। তনাদেস্তথাসোর্বা। অতত অতনিষ্ট অতথাঃ অতনিষ্ঠাঃ অসাত অসনিষ্ট।

৮৮१। न अंतरेया एउ।

যৃযমতনিষ্ট ।

বৃদ্ধি: আহতেতি স্বাঙ্গকর্মকাক্রেত্যাদিনা আত্মনেপদং সিচ্ তথাে গাঙিতীত্যাদিনা নকাবলুক্ নলােপাৎ পূর্বং ঙ্যাস্কমাদেবাপ্রাপ্তিঃ অক্তেতি
ক্রঞ্জ সিচ্ সমস্থিতেতি সংপ্রব্যবেভাঃ স্থ ইত্যাস্থানেপদং ত সঙ্ স্থাদাধাধেট্ ইত্যাদিনা ইঙ্ স্থাদিপদেন এতেযাং গ্রহণম্ ইঙাদাবিত্যাকারলুক্।
বস্ধাত্যাস্ত অপেক্ষিতবিধিয়াৎ সেতােহচতুর্দি তি তকাবং কৃত্যা সঙ্লুক্।
অবাক্রামিতি। অমংস্তৈতি মন্ জ্ঞান্ধন শকাদিম্বাদিঙ্ভাবঃ অপদান্তস্তেত্যাদিনা অক্সম্বাবঃ অকাষ্ঠামিতি সঙাম্বিলাগুবিত্যাদিনা বৃদ্ধিঃ বাস্তম্মাও
ঙ্যাস্তম্ম্ অভিৎস্থতি অক্সমহীতি বকাবমকাবৌ ঙ্যৌ অঙ্য ইতি পদেন
গুযব্যতিবিক্তোংস্থা হল্ গৃহতে তেন অভিৎসাতাম্ অক্সমতামিত্যক্র লুগ্ন
ভবতি। স্থানিতিবিশেষণং কিমর্থম অলাবিষ্টাম্।

উতক্ষেতি বক্তব্যম্। উতক্চ পবস্থ সঙঃ সিচক অঙ্যে হলি পবে দুগ্ভুবতি। কুঙ্শকে ক্টাদিয়াৎ গুণাভাবঃ অকুত।

(৮০৫)। ইঙাদেকত্তরশু সঙঃ সিচণ্চ ঈঙি পরে লুগ্ভবতি।

অবাদীদিতি অশকাদিখাদিঙ্ ল্রাস্তাদেবগুর্বত ইতি বৃদ্ধিঃ সঙ্ কদাদ্যস্পেরিত্যাদিনা ঈঙ্। ব্যবিচীদিতি বিপূর্বাদ্যাচেঃ ব্যচাদেবিট্ ইতি ইট্
বশাদেরশাদিরিতি বিচাদেশঃ আদিপদেন ঈঙ্সিচোরপি গ্রহণাৎ অগ্রহীৎ
অধাসীৎ।

(৮৮৬)। তনাদের তরস্ত ক ও: সিচণ্চ তথাসো: পরয়ো: লুখা ভবতি অততেতি তত্ম বিস্তারে আত্মনেপদৈকবচনং ত সঙ্লুক্ সঙ্লোপেহধ ইত্যাদিনা ইঙ ভাব: তথোণেচত্যাদিনা নকার লুক্। অসাতেতি ধণু দানে অভিত্তথোনিত্যমিতি নকারস্থাকার:।

(৮৮৭)। ত ইতানেন পরবৈপ্রপ্রধানপুক্ষবত্বচনস্তাপি গ্রহণে

bbb। न कृष्णः।

অকৃত অকৃথাঃ।।

৮৮৯। ইণিকোর্গাঃ।

লুঙি পরে ইণিকোঃ স্থানে গা ভব্তি। অগাৎ অধ্য-

৮৯০। লীলীঙোল বা ।
লুঙি,পরে লীলীঙোঃ স্থানে লা বা ভবতি। অলৈষীৎ অলাক সীৎ অলেষ্ট অলাস্ত।

৮৯১। লৃঙি চোঙোগীঃ। লুঙি লৃঙি চ পক্লে ইঙঃ স্থানে গীর্বা ভবতি। অধ্যৈষ্ট অধ্যগীষ্ট অধ্যৈয়ত অধ্যগীষ্যত।

প্রাপ্তে এতিবেধ:। পরক্ষৈপদে তে পরে তনাদেরজ্বরশু সঙঃ সিচশ্চ লুগ্ভবতি। থাসঃ সাহচর্য্যাৎ পরক্ষৈপদতকারাগ্রহণে সিদ্ধে পরক্ষৈগ্রহণং স্পটার্থম্।

(৮৮৮)। তথাদো: প্রয়ো: ক্ঞ: সঙ: সিচশ্চ লুগ্ন ভবতি। অনন্তর্থাতনাদিকেন বিকল্পপ্রাথো লুগনেন বাধ্যতে। অঙ্যাদদূভ্যামিত্যনেন ভূ সিচ্লুক্ নিতামেব ভবতি। অক্তেতি ঋদনশ্চাপ্রনে সিজিতি
সিচ্ক্ঞো লুগভাবপক্ষে অঙ্যাদিত্যাদিনা লুগ্ভবিষ্যতি কিং লক্ষণেনেতি
তৎ কৃতং স্পন্তীর্থম্। নিতাবিধিং বাধিমা বিকল্প এব ভবতীতি মন্দ্ধিয়াং
শক্ষা ত্রাৎ।

- (৮৮৯)। পুঙিতি কেবলমন্থবৰ্ত্ততে তেনাস্থনেপদে অগায়ি অগাতাম্ অগাদিতি ইন্ গতৌ অবাগাদিতি ইক্ সমানে।
- (৮৯০)। শী দ্রবীকরণে ক্র্যাদিঃ অদাদিঃ শী শ্লেষণে শীঙ্ শ্লেষণে দিবাদিঃ ত্রয়াণামপি গ্রহণম্। অবৈষীদিতি সঙ্যাধিজাগুরিত্যাদিনা বৃদ্ধিঃ।
- (৮৯১)। অধ্যৈষ্ট অধ্যৈষ্যতেতি বৃদ্ধিরজাদেরিতি বৃদ্ধিরিকারস্থৈকারঃ। অধ্যগীষ্ট অধ্যগীষ্যত ইতি দীর্ঘবিধানসামর্থ্যার গুণঃ।

৮৯২। দ্বিরেদদেন্টচেন্টোরনি। শ্বনি প্রীরে বেফচেন্টোর্দ্বি ক্রক্তিরেদদা ভবতি। অবিবেইছিৎ অববেইছিং।

৮৯০। অগ্রুরাবপ্রথাদেঃ সন্বল্লিঘুণ্, দীর্ঘশ্চ।
অনি সত্যপ্রথাদেরগুরো ধারুংশে পরে দিরুক্তিঃ সন্বপ্তবতি।
লিঘুণ্ দীর্ঘশ্চ। দীর্ঘো দীর্ঘুক্যুক্তান্তো গুরুঃ। অপীপচৎঅদীদপৎ পূঙ্ অপীপবৎ ল্ঞ্ অলীলবৎ শ্রু অশুশ্রবৎ অশিশ্রবৎ
বিদ্ অবীবিদৎ চুদ্ অচ্চুদ্ধ।

৮৯৪। ণিঙ্লুকি চ। বাদিতবন্তং প্রযুক্তবান্ অবীবদদ্বীণাম্। অগুরাবিতি

⁽৮৯২)। বেষ্ট্রের চেষ্ট্রেরাং ণিঙ, লুঙ্ অন্বে ইত্য-নেন দ্বিফক্তিঃ হ্রস্বাদেশে ক্তে একারশ্র ইকারঃ পক্ষে অকারশ্র ইনিতি কর্ত্তব্যে এদিতি কুর্বাণেন বর্ণনাঘ্বাৎ প্রক্রিয়ালাঘ্রমের আফার্যান্ত্রীষ্ট্রিতি স্টিতম।

⁽৮৯০।৮৯৪)। সন্বদিতি সপ্তম্যর্থে বং সনি পরে যাদৃশী হিন্ধ-জিরনি চ তাদৃশী ভবতি। সনি বিহিতং বিক্ষজিকার্য্যমপি ভবভীতার্থঃ কিন্তং অপীপচদিত্যাদৌ ইবিরদিতানেন ইকারঃ অপীপবদিত্যাদৌ উৎ প্রক্রেডাঙেলো চোপস্ত ইতি বিক্জেণ কতায়াম্ উরস্বৎ পবর্গ সংলজে ইতি উকারশ্য ইবন্। অশিশ্রবং অপ্তশ্রবদিতি শ্রুক্ত প্রাণ্ বিভ্নানি বেতি উকারশ্য পাক্ষিক্ষিত্বং লিঘুণ্ দীর্ঘশ্রেতি পৃথগেব এতদাকাং তেন যত্র সন্বকার্যাং ন বভতি তবাপি দীর্ঘো ভবতি এতনেব ক্ষচিয়্তুম্ অবীবিদং অচুচুনদিত্যদাহতম্। গুরৌ তু পরে ন দীর্ঘঃ। অবিভক্ষত । ইণ্ দীর্ঘশ্রেতি কর্তব্যে যল্পিণ্ ইতি কৃতং তল্প্রাপমতি লথুগুরুসংজ্ঞ্যোস্থানেশা নাস্তি তেনাচিক্ষিপনিতি অত্র ন দীর্ঘঃ বিক্তিমাত্রবিহিত্ত সন্বংকার্যাং ভবত্যেব এতাবতা অলিভ্রপদিত্যক্র জ্ঞপোর্শিঙ্গোপন্টেভি কিন্তনোপ্যে ন ভবতি ন হি তেন বিক্তিমাত্রে কার্যাং কিন্তু প্রক্রতান

কিম্ ? অননাথং অররক্ষং । অপ্রথাদেরিতি কিম্ ? অপপ্রথং ।। প্রথ ্যাদ স্পৃশ্ ঞিহরা মু দৃ স্তু প্রথাদি:।

৮৯৫। অগ্গ্নাম চ।

ঘটং ক্তবান্ অজঘটৎ দৃশদমাখ্যাতবান্ অদদুশৃৎ।

৮৯৬। হলিকলিবর্জমিণন্তনাম বা।

পটুমাখ্যাতবান্ অপপটৎ অপীপটৎ কবিমাখ্যাতবান্ অচীকবৎ

বেব মুখ্যং কার্যাং তৎসন্ধিলোগশিষ্টন্ত বিফক্তিলোপাদিকার্য্য । শুরুজ্ঞানে হি তৎ প্রতিষেধাথপি জ্ঞায়তে ইত্যুপক্ষেপালতং শুরুলকণমাহ। দীর্যো। দীর্যা দীর্যা দীর্যা যুক্তান্তলচ শুরুর্ভবিতি আ ঈ উ শ্লাএ ও ঐ ঔকারা দীর্যা হৈতি প্রাপ্তকম্। দীর্যাস্থ শুরুত্বে ঈহাঞ্চকে ইত্যাদৌ শুবিজাদেরি-ত্যাদিনা গুম্ দীর্যাসহিতো যুক্ দীর্যাযুক্ তহ্ম শুরুত্বাদের অবলাজনিত্যাদৌ অশুরাবিত্যাদিনা ন সন্বত্তাবং যদি দীর্যাস্থিতি ন ক্রিয়তে তদা অশুরাবিত্যাদিনা প্রতিষেধঃ একবর্ণব্যবহিত এব শুরৌ অননাথদিত্যাদৌ স্থাং নতু বর্ণব্যবহিতে। যুক্তোহস্তো যুশাৎ স যুক্তান্তঃ অন্তশুরুং সমীপরাচী মন্মান্তরেঃ সনিহিতো যুক্তো বর্ণ ইত্যর্থঃ লঘ্বাথ্যা তু শুরুপরিশিষ্ট্যাদেরাত্রাব্যবহিত যুক্তো বর্ণ ইত্যর্থঃ লঘ্বাথ্যা তু শুরুপরিশিষ্ট্যাদেরাত্রাব্যবহিত । বদা ণিঙস্তাৎ নিঙি ক্রতে তদা ণিঙ্ লুকি চ সতি সন্বৎ কার্যাং দীর্যাপ্ত ক্রিয়তে। নৈতলক্ষণং কিন্ত উদাহরণস্থ বিষ্যোপদর্শনমাত্রম্। পূর্ক্যক্তেলৈব প্রাপ্তিঃ প্রথাদিন্তমত্র ন সম্ভবতি উত্তর্বত্রে নামগ্রহণাৎ। প্রথ্ প্রথ্যাণে শ্রদ্ মর্জনে স্কৃত্ত্রিত ত্র বায়ন্তর্পা সন্ত্রমে স্থিতির বিদারণে অনুক্র আচ্ছাদনে স্থ ইত্যস্ত তু স্বাদের্থ্যস্ত্র অভিন্তর্নিতি।

हकारमज्ञर्तार्जन्छ अथानिषः वक्तवाम्। अहहकामः रखीन् नवरं।

১৮৯৫.)। অক্লুগ্যস্তদগ্লুক্ অগ্লুগ্নাম চ প্রথাদির্ভবতি। অজঘটাদাত নামস্তৎ করোত্যাদাবিত্যাদিনা বিঙ্ অকারলুক্ নাম-ধাতৃশ্চ বছলমিতি কথাদিখাঘৃদ্যাভাবঃ। অদদৃশদিতি অনেকাচামিত্যা-দিনা অলুক্ নামো ব্যবহিতমিতি পিবাদিখ্য অত্যাপি অলুক্ কৃত এব।

(৮৯৬)। হলিকলিশকো বর্জমিমা ইণস্তং নাম প্রথাদির্ভবতি বা।

স্পূর্পবিদ্যাদৌ পূর্কবিৎ। অজহলৎ অচকলদিতি ম্বচাদেগৃত্বাতাবিতি

व्यक्तकवद्भा र्शनिकत्नाञ्च । व्यवस्य व्यक्तकवद्भा

৮৯ । চুরাদিকথাদিস্পৃহাদিশ্চ।

অচকথৎ অচুকুণং অমমৃগৎ।

५৯५। क्यूद्धि ।

অচকমৎ অদধৎ।

५৯৯। जागृगत्नार्य।

অর্জ্বলাগরং অজীব্রাগরৎ অজগণৎ অজীগণৎ।

৯০০। ন শিঙ্ দ্বিরু**ক্তেঃ।** আটিটং।

ণিঙ্ভাষো অপপটদিতি ব্যবস্থিতং বার্ত্তিককারাদিস্ত অপীপটদিতি উভয়োম তমঙ্গীক্বতা স্ত্রকারো ধিকল্পং ক্বতবান্।

(৮১৭)। চুরাদিগণস্থ: কথাদি: তাদাণস্থ এব স্পৃহাদিশ্চ প্রথাদির্ভবতি। অচুকুণদিত্যাদি কুণ্ আমন্ত্রণে পঠাতে মৃগ্ অবেষণে এতৌ
স্পৃহাদী কুমারকুশৃলকীড়ায়ামিতি স্পৃহাদৌ পঠাতে তয়ো: পিবাদিকার্যাং
নাস্তি অচুকুমারৎ অচুকুশৃলদিত্যাদি বিকক্তৌ দীর্ঘনিবেধঃ প্রয়োজনং
যথেষ্টস্টত্রঃ কথাদিস্থং তনিরাসার্থং চুরাদীতি বিশেষণং তেনাটীচিতৎ
ইত্যাদৌ দীর্ঘন্থং তবত্যেব।

- (৮৯৮)। কমু কান্তো ধেট্ পানে ইত্যেতো অংণিঙি অনি সতি প্রথাদী ভবতঃ। অচকমদিতি প্রিক্র-শ্রুক্যেকিয়াদিনা অন্ ধেটপ্ত অদধং। বিধেটোর্বেতানেন অন্। অণিঙীতি কিম্ ? অচীকমং অদীধপং ণিঙস্তাদত্র অন্। কমুধেটাবিতি কিমর্থং নহি প্রিক্র-শ্রুক্তাদত্র অন্। কমুধেটাবিতি কিমর্থং নহি প্রিক্র-শ্রুক্তাদত্র অন্। কমুধেটার্ক্তান্দণিঙস্তাদন্ সম্ভবতি এমু বা সন্বদ্ধাবে কো দোষঃ যদর্থং কমুধেটোরুপান্দানং তৎ ক্রিয়তে স্পত্তার্থম্। উদ্দিষ্টা হি প্রতীতিঃ স্কুলভা ভবতি।
- · (৮৯৯)। অনি সতি জাগৃগণোদিকিজি: সন্বদ্ধা ভবতি। জাগৃ-ধাতো গুৰ্বাদিছাৎ গণধাতো: কথাদিছাৰপ্ৰাপ্তে বিভাষা পূৰ্কবিৎ মত-দ্বয়দৰ্শনেন স্কোকারো বিকল্প ক্লতবান্।
 - (৯০০)। ণিঙ্ছিককেরগুরাবি গাদিনা বিহিতং কার্য্যংন ভরতি।

৯০১। ব্রস্বোহশাস্বাদেঃ।

শ্বনি সতি শাসাদের অস্য ধাতোদীর্ঘো হ্রস্বো ভবতি। সাধ্ শ্বসীসধং জ্ঞা অজিজ্ঞপং অচীকরং অলীলবং বারমাখ্যাত্বান্ শ্বনীবরং এধমাখ্যাত্বান্মা ভবান্ ইদিষ্টে। অশাস্বাদেরিতি কিম্
প্ অশশাসং অজ্জাগরং।

৯০২। ঋদিৎ:। অডুঢৌকৎ।

আটিটদিতি সেঙ্ণিঙ্ চাস্তোহজাদেরিতি ণিঙস্কম্ম টি ইত্যস্যাত্র দ্বিকাক্ত:। সন্বৎ কার্য্যযত্র ন সম্ভবত্যেব দীর্যস্ত প্রতিবিদ্ধ:।

(১০১)। শাস্ত্র অন্থশিষ্টো আঙ্ শাস্ত্র ইচ্ছায়াং বয়োরপি গ্রহণন্। আঙ্ শাসোকদিন্দাতদেব কার্যাং যদিহ উভয়গ্রহণং জ্বীঙ্বিকলার্থন্ত ন ভবতি। নিত্যাঙ্বুক্তাৎ যচাদেশশু নিত্যন্তাং। অনেকবর্ণব্যবহিতাচঃ শাস্বাদিয়াং একবর্ণব্যবহিতাজশু বিষয়ং। অসীসধদিতি রাধ্ সাধ্ সংসিদ্ধৌ অজিজ্ঞপদিতি জ্ঞা অববোধনে ণিঙ্ পুঙ্ জ্ঞানে বেতি পক্ষে ঘটাদিভাভাধঃ অচীকরং অলীলবদিতি কঞো ল্ঞুণ্ড ণিঙ্ বৃদ্ধিঃ অবীবরদিতি বারশকাং নাম ইত্যাদিনা ণিঙ সর্কত্রৈবাক্ততে ণিঙ্লোপে অনেকবর্ণব্যবহিতাচ্তাৎ ক্রন্ধাপ্রাপ্তিঃ ণিঙ্লোপে ক্রন্থত্বে চ কতে ক্লুক্তাণা নিদস্ত ইতি বিক্লজিঃ। মা ভবান্ ইদিধদিত্যাদৌ চ ণিঙ্লোপে ক্রন্থত্বে চ কতে কুত্রকাহরণে ঝদিজেন জ্ঞাপিতং যদি ণিঙ্লোপমক্রমা দিকজিঃ ক্রিয়তে ভ্রন্থবিত্যাধি ঝদিজমনর্থকং শ্রাৎ ক্রন্থবিত্যাপ্রমক্রমা দিকজিঃ অক্রন্ব্রহিত্যাচে। বিদ্যমানত্বাৎ অনেকবর্ণব্যবহিতাজিতি শাস্বাদিত্বং নাম্ভীতি শঙ্কানিরাসার্থন্। আদিপদেন জাগুরত্বোপসংগ্রহঃ।

(৯০২)। ঋদিদ্ধাতুঃ শাস্বাদিঃ স্থাৎ। অডুঢৌকদিতি ঢৌকু প্রতৌপঠাতে। ৯০০। অনেকবর্ণব্যবহিতাচ্ । অচকা**জা**ই ।

৯০৪। অগ্গ্নাম চ।

भानाभाषाज्ञान् व्यामानः लामान्यस्य खेतान् व्यवन्ताभः।

৯০৫। পদান্তরম্। গোনাবো কৃতবান্ অজুগোনৎ।

ঁ৯০৬। ভাসাদেবা। অবভাসং অবীভসং। ভাস্ টুভাজ্ ভাষ্ দীপ্ জীব্,মীল্ পীড় হেঠ্ রুঠ্ কুঠ্ কণ্ বণ্রণ্ষণ্ প্রাণ্,।:

স্থাদিশ্চতি বক্তব্যম্। স্পৃথাদিশ্চ শাস্থাদির্ভবতি। অচুকুমারৎ অচুকুশুলদিতি। যে চ স্পৃথাদিপণে সাবাদম্যো লিপিকরপ্রমাদাৎ পতিতান্তে অস্মাভির্লিখিতান্তেযামপি গাঠন্ত হ্রস্থনিবৃত্তিরেব ফলম্। অসসাবৎ অস্থত্ত অবভাসং অতিক্তিনং অলিলিবসং অসসভাদ্ধং অগপালদিত্যাদি।

- (> ০৪)। অগ্নুগ্নাম চ শাস্বাদির্ভবতি। অন্বল্লামদিতি ণিঙ্ অনেকাচামিত্যাদিনা অন্পুক্ যদ্যপি অন্ত্র লুপ্তস্তথাপি অগ্নুগত্র ভূতমেব ষধা চৈত্রমৈত্ররোরভাবেহপি অত্র মৈত্রাভাব ইত্যভিধীয়তে। নামেতি কিম্? বাদিতবন্তং প্রযুক্তবান্ অধীবদং ণিঙ্লোপে অগ্নুগন্তধাতুর্নাম।
- (১ ৫)। পদমন্তরং ব্যবধায়কং যক্ত তৎ পদান্তরং শাস্বাদির্ভবিতি। অজ্গোনদিত্যক্র ঔকারো পৃথঃ সোহমৃক্ ন ভবতীতি পূর্ব্বেণ প্রতিবেধেহপ্রাপ্তে বিধানম্।
- (৯০৬)। অনি দতি ভাদাদেদীর্ঘো হ্রমো বা ভবতি। ভাস্থ দীপ্রো টুভ্রান্থ দীথ্যো ভাষ্ ব্যক্তায়াং বাচি দীপি দীথ্যো জীব্ প্রাণধারণে মীল ক্লনিমেষতা পীড় অবগাহনে হেঠ্ রিবাধায়াং রুঠ্ প্রতীযাতে

⁽৯০৩)। অনেকবর্ণব্যবহিত্যচ্ শাস্বাদির্ভবতি। অচকাজ্ফদিতি কান্ধি বান্ধি মান্ধি কাজ্জায়াম্।

२०१। डेमाउः यः।

অনি পরে তিষ্ঠতেরাতঃ স্থানে ইম্রবতি ৷ অতিষ্ঠিপৎ 🖂

२०५। (आवा।

অক্সিত্রপৎ অজিত্রিপৎ।

৯০৯। অল্লুক্ পিবতেঃ ক্নেহেভ্যাসকার্য্যে।
অপীপ্যথা

৯১০। পদস্তঃ কর্ত্রীণ্ সঙা। পদ্তেরুত্র: কর্ত্যাত্মনেপদপ্রথমপুরুষৈকবচনং তকারঃ সঙা সহ ইণ্ভবতি। উদপাদি।

কণ্ রণ্ বণ্ ষণ্শকার্থাঃ শ্রণ্ দানে এবামনি সতি দীর্ঘো হস্বো বা ভবতি।
কণাদীনাং বা হস্বো বক্তব্য ইতি স্থাব্যে দৃশুতে অতোহত্র হেঠাদয়ঃ
পঠিতাঃ। ভ্রাজ্ধাতোক্সনিৎকরণমনর্থকং শুাৎ উভয়পাপ্যনেন বিকরবিধেঃ।
নম্ ভাষণং ভাষ ইত্যাদিভাবে ঘণস্তাৎ নামণিঙা অবভাষদিত্যাদি
সাধ্যম্। ধাতুভাস্ত অবীভর্ষত্যাদি কিং লক্ষণেন ? উচ্যতে। নাম
ইত্যাদিনা স্ত্রে ঘণ্লুক প্রয়োজনব্যাখ্যানে এবাশ্য সিদ্ধান্ত উহনীয়ঃ।

⁽৯০৭)। হ্রম্বে প্রাপ্তে বিধানং দীর্ঘ ইত্যমুর্ফ্রো স এব ইম্ববতীতি লব্দে আং ইতি ক্বতং স্পপ্তার্থম্।

⁽ ১০৮) অনি গতি জিন্ততেরাতঃ স্থানে ইম্বা ভবতি।

⁽৯০৯)। অনি পরে পা পানে ইতান্তাভ্যাসকার্য্যে ক্বতে অকারদুগ্ভবতি। অপীপ্যদিতি নিঙ্যুর্বেঞাদেরিত্যাদিনা যুঃ লুঙ্ ছঙ্ অন্
হস্বঃ দিকজিঃ সন্বন্ধাবাদিবং দীর্ঘণ্ড ততোহকারত লুক্। যদি প্রথমমন্ত্র্ক তাৎ তদা অভ্যাসত দীর্ঘোন তাৎ। অলঘুত্বাৎ ক্রতকার্য্যো নিদন্ত
ইতি নিয়মেন পশ্চাদ্দিকজ্যা ভাব্যমিত্যক্ত নিষেধার্থমাই ক্রতেহভ্যাসকার্য্য ইতি।

⁽৯১%)। পদ্যতেরাম্বনেপদিখাৎ পরস্থাপদমধ্যমপুরুষবছবচনতকারে।
ন ভবতীত্যাহ আত্মনেপ্রদ ইত্যাদি। কর্ত্তরীত্যুত্তরার্থং সচ্সিজ্ভ্যাঞ্চ ভারাদাবিত্যনেনত্ অকর্ত্তর্যাপি ইণ্ ইপ্রথাৎ উত্তরস্ত্রে নতু কর্ত্তবি

৯১১। দীপ্জন্বুধ্ পুরীতায়ীপ্যায়ীভ্যো বা।
অদাপি অদীপিষ্ট।

৯১২। সচ্সিজ্ভ্যাঞ্জাবাদে।।
ভাবে কর্মাণি কর্মাক্ত্রির চ বাচ্যে সর্ব্বধাতুভ্য উত্তরস্তকারঃ সঙা
সচা সিচা সহ ইণ্ ভবতি। অভাবি অলেহি অভেদি রক্ষঃ
স্বয়মেব।

৯১০। ন তুহ্সনমানুতপাম্। অন্থ্য গোৰ্গোপেন।

ভবত্যেব স যদি সামান্তেন বিধানং স্থাত্তদা ভাবকর্মণোরপি বিকল্প: স্থাৎ।

(৯১১)। দীপ্দীপ্তো জনী প্রাছর্ভাবে বৃধ্ অবগমনে প্রী আপ্যায়নে তায়ী সন্তানপালনয়োঃ কায়ী ওশ্যায়ী বৃদ্ধো ইত্যেতেভা উত্তরস্তকারঃ
সঙা সহ কর্ত্রীণ্ বা ভবতি। আত্মনেপদিনাং দীপ্যাদীনাং সাহচর্যাৎ
পরদৈপদিনোর্জন্ জননে বুধ্ অবগমনে ইত্যেতয়োর্ম গ্রহণং তেন কর্মব্যতীহারে ব্যত্যজনিষ্ঠ ব্যত্যবোধিষ্ট ইত্যক্র ন স্থাৎ। অজনীত্যক্র
জন্বধৌ চেতি কথাদিরার বৃদ্ধিঃ। কর্ত্রীত্যেব। অদীপি দীপেন নিত্য
এবাত্র ইণ্।

(৯১২)। ভাবাদাবিতি বাচ্যে সপ্তমী ভাবাদে বাচ্যে বিহিতস্তকার ইত্যর্থঃ সচ্সিজ্ভাঞ্চ্ত্যেপলক্ষণম্। অগনাদয়ো গৃহস্তে। এতচ্চ ব্রঞ্জেণ পাস্তস্ত চ নিষেধেন জ্ঞাপিতম্। অতথা, আখ্যায়ি ধর্মঃ স্বয়মেব ইত্যাদি ন সিধ্যতি। কিন্তু সজাদিভিশ্চ ভাবাদাবিতি লক্ষণমেতৎ ভ্রাস্তৈরস্তথা পঠ্যতে। অভাবীতি ভাবে অলেহীতি কর্মণি সচ্ শাদ্যস্তাদিত্যাদিনা সচ্ অভেদি বৃক্ষঃ স্বয়মেবেতি ঋদ্ধনশ্চাত্মনে সিজিতি সিচ্ কর্ম্বস্তাবাদিণ্।

(৯১০)। হহ প্রপ্রণে মুঁ প্রবণে ণম্ প্রহুত্বে শব্দে অরুপূর্ব্ব তপ্ ধৃপ্ মস্তাপে এবাং ভাবে কর্মণি চ বিহিতস্তকারঃ সজাদিভিঃ সহ ইণ্ ন ভবতি। অহগ্ন গৌর্গোপেন ইতি কর্মণী ত পূর্ববং সিচ্ অঙ্বাদিত্যাদিনা সিচ্ সুক্ হোড় ইত্যাদিনা হস্ত ঘঃ ধোহধাতুর্ঘাদিতি ্র ১৪। তুহ জন্তাৎ কর্ম্মকর্ত্তরি বা। অদোহি গৌঃ স্বয়মেন অন্তথ্য বা অকারি কটঃ স্বয়মেন অঞ্চন্ত

৯১৫। ন রুধিতপিভ্যাম্। অরুদ্ধ গৌঃ স্বয়মেব অতপ্ত ঘটঃ স্বরুমেব। ্র

৯১৬। শ্রন্থ গ্রন্থ জ্বান্তসমন্ত্রিমনপদাকর্মকাপাঞ্।
অশ্রন্থি স্থামের অগ্রন্থি স্থামের অবোচত ধর্মঃ স্থামের অচীকরত ঘটঃ স্থামের অচিকীর্মিট কটঃ স্থামের ব্যক্ত প্রাঃ
স্থামের।

তম্ম ধং বর্গস্থাদিরিত্যাদিনা ঘস্ত কং অপদান্তেহপীত্যাদিনা কম্ম গং।
মুনমান্তপাস্ত অম্নাষ্ট অনংস্ত অৱতপ্ত। অনুবাতপ্ত পাপেন কর্ম পা
ফ্রুতপ্ত ইতি অনুনা সম্বন্ধমাত্রমপেক্ষিতং নতু তত্ত্তরাদিতি তেনাবব্যবধানেহিপ প্রতিষেধং ছহ্মুনমাং ভাবকর্ম গোরিণ্নিষেধো জয়াদিত্যাদীনাং ন দৃষ্টঃ কালাপানাঞ্চ সম্মত্যেত্ৎ তম্বাৎ এতরিমিত্তং নিরূপণীয়ম্।

(৯১৪)। ছহোহজস্তাচ্চ ধাতোঃ কর্ম্মকর্ত্তরি বিহিতস্তঃ সঙাদিভিঃ সহ ইণ্ বা ভবতি। অঙ্কস্তাৎ পূর্ব্বেণ প্রাপ্তে বিভাষা। অহ্যমেতি লিহেত্যাদিনা সজ্জাবপক্ষে সিচ্ তল্লুক্ চ হোড় ইত্যাদিনা ঘণ্ডাদিঃ।

(৯১৫)। রুধিরাবরণে তপ্ সস্তাপে ইত্যেতয়োঃ কর্মকর্ত্তরি বিহিতস্তঃ সজাদিভিঃ সহ ইণ্ন ভব্তি। অরুদ্ধেতি সিচ্ত্রতথেতি সঙ্পূর্ধবিল্ক্।

(৯১৬।৯১৭)। শ্রন্থ গ্রন্থ কর্ ব্যক্তায়াং বাচীত্যেতেষাং
বিপ্ত স্থানাং সনস্থানাঞ্জায়নেপদাকর্ম কাণাঞ্চ কর্মকর্তরি বিহিতন্তঃ
সন্থানিভিঃ সহ ইণ্ন ভবতি। শ্রন্থ নোচনপ্রতিহর্ষণয়োঃ গ্রন্থ
সন্তেইতি ক্র্যাদী শ্রন্থ গ্রন্থ সন্তেইতি যুজাদিঃ বিভ্তাৎ সিদ্ধে
আবিভর্থং গ্রহণং শ্রন্ধী শৈথিল্যে গ্রথি কৌটিল্যে ভ্রামী তয়োরপাত্র
গ্রহণমিতি মৈত্রেয়ঃ বীতি সামান্ত্রহণম্ আয়ুনেপদনিমিত্তক্ষকর্মাকতঃ

৯১৭। প্রয়োজকণিঙ প্রিঞ্কঞামিত্যেকে। উদশিব্রিকত দণ্ডঃ স্বয়মেব।

> ইভি বাদীন্দ্রচক্রচূড়ামণিমহাপণ্ডিতশ্রীক্রমদীশ্বরাচার্ঘ্য-ক্বতে সংক্ষিপ্রসারে মহারাজাধিরাজ শ্রীমজ্জ্মর-নন্দিপরিশোধিতায়াং রসবত্যাং বৃত্তো দ্বিতীয়ক্তিঙন্তপাদঃ সমাপ্তঃ।

যেষাং তে আত্মনেপদাকর্মকাঃ। অবোচতেতি বচো বোচ্চ ইতি অগ্ বোচাদেশত বচনশু শব্দপ্রকাশনত্বাৎ কর্মস্থ ক্রিয়ত্বম্ অথবা অন্তর্ভাবিণার্থত্বাৎ ব্রবীতি কর্মস্থ ক্রিয়ত্ব ব্রবীতি কর্মান্তর্ভাবি কর্মান্তর্ভাবাি কর্মান্তর্ভাবাি কর্মান্তর্ভাবাি কর্মান্তর্ভাবাি কর্মান্তর্ভাবাি কর্মান্ত্র্ভাবাি কর্মান্তর্ভাবাি কর্মান্তর্ভাবাি কর্মান্তর্ভাবাি কর্মান্ত্র্ভাবাি কর্মান্ত্র্ভাবি কর্মান্ত্র্ভাবিল কর্মান্ত্র্ল্ভাবিল কর্মান্ত্র্ভাবিল কর্মান্ত্র্ভাবিল কর্মান্ত্র্ভাবিল কর্মান্ত্র্যান্ত্র কর্মান্ত্র্বার কর্মান্ত্র কর্মান্ত কর্মান্ত্র কর্মান্ত্র কর্মান্ত কর্মান্ত্র কর্মান্ত্র কর্মান্ত কর্মান্ত্র কর্মান্ত্র কর্মান্ত্র কর্মান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত করেল কর্মান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত কর্মান্ত্

ইতি মহাপণ্ডিত শ্রীক্রমনী খরক্তে সংক্ষিপ্তদারে মহারাজাধিরাজশ্রীমজ্জুমরনন্দিপরিশোধিতারাং রসবত্যাং বুতৌ উত্থাসনিকশ্রীগোয়ীচক্রবিরটিতারাং বিবরণীনামটীকারাং
দিতীয়স্তিভস্তপাদঃ সমাপ্তঃ।

কৃদন্তপাদঃ।

১। নড় লৃডুৎ কৃচ্ছতৃশানো ।।

ভাবিশেষাৎ সর্বধাতুভাস্ত্রিয়ু লিন্সেয়ু রুৎসংজ্ঞকৌ শভ্-শানো ভবতঃ। তো লড়ুল্ডুচ্চাতিদিশ্যেতে। কুদি-তাধিকারঃ। ভবন্ স্পর্দ্ধমানঃ জুহবৎ দীব্যন্ ভাবয়ন্ বভ্যন্ ভূয়মানং ভবতা ভাব্যমানো ঘটা অনুভূয়মানঃ স্বয়মেবাত্রা, ভবিষ্যন্ ভাবিষ্যিয়ন্ স্পর্দ্ধিয়মাণ ইত্যাদি

(১)। বিধিরতিদেশঃ সংজ্ঞাবিকারশ্চায়ম্। অতএব শৃতৃশানৌ ভবতঃ। তৌলড্বলুড্বজাতিনিপ্রেত। রুৎসংজ্ঞকোচ তৌ। রুশিত্য-ধিকার শ্রুতি চতুর্বিধং বাক্যং সম্পদ্যতে। ক্রদিত্যধিকার ইতি প্রাঙ্-নামাধিকারাদিতি শেষ:। কুৎসংজ্ঞায়াঃ প্রয়োজনং কিমৃ ? প্রদাদেঃ ক্তেত্যাদৌ কুৎপ্রগ্রোজনং সমাস্বিধানাদি। কুৎপ্র্যান্তং ধিকারাদত্র চ বিশেষানভিধানাদবিশেষাৎ সর্ব্বধাতৃত্য ইত্যুক্তম্। লিঞ্চ-বিশেবানভিধানাক অবিশেষাদিতি ত্রিযু লিঙ্গেধিত্যত্রাপি যত্ৰ তু[°] লিঙ্গবিশেষে বিধানং তত্ৰ বিশেষমেবাভিধান্ততি যথা পুংসি ঘণ্কারকে চ ক্তিঃ প্রিয়াং ঙনট্ ক্লীবে ইতি। ক্রমঃ ক্রমবতামঙ্গমিতি ব্যভিচারীতি ভবিষ্যতিপ্রাদ্যৈরিত্যনেন জ্ঞাপিতং যদ্যত্র ক্রমঃ স্থান্তদা শকু।র্লড্বদতিদেশাভাবে ভবিষ্যতীতি ন স্থাৎ এতদেব স্চ্যাতিং তৌ লড্বল্লু ড্বচ্চাতিদিখেতে ইতি সমুচ্চয়েন চকারং দর্শিতবান্। লড্বদ্তি-দেশাং যন্মিন্ কালে লড়্বিহিতস্তত্র শতৃশানৌ বিধীয়েতে । লটি পরে যানি কার্যাণি বিহিতানি তানি চ তয়োরতিদিশুস্তে এবং লৃড্বদতিদেশে-হপি। কর্তুরি ভাবে কর্মণি কর্মকর্তুরি চ শতৃশানৌ ভবত ইতি স্কর্মিতুং নানাবিধোনাহরণাত্মপক্তন্তানি। প্রথমান্তেন পদেন সহ সামানাধিকরণ্যা-ভাবাৎ নৈতাস্মাত্তরস্থতস্থোদাহরণানি নহুপ্রযুক্তং সৎ সামানার্থমভিধত্তে। অভিধানা উচ্চব্লিতশন্ধবিষয়ত্বাৎ। অতএব কুর্বাদ্রপঃ কুর্বাদ্রপঃ কুর্বাৎক্সঃ প্রমানোহরর্ত্তমানকালে যজমানোহরর্ত্তমানকালেহকর্ত্র ক্রিয়া-ফলেহপীত্রন্থপদকারঃ।

२। वर्ह्नः প्रथमाममानाधिकतरण ।

হে পচন্ হে পচমাুন ইত্যাদে সম্বোধনে নিত্যম্। সন্ কুর্বাণকরঃ কুর্বাৎপাশঃ কুর্বাণপাশ ইত্যাদৌ প্রথমান্তত্ত সামানাধিকরণ্যা-ভাবাৎ নিত্যমেব শভূশানৌ ভবত:। ভাব্যমানো ঘট: অফুভূয়মান: স্বয়মেবাত্মা ইতি কৃতভূভাবস্যান্তে: প্রয়োগোহয়ং দর্শিত ইতি প্রথমা-সমানাধিকরণত্বেহপি ন বিরোধ:। ভবন্নিতি শতৃঃ ঋকার উগিৎ কার্য্যার্থ: শঙ্গুণঃ স্ট্যুগিৎপ্রত্যয়াদের্ম ইতি মুম্ অন্তলুক ম্পর্কমান ইতি ম্পর্ক্ সংহর্ষে শানঃ শঙ্ শানে২ত ইতি ম:। জুহ্বদিতি হু দানে হ্বাদিরাদ্দিকক্তিঃ গফরহাজ ইতি হস্ত জঃ ন জকাণিহ্বাদেরিতি মুমনিষেধঃ। দীবান ইতি রাস্তাদেরিত্যাদিনা দীর্ঘঃ। ভাবয়িরতি ভূগাতোর্নিঙ্ বৃদ্ধিঃ। বুভূষনিতি সন্ দিকক্তি: ব্রস্থত অপূঙ্যুর্তি সংস্ত্যাদিরিতি ত্যাদিতাদিঙভাব: ভূয়মান-মিতি ভাবে যক্। ভাব্যমান ইতি ণিঙস্তাং কর্মণি যক্। অনুভূমমান ইতি কর্ম বং কর্ম কর্ত্তেতি কর্ম বিভাবাদাখ্মনেপদং যক্ চ। ভবিষারিতি লুড্ বদতি-দেশাৎ শুঙ্। অবর্ত্তমানকালে প্রমান ইতি অবর্ত্তমানকালেহকত্রর্থে ক্রিয়া-ফলে চাত্মনেপদাভাবাং যজমান ইতি চ ন প্রাপ্নোতীত্যত আহ প্রব্যানো-**२वर्डमानका**ल रेजामि। প्रयासना यक्षमान रेजि निष्ठाजानारत्रशनितर्नभाष অবর্তুমানকালেহকত্র র্থে ক্রিয়াফলে পূয়মান ইজ্যমান ইতি চ ন ভবতি এতত্ত্ বছলবচনাজ্জেয়ং প্রমান ইতি পৃঙ্পবনে।

(২)। সমানশব্দোহয়ং সাধারণবচন:। যথা চৈত্রমৈত্রৌ সমানধনাবিতি। অধিকরণশব্দোহয়মভিধেয়বচন:। সমানক্ষ তদধিকরণক্ষেতি
সমানাধিকরণং প্রথময়া সমানাধিকরণং প্রথমাসমানাধিকরণমিতি কভা
কর্ত্করণয়োর্বহুলমিতি তৎপুরুষ:। ক্রিয়য়া তৎকাললক্ষণাদিতি সপ্তমী।
প্রথমাসমানাধিকরণভা স্থিতিক্রিয়য়া বহুলং শতুশানয়োকৎপত্তিল ভাতে।
হে পচল্লিত্যাদি গ্রন্থভা বাক্যার্থো ৰাখ্যায়তে। সর্বধাতুভাঃ সম্বোধনে
শতুশানৌ নিত্যমেব ভবতঃ। সম্বোধনব্যতিরিক্তে প্রথমাসমানাধিকরধোঃ

বিপ্র: অস্তি বিপ্র: বিদ্যমানো বিদ্যতে স্মূহ্বৎ জুহোতি অধীয়ানো অধীতে ইত্যাদে বিকল্পঃ। বিপ্রঃ পচতীত্যাদে নিষেধঃ।

গ লক্ষণহেত্বাঃ ক্রিয়ায়াঃ।
 পচয়াসীং অর্জ্জয়য়য়ন্ য়তি শয়ানা ভোক্ষ্যতে ভোক্ষ্যয়াণাঃ পচন্তি। ক্রিয়ায়া ইতি কিম্
 ৽ য়৽ণহেত্বায়িতি কিম্
 ৽ পচতি চ পঠতি

কাপি বিকল্প: কাপি প্রতিষেধঃ। নিত্যবিধানম্ভ নিরন্তমেব। যদা তু প্রথমাসমানাধিকরণে ক্রিয়াসাপেকজং ভবতি তদাপি নিত্যমেব শতৃশানৌ ভবতঃ। "বিপ্রাং পচংস্কিষ্ঠতি। তথাচ মাঘঃ", গায়লোলোন্মৌ পয়সি মহোৎ-পলং ননর্ত্ত ইত্যাদি। এবা ব্যবস্থা শিষ্টপ্রয়োগদর্শনাদভাপগস্করাা। অত-এত জ্যাদিত্যাদিভিক্ষদাস্থতান্তেবোদাহরণানি দর্শিতানি। এতত্বপলক্ষণ-মপরমপ্যহ্নীয়ম্। ভজ্যত ইতি ভক্তিঃ কুর্বান্ ভক্তিরস্ত কুর্বান্তিজিঃ কুর্বাণো ভক্তিরস্ত কুর্বাণভক্তিঃ। দৃঢ়ভক্তিবৎ কুর্বান্তিত্য অজহলিঙ্গত্ত-মিতি ব্যবস্থেয়ম্। স্ত্রীলঙ্গে তু প্রিয়াদিভাৎ পুংবঙ্কাবো ন স্থাৎ। লৃত্দ-তিদেশে চ এতাদৃশ্রেব ব্যবস্থোহনীয়।। হে করিষ্যমাণ ইত্যাদৌ সম্বোধনে নিত্যম্। ভবিষ্যন্ ভবিষ্যতীত্যাদৌ বিকল্প:। বিপ্রামান ইতি বিদ্সভারাং দিবাদিরায়নেপদী। অধীয়ান ইতি ইঙ্ অধ্যয়নে শানঃ স্ক্রাতুরিত্যাদিনা ইয়্।

(৩)। লক্ষণহেষোরিতাত্র হেতৃশব্দালাচ্ ছাৎ প্রাগ্ভাবে প্রাপ্তে পরভাবং প্রাগ্ভাবপ্রকরণস্থ ব্যভিচারস্চনার্থং। অতএব তত্র বক্ষাতি কচিন্বাভিচরতাপীতি। লক্ষাতে চিহ্নাতে যেন তল্লক্ষণং হেতৃর্জনকং। লক্ষণে হেতৌ চার্থে বর্ত্তমানাদ্ধাতোক্তরে শতৃশানৌ ভবতং। তৌ চেল্লক্ষণহেতৃ ক্রিয়ায়া ভবতং। লড্বল্লুড্ বদতিদেশঃ পূর্ব্বেমব ব্যাথ্যাতঃ। পচন্নাসীদিত্যত্র পচনং লক্ষণম্ অবস্থানক্রিয়াবিষয়ং পচনেনাবস্থামক্রিয়া লক্ষ্যতে অবস্থানক্রিয়া চাত্র লক্ষণীয়্ষাৎ প্রধানম্ অতো ভূতকালবিহিতেন লঙ্প্রতায়েন পচন্নিতাস্থ বর্ত্তমানকালো বাধিতঃ। এবমপরোলাহরণেছপি, চ।বর্ষতীতি ধাবতি হস্তীতি পলায়তে ইত্যাদিম্বিতিশব্দেনোক্ত স্থাতাম।

- ৪। মাঙ্গাকেপে। मा পहन् भाभः मा शकामात्वा कात्यः।
- ৫। न नयानिश्रुतानियुक्तानिवर्कमारन। নমুভবতি পুরাযাতি। বর্তুমানে তু। নমুভবন্ পুরাযান্।
 - ৬। ধারীঙোরক্রেশে শতৃঃ।

धातयन् तिमान् विथाः अधीयन् भातायगम्।

উষ্টবাম। এষা চ ব্যবস্থা কারকপাদ এব ব্যাখ্যেয়া। অর্জনিয়ান যাতীতি অর্জ্প্রতিষত্তে চুরাদিঃ। অর্জ্রনং গমনস্ত হেতুঃ। শগানা ইতি শীঙ্ স্বপ্নে শীঙ্ক: শের্যনিচেতি শেভাবঃ। যঃ পচতি স দেবদত্ত ইতি পচতীতি **শক্ষণং দেব**দত্তো দ্রব্যর্ন্নপো শক্ষাতে। পচতি চ পঠতি চেতি নাক্র ক্রিয়-য়োল ক্ষ্যলক্ষণভাবো বিবক্ষিতঃ হেতুহেতুমন্বং বা। হস্তীত্যাদি ইতিশব্দস্ত হেত্বৰ্ত্বাদিত্যভিপ্ৰায়ঃ।

- (৪)। মাঙ্যপপদে সহি আক্ষেপে গম্যানে ধাতোকভরে শতৃশানৌ ভবত:। তৌ লড়্বল্ল, বক্ষাতিদিখেতে। সর্কালে মাঙ্যোগে ইত্য-নেন লুঙ্। আক্ষেপব্যতিরিক্তে সাবকাশোহনেনাক্ষেপে বাধাতে।
- (৫)। ভূতে চ নয়ায়ৈভবিষাতি পুরায়ৈরিত্যনেন বিহিত্ত লটোহতি-দেশাৎ ভূতে ভবিষাতি চ কালে শৃতৃশানৌ প্রাপ্ন তপ্তলিষেধার্থ মিদম্। ন্বাহিতিঃ পুরাদিভিশ্চ যুক্তাদ্ধাতোরুত্তরে বর্তমানাদগুত্র 'শতৃশানৌ ন ভবতঃ। ইতঃ প্ৰভৃতি লৃড্বদতিদেশাভাবো বহুলবচৰাংলৃড্বদ্তিদেশেন **४ काना** जिस्मा ।
- (b)। ধারেঃ কর্ত্রর্থে ক্রিয়াফলে আত্মনেপদবিধানাং ইঙ*চ ভিত্তে-নাত্মনেপদিত্বাৎ শতৃপ্রত্যন্ত্রো ন প্রাপ্রোতীতি বিধানম্। ধারীতি ধৃঞ্ ধারণে ইতায়ং ধাতৃঃ প্রয়েজকণিঙজ্ঞা নির্দিষ্টঃ। শতৃবস্থ চ পরবৈষ শানানৌ চাত্মনে ইতি শতুঃ পংকৈপদসংজ্ঞা শেষাৎ পরবৈ ইতি নিরমেন শেষাৎ কর্তুরি পরশ্বৈপদং নিয়তম্। অতঃ শভূপ্রত্যয়ো ভবন্ কর্তুরি ভবতি তন্মাৎ-অক্লেশ ইতি কর্ত্তরীত্যস্ত বিশেষণম্। ধারমতেরিঙশ্চাঙ্গেশে কর্ত্তরি শক্ত

সংক্ষিপ্রসারবাকরণে

৭। অহঃ প্রশংসায়াম্।

অর্হরাত্মবিদিন্যাম্। প্রশংসায়ামিতি কিম্ ? চৌরো বধমর্হতি।।

৮। দ্বিষঃ শত্ৰো।

চৌরং দ্বিষন্। শত্রাবিতি কিম্ १ ঔষধং দ্বেষ্টি।

a। द्या यजगान। c

স্থ্বন্। যজমান ইতি কিম্ ? স্থরাং স্থনোতি।

১০। শানঃ শীলে পরস্মৈভাষাচ্চ। হসমানো বিপ্রঃ।

১১। শক্তিবয়সোশ্চ। শক্তং নিম্ননো বালঃ গর্ভং দধানা বালা।

প্রতায়ো ভবতি। স চ লড়্বং। ধারয়ন্ বেদানিতি ছাদিছাৎ ষষ্ঠাভাবঃ বেদধায়ণেহবিভমানক্লোঃ কর্তা অভিধীয়তে লড়্বদতিদেশাছঙ ্পুনঃ শতৃ-বিধানং শানস্থায়ুবুত্তিশঙ্কানিরাসার্থম্।

- (१)। প্রশংসা স্ততিঃ প্রশংসাবিষয়ে অর্ছ্ পূজায়ামিত্যশাদ্ধাতোকত্তরে শৃত্রতি স চ লড়ং। প্রথমাসমানাধিকরণে বিশিষ্টবিষয়ার্থং বচনম্।
- (৮)। পূর্ব্বেণ সিদ্ধে নিয়মার্থং বচনম্। দ্বিষ্ধাতোঃ শত্রাবেব কর্ত্তরি শত্র প্রত্যায়ে ভবতি। যথা কর্ত্তরি শত্রপ্রত্যয়বিধানং তৎ পূর্ব্বমেবোক্তম্। হিষ অপ্রীতৌ অনাদিঃ।
- (৯)। স্থনোতেঃ শত্প্রতায়ো ভবতি যজমানে কর্ত্তরি বাচ্যে। স চলড্বং। স্থানতি স্থাঞ্ অভিষবে স্বাদেম্দিতি মুব্। •
- (১০)। শীলং সভাবঃ। শীলে গম্মানে পরস্বৈভাষাদা মনেভাষা-চোত্তরে শানপ্রত্যয়ো ভবতি। শানানো চাত্মন ইতি নিয়মাৎ পরস্বৈপদিষু ন প্রাপ্রোতীতি বিধানষ্।
- (১১)। শক্তো বয়সি চ গম্যমানে পরস্বৈভাষাদাত্মনেভাষাক্রোন্তরে শানো ভবছি। শক্তং নিম্নানো বাল ইত্যাদি। শক্তহননেন বালস্ত শক্তি-

ऽ२। निष्ठृषयात्मी।

অবিশেষাৎ সর্বধাতুভান্তিষু লিঙ্গেষু বস্বানো ভবতঃ। তৌ লিড্ব-দতিদিখ্যেতে। বভূবান্ চিকীষ নি'পেচানঃ পিপক্ষাণঃ।

- ১৩। मार्ट्स विर्वरमी।
 - ১৪। সহমিহোঃ সাহমীঢ়ে ।

দাশান্ সাহবান্ মীঢ়ান্।

র্গম্যতে। গর্ভধারণেন চ বালায়া বয়ো গম্যতে। নিল্লান ইতি হন্ হিংসা-গত্যোঃ হনাদেরনগীত্যকারলুক্ অনুগাদৌ হনো-হো ঘ ইতি হস্ত ঘঃ।

- (১২)। বিধিরতিদেশকায়ম্। বস্থানৌ বিধীয়েতে তৌ চ লিড্বলতিদিশ্রেত্রে। বভূনান্ ইতি ভূধাতোর্ব সংঃ উকার উনিৎকার্যার্থঃ দিরুক্তিঃ
 ভূবো বৃদ্ধি রুদচ্চেতি বুং দিরুক্তেরুদ্দ্দ্র প্রতি বলুক্ সদ্বিরুক্ত্যেকাজিণযসানস্তাবসাবিতি নিয়মেন সদিরুক্ত্যেকাচ এব ব্যচাদিস্থাদ্র ইড়ভাবঃ
 স্থট্যগিদিত্যাদিনা স্থম্। চিকীম্বানিতি সনস্তাদ্বয়ঃ। ন স্বিরুক্তেরিতি
 দিরুক্তিনিষেধঃ ন বস্থানাবিতি ভার্মনিষেধঃ লিড্ভান্ ইত্যাপি প্রয়োগন্তিভন্তপাদ এব ব্যাখ্যাতঃ। অশু লিড্বলেশকার্যানিবন্ধনাভাবাহ্নাহরণ্মিই ন
 যুজ্যতে তথাচিকি বীর্ষাং বভূবানিতি জন্তব্যান্ করোতেঃ সনস্তাদ্বস্থলিড্বচ ণ্যাদেলি ড্ভান্ ইত্যাদিনা ভান্। ভবতের সোরস্থারোগশ্বেত।
 পেচান ইতি অনাদেশাভ্যাসন্তেত্যাদিন। অকারকৈকারঃ দ্বিলুক্ চ:
 - (১৩)। দাশৃ দানে ইতাক্ত বদৌ পরে দ্বিন ভবতি।
- (১৪)। বহু মর্যণে মিহ্ সেচনে ইত্যেতয়োর্বসৌ পরে দিন ভবতি।
 সাহমীটো চাদেশৌ ভবতঃ। সদিকক্ত্যেকাজিত্যাদিনা ব্যচাদিখাভাবাদিড়ত্র
 ন স্থাং দিকক্ত্যভাবাদেব সদিকক্ত্যেকাচ্খাভাবাং। লিড্বদভিদেশাং
 কুস্বৃভৃস্তক্তক্রশুবর্জ স্থানিক নির্মান বনৌ তম্ম নিরস্তম্বাং। আশ্বনেপদিনোহিণি
 সহবেরৌ পরে বিধানসামর্থাং বস্প্রভায়ো ভবত্যেব।

C.

১৫। कुरुজिनमग्रापछापिछ।

চক্রির্ঘটং পপিঃ সোমং সব্রিঃ জজ্ঞিঃ নেমিঃ।

১७। वञ्चर्यरखर्न **ज्**तुष्ठः।

विषान् विविधान्।

১।। ণকভৃঙো কর্ত্তরি।

কর্ত্তরীত্যধিকার:। অবিশেষাৎ সর্ব্বধাতুভ্যস্ত্রিষু লিঙ্গেষু সর্ব্ব-কালে কর্ত্তরি বাচ্যে ণকতৃঙ্গে ভবতঃ। ভাবকঃ ভবিতা। সখ্যস্থ তব স্থগ্রীবঃ কারকঃ কপিনন্দনঃ। দ্রুতং দ্রস্টাসি মৈথিল্যাঃ সৈবসুক্ত্বা তিরোহভবদিতি ভট্টিঃ। সখ্যং করিষ্যতি মৈথিলীং ক্রুক্যুসীত্যর্থঃ।

⁽১৫)। ধুকৃঞ্ করণে স্থ গতৌ জনী প্রাত্ত্রভাবে পম্ প্রহ্রেরে শব্দে ইত্যেতে ভ্য আকারান্তেভাশ্চোত্তরে ইন্তবৃতি। স চ লিড্ বদতিদিশুতে। পপিঃ সোমমিতি পা পানে ক্লন্টাঙনাদাবিত্যাকারলুক্ সোমমিতাত্র কর্ত্তু-রিত্যাদিনা জাদিজাং যঠ্যভাবঃ। সম্রিঃ জ্জিরিত্যত্র তু হনাদেরনগীত্য-কারলুক্ চবর্গাঞ্ঞ ইতি নকারশ্র ঞেকারঃ। নেমিরিতাত্র অনাদেশাভ্যাসপ্রেত্যাদিনা এতঃ দিলুক্ চ।

⁽১৬)। বিদ্ জানে ইতাক্ষাদ্ধাতোঃ পরো বস্পুর্ভবিতি ! স চ লড় বিলিড্বজাতিদিশুতে। লড়্ বচেতি চকারেণ লিড্বদতিদেশশু প্রাপ্তবৈশ্বনির বাসুবাদঃ। লড়্বদতিদেশাৎ বর্তুমানাভিধায়কত্বং লিড্বদতিদেশাৎ ভূতা - ভিধায়কত্বঞ্চ ভবতি। বেত্তীতি নির্দেশো বিদ্ সন্তায়ামিত্যাদেনি রাসার্থঃ।

⁽১৭)। কর্ত্তরীত্যধিকার ইতি ক্তনিধানং যাবদিতি শেষ:। ভাবক ইতি নিতীত্যাদিনা বৃদ্ধিঃ বর্ত্তমানবিহিত্ত্বমস্থ প্রাসিদ্ধমেব। কিন্তু সঞ্চান্তে-ত্যাদিনা ভবিব্যতি কালে প্রয়োগদর্শনাং সর্বকালবিহিত্ত্বমস্থ ব্যবস্থিত-বান্। বহুলবচনাৎ কারকান্তরেহিপ ভবতি। পাদাভ্যাং ব্লিয়তে ইতি পাদহারকঃ গলে চুপাতে ইতি গলেচোপকঃ। দ্রম্ভেতি তৃঙ্ভিত্যফেইলিনং

- ১৮। প্রুক্ত ক্রান্তা ওকঃ সর্ৎসাধোঁ। প্রাবকঃ ই্রুক্ত ক্রান্ত ডবকঃ প্রাবকঃ স্থাতে সরকঃ সর্দ্ধি। স্কুষ্ঠু গচ্ছতীত্যর্থঃ। লুঞ্ লবকঃ।
- ১৯। আশ্রিষ সর্বধাতুভ্যঃ। শীবতাদিতি জীবকঃ নন্দকঃ ভবকঃ।
- ২০। নৃতীথত্যোওঁ কট্ শিল্পিনি রন্জো রজশ্চ।
 ন উকঃ নর্ত্তকী খনকঃ খনকী রজকঃ রজকী।
- ২১। শীলাচারদাধুরু বর্ত্তমানে তৃঙিঃ। পরাপবাদং বক্তা খলং। মুগুয়িতারো বধূমূঢ়াং শ্রাবিষ্ঠায়নাঃ বেদার্থং নির্ণেতা মনুঃ।

- (১৮)। সরুদপি যা সাধু করোতি তামিন্ কর্ত্তরি বাচ্চে প্রক্র ইত্যেব-মাদিভাো ওকো ভবতি। প্রবক ইতি প্রভ্ গতার্থঃ পঠাতে দ্রকঃ প্রবক ইতি ছক্তক্র গতৌ লবক ইতি লূঞ্ছেদনে। বহুশোহপি যা স্বষ্ঠু ক্যোতি তত্ত্ব ল ভবতি।
- (১৯)। আশিষি গম্যমানায়াং সর্ব ধাতুভোগ ওকো ভবতি। আশীঃ প্রার্থনাবিশেষঃ। জীবতাদিত্যর্থব্যাকারেণাশীরর্থস্বযুক্তম্। তথাহি তোস্তা-ঘাশিষীতি জীবতাদিতি সিদ্ধম্। জীবক ইতি জীবনক্রিয়ায়াঃ কর্তা ভবেদিত্যা-শিষ্যতে জীবকো নন্দক ইতি ইজুপাস্তত্বেনানেকবর্ণব্যবহিতত্বেন চ কথাদিত্বাৎ বৃদ্ধ্যভাবে পকেনাপি সিধ্যতীত্যতোঃ ভবক ইত্যুদাস্তম্। সর্ব ধাতুভ্য ইতি কৃতং স্পষ্টার্থম্। অন্তথা প্রুদ্ধ ক্রু ক্রু ত্রু তাত্রামুবর্ত্তত ইতি শঙ্কা স্থাৎ।
- (২০)। বিভক্তিবিপরিণানাং পঞ্চম্যাঃ ষষ্ঠী। নৃতী গাত্রবিক্ষেপে থকু বিদারণে রন্জ্রাগে ইজ্যেতেভ্যঃ শিল্পিনি কর্ত্তরি বাচ্যে ওকট্ ভবতি। রন্জা রক্ষাদেশক। নর্তকীত্যাদৌ টিস্বাদী। অশিল্পিনি তু। নর্তিকাঃ ধনিকা রঞ্জিকা।
 - (२५)। नैवापियू गमामात्मयू कर्खिर वाका वर्खमात्न कालः मर्स्वधाङ्क-

শাদিন শাদেরিতি দৃশ্ দ্রশ্ অস্জাদীত্যাদিন। শশু ষঃ ষ্টবর্গাদিত্যাদিন। তক্ত টঃ।

২২। পকো নিন্দাদেঃ। পরনিন্দকো তুফান ক্লিশি হিংসি খাদি বিনাশি পরিবাদি পরি-ক্ষিপ্ পরিরট্ অসুয় ব্যাভাষ।

২৩। প্রাদের্দেবিজুশাভ্যাম্। পরিদেবকঃ আফ্রোশকঃ।

ভ্যক্তির্ভবিত। শীলাদিধাত্ত্বিশেষণম্। শীলাদ্যর্থবিশিষ্টধাত্ববিক্তিরি বাচ্যে ইতার্থঃ সম্পন্ততে এবমুন্তর ত্রাপি। বক্তেত্যাদি পরাপ্রাদং বক্তীতি ধলস্ত শীলম্। ফলনিরপেক্ষো যো যত্র প্রবর্ততে তত্তস্ত শীলম্। মুগুন্নিতার ইতি মুগুং কুর্বস্তীতি নাম ইত্যাদিনা ণিঙ্ উট্যং বধৃং মুগুন্নি প্রাবিষ্ঠায়না ইতি তেখামাচারঃ। বিনাপি শীলেন মমায়ং কুলধর্ম ইতি প্রবর্তনমাচারঃ। বেদার্থনির্ণয়ঃ মন্তঃ সাধু করোতি। বিনাপি শীলেন তৎ কর্মণি সাধৌ শোভনে প্রবর্ত্ত ইতি। তৃঙীতাস্ত ত্বাদিপাঠাৎ পরাপ্রাদমিত্যাদে ন ষ্ঠী।

- (২২)। শীলাদিছু গমামানেষু কর্ত্তরি বাচ্চো নিন্দাদিতা উত্তরে ণকো ভবতি। তৃণ্ডাপবাদঃ। ক্লিশেরপতাপার্থক্ত ব্যাভাষ ইত্যক্ত চাত্মনেপদিনো বদা অকর্মকতা বিবক্ষিতা তদা হলাদেরদীপাদেরকর্মকাদাত্মনেপদিন ইতি জনে চ প্রাপ্তে বিধানন্। নতু বিশেষেণ কৃচিৎ সামান্তাবাধনাৎ তৃণ্ডাবাধিতো গকো ভবিষ্যতি কিমনেন গকবিধানেন তদেত ভ্রুতাপয়তি অসমানরপেণ বাধৈব তাচ্ছীলিকে ভবতি তেনালম্বারকো নিরাকর্তেত্যাদি তচ্ছীলাদৌ ন ভবতি। দিদি কুৎসায়াং ক্লিশ্ বিবাধনে ক্লিশ্ উপতাপে ঘয়োরপি গ্রহণং তৃন্হ্ হিসি হিংসায়াং খাদৃ ভক্ষণে নশ্ অদর্শনে বিপূর্বঃ প্রিপ্রে অয়োজকণিওত্তঃ পরিপূর্বে বিভিত্তা শিশুত্তঃ ক্লিপ্ প্রেরণে রট্ পরিভাষণে পরিপূরঃ। অপ্র ইতি কন্ত্ গুলিবিদ্ধ যান্তঃ ভাষ্ ব্যক্তায়াং বাচি ব্যাঙ্পূর্বঃ। নিন্দি গরিক্ষিপ্ পরিরট্ পরিবাদি বিনাশি খাদি হিংসাশ্চ। ব্যাভাষাম্মক্লিশ্ এতে নিন্দায়ো দশ জ্রেয়াঃ।
- (২৩)। প্রাদেরপদর্গাহত্তরাভ্যাং দেবিক্রুশাভ্যামৃত্তরে শীলাদিষু গম্যমানের বর্তমানকালে কর্ত্তরি বাচ্যে গকো ভবতি। পরিদেবক ইতি

২৪। ক্রিয়ার্পার্থান্তবিষ্যতি। ভক্তং ভোজকে ব্রজতি ভোক্ত মিতার্থঃ।

২৫। ণিন্ তচ্ছীলাদে প্ৰপ।

যঃ স্বভাবতঃ ভল্নিরপেক্ষস্তত্র কর্মণি প্রবর্ততে স ভচ্ছীল:।
তচ্ছীলাদে গম্যমান্ত্র স্থবস্তোপপদে সতি ধাতোরুত্তরে ণিন্
ভবতি। উষ্ণভোক্ষী।

দিবু: ক্রীড়ার্থাৎ প্রয়োজকনিঙস্তাৎ তেত্ব দেব দেবন ইত্যস্বাদ্বা ণকঃ অপ্রাদেস্ত। দেবগ্নিতা দেবিতা ক্রোষ্টা।

- (২৪)। ক্রিয়ার্থ: ক্রিয়াপ্রয়োজনং সোহর্থোহিতধেয়ো যক্ত তন্মাদাতারুত্তরে ভবিষতি কালে রুর্ত্তরি বাচ্যে ণকো ভবতি। ভক্তং
 ভোজকো ব্রজ্ঞতীতি ব্রজনক্রিয়ায়া: প্রয়োজনং ভোজনং তচ্চ ভূজিধাতোরর্থ:
 অতএব ব্রজনক্রিয়ায়া: সাধ্যা ভূজিক্রিয়া। ণকতৃঙ্টো ফর্তরীতি সামান্তবিহিতেন ণকেন সিদ্ধে ণকবিধানং তৃঙ্বাধনার্থং তেনান্ত বিষয়ে ভোকা
 ব্রজ্ঞতীত্যেবমাদিন ভবতি। তুমঙ্ পুনরম্মিয়র্থে ভবত্যেব অম্মিয়েবার্থে
 তক্ত বিধানাং। পকঃ কর্তরি তুমঙ্ ভাবে ভবতীতি বিশেষঃ। অতএরাভার্যং ব্যাচকার ভোক্ত মিত্যর্থঃ। বিশেষেণাপি সামান্ত্রভ্ত কচিদবাধনাৎ
 কাণ্ডং লবিতৃং ব্রজ্ঞতীত্যর্থে কাণ্ডলাবো ব্রজ্ঞতীত্যত্র গকং বাধিত্বা গোদায়ো
 ব্রজ্ঞতীত্যত্র পকং তুমঙ্ক বাধিত্বা লড় ভবতি এবং স্করাপায়ো ব্রজ্ঞতীত্যাদি।
 সামান্তবিহিতো লড়পি ভবতি। করিয়াতি ব্রজ্ঞতি!
- (২৫)। সপ্তমী চ পরে বাচ্য ইত্যাদিব্যবস্থয়া স্থপীত্যুপপদে সপ্তমী।
 কেবলস্ত স্থপ উপপদস্থ ন সম্ভবতীতি তদন্তবাগ্রহণম্। অত আহ স্থনস্থোপদ ইতি। উপশব্ধ: সমীপবাচী ধাতৃনা তু স্থবস্ত সামীপ্যমূচারণকৃতং সম্বন্ধকৃতঞ্চ সম্ভবতীতি তহুভর্মেনাত্র গ্রাহ্মন্। তেন যশানাতোক্ষত্তরে
 প্রত্যাহেন ভাবাং তৎসত্রিহিতে তৎসম্বন্ধে এব ভবতি। তেন পশ্ত উষ্ণং
 ভোক্বনশীলো বিপ্র ইত্যাদৌ ন ভবতি। এবং সর্বত্ত। স্থবস্তগ্রহণে প্রাশ্তগ্রহণাৎ উপভোক্তা। ভৃত্তিপ্রত্যয়স্তায়মপ্রাদঃ। উষ্ণভোকীত্তি তম্নিমিন্তো-

২৬। ন জাত্যুপপদে। ব্ৰাহ্মণানামন্ত্ৰয়িতা।

২৭। ব্রতে। স্থান্ডিলশায়ী।

২৮। কর্ত্তুরুপমানে। ধ্বাজ্ঞ ইব রোতি ধ্বাজ্ঞ্জরাবী।

২৯। পোনঃপুত্যে।

স্কীরপায়ী।

৩০। ন কুল্মাষাৎ খাদঃ। কুল্মাষথাদঃ।

পপদশু চেতি তৎপুরুষঃ। বছলবচনাৎ কচিদতচ্ছীলেহণি ভবতি। সাধু-কারী সাধুদায়ী ব্রদ্ধবাদী।

- (২৬)। জাতিবাচিত্যুপপদে তচ্ছীলে গম্যমানে ণিন্ন ভবতি আমন্ত্রিতেতি মত্রি শুপ্তভাষণে ইদিদ্ধাতোন্ত্মিতি স্ন্চুরাদিস্থিতি তৃতি-রেবাত্র ভবতি।
- (২৭)। নতে গমামানে স্থবস্তোপপদে শতি ধাতোকতরে ণিন্
 ভবতি। রতং শাস্ত্রতো নিয়ম উচাতে। নিয়মণ্চ কামাচারাপ্রাপ্তৌ
 ভবতি। স্থগুলশাগ্নীতি সতি শয়নে স্থগুল এব শেতে নাম্মত্রেতি অতছলার্থং বচনম।
- (২৮)। কর্ত্তরি প্রতায়বিধানাৎ তেন কর্তা বাচাঃ তম্ম কর্ত্ত্বপন্মানে স্থবন্তোপপদে সতি নিন্ ভবতি। জাত্মপপদার্থমতচ্ছীলাদার্থ ব্দরন্। কর্ত্ত্ত্রিতি কিষ্? অপূপানিব ভক্ষরতি মাধান্ অত্র কর্মণ উপমানমুপপদম্।
- (২৯)। পৌনঃপুত্তে গম্যমানে স্থবস্তোপপদে সতি ণিন্ ভবতি। এতন্দ্রপ্তেজ্বীলার্থং বচনম্। ক্ষীরপায়ীতি যুবে ঞাদেরিত্যাদিনা যুঃ। ক্ষীরং পুনঃ পুনঃ পিবতো দোষশান্তির্ভবতীতি প্রবর্ততে নম্বানা তচ্ছীলঃ।
- (৩০)। কুলাষাত্তরস্মাৎ খাদৃ ভক্ষণে ইতাস্থাদ্ধাতোকত্তরে পৌনঃ-পুত্তে গস্যমানে নিন্ন ভবতি। কুলাযখাদ ইতি কর্মণো গড়িতি পট্।

- **৩১** । অস্মতেম ননে । শোভনমনি ।
- ৩২। খ্যুশ্চাত্মননে । প্রাক্তংসন্তঃ প্রাক্তমানী। আত্মনন ইতি কিম্ ? প্রাক্তমানী দেবদত্তস্থা
- ৩০। কম ভ্যাং কুমারশীর্বাভ্যাং হনঃ। কুমার্বাতী শীর্বাতী।
- ৩৪। অনুপ্রপাদাবিশ্যকে।
 অবশ্যং ভাবঃ অবশ্যস্তা আবশ্যকমিত্যনর্থান্তরং তৎফলার্থং
 প্রত্যবায়পরিহারার্থং বা প্রবর্ত্তমানস্থ ভবতি। স্নায়ী প্রবাদী

⁽ ৩১)। মহাতীতি নিদেশো দৈবাদিকশু মন জানে ইতাশু গ্রহণার্থঃ তেন মন্ত্রাধন ইতাশু তানাদিকশু ন গ্রহণম্। মন্ততেধাতোঃ স্থবস্তো-পপদে সতি মননে গম্যাননে দিন্ ভবতি। মনন এবার্থে ধাতুরয়ং প্রবর্ততে এবং সতি মনন ইতি কৃতং স্পন্তার্থম্।

⁽ ১২)। সাত্মবিবয়ে জ্ঞানে বর্ত্তমানাৎ মন্ত্রতঃ স্থবস্তোপপদে সৃতি
থ্যশ্চ ভবতি চকারাগ্রিন্ চ। প্রাজ্ঞং মন্ত ইতি থিতীত্যাদিনা সম্'। সাত্মানং
প্রাজ্ঞং মন্ত্রতে ইত্যর্থঃ। স্বাত্মমনন ইত্যত্র আত্মশব্দঃ পরাদ্ত্যমাচষ্টে নতু
স্থাদিগুণবদ্বচনঃ। স্বত্ত আহু আত্মমনন ইতি কিং? প্রোক্রয়ানী দেবদন্তস্থোতি। পূর্বিস্ত্রেণ ণিয়েব ভবতি কর্ত্ত্রিত্যাদিনা ষ্ঠী।

⁽৩৩)। কুমারশীর্ষাভ্যাং কর্ম ভ্যামুন্তর স্থাং হন্ধাতোরুত্তরে পিন্
ভবতি। শিরসং শীর্ষন্শীর্ষাবিতি ভদ্ধিত্যাচোরের পরয়োর।দেশবিধানাদিছ
ন প্রাপ্রোতি অন্যাদের নির্দেশাদিছ করণীয়া। কুমারঘাভীতি ণিতীণ্লিড্বর্জ্ঞাং হনো যাত ইতি ঘাতাদেশঃ।

⁽৩৪)। অনুপপদাদ্ধাভোরবন্তাং ভাববিশিষ্টে কর্ভরি বাচ্যে পিন্
ভবতি। আবশুক্ষিতি মনোজ্ঞাদিত্বাপ্পক: ক্চিদ্ব্যস্থানাং স্বরতচ্ছেষ্য্যো•
রিত্যম্পুক্। স্থপীতাভামুর্ভিনিরাদার্থমম্পপদাদিতি ক্বতম্। অসু-

কারী হারী। অবশ্যংকারী অবশ্যংহারীতি তু ময়ূরব্যংসকাদিহাৎ সমাসঃ।

०৫। व्यथमत्र्।

শতং দায়ী খাদকঃ। অধমর্ণ ইতি কিম্ १ - শৃতস্ত দায়কঃ সাধুঃ।

৩৬। স্বার্থেচ গ্রহাদেঃ।

গৃহাতীতি প্রাহী স্থায়ী উৎসাহী উদাসী উদ্ভাসী অপরাধী উপ-রোধী মন্ত্রী সংমদ্দী নিরক্ষী নিশ্রাবী নিবাপী নিশায়ী।

৩৭। পরেভূবো র্দ্ধিব। পরিভবী পবিভাবী।

- (৩৫)। অনুপপদান্ধাতোরধমর্ণে ঋণিনি কর্ন্তরি বাচ্চো ণিন্ ভবতি। শতং দায়ীতি ভবিষ্যদূণিনোর্ণি নিতি আদিআং বছাতা । অধ্মর্ণার্থং ব্যাচকার থাদক ইতি। দায়ক ইতি উৎসর্মসিদ্ধো ণক এব ভবতি মুর্ক্রে-ঞাদেরিত্যাদিনা যুঃ।
- (৩৬)। স্বার্থে চার্থে গ্রহানে নিন্ ভবতি। গ্রহ্ উপাদানে হা গতিনির্ত্তী উৎপূর্বাঃ বহু মর্ধনে দাস্থ দানে ভাস্থ দীপ্রেইতি জ্বঃ। অপপূর্বে রাধ্ সাধ্ সংসিদ্ধে উপপূর্বে ক্ষিরাবরণে মত্রি গুপুভাষণে সংপূর্বে মৃদ্ ক্ষোদে নিপূর্বে রক্ষ্ পালনে শ্রু শ্রবণে ডুব্প বীজভন্তসন্তানে শো তন্করণে এতে গ্রহাদরঃ। উদ্ধাসী উদ্ধাসীতি তম্ম দম্ম উৎক্ষেপে ভস্ ভং-সন্দীপ্রোরিত্যেত্রোন্যাসকারেণ সাধিত্য। দাস্থ দানে ভাস্থ দীপ্রোইত্যেত্রোক্ত উপাধ্যায়সক্ষিক্ষার প্রান্তিভিদ্ শিত্য।
- (৩৭)। পরেরজ্তরস্মান্তবতোর্ণিন্ ভবতি বৃদ্ধিন্চ বা। বৃদ্ধিনেতি কিমর্থন্? জ্যাদিগণপাঠাৎ ভিন্প্রতায় এব পক্ষে ভবিষ্যতি তদেতৎ ক্বতম-শীলাদার্থন্। শীলাদৌ তু। পরিভবীতি নিত্যমেব ভবতি।

পণদাভিধানে তরিমিত্রোপপদস্ত চেতি সমামোন প্রাপ্নোতীতি শ্রুরোমাহ মযুরবাংসকাদিয়াং সমাস ইতি।

०৮। निक याठारमः।

ৰ যাচত ইতি অযাচী। যাচ্বদ্ ব্জ ্বস্ আচম্ব্যাক্ঞ সংকঞ।

৩৯। অচেতনকর্ত্কাদজন্তাচ্চ।

শকারী ঘর্মন্য ুবালাতপ্রঃ।

৪০। ভবিষ্যতি গমাদেঃ।

গ্রামংগ্রী আগামী প্রস্থায়ী প্রতিবোধী প্রযাজী ভাবী।

৪১। অনদ্যতনেইপি। খোগমী।

⁸২। অভেভু⁄বো ভূতে। অভিভাবী।

⁽৩৮)। নঞাপপদে যাচাদের্শিন্ ভবতি। টুযাচ্ যাচ্ঞায়াং বদ্ ব্যক্তারাং বাচি বজ্বজ্গতৌ বদ্নিবাদে আঙ্পূর্কশ্চমু আদনে, ব্যাঙ্-পূর্কঃ সংপূর্কশ্চ হুঞ্হরণে যাচাদিঃ।

⁽৩৯)। নঞ্যুপপদে সতি অচেতনকর্ত্কাদজন্তার্নাতারুত্তরে নিন ভবতি। ঘর্মস্রেতি কর্ত্ব্যুক্তারুত্বাদিক্টিরিতি ষ্ঠা।

⁽৪০)। ভবিষ্যতি কত্তরি বাচ্যে গমাদের্শিন্ ভবতি। গমাতি গমেরনিঙ্গাৎ আচমকমবর্জমিণ্কতোঃ সেঙ্মাস্ত ইতি কণা দিখাভাবা দৃদ্ধৌ কতায়াং বহুলবচনাং হ্রস্থস্। আগামীতাত্র তুন ভবতি। গ্রামনিতি ভবিষ্যদৃশিন্যের্শিনিতি স্থানিস্থাং ষষ্ঠাভাবে দিতীয়ৈব ভবতি। যত্র কক্তৃভাব্যান্তা সোহস্থা বিষয়স্তত্র লৃড়নেন বাধ্যতে। যত্র তুবিদ্যমানস্থ কর্ত্ত্র্শমনাদি- ক্রিয়ায়া ভবিষ্যন্তা তত্র লৃট্। গমিষাভি গ্রামং বিপ্রঃ। গমু স্পু গতৌ ষ্ঠা গতিনির্জৌ বুধ্ বোধনে যা প্রাপণে ভূ সন্তায়ামিতি পঞ্চ গমাদয়ঃ।

^{(.8&}gt;)। অনন্যতনেহপি কর্ত্তরি বাচ্যে ভবিষাতি কালে গমানোর্ণন ভবতি। লৃড়্বিষয়ে পূর্ক্তবোগঃ সাবকাশোহনদ্যতনে লুটা বাধ্যতে ইত্যয়ং যোগঃ। পূর্কবিৎ গ্রামং গস্তা বিপ্রঃ।

^{(.} ৪২.)। অভিপূর্বান্তবতেভূ তকালে ণিন্ ভবতি।

- ৪০। করণাদ্যজঃ। স্থাটোম্যাজী।
- 88। কম গো হনঃ কুৎসায়াম্। পিতৃঘা গী।
- ५৫। তথা ঙিন্ বিক্রাণাতেই।
 য়তং বিক্রীতবান্ য়তবিক্রয়ী বিপ্রঃ।
- ৪৬। শীলাচারসাধুযুজ্যাদেব র্তমানে। " জি জয়ী দৃঙ্দরী কি ক্ষয়ী ইণ্ ময়ী বিশ্রিঞ্ বিশ্রয়ী
- (৪০)। করণাত্ত্তরম্মাদ্ যজেভূতিকালে পিন্ ভবতি। অগ্নিষ্টোমেনেইবান্ অগ্নিষ্টোনমাজী। নরু অগ্নিষ্টোম এব যাণস্তস্ত কর্মন্তং সন্তবতি
 কথং করণত্বম্ ? উচাতে। অগ্নিষ্টোমাঝোন যাগেন করণেন স্বর্গাখ্যং
 ফলমুৎপাদিতবানিতার্থঃ। যাগস্ত ফলোৎপত্তী করণত্বাদ্ বছ্ধাতোরপি
 কলোৎপত্তিরেবাত্রার্থঃ। মীমাংসাশাস্ত্রে করণত্বমেবাগ্নিষ্টোমাদীনাং বজিক্রিয়ায়াং ব্যবস্থিতং তদিহ প্রাপঞ্জয়াল্ল বিবিচ্যতে। অতএবাগ্নিষ্টোমেন
 স্বর্গকানো যজেতেতি শ্রুতিঃ।
- (৪৪)। কর্মণ উত্তরাদ্ধক্তঃ কুংসায়ামর্থে ভূতে নিন্ভবতি। পিতৃ-ঘাতীতি নিতীন্নিজ্ বজ মিত্যাদিনা ফাতাদেশঃ। অকুৎসায়াভ-চৌরং হতবান্ চৌর্ফাতঃ।
- (৪৫)। তথা তেন প্রকাকে পূর্কোকেনেতার্থঃ তেনায়মর্থঃ কম'ণ উত্তরাদ্বিপূর্কাৎ ক্রীণাতেঃ কুংসায়ামিতার্থে ভূতে ভিন্ ভতি। দ্বতং বিক্রীতবান্ ইতার্থপ্রদর্শনম্ এতৎপর্যান্তঃ ভূত ইতালুবর্তত ইতি স্চনার্থম্। বিপ্রস্তা মিষিদ্ধাৎ দ্বতবিক্রয়ণং কর্ম বিক্রেড্যুঃ কুৎসামাক্ষতি। অকুৎসা-যান্ত—ধাহ্যবিক্রায়ো বৈশ্বঃ।
- (৪৬)। শীলাচারসাধুষিতি ভুবঃ সংজ্ঞালগ্ধকগ্নোরিতি থাবদন্ত্-বর্ত্তত । শীলাচারসাধুর গন্যমানেযু জ্ঞাদের্বর্তমানে কালে ভিন্ ভবতি। জি জয়ে দৃঙ্ অনাদরে কি ক্ষয়ে কি নিবাসগত্যোরিতি দ্বোর্পি গ্রহণ-মবিশেবাং। ইব্ গতৌ বিপূর্ক শ্রিঞ্ সেবারাং ট্রম্ উল্লিরণে নঞ্পূর্ক

টুঁবম্ বমী অব্যথ অব্যথী অভ্যম্ অভ্যমী পরিভূ পরিভবী প্রসূ প্রসবী প্রাক্ত প্রজবী।

৪৭। বেঃ শীষিক্রোদেশে। বিশয়ী বিষয়ী দেশঃ।

8 म। यूकारि र्घिन**ण्**।

যোগী ত্যাগী। যুজ্ তাজ ভজ রন্জ সংশ্জ বিবিচির কথাদি সংপৃচ্ অভিচর অপচর ব্যাঙ্মুয্ অভ্যাংঙ্হন্ পরিদের পরিকিপ্ অনুকধ্ আঙ্যমু আঙ্যমু পরিস্ সংজর পরিরট্ পরিবদ পরিদহ পরিমুহ্ ছয় বিষ্ ছুহ্ ফ্রাফ্রীড়।

ৰাণ্ ভয়চননয়োঃ অভিপূর্জ্ন অম্ ব্রোগে পরিপূর্জ্ন ভূ সন্তারাং প্রপূব সংগ্রেবণে প্রপূব্ জু সৌলো ধাতুঃ গতৌ বর্ত্ত ইত্যেকে গতিবিশেষহেতৌ চৈবাপরে। চংক্রম্যাদিগণপাঠাং প্রাপ্তস্ত ভনন্ত বাধনার্থম্ অপ্রপূব্সক্ত বিষয়ং। ইণ্জিভান্তি উভয়ত্র পাঠাং স্থাদেব্রজিতি বর্ট্ ভবতি। ইজরঃ জিজরঃ। জি শ্রী ইণ্বম্ব্যথ্ অভান্পরিভূদ্ ফি প্রস্প্রজু জ্যাদিঃ।

⁽৪৭)। বেং প্রয়োঃ শীঙ্ স্বপ্নে ধিঞ্ বন্ধনে ইত্যেত্যোদেশিংভি-ধ্য়ে ডিন্ ভবতি। শীলাগুলুর্ত্তিরত্রাপার্থিক।দেশ ইত্যন্থ বাচ্যন্থ নিয়তত্বাৎ সামসিত্যোবিত্যতাকারাস্তহোপাদানাং বিষয়ীত্যত্র ষত্মং ন প্রাপ্নোতি। অত্র স্থ্যে মুর্দ্ধন্যবতো নি:দশাৎ বত্বং কবণীয়স্। অথবা শেষো বৃদ্ধানিতি যত্তম্। দপ্তাসকারবানেবার্মিত্যন্তে।

⁽৪৮)। শীলাচারসাধুর্ গমামানেরু কর্ত্তির বাচ্যে যুজাদেরুপ্তরে থিনণ্
ভবতি। তৃঙাপবাদঃ। বোনীতি অকবর্গানিবজন্রজাজাংঘিতি কলাবিতি
জ্ঞা গঃ। মুজাদরো বিবিচাস্তে। যুজ্ সমাধৌ দিবাদিঃ যুজিব্ যোগে রুধাদিঃ
দরোরপি গ্রহণং তাজ্ বলোহানো ত্যাগী ভজ্ সেবায়াং ভাগী রন্জ্ রাগে
রাগী বন্জো ঘিনণীতি নলোপঃ সংপূর্ব স্থ্ বিসর্গে সংস্গী। বিপূর্ব বিচির্
পুরগ্ভাবে বিবেকী রুধাদিঃ। সংপূর্ত্ ইতি সংপূর্বপূচি সম্পর্কী
রুধাদীতি বিশেষণাৎ অদাদিন গৃহতে। অভিপূর্ব্বোহপশ্রমান্তর্গ গতাঃর্থ

৪৯। শমাদেশ্চ।
শমুশ্বী তমু তমী দমুদ্মী প্রমু শ্রমী ভ্রমু ভ্রমী ক্রমু
ক্রমী মদী মাদী।

৫০। বেঃ কষ্ লস্কখ্ শ্ৰেন্ভঃ।
কষ্ হিংসায়াং বিকাষী লস্ শ্লেষণক্ৰীড়নীরাঃ বিলাসী কথ্
শ্লাঘায়াং বিকথী শ্ৰন্ভু বিখাসে বিশ্ৰম্ভী ।

অভিচাৰী অপচারী। ব্যাঙ্পূর্ব মৃষ্ স্থেরে ক্র্যাদিঃ মুষ্ থপ্তনে দিবাদিঃ দ্রোরপি গ্রহণং ব্যামোধী অভ্যাপ্ত পূর্ব হন্ হিংসাগত্যোঃ অভ্যাঘাতী পরিপূর্ব দেব দেবনে পরিদেবী পরিপূর্ব ক্ষিপ্ প্রেরণে পরিক্ষেপী দিবাদিস্তদাদিশ দ্রোরপি গ্রহণম্। অনুপূর্ব ক্ষিরাবরণে অন্তরোধী আঙ্পূর্ব যম্পর্মে আধামী আঙ্পূর্ব যম্প্রমাজ হানানী পরিপূর্ব স্বাতী পরিসারী সংপূর্ব জর রোগে সংজারী পরিপূর্ব গ্রহারঃ রট্ পরিভাষণে প্রিরাদী বদ্ ব্যক্তাযাং বাচি পরিবাদী দহ্ ভত্মীকরণে পরিদাহী মূহ্ বৈচিত্তে পরিমোহী হয় বৈক্ত্যে দোরী দ্বিষ্ অপ্রীতো দ্বেষী হয় প্রপূরণে দোহী ক্রহ্ জিঘাংসায়াং দোহী আঙ্পূর্ব ক্রীড় বিহারে আক্রীড়ী। যুজ্ ভজ্ রন্জ ত্যজ্ হহ্ হয় ক্রাপ্রস্বরাহি ব্যাপ্ত্ মুষাঙ্ যুমাঙ্ যুম্ব দহ্ মূহ্ বদ্ স্থ ক্রিপ্রিঃ। বাজি পরিপূর্ব হিন্ত ব্যাপ্ত মুষাঙ্ যুমাঙ্ যুম্ব দহ্ মূহ্ বদ্ স্থ ক্রিপ্রিঃ।

- (৪২)। শমাদেঃ শীলাদিযু গম্যমানেযু ঘিনণ্ ভবতি। শমীতি আচমক-মেত্যাদিনা কথাদিয়াসৃদ্ধাভাবঃ শমু উপশ্যে তমু আকাজ্জায়াং দমু উপশ্যে শ্রমু তপসি থেদে চ তামু অনবস্থানে ক্ষমুষ্ সংনে ক্লমু গ্লানৌ মনী হর্ষে এতে অষ্ট শমাদয়ঃ।
- (৫০)। বেরুত্রসাৎ ক্যাদেঃ শীলানির ঘিনণ্ ভবতি। কৃদ্ গতৌ দক্ষাস্ত স্থাত্র গ্রহণমিতি জ্যাদিতামত্মবধীর্য ভাষ্যকারমতং প্রস্কৃতি। বৃত্তিকতা মৃদ্ধতাস্ত ক্ষ্ হিংলার্থেহিত গৃহীতঃ। কৃষ্ হিংলারাং বিক্ষী। কৃষ্ শেষণক্রীভূনরোরি লাদী কৃথ শ্লাষাং বিক্ষী শ্রন্ভূ বিশ্লাসে বিশ্লস্তী।

- ৫৯। অপাচ্চ লয়। লষু কাচ্ছো বিলাষী অপলাষী।
- ৫২। প্রাল্লপ্সজ্মথ্বদ্বসঃ। প্রদাপী সংগতে প্রসারী প্রদাবী প্রমাধী প্রবাদী প্রবাসী।
- ৫৩। চরাদেরিফুঙ্ বর্ত্তমানে। তচ্ছীলাচারসাধুযু গন্যমানেষু বর্তমানে কালে চরাদেরুত্তরে ইফুঙ্ ভবভি। চরিফুঃ।
- ৫৭। অলংকুত্ঞো ভূষার্থে চ। ভনাপবাদঃ। অলংকরিষ্ণুঃ। নিরাকৃঞ**্ প্রজন্** উৎ-পচ্ উৎপত্উৎপদ্ উনাদ্ অপত্রপ্ সহ্ রুচ্ রুহু রুধু ভূ

- (৫৩)। চর্ গত্যর্থঃ তৃঙিপ্রভ্যয়স্থাপবাদোহয়ং যোগঃ।
- (৫৪)। অলমিত্যায়ম্। অলংপূর্বাৎ রুঞো ভ্যার্থেংগ্রাথে চ বর্ত্ত-মানাৎ শীলাদিয় গম্যানেয় বর্ত্তমানে কালে ইফুঙ্ ভবতি। চরাদিজাদেব সিদ্ধে পৃথগযোগঃ কিমর্থঃ ? ইত্যত আহ ওনাপবাদ ইতি। অভ্যার্থে অলংক্র ইতি ইফুঙ্ সাবকাশঃ ভ্যার্থে ভূষ্ কুপার্থান্তজ্ঞীলাচারসাধুর বর্ত্তমান ইতি ওনপ্রত্যায়ন বাধাতে অভস্তদপবাদোহয়ং যোগঃ। নিরাঙ্পূর্বেড্নিভ্ক্ত করণে প্রপূর্বেণ জনী প্রাত্তাবে উৎপূর্বাক্ষারঃ ভূপচম্ পাকে পভ্

⁽৪১)। এরপাচে তরশাৎ লমঃ শীলাদিমু ঘিনণ ভবতি। লম্ কান্ডো বিলাধী অপলাধী।

[্]থং । প্রাহত্তরস্থান্তপাদেঃ শীলাদিষু ঘিনণ্ ভবতি। বপ্ লপ্ ব্যক্রারাং বাচি স্থাতৌ ছ জ গতৌ মথ্বিলোড়নে বদ্ ব্যক্তারাং বাচি বস্ নিবাসে বদেঃ সাহচর্যাৎ বসেরপি ভারদের্গ ইণং নতু বস্ আচ্ছাদনে ইত্যস্থা-দাদেঃ তত্ত্র প্রবিদিতা। স্থাতাবিতি ব্তাবুক্তং ভারদের্গ ইণস্চনার্থম্। তেন ঋ স্থাতাবিত্যস্কাদেন গ্রহণম্। তত্মাৎ ভৃতিরেব ভবতি। তস্থাপি গ্রহণমিতি ধাতুপারায়ণম্।

ভাজ অন্জ (স্বন্জ) সর্বে ণ্যক্তাশ্চ। কার্যয়িষ্টা আঢ়ীভবিষ্ণুরিত্যনভিধানার স্থাৎ।

৫৫। সন্ভিক্ষাশংসেরঃ।

তচ্ছীলাচারসাধুরু গম্যমানেষু সনক্ষতিক্ষাঙ্পূর্ববশংসেরুত্তরে বর্ত্ত-মানে কালে উর্ভবতি। চিকীষু ঃ ভিক্ষুঃ আশংস্কঃ।

গতৌ পদ্ গতৌ মদী হর্ষপ্রেপনয়োঃ ভ্বাদিঃ যস্ত মদী হর্ষে দিবাদিঃ দ সমাদিগলপাঠাৎ হিনলো বিষয়ঃ। অপপূর্ব প্রজারাং ষহ্ মর্ষণে যহ্ মুহ্ শক্যার্থে দ্বরোরপি গ্রহণং ভ্বাদিলাহচর্যাৎ যহ্ মর্ষণ ইত্যক্তিল ভ্বাদেশ্র হর্ণমিতি কেচিৎ। কচ্ দীপ্রৌর্ভু বর্তনে রুধু ব্রুজী ভূ সন্তায়াং ট্রাজ্ দীপ্রৌ অন্জ্ ব্যক্তিগ্রক্ষণকান্তিগতিরু। ইহ অঞ্জেং পাঠঃ প্রনাদকতঃ অন্জ্ ইতি এপ্তবাং শাস্ত্রাস্ত্রায়রেবাবাং । নবের্ণান্তাশ্চেতি সর্ব গ্রহণ মান্তাশ্বের চন্নাদয়ো লান্তাশ্চেতি শক্ষানিরাদার্থম্। চর্ সহ্ কচ্ বৃত্ বদু ভূ প্রজন্ অন্জ্ লাজোৎপচোৎপতোলাদয়ঃ। উৎপদ্ নিরাকরোত্যগ্রপাশ্চনাদিনিজন্তালাৎপালাংকি পঠান্তে তেভ্যস্তত্বপ্রগোদিঃ। শিলাদৌ ইকুছ্পাঠাং নিজ্লোপাহশিদান্তিটিত নিজ্লোপাভাবঃ। ভবিষ্ণুবিতি দিদ্ধে
পশ্চাৎ অনাঢ্য আট্যো ভবিষ্ণুরিতি চিব্ প্রতায়ে ক্রতে আট্যাভিনিক্রিরি প্রাপ্রেতি। অত আহ অনভিধানার স্তাদিতি। যদাভূতভদ্তাবাহত্র বির্ক্ষিত্রদাভূতভদ্তাবে লগ্নাদেভূবিঃ থিষ্কুঙ্পুক্নাবিতি থিষ্ণুঙা আঢ়াংভবিষ্ণুরিত্যের ভবতীত্যভিপ্রায়ঃ।

(৫৫)। সন্প্রপাদেরি ত্যাদিলকগৈিহিতস্থ সনো গ্রহণং ন তু ষয় দানে বন্ সন্ সংভক্তাবিত্যেভয়োধারোঃ। এতক্ত গর্গাদির গণে জিগীষ্-শব্দপ্রাহিছনারতে। অথবা সন্বাত্যোকপ্রত্যয়ন্তানভিধানাং। চিকীষ্-রিতি ক্রঞঃ সন্ ঋতণ্চ সনীতি ইর্ দিক্ষক্তিঃ রাস্তাদেরিত্যাদিনা দীর্ঘঃ ইচ্-ক্রাদিত্যাদিনা যক্। ভিক্রিতি ভিক্ বাজ্ঞায়ান্ আঙ্ পূর্বশিসি ইছোয়া-মিত্যস্থ গ্রহণন্ আঙ্ সহিত্ত এবায়াপিঃ

- ৫৬। ইষেরিচছ্বিদেরুম্চ। ইচ্ছঃ কিদ্যু জ্ঞাতা।
- ৫৭। কচিত্রাজ্ঞীলিকেয়ু তৃঙাদ্যপীষ্যতে। উৎপতিতা ভবিতা আশংসিতা কমিতা কমন ইত্যাদি।
- ৫৮। কিপ প্রায়ো দীর্ঘাদিশ্চ বচাদেঃ।
 তাফীলাচারসাধুয় গম্যানেয় বর্ত্তমানে কালে ধাতোল কাতীরে কর্ত্তরি বাচ্যে প্রায়ঃ কিপ্ ভবতি। বচাদে-দীর্ঘাদিশ্চ। প্রাজ্ বিভাট্ ভাস্থ ভাঃ ধূর্কী ধৃঃ ছ্যুতা বিহ্যুৎ উর্জ্ উর্ক্ পৃ পূঃ ডুপচ্য পক্ ভিদ্ ভিৎ ছিদ্

নির্দিটঃ। স্তত্যর্থস্থ তু শংসেন নিষ্তত আঙোহপি যোগঃ। ভিক্ষুরাশং-স্থবিত্যত্ত হলাদেরিত্যাদিনা এনে প্রাক্তে বিধানস্।

- (৫৬) তি তি তি বিদ্যানানের বর্তনানে কালে ইযু ইছারামিতান্ত উর্তবি । ইষেরিছাদেশক। বিদ্ জান ইত্যাং উর্তবিত মুনাগন্ধ । জাতেত্যুর্বাকারোহন্তথাতুনিরাসার্থ: তেন বিদু লাভ ইত্যাদীনানগ্রণম্। বিদি অবদনে ইত্যন্তাপি গ্রহণমিতি ধাতুপারায়ণাদৌ বাবস্থিতন্। অতএব পুযন্তি বিন্দু পৃষতা ইতি জলাবয়ববাচকোহপি বিন্দুশক:।
 ইবেরি ছার্থ সৈব গ্রহণম্ ইছ্বিভাল তদ্ধপ্রতীতে: নতু ইষ্ গতাবিত্যন্ত
 তিমিংস্তব্যাভাবাং। নহ্নিষ্টার্থা শাস্ত্রে প্রকৃষ্টির্ভবিত।
- (৫৭)। উংপতিতা ভবিতেতি ইফুঙ্বিষয়ে আশংসিতেতি উবিষয়ে।
 ভৃত্তি:। কমিতা কমন ইতি গমাদেপুকি ইতি পুক্বিষয়ে ভৃত্তিঃ হলাদেবিত্যাদিনা ভনশ্চ।

ছিৎ গ্রাবপূর্বফ ুঞ্ গ্রাবস্তাৎ বচ্ বাক্ প্রচ্ছ প্রাট্ আয়তপূর্বফ ুঞ , আয়তস্ত্র কটপূর্বপ্রক্ত কটপ্রাক জুঃ সোতো জুঃ প্রিক্ত জীঃ দ্ব ক্র শ্রু গতে জঃ।

হে। হাতো দিশ্চ।

मिन्नाद।

৬০। হুবো দীর্ঘশ্চা

জুহুঃ |

বলপ্রাণনয়েঃ কিপ্ নিঙ্লুকি স্থলুকি চ ক্রতে রম্দ্রুইত্যাদিনা জকারলুমিবেশঃ চজাঃ ক ইতি জন্ম কঃ। পূরিতি পূ পালনপূরণয়োঃ উর্পবর্গাদিত্যুর্ রাস্তাদেরিত্যাদিনা দীর্ঘঃ। পরিতি জুপচষ্ পাকে ভিদিব্ বিদারণে
ভিদির্ দৈধীকরণে ষ্টু ঞ্ স্ততৌ ষঃ স ইতি সঃ গ্রাবাণং স্তৌতীতি গ্রাবস্ত্রং
ইস্বাভুগ্বরাদাবিতি তুক্। বাগিতি বচ্ পরিভাষণে কিপ্ দীর্ঘণ্ট। দীর্ঘাদিশ্রেতাদিপদগ্রহণাৎ উচাদেশাভাবশ্ট। দীর্ঘনিধানসামর্থ্যাদের উচাদেশো ন
ভবিষ্যতীতি ন বক্তবাদ্ উচাদেশেহিদিঃ ক্তেত দীর্ঘস্পপ্রেঃ। প্রাজৃতি
প্রচ্ছ ক্রীপ্রারাং কিপ্ দীর্যঃ বশাদিত্বাৎ প্রাপ্তন্থ প্রচাদেশভাভাবঃ পূর্ববং।
আয়তপ্রস্থা, গ্ কটপূর্বপ্রভা ইতি যৎ পাইতং তরিয়নার্যং তেন কেবলাদন্তোপপদাচ্চ দীর্ঘন্থ ন ভবতি। আয়তং ক্রোতীতি আয়তস্থা। প্রভ্রু গতৌ
কটং প্রবতে ইতি কটপ্রঃ জ্রিতি জুঃ সৌরো ধাতুঃ শ্রীরিতি প্রিঞ্
দেবারাং ক্রিবিতি জ্জুক্রণ গতৌ কিপ্ দীর্যণ্ট।

- (৫৯)। তজ্ঞীলাচারসাধুর গম্যমানেষ্ ছাতে: কিপ্ ভবতি। দিকক্তিত। ধাতো: প্রভায়ে পরে তিঙ্পাদে যাদৃশী দিকক্তিক্ত। তথা দিরিতানেনাম্করণনিদং তেনাছেকাজেব.প্রাগ্দির্ভবতি ক্দনিত্যাদিকার্যঞ্ ভবতি। দিহাদিতি ছাতেক্দিদ্ধিক্তিফ্তোবিতি দিক্জ্যুকারশু ইকার: দিহাদ্বজুম্।
 - (৬৯)। ছ দানে ইত্যক্ষাৎ ক্লিপ্ দ্বিস্ক্তিঃ প্রক্তেট দীর্ঘণ্ট স্থাও।

৬১। দৃণাতেক্সফট। দদৃৎ।

৬২। ধ্যায়োধী**শ্চ।** ধীঃ।

৬৩। রেফোপান্তবঙ্জ ছান্তাচ্ছঃ শশ্চ। বাছি কান্ বাংশো বাংশঃ প্রচ্ছ্ প্রাট্ প্রাশো প্রাশঃ। রেফো-পান্তান্ত্—মূচ্ছ মূরে মূরঃ।

৬৪। ভুবঃ সংজ্ঞালগ্নকয়োঃ।

মিত্রভূর্নাম কশ্চিৎ স্বয়স্ত্র ক্লা পুনর্ভূ দ্বিরিটা প্রতিভূল্যকঃ। প্রায়োগ্রহণং সর্বোপাধিব্যভিচারার্থং তেনাবর্ত্তমানেহপ্যত-চ্ছীলাদে চ উথয়। গ্রাংসতে উখাশ্রৎ পর্ণানি ধ্বংসতে

⁽৬১)। দৃ বিদারণ ইত্যক্ষাং কিপ্ছিক্তিঃ প্রক্রতৌ হ্রস্বণ্চ ভবতি।
দদ্দিতি প্রক্রতৌ হ্রস্বে কতে তুক্। দৃণাতীতি নিদেশো দ্বু ভয় ইত্যক্ত ভ্বাদেনিরাসার্থঃ। উভয়ার্থস্থ গ্রহণমিতি জ্বাদিত্যঃ।

⁽৬২)। বিক্জিনিতি নিবৃত্তম্। ধ্যৈ চিম্বায়ামিতাশু কিপ্ধীভা-বশ্চ ভবতি।

⁽৬০)। ছান্তান্ধানতোঃ কিপ্ ভবতি রেফোপান্তং বর্জ বিষয় ছঃ শশ্চ ভবতি। বানিতি বাছি ইচ্ছারান্ ইনিষার্ম্ কিপ্ ছন্ত শঃ ব্কান্তথাং শলোপঃ। বাংশৌ বাংশ ইতি অপনাস্তস্ত্রোদিনা নকারস্ত্রাম্কারঃ। প্রাড়িতি ছকারস্ত শে কতে ভ্রম্জানীত্যাদিনা শস্ত ষঃ ষষ্ঠ ইতি ষত্ত টেঃ। নিনিত্রাপায়াৎ ছকারস্ত শে কতে ছোহচ ইত্যনেন কত্বিছ্বস্ত নির্ভিঃ। পূর্ব প্র প্রচ্ছ প্রাড়িতি ষছনাহতং ভর্নার্থনিবানার্থম্। মৃরি-ত্যাদি মৃর্চ্ছা মোহনসমুক্তার্রোঃ রম্ব্র ইত্যাদিনা প্রতিষেধাভাবাং ছকার-লুক্ শকারে তুক্তে লুগ্ন স্তাং।

⁽৬৪) ভবতের্ধাতোঃ সংজ্ঞায়াং লগ্পকে চ গম্যমানে কিপ্ ভবতি।
স্বয়স্ত্রিস্থা পুনভূবি রিঢ়া। প্রায়োগ্রহণং সর্কোপাধিব্যভিচারার্থমিত্যুক্ত্যু
তদেব ব্যাকরোতি তেনাবর্তমানেহপ্যতান্তীলাদৌ চেতি চকারোহমুক্ত-

পর্ণধ্বৎ শং কল্যাণে তিষ্ঠতীতি শংস্থাঃ সোমং পিবতীতি সোমপাঃ ভাবয়তীতি ভৌঃ লাবয়তীতি লোঃ।

৬৫। ধ্বেষা দ্বিশ্চ।

म्श्रक्।

७७। छेश्रशत প्रात्मी ह।

ঋতো যজতীতি ঋষিক্ সেনাং নয়তীতি সেনানীঃ প্রণীঃ স্বারাট্ বিরাট সম্রাট ্ষদ, দিবিষৎ নিষৎ প্রাসূতে প্রসূত্ ভীশ্মসূঃ দ্বিষ্ প্রস্থিট মিত্রদ্বিট্ ফ্রন্থ, মিত্রশ্রুক্ ছুন্

C

সমুজয়ার্থ:। তেন প্রসোদাশেদে । ডশ্চেতি কম ণ্যাপি ভন্ধতি। অতঃপরং সামান্তেন বিধানম্ উথাশ্রৎ পর্ণধ্বদিতি শ্রন্ম ধ্বন্ম অবশ্রংসমে
কিপ্ হলুপান্তেত্যাদিনা নকারলুক্ , উথাশ্রস্থকাৎ স্থঃ বস্বাদেস্ত ইতি
সকারস্থ তকারঃ। শংস্থা ইত্যসংজ্ঞায়াম্। সংজ্ঞায়ায়। শমঃ কঞাদেনামি ইত্যঙ্ শংস্থঃ। শংস্থা শংস্থমিতি সংজ্ঞায়াং স্থঃ কশ্চেত্যত্র
হত্রে জয়ানিত্যেন ব্যুৎপানিতম্। ভৌরিতি ভাবরতেঃ কিপ্ কির্মায়োশেচতি পিঙ্লোপঃ উর্ন্তাবাস্থেতি বকারস্যোকারঃ অতোর্দ্ধিশ্চতি উকারঃ
ক্রিছেচোহতেতি বৃদ্ধিঃ। ভৌশকাৎ স্থঃ বিদর্গঃ লৌরিতি লুঞ্ ছেদনে
পূর্কবিং।

- (৬৫)। ঞিধনা প্রাগলভো ইতাস্মাৎ কিপ্ তবতি দ্বিক্জিক।
 দগুক্ ইতি কিপ্ দ্বিক্জিঃ ঝদদিত্যকারঃ ঠচথধেত্যাদিনা ধস্তা দঃ। দধুষ্
 শক্ষাৎ স্থা কোহত্ত্তত্যাদিনা সম্ভাকঃ।
- (৬৬)। প্রাদৌ স্থান্তে চোপপদে সর্বধাক্তাঃ কিপ্ ভবতি। উপ-পদগ্রহণেনৈব প্রাদিগ্রহণে সিদ্ধে প্রাদাবিতি ক্তং স্পষ্টার্থন্। সামাখ্য-বিধানেহপি বিশেষবাবস্থা। সা যথা সদু স্থ জি নী রাজ্ ছহ্ ক্রহ্ ভিদ্ ছিদ্ যুজ্ দিস্ বিদাং প্রাদৌ স্বম্পে চ। ঝতোর্যজন্চ। ঋষিগিতি কিদা-শীলোগিরিত্যাদিনা ইজ্ লুপ্রেহপি কিপি তৎকার্যাং ভবত্যেবেতি অবাদ্য-ভোহসংপ্রসারণঞ্চেতি যন্ধ ইজাদেশনিয়েখন জ্ঞাপিত্য্। ঋষ্চিশ্পাং স্থং ক্রম্জাণীত্যাদিনা প্রাপ্তস্ত বস্ত ঝতোর্যজন্টেতিনিষ্থেঃ। ক্লাট্রশক্ষাহয়ং

গোষুক্ প্রধুক্ যুজ্ অশ্বযুক্ প্রযুক্ বিদ্ বেদবিৎ সংবিৎ জি ইন্দ্র-জিৎ প্রজিৎ ভিদ্ কান্ঠভিৎ প্রভিৎ ছিদ্ বজ্জুচ্ছিৎ প্রচ্ছিৎ।

৬৭। ভজো দীৰ্ঘ**শ্চ।** অৰ্দ্ধভাক্ প্ৰভাক্।

৬৮। অবাদ্যজোহসংপ্রসারণঞ্চ। অবযাঃ।

মথাকথঞ্চিবর্থোহবগন্তব্য:। প্রণীরিতি ণীঞ্প্রাপণে ণাদিধাতোরস্তরি চেডি ণত্বন্। স্বারাড়িতি রাজ্দীপ্রো স্বর্শক্ষোপপদে কিপ্ ঢ্রোরিভ্যাদিনা রেফ-লুক্ দীর্ঘশ্চ সারাজ্শকাৎ স্থ: ভ্রদ্জানিত্যাদিনা জম্ম বং ষষ্ট ইতি ষম্ম ট:। সমাড়িতি রাজস্ম্যাজানে সমাড়িতি নিপাতনাৎ সমো মকারস্তামু-দিবিষদিতি যদ্ বিসর্গগত্যবসাদনেষু দিবীতি সপ্তম্যস্তোপ-পদে কিপ্ তৎপুরুষে ক্তি বছলমিত্যলুক অগ্ন্যাদেস্তালাক্তিগ্লখাৎ ষত্ব। প্রস্তে ইতি নির্দিষ্টং ধৃঙ্ প্রাণিগর্ভবিমোচন ইত্যন্তাদাদিকন্ত . গ্রহণমিতি স্টনার্থন্। তেন ষ্পেরণে ইত্যস্ত তোলাদিকস্ত ষুঞ্ প্রাণি-প্রসব ইতি দৈবাদিকশু চ গ্রহণং ন ভবত্যনভিধানাং। প্রস্থিতি দিয় অগ্রীতৌ মিত্রগুগিতি ক্রন্থ জিঘাংসায়াং কিপ্তঃ মুহ্কুহেভ্যাদিনা হস্ত ঘঃ তুর্য্যান্ত ইত্যাদিনা দশু ধঃ বর্গ শাদিরিত্যাদিনা বশু কঃ। গোধুপিতি তুহ প্রপূরণে অশ্বর্গিতি যুদ্ধির ষোগে যুদ্ধ সমাধাবিতি দ্যোরপি গ্রহণম। यूनट ङ तमभारम देखि व्यमभारम क्रम्विधाना ९ क्वनामि कि स्यु हु। मःवि-দিতি বিদ্ জ্ঞানে বিদ্ বিচারণে বিদ্ সভায়ামিতি ত্রয়াণামেব গ্রহণং নতু বিদ্ লাভে ইতাম ১কারবতঃ পাঠমাবিবক্ষিতত্বাং। প্রক্রিং ইন্রজিদিতি 🐯 क्षरत्र किश् जूक्। कार्ष्ठिनिज्यानि जिनित् विनातरन हिनित् देवशैकद्रदन।

(৬৭)। ভজ্ সেবায়ামিতাসাদ্ধাতোঃ স্বত্তে প্রানৌ চোপপদে কিপ্ ভবতি দীর্ঘন্চ। কিপ্ প্রায় ইত্যাদিনা কিপি নিদ্ধে পৃথিধানমত্তীলার্থম্। (৬৮)। অত্যাসংপ্রসারণফোত পাণিনীয়লিপিকরস্থাসংপ্রসারণমিতি ७२। जमसंबर्भा

প্রছিবাট্। অনদন্তাত্ —শালিবাহঃ বারিবাহঃ।

৭০। পরেব্রজ্ঞ ।

পরিব্রাট্।

१२। शूत्रा नाटनटर्ना ७ 🕶 ।

পুরোডাঃ।

৭২। পঞ্মান্তস্থাহনঃ। প্রশান্ সত্যভাণ্। অহন ইতি কিম্ ? বুত্রহণো।

স্বনংজ্ঞাভাবিতবুদ্ধেঃ প্রমাদঃ তস্থাৎ অবাদ্যজো নেজাস্থাদেশশেততি লক্ষণম্। অবপূর্বাৎ যজতেঃ কিপ্ ভবতি দীর্ঘণ্ট ইজাদ্যাদেশাভাবশ্ট। আদিগ্রহণমূত্তরার্থম্। অব্যাজ্শকাৎ সুঃ উক্থশংসাদেউসিতি ডদ্ ডিতি স্বরতচ্ছেষ্যোলু গিতি শেষলুক্ অত্তাসস্ক্রভাধাতোরিতি দীর্ঘঃ স্কুলুক্ বিস্গ :।

- ে (৬৯)। অকারাস্তাত্ত্রস্থ বহেঃ কিপ্ ভবতি দীর্ঘঃ উহাদেশাভাবক্ত প্রুটবাড়িতি প্রষ্ঠবাহ্শকাৎ স্থঃ হোড় ইত্যাদিনা হস্ত চঃ বর্গস্থাদিরিজ্যাদিনা চম্প্র টঃ। এবং খেতা বহস্তোনমিতি খেতবাঃ। শালিবাহ ইতি কর্মণো ণড়িতি ণট।
- (१०)। পরেরুত্তরশাৎ এ**জতেঃ কিপ্ভবতি দীর্ঘণ্চ। পরিব্রাড়িতি** অসজাদীত্যাবিনা জম্ম মধ্র ইতি যম্ম টঃ।
- (৭১)। পুরস্শকাত্তরস্ত ধাতোদাশেঃ কিপ্ ভবতি। দকারস্ত ডঃ। পুরোডা ইতি পুরে। দাশুস্ত্যেনং দাশু দানে দিবাদিঃ ততঃ কিপ্ স্থঃ উক্থ্-শংসাদেউসিতি ডস্ ডিস্থাদাশ্লুক্ অম্বস্তাসন্তস্যাধাতোরিতি দীর্ঘঃ।
- (৭২)। পঞ্চমান্ত হন্বর্জিত ছ থাতোঃ কিপ্ ভবতি দীর্ঘণ্ট। প্রশানিতি শমু উপশ্যে কিপ্ দীর্ঘঃ প্রশাম্শকাৎ হঃ ধাতুমোনোহঙ্যে ইতি মন্ত নঃ। সত্যভাণিতি ভণ্শকার্থঃ। নাদির্গান্তত্যনেন গশু বর্গানাভাবঃ। বৃত্তহণাবিতি ব্রহ্ম ভ্রাপ ইত্যাদিনা কিপ্ প্রকৃত্যক্ষর-সোত্যাদিনা পদ্ম্। প্রায়োগ্রহণাৎ বহুলবচনাদ্বা কচির দীর্ঘঃ। স্ক্রেজিতি

- ৭৩। অজনাদেঃ পঞ্চলুক্ চ।
 অজাঃ প্রজাঃ গেলাঃ গম্ অগ্রেগাঃ ক্রমু উদ্ধিক্রাঃ ধপু গোষাঃ
 ধমু বিষ্থাঃ।

গণ্সংখ্যানে ঙণাভ্যামিত্যাদিহত্তে স্থগণ্শেতে ইত্যুদাহরণং দর্শন্ত। বৃত্তিক্ষতা প্রেষেণৈতৎ হৃচিত্য ।

- (৭৩)। অপ্শক্ষত্তরো জনঃ অজনং অজনাদেং কিপ্ ভবিত।
 দীর্যঃ পঞ্চমলুক্ চ। অপ্র জায়তে অজা ইতি জন্ জননে জনী প্রাহ্নভাবে দ্বয়েরপি গ্রহণম্। অগ্রেগা ইতি গমু স্বপু গতৌ উদধিক্রা ইতি
 ক্রেম্ পাদবিক্ষেপে ধর্ষিতি পঠিতং বণু দানে ইতাস্থ গ্রহণার্থম্। তেন বন
 বণ সংভক্তাবিত্যস্থা গ্রহণম্। উভয়োরপি গ্রহণমিতি জয়াদিত্যেনোক্তম্।
 গোষা ইতি গাং সনোতীতি অনকারাস্তমনোতেশ্চেতি বত্তম্। বিষধা
 ইতি থনু অবদারণে বিষং ধনতীতি। পঞ্চিধ গ্রিভরয়ং গণঃ। উপপদস্ক
 প্রয়োগদর্শনাছরেয়ম্। ছাদ্বসা অপ্যমী ভাষায়াং প্রযুজ্যন্তে ইত্যক্র লুক্ষণম্।
 তথাচ কাতন্ত্রবৃত্তিঃ, অগ্রেগা উদধিক্রান্ত গোষান্চ বিষধাস্তথা। প্রিয়ং
 দধতু রাজেশ্রে তবাজ্বাসহিতা ইমে। ছন্দিস সংজ্ঞাত্বেন বিশ্রুতা লোকে
 প্রযুজ্যন্তে ইতি মতমিতি। অজাঃ অজৌ অজাঃ অজাম্ অজৌ অজঃ অজা
 ইত্যাদি।
- (৭৪)। অন্নশ্বাদন্তি মিন্পুগণ কি ভক্ষে ইত্য সাং কি প্ ভবতি।
 বি শেষেণেত্যাদি বিশেষেণ তাবং সামাগ্রন্থ বাধা বিধীয়তে ইতি সর্কান্তেক
 কচিং ক্বতি ন বাধ্যতে। নঞ্জ বাধায়াং নাত্যন্তাভাবং হুচয়তি কিন্তু
 পাক্ষিকী বাধা ভবত্যেবেতি অতএব এতং হুচয়িতুং মংস্যাৎ মংস্যাদ ইভি
 বিকল্পোনাহরণমূপগ্রস্থম্। এবং ক্রব্যাৎ ক্রব্যাদ ইত্যান্থপি ভবতি। এবৈৰ
 ব্যবস্থা অন্তল্যাপ্যবগন্তব্যা। তেন গক্তৃঙৌ কর্ত্তনীতি সামাগ্রম্ ইন্ধ্পান্তপ্র্যাদেরদিতি বিশেষঃ তেন পাক্ষিকী বাধা বিধীয়তে ইতি বিক্ষেপকঃ

৭৫। স্পৃশোহকুদকে স্থপি।

য়তেন স্পৃশতীতি য়তস্পৃক। অনুদক ইতি কিম্ ? উদকস্পর্শঃ।

১৬। সমানত্যদাদেদৃ শষ্টসোঁ চ কর্মোপ্মায়াম্।

সমানং দর্শনমস্থ সদৃক্ সদৃশঃ সদৃক্ষঃ আ্যাদৃক্ ত্যাদৃশঃ ত্যাদৃকঃ

অস্থাদৃক্ অন্তাদৃশঃ অন্থাদৃকঃ।

বিক্ষেপ্তা বিক্ষিপ ইতি চ ভবতি। অসমানরপেণাপি বিশেষেণ সামাগ্রস্থা বাধা কচিন্ন ভবতি সরপেণ তু ভবত্যের ইতি প্রায়ো বিজেয়ং তেন কর্মণো পড়িতি সামাগ্রস্থাদেরিত্যাদিভির্বাধৈব ভবতি। চিহ্নার্থগতে পট্টঙোঃ সমানরপ্রম্। কতীত্যুপলক্ষণম্। তন্ধিতানাবপি শিষ্টপ্রয়োগদর্শনাদাবস্থেম্। অতএব দারপালস্থা ইদং দৌবারপালমিত্যাদৌ আদিস্থৈ জাতশ্রতি ঈয় প্রত্যযেন তম্পেদমিতি টণ্ন বাধিতঃ। অতএবেনাচ্যতে—ক্ষ্চিন্পবাদবিধ্যেহপ্যংসর্গোহভিনিশ্রিত ইত্যাদি।

- (१৫)। স্পৃশ্ধাতোরদকশন্ধতিত স্বস্থোপপদে সতি কিপ্ স্থাং।
 পুর্ববোগৈরপদর্গে কর্মনি চোপপদে প্রায়েন বিধানম্। অত্র চ স্থাতি
 ক্তং সব বিভক্তান্তোপপদদর্শনার্থম্। অত্রব মতেন স্পৃশতীতি বাক্যং
 ক্তং মৃতং স্পৃশতীত্যাত্মপি বাক্যং কর্মীয়নেব। মৃতস্পৃদিতি স্পৃশ্
 সংস্পর্শে মৃতস্পৃশ্ধরণং স্থং কোহন্ত ইত্যাদিনা শস্ত কঃ। উদকস্পর্শ ইতি নট্।
- (१৬)। সমানশকাৎ তালাদেশ্চ প্রশাহ দৃশঃ কিপ্ স্থাৎ। টার্ফো চ প্রতায়ো ভবতঃ কর্মণ উপমায়াং গম্যমানায়াম্। সমানং দর্শনমস্থেতি কর্মণি ষষ্ঠা। সমানো দৃশ্যতেহ্সাবিতি কর্মণি বাচ্যে প্রতায়ঃ সমানমায়ানং পশুতীতি বাক্যে কর্তুর্বের ইত্যুভয়থাপি কর্মোপমা গম্যতে। সমানো-দৃগাদাবিতি সমানস্থ সাং পূর্ব্রবং শস্ত কঃ সদৃশ ইতি টঃ টিল্বং স্লিয়ামীকিধানার্থম্। সদৃক্ষ ইতি সে কে চ কতে ইচ্কাদিত্যাদিনা ষত্ম্। ভাদৃগিতি আতাদাদেরস্ত ইতি ত্যাদো দকারস্থাকারঃ অস্তাদৃগিতি উলাক্ষ্তম্ অস্ত-শক্ষোহপি ভাদাদৌ পঠ্যতে ইতি ক্চনার্থম্। অন্তশক্ষঃ সর্কাদ্যস্তর্গাদে অস্তাদৌ ত্যদাদৌ চ ভবচ্ছদানস্তবং স্থানহয়ে পঠাতে কিন্তু বিপিকরম্যান্র্রিপাঠভয়াৎ ত্যদাদৌ অস্তশ্বদা বহুমু পুস্তকেমু ন দৃশ্বতে।

- ৭৭। কচিৎ কেবলাচ্চ। রাজ্রাট্বিষ্বিভিত্যাদি।
 - १-। किं हिमक खेंत्रि ह।

স্জ্যতে স্রক্ দিশ্যতে দিক্ ভবস্ত্যস্থামিতি ভৃঃ সম্পৎ বিপৎ প্রতিপদাদয়ঃ।

৭৯। পুণ্যাদেঃ কর্ম্মণঃ কর্ত্তরি কৃঞাে ভূতে। পুণ্যকৃৎ পাপকৃৎ মন্ত্রকৃৎ কর্মকৃৎ।

৮০। সূপসর্গাচ্চ।

ত্বকৃৎ। কালোপপদপ্রত্যয়নয়মার্থমিদমিতি ভাষ্যম্।

- (৭৭)। উপপদে প্রাদৌ চেত্যাদিভির্মনং কিপ্ বিহিতত্তথাং কচিং কেবলাক ভবতি। পূর্ব্বং বিরাট্ সমাজিত্যুদাহতং কেবলাদপি রাজতে: রাজিতি। পূর্ব্বং প্রবিট্ মিত্রদিট্ ইত্যুদাহতং কেবলাদপি দিয়ো দিড়িতি ভবতি।
- (१৮)। পূর্মং কর্ত্তরি কিপ্ বিহিতঃ কচিদকর্ত্তরি চ দ্যাং। অগতি সজ বিদর্গে কিপ্ সজো মালারাং অজ্চেতি সজঃ অজাদেশঃ অদ্জেত্যাদিনা প্রাপ্তদ্য যদ্য নিষেধঃ। দিগিতি দিশ্ অতিসংজনে কিপ্ দিশ্শলাং স্থঃ পূর্মবং শদ্য কঃ। ভূরিতি ভূ সভায়াং সম্পদ্যান্ত অদ্যানিষ্ঠানীতি সম্পাং। বিপদ্যন্তে অদ্যানিষ্ঠানীতি বিপাং। প্রতিপদ্যতে ক্ষাম্বয়ং বা চন্দোংখ্যানিতি প্রতিপাং। ক্রিপ্তায়েন তু সম্পত্তিঃ বিপত্তিঃ প্রতিপ্তিরিত্যাদাপি ভবতি। এবং মৃদ্ হর্ষে মৃং।
- (৭৯)। পুণ্যমন্ত্রপাপকর্ম ইত্যন্ত্রাৎ কর্মণ উত্তরাৎ করোতেভূতিফালে-কর্ত্তরি বাচ্যে কিপ্তবতি। পুণ্যক্ষিত্যাদৌ পূর্দ্যবং তুক্
- (৮০)। স্থ ইত্যুপদর্মান্তরেমাৎ ক্বঞো ভূতকালে কিপ্ ভবতি কর্ত্তবি বাচ্যে। কর্মণ ইতি বিশেষণস্থাদন্তবাৎ স্থ ইতি পুণ্যাদে ন পঠি-তম্। নমু প্রায়োগ্রহণাৎ দর্মবৈত্রব কিপ্ প্রাপ্তেঃ কিমনেন লক্ষণেন অত-আহ কালোপপদেত্যাদি নিয়মোহবধারণং তচ্চ যত্রৈবকারকরণং ভত্তো-হস্তত্র জ্বেয়ম্। অত্র কালনিয়মঃ পুণ্যাদেঃ কর্মণঃ ক্রঞো ভূতে কিপ্

৮১। সোমাৎ স্থঞঃ। সোমং স্তবান্ সোমস্ত্ত। কালধাতৃপপদপ্রত্যরনিয়মঃ । ৮২। অগ্নেশ্চেঃ।

অগ্নিং চিতবান্ অগ্নিচিৎ। কালোপপদপ্রতা্রানিয়ম:।

এব ভবতি নাম্প্রতায়:। নহি ভবতি পুণাং ক্লতবান্ পুণাকার ইতি। উপপদনিয়ম: পুণাদেঃ কর্মণ: ক্লঞ এব কিপ্নাম্ম্মাং ধাতোরিতি নহি ভবতি মন্ত্রমধীতবান্ মন্ত্রাধীদিতি মন্ত্রাধায় ইতি ভবতি। প্রতায়নিয়ম: পুণাদেঃ কর্মণ: ক্লো ভূত এব কিপ্ ভবতি ন বর্তমানে ন চ ভবিষাতি তেন মন্ত্রং করোতি করিবাতি বা মন্ত্রকদিতি ন ভবতি। ত্রিবিধনিয়মাং প্রকৃতিনিয়মোন ভবতি তেন ধাতোরনিয়ত্রাং মন্ত্রমিয় পুপদে করোতেঃ সামান্তবিহিতঃ কিপ্ ভবত্যের শাস্ত্রকদিতি।

(৮১)। সোমণকাৎ কর্মণ উত্তর্গৎ স্থনোতের্গান্ডোঃ কর্ত্তরি বাচ্যে ভূতকালে কিপ্ ভবতি। সোমস্থানিত বৃঞ্জ্ অভিনৰে। কালেত্যাদি অত্র কালনিম্নমঃ সোমাৎ স্থনোতেঃ কিবেব: ভনতি ভূতকালে নাজ্য প্রত্যায়:। নহি ভবতি সোমং স্থতবান্ সোমসাব ইতি। সদৃশব্যাবর্ত্তন নিয়মস্যানেন নিয়মেন উপপদে পিছিতা এব প্রত্যায় নিবাক্রিয়স্থে নাজ্যে তেন সোমং স্প্রতান্ ইতি জবতুর্ভবত্যেব। ধাতুনিয়মঃ সোমানদেব স্থনোতেঃ কিপ্ নাজ্যমিয় পাদে। নহি ভবতি স্থরাং স্থতবান্ স্থাস্থানিত স্থাস্ব ইতি ভবতি। উপপদনিয়মঃ গোমাং স্থনোতেরেৰ কিপ্ নাজ্যমান্ধাতোনিতি। নহি ভবতি সোমং ক্রীত্বান্ সোমক্রীরিতি সোমক্রায় ইতি ভবতি। প্রভাষনিয়্নমঃ সোমাং স্থনোতেরেৰ কিপ্ নাজ্যমান্ধাতোনিতি। এতায়নিয়্নমঃ সোমাং স্থনোতেরেৰ কিপ্ নাজ্যমান্ধাতোনিতি। এতায়নিয়্নমঃ সোমাং স্থনোতেভূতি এব কিপ্ নাজ্যমির্কার কালে তেন সোমং স্থনোতি সোমাতি বা সোমস্থানিত ন স্থাৎ।

(৮২)। অগ্নে: কর্মণ উত্তরস্মাজিনোতের ভ্রেকালে কর্ত্তরিপ বাচ্যে কিপ্ স্থাৎ। অগ্নিচিদিতি টিঞ্ চয়নে। কালোপপদপ্রভায়-নিয়ম ইত্যত্র কালনিয়মঃ। অগ্নেশিনোতের্ভ কৈ কিবেৰ ভবতি নান্ত-প্রতায়ঃ তেনাগ্নিং চিত্রাম্ ইতার্থিবিক্ষায়াম্ অগ্নিচায় ইতি ন স্থাৎ। উপাননিয়মঃ অগ্নেশিনোতেরের ভূতে কিপ্ ভবতি নান্ত্যান্ধাতোঃ। তেনাগ্রিক্নিতি ন ভবতি। প্রতায়নিয়মঃ অগ্নেশিনোতের্ভ এব কিপ্

৮ । শ্রেনাদেরগ্রিসংজ্ঞায়।

শ্রেনং টিতবান্ শ্রেনচিৎ কন্ধচিৎ রথচক্রচিৎ। সংজ্ঞাগ্রহণ ক্লচ্যর্থন্। তেন শ্রেনাদিরিক চীয়মানো হ্যায়র্থ ইয়্টকারচনাবিশেষ উচ্যতে।

৮৪। ব্ৰহ্মজনাক্তাদ্ধনঃ। ব্ৰহ্মহা জণাহা বৃত্ৰহা। ধাতৃপপদনিয়মঃ।

• ৮৫। कर्माला वर्षे।

কর্মণ উত্তরাদ্ধাতোর তরে ণড়্ভবতি। ক্সুস্তকারঃ কাগুলাবঃ
নাগ্যমিন্ কালে তেন বর্ত্তমানভবিষ্যতোর্মিচিনিতি ন ভবতি। অগাবেব
চিনোতেন গ্রিমার পুপদে ইতি। ধাতৃনিয়মাভাবে ধাতোরনিয়তথাৎ অন্তোপপদাক্তিনোতেঃ কিপ্ ভবতি। ইয়ুং চিতবান্ ইতি বিবক্ষায়াম্ ইয়ুচিদিতি
ভবত্যেব। কিন্তু ধাতৃনিয়মো জন্মাদিত্যেনোক্তঃ তন্মতে ইয়ুচিদিতি ন
ভবত্যেব।

- (৮০)। শ্রেনাদেং কর্মণ উজ্জেমান্তিনোতেং কিপ্ স্থাৎ অগ্নি-সংজ্ঞায়াম্। ধাতৃপপদপ্রতায়সমূদায়েননগ্রিসংজ্ঞা গন্যতে। অগ্নিশকেনাক্র অগ্নাগাধার উচাতে। যথা প্রানীপার্থা মন্দ্রিকা প্রদীপ ইতি। যাদৃশী চ কঢ়িঃ সা বৃত্তিক্তিব ব্যাথ্যাতা।
- (৮৪)। ব্রহ্মাদেঃ কর্মাণ উত্তরম্মান্তর্স্তু তকালে কিপ্ ভবতি। ব্রহ্মহেতি হন্ হিংসাগজ্যোঃ ব্রহ্মহন্শকাৎ স্থঃ সৌ হনাদেরিতি দীর্মঃ। ধাতৃপপদনিরম ইতি। অতা ধাতৃনিরমো যথা ব্রহ্মাদেরের হস্তেঃ কিপ্ নাল্তমান্ত্রপদাদিতি। তেন শক্রহা ইত্যাদিন ভবতি। বহুলাধিকারেণ ধাতৃনিরমন্ত প্রায়িকদাৎ মধুন্থেত্যাদ্যপি দৃষ্ঠতে। অত্যে তু ধাতৃনিরমো নাজ্যেবেতি মল্লস্তে। উপপদ্দিরমো যথা ব্রহ্মাদের্হস্তেরের নাল্তমান্ধাতোঃ তেন ব্রহ্মকৃদিতি ন স্থাৎ। ব্রহ্মান্ত্যপদাদ্দিস্তেঃ কিবের ভবতি ভূতকাল-স্থানিরমহাৎ ভূতে ব্রহ্মঘাত ইত্যাদ্যপি ভরত্যের ব্রহ্মান্ত্যপদাদ্দিস্তেভূতি এব কিপ্ ভব গ্রীন্তি প্রত্যরম্ভাপানিরমণ্ড ব্রহ্মাণ্ড হন্তীন্ত্যর্বে ব্রহ্মহেতি ভব-ত্যের। চতুর্বিধ এবাক্র নিরম ইতি জয়াদিত্যঃ।
 - (৮৫)। তৎসমুদ্দিষ্টং কর্নোভি যথ কর্মা তন্তাত গ্রহণং না স্বরূপক্ত

বেদাধ্যায়: বিষথাদঃ। ব্রহ্ম বদতি গ্রামং গচ্ছতি সাদিত্যং পশ্যতি হিমৰস্তং শূণোভীত্যাদো ন ভবত্যনভিধানাৎ।

৮৬। শ্বমাং সোলুককপোতাৎ পচশ্চশ্চ কং।
শ্বপাকঃ মাংসপাকঃ উল্কপাকঃ কপোতপাকঃ।
৮৭। ক্ষমীক্ষাত্রিভ্যো পঃ।
বহুক্ষমা সুখপ্রতীক্ষা কল্যাণাচারা।

٤

এতনর্থেমব স্বরূপগ্রহণে কর্মশকাদ্ভৃতাবিত্য শব্দগ্রহণং ক্রতবান্। তৎ কর্ম চতুর্বিধং কারকপাদে এব ব্যাপ্যাস্যতে। সন্নিছিতালাভ ইতি স্থায়েন সম্মাৎ থাতোঃ প্রত্যন্তইন্তব কর্মণো গ্রহণং নতু ধাদন্তরক্ত পশ্চ কুন্তং করেছি কটমিতি। কুন্তকার ইতি নির্বর্ত্তাং কর্ম অধিদ্যমানস্তৈব কুন্তা-দেরুৎপাদনাং। কাণ্ডলাব ইতি বিকার্যাং কর্ম সত এব কাণ্ডশু বিকার-করণাং। বেলাধায়ে ইতি প্রাপ্যং কর্ম অসতোহত্তপাদনাং মতোহপি বিকারকরণাভাবাৎ কেবলং ক্রিয়ামাত্রসম্বাহ। বিব্যাদ ইত্যনিপিতং কর্ম। কর্মণ ইত্যন্তিত প্রাক্ ক্রবভূবিদেঃ। অক্যাক্তাৎ যত্র কর্মা ন সম্ভবতি যত্র চোপপদং কারকান্তরং ক্রয়তে তত্র নোপতিষ্ঠতে। প্রাদেশ গটোহবাধনার্থেন শ্রপচপাঠেন জ্ঞাপিতম্। অকর্মকত্বাৎ প্রথমং পচাদেশকেতি ওঃ পুনর্মুপপদশ্চ সংস্থানে পশ্চাদ্বিশেষকত্মস্বন্ধে সতি ন বাধা তেন গন্ধবহঃ হত্তবহুং মধুম্পাদরঃ। গটা ইজুপান্তপ্র্যাদেরদিত্যাদয়ে বাধ্যস্তে তেন প্রদর্শিক স্থান্য বাধ্যস্তে তেন প্রদর্শিক আদ্বর্দণ গট্ট অন্তর্শিক আদ্বিশ্বস্থা বাধ্যস্তে ক্রমণ্ডাই আন্তিশানশ্ত প্রাম্বিক্সাই। অনভিধানাদিত্যাদি প্রাপ্যকর্মণো গট্ট ন ভবতীতি অনভিধানশ্ব প্রায়িকস্থাই।

(৮৬)। শ্বাদের তরক্ষাৎ পচতের্জ্ ভবতি। তহ্য চকারশ্চ কঃ। শ্বানং পচতীতি শ্বপাকঃ ঘণস্তেন পাকশব্দেন সমাসে শ্বপাকালয়ঃ সিধারস্তাব অর্থটিনা তুন সংগচ্ছতে।

(৮৭)। কুমুষ্ সহনে ঈক্ দর্শনাক্ষ্যোঃ আঙ্পূর্কা-চর্ গভার্থঃ ইকারো ধাতুনিদেশার্থঃ এভাঃ কর্মণ উত্তরেভ্যো ণো ভবতি। বছ-ক্ষমেতি আচমক্ষ্যমেত্যাদিনা কথাদিখাধ্দ্যভাবঃ অটিআদী প্রভারা-ভারঃ। bb! यनरमा तरमण्ड।

मर्गात्रमा ।

৮৯। শীলিকামিভক্ষ্যহিভ্যো বা।
মাংসশীলা মাংসশীলী মাংসকামা মাংসকামী মাংসভক্ষা মাংসভক্ষী
পূজাহা পূজাহাঁ।

৯০। দন্শো নলুক্চ কৈবর্ত্তে গট্। দশিঃ।

৯১। দুসো ভূত্যে। দাসঃ।

৯২। খশ ুঙেজ্যাদেঃ। কর্মণ উত্তরাদেজয়ত্যাদেরুত্রে খশ্ ভ্ ভবতি। জনমেজয়ঃ।

⁽৮৮)। মনস ইউরাৎ রমু ক্রীড়ারামিত্যস্থাৎ গ্যস্থাৎ পপ্রতায়ো ভবতি।

⁽৮৯)। শীল উপধারণে চুথাদিঃ কমু কান্তৌ যক্যচতুর্মপি বেভি বিকলিতণিওস্তঃ ভক্ অদনে জহ পূকায়াং চুরানী এভাঃ কম্প উত্তরেভাো গো বা ভবতি। পক্ষে এট্। যেহপি নিত্তাং পমিছান্তি তৈরপি জ্বাদিভোা-হণ্যস্তেভাঃ এভা এব ণড়্বিধেয়ঃ। অভোহিনিশেয়াং ব্যাপ্যানলাম্বার্থমের বিকল ইফোক্তঃ। এতস্তু রক্ষিভেনেব ক্ষুটং ব্যাপ্যাত্তম্।

⁽৯)। কর্মণ ইতি স্ত্রন্থে নামুবর্ততে অনুপপদকৈ বৈজিলংজ্ঞাজি-ধানশক্তে:। দন্শ দংশনে ইত্যামাৎ ণড়্ভবতি নকারলুক্ চ কৈবহের্জ কাচ্যে। অকৈবর্থে জ্ - দংশঃ।

⁽⁻৯২)। তম্ম দম্ম উৎক্ষেপণে ইক্তামাদ্ধাতোভূতি বাচ্চা পড়্ছবতি।

⁽৯২)। এজীতি হত্তে ণিঙতো মিদি ই:। অতএৰ বাচকার এজ্যত্যাদেরিভি। জনমেজয় ইতি এজ কম্পনে এজ ভেজু দীখৌ বা

৯০। জনাদেখে টঃ।

স্তনন্ধর:। স্তন শুনী খারী নাড়ী নাসিকা বাত যপ্তি মুপ্তি ভোমর ধনুস্ ঘট ঘটা।

৯৪। খ্রঃ করপাণিখার্য্যাদেঃ।

করন্ধম: পাণিন্ধম: খারিন্ধম: নাড়িন্ধম:।

৯৫। মাদমিতার্থনথাৎ পচঃ।

প্রস্থাপন্ট মিতংপন্ট নথংপন্টা। পাস্তাবল্লংপনামুনীনিতি ভট্টিঃ।

৯৬। ইরাবাতামদাজোঃ।

ইরংমদঃ বাতমজঃ।

ণিঙ্ শিদাদিত্বাৎ ণিঙ্লোপভাব: ঙিলাৎ গুণ: থিতানৰায়াদিত্যাদিনা অম্ ফাং।

- ্ ৯৩)। স্তনাদেঃ কর্মণ উত্তরক্ষাৎ ধেটঃ থশ্ঙ্ ভবতি। স্তনন্ধর-ইতি ধেট্ পানে শিক্ষাদাবাভাবঃ অরাদেশঃ পূর্ববদ্ম্ শুনিন্ধরানৌ হ্রস্ক্র । স্থিরাং স্তনন্ধরী ধেট্ঠকারোপাদানসামার্থ্যাদটিৎপ্রত্যরান্তাদিপি ই । ইহ্ ষ্টেপ্ট্রোর্গণে পাঠো নির্পণীয়ঃ।
- (৯৪)। করশনাৎ পাণিশলাৎ খার্যাদেশ্চ কর্মণ উত্তরস্থাৎ খাধাতোঃ খশ্ ভ্ ভবতি। করন্ধন ইতি শিতীত্যাদিনা খ্যা ধনাদেশঃ। স্তনাদেঃ স্থনশুনী শক্ষো বিহায় খার্যাদিঃ।
- (৯৫)। নানবাচিনো মিতার্থাৎ নখাচ্চ কর্মণ উত্তরন্ধাৎ পচঃ
 থশ্ ঙ্ ভবতি। মানং প্রস্থানিঃ প্রস্থং পচতীতি প্রস্থাৎকন মানবাচিনা
 তৎপরিমিতং ভণ্ড লাদিকমুপচারেণাভিধীয়তে প্রস্থাদেবি ক্লেদনাসম্ভবাৎ
 বিক্লেদনবাচী হৃত্রে পটিঃ। অতো হেতোম নিমিতি স্বরূপগ্রহণং নিরন্তম্।
 মিতশব্দেহলার্থঃ।
- (৯৬)। ইরারা উত্তরান্দর: বাতাত্ত্রাদক্ষ: থশ্ঙ্ ভবতি। ইণ্ ধাতো: কারাদের ইতি রপ্রত্যর:। ইরা পৃথ্ী জলঞ্ তরা তত্র বা মাদ্যতি ইরশ্বদো বজায়ি:। বাতমজ ইভি অজ্গতিক্ষেপণয়ো:।

৯৭। উত্যাসূর্য্যান্দ্শঃ। উত্যম্পশ্চঃ অসূর্যাম্পশ্চঃ।

के**म । श्रियवणाइनः** ।

श्चिमः वनः वनः व<u>न</u>ः ।

৯৯। দ্বিষৎ পরললাটাত্তপঃ।

দিষস্তপঃ পরস্তপ: ললাটস্কপ:। ইহ ন স্থাৎ দিষজীতাপঃ।

[•] ১০০। সর্ব্বাৎ সহঃ। সর্ববংসহঃ।

- (৯৭)। উত্তশকাৎ অনুর্যাশকাচ্চ কর্মণ উত্তরাং দৃশং থশ ঙ্ ভবতি। উগ্রংপশু ইতি দৃশির প্রেক্ষণে শিরাং পশ্যাদেশঃ। অনুর্যাংপশু ইত্যত্র দৃশিনৈব সহ নক্ষঃ সম্বন্ধো নতু সুর্যোগ তথাহি সুর্যাং ন পশ্যতীতার্থঃ। এবং সতি অগনকত্বাং সমাসোহত্র ম প্রাপ্নোতি কিন্তু অন্বাদেব বচনাৎ গমকত্বম গ্রা ভ্যুপগন্তবাম্। গুপ্তিপরক্ষৈত্বচন্ম্ এবং নাম গুপ্তিরত্র পদং পরিহরণীয়দর্শনম্। সুর্যামপি ন পশ্যতীতি সুর্যোগ সহ নক্রঃ সম্বন্ধে প্রভারো ন ভবতানভিধানাৎ।
- (৯৮)। প্রিয় বশ ইত্যেতাভ্যাং কর্ম্মভ্যামৃত্রাৎ বদ্ ব্যক্তান্থাং বাচীত্যমাং থশ্ঙ্ভবতি।
- (৯৯)। ধিবংপরলনাটেন্ডাঃ কর্ম্মন্ত উত্তরাৎ তপ্ ধৃপ্ সন্তাপ ইত্যুমাৎ থণ্ড্ ভবতি। দ্বিস্তপ ইতি নাস্তদ্বিদক্ষবামস্তলুক্ চেতি মকা-রোহস্তলুক্ চ। তগ্দাহ ইত্যুস্ত তুরাদের্নিঙি পটি চ করে থিবতাপ ইতি ভবতি। যেহপি শাস্ত্রাস্তাস্তাপের্নিঙ্গাদ্বিস্তপ ইতি সাধয়ন্তি তেষা-মপ্যাণিঙ্কাৎ দ্বিস্তাপ ইতি রূপং সিব্যত্যেব কেবলং সাধনবৈধর্ম্মাত্রম্। অর্থভেদোহপি ধাতুনামনেকার্যগাৎ নাস্ত্রেব। এবং পরস্তপো ললাটক্তপ-ইতি। ইহু ন স্তাৎ দ্বিস্তীতাপ ইতি কচিদেব নানগ্রহণে লিঙ্গবিশিষ্টস্তাপি গ্রহণাৎ। ইহু তু লিঞ্ববিশিষ্টস্তাগ্রহণমিত্যভিপ্রায়ঃ। অত্র লিঞ্ববিশিষ্টস্তাণি গ্রহণে অনভিধানমেব কেতুঃ। দ্বিবতীতি দ্বিষ্ণ শ্রাবিতি শত্রস্তাৎ ঝছুরিদি-ত্যাদিনা ঈ।
- (>০০)। সর্বাদকাং কর্মণ উত্তরাৎ মহ মর্মণে ইত্যক্ষাৎ থশ্ ঙ্ ভবতি।

२०১। কুলাব্জকরীযাচ কষঃ। কষ্ হিংসায়াং সর্বক্ষঃ কুলক্ষঃ অব্জক্ষঃ ক্রীযক্ষঃ।

১০২। আশিতাতুবঃ করণভাবয়োঃ।
আশিতংভবং ব্যঞ্জনম্ আশিতংভবং বর্ত্তে। অগ্নাতেঃ কর্ত্তক্রিং
ক্রে শেষো বৃদ্ধাদিতি দীর্ঘঃ।

১০৩। শৰ্জাদ্ধাকো হিৰুক্তিশ্চ। শৰ্জংজহঃ।

১০৪। ভাবকর্মণোঃ স্বত্ত্রীষদ্তঃ কর্তৃকর্মভ্যাম-স্থততদ্বাবে ভূকুঞঃ। স্থাচ্যম্ভবং বর্ততে স্থাচ্যম্করশৈচতো ভবতা।

⁽ २०>)। চকারাৎ সর্বাদিত্যমুবর্ত্তে। সর্বাশকাৎ কুলাত্রকরীষ ইত্যামাজ কর্মণ উত্তরাৎ কমঃ থশ্ড্ভবতি।

⁽১০২)। ভ্ধাতোরকর্মকরাৎ কর্মণ ইতি নোপতিষ্ঠতে। আশিতশর্কাৎ ভরতে: থশঙ্ ভরতি ক্ষরণে ভাবে বাচো। আশিতো ভরতানেন
আশিতংভবং ব্যঞ্জনম্। আশিতেন ভূয়তে ইতি আশিতংভবং বর্ততে।
বিশেষেণাপি সামাল্যপ্রারাধনাৎ আশিতভবনমিতি। ভূপ্তার্থক্স চেতাত্র
কলানামলমাশিতা ইতি ভট্টিপ্রারোগং দর্শয়তা বৃত্তিক্নতা ভূপ্তার্থক্সমাতেক্রুন্। এবমকর্ম্মকত্বে গতিভূজার্থেতাদিনা কর্ত্তরি ক্রঃ। অত আহ কর্ত্তরি
ক্রেইতি শেবো বৃদ্ধাদিতি দীর্ঘ ইতি। তথাচ ভাষাং নিপাতনাত্পধাদীর্ঘ
ইতি।

⁽১০৩)। শৃর্ শক্ষকুৎসায়াং ঘণি শব্ধঃ। শব্ধাত্ত্তরাদোহাক্ ত্যাগে ইতাস্মাৎ থশ্ঙ্ ভবতি দ্বিকজিণ্চ। শব্ধিজহ ইতি কুংসিতং শব্ধং ত্যজ্ঞতী-তার্থঃ। গ্রথহাজ ইতি দ্বিকজ্ঞেহ স্থাজঃ ক্রন্চাঙনাদাবিত্যাকারসুক্।

⁽১০৪)। স্বত্রীষত্তা ইতি কর্তৃকর্মভ্যামিত্যপেক্ষয়া পঞ্চমী কর্তৃ-কর্মজ্যামিতি তু ভূক্তঞ ইত্যপেক্ষয়া পঞ্চমী) কর্তৃকর্মভ্যাং ভূক্তঞা-ভাবকর্মণোরিতি সমসংখ্যবাৎ ক্রমনিয়মঃ। স্নত্রীষম্ভ্যা উত্তরাৎ কর্ত্ত -

১০৫। সহাদেঃ সংজ্ঞায়াম্।

কফংসহো মুনি: রগন্তরং সাম অরিন্দম: ধনঞ্জয়: বিশ্বস্তরা বস্ত্-শ্বরা পতিংবরা শত্রুন্তপ: শত্রুঞ্জয়ো হস্তী যুগন্ধরো গিরিং।

কত্রাৎ ভবতের্ভাবে অভূততদ্ধাবেংর্থে থশ্ঙ্ভবতি। তেভা উত্তরাৎ

১০৬। পূর্ভগাদ্ধারেঃ খঙ্জু।

পুরন্দরঃ ভগন্দরঃ।

কর্মণ উত্তরাং অভ্ততভাবেহর্থে করোতেঃ কর্মণি থশ্ ৬ বতি। ইত্যর্থদ্বারং সম্পাছতে। স্বাঢাংভবং বর্তত ইতি অকস্টেনানাঢ্যক্ত দ্বাঢাং ভবনং
বর্ততে ইতার্থঃ। স্বাঢাংকরশৈচত্রো ভবতেতি অকস্টেনানাচ্যঃ আঢ়াঃ
ক্রিয়তে চৈত্রো ভবতেত্যর্থঃ। এবং ছরাঢাংভবং ছরাঢাংকরঃ ঈ্রুষনাঢাং
ভবম্ ঈর্ষনাঢাং করঃ। নর্বন্যোদ্ধরাক্রপপদ্যোঃ কথং সমাসঃ কঃ পুনরাহ
মূগপৎ সমাসঃ প্রথমমাঢ্যপদেন সমাসং বিধায় পশ্চাং স্থ ইত্যানেন করণীয়া।
(১০৫)। কর্মণ উত্তর্গ্ণং সহাদেখাতোঃ সংজ্ঞায়াং বিষয়ে পশ্ও
ভবতি। সংস্থাবশাৎ যথাদর্শনমূপপ্রসম্বন্ধঃ। ক্টংস্ই ইতি ষহ্ মর্মণে।
রথভ্রমিতি ত্ প্রবন্তর্গ্রোঃ অরিল্ম ইতি তমু দুমু উপশ্যে যদ্যপ্রথমনক্ষ্মক স্তথাপ্যস্তর্ভাবিণ্যর্থহাদ্রাস্যা সকর্মকতা শক্রং দময়তীত্যর্থঃ। সক্মন্
ক্রেরিপ্রত্তে, দমিরাপারিসংঘাতানিতি ভটিঃ। ধনপ্রয় ইতি জি
জয়ে বিশ্বস্তরেতি ডুভুঞ্ ধারণণোদ্যাঃ। বস্ত্ররেতি ধুঞ্ ধারণে

(১০%)। পূর্ভগ ইত্যেতাভাংম্ত্রাদ্ধারে: ধঙ্ভবতি সংজ্ঞারাস্। পুরন্দর ইতি দু বিদারণে ণিঙ্ নিঙ্লোপোহশিদাদাচীতি ণিঙ্লোপ: ণিঙ্-লোপে তৎকার্যানিবৃত্তিন ভিবনীতি তিঙ্ভপ্রপাদে ব্যবস্থিতং তস্থাৎ শেষো বৃদ্ধাদিতি হ্রম্ম: কার্যাঃ। প্রন্দ্র ইন্মা ভগ্নরো রোগতেদাঃ।

অকর্মকক্সান্ত পূর্ববিং দকর্মকতা ণিঙস্তবে তু বস্থারয়েতি স্থাৎ। পচিং-বরেতি বৃঞ্বরণে বৃঞ্দংভক্তাবিতি বা শত্রুস্তপ ইতি তপ্ ধৃপ্ সন্তাপে। পূর্ভগান্ধারেঃ খঙিত্যস্থানস্তরমন্ত্র পাঠো যুক্তঃ নিয়তং লিপিকরপ্রমাদা-

দক্তথাভূত:।

১০৭। ত্রতে বাচো যমঃ। বাচং যমঃ।

১০৮। হৃদয়মিতস্থতপূর্ববাদ্গমঃ। হৃদয়ঙ্গমঃ মিতঙ্গমো হস্তী স্থতঙ্গমো রাজক্ষেে পূর্ববঙ্গমঃ পন্থাঃ হৃদয়ঙ্গমা বাগিতি সংজ্ঞায়ামিতি চুল্লিভট্টিঃ।

১০৯। ভুজাদের্ডো ডথ্চ্সংজ্যাম্। ভুজসম ভুজগা ভুজসা তুরসমা তুরগা তুরসা প্রসমা প্রগা প্রসা।

১১০। বিহায়দো বিহশ্চ। বিহঙ্গম: বিহগঃ বিহঙ্গঃ।

- (১০৮)। স্বর্মিতস্থতপূর্ব।দিত্যেতশ্বং কর্মণ উত্তরাং গমু ধাতোঃ
 ধঙ্ ভবতি। অশিবাং গচ্ছাদেশোন ভবতি। উত্তরস্ত্রে সংজ্ঞায়ামিত্যনেন ইছ চ হস্তীত্যাদ্যর্থোপদর্শনেন এতং স্বচিতং সংজ্ঞায়ামসংজ্ঞায়াঞ্চানেন বিধানন্। এতদর্থমেব পূর্বেঞ্চমঃ পদ্বা ইত্যাদি চুল্লিভট্টিগ্রন্থে
 উক্তঃ।
- (১০৯)। আশিতাভুবং করণভাবয়োরিতাতঃ করণমিতারুবর্ততে।
 ভূজাদে: করণাদ্ধামং থঙ্ভবতি সংজ্ঞায়াম্ ডো ডধ্চ্। ভূজেন কোটিল্যেন গচ্ছতীতি ভূজদ্বমঃ থিত্বাদম্ ডপ্রতায়েন ভূজগং। ডথ্চ্প্রত্যরেন ভূজদং এবং ভূরেণ স্বরমা গচ্ছতীতি ভূরদ্বমঃ ভূরগঃ ভূরদঃ। প্রবেন
 পচ্ছতীতি প্রবৃদ্ধঃ প্রবাঃ প্রবৃদ্ধঃ। স্ক্রিয়ায়্ত ভূজগী জাতেরিত্যাদিনা ঈ।
- (১১০)। বিহারস্ ইত্যক্ষাৎ করণাছত্তরাদ্গমঃ সংজ্যারাং **ধঙ্** ক্ষবতি। ডো ডধ্চ্। এষাং সনিযোগে বিহারসঃ স্থানে বিহালেশ**ন্চ**।

⁽১০৭)। বাচ্শকাত্তরাং হুমো ব্রজে গম্মানে খঙ্ ভবতি। বাচংযম ইতি যমু উপরমে অশিবাং শিতীত্যাদিনা যজাদেশো ন ভবতি। প্রভ ইতি শাস্ত্রে বিহিত্তনিয়ম উচ্যতে। থিংকরণসামর্থ্যাৎ পুরন্দরবাচং-যম্মোরনিজন্তবাং অপ্রাপ্তে অমৃ ভবতি। অন্তথা সংজ্ঞাবগ্যোন স্থাৎ। ব্রত ইতি কিম্? বাগ্যামঃ।

১১১। ঋতিমেঘভয়াৎ কুঞঃ। ঋতিষ্করঞ্চমেঘন্ধরঃ ভয়ন্ধরঃ।

১১২। ক্ষেমপ্রিয়মদ্রাদ্বা। ক্ষেমস্কর: ক্ষেমকারঃ।

১১৩। বহুবি ভালিহঃ খঃ। বহংলিহঃ অব ভংলিহঃ।

১১৪। তুদো বিধুতিলারুষঃ।
 বিধুস্তদঃ তিলস্তদঃ অরুস্তদঃ।

১১৫। क्नाठ्रक्टान्तरः। क्नम्कना नती क्नम्कनः क्नम्तरः।

১১৬। হেস্থানাবশব্দাদেঃ কুঞ্ফস্ভ ্।

- (১১২)। ক্ষেম প্রিয় মদ্র ইত্যুম্বাৎ কর্ম্মণ উত্তরাৎ করোতে: গঙ্ ভবতি বা। পক্ষে কর্মনো গড়িতি গট্। হেম্বাদৌ তু অনেন ত্যক্তপক্ষে টঙ্কেব ভবতি। ক্ষেমকরঃ। হেম্বাদৌ ত্যক্তে পক্ষে ক্ষেমকার ইতি জয়াদিতা:।
- (১১৩)। বহ অব্র ইত্যেতাভ্যাং কর্ম্প্রাম্ব্রাৎ লিহ্ আরাদনে ইত্যুমাং থো ভবতি।
- (১১৪)। বিধুতিলাকষ ইত্যোতেভ্যঃ কর্ম্মভ্য উত্তরাৎ তুদ্ ব্যথম ইত্যামাৎ থো ভবতি। অকল্পদ ইতি নাস্তদিষদক্ষামিত্যাদিনা অম্ অন্ত-াুক্চ।
- (১১৫)। কৃশাৎ কর্মাণ উত্তরাৎ উৎপূর্ক্যাক্রজো ভঙ্গে ইত্যম্মাৎ উৎ-মূর্ক্সাৎ বহু প্রাপণে ইত্যম্মাক্ত খো ভবতি।
 - (১১৬—১১৮)। কর্ত্তরীত্যধিকারাৎ ছেম্বাদাবিতি কর্ত্তরীত্যস্ত বিশেষণদ্।

⁽১১১)। ঋতিমেঘভয় ইত্যস্থাৎ কর্মণ উত্তরাৎ করোতে: থঙ্ ভবতি। ভয়শকাত্তদন্তাদপি থঙ্প্রতায়মিচ্ছন্তি। তেন অভয়ং করোতীতি অভয়য়র: ন ভয়য়রোহভয়য়র: ইত্যেবমপি সিধ্যতি কিস্বর্থভেদোদয়োবি-দ্যত এব।

হেত্বাদো গম্যমানে শব্দাদেরগুস্মাৎ কর্ম্মণ উত্তরাৎ করোতেইঙ্ক্ ভবতি। যশস্করী বিদ্যা।

১১৭। শীলে। শ্রাদ্ধকরো বিপ্রঃ।

১১৮। অমুকূলে।

বচনকরো ভূত্য:। অশব্দাদেরিতি কিম্? শব্দকার:। শব্দ শ্লোক কলহ গাথা বৈর চাটু পটু মন্ত্র সূত্র শাস্ত্র নিপুণ কুল্প চক্র ক্রম কর্মান্ পদ।

১১৯। প্র্যাদ্যাদ্ধ্রাদের।
ব্যাদ্যাৎ কর্মণ উত্তরাদ্ধ্রাদেষ্টঙ্ ভবতি। শ্রীধরং লক্ষ্মীধরঃ টঙ্কুন্ত প্র্প্রো মাত্রাদিকায় স্ত্রিয়ামী তেন শ্রীধরা। জাতৌ
তু—বিদ্যাধরী।

১২০। পুরোহত্রেহ গ্রতোহগ্রাৎ সর্ত্তে। পুরঃসরঃ অগ্রেসরঃ অগ্রতঃসরঃ অগ্রসরঃ।

কর্ত্তা ভবন্ ক্রিয়ায়া হেতুরেব ভবতি এবং সতি হেতুপদমৈকাস্তিকত্বস্থানার্যন্ত বিজ্ঞায়া হেতুরেব ভবতি এবং সতি হেতুপদমৈকাস্তিকত্বস্থানার্যন্ত বিদ্যায়া ঐকাস্তিকহেতুত্বন্য
করোতীতি ক্রুমিকংসেত্যাদিনা ক্সাদিত্বাদ্বিস্গাভাবঃ। হেতাদাবিত্যাদিপদেন শিলাস্ত্লয়োর্গ্রন্য। শ্রাদ্ধকরো বিপ্রাইতি তৎস্বভাব ইত্যর্থঃ।
বচনকরো ভ্রা ইতি স্থামিচিন্তান্থবর্ত্তনপর ইত্যর্থঃ। অশন্তাদেরিতি
কিম্ ? শন্ধকার ইতি কর্মণো ণ্ডিতি পট্। শন্তাদিগণে কুন্তকর্মপদক্রমাণাং পঠিঃ চাক্রাদিমত্যাগ্রিত্য ক্রতঃ।

(১১৯)। শ্রীধর ইতি ধৃঞ্ধারণে জাতৌ তৃ বিদ্যাধরীতি জাতে-রিত্যাদিনা ঈ।

(১২০)। প্রদ্ অগ্রেংগ্রুদ্ অগ্র ইত্যন্তাৎ কর্মণ উদ্ভবাৎ ক্ গতাবিত্যন্তাং উদ্ভব্জি। পুরদ্ইতি পূর্বাশকাৎ স্তাদদৌ পূর্বাপরাশ-ক্ষেড্যঃ পুরাবাধণেডতি অম্ পুরাদেশক। অগ্রত ইতি অগ্রশকাৎ সর্বা-

১২১। কর্ত্তুঃ পূর্ববাৎ। পূর্ববঃ সীরতীতি পূর্ববসরঃ।

১২२। निर्मारमः कृषः।

নিশাকরঃ দিবাকরঃ। নিশা দিবা প্রভা বিভা ভাস্ কার অস্ত অনস্ত আদি লিপি লিবি বলি ভক্তি চিত্র ক্ষেত্র অরুস্ ধনুস্ একাদিসংখ্যা জঙ্গা অহন্ স্থাদিন তুর্দিন কর্ত্ত্ নান্দী বছ বাহু ক্ষপা দোধী ক্ষণদা রজনী ত্যদাদিশ্চ নিশাদিঃ। কিন্ধর যৎকর তৎকর

বিভক্তেরাখাদেঃ প্রায় ইতি তদিঃ মগ্রেসর ইতি কর্মণ ইত্যানুর্তিমক্কথা স্থপীত্যস্থানুর্ত্তৌ সপ্তমান্তস্থ উপপদে উঙ্ কথা তৎপুরুষে কৃতি বহুলমিত্যলুক্ অথবা অগ্রং সরতীতি বাক্যং কথা শেষো বৃদ্ধাদিতি অগ্রশক্ষ অকারইম্মকারঃ করণীয়ঃ।

(১২২)। নিশাদেঃ কর্মণ উত্তরাৎ রুঞ্চন্ত ভবতি। অহেছাদার্থ আরম্ভঃ অন্তথা পূর্ব্বেলৈব দিধ্যতি। দিবেত্যবায়মধিকরণবাচি তত্র কর্মন ইতি ন সম্বধ্যতেহসম্ভবাৎ। দিবা দিবেস প্রাণিনশ্চেষ্টাযুক্তান্ করোকীতি দিবাকরঃ। ভাম্বর ইতি কম্বাদিগণপাঠাদিসগাভাবঃ। অস্তানস্তশক্ষোগতি দিবাকরঃ। ভাম্বর ইতি কম্বাদিগণপাঠাদিসগাভাবঃ। অস্তানস্তশক্ষোগতি নাহে পঠ্যেতে অন্তশক্ষেবানস্তশক্ষেপ প্রাপ্তে যহুভয়পাঠস্তজ্জাপয়তি নাহি সর্ব স্মিলুপপদবিধাে তদস্তবিধিরিষ্যতে। নমু অন্তকরণক এব নঞ্ সমাসেনানস্তকর ইতি ভবিষ্যভীতি কঃ পুনরাহ ন ভবিষ্যভীতি কিন্তু অনস্তং করোজীতি অনস্তকরঃ ন অন্তকরোহনস্তকর ইত্যুভয়োরভিধানেহর্থভেদ এব। অক্ষরেরা ধন্মমন ইতি ইম্কসন্তো কথপফে ইতি কন্ধাদিছাৎ বিস্কাণিভাবঃ কন্ধাদিশেতি মূর্ক্সঃ। একাদিসংখা ইতি এক আদির্যভাঃ সংখ্যায়াঃ একাদিনিদে শাৎ ভত্যন্তাদিশ্চ সংখ্যেতি উপ্তারোগ্রহণম্। এককরঃ স্বিকরঃ বিকর ইত্যাদি জয়াদিত্যমত্ম্। ভাষ্যকারস্ত সংখ্যাশক্ষমুপপদমিজ্বতি তেন সংখ্যাকর ইতি মতদ্বস্থ্যনার্থং বৃত্তিক্ষতা একাদিসংখ্যেতি গণে পঠ্যতে অন্তম-প্রবর্থং প্রতিভাসতে একাদিশক্ষাঃ সংখ্যাশক্ষত। অহম্বর ইতি সমাদেহ-

বহুকরেভ্যে মাত্রাদিহার স্রিয়ামী তেন কিংকরা। হেছাদৌ ডু ভবত্যেব—কিঙ্করী। তথাচ—ইদানাং যাতি কিঙ্করীতি স্থাসঃ

১২৩। কর্ম্মশব্দান্ত্**তী।** কর্শকরঃন

১২৪। অপ্রাদেগায়তেঃ।

সামগ: বক্রগ:।

১২৫। পিবতেঃ হুরাসীধ্ভ্যাম্।

সুরাপ: সীধুপ:।

চিচেতি নকারশু সকার: রুকমিকংস ইত্যাদিনা কস্কাদিস্বাদ্বিসর্গান্তাব:।
গণে পাঠতো বহুশকোবিপুলবাচীতি স্থাসকারঃ সংখ্যাবাচক্স্ম চ গ্রহণমিত্যক্মৈরুক্তম্। হেন্বাদ্যর্থরহিতানামেব কিম্বরাদীনাং মাত্রাদিয়মিতি। হেন্দ্র দৌ
তু ভবত্যেব কিম্বরীত্যনেন স্থচিতং কিম্বরীত্যুপলক্ষণমাত্রং যৎ করাত্যাত্মপি
বোদ্ধব্যম্। ত্যাদাদীনামুপপদত্বং কাতন্ত্রেহপ্যক্তং ত্যাদাদিপদেন বন্ধদেতৎকিম এব গৃহুত্তে ইতি বুক্তং তেষামেব পাদিনীয়লক্ষণে পাঠাৎ। ইমেহত্রাদিপদেন হেন্বাদ্যর্থাঙ্গীকারেণ বা দিনকর্দিনসক্রাদ্য়ং সাধনীয়াঃ।

- (১২৩)। কর্মশনাছন্তরাৎ রুঞো ভৃতৌ গমামানায়াং টঙ্ ভবতি। পূর্বস্থ্রাৎ কর্মণ ইত্যানুর্ন্তৌ কর্মণ ইতি রুভেংপি স্বরূপগ্রহণে দিদ্ধে শনাদিতি রুজং স্পষ্টার্থম্। কর্ম ব্যাপারন্তনাল্যং বেতনং ভৃতিরুচ্যন্তে ততোহক্সত্র কর্মকার:।
- (১২৪)। কন্দণ উত্তরাৎ প্রাদিবর্জিতাৎ গায়তেপ্টঙ্ ভবতি। সামগ ইতি ক্লচ্যঙনাদাবিত্যাকারলুক্ আদস্তাদমাদেরপ্রাদেরিভাঙাপি সিঙ্ধে টঙ্-বিধানং স্তিরামীবিধানার্থং সামগী। প্রাদেশ্ত—সামসংগায়ঃ।
- (১২৫)। স্থরাসীবুভাং কর্ম্মভাাম্তরাৎ পা পান ইত্যন্থাৎ টঙ্ভ ভবতি। পিবতীতি নির্দেশঃ পা রক্ষণ ইত্যন্ত নিরাসার্থা। অভি:প্রাপ্থে টঙ্বিধানং দ্রিয়ামীবিধানার্থং তেন স্থরাপী। স্থরাসীধুভ্যামিতি কিন্ই ক্ষীরপা আন্ধণী অভেবাত্র ভবতি।

১২৬। জিফাদেশ্চরঃ।

, জক্ষাচরঃ সেনাচর: আদায়চরঃ অনুচর: সহচর:।

३२१। अधिक त्रगाष्ठ।

কুরুচরঃ মদ্রচরঃ।

১২৮। গোবেক্ষশক্রকৃতাদ্ধনফঃ।

পোরু: ব্রহ্মন্ন: শক্রন্নঃ কৃতন্ন: কৃতন্নো নাস্তিনিক্ষতিরিতি।

* ,২৯। অমনুষ্যকভূ কাচ্চ।

পিতত্ত্বং পয়:।

১৩০। ন চৌরনগরাভ্যাং হস্তিনি। চৌরঘাতঃ নগরঘাতো হস্তী।

⁽১২৬)। ভিক্ষাদে: কর্মণ উত্তরাচ্চরতেইঙ্ভবতি। তিক্ষাং চর-ভীতি ভিক্ষাচর: চর্পত্যর্থো ভক্ষণার্থ-চ আদায় চরতীতে আদায়চর: আদার ইতি ভূদাঞ্ দানে আঙ্ পূর্ব: ক্র্যু যচ্ আদানং রুত্বা চরতীত্যথ:। আদায়েত্যক্ত গণপাঠদামর্থ্যাৎ অগমকত্বেহপি সমাস:। ভিক্ষা সেনা আদার অরু সহ ইতি ভিক্ষাদি:।

⁽১২৭)। অধিকরণাত্তরাচ্চরতেইঙ্ভবতি। কুরুচর ইতি কুরুষু চরতীতার্থ:।

⁽১২৮)। গোত্রহ্মশক্রকত ইত্যেতশাৎ কর্মণ উত্তরাদ্ধস্তেরে। ভবতি। গোন্ধ ইতি হনাদেরনগীত্যকারপুক্ অলুগাদৌ হনো হো দ ইতি হস্ত ঘ:। কৃতন্মে নান্তিনিস্কৃতিরিতি নান্তীতি তিওন্তপ্রতিরূপক্ষব্যেং নান্তিনিস্কৃতিরিতি নান্তীতি তিওন্তপ্রতিরূপক্ষব্যেং নান্তিনিস্কৃতির। মহান্ত্রক্ত্রিক্তাহ্তরস্ত্রেণাপ্রান্তিঃ শিষ্টাভ্যুপগতসাধুত্মপূলমেতলক্ষণম্।

⁽১২৯)। কর্মণ উত্তরাদমন্ত্যাকর্তৃকাদ্ধন্তেটো ভবতি। মন্ত্যাকর্তৃ-কাত্ত্—শক্রঘাতো রাজা। প্রশাসন ইতি তু দেবকর্তৃক্ষেনামন্ত্যাকর্তৃ-ক্তবাং।

⁽১৩০)। চৌরনগরাভ্যামুত্তরান্ধস্তেষ্টো ন ভবতি হতিনি কর্তুরি

১০১। লক্ষণে জায়াপতিভ্যাম্। জায়াল্লো হস্তঃ পতিদ্বী পাণিরেখা।

:৩২। হস্তিকপাটাচ্ছক্তো।

হস্তিদ্বঃ কপাটদ্র:।

১৩০। অন্তাদেগ মোডঃ।

অন্তং গচছতীতি অন্তগঃ পানং চলিতং গচছতীতি পানগঃ অত্যন্তগঃ অধ্বগঃ। অন্ত অত্যন্ত অনন্ত পান অধ্বন্ দূর পার স্ত্রাগার সাব্ব শুরুতল্ল গ্রাম।

নাচ্য। অমন্থ্যকর্ত্কথাৎ প্রাথে নিষেধঃ। চৌর্ঘাতঃ ইতি ণট্ ণিতীণ্লিড্বর্জং হনো যাত ইতি যাতাদেশঃ। ভাষ্যমূলমেতল্লক্ষণম্। তথাচ ভাষ্যম্—অতএব নগর্থাতো হস্তীত্যাদৌ টাভাব ইতি।

- (১৩১)। জায়াপতিভ্যামুত্তরাদ্ধস্তেষ্টো ভবতি লক্ষণে কর্ত্তরি বাচ্যে।
 লক্ষ্যতে অনেনেতি লক্ষণং শুভাশুভস্থকং চিহুমুচ্যতে। কচিল্লক্ষণযুক্তোহপি লক্ষণপদেনাভিধীয়তে উপচারাং। যথা শুভ্রগণযুক্তঃ পটঃ শুভ্র ইত্যভিধীয়তে। জায়াল্লো হস্ত ইতি জায়ায়া হননলক্ষণযুক্তো হস্তো লক্ষণপদেনাভিধীয়তে। পতিশ্লী পাণিরেখেতি অত্র রেথৈব পতিহননন্ত লক্ষণম্।
 এবং জায়াল্লো ব্রাহ্মণ ইত্যাদৌ লক্ষণং ভবত্যেব ন লক্ষণশক্ষ উপচরণীয়ঃ।
- (১৩২)। হস্তিকপাটাভ্যামূত্তরাদ্ধস্কে: শক্তে গন্যমানারাং টো ভবতি। শক্তিব লম্। হস্তিম ইতি হস্তিনং হস্তং শক্ত ইত্যর্থঃ স চ মহুষ্য এব বাচ্যঃ অন্তথা অমহুষ্যকর্তৃকাচ্চেত্যনেনৈব সিদ্ধং যথা হস্তিমং বিষমিতি। শক্তার্বিভি কিম্ ? বিষেণ হস্তিনং হস্তি হস্তিঘাতঃ।
- (১০০)। অস্তাদেঃ কর্মণ উত্তরাদগচ্ছতের্ডো ভবতি। অস্তগ ইতি ডিতিম্বরতচ্ছেষয়োর্লু গিত্যম্লুক্ পন্নং চলিতমিতি পদ্ গতৌ ক্তঃ অমদো-দাদ্দণ্ড ন ইতি দস্ত তম্ভ চ নঃ। গুরোস্তল্লং গুরুত্তলং গুরুত্তী। অস্তাত্য-স্তানস্তাধ্দদ্রপারস্তাগারগুরুত্তলং সর্বাগ্রামৌ পন্নণ্ডান্তিরমং গণোগদিতঃ।

১৩৪। বিহায়দো বিহশ্চ। বিহগঃ।•

১৩৫। অন্যতোহপি দৃশ্যতে। সর্ব্যব্রগঃ সভতগঃ জিন্ধগঃ আশুগঃ শীঘ্রগঃ।

১ ৩৬। উর্বস উরশ্চ। উরসা গচ্ছগুডি উরগঃ।

•১৩৭। স্থতুরোহধিকরণে। স্থানে গচ্ছত্যম্মিনিতি স্থাঃ দুর্গঃ।

১৩৮। নিরো দেশে। নির্গো দেশঃ ন গচ্ছতীতি নগঃ অগঃ।

- (১৩৪)। বিহারদো বিহঞ্চেতাত্র পুনঃ পাঠঃ লিপিকর প্রমানক্লতঃ।
- (১৩:)। যেভা উত্তরাক্রমের্জে বিহিতস্তেভ্যাহন্ততোহপি ভবতি।
 দূশেগ্রহণ প্রয়োগাল্দারার্থং ক্রেন প্রতগাদয়ঃ। দ্বর্ত্তি সর্বশকাং
 সপ্তমী অদ্যানিসর্বনামবহুভাঃ দপ্তম্যাস্ত্রো,বেতি তাঃ। অধিকরণাত্ত্রোদ্বান্তঃ।
- (১৩৬)। উরস্ ইত্যমাদামেডে। ভবতি। **উরসঃ স্থানে উরশ্চ।** উর্গা গাছ্তাতি বাক্যোপদর্শনং করণাছত্তরাদিতি স্চ্নার্থম্। •
- (১৩৭)! স্কুরিত্যেতাভান্মন্তরাক্ষামেরধিকরণে বাচ্যে ছো ভবতি। অধিকরণে ইত্যনেনাত্র কর্ত্তরীত্যধিকারো নিরস্তঃ। অধিকরণে কর্ত্তরীতি বিশেষণবিশেষ্যভাবান্মপপত্তেঃ। তুর্গ ইত্যক্ত তঃথেন গচ্ছত্যশ্বিনিত্যর্থঃ। বিশেষণাপি সামান্তং বাধ্যতে ন কচিৎ কতীতি ওনটা স্থপমনঃ তুর্গমন ইতি বাচ্যালিঙ্গং কাপি কারকে তেতি প্রশিক্ষতা। যদা তু স্থেমন গম্যতেহসা-বিতি বাক্যং তদা স্কুরীষ্ট্যঃ কর্মণি চেতি ভঃ স্থাৎ স্থগমা তুর্গমঃ।
- (১৯৮)। নির উত্তরাদগমেদে শেহধিকরণে রাচ্যে ডে। ভবতি। নির্গো দেশ ইতি নির্গম্যতে অস্মিন্ দেশে ইত্যর্থঃ। দেশাদপ্তত্ত ঙলড়েব ভবতি—নির্গমনম্। অন্ততাহিপি দৃশ্যত ইত্যনেকৈব সর্কমেতঃ নাধনীয়মিতি স্কুনার্থং শেষে তক্তৈবোগাহরণমুপন্যস্তম্। না গছতীক্তি

১৩৯। আশিষি হনঃ।

তিমিং বধ্যাৎ তিমিহঃ শক্রহঃ।

১৪০। ক্লেশাদেরপাৎ।

ক্লেশমপহন্তি ক্লেশাপহঃ তমোহপহঃ ভয়াপহঃ দুষ্খাপহঃ।

2821 श्रेटिनम्ह I

পটरঃ कलरः ইত্যाদि।

১৪২। সপ্তম্যন্তাজ্জনোভূতে।

মন্দুরায়াং জাতো মন্দুরজোহশঃ।

অগ ইতি দারু আহস্তীতি বাক্যে দার্ক্রাঘাটঃ চার্ব্রাঘাটঃ বর্গ সংঘাট ইতি
শাস্ত্রাস্তরে সাধিতং তদিহ নোক্তং ঘটসংঘাত ইতি চুরাদৌ নড়েব
দিদ্ধেঃ। দার্বাঘাতাদয়স্ত হত্তেরেব সাধ্যাঃ দার্বাঘাত ইতি তু অসংজ্ঞায়াং
ভবত্যেব।

- (১৩৯)। কর্মণ উত্তরাদ্ধন্তেরাশিষি গমামানায়াং ডো ভবতি।
 আশিষীতি প্রত্যয়ার্যবিশেষণম্। তিমিন্ কর্ত্তরি প্রত্যয়ো ভবতি যশিয়ভিধীয়মানে আশীর্গমাতে। তিমিং বধ্যাদিত্যাশীর্লিঙ্প্রয়োগেণ বাক্যোপস্থাসঃ
 তিমিহশক্ষ্য তৎসমানার্যতাং স্চায়তুম্। আশিষীতি কিম্ ? তিমিঘাতঃ।
- (১৪০)। ক্লেশাদেং কর্মণ উত্তরাদপাত্তরাদ্ধন্তের্ডো ভবতি। ক্লেশনপহস্তীতি বাংক্যাপদর্শনমানীর্বিব্যতানশু নিরাকর্ত্ত্বন্ধ্ আশিষি গ্রমামাশ্বাং পূর্বেশ্বৈ সিদ্ধে:। ক্লেশাপহস্তমোপহ ইতি সিদ্ধার্থমের পাণিনিস্ক্রবর্ম্মাদিস্করন্তি। ভ্রাপহং তুম্থাপহ ইতি সিদ্ধিস্ত শিষ্টপ্রয়োগদর্শনাৎ বৃত্তিকারেণাভ্যপগতা। বিষাপহো মন্ত্রং তিমিরাপহমঞ্জনং বাতপিত্তকক্ষাপহং জ্রাপহমৌবধ্যত্যাদি প্রমাদক্ষং বা শিষ্টাভ্যপগতং বেতি ন নিশ্বিষ্ণঃ।
- (১৪১)। পটাদেশ্চ কর্ম্মণ উত্তরাদ্ধন্তের্ডো ভবতি পটং হস্তীতি পটহং। যথাকথঞ্চিৎ ব্যুৎপত্তিরেষাম্। কলং হস্তীতি কলহঃ অত্যাবয়-বার্থামুগমো বিদ্যুত এব কলহে মধুরধ্বনে হভাবাৎ।
 - (১৪২)। সপ্তমান্তাহত্তরাজ্জন্ধাতোভূতিকালে কর্তুরি বাচ্যে 🕬

১৪৩। পঞ্চম্যন্তাদজাতেঃ। বুদ্ধের্জাতো :বুদ্ধিজঃ সংস্কারজঃ খেদজঃ। জাতেস্ত— অশাজ্জাতঃ।

১৪४। প্রাশ্রাহ্মি।

প্রজা লোক:।

১৪৫। দ্বিতীয়ান্তাদনো । পুমাংসমনুজাতঃ পুমনুজঃ স্ত্রানুজঃ।

১৪৬। অন্ততোহপি দৃশ্যতে।
ন জাতোহজঃ দির্জাতো দিজঃ বাক্ষণাজ্জাতো বাক্ষণজোধর্মঃ ক্ষত্রিরজং যুদ্ধম্ অভিজাঃ পরিজাঃ কেশাঃ অমুজাতোহনুজঃ পরিখাতাঃ পরিখাঃ আখাতা আখাঃ

- (১৪৩)। জাতিবর্জিতাং পঞ্চমাস্তাহত্তরাজ্জনো ভূতকালে কর্ত্তরি বাচ্যে ডো ভবতি। বুদ্ধের্জাতো বৃদ্ধিজ ইতি জন্মর্থকর্ত্তুরিত্যাদিনা-পাদানসংজ্ঞা। বৃদ্ধিসংক্ষারয়োরাত্মগুণস্বাৎ থেদস্ভ:চ ক্রিয়াব্যচকস্বাৎ ন জাতিবাচকস্বম্।
- (১৪৪)। প্র ইত্যমাত্তরাজ্জনো ভূতে ডো ভরতি নামি রাচ্চে ধাতৃপপদপ্রত্যয়সমুদায়েন সংজ্ঞা গমাতে।
- (>) । ধিতীয়াস্তাহন্তরে অন্থ ইত্যমির পুপদে জনো ডো ভবঁতি।
 পুমাংসমন্ত্রাত ইতি অন্থ পশ্চাদর্থে অনুপূর্ব্বো জনিস্তৎপূর্ব্বকরণপূর্ব্বকে
 জন্মনি সকর্মকঃ কহাদিভাঃ কন্তরি চেতি ক্তঃ। পুমন্তর্জ ইতি স্বরেহিশি
 সমাসে ইতি অস্লুক্।
- (১৪৮)। জনের্যতো ডো বিহিতপ্ততোহস্ততোহপি ডো দৃশ্রতে। জনেরস্ততোহপি ধাতোর্ডো দৃশ্রতে। সপ্তম্যস্তাৎ পঞ্চমাস্তাক বিহিত-স্ততোহস্তত্তাপি দৃশ্রতে অজাে দিজ ইতি। অজাতের্বিহিতাে জাতেরপি দৃশ্রতে ব্রাহ্মণজ ইতি। প্রানামি বিহিতাে হন্ততোহপি উপস্র্বাদ্দামি চ

ভবতি। মন্বায়াং জাতো মন্বজোহর ইতি তদ্ধিতেৎস্ত্রাতোঃ সংজ্ঞায়াং বহুলমিতি হ্রস্বঃ।

বরমাহতবান্ বরাহঃ কেশিনামানমস্তরং বিশিতবান্ কেশবছ আপো ভ্রশ্যস্ত্রাদিব্ভং বিজায়তেহস্মাদ্বীজং শেষো বৃদ্ধাদিতি দীর্ঘঃ।

১৪৭। শক্ত্যাদ্রাহাদেরঙ্।
শক্ত্যাদ্যাদ্রাহাদেরঙ্।
শক্ত্যাদ্যাৎ কর্মণ উত্তরাৎ গ্রহাদেরত্বেহঙ্ভবতি। শক্তিগ্রহাং লাঙ্গুলগ্রহঃ অঙ্কুশগ্রহঃ। শক্তি লাঙ্গুল অঙ্কুশ, যপ্তি
তোমার ধনুস্ঘট ঘটা।

১৪৮। সূত্রাদ্ধারণে। সূত্রহাঃ।

দৃশ্যতে অভিজাঃ পরিজা ইতি। খিতীয়াস্তাদনৌ বিহিতো ইনিতীয়াস্তাদিপি দৃশ্যতে অনুজ্ঞ ইতি। সপ্তমাস্তাজ্জনো ভূতে বিহিতো ইন্তধাতোরপি
দৃশ্যতে কেশা ইতি কে মন্তকে শেরতে ইতি শীঙ্ স্বপ্নে তৎপুরুষে রুক্তি
বহুলমিতালুক্। জনেবিহিতো ডো ধাত্তরাদপি দৃশ্যতে পরিপাতা ইতি
সর্ব্বতঃ থাতা ইতার্থে পরিপাঃ আ থাতা আথা ইতি পলু অবদানণে।
বরাহ ইতি আঙ্পূর্কাদ্বতেডিল্লান্স্ক্। কেশব ইতি বধঃ সৌত্রোধাতৃঃ শেষো বৃদ্ধাদিতি কেশিশদশ্য ইকারস্তাকারঃ। অব্লমিতি শ্রন্ত্ব
ভান্ত ধ্বন্ত্ব অবশ্বংসনে বীজ্মিতি জনী প্রত্তাবে এবং গিরৌ শেতে
পিরিশঃ কেবলাদপি দৃশ্যতে ইতি থমু থাতোঃ থম্।

() ৪৭)। শক্তিগ্রহ ইতি গ্রহ্ উপাদানে নামগ্রহণে লিঙ্গবিশিষ্ট-ক্সাপি গ্রহণমিতি ঘটগ্রহণাদ্দটাগ্রহণে দিদ্ধে উভয়োরুপাদানমস্তাঃ পরি-ভাষায়াঃ প্রায়িকস্বস্থচনার্থম্। অতএবোক্তমিহ ন স্তাৎ দ্বিষতীতাপ-ইতি। কালাপাস্ত বিকল্পমিছন্তি তেন গটা শক্তিগ্রাহ ইতাপি তন্মতে ভবাত। শক্তাঙ্কুশ্যষ্টিধনুস্তোমরলাঙ্গুল্ঘট্যট্যঃ।

(১৪৮)। স্ত্রাছন্তরাদ্ গ্রহের্ধারণে হর্থে বর্ত্ত নানাদঙ্ ভবতি। স্ত্রগ্রহ-ইতি স্ত্রং ধারমতীভার্থঃ। অক্সত্র স্ত্রগ্রাহঃ স্ত্রং কেবলমুপাদত্তে নতু ধারমতীভার্থঃ। ১৪৯। স্তম্বের্কর্ণেভ্যাং রমিজপোর্হস্টিক্রোঃ। স্তম্বেরশে হস্তী কর্ণেজপঃ সূচকঃ।

১৫০। শমঃ কুঞাদেন কি। শক্ষরঃ শংবরঃ।

১৫১। তথাঁ হেত্বাদাবপ্যতের। শঙ্করা নাম পরিব্রাজিকা শংবরা নাম শকুনিকা ভচ্ছীলেভ্যর্থ:।

ै ৫২। আদন্তাদমাদেরপ্রাদেঃ। শাকশ্রঃ গ্রামত্রঃ ব্রহ্মজ্যঃ স্থপজ্যঃ। কচিদপবাদবিষয়ে-

- (১৫০)। শংশকাত্তরাৎ কুঞাদেনামি বিষয়েহঙ ভবতি। শক্কর ইতি শং কল্যাণং করোতীতি শক্করঃ শিবঃ শং বুণোতীতি শংকরোহস্তর-বিশেষঃ বৃঞ্জ বরণে।
- (১৫১)। হেত্বাদাবিতি হেতুশীলাসুকূলানাং গ্রহণম্। তথা ডেক্সেব প্রকারেণ শংশবাছত্তরাৎ ক্ষঞানের্নামি বিষয়ে তচ্চীলাদাবপার্থেইডেব স্থাৎ। হেত্বাদাবশব্দানেঃ ক্ষঞার্তিতি টঙ্ বাধনার্থমঙ্বিধানং টঙি তু টিত্বাদী স্থাৎ। প্রবকারকরণং বিশেষেণাপি সামান্তং বাধ্যতে ন কচিৎ ক্ষতীতি শঙ্কানিরা-সার্থম্। শঙ্করা নাম পরিব্রাজিকা ভক্ষালেত্যর্থ ইত্যানেন ভচ্চীলং তৎসংজ্ঞা চেতি স্টিতম্।
- (১৫২)। কর্মণ উত্তরাদবিভ্যমানপ্রাদেরাকারাস্তাদ্ধাতোম দিবিঞ্চিতাদ্ধ ভবতি। শাকপ্র ইতি শাকং প্রাতীতি প্রা পাকে গ্রামত্র ইতি ত্রৈঙ্ পান্য, এচোহশিতীতামুক্ত কুদচাওনাদাবিত্যাকারপুক্ ব্রহ্মদ্যা ইতি স্থা ব্রোহানো

⁽১৪৯)। স্তম্মে কর্ণে ইতি দপ্তমান্তমকুরুতং কর্মণ ইত্যস্তামুবৃদ্ধিনিরাদার্থন্। স্বাক্তমেন শব্দান্তর হাততঃ পঞ্চমী রমিজপোরিতি বিভক্তিবিপরিণামাৎ পঞ্চমাঃ ষষ্ঠা। স্তম্বে কর্ণে ইত্যেতাভাামূত্রভাগং রম্
ক্রীড়ায়াং ক্রপ্ জন্ন ব্যক্তায়াং বাচীত্যেভাভামঙ্ ভবতি হস্তিস্চকয়োর্সমানয়োঃ। স্তম্বেরম ইতি স্তম্বেরমো হন্তী কর্ণে জপতীতি কর্ণেজ্পঃ স্চকঃ
পিশুন ইত্যর্থঃ তৎপুরুষে ক্রতি বহুলমিতি সপ্তমালুক্। হন্তিস্চকয়োরিতি
কিম্ ইন্তর্মেতা কর্ণেজ্পিতা।

২পুংংসর্গোহভিনিবিশত ইতি কহনঃ। মাদেস্ত। ধান্তমায়: তন্ত্রবাহ ার্গহ্বায়ঃ। প্রাদেস্ত্র—শাকসংশ্রায়ঃ।

১৫०। मः शका

(गामः (गाञ्चमः।

১৫৪। मभः शार्ठः।

গোসংখ্যঃ। সংপূর্ববস্ত খ্যা প্রকথনে ইত্যস্থাপ্রয়োগাচ্চকিঙো গ্রহণম্।

ক্ষিচিনিত্যাদি বিশেষেণাপি সামান্তমিতি মৎ প্রাপ্তক্তং তহৈন্তবান্তর্বন্মতৎ কহব ইতি। অমাদেরিত্যপ্রাদঃ তৎপ্রাপ্তাবুৎসর্গদিদ্ধাহত্তের স্থাৎ। ধান্তমার ইতি মাঙ্ মানে মেঙ্ প্রণিদানে বা এচোহশিতীত্যাত্বং কর্মণো গড়িতি গট্ সুর্বে জ্ঞাদেরিত্যাদিনা যুঃ, ভন্তরায় ইতি বেঞ্ তন্তমন্তানে স্বর্গ- হরায় ইতি হ্রেঞ্ স্পর্কারাম্ এতে চন্বারো মাদরঃ। শাকসংশ্রার ইতি প্রাণ পাকে গট্ যুঃ।

- (১৫০)। কর্মণ উত্তরাদপ্রাদেং কর্মণ উত্তরণ্ড যং প্রশক্তস্মান্ত্রাদ্যা ইত্যস্মান্ত্সাং। অবিশেষাৎ সর্বেষাং দারণাণাং গ্রহণম্। গোপ্রদ ইত্য ব্যাপ্রাদেরিতি প্রতিষেধাৎ পূর্ব স্ত্রেণাপ্রাপ্তেবিধানম্। গোদ ইতি পূর্বস্ত্রেণাব সিধ্যতি তথাপি চকারেণ পূর্বস্ত্রান কর্ম ইতি শক্ষামাত্র-নিরাদার্থং প্রাদেব দোহত্ত্ ভরতি ইত্যেসা শক্ষা স্থাৎ উপসর্গান্তরাত্ত্ব ভরতি। গোসংদারং। কথং দায়াদ ইতি দায়্মান্তে ইতি বৃংৎপত্ত্যা পচাদেব্রাক্তিগণ্ডাৎ ওঃ কর্ত্তবাং।
- (১৫৪)। কর্মণ উত্তরাৎ সম উপসর্গাহত্তরাৎ খ্যাতেরঙ্ ভবতি।
 চক্ষিঙাদেশস্থ খ্যা ইত্যস্তামকরণং কথা খ্যাতেরিতি নির্দেশ:। অপ্রাদেরিতি প্রতিষেধাদপ্রাপ্তে বিধানম্। গোসংখ্য ইতি অচতুর্মিত্যস্ত বিষয়সপ্রমীখাং প্রথমং খ্যাঞাদেশ:। ধাতুপারায়ণে তু খ্যা প্রকথনে ইত্যতাপ্যস্বাংখ্য ইত্যুদাহতম্। গবাং শতসহস্রাণি বন্মিন্ জাতে পিতা দদৌ। ব্রান্ধশেভ্য: প্রিয়াখ্যেভ্যঃ সোহয়মুগ্রেন জীবতীতি। উচ্যতে। যন্ত্র্যাখ্যাবিভ্যত্ত
 ভাষ্যে উক্তং বচনসামর্থাৎ মুলবিভুজাদেরাক্বভিগণখাৎ পদসংশ্বারবিবক্ষমা

:৫৫। হৃত্ঞোহ্বহনে। অংশহরো দায়াদঃ। অবহন ইতি কিন্ণু ভারহার: ।

১৫৬। বয়োবে!ধকবহনে চ। অস্থিহরঃ খা কবচহক্ষী ক্ষত্রিয়কুমারঃ।

১৫৭। আঙস্তচ্ছীলে। পুষ্পাহরঃ।

১৫৮। স্থেহিধিকরণাব্যয়াভ্যাং ভাবে পুংস্কান্সভশ্চ। গ্রামস্থা নিষ্ঠা শলভোখো বর্ত্ততে। স্বস্থে কোবা ন পণ্ডিভা।

- (১৫৫)। কর্মণ উত্তরাদবহনেহর্থে বর্ত্তমানাৎ ক্ষ্ক্র হরণে ইত্যামাদঙ্ ভবতি। অংশহর ইতি অংশং স্বীকরোতীত্যর্থঃ। উদ্ব্যু দেশান্তর-প্রোপণং বহনং ততোহন্তদবহনম্।
- (১৫৬)। কর্মণ উত্তরাষ্ট্রোবোধকবহনে অর্থে বর্ত্তমানাদ্ধ্রঞ্হরণে ইত্যামাদঙ্ভবতি। বয়ে যৌবনাদিঃ। অস্থিহরঃ খা ইতি অস্থ্যুৎক্ষেপণ-বোগ্যে বয়িদ বর্ত্ত ইতার্থঃ। অবহনে পূর্দ্বস্ত্তেণ সিদ্ধে বহন এবাস্ত বিষয় ইতি বিধানসামর্থ্যাদেব লদ্ধে বহন ইতি কৃতং স্পত্তীর্থম্।
- (১৫৭)। কর্মণ উত্তরাদাঙ পদর্মাহত্তরাদ্ধরতে স্কন্ধীলে কর্করি বাচ্যে অঙ্ভবতি। তচ্ছীলং তৎস্বভাবঃ বহনে হবহনে চ সামান্তেন বিধানম্। পুস্পাহার ইতি প্রয়োজননিরপেক্ষঃ পুস্পাহরণকর্মণি প্রবর্ত্ত ইত্যর্থঃ। তচ্ছীল ইতি কিম্? ভারমাহরতীতি ভারাহারঃ।
- (১৫৮)। অধিকরণাদবারাচো প্রাভিষ্ঠতে: কর্ত্রগ্র্ভ্রতি। ভাবে বাচ্যে পৃংসি চ ভবতি। অন্ততাহিপি ভাবাস্তরেহপীত্যর্থ:। প্রামস্থ ইতি নাছদিব্যবাস্তান্থে ইতি অলুক্নিষেধ:। নিষ্ঠ ইতি স্থাদেরিত্যাদিনা মৃদ্ধন্থ:। শনভোগো বর্ত্ত ইতি শনভানামুখানমিতি ধাহর্থাহত্র ভাব: স্থাস্তান্থাক্দ:

বহুলবচনসামর্থ্যাদ্বা। ইহ তু ঙঃ পচাুনেরাক্ততিগণত্বাৎ অথবা প্রাদেরাদস্তা-দিত্যতং ক্রম্বা পদং সংস্কৃত্য সমাসেন সম্বন্ধনীয়ন্।

২৫৯। জঃ প্রাদিকর্মভ্যাং কেবলাচ্চ।

অভিজঃ সর্ব্যজ্ঞঃ জ্ঞঃ।

১७०। मगुनिजाफ।

পথিপ্রক্ত: সমাহিত ইতি ভট্টি:।

:৬১। শেতেরধিকরণাৎ।

বিলে শেতে বিলেশয়: সর্প:।

১৬২। কর্ত্তুরুত্তানাদেঃ।

উত্তান: শেতে উত্তানশয়ঃ অবমূর্দ্ধশয়:।

১७०। मिश्रमश्राक।

দিশ্বেন সহ শেতে দিশ্বসহশয়:।

সস্তেতি সলুক্ ভাবে বিহিতত্বাৎ ক্লীবত্বে প্রাপ্তে পুংত্বম্। স্বন্থে কো বা ন পণ্ডিত ইতি প্রত্যান্তরন্ত ভাবঃ স্বাস্থ্যমিত্যত্তার্থঃ।

- (১৫৯)। প্রাদেরপদর্গাৎ কর্মণশ্চোত্তরাৎ কেবলাচ্চ জ্ঞা অববোধনে ইত্যশ্নাৎ কর্ত্তরি বাচ্যে অঙ্ভবতি। অভিজ্ঞ ইত্যাদৌ ক্লুদ্টীত্যাদিনা আকারলুক।
- (১৬০)। প্রাদিকর্দ্মণঃ সমুদিতাচ্চোত্তরাজ্ঞানাতেরঙ্ ভবতি যছপি প্রাদিকর্মণ ইত্যায়ং ক্রমঃ ক্রমতে তথাপি কর্মণ উত্তরাৎ প্রাদেকত্তরাজ্ঞানা-তেরিত্যবসন্তব্যম্ উপসর্গাণাং সদৈব ক্রিয়াযোগাং।
- (১৬১)। অধিকরণাত্তরাৎ শীঙ্ স্বপ্নে ইত্যম্মাদঙ্ ভবতি। বিলে শেতে বিলেশর ইতি অকালবাচিনঃ শয়বাসবাসিয়ু ইতি সপ্রম্যা অলুক্।
- (১৬২)। কর্ত্বাচিনঃ উদ্ভানাদের তরাৎ শেতের তবে অঙ্ তবতি অবমূর্দ্ধশয় ইতি অবমূর্দ্ধাধামুখঃ।
- (১৮৩)। দিয়সহশব্দাহত্তরাৎ শেতেরঙ্ভবতি। দিয়েন সহ শেতে ইতি অর্থারীয়াই তি তৃতীয়াসমাদঃ আদিশব্দেনালুক্তসংগ্রহণাদিয়-শব্দভ সহশব্দেন সহ প্রাক্ সমাসঃ। অভি ক্লান্তে ত্রিমিক্টোপপদস্থ চেডি সমাসঃ।

১৬৭। করণাৎ পিবতেশ্চ। শার্ষশারঃ দ্বাভ্যাং গিবতীতি দ্বিপঃ কচ্ছপঃ পাদপঃ।

১৬৫। ছুহোহৎ স্থাপি হশ্চ ঘঃ।
কামং ছুগ্ধে কামছু ধেনুং। ঘম ছুঘঃ সূর্যাঃ অর্থায় স্কুঞ্দে
অর্থভুঘঃ।

ু১৬৬। কোমুদিঃ। কোমোদতে কুমুদম্।

১৬৭। তুন্দাদলদে পরিমৃজঃ!
তুন্দপরিমৃজঃ। অলস ইতি কিম্
গুন্দপরিমার্জঃ।
তুন্দপরিমার্জঃ।

⁽১৬৪)। করণাহত্তরাৎ শেত্রে পিবতেশ্চ অঙ্ভবতি। পার্ষাভ্যাৎ শেতে ইতি পার্যশয়ঃ আদস্তাদিত্যাদিনা কর্মণ উত্তরাদ্বিহিতঃ করণার প্রাপ্নোতীতি পিবতেরঙ্বিধানম্।

⁽১৬৫)। স্থবন্তে উপপদে হহ প্রপূরণে ইত্যাশাদ্ধবতি। হহোহশ্চ

যাং। কর্মণ ইত্যন্ত্রবাবপি কামহ্বা ইত্যাদি দিধাতি তথাপি স্থপীতি ষৎ
কৃতং তৎপ্রয়োজনং দর্শয়তি অর্থায় হথে স্বর্থহ্ব ইতি। স্থপীত্যুত্তর্যোগে২প্যন্ত্রতিতে যেন যেন রিভক্তান্তেনার্থদংগতিজ্ঞায়তে তহপপদম্বগন্তব্যম্।
কামং হথ্যে অর্থায় হথ্যে ইত্যত্র হহি:কর্মকর্ত্বিষয়ং। কর্মকর্ত্রি ন যথমানে।
রিতি ব্যিষ্থেধঃ।

⁽১৬৬)। কুশব্দাহত্তরাৎ মৃদ্ হর্ষ ইত্যম্মাদ্ভবক্তি। কৌ মোনতে ইতি কুমুদম্।

⁽১৬৭)। তুল্দশন্ত্তরাৎ পরিপূর্কাৎ মৃজ্ - ওদাবিত্যক্ষাদ্ভবতি।
অলসে বাচ্যে। অন্ন পরিত্যক্তবাক্যার্থশকপ্রবৃত্তিঃ। তুলপরিমৃজশক্তেবালসে অভিধানশক্তিঃ নতু তুলপরিমার্জ ইত্যক্ষানভিধানাৎ অজঃ
অভিদচি বেতি পাক্ষিক বৃদ্ধাভাবঃ। এতদেব বহুনাং সম্মতম্। একনেবোদাহরণং দর্শরতো বৃত্তিকতোহপ্যেতদেবেইম্। অলমে রূপদ্মমঞ্জী
তুল্পরিমার্জ এবেতি তুরক্ষিতঃ।

১৬৮। শোকাদানন্দকেইপমুদঃ। শোকাপমুদঃ পুত্রঃ।

১৬৯। নথামুচঃ।

नश्रमूहानि धनुः वि।

১৭০। মূলাদ্বিভূজঃ। মূলবিভুজো রথঃ।

১৭১। কাকৃদ্গুহঃ। কাকগুহান্তিলাঃ।

১৭২। স্থতে ক্তবসুঃ। কর্ত্তরি বাচ্যে সর্ববধাতুভ্যো স্থতে ক্তবতুর্ভবতি। স্থতবান্ ক্তব্ বান্।

⁽১৬৮)। শোকশবাহত্তরাদপপূর্মান্ন্ প্রেরণে ইত্যন্মাদানলকে বাচ্যে অন্তবতি। শোকাপন্ন ইতি আনন্দকোহতিধীয়তে। আনন্দক ইতি কিম্? শোকাপনোদঃ যঃ শোকনিব্বারকোপদেশেন কেবলং শোকমুপন্নদভি নতু স্থখমুৎপাদরতি অতা ণড়ভবতি।

⁽১৬৯)। নথাত্ত্তরাশুচু মোক্ষণে ইত্যম্মাদন্তবতি। নথানি মুঞ্জি স্তীতি স্বভাবাদস্তর্ভাবিণ্যর্গোহত্ত মুচিঃ। নথানি মোচয়স্তীত্যর্থঃ।

⁽১৭০)। মৃলাহত্তরাদিপূর্বাদ্ ভুজ্ কোটিল্যে ইত্যমানন্তৰতি। মূলবিভূজ ইতি মূলানি বিভূজতীত্যর্থ:।

⁽ ১৭১)। কাকাছত্তরশাদ্ শুহু সংঘরণে ইত্যন্মাদম্ভবতি। কাকপ্রহা কাকেভ্যো শুহিতব্যা ইতার্থঃ।

অন্ততোহপি দৃশুত ইতি বক্তব্যম্। উপপদান্তরাদপি ধাত্মন্তরাদপি অন্তব্যতি। মহীং ধরতীতি মহীধুঃ মহীকহ ইত্যাদি।

⁽১৭২)। কর্মণ ইতি নির্ত্তং কর্তরি বাচ্যে বিধানম্। ভূতবান্ কৃতবানিতি স্থট্যগিদিত্যাদিনা মুম্ অত্যন্ত শ্রাপ্ত শার্ষা অন্তব্যুক্ জুবাঞ্চং কিদেকাজিত্যাদিনা ত্যাদিবাদিওভাব:।

১৭০। স্বাদের্বন্। কর্তির ৰাচ্যে ভূতে স্বাদের্ধাতোকতরে বন্ভবতি। স্থ্যুস্থা। জে যজা।

১৭৪। কর্মনা দৃশঃ। বহুদুখা।

্১৭৫। রাজ্ঞঃ কুঞঃ। রাজকুসা।

১৭৬। প্রযুক্তে যুধঃ। রাজানং যোধিতবান্ রাজযুধন।

১৭৭। সাহাৎ কৃঞ্যুধঃ। সহকৃষা সহযুধা। •

⁽১৭৩)। স্থা যজা ইতি যুঞ্ অভিষবে যজ্দেবপূজাদৌ পঠাতে
হস্বাভুগ্বরদাবিতি তুক্ স্থাটি দীর্ঘ: ইত্যাদিনা দীর্ঘ: নোনান্তস্তেতি নকারলুক্। ক্রাদেং কন্ ইত্যানেনাপি সিদ্ধে লক্ষণমেতং ভূতকালার্থং যজ্ঞ
ইজাদেশাভাবার্থঞ্চ। বহুলবচনাদেব তৎসিদ্ধৌ প্রপঞ্চার্থমেব জনেরগ্রেজাবা
বিজ্ঞাবা ম্বনেন্ত্রিবা ওন্ অপনয়নে ওনেরবাবরীত্যানিপ্রয়োগাঃ পঞ্চমান্তধাতোঃ কনা বনা বা সাধনীয়াঃ বহুলবচনাং পঞ্চমস্থানে আকারণ্ড
করণীয়ঃ।

⁽১৭৪)। কর্দাংজ্ঞকাহত্তরাদ শির্প্রেক্ষণে ইত্যস্বাস্তৃতে বন্ভবতি। উপপদবিহিতো ণড়নেন বাধ্যতে নতু সামান্তবিহিতঃ ক্তবতুঃ।

⁽ ১৭৫)। রাজন্শকাং কর্মণ উত্তরাৎ ক্লঞো ভূতে বন্ ভবতি।

⁽১৭৬)। রাজন্শদাৎ কর্মণ উত্রাদ্যুধ্ সংপ্রহারে ইতামাজুতে বন্ ভবতি প্রযুক্তো গম্মানায়াম্। রাজানং যোদ্ধ্ প্রযুক্তবান্ রাজ্যুধ্বা অত এব রাজানং যোধিতবান্ ইতার্ধব্যাকারং ক্রতবান্ এ:তনাস্তর্ভাবিণ্যর্থ-তাত্রে যুধেক্ষক্তা।

⁽১৭৭)। সহশব্দাগ্তরাশাৎ ক্লাঞো যুধণ্চ ভূতে বন্ ভবতি। সহেত্যস্ত কর্ম্মণ ইতি ন বিশেষণং সহেত্যস্তাসম্ববাচিম্বাৎ কর্মানুপ-

১৭৮। অন্যতোহপি দৃশ্যতে। অপিশব্দ: সর্বোপাধিব্যভিচারার্থ:। দৃশ্যত ইতি প্রয়োগামুসারু র্থম্। ভূরি দদাতীতি ভূরিদাবা প্রাতরেতি প্রাতরিস্থা।

১৭৯। ধাঞ আদীচ্চ। া শোভনং দধাতীতি স্থধীবা।

১৮০। ভাবে কর্মণি চারস্তে ক্তঃ। ভাবে কর্মণি কর্ত্তরি চ বাচ্যে আরস্তে গম্যমানে সর্ক্রধাতুভ্যো ভূতে ক্তো ভবতি। প্রকৃতো ভবান্ কটং প্রকৃতং ভবতা প্রকৃতঃ কটো ভবংগ।

১৮১। সকর্ম্মকাৎ। ভাবে কর্মনি চ বাচ্যে সকর্মকাদ্ধাতোরুত্তরে ভূতে ক্তো ভবতি। দৃষ্টো দেবো ভবতা দৃষ্টং ভবতা।

পতে:। অনুর্ত্যাপি রুঞ্যুধোঃ প্রাপ্তৌ যদিহোপাদানং তৎপ্রযুক্তা-বিতানুর্তিশঙ্কানিরাসার্থম্। সহ রুজা সহ যুধ্বা সহ রুতবান্ সহ যুদ্ধ-বান্ইতার্থ:।

⁽১৭৮)। যে ধাতৃপপদকালা উক্তান্তেভ্যোহন্ততোহপি বন্দৃশুতে। প্রাতরিম্বা ইতি ইণ্ গতৌ তুক্।

⁽১৭৯)। ধাঞো বন্ দৃখ্যতে। আকার ঈকারণ্ড ভবতি।

⁽১৮০)। যাবদ্ধি: ক্রিরালকণে: সকলকটা সমাপ্তিমুপৈতি তেষাং প্রথমক্রিয়ালকণপ্রবর্তনমারতা। তক্তৈব ভূতত্বেন বিক্লায়াং ক্তা। প্রকৃতৌ ভবান্ কটমিত্যানে প্রশক্ষ আরম্ভন্যোতকা। অকর্মকেভ্যস্ত কর্মণোহ-সম্ভবাৎ কর্তৃভাবয়োরেব ভবতি।

⁽১৮১)। কর্ত্তরীতি নাম্বর্ততে আরম্ভ ইতি চ। দৃষ্ট ইতি ভ্রস্জা-দীত্যাদিনা শশু ষঃ ঘটবর্গাদিত্যাদিনা তস্তু টঃ। সকল্মকা অপি ধাতবঃ কর্মাবিবক্ষায়াং ভাবে প্রত্যমুহ্পাদয়ন্তীতি ধ্বন্ধাদেব সকর্মকান্তাহে ক্রবিধানাং।

১৮২। কর্মোপাদানে হপি ভাবে। ভ্রান্তং দেশীমনেকতুর্গবিষমং প্রাপ্তং ন কিঞ্চিৎ ফলমিভি বাভটপশু-পতিভাং ব্যাখ্যাতম্।

১৮০। রুহাদিভা কর্ত্তরি চ।
আরুঢ়ো বৃক্ষং ভবান্ আরুঢ়ো বৃক্ষো ভবতা আরুঢ়ং
ভবতা আল্লিফ্টা কান্তাং প্রিয়া উপস্থিতো গুরুঃ শিষ্যোগ
অনুজীতঃ পুত্রো তৃহিতরং অনুজাতা তৃহিতা পুত্রেণ
অনুজীর্ণো বৃষলীং শৃদ্রা অনুশিষ্টা শিষ্যং শুরুঃ বৃষ্টো-

⁽১৮২)। সকর্থকাদ্ধাতোঃ কর্ম্মোপালানেহণি সতি ভাবে জ্ব-প্রত্যয়ো ভবতি। ভ্রান্তং দেশমনেকছ্র্গবিষমমিতাত্র ভাবে বিহিতেন ক্রেন কর্মণোহমুক্তরাদ্বিতীয়া এবং কাং দিশং গ্রন্থব্যমিতি কাদম্বী-প্রয়োগে কর্মোপালানেহপি ভাবে তবান্ত্ অমুক্তহাৎ কর্মণো দিশমিতি দিতীয়া তথাচ গমাতে গ্রামং বিপ্রেণেত্যাদাপি ভাবে ভবতীতি ভাগ-বৃত্তিকতোক্তম্ অন্তে ছেবং নেচ্ছন্তি প্রেকরণনিয়মানেরং ব্যবস্থা তেন তিপ্রা

⁽১৮০)। কহাদিতা গাতুভো ভাবে কর্মণ কর্জরি চ বাচো ভূতে কো ভবতি। কহাদয়ে যে২কম কাস্তেভো গতিভূজার্থতাদিনা কঃ সিদ্ধঃ। যদা তু সোপসর্গাঃ সকর্মকা ভবস্তি তদর্থোহয়মারস্তঃ। বৃত্তিকৃতা যদাপি উদাহরণানি কিয়ন্তি দর্শিতানি তথাপি স্পষ্টাবগমায় সর্বাধ্যেব ভাবে কর্মণি কর্মরি চ ক্রমেণ দর্শাস্তে। আরুঢ়ং ভবত। আরুঢ়ো বৃক্ষো ভবতা আরুঢ়ো বৃক্ষা ভবতা আরুঢ়ো প্রিয়ণ আরিষ্টঃ কাস্তাং প্রিয়ণ আরিষ্টঃ কাস্তাং প্রিয়ণ অগ্নিষ্টঃ কাস্তাং প্রেশ অরুজাতং পুত্রেণ অরুজাতা ত্হিতা পুত্রেণ অরুজাতো ত্হিতরং পুত্রঃ জননেনার্গত ইতার্থঃ। অর্জার্গে শৃত্রেণ অরুজার্গা বৃষ্ঠী শৃত্রেণ অরুজার্গা বৃষ্ঠা শিষ্যং গুরুঃ। অর্থানিষ্টা গ্রুণা শিষ্যঃ অরুশিষ্টঃ শিষ্যং গুরুঃ। বৃষ্ঠা দেবেন বৃষ্টঃ কলং দেবেন বৃষ্টো জলং দেবেঃ। অধিশায়িতং নৃর্বেশ্ব অধি-

জলং দেবঃ অধিশয়িতঃ শয্যাং নৃপঃ অধ্যাসিতো ধর্ম্মো মমুনা অনুসিতো গ্রামং নরঃ নতঃ পিতরং বালঃ। বাগীখরং পিতরমের তমানতোহস্মীতি বাণঃ। বিভক্তা ভ্রাতরো হর্থম্।

14

শয়িতা শব্য। দূপেণ অবিশয়িতঃ শ্যাং নৃপ:। যত্রার্থোহধিষ্ঠাদেরিতি কর্ম-সংজ্ঞায়ামক্ত সকর্মকত্বন অধ্যাসিতং মনুনা অধ্যাসিতে৷ ধর্মো মহুনা অধ্যা-সিভো 'ধর্ম্ম:। ধর্মবিষয়ে মনু: স্থিত ইত্যর্থ: ধর্মস্ত বৈষয়িকীদ্যধি-করণস্বাৎ মত্রার্থ ইঠ্যাদিনা কর্ম্মণজ্ঞা। অনুষিতং নেরেণ অনুষিতো গ্রামো নরেণ অন্বিতো গ্রামং নর:। বসতেরূপার্ধ্যাঙ ইতি কর্ম-সংজ্ঞা। নতং বালেন নতঃ পিতা বালেন নতঃ পিতরং বাল:। বিভক্তং ৰাত্ভি: বিভক্তোহর্থো ভ্রাতৃভি: বিভক্তা ভ্রাতরোহর্থম্। কৃহ্ স্থা আস্জনী জুষ্বস্শাস্নমালিষ্বুষ্শীঙৌ ভজিদৈতে স্থাদাশ রুহানয়:। শিষ্ঠপ্রোগদর্শনেন শাস্কু বৃষ্ নম্ ভজোহপি চকারস্থামুক্ত-সমুদ্দয়ার্থতাৎ পাণিনীয়ৈরিষ্যন্তে এবেতি অত্যোদাহতা:। আরুঢ় ইতি কহ জনানি প্রাহ্রভাবে হোড় ইত্যাদিনা হস্ত ঢ়ঃ ধোহধাতুর্য্যাদিতি তম্ত ধঃ ষ্টবর্গাদিত্যাদিনা ধস্ত চঃ চ্যোরিত্যাদিনা চলুক্ দীর্ঘ•চ। আমিট ইতি আঙ্পূর্ব্ শ্লিষ্ আলিঙ্গনে। উপস্থিত ইতি ষ্ঠা গতিনিবুত্তো দোষোমাস্থাং ক্তিতে ইও্ ইঙাদাবিত্যাকান্ত্ব ৷ অনুজাত ইতি জনী প্রাহর্ভাবে অভিতথোর্তিমিতি নকারস্থাকার:। অমুজীর্ইতি জুব্ঝুষ্বয়ে হানৌ জুবাদেরাঙ্ইতি বিশেষণার্থঃ ষকারঃ স্কানির্ইতি ইর্রাস্তাদেরিত্যাদিনা দীর্য: ক্রক্রবেরোরিত্যাদিনা তস্ত ন: ঋনেভা ইত্যাদিনা ণ্ডুম্। অমু-শিষ্ট ইভি শাস্থ অন্ত্শিটো শাদোংচতুর্থপীতি আকারশু ইকারঃ শানিবসিঘসীত্যাদিনা বৰং ষ্টবর্গাদিত্যাদিনা টছম্। বুই ইতি বুষু সেচনে ষ্টবর্গাদিত্যাদিনা তকারশু টকার:। অধিশয়িত ইতি শীঙ্ স্বপ্নে ইঙ-চতুর্বিত্যাদিন। ইঙ্। অধ্যাসিত ইতি আস্ উপবেশনে ইঙচতুর্বি-ত্যাদিনা ইঙ্। অনুষিত ইতি বদ্নিবাদে মৃড়মৃদগুধবদঃ জিনুচেতি ইট্ কিদাশীলে বিভ্যাদিনা বদ্ উদ্পূর্ববং ক্ষম্। আনত ইভি ণম্ প্রহরতে শকে তথো ভাতাাদিনা পঞ্মলুক।

১৮৪। গতিভুজ্যর্থাকর্মকাদধিকরণে চ।
গতো গ্রামং ভবান্ গতো গ্রামো ভবতা গতং ভবতা ইদমেযামুপগতম্ ইদমেযামাশিতম্ ইদমেযাং ভুক্তং ভুক্তো ব্রাক্ষণ ওদনং
পীতা গৌর্জলম্।

১৮৫। পূর্জিচ্ছাবৃদ্ধার্থঞীতো বর্ত্তমানে চ।
পূজিতো দেবঃ পূজ্যতঃ ইত্যর্থঃ ঞিমিদা মিয়:।
শীলিতো রাক্ষতঃ কাস্ত আক্রুষ্টো জুষ্ট ইত্যপি।
রুষ্টশ্চ রুষিতশ্চোভাবভিব্যাহত ইণ্ডাঁপি। হৃষ্টতুষ্ঠো

(১৮৪)। গত্যর্থাৎ ভূজ্যর্থাৎ অকর্মকাচ্চ ধাতোরুত্তরে কর্ত্তরি কর্মণি ভাবে অধিকরণে চ বাচ্যে ভূতে ক্রো ভবতি। সম্ভবব্যভিচারেণ হি বিশেষণমনর্থবদ্ধবতীতি অকর্মকাদিত্যনেন সহ কর্মণীতি ন সম্বধ্যতে অসম্ভবাৎ ইদমিতাধিকরণস্থ ক্রেনাক্তত্বাৎ প্রথমা। এষামিতি অধিকরণবাচিনা চেতি কর্ত্তরি ষষ্ঠী। স্পপ্তার্থং সর্ক্রোদাহরণানি দর্শ্যন্তে। ওদনং ভূক্তে ব্রাহ্মণং ওদনো ভূক্তো ব্রাহ্মণেন ভূক্তং ব্রাহ্মণেন ইদমেষাং ভূক্তং পানার্থোহপি ভূজ্যর্থঃ। পীতা গোর্জনং জলং গবা পাতং গবা পীতম্ ইদংগোঃ পীতম্। আশিতো ভক্তং বিপ্রেণ আশিতং ভক্তং বিপ্রেণ আশিতং বিপ্রেণ ইদমেষামাশিতম্।

(১৮৫)। পূজার্থাদিছার্থাদ্দার্থাৎ জীতশ্চ ভাবে কর্ম্মনি কর্ত্ররি চ ভূতে বর্ত্তমানে চ ক্রো ভবভি। জি ইক্ষাছতি যক্ত স জীৎ। পূজিত ইতি পূজ পূজারাং ভাদিল্ট্রাদিণ্ট ইপ্রের ইত্যাদয়োহণ্যেবম্। মির্র-ইতি ক্রিমিনা স্নেহনে খিঘুষাদীদিতাং ক্রৌ ঘাবিতি ত্যাদিখাদিঙভাবং স্থমদোদাদ্দশ্চ ন ইতি তক্ত দক্ত চ নং। শীলিত ইত্যাদি শীল্ সমাধী স্নেম্পালনে ক্ষম্ম্ সহনে ক্রশ্ আহ্বানে ভূষী প্রীতিসেবনয়োং ক্রম্ রোঘে হুঞ্ ইরনে হুম্ আলিক্যে তুম্ তুষ্টো ক্রমী দীপ্রিকান্তিগতির ক্ষম্ কান্তৌ বা বমু উপরমে কম্ হিংসারাং মৃঙ্ প্রাণত্যাগে এতেষাং ধাভুনামেতানি যথাঘোগ্যং রূপানি। অত্রান্টো সেভৌ। বস্বত্র কশ্চিদ্দিৎ তক্ত রুধাদ্যদিতো বেতি বিকল্লিতেও ছাৎ উদিতশ্চ উদিৎক্রীতি জনেন বিকলিতেও ছাৎ ক্রেকের ছাৎ ক্রেকের ছাৎ ইঙ্নিরেধং।

তথা কান্তস্তথোভোঁ সংযতোদ্যতো। কফীং ভবিষ্যতীত্যাহুরমৃতাং পূর্বববৎ স্ফাঃ। স্থপ্তঃ শফ্তিঃ আশিতঃ লিপ্তঃ তৃপ্তাদিরীমৃতাদিং।

२५७। जगुड् बनीस्टी।

ভাবে কর্ম্মণি চ বাচ্যে সর্ববধাতুভাস্তব্যঙ্গু অনীয়র্জে ভবজ কর্ত্তব্যং করণীয়ম্।

১৮৭। ভিয়োহপাদানে চ তব্যঙ্। ভেতব্যা রজনী ভেতব্যং নৃপতেঃ।

যোহপি ইনিং তস্য শ্বিষ্বাদীনিতাং ক্রো দাবিতি ইঙ্ নিষ্ণে:। ক্ষেরপি হরিবা লোমীতি পক্ষে ব্যচাদিবাদিট্। ক্ষেরপি ক্ষেত্র গহনে চ ক্ষ ইতি ক্রস্ত ত্যাদিবাদিওভাব:। ক্ষ্যেরপি ক্ষমণ্যুষানিতি পক্ষে ব্যচাক্ষিত্রাদিট্। শেষেভা: শকাদিবাদিওভাব:। ক্ষান্ত: কান্ত ইতি তথাশচাঙীত্যাদিনা সেঙ্গান্ন পঞ্চমলুক্ অভিত্তথোশ্চ পঞ্চমালুকীতি আকার:। উত্তত: সংযত ইত্যত্র পঞ্চমলুক্ এতে প্রয়োগা ভূতে বর্ত্তমানে চ। ক্ষুমিতি তু ভূতে ভবিষ্যতি চ। অমৃতা ইতি তু ন মৃতোহমূত ইতি বহুবচনমাদার্থং পূর্কবিং শ্বতা ইতি। বথা শীলিতাদয়ো বর্ত্তমানে ভূতে চভবন্তি তথা এতেহপীত্যর্থ:। স্থা ইতি ক্রিমপ্ শরে শীঙ্ ক্ষপ্রে আদ্ উপবেশনে লিপ্ উপদেহে ভূপ্ প্রীণনে যজাদিবাং শ্বপে: স্প্ ক্রিশ্বান্দের প্রপ্তিনাদানং প্রপঞ্চার্থম্য।

- (১৮৬)। অবিশেষাৎ কালসামান্তেন বিধানম্। কর্ত্তব্যঃ কটপৈতত্ত্বগ ইতি কর্মনি বাচ্যে। অকর্মকেভ্যঃ কর্ম্মাসম্ভবাৎ ভাব এক ভবিতব্যং ভবনীয়ং চৈত্ত্বেণ।
- (১৮৭)। ঞিতী ভরে ইতাশাদপাদানে স্থাবে চ তব্যঙ্ভবিত। ধাতোরকর্মকরার কর্মণি। ভেতব্যা রজনীতি ভীত্রার্থরোভীহেত্রিক্য-পাদানসংক্রা উক্তথাদক প্রথমা। ভেতব্যং নৃপতেরিত্যক তু অমুক্তথাৎ, শঞ্চনী।

১৮৮। কর্ত্তবি বদেস্তব্যণু। বসতীক্তিবাস্তব্যঃ।

১৮৯। প্রবচাদেরনীয়ঙ্ কর্মভাবয়োশত। প্রবচনীয়ো গুরুর্মমুস্ত প্রবচনীয়ো ধর্মো গুরুণা প্রবচনীয়ং গুরুণা সমাবর্ত্নীয়ো গুরুরুপনীতম্ভ উপস্থানীয়ো গুরো: শিষ্য: ।

ু১৯০। কচিৎ করণসম্প্রদানয়োশ্চ। স্নানীয়ং তৈলং দানীয়ো বিপ্রঃ।

১৯১। কচিদ্ধিকরণে চ। রমণীয়ং বনম্।

⁽১৮৮)। বদ্নিবানে ইত্যশ্বাভোঃ কওঁরি বাচ্যে তব্যণ্ভবতি। ব্যস্থব্য ইতি ণিৱাস্কিঃ।

[া] ১৮৯)। প্রপূর্দ্ধো বচিঃ ক্রঞাদেশন গ্রান্থঃ। সমাঙ্পূর্দ্ধো বৃতুঃ উংপূব্দিষ্ঠিতিশ্চ এয়ঃ প্রবচাদয়ঃ। এতেভাঃ কর্ত্তরি কর্মাণি ভাবে চানী-য়ঙ্ ভবতি। প্রবচনায়ো গুক্ধশ্মপ্রেতি কর্ত্তর্যানীয়ঙ্ কর্ত্তু শ্চাম্বাদিক্ষিতি বিভি কর্মাণ মন্ত্রী ওক্রধশ্মং প্রবজীত্যর্থঃ। প্রবচনীয়ো ধর্মো ওক্রণেতি কর্মাণ কর্ত্তুঃ ক্রৈত্যশ্চেতি পক্ষে কর্ত্তরি ষন্ত্রী তেন গুরোরিতি চল্বতি। প্রবচনায়ং গুরুণেতি ভাবে। সমাবর্ত্তনীয়ো গুরুরুপনীতশ্র ইতি কর্ত্তরি গুরুরুপনীতং সমাবর্ত্তেইতার্থঃ সমাবর্ত্তনীয়ো উপনীতে। গুরুণেতি কন্মাণ সমাবর্ত্তনীয়ং গুরুণেতি ভাবে। উপস্থানীয়ো গুরোঃ শিষ্য ইতি কর্ত্তরি শিষ্যো গুরুম্পতিষ্ঠতেইতার্থঃ উপস্থানীয়ো গুরুঃ শিষ্যেণেতি কর্মাণ উপস্থানীয়াঃ শিষ্যেণেতি ভাবে।

⁽১৯০)। কচিং করণে সম্প্রদানে চ বাচ্যে অনীয়ঙ্ ভবতি। কচিদিতি কৃতং শিষ্টপ্রয়োগানুসারার্থম্। স্নাত্যনেন স্নানীয়ং তৈলম্। দীয়তেহদ্যৈ দানীয়ো বিপ্রঃ।

⁽১৯১)। কচিদধিকরণে বাচ্যে অনীয়ঙ্ ভবতি। ষত্ত রুম্যতে তদ্রমণীয়ং বন্ম।

১৯২। ঋহলো ণ্যঃ। ঋদস্তাদ্ধলস্তাচ্চ ধাতোরুত্তরে ভাবে কর্ম্মণি চ বাচ্যে ণ্যো শুবতি। কার্য্যং তার্য্যং পাক্যং মার্গ্যম্।

১৯৩। জনাঙ্পতেঃ কর্ত্তরি চ।
জারত ইতি জন্ম জন্মনেন। আপতীতি আপাত্যঃ আপত্যমনেন
অস্তের্ভাব্যং চিকীর্ষ্যং পুত্রকাম্যং পুত্রীয্যং শ্যেনায্যম্।

১৯৪। দন্ভেনলুক্ চ। দাভাম্।

⁽১৯২)। কার্যামিতি ভুক্তঞ্করণে তনাদিং তার্যমিতি ত্প্রবনতরণয়োঃ ছস্মোক্তা। দীর্ঘস্থাপি গ্রহণং ণিঞ্চাদ্দিঃ। পাকাং নার্যমিতি
ভূপচ্ষ্ পাকে মৃজ্ শুদ্ধো ণ্যেংন্চাদেরিতি চ্জোঃ কগৌ মূজোংচতুর্ধ পীতি
বৃদ্ধি:। হস্তেম্ভ যাতাঃ। বধ্য ইতি তু সৌ্লো বধ্ধাতুঃ :

⁽১৯৩)। জনী প্রাহ্ণণিবে আঙ্পূর্দা গতু গতৌ এতাভাামূন্তরে ভাবে কর্ত্তি চ বাচ্যে গো ভবতি। অকর্মাকত্বান্ন কর্মণি। জন্ম ইতি জনবধী চেতি কথাদিত্বাদ্দাভাবঃ। ভূগতোরাবশ্যকে ভাবামিতি ভবত্যের কথমনাবশ্যকে ভাবামিতি চোণ্য আহ অস্তেভাবামিতি অস্ ভূবীতাশ্বাং গো ক্রতে ভ্বাদির্যাকিচাস্ত্যাদেরিতি ভ্বাদেশঃ। চিকীর্যামিত্যাদি সনাদ্যস্তানাং ধাতৃনাং হলম্ভবাং গাঃ কঞঃ সন্, ঋতণ্চ সনীতি ইর্ রাস্তাদেরিত্যাদিনা দীর্যঃ কৃতকার্য্যো নিদম্ভ ইতি নিল্লিড্ন ইত্যাদিনা দিরুক্তিঃ কথছাদিশ্যদিতিরিতি কস্ত চঃ। পুত্রকাম্যমিতি কাম্যো নাম ইচ্ছায়ামিতি কাম্যঃ হলোঘে ত্রস্ত ইতি যলুক্ পুত্রীযামিতি ত্লাচার ইত্যাদিনা কর্ম শ্রেনাযামিতি শ্রেন ইবাচরতি কর্ত্রায়্ ইত্যাদিনা আয়ে।

⁽১৯৪)। দন্ভ্দত্তে ইতাসাদ্ধাবে গ্যোভবতি নকারলুক্ চ। দাভামিতি নকারলুকি ক্তে বৃদ্ধিঃ।

১৯৫। যাস্ত ঞঃ। বুমিশ্রদে যাকং আসাব্যম্।

১৯৬। উদন্তাদাবশ্যকে।

ভাব্যং শ্রাবাং লাব্স অবশ্যশ্রাব্যং অবশ্যলাব্যমিত্যাদৌ ময়ূরব্যং-সকাদিত্বাৎ সমাসঃ। ব্লোরুয়ং ব্লোরাব্যং লোল্যং লোলাব্যম্।

ু৯৭। আপ্লুঙঃ কর্ত্তরি চ। অবশ্যমাপ্লবতে আপ্লাব্যো জলে ভবান্ আপ্লাব্যুমনেন।

১৯৮। অমাপূর্ববিদেরধিকরণে যঙ্চ। সহাস্তাং রবিচন্দ্রো বসত ইত্যমাবস্থা অমাবস্থা।

⁽১৯৫)। যু মিশ্রণে আঙ্পূর্ব যুঞ**্অ**ভিষবে ইত্যেতাভ্যাং ন্যো শুবতি। ইণঃ নহাদেশ্যঙিতি যঙোহপুৰাদঃ।

⁽১৯৬)। আবশ্যকে ইতি গম্যে সপ্তমী উপপদে সতি যদা উদস্তাৎ পো। ভবতি তদা শ্রাব্যং লাব মিতি ন স্থাৎ। অবশ্যংভাবঃ শ্যাৰশ্যকমিতি মনোজ্ঞাদিখালকঃ কচিন্ব্যানাং স্বরভচ্ছেষ্য্যোলু গিতাম্লুক্। আবশ্যকে গমামানে উদস্তাদ্ধাতোক্তরে প্যো। ভবতি। প্রাবাং লাব্যমিতি শ্রু শ্রবং ছিদনে অত্রাবশ্যংভাবঃ প্রকর্ণাদিনা ক্রেয়ঃ অবশ্যলাব্যমিত্যক্র তু শন্দেনৈর যহ্যপপদনিমিত্তা নাক্র গ্যোৎপত্তিঃ কথং তহি সমাসঃ অত আহে ময়রবাংসকেত্যাদি ময়রবাংসকাদেরাক্তিগণখাদিত্যভি শায়ঃ। ক্রত্যাদে সমাদেহবশ্রমাদেরিতি মকারলুক্। আবশ্যক্তিভি শিষ্ণ প্রবাং লব্যমিতি ইণঃ সহাদের্যভিতি যভের ভবাত। রোরাব্যমিতি ক শন্দে যন্লুগন্তাৎ ণ্যঃ বৃদ্ধির্বেতি বৃদ্ধিঃ রোক্যমিতি যন্লোপে পিন্তামন্তিদিতি গুণাভাবঃ নবিধ্যাদিলিঙ্ কৃদ্যে ইতি প্রতিষেধার দীর্ঘঃ।

⁽১৯৭)। আঙ্পূর্বপ্ল গুর্তার্থ: পঠাতে তন্মান্তাবে কর্ত্তরি চ বাচ্চে আবশ্রকে গম্যমানে গ্যোভবভি। অকর্মকন্মান্ত কর্মণি।

⁽১৯৮)। অমা ইত্যব্যয়ং সহার্থ: ক্মাপূর্বাহসতের ধিকরণে বাচ্যে শ্যো ভবতি যঙ্চ।

১৯৯। ইণঃ সহাদের্ত্ত। ইণস্তাৎ সহাদেশ্চোত্তরে ভাবে কর্মণি চ ৰাচ্যে ষঙ্ ভবতি। চেয়ম্উপপূর্ব ঈ গতে উপেয়ং। নেয়ম্।

২০০। গ্যন্তঃ।

শাশ্যং দাপ্যং হব্যং রোরব্যং লোলব্যম্।

২০১। ভুবঃ কর্ত্তরি চ।

ভবতীতি ভব্যঃ ভব্যমনেন সহাং শক্যং তালব্যাদি শল্ শল্যং যতী যত্যং শস্থ হিংসায়াং শস্তাং ফলং হিংস্রশ্চ তকে তক্যং চতে চতাং যজ্যমিত্যেকে।

⁽১৯৯২০০)। চেয়নিতি চিঞ্ চয়নে প্রদারিতার্থক্রীশক্যার্থ ইত্যাদিনা স্বানেশনিবেধঃ। উপেরনিতি ঈ গতৌ গুণে রুতে অনিণেধ-ধান্তেঙিপ্রাদেবি উপশক্ষাকারলুক্ নেয়মিতি গীঞ্ প্রাপণে। শাষ্ঠানিতি শক্ষ্ হিংসায়াং হিংসার্থান্দেতি চুরাদিছাং নিঙ্ রিদ্ধিঃ। দাপামিতি দাধাতোণিভ ণৌপুঙাদর্ভ্যাদেরিতি পুঙ্। হ্বামিতি হু দানে গুণঃ প্যাদেশিচেত্যাদিনা অবাদেশঃ রোরবাং লোলব্যমিতি যন্লুগন্তাং অনাবশ্রকে যঙ্। নকু ইণঃ স্থানেহজিতি ক্রিয়তাম্ এতেনাকারান্তান্যঙো লক্ষণান্তর-মকরণীয়ং ভবতীতি ন চ বাচ্যং এক্রবিধানার্থং থনাদন্তাদন্ত এচ্চ ইত্যবশ্বান্ধ করণীয়ং ঝকারান্তে চ প্রাপ্তো যঙ্ণোন বাধনীয় ইতি প্রতিপত্তি-গৌরবং স্থাৎ।

⁽২০১,। ভূধাতোক্তরে ভাবে কর্ত্তরি চ বাচ্চো যঙ্ ভবতি।
ভবত্যসৌ ভব্যঃ সহাদিয়ু হলস্তবাৎ ণ্যে প্রাপ্তে বঙ্। সন্থামিতি ষহ্
মর্ষণে ষহ্ মূহ্ শক্যার্থে বা শক্যামিতি শক্ শজ্ঞে তালবাাদি শল্
শলামিতি শল হল পতু গতৌ তালবাাদীতি কৃতং যল্যুল্ আগুগমন
ইত্যন্ত শল্পনিরাদার্থন্। শাবিত্ শল্য ইত্যমরঃ। অস্মাদেব নামীতিকপ্রতায়েন নদাদিত্বাদীপ্রতায়েন চ শলাকী। তথাচ — শশকঃ শল্যকী
গোধা ইত্যাদি। যত্যমিতি ষতী প্রয়েছে। শক্তমিতি শক্ত হিংসায়াঃ
তক্যমিতি তকে সহনে। চত্যমিতি চতে চদে বাচনে ষক্সমিতি ষক্ত দেব-

२०२। भवर्गासाम्लभारमः।

জপ্য: জাপ্যমিত্যেকে। লভ্যম্। লপাদেস্ত—লাপ্যম্। লপ্ রপ্বপ্তপুষ্চমূ।

২০০। স্প্রাদেগ দ্মদ্ধমঃ।
গদ্যং মদ্যং যম্যম্। অপ্রাদেরিতি কিম্ ? নিয়াম্যম্। নিয়ম্যমিতি তু নামণিভন্তাদ্যঙ্।

২০৪। চরেরাঙশ্চাগুরো। • চর্যাঃ আচর্য্যো দেশঃ। গুরো তু—আচার্য্যো গুরুঃ।

পূজাদৌ এক ইত্যুক্তং চান্দ্রশাস্ত্রে দৃষ্টত্বাং। সহি শকি যলি যতি শসবঃ। তকে চতে যজতিরপি সহাদিঃ স্থাং।

(২০২)। লপাদিবার্জতাৎ পবর্গান্তান্তরে ভাবে কর্মানি চ বাচ্যে বঙ্ ভবতি জপ্যমিতি জপ্ জল্ব্যক্তায়াং বাচি। জাপ্যমিত্যেক ইতি কাপ্যপবাদবিষয়ে গাপ্রবর্তনাং। লভামিতি ড্লভ্ষ্ প্রাপ্তৌ। লেপাং কোপ্যমিত্যাদ্যপাশু বিষয়ঃ কিন্ধকারোপাস্তবাতিরিক্ত ধাতোর্গ্যং বাধিতা বঙ্ বিধানশু ফলং ন দৃশুতে ইতি নােদাহত্য্। রপ্লপ্ব্যক্তায়াং বাঞ্ছিবপ্বীজতন্তসন্তানে ত্রপুষ্ লজ্জায়াং চম্ছমু জমু অমু অদনে । বিপি বিপি লিপি ত্রপি চমাং পঞ্চতে লপাদয়ঃ প্রোক্তাঃ।

(২০০)। প্রাহ্যপদর্গবিজিতিভাঃ গদ্ ব্যক্তায়াং বাদি মদী হথে বিমু উপরমে ইত্যেভেডাো যঙ্ ভবতি। যমেঃ প্রগাস্তস্তাং পূর্কোণের দিন্ধে নিয়মার্থং অন্ততাহিপি বিধার্থং যমেহিপ্রাদেরের ভবতি ন সোপ-দর্গাং অতা নিয়ামামিতাত পাঃ। কথং তহি নিয়মামিতাত আহ নাম-পিঙস্তাদ্বভিতি নিয়মং করোতীতি নিয়মশকায়ায় ইত্যাদিনা পিঙ্ অনেকা-চামস্ত্যান্ডেময়োলু গিতি অকারলুক্ নামধাতৃশ্চ বহুলমিতি কথাদিস্বাদ্ধ্রভাবঃ যঙি ক্রতে পিঙ্লোপ ইত্যাদিনা পিঙ্লোপঃ।

(২০৪)। প্রাদিবঙ্গি তাদাঙ্গে তার্নাচ্চরেরগুরাবভিধেয়ে যঙ্ভবতি।
চর্যামিতি চর্ গভৌ ভক্ষণে চ আচার্য্য ইতি চ। গুরৌ তু—আচার্য্য ইতি
আচার্য্য উপনেতা। প্রাদেস্ত । অভিচার্য্যঃ।

২•৫। পণিবহিভ্যাং বিক্রম্যকরণয়োঃ।
 পণ্যং স্বতং বহুং শক্টম্।

২০৬। রুঞোহরোধে।

শতেন বর্য্যা কন্যা। স্থ্রীবো রামবর্ষ্যোহসাবিতি ভট্টি:। স্বরোধ ইতি কিম্ ? বৃত্যা বাটী।

२०१। श्राभिटेवश्रादार्वाहर्त्वः।

অর্য্যঃ স্বামী বৈশ্যশ্চ। অশ্যত্র—আর্য্যো বিপ্র:।

২০৮। স্ত্রিয়াং জাগুর্ভাবে।

জাগৰ্য্যা জাগ্ৰিয়েত্যেকে।

⁽২০৫)। পণ্ব্যবহারে স্কতৌ চ বহ্ প্রাপণে ইত্যেকাভ্যামূত্রে বিক্রয়করণয়োবাচ্যয়োর্যঙ্ ভবতি। পণ্যং ম্বতমিতি বিক্রয়ণীয়মিত্যর্থঃ। বহুং শকটমিতি বহস্তানেনেতার্থঃ। বিক্রয়করণয়োরিতি কিম্ গ পাণ্যং স্থোতব্যমিতার্থঃ বাহুং বহনীয়মিতার্থঃ গা এব ভবতি।

⁽২০৬)। বৃঞ্বরণে ইতামাদরোধবিষয়ে যঙ্ভবতি। অরোধোহনিবারণম্। শতেন বর্যা ইতি পুরুষাণাং শতেন প্রার্থনীয়া ইত্যর্থ:।
দ্রিয়ামেবায়ং প্রতায় ইতি জয়াদিতাচ শ্রুতিকারাভ্যামুক্রং ভাষাদর্শনাৎ
তন্মতস্থানভীষ্টতাং দর্শয়িতুং স্থতীবো রামবর্য্যোহসাবিত্যুদাহ্বতম্। বৃত্যা
বাটী রোধনীয়েত্যর্থ: ইণ্ শাস্থ ইত্যাদিনা ক্যঃ তুক্। বার্য্যা ঋতিজ ইতি
তুর্ঞোণ্যে রূপম্।

⁽২০৭)। ঋ প্রাপণে ভাৃদি: ঋ স্থ গভৌ হ্বাদি: ইত্যেতাভ্যা-মূত্তরে স্বামিনি বৈশ্রে চ বাচ্চে যঙ্ স্থাং। অগ্রত তু—আর্য্যো বিপ্র ইতি ণ্য এব ভবতি।

⁽২০৮)। জাগ নিদ্রাক্ষরে ইত্যন্তাবে বাচ্চে স্তিয়াং যঙ্ভবতি। জাগর্যোতি যঙ্গ্রীডালাম ইত্যাদিনা আৎ জুবাদেরাঙ্ভইত্যনেনাঙা জাগ-রেতি পক্ষে ভবতি।

২০৯ । পরেঃ সর্ক্তেঃ। পরিসর্ব্যা।

२) । हरतः (कवलाष्ठ।

চর্য্যা পরিচর্য্যা। তলচ—বঠিরেকচর্য্যায়ামিতি ভাষ্যম্।

২১১। ঋতুমত্যামুপসর্ত্তেঃ। উপসন্থ্যা গোঃ উপসর্গ্যা বড়বা।

২>২। মাদেশছ্মাদে।।

নায়া ছায়া বন্ধা। শস্থপে শস্থা ব্রীহিগুণিশ্চ। নঞ্পূর্বৰ
পত্ অপত্যম্।

২১৩। জনো জাবা। জায়া ভার্য্যা জন্মো জামাতুঃ স্নিগ্ধ:

⁽২০৯)। পরেরুত্তরাৎ স্থ গতাবিত্যস্মাত্ত্তরে ভাবে বাচ্যে ক্তিয়াং যঙ্ভবতি।

⁽২১০)। পরেব্লন্তরাচ্চর্ গতাবিভ্যস্মাৎ কেবলাচ্চ ভাবে বাচ্যে ব্রিয়াং যঙ্ ভবতি। চরেরাঙশ্চাগুরাবিত্যনেন কেবলাৎ সিদ্ধে স্ত্রীত্বার্থণ বচনং স্ত্রীত্বাদাৎপ্রত্যয়ঃ ত্রিমুনিসম্মতে লক্ষণাভাবাৎ চর্যাসিদ্ধার্থণ গণ-কারোক্তং দুর্শয়তি বঠিরেকচর্য্যায়ামিতি।

⁽২১১)। উপপূর্কাৎ সর্ত্রেগ্ড ভবতি। ঋতুমতাং বাচ্যায়াং গবীত্যত্তে পঠস্তি। তদহশাস্ত্রে বিরোধাদপ্রমাণমেতৎ স্চয়িতুমাহ উপস্থায় বড়বেতি।

⁽২>২)। মাঙ্মানে ইত্যাদের্যঙ্ভবতি ছ্মাদাবর্থে। ছায়েতিছো ছেদনে। বন্ধ্যেতি বন্ধ্বন্ধনে। অপত্যমিতি শল্ভল্পত্গতৌ। আদিপদেন ইশ্যাদি স্ঞ্হরণে ব্ছলবচনাৎ মকারাগমঃ।

⁽২১৩)। জনী প্রাহ্মভাবে ইত্যম্মাদ্ ষঙ্ ভবতি। জনঃ স্থানে জাদেশ-চ বা ভবতি। জায়তেহস্তামিতি জায়া আত্মা বৈ জায়তে পূত্র-ইতি স্বরন্তি জায়া ভার্য্যেত্যাদিনার্থভেদেন ব্যবস্থিতোহয়ং বিকল্প ইতি স্থচিতম্। শিক্ষব্যবস্থা তু শোকে প্রসিদ্ধা।

২১৪। ন**েঞা বদের্গহিতে।** অবদ্যম।

২১৫। জিরশ্চ সঙ্গমে কর্ত্তরি। অজ্ঞগ্যং নোহস্ত সঙ্গতন্।

২১৬। খনাদন্তাদন্ত এচ্চ।

(अंदाः (मिय्रम्। यन्लुकि नार्मियः जारञ्च्यम्।

২১৭। গণেণিডেদ্বা। গণাং গণেয়ং গণনীয়ন্ত্র গণেয়মিতি ত্রিকাণ্ডম।

- (২১৫)। চকারো নঞোহনুকর্ষণার্থ: নঞ উত্তরাৎ জুষ্ ঝুন বয়ো-হানাবিত্যস্থান্ যঙ্ভবতি সঙ্গমে কর্ত্তি বাচ্যে। ন জীর্যাতীত্যজর্ম্যং সঙ্গত্নিত্যর্থ:। সঙ্গম ইতি কিম ? অজ্বিতা কন্দ্র:।
- (২১৬) খন্ন অবদারণে ইত্যন্মাদাকারাস্তাচ্চ ষঙ্ ভবতি। অস্ত্র এক। খেরমিত্যত্র আচিদাদাবিত্যকাল্যক্। দেরমিতি ডু দাঞ্দানে দাদেরমিতি প্রকৃতিবিদ্ধি গাদিশ্চেতি দিরুক্তিঃ দীর্ঘোহনাগমাত ইতি দীর্ঘঃ। তাস্তেরমিতি স্তাগতিনিবৃত্তী যন্পুক্ মূর্দ্শসাৎ কাদিরিতি থাকারেণ দিরুক্তিঃ ঠচথপেত্যাদিনা থস্ত তঃ। ইকারে কতে গুণেনাপি একারে সিদ্ধে একার-বিধানং মাত্রাক্তলাঘবাৎ প্রক্রিয়াক্তমেব লাঘ্যমন্ত্রান্টিমিতি স্থ্রনার্থং থেহযুষ্চীত্যাদিনা ঈকাবে গুণে চ কতে দের্মিত্যাদি সিধ্যত্যের তন্মাৎ য়েয়ঃ য়েয়মিতি উদাহরণীরম্।
- (২১৭)। গণ সংখ্যানে ইত্যশ্বাৎ ণিঙ্স্তাদ্ যঙ্ভবতি। ণিঙ্ এদা ভবতি। গণামিতি ণিঙ লোপ ইত্যাদিনা ণিঙ্লোপঃ গণেয়মিতি ণিঙ্লোপ ইত্যাদিনা ণিঙ্লোপে প্রাপ্তে ণিঙ্ এক্ষ্। শাস্তান্তরে মুখ্য-শক্ষণাভাবাৎ প্রমাণার্থং ত্রিকাণ্ডম্দান্তবান্। তথাচ, অন্নান্থপণাপূর্ণা-পণানিতি মাদঃ।

⁽২১৪)। নঞ্ উত্রাদদ্ ব্যক্তারাং বাচি ইত্যমাদ্ গঠিতে হর্থে বঙ্ ভবতি। প্রকৃত্যা ন উদ্যত ইতি নঞ্ সমাসাৎ অবদ্যং গঠিত -মিতার্থঃ।

২১৮। গায়তেঃ কর্ত্তরি চ। গেয়ো ভ্রান্ সাম্বাং গেয়মনেন।

२১৯। ञ्चभायामि वरमः काम्ह।

ব্রহ্মবদ্যং ব্রহ্মোদ্যং অবদ্যং অনুদ্যং অনুপূর্বববদেরনূদ্যমিত্যেকে।

২২০। স্থারে রাজে নামি।

বাজশ্বন সোমবাচী তেন সোতব্যং রাজসূয়ম্।

২২১। কৃষ্টাৎ পচশ্চ। কুষ্টেন পঢ়ান্তে কৃষ্টপঢ়া ব্ৰীহয়ং।

⁽২১৮)। কৈ গৈ রৈ শন্দে ই ত্যুসাছাবে কর্মণি কর্দি চ বাছো যঙ্ভবতি। গেয়ো ভবান্ সামামিতি খনাদন্তাদন্ত এচে ইতান্তন্তৈকার: কর্জুরিত্যাদিনা কমুণি ষ্ঠা। গায়তি ভবান্ সামানীতার্থ: কর্মণি গেযাল্ল-নেন সামানি।

⁽২১৯)। প্রাদিবজিতে স্থপ্যপপদে ভাবে কর্মণি ।চ বাচ্যে বদের্যপ্ত ভবতি ক্যশ্চ। বন্ধোদামিতি ব্রহ্মণা উদিত্মিত্যর্থে ভাবে কাশ্চ কিনানারোরিত্যাদিনা বদ উদ্। অবদ্যমিতি গহায়ামুক্তমের অবদ্যমন্তি অগহায়ামিহোনাহরণম্। বহুলাবিকারাং মৃষাপূর্কাৎ ক্য এব ভরতি ম্যোদাম্। অপ্রাদাবিতি কিম্? প্রাদায়ণ্য এব ভরতি। অনুস্বাদ্যাম্বাদ্যমিতি ভবতি। অনুদ্যমিত্যেকে ইতি তে হি অনোরূপস্বাৎ ক্যমিছন্তীত্যর্থঃ।

⁽২২০)। রাজন্শকাত্ত্তরাৎ যুক্ত অভিষবে ইত্যক্ষাৎ ক্ষো ভরতি সংজ্ঞায়াম্। সোমবাসীতি সোমা সোমলতা রাজস্মমিতি যাওি প্রাপ্তে ক্যাং সনীণ্ দীর্ঘ ইতি দীর্ঘোন ভরতি ন বিধ্যাদিলিও কৃদ্যে ইতি নিষেধাৎ শেষো বৃদ্ধাদিতি দীর্ঘাঃ কার্য্যঃ ক্রতোরিয়ং সংজ্ঞা।

⁽২২১)। চকারো নামীতান্ত্র্কর্ধণার্থঃ। ক্রন্তাত্ত্রাৎ পচ উত্তরে সংজ্ঞারাং ক্যো ভবতি। পচ্যস্ত ইতি পচ্যাঃ কর্ম্মকর্ত্র্যাশ্বনেপদং যক্ চ স্বয়ং পচ্যস্ত ইত্যর্থঃ।

২২২। গুপের্গঃ কশ্চ।

কুপাম্ অংহেমরপ্যং ধনম্।

২২৩। যুজো জশ্চ গঃ।

্যুগ্যং বাহনম্।

२ १। (वः भूवाः।

বিপুরো মুঞ্জ:।

২২৫। নিয়শ্চ।

विनीयरेखना मिककः।

২২৬। শকেঃ শিক্ চ।

শিক্যং রজ্জুবিকারঃ।

2211 (B: 1

हिट्डाञ्जि ।

- (২২২)। গুপ্রোপনকুৎসনয়োঃ গুপ্রক্ষণে ইতি বা অতো নায়ি ক্যো ভবতি। গুপে র্গঃ কন্চ। গুপ ব্যাকুলত্বে ইত্যন্তাপি গ্রহণমিতি কেহপাতঃ। অনামি তু—গোপ্যম।
- (•২২:০)। 'যুজির্ যোগে ইভাস্মান্নাম্নি ক্যো ভবতি। জশ্চ গো ভবতি। যুগ্যমিতি যোজনীয়ং করিতুরগাদি। অসংজ্ঞায়াম্ভ—যোগাঃ।
- (২২৪)। বেরুত্তরাৎ পূঞ্পবনে ইত্যন্মাৎ ক্যো ভবতি সংজ্ঞায়াম্। পূঞ্পবনে ইত্যস্ত ভাবেরগ্নং প্রয়োগ ইতি জ্যাদিতাজিনেক্রৌ। অনামি তু-—বিপবাম্।
- (২২৫)। বিপূর্বাৎ ণীঞ্ প্রাপণে ইত্যম্মাৎ ক্যো ভবতি সংজ্ঞারাম্। বিনায় ইতি বিনীয়তে সিদ্ধং প্রাপাতে তৈলাদিকমনেনেতি বিনায়:। অনান্নি তু —বিনেয়ম্।
- (২২৬)। শকু শক্তাবিত্যস্লাৎ ক্যো ভৰতি সংজ্ঞায়াম্। শকেঃ শিক্চ।
- (২২৭)। চিঞ্চয়নে ইত্যমাৎ ক্যো ভবতি সংজ্ঞায়াম্। অনায়ি জু—চেয়ম্। অগ্নাবভিন্নেয়ে বহেরজৈঃ সমৃহ্ ইতি সাধ্যতে। উহ্ বিতকে ইত্যমানেব গ্যপ্রতায়েন সাধ্যতে ইতি তদিহ নোক্তম্।

२२४। (जः।

জিত্যো হলিঃ মহদ্ধলমিত্যর্থঃ।

২২৯ অঞ্জেরান্তঃ।

আজ্যং ঘূত্রম্।

২৩০। ভিদঃ কর্ত্তরি চ।

কূলং ভিনতীতি ভিদ্যো নদভেদঃ।

২৩১। উদ্ধাউদশ্চ।

কূলমুজ্ঝতি উদ্ধ্যো নদভেদঃ।

२७२। मिधुभू:वात्रिकत्रत्।

সিধাতি পুষাতার্থোহিম্মিন্নিতি সিধাঃ পুষ্যে। নক্ষত্রভেদঃ।

⁽ ২২৮)। জি জ ৄ অভিভবে জি জয়ে বা ইত্যশ্বাৎ ক্যো ভবতি সংজ্ঞায়ান্। জিত্য ইতি তুক্। হলিশস্বার্থং ব্যাকরোতি মহদ্ধলমিত্যর্থঃ। সনায়ি তু—জেয়ম।

⁽২২৯)। আঙ্উত্তরাদন্জু ব্যক্তিমক্ষণকান্তিগতিযু ইত্যসাৎ ক্যো ভবতি সংজ্ঞায়াম্। আজামিতি হলুপাস্তেত্যাদিনা নকারলুক্।

⁽২০০)। ভিদিব্ বিদারণে ইত্যন্মাৎ ক্যো ভবতি কর্ত্তরি সংজ্ঞায়াম্। অনামি তৃ—ভেত্তা।

⁽২৩১)। উদ্ঝ্উৎসর্গে ইত্যস্থাৎ কর্ত্তরি ক্যো ভবতি শংজ্ঞায়াম্। উদ্ঝ্ইত্যস্ত উদ্ধাদেশশ্চ। অনামি তু—উজ্ঝিতা।

নঞো ব্যথ ইতি বক্তব্যম্। নঞ্ উত্তরাদ্বাথতেঃ কর্তুরি কো ভবতি। ন ব্যথতে অব্যথাঃ।

রুচেশ্চেতি বক্তব্যম্। রুচেশ্চ কর্তুরি ক্যো ভরতি। বোচতে ইতি রুচ্যঃ।

⁽২৩২)। বিধু সংরাদ্ধী পুষ্ পুষ্টো ইত্যোতাভ্যামূত্তরে ক্যো'ভবতি। অধি করণে সংজ্ঞায়াং বাচ্যায়াম্। হ্রুষোকারাস্তনির্দেশ্য বিধু শাস্ত্রে মাঙ্গন্তো চ ইত্যস্থাগ্রহণার্থা। অনামি তু—সেধনঃ।

২৩০। পদপক্ষপরতন্ত্রেষু গ্রহঃ। প্রগৃহাং পদং যত্র সন্ধিনিধিদ্ধঃ অবগৃহাং পদং যক্ত ব্যবচ্ছিদ্য পঠ্যতে। পক্ষে ভবঃ পক্ষ্যঃ অর্জুনগৃহ্যে হরিঃ গৃহঃ পরতন্ত্রঃ।

২৩৪। বহিভূ িতায়াম্। গৃহা নদী বহিভূ হৈত্যর্থঃ।

২ং৫। ঋতৃপান্তাদন্চ্চ্ৎকৃপেঃ। রুধাং স্জাং কীর্না ঋচ্ চৃৎ কুপেস্ত—ঋচ্ অচ্যং চৃতী চর্ত্যং কুপূ কল্লান্

২৩৬। ন পাণিদমবাভ্যাং স্বদ্ধঃ।

⁽২০০)। গ্রহ উপাদানে ইত্যুমাৎ ক্যো ভবতি পদে পক্ষে পরতম্বে চ বাচ্যে। প্রগৃহ্মিতি বশাদেকশাদিরিতি গ্রহ্ গৃহাদেশঃ প্রপূর্কস্থৈব গ্রহেনিবিদ্ধসন্দেরভিধানম্। এবমবগৃহং অবপূর্কস্থ গ্রহেরর্থো যত্র পদসন্দারে তত্রস্তপদানি বিবিধানি বিবিচা পঠান্তে। পক্ষে ভবঃ পক্ষা ইতি দিবাদেশভ্রবাদানিতি য়ং। পক্ষ্যশক্ষো বর্গমভিধত্তে। পরতম্ব ইতি পরায়ত্তঃ তথাচ, গৃহাসক্রাঃ পিফ্র্গান্ডেকাস্তে গৃহ্কাশ্চ তে ইতি অনুকল্পায়াং কঃ।

⁽২৩৪)। বহিভূতিায়াং বাচ্যায়াং গ্রহধাতোকত্তরে ক্যো ভবতি। বহিভূতিায়ামিতি স্ত্রালিঙ্গনিদেশাং পৃথগ্যোগকরণাচ্চ স্ত্রীলিঙ্গ এবাশিরজর্ম গৃহাশক ইত্যুদাহত:।

⁽২০৫)। অন্ত সমীপমুপান্তম্ ঋৎ উপান্তং যন্ত তদুত্পান্তং তন্মাৎ ঋচ্ চৃত্ রূপ্বজি তাছন্তরে ক্যো ভবতি। বুধামিতি বুধু বৃদ্ধৌ স্কামিতি সূজ্ বিদর্গে। কার্নামিতি রূৎ সংশব্দনে। ৰছলবচনাঞ্রাদিণিঙোহজা-ভাবশ্চেতি স্চয়িত্মেতছদান্তং বৃত্তিক্তেতি লক্ষ্যতে তেন কীর্ন্তিরিতি সিধাতি। যত ইণঃ সহাদেশভিতি যঙাপি গান্তাং কীর্ন্তামিতি সিধাত্যেব। ঋচ্ স্থতো চৃতী হিংসাগ্রহ্মোঃ রূপু সামর্থ্যে এভ্যো গ্যঃ। কল্পাদির ক্পাদের ক্পাদের ক্পাদের ক্পাদের ক্রিতি ক্রামিতি

⁽२०७)। विवहननिद्धां नार नाय देखि नमूनाय शहनम् भानिमकार

পাণিসর্গ্যা সমবসর্গ্যা রজ্জু:।

২০৭। ইণ্শাস্থ্রীদৃঙ্রঞ্পুণঃ। ইড্যঃ শিষ্যঃ জুষ্যঃ দৃঙ্অনাদরে দৃত্যঃ রুজ্যঃ পুণ্যঃ।

২৩৮। আবশ্যকে চ স্তবঃ। স্তুত্যঃ অবশ্যস্তত্যঃ।

২০৯। ভূঞোহসংজ্ঞায়াম্।

ভূত্যঃ। সংজ্ঞায়াস্ত—ভার্য্যা পত্নী ভার্য্যো নাম ক্ষব্রিয়বিশেষঃ। ২৪০। তুহাদের্বা।

সমব ইত্যুপদর্গাচ্চোত্তরাৎ স্থন্ধ্র বিদর্গে ইত্যুমাৎ ক্যো ন ভবতি। গো ক্ষতে গুণঃ গোহনুচাদেরিতি জস্তু গঃ।

- (২৩৭)। ইণ্ গতৌ শাস্ত অকুশিষ্টো জুষী প্রীতিদেবনয়োঃ দূঙ্ অনাদরে বৃঞ্ বরণে পুণ্ কর্মণি শুভে চ ইত্যেতেভা উত্তরে ক্যো ভবতি। ইতা ইতি তুক্ শিষ্য ইতি শাদোহচতুর্ম পীতি শাদ আকারস্থ ইকারঃ শাদিবদীত্যাদিনা যত্ত্ম। বুঞো একারামুবন্ধকরণং বৃঙ্ সংভক্তাবিত্যস্থ নিরাদার্থং তত্র বার্যাম্ উপেয়ম্। আশাস্তমন্তং পুন ক্রুভত্তম্ অনিবার্যোগ গৈজেরলৈতি উপপূর্বে স্ব গতৌ আঙশাস্থ ইচ্ছায়াং বৃঙ্ সংভক্তাবিত্যে-তেষাং রূপাণি।
- (২৩৮)। ফুঞ্ স্বতাবিত্যশাহত্তরে আবশ্যকে অনাবশ্যকে চ খ্যোত্যে ক্যো ভবতি। স্বত্য ইতি ইণঃ সহাদের্যন্তিত্যনেন প্রাপ্তশ্র যঙো বাধনার্থম্। অবশ্বস্তুত্য ইত্যত্র উদস্তাদাবশ্যকে ইতি প্রাপ্তশ্ব গাস্তু বাধা।
- (২৩৯)। ডু ভৃঙ্ ধারণপোষণয়োরিত্যন্মাহন্তরে ক্যো ভবতি অসং-জ্ঞারাম্। ভৃত্য ইতি ভর্ত্তব্য ইত্যর্থ:। সংজ্ঞারাস্ত্ত — ভার্যা পত্নীত্যাদি। অভর্ত্তব্যাপি সৈবম্চাতে ণ্য এব ভবতি। নমু অকন্ত্ কারকে চ সমজাদে: সংজ্ঞায়ামিতি ক্য: কথার ভবতি ? উচাতে—ভরণং ভৃত্যা ইতি ভাবে তেন বিধানং ভার্যোতি পুন: কর্ম্মণি গ্য:।
 - (২৪০)। ছহাদেধ তিরারভরে ক্যো বা ভবতি পক্ষে গাঃ। হহ

ত্থং দেখিং গুহুং গোহুং মৃজ্যুং মার্গ্যং বৃষ্ঠাং কৃত্যুং কার্য্যং শস্তুং শাস্তুং অভ্যাস্তুং সংভূত্যঃ সংভার্য্যঃ।

২৪১। ভূবো ভাবে স্থপ্যপ্রাদৌ। ব্রহ্মভূরং ব্রহ্মস্থিতার্থং।

২৪২। হনো নলুক্ চ স্ত্রিয়াম্। ব্ৰহ্মহত্যা।

২৪০। অকর্তৃকারকে চ সমজাদেঃ সংজ্ঞায়াম্।
সমজস্তাস্থামিতি সমজ্যা সভা কীর্ত্তিশ্চ। নিধীদস্ত্যস্থামিতি নিধন্যা বিক্রেতব্যস্থানম্। নিপতস্ত্যস্থামিতি
নিপত্যা যুদ্ধভূমিঃ। মন্যতেহস্থামিতি মন্তা পশ্চাদ্-

- (২৪১)। প্রাদিবর্জ্জিতে স্থবন্তোপপদে ভূধাতোর্ভাবে ক্যো ভবতি।
 স্থপীতি কিমৃ ? ভবাম্। নমু ভূবঃ কর্ত্তরি টেত্যনেন ভাবে যঙ্বাধকে।
 ভবিষ্যতি কিং স্থপীত্যনেন ? নৈবং তশু সোপসর্গবিষয়ঃ শ্রাৎ অশু তৃ
 নিরুপসর্গঃ। অপ্রাদাবিতি কিমৃ ? প্রভবাম্।
- (২৪২)। প্রাদিবর্জিতে স্থবস্থোপপদে সতি হন্ হিংসাগত্যোরিত্যেতশ্বাহন্তরে দ্বিয়াং ভাবে ক্যো ভবতি। নকারশু চ লুক্। ব্রন্ধহত্যেতি
 ন লুকি ক্তে তুক্ ব্রন্ধহননমিতার্থঃ। ভাব ইত্যেব। শ্বঘাতো মৃগঃ শুনো
 হস্তব্য ইতার্থঃ। স্থপীতি কিন্? ঘাতো বর্ত্ততে। প্রাদেশ্ব—প্রঘাতো
 বর্ত্ততে।
- (২৪৩)। সমজাদিভাঃ কর্ত্বর্জিতে কারকে ভাবে চ বাচ্যে দংজ্ঞারাং ক্যো ভবতি দ্বিয়াম্। সমজ্যেতি সংপূর্ব অজ্ গতিক্ষেপনয়োঃ ক্যে ক্তে ভাবের্যকি চাস্তাদেরিতি অজোবীন ভবতি ঘণ্ডক্যেমু বীরিতি

প্রপ্রণে গুছু সংবরণে মৃজ্ শুকো পূর্ মৃষ্ রুষু সেচনে ডুকুঞ্ করণে শন্ত্ব স্তাত অভিপূর্ক অন্ধ ক্ষেপণে সংপূর্ক ডুভঙ্ ধারণপোলণয়োঃ এষাং রূপাণি। মৃজ্যং মার্গামিতি মৃজ্যে হত তুর্ষ পীতি বৃদ্ধিঃ গোহন্চানেরিতি জ্প্র গান্ত হলুপান্তেত্যাদিনা নকারলুক্।

গ্রীবাশিরা মন্তা। মতিরিতি সম্মত্যস্থাকোপকুৎসাছৎ সনেষিতি
নির্দেশাৎ। বিনন্তান না বিলা স্বন্তানাতি স্কৃত্যা। আস্কৃতিরিতি রজস্বলাদিগণপাঠাৎ। শেরতেহস্তামিতি শেষ্যা। ভরণং
ভূত্যা ভূতিরিতি কর্মাক্লান্ত্ তাবিতি নির্দেশাৎ। এত্যনয়া অয়নং
বা ইত্যা। আসনং আস্তা। ভনেন আসনা ব্রজনং ব্রজ্যা
যক্তনং ইজ্যা। সংপূর্বঃ অসু সমস্তা চীয়তেহস্তাং চিত্যা
অগ্রেশ্চয়নং অগ্রিচিত্যা।

২৪৪। কুঞ্জুগ্বা। কৃত্যা ক্রিয়া।

প্রতিষেধাৎ। নিষ্মেতি নিপূর্ক্ ষদু বিষরণগতাবসাদনের সদোহপ্রতে-বিতি মূর্ক্সঃ। নিপত্যেতি নিপূর্ক্ পতু গতৌ। মন্তেতি মন্ জ্ঞানে। মতিরিতি ক্যেন বাধিতথাৎ ক্তিন প্রাপ্নোতি অত আহ সম্মতাস্য়েতি নির্দেশাদিতি। বিদ্যেতি বিদ্ জ্ঞানে স্রত্যেতি মুক্র্ অভিষবে আঙ্ পূর্কাৎ স্থ কঃ কথম্ আস্থতিরিতি অত আহ রজস্বলাদিগণপাঠাদিতি স্ত্রীধর্মিণ্যাদৌ রজস্বলাদিরিতি। তত্র আস্তীবল ইত্যুদাহ্বতম্। শয়েতি শীঙ্ স্থপ্নে ক্যুবচোশ্চেতি শেভাবঃ শীঙোহঙিদ্য ইতি অয়াদেশঃ। তরণং ভৃত্যেতি ভাবে ক্যবিধানং ভাবব্যতিরিক্তেহর্থে সংজ্ঞায়ামপি নায়ং প্রবর্ততে তেন ভার্যোত্যের গ্য এব ভরতি কথং তহি ভৃতিরিতি অত আহ কর্মশন্দভ্তাবিতি নিদেশাদিতি। ইত্যেতি ইণ্ গতৌ। আস্থেতি আস্ উপবেশনে কথমাসনেত্যত আহ ওনেনেতি শ্রন্থাতি যজ্ দেবপূজাদৌ পঠ্যতে। সমস্থেতি অস্থ্ ক্ষেপণে। চিত্যেতি চিঞ্চয়নে।

(২৪৪)। করোতে: স্ত্রিয়াং কর্ত্বির্জ্জিতে কারকে ভাবে চ সংজ্ঞায়াং ক্যো ভবতি। তুক্ বিকল্পেন। হুস্বাদিত্যাদিনা নিত্যে তুকি প্রাপ্তে বিকল্পঃ। জ্ঞানেন ক্রেরবাধনং বক্ষাতি তেন ক্লতিরিত্যপি ভবতি। ক্রিয়েতি রিম্বাতায়ে চেতি ঋকার্ম্ম রিং।

२8৫। श्रुश्मि चन कांत्रक छ।

ভাবে কচিৎ কারকে চ বাচ্যে সর্ববধাতৃভা উত্তরে পুংসি
ঘণ্ ভবতি। পাকঃ ত্যাগ। কদভিহিতো ভাবো
দ্রব্যবৎ প্রকাশত ইতি দ্বিচনব্লবচনে চ ভবতঃ।
পাকৌ পাকাঃ পঞ্চতঃ শক্ষঃ প্রপঞ্চয়তেঃ প্রপঞ্চঃ।
কত্রাদিষট্কে কারকসংজ্ঞা প্রসিদ্ধা। ব্যতিষক্ষতে
ব্যতিষক্ষঃ অবস্ক্ষতি অবসর্গঃ দূরেপাকঃ ফলেপাকঃ
প্রাশ্রস্তি তং প্রাসঃ প্রসীব্যক্তি তং প্রসেবঃ পছতে

(२८८)। यश्चिम वहिकात्रक्यू घन् विधानः ज्यांनि निष्ठे श्रायांनानाना-দ্যাবস্থেমনিতি প্রচয়িত্মাহ কচিৎ কারকে চেতি। এবমুত্রযোগেম্বলি ক্লেয়ম। অর্থস্থ তুব্যবস্থা লোকত এব ক্রেয়া। পাকঃ ত্যাগ ইতি অকবর্গাদীত্যাদিনা চজ্রোঃ স্থানে কর্মো। ক্রিয়াসামাত্রাৎ সর্বধার্ত্বামুগতঃ স্ত্রাবাচিনো ভবতেরর্থ: তক্মান্তাব ইত্যানেন ঘণন্তেন ভবতিনা সর্ব্বণাতনাং ক্রিয়ামাত্রে বাচ্যে প্রত্যয়োৎপত্তিকজা। ক্রিয়ায়ান্চাদ্রব্যবাচ্ছাৎ সংখ্যাসম্বন্ধা-ভাবে দ্বিবচনবছবচনাভ্যাং ন ভাব্যমিতাত আহ ক্লুডিহিতো ভাব ইত্যাদি ক্লৎ প্রভারেনোক্রো ভাবো দ্রব্যবন্তবতীতি দ্রব্যস্বরূপে চ দ্বিবচনবছবচনে চ সম্ভবত এব। ক্লাভিহিত ইতি বিশেষণাৎ যদা ডিঙভিহিতভাবো ভৰতি ভত্ত্ৰৈ-কম্বনেব। অতএর ভাবকর্মণোরাম্বনে ইত্যত্তিগেক্তং ধার্ডর্য: কেবলো ভাব-স্তব্যৈকত্বাৎ প্ৰথমপুৰুবৈকৰচনমিতি। ক্ততো ছি প্ৰায়েণ সিদ্ধতামভিদুধতি। এবঞ্চ সতি পাকাদিক্রিয়াব্যক্তয়োহপি দ্রব্যস্বর্ভাবা ইব প্রকাশন্তে। তিওস্কান্ত । সাধ্যতামন্তিদধতি তত্ত্রৈকত্বমেব প্রকাশত ইতাভিপ্রায়ঃ। এতচ্চ প্রপঞ্চয়েন ন বিবিচ্যতে। পদ ইতি পচি ব্যক্তীকরণে ভাগিং। কথং তর্হি প্রপঞ্চ ইত্যত আহে প্রপঞ্চয়তে-রিতি পচি বিস্তারে ইত্যন্মাৎ চুরাদিণ্যস্তাৎ দৃঙাদি-ত্বাৎ ভেন সাধনীয়:। ইহ কারকসংক্রায়া অভাবাৎ কারকশক্ষেনাত্র কিমভিধীরতামিত্যতাহ কর্ত্তাদিবট্কে ইত্যাদি। তথাচ সা প্রসিদ্ধিরশাভিঃ কারকপাদে এব বিবিচ্য ব্যাথ্যেয়া। ব্যতিষদ ইতি যন্ত্র মঙ্গে স্থাদেরি-ত্যাদিনা ষত্ব। অবদর্গ ইতি কজ বিদর্গে। দূরেপাক ইতি দুক্তে

অনেনেতি পাদ: রজ্যতেহনেনেতি রাগ: এবমুপদেশঃ সংহার: স্থায়: অবহার: অবতার: অবস্তার: বদ্ধঃ বেদঃ অপামার্গঃ আনায়ে। জালং তালব্যান্তদাশৃ দানে দাশ্যন্ত্যশ্মৈ দাশো বিপ্রঃ উপেত্যাধীয়-তেহস্মাদিত্যপাধ্যায়: আধ্রিয়ন্তেহস্মিন্নিত্যাধার: এবমাবায়ঃ অধ্যায়ঃ।

২৪৬। আঙি নিপানে হ্বেঞো ভূশ্চ। স্থাহাবো নিপানম্ উদচ্যতেখনেনেতি উদক্ষ:। স্থানভিধানাত্ৰদক-বিষয়েন স্থাৎ। উদকোদঞ্জনম্।

সম্মানের পচ্যত ইত্যর্থ: তৎপুরুষে রুতি বছলমিতি সপ্তমাা অলুক্। প্রাস ইতি অস্থ ক্ষেপণে। প্রাদেব ইতি ধিবু তন্তুসন্তানে। পাদ ইতি পদ্ গতৌ। রাগ ইতি রনজ্বালে ঘণি ভাবকরণয়োশ্ভেতি নকারলুক্। এবমুপদেশ ইত্যাদি এবমনেন ক্রমেণ উপদিশুতে অনেনেতি দিশ্ অতিনর্জনে। সংহার ইতি সংপূর্বস্ঞ্হরণে। ভাষ ইতি নিপূর্ব ইণ্ গতৌ অবতার ইতি অবপূর্নত্ প্রনতরণয়োঃ। অবস্তার ইতি স্তুঞ্ আচ্ছাদনে। বন্ধ ইতি বন্বধনে। বেদ ইতি বিদ্জ্ঞানে। অপমার্গ ইতি অপপুর্ব মৃজ্ভনৌ ভিন্তি চেতি বুদ্ধিঃ প্রাদের্ঘণি হত্তলমিতি উপস্র্বস্ত দীর্ঘঃ। আনায় ইতি ত্যক্তম। এতে করণকারকে প্রয়োগা দর্শিতাঃ। দাশ ইতি দাশু দানে। উপাধাার ইতি উপ অধিপূর্দ্ম ইঙধায়নে। বিশেষেণাপি সামান্তং বাধ্যতে ন কচিং কৃতীতি ইণন্তাং প্রাপ্তং গুপ্রতায়ং বাধিষা ইঙ্গালোর্যণ্ এব ক্রিয়তে। আধার ইতি ধৃঙ অবস্থানে। আবাগ ইতি কুম্বকারাণাং য প্রাগুণিকা তামভিধতে ইতি রক্ষিতঃ আবায়স্তাশিরতি পৈতু বৈ শোষণে আত্ত্বে ক্তে যুবে ক্রাদেরিত্যাদিনা মুঃ। অধ্যায় ইতি অ্বীয়তেহশ্মিরিতি অধিপূর্বানিত্তঃ কর্ম্মণ পি বাচোহত্র প্রভায়োহয়মিষাতে ইতি কেচিৎ অধী-ব্যপানেন সংজ্ঞায়ামসংজ্ঞায়াং চ সামাল্যেন বিধানং তথাপি শব্দশক্তিমভাবাৎ প্রসাদানয়ঃ শব্দাঃ কেহপি সংজ্ঞাবাচকা এব विरद्धशाः ।

(২৪৬)। আঙ উত্তরাৎ হেবঙ্ স্পর্দায়ামিতাস্মাদাণ, ভবতি। হেবঞঃ

२८१। श्रीरमक्रवः।

সংবাবঃ।

২৪৮। সমো যুত্রক্রবঃ।

সংযাবঃ সংদাবঃ সংদাবঃ ।

২৪৯। বেঃ ক্ষুত্রুবঃ।

বিক্ষাবঃ শ্রু শ্রবণে বিশ্রাবঃ।

২**৫০। প্রা**দ্দ্রস্তব্রুবঃ। প্রদ্রাবঃ প্রদ্রুব্রু গতে প্রস্রাবো মৃত্রম্।

স্থানে হৃশ্চ নিপানে বাচ্যে। আছ্রত্তে জলপানার পশবোহত্তেতি আহারঃ
কুপসমীপস্থা জল।ধারবিশেষা নিপানম্। নিপিবস্তাশির্রিতি অধিকরণে
ঙনট্। নিপান ইতি কিম্ ? আহবয়:। আঙো যুদ্ধে হেবঞো হশেচতি
অস্তানন্তরং নিপানে ঘণ্চেতি ন কৃতং স্পৃষ্টপ্রকরণভেদার্থম্। উদস্ধ ইতি
অন্চু গতিপৃজনয়ো:। উদকবিষয়ে ন স্তাদিতি যদা মৃতাদিবিষয়ে ভবতি
তদা মৃত্যাদ্ধ ইত্যাদি ভবতি। উদকোদঞ্চনমিতি ঙনট্ ক্লীবে ইতি ঙনট্।

- (২৪৭)। প্রাদেকতরাৎ ক শব্দ ইত্যশ্বং ঘণ্ ভবতি ভাবে কারকে চ বাচ্যে। ইণস্তম্ম দৃঙাদিত্বাৎ ঙে প্রাপ্তে বিধানম্। অপ্রাদেস্তা রবং। অপ্রাদেবা নীকক্রব ইতি পক্ষে ঘণ্বিধানাৎ প্রাদেবেবায়ং ভবিষ্যতি। এবঞ্চ সভি প্রাদেরিতি ক্তং স্পষ্টার্থম্। পারিশিষ্যলভ্যাচ্ছাক্রোহর্থঃ স্পষ্টো ভবতীতি।
- (২৪৮)। সম উত্তরেভ্যো যুমিশ্রণে ছ জ শ গতাবিভ্যেত্ত জত্তরে ঘণ্ ভবতি। অম্বমপি ঙবাধনার্থঃ। সম ইতি কিম্ ? প্রেষবঃ প্রদেবঃ প্রেদ্রঃ।
- (২৪৯)। বেরুত্তরাভ্যাং কটুকু শব্দে জ শ্রবণে ইত্যেতাভ্যাং বণ্ ভবতি। বেরিতি কিম্? সংক্ষবঃ প্রতিশ্রবঃ।
- (২৫০)। প্রাছকত্রেভ্যোহ জ ক্র গতৌ ফুঞ্ স্করে ইত্যেতেভ্যো ধন্ ভবতি। প্রস্থাবো মৃত্রমিত্যক্তং লোকপ্রসিদ্ধার্থম্।

২৫১। উদে যুপ্তক্রঃ। উদ্যাবঃ উৎপাবঃ উদ্দ্রাবঃ।

২৫২। সমঃ স্তুবো যজ্ঞে। সংস্তাবো যাজ্ঞিকবিকানাং স্তুতিভূমিঃ।

২৫৩। অভিলৃনিপ্শৃভ্যাম্। অভিলাবঃ নিপাবঃ।

২৫৪। শ্রিভুবোহপ্রাদেঃ। শ্রায়ঃ ভাবঃ অনুভাবঃ প্রভাব ইতি তু প্রাদিসমাসঃ।

্ ২৫৫। নেরিণো নয়ে। —

স্থায়:।

⁽২৫১)। উদ উত্তরেভাো বুমিশ্রণে পূঙ্পবনে ক্রাদিঃ পুঙ্ পবনে ভাুনিরবিশেষাদ্যোরপি গ্রহণং ক্র গতৌ ইত্যেতেভাো বণ্ভবতি।

⁽২৫২)। সম উত্তরাৎ ষ্ট্রুঞ্ স্বতাবিতাস্থাদ্যজ্ঞবিষয়ে ঘণ্ ভবতি। দ্বিজ্ঞানামিতি বছবচনং মিলিতা যত্র স্তবস্তীতার্থঃ। যজ্ঞ ইতি কিম পূ সংস্তবঃ শূদ্রাণাম্।

⁽২৫০)। অভিপূর্ব ল্ঞ্ছেদনে নির্পূর্ব পূঞ্পবনে ইত্যেতা-ভাগং ঘণ্ভবতি। পূঞ্পবনে ক্র্যাদিঃ পৃঙ্পবনে ভ্রাদিরবিশেযাদ্রো-রপি গ্রহণম্।

⁽২৫৪)। প্রাদিবজি তাভাগ শিঞ্সেবায়াং ভূ সন্তায়ামিত্যেতাভাগমুক্তরে ঘণ্ ভবতি। অপ্রাদেছ গ্রহভূব ইতি ভবভাবৌ সংজ্ঞায়াম্ অয়স্থসংজ্ঞায়ামিতি বিশেষঃ। যত্মপুসর্পাদয়ং ঘণ্ কথমন্থভাবঃ প্রভাব ইত্যত
আহ প্রাদিসমাস ইতি অমুগতো ভাবঃ প্রক্ষ্টো ভাব ইতি প্রাদেং ক্ষাদৌ
প্রথময়েতি সমাসঃ।

⁽২৫৫)। নেরুত্তরাদিণ গতাবিত্যস্থাদ্ঘণ্ ভবতি। নয়ে অভিধেয়ে। পদার্থানাং স্বরূপাদচলনং নয়:। পূর্বস্থ প্রায়শক্ষা করণসাধন উক্তঃ। নীয়তে নিশ্চয়েন প্রতীয়তে ধেনার্থঃ স স্থায়ঃ।

২৫৬। পরেঃ ক্রমে।

পর্য্যায়ঃ ক্রমঃ।

২৫৭। চিঞ**ে**শ্চয়প্রত্যাসতাবস্তেয়ে। হস্তেন পুষ্পপ্রচায়ং কুরু। অস্তেয় ইটি কিম্ গুচোর্য্যেণ

পুষ্পপ্রচয়ঃ ক্রিয়তে। চেয়প্রত্যাসত্তাবিতি কিম্ ? তরুশিখরে পুষ্পপ্রচয়ঃ ক্রিয়তে।

२৫৮। प्पट्ट ठः क ४ ।

কায়ো দেহঃ।

২৫৯। গৃহরাশ্যোশ্চ।

নিকায়ো গৃহং নিকায়ো রাশিঃ। বহুত্বমাত্রবিবক্ষায়ান্ত। কাষ্ঠনিচয়ঃ।

⁽২৫৬)। পরেকত্রাদিণ্গতাবিত্যস্থাদ্ঘণ্ডবতি জনে বাচো। পর্যায় ইতি জনঃ পরিপাটীত্যর্থঃ। জন ইতি কিন্? কাল্ছ বিপ্র্যয়ঃ ব্যতিক্ষ ইত্যুগঃ।

⁽২৫৭)। চেরস্থ প্রত্যাদত্তী গম্যমানারাং চিঞ্চরনে ইত্যশ্ধা-ছত্তরে গুণ্ভবতি অস্তেষে বাচো। ন চেৎ স্তেরং চৌর্যাং গমাতে হস্তেন পৃষ্পপ্রচারং কুবিতি হস্তেনেত্যনেন প্রত্যাদত্তির্গম্যতে। তরুশিথর ইত্যনেনাপ্রত্যাদত্তিঃ।

⁽২৫৮)। চিঞা চয়নে ইত্যশাহত্তরে ঘণ্ ভবতি দেহে বাচ্যে। চকারাণ্ড কো ভবতি।

⁽২৫৯) । চিঞ্ উত্তরে ঘণ্ ভবভি গৃহরাশ্যোব চিয়ের। চঃ কশ্চ।
নিকাষো রাশিরিভি ত্রবাণাং কুটাকরণং রাশিরিভি বাপদেশঃ। যত্র
বহুরমাত্রং বিবক্ষাতে তহ্য নিয়মেন কিং কুটাকরণং ভবতীতি নায়ং নিয়য়ঃ।
পৃথগ্যোগকরণং নিরুপসর্গস্ত দেহবাচিত্বং নিশকপূর্দান্ত গৃহরাশ্যভিধায়িত্বং
শক্ষাক্রিয়ভাবাদিতি স্টনার্থস্।

২৬০। চীয়**মানে চ।** আকায়ে[®] নিকায়*চীয়মান:।

২৬১। সংঘে চৈকধর্মে।

ভিক্ষৃণাং নিকায়ঃ ক্লুজ্বস্থ প্রাণিবিষয়ত্বাদিহ ন স্থাৎ। প্রমাণ-সমুচ্চয়ঃ। একধর্ম ইতি কিম্ ? শ্করনিচয়ঃ পৌর্বাপর্য্যমাত্রমত্র বিবক্ষিতং নৈকধর্মত্বম্।

্
২৬২। অবান্নিয়ঃ। অবনায়ঃ।

২৬৩। পরেঃ শারীণাং সর্বতো নয়নে। পরিণায়ঃ।

২৬৪। ব্যুপাচ্ছীঙঃ ক্রেমে। তব রাজবিশায়ঃ তব রাজোপশ্লায়ঃ তব রাজানমুপশয়িভুং ক্রম ইত্যর্থঃ।

⁽২৬০)। চিঞ উত্তরে চীয়মানেহর্থে ঘণ্ ভবতি চণ্চ কঃ। চীরতে-জুসাবিতি চীয়মানঃ।

⁽২৬১)। চিঞ উন্তরে ঘণ্ ভবতি চন্চ কঃ একধর্শ্বে সংঘে বাচো।
ধর্মশন্দোহত্র আচারবচনঃ একোহভিলাে ধর্মো যক্ত স একধর্মঃ সমাসান্তবিধেরনিত্যছাং অক্তসমাসান্তরাদ্ধর্মাদন্ ইতাল্ল ভবতি। সংঘঃ প্রাণিসমুদায়ঃ স চ দ্বিধাে ভবতি একধর্মসন্ধানন পৌর্বাপর্যােণ চ। অত
আহ পৌর্বাপর্যামাত্রমত্র বিবক্ষিতং নৈকধর্মছমিতি রাশিছাং পূর্ক্বপ্রাপ্তােহপি ঘণ্ন ভবতি। শৃক্রনিচয় ইত্যত্র যদি মণ্ স্তাভদৈকধর্মগ্রহণমনর্বকং স্থাং।

⁽২৬২)। অবাছত্তরাং ণীঞ্প্রাপণে ইত্যমাদ্ ঘণ্ ভবতি।

⁽২৬৩)। পরেরুত্তরাৎ ণীঞ্প্রাপণে ইত্যন্থাৎ শারীণাং সর্মতোনয়নে বাচ্যে ধণ্ ভবতি। দ্যতায় রচিতদ্রাবিশেষঃ শারিঃ। পরিপায়
ইতি দ্যতসময়ে শারীণামিতগুতো নয়নমূচ্যতে ণাদিধাতোরস্তরি চেতি গত্তম্।

⁽২৬৪)। বৈরুপাচ্চোত্তরাৎ শীঙ্ স্বপ্নে ইত্যেতস্থাদ্ ঘণ্ ভবতি ক্রেমে গন্যমানে। ক্রমশবঃ পর্যায়বচনঃ। ক্রম ইতি কিমু? বিশয়ঃ।

২৬৫। নির্ঞোধান্তে। নীবারস্গধান্তম্।

২৬৬। গিরো স্থান্ত্যাম্। নিগার: উদগারঃ।

২৬৭। কিরোধান্তে।

নিকারো ধাক্তস্থ উৎকারো ধাক্তস্থা। স্বাদিক্ঞস্ত। নিকারঃ পরিভবঃ। "'স্বত্বঃসহং প্রাপ্য নিকারমীদৃশম্" ইতি ভারবিঃ•।

- (২৬৫)। নি শুৰ্কাদ্ এই বরশে ইত্যাসাদ্ অণ্ ভৰতি ধান্তে ৰাচ্যে।
 নীবার ইতি প্রাদেশনি বহুলমিতি দীর্মঃ। ধান্ত ইতি লামান্তনিদেশে হপাত্র বিশেষোহভিধীয়তে। অভ আহ তৃণধান্তমিতি। অক্ষেইহপি তৃণবন্তব-তীতি তৃণধান্তমিতৃয়ক্তম্। ধান্ত ইতি কিম্? নিরিয়তে ইতি নিবরা কন্তা এইতায়ান্তোহণি সভাবাৎ প্রিয়াম্। •
- (২৬৬)। গৃ নিগরণে গৃ শব্দে ঘ্যোরপি গ্রহণমিতি জয়াদিতাঃ। গিরতেরেবায়ং প্রাহ্যয়ং কাতস্ত্রচন্দ্রব্তিকারো। নি উৎ ইভোতংভান্ত্রা-দিগারতের্ঘণ্ ভবতি। ন্যান্ত্রামিতি কিম্পুগরঃ। শ্লাদার্ভর ও এব ভবতি ন গিরতাগারমিতি বহুলবচনাৎ।
- (২৬৭)। নি উৎ ইত্যেতাভাামুত্তরাৎ কু বিক্ষেপে ইত্যমাদ্ ঘণ্ ভবতি। ধান্তবিদয়ক্ষেমি থেগি ভবতি। নির্ঞো ধান্ত ইত্যতো ধান্ত ইত্যমুর্ত্তা কির ইতি কর্তবো যদ্জাপি ধান্ত ইতি কৃতং তেনেদং স্টতং ন প্রত্যায়ার্থো ধান্তং কিন্ত ধান্তবিষয় ইতি। অতএব নিকারো ধান্তস্তেওি যতা দশিতা নতু মামানাধিকরণাং নিকারো ধান্তস্ত উৎকারো ধান্তস্তেওি ধান্তস্ত বিক্ষেপ ইত্যর্থঃ। কথং তহি পরিভবার্থো নিকার ইত্যত আহ স্থাদিকঞন্তি স্থাদে কৃঞ্ হিংসায়ামিতি পঠ্যতে তক্ত হ্রান্তমাৎ ঙো ন প্রাপ্রেণিত প্র্যাস্থাৎ ঙো ন প্রাপ্রেণিত পুংসি ঘণ্ কারকে চেতি ঘণা ভবিতব্য মিত্যন্তিপ্রায়ঃ। ক্র্যাদে কৃঞ্ হিংসায়াং কৃ হিংসায়ামিতি চ পঠ্যতে তয়োর্মাত্র গ্রহণমন-ভিধানাৎ যতঃ শব্দশক্তিস্তাবাৎ। উৎকারনিকারশকান্ত্যাং ধান্তবিষয়ে। বিক্ষেপ এবাভিধীয়তে ন হিংসা তয়োল্ড ও এব ভবতি। নিকার উৎকারে। ধান্তস্তেতি। ধান্ত ইতি কিম্? পুশ্পনিকরঃ।

২৬৮। স্তিরঃ প্রাদযক্তে। প্রস্তার:। বহেন্দ্র হা বহিস্প্রস্তরো যাজ্ঞিকানাম্।

২৬৯। বেরশব্দবহুত্বয়োঃ। পটস্য বিস্তারঃ। শুব্দে তু। বিস্তব্ধে বাক্যম্ম। বহুত্বে তু বিস্তরস্তৃণানাম্।

২৭০। ছন্দোনাশ্নি যত্ত্বগো বিফারীঃ পঙ্ক্তিশ্ছন্দঃ বিফারো বৃহতীচ্ছন্দঃ।

২৭১। শিরো বায়ুবর্ণাবরণেষু। শারো বায়ুবর্ণশ্চ। নীশারং প্রাবরণম্।

⁽২৬৮) । প্রাত্তরাৎ স্কুঞ্ আছোদনে ইত্যাদ ঘণ্ ভবতি।
বজ্ঞবিষয়ণ্ডেং প্রয়োগো ন ভবতি বর্হিস্পুপ্তর ইতি ঝ্লুঙাদের্ভ ইতি ভঃ ষ্ঠাসমাসঃ ইস্ক্রেষ্ঠা কথপফে ইতি কস্কাদিছাদ্বিদ্যাভাবঃ কস্কাদেশ্চিত বহুম্।

⁽২৬৯)। বেরুত্তরস্থাৎ স্ত্রেগ ঘণ্ ভবতি। শব্দবহুম্যোবি ইয়ণেচৎ প্রয়োগোন ভবতি। বিস্তার ইতি বিস্তীর্গ ইতার্থঃ।

⁽২৭০)। বেরুত্তরাং স্কৃত্র আছোদনে ইত্যাবাছনোনামি বাচ্যে বণ্ ভবতি ষত্তঞ। পূর্বস্ত্রেণৈব ঘণি দিন্ধে ছনোনামি বছার্যং বচনম্। ছন্দংপদেন বৃত্তমিহ গৃহ্যতে। যশু গায়ত্র্যাদয়ো বিশেষাঃ নম্মান চ ব্রাহ্মণাস্তরেবং বিধায়াঃ সংজ্ঞায়া অসম্ভবাং। বিষ্টারঃ পঙ্কিন্ধিতি ছনোবিশেষস্থায়া। নম্ম যদি সম্দিতং বৃত্তনাম তদা কথং বিপূর্বাং স্কৃত্রে ছনোনামি বাচ্যে ইত্যাচ্যতে বিষ্টারপদ্য ছনোনামস্বাভাবাং। তত্ত্বন্ধা ছনোনামি বাচ্যে ইত্যাচ্যতে বিষ্টারপদ্য ছনোনামস্বাভাবাং। তত্ত্বাতে। নামৈকদেশে নামশক উপচরণীয়ঃ। যথা ভীমা ভীমদেন ইতি। বিষ্টার ইতি ষ্টবর্গাদিনা তথ্য টঃ।

⁽২৭১)। শৃ হিংসায়াং ইত্যক্ষাত্ত্তরে ঘণ্ ভবতি বায়ৌ বর্ণে আব-রণে চ বাচ্যে। সামান্তবিধানেহিপি যথা সংজ্ঞাপ্রসিদ্ধিস্তধা প্রত্যন্ধঃ। তেন কেবলান্নিপূর্কাচ্চ বিধিঃ।

२१२। উদেশ গ্রহঃ।

উদগ্রাহ:।

२१०। मत्या मृत्छी।

সংগ্রাহো মল্লস্থ।

২৭৪। অবাভ্যামভিশাপে।

নিগ্রাহোহবগ্রাহস্তে ভূষাৎ।

२१৫। পরের্যজ্ঞ।

উত্তরপরিপ্রাহো যাজ্ঞিকানাম্।

২৭৬। প্রাল্লিপ্দায়াম্।

পাত্রপ্রগ্রাহেণ ভ্রমতি ভিক্কঃ।

२ ११। क्यांत्रकाटनी ह च्यू त्क्यू दलाः।

- (২৭২)। উদ উত্তরাদ্ গ্রহ্ উপাদানে ইত্যমাদ্ ঘণ্ ভবক্তি। দুঙাদিস্বাৎ প্রাপ্তস্ত গুপ্রতারস্থাপবাদঃ।
- (২৭৩)। সম উত্তরাদ্ গ্রহ উত্তরে ঘণ্ ভবজি। মুষ্টিবিষয়শ্চেদ্ধাদ্বর্থো ভবতি। অতঃ সংগ্রাহ ইত্যনেন মুষ্টিনাভিধীয়তে কিন্তু মুষ্টিবিষনং
 দৃদ্গ্রহণম্। নীবারমুষ্টিপচনা ইত্যাদৌ যন্তপি মুষ্টিরিতি পরিমাণমপ্যচ্যতে
 তথাপি অঙ্গুলিবিক্তাসবিশেষকৈ গ্রহণম্। পরিমাণবাচকক সংখ্যাপরিমাণয়োরিত্যাদিনৈব ঘণ্সিদ্ধে:।
- (২৭৪)। নি অব ইত্যোতা ভ্যামুন্তরাদ্ গ্রহ্ধাতোরুত্তরে দণ্ ভবতি অভিশাপে গমাম্যনে। অভিশাপ ইতি কিম্ ? অবগ্রহঃ পদশু নিগ্রহ-শ্বেষারশু ও এব ভবতি।
- (২৭৫)। পরেরুত্তরাদ্গ্রহেরুত্তরে ধণ্ তবতি। প্রত্যয়াস্তস্ত চেৎ ফলবিষয়েহভিধানং তবতি।
- (২৭৬)। প্রাহত্তরাদ গ্রহ উত্তরে ঘণ্ ভবতি লিপ্সারাং গম্যমানা-রাম্। পাত্রপ্রগ্রহেণ ভ্রমতি ভিক্কারিত ভিক্ষারাং লিপ্সাত্র গমাতে। লিপ্সা-রামিতি কিমৃ ? প্রগ্রহো মিত্রস্থা
 - (২৭৭)। ক্ষর ক্রক্রেণে ক্ল সংচলনে এতাভ্যামুরুরে বণ্

न्यातः न्यानः।

২৭৮। সংখ্যাপরিমাণয়োঃ সর্বধাতুভাঃ।
একো নিশ্চায়ঃ। একং নিশ্চায়মাগতমিতি ভট্টিঃ। একো নিশ্চয়
ইত্যেকে। দ্বৌ কারো নিশ্চায়ং প্রস্থাং পুংলিঙ্গপ্রত্যয়াপবাদোহয়মিতি। একা উিলোচ্ছি তিঃ।

২৭৯। নৈকাছাদ্গমঃ। একাহহন গম্যতে একাহগমঃ পস্থাঃ।

২৮০। অপ্রাদের্বা নীরুক্রবঃ।
নয়ে নায় ইত্যমরকোষঃ। রবো রাবং। নিনাদিজং ভীষণরাবগহ্বরমিতি সপ্তকুমারিকা। স্রবং স্রাবং। বরং গর্ভস্রাবো
বরমৃতুষু নৈবাভিগমনমিতি পঞ্চতন্ত্রম্।

ভবতি ক্ষারক্ষালো চাদেশো ভবতঃ। ঘণ্ প্রাপ্তে এব তংসন্নিয়োগে-নাদেশবিধান।র্থং স্ত্রম্। ক্ষরতেরের ক্ষারসিন্ধো ক্ষোরনিরাকরণার্থং ক্ষার ক্ষারাদেশবিধানম্।

⁽২৭৮)। সংখ্যারাং পরিমাণে চ গম্যানে সর্ক্ষাত্ত উত্তরে ঘণ্তবতি। নিশ্চার ইতি নির্পূর্ক্ চিঞ্ চরনে স্পদৃঙাদেও ইতি ও প্রাপ্তে ঘণ্বিধামম্। একো নিশ্চর ইত্যেক ইতি যে এবং মন্ত্রিত তে সংখ্যাগ্রহণমন্মিন্লকণে নেছেন্তি। এতত্ব ন শিপ্তসন্মতমিতি স্চরিত্থ ভটিপ্রয়োগো দর্শিতঃ। দ্বৌ কারাবিতি কু বিক্ষেপে প্রস্থ ইত্যনেন নিশ্যাস্পক্ষ পরিমাণবাচকত্বম্ক্রম্। অবিশেষবিধের্লকে সর্ক্ষাত্তা ইতি কতং ম্পন্তার্থম্। পুংলিঙ্গ ইত্যাদি বাছল্যাদপেক্ষিতবিধিত্বাত্তি শেষঃ। একা তিলোচ্ছি,তিরিতি উৎপূর্ক্লিঞ্ সেবারাং ক্তিঃ শশ্চ ইতি

⁽২৭৯)। একাহাছ্ত্রাদ্গমধাতো: প্রাপ্তো মণ্ন স্থাৎ। প্রত্যান্তরং নিরূপণীয়ম্। মণ্নিষেধ্যামর্থাৎ ভো জন্তব্য:।

⁽২৮০)। প্রাদিবজিতিভাগ গীঞ্প্রাপণে রু শব্দে ক্র গতৌ ইত্যেতেভাগ ঘণ্বা ভবতি। এতেন ভাক্তপক্ষে শ্লুডাদের্ভ ইতি ১৮৮

২৮১। **আঙো রুপ্র**ঃ। আরবঃ আরাবঃ আপ্লবঃ আপ্লাবঃ।

২৮২। পরেরসৎকারে ভুবঃ। পরিভবঃ পরিভাবঃ।

২৮০। উদো নীপ্রিয়ঃ। উন্নয়: উন্নায়ঃ উচ্ছু য়ঃ উচ্ছু য়ঃ।

২৮৪। প্রব্ঞ আচ্ছাদনে। প্রবরঃ প্রবারো বস্ত্রম।

২৮৫! গ্রহো বর্ণক্সম্বন্ধে। প্রগ্রহঃ প্রগ্রাহঃ তুলায়াঃ সূত্রং বণিজাম্।

ভবতি। নামরাবস্রাবশকানাং শাস্তান্তরে মতুসাধ্যত্তাৎ নিদর্শনোপদর্শনং বৃত্তিকৃতা কৃতম্।

⁽২৮১)। আঙ উত্তরাভ্যাং রু শব্দে প্লুঙ্ গতাবিত্যেভাভ্যামূত্রে বন্বা ভবতি। প্রাদেরূব ইতি রৌতেনিত্যং ঘণি প্রাপ্তে প্রবতেশ্চ এ প্রাপ্তে স্তারন্তঃ।

⁽২৮২)। পরেক্তরাদ ভবতেরসংকারে বাচ্চে ঘণ্বা ভবতি। অসংকার ইতি কিম ? পরিভবঃ সর্কাতা ভবন্মিতার্থঃ।

⁽২৮০)। উন উত্তারাভ্যাং ণীঞা প্রাপণে শ্রিঞ্ সেবায়ামিত্যেতাভ্যাং ঘণ বা ভবতি। ভাপবাদঃ। উচ্ছায় ইতি শভ ইতি শশু ছঃ। ভাগর্ত্তিকারস্থ উচ্ছায়ং নেচ্ছতি। আপ্রপ্রায়োগা দৃশ্রস্থ এব পতনাপ্তাঃ সমুস্ভ্রা ইত্যাদয়ঃ।

⁽২৮৪)। বৃঞ্ঞকারাত্বকো বৃঙ্ সাভকাবিতান্ত নিরাসার্থঃ। প্র ইতি সৌত্রহাং লুগুপঞ্চমীবিভক্তিকো নিদেশিঃ। বৃঞা সহ সমন্তপদত্বে তৃ উত্তরবোগে প্রশাস্ত্রহর্লিলা ভাৎ। প্রাহত্তরশ্বাদ্ঞ আচ্ছাদনে ইতাশ্বাহত্তরে ঘণ্ বা ভবতি। প্রতারান্তেন চেলাচ্ছাদনবিশেষ উচাতে। সামান্তপ্রক্রাহিপি শবঃ প্রসিদ্ধিশাবিশেষবৃত্তিভবিত অত আহ্রাদনশব্দেন আহ্রাদনবন্ধবিশেব উচাতে। আচ্ছাদন ইতি কিম্? প্রস্রাহ্রং গৌঃ ৪ এব ভবতি।

২৮৬। রক্ষে চ। প্রত্যহঃ প্রত্যাহোহখাদিবন্ধনরক্ষ্ণঃ।

২৮৭। অবাদৃষ্টিপ্রতিবন্ধে।

অবগ্রহঃ অবগ্রাহঃ।

२४४। कर्ल्बि।

সরতি কালাস্তরমিতি সারো মঙ্জা বলঞ্চ অতিপূর্বরঃ অতীসারো ব্যধিভেদ: বিপূর্বেরা বিসারো মংস্থাভেদ:। পদ্যতে গচ্ছতীতি পাদ: রুজতীতি রোগ: বিশভীতি বেশ: স্পৃশতীতি স্পর্শো রোগ: জরয়তীতি জার: দারয়স্থীতি দারা:।

(২৮৫)। প্র ইত্যন্ত্বর্তিত প্রান্তরাদ্গ্রহ্ উপাদানে ইত্যন্নাদ্ বণ্ বা ভব:ত। প্রত্যনাস্তবাচ্যস্ত বণিক্সম্বন্ধে সতি। অতএবাহ তুলায়াঃ সূত্যং বণিজামিতি।

(২৮৬)। প্রাইতি গ্রহ ইতি চানুবর্ত্তে। প্রাহত্তরাদ্গ্রহেরজ্জী বাচ্যারাং ঘণ্ বা ভবতি। যগুপি রজ্জুশকঃ সামান্তেনোপাত্তথাপ্যত্র বিশেষবৃত্তিগ্রাহা। প্রগ্রহশক্ষ তত্ত্বৈ বৃত্তিদর্শনাং। অত আহ্ অধাদিবন্ধন্যজ্জুরিতি।

(২৮৭)। অবাহতরাদ্গ্রের্ষ্টিপ্রতিবন্ধে বাচ্চে ঘণ্ বা ভবতি। প্রাপ্রকালায়া বৃষ্টেক্ৎপাতদর্শনাৎ। অভাবো বৃষ্টিপ্রতিবন্ধঃ। পক্ষে দৃত্যাদিসাৎ ওঃ।

(২৮৮)। কর্ত্তরি বাচ্যে ঘণ্ ভবতি। পূর্ব্বস্ত্তেণ কারকে ঘণ্
বিহিতঃ কর্ত্তরি চোদাহরণং তত্ত্রোপদর্শিতম্। তথাপি পৃথগ্ লক্ষণকরণং
বিশেষার্থং তেনাস্তোদা হরণের প্রাপ্তশু অন্তপ্রত্যায়শু বাধা ভবতি। স্থ গতৌ ভাদিঃ ঋ স্থ গতৌ হ্লাদিঃ ভ্ঙাম্পবাদোহত্র ঘণ্। মশ্চন্দনাদীনাং দারো ভবতি স এব কালস্তরং সরতি চিরকালস্থায়িখাদিতাভিপ্রায়ঃ। অতাসারঃ ইতি প্রাদের্ঘণি বহুলমিতি দীর্ঘঃ বিসার ইতি বিসরতি বিবিধ-প্রকারেণ সরতি বিসারঃ রাদ্শিদা অমী স্বভাবাদেব। পাদ ইতি পদ্ গতৌ ণক্তৃত্তী কর্ত্তরীতি প্রাপ্তশ্লাপ্রাদঃ। পদমিতি তু ক্লীবেহিপ ২৮৯। ব্যধাদেস্থিয়।

বিধ্যতীতি ব্যাধঃ পরিব্যাধঃ তান: শাসঃ লেহঃ শ্লেষঃ।

२२०। जानसः।

দায়: ধায়: দরিদ্র:।

२२१। ट्रेग्रहः।

শ্রায়ঃ অবশ্যায়ঃ প্রতিশ্যায়ঃ।

২৯২। অবাৎ সোহাঞঃ।

অবসায়ঃ অবহার:।

পূজানের্যদেওতি মঃ। রোগ ইতি কজো ভঙ্গে বেশ ইতি বিশ্প্রেবেশনে স্পেশ ইতি স্পৃশ্সংস্পর্শে রোগানক্তরাপি যা স্পর্শাঃ স পঢ়াদিডাং সাধনীয়ঃ এতের ইজুপান্তপ্র্যাদেরদিতান্ত প্রাপ্তভাপবাদঃ। জার ইতি জুষ্ ঝূষ্ বয়োহানো ণিঙি রুদ্ধে চ কুতারাং জনীজ্বুষ্ ইত্যাদিনা ঘটাদিডাং হ্রমঃ স্বণি ণিঙ্লোপে চ কতে ঘণো ণিস্তাদ্দিরা। দাবা ইতি দু বিদাররণে অবহুত্বেহপ্যস্ত বছ্বচনং আপো দারা ইত্যাদিনা। স্কাণ্ তুলী চোচাতে।

(২৮৯।২৯০।২৯১)। ব্যধাদের্ঘণ্ ভবতি ত্রিষু ভাবে কমুণি কর্তার চেতার্থঃ। বাব ইতি ব্যধ্ তাড়নে দুঙানো ব্যধ ইতি ভাবে বাবে ইতি কর্ত্রর। তান ইতি ততু বিস্তারে খাষ ইতি খদ্ প্রাণনে লেছ ইতি লিছ্ মাষাদনে শ্লেষ ইতি শ্লিষ্ আলিঙ্গনে এতেরু পকভ্ঙোরপবাদঃ। লেহঃ শ্লেষ ইতি পচাদিখাদিপি সিধাতি কিন্তুর পঠ্যতাং তত্রবেতি ন কন্টিখিশেষঃ। আদন্ত ইতি আকাান্তা ধাতবে। গৃহন্তে তেন দায় ইত্যাদি ভুদাঞ্দানে ধায় ইতি ভুধাঞ্ ধারণপোষণয়োঃ দরিদ্র ইতি দরিদ্রা হর্গতো এছিপ পকভ্ঙোরপবাদঃ ঘণি ক্তে যুর্বেঞাদেরিত্যা-দিনা যুঃ দরিদ্র ইতি লুগ্মেহচ্যনকাদাবিত্যাকারলুক্। আদস্তখাদেব সিজ্পে শ্রেছ ইতি পৃথগ্নিদেশো বাধকবাধনার্থঃ। তেন সোপস্বাৎ শ্রেছ গ্রতাবিত্যার্থ প্রাদের। প্রাণ্টিত প্রাণ্ডমতং বাধিখা ঘণের ভবতি।

(২৯২)। অবাহত্তরাভ্যাং যোহন্তক এণি স্ঞ্ছরণে ইত্যেতাভ্যাং ত্তিরু ঘণ্ভবতি। অতং ণকভূঙীে চ বাধিতা। ২৯৩। অতেরিণঃ।

-অত্যায়ঃ 🕈

२२। थाएमः (कवनारकरकारक।

প্রায়ঃ আয়:।

२२६। निर्ह्याश्वादाः।

नायः।

২৯৬। সমঃ ত্রুবঃ।

ত্ব ক্র ক্র গতে সংস্রাবঃ।

२२१। चार्डा छ× ।

আস্রবঃ আস্রাব:।

২৯ -। অপ্রাদের্গ্রহ ছুবঃ। দাবো দাবঃ গ্রাহো জলজন্তঃ গ্রহঃ সূর্য্যাদি: ভাবঃ পদার্থ: ভবে। রুদ্রঃ।

⁽২৯০)। অতেরুত্রাৎ ইণ্ গতাবিত্যস্থাৎ ত্রিধু ঘণ্ ভবতি। ণক-কুভোবাধনার্থং বিধানম। •

⁽২৯৪): প্রাদে: কেবলাঞ ইণ্ গভাবিতাশাদ্ঘশ্[®] ভবতি ইত্যেকে:

⁽২৯৫)। নিয়োহ প্রাদেরিতি লক্ষণমত্র লিপিকরপ্রমাদকতম্। অপ্রা-দেবা নীক্ষক্ষব ইতি অনেনৈব কুতার্থখাৎ ঘণ্ দিদ্ধ এব।

⁽২৯৬)। সম: উত্রাৎ ক্রো ঘণ্ভবতি।

⁽২>৭)। আঙ্উত্তরাং ক্রবো ঘণ্ ভবতি ও চা আত্রব ইতাপি ভবতীতি চক্রমতং নায়স্থা।

⁽২৯৮)। প্রাদিবর্জিতেভাঃ টুদুপভাপে গ্রহ্ উপাদানে ভূ সন্তা-য়ামিত্যেভ্যো ঘণ্ ভবতি ওক্ত। স্বভাবাং সংজ্ঞায়ামেত্রিধানম্। ছুনোন্ তীতি দবো দাবঃ দ্বাবপি বনং বনাগ্নিঞাভিধন্তঃ। ওবিধাবিশি ভাবার্থে। গ্রহগ্রাহাবুদাহরিষ্যতি।

२ २ व ज्लारमण्ड।

জলঃ জালঃ। জল চল জল টল টুল ঠল হল নল বল পুল কুল কস্শল হল পল ফল পতৃ পথে কথে মথে টুবম ভামুক্ষর সহ রমুষদুশদ্জাুশ কুচ্রত বৃধ্রধির।

०००। श्रामञ्ज ६:।

প্রজ্ञनः উञ्জ्ञनः।

७०)। अर्हारमण्डा

পচতীতি পঢ়ঃ বদং নদং ভসং প্লবং চোরং ভরং জরং ঝরং পরং ক্ষমং সূদং দেবং মেষং দেবং সেবং লেখং কোপং মেধং নর্চং ত্রণং দর্শং গমং সর্পঃ বেলং চেলং দদং দধং জারভরং জাতিম্মরং হরং গরং গাহং স্তেকং ম্পচ ইত্যাদি।

⁽২৯৯)। প্রাদিবর্জিতাৎ জ্ঞলাদের তবে ঘণ্ডবতি এশচ। ব্রল দীপ্রৌ চল্কম্পনে জল্ধান্তে টল টুল্বৈর বো চল্ স্থানে হল্বিলেখনে ধল্বদনে বল্প্রাণনে পূল্মহত্বে কুল সংস্থানে বন্ধু চ কস্শল্ হল্পল্ ফল্গতৌ পাতৃ পথে গতৌ কথে নিম্পাকে মথে বিলোড়নে টুবম্ উলিগ-রণে এমু চলনে ক্ষর্ সঞ্চলনে যহ্মর্থণে রমু ক্রীড়ায়াং যদ্ধির বিসরণগত্য-বসাদনে যুশ্দু শাতনে কুশ্আহ্বানে রোদনে চ কুচ্ সক্ষোচনকৌটল্য-প্রতিপ্রস্কাবিশেপনে যুক্ত্জননি প্রাত্র্ভাবে বুধ্বোধনে রুধির্ আবরণে ইতি ভালায় স্বর্ণো জ্লাদিঃ।

⁽৩০০)। প্রাদেরস্তরাৎ জ্লাদেঙে । ভবতি পুংসি। তুশকোহ-বধারপার্থঃ। জ্লাদৌ পঠিতানামিজুপাস্তানাং ঘণৈব কোলপোলাদি-সিদ্ধৌ ডিবিধানমনর্থকং স্থাৎ ছবলং বলবতা বাধ্যতে তেন কুলং পূলং বিপুলমিত্যাদি। কিন্তু জ্লাদেরত প্রাদেশ্বদিতি লক্ষণমেতনিপিকর-প্রমানান্ত্রথা জাভ্য।

⁽ ७० >)। भारतिर्भारिकार्छ। जनिका जैनार्वनार्मनार भारतिकार्कि-

৩০২। প্রাদের কিং শঙ্। উজ্জিরকীতি উজ্জিল: উৎপিব:। লাপাগাধেট্দৃশ:।

৩০০। অপ্রাদেশ্চেত্যেক। জিঘঃ পশ্যঃ।

৩০৪। সাহাদের প্রাদেঃ। সাহয়তীতি সাহয়ঃ। সাতিঃ সোত্রঃ। সাহি সাতি চেতি ধারি পারি•বেদি।

গণ উহনীয়:। ডুপচ্য্পাকে বদ্বাক্রায়াং বাচি গদ্ অব্যক্তে শকে ভদ্
ভংসনে প্লুঙ্ গভার্থ: চূর স্তেয়ে ডুভ্ঞ্ ধারণপোষণয়োঃ জুষ ঝুষ
বয়েহানৌ পু পালনপ্রগরোঃ ক্ষম্য সহনে যুদ্ ক্ষণনে দিবু ক্রীড়ায়াং
মিষ স্পর্নায়াং দের দেবনে যের সেবনে লিখ্ অকরবিভাসে কুপ্ ক্রোধে
মেধ্ মেধাহিংসাসঙ্গমেরু নৃতী গাত্রিকে:প এণ্ শকার্থ: দূশির্ প্রেক্ষণে
গমু স্পু গতৌ বেলু চেলু চলনার্থে পঠ্যেতে দদ্দানে দধ্ ধারণে জারং
বিভতীতি জারভরঃ জাতিমার ইতি স্থ চিন্তায়াং হুঞ্ হরণে গুনিগরণে
গাছ বিলোড়নে স্তেন চোর্যো আক্রভিগ্নয়াং হুঞ্ হরণে গুনিগরণে

(৩০২ ৩০৩)। প্রাদেকত্রাৎ ছ দেকত্রে শঙ্ ভবতি। ছা গন্ধো-পাদানে পা পানে গা শনাগ্নিগংযোগগোঃ ধেট্ পানে দৃশির প্রশানে। ভাদীনাং সাহচর্যাৎ পাধাতুর্গাদিরেব গৃহতে ন অদাদিঃ। উজ্জিছ ইত্যাদৌ শিতাত্যাদিনা জিছাদেশং গা বিধমঃ ধেট্ উদ্দাং দৃশ্ উৎপশাঃ। প্রাদেরিতি কিম্ গ ঘণ্ ছাগ্নং পায়ং। বহুলবচনাৎ সংজ্ঞাষিধ্যে নাগ্নং প্রবর্ততে তেন ব্যাছ ইতি প্রাদেরাদক্রাদিতাৎ। জ্লাদে শেতাত শ্কারমনুবর্তয়ন্তি তেনা প্রাদেশত ভবতীত্যেকে।

(৩০৪)। প্রাদিবির্জি হাৎ সাহাদে: শঙ্ভনতি। সাহর ইতি ষহ্
মর্যনে প্রেমেজকণিঙস্ক সতঃ শঙ্শিব্রাপ্তি লোপাভাবঃ জস্তি তোরিত্যাদিনা
খুণ: প্যাদাবিত্যাদিনা অয়াদেশ:। সাতিরপি প্রয়োজণিঙস্থ:। চিতী
সংজ্ঞানে ভ্রাদি: প্রয়েজকণিঙস্থ: ধৃঞ্ধারণে প্রয়েজকণিঙস্থ: পূ পূরণে
চ্রাদিস্পিঞ্জিঃ বিদ্ বেদনাখ্যাননিবাসের চ্রাদিণিঙ্কঃ অথবা বিদ্ জ্ঞানে
ইত্যাদরঃ প্রয়েজকণিঙ্কঃ।

৩০৫। নেশ্চ লিপঃ।

লিম্পতীতি লিম্প: নিলিম্পা দেবাঃ।

७०५। এ জ क्रमः।

উদেজয়তীতি উদেজয়:।

००१। विन्हरञ्ज्ञादाः।

বিন্দভীতি বিনদ:।

৩০৮। গবাদেশ্চ। গাং বিন্দতীতি গোবিন্দঃ অরবিন্দম্।

৩০৯। শতাল্লপঃ।

শতং লুম্পতীতি শতলুম্পঃ। শতলুম্পস্ত ভারবিরিত্যুৎপলমালা।

⁽৩০ ")। প্রাদিবজ্জিতাৎ নেশ্চোত্তরাৎ লিপ্ উপদেহে ইত্যক্ষাচ্ছঙ্ ভবতি। লিম্প ইতি শে রুমাচানেরিতি রুম্। ঙকারে লুপ্থেহয়মপি শকারো ভবত্যের যদি শকারস্ত গ্রহণং ন স্থাৎ তদা শঙ্বিধানমন্থকং স্থাৎ।

⁽৩০৬)। উদ উত্তরাৎ এজৃ কম্পানে ইত্যামাৎ এজৃ ভেজু দীপাবিত্য-স্মাচ্চ প্রয়োজকণিঙস্তাক্ষ্ক ভ্ৰবতি।

⁽ १८०१)। বিন্দ্রতীতি নির্দেশে বিদ্ বাভ ইতান্ত গ্রহণার্থ:। অন্তথা বিদ্ জানে ইত্যাদেবপি গ্রহণং স্থাৎ: প্রাদিবজ্জিতাদিন্দতেরুত্তরে শঙ্ ভবতি। বিন্দু ইতি পূর্দ্রবন্ধ। সাহাদরো ণিঙস্কা গৃণীতা:। যদি তবৈবারং পঠিতঃ স্থাভদারমপি ণিঙস্কো গৃহত ইতি শঙ্কা স্থাদেব গ্রতদর্পর্পর্যোগকরণম্। অপ্রাদেরিত্যকুর্ত্তী পুনরপ্রাদেরিতি ক্বতম্ উত্তর-ব্যোগন্ধর্তিনিরাসার্থম্। অথবা পৃথান্যোগকরণমপ্রাদেরিত্যকুর্ত্তিনিরাসার্থম্নরপ্রাদেরিতি ক্বতম্।

⁽৩০৮)। গ্রাদেশেচান্তরাদিকতে: শঙ্ভবতি। স্বরবিন্দমিতি অবং শীদ্রং সুর্য্যোদয়াৎ প্রাক্ প্রকাশং বিন্দতীতার্থঃ। স্বভাবাদেব সংজ্ঞায়ামেবাস্ত বিধানম।

⁽৩০৯)। শতশদাহত্তরাৎ লুপু ছেদনে ইত্যস্থাৎ শঙ্ ভবতি। পূর্ববরুম্।

- ০১০। ইজুপান্তপ্রাদেরে ।
 বিষ্ণাতীতি বিষং গরলং বিস্তানীতি বিসং মূপালং বৃষ্যতীতি বৃষং
 তৃষং বৃশঃ (বৃষঃ) বুধঃ বিলিপঃ বিক্ষিপঃ পুরং গৃহং ভূজঃ প্রিয়ঃ
 কিরঃ গিরঃ।
 - :১১। कृक्तिम्कनाः विन्छ।

ঢক্রং চিক্লিদং চরুসম্।

[•]১২। চর চল পত্বদাং চরাচর চলাচল পতাপত্ বনাবদশ্চ বা।

চক্রং চরাচরং চলং চলাচলং পতং পতাপতং বদং বদাবদম্।

৩১৩। পাটেঃ পটাপটক্চ। পাটং পটাপটম্।

- (৩১০)। ইজুপান্তাং প্রাদেধাতোকত্তরেছেরতি। কিষমিতি বিষ্
 বিপ্রয়োগে সন্ধত্রের কর্ত্তরি প্রত্যয়ং। বিসমিতি বিষ্ প্রবেশনে বুসমিতি
 বৃদ্ উৎসর্গে তুম ইতি ভূম ভূপ্তি রুশ ইতি বুশ্ আবরণে (রুম ইতি বৃষ্
 েচনে) বৃধ্ অবগমনে লিপ্ উপদেহে কিপ্ প্রেরণে পুর্ অগ্রামনে গৃহ
 গ্রুণে এবাং যথাক্রমং কপাণি। ভ্নক্তেভ্জা অভাবাং পাণিরেবান্ত বাচাং।
 ভোগ ইতি তু ঘণন্তাং। প্রাদেষা প্রী কৃ গিরাং। প্রিয় ইতি প্রীক্ত তর্পণে
 প্রীঙ্ গতৌ প্রীঙ্ প্রীতৌ বা স্থাভুরিত্য।দিনা ইয়াদেশাং। কির ইতি কৃ
 বিক্রেপে গির ইতি গৃ নিগ্রণে।
- (৩১১)। ড কঞ কবণে ক্লিদ্ আদ্রীভাবে ক্লস্ত ক্ষরণদীপ্রোধিছো-ভেভা উচ্রেম্ছবতি দি । নিল্লিড্স্ত ইত্যাদিনা বিহিতায়া এব দিক-ক্লেরন্বাদোহয়ং দিশেওতি। তেনাগ্রুকাচ্বর্ণ এব ধির্ভ্রত। কথ্রাদিন রিত্যাদিনা কন্ত চঃ।
- (৩১২)। চর গতৌ ভক্ষণে চ চল্ কম্পনে পতু গতৌ বদ্ ব্যক্তারাং বাচি এবামন্ত্রতি। চরাচবাদরস্থাদেশা যথাক্রমং বা ভবস্তি।
 - (৬১৩)। পাটেরিতি অট্ পট্ গতো ণিওস্তো নির্দিষ্টঃ অস্থাদ-

७১৪। প্রাদেরাদন্তাৎ।

প্রহনঃ আহবঃ নিহবঃ ব্যাঘ্রঃ স্থয়ঃ স্কন্নঃ প্রদঃ প্রধঃ।

৩১৫। স্নাদের্ভ!বাকর্তৃকারকয়োঃ।

প্রসানং প্রস্নং প্রস্নাত্যস্মিন্নিতি প্রস্নং তীর্থং প্রপিবস্ত্যাস্মিতি প্রপা পানীরশালিকা। আবিধ্যস্ত্যানেন আবিধঃ আযুধ্যস্ত্যানেন আযুধং শস্ত্রং বিদ্নস্ত্যাম্মিন্নিতি বিদ্বঃ প্রতিষ্ঠান্তেংস্মিন্নিতি প্রস্থঃ দীব্যস্ত্যাম্মিন্নিতি দিবম্। উর্দ্ধলোকো দিবং নভ ইত্যুৎপলমালা।

७:७। श्लिक्टारमर्छः।

পুংসি ভাবে কারকে চ বাচ্যে ৠদস্তাদ্ভাদেশ্চোত্রে ঙো ভবতি। ভূ তরঃ পূ পরঃ গৃ গরঃ ভূ ভরঃ ভূঞস্ত

স্কবিতি। পটাপটাদেশ•5 বা স্থাৎ। হস্তের্ঘনং ঘনাঘনং চেত্যগ্রৈক্ষকং তস্ত ছান্দসম্বমিতি স্ত্রকারস্থাস্বরসং।

⁽৩১৪)। প্রাদেকতরাদাকারাস্তাদ্ধাতোরস্তবতি। প্রহর আহর ইতি হেরঞ্পর্দ্ধায়াং আত্ত্বে ক্লচীত্যাদিনা আকারলুক্। দ্রা গদ্ধোপাদানে মৈ হর্ষদ্ধরে মৈ গাত্রবিনামে দা ধা ইত্যেত্যোগ্ন প্রয়োগাঃ।

⁽১১৫)। স্নাদেভাবে কর্তুরি বজ্জিতে কারকে চ অন্তবতি। স্না শৌচে
পা পানে ব্যধ্ জাজ্নে হন্ হিংসাপত্যো: ঠা গতিনিবৃত্তৌ যুধ্ সংপ্রহারে
দিবু ক্রীড় দৌ পঠ্যতে ৫তে স্নাদয়:। প্রস্নিত্যাদৌ ক্লচ্যঙনাদাবিত্যাকারসুক্ প্রপতি নাম ইত্যাদিনা আৎ আবিধ ইতি বশাদেরশাদিরিতি ব্যধ
বিনাদেশ: বিম্নং ইতি হনাদেরনগীতাকারলুক্ অলুগাদাবিত্যাদিনা হস্ত মঃ।
স্না পিবতি ব্যধি হস্তি স্থা যুধ্যতয়োহথ দীব্যতিঃ স্নাদিরিত্যকোহতে চাত্র
প্রয়োগদর্শনাদ্বিজ্ঞয়াঃ। স্ববতি হবিরনেন ক্রবঃ।

⁽৩১৬। ঘণোহয়মপবাদ:। তর ইত্যাদি তৄ প্লবনতরণয়ো: গৃ
নিগরণে ভূ ভংসনে ইতি ক্রোদৌ পঠাতে ভূঞ্ছিতি ভূঞ্ ভরণে ড্ভূঞ
ধারণপোষণয়ো: ইত্যেতাভ্যাং ভার ইতি। পর ইতি পূ পালনপ্রণয়ো:।
দর ইতি দৃঙ্ অনাদরে বর ইতি বৃঙ্ সংভক্তৌ বৃঞ্ বরণে চ কথং ভর্ষি

ভার: দৃঙ্দর: আদরঃ বৃঙ্বৃঞ্বর: বরেতি তু স্থাবাদেব স্থাম। বর বল সংবরণে ইতাস্থ বারঃ বালঃ। মৃঙ্মর: এহঃ বাহুল্যাদীর্ঘঃ গ্রাহঃ। তথাচ, গ্রাহং গতান্তত্র কথঞ্চিদ্যে ইতি ভটুবার্ত্তিকম্। বশুকান্তো বশঃ রণঃ বসঃ গমঃ।

७) १। देवसः।

জয়ঃ বিজয়ঃ নয়ঃ বিনয়ঃ নিশ্চয়ঃ যবঃ প্লবঃ পবঃ লবঃ জুঃ সোত্তো। জবঃ ব্যধঃ বেধস্ত বিধ্ বিধানে ইত্যস্থানকার্থস্কান্যধনার্থস্থ রূপম্।.

७:४। প্রাদেরদঃ।

প্রয়স:।

বার ইত্যত আহ বাল ইত্যাদি বালাছেলোঁ রো বা রশ্চ ল ইতি লশু রবি-ধানাং। মর ইতি মৃঙ্প্রাণত্যাগে গ্রহ ইতি গ্রহ উপাদানে বাছন্যাৎদীর্ঘ: গ্রাহ ইতি তথাচ ভাবালুক্রমে ত্রিকাণ্ডে গ্রাহোহবহারোহপীয়ত ইতি। বশ ইতি বশ্কান্তো রণ ইতি রণ্গত্যর্থে পঠ্যতে বস ইতি বস্আচ্ছাদনে গন ইতি পন্সপুগতো। দৃঙ্বুঙ্বুঞো মৃঙ্গ্রহি বশি রণি বস:য়াঃ পানশানৰ দৃঙাদয়ঃ।

- (০১৭)। ইকারাস্ত উকারাস্তশ্চ ধাতুদ্ভাদিভবিতি। ক্ষর ইত্যাদি জি জয়ে নীঞ্প্রাপণে নির্পূর্ক চিঞ্চয়নে যু মিশ্রণে প্লুভ্ গাং । পূঙ্ পবনে লুঞ্ছেননে হসোক্তা। দীর্ঘলাপি গ্রহণম্। পূর্কাং দৃভাদীমপদর্শ্য দৃভাদের স্বর্গনমিণ স্কংশেপদর্শ্য বাধ ইতি যহদাস্বহং তনপ্রাদেরের বাধো ভবিধানমিতি স্কনার্থন্। এতেন সোপসর্গাদাবাধ ইতি ভবতি। ভিতি বাধো বিধাদেশাভাবাং। কথং বেধ ইতাত আহ বেদস্প ইত্যাদি। ন্যেবন্ধর্গভাবং অত আহ অনেকার্থবাদিতি।
 - (৩১৮)। প্রাদেকস্তরাং অদ্ ভক্ষণ ইত্যেখাং ভো ভবতি। প্রথম ইতি ঘণ্লুঙ্ ভেষু চাদো ঘদুলিটি বেতি মমাদেশঃ >কারঃ প্রাদীত্যাদিনা >দিংকার্য্যার্থঃ। ঘদ অদনে ইত্যেশাং ঘণা প্রযাসঃ। প্রাদেরিতি কিম্? দাসঃ

৩ ৯। নেরণ্ চ।

निघमः ग्रापः।

৩২০। স্বভিব্যুপেভ্যো হেল্ঞো হশ্চ।

निश्वः অভিহयः बिश्वः উপহবः।

৩২১। সংপ্রাভ্যাং মদো হর্ষে।

जन्मनः প्रमनः।

৩২২। সমুদ্রামজঃ পশুসঞ্চাপ্রেরণয়োঃ।

সমজ: উদজ:।

७२०। बृन्तारनो পर्यः।

পণে। মূল্যং দ্যুতাগুৰ্জিতং ভৃতিৰ্ধনাদিশ্চ।

(৩১৯)। পূর্বেণ ওঃ প্রাপ্ত এব অণর্থং বচনম্। নেরুত্তরাং আদ্ধা-ভোর্ডোহণ চ ভবতি।

(৩২০)। নি অভি বি উপ ইত্যেতেভা উত্তরাং হ্বেঞ্ স্পর্নায়ামিতাত্মাং গ্রেভবতি। হ্বেঞা ছন্চ। নিহব ইতি গুণঃ ছ দানে ইতাত্মাদেব নিহবাদিসিন্ধৌ হ্বেঞো নিহ্বায়াদিনিব্তার্থং লক্ষণম্। যন্ল্গস্তাৎ
প্রকৃতিবন্ধিগুণাদিশ্চেতি ছবিধৌ কতে নিজোহব ইত্যাদি অভ্যানস্তরম্
আঙে যুদ্ধ ইতি কতে তত্র হ্বেঞো ছন্চেতি শকামকর্ত্ত্যং তদেতং কৃতং
বৈচিত্রার্থম্।

(৩২১)। সম্প্র ইত্যেতাভ্যামুত্তরানাণী হর্ষ ইত্যামাং ওো ভবতি হঠে বাচ্যে। সংপ্রাভ্যামিতি দ্বিচনং কৃতং পৃথগনয়োক্রপপদস্ফচনার্থন্। তেনোপস্গান্তরসম্বন্ধে ন ভবতি ক্রডেরভাবাং।

(৩২২)। সম্ উৎ ইত্যোতাভ্যামূত্রাদক্ গতিক্ষেপণয়েরিত্যস্থাই পশ্নাং সভ্যে প্রেরণে চ বাচ্যে ঙো ভবতি। সমজ ইতি পশ্নাং সমুদায়-উচ্যতে। উদক্ষ ইত্যানেন পশ্নাং প্রেরণম্। অজ্বাতোঃ সংপূর্সক্ত সংঘ এবার্থঃ উৎপূর্কক্ত প্রেরণমেব তথাপ্যনয়েরস্পাদানং পশুবিশিন্তার্থ-প্রতীত্যর্থম্। পশুসংঘপ্রেরণয়োরিতি কিম্ গু সমাজো দিজানাং উদাজো-হনীকানাম্।

(৩২৩)। পণ্ ব্যবহার ইতাশাৎ ম্ল্যাদৌ বাচ্যে ভো ভবতি।

৩২৪। অকস্থা পলে একো গ্রহশ্চ। গ্রহঃ। •

৩২৫। গর্ভ গ্রহণার্ঘোপসরণে সর্তেঃ।

গবামুপসর:। বীনামুপসর: দৃফৌু তি ভট্টি:।

৩২৬। প**ৰ্বস্ত**ভূমোচ।

পরিসর: ।

৩২৭। আঙো যুদ্ধে হেবঞো হ*চ। আইবঃ।

৩২৮। কাঠিন্যাদে হনো ঘনশ্চ। খনঃ কাঠিন্যং সংঘাতঃ সান্দ্রাদিশ্চ।

- ্ ২২৪)। প্রহ্ উপাদানে ইত্যমাদক্ষ পণে বাচ্চে ছো ভবতি। গ্রো মহাদেশক। দৃভাদিপাঠাৎ ভঃ সিদ্ধ এব অর্থবিশেবে মহাদেশার্থং বচনম্। মহ্ গ্রহণে ইত্যমাত্ দৃভাদিমাৎ বিদ্ধে অর্থবিশেবমার্থং স্প্রয়তুম্।
- (৩২৫): সংগতী ভাুদিঃ ঋ সং গতী হ্বাদিঃ দ্যোরপি গ্রহণম্। সর্ভেঞ্জরে ছো ভবতি গভগ্রহণার্থম্পদরণে বিষয়ে। গ্রাম্পদর ইতি ক্রাগ্রার্ বলীবর্দানাং গভ্রারণার্থম্পদরণম্চাতে। গ্রাম্পদর ইতেনে বোলাহরণং সংক্রিঃ কৃতং ভারাং পশুবিষয় এবায়ং প্রয়োগ ইতি শঙ্কানিরাসার্থং বানাম্পদরং দৃষ্ট্রেতি উদাহরণং দশিত্বান্।
- (৩২৬)। পর্যান্তভূমৌ বাচ্যায়াং স্থাতোতের্থ ভবতি। পরি-জিনতেহতে এতি পরিসরঃ তথাচ, পর্যান্তভূঃ পরিসরঃ ইত্যামরঃ। পরিসর-বিবরেষু লীনমুক্তেতি মাঘঃ। বিষরপ্রসরৌ তু বাহল্যাং।
- (৩২৭)। আঙ উত্তরাৎ হ্লেঞ্ স্পর্কায়ামিত্যস্থাৎ ঙো ভবতি। হ্লেঞা হ্রাদেশত মূদ্ধে বাচ্যে। আহুরস্তে যোকারোহত্রেতি আহবঃ। মূদ্ধ ইতি কিম্ ? আহ্বায়ঃ।
- (৩২৮)। হস্তেকভরে ঙো ভবতি। হনো ঘনাদেশন্চ কাঠিকাদাবভিষেয়ে। কাঠিকাং গুণঃ। তত্র দগ্গে ঘনঃ সংঘাতো মেলকঃ তত্র লোকস্থাবনঃ সক্তিং কাঠিকাং তত্র ঘনং দধি।

৩২৯। অন্তরো দেশে।

অন্তর্যন:।

৩৩০। পত্রমিত্যেকে।

অন্তর্গণঃ।

৩০১। উদঃ প্রতিকান্ঠকে।

উদঘন: 1

७०२। जलानाम ।

অপ্যনঃ।

৩৩৩। প্রাদ্গৃহদ্বারবাহ্যপিণ্ডকে ণত্ত্বং রুদ্ধির্বা। প্রযণঃ প্রযাণঃ।

৩০৪। ব্যয়োক্রভ্যঃ করণে। বিশেষেণ হস্ত্যনেন বিঘনঃ। বিঘনেন্দুসমত্যুতিরিতি ভট্টিঃ। সংযোগনঃ ক্রন্থনঃ।

৩৩৫। **ণত্বমিত্যেকে।** ক্রুগণঃ।

(৩১৯.৩০০)। সন্তরশকাত্ত্রাদ্ধস্তের্ডি তবতি। হনো ঘনাদেশন্চ দেশে অভিধেয়ে। অন্তর্যন ইতি বাহলীকেষু দেশবিশেষতা সংজ্ঞা। অন্তর্হন্ততে প্রাণিনস্তত্র। দেশ ইতি কিম্? অন্তর্যাচেশ ইভানেনাদেশে বিহিতং পথং দেশে ন প্রাপ্নোতীতাত আহ প্রমিত্যেক ইতি সন্ত্রেয়া দেশে শন্ত্মিত্যেকে পঠন্তীত্যর্থঃ।

- (৩৯১)। যত্র কাঠে স্থাপয়িত্বা কাঠানি তক্ষত্তি তৎ প্রতিকাঠকং তন্মিন্ বাজ্যে উদ উত্তরাদ্ধন্তেওে ভিবতি। হনো ঘনাদেশত। উন্নতাতে হন্মিনিতি উদয়নঃ।
- (৩৩২)। জ্বপাত্তরাদ্ধস্তেরঙ্গে বাচ্যে ঙো ভবতি বনাদেশন্চ। জব্দস্তানেনতি অব্যনঃ। অঙ্গেনত্রাক্ষৈকদেশো হস্তপাদাদয়শ্চ বাচ্য ইতিজয়াদিত্যঃ।
- (৩০০)। প্রাহ্তরান্ধস্তের্থে ভবতি। বনাদেশো ণত্তঞ্চ বৃদ্ধিবা ভবতি। গৃহদারবাহ্যপিওকে বাচ্যে।
 - (০০৪ ০০৫)। বি অয়দ্ জ ইত্যেতেভাঃ উত্তরাৎ করণকারকে

৩৩৬। স্তর্গদ্রশ্চ। স্তবং হত্তানৈন স্তব্দ্ধ স্তব্দনঃ।

৩৩ ।। পরের্ঘশ্চ।

পরিহন্তানেন পরিযো লগুড়ঃ।

৩১৮। নেস্তলন্নাহপরিণাহে।

নিঘো মণ্ডপঃ।

্রতিন। সমোগণে। সংঘঃ।

চ বাচ্যে হস্তেঙোঁ ভবতি ঘনাদেশত ! বিরুপসর্গঃ অয়ো লৌহং জন্ম ক্ষঃ। গ্রমত্যেকে ক্রুবণ ইতাত্রৈব অরীহনাদেরকণ ইত্যত্র ক্রুঘণ-ইতি গণে পঠাতে। তৎ পাঠাগ্রহং কেচিম্বদন্তি সংজ্ঞাশব্দোহয়ং ততঃ পূর্দ্ধপদে চাবনস্থেতি গ্রম্।

(৩০৬)। স্তম্পদার্ভের্ডো ভবতি করণে বাচ্চো হ্স্তের্ঘনানেশো দ্বাদেশন্চ। স্তম্মং হস্তানেনেতি বাকাং করণ ইত্যস্তানুত্তিস্চনার্থম্।

(৩৩৭)। পরেরুক্তরাদ্ধন্তে: করণে গ্রো শুবতি বাদেশণ্য। পরি-হন্ত্যনেনেতি পরিযোলগুড়ঃ পর্যান্ধাদেবা ইতি লয়ে ক্তে পলিয়ঃ।

প্রতেশ্চেতি বক্তব্যম্। প্রতেশ্বন্তরান্ধরেঃ করণে ধ্রো শভিশ্বি ঘাদেশ হ। প্রতিহস্তানেনেতি প্রতিঘ:। কোপক্রোধামর্যবাষপ্রতিঘা কটি ক্রাণি সিয়ামিত্যমরঃ।

(৩০৮)। আরোহ উচ্চারঃ পরিণাসো বিস্তারঃ সমৌ আরোছ-পরিণাসৌ যস্ত্য স তথোক্তঃ তদ্মিন্ বাচ্যে নেক্তরাদ্ধস্তেঙে। ভবতি বাদেশশ্চ। নিঘোম ওপ ইতি সম-৪তুরস্ত্র ইতার্থঃ।

(৩০৯)। সম উত্তরাদ্ধন্তেওোঁ ভবতি। যাদেশশ্চ গণে বাচ্যে।
গণঃ প্রাণিসমূদারঃ সংঘশন্দোহপি তমেবার্থমভিধত্তে অতএব সংঘশু
প্রাণিবিষরস্থানিতি প্রাগাহ ধাতাদিসমূদায়ে তু গণশদ্ধ উপচারাৎ সমূদায়মাত্রে তু সংঘাতঃ। বিপ্রশু সংঘাতঃ ইত্যাদৌ তু প্রাণিবাচকপদান্তরস্ত্রিকর্ষেণ সমূদায়প্রতীতিঃ পদসংস্কারে তু বাক্যং স্বতন্ত্রমিতি প্রাণেব
প্রতিপাদিতম।

৩৪০। উদঃ প্রশক্তে।

উদ্ঘঃ।

৩৪১। উপাদাশ্রয়ে স্বশ্চ।

উপত্নঃ।

৩৪২। অপ্রাদেবা জপ্মদ্সন্হসং।
জপঃ জাপঃ শৃদ্স্ম বৈদিকমন্ত্রজাপং প্রত্যনধিকারাদিতি তাসঃ।
মদো মাদ ইত্যারকোষঃ। স্বনঃ স্বানঃ হসঃ হাসঃ।

৩৪৩। যদো নিসংবুপোচ্চ। ষমঃ যামঃ নিয়মঃ নিয়ামঃ।

: ৪৭। নেগদ্নদ্পঠ্সনঃ।

निश्मः निशामः।

৩3৫। কণোহপ্রাদেশ্চ। কণঃ কাণঃ নিকণঃ নিকাণঃ।

(৩৪০)। উদ উত্তবাদ্ধপ্তের্গ্রে ভবতি ঘাদেশণ্ড প্রশতে বাচ্চো।
(৩৪১)। উপাত্তরাদ্ধপ্তের্গ্রে ভবতি ঘাদেশণ্ড আত্রবে নাজেন আঞ্রিউপ ইত্যাশ্রয়ঃ স নিরমেন সনিহিছো ভবতীতি। গ্রামোপত্ম ইত্যানি নিন গ্রামসমীপভূতোহর্গ উদ্যাতে।

(৩৪২)। প্রাদিবর্জিতেভাঃ জপ্ জন্ন ব্যক্তারাং বাচি নদী হর্ষে স্বন শব্দে হসে হসনে ইত্যেতেভা উত্তরে প্রোভবতি বা। পক্ষে ঘণেব। জাপমাদশকরোঃ শাস্বাস্ত্রীরে বন্ধসাধ্যাথ নিদশনোপ্রাস্থাক্ষতঃ। অপ্রাধ্বেবিতি কিন্? উপজ্ঞাপঃ প্রমাদঃ প্রস্থানঃ প্রহাসঃ।

(৩৪৩)। প্রাণিবর্জিতাৎ যমু উপরমে ইত্যশ্বালি সং বি উপ ইত্যেতেভ্য উত্তরাক্ত ডো বা ভ্রতি।

(৩৪৪)। নেক্তরেভো গদ্বাক্রায়াং বাচি গদ্ অকাকে শক্ষে পুঠ্বাক্রায়াং বাচি স্বন্শকে ইতোতেভা উত্তরে ঙো বা ভবতি।

(৩৪৫)। নেরুত্তরাং কণ্ শব্দ ইত্যাখাৎ প্রাণিবর্জিতাক্ত ছো বা। ভূষতি। নিকাণাণয়ো ধ্বনিমাত্রশাচকাঃ বীণাধ্বনিং তদিতর্ধ্বনিং চাহুঃ। ७८७। थारमर्वेशाध्वरनो । अकनः अकानः।

৩৪৭। অপ্রাদের্ভাবে হনো বধশ্চ।

বধঃ ঘাত:।

৩৪৮। হেবন্তে হুশ্চ।

হবঃ হবায়ঃ ෦

७८३। कत्रा

দক্তছেদ: উরশ্ভুদ: সঞ্চর: বহু: ব্রজ: ব্যজ্ ইতাদি।

- (৩৪৬)। প্রাদেক্ষন্তবাং কণো বীণাধ্বনো বাচ্যে প্রে ক ভব্তি। স্থাপদর্গরহিতোহস্ত বিষয়ঃ। তেন প্রপ্রকণপ্রকাণাদয়ো বীণাধ্বনেবেব ৰাচকাঃ।
- (৩৪৭)। প্রাদিবর্জিতাদ্ধন্তেক্ষন্তরে ভাবে বাচ্যে ৫৫ বা ভবতি। হনোবধাদেশত ভবতি। ঘাত ইতি পিতীপ্ লিজ্বর্জং হনো ঘাত ইতি ঘাতাদেশঃ। ভাবাধিকারাদেব ভাবে সিদ্ধে ভাব ইতি ক্বতং কারক-বিধেনিরাসার্থং তত্র ঘণেব ভবতি।
- (৩৪৮)। ভাবে বাচ্যে প্রাদিবর্জিতাৎ ক্ষেঞ্জ্পজায়ানত স্নাৎ ঙোবা ভবতি। হবাদেশশ্চন পক্ষে-যথাপ্রাপ্তং প্রত্যয়ঃ তেন স্থায়ঃ হ্বান্মিতি চ. ভবতি।
- (৩৪৯)। ধাতোকত্ত্রে করণকারকে বাচ্যে ভো ভবতি। দক্তক্রঃ
 উরশ্বদ ইতি ছদ্ অপনারণে চুরাদিণিওন্তঃ দন্তান্ উরশ্বদেরন্তানেন ইতি
 একে সন্নাহে চ বাচ্যে ওঃ। একোপসর্গে চ করণার্থও ইতি রাদিহাৎ
 পিঙ্গোপে রুম্বস্কল। বদ্যপি ধাতুমাত্রে সামান্তেন বিধানঃ তথাপি
 প্রয়োগদর্শনাদ্ধাতুবিশেষেহর্থবিশেষে চাল্ত বিধানমবগন্তবাম্। সঞ্জরঃ
 ইত্যাদি সঞ্চরন্তানেন বহন্তানেন ব্রজন্তানেন ব্যজন্তানেন ইতার্থে চর্যু
 গতৌ ভক্ষণে চ বহ্ প্রাপণে ব্রজ্গতৌ বিপুর্ব অজ্গতিক্ষেপণয়োরিভোতেষাং প্রয়োগাঃ বণ্ডকোষু বীরিতি প্রতিরেধাৎ অজ্যে বীন ভাহঃ

৩৫০। অবিকরণে চ।

আকর: আলব: গোচর: আপণ: নিগম: কষ: নিক্ষ ইত্যাদি।।

৩৫১। খনঃ করণাধিকরণয়োর্বা।

আখন: আখান:।

৩৫২। ক্লাবেহপি পূজাদের্ঘশ্চ। পূগ: সমূহ: রঙ্গ: ভঙ্গ: তীরয়তেন্তীরং ধনং বনম্ উদরং ভয়ং বর্ষণ পদং তন্ত্রং যন্ত্রং মন্ত্র ইত্যাদি।

৩৫৩। স্তুরীষদ্ধ্যঃ কর্ম্মাণি চ। স্থুতুরীষদ্ধা উক্তক্মাদ্ধাতোরুত্তরে ভাবে কর্ম্মাণি চ বাচ্যে ধ্যে ভবতি। গাদাপবাদঃ।

- (৩৫০)। ধাতোজভরেহধিকরণে চ বাচ্যে জো ভবতি। সামান্ত-রিহিত্ত ঘণো বাধনার্থমিদম্। আকর ইতি এতস্মিন্ কুর্বস্তীত্যর্থঃ। আলব ইতি এতস্মিন্ লুনন্তীত্যর্থঃ। অয়মপি যদ্যপি ধাতোঃ সামান্তেন বিহিত্তথাপি প্রয়োগদর্শনাদর্থবিশেষ এব প্রবর্তনীয়ঃ। গোচর ইত্যাদি গাবশ্চরস্তান্মিন্ বনে আপণ ইতি বণিজঃ আপণায়ন্তে অস্মিন্ জনা নিগ-ছেন্তি অস্মিন হেমানি নিক্ষন্তি অস্মিন্ইত্যর্থে সংস্কায়াং ব্যুৎপাদনীয়াঃ।
- (৩৫১)। থকু অবদারণে ইত্যক্ষাৎ করণেহধিকরণে চ বাচ্যে ছো বা ভবতি। পক্ষে ঘণেব ভবতি। আথনস্থ্যনেন অস্থিন বা।
- (৩৫২)। পূজাদিভা। ধাতৃভাো ভো ভবতি ঘণ্ট। পৃংদি ক্লীবেহপি প্রয়োগদর্শনাৎ প্রতায়ব্যকা লিক্ষব্যবস্থা চ। পৃগ ইতি পূজ পূজায়াং চুরাদিণিঙন্তঃ ও প্রাপ্তৌ য এব ণিঙ্লোপে কতে অকবর্গানী-ত্যাদিনা জন্ম গং বন্জ বাগে ভন্জো আমর্দ্ধনে জন্ম গং তীর্মিত্যাদি পার তীর কর্ম্মমাপ্তৌ ধন্ ধাছে বন্ধন্ সংভক্তৌ এভাঃ ক্লীবে ঘো কা ভবতি ঙো বা। উদর্মিত্যাদি উৎপূর্দ্ব ঋগতৌ ফিলী ভয়ে বৃষু সেচনে এভা এব ঙো ভবতি বিশেষেণাপি সামান্তাবাধনাৎ ভয়নং বর্ষণমিত্যাদি পদমিতি পদ্গতৌ তন্ত্রং যন্ত্রং মন্ত্র ইতি তত্তি কুইম্বধারণে যত্তি সংকোচে মত্রি গুপুভাষণে ইত্যেভেভা। ঘো বা ঙো বা অম্যাক্তিগণন্বাং ভঙ্গা সেবায়াং ভগং পল সংচয়ে খলমিত্যাদি।

(২৫৩) ২৫৪)। স্থছরীষদ্রা ইতি ক্জে সামান্তেনোক্তং অক্প্র-

৩৫৪। অকন্টার্থেষৎস্কুলাং তুষ্থার্থান্ধরঃ। স্থপটা যবাগৃত্বয়া ঈষৎকর: কটো ভবতা তুষ্পুটং বর্ত্ততে।

৩৫৫। ইঙ্ধাতুকথনে তিঙ্বভিঙ্বা।

ধাতুকগনে গম্যানি ভাবে কারকে চ বাচ্যে পুংসি প্রায়ো ধাতোরুত্রে ইঙ্ ভবতি তিঙ্ববিদ্র বা। যজির্যজ্ধাতুর্যজমানশ্চ।
করিঃ কর্ধাতুঃ পণ্ডিতশ্চ। পূঞ্ পবিবৃদ্ধন। হাঞ্ হরির্বিষ্ণঃ।
বিধাঞ্ বিধিত্র ক্ষা। লৃঞ্ লবির্দাত্রম্। যু বিশ্রাণে যবিঃ
সমুদ্রঃ। ডুরুঞ্ করিঃ শিল্পী। শ্বু হিংসায়াং শরিধৃ র্তঃ। রু
ববিঃ স্গাঃ। ভূ ভরিভূ মিঃ। ঋ স্বরিঃ শক্রঃ। রুহ্ রোহি
বর্ণিধাতুঃ স্বর্ণঞ্জ। বহির্বহ্ ধাতুর্ ষভশ্চ। মসির্মসীধাতুঃ কছ্জলবিকারশ্চ। সসিরস্থাতুঃ খড়গশ্চ। বাশির্মস্থাতুঃ শৃগালক্চ। কাশিঃ কাশ্ধাতুঃ স্ক্রেণিতুঃ স্বর্ণজ্জ স্থাতুঃ প্র্রাজ্প । বহির্হ্ ধাতুর্ বিভাগে । পানির্মাণ কাশ্ধাতুঃ ক্রেণিত্র ক্রেণ্ডা বারাণসী চ। পানি পঠ্ধাতুবিদাংশ্চ। পচিঃ পচ্ধাতুঃ গ্রিশ্চ। অঞ্জিরন্জ্ধাতুঃ প্রেষণিকোইঞ্জিকা চ। ক্ষিঃ ক্য্ ধাতুঃ হিংস্রেশ্চ। বসির্বস্থাতুর গ্রিশ্চ
ধ্রনিধ্ব ন ধাতুঃ শারুশ্চ। বনির্বধাতুর্ধাত্যরাশিশ্চ। গ্রন্থি গ্রুত্রি স্থা

থেষিং স্বভ্যামিত্যাদিনা অর্থবিশেষং নিয়ময়তি তেন ঈষংকার্যা: কটো ভবতেতি গা এব ভবতি। ঈষক্ষাক্র মনাগর্যঃ। স্থপতা যবাগুরিভি শোভনপাকেত্যর্থঃ ছম্পচা জম্পাকেত্যর্থঃ। ছঙ্কতমিত্যক্র ছরিতি পাপার্থে। ছম্পচাং বর্ত্তত ইতি ছনি রাবিব হিঃ প্রাত্তমত্রাং ষঃ কথপফে ইতি রেফস্ত ষঃ। (৩৫৬)। পুংসি প্রায়ো বাছল্যেন ভবতীত্যর্থঃ। অতথেব বন্ধাতি কাপি ক্রিয়ামিতি। যজ্বেপ্জানে কর বর্গনে পৃঞ্পবনে ক্ষঞ্ হরণে বিপুর্কি ভুগাক্র গারণপোষ্ণয়োঃ ল ক্র ছেলনে ক্স শন্ধে বন্ধ্ প্রাণনে মন্ধী

ধাতৃঃ পর্ব চ। চরিশ্চর ধাতৃঃ পশুশ্চ। আপিরাপুধাতৃর্বাতপূর্বেল লাভাপিরস্করভেদঃ। দেবপূর্বেল দেবাপিদে বর্যাত্রিকঃ।
এবং স্তম্বকরিধাতাং শক্ষৎকরিবিৎসঃ হৃত্যু হরিনাথহরিঃ দৃতিহরিঃ
পাশুশ্চ। ফলেগ্রহিরবন্ধার্কঃ। মলেগ্রহিছ্ডিডপঃ। রজোগ্রহির্বাতঃ। দেব্যজিমুনিঃ। ভবতিভূধিতুঃ। বুধ্যতিরুধ্ধাতঃ বহতির্বধাতুর্বাযুশ্চ। অমতিরম্ ধাতুঃ রোগশ্চ। অফ্ল ভিবকিধাতুর লা ছ। অঞ্জতিরন্চুধাতুর্গিশ্চ। রমতী রমুধাতৃঃ
কামশ্চেতাাদি।

৩৫৬। কাপি স্ত্রাম্। কুত্ বর্ত্তি প্রজ্লিনী। কীত্তিঃ কৃত্ধাতুর্যশশ্চ। বিদ্ বেদিঃ পরিক্তা ভূমিঃ। পিশ্ অবয়বে পেশিঃ কোষো মাষবিদলঞ্চ।

পরিমাণে অন্ধ্র কেপনে কাশ্বাশ্ শক্ষ্যায় মা অনজ্ ব্যক্তি অক্ষণকান্তি । তার্ কন্ হিংসায়াং ধ্বন্ শব্দে বন্ ধন্ সংভক্তৌ এছ্ সন্দর্ভে চর্ গতৌ ভক্তণে চ বাত্যাপ্রোতি দেবমাপ্রোতীতি বাক্যে বাতাপিদে বাঙ্গিরিতি । এবং স্তপ্রকরিশক্ষংকরি প্রভৃতয়োহর্যবিশেষে নিয়তা এব জ্ঞাতব্যাং । অর্থবিশেষা দ্যার স্তব্দকাবং শক্ষ্যকার নাথহারং দতিহারং গড়েব ভবভি। ফলে-প্রতিরিতি বিক্ষাবশাং কারকাণি ভবন্তীতি অধিকরণবিবক্ষায়াং ফলে ইতি সপ্রা তংশক্ষে কৃতি বহুলমিতালুক্ । কাশ্যা ফলানি গৃহ্বাতীতি কলে-প্রতিঃ শেষোরনাদিত্যকার প্রকার প্রহির্দ্ধি বনস্পত্যানামিতি । আয়ন্তরিঃ ক্ষেন্তরিং উদরভ্রিরিত্যাগ্রিপ কাভ্যাের শেষোরনাদিত্যুম্পদান্মঃ । ভূসভ্রাাণ বৃদ্ অবগ্যনে বহু প্রাপ্রণে অন্ রোগে স্বাক্ষি লক্ষণে অন্ ভূগতিপুদ্ধন্যাং রম্ ক্রিভায়ম্ ।

(৩৫৬)। পূর্বস্থেরণ পৃংসি বিহিছাবিঙ্তিঙৌ ক্কাপি ক্সিয়াং ভাতঃ। রুতু বর্তনে কৃত্ সংশব্দনে কীর্ত্তিবিতি চুরাদেরপাস্থ বছলবচনা-প্লিঙভাবো বাচাঃ। অতএব ঋত্পাস্ত্যাননুচ্চুৎক্পেরিতাতা, বুত্তিকং ত্ তরির্নে : । সনি: সন্ধাতুর্যাজ্ঞা চ। নীবিনীর্ধতৃস্লধনং কাঞ্চা চ। খনি: খনুধাতুরাকরশ্চ। জনির্জনীধাতুঃ স্ত্রী স্বা জন্ম চ নঞ্পূর্ববভা। পাকে অভ্যি: কোটি: শাস্তিঃ শাস্ধাতুরাজ্ঞা চ। বসতির্বস্ধাতুর্বেশা রাজিশ্চ। অংহতিরহিধাতুদীনশ্চ।

७८१। ज्याभारतिः।

কবিকু ঞি ধাতৃঃ ইপ্রত্যয়বিধানসামর্থাক্ল বচাদেশঃ। বিদির্বিদ্ধাতৃঃ। ভিদিভিদ্ধাতুঃভিদিশ্ছিদ্ধাতৃঃ পর শুক্চ। ভুজিভুজি ধাতৃরগ্লিশ্চ। শুজিভুজি পরিত্রশ্চ। শুজিভুজি বুরিং পুরাধাতৃর্বারঞ্চ। কুটিং কুট্ধাতৃগৃহঞ্জ। কুঠিং কুঠ্ধাতৃদি শুরিং পুরাধাতৃর্বারঞ্জ। কুটিং কুট্ধাতৃগৃহঞ্জ। কুঠিং কুঠ্ধাতৃদি শুলিজ দুধাতৃঃ শুভগপাত্রবিশেষণ্ড। কিরিঃ কুধাতুঃ কালঃ শুকরশ্চ। পিরিঃ গুধাতুঃ পর্বভিশ্চ। নঞ্পূর্ব শুহাক্ ভাগেঃ অহিঃ স্পাং কপূর্ব পা রক্ষণে কপির্বানরঃ।

७७५। खियान्।

ক্রচিং ক্রচ্ধাতুরভিলাধে। দীপ্তিশ্চ। কুষিং ক্রযুধাতুর্ধগ্যোদার্জনপঞ। ভংপূর্বক্রা ভক্তিং মূচ্ছ পূর্বক্রপম্। ভ্রণাচ, কিভ্রুত নক্রং, দিব-মস্ত্তক্রিণা ইভি কিয়াতং।

কী ব্র্যানিকাদাজহার যদা তু ণিগু তদা প্রহাসে হাদিনা হনেন কীতনে হি রূপং ছিতি চোপাস্ত ইতি ইক্রে পোল্ড ফাচিচেতি দীর্মঃ। বিদ্জানে পিশ্ অব্যবে তু গ্রধনতরণলোঃ বন্ধ দানে নার স্থোলো পড় অবদারণে, ভন্মী প্রাছ-র্জাবে অপ্রিবিটি রুদ্চাগুনাদাবিত্যাকারলুক্ শাস্থ অন্তশিঙ্গে বৃস্নিবাসে অহি গতে।

(৩৫৭।০৫৮)। জ্ঞানেশ তোপ ভিক্তথনে ভাবে কারকে চ বাচ্চো ইর্ভবতি। পুংসি প্রায়াং। পূর্বেশণৈর ইঙ্জি প্রাপ্তে ইবিধানং উবর্থান্ ইঙি ষ্কি কুটাদিবর্জং ডিভিঙ্কুদন্ত ইতি বৈক্যাদিরাছ্ব্ নিবেধঃ স্থাৎ। নতু ৩৫৯। কচিন্ন ডিঙ্বং।

* দ্ঞি দৃশ্ধাকুঃ সত্তিঃ স্থাতৃঃ অন্তিঃ ঋধাতৃঃ আঙ্পূৰ্ণৰ অন্তিরভিলামঃ অন্দ্ অন্তিঃ পীড়া। তথাচ, শিরোহতিং নাশয়ত্যাশু
ইতি বৈদ্যকম্। পদ্ পণ্ডিঃ সেনাভেদঃ । জন জ্ঞাতি
সগোত্রঃ।

৩৬০। ক্রিঃ স্ত্রিয়াম্। ভাবে কারকে চ বাচ্যে প্রায়ো ধাহুভাঃ স্ত্রীলিঙ্গে ক্রিভ্বতি। ভূতিঃ পূর্বিঃ দৃঙ্দৃতিঃ ক্ষমুক্ষান্তিঃ।

ক্রবো বচাদেশে ক্রতে উবের ন প্রাপ্রোতি কিমি এতায়বিধানেন অত আহ
ইপ্রতায়াবিধানসামর্থ্যাদিতি যদি বচাদেশঃ আন্তদা ইবিধানসনর্থকং আহ।
বিনির্বিদ্ধাত্রিতি বিদ্ জ্ঞানে এবং ভিদির্ বিদারণে ছিদির্ দৈবীকরণে ভুজ্
পাননাভ্যবহারয়োঃ শুচ্ শোকে ঋষী গতৌ পুরা হিংসার্থঃ কুট্ কৌটিলাে
ক্রেটি আলভে শু হিংসায়াঃ কু বিকেপে গু নিগরণে ওহাক্ ত্যায়ে দ্রা কুংলায়াঃ গতৌ চ দ্রৈ স্বালে তং লােতি দায়তি বা তদ্রিং বছলবচনায় অম্নুক্ ইনন্তান ভ্রার্থাদিতি ঈপ্রতারেন তু তন্ত্রী অন্ততন্ত্রিণেতি অক্তসমানান্তঃ।
বিদ্বাতীতি বিবিঃ। কং শিরঃ পাতীতি কপিঃ কৃশ্ বিলেখনে ক্রিঃ
অর্ধবিশেষাভাবপক্ষে বছলাধিকারাং শুণাহেশ্র্ ধাতুর্ এব বৃত্তিক্তা ইরিভূদােষ্ত্র্।

(৩৫৯)। ধাতুকগনে বিহিতন্তিজ্ কচিডিও বন্ধ ভবতি। ড্রন্তিরিতি তিছু ব্দতিদেশাভাবাং ভাদিনাং ন শঙ্ ভবতি ডিত্যুয়েছলিনংশাদিন শান্দেরিতি দৃশ্যে দ্রশ্ ভ্রশ্জান্ত গুলুশামিতি শস্ত ষঃ ষটবর্গাদিত্যাদিনা তস্ত টঃ। স্থিটঃ আর্তিরিতি স্থ গতেই শ্বাদিরাছিছ হ্বাদিয়াদিকতিশ্চ ন স্তাং। আর্তিরিতি অর্দ্ হিংসায়াং পত্তিরিতি পদ্ গতেই দিবাদের্যাক্ত কৃষি তি যান ভবতি জ্ঞাতিরিতি জ্ঞা অববোধনে জ্যো জাশ্চেতি নাং জ্ঞাদেশ্চন ভবতি। (৩৬০)। সামান্তবিধানেহপি ব্যলাধিকারাং প্রেয়াগদর্শনন প্রক্রি

্ ৩৬১। কাপ্যাশিষি। কণ্ডুয়তাদিতি কণ্ডুতিব্ৰাহ্মণ:।

७७२। हित्तान्तारमञ्जामका

হি হেতিঃ যু যৃতিঃ জুঃ সোত্রঃ জৃতির্বেগঃ বেঞ্ উতিরিতি ধারু-পারায়ণম্। তথাচ,মোদগলস্থ কবের্গভীরমধুরোদগারা গিরাং বৃতিয় ইতি মুরারিঃ। চর্ চূর্ত্তিঃ ফল্ ফুল্লিঃ প্রথ প্রত্যয়ব্যম্। বিশেষে-নাপি সামান্তং বাধ্যতে ন কচিৎ কৃতীতি। পক্তিঃ ভিত্তিঃ ছিত্তিঃ কৃতিঃ ক্ষিতিঃ চিতিঃ প্রমিতিঃ সংপূর্বন ইণ্ সমিতিঃ ব্যবস্থিতিঃ ইষু মজ্বা ইতিঃ। তথাচ, ইতির্গাগেচছয়োরিত্যমরকোষঃ। বিত্তিঃ শ্রুপ্রি গ্রেষ্টিঃ লিমিরিত্যাদি। ক্রণ্ডুতিরিত্যেকে।

নি তিক বিকেষু প্রতিনিয়তধা তুম্বলি চাধং বিধীয়তে। অতএবাহ প্রায ইতি।
অতএব বিশেষবিহিত্মলি ওপ্রতারং বাধতে ভূতিঃ পূর্ত্তিবিতি তে প্রপ্রে
ক্রিং পু পালনপূবণবােঃ উব্পবর্গাদিতি উব্ রাস্তানেরি তাাদিনা দীর্ঘঃ ত্যাদিআদিওভাবঃ দৃতিরিতি দৃঙ্ অনাদরে কাস্তিরিতি ক্ষমু সহনে ঘলি প্রান্তে
ধাতুমোনোহঙ্ধে ইতি মন্ত নঃ অভিত্তথােণ্ড পঞ্চমালুকাতি দীর্ঘঃ। ক্ষমুষস্ত ক্ষমা।

(ও৬০)। কাপি কমিন্নপি ধাতৌ বিহিতা ক্তিরাশিবি ভবতি। কণ্ড -য়তাদিতার্থকথনং -আশীংস্ফেনার্থম্। ব্রাহ্মণ ইতি বিশেষণং সংজ্ঞাশকত্ব-স্ফেনার্থম্। বশ্চায়েহলাতি যকারলুক্।

(৩৬২)। হিঁগতৌ ইতোবমাদিভ্যো ভাবে কারকে চ বাচো স্ত্রীলিঙ্গে জিভবতি গুণাদিশ্চ। হেতিরিতি গুণঃ যৃতিরিতি সু মিশ্রণে জৃতিরিত্রা-ত্রাপি দীর্ঘঃ উতিরিতি বেঞ্ তম্বসম্ভানে ইত্যশ্বাৎ জিপ্রত্যয়ে কতে কিলা-শীর্ষোরিত্যাদিনা বেঞ্জঃ দীর্ঘঃ অব্ রক্ষণে ইত্যশ্বাদেব কিবস্তম্ভ চত্তরা- ৩৬৩। বিদ্রিদাদেরাও।

ভাবে কারকে চ বাচো বিভিদাদের তবে দ্রিরামান্তবতি। জুপ-চ্য্পটা জুলভষ্লভা কমুষ্ক্ষমা ত্রপৃষ্ত্রপা। ঘটাদরঃ বিত ইতি বিস্থাদাং ঘটা ব্যথা প্রথা ভিদা বিদারণে ছিদা দৈর্থীকরণে গুহা গিয়োবধ্যাঃ জুবপ্বপা বিবর্মেদ্সোঃ বৃদ্নিবাদে বসা মেদ্সি।

বজরাশ্রিক্যবাংবাজিতানেন উকারে কতে উতিরিতি সিধাতোর জ্যাদিতো-নাপায়মেব সাধিতঃ এতাবত। বেঞ্উতিরিতি ধাতৃপারায়ণমিতি প্রমাণো-পদর্শনম্ অভার্থতামভা হৃচয়িতুং মুরারিশ্রোকত দশিতঃ। চুর্তিরিতি চর গতৌ ভক্ষণে চ ক্তিপ্রতায়ে কতে অকার্য্যোক্ষার বাস্তানেরিত্যাদিনা দীর্ঘঃ জরাদেরপি ন স্থানিতি প্রতিযেপাত্তকাবস্থান নকারং। ক্রিরিতি ফল নিষ্পত্তে ঞিফলা বিদরণে ছয়োরপি গ্রহণং ক্রিডকারপ্র চ লহম অকার-প্রোকারঃ প্রতাতি প্রথ প্রথানে থকারনুক্ অবাযমপি প্রাদিজানিতি শেষঃ। প্রক্রিরিতি ষিদ্ধিনাদেবানিতি বিশেষবিভিত্তনাতো ক্লেন্ বাধনম্ এবং ভিত্তিরিভানে । কতিরিভি কঞ্জন্থতি বিশেষবিহিতেন কোন কিতিরিতি ক্ষিব হিংদারাং বিশ্বালাত। চ্যিতরিতি চেরিতি ক্যেন প্রমিতি-রিতি প্রাদেরাদস্তাদিত্যাতা সমিতিরিতি অকর্তৃকারকেচ সমজানেঃ সংজ্ঞায়া-মিতি ক্যেন ব্যবস্থিতিরিতি প্রাদেরাদন্তাদিতাাতা ইপ্তিরিতি ইবেবিচ্চ চেত্যাতা যজ্ধাতে স্থ পূর্বতং কোন বিত্তিরিতি পূর্কাস্ত্রিথিছতেন কোন স্রস্তিঃ ধ্ববিরিতি প্রাদিহলস্থাদ্দীপাদেরিত্যাতা লভিরিতি বিভিন্নদেরাদিত্যাতা বিশেষবিহিতেন ক্রেণাধা ন ভবতি পাক্ষিকং বিধানং ন ভবতীতার্থঃ কণ্ডুভিরিতি সনাদেশ্ভেড়াতা ন জেবালা ইত্যেক ইত্যনেন স্বকীয়াস্বরসোহত্র দর্শিতঃ। আদিপদেনাপরে-২পি প্রয়োগদর্শনানুহনীয়া:। গায়তেরুক্টীতিঃ সংগীতিঃ পিবতেঃ স্থপীতিঃ সংগীতিরিত্যাতা বাধনং ন ভবতি। এজনতে অনয়া ভ্রুতিঃ তুয়তেখনরা স্থাতিঃ এনটা বাধনণ ন ভবতি।

(৩৬৩—৩৬৪)। ক্ষুন্ সহনে ত্রপূষ্ লক্ষারাং ভ্রায়ন্তর্নে-

৩৬৪। ক্রপে: কুপ্চ। কুপা। •

७७৫। ইষেরিচ্ছ চ।

ইচ্ছা মূজা রুজা ক্রিপা ক্রিয়া পূচ্ছা স্পৃহা। ভাগুরিস্ত, ক্রুধা বাচা দিশা গিরেতি 🖝

৩৬৬। প্রাদেরাদন্তাৎ।

প্রদা উপধা সন্ধ্যা প্রমা ব্যবস্থা সংস্থা।

৩৬৭। শ্রদন্তর্ভ্যাঞ্চ।

শ্ৰন্ধা অন্তৰ্ধা।

ঘটানীন ক্রিম্বরাপর্যান্তান পঠিয়া বিত ইত্যুক্তম্। তরাধ্যে যে ক্ষজ দক্ষি কদি ক্রন্দয়ঃ পঠান্তে তেষু ষিৎকার্যাং নান্তি। গুর্বাদিহলস্তত্মদেবাতা সিদ্ধেঃ ঘটাদৌ পাঠস্ত गমিণোনো দীর্ঘ ইতি দীর্ঘার্থঃ। ভিদা ইতি ভিদির বিলারণে ইতি নিয়মাদভাত্র ভিত্তি: ছিলা ইতি ছিলির বৈধীকরণে ইতি নিয়মান্ত্রত ছিত্তিঃ গুহা গির্য্যোষধ্যোরিতি গুরু সংবরণে ইতাক্ষাৎ গির্য্যোত মধ্যোরেব গুহেতি সাধু: অন্তত্ত গুঢ়িরিতি ভবতি গিরিশকাদয়ঃ সমুদায়েরু ছি প্রবৃত্তা: শব্দা: অবয়বেম্বাপ প্রবর্ত্ততে ইত্যেকদেশেহপি বর্ততে। যথা গ্রামো ভন্নঃ পটো দশ্ম ইতি গিরিশব্দেনাত্র তদেকদেশ উচাতে এতাদৃশ্রপি শক্ষ-প্রবৃত্তিভবতীতি শিব্যবোধনায় গিরিশকেন তদভিধানং ক্লতং বপা বিষর-্মনসোৱিতি নিয়মাদন্তত্ৰ উপ্তি:। ক্ৰপেৰ্ঘটাদিখাদাং দিদ্ধ এব ক্লপাদেশাৰ্থং বচনং কুপ্ধাতোরেব কুপেতি দিদ্ধে ক্রপেতি প্রয়োগনিরাদার্থং ক্রপে: क्रभारिन विधानम्। देषु देव्हायामव देव्हारिन मन्त मृक्षु एको करका ज्या ক্ষিপ প্রেরণে ক্ষি ক্ষয়ে ক্ষি নিবাসগত্যোরিতি বা হন্ধাতুরিত্যাদিনা ইয়া-দেশ: প্রচ্ছ জ্ঞীপ্রায়াং বশাদেরশাদিরিতি পৃচ্ছাদেশ: স্পৃ হ্ সংপারাং কুধ বুভূকায়াং দিশ্ অতিসর্জনে গু নিগরণে গ্লদির ইতি ইর্ তথাচ ভাঞ্রি-মতেন পঠন্তি কুধা বাচা দিশা গিরেতি।

- (৩৬৬)। ভাবে কারকে চ বাচ্যে প্রাদেরুতরাদাকারা**ডাছা**ভো: ক্রিয়ামান্তবতি। ক্রেরপবাদ:।
- (৩৬৭)। শ্রাদ্ অস্তর্ ইত্যেজাভ্যামুত্রাদাকারাঞ্জারতোর্ভাবে কারকে চ বাচ্যে ক্লিয়ামান্তবতি।

७७৮। अर्वािक्टनखामनीशादमः।

ঈহা উহা শ্রথি গ্রন্থা গ্রাথ গ্রন্থা শ্রংসা। অদীপাদেরিতি কিম্ ? দীপ্তিঃ প্রাপ্তিঃ । রাধ্সাধ্সংসিদ্ধো রাদ্ধিঃ লাদ্ধঃ শ্রাপ্তিঃ । কত্বং চেষাতে শ্রাক্তিরিতি ধাতুপারায়ণম্ ।

७४२। मनारमञ्ह।

চিকীর্ষা পাপচা। পাপচা গোপায়া কণ্ড্রা পুত্রীয়া শ্রেনায়া পুত্রকাম্যা।

⁽১৮৮)। গুরুরানির্যন্ত স গুর্বাদিঃ গুর্বাদিয়্ল অস্তো যন্ত স গুর্বাদিয়লন্তঃ তথাত্তরে ভাবে কারকে চ বাচ্যে দীপাদিবর্জিতাৎ প্রিয়া-মান্তবিত। হলিতি জাতিগ্রহাণাদীক্ষেত্যাদৌ গুর্বাদেয়্লস্তর্মবিয়ন্ধন্। ধ্বংসেত্যাদৌ গ্রাদ্যো হল্ ইত্যন্ত্রপার্য্যাপি হল্ডেন যুক্তান্ত্র্যাদকার্ত্র গুরুত্বন্। প্রহেতি ইছ্ চেপ্লায়াং উছ্ বিতর্কে শ্রন্থ মোচনপ্রতিহর্ষপরোঃ গ্রন্থ স্কর্নের্ড ইত্যেত্র্যারপি শ্রন্থা গ্রন্থা ইতি ভবত্যের কিন্ধ ইদিস্বাদ্য ক্রেন্থে বেষাং গুর্বাদিয়ং তেহপি গুর্বাদীত্যনেন গুরুত্ত ইতি স্চ্যিত্রুং শ্রন্থ গ্রন্থ ম্বল্লংসনে দীপী দীপ্রো শ্রাপ্রাপ্রাপ্রাধ্য রাধ্ সাধ্ সংসিদ্ধো ইতি দীপাদৌ পাঠাং রাধ্ বৃদ্ধাবিতি দৈবাদিক্যাগ্রহণং তত্র রাধেতি ভবতি। ল্রাষ্ট্রিরিতি টুল্লাফ্ টুল্লাম্থ দীপ্রো ল্রন্স্লাফ্রন্ডছশামিতি জন্ম বং বাদবিষয়েহপাৎসর্গঃ প্রবর্ত্তে ইতি চজ্যাং ক ইত্যনেন ক ইত্যভিপ্রায়ঃ বহলবচনাদ্য।

⁽৩৬৯)। যদি বন্ মন্ সংভক্তাবিত্যাদীনাং গ্রহণমিষ্টং স্থাৎ তদা ভিদাদাবেব তংপাঠঃ ক্লতঃ স্থাৎ। তম্বাং সন্নিতি প্রত্যন্ত্রহণং ধাত্ব-বিকারাত্রনস্তো ধাতুর্গৃহতে। সনাখন্তাদ্ধাতোঃ ব্রিয়ামান্তবতি। চিকীর্ষেতি তুংগভাদিজ্বায়ামিতি সন্ প্রতক্ত সনীতি ইর্ রাস্তাদেরিজ্যা-দিনা দীর্ঘঃ দিক্তবিত্র স্বাক্ত কিবছাদিকাদিরিতি কম্প চঃ। পাপচ্যোতি হলা-

৩৭০। চিন্তি পূজি কথি কুম্ভি চর্চ্চি ভীষিভ্যো ঙনবাধনার্থীয়।

চিন্তা পূজা কথা কুস্তা চর্চা ভীষা। ধাতুপারায়ণে তু চিন্ত্যাদে-র্পেরিয়ঃ। চিন্তিয়া পূজিয়া ইতি দর্শিতম্।

৭১। চোরিতোলিভ্যাং চুরতুলো চ।
চুঝ্ন তুলা। করোতি তুলনাং তবেতি ঙনপ্রত্যয়ো বহুলবচনাৎ।
৭২। পীড়েব'।।

পাঁড়া। কুরুরাজনিদ য়নিপীড়নাভয়াদিতি মাঘঃ।

ছেকাচ ইত্যাদিন। যন্ দিকজিঃ দীর্ঘোহনাগমাত ইতি দীর্ঘঃ পাপচেতি যন্দুমাঙিদ্দিন চতুমীঙ্চেতি যন্দুক্ গোপায়েতি গুপুধুপ্বিচ্ছিপনীত্যাদিনা আয়ঙ্কগুয়েতি কগুঞাদের্য ইতি যঃ পুল্লীয়েতি তুল্যাচরে চেত্যাদিনা কয় আলোরিভাকারলোপঃ পুল্লকানোতি কাম্যো নাম ইত্যাদিনা কাম্যঃ শুলায়েতি কর্রায় ইত্যাদিনা আয় এতাবন্ত এব সনাদয়ে। গ্রাহা ইতি স্চনাম্ব বহুদাহরণোপত্যাসঃ।

- (৩৭০।। ভীষিবর্জং চুরাদিণিঙতা অন্তর্কতাঃ ভীরিস্ত প্রয়োজকণিঙতঃ এভাো ভাবে কারকে চ বাচ্যে দ্রিয়ামান্তবৃতি। নমু ণিঙতভাপি সনাদি- থেনৈব দিদ্ধে কিমর্থং লক্ষণমিত্যত আহ ওনবাধনার্থমিতি প্রহাসেত্যাদিনা পিঙত্তাং ওনং বক্ষাতি তহাধনার্থম্। চিত্তেত্যাদি চিতি স্মৃত্যাং পূজ পূজায়াং কথ বাক্যপ্রবন্ধে কুবি আচ্ছাদনে চর্চ্চ অধায়নে ক্রিভী ভরে তীক্ষোঃ প্রয়োজকাদিত্যাদিনা ণিঙ্ ভীষানেশক। চিত্তিয়েত্যাদি চিত্তাদের্ণেরিয় ইতি পেঃ স্থানে ইয়াদেশা ভবতি ণিঙ্লোপবাধনার্থ ইয়াদেশঃ ধাতুপারায়শে স্থিতি মত্যুচনার্থম্।
- (৩৭১)। চুর স্তেরে গুল্ উন্মানে ইত্যেতয়োশ্বাদিণিঙক্রোনি দৈ শঃ আভ্যামান্তবতি চুর্তুলৌ চাদেশৌ ভবতঃ। শ্রন্থাসেত্যাদিনা ওনস্থ বাধনার্থঃ যঞ্জেবং কথং করোতি তুলনাস্তবেতি অত আহু বহুলবচনাদিতি।
- (৩৭২)। পীড অবসাদনে ইত্যমাত্ত্তরে স্তিয়ামান্তবতি বা। পূর্দ্ধবৎ ক্রানে প্রাপ্তে বিধানম্।

७१७। भाजपूनमध् छम्ह।

চূড়া।

৩৭৪। ণকস্থাদিচ্চ।

পূর্বনাবাধে ন চোৎপত্তিরুত্তরহা হি সিধাজীতি ভাবে । কোক্তকর্তৃ-বাধঃ। ভেদিকা।

৩৭৫। জুযাদেরাঙ্। জরা ঝরা জাগরা লেখা রেখা মেধা গোধা মৃগয়া দোলা তোলেতি কাতক্রম।

⁽৩৭৩)। গাস্তাচ্চুদ্প্রেরণে ইতাকাৎ স্থিমান্তবতি। চুদশচ্ডা-দেশশচ।

⁽২৭৪)। ণকাছন্তরে ভাবে কারকে চ বাচ্যে দ্বিয়ামান্তর্যতি পকস্থানিচ্চ। ধারধিকারেহপি বিধানবলাৎ পকান্তাদাদ্বিধানম। নমু ভেদিকেত্যত্র কর্তুরি বিহিতাপ্রকাৎ কথং ভাবে আদিধানমত আহু পূর্ব্বাবাধ
ইত্যাদি হি যত্মাদর্থে এবংবিধে বিরোধে যত্মান্তভবস্থোৎপত্তিন পূর্ব্বাবাধ
সম্ভবত্তি অপি তু পূর্ত্ববিধ এব স্মতো ভাবে বিহিতেনাতা পকেনোক্ত স্থাবিধঃ। ভেনিকেতি ভেদনমস্থার্থঃ। এবং কারিকেতি রোগাভিধানে
প্রচ্ছেদ্দিকা প্রবাহিকা বিচর্চ্চিকা। সংজ্ঞায়াং শাহভিঙ্কি পর্য্যায়ে ভবতঃ
শার্ষিকা ক্রমশ্যনমিত্যর্থঃ পূজাযোগ্যতাশম্ ইক্ষুভোক্ষিক।মহাতি ভবান্ ধণে
ইক্ষুভক্ষিকাং মে ধার্যুসি উৎপত্তো ইক্ষুভক্ষিকা। যে উৎপত্না অর্থাম্বসরণমেতৎ লোকত এবাবধারণীয়ম্।

⁽৩৭৫)। ভাবে কারকে চ বাচ্যে জুষাদের ন্তরে দ্বিয়ামান্ত্রতি।
জরা বারা ইতি জুষ্ ঝুষ্ বয়োহানো বিশ্বং প্রাপ্ত স্থাতো বাধনার্থমান্ত্রবিধানং তেন গুণো ভবতি জুষ্ যকারা মুবন্ধা জু বয়োহানাবিত্যস্ক্রাদিপ ঠিত স্থাত্র কার্নি: ঝুষন্ধ মকারো মুথস্থার্থ: যিৎকার্যাভাবাৎ। জাগরেতি জাগু নিদ্রাক্ষয়ে দ্বিয়াং জাগুর্জাবে ইতি যন্তা কার্যা। লেখেতি লিখ্ অক্ষরবিস্তাদে। রেখেতি বালাদিস্বাল্লো-

७१५। श्वारमतान्।

ধারা প্রপতনে আরা শস্ত্রাং কারা বন্ধনগৃহে তারা ক্রোড়া দারা হারা। তথা চ, ক্রোড়া দারা তথা হারা ত্রয় এতে যথাক্রমম্। ক্রোড়ে দারেষু হারে চ প্রকীর্ত্তিতাঃ মনীষিভিরিত্যুৎপলমালিনী। বাচেতি ভাগুরিঃ।

७११। ७निष्कोरक।

ভাবে কারকে চ বাচ্যে ধাতোরুত্তরে ক্লীবে ওনট্ ভবতি। গমনং ভোজনম্।

৩৭৮। ঠিবুসিবোর্দীর্ঘো বা। ষ্ঠীবনং ষ্ঠেবনং সীবনং সেবনম্।

র:। মেধেতি। মের মেধাহিংসরো:। তাধেতি গুধ্পরিবেটনে দিবাদি: গুধ্সংরোষে ক্রাদিঃ দ্রোরপি গ্রহণম্। মৃগয়েতি মৃগ্ অন্বেষণে চুরাদি: স্প্হাদিসাদ্গুণাভাব: বহুলবচনামিঙ্লোপাভাব:। দোলা ভোলেতি কাতদ্বমিতি ছল উৎক্ষেপণে তুল উন্মানে চুরাদিখামিঙ্।

⁽৩৭৬)। ভাবে কারকে চ বাচ্যে ধৃঞাদেকস্তরে দ্বিয়ামাণ্ ভবিতি ধারে তাদি ধৃঞ্ধারণে ঝ গতৌ ডুক্কঞ্করণে ত্ প্লবনতরণয়োঃ দূ বিদাবণে কৃঞ্ছরণে এবাং বৃদ্ধিঃ অর্থবিশেষনিয়মাদন্তর ধৃতিঃ অর্তিঃ কৃতিঃ ক্রুড্ধাতোরিজুপান্তকেন কথাদিখার বৃদ্ধিঃ। আণা বন্বাধনং ন ক্রিয়তে তেন ক্রোড়দারহারা ইত্যুপদর্শিত্ম অতএব ন না ক্রোড়মিত্যমরকোষঃ। বাচেতি বচ্ ভাষণে ভাগুরিবিতি বিক্রার্থং তেন কিপ্প্রায় ইত্যাদিনা কিপ্ দার্ঘণ্টেতি বাগিতি।

⁽৩৭৭)। ভাবে কারকে চ বাচ্যে ক্লীব এব এনট্ ভবতি কারকে ভূ কাপি বাচ্যলিঙ্গমেতটিংকরণাদেবাবগন্তব্যম।

⁽৩৭৮)। ষ্টিবু নিরসনে ষিবু তন্তুসন্তানে এতয়োও নিটি ক্লতে দীর্ষো বা ভবতি। প্যোদরাদিখাদীর্ঘমাহঃ পাণিন।য়াঃ ষ্টিবুসিব্যোদীর্ঘদেন্তি চন্দ্রক্তম্।

৩৭৯। নিত্যং ক্ঞঃ কর্ত্তরি। কারণং হেতুঃ।

৩৮০। বাচ্যলিঙ্গং কাপি কারকে চ।

একং বক্তীত্যেকবচনং রাজভিভুজ্যন্তে রাজভোজনাঃ শালয়ঃ
ছিদ্যতেহদেনেতি ছেদনঃ পরশুঃ। এবং ব্রশঙ্গঃ শাতনঃ প্রমাণং

ক্দানী সাধনী।

৩৮১। ব্যাদের্হনঃ স্ত্রিয়াম্।
বিহম্মতেহনয় বিহন ী অয়োহননী ক্রহননী সংপ্রদীয়তেহৈয়ে সংপ্রদানম্ অপাদীয়তেহস্মাদিত্যপাদানং তুফতেহস্থাং দোহনী
ঘটা।

৩৮২। কর্তুরি রমাদের্ডনঃ। রমণঃ যদনঃ দর্পণঃ জল্পনঃ বর্দ্ধনঃ।

(৩৭৯)। রুজো ওনটি রুতে দীর্ঘো নিতাং কর্ণনি বাচ্যে তবতি।
(৩৮০)। কাপি পাঠো কারকে বিহিতে ওনটি শক্ষরপং বাচালিজং
ভবতি। যনা ভাবে তনা ক্লীব এব ওনট্ একবচনমিতি। বচ্ পরিভাগণে
কর্তুরি ওনট্ রাজভোজনা ইতি ভুজ পালনাভ্যবহারেয়েঃ কর্মানি ওনট্
বাক্যোপদর্শনমেতদর্থস্থনোর্থং সমাসাহস্ত বাক্যং রাজাং ভোজনা ইতি
তথাচ যতীসমাস এবোদাহরিয়তি। এধো ব্রশ্চন ইতি ছেদন ইতি ছিদির
হৈ ধীকরণে করণে ওনট্ এবং ব্রশ্চন ইতি ওব্রশ্চুজেননে শাতন ইতি শদশাতনে প্রয়োজকে ণিও্ শদেরগতৌ শাত ইতি শাতঃ প্রমাণমিতি মাঙ্
মানে বন্ধনীতি বন্ধ্ বন্ধনে বাছ্নিদিত্যাদিনা ঈ সাধনীতি রাধ্ সাধ্ সংসিদ্ধো
এবং গায়তীতি গায়নঃ গাথক ইতি তু গায়তেম্বক ইতি থকঃ।

- (৩৮১)। বি অরস ক্র স্থাৰ ইত্যেভেন্ডা উত্তরাদ্ধস্তের স্ত্রিয়াং ভনট্ ভবতি। বয়োক্রেন্ডাঃ করণে স্তম্বাৎ মশ্চেতি প্রোপ্তস্ত ভপ্রত্যয়স্ত্র স্ত্রিয়াণ কাপনার্থং লক্ষণম।
- (৩৮২)। রমাদে: কর্ত্তরি বাচ্যে ওনো ভবতি। রমণ ইত্যাদি সমু জ্ঞীড়ারাং মুমিশ্রণে দৃপ্ হর্ণমোচনয়োঃ দ্বপ্ জন্ব্যক্তারাং বাচিত।

৬৮০ লৃত্ঞা নশ্চ ণঃ। বিশঃ সংহুর্ষণঃ সম্বর্ষণঃ সংক্রন্দনঃ ভীষণঃ।

৩৮৪। তপাদেঃ সংজ্ঞায়াম্। তপনঃ সহনঃ দমনঃ।

৩৮৫। পৌশালাদেঃ।
নদ্দনঃ বাশ্ বাশনঃ মদনঃ দূষণঃ রোচনঃ শোভনঃ বর্দ্ধনঃ সাধনঃ
চিত্তবিদ্ধাশনঃ কুলভূষণঃ কুলদমনঃ জনাদ্দিঃ।

७৮७। ভূयकूপार्था उष्टीना हात्रमार्यु गर्छमाता।

(৩৮৬.)। ভূষ অলম্বারে কুপ ক্রোধে ইত্যেবমর্থান্তচ্ছীলাচারসাধুৰু

⁽৩৮৩)। লৃঞ্ ছেদনে ইতামাছন্তরে গুনো ভবতি। নকারস্ত নকারশ্চ। লবণো রাক্ষ্যঃ রসার্থে লবণ ইতি ণছবিধানং রসার্থম্। সংহর্ষণমিত্যাদি হয়ু আলিকো রুষু বিলেখনে কদি ক্রদি আহ্বানে রোদনে চ ক্রিভী ভয়ে প্রয়োজকণিঙ্কঃ ভীম্মোরিত্যাদিনা ভীষাদেশঃ প্রত্যয়ান্তরকরণং স্তিয়ানাশ্বিধানার্থং তেন ব্যণা দর্পণা জন্পনা ইত্যাদি। ভর্ষি কথং রমণী কর্তব্যাহত্র যত্নঃ।

⁽৩৮৪)। তপাদেরুত্তরে সংজ্ঞায়াং বিষয়ে কঠরি ওনো ভবতি। তপন ইত্যাদি তপ সস্তাপে ষহ্মর্যণে দমু উপশ্নে।

⁽৩৮৫)। ণিঙি ক্তে ন-দাদেশভবে সংজ্ঞাং বিষয়ে কন্তবি বাচো ভনো ভবতি। টুনদি সমৃদ্ধী বাশ শন্তে মদী হর্ষে ছব্ বৈক্তো কচ্ দীপ্রৌ শুভ শুন্ভ শোভার্থে বৃধু বৃদ্ধো রাধ্ সাধ্ সংশিদ্ধো এভ্যো-ণিছন্তেভো নন্দন ইত্যাদয়ঃ। দ্বণ ইতি প্রীধৃছ্যামিতাাদিনা দ্যাদেশঃ। চিত্রবিনাশন ইতি নশ্ অদর্শনে। কুলভ্বন ইতি শুষ্ অলক্ষারে। কুলদমনঃ ইতি দমু উপশ্যে। জনাদিন হাত আদ্ হিংসায়াং জননামানমন্ত্র-মদি তবান্ ইতি এভাঃ কর্মণো পড়াত গড়্বাধনার্থঃ অববা সর্ক্রনঃ পুস্বার্থান্ অসৌ যাচাত ইতি অদ্ গতৌ যাচনে চ অস্ত ক্রপমিত্যুপাধ্যাদ্ব-স্ক্রম্বার্থান্ ক্রাহনহব্যবাহ্নাদয়ন্ত ছাল্সা এব ক্রিং ছাল্সা অপি ভাষায়াং প্রাক্রান্তে ইতি ভাষায়াং প্রথকাঃ অথবা তেহপ্যনেন্ব সাধনীয়াঃ।

ভূষাশীলো ভূষণঃ কোপনঃ মন্তনঃ রোষণঃ।

७५१। চলশকার্থাদকর্মকাৎ।

চলনঃ চোপনঃ কম্পনঃ শব্দনঃ রবণঃ। অকর্মকাদিতি কিম্ ?" পঠিতা বিদ্যাম্।

৩৮৮। হলাদেরদীপাদেরকর্মকাদক্ষ্নেপদিনঃ। বর্ত্তনঃ বর্দ্ধনঃ। অবিবক্ষিতকর্মত্থে—জুগুপ্সনঃ মীমাংসনঃ। অদীপাদেরিতি কিম্ ? দীপিতা দীক্ষিতা।

বর্ত্তমানে কালে কর্জরি বাচ্যে ঙনো ভবতি। শীলাচারসাধুষু বর্ত্তমানে। ইতি স্কুলনীংস্কা ইত্যতঃ প্রাগন্ধবর্ত্ততে ভূঙিবাধনার্থান্তেতানি লক্ষণানি। মণ্ডন ইত্যাদি মড়ি ভূষায়াং রুষ্ রোষে।

(৩৮৭)। চলনার্থেভাঃ শকার্থেভাঃ ধাতুভ্যোহকর্মকেভান্তচ্ছীলাদিয়ু বর্ত্তমানে কালে কর্ত্তরি বাচ্যে গুনো ভবতি। চলনমনন্তদেশবিষয়ঃ পরিস্পান্দার্থাক্রিয়াবিশেষঃ শকঃ শ্রোক্তিবয়োহর্থঃ। চলনপ্রেপন ইতি চল্
কম্পনে চুপ্ মন্দারাং গতৌ। শক্ষন ইতি শক্ষ শক্ষক্রিয়ায়াং চৌরাদিকঃ।
রবণ ইতি ক্র শকে। গতিঃ পরিস্পান্দনাৎ পৃথগিতি জবতেঃ সরতে চংক্রেমাানে পাঠঃ।

৩৮৮)। হলাদেদ্ধাতোরকর্মকাদাখনেপদিনো দীপাদিবর্জিতাভক্তীলাদার্থেষ্ কর্মর বাচ্যে বর্ত্তমানে কালে ওনো ভবতি। বর্ত্তনো বর্দ্ধন ইতি রতু বর্ত্তনে র্ধু রুদ্ধো। অকর্মকাদিতাস্থাস্থ্রতৌ প্রাপ্তায়াং যতোহকর্মকাদিতি কৃতং তদবিবক্ষিতকর্মকাদিপ ওনো ভবতীতি স্চনার্থং তেন
জ্ঞুপ্রনো মীমাংসন ইতি গুপ্ গোপনকুৎসনরোঃ মান্ পূজায়াং সন্ গুপাদেনির্দাদাবিতি শুপো নিন্দারাং মানো বিচারবিশেষ ইতি সন্ গুপাদেচ গুহ্ গ্রহোরিত্যনেন ত্যাদিখাদিওভাবঃ গুপেরস্থদাতেব্তাৎ পূর্ব্ববদন্তত ইতি আত্মনেপদিশ্বং দ্বিক্তিঃ গঘঝহাজ ইত্যনেন গস্ত জঃ।
মান্ধাতুত্বাদিরস্থদাতেব্রাদাস্মনেপদা বিক্তেন ব্যাদেরীদিতি স্কুকারঃ
অপদান্তঃস্থত্যাদিনা নকারস্থ অসুস্বারঃ। দীপিতা দীক্ষিতা ইতি
দীপী দীপ্রৌ দীক্ষ্ শৌণ্ডে। নমু দীপি নমি ক্ষি কপি হিসি কমাজস্থস্থিঙাং তচ্ছীলাদাবিতি র প্রত্যয় এব বিশেষবিহিতো ওনবাধকো বিদ্যতে
কিমর্থং দীপে: প্রতিষ্বেধঃ এত্রেবে প্রতিষেধবিধানং জ্ঞাপন্থতি বিশেষে- ्रम्ञ । यकाताखः।

কোয়িতা ক্মায়িতা আপাারিতা। অকর্মকাদিতি কিম্কু বসিতা বস্ত্রম্। উৎকণ্ঠাবর্দ্ধনস্ত তৃতীয়াসমাসেন। তথাচ, উৎকণ্ঠাবর্দ্ধনৈঃ শুক্রা রবণৈরম্বরং তুতমিতি ভট্টিঃ।

৩৯০। সূদঃ সকর্মকাৎ। মনুসূদনঃ বলনিসূদনঃ।

७৯)। हरक्यारिकः।

চংক্রমণঃ কুটিলগতিশীলঃ দংদ্রমণঃ জুং সোঁত্রো ধাতুঃ জ্বন: স্ গতে সরণঃ জ্লনঃ শোচনঃ গৃধু অভিকাজ্ফায়াং গর্দ্রনার্কান্ত্রো ল্মণঃ প্তনঃ পদনঃ।

পাপি দামান্তং বাধাতে ন ৰুচিং ক্লুকীতি অতএৰ কমা যুবতিঃ কমনা যুবতিঃ কমা শাখা কমনা শাখা ইত্যানাপি ভবতি ।

(৩৮৯)। যকারাস্তো ধাতুর্দীপাদিভনতি কর্তুরি বাচ্যে। ক্লোয়িভা কুয়ী শদে স্থায়ী বিধননে। আপ্যায়িতেতি আঙ পূর্ব ক্ষায়ী প্রায়ায়ী বৃদ্ধে বিদ্ধাননে। আপ্যায়িতেতি আঙ পূর্ব ক্ষায়ী প্রায়ায়ী বৃদ্ধে বিদ্ধাননে আদাদি: যদাকর্মাজাদেব ভনঃ কথামুংকঠাবদ্ধন ইতি বাভোহস্তভাবিণ্যথোহস্পাক্রিয়তে এব তেন সক্ষাক্রস্ত রুধোঙ নাস্তেন কর্মাবিহিত্যপ্রাস্তেন সমাসঃ অত আহ উৎকর্থাবদ্ধিন-ক্রিলাদি তৃতীয়ায়্রস্তৈব স্চ্রিতুমাহ তথাকেত্যাদি উৎকর্পয়া বৃদ্ধিনীলৈরবেরিভায়নেবার্থ ইতাভিপ্রায়ঃ এবমস্তভাবিণার্থতাপি নাস্নাক্রিয়তে এব। হলাদেবিতি কিম্ গ এধিতা। আয়ায়নপাদন ইতি কিম্ গ ভবিতা। যদ্যপায়নেপদিন ইতি সামান্তেনোক্রং তথাপি অসুদাত্তেত এব গৃহীতবাঃ প্রথমাদিইছেন মুগাছান্তেন শীঙাদৌ ভনো ন ভবিতি দি

(৩৯০)। ষদ্ ক্ষণনে ইত্যস্মাং সক্ষাকাদ্ধাতোকত্তরে ভচ্ছীলাচা-বদাধুষু বর্তমানে কালে কর্ত্তরি বাচ্যে গুনো ভবতি। সক্ষাকাদিতি কিম্ ? দিতা।

(৩৯১)। চংক্রন্যাদেরভরে ভচ্ছীলাচারদাধুরু বর্তমানে কালে কর্ত্তরি বাচ্যে গুনো ভবতি। চংক্রমণা দংক্রমণ ইতি ক্রমু পাদবিক্রেপে দমু জুমু ৩৯২। স্থত্নবিস্ত্যঃ কর্মভাবয়োদৃ শাদেঃ।

হৃষ্ঠ ুদৃষ্ঠতে হৃদর্শনশ্চক্রং চুর্দ্ধনঃ হুর্ম র্যণঃ চুংশাসনঃ চুর্য্যোধনঃ ।

৯০। দৃশাদেবে ত্যেকে।

তুর্ন বি: তুর্দ বি:। তথাচ চণ্ডী, তুর্ম বিদ্যনোজ্জনেতি।

७৯8। अमतिप्रामखाः।

ञ्चानः छ्रमानः इष्मानः। अमृतिद्विष्ठि किम् १ नेशम्बित्वः।

হমু হম্মী প গতো গতার্থালগতিকোটালো ইতি যন্ লিকজিঃ জপ্ জডেতাদিনা অনুস্থারঃ চংক্রম্য দংক্রম্য ইত্যমাৎ ওনে কতে কদচি যন্ল্পিতামিতি যন্ল্ক্ জুং দোত্র ইতি প গতাবিতি গতৌ গতিবিশেষহেতৌ বেপে বা বর্ততে। জলন ইত্যাদি জল্ হুল্ জাল্ সংচলনে শুচ্ শোকে শল্ ছল্ পতু গতৌ পদ্ গতৌ পদ্পতোর্গমাদের ক ইতি পুকোহিপি ভবন্ধি পাতৃকং পাহকং অত্র চ যং চংক্রম্য প্রভৃতিষু চলনার্থপ্রস্তু পূর্কক্ত্রেণ নিছেঃ সক্ষাকার্থং পাঠঃ তেন চংক্রমধাে গ্রামস্ভেতাাদাপি ভবতি। চংক্রম্য জল

(৩১২।৫৯)। স্থ জুর ঈষং ইত্যেতেন্ডা উত্তরাৎ দৃশাদেরভরে কর্মণি ভাবে চ বাচ্যে গুনো ভবতি। স্বদর্শন ইত্যাদি দৃশির প্রেক্ষণে ক্রিব্রা প্রাগলন্ডো মৃষ্ তিতিক্ষায়াং শাস্ত্র অন্নপ্রে) মৃধ্ সংপ্রহারে। দৃশাদেবে ত্যেকে ইতি। তুগাচ কাতন্ত্রত্বং, শাস্ত্র মৃধি দৃশি ধৃষি মৃষাং বেতি।

্ ১৯৪ । স্থ ছর্ ঈষং ইত্যেতেতা উত্তরাদ্ধরিদ্রাবাতিরিক্তাদাকা-রাষ্ট্রদ্ধাতোরুদ্ধরে ভাবে কর্মণি চ বাচ্যে এনো ভবতি। স্থান ইভি ভূদাঞ দানে ভূপাণ ইতি পা পানে ঈষ্দ্রিদ্র ইতি স্কুচুরীষ্ট্রাঃ কর্মণি চেতি ৪৯। ৩৯৫। শ্রন্থান্বিদ্বন্দ ঘট্ণান্তাৎ স্ত্রিয়াং ভাবাকর্তৃ-কারকর্যাঃ।

শ্রস্থ মোচনপ্রতিহর্ষণয়োঃ শ্রস্থনা আসনা বেদনা বন্দনা ঘট্টনা। তথাচ, বৃহচ্ছিলানিষ্ঠু রক্ষ্ঠিঘট্টনেতি মাঘঃ। ভাবনা কীর্ত্তনা।

৩৯৬। ই**ং**বা গবেষণে। অস্বেষণা।

ু ৩৯৭। পরের্বা। পর্য্যেশা পরীষ্টিঃ।

৩৯৮। নগাস্ধাতাস্থলপলিতপ্রিয়ন্তগাৎ কর্মণঃ কুঞোহভূততদ্ভাবে করণে থঙ্নট্। অন্যা নগাং কুর্বস্তানেন নগাংকরণং দ্যুতম্ অস্কংকরণং

- (' ৯৫)। শ্রন্থানের গোরি বির্থান কর্নির তার্থক বির্থান কর্নির ভারে কর্নির তার্থক বনং চ রিয়াং বিরয়ে ভনো ভবতি। শ্রন্থ নোচন প্রতিহর্ষ পরোরি তার্থক বনং এর এর সংদর্ভে ইতাস্থ চৌরাদিক স্থা গ্রহণার্থাং গান্তবাদের তন্মাৎ ভন-বিন্ধানে আন্টিপবেশনে বিন্ধানে বিন্ধানে ইতি ভাূদিঃ চুরাদের পিঙস্করাদের ভনে প্রাপ্তে এবানা দনেত্যাদির পন্। ভাবনা করিনা ইতি ভূদ ভারাং ভূপ্রাপ্তাবিতি বা ক্ত সংশব্ধনে পিঙস্কাৎ ভনঃ আন্তেতি পক্ষে ভব নীতি পূর্মনে বাক্তম্।
- (৩৯৬)। ইষ্ধাতোকজনে গবেষণেহর্থে ক্রিয়াং বিষয়ে গুনো ভবতি।
 আন্বেশা ইতি ইষু গতৌ ইয়ু আভীক্ষো ইতি বা আনয়োরেবামূপূর্বয়োপবেষণার্থজন্। গবেষণ ইতি কিম্ । অনিষ্টিঃ ইষু ইচ্ছায়ামিত্যশু রূপম্।
 (৩৯৭)। পরেক্তর্রাদিষ্ধাতোর্গবেষণে বাচো স্তিয়াং বিষয়ে
 ধনো বা ভবতি।
- (৩৯৮)। নগাদেকজরাৎ কর্মণ উত্তরাৎ করেতেরভূততভ্ঞাবে করণে বাচ্যে থঙ্নড় ভবতি। নগ্নংকরণমিতি থিতানবায়াদিত্যাদিনা অম্। অভূততভাব ইতি কিম্? আচাং তৈলেন কুর্বস্তি ন ছসৌ প্রাসনাচাঃ তৈলেনাঢাঃ ক্রিয়তে। কিং তিই স্লাচ্য এব তৈলেনাভাজাতে

তমঃ আঢ়াংকরণং সূলংকরণং পলিতংকরণং প্রিরংকরণং, স্ভগংকরণম্। ওনটা তু। নগ্রীকরণং ন ভবতীতি জ্যাদিত্যঃ।

৩৯৯। উক্তলিঙ্গেডরো ভাবে ক্লন্তদ্ধিতো নপুংগকে। গঙং বিপ্রেণ যৌবনং বর্ত্ততে।

৪০০। কর্মকর্ত্বে দ্লিমক্।
কর্মকর্ত্রি বাচ্চে ধাতোরুত্রে এলিমগ্ভবতি। পচেলিমাঃ
মাবাঃ স্বয়মেব জিয়েলিমাঃ ক্রোধাঃ স্বয়মেব উপেলিমাঃ পটাঃ
স্বয়মেব।

৪০১। ক্রিয়ার্থাথাতুম্ঙ্ ভাবে ভবিষ্যতি। ক্রিয়ার্থঃ ক্রিয়াপ্রয়োজনমর্থো যক্ষ তন্মান্ধাতোরুত্তরে ভাবে ভবিষ্যতি কালে তুম্ঙ্ভবতি। ভোক্তঃ ব্রজতি।

শ্বনেকার্থনাদ্ধাতৃনাং করোতিরভাঞ্জনে বর্ত্তে। ফ্রনা অভ্ততন্তারে চি প্রত্যয়ো বিধীয়তে তদা তেনৈব তদর্থস্থাভিহিতত্বাৎ পঙ্নটা ন ভবিত্রাং করণবিহিত্তেন গুনটা ভবিত্রামেব। নশ্বীকরণমিতি ভাষ্যকারমতন্দ্রাপ্রত্য এতদেবাত্র ব্যবস্থিতং গুনটা বিত্যাদি জ্ব্যাদিত্যমতমুপক্তস্থং নশ্বীকুর্বস্তানেনেতি বাক্যমেব ভবতীতি তন্মতম্।

- (৩৯৯)। যৌ ভাবে বিহিতৌ ক্রন্তনিতো যদি উক্তলিঙ্গাদিতরে অনুক্রলিঙ্গো ভবতস্তদা নপুংসকে বর্ত্তে। গতং বিপ্রেণেতি ভাবে বিহিতঃ ক্রঃ কিন্তু লিঙ্গং তত্রামুক্তম্। উক্তলিঙ্গেতরাবিতি কিম্
 পূংসি বণ্ কারকে চেতি ভাবে বণি পাকঃ। ক্রিঃ স্ত্রিয়ামিতি ক্রেণ ভৃতিরিতি। বৌবনমিতি প্রাণিজাতিবরোবাচ্যুদগাত্রাদের্ণজ্ঞিতি গট্ অয়মপি ভাবে বিহিতস্তন্ধিতোহনুক্রলিঙ্গো নপুংসক্মিতি।
- (8°°)। পচেলিমা মাবা ইতি ডুপচ্ব্ পাকে স্বয়ং পচাস্ত ইতার্থ: জিয়েলিমা ইতি জি জ্বে ফুদ্ধাতুরিত্যাদিনা ইয়্ উপেলিমা ইতি ড্বপূ বীক্তস্ত্রসন্তানে কিদাশীর্ল্যোদিনা বপ উপ:।
- (৪০১)। ক্রিয়াপ্রয়োজনমর্থো যভেতি ক্রিয়ারাঃ প্রয়োজনং ক্রিয়াপ্রয়োজনম্। যত্দিশ্র ক্রিয়া প্রবর্ততে তত্ততাঃ প্রয়েছনম্।

8०२। छानि ভियुं कानिक यार्थार्था छ।

ভোক্ত কানতি শকোতি ধ্যোতি উৎসহতে ইত্যত্ৰ প্ৰাবীণ্যং গামতে। এবং ভোক্ত প্লায়তীত্যত্ৰাশক্তিঃ। ভোক্ত ঘটতে অইতীত্যন্ত্ৰ যোগ্যতা ভোক্ত প্ৰক্ৰমতে আৱভতে ইত্যত্ৰ ভোকনাত্যবন্ধা। ভোক্ত নি লভতে ইত্যত্ৰ প্ৰত্যাখ্যানম্। বিপ্ৰেণ ভোক্ত ধনমন্তি কিঞ্ছিবতি বিদ্যতে ভোক্ত পাৱয়তি পৰ্যা-প্লোত ভালং প্ৰভুঃ সমৰ্থঃ।

৪০০। অনভিধানাদপরিপূর্ণতায়াং ন•স্থাৎ।
শক্তা৷ ভুঙ্কে সামর্থােন ভুঙ্কে ইত্যর্থঃ। জ্ঞা শক্
ধৃষ্ সহ্ গৈ ঘট্ অর্হ ক্রমু রভ্ লভ্ অস্তার্থঃ শক্তার্থঃ।

ভোক্তু ব্ৰন্ধতীত্য ব্ৰন্ধনিয়ায় প্ৰয়োজনং ভোজনং তচ্চ ভূজিধাতোবৰ্ধস্তস্থাৎ প্ৰত্যন্তবিধানম্। অবিশেষাদক্তক্ৰিয়াৰ্থাৰ্থাদিপি ভবতি। রাজে।
ভোক্তুং মাৰমাহরভি। বিশেষেণাপি সামান্তং বাধ্যতে ন ৰুচিৎ কৃতীতি
ভাবে বিহিতা ঘণাদয়োহপ্যত্ৰ ভবস্তি পাকায় ব্ৰন্ধতি ভূক্তমে ব্ৰন্ধতি ভোজনায় ব্ৰন্ধতীত্যাদি।

(৪০২০৪০০)। জ্ঞাদিভিবৃক্তাদক্রিয়ার্থার্থাক্ত ধাতোর জরে ভাবে করিয়াতি কালে তুন্ত্ ভবতি। জ্ঞানাতীত্যাদি জ্ঞা অববোধনে শক্ শক্তো স্থাদি: নতু শক্ মর্ধণে দিবাদি: ক্রিয়্য়া প্রাগল্ভো ইতি স্থাদে: সহচর্যাৎ ষহ্ মর্ধণে মৈ হর্ষক্ষয়ে ঘট্ চেপ্টায়াং অহ্ পূজায়াং ক্রম্ পাদ-বিক্ষেপে রভ্ রাভস্তে তুলভষ্ প্রাপ্তে)। অন্তার্থ ইতি অস্ ভ্রি ভূ সন্তায়াং বিদ্ সন্তায়াম্। শক্তার্থ ইতি শক্ শক্তো পার তীর কর্মমাপ্তে) পরিপূর্ক্র আপু ব্যাপ্তে) এতে ধাতর: শক্তার্থগ্রাতা দ অলংপ্রভূসমর্থাদয়ো জ্ঞাদয়ঃ। ক্রিয়ার্থার্থাৎ পূর্কেণের নিদ্ধেহক্রিয়ার্থার্থমেতিরিধানমিতি লভ্যত এব তথাপ্য-ক্রিয়ার্থার্থাদিতি কতং স্পন্তার্থম্। প্রক্রমত ইতি প্রোপাভ্যামারত্তে ইতি আয়নেপদম্। বিপ্রেণ ভোক্তং ধনমন্তি কিঞ্চিদিতি ভাববিহিত্তন তুম্ঙা বিপ্রস্থাক্তম্বাৎ কর্তুরি ভূতীয়া অন্তীতি ক্রিয়্য়াধনমিত্যক্তম্। অনভিধানাপরিপূর্ণগ্রাং ন স্থাণিতি ক্ষপরিপূর্ণতা ন্যুনতা তত্তাং গ্রমামানায়াং

৪০৪। ইচ্ছার্থৈরেককর্ত্বির্লিঙ্চ। ইচ্ছতি ভোক্তম্ ইচ্ছতি ভুঞ্জীত ইত্যাদি। অনভিধানাদিচ্ছন্ করোড়ীতাত্র ন স্থাৎ।

৪০৫। কৈ ককৰ্তৃকয়োঃ প্ৰাক্ষালে। এককৰ্তৃকয়োৰ্ধান্ধোঃ প্ৰয়োগে প্ৰাক্ষালে বৰ্ত্তমানাদ্ধাভাকতকে ক্ৰ্বা ভবতি। ভুক্ত্বা ব্ৰজতি।

শ জ্যর্থযুক্তান্ত্ম ভ্ৰত্যনভিধানাং। অর্থাদ্যত্র সামর্থান্থ পরিপূর্ণতা গমাতে তত্র বিধিঃ। শক্তা ভূঙ্কে ইত্যত্র পরিপূর্ণতা ন গমাতে শক্ত ধাতোস্ক গণপাঠোহপরিপূর্ণতার্থ এব শক্ষোতি ভোক্ত্রুং শনৈঃ অন্তথা শক্ত্য-র্থেনের সিদ্ধেঃ।

(৪০৪)। ক্রিয়ার্থার্থাদিত্যনেন প্রাপ্তস্তম্ভ্ ইচ্ছার্থোপপদেকামপ্রবেদনে লিঙ্লোটাবিত্যনেন বাধিতস্তম্বাধনার্থং লক্ষণম্। বিশেষবিহিতস্বাধকোহ-পানেন বাধিতঃ। ইচ্ছার্থেরেকক ইকে নুক্তান্ধাতাক্তরে তুম্ভ্ ভবতি লিঙ্চ। ইচ্ছার্থপ্রস্থা যঃ কর্তা দ এব যগপি ভূজ্ধাত্মপ্রাপি ভবতি তদৈবেকছার্থ ইস্তকক ইকতা। ইচ্ছতি ভোক্তানিতি ক্রিয়ায়য়য় এক এব কর্তা। একক ইকেরিতি কিম্ ? দেবদত্তঃ পুত্রং ভূজানমিচ্ছতি ইচ্ছা মে ভূঙ্কাং ভবান্। অনভিধানাদিচ্ছন্ করোতীতাত্র ন স্তাদিতি ন হার তুম্ভ্ উংপাছমানেন বিবন্ধিতোহর্থঃ শকান্তে বক্তাম্ অনভিধানলক্ষণার্থশ্য কর্তা। অথবা অনভিধানাদিতি ইচ্ছন্ কর্ত্মিত্যম্ভাভিধানস্তাভাবাদিতার্থঃ। লোক প্রসিদ্ধানাং হি শকানাং শাস্ত্রেণার্থায়ানং ক্রিয়তে ন ভিচ্ছন্ কর্ত্মিত্য বাদের লোকে প্রসিদ্ধান ক্রেণার্থাথায়ানং ক্রিয়তে ন ভিচ্ছন্ কর্ত্মিত্য বাদের লোকে প্রসিদ্ধান ক্রেণার্থারিতি তিঙ্পাদ এবাক্সম্।

(৪০৫)। ধাতুগ্রহণমত্র ক্রিরোপলক্ষণং তস্তামেবৈককর্তৃকত্বসম্ভবাৎ এক-কর্তৃকয়োরিতি শক্তিশক্তিমতোর্ভেদস্থাবিবক্ষিতত্বাল্লোকপ্রসিদ্ধ্যোক্তং শাস্ত্রে ছু শক্তিং কারকমিতি ব্যবস্থিতং সা চ শক্তিনি ত্যা পরোক্ষা কার্য্যসমধিগম্য। রুজিশক্তিরপান্তা ব্রজিশক্তিরপান্তা তয়োরাশ্রমন্ত শক্তিমতঃ একত্বাৎ কর্ত্তা-প্যেক উক্ত ইতি। স্থত্রে বিশ্ববচনমতন্ত্রমিতি এককর্তৃকানামপি প্রয়োগে ভবতি। স্নাত্থা পীত্বা ভূক্বা ব্রজতি উত্তরোত্তরক্রিয়াপেক্ষ্যমত্র প্রাক্তালত্বম্। ৪০৬। কচিদপ্রাকালেহপি। উদরং প্রায়িত্ব। ভূঙ্ক্তে ঠাদিতি কুত্বা পততি কংসঃ। মুখং ব্যাদায় স্বপিতি চক্ষু: সম্মীল্য হসতি।

৪০৭। কচিৎু স্থিতাদিপদাধ্যাহারেণৈককর্তৃকতা। অপ্রাপ্য নদীং পর্বতঃ অতিক্রম্য যৌবনং বাল্যং স্লাম্বা স্থমুৎ-পদাতে। মৎপ্রসৃতিমনারাধ্য প্রক্রেতি যাং শশাপ সা ইতি রযুঃ।

গ্রামং গদ্ধা গচ্ছতীতাত্র ব্যক্তিভেদাৎ প্রথমা গতিক্রিয়াপ্যস্তা দিতীয়া গতি কিয়াপ্যস্তি। ভূক্ত্বেতি চজাঃ ক ইতি জন্ত কঃ। এককর্ত্কয়োরিতি কিম্ ? ভুক্তে ব্রাহ্মণে ব্রজতি শৃদ্ধঃ। প্রাক্ষাল ইতি কিম্ ? ব্রজতি চলয়তি চ।

(৪০৬।৪০৭)। এককর্তৃ কয়োধ ব্রাণ্ড প্রয়োগেহপ্রাক্তালেহপি বর্ত্ত-মানাদ্ধাতোরুন্তরে কচিৎ ক্রা ভবতি। উনরং পুর্যান্তা ভুঙ্কে ইতি ভোজনানস্তরমুদরপূরণাৎ পূরণক্রিয়ায়া অপ্রাকালয়ং প্রাকালে বিহিতং জ্বাপ্রতায়ং বাধিক। বিধানমেতদিতি ভূজিধাতোঃ জ্বান ভবতি। এবং সর্কোদাহরণেযু বেদিতবাম্। অপরস্থাহ অত্যাপি প্রাক্কাল এব জ্ঞা তথাহি উদরপূরণানস্তরং যদবশিষ্টং ভোজনং স এবাত্র ভূজিধাতো-ঠানিতি ক্রমা পততীত্যমাপি ঠাৎক্রণান্তবং যা পতন্ত প্র-ম্পরা সা পতনক্রিয়য়ভিণীয়তে মুধং ব্যাদায় স্থপিতীত্যালাবপি ম্থব্যাদা-নানস্তরং যদবশিষ্টং কালশয়নং ভত্তচাতে। যভেককওুক্রোঃ ক্ত্রাপ্রভায়ঃ কথং অপ্রাপ্য নদীং পর্মত ইন্ডাদৌ এককত্ত্রকয়োঃ ক্রিয়য়োরভাষাৎ তথায়ত্র ক্রিয়য়া অপরয়া নছা য়ে। ২য়োগন্তদিশিষ্টঃ পর্বতঃ প্রতীয়তে। অতিক্রম্য যৌবনং বালামিত্যত্রাপ্যবধীরণেন যৌবনেন যোহযোগঃ তদ্বিশিষ্টং বাল্যং বিভাব্যতে। স্নামা স্থমুৎপদ্মতে ইত্যত্র স্নানক্রিয়াযাঃ পুরুষঃ কর্তা উৎপত্তিকিয়ায়াণ্ড স্থবম্ । মৎপ্রস্থতিমনারাধ্য ইত্যত্রাপানারাধনকিয়ায়াঃ নুপঃ কন্তা ভবিষ্যতি ক্রিয়ায়াণ প্রশা কন্তা অত আহ কচিৎ স্থিতাদীত্যাদি অপ্রাপ্য নদীং পর্বত ইত্যত্ত স্থিত ইত্যধ্যাহ্রণীয়ম। তদা চাপ্রাপ্তিক্রিয়ায়া ক্ষমস্থান ক্রিয়ায়াশ্চ এক এব পর্ব্ধতঃ কর্ত্তা ভবতি। অতিক্রম্য যৌবনং ৪০৮। নিষেধার্থালং খলুযুক্তাদ্বা। অলং ভুক্ত্বা অলং ভোজনেন খলু ভুক্ত্বা খলু ভোজানেন ন ভোক্তব্যমিত্যর্থ:।

৪০৯। মেঙো ব্যতীহারে। দ্ব অপমায় যাচতে। অপমাতৃং পরিবর্ত্তয়িতৃং যাচত ইত্যর্থঃ। বেতাসুবর্ত্তে যাচিত্বা অপময়তে।

৪১০। মিশ্চ যচি। অপমিত্য অপমায়।

বালামিতাত্রাপ্যপালস্তোক্তো বর্ততে ইত্যধাহরণীয়ন্। তথাই অত্রাতিক্রনগায়া বর্তনিক্রিয়ায়া তবালামেব কর্তৃ অত্রব এককর্তৃকতা। স্নাত্রা স্থমুৎপ্রতে ইতাত্রাপি স্নাত্বা স্থিতস্তেত্যধাহার্যান্। এবং নংপ্রস্তিক্রনারাধ্য ইত্যত্রাপি ভ্রত্বান।

- (৪০৮)। নিষেধার্থাভ্যামলংখলুশকাভ্যাং যুক্তাদ্ধাতোরুত্তরে জ্বা বা ভবতি। অলং ভোজনেনেতি ভাবে ওনট্ ন ভোক্তবামিতানেন নিষেধা-থতাং ব্যাচকার। কর্মোপাদানেহপি ভাবে প্রত্যয়ো ভবতীতি পূর্কমেব স্চিতমন্তি অতঃ খলুক্ত্বা খলু বাচিকমিতি আলপ্যালমিদং বিশ্রোর্থং সদারানপাহরদিতি বাচিকং ন বক্তব্যমিত্যর্থং। ইদং নালপনীয়মিতার্থঃ। খাদিখাং বাচিকমিত্যক্ত ন ষষ্ঠী কর্ত্তরি তু তৃতীয়া। তদলং প্রতিপক্ষমুদ্ধ-ভেরবলস্থ্য ব্যবসাস্ক্রবদ্ধাতামিতি ব্যবসায়বদ্ধাতা নাবলংনীয়েত্যর্থং। নিষেধার্থ ইতি কিম্? অলক্ষার: ভাবে ঘণ্ অত্রালংশকে। ভূষার্থং।
- (৪০ ন)। মেঙ্ প্রৈণিদানে ইত্যন্ত্রাৎ ব্যতীহারেহর্থে বর্ত্তমানাৎ জ্বাপ্রত্যয়ো ভবতি। ব্যতীহারো বিনিময়ঃ পরিবর্ত্তনমিত্যর্থঃ। অপমায় যাচতে ইতি যাচনক্রিয়াত্র প্রথমা পশ্চাৎ পরিবর্ত্তনক্রিয়েত্যপ্রাক্তালার্থং বচনম্। অনেন প্রাকাশে জ্বাবাধনাৎ যাচতেন ভবতি।
- (৪১•)। মেঙো যচি পরে মিশ্চ ভবতি। চকারো বিকল্পার্থ:। অপ-মিত্যেতি যচি ম্যাদেশে ক্লতে তুক্।

৪১১। ন যদ্যুক্তাদনাকাৎক্ষবাক্যে।

যদয়ং ভূঙ্ক্তে তং পচতি যদয়মধীতে তচ্ছ্ণোতি। অনাকাজক

ইতি কিম্ ? যদয়ং ভুক্ত্বা ব্ৰজতি নূনং পঠিষ্টি।

৪১২। ণশ্বভীক্ষ্যে।

আভীক্ষ্যে বিশিষ্টেছর্থে কর্তমানান্ধাতোরুত্তরে ক্ত্বা ণম্ বা ভবতি। ভোকাং ভোকাং ত্রজন্তি ভুক্তবা ভুক্তবা ত্রজন্তি প্রভোকাং প্রভোকাং প্রভুদ্যা প্রভুদ্যা।

৪১৩। অপগুরের্ণম্পেগার্বা। অপগোরমপগোরম্ অপগারমপগারম্।

৪১৪। পূর্বাদেঃ।

পূর্বদর্যোগে ধাতোরুত্তরে জ্বাণম্বা ভবতি। পূর্বং ভোজং বজতি পূর্বং ভুক্তা অগ্রে ভোজং অগ্রে ভুক্ত্বা ভোজমগ্রে বজতি প্রথমং ভোজং বজতি প্রথমং ভুক্ত্বা এমনভিধানাদ-সমাসঃ।

⁽৪১১)। যচ্ছক্ষযুক্তাদ্ধাতোরক্তরে ক্র্বান ভবতি অনাকাজ্যে বাকো বাচ্চো। যত্র পূর্বোত্তরক্রিয়ে নাপরং কিঞ্ছাক্যমাকাজ্যক্তঃ।

⁽৪১২)। ভূক্বা ভূক্বা ব্ৰজতীতি পদস্তদাকল্যানীক্ষায়েরিতি ধিক্তিঃ। ভোকং ভোজমিতি গমন্তমভিহিতেহপ্যানীক্ষ্যে ইতি দ্বিক্তিঃ। প্রভূজা প্রভূজা ইতি গমা তাক্তে পক্ষে যচ্।

⁽৪১০)। অপপূর্বপ্র গুরী উভমে ইতান্ত গমি পরে অপগারাদেশো বা ভবতি। অপাদ্গুরের্ণমি গার্কেতি ন কতং বৈচিত্রার্থম্। উক্তরৈরপি য়োগৈনি কতেহন্ত বিধানম্। অশ্বাপগারমিতাত দ্বিতীয়াক্তন্ত চেতি শৃম্।

⁽৪১৪)। নিশ্চিতকালয়ত্তিনা প্রথমশক্ষেন সাহচর্যাৎ আগ্রেপৃর্বাবিপি কালমৃত্তী গৃহেতে তেন দেশদিগ্রত্ত্যোন ভবতীতি। প্রভোরত্ত্রে ভূক।

৪১৫। কর্ম্মণ আক্রোশে কুঞঃ থিদ্বচ্চ।

চৌরংকারমাক্রোশতি চৌরং কুসা চৌরোহসীত্যুক্ত্বা আক্রোশতীত্যর্থঃ। করোতিরত্র ভাষণার্থঃ।

826। स्राहर्शामनीशाए।

সাহংকারং স্বাহুং কৃষা লবণংকারং লবণংকৃষা মিন্টংকারং মিন্টং কৃষা সম্পন্নংকারং সম্পন্নং কৃষা। অদীর্ঘাদিতি কিম্ ? সাদূ-কৃতা সাদ্বীকৃতা।

রজতি। এখনভিধানাদসমাস ইতি তরিমিত্তোপপদস্থ চেতি প্রাপ্তাবিতি শেষঃ।

(৪১৫)। কর্মণ উত্তরাৎ করোতেরাক্রোশে গমামানে জ্যুণন বং তাৎ স চ থিৰন্তবিত। চৌরংকারমিতি কর্মণো গমামেন ক্যুণ কিনিমিত্রাং কিনিজোপপদস্থ চেত্যনেন সমাসে ক্রতে থিল্লভিনেশাৎ থিতীত্যানিনা মং। চৌরংকারমিতাস্থ কথং চৌরোহসীত্যুক্যু অর্থব্যাকারঃ ক্রতঃ ইতাত আহ করোতিরত্র ভাষণার্থ ইতি এতেনৈব চৌরশক্সাপি শক্পদার্থকতা হচিতা নহর্থপদার্থকতা অত এব চৌরোহসীত্যুক্ত্যু আক্রুশ্তেন ত্রুণি চৌরং ক্রিয়তে।

- 8১৭। গতার্থাৎ কথমিত্থমেবমন্যথাভ্যঃ। কথংকারং ভূঙ্ক্তে কথং কুত্বা কথং ভূঙ্ক্ত ইত্যর্থঃ। গতার্থাদিতি কিম্ ? অস্থা কুত্বা শিরো ভূঙ্ক্তে।
- ৪১৮। যথাতথাভ্যামস্য়াপ্রতিবচনে।
 যথাকারং ভুঙ্ক্তে কিং তবানেন যথা কৃষা তথাকারং তথা কৃষা।
 অস্য়াপ্রতিবচন ইতি কিম্ থথা কৃষা ভোক্ষ্যে তথা দ্রক্ষাসি।
 গতার্থাবিত্যেব। যথা কৃষা শিরো ভোক্ষ্যে কিং তবানেন।

⁽৪১৭)। কণ্মিথ্মেবমন্তথা ইন্ত্যেতেভা উত্তরাৎ ক্রঞো গতার্থাছত্তরা জ্বা গম্ বা ভবতি। ক্রিয়াসামান্তবিচনোহয়ং করোতিঃ কথমাদিভিঃ
সম্বন্ধে ক্রিয়াসাম গ্রন্থ প্রকারমাচপ্তে বিশিষ্টক্রিয়াস্চনানাং ভুজাদিনাং
প্রত্যাসত্তা তৎপ্রকার এবাবতিষ্ঠতে। যথা ছাবিতি দ্বিদ্বসামান্ত্র্তনা
দিশকো বি প্রাবিতাশ্র সামানাবিকরণ্যে বিশিষ্টসংখ্যায়াম্বতিষ্ঠতে। গতার্বতা তু ক্লেলা বিনা করোতিনা বিশিষ্ট্রধাত্প্রয়োগাদেব তদ্থাবগতেঃ।
স্থা বিপ্রাবিত্যাত্রেব ছাবিত্যশু অর্পপ্রতাতিঃ। অত্তর্রব কথংকারং ভুঙ্কে
ইত্যত্র ষোহর্থঃ প্রতীয়তে স এব কথং ভুঙ্কে ইত্যত্রাপি। নমু বিশেষক্রিয়ামের হি নির্বর্ত্তরম্ সামান্তক্রিয়ামপি নির্বর্ত্তরতীতি কথং প্রান্তার স্ট্রে
উচ্যতে—অস্মাদের বচনাদপ্রকাশেহপি জ্বা। অন্তথা কৃত্য শিরো ভুঙ্কে
ইতি অন্তথেতানেন শিরসঃ প্রকার আখ্যায়তে স বিনা করোহিনা ন প্রতীন্
য়তে ইত্যতো ন গতার্থতা।

⁽৪১৮)। যথাতথাভ্যাং শব্দাভ্যামুত্তরাৎ করোতের্গতার্থাৎ জ্বা গম্ বা ভবতি অংরাপ্রতিবচনে গম্যমানে। অস্বর্জা প্রতিবচনং প্রত্যুত্তরম্ অস্বরাপ্রতিবচনং কথময়ং ভূঙ্জে ইতি কন্টিং পৃটঃ অস্বর্জা প্রতিবক্তি যথাকারং ভূঙ্জে কিং তবানেন ইতি কথং কথা ভূজাতে ইতি প্রশ্নে প্রতিবক্তি যথাক্তমা শিরো ভোক্ষ্যে তথা দ্রক্ষ্যমীত্যক্র স্বর্জ্ঞপান্ধ্যানমেত্রং।

৪১৯। সাকল্যে দৃশ্ বিদঃ।
কথাদর্শং বরয়তি কথাং কথাং দৃষ্ট্বা বরয়তীত্যর্থঃ। বিপ্রবেদং
ভোজয়তি বিপ্রং বিপ্রং বিদিয়া ভোজয়তীত্যর্থঃ। সাকল্য ইতি
কিম্ ? বিপ্রাং দৃষ্ট্বা ভোজয়তি।

৪২০। পুরেশ্চর্ম্মোদরাৎ।

চর্ম্মপূরং দদাতি চর্ম্ম পূরয়িয়া উদরপূরং ভুঙ্ত্তে উদরং পূর্য়য়য়া।

8২১। উল্লোপশ্চ বা বৃষ্টিমানে। গোম্পদপূরং বুষ্টো দেবঃ গোম্পদপ্রং গোম্পদং পূর্য়িত্বা।

⁽৪১৯)। সাক্ষল্যে বর্ত্তমানাংশ কর্মণ উত্তবাদ্যান্থি দেশত জ্বা গম্বা ভবতি কল্পাং কন্যাং দৃষ্ঠ্বা বর্মতীতি পদন্তিবুত্যাদিনা দ্বিশ্বজিঃ কল্পাদর্শং বর্মতীতি অত্র গমৈব সাক্ষল্যং গোতিতমিতি ন দ্বিশ্বজিঃ সর্কাঃ কল্পাদ্ধ্বা বর্মতীতি অত্র গমৈব সাক্ষল্যং গোতিতমিতি ন দ্বিশ্বজিঃ সর্কাঃ কল্পাদ্ধ্বা বর্মতীত্যর্থঃ বিদিম্বা বিশ্বা বিশ্ব ইত্যিতমোরনিজ্যোশ্চাত্র গ্রহণমিতি স্থাতিত সানাল্যগ্রহণেহপি নতু বিদ্ স্তামামিতাল্য তল্পাকর্মকর্মেন কর্মোপপদাভাবাং। তথাচ জ্মাদিত্যেনোজং—যং যং জানাতি শভতে বিচারম্ভি বা তং তং সর্বাং ভোল্যতীত্যর্থঃ।

⁽৪২০)। পূরী আপ্যায়নে ইতি প্রয়োজকণিঙজো নিদি টঃ অণিঙন্তজা-কক্ষকরাং। চম উদর ইতোতাভ্যা কর্মভামুত্তরাং পূর্য়তেঃ জ্বা ৭ম্ বা ভবতি। চমেতি হল চামোলুগিতাম্লুক্ নোনাস্তস্যেতি নলুক্। পূব-য়িছেতি অক্তক্রবিভিতি শিশাদিয়াগ্লিঙো ন লুক্।

⁽৪২১)। কর্মণ উত্তরাৎ পূর্যতেঃ ক্ত্রাণন্ বা ভবতি। ণমি ক্রতে উকারলোপণ্ড বা ভবতি। সমুদায়েন চেদৃষ্টিমানমবগম্যতে। নম্প বনস্তলাব্যয়হাৎ কথং গোম্পদপ্রেণ বর্ষেণ ? উচ্যতে—প্রা পূরণ ইত্যক্ষাং আনস্তানমাদেরপ্রাদেরিত্যিও ক্রতে ক্রদটীত্যাদিনা আকারলুকি চক্তে দিগ্যতি যণ্যেবং তহি কিম্বর্থ বিক্রেন উকারলোপবিধানং

- ৪২২। বস্ত্রার্থাতত্র কোপয়তেঃ I
- বস্ত্রক্লোপিং বৃষ্টো দেবঃ বস্ত্রং ক্লোপয়িকা চেলক্লোপং বসনক্রোপম্।
 - ৪২৩। যাবতো বিদ্জীবঃ।
- যাবদেশ ভুঙ্কে বাবজ্জীবদ্ধীতে। অনভিধানাৰতা ক্ত্বা নোদাসতা।
- ৪২৪। গতার্থাদ্ধনঃ সমূলাল্লড়াদ্যন্ততৎপ্রয়োগশ্চ।
 সমূলঘাতং হস্তি সমূলং হস্তীতার্থঃ। এবং সমূলঘাতমরিং হস্তি।
 অনভিধানাদত্র তৎপ্রয়োগকরণে ক্র্রানোদাহতা।

- । ৪২২)। তত্তেলনে বৃষ্টেলানং প্রাম্যতে। বস্থাপিং কর্মণ উত্তরাং কোপয়তেঃ জা এম বা ভবতি বৃষ্টিমানে গ্যামানে। কুয়ী শক ইত্যক্ষাং ণিঙি ক্তে কাবাদিঃ কায়াদেরিতি কোপাদেশে চ ক্তে কোপয়-ভীতি নিদেশিঃ।
- (8২৩) যাবছক ছিত্রান্ডাং বিদু লাভে শ্বীব্ প্রাণধারণে ইত্যে-তান্ডাং জ্বা ণন্বা ভবতি। জীবনাধ্যয়নয়েঃ সমানকালত্বেংপি ণন্বিধান-সামর্থাং জ্বা অনভিধানাং জ্বাপ্রতায়ো নোদাহত ইতি পারিশিষ্যায়মে-বাক্র নিতাঃ।
- (৪২৪)। সম্লশকাং কর্মণ উত্তরাং গন্তার্থাদ্ধনঃ জ্যু-গন্ বা ভবতি।
 লড়ানাস্ত্রস্য তথ্য প্রয়োগশ্চ। তদিতানেন ক্যাদ্ধাতের্দ্ম ভবতি স পরাম্যাতে অত এব তৎপ্রয়োগাং তেনোকার্থিছাদ্ধমস্তপ্রক্তের্গতার্থতা সোপসর্গভালপ্রাংগাংগ তদ্ধাতৃপ্রোগো ভবত্যেব তেন সমূলঘাতং অবধীদরীংশ্রেছি।
 নম্ সমূলঘাতং হস্তীত্যাদৌ পূর্ককিরায়া গতার্থভাং পূর্কোত্তরকালভেদ এব
 ক্রিয়য়োন শিক্ত কথং জ্যুপ্রতায়ঃ ? উচ্যতে—শন্বিধানসামর্থ্যাৎ, লড়াদীত্যনেন স্কতোহণি গ্রহণং তৎপ্রয়োগে চ শ্রদ্ধমাত্রমপেক্যাতে ইতি বিশ্বাৎ-

প্রাধাতোরের গোষ্ঠানপ্রমিত্যস্থাপি সিদ্ধে:। নৈর্ম্। শমস্তস্থারে কিমেনস্থারায়েত্যাদিনা তরাস্থাদামি ক্রতে গোষ্পনপ্রংতরামিতি সিধ্যতি। গোষ্পানমিতি গোপ্রমানগোর্দেক্তিয়ো: ষর্গেক্ত স্কৃতি যর্ক্ষা।

8२৫। निभृलां क कयः।

ক্ষ হিংসায়াং নিমূলকাষং ক্ষতি নিমূলং ক্ষতীত্যৰ্থঃ। এবং সমূলকাষং ক্ষতি সমূলং ক্ষতীত্যৰ্থঃ।

৪২৬। শুক্ষচূর্ণরুক্ষাৎ পিষঃ!

শুষ্কপেষং পিনষ্টি শুষ্কং পিনষ্টীত্যর্থঃ। এবং চূর্ণপেষং রুক্ষপেষম্।

৪২৭। অকৃতাৎ কৃঞ্য।

অকৃতকারং কর্মেতি অকৃতং করোতীতার্থ্য।

৪২৮। জীবাদ্গ্রহঃ।

জীবগ্রাহং গৃহ্বাতি জীবং গৃহ্বাতীত্যর্থঃ। জ্ঞীবগ্রাহমিব কচিৎ কটিদপি ছায়াস্ত গৃহ্বাতি চেতি মুরারিঃ।

প্রণাশং স বরং প্রনষ্টঃ যঃ সর্ক্রদান্তানপুষ্ স্বপোষ্টানি প্রয়োগেলৈব স্চিতং যত ভূপদর্গেলৈব ধাতোরভার্যতা তত্রাপি গতার্থকাতাবাধন্ ন ক্রেক্তি। সম্ক্রমাতং সংহস্তি ঘটনিধায়ং কুগুম্ফিদ্ধাতীতি। সম্ক্রমাতমিতি ণিতীণ্ লিড্রর্জং হনো মাত ইতি বাতাদেশঃ। অনভিধানানিত্যাদি
ইত আরভ্যঃ তৃতীয়ান্তস্তোপদংশং সমাসো বেত্যন্থাৎ প্রাক্ তৎপ্রয়োগকরণমত্র জ্বা নোদাস্বতা অন্তিধানাৎ! নমু বামুবৃত্তিরেব কন্দার নিরন্তা ? নৈবন্, তৃতীয়ান্তস্তেত্যাদ্যোগেষু বামুবৃত্তিরিষ্ট্রাং।

⁽৪২৫)। নিম্লশকাৎ সম্লশকাৎ চ কর্মণ উত্তরাদ্গতাথাৎ কষ্ হিংসায়ামিতাঝাৎ জ্বা গুম্বা ভবতি। লড়াছাস্তস্ত তস্ত প্রয়োগ্ড।

⁽৪২৮)। শুক্ষ্কক্ষেভ্য: কর্মাভ্য উত্তরাৎ গতার্থাৎ পিন্ধু সংচ্বনে ইত্যমাৎ ক্র্বাণন্বা ভবতি। লড়ান্দস্ত তদ্য প্রয়োগশ্চ। চূর্ণপেযং পিনস্তিক্র্যাণো ভাবিনীয়মবস্থা চূর্বম্পাদীয়তে যথা ওদনং পচ্তীভিবৎ।

⁽৪২৭-)। অক্তশকাং কর্মণ উত্তরাৎ প্তার্থাৎ ক্রঞ উত্তরা জ্বা পুম্ভবতি। লড়ান্তস্ত তভার্প্রায়োগণ্চ।

⁽৪২৮),। জীরশকাৎ কর্মাণ উত্তরাৎ গতার্থাৎ গ্রহ উত্তরা জ্বা পদ্ বা ভবতি। কড়াদ্যস্তস্থ তথ্য প্রয়োগণ্ড। জীবশকো ভাবঘণস্ত ইতি-

৪২৯। উপমানাৎ কর্ভু শ্চ।
অজনাশং নিশ্যতি অজ ইব নশাতীত্যর্থঃ। বিদ্যুৎপ্রণাশং স বরং
প্রনম্ভ ইতি ভট্টিঃ। ঘটনিধায়ং কুণ্ডং নিদধাতি ঘটমিব কুণ্ডং
নিদধাতীত্যর্থঃ। এবং স্থবর্ণনিধায়ং রত্ননিধায়ং ক্রেকিবন্ধং বন্ধঃ
অট্টালিকাবন্ধং চণ্ডালিকাবন্ধং ময়ুরিকাবন্ধং যৃথিকাবন্ধম্।

৪৩°। কর্ত্তঃ পুরুষাদ্বহঃ। পুরুষবাহং বহতি পুরুষঃ সন্ বহনকর্ম করোতীতার্থঃ। ৪৩১। নশো জীবাৎ।

জীবনাশং নশ্যতি জীব<mark>ং সন্ নশ্যতীত্</mark>যৰ্থঃ।

ক্চরিতুমার জীবং গৃহাতীতার্থঃ। •পচাদিসাৎ গুপ্রতায়ান্তশ্চ জীবতীতি জাব এতং স্কৃতিকুং মুরারিশ্লোকশ্চ দর্শিতঃ। কচিনপি ছায়াবিতি জীবন্তং গৃহাতীতি ততার্থঃ।

- (৪২৯)। উপনীয়তে অনেনেত্যুপনানং উপনানাৎ কর্ত্রু: কর্মন-ক্রোং গতার্থান্ধাতারুত্রা ত্রুণ শুন বা ভবতি। লড়ান্যস্তুত্র ত্রুণ পুন বা ভবতি। লড়ান্যস্তুত্র ত্রুণ পুন বা ভবতি। লড়ান্যস্তুত্র ত্রুণ পুন বাগিন্দ। অধিকরণে বন্ধ ইতি শাস্ত্রাপ্তরলক্ষণং চক্রবন্ধং বন্ধ ইত্যুদা-জ্তুন। এবঞ্চ লভি প্রামে বন্ধ ইত্যুদ্মিরের্থে গ্রামবন্ধং বন্ধ ইত্যুদি প্রামেরিত ত্রুত্র নেবাতে অতএব ভাষ্যকারেণাভ্যামেক এব যোগঃ কৃতঃ সংজ্ঞায়ামেন বাস্য বিধানম্ এবঞ্চ সতি সংজ্ঞাশকানাং বৃৎপত্তিগ্যেন কেনাপি প্রকারেশ ক্রেণ্ডানুস্থানাদেব ক্রেণ্ডাবন্ধানিয়াদীনাং দিন্ধিরিছ কৃতা। তথাহি ক্রেঞ্জন্মতানিনি বন্ধবিশেষাণামেতানি নামধেয়ানি।
- স্ক্ষণ কাৎ কর্ত্তরাৎ গতার্থাৎ বহু প্রাপণে ইত্যাধাৎ
 ক্রিণ প্যান্ত বিভাগ কর্ত্তরাৎ গতার্থাৎ বহু প্রাপণে ইত্যাধাৎ
 ক্রিণ প্যান্ত বিভাগ কর্ত্তরা
 প্রাণ্ড বিভাগ কর্ত্যাধ্ ক্রিণ কর্ত্তরা
 প্রাণ্ড বিভাগ কর্তি বিভাগ কর্তি
 প্রাণ্ড বিভাগ কর্তি
 বিভাগ কর

৪৩২। শুষিপূরেরৰ্দ্ধাৎ। উদ্ধশোষং শুষ্যতি উদ্ধিঃ সন্ শুষ্যতীত্যর্থঃ। যাবাদ্ধিশোষং তৃণবদ্বিশুদ্ধ ইতি ভট্টিঃ।

৪৩০। হনঃ করণাৎ। পাদাঘাতং ভূমিং হস্তি পাদেন ভূমিং হস্তীত্যর্থঃ। পাদঘাতং রিপুং হস্তি অসিঘাতমরিং হস্তি।

৪০৪। স্নেহার্থাৎ পিষঃ। উদপেষংপিনষ্টি উদকেন পিনষ্টীভার্থা। এবং গ্নতপেষং তৈলপেষম্। ৪০ঃ। গ্রহ বর্ত্তের্হস্তার্থাৎ।

হস্ত গ্রাহং গৃহাতি হস্তেন গৃহাজীত্যর্থঃ। এবং করগ্রাহং পাণি-গ্রাহম্। হস্তবর্ত্তং বর্ত্তয়তি হস্তেন বর্ত্তয়তীত্যর্থঃ। এবং কর-বর্ত্তং পাণিবর্তম্।

⁽ ১৩২)। উর্নশ্লাৎ কর্ত্বরাভ্যাং গতার্থাভ্যাং শুষ্ শোষণে পূরী আপ্যায়নে ইত্যেতাভ্যাং জ্বা পম্ বা ভবতি। লড়াদ্যস্তরোক্রোক রক্প্রোগশ্চ। উর্পুরং পূর্যাত ইতি অকুদাত্তেগ্রানায়নেপদং দিবাদিয়াং য উর্দ্ধিন পূর্যাত ইত্যর্থঃ।

⁽৪০০)। করণাত্ত্রাং হন্ধানোর্তার্থাং জ্বা পম্ বা ভবতি।
লড়ালান্ত্রস্ত তস্য এমোরণত। পান্যাতং ভূমিং হন্তীভাত্র হনিরহিংসার্থাঃ
বতঃ প্রাল্যুপ্রাতো হিংসা। পান্যাতং রিপুং হন্তীভাত্র প্রাণিদোহাৎ হিংসার্থ এব অসিবাভমরিং হন্তীভাত্র মারণার্থাং যত্র তু হন্তেরকুপ্রয়োগো নাস্তি স হিংসার্থারাজ্যুরস্মাসকর্ষণ ইভাস্য বিষয়া।

⁽৩০৪)। স্নেহার্থাৎ করণাত্ত্ররাৎ পিবু সংচূর্ণনে ইত্যন্ত্রাৎ গতার্থাৎ জ্বা গম্বা ভবতি। লড়াদাস্তস্য পিযেরলুপ্রয়োগশ্চ। উদকল্পতাদীনাং স্নেহার্থতা শাস্ত্রাস্তবে প্রসিদ্ধা। উদপেষং পিনস্থীতি উদাদিরুদকাদেব্র্ণ-সাদাবিতি উদাদেশঃ পিনস্থীতি ক্রধাদেঃ শ্লমিতি শ্লম্

⁽ ৪০৫।৪০৬) বর্ত্তিরিতি ণিঙ্করো নির্দিষ্টঃ হস্তবাচকাং করণাগ্রস্ত্র-

৪৬৬। রতোরপীত্যেকে। হস্তবর্ত্তং বর্ত্ততেন

৪৩৭। আরাত্মীয়জাতিধনার্থাৎপুষঃ। আত্মপোষং পুষ্ণাতি আ্ক্রুনা পুষ্ণাতীত্যর্থঃ। এবং পিতৃপোষং ভ্রাতৃপোষং বিত্তপোষং অর্থপোষম্ স্বপোষম্। যঃ সর্বদাস্মানপুষৎ স্বপোষ্মিতি ভট্টিঃ।

৪০৮। তৃতীয়ান্তস্থোপদংশঃ সমাসো বু । গতার্থাদিতি লড়াদ্যন্ততৎপ্রয়োগশ্চেতি নিবৃত্তম্। মূলকেনোপ-দংশং ভুঙ্ক্তে মূলকোপদংশং মূলকেনোপদংশ্য।

রাদ্এহ্ উপাদানে ইত্যক্ষং বৃতু বর্ত্তন ইত্যন্মিঙিস্তাচ্চ গতার্থাৎ জ্বা শৃষ্ বা ভবতি। লড়ানাপ্তয়োপ্তয়োঃ প্রয়োগ ক্তা গৃহাতীতি এহ্ উপদানে ক্র্যানেন দিত্যাদিনা নাৎ বশাদেকশাদিরিতি গৃহাদেশঃ ণত্তম্। বৃত্তো-রপীতোক ইতি তথাচ কাত্রলক্ষণং হস্তার্থে এহ্বত্তিবৃতামিতি নৈতৎ পাণিনিমতং এতাবতা এক ইত্যক্তম্।

[।] ২০৭) । আরাঝারজ্ঞাতিধনবাচকাং করণাছত্তরাৎ গতার্থাৎ পুষ্ পুষ্টাবিতাস্মাং করা নম্বা ভবতি। লড়াদ্যস্তম্ম তম্ম প্রয়োগণ্ড। আঝাদীনাং স্বরূপাণাং পর্যায়াণাঞ্চ গ্রহণম্ এতদেব স্চয়িতুং বৃত্তিক্তা আত্মপোবং স্বপোবং পিতৃপোব্যামত্যুদাস্কৃতম্। বিত্তপোব্যাতি বিত্তমাত্মসম্বর্তনাত্মীয়ম্। বঃ সর্বানানপুষ্ণ স্বপোর্যাতি স্থান্ধ আত্মবচনঃ।

⁽৪০৮)। উপপূর্কাদন্শ দংশন ইত্যাথাং তৃতীয়াস্তম্ভ সম্বন্ধে সতি জ্বা গম্বা ভবতি। বিকল্পেন সমাসন্ত। গমস্তেনায়ং সমাসো নতৃ জ্বান্তেন। অন্তথা বক্ষ্যমাণে ক্রঞ ইত্যাদিস্ত্রে জ্বান্তম্ভ চ বা সমাস ইত্যানর্থকং আং। ত্রিমিত্তোপপদস্ত চেতি প্রাপ্তদৈয়ব নিত্যসমাস্ত্র সমাসো বেত্যনেন পাক্ষিকত্বং স্বচিতম্। ম্লকেনোপদংশং ভূঙ্ক ইতি ম্লকেনেত্যত্র গুণক্ষিয়াসম্বন্ধে সত্যাপি কর্ম্মতে ম্থাং ভূজিক্রিয়াম্পেক্ষ্য করণজেন তৃতীয়েব ভবতি। গুণক্রিয়াসম্বন্ধস্য চ বিদ্যমানত্বাৎ সমাসো-হবিক্ষ এব।

৪৩৯। হিংসার্থাদ্ধাত্মস্তরসমানকর্ম্মণঃ।
দণ্ডোপঘাতং গাঃ কালয়তি দণ্ডেনোপঘাতং দণ্ডেনোপইন্ড্য। ধারস্তরসমানকর্ম্মণ ইতি কিম্ ? দণ্ডেনোপইন্ড্য চৌরং গাঃ কালয়তি।

৪৪০। দৈর্ঘ্যাসত্যোঃ সপ্তম্যন্তস্থা চ।

দাঙ্গুলোৎকর্মং দণ্ডিকাং ছিনতি ধ্যঙ্গুলেনোৎকর্মং দাঙ্গুলেনোৎক্ষা। দ্যঙ্গুলে উৎকর্মং দাঙ্গুলোৎকর্মং দ্যঙ্গুলে উৎক্ষ্য দৈর্ঘাং
পরিচ্ছিদ্যেত্যর্থঃ। হস্তেন গ্রাহং যুধ্যন্তে হস্তেগ্রাহং হস্তগ্রাহণ
হস্তেন হস্তে বা গৃহীদ্বেত্যর্থঃ।

88)। কর্ষতিরুধোপপীড়ঃ। পাণিনা কর্মণ ভূও্ত্তে পাণিকর্মং পাণিনা কৃষ্ট্বা। পাণোকর্মং পাণিকর্মং পাণো কৃষ্ট্বা। হস্তরোধং দধদ্ধসুরিতি ভট্টিঃ। ব্রজানু ধোবং স্তনোপদীড়ন্।

⁽৪০২)। তৃতীয়ান্ত সম্বন্ধে সতি ধারত্বসমানকর্মণো কিংসার্থা-কাতোকত্তরা জ্বা গম্ বা ভবতি বা সমাসশ্চ। ধারত্বরগ্রহণং হনঃ করণা-দিতানেন সহ বিষয়বিভাগার্থম্। অন্তথা অসিবাতম্বিং হ্জীতাত্র সমান-কর্মক্ষাদ্সাদি প্রসঙ্গ জাং। কাল্যতীতি কাল বেল বিক্ষেপে চ্রালিঃ। দড়েনেপ্রত্যতাত্র হন্তেশ্চোরঃ কর্ম কাল্যতেশ্চ গোঃ। উপহত্যতি যতি চেতি নকারলুক্ তুক্।

⁽২৪০)। দৈর্ঘাং প্রমাণবিশেষ: আসতিরিতি অত্যন্ত্রসন্নিকর্ষ:। দৈর্ঘা-সভ্যোর্গনামানব্যাস্থতীয়াস্থত সপ্তমান্তত চ সহকে ধাতোঃ জ্বা গম্ বা ভবতি বা সমাসন্ত। স্বাঙ্গল ইতি দ্যোরঙ্গুল্যোঃ সমাহারঃ দ্মাঙ্গুলং সংখ্যাব্যন্ত্রাদঙ্গুলের্দিত্যং। হস্তগ্রাহং যুধ্যন্তে ইতি হস্তেম যুদ্ধসন্তবাদাসনা যুধ্যস্ত ইত্যর্থঃ।

^{(93) ।} কৃষ্ বিলেখনে ক্ষিৱাবরণে উপপূর্ক পীড় অবগাহনে ইত্যেতেভ্যা ধাতৃভাতৃতীয়ান্তত্ত সপ্তম্যস্তস্য চ সম্বন্ধে জ্বা গম্ বা ভবতি। পান্ধিকসমাসন্চ। কর্ষতীতি নির্দেশো ভাবের্ত্থার্থ: তুলাদেন্ত ক্ষতীতি ক্রপন্। স্তনোপপীড়মিতি অম্ক্রমন্তক্স্য হৃদ্যাদ্ভাক্তাকামে

88২। পঞ্চান্ত স্থারাম্।
শায্যোত্থায়ং প্রাবৃত্তি শ্যায়া উত্থায়। হর্য়া বঙ্ক্কপরিধানাদ্যপি ন করোতীভার্থঃ।

880। দ্বিতীয়ান্ত ত ।
লোপ্ত গ্ৰহাং যুধান্তে লৌপ্তং গ্ৰহী হা হরয়া শস্তাণ্যপি
ন গৃহাতীত্যর্থঃ। চম্ কম্ বম্ বর্জ মিতি জ্ঞাপকাৎ কচিদ হরায়াঞ্।
পর্বর্জ রতিক্রিয়েতি কামন্দকী।

888। পীড্যমানস্থ স্বাঙ্গস্থা। শিরঃ প্রতিপেষং যুধ্যন্তে শিরাংসি প্রতিপেষং শিরাংসি প্রতিপিষ্য।

৪৫। ন যচ্ছেদে মৃত্যুঃ। হস্তবিক্ষেপং জন্পতি হস্তং বিক্ষিপ্য।

ইতি নিত্যমলুকং বাধিষা তৎপুক্ষে ক্রতি বহুগমিতি বিকল্পেনালুক্। উপপূর্ব্বাণামেবৈষাং গ্রহণমিচ্ছন্তি জন্মনিত্যত্র্বসিংহধর্মদাসাপ্তদিহ নেউম্ এতদর্থমেব হ স্বরোধং দধদ্মন্ত্রিতি ভট্টিপ্রয়োগো দর্শিতঃ। ভাগবৃত্তিকৃতাপ্যেতদেবেইমিছি।

- (৪৪২)। প্রানাং গম্মানায়াং পঞ্মান্তশ্র সদ্ধে সতি ধাতো ক্তরা ক্ত্যা গম্ না ভবতি সমাসশ্চ বা ভবতি। উত্থায় মিতি উৎপূর্ব্বাতিষ্ঠিতেঃ স্থান্ত স্থোকদঃ সংগ্রতি সলুক্ যুর্বে ঞাদেরিত্যাদিনা মৃঃ।
- (880) । চ কারেণাত্র স্বরায়ামিত্যন্বর্ততে। স্বরায়াং গ্রামানায়াং ব্যতীয়াস্থস্য চ স্থক্ষে সতি ধাতোক্তরা ক্রা বন্ধ বা ভবতি ব। স্মাস্ক্র।
- (৪৪৪)। পীডামানশু স্বাঙ্গদ্য দ্বিতীয়াস্তদা চ সম্বন্ধে সতি ধাতো-কতুবা ক্তৃণণম্বা ভবতি বা সমাদণ্ড। যস্য ছেদে মৃত্যুৰ্ভবিতি সোহদ্য বিদয়ঃ। অগুথা উত্তরস্ত্রেণৈব সিদ্ধেঃ। শিরঃ প্রতিপেষমিতি অত্রা-সন্তিরস্তি নতু তৃতীয়াস্তদ্য সপ্তমাস্তদ্য চ সম্বন্ধ ইতি দৈখ্যাসন্ত্যোরিত্যা-দিনা অপ্রাপ্তিঃ।
- (৪৪৫)। ষদ্য ছেদে মৃত্যুন ভবতি তদ্য স্থান্ধদ্য দিতীয়ান্তম্য সম্বন্ধে ধাতোক্তরা ক্রাণম্বা ভবতি। বা সমাসণ্ট। ইন্তেনেত্যাদি ন

88৬। বিশাদেব্যাপ্যমানস্থ তদ্ধিশ্চাসমাসে। গেহাকুপ্রবেশমাস্তে গেহং গেহমকুপ্রবেশং গেবং গেহমকু-প্রবিশ্য।

889। ক্রিবৈ দিঃ সেব্যমানশু। গেহামুপ্রবেশমান্তে গেহমমুপ্রবেশমমুপ্রক্ষোং গেহমমুপ্রবিশ্যামু প্রবিশ্য। তালব্যাস্তবিশ্ পতৃ পদ্ ক্ষন্ম্।

88৮। ক্রিয়াবিচ্ছেদকস্ম কালস্থাস্থৃত্যোঃ। অদ্য বন্ধ্বা দ্বাহান্যাসং গাং বগ্গাতি দ্বাহমত্যাসং দ্বাহমতাস্ম দাহ-তর্মং গাঃ পায়য়তে দ্বাহং তর্মং দ্বহং তর্মিদ্য।

হি হস্তচ্ছেদে মৃত্যুর্ভবতি যক্ত ছেদে মৃত্যুর্ভবতি তত্ত্র ন ভবতি। উৎক্ষিপ্য শিরঃ কথয়তি।

(১৪৬)। ব্যাপ্যমানশু দ্বিভীয়ান্তশু সম্বন্ধে বিশাদেকত্রা জ্বালম্বাভবতি। বাসমাসশ্চ। তদিত্যনেন ব্যাপ্যমানশু পরামর্শঃ তদাপ্যমানম্মাসে দ্বিশু ভবতি। বিশাদিভিঃ ক্রিয়াভিগু হা:দঃ কর্মাণঃ সাকলোন সম্বন্ধেন প্রাপ্তির্বাপ্তিঃ। নতু পদস্ত সাকল্যাভীপায়োবিত্যনেন্দ্রের দ্বিক্তিঃ সিদ্ধা কিমর্থং দিক্তেকবির্ধানম্। উচাতে। তেনের দিক্তিরিয়ং কিন্তু সা অসমাসে যথা শুণ সমাসে ন ভবতীতি ভদক্ষবাদোহয়ম্।

(৪৪৭)। সেব্যমানস্য কর্মণঃ সম্বন্ধে সতি বিশাদেকত্রা জ্বা গ্র বা ভবতি। বা সমাসক্ত্য অসমাসে ক্রিয়েব দ্বিভবতি। আভীক্ষ্যেন ক্রিয়ায়া কর্মণঃ সম্বন্ধাং সেব্যমানতা অত্রাপি পূর্ববিদ্ধিকজের রবাদাং সংপ্রাদি-ক্রিয়ায়া অপি দ্বিক্তিঃ। বিশ্ প্রবেশনে পতু গতৌ পদ্ গতৌ সন্দিব গতিশোষপ্রোণিতি বিশাদিঃ। তালব্যাস্ত ইতি কৃতং মন্দ্রধিয়াং শঙ্কানিবা-সার্গং যথাকথঞ্জিং ক্রেতিসামর্থ্যাৎ বিষু ব্যাপ্তৌ বিস্ প্রেরণে ইত্যন্তাপি শঙ্কা স্যাৎ।

(88৮)। ক্রিয়াবিচ্ছেদকদ্য কালদ্য দ্বিতীয়ান্তস্ত সম্বন্ধে ক্ষম্প্রেক্তর ক্রাণ্ডাল্ডান্তর ক্রাণ্ডাল্ডান্তর ক্রাণ্ডাল্ডান্তর ব্যান্তর ব্যান্

882। আদিশিগ্রহিভ্যাং নাম:।
নামাদেশং গাং দদাতি নামান্তাদেশং নামান্তাদিশ্য নামগ্রাহং নামানি
গ্রহং নামানি গৃহীয়া। দিতীয়ান্তম্ভোতি নির্তম্।

৪৫০। কুৰেখাইব্যয়স্থানিস্টকথনে জ্বান্তস্থ চ বা সমাসঃ।

ব্রাক্ষম্ভ পুজ্রস্তে জাতঃ কিন্তু বৃষল ইতি নীচৈঃকারমাচন্টে কারং-নীচেঃ নীচৈঃকৃত্য নীচৈঃ কৃত্য।

৪৫১। সমাপ্তো তির্ঘাচঃ।

তন্মধাবর্ত্তী কাল: ক্রিয়াবিচ্ছেদক কাল:। তেন কালেন সহ অত্যসনপ্ত তর্মপ্রত চ যোগো বিশ্বত এব। ছাত ইতি দ্বারেকোঃ সমাহারঃ রাজানেটাদিরিতি টঃ ব্য়াতাতি বন্ধ বন্ধনে ক্র্যাদেরিত্যাদিনা নাং পায়রত ইতি
পিবতের্ণিঙ্ যুবে ক্রাদেরিত্যাদিনা যুঃ ণিঙোহব্ধাদেরিত্যান্তনেপদম্।
কানস্রেতি কিম্ থোজনমত্যস্ত গাঃ পায়য়তে অত দেশস্ত ক্রিয়াবিচ্ছেদক্রম্।

- (৪৪৯)। নামশক্ত দিতীয়াওত সম্বন্ধে সতি আঙ্পূৰ্ক দিশ্ অভি-সৰ্জনে গ্ৰহ্ উপাদানে ইত্যেতাভাাম্ত্রা জ্বা গম্বা ভবতি। বা সমাস্চ।
- (৪৫০)। অব্যয়স্ত সম্বন্ধেহনিষ্টকথনে গম্যমানে, রুঞ উত্তরা জ্বা গম্বা ভবতি। গমস্ত জ্বাস্ত চ বা সমাসন্চ। ন ইষ্টকথনম্ অনিষ্ট-কথনং কথনস্বরূপস্তাতথাবিধ্বাদনিষ্ট্রম্ অতএব নীটোকারমাচর্টে ইত্যক্র নীটোরভিধানমেবানিষ্টং মতঃ প্রিয়ম্টেরেবাভিধীয়তে তৎ পুনরিষ্ট্রস্ত কথনং প্রজ্বান ইষ্ট্রাদিতি কারং নীটোরিত্যুদাহ্বতমসমাসপক্ষ্যানার্থং নীটোলকারমিত্যক্র সমাসাসমাসরোরবিশেয়বাং। নকু নীটোক্রত্যেত্যক্র কথং গচ্প্রাদের বহু করণীয়ং অস্তথা সমাসাবিধানমন্থকং স্তাং।
- (৪৫১)। তির্ঘাক্শন্বোগে সমাস্থে গম্যানারাং ক্ঞা, উত্তরা জ্ব গম্বা ভবতি। গমন্তম্ম জ্বান্তম চ বা সমাস্চ। তির্ঘাচ ইতি স্ত্রে নির্দেশ

ভির্যাক্কারং গত: সমাপ্য গত ইত্যর্থং। কারং তির্যাক্ ত্যাক্ কৃত্য তির্যাক্ কৃষা। সমাপ্তাবিতি কিম্ ? তির্যাক্ কৃষা কার্চ্চং গতং।

৪৫২। স্বাঙ্গতদেভূবিশ্চ।

মুখতঃ কারং গতঃ কারং মুখতঃ মুখতঃ কৃত্য মুখতঃ কৃত্য মুখতে। ভাবং ভাবং মুখতঃ মুখতো ভূয় মুখতো ভূতা।

৪৫৩। ধাতৃতদেন স্থাৎ।

মুখে তম্ভতীতি মুখতঃ ক্রবা মুখতো ভূরা।

8৫৪। নানবিনাধাবাঙ্ধস্ণ্ধ্যম্ণাসভ্ততভাবে। নানাকারং ভুঙভে কারং নানা নানাকৃতা নানাকৃতা নানাভাবং হাবং নানা নানাভূয়া নানাভূয় এবং বিনাকাবং বিনাভাবং

- (৪৫২)। সাজ ইত্যানন স্বাজবাচকো মুখাদিশবে। গৃহতে স্বাজ্ত তিনিঃ স্বাস্ত্ৰিঃ স্বাশ্বাচিন্ত্ৰনিপ্ৰত্যবাত্ত যোগে কৰোতেভ্ৰতেশেচা-তিনা জ্বা শম্বা ভৰতি। শনস্ত্য জ্বাত্ত চ বা স্মাসঃ। মুখত ইতি মুখ্যালাং স্থানী স্ববিভ্জেনিতা দিনা ত্ৰিঃ।
- (৪৫৩)। ধাতুশ্চামে চিনশ্চেতি ধাতুতসিত্তস্থ প্রয়োগে করোতেউব-তেশ্চ উত্তরা জ্বা পম্বা ভবতি ন। ম্পেতজ্জীতি মুখত ইতি ভস্ন দস্ক-উংক্ষেপ্রে ক্রিপ্স্লুক্ প্রোরিত্যাদিনা ধাতোঃ স্কার্য্য বিস্গঃ।
- (৪৫৪)। নানা বিনা ইতি শক্রহণ ধা থাঙ্ধম্ণ ধ্যম্ণঃ প্রতিয়া গুজ্তে। নানাবিনাশক্ষোপ দি এতায়ানাঞ্যোগে অভূততভাবে করে ক্রোতেইবতেশ্চোভরা জ্বা ণম্বা ভবতি। গুমস্তম্ম জ্বাস্তম চবা সমাসঃ। অনানা নানা ক্যা ভূঙ্ক ইত্যাদৌ নানাকারং ভূঙ্কে এবমপ্রতাপি।

সক্ষমন্ত্ৰকাণে বৈতি পজে নিষেধাৎ অভোহচি প্ৰাদীৰ্যদেহতি অকাৰলোপা-ভাবং। তিয়াৰূলমূহি তিবাহকতাতি কিপ্তিলঃমহসনাং ভিলিমবিনুদ্দহ হৈছি তিয়াপেশা প্ৰাগাদেৱতন্ত্ৰ, চেতি হাং তল্লুক্ চ অংশী শ্ৰীবে অকাৰতে চেতি নকাৰ্লুক্। তিয়াক্ কথা কাহিং গত ইভি অনুজ্ কথা গত ইভাগং।

8 P-O

দ্ববাকার 🖫 বি ধাভাবং দ্বেধাকারং দ্বেধাভাবং দ্বৈধংকারং দ্বৈধংভাবং দ্বৈধাংকারং দ্বৈধ্যংভাবম্।

৪৫৫। ভূফামোভুবঃ।

তৃষ্ণীং ভাবং ভাবং তৃষ্ণীং তৃষ্ণীং ভূয় তৃষ্ণীং ভূয়।

৪৫৬। আকুকুল্যেংৰচঃ।

মন্বাৰণ ভাৰমন্বক্ অন্ধগ্ভূয় অন্বগ্ভূত্ব। অপুকুলো ভূত্বেতাৰ্থঃ।

८७१। প্রাদের্যচ্ मगरम।

প্রাদেকতরস্মান্ধারোকত্রা ক্র্যু সমাসে যচ্ভবতি। প্রভৃষ্থ স্থাতি।

ন্ধিৰ লাদি দিশ লাং প্ৰকাৰে গ্ৰামানে সংখ্যাস। ধেলি বিভিন্ন ধান্ধ্য গো চেতি বা বাছ বম্পঃ ক্ৰিমন্তে তেন দিশা ছেলা গুণঃ লৈধং কুদ্ধিঃ কৈলাং কাল-নৈন্যংভাবনিতি লিপিকর প্ৰমানপাঠঃ দিশশাং ধাম পেংইভাবাং ক্ৰিলাংকারঃ ক্ৰিধাংভাবমিত্যল বলীয়ম। ধাম্পেকাদ্বতি ধাম্প্। অভ্তক্তাৰ ইতি কিম্পু নানা কুলা কাহিং গ্ৰঃ।

- । ৪৫৫)। জ্ঞীনো যেগে ভবতেধাতোকতরা জ্বা পম্বাভবতি। শুমন্ত্রজ্ঞাত বাস্মাসঃ। জ্বাইতি কৃতং ক্রেণা নির্ত্রার্থ অভ্যাধ তথ্যসাক্র্তিঃ স্থাং।
- (৪৫৬)। অৰক্শক্ষোগে আফুকুলো গ্যামানে ভবভেষ্তিক্জুজ্জা জ্বাণ্য ভবতি। প্যস্তভ চ জ্বাস্তভ চবাস্যাসঃ। অৰ্চ ইতি নিৰ্দেশ্য তিহাঁচ ইতি নিৰ্দেশনৈৰ ব্যাখ্যাতং সাধনঞ্তথৈৰ।
- (৪৫৭)। প্রভূষেতি নিতাং কুপ্রাদেরিতি সমাসঃ। প্রাদেরিতি কিম্ ? অকলা পরনকলা পরমশন্দেন ক্রিলা বিশিষাতে ক্ল্যাশকল্প ক্রিয়াবচন ইতান্তি সামানাধিকরণাং সমাসহেতুঃ। সমাস ইতি কিম্ ? বৃক্ষং প্রতি জ্যোতিছা গতঃ। ন বিতীয়াদিনিষিত্তভেতি সমাসোহত নিষিদ্ধঃ।

80×1 अमारमण्डा

শ্ৰহায়।

৪৫৯। কারিকা মর্য্যাদাযত্নপীড়াস্ত।

কারিকাকুত্য।

৪৬০। অনুকরণমনিত্যন্ত্য্

খটৎকুতা। অনিতান্তমিতি কিম্ ? খটদিতি কুলা।

८५३। व्यक्तिं मर।

সৎকৃতা গুরুং গতঃ।

८७२। यमनग्राहरा

অসৎকৃতা।

८५०। यनः जूषानाः

অলংকুতা।

- (৪৫৮)। এদাদেশ্চোত্তরাদ্ধাতোঃ সমাসে ক্ত! যজ্ভবভি। এদ্ধার ইতি অংপূর্কাং ধাঞঃ ক্ত্বা যজ্ প্রদাদেঃ কতেতি সমাসঃ।
- (৪৫৯)। মর্য্যাদায়াং যত্ত্বে পীড়ারাঞ্চ বর্ত্তমানঃ কারিকাশকঃ প্রদাদি-র্ভবিত্তি। যত্ত্ব কারিকাশকোশক প্রভায়াত্তস্ত্র কারিকাং করেতি ভবতি।
- (৪৬০) । অনিতান্তমকুকরণং শ্রদাদির্ভবিতি। ইতি মন্তে যভা তদি-তারং ন ইতারং অনিতান্তম্।
- (৪৬১)। অভাহিতিবিষয়প্রীত্যা সংল্রম আদরঃ আদরেছরে বর্ত্যানঃ সচ্ছিদঃ প্রদানির্ভবতি। আদর ইতি কিম্ ৪ সংক্রমা কাঞ্ছি গতঃ শোভনং বিভ্যানং বা ক্রেত্যের্থঃ।
- (৪৬২)। অনাদরঃ পরিভব: তিরস্কারঃ রচ্যা যথা অধতঃ পাপম্। অনাদরে মর্থে বর্ত্তমানোহসক্তকঃ শ্রদাদির্ভবতি। সদিত্যর নঞ্স্মাসেনাপি অসংক্ত্যেতি সিধ্যত্যেব কিন্তর্থতেদো বিশ্বতে নঞ্সংপ্ক্ষে অত্রাম্বাশক্ষৰং সদৃশার্থঃ প্রতীয়তে।
- (৪৬০)। অলংশকো ভূষণে হর্থে বর্ত্তমানং প্রদাদির্ভবতি। ভূষণ ইতি কিম্

 পূ অলং ভূক্ত্বা ন ভোক্তব্যমিত্যর্থঃ।

৪৬৪। অন্তরগৃহীতো । সম্বর্গ ডা। গৃহীতো তু—অন্তর্জনা শ্রেনো বর্ত্তিকাং গতঃ গৃহী-ব্বেত্যর্থঃ।

৪৬৫। তৃষ্ণাসমাপ্তো কণেমনসী।
কণেহত্য পয়ঃ ঙ্গিবতি মনোহত্য পয়ঃ পিবতি। যাবদস্যান্তি-লাষো ন নিবৰ্ত্ততে তাবৎ পিবতীত্যৰ্থঃ।

৬৬। তিরোহন্তর্দ্ধানে।
 তিরোভূয় ব্যবহিতো ভূবেতার্থঃ।

৪৬৭। **অদঃ স্বগতালোচে।** অদস্ত্য স্থিতোহস্মি। স্বগতালোচ ইতি কিম্**ণ অদঃ** কৃষা কাৰ্য্যং গতঃ।

৪৬৮। অব্যয়াবস্তংপুরুদো।

অস্তংগতা সবিতা পুনরুদেতি। তুরাসাহং পুরোধার

(৪৬৪)। অন্তর্শকোহগৃহীতৌ বর্তমানঃ শ্রদাণির্ভণতি। অন্তর্গতাতি অন্তর্গকোহগৃহীতে।

- (৪৬৫)। কণেশকঃ সপ্তমান্তপ্রতিরূপক্ষব্যয়ম্। কণেমনসী শক্ষো তৃষ্ণাসমাপ্রে গ্রামানায়াং প্রনাদী ভবতঃ। কচিদপ্রাক্তানােশ্রে জ্বা। অথবা তৃষ্ণাসমাপ্রানন্তবং ধৎ পানং তদপেক্ষা তৃষ্ণাসমাপ্রে: পূর্মত্বম্। ভৃষ্ণাসমাপ্রা-বিভি কিম্ ? কণে হত্বা গতঃ অত্র কণেশক স্ক্ষতেগুলাবয়বেহধিকরণভূতে বর্তি। মনো হত্বা বাচকো গতঃ অর্থাভাবাদ্বিরাণাে গত ইত্যর্থঃ।
- (৪৬৬)। তির:শব্দোহস্তর্ধানেহর্থে বর্ত্তমানঃ প্রদাদির্ভবতি । অস্তর্জান ইতি কিম্? তিরোভূষা গতঃ বক্রো ভূষেত্যর্থঃ।
- (৪৬৭)। অদস্শক এতদিতানেন সমানার্থস্তাদাদির পঠ্যতে স্ব স্থগতালোচনে বিষয়ে প্রদাদির্ভবতি। অদস্কৃত্য স্থিতোহসীতি স্থগত-মিদমালোচনং নতু পরস্থাভিধানম্।
- (৪৬৮)। অন্তংশক: প্রস্শকশ্চাব্যয়ং শ্রদাদির্ভবতি। অন্তং-গভোতি যচি ক্তে যচিচেতামূর্ত্তৌমো বেতি মকারলুক্ পূর্ক্জতোতি পূর্কশক্ষাৎ স্তাদদৌ পূর্কাপরাধ্রেভ্যঃ পূরাবাধ্যেত্যস্প্রতায়ঃ পূর্কঃ

পুরস্কৃতা। অব্যয়াবিতি কিন্? অন্তঃ কৃষা ক্ষিপ্তঃ ক্ষেত্যর্থঃ।
পুরঃ কৃষা পুরাণি কৃষেত্যর্থঃ।

৪৮৯। অচ্ছগত্যর্থবদাঃ।

অচ্ছগত্য অচ্ছস্ত্য অভিগ্নোত্যর্থঃ। অচ্ছোদ্য অভিমুখমুদি-ত্বেতার্থঃ। অব্যয়মিত্যেব। উদক্ষচন্তুং গত্বা স্নাতি।

৪৭০। প্রাছরাদিস্ত্রিঞঃ। প্রাছ্ত্রি প্রাছ্ক্ত্য। প্রাছর্ আবির্ প্রোষ্ট্ বৌষট্ ২ঘট্ স্বাহা স্বধা ধূলী তালী অতালী বেতালী অবালী।

845। সজুঃ সহার্থে। :সজুঃ কৃত্য।

৪৭২। উরা উররীবিস্তারাঙ্গীকারয়োঃ। উরীকৃত্য উররীকৃত্য। উদরীতি কেচিদত্রার্থে পঠস্তি।

শক্ত প্রাদেশন্চ তদ্বিত্বদাদিখাং পুরসশক্তাব্যয়ন্ধ প্রোহ্বায়মিতি কন্ধাদিখাদিসগাভাবঃ। অন্তংক্তেতি অন্ত ক্ষেপণে ইত্যন্ত ক্তপ্রতা-য়ান্তক্ত রূপন্। পুরঃক্তেতি পূ পালনপুরণযোঃ কিপ্ উর্পবর্গাদিত্যুব দ্বিতীয়াবহুবচনান্তঃ পুর ইতি পদন্।

(৪৬৯)। অচ্ছেত্যব্যম্। গভার্থস্য ধাতোর্বদতেশ্চ প্রয়োগে অচ্ছশব্যঃ প্রদাদিভবতি। অভিগমোত্যর্থন্যাকারেণেরাচ্ছশব্দোহভিমুথার্থ ইতি ব্যাহতম। উদক্ষজমিতি নিম্লিমিত্যর্থঃ।

(৪৭০)। প্রান্তরাদির্ভবতেঃ ক্লঞ্চ প্রয়োগে শ্রদাদির্ভবতি।
প্রান্তর্ভুরিতি ভবতেরকেন্দ ধাতোঃ জ্বাপ্রতায়ে কতে ভ্রাদির্যকিচান্তা।
দেরিতি ভূভাবে কতে ভূ ইতাশ্র প্রয়োগো ভবতোব। প্রান্তর্ভুরিরাবিরিত্যাদিনা রম্ভ বকারঃ প্রান্তর্ আবির্ ইতি রান্তপাঠো গণে প্রমাদকতঃ নাম্বন্ধ দুষ্টবাঃ তেন পঠিতঃ প্রান্ত্রেণাদি ভবতি।

(৪৭১ ৪৭২ ৪৭৩ ৪৭৪।৪৭৫।৪৭৬)। সহার্থে ইত্যাদিভি: প্রাছ-রাদিভি: প্রাছরাদিগণে পঠিতানাং সজু:প্রভৃতীনামর্থহদনং কৃতং নম্বর্থাস্তর-নিবৃত্তিঃ স্বর্থাস্তরস্থাপ্রতীতে:। ৪ ১৩। কেবালী সেবালী বাৰ্দ্ধলী সমসমা অনিষ্ঠী কেবলাগ্ৰী সেবলাগ্ৰী শকলা সংশকলা অংসকলা ধ্বংস-কলা ভ্ৰংশকলা হিংসাগ্ৰাম্।

৪৭৪। গুড়ুধাপীড়ারাম।

৪৭৫। ইচ্ছায়ামিত্যেকে।

্৪৭৬। ভল্ ফুলা অক্লা বিক্লী বিস্তারে।

৪৭৭। চ্যন্তঃ।

শুক্লীভ্য় শুক্লীক্ত্য লবণীক্ত্য উফ্লীক্ত্য।

৪৭৮। ডা**জন্তঃ।** পটপটাভয় প**টপ**টাক্তা।

৪৭৯। প্রাধ্বংবন্ধনানুকুল্যে কৃঞি। প্রাধাংক্তা।

৬৮০। জীবিকোপনিষদাবুপমায়াম্।

[।] ৪৭৭)। চ্যুত্তঃ প্রাছরানির্ভবতি। শুক্লীরুত্যেতি অশুক্রং

শুক্রণ করা হীত অভ্যতভাবে ইত্যানিনা চিম্ব অগস্তানী চেতি অকারাতানাকারঃ অনির্গিত্যকারস্ক্। সাক্ষানাদিগণপঠিতানামপি যদা চ্যুত্ত।
ভদাতা বিষয় ইতি স্চণিত্র লবণীরুত্যোষ্ঠারুত্যেতুদাস্তম্।

[ি] ৪৭৮)। ডাজন্বং প্রাত্তরাদির্ভবতি। পটপটাভূয়েতি পটপটা কভোতি চ অব্যক্তশকান্তকরণ।দনেকাচোহনিতৌ কুভূন্তিম্বিতি ডাচ্ তল্মিতাং দিশ্চায়ানাবিতি দিঞ্জিঃ ভলুকু চ।

⁽ ৪৭৯)। প্রাধ্বমিতি মান্তম্বর্ষণ বন্ধনামুক্লোহর্থে বন্ধমানঃ প্রাধ্বং শকঃ কঞি পরে প্রাছরাদিভবতি। কঞি প্রকাতে কঞীতি কতং ভূইত্যক্ত নিস্তার্থম্। বন্ধনামুক্লা ইতি কিম্ণু প্রাধ্বংক্তা শকটং গতঃ অধ্বাভিম্থং ক্রেতার্থঃ। প্রাদেবধ্বন ইতাৎ সমাসান্তঃ।

⁽৪৮০) । জীবিকোপনিষদাবিত্যেতে শক্তো উপমায়াং বিষয়-ভূতায়াং ক্যঞ্জি পরে প্রাত্তরাদী ভবত । জীবিকা জীবনোপায়ঃ।

জীবিকাকৃত্য জীবিকামিব ক্ষেত্যর্থঃ। উপনিষৎক্তা।

৪৮১। হস্তেপাণো স্বীকারে।

হস্তেকতা পাণোকতা স্বীক্ষতেতার্থঃ। হস্তেকতা মহাস্ত্রাণীতি ভট্টিঃ। স্বীকার ইতি কিম্ ? হস্তে কথা পরুষ্ঠ কার্যাপণমস্তি।

৪৮২। সাক্ষাদাদিরভূততদ্ভাবে বা।
সাক্ষাৎকত্য সাক্ষাৎকতা। সাক্ষাৎ মিখ্যা আস্থা অন্তর্দ্ধা প্রভা বোচনা চিন্তা প্রমা ুঅজা প্রজা কুজা বীজা কুহা সংশ্যা।
নমস্ আবিস্ প্রাতুর বহিস্।

৯৮**০। লবণাদেমান্তত্বক।** লবণং ক্তা লবণং ক্তা। উষণং শীতম্ উদকম্ আৰ্দ্ৰ্।

উপনিবত্তস্থানহেতুর্বিদ্যা। উপমারামিতি কিম্। জীবিকাং কৃত্বা ব্যাধো গতঃ।

(৪৮১)। হত্তেপাণী শকৌ সপ্তমান্তাবিহানুকতো সপ্তম্যন্তানুকরণসামগ্যাৎ সমাসে কতে লুক্ ন ভবতি। অন্তে বিভক্তান্তপ্রতিকপকাবারত্বমঙ্গীকুর্বস্তি। হস্তেপাণাবিত্যেতো শকৌ ক্বঞি পরে প্রান্তবাদী
ভবতঃ স্বীকারে বাচ্যে। বিবাহে বাচ্যে ইতি জ্বাদিত্যব্যাখ্যানেংসন্তোবাৎ হন্তেক্ত্য মহাস্থাণীতি প্রমাণোপদর্শনার ভট্টিপ্রয়োগ্যে দর্শিতঃ
ইতি। ভাগবৃত্তিক্রতাহপোতদেব মতম্।

(৪৮২)। অভূতত্তাবে অর্থে সাক্ষানাদিং ক্রঞি পরে প্রান্তরাদিউবতি বা: অথবা প্রদাদিস্বরেব বা ভবতীতি হ্তার্থঃ। সাক্ষাৎকৃত্যতি
অসাক্ষাদ্ভূতং বদা সাক্ষাৎ ক্রিয়তে তদা ভবতি। বদা তু সাক্ষাদ্ভূতত্রৈব সতোহস্তবিশেষঃ কন্চিৎ ক্রিয়তে তদা ন ভবতি। সাক্ষাৎকৃত্বতি
প্রদাদিস্থাভাবে নিত্যসমাসাভাবায় যচ্। আবিঃপ্রাত্থাক্রংশক্ষোঃ প্রাত্তরাদিভূক্ত ইতানেনৈব প্রাপ্তাবিহ পুনঃ পাঠঃ ক্রঞঃ প্রয়োগে বিকল্পার্থঃ।

(१৮০)। সাক্ষাদাদিগণপঠিতগৈয়ব লবণাদেবভূতভদ্তাবে প্রান্তরাদিস্বং মাস্তর্যক বা ভবতি। প্রান্তরাদিস্বাভাবপক্ষে লবণং ক্লুছেতি দ্বিতীয়ান্তমেব লবণমিতি পদম। ৪৮৪। সপ্তম্যস্তস্থাগ্নাদেঃ। অগ্নোকৃত্য স্বগ্নোকৃত্ব বশেকৃত্য বশেকৃত্য দশগ্ৰীবমিতি

ভট্টিঃ। অগ্নো বশে বিকম্পনে বিহসনে প্রহসনে প্রপতনে হর্থে।

৪৮৫। অনুপশ্লেষে উরিদি মনদি মধ্যে পদে নিবচনে চ।

উরসিক্তা উরসিক্তা মনসিক্তা মনসিক্তা মধ্যেক্তা মধ্যেক্তা মধ্যেক্তা শদেক্তা পদেক্তা নিবচনেক্তা নিবচনেক্তা নিবচনেক্তা বচনং নিয়ম্যেতার্থঃ। অনুপশ্লেষ ইতি কিম্ ? উরসিক্তা হস্তং শেতে হস্তী পদেক্তা শিরঃ শেতে শা।

৪৮৬। উপাজে ২য়াজে তুর্বলম্ম বলাধানার্থে। উপাজেকতা উপাজেকতা অয়াজেকতা অয়াজেকতা।

৪৮৭। অন্তর্দ্ধানে তির**ঃ।** তিরস্কৃত্য তিরস্কৃত্বা।

⁽৪৮৪)। সপ্তম্যস্তস্থায়্যাদেঃ শব্দস্ত ক্তঞ্জি পরে প্রাছরাদিত্বং বা ভবতি। সপ্তম্যস্তস্তেতি কতং সমাসেহপি কতে সপ্তম্যস্তম্পত্যর্থন্ । বিভক্তাস্তরপ্রসক্তিরনভিধানান্নিরন্তা এব। অন্তে বদস্তি বিভক্ত্যস্ত-প্রতিরূপকা অমী শব্দাস্তদর্থাভিধায়িনোহত্রৈবাব্যয়া বাঁচ্যাঃ। সপ্তম্যস্ত-স্থেতি সপ্তম্যস্তপ্রতিরূপকস্থাব্যস্থেত্যয়্মর্থোহ্বগস্তবাঃ।

⁽ s৮৫)। অন্তপন্নেবেহর্থে বর্ত্তমানশু উরদীত্যাদেঃ দপ্তম্যস্কশু কৃঞি পরে প্রাছরাদিত্বং বা ভবতি। উপদ্লেবং সংযোগঃ। উরদি-ক্সত্যেত্যাদীনামভ্যুপগম্যেত্যর্থঃ।

⁽৪৮৬)। উপাজেহ্বাজে শন্দৌ হুর্বলম্ম বলাধানার্থে বর্জেতে এতৌ কৃঞি পরে প্রাহরাদী বা ভবতঃ। এতয়ারর্থকথনমর্থাভিব্যক্তরে নম্বর্থান্তরনিবৃত্তয়ে অনরোরর্থান্তরাভাবাৎ।

⁽৪৮৭)। অন্তর্দানেহর্থে বর্ত্তমানন্তির:শল্প: কৃঞ্চি পরে প্রাছরাদিব বি ভবতি। তিরকৃত্যেতি তিরণ্ডেতি পক্ষে কস্কাদিয়াদ্বিদর্গাভাব:। প্রাদীনাং

৪৮৮। কচিদপ্রাদেশ্চ। স্বধনং তাজ্ঞা পচ্ছতি। সন্ধ্যাবধূং গৃহ্য করেণ গাঢ়মিত্যাদি।

৪৮৯। ত্বাদিরোহপৃষ্চ্ছ': ক্তেন্ডো নঃ।

পৃ মৃচ্ছ বিৰ্জ্জ: আদিরেফাজ্যামুত্তরঃ ক্তেন্ত কারো নো ভবতি।
লূনিঃ ধ্নিঃ লীনিঃ প্লীনিঃ ত্রীনিঃ জীনিঃ কীর্ণিঃ জীর্ণিঃ।
অপমূচ্ছ ইতি কিম্? পূর্তিঃ মূর্তিঃ।

৪৯০। জ্বাদেরপি ন স্থাৎ।

শ্রদাদীনাঞ্চ ধাতোঃ প্রাগব্যবহিত এব প্রয়োগঃ স্বভাবাং তথাচাদীনাং পর এব প্রয়োগো ভবতি প্রভবতি প্রদাতি শ্রদ্ধাতি চ। শ্রদাদান্তর্গণে প্রাগ্রাদৌ পঠিতয়োঃ প্রাগ্রাবাঃশক্ষোঃ কবিপ্রয়োগে বাবধানেহপি প্রয়োগো দৃশ্রতে তৎ কথমিতি চিস্তাম্। তথাচ, বারুণীমদবিশঙ্কমথা-বিশ্বক্ষ্মোহভবদসাবিব রাগ ইতি মাঘঃ। প্রাহ্যন্তিরশ্চ ভবতীতি সাংখ্যম।

(৪৮৮)। প্রাদিবজি তান্ধাতোরপি জ্বা মচ্চ ভবতি। কচিন্মহা-কবিপ্রয়োগাদাবিত্যর্থঃ। প্রাদিবজি তত্তেনৈব সমাসাভাবোহপ্যর্থাক্ষেপ-পরিপ্রাপ্তঃ।

(১৮৯)। লুঞ্ছেদনে ধৃঞ্কশানে লী প্লী প্লেষণে ব্ৰী বরণে বা গতিশোষণয়োঃ জ্ঞা বরোহানো ক্র্যাদিগণস্থাঃ সপ্ত ন্থানয়ঃ। কীণি রিতি ক্ বিক্লেপে ক্রি: শ্লুদির ইতি ইর্ রাস্তাদেরিত্যাদিনা দীর্ঘঃ। পূর্তিরিতি পূ পালনপূরণয়োঃ উর্পবর্গাদিত্যুর্ মূর্তিরিতি মূর্চ্ছামোহনসমূচ্ছ্রায়য়োরমুর্দ্ধ্রাদস্ত্যবচ্চসবর্জ মিতি নিরমানতিঙ্কদ্ধলীতি প্রতিষেধাভাবাং লুগ্রুজাহস্ত ইতি অন্তলুকি ক্রতে রেফাছত্তরাং প্লাপ্তো প্রতিষেধঃ। জ্বাদৌ পূ মূর্চ্ছ পাঠে কর্ত্বব্যে অপূমূ্চ্ছ ইতি কৃতং ক্রন্তব্যোরিত্যত্রামুন্র্ত্যর্থম্।

(৪৯০)। ধ্বর্ রোগে ইত্যাদেরপি রেফাছ্তরস্থাঃ ক্তেস্তো নো ন ভবতি। জূর্ত্তিরিতি ধিবস্তম্ভ চেত্যাদিনা বকারস্থ উকারঃ রাস্তাদে- শ্বর জ্বি: দ্বা ভূবি: চর্ চ্বি: হচ্ছা হুবি: তুবী ভূবি: ধুবী
প্তিরিত্যাদি

८०२। क्लिंग्दशितानिष्णारिनम्ह।

পৃ মৃচ্ছ বির্জাং আদিরে কাভ্যামোদিড্ড্যাদেশে তাতরয়ো: ক্তক্ত বেরা ত কারো নো ভবতি। লুমঃ লুনবান্ কীর্ণঃ কীর্ণবান্ জীর্ণঃ জীর্ণ- বান্ ভাশ্জো ভগ্নঃ ভগ্নবান্ ডীনঃ ডীনবান্। সূয়তি দৃঙ্দীঙ্ ধীঙ্মীঙ্বীঙ্ বীঙ্ বীঙ্ লীঙ্।

রিতাদিনা দীর্য:। তৃত্তিরিতি ঞিপরা সংভ্রমে চুর্তিরিতি চর্ গতৌ ভক্ষণে চ হিনোতাদেগুর্ণাদিশ্চেতি অকারস্থোকারঃ রাস্তাদেরিত্যাদিনা দীর্য: ইতিরিতি ছর্জা কৌটলাে। তৃত্তিরিতি ধূর্তিরিতি উর্বী তুর্বী থূর্বী হর্বী ধূর্বী হিংসার্থাঃ পঠ্যস্তে। আদিপদেনাত্রাপরেষামপি গ্রহণম্। কিন্তু প্লকারাস্তানামিকরাদেশে কৃতে রেফাছন্তরা নকারস্থ বিষয়:। তছাতি-রিক্তস্ত রেফো জরাদেরেবাবগস্তব্যঃ তেন সরৎ সর্ভিঃ মূর্বী মূর্তিঃ গুর্বী গৃতিরিত্যাদয়:।

(৪৯১)। চকারেণ জেরিতি তাজ্বা পূর্ব্বস্থানহান্ত্বর্ত । জ্বরাদেরিতাস্থান্ত্রিব্র নান্তি অতন্তৎ পৃথগ্নক্ষণং কৃতং অন্তথা অপূমৃদ্র্থান্দেরিতি কুর্যাং। অতএব জুর্ণঃ তুর্ণ ইতি ভবতি। ভগ্ন ইতি ভন্জো আমর্দনে হলুপান্তেত্যাদিনা নকারলুক্ ওদিদাদের্নাদাবিতি জম্ম গঃ। তীন ইতি ডীঙ্ বিহায়সাং গতৌ দিবাদিঃ ভ্বাদেস্ত ডরিতং। স্যুতীতি স্থা প্রাণ্ডির্যবে দিবাদিঃ যিরক্রগনিদেশাৎ তুদাদেরদাদেশ্য ন গ্রহণম্। দৃঙ্ পরিতাপে দীঙ্ ক্ষয়ে গীঙ্ অনাদরে মীঙ্ হিংসায়াং বীঙ্ অবণে ব্রীঙ্ বুণোত্যর্থে লীঙ্ লেষণে এতে নব দিবাদ্যন্তর্গণা ড্যাদয়ঃ। অপূমৃদ্র্য ইতি কিম্ পূর্তঃ মূর্তঃ। বৃঙ্ বৃঞ্ শ্লভশ্চেদ্র নি বিক্লিতেঙ্ থাদিঙভাবঃ। শ্বিযুবাদীদিতাং ক্রৌ স্বাবিতি ইঙ্প্রান্তিন্যান্তর্বনা রেক্ষান্ন ভবতি। কৃতস্থাপত্যং ক্রার্তিঃ।

৪৯২। দিবোহনক্ষাদে।

আদূানঃ স্বাদূানবান। অক্ষাদ্ধে তু—দূ্যতম্।

৪৯৩। সিঞো গ্রাদে কর্মাকর্ত্তরি।

সিনঃ সিনবান্ গ্রাস: স্বয়মেব।

8 २ ८ व्यक्ति न भागति ।

শমরঃ সমক্রান্। অপাদানে তু—উদক্তমুদকং কৃপাৎ।

৪৯৫। নিৰ্কোহকৰ্ত্ত্বাতে। নিৰ্বাণো দীপঃ। কৰ্ত্বাতে তু—নিৰ্বাভং বাতেন নিৰ্বাতে। বাতঃ

[্]ত (৪৯২)। দিবু ক্রীড়াবিজিনীয়াব্যবহারত্যতিস্কৃতিকান্তিগতির অক্ষাদি-বিষয়বজিতি। ক্রান্থ পরঃ ক্রক্তবহোস্তকারো নো ভবতি। আদ্যান ইতি উদ স্থাবাস্ত্রভূতি বকারস্ত্রোকারঃ। তথাচামরঃ, আদ্যানঃ স্থাদৌদরিকঃ। দ্যুতং ক্রীড়ন্তি দূর্যুতং বর্তুতে ইত্যাদৌ অক্ষাদিবিষয়খাদিজিনীয়া ধাত্বহঃ।

⁽৪৯০)। বিঞ্বদ্ধনে ইত্যাসাদ্থাসে কম্মকর্ত্তরি বাচ্যে ক্তন্ত্ত-ব্যোস্কারো নো ভবতি। গ্রাস ইতি কিম্ ? সিতঃ শৃকরঃ স্বয়মের। কর্মকর্ত্তরিতি কিম্ ? সিতো বিপ্রেণ গ্রাসঃ।

⁽৪৯৪)। অন্চু গতিযাচনয়োরিভ্যস্মাৎ পর: ক্তক্তবছোস্তকারো নো ভবতি অনপাদানে। ন চেদক্ষত্যর্থবিষয়েংপাদানং ভবতীতি অন্চু পূজায়ামিত্যভাতাগ্রহণন্ অক্ষুঃ পূজায়ামিত্যনেন নিত্যমিট্বিধানাৎ। সমক ইতি সঙ্গত ইত্যর্থ: হলুপাস্তেত্যাদিনা নকারলুক্। অচাতে প্রকাশতেহনেনেতি অস্ক ইতি দর্শনাৎ। প্রকাশনেংপ্যক্ষতিঃ প্রযুজ্যতে তত্মাদ্ব্যক ইতি ভবিত্ব্যমিতি ন বাচাং ক্রাস্ত্রভাক্ত প্রকাশনাভিধান-পক্যভাবেনাপ্রয়োগাৎ। ব্যক্ত ইতি তু অন্চু ব্যক্তিমক্রণগতি্ধিত্যক্ত রপম।

⁽৪৯৫)। নিরপূর্ব্বাৎ বা পতিবন্ধনয়োরিত্যস্মাত্তরঃ স্কান্তবন্ধো-স্তাকারো নো ভবন্তি। যদি বাতঃ কর্তান ভবতি। নির্বাণ ইতি কৃতো-২চ উত্তর ইতি গত্বম্। নির্দাতিং বাতেনেতি অন্তক্তে কর্ত্তরি তৃতীয়া।

৪৯৬। ছুশোদীর্ঘ**-চ**। পুদূপতাপে দূনঃ দূনবান্ গ্নঃ গ্নবান্। ছুজ্ঞগতাৰিত্যেকে।

৪৯৭। পুনাতের্মাশে। পুনোরিপুঃ।

৪৯৮। যুক্তযরলাতোহধ্যাখ্যঃ।

প্রতিশানঃ প্রাণঃ মানঃ গ্রানঃ। ধ্যাখ্যেস্ক্র—ধ্যাতঃ খ্যাতঃ।

কর্ত্তেতি বিশেষণম্। বাতেন করণেন নত্বং যথা স্থাৎ নির্ব্বাণো দীপো বাতেনেতি। অনভিধানাৎ ক্রবতো ন ভবতি। মোক্ষবাচকস্ত নির্ব্বাণ-শক্ষো ঙনড়স্তঃ।

- (৪৯৬)। ছ ও ইত্যেতাভাাম্ভর: . জ্জুবণোস্তকারো নো ভবতি। প্রক্তেদীর্ঘন্ট। টুহ উপতাপে ইতাক্ত স্বাদেগ্রহণমিতার্থামুরোধেনাহ ক্যানকার:। ছ জু গভাবিত্যকৈর গ্রহণং ন চ টুছ উপতাপ ইতাক্ত সাম্ববন্ধক বাদিতি টীকাকার:। ন প্রাসদার্থব্যাপকোহরং ভার: প্রমাণীকের্ডুন্ইতীতি প্রথমশক্ষ এব বৃত্তিক্তোহভীত্ত:। তে প্রীষোৎসর্গ ইতাস্য গ্রহণং ন গুভ্ অব্যক্তে শক্ষে ইতাস্য প্রহণং ন গুভ্ অব্যক্তে শক্ষে ইতাস্য প্রহণং ন গুভ্ অব্যক্তে শক্ষে ইতাস্য প্রহণং ন
- (৪৯৭)। পূঞ্ পবনে ইতাস্মান্নাশে বর্তমানাৎ ক্রক্তবছোন্তকারে। নো ভবতি। পুনাতোরতি নির্দেশেন স্পষ্টীকৃতাস্থৈব নাশে বৃত্তিঃ নতু পূঙ্পবন ইতাস্থ ভ্বাদেঃ। পূনো রিপুঃ নষ্ট ইতার্থঃ। নাশ ইতি কিম্ १ পূতং ধান্তং নিম্লীকৃত্মিতার্থঃ জু ছান্তদিভাদিনা ইঙভাবঃ।
- (৪৯৮)। যুক্তা যরলা যন্ত স যুক্তযরলা যুক্তযরলাদাকারান্তাদাতোধ্যাখাবজি তাত্তরঃ ক্তক্তবয়েন্তকারো নো ভবতি। প্রতিশ্রাদা
 শৈঙ্ গতৌ প্রণে মৈ গাত্রবিনামে। ধ্যাত ইতি ধ্যৈ চিন্তাদাং খ্যাত
 ইতি খ্যা প্রকখনে চক্ষিঙাদেশ চ। যুক্ত ইতি কিম্? যাতঃ খরল ইতি
 কিম্? স্নাতঃ। আত ইতি কিম্? প্রতঃ। গণপাঠযুক্ত যুরলপ্ত ধাতোস্ত্র গ্রহণম্। অতো নিমিত্তকতে দিক্তা যুক্তযরলপ্ত ন ভবতি।
 নির্মাতঃ। অত্র হি হ্রাভ্যামশদিবেতি শ্লেকনিমিভা দিক্তিঃ।

৪৯৯। অমদো দাদদ নঃ। ছিন্নঃ ছিন্নবান মদস্ত — মতঃ।

৫০০। উন্দীহ্রীজ্রাত্রাবিনত্তিকুদো বা। সমুন্নঃ সমুত্তঃ।

৫০১। ক্রস্থার্ভঃ।

ঋণম্ ঋতম্।

৫०२। (एवजार्ज्न मार।

৫০৩। কিতবার্থে ধূর্ত্তে।

- (৫০০)। উন্দী ক্লেদনে হ্রী লজ্জায়াং দ্রা গন্ধোপাদানে ত্রৈঙ্ পালনে বিদ্ বিচারণে গুদ্ প্রেরণে এভা উত্তরঃ ক্তক্রবন্ধোন্তকারো নো ভবতি বা। দকারণ্ড নকারঃ। সন্নিযোগশিষ্টং নকারদ্বয়বিধানং যদা ক্তক্রবন্ধোন্তকারো নো ভবতি তদৈব দকারণ্ড নকারঃ। যত্র পুনদ্কারো নান্তি তত্র ক্তক্রবন্ধোন্তকারমাত্রন্ত নকারঃ বিধানসামর্থ্যাৎ। হ্রী ইত্যস্থাপ্রাপ্তে বিভাষা শেষাণান্ত প্রাপ্তে বিভাষা। সমুন্ন ইতি পূর্ব্ববদিঙ্ভাবঃ হলুপান্তেভ্যাদিনা নকারলুক্। বিনতীতি নির্দেশাদিদ্ সভাষামিত্যস্ত নিতাং বিন্নমিতি।
- (৫০১)। ঋ গতাবিত্যস্মাত্ত্তরঃ ক্তস্ত তকারো নো বা ভবতি। ঋণমিতি কালান্তরদেরং সর্দ্ধিকং ধনমুচ্যতে। ঋতমিতি সত্যম্। ইয়ং চার্যব্যবস্থা লোকত এবাবগন্তব্যা।
- (৫০২)। দেবত্রাতেঃ পাক্ষিকপ্রাপ্তক্তকারস্থ নো ন স্থাং। ত্রাত-মিতি কথং কেবলস্থাপি ত্রাতশক্ষ্ম সংজ্ঞায়াং নক্ষ্ম ভবতীতি দেবৈ স্ত্রাতো দেবত্রাতঃ দেবশক্ষাত্র সংজ্ঞোপলক্ষণার্থঃ।
- (৫০৩)। কিতবার্থে কিতবার্ভিগায়িন ধৃর্ট্তে ক্তন্ত তকারো নো ন ভবতি। পূর্ত্ত ইতি ধুর্বী হিংসার্থঃ গঠাতে শিঘুবাদীদিতাং ক্তেনী দাবিতি ইঙ্কানঃ রম্র্ছেন্দস্তাবচ্ছসবর্জ মিতি প্রতিবেধাভাবাৎ লুগ্ যুজোহস্ত ইতি বকারলুক্। অকিতবার্থেত্—ধূর্ণঃ।

⁽৪৯৯)। মদ্ব্যতিরিক্তাদ্ধাতোদ কারাছত্তর: ক্তক্তবছোস্তকারো নো ভবতি। দকারণ্ট নকারঃ। মন্ত ইতি মদী হর্ষে শ্বিঘুষাদীদিতাং ক্রৌ ছাবিতিত্যাদিস্থাদিঙভাবঃ।

প্রে। হেম্বর্থে নির্মিতে।

৫০৫। খণ্ডার্থে ভিত্তে।

৫০৬। শুষিপচিভ্যাং করো।

শুক্ষঃ শুক্ষবান্ পকঃ ঐকবান্।

৫०१। ऋरिया यः।

कामः कामवान्।

৫०৮। शाकारमङ्गिः किटल।

(৫০৪)। হেত্বর্থে নিমিত্তশব্দে ক্রন্ত তকাবো নো ন ভবতি। নিমিত্ত-মিতি ঞিমিদা ক্রেলনমোচনয়োঃ পূর্ব্ববিদিঙ্গুবিং। অন্তেত্বর্থে তু নিমিল:।

(৫০৫)। খণ্ডার্থে ভিত্তশব্দে ক্রস্য তকারো নো ন ভবতি। ভিত্ত-মিতি শকাদিজাদিওভাবঃ। থণ্ডার্থ ইতি কিম্? ভিন্নং বিদারিতমিতার্থঃ। ধূর্ত্তাদয়ঃ শব্দা যদ্যপি ক্রিয়াযোগে সমুৎপন্নাস্তথাপি তৈলপায়িকাদিনদ চি-বশাং কিতবাদ্যর্থমভিদ্যাতি তেন ধূর্তো ধূর্ণঃ ভিত্তং ভিন্নমিতাত্র কিতবো হিংসিতঃ খণ্ডং বিদারিতমিতার্থো ভবতি।

বিন্দতে প্রসিদ্ধনগোরিতি বক্তবাম। বিদু লাভ ইত্যম্মাতৃত্তরঃ ক্স্যাত্তকারো নোন ভবতি। প্রসিদ্ধনয়োব চিয়োঃ। বিদ্যা বিত্তঃ প্রসিদ্ধ ইতার্থঃ। রাজ্ঞো বিত্তং ধনমিত্যর্থঃ। অন্তত্ত্ব। বিশ্বম্। বিন্দতেরিতি নিদে শিদিদ্ সন্তায়ামিতাক্ত দৈবাদিকক্ত বিশ্ব ইতি ভবতি। বিদ্ জ্ঞান ইত্যক্তাদাদেঃ সেঙ্খাহিদিত ইতি ভবতি।

(৫০৬)। শুষ্ শোষণে ডুপচ্ষ্পাকে ইত্যেতাভ্যামৃত্র: ক্তক্ত বন্ধোস্তকার: কবৌ ভবতঃ। ক্রমঃ ক্রমবভামঙ্গমিতি ব্যবস্থা শুষঃ কঃ পচো বঃ।

(৫০৭)। জৈ থৈ থৈ কৈ করে ইত্যৈতশাত্তর: ক্তক্তবহো-স্তকারো মো ভবতি। যথা শ্রঃ শীঃ ম্পর্শে ইত্যস্য শ্রু ইতি নির্দ্দেশঃ ক্তরঃ তথিবেহাপি ন কৃতং বৈচিত্রার্থং বিচিত্রা হি কৃতিরাচার্য্যাণাং কচি-স্তবতীতি।

(৫০৮)। হিত ইত্যাদি হি গতাবিত্যতাপি দিধ্যত্যেব কিছ

কিত্তকারে পরে ধাঞাদেঃ স্থানে হি ইত্যাদির্ভবতি। হিতঃ হিত-হিত্বা হিতিঃ।

৫০৯! দদান্দাঞ্দেঙাম্। দত্তঃ দত্তবান্ দত্তা দত্তিঃ।

৫১০। মরুৎপ্রাদ্যচন্তো বানারস্তে। মরুদতঃ মরুতঃ প্রদত্তঃ প্রতঃ নিদত্তং নীতুম্।

দধাতেঃ প্রয়োগান্তরং মাভূদিত্যেবমর্থং লক্ষণং চকার। একারং কিম্ ? ধেটো মাভূং। ধীতঃ। কিদিতি কিম্ ? ধাতা। ত ইতি কিম্ ? ধীয়তে। (৫০৯)। দান্ দানে ডুদাঞ্ দানে দেঙ্ রক্ষণে ইত্যেতেধাং স্থানে কিন্তুকারে পরে দন্তবতি। তকারাস্তোহয়মাদেশঃ নতু দকারাস্তঃ। তেন অমদোদাদ্দ্দ ন ইতি নোলন ভবতি। দাইতি সামান্তনিদেশ এব কিমিতি ন ক্লতঃ কিমর্থং পৃথগুপাদানম্ ? এবং সতি দাপ্লবনে দৈপ্শোধনে ইত্যেতয়োরপি স্থাৎ দাতং ধান্তম্ অবদাতং স্থেম্।

দ্যতের্যন্লুকীতি বক্তবাম্। দো অবথগুন ইতান্ত যন্লুকি সতি কিন্তকারে পরে দন্তবভি। দাদভবান্। অথবা দ্যতেশ্চেতি লক্ষণমেবং বাবেয়াং—দ্যতেশ্চ স্থানে কিন্তকারে পরে দন্তবভি। প্রাদেরচশ্চেতি-রস্যানারন্তে কিন্তকারে পরে তশ্চ বা ভবতি। দিতঃ দিতবান্ ইত্যাদৌ দোষোমাস্থাং কিন্ত ইতি বিহিতেন ইঙা ব্যবধানাদ্দাদেশোন ভবতি। যন্লুকি তু কচিল্লেতি ইঙি নিমিদ্ধে দদাদেশবিষয়ঃ। দাদভবানিতি। তাদেশন্ত বিশেষ এব বিহিতত্বাদবন্ত ইত্যাদৌ ভবত্যেব ইঙ্ তু তাদেশ-বিধানসাম্প্রাৎ পশ্চাদিপি ন ভবতি।

(৫১০)। নকছেকাং প্রাদেরচশ্চোত্রেষাং দান্ দাঞ্ দেঙাং স্থানে কিন্তুকারে পরে তো বা ভবতি। অনারস্তে গম্যমানে। মরুত ইতি স্বর্গাং স্বর্গে বেতি পক্ষে তকারলুক্। নীন্তমিতি দাদৌচতাদেশে ইতি ইণ্স্থোপদর্গদ্য দীর্ঘ:। অনারস্ত ইতি কিম্ ? ভাবে কর্মণি চারস্তে ক্র ইতি যদা আরস্তে ক্রো বিধীয়তে তদা ন ভবতি। তথাচোক্তম্—অবদত্তঃ বিদ্তুক্ষ প্রদত্তকাদিকর্মণি। স্থান্তন্ত্বক নিদ্তুম্পি চেষ্যতে!

७५५। माट**ङ**ह।

अवर्खा मानः व्यविष्ठः।

৫>২। यि চাদে। জिश्वित्रत्नीमत्त्र।

জभः জभवान् জभः । अजभा। अन्ति क्रां विजया।

৫১৩। স্ফায়ঃ স্ফাঃ ক্তক্তবজোঃ বি স্ফাতঃ স্ফাতবান্। স্ফাতিরিত্যস্ত স্ফাতাস্ত তুলা ইতি মন্বর্গীয়াৎ-প্রত্যয়েন।

যেগপি প্রাদ্য উত্তরাত্তকারবিধানমেব নিতামিচ্ছন্তি তৈরপি প্রদন্তাদি-প্রয়োগদর্শনাতংশিদ্ধয়ে যত্নান্তরমভিধাতবাং তত্মাদিকল্পবিধানমেব স্থায়ামিতি স্ত্রক্তোহভিপ্রায়ঃ। প্রাদ্যচ ইতি কিম্ ? দধি দন্তম্। অচ ইতি কিম্ ? নিদ্ভিম্।

- (৫১১)। প্রাদেরচ উত্তরস্থ দ্যতেঃ স্থানে কিন্তকারে পরে তো বা ভবতি। পক্ষে অবদিতঃ দোষোমাস্থাং কিত্তে ইতি ইঙ্। একযোগ-নিনি ইণ্ডাদমুরুত্তপ্রাপি মকুতঃ প্রয়োগোহত্র ন দুর্শিতঃ অনভিধানাৎ।
- (৫১২)। অদ্ ভক্ষণ ইতাশু কিন্তে যচি চ পরে জ্মির্ভবতি অনোদনে বাচো। ইকার উচ্চারণার্থঃ। জ্মাইতি ক্তঃ ধোহধাত্র্যাদিতি তন্তু ধঃ প্লাচ্চ ধ ইতি পক্ষে ধকারলুক্। প্রজ্মাইতি ক্তৃ । যচ্। নম ক্রি পরে জ্মিং ক্তরা পশ্চাদ্যচ্ করণীয়ঃ কিং যচীত্যনেন তদেতজ্জ্ঞাপয়তি সর্ববিধানাৎ প্রাণের যচ্ ভবতীতি। অন্তথা অভিধায় প্রদায়েত্যাদৌ হাদয়ঃ স্থাঃ।
- (৫১০)। স্ফায়ী ওপ্যামী বৃদ্ধাবিত্যস্য ক্তক্তবন্ধাঃ পরয়োঃ স্ফীর্ভবতি। স্ফীতো ধাপ্তাছ্যপচিতঃ। যদ্যয়ং নিত্যো বিধিঃ কথং স্ফাতাস্তপুলা ইতি চোদ্য আহ স্ফাতা ইত্যাদি। স্ফায়ঃ ক্তিপ্রতায়ে ক্লতে
 বন্চাযে হলীতি যলোপে চ স্ফাতিরিত্যস্মান্তদন্তান্ত্যস্মিয়র্থে অর্শ ক্লাদেরদিত্যকারেণ সাধনায়ঃ। স্ফাতাস্তপ্তলাঃ প্রভূতারকরণে স্কিমুক্তা
 ইত্যর্থঃ।

৫১८।। शार्याञ्जारनो शैन्छ।

পীনো বান্তঃ। প্রাদে তু—প্রপ্যাণঃ আগ্যানঃ।

७७७। चारक्षक्ष्यकाः।

আপীনোহসুঃ আপীনমুধঃ।

১৬। ব্যামিশ্রান্ন স্যাৎ।

প্রাপ্যাণে হন্ধুঃ প্রাপ্যাণমুধঃ।

৫১৭। কিনীর্ঘস্তো নশ্চ কর্জ্রধিকরণয়োঃ। প্রক্ষীণো ধর্ম্মঃ ইদমেষাং প্রক্ষীণম্।

० २४। देनचाटकान्दरावी।

ক্ষীণো বরাকঃ কিতঃ ক্ষীণায়ুঃ ক্ষিতায়ুঃ।

⁽৫১৪)। চকার: ক্তক্তবজোরিত্যকুকর্মণার্থ:। অবিদ্যমানে প্রাদৌ ক্তক্তবজো: পরয়ো: প্যায়ঃ স্থানে পীর্ভবতি। পীন ইতি ওদিবারত্বং প্রপ্যাণ আপ্যান ইতি পূর্ববদ্যবুক্।

⁽ ४) । আঙ্ উত্তরস্ত প্যায়ঃ স্থানে পীর্ভবতি অকৃধসোব।চায়োঃ। প্রাদিয়াৎ পূর্কোণাপ্রাপ্তেরনেনার্থবিশেষে বিধানম্। অন্ধঃ কৃপঃ। উধঃ পশুস্তনঃ।

⁽৫১৬)। উপসর্গান্তরেণ ব্যামিগ্রাৎ পূর্কোক্রবিধানং ন ভবতি। আপ্রপ্যাণ ইত্যানো উপসর্গান্তরব্যবধানাদেব ন প্রাপ্নোতীতি তল্লাস্তোদা-হরণং তন্মাৎ প্রাপ্যাণ ইত্যুদাহর্নীয়ম্।

⁽৫১৭)। কি ক্ষেত্ৰ ভালি: কি নিবাসগত্যোন্তলাদিদ্ব রোরপি গ্রহণ্ম। কিষ্ হিংসায়ামিত্যভা ক্রাদেন্ত ক্ষিত ইতি। কর্ত্যধিকরণে চ বিহিতয়ো: ক্রন্তবন্ধা: পরয়ো: ক্রিলীর্ঘো ভবতি। তয়োন্তকারণ্ট নকারঃ। সদ্দিযোগশিষ্টম্ভয়োবি ধানম্। , (চকারেণ ধচি চাদো ভ্রমিরনোদনে ইতাতো ঘটীতাম্বর্ততে প্রক্ষীয় ইতি) প্রক্ষীণ ইতি কর্ত্তরি ক্রঃ ইদমেযাং প্রক্ষীণমিতি ধাতোরশ্রাকশ্বক্ষাকাতিভ্রম্বর্থকি ক্রনেদেচিত অধিক্রণে ক্রঃ। ক্রেধিকরণয়োরগ্রত্ত - ক্ষিতং ভাবে ক্রঃ। ভাবেহপি বিকর্ম ইতি চন্ত্রমতম্। তথাহি ভাবাক্ষোশদৈগ্রেমিতি তলক্ষণম্।

⁽৫১৮)। কর্ত্ব্যধিকরণে চ বিহিত্যোঃ ক্তক্তব্যোঃ পর্যোদৈক্তি

७१२ । माः नाः माः क्लार्पा

শীতে। বানুঃ শীতং বৰ্ত্ততে।

৫২০। দ্রবকাঠিতে রোগে চ ক্রন্ড নঃ।

শীনং ঘৃতং প্রতিশীনো রোগঃ।

৫২১। অভ্যবাদা।

অভিশীন: অভিশ্যানঃ অবশীন: অবশ্যান:।

•৫২২। ব্যামিশ্রান্ন স্যাৎ। সমভিশ্যানম। সমভিশীনমিত্যেকে।

আক্রোপে চ গম্মানে ক্ষিণীর্বো বা ভবতি। তয়েস্তকারাক নকারঃ। এতদপি সন্নিয়োগশিষ্টবিধানম্। দৈত্যমসূকম্পা আক্রোশঃ শাপঃ, এতাভ্যান্ মন্তব্য পূর্দ্বস্থ্যেণ নিত্যং ভবতি।

- (৫১৯)। খৈঙ্গতাবিতাপ্ত ক্লক্তবন্ধোঃ পরয়োঃ শীর্ভবতি স্পর্শে বাচ্যে। স্পর্শো গুণবিশেষঃ শীতো বায়ুরিতি। গুণবিশেষবাচিভ্যো লুক্ চেতি অৎ তল্লুক্ চ। শীতশব্দেন তদ্গুণমুক্ত উচ্যতে অতো বায়না সামানধিকরণ্যম্। শীতং বর্ত্ত ইতি অত্র গুণমাত্রর্ত্তিরিতি।
- (৫২০)। দ্রবকাঠিন্তে রোগে চ বাচ্যে ক্তক্তবন্ধাঃ পরয়োঃ শ্রঃ
 স্থানে শীর্ভবতি। তয়োস্তকারশ্চ নকারঃ। শানং মৃতমিতি দ্রবাবস্থায়াঃ
 কাঠিতাং গতমিতার্থঃ। প্রতিশীনো রোগ ইতি প্রতিপূর্ববৈশ্রবাস্থ রোগাভিধায়িত্বং তয়তিরিক্তস্ত প্রয়োগো নাস্ত্যাভিধানাং। অন্তত্ত—সংশ্রানো
 রুশ্চিকঃ শীতেন সশ্কৃচিত ইতার্থঃ।
- (৫২১)। অভি অব ইত্যেতাভ্যামুত্তরশু শুঃ স্থানে ক্তক্কবন্ধোঃ পরয়োঃ শীর্বা ভবতি। তয়োন্তকারশ্চ নকারঃ। স্পর্শে দ্রবকাঠিন্যে চ বাচ্যে পূর্ব্বেণ প্রাপ্তে বিভাষা অম্যত্রাপ্রাপ্তেঃ। অনেন তাকে পক্ষে অভিশানঃ যুক্তযরলাত ইত্যাদিনা তম্ম নঃ। স্পর্শদ্রবকাঠিন্যাভ্যামন্তব্রৈবায়ঃ বিকর ইতি চাক্রা এব স্বীকুর্বস্থি।
- (৫২২)। উপসর্গান্তরেণ ব্যামিশ্রাদভ্যবাহত্তরস্থ শৃঃ স্থানে পূর্বস্ত্ত্বেণ প্রাপ্ত আদেশো ন ভবতি। অন্তে তু সমভিশীনং সমভিশ্রানমিত্যেবাত্র ইচ্ছন্তি।

৫২০। প্রাৎ স্ত্যায়ঃ স্তীন্তো মো বা। প্রস্তীতঃ প্রস্তীমঃ প্রস্তীতবান্ প্রস্তীমবান্।

৫২৪। ব্যামিশ্রাচ্চেত্যেকে। প্রসংস্তীমঃ প্রসংস্তীতঃ।

৫২৫। ঞিফলঃ ফুল্ তো লশ্চাপ্রাদে । ফুলঃ ফুলবান্।

৫২৬। সমুদ্ত্যাঞ্চ। সংফ্লঃ সংফ্লবান্ উৎফ্লঃ উৎফ্লবান্। প্রাদৌ তু—প্রফুল্তঃ প্রফুল্তবান্।

⁽৫২৩)। স্থ্যায় ইতি ষ্ট্যৈ ষ্টে শব্দসংঘাতয়োরিত্যত্রৈকস্থ বং দ ইতি বিদে ক্লতে দ্বারেপি গ্রহণম্। স্ত্তীরিতি প্রথমান্তং বিভক্তিবিপরিণামাৎ মবিধৌ পঞ্চমান্তম্। প্রাহত্তরক্ত স্থ্যায়ং স্থানে ক্লক্তবড়োঃ পরয়োঃ স্তীর্ভ-বিতি। তন্মান্তরন্তকারো মো বা ভবতি। তন্মান্তরন্তকানো নিদেশিং মুক্রযরনাত ইতি প্রথমং নো ন ভবতি। নিমিরাভাবাহতরকানে চ ন কবতি।

⁽৫২৪)। উপদর্গাস্তরেণ ব্যামিশ্রাচ্চ পূর্ব্বোক্তবিধানং বা ভবতীত্যেকে। উপদর্গান্তরব্যবধানে ন প্রাপ্নোতীতি বচনম।

⁽৫২৫)। ঞিকলা বিদরণ ইত্যস্ত স্থানে জ্বক্রবন্ধোঃ প্রয়োঃ রুন্
ভবতি। তো লন্চাপ্রাদাবিতি দ্বিতীয়ো যোগঃ। প্রাদিযোগাভাবে সতি
জ্বক্রবন্ধোঃ তকারোলন্চ ভবতি। ধোগবিভাগাৎ প্রফুল্ত ইত্যত্রাদেশো
ভবভ্যের তেন তো লো ন ভবতি। ঞ্যন্থবন্ধনিদেশাঃ ফলনিপ্রভাবিত্যস্ত নিরাসার্থঃ। তত্র ফলিতঃ। নমিঙা ব্যবধানাৎ তত্র ন ভবিষ্যতি তহি
স্পিষ্টার্থঃ। ফুল্ল ইতি পূজেচ্ছেত্যাদিনা ক্রঃ। শ্বিঘুষাদীদিতাং ক্রৌ শ্বাবিতি
ইঙ্ভাবঃ।

⁽ ৫২৬)। সম্ উৎ ইত্যেতাভ্যাঞ্চ পরস্ত ঞিকল: ক্তক্তবত্বোস্তকারে। লো ভবতি। ফুলাদেশক। প্রাহ্যপদর্গদন্ধকাৎ পূর্বস্থ্রেণাপ্রাপ্তি:।

৫২৭। ক্ষীবুল্লাঘক্শোহদপ্রাদৌ। ক্ষীবঃ উল্লীঘঃ কৃশঃ। অপ্রাদাবিতি কিম্ ? প্রক্ষীবিতঃ প্রোল্লা-ঘিতঃ পরিকৃশিতঃ। পরিকৃশ ইতি প্রাদিসমাসঃ।

৫২৮। লদ্জো নগ্বা। লগ্নঃ লগবান নগ্ন: নগবান্।

৫২৯। হলাদে। হ্রস্বঃ ক্তে**ী চ**। হলক্ষঃ হলন্নবান্ হলতিঃ।

৫৩০। অপচায়োহপচিব। অপচিতঃ অপচায়িতঃ অপচিতবান্ অপঢায়িতবান্।

- (৫২৭)। কীর মদে উৎপূর্কারায় সামর্থ্যে রুশ্ তন্কবণে এভ্য উত্তরম্ভ ক্রম্ম তকারঃ প্রাদিযোগাভাবেহত্তবভি। ক্রবতোন ভবতানভি-ধানাং। তত্র ক্ষাবিতবান্। অতি ক্রতে হল্পর্বাভাবাদিঙভারঃ। ক্ষাবো মতঃ উল্লাঘো ব্যাধিনিমূক্তিঃ ক্রশস্তম্যুঃ। যদি প্রাদিযোগাভাবেহত্তবতি কথং পরিক্রশ ইত্যাশক্ষায়ামাহ পরিক্রশ ইতি প্রাদিসমাসঃ ক্রশশক্ষিতি ক্রম্বা পরিগতঃ ক্রশঃ পরিক্রশ ইতি প্রাদেঃ ক্রম্বাদের প্রথময়া ইতি তৎপূর্কয়ঃ এবং প্রেক্ল্ল ইত্যাদ্যপি সিধ্যত্যেব। ক্ষারক্রশোরিজ্পান্তপ্রাদেরদিত্যভা উল্লাঘ ইতি প্রচাদেক্তে ভেন ক্ষাবাদিসিদ্ধে ক্রেনানিইপ্রয়োগনিরাসার্থং শক্ষণম্।
- (৫২৮)। লস্জঃ স্থানে ক্তক্তবয়োঃ প্রয়োঃ নগা ভবতি। লগ ইতি জলস্জা ত্রীড়ে ঈদিঘাদিঙভাবঃ স্বোনিজালোরিতি সলুক্ ওদিভারঃ ওদি-দাদেন গিবিতি জম্ম গঃ।
- (৫২৯)। হ্লাদী স্থথে চেতাস্য ক্তক্তবদোঃ পররোঃ ক্টো চ পরে ছবো ভবতি। হ্লার ইতি ঈদিবাদিঙভাবঃ অনদোদাদদণ্ট ন ইতি নকারঃ। প্রাহ্লাদিত ইতি তুণান্তস্থা রূপম্।
- ৫০০)। অপপূর্বস্ত চাষ্ পূজানিশামনয়ারিত্যস্ত স্থানে ক্তক্তবজোঃ
 পরয়োরপচির্বা ভবতি। ধারস্তরমেবায়মাদিখতে অতএব ইঙ্পাত্র ন ভবতি।
 এতদেব স্চরিত্মপাচচায়শি বেতি লক্ষণং ন রুতম্। চায়তেস্ত সেঙ্ভাৎ
 পক্ষে অপচায়িত ইত্যেব ভবতি। নতু কিমর্থং ধারস্তরাদেশঃ ক্রিয়তে

৫০১। ट्रिंग निज्ञम्।

অপচিতি:।

৫৩২। থিত্যনব্যয়াদমগহ্রস্ব*চ।

খিদক্তে পরেহনব্যয়াত্তরেহস্তবতি। অগ্রুস্বশ্চ। নাজিক্ষমঃ । অনব্যয়াদিতি কিম্
পূ দিবামন্তা রাত্রিঃ।

চিঞ্চ্যন ইত্যশ্মাদেবাপচিত ইতি ক্রপং ভবিষ্ঠি চায়তেস্ক অপচায়িত ইতি। অত্রোচ্যতে—অপচিত্রপদ্যা পূজার্থতাং বোধ্যিতুম্। যে তুধাতু-নামনেকার্থজান্তিঞ্চয়ন ইত্যস্তাপি পূজার্থতাং প্রতিপদ্যন্তে তন্মতে লক্ষণ-মেতং স্পষ্টার্থম্।

(৫৩১)। অপচায়োহপচিঃ ক্রৌ পরে নিতাং ভবতি।

(৫৩২)। থিতীত্যনেন থিদজে। গৃহতে অনব্যয়াণিতি প্রতিষেধবিধান-সামধ্যার হাব্যয়াৎ পরঃ থিৎ সম্ভবতি কিন্তু থিদপ্তমেব পদম। পরো দীর্ঘ ইতি পরিভাষিত নীর্ঘ ত্রমো ভবতীতি কাতত্ত্বে বর্দ্ধনানো ব্যাখ্যাতবান। এবসগ্রুষো ভবতীতি তমতে ন সমানার্থতা তত্মাৎ স্কুরৈংমন্তঃ প্রমনৌং-নত ইতি ভবতি। পানিনীয়া চান্দ্রান্ট হ্রমত্রাপি বদস্তি। স্থারিংমত ইতি প্ৰমন্তংমন্ত ইতি। অগ্য়স্বংশ্চতি চজোঃ ক ইতি অচক্ষরারত ককারং কৃষা সাধনীয়ো নম্বক্। তথাচ, পিতানবায়শ্রেতি গাণিনেঃ থিতানবায়স্য সংখ্য-জ্ঞান চেতি চক্রপ্য ইতি সামান্তেন হুস্থবিধানম্। অনব্যয়ান্মকারো ভবন্ হলন্তাদপি বিধায়ত এব কিন্তুদৌ যুক্তান্তবাৎ লোপ্যঃ স্থছনাত ইত্যাদৌ। অথবা ব্রস্থবিধেরজ্বর্দ্রানজিতাকতেহিপি তৎপ্রাথীে যদজিতি কতং তন্ম-বিশেং সনিযোগশিওজ্প্চনার্থম্। নমু স্থ্রুমতা ইত্যাদৌ যগ্ডনেননাম্ বিধী-য়তে তদৈত্বে ন সিধ্যেত কিঞ্চ নাড়িক্স ইত্যাদৌ লোপোহন্মোহত ইত্য-কারলোপো যত্নসাধ্যঃ স্যাত্তম্য স্থবস্ত প্রকরণে বিহিত্তাং। অথবা স্থর্ধি-কারবিহিতভৈবামোহতাত্ত্রকতা বিধানং তদা বারিংমন্তঃ দধিংমন্ত ইত্যাদৌ হল-চামো লুগিতি লুক্ স্যাৎ পর্মস্ত্রীংমন্ত ইতাত্র অম্শসোবেতি ইয়াদেশক প্রদক্তেৎ ন হি ভদ্বিতীয়াবৎ কার্যাং কিন্তুমমাত্রবিহিতং তত্মাদমবিধানম অপার্থকং সাবন প্রক্রিরাগৌরবঞ্চ। কিঞ্চ উত্তরযোগেহম উপাদানমনর্থকং স্তাং বিতীয়াবদিত্যেবং কুর্যাং অন্যোবাম মত্রামুবুত্তি ভবিষাতি তন্মাদ্রাম-

৫০০। নাত্রিষদরুষামন্তলুক্ চ ।

রাজমেজয় স্থানিষম্ভপঃ অরুম্বদঃ।

৫৩৪। একাজিজ ভাদ্বিতীয়াবদম্।

ভারংমন্তঃ ক্রবংমন্তঃ স্ত্রিয়ংমন্তঃ স্ত্রীংমন্তঃ নরংমন্তঃ সাংমন্তঃ দ্যাংমন্তঃ বায়ংমন্তঃ লাবংমন্তঃ শি ভাষাম্। একাজিতি কিম্ ? লেখাক্রংমন্যঃ গ্রামণিংমন্যঃ। ইজন্তাদিতি কিম্ ? বঙ্মন্তঃ বাঙ্মন্যঃ।

পদং লিপিকরপ্রমাদকতং পরম্পরাগতম্। নাজিরম •ইতি গ্রঃ করপাণিখার্যাদেরিতি খণ্ড্ শিতাত্যাদিনা ধমাদেশঃ ক্রপাঠদারিধাদনব্যয়াত্বতর
এব নকাবো বিধীবতে এবমনুস্বারে রুতে বর্গে বা তদ্বগান্ত ইতি তদ্বগান্তো
বা ভবতি। দিবাম্লা রাত্রিরিতি খাণ্ডাত্মমনন ইতি খাঃ অব্যানীভাবস্যানব্যাল্লাজপকুন্তঃমন্তঃ।

(৫৩০)। থিনন্তে পরে নান্তাং• দিমতোহকমশ্চোন্তরে মো ভবতি।
এষামন্তল্ক চা বাজমেজয় ইতি এজ কম্পনে ণিঙন্তঃ থশ্ভেজাদেরিতি
থশঙ্৷ নমু অন্তবর্তিনীং বিভক্তিমাশ্রিতা বথা রাজাভেতাদে। নকারল্ক্
ভণেথাপি নোনান্তলেতানেন নলুকা ভবিতবাং কিং নান্ত ইতানেন তৎ
ক্রিয়তে শার্তার্থন্। দিমন্তপ ইতি দিমৎপরললাটান্তপ ইতি থশ্ভ্ অরুন্তদ
উতি তুলোবিধুতিলাক্য ইতি থা৷ নমু সকারদ্বাং বিধীয়তাং ভতিবেনা
মকারন্চিহার্থিং এবং মিনন্তাচঃ পরে ক্রতে যুক্তান্তথানন্তলুগ্ভববিষ্যতীতি
ভদেবমন্তল্ক চেতি ক্রতং বৈচিত্রার্থন্।

(৫৩৪)। পুরুষ্ত্রেণ প্রাপ্ত মকারং হ্রমত্বন্ধ বাধিতা বিধানম্। থিদত্তে পরে একাজিজভাননব্যাদন্তবতি স চ দ্বিতীয়াবং। অন্তব বিভিন্তিনীং বিভক্তিনাশ্রিত্য যথ পদত্তং তছাধ্যতে অন্তথা দ্বিতীয়াবিধানমনর্থকং স্যাং। অতএব ন পদান্তে ইত্যনেন ইযুবৌ ন বাধ্যতে। প্রিয়ংমন্তঃ ভ্রবংমন্ত ইতি কুদ্ধাতু । রিত্যাদিনা ইযুবৌ তলিমিজোপদদ্য চেতি সমাসে ক্বতে দ্বিতীয়াবহুত্বেহিপি লুক্সুপোহনোজ্ঞীদেরিত্যম্ লুগ্ভবতি তদা অম্বিধানমনর্থকং স্যাং। স্থিরংমন্তঃ স্ত্রীংমন্ত ইত্যত্র দ্বিতীয়াবত্বন অম্প্রোবিত্তি গুণঃ গাংমন্যঃ দ্বাংমন্য ইত্যত্র দ্বিতীয়াবত্বন গুণঃ পি ত্রাদেরিতি গুণঃ গাংমন্যঃ দ্যাংমন্য ইত্যত্র স্থানাবাদিত্যারং রায়ংমন্য নাবংমন্য ইত্যত্র দ্বিতীয়াবৎকার্যক্র

৫०१। शिल रेशिनाए।

ভিমিক্সিলঃ। গিলাত্ত্ — গিলগিলঃ।

৫৩৬। অন্তস্ত্যাগদেভ্যঃ কারে। অস্ক্ষারঃ সত্যক্ষারঃ অগদক্ষারঃ।

৫ १ १ ४ (त १ ५ दत ।

ধুরন্ধরঃ। ধুরীণাঃ স্থাধু রন্ধর। ইত্যমরকোষঃ। ভবিতা সং ধুরন্ধর ইতি পশুপতি:।

৫৩৮। ভ্রাফীগ্নিভ্যামিন্ধে। ভ্রাষ্ট্রমিন্ধঃ অগ্নিমিন্ধঃ।

ন সন্তঃতীতি। লেখা জংমনা ইত্যত্র পূর্বেশ্যকের ব্রম্বঞ্চ। শ্রিমনাং ব্রাহ্মনকুলনিতি ভাষামিতি শ্রিলনা য়ানং ব্রাহ্মনকুলং মন্যত ইত্যপক্রমা শ্রিমন্যনিতানেন ভবিত্রামিতি ভাষ্যে ব্যবস্থিতং তদিদং ভাষ্যকারমতদর্শনন্। অত্র বিষয়ে পরিতাক্তম্বলিদঃ শ্রীশন্দে রাহ্মনকুলে বর্ত্তইতি এবং সতি হুস্মেহন্তঃ ক্লীব ইতি হুস্মেহেন ভাবাং হলগামোলুগিতি অম্লুক্। বদা তৃ অপবিত্যক্রম্বলিদ্ধঃ শ্রীশন্দ্যেনা শ্রিয়ংমন্তঃ ব্রাহ্মনকুলমিতি অইন্তর্যাপ্যাতম্। পুরন্দ্রবাচং ঘ্যয়োগ্চ পুভ্রাদ্যারেং প্রিতি ব্রতে বাচোষ্য ইতি থিতঃ খণ্ডো বিশেষবিধানাদনি জন্মবারপ্যকাচোরনয়োরম্ ভবতি।

(৫৩৫)। মকার এন সক্রিবান্বতনীয়:। অপেক্ষিত্রিধিদাং।
ধুরোধবে ইত্যত্র তু অমিতি। গিলশক্বাতিরিক্তাদনব্যয়াদ্গিলে পরে
মকারো ভবতি। তিমিন্ধিল ইতি গুনিগরণে ইচ্ছুপান্তপ্র্যাদেরদিতাং স্বরে
বৈতি রেফস্য লঃ তিমিন্ধিল্মা গিলঃ তিমিন্ধিলগিল ইত্যত্রাপি গিলাছভরে।
গিল ইতি মকারো ন স্যাং।

(৫৩৬)। অস্থিতি তিওপ্তপ্রতিরপক্ষব্যয়মভ্যুপগমে বর্ততে। অস্ত সত্য অগদ ইত্যেতেভাঃ কারে পরে মকারো ভবতি। করণং কারঃ ভাবে ঘণ্ অস্ত ইত্যেত্সাভ্যুপগমস্য করণং অস্তংকারঃ সত্যংকারঃ অগদংকারঃ অগবা কর্মণো ণড়িতি গট়।

(৫৩৭)। ধুর ইত্যস্থান্ধরে পরেংম্ ভবতি ব্যাকরণাস্তরে মুখালক্ষণা-ভাবাং প্রমাণাগং শিষ্টপ্রয়োগদর্শনং কৃতবান্। ধুবন্ধর ইতি শ্রাদ্যান্ধৃঞা-দেরিতি টঙ্।

(৫১৮)। ভ্রাষ্ট্র অগ্নি.ইজ্যেতাভ্যামিনে পরে মো ভবতি। ইন্ধনন

৫৩৯। ভদ্রোঞ্চাল্যাং করণে। ভদ্রস্করণং উঞ্জরণম্।

८८०। यक्षारमर्मिनारमी।

মধ্যন্দিনং লোকম্পূণঃ অনভ্যাসমিত্যঃ পরস্পরা দীপক্ষারঃ ধেমু-স্তব্যা আন্দোলনম্ক্রাঞোটিতং শ্যৈনংপাতা ভূমিঃ তৈলংপাতা বাত্রিঃ রাত্রিন্দিবং দক্ষম্।

৫৪১। অথিতি কৃতি বা রাত্রেঃ। রাত্রিপ্তরতীতি রাত্রিপ্তরঃ রাত্রিচরঃ।

মিনঃ ক্রি ইন্ধী দাপ্তৌ ভাবে ঘণ্ লাষ্ট্রস্থ ইন্ধো ভ্রাষ্ট্রনিন্ধঃ ভ্রাষ্ট্রং কপালিকা এবমনিনিন্ধঃ।

(৫৩৯)। ভদ্র উঞ্চ ইত্যেতাভ্যাং করণে শব্দে পরে মো ভবতি। ভদ্রংকরণং উঞ্চকরণনিতি যঠীসমাসঃ।

(৫৪০)। মধ্যাদেরতরে দিন্দ্রনী পুরে মো ভবতি। মধ্যদিন্মিতি মধ্যঞ্চ তদ্দির্গেতি বিশেষণ্ড বিশেষর কর্মধারয় ইতি কর্মধারয়ঃ। দিনশদেন্য দিনকনেশ উপচরিত রুজিঃ। লোকংপুণ ইতি পূণ্ প্রীণনে ইজু গান্তপ্রানেরনিতাং লোকত্ত পুণঃ লোকংপুণ ইতি ষ্টীসমনসঃ। অনত্যাসমিতা ইতি ইণ্ গাতা ইণ্ শাস্কু গাত্যাদিনা ক্যঃ তুক্। অনভ্যাসং দূর্বাত্যাদিনা ক্যঃ তুক্। অনভ্যাসং দূর্বাত্যাদিনা ক্যঃ তুক্। অনভ্যাসং দূর্বাত্যামিতা অনভ্যাসমিতাঃ দ্রাং পরিহত্তরা ইত্যর্থঃ। ধেরুত্তরা ইতি ধেরুত্বরাতি চ পকে ইতি কাত্রেচক্রয়োমতিং ভ্রাতোভ্রঃ ভ্রঃ কর্ত্রবি চেতি যও গুণঃ গাাদাবিত্যাদিনা অব্ বিশেংণসমাসঃ ভবিষ্যন্তী ধেরুক্রচাতে। আন্দোলন্মিতি আঙ্ পূর্ব্ব ছল্ প্রেরণে চ্রাদিণিঙ্খাদনট্। আক্রোটিভান্তি চুট্ ছেননে চ্রাদিং ক্তঃ ইঙ্ ণিঙ্লুক্। জৈনংপাতা ভূমিবিতি তৈলংপাতা রাত্রিরিতি পানু গতো ভাবে ঘণ্ জেনপাতাভূমিবিতি তৈলংপাতা রাত্রিরিতি পানু গতো ভাবে ঘণ্ জেনপাতাভূমিবিতি তিলংপাতা রাত্রিরিতি পানু গতো ভাবে ঘণ্ জেনপাতাভূমিবিতি তিলংপাতা রাত্রিরিতি পানু গতো ভাবে ঘণ্ জেনপাতাভূমিবিতি তিলংপাতা রাত্রিরিতি পানু গতো ভাবে ঘণ্ জেনপাতাভ্রমিবিত হিতি ভাবে ঘণ্ডনিক্রমিতি দ্বন্ধমাসঃ অহনভিত্রাত্রিতা। দিবাশদাদিতাৎ দ্বন্মিতি দেরিদিব্যিতি দ্বন্ধমাসঃ অহনভিত্রাত্রিতা। দিবাশদাদিতাৎ দ্বন্মিতি দেরিদিন্ধিত রহস্তাদাবিতি বিশ্বক্র ইকারভাকারো দিশ্য। দ্বন্ধীতি দেরিদিন্ধিয়া।

(, ৫৪১)। ন হি রাত্রিশকাং পরঃ থিৎ ক্রৎ সম্ভবতি ত্রুপাৎ কুদিজি

৫৪২। শানেহতঃ।

শানে পরেহত উত্তরো মো ভবতি। পচমানঃ ক্রিরমাণঃ।

৫৪৩। কচিন্ন স্থাৎ।

অপি শাকং পচানস্থেতি।

৫৪৪। আদেঃ শানস্যাদীৎ। আসীনঃ।

৫১৫। হ্রসাজুধরাদো। বরাদো পরে হ্রসাজ্ভরে তুগ্ভবতি। জিহরঃ। বন্। স্তঃ। ব্লহতা। যচ্। অধীত্য। কিপ্।সংযৎ।

ক্ষদন্তো গ্রাহ্ম । রাত্রিশ লাগপিতি ক্ষদন্তে পরে মো বা ভবতি । বাত্রিঞ্জ ইতি অবিক্রণোক্তেতি উভ্ এবং রাত্রিমট ইত্যানি শিইপ্রয়োগান্তুমালাদি ধানমেত্র । অথিতীতি কিম্ ? রাণিংমক্ত দিন্মিতাল থিতাপি বিক্লঃ স্থাই ।

- (৫৪৯)। মুখালক্ষণস্থালক্ষণারবৃত্তি ইউল্ফণাস্চ ইউল্ফণ্নিতি প্রায়েণান্মিন্ শাস্ত্রে ব্যবস্থা অভোহত্ত মকার এবাড়বর্ততে। বিষয়াণ ইতি কঞঃ কর্মণি শানঃ যক্ রিদ্তো ধে চেতি রিকারং নবিতো শ্রকি চেতি প্রতিষেধাৎ সনীণ্দীর্ঘ ইতি দীর্ঘোন ভবতি।
- (৫৪৩)। কচিদিতি রুতং শিষ্টপ্রয়োগালিতি শেষঃ এতদর্থমের ভাষ্যপ্রোকপাদো দর্শিতঃ। পচানস্থেতি বছলবচনাৎ এদডিদিত্যেকাশে ন ভবতি। অত্র হ্রপ্রোক্ত্যা দীমস্তাগ্রহণাদ্দননেত্যাদৌ মকাশে। ন ভবতি।

(৫১৪)। আদ উপদেশনে ইতাস্মাত্তরন্ত শান্তাদীভবতি।

(৫৪৫)। জিন্তর ইতি জি জয়ে প্রাদের্বরড়িতি বরট স্থান্থতি যুক্ত ভাতিববে স্বাদের্বরিতি বন্। কনপি গ্রহণং ক্র্যাদের করিতি কনং কৃত্য বা সাধনীয়ন্। প্রদাহত্যতি হনো নলুক্ চ দ্রিয়ামিতি হস্তেং কার নকারলুক্ চ। অধীত্যতি অধিপূর্দ ইঙ্ অধ্যয়নে ক্ত্যা ঘচ্ ভুকি কৃতে উপদর্গেণ সহ দীর্ঘঃ। সংযদিতি কৌ গমাদেরিতি পঞ্চমলুক্। হ্রস্বাদিতি কিন্ প্ প্রভুষ়। হ্রস্বাদিতি স্বভাবহ্রস্বস্থ গ্রহণং তেনেহ ন ভবতি গ্রামণি কুলন্। অতথাব কুদধিকারীয়াঃ পঞ্চ প্রভায়া ব্রাদয়ঃ।

৫৪ ৬। ক্ষিয়োন যচি। প্রক্রীয়।

> ইতি বাদীক্রচক্রচূড়ামণিমহাপণ্ডিতজ্ঞীক্রমদীশ্বরাচার্যাকৃতে সংক্ষিপ্তসারে মহারাজাধিবাজশ্রীমঙ্কমর্মনিদ-পক্ষিশোধিতায়াং রসবত্যাং দতৌ তৃতীয়ঃ কুদস্তপাদ সমাপ্তঃ।

(৫৪৬)। ক্ষিনো যাট পরে তুর ভবতে। ইন্সার্থবহিত, প্রথমন্দ্রিগাছরাৎ সমিহিতশিচকার্থই স্থিতিভান্ত ভিছাবে সুপ্তে চরমন্দ্রিতি সমিহিতালাভ ইতি ভাষেন ক্ষি ক্ষর ইত্যাত ভ্যুবে কি নির্বাহত্যোলির প্রথম ভ্রাকে ভ্রমন্দ্রিতি সমিহিতালাভ ইতি ভাষেন ক্ষি ক্ষর ইত্যাত ভ্যুবে কি নির্বাহত্যোলির প্রথমের ক্ষরি ক্রেইলাভে ক্ষিণ্যার্থে নত কর প্রিয়ার্থার্যার্থিয়ের ক্ষরির হার ভ্রমের হিছি ক্রেইলাভে ক্ষিণ্যার্থার ক্ষরির হিছি ক্রেইলাভে ক্ষরির নির্বাহত করিছে কেন ক্ষরের হিছি ক্রেইলাভি ক্রেইলি ক্রিইলি ক্রেইলি ক্রেইলি ক্রেইলিকিলা ক্রিইলি ক্রিইলিকিলা ক্রেইলিকিলা ক্রেইলিকিলা ক্রেইলিকিলা ক্রিইলিকিলা ক্রেইলিকিলা ক্রেইলিকিলা ক্রিইলিকিলা ক্রিইলিকিলা ক্রেইলিকিলা ক্রিইলিকিলা ক্রিইলিকিলা ক্রেইলিকিলা ক্রিইলিকিলা ক্রিইলিকিলা ক্রিইলিকিলা ক্রেইলিকিলা ক্রেইলিকিলা ক্রিইলিকিলা ক্রিইলিকিলা ক্রিইলিকিলা ক্রিইলিকিলা ক্রিইলিকিলা ক্রেইলিকিলা ক্রিইলিকিলা ক্রিইল

ক্রীলোগীচন্দ্রবিবিচিতারাং বিবর্ণান্মনীক্রাণ্ ভূতীয়ঃ রূপস্তপাদঃ সংগ্রেঃ

क्टिक्रियोगीनिशानः।

১। বাদের ণাদিবাতাদো।

ৰাতাদৌ বাচ্চ্যে বাদেকত্তরে উণাদির্ভবতি। আদেশাগমগুণবৃদ্ধিহ্নস্বাদয়ো যথাসন্তবং পরিকল্লনীয়াঃ। বা বায়ুব তিঃ বন্ধু বুরু র্জিতিঃ সুদ্দ্দ পা পায়ুর-পানং ডুরুঞ্কারু: শিল্পী ইন্ত্রো বিশ্বকর্ষা কর্তা চ ডুমিঞ্মায়ু: পিতুং গোপূর্ক গোমায়ঃ শুগাল: জি জায়ুরৌষধং স্বদ্ সাত্রহিছং অশ্ আত্ত শীল্নম্ আভাতীহি: সাধ্যাধৃধৰ্মীলঃ শোভন•চ রহ্রাত্গ্হঃ লা লায়্নহক বভা প্রসিক্ষিঃ দুদাক কাঠং ষত্ত সাহঃ পর্তৈকদেশঃ চর্চার স্থকরং চট্চাটুঃ ক্টবানী ন বৃদ্ধিঃ চটুঃ পিচিগুঃ প্রিয়ভাবনে দেতৌ পুংক্লীবয়োঃ জরা এটা পূর্ব ইণ্ জরার বিভাশরঃ জটায়ঃ পঞ্চিরা দঃ ইদি ইন্শুক্র: শাক শঙ্কু: শল্যং কদি কন্দুঃ পাকস্থানং গেও ুক 🕁 জনী বৃদ্ধিজানুঃ অগ্রীবঞ্চ লঘি নাযুঃ শান্ত্রম-🔞 কশ্চ তথা ডুভ্ঞা্ভণভূঁৱা সমুদ্র: স্থানী চ ত্তকবুলিঃ তথা মৃঙ্মকণ জা নির্জলদেশো গিরিও চর্ন বৃদ্ধি-চর্জ্বিষ্পাকঃ অস্থ্র: সৌত্রঃ ক্ঞাঞ্জাদেখঃ সনীণ দীর্ঘ ইতি দার্ঘঃ অস্নুমাৎসরী পট্ পটুদ কো রোগী চ কট্ন বুদ্ধিঃ কট্রসো বেতস্চ এবং তৃষ্তুরুঃ শরীরং চাল্লঞ্ধ ধন্ ধর্কাপে। রাশিভেদ্চ পশ্পশুৰ্বাদিঃ অণ্অণুঃ হক্ষো ধাহ্যভেদশ্চ ধান্তো বহুৰচনান্ত ইত্যেকে অণবো বাহয়ঃ ব্ গুণঃ সাক্ষ জাং ৎসর্ন বৃদ্ধিংশেকঃ থড়গাদিম্টিঃ ভুনি ঞ্ ুন বুলিঃ মনুং কিলনঃ শীঙ্গুণঃ শয়ুরজগরঃ বস্ন বুদ্ধিবঁহা ধনং দেবতেদো দ্ৰাম্মী রশ্মী রক্নং যোক্ত্র হন্ হন্নং কপে।লভাধঃ মন্ন বুদ্ধিম সং প্রজা-পতিঃ অস্থ ন বৃদ্ধির নবঃ প্রাণাঃ অপূণ্ ন বৃদ্ধিং অপুং সাসকং ক্লিছ্ ক্লেছ্ডক্রঃ ক্ষিত্রেছব্যাধি-চল্রঃ সরিপাত ও ভিদির্ন গুণঃ ভিছবজং মৃদ্ন গুণঃ মৃত্ কোমলমতাক্ষ বট্ন বৃদ্ধিং বটুং বালবিজঃ ইষ্ন গুণঃ ইষুর্ণিঃ ব্রধ্বিধু-শ্চন্দো বিষ্ণুঃ রাক্ষসশ্চ গৃধ্ গৃধুঃ কামো ঞিধ্যা ন গুণঃ ধৃষুঃ সংঘাতঃ প্রসল্ ভশ্চ অপ তুর্ স্থ পূর্বে ঠান ন সঃ অপ ঠুবালীকং বালক ত ছু চু ছুইং হুষ্ঠু শোভনং সতাঞ্চ লিগুঃ সৌত্রঃ ন গুণঃ লিগু মলো মৃত্রং **हिज्ञत्नाभृबः** हिजः कम ह मृत्रानिशृक्त या मृत्रव्याधः মিত্রমূর্লোক্যাত্রিকে। মিত্রবংসল চ কুমারয়ুঃ রাজপুতঃ শু গুণঃ শরুঃ স্বু

সকরায়্ধং ক্রোধশ্চ বহ্ বাহুভুজিঃ ন বুদ্ধিবছি প্রচুরং শৃ রোলঃ শালুঃ শালুকং এবং মৃঙ্ মালু: পত্রলতা ঋ জালু: কর্করিকা ভন্তব্ছেদঃ শ্লেম্বছানঞ্ তৃ তালুঃ প্ৰসিদ্ধং ক্ৰুপূৰ্ব্বত্চত কঃ ক্ৰুবাঞ্: কুৰুটা ক্ৰুলাসন্চ 'সিধু মুমাগম: সিকু: সমুভে। নগী চ মদ্জো মক্র দেশ: মদ্ভ: পানীয়কাকিকা রনজ নস্ত জঃ রজ্জ্বি 🛎 চী ভূমানভেদত নিশূকা অনচুচস্ত কঃ মুক্সুম্প-ভেদঃ ফল্ গাগমঃ ফল্ঞঃ অসারং নদা চ াবং বল্ বল্ভঃ মনোহরং নম্ মস্ত কং নাকুব লাকিং মন নশুধঃ মধুকেনিং হৈ নগাসো বসত ভল নশু তঃ জতুঃ লীক্ষা শশ্ অদিৎ শিশুকলিঃ সুত্র কলকেশো বভাদেশো বজন-কুলঃ পিঙ্গলশ্চ যা য্যাদেশো ব্ৰদ্ধান্ত্ৰত আহমো যজ্ভ পূঞ্জ উর্ পুরুং প্রচুরং স্বর্গলোকবিশীর্ণো বাখা বা ালজনানশ্চ রু ঝত উর্ কুরুঃ ক্ষত্রিরভেদো দেশে বহুবচনান্তঃ গৃ 🎋ত উব প্রকঃ পিত্রাদিঃ বুহুস্পতিরলঘু-জব্যক রপ্ অদিং রিপঃ শত্রুঃ ঋচ চফ জ্যুন গুণং ক্ষুর্বতরং কুলীন স অস্ অনাদেশঃ অরু সত্কুলং অস্ অ্বাচেনশহরুঃ কৃপঃ অশ্ অরুষারাগ-মশ্চ অংশুঃ কিবণঃ পশ্ গতে বিদ্বুদ্ধিঃ পাংশুর লিঃ প্রথ্রস্থাঃ প্রু মহানু রাজভেনঃ ভ্রম্ভুগাদেশো ভূওঃ সভট প্রাতঃ ক্ষিভেদশচ উর্ঞ্ ণুলোপ উৰজানুদ্ধ ভাগঃ মহছে হ্ৰমঃ উন্মহৎ প্ৰিষ্ধত কঃ ন গুণঃ প্লিকুর-ধার্যারী সেবকো জ্যোতিশ্চ থারু নস্তাবঃ থকঃ কন্দপিন্তীক্ষা **জ্**রশ্চ **আঙ**্ পূর্ণ থন্ন অকারনকারলোলোপঃ আথুমূষিকো বরাছ-১ পরপূর্ব শূ হিংসায়ান্ ৠলুক্ পরভঃ ক্ঠাবঃ শিতপূর্ব জে উল্লুক্ শিংজেঃ এবং শতকে-নদীভেদঃ হরিপূর্ব জ হরিজ্র কভেদঃ পীয়্ সৌত্রঃ পীয়ুং কাকঃ কাল উল্কশ্চ থজি পঞ্চাদেশঃ পদ্ধৃতিহীনঃ কপূর্ব শৃ ৠ এর্ কশেরঃ প্রানদ্ধ তৃণজাতৌ নপুংসক ইতোকে হন্ হিঙ্গাদেশঃ হিঙ্গুঃ প্রসিদ্ধ অধ্বরপূর্ব বুজিব বোগে রেক্স্যাল কু ধাতো বজ লুক্ অধ্বয়ুর্যজুবে দবিৎ নিপূর্ব লগি নেদীর্ঘঃ নীলপুর্ক অগি নীলাঙ্গুঃ ক্নমিভেদঃ অধিপূর্ক অধ্যঙ্গুঃ স্ববয়বঃ কপূর্বে কাঙ্গু; কাদ দশু গঃ কঙ্গুন্চ ব্রীহিভেদঃ ইত্যাদি মন্জো সশু ঞঃ মঞ্বাভনং শমু বাগমঃ শমুকঃ তথা কনুকমঃ শহাঃ গড় গড়ুবুরিমাংসঃ গুড়ক ইত্যাত্যন্নেয়ম্।

। অক্যাদেরুরঃ।

অতি অন্ব্যাহভিনবোলি চলে কেবো দক্ষা অস কলালা দৈত্যঃ মুদী

মন্থ্যে মন্থ্য: শশুভেদঃ মন্থ্যা বেশ্ছা মিদি মন্দ্ৰা বাজিশালা মথে মথুরা নগরীভেদঃ বাশৃ শদে ৰাশুরা রাত্তিঃ বাথ্ যক্ত ইৎ বিথুরো রা ক্সশ্চের চ মিকি মুম্ লোপঃ মকুরঃ পক্ষে মুকাদেশত মুকুরো দর্পণে। দর্শনীয়শ্চ এসী ত্রন্থরো ভীক্তঃ চন্ক্ সৌত্রঃ চক্ষুরো রথঃ দৃদদ্দিদেশা দর্গরো ভেকো মেঘো রাক্ষ্যশত মন্জো মদগাদেশো মদ্শুরো মংশুভেদঃ করু রেফাগমঃ কর্রো নানাবর্ণে রাক্ষ্যশত বা গকালাগমঃ বাগুরা মৃগবন্ধনী কুক্ ককারাগ্যঃ কুকুরঃ কুকুরঃ শ্বা উপাত্তে রেফাগমঃ কুকুরো দেশভেদঃ কুকর্দরং প্রন্থিপর্ণম্ অং বৃদ্ধিরাওরো রোগী ভোলৰাশুশকপূর্ব্র অশ্ শশুব ইত্যাদি।

৩। অবাদেরিষট্।

অব্ অবিষঃ সমুদ্রোহন্তরীক্ষণ অবিষী ভূদ্যোন দী চ মহ্ মহিষঃ পশুভেদঃ
মহিষী রাজপত্নী চ অম্ বৃদ্ধিরামিবং রুহ্ বৃদ্ধিঃ রোহিষো মৃগভেদঃ রৌ হিষী
মৃণী ত্ব বি চ তপ্ পস্ত বং তবিষঃ পক্ষে বৃদ্ধি তাবিষণ্চ রাক্ষ্যঃ স্বর্গণ্চ তবিষী
তাবিষী নদী দেবকতা চ নঞ্পূর্ববাধি অব্যথিষঃ স্ব্যোহন্নিরণ্চ অব্যথিষী রাত্রিঃ কিল্বকারাগ্মঃ কিন্তিবং পাপম্।

৪। মদাদেরিরঃ।

মদী মদিরা মন্তম্ ইষু ইথিরোহগ্রিরাহ্ণ মৃদ্ শুদিরো ভেকো মেলো ধর্মঃ কামুক দ্চ থিদ্ খিদির দ্চল্রো দীন ভাপসদ্চ ছিদ্ ছিদিবঃ থজেগাহগ্রিঃ কুঠার দ্চ চিদি অম্ লোগঃ চদির দ্চলো হন্তী ভুজ দ্চ মূহ্ মূহিরঃ কামে। মূর্থো বিচিত্রঞ্জ মূচ্ মূচিরো ধর্মো বায়দে বঁতা চ মিহ্ মিহিরঃ ক্র্যাঃ তিম্ তিমিরং তমোহির মূচিরো ধর্মো বায়দে বঁতা চ মহ্ মিহিরঃ ক্র্যাঃ তিম্ তিমিরং তমোহির রোগদ্চ রুচ্ রুচিরং শোভনং রুধ্ রুধিরং রক্তা শুষ্ ও্যিরং রক্ত্যালাল শঞ্চ ভিদ্ ভিদিরং বজাং মদি মন্দিরং গৃহং বক্ষ্ নন্ত লুক্ বধিরঃ ক্রতিবিক লঃ উচ্চঃ শ্রাকাশ্চ থাদ্ ভুসাঃ থদিরো বৃক্ষভেদঃ অজ্ ন বীভাবঃ অজিরং সদনং বায়ুং পর্ব তোহঙ্গনঞ্চ শশ্ প্লুতগতৌ অদিং শিশিরঃ ঝতুভেদো হিমঞ্চ প্রথ্ প্রণ্ রলমোহিৎ প্রত্যারেকস্ত লঃ শিথিলং মন্দ্ মন্দলং মন্থ্রঞ্জ আশ্ ভোজনে বৃদ্ধি আশিরোহশিরোহগ্রিরাদিত্যো বায়ু রাক্ষ্যন্চ শীঙ্ উৎ ইব্ শিবিরং তুর্গহানং রক্ষ্ ক্রন্থী আকার্যকারলুক্ ক্রিরং প্রচুরং প্রবঞ্জ গ্রাক্ষালুক্ স্থিরো নিশ্চলঃ স্থবদেশঃ স্থবিরো বৃদ্ধঃ।

ए। इनः मनापः।

মাল গ ত্যথে মৃদ্ধিন্তোপদেশঃ দলিলং পানীয়ং কল্ কলিলং মিশ্রং দোহাগমনমজস্রং কোমলঞ্চ অন্ অনিলো বায়ুঃ মহ্ মহিলা স্ত্রী প্রত্যয়েকারস্ত বা গুণঃ
তেন মহেলা চ ভডিঃ সৌত্রো ভণ্ডিলো দৃতঃ শিল্পী চ ভডি কল্যাপে ভণ্ডিলং
কল্যাণং গুপূ গুপিলো গোপ্তা শুষ্ শুমিলো বায়ুঃ দের দেবিলো ধার্মিকঃ
কুট কুটিলং ব কং কুটিলধর্মা চ তিজ্ নিশামনে তিজিলো রাক্ষ্ণঃ পূজ্
পূজিলো দেবঃ গুহ্ গুহিলং বনং মথে অদিৎ মিথিলা নগরীভেদঃ গম্ মশ্র তঃ গতিলা বেত্রলতা তকি কুম্লোপঃ তকিলা ওম্বিঃ চমু পকারাগমঃ
চম্পিলা নগরীভেদো নদী চ কমু অদিৎ মস্তা ধঃ কিবিলা মৃর্ত্তিঃ পথি পথিলঃ
পথিকঃ ভাম্ মলুক্ ভেলঃ ধাষির্ভেলক ও ভদি ভন্দিলং কল্যাণং পুমাংশ্রু পিডি পিণ্ডিলো গণকঃ গুডি গুণ্ডিলো মুখরঃ শিডি শণ্ডিলস্তীর্থভেদঃ চডি
চণ্ডিলঃ কোপনঃ কুক্ গুণঃ কোকিলঃ পক্ষিভেদঃ ভূ গুণঃ ভবিলো ভব্যঃ
ধায়কঃ স্থানরশ্ব কর্ বস্তা পং কপিলো বর্গভেদঃ বুধ্ বুধিলো বিদ্ধান্ ভূবপ্
বিপলঃ পিতা।

৬। স্থাদেব্রঙ্।

নীঞ্নেরং চক্ষ্রস্থভেদঃ ছাৎ তলোপো বৃদ্ধিত ছৌরং জ্যোতিঃ তৈওঁ,
আদেৎ ত্রোত্রম্ অনোপক্রিয় বাাধিভেদশ্ট ছ হোত্রমান্তিঃ পূঞ্ নোরং
নের্দ্য জলন্ লুপু লোপ্রং চৌরধনং ক্র শ্রোব্রং কর্দঃ বস্বস্তং বসন্ম্
অস্ত্র অস্ত্রং শস্ত্রং শাস্ত্রং গ্রন্থঃ তন্ত্রপুরাণাদিঃ বচ্ বক্রুং মুখং সিচ্ সেক্ত্রং
সেকপার্রং মিহ্ নেচ্বো মেইনং ছদ্ ছত্রমাতপত্রং পদ্ পত্রং বাহনং পর্ণং
পক্ষণ্ট তুস্ তোর্বং বৈণূকং প্রাজনদণ্ডশ্ট বদু সত্রং বজ্ঞা বিভা ভক্তাদিদানক অন্ অস্ত্রং পদ্ পরিছদ উভ্যার্থপ্রিরোজনমেকঞ্চ পা
পারং ভাগুম্ অধিকারী চ গৈ গাব্রং শনীবং হন্তাগ্রক্তর্জাবিভাগশ্ট ক্রি
ক্রেন্থং কেদারঃ শনীবঞ্চ যু বন্ধনে যোত্রং যুক্ যোক্ত্রম্ আবৃহং রাজ্
রাষ্ট্রং দেশঃ দন্শ্ দংখ্রা দস্তঃ নহ্ নদ্ধী চর্মপিট্রী শশ্ শস্ত্রমন্ত্রমার্ধঞ্চ চিঞ্
ন গুলঃ তিরং নানাবর্লোহন্ত্রক ক্রিমিদা ন গুলঃ মিত্রং স্ক্রং যুক্
স্ত্রং বন্ধনন্তব্যম্ অস্ত্র সালুক্ স্রী যোষিং গুলোবারং বংশো নাম চ ধূঞ্
প্রারং গৃহং ক্রত্রধ্র্মণ্ড বী বেত্রং স্থনামপ্রসিদ্ধং ভুপচ্যুপ্তরং গার্হপত্যঃ

কদ্ দৌবঃ ক্ষত্রঃ ক্ষতিয়ঃ ডুধাঞ্ধাত্রং ভাজনং যা যাত্রং গমনং মা মাত্রা পরিমাণং পরিচ্ছেদক্ত ভদ্ ভন্তা চম প্রদেশিকা বিষ্ বৃদ্ধিঃ বৈষ্ট্রং জাৈঃ বৈষ্ট্রো বায়্বিঞ্চ ভদ্জ বৃদ্ধিঃ ভাষ্ট্রমাকাশম্ অন্ধরীষঞ্চ নম্ বৃদ্ধিম লাপক্ত নাত্রং বিচিত্রং ধকুঃ শিবক্ত হন্ বৃদ্ধিন লোপো হাত্রং প্রমণনং লবণরাক্ষসক্ত অশূ বৃদ্ধিঃ আষ্ট্রমাকাশং খন্ বৃদ্ধিন লোপাঃ খাত্রং দানবং শ্রীঞ্চ উষ্ ন গুণঃ উষ্ট্রঃ কলভঃ পূঞ্ পোত্রং শৃক্রমুখং বহিত্রঞ্ছ স্বাহ্বেন ন গুণঃ পুত্রঃ স্তঃ।

৭। প্রাদেরিত্রঙ্ i

পূঙ্পবিত্রং শুটিঃ কুণাশ্চ বহ্ বহিতাং পোত্রং কটে কটিতাং চর্মারচিতশয়নীয়াং থকু থনিত্রসক্দারণম্ ঋ অরিত্রং কেনিপাতকঃ ল্ঞ্লবিত্রং ল্যুতে
যেন দাত্রং ধূঞে ধূবিত্রং ধূয়তে যেন পক্ষে গুণঃ ধবিত্রক্ষেত্যেকে অশ্ অশিত্রং
চকঃ বন্ধ্ বন্ধিত্রং চর্মবালনং মঞ্চ অম্ অমিত্রঃ শক্রঃ নৃ প্রেরণে সবিত্রং
সহ সহিত্রং স্মতে যেন চব্ চরিত্রং বৃদ্ধিরা চারিত্রং বৃত্তং শালঞ্ছ বদ্
বৃদ্ধির দিত্রং মুরজাদি ভূ বৃদ্ধিঃ ভাবিত্রং তৈলোকাং গ্রু বৃদ্ধিঃ গারিত্রমাচার্যাঃ
অন্ধং পানঞ্চ।

৮। कठारमद्तातः।

কঠ্কঠোরং নিষ্ঠ্রং ছুষ্থঞ চক্ চকোবঃ পক্ষা সহ্সহোরঃ সাধুঃ গৈ গৌরো বর্ণবিশেষঃ কিংপূর্কঃ শুমকাবঋকারব্যালু ক্ কিশোরেহেশপোতঃ।

৯। এরঃ পতাদেং।

পত পতেরঃ আঢ়কো গর্ভো গস্তা চ কঠ্ কঠেরো নিষ্ঠ্রঃ কুছে জাবী চ কুঠ্
কুঠেরঃ পর্ণাণঃ গড়ি গড়েরো মেদঃ গুড় গুড়েবো গুড়া ক্ষায়ো গুড়কণ্চ
দন্শ্ নকারলুক্ দশেরো হিংস্লা কুবি মুম্লোপা ক্রেরো ধনপতিঃ শদ্
দস্য তঃ শতেরঃ শাতনস্ত্রণত গুড়া গুড়েরো গোপ্তা লোহদাতী চ গঙ্
গছেরো মেঘা মূল্ প্রতিষ্ঠায়াং মূলেরো জ্টা মূহ্ মূহেরো মূর্যা গুধ্ গুর্ধেরো
পোপ্তা।

১০। কবেরোতঃ।

क्रव तमा भः करभाजः भिक्तितरम्रा वर्षितरमव ।

১১। अछोटमदर्जानः।

পট্ পটোলঃ লতাবিশেষঃ কপি মুন্লোপঃ কপোলো গণঃ কডি .কণ্ডোলঃ

স্থানপ্রসিদ্ধঃ। গড়ি গড়োলঃ গণ্ডি গণ্ডোলঃ সেচনপাত্রং কটে কটোল-*চাণ্ডালঃ। •

১२। कुछनोत्तः।

তম্ব ন নলুক্ তন্তঃ স্ত্রং ডুবাঞ্বাতুঃ গৈরিকাদিঃ ভাদিঃ রক্তাদিশ্চ ঋ
ঋতুহে মন্তাদিঃ ব্রীণাং রক্ত্মিশ্চ সচ্ সক্তৃভ্ প্তিষবচূর্ণ জনী জন্তঃ প্রাণী গম্ম ন
মলুক্ গন্তর্গন্তী আঙ্ পূর্মে আগন্তরভাগিতঃ বৃদ্ধিগান্তঃ প্রেষ্যঃ ক্রমু বৃদ্ধিঃ
ক্রান্তঃ পুন্ধী ক্রমুষ্ ক্ষান্তঃ পিতা পীঙ্ পীতুঃ পা পাতুরাদিত্যো যুথপতিশ্চ
কম্ কন্তঃ কামী কন্দর্পণ্চ মন্ মন্তর্জাতা গমনপ্রিয়োষ্ট্রপরাধঃ প্রজাপতিশ্চ
গৈ গাতুর্গন্তঃ ভা ভাতুরাদিত্যো দীন্তিশ্চ ফা যাতুর্বান্ত্রহ্বগঃ কালশ্চ আপ্
ক্রম্ব অপ্তর্গন্তিঃ শ্রীরক্ষ বিঞ্ গুণঃ সেতুরালিঃ কি সৌত্রঃ গুণঃ কেতুগ্রহঃ ক্রেক্ত ক্রেশ্ গুণঃ ক্রোপ্টঃ শ্রালঃ অব্ প্রকারাদেশঃ প্রত্বিভালঃ
মসী মন্ত দ্যান্ত্র বৃদ্ বন্ত পদার্থঃ বৃদ্ধির্বা বান্তর্গ্ হৃভূমিঃ হি গুণঃ হেতুঃ
কারণম্।

১৩। ক্রাদেরতুঃ।

কৃঞ**্কতুর্যজ্ঞান্ত পুনান্ত্রিক বহ**্বহতুরন্তান্ত্রিক।

১৪। জাবেরাত্বাত্কণো।

জীব্ জীবাভুর্জীবনৌষধং বৃদ্ধিঃ জৈবাভৃকঃ পূত্রঃ সোম আয়ুয়াংশ্চ।

১१। क्यारिक क्षा

কষ্ কর্দোময়ায়িঃ তন্ঃ শরীবং বন্ ধন্ঃ শরং ধান্তদঞ্যশ্চ বছো হন্ত ধঃ
বধুঃ স্ত্রী মুবা চ চম্ চমুঃ সেনা পর্জ থর্জঃ কড় রুম্ কণ্ড,র্ক্জভেদশ্চ বর্জ
সর্জঃ বাণিজিকো বিহাল মূল ওবং মর্জঃ বজকঃ শুদ্ধিক কষ্ হিংসায়াং
বন্ত ছঃ কছেঃ পানা কুই বিস্থানে কুইবমাবান্তা কান্ত শক্তুৎসায়াং কান্তবিকলবাক্ শক্তিশ্চ পদ্ রাজঃ পানুক্পানং ঝ বুদ্ধি আরঃ কামুকঃ বৃক্ষভেদঃ পিঙ্গলশ্চ অদ্ভ্ বৃদ্ধিঃ দলোপঃ আড়ঃ উভ্পং কর্করী চ নঞ্পূর্বে
লবি মুম্পুক্ অলাব্স্তমী ভূদকার। সমঃ ভূদুর্দরিঃ নৃতী ন গুণঃ নৃত্নপ্তকঃ বম্
মন্ত তঃ বভূদেবনদী অক্ষিণোগঃ সভাবাক্ পন্তাশ্চ জমু অম্লোপঃ জঃ স্বনামপ্রাদ্ধা অত্যেপুর্বর্গম্ অন্যু চ্ অবাসূর্মনো বার্মনস্থী পুরোগন্তা চ শৃধ্ শৃধুর

পানং কুৎসিতঞ্চ গৃধ গৃধ্রিত্যেকে অদি অন্যু: শৃঞ্জাণং তৃষণভেদস্থাজাতিশ্চ দৃন্ত্ দৃন্তুঃ সপোঁ বজং জারো গ্রন্থকণ্চ জমু বকারাগমঃ জন্মূর্কভেদঃ তথা কমু কন্মু: শঞ্জঃ পরজ্বগাপহারী চ কপুর্ব ফল্ অদেৎ কন্ধেলুঃ শ্লেমাতকঃ কর্কপূর্বধাঞ্ ধারাদৌ নকারাগমঃ কর্কনুঃ কোলিঃ দিধিপূর্ন সো যতং দিধিয়ুঃ দির্ঢ়া স্ত্রী থড় ভেদে খড়ুঃ মৃতশ্যা ডকারাগমঃ থড্ছুবাহঃ জজ্যা ভবনং জরিত্রা ইন্যু: কর্জঃ কুঠভেদঃ কছ্পণ্চ কপূর্বে শৃ স্কৃৎ এৎ কশের-স্ত্রাভিজ্যে উত্তঃ স্তিয়াম্। অগ্রেগৃপ্তিয়ু;

১৬। মৃগৃভ্যাম্ৎ।

মূঙ্গুণঃ মক্লং বাতো দেবশ্চ গৃ গুণঃ গরুৎ পক্ষঃ মকারাগমো গমুৎ স্থবর্ণং তৃণজাতিশ্চ।

১৭। হ্যাদেরুলঃ।

ন্ধৰ্ গুণঃ হৰু নিঃ কামী মৃগশ্চ শক্ শক্লো মংস্থাভেদঃ শকি শঙ্কুলা উংপদপত্ৰিক। বকি মুম্লোপঃ বক্লো বৃক্জভেদঃ বন্ধ্লোহসতীস্থতঃ মদ্জো
দক্ত ঞ্ মঞ্লং স্কুলং মকি মুকাদেশঃ মুকুলঃ কুটুলাঃ চট্ চটুলং শোভনং
বু ঞ্ গুণঃ বৰুলঃ সংসক্তঃ লুট্ গুণঃ লোটুলোহভিলোটকঃ ভকু ভন্ধলোহনতিবিস্তঃ চতে চতুলঃ স্থাপয়িতা তড়ি তণ্ডুলো ধান্তসারঃ।

১৮। खामितिए।

দঃ গুণঃ সরিৎ নদী তড় নিঙ্লোপস্তড়িং বিদ্যুৎ রুহ্ গুণঃ রোহিং বর্ণ ভেদঃ মৃগবিশেষস্থ স্থী মংস্তশ্চ হ্রপ্রো গুণঃ হরিং মৃগো বায়ুবর্ণবিশেষো দিক্ চ। যুষ্ সৌত্রো জুষী চ গুণঃ যোধিং জোধিং স্ত্রী।

১৯। শমের্টঃ।

শমু মস্ত ণঃ শণ্ডো নপুংসকং গোপতিশ্চ।

२०। करमत्रकः।

ক্ষু কমঠো ভাজনং ক্ম क জ জরঠঃ বৃদ্ধ রমের দিঃ রামঠং হিল:।

२)। ज्ञारनतनः।

তৃপ্তৃপলা লতা ত্রিফলা চ কমু কমলং পদ্দং সংখ্যাবিশেষশ্চ কমলা জন্দ্রীঃ
পট্ পটলং অক্ষিরোগবিশেষঃ সমূহশ্চ কুস্ দশু শঃ কুশলং নিপুণং কল্যাণঞ্চ

মুদ্ মুদলং মুবলং মুর্দ্ধভাবকারোহপীতোকে অয়োগ্রোহন্ত্রবিশেষঃ মগি মঞ্চলং প্রেশ ক্ষান্তঃ বৃষ্ণ শুদ্রঃ দেব দেবলো ধার্মিকঃ দেবকুলিকো দেবতাজী দেবতাজীবন্দ করু অদেৎ কেবলমদ্বিতীয়ং শুদ্ধং কছে মসহায়ন্দ শক্ষ্ণ শকলং খণ্ডং চুপ্ উদং চপলং চঞ্চলং ছো ওদ্বা গকারাগমঃ ছগলঃ ছাগলঃ উভৌ ছাগবাচকৌ শপ্ পশু শঃ শবলোহনেকবর্ণঃ শবলী কুশী শমু শমলং বিষ্ঠা মুজু মকারাদেশঃ মলং পাপং রিষ্ঠা চ পা পলং পাশং পরিমাণবিশেষণ্ট পল্পালং মাংসং ধারু হুবঃ ধবলঃ শুকুঃ কমু বকারগমঃ কম্বলঃ প্রসিদ্ধঃ আঙ্ শুরুর খতি আগগুলঃ শক্রঃ মডি মগুলং বিষং দেশভেদুন্ট কুডি কুগুলং কর্ণাভরণং মগুলাকারণ্ট ছো ছলং ছন্ম কল্ কললং যুদ্ধং শুকুশোণিতৈক-প্রভেদো গর্ডাশয়ণ্ট লগি বৃদ্ধিঃ লাঞ্চলম্।

२२। कर्ष्म ।

কণ্ঠো গলঃ।

২৩। মনণান্তাড্ডঃ।

দম্মতা ণঃ দণ্ডো মিগ্রহো লগুড়শচ থয়ু মতা ণঃ থপ্ত ইক্বিকারোহর্কণ্ড শম্ম্তা ণঃ শণ্ডঃ পলাদিসমূহঃ সণ্সতা ষঃ যথেওা বলীবদ ঃ নপুংসকং পদ্ম-সমূহ ইত্যাকে ভণ্ ভণ্ডোহশীলভাষী রণ্ রপ্তোহর্কচন্দ্রবিদ্ধরাবয়বঃ ধৃপ্তশ্চ মন্নতা ণঃ মপ্তো ভক্তাদিরসঃ অণ্ অপ্তো র্ষণঃ কুণ্ কুণ্ডো ঘটো জারজা-দেরাদির্জলাধারশ্চ ঘুণ্ যুপ্তো ভ্রমরঃ রণ্ রপ্তা সক্রা মৃধীকপণী চ কম্ম সতা পো দীর্ঘশ্চ কণ্ডেঃ শরঃ পরিমাণবিশেষশ্চ জন্ নতা লুক্ জড়ো মূর্থঃ কুণ্ কন্তা গঃ পতা লুক্ গুড় ইক্বিকারঃ গুড়াদেশো গুড়েডা নিন্যঃ।

२८। शामित्रानः।

স্থা স্থালং স্থানি ভাজনং চডি চণ্ডালঃ ক্রকর্মা মাতঙ্গণ পীঙ্ পিয়ালো বৃক্ষভেদঃ কুণ কুণালো নগরং সম্ সমাপ্তাদেশঃ সমাপ্তালঃ পতি পাতালং তালবাদি শের শেরালং জননী শিউলী চষ্ চষালো যুপকটকঃ মধুস্থানঞ্ কুল্ কুলালঃ কুন্তকারঃ পল্ পলালো ধান্তত্বং পন্নং কড়স্বণ্চ বিড় বিড়ালো মার্জারঃ শৃজ্ জন্ম গঃ শৃগালঃ প্রসিদ্ধঃ চতের দ্বিকারাগমণ্চ চাল্লা ক্রডোগিহোত্রোপকরণ্ঠ মাঙ্মালা শুক্ প্তু বৃদ্ধিঃ প্তোলম্। ২৫। মৃজের লীয়ঃ। মৃজু বৃদ্ধিম জিলীয়ঃ আদর্শঃ শুদ্ধিরগ্নিবিভালশ্চ।

२७। श्रुनारनत्रश्रः।

মৃদ্ মৃদক্ষো বাদ্যভেদঃ বিজ্ বিজ্ঞ্জমৌষধবিশেষঃ শৃ হিংসারাং স্থ গতৌ বৃদ্ধিঃ শারঙ্গঃ দারঞ্জন মৃগো হস্তী ভৃঙ্গশ্চাতকঃ নানাবর্ণন্চ বৃঞ্ বৃদ্ধিঃ বাবন্ধ আয়ুধাবন্ধবঃ ত গুপগুরঙ্গ উমিঃ লুঞ্লবঙ্গং দেবকুস্থমং পত্ পতঙ্গং শলভঃ স্থান্চ শল্ শলজো নাম লোকপালঃ মল্ মলঙ্গো লবণজ্বঃ মদী বৃদ্ধিতি তঃ মাতসো হস্তী চণ্ডালশ্চ ষম্ সমন্ধা মঞ্জিগ্ন।

২৭। টি_বতো গু**থু**ঃ। টুওখি খয়থুঃ শোথ ইত্যাদি।

২৮। জুতঃ ক্রিমঃ।

ভু ক্ঞ্ ক্তিমং করণেন নির্ব্তং ড্বপ্ উন্থি মং বপনেন নির্ব্তম্।

२२। शमारमर्गः।

গম্মস্ত ওঃ গলা ভাগীরথী থড় থড়েগাহিসিঃ মৃদ্ মৃদ্রঃ শসাভেদঃ পূঙ্ পূগং সমূহঃ গুবাকশ্চ অদ্ মদ্যঃ প্রোডাশঃ ছো ছাগশ্চাগলঃ ডু ভূঞ্ ডক।রাগমঃ ভূলো ভ্রমবঃ গু গুণঃ প্রর্গঃ ঝিষিনেশয়ঃ শ্হুস্বঃ ওকারাগমঃ শৃঙ্গং বিবাণং পরলভাঙ্গং প্রধানক বৃদ্ধিঃ শার্সং ধরুঃ শার্মঃ পক্ষী।

৩০। ক্রাদের গুঙ্।

ক্ষ করওঃ পুলাধারঃ র বরতো ম্থরোগঃ তৄ তরতা নৌঃ শৄ শরওশ্চত্ত্রণ পক্ষী চ স্ব গতৌ সরও ইত্যেকে ডুভ্ঞা ভরওঃ স্বামী ভূকহঃ ক্ষিশ্চ জূ জরতো জীর্ণঃ কম্ কমওশ্চন্দ্রঃ ছম্ ছমতো বন্ধ্বীনঃ আঙ্পূর্ক ঈর্
এরতো বৃক্ষভেদঃ।

৩১। জনের্ঘনো।

জন নস্ত ঙঃ জহ্মা প্রস্তা নলুক্ জঘনং স্ত্রীকটিপুরোভাগশ্চ।

৩২। গর্জাদেরশুঃ।

গর্জার পঃ পর্জ ইন্রো মেঘশ্চ। ঋ গুণোহরণ্যং বনং ছঞ্ বিজ্ হিরণ্যং স্বর্ণং কপ্রদর্কশ্চ। ৩০। কুঞাঃ পাসঃ।কুঞাং অনামপ্রসিদ্ধা।

৩৪। শ্রাদেরং।

শৃ গুণঃ শরৎ পর্ভেদঃ সংবৎসরশ্চ ভস্ ভসৎ কার্চম্ অশ্বমাংসং জঘনঞ্চ দুগুণো দবরদী দ্দয়ঞ্চ ইসো মৃদ্ধয়্যমকারাগমঃ দৃষৎ শিলা দৃশির্ প্রেক্ষণে দৃশদিতোকে তাজ্ য়জ্ অজ্লুক্ তাং য়ৎ তম্ম অন্লুক্ তৎ এতে পরোক্ষ-বাচকাঃ।

৩৫। স্থলজ্যোরটঃ।

স্থ গতৌ গুণঃ সরটঃ মেঘো বায়ুক লখি মুম্লোপঃ লঘটো বায়ুঃ।

৩৬। ঋধাদেরক্।

ঋণ্ ঋণক্ বৰ্দ্ধিঞ্ঃ প বৃদ্ধিঃ পারক্ সর্পঃ স্কবর্ণক প্রথে পৃথাদেশঃ পৃথক্ ভিন্নন্।

৩৭। যুষদোম দ্।

যুষ্ দৌত্রঃ অস্ত ক্ষেপণে মুমাদ্ অপরোক্ষঃ অস্তঃ অমাদ্ আত্মবাচকো হতঃ।

৩৮। স্বাদেমঃ।

স্কুঞ্ গুণঃ সোম চন্দো লতা চ ষ্টুঞ্ গুণঃ সোমঃ সংঘানো যজ্ঞণ ছ গুণঃ হোমঃ অ হুতিঃ দু গুণো ঘর্মঃ খেদো গ্রীম্মকালন্চ ধূঞ্ গুণঃ ধর্মঃ পুণাঃ যা যামঃ প্রহাঃ যক্ষ্যালা বোগরাজঃ খ গুণোহর্মে হিক্সিরোগঃ স্ গুণঃ সম্মে গ্রানং বেগণ্চ শ্রেঙ্ শ্রামো বর্ণঃ পূঞ্ ধূমোইগ্রিসন্তবঃ ভা ভাম আদিত্যঃ কোধণ্চ গীঞ্ গুণঃ নেমঃ অবধিঃ কালঃ প্রাকারো মূলং গঞ্জ গ্রামিলতাঃ কোধণ্চ গীঞ্ গুণঃ নেমঃ অবধিঃ কালঃ প্রাকারো মূলং গঞ্জ গুলা প্রমান ভামে গাজেরাঃ ভয়ঙ্কর চিবো মধ্যমালাওবণ্চ সকারাগমো ভাম্মো গাজেরাঃ ভয়ঙ্কর চিবা ভরম্বাঃ শিবো মধ্যমালাওবণ্চ সকারাগমো ভাম্মো গাজেরাঃ ভয়ঙ্কর চিবা গুণা বৃদ্ধাং কাষ্ঠং দীপ্রিণ্ট গুমু গুমাং বলং বায়রাদিত্যঃ পক্ষী চিক্ গুণঃ কেমং কল্যাণং গ্ গ্রীমানেশো গ্রীম্মো নিদামঃ ইবু ইয়ো বসন্তো বামুশ্চ দস্ম দন্মো যজ্মানঃ সাবো হীমধ্যা চাযুধ্য্যাঃ শরঃ সংগ্রামঃ শরভো যোদ্ধা চাটুক্ গুণঃ ক্ষোমং তুকুলং স্থিরাং ম গুণঃ ক্ষা মন্থলিকা ভক্তা বিকারঃ ক্ষোমং পদ্ প্রাং ক্মলং ক্ষ্চ চন্ত কো ক্ষাং স্বর্ণং তিজ্ জক্ত গঃ তিমাং ক্রীকং মুজির জন্ত গঃ যুগাং যুগালং জ্বৰ . উরিত্যাদেশঃ উমং নভো, নগ্রং

শুভং মনো গৃহঞ্ শুণো মন্তারুক্ ওঁ প্রণবোহকুমতিশ্চ সিবু স্থামং জলং রশিশ্চ হন্ হি ইত্যাদেশঃ হিমং শিশিরং জনী জন্ম উংপত্তিঃ ভূ ভূমো ধিমানম্।

৩৯। প্রাথেরিবিব্যো।

প্রথ পৃথাদেশঃ পৃথিবি: ইন্স্তাদক্তার্থাদিতীপ্রতায়ের পৃথিবী পৃথী।

80 । विभा**र**मर्वः ।

বিশ্বিখং জগৎ অশৃ অখাে ঘােটকঃ পুরুষবিশেষশ্চ প্রুষ্ প্রেষা , নিঃসঃ ঋতুরাদিত্যো দহনশ্চ নিপূর্ক্ মুমু নিম্নষো বায়ুঃ খুরো নাগো বরাহশ্চ ইমু ইম্আচার্য্যোহল্ষিতশ্চ লষ্কান্তো লম্মে নর্তকোহঙ্গং কান্তশ্চ পদ্পদ্গে ভূলোকো রথশ্চ স্থ গুণঃ সর্কাঃ সকলঃ তথা স্থ সর্কাঃ শিবঃ ঋষে ঋষো হিংস্রো হিংস্রা গোত্রঞ্চ কু বিক্ষেপে গুণঃ কর্বঃ কন্দর্পঃ আখুঃ সামবেদশ্চ দু গুণো দর্ব: রাক্ষসো হিং স্ক শ্হিংসায়াং গুণঃ শর্ব: শন্তঃ গৃ গুণঃ পবে হিহন্কার: এতিয়াদেশো গ্রীবা শিরোধরা থট্ কাজ্যে থটা শয়নীয়-বিশেষঃ লট্ লট্য পক্ষিবিশেষোহবদ্যং ফলঞ্ ষজ্ জন্ত দঃ যদ্বা যুদ্ধিঃ পীঙ্ পীবা উদকং মীঙ্মীবা শীকরঃ সারশ্চ আঙ্পূর্বে আমীবা উদকং বায়ুঃ স্থানঞ্লিহ্লস্জ: জিহ্বা রসনা শীঙ্হুস্থ: শিবঃ শস্ত্: কল্যাণঞ্শিবা গোণী শুগালী হরিতকী চ গুণঃ শেবমমূতং দর্পে মেচুশ্চ ইণ্ ইব উপমানং গুণ এব অবধারণে প্রত্যায়াৎ পরোহনুস্পান এবম্ উপসংহারোক্তৌ এতে অ্যোহব্যা: ষিঞ্পুণ: দেবাব্বতি: আপ্ হুম্ম অপা নদী কণ্ কং ঋষিভেনঃ কথং পাপম অদিং কিথং সুরাবীজী হ্রদ্ শব্দে হ্রস্থ থব : বন্ বুশু উঃ উরং গর্ভাশয়ঃ স্ক্রম্ তত্তঃ তৃণাদি গুচ্ছঃ শ্রু শ্রুবো যজ্ঞোপকরণং শমু শস্বো खविर्ा प्रवनार्थः मञ्जनक गीक निर्मातनः निरन्न वृक्षरञ्जः वी विमातना বিশ্বং মণ্ডলং বিশ্বিকাফলঞ্ শুচ্চশু নঃ শুবং তাম্ম।

-831 क्यांतिः कन्।

কৃঞ্কুছা মংসরো বায়ুশ্চেরণ্ট স্থাতে স্থা সপো বৃদ্ধিজীক: কৈতবঃ প্রভাবী প্রপ্রজাপতিশ্চ স্থারী মাতা স্থা প্রজাদেশঃ প্রজা প্রজাপতিঃ ডেব্রঃ বৃদ্ধঃ পটসংহতিশ্চ ফা নাবা শিরা স্নাতিন দী কন্দরশ্চ মদী মহা শিবঃ বায়সশ্চন্তো মতিশ্চ লট্ লট্ । বাস্থ্যা শক্ শকা হস্তী শুক্রো বিত্য চে শকরী নদী আন্ধূলিশ্ছন ত শীঙ্ শীবা অন্ধরঃ ক্রে, শ্ ক্রেরা শ্গালঃ রুহ্ রুহ্বা প্রার্ট্কালঃ নদা বৃক্ষণ্ট রুহ্বরী ভূমিঃ বৃদ্ধিণ্ট জি জিল্পা শরটঃ ইন্দ্রো জেতা রাজা চ জিল্পরী সেনা বারাণসী চ ক্ষি ক্ষিত্বা বায়ুঃ কালণ্ট ক্ষিত্বরী নদী রাত্রিণ্ট পদ্ পদ্বা গভীরং রন্ধুঞ্চ পদ্বরী গভিঃ ধাঞ্ ধীবা কৈবর্ত্তঃ কর্ম্মণাৎ ধর্ম শিষ্ট ধীবরী মংস্তামাতিনী পীঙ্ পীবা বলবান্ বায়ুণ্ট পীবরী তরুণী গৌণ্ট মী মীবা উদরক্ষমিঃ ধৃঞ্ধুল্বা ধর্মো রিপ্রুঃ সমুদ্রোহনী ক্রুঞ্গ ধর্মো রিপ্রুঃ সমুদ্রোহনী ক্রুঞ্গ ধ্বলো মেধাবী বিষ্ণুণ্ট ধৃত্বরী ভূমিণ্ট ঝ গতৌ গুণোহর্বা রাজী মঙ্গলমধন্ট প্ গুণাঃ পর্বা সার্থিঃ পর্বগ্রন্থিঃ বিষ্বাদিশ্বট নঞ্ পূর্ব্ব ভূগাঞ্জাল্ব অধ্বা রাজপথঃ প্রপূর্ব্ব ঈ ভূগাগমঃ প্রেল্বা প্রাণো নেতা তারকঃ সাগরো বায়ুঃ প্রভাবী নগরঞ্চ প্রেল্বরী নগরী গ্রহ্ গ্রঃ স্থাৎ গ্রাবা গিরিঃ শিলা চ শৃ হিংসাঘাং গুণঃ শর্বনী রাজিঃ।

৪২। রুষাদেরন্।

রুদ্র্যা ইন্দ্রং প্রজাপতিং রুষভণ্চ তক্ষ্ তক্ষা বর্দ্ধকং রাজ্ রাজা নৃপশ্চন্দ্রা রুষভণ্চ প্রিহ্ র্দ্ধৌ দীর্ঘং প্রীহা রোগবিশেষঃ মদ্জো মজ্জা অন্তিদারঃ প্রতিপূর্দ্র দিবু প্রতিদিবা দিবসং ধন্ম সোত্রো ধন্বা মক্ষঃ ধন্মুন্চ যু যুবা তরুণঃ তা তাবা স্থাঃ তৌশ্চ নঞ্ পূর্বপ্রহাক্ ত্যাগে অহর্দিবসঃ উত্থি ইন্কু শা কুকুরঃ মাতরিপূর্দ্র মাতরিশা বায়ুঃ ফিছ্ গুণঃ মেহা ব্যাধিঃ ব্রীহির্দ্যুং সন্তাবশ্চ মৃদ্র্য ছন্ত ধঃ মৃদ্ধা মন্তবং বিশ্বপূর্দ্ব পদা বিশ্বপা দেবো বিশ্বকর্মা প্রজাপতির্দ্ধিন্চ পরিপূর্ব্ব জ্যুং সোত্রঃ উকার্য্য বকারঃ পরিজ্ঞা ইন্দ্রোহ্মিশ্চক্রশ্চ পূষ্ বৃদ্ধৌ দীর্ঘঃ পূষা স্থাঃ অর্যাপূর্দ্ব মা অর্যামা স্থাঃ ক্লিছ্ গুণঃ ক্লেদা চক্রঃ মহ্ মহবাদেশঃ মহবা ইক্রঃ।

৪**৩। কুড়োররঃ।** কুররঃ পশ্চিভেদঃ।

৪৪। সর্ভেঃ সপঃ।

স্ গুণঃ সর্বপঃ শস্তভেদঃ।

৪৫। তনোতেডিতউঃ। তমু তিতউশ্চালনী।

४७। ज्यारनितिग्।

শ³ হিংনায়াং শারিঃ পক্ষী পাশকশ্চ। ত্রজ্ ত্রাজিব তিমগুলী ষদ্ সাদিঃ

ষার্থিঃ যোদা অবসরশ্চ ভ্রম্ রেফস্ত ঝং ভূমিব বিশ্চঞ্চলো জিহ্বা চ স্তন্ত্লোজাহিদিং প্রিস্তিঃ সমুজঃ ক্রম্ অদিং ক্রিমিনীলাঙ্গুঃ রেফস্ত ঝং ক্রমিঃ
ক্রুকরপকা চ তরু অদিং তিমিম বিস্তাভেদঃ মন্ অহুং মুনিঃ বাচংযমঃ পহ্
হস্ত ভঃ নাভিঃ স্ত্রীপুংসয়েঃ প্রাণ্ডাঙ্গে পুংসি গোত্রে ক্রিয়ে চ পণ্ পানিহ স্তঃ বা আলুক্ বিঃ পক্ষী প্রপূর্ক ওহাক্ আলুক্ প্রহিঃ কৃপঃ সমানপূর্বাথা যালুক্ সমানস্ত সঃ সথা মিত্রং মথে ন র্দ্ধির্ম হাঃ মন্তনদণ্ডঃ মস্ত
পঃ পন্থাঃ মার্মঃ অশ্-ধাতোঃ পূর্বের রকারাগমঃ রাশিঃ পূঞ্জা মেষাদিশ্চ
আঙ্ পূর্বেজ্দাঞ্ আলুক্ আদিঃ প্রথমঃ আঙ্ পূর্বেজ্ধাঞ্ আধিম নিদী
ব্যথা সংপূর্বাধা সন্ধিমে লনং বস্ নিবাসে বাসিশ্ছেদনীবিশেষঃ ডুবপ্ বাপিজলাশরঃ যজ্ যাত্রমার্গঃ রাজঃ পঙ্কিঃ ব্রজ্ সোত্রঃ ন বৃদ্ধির জিমাতিলঃ হন্ যাতাদেশঃ ঘাতিঃ প্রহরণং বদ্ বাদির্বক্তা ঘষ্ ঘারিরগিঃ
অং আতিঃ স্বর্গঃ বৃঞ্ বারি জলং বারির্গজবন্ধনী কৃঞ্ কারিঃ শিল্লী অজ্
আজিগুদ্ধ্।

৪৭। ণিঃ প্রশোতরয়োঃ।

কিঙ্কারিমকার্যীঃ সর্স্রাং কারিমকার্যং কা ক্রিয়া ত্বরা ক্রতা সর্বা ক্রিয়। ক্রতা সর্বা ক্রিয়া ময়া ক্রতেতার্থঃ।

८४। इमार्ट्स ।

হম্হতো নক্ষত্রং করণত মৃঙ্ গুণঃ মর্ব্রো মার্মলোকো বায়্ন নিবরণ চ
গু গুণঃ গর্ভো বিবরং বা বাতো বায়ুং অন্ অন্তোহবসানমবয়বং সনীপঞ্চ
পূঞ্ গুণঃ পোতো বালো বহিত্রেঞ্চ দম্ন দীর্ঘঃ দক্ষো দশনঃ স্থন্ বৃদ্ধিঃ
স্বাস্তং মনঃ ধরন্ ধরাস্তমক্ষরারং মৈ মিষাদেশঃ মিষ্টং মানং বহ্ বাঢ়ং নিতান্তঃ
স্বীকারশ্চ ফণ্ বৃদ্ধিঃ সাত্ম স্মনায়াসকৃতং ছ গতৌ দীর্ঘঃ দৃতঃ সদ্ধিক্তঃ
তন্ম কন্ত আং তাতঃ পিতা লুঞ্ গুণঃ লোতো লবণঃ অশ্রুপাত্রণ্ড ষ্কারা
গমঃ লোষ্ঠং মৃৎপিতঃ স্পূর্ক্রে রম্মলুক্ স্কারে দীর্ঘঃ স্বতঃ কুপালুঃ জ্

৪৯। হাদেরিতঃ।

হৃঞ্গুণঃ হরিতো বর্ণবিশেষঃ ক্ষহ্ গুণঃ রোহিতো মংচ্ছাডেদো রক্তঞ্চ রেফন্ত লড়ে ক্তে লোহিতো বর্ণবিশেষঃ শোণিতঞ্চ নঞ্ পূর্ব্ব আপু ন্যাদিত্বায়ঞো নান্ নাপিতো জাতিবিশেষঃ।

৫०। जुः भः मारमः।

শন্ত্ব শংস্তাত হোতা চ বিপূর্ব শক্ত বিশ্বা চণ্ডাল; কল্ সোঁত্রো কলা বিনিযুক্তো বৈশ্বায়াং শৃত্তজঃ সারথিং প্রতীহারো জনো বংসলণ্চ শাস্ত শাস্তা উপাধ্যায়ো রাজা পিতা প্রপূর্বঃ প্রশাস্তা ঋতিক্ মিত্রঞ্চ নস্ সন্তা প্রথা অপত্যস্তাং প্রিঞ্ গুণান বকারাগমঃ নেষ্ঠা ঋতিক্ তিষ্ ইদং ছটা আদিত্যঃ প্রজাপতিঃ সারথিণ্চ ক্রুশ্ গুণাঃ ক্রোটা শৃগালঃ পূঞ্ গুণাঃ পোতা ঋতিক্ চ ক্লি নিবাসগত্যোঃ ইদং তকারাগমঃ ক্লো সারথিং মান্ নলুক্ মাতা জননী পরিমাণকর্তা চ ট্লাজ্ জন্ত পুক্ লাতা সহোদরঃ জাপুর্ব মাঙ্ জামাতা হহিত্য পতিঃ পা রক্ষণে আদিং পিতা জনকঃ ছহ্ ইকারাগমো ছহিতা ক্লা।

৫১। হাকভ্যামেমুঃ।

হৃঞ্ গুণো হরেণু: গন্জন্তব্যবিশেষ: কৃঞ্ গুণ: করেণুহ স্তী হস্তিনী চ।

৫२। इन्स्क्टिः।

হন্ নন্থ লুক্ হথো বিষয়ঃ কুষ্ কুষ্ঠং গদ্ধজ্বাং রোগভেদশ্চ তথাং কোষ্ঠম্ উদরম্ অন্তর্গ হং শরাবশ্চ ণীঞ্ নীথং জলং স্পূর্প্রঃ স্থনীথো ব্রাহ্ণণো ধর্ম-শালশ্চ রমু মলুক্ রথো যানং কাশ দীপ্তৌ কাষ্ঠং দারু কাষ্ঠা অষ্টাদশনিমেষাঃ উৎকর্ষস্থিতির্দিক্ চ অবপূর্দ্র ভুতৃঞ্জ্ অবভূথো যজ্ঞাবসানস্থানম্ উষ্ গুণঃ ওষ্ঠো দন্ডছেদঃ ঋ গুণোহর্থো ধনং বাচাঃ প্রয়োজনং নিমিত্তিশ্চ স গতৌ সার্যঃ সমূহঃ গৈ গাথা গানং প্রাক্তচ্ছেদবিশেষঃ অবপূর্দ্ধঃ ঐদং অবগথঃ প্রাতঃ উৎপূর্দ্ধ গৈ ঐদীৎ উদ্দীথঃ সামবেদঃ নির্পূর্দ্ধ ঋ নিশ্ব থং পশুসংহতিঃ সাম যজাবসানঞ্চ পীঙ্ পীথং জলং ভ্ তীর্থং প্রাস্থানং বিপ্রো গুরুরাগমো নিদানমবতারশ্চ ভু তুথোহিন্নিরজ্ঞনং পাষাণঞ্চ বচ্ বস্ত উঃ উক্থং সামবেদঃ বিভিন্ন রিক্থং জব্যং ধনঞ্চ ঋচ্ ঋক্ থমিতি কেচিৎ বিচ সিকথং মধৃচ্ছিইং নিপূর্দ্ধ শীঙ্ নিশীথোহর্দ্ধাত্রঃ গোপূর্দ্ধ পীঙ্ গোপীয়ঃ প্রত্যায় সংপূর্দ্ধ ইন্ সমিথঃ ঞ্র প্রোথো গহরেরং বিভীয়ণং ক্ষিক্ অশ্বমুথঞ্চ

৫০। জৃর্ঞ্ভ্যামূথঃ।

জু গুণঃ জর্পঃ প্রথমাংসং কশ্মলঞ্ এবং বৃঞ্বরূপং বলং রথগুপ্তিক।

৫৪। স্তৃভ্যাং ডুবাঃ।

স্থ স্থা আদিতাঃ তু ভূষ্যং বাছবিশেষঃ।

ভাদের্ভাষ্যঃ।

প্রপূর্ম নীঞ্প্রায়ে চৌর: আঙ্পূর্ম আনায়ো দক্ষিণাগ্নি: সংপূর্ম সমো
দীর্ঘ: সামায়াং হবি: ডুধাঞ্ধায়া সামধেনী ঋক্ উপপূর্ম চিঞ্ উপ-চায়োহগ্নি: নিপূর্ম চন্ত ক: নিকায়ো গৃহং সংপূর্ম দক্ষায়া ক্রতঃ পা পানে পায়াং কুজৈ: পীয়তে অত্তেতি কুগুপায়াং ক্রতঃ।

८७। 'ऋाशारमतः।

স্বায়ী বকারলুক্ স্বারং প্রচুরং তন্চু চম্ভ কঃ তক্রং মথিতং দাধি তথা বন্চু বক্রং কুটিলং ণম্ নম্রঃ হিসি হিংস্রঃ কমু কম্রঃ নঞ্পূর্ব্ব জম্ব মোক্ষণে অজস্রং শ্বিঙ্ গুণঃ শ্বেরঃ ঈষক্ষনশীলঃ স্প্তু স্প্রশ্চন্দ্র ভূপ্ত প্রো-ভাশঃ সোম আজ্যং কাঠং রোগ চ দৃপ্ দৃপ্রো বলবান্ বদি বন্তুং কল্যাণং পুজক চ উদ্দী উদ্ভে। জলজন্তবিশেষঃ সংপূর্বে সমুদ্রো জলনিধিঃ ণীঞ্ নীরং জলং পদ্ পড়ো ভূলোক: মদী মড়ো হর্ষো দেশভেদ চ মৃদ্ মুড়া প্রতায়কারিণী ক্ষিদ ক্ষিদ্রো রোগঃ স্থর্য্যো বিষাণঞ্চ ছিদির ছিদ্রং ভিদির্ভিজং বজুং মদি মজো গভীরধ্বনিঃ চদি চজো নিশাকরঃ দহ্ দহো নাকে৷ দাবাগ্নিকরঞ্ দস্থ দশ্রং শিশিরং দস্রৌ স্বৈতি দন্ভ্দল্ভঃ সমুদ্রঃ সল্প বদ্বত্যো বদনমলক শঃ কেশ শচ বশ্ উশাদেশো ন যন্ম উশো রশি উলা গৌঃ বাশু বাশ্রঃ পুরুষঃ ক্ষত্রিরণ্চ শীঙ্শীরোহজগরঃ শ্ব্যা নাড়ী চ সিঞ্ নিরা নাড়ী দীর্ঘঃ সীরো লাঙ্গলম্ভঃ হদ্ হলো মূর্থ: সিধু সিধু: সাধু: সিধুকো রুক্তেদ: ভভ্ ভল: থেতঃ চক্ অহং চুক্রোংমডব্যবিশেষঃ রমু অহৎ রুম্রং শোভনং বিপূর্বকদ্ গত্যর্থঃ অহৎ বিকুশ দল্য করিতো রশিশ্চ তমু বৃদ্ধিং তামং প্রসিদ্ধম্ অম্ বৃদ্ধিং আশ্রুদ্ধিং শুচ্দীর্ঘঃ চশু দঃ শুদ্রো বৃষলঃ দৃঙ্ দূরং বিপ্রেরুষ্টং ক্ষতী তম্ম ছঃ কছে ুং কঠং ক্রাদেশঃ ক্রো হরায়া কদির ক্র: শক্র: জি দীর্ঘঃ জীরোহগ্নিঃ জীরকশ্চ স্থ্রেরো দেবতা স্থা মতং ষ্প্রেরণে স্থ আদিতাঃ ডু ধাঞ্ আনীৎ ধীরো বিনীতঃ পণ্ডিতশ্চ গৃধু গৃধুঃ পক্ষিভেদঃ চিঞ্চিরং চিরকালঃ দীর্ঘ চীরং বন্ধলং ভিক্ষ্বাসত ডুমিঞ্দীর্ঘো মীরঃ পর্কতৈকদেশঃ সীমা পানায়ঞ্ বিপূর্ক ইশ্বী নলুক্ বীধুং বিমলং বাযুরশ্মিশ্চ বৃধ্ গুণো বধু ই নভ-শ্চম বিকার ডক্রঃ স্থ্য ও ড্বপ্ বপ্রঃ কেদারঃ প্রজাপতিঃ পিতা পর্ব তশ্চ

অদিং বিপ্রো ব্রাহ্মণঃ ঋজ্ সৌত্র ঋজ্যে নায়কঃ ইদি ইন্দ্রো দেবরাজঃ অগ্
অগ্রং প্রধানন্ন অগ্রভাগঃ সন্মুখক বজ্বজ্যুং কুলিশং হীরকক কুবি নুম্লোপঃ কুব্রং 'কুগুলমরণাঃ শরণাং শকটক চুবি নুম্লোপঃ চুবুং মুখং
প্রীতিকরণং রশ্মিণ ভদি নুম্লোপঃ ভদ্রং কল্যাণং স্থালক উদ্ব্ ঝস্তাঃ দলোপণ্ট উগ্রং শঙ্কুং শ্রেষ্ঠশ্ট ক্রিভী গুণো ভেরঃ পটহঃ তেরী চুন্ন্ভিঃ
গুচ্চন্ত কঃ গুক্রঃ ভার্গবঃ গুকুং বেতঃ বন্ বন্যে বিভাগী ইণ্ ইরা পৃথ্যী
স্বরা জলক।

ূঁ৫৭। দীপিনমিকপিহিসিকমাজস্থস্মিঙাং তচ্ছীলাদোঁ।

দীপি দীপ্রঃ নমি নম্রঃ কপি কম্প্রঃ হিসি হিংশ্রঃ নঞ্পূর্ক জম্ব জজ্ঞং সততং শ্বিঙ্ভণঃ শ্বেরঃ ঈষ্দ্রসন্শীলঃ।

৫৮। পচিনশাদেরকঃ।

প্চ বৃদ্ধিত স্থাক কঃ পাকুকঃ স্থাকারী হৈধ্ব মুলিচ নশ্নংশাদেশঃ নংশুকো বেণঃ রোগশ্চ উষ উন্মাদেশঃ উন্মুক্মদ্দগ্পকাষ্ঠং সংপূর্ব্ব কন্ সংক্ষকোহ-স্থিরঃ সন্ধীর্ণোহপবাদশীলশ্চ ঞিতী রেফাগমঃ ভীক্ষো ভয়ানকঃ কাতরশ্চ।

৫৯। লিখাদেরকঃ।

লিথ লিথকো লেথকঃ কিপ্ কিপকো যোদ্ধা ওহাক্ বিক্জিঃ জহকস্তানী কালো বালে। নির্মোকশ্চ শ্বাধমাদেশঃ ধমকঃ কর্মকারঃ হন্ বধাদেশঃ বধ্ সৌত্রো বা বধকঃ হিংশ্রো ব্যাধিমৃত্যুশ্চ চর্ চরক ঋষিভেদঃ ক্লচ্ ক্লকো-হলঙ্কারঃ ওষধিবিশেষশ্চ ক্ বিক্ষেপে গুণঃ করকঃ কমগুলুঃ করকা বৃষ্টিশিলা স্তঞ্ গুণঃ স্তবকো গুচছঃ ভিদির্ ভিদকো বজং কনী কনকং স্থবর্ণং নূ কুণো নরকো নিরয়ঃ বৃ বরকঃ কল্যাণালী সেবিতবস্ত্যুগলঞ্চ তু বৃদ্ধিস্তারক। নক্ষত্রং কৃষ্ বা বৃদ্ধিঃ কৃষকঃ কার্যকশ্চ ক্ষেত্রোপজীবী উন্দী নলুক্ উদকং জলং স্প গুণঃ সরকো মন্তভাজনং কট্ কটকো বলয়ো রাজধানী সৈত্যঞ্চ চট্ চটকঃ পক্ষিবিশেষঃ বট্ বটকঃ পিষ্টক্ষবিশেষঃ।

৬০। ব্রস্চাদেরিকঃ।

ওব্ৰস্চু বৃশ্চিকঃ শুককীটো রাশিবিশেষণ্চ রুষ্ রুষিকো হালিকঃ ফালণ্চ

প্রাঙ্পূর্ব পণ্প্রাপণিকো বণিক্ ব্রহ্মন্তোতা চু আঙ্পূর্ব আপণিকো বাশভূ ইন্দ্রনীলন্চ প্রাঙ্পূর্ব কষ্ প্রাক্ষিকো গ্রামোপজীবী হিংশ্রং পাপকারো নর্ভকন্চ মুষ্ স্তেয়ে দীর্ঘো মৃষিকঃ উন্দূরঃ সামৃ সীমাদেশঃ সীমিকো কৃষ্ণভেদঃ বল্মীকঃ স্ক্ষরমজাতিন্চ ডুক্রীঞ্ ক্রন্তিনঃ ক্রেতা আঙ্পূর্ব পতু আপতিকঃ শ্রেনঃ পথিবর্ত্তমানঃ কালন্চ আঙ্পূর্ব থন্ন আথনিকঃ চৌরো বরাহো মৃষিকন্চ দৃ গুণো বকারাগমো দ্বিকিঃ পরিবেষণভাগুম্।

७३। ऋक्षारमित्रनः।

শৃঞ্ গুণো হরিণঃ মৃগঃ পাগুরুদ্ গৈঙ্ন আকারলুক শ্রেনঃ পিক্ষিবিশেষঃ এবং স্থৈ বলোপঃ স্তেনশ্চোরঃ অব্ অবিনো ধ্বনিঃ সমুদ্রো রাজাগ্নির্বায়শ্চ রুজী বুজিনং পাপং কুটিলশ্চ অজ্ ন বা আদেশঃ অজিনং চম কঠ্ কঠিনং দৃঢ়ং বৃহ্ গুণঃ বর্হিণো ময়ূরঃ মগা মসিনং পঠিতী পরিমিত্রণ কুডি কুণ্ডিনঃ শ্বদিং দ্রু গুণঃ দ্রবিণং ধনং দক্ষ্ দক্ষিণোহপসব্যঃ শুজুং দক্ষিণা প্রতিগ্রহার্টিক্ চ ঝ ইরাদেশো ইরিণম্ধরং শৃন্তাং মেয ঔষধঞ্চ ট্বেপু এদিং বিপিনং বনং তুহিব্ তুহিনং হিমং মহ্ মহিনং বৃদ্ধিমাহিনঞ্চ রাজ্যম্।

৬২। ব্রুতনোশ্চি।

ক্ষক্ হবনভাওং তন্ম অন্যাবঃ ওক্চম বিরুল্ঞ।

৬৩। গ্লাকুদোর্ডোঃ। গ্লৈগ্লোন্ডন্তঃ তেজন্চ হুদ্ নৌঃ নৌক।।

৬৪। ডৈরাতেঃ।

রা দানে রাঃ আদিত্যো ধনঞ।

७०। গমেডाঃ।

গম্ গোঃ পশুভূ ম্যাদিক।

৬৬। হ্যাতেশ্চ।

ছাৎ সৌত্রঃ দ্যোঃ স্থরলোকঃ।

৬৭। সন্জদে।স্থি:।

সন্জ্সক্থি উকঃ অস্ত্র কেপণেহস্তি কীকসন্

৬৮। অঞ্জেরলিঃ।

षञ्ज অঞ্চাই কুজীক্ত মিলিতপাণি দ্বয়ন্ ।

৬৯। দমেডে বি

দম্দোব ছিঃ।

৭০। পতাদেন্তনঃ 1

পত পুতনং নগরং বী খণো বেতনং কর্মন্ল্যং পূঞ্ পূতনা রাক্ষনী হরীতকী চ।

१ । भगरनि जिज्

পণ্ পশু বো বণিক্ স্থনামপ্রদিদ্ধ: বশ্ কাস্তেট উশিক্ অগ্নির্তং গদ্ধতবাং বীরণমূলঞ্ ডুভূঞ্ ভূরাদেশঃ ভূরিক্ পৃথী রাজ্যং বায়ুরাচার্য্যো রাজা চ।

৭২। জম্বসহোরুরিঃ।

জস্ব মোকণে জন্ত্রিঃ সমাপ্তির জুং ক্রোধণ্ড ষহ্ মর্বণে সভ্রিঃ পৃথ্বী ক্রোধঃ শৃক্তমাদিত্যো ভূলেপিকা বলীবর্দশ্চ।

৭৩। হাদেরনঃ।

হি বৃদ্ধিহ যিনো বৎসরো ত্রীহিণ্চ গৈ ন এদাং গায়নো গায়কঃ উন্দী নলুক্ গুণঃ ওদনোহরং রন্জ্ নলুক্ রজনং কুস্তুঙং রজনী রাত্রিহ রিজা চ অশ্ ব্যাপ্তৌ অকারস্থ রেফঃ শস্ত সং রসনা জিহবা রজ্জুঃ কাঞ্চী চ রশনেত্যেকে ভ্ গুণো ভরণং ভ্তকং ভূ ভূবনং জগৎ কু বিক্ষেপে কিরণো রিশ্নিঃ রূপু রূপণঃ কর্ন গ্রাঃ। (আআনং ধর্মার্কত্যশ্ব পুত্রদারাংশ্চ পীড়য়ন্। মোহাৎ যঃ প্রচিনোত্যর্থান্ স কর্ন গ্রাহ্বিভঃ)॥ পূ শ্বুত উর্ পুরণঃ সমুদ্রঃ বৃদ্ধী বৃজনং নিরাকরণং পাপমস্তরীক্ষণ ঝ উরাদেশঃ উরণো মেষঃ প্রিগ্রা শ্বিং ধিষণা বৃদ্ধিঃ দীর্ষঃ ধীষণো বৃহস্পতিঃ।

৭৪। গ্রীয়তেস্থকঃ। গৈ গাথকো গীতকার:।

৭৫। পৃষাদেরং!

পৃষ পৃষন বিন্দু: মৃগভেদ: শীকরণ্চ পৃষতী মৃগী পৃষৎ ঘৃতং বৃহি ন মুম্

বৃহম্বহান্ বৃহতী মহতী কুজবার্তাকী ছন্দোভেদক মহ মহান্ বিপুলং মহতী নারদবীণা গম্ অম্লুক্ দ্বিক্জিক জগৎ ভ্বনং জগতী পৃথী ভন্দোভেদক জ্বণো জরন্ বৃদ্ধঃ তৃপ্তৃপন্ চক্রঃ বিপূর্ব হন্ অন্লুক্ বেরিদেৎ বেহৎ গর্ভোপবাতিনী পোঃ সংপূর্ব চিঞ্ সংশকাৎ স্কট্ ধাতোরিলুক্ সংশ্চৎ কুহকঃ।

৭৬। ব্যাপ্তাবিনণ্ভাবে।

সংপূর্ব ক শব্দে বৃদ্ধিঃ সাংবাবিণং হট্টশু হট্টং বাাপ্য সমাক্ শব্দ ইত্যর্থ: তথা সংপূর্ব শ্রু সংশ্রাবিণং বৃক্ষশু বৃক্ষং বাাপ্য সমাক্ প্রাব ইত্যর্থঃ।

৭৭। জ্রী ণট্ কর্মাব্যতীহারে।

ভাবোহত্র ষোজ্যঃ ব্যবপূর্ব হঞ অবশবে বৃদ্ধিঃ ব্যবহারী বিপ্রাণামস্যোগ্যব্যবহার ইত্যর্থঃ ব্যতিপূর্ব উক্ সেচনেহতিশবে দীর্ঘঃ ব্যাত্যকা রিফিনানামস্যোগ্যন্ত্রীড়নমিত্যর্থঃ বাত্যকা ইত্যেকে ব্যাঙ্পূর্ব কুশ্ ব্যাক্রোশী
ব্যাক্রিক্রিসি ভবতি ব্যাবপূর্ব চুর্ ব্যাবচারী তথা চব্ ব্যাবচারী
ব্যতিপূর্ব ঈক্ ব্যতীকী ব্যতিপূর্ব ঈহ্ ব্যতীহী ব্যতীহেতান্তিধানার
ভবতি।

१५। व्धारमतमाञ्चः।

বৃধ ব্ধশারঃ পর্বং বজঃ পুরুষণ্চ রন্জ্নলোপঃ রজসারুম লো মেঘণ্চ মদি মন্দ্রাকুঃ বলো জাবণ্চ সহ্ সহসারুঃ ক্মাবান্ যজো ময়্রণচ থ অর্ণাদেশঃ অর্পাকঃ প্রাঃ অধিদে বিভা মনো বাণো রাদ্ধণণ্চ।

१२ । मःश्वादमत्रानः।

সংপূর্ব প্তঞ্ সংস্তবানো বাগ্মী উদগাতা হর্ষণ্ড যুধ্ দ্বিক্তিযুর্থ্ধানং শক্রং ক্ষত্রিশ্চ মুচু দ্বিক্তিঃ মুমুচানো মেঘং বুধ্ বুধানং দিক্তিঃ বুবুধান আচার্য্যাং দেবং পশ্তিতশ্চ দৃশির দৃশানো লোকপালো ব্রাহ্মণ উপাধ্যায়শ্চ যুজির যুজানং সার্থিং শ্বিতা বর্ণে দ্বিস্তম্ভ চ দং শ্বিদানশ্চন্দ্রং কালভেদশ্চ সন্ত হুচ্ছা সনো লুকু ছলোপশ্চ জুহুরাণঃ ক্ষিক্ষদরোহ্যির্ক্ত্মণ ।

७०। मित∣रमशं**ड्।**

দিবু দেবা দেবরঃ রণ্ডাপতিশ্চ স্বপূর্ব অস্স্থা ভগিনী যতী বৃদ্ধিগতা

পত্যত্র জুর্জার্য্যা নঞ্ পূর্ক ট্ নিদ বৃদ্ধিঃ নথাদিত্বান্ন নক্ষোষ্থ ননান্দা পত্য-র্ভগিনী নীঞ্ ঈলোপঃ না পুরুষঃ।

৮)। बद्धकुमः।

অকি অক শঃ শৃণিঃ।

৮२। व्याप्तित्रिः।

স্থ গতো সরণিঃ পন্থাঃ শৃ হিংসায়াং শরণিঃ পদ্ধা ইত্যেকে থা গুণোহরপিরগ্নিমন্ত্রনকাষ্ঠং ধূঞ্ গুণো ধরণিঃ পৃথী শ্বা ধমাদেশঃ ধমনির্নাড়ী শিরা
চ অশ্ ব্যাপ্তৌ অশনির্বজ্ঞাং গ্রন্থ ন গৃহাদেশঃ গ্রন্থী রোগবিশেষঃ অব্
অবনিঃ পৃথী তু গুণস্তরণিঃ সংক্রমঃ স্থোঁগ নোর্যবাগৃণ্ট ধুষ্ গুণো ধর্ষণিঃ
বলকী বৃষণণ্ট কৃষ্ বিলেখনে গুণঃ কর্ষণিরসতী কন্স চঃ চর্ষণিরিত্যেকে অদ্
মকারাগমঃ অন্মনিরগ্নিরশ্বো হন্তী চ বুতু গুণো বর্তনির্মার্গঃ বর্তনঞ্চ বৃষ্
গুণো বর্ষণিঃ খাতুঃ ক্রত্বর্তনঞ্চ আঙ্পূর্বঃ সনস্ত শুষ্ আশুশুক্ষণিবিশ্বির্মিণ্ডলেশ্ট ক্ষিপ্ ক্ষিপণিরায়ুধং জাত্রবিশেষো মন্ত্রোহধ্বযুণিট।

৮০। নঞো ঙনিঃ শাপে। নঞ্পূর্ক বচ্ অবচনিস্তে মূর্থ ভূরাৎ বচনব্যাঘাত ইভার্থঃ।

৮৪। रुপाদেরিস।

সপু গুণ: সর্পির্তং অর্চ্ অর্চিনীপ্তিঃ গুচ্ গুণ: শোচিরগ্নি: রশ্মিন্চ হ গুণো হবির্হিবাং ছদ্ ছদিরাবরণং উচ্ছ্দির গুণ: উচ্ছিদি ব্মনং বৃহ্ গুণো বহিরগ্নিঃ কুশশ্চ রুচ্ গুণো রোচী রশ্মিঃ ছাৎ গুণা দশু জঃ জ্যোতিরগ্নিঃ গ্রহো নক্ষতাং তেজণ্চ স্তঞ্ গুণা স্তবিঃ স্তোতা বজ্ঞণ সহ্ হস্ত ধঃ স্থি-রগ্নি: ভূমিরনভ্বংশ্চ পা পানে থকারাগ্মা পাথিঃ স্বর্গলোকঃ পানং নয়নং স্থ্যান্চ।

৮৫। वश्रापक्षम्।

ভূবপ্বপু: শরীরং ধন্ ধনুশ্চাপ: যজ্ যজুর্বেদবিশেষ: চক্ষিঙ্ চকুর্লোচনং ইণ্রদ্ধি: আয়ুজীবিত্তকালপরিমাণং ত্রপুষ্ ত্রপু: সীসকং মূহ্ মূহ: পুন: পুন: জন্ জন্ম: প্রাণী জন্ম চ ঋ গুণোহক: ব্রণং আদিত্যশ্চ প্রু গুণ: প্রুম: মুদ্র: অর্ণোকো গ্রন্থি: পর্বতশ্চ তপ্তপু: সুর্য্যোহিমি: শক্রশ্চ।

৮७। आप्तिव त्रेष्ट्रे।

গু গুণো গব রোহহন্ধার: গর্বী সন্ধ্যা ইণ্ ইত্বর: গমনশীল: নশ্ নশ্বর: পমু
মলুক্ গত্বর: জি জিত্বর: স্থাতৌ স্তব্ব: এতে স্থামপ্রসিদ্ধাঃ ক্ বিক্ষেপে
গুণঃ কর্বরো ব্যাত্ম: বিদ্ধিরো হিংশ্রন্ধ শৃ হিংসায়াং গুণঃ শর্বরী রাজি: সন্ধ্যা
চ স্থাণঃ সর্বরং তম: বৃঞ্ গুণো বর্ববো গ্রাম্যজন: কামো দেশবিশেষণ্ড
বর্বরী কেশরচনা নদী চ চতে চত্বরং চতুপ্রথমরণ্যং রহস্তবচনং মঙ্গলঞ্চ
নিপূর্ব্ব সদ্ নিষদ্বর: কর্দম: কন্দর্পন্ধ নিষদ্বরী রাজিঃ প্রভা চ ছিদির
ছিন্বরো ধূমো ধূর্তন্চ ছদ্ ছদ্বরং ছাদনং ছদ্বরো নিকুস্কোহ্মিররণ্যঞ্চ ধীঞ্
অনাদরে ধীবরঃ কৈবর্ত্তঃ গুপায়ী পীভাব: পীবর: স্থুল: মীঙ্ মীবরো
হিংসকঃ সেনানী পূজান্চ চিঞ্ দীর্ঘন্টীবরো ভিক্সপ্রাবরণং তিম্ দীর্ঘো
মলোপন্দ তীবরো মেছজাতিবিশেষ: নীঞ্ নীবর: পরিব্রাট্ প্রন্দ নীবর:
জলং গাহ্ হুসো গহ্বরং গুহা গহ্নঞ্চ কটে কট্রো দ্বিভেদ: সংপূর্ব্ব যম্
মন্ত দঃ সংযদ্বরো বাগ্যতো জন্তঃ সমূহন্দ উপপূর্ব্ব হেব্রু বেলোপঃ উপহ্বরঃ সিরি:।

५१। इनाटमर्वः।

ইণ্ দীর্ঘঃ ঈনঃ ইন ইত্যেকে স্বামী স্থ্যশ্চ যজ্যজো যাগঃ উষ্ উষ্ণং তপ্তং শীঘ্রঞ্মীঙ্ মীনো মংস্তঃ রাশিভেদশ্চ কৃষ্ ক্ষণো বিষ্ণুঃ বর্ণ বিশেষশ্চ ঞিত্বপ্ স্থানা নিদ্রা কঞ গুণঃ কর্ণঃ শ্রোতঃ রবিস্তৃতশ্চ বুঞ্জ গুণো বর্ণো ব্রাহ্রণাদিজাতিঃ শুক্রাদিরকারাদ্যক্ষরঞ্জ ক্রগুণো দ্রোগঃ পরিমাণবিশেষ্ণঃ কৌরবাচার্য্যোকাকবিশেষশ্চ পৃ গুণঃ পর্ণং পত্রং যতী যত্রঃ প্রনিধানং ঞিতৃষ্ তৃষ্ণা পিপাসাভিলাষশ্চ তৃধাঞ্জানা ভৃষ্ট্যবা জি জিনো বৃদ্ধঃ সিঞ্ সিনং শরীরং বদ্ধনক্ষ গুণঃ সেনা বলক্ষ অব্ উরাদেশঃ উনম্ অসম্পূর্ণং ক্রায়ী কে আদেশঃ ফেনঃ সমুদ্রক্ষঃ বন্ধ বিধানশো ব্রগ্ন আদিত্যঃ স্বর্লোকশ্চ বৃধাদেশো বুগ্নঃ প্রজাপতির্ম্পান্তন্দক্ষ জজ্ বীভাবঃ গত্বং বীণা বাদ্যাবিশেরং গুণো বেণঃ বাদ্যঃ প্রজাপতির্ম্পান্তন্দক্ষ জজ্ বীভাবঃ গত্বং বীণা বাদ্যাবিশেরং গুণো বেণঃ বাদ্যঃ প্রজাপতির্ম্পান্তন্দক্ষ ক্রান্তা ক্ষেত্রভোবায়ুরোদনশ্চ সিব্ স্থানঃ স্থাঃ প্রসেব আন্তরণং রশ্মিশ্চ পক্ষে বস্ত্রোৎ স্থোনঃ জ্গুণো জর্ণঃ ক্ষমী পক্ষী চন্দ্রমা বৃক্ষঃ ধর্মাশ্চ জন্ জন্মঃ পত্ পত্নোনীচঃ সর্পশ্চ তপ্ তুপ্নো নতঃ সর্পশ্চ বৃদ্ধঃ রাস্না ওষ্ধিবিশেষঃ রাসং রক্ষংদ্রব রম্নো দণ্ডো জিহ্বা চ স্ঞ্ দীর্ঘঃ স্বনা মৃগ্নাংস্বিক্রয়েনেণিছ রম্ভারের রম্না দণ্ডো জিহ্বা চ স্ঞ্ দীর্ঘঃ স্বনা মৃগ্নাংস্বিক্রয়েনেণিছ

মুগপক্ষিণাং বধস্থানং মাংসবিক্রয়জাতিশ্চ রমু মশু তো রয়ং বৈছ্ব্যাদিকং শ্রেষ্ঠঞ্চ বস্ত্ স্বপ্নে বৃদ্ধিঃ সালা গোগলকললঃ স্থা আত্বং গছঞ্চ স্থা লোহ-প্রতিমা জড় তুং গৃহস্তস্তশ্চ ট্যাচ্ যাজ্ঞা প্রার্থনা প্রচ্ছ ছস্ত সং প্রদ্ধা স্ত্ হুলং সলোপশ্চ তৃণং ঘাসং রক্ষ্ রক্ষো রক্ষা ছ বৃদ্ধিহোঁনো যজমানঃ বৃঞ্ ব্যোকাদেশো ব্যোকো গতিঃ।

৮৮। গাদাভুগমিষ্টুঃ। গৈ গেষ্টুক্স্পাত। রঙ্গোপজীবী চ দাঞ্ দেষ্টুদ্নিশীলো যাজকশ্চ গিষ্টুদ্ধিনু-রিত্যেকে।

৮৯। সঃ কুতাদেঃ।

কৃতী কুৎসং সমগ্রম্ অজ্ অক্ষঃ আথগুল আদিতাঃ কালো ব্যাধিণ্চ তিজ দীর্ঘঃ তীক্ষং থবং লোহং শীঘ্ঞ শ্লিষ্ ইদৎ শ্লুঞ্ প্রকৃত্তিং কোমলং স্কুঞ্চ।

৯০। যজাদেযুঃ।

যজ্যজুর্গজমান: হোতা চ মন্মন্য়: ক্রতুঃ ক্রোধঃ শোকস্থানং দৈল্ঞ নদ্দস্থান্টোরো হিংস্র ত শুদ্দনুক্ শুধার্মিঃ জনী জন্মঃ প্রাণী প্রজা-পতিশ্চ ভূজ্ ভূজ্যুর্ভোজনমাদিত্যোহ্যিশ্চ।

৯১। মৃঙস্ত্যাঃ। মৃত্যুম্রণং প্রাণহর্তা চ।

💀 ৯২। সর্ত্তেরযুঃ।

প্ গুণঃ সর্যুঃ নদ[্].বিংশয়ঃ। সর্যুরিত্যেকে।

৯০। স্থাদেঃ পঃ।

নীঞ্ গুণো নেপঃ পুরোহিতঃ উদকঞ্চ পা রক্ষণে পাপং মলং ত্বিতঞ্চ শস্ত্র পরে শস্পং বালতৃণং স্তুঞ্জি দিইঃ স্তৃপঃ সংঘাতঃ নিস্প্রোজনককৈত্যক স্তুঞ্ দীর্ঘঃ কুপঃ পানীয়স্থানবিশেয় মু মিশ্রণে দীর্ঘা যুপো যজ্ঞকান্তং শু হিংসায়াং শ্লুত উব্ শূর্পং কুলক ইতি প্রসিদ্ধং বিষ, গুণো বেঙ্গা আয়া কূপো জলঞ্চ থন্থ নস্ত বঃ থঙ্গো নিস্তেজাঃ বলাৎকারশ্চ শীল উপধারণে চুরাদিঃ ণিঙ্লোপো হুস্বঃ শিল্পং বিজ্ঞানং চিত্রক বাধু ধস্ত যঃ বাজাঃ উন্ধা আশ্রু চ চ্যুঙ্ চ্যুপঃ সংক্রমো বায়ুঃ সংগ্রাম ত পু গুণঃ পর্পং গৃহং ক গুণঃ অর্পঃ সংগ্রামঃ স্থ গুণঃ পর্পং গৃহং ক

তৃ গুণ: তর্প: রশ্চ ল: তল্ল: শ্যা অট্যো দারাশ্চ নীঞ্নীপ: কদ্ম: চ্মুন্ চল্পা নগরী পন্ নশু ম: পশ্পা সরোভেদ:।

৯৪। প্যস্তস্তনাদেরিজু, । ত স্তন্শব্দে পিঞ্ গুণঃ স্তনমিজুর লাহকঃ এবং রুষ্ গুণঃ কর্ষমিজু; রুষকঃ স্থবর্ণং পুষ্ গুণঃ পোষমিজু; কোকিলো ভর্তা চ মুষ্ মোষমিজুরিত্যেকে গদ্ গদরিজুর্বসস্তো বাগ্মী কামুকশ্চ মদী গুণো মদমিজুম্পদিরা।

२०। युः क्लारमः।

কঞ্কণ্ কর্ণ কর্ণ দিল্লী চ এসী অসুং অস্তং ঞিধুষা ধৃষ্ণুঃ ধৃষ্টঃ কিপ্ কিপুঃ
ক্ষেপকঃ গৃধ্ গৃধুঃ সাকাজককঃ ভা ভানুরাদিত্যো রশিশ্চ স্ঞ্ স্ফুঃ পুলঃ
বিষ, বিষ্ণুন রিয়ণাং গম, দিকজিবদিয়ালুক্ জিগল্পঃ প্রাণো মনত দাঞ্দায়া
দাতা শন বাযুত্ব বচ্ চস্ত গং ব্যাব বিদ্কং ধেট্ন এদাৎ ধেল্পঃ নবপ্রস্তা
গৌং স্থা পজং স্থায়া শিবঃ কীলশ্চ বী গুণো পজং বেপুর্বংশঃ রীঙ্ গুণো
রেপুঃ ধৃলিঃ বৃঞ্ গুণো বর্মাদিত্যো নদবিশেষশ্চ গুহাক্ দিকজিরাল কু
জ্লুন রিয়ণঃ ঋষিভেদশ্চ।

৯৬। শ্রাদেও বিবাদিস্ত চছীলাদে।।

শীঙ্ গুণঃ শ্যালুঃ শ্যনশীলঃ দয় দানে দ্যালুদ্নিশীলঃ স্পাহ্ চৌরাদিকঃ স্থালুঃ স্থালুঃ স্থালীলঃ তথা গৃহ্ গৃহ্যালুগ্ হ্লশীলঃ তথা পত্ পত্যালুঃ পতনশীলঃ।

२१। शमादमप् कः।

গমু গামুকো গতিশীলঃ লষ্ কান্তৌ লাযুকোহভিলাষশীলঃ পত্পাতৃকঃ পতনশীলঃ পদ্পাত্কো গমনশীলঃ শৃ হিংসায়াং শাককো হিংসাশীলঃ ভূ ভাবুকঃ ভবনশীলঃ কল্যাণঞ্বুষু বাষুকো বৃষ্টিশালঃ বৃজী বাজুকো বর্জন-শীলঃ হন্ ঘাতৃকো হননশীলঃ স্থাযুকঃ স্থিতিশীলঃ।

্রদ। বুঞাদেফীকঃ। বৃক্ত্রণোবরাকঃ শোচ্যারিয়াং বরাকী ভিক্ষাকাকা অট্ অটাকঃ লুটিন মুম্লুটাকা জল্পলাকঃ।

৯৯। জ্যাদেঃ স্মুঃ।

জি জিফুরিদ্রে ইজুনশ্চ বী একঃ বিষ্ণু: ভূ ভূষ্ণু: পচ্ পক্ষু: গৈ প্লাকু: কিপ্ কিপাঃ নৈ সাকু: মৃজ্ মাকু:।

- > ০। শূবন্দ্যোর্ড রিকঃ। শু হিংসায়াং শরারুঃ হিংসাশীলঃ বদি বন্দারুঃ স্ততিশীলঃ।
- ১০১। অদৃস্থাসো মরঃ।
 অদ্ অদ্বরোহদনশীলঃ স্থ গভৌ স্মরঃ সরণশীলঃ পঞ্বিশেষণ্ড হৃদ্ভ
 বন্মরোহদনশীলঃ।
- ১০২। ভন্জ ভাস্মিদে ঘুরঙ্। ভন্জ ভঙ্গুরঃ ভঞ্জনশীলঃ ভাস্থ দীপ্তেগ ভাস্বরো দীপ্তিশীলঃ ঞিমিদা মেছরঃ স্বিশ্বঃ।
- ১০৩। বিদিভিদিছিদের রুর:।
 বিদ্ জ্ঞানে বিছরো জ্ঞানশীল: পাঞ্ছ্রাতা চ ভিদির্ ভিছরং বজ্রং ছিদ্ ছিছর:
 ছেদনশীল:। ভঙ্গুরভিত্রছিছ্রা: কর্মাকর্তুরি চ দৃখ্যন্তে।
- ১০৪। ঙুকো জাগর্ভেঃ। জাগ জাগরকঃ জাগরণশীলঃ।
- ১০৫। যন্লুগন্তাদংশাদেঃ।
 দন্শ্দশশ্ক: কুৎসিতদংশনশীল: রাক্ষস: সর্পত্ন জ্ঞপুকঃ
 কুৎসিতজ্পনশীল: দহি দলছক: কুৎসিতদহনশীল: যজ্ যাযজ্কঃ
 ইজ্যাশীল: বদ্ বাবদূকো বস্তা।
- ১০৬। স্থাদের্বরঃ।
 স্থাবরঃ ঈশ্ ঈশর: স্ত্রিরামী ঈশ্রী শোনাদিস্থাদাৎ ঈশ্রা গ্রুমলুক্
 গন্ধর: ভাস্থ দীপ্তৌ ভান্ধর: প্রপূর্ক মনী প্রমন্ধর: পিষ্ পেষ্র: যন্লুরস্থা যা প্রাপণে যাযাবরঃ।
- ১০৭ । স্বপ্রষ্ত্যাধ্যো নজ।

 স্পাক্র বৃষ্ বৃষ্কৃত্ত তৃষ্ তৃষ্ক গুষ্ গুষ্কৃ । শীলাদাবিতি নির্ত্তম্
 ১০৮ । ঋবিসংপ্রাদ্ভুবো ভুরসংজ্ঞায়াম্।

 শুত্দে বিঃ বিভুঃ সর্বলো ব্রন্ধা চ স্তুর্গজ্মানঃ প্রভুঃ স্বামী। সংক্ষায়াস্ভা

প্রভূন মি কশ্চিৎ। তালবাশংপূর্বাৎ শস্তু: শঙ্করঃ।

১০৯ । ক্রঃ শক্রমিত্রাভ্যাম্। শব্দুফঃ মিত্রক্রঃ কেচিৎ শত্কুমাহঃ।

১১০। খনোর্ডরঃ। খরো গর্দ ভিস্তীক্ষণ্ট।

১১১। করণাধি করণয়োর্ডরেকে কব কডাশ্চ।
আঙ্পূর্ক থন্ আথরঃ আথনিক: আথনিকবকঃ আথুয়া।

১১২। অভূততদ্তাবে লগাদেভূবিঃ থিফুঙ্খুকণো।
লগপুর্ব ভূ লগ্নস্তবিষ্ণু: লগ্নভাবৃকঃ অলগো লগো ভবতীত্যর্থঃ স্থভগন্তবিষ্ণু: স্লম্ভবিষ্ণু: পতনংভবিষ্ণু আঢ্যস্তবিষ্ণু: অন্ধন্তবিষ্ণু: প্রিয়ন্ত্রীবৃকঃ।

১১৩। ডবহুৰ্ভাতেঃ। ভা ভবান।

১১৪। मार्टमः कः।

দাঞ্দাকো যজমান: তুপাঞ্ পাকোহন্নং স্তম্ব আহারোহনত্বংশ্চ ধাকা স্থী রা রাকোহনড়ান্ অস্তরণ্ড রাকা পোর্ণমাসী ক্ষুঞ্ গুলঃ কর্কঃ শ্বেতাথো হরিস্থান্ড অর্চ্ আর্ক্ আদিতাঃ কন্কনকঃ পিষ্টমৌষধং পাপঞ্চ স্থান্ত ক্ষেকো নিরাময়ো বারুঃ শবশ্চ বৃঞ্ রুকোহিন্নিঃ কাকাখাঃ পশুশ্চ ভূ ভূকং ছিদ্রং মুধ্ মুক্ষো রুষণঃ বল্ বক্ধং অক্ উষ্ ষস্তালঃ উকা দীপ্তিঃ তৃণাদিবিশ্বংশ্যাগবিশেষণ্ট ইণ্ গুণ একঃ প্রথমোহসহায়ঃ প্রধানমন্তশ্চ ফ্রিন্টা গুণঃ ভেকো মণ্ডুকো ভীক্ষণ্ট কৈ কাকে! বায়সঃ শল্ মক্ষং মৎস্যাব্দ্ধলং প্রিরাক্ অন্ধি চ অৎ অৎকঃ শরীরাবয়বঃ ক্রুমঃ পথিকশ্চন্দ্রণ মচঃ সৌরো মর্কো বার্মনঃ প্রজাপতিশ্চ নিপুন্স ওহাক্ নিহাকো গৌনি হাকা গোধিক। অজ্ বী বীকা চিন্তা নেত্রমলং বর্ত্তিশ্চ বীকঃ পক্ষী বার্মন্ত ধ্ঞা ধ্কা বর্ত্তিকা পিঙ্গলা চ ধ্কো বারুঃ ধৃতিঃ কলাপণ্ট যু মিশ্রণে দীর্ঘো যুকা উকনী হী বা রেফস্তালঃ হীকো হলীকো বাস্কদেবো নকুলশ্চ হীকা হলীকা লক্ষা হীকো বায়সঃ।

১১৫। শকেরুনাদিঃ। শক্শহ্নঃ শকুনিঃ শকুস্তঃ শকুস্তিঃ পক্ষিনামানি।

১১৬। ভুবো ওপ্তিঃ। ভ্ৰম্ভিৰ্বৰ্তমানকালঃ।

১১৭। ভূস্ফিপেরমুঃ।

ভূ গুণ: ভৰত্যুর্থিশ্চক্রমা ঈশ্বরশ্চ স্থ গ্রন্তী গুণা সর্গুমে দি কিপ্র ক্রিপণ্যুর্বসন্তো বায়ুর্থিশ্চ।

১১৮ । ক্ষিপ্নদোরসুঃ। ক্ষিপ্কিপণুর্বায়ুঃ নদ্নীদহুঃ মেবঃ হিংসকশ্চ।

३५२। क्लारम्बनः।

কু বিক্ষেপে গুণ: করুণা রূপা করুণঃ শোকো বৃক্ষবিশেষণ বৃঞ্ গুণো বরুণঃ পশ্চিমদিক্পালঃ বৃক্ষবিশেষণ্ট দৃ বৃদ্ধিদ রিক্ষণা ঘাতকো রোগো দৈত্যণ্ট তৃ গুণস্তরুণো ধ্বা রেক্ষ্য লো বা তরুণী তলুনী বা মুবতী কুধ্ কুধুনো মেচছং আরু আর্জুনো ধবলঃ পাগুবো বৃক্ষবিশেষণ্ট মথ্ মথ্নঃ সৌভদ্রঃ শক্রধমণ্ট অদিৎ মিথুনং স্ত্রীপৃংসৌ পিশ্ অবয়বে পিগুনো থলঃ অশ্ অকারস্থ লো লগুনম্ ও্যধিবিশেষঃ ঝ গুণোহরুণঃ আদিত্যসার্থিরাদিতো৷ বর্ণবিশেষণ্ট ফল্ গকারাগলো বৃদ্ধিন্ট ফাল্কনঃ শক্রম্মুঃ বৃদ্ধিঃ ফল্লো। নক্ষত্রে ধুঞ্ গুণো ধরুণঃ প্রজাপতির্বায়ুলে কো রমণীরণ্ট শীঙ্গ গুণঃ শ্রুনোহজগরঃ বী গুণো ব্যুনো দেবঃ যমু যমুনা নদীবিশেষঃ।

४२०। तमा वनारनः।

বদ্ বৎসঃ পোতঃ তৃ গুণঃ তর্ষ্যঃ স্মৃত্রশ্চ হন্ হংসঃ পক্ষিবিশেষো ব্রতী নারায়নো রবিশ্চ কম্ কংসোহস্থাবিশেষো ভোজনপাত্ত লশ্চ কষ্ হিংসায়াং কক্ষমরণ্যং প্রকোষ্ঠঃ বাহ্মৃলঞ্ প্লুষ্ উদৎ প্রক্ষো বৃক্ষবিশেষঃ মন্ বৃদ্ধিম গিলং পললং অশু অক্ষো বৃক্ষবিশেষো রথাবয়বঃ পাশকণ্চ খু সুষা প্ত্রভার্যা ওরসচু বৃক্ষস্তকঃ বৃঞ্ বুষো ধর্ম: বৃষভণ্চ ঝ্যী হিংসায়াং থকো ভল্লুকঃ ঝকং নক্ষত্রং কৃতী কুৎসমুদকং কাষ্ঠং তুঃখমুদরঞ।

১২১। বদারদেঃ সরঃ।

বদ্ বৎসরো বর্ষঃ সংপূর্বে রস্ত লঃ সংবৎসলঃ পীঙ্ গুণঃ পেষলঃ পটুঃ অশু অক্ষরং পরমাত্মা ককারাদিবর্ণ ড ডুকুঞ্ ন ষত্বং ক্ষরো যবাগৃঃ ধূঞ ন দত্বং ধূসরঃ কিঞ্ছিৎপাগুরো রক্ষণ্চ মদী মৎসরঃ পিশুনঃ তমু নলোপঃ তসরঃ তন্ত্রবায়ভাগুং স্ত্রবিশেষণ্চ ঝচ্ ঋক্ষর ঋত্বিক্ ঋক্ষর। ক্লধারা।

১২২। কট্কুষোরাকুঃ।

কট্ কটাকুঃ সর্পঃ শক্ত্রং পক্ষী শিল্পী চ কুষ্ কুষাকুরগ্নির্বাড়বানল আদিত্যঃ প্রোপতাপী বায়ুক।

১২৩। দাকুঃ স্পৃভ্যাম্।

ক গতৌ স্থলাকুরগ্নিন দী দৌঃ মৃগো বায়ুক্ত পু ব্রহিঃ পূলাকুঃ বাছেঃ নর্পো বুল্চিকন্চিত্রকঃ কুঞ্জরো নক্ষত্রক।

>২৪। যৌতেরাগৃঃ।

यू मिल्रात खरणा यवानृ ब्रह्मविरमसः ।

५२०। वरहत्रकृ ।

বচ্বচকুঃ বালো ব্রাহ্মণো বাগ্মী চ।

>२७। छार्टमर्खानकः।

ঞিতী ভয়ানকো ব্যাঘো ভয়ধ্বশ্ধ শীঙ্ শয়ানকোইতগরং লুঞ্ ণত্তং লবাণকং দাত্রং ছেত্তা চ তথা ধৃঞ্ধবাণকো বৃক্ষং পবনশ্ধ তথাচ শিধি শিক্ষাণকো রোগবিশেষক নাসিকোন্তবশ্লো চ তথা ডুধাঞ্ধাণকঃ কেদারো দাদশভাগো ভগচ্ছি দাবস্তম্ভঃ স্বর্ণমানকঃ পৃথ্যী যববিশেষণ্ট দাঞ্দানকং মৃতস্থানকিয়া পা পানকো রসপানং ভীমণ্ট:

১২৭। তনোতের্যতুঃ।

তমু তম্মতুরাদিত্যা রাত্রিশ্চ।

>२৮। द्विसः कूः।

হ্রী রো লো বা হ্রীকু: হ্লীকু: কুমারো মার্জারোহ প্রগল্ভোহপ্রশস্ত ।

১২৯। শ্রবাদেরায্যঃ।

ক্র গুণঃ শ্রবায়ো যজ্ঞপশুরধ্বর্যুশ্চ দক্ষ্ বৃদ্ধিদ ক্রিয়ো বৈনতেয়ো কৃঙ্ধ চ চুরাদি স্পৃত্ত স্পূত্যাযাঃ স্পৃত্যালঃ তথা গৃত্ গ্রতণে গৃত্যাযো গৃত্যামী দিধিপূর্ব যো দিধিযাযামাজ্যং পৃষৎ বৃষ্ণ চ

১০০। বুণোতেরেন্যঃ। বুঞ্ গুণো বরেণ্যঃ শ্রেষ্ঠোহম্মি: প্রজাপতিক ১৩১। व्यक्तिगः। अष्टार्गाश्वराहे वनम्।

১৩২। বদেরান্যঃ। বদ্ বদান্তো দাতা প্রিয়বাদী সংপণ্ডিতক।

১৩০। অমারদরতাঃ।

অম্ অমতং ভাজনং নক্ষোত্তঃ নক্ষমিথিতাদি যজ্যজত ঋষিক্ অফি-হোত্তঃ মূলঞ্বধ্রধক্ষায়ধং শূলঞ্কড় কড়তঃ ভাজনং ডপ্ত লঃ কলত্তং শ্রোণী ভার্যা বৃঞ্ গুণো বর্ত্তা চম্বজ্ঞানু স্পূর্ক বিদ্জ্ঞানে স্বিদত্তঃ ধর্মঃ কুটুন্থো ধনং কৃত্তুক্ত কৃতী সুমাগমঃ কৃত্তাং লাঙ্গলং ছেদনং তলং বেষ্টনঞ্পত্ পত্তাং পক্ষঃ।

১৩৪। ভাদেরভঃ।

ভুকৃঞ্ গুণো ভরতো রাজভেদো নট চ দৃশির গুণো দর্শত চল্রো রবিশ্চ বজ্ বজতঃ ঝিছিগি মিশ্চ পর্বি পর্ব তো গ্রিরিঃ পচ্ পচতোহি মিনি টা ইল্রশ্চ অন্ অমতঃ কালঃ আতক্ষো মৃত্যু দ্ নম্ নমতো ধ্মো নটো দেবঃ প্রহ্মণ্ড অম্ তমতঃ ভৃষ্কঃ পৃষ্ পৃষ্ডো মৃগো বিন্দুন্ত রন্জ্ব নম্ভ লুক্ রজতং রপ্যং হর্ষ্ গতো হর্যাতো যজে। বায়্রি রির্থন্ড শীঙ্ গুণঃ শয়তঃ নিদ্রালুঃ দৃ গুণো দরতঃ গিরিঃ বল্ বলতো হংদঃ শ্বল্ সলোপঃ থলতো ভ্রমরঃ শঠিক।

১ এ । সৌত্যাদেরথঃ।

क উবাদেশঃ কবথো গুণো ববথঃ ভীকঃ কোকিলন্চ শীঙ্ গুণঃ শরথো

হজগরঃ বরাহো মংস্তন্দ শপ্ শপথঃ প্রত্যয়করণং বিদ্ বিদথো বেতা গমঃ
গমথঃ শান্তং গস্তা যানং পদ্থান্দ বন্চু বঞ্চথো বঞ্চনা কোকিলো ধূর্ত্তন্দ জীব

জীবথো ময়্রঃ কুমঃ প্রাণো ধার্মিকো মেঘন্চ প্রপূর্ব্ব অন্ প্রাণথো বলবান্

প্রজাপতিস্তীর্থং বাযুশ্চ।
১৩৬। সমাদের্বসাদেঃ।

সংপূর্ক বন্ সংবসথো গ্রাম: পরিপূর্ক বন্ পরিবসথ: সন্নিবেশ: উপপূর্ক উপবসথ: সমীপবাসী অগ্নিন্চ আঙ্ পূর্ক, আবসথো গৃহং পরিব্রাজকন্চ ভূঞ গুণো ভরথোহগ্নিস্তাপদো রাজা চ বদি বন্দথ: স্বোভা স্কৃত্যন্চ।

১०१। हमार्पत्रमः।

চমু চমযো যজোপকরণদ্রব্যবিশেষঃ অত্ অত্যো গ্রহঃ পুশং বায়ুরাত্মা তৃণং সংহরণঞ্চ অতসী উমা শশুরু অল্ অল্সো বালিশঃ কালোঁ রোগশ্চ তম্ তম্যোহধাবসায়ঃ ক্পোহন্ধারশ্চ তমসং নগরং তমসা নদী রভ্রভস উৎসাহঃ নভ্নভস আকাশং সমুদ্রণ্চ পতৃ পত্সশক্তঃ পক্ষী পত্তক্ষণ পন্পনসঃ কণ্টকিকলং বেঞ্ভকারাগমো ন এনাৎ বেউসো বৃক্ষবিশেষোহিশিন্চ বহু বহসোহনত্মান্ রৃদ্ধির্বাহসোহজরো জ্রুকাবশ্চ যু মিশ্রণে গুণঃ পক্ষে বৃদ্ধিঃ যক্সো যাবসো ঘাসঃ দিবু দিবসো দিনং সিবু সিবসো বাসঃ শ্রেব্ হিংসায়াং প্রিব্যঃ অর্থবিশেষঃ সেব্কশ্চ।

১৩৮। खोर् तत्रकः।

শৃ গুণ: শরভ: পক্ষী ব্যবহার: পশুবিশেষণচ বৃষ্বৃষভো বলীবদ : এষী থবতো বলীবদ : এফা গীতস্ব শচ শল্ শলভ: পভঙ্ক: গদ (গদ ভ: খর: বল্ শশু দিগাং বল্ভ: ইষ্টা: রাস্রাসভা: গদ ভি: লষ্ কাজৌ অহুং লুষভো গৰহতী উষ্ট্রন্চ ষস্ত লাদেশ: লুলভ: পশুবিশেষ: কৃষ্ লুমাদেশ: লুমভা কৃষ্টিকেপে গুণ: করভো গদ ভ উষ্ট্রন্চ কল্ কলভ: করিবিশেষ: গৃ গুণো গ্রভ: পক্ষী অভাবহারণ ।

১৩৯। জ্রাদেও স্তিট্।

জ জরস্তো মহিষঃ বিশ্ বেশস্তোহণিঃ প্রলং বল্লভঃ কামুকশ্চ রহ্ রোহস্তো বৃক্ষঃ রোহস্তী লতা টু নিদ নন্দন্তঃ পুত্রো রাজা মিত্রঞ্চ নন্দন্তী স্পী পিঙি নন্দর্যন্তা নন্দন্যন্তীত্যেকে জীব্ জীবস্তাঃ প্রাণাঃ জীবস্ত আয়ু-শ্বান্ জীবস্তা ওমধিবিশেষঃ প্রপূর্ব্ব অন্ প্রাণস্তো বায়ুঃ রসাঞ্জনক্ষ প্রাণস্তী জিহ্বা হিকা চ তৃ তরস্তঃ সমুদ্রো ভেক আনারশ্চ তরস্তী নৌকা ভূ ভবস্তঃ কালঃ ভবস্তী নটা পূর্মাচার্যন্ত সংজ্ঞা বস্ বসন্ত ঝতুভেদঃ স্ত্রিয়াং বৃদ্ধির্বা বাস্তী মাধবীলতা হন্ হেমাদেশে। হেমন্ত ঝতুভেদঃ বহু বহন্তঃ প্রবভো বায়ুশ্চ ভাস্ফ দীপ্রৌ ভাসন্তো ভাদ্ধরঃ ভাসন্তী তারকা জি জয়ন্তঃ পাক-শাসনিঃ বৃক্ষশ্চ জয়ন্তী ওমধিবিশেষঃ গান্ত সাধ্ সাধ্যন্তো ভিক্ষুঃ সাধ্যন্তী তপন্থিনী তথা গড়্ গড়রন্তো মেঘঃ কলসশ্চ গড়য়ন্তী কর্করী মডি মণ্ডয়ন্তঃ অন্ত্র বধ্সংযো নটোহলক্ষারশ্চ মণ্ডয়ন্তী নটী ভদি নুম্লোশঃ ভদন্তঃ প্রব্রজিতঃ।

১৪०। श्रीष्ट्रारमञ्जरः।

ঝাছ ্ঝাছের: প্রত্যায়: ঝাছেরা বেখা দূর্বা কলা ছবা অঙ্গুলিফেটিকশ্চ ঋ

শুণঃ অরয়ং কবাটং সংগ্রামো বারণঃ সর্কোপায়পরীক্ষণঃ পোতাভরণঞ্চ ক্মৃ কমরঃ কামৃকঃ খলো মনোহরত ভ্রমৃ ভ্রমরো যট্পদো বেধনঞ্চ চম্ চমরো মৃগবিশেষঃ পক্ষে বৃদ্ধিঃ চামরং বালবাজনং দেবৃ দেবরো ভর্তুঃ কনীয়ান্ বাস্থ বাসরো দিবসঃ কেষাঞ্চিত্রতে দন্তাশু তালবাঃ বাশরোহয়িঃ কপিঃ কাকত ক্ষপৃ শুণঃ ন কুপাদেশঃ কর্পরঃ কপালং বদ্ বদরং কোলিফলং বদরঃ কোকিলঃ শৃগালত কতী তশু দঃ ক্রদরঃ প্রঞাপতিঃ ঝ ররঃ পটলং হিংশ্রত জন্থ সন্থ ঠঃ জঠরোহতিকঠিনঃ মৃর্থঃ কৃদ্ধিত বচ্ চশু ঠঃ বঠরঃ শব্দকারো বক্রক বাথ বিটাদেশঃ বিটরো বাগ্মী মদী দশু ঠঃ মঠরঃ পাককুললঃ দীর্ঘঃ মাঠরঃ স্বর্যসমীগবন্তী মৃত্ত্ মর্মাদেশো মর্মরো বস্ত্রপর্বধানঃ কুঃ রেফার্পনঃ প্রকরঃ পক্ষিবিশেষঃ টুওির গতির্দ্ধী শবাদেশঃ শবরো মেচ্ছজাতিবিশেষঃ স্থ দকারাগ্রমা স্বরা ভ্রম্বং বিষ্ণ ।

३८३। यनात्मतातः।

মদী মদারঃ কামুকো বনবরাহো মন্তহন্তী রত্মবিশেষো নৃপবিশেষক অনি অঙ্গারো দগ্ধকাষ্ঠং মদি মন্দারো বৃক্ষভেদঃ দেবতরুদে ববিশেষক কড়্ কড়ারং শালুকং পিঞ্চলঃ কণ্ঠমুল্ঞ নঞ পূর্বে কুবি কুম্লোপঃ বস্তু পঃ দীর্ঘক অকূপারো মন্তহন্তী সমুদ্রঃ কচ্ছপক্ষ কমু কুমাদেশঃ কুমারঃ প্রথমবয়াঃ কার্ত্তিকেয়ক মৃত্ব্ বৃদ্ধিমাজারো বিভালঃ শৃ শৃঙ্গাদেশঃ শৃঙ্গারো বিদয়রতি-কিয়া রসক ভ ভূঙ্গাদেশো ভূঙ্গারো হেমঘটঃ কঞ্ সৌত্রঃ কঞ্জারো দর্শনীয়ঃ ময়ুরঃ হপো কুস্কুমং ব্যঞ্জনং গৃহঞ্চ দীঞ্জন কারাগ্যো দীনারঃ পোতাভরণং স্কুবর্ণং পরিমাণবিশেষক তুষ্ তুষারো হিষম্।

১৪২। কুটাদেরপঃ।

কুট্ কুটপঃ পরিমাণবিশেষঃ বিট্ বিটপো লতা গুলাঃ সমুদ্রশ্চ কুণ্ কুণপঃ
শুর্পঃ শবঃ পূর্ব্বোক্তার্থশ্চ উষ্ উষপোহিদ্ধিঃ স্থ্যন্তপশ্চ দল্ দলপঃ শব্রং
হিরণাঞ্চ কঠ কঠপং শাকপর্ণং শিখাবন্ধনং তৃণং পলাশং গ্লোকশ্চ থজ্
মন্তে থজপং দ্বতং জলং দ্বি চ বেই বস্ত পঃ এদিংপিইপং ভুবনং ত্রিপূর্ব্ব ত্রিপিইপং স্থালোকঃ বল্ বস্ত উঃ উলপং তৃণবিশেষঃ স্থাতৌ স্বাদেশঃ
সর্বপঃ স্বনামপ্রসিদ্ধাং বিশ্ বিশপো মহান্ গৃহঞ্চ শুষ্ শুষ্পোহনিইঃ কুশ
কুশপঃ পানভা ৩ং মতি মণ্ডপো জনাশ্রমঃ। ১৪৩। বিশেরিপঃ।

विभ् विभिन्नः शृश्य ।

১৪৪। ভিদাদেন্তিকঃ।

ভিদির্ ভিত্তিক। গৃহকুড্যং গোধিকা চ কৃতী কুজ়িকা নক্ষত্রং লত্ সৌক্রো লত্তিকা গোধা বাগ্মী গুৰাকং পরিমাণঞ্।

১৪৫। ইম্বশেস্তকঃ।

ইযু ইপ্তকা মৃদ্দিকার: অশু অপ্তকা পিতৃদৈবতং কর্ম।

১৪৬। ইণস্তশ তমশো।

ইণ্ ওণ এত**েশা বিপ্ৰ•চন্দ্ৰমা অ⊲বৰ্গু•চ এতমশো**হধবৰ্গৱলিলণো হোতা ইলঃ সোমোহগি•চা

>89। जारनर्छः।

দ্ভাগো দর্ভ: কুশ: দল্দল্ভ: রাকসং দল্ভ ঝবিভেদ: অসির্বজ্ঞ ঋ গুণোংর্তোহরতে লা বলেধিজ: শিশিরমোর্ধিনাম চ গুগরণে গুণো গর্ভ উন্রমপত্যঞ্টণ ইভো হস্তী।

286। मिः क्षारमः।

কুন্ কুক্ষিকদরং প্রৃষ্থেকরি গৈ গুল গুকিবায়ুস্কেজ দিত্র ক আন্ত কি নেত্ম।

১৪৯। ইस्सः ऋः।

हेषू हेकुः खनाम अभिकः।

১৫০। তাদেরীঃ ক্রিয়াম্।

তৃ গুণস্তরীর মির্বাদিভা গুঞ্জ অব্ অবী: প্রকাশো নুপো রক্ষণ। মেষিকা চ স্ঞু গুণ: স্তরী: কবচং ধৃম: শ্যা মেষশ্চ তত্রি সৌত্র: তন্ত্রীবীণাদি গুণো নাজী চ তন্ত দ: তন্ত্রীনি লা আলম্ভ লক্ লক্ষাদেশ: লক্ষী: শ্রী: বাত পূর্ব: প্রপূর্বশ্চ মাঙ্ মানে বা তপ্রমীর্বাতমূগ: নকুলোহখণ্চ পা পনে দিককি: পপীরাদিত্যে। হন্ত্রী চ যা দিককির্বায়ীহারবাই: অখবিদ্যা মোক্ষ-মার্মো দৃষ্টিশ্চ।

১৫১ । অর্ত্তেরত্বিঙ্গু। ৰ অর্ক্তঃ নিধনিটো মৃষ্টিইত্তো হক্তী চ। ১৫२। गुरुक्तिमः।

পান্ত প্রভ্ ণাজ্যাৎ পূর্ত্ অর্পিন গ্রনাংসম্।

১৫০। বলেরিফুঙ্।

दल् विनक्ष्त्रभानः वनवान् जूषात्रवर्षनः मन्भुनानक ।

১৫४। यहाँ सा

मनी मएछः जनहत्रविरम्यः।

৯৫। অতেরিথিঃ।
শত্ অতিথিরভাগত্তঃ।

১৫৬। অঙ্গেরুলিঃ।

অপি অঙ্গুলিঃ করচরণাবয়বঃ।

१६१। (कांत्रहः।

কুভ্ গুণঃ কবচং সন্নাহঃ।

১৫৮। কুশেরামুঃ।

ক্রশ্ তন্করণে ক্রশান্তর্থিঃ।

১৫৯। শৃপুষোঃ করঃ।

শ হিংসায়াং শুণঃ শর্করা গুড়বিকারঃ মৃদ্বিকারন্তীর্থঞ্চ পুষ্ পুষ্করং পদ্মং করিহন্তাগ্রং বাদ্যভাগুঃ মুথং জলং মধ্যন্তীর্থক রন্ত লঃ পুদ্ধলং হিরণ্যং সমগ্রং ধাক্যকঃ

১৬০। খজাদেরাকঃ।

থজ্ মন্থনে পজাকা বন্ধকা দিধিকোর: শরক্ষণং শরাক্ষিক বল্বলাকা বকপঙ্কি: শল্ শলাকা অনামপ্রসিদ্ধা পত পতাকা বৈজয়ন্তিকা মন্মনাকা কামিনা হস্তিনা দৃতা চ গুপু পক্ষ বং গুবাকং পৃগং তড় তড়াক আঘাত: তড়াকা প্রতা পণ্ যকারাগমং অদিং পিণ্যাকং তিলকবং শৈঙ মকারাগমং শামাকং শশ্বিশেষং পিষ্ গুণং পেষাকং শিলা নভ্ নভাকং কাকো বিয়ং বিজনস্বাক বৃত্ বৃদ্ধিবিত্তীকং ফলবিশেষং লৃঞ্ গুণো লবাকং ছেননং যজ্ কাকো দাতা অপুষ্ অপ্রাকো ক্ষেত্তং পট্ পটাকা বৈজয়ন্তা ধন্ যকারাগমো ধল্লাকং শশুবিশেষং পন্ অদিং পিনাকো ক্ষেপ্তং তিশ্লফ নশ্নশাকঃ কাকং ভিদ সৃষ্লোপঃ ভদাকং

কাকবিশেষঃ শোভনঞ্ পুর্ থুরাকঃ পশুঃ দুঙ্ হ্রন্থ রেকাগমঃ হরাকো মুচ্ছবিশেষঃ।

১७১। क्यारमज़ेकः।

কষ্ক্ষীকা লূক্ মক্ষিকা লতা মর্কটঃ থনিত্রঞ্জুষ্ উকারো দীর্ঘ ঈকারো হুম্ম: দূষিকোহক্ষিমলং বীরণভেদঃ বর্তির্লভা চ কিংপুর্ক কণ্ অদিৎ কিঙ্কি-ণীকা কালিয়া কুদ্র্ঘণ্টিকা প্রতিসিরা কপালিকা তাণ্ডিকা চ কংপুর্স্ন কঙ্ক-ণীভ্যেকে শৃ শর্করীকোহশোহঙ্গনাভরণমগ্নিক পৃ পর্ণরাদেশঃ পর্ণরীকোহগ্নিঃ কুকুরঃ সুর্য্যো জলশস্ত্রশ্চ দৃ দর্দ্ধরাদেশঃ দর্দ্ধরীকা বায়ুঃ ইস্ত্রঃ ভেক্তঃ বাহ্যভেদশ্চ বুঙ্বব রাদেশো বব রীকো মেঘা কেশবিকারো বারণাফলা শাকভেদশ ফর্ ফর্ফরিদেশ: ফর্ফরীকা মুদ্রিকা পাছকা মদ নঞ্চ ফর্ফরীকং নবপল্লবম-গ্রিশ্চ তিম্ তিস্তিড়াদেশঃ তিন্তিড়ীকো বৃক্ষঃ চর্ চঞ্চরাদেশঃ চঞ্চরীকো ভ্রমরঃ ভুক্ঞ কর্করাদেশঃ কর্করীকা জলপাত্রাবশেষঃ মৃড্ মৃড়ীকো রুদ্রঃ সংসারশ্চ ইষু ইনীকা বীরণশলাকা দৃষিকা চ জৃষ্ জর্জরাদেশে: জর্জরীকা শতপত্রিকা ষৃষ্ ঝঝ রাদেশঃ ঝঝ রীকা দেশশিতঞ ফুল্ ফুলরাদেশঃ ফুলরীকো দেশঃ তল্ তল্লুরাদেশ: তলুরীক: সর্প: অন্ অনীক: সৈন্তঃ রণঞ্জর্ ক্ষীকমিলিয়ং বিনুক্ত দৃশ্ দৃশীকং প্রেক্ষণং দৃশীকা পুষ্পবতী স্থ নকারাগম: স্থীকা নানা কালো ব্যবসীয়োহগ্রিক ঋজু ঋজীকো ব্যাকুলঃ চন্দ্রো ধৃমঃ কেতুর্ম হান্ ঋষি-ভেদক অল্অলীকং মিথাা মন্মনীকমঞ্জনং কণ্কণীকং স্কাং বহ্ দীর্ঘো বা বহীকো বাছীকো বা মেচছঃ বল্বলীকো গর্ভঃ শক্তো ব্রহ্মা স্ক্রঞ মকারাগমো বল্মীকঃ উধীকাক্বভমৃত্তিকান্ত,পঃ হ্রন্থ ইত্যেকে।

১৬২। ইমেরিকঃ। ইযু ইমিকো মুঞ্জগর্ভঃ ইমিকা ভূলিকা।

১৬৩। মুড়োফ্ঙ্গলঃ। মৃড্মৃত্ঙ্গলঃ শিশুঃ!

১৬৪। ত্রাদেরীয়ঃ।

তৃ গুণস্তরীয় ব্যবসার স্তম্ব সম্দ্র সমর্থন কৃ গুণ করীয় শুলগোমরং
শৃহিংসায়াং ঝদির শিরীষং পুলাং পৃঞ্জুত্র প্রীষং বিষ্ঠা ঝজ্ঝজীষমুপধানং :
মৈথুনমুদপানং পিউপং জলপাতভেদশ্চ অবি অস্বরাদেশোহস্বীষং নভ্যো
ভাইভোজনং ভ্রমরশ্চ।

১৬৫। <u>कार</u>मतीतः।

কৃ গুণ: করীরো বৃক্ষভেদ: বংশাস্কুরশ্চ পৃ গুণ: পরীরং ধনং কটি কটীর: কন্দরো জঘন প্রদেশশ্চ মৃদ্ মৃদীরং জঘনং জনপদভেদঃ কজ্জলঞ্চ পট্ পটীর-মৃদরঞ্চননং কন্দর্পো কণ্টকঞ্চ শোট্ গর্ভে শোটীর্ঃ ত্যাগী গর্ভে। গরিতঃ শুরশ্চ বশ্ উনীরং বীরণমূলম্ উষ্ দাহে উষীরমিতোকে কৃঞ্ শুন্ত উর্ ক্রীরং মৈথুনং কন্দলঃ কটকঞ্চ কাশ্ দীপ্তৌ হ্রস্থঃ মকারাগমশ্চ কন্মীরো দেশভেদঃ অশ্ মকারাগমঃ অশ্মীরোহশারী ঘস্ ঘস্ত কঃ অকারলুক্ ক্ষীরং পয়োহমুতং নির্যাদশ্চ গম্ব মস্ত ভঃ গভীরমগাধঃ মকারাগমো গন্তীরং গস্ত জো জন্ধীরঃ হিদি হিংসীরে হিংস্রঃ।

১৬৬। वक्षारमज्ञकः।

বন্চু বঞ্কো ধূর্তঃ শৃগালশ্চ বল্ বহা উ: উল্কঃ পেচকঃ শমু বকারাগমঃ
শম্কঃ জলজন্ত জঃ বল্ বল্কম্ৎপলং পক্ষী ক্রিজাতিশ্চ মৃঙ্ গুণো
মককো মন্তরঃ কণ্ কণ্কঃ কাকঃ জেনঃ হিংশ্রন্ম ভল লহা দিছে ভল্কঃ
ঋকঃ জল আধানে জল্কা জলৌকসঃ মল্মারণে মল্কঃ ক্রিভেদঃ মহ্
হস্ত ধো মধ্কো বক্ষবিশেষঃ শল্বুদ্ধিঃ শাল্কং প্রাদিম্লং মৃডি মঞ্কো
ভেকঃ

১৬৭। তাদেমিঃ।

নীঞ্ গুণঃ নেমিং রথমার্গঃ চক্রান্তো ভিত্তিঃ মলঞ্চ ঋ উরাদেশঃ উমিজিল তরত্ব, বাজু রণাদেশঃ রশ্মিঃ প্রভা প্রগ্রহণচ ভূ ভূমিভূই সনামপ্রসিদ্ধঃ ধল দ্বিশ্বন্দেই ইলাম্প্রষ্ঠ ।

३७५। ज्ञानिनिः।

জ্যান জা জানিঃ দৌবলাং হল্ হাদেশো হানিঃ বয়োনাশঃ মৈ গ্লানিরপবাদঃ থৈ গ্লানিঃ দৌবলাং হল্ হাদিবপচয়ঃ বহ্ বিছির্প্রিঃ স্থ গতে। স্থাবঙ্কু শঃ তৃ ম্বণিলীপ্রিব আকি শচ শু গুণঃ শ্রোণিঃ কটিঃ বু গুণো বোনির্ভ্রাঃ
উৎপত্তিস্থানমাত্রঞ্জ প্রি গুণঃ শ্রেণিঃ পঙ্কিঃ সমূহণ্চ বেঞ্জন এদাং পত্তক
বেণিঃ জননী কেশবন্ধনবিশেষণ্চ অগ্ অপ্রিঃ বৈধানরঃ জর্ জ্যার্রাদিত্যঃ।
ব্যিগেহো ব্রদ্ধা জরঃ জরা চ ঞির্বা তূর্ণিঃ শোকো মলশ্চ প্রচ্ছ্ পৃশানেশঃ
প্রিল্লতন্ঃ স্পৃষ্ পৃষ্ণিরিত্যেকে পৃষু বৃদ্ধিঃ পাঞ্চিঃ পান গ্রন্থেরধঃ বৃষু বৃষ্ণিঃ

ক্ষত্রিয়ঃ তদংশশ্চ মূষ্ মৃষ্ণিঃ ব্রহ্মা ভূ রেফাগমো ভূর্ণিঃ পৃথী যুর্ যুর্ণিঃ ব্রমঃ চর্ অদৃৎ চুর্ণিঃ স্বার্ত্তিকস্ত্রভাষ্যং কপদ্কিশতঞ্চ।

১৬৯। জ্রাদেবিঃ।

জু জীবি: শকটং কারঃ পশুঃ ফল্প-চরশ্চ শৃ শীবি: হিংল্রো হরিণঃ ক্রমিশ্চ স্ত্ ত্তীবি: নভঃ রথিরং তৃণজাতিরধ্বয় গৈয়ঃ শুক্রশ্চ জাগ জাগবিরিধিবজ্ঞগরণ্ট ক্রঞ্ ক্রবিস্তম্ভবারঃ কারশ্চ বৃঞ্ গুণো বর্বিবংসঃ শভং শকটং ধারী কণ্টকশ্চ দাঞ্ হ্রো দবির্দাতা দৃ গুণঃ দবি: পরিবেষণভাণ্ডং অট্ অকারাগমঃ অটবিররণ্যং গৃ গীবির্দর্শঃ ঘুষু প্রভ্যারবকারভা তঃ মৃষ্টিদ্রং গৌব রাহশ্চ অভ্ বকারাগমো অবভবিঃ শীন্ত্রগামী ছো ওদং ছবিলীপ্তিঃ ছা হ্রমঃ স্থবিস্তম্ভবারঃ স্বর্গো জঙ্গমণ্ট দিবু বলুক্ দিরু কলুক দীর্ঘশ্চ দীদিবিঃ স্বর্গো গার্হপত্যা কিতবো বৃহস্পতিশ্চ কিকিপূর্ম্র দিবু বলুক্ দীর্ঘশ্চ কিকিদ্দিবিঃ মায়া দিবসোহগ্রং গণং স্বর্গশ্চ অথবা উপপদাস্তভ্য দীর্ঘঃ কিকীদিবিঃ স্থনামা পক্ষী ধার্ম্মিকশ্চ কেচিৎ কিকিদিবিরিতি দ্বিগণ্ডং বাচক্ষতে কিকিব্রানরঃ শব্দকারো বিদ্বংশ্চ দাঞ্ আদিং দিবিধ্রতঃ।

১৭০। বাপাত্যোর্ডতিঃ।

বা ন আলুক্ বাতিশ্চন্দ্রো বায়ুণ্ড পা রক্ষণে পতির্ভর্তা।

১१)। भटकश्र(e)

শক্ শরুৎ পুরীষম্।

১৭২। বির্বিশাদেঃ।

বিশ্ বিপ্রিমৃ ত্য়: অদ্ অদিঃ পর্ব তঃ স্ত ্ স্বিঃ পণ্ডিতঃ স্থ্যোহগিহোত্রশ্চ তৃ ভূরি প্রচুরং স্বর্ণিঞ্চ শক্ত শক্তিমে ঘঃ বজ্ঞো হস্তী পর্ব তশ্চ শুভ শুভিঃ শোভনং ব্রহ্মাপত্যং দর্শনীয়শ্চ জীব্ ঈং ব্রস্বঃ জীব্রিঃ কোপিঃ পক্ষী বটকঃ কালশ্চ বক্ বক্রিঃ কুটিলং রথঃ শল্যমরিশ্চ অকি জঙ্কিশ্চিহ্নং ডুবপ্ বপ্রিঃ ক্ষেত্রং কৃদ্ কৃর্বিঃ সমৃদ্রঃ।

১৭৩। রাদেস্তিঃ।

রা রাত্তিঃ রজনী অত্ অতিঃ ঝবিভেদঃ শদু শতিঃ হিমং কুঞ্রোহপরাধঃ পাটলক্ষ মন্ মন্ত্রিক্ষণদেশক্ষা।

১৭৪। পতেরতিঃ।

পত্ পততিঃ পকী।

মৃহ্ গুণো মরীচিঃ রশিঃ ঝবিভেদশ্চ কণ্ শব্দার্থঃ কণীচিম নশুস্ব্দং চর্ম কাষ্টিকা শক্টঞ্ টুগুমি গতিব দ্যোঃ গুণঃ খন্নীচিশ্চন্দ্রো ব্যাধিরিক্রশ্চ।

১৭৬। হনাদের মঃ।

হম্ হন্যো রাক্ষসঃ ঝ গুণোহরষো রবিঃ অঙ্গুষো বালো লাঙ্গুলো হস্তী চ পীঙ্যকারাগমঃ পীয়ৃষমমৃতং গুণঃ পেযুষঃ অভিনবহৃদ্ধং মদ্জ্সস্ত এঃ মঞ্যা কাঠদোণী গড়ি গগুষো জলচ্ল্কং ক্রিফনা ফল্যো লতাডেদঃ বুঞ্ গুণো বরষো ভাজনম্।

১৭१। প্রাদের वः।

প_ু ৠত্র পুরুষঃ উতো দীর্ঘো বা পূরুষঃ আত্মা পুনাংশ্চ গুণঃ পরুষং নিচুরং নহ্ নহুষো রাজভেদঃ কল্ কলুষং পাপং লদ্ শ্লেষণক্রীডনয়োঃ লম্বুষং পাপং ক্রীড়া চ।

১৭৮। ঋকুটোররুঃ।³

ঋ গুণোহরর: দ্রমাদিত্য আয়ুধঞ্চ কুট্ কুটরু: পক্ষী বর্দ্ধকী কটকশ্চ।

১৭৯। অবাদেরটঃ।

অব্ অবটো গর্ত্তঃ ককি কন্ধটঃ সরাহঃ শক্ শকটং যানভেদঃ চপ্ সৌত্র-শ্বপিটঃ উচ্ছালঃ কর্ক সৌত্রঃ কর্কটঃ কুলীরঃ রাশিভেদশ্চ চম্ চমটো ভক্ষকঃ ভূঞ্ গুণো ভরটো মৃগঃ সংগ্রেটা গুণঃ সরটঃ রুকলানঃ দেরু দেবটঃ শিল্লী কমু কমটঃ কামুকঃ বুঞ্ গুণো বরটঃ রুমিভেদঃ বৃদ্ধিঃ বারটঃ সার্থিঃ সমুদ্রশ্চ মর্ক্ সৌত্রো মর্কটো বানরঃ কীটভেদশ্চ।

১৮०। ज्यादमत्रशिः।

স্থ গতে। বৃদ্ধিঃ সারথিঃ সমুদ্রো রথবাহকশ্চ নিপূর্বে সন্জ্জস্থা: যতঃ
নিযঙ্গথিঃ ধরী রথক্ষকস্তৃণং সার্থিশ্চ উৎপূর্ব্য ঋ গুণঃ উদর্থিঃ সমুদ্রোহনক্ষো বলীবর্দ্দশ্চ।

১৮১। क्लारित्रमः।

কৃঞ্পুণ: করম্বো মিশ্র: কদি নুম্লোপ: কদমো বৃক্ষভেদ: সমূহক বৃদ্ধি: ক বৃদ্ধ: কলহংস: ঠিবু ইব্লোপ: দক্ত পশু তক্ত স্তম্ব: সংঘাত: অথবা স্থৈতে বৈলোপঃ স্তম্বঃ কড়্কড়ম্বঃ শাকাদিঃ কটে কটাৰো বাণো বাদিত্তেদক।

১৮২। কল্কদ্চর্প্রবেরমঃ।

কল্ কলমঃ শালিধান্তং কদ্ কদমঃ পকং পাপক চন্ন চরমঃ পশ্চানজে।
২ন্তানির ত প্রেণ্ প্রথম আদিঃ।

२^५२। क्रिन्तिनः "।

কুও ক্বিন্দস্ত ব্রবায়ঃ কুণ্ কুণিন্দশ্তন্দো দ্লেচ্ছবিশেষণ্চ পূল্ পুলিন্দো। মেচ্ছবিশেষঃ।

১৮8 । श्राप्तकातः।

স্থা স্বোর্ষঃ ডুমিঞ্ গুণো ময়্রঃ পক্ষিবিশেষঃ রূপূ গুণঃ কপূরো ঘনসারঃ মদী মস্বঃ শস্তভেদঃ গজ ্থজ ্রো বৃক্ষভেদঃ গুল্ যন্ত ইৎ সিন্দুরং শৈষকং অগি অকারশু ককারঃ কন্ধুরো মৃগঃ পরাত ।

१ १ विकासिक ।

বন্চ্ বঞ্লঃ তিত্তিরিং পিজি পিঞ্লঃ তৃণসংঘাতো মেঘো জলক কচ্ কলা-দেশং কঞ্লো গাত্রাভবণবিশেষঃ বহ্ বহুলা ক্তিকানক্ষত্রং হুস্ব লভলা বিষ্ঠাবিশেষণ্ট বন্ধ্ বন্ধূলো হস্তী বধ্ বধূলা অস্তী বধূলঃ পশুবাতকং তম্ বৃদ্ধিব কারাগমঃ তাম্বুলং স্বনাম প্রসিদ্ধং শ্, হিংসায়াং বৃদ্ধিদ কারাগমঃ শার্নো: ব্যাত্রঃ লগি বৃদ্ধিলাস্বং পুছেষ্।

१८४। क्रांटमन्छः।

কুঙ্কুচো হস্তী স্ত্রীস্তনো নৈথ্নকালত কৃচি হস্তিনী চিত্রলেখনী প্রমনা চ সংপূর্ব্ব ইণ্ দীর্ঘ: সমীচশ্চ ল: সমুদ্রঃ সংযোগত সমীচী জ্যোৎসা ভূমি: স্ত্রী চ-সিবু স্থ ইত্যানেশ: স্চো দভাস্কুব: স্চী সীবনোপকরণীবিশেষ:

:৮৭। বলাদৈরয়ঃ। বল্বলয়ঃ মল্মলয়ঃ তহু তনয়ঃ স্ঞ্দকারাগমো স্দয়ং বৃষু বৃষয় আশাস্তঃ এতে স্বনামপ্রসিদ্ধাঃ।

১৮৮। मारिएकः।

ভু মিঞ্ গুণো মেকহিঁমান্তিঃ পীঙ্ গুণঃ পেকরপ্রমাণমপানঃ পক্ষী বায়ুরাদিতাণ্চ রু রুক্মুণ্বিশে:বাহস্তর্বিশেষণ্ড ভুলাঞ্ লাক কাঠং পুংসি দারুদ মিদীবাং শশ প্রতুগতৌ অকারস্ত মং শক্ত মুখলোম অশ্ ব্যাপ্টো
অক্ত দেক্তর্বাং অস্ত কেপনে অক্ত চ ইভ্যাকে ঞিকলা কে ইভ্যাদেশঃ
কেরুং শৃগালাং শীঙ্ শীগাদেশং শীপুং শোভাঞ্জনং কদি মুম্লোপং কজন গিন
মাতা শদু শাতনে শক্তঃ শাত্মিতা দশু তঃ শক্রবৈ বীষদু বিদরণগতঃবসাদদেমু সক্তরবসারং জনী নুস্ত তঃ জক্তগ্রীবাগ্রদেশং ঞিভী ভীর্নভ্রশীলং ধশু
লং ভীলুশ্চ কম্ কমুঃ কাস্তঃ পাং আকারস্তা লুক্ প্রঃ পানং ধেট্ ধারুঃ
পানশীলং।

१४२ । कार्त ।

কুঙ্নকারাগমঃ কুন্দঃ পূন্দাবিশেষঃ বৃঞ্নকারাগমো বৃন্দং সমূহঃ পক্ষে গুণো বন্দো মেঘঃ শো তন্করণে শাদঃ কর্দমঃ নবদলং স্বর্ণঞ্জ শপ্ আক্রোণে পস্ত বঃ শক্ষো ধ্বনিঃ।

১৯০। পীজনোরিথঃ। পীঙ্ন ইয়ঃ পীথং-মতমমৃতঞ্জন্জনিথং মাতাপিতরো ভাবাপৃথিকৌ চ

১৯১ । देशुनिद्धिश्यः। देशु शास्त्री विद्याः नोक्कृतिस्था यही नोका छ नाथः यद्धः।

१७२। कहारमञ्जूः।

কচ্বন্ধনে কছো জলোপান্তঃ কমটশ্চ গুঙ্গুচ্ছঃ স্তবকঃ পীঙ্ হ্রসঃ পিচছং বহ'ং পূঙ্ হ্রসঃ:পুছো লাঙ্গু তুদ্ তুচ্ছেং শৃক্তম্ অদ্ অচছঃ প্রসঞ্জঃ

)201 श्रमारमः थः।

খন্ নকারত ৩: থাঝো ধৃতি: শমুমত ৩: শঝা কল্ব: মহ্হত পুক্ মথো যজ্ঞ: অকারপুক্ হতা উ: মুখা বক্মাতা প্রধানক শীঙ্ হ্রা শিথা চূড়া অহিঃ জালা চ মৃদ্ধি ছতা লুক্ মৃথো নিগুণি:।

১৯৪। সোপ্ ধ্বঞ্জো নিস্ট।

সো সানসিঃ স্থবর্গং সথা চ পু গুণঃ পর্ণসিং শাক্ষাভরণক্রিয়া চ ধ্ঞা গুণো ধর্মসিঃ শিরো ভর্তা পক্ষী কলং মাতাপিতরো চ।

ऽक्र । शनारमर्न नः।

পল্ পদ্ধানং পদ্ধঃ অল্পরশ্চ ইল্ স্বৌত্ত ইল্লো রাক্ষ্যো মংস্তস্তারাভেদ চ্ কমৃ কল্পলো মেধাদিলোমরচিতাচ্ছালনবিশেষঃ শমু শশ্বলং স্বনামপ্রসিদ্ধন্।

১৯৬। প্রাদেম নঙ্।

শৃ হিংসায়াং শম স্থং নাম চ কঞ্ কর্ম কারকভেদঃ ক্রিয়া চ বৃঞ্ বর্ম সরাহঃ চর্ চম স্থক্ ভস্ ভস্ম ভৃতিঃ হি গুণো হেম স্থক্ জনী জন্ম উৎপতিঃ ছদ্ ছন্ম মায়া অশ্ ভোজনে অশা প্রস্ত হু ড্দাঞ্ দাম মালা ড্ধাঞ্ ধাম তেজা গৃহঞ্চ ক রোম তমুলোম ভন্কহঃ বোহস্তকর্মণি সাম বেদ-বিশেষঃ নম্মন্ত আণ নাম সংজ্ঞা বেঞা ন এদাং বেমা বপনদণ্ডঃ সিঞ্বজনে দীর্যঃ সীমা অবধিম র্যাদা চ' পা পানে পামা বিচর্চিকা পকারাগমঃ পাপা পাপম্ অং কৃদ্ধিঃ আত্মা প্রসিদ্ধঃ ক্ষেত্রক্তশ্চ বৃহি বৃদ্ধৌ ঝকারভা রেফো ব্রহ্মা প্রজাপতিঃ অখপুর্দি হা সন্ত ভঃ অ্যথামা লোণপুত্রঃ স্থঞ্ সোমা চন্দ্রঃ হাম আহিতিঃ।

১৯৭। সোমারশুভের মিপ্রন।

স্পূর্ম মা স্থামানৌ স্ত্রীপুরুষো এবং স্পূর্ম বৃঞ্জ্বর্মাণী তথা শূ
হিংসায়াং স্থামাণে।

১৯৮। বেতেঞানন্। বোম আকাশম্।

১৯৯। রুচিভুজিভ্যামিষ্যঃ।

কচি কৃচিব্যমভিপ্রেতমিইঞ্জুজুজুজিব্যো দাসো ভোগক।

২০০। কৃত্রুপেরাটঃ।

কু কিরীটিঃ মুকুটং তৃ তিশ্রীটঃ খেতলোগে কটু কং বেষ্টনঞ্ রূপু কুপাটমুদরং বারি চ।

२०)। क्षेंफिरञा मनः।

ক্ট কুটালং মুক্লং শ্লেমা কথালং কুটিলঞ্চ কৈ কামলো রোগবিশেষঃ কশ্ হিংসায়াং কথালমমনোহরং স্তান্ত কুল্ কুআল্ং দেবতা মিট্রীকরণং দেবৰ-ভাগুং গোতাং বদনক।

२०२। व्यातिकम्।

স্থ গড়ৌ গুণ: সরস্তড়াগঃ তিজ্ গুণস্তেজো রশিঃ রেতশ্চ চিডী গুণশ্চেতো দ্দরং তমু তমোঁহন্ধকারঃ অর্ অয়ো লোহং বর্ বয়ো জীবিতকালপরিমাণং পক্ষী চ পীঙ্ গুণঃ পয়ঃ ক্ষীরঃ জলঞ্বচ ব্বর্চো দীপ্তিঃ রক্ষকো রাক্ষসঃ অশু অকারশু যকার: যশঃ কীর্ত্তিঃ বচ্বচো বচনং চশু কোহলুক্ বক্ষঃ উর: উজ্ অর্জনে বলুক্ ৩জো বলং শৃ শিরো মন্তকং ঋ উরাদেশ: উরো বক্ষঃ অর্শাদেশঃ অর্শো রোগবিশেষঃ অর্গাদেশোহর্ণো জলং ইণ্ গুণে। নকা-রাগম: এনঃ পাপং শীঙ্ গুণ: ফকারাগম: শেফো মেহন: স্রু গতৌ গুণ: তকারাগম: স্রোতো বারি প্রবাহ: রীঙ্ গুণস্তকারাশম: রেত: গুক্রং নহ্ হস্ত ভোনভ আকাশং প্রাবণত অজ্জন্ত গঃ পক্ষে বৃদ্ধিঃ অগঃ আগোহ-পরাধঃ অম্ হকারাগমো অংহ: পাপং রহ্ রহো বিজনং হুমাগমো রংহো বেগঃ উচ্ চস্ত কঃ গুণঃ ওকঃ স্থানং ভূ ভূবোহস্তরীক্ষং স্থান্চ রন্জ্নস্ত लूक् রজো রেণু: বদ্ আছোদনে রৃদ্ধির্বাদো বন্ত্রং ছদ্ রুমাগম*****ছন্দো বেদো গায়ত্রাদয় ত উষ্ দাহে উষ: প্রত্যুম: ৰঞ্ পূর্বে উহ্ গুণ: অনেহা: কাল: শিবঃ হুর্যান্চন্দ্রো হিংস্রন্চ পা পুমানেশঃ পুমান্ পুরুষঃ বিধ্বিধানে বেধাঃ প্রজাপতির্গ্নিব বিষ্ চিল্রকারাগম: চক্র: প্রস্ পূর্ব্র ধাঞ্ প্রোধা: সমুজো মেঘক বয়দ্ পূর্ব্ব ধা বয়োধা ত্রন্না রসায়নত পুরদ পূর্ব্ব প্রোধাঃ পুরোচিতঃ পুরুপূর্ব্ব রু গুণঃ উপপদক্ষকারশু উকারঃ পুরুরবাঃ রাজর্বি:।

२००। वित्यपूर्वािकविज्राकातरभो।

বিষেপূর্ম দিবু গুণঃ বিষেদেবাঃ অগ্নিঃ শ্রাদ্ধদেবণ্চ বিষেপূর্ম ভূজ্ গুণো বিষেভোজোহগ্নিঃ।

শ্বির্ শ্বক্থাদেশঃ ঝক্থো ধনং স্থবর্থক চায় চনাদেশঃ চনো ব্রীহন্তীর্থনিমরঞ্চ বৃঞ্ গুণঃ পকারাগমঃ বর্পঃ রূপং পা জকারাগমঃ পাজো বলং থকারাগমঃ পাথো জলমরঞ্চ অদ্ মুমাগমো দশু ধঃ অর্নাহরং পচ্ সকারাগমঃ পক্ষো মাসাদ্ধ্যরণাঞ্চ স্কলির্ দশু ধঃ স্কন্ধো গ্রীবাদেশঃ আপু আপো জলং পক্ষে হ্রো নকারাগমঃ আপো ব্যাপারঃ হ্রত্থাত্রেণ আপশ্চ পশু বঃ জকারাগমোহজো রূপং চল্রশ্চ অজা লন্দ্রী পশু ভঃ মকারাগমঃ অস্তো জলং যুজির গুণঃ জশু গঃ বোগঃ সমাধিঃ চক্ষিঙ্ চক্ষাঃ উপাধ্যায়ঃ প্রপূর্ব্ব প্রচক্ষাঃ বৃহস্পতিঃ নৃপূর্ব্ব নৃচকাঃ রাক্ষসঃ অপপূর্ব্ব স্থ গড়ে

গুণ: অপপূর্বস্ত অকারলোপ: অপ্সরা: দেববোদিং অকি অকন্চিক্ত্ত ভূঞ্ গুণ: গকারাগম: ভর্গস্তেজো ক্রন্ত্রন্চ।

২০৪। বশেরনদ্।

বশ্ কান্তো উশাদেশ: উশনা: শুক্র:।

२०१। मरमञ्जनम्।

দমু দমুলাঃ গ্ৰহো বহিলে।

२०७। कुलारमः कः।

কুল্কুল্কো রোগ: কুল্কা রাত্রি: গুরু রক্ষায়াং ডভাল: গুল্ক: পাদ এছি: শীঙ্ হ্রব: শিফা মূলম্।

২০৭। পিপর্ক্তেঃ শ্বশুঙো।

প্রুদ্ধি: পার্ষো ভূজমূলাধঃ পশুরাযুধৎ পার্ষাস্থি চ।

২০৮। উর্ণোতেড ঃ।,

উৰ্ ঞ্ উৰ্ণা মেধাদিলোম স্বভাবাৎ স্নিয়াং বৰ্ত্তত ।

২০৯। স্থামার্হঃ।

শুদু যন্ত ইৎ সিংহঃ কেশরী রাশিশ্চ।

২১০। ঋশভ্যামটুঙ্।

ঝ অর্ট্র ক্ভেদ: শ্ শর্টু: রুক লাদ:।

२১১। कृजुजार कड्।

क कर्कः वृ ठर्कः।

२)२। हैर्गा प्रम्।

हेन् हे एम् मर्खनाम।

২১৩। দিবোর্যঃ।

দিবু ৰশু রেফো দীর্ঘণ্ড দীর্ঘ: প্রসিদ্ধ: ।

২১৪। জেবি:।

জি জিবিঃ কোপঃ পক্ষী চ।

২১৫। রমেরাপ্তালঃ। রমাপ্তাল: পতিবিশেষো রক্জু: সন্নাহণ্ড। ২১৬। দোর্ডিঃ।

विश्वकः সংখ্যীয়াম্।

২১৭। ত্রাতেডিঃ।

ত্রা ত্রিশকঃ সংখ্যায়াম্।

२ २ । यद पर्ध्य ।

বদ্ সন্বাভাবঃ ষৰ্শকঃ সংখ্যায়াং ষ্ট্।

২ ১৯। কায়তেডিম্।

कৈ किং मर्तनाम।

২২০। নঞো নহেবাহঃ।

नकः भृका नहः इच ७: अनुभान् वनीवर्णः।

२२)। জনের্জঃ।

छन् ननुक् छएं। मन्तर्किः।

২২২। চতের্বার ।

চতে চতার্ শব্দঃ সংখ্যায়াম্।

বর্ণাগনো বর্ণবিপর্যায়ন্চ দ্বৌ চাপরৌ বর্ণবিকারনাশৌ। গাতোস্তদ-র্থাতিশয়েন যোগস্তত্বচ্যতে পঞ্চবিধং নিক্জন্॥ ইতি দিল্লাত্রমন্ত্রাপি প্রকৃতিপ্রত্যযাগমগুণর্দ্ধিক্রস্বাদয়ো বর্থাসম্ভবং পরিকল্পনীয়াঃ। তিঙ্কান্দিতরক্রনাঃ কৃত্তিঃ সর্ক্ষে প্রসাধিতাঃ। সমাসতদ্বিতাভ্যাঞ্চ বিকারানপি সাধ্যেং॥ যশ্মিন্দেশে প্রসিদ্ধা যে প্রয়োজন্যা হি তত্ত্ব তে। অপ্রসিদ্ধান্ত যে শকাঃ বোধা। গ্রন্থান্তরাত্ত্ব তে॥

ইতি বাদীক্রচক্রচ্ড়ামণিমহাপণ্ডিত শ্রীক্রমদীশ্বরাচার্য্য-কুতো সংক্ষিপ্তসারে মহারাজাধিরাজশ্রীমজ্জুমরনন্দি-পরিশোধিতায়াং বৃত্তো কুচ্ছেষোণাদি-পাদঃ সমাপ্তঃ।

क्र टिक्ट्रिया ३ वा अशीम १ ।

উণাদিকং কৃত্বা নিষ্পাদনীয়মব্যয়মাহ-

১। চরাদের্ডদাদিরব্যয়ঞ।

চরাদের জরে ডদাদির্শ্ববিত স চাব্যরঞ্চ। চ বা হাহ ইব হস্ত মা। ঔণাদিকং প্রত্যরঞ্জ রূজাব্যরং নিম্পাদিত জং নিম্পরং কর্ত্ত্ং শীলমস্তার ক্রেরিভি। চ ইতি চর গতৌ তিতি স্বরত ছেময়োলু গিতি লুক্। বা ইতি বল্ ইত্যাশাং ডাৎ হাহ ইতি ওহাক্ ত্যাগে ইত্যমাৎ হ ইণ্ গতাবিত্যমাৎ ব ইব হস্ত ইতি হন্ হিংসায়ামিত্যমাৎ ত মা ইতি মা মানে ইত্যমাদং। নমু মোডাম্ ইতি রুতে সিঙ্কে মৈবং মাঙ্ মান ইত্যস্ত গ্রহণং স্থাৎ গ্রহণে কো দোষ-শেত্রহি বৈচিত্র্যার্থম্। চর্বল্ ওহাক্ ইণ্ হন্ মা এতে চরাদয়ো গ্রাম্থাঃ ডং ডাৎ হ ব ত অং এতে বট্ ভদাদয়ো গ্রাম্থাঃ। স্বরত ছেময়োলু গর্থো ভকারঃ ক্বত্ত কারো মুখস্থার্থোহব্যর ছঞ্চের ধিকারঃ পাদসমান্তিং যাবং।

२। ७९ मिर्नामः मनूक् छ।

সেবাদেকজ্বরেহজ্বতি সলুক্ চ স চাবায়ঞ। এব ইতি সেবৃ সেবনে ইত্যমাদেং।

৩। অসাদেস্থঃ।

শ্বসাদেরুত্তরে থো ভবতি অস ভূবি স্বথ।

৪। ধ্রম আৎ।

ঞিধুষা প্রাগল্ভা ধৃষা।

৫। किंगरमाः किल्।

কিমসোরুত্তরে কিপ্তবতি সলুক্চ স চাব্যয়ঞ। কিং অ।

৬। ইণঃ।

ইণ্ গতাবিত্য**ত্থাৎ কিপ**্ভৰতি। ইণ্ গতৌ ই স চাব্যক্ষ।

৭। উষঃ।

উষ্ দাহে ইত্যন্থাৎ কিপ্ ভবতি বনুক্ চ স চাব্যরঞ্গ উ। সমূক্ চেতি সর্ব আক্ষর্ততে। ভিক্ষামট গাঞ্চানয় ইতি নহি ভিক্ষায়া বৃত্তিঃ কিন্ত যদি গোপ্রাপ্তিভবতি তদানর ইত্যর্থ: এতেনেহাপি সনুক্ব্যাবৃত্তিঃ ক্রিরতে কিন্তু যদি সকার: স্থিতন্তদা লোপো ভবতীজ্যর্থ:। অভোহপি কিপ্ ইত্যন্ত্র-বর্ততে। অথবা সলুক্ ৎচতি ইণ্ ইতি স্ক্রান্নিবৃত্তিত্ব মণ্ডুক্সুতা-ধিকার্জ্যায়েনাম্বর্ততে।

৮। খন্নমোড লুডন্।

খনু বিদারণে ণম্ প্রহ্বত্বে শব্দে ইত্যেতাভ্যামূত্তরে ডল্লুড্মৃ ভবতঃ। খনু
নমু ডিভি স্বরতচ্ছেষয়োলু গিত্যেত্যোন কারমকারয়োলু ক্। সর্বে ধাং
সমাসব্যতিরিক্তানামব্যয়নাং স্থপোহব্যয়াদিতানেন লুক্।

৯। হেস্তেঙ্।

হি গতাবিত্যশ্বাৎ তোঙ্ভবতি। হেতো।

১০। অমাসো হোড্,। •

অম্রোগে আদ্ উপবেশনে ইত্যতাভ্যামূত্তরে হোড**ু ভবতি। অহে**। আহো।

১১। স্বপেড হাডধা।

ঞিষপ শ্রে ইতামাৎ তাহা ডধা ভবতঃ। স্বাহা স্বধা ডিতি স্বর ইত্যা-দিনা অকারপকারয়োলুক্।

১२। छेट्श धौम्।

উহ্ বিতর্কে ইত্যন্ধাৎ ভীম্ ভবতি। ওহীম্।

১৩। স্পোডর্।

স্থপ ইত্যম্মাৎ ভর্ভবতি। স্বর্।

১৪। অমস্তরা আল্লুক্ চ বা.।

অম্ রোগে ইত্যশাৎ তরা ভবতি আগ্নুক্ চ বা **ভবতি**। অন্তর্ অন্তরা।

১৫। দিবুছুযোরাদাঙে।
দিবু ক্রীড়াদৌ পঠ্যতে হব্ দোষে ইত্যেভান্ত্রে আদাঙে। ভবত:।
দিবা দোষা। আতি হতে দিকে হ্যিত্যশ্ত গুণার্থং ক্রার: ক্লভ:।

১७.1. **চরো**ঽমদিচ্চ.।

চৰ্ গতৌ ভক্ষণে চ ইত্যন্মাদম্ভবতি অমি পরে চরোহদিচ্চ ভবতি সা চাব্য-য়ান্তঃ নিত্যে বর্ত্ততে। সদা নিত্যং সন্তং নিত্যত্বমু। চিরমুধ

১৭। নশেস্থ্য

নশ্ অদর্শনে ইত্যমান্তন্ ভবতি।

১৮। তমি নশোহন্তঃ কঃ।

তমি পরে নশোহন্তঃ কো ভবন্তি। নক্তং তত্তত্ত্বপ্রবাদয় ইত্যনেনেঙো-হভাবঃ হল্পরস্বাদ্যুক্তঃ।

১৯। মে, বিন্দুঃ পদবিরামে।

পদবিরামে পদস্ভোচ্চারণশেষে মো বিন্দুর্ভবতি। ওহীম্। নমু বিন্দুর্গ কিন্তাবং চক্রন্থমক্ষরত্বং নহক্ষরত্ব দ্রব্যত্মন্তি। উচাতে। চক্রন্থং চক্রা-কারন্থমিতি তন্ত্রেণ জ্ঞাতব্যম্। এডিম্মিন বছর্বর্থং জ্ঞানতন্ত্রন্থম্।

২০। যমেড দ্বা

যমেকত্তরে ডদা ভবতি। যদা ইর্তি যমু পরিবেশনে ডিবাদম্লুক্।

২১। সমাদেভ বিষ্
।
সমাদেক ভবে ভাষ্ম ভবতি। সায়মিতি ধ্মু উপবেশনে ইতি মো বিন্দ্বিত্যাদিনা বিন্তুষ্।

২২। স্বপো যম্ পলুক্ চ।

স্প উত্তে যম্ভবতি পলুক্চ। স্বয়ম্।

২৩। তনোতেরিমলুক্ চ।

তমু বিস্তানে ইত্যক্ষাদিস্তবতি নলুক্ চ। তে।

२९। जां एन तिए।

অৎ সাতত্যগমন ইত্যাদেরুত্তরে ইদ্ভবতি। অতি পলি। নমু উৎসর্গ ইত্যমু-বুত্তে সিদ্ধে প্রথগিৎকরণং স্পন্থার্থম্।

२৫। পুরিঙ্।

পু পালন ইত্যশাদিঙ্ভবতি। পরি।

২৬। সম্ন্যোঃ কিপ্।

ষমু উপশ্যে শী নয়ে ইত্যেতাভ্যামুত্তরে কিপ্ ভবতি। সং নি।

২৭। নেঃ খল্পপি রঃ।

নেই তুরে ধরপি রো ভবতি। নির্। অকার উচ্চারণার্থঃ।

২৮। আশো ৬ঃ সলুক্ চ। আঙ্। (অকারঃ পূর্ববং))।

২ন। তুষে কিপ্।

তু দৌত্রে ধাতৃত্ব স্তাবিত্যেতাভ্যামুত্তরে কিপ্ভবতি। তু হু।

৩০। উষশ্চ ষস্তঃ।

উষ্দাহে ইত্যশ্বং কিপ্ভবতি যস্তো ভবতি। উৎ ♦

७)। नामश्खा कः।

ণদ্গদ্বাক্তায়াং বাচি ইতাম্মাৎ কিপ্ভবতি নদোহস্তো ঞো ভবতি। নঞ্

৩২। সময়নিকযোরাৎ।

সম্পূর্মাদয় গতৌ নিপূর্ক[ঁ] কষ্ হি^ছিশায়ামিত্যেতয়োরাভ্বতি । স্ময়া নিক্ষা ৷

৩৩। অর্ছন্ত।

অৰ্ইত্যশাদান্তবতি।

৩৪। অর্দো দোধ আত্যাজমঃ।

অর্ফোনো ধাে ভবতি আতি পরে অম্ রোগে ইত্যশাদাজ্ভবতি। অর্ফ্র-শ্চেতি আৎ অন্ধা অমা ইতি অম্ রোগে।

৩৫। বসোহট্ ষত্বঞ্চাদোদ্বা।

वम् निवारम देखानाम छ जवि यद्यक वरमाश्रमोन्ना जवि । वस्त द्वीसह ।

৩৬। অর্ত্তেণাতঃ।

ঋ গতাবিত্যশ্মাৎ ণাতো ভবতি। তকারস্ত স্থাড়িজেনোচ্চারণার্থাকারঃ। আরাৎ ণিত্যকথাদেরাদাবিত্যনেন বৃদ্ধিঃ।

৩৭। চেস্তৎ ডিত্মঞ্চ বা। চিঞ্চয়নে ইত্যমান্তন্তব্য চি ডিব্বন্ধ বা। চিৎ চেং। অকাবভকারী উচ্চারণাথোঁ।

७৮। ঈष्ण्डा

ঈষ্ গতাবিত্যশান্তভ্তবতি। ঈষৎ। নমু ঙিত্বঞ্চ বে**তি কথং নামুবর্ততে**। উচ্যতে। অপেক্ষিতবিধিতালামুবর্তনীয়ম।

৩৯। কমশ্চিৎ ষশ্চ শঃ।

কষ্ হিংসায়ামিত্যশালিজ্বতি যণ্চ শো ভবতি। কলিৎ।

৪০। অমো বোম লুক্চ।

অম্ রোগে ইত্যন্মাদেবার্ভবতি মলুক্ চ। অঘো:।

৪১। তদিহি মবতস্তেনৈকদেশে।

হিমবত উত্তরে তেনৈকদেশে বাচ্যে তসির্ভৰতি। হিমবতা সমানা দিক্ হিমবতঃ।

8२ । **जू**रवा नीम् नीर्यन्छ।

তুষ্ পরিতোষণে ইত্যমান্নীম্ভবতি দীর্ঘণ্ট। তৃফীম্ ঋষ্ডে ইত্যাদিনা ণত্তম্।

8৩। সমো ণিঃ। সমু উপশমে ইত্যক্ষামির্ভবতি সামি ণিত্যকথাদেরাদাবিত্যনেন বৃদ্ধিঃ।

88। কমো কিপু অলুক্চ। কম্। মো বিলুরিত্যাদিনা বিলুঃ।

৪৫। হোরদ্ধবিন্দুঃ।

ছ দান ইত্যশাদর্দ্ধবিন্দুর্ভবতি। ছ বিন্দোরদ্ধমর্দ্ধবিন্দু:। অংশীত্যাদিনা তৎপুরুষঃ প্রাক্ ষষ্ঠ্যা স্থাতিতমিতি অর্দ্ধশু প্রাক্তাবঃ। নমু অর্দ্ধবিন্দুরং কিস্তাবৎ পুদিতীয়াচন্দ্রবন্ধমর্দ্ধবিন্দুরুম্।

8७। कमिकिनिक ।

কমু কাস্তাবিত্যশান্তিদ্ভবতি অদিচ্চ ভবতি। কিঞ্চিৎ।

৪৭। কিমোহন্তঃ পদান্তবৎ।

কিমোহন্তঃ পদান্তবন্তৰতি। চিতি পরে বর্গে বেত্যাদিনা বিকল্পসন্ধিৰ্জবিব্য-তীতি ভাবঃ। কিং কিংচিৎ কিঞ্চিৎ।

8b1 **जूर**वा नौकम् नीर्चन्छ।

ভূষ ্তুষ্ঠিত্যশানীকম্ ভবতি তুষো দীর্ঘণ। ভূফীকম্। মো বিন্দ্রিভাদিনা বিন্দুষম্।

৪৯। সহোহসাৎ। বহ্মর্থ ইত্যাদ্দান্তবতি। সহসা। তকারো মুখস্থার্থ:। পূর্বমের ব্যাখ্যাতং শিষ্বৃৎপত্তার্থং পুনরত্র ব্যাধ্যাত্ম।

৫০। তুরোহঃ किপ্ চ।

তুর্ প্রবনতরণয়োরিঅুমাদোহাক্ ত্যাসে। ইভামাচ্চ ব্লিপ্ ভবতি। তুঃ হা।

৫)। शुरुषा त्हारह मीर्घम्ह।

হু দানে ইত্যন্থাৎ কিপ্ভবতি ঋণশ্চ হি গতাবিত্যন্থাৎ কিপ্ভবতি দীৰ্ঘণ্চ। হো হী।

৫२। প্রচ্ছো ডর্ডিঃ।

প্রচ্ছ্ জ্ঞীপ্<mark>সায়ামিতাস্থাক্ততি প্রতায়ো ভ</mark>বতি। প্রতি। ডিতি স্বরে-ত্যাদিনা **সুক**।

৫७। वलांदनव मां पिः।

বল্ প্রাপণে স্বস্কু স্বপ্নে ইত্যাদেরুত্তরে বদাদির্ভরতি। বলবং স্বস্থং।

७८। श्रष्टारमर्ड् ।

প্রচ্ছাদেরুত্তরে ডৎ ভবতি। প্র।

৫৫। व्यवादमतित्।

অবাদেরুত্তরে ইর্ ভবতি।

৫৬। অবো বৃদ্ধিরিটি।

ইরি পরে অবিত্যস্থ বৃদ্ধির্ভবতি। আবি: 1 '

৫१। नानाविनाज्यीशाशामग्रः श्राटर्थ।

সার্থে নানা বিনা ভূকী হাহাদয়ো নিপাতাস্তে। নানা বিনা ভূকী হাহা
পৃথক্ মনাক্ প্রাতর্ প্নর্ উতৈচন্ মীটেস্ অভি পরা যুগপং অধি হাস্
খন্ বহিন্ বিহর স্থ উপ সাকং সার্জং সহ সম বৈ অ হা অহে তে ভো হি
কক্ ডাঙ্ মাঙ্কু নাম অসমে হ ইখন্ অলং চির বাধায় চিরায় সাক্ষাৎ
স্থিৎ অক্কৎ অপি তদা তবাং মুং দৃষ্টুং স্ষ্টুমিত্যাদি।

৫৮। অদত্তো বলো বতি। বতি পরে অদত্তো বলো ভবতি। কলবংব ৫৯। মুহ উস্। মুহ বৈচিত্তো ইতাসাগ্দ্ভবতি। মুহ:।

७०। চরাদেড দাদিঃ।

চরাদের জরের ডদান্তিবিতি। চ। প্রপঞ্চার্থলক্ষণমিদম্। তে বৈ বিধেয়াঃ স্বসংগৃহীতা ভবস্কি। তেবাং লক্ষণং সপ্রপঞ্চমিক্তি ভাষাম্। যেধামব্যয়ানাং প্রতায়া উক্তান্তেহবায়াঃ। নানা বিনা ভূফী হাহা পঠিতবাঃ।
কশ্চিত্ত্বনানা বিনা ভূফী ইত্যেতান্ হাহাদৌ ন পঠিত। তন্মিন্ মতে
বছলবচনেনৈতেবাং সিদ্ধির্ভবিব্যতীতি ভাবঃ। অন্মিন্ শাস্ত্রে নান্তি অর্থনির্ণয়ফলং কিন্তু প্রক্ষতিপ্রতায়বিভাগফলমবিধানবলবত্তাদেবামবায়ানামর্থোহবগন্তবাঃ। এতেবাং লিক্ষত্ত পরম্পরিরেব জ্ঞেয়ম্।

ইতি বাদী ল্রচক্রচ্ডামণিমহাপণ্ডিত শ্রীক্রমদীশ্বরক্তৌ সংক্ষিপ্তসারে
মহারাজাধিরাঙ্গ শ্রীমজ্জুমরনন্দিপরিশোধিতায়াং রসবত্যাং রুত্তৌ
ঔথাসনিক শ্রীগোয়ীচক্রবিরচিতৌণাদিকতন্ত্রে
অব্যয়পাদঃ সমাপ্তঃ।

তদ্ধিতপাদঃ।

- ১। নামোহতঃ প্রিয়ামাত্তদ্ধিতঃ \
 প্রিয়াং নাম্নোহকারাত্ত্ত্বে তদ্ধিতসংজ্ঞক আৎপ্রতায়ো ভবতি।
 নামস্তদ্ধিত ইত্যবিকারঃ। গতা মতা।
- ১। ধাতূনাং তিঙাদীনাঞ্চ ব্রিয়াং বৃত্ত্যভাবাৎ পারিশেষ্যানাম এবাদী চ লভাতে তথাপি নাম ইতি কতং স্পষ্টার্থম্। স্থায়লভাদ্ধি শান্দোহর্থঃ স্পপ্তৌ ভবতি। কিঞ্চ টণ্ তদ্বুন্দাদাবিত্যাদৌ যতঃ প্রতায়োৎপত্তিস্তদতিত্ব ভং স্থাৎ। যথাপি সংস্থানবিশেষবাঙ্গ্যমপি ব্রীম্বাদিকং লোকপ্রাদিদ্ধান্ত তদিহ ন গৃহতে কিন্তু বৃদ্ধোপদেশপরস্পরাসমধিগম্যমেব তেন খট্যাশক-স্থাপি ব্রাম্বিং যোষিদভিধায়কগু দার্শক্ষ প্রংম্বং আকাশশক্ষাপি নপুংস্কম্ম্ অশ্নিশক্ষাপি দ্বিলিঙ্গতা তটশক্ষাপি ত্রিলিঙ্গতা চ ভবতি।

२। अङ्गारमञ्जा

অজ্ঞা এড়ক। অশ্বা বড়বা চটক। কোকিলা মূৰিকা। জাতৌ
কক্ষা বালা হোড়া পাকা বৎসা মন্দা বিনতা। বয়সি। পূর্ববহায়ণা অপরহায়ণা। টিতি পাঠাগ্রহম্। জ্যেষ্ঠা কনিষ্ঠা মধ্যমা
উত্তমা গোপালিকা পশুপালিক।। পুংযোগে। অসিতা পলিতা
ত্রিকলা *।

🕶। উফিহাদেরিত্যেকে।

উফিহা ক্রুঞা দেববিশা।

যথাপি দ্বিয়ামিতি প্রকৃতিবিশেষণং প্রত্যয়বিশেষণং বা স্থাৎ উভয়থাপি বাবস্থিতং তথাপি নাম ইত্যক্ত সরিধানে দ্রিয়ামিতি দর্শয়তা রতিক্বতা প্রকৃতিবিশেষণমেবাপেক্ষিতম্। দ্রিয়াং বর্ত্তমানস্থ নামঃ প্রত্যয়স্ত দ্রীষক্ত ছোতকঃ। তদ্ধিত ইত্যধিকারঃ পাদীসমাপ্রিং যাবং। নাম ইত্যধিকারস্ক সমাসপাদসমাপ্রিং যাবদিতি। তদ্ধিতসংজ্ঞায়াং প্রয়োজনং বহুলং তদ্ধিত ইত্যাদি। আদিতি তকারকরণং মুখস্কথার্থম্। গতা মতা ইতি ক্ষদিন্ধুগিত্যকারপুক্। হুস্বোক্ত্যা দীর্ঘস্থাগ্রহণাৎ সোমপা ইত্যাদৌ আর ভবতি।
আতি কৃতে ধাত্বয়বত্বাভাবার ধাতুলক্ষ্যাজোরিতি স্বলুক্নিষ্পে। ন স্থাং।

(২।০)। দ্রিয়াং বর্ত্তমানান্নাম্মেইজাদেরুত্তরে তদিতসংজ্ঞক আদ্ভবতি।
আছেতি পচাদিয়ান্তঃ ঘণ্ডক্যেষু বীরিতি প্রতিষধান্ন বীঃ। জাতাবিতি
জাতৌ বিহিতে ঈপ্রতায়ে প্রাপ্তে ইতার্যঃ। এবমপরমশি ব্যাখ্যেয়ম্।
জাতেরস্ত্রীনিয়তাদয়োপাস্তাদিত্যনেন। বয়সীতি বয়্রস্তচরমে ইতানেন।
যৌবনাবস্থায়া এব নাম। প্রত্রায়ণেত্যাদি স্থাদেরন ইতি হিধাতোরনং
কৃষা বহুলবচনাদ্দ্রা চ হারনশকো ব্যুৎপাদিতঃ টিক্বাভাবাদীপ্রতায়ো ন

^{*} সকোকিলাজা বড়বৈড়কাখা সমৃষিকাথো চটকাপি জাতো।
কন্তা তু বালা বিনতাথ বংসা হোড়াপি পাকা বয়সীহ মন্দা।
ল্যেগ্রেজমা গোপগুপালিকে দ্বে সমধ্যমা পুংযুজি বৈ কনিষ্ঠা।
পূর্ব্বাপরাভ্যাং টিতি হায়নেহত্ত গত্বং পল্লেস্তা ত্রিফলাসিতেতি॥

8। जामारमदर्नाभारको।

তা ৰে।

৫। शांबछानृ ि।

দ্বিপদা ত্রিপদা ঋক্।

৬। শূদ্রাদমহৎপূর্ববাজ্জাতো। শূদ্রা। মহৎপূর্ববাত্ত্ব—মহাশূদ্রী।

প্রাণ্ডোতীতি তম্মাট্টতীতি শাস্ত্রান্তরদর্শনং প্রমাদক্ষতম্। ত্রিচতুরোরেবোত্তরস্ত হায়নস্ত গর্থং বিহিতমিহ তুন প্রাণ্ডোতীত্যত আহ পাঠাপ্রদিতি অত্র
গণে পাঠাদিত্যর্থঃ। গত্ববিধাবেবাস্ত পাঠঃ কথং ন কৃত ইতি চিন্তাম্।
অথবা স্ত্রীপ্র এবাত্র গল্পং ভবতীতি স্কচনার্থঃ প্রয়োগ ইতি। প্রংযোগ ইতি
প্রংমায়ঃ প্রংযোগ ইতানেন অসিতা প্লিতা ইতি তোপাস্থান্তশ্চ ন ইত্যনেন
ত্রিফলেতি দ্বিগোরিতানেন ঈপ্রতায়ে প্রাপ্তে বিধানম্। উফিহাদেরিত্যেকে
ইতি হলস্তত্তাদিলা ক্রিপ্রাণ্ডাতি কুন্চু ক্রেন্চু কৌটল্যান্নীভাবয়োঃ
কিপ্ হলুপান্তেত্যাদিনা নলোপো ন ভবতি গণপাঠগামর্থাৎ শেষো বৃদ্ধানি বা। দেববিশেতি বিশ্ প্রবেশনে কিপ্।

- (৪)। লোপাদৌ ক্বতে সতি ত্যদাদেকস্তরে স্ত্রিয়ামান্তবতি। স্তেতি হল্লুক্ সর্ব নাম ইতি দলুকি ষে ইতি দ্বেরদদিতি অকারে ক্বতে অদস্তব্যদাৎ-প্রত্যয়ঃ। এবং কেত্যত্রাপি কাদেশে।
- (৫)। পাদস্তানাম ঋচি বাচ্যায়াং স্ত্রিয়ামান্তবতি। পাদস্তাচেতি প্রাপ্ত ঈপ্রতায়ো বিশেষবিধিত্বাদ্বাধাতে। দ্বিপদেতি দ্বৌ পাদাবস্থা ইতি বছব্রীহি: স্থসংখ্যাগূঢ়াচ্চেতি অকারলুক্ আতি ক্ততে সমাসক্কতাল্লোপস্থ পাদ: শসাদ্যচি তদ্ধিতবে চৈতি হুস্থ:। কশ্চিদ্বিকরেনৈতদিচ্ছতি দ্বিপদী দ্বিপদা দ্বিপাদুক্।
- (৬)। মহান্ পূর্ব্বো যশু স মহৎপূর্ক্বঃ অফুকরণদানশু সর্বমন্থকরণে বৈতি পাক্ষিকদ্বাৎ সমানাধিকরণোত্তরপদে চেতি তলোপদীর্ঘো ন ভবতঃ। ন মহৎপূর্ব্বাৎ মৃত্যুব্জাতৌ বাচ্যায়ামাত্ত-

- প। আদি সৈজাদিদন্তাদজাদকোশলাপ্ল্যাৎ। কৌবীৰ্য্যা সীম্বন্ধ্যা সাবস্ত্যা আজাদ্যা কৌশল্যা।
- ৮। ষপূর্ববাদ্যণঃ। শার্করাক্ষ্যা পোতিমায্যা গৌকক্ষ্যা।
- ৯। অবটাচ্চ। আবট্যা।
- গ্রান্তাদ্যুবতাাং যুশ্চ।স্তা। অভত। স্তা।
- বতি। জাতেরিত্যাদিনা প্রাপ্তস্ত ঈপ্রত্যয়দ্য বাধনম্। মহাশৃদ্রীতি মহাশূদ্রশন্দো হি আভীরজাতিবচনঃ। জাতাবিতি কিম্ ? শূদ্রী পুংবোগোহত্ত বিবিশ্বিক:।
- (१)। আদিস্থ ঐচ আচ্চ যন্ত স্বু আদি হৈজাৎ ঐচ আতশ্চ স্বর্থাং স্কাতীয়াপেক্ষয়া আদিস্থ বিবিক্ষিতম্। আদি হৈজাত ইনস্তাচ্চাজানকোশন-শকাভ্যাঞ্চ বিহিতাৎ ণ্যপ্রত্যয়াহন্তরে স্ত্রিয়ামান্তবিত । গৌবীর্য্যা আমুঠেতি সৌবীর আমুঠ ইত্যেতাভ্যাম্ অসাবেশ্বগান্ধারেরাদি হৈজাতো প্য ইতি প্যঃ। আবস্তোতি অবস্তিশকাৎ ইনস্তাচ্চেতি গ্যঃ তম্ম স্ত্রী আবস্তা প্রংনামঃ প্রংযোগ ইতি প্রাথমীপ্রত্যয়ং বাধিষা আৎ। যদা তু স্ত্রিয়াং বাচ্যায়াং গ্যঃ তদা অবস্তি কুপ্তি কুপ্রভাঃ স্ত্রিয়ামিতি গ্যনুকি ক্বতে অবস্তাতি ভবতি। আজাছা কৌশন্যা ইতি অজাদকোশনকুপ্রভ্যুক্তি গ্যঃ জাতেরন্ত্রীনিম্বতাদয়োপাস্তাদিতি প্রাথম্ম ক্রপ্রত্যয়ন্ত বাধনার্থং লক্ষণমেত্র জ্ঞাপন্থতি অপত্যপ্রত্যয়ান্তব্যাতিনবন্ধন ক্রপ্রত্যয়োপান্তম্বেন নিবর্ত্তে তেন সৌরভেন্নী বৈনতেন্ত্রী-ক্রিটাতি অতএব বৃত্তিক্বতা গার্গী বাৎসীভ্যুদান্ততং তত্তেতি।
- (৮)। যকারঃ পূর্ব্বো যশু স রপূর্ব্বঃ বপূর্ব্বাদ্যন্প্রত্যয়ান্তাৎ স্ত্রিয়া-মান্তবতি। শর্করাক্ষপৃতিমারগোকক্ষশক্তেয়া গর্গাদিখাদ্যণ্। জাতি-খাদীপ্রতায়ে প্রাপ্তে বিধানম্।
- (৯)। অবটশন্ধান্যণ্প্রত্যয়াছন্তরে স্থিমান্তবতি। স্নারট্যেতি পূর্ববন্যণ্ স্তিয়াং ণ্যায়নো বেতি পক্ষে আবট্যায়নী।
 - (১০)। স্থতশ্ৰকাৎ প্ৰাপ্তযৌবনাবস্থ।য়াং বাচ্যায়ামাম্ভবক্তি। যুশ্চ

- ১১। ভোজাৎ ক্ষত্রিয়ে। ভোজা। অগ্রত। ভোজা।
- ১২। পৌজ্রাদ্যর্থাট্টপিণন্তাদ্গোত্রনাল্ণঃ। পুলিকস্থাপতাং পৌজ্রাদিঃ পৌলিক্যা ভৌলিক্যা মৌথর্য্যা।
- ১০। অন্যেরন্তাজ বিতীয়গুর্ব চঃ।
 করীষগন্ধেরপত্যং পোত্রাদিঃ কারীষগদ্ধ্যা বরাহস্ম বারাহা।
 পোত্রাদ্যর্থাদিত্যেব। কারীষগদ্ধী বারাহী। টণিণস্তাদিত্যেব।
 আর্ত্রভাগী বিদাদিত্বাপ্পর্ট্। ঋষেস্তর। বাশিষ্ঠা। অনস্তাজ ্বিতীয়গুর্ব চিস্তর। ঔপগবী।

উকারউচ্চারণার্থঃ। আদ্বিধানং মুখ্যত্বাৎ প্রথমং ক্রিয়তে তৎসন্নিযোগশিষ্টং যুবিধানং পশ্চাৎ। তচ্চ পঞ্চমীনির্দিষ্টত্বাৎ সন্নিহিতমেব ভবতীতি যুক্তম্। এবমাতঃ পরো যুঃ কম্মান্ন ভবতীতি ন চোছ্মম্। অন্তত্র স্থতিতি সামান্ত-বিহিত আৎপ্রতায়ো ভবতোব।

- (১১)। ভোজশন্ধাৎ ক্ষত্রিয়জাতৌ বাচ্যায়ামাত্ত্বতি যুশ্চ। জাতিবিহি-তম্ম ঈপ্রত্যয়স্থাপবাদঃ।
- (১২)। যা সংজ্ঞাশকো গোত্রমন্ত্রমভিধত্তে তন্মাট্রণস্তাদিণস্তাচ্চ পৌল্রান্যর্থাৎ স্ত্রিন্ধান্তবতি যুক্ত। যথা ভরতো নাম কন্চিৎ প্রধানভূতঃ পুরুষা তেনৈব তৎপ্রভবস্থাপত্যসন্তানস্থায়া সর্ব এব ভরতা উচ্যন্তে তে চ পুলিকভূলিকানয়ো লোকপ্রসিদ্ধাঃ নতু গোত্রাধ্যায়পঠিতাঃ এতদর্থস্ট্রনা-রৈব নাম ইত্যুক্তম্। অতএব অন্যিন্ধান্ধস্ট্যান্লক্ষণে ন প্রাপ্তিঃ অস্তাজ্ব-দ্বিতীয়গুর্ব চ্ বাভাবাদ্যানৃত্রা ইত্যুত্তরস্ত্রেণাপ্রাপ্তে বিধানম্। পুলিকস্থাপত্যম্ অদ্প্রাচ্চেতীণ্।
- (১০)। অস্তাচো দিতীয়োহস্তাজ্ দিতীয়: গুরুরজ্যস্ত দোহস্তাজ্-দিতীয়গুর্ব চ্ তম্মানন্দিবাচকাৎ টণস্তাদিণস্তাক্ত পৌত্রাদ্যভিধায়কাৎ স্ত্রিয়াং বর্তুনানাদান্তবিভি যুশ্চ। করীষগদ্ধ ইব গদ্ধোহস্তেভি বছব্রীহৌ উপমানাচ্চেতি ইৎপ্রত্যয়:। করীষগদ্ধেরপত্যং পৌত্রাদিরিতি তস্তা-

্তঃ। ক্রেণিড্যাদেশ্চ। ক্রোড্যা। ক্রেণিড় নাড়ি ব্যাড়ি আপিশলি আপক্ষিতি সোধা-

পত্য ইতি টণ্। বারাহেতি বরাহস্থাপতাং অদন্তাচ্চেতীন্ কারীষণনীতি পুত্র্যাং বার্চ্যায়াং বিহিত্তে টলি টিস্কাদী বারাহীতি ইণস্তাৎ ইনস্তানানুষ্যজাতে-রিতি ঈ। অন্তাজ্ দিতায়শুবঁচাং দিস্বরাণাং ক্রৌড়্যানীনাং গণে পাঠাং অন্তাজ্বিতীয়গুৰ্ব চুইতানেন দৰ্ব জিবরাদীনাং গ্রহণ্ম। খতভাগশকঃ কিং ঋষিবাচকো ন বা যদি ঋষিবাচকন্তদা অনুযেরিত্যেব ব্যায়ুত্তিঃ সিদ্ধা অথ পৌল্রাঅর্থবিহিতপ্রভায়াভাবাদেবাপ্রাপ্তিঃ। ধিদাদের্ণজ্জিতাভোক্তম অনুষিভান্তরাপত্য এবেতি। উচাতে। এব-শকস্তত্রাপার্থে। দুইবাঃ। তেন অনুষিভ্যঃ পৌল্রাদাবনন্তরাপত্যেহপি প্রতায়ো ভবতীতি রক্ষিতেন ব্যাণ্যাতম্। ঔপগবীতি উপগোরপতামিতি টব্ যাচোরুদ্গুণ ইতি গুণঃ। হপ্তিশিরসোহপতাং স্ত্রীতি বাহ্বাদেশ্ভেতীৰ শিরসঃ শীর্ষন্শীর্যাবিতি শীর্ষাদেশঃ ততো যুসহিতে আতি ক্লতে লুপ্ততেগো-হলুপ্তবত্বাৎ যে পরে শীর্ষাদেশাভাবাৎ হান্তিশীর্যা। কথমৌদমেঘ্যায়া হাত্রা: ঔদমেঘাঃ ঔদমেঘানাং সংঘঃ ঔদমেঘঃ অত হি যুসহিতেনাতা ইনে। ব্যব-ধানাৎ প্রাচ্যভরতাপত্যান্তমজ্বর্জমিণস্তাদিতি ণড়িণ্যণস্তাৎ সুত্যান্ধ্যোর-नक्षांचिक हेन् न लात्याकि। উচাকে। প্রায়ো নামগ্রহণে निश्वविभिष्टे-স্থাপি গ্রহণমিতি যুসহিতাদ্বিশিষ্টমপি নাম ইণস্তমেব ইতি নাস্তি বিরোধ:। যথা ঈয়সোবি হিতঃ কনিবেধে৷ লিঙ্গবিশিষ্টপ্ত গ্রহণাৎ বছশেয়দীতাত্র ঈকারসহিতাদিপি কনিষেধে। ন ভবতি। অনির্দিষ্টার্থাঃ প্রভারাঃ স্বার্থে ভবন্তীতি অপত্যপ্রতায়াপ্তাৎ প্রিয়াং নামে৷ বর্তমানাদিহিত: প্রতায়োহপ-তাৰ্থিকৈ বাচক ইতি অপত্যস্থানাতীতি যলোপোহপ্যবিক্দ:। ওদনেঘায়া অপতামিতার্থে স্ত্রীবিহিতপ্রতায়াস্তাচ্চেতি এয়ণি কতে উদ-মেঘেরঃ।

(১৪)। পৌজান্বর্থ টণিণস্থেভাঃ ক্রোড়ীত্যেবমাদিভাঃ দ্রিয়ামান্তর্বিত্ত বুশ্চ। ক্রোড়াদ্যশ্চ ষট্ ইণস্তাঃ তত্রাদ্যের্ ত্রিয়ু দ্বিস্কর্মণ শেষেমূ অস্তাজ্দ্বিতীয়গুর্বচ্মাভাবাদপ্রাপ্তে বিধানম্। চৌপনতপ্রভ্তয়শ্চমার্প্রপ্রাভ্রামগুর্বচ্মাভাবাদপ্রাপ্তে বিধানম্।

ত্তি চৌপয়ত চৈকয়ত শৈকয়ত বৈষয়ত ভৌরিকি ভৌলিকি শালাস্থলি কাপিষ্ঠলি। ১৪ *।

১৫। কচিদন্যতোহপি। দৈবদন্ত্যা যাজ্ঞদন্ত্যা।

১৬। দৈবযজ্ঞাদের্ব। দৈবযজ্ঞা দৈবযজ্ঞী। দৈবযজ্ঞি শোঁচবৃক্ষি শাট্যমুগ্রি কাঠে-বিদ্ধি।

১৭। সযুরাদীৎ পুত্রপত্যোরস্তায়োস্তৎপুরুষে। সূতীপুত্রঃ ভোজীপতিঃ পরমকারীষগন্ধীপুত্রঃ। অনস্ত্যগোস্ত। কাঠেবিদ্যাপুত্রকুলম্।

⁽১৫)। কচিদভাতোহপি ব্রিয়ামন্দ্রবৃতি যুশ্চ। দৈবদন্ত্যভাত্র টণ্ডত্ব-মন্বিত্বম্ অস্তাজ বিতীয়গুর্ব চ্তৃঞ্চ স্ব্রার্থে পৌল্রাদ্যর্থতা তুন বিদ্যতে পুত্রার্থে টণ্বিধানাং।

⁽১৬)। দেবযজ্ঞি শোচবৃক্ষি শাট্যমুগ্রি কার্চেবিদ্ধি ইত্যেতেভাঃ স্ত্রিয়া-মাদ্বা ভবতি যুশ্চ। ইনস্তা এতে যদা পৌল্রাদৌ বর্ত্তস্তে তদা অনুষেরিভ্যা-দিনা প্রাপ্তে বিভাষা যদা পুত্রে তদা অপ্রাপ্তে এতন্মুক্তপক্ষে ইদন্তান্মনুষ্য-জাতেরিতি ঈ।

⁽১৭)। তৎপুরুষে সমাসে গুল্রশব্দে পতিশব্দে চান্তপ্থিতে পরে যুসহিত আৎপ্রতাম ঈদ্ধবতি। স্থতীপুত্র ইতি স্থত্যায়াঃ পুত্র ইতি ঘটীসমাসঃ এবং ভোত্মীপতিঃ। পরমকারীষ্ণীন্ধীপুত্র ইতি পরমা চাসৌ কারীষণদ্ধ্যা চেতি পরমকারীষণদ্ধ্যা ততঃ ঘটীতংপুরুষঃ। কাঠেবিদ্ধ্যাপুত্রকুলমিতি সমাসে পুত্রশক্ষ্মানস্তাতা যদা তু কাঠেবিদ্ধীপুত্রশব্দেন সহ কুলশক্ষ্ম সমাসঃ তদা কাঠেবিদ্ধীপুত্রকুলমিতি ভবত্যেব। নাপ্রধানার্থস্থেতি পরিভাষাঞ্চারেন

ক্রোড়িঃ স্থাদাপিশলিন ডিঃ শালাস্থলিচোপয়তৌ ব্যাড়িঃ।
 ভৌরিকি সোধাতকি বৈষয়তা ভৌলিকি কাপিষ্টলি শৈকয়তা।
 আপক্ষিতি চৈকয়তৌ গদিতাঃ ক্রোড্যাদাবিতি বুধজনবিদিতাঃ॥

১৮। বন্ধাবন্তপদার্থে। কারীষগন্ধীবন্ধঃ। অনন্ত্যে তু। কারীষগন্ধ্যাবন্ধুকুলম্।

১৯। মাভূকে বা।

কারীষগন্ধ্যামাতৃকঃ কারীষগন্ধীমাতৃকঃ।

- ২০। জ্বনীত্বেহপি মাতৃকস্ত মাতৃমাতে। কারীযগন্ধীমাতঃ কারীয-গন্ধ্যামীতঃ।
- ২১। ঋতুগি**টি**মান্তনদাদেরমাত্রাদেরী। অকরোন্তাতুগিৎপ্রত্যায়ান্তাটিৎপ্রত্যয়ান্তান্নদাদেশ্চ মাত্রাদি-

বছমু স্থানেমু ব্যবস্থার্থমুপদর্শিতং তদিহাপি দ্রম্ভবাং তেনাতিকান্ধা কারীষগন্ধ্যামতিকারীষগন্ধ্যা তহ্যাঃ পুলোহতিকু ারীষগন্ধ্যাপুত্র ইতি ভবতি। তৎপুরুষ ইতি কিম্ ? কারীষগন্ধ্যাপতিরম্ভ গ্রামন্ত কারীষগন্ধ্যাপতিরয়ং গ্রামঃ।
কারীষগন্ধ্যাপরমপুত্র ইত্যত্র অন্তাহ্ত পুত্রশন্দন্ত সন্নিধানাভাবাদেব ন
ভবতি। স্যুরিতি উকারবহুপাদানাদিহ ন স্থাং ইভ্যাপুত্রঃ।

- (১৮)। অন্তপদার্থে বর্ত্তমানে অস্ত্রে বন্ধুশব্দে পরে যুসহিত আৎপ্রত্যয় ঈদ্বতি। কারীষগন্ধীবন্ধরিতি কারীষগন্ধ্যা বন্ধুরশ্রেতি বহুব্রীহিঃ।
 তৎপুরুবে তু। কারীষগন্ধ্যাবন্ধঃ। পূর্ব্বস্থূত্রবিদিহাপি ব্যবস্থা তেনেহ ন
 ভবতি। অভিকারীষগন্ধ্যা বন্ধুরশ্র অভিকারীষগন্ধ্যাবন্ধঃ কারীষগন্ধ্যাপরমবন্ধরিতি।
- (১৯)। অন্তপদার্থে বর্ত্তমানে মাতৃকশব্দে পরে যুসহিত আৎপ্রত্যন্ত্র ঈত্তবতি বা। কার্নীষগন্ধীমাতৃক ইতি কাদিশ্ব দাদেরিতি কঃ। পূর্বব-দিহাপি ব্যবস্থা তেনেহ ন তবতি। অতিকারীষগন্ধ্যামাতৃকঃ কারীষগন্ধ্যা-পরমমাতৃকঃ।
- (২০)। যুসহিতস্ত আৎপ্রতায়স্ত ঈবেংনীবেংপি সতি মাতৃকশব্দশ্ত স্থানে মাতৃমাতাদেশৌ বা ভবতঃ। পূর্ববিদিহ ন ভবতি। অতিকারীষ-গ্রহ্যামাতৃকঃ কারীষগর্যাপরম্মাতৃকঃ।
 - (২১)। ব্যাথ্যানতো বিশেষপ্রতিপত্তা: উগিতি প্রত্যয়স্ত বিশে-

গণবজিতাত্ত্তরে দ্রিয়ামী ভবতি। কর্লী ধনবতী পচস্তী অতি-ভবতী ব্রহ্মাণমনতি ব্রহ্মাণী সামুদ্রী কুরুচরী। ধেটফুকারোপাদান-সামর্থাদটিৎপ্রভ্যয়ান্তাদপি ঈ স্তনন্ধয়ী। অমরকোষে তু। স্তনপা তু স্তনন্ধয়েত্যপপাঠঃ। স্তনপা তু স্তনন্ধয়ীতি পঠনীয়ম্। হস্তিনী শুনী নদী। নদ দেব চোর চর গর তর চেল প্লব ভব গাহ সূদ্ গোর বদর কদর কন্দর তর্কার পাত্র পুণ দ্রুণ দ্রোণ কাকণ ওকণ দ্রোণ আয়স্থৃণ আমলক হরীতক বিভীতক ধাতক কোষাতক আঢ়ক শল্ল্যক পুট নট তট কবাট ইপাট আরট মারট মূলাট পট কুট

ষণমত আহ উগিৎপ্রত্যবাস্তাদিতি তেন উথাশ্রদিত্যাদৌ বাতোরুগিত্বাদী ন ভবতি। অব ন্ মঘবলিত্যেতলোঃ কোদেঃ কলিতি বুষাদেরলিতি কন অনু প্রতায়ান্তয়োক্ত ইত্যেতভাদেশভাশি প্রতায়ন্তানিত্বাৎ প্রত্যেত্মঙ্গীকর ণীরম্। কিষ্ণ উগিদিতি সামাস্তগ্রহণে**২শি অঞ্চে**রীবিধানং জ্ঞাপকং ধাতো-রুগিত্বাদীপ্রতায়োহঞ্চতেরের ভরতি নাক্তধাতোরিতি। টিৎপ্রতায়ো যস্ত তত্মানাম ইতি ব্যাখ্যানাৎ বিজিতেত্যাদৌ ঈ ন ভবতি অত্র হি ইড়াগ্মষ্টিৎ ন তু প্রত্যয়:। কর্ত্রীতি ডুকুঞ্করণে তৃঙ্ধনৰতীতি ধনমস্তাস্তীতি তদ-স্থাস্তান্দ্র মতুরিতি মতুঃ অমস্তভহপাস্তাদ্যবাদেম তুমো ব ইতি মন্ত বঃ পচন্তীতি শত্পতায়: শতুরীতি শঙ্যন্ত্যামিতি রুম্ অতিভবতীতি ভা দীপ্রো ডবতুর্ভাতেরিতি ডবতুঃ ভবস্তমতিকোম্বা অতিভবতী ব্রহ্মাণীতি অন গতার্থঃ পঠ্যতে কর্মাণো ণড়িতি ণট্ দামুম্রীতি তম্তেদমিতি টণ্ কুরুচরীতি অধিকর-ণাচ্চেতি টঙ্ স্থনম্মীতি স্থনাদের্ধে টু ইতি থশঙ্থিত্যনবায়াদিত্যাদিনা মঃ এবং প্রভায়ান্তরাদপি প্রাদের্ঘাদেঃ শঙিতি শঙ্কাণ উদ্ধয়ীতি ব্যধাদেরিষিতি বণস্তাদায়ী। এবঞ্চেৎ ক্তাদিপ্রত্যমান্তাৎ কথং ন ভবতি ? নহি ক্তাদয়ো ধেটবং প্রতিপদবিহিতা:। হস্তিনীতি করহস্তদস্তাদিভে ইতি ইন্ L শুনীতি ব উচ্ছাদেরিত্যাদিনা ৰকারষ্য উকার:। নদাদৌ গৌরপিশঙ্গ-

বরাট নাট ভোট হয় গবয় মৃকয় মৎস্থ মসুষ্য ঋষা কোল কুবল
শক্ষ্ মণ্ডল কুগুল কদল কন্দল কাকল বিকল নিজ্ঞল পুজ্ঞল
পিপ্লল উদ্ধ সূদ্ধ গৃদ্ধ আনন্দ আসন্দ ভৌলিঙ্গি আলম্বি উদগাহমানি
ভৌরিকি ভৌলিকি এতো ক্রোড্যাদী চ। অনড্বাহ্ মহৎ কৃহৎ
সূম সৌধাম শম দেহ মহ পৃথু শৃঙ্গ পিশঙ্গ অতস বেতস বৃষ সূপ
পূপ মৃষ মালত মঠ বিল্প সূচ্ শচ শঠ পিগু পাগুর লোহিতাও

পাও,বশকানাং মত্যপি কর্ণিচিন্নেহস্থোদারাস্তরাদ্বণাদক্দান্তান্তাদিত্য-নেনাপ্রাপ্তে পাঠঃ। হয়গবয়মূক্যমংস্থানুষ্য ঋষ্য ইত্যেতেষাং স্তাপি জাতিবাচিত্রে যোপান্তরাৎ জাতেমন্ত্রীত্যাদিনা অপ্রাপ্তে পাঠঃ। বদুৰকদর-কন্দরতর্কাবপ্রণপাত্রজ্বদোর্গকাকণওকর আমলক ধ্রীতক বিষ্ঠাতক পাতক কোশাতক আঢ়ক শল্লাক বুট নট কৰাট আৱট মারট স্থাট মূলাট কুট পট বরাট নাট শফ্ল মণ্ডল কদল কদল কাকল পিপ্লল উদ্ধ গুদ্ধ হৈছে আনন্দ আনদ শম আন্দ বেত্ৰ সূপ পূপ বুধ মূৰ মালত ১১ বিৰ গুৰও স্থার ইভোতেশং জাতিশাচিনামপি স্ত্রীনিয়তদ্বাদপ্রাপ্তে পাঠঃ। দ্রোণশদ্যে গ্রাদ্যাং কুটশকঃ শালায়াং বর্ত্ত্বানঃ স্ত্রীনিয়ত এবাত্র পঠিতঃ গতঃ পরিমাণে ঘটে চানয়োঃ পুংলিঙ্গতা। আয়সূণণন্দঃ শিরানেশেচতি টণন্তঃ ভৌলিঙ্গি আনন্দি ঔল্গাহমানিশলা ইণন্তাঃ এতেয়াং অনুষেবন্তাজ্-দ্বিতীয় গুব চ ইত্যানেন আতি যৌ চ প্রাপ্তে তথাধনার্থঃ পাঠঃ। এতাবি-ত্যাদি এতে পূর্কোকে) ভূরিশনাৎ সার্থিককপ্রত্যনান্তাৎ ইণ্পকে র*চলঃ তয়োর্গণদ্বস্পাঠাৎ ভৌনিকী ভৌনিকী ভৌরিক্যা তৌলিক্যা তকণ তলুন-শক্ষাের রস্তারমে ইতানেন ঈপ্রতারে নিদ্দেহ্বরাহর্গঃ পাঠঃ অথবং তলুনী ত্বলীতি স্বপাঠপ্রয়োজনে সিন্ধে বয়স্তপ্রয়োজনেনৈব স্বীপ্রতায়ঃ অতএব বর্জচর্যে ইত্যত্র তকণীতি নোদাধ্তম্। অন্ডাহ্ মহৎ বুহৎ জোই অশিশু স্থি ইত্যেতেষাম্ অনদন্তবাদাত্যপ্রাপে শেষাণামদন্তানামাতি প্রাপ্তে

শুক্ও মণ্ডপ গড়জ স্থবর মণ্ড পৃথি ক্রোফ্র অশিশু সথি পৌংক্স কেবয় তরুণ তলুনেত্যাদি 🚁।

২২। পুত্রাদিত্যেকে।

পুত্রী। তথাচ, স্কুতা তু দুহিতা পুত্রী ইতি ত্রিকাণ্ডম্।

তদ্বাধনার্থঃ পার্কি: অশিশুরিতি বছরীছিণা সিম্বো গণে পঠিতো নতু তৎপুক্ষেণ। সহ থেন বর্ত্ততে যা গাপি সখীতি ভাসকারসক্ষতং তদিছ নেষ্টম্। অথবা আকৃতিগণত্বাৎ সাধনীয়ম্।

(২২)। পুত্রশকাৎ ব্রিয়ামী ভবতীত্যেকে। তন্মতেন পুত্রশকাং ছহিতৃবচনঃ এতদর্থমো ত্রিকাণ্ডং দর্শিতবান্। অন্ত তু পুত্রশকং ছহিতৃবচনং নেচছন্তি তেন তন্মতেন আছবতীতি নাশঙ্কনীয়ম্। অপরে তু সমাস বেবাত্র ইপ্রত্যামছন্তি রাজপুত্রী ভোজগুত্রী শৈলপুত্রী ইতি।

শানি নট পুট পট ভোটক বাটাঃ কুট তট মারট নাট স্পাটাঃ।
আরট তর গর মুক্য গৌরাশ্চারতকণ্চরকন্দরকদরাঃ।
তর্কার মুক্ত পাঙ্কুর কদলাঃ পুকল নিকল পিপ্ললঃ কোনাঃ।
শানু কুজল কনলে কুবলাশ্চেলঃ কাকলম গুলবিকলাঃ।
ভৌরিকি ভৌলিকি মঞ্জপ পিশু। অতসো বেতসাব্ধ মঠমগুাঃ।
ভৌরিকি ভৌলিকি মঞ্জপ পিশু। অতসো বেতসাব্ধ মঠমগুাঃ।
আয়ন্ত্গামলকাসন্দা গাতক পুণ মহ পাতানন্দাঃ।
আগন্ত্যামলকাসন্দা গাতক পুণ মহ পাতানন্দাঃ।
আগন্ত্যামলকাসন্দা গাতক পুণ মহ পাতানন্দাঃ।
আগন্ত্যামলকাসন্দা গাতক গ্রাঃ কোষাতক শল্লাক শূম হয়াঃ।
শান্ত্যা ক্রেটা তুলনঃ স্ক্ষরঃ পৌংস কেক্য মংস্তো পৃথিঃ।
প্রাব্ ভব গাহাঃ স্থলঃ স্থলঃ প্রেণ্ডা ক্রেটা তুলনঃ ক্রেবাং পেইল কেক্য মংস্তো পৃথিঃ।
মালত স্ক ব্রীতক শৃকং স্থপ মহদ্দেশ পুণ পিশক্ষম্।
লোহিতাগুং বৃহদ্পি গদিতম্ ঔদ গাহোত্তরমানসমেতম্।
অনিভ্যুনাটঃ শচ এতেহপরেহিণি নদাদৌ সদশশতে ॥১১০॥
দ

- ২০। অধিকারান্মত্বর্থাদন্তাৎ। অধিকারী
- ২৪। কেরলস্থ্যঙ্গলমামকভাগধেয়ভেষজ্ঞসমানপাপার্য্যকৃতদীর্ঘজিহ্বাবরায়ান্মি।
 কেরলী স্থাঙ্গলী মামকী ভাগধেয়ী ভেষজী সমানী পাপী আর্য্যকৃতী দীর্যজিহ্বী অবরী। অনান্মি তু। কেরলা।
- ২৬। রেবতরোহিণাভ্যাং নক্ষত্রে। রেবতী রোহিণী।
- (২০)। অধিকারশনাং মন্বর্থবিহিঁতাকারপ্রত্যয়ান্তাৎ স্থিয়ামী ভবতি। অধিকারীতি অধিকারোহস্তা অস্তীতি অর্শ আদেবদিত্যং!
- (২৪)। কেরলানিভ্যোদশভ্যঃ সংজ্ঞায়াং বিষয়ে স্ত্রিয়ামী ভবতি। কেরলী জ্যোতিবিশেষস্থ নাম মামকী দেবতাবিশেষস্থ নাম সমানী ছন্দো-বিশেষস্থ নাম। এবমপ্রমপ্রপ্রিমুরেয়ম্। তবকমমকাবেকত্বে ইতি অক্সন্দপ্রি মামকশক্ষ্য পাঠে। আমার্থারে স্থাতারো ভবতি নাতাত্র তেনাসংজ্ঞায়াং মামিকা লবিকান্য ইতি নিপাতনাদিবং সিদ্ধন্? দীর্ঘা জিহ্বা ক্ষ্যাঃ সা দীর্ঘজহ্বীতি মুক্তোপাক্তরাৎ স্বাঙ্গাদিত্যাদিনা অপ্রাপ্তে বিধানম্।
- (২৫)। শ্রোণৌ বাচ্যায়াং কটশকাৎ ব্রিয়ামী ভবতি। অক্সত্র। কটা পিপ্ললী।
- (২৬). রেবত রোহিণ ইত্যেতাভাাং নক্ষত্রে বর্ত্তমানাভাাং স্ত্রিমামী ভবতি নক্ষত্র ইতি কিম্। রেবতা রোহিণা। যদ্যপি রেবতীরোহিণীশন্মা-ভাত্তদ্যুক্কালে ইতি টণ্ ভাত্তদ্যুক্কালেংবিশেষে ইতি তম্ম পুক্ পুনস্তান্ত্র জাতে ইতি টণ্ রোহিণীরেবতীচিত্রাভাঃ স্ত্রিয়াং নিত্যমিতি টণ্ লুক্ স্ত্রীবিহি-ভদ্য চেতি স্ত্রীপ্রত্যায়দ্য লুক্ তথাপি নক্ষত্রপ্রস্তিসাম্বন্মোর্কিক্তে

২৭। কুণ্ডাৎ পাত্তো।

কুণ্ডী।

२४। (शांनानावश्रत्म।

২৯। স্থলাদকৃতিমায়াম্। স্থলী।

৩০। ভাজাৎ পকায়াম্। ভাজী।

৩১। গুণায়াগাৎ স্লায়ায়।
 নাগা। অস্লায়ায়। নাগা দীর্ঘা।

বর্ত্তমানত্বমিত্যমেন ব্রিণামীপ্রত্যয় ইতি কশ্চিং। কশ্চিন্নদাদেরাক্ষতি-গণভাদী।

- (২৭)। কুণ্ডা২ পাত্রে বাচ্যে প্রিয়ামী ভবতি। অস্তা কুণ্ডা জীবতি ভর্ত্তরি জারজা। যম্ম দ্রবাস্তরবচনঃ স নিত্যং নপুংসকলিকঃ।
- (২৮)। আবপনং ভাজনবিশেষঃ যত্ত ধান্তাদিকং নিক্ষিণ্য নীগতে তান্ত্ৰিন্ বাচ্যে গোণাং ব্ৰিয়ামী ভবতি। অন্তা গোণা বস্তা ইদং মাদুচ্ছিকং নাম।
- (২৮)। পুরুষব্যাপারানভিনির্বতা অক্তরিমা তল্পাং বাচ্যায়াং স্থলাগ্তরে শ্বিমামী ভব্তি। গৌকবেনী হু। স্থলা।
- (৩•)। ভাজাং প্রকাশং স্ত্রিয়ানী ভবতি। ভজ্বিশ্রাপনে চুরাদি-বিপ্তস্তঃ। স্ত্রে ভাতশ্বোগাদানসাম্প্রাৎ শ্রহাস্বিদ্বিদ্দ্ ইত্যাদিনা স্ত্রিয়াং বিস্তিতং গুনং বাণিস্বাদ্তাবিদ্বাদেব গ্রো ভবতি। অন্যা ভাজা।
- (৩১)। গুণবচনারাগাৎ স্থারাং স্থ্রিয়ামী ভবতি। নাগশকোষয়ং যদা স্থোল্যং গুণমভিধার তথিতি দ্বের বর্ত্তে তদা নাগী নাগদৈ।ব স্থোল্য-গুণবেরগাং স্থোল্যবতাভিধীরতে। নাগা দীর্ঘা ইত্যত্র তু দৈর্ঘ্যে গুণে বর্ত্ত-মানো নাগশদে। দ্বের বর্ত্তে। জাতিবচনাত্ত্বাগশকাৎ ছাতেরিত্যাদিনঃ ইমপ্রতারঃ।

७२। कालावर्ष।

কালী।

७७। नीलां श्वारनगांवरमाः।

নীলী গোঃ। কুবলয়দলনীলা কোকিলা বালচ্তে ইত্যপপাঠঃ। নীলী ওষ্ধিঃ।

৩৪। নাম্মি বেভ্যেকে।

नीली •नीला।

৩৫। কুশাল্লোহবিকারে।

কুশী ফালঃ।

৩৬। কামুকানৈগুনেচ্ছারাম্।

কামুকী।

৩৭। কবরাৎ কেশবেশে।

কবরী।

- (৩২)। কালশন্দাদর্শে বাচ্যে ব্রিয়ামী ভবতি। কালীত্যত্র বর্ণঃ প্রবৃত্তিনিমিত্তম্। যদুচ্ছাশন্দে তু--কালা।
- (৩৩)। নীলশব্দাৎ প্রাণ্যোকধিবিষয়ে ক্সিয়ামী তথতি। অন্তর্জ নীলা শাটী।
- (৩৪)। নীলশকাং সংজ্ঞায়াং ব্রিয়ামী ভবতি বা ইত্যেকে। নীলী নীলা নাম কাচিদোষধিঃ।
- (৩৫)। কুশাল্লোহবিকারে বাচ্যে প্রিয়ামী ভবতি। মদ্যণি লোহ-বিকার ইতি সামান্সেনোক্তং তথাপি বিশেষ এবাস্থ বৃত্তিরিতি স্চয়িতৃং কুশী কাল ইত্যুক্তম্। যদা কাষ্ঠাদিনিমি ততদাক্বতৌ তু কুশা।
- (৩৬)। কামুকশকান্মৈপুনবিষরায়ামিচ্ছারাং গম্যমানারাং স্তিরামী ভবতি। অন্তবিষয়েচ্ছারাত্ত কামুকা।
- (৩৭)। কেশবেশে বাচ্যে কবরাত্ত্তরে স্থিয়ামী ভবতি। অক্সাকবরা কর্বরেত্যর্থঃ। তথাচ, ব্যাকীর্ণমাল্যকবরাং কবরীং তরুণ্যা ইতি মান:। গোণস্থলভাঙ্গনাগকালনীলকুশকবরাণামাবপনাদিভোষ্প্রত্ত স্থিয়াং

- ৩৮। বাহঞ্তরপদাৎ। প্রচৌহী প্রাচী।
- ৩৯। প্রায়েহ**র্নিবক্ষায়াম্।** মৃণান্সী ছত্রী।
- ৪০। ব্য়স্থাচরমে। কুমারী কিশোরী বর্করী বধূটী। চিরণ্টী। অবয়সি তু। উত্তা-নশয়া লোহিতপাদিকা। চরমে তু। বৃদ্ধা।

বৃত্তিরেবাপ্রসিদ্ধা তদেতেযামুপাধিবচনমর্থকথনমাত্রফলমেবাভিদৃশুতে ইতি বিনীতঃ । গোণস্থলভান্ধনাগকালকুশকবরাণাং ব্যাবৃত্তী যদৃচ্ছাশব্দত্বং দ্রষ্টব্য-মিতি কেশবঃ।

- (৩৮)। বাহ ইতি অদস্তাদ্বংশতি বিহিতঃ কিপ্ দীর্ঘোহমুক্কতঃ। রাহঞ্ উত্তরপদে মন্ত স বাহঞ্ ত্রপদন্ত আৎ ক্রিয়ামী ভবতি। প্রচৌহী ইতি ব উচ্চ্যাদেব হিল বাপ্যৌতেতি বকারস্তৌকারঃ। প্রাচীতি শ্যাদাবিত। দিনা নকারলুক্। ঈপ্রত্যয়স্ত পূজায়াং ব্যভিচারমিচ্ছন্তি তেন শুব ঙ্ শুব ঞা শুব ঞা বিহণ ভব কিং। বাহঞ্ তরপদাদিত্য কর্মমুকরণে বেতি হো ঢোন ভবতি। বাহঞ্ ভাদিতি ন ক্লতং বৈচিন্ত্যার্থম্।
- (৩৯)। অল্পবিক্ষয়াং গম্যমানারাং দ্রিয়ামী ভবতি। প্রায়োগ্রহণং শিষ্টপ্রয়োগদর্শনার্থম।
- (৪০)। কালকতা শরীরাবস্থা বয়ঃ তচ্চ বালায়েবিনর্দ্ধভেদাৎ ত্রিবিধনেব বহুদশ্বতম্। বৃদ্ধত্বভাতিরিক্তে বয়িদ বর্ত্তমানাৎ দ্রিয়ামী ভবতি। কুমারী কিশোরীতি প্রথমে বয়িদ বর্করীত্যাদি দ্বিতীয়ে। নমুনায়ং কুমারীশকঃ প্রথমে বয়িদ বর্ততে। কিন্তহি পুংযোগাভাবে তথাহি বৃদ্ধাবস্থামানপি প্রযুজ্যতে বৃদ্ধকুমারীতি নৈতদন্তি কুমারীশকঃ প্রথম এব বয়িদ রচঃ যন্ত বৃদ্ধাবস্থামানপি প্রয়োগঃ পুংযোগাভাবাৎ কুমারীদাধর্ম্মাত্রাভাকাঃ যথা গৌর্বাহীকশ্চেতি উন্তানশয়া ইতি উত্তানা শেতে ইতি কর্ত্ব্ ক্রানাদেরিত্যন্ত, তয়িমিন্তোপপদস্থ চেতি সমাসঃ উক্তপ্থক্ষেত্যাদিনাঃ কর্মারয়ের বিহিতঃ পুংবদ্ধান্ধান্ত ন প্রায়োভি কচিদক্যত্রাপীতি কর্নীয়ঃ

- ৪⁻১। দ্বিগোঃ। পঞ্চাক্তী দশ্যটী।
- ৪২। পরিমাণাদবিস্তাচিতকম্বল্যাতদ্ধিতলোপে।

 দ্বাবাঢ়কো পচতি দ্বাঢ়কা পঞ্চপ্রস্থী। অপরিমাণাজু। পঞ্চভিরথ্যে ক্রীতা পঞ্চামা দ্বিশতা দ্বে বর্ষে ভূতা দ্বির্ষা। বিস্তাচিতকম্বল্যাজু। দ্বো নিস্তো পচতি দ্বিবিস্তা দ্যাচিতা দ্বিকম্বল্যা।
 অতদ্ধিতলোপে তু। পঞ্চানামন্মানাং সমাহারঃ পঞ্চামী।

লোহিতপাদিকতি লোহিতো পাদাবস্থা ইতি বহুীহিঃ অক্তুসমাসাস্তান্ত্ৰতি কপ্ৰত্যয়ঃ। নৈতো শক্ষো স্বভাবাৎ বয়োবচনো কিন্তু প্ৰকরণাদিনা বয়ো-হবগময়তঃ।

- (৪১)। দিগোরত উত্তরে স্ত্রিয়ামী ভবতি। পঞ্চাজীতি সমাহারে দিশুঃ স্ত্রাদিশুরদস্ভোহপাত্রাদিরিতি স্ত্রীলঙ্গতা। অত্র প্রকরণে অদন্তবিধেরিষ্টজাদজাদেশ্চতি প্রাপ্ত আদনেন বাব্যতে। অথবা অজ্ঞাদেশ্চতি আৎ প্রাপ্নোতীতি ন বাচ্যং নাত্রাজশব্দস্থ স্ত্রীজ্ঞং কিন্তু সমাহারস্থা। দশপটী তি স্ত্যাদন্তো বেতি মীলিঙ্গতা। উত্তরপদে দিগোরেব বিধিন ভবতি। পঞ্চন্তবধন ইতি অন্তপদার্থে নৈকার্থাভাবাৎ স্ত্রীত্বস্থাবিদ্যমানস্থান্ত।
- (৪২)। পূর্বেণ প্রাপ্তে নিয়মার্থং বচনম্। দ্বিগোস্তদ্ধিতলোপে সতি বিস্তাচিতকম্বল্যবন্ধি তাং পরিমাণাদেবাত উত্তরে স্লিয়ামী ভবতি নাম্যুলতঃ। সর্মতো মানং পরিমাণং পরিশব্ধঃ স্ক্রেভোভাবে বর্ততে আরোহতঃ পরিণাহত স্পরিমায়তে যেন তৎ পরিমাণং প্রস্থাদি পরিমাণস্থানাণস্থানান্তার শাণনিষেধেন জ্ঞাপিতম্। উন্মানমপি পরিমাণগ্রহণেন গৃহতে তেন দ্বে পলে পরিমাণমস্থাঃ দ্বিপলীত্যাদি। দ্ব্যাদ্কীতি তদ্ধিতার্থে দ্বিশ্বা আঢ়কাদেরীনশ্বেত্যমূর্ত্তী দ্বিগৌ কুলিজ্ঞান্ন টিকণ্চেতি টিকণ্প্রস্থাতি পঞ্চপ্রস্থান্ সংভবতি অবহরতি পচতীত্যর্থে তৎসংভবত্যাদাবিতি টিকণ্ পঞ্চাধ্যতি তেন ক্রীতে মৃল্যাদিতি টিকণ্ দ্বিশতেতি দ্বাভাধ ক্রাভাগাং ক্রীতেতি শতাদপীত্যেকে ইতি ২ং ইকাভাবপক্ষে টকণ্মধ্য দ্ধ্ন

৪০। প্রমাণাৎ কাণ্ডাদক্ষেত্রে। দে কাণ্ডে প্রমাণমস্তাঃ বিকাণ্ডী রচ্ছঃ। অপ্রমাণান্ত্র। দ্বাভ্যাং কাণ্ডাভ্যাং ক্রীতা বিকাণ্ডা। ক্ষেত্রে তু। দ্বিকাণ্ডা ক্ষেত্রভক্তিঃ।

88। পুরুষাদাচ্চ।

দ্বে পুরুষো প্রমাণমক্ষাঃ দ্বিপুরুষা দ্বিপুরুষী ত্রিপুরুষা ত্রিপুরুষী পরিথা। তদ্ধিতলোপ ইত্যেব। পঞ্চপুরুষী। প্রমাণাদিত্যেব।
, দ্বাভ্যাং পুরুষাভ্যাং ক্রীতা দ্বিপুরুষা।

পূর্ব্বার্ক তদর্ত্যাদাবসংজ্ঞায়ামিতি সর্ব্জন্ত ব্রক্ দ্বির্বেতি রাত্র্যহংসংবংসরবর্ষাচ্চেতি ঈনঃ টিকণ্ বর্ষান্তান্ত্রমধী টাদাবিতি পক্ষে লুক্ দ্বিন্তেতি তং
সম্ভবত্যাদাবিতি টিকণ্ দ্যাচিতেতি দ্যাঢ়কীবং দ্বিক্ষল্যতি দ্বাভ্যাং
কম্বল্যভ্যাং ক্রীতা পূর্ব্বং টিকণ্ তল্লুক্ চ। অভদ্ধিতলোপে ছিত্যাদি
নিয়মস্থাধিষয়বাং দ্বিগোরিতাস্থ বিষয় ইত্যর্থঃ।

- (৪৩)। কাণ্ডশক্তাপরিমাণবাচিত্বাৎ পূর্কাহতে নিয়মেনাপ্রাপ্তে বিধানম্। প্রমারতেহনেনেতি প্রমাণ যোড়শহস্তপ্রমাণবাচি কাণ্ডং তত্ত্বতিবিশ্বঃ। দ্বিগোঃ প্রমাণবাচকাৎ কাণ্ডাছত্তরে ক্ষেত্রব্যতিরিক্তে বাচ্যে তদ্ধিতলোপে সতি স্ত্রিয়ামী ভবতি। দ্বিকণ্ডীতি মানং মাত্রভিতি মাত্রট্। মানে ইতি দ্বিগৌ তল্পুক্ চ। দ্বিকাণ্ডা ক্ষেত্রভক্তিরিতি দ্বে কাণ্ডে প্রমাণ-মন্তাঃ ক্ষেত্রভক্তেরিতি পূর্কবিন্মাত্রট্ তল্লুক্ চ।
- (৪৪)। পূর্ববদপ্রাপ্তে বিধানম্। দিগোঃ প্রমাণবাচকাৎ প্রুক্ষান্তদ্ধিত-লোপে সতি স্ত্রিয়ামী ভবতি আচে। চকারো বিকল্লার্যঃ। দ্বিপ্রুবেতি লল্লট্রল্লসটো চোর্ফ্লেইতি দল্লট্ দ্বরষ্ট্ মাত্রটঃ হস্তিপ্রুক্ষাভ্যাং উণ্ চ ইতি উণ্ মান ইতি সর্বেষাং লুক্ তল্লুকি চ জাতিবচন এব-পুক্রশকো যদা প্রমাণশক্ষেন সম্বধ্যতে তদা পুরুষগতে প্রমাণে নর্ভতে। যথা সিংহো মাণবক ইত্যত্র জাতিবচনোহপি দিংহশকোহপি মাণবক-সানিধ্যাৎ পৌর্যান্তণশালিনি পুরুষে বর্ততে। পঞ্চপুরুষীতি পঞ্চানাং

৪৫। বর্ণদমুদাভান্তা। । শবলী কল্মীষী শারঙ্গী। অনমুদাভান্তাতাতু। কৃষণা কপিলা

৪৬। তোশান্তাত্তশ্ব নঃ।
এনী শ্যেনী হরিণী লোহিনী। অমুদাতান্তাদিত্যেব। শ্বেতা।
১৪৭। শ্যেতাদেবে ত্যেকে।
শ্যেতা শ্যেনী এতা এনী হরিতা হরিণী লোহিতা লোহিনী।

৪৮। অসিতপলিতাত্তশ্চ র ইত্যেকে। অসিকী পলিকী।

थवना एका।

পুরুষাণাং সমাহারঃ অত্রাপি পুরুষশকঃ পুক্ষপ্রমাণ্ডচনঃ অন্তথা দ্বাঙ্গ-বিকলতা স্থাৎ দ্বিপুক্ষেতি পূর্ত্ত্ববিৎ।

(৪৫)। বর্ণবাচিনোহমুদাক্তান্তাৎ স্থিয়ামী ভবতি।

(৪৭। ৪৬)। বর্ণবাচিনস্তকারোপাস্তাদমুদান্তান্তাং দ্রিয়ানী ভবতি তকারণ্ড নঃ। বানুরন্তির্জমাদিতাচন্দ্রপ্রভিত্নতা বাচম্পত্যাদিক্তত-কোষে চ বিকল্পো দৃশ্যতে ভাষ্যেহমুদান্ততথা ওলগর্ত্তিক্রতা নিত্যপ্রমুক্তং ভাগুরিবোপালিতাদিকোষে নিত্যপ্রমুদান্ততম্। অত আহ বেত্যেকে ইতি শবলকল্মাষশারক্ষেতা এব বর্ণবাচিত্য ঈপ্রত্যে ভবতি নান্তেত্যঃ। এত-শ্রেতহরিতলোহিতানামের ঈকারনকারী ভবত ইতি নিয়তা ব্যবস্থা। এবং সতি শবলাদীনাং নদাদৌ পাঠঃ। এতশ্রেতহরিতলোহিতাক্ত ন ইতি লক্ষণং স্পষ্টার্থং কক্ষান্ন ক্রতমিতি ন দেশুং যুঁতোহপরো বর্ণবাচকো হমুদা-ক্রান্তোবেতি নিশ্চয়েনাস্ত্যবাবসায় ইত্যানিয়তমেবাবগতন্।

(৪৮)। অসিত পলিত ইত্যেতাভাঃ বৰ্ণবাচিভ্যামমুদাতান্তাভাঃ । ব্ৰিয়ামী ভবভিন তৎসন্নিযোগে তণ্ড কঃ। অজাদিগণপাঠাদসিতা পলিতা ৪৯। জাতেরস্থীনিয়তাদ্যোপান্তাৎ।

ময়্রী শৃকরী। অত্র সংস্থানব্যঙ্গ্যা জাতিঃ। কুমারী র্ধলী।

অত্রোপদেশব্যঙ্গ্যা জাতিঃ ক্লীবম্বাভাবাদসর্ববলিঙ্গতা চ। গার্গী

বাৎসী নাড়ায়নী চারায়ণী। অত্রাপত্যপ্রতায়ান্তা জাতিঃ। কঠী
বহর্টী। অত্র চরণরূপা জাতিঃ। যতুক্তং, আকৃতিগ্রহণা

ইতি চ অসিক্রী পলিক্রীতি ছান্দসমেতক্রতু ভাষান্নামিতি কেষাঞ্চিত্রতম্ অত আহে ইত্যেক ইতি।

(৪৯)। স্তিয়ামেব নিয়তঃ স্ত্রীনিয়তঃ নিশ্চিতন্ত্রীলিক ইতার্থ:। জাতিবাচিনোহস্ত্ৰীনিয়তাদ্যকারোপান্তব্যতিরিক্তাৎ স্ত্রিয়ামী ভবতি। জাতিঃ কেতি প্রশ্লাবদরে আহ আরুতিগ্রহণেত্যাদি। আক্রিয়তে ব্যজ্ঞা-তেহনয়েতি আ্তিঃ সংস্থানমূচ্যতে। গৃহতেহনেনেতি গ্রহণং করণসামান্ত-দির্বারাম্ম স্ত্রীলঙ্গুমতি টিবাদীপ্রতায়ো ন ভবতি। আরুতিগ্রহণং ষ্ঠাঃ সা আকৃতিগ্রহণা সংস্থানব্যপ্যেতি যাবৎ অত আহু ম্যুরী শুকরীতি অত্র সংস্থানবাঞ্চা জাতিরিতি ময়ূর্ত্বাদয়ো হি তথাবিধবহাদিসংস্থানবাঞ্চাত্বা-দাক্তিগ্রহণাঃ। নৱেবং সতি কুমারবৃষলাদিশকানাং কথং জাতিবাচিত্বং তথাবিধসংস্থানব্যঙ্গাভাবাৎ এতদেব কথং যুবসংস্থানেন কুমারসংস্থানগু ব্রান্ধণসংস্থানেন বুষলসংস্থানস্থ চাভিন্নত্বাদত আহু অত্রোপদেশব্যক্ষ্যেতি। উপদেশেনাপি আক্রিয়তে ব্যঙ্গাতে ইতি উপদেশ এবারুতি: এতদাঙ্গা জাতিরত্রেতি ভবতাত্রাপ্যাকৃতিগ্রহণা জাতি:। এতহুপদংগ্রাহকং লক্ষণা-স্তর্ঞ সমুচ্চয়েন দর্শয়তি। লিঙ্গানাঞ্চ ন সর্ব্বভাগিতি যা সর্বাণি লিঙ্গানি ন ভলতে সাপি জাতিঃ অতএব ক্লীবন্বাভাবাদসর্কালক্ষতা চেত্যাহ ময়র-কুমারাদিশকানাং ক্লীবর্বাভাবেন অসর্দালিক্সভাচ্চ জাতিত্বন। ব্যাথ্যেয়ং অত্রোপদেশরাঙ্গোতি উপদেশবাঙ্গাতে সতি সংস্থানবাঙ্গাভাবাৎ। আক্রতিগ্রহণা জাতিরিতি লক্ষণেনাসংগৃহীতং কুমারাদীনাং জাতিত্বং তক্ষা-ল্লিঙ্গানাঞ্চন সর্বভাগিতি লক্ষণান্তরেণ জাতিত্বম্। সর্বভাগিত্যত্র প্রথমং কিপি সমাসে চ কতে লিম্বানামিতি পদেনাপেক্ষণীয়েন সহ পশ্চাৎ সর্ব্যাকস্থ kগতিরিতি ন সমাসে বিরোধঃ। পূর্বোক্তলক্ষণছয়েন ব্যবস্থিতায়া এব জাতিলি সানাঞ্চ ন সর্বতাক্। সক্রদাখ্যাতনিপ্রাহ্যা গোত্রঞ্চ চরণৈঃ সহেঁতি॥ অত্যত্তাহ, যা দ্রব্যক্তোৎপত্তাবৃৎপদ্যতে নাশে চ নশাতি যুগপদ্গুণৈঃ সম্বধ্যতে ন সর্ববিদ্যাং ভজতে বহুনর্থামু-পৈতি সা জাতিরভিশ্বীয়তে ষত্রকাং, প্রাহ্রভাববিনাশাভ্যাং সহস্ত

জাতে: স্বরূপমাহ সরুদাখ্যাতনিগ্রাহেতি। সা জাতি: সরুদেকবারমাখ্যাতা উপদিষ্টা নির্গাহা নিশ্চয়েন গ্রাহা ভবতীতার্থঃ। এতেন জাতেরেক'ছং নিতাত্বং প্রত্যেকং পরিসমাপ্তিঞ্চ স্বরূপং দর্শিতবান। তথাহি একস্মিন্ ময়ূরে সক্ষণাথ্যাতা জান্তিদেশান্তরবর্ত্তিগুপি স্বল্লেহপি মুহত্যপি ময়ূরান্তরে নিশ্চয়েন গ্রাহা ভবতি। তত্মাদেকা নিত্যা প্রত্যেকং পরিসমাপ্তা চ সা যদি হেকা ন ভাৎ সরুদাখাতা পিণ্ডান্তরেহপি ন গৃহেত। যদি চ নিত্যা ন স্থাৎ পিগুবিনাশে জাতে বিনাশাৎ পিগুরুরে জাতির্নোপলভ্যেত। যদি প্রতেকং পরিসমাপ্তা ন স্থাৎ তদা যত্রাখ্যাতা ভত্মিন্নপি পিতেও সর্ব্বায়্মনা ন গুছেত কিং পুনঃ পিণ্ডান্তরে অংশেন হি পরিসমাপ্তৌ সত্যাম অংশ এব গৃহতে ন জাতিঃ নহি জাত্যংশো জাতির্ভবতি অনেকত্বপ্রসঙ্গাৎ। অত্রাপত্যপ্রতায়ান্তেতি। তথাহি নড়স্থাপত্যং চরস্থপত্যং পৌল্রাদিরিত্যর্থে অখাদেণীয়ন ইতি ণারন: নাত্র গোড়াদিবৎ সংস্থানবাঙ্গাড়ং নাপি ব্রাহ্মণাদিবৎ উপদেশসহচরিতসংস্থানবাঙ্গাত্বমু। নাড়ায়নঃ পুমানু নাডায়নী ন্ত্রী নাড়ায়নং কুলমিতি দর্কলিঙ্গসম্বনারাপ্যদর্কলিঙ্গতা চ অতঃ পূর্কলক্ষণে-নাসংগ্রহাৎ অপত্যপ্রতায়ান্তা জাতিরিত্যক্রম্। তথাচ, তৃতীয়লকণং পোত্রঞ্চেতি। অত্র চরণরপেতি চরণং শাথা বেদৈকদেশঃ তদ্রপকঠপ্রোক্ত-শাথাধ্যয়নক্রিয়ায়াঃ সম্বন্ধেন প্রবৃত্তত্বাৎ কঠশলোহয়ং ক্রিয়াশলো ন জাতিরিতি চতুর্থং শক্ষণম্। চরবৈ: সহেতি চরণমপি জাতিরিতার্থ:। অক্তমতং দর্শয়তি ষহক্তমিত্যাদি। সত্বং দ্রব্যং প্রাহর্ভাব উৎপত্তিঃ বিনাশো-হনভিব্যক্তি: দ্রব্যস্ত প্রাত্মভাবেণ বিনাশেন চ যস্তা: সহভাবোহস্তি অতএব বাচকার যা দ্রবাস্থোৎপত্তাবৃৎপদাতে নাশে চ নগুতীতি। এতেন দ্রবাস্থ ক্রিয়ায়াত জাতিজ্বং নিরস্তং নহি দ্রবাং ক্রিয়া বা দ্রব্যস্তোৎপতাবুৎপদাত্তে

বুগপদ্গুণৈঃ। অসর্বিলিঙ্গাং বহুবর্ষাং তাং জাতিং কবয়ো বিছুঃ॥
এতিম্মিন্ দর্শনে যুবত্বকুমারত্বক্ষতাদীনামজাতিবম্ । স্ত্রীনিয়তাত্ত্ব। মফিকা বলাকা। যোপান্তাত্ব। ক্ষত্রিয়া বৈশ্যা।
৫০। পাকবালকর্ণপর্ণান্তাৎ।

নাশে চ নশ্যতীতি নিয়ম:। নম্বেবং গুণানাং জাতিত্বং স্থাৎ গুণা অপি দ্রবাস্থোৎপতাবুংপদান্তে নাশে চ নশুস্তীত্যত আহ গুলৈ: সহ যুগপৎ দম্বাতে যদা দ্বো গুণাঃ সম্বধ্যন্তে তদৈৰ জাতিবুপি এতেনৈৰ গুণেভাঃ জাতেঃ পৃথকৃষ্ণ স্চিত্রন্। নবেবমপি নাড়ায়নাদীনাং কঠাদীনাঞ্চ জাতিত্রং ন স্থাদিত্যত আহ অসর্কলিঙ্গানামিতি এতেষাং শব্দানাং নপুংসকত্বাভাবাৎ জাতিত্বসূদ তথাচ শাকটারনঃ গোত্রং চরণমত্রিলিলৈব ভাতি জাতিরিতি। যে তু নাড়ায়নাদিশকানাং নাড়ায়নং কুলমিতি নপুংসক-ক্ষমপান্তীতি মন্তন্তে তেষাং মতে অসর্ব্যলিপামিতি পূর্ব্বোক্তলক্ষণব্যবস্থিতায়া এব জাতেঃ স্বরূপমাত্রকথনং নাডায়নাদিশ্বানাঞ্চ জাতিত্ববীক্রণায় বৈয়া করণসময়সিদ্ধং গোত্রঞ্চরগ্রেঃ সহেতি লক্ষণমঙ্গীকরণীয়মেব। বহুবর্থা-মিতি। তথাহি ময়ুরাণিশকানাং বহব এবাভিষেয়াঃ তেন ষদুচ্ছাশকানাং জাতিত্বং রিস্তঃ নহি দেবদন্তাদিশকা বহুনাং বাচকাঃ। এতস্মিন দর্শনে ইত্যাদি। তথাহি, যুবন্ধে ন 'দ্রব্যক্ষোৎপত্তাবুৎপদ্যতে ন চ নাশে নশুভি বিশ্বমান এব এব্যে শৈশবাপগমানন্তরং তম্মেৎপতেঃ বৃদ্ধছোৎপতেঃ প্রাথি-এবমপরমপাহম। এতদেব মতমাপ্রিত্য বয়স্তচরমে ইত্যত্ত কুমারীতাদাহতম। গার্গী বাৎদীতি গর্গাদিখাদ্যণ্ যোপাস্তখাদ্যথা প্রতি-ষেধোন ভবতি তৎ প্রানেব ব্যাখ্যাতম। হলস্তদ্ধিতন্তেতি যলোপঃ।

('৫০)। পাকাদ্যস্তাজ্জাতিবাচিনঃ স্ত্রিয়ামী ভবতি। স্ত্রীনিয়তত্বাৎ পূর্বেশা প্রাপ্তে এতৈর্ঘোগৈবি ধানম্। ওদনপাকাদীনাং ষষ্ঠীসমাসাদিনা বগাকণঞ্চিদ্রয়ঃ। নমু ওদনপাকশন্দস্তগুলবিক্লিভৌ পুংলিক্লোহপি তৎ কথমন্ত নিয়তন্ত্রীলিক্ষতা ? উচ্যতে। এতদেব বিধানং জ্ঞাপয়তি প্রবৃত্তি-দিমিত্তভেদেন লিক্লাম্বরতয়াপি স্ত্রীনিয়ত্তমেব তথাহায়মোষধিভেদে স্ত্রীলিক্ষো ওদনপাকী গোবালী শঙ্কুকর্ণী পিষ্টপর্ণী। জাতেরিত্যেব। বহুপাকা ব্যবাগৃঃ নির্ববালা বৃদ্ধা দাত্রাকর্ণা গোঃ অপর্ণা পার্ব তী।

- ৫১। মূলাভাদনঞ্পূর্ববাৎ।
 দর্ভমূলী। নঞ্পূর্ববাতু। অমূলা লতা। জাতেরিত্যেব।
 ক'হিশ্নিমূলা প্রসিদ্ধিরুপজায়তে। শ্রুতিমূলা শ্বৃতিঃ শ্রুতা।
- ৫২। অসংভন্তাজিনশণপিগুপুর্ববাৎ ফলান্তাৎ।

 দাড়িনফলী। সমাদিপূর্ববাতু। সংফলা ভন্তফলা অজিনফলা

 ♣াণফলা পিগুফলা। জাতেরিত্যেব। নিক্ষলা ক্রিয়া।
- ৫০। অসদক্ষপ্রান্তকাণ্ড্রনাতকপূর্ববাৎ পুজ্পান্তাৎ।
 শঙ্খপুন্দী। সদাদিপূর্ববাতু। সংপুজ্পা প্রাকপুষ্পা প্রত্যক্পুজ্পা অবাক্পুজ্পা প্রান্তপুল্পা কাণ্ডপুল্পা শতপুল্পা একপুশা।
 জাতেরিত্যেব। অপুজা লতা।

বিক্লিভিবচনস্ত পুংলিঙ্গঃ অতএব ক্ষেত্রে নপুংসকস্তাপি মালশকসা পুষ্পস্ত্রি স্ত্রীনিয়তক্ষমেব। দাত্রাকর্ণেতি দাত্রমিথ কর্ণে চিহ্নং যস্যাঃ কর্ণে চিহ্নার্থ-স্যারিষ্টাদেরিতি পূর্বিপদে দীর্ঘঃ।

- (৫১)। মূলাপ্তাজ্জাতিবাচিনোহনঞ্পূর্বাৎ ব্রিয়ামী ভবতি।
- (৫২)। সমাদিব্যতিরিক্তপূর্বাৎ ফলাস্তাজ্জাতিবাচিন: শকাৎ স্ত্রীয়ানী ভবতি।
- (৫১)। সদাদিব্যতিরিক্তপূর্ব্বাৎ পূপ্পান্তাজ্জাতিবাচিনঃ স্তিরামী ভবতি। প্রাক্পুপোতি প্রপূর্বাদঞ্জে: দ্বিপ্ হলুপান্তেত্যাদিনা নকারলুক্।

৫৪। ইদন্তানামুষ্যজাতেঃ ।
 অবস্তী কুন্তী। অমনুষ্যজাতেন্ত। তিতিরিঃ।

৫৫। পুং নান্নঃ পুংযোগে।
 ক্ষত্রিয়স্ত স্ত্রী ক্ষত্রিয়ী শূদ্রী বৈশ্বী বৈদ্যী। স্পুংনান্নস্ত। প্রজাতা।
 অপুংযোগে তু। দেবদত্তা।

৫৬। সূর্য্যাদদেবতায়াম্। সূর্যাস্থা স্বী মানুষী দেবতায়াস্ত। সূর্যা। ৫৭। নুনরাভ্যাং রদ্ধিশ্চ।

- (৫৪)। ইকার স্থান্ম ম্যান্তাতিবাচিনঃ দ্রিয়ামী ভবতি। অবস্থী কৃত্তীতি অবস্থিকু ন্তিশকাভ্যাম্ ইনন্ত চৈতি ণ্যঃ অবস্থাঃ কৌন্তঃ অবস্থি-কৃত্তিকু কভাঃ দ্রিয়ামিতি ণ্যস্থ লুক্ নিমিন্তাপায়াদ্র্দ্ধিনিবৃতিঃ গোত্তমিহ জাতিঃ এবং দাক্ষী।
- (৫৫) পুংবাচকাৎ শকাৎ পুংযোগে সতি স্তিয়াং বর্ত্তমানানী ভবতি।
 ক্ষাত্রিয়ীতি ক্ষত্রিয়শব্দঃ পুংবাচকঃ প্রাগাদীৎ পশ্চান্তদ্যোগে স্বস্থামিভাবক্ষণ্ট্রনান বাচ্চা ব্রিয়াং বৃত্তঃ। তথা চি, রাজযোগাৎ রাজযোবিৎপ্রভৃতয়ঃ।
 তথা তচ্চক্রাচ্যতাপি ক্ষত্রিয়ীতি শূদ্রাপ্যাভিনীয়তে। জাতৌ তু। ক্ষত্রিয়া।
 বৈদ্যাতি বৈদ্যাশকো বিদ্যাযোগাৎ পুংসো বাচকঃ তদ্যোগাৎ ক্রিয়াং বর্ত্ততে
 নতু বিন্যাযোগাৎ। প্রজাতেতি প্রজাতা নির্গতগর্ভাভিধীয়তে নায়ং শব্দঃ
 পুংসো বাচকঃ পুংযোগে সতি তু স্তিয়াং বর্ত্ততে এব প্রস্বস্থা পুংযোগহেতৃছাৎ। দেবদন্তেতি দেবদন্তসংক্ষত্তেন পুংসা যোগে সতি নায়ং দেবদন্তাশব্দঃ
 স্তিয়াং বর্ত্ততে কিস্তর্হি স্বত্ত এব তন্ত্রা হীয়ং সংজ্ঞা দেবদন্তাশকঃ।
- (৫৮)। পুংবাচকাৎ স্থ্যশকাৎ পুংযোগে সতি অদেবতায়াং প্রিয়াং বর্তমানাদী ভবতি। স্থ্রীতি স্থ্যাগস্তায়োবীয়ে চেতি ঈপ্রত্যয়ে পরে দকারলুক্।
- (৫৭)। নন্নবশকাভ্যাং স্তিরামী ভবতি। বৃদ্ধিত। নৃশকাদূদস্তা-দীপ্রত্যয়ং দিদ্ধ এব বৃদ্ধ্যর্থং বচনং নরশকাদ্বাধনার্থক। অথবা নরশকাদ

.নাৱী।

৫৮ । ক্রীতান্তাৎ করণপূর্ন্বাৎ। অশ্বক্রীতী মনসাক্রীতী ধনক্রীতী। সা হি তক্ষ ধনক্রীতী প্রাণে-ভ্যোহপি গরীয়সীতি শিফ্টপ্রয়োগঃ। ধনক্রীতেত্যপীত্যেকে। অক্রীতান্তাত্ত্ব। সংখন ক্রীতা।

৫৯। ক্তান্তাৎ করণাল্পত্নে। স্পরিলিপ্তী পাত্রী।

দ্দি জাতিবাচকত্বাদীপ্রত্যয়ে সিদ্ধে বৃদ্ধার্থমেব বচনম্। নরশক্তাকার।

লুকি রুতে নকারাকার এব বৃদ্ধিস্থানং সম্ভবতি।

(৫৮)। করণপূর্কাৎ ক্রীতান্তারায়: দ্রিয়ামী ভবতি। অপক্রীতীতি ক্রতা কর্তৃকরণয়োর্বহুলমিতি তৎপুরুষ: বিশেষবিহিতক্ত ঈপ্রত্যয়ন্তায়ং বিষয় ইতি আৎপ্রতায়নিরন্তিঃ। মনসাক্রীতীতি মনসো নায়াতি তৃতীয়ায়া অলুক্। ধনক্রীতেত্যপীত্যেকে ইতি নৈতদল্মাকং সন্মতমিত্যভিপ্রায়:। অধ্যেন ক্রীতেত্যত্র করণপূর্কাঃ ক্রীভশব্দোহত্র ন তৃ ক্রীতাবয়রঃ। অকরণপূর্কাত্ত্য করণপূর্কাঃ ক্রীভশব্দোহত্র ন তৃ ক্রীতাবয়রঃ। অকরণপূর্কাত্ত্য করণপূর্কাত্ত্যত্র কল্পান্ত করণপূর্কাং। মুক্রীতেত্যত্র কল্পান্ন ভবতীতি ক্রীতান্তায়য়য়য় শব্দো ভবত্যের করণপূর্কান্ত। উচ্যতে। করণাদিতি পক্ষমান্তনিদেশেনাপি করণপূর্কাদিতি লব্রে যৎ করণপূর্কাদিতি ক্রতং তং পূর্কাশক্ষাত্রাবয়রত্বত্বস্থানার বিষয়বত্বস্থানার করণপূর্কাবয়র ইতি ঈপ্রত্যয়ো ভবতি। অত্যত্রাম্বক্রীতেত্যত্রাপি ন ভবতি শক্ষান্তরক্রীতার ভবতীতি বদন্তি ব্যবহাহরং শক্ষঃ করণপূর্কাবয়রণ ভবতীতি।

(৫৯)। করণপূর্বাদিতায়্বর্ততে। জাস্তাৎ করণপূর্বাৎ করণারুত্বে সতি স্তিয়ামী ভবতি। স্পবিলিপ্তী পাত্রীতি লিপ্ উপদেহে জঃ
আল্পেন স্পেন বিলিপ্তেতার্থ:। করণপূর্বাদিত্যেব। আল্পেন বিলিপ্তা
নাত্র করণপূর্বাবয়বত্বম্। করণাল্লত্ব ইতি কিম্
ং চন্দনাস্লিপ্তা। অল্পে
ংইতি তু ক্তে পাত্রা অল্পেহপি স্তাৎ।

৬০। অবহনঞ্ স্কালস্থাদিপূর্ব্বাদজাতাদ**ত**া-দাভাদহুত্রীহেঃ।

শঙ্খ ভিন্নী উক্তিন্নী গলোৎকৃত্তী কেশবিল্নী। বহুনঞ ্সকাল-স্থাদিপূর্ববাত্ত্ব। বহুকৃতা অকৃতা স্বকৃতা মাসকৃত। স্থকৃতা দুঃথকৃতা স্থাদিঃ প্রাগুক্তঃ। জাতাত্ত্ব। স্তনজাতা। অনস্তো-দাতাত্ত্ব। বস্তচ্ছনা।

৬১। পাণিগৃহীতাদূঢ়ায়াম্।

(७०)। বহুবাদিব্যতিরিক্তপূর্নাজ্জাতশব্দ বর্জি তাৎ ক্রাস্তাদ্বছত্রীহে-রম্ভোদান্তাহত্তবে স্তিয়ামী ভবতি। শঙ্খভিনীতি ভিদেঃ ক্তঃ অমদোদাদ ঠুন ইতি তক্ত দক্ত চ নঃ গলোৎকৃত্তীতি কৃতী ছেদনে শ্বিপুৰাদীদিতাং ক্ৰেন্ট ষাবিতি ইঙ্নিষেধ:। কেশবিল্নীতি বাদিষাৎ ক্তক্তবন্ধোরিত্যাদিনা তস্ত নঃ। শুখানয়োহমী প্রাণ্যঙ্গবাচিনো জাতিশকাঃ জাতিকালস্থানিভ্যশ্চেতি ক্রান্তস্ত পরনিপাতঃ। এবং মাসকুতাদিধপি। বছকুতং যস্তাঃ অবিদ্যমানং কুতং যন্তাঃ সুষ্ঠু কুতং যন্তা ইতি বছকুতাদয়ো বহুবাদীনা বিশেষণত্বাৎ ক্তান্তম্ম প্রনিপাত:। ক্তবিশেষণে চ বছবীহাবিতাম্ম তু যত্রোভযোবি শে-ষণবং দ তহ্ম বিষয়:। মাদকতা স্থাকতা ইতি যদত পাঠো দুখাতে দ প্রমাদকৃতঃ কালস্থাদিভাঃ প্রস্তু ফুতস্তাম্ভোদান্তত্বাভাবাৎ মাদকৃতে গ্রাদি-রেব পাঠঃ। স্থাদিঃ প্রাগুক্ত ইতি স যথা স্থধত্বংশককণকুপণা র প্রা-লীকামদোঢ়রুচ্ছাশ্চ। অংশপ্রতীপসহিতা একাদশ বৈ স্থথাদযো গদিতা ইতি। **অস্বাঙ্গপূর্মপদাৎ ক্রান্তাদ্বি**কল্লং বঙ্গাতি তত্মাৎ স্বাঙ্গপূর্মপদ এবাস্থ বিষয়: তত্মাৎ স্বাঙ্গপূর্স্নাদিত্যেবাক্তে বহুৱাদিপূর্দ্ধাৎ প্রান্তিন ভবি-ষাতি কিং বহুনঞাদিনিষেধেন তত্মাদ্যাং নিষেধাহস্বাঙ্গপুর্বাদি তানেন প্রাপ্তভাপীতি ব্যাশ্যেষ্ম। বছরীহৌ বছনঞ্সভ্যঃ পবং ক্রান্তমনাচ্ছাদন বাচিজাতেঃ কালাৎ স্থাদেরপি ক্লডমিতপ্রতিপন্নব্যতিরিকঞ্চ। ক্রান্ত-মস্ভোদান্তমিতি শাস্ত্রাম্বরাবিসংবাদিনী ব্যবস্থা। বস্তুচ্ছরেতি বস্ত্রশব্দ-স্থাচ্ছাদনজাতিবাচিত্বাৎ ন ক্তান্তস্তান্তোদাত্ত্বমু।

(৬১)। পাণিগৃহীতশব্দাবূঢ়ায়াং প্রমামানায়াং স্কিয়ামী ভবতি।

পা**নি**গৃহীতী।

৬২। শরবিষকবরমণিপূর্ব্বাৎ পুচছাৎ।
শরপুচ্ছী বিষপুচ্ছী কবরপুচ্ছী মণিপুচ্ছী।

৬৩। উপশ্বনাৎ পক্ষাচ্চ।

উল্কপুচ্ছী সেনা কাকপক্ষী শালা।

প্র । সংখ্যাপূর্কাদান্ত্রে বহুত্রীছেঃ।
 দান্ত্রী।

- পোণিগৃহীতো বস্থা: দা পাণিগৃহীতী পাণিগৃহীতশকোপানানাৎ জ্ঞান্তস্থ প্রনিপাত: আহিতাদিয়ারা। উঢ়ায়ামিতি কিম্ ? যস্তা যথাকথঞ্চিৎ পাণিগৃহীতঃ দা পাণিগৃহীতা।
 - (৬২)। শৃঙ্গান্ধকর্ণেত্যাদিনা বক্ষ্যমাণলক্ষণেন বিকল্পে প্রাপ্তে নিত্যার্থমিলং বাগদ্বরম্। বহুত্রীহেং শরাদিপূর্ব্বাবরবাৎ পূচ্ছাহন্তরে স্থিয়াদী ভবতি।
 শরপুক্ষীতি শরযুক্তঃ পুচ্ছো যস্তাঃ পূর্ব্বার্থেতাদিনা যুক্তপদলোপঃ। অথবা
 শরং পুচ্ছে যস্তাঃ শরপ্চ্ছীতি বাধিকরেণে বহুত্রীছিং সমাসপাদে ব্যবস্থিতঃ
 গঙ্গাদেং সপ্তম্যন্তং পরমিতি পুচ্ছশব্দস্ত পরনিপাতঃ। এবং বিনপ্র্চ্ছী
 মণিপুচ্ছী কবরং পুচ্ছং যস্তাঃ সা কবন্ধপুচ্ছী।
 - (৬৩)। বছত্রীহেরপমানাত্ত্তরাৎ পুচ্ছাৎ পক্ষাচ্চ ব্রিয়ামী ভরতি। উল্কপ্চ্ছীতি উল্কপুচ্ছমিব পুচ্ছং যন্তাঃ সা উল্কপুচ্ছী পূর্ববং পুচছ-পদলোপঃ।
- (৬৪)। বছরীহেরিতামুবৃদ্ধী লক্ষায়াং বদত্র বছরীহেরিতি দৃশুতে তৎ পূর্ব্ববৃত্তিসংকারাল্লিপিকরপ্রমাদক্তম্। সংখ্যাপূর্বাদামন্ ইত্যন্তাৎ বছরীহেং রিয়ামী ভবতি। অত্যাপি পূর্বাদিকতং স্পষ্টার্থম্। নাস্তম্বাৎ প্রাপ্ত উপ্রতায়শু ঈ চান্তান ইতি নিষেধেন উপ্রতায়ে ডাপ্রতায়ে চ প্রাপ্তে তদ্বাধনার্থং বিধানম্। দিদামীতি দে দামনী অ্লা ইতি বছরীহি:। সংখ্যাপূর্বাদিতি কিম্
 উদ্ধামা।

৬৫। বয়সি হারনাৎ। ত্রিহায়ণী গোঃ অবয়সি তু। ত্রিহায়ণা শালা। সংখ্যাপূর্বনা-দিত্যেব। স্থহায়না।

৬৬। অনন্তাতুপান্তলোপিনো নান্নি। স্ব্রাজ্ঞী নাম নগরী বহুসান্নী নাম পুরী।

৬৭। কুস্তাদেঃ পাদন্তাৎ।
কুস্তপদী অউপদী। কুস্ত অউন্ এক জাল শত মুনি শিতি ক্ত্র
গোধা কলস দাসী বি নির্ অদ্ধ ডেল্ল কুণি কৃষ্ণ শূকর শই হ
সূচী ২০ #।

⁽৬৫)। সংখ্যাপূর্ব্বাদ্বন্তবীহের্হায়নাদ্বয়সি গম্যমানে দ্রিয়ামী ভবতি ক্রি ত্রিহায়ণীতি ত্রয়ো হায়না অস্থা ইতি বিগ্রহঃ ত্রিচতুরোব্যসি হায়নস্থেতি শক্ষ। ত্রিহায়ণা শালেতি বয়সঃ প্রাণিধর্ম্বাদিতি শেষঃ।

⁽৬৬)। উপান্তলোপো যশ্মিন্ সম্ভবতি স উপান্তলোপী উপান্তলোপিনোহনস্তাদ্ভত্রীহেং সংজ্ঞায়াং বিষয়ে দ্রিয়ামী ভবতি। ঈ চালান ইতি
ঈপ্রতিষেধবাধনার্থং বিধানম্। স্থরাজ্ঞীতি দ্রিয়ামীতি চেতি উপান্তাকারলুক্ সংজ্ঞানকতাদলাজহলিঙ্গতে সতি গ্রামেহপি বাচ্যে দ্রীলিঙ্গতম্।
উপান্তলোপিন ইতি কিম্? স্থপর্বা দেবী যুক্তবঙ্গানায়মূপান্তলোপী। নত্র
যুক্ষানশ্চ বহুত্রীহেরিতি নিষেধাে ভবিষ্যতি নৈবমসংজ্ঞায়াং তল্প বিষয়ঃ
লাং। অনন্তাদিতি কিম্? বহুপর্বধানাম প্রী হলুপান্তেত্যাদিনা নকারলুকি সতি উপান্তলোপিরম্রান্তি নানন্তত্বম্।

⁽৬৭)। কুস্তাদেরত্তরাৎ পাদস্তাবছত্তরীহেঃ দ্রিয়ামী ভবতি। কস্ত-পদীতি কুস্তাবিব পাদাবস্থা ইতি বছত্তীহিঃ কুস্তাদেঃ দ্রিয়ামিত্যকারলুক্ ঈপ্রত্যরক্ত শদাদিত্বাৎ সমাদরুতালোপস্থা পাদঃ শদাগুচি তদ্ধিত্বে চেতি হ্রমঃ। কুস্তাষ্টজালশক্তমুনিশিতিস্ত্রদ্রোণক্রফ কুণিকলসাং। বিনিরন্ধ-শরুৎস্টিশ্করদান্তেকগোধাশ্চ।

কুম্ভানৌ কুম্ভ পোধা মুনি কুপি কলসাঃ স্ত্রস্কীনিরেকাঃ।
 জোণান্ধিষ্ঠো চ ক্বয়ঃ শিন্তি শত বিশক্তং শূকরা জালদান্তৌ ॥ ২০ ৪

*৬৮। উধসো তন্চ।

ঘটোগ্নী কুণ্টোগ্নী নিরূপ্নী। অমাত্রাদেরিতি কিম্? মাতা যাতা।
অনভিধানাৎ তৃঙস্তম্ম ন স্থাৎ। ধাস্তম্মাত্রী গ্রামম্ম যাত্রী।
মাতৃ যাতৃ ত্হিতৃ ন্নান্দ্ স্বন্ধ তিক্ষ চতক্ষ কতি নপ্ত্রীত্যেকে ১ *।

৬৯। নান্তঃ **সংখ্যা।** প**ন্**নতীঃ সপ্তকুমার্য্যঃ।

(৬৮)। বছরীহেরধসঃ প্রিয়ামী ভবতি। ঈপ্রত্যরে পরে তন্চ।
ঘটারীতি ঘট ইব উধাে যন্তা ইতি ডিতিস্বরতচ্ছেষয়ােলু নিতি অস্লুক্।
অবছরীহেস্ত। প্রাপ্তা উধঃ প্রাপ্তোধাঃ প্রাপ্তাপনাতাাং দিতীয়য়া বেতি
তৎপুরুষঃ। নাতেতাাদি মান্ পূজায়াবিত্যমাৎ ভৃঃশংসাদেরিতি তৃপ্রত্যাস্থেন লুকি চ রুতে যাতেশ্চ তৃপ্রত্যয়ে রুতে মা নানে ইত্যমাৎ যাতেশ্চ
তৃঙ্প্রতায়ে রুতে মাতৃষাতৃশকাে বিবিধাে সম্ভবতঃ তৎ কয়োর্গ্রহণমিতাাশঙ্গামাহ অনভিধানাতৃঙস্তম্ভ ন স্তাদিতি ঈপ্রতায়ম্ভ নিষেধ ইতি শেষঃ।
তৃঙস্তস্ত্যুপলক্ষণং তৃঙাস্তম্ভ চন ভবতি। এতক্র সম্বন্ধিশ দানাং ছহিত্রাদানাঞ্চ সাহচর্যাদবগন্তব্যম্। কতিশবােহত্র পঠাতে কিম্শকাৎ কিমঃ
সংখ্যা প্রশ্নে ডতিরিতি ডতিঃ ডিয়াদীম্ ভাগলােপঃ। যম্প্রপি ঝছিরিদিতাাদিনাত্র প্রাপ্তিন নিষ্তি তথাপি গণপাঠসামর্থ্যাদিদস্তাদক্ত্যথাদিতানেন প্রাপ্তেহস্ত
নিষেধঃ। জয়াদিত্যাদিভির্মপুশক্তাপি নিষেধঃ উক্তঃ অত আহ নপ্ত্রীত্যেকে ইতি।

(৬৯)। নকারান্তঃ সংখ্যাবাচকঃ শব্দো মাত্রাদিঃ স্থাং। সপ্তকুমার্য্য ইতি জদশদোলু ক্ কতিপঞ্চাদেরিতি জদলুক্ সংখ্যাশন্দানাং পদান্তরবিশেষণ্ডনাপি স্ত্রীত্মতি গ্রোতনার্থম্। নতঃ কুমার্যা ইতি বিশেষ্যপদোপাদানং গুণশন্দানাং পদান্তরবিশেষণ্ডনাপি স্ত্রীতে প্রত্যায় অমী ভবস্ত্রীতি নাম্তসংখ্যানিষ্টেনেব জ্ঞাপিতম্। তেন শুক্লা শাটীত্যানৌ আংপ্রত্যায়ঃ নকারস্থানুপ্রবিদাদিপি ন ভবতি।

মাতাননান্দাহহিতা তিসা কতি স্বসাথ বাতে। চতসা চ নপ্তা ॥ ৯ ॥

- ৭০। মনো ডাবানদ্বী। পামানো পামে সীমানো সীমে।
- ৭১। যুগ্ধমানশ্চ বহুব্রীহেঃ। স্থপর্কাণো স্থপর্বের স্থকর্মাণো স্থকর্মে।
- ৭২। ঈ চান্সানঃ। স্থপ্রেমাণো স্থপ্রেম স্থপ্রেম্ণ্যো।
- ৭৩। শোণাদেব।।
 শোণাদের ভরে স্রিয়ামী বা ভবতি। শোণা শোণী। শেইন
 কল্যাণ কৃপণ পুরাণ কমল বিশাল অরাল বিকট বিশঙ্কট উ

 ভরজ চণ্ড। ১২

 ।
- (৭০)। মনস্তাৎ স্থ্রিয়াং ডাপ্রতায়ো বা ভবতি ন পুনরী। ভাত্যক্তের পক্ষে নাস্তবাং প্রাপ্ত ইপ্রতায়স্তা নিষেধঃ। পামানাবিত্যাদি পাধাতোঃ বিঞ্বয়নে ইত্যশাল প্রাদেম নিউতি মনঙ্ বহুলবচনাদীর্যঃ। বহুরীহো ইচাস্তান ইতি বক্ষাতি তদিতরোহস্তা বিষয়ঃ। মন ইতি নেদং প্রতায়গ্রহণং কিন্তু বর্ণগ্রহণং তেনাতিমহিমানো অতিমহিমে।
- (৭১)। যুথমসমীপবর্তা অন্ যুথমান্ তমাদ্বরীহের্ডা বা ভবতি নদ্বী।
 *স্থপর্বাণাবিত্যাদি স্থাটি দীর্ঘ ইত্যাদিনা দীর্ঘঃ। যুক্তবমাসমীপবর্তী অন্
 নাক্ত বিষয়ঃ তেন কর্মদামী প্রজা।
- (৭২)। যুক্তবমব্যতিরিক্তাদনস্তাবহুরীহের্ডা বা ভবতি। ঈ চ। এবং পক্ষত্রম্। স্পপ্রেম্ণ্যাবিতি স্তিরামীতি চেতাকারলুক্।
- (৭৩)। শোণশকাদ্বনিত্বদান্তান্তানিত নিত্যে প্রাথে শেষাণামপ্রাথে বিকল্প:। শোণোদারবিশক্ষটকল্যাণপুরাণক্ষপণবিকটান্চ! কমলারাল-বিশালা ভক্তকণ্ডণ্ড শোণানিঃ।
 - শোণঃ পুরাণক্রপণ্টে কমলং বিশালঃ
 কল্যাণচণ্ডবিকটাভক্তস্বরালঃ।
 স্থাতাং বিশঙ্কট উদার ইমাবপীহ
 প্রোক্তাঃ পুরাতনজনৈরিহ শোণমুখ্যাঃ॥ ১২॥

় ৭৪। চাক্তভাগানদ্যাম্। চাক্তভাগা চক্তভাগী।

৭৫। উ**পাধ্যায়াৎ স্বার্থে।** উপাধ্যায়া উপাধ্যায়ী।

৭৬। গুণবচনাত্মদন্তাদখরুযুক্তোপান্তাৎ। সত্তে নিবিশতেহপৈতি পৃথগ্জাতিযু দৃশ্যতে। উৎপাদনীয়ে।

চন্দ্র (৭৪)। চান্দ্রভাগশশাহত্তরে নদ্যাং বাচ্যায়াং ব্রিয়ামী বা ভবতি।
চন্দ্র সংগা নাম পর্কতঃ ততঃ প্রভবতীতি শৈষিকইণ্ টিব্রাদীপ্রতায়ঃ প্রাপ্ত
প্রক্রিবিধানাং পক্ষে আদিতি পূর্ণচন্দ্র ব্যাখ্যানম্ অবৃদ্ধাভ্যো নদীমানুবাভা ইত্যত্র চ অবৃদ্ধাভ্য ইতি কিমিত্যুক্ত্য চান্দ্রভাগশদং নদীবচনং
প্রভাগাহত্বান্ তশাচন্দ্র ভাগামদ্যামিতি পাণিনীয়ানাং হ্রমাদিপাঠন্তেষামেব
ন্দ্রমপরম্পরবিরোধাদপপাঠ ইতি ভাগবৃত্তিকতোপেক্ষিতঃ। অথবা হ্রেষাহপি
পাঠঃ প্রদ্ধেরঃ তদাত্র একদেশবিক্তমনগ্রবত্তবতীতি সম্বন্ধনীয়ঃ। অনদ্যান্ত।
চান্দ্রভাগী হ্যতিঃ।

- (१৫)। উপাধ্যায়শকাৎ স্বার্থে বর্ত্তমানাৎ স্ত্রিয়ামী বা ভবতি। উপাধ্যায়ীতি উপেত্যাধীয়তেহস্তা ইতি পুংসি ঘণ্ কারকে চেতি ঘণ্। স্বার্থ ইতি কিম্। উপাধ্যায়ানী নাত্রোপাধ্যায়শকঃ স্বার্থে বর্ত্ততে কিন্তু উপাধ্যায়েনোঢ়ায়াং তদ্যোগাদ্রাপি পক্ষে উপাধ্যায়ীতি স্থাৎ।
- (१७)। গুণমুক্তবান্ গুণবচন: ভূতকালে ওনট্ য়: পূর্ক্র: গুণমভিধার পশ্চাত্তদ্যোগাদভেদোপচারাদ্বা তদ্বতি দ্রব্যে বর্ত্তিত স গুণবচন: তশ্মাছকারাস্তাৎ থক্ষপক্র্তেলপাস্তব্যতিরিক্তাৎ ব্রিয়ামী বা ভবতি। ইক এওরলো গুণ ইতি যো লাক্ষণিকো গুণ: স তাবন্ন সম্ভবতি উকারাস্তম্ভ গুণসংক্রায়। অভাবাৎ। লোকে যদপ্রধানে গুণপদাভিধানং দৃশ্রতে যথা অব্যবমাত্র গুণভূতা অপ্রধানভূত। ইত্যর্থ: তদপি ন গৃহতে। অত্র তু যাদৃশো গুণো গৃহতে তদ্দর্যতি সত্ত্বে নিবিশতেইপৈতীতি ব্যবচ্ছেদকক্ষলকত্বাৎ সর্ক্রবাক্যানং সত্ত্ব এবেত্যবধারণং দ্বন্তব্যন্। সন্ধ্য দ্রব্যং তদৈবা ক্রান্তাত্যর্থ: ততোইপিতি সন্ধাদপগছেতি তথাহি আমে কলে শ্রাম্ব্রা

নিত্যশ্চ সোহসন্বপ্রকৃতিগুণিঃ। ইতীহাভিপ্রেতম্। পটুঃ পট্বী বহুঃ বহুবীন খরুযুক্তোপাস্তাত্তু—খরুঃ পাণ্ডুঃ।

পূর্ব্বং স্থিতা রক্ততায়াং জাতায়ামপৈতি। পৃথগ্জাতিযু দুগুতে নানাজ:তি-ষবলোক্যত ইতার্থ:। পৃথপজাতিশব্দাৎ জাতাস্তাজ্ঞাতিব্যঞ্জকদ্রবাবচনাদীয় ইতি ঈরপ্রতায়ো ন ভবতি। শ্লোকবার্ত্তিককার প্রয়োগাদীয়বিধের-নিত্যন্তাৎ। তথাহি, শ্রামতা আয়ে তৃণে গবি চ দুখতে এতেন জাতে-ৰ্ভুণত্বং নিরন্তং যতঃ সন্তা দ্রবো খণ্ডণে কর্মণি চ বর্ত্ততে নাসৌ জাতি ई-ব্যাদ্পৈতি জন্মন: প্রভৃত্যা বিনাশপর্যান্তমাধারদ্রব্যাপরিত্যাগাৎ ন চ জার্ত্তি ।। পুথগুজাতিযু দুখাতে ন হি গোখনখজাতো দুখাতে নাপাখবং গোজা ঠী এবং জাতৌ নিরস্তায়াং কর্ম্মণস্ত স্থাদেব যতঃ সক্রিয়ং দ্রবাং মদা স্থাৎ তি কর্ম্ম সত্ত্ব এব নিবিশতে ঘদা অক্রিয়ং স্থাৎ তদা অপৈতি চ নানাজাতিষু দুখ্যতে অতঃ প্রাপ্তং কর্মনো গুণ্ডমপাকর্ত্তুমাহ উৎপাদনীয়ে৷ নিত্যশ্চেতি 🏖 তথাহি ঘটাদাব্যি সংযোগেন রক্ততা উৎপদ্যতে নিত্যে চ দ্রবো আকাশাদৌ মহত্ত্বাদিনিত্যঃ এবংপ্রকারম্বয়ং গুণে বর্ততে নতু কর্ম্মণি যতন্তত্ত্বংপদ্যতে এব নতু নিত্যরূপং ভবতি। এবমপি দ্রব্যং গুণঃ স্থাৎ তত্রাপ্যেতে ধর্ম। বিলাম্ভে তথাহি দ্রবামপারিজকেংবয়বভূজে দ্রব্যে নিবিশতেংপৈতি চ ততন্ত্রদ্যথা শরীরং হস্তপাদাদিশ্ববয়বভূতেষু সমবৈতি তদ্বিনাশেন বিনাশাক তোহপৈতি চ পৃথগ্জাতিযু দৃহ্যতে হস্তাদিদ্রব্যাণাং নানাজাতিযু দর্শনাৎ দ্রব্যে চ প্রকারম্বয়মন্তি ঘটাদিরুৎপাদনীয়: আকাশাদিনিতাঃ অত আহ সোহদত্বপ্রকৃতি পূর্ণ ইতি প্রকৃতিঃ স্বভাবঃ দত্তং প্রকৃতির্যস্থ সাম্বর্প্রকৃতিঃ ন সম্ভপ্রকৃতিঃ অসম্বপ্রকৃতিঃ যথোক্তৈর্ধ হৈত্বযুক্তো যো দ্রব্যস্বভাবো ন ভর্বতি স গুণঃ। পটাতি অত পটুত্বং গুণমভিধার পটুশকস্তদ্তি দ্রব্যে বর্ততে। বহুশকোহপি বহুত্বং গুণমভিধায় বহুগুণযুক্তে দ্রব্যে বর্ত্ততে ভবতি গুণবচনঃ যাচোৰুদ্গুণ ইতি গুণো ন ভবতি নেদূতোঃ কেবলয়োরিতি প্রতিষেধাৎ। উনস্তাদিতি কিম্ ? শীতা। থকঃ পাও,রিতি থকঃ তীক্ষঃ এবং ষক্র: কক্র: এতৌ শব্দৌ বর্ণাবিশেষমভিধায় তদ্বতি দ্রব্যে বর্ত্তে। खनवठनामिछि किम् ? खांथूः। जवावहत्नाश्यः मत्मा नक् खनमिखियां প্রবৃত্ত:।

११। रेमखानकार्थाए।

রাত্রিং রাত্রী শ্রীঃ শ্রী লক্ষ্মীঃ লক্ষ্মী। ক্ত্যুর্থান্ত — গতিঃ মানিঃ।
মাগান্যানাং মৃণালী মৃত্রেজ্যত্র মানস্থ ভাবে। মানী।

१४। भेळ्डाटमण्ड ।

(৭৭)। ক্তীতি ভাৰবাচকোপলক্ষণম্ ইকারাস্তাৎ ক্তিপ্রত্যয়ার্থ-ব তরিকাৎ স্তিমামী বা ভবতি। রাত্রিরিতি রাতেস্ক্রিরিতি ত্রিপ্রতায়াস্তঃ। রতি প্রিঞ্সেবায়াং কিপ্ দীর্ঘশ্চ। লক্ষীরিতি লক্দর্শনাঙ্গোরিত্য-🗫 আদেরী প্রিয়ামিতি ঈ প্রতায়ো লক্ষাদেশন্চ। গতিরিতি গমে: জিঃ মানিরিতি প্রমানপাঠ: শাস্তান্তরেম্বদুইম্বাৎ ্রিয়ামিতি ক্তি:। র্মানিরিতি ড্রষ্টব্যং জ্যাদের্নিরিতি নিপ্রত্যয়ঃ। তত্তাপি মানিরিতি যহুদাহরণং দুশুতে তদপি প্রমাদক্বতং যদি মানিরিতি পদং সাধু তদা কিমর্থং মাগান-মানীং মূণালী মৃছ্রিতি প্রসিদ্ধেহক্লিষ্টে চ স্থাশতক্ষ পাঠে মাগান্মানীতি পাঠং ব্যবস্থায় তৎসাধনার্থং যত্ত্বমাস্থীয়তে স্লানস্থ ভাবে৷ ম্লানীতি জ্ঞাস্তাৎ স্লানশব্দাৎ তদ্ভাবে তাদমিত্যমূরত্তো মিত্রাদের বিস্থামিতি টণ্ টিস্বাদী। মানিরিত্যস্ত ভাববাচিম্বাৎ ক্তার্থতা নতু জ্যাদিম্বাৎ। যত্রৈব নিঃ কৃতন্ত-স্থৈব ক্রার্থতা এবং শ্রোণিঃ শ্রোণীত্যাদাবপি প্রতিবেধঃ এতাং। অকরণিঃ কান্ধারিমকার্বীরিত্যাদাবপি ক্তার্থস্থারিষেধঃ। যস্ত তু ভাববাচিতা নাস্তি তস্য ক্রান্ত্রস্যাপি ন ক্রার্থতা ৷ অতএব দিতিশকাৎ দোহবখণ্ডনে ইতামাৎ কাপ্যাশিষীতি ক্তিপ্রতায়েন সিদ্ধাদ্পি ঈপ্রতায়ঃ ক্ষতএব বক্ষাতি দিতী-শব্দতের ইতি।

(१৮)। শক্তাদেশ্চ স্ত্রিয়ামী বা ভবতি। শক্তিরিতি শক্ত শক্তো
শস্ত্রবাচকস্থৈব শক্তিশব্দারাত্র পাঠো ন বলবাচকদ্যেতি বহুসমতঃ।
বাষ্টরিতি যক্ত্রধাতোরিঙ্ধাতুকথনে তিঙ্বন্তিঙ্বেতি তিঙ্ কচিন্ন তিঙ্বাদিতি তিঙ্বদ্থাবনিষেধান শঙ্। পদ্ধতিরিতি হন্তেঃ ক্তিঃ পাদরোহ তিঃ পদ্ধতিঃ পদ্ধিমাদৌ সমাসে পাদ ইতি পদাদেশঃ। বস্তিরিত্যাদি
বস্ আচ্ছাদনে অকি লক্ষণে অহি গতৌ অনচ্ গতিষাচনয়োঃ এষু
পূর্ববিত্তিঙ্ ক্যুম্ভতাত্র পাঠোহক্তার্থাদিতি প্রতিষেধে প্রাপ্তে বিধ্যুর্থঃ

শক্তি: শক্তী। শক্তি যথ্<mark>টি পদ্ধতি বস্তি অকতি অংহতি</mark> অঞ্চতি।৭*।

৭৯। অস্বাঙ্গপূর্ব্বাৎ ক্রান্তাদতোদতোদত্ত্রীহেঃ। স্থ্যাপীতা স্থ্যাপিতী। স্বাঙ্গপূর্ব্বাত্ত। উক্তৃদ্ধী সনস্তোদাতাত্ত। বস্তুচ্ছনা।

৮০। পাদস্ভাচ্চ। স্থপাৎ স্থপদী।

৮১। স্বাঙ্গাদযুক্তোপাস্তাদপ্রধানার্থাৎ। স্বতিক্রান্তা কেশান্ স্বতিকেশা স্বতিকেশী চমুক্তা থা

তিঙস্তাদীনান্ত পূর্ব্বেণৈব সিদ্ধে নিয়মার্থ: তিঙস্তানাং মধ্যে এভ্য: শব্দেভ্যঃ । প্রিবামী ভবতি নাক্তেভ্যঃ।

- (१৯)। স্বাঙ্গব্যতিরিক্তপূর্বাৎ ক্রান্তাদন্তোদাতাছহবীহে: দ্রিয়ামী বা ভবতি। স্থরাপীতীতি পা পানে ক্র: বেহযুষচি স্থাদেরাদীদিতামুর্ভৌ কিত্রে চেতি আকারশু ঈকার: এতৎ প্রাণের ব্যাখ্যাতম্। নামীত্য-ক্রেমাং লক্ষণমবহুরীহুর্থম্। প্রবৃদ্ধা চামো বিলুনা চেতি প্রবৃদ্ধবিল নী প্রবৃদ্ধবিল না তদিহ ন ক্লতং বছরীহিণৈর সিদ্ধবাৎ সংজ্ঞাশব্দেষ প্রবৃত্তি-নিমিত্তশাপ্য প্রয়োজনকত্বাৎ সমাসবিশেষগ্রহোহনতি প্রয়োজনকঃ।
- (৮০)। পাদিতি সমাসক্তালোপঃ পাছ্দেব্যুক্তঃ। পাদস্তাৎ শ্বিয়ামী বা ভবতি। স্থাদিতি শোভনো পাদাবস্তা ইতি সমাসঃ স্থাপাগঢ়াচেত্যেকারলুক্ ঈবিধানপক্ষে তু সমাসক্তালোপস্থ পাদঃ শ্বা-দ্যাচি ভদ্ধিত্যে চেতি হ্রস্থম্।
- (৮১)। বহুত্রীহেরিতি নিঘৃত্তং সামাজ্যেন বিধানম্। স্বাঙ্গবাচকাদ-যুক্তোপাস্তাদপ্রধানার্থাৎ স্বিরামী বা স্থাৎ। অতিকেশীতি দিতীয়য়া

শক্তি বৃষ্টি বৃদ্ধরে রাহও পদ্ধমক্ষমংমঞ্চমেত্ত দক্ষিসংখ্যমক্ততি প্রভূতমিথমকিং ।

চন্দ্রম্থী। অপ্রাণিস্থমপি প্রাণিনি দৃষ্টং স্বাক্ষম্। দীর্ঘকেশা দীর্ঘকিশী রথা। প্রাণিনো যথা সংযুক্তং তথা যতাপ্রাণিনস্তদপি স্বাক্ষম্। দীর্ঘম্থা দীর্ঘম্থী প্রতিমা। অদ্রবং মূর্ত্তিমৎ স্বাস্থা প্রাণিস্থমবিকারজম্। অতৎস্থং তত্র দৃষ্টক তত্ম চেতত্তথাযুত্তি স্বাক্ষম্। অস্বাক্ষাত্ত্ — বহুককা বহুজ্ঞানা শ্লক্ষমুখা শালা বন্ধ্রশালা। যুক্তোপান্তাত্ত্ — বহুগুল্ফা।

অব্বাদেঃ ক্রান্তাদাবিতি তৎপুরুষঃ নাত্র কেশশদস্থার্থঃ প্রধানং কিন্তু পূৰ্বপদস্য যতে হত্ৰ যা কেশানতিক্ৰান্তা দৈৰাভিধীয়তে। চন্দ্ৰমুখেতি জ্মনানং মুখং যস্যাঃ সা চক্রমুখা পূর্ব্বার্থেত্যাদিনা বছব্রীহো সমানপদ-⁷লোপ: এবং প্রাত্ম্বাং যস্যা: সা প্রাত্ম্বী প্রাত্ম্যা। অদ্রব্মিত্যাদি মুপনাসিকাভ্যাং যো বায়ঃ নিজ্যমতি স প্রাণঃ সোহস্যাস্তীতি প্রাণী তত্ত্ব যত্তিগৈতি তৎ প্রাণিস্থং কেশমুখাদিস্বাঙ্গমিত্যুচাতে। যতেবং বলককেত্য-ত্রাপি স্বাং হাত আহ অদ্রব্যাতি কফ্স্য দ্রবাত্মকাৎ ন স্বাঙ্গত্ম এবমপি জ্ঞানং স্বাসং স্যাৎ প্রাণেস্থবাং অদ্রবহাচ্চ অত আহ মূর্ত্তিমদিতি কাঠিয়াদি-স্পূৰ্ণবিশেষো মূৰ্তি: তদভাবার জ্ঞানসা স্বাঙ্গত্বং শালায়া অপ্ৰাণিত্বাৎ মুক্ষ-মুখেত্যতা ন মুখ্যা স্বাঙ্গত্বমূ এবমপি শোখ্যা স্বাঙ্গত্বং ন্যাৎ অত আহ অবিকারজমিতি বিকারোধাতুবৈষমাং ততো জাতমিতি বিকারজং ন বিকার-জম্ অবিকারজং শোথদা ধাতুবৈষমাজাতনান স্বাঙ্গন্। যদি প্রাণিস্থং স্বাঙ্গং ভবতি তদা রণ্যাদিপতিতানাং কেশাদীনাং স্বাঙ্গস্থাভাবাং দীর্ঘকেশী রণ্যা ইতি ন স্যাৎ অত আহ অতংস্থমিত্যাদি তন্মিন প্রাণিনি তিষ্ঠতীতি তৎস্থং ন তংস্থম্ অতৎস্থম্ অপ্রাণিস্থমপি কেশাদি শাঙ্গং ভবতি। খদি প্রাণিনি পূর্ম্মং দৃষ্ঠং ভবতি প্রতিমাবয়বানাং তর্হি মুখাদীনাং স্বাঙ্গতা ন স্যাৎ অপ্রাণিস্থাৎ ততণ্চ দীর্ঘমুখী প্রতিমা ইতি ন স্যাৎ অত আহ তস্য ক্রন্ত-ত্তথাযুত্মিতি তদা প্রাণিনঃ স্বাঙ্গং যথাযুত্মিতি যথা যেন প্রকারেৰ সংস্থানবিশেষেণ সংযুতং তথা তেন প্রকাবেণ অপ্রাণিনোহপি যদি যুত্তং ভবতি এবমপি স্বাঙ্গং ভবতীতি। প্রধানার্ধান্ত,—স্থানিখা।

৮২। শৃঙ্গাঙ্গকর্ণদন্তকণ্ঠেষ্ঠিজ্ঞাগাত্রপুচ্ছাচ্চ।
তীক্ষশৃঙ্গা তীক্ষশৃঙ্গী মূদ্বঙ্গা হাদ্বঙ্গী চাক্তকর্ণী চাক্তকর্ণী সমদস্তা
সমদন্তী কিন্নরকণ্ঠা কিন্নরকণ্ঠা বিম্বোষ্ঠা বিম্বোষ্ঠী দীর্ঘজ্ঞা দীর্ঘজঞ্জী স্থগাত্রা স্থগাত্রী কল্যাণপুচ্ছা কল্যাণপুচ্ছী।

৮१ । न द्वांष्ट्रांदिः।

কল্যাণক্রোড়া। ক্রোড় খুর শফ গুদ ভগ বাল গল ইত্যাদি ৭

৮৪। অনাসিকোদরাদ্বতঃ। পৃথুজ্ঘনা।

৮৫। সহ্নঞ্ বিদ্যানপূর্বাৎ।

(৮২ :: বুল্রাপান্তত্বাৎ পূর্ট্রিকাপ্রাপ্তে বিধানম্। শৃঙ্গাদেরপ্রধানার্থাৎ দ্বিধানী বা ভবতি। কিন্নবর্কণ্ঠ ইব কর্প্তো বস্যাং সা কিন্নবর্কণ্ঠ। অত্যাপি কণ্ঠশকঃ স্থাঙ্গবাচ্যের যাদৃক্ স্বরসৌভাগ্যযুক্তঃ কিন্নবর্কণ্ঠঃ ভাদৃশোহস্যা ইত্যর্থাং। অথবা কণ্ঠশকঃ স্বরবাচী অন্মিন্ ব্যাথ্যানে স্থাঙ্গাদিতি পূর্ক্রযোগাদিত্যত্র নাম্বর্ভতে। বিস্বোচ্ঠাতি ওঠোজোঃ সমাসে বা ইত্যকারনুগভাবপক্ষে ঐজেচোহতেত্যোকারঃ।

- (৮৩)। স্বাঙ্গাদিত্যনেন প্রাপ্তে নিষেধলক্ষণান্মেতানি। ক্রোড়াদেরী ন ভবতি। ক্রোড় খুর বাল-গল ভগ গুদ শফমিতাত্র গণে পঠিতম্॥ ক্রোড়াদিরাক্রতিগণঃ। কর ভূজঘোণাশিখাদিকং বিজ্ঞেয়ম্। ক্রোড়াশকঃ গ্রীলিক ইতি আনোক্তেন ভূলকাতে পুংলিক্ষত্বাং ক্রোডশকান্নিষেধেন ন ভবিত্রাম্ এতন্ত, নান্মেষাং মতম্।
- (৮৪) নাসিকোদরবর্জিতাদ্বতেচাহপ্রধানার্থাদা ন ভবতি। জনাসিকোদরাদিতি কিন্? তুঙ্গনাসিকা তুঙ্গনাসিকী তন্দরা তন্দরা।
- (৮৫)। সহ নঞ্বিখনান ইত্যেবং,পূর্ব্বাদপ্রধানার্থাদী ন ভবতি॥ সকেশেতি সহ কেশেন বর্ত্তে ইতি তৃতীয়াস্তেন সহস্ত তুলাযোগ ইতি

^{*} ক্রোড়াদিকে ক্রোড়খুরং শকং গুদং ভগং তথা বালগলং পরাণ্যপি। ৭॥

সকেশা অনাসিকা বিস্তমানোদরা।

৮৬। স্বাঙ্গনমুদায়ান্তাচ্চ।

কল্যাণপাণিপাদা। অসাজসমুদায়ান্তাত্ত্ — কল্যাণং বিভাষানং মুখং যস্তাঃ সা কল্যাণবিভীষানমুখা কল্যাণবিভাষানমুখী।

৮৭। নথমুখান্তানালি।

শূর্ণিখা বজুণখা গোরমুখা কালমুখা। অনান্দি তৃ—শূর্পনিখা প্রিথী বজ্জনখা বজুনখী গোরমুখা গোরমুখী, কালমুখা কালমুখী। ৮৮। ইক্রাদেরানশ্চোঢ়াদে ।

বছব্রীহিঃ সহঃ সো বেতি সহস্ত সঃ। অনাসিকেতি অবিভয়ানা নাসিকা যন্তা ইতি বিগ্রহঃ নঞোহস্ত্যর্থানাঞেতি পক্ষে বিভয়ানপদ-লোপঃ।

⁽৮৬)। স্বাঙ্গসমূদায়াস্তাক্ত দ্রিয়ামী ন ভবতি। কল্যাণং পাণিপাদং যন্তাং সা কল্যাণপাণিপাদা অত্র বহুব্রীহৌ কল্যাণপাণিপাদশকঃ
স্বাঙ্গসমূদায়বাচকান্তঃ কল্যাণবিজ্ঞমানমুখীত্যত্র তু ত্রিপদে বহুব্রীহৌ মুখশক্ষোহন্তো নাসৌ স্বাঙ্গসমূদায়ঃ অয়মর্থো ভাষ্যে ব্যবস্থিতঃ বিজ্ঞমানঞ্চ
তৎ মুখঞ্চেতি বিজ্ঞমানমুখং কল্যাণং বিজ্ঞমানমুখং যন্তা ইতি বহুব্রীহৌ
কল্যানবিজ্ঞমানমুখী ন চ স্বাঙ্গসমূদায়াস্ততা ইতি নিষেধো ন
ভবতি। সহ নঞ্বিজ্ঞমানপূর্ক্যদিত্যত্র পূর্ক্তিহণস্ত ফলং ভাসকারেণ
ব্যবস্থিতং পূর্কশক্ষাবয়ববাচিত্বাৎ সহাত্যবয়বপূর্ক্তমেব স্বাঙ্গং তত্মাৎ
প্রতিষেধা ভবতি কল্যাণবিজ্ঞমানমুখীত্যত্র তুন কেবলং বিজ্ঞামানপূর্ক্রপদান
বয়বং স্বাঙ্গং কিন্তু কল্যাণপূর্বপদাব্যবমপীতি ন ভবতি নিষেধঃ।

⁽৮৭)। নথ মুথ ইত্যেতাভ্যাং সংজ্ঞায়ামী ন ভবতি। শূর্পণ্থা বন্ধ্রণথেতি সংজ্ঞায়ামিত্যমুর্তৌ পূর্মপদে চাবনস্তেতি গ্রুম।

⁽৮৮)। পুংনাম্ন পুংবোগ ইত্যানেন ঈপ্রত্যায়ঃ সিদ্ধ এব সন্নিযোগ-শিষ্টভানো বিধানার্থং লক্ষণম্ ইন্দ্রেণোড়া ইতি ইন্দ্রেণোড়ায়ামেব ইন্দ্র-

তদূঢ়াদৌ গম্যমানে ইন্দ্রাদেরুত্তরে দ্রিয়ামানো ভবতি। ঈ চ। ইক্রেণোঢ়া ইন্দ্রাণী। অন্ঢ়ায়ামপ্যুপচারাৎ। ইন্দ্রু বরুণ ভব শর্ব রুদ্র মৃড় আচার্য্য ।৭#।

৮৯। মাতুলোপাধ্যায়াদানো বা। মাতুলী মাতুলানী উপাধ্যায়ী উপাধ্যায়ানী।

৯০। হিমারণ্যাভ্যাং মহত্ত্ব। মছদ্ধিমং হিমানী অরণ্যানী।

৯১। যবাদ্দু ফীন্থে। ছুন্টো যবো যবানী।

৯২। যবনাল্লিপিভেদে।

বোগেন ইন্দাখা আন ইত্যকারমুচ্চারণার্থং ক্বন্ধা নির্দেশঃ কৃতঃ। আচা-ব্যানীত্যত্র আচার্য্যাদান ইতি গন্ধনিষ্ঠেঃ। ইন্দ্র বরুণ ভব শর্দ্ধা রুদ্রা-চার্য্যো মুদ্রুপ্রপ্রভাদিঃ। চারুধামা মহেন্দ্রাণী জন্মবাহিনীত্যাদি বং কোষেরু দৃশুতে তদ্রুদ্ধাণীবং সাধনীয়ম্। মহেন্দ্রণীতি তু মহতী চামৌ ইন্দ্রাণী চেতি সমাসেহপি সিধ্যতি।

- (৮৯)। মাতৃল উপাধ্যায় ইত্যেতাভ্যামূত্তরে তদ্ঢ়ায়াং বাচ্যায়াম্ আনো বা ভবতি। ঈবিধানস্ত নিতামেব এতদর্থমেবাত্রান ইতি পুনঃ ক্লুত্রন।
- (৯০)। মহত্ত্বে বর্ত্তমানাভ্যাং হিম অরণ্য ইত্যেতাভ্যামূত্তরে স্ত্রিয়ামা ভবতি। তৎসরিযোগে আনশ্চ। মহত্ত্বে বর্ত্তমানয়োরেবা-নয়োঃ স্ত্রাস্থ্য।
- (৯১)। ববশদাদ্রীতে গম্মানে স্ত্রিয়ামী ভবতি। আনশ্চ। অস্তাপি তথৈব স্থীনিঙ্গত্ম। যবানীতি জাত্যস্তরমূচ্যতে তুইত্বঞ্চ যব-জাতেরভাবঃ তদাকারাকুক্তিমাত্রম্।
- (৯২)। যবন ইত্যশ্বান্নিপিভেদে বাচ্যে দ্রিয়ামী ভবতি। আনশ্চ। যবনদেশোদ্রবা যবনাস্তেযাং লিপির্যবনানী তস্তেদমিতি টণ্প্রসঙ্গে বিধা-

इेन्स्राविस्कृत्यो ज्वमूज्वक्रगाहार्यामर्वाम् मथ । १ ।

यवनानी ।

৯০ P ক্ষত্রিয়ার্য্যাৎ স্বার্থে বা। ক্ষত্রিয়া ক্ষত্রিয়াণী অর্ধ্যা অর্ধ্যাণী।

৯৪। প্রারন্ধেচাঢ়ারাম্। পত্নী।

२०। धकानिशृकीक।

একপত্নী। এক সমান বীর পুক্ত ভ্রান্থ পিণ্ড।৬ ≢।

ন। লিপিভেদ ইতি কিম্? যাবনী ভাষা। অভ্যে বদস্তি যবনশক্ষে।

য লিপ্যামভেদোপচারাদর্ভতে তদা যবনানী। ভেদে ভু টণা যাবনী

লিপি:।

- (৯৩)। ক্ষত্রিয় অর্য্য ইত্যেতাভ্যাং স্বার্থে বর্ত্তমানাভ্যাং রিরামী আনশ্চ বা ভবতি। স্বার্থ ইতি ক্ষতম্ উঢ়াদাবিত্যর্থস্থ প্রক্রান্তস্থা নিরাস্বার্থম্। অনরোজাতিঃ স্বার্থঃ। অর্ব্যো বৈশ্বঃ।
- (৯৪)। পতিশকাদ্ঢ়ায়াং বাচ্যাম্ স্তিয়ামী ভবতি। ইকারস্ত নকারশ্চ। পত্যারিতি পঞ্চমাস্তমপি প্রভায়বিধানে আদেশবিধানে চ ষষ্ঠাস্তং বিভক্তিবিপরিণামাদ্বোদ্ধবাম্। উঢ়া চ সম্বন্ধিশক্ষথাৎ যেনোঢ়া তম্ম পত্নীত্যভিধীয়তে।
- (৯৫)। একাদিভ্যশ্চেত্যেবাক্তে পড়ারিত্যমূর্ত্তৌ একাদিপূর্বাৎ পাতিশলাদিশিল ভাতে এব তথাপোকাদিপূর্বাচেতি ক্বতম্ একাদিং পূর্বাবয়বে। যক্ত পত্যারিতি বিশেষার্থসিদ্ধার্থম্। একাদিশ্চ পতিশলস্থাবয়বো ন সম্ভবতীতি পত্যস্তায়ায় ইতি লভাতে তেনায়মর্থো ভবতি। একাদিপূর্বাবয়বাৎ শপত্যস্তায়ায়ঃ দ্রিয়ামী ভবতি উঢ়ায়াং বাচাায়াম্। ইকারস্থ চ নকারঃ। ক্ষতএব একাদিপূর্বস্থ পত্যস্তম্য সম্দায়স্যাপ্রধানার্থতাভাবাং শহুগিয়ান্তবর্জমপ্রধানার্থাদিতি নিষেধশকৈব নাবতরতি। বতোহয়বানামেবাত্রাপ্রধানার্থত্বম্ । বহুবো বীরপতয়োহস্যাং বহুবীর-পতির্নগরীত্যত্র তু বীরপতিশলস্থাপ্রধানার্থত্বায়িষেধা ভবত্যের একাদি-

একাদিকে এক সমান বীরা ল্রাভা তথা হাবপি পিওপুলৌ। ७।

৯৬। অন্তপূৰ্বাদ্বা।

বৃদ্ধপত্নী বৃদ্ধপতিঃ।

৯৭। अभारमर्डाय्रम् ।

অগ্নায়ী। অগ্নি বৃষাকপি পৃতক্রতু কুশীদ কুৎসিত।৫ 🕆।

৯৮। यदनार्वा छात्रका

পূর্ব্নপত্যস্তবিধানাচে। অতএব একাপতিরিয়ং গ্রামস্যেতি বাক্যে ন ভবতি প্রতায়বিধানম্। একপত্নীতি একঃ পতির্যস্যা ইতি বছরীহিঃ এক্ট্রন পত্যা উটারামেব। অন্ট্রায়ান্ত—একপতিরিতি ভবতি। সমানঃ পতিষ্ট্রাঃ সা সপত্নী সমানো দৃগাদাবিতি সমানস্য সভাবঃ। এক ভ্রাতৃ স্থানা বীরঃ পিণ্ডশ্চ পুত্র একাদিঃ।

- (৯৬)। অন্ততো বেতি কর্তব্যে যদন্তপূর্বাদিতি ক্বতং তৎ ফল পূর্ববং ব্যাধ্যেরম্। একাদিভ্যো ব্যতিরিক্তোহন্তঃ। অন্তপূর্ববেরবাং প্রভাষাং শব্দাং স্থিয়ামী বা ভবতি ইকারস্য নকারক। সপূর্বাদিতি ক্তেহপি একাদিভ্যো নিতাবিধানাং। তদন্তোহস্য বিষয়ো ভবত্যেব তথাপান্তপূর্বাদিতি ক্বতং স্পষ্টার্থম্। সামান্তবিশেষ্ট্যায়লভ্যালক্ষণবিভ-ক্তোহর্থঃ স্পষ্টো ভবতীতি। কিঞ্চ সপূর্বাদিতি ক্বতে তুল্যযোগে সহশক্ষ ইতি শঙ্কা স্যাং। এবঞ্চ সতি পূর্বপদাদপি ঈকারনকারো স্যাতাম্। বৃদ্ধঃ পতিরস্যাঃ বৃদ্ধপৃতিঃ বৃদ্ধস্য পত্নী বৃদ্ধপত্নীতি সমাসদ্বয়নাপি প্রয়োগ্রয়মেতং সিধ্যতি। তথাদাশানাং পতিরিয়ং আশাপতিঃ আশাপ্রীত্যদাহরণদ্বয়ং দাতুং যুক্তম্।
- (৯৭)। উঢ়ায়াং গম্যমানায়াং দ্রিয়াং বর্ত্তমানাদগ্ন্যাদেন মি উত্তরে ঈ ভবতি। তৎসন্ধিযোগে ডারশ্চ। অগ্নায়ীতি অগ্নিনা উঢ়া ডিজাদি-কারলোপঃ। অগ্নি কুশীদ ব্যাকপি কুৎসিতাঃ পৃতক্রভুম্ভথাগ্লাদিঃ।
- (৯৮)। উঢ়ায়াং গম্মানায়াং স্তিয়াং বর্তমানাশ্বস্থশকাত্ত্তরে ঈ বা ভবতি। তৎসন্নিয়োগে ডায়ো ডাবশ্চ ভবতি। উভয়োর্বিকল্লেন বিধানং ভবতীত্যর্থঃ অতো রূপত্রয়ম্।
- শ্বাদিকেইথিস্ততো ব্যাকর্পি: কুশীদ পৃতক্রতু কুৎসিতা
 শ্বাদি । ধ ।

মনারী মনাবী মনুঃ।

৯৯। বনঃ কাদ্যজন্তবিহিতানো রশ্চ।
পরলোকদৃথরী পীবরী শর্বরী। অকান্তজন্তবিহিতাত্ত্—সহযুধ্বা
যন্ত্রা বাহুল্যান্মৃদ্রই রুহবরীত্যাদয়ঃ।

১০০। বহুব্রীহো বা।

वन्तीतौर्ता वङ्शीवर्र्या वङ्शीरव। ঈশ্বরেক্যুক্তো নেষ্যতে।

১০১। অন্তর্বতো মুশ্চ গর্ভবত্যাম্।

(৯৯)। কাদেরজন্তান্ত বিহিতাদন উত্তরে দ্রিয়ামী ভবতি। নকারশ্চর্বেল:। নাস্তবাদীপ্রত্যয়ে সিদ্ধে ঈবিধানং রেফসিয়য়ুকার্থং তেন যত্র বনাস্তাদ্রেফা ন ভবতি তত্র ঈ চ ন ভবতি যজা দ্রী। পরলোকদৃশ্বরীতি কশ্বণো দৃশ ইতি বন্। পীবরীতি পীঙ্ পানে ক্রাদেং ক্রিতি কন্। শর্ব-রীতি শৃ হিংসায়াং কন্ বহুলবচনাদ্গুণঃ রেফাছত্তরস্তাপ্যস্তাজস্তবিহিত্তথনপ্রের ক্রিমাশন্দেহয়ং যয়া হিংসা ভবতীতি সাভিধীয়তে প্রাদেবরজ্ত্যালি শর্বরীত্যুদাস্ত রেজিশন্দাত্রতিক্রনাভিধীয়তে। সহযুদ্ধেতি যুধ্ সংপ্রহারে সহাৎ ক্রঞ্ যুধ ইতি বন্ যজা ইতি স্বাদেবর্মিতি বন্। যস্তকান্ত জন্তবিহিতার ভবতি। কথং মন্বরী ক্রহ্বরীতি যতো মনী হর্ষে কহ্ জন্মনি প্রান্তবিধিতি আদিপদেন পদ্রীত্যাদি।

- (১০০:। পূর্বলক্ষণেন বিহিতাবীকাররেফৌ বছব্রীহৌ বা ভবত:।
 বহব: গীবানো যযোন গর্যোত্তে বহুপীবর্য্যো অনেন ত্যক্তে পক্ষে ঈচান্তান
 ইতি বিকল্পবিহিতডাপ্রত্যয়েন বছপীবে ইতি ভবতি। নমু ঈ চ তেন
 ত্যক্তে পক্ষে বিধীয়তে তর্হি বহুপীব্যাবিতি চতুর্যোহিপি পক্ষঃ সম্ভবতি
 অত আহ ঈত্ববেফযুক্তো নেষ্যত ইতি ঈকারম্ভ অরেফেণ যুক্তো নেষ্যতে
 রেফেণেব যুক্ত ইত্যর্থ:।
- (১০১)। অন্তর্ব চ্ছন্দাৎ গর্ভবত্যাং ব্যাচারাং প্রিরামী ভবতি। মুশ্চ। উকার উচ্চারণার্থঃ। উনিবাদীপ্রত্যয়ঃ সিদ্ধ এব তৎসন্নিবোগে মু বিধান

অন্তব ত্ৰী।

১০২। পতিমতোহবৈধব্যে মো বশ্চ। পতিৰত্নী।

১০৩। यृनस्टिः। स्रुविकः। यूवकी हेमस्त्रज्ञानी।

२०८। श्रेष्ट्रारम्बः।

बक् ।

ন

১০৫। উদন্তানামুধ্যজাতেঃ।

1:

ব্ৰহ্মবন্ধুঃ। অমনুষ্যজাতেস্ত্ৰ—স্থাসুঃ তন্ত্ৰঃ।

্ন

নার্থং বচনষ্। তদস্ভাস্ত্যন্ত্রিন বা মতুরিতি মতুপ্রভারেন অন্তর্মতা অন্তি সা এবাস্তর্গ ছেম্বেনাভিণীয়তে অতো শর্ভবত্যা এবাভিধানং সম্ভবতী জ্ঞ্ নির্দেশঃ। গর্ভবত্যামিতি কিম্পু অন্তর্বতী শালা।

- (১০২)। পতিসজ্ঞাদবৈধব্যে বাচ্যে প্রিরামী ভবতি স্থান্ত মকাবশু চ বকার:। অবৈধব্যবচনাৎ পতিশব্দোহ্যং পাণিগৃহী তবচন ইতি স্চিত্ম। অবৈধব্য ইতি কিম্ ? পতিমতী পৃথা।
- (১০•)। যুবন্ ইত্যন্ত্রাং ব্রিয়াং তির্ভ্রতি। নাস্তত্বাৎ প্রাপ্ত জ্ব ক্রাণ্ডাই ক্রথং তাই যুবতী ক্ষত আহ ইদস্তত্বাদীতি ইদস্তান দক্তার্থাদিত্যনেন পাক্ষিক ঈ ইতি শেষঃ নতু ইদস্তানমুধ্যজ্ঞাতেরিত্যনেন নিত্যঃ। নহি যুবতিশব্যো মনুষ্যজ্ঞাতিবচনঃ কিন্তু ব্যোবিশেষবচনঃ।
- (১০৪)। পঙ্গ্বাদেরুত্তরে স্তিয়ামূর্ভবতি। উত্তরঘোগৈরাদিশকঃ প্রপঞ্চঃ।
- (>•৫)। উকারাস্তান্মুযাজাতিবচনাৎ স্ত্রিয়ামূর্ভবতি। ব্রহ্মবন্ধূরিতি ব্রহ্মা বন্ধৃব্যা ইতি বহুবীহিঃ এবং ধাবন্ধঃ এতৌ শন্দো কস্তান্ধিৎ ব্রাহ্মণকাতৌ বর্ত্তেে জাতিথমিহ অসব লিঙ্গখাৎ যতঃ এতৌ স্বভাবাৎ স্ত্রীপুংলিকাবেব। স্থান্ধুরিতি স্থাধাতোর্জ্যানেঃ স্কুরিতি স্থান্ধ্রিত তন্থ বিস্তারে বাদেরুণানির ভাদাবিতি উণ্ বহুলবচনাদ্র্দ্ধ্যভাবঃ। নৈতরোঃ
 শক্ষোম্প্রাক্ষাতিবাচিত্ব। দীর্ঘান্তনুশক্ষেন স্মাস ইতি ক্ল্যাদের্ভিতি

নতু স্থতনুষত্বপালয়াত্মসম্ভৌং বরতত্ব সংপ্রবদন্তি কুকুটা ইত্যত্র দীর্ঘান্তস্থতদীশব্দেন সমাসঃ।

১০৬। ভারোরিত্যেকে। ভীরঃ। তথাচ, ভাবিনী কামিনী ভীরঃ স্থন্দরী দয়িতা প্রিয়েডি ত্রিকাণ্ডম্।

১০৭। কজকমগুলুভ্যাং নামি।
ক্রিনিশিমাতা কমগুলুনাম কাচিৎ।
(১০৮। বাহবস্তাচ্চ।
ভাবাহুঃ মদ্রবাহুর্নাম কাচিৎ। নাম্নীত্যের ব্তবাহঃ।
১০৯। শুশুরাহুল্লোপশ্চ।
শুশুর

১১০। উক্রতরপদাদোপ**ে**ন্য।

তম্বাতোরঙা দীর্ঘান্তোহপি তন্শকো ব্যুৎপাদিতঃ তায়াং প্রয়োগো ন পুনরুণ প্রত্যয়ন্তভ্য সমাসশ্চায়ং স্ত্রীবাচকেন তন্শকেন কর্মণারয়ঃ শরীরবাচকেন চ বহুরীহৌ কপ্রতায়োহনিত্যয়াৎ নিরাক্রণীয়ঃ। ধেয়ু-করেণুক্রকরাকাদয়ো জাতেবাচকা এব নতু মন্ত্রাজাতেঃ। অলাবৃকর্জক্শকো তু ক্রবাদেরভিতি উঙ্জাবেব। বহুলাধিকারাৎ ধোপাঙ্খায় ভবতি অধ্বযু্তিন রিয়ং ব্রাহ্মণী।

- (১০৬)। ভীরুশকাৎ স্থিয়ামূর্ভবতীত্যেকে। মন্নুশান্ধাতেঃ পূর্ব্বেণ সিন্ধে অমন্নুযাজাত্যর্থং বচনম্। অতএব ত্রিকাঞ্চং প্রমাণাত্তন দর্শিতবান্। শিপ্তপ্রয়োগোহপি দৃষ্ঠতে। তাজ নবসঙ্গমতীরু বল্লভিমিতি।
 - (> ॰ १)। কদ্রুকমগুলুশকাভ্যাং সংজ্ঞারাং বিষয়ে প্রিয়ানূর্ভবতি।
- (> •৮)। বাহবস্তাচ শব্দাৎ সংজ্ঞায়াং বিষয়ে ফ্রিয়ামূর্ভবতি। বৃত্ত-বাছরিতি বৃত্তী বাহু যস্তা ইতি বছব্রীছি:। বৃত্তী তু পরিমণ্ডলো।
- (১০১)। শশুরশব্দাৎ স্তিরামূর্ভবতি। উকারত লোপঃ। শশুরিতি অদিব্লুগিত্যকারলুক্।
 - (১১০)। উরুরুত্তরপদং বস্ত তদুরুত্তরগদং তত্মান্নাম ঔপম্যে

कपनी खर्खा तः। व्यानी भरा जू। इर्छा तः।

১১১। সহসহিতসংহিতসফললক্ষণবামপূর্বীচ্চ।
সহোরঃ সহিতোরঃ সংহিতোরঃ সফলোরঃ লক্ষণোরঃ বামোরঃ।
অমুত্রপদাত্য। হস্ত ইব সাম্যুরুর্যস্যাঃ সালহস্তমাম্যুরুঃ।

১১২। উক্তবিশেষবর্জমীপ্রত্যয়ো নানদন্তাং।
গৌঃ বর্ষাভূঃ। অমরকোষে তু। বর্ষাভূী কমঠী তুলি রিতাপপাঠঃ। শিশুঃ শিতিঃ পঞ্চকুমারিঃ।

১১७। विङ्किवञ्चानशोक्तानिकागीरवारक।

গমামানে স্থিয়ামূর্ভবতি। কদলীস্তস্তোদারিতি কদলীস্তস্তাবিব উদ্ধ যঠ। ইতি বহুরীহিঃ পূর্দ্ধার্থেত্যাদিনা ইবুপদলোপঃ।

(১১১)। সহাদিপূর্লাক্ত উন্তরপদাং খ্রিয়ামূর্রকি। অনৌপম্যার্থং বচনম্। হস্তবাম্যুক্রিতি নাত্র উক্লন্দ উত্তরপদং কিন্তু
বাম্কেশকঃ অত এব উর্ব্রেডাদিত্যেব সিদ্ধে উত্তররপদাদিতি কৃতং পূর্বেহত্তবিয়াতং প্রত্যুদাহরণমিহ তু কৃত্যত্রাপু ্যন্তরপদাদিত্যস্যান্তর্ভিহ্চনাথ্য্।
সঞ্জ তু সহিত্রস্বাম্যুক্রিতি প্রত্যুদাহরণীয়ন্। সংহিত্শকে সমস্ত সহিত্ব
যোবেতি মলোপেন সহিত্যিদ্ধা একদেশবিক্ত্যনন্তবন্তবিতি ভাষাং
সহিত্যুহণে সিদ্ধে যৎ সহিত্যোপাদানং ত্রিভ্যানং হিত্যস্প্রেতি ব্যুৎপত্তাব্যি
সহিত্যুক্রিতি সিদ্ধার্থমিতি রক্ষিতেন ব্যাখ্যাতম্।

(১১২। ১১০)। উক্তবিশেশং বর্জায়িয় ঈপ্রত্যায়াহনদন্তার ভবতি। অকারায়াদেব ভবতীতার্থঃ। গৌরিত্যত্র বর্ষাভূরিতাত্র চ জাতেরন্ত্রীনিয়তাদয়োপায়াদিতি শিশুরিতাত্র বয়স্যচরমে ইতি শিতিরিতাত্র তোপায়াত্রক ন ইতি। পঞ্চরমার্যাঃ সমাসতাঃ পঞ্চরুমারিঃ তন্তেদমিতি টণ্ দিয়াদ্যাদিত্যাদিনা টণ্লুক্ পঞ্চুমারিরিত্যত্র দিগোলিত ঈপ্রত্যয়ো ন ভবতি। দিগোরপ্রধানার্থয়াদপ্যত্র নিষেধঃ শক্যতে কলুম্। উক্তবিশেষস্ত ইন্তারামুয়াজাতেঃ কুন্তাদেঃ পাদ্সাদিত্যাদেরন-দস্তাদেব ভবতি। বর্ষাভূত্যাদি বর্ষাভূঃ কমঠী ভুলিরিতি সংপাঠঃ

১:৪। ঋতুগিয়ান্তবর্জমপ্রধানার্ধাৎ। বিভক্রচরা অভিকুক্টা। ঋতুগিলান্তান্ত্র। স্থভাতী।

১১৫। টণ্তদ্ন্দাদো।

তস্তা রন্দমিত্যাদাবর্থে•টণ্ ভবতি। নূণাং রন্দং নারং কাকম্।

এং নৈতিৎ স্পাধীকতং নামোহত ইত্যাদাত ইতি ঈবিধানপ্রকরণে সর্মান্ত্রতিত স্থানবিশেষেণ তু তল্প বাধনং ক্রিয়ন্তে। ণিঙিত্যাদি। ক্রেয়িঙ্কিবস্তাদিপি ইন্দাৎ ইন্দাণীতি পদমিছেন্তি। ইন্দ্রমাচপ্টে নাম ইন্দাদিনা ণিঙ্ অনেকাচমিত্যাদিনা অকাবলোপং ততঃ কিপ্ কিবসোচতি ণিঙ্লোপঃ ইন্দ্রা উচা একদেশবিক্তম্নল্যবন্ধবতীতি ইন্দ্রানানিতাদাবিতি আনঃ ঈচ। ইন্দ্রাণীতি কেচিদেবং সাধ্যন্তি। অন্তেসমানল্যায়েন বন্ধানীত্যালিপি।

(১১৭)। ঝদন্তমূগিদন্তং নকারান্তঞ্চ বর্জীয় অন্তন্মানপ্রধানার্থানীপ্রত্যয়ো ন ভবতি। এতদেব নিষেধবিধানং জ্ঞাপকং প্রধানার্থাং ভদন্তাদপি স্ত্রীবিহিতপ্রত্যয়া ভবন্তি। বহুকুকচরেতি বহুবঃ কুরুচরা অন্তামিত্যন্তান্ত পদার্থন্ত প্রধানার্থহাদপি অধিকরণাচ্চেতি উদ্ভন্তমঞ্জানম্। কুরুচরীত্যক্ত তু উত্তরপদমেব প্রধানম্। অতিকুকুটেতি জাতিবাচকন্ত কুকুটশক্ষাপ্রধানার্থকাং। এবং বহুবে। মদা যন্তাং সা বহুনদা ভূমিরিত্যান্যপি। স্থলাত্রীতি শোভনো লাতা যন্তাং সা স্থলাত্রী লাতুর্নস্থতাবিতি প্রতিবেধাং কাদির্ঝাদারিতি কো ন ভবতি। অতিভবতী স্মতিরাজীত্যাদারপি অপ্রধানার্থকাণীপ্রত্যয়ো ভবতি।

(১৯৫)। তদহ ত্যাদৌ টিকণং বক্ষাতি তক্ষাৎ প্রাগ্থেহর্থা বাচাান্তে তদ্বৃন্দাদয়ঃ তেম্ব্রমৌংসর্গিকষ্টণ্ বিশেষবিহিতৈস্ত প্রত্যয়ন্তর্বাধ্যতে। স্থিহতকাং যন্ত্য ক্রম বাচাং তত্মাদেব ত্রিতোংপত্তিঃ। যনা তু সম্বন্ষ্ঠ্যা সিদ্ধং ন গামিতি পদং বৃন্দমিতানেন সম্বধ্যতে তদা নূপাং বৃন্দমিতি বাক্যং পাক্ষিকে ষ্ঠাসমাদে তু নৃবৃন্দমিতি। নামস্ত তম্ভ বৃন্দমিত্যর্পে বিহিতেন টণা নারমিতি নাস্ভি কণ্চিদ্বিরোধং এবমুত্তর্ঞাপি।

১১৬। ভিকাদেশ্চ। ভৈক্ষম্। ভিক্ষা ক্ষেত্ৰ করীষ অক্সার সহস্র পদ্ধতি দক্ষিণা ধর্মন্ অথর্বন্ গর্ভিণী অহন্ *। ১১।

১১৭। যুবতেঃ পৃংবদ্বিকল্পশ্চ।

যৌবতং যৌবনম্। তথাচ, স্বরূপমভিনেপথাং কলাকুশলযৌবতম্। যস্ত পুণ্যকৃতঃ প্রৈষ্যং সফলং তম্ম যৌবনমিতি
ভাষ্যম্।

১১৮। অশাদীয়**শ্চ।** আশুম্ অশীয়ম্।

⁽১১৬)। তম্ম বৃন্দমিতান্মিরর্থে ভিক্ষাদেঃ পরে টণ্ ভবতি। উৎদর্গিকসৈণ্ অচিত্ত্বাটিকণা বাধিতঃ অন্দান্তাদেশ্চ ণটা তদ্বাধনার্থং পুনর্পণ্ বিধানং গর্ভিণীশব্দাৎ যদি ণট্ আৎ তদা যাজাদিবনেয় ইতি তরা-দিয়াৎ পুংবদ্বাবে অনীতদ্বিতাচ্যয়োশ্চেতি নলুক্ আৎ টণি তু গাণি বিদ্ণীত্যাদিনা নিদেধান ভবতি। ভিক্ষাক্ষেত্রকবীষাঙ্গারসহস্রাণি দক্ষিণা বর্মন্ গর্ভিণ্যপর্কন্পদ্ধত্যহনিতীচ্ছন্তি ভিক্ষাদি। অন্ধারশকাৎ পাশাদি-ছাদ্যদ্পি ভবতি।

⁽১১৭)। অক্লান্তানিত্বাৎ প্রাপ্তস্ত পটো বাধনার্থং বচনম্। যুবতে-স্তদ্দ্দিতানিত্রতে টণ্ ভবতি। পুংবদ্ধিকল্পচ। পূর্ববিৎ পুংবদ্ধাবে প্রাপ্তে বিকল্পঃ। যৌবননিতি পুংবদ্ধাবাৎ যুনস্তিরিতি স্ত্রাধিকারবিহিত্ত ভিপ্রত্যরশ্ত নিবৃত্তিঃ অভাবকর্ত্রতে চেত্যাদিনা নলুক্নিষেধঃ। জয়াদিত্যা-দয়ো যৌবতমিতীচ্ছন্তি ভাষ্যকারস্ত যৌবনমিত্যুভয়মভদর্শনাদ্ত্র বিকল্প উক্তঃ।

⁽১১৮)। অশ্বশকাং তশু বৃন্দমিত্যশ্বিরপ্থে ইয়ো ভবঙি। চকারাট্রণ্ চ। টণি পূর্ব্বেণ প্রাপ্থে ইয়ার্থং বচনম্।

ভিক্ষাক্ষেত্র করীধ পদ্ধতি ততো বর্দ্ময়য়য়য় গভিণী।
 অক্সারোম্থ সহত্রমত্র গদিতোম্থর্কা তথা দক্ষিণা ১৯।

১১৯। अञ्चलाखाटमर्ग है। मधिनाः वृक्तः नाधः वाक्तम्।

১২০। খণ্ডিকাদেশ্চ।

খাণ্ডিকং শোবম্। খণ্ডিক শন্যুগ বরতা হরিদ্রা বড়বা হল বন্ধ ভিক্ষুক শুক উল্ক অহন্ * ১১।।

১২১। ক্ষোদ্রকমালব্যাৎ সেনানান্নি। ক্ষুদ্রকো মালবশ্চ নাম ক্ষত্রিরস্তয়োরপত্যে ক্ষোদ্রকমালব্যো

(১১৯)। অনুদাত্ত আদির্যস্থানাহনুদাতাদিস্তস্মাত্তদ্দমিতাশিরত্ত্বিধানম্। দাগুং বান্দমিতি দণ্ডিনাং
নিদনাং বৃন্দমিতি পটি ক্রতে অনীতদ্ধিতাচ্যয়োকেতি নকারলুক্। যদি
টেণ্ স্থাৎ তদা সরক্ষচারীত্যাদিন। নলুগ্নিষেধঃ স্যাৎ। অনুদাত্যাদিশ্বং
দাস্রান্তরলক্ষণাৎ তত্ত্রপদর্শনাদ্য বিজ্ঞেষ্যম।

(১২০)। থণ্ডিকাদেশ্চ তম্ম বৃদ্দমিতার্থে ণড়্ ভবতি। অস্মিন্
গণে যেহচিন্তান্তেভাষ্টিকপি প্রাপ্তে যে আত্মদান্তান্তেভাষ্টিপি প্রাপ্তে যে আত্মদান্তান্তেভাষ্টিপি প্রাপ্তে ব্য বিধানম্। শৌবনিতি অনীতন্ধিতাচ্যয়োশ্চেতি নকারলুক্। যদি উপ্ স্থাৎ তদা অভাব ইত্যাদিনা নিষেধঃ স্থাৎ শুনঃ সঙ্কোচে ইত্যাস্য উল্যেখ বিষয়ঃ। থণ্ডিক শুকশ্বন্বড়বাযুগবরত্রাশ্চ ভিক্ষকোল্কৌ হলবন্ধোহথ হরিদ্রাহনিত্যেকাধিকৈদ্শিভিঃ।

(১২১)। ক্ষোদ্রকমালবাশকান্তদ্দমিতার্থে দেনায়াং বাচাায়াং ণড়্ভবতি। ক্ষোদ্রকমালবাানিতি ক্ষুদ্রশকাৎ জনপদরূপাৎ ক্ষাপ্রিয়ানিতি গট্ মালবশকাৎ অসালেয়গান্ধারেবাদিকৈজাতো ণ্য ইতি পাঃ রুম্ ধদা তেয়াং বৃদ্দমিতি বহুবর্থে দ্বন্ধঃ তদা বহুষ্ লোপিনাং বহুবর্থদিকেন-শেষয়োরিতি অপত্যপ্রতায়স্যা লুক্। বৃদ্দার্থপ্রতায়ে কর্তব্যে নাজাদিন তন্বুদ্রাদাবিতি প্রতিষেধাং মালবাশক্স্য তিন্ধিত্সালুকি সতি ক্ষুদ্রক্মালবাান য়ট ক্তে অপত্যপ্রানাতীতি ধ্কারলুক্। অত্যে বদস্তি নাজাদিন

খণ্ডিকাদৌ খণ্ডিকঃ শ্বা বরত্রা বড়বা শুকঃ।
 হরিদ্রা ভিক্ষকোল,কৌ হলবন্ধো যুগাহনী।>২ ।।

তয়োর নিং ক্ষোদ্রকমালবী সেনা। অসেনানাম্মি তু। ক্ষোদ্রক-মালবকম্।

১২২। পশোডুণ্। পশ্নাং পৃষ্ঠাস্থাং রুন্দং পার্ষ্।

১২০। উক্ষোষ্ট্রোরভারাজরাজন্যরাজপুত্রাজর্দ্ধবংসমনুষ্যাপত্যপ্রতায়ান্তাদকণ্।
ভক্ষকম্ উট্রকম্ উরভ্রকং রাজকং রাজন্তকং রাজপুত্রকম্ আজকং
বার্দ্ধিং বাৎসকং মানুষ্যকং দাক্ষিকং গার্গকম্।

১২৪। কেদারাচ্চ। কৈদারকম।

>२०। शिलकाशाः यण्। शालिकाम् किमार्थाम्। "

তদ্বন্দানাবিতি কৌদ্রক্স্যাপি লুগ্নিষ্ণে ক্ষোদ্রক্মালব্যাদেব প্রত্যয়:। কৌদ্রক্মালবক্মিতি উক্ষোষ্ট্রেত্যাদিনা অকণ্।

(১২২)। পশুশিকাৎ তদ্য রুলমিত্যর্থে ডুণ্ ভবতি। বকারো-হরমন্ত্যঃ ডিত্রাছফারলুক্। পশুনিমিত্যনার্থং ব্যাচকার পৃষ্ঠাস্থামিতি।

(১২০)। তম্ম বৃদ্দিতাম্মির্গে উক্ষাদের তরেহকণ্ ভবতি।

উক্ষকমিতি অনীত্যাদিনা নকারলুক্। রাজ্ঞা ক্ষান্তির ইতি যপ্রত্যয়াস্তো
রাজন্ত শক্ষা মনোর্জাতে যাহণাবিতি যাপ্রভাষাস্তো নান্ত্যাশকণ এতে

শক্ষো ফাতিমাত্রণাচকৌ ন স্বপত্যাভিষারক প্রভাষাস্তাবিতি পৃথক্নির্দিন্তৌ
অতএব রাজন্তকং মানুষ্যকমিতাত্র অপত্যস্তানাতীতি ফ্কারলোপোহপি
ন ভবতি। দার্জিকমিতি অদন্তাচ্চেতি ইণ্ গার্গকমিতি গর্গাদের্ঘণ্
পৌজাদাবিতি যণ্।

(১২৪)। কেনারশব্দান্তস্য রুক্ষমিত্যম্মির্থেইকণ্ ভবতি। যোগ-বিভাগ উত্তরার্থঃ। অচিতাদ্বিহিত্স্য টিকণো বাধকঃ।

(১২৫)। গণিকাশদাৎ কেদারশকাচ্চ তদ্য বৃন্দমিত্যন্ত্রির্থে যণ্

* ছবতি। গাণিকামিত্যাদি অদিপ্র্গিত্যাকারাকারয়োলুক্।

১২৬। কেশ†চচ। কৈশুম্। •

১২৭। কবচিকেদারাক টিকণ্। কাবচিকং কৈদারিকং কৈশিকম্।

১২৮। হস্ত্যচিত্তাৎ। হাস্তিকং বালহাস্তিকম্ আপূপিকম্। ১২৯। ধেনোরনঞঃ।

হিংমুকং গৌধৈনুকম্। নঞস্তা আধৈনবম্।

্রী ১০০। ঈনোহহুঃ ক্রতো।

⁽১২৬)। তশু বৃদ্দমিতাশ্বির্থে কেশশকাচ্চ যণ্ ভবতি। অচিন্তা-দ্বিহিত্স টিকণোহয়মপ্রাদঃ।

⁽১২৭)। তম্স র্ন্দমিতাশিরতেথি কবচিন ইতাশ্বাৎ কেদারাৎ কেশাচচ টিকণ্ভৰতি।

⁽১০৮)। হস্তিশকান চিত্তবাচকাক্ত তম্ম বৃন্দমিতা আন্তর্থ টিকণ্ ভবতি।
অচিত্ত ইত্যাস্থান স্বরূপস্থা গ্রহণ যতে। ভিক্ষাদের চিত্তবিহিত্সা ইক্ণো
বাধনার্থম্। ভিক্ষাদিশ দান্প গ্রহিত তজ্ ক্ষাপ্যতি নেদং স্বরূপ গ্রহণ ম্ অন্থথা
টিণ্ তঙ্গুলা বিভিন্ননা টণ্ সিদ্ধৌ ভিক্ষাদেষ্টণ্ বিধানমনর্থকং ক্যাৎ।
ধেনোরন এই ইত্যান নঞ্প্রতিষ্ঠেশন জ্ঞাপিতং বৃন্দ বিহিত্য সদন্তেহ পি
ভবস্তীতি। অতো বালহান্তিক মিত্যু দাহত্য অন্ধ্রহাড়া দেবাক্রতিগণ আছেভ্রপদ্রন্ধিঃ লিঙ্গাবিশিষ্ট্যোপি গ্রহণাৎ হস্তিনীনাং সমূহে। হান্তিক ম্।

⁽১২৯)। অবিভয়াননজো ধেকশকান্তপ্ত রন্দমিতাপ্রির্থে টিকণ্
ভবতি। ধৈক্কমিতি ইস্ক্জান্তাদিকক্ষেত্ইতি ইকারল্ক। আধৈনবমিতি তদ্নাদাব্ংসাদেণ্ডিতি গট্উংসাদিগণে বন্ধরাদসমাস ইতি
প্রতিষেধাং তদগণে পঠিতেভাক্দন্তভোহিপি গড্ভবতি। জঙ্গলধেক্বলজান্তক্ষোত্রে বা পূর্বে নিতামিত্যভরপদর্ক্ষিঃ।

⁽১৩০)। অহন্ ইত্যামাৎ তম্ম বৃন্দনিত্যাম্মির্মের্থ ক্রতৌ বিষয়ে ঈলো

ক্রতাবহাং বৃন্দম্ অহীনঃ। অক্রতো তু। আহুম্।

১০১। ব্ৰাহ্মণমাণবৰাড়বপৃষ্ঠাদ্ যৎ। ব্ৰাহ্মণ্যং মাণব্যং বাড়ব্যং পৃষ্ঠ্যম্।

্রতথ। স্থোত্রার্থপৃষ্ঠাৎ ক্রতাবিত্যেকে। পৃষ্ঠ্যঃ ষড়হো যাগঃ।

১৩৩। পাশাদেঃ স্ত্রিয়াম্। পাশা। পাশ তৃণ্ধ্ম হল বাত বন অঙ্গাকৃ নড় পিটক পোর্ট-গল ১০ া

> 1 পোটগলো দ্বাবিত্যেক। পোট্যা গল্যা।

১৩৫। খলগোরপাচ্চ।

ভবতি। অহীন ইতি ঈনেহক্ ইতি নকারলুক্। আহুমিতি থণ্ডিকাদে-শ্চেতি ণট্ ভিক্ষাদিরাটুণ্বা। ঈনেহক্ ইতি নিয়মারকারলুগ্ন ভবতি। শসাদ্যচ্তেতাহযুগ্ম ইত্যকারদুক্।

(১৩১) ৷ ব্রাহ্মণাদেস্তস্থা বৃন্দমিত্যর্থে যন্তবতি !

(১৩২)। স্তোত্রার্থবাচকাৎ পৃষ্ঠশব্দাৎ ক্রতুবিষয়ে বদ্ধবতি ইতোকে পৃষ্ঠাঃ বড়কো যাগবিশেষঃ তথাচ, পৃষ্ঠা।হীনৌ ক্রতাবিতি চলুপ্ত সূত্রম্।

(১০৩1১৩৪)। পাশাদেশুশু বৃন্ধমিতার্থে যদ্ভবতি। স চ ক্রীলিঞ্চে বর্ততে। এতদ্বাতিরি জানাং বৃন্ধবিহিতপ্রত্যয়ানাং ক্লীবস্বম্। অহীনপ্রসা-য়োস্ত পুংস্কং স্বভাবাৎ। পাশ ভূগ ধূম হল বন পোটগলাঙ্কার বাত নড় পিটকাঃ ইতি দশভিঃ পাশাদিঃ। পোটগলৌ দ্বাবিতি স্বরস্ত্যেকে।

(১৩৫)। থলাদেকত বৃদ্দমিত্যশ্বিরর্থে যদ্ভবতি। দ্রিয়াং টণি প্রাপ্তে গোরজাদি প্রাপ্তে যদিতি যতি সিদ্ধে গোশন্দো গাদানং স্ত্রীস্বার্থং ত্রপ্রত্যয়া-ক্ষি। ত্রয়াণাং পাশাদিপাঠে কর্ত্তবো পৃথক্করণমুত্তরার্থম্। গবোতি তদ্ধিত বে ইতাবাদেশঃ।

পাশস্তৃণং ধুমহলৌ বনং নয়ঃ বাতন্তথা পোটগলঃ সমীরিতঃ।
 অঙ্গার এবং পিটকল্চ স্থরিভিঃ পাশাদিকা ইত্যমূদীরিতা দশ। ১০।

थला। गवा। तथा।

३०७ | हेन् ख कम्रान्छ।

খলিনী গোত্রা রথকড্যা।

১৩१। क्नुभारमतिन्।

क्नुगिनी পणिनी निननी छेम् किनी क्र्यू पिनी छ। ।

১০। গ্রামগজজনবন্ধু সহায়াতঃ।

গ্রামতী প্রজতা জনতা বন্ধুতা সহায়তা।

১৩৯। বাতাদূলঃ।

বাতুলঃ।

১৪०। श्रूक्षारिष्ठेश्रग्।

পৌরুষেয়ম্।

১৪১। চরণাদ্ধর্মবিহিতপ্রতায়াঃ।

- (১৩৭)। কুন্মাদেস্ক সুক্মিতার্থে ইন্ ভবতি প্রিরাম্। মত্বণী-রেন ইনাপি প্রেরোগঃ সিধ্যতি। মত্বর্থ ইনস্ক চ বাচ্যালিঙ্গতা অস্ত চ নিবতস্ত্রীত্বম্! অর্থভেদস্ত মহান্।
 - (১৩৮)। গ্রামাদেওস্থ রুন্দমিতার্থে তো ভবতি গ্রিয়াম্।
 - (১০৯)। বাতশব্দাৎ তক্ত বৃন্দমিত্যর্থে উলো ভবতি।
 - (১৪০)। পুরুষশকাত্তস্ত বৃন্দমিতার্থে টেয়ণ্ ভবতি।
- (১৪১)। চরণশকো বেদনিমিত্তে পুরুষে বর্ত্ততে। চরণবাচকাচ্ছকাৎ যন্ত্রাং বে ধর্মবিহিতাঃ প্রভায়ান্ত এব ভক্ত বৃন্দমিত্যর্থে ভবস্তি। ছান্দোগ্যমিত্যাদি। ঔক্থিক বাজ্ঞিক ছন্দোগ বহুত্ত এটাদ্যণিত্তি যণ্প্রতায়ং চরণবাচকেভা এতেজা এব ধর্মে বিধান্ততি স এব প্রভায়ন্তেভা এব বৃন্দেহণি ভবতি। কাঠকং কালাপক্মিতি চরণান্ধর্মানিয়ায়রোরিত্যকণং ধর্মে বিধান্ততি স এব তন্মাদ্রন্দেহণি ভবতি। এবমপরমপ্যহুম্। তন্যধা আথর্বণক্ষাদ্যক্ষাদ্যক্তি টণং বিধান্তিভি

⁽১৩৬)। ধল গোরথ ইত্যেতেভাস্তখ বৃন্দমিতার্থে যথাক্রমম্ ইন্ অ কড্যাশ্চ ভবস্তি প্রিলাম্।

্ছান্দোগ্যং ঔক্থিক্যং বাহবুচ্যং যাজ্ঞিক্যং কাতন্য কাণাপক্ষ্

১৪২। রাগাত্তেন রক্তে।
ক্ষায়েণ রক্তং কাষায়ম্। কাষায়ো গদভিষ্ঠ কর্ণাবিত্য-

১৪৩। **হরিদ্রাম্হারজনাগট্।** হারিদ্রং মাহারজনম্।

১৪৪। নাল্যা অং। নীলম্।

সোহপি টণ্ ধর্মায়ায়াভ্যামগুত্রানভিধানার বিধীয়তে তক্ষাদপি বৃদ্ধে টণ্ ভবতি। নটাদপি ধর্মায়ায়েরোর্ধণ্ বিহিত এব নতু নটপকন্চরণবাচক ইতি নাম্ভ বিষয়ঃ।

(১৪২)। তদ্বৃন্দার্থে নিবৃত্তঃ। জুজাতেখননেতি রাগঃ করণে বণ্। যদ্যণি রঞ্জিরভিষকে বর্ততে যথা ভোজনে রক্তঃ আদক্ত ইত্যর্থঃ অক্তি চ বর্ণবিশেষে রক্তো গোলোঁছিত ইত্যর্থঃ। তথাপি ব্যাখ্যানতো বিশেষপ্রতিপত্তেঃ প্রসিদ্ধত্বাত্তক্ষয়াদপি প্রেথম্। শুক্রস্তা বর্ণস্থিরোৎপাদনমিই রঞ্জেরর্থঃ। স্থত্তে লিঙ্গবচনমতন্ত্রমিতি তেনেত্যনেন সামায়া-গ্রহণম্ এবং সর্বত্তি। স্থানি শুক্রস্তা বর্ণান্তরোৎপাদনং রঞ্জেরর্থঃ কথং কাষায়ৌ গর্ম তদা কর্ণাবিতি স্বভাবত এব ক্ষায়বর্ণবাৎ গর্মভক্তিয়োঃ অত আহ উসমানাদিতি। ক্ষাব্রেণ বক্তাবিব কাষারৌ। রাগাদেরিতি কিম্ গু বজ্বক্ষা রক্তম্।

(১৪০)। হরিদ্রাশকারহারজনশকাচ তেন রক্তমিতার্থে ণড়্ভবতি। গড়িগ্রপ্তাদিত্যাদিনা টণ্বিধানং প্রয়োজনম্। টণি ডু—
স্বিয়ং স্থাং

(১৪৪)। নীশীশলাতেন রক্ত ইতার্থেহস্ববতি। গুণবিশেষবাচিত্যো কুক্ চেতি মন্ত্রীয়লুকা উপচারেণ জবার্ত্তা। বা নীলমিতি সিধ্যতাের ১৪৫। পীতাৎকঃ। পীতকম্।

১৪৬। লাক্ষারোচনাভ্যাং টিকণ্। লাক্ষিকং রোচনিকমু।

১৪৭। কর্দমশকলাদা।

कार्प भिकः कार्पभः भाकलिकः भाकलम्।

১৪৮। ভাতদ্যুকালে।

সামীপ্যানত্র ভশব্দশ্যক্রবাচী। পুষোণ চক্রমসা যুক্তা পৌষী রাত্রিঃ।

টণ্বাধনার্থ বিধানম্। নীলাদপাৎ চক্রবর্দ্দানাভ্যামুক্তঃ নীলেন রক্তং নীলম্।

- (১৪৫)। পীতশব্দাত্তেন রক্ত ইত্যর্থে কো ভবতি।
- (১৪৬)। লাক্ষা রোচনা ইত্যেতাভ্যাং তেন রক্ত ইত্যর্গে টিকণ্ ভবতি !
- (১৪৭)। কদ মশকাং শকলশকাচ্চ তেন রক্ত ইতার্থে টিকণ্ ভব্তি বা। পক্ষে টণেব।
- (১৪৮)। ভারক্ষত্রবাচকাচ্ছকাং তেন যুক্তে কালে বাচ্যে টণ্ ভবতি।
 নত্ন কাল্যা নিত্যথাং বিভূষাচ্চ সর্ব দৈব নক্ষত্রেণ কাল্যা শোগন্তং কথং
 পৌষ্যাদিভিঃ কাল্বিশেষেংভিধীয়তামিতি চোদ্যপরিহারায়াহ সামাপ্যাদত্র
 ভশকশ্চল্রবাচীতি। যদা যুক্কজ্বসমীপবন্তী চল্রেণ ভবতি তদা তর্মক্ত্রনামা চল্রেণ ভবতি সামীপ্যাং। যথা গঙ্গায়াং ঘোষঃ প্রতিবসতীতাত্র
 সামাপ্যাক্ষাপাক্ষেন তৎসমীপং তীর্মভিধীয়তে তথা নক্ষত্রেণাপি চক্তঃ
 বিশিষ্টনক্ষ্ত্রসমীপবর্ত্তিনা চক্রম্যা কাল্যা যোগঃ সম্ভবতি ব্যভিচরতীতি চ
 ভবতি। পৌষীত্যাদিপদানাং কাল্বিশেষবৃত্তিঃ। পৌষীতি টলি ক্রতে
 তিব্যপ্রান্যেণ্ডণীতি ঘলোপঃ। কাল ইতি কিম্ ? নহি ভবতি পুষ্যেণ বৃক্ত্রক্রম্যে পৌষঃ।

১৪৯। দ্বন্ধাদীয়ঃ। রাধানুরাধীয়মহঃ।

১৫০। তদ্টে সান্ধি ডিদ্বা। উপনসা দৃষ্টম্ ঔশনসং সাম ঔশনং বৈংশতং বৈংশম্।

১৫১। বামদেবাদ্যঃ। বামদেব্যম।

১৫২। অ্পত্যপ্রত্যয়ান্তাদঙ্কবিহিতপ্রত্যয়াঃ। `
ঔপগ্রকম্।

১৫৩। তেন পরিবৃতে রথে।

- (১৪৯)। ভাদিতি পঞ্চমান্তমন্থ বন্তম্ অর্থাদিহ ষষ্ঠান্তং বিপরিণমতি নক্ষত্রস্যা দ্বন্ধাৎ তেন যুক্তে কালে বাচ্চ্যে ঈয়ো ভবতি। স্বিহিত্যোরেব নক্ষত্রয়োর্দ্র বিধিরয়ং নহি দুরান্তরিত্যোন ক্ষত্রয়োশ্চক্রম্মা সামীপ্যমেক-বিল্লহনি সম্ভবতি।
- (১৫০)। তেন দৃষ্টং তদ্দৃষ্টং তদৃষ্টে সামি বাচ্যে টণ্ ভবতি। স ডিদ্বা ভবতি। অর্থাৎ যত্তৎপদাভিধেয়ং তত্মাৎ প্রত্যয়ঃ। বৈংশমিতি তেশ্চ বিংশতেডিঠীতি তিলুক।
 - (১৫১)। বামদেবশকাত্তদৃদৃষ্টে সামি বাচ্যে যো ভবতি।
- (১২২)। অপত্যপ্রতায়ায়ায়ে বেংকে বিহিতাঃ প্রতায়াত্তে তদ্ষ্টে সামি বাচ্যে ভবস্তি। ঔপগবকমিতি ঔপগবেন দৃষ্টং সামেত্যর্থঃ। উপ-গোরপত্যমিত্যর্থে তস্যাপত্য ইতি টণ্ তদন্তাদ্ধান্তিপাদকৌপিঞ্জলবর্জমপত্য-প্রতায়ান্তাদকণ্ ইতি অকণ্ তদ্যেদমিত্যর্থে অকণং বক্ষ্যতি সোহপ্যক্ষেহ-প্যর্থে বিধীয়ত এব অতোহক্ষবিহিতপ্রত্যয়ে। ভবতি স তদ্ষ্টে সামি বাচ্যে ভ্তঃ। এবমুদাহরণান্তরমপূর্হং বৈদস্যাক্ষমিত্যর্থে ণড়িণ্যণন্তাৎ সভ্যাম্বযোষ-লক্ষণেষ্থিতি টণং বক্ষ্যতি স চ তদ্ন্তে সামি চ ভবতি।
- (১৫৩)। তেন পরিবৃতে বথে বাচ্যে যত্তৎ পদমিতি নির্দ্ধিষ্টং তস্মাট্রণ্ ভবতি। চার্মণ ইতি অনী গদ্ধিতাচ্যয়োশ্চেতি নকারলোপে প্রাপ্তে অভাবকর্ম্মযে চেত্যাদিনা নিষেধঃ। রথ ইতি কিম্ ? বস্ত্রেণ পরিবৃতঃ

চর্ম্মণা পরিবৃত্তে। রথশ্চার্ম্মণঃ। অনতিধানাদিহ ন স্থাৎ পুক্রেশ্ছাকৈশা পরিবৃত্তো রথঃ।

ূর্বে। দৈপবৈয়াআগ্গট্য বৈপঃ বৈয়ামঃ।

১৫৫। পা**ওুকস্বলাদিন্।** পাণ্ডুকস্বলী।

ুঙ্ক। কুমার্য্যাঃ প্রথমে পুংযোগে। অপূর্বপতিং কুমারীমুপপন্নো ভর্তা কৌমারঃ। উপপন্না ভর্তারমপূর্ববপতিঃ কুমারী কৌমারী।

১৫৭। **ত**ত্রোদ্তে পাত্রাৎ। #রাবেযুদ্ধৃতঃ শারাবঃ।

ি কায়ঃ । অনভিধানাদিহ ন স্থাদিতি যত্র পুরিবারকপরিবৃতয়োরত্যস্তম্থাগো নোপপদ্যতে তত্র ন ভবতীতানভিধানস্থ বিষয়ঃ ।

(১৫৪)। দৈপশন্দাৎ বৈয়াদ্রশকাচ্চ তেন পরিবৃতে রথে বাচ্যে ণড় ভবতি। দৈপঃ বৈয়াদ্র ইতি তম্ম বিকারে ইত্যর্থে প্রাণিনো পড়িতি ণট্ বৃদ্ধিস্থানম্ম পূর্ব্বয়োন্তংসম্বন্ধিনোঃ পদান্তয়্বোর্ণ তৈয়োবা বৈতি ব্যাদ্র-শব্দম্য যকারম্ম স্থানে এয়। বিকারেণাত্র চর্মা গ্রাহ্ণ তেনেব পরিবরণ-সম্ভবাং নতু বিকারমাত্রেণ।

(১৫৫)। পাশুক্ষলশব্দো গজান্তরণে বর্ণকন্ধলে রঢ়া। তন্ধান্তেন পরিবৃতে রথে বাচো ইন্ ভবতি। নমু যো যেন পরিবৃতঃ স তন্মিন্ন-গুটিত মন্বর্থীয়েন ইনৈবৈতৎ সিধ্যতি কিং লক্ষণেন রুঢ়িশকান্ত্র কন্মধার্থা-দিপি মন্বর্থীয়ো ভবতোব। তথা ক্লম্পর্পবান্ পর্বতঃ। উচ্যতে। তেন প্রিবৃত ইতি উণ্পি স্যাক্তরাধনার্থন।

(১৫৬)। কুমারা শলাৎ প্রথমে পুংযোগে গম্যে টণ্ ভবতি। অপূর্বপতিমিতি অপূর্দাং পতির্যস্তা ইতি বহুব্রীহিং উভয়থাপি প্রথম-পুংযোগস্ত গম্যমানত্বাৎ কৌমার ইত্যস্ত কৌমারী ইত্যস্ত চ ব্যুৎপত্তিং বৃত্তিকাব এব দ্শিতবান্।

(১৫৭)। পাত্রবাচকাচ্ছকান্তরোদ্তেহর্থে টণ্ ভবতি। ভূকো-চ্ছিষ্টমুদ্ধ ক্তমুচ্যতে। পাত্রাদিতি কিমৃ ? পাণাবৃদ্ধ তম্। ১৫৮। স্থান্তিলাদ্ব তশরিতরি। স্থানে শেতে স্থান্তিনঃ।

১৫৯। ভক্ষ্যে সংস্কৃতে।

ভ্রাষ্ট্রে সংস্কৃতা অপূপাঃ ভ্রাষ্ট্রাঃ।

১৬০। শুলোখাভ্যাং যৎ।

শূল্যং উথাম্।

১৬১। क्वीतारहेश्न। टेक्स्ट्रिस

১৬২। দগ্নন্তিকণ্। দাধিকম।

১৬৩। উদশ্বিতো বা।

⁽১৫৮)। চত্রেভারুবর্ততে। স্থাওিলশকাত্তা ব্রতশয়িত্বি বাজো টণ্ ভবতি। স্থাওিল ইতি স্থাওিলে ব্রতেন যঃ শেতে স উচ্যতে:

⁽১৫৯)। সত উৎকর্ষাধানং সংস্কারঃ তত্র সংস্কৃতে ভক্ষ্যে বাচ্যে যত্তৎ প্রদোদ্দিষ্টং তক্ষাউণ্ ভবতি। ধর্বিফ্দমভাবহার্য্যং ভক্ষামিকি জয়াদিত্যাদিভিরত্র রাজ্ককা ধরমভাবহার্য্যং ভৃষ্টমৎস্যাদি বিষদমভাব-হার্যাং মোদকাদি।

⁽ ১৩°)। শূলশকাত্থাশকাচ্চ তত্ত্ৰ সংস্কৃতে ভক্ষ্যে বাচ্যে যদ্ভবতি।

^{(&}gt;৬>)। ক্ষারশব্দান্তত্র সংস্কৃতে ভক্ষ্যে বাচ্যে টেরণ্ ভবতি। ক্ষারে সংস্থিরমাণশু থরবিষদত্বং নাস্তীতি অভ্যবহরণীয়মাত্রমত্র ভক্ষ্যম্ অতএব ক্ষৈবেয়ীযবাগুরিত্যদাহরস্তি।

⁽১৬২)। দ্বিশ্বান্তত্র সংকৃতে ভক্ষো বাচ্যে টিকণ্ ভবতি। তেন সংস্কৃত ইতানেনৈব সিদ্ধে অর্থভেদার্থং লক্ষণং যত্রাধিকরণে দ্বি দ্রব্যান্তরেণ সংস্ক্রিরতে তদনেনোচাতে ইতি হ্যাসঃ। দ্বি সংস্ক্রিয়ত-ইতার্থবিবক্ষায়াং টণ্ মার্ভাশিত্যাহা। নহি কিঞ্চিদ্দি সংস্ক্রিয়নাণং প্রাণিক্মন্তি যক্ষাভিধানং দাধিকং স্পেটার্থং বচনমিদমিতি ভাগবৃত্তিঃ।

⁽১৯৩)। উদশ্চিছকাং তত্ত্র সংস্তে ভক্ষো বাচ্যে টিকণ্বা

छेमचिङ छेमचिष्कम् ।

>৬৪। তদ্যুক্পোর্ণমাসিকে সংজ্ঞায়াম্
পৌষী পৌর্ণমাসী অক্ষিন পৌষে মাসঃ পক্ষশ্চ।

১৬৫। অশ্বতা গ্রহায়ণীভ্যাং টিকণ্।
মাশ্রপিকঃ আগ্রহায়ণিকঃ আগ্রহায়ণ্ ইত্যসাধুরিতি পশুপতিঃ।

২৬৬। চিত্রাকৃতিকাফলুনীশ্রবণাদা। চৈত্রঃ শৈতিকঃ কার্ত্তিকিকঃ ফান্তনঃ ফান্তনিকঃ শ্রাবণঃ শ্রাবণিকঃ।

১৬৭। তদ্বৈত।

জবতি। পক্ষে সামান্তবিহিতৡণেব ভবতি। ঔদবিৎকমিতি তাস্তথাদি-কারলুক।

(১৯৪)। তদ্যুগিত্যনেন তদ্যুঁগাথবিহিতপ্রতায়সিদ্ধং পৌধীমাযাাদ্যভিধীয়তে। তদ্যুক্ পৌর্ণমাসী যত্র স তদ্যুক্পৌর্ণমাসিকঃ অতএব ব্যাচকার পৌধী পৌর্ণমাসী যশ্মিয়িতি। তশ্মিন্ ৰাচ্যে সংজ্ঞায়াং
গম্যমানায়াং তদ্যুক্প্রতায়াস্তাউণ্ ভবতি। সংজ্ঞা চ লোকপ্রসিদিবিষয়া
অতএবাহ মাসঃ পক্ষশ্চেতি অসংজ্ঞাত্বাৎ পৌষো দশরাত্র ইতি ন ভবতি
ভূতকে পক্ষে মাসে চন ভবতি।

(১৬৫)। অরথশদোহরিনীবচনঃ ভাতদ্যুক্কালে ইতি টণ্: যদা
পৌর্নাদীমাহ তদা সংজ্ঞারাৎ শ্রবণারথাভ্যাং নামীতি টণ্লুক্ আভ্যাং
তদ্যুক্পোর্নাদীকে সংজ্ঞারাং টিকণ্ ভবতি। অরথা পৌর্নাদী আমিনিতি
আর্থিক:। অতে হায়নমন্তাঃ আগ্রহায়ণী স্ত্রনির্দেশাৎ প্রজ্ঞাদিশাৎ
স্বার্থে টণ্ পূর্বপদে চাবনস্তেতি গ্রম্।

(১৬৬)। চিত্রাদিভাঃ শকেভাঃ তদ্যুক্পৌর্ণমাসীকে বাচ্যে সংজ্ঞায়াং বা টিকণ্ ভবতি। তদৈবামী শকাস্তদ্যুক্তাং পৌর্ণমাসীং বদন্তি যদা উপস্তা। ভবস্তি তম্মাট্রপার্গদেব প্রত্যয়ঃ। অথবা অস্মিন্নর্থবিশেষে বর্ত্তমানেভা-শিক্রাদিশক্তেয় এব।

(১১৭)। সা দেবতা অন্ত ইতি ত্লৈবতং দৈবতমিতি প্রজানিছা

শিলে দৈবতমস্থ শৈৰঃ।

१ उन्होक । यहर

कांग्रः।

১৬৯। শুক্রাদিয়ঃ।

শুক্রিয়ঃ।

১৭০। শতরুদ্রাচ্চ।

শভরুদ্রিয়ঃ। ू

১৭১। ঈয়ঃ পৈঙ্গাক্ষীপুত্রাদেশ্চ।

শতরুদ্রীয়ঃ প্রৈঙ্গাক্ষীপুত্রীয়ঃ তার্ণবিন্দবীয়ঃ।

১৭২। অপোনপাদপাংনপাদ্যামীয়েয়ো পাতঃ-গুশ্চ।

স্বার্থে টণ্ তল্মিন্ বাচ্যে যত্তৎপদাভিধেরং তন্মাট্ণ ভবতি। শৈবং হবি-রিত্যাদৌ চ হবনীয়ন্ত হবিষন্তদেয়ন্ত্রন শৈবো যন্ত্র ইত্যাদৌ চ শিব-প্রকাশকরেন শিবস্তদেবতা ভবতীতি।

(১৬৮)। কশলাদ্রক্ষবাচকাৎ তদৈবতে বাচ্যে টণ্ ভবতি ঐক্ত। পূর্দ্রেণ টণি সিদ্ধে ঐকারবিধানার্থং বচন্দ্। ঐবিধানঞ্চ সনি-যোগশিঞ্চি সনিযোগশিষ্ট্রস্ত বিধানং গুণভূতং ভবতীতি টণেব প্রথমঃ বিধীয়তে তত ঐৎ তদপি বিধীয়মানং পঞ্চমীনির্দিষ্ট্রন্থাৎ কাৎ সনিহিত্যেব। বিধীয়তে।

- (১৬৯)৷ গুক্রশকাতকৈবতে বাচ্যে ইয়ো ভবতি টণোহপবাদঃ:
- (১৭০)। শতক্তশক্তিকৈক.ত বাচ্চো ইয়ো ভংতি। পৃথগ্যোগ-করণমূত্রার্থম্।
- (১৭১)। শতরন্ত্রশব্দাৎ পৈঙ্গাক্ষীপুজ্ঞাদেশ্চ তদ্দৈবতে বাচ্যে ঈয়ো ভবতি।
- (১৭২)। অপোনপাদপা:নপাদিতি দেৰতাবিশেংনাম। তাভাঞ্চ তব্দিবতে বাচ্যে ঈয় ইয় ইত্যেতৌ ব্য ভবতঃ। পাত্ৰণ্ড স্থানে ওশ্চাদেশঃ।

অপোনপ্রীয়ঃ অপোনপ্রিয়ঃ অপাংনপ্রীয়ঃ অপাংনপ্রিয়ঃ i

२१०। यदकाचा।

মহেন্দ্রীয়ঃ মহেন্দ্রিয়ঃ মাহেন্দ্রঃ।

১৭৪। সোমাট্যণ্। সোমাঃ।

১৭৫। বাযু, তুপিক্রষদো যৎ।

বায়্ঞ: ঋতবাং পিত্রাং উষদ্যম্।

১৭৬। মরুত্বদাদেরীয়**শ্চ। •** মরুত্বতাঃ মরুত্বতীয়ঃ স্থনো বায়ুঃ সীর আদিতাঃ

ক্রমোহত্র নাস্তি পৃথগ্ লক্ষণসামর্থ্যাৎ অগ্রথা শুক্রাদিরঃ ঈয়ঃ পৈঙ্গাক্ষীপুত্রাদ দেশ্চ ইত্যেতয়েরের এতৌ শকৌ ক্লেই স্থাতাম্।

- (১৭৩)। মহেন্দ্রশান্তদৈবতে বাচ্যে ঈয় ইয ইত্যেতো বা ভবতঃ। তাভ্যাং ত্যক্তে টণ্।
- (১৭৪)। সোমশকাত্তদৈণতে বাচ্চে ট্যণ্ভব্তি। টিস্বাৎ প্রিয়ামী সৌমী দিক হলপ্তান্ধিতপ্তেতি যনুক্।
- (১৭৫) বাব্যাদিভাস্তদৈবতে বাচ্যে যদ্ভবতি। বায়ব্যম্ ঋতবানিতি যাচোকদ্পুণ ইতি প্রণঃ তদ্ধিত্যে ইত্যবাদেশঃ। পিত্রামিতি তদ্ধিত্যে চেতি ঋকারস্ত স্থানে রিকারঃ অদিলুগিতি ইকারলুক্।
- (১৭৬)। মরুজনাদেশুদৈরতে বাচ্যে যৎ স্থাৎ। পক্ষে ঈর্ন্চ। বাস্থোষ্পতিশদাৎ পত্যস্তাদনশ্বপত্যাদেরিতি প্যে শেষেভাস্ক টান প্রাপ্তে বিধানম্। স্থনাসীর্য্য ইতি দক্ষং কুলা আদস্কঃ পূর্বস্থা ইত্যাকারঃ। ছাবা-পৃথিবীতি দিবস্চ পৃথিব্যামিতি দিবং স্থানে দাবাদেশঃ। বাস্থোষ্পতিরিতি নিপাতনাদাস্তশব্দশ্র প্রেলিসতা কচিদপ্রতাপীতালুক্ কন্ধাদেশেচতি মুর্দ্ধস্থা। স্থাবাম ইতি অগ্নেরীৎ সোমবরুণরোরিতীকারঃ অগ্নেদীর্যাৎ সোমক্রেডি মৃদ্ধস্থা। পঠিতা মক্ত্বদশ্লীষোমস্থনাসীরগৃহমেধাঃ। দ্যাবাপৃথিবী রাজ্যোদ্ধ্রতিরিতি শব্দা গণ্ডেস্থান্ত।

স্থনাসীর্য্যঃ স্থনাসীরীয়ঃ। মরুত্বৎস্থনাসীর দ্বাব্যাপৃথিবী কাস্তো-প্রতি গৃহমেধী অগ্নীষোম#।

১৭৭। মহারাজপ্রোষ্ঠপদাটিকণ্। মাহারাজিকঃ। মহারাজিকস্ত মহতী রাজির্যস্থেতি বহুত্রীহো কঃ। প্রোষ্ঠপদিকঃ।

১৭৮। কাঁলান্তববিহিতপ্রত্যয়াঃ। মাসিকঃ বাসন্তঃ প্রার্যেণ্যঃ।

১৭৯। তদ্থামসংহতো। শিবীনাং গ্রামস্থ সমূহঃ শৈবঃ।

১৮০। রাজন্তাদেরকণ্।

(২৭৭)। মহারাজপ্রোষ্ঠপদাভ্যামুন্তরে তদ্দৈবতে বাচ্যে টিকণ্ ভবতি। তৎদেবােংর্থেংপি মহারাজাচ্চেতি টিকণং বক্ষাতি। মহতী রাজির্যস্ত ইতি বছব্রীহিদমাদার্থং বাধ্যং দর্শয়তা অক্ততসমাদাস্তাবেতি কপ্রতায়েন রূপমিদমিতি স্টিতম।

(১৭৮)। যেভাঃ কালবাচিভাঃ শকেভাো যে ভবার্থে বিহিতাঃ প্রতার্বান্তেভাঃ কালবাচিভান্ত এব প্রভান্নান্তকৈবতেহর্থে ভবস্তি। কালান্তব-বিহিতা ইতি কর্তব্যে যদ্ভববিহিতপ্রভান্না ইতি ক্রতং তেনামমর্থবিশেষঃ স্চাতে। মাসিক ইতি কালাদিতানেন টকণং বাসম্ভ ইতি ঋতুনক্ষত্রাদিতি টণং প্রার্ষেণ্য ইতি প্রার্ষ এণ্য ইতি ভবার্থে এণ্যং বক্ষাতি ত এব প্রভান্নান্তকৈবতেহর্থে এব তেভাো বিধীয়ন্তে।

(১৭৯)। তন্ত গ্রামসংহতিস্তদ্গ্রামসংহতিঃ তন্ত্রাং বাচ্যায়াং টণ্ ভবতি। অর্থান্তচ্চ্পবাচ্যাৎ প্রত্যয়ং। যত্র নিবসন্ ক্রিয়ানিমিন্তকঃ সম্বন্ধঃ স ক্রিবাসে দেশে নামীতান্ত বিষয় ইতি তেন সহার্থভেদঃ।

(১৮০)। রাজ্যাদেকত্তরে তদ্গ্রামসংহতী বাচ্যায়ামকণ্ ভবতি। উণোহপবাদঃ অস্থাকতিগণস্বাদাদিশক্ষোহয়ং প্রকারবচনঃ। রাজ্যু-দ্বৈপাতাম্বরীষপুজোর্ণনাভশৈল্যাঃ। শাল্কায়নজালন্ধরায়ণৌড় ম্বা-

মকত্বজাবাপৃথিবীবাস্তোষ্পতিস্থনাসীরাঃ।
 গুরুমধোহগ্রীযোমক ষট্ স্থাম ক্রত্বদাদিকাঃ॥ ৬॥

রাজস্তকঃ। রাজস্ত শৈল্ধ শালস্কায়ন জালস্করায়ণ আর্জুনায়ন সংপ্রিয় দাঙ্গি মালব ত্রিগর্ত্ত বিরাট উর্ণনাভ বসতি দৈবপাত ওড়ুম্বর বৈশ্ববন বাজ্রব আত্রীড় আর্থকামেয় অম্বরীষপুজ্র বিশ্ববন বৈকর্ণ ইত্যাদি #।

১৮১। ভৌরিক্যাদেবি ধিঃ। ভৌরিকিবিধঃ। ভৌরিকি ভৌলিকি চৌপয়ত বৈশ্বয়ত শৈকয়ত কাণেয় ্রা ।

১৮২। ঐধুকার্য্যাদের্ভক্তঃ। ঐধুকারিভক্তঃ। ঐধুকারি মালস্থায়ন চান্দ্রায়ণ তার্ক্ষায়ণ দাক্ষায়ণ খাড়ায়ন দসমিত্রায়ণ শৌদ্রায়ণ সৌবীর শয়গু শায়ণ্ডি তুণ্ড দেব বৈশ্বধেনব দাসমিত্র ‡।

র্থকামেয়াঃ । দাক্ষিত্রিগর্ত্তমালববিরাটবিত্তবনবৈশ্ববনসহিতাঃ স্থাঃ । সংপ্রিয়া-র্জ্জুনায়নবসতিবৈকর্ণবাল্রবাত্রীড়াঃ। আক্রতিগণোহনমিষ্টস্তম্মাদস্যেহপি বিচ্ছেয়াঃ।

(১৮১)। ভৌরিক্যাদেক্বন্তরে তদ্গ্রামসংহিতৌ বাচ্যায়াং বিধো ভবতি।

(১৮২)। ঐযুকার্যাদেরুত্তরে তদ্**গ্রামসংহতৌ** বাচ্যায়াং ভক্তো ভবতি।

* রাজগুবৈকর্ণ বিরাটদাকি স্থাৎ সংপ্রিয়ো মালবদৈবপাতৌ।
উড়ুন্পরো বৈশ্ববনস্ত্রিগর্ভ আত্রাড়িশৈল্যমথোর্ণনাভঃ।
স্থাদান্রবো বিশ্ববনোহম্বরীষপুত্রার্থকামেয়মথায়নানি।
শালস্কলালন্ধর আজ্জুনেভাো রাজগুমুথ্যে বসতিন্তথালো॥ ২১॥
† ভৌরিক্যাদৌ ষড়িহ গদিতা ভৌরিকির্ভোলিকিঃ স্থাৎ।
কানেয়ো বৈশ্বরত উদিতঃ শৈকচৌপয়তৌ চ॥ ৬॥
† স্থাদেষুকারিঃ কথিতোহত্র দেবঃ সৌবীরশায়ণ্ডিশয়ণ্ডভূগ্রাঃ।
চাম্রান্তু তাক্ষ্ দিপি দাসমিত্রাৎ খাড়াচ্চ দাক্ষাৎ পর আয়নঃ স্থাৎ।
মালস্তদৌদ্রদ্বয়হতোহপি বৈশ্বাৎ স্থাৎ ধেনবো দাসমুতোহত্র মিত্রঃ॥ ১৫॥

১৮০। ছেন্দোনামস্তদাদৌ প্রগাথে। পঙ্ক্তিরাদির্যস্থ স পাঙ্ক্তঃ প্রগাথঃ আনফ্র্ডঃ। যুত্র প্রগ্রন্থ-নাৎ প্রগাণাদা দে ঋচৌ তিস্তঃ ক্রিয়েতে স মন্তঃ প্রগাথঃ।

১৮৪। যুদ্ধে প্রয়োজনযোদ্ধ্যাম্। স্বভ্যা প্রয়োজনমস্ত সোভদ্রঃ সংগ্রামঃ পঞ্চালা যোদ্ধারোহস্ত পাঞ্চালঃ।

১৮৫। নানভিধানাদ্যষ্ঠ্যন্তপদার্থে। এবং যথাবাক্যমূতরত্র।

১৮৬। প্রহরণাধ্বং ক্রীড়ায়াম্। মুষ্টিঃ প্রহরণমস্থাং ক্রীড়ায়াং মৌফা ক্রীড়া।

(১৮৬)। প্রহরণবাচকাচ্ছদাৎ ক্রীড়ায়াং বাচ্যায়াং শে ভবতি।

⁽১৮০)। ছন্দ ইতি ন শ্বরূপস্থা গ্রহণং নাপি বেদস্থ কিন্তু পিঙ্গলাদিলক্ষণনিয়তাক্ষরস্থা এতদর্থনের নাম ইত্যুক্তং তম্ভ হি উক্থাদিনামভিঃ
প্রেসিদ্ধিঃ। ছন্দোনাম উত্তরে তলালে প্রগাথে বাচ্যে টণ্ ভরতি। দশভিরক্ষরৈঃ পাদেন পঙ্তিনাম দন্দঃ অন্তভিরনই পু। প্রগ্রছনাৎ প্রগাণাছেতি ব্যাকারেণ প্রগাথশন্দস্থা প্রকাঃদ্বেন ব্যুৎপত্তিঃ স্থাচিতা।
যদা প্রস্কাৎ গ্রন্থ সন্দর্ভে ইত্যুমাৎ ঘণি ক্লতে শেষো বৃদ্ধাদিতি রেজনকারলোপৌ বৃদ্ধিন্দ তদাত্র প্রগ্রন্থ পাঠবিশেষাৎ প্রগাথো ভরতি। যদা ভূ
কৈ গৈ রৈ শন্দে ইত্যুমাৎ হ্নাদেস্থ ইতি থঃ তদা প্রগাণাৎ গানপাঠবিশেযাৎ প্রগাণো ভরতি।

⁽১৮৪।১৮৫)। প্রয়োজনবাচকাৎ থোক্ বাচকাচ্চোন্তরে গুদ্ধে বাচ্যে টণ্ ভবতি। নানভিধানাদিত্যাদি ষষ্ঠান্তপদার্থব্যতিরিক্তে বাচ্যে টণ্ ন ভবতীত্যর্থঃ। স্থভদ্রা প্রয়োজনমনেন গুদ্ধেনেতি। এবং বথাবাক্যমুদ্ধর-ক্রেতি। এবমশাদেব কারণাদনভিধানাদিত্যর্থঃ। উত্তরত্র উত্তর্থাগে-শ্বপি যাদৃশং থাক্যং তশ্বিন্ অন্তপদার্থে প্রভ্যায়ে ভবতি ন তদিতরান্তপদার্থে। প্রয়োজনধান্ধ ভ্যামিতি কিম্? স্বভ্যা প্রেক্ষিকা অন্ত যুদ্ধশ্য।

১৮৭। ভাবঘণন্তাত্ত্ব ক্রিয়াম্। দণ্ডপাত্তেহিক্যাং বর্তে দাঞ্পাতা দাসী ক্রৈনংপাতা ভূমিঃ।

১৮৮। তৰেত্তি তদধীতে বা । প্ৰভাকরং বেত্তি অ্বধীতে বা প্ৰাভাকরঃ।

১৮৯। ক্রত্যেষ্ট্রিকণ্। জ্যৌতিষ্টোমিকঃ।

প্রত্যরান্তরবিধানং দ্রিয়ামীনিরাসার্থম্। প্রহর্মণাদিতি কিম দু মালা-ভূবণমন্তাং ক্রীড়ায়াম্। ক্রীড়ায়ামিতি কিম্? থড়কঃ প্রহরণমন্তাং সেনারাম্।

(১৮৭)। ভাবনিহিত্যণ প্রভারান্তাছকাং ভদ্তৌ বাচ্যাযাং দ্রিরাং ণো ভবতি! শৈলং পাতেতি শেলঃ পক্ষিবিশেষঃ পতু গতে। প্ংসি মণ্ কারকে ঢেতি ভাবে মণ্ শেলক পাতঃ শেলপাত ইতি যতীসমাসঃ মধ্যা- দেদি নাদাবিতি মঃ সপ্তমান্তপদার্থোহত্র প্রত্যয়ার্থঃ। ভাব ইতি বিশেষণং কিন্? প্রাকারোহতাং বর্ততে প্রপূর্কাৎ করোতেরধিকরণে ঘণ্ প্রাদেশনি বহুলমিতি প্রশক্ষা দীর্ঘঃ।

(১৮৮)। তদ্বতি তদধীতে বা ইতার্থে টণ্ স্থাং। বেত্রানীতে ইতি কর্তুরি লট্ অতন্তৎক্রিয়াকর্ত্তিব প্রভায়বাচাঃ। যং তৎশদবাচাং তন্মাৎ প্রত্যায়ঃ। যাক্যবয়স্ত পৃথককরণাং তদ্বেদনকর্তুরি তদধ্যানকর্তুরি চপ্রতায়ো বাচ্যঃ ন তু তদ্বেদনাধ্যানকর্তুর্যাব। বাক্যভেদেইপ্যেক্যোগকরণাদধ্যানসাহচর্যাচ্চ যস্ত বেদনমধ্যায়নঞ্চ সন্তবতি তন্মাদেব প্রভায়ঃ। অত এব পুরুষবাচকাং মুখ্যাং প্রভাকরশকাং ন প্রত্যায়ঃ যতন্তম্ভ বেদনমধ্যায়নঞ্চ সন্তবতি ন প্রায়ং যন্ত পূক্ষবাচকাং জ্বাত্তংক্তে গ্রন্থে বর্তুতে তক্ত বেদনমধ্যায়নঞ্চ সন্তব্যতি গৌণাদ্যি প্রভায়ঃ।

(১৮৯)। পৃথক্লক্ষণকরণাৎ নাত্র স্বরূপশ্ব গ্রহণম্। অন্তথা বসন্তাদিগণ এব ক্রতুশকোহপি পঠিতঃ স্থাৎ। তথাং ক্রতুবাচকাচ্চকাং তদ্বেত্তি তদধীতে বেত্যর্থে টিকণ্ ভ্রতি। ট্রোহপবাদঃ। জ্যোতি-ষ্টোমিক ইতি অগ্নানেঃ স্থানাবিতি মূরন্তঃ জ্যোতিষ্টোমঃ ক্রতুবিশেষঃ

১৯०। वमरखाक्थारमभ्ह।

বাসন্তিক: বসন্তসহচরিত: গ্রন্থ: বেন্তি অধীতে বেতার্থ;। বসন্ত বর্ষা শরদ ক্ষেত্র শিশির প্রথমগুণ চরমগুণ আত্মগুণ আথবণ অথবন্ ১০। উক্থিক: উপচারাদ্রোক্থশক উক্থিক্যার্থ: *। উক্থ লোকায়ত খ্যায় নাাস পুনকক্ত বজ্ঞ চক্রণ ক্রেমেতর শ্লক্ষ সংহিতা পদ ক্রম বৃদ্ধি গণ সংগ্রহ আয়ুর্বেদ দ্বিপদা ত্রিপদা জ্যোতিষ অমুকল্প অমুপদ লক্ষ্ণ লক্ষ্ণ অমুক্ সংঘাত ইতিহাস পুরাণ ২৭ শ।

ত্তত্ত কর্মাস্বরূপজাৎ অধ্যয়নং ন সম্ভবতি বেদনস্ত সম্ভধতোব তত্মাৎ তৎসহ-চরিত হাত্থাধ্যমান্দারেশ তদখ্যমাণ তদেশমঞ্চ বাচাম।

(১৯০)। ৰসন্তাদেকক্থাদেক্ষেত্রে তদ্বেণ্ডি তদ্দীতে বেত্যর্থে টিকণ্ ভবতি। যো বসন্তেম নির্মেন পঠাতে যত্র বা বসন্তো বর্ণাতে স্বসন্তসহচরিতো গ্রন্থঃ বর্ষাণ্ড শ্বন্ধ ইতি ছন্দ্রস্যাসান্তঞ্চ রুত্থা বর্ষাশ্বনিত্যেকারান্তপাঠো স্থাসে ব্যবস্থিতঃ। শর্মিতি গ্রন্থং শক্ষর্থ্য এতদন্তেবাং মত্রম্। উপচাবাদিত্যাদি যদ্যাপি উক্থশকঃ সামবিশেষমেবাভিধত্তে তথাপ্রত্র উক্থিক্যার্থঃ ঔক্থিকান্ত উক্থিত্যান্ত উক্থিত্যান্ত উক্থিত্যার্থ উক্থাত্যসান্তাং লক্ষণগ্রন্থঃ তৎ কথং তদন্ত-ত্যাদিত্যত আহ উপচারাদিতি যথা প্রদীপার্থা মল্লিকা প্রদীপ ইতি সাম্বাদকে উক্থশকে তু নায়ং প্রত্যারঃ অমভিধানাদিত্যভিপ্রারঃ। বসস্তাদি-গ্রেম্ব উক্থাদিগণগ্রহণে সিদ্ধে উক্থাত্যপাদানেশ্বেম্বান্ধ্যাতিপ্রারো

বসস্তো হেমন্তঃ প্রথমশিশিরাথর্ব গশর দথর্বাণো বর্ষাশ্চরমগুণ আত্মান্তিক গুণঃ ॥ ১ • ॥

[†] উক্থাসুকরৌ ক্রমবৃত্তিসংগ্রহা স্থারেতিহাসৌ দ্বিপদাথ সংহিতা ক্রমেত্রস্থাসপুরণিলক্ষণং সংঘাতলক্ষাসুপদং পদং তথা ॥ লোকায়তজ্যোতিষয়জ্ঞমায়ুর্বেদাসুষ্ঠুক্ষগণাঃপদা কে:। তথা পরে দ্বে পুনক্ষতচর্চে সপ্তাধিকা বিংশতিরেবমন্তে॥ ২৭॥

১৯১। শাখ্যানাখ্যায়িকাভ্যাঞ্চ। শাবক্রীতিকঃ বাসবদন্তিকঃ।

১৯२। मृजाञ्चामकन्नार।

ৰাৰ্তিসূত্ৰিকঃ। কল্পাত্ৰ—কাল্পসূতঃ।

১৯৩। কল্পলকণান্তাৎ।

মাতৃকল্পিকঃ গৌলক্ষণিকঃ।

🗫 ১৪। অনঙ্গক ত্রতিধর্মাদ্বিদ্যান্তাৎ 🔉

সাপবিদ্যিকঃ। অসক্ষজ্রত্রিধর্মাত্তু—আঙ্গবিদ্যঃ ক্ষাক্রবিদ্যঃ ত্রৈবিদ্যঃ ধার্ম্মবিদ্যঃ।

১৯৫। পদোত্তরপদাদিকঃ। পদোত্তরপদিকঃ।

লক্ষণীয়ঃ। অনুস্পন্ধাৎ ইগুস্ক ক্রান্তানিকি স্থেত ইতীকারলুক্ প্রস্তায়ে কেথণ ইতি হবঃ আমুষ্ক ইতি অভাক্তিগণত্বাং জাঙ্গুলিকঃ জাঙ্গুলিবি ধবিদা।

- (১৯১)। পৃথক্লক্ষণকরণাৎ নাজাপি সর্মপ্রাহণন্ আখ্যান-বাচকাৎ আখ্যায়িকাবাচকাচ্চ পূর্ব্বোক্তেহর্থে টিকণ্ ভর্ত। আখ্যানং গ্রন্থায়ভূ তমুপক্ষেপাগতস্থ বর্ণনন্। আখ্যায়িকা তু প্রবন্ধবিশেষঃ। যাব-ক্রীন্তিক্ ইত্যাদি ববক্রীতং বাসবদত্তাঞ্চাধিকত্য ক্রত্মাথ্যানমাধ্যায়িকা চেতি তদ্দিকত্য ক্রতে গ্রন্থে ইতি টিকণ্। অধিকৃত্য ক্রতে গ্রন্থে কচিদিতি টণ্ লুক্ তত্তিকণ্।
- (১৯২)। করবন্ধি তাৎ স্ত্রাস্তাৎ পূর্ব্বোক্তেইর্থে টিকণ্ ভবতি। বৃত্তিস্ত্রং বেন্তি অধীতে বা যঃ দ বার্ত্তিস্থত্তিকঃ। কারণ্ত ইতাত্র ভূ ঔৎ-স্থানিকন্ত্রপ্রে ।
 - (১৯৩)। कज्ञान्तान्नान्नान्नान्न शृह्मादकशर्य विकन् ভवि।.
- (১৯৪)। অঙ্গাদিবঞ্জি তাছিদান্তাং পূর্ব্বোক্তেহর্থে টিকণ্ ভবতি। সাপবিদ্যিক ইতি তৎপূক্ষঃ ত্রৈবিদ্য ইতি দ্বিগৌ ক্লতে ত্রিতলুক্ ভাৎ তত্মাং ত্রৈবিদ্য ইতি ত্র্যবয়ব্যাখা বিদ্যা ত্রিবিদ্যা ময়ূরবাংসকাদিত্বাৎ সমাসঃ তৎপুরুষাদ্যে সংস্কৃতাদেনিত্যমিতি মধ্যপদলোপঃ।
 - (১৯৫)। পদোত্তরপদশব্দাৎ পূর্বোক্তেহর্থে ইকো ভবভি। এত-

১৯৬। শতপথ্যস্তিপথাট্টকঃ। শতপথিকঃ যঞ্জিপথিকঃ।

১৯१। शनादमज्ञकः।

পদকঃ। পদ ক্রম শিক্ষা যীমাংসা সামন্ উপনিষদ্ *।

১৯४। यञ्जाक्षणामिन्।

অমুব্রাক্ষণী।

১৯৯। তম্মপতো।

ভানোরপত্যং ভানবঃ।

२००। भिवारमण्ड।

ভাগরতিকতে। ভাষারভিকতশ্চাভীপ্টম্। জয়াদিত্যেন তু অন্যথা ব্যাথ্যাতং পদশক উত্তরপদস্থিতো যত্র তৎ পদোত্তরপদমুদাদ্বতঞ্চ। পূর্মপদিকঃ পদোভ্রপদিক ইতি চ।

- (১৯৬)। শতপথশন্ধাৎ ষষ্ট্রপথশন্ধান্ত পূর্ব্বোক্তেহর্থে টিকো ভবতি। (১৯৭)। পদাদেরভারে পূর্বেক্তিহর্থে অকো ভবতি।
- (১৯৮)। স্বয়ারূপশকাৎ পূর্বোক্তেহর্থে ইন্ ভবতি। ব্রারূণাপ্যো বেলৈকদেশঃ তৎসদৃশো এহােহলুব্রার্ফণশকেনােচাতে সাদৃশ্রেহবারীভাবঃ। অস্তাবেন ইনা সিদ্ধাতি চক্তঃ তদবুক্তং বেদনাধ্যয়নার্থেন বিহিতেন টগা বাধা স্থানিতি।
- (১৯৯)। তত্তেতি তৎসম্বন্ধমাত্রপরিক্রানার্থমুপান্তং নান্তরীয়ক-সিদ্ধন্ত লিঙ্গনচনোপাদানং যথা ধান্যার্থিনঃ পলালোপাদানম্ অতএবোক্রং সূত্রে লিঙ্গনচনমতন্ত্রমিতি। তত্তাপত্ত্যে বাচ্যে নায়ন্ত্রণ্ ভবতি। যন্তৎপদ-বাচ্যং তক্ষাৎ প্রত্যয়ঃ। যো যত্তাপত্যং স তস্য ভবতি অভন্তপ্তেদমিতি টণি সিদ্ধে কিং লক্ষণেনেতি ন চ বাচ্যম্ এবং সতি ভানব ইত্যাদৌ আদি-হৈজাতশ্চেতীয়ঃ স্যাৎ অয়ন্ত তেন ন বাধাতে অপত্যটণোহুশৈষিক্সাৎ।
- (২০০)। শিবাদেস্তস্যাপত্যে রাচ্যে, টণ্ ভবতি। অস্মিন্ গণেহ দক্ষেভ্যোহদস্তাক্ষেতি ইণি ইকারাস্তেভ্য ইদস্তাক্ষানণস্তাদিতি এয়ণি স্ত্রীবিহিতপ্রতায়াস্তেভাঃ স্ত্রীবিহিতপ্রতায়াস্তাদিতি এয়ণি ইলাশ্সাৎ

^{*} পদত্ত শিক্ষোপনিবৎ ক্রমাঃ স্থামীমাংস্থা নাম চ বট্ট পদাদৌ ॥ ৬॥

শিক্সাপত্যং শৈবঃ তাক্ষঃ কুর্বাদিয়াৎ ণ্যঃ তাক্ষণ্যঃ গাঙ্গঃ শুভ্রাদিয়ালালেয়ঃ তিকাদিয়ালায়ায়নিঃ বৈপাশঃ কুঞ্জাদিয়াদ্বিপাশায়নাঃ। শিব তক্ষন্ গঙ্গা বিপাশা ক্রুপ্তা কোকিলা প্রোষ্ঠ কতও পিট ময়ুর কর্ণ খর্জুরক ভূরি সদ্ধি মুনি কুঠার অনভিমান করুৎস্থ স্থামটি রাষ্টিযেণ যক্ষ ভূমি ইলা সপত্নী জরৎকার প্রোষ্ঠিক চণ্ড কুস্ত কহোড় করুভ বোধ পীবর তৃণকর্ণ ক্ষীরক্রদ জলব্রদ্ধ পরিষিক শোফিল জটিলক বধিরক মঞ্জীরক র্ফিক খঞ্জার ধঞ্জাল রেখ আলেখ বর্জুল পটাক তৃক্ষাক লন্ডাক উর্ণনাভ উৎক্ষা লোহিতিকা আর্যামেতা লক্ষ ক্ষ্ম আয়মুণ ভলন্দন বিরূপাক্ষ *।

দাচশ্চানদ্যামিত্যেয়ণি তক্ষন্ ইত্যক্ষাৎ কুর্বাদিয়াৎ ণাে ঋটিষেণাৎ কাফশক্ষণদেনান্তাদিতি ইণি প্রাপ্তে বিধানম্। জ্বংকাক্ষণদােহত পঠাতে
সপঙ্গাদিয়াদ্প্রত্যয়ান্তঃ ভশু এয়ণ্বাধনার্থঃ পাঠঃ। তাক্ষ ইতি অভাবকর্মষে চেত্যাদিনা প্রতিষেধাৎ অনীত্দিতাচ্যয়ােশ্চেতি ন নকার-

^{*} অষ্টো পঞ্চ শিবাদিকে শিবমুনিবোধোহথ থর্জুরক: ।
পিষ্ট প্রোষ্ঠ ময়ুরকর্ণককুভং থঞ্জারকো বৃষ্ণিক: ॥
গলালক্ষতলন্দনা জটিলকক্ষীরহদৌ প্রোদিতৌ ।
ধ্যেতার্যান্ত, বিপাশয়ক্ষমনভিমান: ককুৎস্কস্তথা ॥
সন্ধিত্ মিলভাকশোফিলজরৎকার্মবিরূপাক্ষয়ুক্ ।
রেখো লোহিতিকা তথা পরিষিক্তভো বতওোহপি চ ।
আয়য়ুণকহোড়পীবরমিলামঞ্জীরকপ্রোষ্ঠিক: ।
ক্রুঞা বর্জুলকোকিলে বিশ্বরকস্তক্ষোর্শনাভাবপি ।
উৎকেয়া তৃণকর্ণকুন্তমুদিতং থঞ্জাল অলেথরং ।
তৃক্ষাকোহথ পটাকভ্রিযুগলং আদৃষ্টিষেণন্তথা ।
সোঃ পিষ্ঠং রপরা কুঠা জলহদন্তক্ষসমতান্তিম: ।
শিষ্টাচারপরম্পরাতিকুশলা অভাক্কতিত্বং বিহুঃ ॥ ৫৮ ॥

২০১। অনাদি স্থৈজাতো নদামানুষীনাম্মঃ। যামুনঃ চৈন্তিতঃ। আদিস্থৈজাতস্ত্র। চান্দ্রভাগেয়ঃ বাসবদত্তেয়ঃ।

২০২। ঋষ্যন্ধকর্ষিকুরুভ্যুশ্চ।

বাশিষ্ঠঃ শাফল্কঃ বাস্থদেবঃ সাহদেবঃ।

২০০। বিকর্ণাদ্বাৎস্থে। বৈকর্ণো বাৎস্থঃ।

লুক্। টণি ষপূর্বক্ষেত্যকারলুক্। উভয়গণপাঠদামর্যাৎ নাত্র বাধা কিন্তু সমাবেশ ইত্যঙ্গীরুত্যাহ কুর্বাদিছাৎ পা ইতি এবং গাঙ্গ ইত্যাদাবপি। (২০১)। নদীনায়ো মায়ুধীনামণ্ট শব্দাদাদিস্কৈজাতবর্জিতান্দ্রস্থাপত্যে বাচ্যে টণ্ ভবতি। স্ত্রীবিহিতপ্রত্যয়াস্তাদিতি এয়ণো বাধনার্থং লক্ষণম্। চিস্তিতা নাম কাচিৎ তস্তা অপত্যং চৈস্তিতঃ। সজাতীয়াপেক্ষয়া অত্তাদিক্মপেক্ষিতং তেন চাল্রভাগাবাসবদন্তয়োরজপেক্ষমাকারস্তাদিত্বম্। নদীনামুধীতি কিম্ ? স্থপণীয়া অপত্যং সৌপর্ণেয়ঃ। নামঃ ইতি কিম্ ? মারুয়া এব শোভনায়া অপত্যং শৌভনেয়ঃ।

- (২০২)। ঋষয়ঃ প্রসিদ্ধা বশিষ্ঠাদয়ঃ অন্ধকা বৃষ্ণয়ঃ কুরব ইতি বংগ্রাখ্যা। ৠয়াদিবচনেভ্যন্তেয়ামপত্যে বাচ্যে টণ্ ভবতি। ইণোহপ-বাদঃ। শফলোহন্ধকবংশাৎ বস্থাদেবো বৃষ্ণিবংশাৎ সহদেবঃ কুরুবংশাহৎপন্নঃ। বহুলাধিকারাৎ অদস্তাচ্চেতি বিহিত্তেগ এবায়মপবাদো নাগ্রেয়াম্। তেনা-ত্রিশন্ধাৎ ৠয়বাচকাৎ ইদস্তাচ্চানিণস্তাদিতি এয়ণ্ ভবতি। এবং রাজ্মধি-বাচকাৎ প্রসেনাৎ অন্ধকবংশোৎপন্নবাচকাৎ উগ্রসেনাৎ বৃষ্ণিবংশোৎপন্নবাচকাৎ বিশ্বক্সেনশন্ধাৎ কুরুবংশোৎপন্নবাচকাৎ ভীমসেনশন্ধাৎ কারুলক্ষণ-সেনাস্তাদিণিত্যনেন কুর্ন্বাদেশত গা ইত্যনেন চ ইণ্ গ্যো ভবতঃ। কথং বিদ্যানস্তরাপত্যে বৈদিঃ বাহ্যাদেরাক্তিগণত্যাদিণত্র করণীয়ঃ।
- (২০৩)। বিকর্ণশকাদাৎশ্রে তস্থাপত্যে বাচ্যে টণ্ ভরতি। বৈকর্ণিরন্তঃ।

২০৪। শুঙ্গান্তারদ্বাজে। শোসো ভারিফাকঃ।

২০৫। ছগলাদাত্রেয়ে।

ছাগলঃ আত্রেয়ঃ।

২০৬। জনপদরপাৎ ক্ষত্রিয়াদ্যচঃ কলিঙ্গমগধসূর-মসাচ্চ।

वाकः कालिकः माग्रथः त्रीतम्मः।

২০৭। বিশ্রবদোবিশ্রবণরবর্ণো চ। বৈশ্রবণঃ রাক্ণঃ।

২০৮। ত্রিবেণ্যান্ত্রিবণশ্চ।

ত্রৈবণঃ।

২০৯। সংখ্যাসংভদ্রান্মান্তুর স্চ। দৈমাতুরঃ ধাগাতুরঃ সাংমাতুরঃ ভাদ্রমাতুরঃ। ২১০। ভৃঙন্তান্ধ স্থাৎ।

⁽২০৪)। শুঙ্গশব্দাৎ ভারদ্বাজে তপ্তাপত্যে বাচ্চে টণ্ ভবতি। লিঙ্গ-বিশিষ্টপ্রাপি গ্রহণাৎ শুঙ্গাশব্দাদপি জয়াদিত্যধর্ষদাসৌ।

⁽২০৫)। ছগলশন্ধাৎ আত্রেয়ে তস্তাপত্যে বাচ্চা টণ্ ভবতি।

⁽২০৬)। জনপদর্তিশব্দো জনপদ উচাতে ক্ষত্রিয়বৃত্তিশ্চ ক্ষত্রিয়ঃ। জনপদরপ্রেন্থ বয়ন্ত জ্মাৎ ক্ষত্রিয়বৃত্তেঃ দ্বাচঃ ক্ষত্রিয়াদিভাশ্চ তন্তাল্পত্যে বাচ্যে টণ্ ভবতি। জনপদরপাৎ ক্ষত্রিয়াদিতি টণোহপবাদঃ। বাঙ্গ ইতি বঙ্গশন্দোহয়ং জনপদবাচী ক্ষত্রিয়ঝাভিধত্তে। ক্ষত্রিয়াদিতি কিম্বাধ্য ব্যাধ্যাপ্তাং বাঞ্জিঃ।

⁽২০৭)। বিশ্রবদঃ ইত্যক্ষাৎ তস্তাপত্যে বাচ্যে টণ্ ভবতি। তস্ত স্থানে বিশ্রবণ রবণ ইত্যেতৌ চাদেশৌ স্থাতাম্। উৎসর্গলক্ষণেনৈব ট্রিঃ সিদ্ধে আদেশার্থং বচনম্।

⁽২০৮)। ত্রিবেণীশকাত্তস্থাপত্যে বাচ্যে টণ্ ভবতি। ত্রিবণাদেশক।
(২০৯।২১০)। সংখ্যাবাচকাৎ সংভদ্রশক্তাঞ্চাঞ্চ পরস্থানাতৃশব্দান্তস্ক্রা

ধান্তব্য মাতৃরপতাম্।

২১১। কন্তায়া যা ঈনশ্চ। কানীনঃ।

২১২। সাল্বাপীলামণ্ডৃকাদ্বা। র্কিঃ। সালঃ সাল্বেয়ঃ পৈলঃ পৈলেয়ঃ মাণ্ড্কঃ মাণ্ড্কিঃ। ২১০। জ্রিয়াং মণ্ড্কাগ্লায়নঃ।

মাণ্ডুকায়নী।

পতে বাচ্যে টণ্ ভবতি। মাতৃশবস্ত স্থানে মাতৃরাদেশক। টণি সিদ্ধে আদেশার্থং দ্রমন্। বৈমাতৃর ইতি ছয়োমাত্রারপত্যমিত্যর্থে তদ্ধিতারথ দ্মাহারে ইত্যাদিনা দ্বিশুঃ। সাংস্কৃত্র ইতি পূর্ব্ধং প্রাদিসমাস্কৃত্রইণ্ ভাদ্রমাতৃর ইতি পূর্ব্বং প্রাদিসমাস্কৃত্রইণ্ ভাদ্রমাতৃর ইতি পূর্বং প্রাদিসমাস্কৃত্রইণ্ ভাদ্রমাতৃর ইতি পূর্বং বিশেষণসমাস্কৃত্তইণ্। তৃওস্তাল স্থাদিতি অনভিধানাৎ বহুলবচনাহেতি শেষঃ। যস্ত জননীবাচকো মাতৃশকো নাসৌ তৃঙ্কঃ কিন্তু মান্ পূজাবামিত্যশ্বাৎ তৃঃ শংসাদেরিতি তৃপ্রত্যয়ান্তঃ বহুলবচনালকাবলুক্ তৃতিভূগেলক্ষণং তৃওস্তাদেপি ন ভবতি।

(২১১)। কন্তাশকান্তস্থাপত্যে বাচ্যে উণ্ ভবতি। যা ইত্যস্ত স্থানে ঈন ও। এয়ণোহয়নপ্ৰাদঃ।

(২১২)। সাঘাদিভান্তঞাপতো বাচ্যে টণ্ বা ভবতি। সার ইতি
সারা ক্ষত্রিরা স্ত্রীবিহিতপ্রভারান্তবাদেরণি প্রাপ্তে টণ্। জয়াদিতার্ত্তী
তু হ্রসাদিরয়ং শব্দ ইতি লক্ষ্যতে। যতঃ স্বাসাবয়বস্ত্রে দাচ ইতি টণুকঃ
স হ্লাদিইছলাত এব বিধীয়তে। পৈল ইতি পীলা নাম কাচিৎ তল্পা
উৎসর্গিকয়ণ প্রাপ্তঃ স্ত্রীবিহিতপ্রভারান্তাদিতোরণা বাধিতঃ। সোহপানাদিইছলাত ইভ্যাদিনা বিহিতেন টণা বাধিতঃ। সোহপি স্বাচশ্চানন্তা ইতি
বিহিতেনৈব এরণা তল্পায়ং পক্ষে বাধকঃ। মাণ্ডুক ইতি ইণি প্রাপ্তে টণ্
পাণ্ডুমণ্ডুকহকুলাছেতেয়েশং বক্ষ্যতি তেন মাণ্ডুকেয় ইতি ভৃতীয়রপম্।

(২১৩)। মণ্ডুকশকান্তস্তাপত্যে প্রিয়াং বাচ্যায়াং ণায়নো ভরতি। মণ্ডুকস্তেমমিতার্থে তন্তেদমিতি টণা মাণ্ডুকী।

२८८। विमारमर्गे ।

বিদস্যাপত্যং পৌজ্রাদিঃ বৈদঃ পূক্রস্থ পুক্রঃ পৌজ্রঃ। বিদ উর্ব কশ্যপ কুশিক ভরদ্বাজ কিলাত কিন্দর্ভ বিশ্বানর ঋষ্টিমেণ ঋতভাগ হর্যাথ প্রিয়ক অয়স্তম্ভ কুচবার শরদ্বৎ শুনক ধেন্ম গো পবন শিশু বিন্দু ভামজ অথ অবতীর শ্যামাক শ্যাপর্ণ হরিত কিন্দাস ব্যয়ক্ষ অর্ক কুগ বধ্যোগ বিশ্ব বৃদ্ধপ্রতিরোধ রথীতের রথস্তর গবিষ্ঠির মঠর নিষাদ স্থীদাকু পূদাকু পুনভূ পুক্র ছহিতৃ ননান্দ্। অত্র ঋষিভ্যঃ পৌজ্রাদৌ অনৃষিভ্য স্থনস্তরাপত্যে এব #।

(২১३)। বিদাদেসস্থাপত্যে বাচ্যে ণড়্ ভবতি। অত্রেত্যাদি অত্রগণে যে ঋষিবাচকাস্তেভাঃ পৌল্রাদাবপত্যে বাচ্যে ণড়্ ভবতি। যে ঋষিবাচকা ন ভবস্তি তেভাগিনন্তরাপ হা এব অত্রব পৌনর্ভবঃ পৌল্র-দৌহিত্রাদিভিঃ দারহিত্রমবাপত্যমভিধীয়তে। এতন্তু বহুলাধিকারাদভি-পানশক্রেবভাবাদা ভবতীতি বোদ্ধব্যম্। বিদাদিভাস্থনস্তরাপত্যে বৈদি-রিত্যাদি। কথং কুশিকস্থানস্তরাপত্যং কৌশিকো বিশ্বামিত্যে। উচ্যতে। ঋষিটণা ভবিষ্যতি। কথং ব্যবহিতাপত্যে বাচ্যে ইক্সন্তঃ দপ্তমঃ কাশ্রন্থনামিতি অগোপবনাদের্গ ট্ ইতি পটো লুক্ স্থাৎ তন্তেদমিত্যর্থে টণ্ এব করণীয়ঃ।

^{*} বিদাদিকে স্থাবিদকশুপোর কিন্দর্ভবিখানরকুচবারাঃ।
ধেন্নঃ শরদ্বংকুশিকত ভাগাঃ স্থাদৃষ্টিষেণঃ প্রিয়কঃ কিলাতঃ
দাজা ভরাং স্থাৎ গুনকোহথ হর্মশ্বঃ স্থাদয়স্তস্ত ইহাইসংখাঃ।
স্থারস্তরা গোপবনাবতারাঃ শ্রামাকবিন্দু অথ ভামজামৌ ॥
শ্রাপর্ণনিগুফরিতাদরোহম্মিরেকার্মবিংশা হরিতো ব্যয়স্কঃ।
তথা চ কিন্দাসননান্দ্ বৃদ্ধা বধ্যোগবিশ্বার্কস্থগা নিষাদঃ ॥
পুত্রঃ পূদাকুঃ ছহিতা স্থাকুর্গবিষ্ঠিরঃ স্থাৎ মঠরঃ পুনভূঃ।
বথীতরঃ স্থাতু রথস্তরোহশ্বিন্ তথৈব শেষঃ প্রতিরোধ এবঃ ॥ ৪৪ শ্ব

২১৫। পরস্তিয়াং পরশুশ্চ। পারশবঃ।

২১৬। জনপদরূপাৎ ক্ষত্রিয়াৎ। ।
পাঞ্চালঃ। অজনপদরূপাত্ত —পোরবঃ। অক্ষত্রিয়াত্ত —ব্রাক্ষণ ণস্থ পঞ্চালস্থাপত্যং পাঞ্চালিঃ।

২১৭। ক্ষত্রিয়রপাজ্জনপদাদপত্যবত্তস্থ রাজনি চ। পঞ্চালানাং রাজা অপত্যঞ্চ পাঞ্চালঃ।

২১৮। স্সালেয়গান্ধারেরাদিকৈজাতো গ্রঃ। আম্বর্ড্যঃ সোবীর্য্যো রাজা চ। সালেয়গান্ধারেস্ত—সালেয়ো গান্ধারো রাজা চ।

- (২১৫)। পরস্থীশব্দান্তস্থাপত্যে বাচ্যে গড়্ভবতি। পরশুশ্চাদেশঃ। বিদানিত্বাং গট্ সিদ্ধ এব আদেশার্ফং বচনন্। অত্র পরস্থীশব্দেন ভিন্ন-জাতীয়া স্ত্রী বাচ্যা রুচ্গ্লায়ং শব্দঃ। ত্রাক্ণণেনোঢ়ায়াঃ শূলায়া অপতাং পারশবঃ। অর্থান্তবে তু গৈনেয়ঃ পরক্রিয়া ইত্যায় বিষয়ঃ।
- (২১৬)। জনপদর্তিশব্দো জনপদ উচাতে ক্ষত্রিয়বৃত্তিশ ক্ষত্রিয়:। জনপদরূপমেব রূপং যক্ত ক্ষত্রিয়বৃত্তেক্তমাত্তস্যাপত্যে বাচ্যে পড় ভবতি। পাঞ্চাল ইতি জনপদক্ত ক্ষত্রিয়স্য দ্বাংজ্ঞা। পুরুরিতি রাজ্ঞঃ সংজ্ঞান জনপদস্য তত্ত্বপূ।
- (২১৭)। ক্ষত্রিররপাজ্জনপদবাচকাৎ তদ্যাপন্ত্যে বাচ্যে যে প্রত্যয়৽ বিহিতান্তে তত্ত্তরুদ্য রাজনি চ বাচ্যে ভবস্তি। যথা পঞ্চালদ্যাপত্যং পাঞ্চালঃ তথা পঞ্চালানাং রাজাপি অনাদিহৈজাত চ নিত্যবহুবচনাদিত্যক্রি প্রাপ্তে গট্ট। এবং বঙ্গানাং রাজা বাঙ্গং কালিঙ্গ ইত্যাদৌ গট্।
- (২১৮)। সাল্বেয়শকাদ্গান্ধারিশকাচ্চাত্যত আদিকৈজাতো জনপদরূপাৎ ক্ষপ্রিয়ান্ত্যাপত্যে বাচ্যে জনপদস্য রাজনি চ গ্যো ভবতি। গটোহপবাদং। আদ্বর্গ্চস্য ক্ষপ্রিয়স্যাপত্যন্ আদ্বর্গ্তাঃ আন্বর্গানাং জনপদানাং
 রাজা আন্বর্গ্তাঃ এবং সৌবীরস্যাপত্যং সৌবীর্যাঃ। সাল্বেয় ইতি তু সাল্বেয়ভ্তাক্রিরস্যাপত্যমিতি জনপদ্বেত্যাদিনা সাল্বেয়ানাং জনপদানাং রাজেতি

২১৯। ইদন্তাচ্চ। আবন্তাঃ কোন্তো রাজা চ।

২২০⁹। অজাদকোশলকুরুভ্যশ্চা আজাদ্যঃ কৌশল্যো রাজা চ। কৌরব্যঃ কৌরব্যো কুরবো রাজানশ্চ।

২২১। নিকারাদেশ্চ। নৈকার্য্যো নৈরক্যো নিষধ্যো রাজা চ।

বংহ। পাণ্ডোর্ডাণ্।

ক্ষত্রিয়রপাদিত্যাদিনা ণড়েব পৌল্লাদ্যস্তাদ্বাহ্মণাদ্য নীতি লুগত্র ন ভবতি। অসাবেয়গান্ধারেরিতি নিষেধসামর্থ্যাৎ যতো ণ্যস্যাপি লুকি তদেবং রূপং স্যাৎ।

- (২১৯)। ইকারাস্তাজ্জনপদর্মপাৎ ক্ষত্রিয়াত্তস্থাপত্যে বাচ্যে জন-পদস্থ রাজনি চ বাচ্যে গ্যো ভবতি। তুমাবস্তাঃ কৌন্তা ইতি অবস্তিকুম্বি-শক্ষাভ্যাং গ্যঃ।
- (২২০)। অজানকোশনকুক ইত্যেতেভাো জনপদরপেভাঃ ক্ষত্রিক্ষেত্র উত্তরে তত্তাপত্যে বাচ্যে জনপদস্ত রাজনি চ বাচ্যে গ্যো ভবতি।
 কুরুশনাত্তত্তাপত্যে বাচ্যে কুর্বাদেশ্চ গ্য ইতি গ্যং বক্ষ্যাতি স ক্ষত্রিয়াদপত্যে
 বাচ্যে। জনপদরপাদিত্যনেন দ্যুচ্ মাদিশেষবিহিতেন টণা বাধিতপ্তধাধনার্থং বচনম্। কৌরব্য ইতি যাচোকদ্পুণ ইতি গুণঃ তদ্ধিত্বে ইত্যানেনাবাদেশঃ। কুরব ইতি জনপদরপাণ ক্ষত্রিয়াদির্তিয়ামিতি গাস্ত লুক্। কথং
 কৌরব্যাঃ পশব ইতি যতোহত্ত ক্ষত্রিয়াপত্যানামেবাভিধানং তদত্র কেচিদক্ষত্রিরে ক্ষত্রিয়োচিতবৃত্তিত্বমধ্যারোপ্যতুং কৌরব্যা ইতি প্রযুত্ত্রির লগত্ত্বাদ্বর শক্ষত্রির কেচিৎ সমর্থরপ্তি অথবা কৌরব্যে
 সাধব ইতি তত্র সাধাবিতি বং হলোবেঙ্ যন্ত ইতি যলুক্। কথং সংবক্ষাত্রাং কৌরবাঃ তন্ত্রেদমিত্যর্থে উৎসাদিগণপাঠাৎ ণভত্র করণীয়ঃ।
- (২২১)। নিকারাদেজ নপদর্মপাৎ ক্ষত্রিয়াৎ তস্তাপত্যে বাচ্যে জন-পদস্ত রাজনি চ গো তবতি।
 - (২২২)। পাঞ্ শকাজ্জনপদরপাৎ কবিয়াতভাপত্যে জনপদস্য

পার্ব্যাে রাজা চা। জনপদরূপাদিত্যের। পাগুনাম্ম: ক্ষব্রিয়-স্থাপত্যং পাগুরঃ। ক্ষব্রিয়াদিত্যের। ব্রাহ্মণস্য পাণ্ডোরপত্যং পাগুরঃ। তম্মামের রয়োঃ পাগুয়া ইত্যসাধুরিতি পশুপতিঃ।

২২৩। উড়ুম্বরাদেরিণ্।

ওঁড়ুম্বরি:। উড়ুম্বর তিলখল মদ্রকার যুগদ্ধর ভুলিঙ্গ শরদণ্ড প্রত্যগ্রথ কলকূট অশ্মক । ৯। ইতো জনপদরূপাৎ ক্ষব্রিয়াদিতি নির্ত্তম্।

२२८। जन्छा का

দাক্ষিঃ প্লাক্ষিঃ দাশরথিঃ। ভাস্যেদমিত্যাদ্যর্থবিবক্ষায়াস্ত । দাশ-রথঃ।

রাজনি চ বাঁচ্যে ড্যণ্ ভবতি। ডিস্বাছ্কারল্ক। পাণ্ডুনায়ঃ ক্ষান্তিয়স্যেত্ত্যাদিনা এতহ্তন্। যঃ পাণ্ডুশকো গোঁঅস্বেন প্রসিদ্ধস্যাত্র সত্ত্রে গ্রহণন্। যথা বাহ্বাদেশ্চেত্যগ্রোক্তং বাহন নি কশ্চিৎ তস্যাপত্যং বাহব ইতি স্থবা সামীপ্যেন বো জনপদরূপস্তস্থাদয়ং প্রতায়ঃ নহি কৌরবঃ পাণ্ডুঃ সামীপ্যেন জনপদরূপঃ পাণ্ডব ইতি শিবাদিস্বাটিন্। পাণ্ডা ইত্যসাধুরিতি জনপদ-রূপাৎ ক্ষব্রিয়াহিহিত্স্য তদ্ধিত্য্য বহুবচনে লুথিধানাং।

(২২৩)। উভূষরাদের্জনপদরপাৎ ক্ষপ্রিয়াত্তস্যাপত্যে বাচো জনপদস্য রাজনি চ ইণ্ ভবতি। উভূষরতিলথলো মদ্রকারো যুগন্ধরঃ। ভূলিকঃ শরদগুল্চ কলকৃটস্তথাশ্যকঃ প্রত্যগ্রথ ইতি জ্রোঃনবৈবোড়ু-স্বরাদয়ঃ।

(২২৪)। অকারাস্তাচ্ছকাৎ তস্যাপত্যে বাচ্যে ইণ্ভবতি। অপত্যে বিহিত্স্য টলোহয়মপ্রাদঃ। অস্যাপত্যমিরিতি তু আদন্ত-

উড়্দরো মদ্রকারঃ কলকৃটো যুগন্ধরঃ।
 প্রত্যগ্রপতিলথলশরদগুশ্মকা অপি।
 জুলিঙ্গশ্চেম্বরাদাবেতে নব সমীরিতাঃ॥ ৯ %

২২৫। অস্থরাপ্লায়নঃ জিয়াম্। আস্থরায়ণী।

२२७। वांश्वारमञ्जा

বাহবিঃ। বাজ চটাকু উপচাকু নিচাকু চূড়া বলাকা বৃকলা পুৰুব-সদ্ অন্তরহত স্থমিত্রা তুর্মিত্রা কৃষ্ণ বেদ অজীগর্ত্ত যু্থিষ্ঠির অর্জ্জুন শাদ্ব গ্লু প্রভাগ্ন রাম জজ্মা ইন্দ্র শর্মন্ উদক্ষ অজধেনু উপবিন্দু ম্যিকা ধুবকা গ্রুবকা নগলা ভগলা শকলা অমৃত্যুহ দেবশর্মন্ অগ্রিশর্মন্ কুনামন্ স্থান্মন্ পঞ্চন্ সপ্তন্ অফন্ শঙ্খভেদিন্ খর-মদিন নগরনদিন্ প্রাকারনদিন্ মাষশরাবিন্ ক্লেমধৃত্বন্ ইত্যাদি।

বদেকমিতি ব্যপদেশেনাকারাস্তথাং। কথং তহি প্রদীয়তাং দাশরণার মৈথিলীতি চোদাং ফদি নিধায়াহ তস্যেদমিত্যাদার্থবিবক্ষায়ান্ধিত্যাদি তেন নায়মর্থাস্তরবিহিতস্যাপনাদ ইত্যভিপ্রায়ঃ। হুস্বোক্ত্যা দীর্ঘস্যাগ্রহণাং কীলালপা ইত্যাদৌ ন স্যাং।

(২২৫)। স্কস্করশকান্তস্যাপত্যে বাচ্যে স্তিয়াং বাচ্যায়াং পায়নো ভবতি। স্মাস্থ্রায়ণীতি জাতেরস্ত্রীনিয়তাদযোপাস্তাদিতি স্ত্রিয়ামী স্ম্রা-পত্য প্রত্যয়ান্তা জাতিঃ পুংসি তু স্মাস্থরিঃ।

(২২৬)। বাহ্বাদেশ্চ তদ্যাপত্যে বাচ্যে ইণ্ ভবতি। বাহবিবিতি
যাচোকদ্পণ ইতি গুণঃ। যেহতানদন্তান্তেভ্যোহপ্রাপ্তে চূড়াশক্সা দাচশ্চাসনা ইতি এগনি প্রাপ্তে বলাকাদেরনাদিছৈজাতো নদীমান্থবীনাম ইতি
টনি প্রাপ্তে পৃষ্ণরসদ্প্রভৃতিষ্পি হলস্তেষু অনদন্তাদপ্রাপ্তে কৃষ্ণাদিভ্যোহদস্তেভ্য প্রয়ন্ধকর্ফিকুকভাশ্চেতি টনি প্রাপ্তে বিধানম্। উদঞ্চ ইতি কিবন্তঃ:
পঠ্যতে উদীচোহপত্যং ঔদঞ্চিঃ তদ্ধিতযাচো শসাদী ইতি শসাদিখাৎ শসাদৌ
লুগন্চোহপূজায়ামিতি প্রাপ্তম্য নকারলুকঃ শেষো বৃদ্ধাদিতি প্রতিবেধঃ।
বাহপ্রভৃতয়ঃ উদঞ্চপর্যস্তা গোত্রখেন প্রসিদ্ধাঃ। বাহ্বাদেরাক্তিগণত্বাৎ
অনস্তরাপত্যে বৈদিঃ প্রবি: গার্গিঃ গাঙ্গিঃ বাৎসিঃ কৌঞ্জিঃ ব্রাক্ষিরিত্যাদয়ঃ।
উদ্যালকবল্মীকাক্ণাদয়োহপি প্রিটিণ বাধনার্থমিহ দ্রন্তব্যাঃ।

থেহত্র পোত্রাবাচিত্বেন প্রাসিদ্ধান্তেজ্যো নাগোত্রবাচিত্রে ইণ। । বাহুন মি কশ্চিন্তস্যাপত্যং বাহুবঃ *।

২২৭। শিরোলোমান্তাচ্চা হান্তিশীর্ষিঃ উভুলোমিং।

২২৮। উদঙ্ক**যশুরাভ্যাং নামি।** উদ**ঙ্কিং শাশুরিং।**

২২৯। শলস্বোরুল্লুক্ চাকে শিকে। শালক্ষিঃ।

(২২৭)। শির**ঃশন্ধান্তা**লোমশন্ধান্তাচ্চ তস্যাপত্যে বাচ্যে ইণ ভবতি। হাস্তিশীর্ষিরিতি হস্তিশিরস্থোহপত্যমিতি ইণি রুতে শিরসঃ শীর্ষন্-শীর্ষাবিতি শীর্ষাদেশঃ। উড়ুলোমিরিতি অনীতদ্ধিতাচ্যয়োশ্চেতি নকারলুক্।

(.২২৮)। উদক্ষ খণ্ডর ইত্যেতাভাগি তদ্যাপত্যে বাচ্চা ইণ্ ভবজি
সংজ্ঞারাম্ ওদিকিরিতি উদক্ষো নাম কশ্চিৎ অদম্ভবাৎ প্রাপ্তে যৌগিকশব্দারিষেধার্থং বচনম্। খাণ্ডরিরিতি খণ্ডরো নাম কশ্চিৎ অদম্ভবাৎ প্রাপ্তে
সম্বন্ধিশব্দারিবেধার্থং বচনম্। সম্বন্ধিশব্দান্ত্র খণ্ডরাদ্য ইতি যে ক্তে খণ্ড্যা
ইতি ভবতি।

(২২৯)। শলকুশকান্তস্যাপত্যে বাচ্যে ইণ্ভবতি উল্লুক্চ।

^{*} বাহুদঞ্চটাকুশান্বধূবকাঃ প্রচ্যায়বামাজ্জুনাঃ।

ক্রম্পে বেদযুধিষ্টিরান্তরহতোহজীগর্তচূড়াগদাঃ।

হমি ত্রানগলাজধেফুভগলাঃ পঞ্চাইসপ্তানজুৎ।

জন্মাযশরাবিপুক্রসদঃ স্থাদে বিশ্বাপি চ।

প্রাকারাৎ বরতন্তথা নগরতো নদীক্রঃ শর্মা প্রিতঃ।

শর্মা চাকুরুপান্নিতোহপি শক্লা মিত্রা স্বতো মৃষিকা।

বিন্দুঃ স্যাহপতঃ স্থনাম বুকলা স্যাৎ শৃশুভেদী বলা
কা কোর্নাম মতঃ ধ্রবোত্তরগকা ক্রেমান্যধূহাপি, চ॥.৪৬॥.

২০ । অমিতোজ্গসন্ধূয়েহিন্তসং সলোপ দে। , আমিতোজিঃ সাভূয়িঃ আন্তিঃ।

২ ৩ । ব্যাসাদের্ডক্ চ।

বৈয়াসকিঃ। ব্যাস বুরুডঃ নিযাদ চণ্ডাল বিশ্ব স্থধাতৃ 🛪।

२७२। कांक्रनक्षनरमभाखानिन्।

তান্ত্রবায়িঃ লাক্ষণিং বৈশ্বক্সেনিং।

२००। क्वारमण्ड गाः।

নাপিত্যঃ লাক্ষণ্যঃ হারিষেণ্যঃ কৌরব্যঃ কৌরব্যো কৌরব্যাঃ।

অকৌশিকে কৌশিকগোত্রবাতিরিক্তে বাচ্যে ইত্যর্থঃ। কৌশিকগোত্রে
তু। ক্রোষ্টুশলক্ষারুল্ল,ক্ চ ইতি গায়নেন শালস্কায়ন ইতি ভবতি।

- (২৩০)। অমিতৌজন সদ্ভ্রদ্ অন্তদ্ ইতোতেভান্ত আপতো বাচো ইণ্ ভবতি। সনুক্ চ। সংকাদৌ ভ্রাংকেতি সদাদীনাং পূজামানৈ-রিতি সমাসঃ।
- (২৩১)। ব্যাসাদেক্ত স্থাপত্যে বাচ্যে ইণ্ ভবতি তৎসন্নিযোগে ডগাগমন্চ। বৈয়াসকিরিতি ডিব্রাদকারলুক্ বৃদ্ধিস্থানন্ত পূর্ব্বয়োস্তৎসম্বনিনাঃ
 পদান্তয়ে, বিভিত্ত যৌবাবিতি যকারন্ত স্থানে ঐয়ঃ বৈয়াসক্যাদরঃ ককারাগমেহপি সিদ্ধান্ত। সৌধাতকিসিদ্ধার্থং ডকো বিধানম্। নিযাদস্যাপি বিদাদাবপি পাঠানৈষাদঃ।
- (২৩২)। কারু: শিল্পী তন্ত্রবায়াদিঃ। কারুবাচকাৎ লক্ষণশন্ধাৎ সেনাস্তাচ্চ শন্ধাৎ তস্যাপত্যে বাচ্যে ইণ্ ভবতি। পূর্ব্যলক্ষণানুবৃত্ত ইণ্ ডক্বিধানাসহচরিত ইতি স্পষ্টার্থং পুনরিহ ইণ্, গ্রহণম্। অদস্তবাদেব ইণ্, প্রাপ্তঃ উত্তরস্ত্রে এতদম্বৃত্ত্যা প্রপ্রতায়েন সহ সমাবেশার্থং বচনম্। বিষক্সেনাদে প্রযন্ধকর্ফিকুরুভাতে চতানেন টণ্, বাধনার্থং বচনম্। এক-যোগকরণম্ভ ন সম্ভবতি কুর্বাদেশ্চ ইতি ইণ্, প্রসন্ধাং স্যাৎ।
 - (২৩৩)। কারুবাচকালক্ষণশ্বাৎ সেনাস্তাৎ কুর্বাদেশ্চ ভদ্যাপত্যে

^{*} वारमा निवासा वक्छः स्थाजा रुखानविशाविकि यहे अपिकी: * I + I

২৩৪ । কুরোঃ ব্রিয়াং পায়নঃ।
কোরবায়ণী। কুরু গর্গর শকল তক্ষন্ মঙ্গুষ অবিশারক রথকার
চপাট্টক কবি মতি বাচ্ পিতৃমৎ ইন্দ্রজালি ধায়জি দামোফীষি
গণিকা কৈশোরি কাপিঞ্জলাদি কুট শলাকা মুর এরকা শুল্র ভবু
দর্ভ শূর্পনায় শ্যাবনায় শ্যাবরথ শ্যাবপুল্র সত্যন্ধার বড়ভীকার
পথিকারিন্ শাকিন্ ইন পিগুমূল শকস্তৃ ভর্তৃ হস্ত। ৩৮। কেচি
ন্তাযায়াং বেণশব্দং পঠন্তি। তথাচ, বৈণ্যং পৃথুং হৈহু মজুনক্ষেতি *।

বাচ্যে পো ভবতি। অজাদকোশলকুক্নভ্যশ্চেতি কুক্নশ্বাং গ্যো বিহিত এব স তু ক্ষল্রিয়াৎ ভদিতরোহস্থ বিষয়ঃ। অতএব কৌরবাা ইত্যত্র জ্বন-পদরূপাৎ ক্ষত্রিয়ামিতি বহুত্বেহপত্যপ্রত্যর্ম্য ন লুক্। তিকাদি-পাঠাৎ কৌরবাায়বিঃ।

(২০৪)। কুরুশকাৎ স্ত্রাপত্যে বাচ্যে ণ্যায়নো ভবতি। কৌরব্যায়শীতি কুরোরপত্যং স্ত্রী যাচোরুদ্গুণ ইতি গুণ: তদ্বিত্বে ইত্যবাদেশঃ
জাতেরস্ত্রীত্যাদিনা স্ত্রিয়ামী অত্রাপত্যপ্রত্যয়াস্তা জাতিঃ। শকস্তুশলোহত্র
পঠ্যতে শকে ভবতীতি কিবস্তঃ গণপাঠসামর্থ্যাৎ মধ্যে মকারঃ। রথকারশক্ষোহত্র পঠ্যতে স জাতিবিশেষবচনঃ শিল্লিবচনাত্ত্র কারুছেনৈব প্রাপ্তেঃ।
কেচিদিত্যাদি বেণাচ্ছন্দিসি প্যো ভবতীতি নিয়তমেব কেচিদভাষায়ামপি
মন্তান্তে।

কুর্বাদৌ কুরুশুত্রদর্ভশকলাং কাপিগুলাদির্ন ।
 পিগুম্লচপাটকো কবিমতা কৈশোরিভরে রকাং ॥
 দামোফীব্যবিমারকো চ পিতৃমনাঙ্গ ব্বাচঃ কুট: ।
 সত্যন্ধারশকস্তুবৌ তু গণিকা স্যাদ্ধারজির্গর ।
 ভর্ত্তা শ্রাবরপেক্সজালিবড়ভীকারাং শলাকাপি চ ।
 স্যাত্তক্ষা রথকারশাকিপথিকারিশ্বাবপুত্রা ইনং ॥
 শুর্পাৎ শ্রাবপদাচ্চ নায় উদিতো হস্তেত্যগাস্তিংশতা ।
 ধীরৈক্তিগরপরপেরাতিকৃশলৈং প্রোক্তাং প্রয়াদমী ॥ ৫৮ ॥

২৩৫। সন্ত্রাজঃ ক্ষত্রিয়ে। সামাজ্যঃ ক্রিয়ঃ। অন্তর। সামাজঃ।

ুঁ ২০৬**। কেশিক্তাঃ কেশিন*চ**। কৈশিক্তঃ।

- ৩৭। বাষর্থাৎ কণুবিহিত্যণ্বচে। বামর্থাঃ বামর্থাে বামর্থাঃ। বামর্থাভাগতাং স্ত্রী বামর্থী বামর্থারীরনী বামর্থাভাপতাং যুবা বামর্থাায়নঃ বামর্থাভারাঃ বামর্থাঃ। সংঘাষ্থাধ্লকণানি বামর্থানি।

२०४। ७ जारन द्वारा

- ২০৬)। কেশিনীশন্দান্তস্থাপত্যে বাচ্চে প্যো ভবতি। কেশিস্তাঃ স্থানে কেশিনাদেশক। গণপাঠেনৈব গাঃ প্রাপ্তঃ আদেশর্থেং বচনম্। অন্তথা যাজাদেরনেয় ইতি পুংবদ্ভাবে অনীতদ্ধিতাচম্মোণ্ডেতি নলুকি অদিলুগিতীকারলুকি ক্বতে কৈশ্র ইতি স্থাৎ।
- (২০৭)। বামরথশকাৎ তস্যাপত্যে বাচ্যে গ্যো ভবতি। স কথবিহিত্যণ্বচ্চ ভবতি। কণ্শকো গর্গাদিগণে পঠ্যতে গর্গাদের্যণ্পৌলাদাবিতি যণি কতে যদিহিতং তত্তমাদপি ভবতাত্যর্থঃ। তক্ষাৎ
 কুর্বাদিগণপাঠেনেব প্যঃ প্রাপ্তঃ কণ্বিহিত্যণ্বদর্থং বচনম্। কথশকানস্তরং গর্গাদাবস্থ পাঠে তু পৌলাদাবেব প্রত্যয়ঃ স্থাৎ। বামরথা ইতি
 বছবচনে বণশ্চেতি পালুক্ বামরথস্থাপত্যং স্ত্রী বামরথী বামরথায়নীতি
 স্তিরাং প্যায়নো বেতি পক্ষে প্যায়নঃ। বামরথস্থাপত্যং যুবেতি বামরথ্যায়ন ইতি পৌলাদিযণিণস্তাচ্চেতি যুবার্থে পায়নঃ। বামরথান্থ ছাত্রা
 বামরথা ইতি পৌলাদিপ্রভারান্তাচ্ছকলাদেরিতি টণ্। বামরথানি
 স্থাক্ষলক্ষণানীতি ণড়িণ্থণস্থাৎ সংজ্বাক্ষঘোষলক্ষণেদিতি টণ্।
- (২০৮)। শুল্র ইত্যেবমাদিতাস্তস্থাপত্যে বাচ্যে এরণ্ স্থাৎ। যেহত্রাকারাস্তান্তেভ্যোহদস্তাচ্চেতি ইণি শলাকাদিভ্যোহনাদিস্থৈজাতো নদীমানুবীনাম ইতি টণি শেষেভাস্তস্থাপত্যে ইতি টণি প্রাপ্তে বিধানম্। কিক্সা কুক্লাস রোহিণী অজবস্তি প্রভূতরেংক চতুম্পাক্ষাতিবাচিন

⁽২৩৫)। সমাজ ইত্যশাৎ ক্ষত্রিয়েহপত্যে বাচ্যে গো ভব্তি।

শোভেয়ঃ। শুল রিষ্ট পুর ব্রহ্মকৃত শতদার শতাহর শলাকা শালা খুল কুমারিকা কুবেরিকা অন্ধিকা গন্ধপিঙ্গলা খরোমতা রোহিনী অন্ধবস্তি বিশ্ব ক্রন্দি শলাকান্ধ লেখান্ধ বিমাতৃ বিধবা কিকসা করিনী দিশ্ শাল্ক শাক্ষি গঙ্গা গোধা কুকলাস অনীবী প্রবাহণ ভরত ভারত মুক্ত ময়ূর কপূর অন্তর আলীঢ় স্থদন্ত স্থদক্ষ স্থামন্ কদ্র অকাশায়ন কিশোরিকা জিল্লাশিন্ পরিধি বায়্দন্ত শকল শবল ঋড়ুর আশোক অন্তর্গন্তিন্ হরিতিন্ বলীবর্দিন্ বিশ্বচিৎ বীজ অশ্ব অন্থিন্ অশ্বন্ শ্বন্ অজ্বির ইত্যাদি।

ইতি গ্রাসঃ তেভাশ্চতুপদশ্চেতানেনৈব এয়ণি প্রাপ্তে পাঠসামথ্যাদ চতুপাজ্জাতিবাটিনোহমী শব্দা ইত্যবগন্তব্যাঃ। বিধবাশকোহত পঠতে স্থাবিহিতপ্রতায়ান্তাদিতানেনৈব এয়ণ্ সিদ্ধঃ তশ্মাৎ যদাসো জঃশালাভিশানিনা তদা ব্যঙ্গাজ্জালাভায়াধ্ব গোরো বেতি প্রাপ্তম্য ণেরশু বাধনার্থঃ। গোধাশক্ষ্ম পাঠো গোধায়াশ্চেতি আরণ্প্রতায়েন সহ সমাবেশার্থঃ। মৃক্তুশ্দানার্কণ্ডেয়ঃ অপাত্রক্লোরেয়নীতি উত্যরলুক্ মার্ক্ড ইতি তু

^{*} শুল্রলীচ্স্নন্তকক্রশকলা গোধা মহ্বোহন্বিকা।
শাল,কং ক্রকলাসবীজশবলা গঙ্গা মৃকণ্ড্রন্তঃ।
বিশ্বক্রনিবিমান্তভারতথরোয়ত্তাঃ স্থনামাখিনো।
দিক্শাক্ষিকুবেরিকাহরিতিনো ক্রেয়া ততো রোহিণী।
আকাশারনবিশ্বচিন্ত্র পরিধিশাশোকশালাখুলাঃ।
কর্পুরাগ্রতরাজনন্তিবিধবানীবিশলাকাক্রবঃ।
অন্তদ্ ষ্টিশতাহরাশম্নিতং স্থান্সরযুক্ পিঙ্গলা।
বল্যা বর্দ্দিকুমারিকা পুরপুরং রিষ্টং ততো ক্রিলী।
লেখা ভ্রকিক্রমারিকা পুরপুরং রিষ্টং ততো ক্রিলী।
বেন্ধাভ্রকিক্রাস্থন্দক্ষভরতাঃ স্থাতাং খড়ুরাজিরো।
বেন্ধপ্রাঙ্কৃতঃ প্রবাহণশত্বারো শলাক,পি চ।
জিন্ধাশ্রাকশোরিকাং সমুদিতা দ্রান্তব্যযুক্তথা।
বিজ্ঞেরাঃ শতশোহপরেহপি পটুভিনীবৈঃ প্রয়োগন্থিতাঃ। ৬০ ব

२० । ठङ्काम मह।

কমগুল্লা অপীত্যং কামগুলেয়ঃ শিতিবাহবা অপত্যং শৈতিবাহেয়ঃ জন্মঃ জান্বেরঃ।

২৪০। স্ত্রীবিহিতপ্রত্যয়াস্তাৎ। সোপর্ণেয়ঃ কৌন্তুকারেয়ঃ।

২৪:। দ্ব্য**চ×চানদ্যাঃ।** দাত্তের=গোপ্তেয়:। নদ্যাস্ত । গোল:।

মৃকওশকাং। যশ্চ কজশকঃ কজকমগুলুভ্যাং নামীতি উপ্রতায়ান্ত-স্তমাং স্ত্রীবিহিতপ্রত্যয়ান্তাদেব এয়ণ্ সিদ্ধন্তদিতরোহত্র হ্রস্বাস্তঃ পঠ্যতে কিন্তু জিনেন্দ্রেণ তত্রোক্তং চতুম্পাড্টঞোহপবাদো হ্রস্বান্তাদেব কজ্র-শক্ষাড্টগিতি এবং সতি স্বর্দ্যার্থেহস্ত পাঠঃ ইহ শাস্ত্রে প্রমাদকৃত ইতি লক্ষ্যতে।

- (২৩৯)। চন্থারঃ পাদা যক্ত দ তথোক্তঃ স্থানগাগুঢ়াকেতি অকরেলাপঃ সমাসকতাল্লোপফোত্যাদিনা হ্বঃ। চতুপাজ্জাত্যতিধারিনঃ শকাভ্রমাপতো বাচ্যে এয়ণ্ ভবতি। কমগুলাদয়ঃ শকাশুত্বপাজ্জাতিবাচিনঃ। কামগুলেয় ইত্যাদো অপাগুকদ্রোরেয়ণীতি উকারলুক্ কমগুলু শিতিবাহুশকৌ ক্রফকমগুলুভাাং নামীতি বাহ্বস্তাচেতি চ উপ্রত্যায়াস্থো প্রাপ্তকৌন তৌ চতুপাজ্জাতিবাচিনৌ অতএব তত্যোক্তং কমগুলুনাম কাচিদিতি আভাাং স্ত্রীবিহিতপ্রত্যয়াস্তাদিতি সিদ্ধে তদিত্রাহস্থ বিষয়ঃ।
- (২৪০)। স্ত্রাধিকারবিহিতপ্রত্যয়াস্তাৎ শব্দান্তস্থাপত্যে বাচ্যে এয়ণ্ ভবতি। কৌন্তকারেয় ইতি কুন্তকারীশব্দষ্টিন্তানীপ্রতায়াস্তঃ।
 স্তিয়া ইতি কৃতে স্ত্রীলিঙ্গদ্বাৎ স্ত্র্যাধিকারবিহিতপ্রত্যয়বর্জ্জিতাদপি স্থাৎ
 দরদোহপত্যং স্ত্রী জনপদরূপাদিত্যাদিনা টণ্ অপ্রাচান্তর্গাদেরত ইতি
 টণ্লুক্ তক্তা অপত্যং দারদঃ।
- (২৪২)। অনাদিহৈজাতো নদীমামুধীনাম ইতি টণো বাধনার্ধং বচনম্। নদীবর্জ্জিতাৎ স্ত্রীবিহিতপ্রত্যয়াস্তাৎ দ্বাচস্তস্থাপত্যে বাচ্চে এমণ্ভবতি। গোলা গোদাবরী।

- ৪২। ইদন্তাকানিণ্ডাৎ।

আত্রেয়ঃ নৈধেয়া। দ্বাচ ইতোব। মারীচা। ইণস্তাত্ত্রী দাক্ষায়ণা।

২৭০। বড়বারাঃ **গুক্রলে।**

বাডবেয়ঃ। অত্যত্র। বাডবঃ।

२८४। लक्षनभागावानिएक।

লাক্ষণেয়ঃ শ্রামেয়ঃ। অন্যত্র। লাক্ষণিঃ শ্রামায়নঃ।

২৪১। বিকর্ণীতকাৎ কাশ্যপে। বৈকর্ণোয়ং কৌশীতকেয়ং। অস্তত্র। বৈকর্ণিং কৌশীতকিং।

২৪৬। জ্রাবের জব**শ্চ।** জ্রোবের:।

২২৭। পাভুমভূকজুজুলাদা। পাওবেয়ঃ পাভবং মাভূকেয়ং মাভূকিং দৌদুলেয়ং জুদুলীনং।

⁽২৪২)। ঢকারো দ্বাচ ইতাককর্ষণার্প: ইকারাস্তাচ্চ্নাৎ দ্বাচ ইনস্বর্জিতাৎ তম্পুণতো বাচ্যে এরণ্ ওবতি। দাক্ষারণ ইতি দক্ষ্যা-পতাং দাক্ষিঃ অর্ম্ভাচ্চেতি ইণ্ ত্র্যাপতো বাচ্যে পৌল্রাদিযণিণস্ভাচ্ছেতি পায়নঃ।

⁽২৪৩)। বড়বাশকাৎ শুক্রলে বাচ্যে এরণ্ ভবতি। অপত্যবিহিত-স্ততোহপক্ষয় শুক্রনে বিধীয়তে তেনাপত্যে বাচ্যে বাড়ব ইতি ভবতি।

⁽২৪৪)। লক্ষণশন্ধী প্রামশনাচ্চ বাশিষ্টেহপত্যে বিশেষে বাচ্যে এরণ ভবতি। শ্রামায়ন ইতি অখাদেশীয়ন ইতি ণায়নঃ।

^{ি (}২৪৫)। বিকর্ণশ্বাৎ কুশীতকশ্বাচ্চ কাশ্যপেহপত্যে বাচ্যে এয়প্ ভবতি।

⁽২৪৬)। জ্রশকান্তভাপত্যে বাচ্যে এয়প্ভবতি। তৎসন্নিযোগে ভ্রবদেশ্সট।

⁽২৪৭)। পাও্বাদিভান্ত আপতো বাচ্যে এয়ণ্বা ভবতি। ছক্--লীন ইতি ঈনস্বদ্ভাচেতি ঈনঃ।

২৪৮। স্থভগাদেরিনেয়ণ্।
সোভাগিনেয়া দেবিগিনেয়া। স্থভগা দুর্ভগা কল্যাণী বন্ধকী জ্যাষ্ঠা
কনিষ্ঠা সধ্যমা জরতী বলীবদী অমুদৃষ্টি অমুসৃষ্টি *। ১১।

২৪৯। সত্যাং কুলটায়া বা। কোলটিনেয়ং কোলফ্রেয়ং।

২৫০। গৈনেয়ঃ পরস্তিয়াঃ। পার<u>স্তৈ</u>ণেয়ঃ।

২০১। চটকার্মেরঃ। চটকস্থ চটকায়াশ্চাপত্যং চাটকৈরঃ।

৫২। জণ্টাদেরারণ্।
 জাণ্টার:। জণ্ট ঘণ্ট মৃগী মূষিকা কাকী পা। ৫।

- (২৪৮)। স্কুজাদিভাস্তস্যাপত্যে বাচ্চা ইনেয়ণ্ ভবতি। স্থীবিহিত-প্রভায়ান্তেভা এয়াণ শেষেভাষ্টণি প্রাপ্তে বিধানম্। সৌভাগিনের ইতি হুৎসিন্তুভগাস্তস্যেতি উভয়পদর্কিঃ।
- (২৭৯)। সত্যাং বর্ত্তমানায়াঃ কুলটায়াস্তস্যাপত্যে বাচ্যে ইনেরণ্ বা ভবতি। পক্ষে ত্রীবিহিতপ্রত্যয়াস্তাদিতি এয়ণ্। অসত্যান্ত—বা কুলা-ক্যুটিত অভিসারমিচ্ছন্তী তস্যা ব্যক্ষাহঃশীলাভ্যাঞ্চ ণেরো বেতি ণেরঃ। কৌলটেরঃ পক্ষে কৌলটেয়ঃ।
 - (২৫০)। পরস্ত্রীশব্দান্তস্যাপত্যে বাচ্চো গৈনেয়ো ভবতি।
- (২৫১)। চটকশব্দান্তস্থাপত্যে বাচ্যে পৈরো ভবতি। প্রায়ো নাম-গ্রহণে লিঙ্গবিশিষ্টস্যাপি গ্রহণমিতি পরিভাষয়া আহু চটকায়া-চাপত্যমিতি। (২৫২)। জন্ট ইত্যেবমানেকত্তরে ত্তমাপত্যে বাচ্যে আরণ্ স্থাৎ।

স্বভগা হুৰ্ভগা জ্যেষ্ঠা বনীবদা থ বন্ধকী
কনিষ্ঠা মধ্যমা চৈব কল্যাণী জন্মতীত্যপি।
অনোদৃষ্টিশ্চ স্থাইশ্চ ৰুদ্রা: স্থা: স্বভগাদিকা: ॥১৯॥
† জন্টবর্ণ্ডৌ মুগী কাকী জন্টানৌ মুধিকাপি চ ॥৫॥

২৫৩। গোধায়াশ্চ। গোধারঃ শুক্রাদিন্নাদেগাধেয়ঃ।

২৫৪। ব্যঙ্গাভুঃশীলাভ্যাঞ্চ শেরো বা। গৌধেরঃ গৌধেয়ঃ কাণেরঃ কাণেয়ঃ দাসেরঃ দাসেয়ঃ কৌলটেরঃ কৌলটেয়ঃ।

২৫৫। ভাতুর্ব্যঃ। ভাতৃব্য:।

২৫৬। ঈয়ঃ সম্বস্থ ।

ভাতীয়ঃ সম্ভীয়ঃ।

২৫৭। মাতৃধ্যপিতৃধ্যভাগি ডেয়ণ্চ। মাতৃধ্যীয়ঃ মাতৃধ্সেয়ঃ পিতৃধ্সীয়ঃ পিতৃধ্সেয়ঃ।

২৫৮। শ্বশুরাদ্যঃ। শুশুর্যাঃ।

২৫৯। রাজঃ ক্ষজ্রিয়ে। রাজনঃ। অন্তত্র রাজনঃ।

(২৫৫)। ভ্রাতৃশকান্তস্যাপত্যে বাচ্যে ব্যঃ স্থাৎ।

(২৫৬)। ভ্রাতৃশব্দাৎ স্বস্থাকাত তস্থাপত্যে বাচ্যে ঈয়ো ভবতি।

(২৫৭)। মাতৃষ্ঠশব্দাৎ পিতৃষ্ঠশব্দাক তপ্তাপত্যে বাচ্যে ঈরো ভবতি। পক্ষে ডেয়ণ্ড। অগ্যাদেস্তদাদাবিতি বন্ধং ডিজাং একারলুক্।

(২৫৮) । শশুরাত্তস্যাপত্যে বাচ্যে যো ভবতি।

(২৫৯)। রাজন্শকাৎ ক্ষত্রিয়জাতো বাচ্যায়াং যো ভবতি।

⁽ ২৫৩)। গোধাশকাদপি তদ্যাপত্যে বাচ্যে আরণ্ ভবতি। জন্টা-দিপাঠেনৈব দিদ্ধে লক্ষণকরণমুক্তরস্ত্রে গোধানুসুত্যর্থম্।

⁽২৫৪)। বিগতমঙ্গং বদ্যাঃ সা ব্যক্ষা ছৃষ্টং শীলং যস্তাঃ সা তুঃশীলা । গোধাশব্দাদ্যক্ষাভিধায়কাৎ ছুঃশীলাভিধায়কাচ্চ তদ্যাপত্যে বাচ্যে ণেরো বা ভবতি। কাণায়া অপত্যং কাণেরঃ দাদ্যা অপত্যং দাদ্যেরঃ পক্ষে দ্যুচশ্চা-নদ্যা ইতি এয়ণ্!

२७०। क्लारिशयकम्ह।

कुनाः किलायकः।

২৬১। বহুপ্রতায়পূর্ববাচ্চ।

ঈষদসমাপ্তং কুলং বহুকুলং তদপতাং বহুকুল্যঃ বাহুকুলেয়ক:।

२७२। जेन्छ्रमञ्जूष ।

কুলীন: বছকুলীন: আঢ্যকুলীন:।

২৬০। হুক্লাগ্নেয়ক চ।

(मोक्रू त्वयकः प्रकृ वीनः।

২৬৪। নড়ণীনো চ মহাকুলাৎ।

মহাকুলীনঃ মাহাকুলঃ মাহাকুলীনঃ।

২৬৫। ক্ষত্রাদিয়ঃ ক্ষত্রিয়ে।

ক্ষত্রিয়:। কাত্রিবয়:।

২৬৬। রেবত্যাদের্ণিকঃ।

রাজন্য ইতি অভাবকর্মযে চেত্যাদিনা নকারলুক্নিষেধঃ। রাজন ইতি যো রাজ্যেহপত্যং বৈশ্যঃ শৃট্রো বা।

- (২৬০)। কুলশব্দাত্তস্থাপত্যে বাচ্যে যো ভবতি ণেয়ক ।
- (২৬১)। বছপ্রতায়পূর্বাৎ কুলশনাত্ত পাত্যে বাচ্যে যো ভবতি পেয়কশ্চ। কুলশনাও কেবলাছক্তঃ প্রতায়ো বছপ্রতায়যুক্তার প্রাপ্রতি বিধানম্। বছকুলমিতি বহুঃ পুরস্তারায় ইতি বহুঃ। প্রতায়গ্রহণং কিম্ পূবহুশনপূর্বাদিপি স্থাৎ স পুনক্তরযোগস্থা বিষয়ঃ বছকুলীনঃ।
 - (২৬২) কুলশব্দাৎ কুলশব্দান্তাচ্চ তম্ভাপত্যে বাচ্যে ঈনো ভবতি।
 - (২৬৩)। হৃদ্ধুলশকাত্তস্তাপত্যে বাচ্যে ঈনো ভবতি। ণেয়কণ্ড।
- (২৬৪)। মহাকুলশকান্তস্থাপত্যে বাচ্যে ঈ্লো ভবতি। ণড়্ণীন ইত্যেতৌ চ ভবতঃ।
- (২**৬৫)। ক্ষত্রশন্ধান্তভাপত্তো ক্ষত্রিয়জাতি**বিশেষে বাচ্যে ইরো, ভবতি।
 - (২৬**১)। রেবত্যাদেম্বস্থাপত্যে, বাটো ণিকো ভবভি**া রেবতী-

রৈবতিক:। রেবতী অশ্বপাল দারপাল মণিপাল বৃক্বঞ্চিন্ বৃকগ্রাহ কণ্ঠগ্রাহ চণ্ডগ্রাহ কুরুটাক্ষ ।

২৬৭। অলোমো বহুষু।

উড়ুলোমাঃ। অবহুষু তু—ঔড়ুলোমিঃ ঔড়ুলোমী।

२७५। তিকাদেণीয়নিঃ।

তৈকায়নিং। তিক কিতৰ সংজ্ঞা বাস শিখা শাট্যা সৈন্ধৰ যমুন্দ ৰুপ্য গ্রাম্য নীড় কুৰু দেবৰথ তৈতিল ঔরস লাসট গোঁৰক্ষ্য ক্ষন্তিয়ার্থ কোঁৰবা ভৌরিকি ভৌলিকি চৌপয়ত চৈকয়ত বৈশ্বয়ত শৈকয়ত ক্ষৈত্যত ধ্বাজয়ত চান্দ্রমস উরস্ অমিত্র গঙ্গা বরেণ্যা

শব্দাদেরণি রুক্বঞ্চিন্নিত্যস্মাট্রণি শেষেভ্যোহকারাস্তথাদিণি প্রাপ্তে বিধানম্। জয়াদিত্যস্ত অশ্বপালী মণিপালী দারপালীতি স্ত্রীলঙ্গং পঠতি। রেবত্যাদৌ দারপালশব্দশ্চ পঠ্যতে ইতি ভাষ্যবচনং দৃষ্ট্য দারপালাদীনাঞ্চেতি ন্সাসঃ।

- (২৬৭)। লোমন্শকাত্ত সাপত্যের বহুর বাচ্যের অকারে। ভবতি। লোমন্শক্ত কেবলন্যাপত্যসংযোগো ন সম্ভবতীতি তদন্তে। গৃহতে। শিরোলামান্তাচ্চেতি ইণি প্রাপ্তে বিধানম্। অবহুরু ত্—স এব ভবতি। ওড়ু-লোমী ইতি দিবচনান্তম্।
- (২৬৮)। তিক ইত্যেবমাদিভাস্তস্যাপত্যে বাচ্যে ণায়নির্ভবতি। ক্ষত্রিযার্থকৌরব্য ইতি গণে পঠ্যতে। ক্ষত্রিয়াভিধায়কাৎ কৌরব্যশকাৎ প্রতায়ো
 ভবতি। যঃ কৌরব্যশকঃ অজাদকোশলকুঞ্ভাশ্চেতি ণ্যপ্রভায়ান্তঃ স
 ক্ষত্রিয়বনেঃ যন্ত্র কুর্বাদেশ্চ ণ্য ইতি ণ্যপ্রত্যয়ান্তঃ স রাজ্মণাদিবচনঃ তত্মাদদন্তাচ্চেতি ইণ্ ভবতি। নাম্নির্ণাস্তান্তিণিবািরিতি ইণ্ লুক্ চ। ধ্রজম্বতোহপত্যং ধ্বাজয়ত ইতি টণস্তঃ পঠাতে।

করবর্তী বৃক্তকণ্ডাৎ কণ্ঠাচ্চ গ্রাহ ইয়াতে।
 বৃক্বক্ষী কুরুটাক্ষা পালো দ্বারাশ্বমণিতঃ ॥৯॥

বন্ধ্যা অবট্। বহুকা খলকো লোমকা স্থামন্ উদন্য যজ্ঞ। ৩৯। *
২৬৯৭ টণস্তাদ্দ্যটঃ।
কার্যাগিঃ।

২৭০। দগুকোশলকশ্মারছাগরুষেভ্যো যুশ্চ।
দাগব্যায়নি কৌশল্যায়নি কাশ্মার্যায়ণিঃ ছাগ্যায়নিঃ বার্যায়ণিঃ।

[্]তি ৯)। টণস্তাৎ দ্বাচঃ শব্দান্তহ্যাপত্যে বাচ্যে ণায়নির্ভবতি।
কার্ত্রায়ণিরিতি কর্ত্রপতামিত্যর্থে তস্যাপত্যে ইতি টণ্ কর্তৃশব্দো
ব্রায়ণবচনো বেদিতব্যঃ তেন পৌব্রাদ্যস্তাদব্রায়্লণাদ্যূনীতি ন ণায়নেলুক্। টণস্তাদিতি কিম্। দাক্ষায়ণঃ দক্ষশক্ষাদদস্তাক্তেতি ইণস্তাৎ
পৌত্রাদিযণিণস্তাক্তেতি ণায়ন এব ভবতি। স্থাচ ইতি কিম্ ? ঔপগবিঃ
উপগুশ্দটেণক্তাদিণেক ভবতি।

⁽২৭০)। দগুপ্রভৃতিভান্তস্যাপত্যে বাচ্যে গায়নির্ভবতি। তৎসন্ধি-গোগে সুবাগমশ্চ। দাগব্যায়নিরিতি যাচোরুদ্গুণ ইতি গুণঃ গুণে কতে তলিতবে ইত্যবাদেশঃ। কোশলশকাদজাদকোশলকুকভাশ্চেতি অগত্যে বিহিতেন গাপ্রভায়েনাস্ত সমাবেশঃ। অথবা অয়ং কোশলশকো জনপদ-কপক্ষজ্রিদান্তমেবাভিধন্তে। কথং ভট্টিকাব্যে কৌশল্যায়নিবল্লভামিত্র কৌশল্যায়নিশকো রামস্ত বাচকঃন হসৌ কোশলস্থাপত্যম্। উচাতে। ইদস্তামনুষ্যভাতেরিতি ঈপ্রভায়ান্তাৎ কৌশল্যায়নীশকাৎ রামে মুবাপত্যে

^{*} বিজ্ঞেরান্তিকরুপ্যনীড়কুরবো গ্রাম্যারসৌ লাক্সটঃ।
শাটা৷ ধ্রাজয়তোহথ চৌপয়তকো গৌরক্ষ্যবন্ধ্যাশিখাঃ।
গঙ্গাবজ্ঞস্থামবালকিতবাঃ স্থ্যঃ থল্যকা লোমকা।
স্থাতাং ভৌরিকিতৈতিলো তদমু চোদস্যো বরেণ্যাপি চ।
রংজ্ঞা চৈকয়তো যমুন্দ উদিতোহবট্যা তথা বহুকা।
শৈবৈভ্যাং কয়তোহথ সৈন্ধব ইতোহমিত্রোরসৌ ভৌলিকিঃ।
কৌরব্যো ভুজজার্থকোহথ গদিতো দেবাদ্রথক্সমাঃ।
সঃ ক্ষেতাদ্যত এবমুগ্রমতিভিঃ প্রোক্তিকাদির্গশঃ॥৯৯॥

২৭১। আদিকৈজাতোহনপত্যার্থারা।

রৈরক্ষায়ণিঃ রৈরক্ষি: নাপিতায়নিং নাপিত্য:। অশত্যার্থাত্তু— ওপগবিং।

২৭২।' পুজান্তাৎ কুশ্চ।

গাগীপুত্রিঃ গার্গীপুত্রায়ণিং গার্গীপুত্রকায়ণিং।

२१७। वाकिनारमञ्ड।

বাচ্যে এয়ন্ পৌত্রান্যস্তাদব্রাহ্মণাদ্যুনীতি এ্য়ণ্লুক্ লুকি স্ত্রীবিহিত্ত চেতি স্থীপ্রত্যয়লুকি কৌশল্যায়নিশকো রামে বর্তিষ্যতে। কন্মার্শকাত্রু কারু-বিহিতাপত্যপ্রত্যয়তায়ং বিশেষবিহিতত্বাদপবাদঃ।

(২৭১)। যুরিতি নাম্বর্ত্তে। আদি স্থৈজাতঃ শব্দাবিদামানা-পত্যার্থাৎ তম্মাপত্যে বাচ্যে পায়নিব। ভবতি। বৈরক্ষায়ণিরিতি রায়ং রক্ষতীতি কন্মণো ণড়িতি ণট্ পক্ষে অদস্তাচ্চেতি ইণ্। নাপিতশব্দাৎ কার্ফবিহিত-প্রত্যয়ে প্রাপ্তে বিধানন্। পক্ষে গ্যো ভবতি। কার্ফলক্ষণবিহিত্তিগস্থা বিষয়ে নেষ্যতে অপেক্ষিত্বিধিত্বাৎ বহুলাধিকারারা অতএবাত্র কুর্বাদেশ্চ ণ্যু ইতাত্র চ নাপিত্য ইত্যাদাস্তবান। অনাদিক্ষৈত্রাত্তম্ব যাক্রদক্তিঃ।

ত্যনাদেশ্চেতি বক্তব্যম্। ত্যালাদেশ্চ তম্মাপত্যে বাচ্যে ণায়নিব। ভবতি। ত্যাদায়নিঃ তাদায়নিঃ স্বাদায়নিঃ মালায়নিঃ পক্ষে ত্যাদঃ তাদঃ স্থাদঃ মালঃ।

(২৭২)। পুত্রাস্তাদাদিশ্রৈজাতো নায়নির্ভবতি বা । তৎসন্নিযোগে কুশ্চ বা ভবতি। এবং রূপত্রয়ম্।

(২৭৩)। যোগবিভাগো নিত্যার্থঃ। রাকিলাদের্ণায়নিঃ স্থাৎ তৎসন্নি-যোগে কুশ্চ। একরপমেব। কেচিদত্র পায়নিমাত্রং বিকল্পমাহরিতি কুর-নেন ন বিধীয়তে পার্যনিস্ত বিকল্পেনেত্যভিপ্রায়ঃ। এবং রূপদ্বয়ন্। এত-লক্ষণদ্বাং ব্যাখ্যাতং বৃত্তিকৃতা ভাষ্যকারমতাত্মত্রন্। জন্মানিত্যানাস্ত মতেন গার্গীপ্রকায়ণিঃ গার্গীপ্রায়ণিঃ গার্গীপ্রিরিতি রূপত্রয়ন্। বাকিলামনিঃঃ বাকিলিরিতি রূপদ্বয়ন্। বাকিলকায়নি:। বাকিল গাবেঠ কার্কট্য কাক লাজ চমিন্
বিমিন্ *। । কেটিদত্র পার্য়নিমাত্রং বিকল্পমাহাঃ। বাকিলায়নিং
বাকিলিঃ গাবেঠায়নিঃ গাবেঠিঃ।

২৭৪। অনাদিকৈজাতো বা আয়নিঃ। গ্লুচুকায়নিঃ গ্লোচুকিঃ অহিচুম্বকায়নিঃ আহিচুম্বকিঃ।

শের। কচিম প্রাৎ।

দাক্ষিঃ প্লাক্ষিঃ।

২৭৬। পৌজাদিপ্রত্যয়ান্তাৎ স্ত্রীবচনাদণ্ কুৎসনে। গার্গ্য অপত্যং গার্গো জাল্ম: শ্রোচুকায়নঃ।

২৭৭। ণিকশ্চ। গার্গিকঃ গ্লোচুকায়নিকঃ।

(২৭৪।২৭৫)। অনাদিকৈছাতঃ শব্দান্তস্যাপত্যে বাচ্যে আয়ণিব। তেবতি। পূর্বাং বাপদং বিকল্পার্থং কুবিধানসম্বন্ধং বাকিলাদেশ্তেতানেনাস্ত-রিতঞ্চেতি পুনর্বেতি কৃতম্। বাশকো ব্যবস্থিতবিভাষার্থঃ অতঃ আহ কচিন্ন স্যাদিতি শিষ্টপ্রয়োগদর্শনেন ব্যবস্থিত ইত্যর্থঃ।

(২৭৬)। পৌত্রাদিপ্রত্যয়ান্তাৎ স্ত্রীবাচকাৎ কুৎসনে গম্যমানে তস্যাশত্যে বাচ্যোহণ ভবতি। পিতৃরসংবিজ্ঞানে মাত্রা বাপদেশোহপতাস্য কুৎসনম্। গার্গ ইতি গর্গশন্ধাৎ গর্গাদেশ্ পৌত্রাদাবিতি যণ জাতেরিত্যাদিনা
ক হলন্তদ্ধিতদ্যেতি যলুক্ গার্গীশন্দানণ্। শ্লোচুকায়ন ইতি মুচুকায়ন্তা
অপত্যম্ অপ্ মুচুকায়নীতি ইদন্তামুনুষ্যজাতেরিতি ঈ। পৌত্রাদিপ্রত্যয়ান্তাদিতি কিম্ ? দারিকেগ্রে জালঃ। জীবচনাদিতি কিম্ । ঔপগবস্যাপত্যম্
ঔপগবিজ্ঞানঃ। কুৎসন ইতি কিম্ ? গার্গেয়া মাণবকঃ।

(২৭৭)। পৌল্রাদিপ্রতায়াস্তাং স্ত্রীবাচকাৎ কুৎসনে গম্যমানে তদ্যা-

বাকিল: কাককার্কট্টো গাবেঠবর্মির্চমর্ণ:।
 লাদশ্চেতি বাকিলানো সপ্তৈতে পরিকীর্ত্তিতা:॥

২৭৮। ভাগবিক্তাদেব । ভাগবি: টকো জান্ম: ভাগবিক্তায়ন:। ভাগবিক্তি ^পতাৰ্ধবিন্দৰ আকাশায়নেয় ।৩।

২৭৯। যামুন্দায়ন্তাদেরীয়**ন্চ।**নামুন্দায়নিকঃ <mark>যামুন্দায়নীয়ন্চ জাল্মঃ। যামুন্দায়নি সোযামায়নি</mark>
বাধ্যায়ণি।৩।

২৮০। সৌবারপোজাদিপ্রত্যয়ান্তাৎ কণ্টার্কুতি-মিমতাদগ্রায়নী। কাণ্টাকুতঃ মৈমতায়নিঃ। ক্রমোহত্র নেষ্যত ইত্যেকে।

পত্যে বাচ্যে ণিকশ্চ ভবতি। যোগবিভাগ উত্তরস্তত্তে ণিকস্যৈবামু-বৃত্ত্যের্থঃ

(২৭৮) ভাগবিত্যাদেঃ শকান্তন্যাপত্যে বাচ্যে কুৎসনে গমামানে ণিকো বা ভবতি। ভাগবিত্তায়ন ইতি ভাগবিত্তিশব্দাদিণস্তাৎ পৌল্লাদিযণিণস্তাচ্চেতি শায়নঃ। তৃপবিন্দোরপত্যং তার্ণবিন্দবং তত্মাধিকঃ তার্ণবিন্দবিকঃ তার্ণবি-ন্দবিঃ। আকাশায়নশকঃ শুক্রাদৌ পঠাতে তত্মাদেরণস্তাধিকঃ আকাশায়নে-বিকঃ আকাশায়নেয়িঃ।

- (২৭৯)। চকারো ণিকান্থকর্ষণার্থঃ। যামুন্দায়ভাদেন্তস্যাপত্যে ৰাচ্যে কুৎসনে গম্মানে ণিকো ভবতি। ঈয়৽চ। যামুন্দায়নিকঃ যামুন্দায়নীয় ইতি যমুন্দস্যাপতাঃ তিকাদেণায়নিরিতি ণায়নিঃ তদন্তায়িক ঈয়৽চ। যমুন্দ স্থামন্ ইতি তিকাদে পঠাতে। ব্যন্যাপতাঃ দগুকোশলকর্মার ইত্যাদিনা ণায়নিঃ যুন্চ বার্ধ্যায়িশিন্তস্যাপতাঃ বার্ধ্যায়িশিন্ত বার্ধ্যায়িশিন্ত বার্ধ্যায়িশিন্ত বার্ধ্যায়িশিন্ত বার্ধ্যায়িশিন্ত বার্ধ্যায়িশিন্ত বার্ধ্যায়িশিন্ত ত্যা লুক্।
- (২৮০)। কুৎদন ইতি নির্ত্তন্। দৌবীরেষু যঃ পৌজ্রাদিপ্রত্যয়াস্তঃ
 ফান্টাক্কতিশন্দো মিমতশব্দক তাভ্যাং ষথাক্রমং তদ্যাপত্যে বাচ্যেহণ্ ণারনীভবতঃ। সম্ভবব্যভিচারে হি বিশেষণমনর্থবদ্ভবতীতি দৌবীর ইত্যুভয়োর্বিশেষণম্। পৌজ্রাদিপ্রত্যয়াস্তাদিতি তু ফান্টাক্তেরের অত এব বচনাৎ যুগ্তেবাত্র প্রত্যয়ঃ। প্রত্যক্ষমতেভাষ্যদশনাৎ ক্রম এব বৃত্তিক্তঃ ইষ্টঃ।

ফার্টাকুতায়নিঃ মৈমতঃ অসৌবীরপোক্রাদিপ্রত্যায়াস্তাত্ত্ — ফার্ট-কুতায়নঃ শৈমতায়নঃ।

২৮১। মনোর্জ্জাতো ব্যষ্ণে। মন্তব্যঃ মান্তবঃ। অজাতো তু—মানবী প্রজান ২৮২। একঃ পোক্রাদো। গর্গস্ত পোল্লঃ প্রপৌল্লাদিশ্চ গার্গাঃ।

🗫 । পোজাদিপ্রত্যয়ান্তাদ্যূনি।

জনোহত্ব নেষ্যত ইত্যেকে ইতি চক্রপ্রাদিত্যাদীনাং মৃত্যুপন্তস্য তৎকলঞ্চ দর্শন্তি ফাণ্টাক্রতায়নিঃ মৈনত ইতি তন্মতসংগ্রহণার্থত্বেং ব্যাপ্যেয়ন্। বং ফাণ্টাক্রিমিনতাদিতি যথৈকবচনেন নির্দেশ্য ক্রতন্ত্রণা অণ্ণায়নী ইত্যক্ত কম্মান্ন ক্রতন্ত্রমাৎ স্বরূপের যদিইমিতি একশেবেণাত্র নিবচনং তেন প্রত্যেকম্ অণ্ণায়নী ভবত ইত্যাচার্য্যাভিপ্রায়ো লক্ষ্যতে। ফাণ্টাক্রতায়ন ইতি ফাণ্টাক্রতশন্তাদিণস্তাৎ পৌল্লাদিশস্থাতে প্রক্রোগাবিপ বাচ্যে পায়নঃ। মৈনতায়ন ইতি মিনতশন্তোহ্বাদে পঠ্যতে পূর্ক্রোগাবিপ সৌবীরবিষয় এব ভবতঃ ইত্যান্তিরিষ্টং তেন সৌবীরাদন্ত্রত ভাগবিত্তায়ন এব। যামুন্দায়নেরপত্যং যামুন্দায়নিঃ টণ্ট্রামনিগ্যাস্তাটিণিণোরিতি টণ্লুক্।

(২৮১)। মনুশব্দাৎ যায়ণো ভবতঃ। সমুদায়েন চেজ্জাতির্গম্যতে অপত্যার্থোহত্র নাস্তি। দ্বিয়ান্ত মনুষী যোপাস্তত্বেন জাতিলক্ষণেন ঈ ন প্রাপ্রোতীতি নদাদিপার্টাদী করণীয়া হলস্তদ্ধিতস্তেতি যলুক্। মানুষীতি তু জাতিঘাদী। মানবী প্রজেতি অত্রাপত্যবিবক্ষায়াম্ শ্বষিঘাট্টণ্ টিস্থাদী।

(২৮২)। প্রত্যপত্যপ্রত্যরোৎপত্তিপ্রসঙ্গে নিয়মঃ। পৌজ্রাদৌ বাচ্যে এক এব প্রত্যয়ো ভবতি। গার্গ্য ইতি গর্গশব্দাং পৌজ্রাদৌ বাচ্যে যণেব ভবতি। নতু তদস্তাদদস্তাচ্চেতীণ্ স্থাৎ এবং ভানবশ্বদাদপি ভামপৌত্রে বাচ্যে শ্রেত্যয়াস্তরং ন স্থাৎ। যথাপি অপত্যং পুদ্র এব রুঞ্ তপাপি অপতনাদপত্যমিতি ব্যবস্থন্না ব্যবহিতেন জনিতেহপি পৌজ্রাদৌ বাচ্যে ভামুশকাদেব টণ্।

(২৮০)। যুশুপত্যে বিবক্ষিতে পৌদ্রাদি প্রত্যয়াস্তাদের প্রত্যয়ো

গার্গারণঃ ঔপগবিঃ। জীবজ্জ্যেষ্ঠ প্রাত্কোষ্ট্রীযুবা। জীবৎ-পূর্ববঃ প্রপৌজ্রাদিশ্চ। জীবন্ জীবদ্রক্ষতরভাত্রন্যঃ সপিত্তে। বা।

২৮৪। পৌজাদিঃ পূজানিন্দয়োঃ। তত্র ভবান্ গার্গায়েণঃ গার্গাঃ গার্গায়ণো গার্গান্চ জালাঃ।

২৮৫ গর্গাদের্যণ্পেজ্ঞাদে।। গার্গাঃ। অপোভাদে তু—মানবী প্রজা। জামদর্য্যো মামঃ। পারাশর্যো ব্যাস ইতি তুপোভাদ্যুপচারাৎ।

ভবতি। গার্গায়ণ ইতি গার্গায়শাৎ পৌল্রাদিয়ণিণস্তাচ্চেতি যূনি বাচো গায়নং। ওপঁগনিরতি তহ্যাপতাে ইতি পৌল্রাদে বাচো ফল টণ্ ওলা ভদস্তানদস্তাক্রিতি তহ্যাপতাে ইণ্ অপতনাদপতাানিতি ব্যবস্থাা হাবাহতেন জনিতােছিল পৌল্রাদিরপতাং ভবিতাব। নয় গুবৈব কোছিলীয়তে। তত্রাহ জাবিদিতাাদি জীবন্ জ্যেটো ল্রাতা যহ্য স জীবজ্ঞাঞ্ঠলাতৃকং স্ত্রাব্যতিরক্তাে যুবেতাভিধীয়তে। জীবৎপূর্কা ইতি জীবন্ পূর্কো মহা স জীবৎপূর্কাং পূর্কাপদেন পূর্কাপ্রক্ষ উচাতে। জীবৎপূর্কাং প্রপৌল্রাদিশ্য যুবেতাভিধীয়তে পূর্কাপ্রক্ষে জীবতি প্রপৌল্রাদিশ্ব বিত্যর্থাঃ। অল্রাপ্যন্ত্রীতি সম্বধ্যতে। জীবন্নিতি সপ্রপুর্ক্ষাবধয়ঃ সপিণ্ডাঃ। লাতুশ্বন্যা ফ্রাক্রার সম্বধ্যতে। জীবন্ যহা প্রপৌল্রাদিঃ দ জীবন্ মৃতেহিপ পূর্কাপ্রক্ষে যুবেতি বাজিধীয়তে। বৃদ্ধান্দেন রয়ঃপ্রকর্ষমাত্রং গম্যতে তর প্রত্যারন তু সম্বর্গারিরম্।

⁽২৮৪)। পৌলাদিরপি পূজায়াৎ নিলায়াং বা গম্যমানায়াং মুছেতি বাভিধীয়তে। ব্যক্তার্থমূলাহরণালি দর্শ্যস্তে। গার্গ্যস্ত দ্বৌ পুল্রৌ তয়োঃ কনীয়ান্ জ্যেষ্ঠে লাতরি জীবতি পিত্রাদৌ মুতেহপি যুবন্ধাল্গার্গায়ণঃ। এবং পূর্ব্বপুরুষে গর্গে গার্গো বা জীবতি প্রক্রো গার্গ্যায়ণঃ। পিত্রে পিতামহল্রাভিরি প্রপিতামহল্রাভিরি বা অত্যস্তর্কে জীবতি গার্গায়ণা গার্গান্ড ভবতি।

⁽২৮৫)। গর্গাদিতাঃ শক্ষেতাঃ পৌলাদে বাচ্যে যণ্ ভবতি।

গর্প বৎস আকৃতি সংস্কৃতি অজ ব্যান্থপাদ বেদভূৎ বীনযোগ পুলস্তি বিনীসি রেভ অগ্নিবেশ শব্ধ শট অবট ধূম বর্ণ্মিন্ ধনপ্রয় তৃফ বিশাবস্থ জরমাণ লোহিত সংশিত বক্র মণ্ডু মজ্জু মন্ত্র বর্ণাধ সন্থ লতু নিগু গুহলু জিগীষ্ সূত্র তন্ত্র ইন্দ্র মনায়ী মন্ত্র কথক কচ্ছপ রক্ষে তরুক্ষ তণ্ড বতণ্ড কপিকত কৃরুকত শকল দেবহু ইন্দ্রহু কণ্ব গোকক্ষ অগস্তি কুণ্ডিনী অনড্বাহ যজ্ঞবন্ধ পর্ণবন্ধ জাত রোহিত ব্যগণ রহোগণ শণ্ডিল মুদুগল যুগল মুবল পরাশর জতুকর্ণ মন্ত্রিত অশ্বর্থ শর্করাক্ষ পৃতিমাব স্থ্রা অবর্কা পিঙ্গল কৃষ্ণ গোলুন্দ উল্ক তিতিক্ষ ভিষজ্ ভিষ্ণুজ্ ভণ্ডিল দম্ভ চিকিত একল্ পিপ্ললু বৃহদ্য়ি জমদ্য়ি স্থলাভিন কুটীগু ॥ ৮৬ ॥ *

নানবা প্রজেতি ঝবিজাট্রণ পৌত্রাদৌ তু বাচ্যে শকলান্তালোহিতাবে নিত্য-মিতি গারনেন মানবাারনী এবং জামদগ্রঃ পারাশর ইতি জমু অদনে শতৃঃ জমন্মিরস্তেতি জামদগ্রিঃ ঋবিজাট্রণ অন্তস্থাদিতা যা যত্র দৃশুতে যা প্রমাদকতা

^{*} গর্গবৎসবীনযোগরেভধুমবিশ্বিণো বেদভ্ৎপুলন্তিশঙ্খতৃক্ষধাদিনজ্বরাঃ।
আরুতির্বিনন্তির্ব্বিবেশবিশ্বযুগস্ব্রান্তপান্ততোহবটং শটোহজ্বংস্কৃতী।
জ্বাৎ নানো লোহিতসংশিত্রকা মন্তমজ্বলুলত্বক্রতক্ষাঃ।
মণ্ডুগুহলুমস্ক্রপকত্তা বোধমনায়ীতন্তবন্তগাঃ।
সন্থং পুস্জিগীধৃষিত্রমিইক্র কুরুকতকপিকতশকলম্॥
ইক্রাৎ পরো হুঃ প্নরেষ দেবাৎ কণ্ নিতিক্ষশ্চিকিতঃ বৃত্তীগুঃ।
প্রাশরোহ্মিরথ শর্করাক্ষো গোকক্ষদন্তো জমদ্বিজ্ঞাতে।।
প্রাশরেষ ইন্যাগন্তী রহোগণঃ শণ্ডিলঃ প্তিমাষৌ।
স্থ্রা ভিষজ্ ভণ্ডিলপর্শবেষাঃ কুন্তিগুড়ান মুখলোহথ মুদালঃ।
ব্যাদ্গণো রোহিত্বজ্ঞবক্ষী স্থ্যাভিনঃ পিঙ্গল একল্শ্চ।
র্থান্তকাধীবরকা উল্কঃ স্তাৎ পিপ্লল্ম দ্বিত ইত্যুপান্তঃ।
কর্ণো জতুন্মগ্তোহথ ভিষ্কৃক্ গর্গাদিক্বে শাসনতঃ প্রয়োগঃ।
কর্ণো জতুন্মগ্তোহথ ভিষ্কৃক্ গর্গাদিক্বে শাসনতঃ প্রয়োগঃ।

.২৮৬। স্ত্রিয়াং ণ্যায়নো ব। গার্গী গার্পায়ণী সাবট্যায়নী। অজাদিখাদাবট্যা।

২৮৭। শকলান্ত্যলোহিতাদেনি ত্যম্। লোহিত্যায়নী শাকল্যায়নী।

২৮৮। রাজাদসমাদে। রাজ্যঃ। সমাদে তু—সোরাজিঃ।

২ ৯। মধুবভোত্র কাণকে শিকয়েঃ।

মাধব্যা বাক্ষণঃ বাত্রব্যঃ কৌশিকঃ। স্তিয়াং লোহিতাদিস্বাদ্বাত্রব্যাস্থনী। সম্ভক্ত-মাধবং বাত্রবঃ।

এবং বৃহঃগ্নিরশু বৃহদ্গ্নিঃ। কথমনস্করাপত্যে রামে ব্যাদে চ বাচ্যে জামদগ্রাঃ পারাশ্য্য ইতি চোল্য আহ পৌল্রাজ্যপচারাদিতি পুত্রে এব পৌল্রস্থমিহোপ-চবণীয়ন্ অন্যেব বংশম্থ্যতাৎ পৌল্রান্দিরপীত্যুপচারঃ। বেদভৃচ্ছন্দাৎ শ্ববি-বাচকা দি কতে অভিজিলাদেরিত্যাদিনা স্বার্থিকে যণি চ বৈদভৃত্য ইতি দিধাতোব তত্র বহুতে লুকি কতে বৈদভৃতা ইতি ভবতি ইহ তু তৎপাঠঃ পৌল্রানে বাচ্যে বেদভৃতা ইতি দিন্ধার্থঃ। পুল্স্তিশন্দোহক্র পঠাতে তত্মাহহুত্বে পুল্স্তাশন্ত্র পৌল্স্তা ইতি। সংস্কৃতিশন্তোহ্র পঠাতে ভ্রণার্থ-ছাং স্কৃতি

- (২৮৬)। পৌত্রানো স্থিরাং বাচ্যায়াং বন্প্রত্যয়ো গ্যায়নো বা ভবতি। গার্গ্যায়নীতি গোত্রজাতিস্বাদী এবং নাধব্যায়নী বৌধ্যায়নী অভিজিদাদেরিত্যাদিনা যণ্ আভিজিত্যায়নী যদি গর্গাদের্যণং বাধিস্বা স্তিয়াং গ্যায়নো ভবতীত্যর্থঃ স্থাৎ তদা আভিজিত্যায়ন্ত্যাদিসিন্ধিন স্থাৎ।
- (২৮৭)। শকলাস্বান্ধোহিতাদের্গর্ণান্থর্গণাৎ পৌত্রাদৌ স্থিয়াং বাচ্যায়াং নিত্য যণ্ গ্যায়নো ভবতি।
- (২৮৮)। রাজশবানসমাদে পৌত্রাদৌ বাচ্যে যণ্ ভবতি। অনেনৈব লক্ষণেনৈবং প্রতীয়তে অন্তন্মাৎ সমাদেহপি যণা: ভবিতব্যং সৌগর্গ্য ইতি।
- (২৮৯)। মধুশকাৎ বক্রশকাচ ব্রাহ্মণে কৌশিকে চ পৌজ্রাদী বাচ্যে ক্রমেণ যণ্ ভবতি। ৰক্রশকাৎ গর্গাদিছেন যণি সিদ্ধে নিয়মার্থং গ্রহণমূ। কৌশিক এব বাচ্যে যথা স্থাৎ তেনান্তব্র মাতৃৎ মাধবঃ বাল্লবং।

২৯০। কপিবোধবততেও আঙ্গিরসে।
কাপাঃ। দ্রিয়াং লোহিতাদিখাৎ কাপ্যায়নী। বৌধ্যঃ বার্তওাঃ
স্ক্রিয়াং লোহিতাদিখাদ্বোধ্যায়নী বাতগুয়ায়নী। অনাঙ্গিরসে
তু—কাপেয়ঃ বৌধিঃ। শিবাদিখাদ্বাতগুঃ। গর্গাদিখাদ্বাতগুঃ।

२৯১। अयुरिनर्गाय्रनः।

অশ্বস্থাপত্যং পৌক্রাদিঃ আশ্বায়নঃ।

অশ্ব অশ্যন্ শচ্ছা বিদ পুট রোহিণ থর্জুর স্বরূপ ভড়িল ভড়ল ভণ্ডিল ভড়িত গুড়িত প্রকৃত বামোদক্ষ অন্ব্রীব কাশ কাণ কোশল গোলাক্ষ অর্ক স্বন বল পদ চক্র কুল শ্রাবিষ্ঠা ধরিত্রিন্ গোমিন্ শ্যাম ধূম ধূম বাগ্মিন্ বিশানর কুট জল থড় গ্রীষ্ম অহর্ বীক্ষ বিশম্প বিশাল গিরি চপল চুপ দাসক বৈল্য বাপ্য স্থানড়্ফ

নহনেনৈৰ সিদ্ধে বক্ৰণক্ষ গণে পাঠ: কিমৰ্থ ইতি চোদাং হাদি নিধায়াহ স্থিয়াং লোহিতাদিভাদিতি গণপাঠে হি লোহিতানিভাগ্নাৰনো ভবতীতি।

⁽২৯০)। কপিবোধকতও ইত্যাক্তভা আন্ধিরসে পৌল্রানৌ বাচ্যে যণ্ করতি। কাপা ইতি অনিল্পৃতিকারলুক্ কণিশব্দাদ্পর্গাদিপাঠানের যনি দিন্ধে নিয়মার্থমুপাদানং তেনান্ধিরসবাতিরিক্তে কাপেয় ইতি ভবতি ইদস্যা-চ্চানিনস্তাদিতি এয়ণ্ গর্গাদিপাঠশু তু প্রয়োজনং দর্শয়তি ব্রিয়াং লোহিত্য-দিন্ধাদিতি। বত্তশক্ষাৎ শিবাদিত্বেন প্রাপ্তং টণং বাধিতা আন্ধিরসে বাচ্যে যণ্ বিধীয়তে যদা তান্ধিরসবাতিরিক্তো বাচ্যস্তদা কিং ভবত্বিত্যাশ্বনামাহ শিবানিত্যদিত্যানি। আন্ধিরশ্রান্ত বত্তী বত্তাদ্যণ্ আন্ধিরশ্রামিতি যণ্লুক্।

⁽২৯১)। অথাদিতাঃ পৌল্লাদৌ বাচ্যে ণায়নো ভবতি। যেহআপতা-প্রত্যয়ান্তাঃ পঠান্তে তেতাঃ পৌলাদিপ্রত্যয়ান্তান্যুলীতি নিয়মাৎ যুনি বিধা-নম্। বৈল্য ইতি গণে পঠাতে বিলিনামা রাজর্ষিন্তভাপতাম্ ইদন্তাজেতি প্যঃ তহ্যাপতাং যুবা বৈল্যায়নঃ পৌল্রাছন্তাদরান্ধণাদ্যুনীতি লুগ ভবজিং গণপাঠদামগ্যাং। আনভূহ্ ইতি গণে পঠাতে অন্জ্যাহ্ শকো গর্মাদিন ধ্বন্তঃ। অমুষ্য ইতি পঠাতে গণপাঠদামগ্যাং ষ্ঠান্তাদেব প্রত্যয়ং মদদো

অর্জ্রন শূদ্রক সুমনস্ ওজ্বস্ হংস আতপ কির থিব খদির নড় চরা
মুঞ্জ ইতিশ ইতিক উপক নমক সপ্তল রাজব্য তিক প্রাণ নর সায়ক
দাসমিত্র দ্বীপ পিঙ্গল পিঞ্জর কিঙ্কর কাতর কাখল কাশ্য কাব্য
অজ অমুষ্য অমিত্র নিগু চিত্র কুমার লোহ ছুর্গ স্তম্ভ শিংশপা অগ্র
তৃণ শকট শলভ মিমত ঋচ্জন ইন্ধ জলন্ধর খুগন্ধর হংসক দণ্ডিন্
হস্তিন্ পঞ্চাল চমস স্কুক্তা স্থিরক ব্রান্ধণ চরক বদর অখল থরপ
কামুক ব্রন্ধদন্ত উভ্নর শোণ অলোহ মণ্ডপ 155৬ **

শাসন ইতি ষষ্ঠ্যা অলুক্ আম্য্যায়ণঃ! দ্বীপশব্দোহত্র পঠ্যতে স দেশবৃত্তি-রিপি স্ত্রীপুংসাভ্যান্ অপত্যবস্তাাং সম্বন্ধাত্রপচারেধাপত্যবান্ দ্বৈপায়নো ব্যাসঃ
পৌত্রাছ্যপচারশ্চ পূর্ববিং।

অবোহনা বিদরোহিণাহ ছিজকামাজুনা: শিংশপা বামোদক্ষররপভণ্ডিলপ্টাঃ শঙ্গশ্রবিষ্ঠানড়া:। কাণোহর্কস্বনচক্রকাশভডলাতুগ্রীবধুমাতপা গোলাকঃ প্রকৃতৌঙ্গদী হি ভতিতগ্রীমৌ বিশম্পেতিকৌ। গোমী বাগিধবিত্রিণো বলকুনে প্রাণাজহংসোপকাঃ ধুম্দীপপদেতিশাগ্রচপলামিত্রেশ্ববিশ্বানরাঃ। বীক্ষামুষ্যবিশালকোশলকুটস্তস্তা**ল,পোহপাৰল:** মুঞ্জঃ শুদ্রকদাসকৌ জলথড়ৌ বৈল্যঃ কিরো ভণ্ডিতঃ। বাপ্যঃ সায়কদাসমিত্রস্থমনোরাজব্যকাস্থা গিরিঃ দণ্ডী হস্টিচরানভ্রথদিরালোহাঃ কুমারঃ থিব:। লোহব্রাহ্মণত্রহ্মদন্তনমকাঃ স্থাঃ সপ্তলঃ পিঙ্গল-..... কাতরৌ তৃণতিকৌ চিত্রং জন: কামুক:। তুৰ্গঃ কাথলকিম্বরৌ নিউনরৌ শোণস্তথন্ম গুপৌ পঞ্চাল: শকটং সকান্তহমুভুম্বাদ্র: স্থিচাভ্যাং রকৌ। দোঃ কত্যং শলভস্তথৈৰ মিমতো **রেফো জলদ্ধাদ**থো বিন্দু স্তাদ্যুগতো ধরোহণ চ মদো রেক্ষো বদাৎ পঃ ধরাৎ ৪১৯৩॥: ২৯২। শপভরদ্বাজাভ্যামাত্রেয়ে।

শাপায়নঃ তাঁরদ্বাজায়নঃ আত্রেয়ঃ। শাপিভারদ্বাজশ্চান্সঃ।

২৯৩। আত্রেয়ান্তারদ্বাজে।

ব্দাত্রেয়ায়ণো ভারদ্বাজঃ। আত্রেয়িরখঃ।

২৯৪। পুংলিঙ্গাড্জাতাৎ।

জাতায়নঃ। অপুংলিস্বাত্ত্ --জাতেয়ং।

ই৯৫। ঋষাবগ্নিশম ণঃ।

আগ্রিশম গ্রিণ ঋষিঃ। অহাত্র। আগ্রিশমি ঃ।

২৯৬। কৃষ্ণরণাভ্যাং ব্রাহ্মণবাশিষ্ঠয়োঃ। কাষ্ণগায়নো ব্রাহ্মণঃ রাণায়নো ব্যশিষ্ঠঃ। অন্তর—কাষ্ণিঃ রাণিঃ।

২৯৭। ভর্গাক্তৈগর্ক্তে। "
ভার্গায়ণক্তৈগর্ক্তঃ। অন্যত্র—ভার্গিঃ।

⁽২৯২)। শপ ভবদাল ইত্যেতাভ্যামাত্রেয়ে বাচ্যে পৌল্রাদৌ পায়নো ভবতি শাপিরিতি অদস্তাচ্চেতি ইণ্ ভারদাল ইতি ঝয়ন্ধক, ইত্যাদিনা টণ্।

⁽২৯৩)। আত্রেরশকাদ্রারদাকে বাচ্যে ণায়নো ভবতি।

⁽২৯৪)। পুংলিঙ্গাজ্জাতশব্দাৎ পৌজ্ঞাদীে বাচ্যে ণাশনো ভবতি। জাতেয় ইতি ত্রীবিহিতপ্রত্যয়াস্তাদিতি এয়ন্। পুংলিঙ্গাদিতি বিশেষণং জ্ঞাপয়তি নামগ্রহণে শিষ্কবিশিপ্রস্থাপি গ্রহণমিতি।

⁽২৯৫)। অগ্নিশম ন ইতামাৎ পৌত্রাদৌ ঝযৌ বাচ্যে গায়নো ভবতি।

⁽২৯৬)। ক্লফশন্ধান্তনশন্ধান্ত যথাক্রমং ব্রাহ্মণে বাশিষ্ঠে চ পৌত্রাদৌ বাচ্যে গায়নো ভবতি।

⁽২৯৭)। ভর্গশব্দাৎ ত্রৈগর্ত্তে পৌল্লাদে বাচ্যে পায়নো ভবতি। ত্রৈগর্ত্ত ইতি ত্রিগর্তস্থাপত্যং জনপদরূপাৎ ক্ষত্রিয়াদিতি পট্ ভবার্ফে ভূ অনাদিহৈত্বাতক্ষ নিত্যবহুবচনাদিত্যকণ্ স্থাং।

২৯৮। শরদ্বতো ভার্গবে। শারদ্বতায়নো ভার্গবঃ।

২৯৯। শুনকাদ্বাৎস্থে।

শৌনকায়ন:।

৩০০। দভাদাগ্রায়ণে।

माजायुगः। माजित्रग्रः।

२०)। (कृष्ठि ननस्मासमूक् **ह**ै।

क्रीकीयनः भानकायनः।

৩০২। পৌল্রাদিযণিণস্তাচ্চ।

গার্গায়ণ: দাক্ষায়ণ:। অপোক্রাদিযণিণস্তাত্তু—সোতক্ষমः সৌমা:।

৩০৩। হরিতাদের্ণড়ন্তাৎ। হারিতায়নঃ পারশবায়নঃ। হরিতাদিবিদাদৌ পঠিতঃ।

(২৯৮)। শরদ্বচ্ছকা দ্রার্গবে পৌলাদৌ বাচ্যে ণায়নো ভবতি। ভার্গবিদ্যাত্ত —শারদ্বতঃ বিদাদিগণপাঠায়টু।

(২৯৯)। শুনকশন্ধাহাওঁস্থে পৌত্রাদে বাচ্চে পায়নো ভবতি বাংস্থাৰ-গুত্র--শোনকঃ বিদাদিখাগ্রট।

(৩০০) দত্রশব্দাৎ পৌল্রাদৌ আগ্রায়ণে বাচ্যে পায়নো ভবতি। অগ্র-শক্ষোহশ্বাদৌ পঠ্যতে আগ্রায়ণঃ।

(৩০১)। কোষ্টুশকাৎ শলস্কুশকাচ্চ পোত্রাদৌ বাচ্যে গায়নো ভবতি। উকারলুক্চ।

(৩০২)। পৌল্লাদাবর্থে বিহিতে যণিশস্তাক্ত ণায়নো ভবতি। পৌল্লাদি-প্রত্যান্তাদ্যূনীতি নিয়মাৎ যূনি বাচ্যেহত্ত প্রত্যায়। সৌতঙ্গম ইতি স্তঙ্গ-মাদেষ্টিণিতি ভন্নিবাসানাবর্থে টিণ্ তদস্তাক্ত তস্তাপত্তা ইতি টণ্। সৌম্নিরিতি সোমাট্যাণিক্তি তদ্দৈবতে ইতি টাণ্ তদস্তাদদন্তাক্তেতি ইণ্।

(৩০৩)। হরিতাদেন ভৃস্তাৎ পৌল্রাদে বাচ্যে পায়নো ভব্তি।

৩০৪। কুঞ্জাদৈশ্চ। কৌঞ্চায়নাঃ ী

৩০৫। একস্থবিস্বয়ের্ণায়ন্তঃ।
কৌঞ্জায়ন্তঃ কৌঞ্জায়ন্তুজ। পৌজ্ঞাদাবিত্যেক। কৌঞ্জিঃ। কুঞ্জ
ব্রেপ্ন ভস্মন্লোমন্গণ শব্ধ শাক শট শুণ্ডা শুভ্রা বিপাশ স্কল্
ক্ষম্ভ। ১৩। *

তিও। দ্রোণপর্কতজীবন্তার।। দ্রোণায়নঃ দ্রোণিঃ পার্ক্বতায়নঃ পার্ক্বতিঃ জৈবন্তায়নঃ জৈবন্তিঃ। পোলাদারিত্যের। দ্রোণিঃ। দ্রোনায়নোহশ্বথামা ইভ্যুপচারাৎ।

৩০৭। তরিবাদে দেশনান্ত্রি। শিবীনাং নিবাদো দেশঃ শৈবঃ।

অয়মপি যূনি প্রত্যয়ং। পারণবায়ন ইতি পরস্তিয়াং পরগুশ্চেতি গট্ প্রহাদেশক।

- (৩০৪)। কুঞ্জাদেশ্চ পৌজ্রাদৌ বাচ্যে ণারনো ভবতি। শশ্বশকাং অখাদিপাঠেনৈব পারনে সিদ্ধে একস্বদিদ্বয়োগ্রিক্সার্থ ইহ পাঠঃ গর্গাদিদাৎ শাধ্যাঃ।
- (৩০৫)। কুঞ্জাদেরেকর্থবিশিষ্টে দ্বিধনিষ্টে চ পৌজ্ঞাদৌ বাচ্যে পায়তো ভবতি। পারিশিষ্যাদ্বত্থবিশিষ্টে পূর্ব্বস্ত্ত্রেণ বিধানম্। ব্রিমান্ত্র— কৌঞ্জায়নী হলস্তব্বিতস্তেতি যলুক্।
- (২০৬)। দ্রোণাদিভাঃ শব্দেভাঃ পৌজাদৌ বাচ্যে পায়নো বা ভবতি উপচারাদিতি গোত্রস্থান্যপুরুষো দ্রোণঃ তম্ম চ পৌজাদৌ দ্রৌণায়ন ইতি যা প্রসিদ্ধিঃ সা চানপ্তরোৎপল্লে বা দ্রোণস্থ পুত্রে অশ্ব-খাম্যপচরিতেত্যর্থঃ।
 - (৩০৭)। নিবসন্তামিন্নিতি নিবাদঃ তম্ভ নিবাসন্তন্নিবাদঃ তন্নিবাদে
 - কুঞ্জশন্তভন্মলোমব্রপাকগণাঃ শটঃ।
 কুঞ্জন্তভাবিপাশাক স্বন্ধক্তো ভ্রোদশ:॥:১৩॥/

৩০৮। তদদূরভবে।

বিদিশায়া অদুরভবং নগরং বৈদিশম্।

৩০১। তামির্ত্ত।

সহস্রেণ নির্বৃত্তা পরিখা সাহস্রী কুশাম্বেন নির্বৃত্তা কৌশাম্বী নগরী।

৩১০। ত্ৰিদ্যমানে চ।

উড়ুম্বরাঃ সন্ত্যাম্মিন্ দেশে ঔড়ুম্বরো দেশঃ। চকারস্তন্মিবাসা-দিয়ু সন্ধিধানার্থক্য। তেনাতঃ পরমাশেষাচ্চতুরু বিধিঃ।

৩১১। উদন্তাদস্ত্ৰাস্ত্ৰাদেৰ্গ ট_্। আবটবম্। স্থ্ৰাস্তাদেস্ত—সোৱাস্তৰং তম্ম সঞ্জঃ সোৱাস্তৰীযঃ।

দেশনারি বাচ্যে টণ্ ভবতি। সরিহিতজাৎ যত্তংপদবাচ্যং তক্ষাৎ প্রত্যয়:। শৈব ইতি টণ্প্রত্যয়াস্ত্যে দেশবিশেষস্থ বাচকঃ। এবমুত্তরযোগোলাহ-রণেম্বপি বাচাম্।

(৩০৮)। তহ্মাদূরে ভবং তদদূরভবং তত্মিন দেশনামি বাচ্যে টণ্ ভবতি। সম্বিহতত্বাৎ যত্তৎপদবাচাং তত্মাৎ প্রতায়ঃ।

- (৩০৯)। তেন নির্নৃত্যং তল্লির্নুত্ত দেশনামি বাচ্যে টণ্ ভবতি। তেনেতি হেতৌ করণে কর্তুরি চ তৃতীয়া। সহস্রেণ নির্নুত্তিতি হেতৌ করণে বা তৃতীয়া। কৌশাস্থীতি কুশান্থেন নির্নুত্তা কর্তুরি তৃতীয়া।
- (৩১০)। তদিগুমানং যত্র তত্তবিদ্যমানং তদিগুমানে দেশনারি চ বাচ্যে টণ্ভবতি। তেনেত্যাদি তেন হেতুনা অতঃপরমশ্বালকণাত্তরম্ আশেষাজ্ঞেবে টণং বক্ষ্যতি তত্মাৎ প্রাক্ ধাে বিধিঃ স তলিবাসাদিরু চতুদ্বে ভবতি।
- (৩১১)। স্থবাস্থাদিব্যতিরিক্তাহ্দস্তাক্তত্ব র্থেরু গড়্ভবতি। যথা যত্র সংক্রাব্যবহারতথা প্রত্যায়:। স্বাবটবমিতি অবটবঃ সম্ভাশ্মিন দেশে ইতিঞ

শ্বাস্ত বণু থণ্ড তণ্ড শৈবলিন্ কর্পুরিন্ শিখণ্ডিন্ গর্ত কর্কশ কঠা বিকর্ণ ক্ষম্তকর্ণ কর্কস্কু মতী গাহ অতি ছেগীরশ্ব ভীমরথ রোণী রোণ্যন্ত কুপান্ত। ২০। ক

৩১২ 1 মতোব হৈজি হিতাৎ। ঐকটাবতম্।

৩১০। বহুবচঃ কৃপে। দৈৰ্ঘবরত্ৰঃ কৃপঃ।

৩১৪। বিপাশোত্রকূপে চ।

পৌবা তথ্যিতি স্থান্তোরদূর ভথ্যিতার্থে ঔৎস্থিক ইণ্ । নমু টণ্ণটোবিশেষঃ কঃ বি:শ্যাভাবাদের চন্দ্রেণাপি লক্ষণং নিরস্তম্ । অত আহ ওস্ত
সংঘঃ সৌবাস্থবীয় ইতি টণস্তাদাদিকৈ জাত গৈতি জীয়ঃ পজ্প্তান্ত্র সংঘাক্ষঘোষলক্ষণেহিতি জয়াপবাদ্ধণ্ আবটবানাং সংঘঃ আবটবঃ । স্থবাত্থাদৌ
উকারাস্তবাতিরিক্তানাং পাঠো বিপার্রশান্তরকৃপে চেতি প্রাপ্তম্প পটো
বাধনার্থঃ । রোণী রোণান্ত ইতি গণে পঠাতে তেন রোণীশক্ষাৎ রোণীশক্ষোহস্তো যস্ত তত্মান্ত প্রভায়ঃ । আন্ধকরোণঃ । কৃপান্ত ইতি গণে পঠাতে
ককার উপান্তো যস্ত সঃ কর্ণছিদ্রকক্ষকবাকু ত্রিশক্ষু প্রভৃত্যঃ যঃ কর্ণছিদ্রকেণ্
নির্ভঃ কার্ণছিদ্রকঃ কৃপঃ ।

(৩১২)। বহুবজ্বিহিতাৎ মতুপ্রতায়াস্তাহন্তরে চতুর্ঘর্থেই ণড়্ ভবতি। ঐকটাবতমিতি ইকটশন্ধাৎ তদস্তাস্ত্যন্মিন্ বা মতুরিতি মতু: বহুবচোহনজিরাদেম তৌ নামীতি দীর্ঘ: নামীতি মস্তা ব:। বহুবজিহিতা-দিতি কিম্ ? আহীবতম।

(৩১৩)। বহরত্শকাৎ চতুর্থরের কুপে বাচ্যে পড়্ভবতি। টংগ্রা-হপবানঃ। যথাসম্ভবমর্থাঃ সমৃধ্যন্তে। দৈর্ঘবরত্র ইতি দৈর্ঘবরত্রেণ নির্বিঃ।

(০>৪)। বিপাশা নাম নদী তস্তা উত্তরকূলে यः কৃপস্তস্থিন্ বাচ্যে

স্বান্তকর্কর্মতীতশু খণ্ড শিথতিন:।
 রোণীরোণান্তকপূ রিশৈবল্য ত্রিভগীরথা:।
 বিকর্ণ: ক্রফকর্ণো ছথ বর্ণ ভীমরথো কঠা।
 গর্হকর্কণাহাল কুপান্তোহপাত্র দর্শিত:। ২০।

দাত্ত; কুপঃ ৷'

७७८। मक्सार्षका

সক্ষলেন সঙ্গতকলেন নিস্তিং সান্ধলম্।

সঙ্গল পুষ্ণল উদ্বৃপ মন্ত্রপ উৎপুট উৎপুল কুন্ত নিধান স্থদক স্থদত স্তৃত স্থানত্র স্থান্ধল সিকতা অলীক পুলার্র্ণ কুপাস পলাশ নিবেশ গন্তীর ইতর অহন্ লোমন্ বেমন্ আত্মন্ বরুণ বহুল মভিষিক্ত গোভূত রাজভূত গোলুন্দ ভল্লপাল সদ্যোমদক্ষ । ৩৩ ॥

৩১ড়। দ্রিয়াং সৌবীরসাল্পপ্রাকাকন্দী প্রাচ্যনগরী।
 ৩১৭। তৃণাদেঃ সঃ।

চতুর থের পড়্ভবতি। উণেহপরাদঃ। অবহরজর্মারস্তঃ। উত্তরকুপ ইতি কিম্? নিপাশা দক্ষিণকূপে বাচ্যে উণেব ভবতি। পট্টণোর্বিধানে বিশেষঃ প্রাপ্তকঃ।

(৩১৫)। সঙ্কলাদে চতুর্থেষু ণড়্ভবতি।

(৩১৬)। সৌবীরাদীনাং দেশনামি স্ত্রীলিঙ্গে বাচ্যে চভুর্থর্যের্ পড়্ ভবতি। দান্তামিত্রীত্যাদি দন্তামিত্রেণ বিধুমাগ্নিনা কাকন্দেন নির্বন্তেতার্থঃ।

(৩১৭)। স্ত্রিয়ামিত্যস্ত্রতি। তৃণাদেশ্চতুর্ধর্থের সোভবতি।
স্ত্রীলিক্তা চ। স্থাপেতি দ্রিয়ামাৎ।

* সম্বলঃ পুঞ্চলঃ কুন্ত উদ্যৃপোৎপুট্মন্তপাঃ।
নিধানোৎপুলগন্তীরাঃ স্থদক্ষসিকতেত্বাঃ।
স্থভূতবেমলোমাহস্থনেত্রা মুস্থমঙ্গলাঃ।
অভিনিজো ভন্নপালঃ সদ্যোমদন্তগোভূতৌ।
পুলাসোহথ রাজভূতো বঞ্গো বহুলস্তথা।
কুপাসন্ত পলাশোহথ স্থদতোহলীক্ষেব চ।
গোলুদ্দোহণ নিবেশোহণি ত্রিভিন্তিঃশৎসমীরিতাঃ॥ ৩০॥

ক্লেসা। ভূণ নড় পর্ন বর্ষ কল বল জল। ৮। *

७२৮ 🕴 . वत्रगां कीर्घन्छ ।

বরাণসঃ। অস্থ হি ভাবার্থে টণি। বারাণসী।

৩.৯। প্রেক্ষাদেরিন্।

প্রেকী। প্রেকা ফলকা বন্ধৃত্বকা ধ্রুকা ধ্রুকা ক্রিপকা শ্রুগ্রোধ ইক্কট সঙ্কট প্রকট। ১০। প

ं । রোহশাদেঃ।

অশারঃ অশারা। রোগে তু—অশারীতি নদাদিঃ। অশান্ যুথ তুষ মীন দর্ভ বিনদ গুড় খণ্ড কাণ্ড নখ শিখা। ১১। ‡

७२८। नथारिकरछेत्रव्।

সাথেয়ঃ। সথি স্থিদত্ত, বাক্ষত্ত শোক্ষিল ভন্নপাল চক্র

(৩১৯)। প্রেক্ষাদেশ্চভুষ থেষু ইন্ ভবতি।

(৩২০)। অশ্বাদেশ্চতুর্বর্থেষু রো ভবজি। নলাদিরিতি নাসৌ রপ্রতায়ান্তঃ কিন্তু অব্যুৎপন্নং নামেতাভিপ্রারঃ। শিগাশকাদ্রেফে ক্লতে ব্রুষঃ কর্তব্যঃ।

(৩২১)। স্থাদেশ্ভতুর্থেয়ু টেয়ণ্ভবতি।

^{(&#}x27;১৮): বরণশব্দাক্ততুর্বর্থেনু সো ভবতি। দীর্ঘন্চ। যদ্যক্তে দীর্ঘঃ স্থাৎ তদা বরণাদাস ইতি বিদ্যাৎ। করোতি চ দীর্ঘং তত্মাৎ সামর্থাৎ তদনস্তরাকারে দীর্ঘঃ।

ভ্ণনড়জলপর্ণস্বর্ণবর্ণছলাঃ স্থাঃ।
 বলমপি চ ভ্ণাদৌ কীভিতাঃ কাব্যবিদ্যিঃ। ৮।

[†] প্রেক্ষাফলক সংগ্রাধবন্ধ কথাক টেকটা:।
ধুবঞ্চবক্ষিপেভ্যঃ কা সন্ধটশ্চ ইমে দশ। ১০।

[্]বাধ্য ইপস্থানি প্রত্যাল্য এটা বিছয়। জুনাদৌ। ১১।

চক্রবাক ছগল অশোক চীর বীর সীকর সরস সমল স্থরস। ১৫। ঃ

७२२। मका भारतर्गाः।

সাফাশাম। সঙ্কাশ কম্পীল কশ্মীর কর্মার শূরসেন যূপ অঞ্চলায় অশান্ কূট অনীল পুলিন তীর্থ অগস্তি বিকর্ণ বিকার নাসিকা স্থাদিন্ সগদিন্ কলির খড়ির চূড়ার মঞ্জার কোবিদার। ২৪। ৭

ং২৩। স্থ্পথস্থে স্থ*চ। সৌপদ্যম্

৩২৭। বলাদের্যঃ। বলাম্। বল পুল উল কুল তুল নল মুর বন নদ। ১। ‡

ু । পকাদেরায়ন্। পাকারণঃ। পক তুষ অওক অলীক চিত্র অতিম কুন্ত

(৩২২)। সঙ্কাশাদেশ্চতুর্বর্থেয়ু প্রো ভবতি।

(৩২৩)। স্থপথি ইত্যেক্তসাচ্চতুর্ম থেমু প্রো ভবতি। থকারস্ত স্থানে স্থাদেশক।

(৩২৪)। বলাদেশ্চতুর্ব র্থেম্বু যো ভবতি।

(৩২৫)। পক্ষাদেশ্চতুর্থের খায়নণ্ভবতি।

সংগ শোফিলবান্দত্তী স্থিদত্তোহথ সাঁকরঃ।
 ভল্লপালশ্চক্রবাকঃ সরসঃ স্থরসম্ভথা।
 চক্রাশোক্রচীরবারাশ্চগলঃ সমলোহপি চ। ১৫।

[†] সঙ্কাশকদ্পীলবিকর্ণযুগাঃ কন্মীরনাথাবপি কোবিদারঃ।
কন্মারঃ কৃটগদিনৌ সন্থভ্যামগস্ত্যনীলো বিকারাস্পতীর্থম্।
শূরসেনাশ্মকলিরাঃ পুলিনং নাসিকা তথা।
চূড়ারঃ থড়িরশ্চাথ মঞ্জারো বেদবিংশতিঃ। ২৪।

বলবনে পুলকুলে মুরনদৌ নলছলৌ।
উল ইতি প্রকটিত ইতি গণো গ্রহমিত: ॥ ৯ ॥

সীরক সরক মমল রোমন্ লোমক লোমশ হংসক স্থবর্ণক হস্তবিল। ১৬। *

৩২৬। পৃথঃ পৃত্**শদ্**। পান্তায়নঃ।

७२१। कर्नात्म्नाय्यानिः।

কার্ণায়নিঃ। কর্ণ অর্ক বশিষ্ঠ বেশ শপ ক্রপদ পাঞ্চল্য শ্কিক ক্লিশ কুন্তী অগুবিৎজীব। ১২। শ

৩২৮। স্থতঙ্গমাদেপ্তিণ্। সোতঙ্গমিঃ। স্থতঙ্গম মুনিচিত বিপ্রচিত্ত মহাচিত্ত মহাপুত্র শেত গদিক শুক্র বিগ্রা বীজ শুনু অর্জুন অজির। ১৩। ‡

৩২৯। বরাহাদেঃ কণ্।

(৩২৬)। পথি ইতাস্মাচ্চতৃষ থেঁবু আয়নণ্ভবতি। পণি ইতাস্থা স্থানে পন্থাদেশশ্চ।

(७२१)। कर्नातन्डजुष त्यंयु भाग्रनिङ्वि ।

(৩২৮)। স্থতঙ্গাদেশ্চতুর্থেষু টিণ্ ভবতি। স্তীত্বিবক্ষায়াং টিবাদী। সৌতস্মী।

(৩২৯)। বরাহাদেশ্চতুর্থেষু কণ্ ভবতি। বরাহাদয়োহরীহণাদৌ পঠাস্তাম্ এবং স্থোলবাহুকঃ শার্করাকঃ ইতি ন সিধ্যতি তমাল্লক্ল্রয়মবতাং কর্ণীয়ম্। যেতাস্ত কণ্ অকণ্ভাাং বিশেষো নাস্তি

- পক্ষপ্তবশ্চিত্রকুন্ডৌ দারকালীকলোমশাঃ।
 সরকাণ্ডকরোমাণি লোমকাতিশ্বহংসকাঃ।
 স্থবর্গকো হস্তবিলঃ সমলশ্চেতি বোড়শ। ১৬।
- † কর্নার্কক্রপদা বশিষ্ঠকুলিশো জীবোহথ কুস্তান্দিকো। অত্তীবং শপপাঞ্চলমুদিতং বেশোহপি কর্ণাদিকে। ১২।
- ‡ স্কৃতক্ষধাৰ্জ্বনি গ্ৰন্থকা মুনেস্ক বিপ্ৰান্মহতোহপি চিত্তম্। প্ৰব্ৰস্ক শেষাপাদিকাজিরৌ চ খেতোহথ বীজোহপি স্বতক্ষমানে। ১৩।

বারাহকম্। বরাহ পলাশ শিরীষ বিনদ্ধ বিজগ্ধ বিলগ্ধ বিভগ্ন স্থলবাত খদির শর্করা। ১১। *।

৩০০। কুমুদাদেষ্টিকণ্। কোমুদিকম্। কুমুদ গোমঠ রথকার দাসপ্রাম অশ্বথ শাল্মলী মুনি স্থল কুউন্নট কর্ণ শিরীষ শর্করা। ১২। শ

৩৩১। অরীহণাদেরকণ্।
আরীহণকম্। অরীহণ কুও দ্রুঘণ খদির ভগল উলুন্দ সাঞ্চরায়ণ
ক্রোইটায়ন ভাস্তায়ণ শৈত্রায়ণ কৈগগ্রায়ন বিপথ বিপাশ উদ্দণ্ড
উদঞ্চন খাডায়ন খাণ্ডব বীরণ কাশ কুৎক্ষ জাম্বত শিংশপা
কিরণ রৈবত বিল্প বৈমতায়ন সৌমায়ন শাণ্ডিল্যায়ন স্থযজ্ঞ
শিরীষ বধির চাপ খাস। ৩২। ‡

তেহরী লগালো ব্যালাদো বা পঠান্তাং ম কন্দি দিশেষঃ। তন্মাদাচার্য্য-পরম্পরাগণপাঠ এবাস্তা। ভূলবান্তরিতি শক্ষমং কেচিদান্তঃ। নতু অরীহ-গাদ্যোহত্রেব পঠান্তাং এবং শৈংশপক ইতি ন সিধাতি।

(৩০•)। কুমুদাদেশ তুর্ম র্থেয়ু টিকণ্ভবতি।

(৩০১)। অরীহণাদেশ্চতুর্ম থেবু অকন্ ভবতি।

ববাহঃ পলাশং শিরীষং বিনদ্ধং বিদ্বাং বিউরিং বিলয়ঃ বিভারম্।
 অথ স্থূলবাহুঃ থকারাদিবোহপি তথা শক্রা স্থার্বরাহাদিকেহমী। ১২।
 কুমুদো গোমঠঃ কর্ণঃ শিরীষঃ শক্রা মুনিঃ।
 কুটাটোঃ তলাখণো দাস্থামশ্চ শাল্লী।

त्रथकातम्य विद्ध्यतः कूभूमारिले कु घाषम । ১२ ।

‡ অরীহণকুগুশিরীযবিন্ধবৈত্রায়ণোদঞ্চনকাশকুৎসাং।
ভাস্তায়ণোলুন্দস্থযজ্ঞচাপাং ক্রেপ্টিয়ানো জাম্বতো বিপাশং।
খাড়ায়নঃ থাওববীরণে দে দৌমায়নো বৈবতশিংশপে চ।
ক্রেদণঃ থদিরখাদৌ ভগলঃ সাঞ্চরায়ণঃ।
বিগন্তায়নবিপথৌ কিরণে বৈমতায়নঃ।
শ্রাণ্ডিল্যায়নবধিরাবুদ্ধঃ ক্থিতা অমী। এই।

ত০২। কৃশাশ্বাদেরীয়ণ্।

কার্শাদ্বীয়⁸। কুশাদ্ব অরিষ্ট অরণ্য বেশান্ বিশাল রোমক শ্রদ্দ কূট লোমশ বর্চ্চদ্ স্থকর পুরগা সংদৃশ স্থগর অস্থুখ ধূম অজিন বিনত অবিনত অর্জুন্ সায়স মৌকগল্য। ২২। «

৩৩৩। খাষ্যাদেঃ কঃ।

খাধ্যকম্। খাষ্য ক্তগ্রোধ শর নিলীন নিধান বিতান বিত্ত পরিগুড় উত্তরাশ্মন্ স্থলবাত খদির শর্করা অন্তর পরিবেশ প্রত বীরণ। ১৬। প

৩৩২। গার্তাদেরিকঃ। গতিকম্। গার্ত কুমুদ অত্যোধ ইকট কক্ষট বীজ বল্পজ প্রিক্তি অপ্ত শিরীষ সরাজ্ঞ প্রশাশ কূপ বিকক্ষত শুক্ষা গুলা ১৫।

্তি। কাশাদেরিলঃ।•
কাশিলঃ। কাশ বাশ পলাশ অশ্বল পীযুক্ষা বিস তৃণ ন দু । কিন্দ কবুরি কন্টক গুহা । ১৩।

(৩৩১)। ক্রশাখাদেশ্চতুর গেসু ঈয়ণ্ভব'ত।

(৩৩০)। ঋষ্যাদেশত্ত্ব থেঁণ্ড কো ভৰ্তি।

(৩১৪)। গৰ্ভাদেশচতুষ থেবু ইকো ভৰতি।

(৩৩৫)। কাশাদেশ্চতৃষ্ থেঁযু ইলো ভবতি।

- * আকৌ কশার্যপ্রগাস্থ্যুমক্টা নৌদ্যল্যবেশ্বশ্যনাজিরসংদৃশানি ।
 ভাতামরিপ্তস্থগরৌ বিনতার্জী চ ভাং সারসোহবিনতলোমশরোমাদানি ।
 বর্চ্চোবিশালস্করাঃ কথিতা ভাবগাং ছাবিংশতিনিগদিতা চ কশার্ম্থ্য । > ।
 । ঋষ্যো বিতানপরিগৃঢ়বিনদ্বথভূত্যগ্রোগবীরণনিলীননিগান্মিথ্য ।
 স্থাঃ স্থলবাহুগদিরাস্তরশর্করাশ্চ বেশঃ পরেঃ পরশতশেত্বাশ্ব । ১৬ ॥
 - ্র গর্ত্তঃ কুমুদ্বিকস্কতক্পন্তগ্রোধাশ্বখাঃ পরিবাপঃ। ব্রজবীজসরাজ্ঞশিরীষাঃ শর্করেকটকশ্বটপলাশাঃ॥ ১৫॥
 - কাশাশ্বথপলাশকণ্টকগুহাকর্রবাশা বিসম্।
 পীযুক্ষাতৃণকর্দমা বননডাবিখং দ্রিভিদি খ্রিতা ॥ ১৩ ॥

৩৩৬। শর্করায়াউগ্গীয়ে চ। শার্করং শার্করীয়ং শর্করিলম্।

৩৩৭। মধ্বাদেম্ভুঃ।

মধুমান্। মধু বিষ স্থাণু ঈক্ষুবেণু কর্কন্ধ শমী করীর হিমা কিশর৷ শার্য্যণ রমণ বর্ম্মন্ পার্দ্ধা শর ইফ্টকা আস্তৃতি শক্তি ঋষ্টি আসন্দী শক্ট * । ২১।

৩৩৮। অস্থবাস্থাদৈর্নদ্যাম্। উড়ুম্বরাবতী ইক্ষতী। স্থবাস্থাদেস্ত। সৌবাস্তবী। স্থবাস্থাদিঃ প্রাগুক্তঃ।

৩৩৯। কুমুদনড়বৈতসমহিষেভ্যো ডিচ্চ।

(৩৩৬)। শর্কবাশকাচ্চতুর্ম থেয় টণ্ নীয় ইত্যেতো ভবতঃ। চকারা-দিলশ্চ। বরাহাদিশ্বাৎ কণা শার্করাকঃ। কুমুদাদিশ্বাট্টকণা শার্করিকঃ। ঋষ্যাদিশ্বাৎ কেন শর্করাকঃ। গর্তাদিশ্বাদিকেন শর্করিকঃ। উৎকরা-দিশ্বাদীয়েন শর্করীয়ম্। লুকং বক্ষাতি তেন শর্করা তল্লুক্প্রকরণে দশ্যিষাতি।

(৩১৭)। মধ্বাদেশ্চ হুম থেঁয়ু মতুর্ভবতি। তদস্থাস্তাম্মিন্ বা মতুরিতি মতুনা সিধাতীতি চক্রঃ। তর বাচাম্। তদিদামানে চেতি দেশনারি টণ্ স্থাং। মধুনা নির্ভিছথে মতুশ্চ ন স্থাং বিষ্বানিত্যাদাব-মন্তেত্যাদিনা মতুংমা বঃ।

(৩০৮)। স্থবাস্থাদিব্যতিরিক্তাৎ শকাচ্চতুর্বর্থেরু নদ্যাং বাচ্যায়াং মতুর্ভবতি। উড়ৃপ্ববিতীতি বহুবচোহনজিরাদেমতী নামীতি দীর্ঘঃ নামীতি মস্থা বং। ইকুমতীত্যত্র তু যবাদিম্বার ভবতি। ভগীরপেন নির্বৃত্তা ভাগীরপীত্যত্র ন ভবতি স্থবাস্থাদিম্বাৎ।

(৩৩৯)। কুমুদাদিভাশ্চতুর্ধর্থেষু মতুর্ভবতি। স ডিচ্চ ভবতি।

মণ্টিক্ষ্বাস্থতিবেণুবর্শ্বরমণাঃ পার্দ্ধাশবস্থাণবঃ।
 কর্কক্ষ্ ষ্টিশমীষ্টকাবিষহিমাসলীকরীরা অপি।
 শক্তিঃ শার্য্যণ ইত্যতোহথ শকটং তদ্বৎ শরা কেঃ পরা।
 ইত্যেবং মধুমুথ্যকৈ নিগদিতা একারিতা বিংশতিঃ॥ ২১॥

কুমুদান্ নড়ান্ বেতস্বান্ মহিম্বান্।

৩৪০ ি জুলো নড়শাদাভ্যাম্। নড়লঃ শাদ্ধলঃ

৩৪১। শিখাুয়া বলঃ।

শিখাবলঃ ।

৩৪২। উৎকরাদেরীয়ঃ।

উৎকরীয়ঃ। উৎকর সঙ্কর সক্ষল পিপ্পল প্রিপ্রলীমূল অশ্মন্ অর্ক পর্ন স্থপর্ন খণ্ডাজিন অগ্নি তিক কিতব আতপ অনেক পলাশ ত্রিবেণি চিবুক পিচুক অশ্বত্থ কাশ কুশ ভক্তা বিশাল শালা অশ্য-জন কর্ম্মন্ উৎক্রোশ ঋতু খদির শূর্পণায় শ্যাবনায় নৈরোচক কসিত নিতান্ত বৃক্ষ ইন্দ্রবৃক্ষ আর্দ্রবৃক্ষ শর্করা * । ৩৮।

কুমুদ্বানিতি ডিব্রাদকার লুক্ কুমুদ্বাদেষ্টিকণিতি টিকণা গর্ত্তাদেরিক ইতি ইকেন কৌমুদিকঃ কুম্দিক ইতি। পুন্ধরাদিন্বান্মন্বর্ণীয়েন ইনা কুমুদিনী। বৈতস্বানিতি অকারস্থানুপ্তবন্ধাৎ সোমন্বর্থে ভসোশ্চেতি পদান্তবন্ধাভাবঃ। নড়াদেঃ কুশ্চেতি ঈয়েন নড়কীয়ঃ।

- (৩৪০)। নজ্শাদ ইত্যোতাভ্যাঞ্চতুর্ম থেয়ু জুলো ভবতি। শাদ-শব্দাৎ কর্দ্মবাচকাৎ জুলো ন ভবত্যনভিধানাৎ। শস্পবাচিন এব ভবতীতি ভাগর্তিঃ।
- (৩৪১)। শিথাশব্দাৎ চতুর্মর্থেরু বলো ভবতি। শিথাবলো নাম গ্রামঃ নম্বর্ণীয়নিপাতস্ক শিথাবলোহদেশে।

(৩৪২)। উৎকরাদেনাম শতুর্ম র্থেরু ঈয়ো ভবতি।

আদার্ৎকরসম্বাশ্বিত্বা উৎক্রোশভন্তাতিকা।
 অশ্বর্থর্ত্বিশালকাশথিদরানেকার্কনৈরোচিকাঃ।
 পর্ণাগ্রী পিচুকোহস্তসংজনফলে মূলান্তপিপল্যথোশূর্পপ্তাবয়ুগান্ত্র নায় উদিতঃ স্থাদাতপশ্চের্ক্ম।
 শালাকশ্বস্থপর্ণপিপ্পলকুশাঃ থণ্ডাজিনঃ শর্করা।
 আন্তেশ্তিক্রিকান্তান্তর্ক্ষকসিতা বেণিস্থিতঃ শঃ পলাং।

৩30। নড়াদেঃ কুল্চ।

নড়কীয়ঃ। নড় প্লক্ষ বিশ্ব বেণুবেত্র বেতস ইক্ষু তক্ষন্ কাষ্ঠ কপোত ণা ১ •।

৩৪৪। ক্রুঞ্গায়া **হ্রস্কেচ**।' ক্রুঞ্কীয়ঃ।

७९७। (भरिष।

চকুষা গৃহতে রূপং চাক্ষুষম্। চতুদ শাং দৃশ্যতে রক্ষ*চ তুদ শিম্।
দৃশদি পিষ্টাঃ শক্তবঃ দার্শদাঃ। উদ্থলে কুলা যবা ঔদ্থলাঃ।
অশৈরুহতে আখো রগঃ। চতুর্ভিরুহতে চাতুরং শকটম্।

৩৪৬। প্রস্থোত্তরপদাচ্চ। মাহকী প্রস্থঃ।

- (৩৪৩)। নড়াদেনার চতুষ থেঁযু **স**রো ভবতি। কুশ্চাগমঃ। ভক্ষরিতাশাং তক্ষবীর: নো নাত্তগ্রেতি নকারলুক্।
- (৩৪৪)। জুঞাশকাজেতুর থেঁয়ু উয়ো ভবতি। কুশ্চাগনঃ। জুঞা-শক্ষাঃ স্কা
- (৩৪৫)। বুলাদিভাশ্চভ্রর্থপর্যান্তেভাঃ প্রাপ্তক্তেভা৷ ঘোষ্টোহর্থঃ স শেষঃ। তন্মিন্ বাচ্যে নাম্নষ্টণ্ ভবিতি। লোকপ্রসিদ্ধা প্রত্যরার্থবাবস্থা। সা চ প্রসিদ্ধিং চক্ষ্মা পৃহতে ইত্যাদিনৈব স্পষ্টীকতা
 কক্ষানাণাঃ প্রত্যরান্তদ্দাদিমর্পের্ ন ভবন্তি। অনন্তরোদ্দেশ্যেষ্ সর্বেম্বেবার্থেয়্ ভবন্তীতি শেষাধিকারপ্রয়োজনন্।
- (৩৪৮)। প্রস্থোত্তরপদারামঃ শেষেহর্থে বাচ্যে টণ্ ভবতি।
 মাহকীপ্রস্থ ইতি প্রস্থোত্তরপদানামুদীচ্যগ্রামন্থাদন্তোদাতাহুদীচ্যগ্রামাদ্দহলচ ইতি গতি প্রাপ্তে ত্লাধনার্থি বচনম্। নন্ত্রপদগ্রহণং কিমর্থম্?
 প্রস্থাতাদিত্যেবোচ্যতাম্ এবং সতি পরমশ্চাসৌ কর্ণীর্থপ্রস্থশ্চেতীত্য-
 - নড়প্লকৌ বিষ্ববেণ, তক্ষা স্থাবেত্তবেতসৌ!
 কাঠ্মিক্ষ্: কপোতক নড়াদৌ কথিতা দশ ॥ ১০ ॥

७८१। तशिकारमञ्ज

বাহীকম্। বাহীক কলকীট বহুকীট শূরসেন পটচ্চর পর্বত উদ-পান তক্ষন্ লোমন্ যকুৎ কমলভিদা পরিখা গোষ্ঠী গোমতী পলদী নৈকতী সন্ধিবেলা সন্ধ্যা অমাবাস্থা ত্রয়োদশী পঞ্দশী পৌর্ণমাসী প্রতিপৎ *।২৩।

🍛 । সংবৎসরাৎ ফলপর্বণোঃ। সাংবৎসরং ফলং পর্ব ঢ। অফলপর্বণোস্তা। সাংবৎসরিকমৃণম্ ।

নাপি স্থাং উত্তরপদগ্রহণে তু সতি ন ভবতি। নাত্র প্রস্থাক উত্তরপদং কিন্তু কর্ণীব্যপ্রস্থাস্থার

(৩৪৭)। বাহীকাদেঃ শেষেহর্ষে বাচ্যে উণ্ ভবতি। কুপাস্তা-চেতি টণি সিদ্ধে বাহীকশন্দগ্রোপীদানং জ্লাপয়তি যেষাং বিষয়ে আদিস্থৈজাদনাদিস্থৈজাচ্চ সন্তবৃতি তেষামাদিস্থৈজাতো বিহিত ঈরো বাধকো ভবতি। তেন ঔলুপলকেরু ভব ঔলুপলকীয়ঃ বাহাকরূপে ভবঃ বাহীকরূপীয় ইত্যাদৌ কুপাস্তটনম্ উদীচাটণঞ্চ বাধিষা ঈয় এব ভবতি। অথবা কুপাস্তাহ্যেত্যনেন িহিত্ত টণোইনাদিস্থৈজাহিষয়ঃ যতঃ আদিস্থৈজাত ঈয়য়য়্ত লাধকঃ আৎ ভ্লাধনার্থে। বাহীকশন্দপাঠঃ। অএ গণে ঈকারান্তাদীনাং পাঠঃ ইদন্তরোপাস্তাৎ প্রাচ্যাদিতি অনাদিস্থৈজাত গাত্ত নিত্যবহুবচনাদিতি প্রাপ্তেজাকণো বাধনার্থঃ। গোষ্ঠানৈকতী-শদ্দৌ বাহীকগ্রামৌ তয়োরাদিস্থৈজাতো বাহীকগ্রামাদিতি ণিকটিকণো-বাধনার্থঃ। সন্ধিবেলেত্যাদীনাং সঞ্চানাং পাঠঃ কালাদিতি প্রাপ্তশ্রু চিকণো রাধনার্থঃ। শেষানামুদীচ্যগ্রামবিহিত্ত পটঃ।

(৩৪৮)। সংবৎসরশব্দ কলে প্রবৃণি চ বাচ্যে শেষেহর্থে টণ্ ভবতি।

> বাহীকপরিথালোম যক্তং গোষ্ঠী ত্রোদশী। অমাবাতা শ্রদেনগুক্ষা সন্ধ্যা পটকরম্। কলকীটঃ পঞ্চাশী সন্ধিবেলাথ গোমতী।

· ৪৯। ধাতুনক্ষত্রাৎ। গ্রৈত্মং পৌষম্। ·

৩৫০। পৌত্রাদিপ্রত্যয়ান্তাৎ শকলাদেঃ ! শাকলাঃ ছাক্রাঃ কাণ্বঃ। শকলাদির্গর্গিদ্যম্তুর্গণঃ। অপৌক্রাদি-প্রত্যয়াস্তান্ত্র—কণ্ণেব। দৈবতমস্থ কাণ্বঃ তম্পেদং কাণ্বীয়ম্।

০৫১। প্রাচ্যভরতাপত্যান্তদ্ব্যজ্ব মিণল্ডাৎ । দাক্ষঃ পাণুগারঃ । পাণিনীয়মিতি তু। পূজায়াং যুবসংজ্ঞত্বা

- (৩৫০)। পৌত্রাদিপ্রত্যয়ান্তাৎ শকলাদের্গণাচ্ছেষেহর্থে টণ্ভবতি । আদিপ্রৈজাতশ্চেতি ঈয়য় বাধনার্থং বচনম্। শকলশক্ষারভা গর্গাদিগণ-সমাপ্রিং যাবৎ শক্লাদিঃ। শাকলা ইতি শাকলাক্ষানী শাকলাশনাৎ গর্গাদিয়ণিস্তাট্রণ্ অপত্যস্তানাতীতি যকারল্যং।
- (৩৫১)। অপত্যশব্দেনাপত্যাথিবিহিতপ্রতায় উচাতে। প্রাচাণ্যাত্রবাচকং ভরতগোত্রবাচকঞ্চাপত্যার্থে বিহিতপ্রতায়ান্তং দ্বাচং বর্জ্জন ইণস্তম্প পোত্রাদিপ্রতায়ান্তাং শেষেহর্থে টণ্ ভবতি। তল্পৈব ইণস্তম্প পৌত্রাদিপ্রতায়ান্তা ভবতি। যত্র পৌত্রাদেনী বাচ্যে ইণ্ ভবতি। দাক্ষ ইতি পৌত্রাদেন বাচ্যে অদন্তাচ্চেত্রি ইণ্ । দাক্ষেরয়ং দাক্ষ: আদিকৈজাতশ্চেতি ঈরে প্রাপ্তে টণ্ অয়ং দ্বাজ্ব ভবতি নতু প্রাচাভরতাপত্যান্তঃ। পাণানার ইত্যয়ং প্রাচ্যাপত্যপ্রতায়ান্তে নতু ঘ্রচঃ। পাণিনিশকাদিণস্তাদপি টণা ভরিতবাং তং কথমীয় ইতি চোদ্যাহ পাণিননীয়মিত্যাদি। পাণিনিশকাৎ ঝরাম্বকর্মিকুরুভ্যশ্চেতি টণ্ গাণীত্যান

উদপানং পৌর্থমাসী প্রতিগৎ কমলাদ্ভিদা। বহুকীটঃ পর্রতোহথ পলদী নৈকতী তথা॥ ২৩॥.

⁽৩৪৯)। ঝুরুবাচকাৎ নক্ষ্রনাচকাচ্ছকাৎ শেষেধর্থে বাচ্যে টণ্ ভবতি। কালাদিতি টিকণো বাধনার্থং বচন্দ্। গ্রৈত্মনিতি গ্রীত্মে জাতমিত্যর্থপরিকল্পনং করণীয়ন্। পৌধনিতি ভাত্তদ্যুক্কালে ইতি টণ্ ভস্ত টণো ভাত্তদ্যুক্কালেথ্বিশেষে ইতি লুক্ তভোহনেন টণ্ তিমা-পুষালোধণীতি বলুক্।

'দিণো লুকি টণস্তাদীয়ঃ। প্রাচ্যভরতাপত্যাস্তব্যচস্ত। কাশীয়াঃ কৈমীয়াঃ। •

৩৫২। কুপান্তাচ্চ। নৈলীনকঃ।

१९११ कच्चारमण्ड (मना<u>९।</u>

ঐক্ষাকঃ কাচ্ছঃ। কচ্ছ সিন্ধু বৰ্ণু অঙ্গার মধুমৎ কম্বোজ বিরূপ শ্বশ্যার কুরু রঙ্কু সাল্প অনুষণ্ড দ্বীপু অনুপ অজপাদ বিজায়ক কুতৃভর। ১৭। *

দিনা ন লুগ্রিবেধঃ পৌলাদিপ্রত্যমান্তাদ্য্নীতি নিয়মাৎ ততঃ পূজায়াং
যুবসংক্রক ইণ্ অধিউণস্তাদিহিত্ত যুবপ্রতায়ত ইণো লুকং কক্ষাতি ইণো
লুকি ক্লতে আদিহৈজাতশ্চেতি পাণিশকাদীয়ঃ। কাশীয়া কৈছীয়া ইতি
কাশিবৈদ্বিশক্ষে ইণজে আভ্যামীয়ঃ ক্ষাণেণিকটিকণাবিতাত ন ভবতি।
চেদিসাহচ্যাাৎ দেশবাচকত কাশিতাত তত্ত গ্রহণাৎ।

(৩৫২)। ককার উপান্তো যশু স কুপাস্তঃ তম্মাচ্ছেষেহর্থে টণ্ ভবতি। নৈলীনক ইতি নিলীনকশন্ধাৎ টণ্ অস্তোদান্তেত্যাদিন। ণাট প্রাপ্তে বিধানম্।

(৩৫৩)। কুপাস্তাৎ কচ্ছাদেশ্চ দেশবাচকাং শেষেংর্থে টণ্ ভবতি।
ক্রিক্ষাক ইতি ইক্ষাকুশকাদেশাগ্রদন্তাদিতি প্রাপ্তং টিকণং বাধিতা অনাদিছৈজাতশ্চ নিত্যবহুবচনাদিতি প্রাপ্তোহকণ্ অনেন বাধিতঃ। ইক্ষাকোষ্টণ্
ণটোরিতি উকারলোপঃ। কচ্ছাদিগণে যে জনপদবাচকা নিত্যবহুবচনাস্তান্তেষামনাদিহৈজাতশ্চ নিত্যবহুবচনাদিত্যকণ্ বাধনার্থঃ পাঠঃ।
উকারাস্তান্ত্ দেশাগুদন্তাদিতি টিকণ্ বাধনার্থঃ। কচ্ছশবল্প ন নিত্যবহুবচনান্তঃ অতঃ শেষে ইত্যমেনৈব টণি সিদ্ধে পুনরশ্ব পাঠঃ কচ্ছাদের্ভৎস্থয়োরিত্যকণ্ বাধনার্থঃ। রঙ্কশব্দাৎ বিজ্ঞায়কশকাদিপ কুপাস্তত্মাৎ পুর্বেশেব
টণি সিদ্ধে পুনরনয়োঃ পাঠঃ কচ্ছাদের্ভৎস্থয়োরিত্যকণ্বাধনার্থঃ।

কচ্ছাজপানে ব্যক্রপষগুকো কাশ্মীরদানে মধুমংকুভূভরো।
 কম্বোক্রিকুকুরয় বর্ণবাে দ্বীপান্প।য়ারবিজায়কা অপি 🚚 ১৭ ॥

৩৮৪। অবারাবারপারাভ্যাঞ। অবারীণঃ অবারপারীণঃ।

৩৬৫। ক্জ্রাদেশৈরকঃ। কাজেয়কঃ। কত্রি হস্তিন্পুক্ষর পুক্ষল মৌবন কুণ্ডিন নগরী মাহিমতী চর্মাণুতী গ্রাম। ১০।

৩৬৬। কুলাচ্ছুনি।

(कोटनग्रकः या।

৩৬৭। কুক্ষেরদৌ।

কৌক্ষেয়কঃ খড়গঃ।

ক্রি প্রাপ্তে বিধানম্। অবারশু পারং পারাবার্যমিতি ষ্টাতৎপুরুষঃ রাজদন্তাদেরাক্কতিগণদাদবারশব্দশু পরনিপাতঃ। উত্তরস্ত্রে তু অবারশু পারম অবারপারমিত্যাপি ভর্তি সমাসঃ।

- (৩১৪)। অবারশধাদবারপারশকাচ্চ শেষেহর্থে ঈনো ভবতি। শেষে ইতি টণি প্রাপ্তে বিধানম্।
- (৩৬৫)। কল্রি ইত্যেবমাদিশব্দেন্তঃ শেষেত্র গৈরকো ভবতি।
 কল্রাদিগণে যে আদিস্থৈ দাতন্তেন্তা ঈয়ে শেষেন্তান্ত টণি প্রাপ্তে কিধানম্। কুৎসিতান্ত্রয়ঃ কল্রয়ঃ কৎস্বরত্রিবদর্থেরু তৎপুরুষে ইতি কুস্থানে
 কলাদেশঃ। অথবা অস্মাদেব নিপাতনাদহর্ত্রীহৌ কলাদেশঃ। কুৎসিতাক্রয়েছিল্ল কল্রিরিতি জিনেক্রঃ। নগরীশব্দোহত্র পঠ্যতে স মাহিন্মতীসাহচর্যাৎ সংজ্ঞাশব্দঃ। জাতৌ তু। নাগরঃ। ভাষাকারস্বরসাৎ
 গ্রামশব্দোহত্র পঠ্যতে তত্মাৎ গীনং যতঞ্চ বক্ষ্যতি। তেন গ্রামেরকো
 প্রামীণো গ্রাম্যন্ত।
- - (৩৬৭)। কুক্ষিশলাচ্ছেষেহর্থেহসৌ বাচ্যে ণেয়কো ভবতি। অক্সত্র।
 - ক ক্রিঃ পুদ্ধরযৌবনে চ নগরী মাহিয়তী কুণ্ডিন:।
 প্রাম: পুদ্ধলহন্তিনৌ চ ক্থিতা চর্মবর্তী স্থরিভি: ১০॥

তওদ। আবায়া অলক্ষাক্রে। আনেয়কং কণ্ঠালকারঃ।

৩৬৯। কুড্যারা যলোপশ্চ। কোডেয়ক:। কুণ্ডারা ইত্যেকে।

७२०। (छेंग्रैंग् नमगरमः।

भारतशः जलम्। नती मही वाताननी ब्याविकी कोनाकी कानाशनी थानिती वामा माद्यी पूर्वता पार्वती (मनकी पूर्वतनगरी * 1 >8 ।

৩৭১। বড়বায়া রূষে। বাড়বেয়ো রুষঃ।

কৌক্ষ:। তত্র ভবেহর্থে অহিদৃতীভ্যাদিনা বিহিতেন টেয়ণা **দিহ্নাৎ**' কৌক্ষেয়াৎ স্বার্থে কে কতে কৌক্ষেয়ক ইতি দিধ্যতি অর্থভেদার্থমেতরক্ষণম্।

(৩৬৮)। গ্রীবাশপাছেরেহর্থেই কারে বাচ্যে পেয়কো ভবতি।
অন্তর। বৈর্বঃ। শিরার্থগ্রীবায়ান্তণ, চেতি টেয়ণা সিদ্ধাৎ গ্রৈবেরাৎ
বার্থিককোন গ্রৈবেরক ইতি সিধ্যতি অর্থভেদার্থমেতদ্বিধানমিতি চেল্ল'
কাট্যেব তেম্বর্থেরমী শক্ষাঃ সিধ্যস্তীতি লক্ষণত্রয়ং প্রত্যাচকাণো ভাষ্যকার
এবান্থযোক্তবাঃ চন্দ্রোইপি তন্মতামুগতোহমু যাক্তব্য এব।

(৩৬৯)। কুড্যাশ দাক্তৈবৈংথে ণেয়কো ভবতি। কুড্যায়া যলোপশচ। অগুত্র কোড্যঃ। এতদৈব লক্ষণং কুণ্ড্যায়া যলোপশ্চতি একে পঠন্তি। তেয়াং কৌণ্ডেয়ক ইত্যুদাহরণম্।

(৩৭০)। নদী ইত্যেবমাদিভাঃ শেষেহর্থে টেয়ণ্ভবতি। ষে হন্দ্র আনাদিহৈক্সাতন্তেভাইণি প্রাপ্তে যে আদিহৈক্সাতন্তেভা সংয় প্রাপ্তে আদিহিক্সাত এব যে স্ক্রাম্তেভা সদন্তরোপান্তাং প্রাচ্যাদিভানেনাকণি প্রাপ্তে বিধানম্। নাবেয়মিতি নদ্যাং ভবমিতার্থঃ। পৌর্বনগরেয়মিন্তাক্র অপ্রাচ্যাধাং প্রাচ্যে নগরান্তন্তেতি নোভয়পদর্কিঃ।

নদা বারাণসা বামা দামা দ্র্রাথ থাদিরী।
 সেনকী পূর্কনগরী সায়া কাশায়নী মহী।
 কৌশাদ্বী দার্বী প্রাবস্তী ন্রাদ্যাঃ স্থান্ডভূর্দশ ॥ ১৪ ॥।

৩৭২। পুরবনগিরিভ্যোবা।

পোরং পোরেয়ং বানং বানেয়ং গৈরং গৈরেয়ম্।

৩৭০। **দক্ষিণাপশ্চাৎ পুরদস্ত্যণ**্।

দাক্ষিণাতাঃ পাশ্চাত্যঃ পৌরস্তাঃ।

৩৭৪। কাদিভাস্তাঃ।

কতাঃ। ক ইহ অমা আবিস্। ৪। (কেহামাবিশ্চ কাদিঃ।)

৩৭৫। ত্রতস্তভাচ্চ।

তত্রতাঃ ততন্তঃ।

(७१১)। वज्रवांभनाटक्रियशर्थ वृत्य वाट्डा टियम् छवछि।

⁽৩৭২)। পুরবনগিরি ইত্যেতেভাঃ শেষেহর্থে টেয়ণ্ বা ভবতি। এতচ্চাদ্রশং কেচিৎ নদ্যাদে পঠস্তি কেচিল্ল পঠস্তি ইতি মতদ্যদর্শনেন বিকল্বিবান্ম।

⁽৩৭০)। দক্ষিণোত্তরাভ্যামাচাদ্রে দ্রেত্বাহি চ ইতি আচ্প্রত্যরাস্থাে দক্ষিণাশন্তাদ্ধিতবদাদিতাদব্যয়সংজ্কোহত্র গৃহতে পশাৎ পুরঃশক্ষোব্যয়ব্যাঃ সাহচর্যাং। দক্ষিণাদিভ্যঃ শেষেহর্যে ত্যণ্ ভবতি।
টণি প্রাপ্তে বিধানম্।

⁽৩৭৪)। কাদিভাঃ শেষেহর্পে ভো ভবতি। ক ইতি কিম্শলাৎ সপ্তম্যাঃ স্থানে অল্ল সপ্তম্যা বেতি অকারঃ কিং কম্বাদৌ ক্শেচতি কিমঃ স্থানে কুঃ। ইহেতি ইদম্শলাৎ সপ্তমী তসাবিদ্ধাবো হণ্চ সপ্তম্যা বেতি ইদমং স্থানে ইকারঃ সপ্তম্যাঃ স্থানে হকারশ্চ। ক ইহ ইতি গণোপাদানসমর্মাৎ নামো বিছিতস্তম্ধিতো বিভক্তাস্তাদিপি ভবতি। অমাশলঃ সমীপনাচী স্বরাদিগণপাঠাদবায়ম্ আবিদ্শলাত্তা আবিষ্টাঃ হুস্বাভাদিতিকিতে তসৌ চেতি মুর্দ্ধভাঃ।

⁽৩৭৫)। এ তদি ইত্যস্তাচ্চ শেষেহর্ষে ত্যো ভবতি। তত্তত্ত

ত্ৰ্ণ। নেঃ দদা সতি।

নিত্য:।

৩৭৭। নিরো বর্ণাশ্রমবহিষ্কৃতে। নিষ্ট্যশ্চাগুলাদি:।

৩৭৮। ঐষমোহাঃ মর্দোবা।

ঐবমস্তাঃ ঐবম্স্তনঃ হস্তাঃ ছস্তনঃ শ্বস্তাঃ শস্তন:।

৩৭৯। দূরাদেত্যঃ।

দূরেত্য:।

৩৮০। উত্তরাগ্রাহঃ।

ঔতরাহঃ।

৩৮১। উদি পিদি বিহ্নিরস্কুকাপিশীভ্যান্টাধনণ্।

ইতি তচ্ছকাৎ অদ্যাদিসর্থনামবহুভাঃ সপ্তম্যাস্থ্যে বেতি সপ্তম্যাঃ স্থানে ত্রঃ হলুক্ সর্বনাম ইতি দকারলুক্। ততস্তা ইতি পঞ্চম্যাস্তসিরিতি তসিঃ।

- (৩৭৬)। নি ইত্যশ্বাৎ সদা সতি সর্বদা বিষ্ণমানে চ বাচ্যে ত্যো ভবতি।
- (৩৭৭)। নির্ইত্যস্বাহণ শ্রমবহিষ্কৃতে বাচ্যে ত্যো ভবতি। বর্ণাশ্চ-স্বার আশ্রমাশ্চ তেভ্যো বহিষ্কৃতশ্চাণ্ডালাদিরেব। নিষ্ঠ্য ইতি পূর্ব্ববং ষত্তম্।
- (৩৭৮)। ঐষমদ্ স্থান্ ইত্যেতেভাঃ শেষেহর্থে ত্যো বা ভবতি। এতেষাং কালবাচিত্বাদবায়ত্বাক্ত কালাব্যয়ান্তনড়িতি তনটি প্রাপ্তে বিধানম্। তনড়িপি পক্ষে ভবতি। শ্বসম্ভক্ চেতি টিকণা শৌবন্তিক ইত্যপি তৃতীয়রূপং বক্ষ্যতি।
 - (৩৭৯)। দূরশ নাচ্ছেষেহর্থে এত্যো ভবতি।
 - (৬৮০)। উত্তরশব্দাচ্ছেষেহর্থে ণাহো ভবতি।
- (৩৮১)। উদ্যাদিভাঃ শেষেংর্থে টায়নণ্ ভবতি। কাপিশীশবাদা-দিখৈজাতশ্চতি ঈয়ে প্রাপ্তে শেষেভ্যোহনাদিখৈজাতশ্চ নিত্যবছ্বচনাল দিভাকণি প্রাপ্তে বিধানম্। রান্ধবায়ণ ইতি যাচোক্রন্তুণ ইতি প্রশ্

ত্তিদায়ন: পাদায়ন: বাহ্নায়ন: রাঙ্কবায়ণ: কচ্ছাদিস্থাৎ রাঙ্কবঃ
কাপিশায়ন:।

৩৮২। দিবাদের্থ ।

দিব্যাচ্ অবাচ্ উদচ্ প্রভাচ ্ উদ্ধার্ক অপরাদ্ধ অধ্যাদ্ধ উত্যাদ্ধ । ১০।

৩৮৩। গ্রামানীন***চ।**গ্রামা: গ্রামীণ:।

অজ্বযবেত্যাদিনা ণ্ডম্। টিস্তাদৌর্দারিনা। কচ্ছাদিস্তাৎ রাশ্ধব ইতি কচ্ছাদেশ্চ দেশাদিতি টণিত্যর্থঃ। কচ্ছাদেন্তিৎস্থয়োরিত্যকণা তু মমুষ্যে বাচ্যে বাশ্ধবক এব ভবতি। প্রাণিস্তোব বাচ্যে রাশ্ধবায়ণো গৌঃ অপ্রাণিনি তু রাশ্ধবং বনমিতি রিশেষস্ত ভাষাবিরোধাদিহ নোক্তঃ।

(৩৮২)। দিব্ ইন্ডোবমাদিকাঃ শেবেহর্থে যন্তবতি। প্রাচ্ অবাচ্ উদচ্ প্রত্যাচ্ ইতি কিবস্তু ভানবায়স্থ অব্যয়স্থ চ নির্দেশঃ। বদানব্যয়স্থ তদা তদিতে পরে শশাদৌ লুগন্চোহপূজায়ামিতি নকারলুগ্ভবিষ্যতীতি কচিয়াব্যর্থস্থ ভূতবদঙ্গীকারাৎ কতনকারলুগেব। যদা তু প্রাগাদেরত্ত্ত্য়ুক্ চেতি অতং তল্লুকঞ্চ কথা তদ্ধিতবদাদিহাদব্যয়ানাং নির্দেশন্তদা অমীদাং কালবাচিত্ত্বে কালাব্যয়ান্তনজিতি তনজুপি ভবতি। দিখাচকে তু মদেব প্রাচ্যম্ অবাচ্যম্ প্রতীচাম্ অতোহচি প্রাগ্দীর্ঘশেততাকারলুক্ পূর্ক্ষরস্থ দীর্ঘত্ত্ব তু ঈত্তপূর্কস্থাত ইত্যকারস্থ স্বকারঃ। পরা-পরশব্দে যদা দিখাচকৌ তদা পরাদ্ধাপরাদ্ধশন্মাদি ক্পূর্কাদদ্ধাদেতি বিকল্পং বিশেষবিধিদ্বাদ্ধিদ্বা বিধানম্। যদা তু ন দিখাচকৌ তদা আভ্যা-মধ্রমান্ধোন্তমান্ধাভ্যাঞ্চ অন্ধান্তাদিতি টিকণি প্রাপ্তে বিধানম্। অদিখাচক-তাপ্যনয়োরন্তি পরং স্থেম্ অপরং তুংখম্।

(৬৮০)। গ্রামশব্দাচ্ছেবেছর্ষে যন্তবতি নীনশ্চা। নীনস্ত নিৎকরণং প্রামীনাভার্য্য ইত্যক্র পুংবদ্ভাবনিষেধার্থম্ ।

^{*} ক্রে: প্রাজবাজ্দচ্প্রতাচ্পরাপরাধমোত্তমাৎ।

ক্রেমথোক্রমপোরং দিবাদৌ কথিতা দশ ॥ ১০॥॥

৩৮२। দিক্পূর্বাদদ্ধাদ্ধা। পৌর্বাদ্ধ্যং পৌর্বাদ্দিকম্।

৩৮৫। বৰ্ষাকন্থাভ্যাং টিকণ্্।

বার্ষিকঃ কান্থিকঃ।

৩৮৬। অদ্ধান্তাং।

বালেয়াৰ্দ্ধিকম্।

্টিণ। ভবতো যুষ্মদর্থাৎ।

जातरकः जामिक्वार जनमीयम्।

৬৮৮। দেশাতুদন্তাৎ। মারুক: শাবরজন্মুক:।

(৩৮৪)। দিক্পূর্মাদিতি স্ত্রকরণাদিগিতি ন স্বরুণগ্রহণম্ অন্তথা দিগদ্ধানেতি স্ত্রং বিদধ্যাৎ। দিখাচকপূর্বাৎ অর্জশক্ষাচ্ছেষেহর্থে বদ্ধা ভবতি। পক্ষেহদ্ধাস্তানিতি টকণ্। পূর্বাদ্ধামিতি পূর্দীস্থান্দ্রে জাতমিতি দিশ উত্তরপদে ভদ্ধিতার্থে চেতি বক্তব্যমিতি কর্মধারয়ঃ!

গ্রামজনপদৈকদেশবাচকাট্টন্টিকণাবিতি বক্তব্যম্। দিখাচকপূর্দাদর্দ্ধাৎ গ্রাইমকদেশবাচিনো জনপদৈকদেশবাচিনশ্চোত্তরে শেষেহর্থে টণ্টিকণো ভবতঃ। গ্রামশু জনপদশু বা পূর্বশ্বিদ্ধদ্ধে ভবঃ পৌর্কার্দ্ধঃ
পৌর্কাদ্ধিকঃ।

(:৮৫)। বর্ষা কহা ইত্যেতাভাাং শেষেধ্যে টিকণ্ ভবতি। বর্ষা-শক্ষাৎ কালাদিতি প্রাপ্তটিকণ্ ঋতুটণা বাধিতস্তদাধনার্থং বিধানম্।

(৬৮৬)। অন্ধ স্থাচ্ছেদেহর্থে টিকণ্ ভবতি।

(৩৮৭)। যুদ্মৎসমানার্থান্তবচ্ছকাচেছেবেহর্থে টিকণ্ ভবতি। ডবত্-ভাতেরিতি ডবত্প্রত্যয়াস্তো ভবচ্ছকো যুদ্দর্থ:। ভাবৎকমিতি ইম্মুক্তা-স্তাদিকন্তেত ইতি টিকণ্ ইকারস্তা লুক্ ভবতীশলাকু বাজাদিরনের ইভি তরাদিখাৎ প্রেরবং কথা ঈকারলুক্ ত্যাদাদিখাত্তবদীর্মিতি ত্যদাদেরীর ইত্যত্ত ভবতস্তোদশ্চেতি বক্ষ্যতি তদ্পি বিশেষবিধানং নানেন বাধ্যং ভবতী-ভ্যতিপ্রায়:। অযুদ্মধ্যতি, ভবচ্ছকাচ্ছত্রস্তাট্রেবে ভবতি। ভাবত:।

(७४४)। तम्बाह्याङ्काद्यक्षाद्यस्थि किंग् अविका

১৮৯। আদি স্থৈজাত এব প্রাণ্ডেশাৎ। শ্লাঢ়কজম্বুকঃ। অনাদিস্থৈজাতস্ত মাস্তবাস্তবঃ।

৩৯০। কালাৎ।

সাংবৎসরিকঃ কাদস্বপুষ্পিকঃ।

৩৯১। আদ্ধে শরদঃ।

শারদিকং আদ্ধা অনভিধানাদিহ ন স্থাৎ। শারদ: আদ্ধাবান্।

মারুক ইতি মরৌ জাত ইত্যর্থে টিকণ্ ভবতি। শাবরজম্ব ইতি শাবর-জম্শবাটিকণ্ ইলুকি ক্তে প্রতায়ে কেংণ্ ইতি হ্রস্থঃ।

(৩৮৯)। পূর্মেণ সিদ্ধে নিয়মার্থং বচনম্। প্রাচেদশবাচকাছকারাস্তা-দাদিস্থৈজাত এব টিফণ্ ভবতি নাগ্রস্থাৎ। আঢ়কজম্বুক ইতি পূর্মবন্ধুম্মঃ। মান্তবাস্তব ইতি মন্তবাস্তশন্ধাট্রণেব ভবতি।

(৯০)। কালবাচকাচ্ছেলাচ্ছেষেহর্থে টিকণ্ ভবতি। মুখ্যয়া গৌণ্যা চ বুজা যে শব্দাঃ কালবাচকান্তেভাছয়ং প্রভায় ইজুলাহরণছয়েন স্টিতম্। তথাহি সংবৎসরাদিশকান্যুখ্যয়েব বুজা কালে বর্ত্তমে। কদম্পুশাদিশকাস্ত গৌণ্যা বুজা। তথাহি কদমপুশাঘচর্যাৎ কাল এব কদমপুশাভিধেয়ঃ। নয় অযুক্তমেতৎ গৌণমুখ্যয়োমু থাে কার্য্যমম্প্রতায়াৎ। নৈবং বাচাম্। যদয়মাচার্যাঃ শেষ ইত্যেব টণি সিদ্ধে প্রতুনক্ষত্রাদিতি টণং কালাদিতি টিকণ্বাধনার্থং বিদ্ধাতি তজ্জাপয়তি গৌণ্সাপ্যক্র গ্রহণম। ন হি নক্ষত্রবাচকাঃ শব্দাঃ কালবাচকাঃ কিন্তু সামীপ্যাৎ চম্রমসমভিধায় ভদযোগাৎ গৌণ্যা বুজ্যা কালবাচনঃ।

শশ্বতষ্টণ্ চেতি বক্রব্যন্। অব্যয়ন্থান্তনটি প্রাপ্তে বিধানম্। শশ্বদিত্য-শ্বাং শেষেহর্থে টিকণ্ ভবতি টণ্ চ। শাশ্বতিকঃ শাশ্বতঃ।

(৩৯১)। প্রাক্ষং কর্মবিশেষঃ তন্মিন্ বাচ্যে শেষেহর্থে শরচ্ছকাং টিকণ্ ভবতি। প্রত্নক্ষত্রাদিতি টণ্বাধনার্থং বচনম্। নতু প্রান্ধ ইত্যনেন ' শ্রন্ধানান্ প্রক্ষোহভিধীয়তে তন্মিন্ বাচ্যে টিকণ্ প্রাণ্ধোতীতি শক্ষায়ামাহ অনন্দিধানাদিতি অনভিধানলক্ষণা হি রুত্তি কিন্তু সমাসা ভবন্তি ন হি শার্মিক-শক্ষে শ্রন্ধাবংপুরুষাভিধানশক্তিরস্তীতি টিকণ্ ন ভবতি। গ্রহা রোগাতপ্রোর্থ। শারদিক: শারদঃ রোগ আতপশ্চ।

৩৯৩। নিশাপ্রদোষাভ্যাঞ্চ। নৈশঃ নৈশিকঃ প্রাদ্যোষঃ প্রাদোষিকঃ।

৩৯৭। শ্বসম্ভক্ চা। শোবস্তিকঃ শস্ত্যঃ।

৩৯৫। প্রার্ষ এণ্যঃ। প্রার্ষেণ্যঃ প্রার্ষেণ্যমাখ্যাতবান্ প্রার্ষেণ্

৩৯৬। মো মধ্যাদিভ্যাম্। মধ্যম: গাদিম:।

্ত্রণ। সলোপশ্চাবোহধসোঃ। অবমঃ অধমঃ।

- (০৯২) শরচ্ছ দালোগে বাচ্যে আতপে চাভিষেয়ে শেষেহর্ণে টিকণ্ ভবতিবা। পক্ষেপাত টণ্।
- (৩৯০)। চকারো বাজুকর্যণার্থ:। নিশাপ্রকোষশক্রভাং শেষেহর্থে টিকণ্বা ভবতি।
- (৩৯৪)। শ্বস্ইত্যসাৎ শেষেহর্থে টিকণ্বা ভবতি। তৎসন্নিযোগে তুগাগনন্চ। শৌবস্তিক ইতি শ্বাদেরিতি বকারফৌবাদেশঃ। শ্বস্তা ইতি ক্রিয়োহাঃ শ্বসা বেডি তাঃ দ্বাভাাং মুক্তে পক্ষে তন্টা শ্বসঃ।
- (৩৯৫)। প্রার্য ইতাক্সাচ্ছেষেহর্থে এণ্যো ভবতি। ঋতুটণোহপবাদঃ।
 কিময়ং ণকারবান্ প্রভায়ঃ এশুং রুত্বা ণত্বমত্র বিধীয়তে ইতি সন্দেহনিরাদার্থমাছ প্রার্যেণ্যমাখ্যাভবান্ প্রার্যেণ্ ইতি! যদায়ং নকারবান্ প্রভায়ঃ
 স্তাৎ তদা প্রার্যেণ্য দার্গ্রিভি কিপি চ রুতে কিম্মোন্টেভি ণিঙ্লোপে
 কৌয ইতি যলোপে চ পদাস্তবাৎ পত্বাভাবে প্রার্যেণ্ ইতি ন স্তাই।
 - (৩৯৬)। মধ্যশব্দাদাদিশদাক্ত শেষেহর্থে মো ভবতি।
- (৩৯৭)। অবস্মধন্ ইত্যেতাভাগে শেষেহর্থে মো ভবতি । তারাঃ সক্ষারস্ত চ লোপঃ।

৩৯৮। মধ্যাদ্ধ সাধারণো। মধ্যো বৈয়াকরণঃ নোত্তমো নাধ্য ইতার্থঃ।

७२२ । উপসমুদ্রাদ্বীপাদরণ । ধ্বিপাঃ। অনুপদমুদ্রাত্ত্র। দ্বৈপাং।

৪০০। অগ্রান্তপশ্চাত্তো ডিমঃ

অগ্রিম: অন্তির্বঃ পশ্চিমঃ।

৪৬১। চিরপরুৎপরারিভ্যস্ত্রঃ। চিরত্র: পর্য়ত্ত্র: পর্মবিত্র:।

80२। कीलावीयां जन्में।

দিবতিনঃ দোষতিনঃ।

৪০৩ ৷ টিরদায়াঝুল্চ। **हिंद्र छनः मायुखनः**।

⁽৩৯৮)। মধ্যশদাৎ সাধারণ্যে গ্রম্মানে শেষেহর্থে অভ্রতি। মস্তাপবাদ :

⁽৩১৯)। উপসমুদ্রাদিতি সমীপে ইতারায়ীভাব:। কচ্ছাদেশ্চ দেশাদিতি টণি প্রাপ্তে কচছ:দেন্ তৎস্থয়োরিত্যকণি প্রাপ্তে চ বিধানম্। -সমুদসমীপে বৰ্ত্তকানাৎ দ্বীপশন্ধাচ্ছেকেংরথি ধণ্ভবতি। অকুপসমুদ্রাত্। হৈপ ইতি টণ্। মনুষ্যে তু দ্বৈপক ইতি।

⁽ ৪০ •)। পশ্চাদিত্যস্থাবায়ত্বেংপি নান্তপদার্থে শব্দামুকরণে চেভি প্রতিষেধার বিভক্তিশুক্। অগ্রান্তপশ্চাদিত্যেতেভাঃ শেষেহর্থে ডিমো ভবতি। ডিৎকরণং পশ্চাদিজ্যস্তালুগর্থং তদিতরমোরদিলুগিত্যনেনৈব সিদ্ধতাৎ।

⁽৪৯১)। চিন্নপক্রংপরারি ইন্ট্যেতেভা: শেষেহর্থে ক্লো ভবতি। চিরশন্দাৎ চিন্ন পায়ালুশ্েচতায়মপি ভবতি। উভয়োরপি বিশেষবিধিত্বাৎ।

^{(8•}২)। **কালবাচকাদ**ব্যয়াচ্ছনাচ্ছেবে তন্ত্্ভবতি। কালাদিতি টিকণোহপবাদ:।

⁽৪**-**৩)। চিরা সার ইত্যৈতাভ্যাং শেষেহর্থে তন্ত, ভব্তি^{টা}

৪০৪। যুগপ্রাহ্লাদেশ্র। মুগেতনঃ প্রাহ্লেতনঃ।

৪০৫। পূর্ব্বাহ্যাপরাহ্লাভ্যাং বা। পূর্ববাহুতনঃ অপরাহুতনঃ পোর্বাহ্নিকঃ আপরাহ্নিকঃ পূর্ববাহ্নেতনঃ অপরাহুতনঃ ইতি তু তরতমতনকালেদিতি সপ্তম্যা মলোপাৎ

৪০৩। পুরাশকান্ত।

পুবাণ:।

৪০৭। তনড়পীত্যেকে। পুরাতন:।

মুকারাগম । সায়মিতি মকারাস্তং যদব্যরং ততােহব্যরত্বাৎ পূর্মলক্ষণে-নৈব সায়স্তনস্থ সিদ্ধতাং যাে অন্তকর্মণি ইত্যত্বাং ঘণি কতে যুর্বেঞাদে-রিত্যাদিনা যৌ চ কতে সায়শকাং সায়স্তনসিদ্ধার্থং সক্ষণম্। মাে মন্তর্থে চেতি বক্রবামিতি পদাস্তবন্ধানত্ববারঃ বর্গে বা তদ্বর্গাস্ত ইতি পক্ষে নকারঃ।

(৪-৪)। যুগ প্রাহ্ন ইত্যেতাভ্যাং শেষেহথে তন্ত্ ভবতি। একারা-গমশ্চ। প্রাহ্নেতন ইতি প্রক্রমহ ইতি প্রাদেঃ রন্তাদৌ প্রথময়েতি সমাসঃ একপুণ্যবর্জং তেভ্যোহকোহকণাসমাহারে ইতাৎ ক্ষকাদেশশ্চ অদন্তেহক্ত-ভ্যেতি গন্ধ। কালবাচিনস্তর্তমতনকালেম্বিতি ক্ষল্থিধানেনাপি যুগেতনঃ প্রাহ্রেতন ইতি দিধ্যত্যেব কিন্তু তম্ব্য বৈক্ষিকত্বাৎ যুগতনঃ প্রাহ্নতন ইত্যাপি স্থাৎ।

(৪০৫)। পূর্বাত্র অপ্ররাত্র ইত্যেতাভাগং শেষেহর্থে তনজ্ ছবজি বা। পূর্বাত্রতন ইতি অহু: পূর্বের্য ভাগ ইতি অংশিষষ্ঠ্যা পূর্বাদে: প্রথ-মায়া ইতি তৎপুরুষ: শেষং পূর্বেবং। পৌর্বাহ্নিক ইতি কালাদিতি টিকণ্। নামস্তদ্ধিতবিধানাং সপ্তমান্তাত্তনটোহভাবে কথং পূর্বাহ্নেতন ইতি চোদ্য আহ পূর্বাহ্নে ইত্যাদি তরাদিয়ু পরেয়ু সপ্তমানুষিধানাৎ তদন্তাদিপি তনটু। (৪০৬। ৪০৭)। পুরা ইত্যাশান্ত্যেহর্থে নজ্ভবতি। অব্যয়ন্তা- ৪০৮। মদ্রবৃজিভ্যাং কঃ। মদ্রকঃ বৃজিকঃ।

৪০৯। কাশ্যাদের্ণিকটিকরণা। কাশিকা কাশিকী।

কাশি চেদি সংপাভি সংবাফ অচ্যুত মোদমান শকুলাদ হস্তিকর্ষ্ কুলামন হিরণ্য করণ গোবাসন ভারাক্ষ স্থরক্ষ অরিন্দম সাধুমিত্র দাসমিত্র দেবদন্ত দাসগ্রাম সোধাবতান যুবরাজ উপরাজ।সন্ধুমিত্র দেবরাজ * ॥২০॥

৪১০। কালাদৃদ্ধাদিপৃৰ্বাৎ। ওদ্ধকালিকা ওদ্ধকালিকী। উদ্ধ পূৰ্বব আপদ্॥৩॥

ত্তনটি প্রাপ্তে বিধানম্। তন দুপীত্যেক ইতি কেচিনস্ত বিকল্পমিচ্ছন্তী-ভাতিপ্রায়ঃ তথাচ, পুরাতনং আং পুক্ষং পুরাধিদ ইতি মাহঃ।

(৪০৮)। মদ্র বুজি ইত্যেতাভ্যাং শেষেহর্থে কো ভবতি। অনাদি-হৈত্বাতশ্চ নিত্যবহুবচনাদিত্যকণোহপবাদঃ।

(৪০৯)। কাশি ইত্যেবমাণিভাঃ শেবেহথে ণিকটিকণী ভবতঃ।
স্ত্রীবিষয়ার্থমূভয়বিধানম্। কাশি চেদি ইত্যেতাভ্যাং জনপদন্ধাদকণি
সংপাতেঃ প্রাচ্যভরতাপত্যান্তরাজ্বজন্বর্জমিণস্তাদিতি টণি আদিহৈজাতশ্চেভি
ক্সিয়ে হস্তিকর্ষ্পান্দশোহদন্তাদিতি টিকণি দেবদন্তশন্ধঃ প্রাগ্দেশবাচকোহত্র
পঠ্যতে তত্মাদাদিহৈঙঃ প্রাগ্দেশাদিতি ক্সিয়ে পরিশিষ্টেভ্যঃ শৈষিকে টণি
প্রাপ্তে বিধানম্। বাহীকগ্রামবাচকাত্য। দৈবদন্তঃ।

(8>0)। উদ্ধাদিশন্পূর্বাৎ কালশন্তাচ্চেষ্থের্থ ণিকটিকণো ভবত:।

কাশিসংবায়্দংপাতিহিরণ্যহস্তিকর্ষবঃ।
 শকুলাদো মোদমানস্থরঙ্গচেদারিক্মাঃ।
 সৌধাবতানঃ করণং দাসগ্রামকুলামনৌ।
 মিত্রং সাধুসিদ্ধদাসত্রগাদ্গোবাসনাচ্যুতৌ।
 দেবদত্তো যুবোপাভ্যাং দেবাচ্চ রাজ ইত্যাপি ॥২৪।

৪১১। আদি স্থৈজাতো বাহীক গ্রামাৎ। শোকলিকা শীকলিকী মান্তরিকা মান্তরিকী। অনাদিস্থৈজাতস্ত। মাহনগরমু।

৪১২। উশীনরগ্রামান্তা।
আহ্বজালিকা আহ্বজালীরা সৌদর্শনিকা সৌদর্শনিকী সৌদর্শনীয়া।

৪১০। পাণ্ডুকবিদেহপাথেয়ানর্তাদকণ্। পাণ্ডুককঃ বৈদেহকঃ পাথেয়কঃ আনর্ত্তকঃ।

8১৪। নৃনাবোঃ সমুদ্রাৎ। সামুদ্রকো নরঃ সামুদ্রিকা নোঃ।

८३ । धूमारमरमं भार।

বৌমকঃ। ধূম ষড়গু। শশাদন আৰক্তিনায়ন দাগুয়ন হুলী ঘোষ-হুলী মহাস্থলী রাজগৃহ শস্ত্রাশিতৃ ভক্ষালী মদ্রকুল অঞ্জীকুল দ্ব্যাহার ত্র্যাহার শস্তায় বর্বর গর্দভ মাঠর ঘোষ পুষ্প পল্লী

- (৪১১)। বাহীকদেশীয়গ্রামবাচকাদাদিস্থৈজাত: শকাচ্ছেষেংর্থে নিকটিকণী ভবতঃ। আদিস্থৈজাতশ্চেতীয়ে প্রাপ্তে বিধানম্। মাহনগর-মিতি অন্তোদাত্তাত্ত্বীচ্যগ্রামাত্বহুক ইতি ণটু।
- (৪১২)। উশীনরদেশীয়গ্রামবাচকাদাদি স্থৈজাতঃ শব্দাচ্ছেবেহর্বের্ নিকটিকনৌ বা ভবতঃ। আভ্যাং ত্যক্তে পক্ষে ঈয় এব ভবতি।
- (৪১৩)। পাপুকাদিতাঃ শেষেহর্থেইকণ্ ভবতি। পাপুকশকাৎ কুপাস্তাচেতি টণো বাধনার্থং বচনম্। বিদেহশব্দানাদিকৈজাত কিত্য-বছরচনাদিতি আনর্গুশকাজ্জনপদাচেত্যকণি সিদ্ধে অজনপদার্থং বচনম্। বিদেহানাং ক্ষলিয়াণাময়ং বৈদেহকঃ। পাথেয়শকাদিপি যুপাস্তাদিত্যনেন অকণি সিদ্ধে অদেশার্থং বচনম্।
- (৪১৪)। নরি নাবি চ বাচ্যায়াং সমুদ্রশক্ষাচ্ছেবেংর্থেইকণ্ ভবতি। নুনাবোরিতি কিম্ ? সামুদ্রং শবণম্।
 - (৪১৫)। ধ্মাদিভ্যো দেশবাচিভ্যঃ শেষেহর্থে অকণ্ ভবতি।

স্থরাজ্ঞী ধার্ত্তরাজ্ঞী অবয়া তীর্থ কুঞ্চি দ্বীপ অস্থ্যরীপ অরুণ উজ্জ্ব-রিনী দক্ষিণাপথ শাকেত * । ৩২ ।

8>৬। কচ্ছাগ্নিবক্তু বর্ত্তোন্তরপদাচ্চ। চারুকচ্ছকঃ কালাগ্নকঃ ঐন্দ্রবক্ত কঃ চাক্রবর্ত্তকঃ।

৪১৭। মরুবচনাদাদিকৈছজাতঃ। পারেধন্বকঃ ঐরাবতকঃ।

0

- (৪১৮)। উত্তরপদশন্ধ: প্রত্যেক্ষমভিসম্বধ্যতে। কচ্ছাগ্নান্তরপদাদেশকাচকাৎ শেষেহর্থে ক্ষকণ্ ভবতি। কচ্ছাগ্নিবক্তুবর্তাস্তাদিতি নোক্রং বহুপ্রভারপূর্বানা ভূদিতি। এবমুত্তরস্ত্রেম্বি যতোত্তরপদগ্রহণমস্তি তইগুতদেব
 ফলং বাচ্যম্। যদা হি কচ্ছদেশশু গুণসামান্তেন ঈ্যদসমাপ্তাহ্যং কচ্ছদেশ
 ইতি কচ্ছুশকান্তঃ পুরস্তানাম ইতি বহুঃ ক্রিয়তে তদা বহুকচ্ছশদ্দে।
 দেশবচন ইতি ভতোহিপি প্রভায়ঃ স্থাৎ উত্তরপদগ্রহণে সতি ন
 ভবতি। কালাগ্নক ইতি অদিল্প্নিতীকারলুক্। বৃত্বর্তনে অধিকরণে
 বণ্চক্রাণি বর্ত্যে স্মত্রেতি চক্রবর্ত্তঃ।
- (৪১৭)। আদিকৈজাতশ্চেতি ঈয়ে প্রাপ্তে বিধানম্। মরুদেশবাচকাদাদিকৈজাতঃ শকাচ্ছেবেহকণ্ ভবতি। সজাতীয়াপেক্ষমত্রাদিছঃ তেন
 পারেধকক ইত্যত্র বিজাতীয়েন পকারেণাদিছঃ ন হস্ততে। আতিজাত
 ইতি কর্তব্যে যদাদিকৈজাত ইতি কৃতঃ তেনায়মাচার্য্যাণামভিপ্রায়ো লক্ষণীয়ঃ। তথা চোক্তম্ ইঙ্গিতেনোন্মিষিতেন মহতা বা স্ত্রপ্রবন্ধেন আচার্য্যাণামভিপ্রায়ো লক্ষ্যতে। পারেধকক ইতি ধন্শকো মরুদেশবচনঃ
 পারে মধ্যে ষঠ্যা বেত্যবারীভাবঃ নিপাতনাদেল্বঃ ক্লীবে বেতি পাক্ষিকঃ
 - শ্মবড়গুবোবস্থল্য উজ্জ্বনীগদ ভভক্ষাল্য:।

 মাঠরবর্বরপল্লীবীপং রাজপৃহারুণমন্তাত্রীপম্।

 তীর্থং মদ্রকুলং ব্যাহারো বোধাৎ পুক্ষমথো ব্যাহার:।

 শক্তায়ো ধার্তস্থল্যাং রাজ্জ্যবয়া দক্ষিণাপথ:।

 দাগুরনস্থলীকৃক্ষিশস্তাশিতৃশশাদনা:।

 আজ্জুনায়নশাকেতাবঞ্জীকুলং মহাস্থলী ॥ ৩২ ॥

৪১৮। যুপান্তাৎ।

সাংকাশ্যক: কীম্পিল্ল্যকঃ মাগা্য্যকঃ।

৪১৯। প্রস্থপুরবহান্তাক্ত।
মালাপ্রস্কঃ বিলুবহকঃ। অনাদিক্তিলান্তন্ত।
শৈবপুরঃ।

৪২**৫। ঈদন্তরোপান্তা**ৎ প্রাচ্যাৎ।
কাকন্দকঃ বারাণসকঃ ঐকচক্রকঃ পাটলিপুত্র**কঃ। গ্রাদিশ্বৈজা**ত ইত্যেব। দাশপুরঃ। অপ্রাচ্যান্ত্র। দান্তামিত্রীয়ঃ।

সমাসাস্তো ভর্তৃহরিদর্শনেনোক্তঃ পারে প্রের জাত ইতি পারেধরকঃ। ঐরাবতে জাতঃ ঐরাবতকঃ।

(৪১৮)। যকারোপাস্তাদাদিস্তৈজাতঃ শব্দান্দেশবাচকাৎ শেষেহর্থেইকণ্ ভবতি।

ন থ্যা ঞ ইতি বক্তন্যন্। যুপাস্তাৎ প্রাপ্তোহকণ্ খ্যাঞঃ প্রয়োগে ন ভবতি। স্প্রথাস্থোদং সৌপ্রথাং সৌপ্রথাদেশে ভবঃ সৌপ্রখ্যীয়ঃ অনাদিছৈ-জাতশ্চেতি ঈয়:। খ্যাঞো যকারঃ শকারস্থানীয়ঃ তহ্যাসিদ্ধমিতি পাণিনীয়াঃ।

- (৪১৯)। প্রস্থ পুর বহ ইত্যেবমস্তাদ্দেশবাচকাদাদিস্থৈজাতঃ শকাচ্ছেষে-হর্থেহকণ্ ভবতি। রোপাস্তত্বাত্ত্রস্ত্রেণ দিদ্ধে পুরগ্রহণমপ্রাচ্যার্থম্। তথাহি নান্দীপুরমুদীচাম্। শৈবপুর ইতি শিবপুরশকাৎ শেষে ইতি টণ্।
- (৪২০)। ঈকারাস্তাৎ রেফোপাস্তাচ্চ প্রাণেশবাচকাদাদিকৈজাতঃ
 শব্দাচ্ছেষেহর্থে অকণ্ ভবতি। ঐকচক্রক ইতি একচক্রশব্দশু আদিকৈজাতত্বাভাবেহপি আধিকৈওঃ প্রাণেশাদিতি ব্যবস্থয়া প্রভায়ঃ। দাশপুর
 ইতি দশপুরে জাত ইতি শেষে ইতি টণ্। দান্তামিত্রীয় ইতি দান্তামিত্রীয়
 ক্রৌরনগরী উদীচ্যদেশস্থেতি আদিকৈজাতশ্চেতি ঈয়ঃ।

8२)। জनপদাচ্চ।

আদর্শকঃ আভিসারকঃ। আদিস্থৈজাত ইত্যেব। মার্গিখঃ।

8২২। অনাদিসৈজাতশ্চ নিত্যবছ্বচনাৎ। আঙ্গকঃ দাৰ্বকঃ। কপিদপরাদপ্রাপ্তাবুৎসর্গুইতি ত্রৈগর্তকঃ।

8২৩। কুলাৎ সৌবীরে। কোলকঃ সৌবীরঃ।

৪২৪। বরাশ্লিন্দ্যনিপুণয়োঃ।:
নাগরকন্চোরঃ প্রবীণন্চ।

82 c। अत्रशास्त्राटमी ।

⁽৪২১)। জনপদবাচকাচ্ছনাদাদিহৈজাতঃ শেষেহর্থেইকর্ ভবতি। আভিসারক ইতি-অপ্রাচ্যঝাৎ পুর্বেণাপ্রাপ্তিঃ।

⁽৪০২)। জনপদৰাচকারিত্যবহুবচনাদাদিস্থৈজাতোহনাদিস্থৈজাতশ্চ শেবেহুপেইকণ্ ভবতি। সামাগুবিধিনৈব উভয়প্রাপ্তৌ অনাদিস্থৈজাত-শেচতি কৃতং স্পেষ্টার্যম্। অঙ্গশন্ধা নিত্যবহুবচনো জনপদবাচক এব এবং দার্থশন্ধেহিপি। নরাদিস্থৈজাতঃ পূর্বেশেব প্রত্যয়ঃ সিদ্ধঃ কিমর্থং চকারেব তদমুকর্ষণম্। উচ্যতে। তক্তং কৌণ্ডিস্থায়েতি নিত্যবহু-বচনাদাদিস্থৈজাতো বাধনং জ্বায়েত। নিত্যগ্রহণং কিম্ ? জনপদৈক-শেষবহুরে মা ভূথ বর্তুনী চ বর্তুনী চ বর্তুনী চ বর্তুনুঃ নারং শন্ধো নিত্য-বহুবচনাস্তঃ অত্রাপ্যকণ্ স্থাং। ত্রিগর্তুশন্ধাং গর্ত্তোত্তরপদাদ্দেশাদিত্যনেন দেশবিশেষবিহিতেন স্বয়েন বাধকেনান্ত ভবিতব্যং তৎ কথং ত্রৈগর্ম্বক ইতি চোদ্য আহু কচিদিত্যাদি।

⁽৪২০)। কুলশব্দাচ্ছেবেহর্থেইকণ্ ভবতি। সৌবীরশ্চেন্তবতি। কৌলোইখ্যঃ।

⁽৪২৪)। নগরশব্দারিন্দ্যে নিপুণে চ বাচ্যে শেষেহর্থেইকণ্ ভবতি। প্রবীণশ্চেত্যর্থব্যাকারেণ নিপুণশন্দ্র্যার্থব্যাকারঃ ক্লতঃ। অন্সত্র। নাগরঃ পুরুষঃ নগরস্থায়মিত্যর্থঃ।

⁽ ४२ ६)। व्यत्रगामकाटिक स्वर्थ नत्र पथि विश्वत्र व्यापा । यहाँ स्वर्

আরণাকো নরঃ পন্থাঃ বিহার: স্থায়: অধ্যায়: হস্তী চ।

৪২৬। কচ্ছাদেন্ তৎস্বয়োঃ।

কাচ্ছকো নরো নরস্থশ্চ। কচছাদি: প্রাগুক্তঃ।

৪২৭। সাল্বাদপদাতে।।

সাল্লকো নরো নরস্থল্ড। পদাতো তু সাল্বঃ পদাতি:।

৪২৮। গোযবাথোশ্ট।

माल्यका दशीः माल्यिका यवाशृः।

৪২৯। বণুনিদসমীপায়াঃ কন্থায়াঃ।° কান্থকঃ।

800 । क्रूज्यूगन्नताचा ।

কৌরবং কৌরবকো গোঁং। নৃতৎস্থয়োল্ভ। কচ্ছাদিসাদকণ্ নিতাম্। কৌরবক: কৌরবং যৌগন্ধরকঃ যৌগন্ধর:।

বাচ্যেরু অকণ্ ভৰতি। অরণ্যান্ন ইত্যস্তায়ং বাধকঃ। নরাণাবিতি কিম্? আরণ্যাঃ স্থমনসঃ।

- (৪২৬)। কচ্ছাদেঃ শেষেহর্থে নরি তৎস্থে চ বাচ্যে অকণ্ ভবতি।
 নরস্থা চূড়াদিকং কাচ্ছিকা চূড়া কাচ্ছকো নথা কাচ্ছকম্ হসিতং এবং
 কাশীরকঃ সৈন্ধকঃ দ্বৈপকঃ আন্পকঃ। জাতার্থে তু সিন্ধোঃ কটণাবিতি
 টণা সৈন্ধবঃ লবণঃ।
- (৪২৭)। সাৰশব্দ কচ্ছাদৌ পঠাতে। ততঃ পূর্বেণৈবাকণি সিদ্ধে নিয়মার্থং বচনম্। অপদাতাবেব নরি তৎস্থে চ বাচ্যে সাৰশব্দাচ্ছেয়েহর্থে-হকণ্ ভবতি। সাৰ ইতি কচ্ছাদেশ্চ দেশাদিতি টণ্।
- (८२৮)। সাঙ্গশন্ধ গবি । यवाधांक वाष्ट्राम्नाः (अटस्टर्वस्कन् ভবতি। कष्ट्रामिष्टेरगाञ्चलवानः।
- (৪২৯)। বর্ণামা নদো বর্নদঃ তৎসমীপারাঃ কছায়াঃ শেষে-হর্থেহকণ্ ভবতি। বর্নদসমীপদেশবাচিনঃ কছাশস্বাৎ প্রত্যারঃ। বর্ধা-কছাভাাং টিকণিতি টিকণোহরং বাধকঃ।
- (৪৩০)। কুরু যুগদ্ধর ইত্যেতাভাাং শেষেহর্থেইকণ্ বা ক্তবভিত্ কুরুশকঃ কচ্ছাদৌ পঠাতে তৎপাঠসাম্থ্যদেব বিনাপি বাশকেন প্রক্

৪৩১। অরণাৎ গোময়ে।

আরণ্য: আরণ্যক:।

৪৩২। তাদাদেরীয়ঃ। তাদীয়ম্।

৪৩৩। ভবতত্তো দশ্চ।

ভবদীয়ম্। ভাদাদিরয়ং সর্বাক্তর্গণঃ।

৪৩৪। আদিস্কৈতিশ্চ। গাৰ্গীয়ঃ শালীয়ঃ।*

টণ্ দিল্ধঃ তথাধাগ্রহণং গুগন্ধরার্থম্। অনাদিক্তৈজাত চ নিতাবহুবচনাদিতি যুগন্ধরশবারিত্যে অকণি প্রাপ্তে বিভাষা পক্ষে শেবে ইত্যানে
টণ্। যদ্যেবং কুকশন্ত কচ্ছাদৌ পাঠঃ কিমর্থঃ অনাদিক্তৈজাত শেততাবিনা নিত্যেহকণি প্রাপ্তে অনেন বিভাষা ভবিষ্যতি পক্ষে শেষে ইত্যানেন টণ ইতি চোদাং হুদি নিধায়াহ নৃতৎক্ষোরিত্যাদি কুক্ষশন্ত কচ্ছাদিপাঠ্যামর্থ্যাৎ নৃতৎস্থবোর্বাচায়োরকণ্ নিতামের ভবতীতি।

- (৪৩১)। অর্ণ্যশক্ষাৎ গোম্যে বাচ্যে শেষেহর্থে অকণ্ বা ভবতি। পক্ষে অর্ণ্যার ইতি গঃ।
- (৪৩২)। তাদ্তদ্যদ্ এতদ্ কিম্ইদম্ অদস্যুদ্দ অক্ষর্যুদ্দের ভবৎ ইত্যেতেভাঃ শেষেহর্থে ঈয়ে। ভবতি।
- (৪৩৩)। ভবচ্ছকাৎ ত্যাদাদিস্থাদীয়ঃ সিদ্ধ এব দবিধানার্থং বচনং ইয়ো ভবতি। স্বাদে পরে ভবচ্ছকশু তকাবশ্চ দে। ভবতি যুগ্মদশ্মদোস্ত টণ্চ সভাকো যুগ্মদশ্মদ্ভ্যাং সম্বন্ধে বেতি ডাকসহিতো নীনষ্টণ্চ পক্ষে ভবতি।
- (৪**৩৪)। আদিহৈত্বাতশ্চ শেষেহর্থে ঈ**য়ো ভবতি। গার্গীয় ইতি গার্গাশ**ন্দাৎ গর্গাদিয়ণস্তাদীয়ঃ অপ**ত্যস্তানাতীতি যকারলুক।

অপত্যপ্রত্যয়াস্তবত্তত্ত্বরপদাদজিহ্বাকাত্যহরিতকাত্যাদিতি বক্তবান্।
অনাদিহৈজাদর্থং বচনন্। অপত্যপ্রত্যয়াস্তাদাদিহৈজাতো যথা ঈয়ো
ভবতি তথা অপত্যপ্রত্যয়াস্তোত্ত্বরপদাৎ জিহ্বাকাত্যহরিতকাতাবর্জিতাচ্ছেমেংর্থে ঈয়ো তবতি। যথা পাণিনীয়া ইত্যত্র ঈয়স্তথা ওদনপ্রধানঃ

80৫। গর্ত্তোত্তরপদাদেশাৎ। বৃকগর্তীয়ঃ 🔊 উত্তরপদগ্রহণাদ্বগুপ্রতায়পূর্বনার স্থাৎ। বাহুগর্তঃ।

৪৩৬। গহাদেশ্চ।

গহায়ম্। গহ অন্তস্ত্রুসম বিষম উত্তম অঙ্গ মগধ পূর্ববপক্ষ অপর-পক্ষ অধমশাথ সমানশাখ উত্তমশাখ একরক্ষ একপলাশ একগ্রাম ইবুপ্র ইম্বলীক অবস্থান্দন কামপ্রস্থ খাড়ায়ন শৈশিরি শৌঙ্গি কাঠেরণি নাঠেরণি গান্ধারি আস্তরি আহিংসু আমিত্রি ব্যাড়ি

পাণিনিস্কৃত্য ছাত্রাঃ ওদনপাণিনীয়াঃ। কম্মলগার্গীয়াঃ যত্র তু অপত্য-প্রত্যয়াস্তাদীয়ো ন ভবতি তত্র তদস্তাদিপ ন ভবতি। দাক্ষেরয়ং দাক্ষ্ ইতি প্রাচ্যভরতাপত্যান্ত ইত্যাদিনা টণা বাধনাদীয়ো ন ভবতি তথা তদন্তাদিপি পৈশ্বলদাক্ষাঃ। জিহ্বাকাত্যছবিতকাতায়োন্ত। জৈহ্বাকাতাঃ হাবিতকাতাঃ কতশব্দাদ্ গর্গাদিয়ণস্তাৎ শৈষিকষ্টণ্।

(৪০৫)। আদি সৈজাতো বাহীক গ্রামাদিতি ণিকটিকণোঃ প্রাপ্তরো-রন্মদি সৈজাতস্ক টণি অকণি চ প্রাপ্তে বচনম্। পর্টোত্তরপদাদ্দেশবাচকা-চ্ছেমেহর্থে স্টামো ভবতি। নত্ন গর্হাস্তাদিতোব কর্ত্তব্যে কিমর্থমৃত্তরপদ-গ্রহণমিতি চোদা আহ উত্তবপদগ্রহণাদিত্যাদি। বছপ্রত্যয়স্তাম্যো বছপ্রত্যয়াস্তম্ভশাৎ গর্ভায় ভবতি। যতঃ সমাস এব পূর্ম্বোত্তরপদব্যবহারঃ যত্র যুব্রোত্তরপদমিতি দুশ্বতে তত্র ত্রায়মেব সিন্ধান্তঃ।

(৪৩৬)। গহাদেং শেষেহর্পে ঈরো ভবতি। যেহত্রানাদিকৈজাত-ন্তেভাঃ শেষ ইতি টণি প্রাপ্তে যে অত্রাদিকৈজাতশ্চ তেভাো জনপদা-চেত্রাকণি যে আদিকৈজাতোহপি ইণস্তান্তেভাঃ প্রাচাভরতেত্যাদিনা টণি প্রাপ্তে কামপ্রস্থান্ত্র প্রস্থপুরবহাস্তাচ্চেত্যকণি প্রাপ্তে বিধানম্। অত্র দেশাদিতীতি যেষাং দেশে চাদেশে চ রুত্তিঃ সম্ভবতি তেষাং গহা-দীনাং দেশাদিতি বিশেষণং যেষাস্ত পূর্ব্বপক্ষাদানাং দেশে রুন্তির্ন সম্ভব-ত্যেব তেষাং ন বিশেষণমিতি যথাসম্ভবমিত্যশ্রার্থঃ। যত উক্তম্। সম্ভবব্যভিচারে হি বিশেষণমনর্থবদ্ভবত্তীতি। আধ্যন্থি ভৌরি আগ্নিশর্মি দৈবশর্মি শৌদ্রি বারাটকি বাল্মীর্কি ক্ষৌমধৃত্বি উত্তর অন্তর নেমি ধন্ধন্ ধন্ধিন্ দত্তাস#। ৩১। অত্র দেশাদিতি যথাসম্ভবং বিশেষণম্।

৪৩৭। মুখপার্শ্বতেসেঃ সলুক্ চ। মুখতীয়ঃ পার্শবতীয়ঃ।

৪৩৮। একতসেশ্চেতি চান্দ্রা:। একতীয়ঃ।

৪৩৯ । স্বশিররাজজনদেবাঁৎ কুশ্চ । স্বকীয়ঃ। ধনমহরহর্দত্তং স্বীয়মিত্যসাধুরিতি পশুপতিঃ। পরকীয়ং রাজকীয়ং জনকীয়ং দেবকীয়ং দেবীয়মিত্যেকে।

- (৪৩৭)। মুথশব্দস্ত পাশ্বশিক্ষ চ যস্তাসিস্তন্মাচ্ছেষেহর্থে ঈয়ো ভবতি। তদেঃ সকারস্ত লুক্ চ। "মুখতীয়ঃ পাশ্ব তীয় ইতি রুহহাকো-রিজ্যাদিনা তসিঃ সর্কবিভক্তেরাদ্যাদেঃ প্রায় ইত্যনেন বা।
- (৪৩৮)। একশব্দস্থ তদেরুত্তরে শেষেহর্থে ঈরো ভবতি। সকারস্থ চ লুগিতি চাম্রাঃ।
- (৪৩৯)। স্বাদিভাঃ শেষেহর্থে ঈরো ভবতি। কুশ্চাগনঃ। দ্বারা-দীনাঞ্চেত্যত্র বামনেন ধর্ম্মদাসেন চ স্বস্থেদং সৌবমিত্যুদাহত্য্ অম্মাভি-রপি স্বাদেরিত্যত্র তম্মাৎ ৰুচিদপবাদবিষয়েহপ্যুৎসর্গোহ্নভিনিবিশতে ইজি বক্তব্যম্।
 - আদৌ স্থার্গহভৌরিশৈশিরিদমা গাদ্ধায়িথাড়ায়নৌ
 কামপ্রস্থমনশাথবিষমা বাল্মীকিবারাটকী।
 আধ্যমিগার্ধৈকরক্ষমধমাৎ শাথান্তথৈবোত্তমাদন্তাদাস্থরিশৌজিশৌজয় ইয়প্রক্ষৌমধৃত্যুত্তমাঃ।
 অন্তন্থোত্তরনেমিধয়িন ইতোহবক্তন্দনাকান্তরম্
 দৈবায়িদ্বয়তোহত্ত শর্লিক্ষদিতঃ কানাদ্বয়াৎ ঠেরণিঃ।
 ব্যাড়িঃ পূর্ব্বপদাত্ত পক্ষমপরাদ্প্রামঃ পলাশন্তথা
 একক্ষাদথ হিংদিমিত্রিগুগলং ছাতঃ স্বলীকস্থিতঃ॥ ৪২ ॥

88 = । পৃথীমধ্যস্ত মধ্যমশ্চ। । মধ্যমীয়ম্। ।

88১। আদি সৈজাতঃ কথুপান্তাৎ। সারীহণকীয়ং দ্রোঘণ্ণকীয়ং কোটশিখীয়ম্ আয়োমুখীয়ম্। দেশাদি-ত্যেব। বাহীকঃ। অনাদিস্থৈজাতস্তু। আর্ত্তকম্।

88২। কন্থাপলদনগরপ্রামহ্রদোত্তরপদাক্ত।

৸াক্ষিকন্তীয়ং দাক্ষিপলদীয়ং দাক্ষিনগরীয়ং দাক্ষিপ্রামীয়ং দাক্ষিহুদীয়ম্। আদিস্থৈজাত ইত্যেব। মাহনগরম্।

⁽৪৪০)। পৃথীমধাশকাচ্ছেষেশ্র্থে ঈরো ভবতি। পৃথীমধাস্ত স্থানে মধ্যমাদেশক। প্রাদেশাৎ কটাদেরিতি লক্ষণং লিপিকরপ্রমাদাৎ পতিতম্। প্রাদেশবাচকাৎ কটাদেঃ শকাচ্ছেষেহর্থে ইয়ো ভবতি। কট-নগরীয়ঃ। কটঘোষীয়ঃ। প্রাদেশবাচকাদিতি কিম্পু কাটনগরঃ।

^{(382)।} দেশদিত্যক্বর্ততে। ককারথকারোপান্তাদাদিকৈছাতঃ দেশবাচকাচ্ছদাৎ শেষেহর্থে ঈয়ো ভবতি। ককারোপান্তাং রুপান্তাচ্চেতি টিন জনপদাচ্চেত্যকনি প্রাপ্তে আদিকৈছাতো বাহীকগ্রামাদিতি নিকটিকলোঃ প্রাপ্তয়োর্বিধানম্। দেশদিত্যস্থানুবৃদ্ধা আদিকৈছাতশেচত্যনোক্রান্তবিষয়্বাদেকেন লক্ষণেন বিশেষবিহিত্টণ্বাধনার্থেন ন ভবিতব্যন্। এবং সতি বাহীকশকাদিশেষবিহিত্স টলোহনেন বাধা ন স্থাৎ। দেশাদিত্যস্থামুবৃদ্ধৌ তু তত্র দেশবিহিত্ত্যৈব টলোহরং বাধকো ভবতীতি।

⁽৪৪২)। কন্থান্তরপদাদেশবাচকাদাদি ইঞ্জাতঃ শকাৎ শেষেংর্থে ইয়ো ভবতি। আদি ইঞ্জাতো বাহীকল্ঞামাদিতি ণিকটিকণোরীদন্ত-রোপাস্তাৎ প্রাচ্যাদিত্যকণশ্চ বাধকঃ। উত্তরপদগ্রহণং বৈচিত্র্যার্থং নতু বহুপ্রত্যয়স্থানিরাদার্থম্। বহুপ্রত্যয়ে কুতে আদি ইঞ্জাতোহভারিং।

৪৭৩। কুকণপর্ণান্তারদ্বাজদেশাৎ। কুকণীয়ং পর্ণীয়ম।

888। আদিকৈঙঃ প্রাক্ষেশাৎ। গোনদীয়ম্ এলাবনীয়**ন্**।

৪৪৫। নৃনাম্মোবা। দেবদতীয়া দৈবদত্তঃ।

৪৪৬। প্রবৃতাৎ মনুষ্যো। পর্বতীয়ো বাজা। *

৪৪৭। অমনুষ্যে বা।

- (৪৪৩)। ভারহাজনামা দেশো ভারহাজদেশঃ। রুক্রণ পর্ব ইত্যোতাভ্যাং ভারহাজদেশবাচকাভ্যাং শেষ্কের্থে ঈয়ো ভবতি। দেশাদিতি
 রুত্থ ভারহাজশব্দশ গোত্তে প্রসিদ্ধশু শুঙ্কানিরাসার্থম্। ভারহাজদেশাদিতি
 কিম্ম ? কার্কণং পার্থম।
- (৪৪৪)। আদিকৈ জাত ইত্যমুবর্ত্ততে। আদিকৈ জাতো বিহিতঃ
 প্রত্যেয়ঃ প্রান্দেশবাচকাৎ ভবন্ আদিকৈ ডেবত। গোনদীয়মিতি
 আদিকৈ জাতকে তি ৰিহিত ঈয়ঃ আদিকৈ ডেবিং ভূতঃ। নমু কিমর্থং
 ব্যবস্থার্থং লক্ষণমিদং ব্যাখ্যায়তে বিধ্যর্থমেব ভবত আদিকৈ ডঃ প্রান্দেশবাচকাদীয়ো ভবতীতি। এবং সতি ঈদন্তরোপান্তাৎ প্রাচ্যাদিত্যকণ্ একচক্রশক্ষ স্থাৎ।
- (৪৪৫)। আদিহৈজাতো বিহিতঃ প্রত্যয়ঃ আদিহৈঙো নরনামঃ:
 শব্দাচ্ছেষেহর্থে সয়ো বা ভবতি। যো দেবদত্তশক্ষ্ণ কাপ্রাদৌ পঠ্যতে স গ্রামনাম তক্ষাদ্দৈবদন্তিক ইতি।
- (৪৪৬)। পর্ব তশকাচ্ছেবেহর্থে মনুষ্যে বাচ্যে ঈরো ভবতি। পর্ব-তীয়ো রাজেত্যনেনাপি মন্থ্য এব বাচ্যঃ। উত্তরস্ত্রেণামনুষ্যে বিধানাৎ মনুষ্য এবানেন বিধানং লভ্যতে তথাপি মনুষ্য ইতি ক্বতং স্পটার্থম্। পারি-শেষ্যলভ্যাচ্ছাকোহর্থঃ স্পটো ভবতি।
- (৪৪৭)। পর্ব তশকামমুষ্যব্যতিরিক্তে বাচ্যে শেষেহর্থে ইয়ো ভ ভবতি। অমনুষ্যা ইহু রক্ষঃপিশাচাদয় উচ্যক্তে। অমনুষ্যাৎ স্

পৰ্বতীয়: পাৰ্বত:।

৪৪৮। তত্ৰ জাতে।

শ্রু জাতঃ শ্রোদ্র:।

৪৪৯। প্রারুষ ইকঃ।

প্রার্ষিকঃ।

৪৫, । নাম্নি শরদোইকণ্। শারদকা দর্ভাঃ মুদ্গাশ্চ।

৪৫১। পূর্কাক্তাপরাক্রাদ্র মূলপ্রদোষাবন্ধরাদকঃ। পূর্কাক্তকঃ অপরাহ্নকঃ আন্তর্কঃ মূলকঃ প্রদোষকঃ অবন্ধরকঃ।

ইতাত্র বৃত্তিক্লদক্ষাতি। কিং ত এবাত্র গৃহন্তে নৈবং দ্বিবোহয়মনমুষ্য-শন্দো রুঢ়িরূপঃ তদিতরুশ্চ ইহ্ তদিত্রীশ্রেব গ্রহণং ব্যাখ্যানতো বিশেষ-প্রতিপত্তে:।

বেণুকাদিভা ঈয়ণ্ ইতি বক্তবাম্। বেণুকাদিভাঃ শেষেহর্থে ঈয়ণ্ ভবতি। বেণুকীয়ং চৈত্রকীয়ম্ ঔত্তরপদকীয়ং মাধ্যমপদকীয়ং পাস্পদ কায়ম্। কুপাচ্চেতি টণোহপবাদঃ। আক্তিগণোহয়ম্।

- (88৮)। জন্মবৃত্তস্ত জাত ইত্যুচ্যতে। অর্থবিশেষবিধানাৎ শেষাধিকারো নিবৃত্তঃ। তত্র জাতে ইত্যন্মিমর্থে টণ্ ভবতি। সন্নিহিত্তাদ্যত্র জাতস্তবৈব প্রত্যমোৎপত্তিঃ। এতেহপ্যর্থাঃ শেষস্থৈব প্রপঞ্চান্তেন জাতার্থে রাষ্ট্রিয়ং পারীণ ইত্যাদি।
- (৪৪৯)। প্রাবৃধ ইত্যন্মান্তত্র জ্বাতে ইত্যন্মিরর্থে ইকো ভবতি। প্রাবৃষ এণ্য ইতি এণ্যস্থাপবাদ:।
- (৪৫০)। শরচ্ছকায়ামি বাচ্যে অকণ্ ভবতি। প্রকৃতিপ্রত্যয়সমু-দায়েনাত্র সংজ্ঞা গম্যতে। শারদকা ইতি দর্ভবিশেষস্থ মূল্যবিশেষস্থ চাখ্যানং ন পুনরত্ব তত্র ক্ষাত ইত্যুগাধিঃ।
- (৪৫১)। পূর্বাঙ্গাদি ভাস্তত্র জাত ইত্যামিরর্থেহকো ভবতি। পূর্বা-স্কৃত্য অপরাত্রক ইতি পূর্বাত্লাপরাস্থাভ্যাং বেতি তনটঃ কালাদিতি টিকণশ্চ প্রতিষ্ধেঃ। আর্দ্রকি মূলক ইতি ঋতুনক্ষ্মাদিতি টণঃ প্রদোষক ইতি

8৫**২। পথঃ পত্-চ।** পত্ৰঃ।

৪৫৩। অমাবস্থায়াফ্টনতো চ। অমাবস্থক: আমাবস্থঃ অমাবস্থা। একদেশুবিকৃতস্থানগুবহাদমা-বাস্থায়াশ্চ। অমাবাস্থক: আমাবাস্থঃ অমাবাস্থঃ।

৪৫৪। সিন্ধোঃ কটণো।

मिक्रकः रेमक्रवः ८

৪৫৫। অপকরাচ্চ। অপকরক: আপকরঃ। এতৎপর্যান্তঃ নাম্নীতোকে।

৪৫৬। তত্ত্ব কৃতক্রীতলব্ধকুশলেরু। শ্রুমে কুতো বা ক্রীভো বা লব্ধো বা কুশলো বা শ্রোম্মঃ।

নিশাপ্রদোষাভ্যাঞ্চেতি টিকণঃ অবস্করক ইতি তন্ত্র জাত ইতি টণোংপ-বাদঃ। অবস্করো বিষ্ঠায়ামিতি অবস্করশকো নিপাতিতঃ।

- (৪৫২)। পথি ইত্যুমাৎ তত্ত্ৰ জাত ইত্যম্মিন্নর্থেহকো ভবতি। পথঃ স্থানে পন্থাদেশন্য। টলোহপবাদঃ!
- (৪৫৩)। অমাবস্থাশকাৎ তত্র জাত ইত্যর্থেইকো ভবতি। টণ্ অৎ ইত্যেতৌ চ। অমাপূর্ব্বসেরধিকরণে যঙ্চেতি যঙা অমাবস্থাপদসিদ্ধিঃ যদাতু গ্যো ভবতি তদা বৃদ্ধ্যা অমাবাস্থা ইতি অতএব একদেশবিক্বতত্বাদনগ্র-বস্তুম্ অমক্সবস্তাৎ কৃত্তবৃদ্ধেরপি অমাবাস্থাশকাৎ প্রত্যয়ঃ।
- ৪৫৪। সিন্ধুশকান্তত্র জাত ইতাশ্মিরর্থে ক টণ্ ইত্যেতো ভবত:।
 সিন্ধুশকঃ কচ্ছাদৌ পঠ্যতে ততষ্টনি নৃতৎস্থ্যোর্বাচ্যয়োরকনি চ প্রাপ্তে বিধানম্। তত্র জাতার্থব্যতিরিক্তস্ত ত্য়োর্বিষয়ঃ।
- (৪৫৫)। অপকরশব্দান্ত তত্ত্র জাত ইত্যর্থে কটণৌ ভবতঃ। তত্ত্র জাত ইতি টণি প্রাপ্তে বিধানম্। যোগবিভাগঃ ক্রমবিধাননিরাসার্থঃ। এতদিত্যাদি। নামি শরদোহকণ্ ইত্যত ইতি শেষঃ।
- (৪৫৬)। তত্রশব্দ: প্রত্যেকমিপি সম্বদ্ধাতে। তত্র কুভাদিধর্থেমু টণ্ ভবতি। অর্থাদ্যত্র কৃতং তত্র প্রত্যয়:। যদ্মপি যদ্যত্র কৃতং

৪৫৭। তত্ত সংভূতে। শ্রুদে সংভবীতি শ্রোদ্যঃ।

৪৫৮। কোষাদ্ত্রবিশেষে টেয়ণ্। কোম্যেং বস্ত্রম্।

৪৫৯ কালীৎ তত্র সাধুপুষ্পাৎপচ্যমানের । বসন্তে সাধুর্ব পুষ্পাতি বা পচ্যতে বা বাসন্তঃ।

८४०। উপ্তেচ।

শিশিরে উপ্তঃ শৈশিরং।

তত্র প্রতারঃ। ষম্পি ষদ্যত্র ক্লতং তত্ত্বে জ্লাতমপি ভবতি। যদ্যত্র ক্রীতং তত্ত্ব লন্ধমপি ভবতি। তথাপি শব্দার্থস্থ ভিন্নত্বাৎ ভেদোহপ্যস্থ্যের নতু পর্য্যায়তা ইতি পৃথগুপাদানম্। তথাহি স্বভাবনিপ্যত্তাবপেক্ষিতপর-ব্যাপারঃ ক্রতশব্দস্থার্থঃ। জন্মস্কুত্বকর্ত্তাবো জাতশব্দস্থার্থঃ। প্রাপ্তি-দামান্তং লক্ষস্থার্থঃ। মূল্যেন প্রাপ্তঃ ক্রীতশব্দস্থার্থঃ।

- (৪৫৭)। তত্র সংভূতেহর্থে টণ্ ভবতি। সংভবেনাত্র নোৎপত্তির জিধেয়া নাপি সন্তা। এবং সতি জাতভবার্থাভ্যামভিন্নতা ন সম্ভবতি নাপ্যাধারাধেয়য়েয়রন্যনাতিরিক্তা যন্তাং সর্বাধেয়মাধারময়প্রবিশতি সা অন্যানতিরিক্তা যন্তাবতঃ সম্ভবতেরয়মর্থঃ। তং সম্ভবত্যা দাবিত্যত্র তু সম্ভবতের্থাহর্থস্তং তত্রৈব ব্যাখ্যান্ততে কিম্ববকৃপ্রিঃ। শ্রেম ইতি শ্রুমে এতদবক্রত ইত্যর্থঃ।
- (৪৫৮)। কোষশন্দান্ত্রবিশেরে বাচ্যে টেয়ণ্ ভবতি। বস্ত্রবিশেষ ইত্যক্তং কোষেয়শন্স্য রূঢ়ত্বসূচনার্থম্। ধদপি কোষেয়ং স্ত্রমূচ্যতে তদপি কারণে কার্য্যোপচারাৎ।
- (৪৫৯)। কালবাচকাছকাত্ত সাধী তত্ত্ত: পূষ্পাতি তত্ত্ব পচ্য-মানে চ বাচ্যে উণ্ ভবন্তি। পূষ্পাদিতি পূষ্প বিক্সনে ইত্যুমাৎ দৈবাদিকাৎ শত্ৰস্তম্। পচ্যমানমিতি কর্মকর্ত্ত্বি শানঃ। অনস্তরমর্থ-বিশেষস্থচনার্থমেতানি লক্ষণানি। অতএব হৈমন ইত্যাদৌ হেমস্তা-ভ্রনোপন্টেতি টণি বিহিতঃ জ্যোপাদিশ্য ষ্থায়থং ভবতি।
- (৪৬০)। কালবাচকান্তত্তোপ্তে বাচ্যে টণ্ ভবতি। যোগবিভাগ উত্তর্বার্য:। উত্তর্যোগেন উপ্ত এব যথা স্থাংন সাধ্বাদৌ।

৭৬১। অখিযুজ্যা অকণ্।

আশ্যুজ্যামুপ্তঃ আশ্যুজকঃ।

৪৬২। গ্রীম্মবসন্তাদা। গ্রৈমঃ গ্রৈমকং বাসন্তং বাসন্তক্ষ্।

সঙ্গ । দেয়র্শে চ। সক্ষায়াং দেয়মূণং সান্ধ্যং শৈশিরম্।

৪৬৪। কলাপ্যশ্বথ্যবব্যাদকঃ।

যার মরুরাঃ কলাপিনঃ স কালঃ সাহচর্যাৎ কলাপী। যাত্র অখি আশ্চ কলিনঃ সোহশ্বথঃ। যাত্র যববুষমুৎপদ্যতে স' যববুষঃ। তাক দেরমূলং কলাপকম্ অশ্বপকং যববুষকম্।

২৬৫। গ্রীস্থাবরসমভিত্রামকণ্। গ্রীরে দেয়মূণং গ্রৈস্কম্ অববসমারাং দেয়মূণম্ আবরসমকম্।

⁽৪৬১)। আখযুজীশকাৎ কালবাচকান্তত্ত্ত্ত্তি বাচ্যেইকণ্ ভবতি।
অধিনীপর্যায়েইখযুক্শকঃ অখযুক্যুক্তা পৌর্ণনাসী আখযুজী ভান্ত্ত্ক্কালে
ইতি টণ্ কালবিশেষে ইতি ন তন্ত্ব্। কালাদিন্তি টিকণি প্রাপ্তে বিধানম্।
(৪৬২)। গ্রীশ্বশাৎ বসন্তশকাচ্চ তত্ত্তাপ্তে বাচ্যেইকণ্ বা ভবতি।
ঝত্তিণাইপবাদঃ।

⁽ ৪৬৩)। কালাদিতানুবর্ত্তে। দেয়মূণং দেয়র্ণমিতি বিশেষণ্সমাসঃ। কালবাচকাচ্ছকাৎ তত্ত্র দেয়ে ঋণে বাচ্যে টণ্ ভবতি।

⁽৪৬৪)। কলাপিন্ অশ্বথ যববৃষ ইত্যেতেভাঃ কালবাচিভাস্তত্ত্র দেয়ে পাণে বাচ্যেহকো ভবতি। নমু কলাপ্যাদিশকৈম যুৱাদর উচ্যান্তে তং কথননাষাং কালবাচিম্মিভাত্রাহ যত্ত্র মযুৱা ইত্যাদি।

⁽৪২৫)। গ্রীম অবরসমা ইত্যেতাভ্যাং তত্র দেয়ে ঋণে বাচ্যে-হকণ্ভবতি। অবরা চামৌ সমা চেত্যধরসমা সমাসে চেতি পুংবদ্ভাবঃ। স্থাগামা বংসর উচ্যতে। কালবিশেষাখ্যা।

৪৬৬। সংবৎসরাগ্রহায়ণীভ্যাং টিকণ্ চ।
সাংবৎসরিকং সাংবৎসরকম্ আগ্রহায়ণীকম্ আগৃহায়ণকম্।

৯৬৭। ব্যাহরন্দে চ। সন্ধ্যায়াং ব্যাহরতি মুগঃ সান্ধ্যঃ।

৬৬৮। তৎসহিতরি চ। সন্ধ্যাসহচরিতমধ্যুনং সন্ধ্যা সন্ধ্যাং সহতে সান্ধ্যঃ।

৪৬৯ । তত্ত্ব ভবে। শ্রুছে ভবঃ শ্রোষ্ণঃ।

৪৭**০। চতুম দািমান্নি।** চাতুম সি পূর্ণিমা।

⁽৪৬৬)। সংবংসরশন্ধাৎ আগ্রহারণীশন্ধাচ কাল্বাচকান্তত্র দেয়ে ঝলে বাচ্যে টিকণ্ ভবতি। চকারাদকণ্ চ। আগ্রহারণীতি অম্মাদেব নির্দেশাং পূর্বপদে চারনস্থেতি পত্তম্। মন্ত্র বেতি ক্তেহকণ্ত্যক্তেকালাদিতি টিকণ্ ভবিষ্যতি টিকণ্ চেতি কিমর্থমূচাতে। ফলে দেয়ে ঝণে চ বিবক্ষিতে সংবংশরাং ফলপর্বণোব্লিতি দেয়র্ণে চেতি টণং বাধিত্য টিকণ্ যথা শ্রাৎ।

⁽৪৬৭)। কাল**ৰা**চকাচ্ছকান্তিত্ৰ তশ্বিন্ ব্যাহরতি মূগে বাচ্যে টণ্ ভবতি।

⁽৪৬৮)। কালবাচকাচ্ছকাৎ তৎসহিতরি তদভাসনশীলে বাচ্যে টণ্ ভবতি। অভাসনমধ্যমনং সহন্ধমিতি পর্যায়:। অধ্যয়নঞ্চ কালশু ন সম্ভবতীতি সাহচর্যাৎ কালেন সহচরিত্মধ্যয়নমভিধীয়তে ইতি স্পষ্টয়িকুমাহ সন্ধ্যাসকচরিতমধ্যয়নং সন্ধ্যেতি। সন্ধ্যাং সহত ইতি তদধ্যয়নমভাশুকীতার্থ:।

⁽৪৬৯)। তত্র ভব ইতাম্মিরর্থে টণ্ ভবতি। অর্থাদ্যত্র ভবক্তত প্রব প্রভার:। সত্তাত্র ভবতার্থো নতু জন্ম তত্র জাত ইতানেন গতার্থদ্বাৎ। (৪৭০)। চতুর্মাসশকাৎ তত্র ভবেহর্থে সংজ্ঞারাং টণ্ ভবক্তি

8৭১। অধ্যাত্মাদেষ্টিকণ্। আধ্যাত্মিকঃ। অধ্যাত্ম অধিভূত অধিদেব উপজ্ঞানু উপকর্শ উপনীবি উর্দ্ধন্য চতুর্ধান্যানেত্যাদি *।১০।

৪৭২। লোকান্তাচ্চ। ঐহলোকিকঃ পারলোকিকঃ।

৪৭৩। সমানপূর্বাৎ।

সামানদেশিক: সামানগামিকঃ।

৪৭৪। অন্তঃপূর্বাদবায়ীভাবাৎ।

আন্তরগারিকঃ আন্তরদেহিকঃ।

চতুর্নাসেয়ু ভবা চাতুর্মাসী পূর্ণিমা। আবাট্নকার্তিকীফাল্পনীনামিয়ং সংজ্ঞা তা হি চতুর্ভিশ্চতুর্ভির্মাসৈরেন সন্তবন্তি। বিশেষবিধানসামর্থাৎ দিখাছাট্রণান্দের্বলাদাবিতি টণ্ লুক্ ন ভবতি। পূর্বেণ সিদ্ধে এতদর্থমেবেদং বিধানম্। (৪৭১)। অধ্যাত্মাদেস্তত্র ভবেহর্থে টিকণ্ চ ভবতি। আধ্যাত্মিক ইতি আত্মগুরীতি সপ্তম্যর্থেহ্বায়ীভাবঃ অনস্তাচ্চেত্যৎসমাসাস্তঃ। অধ্যাত্মে ভবঃ আধ্যাত্মিকঃ এবমধিভূতাধিদেবশকাদিপ। টিকণি কতে অকুহোড়াদিছাত্ভয়পন্ত্রিরঃ। উপজাবাদিশকত্রয়ং জাকুনঃ সমীপমিত্যাদ্যর্থে কৃতাবায়ীভাবসম সং। উর্দ্ধন্দমশক উন্ধাশকেন সমানার্থঃ। সমানেত্যাদীতি আদিশক আক্ষতিগণস্কচনার্থঃ। তেন স্বগ্রামে ভবঃ সৌবগ্রামিক ইত্যাদি। চতুরর্থস্থাত্ম পাঠাচ্চাতুর্থিকঃ। দিখাদ্যাট্রণাদেরিতি লুগ্ধ ভবতি পাঠসামর্থ্যাৎ।

(৪৭৩)। সমানশব্দ্সাৎ তত্র ভবেহর্থে টিকণ্ ভবতি।

(৪৭৪)। অন্তর্শব্দিবায়ীভাবসমাসাত্ত ভবেহর্থে টিকণ্

অধেরায়ভৃতদেবা জামুকর্ণারুপাত্তথা।
 নীবিঃ সমানোর্দ্ধহাবুর্দুন্দমচতৃর্থৌ॥ ১০॥

৪৭৫। গ্রামান্তাচ্চ পর্য্যসূপ্র্বাৎ। পারিগ্রামিকঃ আমুগ্রামিক:।

८१७। मिशादिष् ।

দিশ্যম্। দিশ্বর্গ মৃগ গণ পক্ষ ধার্য্য মিত্র মেধ ক্ষন্তর পথি । রহস্ গলীক উথা শাঁথিন্ আদি অন্তঃ মুখ জঘন মেঘ যূথ ন্থায় বংশ অন্তুৰণে বেশ কাল আকাশেত্যাদি * ।২৬।

৪৭⁹। উদকাদ্দজ্যলায়াম্। উদকান

८१৮। **প্রাণ্যঙ্গাৎ।** দন্তাম্ওষ্ঠাং স্ততাং কর্ণাং নাসিক্যং ললাট্যম্।

ভণতি। স্বাস্তরগারিক ইতি অন্তঃশক্তর্গাধিকরণপ্রধানতাৎ সপ্তমার্থে-২ব্যয়ীভাবঃ।

- (৪৭৫)। গ্রামশরাস্তাক্ত, অবায়ীভাবসমাসাৎ পরি অমু ইত্যেবং পূর্নান্তত্র ভবেহর্থে টিকণ্ ভবতি। পারিগ্রামিক ইতি গ্রামাৎ পরি ইতি অপপরীত্যাদিনা অব্যয়ীভাবঃ অনুগ্রামিক ইতি তৎসমীপে তদ্দর্ঘ্যে চানোরিত্যবায়ীভাবঃ।
- (৪৭%)। দিগিত্যেবমাদেশুত্র ভবেহর্থে যন্তবতি। আদিছৈ-জাতশ্চেতি ইয়ে শেষেভাষ্টণি প্রাপ্তে বিধানম্। মুথজ্বনশন্ধয়াঃ প্রাণ্যঙ্গা-দিত্যনেন যতি সিদ্ধে অপ্রাণ্যক্ষার্থং পাঠঃ। সেনাদ্যবয়ববাচিনৌ যৌ মুথজ্বনশক্ষে তাবং প্রাণ্যক্ষো।
- (৪৭৭)। উদকশন্মজন্তনায়াং বাচ্যায়াং যদ্ৰবতি। নাত্ৰ প্ৰকৃতি-প্ৰত্যায়াৰ্থে শন্তবৃত্তিঃ। ৱজন্তনায়ামিতি কিম্পু ঔদকা মংখাঃ।

(৪৭৮)। প্রাণ্যঙ্গবাচকাচ্ছন্দাৎ তত্র ভবেহর্থে বস্তবতি। .উণ্

দিয়ার্য্যৌ জবনাস্তরং পথিগপাবতামূবংশামূখং
পক্ষোথাস্তরহোহথ মেঘ উদিতো বর্গাদিয় ৄথং তথা।
মেবাকাশমূগা অলীকসহিতা বেশোহথ কালোহপি চ ।
ভায়ে মিত্রমূদীরিতং বুধুগলৈরংলোহত শামীতি দিক ক্ষুক্তরা

৪৭৯। অহিদৃতিবস্তান্তিকুক্ষিকলসিভাটেয়ণ্। আহেয়া দার্ত্তেয়া বাস্তেয়া আস্তেয়া কৌক্ষেয়া কালক্ষ্যো।

৪৮০। শিরার্থগ্রাবায়া**ফণ্চ।** গ্রীবাস্থ ভবং গ্রৈবেয়ং গ্রৈবম্।

৪৮১। বহির্গম্ভীরদেবপঞ্জনাদ্যণ্। বাহ্যং গাম্ভীর্য্যং দৈব্যং পাঞ্চজন্তঃ।

৪৮২। পরিম্থাদেরব্যয়ীভাবে। পারিম্খ্য পারিহনব্যং পার্য্যোষ্ঠ্যম্। পরিম্থ পরিহনু

তাবদয়ং বাধতে আদিস্থৈজাত ঈয়মপি বাধতে ইতি স্চয়িতুং নাসিক্য-মিত্যুদাস্তম্।

- (৪৭৯)। অহি দৃতি বস্তি^ক অস্তি কৃক্ষি কলসি ইত্যেতেভাস্তত্ৰ ভবেংরথে টেয়ণ্ ভবতি। অস্তীতাবায়ং তিওস্তপ্রতিরূপকং বিদ্যতে যথা অস্তিকীরা ব্রান্ধণীতি অস্তি চধনবাচকম্। তথাহি অস্তিমান্ ধনবাত্ম-চাতে দ্বয়োরপাত্র গ্রহণং নতু তিওস্তম্ভানামত্বাৎ। কলসিশক্ষোহত্র হ্রস্বাস্থঃ। তথাচ মাঘঃ, কলসিমুদধিগুর্মীং বল্লবা লোড়রস্তীতি।
- (৪৮০)। শিরাবাচকাৎ গ্রীবাশসাত্ত ভবেহর্থে টেয়ণ্ ভবতি। পক্ষে টণ্.চ। প্রাণ্যস্থাৎ প্রাপ্তস্থা যতোহপবাদঃ। শিরার্থ ইতি কিম্ ? কন্ধরার্থাৎ মাভূৎ গ্রীবাম্।
- (৪৮১)। বহিস্ইত্যেবমাদিভান্তত্ত ভবেহর্ষে বণ্ ভবতি। বাহ্য-মিতি কচিদব্যয়ানাং স্বরতচ্ছেষয়ােরিতি সলুক্। দেবাগ্লাশ্চ ইতি বহি-ষষ্ঠীকঞ্জেতি তদ্বলাদ্যর্থবিহিতেন গােনের সিদ্ধে যণ্বিধানং কৈচিত্রার্থম্।
- (৪৮২)। পরিম্থাদেরব্যয়ীভাবে তত্র ভবেহর্ষে যণ্ ভবতি। মৃথং পরি পরিম্থমিতি কথমব্যয়ীভাবঃ যতোহপপরি ইত্যাদিনা পঞ্চম্যা অবায়ীভাবঃ করনীরঃ পঞ্চমী চ বর্জনার্থাপপরীতি নতু পরিমুখে বর্জনং গম্যতে কিন্তুইি সর্কতোভাবঃ তত্মাদ্যোগবিভাগাদিনা যত্তেনাত্রাবানী-ভাবঃ করণীয়ঃ। যে তু পরিহম্প্রভৃত্যঃ তেমু অপ পরি ইত্যাদিনা স

পর্যোষ্ঠ পরিখল পরিসীর উপসীর উপতৃণ উপকলাপ অনুসীর অনুতিল অশ্বপথ অনুগঙ্গ অনুশীত অনুমাষ অনুষ্ব অনুসূপ অনুবংশ। ১৭ *।

৪৮৩। চতুর্মাসাদ্যজ্ঞে। চাতুর্মাস্থ্যম্।

৪৮৪। অঙ্গুল্যাদেরীয়ঃ। অঙ্গুলীয় জিহ্বামূলীয়ঃ। অঙ্গুলি জিহ্বামূল মুখুতস্ পার্যতস্ 1814

৪৮৫। বর্গান্তাচ্চ। কবর্গীয়: পবর্গীয়:।

এবাবায়ীভাব: অথ তেম্বপি বর্জনং ন গমাতে তদা পবিম্পবং যড়েনৈব।
যে উপসীরাদয়ঃ উপপূর্ব্বাস্থেষু সমীপু ইত্যানেন। অনুগঙ্গমিত্যত্র তংসমীপে তদৈর্ঘ্যে চানোরিত্যানেন। যেহমুসীরাদয়োহমুপূর্দ্বাস্থেষু পশ্চাদর্থে
ইত্যানেনাবায়ীভাব:। অবায়ীভাব ইতি কিম্? পরিগতং মুখং পরিম্থং
নিতাং কুপ্রাদেরিতি তৎপক্ষয়ঃ। পারিম্থমিতি টণেব ভবতি।

(৪৮৩)। চতুর্মাসশব্দাদ্যক্তে বাচ্যে তত্র ভবেহর্থে যণ্ ভবতি।

(৪৮৪)। অঙ্গুল্যাদেন্তত্র ভবেহর্থে ঈয়ো ভবতি। অঙ্গুলিজিহ্বামূলরোঃ প্রাণাঙ্গত্বাং যতি প্রাপ্তে বিধানম্। মুখতস্ পার্মতদ্ ইত্যোতাভ্যাং মুখপার্মতিসেঃ সল্ক চেতি শেষেহর্থে ঈয়ঃ সিদ্ধ এব কিন্তু তত্র ভবে টণা ঈয়ো বাধিতঃ স্থাদেতদর্থং পুনর্বিধানম্। ঈয়ে তু রুতে সস্থ লুক্ পূর্বলক্ষণেনৈব।

(৪৮৫)। বর্গশকাস্তাচ্চ তত্র ভবেহর্থে ঈয়ো ভবতি। উত্তরস্থত্রেণা-শব্দে বিধানাদনেন শব্দে বিধানম্।

মৃথং হয়: বল: সীরমোষ্ঠং পঞ্চ পরেরুপাৎ।
 সীরং তৃণং কল্যপোহথ গঙ্গশীততিলা: পথঃ।
 মাষ: স্পো যবো বংশ: সীরমপ্যকৃতে। নব॥ ১৭॥

[†] অঙ্গু বিজিহবামূলঃ মুখতঃ পাৰ্যতিবিতি ছৌ চ। ৪।

८৮७। (यर्टनी हा भटका

অর্জুনবর্গীয়: অর্জুনবর্গ্য: কর্জুনবর্গী গং। শকে তু—কর্ক

৪৮৭। পরজনাভ্যাং কু**শ্চ**। পরকীয়ঃ জনকীয়া।

৪৮৮। মধ্যাম্মণ্মীরো চ। মধ্যীয়া মাধ্যমা মধ্যমীয়া।

৪৮৯। मिनग्यू मह।

মাধ্যন্দিনম।

৪৯০। কর্ণললাটাভ্যাং কো ভূষণে। কর্ণিকা ললাটিকা।

৪৯১। গ্রন্থাৎ তন্ত্যাখ্যীনে চ।

- (৪৮৬)। বর্গাস্তাচ্ছকাচ্ছকবাতিরিক্তে তত্র ভবেহর্থে ঈরো ভবতি। য ঈন ইত্যেতৌ চ ভবতঃ। 'ঈয়ঃ পূর্স্বেণিব সিদ্ধণ্ডকারেণ যেনাভাাং সহ তম্ম সমাবেশঃ ক্রিয়তে।
- (৪৮৭)। পর জন ইত্যেতাভ্যাং তত্র ভবেহর্থে ঈয়ো ভবতি। তং-সন্নিযোগাৎ কুশ্চাগম:। স্বপররাজজনদেবাৎ কুশ্চেতি শেষেহর্থে ঈয়: সিজ এব কিন্তু তত্র ভবেহর্থে টণা বাধিতঃ স্থাদিতি পুনবিধানম।
- (৪৮৮)। মধাশকান্তত্র ভবেহর্থে ঈরো ভবতি। মণ্মীয় ইত্যেতী চভবতঃ।
- . (৪৮৯)। মধ্যাদিত্যত্মবর্ততে । মধ্যশব্দান্তত্র ভবেছর্থে দিনণ্ ভবতি। তৎসন্নিযোগে মুশ্চাগমঃ। মাধ্যনিনমিতি শিস্বাদ্ধিঃ।
- (৪৯০)। কর্ণ ললাট ইত্যেতাভাাং ভূষণে বাচ্যে কো ভবতি। প্রাণাঙ্গযতোহপবাদ:। রুড়িশব্দেষু নাবস্তমবন্ধবার্থো ভবতীতি কর্ণললাট-সম্বন্ধেন বিনাপি শব্দপ্রয়োগ:। ভূষণ ইতি কিমৃণ্ণ কর্ণাং ললাট্যম্।
- (৪৯১)। ব্যাখায়তেখনেনিতি ব্যাখ্যানং করণে ওনট্। গ্রন্থবাচকা-্চছকাত্তথ্যাথ্যানে ২ তত্ত্র ভূতবে চেবাচ্যে উণ্ ্তবতি। ২ পাটলিপুক্ত

স্থাপো ব্যাখ্যানো গ্রন্থঃ সৌপঃ স্থাপি ভবঃ সৌপঃ। অগ্রন্থান্ত্ — পাটলিপুক্রস্ত-ব্যাখ্যানী স্থাকোশলা।

8कर । 'श्राशंशांदिक' ।

শ্বসায়ণস্থ ব্যাব্যানস্তত্র ভবো বা আর্গয়ণঃ। শ্বগয়ণ পদব্যাখ্যান ছন্দোব্যাখ্যান ছন্দোবালা ছন্দোবিচিতি ছন্দোবিজিতি স্থায় পুনরুক্ত নিগম ব্যাকরণ বিজ্ঞা বাস্তবিষ্ঠা ক্ষত্রবিদ্যা অঙ্গবিদ্যা ত্রিয়ীবিদ্যা উৎপত উদ্পাত সংবৎসন্ধ মুহূর্ত্ত নিমিত উপমিষদ্ শিক্ষা। ২৩। *

৪৯০। ছন্দ্রোযশ্চ। ছান্দ্রঃ ছন্দ্রগুঃ।

৪৯৪। **ছিম্বরাট্টকণ**্। ঐপ্তিকঃ পাংশুকঃ।

ব্যাপ্যানী স্থকোশলেতি পাটলিপুত্রং স্থকোশলয়া খ্যাপ্যায়তে এবং সন্নিবেশঃ। পাটলিপুত্রশক্ষো ন গ্রন্থবাচকঃ।

(৪৯২)। ঋগয়ণাদে গ্রন্থবাচকাৎ শব্দাৎ তল্পাধ্যানে তত্র কবে চ বাচ্যে টণ্ ভবতি। বিদ্যান্তায়শিক্ষাশব্দেভ্যো দ্বিশ্বর্থাট্টকণি প্রাপ্রে ব্যাকর্থশব্দাদিস্থৈজাতশ্চতি কিয়ে প্রাপ্রে শেষেভ্যাহস্তোদাস্তাম্থ্যত ইতি টিকণি প্রাপ্থে বিধানম্। ঋচাময়নং ঋগয়ণম্উপচারাদয়নজিষা-বিশিব্যে গ্রন্থ উচাতে।

(৪৯৩)। ছন্দংশব্দান্থার বাচকাচ্ছকাত্দাকানে তত্ত ভবে চার্ধে টিকণ্ডবতি।

শারণনিগমৌ স্থার-চন্দঃপরতোহধ চন্ধাবি।
ভাষা মানং বিচিতিবিজিতিন্দ তত উনপাতোহত্ত।
ত্রযাক্ষকত্রবাস্তচতুইয়েভাস্ত বিদ্যা স্থাৎ।
পুনকক্তং ব্যাকরণং শিক্ষোপনিষন্নিমিন্তমূহূর্তান্চ॥
ব্যাথ্যানং ছন্দঃপদান্ধিদ্যা সংবৎসরোৎপতাবিতি চনা ২০ ঃ

৪৯৫। শ্বদন্তাক্ত। পাঞ্চোতৃকঃ।

८२७। अ**शहन** र ।

্আচিকিঃ। এখচ্ বাজাণ প্রথম অধ্বর পুরশ্চরণ, নামন্নামাখ্যাত -আখ্যাত। ৮। *

.৪৯৭। অন্তোদাভাত্ত্বচঃ।

ষত্বগহুরোর্বাখ্যান্স্তত্র ভূবে। বা যাত্রপত্তিকো গ্রান্থঃ। অনীস্তোদা-ত্তাতু—সাংহিতায়া ব্যাখ্যান্স্তত্র ভূবো বা সাংহিতঃ।

85- । यद्याद ।

- অগ্নিস্টোমস্থা-ব্যাখ্যানস্তত্ত ভবো বা আগ্নিফ্টোদ্দিকঃ পোর্ণমাসিকঃ। পঞ্চোদনাদীনাং যজ্ঞহোপচায়াৎ পাঞ্চোদনিকাদয়ঃ।

(৪৯৫)। খদস্তাদ্গ্রন্থবাচকাত্তদ্যাখ্যানে তত্র ভবে চার্থে টিকণ্ ভবতি। পঞ্চোভূশকো হত্তদান্তান্ত ইত্যম্ভোদান্তাদ্বহুচ ইত্যপ্রাপ্তিঃ।

(৪৯৬)। ঋচ্ইভ্যেবমাদে গ্রন্থ কিব্তার দাখ্যানে তত্র ভবে চার্থে টিকণ্ ভবভি। ঋচ্নামন্পুরশ্চরণ আখ্যাতানাং গণে পাঠটণ ্বাধনার্থঃ শেষাণাং স্পাঠাথঃ যতন্তে ভ্যোহস্তো দাক্তার হৃত্ত ইন্ডানেনৈর টিকণ্ সিদ্ধঃ।

(৪৯৭)। অস্তোদান্তাম্বক্তচো গ্রন্থাচক্ষাজ্বাখ্যানে তত্র ভবে চার্থে টিকণ্ ভবতি। সমাসানাং প্রায়েণাস্তাদান্তমং বিজ্ঞেয়ন্। স্বরূপব্যবস্থা তু অবিদ্যমানস্বরশক্ষণানাং ন বিজ্ঞানায় ইত্যমাভিকপে-ক্ষিতা। বহুবচ ইতি কিম্ ? দিস্বাটিকণ্ উক্ত একাচ্প্রত্যুদাহিয়তে। সৌপঃ তৈঙঃ।

(৪৯৮)। অনস্তোদাতার্থ আরম্ভ:। যক্তবাচকাচ্ছপাত্রদাথ্যানে

ঋগ্রাহ্মণৌ তথাখ্যাতং প্রশ্চরণমধ্বরঃ।
নামাখ্যাতমধো নাম প্রথমোহষ্ট ঋগাদয়ঃ। ৮।

৪৯৯। ঋষেরধ্যায়ে।
শাহচর্য্যাদৃষ্টিশব্দোহত্র গ্রন্থবিশেষপ্রবচনমণ্ডিধত্তে। বশিষ্ঠস্থ ব্যাখ্যানস্তত্ত্র ভবো বা বাশিষ্ঠিকোহধ্যায়ঃ বৈশামিত্রিকঃ। অন-ধ্যায়ে তু—বাশিষ্ঠী শ্বুৰ্ষ।

- ৫০০। পৌরডাশপুরোডাশভ্যাং টিকঃ।
 পৌরোডাশস্থ ব্যাখ্যানস্তত্র ভবো বা পৌরোডাশকঃ পুরোডাশসহচরিতাে মন্তঃ পুরোডাশস্তস্থ ব্যাখ্যানস্তত্র, ভবো বা পুরোডাশিকঃ।
- ৫০১। আদ্যুপাদানাদাগতে। মগধাদাগতো মাগধঃ হৈমবতী গঙ্গা।

তত্র ভবে চার্থে টিকণ্ ভবতি। যেষ্কু সোমপানং বিহিতং ত এব যক্তাঃ।
অতঃ সোমপানাভাবাৎ পঞ্চোদনাদীনাং ন প্রাপ্রোতীত্যাহ পঞ্চোদনাদীনাং যক্তবোপচারাদিতি। এতদেব কথং ব্যাখ্যামতো বিশেষার্থ-প্রতিপত্তেঃ।

- (৪৯৯)। ঝয়জিধানাদ্গ্রন্থবাঢকাচ্ছকাৎ তদ্মাখ্যানে তত্র ভবে চার্থে অধ্যায়ে বাচ্যে টিকণ্ ভবতি। নমু ঋষ্যভিধায়কঃ শব্দঃ কথং গ্রন্থমাহেত্যাশক্ষাদ্মামাহ সাহ্চর্য্যাদিতি। এতেন মুখ্যাভাবাৎ গৌণস্থ গ্রহণমিত্যুক্তন্।
 বিশিষ্ঠসহচরিতো গ্রন্থবিশেষা বিশিষ্ঠঃ।
- (৫০০)। পৌরোডাশ পুরোডাশ ইত্যেতাভ্যাং গ্রন্থবাচকাভ্যাং তদ্যাখ্যানে তত্র ভবে চার্থে টিকো ভবতি। পুরোডাশসংস্থারকো মন্ত্রঃ পৌরোডাশঃ। পুরোডাশক্ত তু গ্রন্থবাচকতা ন সন্তবতীতি শক্ষায়ামাহ পুরোডাশসহচরিত ইত্যাদি। পৌরোডাশশন্ধাদস্তোদাত্তাৎ পূর্ব্বেণ টিকণ্-বিধানেনাপি বিরোধাভাবে টিকবিধানং স্পষ্টার্থম্। অস্তোদাত্ত্তমেবাক্সান-ধিগতস্বরবিধানশক্ষণানামুপদেশমাত্রাধিগম্যমস্পত্তং ভবতীতি।
- (৫০১)। আদিশন: প্রথমপর্যায়:। প্রথমমপাদানং বিশ্লেষো বন্ধান জন্মাদাগতেহর্থে টণ্ ভবতি। আদিগ্রহণং কিমর্থম্। যদা মগধাদাগচ্ছন্ বৃক্ষমূলাদাগতঃ তদা বৃক্ষমূলশকাটণ্ ন ভবতি।

८०२। छछिकारमञ्ज

শোণ্ডিকঃ। শুণ্ডিক কৃকণ স্থান উদপান উপল তাঁৰ্থ ভূমি তৃশ পৰ্ব। ১। *

৫০৩। **অায়স্থানাট্টক**ণ্। শৌক্ষালিকঃ স্থাতনিকঃ শৌক্ষিকঃ।

৫০৪। ঋতো বিদ্যাযোনিসম্বন্ধাৎ।

হোতৃকঃ ভাতৃকঃ। অবিভাষোনিসম্বন্ধাত্ — সাবিত্রম্।

৫০৫। পিতুর্যন্ত।

পৈতৃকং পিত্রাম্।

৫০৬। অনৃতোহকণ,। শৈষ্যকং মাতুলকম্।

- (৫০২-)। শুণ্ডিকাদেরাদ্যপাদানাদ্যগতেহর্থে টণ্ ভবতি। আয়স্থানাটিকণিতি টণ্বাধকং টিকণং বক্ষ্যতি তদ্বাধনার্থং বচনম্। ক্রকণশব্দস্ম তু পাঠঃ ক্রকণপর্ণান্তারদ্বাজদেশাদিতি ঈয়্ম্যাপি বাধনার্থঃ। তীর্থশন্দো
 ধুমাদৌ পঠ্যতে। ধুমাদেদে শাদিত্যকণোহপি বাধনার্থঃ পাঠঃ। উদপানশকঃ
 উৎসাদৌ পঠ্যতে এতদ্যতিরিক্তোহস্যোহর্থস্কস্থ বিষয়ঃ।
- (৫০৩)। আয় ইতি স্বামিগ্রাহো ভাগঃ। স যক্মিনুৎপদ্যতে তদায়-স্থানম্। আয়স্থানবাচকাচ্চকাদাদাপাদানাদাগতেহর্থে টিকণ্ তবতি।
- (৫০৪)। বিদ্যাক্ততা যোনিক্তশ্চ সম্বন্ধো বিদ্যাযোনিসম্বন্ধ:।
 তম্বাচকাচ্ছস্বাদৃদস্তাদাদ্যপাদানাদাগতেহর্থে টিকণ্ ভবতি। হৌতৃক ইতি
 হোতুরাগত ইত্যর্থ:। সাবিত্রমিতি আদ্যপাদানাদাগতে ইতি টণ।
- (৫০৫)। পিতৃশবাদাদাপাদানাদাগতে ধর্থ টিকণ্ ভবতি। পক্ষে যশ্চ। পিত্রামিতি ভদ্ধিত্যে চেতি ঋতঃ স্থানে রিকারঃ অদিল গিতী-কারলুক।
 - (৫०%)। विषारानिमञ्जानृष्ठवािविकानानाभानामानार्वाट्य
 - ভণ্ডিক: ক্রকণস্তীর্থং পর্ণস্থণ্ডিলভূময়:।
 ভূনোপলোদপানানি ভণ্ডিকাদৌ নবোদিতা:। ১।

- ক্রেণ তোকপ্রত্যয়ান্তান্তস্মেদমর্থাঃ। উপগবকঃ ঔশগবঃ সংঘঃ।
- ৫০৮। হেতুনর ভাোং রূপ্যং বা ময়ট্ চ।
 সমাদাগতং সমরপ্যং সময়য়ং সমীয়ং দেবদত্তরপ্যং দেবদত্তময়ং

 দৈবদত্তম্।
- ৫০৯। আদ্যুপলস্তে চ। হিমবতঃ প্রথমমুপলভ্যতে হৈমবতী গলা।
- , ৫১०। वालवासान्यण् विमृत्रः । देवनृत्र्या मिनः।

হকণ্ জনতি। স্থান স্থাট্টকণো বিধানাত্ত্ব্যতিবিক্ত এ এক বিধয়ে ভবিষ্যতি কিমন্ত ইতানেন তং কৃতং স্পষ্টাৰ্থন্। সামান্তবিশেননায়লভ্যাদ্ধি শান্ধো-হৰ্যঃ স্পান্ধী ভবতি।

- («০৭)। তোকমপতাং তদ্মিরর্থে বিহিতঃপ্রতারস্কোকপ্রতারঃ
 তান্তেদ্মিতার্থে বিহিতাঃ প্রতারাস্তপ্রেদমর্যাঃ। তেশক প্রতারাস্তাক্ষকান্তপ্রেদমিতান্মিরর্থে যে প্রতারা বিহিতান্তে আদ্যুপাদানাদাগতেহপ্যর্থে ভবন্তি।
 উপগবশক্ষান্তপ্রাপত্যে ইতি টণস্তাৎ হাস্তিপাদকৌপিঞ্জলবর্জমপত্যপ্রত্যরাস্তাদকণ্ ইতাকণং গড়স্তাৎ গড়িণ্যণস্তাৎ সজ্বাদ্ধবিদ্যানিক্ষান্ত্রপ্রেধি উল্কল্ক
- (৫০৮)। হেতুভূতাচ্ছকাররবাচকাচ্চান্যপাদানাদাগতেহর্থে রূপ্যং বা ভবতি। সর্ট্ চ। রূপ্যমন্ত্রটো বেতি ন রুতং ক্রমনিরাসার্থম্। সমা-দাগতমিতি সমাদ্ধেতোরাগমনমিত্যর্থঃ। সমীয়মিতি গহাদেশ্চ ইতি পক্ষে ঈয়ঃ।
- (৫০৯)। আত্যপলন্তে চার্থে টণ্ ভবতি। অর্থাদ্বত আত্যপলন্তস্ততঃ প্রত্যায়:। আদ্যপাদানন্ত গঙ্গায়া ব্রহ্মলোকাৎ আত্যপলন্তস্ত হিমবতঃ।
- (৫১০)। বালবায়শদাদাত্যপলস্তেহর্থে যণ্ভবতি। বালবায়শক্ষো বিদূরক্ষ ভবতি। বিদূরং : নগরং বৈদুর্যো মণিস্তত্র সংখ্নি হতে আজ্যপ-লক্তম্ভ তম্ম বালবায়গিরেরের অতো বালবায়স্থৈব বিদূরাদেশং করে।তি নতু বিদূরাৎ প্রত্যয়ঃ।

- ৫১১। তদগচ্ছতোম গিদৃতয়োঃ। ' শ্রোমঃ পন্থাঃ মাথুরো দূতঃ। অমার্গদূতয়োস্ত—ফ্রাম্র ক্রান্ত জি সাধুঃ।
- ৫১২। তদভিনিয্জাসতি দ্বারে।
 শ্রোদং কাত্তকুজন্বারম্। অন্বারে তু—শ্রুসভিনিক্রাসতি পুরুষঃ।
 ৫১৩। তদ্ধিকৃত্য কৃতে গুন্থে।
 সৌভদ্যে গ্রন্থঃ।

৫১৪। সীতাবেষণাদেরীয়ঃ। সীতাবেষণীয়ঃ। সীতাবেষণ ইন্দ্রজনন শিশুক্রন্দ যমসভ রক্ষো-২স্তর গুণমুখ্য। ৬। *

⁽৫১১)। তদিতি দিতীরাষ্ট্রং পদম্। তদগছতি মার্গে দূতে চ বাচ্যে টণ্ ভবতি। অর্থাদ্যন্তংপদং পরামৃষ্টং তত্মাং প্রত্যয়ঃ। গ্রোয়ঃ পদ্য ইতি শ্রুত্বং গচ্ছতীত্যর্থঃ। শ্রুত্বস্থা বিদ্যালয়াধারের পথো গমনম্ অথবা পথিস্থিতেরু গচ্ছৎস্ক পদ্ধা গচ্ছতীত্যুপচারেণোচ্যতে।

⁽৫১২)। তদিতি দিতীয়ান্তন্। তদভিনিদ্বামতি দাবে বাচ্যে টণ্ ভবতি। যত্তং পদং পরামৃষ্টং তত্মাৎ প্রত্যেরঃ। শ্রৌদ্বং কান্তকুজনারমিতি। এতং কান্তকুজনারং শ্রুমভিমৃথং নিদ্বামতীত্যর্থঃ। নিদ্বামণে দারং করণত্বেন প্রসিদ্ধমপ্যত্র স্বাতত্ত্বোন বিবক্ষাতি। যথা স্বাসিন্টিনত্ত্বীতি।

⁽৫১০)। তদধিকতা আরভা প্রক্রমা ক্তে গ্রন্থে বাচ্চো ট্রণ্ডবতি। অর্থাং ষত্তৎ পদাভিধেয়ং তম্মাৎ প্রত্যয়ং। সৌভদ্যো গ্রন্থ ইতি স্থভ্জা-মধিকৃত্য কৃত ইত্যর্থং। গ্রন্থ ইতি কিম্ ? স্থভদ্যামধিকৃত্য কৃতঃ প্রাদাদঃ।

⁽৫>৪)। সাতাবেষণাদেঃ শকাতদ্ধিকৃত্য কৃতে এছে বাচ্যে ঈয়ে! ভবতি শিশুক্রনো রোগঃ যমস্থ সভা যমসভম্ অমমুষ্যাৎ সভেতি ক্লীবৃত্বম্। ইক্রম্ম জনন্যিক্রজনন্ম্।

সীতাবেষণমিক্তজননমথো রক্ষোহস্করং স্থাদ্ গুণাৎ।
 মুখ্যং তদ্বহনীরিতং যমসভং ক্রন্দান্তিকঃ স্থাৎ শিশুঃ। ৬।

৫১৫। অদেবাস্থরাদির্দ্ধ:। শ্যেনকপোতীয়ঃ। দেবাস্থরাদিস্ত-দেবাস্থরঃ রাক্ষো গন্ধর্বঃ।

৫১৬। তরিবাসে। শ্রুম্মো নিবাসোহস্য শ্রুমান্তঃ।

৫১৭। তৎপূর্ববান্ধবনিবাদে। শ্রুত্ববান্ধবনিবাদোহস্ত শ্রোদ্ধঃ।

৫১৮। मिक्कारमण्ड।

সৈশ্ববঃ। সিন্ধু বণু মধুমৎ কমোজ কশ্মীর সাল্ল কিন্ধিশ্ব শব্দিক। উরস্ গন্ধার দরদ শর তক্ষশিলা বংসোদ্ধরণ কোৎসম্বর কাণ্ড-বারণ গ্রামণী শকল কংস ছিন্ন সঙ্কুচিত সিংহ কোষ্ঠ বন্ধ বর্ব ট অসাল। ২৬। **

⁽৫১৫)। দেবাস্থরাদিব্যতিরিক্তো দ্বন্দঃ সীতাবেষণাদির্ভবতি।

⁽ ৫১৬)। নিবসত্যশ্বিরিতি নিবাদো দেশঃ স নিবাদোহস্ত তরিবাস-শুশ্বিন্ বাচ্যে টণ্ভবতি। অর্থাদ্যত্তৎ পদবাচ্যং তন্ত্বাৎ প্রত্যয়ঃ।

⁽৫১৭)। স পূর্দ্রবান্ধরনিবাসোহস্ত স তংপূর্ব্ধরান্ধরনিবাসঃ তত্মিন্ত্র বাচ্যে টণ্ডবতি।

⁽৫১৮)। দিল্বাদেশ্চ তৎপূর্কবান্ধবনিবাদে বাচ্যে টণ্ ভবতি। দৈল্ধব ইতি দিল্প: পূর্কবান্ধবনিবাদোহস্তেত্যর্থঃ। দিল্পবর্ণ মধুমৎকম্বোজকশী-রদার ইত্যেতেভ্যঃ কচ্ছাদেন্ তৎস্থয়োরিত্যকণি প্রাপ্তে কৌৎসম্বরকাণ্ড-বারণগ্রামণী ইত্যেতেভ্যঃ জনপদাচ্চেত্যকণি প্রাপ্তে শেষেভ্যোহনাদিহৈ-জাতশ্চ নি গ্রহ্বচনাদিত্যকণি প্রাপ্তে বিধানম্।

শিল্কন্থোঞ্চকশ্মীরকিন্ধিদ্দসাল্শন্দিকাঃ।
 মধুমহর্গন্ধারা দরনো গ্রামণী শরঃ।
 উরস্তক্ষশিলাকংসবৎসোদ্ধরণবর্ষটাঃ।
 কৌৎসম্বরচ্ছিয়বদ্ধা অসালঃ কাগুবারণঃ।
 সিংহঃ সম্কৃতিতং কোঠং সিন্ধানে শকলং তথা।।২৬॥

৫১৯। গিরেরীয়ঃ শস্ত্রজীবিনি। হালোলো গিরিঃ পূর্বকঝন্ধবনিবাসোহস্ত হালোলীয়ঃ শস্ত্রজীবী অমুগঞীয়ঃ।

৫২০। শশ্তিকাদের্যণ্। শাণ্ডিকাঃ। শশ্তিক সর্ববৈদন সর্ববৈদশ শক্ত শক্তরক শৃষ্থ বোধা কূচবার। ৮। ঃ

৫২১। তৃদীবর্দ্মতীভ্যাং টেয়ণ্। তৌদেয়ঃ বাশ্মতেয়ঃ।

৫-২। শলাজুরাদীয়ণ্। শালাজুরীয়ঃ।

৫২৩। তৎদেব্যে , শ্রুমন্ত্রাভক্ত শ্রোমির)

৫২৪। অদেশকালাদচেতনাটিকণ্।

- (৫১৯): গিরিধাচকাছকাৎ তৎপূর্ক্রান্ধবিনিরাসে শক্তরীবিনি বাচ্যে ঈয়ো ভবতি: শগজাবিনীতি কিম্ থকোদঃ পর্বতঃ পূর্ক্রান্ধবনিবাদো-২স্ত বিপ্রস্থা আর্ফেনিঃ ।
- (৫২০)। শণ্ডিক ইত্যেৰমাদিভাস্তংপূৰ্ক্ষ্মক্ৰীবাদে বাচ্যে যণ্ ভৰতি।
- (৫২১)। তুদী বন তী ইত্যেতান্ত্যং তৎপূর্কাধান্ধবনিবাদে বাচ্যে টেয়ণ্ ভবতি।
 - (४२२)। भना इवसमा उ९ श्रृतिवामविन नारम नारम केशन् उनि ।
- (৫২৩)। স সেব্যোহস্স স তংসেবাঃ তল্ভিন্ভবতি। ্অগান্যভংপন্বাচ্যং ততঃ প্ৰত্যঃ।
 - ं ৫২৪ । । দেশবাতিকালবাডিশ্ৰুব্যতিরিকাদচেতনবাচিনঃ শ্রুবিং

আপৃপিকঃ শান্ধুলিকঃ। দেশকালান্তু—শ্রোত্মঃ বৈত্রয়ঃ।

৫২৫ । মহারাজাচ্চ।

মাহারাজিকঃ।

৫২৬। বাস্থদেবার্জ্নাভ্যামকঃ। বাস্তদেবকঃ গর্জনকঃ।

৫২৭। অপত্যপ্রত্য়ান্তাদকণ্।

উপগ্ৰকঃ। অনভিধানাদিহ ন স্থাৎ পাণিনীরঃ পৌরবীয়ঃ।

৫२৮। किञ्जाक।

নকুলকঃ সাহদেবকঃ লালকঃ।

স সেবো যস্ত তামন্ বাচ্যে টিকণ্ডনতি। আপুপিক ইতি অপুপঃ নেবো-২স্তোথঃ।

- (৫২৫)। মহারাজশক্ষাচ্চ তৎসেব্যে বাচ্চো টিকণ্ ভবতি। নাহা-রাজিক ইভি মহারাজঃ সেব্যোহস্তোত্যরঃ।
- (৫০৬)। বাস্থদেব অন্তর্ন ইত্যেতান্তাং তংদেব্যে নাচ্চেংকো ভবজি। বাস্থদেবশদো দেবতাবাচী তম্মাট্রণি প্রাপ্তে বিধানম্। মনীহ ক্ষল্লিয়বাচী স্থান্তনা ক্ষল্লিয়াচেত্যকণাপি দিদ্ধে বাস্থদেবপাদোপাদানমনর্থকং স্থাং। অকণি সতি বন্ধার্যতিদ্ধিতাস্তোহরঞ্জনবিকারয়োরিতি পুংবস্থাবপ্রতি-বেধঃ স্থাদিত্যপি ন বাচ্যম্ অকেহপি ক্ততে তদ্ধিতকোপাস্ত ইতি পুংবস্থাব-নিষেধস্তেস্ট্রত্বাং। অন্তর্নশকাং ক্ষল্লিয়বাচকাদকণি প্রাপ্তে বিধানম্।
- (৫২৭)। অপত্য প্রত্যয়াস্কাজ্মনাৎ তৎসেব্যে বাচ্যেহকণ্ তবতি।
 প্রপানক ইতি উপগোরপত্যম্ ঔপগবস্তস্থাপত্য ইতি টণ্। ঔপগবঃ
 সেব্যোহস্তেত্যর্থেহকণ্। পাণিনীয় ইতি পাণিন্ ইত্যক্ষাট্রণ্ গাণিবিদণিকেনীভ্যাদিন। নকারলুমিষেধ্য আদিস্কৈজাতশ্চেতি ইয়ঃ।
 - (৫২৮)। ক্ষত্রিয়বাচকাচ্ছপাৎ তৎসেয়ে বাচ্যেহকণ ভরতি।

৫২৯। বহুত্বে জনপদরূপাজ্জনপদিনো জনপদ—
বিহিতাঃ।

অক্সাং ক্ষত্রিয়াঃ সেব্যা অস্থ আঙ্গকঃ মদ্রকঃ বৃঞ্জিকঃ। অবহুত্বে
ভু—আঙ্গং আঙ্গো সেব্যাবস্থ আঙ্গকঃ।

৫৩০। তেন প্রোক্তে। ক্ষত্রবন্ধেন প্রোক্তং যাজ্ঞবন্ধম্।

৫৩১। তিত্তিরিবরতস্ত্তখণ্ডিকোখাদীয়ণ ছন্দমি। তিত্তিরিণা প্রোক্তং ছন্দোহধীতে তৈত্তিরীয়ং বারতস্তবীয়ং

⁽৫২৯)। জনপদর্রণমিব রূপং যশ্র স জনপদর্রপঃ জনপদ্যামা জনপদী জনপদিন:। ক্ষত্রিরবাচকাচ্ছদাদহত্বে জনপদশ্র যদ্রপং তদ্রপমাপরাৎ তৎসেব্যে বাচ্যে জনপদবিহিতাঃ প্রত্যায়া ভবস্তি। অঙ্গা ইতি অঞ্জশব্দোহয়ং জনপদ্বাচকঃ ক্ষত্রিয়রপাক্ষনগদাদপত্যবত্যস্ত রাজনি চেতি টণি
ক্বতে আঙ্গ ইতি জনপদিনঃ ক্ষত্রিয়ন্ত বাচকঃ অস্তা বহুত্বে ক্ষত্রিয়ন্তপাজ্জনপদাদ্রাজনীতি টণ্ লুগ্নিধীয়তে। অতো বহুত্বে জনপদসমানরপোহয়ং ভবতি।
তক্ষাং তৎসেব্যেহর্থে জনপদর্রপাপত্তেঃ জনপদাচ্চেতি অত্মুর্ত্তৌ অনাদিস্থজাতশ্চ নিত্যবহুবচনাদিতি বিহিতাহকণ্ ভূতঃ। অবহুত্বে অনাদিস্থকাতশ্চ নিত্যবহুবচনাদিতি বিহিতোহকণ্ ভূতঃ। অবহুত্বে চ যত্র টণ্ লুক্
ন ভূতস্তত্রাপি জনপদর্রপাপত্তিঃ। অঙ্গশব্দাদাঙ্গশব্দাঘা অকণ্ বিধানে
বুদ্ধৌ কৃত্যাং ন কন্ডিদিশেয়ং। এতাবতা মদ্রকঃ বুজিক ইত্যুদাহত্ব্যু।
মদ্রবৃজ্জিশক্ষৌ জনপদ্রবিচকৌ মদ্রাণাং রাজ্বেতি পূর্ব্ববৃদ্ধণ্ মাদ্রঃ বুজীনাং
রাজা ইদস্তাচ্চেতি ণ্যঃ বার্জ্যঃ অত্রাপি বহুত্বে ক্ষত্রিয়েত্যাদিনা লুকি সতি
মদ্রাঃ বুজয় ইতি। বহুত্বে জনপদর্রপাদেব জনপদিনো বাচকান্মদ্রাৎ বৃজিশক্ষাচ্চ তৎসেব্যহর্থে মদ্রবৃজ্বিভাাং ক ইতি কঃ।

⁽৫০০)। তেন প্রোক্তেংর্থে টণ্ ভবতি। অর্থাদ্যন্তেন ইত্যনেন নির্দিষ্টং তত্মাৎ প্রত্যয়ঃ। প্রকর্ষেণ উক্তং প্রোক্তং ব্যাথ্যাত্মধীতং বা ন তু কৃতম্ অন্তথা তেন ক্তে গ্রন্থে ইত্যনেনাভিন্নতা স্থাৎ।

⁽৫৩১)। তিন্তিরি ইত্যেবমাদিভান্তেন প্রোক্তেহর্ষে ছন্দি । বাচ্যে ঈরণ্ ভবতি। তৈন্তিরীয়ং ছন্দঃ তদ্বেতি তদধীতে বা ইতি

খাণ্ডিকীয়: ঔথীয়:। অছন্দসি তু—তিত্তিরিণা প্রোক্তঃ শ্লোকঃ তৈতিরঃ।

৫৩২। ছগলিনো গেয়িন্। ছগলিনা প্রোক্তং ছন্দোহধীতে ছাগলেয়ী।

৫৩৩। শৌৰকাদের্ণিন্।
শোনকেন প্রোক্তং ছন্দোহধীতে শৌনকী। শৌনক বাজসনেয়
শার্জ রব সাপেয় শাম্পেয় খাড়ায়ন স্কন্দ স্কম্ভ দেবদর্শ রজ্জ্ভার
রজ্জ্কণ্ঠ কঠশাঠ কষায় তলবকার পুরুষায়্ব।১৫। * ছব্দসীতোব। শৌনকীয়া শিক্ষা।

৫৩৪। অকলাপিনো বৈশস্পায়নশিষ্যাৎ। অলম্বিনা প্রোক্তং ছন্দোহধীতে আলম্বী। অলম্বি ক**লিঙ্গ**

ঈয়ণস্তাট্রণ্ তম্ম প্রোক্তাদিতি লুক্। প্রোক্তানি ছন্দোরাহ্মণানি তদ্বেদিতৃতদধ্যেতৃবিষয়াণ্যেবেতি নিয়মং বক্ষাতি অত আহ তিত্তিরিণা প্রোক্তং ছন্দোহধীতইতি।

- (৫০২)। ছগলিন্ ইতাস্থাৎ তেন প্রোক্তে ছনসি বাচ্যে ণেয়িন্ ভবতি। ছগলিনো বৈশম্পায়নশিষ্যস্থাৎ ণিনি প্রাপ্রে বিধানম্। ছাগলে য়ীতি পূর্ক্বদত্র টণ্ তম্ভ লুক্। এবম্ভরত্রাপি ডাইবাম্।
- (৫৩৩)। শৌনক ইত্যেষমাদিভাইস্কন প্রোক্তে ছন্দির বাচ্যে ণিন্
 ভবতি। শৌনকাদৌ যে আদিক্তিজাতক্তেভাঁ ঈয়স্ত শেষেভাস্ক টণাোহপবাদঃ। কঠ শাঠ ইতি সম্দিতস্থাত্র গ্রহণম্। কঠশাঠাভ্যাং প্রোক্তমধীতে
 কাঠশাঠীতি কেবলাৎ কঠশকাৎ প্রোক্তন্ত্রং বক্ষ্যতি।
 - (৫৩৪)। কলাপি । তিরিক্তাদৈদশ্লায়নশিষ্যবাচকাচ্ছন্দাত্তেন প্রোক্তে

শোনকবাজসনেয়ো শার্জরবকষায়শাপেয়াঃ।
 খাড়ায়নপুরুষায়য়েয় কলক্সন্তৌ চ শাম্পেয়ঃ।
 কঠশাঠরজ্জুভারৌ রজ্জাদিককণ্ঠদেবদশোঁ।
 তদয় চ তলবাৎ কারঃ পঞ্চশামী বুধৈকক্রাঃ॥ >

কম্বল ঋষভ আরুণি তণ্ডু শ্যামায়ন কঠ কলাপিন্ হরিক্র ছগলিন্
তুম্মুরু উপল। এতে ত্রয়োদশ বৈশম্পায়নশিষ্যাঃ। ১৩।
কলাপিনস্তা। কালাপঃ। *

৫৩৫। ঋষিবাচিকাশ্যপকৌশিকাৎ কল্পে। কাশ্যপেন প্রোক্তং কল্পমধীতে কাশ্যপী কৌঞ্জিকী। অনৃষিবাচিনস্ত কাশ্যপগোত্র: কাশ্যপ: তেন প্রোক্তং কাশ্যপীয়ং।

তেও। পারাশর্যশিলালিভ্যাং ভিক্সুনটসূত্রয়োঃ। পারাশর্যেণ প্রোক্তং ভিক্সুসূত্রমধীতে পারাশরী ভিক্ষুং শিলালিনা প্রোক্তং নটসূত্রমধীতে শৈলালী নটং।

ছন্দদি বাচ্যে শিন্ ভবতি। এতে ত্রয়োদশ বৈশম্পায়নশিষ্যা ইতি।
অত্র হরিজ্বাদয় চত্বারঃ কলাপিনঃ শিষ্যাঃ প্রতিশিষ্যত্বাহৈশ স্পায়নশিষ্যা
উচ্যস্তে। ছগলিনো শেয়িন্বাধক উক্তঃ। কঠালুকং বক্ষাতি। শৌনকাদেরেবারং যোগঃ প্রপঞ্চঃ। অত্রবাবিশেষাৎ কঠন্ত শিষ্যঃ থাড়ায়নো
বশস্পায়নপ্রতিশিষ্যোহপি শৌনকাদৌ প্রতিঃ।

(৫৩৫)। ঝিষবাচকাৎ কাশ্যপশকাৎ কৌশিকশকাচ তেন প্রোক্তে কল্লে বাচ্যে নিন্ ভবতি। যজ্ঞকর্ম্মণান্ত্রে স্বিধারিধারকো গ্রন্থঃ কল্পঃ। ছন্দসাতি কেচিদত্রান্ত্রবর্ত্তরতি তেন প্রোক্তং ছন্দোহধীতে অয়মপি কাশ্যপী কৌশিকী।

(৫৩৬)। পারাশগ্য শিলালিন্ ইত্যেতাভাাং তেন প্রোক্তেংর্থে যথাক্রমং ভিক্তুত্তে নটকুত্তে চ বাচ্যে ণিন্ ভবতি। পারাশর্যাশকো গর্গাদিয়ণস্তস্ততো ণিনি ক্বতে অপত্যম্ভানাতীতি যকারলুক্। শৈলালী জি অনীতদ্বিতাচ্যয়োশ্চেতি নকারলুক্।

অলমিন্দ্রগলী তণ্ড; কলিঙ্গং কন্মলোহরুণিং।
 শ্রামায়নঃ কলাপী চ হরিক্রস্তব্রপলো।
 শ্বামায়নালিতাং। ১০।

৫, । ঋষিণা প্রোক্তয়োত্র ক্লিণক প্লয়োর্যাজ্ঞ-বল্ক্যাদেঃ।

শাট্যায়নেন প্রোক্তং ব্রাহ্মণমধীতে শাট্যায়নী পিঙ্গেন প্রোক্তঃ কল্লঃ পৈন্সী। যাজ্ঞবৃদ্ধ্যাদেস্ত যাজ্ঞবন্ধঃ আশ্বরণঃ শোলভনঃ।

৫৩৮। কর্ম্মকৃশাখাভ্যামিন্ । কর্মানেন প্রোক্তং ভিক্সূত্রমধীতে কর্মানী কৃশাখেন প্রোক্তং নউসূত্রমধীতে কৃশাখা।

৫৩৯। তেনৈকদিশি। স্থদাল্লা সমানা দিক্ সোদামনী বিহ্যুৎ।

৫৪০। তদিশ্চাব্যয়ম্। হিমবতা সমানা দিক্ হিমবতঃ।

⁽৫০৭)। ঋষণা প্রোক্তে রাহ্মণে কল্লে চ বাচ্যে যাক্তবন্ধ্যানিশান্তি-রিক্তাচ্ছেশ প্রিন্ ভবতি। বৈদিকানাং ছন্দোব্যাথ্যান গঙ্কো ত্রাহ্মণঃ। শাট্যায়নীতি শাট্যশক্ষণে গর্গাদিষণস্তাৎ পৌত্রাদিষণিশস্তাচ্চেতি গারনঃ। পৈঙ্গীতাত্র তু তেনেনিভূতদপ্যভূবিষয়তা নান্তি। ছন্দোব্যহ্মণবাতি বিক্ত-হাৎ কল্পন্থ যাক্তবন্ধ ইতি। যাক্ষ্ণবন্ধাশকাৎ গর্গাদিষণস্থাৎ প্রোক্তে রাহ্মণে বাচ্যে পৌত্রাদি প্রত্যাস্থাৎ শকলাদেশিতি টণ। প্রোক্তাপিকার-বিভিত্তশন্থাবাৎ নামনিভূতিসপ্যক্তবিষয়তা নাভাতা।

⁽৫৩৮)। ভিজ্নটস্ত্রোরেতার্বর্গতে। কর্মে কশাখ ইত্যেতাভ্যাং ব্যাক্রমং ভিক্স্ত্রে নিম্ত্রে চ কেন প্রোক্তে বাচ্যে ইন ভবতি।

⁽ ৫৩৯)। তেনেত্যসূত্তী প্রক্রেনতি পদমত্রোত্রয়েরপি যোগয়োঃ
স্পিটার্থম্। একশবস্তল্যার্থঃ। তেনোত তুল্যার্থেরতুলোপমৈর্নতি তৃতীয়া।
তেন সমান্দিশি বাচ্যে টণ্ ভবতি। অর্থাদ্যত্তনেত্যনেন নিন্দিউং তক্ষাৎ
প্রতায়ঃ। সৌন্মনীতি অভাবকর্ষায়ে চেত্যানিনা নকারল্গিষেধঃ।

⁽৫৪৯)। তেনৈকদিশি বাচ্যে তসিশ্চ প্রত্যাস্থা ভবতি। সোহব্য-মুমু পূর্মবিধানসমাবেশার্থশহকারঃ নতু বাবকঃ।

·৫৪১ † উরসো যশ্চ। উরস্তঃ উরস্থাঃ।

৫৪২। তেনোপজ্ঞাতে।

আপিশলিনোপজ্ঞাতং আপিশলম্।

৫৪৩। তেন কৃতে গ্রন্থে।

বর্রুচিনা কৃতঃ শ্লোকঃ বাররুচঃ।

৫৪৪। মাক্ষিকাদেঃ সংজ্ঞায়াম্।
মাক্ষিকয়া কৃতং মাক্ষিকং মধু। মাক্ষিকা গমু ৎ পুত্তিকা ক্ষুক্ত শরঘা ভ্রমর বরটা বাতপেত্যাদি।৮।*

৫8৫। कूनानारमंत्रकण्।

কুলালেন কৃতং কৌলালকম্। কুলাল দরুড় চণ্ডাল শ্বপাক নিষাদ কর্মার কুন্তুকার সেনা গিরিক ুদেবরাজ পরিষদ্ বধূ ব্রাক্ষণ উরু অনজাহ ইত্যাদি। ১৫। গ

(৫৪৫)। কুলালাদেস্তেন ক্তে বাচ্যেংকণ্ভবতি।

মক্ষিকা পুত্তিকা ক্ষুত্রা শর্মা ভ্রমরগমু তৌ।
 বরটা বাতপোহন্তেহপি মক্ষিকাদৌ প্রকীর্ত্তিতা:। ৮।
 কুলালকর্মারনিষাদদেনা: খপাকচণ্ডালবধ্রবন্ধ।
 তাৎ কুম্ভকারো বন্ধড়োহপানড়ান্ গিরেস্তকো ত্রাক্ষণদেবরাজৌ
 পরে: ষদত্তেহপি কুলালমুখ্যা বুধৈ: প্রযোজ্যা: কিল শাসনেন। ১৫।।

⁽ ৫৪১)। অব্যয়মিতি তদেঃ সম্বন্ধেনালুবর্ততে। উরঃশকাৎ তেনৈক-দিশি বাচ্যায়ামব্যুয়ং তসির্ভবতি যশ্চ।

⁽ ৫৪২⁻)। বিনোপদেশেন জ্ঞাতমুপজ্ঞাতং তেনোপজ্ঞাতে বাচ্যে টণ্ ভবজি ।

⁽৫৪°)। তেন ক্তে স্থামুৎপাদিতে গ্রন্থে বাচ্যে টণ্ ভবতি। গ্রন্থ ইতি কিম্। তক্ষা কৃতঃ প্রাদাদঃ।

⁽৫৪৪)। মক্ষিকাদে: শক্ষাৎ তেন ক্বতে বাচ্যে সংজ্ঞায়াং বিষয়ে টণ্ ভবতি। মাক্ষিকমিতি মধুন: সংজ্ঞা অক্তৈব গামু তমিত্যাদ্যপি। মাক্ষিকাদিপদেন মধুমাদকা এব ক্ষুদ্ৰজন্তবোহত গৃহন্তে।

৫৪৬। তদ্যেদম্। সমুদ্রস্থেদং সামুদ্রম্।

৫৪৭। নানস্তরাদিষু। সমুদ্রস্থানস্তরমিত্যাদু।

৫৪৮। বোঢ়ুর্বহিত্রশ্চ। বাহিত্রম্।

৫৪৯। আথর্বণিকাদথর্বণশ্চ।

আথর্বণিকস্থ ধর্ম্মঃ আন্ধায়ো বা আথর্বণঃ। অনভিধানাদিহ
ধর্মান্ধায়াভ্যামন্থত্ত ন স্থাৎ। আথর্বণিকস্থ গৃহম্।

⁽৫৪৬)। তত্তেদমিত্যম্মিরর্থে ট্রণ্ডবতি। যৎ তৎপদেনোদিঞ্জ তম্মাদিদমিতি পদেনোদিঞ্চে বাচ্যে প্রত্যয়ঃ। স্ত্রে লিঙ্গবচনম্ভন্তমিতি সম্বন্ধমাত্রং বিবক্ষিতম্।

⁽ ৫৪৭)। অনস্তরাদিয় বাচ্যেয় টণ্ ন ভবতি। তভেদমিতি সম্বন্ধমাত্রে বিহিতঃ প্রত্যয়স্ত স্থানস্তরমিত্যাদ্য স্মিন্নর্থে স্থাদিতি প্রতিষেধঃ। আদিনা সমীপদ্রাদেপ্রহিণম্। য়ত্র যত্র তক্তেদমিত্যর্থে। ন প্রতীয়তে সোহস্থ বিষয়ঃ। অভিধানলক্ষণা হি তিঙ্কত্তিক্তসমাদা ভবস্তীত্যকৈর স্থায়ক্ষেয়ং স্পষ্টতা।

⁽ ৫৪৮)। বোঢ় ইত্যমান্তভেদমিত্যমিন্নর্থে টণ্ ভবতি। বোঢ়ুঃ স্থানে বহিত্রাদেশশ্চ। বহেস্ত্তস্তাদপি টণ্ সিদ্ধ এব আদেশার্থং বচনম্। সংপূর্বান্ত্রসাংবহিত্তম্।

⁽৫৪৯)। আথর্কনিক ইত্যক্ষাৎ তন্তেদমিত্যর্থে টণ্ ভবতি।
অথর্কন ইতি চাদেশঃ। আথর্কন ইতি অথর্কনা প্রোক্তমিতি টণ্
পূর্কবন্ধকারলুগ্নিষেধঃ। আথর্বন ইতি স্থিতে তদ্বেত্তি তদধীতে বেত্যক্
রুত্তৌ বসস্তোক্থাদেশ্চেতি টিকন্ আথর্কনিকঃ। গণপাঠসামর্থ্যাৎ প্রোক্তাদিতি নলুক্ ততপ্টণাদেশে। সম্বন্ধমিতে এতৎপ্রত্যন্ত্রবিধানম্। কথমর্থবিশেষোপস্থানঃ ইতি চোদ্যপরীহারান্বাহ অসভিধানাদিত্যাদি।

৫৫০। বাহনাগ্নট্।হস্তিন ইদং হাস্তম্ আর্বতম্।

৫৫১। তৎপূর্বাচ্চ।

হাস্তিচর্ম্মন্।

৫৫২। হলসীরাভ্যাং টিকণ্। হালিকং সৈরিকম্।

৫৫৩। বৈবতিকাদেরীয়ঃ। বৈবতিকীয়ম্। বৈবতিক স্বাধিশি ক্ষোমধ্ব শোরগ্রীৰ ঔদমেদ্বি উদবাপি বৈজবাপি। ৭%।

⁽ a c •)। বাহনবাচকাচ্জ্লান্ত্র্লেদ্মিতার্থে গড়্ভবভি। উৎদর্গিকে ট্রি সিদ্ধে নড়্বিধানং হাস্ত্মিত্যন্ত্র নলুগর্থম্ অভ্যথা গাখাত্যাদিনা সুজ্ঞাদিন্ধান্ত্রিধ্যের সভি হাতিন্মিত্যান্ত্রিগং ভাগে। বাহনাগান্ত এবার্থে
প্রত্যায়ঃ। অশ্বভেদং বহনীয়্মান্মিতি জ্য়াদিত্যাক্তমিত নালীক্তং
ভাষ্যকার্বিরোধাৎ।

⁽৫৫১)। বাহনবাচকপূর্কাত্তেশমিতার্থে গড় ভবতি। হান্তিচর্মমিতি অনীতদ্ধিতাচ্যয়ে।শ্চেতি নকারলুক্ অভাবকর্মমে চেত্যাদিনা
নিষেণস্ত টণি। বাহনপূর্কাত্রপাদয়ং প্রত্যয়ঃ। আশ্বর্যং চক্রমিতি জয়াদিত্যব্যাথ্যানমিহ নাঙ্গীক্রতং ভাষ্যকার্বিরোধাৎ। আপ্রব্যবং পারিষদ্মিতি
তস্তেদমিতি টলৈব দিদ্ধং নাত্র ণটা কণ্ডিৎ বিশেনঃ এতাবতা অপ্রযুগ্রপরিষদশ্চিত পাণিনিস্ত্রে বিদ্যানমপ্রযুগিরষদ্গ্রহণং তদিহোপেক্ষিতম্।

⁽ ৫৫২)। হল সীর ইত্যেতাভাং ত্রেদমিত্রান্মরর্থে টিকণ্ভবতি।

⁽৫৫৩)। বৈবতিকাদেস্তম্ভেদমিত্যস্মিন্নর্থে ঈরো ভবতি। বৈব-তিকাননোহপত্যপ্রতারাস্তাম্ভেভ্য উত্তরস্ত্রেণাকণি প্রাপ্তে বিধানম্।

ইরবভিকক্ষোমগ্ববিশোরগ্রীবোদমেগয়ঃ।
 উদবাপিবৈজবাপিঃ স্বাপিশিঃ মপ্ত ঈরিতাঃ। १।

- ৫৫৪। হাস্তিপাদকোপিঞ্জলবর্জমপত্যপ্রান্তা-দকণ্। । উপগ্রকম্।
- ৫৫৫। নান্তেবাসিদগুমাণবয়োঃ। দাক্ষেরন্তেবাসী দণুপ্রধানমাণবো বা দাক্ষ্ণ।

৫৫৬। ণড়িণ্ যণস্তাৎ সভ্যান্ধযোষলক্ষণেয়ু। বৈদস্য সংযো বা অন্ধো বা বেদগো বা লক্ষণং বা বৈদঃ দাকে-দক্ষিঃ সাগ্যন্ত গাৰ্গঃ।

বৈবতিকীয়মিতি রেবত্যাদেণিক ইতি ণিক:। স্বাপিশ্রাদয়ো ফে ইকারাস্তা জত্র পঠ্যন্তে তে অদস্তাচ্চেতি ইণস্তা:। ক্ষোমধৃত্বিশক্ষো গহাদৌ পঠ্যতে তম্মাদীয়ঃ সিদ্ধ এব তম্মেদমিতার্থে বিভিত্তনাকণা বাধ্যতে তথাধনার্থঃ পাঠ:।

- (148)। হান্তিপাদক্ষেপিঞ্জলশকৌ বর্জ মিত্বা অপত্যপ্রত্যয়ান্তাচ্চন্দান্তভেদমিত্যথেঁহকণ্ ভবতি। উপগবকমিতি উপগোরপত্যমিতি
 টণন্তাদকণ্। অত্যোদাহরণে ণিংকরণে অকরণে চ বিশেষো ন দৃশুতে
 তত্মাদ্মৌচুকায়নকমিত্যুদাহরণং যুক্তং মুচুকশন্দাদনাদিকৈ লাভাত বায়নিরিতি আয়নিস্ততাহকণ্ মৌচুকায়নকঃ। হান্তিপাদকৌপিঞ্জলশন্দরাঃ
 পুনবৌৎসর্গিন্দুলৈব হন্তিনঃ পাদাবিব পাদাবস্তেতি ইন্তিপাদঃ হন্তিপাদজাপত্যং কুপিঞ্জলভাপত্যমিত্যর্থে অদন্তাচেতি ইনি প্রাপ্তে অন্মাদেব নির্দেশাটেণ্ তদন্তান্তস্তেম্পমিতি পুনন্তুণ্। হান্তিপাদ ইতি হন্ত্যাদিত্তাৎ উপমানাদহন্ত্যাদেঃ পাদভ্রেতি অকারলোপো ন ভবতীতি সমাসক্তাল্লোপভ্র পাদঃ
 শ্বাদ্যিত ভদ্ধিত্বে চেতি হন্তো ন ভবতি।
- (৫৫৫)। তত্তেদমিত্যর্থে পূর্ব্রলক্ষণেন প্রাপ্তোহকণ্ অন্তেবাদিনি
 দশুমাণবে চ বাচ্যে ন ভবতি। দশুপ্রধানমাণবাে বেত্যর্থোপদর্শনেন দশুপ্রধানো মাণবাে দশুমাণব ইতি ময়ুরবাংসকাদিছাৎ সমাসং কছা তৎপুরুযাদৌ সংস্কৃতাদেনিতামিতি প্রধানশদলােপঃ করণীয় ইতি স্থচিতম্। দাক্ষ্
 ইতি অদ্স্তাচেতীণ্ ততন্ত্বণ্।
 - (৫৫৮)। ঀট্ইণ্যণ্ইত্যেবমস্তাঞ্কাৎ তত্তেদমিতার্থে পুর্বেণ

৫৫৭। শাকলাদ্ধ। শাকল্যেন প্রোক্তমধীতে শাকলঃ তম্ম সংঘাদিঃ শাকলকঃ শাকলঃ।

৫৫৮। চরণাদ্ধম দ্বায়ায়ো:। কঠস্থ ধর্ম: আত্রায়ো বা কাঠকঃ কালাপকঃ।

৫৫৯। ওক্থিকযাজিকচ্ছনেদাগবহব্চনটাদ্যণ্। ওক্থিক্য ৰাজ্ঞিক্যং ছান্দোগ্যং বাহব্চ্যং নাট্যম্।

প্রাপ্তোহকণ্ সঙ্গাতাদিয়ু বাচ্যেয়ু ন ভবতি। বৈদ ইত্যাদি বেদাং বিদাদেশজিতি পড়স্তাং দাক্ষেরদন্তাচ্চেতীপস্তাং গার্গাং গর্গাদের্যণ্ পৌল্রাদাবিতি
যপস্তাং অক্রণ্নিষেধে ঔৎসর্গিক্টণ্। আছো গ্রাদিস্থো ন গ্রাদীনাং
সম্ভবতি কিন্তু গ্রাদিস্থামিনঃ লক্ষণন্ত দেবদন্তস্থং দেবদন্তইভ্রেত্যক্ষাক্ষণয়োভেদঃ উভয়োপাদানাং গোবলীবদ্বিদিহান্তিতঃ।

- (৫৫৭)। শাকলণকাৎ সজ্বাদিয় বাচ্যেষ্ব অকণ্ বা ভবভি। শাকল ইতি শাকল্যশ্বাৎ গ্র্মাদের্থান্তাৎ পৌক্রাদিপ্রত্যয়াস্তাৎ শকলা-দেরিতি তেন প্রোক্তেহর্থে টণ্ ভরতি। অপত্যস্থানাজীতি বকারলোপঃ ততস্তব্বেত্তি তদধীতে বেতি পুনষ্টণ্ তম্ম প্রোক্তাদিতি লুক্ ততোহকণ্ তেষাং সংঘাদিঃ শাকলকঃ।
- (৫৫৮)। চরণা বেদৈকদেশনিমিত্তে পুরুষে বর্ত্তমানাঃ কঠানয়:।
 চরণবাচকাৎ শকাৎ ধর্মো আমায়ে চ বাচ্যেৎকণ্ ভবতি। আমায়ঃ পাঠপরম্পরা। কাঠক ইতি কঠেন প্রোক্তং বেদমধীতে ইতি কঠশন্দানকলাপিনো বৈশম্পায়নশিব্যাদিতি প্রোক্তেইর্থে নিন্ ওভন্তপ্ কঠচরকাভ্যাং বেদে প্রোক্তন্ত চেতি দ্রোলুক্ তন্ত ধর্ম আমায়ো বেত্যর্থে
 হকণ্। কালাপক ইতি কলাপিনা প্রোক্তমিতি টণ্ তদ্ধীতে ইতি ভতন্তণ্
 প্রোক্তাদিতি তন্ত লুক্।
 - (৫৫৯)। উক্থিকাদিভো ধর্মে আমায়ে চ বাচ্যে যণ্ ভবতি।
 বহুবৃচশবং সুদ্রে উদাহরণে চ বহুষু পুস্তকেষু দিপিকরপ্রমাদাৎ পতিতঃ
 বাহ্বৃচাম্। উক্থিকশবং সামব্যাখ্যানাধ্যেত্বচনঃ ঘাজ্ঞিকশব্দো বজ্ঞবিদ্যাধ্যেত্বচনঃ ছন্দোগঃ সামবেদী বহুবৃচ শ্বেদী।

৫৬০। বিবাহে দ্বন্দাদকঃ। অত্যিভরম্বাজিকা।

৫७>। जारमवाञ्चलारमरेर्वदत्र।

कारकानृकिका । रनवाद्धतारमञ्ज-रेनवाञ्चतः तारकाशक्षर्वम् ।

৫৬২। রথাঙ্গে রথরথাক্তাদ্বৎ।
 রথ্যং চক্রৎ পরমরখ্যম্।

৫৬৩। অগ্নীধোগৃহে রণ্।

আগ্নীধ্রম্।

৫৬৪। সমিধ আধানে টেন্সণ্।
সামিধেন্যো মন্ত্রঃ সামিধেনী ঋকু।

- (৫৬০)। দ্বন্দ্যমাসনিশক্ষাৎ শব্দাৎ তংসম্বন্ধিনি বিবাহে বাচ্যেহকো ভবতি। অত্রিভারদাজিকেতি অত্রেরপত্যানীতি ইদস্তাচ্চানিণস্তাদিত্যে-য়ণ্ য দ্বাদেরপত্যার্থপ্ত বহুত্বেহন্ধিয়ামিত্যেয়ণ্ লুক্ ভরদাজস্ত অপত্যানীতি বিদাদিতালট্ অগোপবনাদেশ ট্ ইতি তম্ম লুক্ অত্রীণাং ভরদ্বাক্ষানাঞ্চ বিবাহ ইতি দ্বন্দাককঃ স্বভাবাং স্ত্রীলিক্ষঃ অদিৎস্ত্রাদন্তেকে ইতি অকারস্কোকরঃ।
- (৫৬১)। দেবাস্থরাদিব্যতিরিক্তাচ্ছকাৎ দ্বন্দ্রমাসনিষ্পন্নাৎ তৎসক্ষিনি বৈরে বাচ্যে অকো ভবতি।
- (৫৬২)। রথশনোহস্তো যশু স রথান্তঃ রথশন্ধাৎ-রথান্তশন্দাচ্চ তৎ-সম্বন্ধিনি রথাবয়বে বাচ্যে যদ্ভবতি। রথাং চক্রং যুগং বা। রথাঙ্গ ইচ্ছি কিম্ ? রথশু স্থানমিত্যাদৌ ন শ্রাৎ তদ্বহতি যুগাদেরিত্যনেন তু কুতা রথাং রথাঙ্গ গতিরিক্তার্ণেহপি দৃশ্যতে।
- (৫৬৩)। অগ্নীধ ইত্যক্ষাৎ তৎসম্বন্ধিনি গৃহে বাচ্যে রণ্ডবতি। অগ্নিমিনতে ইতি ইন্ধী দীপ্তো ইত্যমাদস্তর্জাবিতণার্থাৎ কিপ্ অগ্নীদিতি হোতোচ্যতে।
 - (६ ५ 8)। সমিধ ইত্যমাৎ তৎসৰ্শ্বিকাধানে বাচ্যে টেক্তণ্ ভবতি 🚶

৫৬৫। ভস্ম বিকারে। মুক্তিকায়া বিকারে। মার্তিক:।

৫৬৬। ত্ৰপুজতুভ্যাং মুশ্চ। ত্ৰাপুষং জাতুষং ত্ৰাপুষী জাতুষী।

৫৬৭ । পরশ্ব্যাদ্যলুক্ চ। পরশ্ব্যস্থ বিকারঃ পার্শবঃ।

৫ ৮৮। ব্যক্ষিধিভ্যামংশে চ। পালাশং দেনিবিম্।

তৎসম্বন্ধাৎ সমিধ আবীষত্তে মেন মন্ত্রেণ স এবাত্রাধ্যনশব্দেনোচ্যতে। সামিধেনীতি টিব্রাদীপ্রত্যয়ে ক্তে হলগুদ্ধিতভেতি যকারলুক্।

(৫৬৫) তম্ম বিকারে বাচ্যে টণ্ ভবতি। যন্তচ্পোপান্তং ততঃ
প্রভায়:। প্রক্তেরবস্থাস্তরং বিকার: কারণস্থান্তম্পাদ্মত্যর্থ:। মার্ত্তিক মৃত্তিকাশকাৎ আদ্যাদান্তবাদমূলান্তাদেশেচতি পটোহ্ বিষয়:। শৈষিকার্থা নিরন্ত: তেন হালঃ সৈরঃ বিকারে হল্পীরাভ্যাং টিক্ণিতি টিকণ্ নভবতি। রুদ্দীনাং বিকারো বার্জং মদ্রক্তিশ্যং কইতি কো নভবতি। বৈগ্রে ইতি জনপ্রাচ্চত্যকণ্ নভবতি।

(৫৬৮)। ত্রপু জতু ইত্যেতাভোং তম্ম বিকারে বাচ্চে উণ্ ভবতি। তৎসন্নিযোগে যুরাগমণ্ড।

(৫১৭)। পরশব্য ইতি পরশু ইত্যাত্মাৎ তথ্য হিতাদাব্দস্তগবাদে-র্মদিতি যথ। পরশব্যাত্তস্থ বিকারে বাচ্যে টণ্ ভবতি যকারলুক্ চ। হল-স্কাজিতান্তেতি যকারলুকাত্র ন ভবতি দ্বী ক্রকারে তম্ভ লুখিধানাং।

'(৫৮)। বৃক্ষবাচকাদোষধি-বাচকাচ্চ তত্ত বিকারে অংশে চ বাচ্চে ট্রন্ ভবতি। পালাশমিতি পলাশস্থ বিকারো ভস্মাদিঃ অংশোহবরবঃ কাণ্ডাদিবাচ্যঃ। পূষ্পবস্তঃ ফলবস্তুণ্চ বৃক্ষাঃ ফলপাকাস্তাঃ ওমধরঃ। এত-লক্ষণে ন প্রাপ্তেস্ত টণো বাধকা অপি বক্ষ্যমাণাঃ প্রত্যরা বিকারে অংশে চ বিধীয়ন্তে। তত্ত বিকার ইত্যানেন তু.প্রাপ্তস্ত টণো বাধকা বিকার এব।

৫७२। विवादमभ्छ।

বিল্পত্ত বিকারী বংশো বা বৈল্প:। বিল্প ব্রীছি কাণ্ড মুদ্র মসূর গোধ্ম ইক্ষু বেণু গবেধুকা কর্পাসী পাটলী কর্কন্ধু কুটার বার্হিণ ইন্দ্রাণিকা ইন্দ্রস্থারিষ্ ইন্দ্রায়ুধ বরুণ স্থামাক পীয়ুক্ষা। ২০।

৫৭০। তালাদ্ধকুবি।

তালং ধনুঃ। অন্যত্র—তালময়ম্।

৫৭১। হাটকার্থান্মানে।

হাটকো নিক্ষঃ জাতরূপঃ কার্বাপণঃ। অমানে তু ন্যপ্তিরিয়ং হাটকময়ী।

৫৭২। বিকারার্থাৎ কাংস্থামীনপারশবাৎ।

- (৫৬৯)। বিবাদেশুশু বিকারে 3ত খ্রাংশে চ বাচ্চা টণ্ ভবতি। কাওবার্হিণখামাকেভা আদি সৈঞ্জাদিত্যাদিনা ময়টি প্রাপ্তে শেষভাস্থ বিবাদিভ্যাংস্দাপ্তাদেশেততি পটি প্রাপ্তে বিধানম্। যদি পট্ স্থান্তদা কংশার্থাচিত্যাদিনা পড়ন্তার্টণ্ স্থাৎ টণি তুময়ড্ ভবতি।
- (৫৭০)। তালশকাত্ত বিকারে ধছুমি বাচ্যে টণ্ ছবতি। তাল-ময়মিতি আদিস্কৈলিড্যাদিনা ময়টু।
- (১৭১)। হাটকং স্থবর্ণং ভরাচকেভাঃ শব্দেভা। মানে বাচ্যে টণ্ ভবতি। যেহত্রাদিকৈজাততেভা ময়টি ইতরেভাস্ক অমুদাভাদেশ্চেভি পটি প্রাপ্তে বিধানম্। কথং পুরীং দ্রক্ষাও কাঞ্চনীম্। কাঞ্চনী বাস-যষ্টির্মানার্থাভাবাৎ কর্তব্যাহত্ত যত্ত্বঃ।
- (৫৭২)। বিকারার্থেভা: কাংস্তাদিভাত্তত বিকারে২২শে চার্থে উণ্ ভবতি। কাংস্তমিত্যাদি কংসাম ইদমিতি বিকারাৎ কারণে ভাদর্থেই

^{*} বিষণোধ্মকর্কক্তীরেক্গবেধ্কা:।

য়স্রমূলাকর্পাসীপাটলীবেণুবাহিণা:।

পীযুক্তেল বুং: ব্রীহির্কুলেক্তাণিকে তথা।

ইক্তাৎ ক্রবিয়: আয়াক: ক্রাণ্ড ইথ্যু বিংশতিং । ২০১১:

কাংস্তং শামীনং পারশবম্। অবিকারার্থান্ত —পরশুরু ভবং পারশবং তম্ভ বিকারঃ পারশবময়ম্।

৫৭৩। অংশার্থাচ্চ ণড়স্তোদস্ত লৈতেশেরাই।
শোবং পালাশম্। উণ্ পক্ষেত্—পালাশময়ং দৈবদারবম্ ঐণেন য়ম্। অবিকারাংশার্থান্ত —এণ্যা অপত্যম্ ঐগ্য়ঃ ভক্ত বিকা-রোহংশোবা ঐণেয়ময়ম্।

৫৭৪। গ্রোণিনো ণট্ । ভানো বিকারোহংশো বা লোকিম্বা

ইতি তথ্য হিতে অরাজানেরিতি ঈয়: কংসীয়: তস্ত বিকারে বাচ্যে কংসীয়াৎ যণ্লোপশ্চেয়স্তেতি যণ্প্রত্যয়: ঈয়লোপশ্চ। শমীশনাহিকারে-হর্থে শম্যা নটণিতি নটণ্। পারশবস্ত পূর্বমেব ব্যুৎপাদিত: এতে ক্রয়ো বিকারবিহিতপ্রত্যয়াস্তান্তদ্বিকারার্থে এভ্যন্তশ্।

(৫৭৩)। উদস্তশ্চাসৌ টণস্তশ্চেতি উদস্তটণস্তঃ। বিকারার্থাদংশার্থাচ্চ ণড়স্তাচ্চকাত্বনস্তটণস্তাদৈণেরশকার্চ তক্তা বিকারে অংশে চ
বাচ্যে টণ্ ভবতি। আদিকৈজাদিত্যাদিনা মরটি প্রাপ্তে বিধানম্।
শৌবমিতি খন্ ইত্যুত্মাৎ প্রাণিনো গাঁড়তি অংশে বিকারে চ বাচ্যে গট্
অনীতদ্ধিতাচ্যয়োশ্চেতি নকার লুক্ খাদেরিতি বকারক্রোবাদেশঃ। পালাশমিতি পলাশাদের্বেতি গট্। টণ্পক্ষে দ্বিত্যাদি। যদা পক্ষে বৃক্ষোক্রিভাানংশে চেতি টণ্ ক্রিরতে তদা আদিকৈজাদিত্যাদিনা ময়ট্।
দৈবদারবিন্তি দেবদারশ্লাক্ত বিকারে স্কৃতি টণ্। ঐগেরমিতি
বিকারেহর্থে এগ্যান্থেয়ণিতি টেরণ্। অপত্যার্থে তু স্ত্রীবিহিতপ্রত্যয়াস্তাদিত্যেরণক্তাৎ ময়ট্ অতএব ঐণেরময়ম্। উদস্তাদিতি কিম্? দৌর্বময়ম্। বিকারাংশবিহিতপ্রত্যয়াস্তাদ্বিকারাংশপ্রত্যয়ো ন ভবতীতি ভাষো
ব্যবস্থিতম্ অতএব চল্রো বর্জমানশ্র ন দিরিতি লক্ষণং রুতবান্ বৃত্তিপরস্পরাক্সারিণা তু জুমরমন্দিনা দিতীয়োহিশি প্রত্যয়াইই এব। এতরক্ষণেনাপি
প্রাপ্তি উণো বাধকাঃ প্রত্যয়া বিকারে অংশে চ বিধেয়াঃ।

(৫৭৪)৷ প্রাণিরাচকাচ্ছলাভক্ত বিকারে অংশে চ বাচ্যে গড়,

৫৭৫। অনুদান্তাদেশ্চ। দণ্ডিনো বিকারোহংশো বা দাওঃ।

৫৭৬। রজতাদেশ্চ। রাজতম্। রজত সীস লোহ উড়ুম্বর নীপদার পীতদার ত্রিকন্টক বিভীতক রোহিতক কণ্টকার।২০।#

৫৭৭। পলাশাদেবা। পালাশী পলাশময়ম্। পলাশ খদির শিংশপা ভালন পুরাগ করীর শিরীয় যবাস বিক্ষত।৯। গং

৫৭৮। শম্যা নটণ্। শামীনং শামীনী।

ভবতি। টণি প্রাপ্তে ণড়্বিধানং টণি তু অভাবকর্মাণেচেত্যাদিনা নল্পি-বেধঃ স্থাৎ।

(৫৭৫)। অমুদান্তাদেশ্চ শব্দান্তক্ষ বিকারে অংশে চ বাচ্যে ণড়্-ভবতি। যদ্যত্র টণ্ স্যাৎ তদা সব্রহ্মচারীত্যাদিনা ন লুগ্নিষেধঃ স্থাৎ।

(৫৭৬)। রঙ্গতাদেন্তস্য বিকারে অংশে চ বাচ্যে গড়্ভবতি। যদি টণ, স্থান্তদা রজতস্থ বিকারো রাজতমিত্যাদী অংশার্থাচ্চেত্যাদিনা উণস্তা-টুণু ন স্থাৎ কিন্তু আদিকৈন্তাদিত্যাদিনা ময়ট্ স্থাৎ।

(৫৭৭)। পলাশাদেস্তম্য বিকারে অংশে চ বাচ্যে গড়্বা ভবতি।

(৫৭৮)। শমীশব্দান্তশু বিকারে অংশে চ বাচ্যে নটণ্ ভবতি।

(৫৭৯)। এণীশব্দান্ত বিকারে অংশে চ বাচ্যে টেয়ণ্ ভবতি। গ্রীলিঙ্গনির্দেশাৎ পুংসি প্রাণিনো ণড়িতি গট্ এণং মাংসম্।

রজতং নীপদারশ্চ পীতদার্রবিভীতক:।
 রোহিতক: কণ্টকার: সীসলোহত্রিকণ্টকা:।
 উড় শ্বরশ্চতি দশ প্রোক্তা: হ্যরজতাদিকে। ১০।

† পলাশপুরাগশিরীষশিংশপা বিকল্পতভাদনথ প্রযুদ্দির:।
করীর উক্তোহথ ধবাসসংক্রকঃ পলাশমুখ্যে প্রথিতা অমী নব। ৯ গ্র

৫৮০। পুরুষাচ্চ।

(भोक़र्यग्रम्।

৫৮১। গোপয়দোর্যৎ।

গব্যং পয়স্তম্।

०४२। त्यांका

দ্ৰাম্।

· (b-0) मात्म वयः।

ক্ৰবয়ং মানম্।

৫৮৪। উষ্ট্রাদকণ্

अञ्चेकम्।

৫৮৫। বোমোণভাগ্।

क्षेमम् अमकम् उर्वम् उर्वकम्।

৫৮৬। নান্ধি পিন্টাৎ কঃ। পিষ্টিকা।

⁽৫৮০)। পুরুষশন্ধান্তস্থ বিকারে কস্তাংশে চ বাচ্যে টেয়ণ্ ভবতি।

⁽৫৮১)। গোপরস্ইত্যেতাভ্যাং তস্ত বিকারে অংশে চ বাচ্যে বং স্থাং। একাচ্তাং প্রাপ্তো ময়ট অনেন্দ বাধ্যতে উত্তবস্ত্তেণ চ।

⁽৫৮২)। ক্রশন্তাচ্চ তম্ম বিকারে ক্রংশৈ চ বাচ্যে যৎ স্থাৎ। যোগ-বিভাগ **উ**ত্তরস্থতে ডোরেথামুরত্তার্থঃ।

⁽४৮०)। क्रमनाख्य विकाद व्यरम ह वाटा मान वर्षा रूवि ।

⁽৫৮৪)। উষ্ট্রশকান্তস্থ বিকারে আংশে চ বাচ্যেহকণ্ ভবতি।

⁽৫৮৫)। উমা উর্ণা ইত্যেতাভ্যাং তদ্য বিকারে অংশে চ বাচ্যে-ইকণ্ বা ভৰতি। উমা ওষধিবিশেষঃ উর্ণা মেধাদিলোম। উমাশকাৎ পক্ষে উংসর্গিকষ্টণ্ উর্ণাশকান্ত, অনুদান্তাদেশ্চেতি ৭ট্।

⁽৫৮৬)। পিষ্টশকান্তস্য বিকারে আংশে চ বাচ্যে সংজ্ঞায়াং গম্য-মানায়াং কো ভ্রবতি। পিষ্টাশ্রম্বড়িতি বক্ষাতি ভ্রম্থনার্থমিদ্ধ্য। নক্ষ

ক্টেপ। পরিমাণাৎ ক্রীতার্শবিহিতাঃ।
নিকস্থ বিকার্টরা নৈদ্ধিকঃ শত্যং শতিকং সাহস্রং দ্বিসহস্রং দিসাহস্রং ন্বিনিক্ষং ন্বিনৈদ্ধিকম।

৫৮৮। পিক্রান্ময়ট্। পিক্রময়ম্।

৫৮৯। ত্রীহেঃ পুরোডাশে। ত্রীহিময়ঃ পুরোডাশঃ।

সংজ্ঞায়াং কং বক্ষ্যতি কিমনেন নৈতদন্তি তৎ কুৎসাপমানালাবর্থে বিধী-রতে অয়স্ত বিকারে ইত্যান্তি বিষয়ভেদঃ।

(৫৮৭)। পরিমাণবাচকাচ্ছকাৎ ক্রীতার্থে যে প্রত্যায় বিহিতান্তে তথ্য বিকারেহর্গে ভবস্তি। নৈক্ষিক্ষিতি নিকশকাৎ পরিমাণবাচকাৎ তেন ক্রীতে মূল্যাদিতি ক্রীতার্থে টিকণং বক্ষ্যতি স তদ্য বিকারেহপ্যর্থে ভূতঃ। শতাং শতিক্ষিতি সংখ্যাপি ব্যবচ্ছেদকত্বেনোপচারাৎ পরিমাণগ্রহণেন গৃহতে ইতি শতশক্ষাপি পরিমাণবাচকত্বং শতাদ্যদিকে তদহ ত্যাদাবিভি ক্রীতার্থেইপি বিহিতৌ যদিকৌ তশু বিকারেহপ্যর্থে ভূতৌ। সাহস্রদিতি বিংশতিকাদেই ণিতি তদহ ত্যাদৌ টণ্ দিসাহস্রমিতি হয়োঃ সহস্রয়ো-বিকার ইতি তর্ধিতার্থে দিগুঃ পূর্ববট্টি ক্রতে সংখ্যায়াঃ সংবৎসরসংখ্যম্নো-রিত্যুত্তরপদর্ভিঃ। কার্যাপনসহস্রশত্মানস্বর্ণাস্তাদ্রেতি যথা ক্রীতার্থে বিহিত্যু লুগ ভূতঃ তথা বিকারার্থস্থাপি দিনিক্ষিতি প্রমাণসায়ান্দ্রিত্বেস্প্রামিত্যুত্তরপদর্ভিঃ।

(৫৮৮)। পিইশকাত্সা বিকারে বাচ্চোময়ড্ভবতি। ট্ণোহপ-বাদঃ।

(৫৮৯)। ত্রীহিশন্দাতত বিকারে পুরে।ডাশে বাচ্যে ময়ড্ ,ভবক্তি। বিবাদিখাট্রণি প্রাপ্তে বিধানম্। অত্যত্ত— ত্রৈহম্।

পোঃ পুরীব ইতি বক্তব্যন্। তৎপুরুষে বাচ্চো গোশকাছন্তরে ময়ড্-ভবতি। গোময়ন্। ধ৯০। যবতিলাদসংজ্ঞায়াম্। বক্ষয়ং তিল্পয়ম্। সংজ্ঞায়ান্ত—যাবকং তৈলম⁸।

কে:। আদি দৈওজাদেকাচ্শরাদের ভক্ষ্বস্রয়োঃ। নৈরের শর্ম আমমরং গুরুরং শর্মর্ম। শরুদর্ভ মৃদ্ কুটার তৃণ সোম বল্প । । । । । ভক্ষাকুরয়োস্ত্র- আচং ব্যঞ্জনং বস্ত্রক।

৬৯২। শেষাদ্বা।

দূর্ব মিয়ং দৌর্বং, কম্পোত্ময়ং কাপোতং লোহময়ং লোহম্। অভক্ষ্যবস্ত্রয়োরিত্যেব—মৌদগঃ সূপঃ কার্পাদং বস্ত্রম্।

গবেধুকা রজতোড় মর নীপ দারু বিভীতক পীতদার কণ্টকেভ্য ইতি বক্তব্যম্। ভক্ষ্যবস্তার্থং বচনম্। এভ্যো বিকারে অংশে চ বাচ্চো ময়ড্ বা স্থাৎ। গবেধুকাশকাৎ টণি রজতাদিভ্যো ণটি প্রাপ্তে বিভাষা। গাবেধুকং গবেধুকাময়মিত্যাদি।

⁽ ৫১০)। ববশকাত্তিলশকাক্ত তস্তাবিকারে বাচ্যে অসংজ্বায়াং গম্য-নানারাং ময়ড়্ভবতি। যাবকমিতি যাবশকাটণস্তাৎ যাবাদেশ্চেতি স্থার্থে কঃ।

^{(&#}x27;৫৯১)। আদিকৈজাত: শকাদেকাচ: শরাদেশ্চ ভক্ষ্যবস্তাতিরিক্তে বিকারে অংশে চ বাচ্যে ময়ড্ ভবতি। শরাদে মৃচ্ছেন্দপাঠো লিপিকর-প্রমাদক্ত: একাচ্তাদেব ময়ট্সিকে:।

⁽৫৯২)। পূর্বস্ত্রেণ যেভ্যো ময়ট্ ন বিহিতঃ ন শেষঃ। তন্মাৎ ভক্ষ্য-বন্ধব্যতিরিক্তে বিকারে অংশে চ বাচ্যে ময়ড্ বা ভবতি। সর্ব্যেব প্রাপ্তে-হয়ং বিকরঃ। তথাহি দূর্ব শব্দাৎ বক্ষোযধিভ্যামংশে চেতি ক্ষপোতশব্দাৎ প্রাণিনে পড়িতি লোহশব্দাৎ রক্ষতাদেশ্চেতি প্রাপ্তে বিক্তরঃ। মৌলা ইতি কার্পাসমিতি বিহাদেশ্টেতি টণ্।

[🛊] শরদর্ভকুটীরাণি মৃত্তৃণে সোমবরক্রো। - १।.

৫৯৩। কংসীদাদ্যণ্লোপ**েচ্**য়স্থা। কাংসম্। **ও**

৫৯৪। তদু শাদাবুৎসাদেশ ট্।
ঔৎসম্। উৎস উদ্পান রিকর বিনদ মহানদ মহানদ নাহাপ্রাণ তরুণ তলুন ধেনু ধ্যন্ পৃথিনী পাঙ্ক্তি জগতী ত্রিফ ুভ্ অনুষ্ট ভু জনপদ ভরত উশীনর ভল্লকীয় রথস্তর মধ্যন্দিন মহৎ বৃহৎ কুরু পঞ্চাল ইক্রাবসান উষ্ণিহ্ ককুভ্ স্বর্ণ দেব।২০। *

৫৯৫। বস্কয়াদসমাদে। বাস্কয়ঃ। সমাসে তু—সোক্ষয়িঃ। ৫৯৬। উদস্থানাদ্দেশে।

⁽৫৯৩)। তব্মৈ হিতে অরাজানেরিতি ঈরপ্রত্যয়ান্তঃ কংসীয়শকঃ তত্মাত্স্য বিকারে অর্থে যণ্ভবতি ঈরস্য লোপশ্চ।

⁽৫৯৪)। টণ তদ্দাদাবিত্যারতা যেহর্থা উক্তান্তে তদ্দাদয়ঃ
তেম্বর্থের উৎসাদের্গড্ তরতি। যক্ষির্থে যং প্রত্রায়া বিহিতস্তম্বাধনার্থমিদম্। কুরুশন্দোহত্র পঠাতে তম্মাদপত্যেহর্থে অজাদকোশলকুরুত্যানেতি কুর্মাদেশ্চ ণ্য ইত্যানেন ণ্য এব ভবতি বিশেষবিহিত্যান্তদিতরোহস্য বিষয়ং। কুরোরয়ং কৌরবং অপত্যার্থেহপ্যমন্সি বর্ত্তে ইত্তি
তু জ্য়াদিত্যঃ।

⁽৫৯৫)। বস্কয়শকাদসনাসে তদ্বাদাবর্থে ণড় ভবতি। সৌরস্কয়ি-রিতি স্থবয়য় ইতি নিতাং কুপ্রাদেরিতি সমাসঃ তস্যাপত্তা বাচ্যে অদ্যাচেতীণ্।

⁽৫৯৬)। উদস্থানশকাত্তদু নাদাবর্থে দেশে বাচ্চো পড় ভবতি।

^{*}উৎসো সহানসমহানদভলকীয়া ইন্দ্রাবদানজগতীপৃথিবীস্থবর্ণম্।
বেন্ফিহৌ জনপদং বিকরোদপানং মধ্যন্দিনং বিনদপঙ ক্তিরথস্তরাশি।
দেবো বৃহত্তরুলধন্মহাদিপ্রাণান্তিষ্ট ভ মহৎকক্ ভত্তই ভুশীনরাশ্চ।
পঞ্চাল এষ কুরুভস্তলুনঃ কুরুশ্চ জিংশদ্ ধৈর্নিগদিতা ভরতামুসঙ্কাৎ।৩০।

अम्रश्नः। यापटम कु-अन्दानिः।

৫৯१। त्रापादः त्या

वार्षनः। व्यनः ८१ जू-वार्षनन्त्रयः मध्यः वार्षनकः।

৫৯৮। গ্রীম্মাদরতে।

বৈশঃ। রক্তে তু—বৈশ্বী তিষ্ট্রপ্।

৫৯৯। সত্তা মুম্চ।

माञ्खः ।

৬০০। পৃথিব্যা গশ্চ। পার্থিবা পার্থিবী।

७०)। (प्रविशास्त्र। ' रिमवाः रिमवस्।

উদস্থান ইতি উদস্থানে ভবে। দেশ ইত্যর্থ:। ঔদস্থানিরিতি উদস্থাননায়ঃ ক্সাচিদপতামিত্যর্থ:।

- (৫৯৭)। ব্যক্তকাদংশে বাচ্যে গড়্ভবতি। অনংশে তু বার্ষদ ইতি ব্যদোহপত্যমিতার্থে তদ্যাপত্য ইতি টণ্। উদাহরণপ্রত্যদাহরণয়োঃ সমানরূপং পশুতো বিশেষাবঙ্গমার্থমাহ তদ্য সংঘো বার্ষদক ইতি টণস্তাৎ হাস্তিপাদকৌপিঞ্জনবর্জমিত্যাদিনাকণ্ ভবতি ণড়স্তাত্ ণড়িণ্ যণস্তাদি-ত্যাদিনা অকণো নিষেধে টণি বার্ষদঃ।
- (৫৯৮)। গ্রীমশকাধ ভব্যতিরিক্তে তছ নাদাবর্থে বাচ্যে ণড় ভবতি।
 বৃত্তং ছলঃ। গ্রৈমী ত্রিষ্ট্রিতি ঝতুনক্ষত্রাদিতি টণ্। বিকারেষর্থে বদা
 অনেন ণট্ তথা অংশার্থাচ্চ ণড়স্তোদস্ত লৈষ্যাদিতি টণ্ ভবিষ্যক্তি টণি
 তু আদিকৈজাদিত্যাদিনা ময়ট্ স্যাদিতি গড়বিধানস্য প্রয়োজনম্।
- (৫৯৯)। সংচ্ছকো মতুপ্রতায়াস্তঃ তত্মাতদুন্দাদাবর্থে ণড়্ভবতি। তৎস্ত্রিযোগে কুম চ।
- (৬০০)। পৃথিনীশকাত্তদুন্দাদাবর্থে গড়্ভবতি। পক্ষে ৭শচ। অটবাদীপ্রত্যয়াভাবো বিশেষ:।
 - (৬০১)। দেবশব্দান্তম্ব নাদাবর্থে গড়্ভবতি। পক্ষে গ্রন্ধ।

৬০২। বহিষ্ঠীকণ্চ। ৰাহঃ বাহীকীঃ।

৬০৩। দিত্যদিতিযমাদিতাপ্পঃ।
দৈত্য:। দিতিশব্দান্ত — দৈতেয়:। আদিত্যঃ। অদিতিশব্দান্ত — আদিতেয়:। যাস্য: আদিতাঃ।

৬০৪। পত্যন্তাদনশ্বপত্যাদেঃ।
প্রাজাপত্য:। অন্বপত্যাদেন্ত — আশ্বপত্য । অন্বপতি শতপতি
ধনপতি ধান্তপতি জগৎপতি রাষ্ট্রপতি কুলপতি গৃহপতি পশুপতি
সেনাপতি সভাপতি প্রাণপতি ক্ষেত্রপতি গণপতি ।১৪। *

৬০৫। স্থামান্তাদৎ। অশ্থামঃ।

⁽৬০২)। বহিঃশব্দাজ্দানাবর্থে গ্রোভবতি। পক্ষে টাকণ্চ। বাহ্ছতি কচিদব্যয়ানাং স্বরতচ্ছের্য়োরিতি ইস্লুক্।

⁽৬০৩)। নিতি অদিতি যম আনিত্য ইত্যেতেভাস্তদ্নানাবর্থে গো ভবতি। দিতিশন্ধান্ত্র দৈতেয় ইতি দিতিশন্দাদিনন্তাদক্তার্থানিতি বদা পাক্ষিক ঈপ্রত্যয়ন্তদা স্ত্রীবিহিতপ্রত্যয়ান্তাদিত্যেয়ণ্ ভবতি। অত্র নামগ্রহণে নিঙ্গবিশিষ্টপ্রাগ্রহণার গাঃ।

⁽ ৬০৪)। পত্যস্তাচ্ছকাদশ্বপত্যাদিবর্জিতাত্তমূলাদাবর্থে নো ভবতি।
স্বশ্বপত্যাদেস্ক আশ্বপত্মিতি টণ্ তম্বলাদাবিতি ঔৎসর্গিকষ্টণ্ এব। ধান্তপতিরাষ্ট্রপতিপ্রাণপতিশক্ষেত্যস্ত শৈষিকেহর্থে আদিই ছলাতশ্বেতীয়ঃ। অন্তত্ত্ব
টণ্।

⁽৬০ঃ)। স্থামন্ ইত্যেবমস্তাচ্ছকাত্তব্দানাবর্থেহত্তবতি। অশ্বস্তেব স্থামা অস্তেতি অশ্বথামা শেষো বৃদ্ধানিতি সম্ভ তঃ।

^{*} অঝাৎ শতাৎ ধান্তজগদ্ধনেভ্যঃ ক্ষেত্রাৎ সভারাঃ ভুলরাষ্ট্রর্মাৎ ।
ক্রেনাপশুপ্রাণগদানগৃহাক্ত পতিঃ প্রংবাজ্যাইশ্বপতি প্রবানে ৪১৩০

৬০৬। অগ্নিকলিভ্যাং টেয়ণ্। আগ্নেয়ং কালেয়ঃ।

৬০৭। গোরজাদিপ্রাপ্তে যথ।
গব্যম্। অনজাদিপ্রাপ্তে তু—গোময়ম্।

৬০৮। তোকেহদন্তাদেরিণাদিঃ।
তোকেহপত্যে বাচ্যে অদন্তাদেরত্বে ইণাদির্ভবতি। দাক্ষিঃ
শোত্রের ইত্যাদি। পূর্বৈবিণক সিদ্ধে প্রপঞ্চার্থমিদম্। তে বৈ
বিষয়ং স্থাংগৃহীতা ভবন্তি যেষাং লক্ষণং সপ্রপঞ্চামিতি ভাষ্যম্।
এবমুত্তরত্রাপ্যস্থম্।

৬০৯। তদহ ত্যাদো টিকণ্।
তদহ ত্যাদাবর্থে টিকণ্ভবতি। বস্ত্রমহ তি বাস্ত্রিকঃ বাচিকঃ।
৬১০। দণ্ডাদের্যঃ।

⁽৬০৬)। অগ্নি কলি ইত্যেতাভ্যামূত্তরে তথ্নাদাবর্থে টেয়ণ্ ভবতি। তঘুন্দাদাবিত্যের অগ্নিবৎ কলিত্বমূ।

⁽৬০৭)। গোশকান্তদ্নাদাবর্থেইজানেঃ প্রত্যায়স্ত প্রাপ্তেই যদ্ধবতি। গবামিতি গোরপতামিত্যমিন্নর্থে অজানেষ্টণঃ প্রাপ্তেই যথ। গোময়মিতি হেতুনরাভ্যাং রূপাং বা ময়ট্ চেতি ময়ট্। নায়মজাদি প্রত্যায়ঃ। তদ্দা-দার্থব্যতিরিক্তাদনেন ন প্রাপ্নোতীতি তথ্যৈ হিতাদাবুদস্তগবাদের্ঘদিতি গোশকাং পুসর্যতং বক্ষাতি।

⁽৬০৮)। অনেনাদিপদেন ভৈক্যমিত্যাদিসর্কোদাহরণপরিগ্রহঃ
পূর্ব্বেণৈবেতি। দাক্ষিরিতি অদস্তাচ্চেতীণ্প্রত্যয়েন শৌল্রেয় ইতি শুল্রাদেরেয়নিত্যেয়ণা।

⁽১০৯)। শতাদ্যদিকৌ তদর্ত্যাদাবিতি বক্ষাতি তৎপগ্যস্তেন যোহর্থ উক্তঃ স তদর্ত্যাদিস্তত্রায়মৌৎসর্গিকষ্টিকণ্ বিশেষবিহিতৈস্ত প্রত্য-রৈরস্থ বাধনম্।

⁽৬১০)। দণ্ডাদেস্তদর্হ তীত্যর্থে যো ভবতি।

দণ্ডাঃ। দণ্ড বধ-মুঘল মধুপক কশা অর্ঘ নেধা মেঘ উদক বংশ ধন যুগ স্থত \$১৩। ক

৬১১। দক্ষিণাদেরীয়শ্চ।

দক্ষিণাঃ দক্ষিণীয়ঃ। দক্ষিণা কড়ঙ্গর স্থালী বিল।৪।

৬১২। পাত্রাদ্যদিয়ো।

পাত্রাঃ পাত্রিয়ঃ।

৬১৩। যজ্ঞাদিয়ন্তং কর্মার্ছ তি চ। । যজ্ঞং যজ্ঞকর্ম চার্ছ তি যজ্ঞিয়া।

৬১৪। ঋত্বিজ্যে পীনঃ। আহি জীনঃ।

(৬১১)। দক্ষিণাদেস্তদহ তীতার্থে যো ভবতি। ঈয় চ। কড়ঙ্গরো-মাষাদেঃ কাঠভাগঃ নিগুণছাদীপ্তাগ্রিছাছা যন্তমহ তি স কড়ঙ্গবীয়ঃ কড়-জয়ঃ। স্থানীবিলং স্থান্যা আকাশদেশস্তমহ স্তি স্থানীবিলীয়াস্তওুলাঃ।

(৬১২)। পাত্রশকান্তরহ জীতার্থে যৎ ইয় ইত্যেতো ভবতঃ। পাত্রং ভোজনভাজনং পরিমাণক যস্তৎ পাত্রমহ তীতি দ পাত্রঃ পাত্রিয় ইতি যেন ভূঙ্ভে পুনঃ পাকেন বিনৈব পাত্রং শুদ্ধাতি যক্ত তণ্ডুলাদেঃ পাকস্ত পরি-মাণমহ তি।

(৬১০)। যজ্ঞশকান্তদহ জি তৎ কর্মার্য তীতি চার্থে ইয়ো ভবতি।
যক্তং যক্তকর্ম চার্য তীতি যো লক্ষ্যস্থারো দ্বিজঃ মশ্চ ক্লক্ষ্যারাধিষ্টিতো দেশঃ
দ যজ্ঞিয়ঃ। যো হি যজ্ঞকর্মার্য তি দ এব যক্তমর্য তীত্যবিশেষেইপ্যভয়োকপানানং বাপ্ত প্রসংগ্রহার্যম্। তেন যজ্জিয় ইত্যনেন শক্ষ্যস্থারো দ্বিজঃ
অনিল্যো দেশশ্চোচাতে।

(৬১৪)। ঋতিজ্ইত্যস্বাৎ তৎ কর্মার্হতীত্যর্থে ণীনো ভবতি। ঋত্বিক কর্মার্যতি আত্মিজীনঃ। কেচিদস্বাদ্পি চ তদর্হত্যর্থে প্রত্যন্ত্র-

দণ্ডো মেঘধনে বধোহত্ত মৃষলং মেধার্যবংশৌ কশা।
 তদ্বৎ স্তান্ত্রপুর্ক ইথমুদকং স্তাতাং স্কৃতো হথো যুগ্ন্।১৩।

৬১৫। ছেদাদেঃ সদার্হতি। ছেদং সদার্হতি ছৈদিকঃ। ছেদ ভেদ জোহ নর্ত্ত কর্ব সংপ্রয়োগ সংপ্রেমণ সংপ্রশালাঞ

৬১৬। বিরাগ**স্থ বিরঙ্গশ্চ।** বৈর**ন্সি**কঃ।

७১१। भौर्यटब्हान्य**ण्ड।** भৈर्यटब्हान्यः भौर्यटब्हाः।

৬১৮। তেন জীতে মূল্যাৎ। নৈশ্বিকঃ।

মিচ্ছন্তি তন্মতে ভাবপ্রধানোহয়মৃত্তিক্শকঃ ঋত্বিগ্ভাবেন সন্তাহিত আছি -জীন উচাতে।

- (৬১৫)। ছেদাদেঃ সদাহ তীত্যর্থে টিকণ্ ভবতি। ছেদং সদাহ তি ইতি ত্রুচরিত্রপ্রতিপাদনপ্রমেতং।
- (৮১৮)। বিরাগশব্দাৎ সূদা তদ্হ**তীত্যর্থে টিকণ্**ভবতি। বিরাগস্থানে বিরক্তম্ভা
- (৬১৭)। শীর্ষচ্ছেদশকাৎ সদা তদর্গীত্যর্থে টিকণ্ ভবতি। পক্ষে য=চ। শীর্ষচ্ছেদ ইতি নির্দেশিং প্রত্যে নার্ধানসন্নিযুক্তঃ শীর্ষাদেশক নিপা-তাতে। বাক্যে তু শিরশ্ভেদং সদার্গতীতি ভবতি।
- (৬১৮)। মূল্যবাচকাচ্চকাৎ তেন ক্রীতেহর্থে টিকণ্ স্থাৎ। নহু যন্নিধেণ ক্রীতং তম্ম নিধ্বা মূল্যং ভবতীতি সোহস্ম ভাগাদিরিত্যনেন টিকণ্ দির এব। উচাতে। যদ্যপি বাস্তবোহর্থভেদো নান্ধি বিবক্ষাভেদস্ক বিদ্যত এব স্বথবা স্বর্থভেদোহপি বিদ্যত এব যন্নিধ্বেণ ক্রীতং তত্র ক্রায়কস্থা স্বীকার: প্রতীয়তে যস্ম তু নিধ্বো মূল্যং তত্র ব্যবস্থানমাত্রং প্রতীয়তে নতু ক্রায়ক শ্বীকার:। মূল্যাদাবিতি কিম্? নরেণ ক্রীতং হস্তেন ক্রীতমিত্যক্র মাতৃৎ।

কেন্ডেনে) নর্ত্তকরে কিন্তাহ: সংপ্রেষণং তথা।
 সম: প্রার্থ: প্রয়োগশ্চ ছেনানে) বসব: স্থতা: । ৮।

৬১৯। তদ্ধেষোঃ সংযোগোৎপাত্য়োঃ। সপ্ততেহে তুদ নিপতিষংযোগ উৎপাতো বা সাপ্ততিকঃ।

৬২০ সংখ্যাপরিমাণাখাদিবর্জ বৈচে যথ।
ধক্তঃ। সংখ্যাপরিমাণাখাদেস্তা। ধাষ্টিক: প্রাশ্বিকঃ।
অখ অশান্ হস্তিন্ র্থ গণ উর্ণা উমা ভট্ট বর্ষা বস্থু ১১০। *

৬১১। গোব্রেক্সবর্চসাজ্যাঞ্। গব্যং ব্রুক্সবর্চ স্থান্।

७२२। পু**र्ज्ञानीयम्छ।** পুजाः পুजोयः।

৬২০। পৃথিবীদর্ভূমিভ্যাং ণট্টণো তদীশ্বরতত্ত্র-বিদিত্রোশ্চ।

⁽৬১৯)। ভশু হেতুস্তদ্ধেতো সংযোগে উৎপাতে চ বাচ্যে টিকণ্ ভবতি। সংযোগঃ সম্বন্ধঃ উৎপাতঃ শুভাশুভস্চকোহক্ষিস্পন্দানি।

⁽৮২০)। সংখ্যাবাচকং পরিমাণবাচকমশ্বাদিগণঞ্চ বর্জয়িতা অগ্র-শ্বাদ্বাচঃ শন্দাৎ তদ্ধেতৌ সংযোগে উৎপাতে চ বাচ্যে যথ স্থাৎ। ২০ ইতি ধনস্থা হেতুঃ সংযোগ উৎপাতো বেতার্থঃ । যাষ্ট্রক ইত্যাদাবৌৎসর্গিকাষ্ট্রকণ্ড।

⁽৬২১)। গোশকাৎ ব্রহ্মবর্চ্চদশকাচ্চ তদ্ধেতে সংযোগে উৎপাতে চ বাচ্যে যথ স্থাং। এক্সবর্চ্চদশকো রাজপল্যহন্তিব্রহ্মণো বর্চ্চদ ইত্যৎ-প্রতায়ান্তঃ।

⁽৬২২)। পুত্রশকাৎ তদ্ধেতৌ সংযোগে উৎপাতে চ বাচ্চো যৎ স্থাৎ। ঈরশ্চ। স্বাচ্তাৎ যৎ সিদ্ধ এব ঈরার্থং বচনম্।

⁽ ৬২৩)। তত্র বিদিত ইতি তত্র শক্ষ চেতি ভংপুরুষং রুষা ভদী-

অশ্বাশ্বহন্তিন উমা বস্থভট্যবর্ষা
 উর্ণা গণো রথ ইতি প্রথিতা ছদাত্র ॥ ১০ ॥

পার্থিব: সার্ব ভৌম:।

৬২৪। বাতাদেস্তচ্ছমনকোপনমোঃ। বাতস্খনং কোপনং বা বাতিকম্বাত পিত্ত শ্লেমন্ সনি-পাত॥ ৪॥

৬২৫। তত্র প্রসিদ্ধে লোকসর্বন্ধেকাৎ। লোকিকঃ সার্বলোকিকঃ।

৬২৬। তেনাশ্মিন্ লুপ্যতে। প্রান্থিকং ক্ষেত্রম্।

৬২৭। টিকঃ পাত্রাৎ। পাত্রিকঃ।

७२৮। তদৃদ্ধ্যাদ্যশ্বিশ্ববাদীয়তে।

শ্বরশব্দেন সহ দ্বন্ধ:। পৃথিবীশব্দাক্ত সর্ম্মভূমিশব্দাচ্চ যথাক্রমং ণট্ টণ্ ইত্যেতৌ ভবতঃ তদ্বেতৌ সংযোগে উৎপাতে তদীশ্বরে তত্র বিদিতে চ বাচ্যে। সার্ব্বভৌম ইতি সর্ব্বা চাসৌ ভূমিশ্চেতি একাদীনাঞ্চেতি কর্ম্ম-ধারয়ঃ অমুহোড়াদেরভয়োরিত্যুভয়পদর্দিঃ।

- (৬২৪)। বাতাদেস্তচ্ছমনে তৎকোপনে চ বাচ্যে টিকণ্ ভবতি। (৬২৫)। লোকশব্বাৎ সর্বলোকশব্দাচ্চ তত্র প্রসিদ্ধে বাচ্যে টিকণ্ ভবতিয়া সার্ম্বলোকিক ইতি পূর্বাবং উভয়পদর্দ্ধিঃ।
- (৬২৬)। তেনাম্মিন্ লুপাতে ইত্যমির্থে টিকণ্ স্থাং। অর্থাং যত্তেনেতানেন বাচাং তম্মাং প্রত্যয়ঃ। অম্মিরিতানেন তু য আধারো বিবক্ষিতঃ স প্রত্যয়ার্থঃ। প্রাস্থিকং ক্ষেত্রমিতি প্রস্থেন পরিমিতমম্মিন্ লুপাতে ইত্যর্থঃ। দেবদত্তেনাম্মিন্লুপাতে হত্তেনাম্মিন্ লুপাতে ইত্যাদৌ ন ভবত্যনভিধানাং।
- (৬২৭)। পাত্রশক্তঃ পরিমাণবাচী পাত্রশকান্তেনান্মিন্ লুপাত ইত্যর্থে টিকো ভবতি। যদ্যপি পাত্রিক ইতি টিকণাপি সিধ্যত্যেব তথাপি টিক-বিধানং বৃদ্ধার্থতদ্বিতান্তে। হরঞ্জনবিকারয়ারিতি পুংবদ্ভাবপ্রতিষেধনিবৃত্ত্যর্থম্।

(৬২৮)। তৎশ্বরূপং বুর্ঝানি তহৃদ্যাদি তহৃদ্ধাদ্যশ্বিন্ দীরতে

সপ্ততির ন্ধিরায়ে। লাভঃ শুল্ক উপহারো: বা অস্মিন্নস্মৈ বাংনীরতে সাপ্ততিকঃ।

७२ २। व्यक्ति मिकः।

অর্দ্ধিকঃ।

৬৩০। পূরণার্থাচ্চ।

তৃতীয়ো ভ্রাগো মূল্যং ভৃতির্বা অস্মিন্নসৈ বা দীয়তে তৃতীয়িক:।

৬৩১। ভাগাদ্যো বা ভাগ্যঃ ভাগিকঃ।

অনৈ বা দীয়তে ইতার্থে টিকণ্ ভরতি। বৃদ্ধিরিত্যাদি অধমর্ণেভোগ ধনিনাং মৃলধনাতিরিক্তা গ্রাহা বৃদ্ধিং গ্রামাদৌ স্থামিগ্রাছো ভাগ আয়ং। পটাছাৎপাদনকরণাৎ স্ত্রাদেম্ল্যাৎ পটাদিবিক্তরণেন যদতিরিক্তং ধনং স্লাভ:। বাণিজাং রক্ষানিমিন্তং যদ্রাজ্ঞা ঘটাদৌ গ্রাহং স শুরুং উপহার উৎকোচঃ। অধ্বির্মে বা দীয়তে ইতি সম্প্রদানস্থৈবাধিকরণবিবক্ষারাময়ং কারকভেদঃ। অথবা সপ্রতির্দ্ধির্মিন্ সহম্রে দীয়তে সাপ্রতিকং সহস্রং সপ্রতির্দ্ধির্মেদ্ দীয়তে গাপ্রতিকং সাধুং এবমায়াদৌ চ।

- (৬২৯)। অর্দ্ধশব্যন্ত দ্ব্যাদ্যস্মিন্ন বৈ দীয়তে ইতার্থে ইকো ভবতি। কংসার্দ্ধাভাগে টিক ইতি টিকে প্রাপ্তে ইকবিধানং স্ত্রিয়ামীপ্রতায়াভাবার্থন্। অর্দ্ধশব্দো বক্ষ্যমাণভাগশব্দ কপদ কার্দ্ধে বর্ত্তমানো গ্রাহাং তস্যৈত বৃদ্ধ্যানি দিভি: সহ সম্বন্ধঃ সম্ভবতি।
- (৬৩•)। পূরণার্থাচ্চ শব্দান্তদ্দ্ধ্যাদ্যন্ত্রিক বা দীরতে ইত্যর্থে ইকো ভবতি। তৃতীয়িক ইতি রয়াণাং পূরণ ইত্যর্থে দ্বেন্তীয়ন্তৎপূরণে ইত্যকু-রুত্তৌ ত্রেন্তুন্তেতি ত্রিশব্দন্তীয়ঃ তৃশ্চাদেশঃ।
- (৬৩১)। ভাগশন্ধান্তদ্দ্যাদ্যমিন্ন বা দীয়তে ইজর্থে ইকো ভবতি । পক্ষে যশ্চ টিকণি ভূ বৃদ্ধিঃ স্থাৎ ব্রিয়ামী চ।

৬৩২। ্বংশাদিপূর্কাদ্ভারাত্তং বহত্যাদে । বংশভারং বহতি হরতি উৎপাদয়তি বা বাংশভারিকঃ। বংশ বল্বজ কুটজ স্থুণা মূল অক্ষ ইক্ষু অশ্ব খট্যা।৯। **

৬৩০। বংশাদের্ভারভূতাদিত্যেকে। বাংশিক:। অভারভূতাত্ত্বু—বংশং বহতি হরুত্যুৎপাদয়তি বা। ৬০৪। বস্নাদিকঃ।

বন্মিকঃ ৷

৬৩৫। দ্রব্যাৎ কঃ। দ্রব্যক:।

৬<mark>০৬। তং সংভবত্যাদৌ।</mark> প্রস্থং সম্ভবতি অবহরতি পচতি বা প্রাান্থিকঃ। সংভবতিরত্র সম্ভবপূর্ববধারণার্থঃ।

⁽৬৩২।৬৩৩)। বংশাদিপূর্ব্বাৎ ভারপূর্ব্বান্ত বহতি তং হরতি তমুৎপাদয়তীতার্থে টিকণ্ ভবতি। বংশাদিরিত্যাদি বংশাদিপূর্ব্বাৎ ভারাদিতি স্থাত্রকদেশস্থানে বংশাদেভারভূতাদিতেয়কে পঠন্তি। বাংশিক ইতি ভারভূতং বংশং বহতি হরতি উৎপাদয়তি বেতার্থঃ।

⁽৬৩৪)। বদ্ধাতোরিণাদেন ইভিন প্রত্যয়ান্তো বঙ্গশন্দো মূল্য-রাচী তন্মান্তং বহত্যাদাবর্থে ইকো ভবতি।

⁽ ७०৫)। जनामनाढः वहनामावर्थ हेरका जनकि।

⁽৬০৬)। তং সম্ভবতি তমবহরতি তং পচতীত্যর্থে টিকণ্ ভবতি।
তথাদ্যত্তপদ্বাচাং তত্মাৎ প্রতায়ঃ। সন্তবতিরত্ত্বেত্যাদি আধেয়স্য প্রমান্

শানতিরেকঃ সম্ভবন্তৎপূর্ব্ধধারশাভিধায়ী সম্ভবতিরত্র গাহাঃ। উপসংগ্রহণং

সংবরণঞ্চাবহরতেরর্থঃ সম্ভবত্যর্থঃ পততৌ চ বিছতে প্রস্থং পচতি চকঃ

বংশেকুকুটজাকাণি মৃলহুণাখবৰজা:।
 খটাপ্যত্ৰ বংশমুখে গ্ৰহদংখ্যাঃ স্মীরিতা:॥ >॥

৬৩৭। আঢ়কাদেরীনশ্চ। আঢ়কিক: স্বাঢ়কীনঃ। আঢ়ক আচিত বিস্ত ॥পা

৬ ৩৮। দিগো কুলিজাক্ত টিকশ্চ।
দ্যাঢ়কিকী দ্যাঢ়কীনা। টিকণো লুকং বক্ষাভি দ্যাঢ়কী দ্বিকুলিজীনা দ্বিকুলিজিকী দ্বৈকুলিজিকী। কুলিজস্থ বেত্যুত্তরপদর্ক্ষ্যা
দিকোলিজিকী। টিকণো লুখিকল্লং বক্ষাভি। দ্বিকুলিজী।

৬৩৯। সোহস্ম ভাগাদিঃ। কার্ষাপণো ভাগো মূল্যং ভৃতিব স্মি কার্ষাপণিকঃ।

৬৪০। তদস্ত পরিমাণম্। প্রাস্থিক:।

প্রান্থিক ইতি নতু নিয়মঃ প্রস্থং পচতি ব্রাহ্মণী প্রান্থিকীত্যত্ত সম্ভবত্যর্থেন বিনাপি পচত্যর্থদর্শনাৎ।

(৬৩৭)। আঢ়ক আচিত বিস্ত ইত্যেতেভ্যস্তং সম্ভবত্যাদাবর্থে স্পনো ভবতি। চকারাট্টিকণ্চ। পাত্রশব্দশ্চাত্র গণে ডেইব্যঃ পাত্রিকঃ পাত্রীণঃ।

(৬০৮)। টিকশ্চেতি চকারেণ স্থানগড়াসুরুষাতে তচ্চকারেণ প্রসর্গিকষ্টিকণপি ভবতি। দিগৌ সমাসে আঢ়কাদেঃ কুলিজশকাচ্চ তং সম্ভবত্যাদাবর্থে টিকো ভবতি স্থানষ্টিকণ্ চ। দ্যাঢ়কিকীতি দ্বাবাঢ়কৌ সম্ভবতীতি তদ্ধিতার্থে সমাহারে দিগুঃ সংখ্যায়া ইতি দিগুঃ টিকণো লুকং বক্ষাতীতি অধ্যর্জপূর্ত্তাক তদ্ধিতাদাবসংজ্বামিতানেন স্থাটকয়োম্ভ বিধানসামর্থ্যায় লুক্। দ্যাঢ়কীতি দ্বিগোরিতাসুবৃত্তৌ পরিমাণাদবিস্তাচিতক্ষণাত্তিক হলোপে ইতি দ্রিয়ামী। বৈক্ষিকলুকা সাধ্যসিদ্ধৌ সত্যাং সাধ্যাভাবে সাধনজিজ্ঞাসায়া অপ্যভাবাদীনটিকয়োন লুক্ অত আহ টিকণো লুগ্বিকয়ং বক্ষাভীতি কুলিজাম্ভাচেত্যনেনিংস্থিকস্য টিকণ্ এব।

(৬৩৯)। সোহস্য ভাগো বা মৃল্যং বা বেভনং বেত্যর্থে টিকণ্ স্যাৎ। অর্থাৎ মন্তৎপদবাচ্যং তন্দাৎ প্রত্যয়ঃ।

(৬৪০)। তদস্য পরিমাণমিত্যর্থে টিকণ্ স্যাৎ। অর্থাদ্যভৎপদ-

৬৪)। সংখ্যায়াঃ সূত্রাদে। অশীতিঃ পরিমাণমস্থ আশীতিকং সূত্রমধ্যয়নং সংঘ**্র কম্মতিরাম** চ।

৬৪২। ক্তোমে ডঃ। পঞ্জনশ পরিমাণমস্থ পঞ্জনশঃ। ক্তোমঃ বিংশঃ।

৬৪**৩।** ডডিতি চাক্রাঃ। পঞ্চদশী পঙ্ক্তিঃ।

৬৪৪। ত্রিংশচন্বারিংশন্ত্যাং ডণ্ ব্রাক্ষণাখ্রাছ-নামি।

ত্রিংশদধ্যায়াঃ পরিমাণমেষাং ত্রেংশানি চহারিংশানি।

বাচ্যং তত্মাৎ প্রত্যরঃ! অবচ্ছেদহেতুঃ পরিমাণমেতাবতা ষষ্টিজীবিতপরি-মাণমস্তেত্যর্থে ষাষ্টিকঃ বর্ষশতং পরিমাণমস্ত বার্ষশতিকঃ।

⁽৬৪১)। সংখ্যাবাচকাচ্ছকান্তদক্ত পরিমাণমিত্যর্থে স্থত্তেইখ্যারনে সংখ্য বা কক্সচিনামি বাচ্যে টিকণ্ ক্রাং। পরিমীয়তে পরিচ্ছিন্ততে অনেনেতি সংখ্যাপি পরিমাণমৃচ্যতে। অধীতিরধ্যানং ভাবসাধনেইয়মধ্যানশকং। আশীতিকমধ্যানমিতি অশীতিরাবৃত্তয়ং পরিমাণমক্তাধ্যানক্তেত্যথা। প্রকৃতিপ্রত্যায়সমূদায়েন কস্যাচিদেতনাম কোগরুঢ়মিদম্। সংঘসাথোঁ তু জন্তুন্তিরিত ব্যবস্থা তন্তাতিরিক্ত উত্তরস্ত্রে স্থোমশকবাচ্যঃ। তদস্য পরিমাপনিত্যনেন সিদ্ধে লক্ষণমেতৎ প্রশক্ষার্থং নতু নির্নার্থম্। পঞ্চকংপ্রাতিপদিকার্থং শোড়বকস্ত বিকার ইত্যাদৌ স্ক্রাদিব্যতিরিক্তেইপ্যর্থে কস্য দর্শনাৎ।

⁽৬৪২।৬৪৯)। সংখ্যাবাচকাচ্ছকাত্তদায় পরিমাণমিত্যর্থে স্তোমে বাচ্যে ভো ভবতি। বিংশ ইতি তেশ্চ বিংশতের্ডিফীন্ডি তিলুক্। ডডিজি চাল্রা ইতি স্তোমে ডডিতি স্ত্রং চাল্রা: পঠস্কীক্তার্থ:।

⁽৬৪৪)। ত্রিংশচ্ছসাৎ কতি বিংশতি ত্রিংশতক্ষেতি কে প্রান্থে চম্বারিংশচ্ছস্কানৌৎসর্গিকে টিকণি প্রাপ্তে বিধানম্। ত্রিংশচ্ছসারিংশচ্ছ-স্বাভ্যাং তদস্য পরিমাণমিতার্থে ব্রান্ধণাথ্যস্থলামি বাচ্যে ডণ্ ভ্রতি।

৩৪৫। পঞ্চদশভ্যাং বর্গে তো বা। পঞ্চতো বর্গঃ দশতো বর্গো পঞ্চকঃ দশকো।

৬৪৬। শচ্ছনন্তৰিংশতেডি न्।

ক্রিংশী মাসং পঞ্চদশী পক্ষঃ বিংশী সংঘঃ। ছান্দসমেত্ও।

७८१। শতাদ্যদিকো তদহ ত্যাদো।

শত্যঃ শতিকঃ।

৬৪টী। প্রকৃত্যক্তসংখ্যায়াঃ প্রত্যয়ার্থসংখ্যেয়ত্বে ন স্থাৎ।

শ্রা রণনায়ীতি কর্তকে ব্রাঙ্গণাথ্যগ্রহনায়ীতি ক্তং স্পন্তার্থম্। স্বাত্রে ক্ষি-ণ্যা নায়ীত্যপ্যাশস্বা স্যাৎ।

(৬৪৫)। পঞ্চন্দশন্ ইত্যেতাভ্যাং তদস্য পরিমাণমিত্যর্থে বর্গে বাচ্যে তো বা ভবতি। পঞ্তো বর্গ ইতি পঞ্পরিমাণমস্য বর্গস্যেত্যর্থঃ। পঞ্চকঃ দশকাবিতি সংখ্যায়াং কান্তশেষজ্মিতি কঃ।

(৬৪৬)। সংখ্যাবাচকাচ্ছদস্থান্তনস্তান্ত্বিংশতিশব্দাক্ত তদ্যা পরিমাণ-মিত্যান্ত্রিরথে ডিন্ ভবতি। ছান্দসমেতদিতি ন বহুনাং সম্বভমিতি শেষো-হত্র দ্রষ্টবাঃ। অন্তথা অত্র শাস্ত্রে এতল্লকণকরণমেবানর্থকং স্যাৎ। ন হি ছান্দসং লক্ষণমত্র দৃশ্যতে।

(৬৪৭ ৬৪৮)। এতল্লকণপর্যান্তেন বিশেষপ্রকৃত্যুপান্দানব্যতিরিক্তান্তন্দ্র হিতীত্যাদয়ো যেহর্থা উক্তান্তেমু বাচ্যেমু শতশলাদ্যদিক ইত্যেতৌ ভবতঃ। সংখ্যায়া ইত্যাদিনা কে প্রাপ্তে বিধানম্। শত্যং শতিক ইতি শতমহ তি শতেন ক্রীতঃ শতস্য নিমন্তমুৎপাতঃ শতং বৃদ্ধিরায়ো লাভঃ শুল্কমুপহারো বা অন্মিন্ অইম্ম বা দীয়তে ইত্যাদয়ো মেহর্থাঃ সম্ভবন্তি তে বোদ্ধবাাঃ। এবমূত্তরত্রাপি। প্রকৃত্যুক্তেত্যাদি প্রকৃত্যুক্তায়াঃ সংখ্যায়া যত্র প্রত্যায়বাদ্যম্য সংখ্যেয়ত্বং ভবতি তত্রায়ং ন প্রবর্ততে অনভিধানাদিতি শেষঃ। শতকং নিদানমিত্যত্র প্রকৃত্যা শতশানেনাক্রায়াঃ সংখ্যায়াঃ প্রত্যায়বাদ্যম্য নিদানস্য সংখ্যেয়ত্বম্ । যত্রো নিদানগতিরসংখ্যা শতশব্দেনোচ্যতে অতো বিদকৌ ন ভবতঃ। শত্যঃ পট ইত্রভ্য তু ন প্রত্যেয়বাচ্যমা পট্যা সংখ্যা শতশব্দেনোচ্যতে কিন্তু যেন পটঃ

শতকং নিদানং শতকং কাব্যম্। অপ্রকৃত্যুক্তসংখ্যায়াস্ত শতাং শতিকং শাটকশতম্।

৬৪৯। সংখ্যায়াঃ ক্স্তিশ্বৰ্জম্।

পঞ্চম্। তিশদস্তাত্ — আশীতিকং পাঞ্শংকম্।

৬৫০। কতিবিংশতিত্রিংশতশ্চ।

কতিকং বিংশতিকং ত্রিংশৎকম্।

৬৫১। বত্বন্তাদিক শ্চ।

যাবৎকঃ যাবতিকঃ তাবৎকম্।

৬৫২। বিংশতিত্রিংশদ্ত্যাং ডকোহসংজ্ঞায়াম্। বিংশকং ত্রিংশকম্।

ক্রীতস্ত্রাবে। শতাং শতিকং শাটকশতনিতাত্রাপি ন প্রকৃত্যক্রায়াঃ সংখ্যায়াঃ প্রত্যায়ার্থন্য সংখ্যেয়ত্বং তৎপ্রতিপাদনন্ত সমাসাব্যবেন শতশক্ষেন ক্রিয়তে। নমু কথ্মসমর্থাবিশেষো লভাতে বছলাধিকারাৎ অন্তিধানাদা।

- (৬৪৯)। তি ইত্যনেন শদিত্যনেন চ ত্যস্তং শদস্তঞ্চ গৃহতে দ হি তিশতোঃ কেবলয়োঃ সংখ্যাবাচিত্বং সম্ভবতি! সংখ্যাবাচকাচ্ছলাৎ ত্যস্ত-শদস্তবিজ তাভদহ ত্যাদাবর্থে কো ভবতি। আশীতিকমিতি তদহ ত্যাদৌ টিকণ্ হৈতি টিকণ্ পাঞ্চাশতকমিতি ইস্ক্স্ক্রান্তাদিকস্যেত ইতি ইকারলুক্।
- (৬৫•)। কত্যাদিভ্যস্তদহ তীত্যাদাবর্থে কে। ভবতি। ত্যস্তত্মাদ্দম্ত-পূর্ব্বেণাপ্রাপ্তে বিধানম্।
- (৬৫১)। বছস্তদা সংখ্যাত্বাৎ পূর্ব্বেণ প্রাপ্তে বিকল্প:। বজুপ্রত্যন্ত্রা-স্তান্তদর্হ ত্যাদাবর্থে কো ভবতি। পক্ষে ইকশ্চ। যাবতিক ইতি ইকবিধান-সামর্থ্যাদিস্কস্কুক্তাস্তাদকস্যেত ইতি ন ইকারলুক্।
- (৬৫২)। বিংশতি ত্রিংশ ভাগে তদর্শ তীত্যাদাবর্থে ডকো ভবতি অসং-জ্ঞায়াম। বিংশক ইতি পূর্মবিৎ তিলুক্। সংজ্ঞায়ায়। পূর্মিস্ত্রেণ কঃ। সংজ্ঞায়ামিতি বহুর পৃস্তকেষু দৃশুতে স লিপিকরপ্রমাদক্বতঃ পাণিনিলক্ষণ-বিরোধাৎ।

৬৫৩। কংসাদ্ধাভ্যাং টিকঃ। কংসিকঃ পট\$কংসিকী অদ্ধিকঃ অদ্ধিকী।

৬৫৪। কার্যাপণাচ্চ।

কার্ষাপণিক:।

৬৫৫। তম্ম প্রতিব।।

প্রতিক: কার্ষাপণিকঃ।

৬৫৬। বিংশতিকাদে ইণ্।

বৈংশতিকঃ। বিংশতিক সহস্র শতমান বসন ॥৪॥

७৫१। मूर्लामहिकत्नी।

শোর্পং শোর্পিকম্।

৬৫৮। খারীকাকলীভ্যামীকঃ।

খারীকঃ কাকলীকঃ।

৬৫৯। অধ্যদ্ধপূর্বত্বে দ্বিগৌ চ।

⁽৬৫৩)। কংস অর্দ্ধ ইত্যেতাভ্যাং তদহ ত্যাদাবর্থে টিকো ভবতি। চতুঃষষ্ঠ্যা পলৈঃ কংসঃ।

⁽৬৫৪)। কার্যাপণশব্দাৎ তদর্হ ত্যাদাবর্থে টিকো ভবতি।

⁽৬৫¢)। তন্তেত্যনেন কার্ষাপণং পরাম্গুতে। কার্যাপণস্থ স্থানে প্রতিশ্চাদেশো বা ভবতি।

⁽৬৫৬)। বিংশতিকাদেস্তদর্ত্যাদাবর্থে টণ্ ভবতি। সহস্রশন্ধাৎ সংখ্যায়াঃ কম্তিশম্বর্জনিতি কশু শেষেভ্যষ্টিকণোহপবাদঃ। বিংশতিক ইতি কতিবিংশতিবিংশতশ্রেতি কপ্রত্যয়াস্তঃ।

⁽ ७८१)। শূর্পশকান্তদহ ত্যাদাবর্থে গট্টিকণৌ ভবতঃ। শূর্পশক্ষঃ পরিমাণবাটা।

⁽৬৫৮)। ধারীকাকলীশনাভ্যাং তদর্হত্যাদাবর্থে ঈকো ভরতি। টিকণোহপবাদঃ।

⁽৬৫৯)। অধ্যদ্ধশক্ষঃ পূর্বের মৃক্ত সোহধ্যদ্ধপূর্বরঃ অধ্যদ্ধপূর্ববে সতি প্রারীকাকনীভ্যাং দিগৌ সমাদে চ তদহ ত্যানাবর্থে ঈকো ভব্তি। অধ্যদ্ধ-

অধ্যৰ্দ্ধথারীক: অধ্যৰ্দ্ধকাকলীক:। দ্বিখারীক: দ্বিকাকলীকঃ।

৬৬০। বিংশতিকাদীনঃ।

অধ্যর্দ্ধবিংশতিকীনঃ দ্বিবিংশতিকীনঃ।

অধ্যৰ্দ্ধশত্যঃ দ্বিশত্যঃ।

৬৬১। পণপাদমাষশতাদ্যঃ। ত অধ্যদ্ধপণ্যঃ দ্বিপণ্যঃ অধ্যদ্ধমাষ্যঃ দ্বিমাষ্যঃ

৬৬২। শাণাদ্বা। অধার্দ্ধশাণ্য: দিশাণ্য:। টিকণো লুকং বক্ষ্যতি। অধার্দ্ধশাণঃ দিশাণঃ।

খারীক ইতি অধ্যদ্ধী চাদৌ খারী চেতি বিশেষণসমাসং ক্লভা ঈকঃ। দিখা-রীক ইতি তদ্ধিতার্থে সমাহারে দিগুঃ সংখ্যায়া ইতি বিশুঃ অধ্যদ্ধপূর্বাচ্চ তদর্হতাদোবসংজ্ঞায়ামিতি প্রাপ্তো লুক্ বিধানসামর্থ্যান্ন ভবতি।

(৬৬০)। অধ্যদ্ধপূর্ববে দিগৌ চ সতি বিংশতিকশন্ধাৎ তদহ ত্যাদা-বর্থে দিনো ভবতি। বিংশতিকাদেষ্টণিতি টণি প্রাপ্তে বিধানম্। অস্থাপি বিধানসামর্থান লুক্।

(৬৬১)। অধ্যর্দ্ধপ্রবিষ্ণে দিগৌ চ সতি পণাদেন্তদর্হ ত্যাদাবর্থে যো ভবতি। অধ্যর্দ্দপাদ্য ইতি পণাদিভিঃ পরিমাণবচনৈঃ সাহচর্য্যাৎ পরিমাণ-বাচকক্ষ পাদশব্দকাত্র গ্রহণং ন তু প্রাণান্ধবাচকক্ষ অভএবাতদর্থে ঘতীতি পাদস্যাকারস্য রুষো ন ভবতি নানস্বার্থস্যেতি প্রতিষেধাং। অধ্যর্দ্দ-পূর্ব্ধাচ্চেত্যাদিনা লুথিধানেন অধ্যর্দ্দপূর্দ্বাৎ দিগোশ্চার্ক প্রত্যা ভবন্তীতি জ্ঞাপনাং শতাদ্যদিকয়োঃ প্রাপ্তয়োঃ শেষেভাষ্টিকণি প্রাপ্তে বিধানম্। অথবা অধ্যন্দশত্য ইতি পূর্বাং শতাদিহিতো যথ তদন্তার প্রাপ্নোতীতি বিধানম্। অন্তাপি বিধানসামর্যার লুক্।

(৬৬২)। অধ্যদ্ধপূর্ববৈ ছিগৌ চ সতি শার্ণশকাত্তদর্হ ত্যাদাবর্ধে যো বা ভবতি। শাণো মাষচতুষ্টরপরিমাণবাচী। টিকণো লুকং ক্ষ্যতী-

৬৬৩। শতাদপীত্যেকে। অধাৰ্দ্ধশতাঃ অধাৰ্দ্ধশতঃ দ্বিশতঃ।

৬৬৪। দ্বিতিপূর্বাট্ণ চ।

দ্বিশাণঃ দ্বিশাণ্যঃ দ্বৈশাণঃ ত্রিশাণঃ ত্রিশাণঃ।

৬৬৫। তেন জয়ত্যাদো।
তেন জয়ত্যাদাবর্থে টিকণ ভবতি। অকৈর্জয়তি জিতো দীব্যতি
খনতি বা আকিকঃ। অনভিধানাদিহ ন স্থাৎ। অঙ্গুল্যা
খনতি।

ত্যনেন তাক্তে পক্ষে তদর্হত্যাদৌ টিকণিত্যোৎসর্গিকশু টিকণঃ অধ্যদ্ধ-পূর্বাচ্চ তদর্হত্যাদাবসংজ্ঞায়ামিত্যনেন লুকং বক্ষাতি যকারশু তু বিধান-সামর্থ্যাদেব ন লুগ্ভবতি।

- (৬৮০)। অধ্যদ্ধপূর্বব্দে দ্বিগৌ চ সতি শতশব্দাদপি তদহ ত্যাদা-বর্থে যো ভবতীত্যেকে। যে স্ত্রমেতৎ পঠস্তি তেষাং পণপাদাদিস্ত্রে শতশব্দগ্রহণমনর্থকম্।
- (১৬৪)। দ্বিপূর্কাং ত্রিপূর্কাচ্চ শাণশন্ধাট্টণ্চ ভবতি। চকারো বিক্যার্থঃ। অনেন ত্যক্তে পক্ষে যো বা ভবতি ইতি দ্বাভ্যাং ত্যক্তে পক্ষে টিকণেব ভবতি। তম্ম লুক্ পূর্কবিং।

৬৬৫। তেন জয়তীত্যাদৌ যক্ত তত্তেন জয়ত্যাদি বাক্যমেবায়্কত্য বছবুীহিঃ। স্বার্থপ্রধানত্বাদম্বকরণত্ত তেন অয়ত্যাদ্মির্থে প্রত্যয়ঃ।
এবং তত্র নিযুক্তাদাবিত্যাদিস্ত্রেম্বি। অর্থাদ্যতেনেতি পদেনোক্ষিষ্ঠং
তত্মাৎ প্রত্যয়ঃ। তেনেতি করণে তৃতীয়া অতশৈত্রেণ জিতমিতার্থে ন
ভবতি তচ্ছকনির্দিষ্টাৎ করণাদয়ং প্রত্যয় ইতি। স্থবে সংখ্যাকালয়োরবিবিশিত্তমত এব অকৈর্জয়তীতি বছবচনেন বাক্যং দর্শিতবান্ এবং
সতি অকৈরজয়িদিত্যত্রাপি প্রত্যয়ঃ এবমুত্তর্যোগেম্বিণি জইবয়ম্। ক্ষয়তেম্বে কর্মণী বয়োরপি বাচ্যয়োর্জিত ইত্যত্র ক ইতি যুক্তম্। তত্মাদাক্ষিকঃ কার্যাপাঃ আফিকো দ্যুতকারঃ দিব্যতীতি ব্যবহারার্থসমাপিঃ
প্রহণমত্র অভএব বছলং তদ্ধিত ইত্যত্রোদাজহার। অহিতৃত্তেন ব্যরঃ

৬৬৬। তেন সংস্কৃতে।

দাধিকম্।

৬৬৭। কুপান্তকুলথাট্টণ্। তৈম্ভিডিকং কোলখম।

৬৬৮। তেন তরতি। পৌতিক:।

৬৬৯। নৌ দ্বাচ ইকঃ। নাবিকঃ ষটিকঃ।

৬৭০। তেন চরতি।

দাধিকঃ শাকটিকঃ।

७१२। পर्भारमष्टिकः।

হরতি অহিতৃগুক ইতি। অন্তিধানাদিত্যাদি জয়ত্যাদিক্রিয়ায়াং বস্ত করণত্বমপি প্রসিদ্ধং ন ভবতি তত্রানভিধানমিতাভিপ্রায়ঃ।

(৬৬৬। সত উৎকর্ষাধানং সংস্কারঃ ইয়মপি করণে তৃতীয়া। তেন সংস্কৃতমিত্যর্থে টিকণ্ স্যাৎ। অনুস্ক্ত্যা লক্ষেহপি তেনেতি পদং স্পষ্টার্যম্। এবমুত্রস্ত্রেম্বিপ জ্প্তব্যম্।

(৬৬৭)। ককারোপাস্তাৎ কুলখশন্সাচ্চ তেন সংস্কৃতমিত্যর্থে টণ্ভবতি।

(৬৬৮)। তেন তরতীত্যর্থে টিকণ্ তবাত। পৌতিক ইতি পোতো বহিত্রং তরতিরয়ং প্রবনমাত্রে তৎপূর্ক্রকদেশাস্তরপ্রাপণে তরে চ বর্ত্ততে অন্তং নম্ভাদৌ ঔড়ৃপিকঃ ত্র্গে গৌপুচ্ছিকঃ আশ্বমেধিকো ক্রমহত্যারাম্ এম্বর্থভেদঃ স্পষ্টঃ

(৬৬৯)। নৌশ্বাৎ ষ্যচশ্চ তেন তরতীতার্থে ইকো ভবতি। নাবিক ইতি নৌশন্ধাট্টকণাপি সিধ্যতি পৃথযিধানন্ত স্ত্রীন্ধবিবক্ষায়া-মটিকাদীপ্রভায়নিরাসার্থন্। নাবিকা স্ত্রী।

(৬৭০)। তেন চরতীত্যর্থে টিকণ্ ভবতি। চরতীতি চর্ ভক্ষণে গতৌ চ বর্ত্তত দ্বন্ধোরপীহ গ্রহণমেতহুদাহরণদ্বদ্ধেনৈব স্পষ্টীকৃতবান্।

(৬৭১)। পর্প, ইত্যেবমাদিভ্যস্তেন চরতীত্যর্থে টিকো ভবতি ।:

পর্পিকঃ। পর্প অশ্ব রথ জাল ব্যাস ব্যাল আক্ষ ॥৭॥*

७१२। श्रीमः शक्छ।

পদিকः।

৬৭৩। শ্বগণাট্তিকণ্চ। শাগণিকঃ শ্বগণিকঃ।

৬৭৪। তেন জীবতি বেতনাদেঃ। বৈতনিকঃ। বেতন বাহ অৰ্দ্ধবাহ জাল বেশ উপদেশ প্ৰেষৰ উপাস্তি ইংখশষ্যা শক্তি উপনিষদ স্থিগ পাদ উপস্থান ধনুদ গু ॥ ১৪॥ শ

৬৭৫। ব**স্নাদেরিকঃ।** বস্নিকঃ। ব**স্ন** ক্রয় বিক্রয় ক্রয়বিক্রয় ॥৪॥ গ্ল

টিকণাপি দিদ্ধে আক্ষমশব্দশু পাঠে। বৃদ্ধার্থতদ্বিতাস্তোহরঞ্জনবিকার্য়োরিতি পুংবদ্ভাবনিষেধনিরাসার্থঃ। আক্ষো দ্বিক্ষোপলঃ।

- (৬৭২)। পাদশদাত্তেন চরতীক্তর্থে টিকো ভবতি। পাদশদশ্চ পদ্ভবতি।
- (৬৭৩)। খগণশন্ধান্তেন চরতীত্যর্থে টিকো ভবতি। টিকণ্চ। খাগণিক ইতি খাদেরিতি ক্লারভৌবাদেশে প্রাপ্তে খপুর্ব্বগকারাদাবিতি প্রতিষেধঃ।
- (৬৭৪)। তেন জীবজীতার্থে বেতনাদেরুক্তরে টিকণ্ ভবতি। বাহানস্তরমর্দ্ধবাহ ইতি পঠ্যতে। তত্র অর্দ্ধাৎ পরিমাণস্ত পূর্ব্বে তু বেতার্দ্ধ-শব্দস্য পক্ষে বৃদ্ধিঃ। ধনুদ্ভিগ্রহণং সংঘাতবিগৃহীতার্থম্। ধারুদ্ভিকঃ ধারুদ্ধঃ দাভিকঃ।

(৬৭৫)। বন্নাদেশ্তেন জীবতীত্যর্থে ইকো ভবতি।

৬৭৬। **আ**য়ুধাদীয়**দ্চ।** আয়ুধিকঃ আয়ুধীয়ঃ।

৬৭৭। তেন হরত্যুৎসঙ্গাদেঃ।

खेৎসঙ্গিকঃ। উৎসঙ্গ উড়ুপ উষ্ট্র উৎপুট পিটক ॥৫॥ 🗢

৬৭৮। ভস্তাদেরিকঃ।

ভদ্রিকঃ। ভত্তা বরট ভরণ শীর্ষভার শীর্ষেভার অংসভার অংসেভার ॥৭॥ শ

৬৭৯। বীবধবিবধাভ্যাং টিকণ্চ। বিবধিকঃ বীবধিকঃ বৈবধিকঃ।

৬৮০। কুটিলিকায়াঊণ্। কোটিলিকঃ।

⁽৬৭৬)। স্বায়্ধশন্দাত্তেন জীবতীতার্থে ইকো ভবতি। ঈয়ৼচ।

⁽ ৬৭৭)। তেন হরতীত্যর্থে উৎদঙ্গাদেরুত্তরে টিকণ্ ভবতি । 🖓

⁽৬৭৮)। ভস্তা ইত্যেবমাদিভাস্তেন হরতীতার্থে ইকো ভবতি। শীর্ষ-ভারঃ শার্ষেভার ইতি গণপাঠদামর্থ্যাৎ শিরসঃ শীর্ষাদেশঃ তৎপুরুষে ক্বভি বছলমিতি সপ্তম্যা অলুক্ এবমংসেভারঃ অংসভারঃ।

⁽৬৭৯)। বীবধ বিবধ ইন্ডোডাভ্যাং তেন হরতীত্যর্থে টিকণ্ ভবতি। চকারাদিকশ্চ। বীবধ বিবধশক্ষো সমানাথৌ পথি আহরণীয়তগু,লাদিরু চ বর্ততে।

⁽৬৮০)। কৃটিলিকাশন্ধাত্তেন হরতীত্যর্থে টণ্ ভবতি। কুটিলিকা-শন্ধেন কুটিলা গতিঃ অগ্রে বক্রা লোহাদিময়ী যষ্টিরপ্যুচ্যতে। কুটিলিকয়া পত্যা ব্যাধং হরতি কোটিলিকো মৃগঃ। কুটিলিকয়া অঙ্গারাণি হরতি কৌটলিকঃ কর্মকারঃ।

^{*} উৎসঙ্গোড়পপিটকা উদ্ভৌহণোৎপুট ইমে বাণা: ॥ ৫ ॥

৬৮১। তেন নিষ্পান্ধেহক্ষদ্যতাদেঃ।
আক্ষদ্যতিক্ষু। অক্ষদ্যত জায়াপ্রকৃত পাদস্বেদ কণ্টকমৰ্জন
গতাগত গমাগম যাতোপযাত ॥৭॥ *

৬৮২। ভাবপ্রত্যয়ান্তাদিমঃ। কুটিমঃ দাহিমঃ পূর্ণিমা।

ি ৬৮৩। অপমিত্যাৎ কণ্। আপমিতীকঃ।

৬৮৪। বাচিতাৎ কঃ। যাচিতকম্।

৬৮৫। তেন সংস্ফৌ। দাধিকঃ।

⁽৬৮১)। অক্ষদ্যতাদেরুত্তরে তেন নিষ্পারেহর্থে টিকণ্ স্থাৎ।

⁽৬৮২)। ভাবপ্রত্যয়াস্তাহত্তরে তেন নিষ্পন্নেহর্থে ইমো ভবতি।
কুটিম ইতি কুটচ্ছেদনকুৎসনয়োঃ পুংসি ঘণিত্যাদিনা ঘণ্ কুটনং কুটস্তত
ইমঃ এবং দহেদ হিমঃ। পূর্ণিমেতি পূরী আপ্যায়নে ভাবে ক্তঃ শ্বিঘুয়াদীদিতাং ক্টো ঘাবিতি ত্যাদিরাদিঙভাবঃ ক্তক্তব্যোরিত্যাদিনা ত্স্য নঃ।

⁽৬৮০)। অপমিত্যেতি মেঙ্প্রণিদানে ইত্যশ্বং মেঙে। ব্যতীহারে ইতি জ্বা নিতাং কুপ্রাদেরিতি সমাসঃ প্রাদের্যচ্ সমাসে ইতি যুচ্ মিশ্চ বচীতি ম্যাদেশঃ তুক্। অপমিত্যশব্ধান্তেন নিষ্পন্নেহর্থে কণ্ ভবতি। স্ত্রে পঞ্মীশ্রুতিরমুক্তত্বাৎ।

⁽৬৮৪)। যাচিতশন্ধাত্তেন নিষ্পন্নেহর্থে কো ভবতি।

⁽৬৮৫)। সংস্প্রমেকীক্বতং দ্রব্যাস্তরেণ মিশ্রীভূতমিত্যর্থ:। তেন *সংস্প্রেইংর্থেটিকণ্ ভবতি। ক্তোৎকর্ষণ হি সংস্কৃতং সংস্কৃত্তি অমুৎ-

অক্ষদ্যতগতাগতক টকমদ নগমাগমাঃ প্রোক্তাঃ।
 যাতোপ্যাতজায়াপ্রকৃতো স্বেদন্ত পাদাদাঃ॥ १॥.

৬৮৬। চূর্ণাদিন্। চুণী।

७৮१। यूनगांडेन्।

त्योक्शः।

৬৮৮। ব্যঞ্জনাত্তেনোপদিক্তো সৌপিকঃ।

৬৮৯। ওজঃসহোহস্ভোভ্যত্তেন বর্ত্তে। ঔজসিকঃ সাহসিকঃ আন্তসিকঃ।

৬৯০। তেন ভ্ৰাজতে।

বান্ত্ৰিক:।

কর্ষেহপি মিশ্রমাক্রমিতি সংস্কৃতেন সূহাস্ত ভেদঃ ন চ যেন বং সংস্কৃতং ভবতি তদবস্তাং তেন সহ মিশ্রম্। বিদ্যায়া সংস্কৃতো বৈদ্যিক ইত্যত্র অস্-র্ত্তয়া বিদ্যায়া সংস্কারোহস্তোব নতু মিশ্রত্বম্ অমূর্ত্তায়া মিশ্রতাভাবাৎ।

(৬৮৬)। চুর্ণান্ধান্তেন সংস্থ ইতার্থে ইন্ তর্বতি। নমু যচ্চূর্ণেন সংস্থাং তন্মিন্ চূর্ণমপ্যস্তি অতস্তনস্থান্তান্মিন্ বা মাতুরিতি অনুবৃত্তো অতো-হণকাদেরিনিকাবিতি ইন্ ভবিষ্যতি কিমনেন। উচ্যতে। সংস্থাবিৰক্ষায়ান্ত তেন সংস্থাই ইত্যানেন টিকণ্ স্থান্তবাধনার্থং লক্ষণম্।

(৬৮৭)। মুদ্দাশন্ত্রন সংস্ঠ ইত্যর্থে টণ্ ভবতি।

(৬৮৮)। ব্যঞ্জনবাচকাচ্ছকাৎ তেনোপসিক্তে বাচ্যে টিকণ্ স্যাৎ। ব্যঞ্জনমিহ স্থানৌ রুঢ়ং গৃহুতে। তেন সংস্কৃত্ত ইত্যনেনৈব সিদ্ধে উপসিক্ত-বিধানস্যৈতৎ প্রয়োজনম্ উপসিক্তেহর্থে ব্যঞ্জনাদেব যথা স্থাদিহ মাভূৎ উদ-কেনোপসিক্ত ওদনঃ কিঞ্চ নন্থাপসিক্তেন নিয়মেন গুণোৎকর্মঃ সম্ভবতি অপকর্মস্থাপি সম্ভবাৎ অতোহস্য সংস্কৃতার্থত্বাৎ পৃথক্ত্বম্।

(৬৮৯)। বর্ত্ত ইতি চেইত ইতার্থ:। ওজস্ সহস্ অস্তদ্ ইত্যো-তেভান্তেন বর্ত্ত ইতার্থে টিকণ্ ভবতি।

(৬৯০)। তেন ভ্ৰাজতে শোভতে ইত্যৰ্থে টিক্নণ্, ভবতি। অৰ্থাদ্-ৰম্ভৎপদবাচ্যং তন্মাৎ প্ৰত্যয়ঃ। ৬৯১। কর্মবেষাভ্যাং ষঃ। কর্ম্মণ্যঃ বেষীঃ বেষোহত্র নেপথ্যবাচী মূর্দ্ধশুষকারঃ।

৬৯২। কালাত্তমধীফ্রাদে। মাসমধীফ্রো ভূতো ভূতো ভাবী বা মাসিকঃ।

৬৯৩। সমাগ্রা ঈনঃ।

সমীনঃ।

৬৯। দ্বিগো বা।
দ্বিসমীনঃ দ্বৈসমিকঃ।

৬৯৫। রাত্র্যহঃসংবৎসরবর্ষাচ্চ!

(৬৯১)। কর্ম বেষ ইত্যেতাভাাং তেন ভ্রান্ধত ইত্যর্থে যো ভবতি। কর্ম্মন্য ইতি অভাবকর্ম্মযে চেত্যাদিনা নলুগ্নিষেধঃ। *

(৬৯২)। কালবাচকাচ্ছপাত্তমধীষ্ট্রাদাবর্থে টিকণ্ ভবতি। অধীষ্টঃ
দংকৃত্য ব্যাপারিতঃ। ভূতো বেতনেন ক্রীতঃ ভূতঃ সন্তর্মা ব্যাপ্তকালঃ
ভাবী তাদৃশ এব ভবিষ্যতি। মাসমধীষ্ট ইত্যাদাবধ্যেষণাদি পুরুষাদি
কর্ম্ম তদপি ক্রেনোক্রং ন চাক্তা ক্রিরান্তি যক্তা মাসাদি কর্ম্ম তাং তত্মাং
কালাধ্বভ্যামবিচ্ছেদ ইতি দ্বিতীয়া। নম্বধ্যেষ্পভরণে মৃহ্ ক্রং ক্রিয়েতে
তাভ্যাং কথং মাসো ব্যাপ্যতে। উচ্যতে। ষদর্থং হি তে ক্রিয়ে
ক্রিয়েতে তৎফলভূত্রা অধ্যোষণাদিক্রিয়না মাসো ব্যাপ্যত ইতি ভাজ্যামেব ব্যাপ্যতে ইত্যুচাতে তদা হি তদ্যাপারক্ত ত্ত্রোপচারাং। যথা
চৌরৈপ্রামো দগ্ধ ইতি ন হি চৌরেপ্রামো দক্ততে অপি তু তদা হি
তেনাগ্রিনোপচারাত্র তথা ব্যপদেশঃ। সংখ্যাশব্দোহপি যদা কালে
সংখ্যেয়ে বর্ততে তদাপি প্রত্যয়ঃ দ্বে ষ্ট্রী ভূতো ভাবী বা দ্বিষাষ্ট্রকঃ
সংখ্যায়াঃ সংবৎসরসংখ্যারাবিত্যুত্ররপদর্কিঃ অনহ গ্রাক্ষ টিকণ্লুক্।

- (৬৯৩)। সমাশ কান্তমধী ষ্টাদাবর্থে সিনো ভবতি। সমা সংবৎসরঃ।
 (৬৯৪)। সমাশ কান্তমধী ষ্টাদাবর্থে ছিগৌ সমাসে সিনো বা ভবতি।
 পক্ষে টিকণ্চ। ছিসমীন ইতি ছে সমেহধী ষ্ট ইত্যাদৌ তদ্ধিতার্থে ছিঞা।
- (৬৯৫)। রাত্রি অহন্ সংবৎসর বর্ষ ইত্যেতেভান্তমধীষ্টাদাবর্ধে মিনৌ সমাসে ইনো বা তবতি। পক্ষে টকণ্ চ। বিরাতীণ ইন্ডি

দ্বিরাত্রীণ: দ্বৈরাত্রিকঃ দ্ব্যহীন: দ্বৈয়হ্নিকঃ দ্বিসংবৎসরীণ: দ্বিসাং-বৎসরিকঃ দ্বিক্ষীণ: দ্বিবার্ষিকঃ।

৬৯৬। মাদাছয়দি ণীনঃ।

भागीता वानः।

৬৯৭। বিগোঁচ যঃ।

মাস্যো বালঃ দিমাস্যো বৎসঃ। যথাভিধানমর্থসম্বন্ধঃ।

৬৯৮। বন্মাসাগ্য×চ। বাগাস্তঃ বগাস্ত×চ বালঃ।

সমাহারে বিশুঃ সবৈ কদেশুত্যাদিনা অৎ সমাসান্তঃ তত ঈন:। ধ্যহীন ইতি সমাহারে ধিশুঃ অনিত্যথাৎ সমাসান্তাভাবঃ ঈনেহক ইতি নকারপুক্ একপুণ্যবন্ধ মিত্যাদিনাক্ষাদেশোহৎমুমাসান্তক কশান্ন ভবতীতি নিরপণীয়ম্। ব্যবস্থিতবিভাষয়া ইতি স্থাসকারঃ। হৈয়ক্তিক ইতি ঈনেহক ইতি নিরমাৎ ন নকারলুক্ শসাঘচ্যতোহযুগম ইত্যকারলুক্ বৃদ্ধিস্থানস্তেত্যাদিনা ত্রয়া-দেশঃ। বিসাংবৎসরিক ইতি সংখ্যায়া ইত্যাদিনা উত্তরপদবৃদ্ধিঃ। বিবার্ষিক ইতি বর্ষস্থাভবিষ্যতীতি উত্তরপদবৃদ্ধিঃ ভাবার্যে তু দ্বোর্ষিকঃ।

(৬৯৬)। মাসশকাৎ বয়গুভিধেয়ে তমধীষ্টাদাবর্থে ণীনো ভবতি। মাসীন ইতি মাসং ভূত ইত্যর্থ:। ণিৎকরণং মাসীনাভার্য্য ইত্যত্ত পুংঘ-দ্ভাবনিষেধার্থম্।

(৬৯৭)। মাসশব্দাৎ কেবলাৎ দিগৌ চ বন্ধনি গম্যমানে যো ভবন্তি।
বিধানসামর্থ্যাৎ কেবলান্মাসশব্দাৎ গীন্যয়োঃ সমাবেশঃ। দিগৌ তু য এব
ভবতি। যথাভিধানমর্থসম্বন্ধ ইতি যগপি তমধীষ্ট ইত্যাদমশ্চম্বান্ধে
হর্থা অত্রামুব্ভান্তথাপি ভূভ ইত্যভিধানেনৈব বন্ধসীত্যভার্থসম্বন্ধাে যুক্তঃ।
ভাতএব মাসং ভূতো মাসীন ইত্যুচাতে মাসং ভাবীতার্থে তু প্রান্ধােগােন
দৃশ্রতে অথবা কাপি দৃশ্রতে তদা তদপি ব্যবস্থেন্যম্। নমু মাসং ভূত
ইত্যর্থেহপি মাসিক ইতি পূর্বাং যদ্দাহতং তৎ কথম্। উচ্যতে। অবম্বনি
তু তদ্দ্রপ্টবান্। মানিকাে রোগঃ বান্ধা হি প্রাণিধর্মঃ সোহশ্র বিষয়ঃ।

(७৯৮)। यथानमन्त्रावत्रनि गरमा सा छवछि गुन्छ।

৬৯৯। টিকণ্দীত্যেকে। শ্বাশাসিক:। •

৭০০। যণিকাববয়সি।

ষাগাস্তঃ ষাগ্মাসিকশ্চ রোগঃ।

৭০১। তেন নির্ভাদে।

মাসেন নির্বতঃ পরিজয্যে। লভ্যঃ কার্য্যঃ স্করো বা মাসিকঃ।

৭০২। ষষ্টিরাত্রাৎ কন্তেনপচ্যন্তে রাত্রলোপশ্চ। ষষ্টিকা নাম শালয়ঃ।

৭০৩। তদস্থ ব্রহ্মচর্য্যম্।
মাসং ব্রহ্মচর্য্যমন্থ মাসিকে৷ ব্রহ্মচারী অথবা মাসোহস্থ ব্রহ্মচর্য্যস্থ
মাসিকং ব্রহ্মচর্য্যম্।

৭০৪। তত্র কার্য্যং দীয়তে বেতি ভবার্থপ্রত্যয়াঃ।

⁽৬৯৯)। ধথাসশব্দাট্টকণপি ভবতীত্যন্তে।

⁽१००)। यथापमनान्वयमि शमामान यन् हेक् हेट्याटो छवछः।

⁽৭০১)। কালবাচকাচ্ছকাত্তেন নির্ব্তাদাবর্থে টিকণ্ স্যাৎ। নির্ব্তঃ সমাপ্তঃ পরিজ্ঞয়ঃ পরিজেতুং শক্যঃ পরি সর্ব্বতো ভাবেন লভ্যো লক্ষবাঃ প্রাপ্তব্য ইত্যর্থঃ কার্য্যঃ করণীয়ঃ স্কুকরঃ স্থপসম্পাদনীয় ইত্যর্থঃ।

⁽৭০২)। ষ্টিরাত্রীণাং সমাহারঃ ষ্টিরাত্রঃ সর্বৈকদেশসংখ্যাত-পুণ্যাচ্চ রাত্রেরিত্যৎ সমাসাস্তঃ রাত্রাস্তাদয়ঃ পুংসীতি পুংলিক্ষম্ ষ্টিরাত্রশক্ষান্তেন পচ্যস্তে ইত্যর্থে কো ভবতি। রাত্রশু চ লোপঃ। ষ্টিকা নাম ইত্যুক্তং সংজ্ঞায়ামেবাস্থাভিধানমিতি স্চ্যিত্বং তেন মুদ্যাদৌ নাতিপ্রসঙ্গঃ।

⁽৭০৩)। কালাদিতামুবর্ত্ততে। তাদিতি কালাধ্বত্যামবিচ্ছেদে ইতি দ্বিতীয়া। তংকালং ব্যাপ্যাস্থ ব্রহ্মচর্যামিত্যাম্মির্থে কালবাচকা-চ্ছুলাট্টকণ্ ভবতি। অথবেত্যাদিনা স্বত্ত্যার্থমন্তথা স্চয়তি তদিতি প্রথমান্তং কালবাচকাচ্ছুলান্ডদস্তেত্যথে ব্রহ্মচর্ষ্যে বাচ্যে টিকণ্ ভবতি। (৭০৪)। তত্র কার্যাং তত্র দীয়তে বা ইত্যর্থে চ কালবাচকাচ্ছুলা-

মাসে কার্য্য: শীয়তে বা মাসিকং প্রার্ধেণ্য: হৈমনম্। কালাদিতি নির্ত্তম্

প॰৫। টণ্ব্যুফীদেঃ।

বৈর্ফিন্। ব্যক্ত নিত্য নিষ্ক্রম প্রবেশন তীর্থ সংগ্রাম সংঘাত ক্লবাস উপবাস অগ্রিপদ পীলুমুল ॥১১॥ *

৭০৬। তেন যথাকথাচাগ্নঃ।

যথাকথাচানাদরেণ কার্য্যং দীয়তে বা ষাধাকথাচম্।

१०१। इन्डाम्यः।

रखाम्।

৭০৮। বজ্ঞাত্তস্ত দক্ষিণায়াম্। দুগ্নিফৌমস্ত দক্ষিণা আগ্নিফৌমিকী।

ছবিহুৰ্থ বিহিতাঃ প্ৰত্যয়া ভবন্তি। বথা মাসে ভবং মাসিকমিতি কালাদিতি শুশৈষিকষ্টিকণ্ তথাত্ৰাপি প্ৰাব্যেণ্য ইতি প্ৰাব্য এণ্য ইতি এণ্যঃ
হৈমনমিতি হেমস্তান্তলোপশ্চেতি টণ্ তলোপশ্চ। যন্তাপি যণ্মাসে কাৰ্য্যে
বগাসে দীয়াকৈ তৎ তন্মিন্ মাসে ভবতীতি ভবার্থাছন্ত্যেব তথা কার্য্যতাং
দীয়ামানতাঞ্ধে বিশ্বিত্ং ক্রতম্।

- (৭০৫)। ব্যুষ্টীনরেত্র কার্যাং তত্র দীয়তে বেত্যস্মির্মর্থ টণ্ ভবতি। ব্যুষ্টং প্রভাতং তৎসাহচর্য্যারিত্যশব্দোহিপ কালবাচ্যেব গৃহুতে নাকাশাদিবচন:। নিত্যং সুর্বং কালং দীয়তে নৈত্যঃ বৈষুষ্টমিতি পূর্ববদ্যস্থ ঐয়াদেশ:।
- (१०৬)। যথাকথাচ ইত্যব্যয়সমূলায়ো হনাদরে বর্ত্ততে। যথা-কথাচ ইতান্থাৎ তেন কার্য্যং তেন দীয়তে বৈত্যুর্যে গো ভবতি।
 - (৭০৭)। হস্তশকাত্তেন কার্যাং তেন দীয়তে বেত্তাম্মিরর্থে যো ভবতি। (৭০৮)। যজ্ঞবাচকাচ্ছকাত্তন্ত দক্ষিণায়াং বাচ্যামাং টিকণ্ভবতি।
 - বৃদ্ধং নিতাং নিব্জনোহথ পীলুমূলং প্রবেশনম্।
 তীর্থসংগ্রামসংঘাতাঃ প্রবাসাধিপদে তথা।
 উপবাসক বৃষ্টাদাবেকাদশ সমীরিতাঃ ॥১১॥

৭০৯। তত্ত্ৰ দীয়তে ২পীত্যেকে।

৭১০। মহানাম্যাদেরস্থ ব্রহ্মচর্য্যে।
মহানামীনাম্চাং ব্রহ্মচর্য্যং মাহানামিকম্। মহানামী আদিত্যব্রত গোদান ॥ ৩॥

৭১১। তচ্চরতি চ। মহানাম্নীশ্চরতি মাহানাম্নিকঃ।

৭১২। দেবব্রতাদেরিন্। দেবব্রতী। দেবব্রত তিলব্রত অবাস্তরদীকা। ॥ ৩॥

৭১৩। অন্টাচত্বারিংশতে ডকডিনো। স্মন্টাচহারিংশদ্বর্য সহচরিতং ব্রতং চরতি অন্টাচহারিংশকঃ অন্টাচহারিংশী।

৭১৪। চাতুম স্থাদ্যলুক্ চ।

তত্র ভবেহর্থে যজ্ঞাদিতি টিকণ্ সিধ্যত্যের তক্ষ্যেদমিত্যর্থে তু টণ্ স্যার্দ্রাধনার্থং লক্ষণম।

- (৭০৯)। যজ্ঞবাচকাচ্ছকাৎ তত্ত্ব দীয়তে ইত্যশ্মিরর্থেইপি টিবশ্ ভবতীত্যেকে। আগ্রিষ্টোমিকং ভক্তং ভাষ্যকারসম্মতত্বাদস্যার্থ গ্রৈক ইত্যক্তম্।
 - (৭>)। মহানাম্যাদেঃ শব্দাদশু ব্লদ্ধর্যা টকণ্ ভবতি।
- (৭>>)। মহানাম্যাদেস্তক্তরতীতার্থে চ টিকণ্ ভবতি। মহানাম্যো নাম ঝচস্তৎসহচরিতমপি মহানামীত্যুচাতে উপচারাৎ যত্ত্তস্যৈর চরণং সম্ভবতি।
 - (৭১২)। দেবব্রতাদেঃ শন্ধান্তকরতীত্যর্থে ইনু ভবতি।
- (৭১০)। অট্টাচন্বারিংশচ্চন্দান্তচ্চরতীত্রর্থে ডক ডিন্ ইত্যেতী ভবতঃ। অট্টাচন্বারিংশচ্চন্দেহত্র তথাইচরিতে রতে সাহচর্যাদর্ভতে। চন্বারিংশদাদৌ বেতি ক্নতাব্রম্ম নিদেশাং ক্নতান্বাদেব প্রত্যায়। অষ্টাচন্বারিংশক ইতি যশ্চতুর্ব বেদেয় প্রতিবেদং দাদশবর্ষাণি ব্রতং চরতি স্ট্টাতে।
 - (৭১৪)। চাতুন ভি ইতি চতুম সাদ্ধকে ইতি বণ্ চাতুম ভিশক্।-

চাতুর্মাস্তবজ্ঞসহচরিতং ব্রতঞ্চরতি চাতুর্মাসকঃ চাতুর্মাসী।

৭১৫। তাঁস্মে শক্তে সন্তাপাদেঃ। সন্তাপায় প্রভবতি সান্তাপিকঃ। সন্তাপ সন্নাহ সংগ্রাম সংযোগ সংপ্রায় সংবেশ নিম্পেষ সংপ্রেষ বিসর্গ উপসর্গ নিসর্গ প্রবাস

সংপরায় সংবেশ নিষ্পেষ সংপ্রেষ বিসর্গ উপসর্গ নিসর্গ প্রবাস উপবাস সংঘাত সম্পাদন শক্তু মাংস ওদন শক্তু মাংসোদন।#1>১

৭১৬। যোগাদ্**বশ্চ।** যোগিকঃ যোগ্যঃ।

৭১৭। কর্মা উকণ্। কাম্মুকম্।

৭১৮। সময়াদশু তৎপ্রাপ্তে। সময়ঃ প্রাপ্তোহস্থ সাময়িকঃ।

গুচ্চরতীত্যর্থে ডকডিনৌ ভবত:। যলুক্ চ। ছিতি স্বরতচ্ছেষয়োলু গিতি অকারলুকি ক্বতে কেবলমকারলুক্ অথবা ডিতীতি লুকং বাধিতা এব যকারলুক।

(৭১৫)। তব্ম ইত্যত্র শক্তার্থধোগান্তাম:সন্তীত্যাদিনা চতুর্থী। সম্ভাপাদে: শন্দাহত্তরে তব্ম শক্তে বাচ্যে টিকণ্ ভবতি।

(৭১৬)। যোগশকান্তকৈ শক্তে বাচ্যে টিকণ্ ভবতি। যক্ত।

(৭১৭)। কর্ম্মণ ইতান্মাৎ তদ্মৈ শক্তে নাচ্যে উকণ্ ভবতি।

(৭১৮)। সময়শকাৎ তৎপ্রাপ্তেংক্তেতার্থে টিকণ্ ভবতি। স প্রাপ্তা। ২শু ইতি তৎপ্রাপ্ত: তৎপদেন যন্ত্রাৎ প্রত্যয়ঃ স পরামৃষ্যতে। অত আহ সময়ঃ প্রাপ্তোহস্তেতি।

> সন্তাপসন্নাহবিসর্গমাংসাঃ সংগ্রামসম্পাদনসংপরায়াঃ। সংযোগসংবেশনিসর্গশক্ত প্রবাসসংঘাতমুপাক্ত সর্গঃ। শক্তোন্ত মাংসৌদনমোদনঃ স্থাৎ নিম্পেরসম্পোর উপপ্রবাসাঃ ॥১৯॥

৭১৯। উপবস্তুপ্রাশিত্ভ্যফণ্।

ঔপবন্তম্ অন্তিবং প্রাণিত্রম্।

৭২০। কালাদ্যঃ।

कालाः।

१२३। कार्नाम्य जनीर्घ।

দীর্ঘঃ কালোহস্থ কালিকম্ণম্।

৭২২। অস্ত তৎপ্রয়োজনে।

ইন্দ্রমহঃ প্রয়োজনমস্থ ঐব্দ্রমহিকঃ।

৭২**৩।** একাগারাচ্চোরে। ঐকাগারিক**্রে**চারঃ।

৭২৪। চূড়াদে**ফণ**্। চৌডঃ শ্রাদ্ধঃ।

⁽৭১৯)। উপবস্ত ঋতু প্রাশিত ইত্যেতেভান্তৎপ্রাপ্তেহস্তেত্যর্থে চণ্ ভণতি উপনস্তা প্রাপ্তোহস্ত ঋতুঃ প্রাপ্তোহস্ত প্রাশিতা প্রাপ্তোহস্তেন্ত্রের প্রাপ্তান্তর্গাদ্যঃ।

⁽ ৭২ •)। কালশকাত্তংপ্রাপ্তেহস্তেত্যর্থে যো ভবতি। কালঃ প্রাপ্থো-হক্তেতি কাল্যঃ সম্ভাপঃ।

⁽৭২১)। কালশন্ধান্তনীর্ঘোহস্তেতার্থে টিকণ্ ভবতি। স দীর্ঘো-হস্যেতি তন্দীর্ঘঃ।

⁽ ৭২২)। তৎ প্রয়োজনমস্য তৎপ্রয়োজনং তৎপদেন যন্ত্রাৎ প্রত্যরঃ
স পরামুষ্যতে তৎ প্রয়োজনমস্যোত্যর্থে বাচ্যে টিকণ্ ভবতি।

⁽ ৭২৩)। একাগারশকাৎ তৎপ্রয়োজনমন্তেতার্থে চৌরে বাচ্যে টিকণ্ ভবতি। অসহারং গৃহং চৌরস্ত মোষার্থিনঃ প্রয়োজনং ভবতি ঐকাগারিক-শ্চৌরঃ পূর্ক্ষেনিব সিদ্ধে চৌরে নিয়মার্থং বচনম্। তেন একাগারং প্রয়ো-জনমস্তেতি ভিক্ষোরিতাত্ত্ব ল ভ ভবতি।

⁽ ৭২৪)। চূ**ড়াদেন্তং প্রয়োজনম**দ্যোত্যর্পে টণ্ ভবতি। চূড়া প্রয়োদ ক্রনমন্য চৌড়ঃ প্রহা প্রয়োজনমন্য প্রাহঃ।

৭২৫। বিশাখাষাঢ়াভ্যাং **মন্থদগুয়োঃ।** বৈশাখো মন্তঃ আষাঢ়ো দণ্ডঃ।

৭২৬। উত্থাপনাদেরীয়ঃ। উত্থাপনীয়ম্। উত্থাপন উপস্থাপন অমুপ্রবচ্ন দীর্ঘজীবত সংপ্রেষণ অমুবাসন আভরণ অমুবাদন। *॥ ৮

৭২৭। ঙনান্তবিশিপদিপুরিরুহিসমাপেঃ সপূর্ব্ব-পদাৎ।

পৃহপ্রবেশনীয়ং অশ্বপ্রদায়ং প্রপাপুরণীয়ং প্রাসাদারোহণীয়ং বাগসমাপনীয়ম্।

৭২৮। ধনাদেযিঃ। ধলুম্। ধন ধৰ্ম সূৰ্গণাও

⁽ ৭২৫)। বিশাখা আষাঢ়া শকাভ্যাং যথাক্রমং তৎপ্রয়োজনমস্যেত্তার্থে মন্তে দণ্ডে চ বাচ্যে টণ্ডবতি। বিশাখা প্রয়োজনমস্য বৈশাখঃ জ্যোতির্বাচী বিশাখাশকঃ।

⁽ ৭২৬) । উত্থাপনাদিভ্যস্তৎপ্রয়োজনমদ্যেত্যর্থে ঈয়ো ভবতি উত্থাপ-নায়যিতি উত্থাপনং প্রয়োজনমদ্যেত্যর্থঃ।

⁽৭২৭)। ওনাস্ত ইতি বিশ্বানিভি: প্রত্যেকন সম্বধ্যতে। পূর্বনি পদাছত্তরেভা ওনাস্তবিশ্বাদিভা উত্তরে তৎপ্রয়োজনমস্তেত্যর্থে দিয়ো ভবতি। গৃহ প্রবেশনীয়মিত্যাদি বিশ্প্রবেশনে পদ্গতৌ পুরী আপ্যান্যনে রুহ্ জন্মনি প্রাহ্রভাবে সংপূর্ব্ব আপু ব্যাপ্তো এভ্যো ওনট্ গৃহপ্রবেশনং প্রয়োজনমস্যেত্যাদির্পঃ।

⁽৭০৮)। ধনাদেস্তৎপ্রয়োজনমদ্যেতার্থে যো ভবতি। ধ্রুমিতি ধরং শ্রুয়োজনমস্তেতার্থঃ।

^{*} উত্থাপনমাভরণং সংপ্রেষণদীর্ঘজীবিতে চ ৷ অসুতঃ প্রেকনবাদনবাসনং স্থাপনাস্কোপম্ ॥৮॥

[🕆] धनधानी यनःचर्शाचायुर्टि धनाममः ॥०॥

৭২৯। আকালাদিকটিকণোঁ জন্মনাত্রবিনাশিনি। সমানকালোঁ জন্মবিনাশাবস্থ আকালিকঃ আকালিকী। আকাল-শব্দস্তৎলুরুষোহব্যয়ীভাবো বা।

৭৩০। যোজনাদেস্তদ্গচ্ছতি। যোজনং গচ্ছতি যোজনিকঃ। যোজন পরদার গুরুতক্স। ৩।

৭০১। প্রতিপথাদিকক্ষ। প্রতিপথিকঃ প্রাতিপথিকঃ।

৭৩২। পথষ্ঠিকঃ। পথিকঃ।

৭৩৩। সদা তং যাতি পথো নক্ষে হু**শ্চ**। পাস্থঃ।

⁽৭২৯)। আকালশন্ধাজ্জন্ম শাত্রবিনাশিনি বাচ্যে ইকটিকণোঁ ভবভ: ।
আকালশন্ধাইয়ং সমানকালসমানার্থ: যদ্যপ্যেকশু সমানকালোঁ জন্মবিনাশা ন সম্ভবতন্তথাপি জন্মবিনাশয়োর গুস্তসারিধ্যমনেন ছোতাতে
তৎপুরুষোহব্যয়ীভাবো বেতি। আবৃত্ত: কাল: আকাল ইভি নিতাং
কু প্রাদেরিতি তৎপুরুষ: অথবা অপপরিবহিরিত্যাদিনা অব্যয়ীভাব:। ক্রিয়ামাকালিকা আকালিকী।

⁽৭৩০)। যোজনাদেঃ শব্দান্তকাচ্ছতীত্যর্থে টিকণ্ ভবতি। গুরু-জন্নং গুরুদারা: পরদারান্ গল্ভতীতি গুরুতন্নং গল্ভতীতি গমিরত্র মৈথুন-বচনঃ।

⁽৭৩১)। পথানং পথানং প্রতি প্রতিপথং বীপ্সায়ামিতি অভিপ্রত্যো-রাভিমুখ্যে লক্ষণদ্বিতীয়য়া বেতি বাবায়ীভাব: ঋগাদেরং সর্ব্ব ইতি অং সমাসাস্ত:। প্রতিপথশব্দান্তদগচ্চতীতার্থে টিকণ্ ভবতি। ইকশ্চ দ্বাতিন পথিক ইতি সর্ব্বান্ পথে। গচ্ছতি আভিমুখ্যেন বা পছানং গচ্ছতীতার্থ:। প্রাদিসমাসে ন ভবতানভিধানাং।

⁽ ৭৩২)। পথিশব্দান্তদগচ্চতীত্যর্থে টকো ভবতি। পন্থানং গচ্ছ-জীতি পথিকঃ ব্রিয়াং পথিকী।

প্ৰতঃ। ক্ৰোশশতযোজনশভাততোহভিগমমহ তি সদ তং যাতি চ।

ক্রোশশতিকঃ যৌজনশতিকঃ।

৭৩৫। তেন যাত্যাহৃতং চোত্তরাদিভ্যঃ পর্থঃ। ঔত্তরপথিকঃ। উত্তর বারি কাস্তার স্থল জর্মল অজ শঙ্কু *। ৭।

৭৩৬। স্থলপথাট্রণ্ মধ্কমরীচয়োঃ । স্থালপথং মধুকং মরীচঞ্চ।

৭ ৩৭ বারিপথাদিত্যেকে। বারিপথং মধৃকং মরীচঞ্চ।

⁽ ৭৩৩)। পথিশব্দাৎ সদা তং যাতীত্যর্থে নো ভবতি। থক্ত স্থানে স্থাদেশ-চ। অমুবৃত্ত্যাপি পথি লব্ধে পথিগ্রহণং মন্দধিয়াং স্থথপ্রতিপত্ত্যর্থম্। পাছ ইতি এব্ধিদা পদ্ধানং গচ্ছতীত্যর্থ: প্রিয়াং পাছা।

⁽৭০৪)। ক্রোশশত যোজনশত ইত্যেতাভাাং ততোহভিগমমহ তীত্যর্থে সদা তং যাতীত্যর্থে চ টিকণ্ ভবতি। গমনং গমং অভিমুখং
গমোহভিগমং। ক্রোশশতিক ইতি ক্রোশশতাদভিগমনমহ তীত্যর্থঃ
ক্রোশশতং সদা গছতীতি চার্থঃ।

⁽ ৭৩৫)। উত্তরাদিভা উত্তবস্থ পথিশবস্থ তেন যাতীতার্থে তেন ক্লুতমিতার্থে চ টিকণ্ ভবতি। ঔত্তবপথিক ইতি উত্তবপথেন যাতি উত্তব-পথেনাক্লতমিতি চার্থঃ।

⁽ ৭৩%)। পূর্বেণ টিকণি প্রাপ্তে বিধানম্। স্থলপথশব্যাধুকে মরীচেচ বাচ্যে টণ্ ভবতি। স্থলপথেনার তং স্থালপথম্।

⁽৭৩৭)। বাবিপথশন্ধাদপি মধ্কে মরীচে চ বাচ্চে টণ্ ভবতীত্যেকে।
(৭০৮)। পাবায়ণাদিভাস্তদর্গ্রস্তীত্যর্থে টিকণ্ ভবতি। পারায়ণং
বেদন্ত শাস্ত্রস্থা বা সমস্তাধ্যয়নকর্ম। উত্তরায়ণং যক্তবিশেষঃ। চাল্রায়ণো

উত্তরস্থাকারশঙ্বার্যাঞ্জলসংশ্। ব ।

পারামুশ্ং বর্ত্তয়তি পারায়ণিকঃ। পারায়ণ উত্তরায়ণ চান্দ্রায়ণ।৩। ৭৩৯। তদতাত।

ছৈপারায়ণিক:। অনভিধানাদিহ ন স্থাৎ – পারায়ণং বর্ত্যুভি শিষ্য: উত্তরায়ণাখুং যাগং বর্ত্তয়তি যাজকঃ।

৭৪০। সংশয়াত্রাপন্নে। সংশয়মাশক্ষঃ সাংশয়িকঃ স্থাণুঃ। সংশয়িতরি ন স্থাদিতি স্থাসঃ। ৭৪)। ক্রিয়াবিশেষণাৎ প্রতীপাদের্বর্ততে।

ব্রভবিশেষ:। সর্বত্র প্রস্নপদে চাবনস্তেতি ণ্ডম। পারারণং বর্তরতীতি নিবর্ত্তয়তি সমাপয়তীতার্থঃ।

- (৭৩৯)। পারারণাদাস্তাচ্চ শব্দীত্ত্বর্ত্তয়তীত্যর্থে টিকণ ভবতি। দৈপারায়ণিক ইতি বিঞং ক্লবা টিকণ্ অনহ দাললুক। অনভিধানাদিত্যাদি ৰম্পুপি পারায়ণং গুরুণা শিষ্যেণ চ নির্বর্ত্তাতে তথাপি শিষ্যে এব বাচ্যে প্রভায়: নতু গুরৌ। এতদেব ভাসবর্দ্ধমানাদিযু দৃশ্রতে। তত্মাৎ পারায়ণং বর্জনতি শিষ্য ইতি পাঠস্ত প্রমাদকৃত:। তদেতল্লিরপণীয়ম। যক্ষপ্যন্তরা-ৰুণাখ্যো যাগো যুত্ৰমানেন যাজকেন ৮ নিব্জাতে তথাপি যুদ্ধমান এব বাচো প্রত্যের: নতু যাজকে।
- (१३०)। मः गम्भाना द्वापाद वाता हिकन् उवि । मः गमः मत्नरः र्वाधवस्य मः भारत छे ९ भन्नः म स्थान्। नित्रिम यात्रिन् वा मः भन्न छे ९ भन्नः म श्रूकः বাদিরপি সংশয়াপরে ভবত: তত: কম্মিন্ বাচ্যে প্রত্যয় ইতি সন্দেহমুচ্ছিন্দ-রাহ সংশয়িতরি ন স্তাদিতি তাস ইত্যক্তন্ আপ্তপুরুষব্যাখ্যানে প্রামাণাব্যৰ-অত্রাপ্যনভিধানাদিতি পূর্ব্বোক্তকারণমেবামুবর্তনীরম। স্থাস্চলার্থম । স্থাণাদৌ সংশ্যামানেন বিধিঃ সংশয়স্ত কর্তুরি পুরুষ এব বাচ্যে বিধিরিতি বহুরভূমতি:। তথাচামরকোষঃ, সাংশল্পিকঃ সংশল্পাপন্নমানদ ইতি।
- (৭৪১)। ক্রিয়াবিশেষণাৎ প্রতীপাদেরুত্তরে বর্তত ইত্যর্থে টিকণ্ ভবতি। প্রতীপং বর্ততে ইতি অপুখুগুপক্রিরারা বিশেষণস্য কর্মসং

প্রতীপং বর্ত্ততে প্রাতীপিকঃ। প্রতীপ **অবীপ প্রতিকৃল অনুকৃল** প্রতিলোম অনুলোম পরিমুখ পরিপার্ম। ৮। *

৭৪২। প্রস্থৃতাদেবক্তি। প্রস্তুতং যথা ভবতি তথাহ প্রাস্থৃতিক:। প্রস্তৃত প্রতিস্থৃত পর্য্যাপ্ত। ৩।

৭৪৩। মাশব্দাদেশ্চ। মাশবং বক্তি মাশব্দিকঃ। মাশব্দ নিত্যশব্দ কাৰ্য্যশব্দ।৩।

ক্লীবছঞ্জেতি কর্ম্মন্। প্রতিগতা আপোহশ্মিরিতি প্রতীপন্ ঝগাদেরৎ সর্বত্রেত্যৎ অনদন্তাত্পসর্গাদিতি অপাং স্থানে ঈপঃ এবমন্বীপং প্রতিগতং কুলং
বিশ্বিরতি বছরীহিঃ প্রতিক্লন্ এবমন্থকুলং প্রতিগতানি লোমান্তক্ষেতি প্রতিলোমন্ অবান্ধপ্রতেঃ সামলোর ইত্যৎ অত্তবনমন্তলামন্। পরিমুখমিতি
সর্ব তোভাবেন পরি নিত্যং কুপ্রাদেরিতি সমাসঃ অথবা সমৃদ্যাদাবমূদিটোহপ্যরমর্থ আদিপাদেন গ্রাহ্মহেতি সমৃদ্ধাদাব্যয়ন্থাব্যরীভাবসমাসঃ অব্যানীভাবস্ত্রে যোগবিভাগঃ পরিমুখাদিসিদ্ধার্থং গ্রাসকৃতাক্ষীকৃতঃ। অথবা
পরিবন্ধ নার্থঃ বন্ধ নার্থাপপরীত্যারাদাদিত্বাৎ পঞ্চমী অপপরিবহিরঞ্চাঙ্গ
পঞ্চম্যা বেত্যব্যরীভাবস্ক ন সংগচ্ছতে। পরিপার্খমিতি পরি সর্ব তোভাবে
নিত্যং কুপ্রাদেরিতি সমাসঃ।

(१४२)। প্রভূতাদেঃ শব্দাৎ ক্রিয়াবিশেষণাদক্রীতার্থে টিকণ্ ভবতি।
(१৪০)। মাশবাদেশ্চ বক্রীতার্থে টিকণ্ ভবতি। বক্রীতি ক্রিয়ায়ণ মাশবাদের্ম্থাত্বকর্ত্ত্বং ন সম্ভবতীতি কর্ম্মন্তর্ততে তদা পৃথক্লক্ষণকরণমন্থ্রকং স্থাৎ। প্রভূতাদিগণ এব মাশবাদীনাং পাঠং বিদ্ধাৎ। মাশবাদিশরাক্তিগণং প্রয়োগদর্শনাদ্হনীয়ঃ তেন স্বস্তি বক্তি সৌবস্তিকঃ স্থাগতিকঃ সোবর্মনিক ইত্যাদি।

প্রতীপমবীপমনোস্ত ক্লম্ পরেম্ থং পার্যমিমেহনুলোমম্। প্রতেম্ভ কুলং প্রতিলোমমেবং প্রতীপমুখ্যে বসবং প্রদিষ্টাঃ ॥৮॥।

৭৪৪। স্থাতাদেস্তৎ পৃচ্ছতি। স্থাতং শৃচ্ছতি সোমাতিক:। স্থমাত স্থারাত্রি স্থাস্থ স্থাশব্যা। ৪।

৭৪৫। নিন্দ্যাত্তৎ প্রযচ্ছতি। দ্বিগুণার্থং দিগুণং নিন্দ্যং প্রযচ্ছতি দ্বৈগুণিকঃ।

98 । রদ্ধের্ধুয**শ্চ।** বার্দ্ধ্বিক:।

989। কুসীদদশৈ কাদশাট্টিকঃ। কুসীদিকঃ দশৈকাদশিকী দশৈকাদশার্থং প্রযক্ত্তীভার্থঃ।

- (৭৪৫)। শাস্ত্রোদিতব্যবহারবিকদ্ধব্যবহারো নিলা:। তদাচকাচ্চলাত্তং পুচ্ছন্তীত্যর্থে টিকণ্ ভবতি। দ্বিগুণার্থং দ্বিগুণমিতি তাদর্থ্যান্তাচ্চল্যং
 দর্শয়তি একস্মিরের দ্রব্যে তাদর্থ্যান্ত্রিগুণশকা বর্ততে। যো হাত্তমর্ণঃ
 স একমের দ্রবাং দ্বিগুণার্থং রুত্বা প্রযাচ্ছতি পশ্চাত্তদ্ধয়তি এবং হি দ্বিগুণং
 নিল্যাং ভবতি। যদা তু দ্বিগুণং প্রযাচ্ছতি দ্বিগুণং গৃহ্লাতি ন তদা দ্বিগুণং
 নিল্যাং শাস্ত্রবিহিতত্বাং।
- (৭৪৬)। বৃদ্ধিকারিন্যান্তং প্রয়ন্ত্তীতার্থে টিকণ্ ভবতি। বৃধুবাদেশশ্চ অত্রাপি হাদর্থ্যাদ্দ্ধার্থে বৃদ্ধিক দ্বান্তি:। বার্দ্ধিক উত্তমর্ণ: মুখ্যতরা তু তদ্ত্যা শক্ষোগে অসমর্ণো বাচ্য: স্থাং যতোহসাবেব বৃদ্ধিং
 প্রয়ন্ত্তি।
- (৭৪৭)। কুসীদশকাদশৈকাদশশদান নিন্দান্তৎ প্রবছ্তীতার্থে টকো ভবতি। কুসীদিক ইতি কসীদং বন্ধিন্তদর্থং দ্রবাং কুসীদং পূর্বপদস্ত নিন্দান। দশৈকাদশিকীতি দশ চ তে একাদশ চেতি কর্মধারয়ঃ। নমু সামানাধিকরণ্যে কর্মধারয়ে ভবতি ভিন্নবস্তবিষয়য়োরনয়োরেকম্মির্থে বৃত্তাভাবাৎ কথং সামানাধিকরণাম্ ? উচ্যতে। দশশনো দশার্থের্ বর্ততে একাদশন্দোহিশ একাদশার্থের্ দশার্থে বোপচারাৎ বর্তত ইত্যাদোমঃ। দশৈকাদশানিতি নির্দেশাকারাক্তবং নিপাঙ্যতে।

⁽৭৪৪)। স্থাতাদেঃ শব্দান্তৎ পুচ্ছতীতার্থে টিকণ্ ভবতি। স্থাত-ক্রিয়ামত প্রায়ঃ।

৭৪৮। তত্ত্বকৃতি রক্ষতি বা।

বাদরিকঃ সামাজিক:।

৭৪৯। শব্দার্ছরাত্তৎ করোতি। শাব্দিকঃ দার্ছরিকঃ।

৭৫০। মুগপক্ষিমৎস্থার্থাতদ্ধন্তি।

মৃগং হস্তি মার্গিকঃ হারিণিকঃ শোকরিকঃ পাক্ষিকঃ শাকুনিকঃ তৈন্তিরিকঃ মাৎসিকঃ মৈনিকঃ শাকুলিকঃ।

৭৫১। পরিপথাৎ পরিপন্থশ্চ তিষ্ঠতি চ। পরিপথং হস্তি তিষ্ঠতি চ পারিপন্থিকঃ।

- (৭৪৮)। ত**হুহু**তি তদ্রক্তি বৈত্যর্থে টিকণ্ ভবতি। উছতীতি উছি উঞ্চে উচ্ছিনোতীত্যর্থ:।
- (৭৪৯) । শব্দ দর্হর ইত্যেতাভ্যামুন্তরে তৎ করোতীতার্থে টিকণ্ ভবতি। শাব্দিক ইত্যনেন বৈয়াকরণে এব রুট্থাছচ্যতে নতু গর্দ ভাদিঃ তত্র লোকাপ্রসিদ্ধেঃ। দহুরো বাল্পভাগুবিশেষঃ ভাগুসংস্কারকালে দহুরং শব্দবিশেষং করোতীতি রক্ষিতঃ। দাহুরিকঃ কুম্ভকার এব রুচু ইতি।
- (१৫০)। মৃগার্ধাৎ পক্ষ্যর্থাৎ মংস্রার্থাচ্চ শব্দান্তদ্ধস্তীত্যর্থে টিকণ্
 ভবতি। অর্থলকেন স্থারপস্থ পর্যাগ্যস্তা বিশেষস্থা চ গ্রহণং যতঃ সর্ব এব
 মৃগান্মভিধেয়া ভবস্তি। অজিকান্ হস্তি অনিমিয়ান্ হস্তীত্যত্ত ন ভবতি
 নৈতন্মৎস্তস্ত স্বরূপং পর্যায়ো বিশেষো বা কিন্তু সাধারণং বিশেষণম্ অথবঃ
 অন্তিশানাল ভবতি।
- (৭৫১)। পরিপথশশান্তদ্ধন্তীতার্থে তিষ্ঠতীতার্থে চ টিকণ্ ভবতি।
 পরিপন্থানেশক। পরিপথমিতি পরিমুখ্যৎ তৎপুরুষাব্যমীভাবাভ্যাং তংপুরুষপক্ষে যা সর্বান্ পথে। ব্যাপ্য হস্তি তিষ্ঠতি বা সোহভিধীয়তে অব্যয়ীভাবপক্ষে তু ষশ্চ পদানং ২জ যিতা হস্তি তিষ্ঠতি বা সোহভিধীয়তে ভিষ্ঠতিপ্রয়োগে অকর্মকধাতৃপ্রয়োগ ইত্যাদিনা দিতীয়া যথা সাসমান্তে ইত্যাদ্র ।

৭৫২। মাথোত্তরপদান্তদ্ধাবতি। শৌক্ষমাথিকী।

१७। शनवराटमञ्हा

পাদবিকঃ। পদবী অনুপদ আক্রন্দ। ৩।

৭৫৪। পদোত্তরপাদাতদ্গৃহাতি।

পূর্ব্বপদং গুহ্নাতি পৌর্ব্বপদিকঃ ঔত্তরপদিকঃ।

१८६। अर्थातम्ह।

আর্থিকঃ। অর্থ প্রতিকণ্ঠ ললাম।তা

৭৫৬। ধর্মাধর্মাতচ্চরতি।

ধার্ম্মিকঃ আধর্ম্মিক:।

৭৫৭। সমূহার্থাতত সমবৈতিঃ।
সমূহং সমবৈতি সামূহিকঃ সামাজিকঃ।

⁽৭৫২)। মাথশব্দঃ পৃথিপ্র্যায়ঃ স উত্তরপদং য**ন্ত স মাধো**ত্রপদঃ তক্ষাত্ত্বাত্তার্থে টিকণ্ ভব্তি।

⁽१৫৩)। পদব্যাদেশ্চ ভদ্ধাবভীত্যর্থে টিকণ্ ভবতি। পদবী বর্ম পদস্ত পশ্চাদম্পদং পশ্চাদর্থে ইত্যব্যয়ীভাবঃ সমবারাদ্যর্থেহিমু রিহ ন গৃহতে অনভিধানাৎ। আক্রনস্ত্যশ্বিনিতি আক্রন্দো দেশঃ শ্রণঞ্চ শ্রণমার্ত্তপরি-রক্ষণম্।

⁽१৫৪)। পদশক উত্তরপদং যশু স পদোন্তরপদঃ তন্মান্তদ্গৃহাতীভ্যর্থে টিকণ্ ভবতি।

⁽৭৫৫)। অর্থাদেশ্চ শক্ষান্তদ্গৃহাতীতার্থে টিকণ্ ভবতি। কণ্ঠং কণ্ঠং প্রতি প্রতিকণ্ঠং বীপ্সায়ামাভিমুখ্যে বা অব্যন্নীভাবঃ। প্রতিগতং কণ্ঠমিতার্থে ন ভবতানভিধানাং।

⁽৭৫৬)। ধর্ম অধর্ম ইড্যেতাভ্যাং ডচ্চরতীত্যর্থে টিকণ্ ভবতি। চরণমত্র সেবা তেন কদাচিদাচরণে ন ভবতি।

⁽৭৫৭)। সমূহার্থাচ্চকাৎ তৎ সমবৈতীত্যর্থে টিকণ্ ভর্বত। সমূহং সম-বৈক্তীতি স্মাগত্য তথেকদেশে ভর্তীত্যর্থ:।

৭৫৮। পরিষদো ণ্যঃ। পারিষতঃ।

৭৫৯। সেনায়া বা। সৈক্তঃ সৈনিকঃ।

१७०। नानां विकः स्वामिननारे विकन्धिन कार्याक्राक्रास टमवटक ह।

१७১। (क्नेक् िकः स्रशामगाञ्जनर्गिन ভिक्तो।

१७२। निजार जमदेश मोग्रटक।

নিতামগ্রে ভোজনমশ্রৈ দীয়তে আগ্রভোজনিক: কাক:।

৭৬০। শ্রাণামাংসোদনাট্টিকঃ। শ্রানিক: মাংসিক: ওদনিকঃ।

৭৬৪। মাংসোদনাদিত্যেকে। মাংসোদনিকঃ।

⁽৭৫৮)। পরিষচ্চনাত্তৎসমবৈতীতার্থে ণ্যে ভবতি।

⁽৭৫৯)। সেনাশকান্তৎ সমবৈতীত্যর্থে ব্যো বা ভবতি। সেনায়াঃ সমুহার্থতাৎ পক্ষে টিকণ্।

⁽৭৬০)। স্বামিনো ললাটেকদর্শনশীলে কার্য্যাক্ষমে দেবকে চ বাচ্যে লালাটিক ইতি নিপাত্যতে। টিকণত্র বিধীয়তে লালাটিকদর্শনং হি দূরস্থ-স্থৈব ভবতি অতঃ স্বামিনোহমুপশ্লেষঃ স্থাচিতঃ।

⁽৭৬১)। স্বপাদমাত্রদার্শনি ভিকৌ চতুর্থাশ্রমিণি বাচ্যে কৌকুটিক ইতি নিপাত্যতে। কুকুটীশকাউকণ্ বিধীয়তে। স্বপাদমাত্রদর্শনেনাগুত্রা বিক্রিপ্তনয়নতরা নিয়তেক্রিয়ত্বং স্চাতে।

⁽৭৬)। নি য়ামিতি কালাধ্ব স্থামবিচ্ছেদে ইতি দিতীয়া। নিতা ভবৈদ দীয়তে ইত্যাৰ্থ টিকণ্ ভবতি। অৰ্থাদ্যন্তংপদবাচাং ভন্মাং প্ৰত্যয়ঃ

⁽ ৭৬০। ৭৬৪)। প্রাণা মাংস ওদন ইত্যেতেভ্যো নিতাং ত**ৈ** ্দীরতে ইত্যর্থে টিকো ভবতি। প্রাণামাংসয়োষ্টিকবিধানং বৈচিত্রার্থম্ ,

৭৬৫। ভক্তাট্রণ বা।

ভাক্তিক: ঔজঃ।

৭৬৬। নিষিদ্ধদেশকালাত্ত্রাধীতে।

চাতুপথিকঃ চাতুদ শিকঃ।

৭৬৭। সংস্থানপ্রস্থানাভ্যাং তত্র ব্যবহর্তি।

সাংস্থানিক: প্রাস্থানিক:।

৭৬৮। কঠিনান্তাচ্চ।

্বাংশকঠিনিকঃ।

৭৬৯। নিকটাত্তত্ত্ব বৃসতি। নিকটে বুসতি নৈকটিকঃ।

পূর্ব্বলক্ষণবিহিতেন টিকণাপি লক্ষ্যসিদ্ধেঃ বৃদ্ধার্যতদ্ধিতান্তোহরঞ্জনবিকার-রোরিতি পুংবদ্ধাবনিবেধ প্রয়োজনমিতি চেন্ন কোপাস্তত্ত্বাদিপি তম্ন দিদ্ধেঃ। যে তু মাংসৌদনাট্টকমিচ্ছস্তি তেষাং লক্ষণমেব বৈচিত্র্যার্থম্।

⁽ ৭৬৫)। ভক্তশকান্নিত্যং তদদৈ দীয়তে ইত্যর্থে টণ্ বা ভবতি। পক্ষেটিকণ্চ।

⁽ ৭৬৬)। নিষিদ্ধদেশবাচকাৎ নিষিদ্ধকালবাচকাচ্চ শকাত্ত্রাধীতে ইত্যর্থে টিকণ্ ভবতি। সন্নিহিতত্বাদেশকালয়োনি ষিদ্ধমধ্যয়নাপেক্ষ্য-মেব। চাতুষ্পথিক ইতি চতুষ্পথেখ্যীত ইত্যর্থঃ।

⁽ ৭৬৭)। সংস্থান প্রস্থান ইত্যেতাভ্যাং তত্র ব্যবহরতীতার্থে টিকণ্ ভবতি। ব্যবহারঃ ক্রিয়াতক্ষং যথোচ্যতে লৌকিকো ব্যবহার ইতি লৌকিকং ক্রিয়াতত্ত্বমিতার্থঃ।

⁽৭৬৮)। কঠিনশন্দোহস্তো যশু স কঠিনাস্তঃ তন্মাচ্চ তত্র ব্যবহরতী-ত্যর্থে টিকণ্ ভবতি। যোগবিভাগসামর্থ্যান্দেদং স্বরূপগ্রহণম্। বাংশ-কঠিনক ইতি যোহতুষ্ঠেয়াং ক্রিয়াং শাস্ত্রোদিতামবিপরীতাং বংশকঠিনেহন্ত্র-তিষ্ঠতি সোহভিধীয়তে।

^{্ (}৭৯৯)। নিকটশব্দান্তত্র বসতীত্তর্থ টিকণ্ ভব্ডি।

৭৭০। **আবস্থাট্টিকঃ।** আবস্থিকঃ।

৭৭১। ভত্র নিযুক্তাদে।

তত্র নিযুক্তাদাবর্থে টিকণ্ ভবতি। স্বারে নিযুক্তো দৌবারিকঃ।

११२। यशातासामिकः।

(मवाशाद्य नियुद्का (मवाशादिकः ।

৭৭৩। তস্থ ধর্ম্যো

গুল্মস্ত ধর্ম্যং স্থায়ং মৌল্মিকম্।

११८। गश्यादमधेग्।

মাহিষ:। মহিষী প্রজাপতী প্রলেপিকা বিলেপিক। অনুলেপিক। অনুচারক পুরোহিত বজমান মণিপালী।৯। *

৭৭৫। নুনরাভ্যাং গট**্**। নারঃ।

- (११०)। টিকবিধানপ্রয়োজনং পুংবদ্ভাববিধাবপি ন দৃষ্ঠতে তম্মাদাবদথাদেশ্চতি কক্ষণং লিপিকরপ্রমাদাদগুথা জাতম্। আবদথাদেশ্বত্র
 বসতাত্যর্থে টিকণ্ ভবতি। আবদথিকঃ শ্বাশানিকঃ বার্দ্ধমৃষিকঃ। যোগবিভাগং পূর্ববোগদ্য বিষয়নিয়মার্থঃ। তথাহি নৈকটিক ইতি ভিক্ষুবেবাভিধীন্তে আরণ্যকেন ভিক্ষণা গ্রামাৎ ক্রোশে বস্তব্যমিতি শান্তনিয়মঃ।
 - (৭৭১)। দৌবারিক ইতি খাদেরিতি বকাবস্তৌবাদেশ:।
 - (৭৭২)। অগারাস্তাচ্ছদাত্তত্র নিমুক্ত ইতার্থে ইকো ভবতি।
- (৭৭৩)। তম্ভ ধর্ম্যে বাচে টিকণ্ ভবতি। অর্থান্তম্ভেতি নির্দি-ষ্ঠাৎ প্রত্যয়ঃ। ধর্মামিত্যস্তার্থং ব্যাচকার স্থায়নিতি আচারপরিপ্রাপ্ত-মিত্যর্থঃ। গৌশিকমিতি গুলাস্থানে নিয়তং দেয়মুচ্যতে।
 - ু (৭৭৪)। মহিষাদেশুভ ধর্মামিতার্থে টণ্ভবতি।
 - (৭৭৫)। নুনর ইত্যেতাভ্যাং তক্ত ধর্মামিতার্থে পড়্ভৰতি।

মহিবীযজনানো বৌ প্রোহিতবিলেপিকাপ্রজ্ঞাপত্য:।
 অনুবেপিকানুচারক: প্রবেপিকা মনিপালী ॥॥

৭৭৬। ঋদন্তাকু। হৌত্রম ওদগীত্রম।

৭৭৭। বিশসিতুরিঙ্লোপশ্চ।

বৈশস্ত্রম্।

৭৭৮। বিভাজয়িতুর্ণিঙ্লোপশ্চ।

বৈভাজিত্ৰম্।

৭৭৯। তম্ম মূল্যে।

গুলাস্থ মূল্যং গৌলাকম্।

१४०। তৎপन्तरामि।

তদস্য পণ্যমিত্যাদাবর্থে টিকণ্ ভবতি। লবণং পণ্যমস্থ লাব-ণিকঃ।

৭৮১। কিশরাদেষ্টিকঃ ।

উত্তরস্ত্রেণৈর সিদ্ধে নৃগ্রহণং লিপিকরপ্রমাদক্বতং তশ্বান্নরাদিতি লক্ষণ জ্ঞারাম।

(११७)। ঋকারাস্তাচ্ছকাত্ত ধর্ম্মামিন্যর্থে ণড়্ভবতি।

- (৭৭৭) বিশসিতৃশকাত্ত ধর্ম্মামিত্যর্থে গড়্ভবতি ইঙ্লোপশ্চ। গট্ প্রাপ্ত এব ইঙ্লোপার্থং বচনম্। বৈশস্ত্রমিতি শস্ক হিংসায়াং ভূঙ্ অশ-কাদিখাদিঙ্।
- (৭৭৮)। বিভাজয়িতৃশকাত্ত ধর্ম্মামিত্যর্থে গড়্ভবতি। ণিঙ্-লোপশ্চ।
- (৭৭৯)। তম্ম স্লামিত্যর্থে টিকণ্ ভবতি। শুলাম স্থাকং তচ্চ নৈকান্তং ধর্ম্মাং ভবতি লোকপীড়য়াপি কৃপ্তকগ্রহণাদতন্তম ধর্ম্মামিত্যতো ভিদ্যতে।
 - (१৮०)। পণাং বিক্রষাম।
- (৭৮>)। কিশরাদেন্ত দক্ত পণ্যমিত্যর্থে টিকো ভবতি। কিশরা-দয়: সর্ব্ব এব গদ্ধত্ব থবাচকা:।

কিশরং গদ্ধজ্বয়ং পণ্যমশ্য কিশরিকঃ। ুকিশর নদর নলদ স্থগর তগর গুগ্গুলু উশীর হরিদ্রা হরিদ্রুপর্ণী।৯। *

৭৮২। শলালুনো বা।
 শলালু গদ্ধদ্রবাং পণ্যমশ্য শলালুকঃ শালালুকঃ।

৭৮৩। তদস্য শিল্পম্।

মূদঙ্গবাদনং শিল্পমস্থ মাদ জিকঃ। মূদঙ্গশক্ষেত্ৰ তাৎস্থানাদ্দজবাদনবৃত্তিঃ।

ব

৭৮৪। মত্তুকঝঝ রাভ্যাং **টণ্চ।** মাত্তুকিকঃ মাত্তুকঃ ঝাঝ রিকঃ ঝার্মরঃ।

৭৮৫। তদস্য প্রহরণম্। খাড়গিকঃ।

⁽৭৮২)। শলালুশকান্তম্য পণ্যমিত্যর্থে টিকো বা ভবতি। পক্ষেটিকণ্চ। শলালুক ইত্যাদি ইস্মুক্তাস্তাদিকম্যেত ইতি ইকারলুক্।

⁽१৮৩)। তদস্য শিল্পমিতার্থে টিকণ্ ভবতি। যন্তংগদবাচাং তত্মাৎ প্রত্যায়ঃ। শিল্পং কৌশলং ক্রিয়াভ্যাসপূর্ক্সকজ্ঞানবিশেষঃ। নমু মৃদক্ষ-বাদনং শিল্পমস্য ইত্যর্থোপদর্শনং কৃতং তত্ম্পক্ষবাদনশকাদেব প্রত্যায়ন ভবিতবাং কথং মৃদক্ষশকাৎ প্রত্যায় ইতি চোদ্য আহ মৃদক্ষশকোহত্রেত্যাদি ভবতি হি তাৎস্থ্যাৎ তাছেকাং যথা মঞ্চাং ক্রোশস্তীতি মঞ্চয়া এব মঞ্চা উচ্যান্তে।

⁽ ৭৮৪)। মড্ডুক ঝর্মর ইত্যেতাভ্যাং তদস্য শিল্পমিতার্থে টণ্ ভবতি চকারাং পক্ষে টিকণেব। অত্রাপি মড্ডুকঝর্মরশকৌ তাৎস্থ্যাৎ 'তদ্বাদনবুত্তী।

⁽ ৭৮৫)। জ্বেদ্য প্রহরণমিতার্থে টিকণ্ ভবতি। অর্থাদ্যন্তৎ পদ-বাচ্যং তন্থাৎ প্রত্যন্ধ:। খাজিক ইতি থজা: প্রহরণমদ্যেতার্থ: এবং পারশ্বিক:। প্রাহ্রিরতে জ্বনেনিতি প্রহরণম্।

আদৌ কিশরং স্থগরং নদরং নদদং হরিজ্বপর্ণী, চ।
 গুগুলুতগরোশীরং তথা হরিলা কিশরমুখ্যে। > ।

৭৮৬। টীকণ্ শক্তিযঞ্জিত্যান্। শাক্তীকঃ ৰাষ্ট্ৰকঃ।

৭৮৭। তদস্য শীলম।

পুরুষবচনং শীলমস্থ পোরুষিকঃ অপূপভক্ষণং শীলমস্থ আপূ-পিকং। পুরুষাপুপশ্বকাবত্রোপচারাদ্বচনভক্ষণরত্তী।

৭৮৮। পশ্ছল্লাদেঃ।

ছক্রং ছাদ্দনমাবরণং শীলমস্ত ছাক্রঃ। ছক্র শিক্ষা ভিক্ষা ধুক্ষা পুরোদর্শ উদস্থান কৃষি কর্ম্মন্ সত্য অনৃত রিশিকা।১১। *

৭৮৯। আৎপ্রত্যয়ান্তাৎ স্থঃ। সংস্থা শীলমস্থ সাংস্থঃ।

⁽৭৮৬)। শক্তি য**ষ্টি** ইত্যেভাভ্যাং তদস্য গ্রহরণমিত্যর্থে চীকণ্ ভবতি।

⁽৭৮৭)। তদস্য শীলমিত্যর্থে টিকণ্ ভবতি। ফলনিরপেক্ষা তাৎ-পর্যোগ সেবা শীলম্। পূর্দ্ধবন্তস্য শীলমিতি চোদ্যাহ পুরুষাপূপ্শকা-বিত্যাদি। দৃশুতে চ ঔপচারিক শব্দপ্রয়োগো যথা গঙ্গাতীরে গঙ্গাশক-প্রয়োগঃ।

⁽१৮৮)। ছত্রাদেস্তদস্য শীলমিত্যর্থে ণো ভবতি। ছত্রং শীল-মস্যেত্যর্থে প্রত্যয়ঃ। ছত্রং কিংশীলমিতি ভাবিনং প্রশ্নমগ্রত এব নিবা-কুর্ব্বনাহ ছাদনমাবরণমিতি যতশ্চদ অপনারণ ইত্যন্তাং গ্যাদেস্তঙিতি ত্রঙা সিদ্ধস্য ছত্রশব্দস্যাবরণং প্রবৃত্তিনিমিত্তম্। তচ্ছীলো হি শিষ্যো গুরোদে ধা-প্রারণে বর্ততে।

⁽ ৭৮৯)। আৎপ্রত্যক্ষান্তাৎ স্থাধাতোনি প্রাচ্ছকান্তদ্য শীলমিত্যথে । লোভবতি। সংস্থাশকঃ প্রাদেরাদান্তাদিত্যনেনাৎপ্রত্যয়েন নিপারঃ তন্ধারঃ। এবং ব্যবস্থা আস্থা শকাভ্যামিতি বৈয়ন্তঃ আস্থ ইত্যাদ্যপি দুষ্টব্যম।

ছত্রং শিক্ষাক্রবিধুক্ষাঃ কর্ম্মনত্যানৃত্যানি চ।
 পুরোদর্শ উদস্থানং ভিক্ষাথ বিশিকাপি চ॥১১॥

৭৯০। চুরাতপোভ্যাং **ট**ণ্। চুরা শীলমস্থ চোরঃ তাপসং।

৭৯১। তদস্থ কর্ম্ম বৃত্তমধ্যয়নে। একং রূপং কর্ম্ম বৃত্তমধ্যয়নেহস্থ ঐকরূপিকঃ একমন্থৎ কর্ম্ম বৃত্তমধ্যয়নেহস্থ ঐকান্থিক:।

৭৯২। বহুর পূর্বপদাদিকঃ। দাদশরপিকঃ।

৭৯৩। সদসৎ পরলোকত্বেহস্তিনান্তিভ্যাম্। আন্তিকঃ নান্তিকঃ।

⁽ ৭৯০)। চুরা তপদ্ ইত্যেতাভ্যাং তদস্য শীলমিতার্থে টণ্ ভবতি।
চুরেতি চুর্ স্তেয়ে ণিঙ্ চোরিজোলিভ্যাং চুরতুলো চেত্যাৎ চুরাদেশশ্চ
ছ্ব্রাদো গাঠে কর্তব্যে পৃথগ্লক্ষণকরণং টিস্বাদীপ্রত্যরার্থং চৌরী তাপদী।

⁽৭৯১)। অধ্যয়নে অধ্যয়নবিষয়ে তৎ কর্মাস্য রুত্তমিতাম্মিন্থে টিকণ্ ভবতি। অর্থাদ্যত্তৎ পদবাচাং তস্মাৎ প্রত্যার্য:। একং রূপমিতি একমন্ত-দিতি চাত্র তৎপদবাচ্যস্তদ্ধিতার্থেহত্র দ্বিগুঃ। ঐকান্তিক ইতি অধ্যয়নে নিযুক্তস্য পরীক্ষাকালে পঠিতঃ স্থালিভরূপমেকমন্ত্রৎ কর্মাজাতমিত্যর্থঃ অধ্য-মনে হৃত্তমপ্রপাঠরূপমেব সম্ভবতি।

⁽ ৭৯২)। বছরচ্পূর্বপদাজ্ব্দাত্তদাত্তদা কর্ম বৃত্তমধ্যয়ন ইত্যর্থে ইকো ভবতি। বাদশরূপিক ইতি দাদশরপাণি কন্মাণ্যধ্যয়নেহস্য জাতানীত্যর্থ:। অপপাঠ এব বৃত্তে প্রত্যয় ইষ্যতে ইতি স্থাসকারব্যাখ্যানেহস্বরসস্কুচনায় ঐক-রূপিক বাদশর্মপিক ইত্যুদাহাত্ম।

⁽৭৯৩)। সংপরলোকত্বে অসংপরলোকত্বে চ বাচ্যে অস্তি নান্তি শব্দাভ্যামূত্তরে টিকণ্ ভবতি। বিদ্যমানঃ পরলোকভাবো যদ্য দ সংপর-লোকত্বঃ পরলোকোহন্তীতি জ্ঞানং যদ্যেত্যর্থঃ। অন্তি নান্তি শব্দো তিঙল্ক-প্রতিরূপকাব্যয়ে কেচিন্বদন্তি লক্ষণসামর্থ্যাভিস্তাদেবারং প্রত্য য়ঃ।

৭৯৪। দিফীং প্রামাণিকে। দৈষ্টিকঃ। •

१ ३६। देनवश्रद ह।

দৈষ্টিকঃ। তথাচ, নালম্বতে দৈষ্টিকতাং ন নিষীদতি পৌরুষে ইতি মাঘঃ।

৭৯৬। ভক্ষ্যাত্তদবৈশ্ব হিতম্। অপূপো ভক্ষ্যো হিতমবৈশ্ব আপূপিকঃ।

१৯१। हिर्वादमर्थम् छ्वादमी।

তত্র ভবাদাবর্থে দিবাদেরুত্তরে যদ্ভবিঙ। দিবি ভবো দিব্যঃ।

৭৯৮। তদ্বহতি যুগাদেঃ। যুগং বহতি যুগ্যঃ। যুগ রথ প্র**ঃসঙ্গ।** ৭৯৯। রথান্তাচ্চ।

দ্বির্থাঃ।

⁽৭৯৪।৭৯৫)। দিষ্টশকাৎ প্রামাণিকে বাচ্যে টিকণ্ ভবতি। প্রমাণা-স্তঃপাতিনী মতির্যস্ত স দৈষ্টিকঃ অয়মর্থো জয়াদিত্যেন দর্শিতো ন বহুভিরঙ্গী-কৃতঃ অতো লক্ষণাস্তরং করোতি দৈবপরে চেতি। দৈবপরে চ বাচ্যে দিষ্টশকাট্টিকণ্ ভবতি। অয়মপ্যর্থঃ আপ্রৈরঙ্গীকৃত ইতি স্চনার মাঘ-লোকো দর্শিতঃ মাঘ্রকোস্কুভর্থেব সঙ্গতার্থো ভবতীতার্থঃ।

⁽৭৯৬)। ভক্ষ্যবাচকাচ্ছন্দান্তদক্ষৈ হিতমিত্যর্থে টিকণ্ ভবতি। অকৈ ইত্যত্র হিতেন বেতি চতুর্থী।

⁽৭৯৭)। শেষাধিকারী যেন দিবাদের্ঘদিত্যনেনৈব দিব্যপদং সিদ্ধং ভবত্যের। লক্ষণমিদং প্রপঞ্চার্থম্।

⁽৭৯৮। যুগাদেরুত্তরে তদ্বহতীত্যর্থে যদ্ভবতি। বংসানাং দমনার্থং বদারু কলে দীয়তে তৎ প্রাসঙ্গম।

⁽৭৯৯)। রথাস্তাচ্চ শব্দান্তহহতীতার্থে বস্তবতি। রথাঙ্গে রথরথাস্তাদ্-

৮০০। ধুরস্টেয়ণ্চ।

(श्रीद्वशः श्रृश्यः।

৮০১। একধুরাসর্ববধূরাভ্যামীনঃ।

একধুরীণঃ সর্ববধুরীণঃ 🛊

৮০২। অন্যতোহপীত্যেকে।

উত্তরধুরীণঃ দক্ষিণধুরীণঃ।

৮০৩। শ্কটাট্রণ্।

শাকটঃ 1

৮০৪। তদন্তাক।

দৈশকটঃ।

৮০৫। হলসীরাভ্যাং টিকণ্।

शनिकः रेमविकः।

যদিতি যদা যত্তন। অধ্যদ্ধপূর্কাক্ত তদর্হ ত্যানাবসংজ্ঞায়ামিতি যন্ত্র্কা দিরথ ইতি ভবতি।

(৮০০)। ধুর্ ইতাস্থাৎ তদ্বহতীত্যর্থে টেয়ণ্ ভবতি। চকারাৎ পক্ষে যৎ।

(৮০১৮০২)। একধুরা সর্বধুরা ইত্যেতাভাং তদ্বহতীত্যর্থে ঈনো ভবতি। একধুরায়া ঈনস্থ বা লুকং বক্ষাতি একধুর:। একা চাসৌ ধৃশ্চেতি সর্বা চাসৌ ধৃশ্চেতি একাদীনাঞ্চেতি কর্মধারয়ঃ ঋগাদেরৎ সর্বত্র ইত্যৎসমাসান্তঃ একধুরাং বহতি সর্বধুরাং বহতীত্যর্থে একধুরীণঃ সর্ব-ধুরীণঃ। অন্ততাহপীত্যেক ইতি তদ্যদি সামান্তেনোক্তং তথাপ্যত্তরধুরা-দক্ষিণধুরাভ্যামেব প্রত্যয়ঃ তথাচান্তেধাং লক্ষণং সর্বোত্তরদক্ষিণাদেরীন ইতি।

- (৮০৩)। শকটশকাত্তদহতীতার্থে টণ্ভবতি।
- (৮-৪)। শকটাস্তাজ তদ্বতীতার্থে টণ্ ভবতি। তত্মেদমিতি টণা সিদ্ধমিতি চন্দ্রমতং দ্যয়র্মুধাহরতি দৈশকটমিতি। তত্মেদমিতি টণি দিখা-ছাদিত্যাদিনা লুক্ স্থাং।
 - (৮০৫)। হল দীর ইত্যেতাভ্যাং তথহতীত্যর্থে টিকণ্ ভবতি।

৮०७। उपखोक।

दिश्वहालकः दिश्वीतिकः।

৮০৭। জনামানি।

জন্মো জামাতৃঃ স্নিগ্নঃ স্থা চ।

৮০৮। স্বয়ং তদ্বিধ্যতি।

পাদে বিধ্যুতীতি পদাঃ কণ্টকঃ।

৮০৯। তল্লকরি ধনগণাভ্যাম্।

थगुः गणुः।

৮১০। অর্থাগ্রঃ।

আর্থঃ।

৮১১। বশাতিদ্গতে। বশুঃ।

⁽৮০৬)। তদস্তাচ্চ তম্বহতীত্যর্থে টিকণ্ ভবতি। এতত্নকং পূর্ব্ব-বচ্চন্দ্রণোদারায়।

⁽৮০৭)। জনশকাত্ত্বহতীতার্থে সংজ্ঞারাং যন্তবতি। জনীশকাদধ্ব বাচকাদয়ং প্রত্যয় ইতি জয়াদিত্যঃ। জনী বধ্ জামাতুঃ স্লিগ্ধঃ সথা চেত্য-র্থোপদর্শনেন সংজ্ঞা স্টিতা।

⁽৮০৮)। স্বরং তিরধ্যতীত্যর্থে যন্তবতি। অর্থাদ্যন্তৎপদবাচাং তন্মাৎ প্রভার:। পদ্ম ইতি পাদে বিধাতীতার্থে পাদশনাদ্যতি ক্বতে অতদর্থে যতীতি হ্রস্থ: অদিল্ল গিত্যকারলুক্। স্বর্মতি কিম্? কর্ণসন্তাব্যমানে বেধে মা ভূৎ চৌরং বিধ্যতি মৈত্র: অত্ত বেধে নারাচাদেঃ করণত্বং সন্তাব্যতে।

⁽৮০৯)। ধন গণ ইত্যেতাভাাং তল্লব্বরি বাচ্যে যদ্ভবতি। লব্বেতি শীলাচারসাধুরু বর্তমানে ভৃত্তিরিতি ভৃত্তিঃ ভৃত্তেস্থাদিখাৎ কর্ত্ত্রিত্যাদিনা ন ষ্ঠা।

⁽৮১০)। অর্থশকাত্তর্নরি বাচ্যে গো ভবতি।

⁽৮১১)। বশশব্দান্তকাতে বাচ্যে যন্তবভি। বশমায়ন্তভাং গতে। বশ্বঃ।

৮১২। পদাতিদ্পামিমিন্। পদমিমিন্দৃশাং পভাঃ কর্দিমঃ।

৮১ °। মূলা ততুৎপাটনব্যতিরেকালভ্যপত্রাদৌ। মূল্যো মূল্যঃ অত্যল্পঃ ইতার্থঃ।

৮১৪। তৎসমে চ।

মূল্যঃ পটঃ। যাবল্লগ্নং তাবদেব লভত ইত্যর্থঃ।

৮১৫। ব্লেচ।

मृलाम्।

৮১७। वयमः स्कृति। वयस्यः।

৮১৭। তুলাখাঃ সমে। তুলাঃ।

৮১৮। নাবস্তভার্ণ্যে^{*}। নাব্যম।

(৮১৬)। বয়:শব্দাৎ স্কৃদি বাচ্যে যন্তবতি।

(৮১৭)। তুলাশব্দাৎ সমে বাচ্যে যন্তবতি।

⁽৮১২)। পদশকাতদ্শুমির্মির্থে যদ্ভবতি। পদমির্মিন্ দৃশুমিতি পদ্যং পাদচিক্রং দৃশুং দেষ্ট্রং শক্যং দর্শনযোগ্যমিতার্থঃ। এতেন কর্মস্থ মধ্যাবস্থাচ্যতে নাতিদ্রবো নাতিশুক ইতার্থঃ।

⁽৮১৩)। মূলশকাৎ মূলোৎপাটনব্যতিরেকেণালভ্যপত্রাদৌ বাচ্যে ষদ্ভবতি যন্মূদগাদি অসম্পন্নথাদাত্রাদিচ্ছেদনযোগ্যং ন ভবতি তত্তচাতে।

⁽৮১৪)। মূলশন্ধাত্তৎসমে চ বাচ্যে যদ্ভবতি। পটস্তোৎপত্তিকারণং মূনং যাবতা হিরণ্যাদিনা পটস্তোৎপত্তির্ভবতি তন্মূলং তদ্মাকরোতি যাবস্লশ্বমিতি তৎসমঞ্চ দর্শবতি তাবল্লভত ইতার্থঃ।

⁽৮১৫)। পটাদীনাং বিক্রয়ণেন যাবদ্দ্রবাং লভতে স বন্ধ উচ্যতে। ভিন্নিব বাচ্যে মূলশব্দাদ্ যদ্ভবতি।

^{ি (}৮১৮)। নৌশব্দালাবা তার্য্যে বাচ্যে যদ্ভবতি। নাব্যমিতি ভঙ্কিত্তে ইত্যাবাদেশঃ নাবা তরিতুং শক্যমিত্যর্থঃ।

৮১৯। বিষাত্তদ্বধ্যে।

৮২০। দীতায়ান্ত**্দঙ্গতে।**

দীত্যং ক্ষেত্রম্।

৮২১। जमखोक।

দিসীতাম্ 👢

৮২২। ধর্মাতৎপ্রাপ্যে। ধর্ম্মস্

৮২৩। পৃথ্যপ্ৰায়াক ততোহনপেতে ধৰ্ম্যং পথাম্ অৰ্থাং ভাষাম্।

্, ৮২৪। ছন্দসস্তনিমিতে।

৫। উরসফীণ্চ।

উরস্থ, 'সং।

(৮১৯)। विष्याचित्रं वर्षा वाटा यस्त्रवि।

(৮২০)। সীতাশদান্ত্রা সংগতে বাচ্যে যন্তবক্তি। সীতা লাঙ্গল-শন্ধতিঃ সীতাং ক্ষেত্রম্।

- (৮২১)। সীতান্তাচ্চ শব্দান্তরা সংগতে বাচ্যে যদ্ভবতি।
- (৮২২)। ধর্মশকাত্তৎপ্রাপ্যে বাচ্যে যন্তবতি ধর্মেণ যৎ স্বর্গাদিকং প্রাপ্যতে তদ্ধগ্নম্।
- (৮২০)। ধর্মশকাৎ পথ্যাদিভাশ্চ তক্ষাদনপেতে বাচ্যে যদ্ভবজি।

 * ধর্মামিতি ধর্মাদনপেতমভ্রষ্টামিত্যর্থঃ। গ্রামান্নাগতমিত্যাদৌ যথা বৌদ্ধাদেরপাদানাদাগমননিষেবেহিপি পঞ্চমী তথেহাপি পর্যোহনপেতং পথ্যম্।
 - (৮২৪)। ছন্দঃশন্দাৎ তেন নির্শ্নিতে বাচ্যে বত্তবতি। ছন্দ্রসা নির্শ্নিতং ছন্দ্রস্থা ইচ্ছাপর্য্যায়-ছন্দঃশব্দ ইহু গৃহ্গতে ইতি জয়াদিত্যঃ।
 - (৮২৫)। উরস্ ইত্যস্বাত্তেন নির্মিতে বাচ্চো টণ্ ভবতি। চকারাদ্-. ষচ্চ। পুত্র এব বাচ্চো ইতি জয়াদিতাঃ।

৮২৬। হৃদয়াতৎপ্রিয়ে।

হাস্তঃ |

৮२१। वशीकत्रगमटल ह।

হন্তঃ।

৮২৮। মতাত্তৎসাধনে।

মত্যম্।

৮२৯। बनाउष्कनत्।

জসুম্।

৮৩০। হলাতৎকর্ষণে।

হল্যম্।

৮०५। जनखाक।

দ্বিহল)ম।

৮৩২। তত্র সাধৌ।

সামশুঃ।

⁽৮২৬)। হৃদয়শব্দান্তশু প্রিয়ে বাচ্যে যদ্ভবতি। হৃদ্য ইতি হৃদয়শু জন্লাসাদাবিতি ৰতি পরে হৃদাদেশঃ।

⁽৮২৭)। বশীকরণমন্ত্রে চ বাচ্যে হৃদয়াদ্যদ্রবভি।

⁽৮২৮)। সাধ্যত ইতি সাধনং ভাবে ঙনট্ অথবা সাধ্যতেহনেনেতি করণে ঙনট্ তশু সাধনং তৎসাধনং মতং জ্ঞাতং মতশব্দাৎ তৎসাধনে বাচ্যে বস্তবতি। মতশ্ব জ্ঞাতশু সাধনং মত্যম্।

⁽৮২৯)। জনশন্ধান্তজ্জননে বাচ্যে যদ্ভবতি। স্মত্রাপি ভাবে করণে বা ওনট ।

⁽৮০০)। হলশকাস্তাচ্চ তৎকর্ষণে বাচ্যে ষদ্ভবতি। অত্যাপি ভাবে করণে বা ওনট।

⁽৮৩১)। হলশকাস্তাচ্চ ভৎকর্ষণে বাচ্যে যম্ভবতি।

⁽৮৩২)। তত্র সাধুরিত্যন্মিরর্ধে যদ্ধবিত্ত। যত্তৎপদবাচাং তন্মাৎ প্রত্যয়ং। সাধুং প্রবীণো নিপুণ ইত্যর্থ: অথবা সাধুর্যোগ্যঃ সমর্থ

৮০৩। গীনঃ প্রতিজনাদেঃ।
প্রাতিজনীনঃ। প্রতিজন সংযুগ ইদংযুগ সত্যযুগ পরযুগ পরকুল
অমুধ্যকুল সর্বজন বিশ্বজন পঞ্চজন মহাজন ॥ ১১। ॥

৮৩৪। ভক্তাধ্বঃ ।

ভাক্তঃ।

৮৩৫। পরিষদো गाः।

পারিষদ্য:।

৮০৬। ণোহপীত্যেকে।

পারিষদ:।

৮৩१। कथारमष्टिकगा

কাথিক:। কথা বিকথা নিস্থা বিস্থা বিতণ্ডা কৃষ্ণবিদ্ জনবাদ বৃত্তিসংগ্রহ গুণ গণ আয়ুর্বেবদ গুহু কুঁল্মাব শক্তু অপূপ মাংসোদন

ইতার্থঃ। সামন্য ইতি সামনি সাধু; অভাবকর্দ্মযেচেত্যাদিনা নকার-ল্মিষেধঃ। এবং সভায়াং সাধু; সভ্য ইত্যাদি। উত্তরযোগা অস্ত বাধকাঃ।

(৮০০)। প্রতিজনাদেস্তত্র সাধুরিতান্দিরর্থে ণীনো ভবতি। প্রাতি-জনীন ইতি জনং জনং প্রতি প্রতিজনং বাপ্সায়ামিতাব্যয়ীভাবঃ। প্রতি-জনে সাধুরিতার্থঃ। অমুষাকুল ইতি গণে পঠাতে তৎসামর্থাৎ ষষ্ঠ্যা অলুক্ আমুষ্যকুলীনঃ।

(৮০৪)। ভক্তশব্দান্ত্র সাধুরিতার্থে ণো ভবতি। ভক্তে অরে সাধুর্ভাক্তঃ শালিঃ।

(৮৩৫।৮৩৬)। পরিষচ্ছন্দান্তত্র সাধুরিত্যর্থে গ্যোভৰতি। গোহপি ভবতীত্যেকে।

(৮০৭)। কথাদে: শব্দাত্ত সাধুরিত্যর্থে টিকণ্ ভবতি।

প্রতিপঞ্চয়হাবিশ্বসর্কেভ্যে জন ইয়তে।
 বুগং পরেদংসংসত্যাৎ পরামুদ্যপরং কুলম্। ১১।

ইক্ষু বেণু বোধ সংগ্রাম সংঘাত প্রবাস নিবাস উপবাস। ২৩।*

৮०৮। পথ্যारमस्खेत्रग्।

পাথেয়ম্। পথি অতিথি বসতি স্বপতি। ৪।

৮৩৯। সমানতার্থন্তেত্র বাসিনি। সতীর্থাঃ।

৮৪০। সোদরসমানোদরাত্তত্ত শয়িতরি। সোদর্য্যঃ সমানোদ্র্য্যঃ।

(৮০৮)। প্রথাদিভান্তর সাধুরিতার্থে টেয়ণ্ ভবতি। পাথেয়নিতি-পথাপকারকং বস্তু। স্বাপথেয়নিতি ধনস্থা। ধনং হি ধনপতেরুপকারকন্। স্বভাবাদেব ক্লীবস্থা।

(৮০৯)। সমানতীর্থশকাৎ তত্র বাসিনি বার্চ্যে যন্তবতি। বাসীতি প্রান্তপস্ক্রমথবদবস ইতি প্রান্তব্যাদিনন বিহিতোহত্র ন প্রাপ্তোতি নির্দেশসামর্থ্যাৎ করণীয়ঃ। অথবা বসনং বাসঃ সোহস্থান্তীতি বাসা। তীর্থশক্ষেনাত্র গুরুক্চ্যতে। সমানতীর্থে বসতীত্যর্থঃ। দৃগাদিগণে তার্থ ইতি পঠাতে সমানো দৃগাদাবিতি সমানস্থ সঃ।

(৮৪০)। সোদরসমানোদরশব্যক্ত শব্নিতরি বাচ্যে যদ্ভবতি।
সোদর্য্য ইত্যাদি। সমানঞ্চ তত্ত্বক্ষেতি কর্ম্মধারয়ঃ। সমানোদরে
শক্ষিতা স্থিত ইত্যর্থঃ। উদর্য্যে বেতি পক্ষে সমানস্থ সভাবঃ। নমু
স্থিত ইতি হত্তে কিমিতি ন ক্বতং কিং শমিতরীত্যনেন শমিতৃশব্দোহণি
স্থিতার্থেহিস্তীতি শিষ্যবৃহপত্তার্থং শিষ্যবৃহপত্তিরেব হি শাস্ত্রস্থ প্রধানং

श्वादि कथ। বিপরাপি স্থধা নিবিভ্যাং
বেদান্তমাযুক্দিতং গণবেণুবোধা:।
মাংনোদনেক্জনবাদবিদন্তক্বকা
ক্রামগ্রহৌ তদ্যাত ইমে সমঃ স্থা:।
নিপ্রোপবাস্ত্রণোল্ডরগাঃ সমুদ্রা:।
ক্রামশ্রু গুহপুপমতো বিতগ্রা।

৮৪১। স্থ্পদগর্ভাজ্যাং স্হচার্য্যস্ক্রয়োঃ। স্ব্যুগ্যঃ সগর্ভীঃ। ছান্দসমিদম্।

৮८२। जानात्मतीयः।

তত্র ভবাদাবর্থে ত্যদানেুরুত্তরে ঈরো ভবতি। ভাদীয়:।

৮৪৩। তথ্যৈ হিতেইরাজাদেঃ। বৎসায় হ্বিতং বৎসীয়ম্। রাজাদেস্ত। রাজ্ঞে হিতম্। রাজন্ ব্রাহ্মণ ব্যবল আচার্য্য ইত্যাদি।

৮৪৪। সর্বা**গ্রশ্চ।**

সবীয়ঃ সাব :।

৮৪৫। প্রাণ্যসাদ্যৎ। দন্তাম্।

ফলমিতি। সোদরশব্দেহপ্যত্র স্থত্তে দৃশ্যতে স লিপিকরপ্রমাদক্ত ইত্যুপেক্ষণীয়:। নহ সমানমুদরমস্ত ইতি সহ: সো বেতি সভাবে ক্রতে সিদ্ধাং সোদরশকাক্তর শায়তরি ইত্যর্থে যদি প্রত্যুয়ে। বিধীয়তে তদার্থাসন্থতিরেব।

- (৮৪১)। সয্থাৎ সগর্ভাচ্চ সহচারিণি অনুজে চ বাচ্যে যন্তবতি।

 সমানো যুথঃ সযুথঃ সমানো গর্জঃ সগর্জঃ সমানস্থাত্ত সবিধানং ছাল্পস্

 প্রত আহ ছাল্পমিদমিতি। কথং তর্হি ভাষায়াং লক্ষণমেতৎ ক্বতং
 কচিচ্ছাল্দমা অপি ভাষায়াং প্রযুজ্ঞান্তে ইতি ভাবঃ। অতএব অগ্রে
 ভবমগ্রাং দৃতস্থ ভাবো দৃতস্থ ক্রিয়া বা দৃত্যঃ শিবং করোতি শিবভাতিন
 রিত্যাদয়োহপি ছাল্দমাঃ কবিভিভাষায়াং প্রযুজ্ঞান্তে।
 - (৮৪২)। ত্যদাদি: সর্বাদ্যস্তর্গণঃ। ত্যদীয় ইতি ক্লীবে স্বমোরি-ত্যাদিনা অথাদিতদ্বিতে পরে প্রকৃত্যবস্থানার হল্লুক্।
 - (৮৪°)। রাজাদিব্যতিরিক্তাজ্ঞকাৎ তথ্যৈ হিতে বাচ্যে ঈরো ভবতি। রাজাদেস্তা। বাক্যমেব রাজ্ঞে হিতমিতি।
 - (৮৪৪)। সর্বাশপাত্তমৈ হিতে বাচ্যে ঈরো ভবতি। শশ্চ।
 - (৮৪৫)। প্রাণ্যঙ্গবাচকাচ্ছকাত্তকৈ হিতে বাচ্যে যন্তবতি। ঈুয়-ক্লাপবাদোহয়ম্।

৮৪৬। ত**দন্তাচ্চ।** রাজদন্ত্যম্।

४-१। थलारमञ्जा

थलाभ्। थल यय वृष भाष जिल खन्नान् तथ । १ । 🗯

৮৪৮। থ্যোহজাবিভ্যাম্। অজথ্যঃ অবিখ্যঃ।

্৮৫৯। ্**সাত্মন ঈনঃ।** আত্মনীনঃ।

৮৫০। ভোগোত্তরপদাৎ। রাজভোগীনঃ।

- (৮৪৬)। প্রাণ্যঙ্গবাচকান্তাচ্ছকান্তকৈ হিতেহর্থে যন্তবজি। পরি-থায়াষ্টেরন্নিতি যাবত্তদন্তাচ্চেত্যস্থ্বর্ততে। তেন ধান্তথল্যং পরম্থলা-মিত্যাদি।
- (৮৪৭)। থলাদেশ্চ তথ্যৈ হিতেহর্থে যন্তবতি। ব্রহ্মন্ ইত্যন্ত্রাৎ ব্রহ্মণ্যম্ অভাবকর্ম্মযে চেত্যাদিনা নিষেধাৎ অনীতদ্ধিতাচ্যয়োশ্চেতি ন নকারলুক্।
- (৮৪৮)। অজ অবি ইত্যেতাভ্যাং তথ্যৈ হিতে বাচ্যে থ্যো ভবতি। নামগ্রহণে-লিঙ্গবিশিষ্টস্থাপি গ্রহণাৎ অজায়ৈ হিতম্ অজ্ঞান্ উক্তপুংস্কান্-স্ত্রীপুংবত্তরাদাবিতি পুংবদ্ধাবঃ।
- (৮৪৯)। আত্মনস্তব্যৈ হিতে বাচ্যে ঈনো ভবতি। আত্মনীন ইতি নাত্মাধ্বনোরিভি নকারলুগ্নিষেধঃ।
- (৮৫০)। ভোগোত্তরপদান্তশ্বৈ হিতে বাচ্চে ঈনো ভবতি। রাজ-ভোগীন ইতি অনেনাশ্বিন্ বা ভুজাতে ইতি বাৎপত্তাা ভোগশকঃ শরীর-বাচী অতএব রাজে হিতমিতার্থো গম্যতে। ভোগাস্তাদিতি ক্লতে ভোগোত্তরপদাদিতি ক্লতং বহু প্রত্যয়পূর্মানিক্সাসার্থং তেন বহুভোগীরঃ।

খলো যবো মাষ্তিলৌ বুষোহথ
 ব্রহ্মা রথোহশ্বিরিতি সপ্ত উক্তাঃ । ৭.।।

৮৫১। 'বিশ্বপঞ্জাং জনাৎ কর্ম্মধারয়ে। বিশ্বজনীন: পঞ্জনীন:। সমানাধিকরণ ইতি ভাষাম্।

৮৫২। সর্বজনাট্টিকণ্ চ।

সর্ববজনীনঃ সার্ববজ নিকঃ।

৮৫৩। মহাজনাটিকণ্।

মাহাজনিজ:। কর্ম্মধারয় ইত্যেব। মহাজনীয়ঃ।

৮৫৪। **মাণবচরকাভ্যং ণীনঃ।** মাণবীনঃ চারকীণঃ।

⁽৮৫১)। বিশ্ব পঞ্চন্ ইত্যেতাভ্যামুত্তরশাজ্জনশনান্তপ্রৈ হিতেহর্ষে কল্মধারয়ে ঈনো ভবতি। পঞ্জলীন ইতি দিক্দংখায়ে।নান্নীতি
কল্মধারয়ং কলা প্রভায়ঃ। বিশ্বস্থ জীনে। বিশ্বজন ইতি ষ্ঠীতৎপুরুষে
উৎস্থিক ঈয় এব ভবতি বিশ্বজনীয়ঃ এবঃ পঞ্জলীয়ঃ কল্মধারয় ইতি
চল্লবদ্ধনানজয়াদিত্যালীনাং মতম্। সমানাধিকরণ ইতি ভাষামিত্যক্তং
বভ্রীহাবপি ভবতীতি ক্চনার্থম্। যতো বহুত্রীহিরপি সমানাধিকরণমেব
ভবতীতি। কাচিৎ পুস্তকে বিশ্বপঞ্চাং জনাৎ সমনাধিকরণ ইতি তল্লং
দশুতে তদসঙ্গতং মহাজনাট্রকিয়তি হত্তে কর্মধারয় ইত্যেবেতি
দশ্নাং।

⁽৮৫২)। স্ক্জনশ্কাৎ কর্মার্রে বিহিতেহর্তে তথ্যৈ হিছে বাচ্যে ঈনো ভবতি। টিকণ্চ। অন্ত স্ক্জনীয়ং।

⁽৮৫৩)। মহাজনশব্দাৎ কর্মধার্য়ে তক্ষৈ হিতেহর্থে টিকণ্ ভবতি। অন্র্জ্ঞাপি প্রাপ্তে প্রাষ্টকণ্ কর্ণমীনাত্র্তিনিরাসার্থম্। মহাজন ইতি সমানাধিকরণোত্তরপদে চেতি ভলোপো দীর্ঘণ্ট। মহাজনশব্দোপানাৎ সমানাধিকরণে বিধানং লভ্যতে এব কর্মধার্য় ইত্যস্তান্ত্রভিশ্চ বছ্বীহিনিরাসার্থম্।

⁽৮৫৪)। মাণব / চরক / ইত্যেতাক্র্যাং তদ্মৈ হিতেহর্থে ণীনো ভবতি।

৮৫৫। পুরুষাট্রেণ বধতৎকৃত্রোশ্চ। পৌরুষেয়:।

৮৫৬। বিকারাৎ কারণে তাদর্থ্যে। অঙ্গারীয়ং কাষ্ঠম্। অতাদর্থ্যবিবক্ষায়ান্ত্র। ধানানাং যরাঃ।

৮৫৭। ছদিব লিভ্যাং টেয়ণ্। ছাদিষেয়াণি তৃণানি বালেয়াস্তগুলা:।

৮৫%। ৠষভোপানন্ত্যাং যণ্। সার্যভ্যোঃ বৎসঃ ঔপানহাং কান্তম্।

(৮৫৫)। পুরুষশকান্তমৈ হিতে তস্ত বধে তৎ ক্লতে চ বাচ্যে টেয়ণ্ ভবতি। হিতে ঔৎসর্গিক ঈরে বধে তস্তেদমিতি টণি তৎ ক্লতে চ তেন ক্লতে গ্রন্থে ইতি টণি প্রাপ্থে বিধানম্। সমূহে বিকারে চ পৌরুষেয়পদং প্রোগেব সাধিতম্।

(৮৫৬)। প্রাক্তবেরপথাতাবো বিকারঃ। কারণ্তয়া অত্যোপাদানং কারণং সমানজাতীয়মভিরমস্তানর্ত্তিকারণমুপাদানম্। বিকারবাচকাচ্ছকাৎ কারণে বাচ্যে তাদর্থ্যে গম্যে ঈ্রয়ে ভবতি। অঙ্গারীয়ং কার্চ-মিতি অঙ্গারশকো বিকারবাচকঃ তন্ত্যোপাদানকারণং কার্চং তক্ত তাদর্থাতা গম্যতে। ধানানাং যবা ইতি ধানা ভৃষ্টযবাঃ ধানাশকো বিকারবাচকো ভবত্যেব তৎকারণঞ্চ যবা ভবস্ত্যেব কিন্তু বিকারক্ত কারণেন সম্বন্ধমাত্রমত্র বিবিক্ষিতং নতু তাদর্থ্যং ধানানাং সম্বন্ধনোহ্মী যবা ইতি।

(৮৫৭)। ছদ্ অপবারণে ইতাশ্বামিওস্তাৎ সপাদেরিসিতি ইস ছদেশ্বাদৌ হ্রস্থশ্চতি ণিঙ্লুক্ হ্রস্তথ্য ছদিস্শব্দাৎ বলিশকাচ্চ বিকার-বাচকাৎ কারণে বাচ্যে তাদর্থ্যে গম্যমানে টেয়ণ্ ভবতি। ছাদিষেয়াণীতি ইচ্ক্রাদিত্যাদিনা ষত্বম্।

(৮৫৮)। ঋষভ উপানহ্ ইত্যেতাভ্যাং বিকারবাচকাভ্যাং কারণে বাচ্যে তাদর্থ্যে গম্মানে যণ্ ভবতি। আর্ষভ্যো বৎসঃ ঋষভার্থো বৎসঃ পোষ্যতে স এবমূচ্যতে ইতি তাদর্থাম্। ৮৫৯। চর্মণি ণট্। বারত্রং চমণি অনভিধানাদিহ ন স্থাৎ। ঔপানহং চম[্]।

৮৬০। বিকারাৎ প্রভৃতি ত**েম্ম হিতে**২পীত্যেকে। অঙ্গারায় হিতং অঙ্গারীয়ং কাষ্ঠম্।

৮৬১। তদস্যাম্মিন্ বা স্যাৎ। আসাং প্রাকার: স্থাৎ প্রাকারীয়া ইউকাঃ প্রাকারোহিম্মিন্ স্থাৎ প্রাকারীয়ো দেশঃ। অনভিধানাদিহ ন স্থাৎ। প্রাকারো দেব-দত্তস্থ স্থাৎ।

৮৬২। পরিথায়াফেরণ । পারিথেয়:।

⁽৮৫৯।৮৬॰)। বিকারবাচকার্চ্ছকাচ্চম নি কারণে চ বাচ্যে তাদর্থ্যে গমো গড়্ভবতি। উপানচ্ছকশ্চম ব্যতিরিক্তে বাচ্যে পূর্বেস্ত্রন্থ বিষয়:। উপানহ্ ব্যতিরিক্তর চম নি বাচ্যেংশু বিষয়: উপানচ্ছকাচ্চম নি হাচ্যে উভাভ্যামেব প্রবর্ত্তিত্বামিত্যাশঙ্কায়ামাহ অনভিধানাদিহ ন স্থাদিতি। অনেন ত্যক্তে পক্ষে পূর্বেস্ত্রেণ বিহিতেন যণা ঔপানহং ৮ম ইত্যেব ভবতি। বিকারণে প্রভৃতীত্যাদি। প্রভৃতিশন্ধ আদ্যর্থঃ। বিকারণে কারণে তাদর্থো ইত্যারভ্য যে প্রত্যায় বিহিতাঃ তে তুর্মৈ হিতেহপ্যর্থে ভবন্তীতি একে বদন্তি। এম্বিণ যোগেরু তুর্মে হিতে ইত্যপ্রানুব্রন্তিনিক্তন্তীত্যর্থঃ।

⁽৮৬১)। বাশকঃ বাক্যন্বয়সমুচ্চয়ার্থঃ। তদিতি অক্সেতানেন অস্মি-নিত্যনেন চ সম্বধ্যতে। অস্ত তৎ স্থাদিত্যর্থে অস্মিন্ তৎস্থাদিত্যর্থে চ ঈরো ভবতি। অর্থাদ্যত্তংপদবাচাং তত্মাৎ প্রত্যয়ঃ। আসাং প্রাকারঃ স্যাদিতি যথেষ্ঠসন্তাবনাগ্রামনলমীতি লিঙ্ইপ্রকানাং বহুছেন সন্তাব্যতে এতৎ আসাং প্রাকারঃ স্যাদিতি দেশস্য চ গুণেন সন্তাব্যতে। প্রাকারোহস্মিন্ স্যাদিতি তাদর্থ্যমত্র ন বিবক্ষিতং কিন্তু যোগ্যতামাত্রমিতি পূর্কোণাপ্রাপ্তেঃ।

⁽৮৬২)। পারিখাশবাদস্তৎ স্যাদিত্যর্থেহিমিন্তৎ স্যাদিত্যর্থে চ টেয়ণ্ভবতি।

৮৬৩। তিমা হিতাদাবুদন্তগবাদের্থ । ধেনব্যং বধব্যং গব্যম্।

৮৬৪। তদন্তাচ্চ।

স্থাব্যম্। গোহবিস্ বহিস্ অফ্কা যুগ মেধা ভ্রুচ ্কুপ অক্র স্থান বিস্থান। ১১। *

৮৬৫। নাভেরপ্রাণ্যঙ্গে নভশ্চ। নভ্যং কাষ্ঠম্। প্রাণ্যঙ্গে তু। নাভ্যং ভৈলম্। ৮৬৬। ঊধন্ চোধসঃ।

উধন্যঃ।

(৮৬০)। উকারাস্তাচ্ছন্দান্গবাদেশ্চ প্রাপ্তক্তে তল্মৈ হিতাদাবর্থে যন্তবতি। তলৈ হিতে তাদর্থ্যে তদস্যান্দ্রিন্ বা স্যাদিতার্থে বিধানং নতু বধ তৎক্রতয়ারপি তয়োর ভয়োর পক্ষেপালত ফেনামুখ্যত্বাং। ধেনবামিতি যাচোর দ্পুণ ইতি গুণঃ তদ্ধিত্যে ইত্যবাদেশঃ। হ্রুস্বাক্তয় দীর্মস্তাপি গ্রহণমিতি স্টয়িতুং বধব্যমিত্যুদাস্তম্। উকারাস্তাদস্তপ্রাপ্তাবয়মেবেয়তে। তেন শলঙ্গুশ্দাতম বিকারাক্রমণি গড়িতি চক্ষ্পকাং হবিব্রিকাং হবিব্রিনা বেতি শক্তুশ্দাদর বিকারাকেতি বাধিত্ব। অয়মেব ভবতি। শলক্ষ্যাং চর্ম চরব্যাস্তপ্ত লাঃ শক্তব্যা ধানা ইতি।

(৮৬৪)। তদিতি পূর্ব্বোক্তং বিধানং পরাম্যাতে। পূর্ব্বোক্তং বিধানং তদস্থাদিপি ভবতি। আমবিকাবাক্তেভি যাবং। প্রতিলক্ষণং তদস্থাকেত্যত্ত বর্ততে তেন পরমামিক্ষাং পরমামিক্ষীয়ং যবাপূপ্যং যবাপূপীয়মিত্যান্যপি ভবতি। এতজ্জয়াদিত্যমতং নপ্তেযাম্।

(৮৬৫) নাভিশক্ষাৰ প্ৰাণ্যক্ষে বৰ্ত্তমানাৎ তথ্যৈ হিতাদাবৰ্থে যন্তবতি। তৎসন্নিযোগে নভকাদেশক। রথৈকদেশো নাভিঃ। নাভাং তৈলমিতি প্রাণ্যক্ষান্যদিতি যৎ লক্ষ্ণাস্তরবিহিতত্বাৎ তৎসন্নিযোগে ন নভাদেশঃ।

(৮৮৬)। উধঃশব্দান্তশ্মৈ হিতাদাবর্থে বত্তবতি। তক্ত উধনাদেশশ্চ।

 ^{*} গোবিষ্থদহবিমে ধা বহিঃ ক্রক্ চ রুপাক্ষরে।
 যুগং ঋদোহন্তকা চেতি অমী জ্রেয়া গবাদিকাঃ॥ ২>।

৮৬৭। শুনঃ শুনশূনো চ। শুনুং শুনুষ্

৮৬৮। কম্বলামানি।

ক ম্বল্যः।

৮৬৯। হবিবাচিনো বা।

আমিক্ষাং আমিক্ষীয়ং পুরোডাশ্যং পুরোডাশীয়ম্। ছবিঃশব্দাৎ
গবাদিকাৎ নিত্যং যৎ হবিষ্যম্।

४१० । अशृशादम**र**ह।

অপ্পাম্ অপূপীয়ম্। অপূপ তণ্ডুল পৃথুক অভ্যুষ অরোষ কিণ্ব কটক ইক্ল স্থুণা যূপ দীপ প্রদীপ অশ্বপদ। ১৩ । *

৮৭১। অমবিকারাচ্চ। পিউং পিষ্টীয়ম্।

⁽৮৬৭)। শুন ইত্যন্নান্তমৈ হিতাদাবর্থে যন্তবতি। শুন শুন ইত্যেতাবাদেশৌ চ ভবতঃ।

⁽৮৬৮)। কম্বলশকান্তকৈ হিতাদাবর্থে সংজ্ঞায়াং যদ্ভবতি। কম্বল্য-ইতি উপা প্রশতস্থানাম। অনামি তু। কম্বলীয়া উপা।

⁽৮৬৯)। হবির্বাচকাচ্ছকাত্তকৈ হিতাদাবর্থে যদ্ধা ভবতি। আমি-ক্ষীয়মিতি বিকারাদিত্যাদিনা ঈয়:। হবিঃশকাদ্যদ্যমেন বিকল্পেন ভবিতব্যং তদা গবাদিপাঠোহনর্থকঃ স্থাদিত্যত আহ হবিরিত্যাদি।

⁽৮৭০)। অপূপাদেক তক্ষৈ হিতাদাবর্থে যদা ভবতি।

⁽৮৭১)। অন্নবিকারবাচকাচ্ছন্দান্তনৈ হিতাদাবর্থে যদ্বা ভবতি। নম্থ অন্নবিকার হাদেব সিদ্ধে পূর্ব্বস্থত্ত্বেহপুশাদীনাং কিথাস্তানাং কিমর্থঃ পাঠঃ। উচ্যতে যদা তেহন্নবিকারা ন ভবস্তি কেনচিদাকারসাদৃশ্রেনার্থাস্তরে উপ-চর্যাস্থে তদর্থং তেয়াং পাঠঃ।

অপৃথকিথেকুলদীপযূপং সুণাপ্রদীপৌ কটকাম্বপাদে।
 তাদ্যগুলাভায়্মবেরাধ এব পৃথোঃ ক ইত্যেবমপৃপমুখ্যে ॥১৩॥

५१२। चीशात्मर्य ।

তত্র ভবাদাবর্থে দ্বীপাদেরুত্তরে যণ্ ভবতি। দ্বৈপ্য:।

৮৭৩। তদাহিতে২গ্রো গৃহপতেঃ।

গাহ পত্যঃ।

५१८। (छेश्र् नम्त्राह्मः।

তত্র ভবাদাবর্থে নদ্যাদেরুত্তরে টেয়ণ্ ভবতি। নাদেয়ং নদ্যাদিঃ প্রাপ্তক্তঃ।

৮৭৫। धूमारमत्कन्।

তত্র অবাদানর্থে ধূমাদেরুত্তরেহকণ্ ভবতি। ধৌমকः।

৮৭৬। তদ্তাবে তাত্বম্।

তস্ম ভাবে গমামানে তা ভবতি স্বঞ্চ। রূপভেদাৎ দ্রীক্লীবয়োঃ। অনেকেম্বেকপ্রত্যভিজ্ঞাধীহেতুর্জাবঃ। স্বরূপমান্রং বা। গোর্ভাবঃ

⁽৮৭২)। উপসম্ভাদ্বীপাদ্যণিতি শেষার্থে উক্তং তেনৈব সিদ্ধে ভবাদাবর্থে পুনর্বিধানং প্রপঞ্চার্থমিদম।

⁽৮৭৩)। গৃহপতিশব্দান্তেনাহিতেহগ্নৌ বাচ্যে যণ্ ভবতি। আহিত অবারোপিতঃ। যগুপি গৃহপতিনা দক্ষিণাগ্নিরাহ্বনীয়শ্চাভিধীয়তে তথাপ্যগ্নি-বিশেষ এবাস্ত রূঢ়িঃ লোকপ্রাসিন্ধিহি শব্দার্থং নিয়ময় শ্রীতি।

⁽৮৭৪)। শেষার্থেহপ্যেওল্লকণমুক্তম্। তেনৈব সিদ্ধে ভরাদাবর্থে পুনবিধানং প্রপঞ্চার্থম্।

⁽৮৭৫)। ধ্মাদেদে শাদিতি শ্বোর্থে উক্তম্। তেনৈব সিদ্ধে এত-দপি প্রপঞ্চার্থনেব।

⁽৮৭৬)। রূপভেদাদিত্যাদি রূপং স্বরূপং তস্য ভেদাদশুথাকরণাৎ স্ত্রাধিকারবিহিতাৎ প্রত্যরাস্ত্রশু তা ইত্যস্য সোর্ম ইতি মকারাদেশাস্তম্প কমিত্যক্রণ চিদেশিং স্ত্রিরাং ক্লীবে চ বিধানম্। এতেনৈত্যক্রং ভবতি তত্ব ইত্যেতাবেব প্রত্যয়ে বিধীয়েতে। লিফভেদপরিজ্ঞানার্থস্ক তাত্ব-মিতি নিদেশিং কৃতঃ ইতি। ভবভেরনেকার্থতাৎ ভাবশক্ষোহভিপ্রায়াদিষু ব্রহুমর্থের্ম্বর্ততে তদ্ত্র কম্মির্মের্থ বর্তমানো যুক্সতামিতি সন্দিহান্য

শোতা গোৰং চৈত্ৰস্থ ভাবঃ চৈত্ৰতা চৈত্ৰত্বং চৈত্ৰস্বৰূপমিশুৰ্থং।
৮৭৭ । নঞ্জভৎপুৰুষাৎ।

অমৃত্তা অমৃত্তম্। অতৎপুরুষাত্র। নাস্য পটব: সন্তি অপটু: তস্য ভবঃ আপটবম্ন।

৮৭৮। অচতুরাদেব।।

প্রত্যাহ অনেকেম্বিত্যাদি। উত্তরপদার্থপ্রধানদ্বাং তৎপুরুষশ্ব একবচনেহ-প্যক্তে শবলশ্চানেকো ধবলশ্চানেকঃ রুষ্ণশ্চানেক ইত্যাদিন্দেক শেষণানেকি কেম্বিতি বছবচন্দ্। অথবা বছব্রীছিরেবায়ন্। অনেকেষু শবলাদিষু গোরামিত্যেকপ্রত্যভিজ্ঞারূপিণী বুদ্ধিস্তাবছৎপত্মতে তহ্ম যোহেছুঃ স ভারঃ সমানানাং ভাবঃ সামান্তমিতি যামাছবৈ শেষিকান্তম্মিন্ গমানানে গোতা গোদ্বং গুরুষ্ঠা পাচকতা রাজপুরুষ্ঠা ঔপগবতা দণ্ডিতা নানাত্বং মহন্ত্বন্ উত্তৈশ্বমিত্যাদি। নবেবং সতি চৈত্রতা ইত্যত্র ন প্রাপ্তোতি ন হ্যতানেকেষু একপ্রতাভিজ্ঞাধীরস্তি চৈত্রস্থৈকত্বাৎ অতো লক্ষণান্তরনপ্যতদর্থং বৃত্তিরুৎ করোভি শ্বরূপমাত্রং বেতি। বা শব্দঃ সমুদ্ধরার্থো নতু বিকরার্থঃ যদৃদ্ধাশবানাং টেত্রাদীনাং যহু যহুপক্রিত্মরূপমাত্রং স ভাব উচ্যতে। ভাবে ক্রিয়ার্যাঞ্চ বিধায়কেষু উত্তরযোগেষু সর্বেশ্বের তাত্বমিত্যমুবর্ত্ততে তেন সর্বত্র পক্ষে এতৌ প্রত্যয়ে ভবতঃ।

(৮৭৭)। নঞ্সম্বনিত্তৎপুরুষাৎ তা ভবতি থং বা। উত্তরযোগৈঃ
প্রাপ্তথ্য প্রতায়স্থ বাধনার্থমিদং বচনম্। পৃথাদেরিমন্পুংদীত্যাদিভিঃ পরিগণিভাভা এব প্রকৃতিভাো বিহিত্ত প্রতায়স্থ নঞ্পূর্বাভাঃ প্রাপ্তিরেব
নাজীতি বাধনীয়স্থাভাবঃ। অমৃহতেতি নঞ্সমাদে কতে লঘুপান্তাদিগন্তাট্রণিতি প্রাপ্ত উবোহপবাদঃ। নাস্থ পটবঃ সন্তীতি বহুত্রীহের্বাক্যং
দর্শিতম্। আপটব্যতি টণেব ভবতি। নঞ ইতি কিম্ ? বাহ স্পান্তাং
পুরোহিতাদিপ্রতায়ান্তাদ্যণিতি যণ্।

(৮৭৮)। পূর্বেণ নিত্যে প্রাপ্তে বিকরার্থ বচনম্। অচতুরাদে-

অচতুরতা অচতুরথম্ আচতুর্যম্। অচতুর অসঙ্গত অলবণ অবংশ অবুধ অরুচ অরুস অলস। ৮। *

৮৭৯। পৃথ্বাদেরিমন্ পুংদি।
প্রথিমা পার্ধবং পৃথুতা পৃথু মৃত্ তকু
মহৎ গুরু লঘু প্রিয় ক্ষিপ্র ক্ষুদ্র দীর্ঘ বছল পটু উরু বছ সাধু চণ্ড
খণ্ড অকিঞ্চন বাল হোড় পাক বৎস মন্দ স্বাত্ন ঋজু ব্রস্থ
আশু। ২৭। শ

মলিনিমালিনিমাধবযোষিতামিতি মাত্তে মলিনিমেভ্যসাধুঃ।

স্তারঞ্চ বা ভবতি। এতাভ্যাং ত্যক্তে পক্ষে- ব্রাহ্মণাদেরাক্ততিগণস্বাদচতুরাদী-নামন্টানাং তত্র পাঠপক্ষে ট্যণ্। এবমপরেম্বপি ত্রৈদ্ধপ্যম্।

(৮৭৯)। পৃথু ইত্যেবমাদিভ্যন্ত ভাবে গমামানে ইমন্ বা ভবতি পংসি
পুংলিঙ্গে। প্রথিমেতি প্রাদিঃ প্রিয়াদেরিভ্যাদিনা পৃথু: প্রথং। পার্থবমিতি লগুপান্তাদিনা টণ্ মাচোক্ষদ্ গুণ ইতি গুণং গ্যাদে) চৈচোহ্যবামাব ইত্যবাদেশং। যেহত্র লগুপান্তা ইগন্তাঃ পৃথুপ্রভ্তমন্তেভ্যঃ পক্ষে
লম্পান্তাদিনা টণ্। যে চ গুণবচনাঃ থগুদিয়ঃ তেভ্যঃ পক্ষে প্রান্ধগাদিত্যাদিনা ট্যণ্। যে তু বয়োবাচিনো বালাদমন্তেভ্যঃ পক্ষে প্রাণিজাতীভ্যাদিনা গড়্ভবতি। তাছমিতি তু সর্বেভ্য প্রব। মলিনিমেত্যসাধুরিতি
প্রতেনৈতৎ স্টিতং নামমাক্ষভিগণো বেনাপঠিতেদ্বি ইমন্ বিধেয় ইতি।
নাপি মলিনশকো ন বর্ণবাচক ইত্যুত্তরম্বত্রণাপ্যপ্রাপ্তিঃ। যত্যসায়ং পুংসি
কথং তহি প্রেমেতি ক্লীবেহিপ দৃশুতে প্রীণাতেঃ প্রাদেম্নভিতি মনঙা
সাধ্যম্। পৃথুমূত্তমূব্ত্বভ্বভ্লক্ষিপ্রক্ষাশুমনপট্দীর্ঘাঃ। উক্লগুক্রবৎসা-

চত্রো লবকৈব বুধবসৌ বহদসতৌ।
লসকটো নঞাহটো স্থারচত্রাদিকে ইমে ॥৮॥
পৃথুমৃত্লঘ্বহতমূচতাঃ ক্ষিপ্রবহলম্কমহদৃজুপতাঃ;
ক্ষাভপ্রিবালাঃ সাধুর যো বৎসো মকঃ যাহঃ।
হোড়াকিকনদীর্ঘাঃ পাকঃ পটু অক চান্ধিন্ কথয়তি লোকঃ ॥২৭॥

ক্রাড়মা দার্ত্য্ দ্র্রড় পরিবৃঢ় ভূশ ক্রশ অয় লবণ উপেন্দ্র শীত উপঃ জড় বধির মৃক মূর্য পণ্ডিত মধুর বক্র বিয়াত বিলাত বিশারদ বিমতি বিমনস্সামতি সাম্মনস্॥২৪॥ শৌক্রাং শুক্রিমা॥*

৭৮১। ব্রাহ্মণাদিগুণবচনান্তদ্ভাবক্রিয়য়োঃ। ব্রাহ্মণস্থ ভাবুঃ কর্ম্ম বা ব্রাহ্মণাম্। ব্রাহ্মণ মাণব বাড়ব চৌর

কিঞ্চনহোড্মছৎচণ্ডথণ্ডকালান্চ। ঋজুসাধুস্বাছিপ্রিলঘুপাকা হ্রস্থ ইত্যমী নিযতাং। ইহ পাণ্ডু চারু বক্তা রূপা বুরুকালো চ পঠ্যন্তে। অত্যৈক্তা নাক্সতিগণতা অহু কেনাপি নারং কালশকো বর্ণবিশেষবচনঃ তম্মাছন্তরস্ত্রে-গৈবাপ্রাপেরত্যৈঃ শিইপ্রয়োগতঃ পঠিতব্যাঃ।

(৮৮০)। বর্ণবিশেষাঃ শুক্লাদয়ঃ। দুঢ়াদেবর্ণ বিশেষবাচকাচ্ছকাচ্চ
টাণ ভবতি। চকারাদিমন্ চ। বানুসুঁভিস্তাজমিত্যেতৌ চ। বিমতিশকাজু লঘুপাস্তাদিত্যাদিনা উণপি তেন বিমতের্জাবো বৈমতাং বিমতিতা
বিমতিক বিমতিমা বৈমতমিতি বিশেষশকোপাদানাৎ বর্ণরাপাদিশকেভ্যে
ন ভবাত। দুঢ়াদীনাং গুণ্লচনস্রাভ্তরস্কেণ টাণি দিদ্ধে ইমনর্থ ইহ পাঠঃ
টাণ্ ইছ উত্তবার্থম। দুঢ়াচ্পরিবৃঢ়ভূশরুষলবণবিলাতোক্ষমীতজভ্মুর্থাঃ।
পণ্ডিতমুকবিশারদ্ববির্বিপাতাস্তমক্রমধুরাশ্চ। দক্ষতিস্থানসা অপি বিমতিবিমনদী উপেক্রশ্চ। এষ দুঢ়াদিনি মতক্তর্রণং পঠন্তি কেচিদত্রৈব ট্যুণস্তঃ
স্বভাবাদেব নপুংসকলিকঃ।

(৮৮১)। গুণমুক্তবস্তো গুণবচনাঃ। ব্রাহ্মণাদেগুণবচনাচ্চ তম্ম ভাবে ক্রিয়ায়াঞ্চ বাচ্যায়াং ট্যণ্ ভবতি। ব্রাহ্মণশন্ধং প্রাণিজাতিবচনাং বালিশ-শনাদ্রোবচনায়ভ্বাধনার্থম্। চৌরধূর্জশনাভ্যাং মনোজ্বাদিণকেন সমা-

দৃঢ়বৃঢ়ভূশমূকোপেক্রমূর্থোঞ্চশীতম্।
 জড়বিধিরবিয়াতং পণ্ডিতায়ৌ বিলাতম্।
 মধুরলবণবৃগাং শারদো বেং পরস্থং।
 পরিবৃঢ়কুশবক্রা বেং সমো ছে মনোমতী॥ ২৪ য়

ধূর্ত্ত আরাধয় বিরাধয় উপরাধয় অপরাধয় দিভাব ত্রিভাব একভাব অশুভাব অক্ষেত্রজ্ঞ সংবাদিন্ সংবেশিন্ সংভাষিন্ বহুভাষিন্ শীর্ষথাতিন্ সমস্থ বিষমস্থ মধ্যস্থ অনিশ্বর কুশল চপল নিপুণ পিশুন বালিশ অলম তুম্পু রুষ কাপুরুষ অধিপতি গণপতি দায়াদ বিশস্তি বিষায় পরমস্থ কবি সহায় গড়ুল বিজ্ঞাতেঙাাদি। ৪১।*

বেশার্থং বচনম্। কুশলাদিভ্যো যুবাদি টণা সমাবেশার্থং আরাধরশকাদসাবেরগান্ধারেরাদিইজ্জাতো পা ইতি গাঃ উপরাধরঃ বিরাধরঃ অপরাধর
ইত্যেতেভাো জনপদরপাৎ ক্ষপ্রিয়াদিতি টণ্ তয়োঃ কম্বোজাদেরিতি লুক্
ততশ্চরণগোত্রবিহিত্ত পক্ত বাধনার্থং মাণব বাড়বাত্যামাপ লকস্তৈব
আক্ষেত্রজ্ঞানীখরাত্যাং নঞ্জংপুরুষাদিতি বিশেষবিধিবাধনার্থম্। সংবাদিন্
সংবেশিন্ সংভাবিন্ বহুভাগিন্ শীর্ষথাতিন্ সমস্থ পরমস্থ মধ্যস্থ বিষমস্থ
ক্রপ্রুক্ষ কাপ্রুক্ষ ইত্যেতেভ্যোহিণি নঞ্সমাসেহিপি তাত্মপ্রতায়াত্যাং সমাবেশার্থম্। একভাব দিখাব ত্রিভাব অন্তভাব ইত্যেতেভাো ভাবাভিধায়িত্যঃ
স্বার্থে বিধানার্থম্। গণপতি অধিপতি ইত্যেতাভ্যাঞ্চ পত্যস্তমণো বাধনাথম্।
বিষায় বিশস্তি শক্ষাভ্যাং তাত্মবিধানার্থং ট্যণ্বিধানং এতাভ্যাং তাত্মপ্রতায়া
ন দ্প্রেতে ইত্যাহং। ব্রাহ্মণ মাণব বাড়ব স্বমস্থ বিষমস্থ চৌর মধ্যস্থাঃ।
অপরাধয়োপরাধয়বিরাধয়াশ্চ কাপুরুষঃ। অক্ষেত্রজ্ঞানীখরবালিশক্রপুরুষদায়ালাঃ। অধিপতিগণপতিধূর্ত্তাঃ কুশলচপলপিগুননিপুর্গাশ্চ। অলস-

আদৌ ব্রাহ্মণবাড়বৌ গণপজিঃ সংবাদিসংবেশিনৌ
চৌরারাধয়বালিশা অধিপতিম ধ্যস্থসংভাষিণৌ।
অক্ষেত্রজ্ঞমনীশ্বরস্ত কুশলং শীর্ষান্ত ঘাতী কবিঃ
কাত্রভ্যাং প্রুয়ঃ সহায়গড়ুলৌ ধৃর্ত্তোহথ ভাষী বহোঃ।
দিত্রিভ্যাং তত একতোহগুপরতো ভাবো বিধায়ালদৌ
দায়াদশ্চপলস্তথাক নিপ্ণঃ শন্তিবিতঃ পোঃ শুনঃ।
বিক্রাতং বিষময়মাণবয়ুগং স্থাজাধয়ো বেরুপাৎ
তদ্বং স্থাদপতঃ সমাৎ পর্মতঃ স্থঃ স্থাদিমে স্থাদশি ॥য়য়৸

৮৮২। রাজ্ঞরদন্তাচ্চ। ক্লাজ্যম্ আধিরাজ্যম্।

৮৮৩। গুণবচনাং। মাধুর্যাম্।

৮৮৪। মিত্রাদেব জিয়াম। মৈত্রাং মৈত্রী। মিত্র উচিত অনুপূর্বর যপাকাম সমগ্র রুদ্রে-ত্যাদি।৬। *

৮৮৫। অহ তো মুম্চ। আহ স্তাম আহ স্তী।

বিশন্তিবিষায়া একদ্বিত্রন্তপূর্বেভাবশ্চ। সংবাদা সংবেশী সম্ভাষী শীর্ষঘাতী চ। বহুভাষী পরমন্থ: কবিসহায়গড় লবিজ্ঞাতাশ্চ। অন্তেহপি সার্থি-প্রহিতপুরোহিতসমগ্রদীনেতিহজ্যেষ্ঠাঃ। *তৎস্থবিদগা ভীক্ষপ্রতিক্লবিধর্ম-পরিশেষাঃ। গ্রামিকদণ্ডিকথণ্ডিকধর্মিকপরিষদিকশিলিকসারকাঃ। চর্মিক-কর্মিকস্চকদার্থিকাঞ্জলিকপৃতিকস্বস্থাঃ। পূর্ব্বাপরোন্তরাধরসধর্মমাডু-দাসীনাঃ। অভিরূপস্কর রসদৃশাঃ পুনঃ পুনস্তরতমাতুপূর্বাশ্চ। প্রতিথেদ-তৎপরপরম্পরাদ্যান্তথাত্র বিজ্ঞেষাঃ। তরতমশ্বেষহিতিশয়ার্থ প্রত্যয়োপ-লক্ষণকঃ তত্মান্তারতমানিতি রূপম্।

। ৮৮২ ৮৮৩)। রাজন্শকান্তদন্তার্ক তন্তাবক্রিয়য়োর্বাচ্যরোষ্ট্যণ ভবতি। বাজণাদেরেবায়ং প্রপঞ্চঃ। আধিবাজামিতি নিতাং কুপ্রাদেরিতি তৎপুরুষঃ রাজাদেগ্রাদিরিতি সমাদান্তানাং সমাদাবয়বত্বাদন্ত রাজান্ততা। মাধুর্যামিতি গুণবচনোদাহরণম্।

(৮৮৪): মিকাদেস্তদ্যবিক্রিয়য়োর্বিহিতষ্ট্যপ্স্তিয়াং ভবতি বা। ব্রাহ্ম-ণাদেরাক্রতিগণস্বাট্যণ্ সিদ্ধ এব লিঙ্গব্যবস্থার্থং লক্ষণম্। মৈত্রীতি টিকাদী-প্রভায়ে ক্যতে হলস্তদ্ধিতশ্রেতি যকারলুক্।

৮৮৫)। অর্থ: প্রশংসায়ামিতি শত্রস্তাদহ ক্র্পাদ্রাহ্মণাদিষাট্যাণ্

মত্রকল্রসমগ্রাণি যথাকামোচিতে তথা।
 অনুপূর্ব্বমিতি প্রোক্তাঃ য়য়পুর্ব্বমিতি প্রেরাগতঃ ॥৬॥

৮৮৬। বণিগ্দৃতাভ্যাং।
ৰাণিজ্যং বণিজ্যং দোত্যং দৃত্যম্। প্রায়ো নামগ্রহণৈ লিক্সবিশিষ্টস্থাপি গ্রহণাদিহ দৃতীশক্ষাক্ত। তথাচ, আগতং প্রিয়কথৈরভিদোত্যমিতি ভারবিঃ।

৮৮৭। স্থাঃ। স্থাম।

ভবতি। অহ তা অহ কম।

৮৮৮। স্তেনান্নলোপশ্চ। স্তেয়ম্। স্তৈভামিত্যাগমিকম্।

৮৮৯। পুরোহিতাদিপত্যস্তাদ্যণ্।
পৌবোহিতাম্। পুরোহিত প্রামিক খণ্ডিক দণ্ডিক

দিক এব তৎসন্নিযোগে কুম্বিধানার্থং বচনম্। ট্যানোহভাবে কুম্পি ন

(৮৮৬)। বণিজ্দ্ত ইতোতাভাং তথাবক্রিয়য়োর চিয়েরার্থা ভবতি।
চকারাট্রণ্চ। ভাবক্রিয়য়োরিভাত্রবজং দর্ব বৈব প্রতিশব্দপ্রতিষ্ঠতে নজু
প্রতিলক্ষণম্। তেনাত্র ক্রমোন ভবতি। শ্রুতেন প্রথমং দম্বন্ধঃ পশ্চাদন্দ্রব্রেনেতি প্রভাষাভাগ্যসিপ দমং ক্রমোহত্র ন ভবতি। অথবা বহুলবচনাদেবমুত্রব্যোগেরপি ক্রমো নিরদনীয়ঃ। দ্ভবণিগ্ভাঞ্তি বক্রব্যমিতি
কৈশ্চিনিয়ত ইতি ভাসকারেণাক্রম্ অতো মতভেদদর্শনাৎ ষট্রাণাবক্র
বিহিতো বণিজ্যাশব্দং স্ত্রীলিক্ষমিছতির।

(৮৮৭)। স্বিশ্লাত্তাবক্রিয়য়োর্ব চ্যোর্যো ভবতি। যোগবিভাগ-ষ্টাণ্সুর্ত্তিনিরাসার্থঃ।

(৮৮৮)। স্তেক চৌর্য্যে চুরাদিন্ত প্রত্যেয়াস্তঃ স্তেনশকান্তস্তাবক্রিয়য়ো-র্ব্যাচায়োর্যো ভবতি। নকারলোপশ্চ। স্তেয়মিতি লুপ্তঞ্চালুপ্তবন্ধাৎ তদ্ধিত্বে চেতি নাবাদেশঃ। স্তৈত্তশক্ষো ধর্মাদাসবৰ্দ্ধমানাদিভিরিষ্টস্তদর্থং ব্রাহ্মণাদিষু স্তেনশকোহপি পঠনীয়ঃ।

(৮৮৯)। পুরোহিতাদে: পতান্তাচ্চ তদ্বাবক্রিয়য়োর্বাচ্যয়োর্যণ্ ভবতি। পুরোহিতাদে গ্রাৎসমাবেশার্থং প্ত্যন্তাদ্বদ্ধান্তাদি টণ্-ব্যুমার্থক। নতু ব্রাহ্মণাদেরাক্তিগণ্ডাদের পুরোহিতাদে: পত্যন্তাচ্চ র্ধর্মিক চর্ম্মিক কর্মিক শিলিক দূতিক পৃতিক পরিষদিক প্রতিক সার্থিক অঞ্জীলিক সারক্ষ সূচক। ১৫। * সৈনাপত্যম্।

৮৯০। টেয়ণ্ কপিজ্ঞাতিভ্যাম্। কাপেয়ং জ্ঞাতেয়ম্।

৮৯১। প্রাণিজাতিবশ্বোবাচ্যুদ্গাত্রাদের্ণ ট্। শোবং কোমারম্ ওদ্গাত্রং। উদগাতৃ উন্নেতৃ প্রশাস্ত্ হোতৃ ভর্তৃ প্রতিহস্ত, রথগণক স্বন্ধ, ছন্ঠ্যু অধ্বর্য়। ১০ শ

টাণি সিদ্ধে কিমনেন শক্ষণেন যণি সতি টিম্বনিবন্ধন ঈপ্রত্যয়ে। ন ভব-তীতি চেলৈবম্ এতেষাং স্ত্রীম্ব এব বুদ্তান্তাবাং মৈত্রাদীনামেব পাক্ষিকং স্ত্রীম্বং ব্যবস্থিতং তদেতল্লক্ষণং লিপিকরপ্রমাদক্ষতম্। তম্মাদ্রাদ্ধণাদী মিত্রাদৌ বা অমী শদাঃ পঠ্যন্তে ইতি সন্দেহনিরাসার্থং স্ত্রম্।

(৮৯০)। কপি জ্ঞাতি ইত্যেতা জ্ঞাং তদ্ভাবক্রির রোর্কাচ্যয়ো-ষ্টেয়ণ্ ভবতি। কপিশন্তা স্থান্তা দিনা প্রাপ্তং টণং বাধিত্বা টেয়ণ্ তাত্বোচ যথা তাত্বো ভবতস্তং প্রাণেখোক্তম্।

(৮৯১)। প্রাণিনাং জাতিঃ প্রাণিজাতিঃ বয়ঃ শৈশবাদি প্রাণিজাতিবয়সী বক্তুং শীলমস্তেতি তাচ্ছীল্যে ণিন্ প্রাণিজাতিবাচকাৎ বয়োবাচকাছ্ল্গাত্রাদেশ্চ তদ্ভাবিশিয়য়োবাচ্যয়োর্জ্ভবতি। শৌবমিতি
অনীতদ্ধিতাচ্বয়োশ্চেতি নকারলুক্ অভাবকর্ম্ম চেত্যাদিনা নিমেধস্ত ভনঃ সঙ্কোচে ইত্যস্ত টণেব বিষয়ঃ। খাদেরিতি বকারস্ভৌবাদেশঃ।
লঘুপাস্তাদিগস্তাত্ত্ব টণেবেষ্যতে। অপ্রাণিনি তু। তুলত্বং তুলতা
অজাতৌ তু। মৈত্রত্বং মৈত্রতা। উদ্গাত্ব উয়েত্ব হোত্ব প্রতিহস্ত্

পুরোহিতেহর্থ সারক্ষঃ পরে কান্তা ত্রয়েদশ।
 পণ্ডিদণ্ডিকর্মিচির্মিসারণাঞ্জলিপৃতয়ঃ।
 প্রতিঃ পরিষদিঃ স্থচঃ স্থার্ত্রামিশিলিধর্ময়ঃ ॥ ১৫॥

[†] উদ্গাতৃহোতৃভর্তার উল্লেভা গণকো রথাৎ। প্রশাস্তা প্রতিহস্তা চ অধ্বযুদ্দিষ্ঠ স্কুষ্ঠবঃ॥১০॥

৮৯২। লঘূপান্তাদিগন্তাট্টণ্। গোরবং পাটবম্। অলঘূপান্তান্ত্যু। শক্রয়ম্।

৮৯০। যুবাদিহায়নান্তাচ্চ।

যৌবনং চাপলম্। ব্রাহ্মণাদিয়াৎ চাপল্যম্ এবং কৌশলং কৌশল্যং নৈপুণং নৈপুণ্যং পৈশুনং পৈশুন্তং সৌহাদ হ পৌহাদ্যং হৃদাদেশা-ভাবপক্ষে সৌহদ্য্যম্। যুবন্ কুশল চপল নিপুণ পিশুন স্থবির স্থান্ হুহ্ছল স্থাত্ হুর্জাত্ হেজাত্ যজমান প্রাত্ কর্ণক কুগুক প্রাব্ কমন্তলু কুন্ত্রী হুংগ্রী স্থাত্তী স্থহ্মদয় তুহ্ছ দয় বুষলা পরিব্রাজক সব্রহ্মচারিন্ অনুশংস ক্ষেত্রজ্ঞ। ২৮। ৯ বৈহায়নম্।

অধ্বর্য ইত্যেতেভ্যঃ ঋষিজ ঈয় ইতি ঈয়স্থ বাধকঃ। উল্পাত্ প্রতিহস্ত, প্রশাস্ত্রথগণকস্বষ্ঠুহোতারঃ। অধ্বর্যভর্ত্ত্ঠুয়েতারশেড্যমী গণে নিয়তাঃ।

(৮৯২)। লঘ্পান্তমন্তসমীপং যক্ত স লঘ্পান্ত: লঘ্পান্তাদিগন্তা-চ্ছকাভন্তাবক্রিরয়োর্বাচ্যয়োষ্টণ্ ভবতি। গ্রম্ভার স্বরক্ত বিশেষৌ দীর্ঘো দীর্ঘযুক্ যুক্তান্তো গুরুরিত্যক্তমেবং তৎপরিশিষ্টো লঘুরিতি দ চ ইগন্তা-দেব হল্ব্যবহৃত এব সংভবতীতি নামৌ তক্ত ব্যবধায়কঃ।

(৮৯০)। যুবন্ ইত্যেবমাদেহ বিষ্ণান্তাক শব্দক্তি ভাবক্রি রয়োব চিয়ের। ষ্ঠিন্ ভবতি। যুবন্শকাদ্যোবাচিছেন টন্ প্রাপ্তঃ স মনোজাদিণকেন

স্থবিরপরিপরস্থব্রাজকৌ ক্ষেত্রতো জ্ঞ:।

স্থান্থ যজনান: কো: পরং তুহলং স্থাৎ।

হাদরপ্রথমতো হুর্ছ:পরো ব্রাতৃ শকো
ভবতি তদন্ত শংদোহনু: পরো বৈ যুরাদি॥ ২৮॥

র্বস্থল্বর্ত্তর বিলিক্তর বিলিক বিলিক

৮৯৪। পুরুষহৃদয়াভ্যামসমাসে।
পোরুষং হাদীম্। সমাসে ভূ—পর্মপুরুষহৃম্।
৮৯৫। শ্রোত্রিয়াদিয়লোপশ্চ।
শ্রোত্রম্।

বাধিতঃ তেন সহ সমাবশাৎ দাবপি ভবতঃ। যৌবনং যৌবনিকা অভাবকর্মফ্রেচেত্যাদিনা যুনো ণকে ইতি চ নলুগ্নিষেব:। স্থবিরশব্দা-ছয়োবাচিত্বেন নটো বাধনম। হোওশদাৎ উচ্গাক্রদিগণে পাঠাৎ ছৌ ভবতঃ। সংঘানিধর্থেমু ণড়স্তাট্রণ্ টণস্তান্ত্রু ঈয় ইতি বিশেষঃ। বৌ স্থস্দ হর্নছনো মিত্রামিত্রবাচকাবিহ গণে পঠ্যেতে ভাভ্যাং টণি সৌহার্দ্ধং দৌহর্দিমিতি তাভ্যামেব ব্রাহ্মণাদিঘাট্র্যাণ সৌহার্দ্যঃ দৌহর্দ্যা-মিতি সুহার্যুত্র দ্যুশকাভ্যামপি অনেন ট্রি ক্রতে হাদ্যুত্ত হলাসালাবিতি क्रनारमध्य ह क्रटल सोहार्कः स्नोर्हार्कमिलि क्रनारमभाजावशस्क हेलि यना স্থস্ন মতুর্স দিয়শকাভ্যাং ব্রাহ্মণাদিপাট্যাণ্ বিধীয়তে তদা হৃদাদেশাভাবে। ভবতি অন্মিন্ পক্ষে সৌর্দ্যাং দৌহনম্যামিতি হৃদয়পর্য্যায়ছচ্ছান্দাস্তাত্ টাণি সোহার্দ্যাং দৌহান্দ্যমিতি অতএব সমাসপাদে বক্ষ্যতি সৌহার্দ্যাং সৌহদ্যামিতি হৃদ্হদ্যাভ্যাং রূপমিতি মিত্রামিত্রবাচিস্কহৃদ্হর্জ্ঞশা-ভাাত্ত দৌহনং দৌহন দমিতি মথা ভবতি তৎসন্ধিপাদ এবোক্তম। হামনা-ন্তাত্ত্র দ্বিহায়নস্ত ভাবঃ কর্ম বা দৈহায়নং তক্ষেদমিতি প্রাপ্তস্ত টণ্ তাত্বাভ্যামেক বাধিত:। যুবচপলকুশলনিপুণাঃ পিশুনস্থবিরৌ স্থন্-দ্র্দ্বলা:। কুন্ত্রী হুঃন্ত্রী স্বন্ত্রী সহরোত্রতি। চ কুগুক্যজমানৌ। ক্ষেত্রজ্ঞপরিব্রাজকরুতূহলভ্রাত্মকর্ণ কশ্রবণাঃ। স্থল্পরহোতৃকমগুরনৃশংস-সত্রজ্ঞচারিত্র দয়াঃ 1

- (৮৯৪)। পুরুষ স্কুদয় ইন্যেতাভ্যাং ভদ্ধাবক্রিয়য়োর চিয়য়োরসমাদে টণ্ ভবতি। পুরুষশন্ধাৎ প্রাণিজাতিবাচিত্বাৎ প্রাপ্তস্থা গটোহপবাদঃ। পৌরুষেয়প্রকাশনমিত্যাদৌ তু সমাদেহবিদ্যমানাদেব টণ্ পশ্চাৎ দমাদ ই তি নাস্তি বিরোধঃ।
- (৮৯৫)। শ্রোত্রিয়শকাক্তরাবক্রিয়য়োর চ্যারেছিণ্ ভবতি। যখ চ লোপঃ।

৮৯৬। যুপান্তাদস্প্রথ্যাদন্তাজ দ্বিতীয়গুর্বচো পকঃ। রামণীয়কম্। অদিতীয়গুর্বাচস্ত —ক্ষত্রিয়ম্।

৮৯१। यत्नोछ्लारम**≈**5।

মানোজ্ঞকম্। মনোজ্ঞ অভিরূপ প্রিয়রূপ কুল্যাণ স্থরূপ অমুষ্য-পুত্র অমুষ্যকুল ছান্দস মেধাকিন্ আঢ্য কুলপুত্র ইন্দ্র শ্রোত্রিয় চৌর ধূর্ত্ত যুবন্ বিশ্বদেব অবশ্যং গ্রামপুত্র পরপুত্র গ্রাম্মণ্ড গ্রাম-কুমার বহুল সহায় বুদ্ধেত্যাদি। ২৫। *

(৮৯৭)। মনোজ্ঞাদেস্করাবক্রিয়য়োর্বাচ্যয়োর্পকো ভবতি। বহুলশব্ধঃ পৃথ্বাদৌ পঠ্যতে তেন বংহিমা বাছলকম্। সহায়টোরধূর্তশ্বনা
ব্রাহ্মণাদৌ চ পঠ্যস্তে তেন সাহায়কং সাহায়মিত্যাদি রূপাস্তত্বাদেব
সিদ্ধে ইহ পাঠো ব্রাহ্মণাদিট্যণা সমাবেশার্থঃ। অমুষ্যকুল অমুষ্যপুত্র
ইত্যেতৌ শক্ষো গণে পঠ্যেতে ণকপদ্মকুলপুত্রয়োরিতি ষষ্ঠ্যালুক্। আমুষ্য-

⁽৮৯৬)। স্থপ্রথাশক্ব্যন্তিরিক্তাদ্যকারোপাস্তাদস্ভাজ্ দিতীয়গুর্কাচঃ
শকাভন্তাবক্রিয়য়ের চিয়ের্যার্শকো ভবতি। অক্তর্নাবাকেতি অস্তাচ্
অস্তাচা দিতীয়েইস্তাজ্ দিতীয়ঃ অস্তাজ্ দিতীয়া গুরুরজ্ যস্থ সোহস্তাজ্ বিতীয়গুর্কাচ্ অস্তাজ্ দিতীয়গুর্কাচ, ইত্যনেন ক্রিস্বরাদীনাং গ্রহণমিতি
অনুষেরস্তাজ্ দিতীয়গুর্কাচ ইত্যক্রৈর ব্যাখ্যাতম্। স্থপ্রখ্যশকাতু । স্থপ্রধ্যক্ষ ক্রিসায়গুর্কাচ্ ইত্যক্রৈর ব্যাখ্যাতম্। স্থপ্রখ্যাকৃতি চক্রঃ
যোপধাদ্গুর্কাজ্পধাদস্পপ্রখ্যাদিতি বর্দ্ধমানঃ। পাণিনীয়াস্বসিদ্ধন্দের খ্যাক্রের
বকারস্য যকারত্বাদ্র্পাস্তাতা নাস্তীতি বদন্তি খ্যাতেরয়ং প্রয়েণ্য এব
নাস্ত্যনভিধানাদিতি তৈরঙ্গীকরণীয়ম্। হুম্পুখ্যাদ্পি ন ভবিষ্যতীতি
তের্বামভিপ্রায়ে ক্রম্যতে । স্ক্রেপ্রখ্যাশকান্ত্র । স্ক্রেপ্রাহ্ম্।

মনোজ্ঞমেধাবিম্বেন্দ্রব্ধাঃ সহায়কল্যাণমম্ব্যপ্তাঃ।
 সোঃ স্থাদভেশ্চাপি প্রিয়াচ্চ রূপং গ্রামোত্তরে পুত্রকুমারষতাঃ।
 জাঢারথ শ্রোত্রিয়বির্দেবৌ কুলাৎ পরস্মাদপি পুত্র উক্তঃ।
 স্থাচ্ছান্দ্রোহবশ্বমম্ব্যকুলং স্থাধু উচোরৌ বহুলং পরেহপি।২০।

৮৯৮। দ্বন্ধাৎ স্ত্রিয়াম্। শৈক্ষোপাশ্যায়িকা।

৮৯৯! শ্লাঘাদে চরণগোত্রনামঃ। কাঠিকয়া গার্গীকয়া চ শ্লাঘতে অধিক্ষিপতি তামবগতবান্ প্রাপ্ত-বান্বা।

৯০০। ঋত্বিজ ঈয়ঃ। মিত্রাবক্ষণীয়ম।

কুলিকা আমুষ্যপ্ত্রিকা যৌবনিকা ইতি এতে শকাঃ স্বভাবানে ব স্ত্রীলিঙ্গাঃ।
মনোজ্ঞবহলাভিরপপ্রিররূপগ্রামপ্ত্রকুলপ্ত্রাশ্চ। ইন্দ্রামুষ্যকুলাঢ়াঃ শ্রোবিরমেধাবিচৌরপরপুত্রাশ্চ। গ্রামক্মারছান্দসর্মযুব্গ্রামষ্ট্রশিচ। কলাণ্দবিখদেববিশ্রুং স্ক্রলাম্য্যপ্ত্রাশ্চ। সহায়োহপি পরিজ্ঞেরঃ কোহপ্যাক্তিগ্রদ্মুং রতে।

(৮৯৮)। দদ্দনাসনিপারা ব্রাবক্রির যোব হিচারোর্ণকো ভবতি স্তিয়াম্। শৈষোপাধারিকেতি নাম ইত্যাদিনা স্তিয়ামাতি ক্রতে অদিৎস্ত্যাদস্তেকে ইতি অকার স্তেকার:। বিশ্চ না চ বিনরৌ তয়োভাবঃ বৈনুমিতি ভাষ্যটাকারামুদাহতং তম্মাদ্দদ্শকং বাধিথা লঘুপান্তাদিত্যাদিনা টণেব ভবতি এবং গুক্লাঘবমিত্যাদি।

(৮৯৯)। চরণবাচিনো গোরবাচিনশ্চ নামস্ত জাবক্রিরোর চিায়োঃ শ্লাদির বিধয়ের ণকো ভবতি দ্রিয়াম্। যা আখ্যা শেদায়য়ন প্রযুক্তা ন প্রধা- নাচ্টে মা চরণবাচ্যা যা তু আখ্যা অপত্য প্রতায়নিমিতঃ সা গোত্রশক্রনালা অথবা যে প্রবর্গনায়ে পঠান্তে তে পোরবাচ্যাঃ। শ্লামত ইতি আস্থানিক করেলিতাতার্গঃ। অধিক্ষিপতীতি পরান্ চৌরান্ মন্ততে ইতার্গঃ। তামবগত গানিতি তচ্চকেন চরণগোত্রয়োঃ সক্ষিত্তো যে ভাবক্রিয়ে তেনিদি শ্রেতে অবগতবান্ জ্ঞাতবানিভার্গঃ। প্রাপ্তবান্ লক্রানিভার্থঃ। শ্লাম্বানিভার্যঃ গার্গাতা কঠবং কঠতা।

(৯০০)। পূৰ্বস্থানাম ইত্যান বৰ্তনীয়ং তেন স্বৰ্গগ্ৰহণমত্ত্ৰ ন স্থাৎ। ঋষিগভিধায়িনঃ শব্দাতভাবক্ৰিয়য়োৰ চোয়োৱীয়ঃ স্যাৎ। ব্ৰন্ধোন্দাভূ হোভূ অংধবুৰ্য ব্ৰাহ্মণাত্ত্বসি প্ৰস্তোভূ নৈত্ৰাবৃধ্নপ্ৰতিপ্ৰস্থাভূ প্ৰশাস্ত্ৰ, পোতৃ ৯০১। ঋত্বিগর্থব্রহ্মণস্তুমেব। ব্রহ্মহুদ্য অনুষ্কিগর্থব্রহ্মণস্তু। ব্রহ্মতা

> ইতি বাদীস্রচক্রচূড়ামণিমহাপণ্ডিত শ্রীক্রমদীশ্বরক্রতো সংক্ষিপ্রসারে মহারাজাধিরাজ শ্রীমজ্জ্মশ্বনন্দিপরি-শোধিতায়াং রসবত্যাং বৃত্তী চতুর্যস্তব্দিত-পাদঃ সমাপ্তঃ।

প্রতিহন্ত প্রস্থাবাদ্ধী এত্ব স্বরন্ধণ্যগ্রাবন্তত্তরে তার ঋত্বিজ ইতি কাত্যায়নস্ত্রে দর্শিতাঃ।

(৯০১)। ঋত্বিগ ভিধায়কাদ্বক্ষশকাত্ততাবক্রিয় যোগ চিয়েরান্তমের স্থাৎ। পূর্ব্বস্থকেণ ঈয়প্রাপ্তে বিধানম্। এবেতি কৃতং তাপ্রত্যয়নিরাদার্থম্। ঋত্বিগিতি বিশেষাৎ ব্রাজ্ঞাণপর্য্যায়াৎ ব্রক্ষণ্ণ ব্রন্ধতেতি ভবতি।

ইতি মহাপণ্ডিত শ্রীক্রমদীশ্বরাচার্য্যক্লতে সংক্ষিপ্তসারে মহাবাজাধিরাজশ্রীমজ্মরনন্দিপরিশোধিতায়াং রসৰত্যাং রুক্তৌ ঔথাসনিকশ্রীগোয়ীচন্দ্রবিরচিতায়াং নিবরণীনামটীকায়াং
চতুর্থস্তিদ্ধিতপাদঃ সমাপ্তঃ।

তদ্ধিতপরিশিষ্টম্।

শ্রীমজ্জুমরনন্দিপরিশোধিতরতিভাগাৎ পরিশিষ্টমস্তি বং কিঞ্চিৎ। তৎ দম্পূর্ণং কুরুঠে গোয়ীচক্র: প্রকীর্ণয়া বৃত্তা।

১। জ্রীপুংসাভ্যাং নণ্ তদ্বন্দাদে।।

তদ্দাদর্মী যাবন্ত এবার্থাঃ প্রাপ্তকান্তেরু বাচ্যেরু স্ত্রী পুমস্ইত্যেতাভ্যামুত্তরে নণ্ ভবতি। দ্রৈণং পৌংসম্ ঈরাদে চেত্রীকারলুক্ ত্রীণাং বুলং
স্ত্রীভ্যে হিতং স্ত্রীভ্য আগতং স্ত্রীয়ু ভবং স্ত্রীণামিদমিত্যাদয়োহর্থা অবগন্তব্যাঃ ।
ক্রিয়াং স্থেণী পৌংসী নদাদিত্বাদী। বহুলবচনাক্তন্তাবে বিকর্মস্ভেচ্ছন্তি।
স্ত্রীয়াং পৌংসাং পুংক্ষ্য্। তদুলাদাবিতি কিম্ ? স্ত্রীবং পুংবং।

२। गीरना भागारमञ्जलकरकार्व।

ক্ষেত্রং ধান্তাদেকৎপত্তিস্থানম্। ধান্তাদিবাচকাচ্চকাং তৎক্ষেত্রে বাচ্যে
গীনো ভবতি। ধান্তশক্ষেনাত্র তদিশেষবাচির্নাঃ শব্দা গৃহস্তে নতু ধান্তশক্ষঃ
যতঃ কচিদর্থগ্রহণং কচিৎ স্বরূপগ্রহণমিত্যাদিবিশেষপ্রতিপত্তির্বাধ্যানত
এব। ভাগবৃত্তিকারস্ত ধান্তানমিত্যুদাজহার। মৌলগীনং কৌলখীনং
কৌদ্রবীণম্।

- া ব্রীহিশালিভ্যাং টেয়ণ্।
 ব্রীহিশালিভ্যাং তৎক্ষেত্রে বাচ্যে টেয়ণ্ ভবতি। ত্রৈহেয়ং শালেয়য়ৄ।
- ৪। যব্যবক্ষ প্তি কাদ্যঃ।

 যবাদেন্তংক্ষেত্রে বাচ্যে যো ভবতি: যবাং যবকাং ষষ্টিকাম্। যবকশকো

 বোরধান্তে রুঢ় ইতি। ধাতং মুদেগা যবো মাধ্যে গোধুমঃ কোদ্রবন্তিলাঃ।

 এতানি সপ্ত নামানি ত্রীহিরিত্যাচাতে বুধৈঃ॥

৫। जिनादिना।

তিলাদেন্তৎক্ষেত্রে বাচ্যে যো বা ভবতি। পক্ষে ণীনন্চ। তিল্যং তৈলীনম্ অণব্যম্ আণবীনম্। তিল মাধ ভঙ্গা অণু উমা অতদী। (তিলাণুমাধ-ভঙ্গোমাতস্তঃ ষট্ স্থ্যান্তিলাদয়ঃ।) ভঙ্গাশদঃ কার্পাদে বর্ত্ততে বেতি প্রাতুপারায়ণম্ অস্ত স্ক্রম্ভ রক্ষিতঃ। ভঙ্গাশণাখ্যশন্তেহপীতি বিশ্বঃ।

- ৬। অশ্বান্তদেকাহগম্যে।

 অশ্বশকান্তলৈকাহে গন্যে গীনো ভবতি। আশ্বীনং বন্ধ আশ্বীনানি শক্তা

 যাতি অশ্বেনকাহেন যানি যোজনানি গমান্তে তানি শতং যাতীত্যর্থ:।
- ৭। ভূতপূর্বে গোষ্ঠাৎ।
 ভূতপূর্বে ইতি কচিদন্তত্রাপীতি তৎপুরুষঃ পূর্কৃষিন্ কালে ভূত ইত্যর্থঃ।
 গোষ্ঠশকাং ভূতপূর্ব্বেহর্থে গমামানে ণীনো ভবতি। গাবন্তিষ্ঠন্তামিনিতি
 গোষ্ঠং স্থাইধিকরণাব্যয়াভ্যামিত্যাদিনা অঙ্ অম্বাষ্টেত্যাদিনা বছম্
 গোষ্ঠং পূর্ববিদ্ব কালে ভূতিরভার্থে গৌষ্ঠীনম্।
- ৮। সপ্তপদাত্তৎপ্রাপ্যে সথ্যে।
 তেন প্রাপ্যে সংখ্য বাচ্যে সপ্তপদাছত্তরে গীনো ভবতি। সপ্তভিঃ পদৈঃ
 প্রাপ্যতে ইতি তদ্ধিতার্থে সমাসঃ সাপ্রপদীনং স্থাং স্ব্যুম্ভেরং সংজ্ঞা। কথং
 সাপ্তপদীনঃ স্থা লক্ষণয়া তহতি শক্তিয়া বা।
- ৯। হোগোদোহাদ্ধিয়স্কুশ্চ তদ্বিকারে স্থতে।

 হল্ ইতাবায়ং শব্দোহয়ং গতদিবসবচনঃ। গোদোহা নাত্র
 কর্ত্বর্মপ্রাপ্তৌ কর্মণি বিহিতা যঠা কিন্তু সম্বন্ধে স্থতো ভবতোব ইষ্ঠাসমাসঃ। হোগোদোহশনাতদ্বিকানে মতে বাচ্যে গানো ভবতি। হোগোদোহশক্ত স্থানে হিয়কুরাদেশশ্চ। হৈয়প্রীনং মতম্। অভ্যত্ত।
 হোগোদোহস্ত বিকারঃ উদ্বিৎ।
- ১০। শালাকৃপাভ্যাং তৎপ্রবেশমহ তি নামি।
 শালা কৃপ ইত্যেতাভ্যাং তৎপ্রবেশমহ জীত্যর্থে সংজ্ঞায়াং নীনো ভবতি।
 শালাপ্রবেশমহ তি শালীনো জড়ং স হি জড়তাৎ সভায়াং স্থাতুমযোগ্যো
 গৃহং প্রবিশতীত্যর্থঃ। কৃপপ্রবেশমহ তি কৌপীনং পাপং তদ্ধি নিন্দিতছাৎ
 কৃপপ্রবেশমহ তি ইতি লোকেম্বভিনীয়তে তৎসাহচর্যাৎ শরীরাবয়বোহপি
 কন্তিৎ কৌপীনশন্দেনোচ্যতে। যভপি তস্তাবয়বস্তাচ্ছাদনং বাসস্তদপি
 তৎসম্বন্ধাৎ প্রব্রজিতানাং কৌপীনম্চাতে।
- ১১। ব্রাকাত্ত্ন জীবতি। যে নানাদাতীয়া অনিগ্তর্ভবং শরীরমায়াস্থ জীবস্তি তে ব্রাতাঃ তৎকর্মাপি ব্রাতম্। ব্রাতশ দাত্তেন জীবতীত্যর্থে শীনো ভবতি। ব্রাকীনং ব্রাভানা-মন্ত্রতম উচাতে।

১২। টণ্চ সভাকো যুদ্মদম্মন্ত্যাং সম্বন্ধে বা।

সম্বন্ধে বাচ্যে যুম্মদম্মদিত্যেতাভ্যামৃত্তরে ডাকাগমসহিতইণ্ চকারাৎ ডাকা-গমসহিতো ণীনশ্চ বা ভবতি। এতাভ্যাং ত্যক্তে পক্ষে ত্যদাদেরীয় ইতি ঈয়ঃ ডিত্তাদংলুক্ যৌশ্বাকঃ আত্মাকঃ যৌশ্বাকীনঃ আত্মাকীনঃ যুশ্বনীয়ঃ অত্মদীয়ঃ।

১৩। তবকমমকাবেকত্ব।

ডাকবর্জ্জং সর্মান্থ গর্ভতে। একত্বে বর্ত্তমানাভ্যাং হুশ্বুন অদিত্যেতা ভ্যামৃত্তরে সম্বন্ধে বাচ্চে গম্যমানে ট্রীনৌ বা ভবতঃ। যুত্মন অদোঃ স্থানে তবক্ষমকে । চ ভবতঃ। তাবকঃ মামকঃ ভাবকীনঃ মামকীনঃ পক্ষে জনীয়ঃ মনীয়ঃ।

১৪। ঈনশ্চ দৰ্শ্বচম ণস্তেন কুতে।

সর্ম্বচর্মন্ শক্ষাত্তেন করে বাচ্যে ণীনো ভবতি। ইনশ্চ। সর্ম্বচর্মণা করত ইত্যর্থে সার্ম্বচর্মীণঃ সর্মান্ত্র স্থাংসকাদিয়া নশ্মানের বিধানসামর্থ্যালা সাপেক্ষেহপি সমাসঃ। বিধানসামর্থ্যালা হর্মণা করত ইত্যেবোহর্থঃ প্রভীয়কে। কর্মণাব্যে তু সর্ম্বেণ চমণা করত ইতি দ্বিপ্রকারোহপ্যর্থ-স্থানাতী ইতি সাপেক্ষে সম্পোবাং স্থিতঃ।

১৫। মথামুখসন্মুখাভ্যাও তদত্র দৃশ্যতে।

ঈন ইতাশ্বর্ত্তি। মুথস্থ সদৃশং যথামুথং দর্পণাদিস্থ প্রতিবিদ্মৃত্যতে অন্মাদেব মিদেশিং গাদৃশ্যে ইতাব্যয়ীভাবঃ। সমং মুখং সন্মুখং কর্মধারয়ঃ নিপাতনাং সমশকস্থাকারপুক্ সমাগর্থেন সংশব্দেন বা প্রাদিসমাসঃ। আভ্যাং তদত্র দৃশুত ইতার্থে ঈনো ভবতি। যথাম্থীনঃ সন্মুখীনঃ দর্পণাদিকম্চাতে। উপচারাদভিম্থমাত্রে চ। তথাচ, ততশ্চিত্রীয়মানোহসৌ হেমরক্সময়ো মৃগঃ। যথাম্থীনঃ সীভারাঃ পুপ্লবে বহু লোভয়ন্নিতি ভটিঃ।

১७। তদ্বাধোতি সর্বাপথাদেঃ।

সর্ব্বপথাদেরত্বরে তদ্মাপোতীত্যর্থে ইনো ভবতি। সর্বাণ্ডালে পদ্মান্টেতি একাদীনাঞ্চেত কর্ম্মণারয়ঃ ঋগাদেরৎ সর্ব্বত্রেতি সমাসাজ্যেহৎ সর্ব্বপথীনা সেনা। সর্ব্বপথ সর্বাঙ্গ সর্ব্বকর্মন্ সর্ব্বপত্র সর্ব্বপাত্র। (সর্ব্বপথ-চ সর্ব্বাঙ্গঃ কর্মকর্ম উথৈব চ। কর্মপাত্রং মর্ব্বপত্রং মতাঃ সর্ব্বপথাদয়ঃ ॥)

১৭। আপ্রপদান্তদাপ্রোতি।

পদস্তাগ্রং প্রপদম্ আপ্রপদমিতি অপপরীতাদিনাব্যয়ীভাবঃ। আপ্রপদ ইত্যাম্মান্তদাপ্রেতীভার্থে ঈনো ভবতি। আপ্রপদীনঃ পটঃ আপ্রপদীন দাম শরীরাসম্বেহপি যোগ্যতামাত্রেণাভিষীয়তে।

১৮। অনুপদতিবদ্ধে।

তদ্বন্ধে বাচ্যেহন্ত্পনাত্ত্তরে জীনো ভবতি। অনুপদমিতি অনুইহিংগ্ৰু সাদৃশ্যে বা তৎসমীপে তলৈগোঁ চানোরিতি সাদৃশো ইতি বা সবালী-ভাবঃ। অনুপদং বদ্ধা অনুপদীনা উপানং বব্লাত্তিরত্র করোত্যর্থঃ পদ্দ-মিব আয়তাক্বতেত্যর্থঃ।

- ১৯। সর্বানাতিদুক্ষয়তি। সর্বানশ্বাত্তক্ষয়তীত্যর্থে ঈনো ভবতি। সর্বানীনো ভিদ্যু প্রকাব-কার্তার্ম্য সর্বশ্বঃ সর্বপ্রকার্মনং ভক্ষয়তীত্যর্থঃ।
- ২০। অয়ানয়াতিরেটো।
 অয়নময়ঃ প্রদক্ষিণগমনশ্ অনমঃ প্রস্বাগমনং ত্রুভয়ম্ অয়ান্যং স্মতাবে
 দক্ষঃ। অয়ানয়শকাভয়েয়ে বাচ্যে ঈনো ভবতি। অয়ানয়ং নেয়ঃ অয়ানয়ীনঃ
 শারিঃ দক্ষিণেন বামেন সহায়গমনং প্রাপয়িতবামিতার্থঃ।
- ২১। পু্ত্রপৌত্রাত্তদমুভবতি। তদমুভবতীছাথে পুত্রপৌত্রশন্দাদীনো ভবতি। পুত্রপৌত্রীনঃ।
- ২২। পরাপরপরপরতরাভ্যাং প্রোবরপরস্পরৌ চ।

 এতাভ্যাং তদন্ত্বতীত্যর্থে ঈনো ভবতি। এতৌ চাদেশৌ ভবতঃ।
 পরাংশ্চাপরাংশ্চান্ত্বতি পরোবরীণঃ পরাংশ্চাপরতরাংশ্চান্তবতি পরস্পরীণঃ। ভিনত্ত্যপ্রপরম্পরানিত্যাদৌ প্রকৃত্যস্তরমেব পরম্পরাশকঃ।
- ২০। সমাংসমীনা প্রত্যব্দগর্ভধারিণ্যাম্।
 সমাসমাশকাৎ প্রত্যক্ষর্ভাধারিণ্যামভিধেয়ায়ামীনোহয়ুয়ারকৈ কপ্রদাঞ্চ নিপাত্যতে। সমাশকো বৎসরবচনঃ পদন্ত সাকল্যাভীক্রায়োরিতি বিঃ সমাংসমীনা গৌঃ।
- ২৪। অদ্যশ্বস্তান সূতে ভবতি বা।
 অদ্যশ্বস্থাত্ত হতে তত্ৰ ভবতি বা ঈনো ভবতি। অশ্বাদেব
 নিৰ্দেশ্য অদ্য বা শ্বো বেতি বার্থে সমাসঃ। অদ্য ধো বা শ্বতে

আদামীনা গোঃ অদ্য যো বা ভণতি অদ্যমীনং মরণং কচিদবায়ানাং স্বরত-চ্ছেষয়োরিতাস্পুক্।

- ৫। আংগোরাগোদানং কর্মকারিণ।
 আঙ্পুর্লাদেগাশকাং গোদানপর্যান্তং কর্মকাবিণি বাচ্যে ঈনো ভবতি।
 আগবীনঃ কদ্যকারঃ গৃহীতশু গোঃ সমর্পণপর্যান্তং যঃ কর্ম করোতি স
 উচাতে।
- মন্ত্ৰণ সিষ্ট্ৰণ হৈ থলং কৰ্মাণং পুরুষাধ্যন্তাচচ।

 অনত্ত্ৰাদিভোখগন্তাচ শকাদীনো ভবতি। অৰ্থবিশেষমুপাদানাৎ স্বাৰ্থি-কোহন্ত্ৰ প্ৰভাৱঃ আৰিজ্যানানি বড়ক্ষীণান্ত্ৰিনিত বছন্ত্ৰীহিঃ স্বাঙ্গাভ্যামিত্যা-দিনা টঃ। অবড়ক্ষাণো মন্ত্ৰঃ যো ছাভ্যামেব ক্ৰিয়তে সোণিভান্ত প্ৰচাৰে বিহাৰে কি আশিতংগৰীনং আশিতশক্ষিত্ৰিঃ আশিতান্ত্ৰুবং কৰণভাবয়োৱি হাত্ৰৈৰ কতা স্থানিদেশিং মধ্যে মকারঃ অলং কর্মণে প্রকাষ ইতি চতুর্থা পর্যাদেরিভ্যাদিনী তংপ্রুবঃ অলংক্ষীণঃ অলংপুরুষীণঃ ভাব প্রধানোহয়ং পুরুবশকঃ অলং পুরুবভাবান্ত্রেত্র্যাইঃ। অধিশকঃ শৌভাদিন্ত্র পঠাতে প্রাক্ষণেশ্বর বাক্ষণাধীনঃ নিত্যমেবায়ং প্রভায় তশাদ্দির পঠাতে প্রাক্ষণেশ্বর বাক্ষণাধীনঃ নিত্যমেবায়ং প্রভায় তশাদ্দির স্কৃত্বাত্রির কিবাহিক কথং ভাষ্যে প্রযুক্তং তদতৎপ্রয়োক্তর্যাধীনং ভনভীতি শ্লোক্যাহিকে চ কল্লো হি বাক্যশেষো বাক্যং ৰক্তর্যাধীনং ভবভাতি। ভারবে চ অন্যান্ত্রনিই কিমু নিস্পৃহাণামিতি তত্মাদ্রায্যকারাদি বচনপ্রামাণ্যাং কেৰলানপ্যধিশকাং প্রভায়ঃ। অথব। ইনমধিগ্তমধীন-নিত্যায়ন্ত্রপর্যান্ত্র জন্ত্র্যাম্য
 - ২৭। অদিশ্যঞ্চোবা।

অনিশি বর্ত্তমানাদঞ্চ: স্বার্থে ঈনো বা ভবতি। প্রাচীনঃ প্রপূর্ব্বাদঞ্চতেঃ
কিপ্ ঈনস্থ শসাদিছাং শসাদাবিত্যাদিনা নকারলুক্ আতাহচীত্যাদিনা
অকারলুক্ দীর্ঘশ্চ পক্ষে প্রাক্ প্রাচীনা ব্রাহ্মণী। দিশি তু। প্রাচী দিক্
বাহঞ্তরপদাদিতি ঈ।

২৮। অতান্তাদেস্তদ্গামিনি। সামীতি ভবিষাতি গমাদেরিতি পিন্। অত্যন্তাদেস্তদ্গামিনি বাচ্যে ঈনো ভবতি। অত্যন্তমিতি অন্তল্যভাবোহত্যয়ো বা ইতি সমৃদ্ধাদ ।বিত্যাদিনা অব্যন্নীভাবঃ অথবা অন্তমতিক্রান্তমিতি দিতীয়য়েত্যাদিনা
তৎপুরুষঃ অত্যন্তং ভূশং গামী অত্যন্তীনঃ। অত্যন্ত অবার অব্যরপার
পারাবার পার অন্তকাম কাম ইচ্ছা কামস্ত সদৃশমন্তকামম্ অবারীণাদরঃ
শৈষিকেণাপি সাধিতাঃ অর্থবিশেষার্থং পুনরিহ্ পৃষ্ঠিতাঃ। (অত্যন্তাব্যুরপারাশ্চ পারাবার তথাপরঃ। ইচ্ছামুকামকামাশ্চাবারপারসম্বিতঃ॥)

২৯ ৷ অনুগোস্তদলং গামিনি ৷

গো: পশ্চাদত ও পশ্চাদর্থে ইত্যবায়ীভাবঃ গোরপ্রধানস্তান্তয়েতি হুস্থঃ । অনুগু ইত্যমান্তদলংগামিনি বাচ্যে সন্মোভবতি। অনুগ্রীনো গোপঃ।

৩ । অধ্বনো যশ্চ।

জধন ইতামারদলংগামিনি বাচো স্টনো ভবতি। যত। অধ্যানমলং-গামী অহিনীনঃ নাড়াধ্বনোরিতি নলুক্নিষেধঃ অধ্বয় ইতাত অভাব-কর্ম্যে চেতাটিনা নভ্যিষেধঃ।

१ । अनुभिजानीयं मह

অমিত্রস্থা ভিমুখম্ অভামিত্রম্ অভিপ্রত্যােরাভিমুখ্যে ইত্যাদিনা অব্যয়ী ভাবঃ। অস্মাতদলংগামিনি বাচ্যে ঈর্না ভবতি। যুদ্ধ স্ক্রাণ্ড । অভামিত্রীয়া অভামিত্রীয়াঃ ।

ুহ। পীল্বাদেঃ কুণস্তস্থ্য পাকে।

তম্ম পাকে বাচ্যে পীলাদের ন্তরে কুণো ভবতি। পীল্নাং পাকঃ পীলুকুণঃ। পীলু কর্কর্ শমী করীর বদরী কুবল অশ্ব্য থদির। (শমী করীর
কর্কর্ কুবলাশ্ব্য পীলবঃ। বদরং থদির দাস্তি পীলাদয়ঃ ইমে মতাঃ॥)৮।

৩৩। কর্ণাদেয় লৈ জাহঃ।

তত্যেতামুবর্ততে। তম্ম মূলে বাচ্যে কর্ণাদেকত্তরে জাহো ভবতি কর্ণস্থা মূলং কর্ণজ্ঞাহঃ। কর্ণ অক্ষি নথ মুখ কেশ পাদ গুল্ফ ভ্রাশুক্ষ দস্ত ওষ্ঠ প্ছে। (কর্ণাক্ষিকেশা মুখপাদপ্চ্ছ ভ্রাগুল্ফাঠমুখানি দংঃ। এতিঃ পুনর্দাদশভিঃ পদক্ষেঃ ৫ সিদ্ধকর্ণাদিগণঃ প্রণীতঃ॥) ১২।

৩৪। পকাতিঃ।

তন্মলে বা;চ্য পক্ষাত্ত্তরে তির্ভবতি। পক্ষতিঃ প্রতিপৎ পক্ষিণাং পক্ষমূল 육 🖟

৩।। তেন খ্যাতে চুঞ্চনো।

তেন থাতে বাঁচ্যে চুঞ্চনৌ ভবতঃ। অর্থাদ্যত্তৎপদবাঁচ্যং ততঃ প্রত্যরঃ।
কেশচ্ঞ্যঃ কেশচনঃ বিদ্যাচুঞ্যঃ বিদ্যাচনঃ।

৩৬। বেঃ শালশকটো।

বিশন্ধাত্ত্তরে শালশকটো ভবতঃ। বিশালঃ বিশকটঃ।

৩৭। নিসংপ্রোদশ্চ কটঃ।

বেরিতামুবর্ত্তে। বেং এতেতাশ্চোন্তরে কটো ভবতি। বিকটঃ নিকটঃ সঙ্কটঃ প্রকটঃ উৎকটঃ i

৩৮। অবাৎ কুটারশ্চ বৈরূপ্যে।

অবাছত্ত্রে বৈরূপ্যে বাচ্যে কুটারো ভবডি। চকারাৎ কটশ্চ। অবকটঃ অবকুটারঃ

৩১। ভ্রটটিটনাটা নাদানমনাদো।

নাসায়া নমনে নতায়াং নাসিকায়াং নতনাসিকে চ বাচ্যে অবাহত্তরে ভ্রটটীটনাটা ভবস্তি। অবভ্রটং নাসিকানতিঃ আদিশকাং অবভ্রটা নতনাসিকা অবভ্রটো নতনাসিকঃ

৪০। নের্বিডবিরীধৌ।

নাসিকানমনাদৌ বাচ্চো নেঞ্জরে বিজ্বিরীয়ো ভবতঃ। নিবিজ্ নিক্রিরীয়া নাসিকানমনাদৌ নিবিজা নতনাসিকা নিবিজো নতনাসিকঃ। স্মঞাদিপদেন নিবিজা কেশাঃ। উরুনিবিরীয়নিতম্বভারথেদীত্যাদৌ মনেহপ্যর্থে ভবতি।

৪১। কিলপিটকণাশ্চিশ্চ।

নাসিকানমনাদৌ বাচ্যে নেরুত্তরে কিল পিট ক্কণ ইত্যেতে ভবস্তি। নেঃ স্থানে চিশ্চ। চিকিলঃ টিপিটঃ চিক্কণঃ।

৪২। চুল্ল্চিল্লপিলাঃ ক্লিমচক্ষ্যি।

ক্লিরচক্ষরিতি কর্মধারয়ো বহু ীহিশ্চ। ক্লিরচক্ষি বাচো ক্লিনশবার্ত্তরে লপ্রভাগো ভবতি। ক্লিরস্থ স্থানে চুল্লচিল্লপিলাশ্চাদেশা নিপাতান্তে। চুল্লং ক্লিঃ চুল্লঃ পুক্ষ:।

৪৩। তিলাতত নিক্ষলে পিঞ্বপেজো।

তিলশকাত্তশ্বিদ্ধিস্থলে বাচ্যে পিঞ্জপেজৌ ভবতঃ। নিক্ষলান্তিলাঃ **তিলপিঞ্জাঃ** তিলপেজাঃ।

89। অবৈস্তদ্ধুশ্বে সোচ্দূসমরীসাঃ। অবিশকাত্তদ্ধে বাচ্যে সোচ্চদয়ো ভবস্তি। অবিসোচ্য অবিদুসঃ অবি-

মরীসঃ। অবিদোঢ়াদিরু দন্ত্যোপাদানসামর্থ্যার ষ্ঠ্রমিতি জ্য়াদিত্যভর্তৃহরী
অন্তথা প্রক্রিয়ালাঘবার্থং মূর্ক্সমেব বিদ্ধাাৎ।

৪৫। অলাবু ভঙ্গোমাতিলেভ্যস্তস্তারজিন কঠিঃ।
এভ্যস্তস্ত রজনি বার্চো কটো ভবতি। অলাবৃক্টং ভঙ্গাকটন্ উমাকটং
তিলকটম্।

৪৬। সংঘাতে।

নাম উত্তরে সংঘাতে বাচ্যে কটো ভবতি। অবীনাং সংঘাতোহবিকটঃ অবিশক্ষাদেবায়ং প্রত্যায়ঃ ইতি লক্ষ্যতে যত উদাহরণ।স্তরং ন কেনাপি দর্শিতিম। অবেঃ সংঘাতে কট ইতি বর্দ্ধমানলক্ষণম।

৪৭। বিস্তারে পটঃ।

নাম উত্তরে বিস্তারে বাচ্যে পটো ভবতি। অবীনাং বিস্তারোহবিপটঃ পূর্ব্ব-স্থএবদত্রাপি ব্যাথ্যেয়ম্।

৪৮। পশুভান্তশ্র স্থানে গোষ্ঠঃ।

পশুবাচকেভাস্তস্ত স্থানে বাচ্যে গোটো ভবতি। গোগোটং মহিষীগোটম

৪৯। দিত্বে গোযুগঃ।

পশুবাচকেভ্যস্তক্ত দিজে বাচ্যে গোযুগো ভবতি। গোগোযুগম্ অশ্বগোযুগম্ উষ্ট্রগোযুগম্।

৫০। ষট্কে ষড্গবঃ।

পশুবাচকেভান্তপ্ত ষটকে বাচ্চো ষড়্গৰো ভবতি। হস্তিষ্ড্গবম্।

৫১। তৎমেহে তৈলঃ।

তস্ত্র স্নেহে বাচ্যে তৈলো ভবতি। বংতংশব্দবাচ্যং ততঃ প্রত্যয়ঃ। তিব্দ-তৈলম্ ইন্সুদীতৈলম্।

৫২। ইক্ষ্বাদেস্তৎকেত্রে শাকটা।

ইক্ষ্ণাদেরস্তরে তৎক্ষেত্রে বাচ্যে শাকটো ভবতি। ইক্ষণাকটং জীরক-শাকটম্।

৫०। मलकारमः भाकिनः।

তংক্ষেত্রে বাচ্যে মূলকাদেরত্ত্বে শাকিনো ভবতি। মূলকশাকিনং জীরক-শাকিনং বাস্থকশাকিনম। কটাদয়ঃ শব্দা রজঃপ্রভৃতীনাং বাচকাঃ অভিধান নিষ্মানলাব্ প্রভৃতীনামেব পরে প্রযুজ্ঞান্তে তক্ষাং সমাসেনৈবালাবৃক্টা-দয়ঃ সাধনীয়াঃ কিং লক্ষণৈবিভি চন্দ্রঃ। প্রত্যাথান প্রত্তোহসৌ লক্ষণানাং বিচক্ষণঃ। ব্যাখ্যানগৌরবক্ষেশং মহান্তং হন্ত নেক্ষ্তে ।

৫१। তদস্য সঞ্জাতং তারকাদেরিতঃ।

ভদিতানেন তারকাদেঃ পরামর্থঃ। তারকাদের জবে ভদস্ত সঞ্জাতনিতার্থে ইতো ভবতি। তারকা সঞ্জাতা অস্ত্র তারকিতং নভঃ। তারকাপুপ্পকরোল তবঙ্গশবপল্লবাং। শাজীয়ক কাঙ্গারশুঙ্গারন্ধরক করাঃ। বিচাবগর্ব বিনামাঞ্চর্যোৎকর্যক্ ভূচলাং। গর্ভনিদ্ধ মণোৎকণ্ঠাদ্রোচদাচাব্ ভ্রচন্দ্রিকাঃ। নিদাক্ বলয়শ্রারাগকোরক কুটালাঃ। কুস্ক মন্তবকোচ্চাবপ্রবালপুলক রগাঃ। কর্ম মন্তবকাশ্রারাগকোরক কুটালাঃ। কুস্ক মন্তবকোচ্চাবপ্রবালপুলক রগাঃ। কর্ম মন্তাধিসীমন্ত প্রথক কুক ভন্ত কাঃ। পিপাসা মঞ্জনী পণ্ডা বৃভ্কা তথ্ থক-জক্রে। বেগঃ কিশল্যস্তর্লা মুল্রাভিলক শৈবলাঃ। মৃত্রং প্রীয়মুক লে বোগস্ত্রাদয়োহপরে। প্রেয়াগদর্শনাজ জ্রেয়াস্তারকাদে বিচক্ষণৈঃ। নমুবু ভূক্ষাপিপাসাশকৌ কিমর্থমিত পঠোতে সনস্তাৎ ক্রে সতি বৃভূক্ষিতঃ পিপাসিত ইতি ভবিষ্যতি নৈতৃদ্ধি এতয়োঃ সকর্মক জাৎ কর্ত্ররি ক্র এব নাস্থি কর্মাণি চ ক্রে সতি বৃভূক্ষিতঃ ওদনঃ পিপাসিতং জলমিতি ভবতি। অনেন ইতে ক্রতে বৃভূক্ষিতঃ পিপাসিতো মৈত্র ইতি ভবতি। ইত্যভয়োরর্থভেদাে মহান।

৫৬। গর্ভাদপ্রাণিনি। গর্ভশব্দাপ্রাণিনি বাচ্যে তদশু সঞ্জাতমিতার্থে ইতো ভবতি। গর্ভিত্তা ব্রীহি:। প্রাণিনি তু। গর্ভঃ সঞ্জাতোহস্তা ইতি বাকামেব।

৫৭। মানং মাত্রেট**্।** ভদভেজকুবর্ততে। তদভ মানমিতার্থে মাত্রজ্ভবতি। অর্থাৎ যুক্ত চ্ছব্যেদিষ্টং ততঃ প্রত্যয়:। সম্বন্ধিশকতাৎ সেয়া প্রত্যয়বাচ্যা। প্রশং মানমশু পলমাত্রং ত্বতং প্রস্থমাত্রং ধান্তং প্রাদেশমাত্রী সমিৎ শত্মাত্রমায়:। পরিচেছদহেতৃশ্যানমিতি সর্বে ধামেব মানবাচ্যত্বম্। যথা, হস্তঃ প্রস্থা কিছু-রিত্যাদি। মেয়ে প্রয়োগস্ক অভেদোপচারাৎ।

৫৮। কিমিদজ্ঞাং যতুর।

তদশু মানমিতার্থে কিম্ ইনম্ ইত্যেত:ভ্যামুত্তরে যতুর্বা ভবতি। কিং মানমশু কিয়ান্ ইনং মানমশু ইয়ান্ কিমিদমোর্যতৌ হ্রস্থেশ্চতি কিমঃ স্থানে কী ইনমঃ স্থানে দি হর্মণ্ড স্কট্যুগিদিত্যাদিনা কুম্ অত্তত্ত্ত্ত্যাদিনা দীর্ঘঃ। পক্ষে কিস্মাত্রম্ ইন্মাত্রম্।

৫৯। যত্তদেতদ্যো বতুঃ।

এভা উত্তরে তদশু মানমিত্যর্থে বতুর্ব ভবতি। যৎ পরিমাণমশু যাবান্ তাবান্ এতাবান্। বতৌ চ যত্তদেতদামিত্যাকা ः। পক্ষে যন্মাত্র-মিত্যাদি। যৈরপি পরিমাণেহস্ত বিধানমিঘাতে তৈরপি শিষ্টপ্রয়োগদর্শনাৎ নানে মাত্র এবাস্থা বিধানমৌপচারিকং বিধেয়মেব তত্মান্মানে মাত্র এবাস্থাবিধানং গ্রাধ্যম্।

৬০। কিমঃ সংখ্যাপ্রশ্নে ডতিঃ।

সংখ্যাপ্রশ্নে বর্তুমানাৎ কিম উত্তরে তদস্য মানমিতার্থে ডতিবর্ণ ভবতি। কা সংখ্যা পরিমাণমেষাং কতি বিপ্রাঃ কিয়ন্তো বিপ্রাঃ একবচনদ্বিচনয়োঃ সংখ্যানিয়তত্বাৎ সংখ্যা প্রশ্ন এব ন সম্ভবতীতি একবচনে দ্বিচনেন চ ভবতঃ অতএব সংখ্যাপ্রশ্নে কিয়ানিতি চ ন প্রক্যেক্তব্যম্। প্রশ্নগ্রহণং কিম্বসংক্ষেপার্থান্মাভূৎ কেয়মেযাং দশানাং সংখ্যা যত্তন্ত্যাঞ্চ কেচিড্ডতিমিচ্ছন্তি কিন্তু তদনার্যভাছন্তিনিরস্তম্।

७)। मच्च व्यामा । ।

তদসা উদ্ধানমিতাথে দিঘট বয়সটো ভবত:। মাত্রট্চ। উকরদ্ধি মানমসা উক্দর্ম উক্দর্যসম্ উক্মাত্রং জাতুদম্বং নদীজলং প্রস্থমাত্রং কুড়ব-মাত্রং বা ধান্তমিত্যাদি। সংশয়েষ্পি প্রযুক্তাক এব তথাপূহ্নং তথাৎ সংশরেঃ লক্ষণকরণমন্ধ্কম্।

৬২। হস্তিপুরুষাভ্যাং টণ্বা। তদ্যোর্মানমিত্যথে আভ্যামুত্রেউণ্বাভন্তি। হস্তী উর্কানমস্য ছান্তিনং ভলং সত্রন্ধচারীত্যাদিনা নলুমিষেধঃ পক্ষে হন্তিদম্বং হন্তিদ্যালম্। •

৬৩। স্বাংশি দ্বয়সট্মাত্রটো বা ধতুবত্বতাৎ।

যত্তাৎ বজন্তাচ স্বার্থে দ্যুসট্মাত্রটো বা স্যাতাম্। কিয়দ্বসং কিয়ন্মাত্রং

যাবদ্বসং যাবন্মাত্রং পক্ষে কিয়ৎ যাবৎ।

৬৪। ত্রডংশে সংগারাও।

আংশোহবয়বীঃ। আংশে বর্তমানায়াঃ সংখ্যায়ান্তদসোত্যর্থে তয়ড়্তবতি।

আংশাংশিসম্বন্ধে ষষ্ঠ্যা আংশ্যেব বাচ্যঃ। পঞ্চ আশা শ্রীস্যা পঞ্চতয়মনুমানৃং
চতুইয়ী বুজিঃ চতুরনজ্হোরিত্যাদিনা বা স্থানে উকারঃ রঃ সন্ত্যাবিত্যাদিনা
রেফস্য সঃ হস্বাত্তাদিত্তিতে তসৌ চেতি ষত্বম্।

৬৫। দিত্রিভ্যাময়ড়্বা।

অংশে বর্ত্রমানাভ্যাং বিত্রিভাগি তদসোতার্থেইয়ড়্বা ওবতি। দ্বাবংশাবস্য

দ্বাং এয়ম্ অদিরুগি তীকারসুক্ পক্ষে তর্তী দিতয়ং ত্রিতয়ম্।

৬৮। উভাৎ।

বোগবিভাগারিতাবিধানম্। অংশে বর্ত্তমানাত্বভশকাৎ তদস্যেত্যর্থে অয়ড়্ ভবতি। উভাবংশাবদ্য উভরো মানঃ উভয়ে দেবমন্থ্যাঃ। কথং বহুনাং দেবমন্থ্যানাং দাবংশৌ ভবতঃ বছপাত্র বহুত্মন্তি দ্বিম্পি চাস্ত্যেব দ্বৌ রাশী সম্পায়স্যাংশৌ একো দেবানাম্পরো মনুষ্যাণামিত্যর্থঃ।

৬৭। মূল্যক্তেত্ব্যয়োশ্ঘট্।

অংশে সংখ্যায়া ইতাকুকর্তি তদক্ষেতি চ। মূলাংশে কর্ত্তমানায়াঃ সংখ্যায়াঃ মূল্যে বাচো কেত্রাংশে চ বর্তমান রাঃ সংখ্যায়াঃ ক্রেত্রে বাচো তদক্তে তার্থে মরছ ভবতি। যবানাং দ্বাবংশৌ মূল্যমন্ত্রোদ্বিতঃ দিমহমুদ্বিদ্যবাদাং তিলানাং দ্বাবংশৌ মূল্যমন্তাঃ শর্করায়াঃ দ্বিময়ী শর্করা জিলানাম্ এবং ক্রেত্রেহংশেহপি। দ্বাবংশার্দ্বিতঃ ক্রেত্রে) এষাং যবানাং দিময়া ধরা উদ্বিতঃ। সর্ব মূলাক্রেত্র্যসন্ধরে ষ্ঠীপ্রত্যয়বাচ্যস্থাংশস্তানেকত্বে প্রতায়ো নেষ্তে অন্তিধানাং। দ্বে ষ্রানাং তার উদ্বিতঃ অত ছি. ত্র্যাণামংশানাং মূল্যে ত্রিশ্বো বর্ত্ত ইতি ল ভবন্তি প্রত্যয়ঃ। প্রক্রমংখ্যা-

যাশ্চ নেষ্টতেখনভিধানাৎ যবানামেকোখংলো মূল্যমস্যোদখিতঃ। অংশ-ইত্যেব। দ্বৌ গ্রীহিয়বৌ মূল্যমস্যোদখিতঃ। মূল্যক্রেতব্যযোগিতি কিম্ ? দ্বিগুণং তৈলং পচ্যতে ক্ষীরেণেভ্যত্র ন ভবতি। তৈলশু ভাগাৎ ক্ষীরেণ হেতুনা দ্বৌ ভাগো যক্র ততৈলং পচ্যত ইত্যর্থঃ।

৬৮। শতিশদ্দশিন্তায়া ডন্তদ্বিকে শতুসহত্যে।
শতসংস্থাইতি ব্যক্তসমন্ত্রহণং তদ্দিকং যত্র তত্ত্বদ্বিকম্। শত্যন্তায়াং
শদন্তায়া দশান্তায়াশ্চ সংখ্যায়া উত্তরে তদ্বিকে শতে সহস্রে শতসহক্রে
চ বাচ্যে ডো ভবতি। বিংশতির্বিকা অন্মিন্ শতে বিংশং শতং সহস্রং
শতসহস্রং বা। শতসহস্র ইতি শানানাং সহস্রং সহস্রাণাং শতমিত্যুভয়ণা
সমাসং। দ্বিতীয়পক্ষে সহস্রশক্ষাঃ শান্তদন্তাদিয়াং পরনিপাতঃ এবম্ একবিংশম্ একত্রিংশম্ একাদশম্ একপঞ্চাশম্। বিংশতির্বিকান্মিন্ পুরাণশতে বিংশং পরাণশত্মিত্যত্রাপি শতমেব বাচ্যং সঞ্চাতীয়েনৈবাধিকাপ্রতীতেঃ বত্র তু বিজা, তীয়াধিকাং তত্র ন ভবতি প্রয়েগাভাবাং বিংশতঃ
পণা অধিকা অন্মিন্ বার্যাপণশতে ন হি বিংশং কার্যাপণশতমিত্যুক্তে
বিংশতেঃ প্রানাং বিজাতীয়ানামাধিকাং প্রতীয়তে। শতিশদ্দশান্তায়া ইতি
কিম্ পঞ্চাধিকা অন্মিন্ শতে দশাধিকা অন্মিন্ শতে দশাধিকা অন্মিন্
সহস্রে। শতসহস্র ইতি কিম্। একাদশ্ অধিকা অস্মাং বিংশতৌ।
সংখ্যায়া ইত্যেব। গোত্রিংশদ্ধিকা অন্মিন্ গোশতে ত্রিংশদিতি সংখ্যাশকো
নতু গোত্রিংশচ্করঃ।

৬৯। দ্বেতীয়স্তৎপূরণে।
পূর্যাতেখনেনেতি পূবণম্। ছিশকাৎ সংখ্যাবাচকাৎ তৎপূরণে বাচ্যে
তীয়ো ভবতি। ছিতীয়ঃ। যেনোপজাতেন সা সংখ্যা পূর্যাতে সোহভি-ধীয়তে।

৭.০। ত্রেস্ট্রে । ত্রিশকাত্তংপূরণে বাচ্যে তীয়ো ভণতি। ত্রেঃ স্থানে ভূশ্চ। তৃতীয়ঃ।

৭১। চতুরো (যথে) চলোপশ্চ।

চথা ইত্যম্মাৎ তৎপূরণে বাচ্যে য ঈয় ইত্যেতো ভবত:। চকারলোপশ্চ।
ভুগ্যঃ ভুরায়ঃ চতুরনডুহোরিভ্যাদিনা বা স্থানে উ:।

৭২। ষট্কতিকতিপয়েভ্যশ্চ থট্।

চন্ধার ইতামাৎ ষট্কতিকতিপয়েতাশ্চোত্তরে তৎপূরণে বাচ্যে পট্ ভবতি।
চতুর্থ: চতুর্থী ষষ্ঠী: ষস্ঠী ব্রস্থাতি নিয়মাৎ ষষ্ঠ ইতি ষস্থা টোন ভবতি ঘটবর্গাদিত্যাদিনা থক্ত ঠা। কতিথা কতিপয়থা বিধানসামর্থ্যাদসংখ্যাবাচকাৎ
কতিকতিপয়শকাৎ থট়।

৭৩। নান্তানীট্।

নাস্তাৎ সংখ্যাবাচকাং তৎপূরণে বাচ্যে মট্ ভবতি। পঞ্চমঃ পঞ্চী সপ্তমঃ অষ্টমঃ নব্যটি দশমঃ।

৭৪। দশান্তাডটে।

দশাস্তাৎ সংখ্যাবাচকাৎ তৎপূরণে বাচ্যে ডট্ ভবতি। একাদশঃ একাদশী অষ্টাদশঃ।

৭৫। শতিশদন্তাৎ সসংখ্যাষ্ট্যাদেশ্চ ত্রুমট্ চ।
শতান্থাং শদন্তাং সংখ্যাবাচকাং সংখ্যাবাচকসহিত্রস্ত্রীদেশ্চ তংপুরণে বাচ্যে

উট্ ভরতি। পক্ষে চমট্ চ। উনবিংশঃ তেশ্চ বিংশতেডিতীতি তিলুক্
উনবিংশতিতমঃ বিংশ বিংশতিতমঃ মন্ত্রীবিংশঃ মন্ত্রীবিংশঃ উনবিংশতমঃ তিংশঃ কিবালিকা
উনবিংশতমঃ তিংশঃ বিংশত্রমঃ অস্ত্রাপঞ্চাশতমঃ একবঠঃ
একব্রিতমঃ ষ্টিসপ্তত্নীতিন্ত্রয়ঃ ব্ট্যাদ্যঃ।

as। শেবান্নিত্যম্।

যন্ত্ৰান্তংপূৰণে প্ৰত্যয়ে ন বিহিতঃ স শ্বেষঃ । তন্ত্ৰাৎ সংখ্যাবাচকান্নিত্যং তন্ত্ৰ ভবতি । উনষ্টিতনঃ ষ্টিতনঃ সপ্ৰতিতনঃ শততনঃ সহস্ৰতম ইত্যাদি। পূৰণাৰ্থাভাবাদেকশন্দান্ন প্ৰত্যুঃ ।

৭৭। মাসার্ক্রমাসসংবৎসরাচ্চ।

সংখ্যাবাচকত্বাভারীঃ পূর্বেণাপ্রাপ্তে বিধানম্। এভান্তংপূরণে বাচ্যে তমট্ ভবতি। মাদভ পূরণো মাদতমোহরং দিবসঃ অদ্ধ্যাদতনঃ সংবংসরতমঃ।

৭৮। বহুগণপূগসংঘাতিথট্।

এভাস্তৎপূরণে রাচো তিথট্ ভবতি। বহুনাং পূরণো বহুতিথঃ গণতিথঃ বিধানসামর্থ্যাৎ পূগসংঘ্যোরসংখ্যা চিক্তহেহপি তিথট্।

৭৯। যাবদাদেরিপট্।

যাবদাদেন্তৎপূরণে বাচ্যে ইথট্ ভবতি। যাবতিথঃ তাবতিথঃ এভাৰতিথঃ বন্ধয়ে বন্ধস্থশ্চ যাবদানিঃ।

৮০। তদস্বাস্তামিন্বামতুঃ।

তদস্তান্তি তদস্থান্বাভীতার্থে মতুর্ভবতি। অর্থাৎ যদ্যৎপদোদিষ্ঠং তঙঃ প্রতায়ঃ। নতু যদ্বস্থান্তি তত্তবিদ্বিপি বিদাতে যথা বৃক্ষণ্ড শাখা বুক্ষে শাথেতি কিমর্থমুভয়োরপাদানম্। উচাতে। নারং নিয়ম:। যতো দেশা-ন্তরগতোহপি পুল্রো দেবদত্তস্থ ভবত্যেৰ গঙ্গায়াং বিদ্যমানোহপি ঘোষো ন গল্লায়াং ভবত্যের উত্মানর্থদ্বয়োরুপাদানং স্থায়ামেব। নতু তদস্থ তদস্মিরি-তাক্তে২প্যস্তীতি লভ্যতে এব সর্বপদার্থদম্বদ্ধাৎ সত্তায়াঃ। তৎ কিমস্তা-ত্যনেন তৎ কৃতং বস্তমানসম্বন্ধে প্রত্যম্বিধানার্থম্। তেন গাবো যাম্মন্ সন্তি স এব গোমান্ নতু যস্তাসন্ যস্ত ভবিষ্যন্তি বা। তহি কথং গোমান-রমাসাৎ গোমানরং ভবিতেতি। উচ্যতে। তকিতোক্তবর্ত্তমানকালস্থাপ্রধানত্বাৎ তিঙুক্তকালেন বাধনাৎ। গোমাবিতি স্নট্যুগিত্যাদিন, সুম্ অন্তত্যানিনা দার্যঃ গোমতা স্থলী। ভূমনিন্দা প্রশংসাস্থ নিত্যযোগেহতিশায়নে। সংসর্গে-হস্তি বিবক্ষায়াম্মী মন্তাদয় স্মৃতাঃ। ভূমি বছত্তে। ধনবান্। নিন্দায় ং ককু-দাবত্তী হয়ঃ কক্দাবর্তোহনিষ্টফলন্ডারিন্দিত:। প্রশংসায়াং রূপবতা কন্তা। নিতাবোগে ক্ষীরিণো বৃক্ষাঃ। অতিশায়নে উদরিণী কন্তা। সংসর্গে দণ্ডা নতু যন্ত গৃহে স্থিতো দণ্ডঃ স দণ্ডা। ভূমাদিগ্রহণং প্রায়িকোৎয়মিতি লক্ষ্যতে। যতঃ পুলবান্দেবদত্তো ভূতঃ স্বস্তিমানয়মদ্যাপি ন প্রতিভাতী-ত্যানো অন্তত্তাপি নত্তাদিদর্শনাৎ প্রশংসাদিক্তা কশ্চিদেবাত্ত প্রত্যয়নিমিত্তং কল্পনীয়ঃ।

७८। खनवाहित्रमा**रम**र ।

গুণবাচকাৎ রসাদে ত ভদস্তান্মিন্নস্তীতার্থে মতুর্ভবতি। রসবান্ রূপবান্ পূর্বেণ সিদ্ধে বিধানমিদমিনাদিনির্ভার্থন্। গুণবাচীতি কিম্ ? রসিকো নটঃ ভাববাচকোহত্র রস্থকঃ। রূপিণী কস্তা রূপিকো দারকঃ শোভার্থো-হত্র রূপশকঃ। রূপ রস্ গল্প শুর্শ বর্ণ শক্ষ স্বেহ।

৮২। একাচ্। একাচ্রসাদিভবতি। থবান্ অবান্।

৮৩। অমন্ততত্বপান্তাদ্যবাদেম তুমো বঃ।

শ্বকারান্তাৎ মকারীন্তাৎ অকারোপান্তাৎ মকারোপান্তাচ্চ যবাদিগণবজি তাত্তরক্ত মতোমে বি ভবতি। বৃক্ষবান্ কিংবান্ পয়সান্ লক্ষীবান্ প্রমান্তা দীর্ঘতার গ্রহণং থটাবান্ ভাষান্। অমন্তত্তপান্তাদিতি কিম্? অগ্নিমান্ আয়ুমান্। যবাদৈন্ত যবমান্। যব উর্দ্ধি ভূমি রুমি তিমি জাক্ষা জুঞা ককুদ্ হরিত গরুৎ ইক্ষু জ মধু বন্ধু বিন্দু কান্তি সিদ্ধি বস্থ অংশু চারু বর্ণ হন্ন সান্ধ ভারাদ্যঃ। ইক্ষ্ণাদিভ্যো নামত্বাৎ প্রাপ্তিঃ যবাদিরাক্তিগণঃ প্রয়োগদর্শনাদ্যনায়ঃ। যবোমি ভূমিরুময়ন্তি মিদ্রাক্ষেক্ষ্বিন্দবঃ। জুঞান মধুক্রকরুদো গরুদ্বিশিন্তা। হরিতঃ কান্তিসিদ্ধা চ চারু সান্ধ হন্ত্বস্থা। ভানুদেতি যবাদিঃ স্থাদভ্যেহপি স্থাঃ প্রয়োগতঃ॥

৮৪। সঙ্যশাদ্তাচ্।

ঙ্যশাদিবাতিবিকারাচোত্রক্ত মতোমে বিবা ভবতি। ক্রথান্ বিহারান্
উদ্ধিরান্। ঙ্যশাদারাতু কুঙ্মান্ গীমান্ আয়ুয়ান্ যজুয়ান্ দিয়ান্
স্বতস্পান্ মধুলিড্মান্ গোধুয়ানিতাাদৌ হাকাদেশাঃ হানিবৎ কাপীতি
ঙ্যশাদারার বকাবঃ। অতএব নূমত ইলং নামতিমিতাবাপার্গারভাভাবার বকাবঃ ক্ষাম্যাপতাং ক্ষামিঃ ততা মতুঃ ক্ষামিমান্ ক্ষাণো ম ইতি
নকারক্ত স্থানিব রাল বকারঃ।

৮৫। নালি।

সংজ্ঞায়াং বিষয়ে মতোমে । বো ভবতি। অহীবতী কপীবতী মুনীবতী শরাদেশ্চেতি দীর্ঘঃ অধিকীবান্ নাম গ্রামঃ।

৮৬। অষ্ঠীবদাদয়ঃ।

অষ্ঠীবদাদয়ঃ সংজ্ঞায়াং নিপাত্যস্তে। অস্থিশকস্যাষ্ঠাভাবং। অষ্ঠীবান্ জামুঃ।
অন্তর। অস্থিমান্ চক্রশক্ষ্য চক্রীভাবং চক্রীবান্ গদ ভঃ। চক্রীবদক্ষ হংধ্রক্লচো বিসম্রারিতি মাঘা। অন্তর চক্রবান্। কক্ষায়াঃ কক্ষীভাবঃ কক্ষীবান্ কশ্চিদ্যিঃ। অন্তর। কক্ষাবান্।

५१। উদস্বানুদধো চ।

উদধৌ বাচ্যে উদয়ানিতি নিপাত্যতে সংজ্ঞায়ান্। উদকশু উদন্ভাব:। উদয়ান্ সমুদ্রং উদয়ান্ নাম ঋষি: যশ্মিলুদকং ধীয়তে স উদধির্ঘটাদিরপি ভবতি উদয়ান্ বটঃ উদয়ান্ মেঘঃ কথমুদকবান্ ঘটঃ সম্বন্ধাত্ৰমত বিবক্ষিতং নতু দ্ধাতীতাৰ্থঃ।

৮৮। প্রাণ্যস্থ্রুজন্তরোগাদাদন্তাল্লুশ্চ।

প্রাণ্যঙ্গদ্য ক্রজন্তা রোগদ্য চ বাচকাদান্তাত্ত্তরন্তদ্যান্ত্যন্মির্থে লোভবতি। মতৃশ্চ। চূড়ালঃ চূড়াবান্ কর্ণিকালঃ কর্ণিকাবান্ গজঃ। প্রাণ্যঙ্গবেহিপি শিখায়া লং বাধিঝা গ্রীহাদিঝাদিয়েব শিখী। যুকালঃ মক্ষিকালঃ বিচর্চিকালঃ মুর্চ্ছালঃ পক্ষে যুকাবানিত্যাদি। প্রাণ্যঙ্গ ইতি কিম্? শিক্ষাবান্ শিক্ষা বেদ্যাক্ষং নতু প্রাণিনঃ। আদন্তাদিতি কিম্? হস্তবান্ মশকবান্ কাশবান্।

५व। मिश्रारिक ।

পূর্ব্বোক্তেহর্থে সিশ্বাদেলে। ভবতি। মতুশ্চ। সিশ্বলং সিশ্ববান্। সিশ্ব-গড়্নাভিবীজপ্রদ্রানিষ্পারপাংগুহমুকর্ণাঃ। মণিসক্থিমাংসপগু গ্রামোদক-শীতপুদ্ধপিঙ্গাশ্চ। পক্ষপৃথুমঞ্জুকগুক্পিচটুপত্রাথি পর্ণমৃত্রুফাশ্চ। পেশ-ক্ষেহৌ কেনঃ প্রয়োগতোহত্যোহিধি সিশ্বাদিঃ॥

৯০। বৎসাংসাভ্যাং স্নেহবলিনোঃ।

বংসাৎ স্নেহবতি অংসাদ্বলবতি বাচ্যে লো ।ভবতি। বংসলঃ অংসলঃ। পাক্ষিকো মতুরত্র ন ভবতি তদস্তস্থ স্নেহবছলবদভিধানশক্তেরভাবাং। অক্সত্র। বংসবতী গৌঃ। অংসরান চুর্কালঃ।

৯১। জটাঘাটাকালাদিলশ্চ কেপে।

ক্ষেপো নিন্ধা। এভ্যো মন্বর্থে ক্ষেপে গম্যমানে লো ভবতি। ইলন্চ।
জটালঃ জটিলঃ ঘাটালঃ ঘাটিলঃ কাললঃ কালিলঃ। মতুরত্র ন ভবতি।
তেন ক্ষেপার্থানিধিগমাৎ। ক্ষেপ ইতি কিম্ ? জটাবান্ তাপদঃ ঘাটাবান্
কালবান কালাচ্চান্তালিভিলে নিষ্ঠঃ।

৯২। পिচছাদেরিলঃ।

পিচ্ছাদেম থথে ইলো ভবতি। মতুশ্চ। পিচ্ছিল: পিচ্ছাবান্। পিচ্ছা ধ্রুবকা এবকা প্রক্রাপর্ণোর উদকফেনাশ্চ। কলপঙ্কপাদকাকা ত্রীহিস্তন্দো-দরে পিচিগুযবৌ চ। পিচ্ছাদিস্তন্দাদিষিনিকাবপি পাক্ষিকৌ ভবতঃ। কৈশ্চিদ্পুহাগ্রহাদ্যাঃ পিচ্ছাদিগণে পঠ্যস্তে।

৯৩। পাঞ্চি ধমনিভ্যামীলঃ।

আভ্যাং মন্বর্থে স্বলো ভবতি। মতুশ্চ। পাঞ্চীলঃ পাঞ্চিমান্ ধমনীলঃ ধমনিমান্।

৯৪। বলবাতললাটদন্তগলাদূলঃ। এভ্যোমন্বর্থে উলোভবভি। মতৃশ্চঃ বলুনঃ বাতৃলঃ ললাটনঃ দন্তনঃ গলুলঃ পক্ষে বলবানিত্যাদি।

৯৫। লোমাদেঃ শশ্চ।
লোমাদের স্থাপ্ত লোমাদাং লোমবান্। লোমক্ষবক্রহরিতরুকপিমণিরোমাণি বর্ণকর্কেী চ। ইতি দশভিলে মাদিগণঃ
প্রণীতো বহুস্বরসাং।

৯৬। পামাদেন ।
পামাদেন হিথে নো ভবতি। মতুক্ত। পামনঃ পামবান্। পামন্ সামন্
শ্লেমন্দক্ত কমি বলি বাম। (পাম সাম শ্লেম দক্ত কমিবামো বলিভথা
পামাদ্য ইমে সপ্ত নিয়তা কথিতা বুধৈঃ॥)

৯৭। অঙ্গাৎ প্রশংসায়াম্। অঙ্গশন্ধাং প্রায়াং বাচ্যায়াং মন্বর্থে নো ভবতি। শোভনাগুঙ্গাগুস্যাঃ সন্তি অঙ্গনা। অগুত্র অঙ্গবতী।

৯৮। শাকীপলালীকজ্ঞনাং ব্রুমশ্চ।
শাকাদীনাং মন্বর্থে নো ভবতি। হ্রন্থশ্চ। শাকিনঃ পলালিনঃ কজ্ঞণঃ
মহচ্ছাকং শাকসমূহো বা শাকী মহৎপলালং পলালসমূহো বা পলালী।
তথাচ। শাকী পলালী সরসী শাকাদ্যোঘমহন্ত্রােরিতি রন্ধকোষঃ। নাগজননী গৃহগোধিকা বা কজ্ঞকচাতে। যে কজ্ঞশকং দীর্ঘান্তমত্র পঠন্তি
তৈর্প্বার্থমিহ পঠ্যতে।

৯৯ । বিষ্
কোইস্তাতিছ্যযোলে পিশ্চ।
বিষক্শকানাত্থে নো ভবতি। অস্তাতিছ্যয়োলে পিশ্চ। পক্ষে মতৃশ্চ।
বেঃপ্রাদিসোন নার্থ ইতি কৃতমুদ্ধিক্তা বিষুশকোহব্যয়ম্। বিষু অঞ্জীতি
কিপ্ বিষক্ বিষগস্যান্তি স বিষুণঃ বিষুব্দাথ্যঃ কালোহনেনোচাতে বিষ্
থান্।

১০০। লক্ষ্যা উতোহচ । শক্ষীশন্ধান্মত্বৰ্থে নো ভবতি ইতোহচ্চ পক্ষে মতুশ্চ শক্ষণঃ শক্ষীবান্। ১০১। জ্যোতিষ ইল্লুক্ চেন্দুত্যুতে।
জ্যোতিষ্শকাদিন্ত্যুতে গম্যমানায়াং মন্বর্থে নো ভবতি ইকারলুক্ চ।
জ্যোংসা। অগুরা। সংস্থায়ামসংজ্ঞায়াঞ্জ্যোতিয়াতী।

১০২। প্রজ্ঞান্তার্কার্চাবৃতিভ্যো শশ্চ।

এভ্যো মত্বর্থি গো ভবতি। মতুশ্চ। প্রাক্তঃ শ্রান্তঃ বার্তঃ। পক্ষে
প্রজ্ঞাবানিত্যাদি। সিধ্যাদিপিচ্ছাদিপাঠাৎ প্রজ্ঞালঃ প্রক্রিলঃ।

১০৩: জ্যোৎস্থাদেউণ্চ।

জ্যোৎস্থাদেম স্থাধি টিণ্ভবতি। মতুশ্চ। জ্যোৎস্থা জ্যোৎস্থাবতী। জ্যোৎস্থা তমিপ্র কুণ্ডল কুতপ বিসর্পিকা বিপাদিকা সহস্র তমস্ত্রখা শিক্ষা।
(জ্যোৎগ্রাতমিগ্রাকুত্রপাঃ স্থাশিক্ষাবিপাদিকাঃ। বিসর্প কুণ্ডলে বাপি সহস্রত্রমনী ইতি।)

> প । সিকতাশ্র্করাভ্যাম্।

আভ্যাং মন্বর্থে উণ্ভবতি । বাতুশ্চ । পৃথগ্যোগকরণমূত্রার্থিন্। সৈকতে

ঘটঃ সিকতাবান্ শার্করঃ শর্করাবান্।

২০৫। ইলশ্চ দেশে।
আভাাং মত্বর্থে দেশে বাচ্যে টণ্ ভবতি। ইলশ্চ। পক্ষে মতুশ্চ। সৈকতঃ
সিকতিলঃ সিকতাবান্ দেশঃ। সিকতা ইতি লুক্প্রকরণে বক্ষাতি।
শার্করঃ শর্করিলঃ শর্করাবান্ দেশঃ। চাতুর্থিকেন সিদ্ধে বচনমিদ্মসংজ্ঞার্থং তত্ত্ত্তি নামীতামুবর্ততে।

২০৬। অসন্তমায়ামেধা স্রজো বিন্।

অসন্তাং মারা মেধা স্রজ্ ইত্যেতেভাশ্চ মন্তর্থ বিন্ভবতি। পক্ষে মতুশ্চ।

যশস্বী যশস্বান্পরস্বী পরস্বান্ মারাবী মারাবান্ বীহাদিপাঠাং মারা
মায়িকঃ। মেধাবী মেধাবান্ স্রথী স্রথান্।

১০৭। ঊর্জোইস্চ সাহস্কারে। উর্জ ইতি কিবস্তঃ তত্মাৎ সাহস্কারে বাচ্চে মন্বর্থে বিন্ভবতি। অসাগ্মশ্চ উর্জাসী রুঢ়াহস্কারঃ। অস্ত্র। উর্থান্।

২০৮। তপ্সফাণ্চ। তপদ্শকাঝতথে ধিন্ভবতি। টণ্চ। পক্ষে মতৃশ্চ। তপ্সী তাপসঃ তপ্সান্।

১০৯। আময়াদাবিন্।

আময়শকানাত্র্থ আবিন্ ভবতি। আময়াবী। পক্ষে আময়ী আময়বান্।

১১০। দন্তাতুর উন্নতে।

উন্নতেংর্থে বর্ত্তমানাৎ দস্তশব্দানাত্বর্থে উরো ভবতি। দস্তা উন্নতা: সস্ত্য-স্মিন্ দস্তর:। অন্যত্ত্রনুদস্তবান্।

১১১। तः अधारिनः।

শুষাদেন বিথে রো ভবতি। মতৃক। শুষির: শুষিমান্। শুষি উষ মধু
পুক নথ মুথ পাংশু পাণ্ডু বন্ধ। (উবো মধু শুষিঃ পুদ্ধো নথং পাংশুমু থং
তথা। পাণ্ডু বন্ধনিমী স্থান তাঃ শুষাদিয়ো বুধৈঃ ॥) শকশকি স্বভাবাদিবিক্ষিতার্থ এবারং প্রতায়ঃ। তেন মধুমাধুর্য্যমত্রাপ্তি ইতি মধুরো রসঃ দ্রব্যাভিবানং নতু তদ্যোগাল্যধুরো শুড়ঃ। যথা শুক্ল গুণ্যোগাৎ শুক্লঃ পটঃ।
স্বালু উয্বান্ ঘটঃ মধুমান্ বুক্ষঃ।

১ : ২ । খনগদিকুকুজেভো নামি।

এভা মহর্থে সংক্ষারাং রো ভবতি। •খমছান্তীতি থরো গর্দভ:। অন্তর।

খবান্। নগরং পত্তনং রোহশাদেরিত্যাদিনা চাতৃর্থিকেন দিন্ধং সংজ্ঞারামিদম্।

অন্তর নগবান্। দিনুরো হন্তী। কুঞ্জো হন্দিন্তো বা কুঞ্জরঃ দ এব।

অন্তর দিনুমানুকুজবান্।

১১৩। তমসস্তমিদ্চ।

ভ্যস্শকাল্ল হর্থে নামি রো ভবতি। ত্যসঃ স্থানে ত্যিসাদেশক। ত্যিস্থা বাত্রিং ত্যিস্থাং পক্ষঃ। অন্তর ত্যস্থিনী গুহা।

১১৪। কচ্ছ্যা হ্রস্বশ্চ।

কচ্ছ শব্দানাত্বে বো ভবতি। হুস্বশ্চ। কচ্ছুরঃ। অন্ততা। কচ্ছু মান্।

১১৫। গ্রাক্রভ্যাং মঃ।

হ্যশব্দো দিবস্বচনঃ ক্রেশক্ষো বৃক্ষাবয়ববাচকঃ। আভ্যাং মত্বর্থে মো ভবতি।
হ্যামঃ ক্রেমঃ : রাট্যান্ন মতুঃ ন হি তত্র তদর্থাবগতিঃ।

১১৬। কেশাদেবে বা।
কেশাদেকত্তরে মন্বর্থে বো বা ভবতি। মতুশ্চ। অতা বাগ্রহণাং ইনিকাবপি
ভবতঃ। কেশবঃ কেশবান্ কেশী কেশিকঃ। কেশ মণি হিরণ্য কুমার
বিষু বাজী ইপ্তকা শিপ্তপ্রয়োগদর্শনাদক্যত্তাপি।

১১৭। অর্ণসঃ সলোপশ্চ।

অর্থ ন্শকান্মতর্থে বো ভবতি সলোপশ্চ। অর্থবঃ কঢ়িশকত্বত ন মতুঃ।

১১৮। গাণ্ড্যজকারান্নি।

গাণ্ডী অজকশন্দাভাং মন্বর্থে নামি বো ভবতি। গাণ্ডীবমর্জুনধন্মং সন্ধি-কার্যাসামর্থ্যাদ্ধ স্থাদপি গাণ্ডিবম্। অজো বিষ্ণুং কো ব্রহ্মা তাবস্থিন্ বিছেতে অজকবং হরধন্ম: অথবা অজো মুখ্যোহস্তেতি বাক্যে স এষাং মুখ্য ইতি কং কচিদগুত্রাপীতি দীর্ঘ: অজকাবমপীট্টং চাক্রাণাম্। অজগবমিতি কবর্গতৃতীয়-যুক্ত সমস্ত ইহ তুন ব্ছসন্মতম্।

১১৯। মেধারপাভ্যামিরঃ।

আভ্যাং মন্বর্থে ইরে। ভবতি। মতুশ্চ। মেধিরঃ মেধাবান্রথিরঃ রথবান্।

১২০। কাণ্ডাণ্ডান্সারঃ।

আভ্যাং মন্বর্থে ঈরো ভবতি। মতুশ্চ। কাণ্ডীরঃ কাণ্ডবান্ অণ্ডীরঃ অণ্ডবান্। কেচিদ্ধ স্বাদিপ্রত্যয়মিছুন্তি।

১২১। পু**र्जा**रमर्कानः।

পুত্রাদেশ্বর্থে বলো ভবতি। মতুন্চ। পুত্রবলঃ ভ্রাতৃবলঃ উৎসাহবলঃ উৎসঙ্গবলঃ। পক্ষে পুত্রবানিত্যাদি।

১২২। खोधियागामि तक्षयनामिः।

রজম্বলাদির্মান্থর্যে নিপাত্যতে। সংজ্ঞার্যং পৃথক্ লক্ষণম্। রজম্বলা ঋতুমতী। অন্তত্র রজম্বান্ বাতঃ। কৃষীবলঃ কৃষকঃ দীর্ঘো বলাদৌ কৃষাদেরিতি দীর্যঃ। অন্তত্র। কৃষিমং ক্ষেত্রম্। আমৃতীবলঃ শৌণ্ডিকঃ। দস্তাবলো হস্ত্রী শিথাবলো ময়ুরঃ শিথাবল। স্থূণা পরিষদ্বলা রাজা সদোহপ্রতেরিতি মন্ত্রম্। পরিষদ্বলান্মহাত্রকৈবেতি ভট্টিপ্রয়োগে তু নবাক্ষরপাদে।
রুত্তিভেদঃ। যথা প্রধানকর্মণ্যভিধেয়ে ইতি এবং ভাগরুত্তিকৃতোক্তম্ আস্থানং
সংসদাস্থানী পরিষৎ পর্ষদৌ সমে ইতি রভসঃ। একদেশবিকারেণ পর্যজ্ঞ্জানদিপ বলপ্রতায়ো ভাষার্ত্তাবৃক্তঃ এতৎপ্রামাণাং তু নাবধারয়ামঃ। উর্জ্জিশলো রুঢ়াহস্কারঃ উর্জ্জ্ বলপ্রামাঃ কিবস্তঃ রুম্ন্নু ইত্যাদিনা জলুন্নিষেধঃ।
ক্ষত্র বলে পরে উর্জ্জাদেশো নিপাত্যতে। অন্তত্ত। উর্মান্।

১২**७।** ফলবর্ছশৃঙ্গাদিনো ব'।

এভা মন্বর্থে ইনো বা ভবতি। মতুক্ত। পক্ষে ইন্। ফলিনঃ কলবান্ ফলী এবং বহিঞ্জঃ শুন্ধিণ ইত্যাদি।

১২৪। মলাদীমদশ্চ।

মলশকারাত্বর্থে ইনো ভবতি। ঈমস-চ। পক্ষে মতু:। মলীনং মলীমসঃ মলবান্ বিবক্ষানিয়মাৎ আঁদ্যো বহিরস্তশ্চাবিশুদ্ধে তৃতীয়স্ত মলমাত্রযুক্তে।

১২৫। অতোহণকাদেরিনিকো।

ণকাদিবৰ্জিতাদত উত্তরে মন্বর্থে ইনিকৌ ভবতঃ। মত্রুশ্চ। দণ্ডী দণ্ডিকঃ দণ্ডবান্। কার্য্যাদিবর্জিতাঃ ক্লস্তাঃ ধান্তাদয়শ্চ তণ্ডুলাদিবর্জিতা জাতিবাচকাশ্চ প্রয়োগদর্শনাং পকাদিপদেন গৃহস্তে তেতা ইনিকৌ ন ভবতঃ। পাবকবান্ পাঠকবান্ কারকবান্ সেহবান্ কুন্তকারবান্ ধান্তমায়বান্ ঈর্মারবান্ হিংস্রবান্ ইত্যাদি। কার্য্যাদেস্তা। কার্য্যা কার্য্যাকঃ কার্য্যান্। কার্য্য গৃহ দাত্র পোত্র স্থান ভোগ বিজয় সংযম ইত্যাদি। ধান্তবান্ দ্ব্যবান্ শশ্ববান্ প্রাবান্ মাল্যবান্ সত্যবান্ অপত্যবানিত্যাদি। জাতিবাচকাং ব্যান্তবান্ গিছবান্ গজবান্। তণ্ডুলাদেশ্ভ তণ্ডুলী তণ্ডুলিকঃ তণ্ডুলবান্ কর্পটী কর্পটিকঃ কর্পটবান ইত্যাদি।

১२७। न मखमार्र्थ।

সপ্তম্যর্থে ইনিকৌ ন ভবতঃ। দণ্ডোহস্তামস্তি দণ্ডবতী শাল। বীরণবান্ গ্রামঃ। হ্রস্বোক্ত্যা দীর্ঘস্তাগ্রহণাৎ থটাবান্।

১२१। बौश्राप्तक।

ব্রীহাদের্ম্মথে ইনিকো ভবতঃ। মতুশ্চ। ব্রীহিশিরোমায়াভ্যঃ শালেরিনিকো বিধীয়েতে ইক এব নোকুমারীকরণসভাষরথদাদিভ্যঃ। সংজ্ঞানাবীণাশিখেষ্টকামেথলায়ণাশাখাঃ। কেকাজরাপতাকাবড়বাদংষ্ট্রাগদান্মনীষাভাঃ। মালোৎসাহায়াসত্রতমুকুলোদামনিচুলপরিণাহাঃ। স্তবকোভ্যমামায়ালকরালাবরোহাঃ ফলোপ্যামো চ। আরোহবায়ায়ায়ামাদ্যাঃ কশ্মচম্বর্মাভাঃ। ইয়েবৈতেভ্যঃ স্থায়াতুশ্চ সর্ক্রেভ্য এবেষ্টঃ। ব্রীহ্থানীনাং নোপ্রভৃতীনাং সংজ্ঞাদীনাঞ্চানদস্তত্বাৎ কর্মাদীনামনস্তানামনস্তত্বান্ধ্রাপ্রে বিধানম্। করণস্থ মালাদীনাঞ্চ প্রাপ্তে নির্মার্থম্। ব্রীহী

ব্রীহিক: ব্রীহিমান্ শীর্বী শীর্ষিকঃ শিরসঃ শীর্ষন্শীর্ষাবিতি অচি পরে শীর্ষাদেশঃ শীর্ষবান্ মতৌ চ শীর্ষ ইতি শীর্ষাদেশঃ অশীর্ষী অশীর্ষিকঃ অশীর্ষবান্ ইতি চান্দ্রা উদাহরন্তি। নাবিকঃ নৌমান্ যবথদিকঃ যবথদ্বান্ সংজ্ঞাবান্ আদ্বামী আন্বামবান কর্মী কর্মবানিত্যাদি।

১২৮। ধনাত্রত্তম্পে । ধনশকাত্ত্তরে উত্তমর্ণে বাচ্চো মন্বর্থে ইনিকো ভবতঃ। ধনী ধনিকঃ। উত্তমর্ণ ইতি কিম্পূ ধনবান্।

১২৯। স্মাঙ্গাদ্দাবিলম্ভূ চ।
স্বাঙ্গবাচকাং শন্ধাং বৃদ্ধো বর্তমানান্মত্বর্থে ইনিকো ভবতঃ। ইলম্ভূ চ।
বৃদ্ধো কর্ণবিশু কর্ণী কর্ণিকঃ কর্ণিলঃ কর্ণবান্।

১৩০। একগোপুর্বাদিকণ্ নিত্যম্।

অত ইতানুবর্ত্তে। মন্বর্থে একপূর্বাৎ গোপূর্দাচ্চ শ্লাদদস্তাদিকণ্
নিতাং ভবতি। মন্বাদ্যনুবৃত্তিশক্ষানিরাদার্থং নিত্যগ্রহণম্। একঞ্চ তৎ
শতক্ষেতি একশতং তদস্তাস্তীতি একশাতিকঃ সংখ্যারাঃ সংবৎদরসংখ্যানাবিতি উত্তরপদর্কিঃ গৌশতিকঃ ঐকবন্ধিকঃ। অনতস্তা। গোবিংশতিমান্।
ঐকগবিক ইতি তু গৌরতদ্বিতলুকীতি রাজাদিজেন সনাসাত্তে কতেহদস্থাৎ
গৌশক্টিক ইতি শক্টীসমানার্থোহনস্তঃ শক্টশকঃ। একপ্রবাদিতি
কর্ম্বার্মাদেবান্মিষ্যভঃইতি স্থাসঃ। তৎপুরুষ্যে তু। একশক্টবান্।

১৩১। নৈকদ্ৰেব্যাৎ। এক্তব্যশ্লাম্ত্ৰ্যে ইবণ্ন ভবতি। এক্তব্যবান্ এক্তব্যবহাৎ।

:৩২। নিক্ষশতনিক্ষসহস্রাৎ। আভ্যাং মন্বর্থে ইকণ্ ভবতি। নৈদ্যশতিকঃ নৈদ্যহস্রিকঃ।

১৩৩। রূপাদাহতপ্রশংসয়োর্যঃ।

আহতপ্রংশংদোপাধিকোহর্থে বর্ত্তমানাৎ রূপশকান্মত্বর্থে যো ভবতি। আহতং রূপমপ্রাক্তীতি রূপ্যঃ কার্যাপণঃ প্রশস্তং রূপমপ্রান্তি রূপ্যো গৌঃ নির্বাতিকাতাড়নাদিনা দীনারাদিষু পুরুষাকৃতিঃ যজপুরুৎপাছতে তদাহতমিহোচ্যতে। আহতপ্রশংস্রোরিতি কিম্ ? রূপবত্তেজঃ। প্রশংসায়াং রূপবানিত্যপি ন্যাহতে।

১৩৪। হিমাদেশ্চ।

হিমাদেম স্বৰ্থী যো ভৰতি। মতুশ্চ। হিম্যঃ হিম্যবান্ পৰ্বতঃ গুণাঃ গুণ-বান্ ব্ৰাহ্ৰণাঃ। আফুতিগণোহয়ন্। তেন মঙ্গলং পূৰ্ণইটাদি বিদ্যতে হত্ৰেজি মঙ্গল্যম।

১০৫। শৃঙ্গরন্দাভ্যামারকঃ। আভ্যাং মত্বর্থি আরকো ভবতি। মতু-চ। শৃঙ্গারকঃ শৃঙ্গবান্ রুন্দারকঃ বুন্দবানক।

১৩৬। গোর্মিন্ পুজো।
গোশলারত্থে প্জো বাচ্যে মিন্ভবতি। গোমী। নিলো চেতি কেচিৎ।
অভো গোমান্।

১৩৭। স্থাদামিত্রীশ্বরে। সশকামত্বর্থি আমিন্ভবতি। প্রকৃতিপ্রতায়সমুদায়েন চেদীখর উচ্যতে। স্বামী অন্তর্য স্বান্।

১৩৮। প্ৰমিক্ত্যাং তশ্চ। আভ্যাং মন্ত্ৰিঃ ভাং। মতুশ্চ। প্ৰতিঃ প্ৰবান্মক্তঃ মক্ৰান্।

১৩৯ । বাচো গ্রিন্। বাক্শলাছত্তরে মন্তর্তি। বাগ্গী।

১৪০। আলাটো কুৎসিতবহুভাষিণি। অস্মান্মন্বৰ্গে কুৎসিতবহুভাষিণি বাচ্যে আল আট ইত্যেতৌ ভবতঃ। বাচালঃ বাচাটঃ। অকুৎসিতবহুভাষিণি তু। বাগ্গ্মী।

১৪১। **উর্ণায়া আ**য়ুঃ। অস্তা মন্বর্থে আয়ুর্ভবতি। উর্ণায়ঃ মেবলোমরচিতাচ্ছাদনবিশেষ:।

১৪২। অর্শ আদের । অর্শন্ ইত্যেবমানে মর্পেইছবতি। অর্শাংসি সন্তামিন অর্শন্ । অর্শন্ উরন্ আর্দ্র তুল চতুর পলিত জটা ঘাটা অর্শ আরুতিগণোহরম্।তেন ব্রাভিন্ন-রপেণ শব্দেন তদ্বতোহভিধানং তৎ সর্বমিহ দুষ্টবাম্। তেন থঞ্জঃ পাদেছ-হত্যাগীতি থঞ্জঃ কাণং চক্ষ্রভান্তি কাণঃ। (অর্শ আর্দ্রাব্রস্থানে) চতুরঃ পালিতো জটা ঘাটা প্রয়োগতোহত্তেহপি অর্শ আ্যানতা বুবৈঃ।)

১৪৩। গুণবিশেষবাচিভ্যো লুক্ চ।

শুক্লাদরো রূপাদীনাং শুণানাং বিশেষা:। তেভ্যো মন্বর্যেইন্তবিটি । পূক্ চ।
শুক্লা পটা: পাণ্ডুর্নটা: স্করভি চন্দনং কটু ব্যোষম্। যে পুঁ শুক্লাদীনামুপচারেশ প্রব্যবৃত্তিমনিচ্ছন্তি তেষাং লক্ষণমেতৎ স্পষ্টার্থম্ এবমমুলবণাদয়ো২পি এপ্রব্যা:। সত্যাদয়োহপি শক্ষা বাচ্যগুণস্থ বিশেষা ইত্যঙ্গীকুর্বন্তি
তেন সত্যো বিপ্রা: সত্যা নারী সত্যং কুলমিতি।

১৪৪। প্রাণিস্থাদস্বাঙ্গাদিমেব ঘদে।

হন্দসমাসে প্রাণিস্থাদস্বাঙ্গবাচকার হর্থেইদন্তাদিয়েব ভবতি। নিম্নাদিতরেষাং বাধা: । কটকবল্পয়িনী শঙ্খনুপ্রিণী। অপ্রাণিস্থান্ত্র্। পুশ্দলবান্
বৃক্ষঃ। স্বান্ধান্ত্র। স্তনকেশবতী। অত ইত্যেব। চিত্রকলগাটকাবতী।

>৪৫। নিন্দিডরোগাভ্যাঞ্চ। আভ্যাং নম্বর্থে ইরেব ভবতি। ককুদাবন্তী হয়ঃ কুষ্ঠা জরী।

১৪৬। বাতাতিসারপিশাচাৎ কশ্চ। এভ্যোমস্বর্থে ইন্নেৰ ভবতি। তৎসক্লিযোগাৎ কশ্চ। বাতকী অতিসারকী পিশাচকী। বাতাতিসারাভাাং রোগত্বাৎ পূর্ব্বেণ সিদ্ধে কবিধানার্থং বচনম্।

>৪৭। স্থাদেশ্চ। স্থাদিভ্যো মন্বর্থে ইন্নেব ভবতি। স্থা তুম্ধী। স্থ তুম্থ হস্ত অলীক করুণ রূপণ হল রুদ্ধু প্রতীপ সোঢ় অঞ্চ আন্ত্র প্রথায় কক্ষ।

১৪৮। মালায়াঃ কেপে। মালাশকাং কেপে গম্মানে মন্বর্থে ইল্লেব ভবতি। মালী। ব্রীহাদিনাদিন সিদ্ধ এব মৃত্রিরাসার্থং বচনম্। অক্ষেপে তু। মালী মালাবান্।

১৪৯। ধর্মাশীলবর্ণাস্তাৎ। অন্তশন্য প্রত্যেক্যভিদম্বধ্যতে। ধর্মাছস্তান্মম্বর্থে ইন্দ্রেব ভবতি। ব্রাহ্মণ-ধর্মী ব্রাহ্মণশীলী দিজবর্ণী।

১৫০। সর্বপূর্কাৎ। সব পূর্কাৎ মন্বর্থে ইরেব ভবতি। সর্বধনী বার্দ্ধ্বকঃ সর্ববীজী রুমকঃ সর্ববেশী নটঃ।

১৫১। বাহুরুপূর্ববাদ্ধলাৎ। শাহপূর্বাৎ উদ্পূর্বাদ্বাদ্ধতথে ইয়েব ভবতি। বাহবলী উদ্ধবলী।

१८२। वर्गाचु चाठातिनि।

অবিন্ বাচেট বর্ণাভ্তরে ইরেব ভবতি। বর্ণী ব্রন্ধচারী। অগুরে। বর্ণবান্।

১৫२। कत्ररखनखानिएछ।

ইভে বাচ্যে এভ্যো মন্বর্থে ইয়েব ভবতি। করী হস্তী দস্তী। আগুত্র। করবান পুরুষঃ।

১৫৪। वर्शामाकां क्षिमिन।

আকাজিমীন বাচ্যেহর্থান্মত্বর্থে ইরেব ভবতি। অর্থনমর্থঃ সোহস্রাস্তীতি অর্থী অন্যোহর্থবান্।

১৫৫। তদন্তাক।

অর্থান্তান্মত্বর্থে ইঙ্গেব ভবতি। ধান্তেনার্থো ধান্তার্থ: তত ইন্ ধান্তার্থী।

১৫৬। পূরণান্তাদ্বয়দি।

পূরণপ্রত্যরাস্তাদয়দি গম্যমানে মত্বর্থে ইরেব ভবতি। পঞ্চানাং মাদানাং বংসরাণাং বা পূর্বঃ পঞ্চমঃ দোহস্তী তীতি পঞ্চমী বালকঃ। বয়সীতি কিম্ ? পঞ্চমবান্।

১৫१। शुक्रतामिएका (मर्म।

পুকরাদিভ্যো মন্বর্থে ইরেব ভবতি। সমুদায়েন চেদেশো বাচাঃ। পুকরী পুকরিণী পুকরাণি তীর্থানি সম্ভান্মিন্ দেশে ইত্যত্র ন ভবতি অনভিধানাং। দেশ ইতি কিম্? পুকরবান্ গজঃ পুকরপদ্মতমালোংপলনলশাল্ক-কুমুদকল্লোলাঃ। যবশিরীষকরীষা মৃণালবিষকর্দমান্তরক্ষণ্ড। কৈরব ইতি বিজ্ঞেয়ঃ প্রয়োগতঃ পুকরাদিরভোষপি।

১৫৮। মন্মান্তানান্দি।

মনস্তাৎ মাস্তাচ্চ মন্বর্থে নামি বাচ্যে ইয়েব ভবতি। মনস্তাদপ্রাপ্তে বিধানং মাস্তাৎ প্রাপ্তে নির্মঃ। প্রথিমিনী দামিনী। প্রথিমন্ দামন্ ইত্যেতাভ্যা-মিনি ক্লতে অনীত্ত্বিতাচ্যয়োশ্চেতি ন নকারলুক্ সোমিনী। স্থানামি তু। দামবান্ পামবান্ সোমবান্।

১৫৯। কংশংভ্যাং বভতিত্তবাঃ।

কং শমিতি শব্দৌ মান্তাবৃদকস্থথবাচকৌ। আভ্যাং মন্বর্থে ব ভ তি তু ত মা ইত্যেতে ষট্ প্রত্যয়া ভবস্তি। কংবং শংবঃ কন্তঃ শস্তঃ কংতিঃ শংতিঃ কংতুঃ শস্তঃ কংতঃ শংতঃ কংয়ঃ শংয় মো মন্তর্থে চেতি বক্তব্যমিতি পদন্ত-বন্ধাৎ মোহনচাত্রস্বার ইতাত্রস্বারঃ বর্গে বা তন্ধগান্ত ইতিপক্ষে বঁশান্তঃ কঁক্ত শ্বা ইত্যত্র তু পদান্তেহত্বসারো ববলা ইতি সাকুনাসিক্যকারঃ।

১৬০। যুরহংশুভংভ্যাঞ্চ।

কংশংভ্যাং অহংগুভংভাঞ উত্তরে মন্বর্থে যুর্ভবতি। অহমিতাব্যয়ম্ অহ্ ভারে বর্ততে গুভমিতি চ গুভপ্র্যায়ঃ। কংসুঃ শংবুঃ অহংবুঃ অহংকারবার গুভংযুঃ কল্যাণবান্।

১৬১। जुन्मिवनिवरिष्ठः।

এভা মন্বর্থ ভ: স্যাং। তুন্দিরিতি বৃদ্ধা নাভিক্চাতে স্বাস্থান্দ্রিবিশমতূ চেতি ইক ইল ইন্মতুরু প্রাপ্তেরু বিধানম্। উৎসর্গনিদ্ধান্ত নতুভবত্যেব। ক্রিয়াদেরাক্রতিগণন্ধাং লণ্ড। তুন্দিভঃ তুন্দিলঃ বলিভঃ পামাদিন্বাং বলিন ইতি চ বটিভঃ।

১७२। निर्मारमतानुः।

এভাো মন্বর্থে আপুভবতি । মতুশ্চ । নিদালুঃ নিদাবান শ্রদ্ধালুঃ শ্রমান্বান্তি নিদাতি আপুভবিত । তথাচ, কপালুর ভারে প্রতঃ স্মাইতামরঃ ।

১৬৩। হৃদয়াদ্বা।

অম্মান্মত্বর্থে আলুবর্ণ ভবতি মতুশ্চ। পক্ষে ইনিকৌ। হৃদয়ালুঃ হৃদরবান্ হৃদয়ী হৃদয়িকঃ।

১৬৪। ঈয়ঃ সৃক্তসাম্বোঃ।

নাম উত্তরে হক্তে সামি চ বাচ্যে মন্বর্থে ঈরো ভবতি। অচ্ছাবাক্ শকোহিন্দিরধ্যারেহস্তি অচ্ছাবাকীরং হক্তং যজ্ঞাৎ যজ্ঞীরং সাম কথমস্য সামীরং
হক্তং কয়ানশ্চিত্রীরং সামবাক্যমেতৎ স্থুপ্রহিতত্বাল্লাম ন ভবতি। উচ্যতে।
অত্করণশকানাং স্থর্রপার্থন্থাৎ নাত্র স্থুপ্রহিতত্বং যথা গোশকবাচ্যোহর্থো
যন্মিন্তি তন্মিন্ বাচ্যে গোশকাৎ প্রভায়ঃ তথা অনুকরণশকানামেধামস্থকার্যার্থশকা এবার্থাঃ তে চ হক্তে সামি চ সন্তীতি প্রভায়াঃ।

১৬৫। অধ্যায়ানুবাকয়োলুখা।

নাম উত্তরে মন্বর্থেহধ্যায়ামুবাকয়োরভিধেয়য়োরীরো ভবতি। তম্ম লুখা। সন্ধ্বভাগুশব্দো ধ্রীমূল্লন্তি গর্ধভাগ্রীয়ঃ গর্ধভাগ্রোহধ্যায়োহসুবাকো বা। এবং দীর্ঘজীবিতীয়ঃ দীর্ঘজীবিতঃ পলিতস্তম্ভীয়ঃ পলিতস্তম্ভঃ।

১৬৬। বিমুক্তাদেষ্টণ্।

বিমুক্তাদিভো মন্বর্থেই ধার্মির বাক য়োরভি ধের য়োর প্তরতি। বিমুক্তশব্দোই মিরস্তি বৈমুক্তঃ অধ্যায়েই রুবাকো বা। বিমুক্ত দেবা হর রক্ষোহস্তর উপদদ্ পরিসারক বস্ত্রমং অরীবং বর্তিবং পত্নীমং হর্ষবং রুত্রহন্ পতত্রিন্ স্তর্ব দশার্গ ইড়া উর্ব শী দশার্হ বয়দ্ হবিদ নি অক্তহত্য সোমাপৃষন্
অগ্রাবিষ্ণু। (বিমুক্তোপদদৌ দেবাস্তর রক্ষোইস্তর্রাবিপি। বস্ত্রমন্থিমংপত্নীমন্তরণ পরিসারকঃ। স্থবর্ব হোর্বস্থো দশার্ণেড়া পতত্রিপঃ। অক্তহত্যহবিদ নিসোমাপুরবয়াংসি চ। অগ্রাবিষ্ণু দশার্হ তি বিষ্ক্রাদিরসৌ মতঃ।)

১৬৭। গোষদাদেরকঃ।

গোষদাদেশ্বস্বর্থইব্যায়ার বাকয়োরভিধেয়য়েয়ারকো ভরতি। গোষদোহশ্বিন রপ্তি গোষদকঃ অধ্যায়োহর্বাকো বা। গোষদ ইয়েয়া মাতরিখন্ দেবস্তবা দেবীরায় ক্রেতাস্থা অববেস্তা রক্ষোহন স্বাহা প্রাণ রুশার প্রহন্তরা।

১৬৮। মত্ববীয়ান্তান্ন সরূপো মত্ববীয়ঃ শৈষিকান্তাচ্চ শৈষিকঃ।

মন্বর্থীয়াস্তাৎ সমানরপো মন্বর্থীয়োন ভবতি। শৈষিকাস্তান্ত সমানরপঃ
শৈষিকঃ প্রত্যয়োন ভবতি দণ্ডোহস্তাস্তীতি দণ্ডিকঃ দণ্ডিকোহস্তাস্তীতি
পুনরিকোন ভবতি। বিরূপস্ত ভবত্যেব দণ্ডিকবন্তো গৃহাঃ। দণ্ডোহস্থান্তীতি দণ্ডী দণ্ডিনোহস্তাং সন্তীতি দন্তিমতী শালা শালায়াং ভবঃ আদিস্থৈজাতশ্চতি ঈয়ঃ শালীয়ঃ শালীয়ে ভব ইতি পুনরীয়োন ভবতি বিরূপস্ত ভবত্যেব। ক্রুন্নে ভবঃ শ্রৌত্বঃ শ্রোন্ধ ভব শ্রৌত্বীয়ঃ।

১৬৯। পথস্তত্ত্ৰ কু**শলেহকঃ।**

পণিশনান্তত্ত কুশলে বাচ্যে হকে। ভৰতি। পণি কুশলঃ পথকঃ তত্ত্ব কৃতক্ৰীতলৰকুশলেধিতি টণি প্ৰাপ্তে বিধানম্। পণিক ইতি ছু ভালাছতী-ত্যৰ্থে পথষ্টিক ইতি টিকেন।

১१०। आकर्नारमः कः।

সাকর্ষাদেরভবে তত্র কুশলেহর্যে কো ভবতি। আকর্ষে কুশলঃ আকর্ষকঃ।
সাক্ষ ৎসক পিশাচ পিচিগু অশনি অশান্ নিচয় শকুনি হলাদ নয় জয় হাদ।
সক্প্রতায়ে প্রাপ্তে কপ্রতায় বিধানম্ উকারান্তেকারাভ্রোবিশেযার্থম্।
প্রাকর্ষৎসক্ষিত্রা অশনিপিশাচৌ পিচিগুশ্চ: শকুনিহ্রাদহলাদা নয়ো
প্রশেত্তি বিজ্ঞোঃ।)।

২৭১। ধনহিরণ্যাভ্যাং কামে।

কামশব্দো ভাবঘণস্তঃ। তত্রেতানুবর্গতে। আভ্যাং তত্র কামে বাচ্চে কোভবতি। ধনকো মৈত্রস্থানবিষয়ে ইচ্ছেত্যর্থঃ। হিরণ্যকঃ।

১৭২। সাঙ্গেভ্যন্তৎপরে।

ক্ষাঙ্গনাচক্রে ভাতত্ত্পরে বাচ্চ্যে কে! ভবতি । দক্তেযু তৎপরো দন্তকঃ কেশকঃ। বহুলবচন্নিত্রশাং স্বাজসম্দাবাদ্ধি ন্থকেশকঃ।

১৭৩। অংশাতদারিণি।

ভিন্নাবিণি বাচ্যেহংশশব্দাৎ কো ভব্জি। অংশকো দায়াদঃ অংশহ্রণশীল ইতার্থঃ।

১৭৪। তন্ত্রাততোহচিরোদ্ধতে।

তস্বশব্দাদি চিরোদ্তে বাচ্যে কো ভবতি। তন্ত্রকঃ পটঃ তন্ত্রান্তদানীমেরো-দ্ধ ত ইত্যর্থঃ।

১৭৫। স এষাং মুখ্যঃ।

অন্মিন্নর্গে কো ভবতি। অর্থাদ্যত্তৎপদবাচাং তস্মাৎ প্রতায়ঃ। দেবদন্তো মুখ্য এবাং দেবদত্তকা লোকাঃ। মুখা ইতি কিম্? দেবদত্তঃ শক্রবেয়ামু।

১৭৬। পার্বাত্তেনারিচ্ছতি।

পার্ধশন্দাক্তেনারিচ্ছতীতার্থে কো ভবতি। পার্শকঃ পার্থমনৃজুরুপায়ঃ উংকোচানিঃ তেন যোহর্থান্ অরিচ্ছতি স এবমুচ্যতে।

১৭৭। অয়ঃশ্লদণ্ডাজিনাভ্যাং টিকণ্।

আভাং তেনার্থানিধিচ্ছতীত্যর্থে টিকণ্ ভবতি। তীক্ষ উপায়োহয়:শূলং তেনার্থানিবিচ্ছতি আয়ঃশৃলিকঃ সাহসিকঃ ইতার্থঃ। দস্তো দণ্ডাজিনং ক্রেনার্থানিবিচ্ছতীত্যর্থে দাণ্ডাজিনিকস্তপন্থী দান্তিক ইতার্থঃ। ১৭৮। ুউদ উৎকণ্ঠাবতি। উদ উত্তরে উৎকণ্ঠাবতি বাচ্যে কঃ স্থাৎ। উৎকঃ প্রবাদী।

১৭৯। অধ্যার চাদ ধিশ্চ।
অধ্যার চ্শলং কঃ স্থাং। তক্স স্থানেহধিক। অধ্যার চুইতি অব্যান্ত্র্
পূর্ব রুহ্ জন্মনি প্রাহ্রভাবে রুহাদিভাঃ কর্তুরি চেতি কর্তুরি কর্মণি ক্তঃ যদ'
কর্তুর্যাং নিপ্সান্ত লাধিকো দোণঃ। থারীমিতি কর্তুরুক্ত স্থাং প্রথমা কর্মনি
গোহনু ক্ত সাং দিতীয়া। যদা তুক্মণি তদা কর্তুরুক্ত স্থাং তৃতীয়া কম্মণ
উক্ত সাং প্রথমা অধিকা থারী দোণেন।

১৮০। গুণবাচিশস্থাতেন সম্যক্সম্পন্নে।

গুণবাচিন: শস্তশন্দাৎ তেন দর্দ্ধপ্রকারশস্ত্রসম্পন্নে বাচ্যে কঃ স্থাৎ। শস্তকঃ থড়্গাঃ শস্তকো মণিঃ গুণেন দর্মপ্রকারসম্পন্ন ইত্যর্থঃ। মাদে ভিন্নাদাবিভান্ত শস্ত সংগ্রে শস্যং ব্রাহেগুণি চেতি বৃক্তিঃ ইহ্ তু ব্রাহিনিরাদার্থং গুণবাচীতি বিশেষণম্।

১৮১। অনোঃ কমিতরি।

অন্ন ইতাপাৎ কমিতরি বাচো কঃ স্থাৎ। অনুকাময়তে অনুকঃ।

১৮२। जट्टर्वा नी**र्घ**ण्ठ।

কমিতরি নাচ্যেগ্ডেঃ কো ভর্বাত। প্রেক্ষ দীর্ঘ**ণ্ট। অভিকঃ অভীকঃ**।

১৮৩। বালণাচ্ছ:স্তাপজীবিনি ব্রাহ্মণস্থানে।

লার্নণিঃ স্থায়তেখনেতি আর্মণস্থানং তিমান্ বাচ্যে কঃ স্থাং। লাহ্মণকঃ কডেরিয়ং দেশবিশেষস্থা। যত্র দেশে সদাচারা আর্মণা এক শাস্তোপজাবিনঃ কতাঃ।

১৮৪। উষ্ণাদ্যবাগৃবিশেষে। উঞ্গদাদ্যবাগৃবিশেষে বাচ্যে কঃ স্থাৎ। উষ্ণিকা অগ্নেরচিরোদ্ধ্রা অন্নানা যবাগরভিনীয়তে।

১৮৫। শীঘ্রকারিণি চ। উষ্ণশন্ধং শীত্রকারিণি চ বাচ্যে কঃ স্থাং। উষ্ণশন্ধঃ শীত্রবাচী উষ্ণংক মনুষ্যঃ দক্ষ ইত্যর্থঃ।

১৮৬। শীতামার্শকারিণি। শীতশকামানকারিণি বাচ্যে কঃ স্থাৎ। শীতকো নরঃ অলস ইত্যর্থঃ। ১৮৭। উপাধিভ্যাং ত্যকঃ পর্বতাসয়োদ্ধভাগয়োঃ।
উপ অধি ইত্যেতাভাাং যথাক্রমং পর্বতন্তাসয়ভাগে উর্ধভাগে চ বাচ্যে:
ত্যেকো ভবতি। উপত্যকা অধিত্যকা স্বভাবাদনয়োঃ স্ত্রীলিঙ্গতম্। সমুদ্রোপত্যকা হৈমী পর্বতাধিতাকা প্রী। রত্বপারায়াণং নামা লক্ষেতি মমঃ
মৈথিলি। ইতি ভট্টিকাবো তু সমুদ্রোপত্যকেত্যুপচারাং।

১৮৮। উদরাত্তদধীনালদে টিকণ্। উদরশকাত্তদধীনে হলদে বাচ্যে টিকণ্ভবতি। ওদরিক:।

১৮৯। পূরণান্তাত্তেন গ্রন্থং গৃহাতি পূরণলুক্ চ।
পূরণপ্রত্যয়ান্তাক্তনাতেন গ্রন্থং গৃহাতীতার্থে ক: আং। পূরণপ্রত্যয়ভ চ
লক্ চ। গ্রন্থগ্রন্থাগ্যাে রূপাদিরের পূরণপ্রত্যয়ান্তোহভিধেয়:। দিতীয়েন
রূপেণ গ্রন্থং গৃহাতি দিকো৷ বটু: ত্রিক:। নিমিত্রাপায়াং ত্ভাবনিবৃত্তি:।
প্রন্থেহরগ্রন্থ তু। পঞ্চমদিনেন শব্দং গৃহাতি দিতীয়েন হন্তেন দ্ওং গৃহাতি।

১৯০। গ্রহণে লুখা।

গৃষ্ঠতেহনেনেতি গ্রহণং রূপাদি তর্চ প্রকৃতিবিশেষণং পূর্ণপ্রত্যয়াস্তাৎ গ্রহণে বর্তমানাং সার্থে কো ভবতি। পূর্ণপ্রত্যযাস্তম্ভ বা লুক্ চ। দ্বিতীয়েন রূপেণ গৃষ্তে দ্বিতীয়কং দ্বিকং গ্রহণং ভৃতীয়কং ত্রিকং চতুর্ফং চতুর্থকং ছনি-রিত্যাদিনা রেফশু ষত্ম।

় ৯১। শৃত্বলাত্তদস্য বন্ধনং করতে ।
শৃত্বলশস্থাৎ তদস্য বন্ধনমিত্যর্থে করতে বাচ্যে কো ভৰতি। শৃত্বলকঃ।
বন্ধনমিতি কিন্? শৃত্বলং বাহ্মস্থা। করত ইতি কিম্? শৃত্বলং বন্ধনঃ
মস্ত গোঃ।

১৯২। কালান্ডোগনান্দি। কালবাচকান্ত্রণাৎ রোগনামি বাচো কো ভবতি। দ্বিতীয়াদিম্বেবায়ং প্রভায়-স্থাত্রৈব সংজ্ঞাধিসমাৎ দ্বিতীয়েহছি ভবঃ দ্বিতীয়কো জ্বরঃ তৃতীয়ক**ঃ চতুর্থকঃ**।

১৯৪। তদশু কারণম্। অস্মির্থে রোগনামি বাচ্যে কো ভবতি। বিষপুশং কারণমশু বিষপুশ্রকা: রোগঃ।

১৯৪। কার্যান্।

তদস্মেত্যস্বৰ্ত্তে। তদস্ত কাৰ্য্যমিত্যৰ্থে কো ভবতি বোগনায়ি বাচ্যে। শীতং কাৰ্যামস্থা শীতকো জবঃ।

১৯৫। প্রায়স্তদন্মস্থিন্।

প্রায়ো বাহুল্যেন তদরমন্ত্রিরিত্যর্থে কো ভবতি নামি। অর্থাদ্যতৎপদবাচ্যং ততঃ প্রত্যয়ং। গুড়াপূপাঃ প্রায়েণারমস্তাং গুড়াপূপিক। পৌর্ণনাসী। নারীত্যেব। শক্তবঃ প্রায়েণারমন্ত্রিন।

১৯৬। কুল্মাসাণ্ণট্।

কল্মাসশব্দাৎ প্রাদেশ তদরমন্মিরিতার্থে পট্ ভবতি সংক্রায়।ম্ ে কৌল্যাসী পৌর্ণমাসী। নদী পবিমান ইতি মাসশব্দং ব্যুৎপান্য কুলশক্ষ্পাক।রলোপং রুত্ব। কুল্মাসশকো পাতুপাবায়ণে সাধিতঃ।

১৯१। निकामिन्।

ভদম নিম্ প্রায়েণেত্যর্থে বটকাদিন্ ভবতি সংজ্ঞায়াম্। বটকিনী পৌর্যাসী

১৯৮। बद्धारमी।

নায় উত্তরেংল্লানবথে গমাধানে কো ভবতি। অলং তৈলং তৈগ্ৰহণ্। ১৯৯। হলে চা

इस्रद्विभित्रेश्वर्थ वर्त्वगानाथ कः श्राथ । इत्या वत्का वृक्षकः ।

২০০। অজাতে।

অজ্ঞাতে হথে কঃ স্থাৎ। স্বেন রূপেণ জ্ঞাতো বিশেষেণাজ্ঞাতি ইংগাচাতে। বস্তাতাত্তিকমেৰ জ্ঞানং ভস্ত প্রয়োগাভাবাং। কস্তায়মর্গো-হয়কঃ।

২০১। কুৎসিতে।

ক্ৎসিতেংগে কং স্থাৎ। কৃৎসিতেংধাংশ্বকং কুৎসিতং লানং দানকম্।
কথং কুৎসিতকোংকুকিপিতক ইতি ক্ৎসিতজান কম্পায়াম অনুকিপিতক্ষ চ কুংসায়াং ভবিবাতি অথবা কুৎসিতান কিপিতশক্ষোরত্তৈব ক্ৎসা
অনুকম্পা চ প্রবৃত্তিনিমিত্তম্ অস্তা চ প্রতারহেতৃঃ। বথোক্তং প্রকৃষ্ট ইতি গুক্লাদিপ্রকর্ষস্থাভিদায়কঃ, প্রকৃষ্টস্থ প্রকর্ষেহর্গে তরাদিস্ত বিধীয়তে দেবদক্তাদিকুৎসায়াং বর্ততে কুৎসিতশ্রুতিঃ কুৎসিতস্থা তু যা কুৎসা তদর্থ: কো বিধীয়তে। কুৎসিতত্ত্বন কুৎসাবান্ সম্যথাপি কুৎসিক্ত স্থাপ কাভিহিতঃ কেন বিশিষ্টোহর্থঃ প্রতীয়তে।

২০২। নাল্ল।

কুৎসিত ইত্যেবাল্বর্ত্তে। কুৎসিতজোপাধিবিশিষ্টে**ংর্থে বর্ত্তমানাৎ কো** ভবতি। তদন্তেন চেৎ সংজা গমতে। শূদ্র**কঃ পূর্ণকঃ**।

২০০। অবক্ষেপ্রে।

অবক্ষিপাতে ন্থক ক্রিয়তেখনেনেতি তদবক্ষেপণম্। ত**দ্বিশিষ্টেংর্থে বর্ত্তমানা**ৎ কো ভবতি। বিয়াকরণকত্বেন তথ বিকথ**দে ব্যাক্ষণকত্বেন তথ পর্বিতঃ** স্বভাবাৎ কৃৎসিতঃ প্রবস্থা বৃৎসার্থং ষত্তপাদীয়তে তদবক্ষেপণং যন্ত**ু কুৎসিতমে**ব তৎ কুৎসিত ইত্যাস্থা বিষয়ঃ।

২০৪। সাদৃশ্যরভেত্তৎপ্রতিরূপনামোঃ।

প্রতিরূপং প্রতিকৃতিঃ প্রতিজ্ঞন ইতি পর্যা**রঃ। সাদৃশ্রপুত্তঃ শব্দাৎ তৎ-**প্রতিরূপে নামি বাচ্যে কো ভবর্তি। **অথকঃ তৎপ্রতিকৃতির্জ্ঞাভিধীয়তে** ।
ক্ষণবা ভৎসন্প্রেশ্বরং সংজ্ঞা। প্রতিরূপনা**রোরিতি কিম্? গৌরিব গবয়ঃ**।

२०৫। न विदक्तशाचाकोवार्थायः **विजन्नकार्का**ञ्च।

বিক্লেয়ব্যতিরিক্তাম জীবিকার্থাম চিত্রধ্বজান্তর্ম প্রতিকৃতিমু বর্ত্তমানাৎ শলাৎ কোন ভবতি। চিত্রে রামঃ বৃধিষ্ঠিরঃ ধ্বজে গরুড়ঃ বৃষঃ অন্তর্গরাং বাস্থানবঃ বিপ্রাঃ দেবলোকাদীনাং জীবিকার্থাঃ প্রতিকৃত্য উচ্যন্তে। বিক্রেয়ে তু: বাস্থাদেবকান্ বিক্রীণীতে। অচিত্রাদিশু তু:। হস্তিকান্ ছারাদর্শকো দর্শরেতি।

२०७। (मच नथारमञ्ह।

দেবপথাদেশ্চ প্রতিরূপে বাচ্যে কোন স্থাং। দেবপথা । দেবপথ হংসপথ বারিপথ জলপথ অজপথ শঙ্কুপথ দিন্ধগতি উন্ধূত্রীবা রামরজ্জু মংস্য ইন্দ্র বন্ধ কন্ধ মূর্থ হ্রা কাকতুণ্ডাদয়ঃ। দেবপথমূথং হংসপথো বারিপথস্থপা।
শঙ্কুপথে লক্ষেপ্ট্র গ্রীবাঃ দিন্ধগতির্হিচ। মৎস্থশচাজপথো রামরজ্জুপথা ইমে।
কাকতুণ্ডাদয়শৈচবং জ্ঞাতা দেবপথাদয়ঃ॥

२०१। यावारमः।

যাবাদে: সার্থে কে। ভ্রতি। যাব এক যাবকঃ এবং মনিকঃ পীতকঃ

চন্দ্রকঃ স্বস্তুকঃ অন্তব্দ অন্তব্দ অন্তব্দ গড়ুকঃ সমুদ্গকঃ ভৃতকঃ
ভিক্ষকঃ দৃতকঃ কল্লকঃ অবিকঃ আইকঃ জ্ঞাতকঃ অজাতকঃ আফ্রতি-গণোহয়ম্।

२०५। जातीर्निश्रुत।

নিপুণে বর্ত্তমানাৎ অণোঁঃ স্বার্থে কো ভবতি। অণুকো নিপুণঃ। অন্তত্ত। অণুর্ধান্যাদিঃ।

২০৯। উষ্ণশীতাভ্যামূতো।

আভ্যামৃতৌ বর্ত্তমানাভাাং স্বার্থে কো ভবতি। উষ্ণকঃ শীতকঃ ঋতুশেচৎ। অন্তত্ত্ব। উষ্ণঃ কম্বলঃ শীতো বায়ঃ।

২১০। তনোঃ সূত্রে।

স্থাত্রে বর্তমানান্তনোঃ সার্থে কো ভবতি। তমুকং সূত্রঞ্চেং। অফ্রতা। তমুকৈচত্রঃ।

২১১। জাতো প্রিয়াদেঃ।

জাতৌ বাচ্যায়াং প্রিয়াদেঃ স্বার্থে কো ভবতি। প্রিযকং চিত্রকং মৃগজাতিঃ গুহুকঃ দেবযোনিজাতিঃ গোলকঃ অন্তজাত্রাহ্মণাদিজাতিঃ ক্জকস্তর্জ-জাতিবিভ্যাদয়ঃ প্রযোগদর্শনাদৃহাঃ গ

২১২। লনবিপাতাভ্যাং পশো।

পশৌ কর্মানাভাাং লৃনবিপাতাভাাং স্বার্থে কে। ভবতি। লূনকঃ বিপা-তকং পশুঃ। অগ্রতা। ল্নো দর্জঃ।

২১০। পূত্রাৎ কৃত্রিমে।

ক্সত্রিমে বাচে প্লশব্দাৎ স্বার্থে কো ভবতি। পুত্রক: ক্তিমন্ছেৎ। স্মন্ত্র। পুত্রঃ।

২১৪। শৃহাদ্রিকে।

রিক্তে বাচ্যে শূনাশব্দাৎ স্বার্থে কো ভবতি শূনাকঃ ধনাদিহীন ইত্যর্থঃ।

२२६। স্নাতাদেদমাপ্রো।

বেদসমাপ্তৌ গম্যমানারাং স্নাতাৎ স্বার্থে কো ভবতি। বেদং সমাপ্য স্নাতঃ স্নাতকঃ। অন্যত্র। স্নাতঃ।

২১৬। কুমারক্রীড়নবাচকেভ্যঃ।

এভাং স্বার্থে কো ভবতি। কন্দৃকঃ ভ্রমরকঃ গিরিকঃ শৃঙ্গকম্।

२:१। जेयरमान्छ।

ঈণস্বস্তাৎ শন্দাৎ স্বার্থে কো ভবতি। শ্রেয়ানেব শ্রেয়স্কঃ জ্যায়ানেব জ্যায়স্কঃ।

২১৮। লোহিতানাণো।

জ্ঞান্মণৌ বাচ্চো স্বার্থে কো ভবতি। লোহিতকো মণিঃ যাবদুব্যভাবিত্বাৎ স্বভাবরক্তথাক উত্তর্যোগ্যোরয়মবিষয়ঃ।

২১৯। অনিত্যে বর্ণে কালাচ্চ।

অনিভ্যে বর্ণে বর্ত্তমানাৎ লেছিতাৎ কালাচ্চ স্বার্থে কো ভবতি। লোছিতকঃ কোপেন লোছিতকঃ পীড়নেন কালকো বৈলক্ষণোণ লজ্জ্যতার্থঃ। সভ্যে-বাশ্ররে যৎ কদাচিৎ ভবতি কদাচিন্ন ভবতি তদনিতাঃ গুণবুত্তেবস্তু দ্বা-বাচিন্ধে প্রতায়ো বিশায়তে অতএব কালাদ্বর্ণে ইতি বর্ণমাত্রবৃত্তেশী প্রতায়া-স্তাৎ কো ন স্থাং। অনিত্য ইতি কিম্প লোহিতং গোঃ লোহিতং ক্ষরিসং যাবন্ধুবাভাশিলাং অত্র নিত্যো বর্ণঃ দ্বাবিনাশাৎ যদানিতাং স্থাং তথা অনিত্যগ্রহণমন্থিকং স্থাং ব্যাবন্ত্র্যুভাবাং। বর্ণ ইতি কিম্প অস্তিবর্ণগ্রহণে দ্ব্যস্থাপ্যনিত্য ইতি বিশেষণং স্থাৎ তত্তশ্চ লোহিতকাঃ প্যথিবঃ প্রমাণব ইলাত্র কো ন স্থাং তেবাং নিত্যগ্রাং। বর্ণগ্রহণে ভু। সতি নিত্যে প্রবাব বর্ণে চানিত্যে প্রভাবঃ সিধাতি।

५५०। तुर्कु ह।

লাক্ষাদিনা রক্তে চ বর্ত্তমানো যো লোহিতশক্ষা কালশক্ষণ তত্মাৎ কো ভবতি। লোহিতকঃ পটঃ কালকঃ পটঃ। যদা বর্ণস্থ যাবদ্দ্রভাবিতা তথা অস্যোদাহরণম্ অনিতাতায়ান্ত পূর্কেণৈর স্থাব। লোহিতশকাং প্রথমণ স্ত্রীজবিবক্ষায়াণ তোপাস্তান্ত ও ন ইতি সিদ্ধৃত্বাৎ লোহিনীশকাৎ কে রুতে প্রত্যে কেহণ্ ইতি হ্রম্বরে চ লোহিনিকেতি ভবতি। অথবা প্রথমণ কো বিধীয়তে পশ্চাৎ স্ত্রীজবিবক্ষা তথা গোহিতিকেতি।

২২১। ক্রাদনাত্যন্তিকে।

জনাতান্তিকবিশিষ্টেংর্থে বর্ত্তমানাৎ ক্রান্তাৎ স্বার্থে কো ভবতি। নাত্য-

ন্তিকং ভিন্নং ভিন্নকং, ভিন্নকীকৃত্য যড় জমিতি মাঘ:। অনাত্যন্তিক ইতি
কিম্ ? ভিন্নং কাঠম অত্যন্তমেব ভিন্নমিত্যর্থ:। সামিকৃতম অর্জভুক্তং
নেমিকৃতমিত্যত্র ন ভবতি অনাত্যন্তিকশু সামিশকাদিভিক্তস্থাৎ স্বয়ং
সামিকেনেতি তৎপুক্ষঃ। অর্জভুক্মিত্যাদৌ সপ্তম্যর্থ ইত্যেকে ইত্যনেন
অথবা বিশেষণসমাসোশ্বহন্ত্রীহিব্য়।

২২২। আচ্ছাদনে বৃহত্যাঃ।
আচ্ছাদনেশ্বর্ত্ত্যানাৎ বৃহতীশদাৎ স্বার্থে কো ভবতি। বৃহতিকা আচ্ছাদনবিশেষঃ প্রতায়ে কে২ণ্ ইতি হুস্থঃ নিত্যোহয়ং বিধিঃ জনভিধানশক্ত্যা।
জন্যত্র। বৃহতী ওষধিঃ।

২২৩। অভিনোপপদ্ধাবহুস্করাদেস্তরাৎ। আভিনাদেস্তরাৎ স্বার্থে কো ভবতি। অভিনতরমেব অভিনতরকম্উপ-পদ্মতরকং স্করতরকম।

২২৪। তৃষ্ণীমো মলুক্ চ শীলে।
তৃষ্ণীং শকাং শীলেহর্থে ক্রেডেবিড। মলুক্ চ। তৃষ্ণীংশীলং তৃষ্ণীকঃ
বহুলবচনাৎ প্রতায়ে কেহণ্ ইতি ন ব্রম্বঃ মকারস্থানুপ্রবন্ধা।

ই২৫। কাম্চ।

যোগবিভাগসামর্থ্যাৎ শীলে ইতি নামুবর্ত্তে। তৃক্ষীংশব্দাৎ কাম্ভবতি।

মলুক্চ। তৃক্ষীকাং তিষ্ঠতি।

২২৬। কুপায়াম্। কারুণোনাভ্যপপত্তিঃ পরস্ত রূপা তস্তাং গম্যমানারাং কো ভবতি। পুত্রকঃ বুভুক্ষিতকঃ জ্রিস্তকঃ।

২২৭। নীতে তদ্যুক্তাৎ।
তদিত্যনেন রুপায়া: পরামর্ধ:। নীতো গম্মানায়াং রুপাযুক্তাৎ কো
ভবতি। হস্ত তে গুড়কা: রুপাযুক্তো দানেনাখাসয়তি দানরূপাত্র নীতিগমতে। পূর্ব্বেণ প্রত্যাসভেরমুকল্পামানাং প্রত্যায় ব্যবহিতাদিপি যথা
ভাদিতি বচনম।

২২ দ। নৃনামো জাতেরিলেয়ে চ।

কপারাং নীতৌ বেতালুবর্ত্ততে। জাতিশব্দে। যো মনুষ্যনামধেরঃ

কবাৎ কপারাং নীতৌ চ গম্যমানারাং কো ভবতি। ইলেয়ে চ ভবভঃ।

ব্যাছো মাম কশ্চিৎ সোহসুকম্পিতঃ শিক্ষামাণো বা ন্যাছকঃ ব্যছিলঃ ব্যাছিয়ঃ সিংহকঃ সিংহিলঃ সিংহিয়ঃ।

২২৯। অজিনান্তাল্লুক্ চাজিনস্থ।

অজিনান্তার নাম উত্তরে রুপায়াং নীতৌ চ গম্মানায়াং কো ভবতি। ইলেয়ৌ চ। অজিনস্থ লুক্ চ। ব্যাঘ্রাজিননামা অমুকম্পিতঃ শিক্ষ্যাণো বা ব্যাঘ্রকঃ ব্যাদ্রিলঃ ব্যাদ্রিয়ঃ এবং রুফাজিনঃ রুফ্তকঃ রুফ্তিলঃ রুফ্তিয়ঃ।

২৩০। বহুরচ ইকশ্চ বা দ্বিস্বরাদূর্দ্ধমটি লুক্ পূর্ব্ব-পদস্য চ।

বহুবটো নুনায় উত্তরে কপায়াং নীতো চ গমামানাগ্রাম্ ইলেয়ে কশ্চ বা ভবতি। অচি পরে বিস্থৱাদ্র্দ্ধং লুগ্ভবতি। প্রেক্ষ পূল্পদশুচ লুক্ চ। অনুকম্পিতঃ শিক্ষামাণে। বা দেবদত্তো দেবিকঃ দেবিলঃ দেবিয়ঃ দত্তিশঃ দত্তিয়ঃ পক্ষে দেবদত্তকঃ। শোভনকর্মান্তকম্পিতঃ শিক্ষামাণে। বা শোভনকর্মান্তকম্পতঃ শিক্ষামাণে। বা শোভিকঃ শোভিগঃ শোভিয়ঃ কণ্মিকঃ কন্মিলঃ কন্মিয়ঃ পক্ষে শোভনকর্মার্কঃ। বহুবচ ইতি কিম্ ? দত্তকঃ।

২৩১। উপপূর্কাদডাকো চ।

উপপুর্বার্নায় উত্তরে রুণায়াং নীতৌ চ ইক ইল ইয় ইত্যেতে অড অক ইত্যেতী চ বা ভবতঃ। অচি পরে বিস্বরাদুদ্ধং বা লুক্ চ ওপেন্দ্রবভো-হন্কম্পিতঃ শিক্ষ্যমানে বা উপিকঃ উপিলঃ উপিয়ঃ উপডঃ উপকঃ পকে উপেন্দ্রকঃ। ভবতি হি কারণাদ্তিক্রম ইতি সন্ধিবিশ্লেষং কুত্বা লুক্।

২৩২। এচো দ্বিতীয়ত্বে তদাদেঃ।

বহুবচো নুনায় উত্তরে রুপায়াং ন'তে চ ইক ইলেয়ো চ বা স্থাতাম্। অচি পরে এচো ছিতীয়ত্বে সতি এজানেলুক্ চ ভবতি। প্রত্যয়াঃ পূর্কেণের সিদ্ধালুরহং বচনম্। কুবেরনভোহমুকম্পিতঃ শিক্ষ্যমাণো বা কুবিকঃ কুরিয়ঃ পক্ষে কুবেরদত্তকঃ। কহোড়োহমুকম্পিতঃ শিক্ষ্যমাণো বা কহিকঃ কহিলঃ কহিয়ঃ পক্ষে কহোড়দত্তকঃ।

২৩৩। চতু:স্বরপদপূর্ববাৎ তুর্য্যস্বরাদূর্দ্ধিম্।
চতুঃস্বরপদপূর্বার নাম উত্তরে কুপায়াং নীতৌ চ ইক ইলেয়ৌ চ বা

ভবতঃ। অচি পরে চতুঃস্বরপদাদ্র্নং লুক্ চ ভবতি। বৃহস্পতিদভোহমু-কম্পিতঃ শিক্ষশীণো বা বৃহস্পতিকঃ বৃহস্পতিলঃ বৃহস্পতিয়ঃ পক্ষে বৃহ-স্পতিবস্তকঃ বৃহস্পত্যাশীদ ত্যোহপি বৃহস্পতিকঃ চতুঃস্বরোহত্র বৃহস্পতি-শক্ষঃ।

২৩৪। একাচ্পূর্কাদনাদিপদস্য।

একাচ্পূর্বপদান্মর্যানায় উত্তরে রূপায়াং নীতে চ ইক ইলেয়ো চ বা ভবতঃ। অনাদিপদস্থাচি পরে লুক্ চ। বাগাশীদ জোহতুকম্পিতঃ শিক্ষ্যানা বা বাচিকঃ বাচিলঃ বাচিয়ঃ শেষোর্দ্ধাদিতি প্রদান্তবস্থাভাবঃ বড়ফালিদত্তোহসকম্পিতঃ শিক্ষ্যানাে বা ষড়িকঃ ষড়িলঃ বড়িয়ঃ অন্তব ঠিয়া
বিভক্তঃ সমাসাশ্র্যাং পদান্তবহে বর্গাদেবিত্যাদিনা টকারক্ত ডকরেঃ।
স্মচীত্যেব। বাগাশীদ ভকঃ বড়ঙ্গুলিদক্তকঃ।

२०१। वर्गामानारम्ह।

অর্থামাপ্তাদেঃ কুপায়াং নীতৌ চ ইক ইলেয়ৌ চ বা ভবতঃ। অচি পবে হনাদিপ নলুক্ চ । অর্থামদন্তোহত্তকম্পিতঃ শিক্ষামাণো বা অর্থামিকঃ অর্থামিলঃ অর্থামিলঃ অর্থামিন শবল স্থপবি বিশাল বরুণ বিশাপাদয়ঃ। অর্থামেন্দদত্তোহত্তকম্পিতঃ শিক্ষামাণো বা অর্থামিকঃ। অর্থামা শবল শৈচব বিশালঃ স্থপরিস্তাপা। বিশাপা বরুণাদিশ্চ বিজ্ঞাতা অর্থামাদয়ঃ॥

२७७। উগন্তাদেরিলক্সাদিলুক্ চ।

উগস্তাদেন্ নাম উত্তরে রুপায়াং নীতৌ চ ইক ইল ইয় ইত্যেতে বা ভবস্তি।
আচি পরেহনাদিপদশু ইল্ফাদিলুক্ চ। ভারুদ্রোহন্তুকম্পিতঃ শিক্ষামাণে
বা ভারুলঃ উগস্তাদিকস্থাদিলুকং বক্ষাতি ভাতুকঃ ভারুবিয়ঃ। কেচিদিয়
শ্রাদিলুকমিচ্ছস্তি ভাতুয়ঃ ভ্রাতৃলঃ ভ্রাতৃকঃ ভ্রাত্রিয়ঃ ভ্রাতৃয় ইতি কেচিং এবং
সবিতৃয় ইত্যাদি।

২৩৭। কে উত্তরপদস্য চ বা।

রূপায়াং নীতো চ বিহিতে কে পরে ন্নামঃ দম্বনিঃ পূর্ব্বপদশু উত্তরপদশু চ লুক্ চ বা ভবতি! দেবকঃ দত্তকঃ দেবদত্তকঃ ব্যাদ্রকঃ অজিনকঃ ব্যাদ্রাজিনকঃ।

২৩৮। অপ্রত্যায় চ।

প্রভারমস্তরেণাপি নূনায়ঃ পূর্ব্বোত্তরপদক্ষৈত্র ভীমঃ ভীমদে । দেখা দদ্ধং দেবদক্তঃ। বছলাধিকারাৎ কচিত্ত্তরপদক্ষৈত্র ভীমঃ ভীমদে । সভ্যা সভ্যা কচিৎ পূর্বেপদক্ষৈত্র হরিঃ ভর্তৃহরিঃ।

২৩৯। পাশো নিন্দ্য।

নিন্দ্যে বর্ত্তমানাৎ পাশো ভবতি। যেন প্রবৃত্তিনিমিন্তেন শব্দশ্র বৃত্তিরকৈব নিন্দায়াং প্রত্যয়ং তদর্থপ্রতীতেঃ সন্নিহিততাৎ। বৈয়াকরণপাশঃ পাঠক-পাশঃ। যো বৈয়াকরণশাস্ত্রে প্রবীণঃ প্রকারাম্ভরেণ নিন্দ্যঃ তত্ত্ব ভ ভবতি। তত্তাপি ভবতীতি রক্ষম্পাশানিতি ভট্টিকাব্যে প্রয়োগদর্শনাই লক্ষ্যতে।

২৪০। অফিমাদ্রাগে ণো বা।

অন্তমশ্লাদ্ভাগে বর্ত্তমানাৎ গো বা ভবতি। অন্তমো ভাগঃ আন্তমঃ অন্তমঃ।

२८४। वर्ष्ठाष्ठ।

ষষ্ঠশকান্তাগে বর্ত্তমানাৎ গো বা ভবলি। বঞ্চো ভাগঃ বাষ্ঠঃ বষ্ঠাঃ যোগ-বিভাগঃ উত্তরার্থঃ।

২৪২। মানে ক×চ।

ষ্ঠশকামানরূপে ভাগে বর্তুমানাৎ কো পশ্চ বা স্থাৎ। ষ্ঠকঃ ষ্ঠাঃ ব্ঠঃ।

২৪৩। একাদাকিন্ চাসহায়ে।

অসহায়ে বর্ত্তমানাৎ একশব্দাৎ ক আকিন্ ইড্যেতো বা ভবত:। একাকী একক: এক:। শতমেকাকিনো যান্তি অসহায়া ইত্যর্থ:। অসহায়বচনং সংখ্যাবাচিনিরাসার্থম্।

২৪৪। চরট্ প্রাগ্ভূতে।

প্রাগ্ভূতেহর্থে বর্ত্তমানাং চরট্প্রতায়ো ভৰতি। আচ্যোহয়ং প্রাগ্ভূতঃ আচ্যেচরঃ দর্শনীয়চরী। সর্বথাতীতত্বমত্রার্থঃ প্রাগ্গ্রহণাদ্যত্র ভূতস্ত বর্ত্ত-মানতা তত্র ন ভবতি। ঈশ্বীভূতঃ।

২৪৫। রূপ্যশ্চ তস্থা।

প্রাগ্ভূত ইতান্থবর্ততে। তত্তেতানেন যন্মাৎ প্রতায়ন্তস্য পরামর্য:। তৎ-সম্বন্ধিনি প্রাগ্ভূতে বাচ্যে চরট্ স্যাৎ রপ্যশ্চ। বিপ্রস্য প্রাগ্ভূতো গৌঃ বিপ্রশাঃ বিপ্ররপ্যঃ।

২৪৬। রূপস্ততো তিওশ্চ।

স্তুভি: প্রশংসা প্রকৃতিবিশেষণকৈতং। স্তুভিবিশিষ্টেহর্থে বর্ত্তমানাং নামস্থি-ভন্তাচ্চ রূপো ভবভি। অনুপাত্তার্থবিশেষাঃ প্রভাষাঃ প্রকৃত্যর্থং বিশেষমন্তি অতঃ প্রকৃত্যর্থ স্যৈব যে শিঙ্গবচনে তে জন্সাপি ভবতঃ। প্রশস্তঃ শান্দিকঃ শান্দিকরূপঃ ব্যলরূপঃ ক্রৌররূপঃ ইত্যাদাবপি রুষণত্বস্তু চৌরত্তস্য পরিপূর্ণত্বেন স্তুভিরস্ত্রের। পচ্ভিরূপং পচভোরূপং পচন্তিরূপম্। আখ্যাজন্ত যন্ত্রপি ক্রিয়াসাধনক্রেচাভয়ং বাচাং তথাপি মুখ্যত্বাং ক্রিয়ের প্রধানমর্থঃ যন্চ প্রধানং প্রকৃত্যর্থস্তিক্তিব শিঙ্গবচনে স্থার্থিকৈরমূবর্ত্ততে ক্রিয়া স্কৈকা অতো রূপান্তাৎ দ্বিচনবছবচনে লভবতঃ ক্রিয়াবিশেষণত্বাৎ ক্রীবত্তমপি ভবতি পচতঃ শীচন্তা-ভাত্র, তু দ্বিচনবছবচনে সাধনস্যানেকত্বান্তবত এব।

২৪৭। মনাগুনে কল্পদেশীয়াঃ।

কিঞ্চিদ্নে বর্ত্তমানারামন্তিঙ্গ করদেশ্রদেশীয়াঃ স্থাঃ। শুড়কয়ঃ কিঞ্চিদ্নপ্রবৃত্তিনিমিত্তা শুড় উচাতে। শুড়কয়৷ দ্রাক্ষেত্যত তু দ্রাক্ষায়ামারোপিতশ্র
শুড়বস্য কিঞ্চিদ্নত্বমিত্যার্থিকস্বার্থিকাঃ কিচিৎ প্রকৃতিতাে লিঙ্গবচনাশ্রতিক্রম্য বর্ত্তহেপীতি স্ত্রীলিঙ্গতা অতএব বৎকয়ঃ পচসি ত্বৎকয়ো দেবদত্তঃ
পচতীতি রূপদ্মং তিঙ্কপাদে ব্যবস্থিতম্। পটুদেশ্যঃ পটুদেশীয়ঃ পচ্তিকয়ং
কিঞ্চিদ্না পাকক্রিয়েত্যর্থঃ।

২৪৮। বহুঃ পুরস্তানালঃ।

মনাগৃনে বর্ত্তমানায়ায়ঃ পুরস্তাৎ বহুর্ভবিভি। নামাধিকারেহিপি নায় ইতি কৃতং তিঙাইতানমূর্ত্তার্থম্। পঞ্চমী চ তহুত্তরে ইতি ব্যবস্থাবাধনার্থং পুরস্তাদিতি কৃতম্। বহুপট্টং বহুত্বধণং নরঃ বহুতৈলং প্রসন্থা বহু-শুদো দ্রান্ধা। স্বার্থিকানাং প্রকৃতিলিঙ্গানুবর্ত্তমানস্থাৎ প্রকৃতিলিঙ্গতা। অথবা স্বভাবাদয়ং প্রকৃতিলিঙ্গং নাতিক্রম্য বর্ত্ততে ন হি স্বভাবব্যতি-রিক্রো লিঙ্গব্যবস্থাহেতুরস্তি তথাচোক্রং লিঙ্গমশিয়াং লোকাপ্রস্থাৎ লিঙ্গম্য। নম্থ বহু দদাতি বহু করোতীত্যাদৌ কিঞ্চিদ্নার্থো বহুশব্দো বিদ্যত এব তেন চ সমাসেন সিদ্ধস্থাৎ কিং লক্ষণেন তদসৎ গর্ত্তোত্তর-পদাদ্দেশাদ্দিতীয়প্রত্যয়েন বহুগন্তীয় ইত্যেব স্থাৎ নতু টণা বাহুগর্ত্তঃ বহুপত্যেতি সমাসে সথিবস্থাভাবান্নাদেশনিবেধাে ন স্থাৎ বহুরাজা বহুগোঃ বহুপত্থা ইত্যাদৌ সমাসান্তঃ উঃ স্থাৎ বহুস্পিশাত্রমিত্যাদৌ

উত্তরপদস্থাৎ কম্বাদিখং ন স্থাৎ এবং চাক্রাণামপি প্রস্তাধ্যানং নিরস্তম্।

২৪৯। রঃ কুটীশমীশুণ্ডাভ্যোহল্পত্বে। এভ্যোহল্লত্বে গমামানে রঃ স্থাৎ। কুটীরঃ শমীরঃ ওঞারঃ গুণ্ডা মদিরাস্থানম্।

২৫০। কুত্বা ডুপঃ।

কুতৃশব্দানলবে ডুপো ভবতি। কুতুপঃ চর্ম্ময়ং স্নেহভাজনম্।

🗣 ২৫১। দ্বিহুভ্যোহত্যর্থে তরতমো।

ভাতার্থাহিতিশয়: প্রকর্ষ ইতি পর্যায়: । দ্বিবছভা ইতি ক্চিৎ পঞ্চমী চেতি পুণক্করণে পঞ্চমী । দ্বোবেক্স্যাতিশয়ে ইতার্থে নামস্তিঙ্গণ্ড তরো ভবি । বহনাং তম: । অতিশয়ণ্ড সমানরূপাপেক্ষ এব ভবতি । দ্বাবিমৌ পাচকৌ বনোরয়মতিশয়েন পাচকঃ পাচক্তরং । সকে ইমে শুক্লাং অয়মেবামতিশয়েন শুক্লং শুক্লতমং । মথুবা পাটলিপুত্রেভাং আঢ়াতরা ইতারাপি পব-প্রেমশুপ্রধারণায়াং দ্রোরেক্স প্রকর্ষঃ ভেরতিনস্ক অবয়বাপেক্ষ্ । পক্ষয়ং পট্রাসীৎ পট্টতরগৈচ্যতম ইত্যাদাববস্থাভেদেন পৃথক্তম্ । জাভিদ্রবায়োঃ প্রকর্ষাভাবাং গোতরো ডিথতম ইতি ন ভবতি । ম্বাত্রাপি ক্রিয়াগুণপ্রকর্মো বিক্ষাতে তদা তরতমাভ্যাং ভবিতবামের । নতু প্রতায়স্থ স্বার্থিকত্বে কুমারিতরা শবলিতরা ব্রাহ্মণিতরা ইত্যত্র বয়স্পচরমে বর্ণাদক্ষাত্রান্ত জাতের-স্থীনিয়ভাদবোপাস্থাণিতি ঈপ্রতায়ঃ কুতো ন ভবতি । উচাতে । রুটা যে ব্রোব্রনা বর্ণবিচনা জাতিবচনাশ্চ তেভা এব ঈপ্রতায়ঃ নতু তবতমাস্থাদরো বয়ঃ প্রত্তিমু রুটাং । অত্যর্থপ্রতায়স্থাদিপি পুনরতিশ্রেহর্থে সরূপপ্রতারো নেমতে বিরূপন্ধিয়ত এব । যুধিষ্ঠিয়ঃ শ্রেষ্ঠতমঃ কুরুণাং অত্যে তু দ্বিত্বহুছে অনক্ষীকৃত্য প্রকর্ষমাত্রে প্রতায়া ন মন্তত্তে ।

২৫২। কিনেদন্তাব্যয়তিওন্তদন্তাদামদ্রব্যে তদব্যয়ম্।
কিম্শলাদেদন্তাদব্যয়াং তিঙক তরতমান্তাং অদ্রব্যবিষয়ে বর্তমানাং
আম্ ভবতি। তচ্চাব্যয়ম্। তদ্ধিতবদাদিপ্রকরণবাতিরিক্তবাং অব্যবং ন প্রাধ্যোত্যতোহব্যয়বিধান। ইদক্ষ কিংম্ ইদক্ষ কিং ইদ্মন্যো-

রতিশরেন কিং কিন্তরাং কিন্তমাং যদ্যপি কিংশন্ধ: প্রশ্নে তথাপি ন প্রশ্নপ্রকর্মে প্রত্যয়: কিং তহি পিচ্ছামানস্ত গুণস্ত ক্রিয়ায়া বা প্রকর্মে তরাদ্যন্তে
অত্যন্তপ্রচ্ছামানপ্রকর্মস্তবাবগন্যমানত্বাৎ পূর্ব্বাহ্নেতরাং পূর্ব্বাহ্নেতমাং কালবাচিন ইত্যাদিনা অনুধিধানাৎ স্ববন্তাদিপি তদ্ধিত: কালব্যতিরিক্তস্ত একারান্তস্তাভাবাৎ কালস্ত ক্রব্যবাচিত্বেহপি ন নিষেধঃ। উচ্চৈন্তরাং প্রতরাং
নিতরাং স্কতরাং পচতিতরাম্। অদ্রব্য ইতি কিম্ ? উচ্চেন্তরন্তরকঃ।
ফলাপি দ্রব্যে প্রকর্মেণ নান্তি তথাপি ক্রিয়াগুণস্থ: প্রকর্মো ফল দ্রব্যে আরোপ্রাত্ত তলায়ং প্রতিবেধঃ।

२৫७। खनामीयिष्ठि वा।

অত্যর্থ ইতাত্বর্ততে। গুণবাচকশনাৎ দ্বয়োরেকস্থ প্রকর্ষে স্বয়স্থ্বা ভবতি। বহুনামিষ্ঠঃ। পটীয়ান্ পটিষ্ঠঃ অনেকাচ ইমেষ্ঠেয়সাবৃতশ্চেতি উকারলুক্। পক্ষে পটুতবঃ পটুতমঃ। গুণাদিতি কিম্ ? পাচকতরঃ পাচকতমঃ।

২৫৪। নাত শ্রেশ ।

যে স্বাতস্থ্যোগাপি অভিধীয়ন্তে তেহত প্রো:। অতংস্থাং গুণাদীয়ন্ত্রিটো ন
ভবত:। শুক্লতর: শুক্লতম: শুক্লাদরো হি স্বাতস্ত্রোণাপ্যভিধীয়ন্তে পট্স শুক্ল ইতি নতু পট্যদরঃ নহি ভবতি দেবদত্তস্থ পটুরিতি।

২৫৫। মতুবিন্ভ্যাং তল্লুক্ চ।

মতুবিনভ্যাং প্রত্যয়াভ্যামৃত্তরে দ্বোরেকস্ত প্রকর্ষে ঈয়সুর্বা স্তাৎ। বহুনামিঠঃ। তৎসন্নিয়োগে মতুবিনোলুক্ চ। অগুণার্থং বচনং লুগর্যঞ্।
অয়মনয়োরত্যর্থেন বস্তমান্ বসীয়ান্ অয়মেষু বসিষ্ঠঃ অয়মনয়োঃ অয়ী
অজীয়ান্ অয়মেষু প্রজিষ্ঠঃ পক্ষে বস্তমন্তরঃ বস্তমন্তরঃ।

২৫৬। প্রকারবতি জাতীয়ঃ।
সামাগ্রভেদকে। ধর্ম: প্রকার: দ চ দ্রব্যাদ্রিতঃ পটুম্বাদিঃ। প্রকারবতি
বর্ত্তমানাক্রান্ধো জাতীয়ো ভবতি। পটুম্বাতীয়ঃ থাপ্রত্যয়ঃ প্রকারে অয়ং
প্রকারবতি ইতি বিষয়ভেদাৎ তজ্জাতীয় ইত্যত্র থাপ্রত্যয়েনাস্থ বাধা ন
ভবতি অত্তব্র প্রকারবাচকাৎ তথাশকাৎ তৎপ্রকারবতি জাতীয়োহপি
ভবতি। তথাজাতীয় ইতি।

২৫৭। স্থ্লাদেঃ কঃ। স্লাদেকতকে তৎপ্ৰকাৰণতি বাচ্যে কে ভণতি। জাতীয়ত বাধকঃ। স্থূলকো মণিঃ বংশিদ্ধুবংকান্তিকত্বাৎ অচলন্নপি চলনিব লক্ষ্যতে স চলৎকঃ
এবং প্রভামগুলযোগাৎ অবৃহর্গি বৃহন্ধিৰ লক্ষ্যতে স বৃহৎক ইতি সাদৃশুমেব
প্রকারার্থং ব্যাচক্ষ্যতে । স্থূল অনু মাস ইক্ষ্ চঞ্চু চঞ্চৎ চলৎ বৃহৎ কুমারী
প্রকুমারী শশুর পুঞ্জ মূল পত্রমূল হল বাটা। কাল । স্থূলচঞ্চচলৎকালাঃ
পত্রমূলবৃহদ্ধলাঃ । কুমারীপুঞ্জমায়েক্ষ্কুমারীশ্বশুর্শেবঃ । চঞ্বাট্যাদয়ে।
ভেয়াঃ স্থলাদ্য ইমে মতাঃ ॥

২৫৮। অবদাতাৎ স্থরায়াম্। ক: স্থাং। অবদানিকা স্থরা।

২৫৯। বাট্যাকালাবদাতাৎ স্থরায়ামিতি কেচিৎ। বাট্যকা কালিকা অবদাতিকা স্থরা।

২৬০। কৃষ্ণাতিলেযু।

कः मा९। द्रुखश्रकात्रवर्गास्त्रिनाः कृष्किकाः।

२७४। यवानुबोदशी।

কঃ স্থাৎ। যবকো ব্রীহিঃ।

২৬২। গোমৃত্রাদাচ্ছাদনে।

কঃ স্থাৎ। গোমূত্রপ্রকারমাছোদনং গোমূত্রকম্। জ্জাপি সাদৃখ্যমেব প্রতীয়তে।

२७७। जोर्गाष्ट्रानियु।

প্রকারে কঃ স্যাৎ। জীর্ণপ্রকারাঃ শালয়ঃ জীর্ণকাঃ।

২৬৪। স্থরায়ান্তদর্শেহহো।

কঃ স্যাৎ। স্থরাবর্ণপ্রকারোহহিঃ স্থরাকঃ।

২৬৫। দ্বিত্রিভ্যাং ধণ্। ত্রেধং ক্রেধে ব্রুনাং বচনঃ ধন্ন্যাং। ক্রেধং ক্রেধে ব্রুনাং বচনঃ ধন্ন্য হৈধমিতি মান্তমব্যয়ম্।

২৬৬। ক্রিয়াগুণসংজ্ঞাভিদ্ধ য়োরেকস্থ পৃথকারে তরো বা তদাদেঃ। ক্রিয়া গুণেন সংজ্ঞা বা দ্যোরেকস্থ পৃথককরণে গম্যমানে তদাদে-

কভবে তরো, বা, স্যাৎ। ততরো ভবতো: পাচক:। ততরো ভবতেঃ

পট্:। ততরো ভবতোদে বিদ্যান্ত । যতরঃ কতরঃ এক ক্রিপ্রাক্তিক স ভবতোঃ পাচক ইত্যাদি ⊭

২৬৭। বহুনাং জাত্য তুমঃ।

বহুনাং জাত্যা পৃথক্করণে তমো বা ভবতি। ততমো ভবতাং কঠঃ। যতমঃ একতম:। পক্ষে স ভবতাুং কঠঃ। জাত্যেতি কিম্? কো ভবতাং দেবদত্তঃ।

২৬৮। কিমস্তরশ্চ।

বহুনাং জাতা। পুথকরণে কিম ইত্যন্থাৎ তর্ত্তমূশ্র বা ভবতি। কতমো ভবতাং কঠঃ। কতরো ভবতাং কঠঃ কো বা।

২৬৯। ইদমস্তরো দম্লোপশ্চান্তার্থে। অন্তার্থে বাচ্যে ইদম উত্তরে তরো তবতি। দম্লোপশ্চ। তরগ্রহণং তমান্তব্তিশঙ্কানিরাসার্থম্। ইতরঃ অন্ত ইত্যর্থঃ।

২৭০। অন্তাচ্চ।

অক্সাজার্নে তবো ভবতি। অক্সতরঃ। অন্যার্থান্সবৃত্তিরক্সতরানায়োঃ স্মানার্থতাস্ক্রনায়।

২৭১। কাস্গোণেরারয়ত্বে তরট্। কাফগোণোরয়ত্বে গমো এতাভাামৢত্বে তরজ্ভবতি। অলার্থে বিহিত্ত কভাপবাদঃ। কাফ্ভরী গোণীভরী কাফঃ শক্রিরায়ুধবিশেষঃ।

२१२। व<मान्नानागृरकः।

বাল্যেন মুক্তে বাচ্যে বৎসাত্ত্তরে তর্ত্ ভবতি। বংসতবং মুক্তবালাঃ প্রাপ্তযৌবনো বৎস উচাতে।

২৭৩। উদ্ধ হারুণামুক্তে।

তারুণোন মৃক্তে বাচ্যে উক্ষন্তরট্ স্থাৎ। উক্ষতরস্তাক্তযৌদনঃ প্রাপ্তিতীয়-বয়া উক্ষোচ্যতে।

২৭৪। অশ্বাদ্যদিভজাতে।

গর্মভঙ্গাতে বাচ্যে অখশকাত্ত্রে তর্ড্ ভবতি। অখতর: অখজাতৌ গর্মভেন জাত উচ্যতে।

২৭৫। ৠষভাদ্যারবহনাশক্তে। ঋষভশকাদ্যারবহনাশক্তে বাচ্যে তর্ড্ ভ্রতি। ঋষভ্তরঃ। ২৭৬। বত্তে ইয়েণ্ তৎসাদৃশ্যে। বন্তিশব্দাৎ তংসাদৃশ্যে বাচ্যে টেয়ণ্ ভবতি। বন্তিরিব বাস্থেয়:।

२११। शिलाशारखेशका

তৎসাদৃশ্যে বাচ্যে শিলাশব্দাৎ টেয়ণ্ টেয়ণ্চ স্থাৎ। শিলেব শৈলেয়ং শিলেয়য়।

२१४। भाषारमर्घः ।

শাথাদেস্তৎসাদৃশ্রে বাচ্যে যো ভবতি। শাথেব শাখ্যম্। শাশ্ মুথ জ্ঞগ্র জ্বন স্কর্ম চর্ম দ্বান উরদ্শরণ শৃঙ্গ মেঘ বিরদ। (শাথাশৃঙ্গৌ, মুথস্কন্ধৌ জ্বনাগ্রে উরস্তথা। চরণং শরণং মেঘো বিরদণ্চ মতো বুইধঃ।)

২৭৯। দ্রোর্ভব্যে।

ক্রশকাত্তৎসাদৃশ্যে ভব্যে বাচ্যে যঃ স্থাৎ। ক্ররিব দ্রব্যমসৌ পুরুষঃ স্বভাবান্বয় নপুংসকলিঙ্গঃ যথা ক্রমঃ ফলাদিভিরর্থিনঃ প্রীণাতি তথায়মপি সহিত্তব্যো ভবতি। আত্মগুণসম্পন্নেগপি দ্রব্যমুচ্চতে। দ্রব্যং হি ক্রিয়াং বিনয়তি নাদ্রব্যমিতি হিরণ্যাদিকমপি দ্রব্যং পুরুষার্থসাধকত্বাৎ।

২৮০। কুশাগ্রাদেরীয়ঃ।

কুশাগ্রাদেন্তংসাদৃশ্যে বাচ্যে ঈয়ো ভবতি। কুশাগ্রমিব স্ক্রম্মাৎ তীক্ষমান্ত কুশাগ্রীয়া বৃদ্ধিঃ। অর্জন্ধ তীশকোহর্মজন্ম নানে বর্তুতে তছদিন্ট বিষ্টিম্বাৎ অর্মজন্ম কাকতালশকঃ কাকস্তা গমনে এব তালস্তা পতন এব কাকম্মরণে বর্তুতে তম্বদাকস্মিকং সম্প্রতং কাকতালীয়ম্ এবং ঘুণাক্ষরীয়ম্ অজাক্রপাণীয়ম্ অন্ধন্তীয়ং খনতিবিলীয়মিত্যানি কাকতালানিশকানাঞ্চার্থবিশেষসমাসোহস্মাদেব গণপাঠাৎ।

२৮)। भर्कत्रादम्खेन्।

শর্করাদেস্তৎসাদৃশ্রে বাচ্যে টণ্ স্থাৎ। শর্করের শার্করম্। শর্করা কপালিকা পুগুরীক শতপত্র গোলোমিন্ নকুল দিকতা গোপুছে রূপাটকা
নারাচ। (শর্করা পুগুরীকে চ দিকতা নকুলস্তথা। গোলোমশতপত্রঞা
গোপুছেশ্চ কপালিকা। রূপাটিকা চ নারাচঃ শর্করাদিরদ্যো মতঃ।)

२७२ । जः मश्राः।

সপত্মশব্দাৎ সামৃশ্রে বাচ্যে অপ্রত্যয়ো ভবতি। সপত্মীর সপত্রং প্রতিপক্ষ উচ্যতে।

२४०। अन्नुनार्तिष्टिकन्।

তৎসাদৃশ্যে বাচ্যে অঙ্গুল্যাদেকত্তরে টিকণ্ ভবতি। অঙ্গুলিরিব আঙ্গুলিকঃ। অঙ্গুলি ভরুজ শঙ্গুলী কুলিশ উরস্ বর্ণ বক্র হরি মূনি কপিশ মণ্ডপ গোণী থল চক উদ্ধিৎ। (অঙ্গুল্যুন্ধিদ্রক্তবর্ণকুলিশমণ্ডপাঃ। শঙ্গুলীবক্রকপিশা গোণীমুন্যুরসো হরিঃ। খলশ্চকরিমে পৃঞ্চশাঙ্গুল্যাদ্যঃ স্বাঃ॥)

২৮৪। **একশালায়া ইক*চ।** ঐকশালিকঃ একশালিকঃ।

২৮৫। কর্কলোহিতাভ্যামীকণ্।

আভ্যাং তৎসাদৃশ্যে বাচ্যে ঈকণ্ ভবতি। কার্কীকঃ শুক্লাশ্বসদৃশঃ লৌহিতীকঃ স্বয়মলোহিতঃ স্ফটিকানিরাশ্রয়বশালোহিতোহবভাসতে যঃ স এবোচাতে।

२৮७। পুनाश्चारभूशापुर्वताए।

তৎসাদৃশ্যার্থো নির্ত্ত:। নানাজাতীয়া অনিরতর্ত্তযো ধর্মকাম প্রধানাঃ সভাঃ পৃগাঃ। তদাচিনঃ শব্দাৎ অম্থ্যপূর্ রাগ্নো ভবতি। অনির্দিষ্টার্থাঃ
প্রতায়াঃ স্বার্থে বিধীয়ন্তে। লোহধ্বজশ্বাৎ লোহধ্বজ্যঃ শিবিশ্বাৎ শৈবাঃ অদিল্ল, গিত্যকারেকাবয়োল্ ক্। মৃথ্যপূর্বাত্ত্ব দেবদত্তো মুথ্যোহস্থ দেবদত্তকো লোকঃ স এবাং মুথ্য ইতি কঃ। অত্র দেবদত্তশব্দো মুথ্যবাচকোহস্থ শব্দস্থ পূর্বাব্যুব ইতি ন ভবতি প্রতায়ঃ।

২৮৭। ব্রাতবাচ্যাদ স্তিয়াম্।

নানাজাতীয়া অনিয়তবৃত্তয়ঃ উৎসবজীবিনঃ সঙ্গাঃ ব্রাতশকেনোচাস্তে। এভ্যোহস্বিয়াং ণ্যো ভবতি কপোতপাকশব্দাৎ কাপোতপাক্যঃ বৈহি--মত্যঃ। দ্বিয়াস্ত। কপোতপাকা।

২৮৮। বাহীকেষত্রাহ্মণাদরাজন্তাচ্ছস্ত্রোপজীবিদং-ঘাট্যণ্।

ৰাহীকেযু শক্ষোপজীবিনাং দজ্যাতশু বাচকাৎ শকাৎ বান্ধণজাতিৰজি তাৎ

রাজ্যশক্ষবজি তাচ টাণ্ ভবতি। ব্রাহ্মণ ইতি জাতিগ্রহণং রাজ্য ইতি স্বরূপগ্রহণম্ অয়মাচার্যান্তাভিপ্রায়ো নিষেধ্বয়করণাদবগন্তব্দু। টিঅমী-বিধানার্থম্ অতএবাস্তিয়ামিত্যত্র নামূবর্ততে। কৌজীবৃষশকাৎ কৌতীবৃষ্যঃ ক্ষৌদ্রকাঃ মালবাঃ। বাহীকেম্বিতি কিম্? পুলিন্দঃ শবরঃ। অব্রাহ্মণা-দিতি কিম্? শালক্ষারনঃ অরাজ্যাদিতি কিম্? রাজ্যুঃ টাণি সতি স্তিয়ামী-প্রতায় তাং। অশক্ষজীবিনাস্ত্র। মল্লঃ। সজ্য গ্রহণং কিমর্থং বক্রো ঘোণঃ।

২৮৯। বুকাট্টেম্বণ্।

বৃকশব্দাৎ শস্ত্রোপজীবিম ক্ষবাচকাট্টেগ্রণ্ ভবতি। বার্কেণ্যঃ। শক্ত্রোপ-জীবিসংঘাদিত্যেব। জাতিশব্দান্দাভূং। কামক্রোধৌ মন্ম্যাণাং খাদি-তারৌ বুকাবিব।

२৯०। मामनार्मितीयः।

শস্ত্রোপজীবিসজ্বোচকাৎ দামন্তাদেরীয়ো ভবতি। দামনীয়ঃ। দামনি উলপি বৈজবাপি সৌপাদি ঔদকি ঔষধি আবিদন্তি কাকন্দকি সার্বসেনি বৈদবি শাক্স্তকি মৌঞ্জায়ন সাবিত্রীপুত্র। (দামনিণ্চ সৌপাদিশ্চ সার্বসেনিণ্চ বৈদ্বিঃ। কাকন্দক্যাবিদন্তী চ সাবিত্রীপুত্র ওরধিঃ। শাবু স্তক্যোল-পিবৈজবাপী মৌঞ্জায়ন স্তথা। দামন্তাদির্যত াসে ছাদ্বৈশতে বিচক্ষণৈঃ।)

২৯১। কৌগ্রেগনেস্ত্রিগর্ভেরু।

ত্রিগর্ত্তেষ্ এভাঃ শস্ত্রোপজাবিসংঘবাচকেভা ঈয়ে। ভবতি। কৌণ্ডোপরগাঁয়ঃ
ত্রিগর্তেদিতি কিম্? কোণ্ডোপরথাঃ পুগাদিত্যাদিনা ণ্য এব ভবতি।
কৌণ্ডোপরথ দাওকি ক্রোষ্ট্রকি কাল্মাসি জালমাসি ব্রাহ্মণগুপ্ত জানকি।

२৯२। পর্যাদিযৌধেয়াদিভ্যফীণ্ণটাবস্ত্রিয়াম্।

এভাঃ শক্ষোপজাবিদ লবাচকেভ্যোহন্তিয়াং যথাক্রমং টণ্ণটো স্থাতাম্।
পার্মবঃ যৌধেয়ঃ। স্তিয়াস্ত । পশৃঃ। শক্ষোপজীবিদ লাদিভাব ।
অস্বঃ পশৃ অস্বর বাহীক রক্ষদ্ বস্থ বয়দ্ মরুৎ দলহ পিশাচ
অশনি কার্মাপণ। (পশ্বস্থরো দশাহ শ্চ বাহীক শ্চাশনির্বস্থ । বয়ো
মক্রৎ পিশাচন্চ সত্ত্ব কার্মাপণং তথা। রক্ষণ্ট ছাদ শৈবেতি পশ্বাদিঃ
ক্থিতো বুধৈঃ॥) যৌধের যৌক্রেয় শৌক্রেয় আর্তের ক্ষারণেয় ত্রিগর্ত

ভবং উশীনর। (বোধের: ক্ষারণেরশ্চ বৌক্রেয়োশীনরৌ ভবং। ত্রিগর্তা-র্ত্তেরশোভ্রেয়া ক্ষেয়োদিগণো মতঃ।) সবচ্ছকো মতুপ্রত্যমাস্তো বেদিতব্যঃ।

২৯৩। ণ্যাদীনাং বহুষু লুক্।

ग টাণু টেক্সণ্ ঈয় টণ্ ণট্ ইত্যেতেষামনস্তর্বিহিতানাং বহুষু অন্তিয়াং
লুগ্ ভবতি। লোহধ্বুজাঃ কপোতপাকাঃ কৌগুরষাঃ রকাঃ দামনয়ঃ
কৌগুলপরথাঃ। পশূ শব্দো হুহুশব্দবং পর্যাঃ ত্রিগর্তাঃ। অন্তিয়ামিত্যেব।
লোহধ্বজা ব্রেয়ঃ কৌগুরুষাঃ দামনীয়াঃ।

২৯৪। অভিজিদাদেরপত্যটণন্তাদ্যপু্চ।

অভিজিদাদেরপত্যটণন্তাদ্যণ্ স্যাৎ। তহ্য যণো বছষদ্রিয়াং লুগ্ভবতি।

অভিজিতোহপত্যং আভিজিতঃ স এবাভিজিত্যঃ অদিল গিতাকারলুক বহুছে
আভিজিতাঃ। অভিজিৎ বেদভ্ৎ শালাবৎ শর্মং শিখাবৎ শমীবৎ উর্ণাবৎ

শমৎ। অপত্যপ্রহণং কিম্ ? অভিজিদেবতা অহ্য আভিজিতাঃ স্থালীপাকঃ তদৈবত ইতি টণ্ স্বার্থিকজেনাস্যু যণোহপত্যার্থছাৎ পৌল্রাদিযণিপত্তাচেতি পায়নেন আভিজিতাস্যাপত্যং আভিজিতায়নঃ। অদ্বিয়ায়িত্যেব। আভিজিতঃ দ্রিয়ঃ ছলন্তজিতসোতি যলুক্ দ্রিয়াং প্যায়নো বেভি
পায়নে ক্তে আভিজিতায়নঃ লুকি সতি টণন্তাদীপ্রতায়েন আভিজিতা
ইতি সিধ্যতি কিং লুগ্নিষেধেনেতি ন বাচাং লুকি সতি আভিজিতীনাং
য়ত্বঃ আভিজিত ইত্যত্র ণড়িণ্ ষণস্তাৎ সংঘাদ্ধগোষলক্ষণেদ্বিতি টণ্ ন

২৯৫। শীতে ক্ষিতৃপ্তাদালুস্তন্ন সহতে। এভা আলুর্ভবতি তন্নসহত ইতার্থে। শীতালুঃ উষ্ণালুঃ তৃপ্তালুঃ।

২৯৬। হিমাদেলুস্তৎ সহতে। হিমাত্তং সহতে ইতার্থে এলুক্তবতি। হিমেলু:।

স্যাৎ ক্লান্তিপাদেত্যাদিনা অকণের স্যাৎ।

২৯৭। বলবাতাভ্যামূলঃ। আভ্যাং তংসহতেহর্থে উলো ভবতি। বদুলঃ বাতৃলঃ। জয়াদিতাত্বাহ এতাবপি প্রতায়ৌ তম সহতে ইতার্থ এব স্থাতাম্।

২৯৮। আদ্ধাত্তদদ্যানেন ভুক্তমিকঃ। আদ্ধান্ধাণ আদ্ধান্মিন্ দিবদেখনেন ভুক্তমিতার্থে ইকো ভবতি। আদ্ধাননে- নাণ্যভুক্তং প্রান্ধিকঃ অদ্যগ্রহণাৎ খো ভুক্তে আদ্ধে আদ্ধং ভুক্তমনেনেত্যধেঁ ৰা প্রাদ্ধিক ইতি ন স্থাৎ।

२৯৯। हेन्।

শ্রাদশকান্তদদ্যানেন ভূক্তমিত্যর্থে ইন্ স্যাৎ। প্রাদ্ধী। যোগবিভাগ উত্ত-রত্র ইন্ এবামুর্ত্তার্থঃ।

৩০০। ইন্টাদেরিফ্রমনেনেত্রাদে।।

ইষ্টাদেরিষ্টমনেনেতার্থে ইন্ স্যাৎ। ইষ্টমনেন ইষ্টা যজে অব্যবহিতেনাক্তন কর্ম্মণ ইতি সপ্রমী। পূর্ত্তমনেন পূর্ক্তী। ইষ্টং পূর্ত্তং নিগদিতং পরিগদিতং নিক্থিতং নিপঠিতং উপপঠিতং সঙ্কলিতং সংরক্ষিতং গলিতং অর্চিতং সাতম্। (পরিরক্ষিতপরিকলিতাবকীর্ণমাযুক্তনিগৃহীতম্। আসেবিতা-বধাবিতনিরাক্কতোপাক্কতক্রতোপকৃতম্। অবক্লিতং নিযুক্তং ব্যাকুলিতং চাত্ত্তণিতমন্থপঠিতম্। উপসাদিতোদ্গৃহীতং পরিগণিতং নিযাদিতাবীতম্।)

৩০১। কুতপুর্কাদেশ্ট।

ইন্ স্যাং। রুতং পূর্ব্বমনেন রুতপূর্বী কটং অন্তেভ্য: পূর্ব্বমনেন কট: রুতঃ পশ্চাদতৈরিত্যর্থঃ। ভুক্তপূর্বী ওদনং ক্তপ্রত্যয়েন ভাবঃ কর্ম সামান্তং চোক্তং নতু কট: অতোহমুক্তথাৎ ছিতীরা কচিদ্প্রতাপীতি তৎপুরুষং রুষা প্রতায়ঃ।

৩০২। ধোগ্য ক্রিয়াধ্যাহারে পূর্ব্বাৎ।
আনেনে ত্রন্থবর্ততে। যোগ্য ক্রিয়ায়া অধ্যাহারে সতি আনেনেতার্থে পূর্ব্বশব্দাদিন স্থাৎ। পূর্ব্বমনেন ভুক্তং ক্বতং শীতং বা পূর্ব্বী।

৩০৩। অমেষ্টের্য্যসুপদাৎ। অবেষ্টরি বাচ্যে অমুপদাহত্তরে ইন্স্যাৎ। অমুপদমেতারুপদী।

ত ৩০৪। উপদ্রেকীর সাক্ষাতো ডিন্।
সাক্ষাদিত্যব্যয়ম্। তত্মাহপদ্রপ্তরি বাচ্চে ডিন্ ভবভি। সাক্ষী উপদ্রুষ্টা অন্থযক্তপ্তোচ্যতে ন দাতা নাপি গ্রাহীতা।

৩০৫। তত্ত্যেদমিন্দ্রাদিয়ঃ। তদ্যাদমিতার্থে ইন্দ্রাদিয়ো ভবতি। ইক্স আত্মা তদ্যাদমন্ত্রাপকং ইক্সিয়া আহা চকুরাদিভি: করণৈরমুমীয়তে ন ধলু অকর্তৃকং করণমস্তীতি অথবা ইক্রস্যাত্মনো বিষয়োপভোগায় চকুরাদীনি ভবস্তীতি। ইক্রস্যোদং ভবতি।

৩০৬। ছন্দেশো বা তদধীতে শ্রোত্রশ্চ। ছন্দদ উত্তরে তদধীতেহর্থে ইয়ো বা ভবতি। ছন্দদঃ স্থানে শ্রোত্রশচ। শ্রোণিয়ঃ পক্ষে টণ্ ছান্দিদঃ।

৩০৭। ক্ষেত্রাৎ পরক্ষেত্রে চিকিৎসে।
পবক্ষেত্রে চিকিৎসে বাচ্যে ক্ষেত্রানিয়া ভবতি। পরক্ষেত্রং জন্মান্তবদারীরং
তত্র চিকিৎস্যো ব্যাধিঃ ক্ষেত্রিয়ঃ ইহ জন্মনি অসাধা ইত্যর্থঃ। অথবা
পরক্ষেত্রং অন্তদ্ববীরং তত্র সংক্রময় চিকিৎস্যাং বিষং ক্ষেত্রিয়ম্ অথবা
দিস্যানাং কৃতং ক্ষেত্রং ত্ণাদানাং পরক্ষেত্রং ভবতি তত্র চিকিৎস্যাং বিনাশ্রং
তৃণ ক্ষেত্রিয়া অথবা পর্বারাঃ পরক্ষেত্রং ত্ত্রাগুভহেত্ত্বাৎ চিকিৎস্যো
নির্গ্রাহঃ পারনারিকঃ ক্ষেত্রিয়ঃ।

০০৮। সংখ্যা দির্বাভীক্ষেত্রিক পাদঃ পচ্চ।
সংখ্যা লাদির্বাস্ত স সংখ্যাদিঃ সংখ্যাদেঃ শকাদাভীক্ষ্যে দ্যোত্যেহকো ভবতি।
পালঃ পচ্চ। অঘাচ্যশিষ্টমানেশবিধানং যথা ভো বটো ভিক্ষামট গাঞ্চানম্বেতি। দ্বৌ পাদৌ দদাভি দ্বিপদিকাং দদাভি ত্রিপদিকাং দদাভি তদ্ধিতাথে দিগুসমাসং কড়া অকঃ অদিলুগিত্যকারলুক্ সমাসকতালোপডাভাবাৎ
পদাদেশোন প্রাপ্রোতীতি বিধানম্। স্বভাবাদস্ত স্ত্রীলিঙ্গতা প্রত্যুব্বনাভীক্ষ্যং গ্রোভিতমিতি ন দ্বিক্ষক্তিঃ এবং দ্বে দেভে দদাভি। দ্বিশতিকাং
দদাতি। পাণিনিলক্ষণেহপি পাদশতগ্রহণমনর্থকং অন্ত্রাপি দশনাদিত্যুক্তং
তেন দ্বিমাদকিকাং দদাভি দ্বাপ্পিকামশ্লাতি। দ্বৌ পাদৌ দদাভীত্যুত্র ন
ভরত্যনভিধানাং। আভীক্ষ্য ইতি কিম্ ? দ্বৌ পাদৌ দদাভি দদাভিরত্রাবোপণার্থঃ দানার্থত্বে তু উত্তর্ব্ত্রেণাকঃ স্তাৎ।

७०२। मखनानायां मह

অনাভীক্ষ্যার্থ আরম্ভ:। দণ্ডে দানে চ গম্যে সংখ্যাদেরকো ভবতি। দ্বিপদ দিকাং দণ্ডিতঃ ত্রিপদিকাং ব্যবস্থজতি ত্রিশতিকাং দ্বিমোদকিকাং দ্বৌ দ্বৌ মানৌ দদাতীত্যত্র ন ভবত্যনভিধানাং।

৩১০। জাত্যক্তাজ্জাতিব্যঞ্জক দ্রব্যবচনাদীয়ঃ।

জ্বাত্যস্তশকাজ্জাতিব্যপ্তকদ্রব্যাভিধায়কাদীয়ে। ভবতি। বাহ্মণজাতীয়ঃ বাহ্মণো জাতিরস্ত ইত্যস্তপদার্থো বছব্রীহিঃ এবং ব্রাহ্মণজাতিশব্দে। জাতিব্যপ্তকদ্রবাবাচকোহপি ভবতি ততঃ স্বাথে প্রভায়ঃ। প্রকারবতি জাতীয় ইতি জাতীয় প্রতায়েনৈব ব্রাহ্মণজাতীয় ইত্যাদৌ দিছে জাত্যস্তাদীয়বিধানং বছব্রীহৌ ব্রাহ্মণজাতিরিত্যাদিপ্রয়োগনিরাসার্থম।

৩:১। স্থানান্তাত্ত ল্যাদা।

স্থানাস্তাৎ শকাত্ততু ল্যবাচকাদীয়ো বা ভবতি। পিতৃস্থানমিব স্থানমস্তেতি বছব্রীহিণা পিতৃস্থানশকঃ পিতৃতুল্যবচনশকঃ পিতৃতুল্যবচনস্তত ঈয়ঃ পিতৃ-স্থানীয়ঃ রাজস্থানীয়ঃ। তত্তুল্যাদিতি কিম্? গোস্থানম্।

৩১২। তৎপ্রাচুর্য্যেণ প্রস্তুত্মিতি ময়ট্।
তৎপ্রাচুর্য্যেণ বাহল্যেন প্রস্তুতং সংভৃতীক্কত্মিত্যশ্বিদর্থে ময়ট্ স্থাৎ। তদিত্যনেন যক্ষাৎ প্রত্যায়ঃ স পরামৃষ্যতে। প্রাচুর্য্যেণ প্রস্তুত্মরম্ অরময়ং
যবাগুময়ী শালা।

৩১৩। বহুবর্গাদ্দ বিহিতাশ্চ।

তৎপ্রাচুর্য্যেণ প্রস্তুতমিত্যর্থে বহুরর্থে বর্তুমানাং শব্দাৎ ময়ট্ ভবতি বুন্দান্যর্থ-বিহিতাশ্চ প্রত্যায় ভবন্তি। প্রাচুর্যোগ প্রস্তুতা মোলকা মোদকময়ং মৌদকি-কম্। হস্ত্যাচিত্তাদিতি বুন্দান্যর্থবিহিত্তিবন্ধপ্যাশিন্ধর্যে ভবতি। লিক্ষম্য লোকা-শ্রম্বাৎ ব্যবস্থা।

৩১৪। অস্মিন্।

তৎপ্রাচুর্যোণ প্রস্ততমিতীতি বছরর্থাদ্বৃন্দবিহিতাশ্চেতি চানুবর্ততে। তৎপ্রাচুর্যোণ প্রস্ততমন্মিন্নর্থে ময়ড্ ভবতি। বছরর্থে বর্তমানাৎ ময়ট্ বৃন্দার্থবিহিতাশ্চ প্রত্যয়া ভবস্তি। অনময়ো য়জঃ। অয়ংপ্রাচুর্যোণ প্রস্ততমত্রেত্যর্থঃ
অপূপময়ো য়জঃ আপৃপিকঃ অপূপাঃ প্রাচুর্যোণ প্রস্ততঃ অম্মিন্ য়জে
ইত্যর্থঃ।

৩১৫। অনন্তাবসথেতিহভেষজাদ্যণ্বা।
এভাঃ স্বার্থে যণ্বা স্থাং। অনস্তমের আনস্তাং আবস্থাং ইতিহেতাব্যুরং
অসমুদায় উপদেশপারম্পর্য্যে বর্ততে। ঐতিহং ভৈষজ্যম্।
.

৩১৬। চতুর্বর্ণাদিভ্যঃ। স্বার্থে এভ্যোষণ্ভবতি বা। চাতুর্বর্গং চাতুরাশ্রম্যং চাতুর্বেদ্যং সার্ক্ষ- বৈদ্যম্ অন্নহোঞ্জিলবাৎ উভয়পদবৃদ্ধিঃ বাড্গুণ্যং সৈশুং সান্নিধ্যং সামীপ্যম্ স্তপম্যং সৌথ্যং মাণিক্যং ত্রৈকাল্যং ত্রেশক্যং ত্রেলোক্যমিত্যাদি।

৩১৭। নামরূপাভ্যাং ধেয়ঃ।

আভ্যাং স্বার্থে ধেয়ো বা ভ্রুবতি। নামধেরং কপধেরম্।

৩১৮। ভাগাদ্য*চ।

স্বার্থে ভাগাক্তেয়া ভবতি যশ্চ বা ভবতি। ভাগাং ভাগধেয়ম্।

৩১৯। নবাৎ।

चार्थ (या वा छार। नवः नवाम।

७२०। ঈनजनज्ञा नृम्ह ।

নবশকাৎ ঈনতনত্না ভবস্তি। ভৎসন্নিযোগে নবস্য স্থানে নৃশ্চাদেশঃ। নবীনং যাচোকদ্পুণ ইতি গুণঃ নৃতনং নৃতুম্।

৩২১। প্রাৎ পুরাণে ণশ্ট।

প্রশক্ষাং পুরাণে বাচ্যে পো ভষতি। ঈনতনরাশ্চ। প্রণং প্রীণং প্রতনং প্রস্রম।

৩২২। দেবাতঃ।

স্বার্থে তোবা স্থাৎ। দেব এব দেবতা।

৩২৩। তীয়ান্ত।দবিদ্যার্থাটীকণ্বা।

ভারপ্রত্যয়ান্তাবিদ্যার্থব্যতিরিক্রবাচকাৎ স্বার্থে টীকণ বা স্থাং। দ্বৈতী-য়ীকী তাভীয়াকা টিস্থাদী পক্ষে দ্বিতীয়ং ভূতায়ম্। অবিদ্যার্থাদিতি কিম্ দ্ দ্বিতীয়া বিদ্যা।

৩২৪। বিনয়াদেষ্টিকণ্। 🌁

এভাঃ স্বার্থে টিকণ্ বা স্থাৎ। বিনয় এব বৈন্যিকঃ। বিনয়োপচাব-দঙ্গতিসময়সমুৎকর্ষসম্পানানি। ব্যবহারসমাচারাকস্মাদন্থগামিনঃ সমূহক্। মতায়বিশেষবিষয়াঃ কথঞ্চিদতান্ত ইত্যাদায়।

৩২৫। উপায়াদ্ধস্ব চ।

অস্বাৎ স্বার্থে টিকণ্ বা ভবতি হ্রস্ত । ঔপন্নিকঃ।

৩২৬। বাচঃ দন্দেশে।

সন্দেশে বর্ত্তমানাৎ বাচ্শবাৎ স্বার্থে টিকণ্ স্থাৎ। বাচিকং বাচিকমার সন্দেশবচনমাহেত্যর্থ:। টিকণা বিনা সন্দেশবচনবৃত্ত্যভাবার্নিত্যোহয়ং বিধিঃ। সন্দেশ ইতি কিম্? বাগস্য মধুবা।

৩২৭। তদ্যুক্তাৎ কর্মণফণ্।

তেন সন্দেশেন বৃদ্ধসংবাদেন যুক্তেং বৈর্ত্তমানাৎ কর্মশদাৎ স্থার্থে টণ বা স্যাৎ। কার্মণং যদাচিকং শ্রুতা বশীকবণাদিকমনুষ্ঠীয়তে তেনেবমূচ্যতে।

७२৮। अर्खात्म^{*} ।

স্বার্থে টণ্ বা স্যাৎ। প্রজানাতীতি প্রক্রঃ জ্রঃপ্রাদিকর্মান্তাং কেবলাচ্চেত্র দ্ব এব প্রাক্তঃ। নত্ন যা প্রজানাতি তিন্দ্রি প্রজা বিদাতে অতশ্চ প্রভানার্জাবৃত্তিভাগ ব ইতি মন্বর্থীয়েন পেনৈর দিন্ধণ বিশেষার্থঃ পাঠঃ ততঃ স্থিয়াং প্রাপ্রা খাৎ। টণি তু প্রাক্তী। প্রজ্ঞ চোর বণিজ্ উঞ্চিত্ প্রত্যক্ষ বিদ্যা মনস্ ভূত্রৎ চিকার্যথ শক্র শোধ চকুষ্ বস্ত্র মকৎ ক্রুক্ দশার্হ বিষদ্ অস্ত্রব ক্ষেদ্ পিশাচ অশনি দেবতা বন্ধ বিপৎ সম্পৎ ব্যান্ত্রত বিদৎ সঞ্জ আগ্রীর হিত সাধারণ আগ্রয়ণ অগ্রহায়ণ মহৎ। সাবারণশান্দা গুনপ্রত্যা বাস্তঃ পঠ্যতে। সর্বাদ্তি মতুপ্রত্যাব্যঃ স্বাদ্রর সাধারণ শৈরতঃ। ক্রক্ষ্মার্থঃ জ্বন্দিত্যেক ক্রেক্স্ম্রার্থঃ অস্তাক্রতিগণরাং। চঞ্চাল এব চাপ্তাল ইত্যাদি দুইবাম্।

৩.৯। ছন্দোনামভ্যঃ।

এভাঃ স্বার্থে টণ্ বা মাণে। ত্রিষ্টুবেব ত্রিষ্টুভম্ স্থানষ্টুভং জাগতং গায়ত্রণ নপুংসকত্বং স্বভাবাং।

৩৩০। বিদারিণো মৎস্তে।

বিস্বতীতি বিদাবী তম্মৎ মংসো বর্তমানাং স্বার্থে টণ্ বা দ্যাং।
বৈদাবিশঃ সত্রহ্মচাবীত্যাদিনা নকারলুগ্নিষেধঃ।

৩৩১। শ্রোত্রাচ্ছরীরে।

স্বার্থে টণ্বা ভবতি। শৌত্রং শ্রেম্। মণিবন্ধবাচকে তুন স্যাৎ।

७१२। कृष्क्षांमा द्रा।

শ্বার্থে ক্ষণ্কাৎ টণ্ বা ভবতি। কাষেণ্ মৃগ:। জ্মাত ক্ষণ গৌ:।

৩০৩। ওষধেরজাতে।

গুষধিশব্দাদজাতীে বর্তমানাৎ স্বার্থে টণ্ বা ভবতি। গুষধিভিরারদ্ধে কল্পাদো গুষধিশব্দস্তদেবৌষধম্। জাতৌ তু—গুষধরঃ ক্ষেত্রে।

७ । हं जूष्म परिष्ठे युन्।

চতুষ্পদবাচকাচ্ছকাৎ স্থাতে টেয়ণ্ বা ভবতি। শবল এব শাবলেয়ঃ ধাবলেয়ঃ।

७७१ । छें शर्धक ।

উপধিশব্দাৎ স্বার্থে টেয়ণ্ বা ভবতি। উপধীয়টে ইভূপিধিঃ রথাঙ্কুর্ উপধেয়মপি তদেব দারু।

৩৩৬। মুদস্তিকঃ।

স্বার্থে তিকো ভবতি। মুদেব মৃত্তিকা।

৩৩৭। সম্মে চ প্রশংসায়াম্।

মূলঃ সমৌ চ প্রশংসায়াং ভবতঃ। মৃৎসা মৃৎসা। প্রশংসায়ামিতি কিম্? মৃতিকা।

৩৩৮। নমোহহংভ্যাং কারঃ।

কর্মণো ণড়িতি ণটা সিদ্ধে স্বার্থিকার্থং বচনম্। আভ্যাং স্বার্থে কারে। ভবতি। নম এব নমস্বাসঃ অহমিতাব্যয়ম্ অহঙ্কারে প্রবর্ততে অহমেবাহস্বারঃ।

৩৩৯। বর্ণাৎ।

বর্ণ ইত্যানেনাক্ষরমূচ্যতে নতু দ্বিজ্ञাদয়: তেভাঃ প্রতায়ে তদর্থাভিধানশক্তাভাবাং। বর্ণাৎ স্বার্থে কারো বা ভবতি। আঃ অকারঃ অচ্সহিতে। হলপি বর্ণো গৃহতে তেন ককারঃ গ্রিকারীয়তি ডুকারো ড্বিভঃ জ্বিম ইতি বিশেষগার্থঃ বহুলবচনাদেব কার ইতি।

७९०। त्रारम्यः।

রাম্বর্ণাৎ কারপ্রতায়ং বাধিতা এফ: স্যাহ। রেফঃ।

৩৪১। বিশো জাতৌ গ্যঃ।

বিশ্ ইতাশাৎ জাতৌ বর্তমানাৎ স্বার্থে ল্যো ভবতি বা। বিজেব বৈশ্রঃ। জাতাবিতি কিম্ ? বিয়াত্রম্। ৩৪২। মর্তক্ষেম্যবিষ্ঠাদ্যঃ।

এভাং স্বার্থে গোবা ভাং। মর্ত্তাঃ মর্ত্তঃ ক্ষেম্যং ক্ষেমং প্রবিষ্ঠাঃ ধ্বিষ্ঠাঃ।

৩৪০। দেবতান্তাত্তদর্থে।

দেবতা স্তাত্তদর্থে যো বা স্থাৎ। অগ্নিদেবতার্থমিদং অগ্নিদেবতাং পিতৃদেবতাম্।

৩৪৪। পাদার্ঘাভ্যাঞ।

পাদার্ঘাভ্যামৃক্তরে তদর্থে যো ভবতি। পাদার্থং পাদ্যম্ অর্ঘ্যম্।

৩৪৫। অতিথেণ্যঃ।

তদর্থে ণ্যঃ স্যাৎ। অতিথার্থং আতিথাম্।

৩৪৬। নবযজ্জাদেরিকণ্তদত্ত বর্তে।
নবযজ্জাদেরতরে তদত্ত বর্ততে ইত্যানিরতে ইকণ্তবতি। নব্যজ্ঞো
বর্ততেহত্ত নাব্যজ্ঞিকঃ পাক্যজ্ঞিকঃ।

৩৪৭। পূর্নাসাট্রণ্।

পূর্ণমাদশব্দাৎ তদত্ত বর্ততে ইত্যর্থি টণ্ ভবতি। পূর্ণো মাদোহদ্যাং বর্ততে পৌর্ণমাদী তিথিঃ পৌর্ণমাদশ্চদ্রঃ। পূর্ণমাদন্তদ্যেয়ং পোর্ণমাদী তদ্যাদমিতি টণ্ এবঞ্চ ব্যুৎপত্তিঃ।

৩৪৮। পিতুস্তদ্ভাতরি ব্যঃ।

পিতৃশব্দাৎ তদ্ভাতরি বাচ্যে ব্যো ভবতি। পিতৃবা:।

৩৪৯। মাতুডুলঃ।

তদ্বাতরি বাচ্যে মাতৃশদাৎ ডুলঃ স্যাৎ। মাতৃলঃ।

৩৫০। পিতৃস্তৎপিতরি ডামহট্।

পিতৃশব্দাৎ তৎপিতরি বাচ্যে ডামহট্ ভবতি। পিতামহঃ টিৎকর্মণসামর্থ্যাৎ পিতৃম তির বাচ্যারাং পিতামহী।

৩৫১। ষাতৃশ্চ।

মাতৃশদাত্তৎপিতরি বাচ্যে ডামহট্ ভবতি। মাতামহ: অত্র টিংকরণসাম্ম্যাৎ মাতৃমতিরি বাচ্যায়াং মাতামহী।

৩৫২। ভ্রাতুর্ব্যঃ শত্রো

শক্রো গম্যমানে ভ্রাতৃশক্ষান্ধ্যো,ভরতি। ভ্রাতৃব্যঃ শক্ষঃ।,

৩৫৩। ধেনোছ শ্বর্ণদত্তায়াং স্থঃ।

ধেরশব্দাং হ্রপ্তরপেণ ঝণেন দত্তায়াং থেনৌ বাচ্যায়াং শুঃ স্থাৎ। ধেরুষ্যা।

७८८। वनानिखनिवादनी।

ইবশন্দ উপমানার্থ:। তদিতানেন উপমানমূচাতে। তৎসন্থনাত্বপানাত্বপানার্থকোরে বাচ্যে বন্ধবৃতি। জাত্যাদিশদান্ সর্কাংশ্চ বিভক্তার্থ।নিবার্থো ব্যাপ্নো-তীতি সর্বতঃ সর্বাচ প্রত্যান্তঃ। ব্রাহ্মণ ইবায়ং তাহ্মণনিবামুং পশু ব্রাহ্মণনেবানেন কৃতং ব্রাহ্মণায়েব শূদায় দদাতি ব্রাহ্মণাদিব শূদাদিপি বিভেতি ব্রাহ্মণশ্রেব শূদ্মশাচারঃ ব্রাহ্মণে ইব সজ্জনেহনুরক্তঃ সর্বাত্র ব্রাহ্মণবং। ক্রিয়াশনাৎ পাচকবৎ ভ্রাশনাং দণ্ডিবৎ গুণশনাং নীলবং।

৩৫৫। তদহ ক্রিয়াযাম।

তদহ তীতি তদহ' পচাদিঃ তদহ' চানো ক্রিয়া চেতি তদহ ক্রিয়া তম্থাং বাচাায়াং বং স্থাং। যত্তংপণবাচাং তমাং প্রতায়ঃ। বাদ্ধানমইতি ব্রাদ্ধাবদানং দানক্রিয়া তদহে গ্রেগ্য িক্যায়ামিতি কিম্ গ্রাজানমইতি বাদ্ধাহণ ছলং অর চছলুং দ্বাং তদহ মিতার্থঃ।

৩৫৬। কিং যৎ সকৈ কান্যাৎ কালে দা সো বা সক্ষিত্য।

কালে বর্ত্তমানাং কিমাদেকত্তরে দা ভবতি। তিঞ্চিন্ পরে সর্ক্ষিন্ত স্থানে সকারাদেশো বা ভবতি ক্ষিন্ কালে কদা কিং ক্ষাদে কুণেচ্তি কং বিশ্বন্কালে বনা সর্ক্ষিন্কালে সদা সর্ক্ষিন্ একদা অন্তদা। স্বভাবদিনীবাং সপ্তমার্থ এবাভিধানম্। যত্ত্ব দিনে ইত্যাদে দা ন ভবতি। কালদামান্তবাচিতামাত্রেহস্টেইড্বাং। কাল ইতি কিম্? ক্ষিন্দেশে।

०८१। जाना मानीकः।

কালে বর্ত্তমানত্তৰ উত্তরে দা ভবতি দানীঞ্চ। তিম্মিন্ কালে তদা তদানীম্।

৩৫৮। ইদমোহধুনা চাদিন্তাবশ্চ। কালে বর্ত্তমানাৎ ইদম উত্তরে ধুনা ভবতি। দানীঞ্চ তয়োঃ পরয়েঞ্ রিদম: স্থানে ক্রমেণ অৎ ইৎ ইত্যেতো চাদেশো ভবত:। অন্মিন্ কালে আধুনা ইদানীম্।

৩৫৯। হিস্চেদম এতশ্চ।

কালে বর্ত্তমানাৎ ইদম উত্তরে হিঃ স্থাৎ। ইদমঃ স্থানে এতাদেশক। এতর্হি।

৩৬০। কিমদোযতদেতদন্যভ্যোহনদ্যতনে বা।

এভ্যোহনম্বতনে কালে ৰাচ্যে হিঁব গ্লাৎ। কহি অমৃহি যহি তহি এতহি অন্তহি পক্ষে কদেউ্যাদি। অনদ্যতনে হি রন্ততরস্থামিতি পাণিনিলক্ষণে সর্জনামভ্য এব হি প্রাপ্রোতি তথাপি প্রয়োগদর্শনেন ব্যবস্তৃতি স্চ্যন্তি শুক্রমানাদিভিঃ কিংঘত্তদেতদন্তেভ্য এব হি বি হিতঃ। জয়াদিত্যেন অন্তর্-হীতি নোলাহ্বম্। জ্মরনন্দিনা তু অমুহীতি স্ববস্তুপাদে উদাহ্বতম্।

৩৬১। দ্যন্তত্তাহ্নি সমানাৎ দক্ষা।

তক্রাহনি বাচ্যে সমানাগতবের দ্যুষ্ঠ ভবতি। সমানশু স্থানে সশ্চাদেশঃ। তন্তেতানেন যশ্বাৎ প্রত্যয়ঃ স পরাম্বাতে। সদাঃ নিমিত্তনিমিত্তিনোঃ সমা-নেহহনীতার্থঃ। তদ্যণা সদ্যঃ প্রাণহরং মম্তাড়নং যশ্মিরহনি মম্তাড়নং ত্রিরেবাহনি প্রাণহরণমিত্যর্থঃ।

৩৬২। দা ইদমোহদ্যাবশ্চ।

তত্রাহনি বাচ্যে ইদম উত্তরে দ্যপ্রত্যেয়ঃ স্থাং। ইদমঃ স্থানে অভাব*চ। অদ্যা অস্মিন্ত্রনীত্যর্থঃ।

৩৬৩। পরাদেদ্যবি।

তত্রাহনি বাচ্যে প্রশক্ষাত্ত্তরে এদ্যবি ভবতি। প্রেদ্যবি প্রশ্নিরহনীত্যর্থঃ।

৩৬৪। প্র্বাদেরেত্ন্যস্।

তত্রাহনি বাচ্যে পূর্দ্বাদেকত্তরে এছাদ্পরায়ো ভবতি। পূর্দ্বেছাঃ পূর্দ্বাদার-হনীতার্থঃ। পূর্ব্ব অপর উত্তর অধর অছা অন্তত্তর ইতর।

७७৫। উভয়াদ্বাস্চi

তলাহনি বাচ্যে উভয়শবাদেগ্যদ্ ভবতি। গ্রাদ্ চ। উভয়েগ্যঃ উভয়গ্রাঃ।
৩৬৬। উদারী পূর্ববপূর্ববতরাৎ সপরশ্চাদে।

জ্ঞান্দে বাচ্যে পূর্ব্ধাং পূর্ব্ধতরাচ্চ উৎ আরি ইত্যেতো স্থাতাম্। সপরশ্চ ভবতি। স ইত্যানেন পূর্ব্ধপূর্ব্ধতরো পরামৃষ্যেতে। পূর্বশ্বিমাদে পরাৎ পূর্ব্বতরশ্বিমাদে পরারি।

৩৬৭। সমস্ধিদমে। দম্লোপশ্চ।

তত্রাব্দে বাচ্যে ইদম উুত্তরে সমদ্ণ্ স্থাৎ। দম্লোপশ্চ। অস্মিনব্দে এষমঃ।

७७৮। विनक्षः जाः नानार्गा।

বি নঞ্ ইত্যেতাভ্যাং যথাক্রমং নানাণৌ ভবতঃ। বিনা নানা ! অনয়োঃ প্রত্যযান্ত্যোর্থো লোকত এব স্ক্রেয়ঃ।

৬৯। প্রকারে থা সর্বাদেঃ।

কাল ইতি মিনৃত্তম্। প্রকারে বাচ্যে সর্লাদিগণাত্ত্রবে থা ভবতি। প্রকারঃ সাদৃশ্রেইপাস্তি যথায়ং চৈত্রপ্রকার ইতি। সামাল্লন্ত ভেদকে ধর্মেইপাস্ত্রি সচ দ্রব্যাশিতঃ পট্নাদিং। অত্র তু দ্বিতীয়ার্থক্ত গ্রহণং বিভক্তার্থং এবায়মিয়াতে সর্কারাং প্রকারাং ভূঙ্ভে সর্কোণ প্রকারেণ গছেতি সর্কান্ প্রকারান্ করোতি সর্কার্ম প্রকারায় দদাতীত্যর্থে সর্ক্থা এবমুভয়থা অল্লথা অল্লতরপা ইতরথা তথা যথা এতথা অমুথা অপ্রব্যেতাদি। প্রয়োগদর্শ-নাদল্যদপ্রহম্।

৩৭০। কিমস্থম।

প্রকারে বালে কিমন্তম্ভবতি। কথম্।

७१८। ङेन्स देखा।

প্রকারে বাচো ইনমস্ম্ ভবতি। ইনমশ্চেনাদেশত। ইখম্। থাপরাদৌ দৌ যোগো।

৩৭২। এতদদেহত্যেক।

ইখম্। তন্মতে এতপেতি ন স্থাং।

७१७। मःथाया भा।

সংখ্যাবাচকাচ্ছদ্রনং প্রকারে বাচ্যে ধা ভবতি। চতুদ্ধা করোতি চতুরঃ প্রকার।ন্ চতুর্ভিঃ প্রকারৈর্বেতার্থঃ চতুরনজুহোরিত্যাদিনা বাকারস্যোকারঃ। নরধা দ্রবাং একরাশিং পঞ্চধা কুরু।

৩৭৪। ডতান্তাদিশ্চ সংখ্যা।

ডতান্তাদিশ্চ সংখ্যা ভবতি। কিম: সংখ্যাপ্রশ্নে ডতিরিতি ডতি: কতিধা। ডতান্ত যত্বন্ত অপ্রচুরার্থ বহু অসংঘার্থগণঃ। সমাসক্ষবিধাবর্দ্ধপূর্ব-পূরণপ্রতায়ান্তশ্চ। সংখ্যা ভবতি। অর্দ্ধপঞ্চমঃ শূর্প: দিক্সংখ্যয়োন শ্লিতি সমাসঃ অর্দ্ধপঞ্চমকঃ সংখ্যায়া: কব্রিংশদ্বর্জমিতি কঃ অর্দ্ধপঞ্চমকধা।

তৃপ্র । ধ্যম্পেকাদা। ক

একশদাং প্রকারে বাচ্যে ধ্যম্ণ্ বা স্থাৎ দৌ রাণী ঐকধ্যং করোতি ণিস্থাদ্রুদ্ধিঃ পক্ষে একধা।

৩৭৬। বিত্রের্ধান্ত ধৃম্ণে বা।
বামুরত্তী পুনর্বাগ্রহণং সমুচ্চারার্থন্ এবং হি সমুচ্চরো ভবতি ঘদত ক্রমো
নিরক্ততে। প্রকারে বাচ্চো দিশলান্ত্রিশলান্ত ধাঙ্ ধৃম্ণ্ ইত্যেতে। বা
ভ্যাতান্। দ্বেধা ভিন্নাল্গুণঃ দ্বৈধং পক্ষে দ্বিধা।

৩৭৭। রিরিন্টাদুর্দ্ধান্তন্তোপশ্চিদিগ্দেশকালার্থের ।

দিন্দেশকালার্থের বর্ত্তমানাদ্দ্ধাত্তরে রি রিটাদিত্যেতো স্থাতাম । উদ্ধাস্য স্থানে উপশ্চ । উদ্ধা দিক রমনীয়া উদ্ধায়া দিশ আগতঃ উদ্ধায়াং দিশি বসতীত্যর্থে উপরি উপরিষ্ঠাং এবং দেশকালয়োরপি । অক্সত্র । উদ্ধে প্রুবে বসতি অব্রোদ্ধান্দা দেশাত্যপলক্ষিতে প্রুবে বর্ততে । রিপ্রভৃত্যঃ প্রতায়া বিধাস্থামানাঃ প্রথমাপঞ্জ্যীসপ্রমার্থাদন্যত্র ন বিধীয়ন্তে অনভিধানাং তেনেত্ব ন ভবতি । উদ্ধাং দেশং গতঃ ।

০৭৮। স্তাদ্দো পূর্নাবারাধরেতাঃ পুরাবাধশ্চ।

দিগানো বর্ত্ত্যানেতাঃ পূর্দাদিতা উত্তরে স্তাৎ অস্চ ইত্যেতো ভবতঃ।
পূর্দাবরাধরাণাং স্থানেপর অব অধ ইত্যেতে আদেশাঃ স্থাঃ। পুরস্তাৎ
রমাং প্রোরমাং প্রস্থাদাগতঃ পুর আগতঃ পুরস্তাদ্দতি পুরোবদতি এবং
অবস্তাৎ অবঃ অধস্তাং অধঃ।

ত্রপক। স্তাত্যবো বা। স্তাতি পরে বিহিতোহবাদেশো না স্থাং। অবস্তাং অবরস্তাং। অবরা-শকাত্যু: পুংবত্রাদাবিতি পুংবদ্ধারঃ।

৩৮০। আৎ সপশ্চ স্তল্লুক্ চার্চ্ছে।
স ইত্যনোবর্গ্য পরামর্থঃ। দিগাদৌ বর্তনাৎ অবরশকাদাভবতি।

অবরণ্চ পণ্ডো ভবতি। অর্দ্ধে পরে তল্লুক্ চ। অবরক্তাং দিশি বসতি পশ্চাৰ্সতীত্যাদ্ধিপশ্চাৰ্দ্ধম্।

৩৮১। দক্ষিণোত্রাভ্যাম।

আভ্যামুত্তরকাদবরশকাৎ দিগাদে বর্ত্তমানাদান্তবতি। অবরঃ প্রশ্চা ভবতি। অর্কে পরে তল্ল্ড। দক্ষিণস্থাশ্চ অবরস্থাশ্চ দিশোম ধ্যা দিক্সা দক্ষিণাবরা দিল্মধানামি পূর্ব্বাদে: প্রথমান্তপদার্গ ইতি বহুরীহিঃ তন্তাং দিশি বস্তি দক্ষিণপশ্চাবস্তি দক্ষিণপশ্চাক্ষা রমাঃ।

৩ - ২। অধরাচ্চ। ৰক্ষিণোত্তরাভ্যামৃত্তরাদধরাচ্চ দিগাদৌ বর্ত্তমানাদাত্ত্বীত। দক্ষিণশব্দঃ

কালবৃত্তিন সম্ভবতীতি দিপেশবৃত্তিগৃহিতে। দক্ষিণা দিক্রমনীয়া দক্ষিণাৎ বমনীয়া উত্তরশ্রহ দিশি বর্মাত উত্তরাস্কৃষতি অধ্যাদাগত:।

৩৮৩ পরাবরাভ্যাঞাত্স বা

দক্ষিণোত্তরাভ্যামিত্যমুবর্ত্ততে। দিগানৌ বর্ত্তমানাভ্যাং দক্ষিণোত্তরাভ্যাং পর অবর ইত্যেতাভ্যাঞ্ অত্য বা ভাং ি দক্ষিণা দিক্রম্যা দক্ষিণতো দিক্ রুম্যা উত্তরতে। বসতি উত্তরাধ্মতি পরতো রুমাং পরস্তাদ্দ্রস্থ অবরতো বসতি অবরস্তাদ্বসতি অবোবসতি। অতসোহকারোপাদানং র্যাদ্যৈরিতাঞ তদিগ্রহণনিরাদার্থম্! ততো ভবতা ক্বত আয়ুম্মতেভ্যাদাবপি তৃতীয়াং বাধিত্বা ষষ্ঠী স্থাৎ।

৩৮৪। পরাৎ স্তাৎ। দিগাদে। বর্তমানাৎ পর শব্দাৎ স্থাৎ আৎ। পর্ত্তাৎ I

৩৮৫। প্রাগাদেরতল্পক্ চ।

দিগাদৌ বর্তমানাৎ প্রাগাদেরম্ভবতি। তল্লুক্চ। প্রাক্পপ্রাদক্তেঃ কিপ্ প্রাচি দেশে বদ্যতি প্রাথসতি অতো লুকি ক্লতে অশৌ ক্লীবেহবায়ত্বে চেতি নকারলুক্। প্রাচীশবাত্ত অল্লুকি কতে লুকি স্ত্রীবিহিতক্ত চেতি স্ত্রীপ্রতায়নিবৃত্তিঃ প্রাথসাতি আদিপদেনাঞ্চতেঃ দিন্ধা দিথাচকাঃ শব্দা গৃহস্তে। প্রত্যক্ অবাক্ মক।

৩৮৬। দক্ষিণোত্তরাভ্যামাচাদুরে দূরে স্বাহি চ। দক্ষিণোত্তরাভ্যামদূরে নিগাদৌ বর্ত্তমানাভ্যামাচ্ ভবতি। এতাভ্যামের দূরে আচ্ আহি চ স্থাৎ। আচশ্চকণর আরাদালৈ)রিতি <u>চিহার্ত্রী</u>

স্বায়ধা বিভিদাদেরাতোহপি গ্রহণং স্থাৎ প্রথমাসপ্তম্যর্থাদক্ষত্র ন ভবতানভিধানাৎ। দক্ষিণা বিমাষ্ উত্তরা বসতি দক্ষিণাহি রমান্ উত্তরাহি বস্তীত্যাদি।

৯৭। এনবধরাচ্চ বা।

দক্ষিণোত্তরাভ্যামধরাচ্চ অদ্রে দিগাদৌ বর্ত্তমানাৎ এনপ্রা ভবতি। পকার এনপা দিতীয়া চেতি চিহ্নার্থঃ। অয়মপি প্রথমাসপ্তম্যর্থাদভাত ন ভবতি। দক্ষিণেন রুমাং দক্ষিণারুমাং দক্ষিণতো রুমাং দক্ষিণেন বৃস্তীভাষি।

৩৮৮। পূর্বাদেরপীত্যেকে।

পূর্কাদেরপ্যদ্রে দিগাদৌ বর্ত্তমানাৎ এনপ্ বা ভবজীভ্যেকে। পূর্বেণ রম্যং পূর্ব্যতো রম্যম্ অপরেণ অবরেণ।

৩৮৯। কুত্বস্বারে সংখ্যায়াঃ।

বারে গমামানে সংখ্যায়া উত্তরে কর্ত্বস্ ভবতি । একরপক্রিয়ায়া অভ্যার্তিবার: । পঞ্চরডো ভূঙ্জে পঞ্চবারান্ ভূঙ্কে ইত্যর্থ: শতং বারান্ শতং বারাণাং বা শতক্রডো ভূঙ্কে কতিক্রতঃ তাবৎক্রতঃ বহুক্রতঃ গণক্রতঃ । অভ্যার্ত্তিভিন্নকালানামেব ক্রিয়াণাং সম্ভবতি তেনেহ ন ভবতি পঞ্চপাকা ইতি ইহ অভিন্নকালানামেব ক্রিয়াণাং সংখ্যেতি নাস্ত্যভ্যার্ত্তিঃ । ক্রনভি-ছিতভাবপ্রত্যয়প্রয়োগেহপি যত্র কালভেদঃ প্রতীয়তে তত্র ভবত্যেব যথ। দ্বির্দনং দ্বিঃ প্রকারঃ । বার ইতি কিম্ গুপঞ্জুভ্রেন্ত । সংখ্যায়া ইতি কিম্ গুপ্তাম্বারান্ ভূঙ্কে নহি প্রভূতশক্ষঃ সংখ্যাত্বেন প্রাদিদ্ধঃ ।

৩৯০। দ্বিত্রিচতুর্ভাঃ স্থঃ।

এভ্যো বারে গম্যে স্কর্তি। দিছু গ্রেক্ত ব্রিভূ গ্রেক্ত চতু ভূ গ্রেক্ত যুক্তান্ত-দ্বাৎ স্থলুক্। কেহপি স্থবিধিং বিকল্লেনেচ্নন্তি তেন ধিক্লয়ে। ভূঙ্কে ইতি।

৩৯১। সকুচৈচকস্থা।

বারে গ্রামানে একশবাহত্তরে স্থং ভাং। একস্ত স্থানে সক্ষাদেশঃ। সক্ষণ্ডুঙ্কে একবারং ভুঙ্কে ইত্যর্থ:। অভ্যাবৃত্তিহি বারং একস্ত নচাত্রাভাবিত্তিঃ সম্ভবতি তমালক্ষণসামর্থাদৌপচারিকোহত্র বারশকঃ কশ্চিদাহ লক্ষণমেতৎ প্রপঞ্চার্থন্। সরুচ্ছদ্রাস্যেকবারার্থস্য সরুদ্ভুক্ত ইতি ভবিষ্যতি ঐকশন্ধান্ত অভ্যাবৃত্ত্যভাবাদত্র রূত্বদ্ ন ভবিষ্যতীতি।

৩৯২। বহোরবিপ্রকর্মে ধা বা।
বছশবাদবিপ্রকর্মে বারে বাচ্যে ধা বা দ্যাৎ। বছধা দিনস্য ভূঙ্জে কম্বদর্শ্য: কালাদধিকরণাদিটি ষষ্ঠা পক্ষে বছক্তঃ। বিপ্রকর্মে তু। বছক্তথা
মাসস্য ভূঙ্জে।

ত্রতী। বহুরার্থাৎ কারকত্বে শদ্ মঙ্গলে।
বহুর্বাং অরার্থান্ত নামস্তদ্য কারকত্বে বিবক্ষিতে মঙ্গলে গম্যমানে শদ্
বা স্যাং। বহুনি দদাত্যাভ্যুদয়িকের কর্মস্থ বহুভিদ দাতি বহুভো দদাতি
বহুভা আগচ্ছতি বহুরু নিদ্ধাতীতার্থে বহুশঃ অর্থগ্রহণাং ভ্রিশো দদাতি
প্রভূতশো দদাতি এবমরং দদাত্যনিষ্টেষিত্যাদো অরশঃ স্তোকশঃ। আজ্যুদয়িকে কর্মণি বহুশো দানং অনিষ্টের অরশো দানম্ অত্র মঙ্গলং গময়তি।
বহুরার্থাদিতি কিন্? গাং দদাতি। কারকত্ব ইতি কিন্। বহুনাং
স্বামীত্যত্র সম্বন্ধা বিবক্ষিতো নতু কারকত্বম্। বহুবো দদাতি অরা দদাতীভাত্র ন ভ্বত্যনভিধানাং।

৩৯৪। সংখ্যৈকার্থাদ্বীপ্সায়াম্।

সংখ্যাবাচকাচ্চনাং একার্থাচ্চ তস্য কারকত্বে সতি বীপ্সায়াং গম্যমানায়াং
শস্ বা স্যাং। দ্বৌ দ্বৌ দ্বলতি দিশো দ্বলতি কতিশং গণশং তাবচ্ছং এতাবচ্ছং। একার্থাং কার্যাপণং দ্বলতি কার্যাপণশো দ্বলতি পাদশং প্রস্থশং কার্যাপগাদয়ং পরিমাণশ্বলা অন্যনানতি বিক্তন্য পরিমাণরূপন্যৈকন্যৈবার্থস্য বাচকা
বিক্তনা তু তেবাং দ্বিত্বাদিকমৌপচারিকমভিথীয়তে ঘটং ঘটং দ্বলতীত্যত্র ন
ভবতি নহি ঘটাদয়ং কর্মাপণাদিবং স্বভাবাদেকার্থমাত্রবৃত্তয়ং যতো জাতিশব্দা জ্বমী জাত্যভিব্যঞ্জকভূতায়ামনেকব্যক্তৌ প্রবর্ত্তম্বং প্রকরণাদিনৈকার্যাবগতে তু ভবত্যেব ঘটণো দেহীতি যথা সংঘশং বৃন্দশং পূগশ ইতি।
বীপ্সায়ামিতি কিম্? দ্বৌ দ্বাতি অকারকত্বে তু। দ্বোদ্বাহ্নাং সামী।

৩৯৫। অভূততদ্বাবে কভুস্তির্ চিবুরগভাদী চ।
প্রাগ্রস্থাবতোহবস্থান্তরেণাভূতস্যাজ্ঞাতস্যানন্তরং তদান্তনা লাভোহবস্থান্তরেণ জন্ম অভূততন্তারে:। অস্থিন গম্যে ক ভূ অস্ ইত্যেতেরু

প্রযুজ্যমানেষু নাম উত্তরে চিব্রুবতি। অগস্তাত্ চিব্রুরিয়াগে ঈ চ। অবস্থান্তরাপত্তেরের বাচ্যত্বেন মুধ্যত্বাং তদ্বাচকাদের নাম: প্রত্যয়:। অমহান্তং মহান্তং করোতি মহংকরোতি অমহান্মহান্ভবতি মহন্তবিভ व्ययहान् महान् नागा पर पराप्ता महत्त्र पर हुत्र हे छि छ। अना जिलार প্রদাদেঃ ক্তেতি সমাসঃ মহন্ত ক্সমা ইতি নাভূতত দ্বাবে ইতি আন্তলোপ-য়োনি যেধঃ। অগুক্রং গুক্কং করোতি গুক্লীকরোতি মানীভবতি গুচীস্যাৎ স্থবর্ণং কুগুলীকরোতি অদিলুগিত্যকারলুক্ মাত্রীস্যাৎ যবরলোহচীতি রেফ:। অগস্তাদী প্রত্যায়ে। নাক্ষাং তেন দিবাভূতা রাত্রিঃ। অগস্তাদিতি কিম্ ? নৌস্যাং অস্তেলি ভস্তস্যৈব প্রয়োগেহভূততদ্ভাবস্য প্রতীতিঃ শবশক্তিস্বভাবাং এতদেব সর্কশান্তে উদাহতম্। নতু লড়াদ্যন্তস্য। অভূততদ্ভাব ইতি কিম্? শুক্লং করোতি পূর্কাবস্থাবতোহবিবক্ষিতত্বাং নাস্তাভূততদ্ধাবঃ। কুভূম্ভিমিতি কিম্ ? অন্তর: শুক্লো জায়তে অভূততন্তাবেংপি কারণাং কার্য্যা ভেদবি-বক্ষায়াং ন ভবত্যনভিধানাং। তস্ত্রভ্যঃ পটং করোতি মুদ্ধ্যো ঘটো ভবতি তন্ত্রং পটং করোতি মৃদং ঘটং করোতি। কথং, বিতানভূতং বিততং পৃথিব্যাং যশঃ সমূহরিব দিথিকীর্ণমিতি ভূতশকঃ শকান্তরমাত্রেবার্থে বিভান-মিবেতি। ততােহত্র চেরভাবাং কচিদক্যত্রাপীতি সমাসঃ।

৩৯৬। উদন্তাদূঃ। উদস্তাং চিননিযোগে উর্ভবতি। ঈবাধনার্থং বচনম্। পট্করোতি বধুস্যাৎ।

৩৯৭। অরুর্মনশ্চক্ষুশেচতে।রহোরজসামন্তলুক্ চ।
অকঃপ্রভূতীনাং চিসনিযোগেংস্তলুক্ চ ভবতি। উদন্তাদৃশ্চ। অনকরকঃ
করোতি অরুক্বোতি উন্মনীকরোতি উচ্চক্ষুসাং বিচেতীকরোতি বিরহীকরোতি নিরজীসাং। নিরজীকারিতঃ স্থামিতি ভটিঃ।

৩৯৮। সাদভিব্যাপ্তো সম্পদ্যতো চ বা।
আনেকব্যক্তীনাং প্রত্যেকমেকদেশেন বিকারাপত্তিঃ একব্যক্তেরনেকব্যক্তেশ্চ সর্লায়না বিকারাপত্তিশ্চাভূততন্তাবেহভিব্যাপ্তিঃ তদ্যাং গন্যা
মানায়াং স শদ্যতো কভুন্তির চ প্রযুজ্যমানের সাদা ভবতি। বর্ষাস্থ সর্কাং
লবণমূদকদাং স পদ্যতে কাঠিং ভত্মসাং সম্পদ্যতে ভত্মসাং করোতি ভত্মসাং ভবতি ভত্মসাং স্যাৎ পক্ষে ভত্মকরোতীত্যাদি।

৩৯৯। তদধীনে।

শ্বভূততদ্ভাব ইতি নিবৃত্তম্। তদিতানেন যশ্বাৎ প্রত্যরঃ স পরাম্যাতে। তদধীনে তদায়তে বাচ্যে সম্পদ্যতৌ ক্লভুন্তিযু চ প্রযুজ্যমানেযু সাৎ ভবতি। রাজ্যাৎ সম্পদ্যতে ব্রাগ্ধণসাং করোতি সেবকসাৎ মহী ভূতা।

8001 जो **है** (मरत्रा

ভদধীন ইত্যমুবর্ত্ততে। যশ্মৈ যদেরং তন্তদধীনে তশ্মিরভিধেরে সম্পদ্যতৌ কভ্বিরুচ প্রফুজ্যমানেষু আ স্যাৎ সাক্ত। দেবাধীনং দেয়ক্ষরোতি দেব-আকরোতি দেবসাং করোতীত্যাদি। দেয় ইতি কিম্ ? রাজসাৎ করোতি রাষ্ট্রম্।

৪০১। দেবাদেঃ কর্মাধিকরণার্থে চ ধাতোঁ।
কর্ম্মাদিকরণে চার্থে বর্তুমানাদেবাদেকত্তরে ধাতো প্রযুজ্যমানে তা ভবতি।
রুভুস্তান্ত্রনিরাদার্থং ধাতাবিতি বচনং তেন সর্ব্ধবাতুপ্রয়োগে ভবতি।
দেবান্ গছতি দেবত্রাগছতে দেবেষু বসন্তি দেবত্রাবসতীত্যাদি। দেবপুরুপুক্ষবহবো মন্ত্র্যমের্ক্ত্যে বড়েব দেবাদিঃ।

৪০২। ডাচ্ স্থাদের বিক্ল্যাদো ক্রি ।
ডাচশ্চকারো ডাল্ড ইতি চিন্থাই। স্থান্ত্ল্যাদাবর্থে গ্র্মান করোতৌ
প্রভ্রমানে স্থাদেকত্তরে ডাচ্ ভবতি। চিত্তাবাধনমানুক্ল্যন্। স্থাকরোতি দেবং অন্তক্লং করে তীত্যর্থ: প্রিয়াকরোতি। স্থান্ত্ল্যাদ্যাল্ড ।
ভিষধং স্বথং করোতি উনধ্যাচেতনভাৎ নহি চিত্তাবাধনে প্রবৃত্তিঃ।

৪০৩। তুঃখাৎ প্রাতিকূলো।

ছঃখশকাং প্রাতিকূলাহর্থে ক্বঞি প্রযুজ্যমানে ড:চ্ভবতি। চিত্তব্যথনং
প্রাতিক্লাম্। ছঃখাকরোতি অনভিমতমাচরতীত্যর্থং। অক্তত্ত। ছঃখং
করোতি কলাম।

808। कर्ष**ा मञ्चार**कः।

সম্বাদেকত্তরে কর্যণার্থে অভিধেষে ক্বঞি প্রযুদ্ধানাকে ডাচ্ ভবতি। সম্বাকরোতি ক্ষেত্রং পুনস্তিবাঁক্কর্যতীত্যর্থ:। দিতীয়াকরোতি দিতীয়ং কর্ষণং করোতীত্যর্থ:। ভূতীয়াকরোতি অনুলোমং কৃষ্টং পুন: প্রতিলোমং কর্মতীতার্থ:। বীজাকরোতি বীজেন সহ কর্যতীত্যর্থ:। সম্ব দিতীয় ভূতীয় বীজ।

৪০৫। সংখ্যাপূর্বেগুণঃ।
সম্বাদির্ভবতি। দিগুণাকরোতি ত্রিগুণাকরোতি ক্ষেত্রং দিগুণং ত্রিগুণং
ক্ষেত্রস্থ বিশেখনং করোতীত্যর্থ:।

৪০৬। সত্যাদশপথে।
সত্যশশাদশপথে বাচ্যে বর্ত্তমানাং ক্ষঞ্জ প্রযুজ্যমানে ডাচ্ ভবতি। সত্যাকরোভি বণিগ্ভাগুং ময়ৈতদবশ্বং ক্রেত্রবামিতি প্রত্যয়ং করোতীত্যর্থঃ।
কারশন্দে ক্রেরপনে অস্তস্ত্যাগদেভ্যঃ কার ইতি মঃ। তথাচ ভারবিঃ,
সত্যস্কারমিবাস্তক ইতি। শপথে তু। সত্যং করোতি বিপ্রঃ।

8০৭ । সপত্রনিষ্পত্রাভ্যামতিবেধেনে।
সহ পত্রেণ বর্ততে ইতি সপত্র:। নির্গতং পত্রমন্মাণিতি নিষ্পত্র:। আত্যামতিবেধনে গম্যমানে ক্রঞি প্রযুজ্যমানে ডাচ্ ভবতি। সপত্রাকরোতি
মৃগং ব্যাধঃ সপত্রং শরমভ্য শরীরে প্রবেশয়তীত্যর্থ:। নিষ্পত্রাকরোতি
শরীরাচ্ছরমপরপার্থে নিক্রাময়তীত্যর্থ:। অতিবেধন ইতি কিম্ ৭ সপত্রং
বৃক্ষং করোতি প্রাবৃট্। নিষ্পত্রং করোতি গ্রীয়ঃ।

৪০৮। নিজুলাদন্তর্বহিকারে।
অন্তর্বয়বানাং বহিকরণেহর্থে বর্জনানাং নিজুলশকাং ক্রিঞ্ প্রযুদ্ধমানে ডাচ্
ভবতি। নিজুলাকরোতি দাড়িমং বীজম্। অন্তর্জ নিজুলং করোতি রিপুম্।
কুলশকোহত্র গোত্তবচন:।

৪০৯। সময়াৎ কালহরণে। সময়শলাৎ কালহরণে বাচ্যে কুঞি প্রগুজামানে ডাচ্ভবতি। সময়া-করোতি কালভাহরণং করোতীত্যর্থ:। অভাত্র সময়ং করোতি।

৪১০। শূলাৎ পাকে।
শূলশব্দাৎ পাকবিষয়ে ক্তি প্রযুজামানে ডাচ্ভবতি। শূলেন পচতি
শূলাকরোতি মাংসম্। পাক ইতি কিম্? শূলং করোতি কদরম্।

8১১। ভদ্রমদ্রভিণি শুভমুণ্ডনে।

মঙ্গলপূর্বকং মুণ্ডনং শুভমুণ্ডনম্। তিমির্মের বর্তমানাভ্যাং ভদ্র মদ্র ইত্যেভাভ্যাং কঞি প্রযুদ্ধানে ভাচ্ ভবতি। ভদ্রাকরোতি মদ্রাকরোতি

মাণবক্ষ্। শুভমুণ্ডন ইতি কিম্ ? ভদ্রং করোতি মদ্রং করোতি মুণ্ডনং
করোতীত্যর্থঃ।

8>২। অব্যক্তশব্দামুকরণাদনেকাচোহনিতৌ কৃত্ব-স্তিয়ু।

যত্রাকারাদয়ে বর্ণাঃ স্পষ্ট। ন প্রতীয়ন্তে সোহব্যক্তশকঃ তদনুকরণাচ্ছকাদনেকাচ ইতি পরস্বাভাবে সতি রুভুন্তিয়ু প্রবৃদ্ধানানেয়ু ডাচ্ ভবতি। পটপটাকরোতি পটপটাভক্তি পটপটাস্তাং। খটগটাকরোতি থটং থটং লকাভ্যাং ডাচি রুতে তলুগ্নিত্যং দ্বিশ্চায়াদাবিতি তকারলুক্ দ্বিরুক্তিঃ।
অনেকাচ ইতি কিম্? চীংকরোতি। ইতৌ পরে তু। ঘটদিতি করোতি।
অব্যক্তশকামুকরণ ইতি কিম্? দৃশং করোতি।

৪১০। যাচোরুদ্গুণঃ।
প্রকরণনিয়মান্তদ্ধিত ইতাধিকারাদ্ধ বাচোরিতি তদ্ধিতবিশেষণম্। তদ্ধিতযাচো: পরয়ো: উত: স্থানে গুণো ভবতি। বায়ব্যং বায়ৣরতুপিক্রয়মো
যদিতি যং। ভানব: তত্তেদমিতি টণ্ ভানবীয়ং আদিহৈজাতশেতীয়ঃ।
উদোদিতি কর্তব্যে যং উদ্গুণ ইতি ক্লতং তেন অনিতাম্বমশু জ্ঞাপাতে।
অত: স্বায়জুব ইতি সিধাতি। তথাচ কাতয়ং স্বয়স্তুব ইতি বক্লবাম্।
অতদ্ধিতে তু। কণ্ডুয়া।

8>৪। নেদূতোঃ কেবলমোঃ।
ঈকারে উকারে চ কেবলে পরে গুণো ন ভবতি। পটী, গুণবচনাহদস্তাদিত্যাদিনা ঈ ব্রহ্মবন্ধু: উদস্তান্মনুযাজাতেরিতি উ: পট্করোতি বধ্স্থাৎ
চ্যোলুপ্তে উদস্তাদ্রিতি উ:। কেবলযোরিতি কিন্? বায়বীয়:।

8১৫। শিরসঃ শীর্ষন্শীষে ।
শিরংশকশু স্থানে তদ্ধিত্যাচোঃ প্রয়োঃ যথাক্রমং শীর্ষন্ শীর্ষ ইত্যোতাবাদেশো ভবতঃ। শীর্ষণ্যো মৃথাঃ শীর্ষণ্যঃ স্বরঃ অভাবকর্ম্বে চেত্যাদিনা
নকারলুমিষেধঃ। হস্তিশিরসোহপত্যং হাস্তিশীর্ষিঃ শিরোলোমাস্তাচ্চেতি
ইণ্ স্থানিরস ইদং স্থোলশীর্ষ্য।

৪১৬। মতে চ শীর্ষঃ। মতৌ পরে শিরসঃ স্থানে শীর্ষাদেশো ভবতি। শীর্ষবান।

৪১৭। কেশে যে বা। কেশে বাচ্যে যপ্রত্যারে পরে প্রাপ্তাদশো,বা ভবতি। শীর্ষণ্যাঃ কেশাঃ শিরস্তাঃ।

8261 अमिल्लूक् I

তদ্ধিতথাচো: পরয়োরকার ইকারশ্চ লুগ্ভবতি। গার্গা: তুলাং নদী। অস্থ দ্ধী ঈ পুংনায়: প্ংথোগে ইতি ঈ দাক্ষি: অস্থাপত্যং ই: অদস্তাচ্চেতীণ্ আগ্নের: অগ্নিকলিভ্যাং টেয়ণ্ ইতি টেয়ণ্ শ্রীদেণ্ডা অস্থ শ্রায় ইত্যত্ত টণি ক্বতে অপেক্ষিতবিধিয়াং প্রথমং বৃদ্ধিকারে ক্বতে লুকোহপ্রাপ্তি:।

৪১৯। তেশ্চ বিংশতেডিতি।

ডিতি পরে বিংশতেন্তেশ্চ লুগ্ভবতি। বিংশত্যা দৃষ্টং দাম বৈংশং উপবিংশাঃ।

৪২০। কচিদব্যয়ানাং সমতচ্ছেযয়োঃ।

তদ্বিত্যাচোঃ প্রয়োরবায়ানাং স্বরতচ্ছেষ্যোঃ ক্চিল্লুগ্ভবতি। সায়ং-প্রাভর্ত্তবিং সায়ংপ্রাভিক:। কালাদিতি টিকণ্ কালাব্যয়ান্তনড়িতি তনড়ত্র নেয়তে অনভিধানাং। বাহ্ন ইতি বহির্গন্তীরে দেবপঞ্চলাদ্যণিতি য়ণ্ রাহীক: বহিষ্ঠীকণ্ চেতি টীকণ্। স্বর্ভ্তর: সৌবঃ শ্বাদেরিতি বকারস্থো-বাদেশ: পৌনঃপুনিকঃ আক্ষিকঃ অবশ্রুংভাবঃ আবশ্রুকং মনোজ্রাদেশ্চেতি গক:। ক্চিল্ল স্থাং। শাশ্বতিকঃ শাশ্বতঃ শশ্বত্তীণ্ চেতি বক্তব্যমিতি টিকণ্টণ্চ আরাতীয়ঃ।

৪২১। তদেশ্চ।

ভদ্ধিতধাচোঃ প্রয়োন্ত্যেন্চ স্থারতচ্ছেষয়োলুর্গ্ভবতি। কৌতষ্ট্রঃ। ৪২২। অনেকাচ ইমেপ্টেয়সো।

ইমন্ ইষ্ঠ ঈয়য় ইত্যেতেষু পরেষু অনেকাচো নাম: স্বরস্ত তচ্ছেষস্ত চ লুগ্ভবতি। চণ্ডিনা পটিমা লঘিমা মহিমা চণ্ড পট্ লঘু মহচ্ছেলেভ্যঃ পৃথাদেরিমন্ প্ংদীতি ইমন্ পটীয়ান্ পটিষ্ঠঃ গুণাদীয়স্বিষ্ঠো বৈতি ঈয়স্বিষ্ঠো ইয়মাসামতিশয়েন পটী পটিষ্ঠা যাজাদিরনেয় ইতি প্ংবভাবং কম্বা উকারল ক্ বসীয়ান্ বস্মচ্ছেলাৎ মতুবিন্ভ্যান্তলুক্ চেতি ঈয়সো মতুলোপে চ ক্তে উকারলুক্। একাচস্তা। শুজিষ্ঠঃ শুজীয়ান্ প্রেমা প্রেষ্ঠঃ প্রেয়ান্।

৪২৩। অপাণ্ডুকদ্রোরেয়ণি।

মণ্ড্কপ্রা উদিতামবর্ততে। পাণ্ডুকক্রবর্জিত স্থাকারাক্তস্ত এয়ণি পরে

উকারলুগ্ভৰতি। লেখাভ্রেয়: গুলাদিখাৎ এয়ণ্ কামগুলেয়: চতৃ-পানদেতত্যেয়ণ্ > পাগুকড়োস্ত। পাগুবেয়: পাগুমগুকছ্চুলাছেতি এয়ণ্ কাদ্রবেয়: শুলাদিখাদেয়ণ্।

৪২৪। ইক্বকোকণ্ণটোঃ।

ইক্ষ্ক্ৰ টণি ণাট क পরে উকারো লুগ্ ভবতি। ইক্ষ্ক্রনপদেমু ভবঃ ঐক্ষাকঃ কুপাস্তাচ্চেতি টণ্ ইক্ষ্কোঃ ক্লিয়ভাপত্যং ঐক্ষ্কঃ। জনপদ্বপাংক্লিয়াদিতি টণ্।

৪২৫। অয়ো ভবে সর্যাঃ।

সরবূশকস্থ ভবার্থে বিহিতে প্রতায়ে পরে অয় ইত্যক্ত লুগ ভবতি। সারবং তত্র ভবে ইতি টণ্ যাচোকদ্গুণ ইতি গুণোহবাদেশঃ।

৪২৬। হিরণ্যস্থ ময়টি যস্তা।

গিবণ্যশক্ষ ময়টি পৰে য়স লুগ্ছবতি। হিবন্নয়ং তহা বিকারেগ্রেথি শেবাদেতি ময়টু।

৪২৭। সৎস্থান্ত জীকারে।

মংস্থাকার অবিবিহিংত ঈকাবে পরে লুগ্ভবতি। মংসা নদাদি-আদী। স্বীকার ইতি কিম্পূ মংস্থাধ হিতং মংস্থীয়ং তামে হিতেহরা-আদেরিভায়ঃ।

8২৮। হলস্তদ্ধিত**স্থ**!

হল উত্তরশু তদ্ধিত্যকারশু স্ত্রীকাবে পরে লুগ্ভবতি। গাগী বাংদী নৌনী। হল ইতি কিন্? বারিকেরী স্ত্রীবিহিত প্রত্যান্ত্রীদিতায়ণ্ ছাতিয়ালীপ্রতার। তদ্ধিতপ্রতি কিন্? বৈদ্যী পুংনায়ঃ পুংযোগে ইতি দী।

৭১৯। সূর্য্যাগস্ত্যযোরীয়ে চ।

স্ধাগিস্তা যোর্থকার সা গৌকারে ঈরে চপনে লগ্ছবতি। স্থোঁণ একা দিখলাকা সৌরী তেনৈকনি শ ইতি টণ্টিবাদী স্থাস্য স্ত্রী স্বী মান্ধী স্থানদেবতারামিতি ঈপ্রতায়ঃ। অগস্তা দাপিতাং স্ত্রী আগতী শ্বাধিষাট্রণ্ সৌরীবঃ আগন্তীয়ঃ আদিহৈজাতশ্চেতীয়ঃ। প্রতায়াস্তরে তু। সৌর্যাঃ আগস্তাঃ তদৈবত ইতি টণ সৌর ইতি তুম্বনশ্বাংং।

৪০০। অপতাস্থানাতি।

ভদ্ধিতথাচোরিতার্বর্ততে। পূর্লিস্ত্রে স্ত্রীকারে পরে লুগ্, ভবেৎ ভদিত-রোহদ্য বিষয়:। হল উত্তরস্যাপত্যার্থে বিহিত্স্য যস্য ভদ্ধিত্ব আকার-বর্জিতে অচি চ পরে লুগ্, ভবতি। গর্গাণাং সম্হো গার্গকঃ উক্লোষ্ট্রো-রভ্রাজেত্যাদিনা অকণ্ পারাশরী ভিক্ষু: প্রারাশর্য্য শিলালিভ্যাং ভিক্ষ্ণউস্প্রয়োরিত্যনেন নিন্ গার্গীক্তঃ অগস্তাদী চেতি চি ক চ। অপত্য-স্যেতি কিন্ ? সাংকাশ্রকঃ সন্ধাশাদেন্য ইতি চাতুর্থিকো ন্যঃ তদস্তাৎ যুপান্থাদিত্যকণ্। রাজুন্যকঃ মানুষ্যকঃ ইন্যুবাপি ন লুগ্, ভবতি। অপত্যা-ধিকারেছপি নায়ং প্রত্যয়োহপত্যার্থে কিন্তু জাতৌ। অনাতীতি কিন্ ? গার্গ্যারণঃ পৌত্রাদ্বনিশ্তাচ্চেতি নায়নঃ। হল ইত্যেব। কারিকেয়িঃ অদন্তাচ্জিন্।

8७)। विवकोग्नारमङ्गीग्रस्र।

বিৰকীয়াদেরীয়স্যানাতিতনিতে পরে লুগ্ভবতি। বিৰাদিক ঞান্তো লড়াদেঃ কুশ্চেত্যনেন কতে ঈরপ্রভায়ান্তো বিৰকীয়াদিঃ। বিৰাধ্ত সন্তি স বিৰকীয়ঃ তত্র ভবো বৈৰকঃ তত্র ভবে ইতি টণ্।

8७२। তিষ্যপুষ্যয়োটণ।

তিষ্যপুরাশক্ষোর্যকারস্য টণি পরে লুগ্ভবতি। তৈখমহঃ পৌধী রাত্রিঃ ভাতদ্যুক্কালে ইতি টণ্।

৪০০। অন্তিকস্য তমে তিকস্য। তমপ্রতারে পরে অস্তিকাবয়বস্য তিকস্য লুগ্ভবতি। অস্তমঃ।

৪৩৪। কস্য সদ্যয়েশ্চ।

অন্তিক বিরবিদ্য ক্ষ্য তমে দিনি যকারপ্রতায়ে চ পরে লুগ্ভবতি। জন্তি-ভমঃ অন্তিকে দীদতি অন্তিষৎ কিপ্ অগ্নাদেরাক্তিগণস্বাৎ ষত্বম্। অন্তিরঃ ভক্র সাধাবিতি যথ।

৪৩१। ইম্মক্তান্তাদিকদ্যেতঃ।

ইস্থানেঃ প্রত্যন্ত্রারিই গ্রহণম। ইক ইতি নিরম্বন্ধকস্য লুপ্তান্থ্রক্ষস্য চ গ্রহণম। ইসন্তাহ্যন্তাহণন্তাৎ তদন্তাক্ত বিহিত্স্য ইকস্য সম্বন্ধিনঃ ইকারস্য লুগ্ভবতি। সাপিদঃ ধান্তকঃ তেন সংস্কৃতে তদ্স্য প্রহরণমিতি টিকণ্ সপিধি মংশব্দী স্পাদেরিস্ দ্পাদেরস্ ইতি ইম্প্

প্রতারাকো। বৈকৃকং পৈতৃকম্ ঔদখিংকং ধেনোরনঞ: পিতৃর্যন্চ উদ্ধিতো বা ইতি ভিকণ্। উরুণা তরতি উরুকঃ নৌ দ্যাচ ইক ইতি ইকঃ। অপ্রতায়ান্তয়ে। স্ক ন ভবতি আশিষিকঃ ঔষিকঃ বস নিবাসে কিপ্ উসাদেশঃ ততিষ্টিকণ্ বছম্। জ্যোতিষিক ইতি তু টণা নিম্পরাৎ জ্যোতিষশকাৎ ইকণ্ মাতিথিক ইত্যত্র তু মৃত্তিখশলাগ্রড়ন্তাবিহিত ইকণ্ কিন্তুদন্তাদিতি পুগ্ন ভবতি।

৪৩৬। দোষশ্চ।
দোংশনাত্তরীম ইকঃ সম্বিনঃ ইকারম্ভ লুগ্ভবতি। দোর্ভাং তরতি
দৌদঃ।

৪৩৭। ন শশ্বতঃ। ইকস্টতো লুগ্ন ভবতি। শাখতিকঃ।,

৪৩৮। বিথাদ্যাট্রণাদের নদাদে ।

বিথাদ্যাত্তরশু বুন্দানবর্থে বিহিত্ত টণাদের্গ্ ভবতি। তদর্থীতি
পর্যান্তং বুন্দানিকজ্ঞা। পঞ্চস্থ কপালেরু সংস্কৃতঃ পঞ্চকপালঃ তদ্বিতার্থে

বিগুঃ ভক্ষ্যে সংস্কৃতে ইতি টণ্। পঞ্চানাং কপালানাং সমাহারঃ পঞ্চকপালী
সমাহারে বিগুঃ ততঃ পঞ্চকপাল্যাং সংস্কৃত ইতার্থে সংস্কৃতার্থবিহিত্তিণ্লোপঃ লুকি স্ত্রীবিহিত্ত চেভি স্ত্রীপ্রতায়নির্ভিঃ। পঞ্চকপালঃ ছো
বেদাবধীতে বিবেদঃ পূর্ব্বিদ্নিগুঃ তদ্বন্তি তদবীতে বেতি টণ্ পঞ্চকপালাল্য
প্রোডাশশ্র ইন্মিতার্থে পুনবিহিত্ত টণোলুগ্ভবতি লুপ্তঞালুপ্তবৎ কচিনিতি
লুপ্তত্ম টণোহলুপ্রব্যাৎ নায়ং বিগোক্তরঃ অতঃ পঞ্চকপাল ইত্যেব ভবতি।
পঞ্চত্যো গর্গেল্য আগ্রুমিত্যর্থে হেতুনরাভ্যাং রূপ্যং বা ময়ট্ চেতি রূপ্যঃ
ময়ট্ চ পঞ্চগর্গরাপ্যং পঞ্চগর্গময়মিত্যাণে বহুলাবিকারাদনজাদেন লুক্।
বৃন্দাবিতি কিম্ং ঘাভ্যাং নৌভ্যাং তরতি দ্বিনার্থিকঃ নৌ ঘ্যচ ইক ইতি
ইকঃ।

৪৩৯। নাপত্যার্থে।
দিগোরুত্তরশু অপত্যার্থে বিহিতশু তদ্ধিতশু দুপ্ন ভবতি। দ্বাদে বদত্তমারপত্যং দৈদেবদন্তিঃ অদন্তাচ্চেতি ইন্।

880। অধ্যর্দ্ধ পূর্ববিকি তদর্হ ত্যাদাবদংজ্ঞায়াম্। অধ্যন্ধ: পূর্বে! বন্মিন্ সোহধ্যদ্ধপূর্বে: তক্ষাদ্বিগোল্চ তদর্হ ত্যাদাবর্থে বিহিত্ত লুগ্, ভবতি। প্রত্যান্তেন চেৎ সংজ্ঞান গমাতে। অধ্যহিকাসৌ কংসশ্চেতি অব্যর্দ্ধকংসঃ তেন জীতং কংসাদ্ধান্তাং টিক ইতি টিক: তক্ত্র ক্র অব্যদ্ধকংসম্ এতদেব লুমিধানং জ্ঞাপয়তি অব্যদ্ধপূর্ব্ব, দ্বিগোশ্চ অহ প্রত্যায়া ভবস্তীতি দ্বিকংসঃ দ্বৌ কংসাবহ তি ছাভ্যাং কংসান্তাং জীতং বাম্মিয়র্থে বিহিত্ত টিকণো লুক্ তদ্ধিতার্থে দ্বিশু:। অব্যদ্ধসূর্প: দ্বিস্প: স্পান্ধটিকণাবিতি ণট্টিকণোরগুতরক্ত লুক্ ক্রাং তুদ্ধিতলুগস্তাদ্বিস্পশিকাং দিস্পেণ পটেন জ্রাতমিত্যর্থে তেন জীতে মূল্যাদিত্যনেন যদা টিকণ্ তদা দিসেপিকমিতি প্রথমং লুক্ত তদ্ধিতভালুপ্যবন্ধাং পরিমানজাশাণজ্ঞানজামিত্যনেন উত্তরপদর্দ্ধিঃ। সংজ্ঞায়ান্তানেন উত্তরপদর্দ্ধিঃ। সংজ্ঞায়ান্ত। পাঞ্চলোহিতিকং প্রঞ্জায়ামিত্যনেন উত্তরপদর্দ্ধিঃ। সংজ্ঞায়ান্ত। পাঞ্চলোহিতিকং প্রঞ্জায়ামিত্যনেন উত্তরপদর্দ্ধিঃ পরিমাণমন্তেতি তদ্ধিতার্থে দ্বিশুঃ তদক্ত পরিমাণমিতি টিকণ্ সংজ্ঞান্ধনান্ত্রপদর্দ্ধিঃ পরিমাণবিশেষক্ত বংজ্ঞেরম্।

৪৪১। কার্যাপণসহস্রশত্যানম্বর্ণান্তারা।

অধ্যন্ধপূর্দ্ধাং বিগোঃ কার্যাপণাগন্তাং তদহ ত্যাদাবর্থে বিহিত্স লুখা ভবতি। পূর্বেণ প্রাপ্তে বিভাষা।, অধ্যন্ধিকার্যাপণিক্ম অধ্যন্ধি প্রতিক্ষ্ এবং দিকার্যাপণাং দিকার্যাপণিকং বিপ্রতিকং ক্রাপণাঞ্জ্য তম্প্রতিক্য ইতি টিকঃ লুক্পক্ষে নিমিন্তাভাবাৎ প্রত্যাদেশো ন ভবতি। অধ্যন্ধিনহস্রন্য অধ্যন্ধিনাহস্রং বিশত্যানং দিশাত্যানং বিংশতিকানেই গিতি টণ্ বিস্তব্যং বিদৌবর্ণিকং তদহ ত্যাদাবিতি টিকণ্ পূর্কবিদ্তর্বপদর্দিঃ।

৪৪২। দ্বিত্রিবহুপূর্ব্বাদ্বিস্তনিক্ষাস্তাৎ।

দ্যাদিপূর্বাং বিস্তান্তাং নিকান্তাক্ত বিগোকত্বরম্ভ তদহ ত্যাদাবর্থে বিচ্ছিত্র পুরা ভবতি। দ্বিবিস্তং হৈবিভিকং দ্বৌ বিস্তৌ পরিমাণমন্ত তদম্ভ পরিমাণ ইতি টিকণ্ পূর্ববস্থারপদর্কিঃ দ্বিনিদ্ধঃ দ্বিনিদ্ধঃ ত্রিনিদ্ধঃ ত্রৈনিদিকঃ বহুনিকঃ বহুনিকঃ।

৪৪০। কুলিজান্তাচ্চ।

কুলিজগ গান্তাক্ত বিলোকত্তরস্থ তদর্শতাদাবর্থে বিহিত্ত লুখা ভবতি। বে কুলিজে সম্ভবতি ইত্যাদাবর্থে দিনৌ কুলিজাচ্চ টিকন্চেভি টিকণ ভ্যাং ত্যক্তে পক্ষে বিহিত্ত টিকনো লুক, বথাচ টিকন এব লুক্ তদ্বিগৌ কুলিজাচ্চ টিকন্চেভি তত্ত্রবোক্তং দ্বিক্লিজী দৈক্লিজিকী পরিমাণাদ্বিস্তাচিত্তকস্থ-ল্যাক্তিছিত্লোপে ইভি ব্রিষানী।

888। वर्षा छमधी छोटनी।

বর্ষশন্দান্তাৎ দ্বিট্যান্তমধীষ্টাদাবর্থে বিহিত্ত লুখা ভবতি। 'দ্বৌ বর্ষে আধীটো ভূতো ভূতো ভাবী 'বেতি রাত্র্যহঃসংবৎসরবর্ষাচ্চেজীনঃ পক্ষে দ্বিষ্যাণ্য দিবাধিকঃ পক্ষে দুক্ দ্বিষ্যা।

৪৪৫। প্রাঞ্জিনি নিত্যং ভূতে।

প্রাণিবাচ্যে ভূতেহর্থে বর্ষাস্তান্দির্গোবি হিতস্য লুগ্নিতাং স্যাৎ। দ্বিবর্ষে ভূতঃ দ্বিবর্ষে বালঃ। ভূত ইতি কিম্ ? দ্বৌ বর্যবিধী থ্রো ভূতো ভাগী বেতি দ্বিবর্ষি দ্বিবাধিকঃ পুরুষঃ পূর্বস্থিত্রণ বিকল্প এব ভব্তি।

৪৪৬। মানে।

দিগৌ মানে বিজিত্স্য প্রতায়স্য লুগ্ভবতি। দে। প্রস্থে মানমস্য দ্বিপ্রস্থং পানাং মানং মাত্রজিতি মাত্রট্ দ্বিজাত্ম জলং দ্বট্দ্যুদ্টৌ চোর্জুমিতি দৃদ্ট্-দ্যুদ্টো চ বিপুক্ষী পরিধা হস্তিপুক্ষাভ্যাং টণ্ বেতি টণ্ এষাং লুক্।

৪৪৭। সর্বসংপূর্বাতদ্বরেত্তদ্বেদিত্রোঃ।

সর্ব্বপৃধ্বাং সহশব্দপূর্বাচ্চ তদ্ধোতরি তদ্বেদিতরি চ বাচ্যে বিহিত্স্য লুগ্ভবতি। সর্ব্বং তন্ত্রং বেত্তি সর্ব্বতন্ত্রঃ সর্ব্ববেদঃ সর্ব্বগ্রহঃ সবার্ত্তিকঃ সসংগ্রহঃ
ক্ষেপ্তবচন ইত্যব্যয়ীভাবঃ অব্যয়ীভাবে চাকালে ইতি সহস্য সঃ। কথং দ্বৌ
বেদাবধীতে দ্বিবেদঃ ত্রিব্যাকরণঃ দ্বিগৌ লুগিধানাং।

৪৪৮। সূত্রবাচিকান্তদংখ্যায়াঃ।

স্ত্রবাচিনঃ কাস্তাৎ সংখ্যাশন্ধবাচকাৎ তদধ্যতরি তদ্ধেদিতরি চ বাচ্যে বিহিত্স্য লুগ্ভনতি। অষ্টাবধ্যায়াঃ পরিমাণমশু তদশু পরিমাণমিত্যর্থে সংখ্যায়াঃ করিংশদ্ধ মিতি কঃ পাণিনীয়মষ্টকং স্ত্রং তদধীতে অষ্টকঃ। সংখ্যায়াঃ ইতি কিম্ ? মহাবার্ত্তিকং স্ত্রমধীতে মাহাবার্ত্তিকঃ। অকাস্তাত্ত্য চতুইয়মধীতে চাতুইয়ঃ।

४४३। (वाकार।

তেন প্রোক্ত ইতার্থে বিহিতাৎ। পরস্থা তদধ্যেতরি তদ্বেদিতরি চ বাচ্যে বিহিত্ত লুগ্ভবতি। পাণিনিনা প্রোক্তমিতার্থে যুবপ্রত্যয়লুগস্তাৎ পাণিনিশনাং আদিহৈজাতক্তেতি শৈষিক ঈয়ং পাণিনীয়ং তত্ত্বণ্ তদ্য লুক্ চ যদি মলুগ্ন আৎ তদা পাণিনীয়া স্ত্রী ইতি ন দ্যাৎ। আপিশলিশকাদিনস্তান্তেন

প্রোক্তে অর্থে প্রাচ্যভরতাপত্যাস্তাদ্যাজ্বর্দ্ধ মিনস্কাদিতি টণ্ ততন্তবেরীত্যর্থে বিহিত্তণ্ লুক্ আপিশলঃ দ্বিরাং আপিশলা প্রোক্তার্থবিহিত্স্য টণোহ-প্রধানার্থবাৎ অত্তিরিমান্তবর্জ মপ্রধানার্থাদিতি প্রতিষ্ধাদীপ্রত্যয়াভাবঃ। কাশকুৎসেন প্রোক্তা শ্রীমাংসা কাশকুৎসী তামধীতে কাশকুৎসা ব্রাহ্মণী টণ্ লুকি ক্তে সুকি দ্বীবিহিত্স্য চেতি ত্রীপ্রত্যমনিব্রুতিঃ ক্ষপ্রধানার্থবাৎ ক্ষপ্রত্যয়ভাবে আৎ।

৪৫০। বেদে তবিষয় এব।
বেদে বাচ্যে বিহিতঃ প্রোক্তপ্রত্যয়ন্তদধ্যেতরি তদ্বেদিতরি চ বিষয় এব
ভবতি। অনন্যবদ্ধাবা বিষয়ার্থঃ তেন স্বাতন্ত্র্যমুপাধ্যস্তর্যোগো বাক্যঞ্চ
নিবর্ত্ততে। পিপ্পলাদেন প্রোক্তং বেদং বেত্তাধীতে বা পৈপ্পলাদঃ এবং
তৈত্তিরীয়ঃ ছাগলেয়ী শোনকী আলম্বী কালাপঃ। বেদ ইতি কিম্?
পৈপ্পলাদঃ শ্লোকঃ তদ্যেদং পৈপ্পলাদীয়ং শৈপ্পলাদং বেত্তাধীতে বেতি স্বাতন্ত্র্যমুপাধ্যস্তর্যোগো বাক্যঞ্চাত্র ভবতি। নিম্নাভাবাৎ পৈপ্পলাদঃ পুরুষ ইত্যাপি
ভবতি।

৪৫১। কাশ্যপকেশিকাভ্যাং কল্পেচ।
ভাভাং কল্পে বাচ্যে বিহিতঃ প্রোক্তপ্রত্যমন্তবিষয় এব ভবতি। তেন প্রোক্তং
কল্পমনীতে বেত্তি বা কাশ্রুপী কৌশিনী। কল্প ইতি কিম্ ? কাশ্রুপীয়া
সংহিতা। আভ্যামন্যত্ত। পৈশ্লী কলঃ।

৪৫২। পারাশর্যকর্মনাভ্যাং ভিক্ষুসূত্ত্র।
আভাাং ভিক্ষুত্তে বাচ্যে বিহিতঃ প্রোক্তপ্রতায়ন্তবিষয় এব ভবতি। পারাশরী ভিক্ষ্ অপতাস্যানাতীতি যলুক্ কর্মনী ভিক্ষ্য। স্থ্য ইতি কিম্ ?
পারাশরীয়ম্।

৪৫৩। শিলালিকশাশ্বাভ্যাং নটসূত্ত্বে।
আভ্যাং নটস্ত্ৰে বাচ্যে বিহিতঃ প্ৰোক্তপ্ৰতান্তৰ্ভিষয় এব ভবতি।
শৈলালী নটঃ কুশাখী নটঃ।

৪৫৪। খাষেরযাজ্ঞবক্ষ্যাদের্ত্রাহ্মণে।
বাজ্ঞবক্ষ্যাদিব্যতিরিক্তাদৃধিবাচকাদ্রাহ্মণে বাচ্যে বিহিতঃ প্রোক্তপ্রত্যন্ত্রদ্ধ্যত্তদেদিত্বিষয় এব ভবতি। শাট্যায়নী ভাগুরী তৈন্তিরিয়ী
ঐতরেয়ী ইতরশকাৎ শুলাদিখাদেয়ণ্ তিন্তিরিশলাৎ ইদস্তাচানিদস্থা-

দিভ্যেয়ণ্ **আভ্যাৰ্ ঋ**ষিণেত্যাদিনা প্ৰোক্তেহৰ্থে পিন্। বেদমন্ত্ৰব্যাথাগ্ৰন্থে ব্ৰান্ধণঃ। যাজ্ঞবন্ধাদেন্ত। যাজ্ঞৰক্ষ্যানি ব্ৰান্ধণানি।

৪৫৫। কঠচরকাভ্যাং বেদে প্রোক্তশ্য চা
আভাাং বেদে বাচ্চে বিহিত্ত প্রোক্তপ্রতায়স্তাচ লুগ্ভবতি। কঠেন
প্রোক্তং বেদমধীতে অকলাপিন ইত্যাদিনা পিন্ তত্তইণ্ কঠঃ এবং চরকঃ
তেন প্রোক্ ইতি টণ্ তল্পুক্।

৪৫৬। যক্ষাদেরপত্যার্থস্থ বহুদ্বেহৃদ্রিয়াম্।
বন্ধাদিগণপঠি নদপত্যার্থস্থ বহুদ্বে বিহিত্ত অন্তিমাং লুগ্ ভবতি। যক্ষণ্ঠা-পত্যানি বহুনি যক্ষাঃ। অপত্যার্থস্তেতি কিন্ ? যক্ষণানী শিষ্যাঃ যাক্ষাঃ
তল্পেনিতি টণ্। বহুদ্ব ইতি কিন্। বাক্ষঃ যাক্ষো বক্ষানতিক্রান্তঃ অতিন্যক্ষঃ প্রেয়া যক্ষা যক্ত দ প্রিয়যক্ষঃ অত্র লুগনস্তরং সমাসঃ যাক্ষমতিক্রান্তা অতিযান্ধাঃ প্রিয়ো যাক্ষাে যেষাং তে প্রিয়যান্ধাতি কিন্ম্ ? যক্ষসাপত্যানি বিহিতঃ কিন্তু সমাসার্থো বহুদ্ববৃত্তিঃ। অন্তিয়ামিতি কিন্ম্ ? যক্ষসাপত্যানি বিয়েয় যাক্ষাঃ। যক্ষ লক্ষ ক্ষ আয়স্থুণ ভূণকর্ণ ভনন্দন এভাঃ বড়ভাঃ শিবাদিস্বাট্রণ সদামত্ত কম্বল হার বহির্যোগ কর্ণাটক পিণ্ডাজ্জা বক্ষক থ রক্ষোহস্বর জন্ত্রারথ উপকাশ কটুকমন্থক বিষপুট উপরিমেখল ক্রোষ্ট্র মায় ক্রোষ্ট্রস্থান ক্রাইপাদ শীর্ষমায় শীর্ষমান্ পদক কর্ষক এভাো বিংশতেরদান্তাতিত ইণ্ বিশি ক্ষুদ্রি অজবন্তি এভাব্রিভাঃ শুলাদিস্থাদের্য ক্ষরপ ভিজে ভণ্ডিত ভণ্ডিত এভান্ত এভাঃ পঞ্চল্যাহশ্বাদের্গায়ন ইতিপায়নঃ পুদ্ধরসদ বাহ্বাদেন্তেতি ইণ্ অন্তি ইণ্ডাজানিশস্তাদিত্যেয়ণ্ ভৃগু কুৎস বশিষ্ঠ গোতম অন্তিয়ন্ এভাঃ পঞ্চল্যঃ শ্বিষ্ট্রাণ্।

৪৫৭। যণশ্চ।
বছত্বে বাচ্যে বিহিতভাপত্যপ্রতায়ন্ত যণোহস্তিয়াং লুগ্ভবতি। গর্গাঃ।
অবহুত্বে তু। গার্গাঃ গার্গাে। অনপত্যশু তু। বাহাঃ বহির্গস্তীরদেবপঞ্জনাদ্যণ্ ইতি তত্র ভবে অর্থে যণ্। লক্ষণমেতৎ কিমর্থং গর্গাদ্যাে
যক্ষাদাবেব পঠ্যস্তাম্ এবমনস্তরাপত্যশু লুক্ স্যাৎ গার্গেয়ঃ।

৪৫৮। কুণ্ডিন্যাঃ কুণ্ডিনঃ।
গর্নাদিখাদিহিতস্য যণঃ পূর্মেণ লুক্ সিদ্ধ এৰ কিন্তু আদেশার্থং বচনম্।
কুণ্ডিনীশকাৎ অপত্যার্থে বহুত্বে বিহিত্ত যণোহক্সিয়াং লুগ্ ভবতি।

কুণ্ডিন্তা: স্থানে কুণ্ডিনাদেশত। কুণ্ডিনা। অবহুত্বে তু। কৌণ্ডিন্তা। অবহুত্বে তু। কৌণ্ডিন্তা। অবিয়ামিতি কিম্ ? কৌণ্ডিন্তাঃ ব্রিয়ামীপ্রত্যায়ে ক্রতে যণ্ লুক্।

८ करा **चर**ाशिवनारमर्ग है: ।

গোপবনাদিব্যতিরিক্রাছছতে বাচ্যে বিহিতস্থাপত্যার্থক্ত গটোহস্তিয়াং লুগ্ভবতি। বিদাং। বিদাদের ড়িতি গট্। স্তিয়াস্ক। বৈদ্যা স্তিয়য়ঃ। গোপবনাদেস্ক। গোপবনাঃ। গোপবন শিগু বিন্দুভামক অংশ অবতার স্থামাক স্থাপর্ব গোপবনাদিবি দান্তম্বর্গণঃ বিদাদাবস্তরাপত্যে যেভ্যো গট্ কস্থ ন লুগিতোকে। পৌনর্ভবাঃ পৌল্রা দৌহিত্রাঃ নানান্রাঃ পারাশরাঃ বর্দ্ধমানস্ক লক্ষণমেবৈতদর্থং চকার।

৪৬০। অগস্ত্যস্পাস্তঃ।

অগস্ত্যশব্দাঘছতে বাচ্যে অপ্তিয়াং বিহিতস্থাপত্যপ্রতায়স্ত লুগ্ভবতি। অগস্ত্যন্ত স্থান অগস্তিশ্চাদেশঃ। অগস্তয়ঃ ঋষিটণো লুক্। অবহুতে তু। আগস্তাঃ। প্রিয়াস্থ। অগস্তাস্যাপিত্যানি স্ত্রিয়ঃ আগস্ত্যঃ স্থ্যাগস্তায়োরীরে চেতি যলোপঃ।

৪৬১। বহুচঃ প্রাচ্যাদিণঃ।

অন্তিয়ামিতি নির্ত্তম্। বহুস্বরাৎ প্রাচ্যাৎ বহুতে বিহিত্তাপত্যপ্রতায়ক্ত ইণো লুগ্ভবতি। প্রাগারাঃ অদন্তাক্তেজি ইণ্ তস্য লুক্ যুধিষ্টিরাঃ অর্জুনাঃ বাহ্বাদীণো লুক্। অবহুত্বে তু। পাত্মাগারিঃ যৌধিষ্টিরিঃ। বহুবাট ইতি কিম্? বৈক্ষঃ। প্রাচ্যানিতি কিম্? বালাকয়ঃ।

৪৬২। উপকাদিভ্যো বা ।
উপকাদিভ্যো বহুবে বিহিত্স্যাপত্যপ্রত্যয়স্য লুগ্বা ভবতি। উপকাঃ
উপকাষনা: নমকাঃ নামকায়না: উপকনমকাভ্যামঝাদিঃ ণায়নস্য লুক্
স্পিষ্ট পিষ্ট ময়্র কর্ণ জাটলক বিধরক বৃষ্ণিক পঞ্চালক এভ্যোহইভাঃ
লিবাদিঘাটণো লুক্ অনুলোমন ইত্যমালোমাস্তাতো লুক্। ভ্রষ্টককণিষ্ঠল
কঞ্চাজিন ক্ষান্ত্রল্য অবটাবক অভাবক উলুক্ অনুজক শালাধল
থারীজ্জ্ব পতঞ্জল কর্ম্মনক কুণীতক কাশকুৎস নিদাঘ কলসীকঠ
দামকণ্ঠ কৃষ্ণপিত্রল অজপথ বিপঞ্জলক প্রতান অভিহিত এভ্যো
ঘাবিংশতেরদস্তাচ্চেতাণো লুক্ এযাং ঘদ্দেহপি বিকয়েন লুক্ এয়াং
মধ্যে বেহুজ এয়ো ঘদাঃ উপক্রমকাঃ ভ্রষ্টক্রকপিষ্ঠলাঃ কৃষ্ণাজিনকৃষ্ণ-

ক্ষেন্যা: ইতি উত্তরস্ত্রে পঠান্তে তেখাং নিতামের উত্তরস্ত্রেগ্ন নুগিতি জ্ঞা-দিত্যক্ত মতম্। ^বতত্রাপি বিকর ইতি তু ভাষ্যকারস্বরদঃ তন্মতে উত্তরস্ত্র স্বন্ধে ত্রয়াণাং পাঠো নিরর্থকঃ।

৪৬৩। তিক্কিতরাদিভ্যো স্বন্ধে।

বেতি নাম্বর্ত্তে। ভিকাদিভাঃ কিতরাদিভাত বছতে বিহিত্তাপত্যাপ্রতায়ন্ত ঘল্লে পূণ্ডবতি। তৈকায়নয়ত কৈতরায়নয়ত তিককিতরাঃ
তিকাদিণায়নেপূক্ উপকনমকাঃ আভ্যাম্ অবাদিণায়নমুগ লুক্ সরলককুভাঃ
কুজককুভাঃ কুজাদদন্তেণো পূক্ ককুভাৎ শিবাদিত্বাৎ টণো পূক্ উরসলকটাঃ
উরদাত্তিকাদিনা যণেপূক্ লক্ষটাদদন্তেণো পূক্ অগ্নিবেশকুশেরকাঃ অগ্নিবেশাদ্গর্গাদিযণো পূক্ যণতেতি লক্ষণেন পূক্ সিদ্ধ এব দ্বন্ধার্থঃ পাঠঃ কুমেরকাদদন্তেণো পূক্ বঙ্গরভঞ্জীরথাঃ পাপকনরকাঃ বকনথবভরপরিভদ্ধাঃ
লক্ষশান্তমুখাঃ কুঞাজিনকুঞ্জুল্দরাঃ ভ্রষ্টককপিঠলাঃ এভ্যোহস্তাদিণো পূক্।

८७८। नाजामि उन्द्रमारनी।

বিষয়সপ্তমীয়ম্। যা পূর্কস্টেত্রব্ছত্বে লোপো বিহিতঃ স তদ্বৃন্দাদ্যর্থঃ অন্ধিন্ প্রত্যায়ে অজ্ঞানৌ বিধাত্মিষ্টে ন ভবতি। যঞ্চানাং শিষ্যাঃ যান্ধীয়া গার্গীয়াঃ বৈদীয়াঃ ঘৌধিন্টিরীয়াঃ। অজ্ঞানবিতি কিম্? যঞ্জেভ্য আগতং যঞ্জ্ঞপ্যঃ হেতুনরাজ্যাং ক্লপ্যং বা শন্ত্রটেতি ক্লপ্যঃ। তদ্বৃন্দাদাবিতি কিম্ ? যঞ্জেভ্যো হিতং যান্ধীয়ম্।

৪৬৫। জনপদরূপাৎ ক্ষত্রিয়াদ্তিয়াম্।

জনপদসমানো যঃ ক্ষত্রিয়ঃ ক্ষত্রিরবাচকঃ শক্তর্মান্ত্বে বাচ্যে বিহিত্তাপত্যপ্রসায়িয়াং লৃগ্ভবতি। পঞ্চালতাপত্যানি পঞ্চাঃজনপদরপাৎ ক্ষত্রিয়াদিতি গট্। বঙ্গাঃ কলিঙ্গাঃ জনপদরপাৎ ক্ষত্রিয়াদ্যাচঃ কলিঙ্গমগ্রহ্মসাক্ষেতি টণ্। অঙ্গনপদরপান্ত্। পৌরবাঃ। অক্ষ্রিয়ান্ত্। পঞ্চালতা ব্যক্ষণতাপত্যানি পাঞ্চালয়ঃ। প্রিয়ঃ পাঞ্চালায়মীয়াং প্রিয়পাঞ্চালাঃ পাঞ্চালমতিক্রান্তাঃ অতিপাঞ্চালা ইত্যত্র সমাসো বছ্ববৃদ্ধির্মত্ অপত্যপ্রত্যয়ঃ। বিয়য়ায়। পাঞ্চালভাপত্যানি বিয়য়ঃ পাঞ্চাল্যঃ প্রিয়ারে। পাঞ্চালভাপত্যানি বিয়য়ঃ পাঞ্চাল্যঃ প্রিয়ারেনা ব্যান্তিলায়ঃ এষাং প্রিয় ক্রেনালায়ঃ অত্যান্ত্রিয় প্রত্যার্থত ভূত্রীম্বনের।

💌 ৪৬৬ । ক্ষজ্রিয়রপাজ্জনপদাদ্রাজনি।

ক্ষত্রিয়রপাজ্জনপদবাচকাচ্ছকাদ্রাজনি বাচ্যে বছত্বে বিহিতপ্রাপ্তিরাং লুগ্ভবতি। পঞ্চালানাং রাজানঃ পঞ্চালাঃ ক্ষত্রিয়রপাজ্জনপদাদপত্যবস্তম্পরাজনীতি টণ্।

Q.

৪৬৭। কমোজাদেঃ।

কমোজাদেঃ ক্ষপ্রিয়বাচকাদপত্যে জনপদবাচকাচ্চ রাজনি থাচ্যে বিহিতস্থ লুগ্ ভবিতি। পূর্ব্ববৈশ্ব লুকি সিদ্ধে অবহুদ্বে স্ত্রিয়াঞ্চ লুগর্থং বচনম্। কম্বোজঃ কম্বোজে কম্বোজাঃ কম্বোজা। অপত্যাদ্রাজ্ঞশচান্তঃ। কাম্বোজো ভৃত্যঃ। কম্বোজ চোল কেরল শক আকৃতিগণতা চাস্ত লক্ষ্যতে যতো ব্রাহ্মণাদৌ পঠিতানাম্ আরাধয় বিরাধয় উপরাধয়ানামনেন লুকং জিনেক্স উক্তবান্।

৪৬৮। অবন্তিকুন্তিকুরুভ্যঃ স্ত্রিয়াম্।

এভাঃ ক্ষত্রিয়বাচিভ্যোহপত্যে বাচ্যে জনপদবাচিভ্যো রাজনি চ বাচ্যে স্ত্রিয়াং বিহিত্ত লুগ্ভবতি। অবস্তেরপত্যং স্ত্রী অবস্তী কুস্তী ইদস্তাচ্চেতি ণ্যশু লুক্ ইদস্তান্মুখ্যজাতেরিতি ঈ। কুরঃ। অজাদকোশলকুঞ্জাশেচতি ণ্যশু লুক্ উদস্তান্মুখ্যজাতেরিতি উঃ। প্রিয়ামিতি কিম্ ? আবস্তাঃ।

৪৬৯। অপ্রাচ্যভর্গাদেরতঃ।

প্রাচাভর্গানিবর্জিতাজ্জনপদসমানরপক্ষ প্রিয়াদপত্যে ক্ষ প্রিয়সমানরপজ্জনপদান্তাজনি বাচ্চা বিহিত্তস্যাকার প্রতায়স্য দ্বিয়াং লুগ্ ভবতি । মদ্রী দরৎ মদ্রস্যাপতাং স্ত্রী দরতো হপতাং স্ত্রীতি দ্বাচ্ ছাট্বা শূরসেনী গট্ অমুবরে লুপ্তে
ধাবপ্যকারপ্রতায়ৌ লুপ্রস্যালুপ্তব্রেনাপত্য প্রতায়স্ত জাতি ছালী । প্রাচ্যান্ত্র্যা
পাঞ্চালী বৈদেহী আঙ্গী বাঙ্গী কালিন্দী মাগধী । ভর্গাদেস্ত ভার্গী কারুত্রী
কৈকেয়ী প্রাক্তকেকরীতো ভরতপ্রতাহভূদিতি কেকয়কুলোৎপন্নায়াং
দ্বিয়া উপচারাৎ কেকয়শব্রত্তিঃ নদাদিছাদী ।

৪৭০। বহুৰু লোপিনাং বহুৰ্বছিটন্দ্বকশেষয়ে;

্ষেভ্যঃ পূর্বলক্ষণৈবঁত্যু লোপো বিহিতস্তেষাং শকানাং বহুনাং বাচকে বোৰ্দ্ একশেষণ্চ তত্ৰ অপত্যে রাজনি চ বাচ্চো বিহিত্ত লুগ্ভবতি অবহুজে বিহিত্তস্য প্রত্যরশু লুগর্থং বচনম্। আঙ্গণ্ট বাঙ্গণ্ট কালিঙ্গণ্ট অঙ্গবন্ধকলিঙ্গাঃ স্বীকৌ চ বাঙ্গৌ চ আঙ্গণ্ট বাঙ্গোট আঙ্গণ্ট বাঙ্গণ্ট অঙ্গবঙ্গাঃ। এতেছপি দ্বন্ধা বহুনামেব বাচকাঃ আঙ্গণ্ট আঙ্গাঃ। প্রিরাম্ভ। আঙ্গী বাঙ্গী কালিঙ্গাঃ আঙ্গাঃ।

895 । ताशारनाशिनाः वा।

পূর্ব্বলক্ষণৈর্যত্ত বহুর্ব্ লোপো বিহিতঃ তে লোপিনঃ তদক্তে অলোপিনঃ তেষাং বহুবর্থে দক্ষে একশেষে চ লোপিনমপত্যে রাজনি চ বাচ্যে বিহিত্সা লুখা ভবতি। আঙ্গণ্ড বাঙ্গণ্ড প্রেষ্ঠিণ্ড অঙ্গবঙ্গপ্রোষ্ঠাঃ আঙ্গবাঙ্গপ্রোষ্ঠাঃ আঙ্গবাঙ্গপ্রোষ্ঠাঃ আঙ্গবাঙ্গপ্রাষ্ঠাঃ আঙ্গবাঙ্গপ্রাষ্ঠাঃ অঙ্গবাঙ্গপ্রাষ্ঠাঃ বাঙ্গীশব্দোহত্রালোপীতি অন্তিয়ামিতি নিষেণাং। আঙ্গণ্ড বাঙ্গণ্ড রাজা কালিঙ্গণ্ড ভুত্যঃ আঙ্গবাঙ্গকালিঙ্গাঃ অঙ্গবঙ্গ-কালিঙ্গাঃ আঙ্গবাঙ্গকালিঙ্গাঃ অঙ্গবঙ্গকালিঙ্গাঃ অঙ্গবঙ্গকালিঙ্গাঃ অঙ্গবঙ্গকালিঙ্গাঃ অঙ্গবঙ্গকালিঙ্গাঃ অঙ্গবঙ্গকালিঙ্গাঃ আঙ্গবঙ্গকালিঙ্গাঃ আঙ্গবঙ্গকালিঙ্গাঃ আঙ্গবঙ্গকালিঙ্গাঃ আঙ্গবঙ্গকালিঙ্গাঃ আঙ্গবঙ্গকালিঙ্গাঃ কালিঙ্গণকোহত্রালোপী। একশেষে পাঞ্চালাঃ পঞ্চালাঃ অন্তিন্ধিন পাঞ্চালাঃ। পাঞ্চালঃ পাঞ্চালান্চ পাঞ্চালাঃ পঞ্চালাঃ বন্ধানিঃ অন্তিপ্রারিত্যাদিনা একশেষঃ। পাতঞ্জলাদীনাং বহুনাং মন্তনাত্রিত্য লক্ষণমেতং। অন্তে পুনরত্র লোপং ন মন্তন্তে।

৪৭২। পৌজাদ্যভাদবাক্ষণাদ্য্নি।

পৌজাদ্যর্থবিহিতপ্রতায়: পৌজাদিস্তদন্তাদ রাহ্মণবাচকাং যুনি বিহিতক্ত লুগ্ভবতি। ক্ষজ্রিয়াদদন্তাক্রেতি ইনস্তাৎ বৌনিশকাৎ পৌজাদিয়ণিণন্তা-চেতি যুনি বিহিত্পায়নক্ত লোপঃ এবং বৌদিঃ পিতা পুত্র-চ ভবতি ঝযা-ককর্ম্বিকুক্ভান্চেতি উণস্তাং খাফদ্ধশক্ষাং অদস্তাচ্চেতি যুনি বিহিতক্ত ইণো লুক্ খাফদ্বঃ পিতা পুত্র-চ ভবতি এবং বাহ্মদেবঃ নাকুলঃ জনপদেত্যাদিনা উণস্তাৎ আক্ষাৎ উণস্তাদ্যাচ ইতি যুনি বিহিতক্ষ ণায়নেলুক্ আক্ষঃ পিতা পুত্র-চ বৈশ্বাৎ ভাণ্ডিজকোর্যায়নস্থা লুক্ ভাণ্ডিজাক্যঃ পিতা পুত্র-চ। রাহ্মণান্ত। দাক্ষিঃ পিতা। দাক্ষায়ণঃ পুত্রঃ।

৪৭০। ইণঃ প্রাচ্যাদভরতভূলুনাদেং।

ভরতগোত্রবন্ধি তাং তুলুমাদিবন্ধি তাক প্রাদেশীয়বাচকাদিণভাদ্র্য্ বিহিন্তি লগত ভবত । বালণপোত্রাদাবশ্যনেন লুক্ ক্ষপ্রিয় নিজাদে তুপ্রপ্রধার প্রান্তি বিদ্ধার্য পূর্বে বৈদ্ধার্য । পারাগারেরপতাং যুবা পৌত্রাদিযণিণভাচেতি পারনগ্য পুক্ পারাগারিঃ পিতা পুত্রণ । ভরতগোত্রাত্ম । আরু নিঃ পিতা আরু গারনং পুক্ত ইত্যাদে তু আরু নিশন্ধাৎ বাহস্কুনীণভারারনগ্য ন লুক্ অল্লাদেব নিবেধবিধানাং পৌজ্রাদান্তা প্রান্ত্রাদ্য প্রাণ্ডানি ন লুগ্ভবতি। তুলুনাদেন্তা । তৌলুনিঃ পিতা তৌলুনারণং পুত্রঃ । তুলুন ধারণ বল্লীক দেবাহ দেবমত দেবযক্ত প্রাণাহত চপেটক প্রার্থিক অহিংসক অস্ত্র নিরম অলিবর্দ্ধ কলিঙ্গ প্রশারবিক বিকল বিকর্ণ করেণুপাল অন্তবহৎ পুকরসদ্ অন্তর্গাভ্যাং বাহ্রাদিস্থাদিণ্ অনুহোড়াদেকভ্রোরিত্যুভ্রপদর্দ্ধি: শেষেড্যোহ্রুয়াড্যাং ইণ্ডা ইণ্ডা

८१२ । श्राट्यर्ग द्वेगन्छ मिनः।

শ্বিনাচকাং শক্ষাং ণড়স্তাৎ টণস্তাৎ যূনি বাচ্যে বিহিত্যা ইণো লুগ্ভবতি। বিনাদের্গড়তি ণড়স্তাৎ বৈদশব্ধাদ্যূনি বাচ্যে বিহিত্যা ইণো লুক্ বৈদঃ পিতা পুল্রু । শ্বিটিণস্তাগশিষ্ঠানিণো লুক্ বাশিষ্ঠঃ পিতা পুল্রু । অন্-ধেস্তা। শিবাদিটণস্তাৎ কৌহড়াৎ অদস্তাচ্চেতীণ্ কৌহড়ঃ পিতা কৌহড়িঃ পুলুঃ।

৪৭৫। পায়নিণ্যান্তা টুলিপোঃ।

গাযনিপ্রভায়ারায়াপ্রপ্রতায়ায়াচচ ফূনি বাচো বিহ্নিত্স টণঃ ইণশ্চ লুগ্
ভবতি। তিকাদেশীয়নিরিতি ণায়য়য়াত তৈকায়নের্য্নি বিহিত্স টণো লুক্
তৈকায়নিঃ পিতা পুত্রণ্চ পিতামহঃ পৌত্রশেচিক দ্রষ্টবাম্। ক্র্বাদেশ্চ ণা
ইতি গাস্তাং কৌরবাাং যূনি বিহিন্ত ইণ্ তস্তু লুক্ কৌরবঃ পিতা পুত্রশ্চ ।
টণিণোরিতি কিন্? অজাদকোশলক্রভাশ্চেতি গাস্তাং ক্ষত্রিয়বাচকাং
কৌরবাশকাং তিকাদেশীয়নিরিতি গায়নিঃ কৌরবাায়নিঃ।

৪ १৬ । পেলাদেঃ।

পৈলাদের্ম বাচ্যে বিহিত্স্য লুগ্ভবতি। পৈলায়া অপত্যং নালাপীলা মণ্ডুকাছেতি উণ্ পৈলঃ তস্যাপত্যং যুবা টলস্তাদ্যত ইতি গায়নিঃ তস্য লুক্ পৈলঃ পিতা পুক্রণ্ড। পৈল উদ্ধিত ভৌলিকি শাল্কি যাক্তির সাত্যকামি সাত্যকি উদ্মঞ্জি উদ্বৃদ্ধি উদ্ভৃদ্ধি উদ্বৃদ্ধি

বৈবস্থানি পৈক্লায়নি বাকণি বাহবায়নি উদক্ষিতি বাহক্ষিতি উদ্যায়নি উদি হায়নি পৈদায়নি উদক্ষি বাহবাদিখাৎ ভৌলিঙ্গিক ভূষরাদিখাৎ শালক্ষি শলা ক্ষিক্লানুক্চাকৌশিকে ইভ্যানেন শেষা অদস্তাচ্চেত্যনেন ইণস্তাঃ তেভ্যঃ পৌল্রাদিযণিণস্তাচ্চেতি গায়নস্থ লুক্ ইণস্তানামেষাম্ ইণঃ প্রাচ্যাদিত্যাদিনা লুকি সিদ্ধে অপ্রাচ্যার্থ পাঠঃ।

৪৭৭। অজাদিতদ্নাদে।

বিষয়সপ্তমীয়ক। অজাদৌ তদ্লাভার্পপ্রতায়ে বিধাতুমিন্নে যুবপ্রতায়শু লুগ্ভবতি। তশু লুকি সতি যো যতঃ প্রাপ্রোকি স ভুবতি। ফান্টাক্কতভাপতাং ফান্টাক্কতিং। তশুপেতাং বুবা সৌবীরপৌজ্রাদিপ্রতায়াশ্বাৎ
ফান্টাক্তিমিনতাদপ্রায়নীতি অণ্ ফান্টাক্কতঃ তশু ছাত্রা ইতি বুদ্ধিশ্বে যুব
প্রতায়গু লুক্ তদা ইণস্তং প্রকৃতিরূপং স্থিতং ততঃ প্রাচাভরতাপত্যাস্তমজ্ব বর্জনিণস্থাদিতি টণ্ ফান্টাক্কতাঃ ভাগবিত্তগাপতাং ভাগবিত্তিঃ তশ্পাপতাং
যুবা ভাগবিত্তাদেবে তি নিকঃ ভাগবিত্তিকঃ তসা ছাত্রাঃ পূর্কবৎ যুবপ্রতায়নিব্রত্তী টণ্ ভাগবিত্তাঃ। অজাদীতি কিম্ থ ফান্টাক্তরূপাং হেতুনরাভ্যাং
কপাং বা ম্যট্ চেনি কপ্যং লুকি ফান্টাক্তিকপ্যমিতি স্থাৎ। তছ্লাদাবিতি কিম্ থ ভাগবিত্তিকায় হিতং ভাগবিত্তিকীয়ং তথ্যৈ হিতেহরাজাদেরি। উ
কয়ঃ।

৪৭৮। পায়নিণায়নয়োবা।

ণায়নিণায়নগোন নি বাচো বিহিত্যোবজাদে তদ্বলান্যর্থপ্রতায়ে বিধাতুমিষ্টে লুঝা ভবতি ৷ গগজাপতাং গার্গাঃ তস্থাপতাং য্বা গার্গায়ণঃ তস্ত ছাত্রা ইতি ণায়নে লুপ্রে আদিষ্টেজাতশ্চেতি ঈয়ঃ গার্গীয়াঃ গগ্রায়ণীয়াঃ মঙ্ক-স্থাপতাং যাঝঃ তদ্যাপতাং যুবা উণস্তাদ্দাচ ইতি ণায়নিঃ তম্ভ ছাত্রা যাঝীয়াঃ যাঝায়নীয়াঃ

৪৭৯। অবক্তরে যুনো লুকি নলুপ্ত্যু লোপিনাম্। একদে দিনে চ বিহিত্ত গ্ৰপ্তায়ত লোপে সতি বহুয় লোপিনাং পূর্বন লক্ষণৈ প্রাপ্তা লুগ ভবতি। বিদানামপত্যম্ অপত্যে বা অদন্তা চেতি য নি ইণ্ ঋমেণ উণন্তাদিশ ইতি অবক্তমে বিহিত্তালো লুকি সতি অগোপ-বনাদেণ ডিতি পট্ বহুদে বিহিতো লুগিমিধ্যতে বৈদঃ বৈদৌ এবং যাস্কঃ যাস্বৌ গার্গাঃ গার্গাঃ আগোঁ। নাজাদিত্যু লাবিত্যি শৈষ্টা

প্রপঞ্চ: স্পষ্টার্থঃ। ইণো লুকি সতি অজাদিপ্রত্যয়স্যায়মবিষয় ইতি মন্দ্র-ধিয়াং শস্কঃ স্যাৎ।

় ৪৮০। য**ুনো লুকি বহুত্বেহপি লুগেকত্বিত্রয়োরপি।** বহুলোপিনামিত্যম্বর্ততে। বহুতে বিহিত্স্য যুবপ্রত্যয়স্য লুকি সতি বহুষ্ লোপিনাং শব্দানাং দিজৈকত্বয়োরপি বিহিত্স্য লুগ্ভবতি। বৈদ্স্য বৈদ্যোথা অপত্যানি বিদাং। বহুতে বিহিত্স্য যুবপ্রত্যয়স্য লুকি সতি অবহুত্বেহপি বিহিত্স্য লুগ্ভবতি। এবং গর্গাং যক্ষাং অক্ষাং।

৪৮১। যণ্ ণটোরবহুত্বে বা ষষ্ঠীতৎপুরুষেত্রপদে।

ষষ্ঠীতৎপুরুষদম্বনিত্যুত্তরপদে পরেহবহুত্বে বাচো বিহিতয়োরপতাপ্রতাররোর্যণ্ণটোল্ যা ভবতি। গার্গান্য গার্গানোর্বা কুলং গর্গকুলং গার্গাকুলম্
এবং বিদক্লং বৈদকুলম্। যণ্ ণটোরিতি কিম্ । যাম্বকুলম্ আম্বকুলং
উণত্র বিহিতঃ। অবহুত্ব ইতি কিম্ ? গর্গাণাং কুলং গার্গাকুলং বিশেষবিধিত্বাং পূর্বলক্ষণেন বিহিত্সা নিতাল কোহত্র বাধা স্যাৎ। ষ্ঠীতংপুরুষ
ইতি কিম্ ? গার্গাবাৎস্যো। উত্তরপদে ইতি কিম্ ? রাজ্যো গার্গাে রাজগার্গাঃ।

৪৮২। বতপ্রাদ্যণ আঙ্গিরস্যান্।
বতপ্রশালাঙ্গিরস্যাং বাট্যায়াং বিহিত্স্য যণো লুগ্ভনতি। বতপ্তী। কপিবোধবতপ্রেভ্য আঙ্গিরসে ইতি ষণ্ভলুকি স্তি নদা, দিখাদা অনাঙ্গির্গ্যান্ত বাভগ্রায়নী সকলান্তালোহিতাদেনি তামিতি গ্যায়নঃ জাতিখাদী। শিবাদি
ভাট্ণি তু। বাতপ্রী।

৪৮০। চটকানৈরসা স্ত্রিয়াম্।
চটকশব্দাৎ চটকাশদান্ত স্থাপত্যে বাচ্যে বিহিত্সা নৈরস্য লুগ্ভবতি।
চটকস্য চটকায়াশ্চাপতাং স্নী চটকা। নৈরস্য শ্রবণং মাভূদিতি বচনং
স্থিয়ামিতি বচনম্। জাতিবচনস্ত চটকাশব্দোহস্থেব।

৪৮৪ । স্থানান্ত গোশালথর শালান্ত জাতে।
স্থানান্তাং গোশালাং থবশালাক ভত্র জাত ইতার্থে বিহিত্সা লুগ্ভবিতি :
গোস্থানে জাতঃ গোস্থানঃ অবস্থানঃ গোশালং থবশালং সেনাস্থবশালে
ত্যাদিনা ক্লীবন্ধং ভত্র জাতঃ গোশালঃ খবশালঃ। নামগ্রহণে লিক্সবিশিষ্টসামি গ্রহণাৎ গোশালাযাং জাতো গোশালঃ খবশালঃ লুকি স্ত্রীবিহিত্সা
হিজি গ্রাপ্রভাষ্স। লক্।

৪৮৫। তিষ্যশাতা মুরাধাপুনব স্থহন্ত বিশাখাবত লাভ্যঃ।
এভ্যো জাভার্থে শ্বিহিত্স্য লুগ্ভবতি। িষ্যাদের্ভান্তন্ত্ক কালে ইতি
টণ্ ভান্তন্ত্ক কালেহবিশেষে টণ ইতি টণ্লুক্ প্রকৃতিবল্লিস্বচনে চ
তিষ্যে কালে জাতঃ পুনর্ব স্বাজাত ইতার্থে পুনষ্টণ্ তস্যানেন লুক্ তিবাঃ
পুনর্ব যেহত্র স্ত্রীপ্রতাল্লভান্তেষাং পূর্কবং স্ত্রীপ্রতায়্যাপি লুক্ অনুরাধ্যায়ং জাতঃ অনুরাধঃ বছলা ইতি কৃত্তিকোচাঃস্তঃ।

৪৮৬ । নক্তেভো বা।

নক্ষত্রবাচকেভ্যো জাতার্থে বিহিত্সা লুখা ভবতি। ধ্বশেষবিধিশেষোহসা

• বিষয়ঃ। অখী আধিনঃ অখ্যুক্ আখ্যুজঃ।বোহিণঃ রৌহিণঃ মৃগশিরাঃ
মার্গশীর্ষঃ শিরসঃ শীর্ন্শীর্ষ বিভি শীর্ষাদেশঃ অভিজিতঃ আভিজিতঃ
চিত্রঃ গ্রণঃ প্রাবণঃ ব্রভঃ বৈরতঃ।

৪৮৭। বংসশালাক । জাতাৰ্থে বিহিত্যা ৰা লুগ্ভৰতি । বংসশালঃ। বাংসশালঃ।

৪৮৮। শতিভিষজো ডশ্চ।
শতভিষজ্শদাক্ষাতার্থে বিহিত্সা শুখা ভবতি । লোপপক্ষে ডশ্চ। শতভিষক শতভিষজা শতভিষ্ঠা।

६४२। कबुगायेन्छ।

ফর্নীশদাজাতার্থে বিহিত্স। প্রাভবতি। পক্ষে টশ্চ। ফর্তাং জাতঃ ফর্তনঃ ফার্তনঃ স্থিয়ান্ত কার্ত্তনা ফর্তনা। টপ্রতারে তু। ফর্তনঃ স্থিয়াং ফর্তনী।

৪৯০। শ্রবিষ্ঠাষাঢ়া ভাগমীয়*চ।
আভাং জাতার্থে নিধিতসা লুখা ভবতি। পক্ষে ঈয়*চ। শ্রবিষ্ঠঃ শ্রাবিষ্ঠঃ
প্রবিষ্ঠীয়ঃ অষাতঃ আষাতৃঃ অষাতৃয়িয়ঃ অষাতৃ।শদ্যে হ্রন্থানিঃ যদ্রোহিনীযোগফলং তদেব ভবেদ্যালাসহিতে চ চল্লে ইতি ববাহঃ।

৪৯)। রোহিণীরেব তা চিত্রাভাঃ স্ত্রিয়াং নিত্যম্।
রোহিণাদের্জাতার্থে বিহিত্সা স্থিয়াং বাচ্যায়াং নিতাং লুগ্ভবতি।
রোহিণাং জাতা রোহিণী কস্তা লুকি স্ত্রীবিহিত্সা চেতি স্ত্রীপ্রতামন্কি
রেব চ:রাহিণাভাাং নক্ষত্রে ইতি স্থিয়ামী প্রতায়: নক্ষত্রবাচিতাস্য

প্রাগাদীদিতি নক্ষত্রবাচিতা অথবা নদাদেরাক্সতিগণদ্বাদীপ্রত্যয়ঃ, করণীয়ঃ। রোহিণী রেবতী চিত্রা।

8 हर । न मचारितः ।

মঘাদেজ তিথে বিহিত্সা পূগ্ন ভবতি। মধাস্থ জাতো মাঘঃ ক্লখথের জাতঃ আখথঃ প্রোষ্ঠপদাস্থ জাতঃ প্রোষ্ঠপানঃ ভদ্রপাদঃ প্রোষ্ঠপদাভদ্রপদয়োজ তি ইত্যুত্তরপদর্দ্ধিঃ।

৪৯ । লবণাৎ সংস্ফেট।

সংস্প্তে অর্থে বিহি,ত্যা লুগ্ভবতি। লবণঃ স্থাং তেন সংস্তে ইতি

টিকণ্ তম্ম লুক্। জব্যবাচী লবণশন্দোহত্ত গ্রাহাং রসবাচিনি ভূ মম্বর্থলুকাগি সিধাতি।

৪৯৭। থামাজিনান্তাদ্ধের।

পামান্তাদ্দিনান্তাক তম ভবে বিহিত্ত লুগ্ভবতি। অধ্থামি ভবোহখ
থামা থামান্তাদ্দিতি ভবাপবিষ্কিত্তাতো লুক্! ক্ষাজিনে ভবং

ক্ষাজিন্য।

৪৯৫ । এক গুরারা **সিনো কা।** এক গুরাশকাদীনো লুয়া ভবতি। এক বুরাং বছতি এক ধুরঃ এক ধুরীণঃ এক গুরাসব ধুরা ভাষিমন ইতি ঈনঃ লুকি জীবিহিত্সা চেতি জীপতার-নিরুজিঃ।

৪৯৬। স্তিবাচনাদে সংপ্রাজনে। ব্রিচ্চনাদেরৎপ্রয়োজনে বাড়ো বিচ্ছেক্ত লুগ্ভবতি। ব্রিবাচনং প্রো-জনমস্য স্থিবাচনঃ অস্য তৎপ্রধানেনে ইতি টিকংশা লুক্ এবং প্ণাহ-বাচন্মিতাাদি।

৪৯৭। কাদসাদের পুর্সে ।
ক্রম্ম দের পুর্সে বাচ্চে বিহিত্স। ব্লাত্বতি। কদ্দসা প্রস্থা কদসং
বুকোনিরিভ্যামংশে চেতি টব । ক্রম্মতম্পেকাশোককরবীবক্কটকার
কোবিদারঃ কর্ণিকারঃ সিদ্ধাবনেরঃ স্কৃতার। অন্তর। পটেলারাঃ প্রস্থাং
পাটলং বর্ণসা পুস্পং বাক্রম্।

৪৯৮। শিরীনাদেব।। পুষ্পে বাচ্যে বিহিত্তস্য লুগা ভবতি। শিরীষদ্য পুষ্পং শিরীষং শৈরীষং প্রয়োগদর্শনাদভ্যদপুছেন্।

8aa। द्वीरवर्तापग्रल।

মূলে বাচ্যে বিহিত্তন্য ল্থা ভবতি। হ্রীবেরং হৈকেরং স্থরণং সৌবণম্। অনাত্র। এরপ্রদামূলম্ ঐর ভং সালায়াঃ সালং বিল্লসা বৈল্প।

৫০০। কলেইপ্লাদেঃ।

ফলে বাচ্যে প্লক্ষাদিবাঞ্চিরিক্তান্তংপথ্নস্য পুণ্ডবতি। আমলক্যা: কশন্
আমলকন্তাদিবৈজ্ঞাদিত্যাদিনা ময়ট্তস্য লুক্ লুকি ক্নীবিহিত্স্য চেতি ক্লীপ্রতায়লুক্। ক্বলং বদরং অন্ধান্তাদেশেতি টণ্ডস্য দ্বীবিহিত ঈকারস্য
চ লুক্। প্লকাদেন্ত প্লাক্ষ্য প্লক্ষাদেন্ত প্লাক্ষ্য গ্রেক্তান্ত্র্যাধ্বর্থবেণবং। ইঙ্গুলী
শিগুবত্যে চ ক্রেয়া রূপাক্ষ্যারতঃ॥ প্লক্ষাদ্যোহ্মী বিল্লাদিগণে পঠনীরাঃ
তেন ণটং বাধিতা বিল্লাদেশ্চেভি উণ্ভবতি।

৫০১। ত্রীহিভ্যঃ প্রকৃতিবল্লিক্সঞ।

কাহিবাচকেভাং ফলে বাচ্যে বিহিত্সা লুগ্ভৰতি। প্ৰকৃতিবল্লিক্ষণ। অফুৎপন্নে প্ৰভাৱে প্ৰকৃতি যন্ত্ৰিকং জন্ত কি চ সভি ভবতীতাৰ্থং। বচন্দ্ৰ- ভভিধেয়কৈছা । মূলাস্য মূলায়োমূলানাং বা ফলং মূলায় মূলায়োমূলানাং বা ফলং মূলায়া মূলায়োমূলানাং বা ফলে মূলো এবং মূলাঃ ফলানি।

৫০২। হরাতক্যাদেশ্চ।

হবাতকাদেঃ ফলে বাচ্যে বিহিত্ত জুগ্ভবতি। প্রকৃতিবলিক্ষণ। হরীতকীনং ফলং হরীতকাঁ হরীতকাা: ফলানি হরীতকাঃ হরীতকাাম্মিকা পথ্যা
মুদ্বীকা পিপ্লীকণা। চিঞা কোশাতফী দ্রাক্ষা কর্কটা কল্টকারিকা। খেতপাকা চ কর্কার রেবা এলা বলাদয়ঃ।

৫০০। জন্মাবা।

ফলে বাচ্যে বিহিওতা লুগা ভবন্তি। প্রাকৃতিবল্লিক্সঞ্চ বা ভবতি। জামবং জন্ম জন্মঃ।

৫०८। मलिकारमः शुर्ला

এভ্যঃ প্রপ্পে বাচ্যে বি ইতসা নুগ্ভবতি। প্রকৃতিবল্লিক্ষণ। মল্লিকারাঃ পূস্পং মল্লিকা মলিকারাঃ পূস্পাণি মল্লিকাঃ। মল্লিকা মালতী জাতী মাধবী নবমালিকা। শেকালী কেতকীত্যাদ্যা জেয়া পক্ষ্যানুসারতঃ।

৫০৫। রহত্যাদেমূলে। এভ্যোমূলে বাচ্যে বিহিত্ত শুগ্ভবন্তি। প্রকৃতিবল্লিক্ষণ বৃহত্যা মূলং বৃহতী। বৃহত্যংশুমতী মুম্ভা বিদারী শালপর্ণাপি। গম্ভারী চ হরিদ্রাদ্যা জেয়া লক্ষ্যামুসারতঃ।

েড। ভাত্তদ্যুক্কালেহবিশেষে টিণো বচনঞ।
নক্ষত্রবাচকাজ্কাৎ তদ্যুক্কালেহবিশেষে বিহিত্সা টণো লুগ্ভবতি।
প্রাকৃতিবল্লিক্ষণ বচনঞ। অদ্যুপ্যাঃ অদ্যুক্তিকাঃক্সন্মঘাঃ অন্তেত্যধিকরণনিপারং তেন সহ প্যাদীনাং বিশেষণবিশেষ্ডাবে। নান্তি অন্তেতি
ব্যধিকরণত্বাদিতি লুগ্ভবতি। যত্র তৃ বিশেষণবিশেষ্ডাবঃ শুত্র ন লুক্
পৌষী রাত্রিঃ। টণ ইতি কিম্? অদ্যুরাধায়ুরাধীয়মহঃ দ্দ্দাদীয় ইতি
ঈয়ঃ।

৫০৭। শ্রেবণাশ্বত্থাভ্যাং নান্ন।

আভ্যাং তদ্যুক্কালে বিহিত্স্য লুগ্ভবতি সংজ্ঞায়াম্। প্রকৃতিবল্লিপবচনে চ। প্রকৃতিবদ্তাবোহত্র নেষ্যতে ইতি জয়াদিতাঃ। অন্তে তু স্ত্রীলিপোহত্র শ্রবণাশন ইতি মন্তক্ষে। শ্রবণা রাত্রিং অর্থথো মুহুর্তঃ। অসংজ্ঞায়ান্ত । শ্রবণী রাত্রিঃ আর্থী রাত্রিঃ অর্থশন্দেনাধিনীনক্ষত্রমূচ্যতে।

৫০৮। অবিদিশাদে স্তন্নিবাসাদিষু দেশে।

তন্ত্রিবাসাদিষু চতুর্ অর্থেষু দেশে বাচ্যে বিদিশাদিব্যতিরিক্তাদিহিতক লুগ্ভবতি। প্রকৃতিবলিঙ্গবচনে চ। পঞ্চালানাং নিবাসো দেশং পঞ্চালাঃ
অঙ্গাঃ বঙ্গাঃ কুরবঃ মৎস্থাঃ পুঞাঃ যস্কাঃ। বিদিশাদেস্ত। বৈদিশঃ
উত্ত্বরঃ গ্রামসমূহো দেশঃ তেনেহ ন ভবতি। পঞ্চালানাং নিবাসো গ্রামঃ
পাঞ্চালঃ।

৫० %। वत्रशासिक्ट।

আদেশার্থং বচনম্। বরণাদেরুৎপল্লস্য চাতুরর্থিকস্য লুগ্ভবতি।
প্রক্তিবল্লিঙ্গবচনে চ। বরণানামদ্রভবো গ্রাম: বরণাঃ শাল্সলয়ঃ ঔৎসগিকস্য টণো লুক্ শর্করাশক্ষ্য রূপাণি চাতুর্থিক এবোক্তানি গণপাঠসামর্থ্যাদক লুকি শর্করা:। শিরীষশক্ষাৎ বরহাদিভাদকণা শৈরীবকঃ কুমুদাদিস্থাৎ টিকণা শৈরীষিকঃ অনেন লুকি শিরীষঃ। গোনে
নাম হদৌ তয়োরদ্রভবো গ্রাম: গোদৌ। বরণা শৃঙ্গী শাল্মলী ভক্ষশিলা
প্রেমতীগরা:। কাঞ্চী উজ্জ্বনী জানপদী চন্দা কন্দৌর্মা কাঞ্চী চা

কেট্ক বদরী শিরীষাঃ শতী বলভী চ শর্করা গোদো। অলম্বালিকারন পণী মথ্রাশ্চ শশ্লিপণী চ জন্ম; বজ্বঃ স্বলঃ ধলতিকমধুরে চ তাদ্রপণী চ। বহুলাধিকারাৎ ধলতিকাদিয়ু প্রকৃতিবছচনং ভবতি। লিক্ষত্বভিধেরত্র এব ধলতিকো নাম গিরিঃ তত্তাদ্রভবানি বনানি ধলতিকবনানি প্রয়োগ-দর্শনাদ্যদ্পি জেরম জ

৫১০। সিকতাশর্করাভ্যামিলস্ত।
অভনিবাসার্থ্যে বোগঃ। আভ্যাং মন্বর্থে বিহিত্ত ইলম্য লুগ্ভবতি।
প্রকৃতিবল্লিঙ্গবচনে চ। ইলবিধানসামর্থ্যাৎ পাক্ষিকে। লুক্। সিকতা
অবিন্ সন্তি সিকতাঃ দেশঃ সিকতিলঃ প্রকৃতিবহুত্বে বহুবচনম্।

৫১১। প্রতিকৃতিরূপে কস্ম মনুষ্যে । প্রতিকৃতিরূপে বিহিত্সা কস্য মনুষ্যে বাচ্যে লুগ্ভবতি। প্রকৃতিবল্লিস-বচনে চ। চঞ্চা তৃণময়ঃ পুরুষঃ চঞ্চাপ্রতিকৃতিঃ পুরুষঃ চঞ্চা কুমারী প্রতি-কৃতিঃ কুমারী অপ্তিমনুষ্যঃ।

৫১২। অধিকৃত্য কৃতে কটিৎ।

৫১৩। অজাতিতদ্বিশেষণানাঞ।

ज्यानि ज्याष्ट्रीर्थः वहनः निक्ष्मनर्मनत्मज्द।

অস্মিরর্থে বিহিত্তস্য কচিল্লু পূত্রতি। প্রক্লতিবলিঙ্গর্বচনে চ। বাসবদন্তামধিকতা কতা কতা আথাাধিকা বাসবদন্তা কাদম্বরী কথা রত্নাবলী নাটিকা কুমার-সম্ভবঃ জানকীহরণঞ্চ কাব্যম্। কচিন্ন ভবতি। ভৈমর্থা। ভেদাভেদ্বি বক্ষয়ৈতদিতি চান্দ্রানাং প্রত্যাখ্যানম্।

বেষাং প্রকৃতিবল্লিন্সবচনে চ ভবতঃ তে তদিতানেন পরাম্যান্তে। তদ্বিশেবণানাঞ্চ জাতিবর্জিতানাং প্রকৃতিবল্লিন্সবচনে ভবতঃ। পঞ্চালাঃ রমণীয়াঃ
গোদৌ নাম হুদৌ বহুবথৌ। জাতিবাচকানাং ন ভবতঃ। পঞ্চালা দেশঃ
জাতিদ্বারেণ যানি বিশেষণানি ভেষামপি লিন্সবচনে প্রকৃতেরিব ন ভবত
হতি পঞ্চোলাদেশো রমণীয়ঃ মনুষ্যে লুকি প্রকৃতিবল্লিন্সবচনে তদ্বিশেষণানাং
ন ভবতঃ অপিতা মনুষ্যা রমণীয়ঃ অপিতামনুষ্যা রমণীয়াঃ সর্বমেতদ্বহুলবচনাৎ। যদ্যপি লিন্সব্যবন্থাঃ শক্ষানাং স্বভাবদিন্ধা লোকতএব ভ্রেয়াঃ

৫১৪। লুকি স্ত্রীবিহিততা চ ।

যত্র প্রকৃতিবল্লিক্সবচনে ন ক্তে সোহদা বিষয়ঃ। পূর্মবন্ধণৈস্তদ্ধিতলুকি

ক্ষতে স্ত্রীপ্রভারস্য চ লুগ্ভবতি । শঞ্জি: শক্ষীভি: ক্রীভ: পঞ্চত্বল: শাড়াই কুণ্ডোরীভ্যাং ক্রীভ: বিকৃত্থোখা: তেন ক্রীতে বুল্যাদিতি: টিকণ্ বিশ্বাদাটিণাদের্ব লাদাবিতি টিকণ্ লুক্ নমভবান্তোহস্য দেবতা নবভব: আমলকা: ফলম্ আমলকং বলর্যা: ফলং বলরম্। লুগুত্তরকালে বিহিতস্য ভূ স্ত্রীপ্রভারস্য লুগ্ন ভবত্যনভিধানাৎ। অবস্থী কুষ্টাক্রক্রঃ। যে পুংবদ্ধাবমত্র বদক্তি তেবাং পুংলিক্তা স্যাৎ।

৫১৫। न तानीमृ (छाः।

ভদ্ধিত বুকি সতি শ্রীপ্রতায়দ্য লুগ্ভবতি। পঞ্চির্গোণীভি: ক্রীতঃ পঞ্গোণি: পঞ্চস্থ চঃ স্ত্রীপ্রতায়দ্য চেতি হস্তঃ।

৫১७। প্রাদিঃ প্রিয়াদেরিমেষ্ঠেয়সৌ।

ইমন্ ইঠ ঈয়য় ইত্যেতের পরের প্রিয়াদেং স্থানে প্রাদির্ভবতি। প্রেমা পৃথাদেরিমন্ পৃং দীতি ইমন্ প্রেঠঃ প্রেয়ান্ গুণাদীয়ন্বিঠো বেতি ইঠেয়য়। উরু বর বহুল বংহ গুরু গর দীর্ঘ দ্রাঘ হ্রম্ব হ্রম ক্ষিপ্র ক্ষেপ ক্ষুদ্র ক্ষোদ পৃথ্ প্রথ মৃত্ মদ ভূশ দ্রশ রুশ ক্রশ দৃঢ় দ্রঢ় পরিবৃঢ় পরিবৃঢ় পরিবৃঢ় পরেরুত্ররুগা বৃঢ়ন্ত ব্রুটাদেশো ভবতীতার্থঃ নতু সমৃদিত আদেশঃ অন্তথা পর্যাবিচুম্বদিতার উপস্পেণ গহ ভিরপ্রকৃতির্ফ ভিলা স্থাং। দৃহ দৃহি বৃহ বৃহি বৃদ্ধাবিত্যন্থাং হুগাদেশ্য ইতি তপ্রত্যাদেন স্থুলে বলব্তি চ বাচ্যে দৃঢ়ঃ প্রভৌ বাচ্যে পরিবৃদ্ধান স্থানীয়ঃ। পৃথাদৌ প্রিয়াদীয়াং দৃঢ়াদৌ ভূশাদীনাং পাঠাং এভ্য ইমন্ উদাহ ইব্যো নাভেভ্যঃ স্থিরঃ স্থঃ স্থেইঃ স্থেরান্। স্থরমপি কেটিং পৃথাদৌ পঠন্তি। স্থেমা। ক্ষির ক্ষ তৃপ ত্রপ দৃণ দ্রপ বৃন্ধারক বৃন্ধ স্থল স্থর দূর দ্ব অন্তিক নেদ বাঢ় সাধ প্রশাসা প্রারদ্ধ বৃন্ধ যব।

৫১१। यूवाझरग्राः कन् वा।

क्रिकेः कनीयान् পক्ष्य यविष्ठः यवीयान् अन्निष्ठः अन्नीयान् ।

৫১৮। প্রশশ্রহদ্ধয়োর্জ্যা লুক্ চেয়সোঃ।

প্রশাস্ত্রক্রেক্রা বা ভবতি। তৎসন্নিযোগে ঈরসোরানিশুক্ চ। জান্তঃ জ্যারান পক্ষে শ্রেষ্ঠঃ শ্রেনানু বর্ষিষ্ঠঃ বর্ষীয়ান্ দৃপর্ক্রেরারপি পৃথ্যদিপাঠাং চাক্রান্য ইমনমিচ্ছন্তি দ্রশিমা বর্ষিমা ইমনি জ্যাদেশক্তেষাং মতে নাজি।

৫ ১৯। বহোর্ রিম্নত।

ষংহাঃ স্থানে ইমনানিযু পরেষু ভূর্ত্তবিতি । ইমন্ ইরস্থ ইত্যেত্রোরাদিশুক্ চ। ভূমা ভূমানু পৃথাদিশ্বাৎ ইমন্ অনিত্যখার গুণঃ।

৫२०। इर्छ यन्छ।

ইঠে পরে বহো: স্থানে ভ্রাদেশো ভবতি। যশ্চ। ভূমিঠ:। বেহজা গুণ-বাচকান্তেম্বলি ঈরস্বিঠো ভবত:। তরোঃ পরয়োরাদেশবিধানাং।

৫২১। বৃদ্ধিস্থানস্থ পূর্ব্বয়োক্তৎসম্বন্ধিনোঃ পদান্ত-য্যোপি তৈয়কোবো।

যকারসাহচর্য্যাৎ বকারো২শ্বং দস্তা:। বছলং তদ্ধিত ইত্যানেন প্রকাবেণ বত্র বৃদ্ধিঃ প্রাপ্রোতি তত্ব দ্বিস্থানং তত্ত পূর্কয়োর্ব দ্বিস্থানসম্বদ্ধনাঃ পদা-প্তযোর্যকারবকারয়োঃ স্থানে তদ্ধিতে ণিতি পরে ঐয় ঔব ইভ্যেতাবাদেশৌ ভবতঃ। ইযুবাবিতি কর্ত্তব্যে মদৈয়ৌবাবিতি ক্লতং তজ্ঞাপয়তি বুদ্ধের্বাধ-কমিনং বিধানম্। ত্রান্বকভেদঃ ত্রৈয়ন্ত্রিকং বিশেষেণ আক্রিয়ন্তে ব্যুৎপাদ্যন্তে শকা অনেনেতি ব্যাকরণং করণে ভন্ট তবেজি তদধীতে বেতি ণ্ট বৈয়া-করণঃ শোভনোহখঃ স্বাঃ প্রাদসমাসঃ ভক্তেদমিতি উণ্ সৌবরঃ এঃ কামদেবস্থাকার: যাকারস্তেদমিত্রর্ টণ্ এয়াকার: এবম্ ঔবাকার: পূর্ব্বত্রানিন্দে পর্বতবিশেষে ভবঃ পূর্ব্ববৈষ্ণনিন্দঃ দিশে। মদ্রবর্জ মিত্যুত্তরপদ-বুদ্ধিস্থানাৎ পূর্বভ স্থানে ঐয়:। বুদ্ধিস্থানভ পূর্বয়োরিতি কিম্ ? দধি-প্রিয়োহবোহত দধ্যক্ষ তৎপুরুষাদৌ সংস্কৃতাদেনিতামিতি প্রিয়পদলোপ: তত ইণ্ দাধ্যঝি নাত্র বৃদ্ধিষ্টানাৎ পূর্ফো পদাস্তধ্যে কিন্তু ব্রেরা। তৎসম্ব-দ্ধিনোরিতি কিম্

প্রেহণীতী ভূতো ভাবী বেতি দ্বাণীতিক: কালাত্তমধী-ষ্টাদাবিতি টিকণ্ সংখ্যায়াঃ সংবৎসরসংখ্যারেত্যুত্তরপদবৃদ্ধিঃ পূর্ব্বপদাবয়ব-ত্বাদ্যকারক্ত বৃদ্ধিস্থানেন সহ ন সম্বন্ধিত্বম্। পদাস্তরোরিতি কিম্? যাতঃ हेन: শভ ঘবরলোহটাতি যকার: তত্ত্বণ হৈদমিক: পূর্ববি ট্রকণ্।

৫२२। शिएः।

অপদাস্তার্থ আরম্ভ:। শ্বাদের নিস্থানশ্র পূর্বস্থ ফকারশ্র বকারশ্র চ স্থানে ভদ্ধিতে নিতি পরে ঐয় ঔঘ ইডোভাবাদেশো ভবতঃ। শুন ইদং দৌবনং টনি অভাবকর্ম্মযে চেভ্যাদিনা ন নুমিষেধঃ। শুনো বিকারঃ

শৌবং প্রাণিনো পঞ্জি গটু অনীভিত্রিভাচ্যরে:শেচভি নকারলোপ:। ছাত্রে निष्रका मोराविकः তত্ত निष्कामाविकि पिकन् श्वर्कतः मौतः किमवायानाः স্বরতচ্ছেষয়োরিতানেনন শেষলুক্ স্বরমধিকতা ক্রতো গ্রন্থ: সৌরব: তদ-ধিকৃত্য ক্রতে গ্রন্থে ইতি টণ্ স্বস্তী আহু সৌবস্থিক: মাশকাদেরাকৃতিগণত্বাৎ টিকণ্ राक्षरम ভবঃ বৈয়ন্ধमঃ राज्यस्म ভবো বৈয়ন্ত্ৰস্ঞু স্বভেদংসৌবং স্কারুত-স্যাপতাং কৈয়কতম্ ঋষিত্বাট্রণ্ স্বাহ্মুদোরিদং সৌবাহমুদবং কন্চিৎ পঠতি দৌবাছ্যুদং স্বাহা চাদো মুচেতি স্বাছ্যুৎ তত**শ্চা**তুরর্থিকট**ং** ভগোধস্য বিকারো নৈয়গ্রোধ: অন্যুৎপরোহয়ং স্তগ্রোধশন্দ: অক্রণন্ধীতি ব্যুৎপত্তিক তু পূর্ব্বস্থরেণ সিদ্ধে গণপাঠো ন করণীয়:। খপুর্ব্বপদে অগ্রোধে চ সমস্তে প্রতিবেধাৎ বাদিপূর্ব্বপদাদপারং বিধি: শুনো দংষ্ট্রা খাদংষ্ট্রা শুনো দস্তদংষ্ট্রা-कर्नभूक्षभामिक मौर्यः जमार छवः त्नीवानः हुः बात्रभामतमानः त्नीवात्रभानः তত্ৰ ভবে ইতি তদ্যোদমিতি চ টণ্ আদিখৈজাতশ্চেতি প্ৰাপ্ত ঈয়স্ত কচিদপ-বাদবিষয়েহপুলের্গোছভিনিবিশতে ইতি বাধ্যতে স্বর্গমনং মন্সা প্রাহ সৌবর্গ-भनिक: अधारम छवः सोवशामिक: अधाजात्मताकृष्ठिशणवार हिकण अन দার স্বর্ স্বস্থতি ব্যক্ষস ব্যদ্ধস স্ফাকুত স্বাহ্মুছ ভাগোধ; দ্বারশক্ষোহকার্তি স্তোহত্র গণে পঠাতে রেফাস্তদা তু দারিক ইতি ভবতি।

৫২৩। ন স্বাগতাদেঃ।

পূর্বস্থাভাগ যৎ প্রাপ্তং তর ভবতি। স্বাগতমিত্যাহ সাগতিক: পূর্বনি ট্রকণ্ শোভনোহধার: স্বধার: তেন চরতীত্যর্থে স্বাধ্বরিক: ব্যবহারেণ চরতি ব্যাবহারিক: শোভনাল্যসানি যদ্য দ স্বক্ষ: বিগতান্ত্রসানি যদ্য দ ব্যক্ষ: বিগত আড়ো বদ্য দ ব্যাড়: তেবামপত্যং স্বানি: ব্যাদি: আদস্তাজ্তি তাত্যে বদ্য দ ব্যাড়: তেবামপত্যং স্বানি: ব্যাদি: আদ্বাজিত ট্রেণ্ স্বাগত স্থার ব্যবহার স্বন্ধ ব্যক্ষ ব্যাড় স্বপতি। আক্রতিপরাং স্বালারেহিপি ক্রব্রাঃ তেন স্বাস্থাং স্বামাং স্বাজ্বতং স্বাত্রাঃ স্বার্থিকাঃ প্রত্যাঃ স্বাভাবিকা গুণাঃ। নিপ্র্যাদক্ষত্রকণা ভঙ্কুঃ দিদ্ধ: ক্রম্বোর্দং প্রাক্রব্যিতি নিক্রক্ষ্। ত্রিশ্নিস্বতন্ত্র নৈর্ম্বব্যিতি।

৫২৪। শ্বপূর্ব্ব ইকারাদে চ।
শব্দ ইকারাদে ভদ্ধিতে শিভি পরে স্থাগতাদি

র্ভবতি। খেব ভন্তা অস্ত সংশ্বভন্তঃ শুন ইব দংট্রা অস্ত বাদংট্রঃ তরো-রপতাং বাভন্তিঃ বাদংট্রিঃ বগণেন চরতি বাগণিকঃ। বাভন্তিশবান্ত্ ণড়িণ্ যণস্তাদিত্যাদিনা টণ্ বাভন্তঃ দ্পুত্তেণোহলুপুবন্বেন ইকারাদিভদ্ধিত-পরতায়া বিভ্যান্তাং। ইকারাদাবিতি কিম্? শৌবাদংট্রঃ শৌবগণঃ তদন্তেদ্যিতি টণ্।

৫-৫। অগ্রোধঃ সমস্তঃ।

সমতো অগ্রোইশক: স্বাগতাদির্ভবতি। অগ্রোধমূলে ভব: অগ্রোধমূল:।

৫২৬। শ্বাপদস্থ বা।

খাপদশ্ত তদ্ধিতে ণিতি পরে বকারভোবাদেশো বা ভবতি। শুন ইব পদমশু খাপদ: পূর্ববদ্দীর্ঘ: তন্তেদং শৌবাপদং খাপদম্।

a २ १। श्राटकितकारमः।

ণিতি পরে দেবিকাদের জিস্থানন্ত আন্তবতি। দেবিকায়াং ভবং দাবিকং দেবিকাক্লে ভবং দাবিকাক্লিকং পূর্ব্ধেদিবিকা নাম গ্রাম: তত্র ভবঃ পূর্বদাবিকঃ প্রাচ্যগ্রামনগরয়োরিত্যত্তরপদর্দ্ধিস্থানং শিংশপায়া বিকারঃ শাংশপং পলাশাদেবে তি ণট্ শিংশপস্থলে ভবং শাংশপস্থলঃ পূর্ব্বশাংশপঃ দিতাং বহতীতি অনস্তাদহশ্চেতি কিপ্ দীর্ঘশ্চ দিত্যবাট্ দিত্যৌহ ইদং দাভ্যৌহং টলি ক্বতে বস্থবাহোরিত্যাদিনা বাস্থানে ঔকারঃ দীর্ঘসত্রে ভবং দার্ঘসত্রং শ্রেমি ভবং শ্রায়সং সর্ব্বান্থে ক্বতে বৃদ্ধিঃ তেন বৃদ্ধ্যপত্তিভাজাজ্বং প্রেমি ভবং শার্মসং সর্ব্বান্থে ক্বতে বৃদ্ধিঃ তেন বৃদ্ধ্যপত্তিভাজাজ্বং দার্মসিক্তি তেবাং মতে দাবিকভাব্য ইতি ভবতি। বৃদ্ধিস্থানত্তি তেবাং মতে দাবিকভাব্য ইতি ভবতি। বৃদ্ধিস্থানত্তি তেবাং মতে দাবিকভাব্য ইতি ভবতি। বৃদ্ধিস্থানত্তি তেবাং শিংশপা দিত্যবাহ দীর্ঘসত্র ভারম্য। দেবিকা শিংশপা দিত্যবাহ দীর্ঘসত্ত ভারম্য।

৫২৮। বহুীনর স্থৈও।
। বিভি পরে বহুীনরন্ত বৃদ্ধিভানে ঐদ্ভবতি। বৈহীনরি: বিহীনর্শস্বাদেবারং
বিধিরিতি চান্ত্রঃ এবং সতি বাহীনরিরিতাপি স্থাৎ।

৫২৯। কেকয়মিত্রযুপ্রলয়ানাং যথে বিষয়:।
কেকয় মিত্রযুপ্রলয় ইভ্যেতেবাং বকারস্থ যুকারস্থ চ স্থানে তদ্ধিতে ণিতি
পরে ইয়াদেশো ভবতি। কেকয়স্থাপতাং কৈকেয়ঃ জনপদরপাং ক্ষতিয়াদিতি ণট্ ভর্নাদিখাদপ্রাচাভর্নাদেরত ইতি সুকোহতাবঃ। কথং ভশা

কৈ করীস্থাতঃ আর্রাকালিতি বক্তব্যম্। কিঞ্চ ব্রত্তিবিষয়ে আনিয়তাঃ শক্ষ দুখান্তে তং কেক্ষ্সমানার্থঃ কীক্ষ্পক্ষোহণগান্তীত্যমূমেরং তত্ত ভেদমিতি টণা ইয়াভাবাদ্ধবিষাত। মৈত্রেয়ঃ মৈত্রেয়িক্যা শ্লাক্তেহক্র শ্লাবাদে চিন্তবণ-গোত্রনায় ইতি গ্রুং মিত্রশ্বভাবেনেত্যর্থঃ প্রক্ষাদাগভং প্রাবেষ্ম্।

৫৩**০। উক্তপুংস্কানৃত্তীপুং**কতরাদে^{র্বা}।

এক স্মিন্ প্রবৃদ্ধিনিমিয়ে উক্তঃ পুমান্ কেন তত্ত্বস্পংস্কন্ উবজি তং দ্রীলিঙ্গং ভরাদে পরে পৃংবন্তবৃতি। দীর্ঘতরা দীর্ঘতমা যুক্তরা যুবতমা যুক্তিরিতি স্থিয়াং বিক্তিক্ত ভিপ্রভায়স্ত নিবৃদ্ধিং মদা তু ইন্দন্তাদক্তর্থাদিতি ঈ তদা ব্রুম্ব ক্রেডে যুবতিতরা যুবতিতমা শুক্রেরং প্রাগ্ভূতা শুক্রেরী চরট্ প্রাগ্ভূত ইতি চরট্ রমাতরা বমাকরা পটুদেশ্রা মনাগ্নে ইত্যাদিনা কর্মেশ্রেণ দর্শনীয়রূপা রূপঃ স্থতে তিওন্টেজি রূপঃ পটুপাশা পাশো নিন্দ্যে ইতি পাশঃ অজনরৈ হিত্রম্ অজ্বাং খ্যোক্রজাবিভ্যামিতি থাঃ খ্যগ্রহণসাম্প্রাণ জাতিশ্রেতি প্রংবদ্ধাবনিষ্টেশ্ব ন ভ্রতি। নহি জাতিব্যতিরিক্তক্ত থাক্ত বিষয়ঃ সম্ভবতি। অন্বিতি কিন্ত্র ব্রহ্মবন্ধূতরা।

৫৩১। পূরণপ্রত্যয়ঃ।

ভরাদির্ভবতি। কভিপয়ানাং পূরণী কতিপরধী ষট্কভিকতিপয়ে ভ্যশ্চ থড়িতি থট্ বহুনীনাং পূরণী বহুতিথী বহুগণপূগসঙ্গাত্তিথড়িভি তিথট্।

৫৩২। গুণবচনাক্তা সম্।

গুণবচনাত্ত্বং তা তথ্য তরাদি: স্তাৎ। পট্যা ভাব: পট্তা পট্তম্। অগুণবচনাত্ত্ব। কঠ্যা ভাব: কঠীতা কঠীত্বম্।

৫৩৩। বহুৱাপাচ্চ্

বহ্বর্থাদরার্থাচ্চ বিহিতঃ শস্ জ্রাদির্জবতি। বহ্বীজ্যো দেকি বছশো দেফি অল্লাভ্যো দেফি অল্লাভ্যা দেফি অল্লাভ্যা দেফি অল্লাভ্যার্থাৎ কারকত্বে শস্ মঙ্গলে ইন্ত শ প্রকরণনিয়মান দ্বিতীয়াবহুবচনং শস্ ন ভ্রতি তেন বহ্বীঃ পশ্স।

৫৩৪। যাজাদিরনেয়ঃ। ংষকারাদিরজাদিরেমবজিভিক্তদ্ধিভিক্তরাদির্ভবতি। এগ্রা ভারঃ, ঐণ্যাঃ ষ্টাদিবর্ণবিশেষাট্যাণ্ চেতি ট্যন্ পাঞ্চলোহিতিকং পঞ্লোহিন্তঃ পরিমাণ-মন্তেতি তদ্ধিতাথে সমাসং তদস্য পরিমাণমিতি টিকন্ পুংবদ্ধাবাৎ তোপা-স্তান্তক্ত ইতাস্য নিবৃত্তিঃ। কন্দ্রাণী দেবতা অজ্ঞ রৌদ্রঃ। অনের ইতি কিম্? ক্রোহিণেরঃ রোহিণেরঃ পুংবদ্ধাবেন তারিবৃত্তিঃ স্থাৎ।

৫ ৩৫। স্মান্ত্রাটের বৃ।
স্মান্ত্রালভবিতি। স্থাঃ স্ত্রী স্মান্ত্রিকেতি ভারঃ ঈচ
স্মান্ত্রী সান্ত্রেতা স্মা স্থায়েঃ স্থাকিলিভাগি টের্নিভি টের্ন্।

৫৩৬! জাতীয়দেশীয়ে প্রতিষেধবিষয়ে হপি।
এতৌ প্রতায়ৌ প্রতিষেধবিষয়ে তরাদী ভবতঃ। দত্তপ্রীতীয়া পঞ্চমদেশীয়া
মদ্রকজাতীয়া পাচকদেশীয়া শ্রৌল্লদেশীয়া স্বম্থদেশীয়া দীর্ঘম্থদেশীয়া
কঠজাতীয়া ইত্যত্র সংজ্ঞাপ্রণ্যৌ তদ্ধিতকোপান্তঃ অকণকঙকট্ঙকাত্ত চ
বৃদ্ধার্থতদিতান্তয়োরঞ্জনবিকারয়ো: অমানিনিয়ালাদী জাতিশ্চেতি নিষেধবিষয়েহপি প্রেরোর প্রকারবতি জাতীয় ইতি জাতীয়ঃ মনাগ্নে ইত্যাদিনা
দেশীয়ঃ।

৫৩৭। কল্পতরতমর্মপেষু জ্রীৎ ব্রস্থঃ।
কল্লাদিষু পরেষু উক্তপুংস্কং ক্রীৎ ব্রস্থো ভবতি। পুংবস্তাবে প্রাপ্তে তল্লিষেধবিষয়ে চ বিধানম্। পটি কল্লা পটি তরা পটি ত্রমা পটি রূপা ইতি বামনেনোনোদাহতং রক্ষিতেনাপ্যভাগেগতং জিনেক্রধর্মাদাসাভ্যান্ত পটুকলা ইত্যুদাস্তং ভিন্নবিষয়ত্বাৎ পুংবদ্ধাবোহত্র ন বাধ্যতে ইতি তংস্বরসোপলক্ষ্যতে।
খনকিকল্লা ত্রান্ধণিতরা কঠিত্যা বৈদেশিরূপা। অনুক্রপুংস্কল্ভ। আ্যান্দ্রীকল্লা লক্ষীতরা তন্ত্রীরূপা। সদিতি কিম প দত্যকল্লা।

৫:৮। গোত্রাদৌ চোত্তরপদে।
গোত্রাদৌ চোত্তরপদে।
গোত্রাদৌ চোত্তরপদে পরে উক্তপুংস্কং স্ত্রীৎ হুস্মো ভবতি। ব্রাহ্মণিগোত্রা
ব্রাহ্মণিক্রবা বাহ্মণিচেলী গোত্রাদিশকানাং নিন্দাগর্ভম্বাৎ নিন্দাগর্ভক্তথা
নিন্দাস্তেতি কর্মধারয়ঃ হনীতীতি ক্রবঃ অভিপচতিক্রব ইতি প্রতিষেধাৎ
বচাদেশাভাবং। চেল্ বেল চলনার্থ: পঠাতে পচাদিম্বাং ওঃ নদাদিম্বানী
হাহ্মণিমতা ব্রাহ্মণিহতা ইতি কর্মধারয়ঃ। উত্তরপদগ্রহণাৎ বাকো ন
ভবতি। ব্রাহ্মণীহতা। গোত্র ক্রব চেল মত হত।

৫৩৯। একাজ্বা। উক্তপুংস্ক ইতি নাতুবর্ততে। কলাদিযু পরেরু গোতাদে (চাত্তরপদে পরে একাচ্ স্ত্রীৎ হথো বা ভবতি। স্ত্রীকরা দ্রিকরা স্ত্রীশব্দো নদাদিখালী-প্রতায়ান্ত: ঈরপা ইরপা ঈশব্দো লক্ষীবাচক:। স্ত্রীদিত্যেব। শ্রীতরা কিবস্ত: রুডদীর্য: শ্রীশব্দঃ। ইদস্তাদক্তার্থাদিতি ঈপ্রত্যান্তের তু শ্রীভরা শ্রিত-রেতি ভবিতব্যমেব। অনেকাচ্ ভু। উরীকরা।

७८०। अर्र

স্ত্রিয়াং বিহিতঃ **উৎপ্রত্যরঃ করাদির পরে**ষ্ট **হুস্বো বা ভবতি। ধীবৰূকরা** ধীবনুকরা উদস্তান্মনুষ্যন্তাতেরিতি স্তিয়ামুঃ।

৫৪.। পুংবফোগিতঃ।

উগিতঃ পরং স্থাৎ কল্লানিষু পরেষু ছসো বা ভবতি। পুংবচচ বা । বিকল্লব্যেন রূপত্রম্। শ্রেরদীকলা শ্রেরদিকলা শ্রেরদ্ধলা। ঈরদৌ পরে প্রশশুঃ শ্রুঃ উনিবাদী বিচুষিতরা বিছ্মীতরা বিদ্বরা বস্থবোর্তের্নভ্রেচিত বস্তঃ বস্থবালোস্থদ্ধিত্যে চেতি বক্ষারস্থোকারঃ সন্নিহিত্যাং উগিনিমিত্তশুব স্থীতো গ্রহণম্। তেন প্রাচিতরা অবাচিতরা ইত্যাদৌ নিত্যো হসঃ উগিতোহপ্রস্থবের বাহক্ত্রবপদাদিতি ঈ।

. ৫৪২। ভোগবতীগোরীমত্যোন ক্রি হুস্কঃ।
নামি সংক্রায়াং বিষয়ে ভোগবভীগোরীমতোক্ষ তরাদৌ পরে হ্রস্বো ভবতি।
নিত্যার্থং বচনম্। ভোগবতিত্রা গৌরীমতিত্রা।

৫৪৩। প্রতায়ে কেইণ:।

প্রতায়ে কে পরেংশো ছম্মে ভবতি জ্ঞকা গ্রামণিক: পপিকা পাটলিকা কুমারিকা ধীব দুকা অজ্ঞাতাদিধর্থেষু ক:। অণ ইতি কিম্ ? গৌকা নৌক। বাকা ধাকা বা ধাঞোদাদে: ক ইতি কপ্রত্যেয়: বহুলবচনায় ছম্ম:।

৫৪৪। অদিৎস্ত্রাদন্তে কে।

দ্বীবিহিত আং অস্তো যদ্য দ স্ক্রাদস্তঃ। প্রতার ইত্যমুর্ত্তং বিভক্তিবিপরিগামাদত্র ষষ্ঠান্তম্। স্ক্রাদস্তে প্রতারদশ্বন্ধিনি কে বর্ণে পরে অকার
ইকাবো ভবতি। মুণ্ডিকা বালিকা শুভংঘিকা পূর্ব্বৎ কে হ্রস্মঃ। লিখাদেরক ইতি লিখিকা। প্রু জ ক্রুন্থ লুভ্যো ওকঃ দক্তংসাধাবিতিঃ
ওকঃ লবিকা এতদা হকি ক্তে এষিকা। অপ্রতারদ্য তু। শক্রোভেঃ

চাপদিখাং ঙ: শকা হ্রেক্টো দীর্ঘন্তাপ্রহণাৎ রাকা ধাকা। স্ত্রাদস্ভ ইতি কিম্পু পুত্রকা। আদস্ত ইতি কিম্,। রব্ধকীত্যাদি।

৫৪৫। लिविकामग्रः।

লবিকাদয়ো নিপাতান্তে। লবং কায়তীতি কৈ গৈ রৈ শব্দে আদস্তাদ-মাদেরপ্রাদেরিতাঙ্ অপ্রত্যয়ত্বাৎ পূর্ব্বেণাপ্রাপ্তে বিধানম্। মামিকা কেরলস্থ্যস্প্রমামকভাগধেয়েত্যাদিনা নামি ঈবিধানাৎ। অন্তত্ত আৎ ভক্তিকা শল্ফিকা শংযিকা অধাতন্ত্যযকাদপক্ষিকাত্যতাগং স্ত্র্যাত ইতি বিকরে প্রাপ্তে পাঠঃ।

৫8७। न जामारमः मगारम।

সমাসে সতি পূর্ব্যলক্ষণপ্রাপ্ত ইকারস্তালাদেন ভবতি। ন এষা আনেষা আনেবকা কুপায়ামিত্যাদিনা অক্ ন সর্ব্যনায়ঃ সমাস ইতি কেটিং ভন্মতে অস্ক্রিকা প্রমুস্ক্রেক্ত্যাদি।

089। यत्नमभ्या

অসমাসাৰ্গি বচনম্। যদ্তদ্অদস্ইলোতেষাম্ইল ভবতি। যক। সক। অসকৌ স্থী যকাং তকামধীমহি।

৫৪৮। বহুব্রাহো সমাসান্তকবর্জ ম্।

পূর্বস্থের প্রাপ্ত ইকাবঃ সমাসান্তে বিহিতং কং বর্জারন্ধা বছরীছোঁ সমাসে ন ভবতি। সহর পরিবাজকা অফাং বছপরিবাজকা নগরী। সমাসান্তকে তু। বছনি চর্মাণ্যক্তাং বছচমি কা অক্তসমাগ্যন্তাদেতি বছরীটো কঃ।

৫৪১। আশিষি ওকস্ম।

আশিযি বিহিত্সা ওকস্যাকার ইন্ন ভব্তি। জীবকা নন্দকা আশিষি স্ব্ধাতৃভা ইতি ওকঃ।

৫৫०। किनकामग्रः।

ক্ষিপকা নিপাত্যন্তে। নিপাতনাৎ সব এ ইস্বাভাব:। ক্ষিপকা ধ্রবকা ক্ষিপ প্রেরণে ধ্রু গতিষ্ট্রেরারিজুপান্তপ্র্যাদেরদিতাৎ উদস্তাৎ ক:। চটকা এড়কা উপত্যকা অধিত্যকা উপাধি গ্যাং তাক: পর্বতাসন্মোর্জভাগরোরিজি ভাক:।

৫৫১। লুপ্তোভরপদঃ।

দেবদন্তিকা এব দেবকা পূর্ব্ববং কঃ কে উত্তরপদস্য বেতি দন্তপদলোপ:।

৫৫২। তারকা নক্ষত্রে।

তরতের্ণক: উপচারাৎ কনীনিকায়াঞ। অক্তর। তারিকা।

(() वर्गका श्रावत्राम।

প্রাবরণমাচ্ছাদনবিশেষ: । বর্ণ: বর্ণক্রিশ্বাবিস্তান্ত গুণবচনেম্বিতি চৌরাদিক: ততো গক:। অন্তত্র। বর্ণিকা শাস্ত্রদ্য টীকা ব্যাখ্যাত্রীত্যর্থ:।

৫৫৪। অফকা শ্রাদ্ধে।

অশু ব্যাপ্তো ইম্বশোস্তক ইতি তকঃ ভ্রস্জাদ্যস্তচ্ছশামিতি শস্য যঃ। অগুত্র অষ্টিকা অষ্টপরিমাণমস্যাঃ সংখ্যায়াঃ কস্তিংশদ্বর্জমিতি কঃ।

৫৫৫। বা সূতকাদয়:।

এতে বা নিপাতান্তে। স্তকা স্তিকা পুত্রকা পুত্রিকা বৃদ্ধারকা বৃদ্ধারিকা এবকা এবিকা এবকৈতি গণুপাঠাৎ দ্বিচনাদৌ নিতাম্ এতিকে এতিকা: দ্বকা দ্বিকা সর্বিকা সর্বিনামত্বাদস্তান্থরাং পুর্ব্বোহক । কচিৎ স্বার্থিকা: প্রকৃতিতো লিঙ্গবচনাক্ততিবর্ত্তন্তে ইতি দ্বিদ্ধাদেকবচনম্ । চাদ্রান্ত দ্বিচনমেরেচ্ছন্তি দ্বকে দ্বিকে জ্ঞকা জ্ঞিকা ভঙ্ক্তকা ভত্তিকা ভঙ্কিকা ভঙ্কিকা ভত্তিকা নিজে ভত্তকোপাদানং তদন্তার্থম্। তেন বহুভন্তকা বহুভন্তিকা অজ্ঞকা অজ্ঞিকা অজ্ঞাতাদিশ্বর্থেষ্ কঃ স্বকা স্থিকা স্থাদো যদা সর্ব্বনাম তদা অক্। অক্তত্র ক এব জ্ঞাদীনাং তদন্তানাম প গ্রহণাৎ অক্তকা অজ্ঞিকা ইত্যাদি। স্বত্যেয়ন্ত তদন্তানামগ্রহণাৎ অন্বকা অনেষকা।

৫৫৬। বর্ত্তকা শকুনো। বেত্যমুবর্ত্ততে। বর্ত্তকা বর্ত্তকা বৃত্ বর্ত্তনে পক:। অন্সত্র। বর্ত্তিকা কাশিকা হত্তস্য ব্যাথ্যাত্রীত্যর্থ:।

৫৫৭। অধাত্বত্যকাদত্যত্যপং স্ত্রাতিঃ।

ন্ত্রাদন্তে কে পরে অধাত্তস্থিতাং যকারাৎ ককারাচ্চোত্রস্য ত্যতাণ্
বিজ্তিস্য স্ত্রীবিহিতস্যাতঃ স্থানে বিহিতোহং ইদ্ধা ভর্বত। ই ভ্যকা
কল্মিকা চটকিকা মৃথিকিকা ইন্ড্যাদিশব্দভাঃ পূর্কবং কঃ পক্ষে
ইভ্যকেত্যাদি। অধান্থিতি বিশেষণং কিম্
পু স্থারিকা স্থাকিকা
নিঞ্প্রাপনে ঋণুঙাদেও ইতি ভঃ পচতেছণ্ বছরীছিঃ অক্তস্মাসাস্তা-

্মতি কঃ। ধকাবত্ৰ ধাত্বস্তৰ বিনি। যকাদিতি কিম্? অঞ্কা। অত্যত্তাণ্ ইতি কিম্প্রুইতিকা কাদিভাকা ইতি ত্যপ্তায়ঃ দাক্ষিণাত্যিক। ক্ষিণাশ্যংপ্রমন্তাণিতি তাণ্। স্ত্যাত ইতি কিম্পু স্কুভীয়িকা!

৫৫৮। অনুতপুংক্ষপ্তাক।

মন্ত্রন্ধানতঃ স্থানে নিহিতাহং ইয়া ভবজি। আচে। খটিকা পট্কা থটাকা পূর্ববং কঃ ন খটা অথটা ইতি নঞ্সমাসং কথা কঃ অথটাকা পর্মথটাকা পর্মথটাকা পর্মথটাকা পর্মথটাকা পর্মথটাকা পর্মথটাকা সদাদীনাং পূজানানৈরিতি কথারয়ঃ নিয়তন্ত্রীলিঙ্গাং থটাশলোহু ফুকুপুংস্কঃ সর্ক্ষত্র প্রতায়ে কেহণ ইতি হুস্বঃ অবিশ্বমানা থটা অস্যা ইতি বছরীহাবপি অথদ্বা অথটাকা অথটাকা অক্ষতসমাসাস্তাদ্বতি কে কতে আতো বেতি কতো হুস্বোহনুজপুংস্কস্যাতঃ স্থানে বিহিতো বিকল্প এব ভবতি। যদা তু অবিদ্যমানা থটা যস্যা ইতি অথটা ইতি ন্ত্রীপ্রত্যয়স্য চেতি হুস্বে কতে পূনঃ প্রিয়ামাৎ ততোহলাদৌ কে কতে হুস্বঃ তুদা উক্তপুংস্কগৈরাকারস্য স্থানে অতি কতে বিকল্পয়াভাবাৎ নিত্যমথটাকেতি।

ইত্যোথাসনিক এ গোয়ীচন্দ্রবিরচিতং মহারাজাধি-রাজশ্রীমজ্জুমরনন্দিপরিশোধিততদ্ধিত-পরিশিষ্টং সমাপ্তম্।

কারকপাদঃ।

া ক্রিয়ামুখ্যপ্রয়োজকো কর্তা। ক্রিয়া সর্বের ধান্বর্থাঃ করোত্যর্থো বা। ক্রিয়ায়াং সাধ্যায়াং কার-কেবু যো মুখ্যস্কদায়োজনার্যঃ স কর্তৃসংজ্ঞো ভবতি। প্রয়োজ-

(১)। নাম ইতাধিকারাৎ কর্ত্তাদিসংজ্ঞা নাম এব অতঃ পশু সুরো वावजीजाति कर्वममुम्बिष्टेचानिमा कर्यानिमः छ। मामकनीया । अविकाजायाः ক্রিয়ায়াং তত্র মুখ্যত্বং ন জ্ঞায়তে অত আহ ক্রিয়া সল্লে ধাত্বর্থা ইতি। চ ধার্ম্বর্থ: বিবিধো ভবতি। কোহপি পরিস্পন্দনসাধনসাধ্যো যথা গম-नामिः। (काश्रेशार्षात्रम्थनम् । धन्मार्था यथा व्यवज्ञानामिः। धाष्ट्रमञ्जनव উদ্দিষ্টমেব ভাণিদশগণা ইত্যাদি। 'এতদ্রচিক্লপং লক্ষণমভিধায় সকলার্থ-সংগ্রাহকমন্বর্ধমপরলক্ষণমপ্যাহ করোতার্থো বেতি। বতঃ করোতেরর্থ: দর্মধাত্বর্থানুগত:। অরম্ভ বৌগিক: শকার্থ:। ক্রিরতে ইতি ক্রিয়া কুঞ-স্বথেতি কা:। স্পতএব কিং করোজীতি প্রশ্নে পচতি গছতীত্যাদ্যুত্তরং ক্রিয়তে ন ছি অন্তার্থপ্রশ্নে অন্তত্ত্বরং সম্ভব্তি। যন্তেবং কথমস্তীত্যাদীনাং ক্রিয়াখং নহি কিং করোতীতি প্রশ্নে অন্তীভাতরং সম্ভবতি। অত্যোচাতে। প্রাত্মকর্ত্ত রাশয়াহুরপমেবোতরং সম্ভবতি। যদা অভিত্সন্দেহ এব কিং করোজীতি প্রশ্ন: তদোত্তরমেব তাদৃশমপি ভবত্যন্তি : তাবদিতি। ক্রিয়ারা-মিত্যাদি। মুখ্য: প্রধানভূত: প্রাধায়্যং চায়্যাপেক্ষং ভবতি তচ্চ ক্রিয়ায়াং ভবন্নিমিত্তভূতেখেব সম্ভবতি। কারকং নিমিত্তং হেতুরিতি পর্যায়:। অত আহ কারকের বো মুখ্য ইতি। এতেনাক্বতসংজ্ঞান্তপি লোকপ্রসিদ্ধাব ঘট কাবকানি জেরানীতি প্রতিপাদিতম্। অতএব রুৎপাদে উক্তং কর্ত্রাদি-वहित्क कात्रकमः छ। अमिरक्षित्र । नम् कथः कात्रत्कम् काष्टां निष् तन्वनरखा मुशाः অত আহ তদায়োজনার্ছ ইতি হেতুগর্ডমিদং বিশেষণং কারকায়ো-জনাহ ত্বালুখ্যত্বমিত্যর্থ: । কর্ত্র হি নিযুজ্যমানানি করণাদীনি প্রবর্ত্তরে নতু তৈ: করণাদিভি: কর্তা ক্রিরায়ামাবোজ্যতে। কারকশবশ্চায়ং লোকে कन्छ । एमराएकः कोर्रकः ज्ञानग्राध्यापनः शहि । शहित्राख्यापनः एमराएकन व्यक्तप्रकः।

প্রসিম্বো বাংপল্লো নিনিউপগায়:। যদি ণকপ্রতায়ান্ত: সাাৎ তদা কর্ত্ত-শক্ষেন সহ সমানার্থ: স্যাৎ। এবঞ্চ সতি ক্রিয়ামুখ্যস্যৈর কারকপদেনাভি-ধানং ভবেদিতি জন্নাদিত্যাদীনাং মতম্। ভাষ্যকারম্ভ করোতীতি কারক-মিত্যাহ আবিক্লিতেজ লনক্রিয়াং কুব'ৎ কাষ্ঠমপি অধিশ্রয়ণক্রিয়াং কুব'তী স্থাল্যপি স্বাবন্ধববিক্লিভিং কুর্বনন্নমণি। বুক্ষাৎ পত্রং পত্তীত্যত্ত পত্তঃ পত্রস্য বিভাগং প্রত্যাত্মনো নিমিত্ততাং কুর্বাণো বুক্ষোহপি বিপ্রায় গাং দদা-তীতাত্র গো: স্বীকার: কুর্বন বিপ্রোহপি কারকং ভবত্যেব। অতএব সর্বা ণ্যেব কারকাণ্যভিধীয়ত্তে তেষাত্ত দর্কেষামায়োজনং কুর্বন্ দেবদত্তো হি মুখাঃ কর্ত্তা ভবতি। যদি পুনঃ পাক্রিয়াং কুর্ব তাং, কাষ্ঠাদীনার্মাপ মুখ্যতং বিবক্ষ্যতে তদা কাঠং পচতি স্থালী পচ্তিওদন:পচ্তীত্যাদ্যপি ভবতি।তেষাং মধ্যে যদা যদ্য ক্রিয়াব্যাপ্যস্থং সাধকতমস্বাদিব্যাপারভেদাপেক্ষা বিধীয়তে তদা কম্মস্ব-ক বণ স্বাদিকমিতি। তথাচোক্তং — নিষ্পত্তিমাত্রে ক র্ভন্তং সর্মত্রৈ বাস্তি কারকে। ব্যাপারভেদাপেক্ষায়াং করণছাদিসম্ভব: ॥ দেবদত্ত: পচতীত্যাদি পচতিরত্র বিক্লেদনার্থ: সা চ বিক্লেদনা দেবদন্তসাধ্যা ভবত্যের তদর্থং তং-প্রবৃত্তে: অতএবাদ্য দকর্মকত্বনিতি। যদা ছ বিক্লিভিৰচনন্তদা ওদন: পচাতে ইতি কর্ম্মকর্ত্তবিষয়: পচি:। প্রয়োজকে ণিঙি সতি প্রকৃত্যর্থসমানার্থ: প্রতীয়তে। পাচয়তি ভক্তং দেবদত্ত ইতি। এবমারোহয়তি হস্কিনং হস্তিপক: ভেদরতি মন্ত্রিণং রাজা রঞ্জয়তি বন্ত্রং রজক:। দীপিতস্তুমমুস্তা-वमन्भारमञ्जानमः প্রয়োগা ক্রগ্ভবন্ ক্রগ্ভাবনাদিধাত্র্যবস্থা প্রযুক্তান্তে। পচতীতে শেষাৎ পরবৈষ ইতি কর্ত্তার পরবৈষপদংতত্তা তেঙাদাবুক্তাম ত কর্ত্তু-करूषार मनुष्कुरकार स थे जम देखि दिवतह नेबार सः दिवत हेखा ब कातकारबाजनार् पर्यान कार्टि त्रिकाश्चिम्। नस् यमि कात्रकारबाजनर বিদধত এব কর্তৃ থা প্রতীয়তে তদা আত্তে বিপ্র ইত্যাদৌ কথা কর্তৃত্ব ? कांत्रकाखतां जावाः। व्यव वार वार् हेिक वार्श (बारागा वांगाजा ह उसा-নীমায়োজনমকুর্বতেহে'প বিদ্যন্ত এব যথা পচিক্রিয়াং ভদানীয়কুর্বতোহ'প र। তৎসমুদ্দিষ্টং कर्म।

তেন কর্ত্রা সমাক্ ক্রিয়াভাগিতয়া গত্যাদৌ তৎফলভাগিতয়া চোদিষ্টং কর্ম্মসংজ্ঞং ভবতি। তচ্চতুর্ধা বিভজস্তে। প্রাপ্যং নির্বস্তাং বিকাগ্যমনীপ্সিতঞ্চেতি। দেবদুরো গ্রামং গচ্ছতি গমনেন গ্রামং প্রাপ্নোতীত্যর্থঃ। কটং করোতি বক্ত্রং রজতি পাপং ভাজতি। ধর্ম্মে সূত্রং করোতীত্যর্থে ধর্মাং সূত্রয়তি

পাচকব্যবহার: । দেবদন্তেন পাচয়ত্যোদনং বজ্ঞদন্ত ইত্যত্র ণিঙস্তাভিহিতারাং প্রযুক্তিক্রিয়ারাং মুখ্যম্বেনৈর কর্তৃত্বে সিদ্ধে পাচক্রিয়ারাং প্রয়োজ-কত্বেন কর্তৃত্বমনর্থকমিত কোচিচোদয়ন্তি তদসৎ এবং সতি যথা দেবদন্তন পক্তৃং প্রযুঙ্জে ইত্যত্র নাবশ্রুং পাকাভিনিরুন্তিঃ প্রতীয়তে তথা দেবদন্তেন পাচয়ত্যোদনং বজ্ঞদন্ত ইত্যত্রাপি নিয়ম'সদ্ধা পাকাভিনিরুত্তির প্রতীয়েত। তথাচ, প্রযুক্তিক্রিয়ায়াং ভূতায়াই পাচক্রিয়ায়ান্ত ভবিষ্যস্ত্যামিপি দেবদন্তেন বজ্ঞদন্তোহপাচয়াদিতি স্যাং। কিঞ্চ স্প কারেণায়ং পাচয়তে রাজেতাত্র পাকক্রিয়ায়াং রাজ্ঞঃ কর্তৃত্বাভাবে কর্ত্র্যক্রিয়াফলস্যাভাবাদাত্মনেপদং ন স্যাৎ তত্মাজাজাদেঃ প্রেষণক্রিয়ায়াং মুখ্যকর্তৃত্বং পচিক্রিয়ায়াং তু প্রয়োজ-কর্ক্তৃত্বমিতি।

(২)। তচ্চকেনানন্তরোক্তঃ কর্তা পরামূলতে। সংশক্ষঃ সমাগর্থঃ। দেবদত্ত ওদনং পচতীত্যাদৌ পাক ক্রিয়াময়ং ভলতা দেবদত্তেন ওদনং সমাজিদিষ্টঃ। দেবদত্তো গ্রামং গচ্ছতীত্যাদৌ গমনক্রিয়ায়া; ফলং সংযোগময়ং ভক্রতা দেবদত্তেন গ্রামং সমাজিদিষ্ট ইতি। ওদনস্য গ্রামস্য চ কর্ম্মসংক্রেত্যভিপ্রায়ঃ। যস্য সমাজিদিশ্রখং নাস্তি তস্য ন কর্ময়ং পয়সা ওদনং ভূঙ্কে ইতি। যদ্যপি কর্ত্ব ক্রিপ্রাং ন ভব ত তদাপ ন কর্ময়। মাদেমম্বং বয়াজীত্যক্র কর্মাণ উদ্দেশ্রা মায়া ন কর্ত্তঃ। তচ্চতুর্দ্ধা বিভক্ততে ইতি প্রাচার্য্যা ইতি শেষঃ ! কর্ত্তঃ ক্রিয়ায়া ব্যাপ্রিমাত্রং যত্র প্রতীয়তে ন নিশ্বতিন চ বিক্রতিন্তং প্রাপ্যম্। যথা গ্রামং গচ্ছতি গমনেন গ্রামং প্রাপ্রীত্যর্থঃ। কর্ত্তঃ ক্রিয়য়া যসোৎপাদঃ প্রকাশো বা তয়িবর্ত্তাম্। যথা কটং করোতি প্রং প্রস্তে। কর্ত্তঃ ক্রিয়য়া যসোৎপাদঃ প্রকাশ্যে যথা বন্ধং রম্ভিদ্যানাডেন বা অবস্থান্তরাপ্তিন্ত দ্বিকার্য্য যা যথা বন্ধং রম্ভিত

সূত্রয়তি ক্রিয়ায়াঃ কর্তৃ সমুদ্দিষ্ট হাদ্ধর্মশ্র কর্মাহম্। এবং বলিং বন্ধয়তি । কংসং ঘাতয়তি

७। यजारशिश्विष्ठीरमः।

অধিষ্ঠাদের্ধাতোরর্থে যিশ্মিশ্নাধারে উপলভ্যতে স আধারঃ কর্ম্ম-সংক্ষো ভবতি। দেবদত্তো গ্রামমধিতিষ্ঠতি পীঠমধ্যাস্তে শয্যা-মধিশেতে ।

কাষ্ঠং দহতি। যং পুনন প্রাপাং ন নির্বর্তাং ন বিকার্য্যং কেবলমনাপ্নিতত্বেন ত্যাজাবাং কর্ত্রা সমুদ্দিষ্টং তদনীপ্নিতম। যথা পাপ: তাজতি আদিতাং পশুতি অহিং লজায়তি। গ্রামং প্রজ্ঞন ভূণং স্পূশতি প্ত্রমিচ্ছতি প্রিয়ং স্বরতীত্যাদৌ ক্রিয়াবিষয়ভরা ব্যাপারং যথা প্রতীয়তে ন তথা ত্যাগক্রিয়য়া পাপস্ত প্রাপ্তি: প্রতীয়তে এভাবতা অনীপিতং পৃষ্ঞদিঔম ৷ কটং করোতি শোভনং বিতভমি-ভাগে পোভনাদিকক কর্ত্রনিভামেব। কাঠং ভন্ম করোভাতাত্র তৃ কাষ্ঠং বিকার্য্য: ভন্ম নিবভাষ্। ধন্মে স্থর্মিত্যাদি। স্থাং করোতীতি বাক্যে করোতিক্রিয়ায়াঃ স্ত্রমেব কম্ম। যদা তু অস্তর্ত কর্মিকা স্ত্ররতি-ক্রিরা সংগ্রাতা তদা তস্তাঃ কর্তুকদেশে। ধর্ম এব ভবতাত্যভিপ্রায়:। স্র্য হাতি নাম ইত্যাদিনা ণিঙ্ অনেকাচামিত্যাদিনা অকার লুক্। বলিং वक्तवाठी विवस् वक्रान शूरिम घन कात्रातक ८५ वि घन वर्णव स्ता विनिषक्तः তমাচাও পূৰ্ববিষ্ঠি বণ্লুক্ চ। কংসং স্বাতয়তাতি হন্হিংদাগভ্যাঃ অ প্রানে ভাবেত্নো বধণেচতি ভো বধানেশত কংসবধমানটে ণিঙ্ ওলুক্ চ ক্রিনিমিত্রাপার ইত্যাদিনা ব্যানেশনিবৃত্তিঃ ণিঙি পরে ণিভাণ্লিড্বর্জণ হনে। ঘাত ইতি ঘাতাদেশঃ। সত্রাপি বন্ধাখ্যানকর্ত্ব লিরেবাদেখ্যে। বধা-খ্যানক উ্ৰন্ড কংসন্তন্নিবন্ধনতাৎ কথামূবন্ধন্ত।

(৩)। ষ্ঠা গতিনির্ত্তো আদ্ উপবেশনে শীঙ্ স্বপ্নে অধিপূর্বনেতৎ ত্রমধিষ্ঠাদিঃ। যত্র ইতানেন সপ্তমাস্তেনাধারঃ পরানৃত্ততে অত আহ ম্স্মিরাধারে উপলভ্যত ইতি। যদিন্ পুনরাধারে অধিষ্ঠাদের্শতো-

৪। অভিনেরিশঃ।

গ্রামমভিনিবিশতে গৃহেহধিষ্ঠানং কল্যাণেহভিনিবেশ: পাপেহভিন্ নিবেশঃ। যশ্মিন্ যশ্মিমভিনিবিশত ইত্যাদ্যপি দৃশ্যতে।

৫। বদতেরুপায়ধ্যাঙঃ।
 গ্রামম্পবসতি গ্রামমাবসতি।

৬। নাভোজনার্থস্য।

উপবস্থি প্রামে। একাদশীমুপবসান্ত নিরম্বুভক্ষ্যা ইত্যত্র কালাপ্রভামবিচ্ছেদে ইতি দ্বিতীয়া।

বর্গো নোপলভাতে স কর্ম্মগংজ্ঞো ন ভবতি। গৃহে পীঠমধ্যান্তে ইতাত্র হি গৃহং পীঠাবস্থানক্রিয়ায়া আধারো ন পুনরধ্যাসনক্রিয়ায়াস্তস্তাস্ত পীঠ এবানার:। আদ্নীঙোঃ সাহচ্য্যাৎ তিষ্ঠতেরপ্যকর্মকন্তৈব গ্রহণম্। তেন গ্রামে লোকমধিতিষ্ঠতীত্যক্র গ্রামস্ত ন কর্মসংজ্ঞা লোকস্ত তু কর্তৃসমুদ্ধি ইয়াং কর্মায়ম্।

- (৪)। স্পতিনি ইতি সম্দিতোপসর্গদয়সনিতক্ত বিশতেরর্থে। যথিরাধারে প্রতীয়তে স আধারঃ কর্মসংজ্ঞো ভবতি। অভিনিবিশত ইতি
 ক্যানাদ্বিশাদেরিত্যাত্মনেপনম্। কচিদপবাদবিষয়েহপুঃসর্গোহেভিনিবিশত ইতি ক্যায়াৎ। অন্মিন্নেব ভাষ্যকারবাক্যে অভিনিবিশত ইতি
 প্রয়োগাক্ত ব্যতিচারঃ কচিদ্রবতি। তেন গৃহেহধিষ্ঠানমিত্যাদাপি
 দশ্ততে।
- (৫)। বসতেরিতি নির্দেশা বস্ আচ্ছাদন ইত্যদাদেঃ বহু স্কন্তন ইতি দিবাদেশ্চ নিরাসার্থঃ। উপ অন্থ অধি আঙ্ ইত্যেবং পূর্ম্বসা বসতেরর্থো যশ্মিয়াধারে উপসভাতে স আধারঃ কন্মসংজ্ঞো ভবতি। উপ-বস্তীতি বসু নিবাসে।
- (৬)। অভোজনার্থস্ত বসতেরর্থো যশ্মিরাধারে উপলভাতে স প্রাধারঃ কর্মসংজ্ঞোন ভবতি। অয়ং যোগো নিরাকর্জ্যুং শক্যতে ব্যতাহভোজনার্থন্য উপপূর্ববিদা বসতেন গ্রামেহিধিকরণং কিন্তু কেবল-

৭ । জুধুজহোরপদর্গে সম্প্রদানম্। চৈত্রং পরিজুধাতি রাজানং সংক্রহুতি।

৮। দিবঃ করণং যুগপৎ কর্ম্ম চ।

মনসা দেবী অকৈনিবিয়তে দেবদত্তো যজ্ঞদত্তেন। উভয়সংজ্ঞায়ানিপি যত্ৰ যুগপত্ভয়কাৰ্য্যং ন সম্ভবতি তত্তৈকম্ম কাৰ্য্যম্।
অকৈদীবাতি অকান্দীবাতি অকৈদেবিকঃ অকাণাং দেবকঃ।

স্তেতি ভাষ্যং গ্রামে বসন্ কোহপ্যেকরাত্রং দ্বিরাত্রং বা উপবদ্যতীত্যর্থঃ এবং দ তায়ং যোগো বিস্পটার্থঃ।

- (৭)। ক্রুধ্কোপে জহ জিঘাংসায়ামিতোতয়োকপসর্গে সতি সম্প্রনাং কন্মসংজ্ঞা ভবতি। ক্রুপজ্ঞহের্ষেত্তাদিনা প্রাপ্তায়াঃ সম্প্রদানসংজ্ঞায়া অয়মপবাদঃ। কণ গাংপয়েন প্রভায়েন কর্মণ উক্তমাং রিপবঃ পরিক্রেধ্যম্পে নৃপেণেতি ভবতি। কর্মাণি বিহিতা ষষ্ঠাপি ক্রৎপ্রয়োগেহবাধিতা ভবতি রিপোরতিক্রোদ্ধেতি:
- (৮)। ক্রিয়াতিসাধনং করণমিতি সিদ্ধায়াং করণসংজ্ঞায়াং দিব্ধাতোঃ প্রনাগে করণং কর্ম চ যুগপদ্ভবতি। একদৈব করণসংজ্ঞা কর্মসংজ্ঞা চ ভবলীতার্থঃ। মনসা দেবীতাত্র করণসংজ্ঞা কার্যাং তৃতীয়াসমাসে মনসোনামীতি তৃতীয়ায়া অলুক্। কর্ম্মসংজ্ঞাকার্যাং কর্মণো ণড়িজি ণট্। কর্ম্মসংজ্ঞয়া বিনাপি ওপ্রতায়াস্তাৎ দেবশন্দায়দাদিপাঠাদীপ্রতায়ঃ সিধ্যতোব মতোহত্রোদাহরণেহসন্তোয়াহ্লাহরনাস্তরং দর্শয়তি অক্ষৈদে বয়তে দেবদত্তো যজ্ঞদত্তেনে ত। অত্র ধাতোঃ সকর্মকত্বে চেতনকর্তৃত্বেহকর্মকান্ট পাদিবর্জ বুধাদিরিতি বুধাদিছাভাবায়িভোহবুধাদেরিত্যায়্মনেপদং ভূতম্। যাশিত্রজাদিন। কর্ম্মসংজ্ঞায়াশ্চাভাবঃ। তত্রৈকস্থ কার্যামিতি পর্য্যায়েণেতি বাক্যশেষঃ। কর্ম্মসংজ্ঞায়াশ্চাভাবঃ। তত্রকস্থ কার্যামিতি পর্য্যায়েণেতি বাক্যশেষঃ। কর্ম্মসংজ্ঞার পরস্বাৎ কথং করণসংজ্ঞান বাধ্যতে ইতি ন বাচ্যম্ অনেনৈবোভয়সংজ্ঞাবিধানাং। অক্সেনীব্যতীতি রাস্তাদিদ্বাদ্দার্যঃ। দিবিরত্র ক্রীভার্থঃ যদি দৃত্রার্থঃ ক্রমবিক্রয়ার্থশ্চ স্থাৎ তদা অমুপসর্গে নিত্য-মতি বর্ষ্যী স্থাৎ অক্যাণাং দেবক ইতি কর্ম্মংজ্ঞায়াং কর্ড্য শ্রাদিক্সছিরিতি

৯। কর্দাহেতুত্ব হাদেঃ।

ত্হাদেঃ প্রায়োগে কর্তৃসমুদ্দিউকর্মহেতৃ: কর্মসংজ্ঞো ভবতি।
গাং দুর্মণ দোগ্ধি গোপং ক্রুদ্ধমবস্থানং যাচতে অবস্থা দুমসুনরভাতাথঃ। গামবরুণদ্ধি ব্রজং পুচছ্তৃপোধ্যায়ং শীব্রং ভিক্ষতে ভিক্ষাং
ধাণ্যিকং ভিক্ষাভ্যর্থগ্রহণং দেবদত্তং ধনং প্রার্থিতে রাজানং বস্ত্রং
যাচতে শক্ষরং বরং মুগরতে অনেকার্থিদ্ধাত্নাং মুগির্যাচ্ঞার্থঃ
বক্ষণবিচনোতি ফলং ক্রতে কার্যাণ পিতরং শাস্তি দর্মণ শিষাং কর্যতি

করা । নাঠা । অনসা ষষ্ঠা তৃতীসাপি বাধাতে ইতি কেচিং তন্মতে অকৈন-দেশিক ইতি ন ভবতোৰ ধাতোরতা সকর্মকরাৎ। অক্ষান্দীবাতীতাত্র অকা দীবাস্ত ইতি ভবতোৰ। নতৃ ভাব প্রবাবে অকৈদীবাত ইতি নাপ্য-কৈশ্বি ইতি কর্ত্তরি ক্রঃ। চন্দ্রতা স্বেক্বিধং কার্যামনালোচা যোগমমুং প্রত্যাচক্ষাবস্যাধিকস্বাতন্ত্রাম্।

⁽৯)। একার্থবোবপি বাচিভিক্ষোক্ষভয়োকপালানং স্বরূপগ্রহণমিতি শক্ষানিরাসার্থমাই ভিক্ষীতার্থগ্রহণমিতি নম্বন্যেষামর্থগ্রহণনিরাসার অন্যেষামপার্থগ্রহণাং
তথাই ক্রেবের্থগ্রহ্ণাং শিষাং ধর্মং বদত্যাচাই উপদিশভীত্যাদি ভা কি থা চং
প্রবর্ত্তের্থগ্রহ্ণাং শিষাং ধর্মং বদত্যাচাই উপদিশভীত্যাদি ভা কি থা চং
প্রবর্ত্তের্থগ্রহণমিতি স্থচনার অবস্থাত্মত্নয়তীত্যুক্তন্। আক্রতিগণ
ভারমিত্যেকে ইতাক্ত প্রয়োজনমাই দেবাস্থারিরিত্যাদি অস্বনিধঃ কর্মনংজ্ঞায়াং
সভ্যাং গৌণং কর্ম গ্রহানেরিত্যুক্তমাং প্রথমা। আক্রতিগণমানের বথাসন্তবম্বাহরগানি কার্যাদি। বোদীতি হৃত্প্রপূবণে তিঙ্ছোট ইত্যাদিনা হক্ত
ঘারিবালী কন্ত্র গংলা গামিতি অস্প্রোদিনি আকু কং অপ্রাক্ষেইপীভাাদিনা কন্ত্র গংলা গামিতি অস্প্রোদিনিত আক্র্মান্ত্রীতি প্রছ্
জ্ঞান্ত্রাম্ শক্তরাদেরিতি শং। বশাদেকশাদিরিতি প্রছ্টানেশং। ভিক্ষ্
যাজ্যাম্ অর্থ যাচনে মৃণ্ আর্ষণে আক্রনেপদিনঃ মৃগ্যে

ভারং প্রামং হর্তি ভারং প্রামং অক্সাং নয়তি প্রামম্। আকৃতি-গণশ্চায়মিভ্যেকে। দেবাস্থরৈরমৃত্যমন্ধুনিধির্মমন্থে ইতি ভারবিং। তুহি যাচি রুধি প্রছি ভিক্ষি চিঞো ক্রবি শাসি জি দণ্ডি কুযো বহতির্হরতির্নয়ভিশ্চ ক্রাদিগণঃ প্রবদস্ক্যপরে তু যথাবগমম্।

১০। যাশিজ্ঞাক্রপ্রথাকর্মণোহন্যাদেঃ প্রয়োজ্যঃ।
কর্তৃসমুদ্দিষ্টহাৎ সর্বাধাতৃনাং প্রয়োজ্যত্ম কর্মান্তে সিদ্ধে যাত্যর্পত্য
কর্মাত্যর্পত্য জ্ঞানার্থত্য ক্রঞর্থত্য শৃণোত্যর্থত্য অকর্ম্মকত্ম চ ত্যাদিবিজ্ঞিতত্য থাতোঃ প্রয়োগে প্রয়োজ্যঃ কর্ত্তা কর্ম্ম নিয়ম্যতে।
প্রয়োজ্যতাত্যগাত্রপপত্তা। প্রয়োজকাক্ষেপস্তদাক্ষেপাদৈকপদ্যান্তর ক্

শাহাদিখার তাং। চিনোতীতি চিঞ্চ্চয়নে তিঙ্ স্থাদেম্দিতি লং বাঞ্বাজাগং বাচি শাস্থ অন্থানি আদাদী জি জায়ে ভাদিঃ দণ্ড দণ্ড-নিপালনে চ্রাদিঃ যুক্তান্তভার বৃদ্ধিঃ ক্ষমু বিলেখনে বহ্ প্রাপণে সঞ্করণে বীঞ্পাপণে ভাদয়ঃ। মমস্ত উতি মন্থ বিলোজনে লিট্সংজ্ঞক এ দিক্তিঃ। ছহীত্যাদি রাঞালেরিরিভি ইপ্রভারান্তা ছহাদয়ঃ। ইর্ ধাতৃকখনে তিঙ্বত্তিঙ্ বেভি তিঙ্প্রভারান্তান্ত ছহাদয়ঃ। ইর্ করৌ কেবলাবেবান্ত্রতৌ জয়ভিশ্চ কেবলং। পৃছীতি ছোহচ ইতি না দিয়ম্ আশাদেব নিপাতনাদিতি ভবৈর বৃত্তিকতোক্তম্। প্রবদ্ধ্যানরে ভূ যথ বগমমিতি অন্বিরেব পক্ষে বৃত্তিকতঃ স্বরস্ত উতি ভাষতে। যতঃ প্রথম মপ্রক্রমাক্তিগলশ্চাম্মিতি। প্রস্থাক্তং প্রবদ্যাপরে ছিতি এতংসাধকে মহাকবিপ্রযোগশ্চ দর্শিতঃ। অভ এবাছ তণ্ড লাদোদনং প্রচ্তি কাশান্ত করে বরোতি চৈত্রং গ্রামং প্রহিণোতি ইত্যাদে তণ্ড লকাশগ্রামাণাং করে ভ্রিতি বর্ণয়ন্তি।

⁽১০)। প্রয়োজ্যভাত্যথামূপপত্তা প্রয়োজকাক্ষেপ ইতি প্রয়োজকে-২পাক্ষিপ্তে চৈত্রেণ প্রেষিতো মৈত্রো গ্রামং গচ্ছতীত্যাদৌ বিধান-সামর্থ্যাৎ কর্ত্তৃসংজ্ঞাং বাধিত্বা কর্মুসংজ্ঞয়া ভবিত্তব্যমত আহ ঐকপদ্যা

প্রবোজকে ণিঙি। মৈত্রশৈচত্রং গ্রামং যাপয়তি গময়তি প্রশাপয়তি। পৃতনাষাড় দিয়ো ধুর্ যুক্তানকত্য বাজিনঃ। আয়ংষি বকু
নির্ভিদ্য প্রাভপ্পনিরমোচয়দিতি ভটিঃ। আমে চয়দিতি মোচনেন
ভবান্তরমপ্রমাদিত্যর্পঃ। অত্র হি মুচিমু ক্রিপূর্বিকায়াং গতৌ
বর্তে। এবমজিগ্রহত্তং জনকে। ধনুস্তদ্যেনা দিনদৈত্যপুরং পিনাকীতি ভটিঃ। অ্যাচিতারং নহি দেবদেবমদিঃ স্বতাং গ্রাহয়িতৃং
শশাক। ইত্যপার্ধুরিত্যকুত্যাসবাভটো। গ্রাহয়িতৃং স্বীকারয়িতুমিতি
কাব্যার্থঃ। শূরদেনং পৌকুষং ত্যাজয়তি। দেবদত্তং শতং দাপয়তি

স্তরক্ষে ইতি। অত্র হি প্রেষিতো গছতীতি পদদ্বয়েন প্রয়োজা প্রয়ো-পনবোধ্যমেকবৃদ্ধিগ্রাহ্রাদস্বসং

ভবতি। অন্তরঙ্গবহির≉য়োরস্তরসং বলবদিতি লৌকিক এব ভাষ:। তত্মাং প্রয়োছকে ণিঙি ক্রতে প্রয়ো-জাসা কর্মাংজ্ঞা ভবত তি সিক্ষ্। নত্ ধালোণিতি কতে একপদেনৈর ক্রিবরোরভিধানাং যথা প্রযোজাদা কর্ত্ত্বমুদ্দিইজাং কর্মত্বং প্রাপ্লোতি তথা ক্রিয়ারাং মুঝারাৎ কর্তৃত্বমপি ভত্তর প্রাণ্ডে পরত্বেন কর্তৃত্বে প্রাপে তলাধনায় বিধার্থমেবেদং স্ত্রমিতি ন বক্তবাম। যতে। গুময়তীভাাভি প্রব্যেজক ক্রিটের প্রধানং গমি ক্রিয়া 👂 তদস্ত ভূতি তাদ প্রধানং প্রেধানা-প্রধানয়োম থাে প্রধানে কার্য্যসম্প্রভাষ ইতি ভাষাৎ প্রয়োজকক্রিয়াপেক। কর্মক প্রাপ্তমতো নিরমার্থমেবেদং স্থামিতি। যাপরতি প্রভাপয়তী-ত্যাদৌ নৌ পুঙাদ গানেরিতি পুঙ্। গময়তীতি অস্বার্থনাবিত্যাদিন। ঘটাদিত্বাৎ হ্রস্থঃ, উপসর্জনীভূতার্থাস্তরা অপি বার্থাদয়োহত গুহুত্ব हेि । अज्ञादनिति नीवरशः প্রাপণার্থয়োঃ প্রতিষেধেনৈর জ্ঞাপিতঃ তথাহি অজাং নরতি গ্রামং বহতি ভারং গ্রামমিতাত নীবহী ভারাদে: সন্তুত্রনা উপদ্জ নীভূতদেশান্তর প্রাপণার্থং গতার্থমভিধন্ত:। এতদেব প্রচায়ত্তং প্রাভশ্বনিরমোচয়নিত্যদাহত্ত্ব। এতেন প্রাবেশয়নানিরমধ্য-: মনম্। তামস্বমারোপ্য স্থতাং প্রতম্থে। প্রিথামুদ্রস্তমতীতর্দ্ধরি:।

ইড্যাদয়েছসাধব ইতি বাজটা:। ছাত্রং ভক্তমাশয়তি অভ্যবহারযুতি ভোজয়তি প্রভাবপূর্বব বে। প্রভাবসায়য়তি ছাত্রং শাস্ত্রং জ্ঞাপয়তি বোধয়তি প্রভায়য়তি বেদয়তি। শিষ্যং বেদং বাচয়তি পাঠয়তি ভাষয়তি। শাস্ত্রং পুরুং প্রাবয়তি অধ্যাপয়তি। দেবদত্তমাসয়তি শায়য়তি দয়িতাম্। বিপ্রো মৈত্রং চৈত্রং সংক্রোধয়তি
য়াজা নৈয়োগিকং দেশমধিষ্ঠাপয়তি। অভাদেরিতি কিম্ ? অজাং
মৈত্রং চৈত্রেণ গ্রামং নায়য়তি।

ধুতনবাতপুমুৎস্ক ভামতে। ন কমলং কমলগুরদ্ভদি। অস্ত্রকেবিদরং মরু-ত্বতা শৈলবাসমত্নীয় লম্ভিত: ৷ নমু মাং প্রাপয় পত্যুরম্ভিকমিত্যাত্মপি াতাৰ্থকেন ভৰতি। এৰ্পসন্ধানৃতধাৰ্থে গতাৰ্থ: প্ৰতীয়তে। সিতং সিতিয়া স্ত্রাং মূনেব প্রি সারিভি: সৌধমিবাথ লক্তয়ন্নিত্যত লভিগমনা-র্থোপসজনী ভৃতং পাপণার্থমাহ অতঃ দিতিয়েতি ন কর্ম। শূরদেনং পৌকষং ত্যাজর গীতাত্র তু পৌক্ষরগণ্ডনমর্থো নতু দেশান্তর প্রাপ্তি:। দেবদন্তং শত দাপয়তীতি সম্মানিরহঃ পরস্বাপোদানমর্থো ন তু গতার্থ: মত আহ ই গাৰ্দ্যোহ্যাধৰ ইতি ৰাভট ইতি। অন্তে তু এবংবিধান বহুন মহাক্ৰি-প্রয়োগান্ দৃষ্ট্য কুশকাশাবলম্বনন্তায়েন কিমপি প্রকারান্তরমাহ: । পায়য়তি পান্থমুদকমিতা ত্রাশ্লাতার্থসাং। প্রীতোহহং ভোজয়িমানি ভবতীং ভ্বনত্রয়-মিতাত তু ভুজেরশ্বতার্থ হৈব। ধথা বুভুক্ষিতশ্ত ভোজনং প্রমানক্ষ্ তথা ভূবনত্রয়ভোজনমিতি পরমানন্দক্ষৎ। তথাচ—ভোজদেবেন 6ির-প্রবাদাদাগত স্থান্ত সংস্থান কর্ম বাকারে অভ্যবহারার্থ তৈব প্রতিপাদিতা। তথাচো ক্রম্-অত্র হুপোষিতৈররমিবেক্ষতে রতিঃ। দর্শরতি রূপং প্রিরাম। দ্রাপয়তি সৌরভং দয়িতান্। স্পর্শয়তি গাত্রং কামিনীমিত্যাদি জ্ঞানার্থাস্ত-র্ভাবাং। ব্রভাবণার্থ: শৃণোতিরধায়নার্থো নতু জ্ঞানার্থ: অতোহন্ত পৃথগু-পাৰানম্। আশয়তীতাাদি অশ্ভোজনে ভুজ্পালনাভ্যবহারয়ো: অভ্য-বপূর্ম হুঞ্হরণে প্রত্যবপূর্ম: যোহস্তকর্মণি। জ্ঞাপয়তীত্যাদি জ্ঞা অব-বোধনে বৃধ্ মবগমনে। প্রত্যায়য়ভীতি ইণ্ গতৌ প্রতিপূর্ব্বোহয়ং জ্ঞানার্থ:

- ১>! অনিয়ন্ত, প্রযোজকে বহিশ্চ।

 বাহয়তি ধান্যং পুত্রেণ কৃষক:। নিয়ন্ত, প্রযোজকে তুঁ। বাহয়তি
 ধান্যং বলীবর্দান্ কৃষক:। ওদনং ধার্মিকো বুভুক্ষিতেনাদয়তি
 খাদয়তি।
- ১২। ভক্ষিরহিংসায়াম্। ভক্ষযতি ভক্তং বিপ্রেণ ধার্ম্মিকঃ। হিংসায়াস্ত্র। ভক্ষয়তি চৌরং শানং রাজা। হবায়য়তি দেবদত্তেন গাং যজ্ঞদত্তঃ দেবদ-

নিঙ্ বৃদ্ধিরায় বেদয়তীতি বিদ্ জ্ঞানে বাচয়তীতি ক্রঞ্ ব্যক্তায়াং বাচি নিঙ্
ক্রনে: বচিতি বচাদেশঃ বৃদ্ধিঃ বচ্ ভাষণ ইতাপ্তাপ্যেতদ্দ্রপং পাঠয়তাতি
পঠ ব্যক্তায়াং বাচি প্রাবয়তীতি ক্র প্রবাণ অধ্যাপয়তীতি ইঙ্ অধ্যয়ন
জ্যাদেরিদাদিতি আবুং পুঙ্। আসয়তীত্যাদি আস্ উপনেশনে শায়য়তাণি
শাঙ্ স্বপ্রে। বিপ্রো মৈত্রং চৈত্রং স্কংক্রোপয়তি রাজা নৈযোগিকঃ দেশমধিষ্ঠাপয়তীত্যাদে ক্রপজ্রেহের্য্যোদিনা সম্প্রদানশু মত্রার্য ইণ্যাদিনা
অধিকর্যপ্রত চ কর্ম্মগংজ্রায়ামপ্যকর্মক্রমের যত এতে দাত্রবাহকক্রক
এব। সোপসর্গাণমৌপাধিকমেষাং সকর্মক্রম্। অতএব দেবদভ্রমাসয়তি মাসমিত্যায়্যকর্মক্রান্তবিত। অত্র কর্মান্তেতি কর্ময়ম্। মৃত শাঃয়তি মত হং মাতেত্যত্র ক্রিয়াবিশেষণ্রেন মৃত্পশ্রু কর্মন্তহিপ শীঙ্ বাত্রান্
কর্মকর্মের ঔপাধিককর্মসম্বন্ধার। অক্রেদে বয়তে নেবদত্রা মন্ত্রদত্রনেত্যত্র দীরাতেঃ সকর্মকর্মণ সর্ববিবেতি মুগপদ্গ্রহণসামর্থ্যাদেবাঙ্গীক্রম।
নিয়মঃ কিম্ ? পাচয়তোদ্নং চৈত্রেণ বৈষক্

- (১১)। অনিয়ন্তরি প্রয়েজকে সতি বহিন্তাদিঃ ভাং। অক্টচেতনানা গবাদীনাং নিরম্ভরমধিষ্ঠাতা নিয়ন্তা! যদা বহিধারণার্থস্কদা যাতা
 র্থান্ত্রসাদেব ন কর্মা। বাহয়তি হারং দ্যিতয়া। নক্ষরমালাভরণং
 তক্ষণা। বাহয়হীত্যাদৌ তথাহি, বহতি যা পরিতঃ কনকস্থলীঃ। বসন্তপুশাভরণং বহন্তীত্যাদৌ ধারণার্থতান্ত দুল্লতে।
- (১২)। অ.হিংসায়াং বর্ত্তমানো ভক্ষিন্যাদিঃ স্থাৎ। ভক্ষয়তীতি
 চুরাদিণিঙস্তাং প্রয়োজকে নিঙ্। ভক্ষয়তি বৃষং বীহানিতার বীহাদীনামপি জাবযোগাদ্ধিংনেত্যাচার্যাঃ। স্বায়য়তীতি স্বেঞ্ স্পায়য়

ত্তেন ক্রন্দয়তি পিতরং যজ্জদতঃ শব্দায়য়তি পুক্রেণ মর্দ্দলং দেবদত্তঃ।

১৩। প্রয়োজকপ্রযোজ্যো ন কর্ম। গময়তি গ্রামং চৈত্রং মৈত্রেণ ধীরঃ।

১৪। কৃহ্নজোর্বা।

ক্লন্সেঃ প্রােগে প্রয়োজ্যঃ কর্ত্তা কর্ম্ম বা ভবতি। কারয়তি কটং ভূত্যং ভূত্যেন হারয়তি ধনং চৌরং চৌরেণ।

১৫। দৃশ্যভিবাদ্যোরা গ্লনেপদে।
দর্শবতে স্বকার্যাং পিতা পুত্রং পুত্রেণ অভিবাদয়তে গুরুঃ স্বয়মেব
শিষ্যং শিষ্যোণ।

এচোহশিতীত্যাবং নিঙ্যুদেরিত্যাদিনা য়ং। ক্রন্মন্তীতি কদি ক্রদিক্রনি আহ্বানে রোদনে চ শব্দায়য়তাতি শব্দাদেন্তং করোত্যাদাবিতি আর্ততঃ এবোজকে নিঙ্। নীহ্বাশব্দায়ক্রন্দানাং বহেরনিয়ন্ত্রকর্তক। ভক্ষেবহিংলানিধনে সদিখ্যাদ্যান্যাদিন্তমিশ্যতে।

- (১৩)। প্রয়োজকশ্চাংসী প্রযোজাশ্চেতি প্রয়ে,জকপ্রযোজাঃ স কর্মান ভবতি। গ্রমারতি গ্রামং চৈত্রং মৈত্রেণ দীর ইত্যত্ত চৈত্রস্য মৈত্রঃ প্রয়োজকঃ দীবস্য তু প্রয়োজ্যঃ। গ্রমারতীতি ণিঙস্কায়িঙি ক্বতে পিঙ্-
- (১৪)। পূর্দ্রেশ্রেশ নিয়মাং যত্ত কর্ম্মাং ন প্রাণ্ডোতি সোংস্য বিষয় ইতি ভাষ্যে ব্যবস্থিতন্। অতএব পূর্দ্ধে অভাবহারয়তীড়াদাজহার। আদে অন্তথা কুন্। ফলা হরতির্গতৌ বর্ততে অভ্যবহারে চ করোতিশ্চা-কর্মাকো ভবতি তথা প্রাণ্ডে ফলা হরতিন্তেয়াদৌ বততে করোতিশ্চ সক্মা-কন্তদা অপ্রাণ্ডে ভিচাবেতি।
- (১৫)। আগনেপদে অনয়োঃ প্রয়োগে প্রযোজ্যঃ করা কথা বা ভবতি। দৃশ্যে প্রাপ্তৌ অভিবাদয়তেরপ্রাপ্তৌ বিভাষেয়ম্। দর্শয়ত ইতি বিভোহবুধাদেরিত্যায়নেপদম্। অভিবাদয়ত ইতি অভিবাদিরত চুরাদি-শাস্তো গৃহীতঃ ততো বিতীয়ো বিঙ্ প্রাক্কশ্মঞ্জেষ্থোর্থস্তেত্যাস্থনেপদম্।

১৬। ক্রিয়াতিসাধনং করণম্।

যদ্যাপারানস্তরং কত্রণি ক্রিয়োৎপাদ্যতে তৎ ক্রিয়াতিসাধনং করণ

সংজ্ঞং ভবতি। অধ্যেন গ্রামং গচ্ছতি মৈত্রঃ।

১৭। প্রদানলপ্ সম্প্রদানম্।
প্রকৃষ্টমাত্যস্তিকং দানং কর্ত্র ক্রিয়মাণং যো লভতে স সম্প্রদানসংস্থো ভবতি। বিপ্রায় গাং দদাতি রাজা। যচ্চতি প্রতিমূখং
দয়িতারৈ বাচমস্তিকগতেইপি শকুস্তাবিতি ভারবিং।

⁽১৬)। সাধনমিতি সাধাতেহনেনেতি করণে বিহিতেন জনটা নতু কর্ত্বি বিহিতেন এতদেব স্পৃত্তি ভুমাহ যন্ত্রাপারানস্তরং কর্ত্রে ত্যাদি। অন্তথা ক্রিয়াসাধনত্বে কর্ত্র্রপি করণজং স্থাং। যদ্বাপারেত্যাদিনা অতি শক্ষ্মাতিশয়ার্থতাং ব্যাখ্যাতবানিতি। যদ্যেবং তদিহ ন সিধ্যতি অন্থেন পণা গচ্ছতীতি পথং ক্রিয়াসিদ্ধৌ ব্যবহিতব্যাপারত্বাং। নৈয় দোরং করণজাত্যনপেক্ষিতত্বাং। প্রকর্ষস্থা পরতোহিপি কার্নাদধিকরণাদেরাশ্রিতাতিশয়ত্বং করালক্ষণং নতু সাধনানাং মধ্যে আশ্রিতাতিশয়ত্বমিতি। যত্তাতে সকক্ষা সপ্রকর্ষণ্ড করণানাং ন বিদ্যতে। আশ্রিতাতিশয়ত্বং হি পরতন্ত্রস্থা লক্ষ্ণম্যা স্থাল্যা পচ্যতে ইত্যাদৌ স্থাল্যাদেব্যাপারানস্থর্মেব ক্রিয়াসিদ্ধেবিবিক্ষিত্রাং করণসংজ্ঞা তথ্যাদৈবক্ষিক এবার্থং কারকত্বে নিমিত্রম্। অতএবোক্তম্। ক্রিয়ারাঃ পরিনিম্পত্রিদ্ব্যাপারাদনস্তরম্। বিবক্ষাতে যদা তত্র করণস্বং তদা স্থতম্য বিষক্ষা দৃষ্ঠাতে যতঃ।

⁽১৭)। প্রদানমিতি দান্দাঞোষ্ড নড়ন্তরোঃ প্ররোগো ভবতি দেদেঙোঃ প্রপূর্বরোলোকে প্রয়োগাসিদ্ধে:। প্রদানং লভতে ইতি প্রদানলপ্ উপপদে প্রাদৌ চেতি কিপ্ যস্য প্ররাদানং নান্তি তদা তান্তিকং দানম্। বচ্ছতি প্রতিম্থং দয়িতায়ে বাচমন্তিকমিতাত্রাপি প্ররাদানং নান্তি অতএব ভ্যানি দত্ত সীতায়ে। মাধানদ্ম তিলেভাঃ

১৮। ঈশিতাদি স্পৃহাদেঃ।

স্পৃহাদেঃ প্রয়োগে ঈপ্সিতাদি সম্পূদানসংজ্ঞং ভবতি। পুশেশভ্যঃ স্পৃহয়তি রাজা পুপোভ্যঃ স্পৃহতে রাজ্ঞা।

১৯। যদভিশ্বত্য ধাত্বৰ্থঃ।

মভিপ্রেতা হৃদয়ে ক্রেত্যর্থঃ। যুদ্ধায় সংনহতে রাজা পত্যে শেতে শ্রাদ্ধারী নিগল্হতে বিপ্রঃ। তত্ততু মিপতিঃ পত্রৈয় দর্শয়ন প্রিয়দর্শন ইতি রযুঃ। প্রণম্য শাস্ত্রে স্কুগতায় জীয়িনে। অভি---প্রেত্যাবিবক্ষায়াস্ত্র। শিবং প্রণম্য।

প্রতিষক্ষতীত্যাদির্ভবতি। রজকন্ত বন্ধং দদাতীত্যক্র পুনরাদানমন্ত্যেব।
কর্ত্রা কিয়মাণমিতি তদাতান্তিকং দানং যদি কর্ত্রা ক্রিয়মাণং ভবতি।
কিং পুনদানং কর্ত্রা ক্রিয়মাণং যন্তেন স্পেক্স্যা দীয়তে নতু ভয়াদিনা।
মতএব মতঃ পৃষ্ঠং দদাতি রান্ধ্রো দণ্ডং দদাতীত্যাদৌ ন সম্প্রদানম্। নয়য়য়্র
বিশেষং কথমবগম্যতে
 সম্প্রদানমিতি মহত্যাঃ সংজ্ঞায়াঃ অবর্থবিজ্ঞানাং
তিন্ধি সম্প্রদানং ভবতি যং স্বেজ্য়া দায়তে। দদাতীতি ভুদাঞ্ দানে তিঙ্
ভব্বিত্যাদিনা দ্বিভ্সিক যক্ত্রীতি দান্ দানে তিঙ্ দান্যমোর্যক্রেতি

যক্তাদেশঃ !

- (১৮)। স্প হয়তীতি স্তৃহ ঈন্সায়াং চুবানি রামিও ইজুপান্তাংন কথানি বার বৃদ্ধি: স্থানিশ্চেতি পিবানি বার গুণঃ। স্থানীতি ক্রতী-ভার্যঃ। প্রেভাঃ স্মৃহতে ইতাত্র কর্মানোহভাবাদ্ভাবে প্রত্যুগ্ন অত্তব ভাষ্টেকতাদেকবচনম্।
- (১৯)। ধার্থ্য ক্রিয়া বং ক্র্নরে ক্রন্থা ক্রিয়া আরভাতে ত্নীপ্সিতাদি সম্প্রদানসংজ্ঞা ভবতি। বৃদ্ধা হি কিঞ্চিৎ প্রথমা গৃহতে ভতোহনুমীয়তে ততোহর্থাতে ততোহধাবদীয়তে তত আরভাতে সর্কত্রৈবায়ং ক্রমা। স চ হৃদয়ে করণীয় এব। অত আহ হৃদয়ে ক্রন্থেতার্থা প্রার্থনমধাবদায়ং বা হৃদি নিধায়েতার্থা। অভএব শিষ্যেভাোহকথয়দ্গুকা জ্যেষ্ঠায় প্রভাম পিতা ব্রহ্ম ক্রয়াদিভাদি প্রয়োগা। নমু যথেবাং তদা সর্ক্তিব সম্প্রদানসংজ্ঞা প্রায়োতি অত আহ অভিপ্রেভাবিক্লায়ামিতি। অয়ঞ্চ বিক্লাভেদো

২০। শংপ্রীতিকৃক্রচ্যর্থকর্তা। বিপ্রায় রোচতে মোদকঃ স্বদতে মোদতে। ২১। সাধুর্ধারয়তেঃ। বিপ্রায় শতং ধারয়তি খাদকঃ।

নিত্যানাং পদানাং প্রয়োগদর্শনাদভূপেগন্তব্যং ন পুনঃ স্বেচ্ছুয়। এবক্ষেং গতার্যপ্রথাপথার্থায়া ক্লতিচেতি চতুথীবিধানং পাক্ষিকমফলং বিবক্ষায়ামবিব-ক্ষায়াং প্রযোগদর্যদিদ্ধের ডিং তৎ ক্রিয়তে স্পষ্টার্থম্। পরামর্থসমধি-গম্যাদর্থাদ্ধি শালা প্রতীতিঃ স্থলভা ভবতি। ইদমপি প্রং স্পষ্টার্থম্। যুদ্ধং কর্ত্বং সংনহতে পতিং রময়তুং শেতে শ্রাদ্ধং কর্তুং নিগল্ভতে এবংবিধার্থনিবক্ষায়াং তৃম্গর্ভাৎ কর্মণ ইত্যনেনৈর চতুর্থীসিদ্ধেঃ। যুদ্ধার সংনহত ইতি নহ বন্ধনে দিবাদিরায়্মনেপদী যুদ্ধং ক্ষমে কৃত্বা সমহন-ক্ষিয়াং করো তীতার্থঃ। পত্যে ইতি পতিরসমাসে ইত্যাদিনা স্থিবদতি দেশাৎ তৃত্ত্বং স্থারিতি তৃত্ত্বয়াৎ স্থনছে ছদ্ধিতাচোরিতি পিবাদিত্যায় ওলং শেত ইতি শীঙ্ স্বপ্নে শীঙঃ শের্থনি চেতি শেভারঃ। নিগল্ভত ইতি গহ গল্হ কুৎসায়াং ভাদিঃ। এবমীসিত্যাবিক্ষায়াং প্রস্থানাং স্ক্রতি চক্র-বাকস্ত শকুনেং স্পৃহয় তীত্যাদৌ সম্মবিবক্ষায়াং ষ্ঠী ক্রিয়াদিগ্রত্ব তৃ কর্ম্ম,জ্যে এব পুস্পাণি স্পৃহয়তি অতএব স্পৃহণীয়া বিভূত্ম ইতি কর্মণি অনীয়ঙ্ব। তথাচোক্রং—বিক্ষাবশাৎ কাবকাণি ভবস্তি।

(২০)। ক্লচিরিতি কচির্ দীপ্তাভিলাময়োঃ ক্রঞাদেরিরিতি ইং কচিনা
দনানার্থা ক্রচ্যথাঃ ময়ুরনাংসকাদিয়াৎ মধ্যপদলাপী কর্ম্মধার্যসমাসঃ।
সন্ত্রপি ক্রচ্পাতুদীপ্তে) অভিলাবে চ বর্ত্তে তথাপাভিলাব এবাত্র বর্ততে
দীপেঃ প্রীতিকরণাসন্তবাৎ। অথবা ক্রচিবভিলাখোহর্থো যেযাং তে
ক্রচ্যথাঃ ক্রচ্যথানাং কর্ত্তা খংপ্রীতিং করোতি স স সাদানসংজ্ঞো ভবতি।
অভিলাব ইতি ণিঙপ্তোহয়ম্। বিপ্রায় রোচতে মোদকঃ বিপ্রমভিলাম্যতীত্যর্থঃ। অভিলাবের্মেনিকঃ কর্ত্তা। অভিলম্পে তু বিপ্রঃ এবং সতি
স্থামিদং কর্ত্তবিষয় এব আমভ্যতে অথবা শেষষ্ঠ্যা বিষয়ে বিপ্রস্থাভিলাম্য
মোদকঃ কর্ত্তি।

(২১)। সাধুক্তমর্ণো ধনস্বামী স চ অধমর্ণমপেক্ষতে অতএব

- ২২। ক্রুধক্তহের্ব্যাসুয়ার্থানাং যত্রার্থঃ কোপে।
 অমর্বঃ কোপঃ অপকারো দ্রোহঃ অক্ষমা ঈর্য্যা। গুণেযু দোষাবিদ্ধরণমসূয়া। বিপ্রায় ক্রুধ্যতি ক্রহুতি ঈর্ষ্যতি অসূয়তি। দ্বেষ্টি
 প্রায়ো গুণেভ্যোহপীতি ভট্টিঃ। অকোপে তু। ভার্যামীর্ব্যতি
- ২৩। শ্লাঘাদের্যজ্জীপা। বিপ্রায় শ্লাঘতে হুতে ভিষ্ঠতে শপতে। শ্লাঘাদিনা বিপ্রং ভোষ-য়িতুমভিপ্রেতং নিবেদয়িতুং বেচ্ছতীত্যর্থঃ।

গৃহীতাপরিশোধনার্থাহত্র ধারয়তের্নান্যার্থঃ অর্থান্তরবৃত্তিম্বম্য প্রসিদ্ধন্থ বিষয় বিষয়ে বিষয় বিষয়ে বিষয়ে বিষয়ে বি

- (২২)। ক্রুধান্যর্থানাং ধাতৃনাং প্রয়োগে তেয়ামেবার্থঃ কোপে সতি দিমিন্ বিষয়ে ভবতি স সম্প্রদানসংজ্ঞো ভবতি। ক্রুধ্ কোপে ক্রুহ্ জিবাংনারাম্ অকর্মকৌ অত্র ষষ্ঠাং প্রাপ্তারাং স্কর্ম জির্ম্যার্থাঃ অস্থানাং কণ্ড্রাদিয়াং যঃ এতৌ সকর্মকৌ তত্র দিতীয়ায়াং প্রাপ্তায়ামস্তাবস্থা। ক্রোধস্থাবং কোপ এব দ্রোহানয়োহপি কোপপ্রভবত্বাদেব কোপার্থাঃ। ভার্যামীর্যাতীতি নাত্র কোপঃ কিন্তু পরের্ভ্রামানাং তাং নক্ষমতে। উষপং দেখিতি নাভিনন্মতীত্যর্থঃ। ক্রোধাদয়কৈতে শক্ষবাচ্যা এব ইয়্যস্তে। তেনেহ্ ন ভবতি রিপুং ন ক্ষমতে। যত্রার্থ ইতি কিম্ থ্ বির্ম্বাঃ কোপস্তত্র যথা স্তাৎ অন্তথা কারকাস্তর্মপি বাধতে ইতি পৈশুন্তেন ক্রন্থতি।
- (২০)। জীপেতি জ্ঞা মারণেত্যাদিনা জ্ঞানে বেতি ঘটাদৌ পঠ্যতে তথানিতি পুতি হ্রপ্তরে সনি দিছে চ ক্বতে জ্ঞপের্নিত্ব লোপশ্চেতি অকাঃ ভ্রন্থ ক্ষকারঃ দ্বিলুক্ চ নিঙ্গোপণ্চ সনাদেশ্চেতি স্তিয়ামাৎপ্রতায়ঃ শ্লাম্বন্ত্ স্থান্দপাং প্রয়োগে যৎ জ্ঞপরিত্মিছা তৎ সম্প্রদানং স্যাৎ। শ্লাম্বত ইতি শ্লাম্ব ক্থনে অনুদাত্তেয়াদাম্বনেপদং হৃত ইতি হ্র্ অপনমনে অদাদিঃ তিঠত

- ২৪। রাধীক্ষোবি বিধপ্রশ্নো যস্তা। বিপ্রায় দৈবং রাগ্নোতি রাধ্যতি ঈক্ষতে। বিবিধপ্রশ্নেন দৈবং পর্য্যালোচয়তীত্যর্থঃ।
- ২৫। প্রত্যাঙ্ভ্যাং শ্রুবোহমুপ্রতিগৃণক গম্পর্ব্ব-ক্রিয়া কর্ত্তা।

বিপ্রায় গাং প্রতিশৃণোতি রাজা। যাচমানে বিপ্রে গাং প্রতিজ্ঞানাতীত্যর্থঃ। হোত্রেহসুগৃণাতি হোমং প্রথমানং হোতারং প্রোৎসাহয়তীত্যর্থঃ।

ইতি ষ্ঠা গতিনিবুত্ত্বী স্থোক্ষ্মপ্তনাদাবিত্যাত্মনেপদং ভবতি শপত ইতি শপ্
আক্রোশে শপঃ শপথ ইত্যাত্মনেপদম্। প্লাঘাদিনেত্যাদি এতেন তোষবাথতা জ্ঞাপনার্থতা জ্ঞপেদ শিতা। তুষির্ত্রাকর্মকো গাস্তঃ সকর্মকো
লবাত জ্ঞাপাতুঃ সকর্মকঃ স গাস্তে দ্বিকর্মকো ভবতি প্লায়প্রভূত্যোহপ্যনামারর্থয়োর্বর্ত্তমানাঃ সকর্মকা দ্বিকর্মকাশ্চ ভবস্তি। এতেনায়মর্থঃ
সম্পদ্যতে বিপ্রায় প্লাঘতে প্লাঘনেন বিপ্রং তোষ্য়িত্মিচ্ছতি প্লাঘনেন
বিপ্রমভিপ্রেতং নিবেদ্য়িতুং বেচ্ছতীত্যর্থঃ এবং জ্বনেন শপনেনেতি
বোদ্ধবাম্।

- (২৪)। রাধেরীক্ষতেশ্চ প্রয়োগে যক্ত সম্বর্মী যদিষয়ো বিবিধপ্ররঃ তৎ সম্প্রনানসংজ্ঞং ভবতি। রাধ্সাধ্সংসিন্ধৌ স্বাদিঃ রাধ্রুদ্ধৌ দিবাদিঃ অবিশেষাৎ ব্রেদারপি গ্রহণম্। ঈক্ষ্দর্শনে ভাদিঃ অনেকার্থনাৎ ধাতূনামিচ প্রস্ক্রিকপর্যালোচনার্থা অমী ধাতবঃ। ঈক্ষিতবাং পরস্থীভাঃ
 স্ববর্মো রক্ষসাময়্মিতি ভটিঃ। বিবিধপ্রশ্রেন চিত্তং কীদৃপিতি পর্যালোচনীয়মিত্যর্থঃ।
- (২৫)। অনুপ্রতিগৃণ ইতি প্রাদিসমাদঃ ষষ্ঠীসমাদঃ পঞ্চনীসমাদো বা। প্রত্যাঙ্পূর্মস্থ শৃণোতেঃ অনুপ্রতিপূর্মস্থ গৃণাতেশ্চ গম্যায়াঃ পূর্মস্থাঃ ক্রিয়ায়াঃ কর্ত্তী সম্প্রদানসংজ্ঞো ভবতি। প্রত্যঙ্পূর্মশ্চ শৃণোতিরভ্যাপগমে বর্ততে। স চাত্যপগমঃ পরেণ যাচিতস্ত সম্বতি। ভক্ষাং যাচন ক্রিয়ায়াঃ কর্ত্তী সম্পুদানমিত্যর্থঃ। অনুপূর্মঃ প্রতিপূর্মশ্চ গৃণাতিঃ প্রথমং শংসতঃ প্রোৎসাহনে বর্ততে তক্ষাৎ শংসনক্রিয়ায়াঃ কর্ত্তী

২৬। চলুৎপ্রাগ্ভ্রপাদানম্।
-চলতঃ প্রাক্সম্বন্ধিস্থানমপাদানসংজ্ঞঃ ভবতি। স্ক্রাৎ পত্রং
প্রতি বিপ্রাদ্ত্রঃ গৃহাতি।

২৭। অপাদান সম্পূদান করণাধারকর্ম্মণাম্। কর্ত্ত্ব্দান্যোহন্তসন্দেহে পরমেকং প্রবর্ত্তে। বিপ্রায় বন্ধং দ্বরা গৃহাতি উপবিশ্যোতিষ্ঠতি পীঠে গৃহং প্রবিশ্য নিঃসরতি অস্তোষ ঘটঃ পশ্য।

সম্প্রদানমিতার্থ:। অত্যোদাহরণছয়ে যাচনং শংসনক পূর্ক্কিরা।
এতগপলক্ষণমাত্রম্। ক্রিয়ান্তরক্ত যদা পূর্ক্রমুপলভাতে তনা তংকর্তাপি
সম্প্রদানং ভবতি। যথা, শৃষদ্ধাঃ প্রতিশৃষ্টি মধ্যমা ভীক্ব নোত্তমা ইতি
ভটিঃ। পূর্কাং যে শৃণ্টি তৈর্যগুচাতে তদ্বচন্তদামুক্লো বর্তন্তে তেভাঃ
প্রতিশৃণ্টি বয়মেতদ্বঃ করিষামে ইতাভাপগচ্ছন্তি অত্র প্রবণমেব পূর্ক্বিয়া উত্থাঃ কর্ত্তা সম্প্রদানং ভবতীতি। শৃংগাতীতি ক্র প্রবণে ক্রবঃ
শৃংশ্চতি মুৎ শৃভাবশ্চ গৃণাতীতি। গুশন্দে ক্যাদিঃ ক্র্যাদেন দিতি নাৎ
হ্রস্ক্রণ ইতি নির্দেশা গৃনিগরণ ইতান্ত তৌদাদিক্ত নিরাসার্থঃ।

(২৬।২৭)। ভূশব্দেন স্থানমাত্রমভিধীরতে। চলতো বিপ্লেষং কুর্মতঃ প্রাক্সমন্ধি স্থানং পূর্ব্বসংশ্লেষাশ্রয় ইতার্যঃ। যদন্তেন গৃহতে তদপি চলদ্ভবত্যেব এতদিভাবিয়িতুং দিতীয়োদাহরণোপন্তাসঃ। যতশলন্ত্র-মিহ মুখ্যং গৌণঞ্চ গৃহতে অতএব সত্যাৎ শ্বলতি বচনং আচারাচ্চলতি চন্তমিত্যাদি ভবতি। অধন্যাদ্বিরমতীত্যাদৌ বিরতিরক্ত চিন্তানির্ভৌ বন্ততে অধন্যাজ্বগুপত ইতাত্রাপি গহায়াশ্চিন্তনিবৃত্তির্জ্জ্পুপা। যদা তু নায়মর্থস্তদা জুগুপতে হর্জনমিতি ভবতি নিন্দতীত্যর্থঃ। গৃহণাতীতি গ্রহ্ উপাদানে তিঙ্ ক্র্যাদেন দিত্যাদিনা নাৎ বশাদেরুশাদিরিতি গ্রহো গৃহ্ণত্বম্। ভূপালাদথিলং ভ্রমন্তি ভ্রমণ গুদ্ধা গুণানাং গণাঃ। অত্র নিঃসরণাঙ্গে ভ্রমণ ভ্রমি তেন নিঃস্ত্য ভ্রমন্ত্রীত্যর্থঃ। ঘনাদিদ্যোততে বিহ্যুৎ অত্র নিঃসরণাঙ্গে বিদ্যোত্রে বিহ্যুৎ: তেম নিঃস্ত্য বিদ্যোত্তে ইত্যর্থঃ। ত্রান্ধণাচ্ছংদী অত্রোদ্ধরণাঙ্গে শংসনে শংসিঃ ভেন ভ্রাহ্নণাত্তি ক্র্যুণ্ডা শংসতীত্যর্থঃ। ইথমেব প্রয়োগদর্শনিৎ সর্ব্রাভ্রাপগন্তবাম্।

২৮। গুর্বাদী ওর্থাদে:।
ইঙর্থাদে: প্রয়োগে গুর্বাছপাদানসংজ্ঞং ভবতি। গুর্বাদীত্যব্যক্তলিন্ধবিক্ষয়া নপুংসকত্বম্। উপাধ্যায়াদধীতে পঠতি শৃণোভি
জানাতীত্যাদি।

২৯। অগুরুত্বে ষষ্ঠী। নটস্য গীতং শৃণোতি।

৩০। প্রাজেঃ সোচ়ুমশক্যম্। যুদ্ধাৎ পরাজয়তে।

এবঞ্চ সতি অপাদানবিধায়কা উত্তরযোগা অস্তৈব প্রপঞ্চাঃ। মেষানোধোহপসরতীতি অত্যোভয়োশ্চলত্বমিতি ন বক্তব্যম্। অন্যতরকর্মজো
বিভাগো বাচাঃ। একস্যাপ্যপক্ষণে অন্যভাবিধিভাবঃ। যত্র তু উভয়কর্মজো বিভাগঃ তত্র মেষাবপসরত ইতি ভবতি। চলদিতি কিম্ ?
বৃক্ষন্ত পত্রং গৃহে তিষ্ঠতি যদা তু সম্বন্ধমাত্রং বিবক্ষাতে ন চলতঃ প্রাগ্ভূমং তদা বৃক্ষন্ত পত্রং পত্তীতি।

(২৮:২৯)। যদৈব গুরোরধায়নং তদা নিয়মপূর্ক্কমেব ভবতি।
অন্তথা গুরুত্বামুপপত্তে:। অগুরুত্বে নটস্থ গীতং শুনোতীতি শুনোতিরন্ত্র
নাধায়নার্যঃ কিন্তু শ্রবনেন্দ্রিয়ব্যাপারার্যঃ। অতএব তস্থাগুরুত্বম্। অধীত
ইতি ইণ্ড্ অধায়নে জানাতীতি জ্ঞা অববোধনে জ্ঞোজাশ্চেতি নাৎ জাদেশশ্চ অয়ং যোগো বিষ্পান্তার্থঃ। তথাহি—উপাধ্যায়াদধীত ইতি জ্ঞানং
গৃহ্ণতীতার্যঃ। জ্যোতির্দংজ্ঞানানি ভবস্তাতি ভাষাম্। গুরুত্বিতং জ্ঞানং
শিব্যে উৎপৎস্থমানে সন্ধাতীয়ে জ্ঞানে বিশেষমুৎপাদয়তি। যথপি
জ্ঞানস্থায় গুণস্থ নিন্ধিয়ত্বেন সঞ্চরণং ন সম্ভবতি তথাপি ভচ্ছিয়ে জ্ঞানান্তরং জনয়ৎ সঞ্চরতীবেতি উপচারিকবিশ্রেষস্থ সম্ভবাদেবাপাদানং ভবতীতি।

(৩০)। পরাপূর্বস্থ জি জয়ে ইত্যস্থ প্রয়োগে সোচ্মশক্যমপাদানসংজ্ঞং ভবতি। যুদ্ধাৎ পরাজয়তে যুদ্ধং সোচ্ছু ন ক্ষমত ইত্যর্থঃ।
এবঞ্চায়াসাৎ পরাজয়তে রোগী ইত্যা৸পি ভবতি। পরাজয়ত ইতি
জেলিপরাভ্যামিত।য়নেপদং কর্মসংজ্ঞাপবাদোহয়ং যোগঃ। সোচ্ছু-

৩:। ভাত্রার্থয়োভীহেতুঃ। ব্যাঘাদিভেতি ^{শ্ব}ত্রোস্থায়তে।

৩২। অন্তর্দ্ধার্থং যদীয়াদর্শনমিচ্ছতি।

উপাধ্যায়াদস্তৰ্দ্ধতে ছাত্ৰ: পলায়তে নিলীয়তে লুকায়তি। অন্তৰ্দ্ধাৰ্থ-মিতি কিম্? ঢৌৱান্ন দিদৃক্ষতে রাজা।

মশকামিতি কিম্ ? শত্রুং পরাজয়তে। যদা তু যুদ্ধং মনসা প্রাপ্য ভত*চ: লতি তদা পূর্দ্ধেণৈবাপাদানসংজ্ঞাযাং প্রাপ্তায়াং বচনমিদং স্পত্তার্থম্।

- (৩১)। ভীতির্ভীঃ ত্রাণং ত্রা কচিদক ইরি চেতি কিপ্ ভীত্রাবণোঁ যয়েবিটা তীরাণোঁ। অথবা ভাত্রা ইতি ধাতৃনিদেশস্তয়েবর্থ ইব অর্থো যয়েবিতি বাক্যে সনাসঃ। ভাগজ ত্রার্থস্য চ ধাত্রোঃ প্রেরানে ভয়হেতৃবপাদানং স্থাৎ। বিভেতীতি ত্রিভা ঔয়ে হরাদিয়াচত প্রিত্যাদিনা বিঃ। ত্রায়ত ইতি কৈঙ্ পালনে শঙ্। অয়মপি যোগঃ পূর্ক্রিস্তব প্রপঞ্চঃ। তথাহি বাাঘাদ্বিভেতীতি য এবং প্রেক্ষাবান্ ভবতি স যদি মাং ব্যাঘঃ পঞ্চেৎ তদা প্রবং মৃত্যুবিতি মনসা ব্যাঘঃ তং প্রাপ্য তত্রুচলতি শত্রোস্তায়ত ইত্যাদি যল্পেবং শক্রঃ পঞ্চেৎ তদা প্রবং মৃত্যুবিতি মনসা শক্রং গঙীষ্বা ততাে নিম্বর্ত্তে তত্মাদ্যারবিভিন্নো নাস্তি স নাস্থ বিষয় অতএব কৃষ্ণিক্রিন্নং ভার্য় তীত্যক্ত নাপাদানসংজ্ঞা। যদাপি ভয়ং প্রাণিস্মন্ত্র্যাপি কাকাতিলাং- প্রায়ত ইত্যক্রাপি মঞ্যানিনি ভয়মুপচরণীয়ম্। অথবা তিলরক্ষণস্থ কাকো নিমিত্রং বারণাদের্যরিন্তির্গতিপাদানম।
- (৩২)। অন্তর্কিব্যবদানং তদর্থং যদীয়াদর্শনবিষয়তামাম্মন ইচ্ছতি তদপাদানং স্থাৎ। যন্ত্রদোনি য়তদম্বর্ধাৎ তদিতি লভাতে। উপাধ্যায়াদন্তর্ধাদ্দ ইতি উপাধ্যায়ে মাং মাদ্রাক্ষীদিতাপদরতি অন্ত্রাপাদানসংক্রেরৈইচ্ছার্থো গোতিতঃ। অন্তর্ধন্ত ইতি অন্তর্শক্ষপূর্ব্ধাং ডুশাঞো হ্লাদিষাৎ দিরুকৌ দাধোহ লি চেতি অকারলুক্ নধাঞ ইত্যাদিনা ন ধকারস্থ দকারঃ বর্গস্থান দিরিত্যাদিনা ধস্ত তঃ। নিলীয়তে ইতি লীঙ্ শ্লেষণে দিবাদিষাং যং। প্লায়ত ইতি প্রাপূর্ব্ব অনুরয়ু গভাবিত্যশাদাম্থনেপদম্। উপদর্মন

৩৬। বারণাদেইনিমিত্র্।

যবেভা গাং বারয়তি ক্ষেত্রে রক্ষতি অধর্মাজ্জু শুস্পতে বিপ্রঃ পাপাদ্বিমতি ধনাৎ প্রমান্ততি।

*

৩৪। জন্মর্থকর্ত্তঃ প্রকৃতিঃ।

প্রায়্ধাতোরিতি রশু লক্ষ্। লুকায়তীতি লুন্চ্ অপনয়নে লুচাত ইতি
কিপ্ লুক্ কায়ো যক্ত স লুকায় স ইবাচবতি কর্নায় ইত্যাদিনা আয়্
তল্লুক্ চ অথবা কাষণকেন সহ কর্মধারয়ং কলা তং কবোতীতি ণিঙ্
লুকায়য়তীতি রূপম্। চৌরার দিদৃষ্ণত ইতি সনপ্রতায়েনৈর ইচ্ছার্থোইভিথক্তেং চৌরা মাং ন পশ্লেয়ুরিতি বাবধানমিহ নাজীতি দিদৃষ্ণত ইতি দশির
প্রেক্ষণে সন্ বিরুক্তিং পাদিতি পাকার প্রাকারঃ ইন্দিরদিতি ইত্বং অস্কানস্তে
গাদিনা শশু ষঃ চলোঃ ক ইত্যনুবৃত্তী যশ্চান্ত্রেক্সক ইতি যক্ত ক ইচ্
ক্রাদিত্যাদিনা মৃদ্ধিঃ স্মাদেং সনীত্যাদিনা আল্লনেপদম্। অয়মপি যোগঃ
গ্রাক্রদপাদানসংক্রায়ং তথৈর প্রপঞ্চার্থঃ।

- (৩৩)। বারণাদের্যারিমিন্ত তদপাদানং ভবতি। বদর্থ বারণং ক্রির্থে করন্ত নিমিন্তং ভবতি। যবেভা। গাং বাব্যতি ক্ষেত্রে ইতার যবান্ মা গৌর্ভক্ষরতীতি বাবণন্ত যবা এব নিমিন্তং নতু ক্ষেত্রম্ অত এব ক্ষেত্রে নাপা- দানসংক্রা। অধর্মাজ্জ, গুপ্সতে ইতি গছ য়াণি-চন্ত্রানুর্তিজু গুপ্প। তত্তা অধর্মাঃ কারণং পাপাদ্রিরমতীতি বিরমিব্র চিন্তনির্ত্তী বক্ততে তত্তা পাপমেব নিমিন্তম্। বার্যতীতি বঞা বরণে চুবাদিস্থান্তি, গামিতি অমশ সোরোদাদিতাার্য। জুগুপ্পত ইতি আয়ানেপদম্। বিরম্ভীতি রমু ক্রীড়াযাং প্র্যান্ত বিভাগ রম ইতাাল্যনেপদনিয়ের। কৃপাদক্ষণ বাব্যতি অয়েঃ পুত্রং বার্যতীত্যাপি বারণতায়িঃ কৃপশ্চ নিমিন্তং মদি তত্রাগ্রিক্সৌ ন স্থাতাং চদা কিং বাবণং ক্রিয়তে অ্যমদি গোগঃ পূর্বকৈত্ব প্রপঞ্চঃ। যথা পূর্বেণ বিধ্যতি তত্যাগ্রাহ্মেব।
- (৩৪)। জনিবিতি জনী প্রাজ্ভাবে ইণ্ধাতৃকথন ইত্যাদিন ইছ্ জনীবাতোবর্থ ইব অর্থো বেষাং তে জন্তুগাঃ অথবা জনিকংপ্তির্গো

বীজাদস্কুরো জায়তে পিতুঃ পুজো জায়তে শৃঙ্গাচ্ছরো জায়তে গোময়াদ্বুশ্চিশো জায়তে। ইত্যুদ্ধিজ্জোমজো তৎসমবেত্থাৎ তৎপ্রকৃতী।

৩৫। ভুব আদ্যোপলস্তস্থানম্। •
হিমবতো গঙ্গা প্রভাবতি।

বেষাং তে জন্মর্থাঃ তেষাং কর্ত্তা জায়মানঃ তম্ম প্রকৃতিঃ কারণমপাদানসংজ্ঞং ভবতি : পূর্দবোগান্নিমি নমিতা ত্রুত্তে মত্র প্রক্রতিগ্রহণং সর্বকারণোপসংগ্রহ-নিমিত্তঞ্জি: ভ্রায়ৎ সম্বেভং কার্যাম্ৎপভতে তৎ সমবাঞ্চি কারণম্। পণা ঘটস্থা মুংপিও:। সমধ্যবিকাবণ প্রত্যাসন্নমবপ্রতসামর্থামসমবায়ি কার-ণম্। যথাপটণ তম্বদ্দদংযোগঃ। এতদাতিরিক্তং নিমিন্তং কারণমিতি। গণা ঘটতা কুলালাদিঃ। জায়ত ই ত জন্ধাতোদি বাদিত্বাদ্যৎ জাদির্যজ্ঞা। নেরিতি জাদেশঃ বীজাদক্ষ্রো জায়ত ইতি বীজং সমবায়ি কারণম। পিতৃঃ পুলো জায়ত ইতি পিতা নিমিত্তং কারণম । নত্ চতুর্বিধাঃ প্রাণিনো জায়-মানা ভবন্ধি। জনাগুলাঃ অগুলাঃ উদ্দিজ্জাঃ উন্মলান্চ। তথাচোক্তং, জরামুলা মনুষ্যালা অওজা ভল্লাদয়:। উদ্ভিজ্ঞাসক প্রাদা উন্মলা মশকাদয়:॥ তং কথমুক্তং শৃঙ্গাচ্চণো জাগতে গোময়াহ শিচকো জাযতে ইত্যত আহ উদ্বিজ্ঞোপ্সজৌ,তংসমবেতকাং তৎ প্রকৃতী। তৎসমবেতকাং তৎসংযুক্তকাদি-তার্থঃ। যথা তুরী পটস্ত কারণম্। জায়ত ইতি দিঙ্মাত্রম্। সন্থাৎ স্থমুৎপদাতে চক্রাদ্যটো ভবতি তন্তভাঃ পটঃ আদিতাদাহরণীয়ম। অয়-মাপ যোগো মানসাৎ বিভাগাৎ প্রক্তিয়ব প্রপঞ্চঃ। তথাহি লোকে যদযন্ত্রা-জীয়তে তত্ত্রসান্নির্গচ্চতীতাচাতে।

(২৫)। কর্ত্রিভান্থবর্ত্তে ভবনং ভূ: কচিদকর্ত্তরি চেতি কিপ্ ভূবং কর্ত্বদাদ্যোপলস্ভস্থানং তদপাদানং স্থাৎ। অথবা ভূ ইতি ধাতু-নির্দেশং ভবত্যর্থস্থ কর্ত্ত্বদাদ্যোপলস্ভস্থানং তদপাদানং স্থাৎ। হিমবত্যে গঙ্গা প্রভবতীতি অব্যোধনায়া গঙ্গায়া হিমবান্ প্রথমোপলস্ভস্থানম্। এতাবতা পূর্কস্থেরেণের ন প্রাপ্নোতী ত স্ক্রমিদমুক্তম্। অথবা অন্তম্পি

७७। देवसंग्रिकानाधिकत्रनम् ।

বৈষয়িকনোপশ্লেষিকনাভিব্যাপকনধিকরণনংজ্ঞঃ ভবঁতি ! প্রতিপাছাদিবিষয়ঃ। বিষয়ে ভবং তদহ'ং বা বৈষয়িকম্। ধর্ম্মে বেদাঃ প্রমাণম্। আশ্রয় উপল্লেষ্ট্র ভবমোপশ্লেষিকম্। বনে সিংহঃ প্রতিবসতি অভিব্যাপকে ভবমাভিব্যাপকম্। তিলেষু তৈলং বিছতে। গঙ্গায়াং ঘোষঃ প্রতিবসতীতি সমীপলক্ষণয়া ঔপশ্লেষিকম্।

৩৭। বিবক্ষাবশাৎ কারকাণি ভবন্তি। গৃহে প্রবিশতি পুস্পাণি স্পৃহয়তি স্পৃহণীয়া বিভূতয়ঃ

গোগং প্রপঞ্চার্যঃ তথাহি অপক্রামন্তি তত্মাদিত্যাপঃ সন্ততত্মাদক্যাণ ক্যাশ্চ প্রাগর্ভবন্তীতি ন বিশ্লেষোপলন্ধিরিতি।

(৩৬।৩৭)। বৈষ্
বিক্ষানিতি বিশেষপ্রতিপত্তার্থং নিহিত্রক্ষণ এবাষ্
থানিক্যতে ক্রিয়া আরোপাতে যত্র তদধিক বণনিত্যাধানিকরণ ক্রেয়া যালেকরণ এবা প্রতানিকরণ কর্মানিকরণ কর্মানিকর বিষয় যথা কর্মানিকর ক্রেয়ানিকর বিষয় যথা কর্মানিকর ক্রেয়ানিকর ক্রিয়ানিকর বিষয় যথা কর্মানিকর ক্রেয়ানিকর ক্রিয়ানিকর ক্রেয়ানিকর ক্রিয়ানিকর ক্রিয়

স্থালী পচতি দোগ্ধি পয়ো গোভ্যো গবাম্। যাচতে কম্বলং রাজভ্যো রাজ্ঞাম্। রিপৌ কোপঃ পুজেম্ স্পৃহা। তপোবনের্ স্পৃহয়ালুরেষা ইতি রঘুঃ। চৈত্রোহম্মেন গ্রামং ন গচ্ছতীত্যাদৌ

সাক্ষাদ্ধারয়েৎ কিয়াম্। উপকুর্ব ৎ ক্রিয়াসিদ্ধৌ শান্তেইধিকরণং স্বতম্। তিলেষু তৈলমিতি তিলাদিকং হি তৈলাদিকং ব্যাপ্যাৰতিষ্ঠতে ইত্যাভি-ব্যাপকম্। যদ্যপ্যত্র তিলাদীনাং তৈলাদিভিঃ সহ সংযোগোহস্তি তথাপি দেশবিভাগাদেবাত্রোপশ্লেষব্যবহানো নাস্তীতি পৃথগ্নিদে শ:। নতু কথং গঙ্গায়াং ঘোষ ইত্যত্রাধিকরণং গঙ্গায়াং লক্ষণত্রয়স্তাসন্তবাদত আহ সমীপলক্ষণয়েতি জলে ঘোষশু বাসাব্যাকুপপত্তা গঙ্গাশকেন সমীপং তীরং লক্ষ্যতে ইতি গঙ্গাশবেন তীরমেবাভিহিতং তীরেণ তু সহোপশ্রেষা বিদ্যত এব। এবমঙ্গুলাগ্রে করিশতং বসতীত্যত্রাপি অঞ্চু-ল্যগ্রনির্দিষ্টং দেশমঙ্গুল্যগ্রপদং লক্ষ্যতীতি। স্থালা। পচতি স্থাল্যাং পচতি স্থালা পচতীত্যাদি শিষ্টপ্রয়োগদর্শনাং লক্ষণেযু সন্দিহানস্য সন্দেহনিরাসার্থমাহ। বিক্লাবশাৎ কারকাণি ভবস্তীতি। বক্তুমিচ্ছা বিবক্ষা তদায়ত্তথাৎ কারকাণি কর্ত্রাদীনি ষড্ভবন্তীতি যদা যাদৃশী প্রয়োক্ত বিবিক্ষা ভবতি তদা তাদৃশং কারকং ভবতীতি। যদ্যেবং তহি কর্ত্রাদিলক্ষণান্য প্রয়োজনানি নৈবং তৈরেব লক্ষণৈব্যবস্থিতানি কারকাণি বিবক্ষান্তে। কারকঞ্চ শক্তিন তু দ্রবাং দ্রবাদ্যোকস্বভাবসাংনেকরপ-তায়া অপ্রযুক্তবাৎ শক্তীনাম্বনেকরপত্বাৎ প্রযুক্তাতে অতএ শক্তিঃ কারকমিতি বৈয়াকনণব্যবস্থা দ্রব্যেরু তু কারকশন্তঃ শক্তিশক্তিমতো-র্ভেদস্যাবিব্যক্ষিতত্বাং। গৃহে প্রবিশতীত্যত্র গৃহস্য কর্ত্ত্সমুদ্দিষ্টত্বাং কর্মাত্বং যুক্তমেব তদ্যৈব যদাউপদ্লেষো বিবক্ষাতে তদাধিকরণত্বং ভবতি। পূজাণি স্পৃহয়তীতি অত্রেপিতত্বস্যানিবক্ষায়াং কর্ত্সমৃদিষ্ট-বিবক্ষায়াং কর্মসংজ্ঞা এব অতএব স্পৃত্নীয়া বিভূতয় ইতি কর্মসংজ্ঞায়াং সত্যাং তবাঙনীয়ঙাবিতি কশ্বণানীয়ঙ্ অতএব কর্মণ উক্তথাৎ প্রথমা। গোভো রাজভা ইত্যপাদানবিবক্ষায়াং পঞ্চমী কাবকাবিবক্ষায়াং ষষ্ঠ্যপি ষষ্ঠানিধাবেব বক্ষাতি। স্প হয়াপুরিতি চুরাদিজায়িঙ্ ণ্যাদেও ঘাদি-

ৰুক্ৰ ব্যদিপ্ৰতিপন্নাং চৈত্ৰাদো কথঞ্চিৎ প্ৰযুক্তাং । ব যোগ্যা-মুপলন্তাং নিষেদ্ধুং পশ্চান্নঞো যোগং।

৩৮। তত্র তিঙাদাবুক্তম্।

ভচ্ছীলাদাবিতি গুলু:। চৈত্রোহমেন গ্রামং ন গচ্ছত্রীত্যাদৌ চৈত্রাদীনাং কথং কর্তৃকরণকর্ম্মদংজ্ঞা যজো যস্যাং ক্রিয়ায়াং সত্যাং প্রতানি ভবস্তি সৈব গ্যনক্রিয়াত্র নিষিধ্যতে অত আহ কর্ত্রাস্ত্রাদীতি আদিশব্দেক করণাস্তর-কর্মান্তরয়োগ্রহণং কর্ত্তরাদে প্রতিপন্নাং ব্যবস্থিতাং চৈত্রাদাবিত্যাদি-मरमनायधामरपार्श्वर्गर रेठजामो कथिष्ट रकनानि প्रकारत्व প्रवृक्ताः ব্যাপারিতাং যোগ্যামুপলস্তাং নিষেদ্ধং পশ্চারঞো যোগ:। উপলব্ধি-যোগ্যস্যান্থপলম্ভোহভাবং বোধয়তি। পূর্ব্বং নঞো যোগন্ত বিরুদ্ধ এব মতঃ কর্তৃকরণকর্মবিষয়া হি গ্রমমক্রিয়াত্র প্রতিনিষেদ্ধ,মিষ্টা তস্যাশ্চাভাবে বিষয়ভাবাদেব পূর্দ্মপ্রতিষেধোহযুক্তঃ। যতো লব্ধরূপং কচিৎ কিঞ্চিত্তাদূর্দেব নিষধাতে। বিধানমন্তরেণাতো ন নিষেধদা সম্ভব: ॥ ষ্টুকারকাণ্যপনাস্য তেষাং ব্যবস্থার্থং বার্ত্তিকস্তত্রমাহ অপাদানেত্যাদি। অক্টোহন্তসন্দেহে পর-নেকং প্রবর্তত। পরস্বাত্র শ্লোকদর্শিতসংজ্ঞাক্রমকৃতং নতু স্তুত্তকৃতং পুন-রত্রাপাদানাদীনাং ব্যতিক্রমেণোপদর্শনাৎ। বিপ্রায় দত্ত্ব। বস্তুং গৃহাতীত্যুদা-ছরণত্রয়ে সম্পূদানাদিসংজ্ঞাত্রয়মপাদানসংজ্ঞাং বাধিকা প্রবর্ততে। অস্ত্যেয ঘটঃ পশ্রেত্যত্র কর্ম্মসংজ্ঞাং বাধিত্বা কর্ত্ত্সংজ্ঞা প্রবর্ততে। ধরুষা শরান্ ক্ষিপতীত্যত্রাপাদানং বাধিতা করণসংজ্ঞা। উৎসর্গস্যাপবাদেন গুণসা চ প্রধানেন বাধৈব বিধীয়তে। স্বতঃ সন্দেহাভাবালানেন তত্র ব্যবস্থা। ৰিপক্ষায় জ্ৰহুতি বিপ্ৰায় শ্লাঘত ইত্যাদৌ চ কৰ্মসংজ্ঞা সম্পূদানেন বাধিতা। বরায় আহুয় কন্যাৎ দদাতি বিপ্রায় অর্চয়িত্বা ধেমুদীয়তে সংগৃহ দাত্রেণ ধান্যং লুনাতি মূলকেনেমপদংশং ভুঙ্ত্তে অত্ত দদাতীত।াদিক্রিয়াণামেব সাধ্যত্বাং মুখ্যতম। আহ্বানাদিক্রিয়াণান্ত তদর্থতয়া গুণভাবঃ। অতঃ সম্পাদানাদিসংজ্ঞৈব ভবতি। অপাদানাদিল্লোকো বৃত্তিযু চলৎ প্রাগ্ভূর-পালানমিত্যদ্যানন্তরং লিপিকর প্রমাদাদ শতে অত্র পুনরস্য পাঠো যুক্ত:।

(৩৭। ৮)। প্রক্রান্তরাৎ তত্ত্বেত্যনেন কর্ত্রাদি পরাম্খতে। উক্তপদম্পি তদেব বিশিনস্থাত্যাহ তত্ত্ব কর্ত্রাদাবিত্যাদি সাহচর্যাৎ তত্র কর্ত্রাদে তিঙ্কৃত্তদ্ধিতসমাসে বিহিতে তৎ কর্ত্রাত্র্যক্তং ভবতি। প্রায়েণাত্রে লিখিতোহগ্র্যঃ প্রধানং প্রধানেন হি ব্যপ-দেশা ভবন্তীতি। তিঙ্শব্দেনাখ্যাত্রপ্রসিদ্ধা লড়াদয়ো ব্যপদি-শ্যন্তে। ত্বং কুরু ঊঃ কৃতঃ। শ্রেষ্ঠো রাজা প্রাপ্রোদকো গ্রামঃ বিষর্ক্ষোহপি সংবর্ষ স্বয়ং ছেত্রুমসাম্পুত্রম্ ইত্যাভব্যয়োক্তরঞ্চ

ষষ্ঠাপাত্র গৃহতে। অগ্রে লিখিত ইতি কৃতং শীঘ্রং শিষ্যপ্রতিপত্তার্থাই প্রত্যয়বাৎপত্তা তু তত্র ভব ইতার্থে অগ্রশকাদ্যদিহিতঃ অগ্রে ভবো ছগ্রঃ অথবা অগ্রোলিথিত ইতি পাঠঃ উল্লেখ্য উদ্ভেদ্য তথাহি আখ্যাতপাদে ধাতোন্তিভ তদ অন্তাতি প্রথমমুভিন্ম। তং কুর্বিত্যাদি কৃঞ্ধাতোলে টি হি ক্লকোহঙিত্যাদিতাৎ ক্লকোহঙিত্যারতি উর অযুগ্রহদভ্যোহেরিতি হেলু ক্ কর্মরি বিহিত্তন তিঙা কর্ত্তকজ্বাৎ প্রথমা স্বমিতি। ক্লত ইতি কন্মণি বিহিতেন ক্রেন কন্মণ উক্তম্বাৎ ঘট ইতি প্রথমা। শ্রেষ্ঠ ইতি স্বের ইমে প্রশাসাঃ ময়মেযামতিশায়ন প্রশাস্ত ইতি প্রশাসাশকাৎ গুণাদীয়স্বিষ্ঠাবিতি ষ্ঠ প্রত্যায়ঃ। প্রাদিঃ প্রিয়াদেরিমেষ্ঠেরদাবিতি প্রশাসন্দান্য শ্রাদেশঃ কর্বিহিতেন তদ্ধিতেন কলুঞ্জ্ঞাৎ রাজেতি প্রথমা স্থাট দার্ঘ ইত্যাবিনা দার্ঘ: নোনান্তস্যেতি নলুক। প্রাপ্তসুদকং যং গ্রামং দ প্রাপ্তোদকো গ্রাম: অন্সপনার্থো বছরীহিরিতি সমাসঃ সমাসেন কর্মণ উক্তথাৎ প্রথম: যটঃ ক্রিয়তে ইত্যাদৌ কর্মণি বিহিতেন তিঙা কর্মণ উক্তম্। তিঙা করণাদীনা-মুক্তবং নান্তি তত্র ত্যানভিগানাং পচতীতি পাচকো বিপ্র ইতি কর্ত্তবি বিহিত্তন কুতোক্তবম্। আযুধান্তে অনেন ইত্যায়ুধং শস্ত্রং দীয়তেহলৈ দানীয়ো বিপ্রঃ বিভেতাশাদিতি ভীমঃ আধিয়ত্তে ক্রিয়াশ্রিন্নিতি আধারোহধি-করণম এতেয় করণাদিবিহিতেন কতা করণাদীনামুক্ত মন্। কেল্রিয়ং কুষ্ঠং ক্ষেত্রাৎ পরক্ষেত্রে চিকিৎস্য ইতি ইয়:। শতেন ক্রীত: শতা: পট:। অস্ত্রো ভোজনমলৈ নিযুক্তং দীয়তে স আগ্রভোজনিকঃ কাকঃ ভদ্ধিতেনাপাদান-স্যোক্তত্বং নান্তি। স্থভদ্রা প্রয়োজনমদ্য দৌভদ্রং দংগ্রামং পর্বতা অস্মিন দেশে সন্তীতি পার্ব তো দেশঃ। এতেয়ু কম্মান্যর্থ বিহিতেন ভদ্ধিতন কর্মান দৃশ্যতে। বিপ্রেণ হং পূগং খাদয়তা বাচ্যসে। ভুক্তং যাচমানায় দাতুমারেভে। পশ্যানীয়তে বিপ্রঃ। গোমতে দত্তমিত্যাদাবথৈ-কন্সাদেকবাক্যে কৃদাদিভিন্তিঙা বা বিহিতং কর্তৃস্বাহ্যক্তত্বাদি চকালবিশেষশ্চ পরম্পরায়াপ্যাকাঙ্ক্ষাবিরোধেন প্রধানহাতিঙা বাধাতে।

৩৯। ক্তক্তবভূক্তিত্যশ্চেত্যেকে।
তে চ প্রধানং তদাচ্যবাক্যার্থাকাজ্ফাকৃষ্টন্থাৎ কুদাদিপদার্থানাং
বাক্যার্থঃ কারকাকাজ্ফিণো হি ধার্থ্যা:। কিং করোতীভ্যুত্তরভূত

দীনামুক্তত্বম। নিজিতঃ কামো যেন স নিজিতিকামঃ গতো দেবদত্তো যেন পণা স গতদেবদত্তঃ পন্থাঃ দত্তা গৌর্যম্মৈ স দত্তগুর্বি প্রঃ প্রেপতিতং পত্রং যমাং স প্রপতিতপত্রস্তকঃ। চিত্রা গৌর্যস্য স চিত্রগুদেবিদত্তঃ স্থিতো বিপ্রো যন্ত্রিন স স্থিতবিপ্রো দেশঃ। এতেমু কর্ত্রাদিয়ু বিহিতেন সমাদেন কর্ত্রাদীনামুক্তরম্। শিশূনাং ঝটিত্যববোধনায় এতাম্যুদাহবণানি। অবায়োক্তবঞ্চ দুখাতে ইতি দুশি গ্রহণং প্রয়োগানুসারার্থং শিষ্টপ্রয়োগদর্শনা-ভবতি নতু প্রায়েণোতি। বিপ্রস্বয়া পূগং খাদয়ন্নিতি বাক্যে কর্ভৃবিহিতেন শত্রা বিপ্র ইতি প্রয়োজককর্ত্তোক্তঃ দ্বয়েতি প্রয়োজ্যকর্ত্তা অনুক্তঃ বিপ্রেণ বং বাচ্যমে ইতি কর্ম্মণি বিহিতেন হিঙা বিপ্রেণেতি প্রয়োজককর্ত্ত। অন্তক্তঃ ত্বমিতি প্রযোজ্যা কর্ত্তা কর্ম্মসংজ্ঞক উক্তঃ যদা তু পূগং খাদয়তৈব বাচাদে इट ठा जरवार्या कारवात्रर्थिक दारिक वाका कर जना किः शामिकि ववा अञ्चल दर বাচিক্রিয়য়া বা উক্তম্বং ভবম্বিতি সন্দেহঃ। ভক্তং যাচমান ইতি বর্ত্ত-মানকালে কর্ত্তবিহিতেন শানপ্রত্যয়েন কর্ত্ত, ক্রজত্বং দাতুমারেভ ইতি ভূতকালে কর্ত্তরি কর্ম্মণি বা বিহিতেন লিটা অপরকারকাণামমুক্তত্বং ভবতি যদা এত্য়োর্ব ক্যিয়োর্বর্থকন্বাদেকবাক্যতা ভবতি ভক্তং যাচ-মানায় দাতুমারেভে ইতি তদা যাচমানশনাছক্তথাৎ প্রথমায়ামমুক্ত-জাচ্চতুর্থাাং প্রাপ্তায়াং বিরোধঃ বর্ত্তমানকালভূতকালবিরোধন্চ। বিপ্রমিতাত্র কর্তৃ বিহিতেন লোটা বিপ্রস্য কর্মণোহস্ক্রন্থম্ আনীয়তে বিপ্র ইত্যত্ত কর্মণি বিহিতেন লটা বিপ্রস্যোক্ত মৃ অনয়োরেকবাক্য- সর্বাধারর্থানুগতঃ সাধ্যসাধনেতি কর্ত্তব্যতাকাঞ্জনীভাবনেতি প্রসিদ্ধা করোতার্থো বা।

৩৯। গৌণং কর্ম ছহাদেঃ। ছহাদেঃ প্রয়োগে তত্ত্ব কর্মণি ভিঙাদৌ বিহিতে গৌণমপ্রধানং

ভাষাঞ্চ পঞ্চানারতে বিপ্র ইভাতাহুক্তরাং দিতীয়ায়ানুক্তরাং প্রথমায়াং প্রাপ্তায়াং বিরোধ:। গোমানিতি কন্টরি বাচ্যে •বর্তমানে তদ্ধিতো বিহিতঃ দন্তমিতি কর্মাণ বাচ্যে ভূতে ক্তো বিহিতঃ অনয়োরেকবাক্য-তায়া প্রথমানভূরোরিরোধ: কালবিরোধ*চ অত আহ ক্লাদিভি রিত্যা দ। প্রভানায়তে বিপ্র ইতার তিঙা অন্তর কুণাদিভিঃ যাচমানায় দাতুমারেতে ইতাত্র জ্ঞান ভগু ক্রানক্রিযার্থাচেড ত বিহিতেন তুমঙা সহ সাক্ষাৎকাল-বিবোধো নাস্ত্রীতি নচ বাচাং অত উক্তঃপরস্পানয়ানীত্যাদি প্রধানয়া স্তর্ধা বাধাত এবং প্রধানা প্রধানয়োগ্রাপ্র প্রধানে কর্ম্মন্ত্রতায় ইভি ভারাৎ। তে চ প্রধান মতি ি েক কর্তুকভাতে তার্থঃ। প্রাধান্তে হেতুনাই ত্রাচ্যবাক্যার্থাকা হল্লাক্র রাৎ ক্লাদিপদার্থানা মতি তিওু ক্তক্তবতুকুত্যবাচ্যপ্র ব্যক্যার্থস্ত্যাকাক্ষ্ণা অরুষ্ঠহাৎ কুদা দপদার্থানাং ব্যক্যার্থমের ব্যাক্ষরো ত বাক্যার্থ: কাবকাক্যজেনো হি ধার্থা ইতি ধার্ত্পাকাজ্ঞা কারকাণি আকাজাতে । অত্ত কৃদানে পদার্থা এব কারকাণে আকাজায়া চাকর্যকা ভবন্ধি। আকর্ষণীয়শ্চাপ্রধানমাকর্ষকাশ্চ প্রধানমিতি অতঃ প্রধানমাভিঙা বাধ্যানে টাত সিদ্ধম : নম্ন ধার্য এব কঃ অত আহ কিং করোতীত্যাদি কিং করোতীতি প্রদ্ধে উত্তরভূতিঃ দর্মধান্বর্থেরকুগতঃ। তথাহি কিং করোতীতি প্ৰশ্নে পচতি গদ্ধতি ইত্যাহ্যেত্তরং ভৰতি। সাধ্যসাধনেতিকৰ্ত্তব্যতাকা ক্ষ্মীতি সাধ্যং কশ্ম সাধনং কবণ মতি কর্ত্তব্যতা নমনোলমনারোপণাদি তদাকাজ্জী ষ্মতএবাহ বাক্যার্থঃ কারকাকাজ্মিণো হ ধাত্বর্থা ইতি। ভাবনেতি প্রাসিদ্ধ ইতি ভাবয়তে ব্যাগ্নোতি সর্নাকারকাণীতি ভাবনা ভূ প্রাপ্তাবিত্যস্মাৎ শ্রন্থা-সেত্যাদিনা ওনঃ। পক্ষান্তবমাহ করোত্যথো বেতি। তথাহি পচতি যুৱতী'ত পাকক্রিয়াং যাগক্রিয়াং করোতীতার্থঃ।

(৩৯)। श्रुटिर्त्तन निष्क निष्ठमार्थः वहनमिनम्। এতেन প্রধান-

কর্মোক্তং ভবতি। দুহুতে গোর্চ শ্বং গোপেন জীয়তে দেবদন্তঃ
শতং যজ্ঞদত্তেন। দেবাস্থবৈরমৃত্যসমূনিধির্ম মন্তে ইতি ভারবিঃ।
গর্গাঃ শতং দণ্ড্যস্তাম্।

৪০। ন হৃঞ্কৃষিনীবহাম।

ব্রিয়তে ভারে। গ্রামং কৃষ্যতে গ্রামং শাখা নীয়তে প্রামমজা উহুতে ভারে। গ্রামম্।

8)। প্রযুক্তং বিহিতাপ্রযুক্তো। যাচাতে কম্বলঃ বাচাতে ধর্মং রাজা।

কর্ম পোহরু কন্ধং কর্ত্বস্দিষ্ট বাং, যক্র কর্ম্মণজ্ঞা ক্বতা তং প্রধানম্। বৃহত ইতি তুহ্ প্রপূরণে ভাবকর্মণোরাত্বনে ইত্যাত্মনেপদং যগ্ভাবকর্মনেপারিতি যক্। দেবাস্থরৈরিতি, নিত্যবিরোধাভাবাং নৈকত্বং ক্লীবত্বঞ্চ। কর্মণি ক্বতি বিহিতে গৌণস্থোক্তত্বং যথা পৌর্হ শ্বা হুগ্মং রাজ্য কন্মলং যাচনীরুশ্চ তদ্ধিতস্মাসয়োরসম্ভব এব।

- (৪০)। ছহাদিত্বান্দৌণস্ত কর্মণ উক্তরে প্রাপ্তে প্রতিষেধঃ।

 ক্ষ প্রাদীনাং প্রয়োগে কর্মণি তিঙাদৌ বিহিতে গৌণং কর্ম্মোক্তং স স্থাং।

 পারিশেষ্যাৎ প্রধানকৈতবোক্তমন্। ব্রিয়ত ইতি রিদৃতোধে চেডি রিকারঃ।
 উক্তত ইতি বহু প্রাপণে কিদাশীলে গারিত্যাদিনা বহু উহু।
- (৪১)। স্থাদেঃ প্রয়োগে বিহিতা প্রযুক্তের সত্যাং প্রযুক্তং কর্ম্মোক্তং ভবতি। গৌণস্য কর্ম্মণ উক্তম্বং বিহিতং তস্য যদা প্রয়োগো ন ভবতি মুখ্যঞ্চ প্রযুক্তং তদা তস্যৈবোক্তমনিতার্থঃ। যাচাতে কন্মণ ইতি রাজনি গৌণে কর্ম্মণাপ্রযুক্তে মুখ্যস্য কন্মলস্যৈবোক্তম্। বাচাতে ধর্মাং রাজেতি ক্রতে ধর্মাং রাজানং মিজঃ বাচারতি ধর্মাং রাজানং মিজঃ বাচারতি ধর্মাং রাজানং মিজঃ বাচাতে ধর্মাং রাজানং মিজঃ বাচাতে ধর্মাং রাজানং মিজঃ ওক্তমং বিহিতং তস্যাপ্রযুক্তো বাদ্দ এবোক্তমং বাচাতে ধর্মাং রাজেতি পর্মানোক্তমং ন স্থাং গৌণং কর্মা গুছাদেরিতি বিহিতোক্তম্বা রাজঃ প্রযুক্তমাং।

৪২। গৌ কর্তা।

ণিঙঃ প্রয়োগে তত্র কর্ম্মণি ভিঙাদৌ বিহিতে কর্তা কর্ম্মোক্তং ভবতি। বোধ্যতে বেদং শিষ্যো গুরুণা।

একবিবহুবচনং প্রথমাদেরেকৈকম্। প্রথমাদিসপ্তবিভক্তীনাং প্রথমপুরুষাদেশৈচকৈকম্ একবিবহুবচনং

⁽৪২)। বোধ্যত ইত্যাদি অত্র বাশিজেত্যাদিনা শিব্যস্ত কর্ত্তু কর্ম্মণ্ড বিহিতং তক্তৈবোক্তম্বাৎ ন বেদস্ত ।

⁽৪৩)। প্ৰথমাদীতি প্ৰথমৰিহিতোইগ্ৰোদ্ভিন্ন: প্ৰথম: স আদিৰ্বস্য স প্রথমাদিঃ প্রথমণ্ড দ্বিতীয়াদেরাদির্ভবতি। স চ প্রক্রংস্থমানপ্রামশীং। অন্মিন পালে প্রধানত্বাক্ত স্থ ওজদাদিরভিনীয়তে। স চার্থানাং বিভজনা-দিভক্তিশনো লোকে প্রসিদ্ধ:। ইথং স্থ ঔ জসিতি প্রথমা বিভক্তি: অম ওটু শসি ত বিতীয়া বিভক্তি:। অনেত ক্রমেণ প্রথমাদিপদেন সপ্ত বিভ-ক্তয়ো গৃহত্তে। তত্ত্বেণ চ ত্রিশ: প্রথমধ্যমোত্তমা নামগুলদক্ত বিতি ক্ত্রে পরিভাষিতা: প্রথমপুরুষাদয়োহপি ত্রয়ো গৃহস্তে। একৈকমিতি সমাসব-চ্চেতারুরুত্তৌ একঞ্চ বীপায়ামিতি দ্বিঃ প্রত্যেকমিতার্থঃ একং বন্ধীত্যেক-বচনমিত্যনেন অবর্থসংজ্যেরমিতি স্থচিত্ম এতেনৈতত্বকং স্থাৎ একছে বাচ্যে একবচনং স্থ। ছিম্বে বাচ্যে দ্বিবচনমৌ। বছম্বে বাচ্যে বছবচনং জস। এবং সর্বাদ্ধ বিতীয়াদিয় প্রথমপুরুষাদিয় চ একছবিদ্ববহুত্বিধানম্। নতু यिन একভাদিৰ বাচ্যের বাদরে ভবস্তি তদা কথমেকো দাবিত্যাদৌ স্বাদয়:। প্রকৃত্যৈব একাদার্থাভিধানাদত আহ আহ প্রকৃত্যর্থ: প্রত্যায়েনানুদান্ত নসু উক্তার্থ নামমুবাদারৈর কথং বিভক্তর: ক্রিয়ন্তে যতুক্তম উক্তার্থানাম প্রয়োগ ইতি তত্ত্রাহ কেবলাপ্রয়োগিত্বাদিতি। তথাচ ভাষ্যং. নাপনং শাম্বে প্রযুপ্তীত ইতি কেবলা প্রয়ো গন্ধাদিতি হেতুপদং তল্পেণান্তর-বাক্যার্থস্থাপি কারণমবগস্তব্যম্। সর্বত্ত প্রকৃতিপ্রভাগ্নে প্রকৃতার্থবিশিষ্টং প্রত্যয়ার্থং সহ ব্রতঃ কেবলা প্রয়োগিত্বানিতি ইহ কেবাঞ্চিৎ স্বার্থদ্রব্য-লিক্সংখ্যাকর্মাদ্যাত্মক: পঞ্চক: শব্দার্থ ইতি মতম। কেষাঞ্চিৎ স্বার্থদ্রব্য-লিঙ্গাল্মকন্ধিক ইতি। তত্ৰ স্বার্থো বিশেষণমভিধীয়তে দ্রবাস্ক বিশেষাম। তথাহি গৌরিতাত্র গোশবস্থ স্বরূপং বিশেষণতাৎ স্বার্থ: জাতিস্ক বিশেষ্য-

ভবতি। একং বক্তীতোকবচনং দ্বে বক্তি দ্বিবচনং বহুনি বক্তি বহুবচনন্। ঘটঃ ঘটো ঘটাঃ। ভবতি ভবতঃ ভবস্তি। একে। দ্বাবি-ভ্যাদৌ প্রকৃত্যর্থঃ প্রভায়েনানুন্ততে কেবলাপ্রয়োগিয়াৎ। সর্বত্র

দাদ্দ্রব্যম্। শব্দো হুর্থং প্রতিপাদ্য়ন্ স্বরূপমপি প্রতিপাদ্য়তি প্রদীপব-দিতি। স্বরূপমপি শকার্থো ভবতি। পট্ট শুক্লো গুণঃ ইতাত্র জাতির্বি-শেষণতাৎ স্বার্থঃ গুলো বিশেনারাং দ্রবাম্ গুরুঃ পট ইত্যানে বিশেষণ-ভূতো গুণঃ স্বার্থঃ বিশেষ্যভূতং পটাদিকংদ্রবাম্। ষষ্ঠীঃ প্রবেশয় ইত্যত্র ষষ্ঠ্যা-নিকং বিশেষণভাষাপন্নং সামঃ বিশেষ্যভাষাপন্নন্ত পুরুষাদিকং দ্রব্যম। দণ্ডী-ভানে সমন: স্বার্থ: পাচক ইত্যানে যং ক্রিয়ানিমিত্তক: প্রভান্য: সা কিয়া স্বার্থঃ লিঞ্চং স্ক্রীস্বাদিকং সংখ্যা এক ক্যাদিকর্মাদয়োহভিহিতাএব। অত্র ত্রিকঃ প্রাতিপদিকার্থেহসীকৃত ইতি প্রতিভাতি যতোহবাভিহিতম। একং ব্লৌ-তোকবচনমিত্যাদি। একম্যাদয়ো বিভক্তিব্যাভিধীয়ন্তে। এক মাবিত্যাদৌ প্রকৃতার্থঃ প্রতায়েনানুদাতে ইত্যানেনাপ্যেতৎ প্রতিপাদিতম্। একদাদিযু শদেষের প্রকৃত্যর্থ: সংখ্যা প্রতায়েনান্দাতে অক্সত্র পুনরভিদীয়তে কর্ম্দয়ো-হবি বিভক্তেরের বাচ্যাঃ। অনুয়ব্যতিরেকসম্পিগ্রো হ্যমর্থঃ। বিভাকের পরমেকদ্যাদিসংখ্যা কর্মজাদিকঞ প্রতিপাদ্যতে যচ্চ পয়ঃ পয়ে। জুব্যতীতাদে বিভক্তিং বিনাপি সংখ্যাক্ষ্তাল্যবগ্নঃ সু বিভক্তিজনিত সংস্কাৰ্থনিশ্বাদেৰ ধাতোঃ ক্রিয়েৰ বাচ্যা ইত্যৱৈবাচার্যাণামবিবাদ এব। পঞ্⇒পক্ষে তু সংখ্যাকর্মাদয়ঃ প্রকৃতিস্থা এব বিভক্তিভিদে ্যাতান্তে যথা ধাতৃত্ববার্থবিশেষো ভাপদর্গেণ দ্যোতাতে। যত উক্তং লিঙ্গদংখ্যাবিনি-मुं छा । यः পদত্বার্থমবায়া দতি অদ্বাবাচিনামবায়ানামেব লিঙ্গসংখ্যাবিনি-মুক্তিরম। অক্সেধান্ত লিম্পসম্খোচ বিদ্যেত এব কর্মাদিকারকশক্তিরপি প্রকৃতিইম্ব বিভক্তিভিদে ্যাতাতে তথাচ, অমু উটু শসঃ কর্মাহনুক্তা দিত্যা-নিভি: কর্মানেরুত্তরে অম্ ওট্ শসাদয়ো বিধীয়ত্তে এবঞ্চ সতি পঞ্চকঃ শকার্থ শতি স্বীকৃতং তত্মাত্বভয়থাপি ব্যবস্থা স্বীকরণীয়া অবিরোধাণ। কোহত্রার্থে কাকদস্তপরীক্ষায়ামিব নির্বনাতিশয়ঃ লক্ষান্তরোধাং কচিং কিঞ্চিদাগ্রন শীংস। অত্র পুনঃ হতে একো দাবিতাদৌ প্রকৃতার্থ প্রতায়েনানু গজে

প্রতায়ো প্রকৃতার্থবিশিষ্টং প্রতায়ার্থং সহ জ্রত ইত্যেকে।

88। বিংশত্যাদেরনারত্তে বহুত্বেহপ্যেক্বচনম্।
বিংশতিং পুরুষাঃ শতং ব্রিয়ঃ একবিংশতির্বনানি। বনং মুগং
দেনেত্যাদি। আর্ত্তী তু—দে বিংশতী তিন্তো বিংশত্য়ঃ।

ইতানেনৈব ত্রিকঃ প্রাতিপদিকর্থ ইতি বিশেষমঙ্গীকৃত্য মতাস্তরমাহ কেবলাপ্রায়াগিত্বাদিতি। তথাচোক্তং, নাপদং শাস্ত্রে প্রযুঞ্জীত অন্বয়ন্তি-রেকসমধিগমাো হয়মর্থঃ কেবলস্থ প্রয়োগাভাবাত্বভয়োরেব প্রকৃতিপ্রত্যায়য়েঃ স্বার্থাদিপঞ্চকবোধনমন্বয়ব্যতিরেকাভ্যামবধারিতম্। তন্মাৎ সহ ক্রেত ইত্যেক ইতি একশন্দোহন্তার্থং বছবচনান্পপরতঃ। তথাচোক্তং বাচিকা দ্যোতিকা বা স্থাদি বাদীনাং বিভক্তরঃ। স্থাদা সংখ্যাবতোহর্ণস্য সমুদায়োহভিধায়কঃ।

(৪৪)। বিংশত্যাদেঃ শদস্যানাবৃত্তী বাচ্যায়াং বহুত্বেহপ্যেকবচনং ভবতি। বিংশত্যাদয়ঃ সভ্যাশকাঃ সভাবাদেব সংখ্যেয়ে সভ্যাদে চ বর্ত্তস্থে বলা সংখ্যেয়বৃত্তয়ো ভবস্তি তলা প্রফর্যাদিপদৈঃ সহামীয়াং বিশেষণবিশেষাভাবঃ সংখ্যেয়স্য বহুত্বাং বহুবচনে প্রাপ্তে একবচনং বিদীয়তে। যদা পুনঃ সংখ্যানবৃত্তয়ো ভবস্তি তলা সমুলায়সৈয়কছেনাবহুত্বাদেব ন বহুবচনপ্রসঙ্গঃ। অতএব গবাং বিংশতিরিত্যাদি নোদান্তত্য। বনং য়ুণ সেনেত্যাদি ইত্যালার্য্যাণাং মতভেদঃ। কেচিরদন্তি বনাদিপদেন বৃক্ষাদয়োহভিধীয়স্তে তলা বহুত্বাং বহুবচনে পাপ্তে একবচনং কেচিরদন্তি বনাদিপদেন সমুহোহভিধীন্যতে তলা সমুলায়স্যোকত্বাদেকবচনং সিধ্যত্যেব। আরুত্তৌ হিছি।, ধদা আমী বিংশত্যাদিশকাঃ সংখ্যানবৃত্তয়ো ভবস্তি তদৈকত্বে একবচনং দিধারক্তৌ দিবচনং বহুধারক্তৌ বহুবচনং পূর্বেস্ত্রেণৈব সংখ্যেয়বৃত্তয়ো যদা অমী, ভবস্তি তলা অমীয়াং আবৃত্তাভিধানশক্তিন স্থিয়নভিধানাং। নহি ভব্তি দ্বে বিংশতী পুরুষাঃ তিংশ্রো বিংশতয়ঃ প্রিয় ইতি।

৪৫। আপো দারা বর্ষাঃ দিকতা জলেক্বিস ইত্যা-দেরবহুত্বেহপি বহুবচনম্।

৪৬। পুংসি গৃহাশ্চ।

৪৭। স্থমনোহপ্সরোবল্পজাদেব। ৮

বেশ্যা শাশানস্থমনা ইব বর্জনীয়া স্থমনসঃ। অপ্রত্যাখ্যের দপিসমনসী ইত্যসাধুঃ। ত্যাদিন ক্রিশা ইতি সূত্রস্থা বামনবৃত্তী অপ্রবা ইত্যেকবচনান্তমুক্তম্ অপ্রবসঃ। একো বল্পজ ইত্যর্থ-বংসূত্রস্থ ভাষ্যং বল্পজাঃ।

৪৮। জাত্যক্তবিদংখ্যাবিশিষ্টবৈষ্ঠকত্বে। গৌবয়ং গাবঃ ইমে বুক্ষোহয়ং বৃক্ষা ইমে। সংখ্যাবিশিষ্টস্থ তু। একো গৌঃ একে। ত্রীহিঃ।

⁽৪৫।৪৬)। শদশক্রিস্বভাবাদিতি শেষঃ। আপ ইতি জস্ স্থাটি দীর্ঘ ইত্যকুর্ত্তী ভেহপোহস্তোজ ইতাক।রসা নীর্ঘঃ। আদিপদেন বস্তান্তবা চল্লা ক'ত্তকা মদা নাজাদেগ্রহণম্। আবজ্ঞাতেহর্থে বহুবচনমিতি লাস্যকারবচনাৎ তদপ্যতা বক্তবাং কতি ভবতঃ পুল্রাঃ।

⁽৪৭)। স্থমনঃ প্রভৃতীনামবল্জেংগ বহুবচনং বা ভব ত। ১হুবচনং বহুপ্রসিন্ধন্য স্থাত একবচনে প্রামাণ্যং দর্শয়তা বেখা শ্বশানস্থমনা ইব বর্জনীয়েত্যুদাহবণে স্ত্রীলিঙ্গতাপি নিয়তা স্থচিতা। অতএবাহ অপ্রত্যা-ব্যুয়ে দ্বিস্থমন্দী ইত্যাধুরিত নপুংসক্ষাভাবাদিতি ভাবঃ।

⁽৪৮)। জাতিন মান্তমেকোহর্থস্তদভিধানে একত্বে প্রাপ্তে ইদম্চাতে। জাতেরুক্তৌ প্রতিপাদনে বিশেষণভূতরা সংখ্যনা ব'র্জ তিস্যাকত্বে বহুবচনং বা ভবতি। অর্থসা বহুবচনবিধানাং তদ্বিশেষণস্যাপি বহুবচনং ভবাত। একার্থাভিধার্থনো বহুবর্থাভিধান্নিতাভাবেহতিদেশোহরুমেকার্থো বহুবর্থনভব্বতীতি। যদ্যপি গুণনদ্দ্রবামিতি ব্যবস্থিতে সংখ্যাবত্তং জাতেন সম্ভবতি তথাপ্যোপচারিকোহত্র সংখ্যাবত্বে ব্যবহারঃ কার্যাঃ। অজাঙ্গে তু। দেবদক্তঃ যদ্চহাশব্দোহরং নতু জাতিবাচা। উক্তাবিতি কিম্? বিদ্যা প্রকৃতিবৈদ্য বিদাদেশভিতি গট অম যাত্বাৎ

- ৫৯। স্থুম্মদোহবিশেষণস্য দ্বিত্বে চ। অহং ত্রবীমি আবাং ক্রবঃ বয়ং ক্রমঃ। সবিশেষণস্থ তু। স্বহং পণ্ডিডঃ।
- ৫০। যুত্মা গ্রেক গুরুবিশেষণস্য। কংমে গুরুঃ যুয়ং মে গুরবঃ ।
- ৫১। শ্বাস্ত্র চ গোরবে।
 ভট্টারকপাদঃ সমাদিশতি ভট্টারকপাদা সমাদিশতি তত্রভবান্
 করোতি তত্রভবস্তঃ কুর্ব স্থি।
- ৫২। প্রাষ্ঠপদাফন্তনীনাং ভত্তে দ্বিছে।
 পূর্বের প্রোষ্ঠপদে পূর্ববাঃ কন্ধনাঃ পূর্বের কন্ধনাঃ পূর্ববাঃ কন্ধনাঃ।
 গভবে তৃ। কন্ধন্যোজ্বতি কন্ধন্যো কন্সে।

কোন ভবতি। গোত্রঞ্চ চরণৈঃ সহেত্যস্য জাতিত্বমস্ত্যেব নত্বত্র জাতি-প্রব্যোজনং চিকীর্ষিতম্। কিন্তর্হি প্রকৃতিপ্রত্যায়াখ্যানম্।

- (৪৯)। বিশেষণরহিত্স্যাম্মদ একত্বে দ্বিষ্ণে য বছবচনং বা ভবতি। অত্রাপার্থন্য বছরাতিদেশ: তেন তিঙ্গুস্যাপি তত্র বর্ত্তমানস্য বছরচনাস্তত্বং ভবতি। যথস্যামছলস্যাত্মবিষয়নালাখনৈ চকত্বাদ্বিষ্ণ ন সম্ভবতি তথাপি ধঞ্চাইঞ্চেতি সক্ষত্র ত্যদাদিরিত্যেকশেষেণ পদদ্যো রভিধানে দ্বিষ্ণং সম্ভবতি কথং সা বালা বয়মপ্রগল্ভমনসঃ ইত্যাদি চিস্তাম্। বিশেষণবিশেশ্যভাবং প্রতি কামচারাদ্মান এব বিশেষণন্ধং পদাস্তর্ম্য তু বিশেষ্যন্থমবগন্তব্যং কবীনাং প্রয়োগদর্শনাং।
 - (৫०)। श्वकृतिरमयनमा यूच्चम একছে বহুবচনং वा मार।
- (৫১)। গৌরবেংভিধেয়েহশুত্র চৈকশ্মিরর্থে বছবচনং বা ভবতি।
 ভটারকপাদ ইতি মাননীয়শরীরৈকদেশে এব পাদে গৌরবেণ মাননীয় প্রাণিধন্মাধ্যারোপাদয়ং প্রয়োগঃ। তথাচ—জীবৎস্থ তাতপাদেধিতি। তত্রভবানিতি গৌরবং দ্যোতাতে। এবং তত্রভবস্তো বার্ত্তিককারমিশ্রা ইত্যাদি।
- (৫২)। প্রোষ্ঠপদয়োর্ছমোঃ ফল্পফোক্ষ ছয়োর্ভতে সতি দ্বিত্বে বছ-বচনং বা স্যাৎ। ফল্পফোর্জাতে ফল্পফৌ কন্সে ইতি ফল্পনীশব্দাৎ নক্ষ-

- ৫৪। দ্বিবচনস্থিতাবুভঃ প্রয়োজ্যোহন্যত্রোভয়ম্। উভো উভে উভয়ঃ উভয়ে উভয়োঃ পুত্রঃ উভয়পুত্রঃ। উভাপাণি উভাঞ্জনীত্যাদয়ো দ্বিদগুাদিগণপাঠাৎ।

ত্রেণ যুক্তঃ কাল ইত্যর্থে ভাত্তদ্যুক্কাল ইতি টণ্ ভাত্তদ্যুক্কালেথবিশেষে ইতি টণ্লুক ততঃ ফল্লুভার্জাতে কন্মে ইত্যথে ঋতৃনক্ষত্রাদিতি টণ্ নক্ষত্রেভার্থিতি টণ্লুক্।

- (৫০)। পুষাোহর্থো ষদ্য দ পুষার্থঃ পুষাপ্যায়ঃ পুষার্থপুনর্দ্যনাং ভত্তে দত্তি বছতে দিবচনং নিত্যং ভবতি। নিত্যমিতি কতং বারুরতি-শঙ্কানিরাদার্থম্। পুষ্যে জাতঃ পুনর্বস্বোর্জাতাবিতি পূর্ববং দাধনম্। পুষার্থপুনর্বস্নামিতি কিম্বরাধার্মার্থার অত্ত বছতে দ্বিচনং ন ভবত। নক্ অকীণি মে দর্শনীয়ানি পাদা মে স্কুমার্তরা ইতি কথং দিছে বছবচনম্। আরং পুনর্মার্থিত কথং দিছে একংচন্ম্ইয়ং বিশাথা ইতি কপং বছতে একবচনমত আহ লোকস্যেত্যাদি।
- (৫৪)। দ্বিচনস্থিতৌ দ্বিচনপ্রয়োগে উভঃ প্রযোজাঃ দ্বিচন-ন্থিতেরন্তত্র উভয়ং প্রযোজাম্। স্তত্তে উভ ইতি দ্বিচনস্থিতৌ চ প্রয়োগোহমুকরণত্বাৎ। উভে ইতি নাম ইত্যাদিনা আৎপ্রভায়ে ক্বতে দ্বিচনমৌ ঔদীদিত্যাদিনা ঈকারঃ। উভয়ে ইতি পূর্মাহ্যভয়ো জিদ

৫৫। সমুদ্ধ্যক্তাৎ স্থ জসঃ।

সম্বোধনোক্তাভ্যামূত্রে স্থ ও জসো ভবস্তি। বোধ্যস্থাভিমুখী-করণং সম্বোধনন্ অচেতনে তৃপচারঃ। হে বিপ্র ভুক্তং ত্বয়াহে বিপ্রো হে বিপ্রাঃ 🖛 ঘট বিপ্রো বদতি।

বেতি সর্বান্দংজাবাং জাসিং প্রংসীতি ইকারঃ । উভয়োঃ পুত্রঃ উভয়পুত্র ইতান ল্ক্ স্পোজনোজীনেরিতি লু ক ক্রতে দ্বিচনপ্রান্থিতিঃ। মদ্যেবং তং কথম্ভাপাণীত্যাদি অত আহ বিদ্যাদিগণপাঠাদিতি তথাচোভয়াদস্ত-হস্তক । ক্লেনিপাণি ভা উভনপ্রোভো বেতা ক্লিভা ভ প্রায়ঃ।

(৫৫)। উক্তন্নভাবাদপ্রাপ্তো সম্বোধনাৎ পৃথ'গ্রধানম। বোধাস্ত বিধেয়মর্যঃ জ্ঞাপনায়স্তাভিমুগীকবণং সাক্ষাংকারেণোপাদানং সম্বোধনং তচ্চ জ্ঞাতভান্তবাৰে সম্ভৰতি! যথা যে বিপ্ৰেণ্ড বিপ্ৰবৃত্ত জ্ঞাতভায়মকু গদঃ নতু বিধাতব্যবস্তন:। যথা ৰাজা ভবেতি অজ্ঞ হি রাজত্বং বিধাতবাং বস্থিতি ন ভবতি সংপোধনম। এবং যুধাস্থ বিগতজ্ঞর ইত্যাদি। বিপ্রো বদতীতি কর্ত্তবিহিতেন তিঙা বিপ্রয়োক্তহম ৷ নতু অয়ং পুরুষঃ ইয়ং নারী কো রাজা ইত্যাদৌ কথং প্রথমা তিগুদিভিরুক্তত্বাভাবাং অত্যোচ্যতে। স্থ ঔ জন ইতি দিতীয়লকণমিচ তথেণোপাত্তং দুষ্ঠব্যং যত্ৰ তিঙাদাভাবাহুকত্বং নান্তি নোহস্ত বিষয়। অথবা সন্তংহি বাকাং ক্রিয়রা পরিসমাপ্যতে অন্তিক্রিয়াধাহানত্বাত্তক ভবিষাতি। সর্বত্রান্তিক্রিয়াধাহারস্ত যুক্ত এব সভাসদদ্যৈত্ব সামত্র বিদ্যান্ত্রাং। ভগাচো ক্রম্-যেত্রাগ্রুৎ ক্রিয়াপদং ন ক্রাতে ত্রাপ্তির্ভান্তীপর: প্রয়োক্রবা: ভবন্তাতি লট পূর্মাচাধ্যস্থ সংজ্ঞা অস্থাতুর্ল ভ্রত্ত প্রোক্তব্য ইতার্থঃ। বোধাস্থ জ্ঞাপনীয়স্থাভিমুথীকরণং সম্বোপনং জ্ঞাপনীয়ত। চ চেতনভৈত্র সম্ভবতি। তং কথং হে ঘট ইত্যাদি প্রায়োগা ঘটগাতেতনত্বাদিতি চোদ্য আহু, অচেতনে তুপচার ইতি চেতনত্ব-স্তেতি শেষ: এবং শুষ্যতি শালিঃ স্থালী পচতি কাঠানি পচন্তি কুলং পিপতি-ষতীত্যান্যপি। এতদিয়াত্মেবাল্লপি সম্প্রনায়ম্। তন্যথা হস্ত্যাত্মান-

- ৫৬। লিঙ্গসংখ্যাবিনিমুক্তাৎ হঃ পদত্বার্থমবায়াৎ। আছব্যবাচিনামব্যয়ানাং লিঙ্গসংখ্যাবিনিমুক্তম্। চবাহাহ এব ইত্যাদি।
- ৫৭। অমৃ ঔট্ শসঃ কর্মণোহমুক্তাৎ। অমুক্তাদিত্যধিকার:। অমুক্তাৎ কর্ম্মণ উত্তরে অম্ ঔট্ শসে। ভবস্তি। দেবং পশ্য দেবো দেবান্। অমুক্তাদ্বিতি কিম্?

মাম্মনা ইত্যত্রাপ্যভেদেহপি ভেদোপচার: এবং শশকস্থ বিষাণং নিক্ষ-যতি দোষাভাবেন যুক্ত: অভাবং করোতি অঘটো জারতে ইত্যাদাবসতাপি সত্রপচার: করণীয়: । যদ্যপি শাস্ত্রাস্তরে এবংবিধেষু দূষণেষু বছপ্রকারা: সিদ্ধাস্তা উক্রাস্তথাপি সংক্ষিপ্রসারত্বাদস্য সিদ্ধাস্ত্রলেশ এবোক্ত:।

- (৫৮)। অনিব চনীয়স্থানি সপ্ত স্থ: ক্রমেণ গছতি পুণ্যক দিত্যত্র সংশবস্থ ভবাবচনপ্ত নপুংসকস্বং বহুসং কর্ম্মস্ক বিদ্যুতে তত্মান্ততা বিভক্তীনামুংশক্তি: সিদ্ধৈব বে ভূ ভবাবাচিনো ন ভবস্তি তেবাং লিঙ্গাদিরহিতছাছিভিন্ন প্রাপ্রোতি। যতো ভব্যাধার, সখ্যাকর্ম্মাদিশক্তি: তদ্যোতনায়েব বিভক্তি: ক্রিয়তে অতএবাহ স্থ: পদত্যার্থমবায়াদিতি সংখ্যাকর্ম্মমাদিদ্যোতিক। বিভক্তরোহত্র ন ভবস্তোব পদত্মার্থন্ত স্থ: ক্রিয়তে তথাচোক্তং নাপদং শাস্ত্রে প্রবৃত্তীত ই ত। আঞ্জাতমিত্যাদো বর্ণে বা তহুগাস্ত ইতি পদান্ত কার্য্যাণি বিদ্যন্ত এব স্থ প্রভারে ক্রতে অবায়ানাং প্রথমান্তাং তেন গ্রাম উচ্চৈন্তে সংগ্রাম উচ্চৈন্তব স্থ মত্যক্র তু সপূর্ব্বাৎ প্রথমান্তাং কথিতামু কথনেহপীতি তে ভবৌ ভবতং।
- (৫৭:। অনুকাদিত্য ধকার ইতি পাদসমাপ্তিং যাবদিতি শেষ:।
 উক্তানুক্তয়ো: সামান্তবিধানেংপ্যক্তাৎ স্থ ও জন্ ইতি বিশেষবিধানাদেবানুকাদ্বিনামানরা ভবিষাস্তি কিমনুকা'দত্যনেন তৎ ক্রিয়তে স্প্রধিষ্
 উক্তাদিত্যমুব্ভিশকানিরাসার্থঞ্চ। পশু ই ত শিতি তিঠাদি: স্থাদে রতি
 পশ্চাদেশ: ক্রিয়তে ইতি যক্ রিদ্তো যে চেতি রিকার:। কৃতপূর্বী কটমিতি কৃতং পূর্বমনেন ই ভার্থে কৃতপূর্মাদেশেততীন্ অত্ত ক্রপ্রভারেনোকত্বেংপি কটমিতি কথং দিতীয়া অত আহ ক্রপ্রভারেনেত্যাদি ভাবে
 বিহিত্তেন ক্রেন কর্মণোংল্র নোক্তম্। তথাচ—কাং

ক্রিয়তে কট:। কৃতপূর্ববী কটমিত্যত্র ক্তপ্রতায়েন ভাব: কর্ম্ম-সামান্যক্ষোক্তং ন তু কট:। ক্রিয়তে কটমিত্যাদি ন স্থাদনভি-ধানাৎ।

৫৮। অপৃথগ্রপুক্রিয়ায়া বিশেষণস্য কর্মত্বৎ ক্লীবত্বক।

ক্রিয়ায়া একুসাদেকবচনম্। সাধু পচতি ক্রতং চলতি অথো পচতি সাধু তে স্বং স্তোকং গতঃ স্তোকগতঃ। পৃথগ্র্পক্রিয়া-য়াস্ত—সাধু: পাকঃ সাধু পাকো সাধবঃ পাকাঃ।

দিশং গন্তব্যমিত্যেবংবিধঃ কাদশ্বরী প্রয়োগো দৃশ্বতে। প্রথমমবিশেষিতে কর্মণ্যকে পশ্চান্বিশেষকর্মসন্থন্ধেইপি তদ্য নোক্তত্বমিত্যক্তিপ্রায়ঃ। যথা (অথবা) স্বমাংসাদপি শক্যমনেন ক্ষুণ্ধ প্রতিকর্জুমিত্যত্র ভাষ্যকারবচনে শক্যমিত্যত্র দামান্তনিদেশে নপুংসকত্বে পশ্চাৎ ক্ষুদিত্যনেন সম্বন্ধেইপি ন স্ত্রীত্বমিতি। নমু দামান্তকত্মণ উক্তবে বিশেষস্যোক্তবং ন ভবতি তদা ক্রিয়তে কটমিত্যাদাপি প্রয়োজ্যমেব অত আহে অনভিধানাদিতি লৌকিকানাং বৈদিকানাঞ্চ নিত্যানাং পদানাং লঘুপ্রতিপত্ত্যর্থং প্রকৃত্বপ্রত্যান্ত্রীতাপরিকর্মনেনার্থকথনং ব্যাকরণেন ক্রিয়তে নতু পদানি ক্রিয়ন্তে। যেষাঞ্চাভিধানং নান্তি তেষামর্থকথনমপি ন সম্ভবতীত্যভিপ্রায়ঃ।

(৫৮)। অপৃথগ্রপায়াঃ ক্রিয়ায়া বিশেষণদা কর্ম্মন্থ ক্লীবন্ধক ভবতি।
প্রুষাঃ পচন্তি ওদনানি পচান্তে ইত্যাদাবপি কর্ত্বণাং কর্মণাঞ্চ বহুন্থং দামান্তবং ক্রিয়া প্নরেকর্মপৈবেতি বৈয়াকরণাঃ। অত আছ ক্রিয়ায়া একত্যাদেকবচনমিতি তদ্বিশেষণদাতি শেষং। দাধু পচতীতি ক্রিয়য়া দহ
দামানাধিকরণাাত্তদিশেষণত্বং দাধু যথা ভবতি তথা পচতীতার্যঃ। ক্লীবন্ধাক্রেলন্টামো পুলিত্যমূল্ক। কর্ম্মসংজ্ঞায়াঃ ফলং দর্শয়তি অথো পচতি মাধু
তে স্বমিত্যত্বসাধুশক্ষা কর্মন্তে সতি সপ্র্রাৎ প্রথমান্তাৎ কথিতাত্মকথনেহপীতি বিকয়েন তে ন ভবতি। স্তোকং গতঃ স্থোকগত ইত্যাদৌ দ্বিতীয়ায়া গতালৈরিতি সমাসঃ। সাধু পাচক ইত্যাদৌ কর্মন্তেহিশি সতি
ক্রিয়াবিশেষণাচ্চেতি প্রতিষেধায় যঠী। ধাতুনাং সকর্মকত্মাকর্মুকত্ব্যবস্থা

৫৯। হাদিযুক্তাৎ।

সাহচর্য্যবিবক্ষয়া অব্যয়ৈহা দিভিযুক্তাহুত্তরে অমৌট্শসো ভবস্তি।
হা বিপ্রং পুত্রো মৃতঃ বিপ্রস্থা পুত্রো মৃত ইত্যর্থঃ। উপপদবিভক্তেঃ কারকবিভক্তিগরিয়সীতি। শাঝিভিহা হতা ভূয়ো
কদয়ানামুদেজয়য়য়ৈবিতি ভট্টিঃ। নমস্যতি গুরুন্ নমস্কৃত্য মুনিত্রয়ং বিক্তে পৌরুবন্। অন্তরা হাঞ্চ মাঞ্চ কমগুলুঃ তব চ
মম চ মধ্যে কমগুলুরিত্যর্পঃ। এবমন্তরেণ তাঞ্চ মাঞ্চ কমগুলুঃ
উত্তরেণ হাঞ্চ মাঞ্চ কমগুলুঃ অন্তরেণ পুরুষকারং বিনা
পুক্ষকারমিত্যর্থঃ। নিক্ষা গ্রামং সময়া গ্রামং উপর্যা-

প্নস্তংসমুলিইক টোব ন সৌপাশিক কর্মণা তেন শীঘ্রং ভূগত ইতি ভাবে লড়েব। শীঘ্রং স্থা শীঘ্রাসিতমিদমেন। মিতাজাপাকর্মক হাং গনিভূজাপা দিতাদিনা অধিকরণে চাত্রঃ শীঘ্রং কম্পন ইতার চলশকাদিতা দিন। এনশ্চ ভবতি। সাবুং পাক ইতি পুংসি ঘণ কারকে চেতি ঘণ্ অকবর্গাদীতাদিন। চস্য কঃ। ক্লভিহিতো ভাবো দ্রব্যবং ইতি দ্রায়তি দেশাদ্স। পুথর ক্পত্রেব অভ্এব দ্বিচনবল্বচনে ভবতঃ।

⁽৫৯)। বৃষ্ঠাপবাদতাদ্য প্রায়েণ। হা ইতি ধাতুরন্তি অবাযঞ্চ পিগিতাবায়্মের অন্তবেতাাদন্তনবায়ঞ্চ অন্তরেণেতি তৃতীয়ান্তমবায়ঞ্চ নিক্ষেত্যাদন্তমবায়ঞ্চ সময়েতি তৃতীয়ান্তমবায়ঞ্চ উপপূর্ণপাদি বয়মবায়-মের উভয়তঃ সর্ক্র ইতি তশুন্তং পরিতোহভিতঃ শক্ষো তিরি শতায়ান্ত-বিপি বভাবাদবায়ো যাবদিত্যবায়মন-য়ঞ্চ। তদত্র কেষাং এচণং ভবিষ্ঠিতাহ সাহচর্মাবিবক্ষয়েতি নিশ্চিতাবায়ানাং বহুনাং সাহচ্যাথ য়াল্যবায়ালবায়ানি চ সন্তি তাল্যবায়াল্যব গৃহন্তে। তেনান্তরায়াং পুরি বসতি কিন্তে চৈত্রশু মৈত্রশান্তবেণ জ্ঞাতেন বিশেষেণ জ্ঞাতেনেতার্থঃ। রক্ষসাং নিক্ষা মাতা প্রিয়ায়ঃ সময়ায়তমিতাত্র দ্বিতীয়া ন ভবতি। হা বিপ্রমিত্যত্র প্রশ্রে মৃত ইত্যকং বিপ্রশক্ষ সম্ব্রিশক্ষানিরাসার্থম্। হা দেবন্তমিত্যক্র হাশকো রোদিত্গতশোক্রচনঃ দেবদ্তস্ত সম্ব্রাক্ত

শরি গ্রামন্। অনুপর্য পরিবোগে তু। উপযু গের বুদ্ধীনাং চরস্তী শরবুদ্ধর: । ইত্যুপরি বুদ্ধীনামুপরি চরস্তীত্যর্থ:। অধ্যধি গ্রামন্ অধ্যহেধা গ্রামন্ অভিতো গ্রামং পরিতো গ্রামন্ উভয়তো গ্রামং স্ববিতোগ্রামং নদীং যাবৎ যাবদাহত সংপ্রবন্।

৬০। লক্ষণেহভিপ্রতিপর্য্যনবঃ। গঙ্গামভিবসঙি।

লোকান্তরিত ইতি সম্বোধনে প্রাপ্তায়াং প্রথমায়াং দিতীয়েতি রক্ষিতেন যত্নজং তং কটাক্ষেণ দূষিতং তথাচ ন সমুদ্ধাবিতি স্ত্ৰক্কতাপ্যক্তম্। হ। ভাতেতি ক্রন্দিতমাকর্ণা বিষয় ইতি হা পিতঃ কাসি হে স্ক্রভ্র বহেবং বিল-লাপ স ইত্যাদয়ঃ শিষ্টপ্রয়োগান্চাত্র বহব এবাস্যার্থস্থায়ত্রাহক। দুশুস্তে। যা পদাস্তরসঙ্গদ্ধেন বিভক্তিবিধীয়তে সোপপদবিভক্তিঃ কণ্মাদিসংজ্ঞানিমিন্তা বিভক্তি: কারকবিভক্তিরূপপদ্বিভক্তের্বিষয়ে কারকবিভক্তি প্রাপ্তে কিং সাাদিতি শঙ্কায়ামাই উপপদ্বিভক্তেরিত্যাদি। হা হতেতাত্র হাযোগেন প্রাপ্তাং দ্বিতীয়াং বাধিতা কর্মণি বিহিতেন ক্রেন কর্মণ উক্তত্তাং প্রথমৈব ভবতি। নমস্যতি গুরুনিত্যত্র নমোযোগেন প্রাপ্তাং চতুর্থীং বাধিত্বা কর্ম্মসং-জ্ঞানিমিক্তা দ্বিতীয়ৈৰ ভৰতি। এবং নমস্কত্য মুনিত্রয়মিত্যত্রাপি। অস্করা ভাঞ্চ মাঞ্চ কমণ্ডলুরিত্যতা অধ্যাহতিয়া অন্তিক্রিয়া উক্তরাৎ কমণ্ডলোঃ প্রথমান্তবং ত্বাং মামিতি তু সম্বন্ধ্যক্ষীং বাধিত্বা দিতীয়া। উপ রুপরি গ্রামমি-ত্যানে উপর্যাধোহধয়ঃ সামীপ্যে ইতি বিঃ। সদ্বিক্তিরেব উপর্যাদিগণে পঠ্যতে ইতি স্টনায়াহ অনুপর্গপরিষোগে দিত্যুক্তম্। উভয়তঃ সর্বত **ইতি পঞ্চম্যান্তসিরিতি তসিঃ** : পরিতোহভিত ইতি তসিরভিপর্য্যোশ্চোভয়-সর্ব্বার্থমোরিতি তদিঃ। যাবদ্যোগে বাভিচারোহপি দুখ্যতে অস্মাকং যাবদাক্ষেপং ব্রতে। হা ধিক্ সময়া নিক্ষাস্তরাস্তরেণাভিতঃ পরিতঃ যাবৎ সূর্ব্বত উভন্নত উপর্যাধোহধি সধিকক্তমিতি হাদি:।

(৩০)। লক্ষণে বিনয়ে ভূতে অভিপ্রতিপর্যানবো হাদয়ো ভবস্তি। লক্ষ্যতেহনেনেতি লক্ষণং চিকুং জ্ঞাপকং হেজ্রিহাভিপ্রেতম্। গঙ্গামভি- ৬১। কিঞ্জিৎ প্রকারাপত্তো। সাধুবি,টিপ্রা মাতরমভি।

৬২। বীপ্সায়ামৃ। গৃহং গৃহমভিগীতম্।

৬**৩। অভিবৰ্জ্জং বিভাগে।** যন্মাং প্ৰতি স্যাতদ্দেহি।

াদতীত্যত্র গঙ্গা লক্ষণং বদন্ পুরুষো লক্ষ্যঃ তয়োর্গঙ্গাং প্রাপ্য বদতীতি প্রাপ্তিক্রিয়াজনিতলক্ষ্যলক্ষণসন্ধোহভিশব্দেন দ্যোত্যতে।

e D

- (৬১)। কিঞ্চিং প্রকারাপত্তী বিষয়ভূতায়ামভ্যাদরো হাদরো ভবন্তি।
 সাধুবিপ্রো মাতরমভীতি মাতরমিতি গুণঃ পিত্রাদেরিতি গুণঃ বিপ্রস্থ মাতৃবিষয়া সাধুভাবাপত্তিরাগ্যায়তে অত্রাপি মাতরং প্রাপ্য সাধুভাবাপত্তিরিতি
 প্রাপ্তিক্রিমাজনি হ এব মাতৃঃ সাধুভাবাপত্তেশ্চ বিষয়বিষয়িভাবসম্বন্ধেহিভিশব্দেন দ্যোতাতে।
 - (৬২)। পদার্থান্ ব্যাপ্ত মিচ্ছা বীক্ষা তস্যাং বিষয়ভূতায়ামভ্যাদ্রে। গদয়ো ভবস্তি। গৃহং গৃহমভিগীতমিতি পদস্ত সাকল্যাভীক্ষায়োরিতি দ্বিষ্ম। গীতমিতি ভাবে ব্রু: এচোহশিতীত্যাবং কিত্তে চেতি ঈকারঃ অঞ্জ বীপ্সা দ্বিকবৈক্তাব দ্যোত্যতে। অভিশব্দস্য তু গীতক্রিয়য়া গৃহাণাং য়ঃ সম্বন্ধঃ স্লোত্যঃ।
 - (৬৩)। অভিং বিহায় বিভাগে বিষয়ত্তে অভ্যাদয়ে। হাদয়ো ভবস্তি
 প্রতিপর্যানবা হাদয়ো ভবস্তাত্যর্থ:। স্বাক্রিয়মাণোছংশো বিভাগ:। য়য়াং
 প্রতিভাদি যোহত্র মম বিভাগঃ আভকতে স দীয়তামিত্যর্থ:। আভজনক্রেয়াজনিতঃ স্বীকরণক্রিয়াজনিতো বা স্বর্যামভাবোহত্র সম্বন্ধঃ প্রতিনা
 দ্যোত্যতে। ষয়াং প্রতি স্তাদিতি অমা বাং মামিতি অম্বদো মাং প্রতি
 স্থাদিতি অস ভূবি বিধিলিও ধাং লাস্ত্যোরদিত্যকারসুক্ প্রাহম্পানে রস্তেগাঁচোরিতি বহং ন স্থাং। দিতীয়ার্থায়িভপ্রতিপরিভ্যম্নেতি প্রতিষেধাং।
 দেহাতি ডুদাঞ্ দানে গোঁট হি দানাস্ত্যদেদ্বিল্ক চেতি একং দ্বিয়া্র্ক্ চ।
 সভিবজ্ঞ মিতি কিম্ ং য়য়ামভিষ্যাত্দীয়তামিতি অভেদিতীয়ার্থভাভাবাৎ
 রয়ং ভবত্যের। বদ্যেবং মামিভাত্র কথং দ্বিতীয়া ই উচাতে। তৎসম্দিউং

৬৪। উপো হীনে। উপ চৈত্রং মৈত্র!।

৬৫। অনুর্থীনসহত্তেত্বপি হাদিঃ। অনু বিপ্রাং বৈশ্যঃ পুত্রমন্বাগতঃ কন্যামনু শোকঃ।

৬৬। প্রতিভাতিশব্দ যুক্তাক।
ন প্রতিভাতি বুভুক্ষিতং কিঞ্চিৎ বুভুক্ষিত্ত কিঞ্চিম প্রতিভাদ তীভার্থঃ।

৬৭। ন সম্বুদ্ধো। হাতাত।

৬৮। কালাধ্যভ্যামবিচেছদে।

কর্মেতি ভবতি। যদ্যপাস্তিরকর্মকস্তথাপ্যকর্মকা হি ধাতবঃ সোপদর্গাঃ সক্মকা ভবস্তি।

- (৬৪)। হীন উৎকৃষ্টাপেক্ষ্যঃ হীনে: ৎকৃষ্ট্মন্ত্রকে দ্যোত্যে উপে। হাদিভবতি। উপ চৈত্রং মৈত্র ইতি চৈত্রাপেক্ষয়া মৈত্রো হীন ই হার্থঃ। হীনত্বং
 বিশেষণমুৎকৃষ্টত্বং বিশেষ্যং বিশেষণবিশেষ্যসম্বন্ধমুপশকো দ্যোতম্বতি স্বভাবাৎ
 বিশেষ্যস্ত প্রধানভাত্তংক্তেইনবাস্ত মুখ্যো যোগন্তেন চৈত্রে হিতায়া ন মৈত্রে।
- (৬৫)। অনুশকো হাঁনে সহার্থে হেতৌচ দ্যোত্যে হাদির্ভবতি।
 অপীতি সম্ক্রার্থ:। লক্ষণাদিষু অনোহাঁদিন্ধং ক্রতমেব হীনাদিম্পি
 ভবতীতার্থ:। হাদিরিতামুবুরারেব পুনহাঁদিপদং সমাপ্তিস্থচনার্থং হীনার্থঃ
 পূর্ব্যোগ এব ব্যাখ্যাতঃ। পুত্রমন্বাগতঃ কল্যামস্থশোক ইতি ক্রিয়াদিগৌণাৎ
 সহার্থ্যে হেতুচিক্লগোত্রাদেনিতি যোগদ্বমেন তৃতীয়ায়াং প্রাপ্তায়াং দিতীয়াবিধানম্।
- (৬৬)। প্রতিভাতিশন্দযুক্তাহন্তরে দ্বিতীয়া ভবতি। প্রতিভাতীতি প্রতিপূর্কো ভা দীণ্ডৌ ম্বদাদিঃ।
 - (৬৭)। সমৃকৌ হাদিযোগে দ্বিতীয়ান ভবতি।
 - (৬৮) ৷ স্ববিচ্ছেদশ্চ ক্রিয়া স্থানেন ভাবোন চ সম্ভবজীত্বাদাহবণ-

অবিচ্ছেদে গম্যমানে কালাধ্বভ্যামূত্তরে অমেট্শসো ভবস্তি।
মাসমধীতে। উভয়ত্ত দশাহানি কুলস্থান্নং ন ভূজ্যতে। একাদশ্যাং ন ভূঞ্জীত পক্ষয়োকভয়োরপীতি বাত্তল্যাৎ। যোজনং পর্ববতঃ ক্রোশং কুটিলা নদী মাসচতুষ্টয়মধীতে বর্ষশতং জীবতি।
জন্ম জন্ম যদভ্যস্তং দানমধ্যয়নং তপ ইত্যাদুর্শিচরিতকালস্থাৎ।

৬৯। কর্মবন্চ।

মাসোহধীতঃ রাত্রেরধীতা অহরপ্যধীতং নীতো মাসঃ স্থান। অবিচেছদ ইতি কিম্। মাসস্থ দিরধীতে। মাসস্থ মহত্তং ক্রোশস্য মহত্তমিত্যাদ্যবিচ্ছেদাবিবক্ষায়াম্।

অবমুপগুস্থন। মাসচভুইরমধীতে বর্ষশতং জীবতীতি কালস্ক স খ্যারাং কাল উপচরিতঃ। জন্ম জন্ম ঘদভাস্তমিতাত্র কালাবছেদিকারাং ক্রিয়ারাং কালস্তোপচারঃ। অকর্ম্মকধাভূপ্ররোগে উত্তর্যোগেন বিধানাৎ সকর্মক-ধাভূপ্রয়োগেহস্ত বিষরঃ অত্তর সকর্মকধাভূনামেব প্রয়োগো হ্রোদাহতঃ। বর্ষশতং জীবতীতি যদক্রোদাহতং ভত্নপচরিত্রকালার্থং দিভীরা ভূতর্যোগে-নৈব।

(৬৯)। বাজ্যাং কলাধ্বভ্যান্ অন্ উট্ শদো বিহিতান্তৌ কালাধবানো কর্মবন্তবত:। মাসোহবীত ইতি কর্মণি বিহিতেন জেন মাদস্থোক্তবং মৃথ্যপ্তাসন্তবে হাতিদেশিকং কার্যাং ক্রিয়তে যদা তু কর্জ্সমুদ্দিইং
কর্মান্তি তদা ততৈবোক্তবন্। মাসং কেদোহধীত ইতি মাসপ্ত দিরবীত
ইতি দিক্রিচতুর্জ্যঃ স্থারতি ক্রিয়াভ্যার্ত্তৌ হঃ বারম্বয়মধীত
ইত্যর্থ:। মাসপ্ত মহন্ত্রমিত্যক্রাবিচ্ছেদবিবক্ষা ন ক্রিয়ত এবাপ্রয়োগাং।
একাদশ্যাং ন ভুঞ্জীত ইতি যদা অবিচ্ছেদবিবক্ষা ক্রিয়তে তদা একাদশীং ম
ভূঞ্জীত ইতি ভবতি। প্রভূদাহরপদর্শনেন বন্ধ্যপ্রধানতাস্য প্রতিভাসতে।
ব্যপ্তাদিভ্যোহনিত্যক্র সপ্তম্যপ্রধান্ত্রম্য প্রাস্কত্যক্তং তন্মাত্তর্যাপ্রাদোহরু
মিতি।

৭০। অকর্মকধাতুপ্রয়োগেই ক্রিয়ান্ত রাক্তর্জাবে দেশ-ভাবাভ্যাঞ্চ।

মাসমাস্তে মাসমাসাতে দেবদত্তেন দিবসং শ্বপিতি দিবসমস্থপ্যত স্বন্দরীভিঃ ক্রোশং শ্বপিতি ক্রোশং স্থপ্যতে দেবদত্তেন শ্রুদ্ধং বসতি শ্রুদ্ধাতে ক্রন্ স্থপিতি ক্রন্ স্থপ্যতে গোদোহমাস্তে গোদোহমাস্তে ওদনপাকং স্থপিতি ওদনপাকং স্থপ্যতে। ক্রিয়ান্তরান্তর্ভাবে তু—মাস মাস্যতে দিবসোহস্থপ্যত ক্রোণঃ স্থপ্যতে
শ্রুদ্ধ উষ্যতে ক্রবঃ স্থপ্যতে গোদোহ আস্যতে অভিব্যাপ্যত্যর্থঃ।

৭১। ফলসিদ্ধৌ ক্রিংগেপরমে তৃতীয়া। মাসেনামুবাকো২ধাতো জ্ঞাতঃ ক্রেণেনামুবাকো২ধীতো জ্ঞাতঃ।

⁽१०)। অকর্মকরাত্প্রারোগেছবিচ্ছেদে গমামানে কালাধ্যভাগি দেশভাবাভ্যাঞ্চোত্তরেছক্রিয়াস্তর্জাবে অম্ ওট্ শসো ভবস্তি। কর্মবিচ্ছেতি নামুবর্ততে। অতএব মাসমাসিতেত্যাদৌ কর্জুরিত্যাদিনা ষষ্ঠী ন ভবতি। বদা তু ক্রিয়াস্তরাস্তর্জাবা ভবতি তদা মাসমাস্তে ইত্যাদৌ অন্তভূ তক্রিয়াস্তরাদিপ্রকার কর্মসংজ্ঞায়াং সত্যাং পূর্দ্ধেবৈব দ্বিতীয়া মাসমান্তে মাসমভিব্যাপ্য আন্তে ইত্যর্থঃ। তদা কর্মণি বিহিতেন তিঙা কর্মণ উক্তর্জাৎ মাস আগ্রতে ইত্যাদি ভবতি অতএবাহ অভিব্যাপোত্যর্থঃ। তথাচ ভাষাম্, আসনাদিপ্র্দিকায়াং প্রাপ্তাবাস্থাদীনাং বৃত্তিরিতি এবঞ্চ সতি মাসম্যাসিতা দিবসমা স্কল্লা ইত্যাদিন কর্মণ কর্মপি ভবতি। আন্ত ইতি অস্ উপবেশনে স্বপিতীতি ঞিশ্বপ্ শয়ে রুদাদেরিদ্ধলাযে ইতি ইৎ অস্থপ্যত ইতি কঙ্ ত বক্ অদাদিবচন্দ্র-পারিত্যাদিনা স্বপঃ উব্যত ইতি বস্ নিবাসে যক্ কিদাশীলে গারিত্যাদিনা বস উদ্বেশং শাসীত্যাদিনা মত্ম্। গোদোহমোদনপাক্ষিতি পুংসি ঘণ্ কারকে চেতি ঘণ্।

^{় (}৭১)। অবিচ্ছেদে গমামানে কালা প্রভাামুত্তরে ফলসিন্ধৌ সভ্যাং

অফলসিন্ধে তু। মাসমসুবাকোহধীতো নচানেন জ্ঞাতঃ।

৭২। কতৃ করণাট্টাভ্যাংভিসঃ।

কর্ত্করণাভ্যামূত্তরে টা ভ্যাং ভিদো ভবন্তি। দেবেন ক্রিয়তে দেবাভ্যাং দেবৈঃ। অখেন গ্রামং গচছতি মৈত্রঃ।

৭৩। সংজ্ঞোবা কর্ম্মণঃ। পিত্রা সংজানীতে পিতরম্।

৭৪। কৃতি ন স্থাঃ। মাতুঃ সংজ্ঞাতা।

ক্রিয়াপরিত্যাগে ভূতীয়া ভবতি। মাসেনেত্যাদি অধ্যয়নস্য ফলং জ্ঞানং আছ্ধারণমিত্যর্থঃ। মাসমমুবাকোঁহধীত ইত ত্র কর্ম্মক্তেতি কর্ম্মক্থেইপি মুখ্যস্য কর্ম্মণ এবানুবাকস্যোক্তত্বং ন মাসস্যোক্তত্বম।

- (৭২)। গছেতীতি গ্মুস্পুগতৌ শিতীত্যাদিনা গমুগছে।
- (৭৩)। সংপূর্বস্য জানাতে: কর্মণ উত্তরে টা ভাাং ভিসো বা ভবস্তি। সংজানীত ইতি জা অববোধনে সম্প্রতিভাগমন্মরণ ইত্যা গ্রনেপাং জ্যো জাশ্চেতি নাৎ জাদেশত নাহ্বাদেরিত্যাদিনা ঈত্ম। সংজানীতে পিত্রা পিতরমিতি পিতরং জানাতীত্যর্থ:। যদা তু স্মরণার্থ: প্রযুজ্ঞতে ভদা স্মৃত্যর্থহা চেতি কর্মণি ষষ্ঠী তয়া ভাক্তপক্ষেথনেন ভূতীয়া পক্ষে দিভীয়া চ। সংজানাতি মাতৃশ্মতা মাতরমিতি স্মরণার্থছাদা গ্রনেপদঞ্চ ন স্থাং।
- (98)। সংপূর্ব্বাজ্জানাতেঃ ক্বতি সন্তি কর্মণ উত্তবে টা ভ্যাং ভিসো ন ভবন্তি। কর্চুরিভ্যাদিনা কর্মণি ষষ্ঠী সিদ্ধৈব বিশেষবিধানাৎ ভূতীয়য় শক্ষে ষষ্ঠী বাধিতা স্থাদিতি তৃতীয়াবাধনার্থমিদং বিধানম্। মাত্রিতি কর্ম্ব রিভ্যাদিনা কর্মণি ষষ্ঠী ওসিওদোর্ড সিতি ভূস্ সংজ্ঞাতেতি ভূঙ্।

৭৫। চতুর্থী চ পরিক্রীঞো বেতনাদৌ করণে। শতেন পরিক্রীতঃ শতায়।

৭৬। হেছুচিহ্নগোত্রাদেঃ।

ফলসাধনযোগ্যো হেডুঃ। অশ্বয়ব্যতিরেকাব্যভিচারেণ জ্ঞাপকো বা হেডুঃ। হেডুচিহ্নগোত্রাদেরুত্তরে টা ভ্যাং ভিসো ভবস্তি। বিভায়া যশঃধ্মবত্ত্বনাগ্রিমান পর্ব ওঃ ছত্ত্রেণ ছাত্রমন্ত্রাক্ষীৎ গোত্রে-

(१৫)। পরিপূর্বস্ত ক্রীণাতেঃ প্রয়োগে বেতনাদৌ করণে বর্তমানা-চন্তরে টা ভ্যাং ভিসো ভবস্তি চতুর্থী চ। বেতনাৎ করণাণিতি ন ক্লতং বেতনশকাদেব করণাম্ভবতীতি শঙ্কানিরাসার্থম্। ভৃতীয়া সিদ্ধৈব চতুর্থার্থং বিধানম্। পরিক্রীতঃ শতেন শতায় ইতি শতেন বেতনেন নিবদ্ধ ইত্যর্থঃ।

(৭৬)। ফলসাধনেত্যাদি লোকে হি ফলসাধনযোগ্যো হেতুক্চাতে। অনিপাদররপি ফলং যোগ্যতামাত্রেণ হেতুর্ভবতীতি স্থচরিতুং যোগ্য ইত্যু-ক্রম্। তহুদাহরণং বিদায়া যশ: বিক্রা কাপাকুর্ব্বতাপি যশ: তৎসাধনযোগ্য-তামাত্রেণ হেতুর্বপিদেশমাসাদয়তি। অব্বয়েত্যাদি অব্যভিচারো নিরুম: यদ-ম্বব্যেন নিয়মেন যন্তবতি যন্তাতিরেকেণ নিয়মেন যন্ন ভবতি স জ্ঞাপকো হেতৃ-রত্মেয়ত বাশক: সমুচ্চয়ার্থ:। এতছদাহরণং ধ্মবন্থেনাগ্রিমান পর্বত ইতি হেতাবপি করণঘেন তৃতীয়া দিধাতীতি ন বক্তবাং হেতুকরণয়োর্ডেদাং। তথাহি-যদধীনবৃত্তিঃ কর্ত্তা স হেতৃঃ করণন্ত কর্ত্রধীনবৃত্তীতি। দাবি ত্যিত্র দারুণো হেতুছং ন বিবক্ষিতং কিন্তু বিকারেণ তদর্থতা হেতুছবিব-ক্ষায়ান্ত দারুণা যূপ ইতি ভবতি। সামাক্তাবগমে ইতরেভাো যন্তাবচ্ছিনন্তি তচ্চিত্র। ছত্রেণ ছাত্রমদ্রাক্ষীদিতি মহুব্যসামাক্তাঞ্ছাত্রখং ছত্রেণ ব্যবচ্ছি-রম্। অদ্রাক্ষীনিতি দৃশিরত্রোপলব্ধিবচনঃ উপলব্ধবানিতার্থ: দৃশিধাতোলু ওূ ত্তু সঙ্ সঙ্কদাগতেরীঙ্ত্বোরিতীঙ্ ঙিত্যে ইত্যাদিনা দুশো দ্রশ্ অনিঙ্হলন্তব্যেতি বৃদ্ধিঃ ভ্ৰদ্জাদীত্যাদিনা শস্ত ষঃ ৰশ্চান্তব্সেক ইতি ষ্ম্য ক: यदम्। গোত্ৰেণাহং বাৎশু ইত্যানৌ যত্ৰ ক্ৰিয়াপদং নাস্তি তত্ৰ সম্বন্ধ-মাত্রং প্রতীয়তে নতু কাপি ক্রিয়া। ন হি ক্রিয়েয়া বিনা কর্তৃকরণে সম্ভবতঃ

পাহং বাৎস্য: সমেন তিষ্ঠতি বিষমেণ ধাবতি প্রকৃত্যা ধার্ম্মিকঃ প্রায়েণ যাজ্ঞিকঃ দিলোণেন ধান্তং ক্রীণাতি পঞ্চকেন পশূন্ ক্রীণাতি সাহস্রেণাশং ক্রীণাতি স্বরূপেণ প্রিয়ংবদং স্বভাবেন স্বরলং জাত্যা ব্রাহ্মণঃ। ধনপতিগৃহাত্বস্তরেণাশ্মদীয়ং গৃহমিতি মেঘদূতে। নামা স্বতীক্ষশ্রেতেন দাস্তঃ।

৭৭। ক্রিয়াদিগোণাৎ সহার্থিঃ। ক্রিয়াগুণদ্রব্যসম্বন্ধে গোণাৎ সহার্থিযু ক্রাত্তরে টা ভ্যাং ভিসো

তরোঃ ক্রিয়াপেক্ষরাৎ তন্মাৎ তৃতীয়া যদা তু রুত ইত্যাদি গমাতে তদা কর্ত্রের তৃতীয়া তন্মাদেগাত্রাদেরিতি প্রপঞ্চার্য । বাংস্থ ইতি গর্গাদের্যণ্ পৌরাদারিতি যণ্। প্রারেণ যাজ্ঞিক ইতি যাজ্ঞিকলক্ষণভূমন্তং প্রায়শকার্থঃ সমেন তিষ্ঠতাত্যাদৌ ন করণত্বং বিবক্ষিতং কিন্তুইি ক্রিয়ানিশেষণত্বাৎ কর্মতং প্রাপ্রেরিত বিবেদ্ধিত বিবক্ষিত ত্বাৎ দ্বিতীয়া প্রাপ্রেরিত তথাহি রো রৌ দ্রোণৌ রুক্ষা ধাস্তং ক্রীণাভীত্যর্থঃ । এবং পঞ্চকেন পশূন্ ক্রীণাতি পঞ্চ পরিমাণমন্ত্রেতি পঞ্চকঃ সংখ্যায়াঃ করিংশহর্জ মিতি কঃ পঞ্চকং রুদ্ধা পশূন্ ক্রীণাতীত্যর্থঃ । সাহস্রেণাশ্বং ক্রীণাতাতি বিংশতিকাদেইনিতি টণ্। সহস্রং সহস্রং রুত্বা ক্রীণাতীত্যর্থঃ ৷ বিষমেণ ধাবতীত্যাদৌ করণবিবক্ষা সম্ভবত্যের প্রপঞ্চার্থতা পূর্বিম্কৈর কর্ম্মান্যক্ষেনাথকত্বেনাস্থ ব্যবস্থা বিষমং ধাবতি দিছোশং ক্রীণাতীতি প্রয়োগো ন স্থাৎ ৷ গোগ্রাদিরাক্রতিগণঃ উদাহরণাদ্হনীয়ঃ ৷ তেনাম্বনা শূরঃ পরিণত্যা মধুর ইত্যাদি দিধ্যতি ।

(११)। গৌণস্থ সহার্থিঃ সহ যোগে অবস্থানেব ক্রিয়াদিসম্বন্ধেন ভবিত্রাম্। ব্যাবর্ত্ত্যঞ্চান্থং নাস্তি এবঞ্চ সতি ক্রিয়াদীতি ক্রতং ঝটিতি প্রতিপত্ত্যর্থম্। যুক্ত্যুপনীতাদ্ধি শাকোহর্থো ঝটিত্যব্বোধং জনমতি ক্রিয়াগুণদ্রবাসম্বন্ধে ক্রমেণোদাহরণক্রয়ং বেল্ফ্রাম্। সূলত্ত্র মহন্ত্রসম্মানার্থতাং গুণগ্রম্। যস্য ক্রিয়াদিসমৃদ্ধঃ সাক্ষাংশকেন প্রতিপান্ততে তৎ প্রধানং যস্য ন প্রতীয়তে তল্গোণম এতচ্ছক্পক্রিম্বভারাং। স্বত্রধ্

ভবস্তি। পিত্রা সহাগতঃ পুত্রঃ পিত্রা সহ স্থূলঃ পিত্রা সহ গোমান্। শাকং সার্দ্ধং সঁমং সজুঃ।

৭৮। গম্যমানৈশ্চ সহাতির্ধঃ। রন্ধো যূনাগভঃ।

৭৯। তুল্যার্থেরতুলোপমৈর্ব।।
তুল্যো বিপ্রস্ত বিপ্রেণ। সদৃশো বৈশ্বস্থা বৈশ্বেন। তুলোপমাভ্যাস্ত্র। নাস্তি তুলা বিষ্ণোঃ নাস্ত্যপমা শিবস্থ।

সাক্ষাত্তরোঃ ক্রিয়াসম্বন্ধাভাবাৎ পিত্রা সহাগতঃ প্র ইত্যত্র দ্বিচনমপি ন ভূতন্। যদা ভূতরোঃ ক্রিয়াদিসম্বন্ধঃ সাক্ষাদ্বিক্ষাতে তদা পিতাপুক্রৌ সহাগতাবিতি ভবতি। পুলেণ সহাগতঃ পিতা ইতি প্রসিদ্ধোদাহরণমবধার্য্য পিত্রা সহাগতঃ প্র ইতি যদত্রোদাহতঃ তৎ পিতাপুরুসম্বন্ধে পুলো হৃপ্প্রধানং ভবতি। তেন পুলাৎ ভৃতীয়েতি মন্দধিয়াং শঙ্কানিরাসার্থম্। গৌণাদিতি কিন্ ? শিষ্যেণ সহোপাধ্যায়স্য গৌরীত্যত্র ষষ্ঠীং বাধিত্বা উপাধ্যায়শ্বরণ ভৃতীয়া স্যাৎ যত্যুপাধ্যায়স্য গাং প্রতি বিশেষণত্বনাপ্রাধান্তং শিষ্যন্ত প্রতি প্রাধান্তম্য ।

- (৭৮)। ক্রিয়াদিসম্বন্ধে গৌণাদ্ গম্যমানৈত সহাথৈর্বোগে টা ভ্যাং ভিসো ভবস্তি। যুনেতি যুবন্শকাং টাব উচ্ছ্বাদেরিত্যাদিনা বকারস্য উকার:।
- (৭৯)। তুলাথিঃ সদৃশাভিধায়িভিঃ শকৈর্যোগে তুলোপমাভ্যাং বর্জিতৈ ছা ভাং ভিসো বা ভবস্তি। পক্ষে সম্বন্ধহঠোব ভবতি। তুলো-পমাপ্রভিষেধনৈব বিনাপার্থশকেনার্থগ্রহণে সিদ্ধে যদত্রার্থশক্ষোপাদানং কৃতং তৎপদাস্তরনিরপেক্ষাব যে তু তুলাভামান্তঃ তেষামেবাত্র গ্রহণমিতি স্টনার্থম্। এতেন সাদৃশুদ্যোভকা ইবাদয়াে নিবার্ত্তভা ভবস্তি। অভাগেরিব গরয় ইত্যাদৌ ন তৃতীয়া। তুলোপমাশকাবত্র সদৃশজবাবচনৌ ন তু ধর্মবি চকৌ ভূল্যার্থছাপ্রসঙ্গাং। নান্তি তুলা বিক্ষোঃ তুল্যো নাজীভার্থঃ। তেন সাদৃশুং গ্রহপনিজ্বত্তগদ্ধৈরিত্যাদৌ তু গ্রমামানৈশ্চ সহার্থেরিতি গ্রমাননেন সহার্থেন তৃতীয়া। এবং তুলনাপ্তরেণাধি-

৮০। যেনাঙ্গী বিকৃতঃ।
সম্বন্ধিগবাং সম্বন্ধিনমান্ধিপস্তীতি যেনাজেনাঙ্গী বিশ্বতো তণ্যতে
তম্মাত্ত্তরে টা ড্যাং ভিষো ভৰম্ভি। অক্ষা কাণঃ পাদেন খঞ্জঃ
পৃষ্ঠেন কুক্জঃ।

৮১। স্ক্রেণাং ভ্যানঃ সম্প্রদানাং। । নিপ্রায় গাং দদাতি রাজা বিপ্রাভাগে বিপ্রেভাঃ।

৮২। নমঃস্বস্তিপাহাস্বধাবষট্শক্তাহৈর্থঃ। নমঃপ্রভৃতিভিঃ শক্তাহিশ্চ শদ্বৈযুক্তাহত্তরে ঙে ভ্যাং ভাগে।

রোহতীত্যাদ্যপি ভবতি। কশ্চিদাহ তুলোপমাশক্ষো সাদৃশ্যং ধর্মং বদতঃ
তরোঃ প্রতিবেধো জ্ঞাপরতি ধুর্ম্মিবচনেন তুল্যার্থ ইত্যানেন ধর্মবাচ্যপি গৃহতে। তেন সাদৃশ্যং গতমপনিদ্রচ্তগদ্ধৈরিত্যাদ্যপি সিধ্যতি।
প্রজ্ঞনা তুল্য ইত্যত্র হেতুম্বেন করণত্বেন বা তৃতীয়া নম্বনেন অন্তথা পক্ষাস্তরেহুপি ষষ্ঠী স্যাং।

- (৮০)। নম্ম কথমঙ্গেন বিক্নতেনাঙ্গী বিক্নতো ভণ্যতে অবয়বধর্মস্য সম্নায়ে অধ্যারোপাং। যথা আঢ্যমিদং নগরমিত স্বত্রে ভণ্যত ইতি ক্রিয়া-ধ্যাহারাং। যেনেতি হেতো করণে বা ভৃতীয়া উদাহরণে তু দ্যোতাতে। ভণ্যত ইত্যাদি ক্রিয়াপদাধ্যাহারস্যানভাইত্বাং হেতুত্বং করণত্বক্ষ নাস্তীতি স্ক্রমারব্বং ষঠ্যপ্রাদার্থম্। অক্ষিকানয়োনিমিন্তিনৈমিত্তকসম্বন্ধ্য বিদ্যমানতাং যথা স্বস্য পট ইত্যাদে প্রক্রতেরক্সথাতাঝে বিক্নতির্ন্ত কুৎসা। তথাচ—রম্যাণাং বিক্নতিরপি ভারং ভনোতি। তেন মুখেন ত্রিলোচন ইত্যাদ্যপি ভবতি। অক্রেতি অক্ষিশকাং টা অস্তোহন্ধিত্যাদিনা অন্ শ্পাদ্যছাত ইত্যাদিনা অকারনুক্।
 - (৮১)। গামিতি অম্শদোরোদাদিত্যারং দদাতীতি নিরিজ্ঞ ইত্যাদিনা বিত্তম্।
 - (৮২)। শকাথৈরিতি চিহ্নে তৃতীয়া চিদ্রক্ষ বোপে সতি ভবতি। মুখা ছত্ত্বেণ ছাত্রমজাক্ষীদিতি মত আহ শক্তাথৈর্ফাদিতি শেষঃ। নমঃ

জবস্তি। নম; শিবায় স্বস্তি রাজ্ঞে অগ্নয়ে স্বাহা স্বধা পিতৃভাঃ বৰড়িন্দ্রায় শক্তো মল্লো মল্লায়। অলং প্রভু পর্য্যাপ্ত প্রোথ সমর্থ ইত্যাদি।

৮৩। শক্তার্কির ষষ্ঠ্যপীষ্যতে। নাপ্রোথীদক্ষ কশ্চনেতি ভট্টি:। মমায়ং প্রভুরিত্যাদি।

৮৪। • হিতেন বা। অরোচকিনে হিতম্ অরোচকিনো হিতং পয়ঃ। • প্রামাদ্যদ্গুণিনাং হিতমিতি ভট্টি:।

শিবায় ইতি নম ইতি সাস্তমব্যয়ং বিশেষ্যভূতং প্রণামমাচষ্টে অতঃ সম্বন্ধষ্ঠাঃ প্রাপ্তায়াং চতুথী দ্রবস্থ বিশেষ্যদ্ব ক্রিয়ার্দিযোগঃ স্থাং অবায়ানাঞ্চ বিশেষ্য-পরতা দৃশ্যত এব যথা নির্দ্ধাক্ষমিতি নক্রা অভাবোহভিধী হতে। শক্ষো মল্লায় ইত্যক্ত করকবিভক্ত্যা প্রথময়া বাধিতত্বাং মল ইতি ন চতুথী। নমশ্চকার দেবেভা ইত্যাদে দেবেভাো নম ইত্যাস্যাব করোতিক্রিয়াব্যাপ্যত্বং নতু দেব ইত্যক্ত অতস্তক্র কর্মসংজ্ঞায়া বাধা। নমশ্বক্তা মুনিত্রয়মিত্যাদৌ তু নমংশব্দেন দ্যোতিত প্রণামার্থস্থ করোতের্ব্যাপ্যত্বাং মুনিত্রয়মিত্যক্র কর্ম্মস্থা। শক্ষো বাল্লা রাজ্ঞ ইত্যক্র ন শক্ষার্থসমূলে রাজ্ঞ ইত্যক্র ষষ্ঠা কিন্তু মলাভিস্পদ্ধে অতো বোগাভাবাত্তক্র ন চতুথী। অলংবোগে চতুর্থীক্রতিনান্তিঃ চতুর্থ্যাপর্যাদের্মানাদাবিতি নিত্যসমাদে বাক্যাভাবাদিতি কেচিছদক্তি। বাক্যমণি রথা ভবতি ভচ্চতুর্থীসমাদে বক্ষ্যামঃ।

- (৮০)। শক্তাথৈ শবৈষ্ কাৎ ষষ্ঠাপীষাতে। চতুৰ্থী ভবতোৰ। বেতি কৰ্ত্তব্যেহপীষ্যত ইতি ক্কতমসৰ্কবিষয়তামশ্য স্থচিয়তুম্। মমায়ং প্ৰভূৱিতি প্ৰভূশকো বদা ঈশ্বরবাচী তদা সম্বন্ধষ্ঠাৰ চতুৰ্থাবিষয়ত্বাৎ। অপ্ৰোধীদিতি প্ৰোথ্ পৰ্যাথো।
- (৮৪)। হিতশব্দেন যুক্তাহন্তরে গ্রে ভ্যাং ভ্যাসো ভবস্তি ব'। পক্ষে ষষ্ঠী চ। অরোচকিনে ইতি আরোচকশন্দারিন্দিতরোগাভ্যাঞ্চেতি ইন্। প্রামান্যদিতি মনী হর্ষে প্রপূর্কারঙ্ নিবানিত্বাৎ যং শন্দেলীর্ঘাই ইতি দীর্ঘাঃ।

৮৫। वाशिवि शिजामारेर्यः।

নৃপায় হিতং ভূয়াৎ নৃপক্ত পথ্যম্।

৮৬। আয়ুষ্যার্থঃ।

নৃপায় আয়ুষ্যং নৃপস্থ জীবিতং নৃপায় নৃপস্থ। 🖵

৮৭। ভদ্ৰাৰ্থঃ।

নৃপায় ভদ্রং নৃপশ্য ভদ্রং ভূয়াৎ।

৮৮। স্বস্থিবর্জ্জং কুশলার্থঃ।

নৃপায় কুশলং নৃপশ্য ভূয়াৎ নিরাময়ম্। স্বস্তিযোগে তু-স্বস্তি গোভ্যো ভূয়াৎ।

৮৯। স্থার্থঃ।

रूथः नृপाय नृপमा मः नृপाय नृপमा ।

৯০। প্রয়োজনার্থঃ ।

প্রয়োজনং নৃপায় নৃপস্য অর্থো নৃপায় নৃপক্ত।

৯১। তুঙ্গর্ভাৎ কর্মাণঃ।

তুমস্তো ধাতুর্গর্ভস্থিতো যত্র প্রতীয়তে তম্মাৎ কর্মণ উত্তরে ঙে ভ্যাং ভাসো ভবস্তি। কাষ্ঠায় ব্রঙ্গতি কাষ্ঠমানেতুং ব্রঙ্গতীত্যর্থঃ।

⁽৮৫।৮৬।৮৭।৮৮।৮১।৯১।৯০)। আশিষি গম্যমানায়াং হিতা
দার্থবাগে ভে ভ্যাং ভ্যাসো ভবন্তি বা পক্ষে ষষ্ঠী চ। আর্ষামিতি হিতার্থে
বং। স্বন্তি গোভ্যো ভূয়াদিত্যত্র নমঃ স্বন্তীত্যাদিনা নিতাং চতুথী স্বন্তিযোগে
বিশেষবিধানাদেব বাধা সিধ্যতি তথাপি স্বন্তিবৰ্জমিতি ক্বতং স্পটার্থম্।
সামান্তবিশেষপ্তার্বিচারাৎ শাকী প্রতীতিঃ স্থলভা ভবতি। আশিষীতি কিম্
প্রায়্যাং প্রাণিনাং স্বতম্।

⁽৯১)। তুম্প্রতায়সা কেবলস্যাপ্রয়োগাৎ স যত্র বিহিতস্তদ্-গছতে। স চ ধাতোরেব সম্ভবত্যত আহ তুমস্তো ধাতুর্মভিন্থিতো যত্রাস্টাতি গর্ভনদোহত্র গৌণঃ যথা গর্ভস্থিতোহদৃষ্টোহপি নিমিত্তেন প্রতীয়তে তথাত্র তুমস্তো ধাতুরিতি তৎপ্রতীতিশ্চতুর্থোবাভিধীয়তে

পাকায় ব্ৰন্থতি সম্পত্তয়ে ব্ৰন্ধতি পাৰ্কং সম্পত্তিঞ্চ কৰ্ত্ত_ং ব্ৰন্ধতী-তাৰ্থ:।

२। जमर्थाए।

যুপার দাক অত্থায় ঘাসঃ রন্ধশায় স্থালী।

৯৩। সম্পদ্যমানাৎ কৃপ্ত্যবৈষ্টি। মূত্রায় যবাগৃষ্ঠসংকল্পতে সম্পদ্যতে সংজ্ঞায়তে।

অন্তথা তদপ্রতীতে:। কাঠার ব্রহ্ণতীতি তুমন্ত আনমতিরত্র গর্ভস্থিত:
তৎকর্ম কাঠম্। নত্ন তদর্থাদিতানেনৈর চতুর্থী সিদ্ধা তৎ কিমর্থমেতৎ
ক্রিয়তে নিয়মার্থম্। তুমর্থান্তর্ভাবে চতুর্থী ভবন্তী তুম্বর্ভাবে ভবতি।
নতুদ্দিষ্টতুমন্তাৎ। কাঠমানেতুং ব্রন্ধতীতি। অথবা ষ্টাবাধনেন কতার্থা
তদর্থচতুর্থী গমামানক্রিয়া ব্যাপ্যত্বাৎ কর্মসংজ্ঞষাত্র বাধ্যতে তথাধনার্থং
বচনমিদম্। তুম্বর্ভাদিতি কিম্? কাঠমানেতুং ব্রন্ধতি। কর্মণ ইতি
কিম্? কাঠার দাবেণ ব্রন্ধতি করণেহপি চতুর্থী স্থাৎ।

- (১২)। তদিতানেন কিঞ্চিত্ত পরামৃশ্রতে অর্থশকঃ প্রার্থকে বিল্লাভিত্ত কর্মান্ত কর্মান্
- (৯০)। ক্রার্থিধ ভি্তির্কাৎ সম্পদ্যমানাহন্তরে তে ভ্যাং ভ্যসো ভবস্তি। মৃত্যায় ববাগু: সঙ্করতে ইতি মৃত্ত যোগ্যা ববাগৃবি কাররপেণ ভবতীত্যর্থ:। সম্পদ্যমানত্মত্র বিকাররপাপত্তি:। সঙ্করত ইত্যাদি ক্লপূ সামর্থ্যে ক্লপাদে: কুপাদিরিতি কুপাদেশ: গুণ:। পদ্ গতৌ জনী প্রান্ত্-* ভাবে দিবাদী জাদিরিত্যাদিনা জাদেশ:।

৯৪। নাবিকারবিবক্ষায়াম্। মৃত্রং যবাগৃঃ সংকল্পতে সম্পদ্যতে জায়তে।

२०। (छन्विक्नाश्राक्षा

মৃত্রং যবাথা: সংকল্পতে সম্পদ্যতে জায়তে। 🕟

৯৬। উৎপাতেন জ্ঞাপ্যমানাৎ। বাতায় কপিলিকা বিদ্যুৎ আতপায় লোহিনী বিদ্যুৎ।

৯৭। গত্যর্থস্থাপথ্যর্থাদ্বা কৃতি চ।
গতার্থস্য ধাতোঃ প্রয়োগে পথ্যর্থাদক্তস্মাৎ কর্ম্মণ উত্তরে কৃতি চ ঙে ভ্যাং ভ্যাসো বা ভবস্তি। গ্রামং গচ্ছতি গ্রামায় বনস্য গমনং বনায়। অপথ্যর্থাদিতি কিমুণু পস্থানং গচ্ছতি।

⁽৯৪)। অবিকার্ক্রবিক্ষায়াং পূর্ববেষারেণ প্রাপ্তায়াং ঙে ভ্যাং ভ্যাসেন ভবন্তি। মূত্রং যবাগৃং সম্পদ্যত ইতি অত্র বিকারো ন বিবক্ষিতঃ কিন্ত কারণতাম্যত্রং বিকারস্ত প্রকৃতিরূপারোপাৎ সামানাধিকরণ্যম্ অতএব দেব-দত্তস্ত সম্পদ্যন্তে শালয় ইত্যাদার্থপি ন ভবতি।

⁽ ৯৫)। ভেদবিবক্ষায়াঞ্চ ওে জ্যাং ভ্যাসো ন ভবস্তি। সূত্রং যবাগ্যাঃ সম্পানত ইতি জন্মর্যকর্ত্যু: প্রকৃতিরিতি যবাগ্যা ইত্যত্র পঞ্চমী।

⁽৯৬)। উৎপাতো ভাবিস্থা বিক্লতের্নিমিন্তং তেন বোধ্যমার্নাৎ ওে ভ্যাং ভ্যাসো ভবস্তি। বাতায় কপিলিকা বিহ্যাদিতি কপিলিকা বিহ্যাহংপাতঃ তেন জ্ঞাপ্যমানো, বাতস্তত চতুথা ভবতি।

⁽৯৭)। পূর্বব্রাৎ কর্মণ ইতান্বর্গতে অর্থগ্রহণাং ব্রজতীত্যাদি-ক্রিরায়া গ্রহণম্ কর্মণি বিহিতং দ্বিতীয়াং বাধিছা সাবকাশা চতুথা ক্রং-প্রব্রোগে ষষ্ঠ্যা বাধিতা স্থাদিতি শন্ধানিরাসার্থং ক্বতি চাত্রেতি কৃতম্। এতেন ভারে পক্ষে বিতীয়া ভবতি। ক্রংপ্রয়োগে তু ষষ্ঠা। পন্থানমিতি পথ্যাদে-রাত্রাদিনা আন্থো হশ্চ। অর্থগ্রহণাং মার্গং গচ্ছতীত্যাদি।

৯৮। নু গত্যুপচারে। মনসা স্বর্গং গচছতি।

৯৯। প্রাপণমৈথুনবিবক্ষায়াঞ। অজাং নয়তি স্তিয়ং গ্রুচছতি।

১০০। পক্ষান্তরেহপি কর্তৃকৃতি ন ষষ্ঠী। গ্রামং গন্তা•গ্রামায়।

১০১। কৃতি ষষ্ঠী বেতি ভাগবৃত্তিঃ ব গ্রামস্য গস্তা গ্রামায় বনস্থ গমনং বনায়।

১০২। পথ্যর্থান্ত কচিচ্চতুর্থী।

- (৯৮)। গত্যপচারে ক্বত্যপি তে ভ্যাং ভাসো ন ভবন্ধি। পূর্ব্বদেশ-পরিত্যাগে সতি উত্তরদেশসংযোগফলা হ্বি গতিঃ যত্র তহ্যা অভাবস্তত্র গতি-প্রয়োগ উপচারাং। অভএব মোহং গচ্ছতি নিদ্রাং গচ্ছতীত্যাদার্বপি ন ভবতি।
- (৯৯)। প্রাপণ ইতি প্রাপণার্থধাতোর্গ্রহণম্। প্রাপণার্থস্থ ধাতোঃ প্ররোগে গতার্থস্ত গাভোমৈ প্রার্থবিবক্ষারাঞ্চ কর্মণ উত্তরে কৃত্যপি ঙে ভাগে ভাসোন ভবস্তি। প্রাপণার্থধাতোর্গতার্থস্থাং যাশিজ্ঞেত্যাদিনা কর্মনাংজ্ঞ। ভূতা তথা চতুর্থাপি প্রপ্নোতীকি প্রতিষেধঃ। প্রাপণমৈপুনবিক্ষায়ামিত্যপলক্ষণং মুখ্যাদ্যাভার্থাদক্তামুপসর্জনীভূতাং গতিমুপলক্ষর্যতি। তেন গৃহং প্রবিশতি পর্বতশিধ্রমারোহতীত্যাদাবপি ন ভবতি।
- (১০০।১০১)। কর্ত্ক তি সতি পক্ষান্তরেহপি চতুর্থী স্থাং। তাকে পক্ষেন ষষ্ঠা। বঠাাং নিষিকারামুৎদর্গসিদ্ধা কর্ম্মণি দিতীয়েব ভবতীতার্থঃ। সামান্তেনৈব কৃতি ষষ্ঠা ন ভবতাতি জন্মাণিতাসম্মতম্। ভাবকৃতি বনং পমনমিতি লোকে প্রয়োগস্থাদর্শনাৎ কর্ত্তকৃতি ন ষষ্ঠীতি বিশেষস্ত এ স্ত্রকৃতা দর্শিতঃ। কৃতি ষষ্ঠা বৈতি ভাগবৃত্তিরিতি কৃতি সত্যানেন তাক্তে পক্ষে ষষ্ঠা ভবতি চতুর্থীং বাধিষ্ণৈবৈতি শক্ষানিরাসার্থং বাগ্রহণম্। কর্ত্তরি ভাবে চক্ষাত বিহিতে বন্ধী ভবতীতি স্বচনার্থং প্রয়োগ্রয়মুপ্রস্তব্য ।
 - (>•২)। অপথার্থানিতি প্রতিষেধস্ত সকোচং দর্শন্তি। পথার্থা-

উৎপথেন পথে গচ্ছতি।

১০৩। মক্ততিকর্মণোহনাবাদেরনাদরে।
মক্তে বাং তৃণায় তৃণং মক্তে বাং শুনে খানম্। নাবাদেস্তা। ন
বাং নাবনহং মক্তে যাবতীর্বং ন নাব্যম্। ন বাংমন্নমহং মক্তে যাবদ্বুক্তং ন শ্রাদ্ধন্। নৌ অন্ন কাক শৃগাল।

১০৪। যুস্মদাদেরনভিধানার স্থাৎ। স্বাং তৃণায় মন্তে দেবদক্তং তৃণায় মন্তে।

১০৫। অপাদানান্ত্রি ভ্যাং ভ্যসঃ। অপাদানাত্ত্তরে ঙসি ভ্যাং ভ্যসো ভবস্তি। রক্ষাৎ পত্রং পত্তি রক্ষাভ্যাং রক্ষেভ্যঃ।

১०७। यज् गर्जातः।

চোত্তরে কচিৎ ক্বতি চতুর্থী বা ভবতি। কচিৎ কম্মিরপি বিষয়ে। কোহ:সী বিষয়:। উৎপথেন পথে গচ্চতীতি বত্তাবম্বানা পদ্মানং গচ্ছতি তত্র প্রামাদি-বৎ পদ্মা এব গম্য: তত্র চতুর্থী ভবতীত্যর্থ:। পথে ইতি লুক্ শ্যাম্মচীতি মান্তলুক্।

(১০৩)১০৪)। মন্ততেধ তোন বিদেরক্তস্থাৎ কর্মণ উত্তরেহনাদরে গদ্যমানে ঙে ভাগং ভদাে ভবস্তি বা। অনাদরঃ পরিভবস্তিরস্থারো রাটা। মন্ত তীতি নির্দেশাং মন্ জানে ইত্যক্ত দৈবাদিকক্ত গ্রহণার্থঃ তেন মন্থ বাধন ইত্যক্ত তানাদিকক্ত গ্রহণাভাবঃ। শুন ইতি ব উচ্ছাদেরিত্যাদিনা বক্ত উকারঃ খানমিতি স্থটীত্যাদিনা দীর্ঘঃ। মন্ততীতি কিম্ ? ছাং তৃণং জানামি। অনাদের ইতি কিম্ ? অকারাঙং স্থতং মক্তে যক্ত মাতা ন পশ্যতি। ম্মাদাদয়াহিশি মন্ততঃ কর্মাণি ভবস্তোব তক্ত চতুর্থী কর্মার ভবতীত্যত আহ মুম্মদাদেরিত্যাদি।

(>•৫)। বৃক্ষাদিত্যাদি টাভিসিত্যাদিনা আৎ ভ্যামি দীর্ঘ ইতি দীর্ঘ: এন্তা ইত্যাদিনা একম।

(>৽৬)। ধজিতানেন বচ্প্রতায়ান্তো ধাতুগৃহতে কেবন্স্তা-

ষদ্ধো ধার্কুর্গর্ভস্থিতো যত্র প্রতীয়তে তম্মান্ত্রেরে ঙসি ভ্যাং ভাসো ভবস্তি। প্রাসাদাৎ প্রেক্ষতে প্রাসাদমারুহ্য প্রেক্ষত ইতার্থঃ। সাসনাশ্যোক্ষাতে আসনে উপবিশ্য ভোক্ষাত ইত্যর্থঃ।

১০৭। নাক্স্যাধিকরণাৎ। বলেনানয়তি বলেনাক্ষা আনয়তীতার্থঃ।

১০৮। ঋণাদকর্তৃতাদ্ধেতোঃ। শতাদ্বন্ধঃ। কর্তৃতাত্ত্ব। শতেন বন্ধিতঃ।

১০৯। গুণাদ্ধেতোরস্ত্রিয়াং বা।
জাড়াাদ্দ্ধং জাড়োন বন্ধ: পারিখাত্যান্মুক্তঃ পারিখাত্যেন মুক্তঃ।
পারিখাত্যং তত্ত্বজ্ঞানম্। স্ত্রিয়াস্কু—বৃদ্ধা মুক্তঃ প্রজ্ঞয়া মুক্তঃ।

১১০। কচিৎ স্ত্রিয়ামপীষাঁতে। ঘটো নাস্তীহামুপলক্ষে:।

ভাবাৎ। গর্ভস্থিত ইতি ন শব্দাদবগতোহর্থতস্ত্র প্রতীয়তে ইতার্থঃ। নাক-দ্যাধিকরণাদিতি প্রতিষেধাৎ কর্মণোহধিকরণাচ্চায়ং বিধিরিত্যাদাহরণদয়্ম্-পত্যস্তম্।

⁽১০৭)। কর্মনোহধিকবণাক্তান্তর উসি ভাগে ভাগো ন ভবস্থি। বলেনেতি করণে ভৃতীয়া।

⁽১০৮)। ঋণাদকর্তৃতাদ্ধেতোকত্বে ওসি ভাাং ভাসো ভবস্থি। গুলীভমপরিশুদ্ধং ধনমূণমূচানে। শতাদ্ধ ইতি বধ্ব দনে শত্স ঋণস্থ তেতৃত্বম্অতস্তীয়ায়াং প্রাপায়ামিরং পঞ্মী। শতেন বন্ধিত ইতি ণিঙ্জ-স্তবন্ধনক্রিয়ায়াং শত্সা প্রোজককর্তৃত্বং বিব্সিত্বং বন্ধন্য চ তদেব শত্ম্ ক্রণং হেতৃরপি।

⁽১০৯।১১০)। অস্থীলিম্বজে সতি চেতোগুণাছত্তরে ওসি ভ্যাং ভাসো বা ভবস্তি। শুণশব্দেনাত্র জ্বাাশ্রিতো গুণো ন গৃহতে এব কিন্তু

১:১। স্তোকাদের্ধ শ্ববাচিনঃ করণাং।
স্তোকান্ম ক্রঃ অল্লান্ম ক্রঃ অল্লেন ক্ছাম্ম ক্রঃ
ক্ষেত্রণ কভিপয়াম্ম ক্রঃ কভিপয়েন। অধর্মবাচিনস্ত — স্তোকেন
পরসা তৃপ্ত:। অকরণাত্ত — স্তোকঃ চলভি শ্রের পচভি।

১১২। প্রশ্নোত্রয়োরপাদানক্রিয়ায়া অপ্রয়োগে। কুতত্ত্বং বনাৎ।অনভিধানাদিহ ন স্থাৎ। কত্বং কস্থায়মশ্ব ইত্যাদি।

১১০। যঁতঃ কালাধ্বমানং মেয়ে কালে সপ্তম্যধ্বনি প্রথমা চ।

কার্ত্তিক্যা আগ্রহায়ণীমাসে গবিধৃমতঃ সাংকাশ্যাং চন্থারি যোজনানি চতুর্বু যোজনেষু।

সম্বন্ধিমাত্রং পরার্থক্ষপাপন্নমিতি তেন বহ্নিরত্র ধৃমাদিত্যাদাবপি পঞ্চমী ভবতি। পূর্ব্বাযোগাদ্ধেতোরিত্যন্তবৃত্তী প্রাপ্তান্থাং যদত্র হেতোরিতি ক্রতং তত্ত্ত্তরযোগেষু হেতোরিত্যস্যান্তবৃত্তিনিরাদার্থস্।

⁽১১১)। স্বোকাদের্ধ শ্বাভিধারকাং করণাহন্তরে ওদি ভাাং ভ্যাসো বা ভবস্থি। পক্ষে করণসংজ্ঞাকার্য্যং টা ভাাং ভিসো ভবস্তোব। স্বোকা-দয়ো হি শব্দাঃ স্বভাবাদ্গুণবচনাঃ ধনা স্বভেদোপচারাং স্বোকাদি গুণবতি দ্রবো বর্ত্তম্বে তনা অধর্মবাচিনো ভবস্তি স্বোকাল রুচ্ছু কতিপর ইতি স্থো-কাদিঃ। একার্থস্থেপ স্বোকাল্লক্ষ্ণ কতিপন্নানাং স্থোকার্থাদিতি ন রুতং পর্যায়াম্বরনিবৃত্তার্থম্। তেনেহ মা ভূৎ মাত্রয়া মৃক্তঃ স্বোকং চলতীতি অপৃথান্রপেত্যাদিনা কর্মন্তম্।

⁽১)২)। অপাদানহেতু: ক্রিয়া অপাদানক্রিয়া প্রশ্নস্য উত্তরস্য চ বাচকাচ্চকাদপাদানক্রিয়ায়াঃ অপ্রয়োগে সভি ওসি ভ্যাং ভ্যাসো ভবস্তি। যদা স্বাসক্তীত্যাদি ক্রিয়ায়াঃ প্রয়োগো ভবতি তদা পূর্ববোগেনৈবাপাদানসংজ্ঞা। কুত্রখনিতি প্রক্রঃ বনাদিতি প্রক্রান্তরম্।

⁽১৯৩)। যতঃ প্রভৃতি কালস্যান্তনো বা মানং পরিছেদ্ওস্থা-

১১৪। আরাদাদৈয়ে। আরাদাদ্যে: শকৈর্কাছত্তরে ওসি ভ্যাং ভ্যসো ভবন্তি। আরা-দ্গ্রামান্বসতি।

১১৫। আচ্। দক্ষিণা গ্রামান্বস্তি উত্তরা গ্রামাৎ।

১১৬। শাহি।
দক্ষিণাহি প্রামাৎ উত্তরাহি প্রামাৎ। তথাচ, উত্তরাহি বসন্ত্রামঃ
সমুদ্রাদ্রক্ষসাঃ পুরমিতি ভট্টিঃ।

১১৭। অন্তার্থঃ। চৈত্রাদন্তঃ। ভিন্নো ব্যতিরিক্তো বিলক্ষণ ইতরঃ।

ছন্তরে ঙসি ভ্যাং ভ্যসে। ভবস্তি। ষ*চ কালো মেয়ন্তত্র সপ্তনী। য•চাধ্বা মেয়ন্তত্র প্রথমা সপ্তনী চ।

- (১১৪)। আগছেলো দ্রসমীপয়োর্বর্ততে। আরাদ্গ্রামাদিতি উত্তরাদ্গ্রামাদিতি পঞ্চমাবিধানগামর্থ্যাদত্ত নাব্যয়ীভাবসমাসঃ। তদ্যুক্তাদিতাদিনা
 ষ্ঠীপঞ্চম্যোঃ প্রাপ্তয়োঃ পঞ্চমীবিধানং ষ্ঠীনির্ত্ত্যর্থম্।
- (১১৫)। আচ্প্রত্যয়ান্ত আরাদাদির্ভবতি। দক্ষিণা গ্রামাহত্তরা গ্রামাদিতি দক্ষিণোত্তরাভ্যামাচাদ্রে দ্রে তাহি চ ইত্যাচ্।
- (১১৬)। আহিপ্রতায়াস্ত আরাদাদিওবতি। দক্ষিণাহি গ্রামাদিও দক্ষিণোত্তরাভ্যামিত্যাদিনা আহি। নমু পূর্ব্বাদিছেনৈবারাদাদিকে সিদ্ধে আজাহী ইতি কিমিতি পৃথক্ পঠিতৌ। উচাতে। তদ্ধিতপাদে রিপ্রতায়-প্রভৃতয়স্তদ্ধিতপ্রতায়া ষত্র বিহিতান্তত্রাজাহী চ বিহিতৌ তয়োঃ র্যাদিছেনৈব গ্রহণে সতি ষঠী স্তাদতস্তব্বাধনার্থমনরোঃ পৃথগুপাদানম।
- (১১৭)। অন্তার্থ আরাদ।দির্ভবতি। ইতর শকোহপ্যক্তার্থ এব।
 তথাচ ভট্টি:, ইতরো রাবণাদের রাববালুচরো ঘদীতি অন্তাদয়ঃ সম্বন্ধিশকা
 যতোহনীযামক্তবং নিয়নেন তদপেক্ষত্তে তমাত্তেনৈব সহামীধাং
 মুখ্যো ধোগন্তত এব পঞ্চমী। অতএবাবধিভাবসম্বন্ধে পঞ্চমী
 ভবতি নতু সম্বর্ধান্তরে। গৌরেব ব্রাদ্ধণস্থান্তর্ব মতোহক্তমং তয়া গবাস্থানিরতঃ সন্ধরঃ ব্রবলেন তুসহ সম্বামিসন্ধানী নিয়ত ইতি।

১১৮। দিতেদশকা লার্থঃ পূর্ববাদিঃ। ইয়মদ্যাঃ পূর্ববা দিক্ ইয়মস্থা উত্তরা দিক্ গ্রামাৎ পূর্বেরা দেশঃ নাঘাৎ পূর্ববঃ পৌবং নাঘাত্বতরঃ ফাল্পনঃ।

১১৯। অন্চূত্রপদঃ। প্রাক্ গ্রামাৎ প্রত্যক্ গ্রামাৎ।

১২০। সীমাভিব্যাপ্ত্যোরাঙ্। অবনাদ্ফৌ দেবঃ। ১২১। বর্জনার্থাপপরী।

- (১১৯)। অন্চুক্তরপদং যস্য স আরাণাদির্ভবতি। প্রাণিতি প্রত্যাগিতি প্রস্থাৎ প্রতিপূর্মাচাঞ্চতেঃ কিপ্তদন্তাৎ প্রাণাদেরজনুক্ চেতি অং তল্লক্ চ অসৌ ক্লীবেংবায়ত্বে চেতি নকারলুক্ তদ্ধিতবদাদি দ্বাদবায়ত্বং পূর্মাদিত্বেনৈব সিদ্ধে অনচ্তরপদ ইতি কৃতং ঘানোরিতি প্রাপারাঃ ষষ্ঠ্যাঃ প্রতিষেধার্থম্। অন্চুত্তরপদো দিন্দেশকালার্থ এব গৃহতে তেন সম্ভাভ দেবদত্তেন সম্ভাভ দেবদন্তস্যাতি ন পঞ্মী সহাঞ্চাতি স্বাভ্
- (১২০)। সীমায়ামভিব্যাপ্তৌ চ বর্ত্তমানমাঙ্ আরাদাদির্ভবতি।
 সীমাভিব্যাপ্ত্যোরিতি বিশেষণমর্থাস্তরনিরাসার্থম্ আপিঙ্গলঃ আগতঃ তথাচ, ঈরদর্থে ক্রিয়াযোগে মর্যাাদাভিবিধো চ যঃ। এতমাতং ঙিতং বিছ্যাাছাক্যম্বরণয়োরঙিদিতি। আবনাদিতি বনসীমাপর্যাস্তং বনমভিব্যাপ্য
 বেত্যর্থঃ।
 - (১২১)। বর্জনার্থোহপ পরি চ আরানানির্ভবতি। অপ গ্রামা-

⁽১১৮)। দিদেশকালার্থঃ পূর্ব্বাদিরা াদাদির্ভবতি। দিদেশকালার্থ ইতি বিশেষণং যদি ন ক্লতং স্যান্তদা পূর্ব্বাদিরিত্যুক্তে দিগ্রুত্তেরের গ্রহণং স্যাং। ইয়মস্যাঃ পূর্ব্বা ইতি দিশ্রের পূর্ব্বাদিশকানাং মুখ্যতাং দেশকাল-রন্তিতা তু পূর্ব্বাদীনামুপচারাং। ন চ বাচ্যমসতাম্মিন্ যত্র পূর্ব্বাবয়বর্তিঃ পূর্ব্বাদিশক স্তত্রাপি পঞ্চমী স্যাং। পূর্বাং কায়স্য পূর্বাং ছাত্রাণামানন্তর্মম্ব ইতি যতোহংশিষ্ঠ্যা পূর্বাদেঃ প্রথমারা ইতি ষ্ঠীসমাসবিধানসামর্থ্যাদেবা-বয়বাবয়্বিসম্বন্ধে ষ্ঠী ভবিষ্যতি ন পঞ্চমী।

অপ গ্রামাদ্রেটা দেবঃ পরি গ্রামাদ্রেটা দেবঃ।

১২২। প্রতিদানে সাদৃশ্যে চ প্রতি। *

মাধানশ্মৈ তিলেভ্যঃ প্রতিযক্ততি অভিমন্ত্যুরর্জ্জ্নতঃ প্রতি।

১২৩। ঋশ্ভেষুক্তাদ্দিতীয়া চ। দেবাদৃতে ফুলং নাস্তি দেবমৃতে ফলতি পুরুষারাধনমৃতে ইতি পুষ্পদস্তঃ।

১২৪। পৃথধিনানানাযুক্তাভূতীয়া চ।
পৃথগ্দেবাৎ দেবং দেবেন বিনা দেবাৎ দেবং দেবেন নানা দেবাৎ
দেবং দেবেন।

দৃষ্টো দেব ইতি গ্রামস্য বর্ষণেন বর্জ্জনং পরিহরণম্ অপশক্ষেন দ্যোত্যতে। পরিপ্লানোহধ্যয়নায় পর্যাধ্যয়নঃ অপগতঃ শাথায়াঃ অপশাথ ইত্যাদৌ ভূ পর্যাপাভ্যাং ক্রিয়াযোগো নাধ্যয়নাদিভিঃ শকৈরিত্যতো ন পঞ্চমী।

⁽১২২)। দন্তস্য প্রতিনির্ঘাচনং প্রতিদানম্। প্রতিদানে সাদৃশোচ বর্ত্তমানঃ প্রতিশব্দঃ আরাদাদির্ভবতি। মাধানকৈ তিলেভাঃ প্রতিষচ্ছতীতি পূর্ব্বগৃহীতানাং তিলানাং মাধৈঃ শোধনং করোতীতার্থঃ। অভিমন্যরজুনতঃ প্রতীতি অভিমন্যরর্জ্জনত সদৃশ ইতার্থঃ। অত্র শোধাশোধনসম্বন্ধঃ উপমানোপমেয়সম্বন্ধ প্রতিনা জোতাতে অতঃ ষষ্ঠাাং প্রাপ্তায়াং
পঞ্চমী। যদ্যপি প্রতিযোগো মাধেষপি বর্ত্ততে অভিমন্তাবপি তথাপি
কারকবিভক্তা বিতীয়ন্ত্রা প্রথময়া চ পঞ্চমী বাধ্যতে।

⁽১২৩)। ঋতেবৃক্তাচ্চন্দাতৃত্তরে ঙদি ভ্যাং ভাসো ভবস্তি দিতীয়া চ। ঋত ইত্যান্যয়ং বন্ধ নার্থে বর্ত্ততে।

১২৪)। চকারেণ গুসি ভাাং ভাসো দ্বিতীয়া চাত্ত্রনাতে। পৃথগাদি
যুক্তাত্ত্বাছত্তরে গুসি ভাাং ভাসো ভবন্তি দ্বিতীয়া তৃতীয়া চ। পৃথগাদীনামে হার্থানামুপাদানং পর্য্যায়ান্তরনিরাসার্থং তেন হি রুক্ দেবলপ্তত্তেভি
পঞ্চমী ন ভব্তি।

১২৫। ধর্মবাচিদ্রনিকটার্থাতাঃ সপ্তমী চ তদ্যুক্তাৎ ষষ্ঠীপঞ্চম্য

গ্রামস্থ দূরান্বসতি থামান্দুরং দূরেণ দূরে। অধর্মবাচিনস্তা। দূরো গ্রামঃ।

১২৬। আশিষি হিতাদ্যর্থযোগে বঁডীপঞ্চ্য্যানের। দূরং হিতং গ্রামস্থ গ্রামাৎ ভূয়াৎ।

১২৭। অধিকযুক্তাৎ পঞ্চমীসপ্তম্যো। কুড়বাদধিকঃ প্রস্থঃ কুড়বেহধিক:।

১২৮। বহিযুক্তাৎ ষষ্ঠীপঞ্ম্যো। গ্রামস্য বহিঃ গ্রামাদ্বহিঃ।

১২৯। ওদোসামঃ সম্বন্ধে। স্বস্থাম্যাদিসম্বন্ধে গম্যমানে সম্বন্ধিনোহপ্রাপ্তবিশেষাত্নতরে ওসো-সামো ভবস্তি। রাজ্ঞোধনং রাজ্ঞোঃ রাজ্ঞাম্।

⁽১২৫)। ধর্মবাচিনো দ্রার্থারিকটার্থাচোত্তরে ভান্তিশ্রো বিভভারো ভবন্তি। সপ্তমী চ। তা ইতি ক্বতং পূর্ব্বোক্তানাং পঞ্চমীদিতীয়াতৃতীয়ানাং বিধানার্থম্। চকারমাত্রেণাস্থরকৌ সন্নিহিতায়া এবামুবৃত্তিরিতি শকা স্যাৎ। ভদিতানেন ধর্মবাচিদ্রনিকটার্থা পরামর্শা:। ধর্মবাচিদ্রনিকটার্থযুক্তাৎ ব্রতীপঞ্চম্যৌ ভবতঃ। দ্রাদিশকা যদা দ্রধর্মবিতি
গ্রামানে বর্ত্তক্তে তদা ন ধর্মবাচিনাঃ।

⁽১২৬)। দ্রনিকটার্থযুক্তাজন্দাহন্তরে আশিষি বিষয়ে হিতাদ্যর্থযোগে-হপি সতি ষষ্টাপঞ্চমাবেব। আশিষি হিতাদার্থৈরিতি চতুর্থী প্রাপ্তে। তদ্বা-ধনার্থমিদম্। এবকারোহবধারণার্থঃ। অন্তথা চতুর্থ্যপি পক্ষে ভবতীতি কন্তাপি শক্ষা স্থাং।

⁽১২৭)। অধিকশব্দেন যুক্তাহত্তরে পঞ্চমীসপ্রমার ভবতঃ।

⁽১২৮)। বহিঃশব্দেন যুক্তাত্ত্তরে বন্তীপঞ্চমার ভবতঃ।

⁽১২৯।১৩০)। স্বস্থাম্যাদীত্যাদি স্থং ধনং স্থামী ধনাধিপতিঃ। আদিশন্দেনাবয়বাবদ্ধবিজন্তজনকাধারাধেয়াদয়ো গৃহস্তে। স চ সম্বন্ধ উভয়নিঠো ভবতি। এবঞ্চ সতি উভয়োদ্ধনি বন্ধী প্রাণ্ডোতাত আহ

১৩০। কর্মাদিবিষয়েহপ্যবিবক্ষিতে কর্মাদে সম্বন্ধ-বিবক্ষায়াং ষষ্ঠ্যেব।

মাষাণামশ্বীয়াদিতি ভাষ্যম্। ন চ স্ক্লিছাত কম্মচিদিতি ভট্টিঃ। সা লক্ষ্মীরূপকুরুতে স্ক্রা পরেষামিতি কিরাতঃ। নারায়ণস্থাস্থ-করোতীত্যাদি।

১৩১। হেতুযুক্তাদ্ধেতোঃ। সঙ্গস্ত হেতোর্গসভি। কেচিদত্র বেভি পঠস্তি। তেন ব্রাহ্মণেন হেতুনা পুংযোগাদ্ধেতোরিত্যুপপন্নং ভবভি।

সম্বিনাং প্রাপ্তবিশেষাদিতি। অপ্রাপ্তেরী বিশেষে। যেন সম্বন্ধিনা তন্মাৎ কেন চ বিশেষাে ন প্রাপ্তঃ। যত্র বিধানাস্তরং নাস্তি এতেনৈত চুক্তং ভবতি সামান্তবিধানমেতং। সামানাস্ত বিশেষেণ বাধা কক্ত ন সন্মতঃ। তন্মান্ধনামিতাাদৌ বিশেষবিধিরের ভবতি। তেন ত্যক্তোংক্ত বিষয়ঃ। যদ্যেবং নাষাণাম নীরাদিতাাদৌ কথং কর্মাদিবিষয়ে ষষ্ঠা অত আহ কর্মাদীতাাদি। অবিবন্ধিত কর্মাদিবিষয়ে অপ্রথানা নায়ং বিষয় ইতি মাষাণামিতি তৎসমৃদিপ্তং কর্মেতি ন কর্ম্মণজ্ঞা। ন চ শ্লিহুতি কক্তচিদিতি ষদভিপ্রেতঃ ধান্ধর্থ ইতি ন সম্পুদানম্বন্ধ। সা লক্ষ্মীকপক্ষতে যয়া পরেষাং নারায়ণ্তাম্বনরে তীতি কর্মান্ধক ন বিবন্ধিতম্। আদিশব্দেন মৃতক্ত পূর্ণমিত্যাদি সম্বন্ধনীয়ম্ অতএব, মধুন ইব তথৈবাপূর্ণমদ্যাপি ভাতীতি মান্ধঃ। অতএক করণত্বং মধুনাে ন বিবন্ধিতম্।

(১৩১)। হেতৃশব্দেন যুক্তাহন্তরে ওলোসামো ভবস্তি। হেতৃশব্দাদ-প্যস্তে অত্র চকারো লিপিকরপ্রমাদাং পতিত ইতি লক্ষ্যতে। হেতৃশব্দয়েরে ষষ্ঠীবিধানাং ভৎপর্যায়শব্দযোগে তৃতীব্রৈব ভবতি। আত্মনা নিমিত্তেন বসতি। ব্রান্ধনেন হেতৃনেতি হেতৃচিহ্নগোত্রাদেরিতি তৃতীয়া প্ংযোগা-ক্ষেত্রেরিতি গুণাদ্ধেতারস্ত্রিয়াং বেতি পঞ্চমী। ১७२ । शिटेलाः ।

রিপ্রভৃতিভিন্তদ্বিতাক্তঃ শব্দৈযুক্তাত্বনে ছসোর্দামো ভবস্থি। উপরি গ্রামস্থ বসতি।

১৩৩। রিষ্টাৎ।

উপরিষ্টাদ গ্রামস্ত।

১৩৪। অস।

পুরো গ্রামস্য।

२०६। खाँद।

পুরস্তাদ্গ্রামস্থ।

५०७। वार्।

উত্তরাদ গ্রামস্য।

১৩৭। অতস্।

উত্তৰতো গ্ৰামস্থ।

১৯৮। এনপা দিতীয়া চ। কিলো গ্রেম

দক্ষিণেন গ্রামস্থ গ্রামম্।

১৩৯। বহুলবচনাৎ কচিৎ পঞ্চমী।

(১৩২ । ১ ত । ১৩৪ । ১৩৫ । ১৩৬ । ১৩৭)। আদিশকেন রিপ্তাং অস্ স্থাৎ আৎ অতস্প্রতায়া গৃহস্তে। এতে প্রতায়া দিক্শকেতাঃ স্বার্থ এব বিধীয়স্তে। দিকেশকালার্থঃ পূর্বাদিরিত্যারাদাদিয়াৎ পঞ্চমাং প্রাপ্রায়ায় ষষ্ঠাবিধানম্। উপরি উপরিস্তাদিত্যর্জশকাৎ রিরিস্তাদ্র্জান্তস্তোপশ্চ দিক্দেশকালেছিতি রিরিস্তাৎপ্রতায়ৌ উর্জাশকান্ত রিরিস্তাদ্রাদ্রতি পূর্বাশলাৎ স্তাদেশে পূর্বাপরাধ্বেতাঃ পূরাবাধ্বেতি স্থাদেশে প্রতায়ৌ পূর্বাপরাধ্বেতাঃ পূরাবাধ্বেতি স্থাদেশে প্রাদেশে উত্তরাদিতি দক্ষিণোত্তরাভ্যামিত্যাৎপ্রতায়ঃ। উত্তর ইতি দক্ষিণোত্তরাভ্যামিত্যাদিনা অতস্প্রতায়ঃ।

(১০৮।১০৯)। এনপ্তন্ধিত প্রায়ান্তেন যুকাছ্তকে ওলোদামো

ককোণিঃ কূর্পরাদুধঃ মথুরা পাটলিপুব্রুকেণ্ড্য আচ্যতরা কাকাৎ কৃষ্ণঃ বালাঘালঃ।

280 । कर्याणा वा **मश्रांत्मः**।

দয়াদেং প্রয়োগে কর্ম্ম উত্তরে ঙসোসামো বা ভবস্তি। ভক্তং দয়তে ভক্তস্ম ভক্তমীফে ভক্তস্য যথেফং বিনিযুঙ্ক ইত্যর্থ:।

১৪১। স্বত্যর্থস্থ চ।

মাতু: স্মরতি মাতরং মাতরমধ্যেতি মাতুঃ। অধ্যয়ং স্মরণবিশেষঃ।

>৪২। ভাববা**চিনঃ প্রয়োগে ষষ্ঠ্যেব**।

ভবন্তি। দ্বিতীয়া চ। ধাদিবাৎ ষষ্ঠাং প্রাপ্তারাং পক্ষে দ্বিতীরার্থং বচনম্।
দক্ষিণেনেতি এনবধারাচেতি এনপ্প্রত্যয়:। অধ ইতি অধরশন্ধাৎ
ন্তাদসাবিত্যাদিনা অস্প্রত্যয়োহধাদেশক। মধুরা পাটলিপুত্রকেভা আঢ়তরা
ইত্যাদৌ বর্গাজ্জাত্যাদিভি: পৃথকরণ ইতি ষষ্ঠীসপ্রয়ো: প্রাপ্তয়ো: পঞ্চমী।
যশ্মিন্ পৃথক্করণে বিভাগো বিদ্যুতে সোহস্থ বিষয়ঃ।

⁽১৪০)। নহু মাশাণামগ্রীয়াদিত্যাদৌ কর্মণি বিষয়ে বথা বচী তথাত্রাপি ভবিষাতি কিং লক্ষণৈস্তদেতানি নিয়মার্থানি দয়াদেঃ প্রয়োগে কর্মণ এবাবিবক্ষাযাং বচ্চী ভবতীতি নতু কারকাস্তরক্ত। তেন মাতৃশু গৈদ্রত ইত্যাদৌ করণবিষয়ে ন বচ্চী। দয়ত ইতি দয়্ দানগতিরক্ষণহিংসাদানের ভাদিঃ। ঈষ্ট ইতি ঈশ্ ঐশার্যে অদাদিঃ অস্কেত্যাদিনা শশু য়য় ঘটবর্গাদিত্যাদিনা তথা টঃ। ঈশ্ধাতুরকর্মকঃ কথমপ্ত সকর্মকন্থমিত্যাদ্দামাহ যথেইং বিনিয়ুজ্ক ইত্যর্থ ইতি এতেনানেকার্থসাদ্দাক্রশ্বক্ষং দর্শিতম্।

⁽১৪১)। স্বৃত্যর্থক ধাতোঃ কর্মণ উত্তরে গুলোসামো ভবস্তি বা। অধ্যেতীতি ইক্ সরণে ९ 'দিরধিপূর্কঃ।

⁽১৪২)। ভাববাচিনো ভাববিহিতন্ত লড়াদেদ রাদেঃ প্রয়োপে হঠ্যের ভবত্তি নাক্তা বিভক্তিরিভার্কী। স্বাদেব বঁটাবিধানসাম্প্রাঞ্

ভক্তত দ্ব্যতে দ্বেদ্তেন ভক্তয়োদ থিতম্। ভক্তানামীব্যতে মাকু: স্মর্যতে মাকু: স্মৃতম্। এবং দর্বত্ত দ্য়াদিষু।

১৪৩। গুণোৎকর্ষে কৃঞঃ। পটস্যোপস্কু রুতে পটম্।

১৪৪। রুজার্থস্থ স্বার্থ কর্তৃত্ব। রোগো রুজতি চৌরং চৌরস্থ আমঃ আময়তি চৌরং চৌরস্য। অস্বার্থকর্তৃত্বে তু—নদী কূলং রুজতি।

১৪৫। ন জ্বিসন্তাপ্যোঃ।

সভাপি কর্ম্মণি ভাববাচিনঃ প্রত্যয়স্ত প্রয়োগো বিজ্ঞোঃ। অতএব রুৎপাদে জ্ববিধানেনোক্তং কর্ম্মোপাদানেহপি ভাবে প্রভায়ো ভবতীতি। অথবা প্রথমং ভাবে প্রভায়ং রুদ্ধা পন্চাৎ কর্ম্মণা সহ সম্বন্ধো বিধের ইতি। দ্যাত ইত্যাদি ফ্রিক কর্মনি স্থাৎ তদা ভক্তপ্রোক্তরং ভবেৎ। দ্যিতমিতি ভাবে ক্তঃ যদি কর্মনি স্থাৎ তদা দ্বিচনমুক্তং ভবেং। ঈষাত ইতি অঞাপি বছবচনং ভবেং।

- (১৪৩)। গুণোৎকর্ষে গম্মানে করোতেঃ কর্মণি ওসোসামে। বা ভবস্তি। নাত্র বৈশেষিকসিদ্ধো গুণো গৃহীতঃ কিন্তু যেন ধর্মেণ যদ্ধন্ত লোকে প্রকাশতে স তক্ত গুণা তম্মাৎ গুণাস্তরোৎপাদনমুৎকর্ম্বঃ। উপস্কু কৃত ইতি উপাদ্ গুণোৎকর্ম ইত্যাদিনা স্কৃত্ব প্রতিষক্তে আত্মনুনপদম্।
- (১৪৪)। রুজো ভঙ্গে বিদ্ভিদাদেরাদিত্যাৎ। রুজা অর্থ্যে যশু স ক্ষজার্থ: রুজার্যশু ধাতো: প্রয়োগে কর্মণ উত্তরে গুদোসামো বা ভবস্তি স্বার্থকর্ত্ত্বে সতি। ধাতো: স্বভাব: স্বার্থ: তৎকর্ত্ত্বে সতীত্যর্থ:। এতেন ভাবপ্রত্যায়ায়ানাং রোগাদিপদানাং কর্ত্বে সতীত্যর্থে। লভাতে। রোগো রুজতি চৌরমিতি রুজ্ধাতোরর্থে। রোগা: ত্র্যাত্র কর্ত্বেং রুজতীতি তুদাদি-সাচ্চে:। আময়তীতি অম্ রোগে। নদী কৃলং রুজতীতি ন হি নদী কর্ত্রী: ন রুজ্ধাতোরর্থ:।
- (১৪৫)। জরে: সন্তাপেন্চ প্রয়োগে স্বার্থে কর্তৃত্বে সন্তি কর্মণ উত্তরে ওলোসামো ন ভবস্তি। চৌরং জরমতি জরঃ সভাপয়তি সন্তাপ

চৌরং স্বরমতি স্বরঃ চৌরং সন্তাপয়তি সন্তাপ:। চৌরস্য সন্তাপয়-তীতি চাম্দ্রাঃ।

১৮৬। আশিষি নাথঃ। আশীরভিল্যিতপ্রাপণ্ডেছা। নাথতে পুত্রং পুক্রস্য।

>৪৭। জাস্যাদৈহি 'সোয়াম্।
চৌরমুজ্জাসয় ভি চৌরস্য। প্রণিহন্ নিপ্রহন্ প্রহন্ নিহন্ নাটি
ক্রাথি জস্থ নট ক্রথ চুরাদয়ঃ পিষু। •

ইতি জর রোগে প্রয়োজকে ণিঙ্বৃদ্ধিঃ ঘটাদিঘাদ্র : তপ্ধৃপ্ সস্তাপে পূর্মবিধিঙ্।

(১৪৬)। আশিষি বিষয়ে নাগতেঃ প্রয়োগে কর্মণ উত্তরে গুসোসামো বা ভবস্তি। নাথতে পুত্তমিতি নাথ নাধ্ব যাক্ষোপতাপৈশ্বর্যাশীঃম্বিতি ভাদি: নাথেরাশিষীত্যাত্মনেপদং পুত্রো যন্ত নাস্তি স আশাস্তে পুত্রো মে ভূয়াদিতি। আশিষীতি কিম্ গুপ্রিয়ং নাথতি যাচতে ইতার্যঃ।

(১৪৭)। জাস্তাদেং প্রয়োগে হিংসায়াং গমামানায়াং কর্মণ উত্তরে গুসোসামা বা ভবস্তি। জকু হিংসায়াং জক্ষ তাড়নে এতৌ চুরাদৌ পঠোডে দ্রোরপি গ্রহণং ন দিবাদের্জক্ম মোক্ষণে ইত্যন্ত ভন্ত হিংসার্থাভাবাৎ। নকু যদি হিংসার্থাভাবাদেব দৈবাদিকস্থান গ্রহণং তদা কথং জাস্তাদেরিছি ক্রে নিঙ্কামিহিতেন ধাতুকথনেন ইঙক্তেনায়ং নির্দেশঃ তবৈতাদৃক্ রন্তিকতো-হভিপ্রায়ঃ। বিক্রভনিদেশস্ত যত্র জাসীতি রূপং তত্র যথা স্থাৎ তেনেহ মাভূং। চৌরমঙ্গাজসদিতি অত্র হি জক্ষ্যাতোর্ণিঙ্ লুঙ্ হঙ্ শ্রিক্রন্তা ক্রেরাবিত্যাদিনা সন্বস্থাবাদেরিতি হ্লয়ঃ নিল্লিড়ান্তেত্যাদিনা দিক্রিজঃ ক্রেরাবিত্যাদিনা সন্বস্থাবাদেরিতি হল্মঃ নিল্লিড়ান্তেত্যাদিনা দিক্রিজঃ ক্রেরাবিত্যাদিনা সন্বস্থাবাদেরিতি হলমঃ নিল্লিড়ান্তেত্যাদিনা দিক্রিজঃ ক্রেরাবিত্যাদিনা সন্বস্থাবাৎ ইদ্মিরানিতি অকারস্থ ইঙ্ং ততো দীর্মঃ। গণে নাটি ক্রাথি ইতি বিক্রন্তনিদে শ্রভাপোতদেব ফলং তেনেহ ন ভর্বতি দক্ষ্যমনীন্টণিতি বিপ্রমচিক্রথদ্বিতি নত অবন্ধন্দনে ক্রথ হিংসায়াং চুরাদী দ্রোরত্র গ্রহণং পট্ নৃতিগত্যাঃ ক্রথ ক্রথ হিংসায়ামিতি ভানী ঘটাদী তরানাম্ব

১৪৮। বিষঃ শত্রক্তক্ত। চৌরং বিষন্ চৌরস্য।

১৪৯। ব্যবহাঞ পণের গ্রহারে। ব্যবহারোহত্র দ্যুতক্রেরবিক্ররো। ব্যবহরতি শতং শতস্য পণতে শতং শতস্য।

১৫০। সোপসর্গশু দিবঃ। প্রতিদীব্যতি শৃতং শতস্য।

১৫১। অনুপদর্গে নিত্যম্।
শতস্য দীব্যতি অদ্যুতক্রেরবিক্রয়েশস্তা। ব্রাহ্মণান্ দীব্যতি স্তোতীভার্থঃ।

গ্রাহণম্ এতদেব স্পষ্ট মিতুমাহ জ্মুনট ক্রথ চুরাদম ইতি। প্রণিহন্ ইতি
নির্দেশো নেরঙ্ব্যবায়েহপীত্যাদিনা পদ্ধ পিষ, সংচূর্ণনে।

- (১৪৮)। দ্বিষ্ অপ্রীতৌ ইতান্ত শত্প্রত্যরাম্বন্ত প্ররোগে কর্মণ উত্তরে ঙলোদামো ভবন্ধি বা। ধিষ্মিতি দ্বিঃ শত্রাবিতি শত্প্রত্যয়ঃ !
- (১৪৯)। ব্যবহারেহর্ষে বর্ত্তমানশু ব্যবপূর্ব্বশু হুঞ: পণেশ্চ কর্মণ উত্তরে ওসোসামো ভবস্তি বা। পণত ইতি পণেবর্যবহারে বেতি আয়ঙ্ অভাবপক্ষে অমুদান্তেস্তাদাত্মনেপদম্। ব্যবহার ইতি কিম্? শলাকাং ব্যবহরতি গণরতীত্যর্থ:। ব্রাহ্মণান পণার্মত স্তৌতীত্যর্থ:।
- (১৫০) 1 উপসর্গসহিতক্ত ব্যবহারেহর্থে বর্ত্তমানক্ত দিব্ধাতোঃ প্রয়োগে কর্মণ উত্তরে ওসোসামো বা ভবস্তি। প্রতিদীব্যতি ইতি দিবাদি-ডা বং দন্ত্যবাস্ত ইতি বাস্তাদিখাং রাস্তাদেরিত্যাদিনা দীর্ঘঃ। উত্তরযোগে-লান্তপদর্গে নিত্যবিধানাং সোপদর্গ ইতি বিশেষণেন বিনাপি সোপদর্গে বিকরবিধানং সিধাতি এবঞ্চ সতি সোপদর্গ ইতি ক্বতং স্পষ্টার্থম্।
- (১৫১)। উপসর্গাভাবে সন্ধি দিব্ধাতোঃ প্রয়োগে ব্যবহারেহর্থে কর্মণ উত্তরে ওসোসামো নিত্যং ভবজি। বিধানসামর্থ্যাদের নিত্যক্ষে সিদ্ধে নিত্যামতি ক্বতং স্পর্ধার্থম্। অক্সথা মন্দধিরাং সন্দেহ: তাৎ। পূর্বান্ধাণ্যন নিত্যং বিধীয়কে অনেন বেডি।

২৫২। জোহবোধার্থস্য করণাৎ। মধুনো জানীতে মধুনা। অনেকার্থস্বান্ধাতুনাং মধুনা প্রবর্ত্ত ইত্যর্থঃ।

১৫০। তৃপ্তার্থস্য চ।
নাগ্নিস্প্রতি কান্তানীং কান্তিঃ। ফলৈর্বেরাশিতং ভবম্। ফলা
নামলমাশিত্রেতি ভট্টিঃ। ওদনস্য পরিপূর্ণা বিকুর্বতে ছাত্রা
ওদনেন।

১৫৪। কর্ত্ত্রশ্চাত্বাদিক্ষন্তি:। অবাদিক্ষন্তিযুক্তিাৎ কর্ম্মণ: কর্ত্ত্ব্যেডেরে ডসোসামো ভবন্তি। নগরস্য কারকঃ অপাং স্রফী দেবস্য শায়িকা।

১৫৫ কচিন্ন স্থাৎ।

(১৫২)। জানাতেরবোধনার্থসা প্রীয়োগে করণাত্ত্তরে ওসোসামো বা ভবস্তি। মধুন ইতি অচাকোর্রিতি মু: জানীতে ইতি ক্রাণিয়াৎ ক্রো জাণ্ডোত নাৎ জাদেশক নাহ্বাদেরাজলাঙিতীত্যাকারস্য ঈকার:। মধুনা প্রবর্তত ইত্যর্থ:। এতেন জানাতেক প্রবর্তনার্থতা দর্শিতা মধুচাত্র করণম্। অফ্রৈমিপ্যাজ্ঞানবচনার্থতাপাস্থ ব্যাথ্যাতা যোহি মধুনি রক্তো নির্ত্যে বা ভবতি স চিত্তলাস্তা সর্বত্র মধ্বোধেন প্রবর্ততে অন্তত্তান্থবোধেন। প্রব-র্ত্তনং মিথ্যাজ্ঞানপ্রবর্ত্তনং মিথ্যাজ্ঞানঞ্চান্তানেম্ব জ্ঞানকার্য্যাকরণাৎ। অবোধার্থস্যেতি কিম্ १ চক্ষ্যা জানাতি।

(১৫৩)। তৃপ্যর্থস্থ চ ধাতোঃ প্ররোগে করণাছন্তরে ওসোসামো ভবস্তি বা। তৃপ্যতীতি তৃপ্ প্রীণনে আশিতস্তবমিতি অশ্ ভোজনে আ শতাঙ্কাং করণভাবয়োরিতি থশ্ঙ্ শেষো বৃদ্ধাদিতি অহাতেদীর্ঘঃ থিত্য-নব্যয়াদমগ্রস্বশ্চেত্যম্। বিকুর্বতে ইতি বিপূর্ব্বাৎ করোতেরকর্মকাচেতি আাল্মনেপনং অস্তে ক্লেছিভিত্যদিতি উৎ ক্লেছিভিত্য িতি উর্ আল্মনেছ-নত ই ত অদাদেশঃ।

্ ১৫৪। ১৫৫। ১৫৬ ' ১৫৭। ১৫৮। ১৫৯। ১৬০। ১৬১)। কৃদ্ধি বিতি হেতৌ তৃতীয়া কৃমিমিত্রাৎ কর্ত্তু: কর্মণ ইত্যর্থ:। তেনেছ ন ভবতি ধারৈরামোদমুত্তমং বৃদ্ধিপূর্ববং ধ্রুবং নতা রাজকৃতা পিতা খলমিতি ভট্টি:। অতাদিকৃতিরিতি কিম্ ? ভক্তং ভূক্ত্বা ব্রজতি।

১৫७। यह ।

বিপ্রং প্রস্থাপ্য।

১৫१। वस् ।

ত্থাং পারং পারম্।

১৫৮। अवैः।

ভক্তং পচন্।

১৫৯। শানঃ।

ভক্তং পচমান:।

३७०। वानः।

ভক্তং পেচানঃ।

নগরং কারকো যাতীতি। নগরস্থ কারকঃ অপাং অস্টেতি কর্মণঃ যন্তা কারক ইতি কর্ত্তরি পকঃ বৃদ্ধিঃ অস্টেতি স্তজ্ বিদর্গে তৃঙ্ ভিত্যযেহলিনং শাদিন শাদেরিতি স্তজঃ অজ অদ্জেত্যাদিনা জন্য যং ষটবর্গাদিত্যাদিনা ভস্ত টঃ ঝত আৎ স্থনেতি আৎ। দেবদত্তস্থ শারিকেতি কর্ত্তঃ যন্তা শারিকেতি কর্তিঃ যন্তা শারিকেতি কর্তিঃ যন্তা শারিকেতি শাঙ্ স্থেপ পকঃ বৃদ্ধিঃ পকস্যাদিচেতি আং অকারস্য ইকারঃ। কচির তাদিতি শিষ্টপ্রয়োগদর্শনাদিত্যতি প্রায়ঃ। ধারৈরিতি ড্বাঞ্ ধারণ-পোষণরোর্ঘণস্তঃ যুবে ঞাদেরিত্যাদিনা যুং প্রস্থাপ্যতি স্থাবাতার্দিঙ্ পূঙ্ জ্যু যচ্ যেচেত্যমূর্ত্তী পিঙ্লোপোহশিদাদাচীতি পিঙ্লুক্। পায়ং পায়-মিতি পায়াতোঃ জ্যু পম্বাভীক্ষ্যে ই ত জ্যু পম্ পমস্তমভিহিতেহপ্যাভীক্ষ্যে ইতি দ্বিঃ যুবে ঞাদেরিত্যাদিনা যুং। পেচান ইতি লিড্রন্থানাবিতি আনঃ লিড্রন্তিদেশাদ্বিত্বং অনাদেশাভ্যাসস্তেত্যাদিনা অকারস্থ একারঃ দ্বিলুক্ চ পেচিবানিতি লিড্রন্থানা ব'ত বস্থঃ দ্বিজাদি সন্ধিকক্তেকাভিন্যসাদন্তাবসাদ্বিত বাচাদিশ্বাদিট্ স্থঃ মূম্ দীর্ঘো মহৎসান্তোনাবিতি দীর্ষঃ।

১৬১। ুবহুঃ। ভক্তং পেচিবান।

১৬২। ইল্লিড্বৎ।

गाः **प्रक्तिः** ।

५७१ छैः।

किं हिकीयूर् ।

১৬৪। ইফুঙ্।

কন্যামলং করিষ্ণুঃ।

১৬৫। जकरमर्व् कः।

আগামুকো গঙ্গাম্। কমেস্ত-দান্তাঃ কামুকঃ।

१७७। छः।

গ্রামং গতঃ।

(১৮২।১৬০।১৬৪)। লিজ্লতিনিষ্ট ইৎ ছাল্ভিবতি। গাং দদিরিতি দদাতে: রুস্প্রনীত্যাদিনা ইৎ লিজ্লতিদেশাৎ দিকজি: রুলচ্যঙনাশাবিত্যাকারলুক্। লিজ্লিতি কিম্ ? অন্নস্ত কটি: ক্রঞাদেরিরিতি ই:
চিকীর্নরতি করোতে: সন্ ঋত কনীতি ইর্ দিকজি: রাস্তাদেরিরিতি ই:
দিকীর্নরতি করোতে: সন্ ঋত কনীতি ইর্ দিকজি: রাস্তাদেরিত্যাদিনা
দীর্ঘ: সন্ভিক্ষাশংসেকরিতি উ: উরিতি রুতো বিশেষণং তেন উলস্তবিধে:
ধনং গৃধু: রক্ষোগণং ক্রিপ্রাত ভাগর্ভিকৃতা দর্শিতম্। জ্বাদিত্যস্বরসোহপাত্র লক্ষাতে এবঞ্চ সভি রিপ্রং জ্বিফ্ স্থামিছ্র: শাব্রং বিন্দ্রিত্যাদ্যপি
ভবতি। বৃত্তিকৃতা হত্র ভস্ত ব্যভিচারদর্শনায়োদাহতম্। তথাচ, তব দর্ব্বগত্ত সম্প্রভি ক্রিতিণ: ক্রিপ্র্রনীর্মানিব সভ্যান্ত্রকা নরক্ত জ্বিফ ব ইত্যাদরো
ক্রাক বিপ্ররোগা দৃশ্বন্তে। যে তু ক্লবোগে ষ্টীমত্র নেছ্নিড তে মহাকবিপ্ররোগান্ দৃষ্ট্রা সম্বর্ষট্যা যম্ম্রম্ভীতি। অলম্বরিষ্কৃরিতি অলংক্রঞা
ভূষার্থে চিতি ইষ্ণ্ড্র।

(১৬৫।১৬৮।১৬৭।১৬৮)। অক্ষেক্তরো গুক্বানির্ভবতি। আগামুক ইতি গমানেক্ ইতি র্ণৃক:। এবং কামুক:। গত ইতি গতি- ১৬৭। ক্তবজুঃ। প্রানং গতবান্। ১৬৮। ভৃঙিঃ। পরাপবাদং বক্তা খলঃ।

১৬৯। ঈষৎস্কুর্ভ্যো গুওনো । টি

ঈষৎকর: কটো ভবতা। ছুর্দানং স্বয়া ধনম্। কোষদগুসমগ্রাণাং
কিমেষামন্তি ছক্ষরমিতি সম্বন্ধবর্ষ্ঠ্যা।

১৭০। ভাবিষ্যদূর্ণিনোর্ণিন্। গ্রামং গমী শতং দায়ী।

১৭১। আবশ্যকে ণিনপীত্যেকে।

অংশং হারী দায়াদঃ।

১৭২। তুম্ঙ্। গ্রামং গন্তুম্।

ভূজার্থাকশ্বকাদধিকরণে চেতি জ্ঞা। গতগানিতি ভূতে ক্তবভূরিতি ক্তবভূগ তথোশাঙি বীত্যাদিনা মলুক্। গত্যর্থধাতোঃ প্রযোগে ক ঠুকুতি ষষ্ঠা ভবতীতি প্রাগেবোকং তত্র ষষ্ঠ্য প ভবতীতি স্বরসোপদর্শনার্থং কর্তৃক্তদন্তো গমিরত্রোদাস্ত্রতঃ বক্তেতি শীলাচারসাধুষিত্যাদিনা তৃঙিঃ।

(১৬৯)। ঈষদা দিতা উত্তরৌ ওঙনৌ খাদী ভবতঃ। ঈষৎকর ইতি অকপ্টার্থেত্যাদিনা ঙঃ হুদানমিতি অদার দালভাদিতি ঙনঃ। যদোতৌ ওঙনৌ খাদী ভবতস্তদা কথং কিমেধামি ও হুমরমিতি ষটা অত আহু সন্তম্ম ষঠ্যা ইতি। অনেন যোগেন কর্জ্যু কর্মণশ্চ বিহিতায়াঃ ষঠ্যাস্থা দিখাং প্রতিবেধাে নতু সম্ব্রষ্ঠ্যা ইত্যাভিপ্রায়ঃ।

(১৭•)। ভবিষ্যতি কালে ঋণিনি চ বিহিতো ণিন্ ভাদি ভাং। গ্রামং গমীতি ভবিষ্যতিগমাদেরিতি পিন্। শতং দায়ীতি অধ্যা ই ত পিন্যুবে ঞাদেরিত্যাদিনা যুঃ।

(১৭১। ১৭২)। অবশুস্তাবঃ আবশুকং তত্র বিহিতো ণিন্ ছা দর্ভব ত ইত্যেকে। অংশং হারীতি অনুপপদাদাবশুক ইতি ণিন্ অস্তে তু অংশস্য হারীতি বদন্ধি। ১৭৩। ৃপকস্তমর্থে প্রায়:। ভক্তং ভোককো ব্রহতি।

১৭৪। কচিন্ন স্থাৎ। বর্ষশক্তম পূরকো জীবতি পুত্রপোক্রাণাং দর্শকোহস্তি।

১৭৫। জিয়াবিশেষণাচ্চ।

সাধু পাচক্ত।

১৭৬। বর্ত্তমানবাচিনা ক্রেন। রাজ্ঞাং মতঃ রাজ্ঞাং পৃঞ্জিতঃ ।

১৭৭। কচিন্ন স্থাৎ।

শীলিতো দেবদত্তেন রক্ষিতো দেবদত্তেন। কাস্তো হরিশ্চক্র

⁽১৭৩।১৭৪)। তুমর্থে বিহিছো গৰুধাদির্ভবতি। প্রায়ো বাছ-লোন তুমঙ্ ভবিষাতি বিহিতঃ ভবিষাংকালে বিহিতো পকঃ স্বাদর্ভবতী-তার্থঃ। প্রায়োগ্রহণকলং ব্যাচষ্টে কচিন্ন স্থাদিতি। ভক্তং ভোজকো ব্রুক্তীতি ক্রিরার্থান্তবিষ্যতীতি পকঃ। পূরক ইতি পুরী আপ্যায়নে চুরাদিঃ বর্ষশতং পূর্রিতুং জীবতীতার্থঃ।

^{(&}gt; १ ৫)। ক্রিয়াবিশেষণাস্য কর্ম্মসুক্রং তত্ত্ব ষষ্ঠী প্রাপ্নোতি তরি-বেধার্থমিদং বচনম্। ক্রিয়াবিশেষণাৎ কর্মণঃ ক্লুদ্ফুলাছন্তরে ভ্রেনাসামোন ভবস্তি।

⁽১৭৬।১৭৭)। বর্ত্তমান িছিতেন কেন বৃক্তাৎ কর্মান: কর্ত্তুন্তর ওলোদামো ভব তা। ছাদিছাৎ ক্তন্ত কর্তুন্ত ত্যাদিনা ষষ্ঠ্যামপ্রাপ্তানর ব্যামেত বিধানন্। পুলেচ্ছা বৃদ্ধার্থ ইত্যাদিনা বর্ত্তমানে ভূতে চ কো বিহিতঃ বদা বর্ত্তমানে ক্তন্ত দা বর্ত্তী। ভূতে তু কর্তুরি তৃতীরৈব ভবতি। ভতএব পূর্বেঃ প্রহরণমন্ত্রবিধনিউমিতি বাংখারনৈঃ। অনুপ্রাস্থিয়া গৌড়ৈ ত্তুদিইং বন্ধগৌরবাদিতি দণ্ডা। ভান্ত ত্রাপ্তোরং প্রকারা বহব এব শিষ্টপ্রয়োগা এবার্থ ভান্ত বাংখাহকা দৃখান্ত। ক্তির ভানিতি শীলিতো রক্ষিতঃ ক্ষাম্ভ ইত্যাদিনা বত্র বর্ত্তমানে কো বিহিতঃ তদ্যুক্তাৎ কর্ম্মণঃ কর্তুন্তারের প্রসাসামোন ভবস্থি। ক্তিৎ গ্রহণাৎ কাজো হরিতক্স ইব প্রকানামিত্যক্র

ইব প্রজানাম। হয়। জ্ঞাতো মুয়া জ্ঞাত ইত্যসাধুরিতি ভাগবৃত্তিঃ।

১৭৮। অধিকরণবাচিনা চ।

ইদমেষামাসিতং ইদমেষামুপগতং ইদমেষাং ভুৰত্ৰমাদনশ্য।

২৭৯। ভাববাচিনা বা।

ছাত্রস্থ হসিতং ছাত্রেণ হসিতম্।

১৮०। कर्जुः कृरेजान्छ।

দেবদত্তেন কর্ত্তব্যং দেবদত্তস্য কর্ত্তব্যং কর্ণীয়ং কার্য্যম্। যেন তে সহ গন্তব্যং স্থা সহেত্যর্থ:।

ষষ্ঠী ভবত্যেব। এতৎ সর্বাং বছলা ধঁকারাদেব সাধনীয়ন্। তথা জ্ঞাতো ময়া জ্ঞাত ইত্যসাধু বিতি ভাগবৃত্তিরিতি ভাষ্যকারস্বরসেন বুদ্ধার্থাদিপ্রয়োগে চ বর্তুমান এব ক্যো নতু ভূতে ভবতি অতঃ ষঠ্যেব ভবিতব্যমিতি ভাগবৃত্তি-ক্নতো মতম্ অত্র স্বরসাভাবাদিতি ভাগবৃত্তিবিতি মতান্তরমুপগুস্তবানিতি।

(১৭৮)। অধিকরণবাচিনা ক্তেন যুক্তাৎ কর্মণঃ কর্ত্তিরে ওসো-সামো ভবস্তি। ক্তন্ত ছাদিছাৎ ষষ্ঠ্যামপ্রাপ্তায়াং বিধানম্। ইদমেষা-মাসিতমিতি আস্ উপবেশনে গতিভ্জার্থেত্যাদিনা অধিকরণে ক্তঃ। আসের-কর্মকছাৎ কর্তিব সম্ভবতি ন কর্ম। ইদমেষাং ভ্কুমোদনস্যেতি ভ্রেঃ সকর্মকছাৎ কর্তা কর্ম চ সম্ভবতীতি উভয়োঃ ষ্ঠা। কর্তৃকর্মপ্রাপ্তাবিত্যা-দিনা কর্তৃশ্চাছাদিরিত্যাদিনা প্রাপ্তায়া এব ষ্ঠ্যা নিয়মঃ ন ছনেন যোগেন বিহিতায়াঃ।

(১৭৯)। ভাববাচিনা ক্তেন যুক্তাহ্ছেরে ঙসোসামো বা ভবস্তি। ছাত্রস্য হসিতমিতি ভাবে ক্ত:।

(১৮০)। ক্বতৈয়ু জাৎ কর্ত্ত্বরে গুদোসামে। ভবস্তি বা। কর্ত্ব্যমিতি তবাঙ্ অনীয়ঙাবিতি তবাঙ্ ঋহলোণ্য ইত্যাদি তবাঙা-দ্বঃ। কর্ত্ত্বিতি কিম্? গেয়ো মাণবকঃ সামাং গায়তীতি গেয়ঃ গায়তেঃ ১৮১। ন কর্তৃকর্মপ্রাপ্তো।

ক্রফির্যা গ্রামং শাখা দেবদত্তেন নেতব্যা গ্রামমজা দেবদত্তেন।

১৮২। কর্ত্কশ্মপ্রাপ্তো কর্মণ এবৈককৃতি। গবাং দোহো গোলান। অনেককৃতি তু। ওদনতা পাকো ব্রাহ্মণানাঞ্চ প্রাত্তবিঃ।

১৮৩। স্ত্রাকৃদ্তিরাম্বর্জ কর্ত্তুর্বেত্যকে। বিচিত্রা সূত্রস্থ কৃতিঃ পাণিনিনা পাণিনে:।

কর্ত্তিরি চেতি যঙ সামামিতি কর্মণঃ কর্তুদেচত্যাদিনা নিত্যমেব ষষ্টা ভবক্তি। যেন তে সহ গন্তব্যামতি যেনেতি কর্ত্তিরি তৃতীয়া তে ইত্যত্র সহ-যোগে তৃতীয়া তে ইত্যস্থাবায়কাধিভক্তিবুক্ অতএবাহ ক্ষয়া সহেত্যর্থঃ।

(১৮১)। কুতৈয়র্জিৎ কর্মণ: কর্ত্ত্ব একনা প্রাপ্তে ওসোনামে।
ন ভবস্তি। জ্বত্তিকেব্ বিলেখনে তবাঙ্ অপাদিব প্রপাদেরিতি ক্ষমঃ
জ্বত্ত্ব

(১৮২।। কর্তু প্রেত্যা দিনা উভয়ত্র ষষ্টা প্রাপ্তে। নিয়মার্থং বচনম্। কর্ত্তরি কর্মনি চ ষষ্টা প্রাপ্তে। কর্মনি কর্মনি চ ষষ্টা প্রাপ্তে। কর্মনি কর্মনি চ কর্মনি চ প্রাপ্তিমাত্রে নিয়মং ন তৃভয়-প্রয়োগে তেন গম্যমানেহপি কর্মনি নিয়মং। অতো দোহো গোপেন ইতি ন ষষ্টা কর্মনো গম্যমানত্বাং। গবাং দোহো গোপেনেতি দোহ ইতি চহে-ভাবে ঘণ গবামিতি কর্ম্মনি ষষ্টা নতু কর্ত্তরি গোপেনেতাত্র। ওদনশ্র পাকো ব্রাহ্মণানাঞ্চ প্রাহ্রভাব ইত্যত্রাপি কর্তুকর্মপ্রাপ্তিরস্ত্যেব নম্বেকক্কতা উভয়ো: প্রাপ্তিঃ। পাক ইতি ক্রতঃ প্রয়োগে ওদনে কর্মনি ষষ্টা প্রাহ্রভাব ইতি ক্রতঃ প্রয়োগে কর্ত্তরি রাহ্মনে ষষ্টা। একক্রতীতি ক্রতং কর্তৃকর্মন্সম্বত্যতনার্থম্। ষত্র ম্বনেকস্ত ক্রতঃ প্রয়োগে কর্ত্তকর্মাগমনের ম্বয়োরপি ক্রত্যেক্ত ত্রাপি নিয়মো ভবত্যের গবাং রক্ষা দোহো গোপেনেতি।

(১৮০)। কর্তৃকর্মপ্রাপ্তে আছর্জিতেঃ স্ত্রীরুৎপ্রতামৈর্দুক্তাৎ

১৮৪। অনাৎকৃদ্ভিবে ত্যপরে। শব্দানামন্ত্রশাসনমাচার্য্যেণ আভার্য্যস্থ।

১৮৫। নিত্যং ছাতা। ভেদিকা চৈত্ৰস্য কাষ্ঠানাং চিকীৰ্ষা মৈত্ৰস্থ কটুস্থ।

১৮৬। কর্মন্বয়ং ছহাদীনামসুক্তং স্থাৎ কৃতা বদি। কশ্চিত্রত সমাচন্টে ষষ্ঠীং প্রধানকর্মানি। গাং দোঝা ধুক্ষস্ত গোপঃ।

১৮৭। অধিকরণান্ঙিওস্ফ্রপঃ। অধিকরণাত্নত্তকে ডি ওস্ স্থপো ভবস্তি। গ্রামে বসতি

কর্জুকত্তরে ওসোসামো বা ভবন্ধি ইত্যেকে। নিত্যং ত্বাতা ইতি বিশেষ-বিধানাদেব আদর্জ মিতি সিদ্ধং তং ক্রিয়তে স্পষ্টার্থম্। ক্লভিরিতি ক্রিঃ প্রিয়ামিতি ক্রিঃ।

- (১৮৪)। আছজি তৈঃ কৃদ্ভির্কাৎ কর্তৃকর্মপ্রাপ্তৌ কর্তৃক্তরে ঙদোদামো বা ভবস্তীতাপরে। অনুশাদনমিতি শাস্থ অনুশিষ্টো ওনটু। এতরতে তু গবাং দোহো গোপেন গোপস্থ ইতি ভবিতব্যম্। ইদানীং কর্তৃকর্ম্মেতানিস্থমসুর্তিমাত্রপ্রয়োজনং কর্মণ এবৈকক্কতীতি স্পষ্টার্থম্।
- (১৮৫)। আতা কতা যুক্তাৎ কর্ত্তু: কর্মণান্টোন্তরে গুসোসামো নিতাং ভবস্তি। কর্ত্বর্মপ্রাথাবিত্যাদিনা নিয়মশু বাধনার্থমিদম্। ভেদিকেতি লকপ্রত্যয়াস্তাৎ পক্সাদিচ্চেতি আৎ অকারস্থ ইকারশ্চ। চিকীর্বেতি কঞ: সন্ ঋতশ্চ সনীতি ইর্ বিশ্বক্তঃ রাস্তাদেরিত্যাদিনা। দীর্ঘঃ সনাদে-শেতি আৎ।
- (১৮৬)। বদা কর্ত্তরি ক্ববিধীরতে তদা কর্মাধরমেবাস্কুকং ভবতি।
 প্রধানে কর্ম্মণি ষষ্ঠীতি কন্দিদাচষ্টে অগ্রস্তু অপ্রধানকর্মণীতি। দোম্বেতি
 ভূঙ্ হোঢ় ইত্যাদিনা হস্য বঃ ধোহধাতুর্য্যাদিতি তক্ত ধঃ বর্গস্তাদিরিত্যাদিনা
 বস্তু কঃ অপদান্তেহপীত্যাদিনা কন্তু গঃ গুণঃ শ্বত আৎ স্থনেতি আৎ।
- (১৮৭)। গ্রামে বসতীতি ঔপশ্লেষিকমধিকরণম্। নমু ক গত ইত্যানৌ ঔপশ্লেষিকাদ্যভাবে কথমধিকরণসংজ্ঞা অভ আহ গমিগমনপূর্বি-

প্রানয়োঃ প্রানেষু। ক গতঃ ক পম্যতে ক যাতীত্যাদে গমির্গমন-পূর্বিকায়াং স্থিতে বর্ততে।

১৮৮। ক্রিয়া তৎকালকণাৎ।
প্রানিদ্ধকালক্রিয়াবারে তন্য ক্রিয়ান্তরভাপ্রসিদ্ধং কালং বেদ
করণভূতেন বক্তা লক্ষয়তি তন্মাত্তরে ডি ওদ্ স্থপো ভবস্তি।
ক্রিয়াহসামান্তেন ক্রিয়ান্তরেংপি তচ্ছকঃ। গোযু ছহুমানাস্থ গভঃ ছন্ধা স্বাগতঃ ধনে স্থং ধনে সতি স্থং ভবতীত্যর্থঃ।

১৮৯। কর্ত্ব্যুহ তোহনহ তশ্চ কর্ত্ত্ব প্রতিযোগিনি-রূপণে।

কায়ামিত্যাদি। কেতি কিম্শকাৎ সপ্তমী অচ্চ সপ্তমা বেত্যৎ কিং কস্ত্রাদৌ কুশ্চেতি কিমঃ কুঃ যবরলোহচীতি বকারঃ।

⁽১৮৮)। তৎশকেন ক্রিয়া পরামৃশ্রতে। ক্রিয়ার ক্রিয়াকাললকণাদিতি স্ক্রং ভবতি প্রসিদ্ধনেবাপ্রসিদ্ধং লক্ষমতীতি স্বভাবং অতো বৃত্তিক্নভাাকরোতি প্রসিদ্ধলাক্রিয়াবারেণেত্যাদি। নবেনদি তদিত্যনেন প্রক্রাকরোতি প্রসিদ্ধলাক্রিয়াবারেণেত্যাদি। নবেনদি তদিত্যনেন প্রক্রাকরোতি প্রসিদ্ধলাক্রিয়াবারেণেত্যাদি। নবেনদি তদিত্যনেন প্রক্রাকরোর ক্রিয়ার্বরশ্ব গমনস্রাসন্তবাং অত আহ ক্রিয়ারসামান্তেনেতি।
ক্রেয়ারসামান্তেন হেতুনা ক্রিয়ান্তরেহিপি পরামর্ধণীয়ঃ তছকঃ প্রযুজ্যত এব
ক্রিয়ান্তরেহিপি ক্রিয়ার্বসামান্ত্রশ্ব বিদ্যমানত্বাং। নহু ধনে স্থমিত্যক্র ক্রিয়ায়া
অভাবাং ক্রিয়য়া ক্রিয়ান্তরকাললক্ষণং ন সম্ভবতীতি কথং সপ্রমী ইত্যাশক্ষায়ামাহ ধনে সতি স্থাং ভবতীত্যর্থঃ। অ্রাপি ধনাবস্থিতিক্রিয়য়া
স্থপ্য ভবনকালো লক্ষণীয় ইত্যভিপ্রায়ঃ। ক্রিয়ারেতি কিমৃ ? শিপরা বটুভূর্তক্রে অত্র শিথয়া বটোর্জোজনক্রিয়াকালো লক্ষ্যতে নতু ক্রিয়য়া। তৎকালক্ষণাদিতি কিম্ ? পততা ক্মগুলুনা স্থবিরঃ অত্র পতনক্রিয়য়া
স্থবিরো লক্ষিতো নতু ক্রিয়ান্তরক্ত কালঃ।

⁽১৮৯)। প্রতিযোগনিরপণে সতি ক্রিয়াং কর্ত্ব ক্রিয়াং কর্তু-মনহ্তিশ্চ কর্ত্বভূরে ডি ওস্ স্থপো ভবস্তি। কুধার্তেদিতি কুধয়া কতঃ

কুধার্ত্তের্ ভূঞ্চানের্ তৃপ্তা আসতে কুধার্তা ভোক্তঃ তৃপ্তা আসিভু-মহস্তীতার্থঃ। কুধার্ত্তেদাসীনের্ তৃপ্তা ভূঞ্জতে কুধার্তা আসিভুং তৃপ্তা ভোক্তঃ নাহস্তীত্যর্থঃ।

১৯০। ষষ্ঠী চানাদূতে। ক্রিয়য়া অনাদৃত্তে গুম্যমানে ঙি ওস্ স্থপো, ভবস্তি। বষ্ঠী চ । ক্রোশতঃ প্রাব্রাজীৎ ক্রোশতি ক্রোশন্তমনাদৃত্যেত্যর্বঃ।

১৯১। ক্রিয়াদ্বয়মধ্যাধিকরণকালাধ্বভ্যাং পঞ্চমী চ। অদ্য ভুক্ত্বা দ্বাহে ভোক্তা দ্বাহাৎ। অত্র স্থিয়া ক্রোশে লক্ষ্যং বিধ্যতি ক্রোশাৎ।

১৯२। सामारिनाः।

পীড়িতঃ তৃতীয়াসমাসাদন্তাদৃতত্মেতি বৃদ্ধি:। ভূঞ্জান ইতি ভূন্ফেরপালনে ইত্যাশ্মনেপদং শানঃ শ্বন্ শ্বান্ড্যোরদিত্যকারলুক্। আসত ইতি আস্ উপবেশনে অন্তে আত্মনেহনত ইতি অন্তোহং। অগ্রাপি ক্রিয়য়া ক্রিয়ান্তর-কালো লক্ষ্যত এব কিন্তু যথা দোহাদিক্রিয়া প্রসিদ্ধকালা ন তথা ভোজন-ক্রিয়েং প্রসদ্ধকালেতি স্পন্তার্থেহিয়ং প্রসঞ্চঃ।

⁽১৯•)। ক্রিররেক্যাদিনা সপ্তম্যাং প্রাপ্তায়াং উভরবিধা । নদ্। অত্রাপি ক্রোশনক্রিরয়া ব্রজনক্রিয়াকালো লক্ষ্যতে।

⁽১৯১)। কিয়াবরস্থ মধাং ক্রিয়াবয়মধ্যং তদ্ধিকরণং যয়োঃ কালাধ্রনোপ্রাভ্যামৃপ্তরে ডি ওদ্ স্থপো ভবস্তি। পঞ্চমী চ। অধিকরণতাৎ
সপ্তম্যাং প্রাপ্তারাং পঞ্চমার্থং বচনম্। ছাহ ইতি অহঃ প্রাণীতি টঃ জনীতদ্ধিতেত্যাদিনা নকারলুক্ অদিল গিত্যকারলুক্। ছাহস্ত কালস্ত ভোজনক্রিয়াবয়মধ্যাধিকরণতাং ক্রোলস্তাধ্বনোহ্রাপ্যবস্থানক্রিয়ালক্যাবেধনক্রিয়াং
হয়মধ্যাধিকরণতাম্। ছাহারিঃস্ত্য ইত্যপাদানবিবক্ষায়াম্। ক্রোলক্রেমধ্য ক্রেমধ্য প্রাণিশন্ত পঞ্চম্যামধিকরণতা চ সপ্তম্যাং সিদ্ধারণ
স্ত্রমিদং কর্মকর্ত্য তংক্রিয়তে প্রপঞ্চার্যম্।

⁽১৯१)। वामारिनाः नषसर्वशाः व्याश्वाताः शत्क नश्रमार्थः वहे

স্থাম্যান্যৈঃ শলৈষু ক্তাহতরে ভি ওস্ স্পো ভবস্কি। বস্তী চ। গোষু স্বামী গবাং স্থামী। ঈশ্বর অধিপতি দায়াদ সাক্ষিন্ প্রতিভূ প্রসূত।

১৯৩। ন তুল্যার্থযোগে। তুল্যো গোভিঃ স্বামী গোভিস্তল্যো গবীশ্বর ইত্যর্থঃ। সম্বন্ধবিব-ক্ষায়াস্ত্র—তুল্পে গবাং স্বামী।

১৯৪। কৃত্বসর্থিঃ কালাদধিকরণাৎ। পঞ্চক্রোংক্টি ভূঙ্ক্তে অহঃ বিরহ্নি বিরহঃ।

১৯৫। আযুক্তেন কুশলেন চ তাৎপৰ্য্যে।

নম্। এতেন সম্বন্ধষ্ঠোব পক্ষেংন্দাতে। অতএব গোস্বামীত্যাদৌ ষষ্ঠান্দাসভাকরণতাং প্রতিষ্ঠেগে ন ভবতি। অন্তরা তাঞ্চ মাঞ্চ স্বামীত্যত্র স্বামী আধেরতেনাথারতে। আধের-চাধারেণান্তরার্থেন সম্পাতে মতু মুম্বন্ম-দর্থেন এতাবতা স্বামিশকসম্বন্ধাভাবাং যুম্বন্মদোন ষ্ঠীসপ্তম্যৌ তেন হাদিব্রুদাদিতি দিতীরেব ভবতি। একার্থানাং স্বামীশর।ধিপতিশবানাং স্বাম্যাদিব্রুদাদিতি স্বামাং শবানাং স্বরূপগ্রহণম্।তেন তৎপর্য্যায়াণাং ন ভবতি। (১৯০)। তুল্যার্থের্থিগে স্বাম্যান্যিরিতি ন প্রবর্ত্তে অভ্যাপ্রবৃত্ত্বী ভ্লাব্রির্ত্রলোপ্নৈর্থেতি ভূতীয়া বা ভবতি। তয়া ত্যক্তে পক্ষে সম্বন্ধ্রী।

(১৯৪)। কৃষ্পর্থৈ প্রতারেয় কাং কালবাচিনোহধিকরণাছন্তরে
ডি ওদ্ স্থাে ভবন্তি। ষষ্ঠী চ। অধিকরণে সপ্তমাাং প্রাথায়াং পক্ষে
ষষ্ঠার্থং বচনম্। পঞ্চক্ষ ইতি কৃষ্ণ বারে সংখাায়া ইতি কৃষ্ণ অহীতি
বেঙাারিত্যকারলুক্ অহু ইতি শুনাদ্যতাত ইত্যাদিনা অকারলুক্ ছিরিতি
ছিত্রিচতুর্ভাঃ স্থরিতি স্থং তদ্ধিতবদাদিষ্বেনাব্যয়ন্তাং স্থাক্ত্ব। পঞ্চ বারান্
কৌ বারৌ ভূঙ্কে ইত্যর্থঃ।ধাপ্রত্যয়োহ্প কৃষ্ণর্থঃ বহুধা রাত্রৌ ভূঙ্কে
রাত্রেঃ। কালাদিতি কিম্ ? ষিঃ কাংগুপাত্রাাং ভূঙ্কে। অধিকরণাদিতি কিম্ ? পঞ্জক্ষে রাত্রীং ভূঙ্কে।

(>>)। আয়ুক্তেন কুশলেন চ. খুকাদধিকরণাৎ তাৎপর্যো

আযুক্ত: কটকরণে কটকরণস্থ আযুক্তো ব্যাপৃত্তুৎপর ইত্যর্থ:।। কুশলো ভবান্ গৃহকরণে গৃহকরণস্য।

১৯৬। বর্গাজ্জ্যাত্যাদিভিঃ পৃথকরণে। মমুষ্যের ক্ষত্রিয়ং শূরতমঃ মমুষ্যণাম্।

১৯৭। ক্রচিৎ পঞ্চমী চ । বিরতকরণাঃ স্বরাস্তেভ্য ঐ ঔ বিরতভরো ।

১৯৮। ুসাধ্বসাধৃভ্যাং সপ্তমী।
সাধুর্বিপ্রো মাতরি অসাধুর্বিপ্রঃ পিতরি। তয়োরযোগে তু সাধুভূত্যো রাজঃ রাজসক্ষমী ভূত্যা সাধুর্ন হস্য রাজানং প্রভিসাধুহম্।

গমামানে ভি ওদ্ সংশো ভবজি ৷ বঠী চ ৷ দপ্তম্যাং প্রাপ্তায়াং পক্ষে ৰঠার্থং বচনম্ ৷

⁽১৯৬।১৯৭)। বর্গবাচিন: শকাছত্তরে ডি ওদ্ স্থপো ভবন্তি ষষ্ঠী চ জাত্যাদিভি: পৃথকরবে সতি। আদিশদেন গুণজিগ্নয়ো এ হণম্। মন্থ্যো- ছিতি মন্থ্যবর্গাৎ ক্ষত্রিয়স্ত জাত্যা পৃথকরণং গোরু কৃষ্ণা ক্ষীরিণী অধ্বগেরু ধাবন্ত: শীঘতমা:। যদা বর্গসাধিকরণতং বিবক্ষাতে তদা সপ্তনী সিদ্ধৈর যথাবক্ষে শাখা। যদা অবরবাবরবিসম্বদ্ধো ধিক্ষাতে তদা মঠ্যপি সিদ্ধির যথাবক্ষে শাখা। এবঞ্চ সতি যোগোহয়ঃ প্রপঞ্চার্থঃ। অপাদানপঞ্চমী: বাধনার্থতাপাস্ত ন সম্ভবতি। চলতোহবধিবিক্ষায়াং অপাদানপঞ্চমী: বাধনার্থতাপাস্ত ন সম্ভবতি। চলতোহবধিবিক্ষায়াং অপাদানপঞ্চমা কিং নঃ ভবিতব্যং গোসমূহাৎ ধেলুমানর ইতি সামান্তবিহিতায়া অণি ষষ্ঠ্যাঃ পৃথক্ষরণে ইত্যনেন সমানপ্রতিষেধাহপ্যবিক্ষ এব। কচিৎ পঞ্চমী চেতি শিষ্টপ্রয়োগবিষয় এবেত্যর্থ:। তেভ্য ঐ ঔবিবৃত্তরাবিতি অজ্ঞাপি বৃদ্ধ্যা স্বরন্থেনকীক্ষত্য ভেত্য ঐঃঔ ইত্যেতয়ো: পৃথক্রবণাদপাদানপঞ্চমী সিধ্য-ভীতি। এবং সত্তি মধুরা পাটলিপ্রক্ষেত্য আচ্যতরেতি।

⁽১৯৮)। সাধ্বসাধুশদাভাাং যুক্তাৎ পরে সপ্তমী ভবতি। ঙি ওস্ স্থপ ইত্যসূত্রে প্রাপ্তারাং বৎ সপ্তমীতি কৃতং তৎ ষষ্ঠানুর্ভিশকানিরাসার্থম্। ব্যক্তএব, নিতাকে সপ্তমী। সাধুবি প্রো মাত্রীতি মাতরি বিষয়ে সাধুঃ

- ১৯৯। সাধুনিপুণাভ্যাং পূজায়ামপ্রত্যাদে। ।
 সাধুবি প্রো মার্ডরি নিপুণো ভৃত্যো রাজ্ঞি। অপূজায়াস্ত্র—সাধুভূত্যো রাজ্ঞঃ। প্রত্যাদে। তু—সাধুরি প্রো-মাতরং প্রতি-মাতরমনু মাতরং পরি।
- ২০০। দ্বিতীয়াবর্জং নাম্যা বিভক্তিঃ প্রত্যাদেশী। বৃক্ষং বৃক্ষং প্রতি পুষ্পাণি সন্তি দেবদতং প্রতি কুপ্যতি দাং প্রতি বামী মন্ধচনং প্রতি সাক্ষা কেশান্ প্রক্যুৎস্থকঃ ৮

বিধেরকারীত্যর্থ: ন হাত্র সাধুশকঃ পূজায়াং তথা সতি সাধুনিপুণাভ্যামিত্যাদিনা সপ্তমী সিদ্ধৈব। নহস্ত রাজানং প্রতি সাধুহমিতি এতেনৈতহক্তং সাধ্বপাধুশকপ্রবৃত্তিনিনিত্তং হি সাধুহমসাধুহঞ্চ তম্ত বো বিষয়স্তর্জানেন সপ্তমী।
নক্ উত্তরপদার্থপ্রধানস্তৎপূক্ষয় এবং সচ্চি সাধুযোগে সপ্তমীবিধানাৎ অসাধুযোগেহিপি সপ্তমী ভবিষ্যতি কিমর্থমসাধুগ্রহক্ষ ক্রতম্। এবঞ্চ সতি বদসাধুগ্রহণং ক্রতং তেন জ্ঞাপরতি স্বাম্যাগ্রৈরিত্যনেনাযুক্তনেত্যনেন চ এতৎপ্রকরণবিহিতেন কঞ্ যোগে বিভক্তিন বিধীয়তে ইতি প্রকরণাস্তরবিহিতেন
ক্রিয়ত এব অতএব দেবদন্তাদনম্ভ ইত্যক্রারাদালৈরিত্যনেন পঞ্চমী। অগ্ন্যর্থাদপৃথগৃধ্য ইত্যক্র পৃথিয়িনেত্যাদিনা পঞ্চমী ভবত্যেব। অমুমেবার্থং রক্ষিতথ্যন্থে বৃত্তিক্বশ্লাচকার।

- (১৯৯)। সাধুনিপুণাভ্যাং ঘুজাছন্তরে পুজায়াং বিষয়ে অপ্রকানে সিতি সপ্তমা ভবতি। নমু সাধুভূ তাো রাজ্ঞ ইত্যত্র সাধুশন্ধযোগে এব নাস্তি যথা তৎ পূর্বামেব ব্যাখ্যাতম্ এবঞ্চ সতি ঘাঙ্গবিকলং প্রত্যুদাহরণম্। অত্যোদ্যাতে। যণাত্র পূজায়ামিতি নাস্তি তথা সাধ্যমাধুভ্যামিত্যনেন সহ বিষয়াভাবঃ তথা সতি বিধানসামর্থ্যাদেব অনেনাযোগেনাপি সপ্তমী প্রাপ্রেতি ভরিবৃত্যর্থং পূজায়ামিতি ক্রতম্। সাধুনি প্রো মাতরং প্রতীভ্যাদৌ লক্ষণেহভিপ্রতিপর্যানব ইতি দ্বিতীয়া।
- (২০০)। প্রজ্যাদৌ বিতীয়াং বর্জ ক্লিছা অন্তা বিভক্তির্ম ভবতি। বৃক্ষং বৃক্ষং প্রতি পুলাণি সন্তীত্যধিকরণভান সপ্রমী বৃক্ষং বৃক্ষমিতি বীজারামিতি

২০১। অব্যবহিতেনা ক্তেন কর্মাণঃ। অধীজী ব্যাকরণে। ব্যবহিতেনা ক্তেন তু। কৃত্পূর্বী কটম্।

২০২। যশ্মাদধিকং যশ্ম স্থামী পরিবারো বা তত-দ্যোপাধিভ্যাম্। উপখ্যাগ্যাং জোণঃ। অধি পঞ্চালেমু ব্রহ্মদক্তঃ অধি ব্রহ্মদতেমু:

২০৩। জিয়াহেতোঃ কর্মযুক্তাৎ।

দিতীয়া। দেবদত্তং প্রতি কুণ্যতীতি ক্রুধক্রহের্ব্যেত্যাদিনা সম্প্রদানসংজ্ঞায়াং ন চঙ্গুর্থী। তাং প্রতি স্বামী মন্বচনং প্রতি সাক্ষী স্বাম্যাছৈরিতি ন ষষ্ঠী-সপ্তমৌ। কেশান্ প্রত্যুৎস্ক ইন্ডি প্রসিত্তোৎস্ক্কান্ডাং তৃতীয়া চেতি-সপ্তমী তৃতীয়া চ ন ভবতি।

- (২০১)। অব্যবহিত ইন্প্রভায়ো যত্বাৎ তেনাব্যবহিতেনা কেন মুক্তাৎ কর্মণ উত্তরে সপ্রমী ভবভি। অধীতী ব্যাকরণে ইতি অধিপূর্ব্ব ইঙ্ অধ্যবনে কঃ ইক্টাদেরিষ্টমনেনেভ্যাদাবিতি ইন্। ক্লতপূর্বী কটমিতি কৃতং পূর্ব্বমনেন ইভার্থে কৃতপূর্ব্বাদেশেভতীন্। মাসমধীতি ব্যাকরণে ইভাত্র তু মুগ্যাদেব কর্মণঃ সপ্রমী নতু মাসশ্বাদাতিদেশিককর্মণঃ।
- (২০২)। বন্ধাদধিকং বস্ত স্বামী বস্ত পদ্মিবারো বা ততন্চোত্তক্কে উপা-ধিভ্যাং বোগে সপ্তমী ভবতি। বন্ধাদ্বস্তেতি। পদম্বোরূপাধিভ্যাং সহ বথাক্রমং সম্বন্ধ স চোদাহরণেনৈব ব্যক্তঃ। উপথার্যাং জোণ ইতি উপে-নাধিক্যং দ্যোভ্যতে। অধিনা চ স্বস্থাম্যাদিসম্বন্ধঃ থার্ব্যা জোণোহধিক ইত্যর্থঃ। অধিপঞ্চালের ত্রন্ধত ইতি পঞ্চানাং ত্রন্ধতঃ স্বামী অধিত্রন্ধ-দত্তের পাঞ্চালা ইতি ত্রন্ধত্তত পাঞ্চালাঃ পরিবারাঃ।
- (২০৩)। জিলাহেতোঃ কর্মণা যুক্তাৎ পরে সপ্তমী ভবক্তি। চর্মণি। বীপিনং হত্তি দক্তরোহ তি. কুঞ্রুন্। কেশেষু চমরীং হত্তিঃ সীমি প্রা-

চর্মাণি দ্বীপিনং হস্তি দন্তয়োহ স্থি কৃপ্পরম্। কেশের্ জনরীং হস্তি সালি পুরালকোঁ হডঃ।।

২০৪। প্রদিতোৎস্কাভ্যাং তৃতীয়া চ। কেশের প্রদিতঃ ক্রেশৈ: প্রদিতঃ প্রদক্ত ইত্যর্থ:।

২০৫। লুপ্ততদ্ধিতনক্ষত্রাদধিকরণাৎ। পুষ্যে নবার্মন্দ্রীয়াৎ পুষ্যে পুষ্যযুক্তকাল ইত্যর্থঃ।

২০৬। সর্বা হেম্বর্যিঃ সর্বনান্নঃ। *
হেম্বর্থিঃ শব্দৈযুক্তাৎ সর্বনান্ন উত্তরে সর্বা বিভক্তয়ো ভবস্তি।

লকো হত ইতি। দ্বীপ্যাদিবধায় চর্মাদয়ো হেতবং তে চ দ্বীপ্যাদিভিঃ কর্ম্মভিঃ সংযুক্তাঃ। হেতৌ তৃতীয়ায়াং•প্রাপায়াং সপ্তমীবিধানম্।

⁽২০৪)। প্রাসিত উৎস্কক ইত্যেতাভাগি যুক্তাছন্তরে সপ্তমী ভবতি।

তৃতীয়া চ। কেশেষু প্রাসিত ইতি কেশবিষয়ে ইত্যর্থ: বৈষয়িকাদাধিকরণাং সপ্তম্যাং সিদ্ধায়াং তৃতীয়ার্থং বচনম্। প্রাসিত ইতি বিঙ্ বন্ধনে

ইত্যন্ত ক্রান্তন্ত রূপম্। প্রাসিত ইতি প্রসক্র উচ্যতে। কেশেষু নিত্যং
তৎপর ইত্যর্থ: ইট্টেইভিযুক্ত উৎস্কর:।

⁽২০৫)। লুপ্তঞ্জিতো যন্ত তন্মাদধিকরণান্নকত্রবাচিন উত্তরে সপ্তমী ভবতি। ভৃতীয়া চ। পৃষ্য ইতি পৃষ্যশব্দাৎ ভান্তদ্বুকাল ইতি টণ্ ভান্তদ্-যুক্কালেংবিশেষ ইতি টণ্ লুক্। অধিকরণাদিতি কিম্? ইন্ত মাভূৎ অদ্য পুরাঃ পূর্ববন্তজিতলুক্। লুপ্তজিত ইতি কিম্? মঘাস্থ অভি চক্রঃ।

⁽২০৬-१-২০৭)। সর্দ্ধা ইতি বিভক্তি প্রকরণাহিত জেবি লৈষণম্। হেতৃশক্ষসমানোহর্থো যেবাং তৈতে হিবৈর্ঘাদে সর্দ্ধনায় উন্তরে সর্দ্ধা অপি প্রথমানরো বিভক্তরো ভবস্তি। হেন্ধর্থ সর্দ্ধনায়াং বিলেমণবিশেষভাবা-ক্ষেত্রর্থভাশ্চ সর্দ্ধা বিভক্তরভা এব স্থাঃ। 'যতো নিক্ষবিভক্তেঃ সামাস্তেম বিশেষণবিশেষ্যভা তথাচ; বিশেষ্যক্তর ব্যক্তিকং বিভক্তিবচনে চ যে। ভব্রেষ্ব ভানি কার্যানি বিশেষণপ্রচহুপি চাইভি । কো হেতুর্বন্ধতীভাবেন প্রশান

২ % ৭ । বিশেষণবিশেষ্যভাবাদ্ধেত্বর্থেভ্যশ্চ ।
কো হেতুর্বসতি কং হেতুং কেন : হেতুনা কশ্মৈ হৈতবে কশ্মান দ্ধেতোঃ কস্থ হেতোঃ কশ্মিন্ হেতো ঘাভ্যাং নিমিত্তাভ্যাং ঘয়োঃ প্রয়োজনরোঃ ভবৎস্থ কারণেম্বিত্যাদি ।

ষষ্ঠী সূত্রে ততঃ স্থানে পঞ্চমী চ তছুতুরে। সপ্তমী চ পরে বাচ্যে গম্যে চোপপদে কচিৎ॥

"ইকো যলচি" ইকঃ স্থানে অচি পরে যলাদেশো ভবতি। "ভাব-কর্মণোরাত্মনে"। ভাবে কর্ম্মণি চ বাচ্যে আত্মনেপদং ভবতি। "বাচি যমো ব্রতে"। ব্রতে গম্যমানে বাচ্যুপপদে সক্তি যম উত্তরে। খজ ভবতি।

ইতি বাদীক্রচক্রচূড়ামণিমহাপণ্ডিত ঐক্রমদীশরকৃতৌ
সংক্ষিপ্তসারে মহারাজাধিরাজ-শ্রীমজ্জ্মরনন্দিপরিশোধিতায়াং রসবত্যাং বৃত্তো পঞ্চমঃ কারক্রপাদঃ সমাপ্তঃ ॥

বিভক্তে: প্রয়োগো জয়াদিতাবিনীতকীর্তিভাং নোপদর্শিতঃ অতৈত্ব দর্শিতঃ। এবং কিং নিমিত্তং কিং কারণং কিং প্রয়োজনমিত্যাদি এতত্ব-দাহরগৈরেবাভিব্যক্তম্। কেচিদ্বিতীযাদিবিধানমপি নেচ্ছন্তি হেতুকারণ-নিমিত্তশক্ষৈরেব যোগে সর্বা বিভক্তয়ো ভবস্তি। নালৈরিতি কেষাঞ্চিন্মতং কিং বিভবচ্ছনাঃ সর্বাদিগণে পাঠাৎ সর্বানামসংজ্ঞকাঃ ভবৎস্থ ইন্ডাদি ভবতো যদ্যপি সর্বানামকার্য্যং নান্তি তথাপি সর্বাদিগণপাঠাৎ ভবতোহক্ সমাসে পৃংবত্তাবো ছেম্বর্থিঃ সর্ব্বাদিশ্চেতি বছনাবিভক্তয়ঃ সর্বদ এব স্থারিতি ভাবঃ। ষষ্ঠি ইত্যাদি। অবং শ্লেকঃ শাস্তব্যবহারার্থং সত্তে ষষ্ঠাদীনামর্থান্তরেহিপি রুত্তিরিভি বিভাবনার পাণিনিব্যাকরণস্থা প্লোকবার্ত্তিকঃ, স্তত্ত্বতা নিবদ্ধঃ। অতথ্যব ইকো যলচি ভাবকর্মণোরাত্মনে বাচি যমো এতঃইতি পাণিনীয়স্ত্তোলাহরণাস্থাচার্য্যেণ দার্চ্যার্থং বুত্তাবৃদাহতানি কচিদিতি সর্ব্যা যোজ্যম্। তচ্ছকো যক্ষবিভক্তিপ্রানং তৎ পরামৃশ্রতে ইতি। স্থতে যা ষষ্ঠী সা তস্ত্র্যানে বেদিতব্যা। কাচিদ্গ্রহণাৎ সম্বদ্ধাদৌ চ। স্থানশকোহক প্রসঙ্গবাচী যথা দর্ভাগাং প্রব্যান্তরিতব্যাং দর্ভাগাং প্রসঙ্গ ইত্যর্থঃ ত্রস্ত স্থানে তস্ত্রপ্রসঙ্গরিতব্যাং দর্ভাগাং প্রসঙ্গ ইত্যর্থঃ ত্রস্ত স্থানে তস্ত্রপ্রসঙ্গবিত্তাই । স্বত্রে যা পঞ্চমী সা তত্মাহত্তরে ইত্যর্থে কচিদ্গ্রহণাদেব হেত্বাদৌ চ। স্বত্রে যা সপ্তমী সা তন্মিন্ পরে তন্মিন্ বাচ্যে তন্মিন্ গ্রেয়া স্বিদ্ধান্তিকরণাদৌ চ।

ইতি মহাপণ্ডিত শ্রীক্রম্দীশ্বরাচার্য্যক্সতে সংক্ষিপ্তসারে মহারাজাধিরাজশ্রীমজ্জুমরনন্দিপরিশোধিতায়াং বসববত্যাং বৃত্তৌ ঔথাসনিকশ্রীগোয়ীচন্দ্রবিরচিতায়াঃ বিবরণীনামটীকায়াং
পঞ্চমঃ কারকপাদঃ সমাপ্তঃ

সুবস্তপাদঃ।

নুক্ চিল্পিক।

চিহ্নার্থস্য চিহ্নপ্রয়োজনকন্ম লুগ্ ভবতি। পদসিদ্ধে যন্ন স্থিতং তচ্চিহ্নার্থম্। দেব—জস্ দেবাঃ। ডুগ্লুচুষ্—তিঙ্ – শঙ্ পচতি।

€.3

২। স্থাহব্যয়াৎ।

(২)। স্থবিতি সন্ত্রমীবছবচনশু ন গ্রহণম্। ব্যাপ্তেন্যায়াৎ ক্রম-বিরোধাচ্চ। প্রথমাদীভ্যাদি এতেনৈতৎ প্রতিপাদিতং যথা পূর্ব্বাচার্য্যৈঃ স্থবিতি প্রজ্যাহারেণ সপ্ত বিভক্তর উপসংগৃহীতাঃ তৎপ্রসিদ্ধোবাত্রাসি

^{(&}gt;)। নিত্যানাং পদানাং প্রতিপত্তার্থং প্রস্কৃতিপ্রতায়বিভাগপরি-করনং শান্তেণ ক্রিয়তে। (নতু পদানি ক্রিয়ন্তে।) তত্রাধিকসক্ষরং পদসিম্বৌ ন স্থিতং তশু কিং প্রয়োজনমত আহ। পদসিদ্ধৌ যন্ন স্থিতং ভচ্চি-স্থার্থমিতি তক্ত পৃথিধীয়তে। হেতুক্বতং জ্ঞানং চিহ্নং যথা কমগুলুনা চৈত্র-শ্চিহ্নিতো জ্ঞাত ইতার্থ:। যথা কর্মন্তলোশ্চিহার্থতা তথৈবানবন্থিতবর্ণানাং চিহ্নার্থতা। সুগিতাব্যুৎপক্ষ নাম নতু নুঞ্চতে: কিবন্তম্ভ রূপম্। তথা সতি বুকি স্ত্রীৰিহিতত চেতি নিদে শাহুপপত্তি: তাং। চিহ্নপ্রয়োজনং ত্রিকি ধম্। সন্দেহনিরাসস্তম্ভাবোপলক্ষিতকার্য্যপ্রবৃত্তিঃ শাস্ত্রাম্তরপ্রসিদ্ধ্যপদংগ্রহ-শ্চেতি। যদি জস্পসোজ কারশকারো চিহ্নপ্রয়োজনকো ন স্থাতাং তদা অসি রুতে জন্শদো: কার্যাভেদে সন্দেহ: স্থাৎ। একস্থাস্করণম্ভ ন রুতং স্পৃষ্টার্থম্। যদি ডুপচষ্ ইত্যক্ত ডুকারষকারাদরো ন ক্রতাঃ স্মান্তদা ডি.ড: ক্ত্রিম ইতি ক্রিম: স্বরিতঞিতোরিত্যাদিদা আত্মনেপদং বিভিদাদেরাদিতি আতে ন স্থাৎ। কিপ্ তুগাদৌ চ পক্ষারাদরো নাপি সন্দেহনিরাসার্থা:। নাপি তদ্তাগোপদক্ষিতত্বেন কার্য্যার্থাঃ। কিন্তু শাস্ত্রান্তরপ্রসিষ্ক্যপুসংগ্রহার্থাঃ। কিবিতি তুর্গিতি যঃ শাস্ত্রাস্তরে প্রাপদ্ধঃ স এবারমিতি প্রাসিদ্ধারণসংগ্রহো ষধা স্থাৎ এবং সর্ব্যত্রোলেয়ম্। ষিদ্তিদাদেরাং শিক্তি তিষ্ঠা'দ: স্থাদেরিতি জ্ঞাপকাং প্রকরণনিয়মাভাবে ধার্মদাবপ্যনেন লুক।

প্রবায়াত্তরত সুপো লুগ্ভবতি। প্রথমাদিসগুবিভক্তীনাং স্থপ্ প্রত্যাহারঃ। স্বর্গচ্ছতি স্বঃ পততি স্বস্তিষ্ঠতীত্যাদি।

- ত। অব্যয়ীভাবে চানতঃ। অধিন্তি উপবধু।
 - ৪। নামপদার্থে শব্দাসুকরণে চ।

রাবহারঃ কার্যাঃ যতো নাত্র শাস্ত্রে প্রত্যাহারগ্রহণমুপস্থান । অথবা প্রত্যাহিরতে উপসংক্ষেপেণ গৃহতে অনেনেতি সর্বোপসংগ্রাহকং কিমপি প্রত্যাহারপদেনাভিধেয়ন । অত্র সপ্তবিভক্তীনামক্তে মং স্থবিতি ক্রায়তে তদেবোপলক্ষণীভূতং সর্ব্যোপসংগ্রাহকমবগন্তব্যান । যথা রাজা চলতি ইভ্যুক্তে
তত্রপলক্ষিত্রস্থ সমূহক্ষৈব গমনমবগম্যতে । স্বর্গজ্ঞতীতি বিভীয়াভূতীয়াচতুর্থীনামুদাহরণং সংগততীতি পঞ্চনীষ্চেগ্যাং স্বন্ধিউতীতি প্রথমাসগুম্মাঃ ।

- (৩)। অবারীভাবে সমাসে সহিত আকারবাতিরিক্তাচ্চোত্তরশু স্থুপো লুগ্ভবতি। অধিস্থীতি স্ত্রীমধিকতা কথা প্রবর্ততে ইতি সমৃদ্যাদাবব্যন-শ্রারীভাব ইত্যনুবৃত্ত্বী সপ্তমার্থে ইতাবারীভাবঃ। উপবধিবতি বধবাঃ সমাপমিতি সমীপে ইত্যবারীভাবঃ। অবারীভাবোহবারবিশেষণঞ্চ ক্লীবমিতি ক্লীবছেন হুস্বোহস্তঃক্লীব ইতি হ্রস্বঃ। অনত ইতি কিম্ ? উপকুস্তম্ অব্যরী-ভাবেহদন্তাৎ স্থপোহপঞ্চমা ইতি মঃ। নতু মকারবিধ্বনসামর্থাদেবাক্র অদন্তাৎ স্থপোহপৃত্তাবে সিদ্বেহনত ইতি কৃত্য্ উপকৃন্তাদিত্যাদে পঞ্চমা-দিল্মিবেধার্থম্।
- (৪)। যথাৎ হলো বৃষিধেরন্তনাদক্তপদার্থে বর্ত্তমানাং শক্তামুক্ততী প্রযুক্তাচ পূর্বলক্ষণহরপ্রাপ্তো বৃগ্ ভবতি। প্রাপ্তং হর্ষেন ইতাক্তপদার্থে। বছবীহিরিতি সমাসঃ ততঃ বঁচী। প্রাহ্ম ইতি প্রশক্ষোংবারং শক্ষামুক্ততী প্রযুক্তঃ এবং জ্ঞাতম্বিদ্ধি যেন সা জ্ঞাতাধিন্তিঃ সরতিক্রান্তা অতিস্বরঃ। অতাধিন্তিরিত্যাদার্থি না পূক্। অক্তপদার্থাদক্তর পূগ্ ভবত্যের। পরমুদ্ধঃ পত্তি ইক্রম্বন্তিঠিত। সর্ব মুক্তরণে বেতি বিকল্পে সিদ্ধে নিত্যং পুলিক্ষেধ্য শক্ষামুক্তরণে চেতি কৃতম্। নমু কাল্লবার্যানি অত আহ চাদীত্যাদি। চাদরো লিক্স্ক্যাবিনিম্ক্তাং অতএবোক্তং লিকসংখ্যাবিনিম্ক্তাং স্থ

প্রাপ্তস্বরঃ পুজঃ প্রাবহঃ। চাদি প্রাদিস্বরাদি কৃত্বু শাদিত স্বিভ-বদাদ্যব্যয়ন্।

় ৫। ব্রস্থিঙ্ভ্যাং সোঃ সম্বুদ্ধৌ। ক্রমানেঙশ্চোতরুত সম্বোধনবিষয়ত সোলুগ্রুত্বতি। হে দেব হে বন হে অগ্নে হে বায়ো।

পদত্বার্থমন্যয়াদিতি অদ্রব্যবাচিনামব্যয়ানাং লিঙ্গসংখ্যাবিনিমু কত্বমিতি। স্বরাদয়স্ত তেভাো ভিন্তস্তে অতএব তত্র সর্ববিভক্ত্যপদর্শনং ক্রিয়াসম্বন্ধেন .দর্শিতবান । চাদয়ো দ্যোতকা: স্বরাদয়স্ত বাচকা ইতি চাপরো বিশেষ:। স্বরাদীনামদ্রবাবাচিত্রমিতান্তেষাং মতং কিন্তু তদিহ নাঙ্গীকৃতম্ এতাবতৈব চাদিস্বরাদ্যোঃ পৃথগুপাদানম্। প্রাদয়স্ত প্রপরাঙপনীত্যাদিল্লোকেনৈবা-ভিহিতা উপনর্গনংজ্ঞকাশ্চ এতাবতা পৃথ গুপন্তস্তা:। আদিপদেন শ্রদাদয়: প্রাত্রাদয়: সাক্ষাদানয়ক গ্রাফা:। অথবা চাদিপদেন চাদয়: স্বরাদিপদেন শ্বরাদয়ঃ প্রপঞ্জয়েন কিয়ন্ত উপদর্শান্তে। চ বা হ হা অহ এব এবম্ ইব ননং শশ্বৎ চিৎ কচিৎ হস্ত সাকং মা মাঙ্ নঞ্ উত তং এত সার্দ্ধ রে অরে চেৎ কচ্চিৎ শ্রৌষট্ বৌষট্ অদ্ধা কিম্ উদ্ ছো আহো স্বাহা স্বধা কিম্ স্বস্তি অয়ি ওম্ অংখ হি হে অংহ থলু কিল অথ অংথা নমু নু জাতু তু অ ই উ ঐ ঔ ইত্যাদয়ঃ। তু তু ইত্যেত্রোরবায়য়োরুকারন্ত বকারাদাববারে পরেহলৈলু গুক্ত: সোহত্র নোক্ত:। বৈ নৈশক্ষােরবায়য়ােবি দামানতাং। স্বর্ অন্তর্ প্রাতর্ পুনর্ উচৈচস্ নীচৈদ্ শনৈদ্ ঋতে যুগপৎ আরাৎ পৃথক্ क्षम चम जिना मोता भोता हिता मनाक् नेयर खन् आवर जायम् ममम् जुस्कीम् विष्य आदिन् धिक् निकरा नमस्रो खर्म् नार्यम् नर्जः मृसा यदा नामीजानसः। ক্তু,মালীতি কুৎসং ভূকং ভূমাদি আদিপদেন জ্বা ণম্ যচো গৃহজ্ঞ। তদ্ধিত-বদাদীতি তদ্ধিতসংজ্ঞকং বৎ আদির্যস্ত স তদ্ধিতরদাদিঃ বদাদিশুদিবাদাবি-ত্যারভ্য যাচোরুদ্গুণ ইত্যত: প্রাক্ যে বিহিতা: প্রত্যয়ান্তে বদাদয়:।

(e)। ছে বন ইতাত্ৰ সোৰ্দ্ম ইতি ৰাধিতা স্থলক। অথবা মকারে ক্তে স্থানিবভারাত্তিক পুক্। হ্রবৈঙ্ভ্যামিতি কিম্ গ হৈ বোমপাঃ

छ। खनुः तमी।

সম্বুদ্ধী সৌ পরে গুণো ভবতি। হে সখে হে পতে হে মতে হৈ
মথে হে ক্রোফৌ হে স্কুনো হে বরতনো। দীর্ঘাস্তইতনূবরতন্শব্দয়োস্ত। স্তুতমু সত্যমলংকরণায়তে বরতমু সম্পূরদস্তি
কুকুটা ইতি মাঘঃ। হে কর্ত্তঃ হে মাতঃ হে পিতঃ।

१। न श्रांतिः।

হে পন্থা: হে মন্থাঃ হে ঋতুকা:।

- (৬)। অত্রাপি সমৃদ্ধাবিতি বিষয়সপ্তমী। সমৃদ্ধিবিষয়ে সৌ পরে সম্বোধনাদিহিত ইত্যর্থ:। হে সথে ইত্যত্র তৃত্ত্বৎ স্থারিত্যতিদেশাৎ শত আৎ স্থানিত প্রপ্রে হে ক্রোষ্টো ইত্যত্র স্থানিত প্রস্কে প্রপ্রে ওপ:। দীর্ঘান্তেত্যানি। এতেনৈতৎ প্রতিপাদিতং পূর্কস্ত্রাদ্ধ ইত্যান্তর্বত্তে। তৎ ষষ্ট্যন্তং বিপরিণামেতি তেনায়মর্থ: হ্রম্ম ইকঃ স্থানে এঙ্ অর অলো ভবস্তাতি এঙাংকুর্ভিরসম্ভবাদেব নিরস্তা:। অভএব হে প্রীরিত্যাদৌ ন গুণঃ। তনোতেঃ ক্রমাদের ডিতি উঙ্জঃ তন্ শক্ষো দীর্ঘান্তঃ তন্শক্ষ্যাম্ব্যজাতিত্বাৎ উদন্তারম্ব্যজাতেরিতি উঙ্বিধানং নান্তি শোভনা তন্র্স্ত। ইতি বহুরীহিঃ তে চানিত্যা ইতি কপ্রতায়নিযেবঃ স্ত্রীদৃদিত্যাদিনা হ্রমঃ। ১কারাস্তাং হে গমল।
- (१)। সদ্দিবিষয়ে সৌ পরে পথি মথি ঋতৃক্ষি ইত্যেষাং গুণো ন ভবতি। ছে পথা ইতি পথাদেরিভানুরতো আৎ সাবিতি ইকারস্থাকারঃ। থো স্থাদেশত। নক আৎ সাবিতি সমুদ্ধিরাতিরিক্তেংপি সাবকাশঃ গুণঃ সাবিতি পথাদিব তিবিক্তেংপি সাবকাশঃ। তত্মাৎ পথাদেঃ সমুদ্ধার্ভর্প্রাপ্রাবপেক্ষিতবিধিয়াৎ আৎ সাবিতি ভবিষ্যতি কিমনেন লক্ষণেন তদেত্রজ্পাপ্রতি নমুদ্ধি প্রাপ্তান্ বিধীন্ গুণ এব বাধতে তেন হে কর্তঃ হে সথে হে ক্রোষ্টো ইত্যত্র গুণ এব ভবতি। কিমর্থং তাই ন সমুদ্ধাবিতি লক্ষণং ন ভল্লকণং তত্তির ব্যাখ্যাস্থামঃ।

হে খ্রী:। অঙ্ইতি ন ক্তং দীর্ঘসাগ্রহণার্থন্। এতচ্চ জ্ঞাপরতি প্রত্যা-হারেযু প্রায়েণ ক্রমোক্যা দীর্ঘসাপি গ্রহণম্।

৮। বা ক্লীবে। হে বারি হে বারে।

- ৯। মাতুমাতঃ পুত্রেহক্সপদার্থে মাতৃস্ততৌ। হে গার্গীমাত বং ধলোহদি।
 - ১०। छोन्द्र त्यार्थ्यारमः।

সমুন্দো সো পরেহ প্র্যাদেং স্ত্রালিক ঈদৃদ্ধুমো ভবতি। হে নদি হে বধু হে লক্ষি। অশ্রাদেরিতি কিম্ ? হে ক্রীঃ হে ক্রঃ।

১১। সেযুবীদৃদন্তো ধাতুঃ।

- (৮)। ক্লীবে সন্ধুদ্ধিবিষয়ে সৌ্পরে গুণো বা ভবতি। হে কর্তৃক্ল-হ কর্ত্তঃকুল হে লিখিতগম্ হে লিখিতগমণ্ ইত্যপি ভবতি। হে কর্তৃক্ল ইত্যত্র গুণো ন ভবনীতি ভাগবৃত্তিঃ।
- (৯)। সন্ধারিষয়ে সৌ পরে অস্তপদার্থে সমাদে সভি পুত্রে বাচ্যে মাতৃস্বতৌ গমামানারাং মাতৃশব্দ স্থানে মাতাদেশো ভবতি। মাত্রা শুভিঃ মাতৃস্বতিঃ প্রাঘাগুণ চয়া মহাকুলসম্ভতয়া বা মাতৃস্বতিগমাতে তয়ৈর পুত্র-স্থাপি শুভির্ভবতি। কাদিশ দানেরিতি কে প্রাপে বিধানম্। গার্গীমাতেতি বৃদ্ধার্থতিদিতান্থেইরঞ্জনবিকারমোরিতি পুংবছা নিষেধঃ। মাতৃশ্বতাবিতি কিম্ ? হে যুব্যাভৃক শ্বরপাধাানমেতং।
- ১০।। হে নদি ইতি নদানিতাং প্রিয়ানী হে বধিবৃতি বধ্ বন্ধনে ক্ষাদেরঙ ইতি উঙ উঙ্কঃ স্বভাবাদনং স্ত্রীলিঙ্গঃ। হে লন্ধি ইতি লক্ষণনান্ধরোঃ ত্রাদেরী ব্রিয়ামিতি ঈপ্রতায়ঃ লক্ষাদেশশু। হে অতিলন্ধি দেব তে হে বছপ্রেয়সি নূপ ইতাত্র পুংলীর্ঘঃ ব্রাপ্রতায়ন্ত্রীবং পুংত্বেহপীতি স্থাজার স্থঃ গ্রাদেরিতাত্রানিশকো গণস্চকঃ তেন ভ্রশকো গৃহীতঃ ভ্রম্ছলনে ইতাপ্ত ক্ষাদেরঙিতি উঙি ক্রতে অকারমকারয়োলুকি চ ক্রতে ক্রশকো বাংপাদিতঃ প্রকারব্দনশু প্রিপ্রকার ইতার্থঃ তৎ প্রকারং দর্শয়তি।
 - ১১১)। সহ ইর্বাভাং বর্তত ইতি সেয়্ব্ সেয়্ব্ চাসৌ ঈদ্দস্তশ্চেতি

হে ধীং হে ভুঃ। শগেষুবীদূদ'ন্তস্ত্রী। হৈ শ্রাধি হে বর্ষাভু। ক্রমাদেশসামর্থ্যান্ন গুণং।

:২। দ্বাজন্বার্থাদেশ্চ।

হে অন্ধ হে অন্ধ হৈ অন্ন হে অগ্ন হে অগ্ন হৈ স্কু । হা পিতঃ
কাসি হে স্কু বহেববং বিললাপ স ইতি ভ িটঃ। বিমাননা স্কু
কুতঃ পিতৃপুৰ্ভহ ইতি কালিদাসঃ। ঘাজিতি কিম্ ? হে অন্বিকে
হে অন্বালিকে হে অন্বালে হে অন্বাড়ে। দ্রীত্যেব। হে স্কু দৈ বিদত্ত।

সেয়্বীদৃদন্তঃ স ধাতৃঃ প্রাদির্ভবিত। শ্রীশক্ষাহপে বংবিধ এব তেন শ্রীশক্ষ-সদৃশা অপরে গৃহন্তে তথাহি শ্রিঞ্ সেবায়ামিত্যমাৎ কিপ্ দীর্ঘন্ত। হে ধীরিতি ধ্যৈ চিন্তারাং ধ্যায়ো শ্লীণেতি কিপ্ ধীভাবন্ত। হে ভ্রিতি ভ্র্যাতোঃ কিপ্। হে প্রশ্নীত্যাদি উপসর্গাদেব ধিয়ঃ স্থবর্জমিতি বর্ষাপুনদৃণকারাভ্যো ভ্র ইতি যকারবকারাভ্যামিযুবে বাধিতাবিতি। নানয়োঃ সেয়্ব্রম্। প্রধায়তীতি প্রকৃষ্ট্র্রিবাচকন্ত প্রধীশক্ত প্রনাব্যায়ং বর্ষাভূশকন্ত চ নিয়ত্ত্রীলিক্ষরাৎ ক্রাপ্রংদীর্যভাবে অনিয়বর্থো ধাতৃন্বিতি প্রবন্ধাভাবঃ। অধাতৃস্তা। হে স্থি। সের্বীদৃদন্তত্রমিহান্ত্যের ন ধাতৃত্বম্। তথাহি অস্থ ক্ষেপণে ইত্যন্ত্রাৎ ন্তাদেক্ষভিতি ত্রঙি ক্তে বহুল্বচাদিলাপে চ কতে নদাদেরাক্ষতিগণন্ধানীপ্রভাবে চ কতে স্থীতি আন্তো ধাতৃত্বাভাবঃ। নত্র হে নদীত্যাদের গুলঃ ক্ষার স্থাৎ কতে আহ হ্রম্বাদেশসামর্থ্যার গুলঃ যদ্যত্র গুণেন ভাবাং তদা হ্রমাদেশসক্ষরা পূর্বস্ত্রেণ। শ্রাদিবজিতি তক্ত দীর্ঘস্তাপি গ্রুং বিদ্বাহা।

(১২)। অসা অর্থো যেবাং তে অন্নার্থাঃ অস্বাপ্র্যায় ইতার্থঃ ঘাচশ্চত ক্ষার্থাশ্চেতি ঘারুস্বার্থাঃ আদিপদেন শিট্টপ্রবোগদশ নাভ্যুপগতত্ত্ববিধানার গ্রহণং তেন হুস্ব হস্ত হা পিতঃ কানি হে ক্ত্রু ইক্ত ব্রুহস্ত বিধানার হুস্বার্থমাদি গ্রহণমূচিতম্। ঘারুস্বার্থানেশ্চ স্ত্রীনিক্ষ্ত সম্ব্রের সৌ পরে হুস্কো ভবতি। অস্বিকাদিত্রয়মপি অস্বাসমানার্থং কিন্তু ঘাচ্ছাত্বার ইংসা নাজ্যাধান কর্ম অবাদিগণ এব ক্রিয়তাম্ অবিকাদির গণগঠিত।বাদেবন

১৩ । চতুরনভূহে। । হে প্রিয়চন্ত্র লৈ ছে প্রিয়চন্দ্রে বদত্ত হে অনভূন্ হে প্রিয়ামভূন রটবি।

४८। **७**वम्स्टर्स्ट †।

হে ভোঃ হে ভবন্ হে ভগোঃ হে ভগবদ্ হে হুঘোঃ হে ভাষবদ্।। অব্যয়োহপি ভোঃ শব্দোহস্তি তেন ভো ব্রাহ্মণি ঙে, দেবদত্যজ্ঞ-দত্তবিষ্ণুমিত্রাঃ। তথাচা ভাষ্যম্, অব্যয়মেব ভোঃ শব্দো নৈধা ভবতঃ প্রকৃতিরিভি।

ভবিষ্যতি। নৈৰম্ উপসংগ্ৰাহ্মকন্ত সৰ্ব পা অসম্ভবে হি গণঃ ক্ৰিষ্বতে কত উপসংগ্ৰাহ্মক সতি ঝটিতি দৃঢ়নিশ্চয়ো জায়তে। যদ্যুপসংগ্ৰাহক্ভবেহপি গণঃ কাৰ্য্য তদা পঞ্চমান্তস্থাহন ইল্যক্ত্বা শ্ৰমাদেক্তি ক্ৰতং-স্থাৎ শৰ্মাদি-গণপাঠাভাবাদেব হনে। দীৰ্ঘো ন ভবিষ্যতি।

- (১৩)। চন্তার্ অনজ্বাহ্ ইত্যেতয়োঃ সমুদ্ধৌ দৌ পরে ব্রুমো ভবতি।
 চন্তার্শক্ষা নিতারহুরচনান্তমাৎ স্থন সন্তর্তীতি অন্তপদার্থে উদাস্তঃ
 ভংসাহচর্বাৎ অনজ্বাহ্শকোহপান্তপদার্থে চ ব্রুমো ভর্কত। কেবলে তৃ
 ভবতীতি মুখ্য এব পক্ষঃ। যোগবিভাগকরণাৎ স্ত্রীতি নাম্বর্ততে এতদর্থং
 হৈ প্রিয়চম্বদের্বদন্ত ইত্যুদাস্থকুন্। হে প্রিয়ানজ্বট্রি ইতি প্রিয়োহনজ্বান্
 বক্ষাঃ সা প্রিয়ানজুন্ সাবনজুহ ইতি মুদ্। যদা তু অনজ্বাহ ইত্যামাৎ
 নদাদিস্থানীপ্রতামে ব্রিয়ামনজ্বো বেকি চ কতে অনজ্বী অনজ্বাহীতি
 শক্ষাভ্যাঃ সমাসঃ। তদা হে প্রিয়ানজ্বিলিক ফে প্রিয়ানজ্বীনে ভটকি
 ইতি ভবতি। নগ্রেমকে তু হে প্রিয়চত্বন হে প্রিয়ানজ্ব নতি ভবতি
 জত্বনজ্বোর্বা উচ্ছেয়াদাবিত্যাদিনা বাকারক্স স্থানে উকার এরান্তি বাধিকঃ
 প্রভাবতা ভরোদাস্ত্রম্।
- (১,৪)। ভবদারেরবয়বস্ত বক্তঃ স্থানে সমুদ্ধৌ সৌ পরে উসাদেশো বা ভবতি। হে ভো ইতি ভা দীখো ভবজুর্ভাতেরিতি ভবতুঃ হে ভগোঃ হে অবো ইতি ভগ অবশক্ষোন্তদস্তান্তানিন্ বা মতুরিতি মতুঃ অমন্তঃ তদুপারেভাদিনা মক্লারস্য বঃ। অহায়েছপীতাাদি বদি ভোঃ

১৫। উশনোহন্তো লুগো বা। হে উশন হে উশনন্ হে উশনঃ।

১৬। প্রচেতোইন্ডো রাজনি রো বা। হে প্রচেতো রাজন্ হে প্রচেতা রাজন্।

५१। जारम् ।

সম্বুক্ষো সোলারে জ্রালিঙ্গ আদেন্তবতি। হে বালে হে মালে।

১৮। मोर्ट्या न·हनारमः।

সৌ পরে হনাদের্ঘো দীর্ঘ: প্রাপ্তঃ সম্বন্ধো স ন ভবতি। হে

শন্দোহয়ং ভবত এব প্রকৃতিঃ স্যান্তদা দেবদন্তাদীনাং বহুনামেব বিশেষণং ভোঃ শন্দো ন সাথে সাবেব পরে উস্ বিধানাদাহ অব্যয়মের ইত্যত্তিব এয় ইত্যথেন ভো দেবদন্ত ইত্যাদিবাক স্থিতীয়া ভোঃশব্দস্য পরামর্যঃ। নৈবা ভবতঃ প্রকৃতিরিতাত্ত্র তু প্রকৃতিবিশেষণত্বাদেবেতাক্ষ্য স্ত্রীলিক্ষতা ভগোঃশব্দস্য অঘোঃ শব্দস্য চাব্যয়ত্বং চতুর্যন্থাং রা ক্ষিত্থ ভন্মতে ভগো দেবদন্তবক্ষদন্তবিশ্বমিত্রা ইত্যাদির্ভবতি।

- (১৫)। সম্বুদ্ধৌ বিষয়ে সৌপরে উশনংশক্স্যান্তঃ লুখা ভবতি। নকা-বশ্চ বা ভবতি। অতএবোদাহরণত্রয়ম্। লুক্পক্ষে হ্রব্যৈঙ্ভ্যামিত্যাদিনা স্থলুক্ ইত্যত্র লুগ্যুজোহস্ক,ইত্যুনেন লুক্।
- (১৬)। সমুদ্ধৌ বিষয়ে সৌ সতি রাজনি শব্দে পরে প্রচেতঃশক্ষ্যান্তোঃ
 রো বা ভবতি। হে প্রচেতো রাজনিনি বিসর্গে কতে ওরতাত্যকাদানিতিঃ
 পূর্ব্বাতা সহৌকারঃ। হে প্রচেতা রাজনিতি রেকে ক্লভে অচ্যকাদে চরাস্ত ইতি কন্দানিতাবিঃ। চ্যোরিত্যাদিনা রেকলুক্ দীর্ঘন্চ। প্রকরণনিদ্মাদ্রাদ্দন্শকোহপি সম্বুদ্ধিবিষয় এব প্রাহঃ। অথবা রাজনীতি সম্বুদ্ধিপদমেবাত্ত্রকাত্য সপ্তমান্তঃ তেনেহ ন ভবতি। হে প্রচেতো রাজান্তি।
- (১৭)। অনির্বর্থো ধাজুরিতি স্থিরাঞ্ পুংবদ্ভাবাৎ স্ত্রীলিঙ্গ আর ভব--জীতি। হে সোমপা বান্ধণীত্যত্ত এতং ন ভবতি।
 - (১৮)। হে বৃত্রহন্নিতাত্র সৌহনাদেরিতি হে স্থমন ইন্ডাত্র- আইন্ডান

বৃত্তহন্তে স্থানঃ হে স্বপ_্ হে মহন্তে পুমন্তে স্থানন্তে গামিরিভাদি।

১৯। ন নাস্তস্ত নলুক্ চ। হে অর্থিন্ হে ভোগিন্।

२ । वा क्रीरत।

(र कर्षा (र कर्षान्।

(A)

শন্তদ্যাধাতোরিতি হে স্ববিত্যত্র স্থাট দীর্ঘ: স্ত্রীপুংসয়োরিত্যমূর্ত্তো ভেংপোহজাদ ইতি হে মহন্ হে পুমন্ ইত্যত্র স্ট্রাগিদিত্যাদিনা হ'ম কতে
দীর্ঘো মহং সাজোনাবিতি হে গোমনিত্যত্র অন্তর্গাসন্তস্যাধাতোরিত্যাদিন।
প্রাপ্তস্য দীর্ঘ্য নিষেধ:। আদিগ্রহণাৎ হে রাজনিত্যত্র স্থাট দীর্ঘ: স্ত্রীপুংসয়োরিতি প্রাপ্তপ্রতিষেধ:। এভিল ক্রনৈর্যত্র দীর্ঘ: প্রাপ্রোতি স হনাদেরিত্যানেন গ্রাহ্য:। হে স্ববিত্যত্র ঝগাদেরং সর্বত্রেতি প্রাপ্তস্ত সমাসাস্তস্তানিত্যখানিষেধ:।

- (১৯)। সমৃ জৌ সৌ পরে নাস্তম্ন প্রাপ্তে। নির্দেশ নকারলুক্ চ ন ভবতি। চকারোহত্র পূর্বস্বেণ প্রাপ্তমানীর্ঘনিষ্যের সমৃচ্চয়ার্যাঃ। দিবিধা হি সমৃচ্চয়ার্যা ভবতি প্রাপ্তমাপ্রাপ্ত চ। যথা ব্রান্ধণেন্ত্যো দিবিদানং দীয়তাং ঘৃতঞ্চ দীক্ষিতায় ইতাত্র ব্রান্ধণজনে প্রাপ্তমেব দিবিদানং সমৃচ্চীয়তে। শৃত্তেত্যো দিবি দীয়তাং ঘৃতঞ্চ ব্রান্ধণারেত্যব্রাপ্রাপ্তমেব দবিদানং সমৃচ্চীয়তে ইহ তৃ পূর্বস্বেণ প্রাপ্ত এব দীর্ঘনিষ্যেঃ সমৃ চেতঃ। হে অর্থিনিত্যত্তা অর্থশন্ধাৎ অর্থানাকাজিক্ষণীতি ইন্। নো নাস্বস্তোত প্রাপ্তনলুক্নিষ্যেঃ। নেতামুন্বুজী নিষ্যের স্নান্ধ প্রভাগ স্বপ্রতিপঞ্জর্মন্। হে রাজবুলারক ইত্যব্র সমাসে কতে যো নকারলুক্ তম্ভাপি প্রতিষ্যেঃ কন্মান্ন ভবতীতি। ন চাবাচাম্। সমৃ জিপদানাং সমাসাভাবাৎ যতো বাক্যপত্মর্থং নাত্র সমাসো গ্রম্বিত্থ সমর্থঃ অবয়বসন্থোধনং হি বাক্যেন গ্রম্যতে- সমৃদান্ধসন্থোধনম্ভ সমাসেন।
 - (২০)। ক্লীবে সম্বুদ্ধো সৌ পরে নকারনুগ্নিষেধা বা ভবতি। পূর্ম্ব-স্থানেণ নিত্যে প্রাপ্তে বিভাবেয়ন্। দীর্ঘস্ত স্ত্রীপৃংস্লোবি হিততাৎ ক্লীবে ন প্রায়োত্যের।

২১ । বোক্থশংসাদেঃ । হে উক্থশাঃ হৈ শ্বেতবাঃ হে:অবযাঃ হে:পুরোডালে।

২৩ । স্বাদ্তোক্ত। অনুং গম্ম্

(২২)। অণোহন্ অণম্ ইতি ষষ্ঠাদমাদঃ অণ্ ইতি কিমর্থং রায়ং
নাবম্। নমু ঋগিতি ক্রিয়তাম্ এবং সতি ৠদুতোশ্চেতি ন ক্বতং ভাৎ
তর্হি কর্তারমিতাত্র বৃদ্ধেঃ পিতরমিতাত্র গুণাৎ পূর্ন্মং লোপো ভবতি। নমু
অপেকিতবিধিখার ভবিষাতি অপেকিতবিধিপরিভাষাঙ্গীকারঃ পুনরপ্যবশ্যমেবাত্র করণীয়ঃ। অন্তথা প্রতিভূবং থলপুমিতাত্রাপি পূর্বং লোপঃ
ভাৎ। অত্রোচাতে। নাত্রাপেক্ষিতবিধিশ্বাং উর্ বকারো ক্রিরেতে।
কিন্তু যদয়ম্ আমি ক্রিয়াং নোব্ চেতি প্রতিষেধমনুশাস্তি তল্প্ জ্ঞাপয়তি
লোপোহণমোহতঃ সবর্ণোহক্শসঃ সো নন্দ পুংসীত্যাদিবিধিভাঃ প্রাপের
উবাদয়ো বিধীয়স্তে অতঃ আম্যকো মুনীর্ঘণ্টেতি প্রাপ্তান্ন বিধেঃ প্রাপ্তবাদয়ঃ
প্রাপ্তর তৎপ্রতিষেধার্থং লক্ষণং সার্থকং ভবতি। তল্পাদপেকিতবিধিপরিভাষাঙ্গীকারঃ উবর্থমত্রাবশ্রং করণীয় ইতি ষজ্কং তল্পভবতি। তদেতাদুশমপেক্ষিতবিধিপরিভাষাঙ্গীকারেণ লক্ষণথত্তনমপাপ্তিতাং ভবত্তরস্বমেতং।
(২০)। শ্বাদ তোশ্চ সম্বাদ্ধিমাহমাহলারত পুণ্ভবিভি। অনুমিতি

^{(&}gt;>)। উক্থশংসানে: সন্ধানি সৌ পরে দীর্ঘনিষেধাে ন'ভবতি। উক্থশা ইতাাদি উক্থং শংসতীতি কিপ্ হলুপান্তেত্যাদিনা নকারলুক্। খেতা-বহস্থোনিতি অবস্থান্যজ্যাহকেতি কিপ্ দীর্ঘণ্ড অবপ্রাদ্যজ্যাকেতি অবাদ্সভোহসং প্রসারগকেতি কিপ্ ইজাদেশাভাবো দীর্ঘণ্ড পুরে। দাশুস্তোনমিতি
দাণ্ দানে দিবাদিঃ পুরসো দাশেদে উত্তেতি বিপ্ দকারশ্ ডকার:
এভাঃ সৌ কতে উক্থশংসাদেও সিতি ডদ্প্রতায়ঃ ডিতি স্বরতছেষযোল্গিতি লুকি কতে ২৩০ন্ততাঃদিনা দীর্ঘাং তপ্র সমুদ্ধী প্রতিষেধাে
নিরস্তঃ।

২৪'।' সবর্ণোহক্শসঃ সো নশ্চ পুংসি। সকঃ সম্বন্ধিনঃ শসোহতঃ স্থানে পূর্ববসবর্ণো ভবতি। পুংলিজে লো নশ্চ। দেবান্ কবীন্ নদীঃ বধ্ সাতঃ ।

२०। ञन्छारनोजन्छ। उद्भृत् वद्भृ वद्भृः।

२७। न (शांकाटनांका

411

সুলান্ গাঃ পশ্য স্তাঃ বিপ্রান্ পশ্য।

২৭। টাভিস্ডেঙশিঙদামিনৈরায়াৎস্থাঃ।

- (২৪)। সমানো বর্ণ: স্বর্ণ: সুমানো দৃগাদাবিতি সমানশব্দশু সং সমানশব্দন সদৃশ উচাতে সাদৃশুং চাঞাপেক্ষাকৃত্যেব ভবতি। যদি স্থানিন এব সাদৃশ্রেন ভবিতব্যং তদা আদিতি দিখ্যাৎ তক্ষাৎ সন্নিচিত্তাক এব সদৃশ: করণীয়: অত আহ পূর্কস্বর্ণো ভবতাতি সো নকারবিধানমন্বাচয়-শিপ্তমপি পূর্বস্বর্ণবিধানং নিয়ত্যেব এতেন নম্বিধানাভাবেহপি পূর্বস্বর্ণো ভবতি পূর্বস্বর্ণভোৱে নম্বং ন ভবতোব।
- (২৫)। ১দস্ভাত্তরক্ত শদোহতঃ স্থানে ঔ ইত্যক্ত জসন্চাতঃ স্থানে পূর্ব্বস্বর্গে ভবতি। পৃংলিকে শসং সো নন্চ। শসং স্থানে পূর্বস্ত্রেণ দির্ক্তিত্ব সমুক্তরন্চকারঃ। বছুনি ১কারাণি যত্র স বহুঃ কাদির্ঝ দাদে-রিতি কপ্রতায়োন ভবতি। ঋণিতানেন তত্র ১কারস্তাগ্রহণাৎ বহবুনি-ত্যাদো ১দ,তোন্চেতি দীর্ঘ ৠকারঃ ৠদুতা ১দ্তা চ লভাগদ্যযুক্ত ১কারঃ।
- (২৬)। গোদাবোঃ শব্দমোঃ পৃর্কস্তোক্তং কার্যাং ন ভবতি। সুলা-নিতি বিশেষণং গা ইত্যন্ত পুংলিঙ্গতাস্ফ্রনার্থন্ অন্শ্রে। রোদাধিত্যাবে কতে স্বর্ণেনাগদীর্ঘ ইতি দীর্ঘঃ। স্কুদ্যা ইতি শোভনা দ্যোর্যেমামিতি বছরীহিঃ।
- (২৭)। দেবেনেতি ইনে কতে গুণ: ঐসিতি কতম্ অভিজনসৈরিতি সিদ্ধার্থ: দেবৈরিত্যাণো এসি চ কতে ঐলেচোহতেতি বৃদ্ধা ন

ৠ ইতি বর্ণাসুকরণং নঞ্তৎপুরুষঃ অচান্ ইতান্। লমু মিতি গমুধাতো-রনুকরণম্ অনুকার্ষোণার্থেনার্থ-ভা।

অতঃ সম্বন্ধিনাং ট্রা ভিস্ ডে ঙসি ওসাং স্থানে ইন ঐস্ আয় আৎ স্থা ইত্যোতে আদেশা ভবন্ধি। দেরেন দেবৈঃ দেবায় দেবাৎ দেবস্থা।

২৮। জরস্কান্ত্রিয়ামিনারে । শতিজ্ঞরেণ অতিজরসিন অতিজরাৎ অতিজরসাৎ ।

২৯ । ত্রুরাদিসর নামবহুভাঃ সপ্তম্যাক্রো বা । ত্রিন্ তত্র বহুরু বহুত্র।

৩০। ন বছোরসংখ্যাবাচিনঃ।

নীর্ঘণ্ড বিধানং অভিজরদাদিতি সিদ্ধার্থং যন্দেছনের বিহিতয়ারেবেনাভোকতরস্থানে প্রকৃত্ত বিধানং অভএব তন্তানুক্তাবপি টাঙ্গী স্থানিনৌ
সভ্যেতে। অত ইতি কিন্ ? অগ্রিভিং হ্রেম্বান্তা দীর্ঘস্যগ্রহণাৎ মালাভিং।
(২৮)। জ্বস ইত্যাদেশাসকরণম্। অগ্রীলিকে বর্তমানাৎ জরদা
ইত্যমাচোভরয়োঃ টাঙ্গোঃ স্থানে ইনাতৌ ভবতংশ পূর্বস্ত্রেণাতো বিহিতং
কার্যাং হলস্তান্ধ প্রাপ্রোতীভি বিধানম্। নক্ষ্ণ বলা অকারাস্ত এব অতিজরশকাহিত তলা ইনাতোঃ পরয়োঃ-পশ্চাৎ জরাচি ভবস্ বেতি জন্মাদেশে।
ভবিষাতি বিং লক্ষবেন। তদেতক্তাপন্তি অচি পরে জন্সাদেশ এব
প্রথমং ভবতীতি তেনাজিজরক্ষে অতিজরক ইত্যবান্ধাদেশঃ ভাদেশক ন
ভবতি। অভিজন্মাবিতান্ত উনীক ক্ষতি অতি অতিজরিকাত্র উনাদেশাং

দোব: আরক্ত দীর্ঘবিধানং কিমর্থমিতি চিন্তাং হ্রমেইপানিরোধাং। আতে।

(২৯)। দ্বিশকাদিবন্ধি তেভাঃ সর্বনামভেন কর্মপাচোত্তরভাঃ
নথমাঃ স্থানে তাদেশো বা ভবজি। নথমীতি স্কানত্ত্বগুহণং তক্ষিমিতি
ক্ষৈত্বাৎশিনো ভেওসিন্তীনামিতি শ্বিনাদেশঃ দ্রিয়াং ভতাং তত্ত্ব পূংবৎ ক্রাদ্ধ মিতি পংবদ্ধাবাৎ ভাভাবাভাবঃ অথবা ক্রন্তাভি বৃক্তি ভাতাকাভাবঃ।

ব্রান্ধণা অভিজন্মে ব্রাক্ষণাঃ।

পূর্বাং অচ্শরতা প্রধাজ্বসাদেশ এব ন প্রাপ্নোতি অত ঐসিতি রুতে পক্ষে
পশ্চাৎ জনসাদেশত ৷ অন্তিয়ামিতি কিন্-পূ জনসাংক্রমাঃ অতিজনসা

(७०)। व्यतः भागातिस्ता वद्याक्रलत्रयाः अध्याः व्यास्त स्वाःस

বহো সপে প্রচুরে সূপ ইত্যর্থঃ। দ্যাদেন্ত—ক্ষ্যোঃ ভবতি ইয়ি । ময়ি।

७)। পঞ্চম্যাস্তর্সিः।

তন্মাৎ ততঃ যন্মাৎ যতঃ কন্মান্ধীন: কুঙো হীন: বহুভাঃ বহুতঃ। অদ্যাদীত্যেব। স্বাভাাং ভবতঃ স্বৎ মৎ।

৩২। ভবদা দিযুক্তেভ্যঃ সর্ব বিভক্তে স্ত্রহাত শ্চ।
সভবান ততোভধান তত্রভবান ইমংদীর্ঘায়ুষং ইতোদীর্ঘায়ুষম্ অত্রদীর্ঘায়ুষম্ ইহদীর্ঘায়ুষং কেনায়ুত্মতা কুভমায়ুত্মতা কুত্রায়ুত্মতা কায়ত্মতা। এবং সর্বত্রোক্ষেয়ম্। ভবৎ দীর্ঘায়ুষম্ আয়ুত্মৎ দেবানাও
প্রিয়ঃ।

ভবতি। তার ময়ীতি অমৌ যাবী টাভ্যোত সৈশ্চত ইতি যিঃ জমৌ চ। দি ভবৎ যুদ্মদ্ অশ্বদ্ ইত্যেতে চন্ধার এব দ্বাদয়ঃ। পূর্কস্তে বহুশব্দমক্করা বহোঃ সংখ্যাবাদকাদিতি ন কৃতং বৈচিত্রার্থম্।

⁽৩১)। ঘ্যাদিবজি তাৎ সর্কানারো বহুশন্দাচোত্তরন্তাঃ পঞ্চন্যাঃ
ন্থানে তসিব বিভাগ তব্যাৎ তত ইত্যাদৌ হেতৌ পঞ্চনী অপাদানপঞ্চন্যান্ত কহুহাকোরিত্যাদিনৈব তসিঃ মিদ্ধঃ। কমাদ্ধীন ইত্যত্র তু অপাদানে পঞ্চনী বিছিণ ওহাকন্ত প্রয়োগাৎ কহুহাকোরিত্যাদিনা অপ্রাপ্তিঃ এবং
ততোহবরোহতি অয়ন্দি বহুহারসংখ্যাবাচিনো ন ভবতি যথা বহাঃ স্পাৎ।

^{(:} ২)। তবদাদিশক টুক্তে ভোইছা দিস দ নামবছভাঃ সর্ববিত কীনাং স্থানে তসিবা ভবতি। অহাতশ্চ বা ভবস্তি। যে যত্মাবিহিতাঃ সন্তি তে তত্মান্তবন্ধি। ততঃ তত্রেতি তদ্শবাং তসিত্রে চ। ইহ ইত্যাদি ইদম্শবাং তসাবিদ্ধাবো হশ্চ সপ্তমা বেতি হ ইন্তাবন্ধ তসিত্রে চ ত্রে পরে হলাদিত্যকারঃ। ক্রেতাদি কিম্শকাং অক্ত সপ্তমা বেতি অং তসিত্রে চ হল্লুক্ কিং কন্ধানে কুলেনিত কু:। ভবাদিত্যাদি চত্বারু এবৈতে ভবদাদয়ঃ। ভব-চ্ছেদো মছাত্মবচনঃ। বেবারাং প্রিয়ন্ত্র নিশিতবন্ধনঃ। নিতামানো দেবক্তে প্রিয় ইন্তানুক্।।

৩৩। রুহু হাকোর প্রয়োগে তাসির্বাপাদানপঞ্চন্যাঃ।
ততঃ পাণিতো ভ্রমঃ তক্ষাৎ পাণেভ্রমঃ ভূমিত উজ্জিহীতে ভূদের
রুক্তিহীতে দ্যাদানাচছতি। বিচ্চ আগচ্ছতি মত্যো বিভাদ্যমঃ ক্ষরমিতি ভট্টিঃ। রুহু হাকোঃ প্রয়োগে ভূ—পর্ব তাদবরোহন্তি মুনয়ঃ।
সার্থাদ্ধীয়তে। অনপ্রনানপঞ্চমাস্তি—দেবাদন্যঃ মদন্যঃ। মাদর্শন
তান্যং ভরতঞ্চ মুত্ত ইত্যপপাঠঃ। মাদর্শতামুং ভরতং মদন্যমিক্তি
পঠনীয়ম।

(৩৩)। রুহু হাকো: প্রয়োগাভাবে অপাদানে যা বিহিতা পঞ্মী তন্তা: স্থানে ত্রিব। তবতি। সূর্মনামবছভ্যোহপি অপাদানপঞ্চম্যাঃ স্থানে তদিব। ভবতীতি হুচনার্থং তত ইত্যুদাছতম্। হাক্ ইতি নির্দেশাৎ ওহাঙ্গতাবিতান্ত প্রয়োগে ভবতাতি স্কনার্থন। ভূমিত উজ্জিংীত ইতুলা-উজ্জিহাতে ইতি হ্বাদিখাদ্দিকজি: নাহ্বাদেরাদ্ধল্যঙিতীতি অকারত্যেকারঃ ঋপূহাঙ্ মাঙ্ ভৃঞামজীদিতি দ্বিরুক্তৌ ঈকারঃ হ্রস্ক দাাদিভোহপানেন ভবতীতি শ্চনার্থং দিত ইত্যাদাহতম্। মত্তো বিভা-দিতি ভাত্রার্থয়োজীহেতুরি তাপাদানসংজ্ঞা স্বমৌ ধাষী টাঙ্যোর্ভ সেশ্চ ত ইতি অপ্নদো মাদেশঃ গুদেশ্চ তঃ পঞ্চম্যাঃ স্থানে তদৌ কতে ত ইতি তদৌ পরে তকার:। পর্মতাদবরোহস্তীতি কর্ জন্মনি প্রাত্তাবে সার্থাদীয়তে ইতি ওহাক্ ত্যাগে কর্মণ্যাম্মনেপদং যক্ চ যেহ্যুয়চি স্থাদেরিত্যাদিনা আকারক্ত ঈকারঃ ওহাঙম্ব হায়ত ইতি রূপম। অপাদানসংজ্ঞকস্য সার্থস্য বিশ্লেষ-ক্রিয়ায়াং স্বাতন্তামপি বিবক্ষণীয়ং তেন তৎসমুদ্দিষ্টং কর্ম ইতি কর্ম্মণজ্ঞা-বিরুদ্ধা সার্থস্য যাতস্ত্রাবিবক্ষারাং চ কর্তুসংজ্ঞারা অপাণানসংজ্ঞা ন বাধাতে হাক্প্রয়োগে পঞ্ম্যান্তসিনিষেধ্যামর্থ্যাৎ কর্ম্মকর্ত্তরি প্রয়োগোহস্য নেষ্যত-ইত্যাচাৰ্যাঃ ভাবে চাম্ম প্ৰয়োগো নেষ্যত ইণ্ডি তেন সাৰ্থানীয়তে দেবদত্তে-নেতি ন ভবতি কর্মার্ত্র্যায়ং প্রয়োগ ইতি বাভট:। দেবাদস্ত ইতি স্নারা-দালৈঃতি পঞ্চমী। অসুরুত্তাবলদ্ধে তদিবে তি যদিহ ক্বতং ভদত্ত জহা-দীনামমুর্ত্তিশ্বানিরাসার্থম।

৩৪। প্রতিযোগে চ। শভিমন্মারর্জনুবত: প্রক্রি শর্জনাৎ।

৩৫। অতিগ্রহাচলনিক্ষাস্বকত্তৃতীয়ায়াঃ।
বৃত্ততোহতিগৃহতে বৃত্তেন অতিক্রম্য গৃহত ইতার্থ:। বৃত্ততো ন
ব্যথতে বৃত্তেন ন চলজীত্যর্থ:। বৃত্ততঃ ক্রিপ্ত: বৃত্তেন নিন্দিজ্ঞে
ভবতীতার্থ:।

৩৬। পাপহীয়মানযুক্তাচ্চ।
বৃত্ততঃ পাপ: বৃত্তেন পাপ ইত্যর্থ:। বৃত্ততো হীয়তে বৃত্তেন হীয়মানো ভবতীত্যর্থ:। কর্তৃতীয়ায়াস্ত্র—দেবদত্তেনাতিগৃহীতঃ দেবদক্তেন হীয়তে।

৩৭। পক্ষে ষষ্ঠ্যাঃ। দেবা অৰ্জ্জুনস্ত অৰ্জ্জুনতোহভবন্ অৰ্জুনস্য পক্ষেহভবন্নিত্যৰ্থ:।

⁽৩৪)। প্রতিশবস্থ যোগে বিহিতায়াঃ পঞ্চমাঃ স্থানে তদির্বা ভবতি। অনপাদানপঞ্মীছেনাপ্রাপ্তে বিধানম্। অর্জ্জুনত ইতি প্রতিদানে সাদৃশ্রে চ প্রতি ইতি আরাদিয়াৎ পঞ্চমী।

⁽৩৫)। অতি গ্রহান্যর্থে বিষয়ে যা অকর্ত্তরি বিহিতা ভূতীয়া তস্যাঃ স্থানে তসিব পিত্রতি। অতিক্রম্য প্রহোহতিপ্রহঃ অতিগৃহত ইতি কর্মাণ তে যক্ বলাদের শাদির্মিত গ্রহঃ স্থানে গৃহাদেশঃ। ব্যথত ইতি ব্যথ্ভয়-চলনয়োঃ কিপ্ত ইতি ক্লিপ্ প্রেরণে শকাদিম্বাদিঙভাবঃ বৃত্তেনেতি হেতো ক্রবণে বা তৃতীয়া।

⁽৩৬)। পাপেন হীরমানেন চ যোগো যস্য ত্রাচিনঃ শব্দাত্তরক্তা অকর্ত্তরি বিহিতারাস্থ তীরারাঃ তসির্বা ভবতি। রুত্তঃ পাপঃ রুত্ততো হীয়তে ইতি হেতৌ করণে বা তৃতীয়া অংগ্র রুত্তস্য পাপেন হীরমানেন চ দেবদন্তাদিনা যোগো নাত্র নিন্দা বিবক্ষিতা কিন্তু স্বরূপাখ্যানমেতৎ নিন্দারাং পূর্মেণেব সিক্রেঃ।

⁽৩৭)। পক্ষে গম্যমানে ষষ্ঠ্যাঃ স্থানে তদিবা ভবতি। দেবা

আদিত্যা: কর্নস্থ কর্নতোহভবন্ কর্নস্থ পক্ষেহভবনিত্যর্থ:। অপক্ষে
জু—বৃক্ষস্থ শাখা।

- ভাগ বাহিন শিচকিৎ সায়াম্।
 প্রবাহিকায়া প্রবাহিকাতঃ কুরু প্রবাহিকায়াশ্চিকিৎসাং কুরিভার্থঃ।
- ত্র। শ্রুব বিভ**ৈত্র দিয়াদেঃ** প্রায়ঃ।
 আদিঃ আদিভঃ আদে আদিভঃ মন্ত্রেণ মন্ত্রতো হীনঃ স্থারেণ স্বরতঃ
 বর্ণেন বর্ণতঃ শরীরেণ শরীরতঃ ক্রেশে ক্রেশতঃ মন্ধ্য মধ্যতঃ পার্শের পার্শবঃ পৃষ্ঠে পৃষ্ঠতঃ প্রথমে প্রথমতঃ অন্তে অন্ততঃ মুথে মুখতঃ অত্যে অগ্রতঃ আকৃতিগণশ্চায়মিত্যেকে। খৎপ্রসাদতঃ কবয়ঃ সামান্যতঃ সিদ্ধমিত্যাদি।
- ৪০। তদিরভিপর্ব্যোদেকাভয়দর্বার্থয়োঃ। অভিতঃ পরিতঃ।

আৰ্জুনত উত্তি পক্ষাপেক্ষয়ৈব সম্বন্ধে ষষ্ঠী। বৃক্ষত শাথেতি অবন্ধ-বাবয়বিসম্বন্ধে ষষ্ঠী।

- (৩৮)। রোগবাচিন: শব্দাহত্তরস্থা: ষষ্ঠ্যা: স্থানে তদির্বা ভ বতি চিকিৎসায়াং প্রমানার্মান্। প্রবাহিকা গ্রহণী রুক্। চিকিৎসায়ারিতি কিম্ ? প্রবাহিকায়া: প্রকোপং করোতি।
- (৩৯)। আদ্যাদেঃ শক্ষাৎ সর্কবিভক্তেঃ স্থানে তসিবাঁ ভবতি।
 প্রায়ো বাছল্যনেত্যর্থঃ। শিষ্টপ্রয়োগদর্শনেন ব্যবস্থায়াপনার্থং প্রায়োগ্রহণম্। মন্ত্রতা হীন ইতি অপাদানপঞ্চম্যান্তসিন সম্ভবতি হাক্প্রেয়াগনিষেধাৎ পাপহীয়মানয়ুক্তাক ইতি ন প্রাম্মোতি যতঃ হীন ইতি কর্ত্ব্যক্তিরিক্তায়ান্ত্রতীয়ায়া অর্থাসক্ষতেঃ। অভোহস্তাদ্যাদিবমুক্তম্। বংপ্রসাদ্ভ ইতি সামান্তর্ত ইতি ভৃতীয়ায়ান্তসিঃ। আক্রতিগণন্থাদেব অধ্যয়মতেঃ বিপ্রক্রীখ্যানমিতি গুণতঃ প্রাঞ্জপ্রত্যতি ভৃতীয়ায়ান্তসিঃ।
 - (৪০)। অভিপর্যোরিতি বিভক্তিবিপরিণামাৎ সঞ্চমার্থে বঠী।

8)। অভিম্থার্থাভেশ্চ। অভিতো গ্রামম্ অভিম্থং প্রামম্ভেত্যর্থ ইতি কজ্জট:।

৪২। ভ্যাম দীর্ঘঃ।

ভ্যামি পরেছতঃ স্থানে দীর্ষো ভবতি। দেৰাভ্যাং ধনাভ্যাম্। পুপ্তঞালুপ্তবং কচিদিতি। রাজভ্যাম্।

৪৩। এদ্ভাস্সামোস্স্পসূ। ভাস্সামোস্স্পসূপরেষু অভঃ স্থানে এস্তবতি। দেবেভাঃ দেবয়োঃ কেষাং ধনেষু।

88। जागारका जूनीर्घ मह।

উভয়ার্থাদভে: দর্বার্থাৎ পরেশ্চোত্তরস্তাসর্ভবিত। নায়মাদেশঃ কিন্তু প্রভায়ো নিতাক। অতএবামুর্ত্তিপ্রাপ্তং তদিং তাক্ত্বা অস্তো বিহিতন্তদিরিতি। পরিত ইতি দর্বত ইতার্থ: অভিত ইতি উভয়ত ইতার্থ: উভয়শকার্থয়োরিতি কিন্? অভিযাতি পরিষিঞ্চি।

- (৪১)। স্বভিমুখার্থাচ্চাভেক্তরে তদির্ভবতি। স্বভিতো গ্রামমিতি হানিযুক্তাদিতি দিতীয়া।
- (৪২)। ভ্যাম্যাদিতি ন ক্লতং বৈচিত্র্যার্থম্। বিচিত্রা নানারপা হি ক্লতিঃ স্ত্রকারস্থ ভবতি। লুগুমিতি। লুগুমিপ ক্লচিদ্বিষ্টেইলুপ্থবদ্ভবতি। রাজভ্যামিতি নো নাম্বস্থেতি নকারলুপ্থেইলুপ্থবদ্ধান্ন দীর্ঘ: ক্লচিদিতি বচ-নাং যাভ্যামিত্যত্র হল্পুক্ সর্ক্রনাম ইতি লুপ্থস্থ দকারস্য লুপ্থবন্ধ্যেব স্থপ্যেব পরে নকারস্থালুপ্থবন্ধং তেন রাজভিঃ রাজভ্য ইত্যাদি। অস্থপি তু রাজেভ্যা রাজভ্রুমিত্যাদৌ গুণদ্বিদ্বাদিকং ভবত্যেব।
- (৪০)। সামিতি সিরামাতানেন বিহিতেন সিনা সহিত্যসামে গ্রহণং তথ্যৈর সর্বনাম্ম: পরে সম্ভবাৎ : তেন শয়সামিত্যাদৌ ন এরম্। হুস্বোক্ত্যা দীর্ঘসাগ্রহণাৎ সোমপাত্য ইতাত্র ন এরম্। ভা ইতি কর্ত্তব্যে সকার্বত্ত্র-পাদানং সকারবত্তাবাদেশার্থং তেন যুম্বভাং অক্ষভামিতাত্র ন ভবতি।
- (88)। প্রত্তেম প্রথমবৃদ্ধিসন্নিহিতভাৎ ষষ্ঠী বছরচনতা:মা গ্রহণং নতু ভ্যাদেশত >কারদ্য দীর্ঘতাপ্ররোগাৎ তৎস্বর্ণো দীর্ঘ স্ক্রকারঃ গ্রন্থাং

আমি পরেছক উত্তরো সুর্ভবতি। অক্সার্ঘন্চ। দেবানাং কবীনাং ধেনুনাং গতঞ্জীণাং পিতৃণাম্।

४०। क्रीटवश्रि।

বারীণাম্।

8७। <u>नाञ्चौ</u>श्चकृ ि नोर्घार।

সহ এন বর্ত্তমানা: সাঃ তেষাং তাসাং বা সাং বিগত ইর্যেভ্যো যাভ্যো বা ব্যঃ তেষাং তাসাং বা ব্যাং বাতপ্রম্যাম্।

সবর্ণে দীর্ঘে যবরলাদেশে প্রাপ্তেইস্য বিধানম্। সোমপামিত্যত্র ধাতোরাল্ল,ক্
শসাদ্যটীতি লুগেব ভবতি। শ্রিয়াং শ্রীণামিত্যত্র স্তিয়াং সেয্বাবামীতি
বৈক্যাদিত্বপক্ষে মুর্ভবত্যেব পক্ষে ইয়াদেশঃ এবং গ্রামণ্যামিত্যত্র কারকোপসর্গাভ্যামিত্যাদিনা যকারঃ ইয়্ঝাদেশে। বিশেষবিহিতৌ যবৌ লোপাদিবিধানঞ্চ ছবিধানাৎ পূর্বমেব ভবতীতি ক্লীবেইপীতি সুবিধানেন আমি ক্লীতি
স্ত্রীশক্ষ ইবক্যাদিত্ববিধানেন চ জ্ঞাপিতম্। যদ্যমমেব পূর্বং ভবতি তদা
অচীকোমুরিতি মুবাধনার্থং ক্লীবেইপীতি স্ত্রং স্ত্রাশক্ষ্যামি বৈক্যাদিত্ববিধানার্থাই আমি স্ত্রীতি লক্ষণমনর্থকং স্যাং। অক ইতি কিম্ ? তে শকাং
তয়াম্।

- (৪৫)। আমি পরে জ্বক উত্তরো হুঃ ক্লীবেহপি ভর্ত। অক্লী-র্যান্ত অসীকো শ্বরিতি কুবাধনার্থং লক্ষণং তত্মিন্ সতি সন্নিযোগশিষ্টো দীর্ঘোন স্থাৎ।
- (৪৬)। স্ত্রীত্বং প্রকৃতিঃ স্বভাবো মূলং যক্ত স স্ত্রীপ্রকৃতিঃ স্ত্রীপ্রকৃতিশ্চাসৌ দীর্ঘশ্চতি স্ত্রীপ্রকৃতিদীর্ঘঃ মঃ স্ত্রী প্রকৃতিদীর্ঘো ন ভবতি তত্মাদামি
 পরে মূন ভবতি। অগদীর্ঘ ওে। সা ইতি অশকো বিষ্ণুবাচকঃ সোহস্ত প্রকৃণতর্নাসৌ স্ত্রীলিকঃ এবং বীশক্ষক্ত চ ইশকঃ স্বরবাচকো মূলং নাসৌ স্ত্রীলিকঃ। বাভপ্রমীতি বাতং প্রমিমীতে মাঙ্ মানে পুংসি উপাদিক কপ্রতামঃ। বাভপ্রমামিতি যবলোহচীতি যকার এবং অনুশক্ষাৎ অনুাম্।
 স্ত্রীশক্ষ্ণ যোহক্সপদার্থে বর্জতে তক্ত শ্রীশকঃ স্ত্রীলিক এব প্রকৃতিঃ। বর্ধা-

৪৭। সুৰ্বা দীৰ্ঘশ্চ। নুণাং নৃথাক্।

় ৪৮। ৰ তিস্চতজ্যোঃ। তিস্ণাং চতস্ণাম্।

৪৯। ধাতোরল কু শদান্ত চি। শদান্ত পরে ধাতোরাল গুভকতি। আজ্যপ: আজ্যপা হাহঃ হাহা শুভংযা গুভংযা ভাতং তায়ত ইতি তাততা তক্ষৈ তাততে।

৫০। ক্ত্বাদেব।
ক্ত্বায়াং ক্ত্বায়াং টি টায়ামাদেশ ইতি ভাষ্যন্। আকৃতিমণশ্চায়ন্।

ভূশকাদীনাঞ্ স্ত্রীন্তমের মূলং নন্ধগ্লপদার্থসমাসাদিনা অমীযাং স্ত্রীন্ধর্গতঃ কিন্তঃ স্বভাবাং।

- (৪৭)। নৃশব্দস্যামি পরে দীর্ঘো বা ভর্তি। সূর্ভ্বত্যেব দীর্ঘছং বিকল্পতে।
- (৪৮)। তিস্ফ চতস্থ ইজ্যেতয়োরামি পরে দীর্ঘো নাভবতি। সূর্ভব-তোবা। তিস্থাং চতস্থামিতি প্রিয়াং ত্রিচতুরোঞ্জিস্চতপ্রাণতি তিস্থ-চতস্রাবাদেশৌ।
- (৪৯)। আত্মপ ইক্তি আত্যং পিবতীতি হাহে তি হা কুংসিতং শকং অহাতীতি শুভং বাতীভি উপপদে প্রাদৌচেতি কিপ্ শুভমিতি মাস্তমবায়ং তাতত ইতি তার সম্ভানপালনয়োঃ কিপ্ কৌম ইতি যকারলুক্ একদেশ-বিরুত্তমন্মারন্তবতীতি ধাতুত্বম্। কর্মাত্র ভামিত্রোপপদক্ষ চেতি সমাসঃ বিরুত্তমন্মারন্তি গ্রুত্বম্। কর্মাত্রেপদেকাই ভি তস্য হাহান্ হাইছ ইত্যাদি ভবতি। এতদেব শসাদ্যতি ধাতোরাল্লুক্বিধানং জ্ঞাপকং কিবস্তা হি ধাতুত্বং ন জহতীতি। ধাতোরিতি কিম্ ? খটাং পঞ্জা শসাদ্যতীতি কিম্ ? সোম্পান্তিইন্তি।
- (৫০)। শসাদর্গি পরে জ্বাদেরালুখা ভবতি। টি টাগ্নামাদেশ। ইতি ভাষামিতি। এতেন জ্বাটা প্রভৃতীনাং ভাষাকারবচনাৎ ক্রীলিনেন

৫১। ইণ উদিণ্। ইণ উত্তরো ওদিণী ভবতি। কবী ধেকু।

৫২। নাস্থপঃ। সংখ্যাপতে।

৫৩। সপ্রাঙ্ক্তিঃ। ইণ উত্তরো ডিঃ পূর্বেক। মহ ঔত্তবক্তি। করো ধেনো।

ণ ৪। সীনশব্দাৎ (কবলঃ। সংখ্যা।

স্বমপি স্টেডম্। যথা চ ঙিভি যা ভবতি তথাচ স্থলুকা ঔদীতা চ ভবিতব্যম্। তেন জ্বা ক্রে। অস্তেতু বদস্তি ভাষাকারপ্রয়োগাং যা ভবতি
নতু স্থলুগাদি। তেন জ্বাং ক্রে) ইডি। আরুতিগণ ভারমি ত এতেন
বগ্রাধাতোরাল্লুক্ শিইপ্রয়োগে দৃশুতে সোহস্ত বিষয় ইতি। তথাচ-—হলশ্নঃ
শান জ্বাবিত্যাদি পাণিনীয়লক্ষণে লুগ্ দৃশ্বতুত।

- (৫১।৫২)। ক্রমঃ ক্রমঃতামক্ষতি স্থায়াদিকারাত্ত্তর ইকারো ভবতি উকারাজোকার:। ইবোক্তাা দার্যস্থাগ্রহণাৎ নদ্যাবিত্যক্র ন ভবতি। নামুপ ইতি প্রকরণ নয়মা দ'ত শেবং। অসুপ ঔকার ইণ্ন ভবতি। সংখাপাতে তৈ স্থিশকাৎ স্লিয়াং নদাদিপাঠাদী সমৃক্ষে হ্রমণ্ড ঔপা-তেতি বপ্গাতোঃ কর্মণি লঙ্ভে যক্ কিদাশীলে গারিত্যাদিনা বপ উপ্র্নিক্রাদেরিতি বৃদ্ধি: স্থপ্রাতিরিক্রমান্ত ইকারঃ সংগাবিত্যক্র তু ঙেরৌকার-বিধানসামর্থ্যার ইকারঃ।
- (৫০)। ইণ্ ইতি পূর্বস্থানিহ নাত্বর্ততে। ঙেঃ স্থানে পূর্দেণ সহ ইণ্বিধানে ঙেলু গিতোবং বিদধাথ। অত ঔণীদিতি যদত্বর্ততে তংপূর্বস্ত্রে স্বান্তপাত্রাদেশত্যা গাদরতি অন্তথাক্পশতেঃ।
- (৫৪। স্থিশকাছন্তর: কেবলো ভিরৌদ্রবতি। কেবলস্থানে ভিরিতি
 ন ক্লতং বৈচিত্রার্থম্। স্থাবিতি স্থান্তাদেশা: স্থানিব কাশীতি স্থানিবদভাবাৎ ক্লম্ভিতোরিত্যাদিনা ন গুণ: স্থারিতি ক্লতে ঈরায়্ সিদ্ধতাপি
 গ্রাহণং তাৎ তরিরাকরণায় স্থিশদানিতি ক্রতম্। হ্রস্বোক্ত্যা দীর্ঘতাগ্রহণাৎ
 লিক্রিশিপ্ততাগ্রহণাক্ত স্থীশকার ভবতি। তদগুবিধানাং অতিস্থােটা
 অন্তে তু অভি স্থাবিতীচ্ছন্তি।

ee। हो ना श्राम। পুংলিক্সেইণ উত্তরফী না ভবতি। কবিনা স্থাপুনা।

৫৬। ঋত আৎ স্থন।

ভবতি হি ব্যাখ্যানতো বিশেষলাভো নতু সন্দেহাদলক্ষণমিতি। স্থনা প্রথমৈকবচনেন সহ ঋত: স্থানে আন্তবতি। কর্ত্তা মাতা।

৫१। न मचुरको।

ছে কর্ত্তঃ হে মাতঃ।

৫৮। স্থটি বৃদ্ধিস্ত ওাদেঃ। স্টি প্রত্যাহারে পরে তৃঙ্ তৃঙ্যাদেখ তঃ স্থানে বৃদ্ধির্ভবতি

(et)। श्रुशी कि किम् ? न्यका (धवा। नीर्घना। वर्षना। वर्षना। (৫७। ৫৭)। স্থনেতি প্রথমৈকবচনং সপ্রমীবছবচনক্ষ সম্ভব ত তৎ কিমুভরোগ্রহণং প্রথমৈকবচনমাত্রস্তা সপ্রমীবছবচনস্যা বা ইতি সন্দেহঃ। অত আছ। ভবতি হি ব্যাখানিতো বিশেষলাভ ইত্যাদি। অনেন সন্দেহে-নালক্ষণং অন্তথাবিধানং ন ক্রিয়তে। তত্মাদ্যাথ্যানত এব বিশেষলাভো ভবতি হিশকো यশ्वानर्थ वााशानम् शरमगत्रशत्राममिशकार्थवित्वहनम्। কর্তেতাত্রানম্ভরক্ত্রেণ বৃদ্ধৌ প্রাপ্তায়াং মাতেত্যত্র গুণঃ পিত্রাদেরিতি গুণে প্রাপ্তে বিধানম্। ঋদিতি ন দীর্ঘগ্রহণং তেন বহবূ; ঙদিঙসোক্ত বহবু ইতি। হে কর্ত্তরিত্যাদৌ ঋত আং কথং ন ভবতি। অত আহ। সমুদ্ধাবিতি গুণঃ সাবিত্যমেন বাধিতথাদিতি শেষঃ। প্রাস্তান্ত লক্ষণমেত-इन् छ ।

(৫৮)। স্থড়িতি প্রথমৈকবচনাদি ঔট্পর্যাম্বন্ত গ্রহণমিতি শাদ্রাম্বরীয়ঃ প্রত্যাহারঃ তলৈয়বাত্র গ্রহণম্। এতদেব স্চয়িত্বং ওটিষ্ট-কারামূবদ্ধ: শাস্ত্রাস্তর ইব ইহাপি: ক্বত: । কর্ত্তারাবিত্যাদি গকভৃঙৌ কর্ত্তরীতি শীলাচারসাধুযু বর্ত্তমানে তৃঙিরিতি তৃঙ্তৃঙিপ্রত্যয়াস্তয়োরুদা-· इद्रशम् । ष्रञ्जु जृङ्ग्रेखषान् श्रीरथे (नेवानाम् भाषानम् । **उप**रिः। नन्

কর্তারো কর্তারং কর্তারো। স্বস্থ নন্ত ক্র কর্ত্রাক্ত পাতৃ জোক্ত শাস্ত প্রশাস্ত ।

७०। (शामारवाः।

স্থৃটি পরে গোদ্যবো: শব্দয়োর ক্বিভবভি। গো: গারো গাব: ক্রো: দ্যাবো দ্যাবঃ।

৬০। অমৃশদোরোদাৎ।

गाः गाः छाः माः।

স্থাতী শাস্থ অনুশিষ্ঠে। প্রপূর্ষণ ক্ষণ্ সৌরঃ এভান্তঃ শংসাদেরিভি তৃপ্রত্যয়ং করা নম্পাতোমকি রস্য চ পকারং করে। নীঞো গুলং যকারা-গমঞ্চ রিষ্ ইকারস্যাকারঞ্চ পূঞো জ্রেতেশ্চ গুলঞ্চ করে। এতে বাং-পাদিতাঃ। হোতৃশব্দ ভৃত্তভান্ত দ্ব মন্ত তি। সংজ্ঞাদকন্ত ভূপ্রতায়ান্ত এব অতঃ পৃথ গুপাতঃ। প্রশাস্ত শব্দম্য সোপসর্গমাপাদানমুপসর্গান্তরনির রাসার্থম। ক্রোষ্ট্রশকাং স্থাতি শকারে কতে বৃদ্ধিঃ। যেহত্ত সেওস্তেমাং বহুলবচনাদিওভাবং। শাস্ত শংস্ত শক্ষেত্র স্থাত বৃদ্ধিঃ কজ্জটেনানাশ্চ ব্যবস্থিতা। কেচিত্র শান্তরৌ শান্তর ইন্তি ন্নান্তে অপেক্ষিতবিধিরাৎ কর্তার ইত্যাদৌ জস্ভিতোরপিবাদেরিতি গুণং বাধিরা বৃদ্ধিঃ কর্তনী ইত্যাদৌ ভূ বৃদ্ধিং বাধিরা স্থাকার্যমিতি ক্রঃ। ভূঙ্যাদেরিতি ক্রতং গুণঃ পিত্রাদেরিতানেন বিষয়বিভাগাবগ্যার্থম ভূঙ্ত্তান্তো নপা নেষ্টা হন্তা স্থা প্রশান্তা করা হোতা পোতা শান্তা শংস্তা তথা ক্রোষ্টা।

- (৫৯)। সম্বোধনেহপি প্রথমং বৃদ্ধিঃ তদেঙ্গাভাষার স্থলুক্। নাপ্রধানার্থয়োরিতি বক্তব্যম্। তেন হে চিত্রগোছে চিত্রগব ইত্যত্ত-ন ভবতি। শোভনা গৌঃ স্থগৌরিত্যত্র তু ভবতোব।
- (৬-)। অম শুসো: পরয়ো: গোগারো: শক্ষোরোদান্তবতি। অমি ব্দেরপবাদ:। গোলারোরোরা সহ সম্বন্ধ: তেনাম্শসোরিতাত্র ক্রমো নাশক্রীয়:। সহ উনা বর্তত ইতি সোশকাদকেন সৌ: সাবৌ সাব: সাং সাবৌ সা ইতি সাধিতং ন তথ্যসূত্রস্থতমিতাত্র নেউম্:

৬১। গুণঃ পিত্রাদেঃ।
স্থাটি পরে পিত্রাদেখ তঃ স্থানে গুণো ভবতি। পিতরো পিতরঃ
পিতরং পিতরো। ননান্দ্ মাতৃ ছহিতৃ যাতৃ জামাতৃ নৃ দেহ প্রাতৃ
ইত্যাদি।

৬২। ঙদিঙদোডুদ্।

বাত উত্তরয়েঙ দিঙদো স্থানে ডুস্ ভবতি। কর্ঃমাতুঃ।

৬২। রায়েও ইলোলেও।

উভয়াকাঞ্জনালক্ষণপ্রকরণাৎ স্বাদিহলি পরে রৈ সক্ষণ্ঠ ঐদা স্তবভি। রাঃ রাভ্যাং রাস্থ।

৬৪। ইচ্চ কুসহিতটামোশ্চ।

⁽৬১)। ঋণ ইতি স্থাত্রে ক্তেইপ্রান্ধর্ত্তীশ্রের ঝতঃ স্থানে গুণত্বং ল ভাত এব এবং সক্তি পিত্রাদেরিতি ক্বতং মন্দধিয়াং স্থেপপ্রতিপত্তার্থং তৃঙাদেরাপ ঋণো ভবতী'ত শঙ্কা শ্রাং পিত্রাদেরিত্যা দপদেন তৃঙ্কৃঙাস্থাদিবাতিরিক্তাঃ সর্ব্ব এব ঝকারাস্তাঃ শন্ধা গুহস্তে।

⁽৬২)। পি াদেস্ভাদেরিতি ধ্রমণি নামুবর্ত্ততে সামান্তেন বিধানম্।

এতদর্থমেবোদাহরণধ্যমুপগুস্তম্। কর্জুঃমাতুরিতি ডুলি ক্তে ডিভি স্থরতক্ষেবনোলু দিতি ঋকার নুক্।

⁽৬৩)। নমু রৈঝং রৈতা ইত্যত্ত আরং কন্মান্ন ভবতি অত আহ উভয়েতাদি। উভয়োন মিমুপোরাকাজ্ফালকণং চিহুং যত্র প্রকবণে তহুভয়াকাজ্ফালকণপ্রকরণম্ অতো হেতোঃ স্বাদিহলি পরে ইভি অত্র স্থান্তপ্রকরণে স্থাপি কার্যাং বিধীয়তে তৎপ্রক্রতোচ অতন্তভূহ ভর্ম নবন্ধ মেব কার্যাং ভবতীতি।

^{ি (}১৪)। স্থাদিহলি পরে কুসহিতরোটামোন্চ পরবোঃ রৈশক্ষণ ইকার আন্তবতি। ইকারস্ত স্থানিভাবের ক্লীবে বিধানং নহক্লীবে বৈশক্ষ্য ইকারঃ সম্ভবতি। বছরাভ্যামিতি বছবো রায়ো যত্র ৬৫ বছরি হ্রবেহিন্ডঃক্লীবে, ইতি হুক্ষাং এচ্ছবা, হ্রব্রেছে ইতি উকারস্তে--

ৰহুরাভ্যাং কুলাভ্যাং বহুরাণা কুলেন বহুরাণাং কুলানাম্।
৬৫। আত ঈতঃ স্থলুক্ স্ত্রিয়ামু।
ত্রীলিকে আত ঈতশ্চোত্তরত যোলুগ্ ভবতি বালা নদী।
৬৬। ন প্লাতুলক্ষ্যাাদ্যোঃ।
ভীঃ ধীঃ শ্রীঃ লক্ষীঃ অবীঃ তরীঃ তন্ত্রীঃ প্রিয়শশীঃ বহুব্যীঃ।

কার: । বহুরাণেতি অচীকো মুরিভি মুং বহুরাণামিভি ক্লীবেহুপীতি মু:।
মুনহি চ টামোর দতি কিমর্থং হল্নিবন্ধনমেবাব্বং ভবিষ্যতি এবং সতি বহুরিণী
বহুরীণি বহুরিণে ইত্যাণে চ প্রাপ্রোতি। নমু মুসহিতটামোন্চেতি কুন্তে
হপি কত্মার ভবতি অত্মান্তেব নিয়মাৎ ধনি মুস্ছতে ভবতি তদা টামোরেব
নাছাত্র। এবক্ষেৎ ভুসহিত ইতি কিমর্থং টামোন্ডেডি ক্রিরুতাং এবং সতি
মুবিধানাৎ পূর্লং ভবতীতি শক্ষা স্থাৎ। অপেক্ষিতবিধিছেন লক্ষণশণ্ডনং
বহুধৈব প্রতিক্ষিপ্তম্। বহুরিণা বহুরীণামিতি কাজ্রসম্মতম্।

- (৬৫)। বালে ত অজাদেশ্চেতি দ্বিরামাৎ নদীতি নদাদিখাৎ দ্বিরামী। পুংদীর্ঘ: দ্বীপ্রত্যায়: দ্রীবৎ পুংক্তেশীতি দ্বীক্ষাৎ স্প্রেরদী কিপ্র:। দীর্ঘ-নিদে শাদিহ ন ভবতি মিজ:। দ্রা ধকার্মবিহিত আৎ তক্ষিত্রাধিকার-বিহিত ঈক্তাস্য বিষয়:। তদ্বাতিদ্বিক্তা ক্ষ্মাদৌ স্তইব্য:।
- (৩৬)। ত্রী লঙ্গে ধাতুসম্বন্ধিনো লক্ষ্যাদিসম্বন্ধিনশ্চ আত ঈতশেছের বা সোল গ্র ভবভি। লক্ষ্যাদিসিক্ষাব্যবভূতো য ঈকার: স এব লক্ষ্যাদিন কু নিশারে লক্ষ্যাদিশকে যো বিহিতঃ অভএব ইন্ডাদক্ত্যাদিতি ঈপ্রভাবে কতে সোলে পি। ভবভোব। জীরিতি ক্রিজী ভবে কি স্থীরিতি বৈধ্য চিন্তারাং ধ্যারো ধীশেতি কিপ্ ধীরাদেশক শ্রীরিতি প্রিঞ্জ সেবায়াং কিপ্ দীর্ঘণ্ট অভাবাদেবামীবাং ত্রীলিক্ত্মন্। যতে লিক্ষবাৰ্ম্যা লোক-ব্যবহারাধিগন্মৈর। জ্বাচ্চ—লিক্ষাশিয়াং লোকাশ্রমাদিক্রি। ক্র্যাক্রি

७१। ऐमीर क्रीवाक।

ব্রিয়ামাতঃ ক্লীবাচ্চোন্তরে ওদীন্তবতি। বালে ধনে বারিণী পয়সী।

७७। भश्रामीर।

विक्रयी स्था जित्रकी भिलामिकी भिलामिकी।

ত্যাদি লক্ষ্ দর্শনাস্করোঃ অব্ রক্ষণে তৃ প্রবনতরণরোঃ স্ক্ আছাদনে তন্ত্র ইতি সোত্রো ধার্তঃ তত্তি কুট্ম্থধারণে বা এভাঃ ত্রাদেরী দ্রিয়ামিতি
। লক্ষ্ স্থানে লক্ষাদেশো গুণশ্চ বহুলাধিকারাং। প্রিয়পপীঃ বহুষয়ীরিতি পা পানে যা প্রাপণে পূর্ববদীপ্রত্যরে বহুলাধিকারাং দিক্জিঃ সুম্বশ্চ
প্রিয়া পপীর্ষস্যাঃ বহুব্যা যয়েয়া বস্যা ইতি বহুত্রীহিঃ। স্ত্রীপ্রং দীর্ঘ ইত্যাদিনা প্রবন্ধানে স্কুক্য প্রাপ্তে কথ্যেতহুদাস্ত্রমিতি চিন্তাম্। অনিয়বর্ধো ধার্ক্রিতি প্রয়বেনৈব প্রায়েগাকারান্তান্ধান্তাঃ স্কুক্ ন প্রাপ্রোতীতি
আকারান্তো ধাত্নে দাস্তঃ।

- (১৭)। আদীন্ত্যামিতি কর্ত্তব্যে যদাত ঈত ইতি ভিন্নবিভক্তিনিদে শিং
 পূর্ববস্ত্রে কৃতঃ তেনাচার্য্যাভিপ্রায়ো লক্ষাতে আত ইত্যসামুবৃদ্ধিন তু ঈত
 ইত্যস্য অতএব বৃত্তিকারো বাচ্যকার দ্রিন্নামাত ইতি। উদিতি ঔ উটোঃ
 সামান্তেন গ্রহণম্। বারিণী ইতি অচীকো সুরিতি হং। বহবনৌ পর্ব তাবিত্যাদৌ গুণীভূজস্য নামঃ ক্লীবস্থং নম্বন্তপদার্থস্য প্রধানস্যেতি ঈন্ন ভবতি।
 তৎপুম্বাদৌ জু অস্তব্যপদলিক্ষর্যাৎ ভবত্যেব। অতএব চাক্লবনে
 রাজবনে।
- (৬৮)। ঔকারবি হত ঈং শন্তবতি। শনি পরে যং কার্যাং বিহিত্তং ভত্তর ভব ীত্তার্থ:। বিহুবীতি বিদ্ জ্ঞানে বস্কুরে ত্তৈনতি বস্থা: রিমন্ ইত্যামাং ঈরে কতে বস্থবাহোত দ্বিত্যে চেতি বকারস্থো-কার:। দ্রেপথীতি পথ্যাদেরাহোদ্ধন্ততি স্থাট প্রাপ্তমানং বা ধ্যা লুক্ শনাদ্যানীতি ইকারলুক্। তির ীতি তিন্দে, ২ঞ্জীতি অনচু গত জনয়োঃ কিপ্তিরসাহপুঞ্জায়াং ন শনাদ্যানীতি প্রতিষেধাং তিরংনহসমাম ভিরিন্দি সময় ইতি তির্ঘাদেশে। ন ভবতি শনাদৌ লুগন্চোহপুঞ্জায়া-

৬৯। **ওটো সোরিদমশ্চানঃ।** গ্রিয়ামাডঃ স্থানে টোলোঃ প্রয়োরেস্তবতি। ইন্নমশ্চানঃ। বালয়। বালয়োঃ অনেন অনয়োঃ প্রমানেন প্রমানয়োঃ।

৭০। ঙিক্তি যা। ঙিতি পরে ব্রিয়ামাত উত্তরে যা ভরতি। বালায়ৈ বালায়া: বালায়ামুন ^{কংক}

৭ । ঈদৃদ্যামা। ঙিতি পরে স্ত্রিয়ামান্ত্রামুত্তরে আ ভবতি। নদ্যৈ নদ্যাঃ বধ্বৈ বধ্বাঃ।

৭২। ইয়ুবর্পাজ্যাং বেণশ্চ।

মিতি নকারলুক্ অতোহচি প্রাক্ষিণেচতি অকারলুক্ ভবতি চছে টঠে ইত্যাদিনা বিদর্গস্ত শকার:। শীলাদোফীতি শস্তবাং বাদদাদিদ স্তাদে-রিতি দোষশক্ষ্য দোষন্ আদেশঃ বেঙ্যোরিত্যকারলুক্।

- (৬৯)। আত ইতি পঞ্চমান্তমনুষ্তমিহ বিভক্তিবিপরিণামাৎ ষষ্ঠান্ত মত আহ আতঃ স্থান ইতি। ইনমণান ইত্যায়ং মোগো বিভক্তবাঃ তেন দ্বিয়ামেবানাদেশো ভবতীতি শহা ন স্থাং অতএবানেনেত্যুদাহত্য : ইন্মাংত্র সর্বনামো গ্রহণং তেনাপ্রধানার্থত্বে চেতি সর্বনামসংজ্ঞাপ্রতিষেধে নারং ভবতি। অতীদমা অতীদমোঃ। পরমানেন ইত্যাদৌ কর্মধারম্ভ উত্তরপনার্থপ্রধানস্বান্তবত্যেব। প্রথমং সমাসে সন্ধিকার্য্যে চ হৃতে কুত্রাদেশন ভবিত্বাম্। ইনমো বিশ্বতত্মাদিতি ন চোগ্রম্। নেক্রন্ত পরত্ব ইত্যানের জ্ঞাপিত্যেতং প্রথমং সন্ধিকার্য্যং ন ভবতীতি।
 - (१॰)। বালায়ৈ ইন্ডি ঐজেচোহতেতি বৃদ্ধিরৈকার:। পুংবন্ধান্ত্র সোমপা ইত্যাদের বা ইত্যাদরঃ।
 - (৭১। অন্তিরান্ত গ্রামণ্যে খলপে ।
 - (१२,। देवूवर्वरवाः आत्यं विकास देगच्यात्यः। देवूवचीका-

ভিতি পরে দ্রিয়ামিযুবর্পা ভ্যামীদৃদ্যামিণশ্চোন্তরে আ বা ভবঙি। শ্রিয়ে প্রিয়ে ক্রাবৈ ক্রবে মতৈয় মতয়ে পট্টে পটবে।

৭৩। স্ত্রীতো নিত্যম্। জিয়ে।

৭৪। সুদ্ধাতুত্রীক্রবোহচ্যবৈক্যাদোরযুবে ।

সুঃ স্বরূপেণ একো বেকঃ বেক এব বৈক্যং স্বার্থে দণ্। অটি
পরে কেবলসুৎপ্রভৃতিবজি তানাং সুদ্ধাতু দ্রী জ ইত্যেতেধামিণঃ
দ্বানে ইয়ুবো ভবতঃ। ধর্ম্মিকল্পনাতো হি ধর্ম্মকল্পনা লখীয়দীতি
পক্ষম্যক্তম্য ইণ ইত্যমুব্তক্য ষষ্ঠীবিপরিণামঃ। প্রাপ্নুবন্তি

মিতা রার্থশণঃ কাবণবাচী ই বুব্ নিমিতা ভাষিতার্থঃ। কৌ পুনরিব্ব্ নিমিত্তো যত্র এতো বিধীয়েতে। অতএব যত্র বাধিতো তৌ স নাক্ত বিষয়ঃ
বর্ষালৈ ইতি। মত্যৈ পটে ইত্যাকারে ক্লতে অজ্বাবহিতকেতি পিবাদিভার গুণঃ। স্থা সভূ ইত্যাদয়ঃ শব্দা ক্রিয়াং বর্তন্তে ওদা জীপুংনীর্ঘতেঙ্গ ইযুবর্থভাৎ পুংবদ্বাবাভাবে অনেন পাক্ষিক আকারঃ। দ্বিয়ামিত্যেব
স্থায়ে বিপ্রায় পটবে বিপ্রায়।

- (৭:)। স্ত্রীপদসম্বন্ধী ঈং গ্রীৎ তশ্বাত্তবে আ নিজ্যং ভবতি। ইযুবর্থ-জ্বেন বিকরে প্রাপ্তে নিজ্যবিধানম্। স্ত্রীত ইতি তল্পস্তং ন দম্ভবতি। অপা-দানপঞ্চম্যান্তসিবিধানাৎ নেয়মপাদানপঞ্চমী কিন্তু আরাদাদ্যৈরিতি দিগ্ন-যোগে।
- (৭৪)। স্বাক্তন্পরতা মুতোন সম্ভবতীতি উত্থাকাজ্ঞালকণপ্রকরণনিরমমপহার সামান্তেন বিধানস্। ইয়ো যকারসাহচর্যাৎ উবো বকারোহস্তঃস্থঃ এবং বনা বিতাস্ত চ। এক ইতি অসহায়োহসংযুক্ত ইতার্থঃ বার্থে
 বিপ্রিতি চতুর্মন্তি লিতাশ্চেতি শেবঃ। নাত্রন্তানী নির্দিষ্টঃ তৎ কোহত্ত স্থানিস্থেনোপকরনীয় ইণ্ ইতি চের সম্ভবতি পঞ্চয়স্তস্ত স্থানিস্থাসম্ভবাৎ।
 স্বত্ত আহ ধর্মিকরনাতো হীত্যাদি। ইণ ইতাস্ত ধর্মিণ
 উপস্থিতোঁ ষঠাস্ততা ধর্মঃ পরিকরনীয়ঃ অন্তপরিকরনে তু ধর্মী

শ্বাধীয়াতে জি হ্রিয়তি স্তবন্তি নিয়ে। তুই বুবে পুপুর্থ: ক্রিয়ৈ ক্রবি।
একদেশবিক্তমনগুবন্তবতীতি শ্বেব প্রবন্ধে দল্তে ছিল্লে বা কর্ণে
থৈবেতি। মৃঙঋতোরিবেহপি ধাতৃহম্। মিয়তে। স্থাগুদেশাঃ
শ্বানিবৎ কাপীত্যক্তেই হৈহপি ধাতৃহম্। ভুবো ভুবা।

শর্মণ্ড পরিকল্পনীয় ইতি উভয়পরিকল্পনাদেক একপরিকল্পনং লঘুতরং ভৰতীত্যৰ্থ:। ইণ ইভি হ্ৰেজ্যা দীৰ্ঘস্তাপি গ্ৰহণম্। প্ৰাপ্নুৰম্ভীতি আপ্ ব্যাপ্তৌ স্বাদেমু দিতি কুৎ অৱ যুক্তো মুৎ। অধীপ্নাতে ইতি অধিপূর্ব্ব ইঙ্ অধ্যয়নে লটু আতে ইয়াদেশে ক্বতে অধীকারেণ সহ দীর্ঘ:। জিহ্নিয়তীতি **ৰী লক্ষায়াম্ অন্তোহদ্দক্ষাদেরিতাৎ স্ববন্তীতি ষ্টুঞ্স্ততৌ নিয়াবিতি** ণীঞ্প্রাপণে কিপ্ কিবস্তবাদ্ধাতৃত্বম্। কথং তর্ছি পরমনিয়াবিতি সমুদায়-শুকিবস্তম্বেনাধাতৃত্বাৎ। উচ্যতে। ধাছস্তশাপি ধাতৃত্বমন্ত্ৰীকরণীয়মিত্য-· लायः। जूहे तूय हेि छोटलिं ज्यानाविकि वसः मूर्कमयमा९ कानि-রিতি দ্বি: বহুং যটবর্গাদিত্যাদিনা তক্ত টঃ সন্ধিকক্ষ্যেকাঞ্চিনঘসাদস্ভাবসাবিতি নিগ্নমন ইডভাব: ঙে: বমুবাহোস্তদ্ধিত্যে চেতি বকারভোকার: উবাদেশ: এবং লুলুবুৰ ইতি লুঞ্ছেদনে শ্বিমৈ ইতি অস্ত কেপণে ভাদেশ্বঙ্ ইতি विक्ष वहनवहनामकावरनाथः अञ्जिमिकामिना में क्वेरीिक अम् अनवहास्मः চলনে বা ক্ষাদেরভিতি উঙ্ বহুলাধিকারাৎ মকারাকারয়োলু ক্ এরড ইতি মৃঙ্ প্রাণত্যাগে তুনাদিঘাৎ শং রিদৃতো যে চেতি রিকার:। নকু কথমশু ধাতৃত্বং বিকারেণাক্তণাপত্তে: মত আহ একদেশবিক্তমিত্যাদি একদেশে যৰিক্বতং যদন্তপাভূতং ভদন্তবৎ প্ৰকৃতিবন্তবভীতি। ্লৌকিকস্তারেন দ্রুদ্বিতৃমাহ খেবেত্যাদি বিকারো হি দ্বিবিধা ভবতি অধি-कारकार शामताम विमामानाकहारमन ह अञ्चलि श्रावृक्ष मरस हिस्स वा करर्न ইতি বাকাৰয়েন স্চিত্ৰ। নমু বদোবং কথমস্তেভূতিহলি ধাতৃত্বং নক্ত একদেশো विकृष्णः किन्त नमूनायः। अञ्चामानकायाः श्रात्रास्त्रमाह श्रामाः रमणाः श्रामितः कार्गीछि। यश्र शास्त कार्याः विधीयास्य म शासी श्रामिस

৭৫। **অসবর্গেহভ্যাসপ্ত।** ইয়ায় উবোষ।

৭৬। ন পদা**ত্তে**। অর্থং হরর্থম্।

পণ। ক্রিয় আদো বা। ক্রাদিঃ ক্রিয়াদিঃ। আয়ৈক্যাদেরিভি কিম্ ? চিকন্টি ভূমন্তি।

তুলাং বর্ত্তত ইতি স্থানিবং স্থানিনি বিহিতা আদেশাঃ স্থানিবয়বন্তি কাপীতি বচনাৎ মাপরতীতাত্র মিনীঞোর্মাদাদীভোহাট চেতি মাদেশে ক্বতে পুঙের ভবঙি। স্থানুত্রীক্রব ইতি কিন্ ? লক্ষ্যৈ রখনাঃ। স্থানিত তকারবতো গ্রহণাৎ ত্রসবঃ কিপ্রবঃ ইত্যাদৌ ন ভব'ত। স্পটীতি কিন্ ? প্রাপ্ন মাৎ। ইণ ইত্যের চক্রত্ঃ।

- (৭৫)। ধাতোদি কক্ত পুর্বোহজ্ঞান ইতি শাস্তান্তরসংজ্ঞা তরৈবাত্র ব্যবহার: কার্যা:। অভ্যাসক্ত ইণ: স্থানে অসবর্ণেইচি পরে ইনুবৌ ভবত:। ইয়ায়েত ইণ্ গ্রেটা অন্ বৃদ্ধি: ঐকারেণ সর্বাদেশতাং দিক্তি: হস্প্র আরাদেশতাঃ আনদেশতার সর্বাদেশ:। উবোরেতি উব্লাহে অন্ গুণ:। নম্ গুণে ক্লতে গুরিকাদেরন্তেল্পোরিতি ভাষ্ ক্লাল ভবতি। উচাতে। গুরিকাদেরিহিত্ত লিটা তেন ভাষ্বিধানাং। অসবর্ণ ইতি কিম্ ? স্বয়্রুঃ উবতু:।
- (৭৬)। পদান্তে বর্ত্তমানক ইশং স্থানে ইষুবৌ ন ভবতঃ। নার্থমিতি না ইতাক্ত ক্লিবস্তরাৎ ধাতৃত্বে প্রাপ্তিঃ প্রতিবিধাতে লুগুঞ্গালুপ্তবৎ কচিদিতি পদাস্বত্বন্
- (৭৭)। ক্রী ইক্সান্ত নাদিশকে পরে ইকারত ইর্ বা ভর্তি। *সর্-মনুকরণে বেকি সিছে লক্ষণমেত্রিয়মার্থম্। তেন, ভাদিঃ হ্রাদিঃ হাদি-রিতাত্র র বিকলো ভর্তি। ধাতুপারারণে তু ক্রিয়াদিরিতি সাধিতং তর্ম ল-মেত্রক্ষণং রক্ষিতে চনাপ্যেতদেবোদান্ত্রন্। চির্তি স্ব্রীতি চিঞ্ চরনে মুঞ্ অভিয়বে স্থাদেস্দিতি হব।

- ৭৮। কুটাদিবজ' ঙিভিঙ কৃদন্তঃ। প্রাপ্নবানি স্তায়তি চয়নম্। কুটাদিস্ত। ধ্বনং সুবিষ্যতি গুবনং ধ্রুবনং কুবনম্।
- ৭৯। চতু ধি (জুহোতিশ্চ।

 যস্তি যস্ত আয়ন্ জুহবতি। অচতুর্ তু। ঈয়তুঃ। ঈয়ুঃ। অত্র
 সর্বাদেশো স্কেটি ইয়াদেশে সভি দিঃ। জহুবতুঃ জুহুবুঃ।

কুটানরণ্ড ণিতীতি বক্তব্যম্। কুটানরশ্চ ণিতি পরে বৈক্যানয়ো ভবস্তি। ধাবয়তি ধাবকঃ:।

(१२)। ইণিতি ধাতোগ্রহণং ন প্রত্যাহারস্থ প্রত্যাহারগ্রহণে সতি
ক্রোতেরপাদানমনর্থকং আং ইন্ গ্রু-পেনৈব তৎপ্রারে:। ইণ্ গতে) হ
কানে ইত্যেতো চতুর্ পরেষ্ বৈক্যাদা ভবত:। যত্রীতি যবরলোহটীতি
যহং আর্মিতি লঙ্ অন্ যবরলোহটীতি বাধিতা বৃদ্ধিজ্ঞাদেরিতি বৃদ্ধিং ওত্
আর্ পদাদাবক্ত। এবমহমায়ম্। ভ্রেতীতি অস্তোহদু জন্মাদেরিতাক্রেলাং ভিন্নতিঃ হক্ত জঃ। ইন্দুং ইন্নিতাল যদি প্রথমং বিক্তিঃ তাৎ
তথা অভিদহীতাদিনা বকারঃ ভাষত আহু অলেতাাদিন

⁽१৮)। কুটাদীন্ বজ দ্বিতা ভিভিড্ডের ভিৎক্রদন্ত কৈব্যাদির্ভবিত। ভিত্তিজ্বতৌ অস্তৌ যস্য স ভিত্তিজ্বদন্ত:। প্রাপ্রবানীতি উবভাবে গুণঃ ব্রন্ধতীতি দ্রী ইবাচরতি চেষ্ঠতে বা ইতি কর্ত্রার্ইত্যাদিনা আর্ত্রুক্ চ সনাদ্যম্ভবেন ধাতৃত্বান্তিঙ্ লঙ্। অস্তলকোহরং সমীপবাচী তেন লব্যবধানাং স্বতীত্যক্র ন বৈক্যাদিরম্। কথং তহি ব্রন্থতীতি লঙা তিঙো ব্যবধানাং। উচ্যভে। তিঙ্নিমিন্তোংপক্রতাং লঙিণি ভিত্তেব। যথা—বিদ্যান্তিঙ্ ধনং বিদ্যৈব অতন্তনিমিন্তমেব বৈক্যাদিন্তম্। এবঞ্চেং স্বতীত্যাণি লক্ত তিঙ্বং ভবতু কো বিরোধঃ বৈক্যাদিন্তম্ ন ভবতি তল্পাঙিভাং। লাবক ইত্যাদৌ নিতো ভিত্তাং নোবাদেশঃ। ধ্বনমিত্যাদৌ ধ্বিধ্ননে গুলবনে গুপ্রীম্বোৎসর্গে জ গতিক্র্র্যায়োঃ কুঞ্ লক্ষে এতে পক্ষেব ক্টাদাবিশন্তাঃ। ভিঙ্ক্লিণিত কিম্ প প্রিয়ঃ ভ্রবঃ। ভসিঙ্সোঙ্তিন্ত্রাদিপি বৈক্যাদিন্তংন ভবতি।

७०। **देश**ा

अधिरास्ति अधीरास्ति । अठजुर्म् जू । अधीराजूः अधीरम् ।।

৮১ ৷ আমি স্ত্রীয়

ত্রীণাম্।

ball अभूमारमार्गा।

जीः जियः जीः जियः।

৮৩। দ্রিয়াং সেরুবাবামি।:

खिशाः जीनाः जनाः जनाम्।

৮৪। অভিদচ্যনেকাচোহযুক্তধাতোরিদ্যঃ।

- (৮০)। ইক্ শর্প ইত্যয়ং ধাড়া চত্যু পরেষু বৈক্যানির্ধা ভবতি। গাণিনীয়ানাং নতভেদার্থেহিয়া বিক্লারস্ত্রণ ইঙ্ অধ্যয়ন ইত্যস্ত ভূবিয়াতে।
- (৮১)। আমিপরে স্ত্রীশব্দো বৈক্যাদি ভবন্তি। স্তিরাং দেবুধাবা-মীতি পান্ধিকে বৈক্যাদিছে প্রাপ্তে নিত্যার্থং বচনম্।
- (৮২)। জন্শলো: পরহয়া: স্ত্রীশল্পো বৈক্যাদির্বা ভবতি। স্থ্রীমিতি লোপোহণমোহত ইভ্যকারপুক্। স্ত্রীরিতি সবর্ণোহগিভ্যাদিন। পূর্ম্ব-স্বর্ণঃ।
- (৮৩)। ইশ্ ইতি প্রজাহারেণোপস্থাপিতরোরীকারোকাররোঃ সেমুবাবিতি বিলেশগন্। দেখুবো ঈকারোকারো আমি পরে শীলিঙ্গে বৈক্যাদী বা ভ্রতঃ। সহ ইযুবাভাগে বর্ত্তে সেমুবৌ। কৌ চ ঈ কারোকারো ইযুবাভাগং সহ বর্ত্তে যৌ তৌ তৌ প্রসঞ্জাতে। নমু যৌ ঈকারোকারো সেমুবৌ ন ভ্রতঃ তয়েবৈ ক্যাদিছে কো বিরোধঃ বদর্থং দেযুবাবিতি কৃতং ক্যতাং নাজ্যিবিরোধঃ তংক্রভক্ষাস্পত্তার্যন্।
- (৮৪)। যুক্তাবধবো: ধাঞ্যুক্তরা চুস্তবাতিরিক্তিত্র নেকাচ ইক বোল-শতিপক্তি,পরে বোল্ডরতি।

৮৫। কারকোপদর্গাভ্যাং ক্যন্তেদ্তোরচি যথে। বিক্যাতে বিবিয়কে নিম্মাং মেনাম্যং রুকভ্যি প্রভ্যি খলপুং লগ্ন-হ্বম্। ডিদচি ভু। চিচয়িথ অবিভয়ং। ফুক্রধাতোন্ত। শিখি-য়তুং যবক্রিয়ং।

(৮c)। কারকাত্পদর্গাচোত্তরতা কিপ প্রতায়াম্বর্ত অযুক্তধাতোরি-কারো কাররো 🛩 সনে অচি পরে যবৌ ভবতঃ । অভিৰত্তঃ পূর্বভা বিষয়ঃ কিবস্তস্ত ব্রহার । বিব্যাতে বিব্যিরে ইতি ব্যেঞ্সংবরণে ইতি বেঞ্বর্জং লিট চেতি বীভাবে ক্বতে অথবা বী গতিপ্ৰজনকাষ্ট্ৰীসন্থাদনেষু অজু গতিক্ষেপণয়োরিতাশু বা বাাদেশে ক্তে কর্মণি রপম্। ক্ত যবরল ইতি छुतानिकाल नीर्यः। नीसात्र देखि नीर्का वस्तः विक्खिः मन् वस्वतादश-श्रक्षिज्यराठिज वकात्रमामितः कृष्ण विव तिम आस्मित् ध्रम् । মিত্যাদি সেনাং নম্বতি বুক্তেনো বিভেতি প্রবিভেতি থলং পুনাতি লগ্নং হুৰুৱতী ত উপপদে প্ৰানে চেতি কিণ্ • কিদাশীলে গারিত্যাদিনা হেবঞো হ:। চিচরিথেতি চিঞ্চরনে 'লট্ থঙ্ অনিওস্বদমস্তৌমাদিবর্মিতি त्रशारिषार भरक हेंडु: व्यक्टियु तििः कि ही छटा नड् वन् इककारनतन् ভুস্ ইতি ভুস্ ৰিক্জিঃ। শিখিয়ত্রিতি টুওবি গতির্ক্ষোঃ লিট্ অতৃষ্ দ্বিক্তি: ইনাৰেশ:। যবক্ৰিয় ইতি যবং ক্ৰীণম্ভীতি কিৰম্ভাৎ কৃদ্। অনে-কাচ ইতি কিম্ ? অধীয়াতে অধীয়তে। কারকোপদর্গান্ড্যামিত্যত্র অভিনচ্য-নেকাচ ইতি: ন সম্বধ্যতে সামান্যেক বিধানম্ অতএব বৃক্তিয় প্রভ্যাস্থ্যদা-ক্তম্। কারকোপদর্গাভ্যামিতে কিম্? নিয়ে নির:। ননুপপদাবিত্যেব: কিং নাকুতং প্রমালানো নীলেডডি প্রমনীঃ প্রমনিরো প্রমনিরঃ ইত্যতাপি দ্যাৎ কারকোপদর্গাভ্যামিতি তু'নাত্র প্রদন্ধ: পরষশবদ্য ক্রিদাদক্ষাভাবে नाकातकन्नार । এवं एटर उर्दि यमा जु भत्रमर नम्नजीिक किंभ जमा मार्राप्त পরমনাবিতি কার্যকাপপদত্তাং। নৈৰম্। প্রমশবস্য বিশেষণভাং। পদ্মং কিন্ত দতি সাপেকভাদত্র সহাসাভাবঃ জিরাবিশেবণত্তেৎপি অগমক-স্বাৎ সমাদাভাব: অভএব মৃহ পচভাত্যাদৌ বড়পি ন ভবতি। ক্ষান্তেদূতো-রিতি-কিম্ ?' বিষুষ্বত:। ধাৰণা হুমুক্তাবাৎ উল্লোট অফ্রানিটাত্র-सम्बद्धाव।

৮৬। ঈয়ায়োশ্চ কিবস্তয়ো:।
মালামিচ্ছস্তো মাল্য: সংখবাচরতে সখ্যে। অনেকাচ ইত্যৈব ।।
অমিচ্ছস্ত ইয়ঃ। অযুক্তধাতোরিত্যেব । মাকিমিচ্ছস্তো মাকিয়: ।।

৮৭। উপদর্গাদেব ধিয়ঃ স্থবজ ম্। প্রধায়। সৃপদর্গান্ত্র। স্থধিয়া।

৮৮। বর্ষাপুনদূ ন্কারাভো ভুবঃ। ় বর্ষাভুঃ পুনর্ভ্রঃ দূন্ভুং কারাভুম্।

⁽৮৬)। ডিলচি চ পরে কারকোপসর্গাভাবে ঢানেন বিধানম্। ঈয়ায়্
প্রভায়ান্তস্য কিবন্তস্যানেকাচোহর কথাতোরীকারোকারয়োঃ স্থানে অচি
পরে যবৌ ভবতঃ। মাল্য ইতি মালাশলাৎ তুল্যাচারে ইড্যাদিনা ঈয়্
অয়োরিতি আকারসুক্ কিপ্ কৌ য ইতি ঘকারসুক্ জস্ ইয়াদেশে প্রাপ্তে
ফকারঃ। সথ্য ইতি সন্ধিশলাৎ কর্ত্রায়্ইত্যাদিনা আয়্ হলিজ্ভ্যামিত্যাদিনা আকারসুক্। অঙিং ভিতোকদাহরণে। অমিচন্ত ইয় ইতি অং
বিজুন্। দান্দির ইতি দক্ষ্যাপত্যম্ অদন্তাক্তি ইণ্ রৃদ্ধিঃ সর্বং পূর্বিবৎ। যুক্তসন্নিহিতরোরের ঈকারোকারয়োঃ প্রতিবেধাহয়ম্ তেনেহ ন
ভবতি গ্রামমিছক্তা। গ্রাম্যঃ। ঈয়ায়োশ্চেতি লিপিকরপ্রমাদক্তং তেন
তেন দের সের ইত্যত্রোঃ কিপি উদ্প্রবান্তব্যাত্যকারে ক্রতে দ্বে

ক্রেয়া স্যান্ত্রেলা ইতি ভবতিন

⁽৮৭)। উপসর্গাহতরক্ত থীশক্ত উকারো যো ভবন্ স্বর্জারিছেব ব ভবতি। উপসর্গাহতরক্ত পূর্ব্বেণ প্রাপ্তে নিয়মার্থা বচনমিতি স্চয়িত্মেব-কারকরণম্। প্রথ্য ইতি প্রধ্যায়স্তীতি ধাাঘো ধীশেতি কিপ্ ধীভাবশ্চ। উপসর্গাদেবোত্তরক্ত ভবতি নাজসাদিতি নিরমো বিরুদ্ধঃ এবং সতি শাস্ত্রং ধ্যায়স্তীতি শাস্ত্রখা ইতাত্র যকারোলন স্থাৎ এতক্ত সকলশাস্ত্রক্ত সম্ভব্। শোভনং ধ্যারস্তীতি স্বিয়া বহুরীহো তু কারকোগসর্গভাবাদেবাপ্রাপ্তিঃ।

⁽৮৮)। বর্ষাদিশবেক্তা এর উত্তরত ভুব উকারত তথাচি পরে বকারো । ভরতি। এতদপি নিম্নার্থমৃ। তেন প্রতিভূবো প্রতিভূব। ইত্যুক্তর

৮৯:। আমি প্রিয়াং নোব্চ। ব্রাভূণাং পুনষ্ঠুলাং দৃন্ভূনাং কারাভূণাম্।

৯০। স্ত্রীপুংদার্যঃ স্ত্রিয়াক্ষ্পুংবছ্দ বর্জ মৃ।

क्षा विमित्र।

ভবতি। দৃন্পূর্বাং ভবতে: ক্রনদের ডিতি উঙ্জো দৃনভূপকো বৃহপাদিত:
উণাদিক ডাং গুণাভাবং। অত্র ষবরলোহটীতি সংদ্ধ দৃন্ভৃং দৃন্ভৃ
ইতাত্র লোপোহণনোহত: সবর্ণ্লেইক্শনঃ দো নক পংসীতি বিধানাং পূর্বাং বাদেশার্থং দৃন্ভৃগ্রহণনিতি ভাষাসিদ্ধং কিবস্তপক্ষেত্র নির্মার্থমেব। কার্মপ্রাচেষাত ইতি বামনং বর্ষাপুনদূর্নকারীছুর ইতি চাক্রঃ। কারশকোহয়ং ঘণস্তো রজৌ ভাষো চ দৃশুতে ইতি রক্ষিতঃ। কথমত্র স্ত্রীলিকো দৃশুতেইতি নাবশার্যামঃ। পুনর্বায়াং বর্ষাভ্ দ্বিয়াং কিঞ্পুকে প্লবে পুনভূ:
ভাৎ দ্বিরুলায়াং দৃন্ভূঃ পরগবছ্রোঃ কারাভ্ নিগভ্তানে ক্রিয়ায়ামিপি চেষ্যত ইতি।

(৮৯)। বর্বাদিন্তা উত্তরদ্য স্তিয়ামামি পরে উকারস্ত স্থানে বকারো ন বভতি উবাদেশক ন ভবতি। এতাভ্যাং ত্যক্তে পক্ষে মুরের ভবতি। :

(৯০।৯১)। জীলিঙ্গে পৃংলিঙ্গে চ যা শব্দো দীর্ঘা: স জিয়াঞ্চ পৃংবত্তবিভিশ্দাং বর্জয়িত্বা জীত্তমত্রান্ত্যের কার্যার্থন্থ পুংবত্তার:। সহ এম-বর্ত্তবে সাইতি আত ঈত ইত্যাদিনা স্থলুক্ সাবিত্যক্ত ঔদীৎ ক্লীয়াচ্চেতি-ঈৎ সেত্যক্ত এট্রোসোরিদমশ্চান-ইতি এত্বঞ্চন ভবতি। এবমপরমপ্যন্নেয়ম্। বিগত ইর্বস্ত যস্তা বা বীঃ ব্যাঃ ইত্যক্ত ইন্স্ত্যামা ইতি আকারো ন ভবন্তি-প্রিয়কর্ষ ইতি প্রিয়া কর্বৃত্ত যস্তা বা প্রিয়কর্বৃঃ জীপুংদীর্ঘ ইতি কর্ম-ধাররো বন্ধো বা বন্ধে তু জিয়াঃ পুংস ইত্যক্তমামান্তো ন ভবতি। শক্ষ-বর্ত্তাৎ নিদ্ধেশ্য । প্নদীর্থশক্ষেন সমানে ক্লতে স্বরেষ্ণি সমানে ইত্য-মলুক্। ঠিং। অনিযুবর্থো ধাতুঃ। আমণ্যে ত্রিয়ৈ খলপে সোমপাঃ সোমপো। ইযুঁবর্ষস্ত স্থানীয়া ক্ষুত্রি।

৯০। পুংদীর্ঘঃ ক্রাপ্রত্যয়ঃ ন্ত্রীবৎ পুংস্তেইপি। অপ্রেয়সীঃ পর্কমানান্ পশ্য অলক্ষ্যো বিপ্রায় দৈহি।

৯৪'। ঈয়ায়োঃ কৌ। নারীমিচ্ছতো নারীবাচরতো নার্য্য বিপ্রস্থা।

(৯৪°)। কৌ সতি ঈরারো: সতো: পুংদার্থ: ক্রীপ্রতার: পুংছে-হলি স্ত্রীবস্তবতি। নার্যা বিপ্রস্য ইতি নার্বীশুসাৎ ঈরারৌ হলিজ্ভাগনি-ভাদিনা আদিলোপ: কিশ্ বকারপুক্। অদীর্ঘন্ত। অভিরত্তরে বিপ্রার। স্ত্রীপ্রভার ইতি-কিন্? অভিপ্রিরে বিপ্রার অভিস্তিরো: বিপ্রস্য। বদা

⁽৯২)। অনিযুবর্থ ইতি অর্থশক্ষা কারণবাচী ইযুব্কারণব্যতিরিক্ষঃ
স্ত্রীপৃং-দীর্ঘো ধাতৃঃ স্ত্রিয়াঞ্চ পুংবম্ববতি। গ্রামণো স্ত্রিরৈ ইত্যত্র উদ্দ্র্যামা
ইত্যাকারঃ সোম্বপা ইত্যত্র স্থপুক্ সোমপাবিত্যুক্র উদীং ক্লীবাচ্চেতি স্কর্কারণ নাজবতিন।

⁽১০)। পুমাংশ্বাদে দীর্ঘন্টেতি প্ংদীর্ঘঃ পুংলিক্সা দীর্ঘান্তঃ স্ত্রী-প্রভারান্তঃ শব্দঃ পুংশ্বহিপ স্ত্রীবদ্ধবভি। ক্রিয়াং নিহিতং কার্যাং তত্র ভবতী-ভার্যঃ। ন তু পুংশ্বং নিবর্ততে ভেন স্বপ্রেমীঃ ম্পর্কমানানু পশ্ব ইতি তর্মিশ্বনশ্ব পুংশ্বমেব। অন্তরঙ্গনিমন্তা নদীসংস্ত্রা প্রাক্ প্রবৃত্তা পশ্চাহহিনরঙ্গ পুংশ্বমোবে ন নিবর্ততে ইতি শাস্ত্রান্তরগ্রায়লকোহয়মর্থঃ স্ত্রে নোপনিবর্কঃ। তথাহি কিল্ স্থপ্সমাদেশবর্ষইন্ত্রীবিষয়খাৎ দিন্ধমিতি ভাষান্। প্রিয়শকাৎ গুণাদীরস্বিচাবিতি ঈরস্তঃ প্রাদিঃ প্রিয়াদেরিচেয়সাবিতি প্রাদেশঃ প্রত্নিদিত্যাদিনা ই অবিদ্যমানা প্রের্মী অস্তেতি বছরীহিঃ নভ্জোহস্ত্যর্থানা-ক্ষেতি বিদ্যমানপদলোপঃ কাদির্ধ দাদেরিতি প্রাপ্তমান কল্প স্কর্মোর্যানতি নিষেধঃ ইন্ধ্যমান্তরীহাবিতি ন ক্রন্তঃ অত্র শসঃ সম্য স্থানে নো ন ভবতি। এবং অপ্রেম্বনী বিপ্র ইত্যার স্থাক্ অলক্ষ্যৈ বিপ্রায় দেহীত্যার অবিদ্যমানা ক্ষ্মীর্যস্য ইতি মাবাদিরেকার্য ইতি কোন ভবতি জ্বনেকার্থকাৎ।

৯৫। ডিরামাগস্থানী ভ্যাম্।
আগস্থাকারারিইনেচাতরা ডিরাস্তবজি। নভাং শ্রাং প্রসক্তঃ
সদোধ ইতি পাণিনিঃ। ভুবাং বালায়াং কন্তাং গ্রামণ্যাম্ উন্সাং
নিয়াম্।

৯৬। হর্ষোহন্ভঃ ক্লীবে। ক্লীবে নপুংমুকলিকেহন্তো হ্রন্থো ভবতি। সোমপং কুলং সহ এন কর্তমানং সংস্থপ্রেয়সি খলপু।

৯৭। এচ ইণ্ হুস্তবে। স্থতি স্থারি স্থগ্যা বহুসু চিচেটে।

পদং শবং স্ত্রিয়াং বর্ত্ততে তরাদ্য লক্ষণসাবিষয়ত্বাৎ অতিশ্রিরৈ ব্রান্ধণ্য ইতি এবং স্কুট্ডা অতিকুট্ডাঃ স্ত্রিয়ে। প্রেছ্পীতি কিম্ ? স্বংপ্রান্ধ ব্রান্ধকুলম।

- (৯৫)। বিভক্তে কুতায়াং য আকার উৎপনতে স আগন্তঃ। নদ্যামিত্যানৌ ঈদ্স্যামা ইতি আগন্তরাকারঃ। শামিতি পানিনীয়ানাং শীতায়মাদেশো বিহিতঃ স চ সভাবাদেব স্ত্রীলিকঃ। তথাচ লিক্ষকারিকা, ঈদ্দস্তং যতিকোচ্ শর্থ জর্থ দর্থ দৃশ্ধ প্রার্থনৈবেতি। ভ্বামিতি ইয়্বর্থাভ্যাং বেণশ্চেত্যাকারঃ তদভাবে ভ্বি। বালায়ামিতি ডিতি বেতি
 যা ক্যামিতি স্যা ডিতি দ্বিয়াং প্রাক্ প্রবচ্চেতি স্যা গ্রামণ্যামিতি নিয়োগ্রামাগ্রাভ্যামিতি পত্বং উল্লেখ্মিতি উল্লেখ্যীতি কিপ্। আগন্থিতি কিম্ণ্
 ভক্তে।
- (৯৬)। ঈরদোর হ্রীহাবিতি নিষেধাংস্তাপীতি পুরুষোভ্যদেবাদরঃ।

 ক তৎ সম্বতমিতিং স্চর্মিত্ব সুষ্টপ্রমুগী ভাষাহতম্ ।
- (৯৭)। এচো হ্রত্বত্বে কর্তুরো ইণের ভবতি নাক্তঃ। তদিই হানিতঃ
 সাদৃত্যাৎ একারৈকাররোরিকারঃ: ওকারোকাররোক উকারো ভবতি।
 তথাহি—তালুঠানীয়ে ইকার: কঠতালুস্থানীয়ে একারেকারে ওঠাহানীরঃ
 উকার: কঠেচিস্থানীয়ে ওকারোকারে। অধ্বা ইণ্ চং ইণ্ চ ইত্যেক-শেষেণ বাবিণো গ্রাহো এবমাভ্যাং: মহ সমসংখ্যমে ক্রমব্যরহারাং নান্ধিবিরোধঃ। স্ক্রীত্যানে হ্রেডে ক্রেডে হলশ্চামো লুগিতি স্কুক্ চিচেট্টে

৯৮। নাপ্রকৃতেঃ। বনে ধনে বদাভ্যাং ধনাভ্যাং বনেভ্যঃ ধনেভ্যঃ।

৯৯'। জস্শসোঃ শির্নাস্তো দীর্ঘশ্চ।
ক্লীবে জস্শসোঃ স্থানে শির্ভবন্তি। সন্নিহিতালাভে বিপ্রকৃষ্টই
বিধিরপেক্ষতে নতু সন্নিহিতলাভ ইতিঃ। শাবৈৰ পরে কেবলনাজ্যে দীর্ঘন্ত। স্কর্মাণি কারীণি।

১০০ । **জম্বচিছঃ।** বিঘাংসি স্থপন্থানি প্রাক্ষি স্বাদিশ।

ইতি চেষ্ট চেষ্টারাং লিট্ এ ছিক্সজিং হ্রম্বঃ। প্রকরণান্তরেহণি হ্রম্ববিধান-বিষয়ক্তৈব বাবস্থেরমিতি স্থচনার্থং চিচেষ্ট ইত্যাদান্তম্।

- (৯৮-)। প্রক্তরেক্তাংপ্রকৃতিঃ প্রত্যয়াদিং। প্রত্যয়াদেং সম্বন্ধের সতি ক্লীবে প্রাপ্তো হ্রেরা ন ভবর্তি। প্রত্যয়াহৃৎপজ্ঞে প্রাগ্ ভবতীত্যর্থঃ। অতএব বনেভ্য ইত্যত্রাপি ন হ্রম্মঃ। কথং তহি বিমলহ্য দিনমিতি। উচাতে। দ্যব্যৌৎ সৌ দিব ইত্যত্র বিষয়সপ্রমী বক্তব্যা তেন সৌ অকৃত এব ঔকারে হ্রম্মে চ ক্লতে স্মঃ তল্ল, ক্ চ কর্তব্যঃ।
- (৯৯)। দীর্ঘবিধানের সহ সন্নিযোগশিষ্টপাভাবান্নাপ্তো দীর্ঘশেনিত পৃথগিদং বাক্যম্। এবঞ্চ সতি শৌ পরে দীর্ঘপ্তমেবানের বিধীরতে ইতি কথং নিশ্চয়: নাস্তশ্চ দীর্ঘো ভবন্। স্কর্মানীতাত্র সোক্ষকার: কন্ত চাকার: কন্মার ভবতীভি চোদ্মাহ সন্ধিহিতালাভ ইত্যাদি। প্রক্রাস্তশাৎ শিবিধানমের সন্ধিহিত্য। অন্তক্রমোচ্চারণের চ মকারাকার এব নকারপ্ত সন্মিহিত: অতঃ শাবের পরে কেবলনাস্তো দীর্ঘশ্চ ভবতি। নাস্ত ইতি কিম্ প্রস্থিরিব
- (> >)। শিরাদেশো জন্মরেতি। জনাদেশক্ত শ্রে স্থানাদেশাঃ স্থানিবভারীছি বা স্থান কল্কার্য্য সিদ্ধে শনাদেশক্ত শের্কস্কার্য্যার্থং জন্মরার:। বিষাংগী ত বিদ্ জানে বস্তুবে ত্তেকভূচেতি বস্তুং বসুবাহোজিতবে চেতি শনাদেশ বিহিতো বকারক্ত উকারো জন্মরাবাদ ভরতি জন্মর জারবিধানসামর্য্যানের স্থানিবভারেও শস্কার্য্যং শের্ক ত্বত্যের শারচেন্তেভূ

১০১। অধীকো মুঃ।

ক্লীবে স্বাদ্যচি পরে ইক উত্তরো সুর্ভবতি। নারিণী মধুনী কর্তৃণা।

১९२। वाजिनिदत्रभस्त्रक्रीमाि शूःवद्या।

अहित्न अहरत्र कुलक्ति।

যাস্বস্তেতি নুঃ দীর্ঘোমহৎসাস্তোনাবিতি দীর্ঘ:। সুপদ্বানীতি পথ্যাদেরাছোছেশ্চতি জন্মজাবাদান থো ছন্দ। প্রাঞ্চীতি প্রপূর্ব অন্চু গতিপূজনয়োঃ
প্রাঞ্জীতি কিপ্ শনাদৌ লুগন্চোংপূজায়ামিতি প্রাপ্তস্ত নকারস্ত লুকো
জন্মজাবাৎ প্রতিষেধঃ কথং তহি দদাদেরপ্রাপ্তৌ শসি ছদম্যস্ত জন্দি উদকন্য উদানি অস্থগিতান্য অসানি আতিদেশিকং কার্যাং কচির ভবতীতি
কর্তব্যাহত্র যতঃ।

- (> >)। প্রকরণনিরমেনোপস্থাপিতলা স্থপোষ্টীত বিশেষণম্।
 ত্মত আহ স্বাদ্যটি পরে ইতি তেনেহ ন ভবতি মাধ্বী স্থরা। অচীতি কিম্ ?
 বারিভ্যাম্। নমু ইকো মুরিতি কতে কো ধোষঃ বারিভ্যামিত্যাদে নো
 নাস্তপ্যেতি লুগ্ভবভ্যেব। নৈবম্। তত্র স্কভাবনাস্তপ্য গ্রহণাৎ। ইক
 ইতি কিম্ ? বনে কুণ্ডে।
- (২০২)। বাচালিঙ্গ ইগস্তঃ ক্লীবে বর্তমানষ্টাছটি পরে পৃংবদ্ধাবো বা ভবজি। ক্লাবেহপি ষহক্তং কার্যাং তর ভবজীতার্থঃ। পৃংবদ্ধাবেন যদি প্রক্ল-তন্ত নোবেব নির্বিরিন্তা স্যাৎ তদা পৃংবদ্ধাতি ন কুর্যাৎ কুরেব বিকরেন বিদ্ধাৎ তন্মৎ হ্রন্থনিবৃত্তিরপি প্রয়েজনং তেন গ্রামণ্যঃ কুলাৎ গ্রামণ্যাং কুলাং নামিতাত্র কারকোপসর্গাভ্যামিত্যাদিনা যকারঃ হ্রন্থন্থে তু গ্রামণিনঃ কুলাং গ্রামণিনঃ কুলামামিত্যক্র ক্লীবেহপীতি ফুদীর্ঘন্ত। শুচিনে শুচবে ইতি পৃংবদ্ধাবায়োয়ভাবে গুণঃ। শুচিনিপ্রঃ শুচিঃ স্ত্রী শুচি কুলমিত্যক্র বাচ্যলিক্ষতা। শুচিনেভ্যক্র নৌ ক্লতে টা নাদেশে বা ক্লতে বিশেষাভাবাৎ প্রথমান্দিন্তাপি টা নোদাহতা। স্থাম্ কুলমিত্যক্র ইপস্তম্য ক্লীবতা নতু বাচ্যলিক্ষতা অক্লীবে স্থনৌরিভ্যম্যানিগস্তমাং। বাচ্যলিক্ষ ইতি কিম্ গুরুপ্থে। ইগস্ত ইতি কিম্ গুরুপ্থে।

১০৩। শাবচোহঙ্যান্তস্থ।

ক্লীবে শো পরেহঙ্যান্তক্তাচ উত্তরো মূর্ভবতি। হল্ব্যবায়েছনি। পয়াংসি স্পুনাংদি সান্ডাংহি রোচীংষি বপুংমি স্বঞ্জি স্বরেম্ভি।

১০৪। অদস্তস্থ চ।

বনানি ধনানি। অঙ্যান্তভেতি কিম্ ? স্কর্মাণি বছৰি স্থগিন্ধি প্রচলি স্থদিবি।

কুলে। অচীতি কিন্? গ্রামণিভ্যাং কুলাভ্যান্। পূর্ববোগাদেবাচীত্যকুবজৌ প্রাপ্তায়াং অচীতি কুতং মন্দধিয়াং স্থপ্রতিপত্তার্থন্। টাদাবিত্যস্যাদ্ চীতি বিশেষণমন্ত্র্বর্তনীয় মিতি স্পষ্টিং ন ভবতি।

(১০৩)। অঙ্য ইত্যনেন ঙ্বব্যতিরিক্ত হল্বর্ণপ্ত গ্রহণং
নঞা সদৃশপ্রতিপজিকরণাং এতচ্চাদস্কলচেতি দক্ষণান্তরকরণেনৈব
জ্ঞাপিতম্। অন্তথা তদনর্থকং ভাৎ। ভবতু শাস্ত্রে লাঘনমেব সাধ্যং
সত্যং বর্গভাদিঃপদাস্তেহঙ্যেচেতি লিখন্তীত্যাদাবপি প্রসঙ্কেং। যদ্যঙ্য
ইতানেন হলো গ্রহণং তদা অচ উত্তরে শিপরতা ন সন্তর্পতি
হল্ব্যবায়াদত আহ হল্ব্যবায়েহপীতি। লক্ষণসামর্থ্যাদিতি বিশেষঃ যদি
হল্ব্যবায়ে মুন্ ভাৎ তদা লক্ষণমেবানর্থকং স্যাৎ। নমু যদি হল্ব্যবায়ে
ভবতি তদা অচা হল্ব্যবায়েহঙ্যাভ্তর এব হঃ কন্মার ভবতি। উচ্যতে
এবমচ ইত্যনর্থকং স্যাৎ রার্ত্তাভাকারানর্থকমনেকহল্ব্যবায়ে ব্যার্ত্তিভবিষ্যান্তি এবক্ষেৎ নবহুর্জ ইতি নিষেধেংশুনর্থকং স্যাং তৎসামর্থাদনেকহল্ব্যবায়ে
হপি মুনা ভবিতব্যমেব তন্মাৎ শিপরতায়া এব হল্ব্যবায়ে মুর্ভ্বতি নম্বচ
উত্তরভায়াঃ। পরাংসীতি দীর্ঘো মহৎ সাজ্যোনাবিতি দীর্ঘঃ। স্প্রাংসীতি
স্কৃট্যগিদিত্যাদিনা প্রাপ্তো মুম্ নক্ষীব ইতি নিষিদ্ধঃ। স্পঞ্জীতি স্থঞ্ বিসর্পে

(>=8)। শৌ পারে অদন্তন্য চ মুর্ভবন্তি। বছৰীতি বছবো যবর্ণা বেষু তানি বছষি শোভনা গীর্ঘেষাং তানি স্থাগিরি প্রচলীতি প্র পূর্ব্ব চল কম্পনে কিপ্। ১০৫। ন বহুজ:। বহুজি বহুজীত্যত্ৰ বেফাদিত্যেকে। ঙ্বোপলক্ষিতা বৰ্গাস্তা যৱলবা:।

১०७। (मध्यः।

ক্লীবে অক্স উত্তরস্থ সোঃ স্থানে মো ভবতি। বনং ধনম্ মঙি-জরম্।

>০৭। জ্বাস্তাদমিত্যেক। অতিজ্বম্ অতিজ্বসম্।

⁽১০৫)। বহুল ইত্যন্যাচ উত্তরে শৌ পরে ফুর্ল ভবতি। উর্জ্বলপ্রাণনয়োঃ কিপ্ বহব উর্জেণি যেষাং তানি বহুল্পি এতদেব নিষেধবিধানং জ্যাপকং তেন হল্দয়ব্যবায়েহপি ফুর্জবতীতি তেন রাজস্পর্দ্ধি। রেফাদিত্রেকে ইতি রেফজকারয়োম ধ্য ইত্যর্থং। ঙ্যোপলক্ষিতা ইতি উপলক্ষণং হি দিবিধং ভবতি কাপি সদৃশগ্রাহকং কাপি সমূহগ্রাহকম্। যথা কাকেভ্যো দধি রক্ষতামিতি কাকপদেন কাকমার্জারক্ক,রাদয়ঃ উপদ্রবক্ষরেণন সদৃশা গৃহুত্তে অনেন পথা রাজা গত ইতি তত্পলক্ষিতঃ সমূহো গৃহুতে। তথাত্রাপি বর্গান্তেন ওকারেণ ওঞ্জননমাঃ সদৃশা গৃহুত্তে ধকাব্রণ যরলবসমূহঃ।

⁽১০৬)। অচ ইতি পূর্ব্বস্থাদিহ নামুবর্ততে। হলশ্চামো লাগাজ ইকোহলশ্চোত্তরস্ত লুখিধানাৎ গারিশেয়াদকারাস্তোহস্য বিষয়: অত আহ অত উত্তরসোতি।

^{(&}gt;•१)। জরান্তাছকাছত্তরস্য সোরস্তবতীত্যেকে। এক ইতি বিক্রার্থন্। অতিজ্বসমিতি অমি ক্লতে জরাচি জরস্ বেতি জরসাদেশে চ ক্লতে হলন্দামা পৃগিতি পুক্ ন ভবতি হল উত্তরে বিহিতস্যামঃ সোল্চ তেন পৃথিধানাৎ নারং হল উত্তরে বিহিতঃ কিছুতঃ। অতএবাতিজ্বসং ক্লং প্রেত্তাঞাপি ন লুক্। অতিজ্বসিত্তে লোপোহণমোহত ইত্যকারস্ক্।

- ১০৮। অব্যয়ীভাবেইদন্তাৎ স্থপোহপঞ্চারার । উপকুম্বন্ । পঞ্চমান্ত—উপকুম্বাৎ।
- ১০৯। তৃতীয়ায়া বা। উপকুম্ভন্ উপকুম্ভেন।
- ১>০। অসমৃদ্ধিনদীসংখ্যাবস্থবেভ্যঃ সপ্তম্যা:।
 উপকুম্বন্ধ উপকুম্ভে। সমৃদ্ধিনদীসংখ্যাবয়বেভ্যস্ত—সুমন্ত্রন্ উন্মত্তগঙ্গম্। একবিংশতিভারস্বাজ্ঞম্। ম্থাসংখ্যক্ত নিরস্তম্বাদিভি
 ভাবে দৃশ্যতে।
- (১০৮)। অব্যয়ীভাবে সমাসে দত্তি অনস্তাহত্তরুদ্য স্কুপা: স্থানে মো
 ভবতি। অপঞ্চম্যা ইতি পঞ্চম্যা: স্থানে ন ভবতীতার্থঃ। ন পঞ্চমী
 অপঞ্চমীতি সৌক্রবাৎ ক্রিয়াসাপেক্ষেণাপি নঞা তৎপুরুষঃ বহুবীহৌ তু
 অনি বুর্বর্থ:স্ত্রীদূদিতি ঝদাদিয়াৎ কাদির্মাদাদেরিতি কঃ স্থাৎ অথবা তে
 চানিত্যা ইতি কস্তানিত্যথাৎ অপঞ্চমা ইতি স্কুপ ইত্যস্ত বিশেষণং পুংদীর্ঘঃ
 স্ত্রীপ্রত্যরঃ স্ত্রীবৎ পুংস্কেহপীতি স্ত্রীবন্ধাবাদীদ্য্যামা ইত্যাকারঃ। উপকুষ্তমিতি কুন্তস্ত সমীপং সমৃদ্ধাদাবব্যস্কাবায়ীভাব ইত্যক্ষুরতঃ সামীপে
 ইতি সমাসঃ। জরাস্তাদমিত্যেকে ইতি উপজরসম্ উপজ্বয়্ব অন্তপদার্থে
 নিষ্বেধন চ জ্ঞাপিতমব্যরীভাবকার্যাং তদ্সাদ্পি ভবতীতি তেন প্রমোপকুষ্তম্ ।
 - (১০৯)। অব্যস্তীভাবে সমাদে অদ্তাত্তক্তাভ_্তীরারাঃ স্থানে মকারো বা ভ্রতি।
 - (১১০)। সমৃদ্ধার্থাৎ নক্ষবয়বাৎ সংখ্যাবয়বাচ্চ ইতর স্মিয়ব্যয়ীভাবে সমাসে সভি অক্সাঞ্জয়ভাঃ সপ্তম্যাঃ হানে মকারো বা ভবতি। স্মন্তমিতি সমৃদ্ধির্ম জাগামিতি পূর্ববং সমাসঃ। উন্মন্তগকমিতি উন্মন্তা গঙ্গা বিন্দিন্ দেশে নিতাং নকীভিন্নপ্রপদার্থে সংজ্ঞান্তামিতারারীভাবঃ। এক-বিংশতিভারলাজমিতি একবিংশতেভারলাজানাং সমাহারঃ। বিভাজনৈ ক্রোক্রোটগর্ন দীভিশ্চ সংখ্যারা ইতাবারীভাবঃ পূর্বস্ত্রেশের নিত্যো মকারঃ। উপষ্মুনম্ উপষ্মুন ইতাত্ত তু ন নকীজনিবন্ধনোহবারীভাবঃ ক্রিন্ত স্মীপনিবন্ধনিতি বিকল্প এব ভবতি। ব্যাসংখ্যক্ত নির্ম্মণ্ডামিতি

३:३। इल्नात्मा नुक्।

ক্লীবে ইকো হলশ্চোত্তরভাম: নোশ্চ লুগ্ ভবভি। বারি মধু কর্জ্ পয়ঃ।

১১२। **ञ्चन**म्।

वरः भेषु युनुः कुलम्।

১১৩। জরাচি জরস্বা।

অচি পরে জরাশব্দো জরস্ বা ভবতি। জরে জরসোঁ। এক-দেশবিক্তমনশুবস্তবতীতি অতিজরপ্রভৃতো চ জরসাদেশ:। অতি-জরৈ: অতিজরসৈঃ। স্বাদিপ্রকরণাদিহ ন স্থাৎ। জরা অত্র।

জানে দৃশুতে ইতি যথেত্যস্তাদাদৃশ্বে ইতি অব্যয়ীভাবে মতি নট্যা মকারস্থ নিতাবিধানায় প্রাপ্নোতীতি বছলবচনাদিতি রক্ষিতঃ।

নাগুপদার্থে ইতি বক্তব্যম্। যশ্মাৎ স্থপো মো বিধেয়ন্তশাদগুশু পদ-স্যাভিধেয়ে বর্তমানাং পর্ন্য স্থপো মো ন ভরতি। শুদ্ধোপকুন্তঃ অত্যূপ-কুন্তঃ। পরমোপ্রুন্তমিত্যত্র তু যশ্মান্মো বিধেয়ন্ত্রস্যৈবার্থস্যাভিধেয়তা ইতি ভবতি মাদেশঃ।

- (১১১)। ক্রকারেণ ইক ইত্যক্তরণতে চকারোহন্নং তন্ত্রেণ আম্ ইত্য-নেনাপি সম্বধ্যতে তেন সোরিত্যস্যামুর্ডিঃ। স্থবদমিতি স্বস্থাবাদমোহপি লুকি সিদ্ধে অম ইতি কৃতং ম্পষ্টার্থং শকাদাতিদেশিক্ষমম্পষ্টং ভবতি।
- (১১২)। ক্লীবেহন্ স্থবন্তবি । রূপাতিদেশেহয়ং কার্যাতিদেশে থি স্থবিহিতং কার্যাং স্যান্ন তু হল্বিহিতং কার্যান্ । জ্বং পশ্রেতি স্ক্রারে সতি সোহস্থেত্ত ইতি হলি পরে বিহিতঃ সকারো ভবতি । স্থপ্নিভাত্র হলি সুক্ প্রসোহস ইতাস্থুক্ ।
- (১১৩)। ধ্বরশারিরামিনাভাবিতি বিধানেন ক্লাগিতং সমাসান্ত-ক্তিভাগি ব্রসাদেশে ভবতীতি। অভিজ্ঞাংসি তুলানীতাত্র অদস্তভ চেক্তি সুবিধানং বাধিখা ব্রসাদেশে কুতে শাবচোহত ্যাভভোতি সুং ব্রসা-

১১৪। অস্তোহন্ দধ্যাদেনটাদে।
টাদাবটি পরে দধ্যাদেরস্তোহন্ ভবতি। দগ্গা দগ্গে অভিদগ্গে প্রিয়দগ্গঃ বিপ্রস্থা। দধি অস্থি অক্ষি সক্থি।

১৯৫। ঋৎ ক্রোফৌরনামি। অনামি টাদাবিচি পরে ক্রোফৌরস্ত ঋষা ভবতি। ক্রোফ্রা ক্রোফ্রনা। অনামীতি কিম্? ক্রোফ্রনাম্।

দেশ এব প্রথমৎ ভবতীতি পূর্বমেব ব্যাখ্যাতম্। জরাশনে বিহিতং কার্য্যনতিজর ইত্যত্ত ন প্রাপ্রোতীতি অত আহ একদেশবিক্বতমিত্যাদি। কচিদেব নিমিদ্ধাপায়ে নৈমিত্তিকস্তাপ্যপায়াৎ ঐসিত্যত্ত জরসাদেশে কতে ন নিবর্ততে।

(১১৪)। জটীকো মুরিতি মুপ্রাপ্তে বিধানম্। দর্প্পতি শসাদ্যচাত ইত্যাদিনা অকার্লুক্ নকারবিধানেনাপি সিদ্ধে অন্বিধানং দধনীতাত্রাকার-ক্রত্যং বেঙ্যোরিতি পাক্ষিকোহত্রাকারলুক্ ক্লীব ইত্যত্রামূবর্ততে তদ্দ্দাদেবি শেষণম্। অতিদরে বিপ্রায় ইত্যত্র সমস্তো হি পুংলিঙ্গঃ দধিলদ্দঃ ক্লীবমেবেতি ভবত্যেবানাদেশঃ। ক্লীলঙ্গে চ অতিদর্প্তে অভিদর্প্তি এবং ধৃতাঙ্গা হরেনেত্যাদি। ক্লীব ইত্যস্যানমূর্ত্তী বদৃচ্ছাশন্দাদি ন স্যাৎ দধিনাম কল্চিৎ তেন দধিনা। কিঞ্চ ক্রম্কেনিন্মাদিস্তাদিচ্চেতি ধাঞ্চ ইৎপ্রতারে লিড্রুভিদেশাৎ দিক্রকো ক্রতায়াং বো দধিশক্তব্রাপি স্থাৎ। টাদাবিতি কিম্? দধিনী। ক্লীব ইতি কিম্? প্রিরদধ্যে। অচীত্যেব। অক্লিভ্যাম্।

(১১৫)। মঞ্কপ্রত্তারেন বেতাম্বর্ততে ইতি। উত্তরহত্তে নিত্য-মিতানেন হুচিতম্। ক্রুশ্ আহ্বানে ইত্যন্ত্রাৎ তৃস্তনাদেরিতি তৃপ্রত্যরঃ ক্রুশে গুণশ্চ ক্রোষ্ট্রশক্ষঃ শৃগালবাচী। অনামীতি। বছরীহিন্তৎপ্রদার বা অচ্যরিতি অনাদেশঃ। আমাকো কুর্দীর্ঘশ্চেতানেন নো রুতে২চ্-পরত্বাভাবাদেব ধার প্রাপ্নোতীতি কিমনামীতানেন তদেতক্ত্রাপরতি ধকার এবাপরবিধিতাঃ প্রথমং ক্রিরতে তেন ক্রোষ্ট্রা ইত্যক্র নাদেশো ন ভবতি। টাদাবিত্যেব ক্রোষ্ট্রন্। ১১৬। • স্থ্রিয়াং নিত্যম্। কোষ্ট্রী।

১১৭। ন ক্লীবে। বহুক্রোফ্ট বনম্ 🕞

১১৮। इंग्रि।

স্থাটি পরে ক্রোফোরস্ত ঋন্তবতি। ক্রোফার ক্রোফারে ক্রোফারে।

১১৯। ন সম্বুদ্ধৌ। হে ক্রোফৌ।

(১১৮।১১৯)। ৰেভি নাম্বৰ্ত্ততে যোগবিভাগসাৰ্থ্যাৎ। হে

[।] ১১৬)। স্তিয়া: বিহিতে প্রতায়ে পরে ক্রোপ্টোরম্বো নিতামুম্ভরতি। পঞ্চভিঃ ক্রেষ্ট্রোভিঃ ক্রীকৈঃ পঞ্চক্রোষ্ট্রভিরি-ক্ৰোষ্ট্ৰীতি নদাদিপাঠাদী। তাত্র তেন ক্রীতে মুণ্যাদাবিতি টিকণ্ অধার্দ্বপূর্বাচ্চ তদ্রহতীত্যাদাবিতি তল্লুক্ চ লুকি ক্রীবিহিতস্ত চেতি ঈকারপুক্ লুপ্তদ্যালুপ্তবন্ধাৎ ন শ্লন্নিবৃতি:। বহবঃ ক্রোষ্টারো যস্যাং নগর্ব্যামিত্যত্র ঋতৃগিন্নান্তবর্জ্জম প্রধানার্থাদিতি প্রতি-বেধাদী প্রভারাভাবে স্থটীভি ধাৎ ক্রোষ্টোরনামীভি ধাকারে ক্লতে ধাকারান্ত-নিবন্ধন ঈপ্রত্যয়ঃ কৃতঃ বহুকোষ্ট্রী বহুকোষ্ট্রের। শসি তু । বহুকোষ্ট্রঃ। টাদো। বহুকোষ্ট্রা বহুকোষ্ট্রা বহুকেষ্ট্রিভ্যাম্। আমি। বহুক্রোষ্ট্রাম্। (১১৭)। স্প্রীবে ক্রোষ্টোরম্ভ ঝর ভবতি। পূর্ক্রস্ত্তেণোত্তরস্ত্রেণ চ প্রাপ্রি: প্রতিষিধ্যতে । ব**হুক্রোষ্ট্র বনমিত্যত্র বহবঃ ক্রো**রীরো যশ্মিন্ বনে ইতি স্থানীতি প্রাপ্তস্ত নিষেধঃ বছং কাঠুনে বনায় ইত্যাদৌ ঋণজোষ্টোরি-ত্যাদিনা প্রাপ্তস্ত নিষেধঃ অচীকো মুরিডি মু: বাচালিকেত্যাদিনা পুংবদ্ভাব-পক্ষে ক্লীনম্বাভাবান্ন প্রতিষেধঃ বছক্রোষ্ট্রে বছক্রেষ্টিৰে বনায়েতি। क्रीरव निरम्धविधात्मन পতित्रमभाग देखानिना ममामनिरमधविधात्मन ह জ্ঞাপিতম্। নামবিহিতানি কার্য্যাণি তদন্তেহপি ভবস্তীতি বছক্রোই নীত্যুদা-हर्राच्छ ममान फक्कर्विकारता *जान्यः यज्ञ* छ ्रमछातार । **পূ**र्विविधि अजिरस्थन সুমুমুটো ভবত ইতি ভাষাম্।

১২ । পথ্যাদেরাছো ছাত । তথা ছাত । পছানো পছানঃ পদ্মানং পদ্মানা পথি মধি ঋতুক্ষি।

১২১। আৎ সো। সোপরে পথাদেরস্ত আন্তবতি থো ছক্ত। পর্ছাঃ।

১২২। ন ক্লীবে। ক্ছপণি বনম্।

. ১২৩। সুক্ শদাদ্যচি। শদাদ্যচি পরে পথ্যাদেরস্তো লুগ্ভবতি। পথঃ পথা।

১২৪। ভৃঙ্বৎ সখ্যঃ।
স্থিশব্দসান্ত ব্দতিদিশ্যতে। ভৃঙ্বিহিত্মাদৃদ্ধাদিকং তত্র ভবতীত্যর্থ:। স্থা স্থায়ে। স্থায়ঃ স্থায়ঃ স্থায়ো স্থা।

ক্রোষ্টো ইত্যত্র কথং শ্বন্ন ভবতীত্যত্র আহ ন সম্মুদ্ধাবিতি। গুণঃ সাবিত্য-নেন বাধিতথাদিতি শেষঃ। ভ্রাস্তান্ত লক্ষণমেতথদন্তি যদি লক্ষণমেতৎ স্যাৎ ভদা হে ক্রোষ্টারাবিত্যত্রাপি শ্বন্ন স্যাৎ।

(১২০)। ছন্টেড্যকার উচ্চাবণার্থ:। অনি ক্তে স্থাট দীর্ঘেণাপি সিন্ধে আন্ ইতি দীর্ঘবিধানেন জ্ঞাপিতং বর্ণশাঘবাৎ প্রক্রিয়ালাঘ্রমেবাচার্য্য-স্তাভীষ্টম্। পথি মথি ঋতুক্ষীতি ত্রয়ং পথ্যাদি।

(>২>)। তকারো মৃথস্থার্থ:।

(>২২)। পূর্বলক্ষণদ্বরকার্য্যং ক্লীবে সৌ পরে ন ভবতি। বছপথীতি তে চানিত্যা ইতি ঋগাদেরৎ সর্বত্রেতি ক্ষম ভবতি। শাবিত্যেব। স্থপদ্বানি।

(১২০)। স্থট্যানাদেশ এব বাধকে সিদ্ধে শসাদীতি ক্বতং স্থপথী-ত্যাদৌ স্কট্কার্যাং বাধিষা শস্বভাবাদয়মেব ভবতীতি স্চনার্থম্। অচীতি কিম্ ? পথিভ্যাম্।

(১২৪)। দ্বিবিধো স্থতিদেশো ভবতি। রূপাতিদেশ: কার্য্যাতি-দেশক। স মধা পোবদগবয়: গোবদাহীক ইতি অত তু ভূঙ্ বিহিত্তমিত্যা- আতিদেশিকং কার্য্যমনিত্যমিতি। স্থিনা বানরেন্দ্রেণেতি ভুউটি:। সখ্যে।

১২৫। গুসিগুসোরুস্। স্থাঃ।

১২৬। খীতীত্যস্থাদীয়ায় দিদ্ধান্ধীত্যস্তাক ক্রন্তিননত্ব।
নথে।
নখমিচ্ছতি নখী: সখায়মিচ্ছতি স্থোচরতি স্থী:
পতিমিচ্ছতি পতিরিবাচরতি পতীঃ লুন্মিচ্ছতি লুনিরিন্
বাচরতি লুনীঃ। নখাঃ সখাঃ পতাঃ লুফাঃ।

দিনা কার্যাতিদেশ: স্থচিতঃ। সপেতি ঋত আৎ স্থনেতি আং স্থায়াবিত্যাদে স্থাট বৃদ্ধিরিত্যাদিনা বৃদ্ধিঃ। সংখ্যতি ন হি তৃতি টানাপ্ংসীত্যস্ত বিধানং দৃশুতে অতোহত্ত ন ভবতি। সংখ্য ইতি ন হি তৃতি তে পরে গুণো দৃশুতে ঋন্তে তদ্ধিতাচোরিতি পিবাদিশ্বাৎ। প্রকরণনিয়মাৎ স্থসপেত্যত্ত কাদিশ দাদেবিতি কোন ভবতি অতএব তৃত্বদতিদেশাভাবাদীপ্রত্যয়স্থা-প্রাপ্থো স্থিশদো নদাদৌ পঠিতঃ।

(১২৫)। তৃঙ্বদজিদেশাৎ ডুসি প্রাণ্ডে বিধানম্। সবিশকাছন্তর-য়োঙ সিঙসোঃ স্থানে উদ্ ভবতি। সখ্যারিতি স্থানিবত্বাভাবাৎ গুণাভাবঃ। এবং স্থানিশনাৎ স্থানা স্থানায়ী স্থানায়ঃ স্থানায়ং স্থানায়া স্থানীন্ স্থানা স্থানিত্যে স্থানাতি এতভাষ্যকারস্থ সম্বত্বাদিহ ব্যবন্থিতন্। তথাচ মতিসখ্যবিত্যেব ভবতীতি ভাষ্যকারঃ। শেষো ঘ্যানথিরিত্যত্ত বক্ষিতোহ-প্যাহ জয়াদিত্যাদিপরস্পরয়া তু স্থানা স্থানার স্থাবে স্থানেরিতি ব্যবস্থিতন্।

(১২৬)। ইতিশব্দেহমুকরণে তচ্চ প্রত্যেকমভিসন্ধ্যতে। থী ইতি তী ইতি অস্তো যন্ত তন্মাৎ থীতীত্যস্তাৎ ক্তক্যোন ছৈ সতি নীতাস্তাচ্চ সন্ধান্ত সিংহাছন্তররোঙ সিঙ্গোঃ স্থানে উস্ ভবভি। নথমিছতি সংখবাচ-রতি নথসখিশস্বাভাগ তুল্যাচার ইত্যাদিনা ঈর্ পতিশ্লাদীর্ কর্ত্রিজ্যাদিনা আর্ বা হলিজ্ত্যামিজ্যাদিনা ক্ষারাকার্যোলুক্ সনীণ্ নীর্ঘ ইতি দীর্ঘ: ততঃ কিপ্ কৌ য ইতি যকার্যুক্। গুনং গুনিরিতি গুঞ্ছেদনে

১২৭। পতিরসমাসে সখিবট্টাদো।
অসমাসে সতি টাদাবচি পরে পতিশব্দঃ সখিবদতিদিশ্যতে। পত্যা পত্যে পত্যুঃ পড্যো। আতিদেশিকং
কার্য্যমনিত্যমিতি। পতিনা নীয়মানায়াঃ পুরঃ শুক্রো
ন ছুষ্যতি। গতে নফে প্রব্রজতে ক্লীবে চ পতিতে
পতো। অসমাস ইতি কিম্ ণু প্রকাপতিনা।

১২৮। বুর্গস্যাদিঃ পদান্তেইঙ্যে চ।
পদান্তেইঙ্গে চ পরে বর্গস্থা স্থানে তত্ত্বর্গাদির্ক্বিভি। সংলিক্
সংলিক্তরঃ সংলিগর্থঃ। অপ্রাপ্তে বহুধান্বের্যো বিধিঃ প্রাপ্তে হনর্থিক ইতি। গোধুগ্ভ্যাং সংলিগ্ভ্যাম্। অঙ্ব ইতি কিম্ ?
লেলেখিন লিখ্যতে। নঞা ভ্রপযুদ্দাসাদপরে হল বিশ্যোহ-

ভাবে কর্মনীত্যাদিন। কঃ কিঃ ক্রিয়ামিতি কিঃ ক্রক্তবন্ধোরোদিড্ড্যাদেশ্চ দাদিরোহপূস্ক্র ক্রেডোন ইভি তক্ত নঃ। শেরং পূর্কবং। ঈয়ায়োশ্চ কিবস্তয়োরিতি : ঈকারক্ত যঃ। অস্তাদিতি কিন্? ইহ মাভূং থমিছতি থিরঃ একাচ্তাৎ যকারাভাবঃ। ঈয়ায়্সিদ্ধাদিতি কিন্? সংগাঃ। নদাদিভানীপ্রতায়োহয়ং সধীশকঃ।

(১২৭)। তৃঙ্বং সর্গঃ পত্যুরসমাসে টাদৌ ঙদিঙসোরুদ্ ঙেরী ক্লে পত্যা পত্যে পত্যুঃ পজ্যৌ স্থাবিতি দিধ্যত্যেব তদেবং ন ক্তং বৈচিত্রার্থিম্।

(১২৮)। পদান্তেহঙ্বে চ ইত্যাহর্ত্তী বানি বিধানানি তানি সামাত্যেন ভবন্তি। প্রকরণনিরমো নামাবিকারশাত্র নাপেক্ষিত ইতি। তিঙ্
রুত্তোর্থ বর্জমিত্যনেন ন তিঙ্কুদ্বনীত্যনেন চ জ্ঞাপিতম্। এতদের স্চরিত্ত্ব
লেলেখ্রীত্যত্র প্রত্যাদান্তম্। সংলিগিতি লিখ্ অক্ষরবিনাসে কিপ্ অরুত
এব স্থলুকি অঙ্যপরতয়াপ্যেতং সিধ্যত্যের কিন্তু সংলিগর্থ ইত্যাদ্যর্থমবস্তামেব পদান্ত ইতি কর্ত্তব্যং তদর্থং ক্রিয়মাণ্যেতদর্থমিপি ভবতি। সংলিক্তর
ইতি বিবহুত্যোহত্যর্থে তর্তমাবিতি তরঃ। নমু গোধুগ্ভ্যাং সংলিগভ্যামিত্যত্ত হৃহ্ বিধাং কিপ্ হো দু ইত্যাদিনা হস্ত বং তৃষ্যান্ত ইত্যাদিনা বস্ত

ঙ্যঃ। যথা ত্রাহ্মণপয়ু গোসাদীপরো নৃবিশেষোহত্রাহ্মণঃ তেনাচি পরে ন স্থাৎ। নিখন্ডি।

১২৯। ষবর্জা ঙ্যেইপি তদ্ধিত। সংলিঙ্মরম্। যে ভু—সোলিখাম্।

১৩०। नामिव गांखमा।

প্ৰশান্ সত্যভাণ্।

১০১। वर्षेः ।

ধে চ কতে থকারঘকারয়ো: কে চ কতে অপদান্তেংপীত্যাদিনা গকারে চ পুনর্গস্থাদি: কমার ভবতীত্যত আহ অপ্রাপ্তে ইত্যাদি। অপ্রাপ্তেংলকে সাধ্যসিদ্ধাবভূতায়াং বহুধা বিধিরবেষ্টব্য: প্রাপ্তে লব্ধে ভূ সাধ্যসিদ্ধে ভূতায়াং প্রনর্গক: সাধ্যসিদ্ধে ভূতায়াং সাধ্যক্ষিজ্ঞাসায়া অভাবাং। অত্র প্রোধ্প্রভাং সংলিগ্ভামিতি সাধ্যপদস্থ সিদ্ধিভূ তৈব এবং সতি পুন: প্রবর্গনমর্থকং স্থাদিতি ভাব:। ঙ্যব্যতিরিক্তথাদকারস্থাপি অঙ্যথমতো লিখ্বিত্যতাপি ককার: প্রাপ্তোতি অত আহ নঞা ঙ্যপর্যদাসাদিত্যাদি। তথাচোক্তং, নঞ্জেব যুক্তমন্তং সদৃশাধিকরণং বোধরতীতি উত্তর্গদার্থপ্রধানস্তংপ্রথম। অতো নঞা নোভরপদার্থে দিরস্থতে কিন্তু সদৃশপ্রতিপত্তি: ক্রিরত ইত্যভিপ্রায়:।

- (১২৯)। যকারং বর্জয়িষা ঙ্যেৎপি ভদ্ধিতে পরে বর্গশু স্থানে তথ-র্গাদির্ভবতি। পদাস্তেহঙ্বে চেতি যত্র যত্রাস্থবর্ততে তত্র তত্রায়মপি। অতএব উত্তরস্ত্রে নাবভূমাত্রমিত্যুলাহরিষ্যতি। সংলিঙ্ময়মিতি লংলিখ্-শব্দাৎ তস্য বিকারে ইত্যুলিয়র্থে শেষাবেতি ময়ট্ থকারস্য কে ক্তে ময়ড়াদৌ নিত্যমিতি কস্য ঙঃ। সৌলিখামিতি স্থলিখ্শবাৎ স্থলিখো ভাব ইত্যুগৈ ব্যান্গাদীত্যাদিনা ট্যপ্।
- (১০০)। বর্গান্তস্থানে পদান্তেহঙ্বে চ পরে আদির্কাভবন্তি।
 জ্ঞাদিপদং বৈচিত্র্যার্থসূ।
 - (১৩১)। প্রমূড়িতি মুব্ ক্ষেরে মুব্ ক্ষেবে বা কিণ্ প্রমুদ্ধানিতি

পদান্তে হঙ্বে চ পরে যকারফৌ ভবতি। প্রমৃট্রঃ প্রমৃত্যন্।

১৩২। অধাতোন স্যাৎ। স্পিইন্ন।

১**৩** । ষ**ষস্থটি ।** ষষ্ঠঃ ।

১৩৪। তিওঁ ক্তোর্ধ ব**র্জ্জন্।** আচষ্টে দ্বিফীঃ। ধে ভূ—আচড় ঢে_ৰ।

১৩৫। ভ্রস্জাদ্যস্তচ্ছশাম্। পদাস্তেইঙ্যে চ পরে, ভ্রস্জাদ্যস্তচ্ছশাং স্থানে যো ভবতি। মাষভূট, মাষভূগাত্রং ওব্রস্চ্ বৃক্ষর্ট স্জ্

ভদস্যাস্ত্যত্মিন্ বা মত্রিতি মতৃ: চে ক্লতে 'অপদান্তেংপীত্যাদিনা টস্ত ডঃ ক্লঙ্থশাদ্যস্তাচ্চেতি মস্য বঃ যশ্চেত্যনেন পদাস্তবত্ত্বং মত্বৰ্থেংপি পরে ভব-তীতি ব্যবস্থিতম্। এবং সতি প্রমুড্যানিতি পদাস্তবত্ত্বেংপি সিধ্যতি তথাপি বিশেষবিধিত্বাং যবর্জ্জমিত্যস্যায়ং বিষয়ঃ।

- (১৩২)। অধাতোঃ যকারষ্টকারো ন ভবতি। সর্পিষ্ট্রমিতি তম্ভাবে তাত্মমিতি ত্বং হ্রস্বান্তাদিতদ্ধিত ইত্যাদিনা বত্বং ঘটবর্গাদিত্যাদিনা তস্য টঃ স্থপাদেরিসিতি ইন্প্রতায়াম্ভতাদয়মধাতোঃ যঃ।
- (১৩৩)। থটোৰ পরে ষবঃ বকারটো ন ভবতি। বঠঃ ইতি ষট্ কতিকতিপয়েভাশ্চ থড়িতি থট়। অনাত্র ভবতোব। ষট্ ষড়ভিঃ।
- (১৩৪)। ধকারং বর্জয়িষা তিঙি ক্বতি চ পরে মকারটো ন ভবতি।
 আচন্ত ইতি চক্ষিঙ্ ব্যক্তায়াং বাচি আঙ্ পূর্বা: লট্ তে ক্ষোর্নিজাদ্যোরিতি
 কলুক্ ষ্টবর্গাদিত্যাদিন। তস্ত ট:। ছিত্ত ইতি দ্বিষ্ অপ্রীতৌ ক্তঃ তস্ত ট:।
 আচড চ্ ইতি অপদান্তেহপীত্যাদিনা টন্য ড: মইবর্গাদিত্যাদিনা ধন্য চ:।
 ধাত্যেঃ ষ্ট্রঃ মুধোহধটি তিঙ্কুতোধে ইতি ন কুতং বৈচিত্রার্থম্।
- (১৩৫)। মাষভৃড়িতি ত্রস্জ্ পাকে মারং (ভ্রুজাতীতি ক্রিপ্ বলাদেরলামিরিতি ভূস্জাদেশঃ কোনিজাদ্যোরিতি সলুক্ চজাঃ ক

মন্ত্রত প্রিবাট্ প্রচছ্ প্রাট্ অশ্ দুয়োট্।

১৩७। न विश्वस्थाः।

विश्वरुक्।

১৩৭। ঋতোর্যজন্ত।

ঋত্বিক্।

১৩৮। সজো মালায়াং ভ্ৰজ্চ। শ্ৰক্।

১৩৯। হো ঢোহস্থক্ষে দাদিশ্চ যঃ।

ইতি কন্ধং বাধিন্বা যে ক্বতে ষষ্ঠ ইতি ট:। মাষভ্গাত্তমিতি মানং মাত্রট্ ইতি মাত্রট্প্রতায়ঃ। ফুক্সবৃড়িতি ওব্রস্চু চ্ছেদনে। মন্ত্রসঙ্গানিতি স্জ্ বিসর্গে সর্বং প্রবং। স্থানমূড়িতি মৃজ্ শুদ্ধৌ। দেবেট্চর ইতি যজ্ দেবপূজাসঙ্গতিকরণদানেয়ু কিপ্পায় ইত্যাদিনা কিপ্ কিদাশীলে গারিত্যা-দিনা যজ ইজ্ দেবেজিতাশাৎ চরট্প্রাণ্ড্ত ইতি চরট্। রাড়িতি রাজ্ দীপ্রৌ লাড়িতি ট্লাজ্ ট্লাস্থ দীপ্রে) পরিবাড়িতি বজ্ ব্রজ্ গতৌ পরে-ব্রজক্তেতি কিপ্ দীর্ষণ্ড। প্রাড়িতি ছকারোদাহরণং নিপিকরপ্রমাদ-ক্তম্। তথাহি, রেকোপান্তবজং ছাস্তাচ্ছঃ শক্তেতি শকারে ক্তে যোহত্র বিধীরতে তথাৎ প্রস্তিয়ান্ত্রণমিতি দ্বন্তবাম্। ছগ্গাড়িতি হগ্গমগাতীতি জন্প ভোজনে কিপ্।

- (১৩৬)। বিশ্বপূর্বাৎ স্বজোহস্তক্ত স্থানে যোন ভবতি। বিশ্বস্থাতি চজোঃ ক ইতি ক্ষম্ত কঃ। পাণিনীয়ানাং ব্যবস্থিতপরিভাষয়া অন্ত সিদ্ধিঃ।
 - (১৩৭)। ঋতোরুত্তরশু বজোহস্তুশু স্থানে যো ন ভবতি।
- (১৬৮)। মালায়াং বাচ্যায়াং স্থানে স্কোহন্তস্ত স্থানে যো ন ভবতি। প্রজা-দেশক ভবতি। প্রাণিতি স্থান্তে ইতি কচিদকর্ত্তরি চেতি কিপু।
- (১৩৯)। ভৃকড়িতি কহ জন্মনি প্রাহর্ভাবে। ভৃকটার ইতি বিবছ্ছ ভ্যোহত্যর্থে তরতমাবিতি তর:। ভ্রুট্মিতি ভঙ্কাবে তাছমিতি সৃষ্।

সংক্রিপ্রসারব্যাকরণে

পদান্তেহঙ্যে চ পরে হকারে৷ ঢো ভবতি। স্থপোহয়শ্মিন্ সে পরে হকারো যা স্থাৎ। দাদিশ্চ হকারো যা স্থাদিতি তন্ত্রেণ সহ সম্বন্ধঃ। ভূরুট্ ভূরুট্রঃ ভূরুট্ট্বং লেড়ি। অস্থপে তু। লেক্ষি লেক্ষাতে। দাদিশ্চ। গোধুক্ গোধুক্তা গোধুকু।

১৪০। ঘণি সংজ্ঞায়াম্।

निनाचः व्यवनाचः त्मचः।

১৪১। সুহ্জহ ফুহ ফিহাংবঢ়ো। মুদ্ধ: মূড়ঃ।

লেড়ীতি লিহ্ আশ্বাদনে তিঙ্ গুণ: ঢে ক্নতে ধোহধাতুর্ঘাদিতি তন্ত ধঃ

ঘটবর্গাদিত্যাদিনা ধন্ত ঢ: চ্রোরিভর্দদিনা ঢলুক্। লেক্ষীতি বর্গন্তাদিরিত্যাদিনা বন্ত ক: ইচ্ক্রাদিত্যাদিনা ঘদ্ধ। লেক্ষ্যত ইতি লট্ ল্ট শুঙ্
চোতি ল্ট্সংজ্ঞকতে শুঙ্। গোধুগিতি গোছহ্ শব্দাৎ শ্বঃ ঘে ক্লে
তুর্যান্ত ইত্যাদিনা দশ্ত ধঃ অধাতোন স্যাদিত্যকুর্ত্তা। ধাদ্ববরবো দকারো

যস্যাদিস্তদ্য হকারো যো ভবতি। তেন দামলিঙ্ভ্যামিত্যাদৌ ঘ্যাভাবঃ
দামলিহমিচ্ছতীতি ঈর্ত্তাৎ কিপ্ দামলিছো ধাতুবেহপি ঘো ন ভবতি।
গণপঠিতধাতোরেবাত্র গ্রহণাদিতি বামনচক্রাদীনাং মন্তম্। সনাদ্যক্তধাতোরপি গ্রহণমিতি ভাষ্যকারসন্মতম্। তন্মাদ্ ঘদ্বেহপি দামলিগিতি ভবিতব্যমিতি ভাগবৃত্তিঃ।

- (১৪•)। ঘণি পরে সংজ্ঞারাং বিষয়ে হকারো ঘো ভবতি। নিদাঘো ঘর্মাস্য অবদাঘো ভক্ষা মেঘোহব ভ্রস্ত সংজ্ঞা। অক্সত্র। নিদাহঃ অবদাহঃ মেহ:। অহ ধাতোরহঃ অর্থ ইতি তু অর্থ ব্যাপ্তাবিজ্ঞাৎ যদ্যহ তেঃ স্যাৎ অর্থেণতাত্র হো ঘছে ইতি গছপ্রতিষ্বেং স্যাৎ।
- 1>8>)। মূহ বৈচিত্তো ক্রহ জিমাংসারাং ক্রহ উদ্গীরণে কিহ প্রীতো এবাং হকারঃ পদাস্তেহত যে চ পরে ঘঢ়ো ভবতঃ। মিত্রগ্রাং মিত্রগ্রাম্ উৎস্ট্ উৎসূক্ লেখা মেঢ়া। অত্রৈব নহো ধো ইতি লক্ষণং কথার ক্রতমিতি চিস্তাম্।

১৪২। চজোঃ কঃ। শদান্তে ২৬ যে চ পরে চজোঃ স্থানে কো ভবতি।

১৪৩। বশ্চাস্থপে কঃ। স্থবাক্ স্বভুক্ স্থভুক্তরঃ বণিক্ ভিষক্ বক্ স্রক্।

১৪৪। সর্বীমন্তুকরণে বা।

অচ্স্ অকু ৷

১৪৫। জেবিপরাভ্যাম্।

>८७। किया न यि

পিষ্ পিনক্ষি।

(১৪২।১৪৩)। যত ইত্যন্ত্র ষ ইত্যন্ত্রতে পূর্ববাগাদম্প ইতি
চ তেনায়মর্থ: সম্পদ্রতে। বশ্চাম্পে পরে কো ভবতি। বশ্চাম্পে ক ইতি
লক্ষণান্তরমিতি ভ্রান্তান্মপদেশপরম্পরা, পরিহরণীয়া। চজোরনাদেশয়োরিহ গ্রহণ: তেন তক্তক্ষ: নিচ্ছ ইত্যাদৌ ন ভবতি। এতক্ত তশ্চটাবিত্যনেন
জ্ঞাপিতম্। বদ্যাদেশে চজোরপি কঃ স্থাৎ তদা তঃ কটাবিত্যেবং কুর্যাৎ
এবং সতি প্রক্রিয়ালাযবং ভবতি। স্বাগিতি বচ্ পরিভাবণে কিপ্
প্রায় ইত্যাদিনা কিপ্ উল্লাদেশভাবো দীর্ঘশ্চ। স্বভুক্তর ইতি ভূল্লেঃ
কিপ্ কিবন্তাং তরঃ। বণিগিতি পণ্ ব্যবহারে পণাদেরিজিতি ইজ্পশ্র
বঃ। ভিষ্ণিতি ভীষরতেঃ ঋধাদেরজিতি অজ্ হ্রশ্চ। ত্যিতি ত্ব্চ্
গত্যর্থ: কিপ্ হলুপান্তেত্যাদিনা নলুক্। প্রগিতি স্ক্রে মালায়াং প্রজ্
চেতি ষাদেশভাবঃ প্রজাদেশশ্চ।

(১৪৪।১৪৫।১৪৬)। অনুকরণে সর্কমেব বিধানং বা ভবতি। অচ্ স্থ ইত্যত্র অজিতি প্রত্যাহারামুকরণন্। তথাচ অচ্ স্থ প্রত্যাহারার্থা অমুবদ্ধা ইতি ভাষান্। নাজ্ঝলাবিতি পাণিনীমুম্ব্রক। জেরিত্যত্র গাতৃত্বাৎ প্রাপ্ত ইয়াদেশোন ভবতি। কিন্ত ইত্যত্র তু ভবত্যেব। গবিভায়মাহ ইত্যত্রানুকরণস্য গোশনত্ত নামত্বাভাবাৎ বিভক্তেরমুৎপত্তিঃ। বটদিত্যত্র তু বিভক্ত্যুৎপত্ত্রী পদত্বাৎ বর্গাদেরিত্যাদিনা তৃতীয়ঃ। সর্মমিতি প্রক্নতা-প্রক্রতসংগ্রহণার্থন্। পিনক্ষীতি পিষ্ব সংচ্পনে ক্রণাদেঃ শ্বন্ ইতি শ্বন্। অমুপ্ত ইতি কিম্ १ বিট্ম। >৪৭। অকবর্গাদিবজ ব্রজাজাং বিতি কর্গো।
পাকঃ ত্যাগঃ রাগঃ আলোক:। আলোচ ইভি চৌরাদিকস্থ
রূপম্। যোগী ত্যাগা। কবর্গাদিবজ ব্রজাজাস্ত্র। সংকোচঃ
বাজঃ। নভস্বান্ যদ্য বাজেষু ফলে তিগ্যাংশুপাবকাবিতি ভট্টিঃ।
পরিব্রাজঃ সমাজঃ।

১৪৮। ব্যেহন্চাদেঃ। পাকাং ভোগ্যম্। ঋচাদেস্তা। অর্কান্ আর্ক্ আর্ক্ শুচ্মুচ্যজ্তাজ ্উজ্।

⁽১৪৭)। কবর্গ আদির্যন্ত স কবর্গাদিঃ কবর্গাদি বজ্ ব্রজ্ অজ্ বাতিরিক্তানাং চজাঃ স্থানে ঘিতি পরে কর্গো ভবতঃ। পাক ইতি ভাবে ধণ্ সালোক ইতি লোচ দু দর্শনে রাগ ইতি রক্তাতে অনেনেতি ঘণি ভাব-করণযোশ্চেতি নল্ক আলোচ ইতি চৌরাদিকস্য রূপমিতি ইণস্ত ইতি দুঙাদিরাৎ ওঃ। অতো বিশ্বাভাবাৎ ককারো ন ভবতি। যোগীতি মুজাদির্ঘিনণ্ ইতি ঘিনণ্ সংকোচ ইতি কুচ্ সংকোচে। কবর্গগ্রহণাৎ বজ্রো গজ্জ ইতি থক্জ ব্যথনে গল্জ শবে। বাজ ইতি বজ্ ব্রজ্ গতৌ বজের্গস্থনিষ্বের্থিং পাণিনিচন্দ্রলক্ষণং নান্তি অজিব্রজ্ঞোশ্চেতি চকারস্যা-ক্তুসমুক্তয়ার্থক্মান্তার্রক্তক্ষ্। শিন্তপ্রয়োগদর্শনান্নিষেধ ইতি স্চার্তুং ভট্টি-প্রয়োগোপঝাসঃ। বাজঃ পকা। সমাজ ইতি অজ্ গতিক্ষেপণরোঃ সমৃদ্যামজঃ পশুসক্ষপ্ররণয়োরিতি ঙেন তাক্তে পক্ষে ঘণ্ এবং ব্যাজঃ।

⁽১৪৮)। পো পরে কবর্গাদিবজ্বজাজ্বাতিরিকস্থ ঋচাদিব্যতি-রিক্রদা চ চজোঃ স্থানে কর্গোভবতঃ । পাকাং ভোগামিতি তুপচ্ষ্ পাকে ভুজ্ পালনাভাবহাররোঃ ঝহলোণা ইতি গাঃ। ঋচ্স্ততৌ টুযাচ্ যাজ্ঞায়াং রুচ্ দীস্তৌ অর্চ্চ্ পূজায়াং শুচ্ শোকে মুচ্ মোক্ষণে যজ্ দেব-পূজায়াং তাজ্ বয়োহানৌ উজ্ অর্জনে আফ্রাবে বা ঝচাদিঃ। অর্চ্ছেচ্-তাজোল্ঞাং গণে পাঠো ভাষাকারস্বরদঃ কতঃ। কবর্গাদেস্তা। কৃর্জ্বিং ব্যক্তরিং গর্জ্জাং অথবা স্বক্রপাদিরিতাক্ত নাম্বর্তনীয়ঃ ঋচাদিশ্বাদেব কবর্গাদেরপি ন ভবিষাতি সত স্বাহ ঋচাদিরাক্তিগণ ইতি।

- ১৪৯। অপদসংঘাতে বচ্। বাচ্যম্। পদসংঘাতে তু—বাক্যম্।
- ১৫০। প্রাৎ পদসংঘাতে হপীত্যেক। প্রবাচ্যো নাম পাঠবিশেষোপলক্ষিতো গ্রন্থঃ।
- ১৫১। নার্ধের্দশরাত্রস্থ দশমেহ্ছনি। অধিবাক্যম্। অন্যত্ত—অধিবাচ্যম্।
- >৫২। **ভক্ষে ভূজ**্। ভোজ্যম্। স্বয়ত্ত—ভোগ্যম্।
- ১৫৩। শক্ত্যর্থে প্রনিভ্যাং যুজ্। প্রয়োক্তুং শক্যঃ প্রযোজ্যঃ নিযোজ্যঃ।

- (১৫০)। প্রাহ্তরো বচ্ পদসংঘাতেহপি ঋচাদির্ভবতি। অপি-শন্দাদপদসংঘাতেহপি। প্রবাচ্যো নামেত্যাদিনা পদসংঘাতার্থতামস্য ব্যাচকার।
- (১৫১)। অধেকুত্রো বচ্ দশরাত্রশু দশমেংহনি বাচ্যে ঋচাদির্ম ভবতি। তদ্বাতিরিক্তে তু বাচ্যে ঋচাদিরেব। দশরাত্রো যাগবিশেষঃ তত্র যাজ্ঞিকো নব দিনানি কিঞ্জির ব্রতে দশমে দিনে যথাবিখ্যভিদধাতি তদ্দশমং দিনমিত্যধিবাক্যম্।
- (১৫২)। ভক্ষ্যে বাচ্যে ভুদ্ধাতুর্ধ চাদির্ভবতি। মৃদ্যপি ভক্ষাং চব গ্রং
 চুষাং লেহং পেরমিতি ভেদো বিদ্যুত এব। যথা থরবিষদং ভক্ষ্যমিতি
 তথাপাত্রাভাবহার্য্যমাত্রং ভক্ষ্যমিতি। রথা অব্ভক্ষ্যো বায়্ভক্ষ্য ইতি।
 তেন ভোল্যা যবাগৃং ভোলাং ভক্ষ্মিতি ভবতি। অন্যত্র ভোগ্যমিতি
 উপভোক্তব্যং রাজ্যাদিকমিত্যর্থং।
 - (১৫০)। শক্তার্থে বিহিতে ব্যে পরে প্রাং নেশ্চোব্তরো যুক্ত্

⁽১৪৯)। পদসংঘাতব্যতিরিক্তেহর্থে বর্ত্তমানো বচ্ ভাষণে ইত্যরং ধাতৃশ্ব চাদির্ভবিত। বাচাং বচনীয়মিত্যর্থ:। পদসংঘাতক্তিঙ্ স্থবস্তচরঃ তন্মন্ বাংচ্য তস্য সংজ্ঞায়ামিত্যর্থ:। অয়স্ক বিশেষো ব্যাখ্যানতোহ-বধারলীয়ঃ।

১৫৪। আবশ্যকে সর্বয়চাদিঃ। অবশ্যপাচ্যং অবশ্যভোজ্যম্।

১৫৫। প্রযাজাদির্ঘণি যজ্ঞাঙ্গে। প্রযাজঃ উপযাজঃ উপাংশুযাজঃ ঋতুয়াজঃ। ঋচাদিরা-কৃতিগণঃ।

১৫৬। ওদিদাদেন্দি। বৃক্ষঃ ভুগ্নঃ পকঃ।

ঝচাদিঃ স্থাৎ। অত এৰ ব্যাচকার প্রযোক্ত্যুং শক্য ইত্যন্মাদেব বিধানাৎ শক্তার্থে গ্যঃ।

(১৫৪)। অবশ্যংভাবং আবশুকং মনোজ্ঞাদেশ্চেতি ণকঃ কচিদবারানাং স্বরতচ্ছেষয়োলু গিতি অম্লুক্ আবশুকেহর্থে বিহিতে ণ্যে পরে
সর্বায়নিদিং স্থাৎ। অবশ্রপাচ্যমিতি শ্বহলোণ্য ইতি ণ্যঃ সামান্তবিহিতঘাদাবশ্যকে ণ্যঃ ময়ূরব্যংসকা দ্যাৎ সমাসঃ ক্লত্যাদৌ সমাসেহবশ্যমাদেরিতি মলুক্। প্রকরণাদিনা গম্যে ছাবশ্যকে পাক্যম্।

(১৫৫)। ষজ্ঞাঙ্গে বাচ্যে ঘণি পরে প্রযাজাদিনিপাত্যতে। ক্ষন্ত গছাভাবো নিপাত্যত ইত্যর্থ:। অগ্নিষ্টোমাদিযক্তে পঞ্চপ্রযাজাদয়োহঙ্গভূতাঃ ক্রিয়ন্তে এবমপরে।

বঞ্চো গভাবিতি বক্তবাম্। খণি পরে গতৌ বাচ্যাযাং বঞ্চ ইতি
নিপাভ্যতে। বঞ্চং বঞ্জি বণিজঃ গস্তবাং দেশং গচ্ছস্তীভার্থঃ। অগতৌ
ভূ—বঙ্ক কাঠাং কৌটল্যং বঞ্চের্থঃ।

(১৫৬)। ক্তক্র বেষারোদিড্যাদেরিত্যাদিলক্ষণের যা প্রকৃতিঃ সা ওদিদাদিপ্রাক্ষাবে চ ক্তক্রবেরাদেশান্তে নাদরো গ্রাহাঃ। ওদিদাদে-শুলোঃ স্থানে নাদৌ পরে কগো স্থাতান্। ও্কপর্যাভারার প্রাচ্যাতীতি বিধানন্। বৃক্ ইতি ওবস্চু ছেননে ক্তঃ বশাদেকশাদিরিতি বৃস্চাদেশঃ কোনিজাদ্যোরিতি সকার নুক্ ক্তক্রবেষারিত্যাদিনা তম্ম নঃ। ভূগ ইতি ভূজো কোটিলোঃ পক্ ইতি ডুপচ্য্ পাকে গুষিপচিভাগিং ক্রাবিতি তম্ম বঃ। ১৫৭। কোহত্তা দিশ্দৃশ্স্পৃশ্ধৃষ্ট্রিং ক্যন্তা: নাম্। দিক্দিগ্ভাাম্।

১৫৮। নশোঁবা। শীঘ্নট্ শীঘ্নক্ষ্কু

১৫৯। তুর্যান্তন্ত তীয়োহজস্তর্গো ভাদে।
পদান্তে ভাদে। চ পরে বর্গ তুর্গান্তো জকারাদল্যো বর্গ তিয়া
বর্গতি তুর্থা ভবতি। গুহ্ নিবুট্ অজোঘোট্ কুণ্ডু ভ নামণিঙ্
কিপ্ ছন্চ্প্ ছন্তু হন্ ভঃ। এবং গর্ধপ্ ছুহ্ গোধুক্

(১৫৭)। দিশ্ অতিসজ্জনে দৃশির্প্রেক্ষণে স্পৃশ্ সংস্পর্শে ঞিরবা প্রাগল্ভো ঞ্চিত্ অপ্রীতৌ ইত্যেতেষাং কাস্তানাং অস্তো বর্ণঃ পদাস্তেহঙ্যে চপরে কো ভবতি। দিগিতি দিশ্রতে ইতি দিক্ কচিদকর্ত্তরি চেতি কিপ্ সমানতা নাদের শস্তানী চ কর্মোপমায়ামিতি কিপ সদৃক্ স্পৃশোহমুদকেম্ব-পীতি 'কপ্ মতস্প ক্ ধ্যো দিশ্ভেতি কিপ্ দিকক্তিশ্চ দধ্ক উৎপূর্ম ফিছে: কিপ্ শেযোরদাদিতি তলুক্ যথ্য ততো গম্প্র উঞ্জিক।

(১৫৮)। নশ্ অদর্শনে ইতাস্থ কিবস্তস্থান্তো বর্ণ: পদান্তে ও যে চ পরে কো বা ভবতি। শীঘ্রনড়িতি শীঘ্রং নগুত ইতার্থে কচিদকর্ত্তরি চেতি ভাবে কিপ্ ভ্রম্জাদাস্তদ্ধানিতি শস্ত যঃ ষষ্ট ইতি মস্ত টঃ।

(১৫৯)। তৃথাান্ত সন্ধিক তৃতীয়ন্যাভাবাৎ একাচ্ব্যবহিত একাজ্বল্ব্যবহিত গৃহতে তেন বন্ধ্নন ইতাসা অভান্ৎদীদিতি। দাজাদিব্যবহিত গৃহতে তেন বন্ধ্নন ইতাসা অভান্ৎদীদিতি। দাজাদিব্যবহিত গুতু বিপ্ৰক্ষতান ভবতি। দামনিজ্তি দামলিহমিছতি দামলিহতীতি বা ততঃ কিপ্ অতএব তৃণ্যুবিত্যাদৌ ধকারো ন স্যাং। নিযুজিতি গুতু সংবরণে কিপ্ হে'ঢ়ো ইত্যাদিনা হস্য চঃ গস্য যে কতে বর্গস্যাদিরিত্যাদিনা চম্য টঃ। অন্ধোঘোড়িতি জোগুহ্ ইত্যতো ঘন্লুগন্তাৎ লঙ তৃভ্ অভাগমো গুণঃ লুগ্যুজোহন্ত ইতি তলুক্ তৃত্যুভশন্তাম ইত্যাদিনা গিঙ্ অনেকাচামিত্যাদিনা অকারলুক্ কিপ্ কিব্বযোশ্চেতি লিঙ্লুক্। আদিসংগৃহীতান্দর্শন্তি সেইত্যাদি। ধোকীতি হৃহ্ প্রপূর্ণে

বৃধ্ স্বভূৎ গোধুগ্ভ্যাং স্বভূত্ত্যাম। সে। ধোকি ভোৎসক্তে।

ভিঙ্ থেব।: ধুদ্দুং ব্যক্তাজ্যোঘূদুম্।

১৬০। ভদ্ধিতে হলি যবৰ্জমৃ।

মিত্রঞ্জা। অভ ইতি কিম্ ? জভ জঞ্চাতে।

১৬১। তদিশ্চ ।

মিত্রপ্রকঃ মিত্রপ্রটঃ।

১৬২। লুগ্যুজোহন্তঃ।

লট্ সিঙ্ হোঢ় ইত্যাদিনা হস্য মং যে ক্লতে বর্গস্যাদিরিত্যাদিনা মস্য কং ইচ্ ক্রাদিত্যাদিনা সস্য মং। ভোৎস্যত ইতি বুধ্ অবগমনে। ব্যতাজো-যুচমিতি জোগুহ ইত্যাদি মন্লুগস্তাৎ কর্ম্মব্যতিহারেংহস্যদেরিত্যাম্বনেপদং লঙ্ ধ্বং হস্য ঢে ক্লতে ষ্টবর্গাদিত্যাদিনা ধ্যা ঢঃ চ্যোরিত্যাদিনা চলুক্ দীর্ঘন্চ। বকারযুক্তধকারোপাদানাদিহ ন স্যাৎ দাদিদ্ধি দধ্ধারণে যন্লুকি লোট্ হি হ্বঙ্যাদ্ধিরিতি হের্ধিঃ। তুর্যাস্ত ইতি কিম্ ? দিৎপতি। তৃতীয় ইতি কিম্ ? ক্রুধ্ ক্রোৎস্যতি। বক্ষ্যতীতি বহ্প্রাপণে বহ্ধাতোলিট্ শকাদিম্বাদিঙ্ভাবঃ। অবলীয়োহয়ং বকারঃ।

- (১৬০)। তদ্ধিতে হলি পরে যকারং বৰ্জ মিম্বা বর্গচতুর্থাস্তো জকারাদক্ষো বর্গ তৃতীয়ো বর্গ চতুর্থো ভবতি। মিত্রগুরুতি মিত্রজুহ্ শব্দাৎ তদ্ভাবে তাম্মিতি তা মূহ্ ক্রহেত্যাদিনা হস্য মঃ। যবক্ষ মিতি কিম্? দার্চ গ্রু । দৃঢ়াদেব পরিশেষাৎ ট্যণ চেতি ট্যণ্ অদিল্পগিত্যকারলুক্। জ্বপ্যত ইতি জভ্ মৈথুনে জভ্ জুভী গাত্রবিনামে ইত্যস্যানিঙ্ মাভাবালাস্য রূপম্।
- (১৬১)। তসিক ভাদির্ভবতি। মিত্রঞ্জঃ মিত্রঞ্জ ইতি কহ্-হাকোরিত্যাদিনা তসিঃ মৃহ্তুক্তোদিনা ঘটো। ভাদাবিতি কিম্? অঙ্যঃ ইত্যেবাসুবর্ত্তাম্। এবং সতি দোখীত্যত্রাপি স্যাৎ।
- (১৬২)। ন তিঙ্কৃত্ধলীতি নিংবধাৎ সামান্যেনৈতবিধানম্। অবিন ভবিতি ডুক্তৃঞ্ধারণপোষণয়োঃ লঙ্স্ত্ আদিমান্দিকক্তিঃ ঋপুহাঞ্মাঞ্

পদান্তেহঙ্বে চ পরে যুক্তস্যান্তো লুগ্ভবতি। অবিভ: প্রাঙ্ মাংসপিপক্।

১৬৩। ন তিঙ্কুদ্ধলি।

১৬৪। রমুর্দ্ধ্যে দন্ত্যবচ্ছসবর্জ মৃ।
ছুঙ্ক্তে ভঙ্ক্তা স্পুর্থ অমাট্ রাজস্পর্ত্। দন্ত্যবচ্ছসান্ত। চর্
কিপ্ চঃ চরো চরঃ ধুরী ধৃঃ ধৃর্তঃ দোধৃর্তঃ মৃচ্ছ মৃহ মৃর্তঃ
কর্ষিচ্ছতি 'চিকীঃ।

ইত্যাদিনা ঈকারো হস্তঃ গুণেনার । প্রাঙিতি প্রপূর্ম মন্চু গতিপুজনয়োঃ । কিপি কতে ন ভিঙ্ ক্লাকলীতি নিষেধঃ শসাদে লুগন্চোহপূজায়ামিতি নিমন্মাং হলুপাস্তেত্যাদিনা ন নকারলুক্ সৌ কতে চজোঃ ক ইতি চদ্য কঃ উপাস্তম্ভ বর্গ ইতি নদ্য ঙঃ পদাস্তমাং কলুক্ । মাংসপিপক্ ইতি পচেঃ সন্ দিকজিঃ ইত্বঞ্চ উপপদে প্রাদৌ চেতি কিপ্ ভারিমিডোপপদ্যা চেতি দমাসঃ । অঙ্যে তু । মাংসপিপগ্তাঃ মাংসপিপক্ ।

(১৬০)। ভবতি হি ব্যাখ্যানতো বিশেষলাভ ইতি ন্যায়েন তিঙ্-হলি রন্ধলি চ পরে যুক্তস্থান্তো লুগ্ন ভবতি।

(১৬৪)। রম্র্নে। বুক্তাস্তস্ত তিঙ্ ক্রলি সতি দস্তাবচ্ছসান্ বর্জনিয়া নিমিভাস্তরপ্রাপ্তেহপি লুগ্ন ভবতি। ম্র্নশ্বনাপচারাৎ প্রাথচনং। অচিপরে লুক্ প্রসঙ্গাভাবে হলীতানর্থকং স্যাং তদেতজ্জ্ঞাপয়তি অনেন হলি বিহিতো লুক্ কাবপি ভবতীতি তেন চরে) চরং ধুরৌ ধুর ইতি সিধাতি। ভূঙ্কে ইতি ভূজেং শ্বম্ শ্বাস্তোার্মিভাকারলুক্ জন্য কং নদা ঙং ভঙ্কাইতি ভন্জো আমদ্বন ভূঙ্ সপ্তাইতি তপু গতৌ ভূঙ্ ভুণঃ অমার্চ্ ইতি মৃজু গুরে লঙ্ ছঙ্ মূজোহচভূর্ম্পীতি বৃদ্ধিং ভ্রন্তেজ্ঞাদিনা জন্য ষং মন্ত ইতি যন্য টং রাজস্পর্ত ইতি স্পর্ক্ সংহর্ষে ক্রিপ্ ক্রিব্রে বিহিত ইতি সৌরুতে পদাস্তবার্মিভোহপি লুগ্ন ভবতি। চরিতি চর্ক্ অদনে ধ্রিতি ম্র্লি হিংসার্থং কিপি ক্রতে বল্কু সৌরুতে রাস্তাদেরিত্যাদিনা দীর্ঘং স্বন্ত্র্ক্ ইতি কিবতার্থে ধূর্ত্ব ইতি প্রতিষেধারকারাভাবং দোধূর্ত্ব ইতি যন্লুগস্তাৎ ক্রং মৃত্ত ইতি মৃদ্ধা মোহনসমৃদ্ধায়রোঃ অপমৃদ্ধি ইতাহার্ত্তী ন নম্বং চিকীরিতি ক্রঞঃ সন শুভুদ্ধ সনীতি ইর্ রাষ্কাদেরিত্যাদিনা দীর্ঘঃ ক্রিপ্-

३७१। स्कार्निकारमाः।

পদান্তে২ঙ্যে চ পরে যুজো নিজরপাদিন্থিতয়ো: স্থকারককারয়োলু গ্ভবতি। শীঘ্রমক্ মক্ত্বা ওব্রস্চূ বৃক্তঃ গোরট্ আচন্টে।
নিজাদ্যোরিতি কিম্ ? বাক্ স্থিতা। ভুষে তু—ভূজাতে।

১৬৬। কৌ যঃ। স্থায়মিচ্ছতি স্থোচরতি স্থীঃ স্থ্যো স্থ্যঃ।

নিমিত্তকলোপোহত্র বহুলবচনাদপেক্ষিতবিধিন্বাহা ন ভবর্তি পদাস্তাপ্ত যনিমিত্তক্ব ভবত্যেব। তেন দ্বিচনাদৌ চিকীর্ষো চিকীর্ষ:। দস্ত্য ইতি
কিন্? গ্রামপূর্ব্ব পর্মাধানের গত্যথা: দগুকে পঠ্যস্তে। অয়মোগ্য: তেন
গ্রামথব । বথা, স্থাপুরয়ং ন ভবতীত্যুক্তে পুরুষাদৌ তৎসদৃশে প্রতাগাদৌ
তথা তিপ্ত্ কৃদ্ধলি ন ভবতীত্যুক্তে তৎসদৃশে প্রতাগাদৌ পর এব তহিধানমিতি। তেন সংক্ষোভ উংক্ষোভ ইত্যাদৌ ন ককারল্ক্ ক্রুপ্ত্যাং
প্রাপ্তভামিত্যাদৌ তু ভবত্যেব। নমু দধ্যত্র মধ্বত্র ইত্যত্র পদাস্তম্বাৎ
বকারবকারয়াের ক্ক কন্মার ভবতি। উচ্যতে। স্থাস্থাদেশাং স্থানিবং
কাপীতি ইকারােকারান্তম্বাৎ বকারবকারয়াের ক্রাস্তবৈত্ব নান্তীতি ন
দেবাং।

(১৬৫)। যুজো নিজরপাদিস্থিতয়োরিত্যপদেশ এব সংযোগাদিস্থিতয়োর্নত্ব পশ্চাদিতার্থঃ। ধাতৃপদেশাবস্থায়ামেব লুগ্ভবতীত্যক্তম্।
অতএব সন্তিধাতার্মুমি কতে তত্তৈব যুক্তাদিছাৎ সংস্থাত্যত্র ন সকারলুক্
বাক্ স্থিতেত্যত্র ককারস্থ পশ্চাদাদিস্থিতসম্। শীঘমগিতি টু মস্জো গুলো
কিপ্ মক্রা ইতি ক্রা বুক ইতি ওরস্চ্ ছেদনে ক্রঃ বশাদেরশাদিরিতি
বুস্চাদেশঃ। অয়মাদেশোপদেশ এব সংযুক্তঃ। ক্রক্তবজোরোদিড্ডাদেশেচতি তম্ত নঃ ওদিনাদেনাদাবিতি চম্ত কঃ। গোরজিতি রক্ষ্পালনে
কিপ্ ষপ্ত ইতি যক্ত টঃ। আচপ্ত ইতি আঙ্পুর্স চক্ষিঙ্ ব্যক্তায়াং বাচি
বাট্ তে তিঙ্কৃতোধ্বজ্জমিতি প্রতিষ্কোৎ যক্ত টো ন ভবতি ঘটবর্গাদিতাাদিনা তম্য টঃ। ভ্জ্জাত ইতি ভ্রম্জ্ পাক্ষে বশাদেরশাদিরিতি ভ্র্জাদেশঃ
জগোজাদাবিতি সকারম্য ক্রকারঃ।

(১৬৬)। को शदत या नृश् खर्रात मशौतिष्ठ नियमानीवादवी

১২৭। বশ্চাযে ছলি।
ক্ষ্মী কুত: নিরয় নিরভাাং বৃক্ষর্শচ নামণিঙ কিপ্রক্ষ্
বৃক্ষভ্যাম্।

১৬৮। নো নান্তস্থা। পদান্তেংগ্র্যে চ পরে নান্তস্থা নকারো লুগ্ভবতি। স্থপ্রেমা কর্ম্ম রাজতঃ কর্মবান্।

হলিজ্ভানিত্যাদিনা ঈকারাকাং য়োলুক্ সনীণ্দীর্ঘু ইতি দীর্ঘঃ এবং কণ্ডুরতে কিপ্কভঃ। উভরস্ত্তেপৈ লোপে প্রাপ্তে লক্ষণমেতজ্ভাপরতি হলি বিহিতং কার্যাং কৌন ভবতাতি। তেন প্রম্যাবিত্যাদৌ বস্ত ইত্যাদয়োন ভবন্তি।

(১৬৭)। অকাদৌ চেতি পদান্তে লুগ্বিধানাং অপদান্তেখনেন বিধানম্। চঞারাং কাকাক্ষিগোলকভারেনোভয়ত্র সহধ্যতে। কৌ ফকারবজ্জিতে হলি চ পরে ফকারো বকারণ্ড লুগ্ভবতি। কৃত ইতি কৃরী শব্দে ক্রঃ বিঘুষাদীদিতাং ক্রে) দাবিতি ত্যাদিদ্বাদিঙভাবঃ। নিরয়শন্ধায় ইত্যাদিনা নিঙ্ কিপ্ কিম্মেরোশ্চেতি নিঙ্লোপঃ তভ্যাল্প্রবন্ধাং পূর্ম্বন্ধান বলোপভাবঃ। এবং বৃক্ষবিতি অব্যয়্যু বৃক্ষব্যু ইত্যত্র ঘবলাদিত্যেক ইভি ষম্বিধানসামর্থ্যাদনেন প্রাপ্তভ লুকোহভাবঃ। হলীতি কিম্
 তেরু দেরু দেবনে ইত্যন্ধাং তেবনং দেবনম্। অব ইতি কিম্
কুরাতে যকার সাহচ্য্যাৎ বকারোহর অন্তঃ হো গৃহতে। তেনেহ ন ভাব। করু বর্ণনে কিপ্ কব্ ভ্যাম্।

(১৮৮)। নোহস্তত্তেতি কর্তব্যে যথে নাস্তত্তেতি ক্বতং তৎ স্বভাবনাস্ত্যা নামেহত্ত এহণমিতি স্চনার্থম্। তেন নিন্দু বিন্দু প্রশান্ত্যাং গুণবান্ ইত্যাদে নকারো লুক্ ন ভবতি। অথবা লুগুন্তালুগুবড়াদাদেশক স্থানিবঞ্জাক নাজভাভাবং। ববজ্জং ও্যেহপি ভদ্ধিতে ইত্যকুর্ত্তৌ পামনং পঞ্চমং দণ্ডিম হা দিশ্বল ইত্যাদি দিধ্যতি পামাদেনং নাস্তান্ত্রট্ তদ্ভাত্যান্ত্রিন্ বা মতুরিতি মৃত্ং দিশাদেশ্চ ল ইতি নাদয়ং। রাজাজা ইত্যাদে সমাসে লুগ্রাং বিভক্তিমান্তিত্য পদাস্তবারকারলুক্। স্বপ্রেমা ইতি স্থাটিনীর্ষ ইত্যাদিনা দীর্থং কর্মেতি হলশামো লুক্ ইতি স্থলুক্ রাজস্বমিতি ভারাবে

১৬৯। অনীতদ্ধিতাচ্যয়োশ্চ। অগ্নিশর্মণোহপত্যং আগ্নিশর্মিঃ কেশিনি সাধুঃ কেশ্যঃ।

১৭০। কোষে চর্ম্মণঃ। চার্মঃ কোষঃ।

১৭১। **অশ্মনো বিকারে।** আশাঃ।

১৭২। শুনঃ সকোচে। শোৰম্।

তাত্বমিতি ত্বং কর্ম্মবানিতি মতু: অমস্তত্ত্বপাস্তাদিত্যাদিনা মতোর্ম্মো বং স্কুটাগিদিত্যাদিনা মুম্ অত্যন্তেত্যাদিনা দীর্ঘ:।

- (১৬১)। ঈকারবর্জিতে তদ্ধিতাচি তদ্ধিত্যে চ পরে নাস্তস্থ নকারো লুগ্ভবতি। আগ্নিশর্মিরিতি বাহ্বাদেশ্চেতি ইণ্কেশ্র ইতি ভত্র সাধাবিতি বং। অনীতি কিমৃ ? হস্তিনী।
- (১৭০)। অনস্তত্বাদভাবকর্ম্মযে চ ইত্যাদিনা টণি প্রাপ্তস্থ নিষেধস্য বাধনার্থং বচনমিদম্। এবং বক্ষ্যমাণবচনান্থপি তদর্থাক্তেব ভবস্তীতি অতষ্টপোবামীষাং বিষয়:। অনীতদ্বিতাচি যে চ পরে কোষে বাচ্চে চর্ম্মণোনকারো লুগ্ভবতি। চার্ম্ম ইতি তস্যোদমিতি টণ্। অক্তত্র। চার্ম্মণং চক্ষ্:।
- ্ (১৭১)। বিকারে বিহিতয়োরনীতদ্বিতাচ্যয়ো: পরয়োরশ্বনো
 নকারো পূর্ভবতি। আশ্ব ইতি তস্য বিকারে ইতি টণ্। অক্তর। আশ্বনঃ
 তস্যেদমিতি টণ্। বামনাদয়োহপি নিত্যং নলোপমাহঃ কয়াদিত্যন্ত তস্য
 বিকার ইত্যত্র বিকরম্দাহাতবান্। অতএব যশ্চাপমাশ্বনপ্রথাং সেয়ং
 ধত্তেহক্তত্বহিমিতি ভটিঃ। অথবা অশ্বনো জাতমাশ্বনমিতি লোহমূচ্যতে তত্র
 জাত ইতি টণ্।
- (১৭২)। অনীতদ্বিতাচ্যরোঃ পররোঃ শুন ইতাসা সংকোচে বাচো নো লৃগ্ভবতি। শৌবমিতি টণি ক্লতে খাদেরিত্যাদিনা বকারসা ঔবঃ। অনাত্র শৌবনঃ। ণটি তু। অনীতদ্বিতাচ্যরোশ্চেতি নলুক্। শৌবং বুলম্।

১৭৩। ট্যাণি জ্রণহন্ধাব্রোস্তক্চ। জ্রণন্নো ভাবং জ্রোণহত্যং ধৈবত্যম।

१ अत्य

षाशीनः।

১৭৫। नाजाध्वरनाः।

वाज्ञनीनः वश्वनीनः।

১৭৬। যৃনোণকে। যৌবনিকা।

- (১৭৩)। জ্ঞাহন্ধীবন্ইত্যেতয়োষ্টাণি পরে নো লুগ্ভবতি। তুক্ চ। ভৌণহতামিতি জ্ঞাং হতবানিতি ব্রহ্মজ্ঞাবুত্রান্ধন ইতি কিপ্ জ্ঞাদ্যে ভাব ইত্যর্থে ব্রাহ্মণাদিষাৎ টাণ্। ধৈরতামিতি ধীঙ্ অনাদরে জ্যাদিঃ ক্র্যাদেং কন্ ইতি কন্ নলুক্ সিদ্ধ এব তৎসন্ধিধোগে তুগর্থং বচনং নস্য স্থানে খাদেশস্ত ন ক্লভঃ উত্তর্ব প্রক্রাস্ত্রসা নলুকে। নির্তিশক্ষানিরাসার্থং।
- (১৭৪)। পূর্বেণ সিদ্ধে নিয়মার্থং বচনম্। অহনিতাস্য ঈন এব পরে নস্য লুক্ স্যাং নান্তস্মিন্ পরে। ঘাহীন ইতি দে অহনী ভূতো ভাবী বা ইতি রাত্রাহংসংবংসরবর্ষাচেচতি ঈনঃ এবং অাহীনঃ। অহীন ইতাত্র ঈনোহকং ক্রতাবিতি ঈনঃ অহাং বৃন্দমিতার্থঃ। ঈন ইতি কিম্ ? আহ্নিকং তেন নির্ত্তাদাবিতি টিকণ্। কথং দ্বাহং আহং তংপ্রতিবিধানং স্মাসান্তে বক্ষামঃ।
- (১৭৫)। আত্মন্ অধন্ ইত্যেতয়ো: ঈনে পরে নলুয় ভবতি। আত্মনীন ইতি তবৈ হিত ইতামুবুরো আত্মন ঈন ইতি ঈন: অধ্যনীন ইতি অধ্যনোয়শ্চেতি ঈন:। ঈন ইত্যেব। প্রত্যাত্মং অধ্যধ্যমিতি অব্যন্ত্রী-ভাবে সমাদে সতি অনস্তাচ্চেতাং। অনীত্ত্বিভাচ্যয়োশ্চেতি নলুগেব ভবতি।
- (১৭৬)। শকে পরে যূনো নকারে বুগ ভবতি। যৌবনিকেতি যূনো ভাব: মনোজ্ঞাদেশেতি শক: সভাবাৎ ত্রীলিক্ষ:। ত্রিয়ামনেকাচো-হকোংদিদিত্যকারন্যেকার:।

১৭৭। গাথিবিদ্বিকেশিগণিপণিযুক্তাদেরিনফীণ। গাথিনঃ বৈদ্বিনঃ কৈশিনঃ গাণিনঃ পাণিনঃ বান্দ্রিনঃ।

১৭৮। সত্তক্ষচারিপীঠদর্পিকলাপিকুথুমিতৈভিলিজাজলিলাঙ্গলিশিলালিশিখণ্ডিকজ্জমনপত্ত্যে।
অধিন ইদং আধিনম্। অপত্যে তু—মায়াবঃ মৈধাবঃ।

(২৭৭)। অনপত্যে টণি পরে উত্তরস্ত্রেণৈর সিদ্ধে অপত্যটণর্থং বচনন্। গাথিন্ রিদথিন্ কেশিন্ গণিন্ পণিন্ ইত্যেতেষাং যুক্তাদেশচ ইনষ্টণি পরে নো লুগ্ন ভবতি। যুক্তাদেরিতি যদি নামাে বিশেষণং স্যাৎ তদা
বান্দিন ইত্যত্র ন স্যাৎ। নামােহযুক্তাদিঘাৎ তন্মাদিন ইত্যা্য বিশেষণং
যুক্তাদেরিন ইত্যর্থঃ। এবঞ্চ সতি গাথি বিদথি ইত্যাদিশকৈঃ সহ যুক্তাদেরিত্যা্য ছদ্বো ন সংগচ্ছতে তন্মাদ্যত্মান্তরমান্ত্রেং ছন্দোবৎস্ক্রাণি ভবন্তীতি।
গাথিন্ ইত্যাদি গাথাশকাৎ ব্রীহ্যাদেশ্চেতি ইন্ শেষেভ্যাহতাহনকাদেরিত্যাদিনা ইন্ তেভ্যাহপত্যার্থে উণ্।

(১৬৮)। অনপত্যে টণি পরে সব্রহ্মচারিপ্রভৃতীন্ নব শকান্ বর্জরিষা ইনো নকারে পুথ ভবতি। প্রাধিনমিতি অসম্ভ্রমায়ামেধাপ্রজা বিরিতি
িন্ তন্মান্তমেদমিতি টণ মৈধাব ইতি মেধাবিন্শকাৎ তস্যাপতা ইতি টণ্।
আটণি তু। দণ্ডিনাং সমূহো দাণ্ডঃ অমুদাতাদেণ্ডিতি ণট্। সব্রক্ষচারিণ
ইমে সাব্রক্ষচারাঃ। এবং পৈঠসর্পাঃ তস্যেদমিতি টণ্। কলাপিনা
প্রোক্তমধীতে বা ইতি তেনপ্রোক্তমিতি টণ্ তদন্তান্তমেতি তণ্ধীতে বেতি
টণ্ প্রোক্তবিহিতাদিতি টণ্লুক্ অযাজ্ঞবন্ধ্যাদিপ্রোক্তানি ছদ্দোরান্ধণকল্প
স্ক্রাণি তবেণিভৃতদধ্যভৃবিষয়াণাবেতি তদেদিভৃতদধ্যভৃবিষয়তায়াং
কালাপাঃ। কুথুমিন ইমে কৌথুমাঃ তস্যেদমিতি টণ্ তৈত্তিলিজাজনিন
নামাচার্য্যো তৎকতো গ্রন্থোহণি তৈত্তিল্যাদিবাচাঃ উপচারাৎ তৎকৃতহিপি
তিহপচারো যথা সর্ক্ষিদং পুরাণং কর্ম্ম ভুজ্যতে তমধীতে ইতি টণ্ তৈত্তিলাঃ
জাক্ষ্মাঃ বত্যপচারো ন স্যাৎ তদা শৈষিকেহর্থে আদিকৈ্ত্রজাতশ্রুতি উন্থঃ
স্যাৎ। এবং লাক্ষলাঃ। শিলালিন ইমে শিপন্তিন ইমে শৈলালাঃ শৈখণ্ডাঃ।
বদ্যপি শিলালিন্শন্ধা বামনরত্তী ন দৃশুতে তথাপি ভাষ্যদর্শনাদিহোক্তঃ।
রক্ষিতেনাপ্যতৎ পারাশর্য্যশিলালিভ্যামিহাক্তম্।

- ১৭৯। অভাবকর্মযে চ স্থপর্ব শৃকরসদ্ম বর্জ মনঃ।
 স্থান ইদমপত্যং বা সৌহনং যুনো ভাবং কর্মানা যৌবনং বেমনি
 সাধুঃ বেমন্তঃ। ভাবকর্মযে তু—রাজ্ঞো ভাবং কর্ম্ম বা রাজ্যম্।
- ১৮০। বর্মণ এব মনোহপ্যতে টণি।

 চক্রবর্ম ণোহপত্যং চাক্রবর্মণঃ। অবর্মণস্তা। ভদ্রসাম্নোহপত্যং
 ভাদ্রসামঃ। অনপত্যে টণি তু। চর্মণা পরিবৃতো রথশ্চার্মণঃ।
- ১৮১। জাতো ব্রহ্মণঃ। ব্রহ্মণোহপত্যং জাতিব্রাহ্মণঃ। অনপত্যে টুণি তু। ব্রাহ্মী নামৌষধিজাতিঃ। অজাতো তু। ব্রহ্মণোহপত্যং ব্রাহ্মঃ।
- (১৭৯)। টণি ভাবকর্মব্যতিরিক্তে যে চ পরে স্থপর্ব শৃকরসদ্মশকো বজ রিঘা অনো নকারস্ত লুয় ভবভি। অনপত্যে ইত্যত্ত নানুবর্ততে সামান্তেন বাধনম্। সৌদ্ধন ইতি যুক্ত অভিযবে ইতি স্থাদেব রিতি বন্ তুক্ ততপ্টণ্। স্থপর্কপাঠাৎ পর্ব গ ইদং পার্ব গং শ্রাদ্ধম্। যৌবনমিতি যুবাদিহায়নাস্তাচ্চেতি টণ্। বেমস্ত ইতি তত্ত সাধাবিতি যৎ। রাজ্যমিতি রাজ্ঞন্তান্তেতি টাণ্। স্থপর্ব শৃকরসদ্মবজ মিতি কিম্ ? স্থপর্ব ণ ইমে সৌপর্বাঃ শৃকরসদ্মন ইমে শৌকরসদ্মাঃ।
- (১৮০)। অনন্তবাৎ পূর্ব্বেণৈর প্রতিষেধে সিদ্ধে নিয়মার্থং বচনম্। অপত্যে বিহিতে টণি পরে মনস্তস্য প্রতিষেধাে ভবন্ বর্মণ এব ভবতি নাগুসা। অনপত্যে টণস্ত নিয়মগ্রাবিষয়ত্বাৎ তন্মিন্ পরে পূর্বাস্থােনিষেধাে ভবত্যেব। চার্মণ ইতি তেন পরিবৃত্তে রথে ইতি টণ্। নম্পু নিয়ন্মেন যদ্যত্রাপি নলুক্ দ্যাৎ তদা কোষে চর্মণ ইতি লুগ্বিধানমনর্থকং স্থাৎ তৎসামর্থাানের কোষব্যতিরিক্ষে লুগ্ধ ভবিষ্যতি। তন্মাৎ সাম্ম ইদং সামন-মিত্যুদাহরণীয়ম্।
- (১৮১)। মনস্কর্ণং নিরমেন লুকি প্রাপ্তে নিষেধার্থং বচনম্। ব্রহ্মণ ইত্যক্তাপত্যে টণি পরে জাতৌ বাচ্যারাং নো লুগ্ন ভবতি। ব্রাহ্মী নামৌষধি-জাতিরিত্যক্র যদ্যনপত্যে টুণি জাতৌ চ অভাবকর্ম্মযে চেত্যাদিনা নিষেধঃ ভাং তদা অপত্যে টণীত্যস্যাক্র্তিরনীর্ধিকা স্যাং।

১৮২। উক্ষশ্চ।

উক্ষোহপত্যম্ ঔক্ষ:।

১৮৩। হিতনালো বা।

হিতনাম্বোহপত্যং হৈতনামঃ হৈতনাম:।

১৮৪। कर्जालाश्मीत्म।

কার্দ্মণঃ। শীলে তু। কার্দ্মঃ।

১৮৫। দৃণ্ডিহস্তিনোর্ণায়নে। দণ্ডিনোহপত্যং দাণ্ডিনায়নঃ হাস্তিনায়নঃ।

১৮৬! জিক্সাশিন এয়ণি। জিক্সাশিনোহপত্যং জৈক্সাশিনেয়ং।

^{(&}gt; ৽ ২)। অভাবেত্যাদিনা নিষেধে প্রাপ্তে নিয়ম:। উক্ষন্নিত্যস্তা-পত্যে টণ্যেব পরে নো লুগ্ধ ভবতি। ঔক্ষ ইতি টণিষপূর্ব্বস্যেত্যকারলুক্। ত্যোদমি ত টণি তু ঔক্ষং পদম্।

⁽ ১৮০)। অপত্যে বিহিতে টণি পরে হিতনামো নকারলুগা ভব'ত। বর্মণ এবেত্যাদিনা নিয়মেন লুকি প্রাপ্তে বিভাষা।

⁽১৮৪)। বর্মণ এবেতাাদিনা অপত্যে টণি নিয়মাৎ তদ্যুক্তাৎ কর্মণ্টমিতি টণি ক্তে কার্মণ ইত্যত্র অভাবেত্যাদিনা নিষেধঃ দিদ্ধ এব কর্মণোহপত্যামত্যক্ত তু নিয়মেন লুকা ভবিতব্যমেব। শীলে তু কার্ম ইত্যত্র তদস্ত শীলমিত্যস্তামুর্ত্তৌ শশ্রোদেরিতি গে ক্তে অনীতদ্ধিতেত্যাদিনা নলুক্ সিদ্ধ এব এবমেব কার্ম্কমিত্যাদেন চ। তন্মালক্ষণমেতৎ শাস্তান্তর দর্শনমাত্রেণ ভাবিত্রবিবেচকৈরক্র প্রতিক্রিপ্তমিত্যুপেক্ষণীয়ম্।

⁽১৮৫)। দণ্ডিন্ ইন্ডোত্রোঃ ণায়নে পরে নো লুগ্ন ভবন্তি। দণ্ডিন্ ইন্ডিন্ ইন্ডোন্ডো অশ্বাদিগণে পঠোন্ডে ত্রোরপভ্যেহর্থে অশ্বাদেশায়ন ইতি ণায়নঃ।

⁽১৮৬)। জিন্ধাশিন্ইত্যক্ত এয়ণি পরে নো লুগ ভবতি। জিন্ধা-শিরিতি ক্তাদৌ পঠাতে ক্তাদেরেয়ন্ত্তি এয়ণ্।

১৮৭। বাসিনো ণায়নো। বাসিনোহপড্যং বাসিনায়নিঃ।

১৮৮। অথব ণষ্টিকণি।

অথব ণা কুতো গ্রন্থ: উপচারাদথর ভিমধীতে আথর্ব ণিক:।

১৮৯। রাজ্ঞোমতো দৌরাজ্যে।

রাজ্যান্। অন্যত্র--রাজ্বান্।

১৯০। রুমঃ পর্বত।

क्रमगुन् क्रमन्यका नवनार्थः।

১৯১। চম পো নদ্যাম্। চম পুতী নদী।

- (১৮৮)। অথব রিত্যস্ত টিক্ণি পরে নো লুগ্ন ভবতি। অথব রিত্য-নেন ঋষিবিশেষ উচাতে তস্তাধ্যয়নং ন সম্ভবতীতাত আহু অথব লৈতাাদি। আথব ণিক ইতি তদ্বেত্তি তদধীতে বেতামূর্ত্তৌ বসস্তোক্থাদেশে তি টিকণ্। বসস্তাদৌ প্রোক্তপ্রতায়ান্ত আথব শশকঃ পঠাতে তন্মাৎ টিকণি ক্তে আথব ণিক ইতি সিধ্যতি প্রোক্তাদিতি টিকণ্ লুক্ গণপাঠসাম্প্যাদেব ন ভবিষ্যতি কিমনেন শক্ষণেন অথব রিতি বছসস্তাদৌ পঠাতে তদপি ন পঠনীয়মিতি তদেতচিস্তাম্।
- (১৮৯)। রাজয়িত্যক্ত মতৌ পরে সৌরাজ্যে গম্যমানে নো লুগ্ন ভবভি। রাজবানিতি তদস্তাস্থিমিন্ বা মাতুরিতি মতু: অমস্তত্ত্পাস্তাদিত্যা-নিনা মস্ত বং রাজবান্ দেশঃ সৌরাজ্যং তত্ত্ব যথোক্তচরণাদিত্যর্থঃ। অস্তত্ত্র— রাজবান্ রাজযুক্ত ইতার্থঃ।
- (১৯০)। ক্ষমন্ ইতাক্ত মতৌ পরে পর্বতে বাচ্যে নো বুল্ল ভবতি। ক্ষমন্শব্দো লবণার্থ ইতি পর্বত এব প্রয়োগোহত্ত নাক্তর। পর্বত ইতি তুক্তং পর্বতার্থস্থন। ক্ষমণানিতি পর্বতবিশেষত্ত সংজ্ঞা অজ্বয়বেত্যাদিনা গ্রম্।
- (১৯১)। চম মিত্যক্ত মতৌ পরে নদ্যাং বাচ্যায়াং নো লুগ ভবতি। চম গভী নদীবিশেষক্ত সংজ্ঞা। অন্তর্জী—চম বান্।

⁽১৮৭)। বাসিন্ ইত্যস্থ গায়নৌ পরে নো লুগ্ন ভবতি। বাসি-নায়নিরিতি আদিহৈজাতোহনপত্যার্থান্বেতি, গায়নিঃ।

১৯২। অন†রঃ। অহন্ অভবন্ রক্ষান্।

১৯৩। শসাদ্যচাতোহযুখমঃ। শসাজচি পরে মুক্তবমবজ[ং] নাস্তম্ভাতো লুগুভবতি। সংশ্রেম্ই স্প্রেম্ব। অষুখম ইতি কিম্ ? স্থপর্ব গং আজুনঃ।

১৯৪। স্ত্ৰিয়ামীতি চ। ৰাজী।

১৯৫। টণি ষপূর্ব্বস্থা। পোকং তাক্ষম্।

১৯৬। ধৃতরাজহ**ো**শ্চ। ধার্তুরাজ্ঞঃ ভ্রোণদ্ধঃ।

⁽১৯২)। অনামো নো লুগ ভবতি। নাম ইতাধিকারস্ত ফলমেতং। বৃত্তিক্রদাহ তিওস্তাদিতরং স্পশ্স্থা নাম ইত্যত্র ব্যাখ্যাতয়া ব্যবস্থা ধাতো- স্তিওস্তস্ত চ স্পৃস্থবিদশ্চ নো লুগ ভবতীত্যর্থ:। অহনিতি হস্তেল ও্ ছঙ্ লুগ্যুক্ষোহস্ত ইতি তলুক্ অহনিত্যত্র ধাতোঃ অভবন্নিত্যত্র তিওঃ বৃক্ষানিত্যত্র স্থপো নকারো ন লুগঃ।

⁽১৯৩)। যুক্তৰমাদন্ত: কেবলো বমো ভবতি। বমাদিতর চ বর্ণ:। (১৯৪)। বেঙাোরিতি বিকল্পে প্রাপে নিত্যার্থ: ৰচনম্। স্তিরাং

বিহিতে স্বৃতি পরে যুগমবর্জং নাগুন্থাতো লুগ্,ভবভি। রাজীতি ঝহুগিদিত্যাদিনা স্ক চবর্গাঞ্ঞ ইতি নকারশু ঞঃ।

⁽১৯৫)। ভদ্ধিভ্যাচো: শসাদিস্বাল্কি সিদ্ধে নির্মার্থং বচনম্। টণি পরে নাস্তস্থাতো লুক্ ভবন্ ষপুর্ববৈশ্বব ভবতি নাগ্রপূর্বক্স। পৌষ্কং তাক্ষ-মিতি পৃষন্ তক্ষন্ ইন্ড্যেজাভাাং টণ্তদ্বলাগাবিতি টণ্ অভাবকর্ম্যেচেত্যা-দিনা ন লুগ্রিষেধঃ। নির্মাদিহ ন ভবতি শৌবনং যৌবনম্।

⁽১৯৬)। নিরমেনাপ্রাপ্তে বিধানম্। হলিতি ধাত্রপাতঃ তসাৎ: টণ্ন সম্ভবজীতি ভদস্ত প্রহণম্। ধৃতরাজন্ হন্ ইত্যেত্রোন স্তিগ্র

१ शिक्षण । १९६८

উড্যো: পরয়োর্যু ক্রেবমবর্জ : নাস্তস্তাতো লুগ্ বা ভবতি। স্থপ্রেম্বী স্থপ্রেমণী শিলাদোষণী শিলাদোষণী অফী অহনী রাজ্জি রাজনি।

১৯৮। স্থাট্ট দার্যঃ স্ত্রীপুংসয়োঃ।
স্থাট পরে স্ত্রীপুংসয়োন স্থিতাতো দীর্ঘো ভবতি। স্থপব। স্থপবাণো স্থপবাণিং স্থপবাণে প্রপর্বাণে প্রতিদিবা।

১৯৯। ভেহপোহন্তোদঃ।

স্বাদিভে পরেহপ্শব্দস্থান্তো দে। ভবতি। স্কৃতি পরে হতোদীর্ঘশ্চ।

অদ্ধি: অন্তঃ আপঃ স্বাপং বহবান্পি।

ন্ধণি পরে অতো লুগ্ভবতি। ধার্ত্তরাজ্ঞ ইতি বছব্রীহিঃ তভোদমিতি টণ্ ভৌণছ ইতি ভূণং হতবান্ ইতি ব্রহ্মজ্রণেত্যাদিনা কিপ্ অনুগাদাবিত্যা-দিনা হস্ত খঃ।

(১৯৭)। স্থপ্রেম্বীতি উদীদিত্যাদিনা ঈ অজ্বধবেত্যাদিনা পথম্।
(১৯৮)। অযুগম ইতি নাম্বর্ততে ইতি স্থপবে ত্যুদাহরণেনৈব স্পাঠম্।
প্রতিদিবেতি প্রতিপূর্বদিব ধাত্যের বাদেরন্নিতি অন্। ক্রীপুংসয়ারিতি
কিম্? স্থপব স্থপ্রেমণী। অক্লীব ইতি ন কৃতং স্পাষ্টার্থম্। পরিশিষ্টবিধেম্ থাবিধানং স্পাষ্টং ভবতি। স্থাটীতি কিম্? স্থপবর্ণঃ।

(১৯৯)। চকারোহত্ত লিপিকর প্রমাদাৎ পতিতঃ। অন্তথা অতো
দীর্ঘণ্ট ভবর্তাতি দিতীয়বাকাং চল ভং স্থাৎ। অথবা ব্যাখ্যানতা বিশেষপ্রতিপত্তিঃ করণীয়া। প্রকরণনিয়মাৎ স্বাদিভ ইত্যুক্তম্। অতএব অন্তক্ষ্য
ইত্যাদৌ ন ভবতি। তদস্তাদিপি ভবতীতি স্ফনায় স্বাপ ইত্যুদাহতম্।
লোভনা আপ ইতি তৎপুরুষঃ ন বছব্রীহিবর্জং পূজার্থস্বতিভ্যামিতিঃ ঋগাদের২
সর্ব্বত্রেতি প্রাপ্তমা সমাসাম্ভস্য নিষ্কেঃ। বহ্বাশ্পীতি তু বহ্বা আপ এমিতি
বছব্রীহৌতে চানিত্যা ইতি সমাসাম্ভবিধেরনিত্যভাদেকবচনিদ্বিচনে চ পরি-

२००। (मी इनारमः।

সৌ পরে হনাদে: দ্রীপুংসয়োরস্তো দীর্ঘো ভবভি। বৃত্রহা।

২০১। ইনন্তপ্যাৰ্য্যমূপ্।

वर्षी (जाकी भग्नती भृषा वर्षामा।

২০২। অত্তাসন্তস্থাধাতোঃ।

ভবান্ ধনবান্ স্কমনাঃ। ধাতোস্ত্র। পরীতৎ পিগুরা:।

ক্ষড়া বছবচনমেব সর্বৈরাজ্যিকদাক্তং তক্ষাদেকবচনদ্বিচনয়োঃ সমাসাস্তাভাবো ন বাচ্যঃ বছবচনে সমাসাস্তাভাব এব নিয়ত ইত্যপি ন প্রমাণং যতো
বহ্বপানি তড়াগানি সারসাঃ সমুপাসতে ইত্যাপ্তানাং প্রয়োগো দৃশুতে।
কেচিহদন্তি শাবচোহঙ্যাস্তম্যেতি হল্ত্যবায়েহপীতি প্রথমবিহিতেন মুনা
ব্যবধানাম দীর্ঘঃ তেন বহ্বস্পীতি গুডৌচ তন্ধ্যাক্তং ভাষ্যাদৃষ্টভাং।

- (২০০)। অত ইত্যত্র নামুবর্ত্ততে ইনন্তস্য দীর্ঘবিধানেন সম্মাবিরোধাণ দীর্ঘস্যাজ্ধর্মজাৎ অজেব স্থানী যুক্তঃ। স চ হনাদেরস্তো ন সম্ভবতীতি অস্তসন্নিহিতো গৃহতে। স্থাটি দীর্ঘ ইত্যাদিনা দীর্ঘদ্ধে প্রাপ্তে হন্
 ইনস্তপৃষার্যায়াং নিয়মার্থং বচনম্। এষাং সাবেব পরে দীর্ঘো ভবতি
 নাম্যত্রেতি। তেন বৃত্তহণোঁ বৃত্তহণ ইত্যাদৌ ন ভবতি। সমানবিষয়াপেক্ষমাণ্ডাবেতি। তেন বৃত্তহণোঁ বৃত্তহণ ইত্যাদৌ ন ভবতি। সমানবিষয়াপেক্ষমাণ্ডাবেতাব। বৃত্তহেণীত্যাদোঁ তু জস্পাদোঃ শিনাস্থো দীর্ঘশ্চেতি দীর্ঘো ভবত্যেব। বৃত্তহেতি বৃত্তং হত্বানিতি ক্রন্ধ লণক্ত্রাদ্ধনা ইত্যানেল কিপ্ লুগ্যুজ্যাহস্ত ইতি স্থলুক নোনাস্তস্যেতি নলুক্।
- (২০১)। আদিপদেন সংগৃহীতানাং বিবরণমিদম্। ইনস্তপ্যার্যারাং স্ত্রীপ্ংসরোঃ সৌ পরেহস্তো দীর্ঘো ভবতি। ইনিতি ন স্বন্ধপগ্রহণং কিন্ত প্রত্যন্ত্রগ্রহণমিত্যুনাহরণেনের স্পষ্টম্। অর্থীতি অর্থাদাকাজ্জিণীতি ইন্ ভোজীতি অনুপপদাদাবৃশ্রকে ইতি নিন্ পর্ম্বীতি অসন্তমারামেধাশ্রজাে বিরিতি বিন্।
- (২০২)। অত্বস্তদ্য অসম্ভদ্য চ সৌ পরে ধাতুসম্বন্ধিবজি তিদ্যান্তদ্য স্থানে দীর্ঘো ভবতি। অথবা অত ইত্যত্তাসূবর্তনীয়ং তদা ধাতুসমন্ধি

২০০। উশনঃপুরুদংশোহনেহসাং সলুক্ চ। উপনা পুরুদংশা অনেহা।

২০৪। রাস্তাদেরছুরাদেরিণ্ হলি। ইলি পরে ছুরাদিবর্জং রাস্তাদেরিণ্ দীর্ঘো ভবতি। স্থগীঃ স্থগীর্ড্যাং স্পৃঃ কুলম্।

২০৫,। দন্ত্যবান্তঃ। শীব্যতি সীব্যতি। ওষ্ঠ্যবান্তন্ত উজ্কিপ্উপ্উব্ভ্যাম্।

বজি তন্তাতঃ স্থানে দীর্ঘো ভবতীতি স্পষ্টঃ স্ত্রার্থো ভবতি। ভবানিতি ভা দীর্থৌ ডবত্র্জাতেরিতি ডবতুঃ ডিম্বাদাকারলুক্ স্থঃ দীর্ঘং স্ক্ট্যুগিদিত্যাদিনা মুন্। ধনবানিতি হুদ্পান্তান্দিন্ বা মতুরিতি মতুঃ অমস্ত ভতুপান্তাদিত্যা-দিনা মতুমো বং। পরীতদিতি তমু বিস্তারে কিপ্ কৌ গমাদেরিতি নকার-লুক্ তুক্ কিবস্তরুচাদাবৃপদর্গকারকপূর্মস্তচেতি পরেদীর্ঘঃ। পিওএ ইতি গ্রস্থ প্রদনে পিগুং গ্রসতে ইতি কিপ্ অত্র ধাম্বরবন্থানীতি ন দীর্ঘঃ। অধাতুভূতপূর্মস্থাপাধাতুদ্মেবাঙ্গীকরণীয়ং ছেন গোমস্তমিচ্ছতি গোমত্যভি গোমত্যতে কিপি কতে গোমানিতি ভবতি।

- (২০৩)। উশনস্প্রদংশস্ অনেহস্ ইত্যেতেষামস্তঃ সৌ পানে দীর্ঘো ভবতি। সল্ক্ চ। অসম্ভবাদীর্ঘে সিদ্ধে সল্গর্থং বচনম্। লৃগ্যুজ্ঞো-হস্ত ইতি স্লুকি ক্লতে সল্ক্ অভাবা সল্ঘিধানমনর্থকং স্যাৎ সোলে পা-প্রাপ্তে:।
- (২০৪)। অছুরাদেরিতি অধাত্রিতি চ' জ্ঞাপরতি সামাক্রেনৈত ছ-ধানম্। স্থারিতি গুলিগরণে কিপ্ শ্লাদিরিতি ইর্ কিবস্তত্বেনাস্য ধাতৃত্বাৎ অধাত্রিতি ন ছুরাদিষম্। স্থপুরিতি পুপালনপুরণয়োঃ কিপ্ উর্ পবর্গাদি-তার্ সরিহিতালাতে ইত্যাদিপরিভাষরা অন্তরেক্সরিহিত ইণ্ এব গৃহুতে তেনাবিভরিত্যতা ইকারসা ন দীর্ঘঃ ইণ্ গ্রহণাদকারসা চ ন ভবতি।
 - (২০৫)। দন্ত্যৰকারান্তো রান্তাদির্ভবক্তি। যবর**লী**রো বকারো

২০৬। সন্ স্তব্ভলি সেঙ্গ্ট। শেপঠীঃ পিপঠীর্ভ্যাম্।

২০৭। সজুবাশিবোশ্চ। সজু: আশী:।

২০৮। বেপাস্তস্থাচিচ।

ছুচ্ছ তি হুচ্ছ ্যতে প্রতিদীবৃঃ প্রতিদীবৃা। ওষ্ঠ্যবোপান্তস্থ তু। উক্ষ্ উক্সিতা। অছুরাদেরিতি কিম্ ? ছুর্ ছুর্যাতে।

২০৯। ছুকুঞা। কুব: কুম: কুর্যাৎ।

দস্তাঃ। দীব্তী ত দিব্কীড়াদৌ পঠাতে উবিতি উক্ত আর্জ বে অয়ং প্রকীয়তাদোঠো বঃ।

(২০৬)। স্থপ্দমন্ধিনি হলি পরে সেঙ্গ্ড ধাতোঃ সন্ রাস্তাদির্ভবিত। সেঙ্ ইতি প্রথমাস্তপাঠস্ত কথং ন রুতঃ ? প্রথমাস্তপাঠে তু সেঙ্ সন্ রাস্তাদির্ভবিতীতি। পিপঠীরিতি অশকা দিন্তাদিঙ্। সেঙ ইত্যুপলক্ষণং মেটোহপি ভবিত। তেন প্রোণ্রিবীঃ রুরুলীর্ভ্যাম্। সেঙ ইতি শক্ষমকর্ভ্যুম্ অনিঙঃ সনীণ্দীর্ঘ ইত্যনেনের দীর্ঘবিধানাৎ তৎ ক্বতং স্পষ্টার্থম্। স্থপিতি কিম্ ? পিপঠিষাতে।

(২০৭)। সৌত্রত্বাৎ প্রকৃতিভঙ্গভয়ায়া অকারসহিত নর্দেশায়া বিসর্গাভাবাহত্ত ত্রষ্টবা:। হলি পরে সন্ধ্যাশিধোণ্ট ইণ্ দার্যো ভবতি। সন্ধৃরিতি যণ্ড সন্ধুর ইতি বিসর্গঃ আশীরিতি ইচ্ছার্থস্যাঙ্ শাসোঃ কাবিতি আকারস্যোক্ষার: আশিসিতি গণপঠিতসাম্ভধাতৃপলক্ষণম্। অথবা চকারম্বস্কুসমুচ্চয়ার্যঃ। তেন স্থপীঃ স্থতুঃ পিন্দ পেন্দ গতৌ তুস্ রস্ শব্দে কিপ্ এবম্ আর্যাং শাস্তীতি আর্যাশীঃ।

সমাসেহচি চেতি বক্তব্যম্। সমাসাবয়বেছচি হলি চ পরে স্বাস্তাদেরিণ্ দীর্ষো ভবতি। স্থগীরর্থং পিপঠীরিচ্ছা আশীরমুম্মরণং সজ্বাজ্ঞা লুপ্তস্যা-পুপ্তবস্বেছপি হল্পরতা ন সম্ভবতি।

(২০৮।২০৯)। ধাতৃপাঠে রেকোপাস্ত এবারমিতি ক্তেহপি ছিছে ভূতপূর্বগত্যাশ্ররণান্বা রেকোপাস্তম্। রেকোপাস্তম্য দস্ত্যবকারোপাস্তম্য ২১০। অধাতুঃ।

চতুর্জি: নি: ছ:।

২১১। ঈয়ায়্ তদ্ধিত্যান্তঃ।

দিবমিচছতি দিবাতি কুক্রায়তে ধ্যা:।

২১২। কৃত্যবরলঃ।

রীঙ রির্ধ্যে গুরেরি:।

চ হলি মচি চ পরে ইণ্ দীর্ষো ভবতি। হুচ্ছ তীতি হুচ্ছ বিটেলা।
টুওক্ষু বিজ্ নিপেষে ইতি দীর্ষপাঠাৎ বে পাজদার্যবিধেরনিতাত্বং তেন
উদ বুদ দিবু দীর্ষো ন ভবতি ইতি চাদ্রাঃ। প্রতিদিব্রেতি প্রতিপ্রাদিব্ধাতাঃ ব্যাদেরন্ ইতি অন্ শসাঘটীত্যাদিনা অকার্লুক্ ধাতুসম্বন্ধেরায়ং
বকার ইতি প্রতিষেধাভাবঃ।

মাজস্তস্যেতি বক্রব্যম্। অজস্তস্য বেণিস্তিস্য দীর্ঘোন ভবতি। চিরি-ণোতি জিরিণোভীতি রিক্ষিচিরিজিরিদাশ্ ক্রহ্ জিবাংসাধাং স্বাদেস্থ দিতি মুং।

ছুর্যাতে ইতি ছুর্ ছেদনে। কুর্ব ইতি ন ক্রঞো বে চেতি উন্নিষেধঃ ক্রোহিঙ্ডার্ ই:ত উর্। ডুক্তঞ্সানে কুর্ ইভ্যেবং কঝান্ন কৃতম্ ? এবং সতি কুর্ শব্দ ইতাস্য গ্রহণং স্যাৎ ।

- (২১•)। ধাতোরভো রাস্তাদিন্দ্ রাদির্ভব[†]ত। চতুর্জিরিতি চতুরনতুর্ ইত্যাদিনা বা স্থানে উঃ নির্হ**ারতি রাস্তমব্যয়ম্**।
- (২১১)। ঈয়ায়ে তিজিত্যান্ত চুরাদির্ভবিত। ঈয়ায়োশ্ছুরাদিকার্যাভাবাৎ তদন্তন্য গ্রহণম্। তিজিত্যোহস্তোহিন্যেতি অতদ্গুণসংবিজ্ঞানাৎ
 প্রক্তেগ্র্ণম্। দিব্যতীতি দিব্ইত্যুমাদীয়্ হলিজ্ভ্যামিত্যাদিনা ঈকায়পুক্ কুরুরায়ত ইতি বে পাস্তম্বাভাবাদেবাপ্রাপ্তিঃ তন্মাচ্চতুর্যত ইত্যদাহাগ্যম্ ঈয়ায়য়য়য় ধাতুষাৎ প্রাপ্তিনি বিদ্ধা। গীর্যাতি ধ্র্যতীতাত্ত তু ঈয়ায়য়য়য়
 ধাতুষাৎ প্রাপ্তে নিষিদ্ধায়ামপি কিবস্তধাতুষাদ্ধল্নিবন্ধনং দীর্ঘণং ভবত্যের।
 ধ্র্যাইতি ধুরস্টেরণ্ চেতি বং। কিবস্তধাতুষাৎ প্রাপ্তিঃ।
 - (২১২)। কৃতা আদিষ্টা যবরলা যদ্য দ কৃত্যবরল: ধাতৃশ্ছুরাদির্ভবন্তি।

২১৩। ধাতুমো নোহঙ্যে।
পদান্তেংঙ্যে চ পরে ধাতোম কারস্ত স্থানে নো ভবতি। প্রশান্
প্রশান্ভ্যাম্। অঙ্য ইতি কিম্ ? গম্যতে আচাম্মোতি কন্তঃ।

२ ३ । वटमां का

खगवान् जःगवः जःगगः।

২১৫। শসাদে লুগন্চোহপূজায়াম্। অপূজায়ামর্থে শসাদে পরে অঞ্তেন কারো লুগ্ভবতি।

রির্য্যে ইতি রীঙ্গতৌ লিট্ এ দিঃ অঙিদচীত্যাদিনা ইকারস্য যঃ গুর্বেনিরিতি গুনিগরণে বাদেরুণাদির্বাতাদাবিতি উণ্বছলাধিকাত্র গুরুশস্বাদ্যিকারস্য বকারঃ ধাতুসম্বন্ধোবারমিতি প্রাপ্তিঃ।

- (২>৩)। কৌ মোনোহঙ্ য ইতি ক্তেংপি প্রশান্ প্রশান্ত্যামিত্যাদিসিকৌ যদান্থিতি ক্তং তরামাধিকারেংপি ধাতুমাত্রস্যৈবারং প্রবর্ততে ইতি স্চনার্থং তেন প্রশাস্ত ইত্যাদি মিধ্যতি। তিঙ্পাদেহন্মিন্ স্ত্রে ক্তে ধাতিতি শক্যমকর্ত্ব; তজ্ঞাপরতি তিঙ্পাদলক্ষণানি প্রারো নামে। ন ভবতি অতএব মিত্রগ্রন্তেত্যাদৌ কিবস্তম্য ধাতুত্বেংপি ধোহধাতুর্যাদিতি ন ভবতি। প্রশানিতি প্রপূর্মে শম্ উপশ্যে পঞ্চমান্তম্যাহন ইতি কিপ্ দীর্ঘণ্ড আচামোতীতি চমু অদনে স্থ দীর্ঘো বাচম ইতি দীর্ঘঃ। কম ইতি দীপিনমিকপিহিসিক্মাজ্ স্থিতাং তচ্ছীলাদাবিতি রঃ। ধাতোরিতি কিম্ ইদ্ম্।
- (২১৪)। ঙ্বভাদপ্রাপ্তে বিধানম্। বমোশ্চ পরয়োঃ ধাতোম কারস্য স্থানে নো ভবতি। জগবানিতি গমু স্পু গতৌ লিড্রস্বানাবিতি বস্তঃ দিঃ গ্যবহাজ ইতি গ্স্যজঃ জগবস্ ইত্যত স্থ: দীর্ঘ: স্থাদিকার্য্যন্। জংগবঃ জংগন্মঃ ইতি যন্লুক্ প্রকৃতিবন্ধির্গাদিশ্চেতি দিঃ জপ্রভেত্যাদিনঃ অনুস্বারঃ।
- (২১৫)। অন্চু ইতি কিবস্তমলুগুনকারমকুরুতম্। যদি ধাতু-মাত্রাকুকরণং স্যাৎ তদা তির্ঘাঞ্চনং বিষক্তঞ্চনমিত্যাত্মপি বক্ষ্যমাণযোগৈঃ স্যাৎ অথবা ধাতুমাত্রাকুকরণেহপি নাম ইতি বিশেষণাৎ ক্কির ছ'এব

প্রাচ: প্রাচা প্রাণ্ড্যান্। অপূজায়ামিতি কিম্ ? প্রাঞ্চ: প্রাঞ্জা প্রাঙ্ভ্যান্।

২১৬। অশো ক্লীবেহব্যমত্বে চ।
প্রাক্। হলুপান্তাসুমোহসনীতি লুকি সিদ্ধে বিভক্তো নিয়মার্থমিদম্। শসাদাবেব বিভক্তো নাগ্যস্তামিতি।

২১৭। তদ্ধিতথাচো শদাদী। প্রাচ্যঃ প্রাচী প্রাচম্।

২১৮। **অ**তোহচি প্রাগ্দীর্ঘশ্চ। অপুজায়ামর্থে শসাদ্যচি পরে২ঞ্জতেরতো লুগ্ভবতি। পূর্বেবা

গ্রাহা:। প্রাচ ইতি অন্চু গতিপূজনয়ো: প্রপূর্বা: কিপ্ শনি কতে অতো-হচি প্রাঞ্গিশেতি অকারলুক্ প্রশক্ষাকারস্ত চ দীর্ঘ:। প্রাঙ্ভাা-মিতি অন্চু পূজায়ামিতাস্ত রূপং চজোঃ ক ইতি চন্ত ক উপান্তস্ত বর্গ ইতি নস্ত ওঃ লুগ্যুজোহন্ত ইতি অন্তলুক্। শ্লাদাবিতি কিম্ ? প্রাঙ্ প্রাঞ্চা প্রাঞ্চঃ।

- (২১৬)। শিব্যতিরিক্তে পরে ক্লীবেংব্যয়ত্বে চ সতি অপূলায়ামর্থেইঞ্চলেন কারো লুগ্ভবতি। প্রাণিতি ক্লীবেংব্যয়ত্বে চ উদাহরণম্। প্রান্চ ইত্যয়াৎ প্রাগাদেরভল্লুক্ চেতি অৎ তল্লুক্ চ তদ্ধিতবদাদিখাদব্যয়ত্ম্। অশাবিতি কিম্ ? প্রাঞ্চি। জন্শনোরিত্যাদিনা শিঃ। নমু নলুকি চ কতে ধুনাপ্যতৎ দিধ্যত্যেব তত্মাদশাবিতি কিমর্থমিতি চিস্ত্যম্। যথা গ্রামধ্বৎ গ্রামধ্বদাবিত্যাদৌ কৌ পরে নকারলুক্ তথাত্রাপি দিধ্যত্যেব ইত্যত আহ হলুপাস্কেত্যাদি। অক্ষেঃ কিপ্নিমিন্তলোপঃ শনাদাবেব বিভক্তে) কর্তব্যতায়াং ভবতীতি অথবা লক্ষণমেতল জ্রাপয়তি কিপ্নিমিন্তোহপি লুক্ অঞ্চতের্ন ভবতীতি।
 - (২) ৭) তদ্ধিতয় তদ্ধিতাক শুনাদিবদতিদিখাতে। প্রাচ্য ইতি দিবা-দেরিত্যাদিনা শৈষিকো যৎ প্রাচীতি বাহঞ্তরপদাদিতি ঈ। প্রাচমিতি জ্ঞেনমিতি টণ্।
 - (২১৮)। দ্যুচ ইতি দিব্ধাতো: দিবমঞ্জীতি কিপ্ ৰাজাদিপদে

দীর্ঘশ্চ। নীচা নীচা প্রতীচা প্রতীচা গোচে দূর্টা। সকার ব্যব-ধানান্তিরসোন দীর্ঘা। তিরশ্চা তিরশ্চী স্থীচা প্রতীচী স্মীচী স্মীচীনা তিরশ্চীনা তৈরশ্চম।

্ ২১৯। **ঈত্নৎপূর্ব্বস্থাতঃ।** উদীচঃ উদীচা।

২২০। তদ্ধিতথে চ। প্রাতীচ্যম্ ঔদীচাঃ।

২২১। তিরঃসহসমাং তিরিস্থিসময়ঃ।
অন্চুসম্বন্ধিনাং তিরঃসহসমাং স্থানে তিরিস্থিসময়ো ভবস্তি।
তির্যাঙ্ স্থাঙ্ সম্যঙ্।

২২২। তিরসোহপূজায়াং ন শদাদ্যচি। তিরশ্চঃ।

চেতি দিবো বকারশু উকারঃ। পূজায়াস্ত। গুঞা:। অতো লুকা সহ অধাচর্মানপ্তো দীর্ঘো ভবতি ন তু সন্নিয়োগশিষ্ট: এতৎ স্থচিয়তুমাহ সকারব্যবধানাদিত্যাদি। এতত্ত্ব ফলং সন্নিহিতালাভ ইতি পরিভাষায়া:। সমীচীন
হাত সমাগাদেরীন ইতি ভবাদাবর্থে ঈন: তৈরশ্চমিতি তম্পেদ্যতি টণ্।

- (২১৯)। অপুজায়ামর্থে শদাদ্যচি পরে উৎপূর্ব্যস্থাঞ্চতেরতঃ স্থানে ক্সন্তবতি।
- (২২০)। পূর্ব্ধশক্ষণাভ্যাং বিহিতৎ কার্যাং তদ্ধিতবে চ পরে ভবতি।
 অচি বিহিতং কার্যাং যে পরে ন প্রাপ্নোতীতি বিধানম্। প্রাতীচ্যমিতি
 ব্রাহ্মণাদিস্বাট্ট্যণ্ উর্গাচা ইতি দিবাদের্যদিতি শৈষিকো যৎ। তদ্ধিত্য ইতি
 কিমৃ ? ঈষ্ প্রত্যঞ্জতি।
- (২২১)। তির্যাঙিত্যাদি চজো: ক ইতি চম্ভ কে ক্বতে উপাস্তম্ভ বর্গ ইতি ভকানে ক্তে যুক্তাস্তমাৎ কলুক্।
- (২২২)। অপূঞ্জায়ামর্থে বর্ত্তমানস্তাঞ্চতে: শদাদ্যচি পরে তিরসঃ স্থানে তিরিন ভবতি। তদ্ধিত্বাচো: শদাদিদ্বাৎ তিরশ্চীন ইত্যাদৌ

২২৩। বিষগ্দেবসর্বাদেও দ্রি:। অন্তুসম্বন্ধিনো বিষগ্দেবসর্বাদের তরে ও দ্রিভ্রতি।

২২৪। ডিতি স্বরতচ্ছেষয়োলুক্। বিষয়াঙ, দেবদ্রাঙ্ নুর্ববিদ্রাঙ্ তদ্রাঙ্ স্বান্ত ভ্রান্ত ভ্রান্

২২৫। • অদসো দো মুর্বা মুইর্ডক্রেন্চ।
অন্চুসম্বন্ধিনোংদসো দো মুর্বা ভবভি। ভৎসন্নিয়োগাৎ ডল্লেন্চ
মুই:। অদন্তাঙ্ অমুমুয়ঙ্।

২২৬। মুত্বাভাবেহপি ডদ্রে**শ্চ** মুই:। অদম্যঙ্। অমুদ্রাঙিতি কাতন্ত্রম্।

२२१। व्यर्वन्न खुन न कारमे।

চ ন ভবতি । অপূজায়ামিতি ক্লভং তিরঃসইনমামিত্যাদিনা সামাল্পেন বিধান-মিতি স্ফনার্থম্ । যদি তত্তাপূজায়ামিত্যসূবর্ততে তদিহাপূজায়ামনর্থকং স্যাং এতএব তিরসো নালুকাতি ন ক্লভং বৈচিত্যার্থম্ ।

(২২০)। বিপূকাৎ সো: বে: প্রাদিবোর্নার্মে ইতি যক্ষ বিষু অঞ্চীতি কিপ্ বিষক্ সর্কাং পূর্কাবৎ।

(২২৪)। ডিতি পরে সর্ম্য তচ্ছেষ্ম্য চ নুগ্ভবতি। স্নিহিতালাভ ইতি আয়াদস্ক্রম্বরো লুপ্যতে তচ্ছেব ইতি তৎপদেন স্বরঃ পরাম্প্রতে তস্য শেষঃ তচ্ছেষঃ তদবচ্ছিরোহস্ত্রভাগঃ। স্ক্রানীত্যাদিপদেন চ পূর্ব্বাদরোহিণি গৃহস্তে নম্বরাদয়ঃ। স্বামঞ্চতীতি স্বদ্রাঙ্গ স্বন্ধাবেকত্বে পদপ্রত্যমন্ত্রো-রিতি স্বনাদেশঃ। শ্লাদি। তু। অপুলায়ামতো লুকি শীর্ষতে ক্তে বিষ্দ্রাচ ইত্যাদি। প্রায়ন্ত বিষ্দ্রাঞ্চ বিষ্দ্রাঞ্চা।

(२२८)। इत् नकात्रशानी अकात्रख उक्कात्रनार्थः। अनुप्रादिखि जिनानमृत्कः।

(২২৬)। মুদ্বাভাবে সতি ডব্রেশ্চ মুইর্ডবতি। ইতি ভূতীরঃ পক্ষ:। অমুদ্রাঙিতি কাতন্ত্রমিতি চাক্রাণামপ্যেতং সন্মতং কিন্ধ নৈতং ত্রিমুনি-সন্মতমিতি বৃত্তিকারেণাপেক্ষিতম্।

(२२१ । अत्रार्धाः कारमः कनिष्ठि कन् अखात्रारसा १ वर्षः । असः

অনঞি সত্যসৌ পরে অর্বন্যক্ষ্য নকারস্তপ্রতায়ে। ভক্তি । অর্বস্থে অর্বন্তঃ অর্বতী আর্বতম্। অনঞাতি কিম্। অবং র্বাণো। অগাবিতি কিম্ অর্বা।

২২৮। মঘবদো বাদো নঞি চ।

মঘবান মঘবা। হবিজ কিতি নিঃশকো মথৈষু মঘবানসাবিতি
ভটিঃ। মঘবতো মঘবতী মায়ৰতম্ অমঘবান অমঘবতো অমঘবতী অমাঘবতম্।

২২৯। বঁহুত্রীহো বয়দি স্থদংখ্যাভ্যাং দন্তদ্য দতৃঃ । স্থদন্ স্থদতী দ্বিদতী।

প্রভারাবরবাদেশস্থাপি তুইতাক্ত প্রভারত্বমঙ্গীকরণীয়নিতি মত্বা ব্যাচকার ত্প্রভারো ভবতীতি। অতএব স্ট্রানিদিভাদিনা স্থ্ এব ভবতীতি। অত্যে তু অগ্রথা ব্যাচকতে তুর্রমাদেশ এব স্থট্যানিংপ্রভারাদেরিভাদিপদেন আনেশস্থাপ্যানিতো গ্রহণন্। এবং দ্রাদেশস্থাপি। অর্কানীতি স্ত্রাত্ব- ব্রক্ষারাং নান্তবাদীপ্রভারঃ পশ্চাত্বাদেশঃ। আর্ক্রতমিতি ভ্রাপত্যে ওপ্রদমি ত রা টণ্ অনর্বাণাবিতি অচান্নিভান;

২২৮)। মধ্বন্শক্ষ নকারোহসৌ সৌ চ পরেহন ঞি ন ঞি চ সতি তুর্বা ভবতি। মধ্বেতি স্থাট দীর্ঘ ইত্যাদিনা দীর্ঘঃ নোনাস্থভেতি নকারপুক্। মধ্বানিতি অন্ধন্তাসক্তাধাতোরিতি দীর্ঘঃ মুক্তান্ত নুক্। দ্বিচনাদৌ
মধ্বানৌ মধ্বানঃ পক্ষে মধ্বক্তো মধ্বন্ত ইত্যাদি। দ্রিয়াং মধ্বোনী মধ্বতী
টিনি মাধ্বতং মাধ্বনম্। তুরাদেশোহত বিধীরতে আতো দীর্ঘবিধানাভাবাৎ
মধ্বন্ মধ্বন্তা ইভি বামনেনোদাহতং তত্ত অস্বরসাৎ ভট্টিপ্রয়োগঃ প্রমাণস্বেনোপদশিতঃ। অতএব সৌ চ ম্ববান্ মধ্বা ইতি কালাপত্তম্। মধ্বান্
মধ্বন্তো মধ্বন্ত ইতি মতুপা সিদ্ধ্য ম্ববিয়িত প্রক্রান্তরম্বন্তীতি চল্লেণ
প্রতাধাতং ক্রমাৎ স্বন্তং তত্ত সম্মতম্। যত্তবং ভাষো অর্কাণস্তম ঘোনস্বর্গ নিষাং ছান্দ্র্যং হি ভূদি ত।

় (২২৯) বৃহত্তীহো সমাসে সৃতি বয়স্তি, গমামানে সুইত্যন্ত্ৰাৎ

হও । ক্রিয়াং নান্ধি। আয়োদতী ফালদতী।

২৩১। শ্রাবারোকাভাগে বা।

শ্যাবদন্ শ্যাবদন্তঃ অরোকদন্ অরোকদন্তঃ অদীপ্তদন্ত ইত্যর্বঃ। নান্নীত্যেব। শ্যাবদন্তঃ অরোকদন্তঃ।

२७२। व्याखारमवी।

কুশাগ্রদন্ কুশাগ্রদন্তঃ। শুদ্ধ শুদ্র বরাহ অহি মূষিক ব্যক্ত শিখর গর্দ্দান্ত।

২৩০। স্থাট্যগিৎপ্রত্যরা**দেমু** ম্ । স্থাট পরে উগিৎপ্রতায়াদেরুত্তরে মুস্কবতি।

- (২৩০)। বছব্রীহৌ সমাসে সতি ব্রিয়াং বাচ্যায়াং সংজ্ঞায়াং বিষয়ে দস্তস্ত দত্রিত্যসমাদেশো ভবতি। অয়োদতী ফালদতী কন্তান্চিন্নাম। নামীতি কিমৃ ? বিশ্বদন্তী।
- (২৩১)। শ্রাব অরোক ইত্যেবংপুর্শ্বস্ত দক্ত**ন্থ বছ**ত্রীহৌ নামি বাচ্যে দত্রব ভবতি।
- (২০২)। অগ্রশকোহন্তো যন্ত সোহগ্রান্তঃ তদাদেক্তরন্ত বছরীহোঁ
 সমাসে দক্ত দত্ব ভাতি। নেতাহ্বতো প্রাথায়াং প্নবেতি কতং
 নামীতাভাত্বভিশকানিরাসার্থম্। দ্যোতিতান্তঃসভৈঃ কৃষ্কুট্যুগাগ্রদতঃ
 আইতরিতি মাবং। বছরীহাবিতি কিম্
 সমাসান্তরে মা ভূৎ ব্রদন্তঃ।
 অগ্রান্তরন্তনাঃ শিধরবরাহাহিম্বিক্রবান্চ গর্মভ ইতি। অগ্রান্তান্তরে
 অক্রেণ গর্মভোগ গ্রিভা নেইঃ।
 - (২৩০)। পুন্দাধীনামুগিৎ প্রত্যরাম্ভকমতিদেশুম্। আদিপদেন 😜

২৩৪। মিদস্যাচঃ পরম্।
প্রায়য়জীতি স্প্তিঙ্কত্তিতাঃ প্রতায়ঃ। ভবান্ ভবজে
ভবজঃ। বহুপ্রেয়ান্ ক্রবিবান্ পছন্ পুমান্ মহান্ রুহন্ পুদন্
জরন্তুপন্।

ব্নক্তেরসমাসে ইত্যাদিসংগ্রহ:। তেন প্রিরপুংসী মহতী বৃহতী পৃষ্তী জরতী তুপতীত্যাদি। ঋতুগিদিভাদিনা ঈপ্রতারেন সিধাতি নদাদিদ্বমেবা কম্মারোচাতে। এবং সতি অভিমহতীত্যাদৌ ঋতুগিন্নান্তবর্জন প্রধানার্থা-দিতি ঈপ্রতায়প্রতিষেধং স্যাৎ নদাদৌ ভূমহৎ বৃহৎ পাঠঃ প্রমাদক্বত:।

। ২৩৪)। অচাং ক্রমসন্নিবিষ্টানা বোহস্ত্যোহচ্ সোহস্তাচ্ তত্মাৎ পন্নং মিন্তবতি। প্রতায়সংক্ষা অস্মিন্ শাস্তেইস্ক্র ছাৎ কে প্রতায়া ইতি প্রাপ্তে আহ প্রত্যাক্তমন্ত্রীভাগনি প্রত্যাক্তমন্ত্রি কোধকুন্তি অর্থানিতি প্রত্যাক্তমন্ত্র ইন গতাবিত্যস্থাৎ অন্তর্জাবিণার্থদ্বাৎ প্রতিপূর্কাং ঋদুভাদের্ভ ইতি ঙঃ অথবা প্রতীয়তেহর্থোহম্বাৎ প্রতীয়তে অনেনেতি বা প্রজায়: যেন হৃথা: প্রতীয়ক্তে সোহবক্তমর্থান প্রত্যায়য়তীতি পর্যাক্ষরতার্থবাক্ষরোহয়ং তে চ স্প্ কিড্ রুভিজিতাঃ প্রত্যায়াঃ কিঙ্পদম্পলক্ষনং তেন তিঙ্পাদ্বিহিতাঃ সনাদয়োহণি গৃহুত্তে স্বন্ধ্রথা বৃত্তমতীতাাদৌ অপ্রতাষাব্যবস্ত চেতি প্রতি-दिशां क्वि निर्देश मार् अल्बन दोशकाकृषः ४ अत्रमक्ताकम्। यमाणि প্রক্ষতিরপার্থং প্রত্যায়য়তি তথাপি ন তত্ত প্রত্যয়পদং রচ্ম। বত্ত তু প্রকৃতেবাগ্রুগা চ উগিত্বং ন তত্ত্রুগা । উথাপ্রং অমি চৎ প্রনৃত্বা প্রনৃত্ব क्ष्यक्षामा किल् इनुभारक्ष्यानिमा नकात्रनुक् क्वारमञ्जू हेर्जि ममा जः পোমস্তমিচ্ছতি গোমতাতি ততঃ কিণ্ কৌ ষ টৈতি ফলুক স্কটি পৰে উ পংপ্রভারনিরদ্ধন ক্রম ভবভোব গোমানিভি ভবানিতি পূর্কবং। বহ-त्यंत्रानिष्ठि आणिः शिक्षा म त्रायांत्रेयमानिष्ठि अभगनक्षमा अः आएमन विधानमायर्थाक्ष्ववश्वना नशाचानीय प्रः । वहनायन मह वहवै।हिः ममारमश्री উদ্বিংপ্রতান্ত্রনিবন্ধনোহত্ত সুমিভানেন। স্থতিতং দীর্ঘো মহংসাস্তোদাবিতি দীর্ঘঃ। के बिहानिकि देव भ को वस मिबक्का शकिन यमान बतमानि क वार्गित शिन्हें

२७৫। ৢযুনক্তেরসমাসে। 'বুঙ্যুঞ্চো যুঞ্জঃ। সমাসে তু। অখযুক্ অখযুক্জা অখযুক্জঃ।

২৩৬। সাবনজুহঃ।

অন্ত্ৰান্।

२०१। न क्लोर्द।

ক্রেয়ঃ পচৎ।

২০৮। শতুরীতি শঙ্যদ্ভ্যাম্। ঈতি পরে শঙ্যন্ত্যামুত্রস্মাৎ শতৃপ্রত্যাত্ত্তরে মুম্ভবতি। ভবন্তী ভাবয়ন্তী স্ত্রী কুলে বা। দীব্যন্তী।

ক্ষাবিত্যাদিনা ইয়্ইকারেণ বিক্ষক্তি: দুর্গি:। পুমানিতি পুমদ্ ইত্যন্থাৎ
সৌ ক্তে হলি লুক্ পংসোহদ ইতাদ্স্কি প্রাপ্তে স্থান্ ক্তে অন্রপভা হাবার অস্লুক্ এবামন্থ গিংপ্রতায়ত্বাৎ ন প্রাপ্রোতীত্যুপালানং তথাহি
পুমসিতি পা ধাতো: প্রাদেরসিতাদ বছলাধিকারাৎ পুমাদেশেন চ সিদ্ধা
মহলাদবত্ত মহ্ পূজায়াং রহি রন্ধে পৃষ্ সেচনে জ্বায়োহানো তৃপ্ প্রীণনে
এতাঃ প্রাদেরনিত্যৎপ্রতায়াস্তাঃ।

- (২০৫)। স্থাটি পরে যুজির বোগে ইত্যন্মাত্তরেহ্দমাসে ন্স্তবতি।

 যুদ্ভিতি সৌ কতে চলোঃ ক ইতি জন্ত কঃ উপাস্তক্ত বর্ম ইতি নক্ত ঙঃ

 অধ্যুগিতি উপপদে প্রাদৌ চেতি কিপ। যুনকীতি নির্দ্ধেশা যুজ্ সমাধাবিত্যন্ত দৈবাদিকস্ত নিরাদার্থঃ। তেন যুজমাপনা ঋষয়ঃ ইতি ভাগবৃত্তিকারঃ কেচিং সামান্তগ্রহণমিক্তি
- (২০৬)। অনজাহ ইত্যশ্বাৎ সৌ পরে স্কন্তবিত্ত। সমুদ্ধৌ হে অনজুন্।
 कচিনেব লিক্ষবিশিষ্টস্থাত্তহণাদিহ ন ভবতি। অনজ্হী অনজাহী।
- ·২৩1)। পূর্কবিহিতো হ্ম্ ক্লীবে ন ভবতি। শ্রেরাংগীত্যাদৌ ভূ শাবচোহঙ্যান্ততে ত হঃ।
- (২৩৮)। ঈদিতি শহুগিদিত্যাদিনা কৃত্ত ঈপ্রত্যরক্ত ঔদীৎ ক্লীবা-চেতি কৃতত চ গ্রহণম্। অথবা ঘাত্যাং ধন্দং কৃতা ঈদিতি নিদেশিঃ।

২৩৯।: অতো বা।

ভূদজী ভূদন্তী ভবিষাজী: ভবিষাজী:। ফাজী: যাস্ত্ৰী:। অনভস্তা।
প্ৰাপুৰতী কুৰ্ব জী।

২ ৭০ । ন'জকাদিহবাদে:।

জকাদেজু হোত্যাদেশ্চোবক্তমাতহত্প্রভায়াছ্ত্রের প্রাপ্তো মুম্ না

জবতি । জকৎ জকতে জকত জকত জকত । 'জক জাগৃচকাস্য শাস্ত দ্বিজ্যা । জুহবং বিভাগ-পাসচং পুরান ।

২৪১। শৌবা। কতি জকন্তি।

ত্তবস্তা ভাষমন্ত্ৰীত্মভারোরেকোনাহরণমিতি স্ত্রী কুলে রেতি বিশেষপদ্ধরেন। প্রাচ্ছ্যাদেরিভাকোরে, লুপ্তে জ্বেদেশবিক্তমনজ্যভ্রতীতি তকান রিভাকান।

- (২০৯)। পূর্মবোগাদিতরোহস্কাবিবর:। ঈকি পরে অক উতরক্ষা-ফ্রপ্রতারাচ্তরে হ'বা ভবতি। হুলোক্তা দীর্ঘসাপি। গ্রহণাং যাতী: যাস্ত্রীতি। প্রায়ুবতীতি প্রপূর্ম আপু ঝাণ্ডৌ মুং। কুর্ব তীকি কঞো-হতিত্যং ইত্যুৎ ক্রপ্রেইডিড্রা রক্তর করো: তুর্ম্ ইব্যুতে ডেন্ফ কুর্ব স্থীকি ধাতুপারায়ণে ব্যবস্থিতং তর্মহুনামসম্বর্মিকি প্রভ্যুদাক্ষ্যং তেন নুনতীত্যক্র তু নুগচীকি প্রথমমাকারদ্ধি ক্রকে মুম্ নাত্রতি।
- (২৪০)। ইট্রাগিদিত্যাদিনা প্রাথক্ত সুমঃ প্রতিষেধঃ। জ্রক্ ভক্ষ-হসনরোঃ লাগু নিদ্রাক্ষরে দরিজা ছর্গজে চক্ষাস্থ দীর্জো লাক্স অমূলিটো এতে পঞ্চ অক্ষনরঃ। পাপচদিতি জ্ঞাদিবদ্যন্দুগন্ত ইতি জ্ঞাদিত্বং পুমা-নিতি বিশেষ্যপদোপাদান নপুংসকনিরাসার্থং তদৈন ন ক্লীর ইতি নিষেধে। নৈব সিদ্ধন্।
- (২৪১)। ন ক্লীব ইতি প্রতিবেধে সক্তি বিজয়বিধানম্। জক্ষাদে-জুহোজ্যাদেশ্চ শতুরুত্তরে শৌপরে হুম্ বা ভবতি। শাবচোহঙ্যান্তপ্রেজি ক্লুছে পাঞ্চি সুম্বিধ নসামর্থাদেব ন ভবতি।

২৪২। দ্বীর্থো মহৎসান্তো নো । নো সভি মহৎসান্ত দীর্ঘো ভরতি। মহান্ শ্রেরাংসো রোচীংবি বপুংবি।

২৪৩। হল্লি লুক্ পুংসোহসঃ। হলি পরে পুমস্শবস্থাসো লুগ্ভবতি। পুংভাাং পুংলিকঃ স্থপুং কুলম্।

২৪৪। স্বরেহপি সমাদে। পুমর্থা।

২৪৫। কাদৌ শসাদাবিচ চাতঃ।
কাদৌ শসাদাবিচ চ পরে পুংসোহতো লুগ্ভবতি। পুংসোকিলঃ
পুংস্বং পুংসঃ পুংসা স্তপুংসী। স্ত্রী কুলে বা। স্ত্রীপুংসাভ্যাং
প্রিয়পুংসী পোংস: পোংসিক:। *

⁽২৪২)। সাস্ত ইত্যত্রাকার উচারণার্থ:। নাবিতি মুসুমোরুভয়ো-গ্রহণম্ এভদর্থমেবোভয়োরুকারামুবদাকরণং প্রকরণনিয়মাদিদিদ্ধাতোত্-মিত্যক্তাগ্রহণম্। অতএব হিসি হিংসালামিতাক্ত কিবস্তক্ত স্থাইন স্কুহিংসো স্বহিংসা ইতাত্র দীর্ঘবাভাবঃ। শ্রেয়াংসাবিতি পূর্ববং। রোচীংবীতি জস্ববোরিত্যাদিনা শৌরুতে শাবচোহঙ্যাস্তক্তেতি স্থ:।

⁽২৪১)। পৃংভ্যামিতি সো মন্বর্থে চেতি বক্তবামিতি পদান্তবন্ধাৎ বর্গে না ভন্ধর্যান্ত ইতি পক্ষে মন্ধারঃ। পৃংলিক ইতি পুমান্ লিক্সয়ন্তেতি বহু-ব্রীহিঃ এবং স্থপ্মিতি অসি লুপ্তে হলন্ধামো লুগিতি স্থলুক্।

⁽২৪৪)। সমাসৈকদেশে সমাস উপচারাৎ। সমাসাবয়বে স্বরেহিপি পরে পুমদ্ ইত্যক্তাসো লুগ্ভবভি। যদি সমাসে সতীতি ভাৎ তদা পর্ম-পুংস ইত্যত্তাপ্যস্তুক ভাৎ।

⁽২৪৫)। শসাদাচীতি কর্ত্ত:বা ভিরুপদনিদে শো বা দদাদিরিভাত্র শসাদাবিভাগ্রাস্থ্রার্থ:। ব উচ্চ্বাদেরিভাত্র ভূ অচীভাপাস্বর্গতে। পুংকোকিল ইভাত্র পুর্মেণাস্পুকি প্রান্তে বিধানম্। অলুধিধানসামর্থাদের শুগাযুজোহন্ত ইতি সনুগপি ন ভবজি। পুনাংশ্যামে কেকিলন্টেড

২৪৬। ঈয়াদো চ। শংশ্বতি পুংশ্বতে পোংস্নং নপুংসকম্। ২৪৭। ন শাদো।

न्द्रभया।

২৪৮। অনচ্ঙ্যপরে কাদে খাঞি চ। পুংক্ষীরং পুংখ্যানম্।

২৪৯। **অসম্বোচ।** স্থপুংকরোতি স্থপুংচলতি।

কর্মণারয়ঃ পুংলোহপদাস্তে চেতি অমুস্বারঃ স্ত্রীপুংসাভ্যামিতি দ্বন্দ্ব ইতামু-বৃত্তো স্ত্রমাঃ পুংস ইতাৎ। পৌংসঃ পৌংসিক ইতি সাধনং নিরূপণীয়ম্। কাদাবিতি কিম্ १ পুংগবঃ।

- (২৪৬)। ঈয়াদৌ পবে প্ংসোহতো লুগ্ভবতি। পুংস্ততীত্যাদি পুম্দ্ ইত্যস্থাৎ তুল্যাচারে চামস্তাব্যয়াদীয় ইতি ঈয়ঃ কর্ত্রয়ঃ স্ত্রীপংবদ। লুক্ চেতি আয়ঃ হলিজ্ভামীয়ায়োরাদেরিয়াদিলুক্। নপ্ংসকমিতি ন স্ত্রী ন পুমান্ ইতি নপুংসকং ন নথাদেরিতি নঞোহদ্ভাবনিযেধঃ। নিপাত-নাদিইদিদ্ধিরিতি ন স্ত্রীপদলোপঃ অক্বিধান্ধ।
- (২৪৭)। শাদৌ পরে পুংসোহতো লুগ ভবতি। অতোহসো লুগেব ভবতি।
- (২৪৮)। অচ্ঙ্যব্যতিরিক্তে পরে কাদৌ খাঞি চ পরে পৃংসোহতো
 লুগ্ন ভবতি। অঙ্য ই গ্রনেন ঙ্যব্যতিরিক্তো হলেব সর্ব গৃহতে। তথাপ্যজ্নিষেধাহপাত্র কৃতঃ স্পষ্টার্থঃ। খাঞো যকারঃ সকারস্থানীয়ন্তভাসিদ্ধতাৎ পৃংখ্যানমিতি সিদ্ধিঃ পানিনীয়ানাং ঞকারবতো নির্দেশাৎ
 খ্যাবাতৌ পরে অতো লুগ্ভবত্যেব।
- (১৪৯)। পরিস্থাপবাদবিষয়মুৎসর্গোহভিনিবিশত ইতি কাদিপরতাত্ত ভবিষ্যতীতি। যদা অস্ব্রুক্ ন ভূতন্তকা প্রাপ্তশালুকোহরং নিষেধঃ। অসন্ধৌ চ সতি পুংসোহতো লুগ ভবতি। বর্ণানাং ক্রততরোচ্চারণং সন্ধিঃ। যদা সন্ধির্ত্তবিভ তদা স্বৃপ্থক্ষেরাতি স্বৃপ্থক্ষেত্রভিচাদ্যেব ভবতি।

२००। वा नर्नानिन खाटनः।

नजामि भरते मखामः श्वात ममामिर्व। ভवि । मखान् मछः भूमाय् स्व। भाम भाम् भाम् भाम् भाम् भाम् भक् । भाम भाम् साम् भक् भकन् यक् यकन् याम आमन् माम् एताय मामन् यक् व्याप्त । अमन् सामन् स

২৫১। তদিকুস্থান স্নিত্যম্। নস্তঃ নঃকুজঃ।

২০২। যত্যবর্ণনগরয়োষ্ট। নাসিক্যোর বর্ণনাসক্যার্থ। নাসিক্যোর । নাসিক্যোর । নাসিক্যোর ।

২৫০। **অন্তিকোহন্তিত্তসৌ।** অন্তিত:।

⁽২৫০)। দন্তাদয়ন্তরোদশ দদাদয়ন্ত। যক্তং হৃদয়য়য়িছিতমাংসবিশেষঃ
লকং পুরীষম্ অস্ক্ রক্তম্। পদঃ নিশঃ মাভাগং মাভিঃ সোমত্বর্থভসোলতি পদান্তবরাদিসর্গঃ আতো ভোভগোহঘোভ্যশ্চাকাদাবিভি বিস্পান্ত্রি। যকঃ শক্তঃ আলা দোফা উদ্না অলা নসা নোভ্যাং হৃদি। হৃদয়ন্সমানার্থে হৃচ্ছেকোহপান্তি। তথাচ, হৃদ্জোগঃ হৃদয়রোগাদিসিদ্ধর্থং বৃদ্ভিক্ষক্তাতি হৃদ্দহয়াভ্যাং ক্পমিতি। তত্তাং হৃদয়াদেশবিধানং প্রমাদক্তনিতি লক্ষ্যতে।

⁽২৫১)। তসৌ কুড়শক্ষে চ পরে নিতাং নসাদেশো ভবতি আদেশেন প্র্কোক্তস্থানী আক্ষিপ্তঃ। নস্ত ইতি রহ্ হাকোরিভ্যাদিনা তসিং। নংকুজ ইতি নাসিকা কুড়া অভেতি বহুরীহিঃ।

⁽২৫২)। বর্ণনগরবাতিরিকার্থে বিহিতে বতি পরে নিতাং নসাদেশো ভবতি। নন্তমিতি তত্র ভবেহর্থে প্রাণ্যঙ্গাদিতি বং। নাসিক্যো বর্ণঃ নাসিকাং নগরকেতি হিতার্থে সাধ্বর্থে বা বং।

⁽২৫৩। অ.ভকশবস্তানী পরেহস্তির্ভবতি।

২৫৪। পদ্ধিমাদো সমাদে পাদঃ। পদ্ধিমং পদ্ধতিঃ।

২৫৫। হিংসার্থঃ কৃষ**্।** পৎকাবিশঃ পদ্গা: । পদ্গা ভরম্বাজমুনিং স্পিষ্টি ভটিঃ। অসমাসে তু। ভোঃ পাদ হিমং স্পৃশ।

२०७। श्राप्तः भिना

নিকঃ পরিকঃ।

ঝচং পচ্ছঃ প্রশংসন্তি পাদং পাদমিত্যর্থ:।

২৫৭। শঁকমি আহোধনিকে বা। পাদশকঃ পচ্ছকঃ পাদমিশ্রঃ পদ্মিশ্রঃ পাদহোয়ঃ পদ্ঘোষঃ পাদ-

২৫৮। অকিবন্তঃ শশ্চো ভাগে ততঃ সঃ শশ্চ। নিজ্ভাাং নিচ্ভ নিচ্ছু।

⁽২৫৪)। সমাদে সতি হিমাদৌ পরে পাদ: পদ্ধবতি। পদ্ধিন্যতি যতীসমাস: পদ্ধতিরিতি ক্তান্তেন হতি শকেন কতাকর্ত্করণয়োব হলমিতি সমাস:।

⁽২৫৫)। হিংসার্থ: কষ্ হিমাদিউবতি। কষ্ হিংসার্থ: পঠাতে। পংকাষিণ ইতি নিন্ তচ্ছীলাদৌ স্থপীতি নিন্ নিনন্তলৈ হিমাদৌ পাঠ:
ইত্যুদাহরণদর্শনাদেবাবগন্তব্য:। পালাভ্যাং গচ্ছতীতি পদাং অন্ততাহিপি
দুক্তাত ইতি ডঃ পালভাজায় ভাপহতগেষিতি হুম্বেন পদ্গ ইতি চ।

⁽২৫৬) ঝচঃ সম্বন্ধী পাদশব্দঃ শসি পরে পদ্রবৃতি। বিতীয়া বহুবচনে
শসি পরে পদাদেশ উক্ত এব অতস্তন্ধিতশ্বসাহত গ্রহণম্। চহুর্থাংশবাচক
এব পাদশদঃ ঝচঃ সম্বন্ধী পদ্ধবৃতি। পচ্ছ ইতি সংবৈধাকাথাদ্বীপায়ামিতি
শস্। শণত্রে চণত্রা ইতি তম্ম চঃ শশ্ছ ইতি শস্ত ছঃ পাদং পাদমিতি বীক্ষার্থক্থনম্। ঝচ ইতি কিম্ম পাদশঃ কার্যাপণং দদাতি।

^{`(}২৫৭)। সমাসে সতি শব্দাদির পরের পাদশবাঃ পদ্বা ভবতি। পাদশব্দপচ্ছকাভ্যামেব রূপদ্রসিদ্ধিউবিয়তি। ন চ বাচ্যন্। পচ্ছশব্দপ্ত
ভাষ্যব্রবানিষ্ঠ্যাব।

⁽২৫৮)। অক্রিড: শকারো ভালে। পরে চকারো ভবভি। তভ

২৫৯। ্ন তদ্ধিত্যাচোঃ। . শন্তে ভবো দন্তাঃ দান্তিকঃ।

২৬০। ব উচ্ছ্যাদেব হৈ। বাপ্যে চিচ।
শসাদাবিচ পরে খাদেব কার উত্তবতি। রাহো রাকারোহপ্যোক্ত।
শুনঃ শুনা যুনঃ যুনা মঘোনঃ মঘোনা।

২৬১ ° ঈবর্জ শ্বেন্ যুবন্ মঘোনাং ন তদ্ধিতাচি। শোবং যৌবনং মাঘবনম্। ঈতি তু—শুনী যুনী, মঘোনী।

২৬২। বস্থবাহোস্তদ্ধিত্যে চ।

উত্তরঃ সকারণ্চ শো ভবতি। ভ্রস্থান্যস্তজ্নামিতি প্রাপ্তে নিধানম্। নিচ্ভ নিজু ইতি শশ্ছ ইতি পক্ষে ছকারঃ। অক্বিস্ত ইতি কিন্ ? 'বিড্ভ্যাং বিট্স্ক।

- (২৫৯)। ভদ্ধিত্যাচোঃ প্রয়োদ স্থাদেঃ স্থানে দলাদিন ভবতি। ভদ্ধিত্যাচো শসাদীতি প্রাপ্তে নিষেধঃ। দস্তা ইতি তত্ত্ব ভবেহর্থে প্রাণ্যঙ্গা-দিতি যথ।
- (২৬০)। দপ্তাবকারোহকারবান স্থানী মখবলো বা সৌ নঞি চেতি মকারস্থ তৌ কতে একনেশবিক্তমনস্থবতীতি মখবতো মঘবতে ইত্যাদৌ কথং উল্পং ন ভবতি। উচ্যতে। সাহচর্যাৎ নকারাস্থানামেবামীধাং গ্রহণাৎ অতএব মঘবনিতি গণেহপি পঠিতং।
- (২৬১)। ঈকারং বজ্জ মিছা খাদীনাং ত্রমালাং ভদ্ধিতাতি পরে উন্ন ভবিত । তদ্ধিত্যাচোঃ শুসাদিছাৎ প্রাপ্তৌ নিষেধঃ। শৌবমিতি প্রাণি-জাতিবন্নোবাচ্যালানোদের্গড়িতি গটু থৌবনমিতি যুবাদিহামনাস্তাচ্চেতি টণ্। মাধবনীমিতি তদ্দৈবতে ইতি টণ্। গুনীতি ক্ছণিদিত্যাদিনা ঈ। অচ্যের প্রাপ্তাবচীতাত্র কৃতং স্পুটার্থম্।
- (২৬২)। চকার: পূর্কবিধেরের সমুচ্চরার্থ:। শাসাদারটি ভদ্ধিভূমে চ পরে বসোর কার উদ্ভবজি। বাহো বাকার ওচ্চ। বিছম ইভি
 বিদ্ জ্ঞানে বহুরে ভেল ভূচেতি বহু:। পেচ্ব ইভ্যাদৌ রাধিকভেড়-

বিছ্যঃ পেচ্যঃ বিছ্যী বৈছ্যাং বৈছ্যিকঃ প্রষ্ঠোহঃ প্রষ্ঠোহী প্রাষ্ঠোহ্য

২৬০। চতুরনড়হোর। উচ্ছসাদো সমাসেহশো ক্লীবে তদ্ধিতে ঈয়ায়্ কাম্যে চ। চতুর: চতুর্ভি: চতুর্খঃ। বদ্ধানড়ৎ কুলং আনভূহিক: চতুর্যাভি চতুর্যাতে অনভূহতি অনভূহতে অনভ ৎকাম্যতি।

২৬৪। ব্রিয়ামনভূহে। বা। মনডুহী অনড়াহী।

কাজিণ্ ঘদাদস্তাবদা ইতি ব্যাদিখাদিহিতোহপীট হলো নিমিন্তপ্তাপাপারারিবর্ততে। বৈছ্যিক ইতি তদহ তাদো টিকণিতি টিকণ্ বৈছ্যামিতি
প্রাষ্টোহ্মিতি সামণাদিখাটণ্। প্রচৌহ ইতি অদস্তাহলেতি কিপ্
দীর্ঘাদা কালাপাস্ত অনদস্তাদপি বহুঃ কিপ্ দীর্ঘাদা ইচ্ছন্তি বাকার্জাপ্রকার্ঘা তেন শাল্যহঃ শাল্যহা ইত্যাদির্ভবিত। ন ভদিহেব্যতে
ভাষাদিবিরোধাৎ।

ক্ষোম তৌ চেতি বক্সবাম্। বদোব কাবো মতৌ চ পরে ভৈছবতি। পেচুম্মান্ বিহুম্মতী সভা পাণিনীয়ানামেতন্নকণং সিদ্ধমেব। কাতন্ত্রটীকা-কারোহণি বক্তব্যঞ্চকার।

(২৬০)। চন্ধার্ অনজাহ্ ইত্যেতারো: শসাদৌ পরে সমাসে সভি
শিবজিতে ক্লীবে চ তদ্ধিতে ঈরি আয়ি কাম্যে চ পরে বকার উদ্ভবতি।
সমাস ইত্যানেনৈব বদ্ধানজুৎ কুলং প্রিয়চতু: কুলমিত্যারাপি সিধ্যত্যের তথাপি
ক্লীব ইতি কৃতং সমাসাম্ভরম্বিভয়োরনয়ো: ক্লীব এব যথা ভাং। তেন
প্রিয়চন্ধা: প্রিয়ানজানিতি ভবতি। আনজুহিক ইতি প্রমাদোদাহরবং
তদ্বিভয়াচো: শসাদিয়াদেবাত্র প্রাপ্তিস্কাদনজুৎক ইতি প্রস্তাবম্।

় পিঙি চেতি বক্তবাম্। পি'ঙ চ পরে চন্ধার অনত্বাহ ইজ্যেতরোব াঁকার উদ্ভবতি। অনত্বাহমাচণ্টে অনভয়তি এবং চত্তয়তি। শৌ তু — চন্ধারি প্রিয়চন্ধারি। ঙ্যান্তবার স্থাঃ প্রিয়ানড্যাংহি।

(২৬৪)। অনভাহ ইভাভ বাকারব্রিরাম্থা ভবতি। অমূড্রী অবভাহীতি ন্বাদিপাঠানী। २७४। नारवारि स्मी निवः। स्मी भरत नावि बाठााग्रार निरं वा वकात्र श्रेष्ठविछ। स्मीः। नावीिछ किम् १ निवृकिभ् मृाः।

২৬৬। হ্লাবে। অবে হলি পরে দ্যবি বাচ্যায়াং দিবো ব উত্তৰভি। ছ্যাজ্যাং ছ্যাময়ম্। অম ইতি কিম্? দিবি ভবো দিবাঃ।

২৬৭। যাজাদিপদে চ। ছ্যযানং দ্যুদানং দ্যুবর্গী। ২৬৮। উদ স্তাবান্তস্ত।

. मित्रू मृख्श छित्रू छ्राज्श मित्रू मृाञम्।

⁽২৬৫)। দ্যোশব্দেনাকাশং স্বৰ্গশ্চাভিধীরতে তবাচকো দিব্ শব্দোহ ব্যুৎপরস্তত্তারং বিধিঃ। বিমল্ফা দিনমিতাত্ত ঔকারে ক্তে হুস্বোহ্ত কীৰ ইতি হুস্বঃ। দ্যুরিতি কিপীতি বকারস্তোকারঃ দেবনমন্তার্থঃ।

⁽২৬৬)। মণ্ডুকপ্লাধিকাছদিত্যম্বর্ততে। যদি সন্নিহিতমৌদিত্যমুবর্ততে তদা পূর্মাশক্ষণমনর্থকং স্যাদনেনৈব তৎসিক্ষে:। ছ্যমন্নমিতি আদিবৈজ্ঞাদেকাচ্ শ্বাদেরভক্ষবপ্রমোরিতি মন্ট্। সামান্তবিধানাদনে হলি পরেহপি স্থাৎ তেন দিবি সীদতি দ্যুদ্দিত্যাদি সিধতি দিব্য ইতি দিবাদের্বক্তবাদাবিতি বং দ্যবীত্যেব দ্যুভান্। হলীতি কিন্ ? দিবৌ দিবঃ।

⁽২৬৭)। বন্দ জ্বান বানে বানে আদী বস্তু তৎ বাজাদি তান তৎ-পদক্ষেতি ৰাজাদিপদং তদিন্ পরে দিব ইত্যস্য ব উত্তবতি। পদং ক্ষবন্তং তিভন্তক্ষেতি। ভিঙন্তপরতা দিবো বকারস্য ন সন্তবতি। স্ববন্তপরতাপি সমাস এব সন্তবন্তি জ্বতঃ সমাস এব উত্তবতীতি। ছাবানমিতি দিবো বানমিতি বন্তীসমাসঃ। বাজাদীতি ক্ষতং স্পান্তার্থন্। এতদপ্যবে হলি পরে ভবতীতি মন্দবিরাং শহা স্যাৎ।

⁽২৬৮)। সামাজেনৈত্বিধানমিতি ভিঙাল বেতি লক্ষণ জ্ঞাগরতি। ন হি স্থাপি ভিঙাল সম্ভবাসীতি। ক্ষমে হলি পরে স্ক্যাব্কারক উর্জন্তি।

২৬৯। কিপ।

श्वकृतः। दित्र प्रश्चः त्यत्र अक्ष्यां स्त्रिन्। स्त्रिन्। क्ष्यः। दित्र प्रश्चः।

২৭০। কিবন্তস্ত চ ত্তরাব্জরব্রিব মবাং সাচ্। হরা তৃ: তৃর্তিঃ অব্ উঃ উভিঃ শালিমবতীতি শাল্যু: জর্ জৃঃ জৃর্তিঃ স্রিব্ স্কঃ স্রেভিঃ মব্ মৃ: মৃতিঃ।

২৭১। অতো বৃদ্ধিশ্চ।

দ্তিমিত্যাদি দিবু ক্রীজাদৌ পঠাতে **চি**বু নিরসনে বিবু তন্তসন্তানে ককে-বংখার্বিক**নিতেত্তা** ন স্যাদিতীঙ্নিবেধঃ। অয ইত্যেব। দীব্যতি। হলী-ত্যেব দেবিস্থা।

(২৬৯)। কিপি পরে দম্যবকারস্য উর্ভবতি। উর্নপ্তাবাস্তস্যেতি বিধানেনাপি অক্ষ্যারিতি সিধাত্যেব অক্ষ্যাবাদিত্যাদিসিদ্ধার্থং কিপ্যুবিধানম্। লক্ষণকৈতজ্জাপয়তি। অন্মিন্ পাদে হলি বিহিতং কার্যাং কৌ ন ভবতীতি তেন গ্রামধ্বসৌ উপানহৌ সংলিধাবিত্যাদি সিধ্যতি। পাদান্তর বিহিত্ত ভবত্যের। তেন গ্রামধ্বসাবিত্যত্ত হলুপাস্তেত্যাদিনা নকারলুক্। দয়ুরিত্যাদি দের দেবনে ধের সেবনে পঠ্যতে প্যাদাবিত্যাদিনা অয়াদেশ:। সির্ধাতোঃ সমূরিত ক্রম্বোশ্টতি ণিঙ্লুক্ এবং দিব্ধাতোরপি দয়ুঃ।

(২৭০)। ঞিজরা সন্তমে অব্ রক্ষণে অর্ রোগে ত্রিব্ গতিশোষণয়েঃ
মব্ বন্ধনে ইভ্যেতেষাম্যে হাল পরে কিবন্তানাঞ্গামীয়াং অচ্সহিতো
বকারো উর্ভবতি। অব্ ত্রিব্ ম্বাং বকারত পূর্কোণৈব সিদ্ধে অচ্সহিত্যা স্থানার্থমূপানান্ম। তৃষ্তিরিভি জিঃ বিয়ামিতি জিঃ মাদিরোহপ্ মৃচ্ছ:জেন্তো আইতি নম্বে প্রাণেরপি ন স্যাদিতি প্রতিষ্ধাঃ। অযে হলি পরে
কিনীতি চাম্ব্রিরাতে কিম্বং কিবন্তসাচেতানেন তৎ ক্রিয়তে স্ফ্রার্থমু।
হল্যবে ইত্যেবাত্রাস্বর্ততে ন কিনীতি শক। স্যাৎ।

(২৭১)। অকাবাহ্নর: পূর্মবোগৈবিহিত উকারো বৃদ্ধিশ ভবতি। চকারঃ পূর্মবিধিসমুক্তরার্থো দতু বিক্লার্থ:।থৌনাতীতি ধব্ ভুতিপ্রাহ্ন- শব্থোনাতি খুনমবতীতি ধনোং যবং লাবয়তীতি যবলোঃ ধাবু থোতম্।

२१२। लूर्य।

मिनिवान् (मिविव: ।

२११। डिकेलि वा।

দেদেতি দেছোতি। অদন্তাবান্তত হু। কর কিপ্কপ্।

২৭৪। সোহকোহন্ত।

इति পবেং हन् मक्त जानुः भा खर् । अदः मीर्पाद्य जान्।

२१৫। मगारमञ्जि ह।

অহরাপম:।

ভাবে দন্তাবান্ত ইত্যেকে ক্রণান্ধনা দিব্যাদিনা নাৎ বৃদ্ধৌ ক্রভাবাৎ একে-চোহতেতি বৃদ্ধিঃ হ্রন্থোন্ডগা দীর্ঘন্তাপি প্রস্থাং। য্বলৌবিতি ক্রিক্সেখান্ডেডি নিঙ্লুক্।

- (২৭২)। সাইচর্য্যাদকাবোহরং দস্যোহসুকতঃ। দস্তাবান্তস্য বকারো

 বে পবে লুগ্ভবতি। দিদিবানিতি দিক্ধাতোর্ম স্থাং দেনিব ইতি যনলুগস্থাং
 উত্তমপুকবস্য দিৰ্চনম্ বস্। বশ্চায়ে হলীতি প্রাক্তো লোপঃ উদস্তিনবাস্তস্যেতি বাধিতঃ ভ্রাধনার্থং ৰচনম।
 - (২৭৩)। ডিদ্ধলি পবে দম্বাবান্তস্য বকাবো লুগা ভবতি। নেদ-ভীতি যন্ৰুক্ মিকক্তিঃ গুণঃ। পক্ষে বকাবসোকাবে যকাবে চ ক্ডে গুণঃ। কবিতি কবুবৰ্ণনে কিপ্।
 - (২৭৪) ৷ দীর্ঘাহোভ্যামিতি বিসর্গে ক্লতে সাদিও ইতি কপাদির'ৎ আছো কপাদাবিতি রেফো ন ভবতি ওবতাত্যকাদাবিতি পূর্ফাতা সহ বিসর্গস্য ওকার:1
 - (২৭৫)। সমাসে স্থিতেখিচ খলি চ পবে অহন্ ইতাস্যাস্থ সে। ভবিতি। অহবাগম ইতি স্রোধিসর্গ ইত্যাদিনা বিসর্গ: অভোভগে। খবোতা ইংয়াদিনা কুকি প্রাপ্তে অন্তো বপাদাবিতি বেকঃ। ইনি অহর্থণ ইঞি

२१७। छक्षभः मारमर्जम् ।

উক্থশাঃ উক্থশোভ্যাং শেতবাঃ শেতবোভ্যাং অবযাঃ পুরোডা:।

२११। वसारमञ्जः।

व्याय हिन भारत वस्त्राप्तत्रस्टाः । विषयः । विषयः विषयः। विषयः। विषयः। विषयः। विषयः। विषयः। विषयः। वस्य स्वन्यः विषयः। वस्य स्वन्यः विषयः। वस्य स्वन्यः विषयः। वस्य स्वन्यः विषयः।

ওরতাত্যকাদাবিতি ওবে প্রাণ্ডে রেক:। সমাসে ইত্যোপগ্রেবিকমধিক রণং বথা বনে সিংহ: প্রতিবসতীতি বদি বিক্ষসপ্তমী স্যাৎ তদা সমাসে সতি ছাচি পরে ইতি স্তাৎ এবঞ্চ দীর্ঘাক্ত ইত্যাদৌ চ সং স্যাৎ। বাজাদিপদে-চেত্যমূর্ক্ত্যাপ্যমির্থে প্রাপ্তে সক্ষ্ণমিদং বৈচিত্র্যার্থম্।

(২৭৬)। উক্থানন্দ ইত্যাদেহ নি পরেহজো ডদ্ ভবতি। উক্থানা ইতি উক্থাং শংসতীতি শন্ম জতো উপপদে প্রাদৌ চেতি কিপ্
হলুপান্ড ইত্যাদিনা নকারলুক্ ডিস কতে ধাতুত্বাভাবাদহস্তেগ্যাদিনা দীর্ঘঃ।
শ্বেতা বহজ্যেনমিতি অনস্তাহহল্চেভি কিপ্ দীর্ঘন্দ অবপূর্মাদ্যজতেঃ
অবাদ্যজোহসংপ্রসারণক্ষেতি কিপ্ দীর্ঘন্দ। পুরো দাশুস্তোনমিতি পুরঃপ্রবাৎ দাশু দানে ইপ্রসাৎ প্রসো দাশেদে ডিলেচতি কিপ্দান্য চঙঃ।

(২৭৭)। বিশ্বস্ত্রেভি ভঙাবে ভাষমিতি তা। বিশ্বয়মিতি তাইপ্রাচুর্য্যেশ প্রস্তুত্রমিতি ময়ট্ ময়ড়াদৌ নিতামিতি তস্য নঃ। বৈছ্য়ামিতি ব্রান্ধণাদিগুল চনান্তরাবক্রিয়বোবিতি টাণ্। বস্থবাহোস্ত ক্তিতবে চেতি
বস্য উঃ। বিহল,মান ইতি আয়্ হলিজ্জামিতাঃদিনা আকারলুক্।
পেচুয়ানিতি বিহ্য়াই তাজাপেক্ষিত্রিধিয়াছকারে রুছে মুর্দ্ধন্তে যে চ রুছে
বস্তুমানিতি বিহয়াই তাজাপেক্ষিত্রিধিয়াছকারে রুছে মুর্দ্ধন্তে যে চ রুছে
বস্তুমানিতি বিহয়াই তাজাপেক্ষিত্রিধিয়াছকারে রুছে মুর্দ্ধন্তে যে চ রুছে
বস্তুমানিতি বিহয়াই তাজাবে ক্রিগ্রুম্বরুত্তকেত্রর্থমণীতি প্রত্যুদার্যতম্।
আবে ইতি তু বিষ্মাবান ইতার্থমন্ত্রুতকেত্রর্থমণীতি প্রত্যুদার্যতম্।
আনজ্মানিত্যক্র তু একদেশবিক্রতয়্যানন্তর্ব্যাৎ তকারো ভবত্যেব। প্রন্তু
বন্স্থ অবল্বংসনে স্তুল্ প্রমানে ইত্যস্যাপাক্র গ্রহণমিত্যান্তঃ। ধ্বন্ স্থসাহফর্মান্বয় গ্রহণমিতি নেব্যতে ধ্বন্ত্র স্তুজৌ চ নামাধিকারাৎ প্রজ্ঞা ধ্বক্ষ

२१४। नत्श (शिष्ठ त्य।

নদ্ধঃ নংস্থতি উপানং। ঙ্যে তু। নানহাঃ নানদাঃ নহতে

२१२। मगारमश्कि ह।

विद्यमान्यः छेशानमर्थः।

२४०। अल्लुगारको हरना रहा यः।

অল্লুগাদে সতি হনো হকারো যো ভবতি। রুত্রন্তঃ রুত্রন্তা স্থস্টি।

২৮১। বৃদ্ধিদ্বিরুক্তার্থে।

অঘানি জঘন্ত জংঘন্তি।

रेजाानी न खर्जि

(২৭৮)। অঙ্যে হলি পরে নহ্ বন্ধনে ইতাস্যাস্তো ধোঁ ভবতি। তকার-স্থামুর্ত্তাপি নামি সিন্ধো ধকারবিধানসামর্থাদনাক্ষোহপ্যয়ং ভবতি। ধাতো-রের ধকারবিধান প্রয়োজনদর্শনাৎ। নদ্ধ ইতি ক্তঃ ধ্যোহধাতুর্থ।দিভি তস্য ধঃ। উপাননিতি কিবস্তক্ষচাদাবিত্যাদিনা দার্ঘঃ। নানহব ইতি ধন্লু-গস্তাৎ বস্।

- (২৭৯)। অবেহঙ্বে চেতি ছয়মপাত্র নামুবর্ততে। তত্ত্র সমাস ইতি সমাসৈকদেশে বর্ততে। সমাসৈকদেশে হলি অচি চ পরে বসাদেরতাে নহস্চ হকারঃ তকারধকারে ভবতঃ। অতএব পয়মবিছ্যা প্রিয়ানড্রা বজোপানহা ইত্যাদৌ ন ভবতি। অবে অঙ্বে ইত্যস্যানস্ব্রভ্যা বিশ্বরাত্তং উপানজ্পম্।
- (২৮০)। বৃদ্ধিকিকজ্যথে বিধানাৎ প্রকরণনিয়মাপ্রাপ্তঃ স্থবত ন সম্বাতে। ন হি স্থপি কৃদ্ধিকিকজ্যর্থপরতা সম্ভবতি। বৃত্তম ইতি বৃত্তং ত্বানিতি ব্রহ্মপ্র লাক্ষন ইতি কিপ্। শসাদ্যচাতোহর্থম ইত্যকায়ল,ক্। মন্ত্রীতি হনাদেরনগীতাকারল,ক্।
- -(২৮১)। অর্থপদ: কারণবাচী। বৃদ্ধিকারণে বিরুক্তিকারণে চ পুরে হনো হকারো বে! ভবতি। অধানীতি কর্মণি লুঙ্ মান্তনেপুরুং

২৮-২। দ্বিক্লক্তিহেতাবননি হে:। প্রক্রিয়ায় প্রক্রিয়ায়বিষ্ঠি। অনিতৃ—প্রাক্তীহয়ৎ । ২৮-৩। অহে র্যাণি।

चर्षः।

व्यर्वः ।

২৮৪। হলুক্ সর্বনামঃ। সর্বনামোহন্তা হল্ লুগ্ভবক্তি। সর্বনাম ইতাধিকার;। যঃ যৌ যে।

২৮৫। ক্লীকে স্বমোরপ্রধানং সমাসেহথাদিতদ্ধিতে শব্দামুক্তি কাম্যাদৌ প্রকৃতিত্যব জ্যদাদয়ঃ।

ত ঝন্ধনশ্চাত্মনে সিজিতি সিচ্ সচ্সিচ্ভ্যাঞ্চ ভাবাদাবিতি সিচ্সহিতক্ত তকারত ইণ্। জ্বন্থেতি লিট্ থঙ্। জংক্ষীতি যন্দুগন্তাভিঙ্ জপ্-জভেত্যাদিনা অস্থার:। হননমিছতি হননীয়তি ততঃ সন্ জিহননীয়িষতি নাজ হল্পেঃ সন্ বিক্কিকায়ণং কিন্ধ হননীয়তেখা ত্বিয়বত ।

- (২৮২)। অন্ বর্জিতে ধিক্ষকিনিমিত্তে পরে হি গতাবিতান্ত হকারো বো ভবতি। প্রজিবার্রিয়তীতি হিনোতের্ণান্তাৎ সন্ ইঙ্ গুণোহরাদেশো ধিক্ষিয়ে। নমু কথমত্র ঘন্ধং নিঙক্তর ধান্তর্যাং। উচাতে। অননীতি প্রতিবেধো জ্ঞাপরতি নিঙক্তবাদপ্যরং বিধিরিতি। প্রাজীহরদিতি প্রক্রক্র-কর্ণাঃ কর্ত্র্যানিতান্ ব্রব্যোহশাস্বাদেরিতি ক্রম্বঃ ধিক্ষক্রিং অগুরাবিত্যাদিনা সম্বার্থাৎ ইদ্বির্দিতীকারং ততাে শীর্ষঃ।
- (২৮০)। ঘণি পরে প্রশংসায়াং গম্যমানায়াং অহের্ছকারো খো ভবতি। অর্থ ইতি অর্ছ মহ্ পূজায়াং পুংসি ঘণ্ কারকে চেতি ঘণ্। অত্ত প্রশংসারামিতি অর্থকথনং গিপিকরপ্রমাদাৎ পতিতম্।
- (২৮৪)। নমু তালাদিবেরান্তহল্নন্তবাৎ হল্পক তালাদেরিতি কথং নোক্তমিতি হুদি নিধারাহ সর্বনার ইতাধিকার ইতি। তেন কল্যমাণানি কার্য্যাণি সর্ব্যনাম এব ভবন্তীতাধিকারার্থং সর্ব্যনামশদোপালান্যবস্তমেব কর্মীরং সুগর্থমিপি ভবতীতি।
- (২৮৫)। নপুংসকে স্বমোঃ পরয়োঃ সমাসে সতি অপ্রধানম্।
 অপ্রধানমিত্যপরিতাক্তলিকবচনমেব বিশেষগম্। যথা ধর্ম্মে বেদাঃ প্রমাণ-

ভাঙ তথ ইদম্ তথপুক্রা তথকা বংশা তমভিক্রান্ত: অভিতথ অভিতদো অভিডদ:। প্রধানং সমাসে তু। পরস্কঃ পরমতো পরমতে। তবং তদীযম্। থাদোঁ তু। যথা তথা তদা ভদানীং তহি ততরঃ ততমুঃ। বুলাদিমধ্যমা অম্মান্ত্রমা। তথকাম্যন্তি তদাতি তদাতে তদয়ভি এইয়তি ইদয়তাভাদযোহনেকাচাম-ন্ত্যাজিতি লোপাঙ্।

মিতি। অথবা অপ্রধানসমাসে ইতি পাঠ: অপ্রধানস্থ সমাসোহপ্রধান-সমাসঃ প্রক্রান্তত্বেন সাগ্নিধাদপ্রধানস্যেতি তাদানেবিশেষণং অপ্রধানসা ভাদাদে: সমাসে সতীতার্থ:। যদাপি অপ্রধানার্থতে চেতি সর্ন্মনামনিষেধে-নৈবো কার্থমে তৎ তথাপ্যত্র ক্বতং স্পষ্টার্থম্। প্রকৃতিস্কলাবস্থানাবগম এক-ত্রৈব জায়তামিতি। থাদিবর্জিতে তন্ধিতে পবে শব্দামুক্কৎ শব্দামুকরণং তত্ত্ব কামাাদো চ প্রভায়ে পরে ভাদাদর: প্রকৃত্যৈর ডিঠন্তি বং বং কার্যামূক্তং তত্তর ভবতীতার্থ:। স্যান্চন্দ্রসি বহুলমিতি পাণিনিলক্ষণে ছন্মোগ্রহণাদমু-মীয়তে ভাষায়ামপি দ্যো ভবতীতি। তথাছি তাদাদীনামবিভঞ্জাবিভি সর্ব্বর্থা। ত্যদাদীনামকলোবিহিত আদেশ ইতি চক্র:। তন্ত্রাৎ স্য ইতি ছান্দসমিতি ভাগবৃত্তিকাবসা ভ্রম:। অতএবাত্র তানিত্যপাদানং কুতমা-চাৰ্যোণ। তাণিতি হল ভামো দুগিতি স্নুক্। তৎপুত্ৰ ইতি অকবণাদাব-শত্রাল্য: ষষ্ঠ্যা ইতি তৎপুরুষ: সমাস: স্বভাষাত্ত্বপদার্থপ্রধান:। তৎস্থ ইডি স্থোহধিকবৰ্ণাবায়াভাগি ভাবে পুংসাক্তন্তেতাও ক্লচাওনাদাবিজ্ঞা-কারলুক তরিমিজোপদস্য চেতি সমাস:। অভিতদিতি অভিক্রাস্ট্রমেডি বিতীয়য়া অত্যাদে: ক্রাম্ভাদাবিতি তৎপুরুষ: নাত্র তক্ষ্পবাচ্যং প্রশানং কিন্ধু-বস্তমতিক্রাস্তঃ শ এরাতিতবিতানের তস্যাভিধানাং। বলা ভ অভিশক্ষঃ পূজার্থস্তদা নিতাং কুপ্রাদেরিতি সমাসেন তদা অপ্রধানার্থতা ন ভবতি তভোহতিস ইত্যেব ভবর্তি ৷ প্রমুস ইতি প্রমুক্তানে স চেতি বিশেষণস্কা ৰিলেব্যৈঃ কৰ্মধারম ইতি সমাসং। জন্মতি তদা ভাব ইতি ভদ্ধাৰো জাৰ্মিতি বং তদীৰ্মিতি তত্ৰ ভবৈহৰে তাদাদেৱীৰ ইতি কৰা জৰেতি ২৮৬। স্বমো: ক্লীবে তুগন্তাদে:।

অস্ত অন্তরৎ ইতরৎ কতরৎ কতমৎ যতর্থ বতমৎ ততরৎ

ক্রতমৎ। একতরৎ একতমৎ।

২৮৭। প্রধানার্থাদ্বা সমাসে। প্রমকতরং **পরমকত**রং।

२५५। नाव्यवानार्थाए।

ইফৌতরং কুলম্।

প্রকারে থা সর্বাদেরিতি থা তদা তদানীমিতি তদো দাদানীঞ্তি দাদানীম্ প্রত্যারী তহাঁতি কিমদো যন্তদেতদন্তেভ্যোহনদাতনে। হিঁবেঁতি হি:। ততরঃ ততমঃ ইতি ক্রিয়াগুণসংজ্ঞাভিদ্ন গোরেকস্য পৃথক্কারেতরোবাতদাদেরিতি তরঃ বহুনাং জাত্যা তম ইতি তমঃ। থা দা দানীং হিঁতর তমাস্থাদরঃ যড়্দীরিতাঃ। আস্মান্তমিছতি তাং বা তৎকাম্যতি তদঃ প্রক্রতাবস্থানে নিমিভাভাবাদাতো ক্লিবৃত্তিঃ। তদ্যতি তদাতে ইতি ইরারো রূপম্। যং করোতি যাং বা যদয়তি।

(২৮৬)। ক্লীবে স্বনোং প্রয়োরয়াদের ত্র্গ্ভবতি। অস্ত্র অন্তর ইতর ইতি ত্রয়োহসাদৌ পঠান্তে! ক্রিয়াগুণসংজ্ঞাভির্ব রোরে-ক্সা পৃথক্কারে তরো বা তদাদেরিতি তরু বহুনাং জাতা তম ইতি তমং। তরুতমাস্তাং সপ্ত এবং দশভিরয়ং গণং। একতরম্ভ সর্বাদৌ পৃথক্ পঠাতে। অস্তদিতি তৃকি রুতে হলশ্চামোল্গিতি স্বমোল্ক্। বদি স্বমোং হানে তৃক্ স্যাৎ তদা সম্ব্রৌ স্থানিবভাবাৎ হুবৈভ্ভামিত্যাদিন। পুক্শরা স্যাৎ।

(২৮৭)। প্রধানমর্থো যস্য স প্রধানার্থা: সমাসে সতি প্রধানার্থাদক্তাদেকস্তরে স্বমোঃ প্রয়োঃ ক্লীবে তুথা ভবতি। পরমকতরমিতি কর্ণ্যধারমঃ বিশেষাধাং কতরস্য প্রধানার্থতা। কথং পরমকতরমিতি চোদয়িখা
ভর্ত্বরিরাহ ভাষ্যেৎহুদাক্তথাৎ সন্দিশ্ধমেবৈতৎ কথং ভবিতবামিতি তদেক
ভর্তবিবচনম্বশ্বম প্রধানার্থাধা সমাসে ইতি স্ত্রমত্রারম্বর্

(२४४)। ममात्म मिक वार्थमानाथीमश्रात्म स्वरत क्रीहर व्याप्नी

২৮৯। রূপায়াং নিশ্বনে ২জ্ঞানে নাতো দানের নানিতে। প্র'য়োহস্তাম্বরাৎ পূর্বোহয়। সর্বনামতিঙ-ব্যয়াৎ॥

হা সকত্বং পাপোহতকং জল্পসকি গোপাযকেন্ধনাযুধী উচ্চকৈৰ্দদাভি ॥

২৯০,। ব্রস্বভাল্লভয়োক।

হ্রস্থেন অল্লেন বা ত্বয়া ত্বকা।

২৯১। অবক্ষেপণত্বে চ। অবক্ষিপ্যতে বেন ওদবক্ষেপণম্। ত্বকা পুত্রেণ সা গবি তা।

পররোম্বর্য ভবতি। ইষ্টেতবং কুলমির্ভি ইষ্টমিতবদ্ বস্য ভদিষ্টেতরং জন্য-পদার্থো বছরীছিরিতি সমাসঃ।

⁽২৮৯)। তদ্ধিতপাদে ক্বপাদিবর্থেরু নায়ঃ কো বিহিতন্তদপবাদেহয়ং প্রকবণাসুরোধাদিলেক্তঃ। সর্কনামন্তিগুলান্বরাচ্চ ক্বপাদিবর্থেষ্ট্রশ্বরাৎ পূর্ব্বোহক্ প্রারো বাছল্যেন বা ভবতি। কার্মণোনাভূগপণিতঃ পনশু কপা । হা সকত্বমিতি অমুকল্পাত্র গমাতে শ্বসিতকি উঠকৈবের ক্ষীণো জাতঃ। পাপোহইকমিতি নিন্দনং কুৎসনম্ অক্ত দকার্যমান্তানং নিন্দতি। গামানাপরি-জ্ঞানে বিশেবাপবিক্ষানমজ্ঞানং জয়সকীতি সামান্যেন ক্রাতা বিশেবমনিশ্চিতা বদসীতার্থঃ। সদাচারবাবন্থিতাক্তেন প্রবৃত্তিনির বী নীতিঃ গোপারকেম্বনায়্ক্র্বীতি নীতিশান্ত্রাম্বারেশেবাজিঃ। দানমিশিতঃ মাননং দানেন মানিজ্ঞ উচ্চকৈর্দানীতি দাতুর্মনিন্ধবগ্রমতে দানীরস্যানি মাননমেত্তর্বতি।

⁽২>•)। ক্লব্ৰেহরত্বে চ গমামানে সর্জনামতিওবারাত্ত্বে অস্তা-বরাৎ পূর্ব্বোহধা ভবভি। বরা বরকা ইত্যুভরোবেব উদাহরণং পৃধন্ধরূপ প্রোরোগ্রহণনিবৃত্ত্যর্থম্।

⁽২৯১)। অবক্ষেপক্ষে চ গমামানে সর্কনামতিওবায়াহনত ক্ষক্তঃ-ক্ষাৎ পূর্কোহয়া ভবতি। ত্বয়কা পুক্রেণ সা গবিতি। ইতাবক্ষেপ্বার্ষে

২৯২। স্বাদিস্বরাৎ প্রাক্ কচিৎ। স্বরুকা ময়কা ভূত্যকং মহাকং যুস্থাককং অস্থাককং স্বয়কি ময়কি স্বত্রক তত্রক কুত্রক।

২৯০। সর্বাদিঃ সর্বনাম স্থাদ্বাদ্বাদির্জনি নায়তঃ।
তীয়শ্চ ডিতি পূর্বাদির্ড সিঙ্যোর্বায়তঃ সদা॥
সর্বব বিশ্ব উভ উভয় এক হর নেম দিম অন্থার্থক সর্ববার্থ সম।
অক্ত অন্থাতর ইতর কতর কতম যতর যতম ততর ততম একতর

ছষকেতি পদং পরক্ত কুৎসার্থমিহোপাদীরতে। যঃ প্নঃ স্বয়মেব কুৎসিতঃ তত্ত্ব নিন্দার্থছেন পূর্কোণৈব সিধ্যতি।

(২৯২)। সর্বনায়: স্বাদিস্বরাৎ প্রাক্ কচিদ্যা ভবতি। গৃয়কং
বয়কম্ অয়কম্ ইন্ধক্। স্বাদিস্বরাভাবাদেব তিওব্যারোরিক্রেপাদানমনর্থকং স্তাৎ। কচিনিতি বচনাং যুশ্নকাভিরশ্বকাভিঃ যুবকরোরাবকষোবিজ্যানে প্রক্তেরেবাস্ত্যস্বরাৎ প্রাক্ অথা ভবতি।

(২৯০)। সর্কাদিগণপঠিতং সর্কনাম ভবতি। অয়াদর্জিস পরে সর্কনাম বা ভবতি নাক্ত ইতি নাক্তবিন্দ্ পরে। অক্ত ইতি সর্কানি বিভক্তেরাণ্যাদেং প্রায় ইতি সপ্তমান্তিসিং। অস্বাতিরিক্তে পবে সর্কনাম নিত্যমিতি শব্ধানিরাসার্থং নাক্তত ইত্যুক্তম্। তীরণ্ট টুতীতি তীরপ্রত্যয়াস্তো দ্রিতি পরে সর্কনাম বা ভবতি। নাক্ততঃ নাক্তমিন্দ কার্য্যে বিধেয়ে। পূর্কানি জির্নিজ্যোর্বেতি ওসিঙ্যোং ছানে আদেশে কর্ত্তব্যে পূর্কাদিঃ সর্কনাম বা ভবতি। অক্ততঃ সদেতি ওসিঙ্যোরাদেশ বিধানব্যতিরিক্তে কার্য্যে কর্তব্যে সদা সর্কানাম ভবতি। ওসিঙ্যোং পর্রোরিতি তু ন ব্যাব্যেয়ন্ এবং সভি পূর্ক্সাঃ পূর্কানামতারাপি বিকল্পেন আ আং। এতেন স্লোকেনাক্সর্বো ব্যব্দিক্তাঃ পূর্কানীনাঞ্চ সদা সর্কানামত্বাং বং যং সর্কানামকার্যামন্যান্তানি বিহিত্যাৎ অন্তর্ভবিত্যার্থঃ। অয়াদীনাং অসি বিহিত্যাৎ তীরপ্রতারান্তস্য ত ডিভি বিহিত্যাৎ অক্তর প্রতিবিদ্ধরাৎ জনি ভিভি চ যথিতিতং সর্কনামন্ত্রায়ি ত্রেব ভবতি নাঞ্চিতি। অত এব সর্কা হেতর্বৈং স্কানাম ইতি দর্ক্সা

একতম: শতাদি: । তাদ্ বদ্ তদ্ এতদ্ ইদম্ কিম্ আদস্ এক

বি বুলদ্ অস্মদ্ যুল্মদথ ভবং । আদিস্তাদাদিঃ সর্বাদিঃ । অল্ল
প্রথম চরম নেম সিম অর্জ কভিপয় বয় ত্রয় তয়ট্প্রতায়াস্তোংল্লাদি । ব্যথাং ভুয়েষামণি মেদিনীভূতামিতি মাঘে অন্নেষামিত্যসাধু: ।

বিভক্তয়ে। ন ভবস্তি। সমাসে: বিহিতঃ পুংবদ্ধাবোহপি ন ভাৎ। আরা-পুত্র: দিতায়াপুত্র ইতি। উভবশব্দা সর্বাদিগণে পাঠ: সর্ববিভক্তার্থ:। যতঃ কৈমাদিত্যাদানি সর্কনামকার্যাণি একবচনবছবচনবিষয়াণ। শক্ত ছিবচন'ব্যয় এব একব্চনব্ছব্চনবিষয়ত্ত উভয়শৃদ্ধ নেমশুদোহত সকলসর্মনামকার্য্যার্থ: পঠিত: অরাদৌ তু জসি বিকরার্থ:। অন্যার্থত্ব ইতি বছৰ প্ৰসিদ্ধাৰ্থজান ধৰিধানং নম্বৰ্গান্তরনিবৃত্যৰ্থম্। অস্তি সমশব্দঃ স্বার্থ: যথা সমৰাজ্যং বস্তুতে ই.ত এবং কিল রাজন্যবিদ্যমানে সতি প্রযুঞ্জতে পাণ্ডতা: তত্র সব্ধবাজ্যমিত্যাহঃ। অন্তি চ তুল্যার্থ: সমে দেশে যজেত অত আহ সর্বার্থ: সম ইতি। ঘাদযো ভবদস্তা ভার: তদনস্তর: কিম্লক: পঠনীয়:। তদস্বস্কাদাদি: তাদাদিধু প্ৰমিত্যেক ইতি একশেষার্থ: তেন ভবাং ৮ কল্চ কাবিতি। তদনস্তরম্ সনাশবং পুনঃ পঠনীয়া তদন্তন্ত্র-मानिः नमानजानात्नम् भेडेरमो চ कर्त्याशमायाः जानात्नत्रीतः आखानात्मत्रस ইভাত্র গ্রহীতব্যঃ। তেন অগ্রাদৃগিত্যাদি ভবতি। অরম্ভ বিশেষো ব্যাখ্যানতো বিশেষপ্রতিপত্ত্যাবগস্তব্যঃ ষথৈব সমানো দুগাদাবিত্যত্ত দৃগাদিগণ: পদ্মাশকাতঃ। ক্যাদিঃ কিমাদেরিত্যতামুরুত্ত দৃক্ দৃশ দুক্ষ সমাপ্ত:। অত চ গৌকিকন্যায়োহণি দুগুতে বধা ভূবনানি লোকা ইত্যুক্তে কাপি সপ্ত গৃছতে কাপি তার: পরোধ্য ইত্যুক্তে কাপি সপ্ত कालि ठ्यादः। बाानिशगञ्च वियुत्रमन्यम्ख्यमञ्चः। अज्ञादने वस्रवेद्रमदन्ते বিত্রিভ্যাময়ড়্বেভি অয়ট্প্রভাষাকৌ। ত্বট্প্রতারান্ত ইতি ভরজংশে দংখাারা ইতি তরভত্তা:। বিভরত্তিতরচভূতরদশতরাদর:। বরেবামিতা-সাধ্রিতি অরাদীনাং জন্যের সর্মনাম্বারানাতঃ।

২৯৪। পূর্ব্বপরাবরদক্ষিণোত্তরাপরাধরাণি দিগ্দেশ-কালের।

পূর্ববশ্যৈ পূর্ববায় পূর্ববশ্মাৎ পূর্ববাৎ পূর্ববন্মিন্ পূর্বের। অদিগ্দেশকালেযু জু—শান্তে দক্ষিণায় প্রবীণাযেত্যর্থঃ।

২৯৫। স্বমাত্মাত্মীরয়োশ্চ।

শ্বশ্মৈ আত্মনে আ্ফ্রীয়ায বেডার্থ:। অনাত্মাত্মীয়য়োস্ত। স্বায়

মে দীয়তাং জ্ঞাতয় ইতার্থ:। স্বায় মে তৃষ্ণা ধনায়েতার্থ:।

২৯৬। বাছাধরবাদদোরপুরেহস্তরম্।
গ্রামাদন্তরে চাণ্ডালগৃহা: বাছা ইত্যর্থ:। অন্তরে শাটকা: গুপ্তপরিধানীয়া ইত্যর্থ:। পুরে তু—অন্তবে পুবে বসতি। পূর্ববাদি।
২৯৭। পূর্ববিচ্যাভয়ো জসি বা।

পূর্বের পূর্ববাঃ উভয়ে উভয়া:।

⁽২৯৪)। পূর্কাদিগণং লক্ষণত্তরেন বির্ণোতি। পূর্ক অবব দক্ষিণ উত্তব অপব অধর ইত্যেতানি দিগদেশকালেখেব বর্তমানানি পূর্কাদিগণে গৃহ্যন্তে। দিগ্দেশকালবাচিত্বমনীযামবধিনিয়মেনৈব নিষতং ভবতি। ইয়ং পূর্কাদিক্ অয়ং পরো দেশঃ অয়মপরঃ কালবিশেষঃ কৃতশ্চিদিতি নিয়মেনৈব গমাতে।

⁽২৯৫)। স্বমিতি শকরূপং আত্মনি আত্মীবে চ বর্ত্তমানমেব পূর্বাদি-ুগণে গৃহতে নতু জ্ঞাতিধনয়োঃ।

⁽২৯৬)। পুববাতিরিকে বাত্তে ঋধরবাসসি চ অর্থে বর্ত্তমানমেবা্-স্তরং পূর্ব্বাদিগণে গৃহতে। ঋন্তরে পুরে বসতীতি বাত্তে পুরে বসতীত্যর্বঃ। বাহাধরবাসসোরিতি কিম্? প্রাময়োরন্তবে তাপসঃ মধ্যে ইত্যর্বঃ।

⁽२৯१)। शृक्तांपरता नव উভत्रनयन अपि शरत नर्कनाम वा स्रविक

२৯৮। न नानि।

नर्व नारम नर्वा र विचार विचारेश अखिविचारेन छेखना नाम क्नारः।

२৯৯। ज्ञानार्थक ह।

প্রিয়তৎ প্রিয়তদো প্রায়তদঃ তমতিক্রাস্তাঃ অভিতদঃ অমুমতি-ক্রান্তেন অত্যদসা অহকং পিতা অস্ত মৎকণিতৃকঃ ত্বকং পিতা অস্ত ত্বকপিতৃকঃ দত্তসর্বাঃ।

৩০০। অগিত্যেকে। মকৎপিতৃক: বকৎপিতৃক:।

⁽২৯৮)। সর্কেবাং নাম সর্কনাম ইত্যর্থবাৎপত্ত্যা মহন্তাঃ সংজ্ঞারাঃ করণক্ত ফলং লক্ষণেন দর্শন্তি। নামি বর্ত্তমানং সর্কাদি সর্বনাম ম ভবতি। সর্বাদেতি সম্ম ইতি কন্তাপি সংজ্ঞা। অতিবিধা ইতি ওবধি-বিশেষত্ত সংজ্ঞা। উত্তা নাম কুরব ইত্যত্ত দেশো বাচ্যে ভবত্তাব স চাবধিনিয়তঃ অনেরো স্থেনতাৎ কিন্তু তত্ত দেশবিশেষত্ত সংক্রৈবেয়ম্। বিশ্বরূপতাশ্মহেশ্বত মা বিশেষাং বাচক: সর্কাশক্ষেত্রনৈব অতিরিতি। নমঃ সর্ব শৈ তে ইত্যুপপারং ভব্তি।

⁽২৯৯। ২০০০)। অভাধানার্থন্তে চ সতি সর্বাদিঃ সর্বনাম ন স্থাং। সর্বানামবিহিতং কার্যাঃ জত্র ন ভবতীত্যর্থঃ। প্রিয় চদিতি প্রিয়ঃ স যত্রেতি বহুরীহিবাক্যন্। অত্যদসেতি অস্তুসিদ্ধাবৃদ্ধতৌ মাদীর্গব্রখাচোরিত্যকারক্ত উকারঃ মঃ শেষে ইতি দকারক্ত মকারক্ষ ন ভবতি। অহকং পিজা অক্তেতি অত্র ক্লপাদামিজ্যানিনা অগ্ ভবত্যেব। যদা তত্ত্বৈব সমাসাত্ত- ভূ তস্যাপ্রধানার্থতা তদা সর্বনামজাভাবাদগ্ ন ভবতি। কোহরাদাধিজ্যবিধ্বকারীয়ঃ ক এব ভবতি। মংকপিতৃক ইতি ভবতি। অগিত্যেক ইতি। অপ্রধানার্থকে সর্বানামকার্য্যপ্রতিবেধাে ভবতি অগত্র ন প্রতিবিধ্যতে অক্তং সোহক্ ভবত্যেব ইত্যেকে বদন্তি। গোনদীর এবমাহেতি ভাগবৃত্তি হতোনক্ষন্। প্রধানার্থকে তু। পরমত্বৈ। এতদেব নিষেধবিধানং আগকন্। সমাসাবেরবায়াপি সর্বাদেঃ স্বানামসংক্ষা ভবতীতি। তেন পরস্বাক্তিশ্ব ইজ্যাদি।

৩০১। তৎপূৰ্কত্ত চ। বক্তান্তৰবদনান্তৰাঃ দত্তদৰ্বাণ্যাঃ।

৩০২। দ্বন্দে চ। হদকানাং পূর্ববাপরাণাম্।

৩০৩। তৃতীয়াবাক্যসমাসয়োঃ। ^c মাসেন পুর্বনায় মাসপূর্বনায় মাসেনাবরায় মাসাবরায়।

৩০৪। দিঙ্মধ্যনান্দি বা। দক্ষিণপূৰ্ববস্থাঃ দক্ষিণপূৰ্ববায়াঃ।

- ৩০১)। ভদিত্যনেনাপ্রধানার্থকং পরামৃশুতে। বস্য অপ্রধানার্থকং প্রামৃশুতে। বস্য অপ্রধানার্থকং প্রামৃশুতে। বস্তমন্তরং থেষাং তে বস্তান্তরাং এবং বসনান্তরাং দাভ্যাং দল্ফে কতে তদন্তবাং প্রাপ্তা সর্বান্যসংক্ষা প্রতিধিধ্যতে অতো দল্ফে বৈভি ইন্ন ভবতি। অন্তে ভূ অপ্রধানার্থকে চেতানেন বত্র নিষেধঃ ক্ষতেং স পূর্বাবিরবো বন্ধ্য তত্রাপি সব নামসংক্রা ন ভবতীতি বদন্তি। দত্তসর্বাহ্যত্তর ভূ পূর্কহত্রেণ নিষেধঃ অতো দত্তসর্বাহ্যান্ত চেভি দল্বেংপি তন্ন ভবতি। হল্ফে চেভি নিষেধক্ত সর্বান্যস্ত্রান্ত এব বিধীয়তে। অত এব তাদ্ধ্যবেশ্যাহরণং তত্রাপান্য ত্ত্রাপান্য ত্ত্রাপান্ত ত্বন্ দ্বন্যস্তানার প্রমাণক্ষ্ উভন্নবিবাচার্যার্থাং আতএব বৃত্তিক্তিত্তদ্বাহ্রণ্ডরম্প্রস্তুমিত।
- (৩০২)। জন্দসমাসে চ কতে স্বাদিঃ সর্বাদ ন ভবতি। ওদস্তা-নামিতি জ্ঞান্তে চেতি জন্ম যুদ্দ একার্থসাং জন্মানবৈক্তে পদপ্রভাগরেশ-রিতি জ্ঞানেশঃ। সমাহারজন্দে জ্ঞান্ত্রভাগাপ্যদাহরণম্। ইদিধৌ বন্দে বেতি লক্ষণমক্তা যথক্ত জ্বলি বেতি ক্তরং স্যান্তরণ স্বভবংক। ইত্যন্ত্র পক্ষেহগপি স্যাৎ।
- (৩০০)। ত্তীরারা বাক্যে সমাদে চ বতি বর্কাদিঃ সর্ক্রনাম ন ভবতি। মাসেন পুর্বায় ইতি বাক্যে অর্থাজৈন্থ তীরায়া ইতি সমাসঃ "সমাসস্য বিকরবিধানাছাক্যমপি। তৃতীয়েতি প্রদোপাছানেন বঃ সমাসঃ স তৃতীয়াসমাসঃ চায়মেব ভবতীতি। কৃতা কতৃকরণয়োর হলমিত্যনেন ভূ সমাসে সবাধিকার্যাং ভবতোব। ত্বকা কৃতং ভকৎকৃতম্।
 - (৩-৪)। पिट्नार्स्थाः निवाधाः जन्नामि वाट्या नर्वापिः नर्वसाम बा

७०৫। ভবতো । स्वार्थः नर्यानिकः।

ভবকান্ ভবস্তকো ভবস্তক: ভবত্যা: প্রসাদো ভবৎপ্রসাদ: ভবস্তো হেতৃ ভূঙ্জে।

७०७। জिमि पूरिम ।

পৃংলিক্ষে ঐস্ ইন্তবিত। তে সবে সর্ব আরে আরকে এবৈকে। এবৈকা ইড়োকে। অসর্বনামত্বে তু। অল্লা: । অবিশ্বমানমেকমেধাং তে অনেকা:। ভবস্তানেকে জলধেরিবো-র্মায় ইত্যক্র কিরাতে অনেকে ইত্যপপাঠ:। অসংখ্যা ইতি পঠনীয়ম্।

ভবতি। দক্ষিণপূর্বস। ইতি দিম্বধানামি পূর্বাদে: প্রথমান্তপদার্থ ইতি বছরীহি: অপ্রধানার্থবে চেতি নিষেধে প্রাপ্তে বিকরবিধানম্।

(৩০৫)। ভবছেকাং সমন্ত সর্বনামকার্য্যে প্রাপ্তে নিয়মার্থং বচনম্। ভবতোহগ্ ভবতি। সমাসে পৃংবভাবো ভবতি। হেন্বর্থঃ শলৈর্মুক্তাৎ সর্বাদিশ্চ ভবতি নাজং কার্য্যন্। তেন হল্লুক্ সর্বনাম ইত্যাদিকাগ্যাণামভাবঃ। স্বাদিবরাৎ প্রাক্ কচিদিতি ভবকান্ ভবস্তকে। ভবতকঃ। ভবৎপ্রসাদ ইতি সমাসেহচি চেতি পৃংবভাবঃ। ভবতৌ হেন্তু ভূঙ্ কে ইতি সর্বা হেন্তর্থঃ সর্বানাম ইতি সর্বা এব বিভক্তরো ভবতি।

উভবাতে তি ব কব্যম্। এতদপি নিরমার্থং বচনম্। উভরীশব্দদগ্ভবতি। সমানে প্ংবডাবন্দ। হেছবৈধিঃ সর্বা বিভক্তরন্দ। উভরকীতাদি নাস্ভং সর্ব নামকার্যান্। ভেন উভবা উভয়ো ইত্যাদি। স্ত্রীলেশনির্দেশিং উভরদৈ ইত্যাদি ভবতি।

(৩+৬)। সর্বনার ইতি প্রতিলক্ষণসমূবর্ততে। একৈ ইতি একঞ্চ প্রকলেতি একঞ্চ বীপোরামিতি বিঃ সমাসবত্তাবিতজিলুকু। কর্মধারর-সমাসবত্ত ভবতীতি তিওওপাদ এব ব্যাথাতিম্। অতঃ প্রধানার্থদ্ধাৎ প্রামকার্যান্তব্বতার। একৈকা ইত্যেক ইতি বহুবীহিসমাসবত্তাদ্ধাধা-

৩-৭। **খদে** বা। পূর্বাপরে পূর্বাপরা:।

৩০৮। সৈত্বাৎশ্বিনো ঙেও দিঙীনাম্। ঙেও দিঙীনাং স্থানে স্মৈ স্থাৎ স্থানো ভবস্তি। তস্মৈ তস্মাৎ অস্মিদ্ একস্মৈ একস্মাৎ। একাদপীজেকে। সর্ব তো জয়মিচ্ছস্তি পুত্রাদেকাৎ পরাজয়মিতি। পূর্বস্থাৎ পূর্বস্থিন্। অসব নামত্বে ছু। পূর্বাৎ পূর্বে এবমুক্তরত্রাপি।

৩০৯। স্থাঙিতি প্রিয়াং প্রাক্ পুংবচ্চ। ব্রিয়াং ডিভি পরে স্থাভবডি। প্রাক্ পুংবচ্চ। তত্তৈ ভস্তাঃ ভস্তাম্।

নাৰ্ধবেন সৰ্বানাকাৰ্যাং ন ভবতীত্যজ্ঞেবাং মতং নৈত্ৰ জিকংসন্মতম্।
মনেকা ইত্যত্ৰাপ্যসৰ্ব নামন্বমেৰ হেড্ছ বছৰীছেৱন্যপদাৰ্থবাং। বৰা তুন
এক অনেক ইডি সমাসন্তদোভিৰপদাৰ্থপ্ৰধানদাং তংশুক্ষক প্ৰধানদমন্ত্যেব
কিন্তা বছৰচনং ন সম্ভবতীতি নিজ্যৈকবচনাক্তৰাদেকশকত।

⁽৩•৭)। বন্ধে বন্দসমাসে পৃংলিকে সর্বাদেক দিবা ভবতি। বন্ধে চেতি সর্কানাসসংজ্ঞাপ্রতিবেধাদপ্রাপ্তে বিভাষা। পৃংলীভ্যেব। কতরকভমাং বিষয় । সর্কানীনানের বন্ধোহন্ত বিষয় ইতি জয়াদিভাষর্ত্তদাসাদ্যসদর্শিত তোদাহরণেন প্রতিভাতি। চুর্গনিংহন্ত ক্তরকভ্যে দত্তকভ্যা ইত্যুদাক্তার।

⁽৩০৮)। প্রদীতি মাতুর্বর্ততে অভঃ ক্লীবেছণি ভরতি। একাদিতাণি প্রাক্তমকে ইচ্ছতি নৈত্রহুসক্ষতং প্রমাণান্তরাভাগাং।

⁽৩০৯)। বিশেষবিহিওখাং ডিডি যা ইডাজারমশ্বাদ:। তা ইডি
দীর্ঘবিধানং ভিরামাগ্রানীক্যামিতি ভেরাম্বিধানার্থন্। প্রেরামারার
ইডাাদিনা রিরাং বিহিতস্যাতো নির্জিঃ। প্রাগিতি ক্বডং মশ্ববিধাং
ত্থপ্রস্থিতার্থন্। স্ক্রামার স্যা ইত্যনেন ব্রেধানাৎ শৈশ্বাংশিব্রো
ন তব্ধি।

৩১০। পুংবক্রাদেন। ভত্র নদ্যাং ইডঃ ইছ।

७১১। नगारम है।

পূর্ববিত্যান্ট দক্ষিণতাল দিশোম ধ্যা যা দিক্ সা পূর্ববিদক্ষিণা । পূর্বা চার্সো লালা চেভি পূর্বেলালা । পূর্বামূখং সৃহমিত্যত্র ক্ষচিদত্ত-ত্রাপীতি দীর্ঘ:। দক্ষিণাপথং উত্তরাপথং দক্ষিণাত্রোতঃ উত্তরাত্রোতঃ দক্ষিণোত্তরাভ্যামাচাদূদ্দে ইত্যাচ্ প্রত্যক্ষেন রূপম্। ভবভ্যাঃ প্রসাদো ভবৎপ্রদাদঃ ভবতীপ্রসাদাদিত্যাগমিকম্।

(৩১০)। জাদৌ পরে দর্বাদিঃ পুংবস্তাবো ভবঁতি। তত্ত্রেতি অঘাদীত্যাদিনা ত্রঃ ইন্ড ইতি পঞ্চম্যা ন্তি নিরতি ভিনিঃ ইন্ডেতি তসাবিদ্যাবো হল্চ সপ্তম্যা বেতি হঃ ইন্ডাবল্চ। থাদয়োহপি জাদয়ঃ। যয় প্রক্লুজ্যা যথা প্রকারে যা সর্বাদেরিতি থা। কয়। প্রক্লুজ্যা কথা কিম্পুনিতি থম্। তসাং বেলায়াং তদা তদানীং তদো দাদানীঞ্চেতি দাদানীমৌ। তস্তাং রাত্রৌ তহি কিমদোযজনেতদনোভ্যোহনদাতনে হিবেতি হিঃ। থম্-দানীমোন পুংবদ্ভাবন্তেন কথা তাদানীমিতি ভবিতবামিতি লক্ষ্যতে ইতি তৃতি লিলাদিপত্রে রক্ষিতঃ। অসর্বাদেন্ত। গৌরীতঃ ক্ষাতঃ। পূর্ববোগাদেব প্রবিদ্যাস্থর্তি প্রাদ্যানিয়াগার্থম্।

সংখ্যার্থবছন্টেতি বক্ষব্যম্'। দংখ্যাবাচকো বছশকঃ দ্রিয়াং জাদৌ পরে
প্রবেত্তবভি'। বহুবীরু বছত্ত বহুবীভাঃ বহুতঃ'।

(৩১১)। সমাসে চ প্রাকৃত্বিতং পর্কমাম পৃংবছবতি। বিষয়ান্তরাভাবাং অপ্রধানার্থছে চেতি সর্কনামপ্রভিন্দেক্ষেপ্যরং প্রবর্ততে। পূর্কদক্ষিণেতি দিঙ্মধানামি পূর্কাদেং প্রথমান্তপদার্থ ইতি বছব্রীছিং। পূর্কশালেতার উক্তপৃংকান্ত্রীপৃংবং ব্রিয়ামিতি পৃংবভাবং দিগভোব কিছ অন্তার্থকতদেতদর্থমিপি ভবতীতি তথা উদান্ততং পূর্কভাং মুখমস্যেতি পূর্বামুখমিতার কথং ম প্রেভাবং অত আছ কচিদক্রতাপীতি দীর্ষঃ ইতি পূর্বে
ভাবোহর ভবতোব পশ্চানীর্যঃ কর্তবাং। আচ্প্রভাবেদেতি আচ্প্রভাবেদ্ধা
দিকাভ্যামৃত্ররাদক্ষিণাভ্যাং সমাসঃ গুলাবেরং সর্ক্রেভার্থ সমানাক্ষং ক্লা ७)२। नित्रायि।

ন্ধামি পরে সির্ভবতি। তেযাং তাসাং পূর্বেকেষাম্। অসবর্বনামত্বে তু। প্রিয়ৈকানাম্। যথৈকং ভাজনমসহভুজামনেকেষামুপকারং করোতীভাত্রানেকেষামিত্যসাধুঃ।
।

· ৩১৩। সৌ তঃ সস্তদেতদ্ভ্যদাম্। সৌ পরে তদেতদ্ভ্যদাং তকারঃ সো ভবতি। সঃ এবঃ ছঃ।

৩১৪। অকাদ্যবায়েহপি সাদি:।

সক: এবা এবক: আভা: অসকো পুমান্ স্ত্রী চ।

৩১৫। এতদন্ততে স্যার্থ।

অত্র অতঃ।

শাধনীয়ঃ নতু দক্ষিণস্যাঃ পদ্মাঃ দক্ষিণা চাসে) পদ্মান্দেতি বাক্যে প্রিরাং বিহিতেনাৎপ্রত্যয়ান্তেন সহ সমাসং ক্ষতেতার্থঃ।

⁽৩১২)। প্রিরৈকানামিতি অপ্রধানার্থতার সর্কনাম।

⁽ ৬১৩)। সাবিতি প্রথমৈকবদ্দন্যা গ্রহণং রতু সপ্তমাব্ছবদ্দন্যা। ন তদঃ সুস্যা পাদপুরণে ইত্যানেন তদ্শস্বসম্বন্ধিনঃ সৃস্যা লুম্বিস্ক্র্যাসন্ধি-প্রতিষ্ণোং অক্সথা তদনর্থকং স্যাৎ।

⁽৩১৪)। ব্যবায়ো ব্যবধানম্। অক্ আং ইত্যেতাভাাং ব্যবায়েহিপি সাদির্ভবিতি। আদিপদেন ইতঃপ্রভৃতি যে আদেশাস্ত্যদানো বিহিতাস্কোং গ্রহণম্। রছু নাক্যেদাদিরিতি প্রতিধেষবিধানং বদি জ্ঞাপকং
ব্যাখ্যায়তে তথা অমী আদেশা অক্বাবহিতা অপি ভবিষান্তি তদা লক্ষণমিদং কর্ত্যুপক্যাং তৎ কৃতং পাইার্থম্। জ্ঞাপক্ষিদ্ধালাক্ষণিকোহর্থো
বিপালো ভবতীন্তি। অমৃভিরিতাক তু অতা মহ দীর্ষে কৃত্তেহিপি অতোহভাবাদেব ন ভিস্ফেং। আভা ইত্যক তু একদেশবিক্ষত্যনমন্তব্ভবতীন্তি
ইদ এব হল্যাদিতাৎ।

⁽ ५२६)। 🛊 এতদ্যো: পরস্নোরেতদ: স্থানেহত্ত্বতি।

- ৩:৬। ইদমশ্চ কথিতাকুকথনে দ্বিতীয়াটে স্বেনঃ। এতমধ্যাপয় ইমং বা অথৈনং বোধয়।
- ७১१। अनम्भि क्रौर्व। अक्रानरेत्रन९ भाजम्।
 - ৩১৮। বিতীয়াটো সম্ভস্ত সমাসে।

এবং প্রিক্তঃ এনচিছ্ তঃ এনেন কৃতম্ এনংকৃতম্ এনয়োঃ পুরুঃ
এনণপুরঃ। অকথিতাসুকথনে তু। দেবদৃতং ভোজয় ইমঞ্
বিজ্ঞাদতম্। এতমাতং ডিতং বিজ্ঞাৎ। এন্যাং কন্সাং সালকারাবিভ্যাগমিকম্।

- (৩১৬)। অনুশব্দঃ পশ্চাদর্থে কথিত স্থান্ত কথিত বাহুকথনং কথিতানুকথনং তিনিন্দতি এতদ ইদমশ্চ দিতীয়া ওদ্ইত্যেতে বৃপরেষু এনো তবতি। এতমধ্যাপরেতি কথনম্ অথপনেং বোধন্ধ ইত্যুক্কথনম্ অথপন্দেহনস্তরনাচী। ইমং বেতি ইদমঃ কথনম্। এতেন বিপ্রেণ রাত্রিরধীতা অথেনেন অহরপাধীতম্ এতরোবি প্রয়োঃ শোভনং শীলম্ অথপন্য়োক্ত নিঞ্চ নির্দ্দেশহিপ এতরোগ্রামরোবিপ্রা বসন্তি অথৈনয়োবি হিংসোহিপ। এবমিদমোহিপি ক্ষাপং ক্রেরম্।
- (৩১৭)। কথিতামুকুধনে বিষয়ে ক্লীবেহমি পরে এতদ ইনমন্চ স্থানে এনস্তবতি। প্রকালবৈদনিতি এতদ ইনমন্চোনাহরণম্।
- (৩১৮)। কথিতামুকথনে বিষয়ে বিতীয়ান্তপ্ত টান্তপ্ত ওসম্ভস্ত চ এতদ্ ইদমশ্য স্থানে সমাসে মতি এনজবতি। ক্লীবে সমাসে চাপ্রধানার্থবাৎ প্রকৃত্যবিভিত্যোরেনদিত্যাদেশঃ। এনজি ত ইতি বিতীয়ায়া গতাদ্যৈরিভি সমাসঃ। এমৎকৃত্মিতি কৃতা কর্ত্বপ্রথার্য হুবামিতি সমাসঃ। এমংপুজ্ ইতি অকরণায়াবিত্যাদিনা ষ্ঠীস্মাসঃ। এমমতিক্রাম্ভম্ অভ্যেনদিতি কেচিৎ। অন্যে বদন্তি সমাস ইতি সমাসাবস্থবে সমাস্ত্রশন্ত সমাসাব্দ্রবে পরে ভবতি। অন্যে বৃপ্তভাব্ধবৃত্তাব্ধবিত্তা পুর্বাস্থ্যবিশ্বাহ ব্যবস্থায়

৩১৯। কিং কজাদো কুশ্চ। ক্ষেম্শব্দঃ কো ভবতি ত্রাদো পরে কুশ্চ। কং কোঁ কে। কখং কুত্র কুতঃ।

৩২০। সাক্চ।

কঃ কুত্ৰ কুতঃ।

৩২১। নাস্থাদিথমাদো। কিছর:।

যদ্যপ্যেনৎশ্রিত ইতি লক্ষ্যতে অত্যেননিতি চ তথাপি ন তদিহেইং ভাষাাত্বপদকারাদীনাং নতেন বিরোধাং। দেবদন্তমিত্যাদি দেবদন্তম্য কথিত্যা
ইমক্ষেত্যদেন নাতৃকথনং কিন্তু যজ্ঞ্জনন্ত কথনম্। নবতৃকধনমিতৃাক্তে
এব কথিতগ্যেতি লভ্যতে নহক্ষিথিতভাত্মকথনং দন্তবিত কিন্তু কথিতাত্মকথনমিতি মহতঃ পদভোপাদানেনায়মর্থো লভ্যতে। খং কিঞ্চিত্পদিশ্র
বাদ্যান্তরেণ প্রব্নান্ত্রপদিশ্রতে তং কবিতাত্মকথনম্। তেন এতমাত্মিভ্যত্তাপি ন ভবভি। অত্র হি ঈষদর্থ ইত্যাদিনা বস্তমাত্রনিদেশং কৃত্যা
কিঞ্চিত্পদিষ্ট্র। অতঞ্বায়ং দণ্ডো হ্রানেন ইত্যাদৌ ন ভবত্যেব।

- (৩১৯)। ত্রাদৌ কুশ্চেতি তানে কুশ্চেতি পাঠঘরম। তকারাদৌ স্থাপি পরে কুশ্চ ভবতি। তকারাদিছত ক্সপি ত্র তভ্যোরেষ সম্ভবতি। অথবা ত্রাদিপদেন ত্র তসী গ্রাকৌ। কিন্তু প্রথমত্রাদাবিতি পাঠো রমণীয়ঃ। কথমিতি কিমস্থমিতি থম্।
- (২২০)। অক্সহিতঃ কিম্কো ভৰতি। বাদৌ পরে কুল্চ। কঃ কুতঃ কুত্রৈতি কিম্বলাৎ রূপাদিবর্থেবু অক্সহিত্তাপি কিম্শন্তোদাহরণ-জ্বামিদন্।
- ৩২১)। স্থাদিথমাদিব্যতিরিক্তে পরে কিম্পক্ষ কো ন ভবতি।
 কিন্তুর ইতি নিশাদেঃ কুঞ ইতি টঙ্। থমানীতি থম্দাদানীংহিতরতমাদর:। ক্লীবে সমোরিত্যাদিনৈব লকার্থোহয়ং যোগঃ তং ক্রিয়ডে
 প্রশাদ্য:।

৬২২। অচ্চ সপ্তম্যা বা।

क। .

৩২০। অদমোদঃ সঃ সোরোচ্চ।
সোপরে অদসো প্রকার সো ভবতি সো: স্থানে ওকারশ্চ।
অসৌ পুমানু স্ত্রী চ। বে ২সৌ ব্রাক্ষণ ব্রাক্ষণি চ।

৩২৪। অক্যোদ্ধ।

व्यमत्को भूमान् हो ह। एह व्यमत्को।

৩২৫। ওক্বাভাবেহকোহছুৎ।

অন্ত্ৰ: অন্ত্ৰা হে অন্ত্ৰ হে স্বাহ্ৰে। অমূক ইত্যাগদি কন্।

७२७। यः लिख।

উক্তাচ্ছেষে काली भरत जनमा ला त्या छवछ । असू असूः।

⁽৩২২)। বিদ্শবস্য সপ্তম্যা: স্থানেহরা ভবতি বিষশ্চ কু:। এমশি কেচিদিচ্ছস্তীতি অয়াদিতা:। কুত্র কেতি স্নপদন্ত চক্রভাভীষ্টন্। কুত্রেত্য-শার্তমিতি ভাগবৃধি:। কুষ্টেতি তু স্থান্দসন্।

⁽২২০)। ব্ৰিন্নামাতি কতে সম্মূলা চ অপুকং ৰাবিদা ওকারো ভব-তীতি হচরিত্ব ব্ৰীসমূদাহরণম্। ক্লীবে তু প্রাঞ্চীতাৰ তাদাদর ইতি ব্যবহুগা সর্কানাম্যাতাবঃ।

⁽৩০৪)। অকি সতি অবসো দঃ সো ভৰতোব। ওকারক বা ভৰতি। ব্রীদে অদিৎ দ্র্যাদর্তেকে ইতি প্রাথমিত্বং বর্ত্তবসামিতি নিবিদ্ধর্।

⁽৩২৫)। ওত্বাভাবে সঙি অকোহকার উত্তরতি। অসুক ইঙ্যা-গমিকমিতি মা শেষে ইভি বিহিতো ককারো হয় ন প্রায়োভি স আগমি-কথাফালস্থান্ডরাঃ।

⁽८२०)। त्रो विधानम् सः छपिछत्रामीयमापि त्यव देखि साधाः-

ভং৭। থাকো চ। অমুধা অমূহি।

৩২৮। অন্তাশিদ্ধাবৃত্তে মাদ্দীর্ঘত্রশাচোঃ। উরাদশুসর্ব কার্যাসিদ্ধো সভ্যামদসো মঞ্চারাত্তরয়োদীর্ঘত্রশাচাঃ স্থানে উন্তাভবতঃ। অমু অমৃভ্যাং অমৃনি অমুদ্ধৈ।

৩২৯ ঈদেতো বহুত্ব।

ঈবাদগুসব কার্য্যসিদ্ধো সভ্যামদসো বহুত্ববিষয়স্য এতঃ স্থানে

ঈশ্ববভি। অমী অমীভাঃ।

৩০০ টা নাতঃ।

নেন অমুথেত্যাদে। ন প্রায়োতীতি পানে চেতি লক্ষণম্। যদা তু স্ব্রাতি-রিক্ত: সর্ব্ব এব বিষয়: শেষস্তদা নেদং লক্ষণং কিন্ত উদাহরণার্থমুপদর্শন-মেতং। অদসীয় ইত্যাদে। তু প্রকৃত্যের তারাদর ইতি ব্যবহৈষ্ব «সর্ব্বনাম-কার্যসভাব:।

- (৩২৭)। থানো চ পরে **অবসো দো মো ভব**তি। অমুথেতি প্রকারে থা সর্কাদে^{ত্}রতি থা অমুকীতি হি*শ্চে*নমর্থতক্ষেত্যসূত্রত্তো কিমদোয়ন্তদেত-হয়েভ্যোহনদাতনে হির্বৈতি হি:।
- (২২৮)। অসু ইতি ঐলেচোহতেতি বৃদ্ধী কুতারামূকার: অমূভ্যা-মিতি ভ্যামি দীর্ঘ ইতি দীর্ঘে ক্রতে উকার: অমূনীতি ক্লীবে অস্পনাঃ দির্নায়ে দীর্ঘশ্চতি শিং অবস্তম্য চেতি মৃং পূর্বেণ দীর্ঘ: ততঃ উকার:। অমূদ্যৈ ইতি শ্বৈভাবে ক্রতে মঃ শেষ ইতি মকারে ক্রতে উকার:। মাদিতি কিমৃ ? অমুকৈ: অসকৌ কানপ্যন্তর: স্তাৎ।
- (৩২৯)। বছত ইতি বিষয়সপ্তমী অতো বাচকার অদসো বছত্ত বিষয়ক্তেতি। উকারে প্রাণ্ডে বিধানম। অসীতি অসিং প্রগীতি ইৎ গুণে চ ক্লতে ইত্বং অমীজ্য ইত্যব এতা ইত্যাদিনা এতে ক্লতে ইত্য্ নাদিত্য-সুবর্গতে তেন কাৎ পরস্থান ভবতি অমুক্তেয়া।
 - (७७०)। है। श्रान्त हेत्न श्राप्त विधानम्। উत्त्व कृत्छ होना शूरती-

অগসোহতঃ সম্বন্ধী টা না ভবতি। অমুনা।

· ७०)। ভिमार।

ভিসি পরে অদসোহতঃ স্থানে এন্তবন্তি। অমীভিঃ।

७७२। ইस्ट्यांश्वियाम्।

ভিসি পরে ইদম: স্থানেংক্রিয়ামেন্তবতি। এভিং। ইমৈৰি পক-মিতি তু। ইদমর্থেমশব্দস্য রূপম্।

७७७। नारकामामिः।

ष्प्रमूरिकः हेमरिकः हेमकाङ्गाः हेमरक्यः।

৩০৪। তদাবিদ্<mark>তাবো হন্দ্র সপ্তম্যা বা</mark>। ইতঃ ইয় অন্মিন।

জ্যনেনৈৰ ভবিষ্যতীতি চেদিত্তি ন চ ৰাচ্যং অন্তৰিদ্ধাবুৰবিধানাং। অত ইতি কিম্ ? অমুয়া।

⁽৩০১)। টাভিদ্ভেঙদীতাদিনা ঐসি প্রাপ্তে এবিধানদ্। এতি ক্তে অকারস্থ নিমিত্তসাভাবাদৈদ্ ন ভবতি। এবে ক্তে উদেতো বহুছে ইতি ঈশুম। এবিধানমূত্তরার্থম। অক্সথা ভিনীদিজ্যেবং কুর্যাথ।

⁽ ৩০২)। জ্ঞিদ ঐদি প্রাধ্যে এবিধানম্। স্মারিরামিতি কিম্ ? স্থাতিঃ।

⁽৩৩৭)। অবস্ ইন্ম্ ইত্যেতয়েরকি সভি এলাদিন ভবভি। এত-দেব নিষেধবিধানং জ্ঞাপকম্। একদেশবিক্তমনন্ত্রবন্তবিভ অন্তথা অকি সভি এলাদি প্রাপ্তাভাবে নিষেধবিধান্যনর্থকং স্থাই। এলাদিরিভা:নন এৎ সং মন ইত্যেক্ আদেশা গৃহত্তে। ইমকেনেভি এট্রোসোরিদমন্তান ইতানেন অনো ন ভবভি। লো মোহনীভি দক্ত ম:।

⁽৩০৪)। তদৌ পরে ইন্নয়: স্থানে ইক্তাবো ভবতি। সপ্তমাা: স্থামে হকাবো বা ভবতি। তৃংসন্নিযোগাং ইন্ন ইভাবক্ত। ইন্ধিত গছতীতি প্রারেণ ব্যবহারশালোক্য সন্দিহানো মন্দ্রী: স্থানিতি ভাষশক্ষোপাধানম্।

৩৩৫। হল্যৎ।

হলি পরে ইদম: স্থানে২স্কবতি। আভ্যাং আভি: এক্যঃ অস্যাঃ অস্থ্য সত্র অস্থাং আস্তু।

२०७। छ्त्यस्यशः खोशूः त्राः। ॰ रेक्षमः खात्म छ्ना मह खोश्ः त्राः त्रिसमय्गिष्णणावात्त्रां खवणः। रेसः खो यदः शूमान् शत्रास्यः शत्रमासम्।

৩৩৭। দোমোহচি।

श्वामाि शत्त रेमटमा तमा तमा खवि । रेटमा रेमाः रेमािन ।

৩৩৮। অকি হল্যপি।

ইমকাজ্যাং ইমকেজ্যঃ ইমকেষু। অস্বাদ্যতি তু। ইদমর্থঃ।

⁽ ৩০৫)। হলীতি কিম্ ? দোমোহচীতি বাধকো ভবিষ্যতি তৎ্ধলীতি কৃতং লাষ্টাৰ্থম্ ।

⁽ ৩০৬)। সমাসে পরমেদমিতি হিতে বিভক্তে কুতারাং ভবতি হি কারণাদভিক্রম ইন্ডি সন্ধিবিশ্লেষং ক্রমা আদেশ:। বছত্রীহৌ তু অপ্রধানার্থমে চেতি প্রতিরেধাং প্রাপ্তেদং স্ত্রী পুমাংশ্রেতি।

⁽৩০৭)। হল্মাত্রে স্থানিভাদেশোহয়ন্। ইমানিতি দকারত মকারে ক্লতে মঃ।

⁽২৩৮)। প্রকরণনিরমত ফলং সর্বত্যেইদ্বাৎ ভদিহাপি নাব্যমিতি
পূর্বাক্তরে বৃত্তিক্রদাহ স্বাদ্যটীতি। এবঞ্চ সতি অকোহকারে পরে ন প্রাম্যোতীতি বিধানন্। অফি সতি স্বাদ্যটি পরে হলি চ ইদমো দো মো ভবভি। অচি তু ইমকৌ ইমকে ইমকানীত্যাদি। প্রকরণনিরমান রম্মে স্বাদেং প্রভ্যুদাহরণং দর্শরতি ইদমর্থ ইতি এভচ্চ সিদ্ধান্তরেং ক্লীবে সম্মেরপ্রধানং স্বাস ইত্যাদিনাপ্যক্র স্কারন্ত স্কারের ন প্রাপ্রোত্যেব।

৩০৯। স্থপা জ্মাদির্ অদস্মদোরহমাদিশ্চ সম-জ্ঞাদো।

স্থা সহ যুত্মদং স্থানে সমাদির্ভবতি। অস্মদং স্থানে অহমাদিশ্চ। স চ যুত্মদক্ষদোরলিক্ষরাৎ স্ত্রীপুংনপুংসকেষু সমো ভবতি।

৩৪০। হ্রনা ত্বমহয়।

হে বং হে বহং পরমত্বং পরমাহম্। অহমিত্যবায়ঞ্চ অহকারঃ।

৩৪১। অমা ত্বাং মাম্।

পরমত্বাং পরমমাম্। এবং সমাসেহপরমপূর্যনীয়ম্।

७८। यूवादवी बिद्ध।

যুবাভ্যাং আবাভ্যাং যুবয়োঃ আবয়োঃ।

৩৪৩। ঔউটোরাম্।

যুবাং আবাম।

⁽৩৩৯)। লিঙ্গভেদবিহিতস্থাদাদিকার্য্যস্থাভাবাদাহ যুদ্মদমদোরলিঙ্গ-ত্থাদিত্যাদি। যদি চাদীনামিব তয়োরলিঙ্গতং স্থান্তদা ত্বং দর্শনীযা অহং দর্শনীয় ইতি বিশেষনেহপি লিঙ্গভেদো ন স্যাৎ।

⁽৩৪০)। স্থনা সহ বৃদ্ধদন্তমন্দ্রনাহণ ভবতি। স্বন্ধাবেকতে পদপ্রভাষরোরিতি মদাদেশে কতে কথমহন্ধার ইতি চোদ্যমাহ অহমিত্যবায়ক্ষেতি তত্মারমোহংভ্যাং কাব ইতি কারপ্রভারেন সাধনীয়া। অহমাবাণীক্রিয়াণি অহংমন্যা অহংপ্রভারা অহং—গ্রাহা অহমাত্মা ইত্যাদি তু
সমাদেন।

⁽৩৩১)। অমা সহ বৃশ্বদন্তাং অন্মদো মাং ভবতি।

^{় (}৩৪২)। বিজে বর্তমানরোধু গ্লণক্ষণোঃ স্থানে যুবাবৌ ভবতঃ যুবা-ভ্যামাবাভ্যামিতি ভ্যামি দীর্ঘঃ ইতি দীর্ঘঃ। যুবলোবাবলোরিতি এস্তঃ ইত্যাদিনা এম্বন্ধাদেশশ্চ।

⁽ ७४७)। यूप्रतपारमाः नषकित्नारप्रोखेरहाः श्वात व्याखविष्ठ । भृथक्

৩৪৪। জদা যুবং বরম্।

यूय्रः वय्रम्।

७८८। नाम्बर्।

यूत्रान् अन्यान्।

৩৪৬। ছুমো যায়ী টাঙ্কোঙ দেশ্চ তঃ।

पग्ना मन्ना पन्नि मन्नि पट मट ।

७८१। ध्या जूजाः मञ्जू।

তুভ্যং মহম্।

৩৪৮। ভিস্কুপোরাৎ।

যুন্মাভি: অন্মাভি: যুন্মান্ত অন্মান্ত।

পৃথক্ সম্বন্ধাৎ ক্রমোশ্ব ন ভবতি। আন্ ইতি দীর্ঘবিধানং লোপোহণ মোশ্ত ইতি লোপনিরাসার্থম্। নম্বেবং সিরামিতি স্থাৎ নৈতদন্তি নহ্য-নিষ্টার্থাঃ শাস্ত্রে প্রকুপ্তিরিতি এবঞ্চেৎ হ্রস্ববিধাবপ্যদোষঃ তদেতচ্চিস্তাম্।

(৩৪৪)। জনা সহ যুদ্মদো ধৃদ্ধং অন্মদো বয়মিত্যেতৌ ভবত:।

(৩৪৫)। ব্যাদস্পো: সম্বিদ্য শ্বাং স্থানেহন্ ভবতি। জ্বাস্কশ্বং স্বর্ণোহক্শস ইত্যাদিনা অপ্রাপ্তৌ বিধানম্। তেন সুমান্ ব্রাক্ষণীঃ
অস্থান্ কুলানীতি ভবতি।

(৩৪৬)। টাঙি ইন্ড্যেতব্যেও সৈশ্চ সম্বন্ধিনো যুন্নদক্ষণো: স্থানে ব্য ইন্ড্যেডাবাদেশো ভবতঃ। টাঙ্যোঃ স্থানে বাষী আদেশো ভবতঃ। গুনেন্চ তো ভবতি।

ু (৩৪৭)। ঙে ইভানেন দহ যুৱদ: স্থানে তুভাং অস্থদ: স্থানে মহং ভবতি।

(৩৪৮)! ভিদ্রপো: পররোর্মদেরদোরুত্তরে আন্তবতি। হবোজ্যা শীর্বভাগ্রহণাৎ বুমাভিরমাভিরিত্যত্র উস্ভাবাভাব: বুমান্থ অস্থান্ন ইত্যান আসি একাজাব: । ৩৪৯। হতুৰ্থীভানো ভাষ্। বুৰভাষ্ অৰভাষ্।

৩৫০। পঞ্চমীভ্যমন্ত:।

যুত্মৎ অন্মৎ।

०६५। ज्या जः।

ছতঃ মতঃ ধুবঁতঃ আবতঃ যুদ্মতঃ অমতঃ।

৩৫২। তব্মমো গুসা।

७व मम। माम्याज्यात्रक्ष ममञ् मम्या।

- (৩৪৯)। যুদ্দশ্বদোরস্তরক্ত চতুর্থীভাসঃ স্থানে ভাষ্ ভবতি। উত্তব-স্ব্রে পঞ্চমীতি বিশেষণাচ্চতুর্থীতি কর্ত্ত্মশক্যম্। অথবা ওসিওসোর্ভেদার্থং যথেকারন্চিক্রার্থ: ক্লতঃ তথা ভাসিভাসেশিরতি ক্লতে চতুর্থী পঞ্চমা বয়মপি শক্যমকর্ত্ত্য্য এন্ত্রাস্নামোস্প্রপ্ত্রু ইতাত্র তু ভাসিগ্রহণমপি কর্ত্তব্যং তদেতর ক্লতং বৈচিত্র্যার্থম্।
- (৩৫•)। যুদ্দদদেকিত্তরশু পঞ্চমীভাস: স্থানে তো ভবতি। অকাব উচ্চারণার্থ:।
- (০৫১)। তসৌ পরে যুদ্দন্দদোরুত্তরস্তো ভবতি। অকার উচ্চারপার্থ:। পূর্বাং তকারাদেশোহয়মাগম ইতি স্পষ্টরিত্ং পৃথগ নির্দেশ: ক্বতঃ।
 তত্তো মন্ত ইতি তৃমৌ বাষীত্যাদিনা ভমাদেশো ওসেন্চ তঃ স্থানিবভাবাৎ
 ক্রহ্ হাকোবিত্যাদিনা তকারক্ত স্থানে তসিঃ ঘ্যাদিত্বাৎ যুদ্দন্দদোঃ পঞ্চম্যাতত্তিরিতি তসেরপ্রাপ্তিঃ। যুবন্ত আবন্ত ইতি যুবাবৌ বিদ্ব ইতি যুবাবাবাদেশৌ।
- (৩৫২)। গুলা সহ যুগ্ধনন্তনাঃ স্থানে তব মম ইত্যেতাবাদেশে তবতঃ। বদি নীরক্ষীরসম্বন্ধবং প্রকৃতিপ্রত্যন্তরারেকৈবান্ধমাদেশক্তনা বংপুত্র ইত্যাদৌ পুক্সপোধনোক্ষীদেরিতি সম্দান্তলাপঃ ন্যাং ন স্যাদেব বা তন্ধাং গুলা ক্ষানালেশা যুগ্ধনন্তন্ত্র্মমৌ ভবতঃ হলস্থাবিতান্ব গরিকর্মনীরম্। এবং ঘনহমিত্যাদৌ স্থনা দ্বমহম্ অমা বাং মাং ক্সা
 বুরং বরং গুলা ভূতাং মন্ত্রিভ্যাদিলক্ষণৈত বিভক্তঃ স্থানে অমাভাদেশাঃ

৩৫০। সামোহকম্। যুমাকম্ মনাকম্।

৩৫৭। স্থজন ঙেঙস্বজ মপ্রধানার্থরোঃ সমাসে যুক্তদম্মদোরেকত্বে হনৈত্যকত্বদ্বিত্বত্ত্ত্বলৈ ত্বমৌ দিছে যুবাবৌ স্ত্রে যুক্তাম্মৌ স্থাতামমি দীর্ঘশ্চ।

ষামতিক্রাস্ত্রে অতিরাং রামতিক্রাস্তম্ অতিরাং রামতিক্রাস্ত্রের অতিরার বিজ্ঞান্তর অতিরাল্ অতিরাল্ রামতিক্রাস্ত্রের অতিরাল্য রামতিক্রাস্ত্রাল্য অতিরাল্যাং বামতিক্রাস্ত্রাল্যাম্ অতিরাল্যাং বামতিক্রাস্ত্রাল্যাম্ অতিরাল্যাং রামতিক্রাস্ত্রাল্যাং বামতিক্রাস্তর অতিরহ রামতিক্রাস্ত্র্রায়াং অতিরব্যাঃ রামতিক্রাস্তর্যাং অতিরহ রামতিক্রাস্ত্রেরাং আতির্বাং বামতিক্রাস্ত্রেরাং রামতিক্রাস্ত্রেরাং রামতিক্রাস্তর্যাং র্বামতিক্রাস্তর্যাং র্বামতিক্রাস্তর্যাং র্বামতিক্রাস্তর্যাং র্বামতিক্রাস্তর্যাং র্বামতিক্রাস্তর্যাম্ র্বামতিক্রাস্তর্যাম্ র্বামতিক্রাস্তর্যাম্ র্বামতিক্রাস্তর্যাম্ র্বামতিক্রাস্ত্রাম্ র্বামতিক্রাস্তর্যাম্ র্বামতিক্রাস্তর্যাম্ র্বামতিক্রাস্ত্রাম্ র্বামতিক্রাস্তর্যাম্ র্বামতিক্রাস্তর্যাম্ র্বামতিক্রাস্ত্রাম্ র্বামতিক্রাস্তর্যাম্ র্বামতিক্রাস্ত্রাম্ স্বামতিক্রাস্ত্রাম্ স্বামতিক্রাস্ত্রাম্ স্বামতিক্রাস্ত্রাম্ স্বামতিক্রাস্ত্রাম্যাম্

প্রক্তেঃ স্থানে চ তাদয় আদেশা বিধেয়াঃ। নামন্তদ্ধিতবিধানাৎ কথং মমতা মমন্ত্রমিতি ষষ্ঠান্তাত্তমিতি অত আহু মমেত্যব্যয়ঞ্চেতি।

⁽৩৫৩)। সিরামীতি বিহিত্ত স্কাব্ত ষ্টাব্ছব্চনত সাম্ ইতি নির্দেশ: কৃতঃ। যুম্মণার্লোশ্চোত্তবক্ত সামঃ স্থানেহকস্তব্তি। যুম্মাক্ম-স্থাক্মিতি স্বর্লোশীর্ষ ইতি দীর্ম।

⁽৩৫৪)। জনঃ সাহচর্যাৎ ক্রমনিয়মান্বা স্থ ইতি প্রথমৈকবচনশু গ্রহণম্। ক্রেন্ডেডসান্ বর্জ যিতা সমাসেহপ্রধানার্থয়োর্ ক্রনত্রলোবেকছে সন্তি সমাসেহস্কস্য এককে বিছে বহুছেছিপি যুদ্দশ্বনোঃ স্থানে ধ্যৌ

অতিযুবাভ্যাং যুবামতিক্রান্তেভ্যঃ অতিযুবভ্যঃ যুবামতিক্রান্তাং প্রতিষ্বৎ যুবামতিক্রান্তাভ্যাম্ অতিযুবাভ্যাং যুবামতিক্রান্তাভ্যাম্ অতিযুবারঃ যুবামতিক্রান্তানাম্ অতিযুবারং যুবামতিক্রান্তে অতিযুবারি যুবামতিক্রান্তানাম্ অতিযুবারং যুবামতিক্রান্তের অতিযুবার যুবামতিক্রান্তাঃ অতিযুবারং যুবামতিক্রান্তের অতিযুবার যুবামতিক্রান্তাঃ অতিযুব্মাং যুবামতিক্রান্তির অতিযুব্মাং যুবামতিক্রান্তা অতিযুব্মাং যুবামতিক্রান্তা অতিযুব্মাং যুবামতিক্রান্তা অতিযুব্মার মুবামতিক্রান্তারাং অতিযুব্মালাং যুবামতিক্রান্তির্ভান্তেভ্যঃ অতিযুব্মাভাাং যুবামতিক্রান্তভ্যঃ অতিযুব্মাভাং যুবামতিক্রান্তভাং অতিযুব্মাভাং যুবামতিক্রান্তভাং অতিযুব্মাভাং যুবামতিক্রান্তভাং অতিযুব্মাভাং যুবামতিক্রান্তভাং অতিযুব্মাভাং যুবামতিক্রান্তভাং অতিযুব্মাভাং যুবামতিক্রান্তভাং অতিযুব্মাৎ যুবামতিক্রান্তভাং অতিযুব্মাৎ যুবামতিক্রান্তভাং অতিযুব্মাণ যুবামতিক্রান্তভানাম্ অতিযুব্মাকং যুবামতিক্রান্তভানে অতিযুব্মার যুবামতিক্রান্তভানাম্ অতিযুব্মার যুবামতিক্রান্তভানে অতিযুব্মার যুবামতিক্রান্তভানে অতিযুব্মার যুবামতিক্রান্তভানাম্ অতিযুব্মার যুবামতিক্রান্তভানে অতিযুব্মার যুবামতিক্রান্তভানাম্ অতিযুব্মার যুবামতিক্রান্তভানাম্ অতিযুব্মার যুবামতিক্রান্ত

ভবতঃ। অপ্রধানার্ধরান্তরোদি ছৈংকৈ ছিছে বছছেংপি যুবাবৌ
ভবতঃ। তবোবেবাপ্রধানার্ধরোব ছিছে অক্তিক্ষে দিছে বছছেংপি যুবানৌ
ভাতান্। আমি পরে ধীর্ষক। অপ্রধানার্ধনাং হল্দুক্ সর্মনায় ইতি ন
প্রায়োতীতি সুমাম্মবিধানন্। ঔউটোরান্ ইত্যাদিশক্ষণং সর্মমিছাল্লবর্জতে
তেন তৎকার্য্যপ্রধানেংপি ভবতি। সামোংকর্ ইত্যভাত্তর্তিসামর্থাদেপ্রধানার্থছেংপাসর্মনামন্বাদবিহিত্তেংপি সিরামীতাত্র আমেবাকস্করতি।
হল্পত্তেভস্বজ নাং জমাদিকার্যাং ন ভবতি। হ্বনা স্বাহমিতানুস্বভেষপ্রধানার্থছেংপি ভৎকার্যাং ভবত্তের। স্বামতিক্রারাবিতি যুব্বদ একসং
অক্তম্য বিস্তং অতিস্বামিতি উউটোরামিতি উত্থানে আন্। সামতিক্রান্তমিতি রুব্বদ একসং অক্তমাপোকসং অভিসামিতি স্বান্দ একসং
বোপোংপমোহত ইত্যকারপূর্ণ। স্বামতিক্রান্তাবিতি মুব্বদ একসং অক্তম্বারীতি উটারামিতি উট্টারানি বিত্রান্তাবিতি মুব্বদ একসং অক্তম্বারীক্রি স্বান্দ একসং অক্তম্বারীক্রি
রিষ্ণ অভিসামিতি উউটোরামিতি উট্টারানে আন্। স্বামতিক্রান্তানিক্রি

যো: অতিযুগ্নো: যুগানতিকান্তেমু অতিযুগাস্থ। এবং লক্ষণং
শ্বন তং লক্ষণং লক্ষণং যাভ্যাং তৌ লক্ষণং লক্ষণং যৈন্তান্ লক্ষস্থানিত্যাদি। এবং মামতিকান্তো অতিমাং মামতিকান্তম্ অতিমাং
মামতিকান্তো অতিমাং মামতিকান্তান্ অতিমানিত্যাদি। স্কুস্টেভস্প তু। ভামতিকান্তঃ অতিহং ভামতিকান্তাঃ অতিযুগ্ধ ভামতিকান্তায় অতিহুভ্যাং ভামতিকান্ত্ৰত অতিতবেত্যাদি।

७৫०। निष्कितखरामा प्रमानाहमानी। बुधानाहकानः पः युताः युग्नः पाः युताम्।

বৃদ্ধানঃ একস্বং অক্তন্ত বহুত্বং অভিযানিতি শসোহন্ ইতান্ এবনপবত্রাপি লাইনেব। অভিযুৱেতি স্বামী বাদিনা বাদেশঃ অভিযানিতি ভামি দীর্ঘ ইতি দীর্ঘঃ অভিয়াভিরিতি ভিস্ত্রপোবাদিতাাং। অপরং বুভাবেব লাইন্। স্বামতিক্রান্ত ইত্যুপলক্ষণন্। যুবামতিক্রান্ত ইত্যুত্র বৃদ্ধানতিক্রান্ত ইত্যুত্রাপি অভিয়নিতি এবমতিব্ রমিত্যাদিপি ভবতি। অপ্রানাতিক্রান্ত ইত্যুত্রাপি অভিয়নিতি এবমতিব্ রমিত্যাদিপি ভবতি। অপ্রানার্থিছেইপি সর্ক্রামন্ত্রাং স্বন্ধান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্র ক্রাম্বান্ত্র ক্রম্পত্তিপ্রক্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্র ক্রম্পত্তিক্র ক্রাম্বান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্তর ক্রম্পত্তিক্র ক্রাম্বান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্তর ক্রম্পত্তির ক্রমেন্ত্রান্ত্রান্তর ক্রম্পত্তির ক্রমেন্তর ক্রম্পত্তির ক্রমেন্তর ক্রম্পত্তর ক্রমেন্ত্রান্ত্রান্ত্রান্তর ক্রম্পত্তর ক্রম্পত্তর ক্রমেন্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্তর ক্রম্পত্তর ক্রম্পত্তর ক্রমেন্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্তর ক্রম্পত্তর ক্রমেন্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্র ক্রম্পত্তর ক্রমেন্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্তর ক্রমেন্ত্রান্ত্রান্তর ক্রমেন্ত্রান্ত্রান্তর ক্রমেন্ত্রান্ত্রান্তর ক্রমেন্ত্রান্ত্রান্ত্রান্তর ক্রমেন্ত্রান্তর ক্রমেন্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্ত্রান্তর ক্রমেন্ত্রান্ত্রান্তর ক্রমেন্ত্রান্ত্রিন্তর ক্রমেন্ত্র ক্রমেন্ত্রান্তর ক্রমেন্ত্রান্ত্রান্তর ক্রমেন্ত্রান্ত্রান্তর ক্রমেন্ত্র ক্রমেন্ত্র ক্রমেন্ত্র ক্রমেন্তর ক্রমেন্তর ক্রমেন্তর ক্রমেন্ত্র ক্রমেন্ত্র ক্রমেন্তর ক্র

(৩৫৫)। শিঙ্কিপাবস্তে ব্যোক্টো শিঙ্কিবস্তো এবংভূতরোরশি ব্রদশ্বদোঃ স্থপা সহ স্বমাদিরহমাদিক ভবতি। বুলানাচকাণ ইতি একস্ব-বিশ্বরোবিশেবং বক্ষাতি। এতাবতা বহুবর্থম্পালহার নারস্তংকরোভ্যাদা-শিত্যাদিনা নামণিঙ্ অনেকাচামিত্যাদিনা অলোগঃ ততঃ কিপ্ কিন্দশ্বো-শ্বেতি শিঙ্মুক্ ততঃ স্বাদরঃ। স্বমিত্যাদি। একদেশবিক্তমন্তবন্তবতীতি স্থনা স্বমহমিত্যাদি পূর্ববিং। স্বর্লাবেকস্বে পদপ্রত্যর্রোরিত্যক্ত প্রাক্ ৩৫৬। শুস্ভিস্ত্পাত্ত মত্তাৎ। বুষান্।

७८९। यात्यास्त्रिमत्य्रातस्त्रुक्। स्रा व्वाखाः यूवािः जूषाः यूवािखाम्।

৩৫৮। ভ্যক্তমশ্য লুক্বা।

মুম্মাং যুম্বভাম্। যুড্ভামিতি কাতলম্। স্থ যুমাভাং যুম্মং

যুম্মাং তব যুবয়ো:।

৩৫৯। অকমোহদার্ঘো যুম্মান্মোর সূল্যা।

নুমাকং যুমাকন্। যুমানিতি কাতন্ত্রন্। জি৷ যুবয়োঃ যুমান্ত।

এবন্ অহন্ আবাং বয়ং মান্ আবান্ অসান্ মা৷ আধাভ্যান্
অসাভিঃ মহান্ আবাভ্যান্ অন্ত্যন্ অসভ্যন্। অস্ভ্যনিতি
কাতন্ত্রন্। মৎ আবাভ্যান্ অন্ত্ অসৎ মন আবয়োঃ অন্তর্ন
অসাকন্। অমানিতি কাতন্ত্রন্। মিয় আবয়োঃ অসাহ্য।

৩৬০। কেচিৎ ত্বমাদ্যহমাদী নেচ্ছস্তি।

⁽ ৩৫৬)। ণিঙ ্কিবস্তয়োর্ খদশ্বদোঃ শস্ভিস্মূপ স্থ পরেয়ৄ। মকারশু স্থানে আন্তবভি।

⁽৩৫৭)। বাব্যো: প্রয়োস্ত্র্মব্যোরকারক্ত নুগ্ভবতি। বধাসংখ্যমিহ নেষ্ট্রম্। ব্রাভ্যামিত্যাদি শিব্যহিতৈবিতরা অন্তলক্ষণসিদ্ধান্তপি উহাহরণানি ক্রমেণ দর্শরতি।

⁽ত৬৮)। ভাসি পরে ণিঙ্কিবস্তবোর্মদক্ষণোঃ সম্বন্ধী অকার আগমো নিত্যং ভবতি। নকারস্ত চ লুখা ভবতি। বৃদ্ধানিত তন্মতে অকারাগমোহত্ত ন ক্রিরতে যুক্তাস্তবাস্থকারপুর্ব।

⁽৩৫৯)। বুদাবোদ'ল নুধা ভবতি। ভয়ো: পরভাকমোহদীর্থো -ভবতি। তৎসন্নিহিত্যাদকম্ আদ্যক্তিবাকারস্য দীর্ঘো ভবতি।

⁽৩৯০ । ব্যালখনোবিহিজো দ্যাণ্যহ্যাণী নেছজি কেচিং। ভ্রমজং ধর্শর।

৩৬১। স্থানেরম্মক ল্থা।

য়ৃষ্ং যুষম্।

৩৬২। আম্টাভিদ্ঙিস্প্স্ল লুগ্নিত্যম্।

য়ুষাং যুষা। বুয়োতি কাতল্তম্। যুষাভিঃ যুষা যুষাস্থ।

৩৬০। আম্শদ্ভান্যাৎ।

यु बार यु वान् यु वाज्याम्।

৩৬৪। ঙেরম্ মস্ত লুখা।

सूत्रः युसम्।

৩৬৫। তভামোরশ্বস্থ লুগ্বা।

ষুমং যুধং যুমভ্যং যুমভ্যম্। যুড়্ভ্যমিতি কাতল্তম্।

৩৬৬। উদোহশ্বস্থ লুগা।

यूष यूष।

^{&#}x27; (৩৬১)। স্বমানাহমাদ্য ভাবে সতি স্থজসোঃ স্থানেহস্তবতি। যুগ্থা-শ্বোম কারস্ত লুখা ভবতি। স্বামাচক্ষাণঃ যুবামাচক্ষাণঃ মুগ্থানাচক্ষাণঃ সর্বত্য যুগ্ধ যুবমিতি তু জন্তব্যমৃ।

⁽৩৬২)। স্বামিতি ঔঐটোরামিতি বিহিতস্যামো গ্রহণম্। স্বাম্-টান্ডিস্ভিস্প্স্পরের মকারক্ত লুগ্নিত্যং ভবতি। বৃন্ধং বৃৎমিতি স্বজ্ঞসো-ক্ষণাহরণম্। টাঙ্যোর্যায়্যাদেশৌ পূর্স্বিবং।

⁽৩৬৩)। আমি শদি ভ্যামি চ পরে যুদ্মান্দোর্ম কারস্ত স্থানে আন্তর্বতি।
(৩৬৪)। যুদ্ধদন্ধলোকতরস্ত ভেরিত্যস্তাম্ভবতি মকারস্ত বৃগা
ভবতি।

⁽ ৩৯৫)। ভজামোঃ পররোরত্তবতি। মকারক্ত সুধা ভাং। অস্তে ভাষাতং নেজ্জি ভন্মতে যুড্ভামস্ভামিতি ভবতি। ত ইতি ওসেতঃ পঞ্চীভাসত্ত ইত্যুডরোর্গ্রম্।

⁽ ৩৬৬)। ওসোহৎ ভাৎ। বৃদ্মান্দোর্ম কারন্ত পুথা ভবভি।

৩৬৭। ওসি মস্যায়। যুষোঃ।

० ৮। अकमानामा नृग्।।

৩ ১। একত্ববিত্তবোর প্রধানসমাসবৎ স্তজস্ভেভি-রেকত্বে ত্বং নং ভ্রমা ত্বমো।

ত্বামাচকাণঃ তৃং তৃণং তৃং তৃণং তৃণ তৃবা । তেবেতি কাতস্ত্ম । তৃণভাং তৃণভাং তৃং তৃণভাং হৃতং তৃণভাং তৃৎ তৃত্বাং তৃণকং তৃষি তৃবোঃ তৃণ্ড । মামাচকাণঃ মং মাং মং মাং মাং মাণ মান মযা। মেনেতি কাতস্ত্ম । মাভাং মাভিঃ মং মাভাং মভাং মৎ ম মাভাাং মহ মযোঃ মাকং মযি মযোঃ মাস্থ । মামাচকাণাঃ হৃমিতি কাতস্ত্ম । যুবামাচকাণঃ তৃং যুবাং যুবাং

⁽৩৬৭)। ওসি পবে যুদ্মাশ্মোর্ম কাবস্ত বো ভবতি।

⁽৩৬৮)। অকমি পরে যুমাম ইত্যেতাভ্যামূত্তরে আঙ্বভি। মন্ত লুখা স্থাৎ।

⁽৩৬৯)। একবে দিছে চ বর্তমানরোর্ণিত কিবন্তরোর্ মানদার-শ্রেধানসমাসবৎ কার্যাং ভবতি। স্কল্প্রেডিঃ সন্ধ্রমানদারেক্ষে অর্থে বর্তমানমোত্তং মমিত্যেভাবাদেশৌ ভবতঃ। ওসা সহ তরোরেক্ষে বর্ত্ত-

আবান্ আবয়া আবাভ্যাম্ আবাভি: মছম্ আবাভ্যাম্ আবভাম্ আবং আবাভ্যাম্ আবং মম আবয়ো: আবাকং আবয়ি আবয়ো: আবাহা। অস্বাদে তু। মুবামাখ্যাতৃমিচ্ছতি বৃব্দয়িষতি বৃব-য়োভাবি: বৃশ্তা।

৩৭০। স্বন্দাবেকত্বে পদপ্রত্যরয়োঃ।

তৃৎপুক্রং তৃরাখং সমারং তৃদীয়ং তৃত্তরং তৃত্তম: তৃর্ধৎ মৎপুক্রং
মরাথং মৎকরাং মদ্ধ তৃদয়তি মদয়তি তৃৎকামাতি মৎকামাতি
দ্যাতি দ্যাতে মতাতি মততে। লুপ্তঞালুপ্তবং কচিদিতি অস্বং
দং ভবতি দ্ভবতি মন্তবতি। এবং কাতদ্রে স্বাধি অধিস্থ ম্যাধি
অধিমৎ তব সমীপম্ উপস্থ উপস্থ অতিকান্তং স্বাম্ অতিস্থ
অতিমদিত্যদাহাতম্। অনেকত্বে তৃ। যুব্যোর্ম্মাকং বা পুক্রঃ
যুম্প্রক্রঃ আব্যোর্মাকং বা পুক্রঃ অক্ষৎপুক্রঃ যুম্মদীয়ম্ অক্ষ্

মানবোন্ত মৌ ভবতঃ। এতৎ সাধনং প্রাণেব স্পষ্টম্। অস্বাদৌ স্বিতি স্মাদীনাং স্থপানৌ পবে বিধানাৎ সাদিব্যতিবিকে ন ভবতি ব্যুমন্নিযতীতি শিঙকাৎ সন্ ৰিসক্তিঃ বুমক্তেতি ভঙাবে ভাষমিতি তা বিশ্ববহুষরোরেভত্না-হরণম্। একত্বে স্বন্দৌ বক্ষাতি।

(၁१ -)। পদে প্রভাবে চ পরে একত্বে বর্ত্তমানরোর্ত্তমন্ত্রনালালেশী ভবতঃ। পূর্ববিধানব্যতিরিক্তোহস্ত বিষয়:। স্বায়মিতি আদিক্তিলাদেকাচ্পবাদেরভক্ষাবন্তরোরিতি বিকারার্থে ময়ট্। স্বদীর মতাত্র তত্ত্ব, ভবেহর্থে তাদাদেরীর ইতি কয়ঃ। স্বভর ইতি ক্রিয়াগুণসংজ্ঞাভির্ব য়োরেক্স্য পৃথক্কারে তরো বা তাদাদেরিতি তয়ঃ। স্বদদিতি বদাদিস্তাদিবাদাবিতিবং। মংকর ইতি মনাগ্নে কল্লদেশ্রদেশীরা ইতি কয়ঃ। স্বদর্ভীতি পিঙ্কধাদিস্বাদ্বাভাবঃ একাচ্ত্রাদস্তপূক্ ম ভবতি। স্বংকামাতীতি ক্রামান নাম ইছেরামিতি কামঃ। স্বদ্যতীতি ক্ল্যাচার

ত্ব । অপাদাদাবেকবাক্যে পদাদমা দ্বা মা।
প্রামন্ত্রা পশুতি গ্রামো মা পশুতি। পাদাদে তু—তদ্দর্শিনমুদাসীনং
দামের পুরুষং বিদ্বঃ। অনেকবাক্যে তু—ওদনং পচ তব ভবিব্যতি। সাখ্যাতং স্থাব্যয়ং সকারকং সবিশেষণং বাক্যমিহাভিত্রেতম্। নতু লোকিকপদসংঘাতঃ সম্বন্ধার্থো বাক্যমিতি। এবমুত্তরও
ব্রাপ্রাদাহার্য্যম্।

ইত্যাদিনা ঈর্। বদ্যতে ইতি কর্ত্রার্ইত্যাদিনা আর্ হলিজ্ত্যামিত্যাদিনা ঈকারাকারবােল্ক্। ল্পুমপ্যল্পুবং কচিবিবরে ভবতীভি। বছবভীতি অভ্ততদ্ধাবে কুভ্তিষ্ চি্রগস্তাদী চেতি চি: তভ ল্পুস্যাল্পুবন্ধে
নতি প্রত্যরপবদাং দদাদেশ:। অধিদং উপদ্দিতি সমৃদ্যাদাবব্যরস্যাবারীভাব ইতি সমাসঃ অব্যরীভাবে চানত ইতি স্থাক্ । অভিদ্দিতি
বিতীর্বা ইত্যাদিনা সমাসঃ হলশ্চামাে ল্গিতি স্থাক্ ।

(০৭১)। ছন্দংশান্ত্রনিয়মিতশ্লোকস্ত চতুর্থেহিংশং পাদং। পদং
থবস্তং তিওন্তঞ্চ। একবাক্যে আধারভূতে পাদাদিব্যতিরিক্তে স্থানে বর্ত্তমানয়োঃ পদাহত্তবয়োর্ য়দশ্মদোঃ স্থানে অমা সহ তা মা ইত্যেতৌ ভবতঃ।
ছদ্দর্শিনমিত্যাদি একবাক্যে পদাহত্তরো যুম্মছ্লেহেত্র ভবত্যের কিন্তু
পাদাদৌ বর্ত্তমানঃ। ওদনং পচ ইত্যেকং বাকাং তব ভবিষ্যতীতি দিতীরং
বাকাম্। একবাক্যে স্থিততাৎ পদাহত্তরো দিতীরবাক্যে স্থিতো মুম্মছ্লেশ
ইতি তে ইত্যয়মাদেশো ন ভবতীতি। উত্তরপ্ত্রেমপ্যেতদম্বর্তত ইতি
প্রচরিত্তম্বরপ্রস্থ প্রত্যাদাহরণমেত্রপঞ্চন্তম্। অস্ত তু প্রোসাদাহত্তিই তাং
পশ্ততিতি। নমু পরস্পরাকাক্ষাপেক্ষালক্ষণস্য সম্বন্ধস্থ বিদ্যমানত্তাৎ
পদসংঘাতঃ সম্বন্ধার্থো বাক্যমিত্যেকমেবেদং বাক্যমিত্যাশক্ষামাহ সাধ্যাতমিত্যাদি। ভাষ্য আহ সাধ্যাতং তিভন্তমানৈকং বক্ষতি। সাধ্যাতমিতি
নিত্রাদি। ভাষ্য আহ সাধ্যাতং সাব্যয়ং বথা উচ্চৈঃ পভতি। সাধ্যাতং
সকারকং বথা ওদনং পচতি স্পকারঃ। স্বিশেষণমিত্যক্র বিশেষণমুক্তম
ক্রিরাকারক্রিপেরণক্ত সামান্যেন গ্রহণয়্ব। সাধ্যাতং স্বিশেষণং বথা মৃষ্ট

৩৭২। ঙস্ঙেভ্যাং তে মে। শ্রামন্তে স্বমন্তি গ্রামন্তে দীয়ভাং গ্রামো মে দীয়ভাম্।

৩৭৩। শস্চতুর্থীভ্যস্সাম ভিবে । কুঃ। গ্রামো বং পশাভি গ্রামো নঃ পশাভি গ্রামো বো দীয়ভাং গ্রামো নো দীয়ভাং গ্রামো বঃ স্বমস্তি গ্রামো নঃ স্বমস্তি।

৩৭৪। ঔট্চতুর্থীভ্যাং ষষ্ঠ্যোস্ভির্বাং নৌ। ভামো বাং পশ্যতি গ্রামো নৌ পশ্যতি গ্রামো বাং দীয়তাং গ্রামো নৌ দীয়তাং গ্রামো বাং স্বং গ্রামো নৌ স্বম্।

৩৭৫। অকথিতামুক্থনে বা।

পচতি বিষদমোদনং পচ'ত এবংবিধবাক্যে এব যুদ্দশ্বদোং প্ররোগে স্বামাদ্যরো ভবস্তি। চৈত্র গ্রামং তাজ গুরুত্তে হগ্নং পাসাতীতাত্র দিতীয়বাক্যে পদাছত্তরো সুদ্দান্তকোহিতীতি ভবত্যাদেশং। নত্র গ্রামো বাং স্বং গ্রামোনৌ স্বমিতি কথমতিভক্তং বাক্যমুদান্তবিষ্যতি। উচ্যতে—নৈতদতিভক্তং বাক্যং যত উক্তং যত্রান্ত ক্রিয়াপদং ন ক্রমতে তত্রান্তির্ভবন্তীতি পবঃ প্রয়োক্তব্য ইতি। ভবন্তীতি প্র্রোচার্য্যেল ডুচ্যতে অস্থাডুর্ল ভৃত্তঃ প্রয়োক্তব্য ইতি। ভবন্তীতি প্র্রোচার্য্যেল ডুচ্যতে অস্থাডুর্ল ভৃত্তঃ প্রয়োক্তব্যঃ।

- (৩৭২)। একবাকো পদাহন্তবন্ধোরপাদাদৌ বর্ত্তমানরোর্যুমদম্মদোঃ স্থানে গুসা গুয়া চ সহ তে মে ইত্যোভাবাদেশৌ ভবতঃ।
- (৩৭৩)। একথাকো পদাছত্তরয়োবপাদাদৌ বর্তমানয়োর্ম্মদক্ষদোঃ
 স্থানে শসা চতুর্বীভাসা সামা চ সহ বস্ নস্ ইত্যেতাবাদেশৌ ভবতঃ।
- ু (৩৭৪)। একবাক্যে পদাছত্ত্রয়োবপাদাদে বর্জমানরোর্ম্মদশ্বদোঃ
 ভামে ঔটা চতুর্থীভ্যামা ষঠ্যোসা চ সহ বাং নৌ ইত্যেতাবাদেশো ভবতঃ।
 গ্রামন্ত্রপুক্ত সমন্তি গ্রামো বৃদ্ধংপুল্র সমন্তীত্যাদে সমাসে সতি বিভভেনুপ্রাদেতে আদেশা ন ভবন্তি।
 - (৬৭৫)। পূর্ববোগৈরি হিতান্ত্রামাদরোহকথিতান্তকথনে বা ভবস্কি।

প্রামকাং পশ্যতি প্রামো মাং পশ্যতি প্রামকা পশ্যতি প্রামো মা পশ্যতি। কবিতাসুকধনে তু। অথো প্রামতা পশ্যতি কথো গ্রামো মা পশ্যতি অথো গ্রামত্তে স্বং অথো গ্রামো মে স্বং অথো গ্রামন্তে নীয়তাং অথো গ্রামো মে দীয়ভামিত্যাদি।

ত্বঙ । সপূর্বাৎ প্রথমান্তাৎ কথিতামুকথনেহপি।
আথো গ্রামে কম্বলন্তে সং অথো গ্রামে কম্বলো মে স্বেম্। অপপূর্বান্ত্র্
কম্বলন্তেংথো সং কম্বলো মেহথো স্বম্। অপ্রথমান্তান্ত্র,। কম্বলো
গ্রামে তেহথো সং কম্বলো গ্রামে মেহথো স্বম্ভাদি।

ত্রণ। ন চবাহাহৈবযোগে।
গ্রামো যুবয়োশ্চ সং গ্রাম আবয়োশ্চ সং গ্রামো যুবয়োর্বা সং
গ্রাম আবয়োর্বা সং গ্রামে যুবয়োর্হ সং গ্রাম আবয়োর্ব সং
গ্রামে যুবয়োরহ সং গ্রাম আবয়োরহ সং গ্রামো যুবয়োরের সং
গ্রাম আবয়োরের সম্। যত চাদিভিন যুদ্দমদোর্যোগোহপি

ক্ষিত্ত পশ্চাৎ কথনং ক্ষিতামুক্থনম্। পুনক্ষিত্রৈর্থ্যক্ষাৎ ক্ষেচি-বিষয়ান্তরযোগেন কথনমিতার্থ:। নগরং দ্বাং পশ্রতীতি কথনমত্রোষ্ট্রম্। গ্রামন্ত্রা পশ্রতীত্যসূক্থনম্। অথশব্যোহনন্তরার্থ:।

⁽৩৭৬)। সহশবো বিদ্যমানবচনঃ সহঃ সো বেতি সভাবঃ। বিদ্যনানপূর্বাৎ প্রথমান্তাৎ পদাৎ পরয়েয়র্মদমনোঃ স্থানে অমাদিভিঃ সহ বে ভামাদরো বিহিতান্তে কবিতাকুকথনেহপি বা ভবন্তি। প্রামে কবলো মুব্বরোশ্চ সমিত্যাদৌ চকারাদিভির্যোগেহপি কবিতাকুকথনেহপ্যনেম বিকর্মবিধানম্। বিনা কবিতাকুকথনেমাপি শভ্যত এবায়মর্থতংক্রিয়তে স্পত্তার্বন্। (৩৭৭)। চবাহ অহ এব এইডঃ পঞ্চির্মদমনোর্যোগে সভি

দর্থীস্থরত ভত্রাণি দাদরঃ ছাঃ। আমশ্চ তা গশাডি আমশ্চ মা পশাডি গ্রামশ্চ তে স্বং গ্রামশ্চ মে স্বং গ্রামন্তে স্বঞ্চ গ্রামো মে স্বঞ্চ।

০৭৮। আনলোকনদৃশ্যর্থযোগে চ।
গশ্যামি বাং ঈক্ষে তব পুত্রং জানামীত্যর্থঃ। আলোকনদৃশ্যর্থবোগে তু। গ্রামন্তা পশ্যতি গ্রামো পশ্যতি নিরূপয়তীত্যর্থঃ।
বত্রানালোকনদৃশ্যর্থেন বুদ্দশ্যদোর্ঘোগেছপি বর্ধান্তরশ্য তত্রাপি
প্রতিবেধঃ। গ্রাম স্তব বং সমীক্ষ্য গতঃ।

৩৭৯। একবচনসস্কুদ্যন্তাচ্চ।

তরোবি হিতান্ত্রামাদরো ন ভরন্তি। গ্রামো যুবরোশ্চ স্বমিত্যানে চকারা-দিভির্মদক্ষদোঃ সম্বদ্ধঃ স্বামাদেশস্মোঃ প্রথমোদিষ্টরোঃ প্রতিবেধোদাহ-রণং ত্যক্ত্রা যহদাহরণং প্রায়েশ বৃত্তিয়ু দৃশ্যতে তলিপিকরপ্রমাদক্ষতম্। গ্রামশ্চেত্যত্র সংক্ষত্যক্র সমুচ্চরার্থশ্চকারো গ্রামেশ স্বেন চ যুক্তঃ।

(৩৭৮)। আলোকনং চক্ষ্যাধনং জ্ঞানমিহাজিপ্রেডম্। দৃশুর্থ ইত্যত্র দৃশিক্ষানমাত্রবচনঃ চক্র্যাহণব্যতিরিক্তস্ত দৃশুর্থস্ত ব্যাদশ্বনোঃ প্রয়োগে দামানরো ন ভবন্তি। চকারাদশ্বস্ত যোগেহিপি। মত আহ যত্রানালোকন-দৃশুর্টেধন ব্যাদশ্বদোর্ঘেশিকাহিপি দ্বধান্তরক্ত ত্রাপি প্রতিষেধ ইতি। পশ্রামি দামিত্যক্র ক্রিয়োদেশ্রদাদ্ব্যাদশ্বনোরের অনালোকনদৃশার্থিযোগঃ। গ্রামন্তর স্বং সমীক্ষ্য গত ইত্যক্র তু দৃশ্যুর্থেন ব্যাদশ্বনোর্ঘাণঃ কিন্ত তৎসদ করে স্থান ক্রিম্বানের ক্রিম্বানের ক্রিয়ান ক্রিম্বানের ক্রিয়ান ক্রিয়ান ক্রিয়ান পশ্রন বাক্যভেনাদেরাপ্রাপ্রেরিতি কন্টিং কিন্ত গ্রামং মহং দীর্মানং পশ্রন ক্রিটি বাক্যভেনেনোদাররপ্রমণি সম্বর্থের ত্রানেন প্রতিষ্কের। নির্মান ক্রিটি নির্মাণং চকুংলাধনং জ্ঞানম্।

(৩৭৯)। বদাপি সন্ত্যকাৎ স্থ ও অস্ইত্যত্ত নাম এব সভ্ছি-অধাপি সন্থিবিহিতকেনোপচারেণ স্থ উজ্যামত সন্ধিয়স্। অপাদায়ে टर विक्ष कर यम्। जनानानावित्कातः। त्नवि त्वरहः नना नामः।

৩৮০। সপৃৰ্বাভ ভারেব।

উচিতাসুচিতং রচয়াঁমি দেবি তে।

অ৮১। ছেরিদং। বাদৌ পরে দিশনস্য ইদত্তবভি। ছোঁ বে বাজ্যাম্। অস্বাদোঁ তু। বিভঃ।

বর্ত্তমানাৎ সম্বৃদ্ধান্তাৎ প্রয়োর্ব্যদশ্বদোঃ স্থানে সামাদ্যো ন ভবস্তি। এক-বচনসম্বৃদ্ধান্তি লক্ষণং বছর্ পৃত্তকের্ দৃশ্যতে কিছ তৎ পূর্ববৃত্তিদর্শনোভূতসংখ্যারব্যাক্লর্ছিভিরনভিজ্ঞেঃ ক্রতমিতি লক্ষ্যতে। যত একবচনসম্বৃদ্ধান্তাদের স্বামাদ্যো ন ভবস্তীতি পাণিনিসর্ক্রবর্দ্ধান্তব্যাকরণে
ক্রাপি ন দৃষ্টম্।

(৩৮•)। সপৃর্কাৎ বিদ্যমানপূর্কাৎ সমৃদ্যস্তাৎ পরয়োর্ ব্লদক্ষণেঃ
স্থানে থামাদবো ভবস্তোব। স্থারিতি ক্বতং নিষেধবিধানতিরোহিতত বিধেঃ
পুনক্তাবনার্থন্। এবকারকরণঞ্চ নিষেধতাত্যস্তাভাববিভাবনার্থম্।

ন বিশেষরভ্যেকাধিকরণপূর্ব্বাদিতি বক্তব্যম্। বিশেষরভ্যেকাধিকরণং সৰ্দ্ধান্তং পূর্ব্বং যথাৎ সম্মান্তং পরয়োর্গ্রদান লো: ছানে ছামানরো ন ছাঃ। চৈত্র মাণবক তব থং চৈত্রণকো বিশেষরভিঃ। বিশেষরভিরিতি কিন্? ছাত্রো গুণিনো বাং খং ছাত্রণকঃ সামান্তর্ভিঃ। একাধিকরণ ইতি কিন্? চৈত্র মৈত্র বাং খর্।

সামাল্রজ্যেকাধিকরণপূর্বাহস্নসৌ বেতি বক্তব্যম্। সামাল্রজ্যে-কাধিকরণং পূর্বাং যন্মাজন্মাৎ সমৃদ্ধান্তাৎ পরয়োর্মানন্দার্বিস্নসৌ বা স্যাতাম্। ছাত্রা বৈয়াকরণা বৃদ্ধাকং বং বং বং বং ব

(৩৮১)। স্থগতি পূর্বক্তাদিহাস্বর্ততে বিভক্তিবিপরিণামাৎ সপ্তব্যক্ত জারত জার থানো পরে ইতি। বে ইতি বিশ্বদানৌ ঔউটো: পররোরত্বে' ক্ততে তাদাদেশে পোবাবিতি নির্মাৎ নার ইত্যাদিনা আথ। বিক ইতি কহু হাকোরিত্যাদিনা তদিঃ স্থান্যাদেশাঃ স্থানিবঙ্ ৬৮২'। সংখ্যাশব্দা: সংখ্যেরার্থা: প্রারঃ সংখ্যা-মাত্রার্থা বা।

ছে দ্রিয়ো বিংশভিঃ দ্রিয়ং দ্রীশাং বা বিংশভিঃ। বার্ত্তাকুরেযা গুণসপ্তযুক্তা। স্কলনৈকবন্ধঃ।

কাৰ্পীতি স্থানি-স্বাভাবাৎ তদেরস্বাদিদ্ধ কাপীতি বচনাৎ স্থানিবস্তাবাৎ তদ্যাবশ্রুং স্বীকরণীয়ঃ।

(৩৮২)। সংখ্যা গণনা অসৌ দ্রব্যাশ্রিতো গুণবিশেষ ইতি বৈশে-বিকান্তবাচকা: সংখ্যাবাচকা: শব্দা: একদিত্তিপ্ৰভূতরো লোকে প্রসিদ্ধা এব। তে চ প্রায়ো বাছলোন সংখ্যেরার্থা ভবন্তি। সংখ্যেরং নগনীয়ং জ্বাং তদেবার্থো হভিষেরো ষেবাং তে সংখোরার্থাঃ এতেনৈতৎ প্রতিপাদিতং সংখ্যাবাচকাঃ শকা অভেদোপচারামুভর্থীয়াল্লোপান্ব তথতি তব্যে বর্ত্তক্তে বথা শুক্লাদয়:। সংখ্যামাত্রার্থা বা ইতি সংখ্যানমাত্রাভিধেয়া শুণমাত্রবৃত্তরো বা। বে বিরো বিংশতিঃ দ্বির ইতি সংবোরার্থাছত সংখ্যাশন্দঃ অতএব বিশেষণৰিশেষ্যভাব: খ্রীণাং বেভি বিংশতিরিভি পদসত্তাপুষঞ্জনীয়স অত্র সংখ্যামাত্রার্থতা অতএব ওপগুণিনোঃ সম্বন্ধে ষষ্ঠী। বিংশতিশবস্থ সংখ্যেয়া-र्थछोर সংখ্যামাত্রার্থতাঞ্চ দর্শয়িতুসুদাহরণয়য়মুপদ্মক্ততা বুভিকারেণৈবং হচি-তম্। বিংশত্যাদিশলাঃ সর্ব্বএব সংখ্যেরার্ধাঃ সংখ্যামাত্রার্ধা বেতি। ইত:-পূৰ্দ্মং বে সংখ্যাশকান্তে সংখ্যেরার্থা অভএব বিশক্তা নংখ্যেরার্থতা দর্শিতা। বত আদলভাঃ সংখ্যালকাঃ সংখ্যেরে বর্ততে ততঃপরং বিংশত্যাদরঃ সংখ্যানে সংখ্যেরে চেত্যাতঃ। এতদপি ব্যক্তিচরতীতি স্চরিতৃং বার্তাকুরেবেত্যুদা-ছত্র। ওপানাং নপু ওপসপ ইতি সংখ্যানবৃত্তিনা সপ্তশক্ষেন ষ্ঠাসমাসঃ गरक्षात्रवृक्तिन। विरमनगममाम**ण** न **खनका**नस्कचार। व्यवना व्यजाः गःशाताः शृक्तिशाष्ठः गार । युक्तनानात्वकः सुक्तेनकः युक्तनप्रविती यो একা সংখ্যা সংখ্যানে বর্ততে স এব বন্ধুরম্যেতি স্থকনৈকবন্ধঃ সংখ্যেমবৃত্তিনা দেশবার্থাসঙ্গতিঃ ভাব। একঃ ফুকরো বন্ধুরভেতি ফুলন একো বদ্বক্তেতি বা উভরবাপার্থাসক্তিঃ ভাব। এতক ব্যেকরোর্ঘবচনৈক-बहरत देखांब अक्षिवहृत्तर क्षेत्रवातरहरेकक्षिकाक ह मर्थामवृद्धिका

ত্য-৩। নাপ্ৰধানাৰ্থস্ত। শুভিষি:।

০৮৪। দ্রিরাং ত্রিচড়ুরোন্ডিস্টভার্জো। দ্রীনিঙ্গে বর্ত্তমানয়োন্তিচভূরো: স্থানে ভিস্টভর্জো ভবতঃ।

৩৮৫। ঋতীৈর*চানাম্যচি।

তিন্ত্ৰ: চতত্ৰ প্ৰিয়ান্তিলো যক্ত বান্ধণত্ম স প্ৰিয়তিসা প্ৰিয়-তিলো প্ৰিয়তিন্ত্ৰ: প্ৰিয়ান্চতলো যক্ত স প্ৰিয়চতলা প্ৰিয়চতলো প্ৰিয়চতন্ত্ৰ: প্ৰিয়ান্তিলো যক্ত বান্ধণকুলস্য তৎ প্ৰিয়তিক প্ৰিয়তিকণী প্ৰিয়তিস্থিনি।

তৃ একাদিশবেন স্চিত্রম্। তথাচ ভর্ইরি: ছোকয়োরিতি নিদেশাৎ সংখ্যাসাত্রেহপি সম্ভবঃ। একাদীনাং প্রসিদ্ধ্যা তু সংখ্যেয়ার্থছসম্ভবঃ।

⁽৩৮০)। অপ্রধানার্থশু দিশন্দস্য বাদে পরে ইন্দ্র ভব্তি। অতি-দ্বিরিতি অভিক্রান্তৌ থাবিতি দ্বিতীয়য়েত্যাদিনা সমাগঃ।

⁽৩৮৪)। নাপ্রধানার্থস্যৈতি উত্তরস্ত্রে প্রভিষেধাৎ অয়মপ্রধানার্থ-রেহপি প্রবর্ততে অতএব প্রিয়তিসেত্যদাঞ্চহার। দ্বিয়ামিতি ত্রিচত্রো-বিশেষণম্ অতএব ব্যাচকার দ্বীলিঙ্গে বর্তমানয়োরনিয়ারিতি। অঞ্চ-পদার্থে পুংদি নপুংসকে চ বাচ্যে ক্রিচত্রোঃ দ্বীলিঙ্গে ছাদাদেশে। ভব-ভোব। পুংলিঙ্গে নপুংসকে চ বর্তমানয়োরঞ্জপদার্থে দ্বিয়াং বাচ্যায়ামিপি আদেশোন ভবতীতি প্রভাগাহরপেনের স্পান্তং করিষ্যতি।

⁽৩৮৫)। তিস্বচতল্রোপ্পতি: স্থানেহনাম্যটি পরে রো ভবতি।
তিন্ত্র: চতক্র ইতাত্র জনি পরে গুণে প্রাপ্তে শদি তু পরে দবর্ণোহকৃশন্ত্র
ইত্যাদিনা পূর্বাদবর্ণে প্রাপ্তে প্রিম্বতিল্রাবিত্য । গুণঃ শিক্রাক্রেরিভি গুণে
প্রাপ্তে প্রিম্বতিল্র ইতি ওনিওনোড় নিতি তুনি প্রাপ্তে প্রিম্নতিল্রাভাল ভৌ পরে গুণে প্রাপ্তে রেম্ববিধানন্। প্রিম্নতিল্রা প্রিম্নভিল্রে প্রিম্নভিল্রেরিভি ব্রর্বোহটীভানেনাপি রেম্বঃ বিশ্বত্যেব। জনামীভি কিন্ ?
ভিস্পাং চতস্পান্। নমু সুব্যবধানাম্বেটাং পরতা নান্তীভি তেন রেম্বেন্ন ভবিষ্কৃতি কিমনামীভানেন ব্যা স্বিম্নান্থ প্রাকৃ প্রাপ্রোক্তি তেন

দ্রিয়ামিতি কিম্ ? ত্রয়ং ত্রীণি চম্বার: চম্বারি। প্রিয়ান্ত্রয়ং প্রিয়াণি ত্রীণি ষম্বা ত্রান্ধাণ্যাঃ সা প্রিয়ত্রিঃ প্রিয়ত্রয়ঃ প্রিয়চ্ছাঃ প্রিয়চ্ছারে। প্রিয়চ্ছারঃ।

৯৮৬। ত্রেরাম্যন্ত্রিয়াং ত্রয়ঃ।

অন্তিয়াং বর্তমানস্থামি পরে ত্রেঃ স্থানে ত্রয়ো ভবতি। ত্রয়াণাং
পরমত্রয়াণাম্। (ক্রিয়াঞ্চাপ্রধানার্থস্থা।) প্রিয়ান্তরয়াণ
ত্রীণি যেষাং যাসাং বা প্রিয়ত্রয়াণাম্।

৩৮৭। 'নাপ্রধানার্থস্যেতি কাতন্ত্রগ্।

অভিত্রীণাং প্রিয়ত্রীণাম্। ত্রীণামিব সমুদ্রাণামিত্যাগমিকম্।

প্রিরতিস্থা প্রিরচতস্থা ইত্যত্র রেফবিধানমবাহতমেব অতএব সুবাবধানার ভবতীতি। আমি তু মুবাবধানাৎ প্রাক্ প্রাপ্যোতীতি তরিষধার্থমনামীতি রুতমিতি মহতী করনা কথং সংগছতে কিঞ্চ বর্চাবহুবচনে পরে
যদি রেফেণ ভবিতবাং তদা ন তিস্তুৎস্রোরিতি দীর্ঘনিষেধবিধানমনর্থকং
স্থাৎ ওবিধানাদেব রেফস্তত্ত্ব ন ভবিষাতি কিমনামীতি প্রতিষ্থেন তুমাদর্ঘটিতি পাঠঃ প্রতিভাতি। অমুকারবিষয়েইচি পরে রো ভবতি। মুকারবিষয়ের ন ভবতি। কন্দ নুকারবিষয়ঃ যশ্বিন্ পরে মুবিধীয়তে। এবরু
সতি প্রিরতিস্থাীতাদো রেফো ন ভবতি। অথবা অনামীতি মুসহিত
আম্ নাম্ তন্মিন্ পরে ন ভবতি। মুসহিতং আম্পদং প্রত্যরাস্তরোপলক্ষণং
তেনায়মর্থো ভবতি মুবিষরে প্রত্যায়ে পরে রেফো ন ভবতি প্রিরাতিস্রো
ষশ্ব ব্রাহ্মণায় স প্রিরতিসা অত্র সমস্তরং শব্দরূপং পুংলিকং ত্রীতি তু
জ্বিরামেব বর্ততে ইতি ভবত্যাদেশং এবং প্রিরতিস্থ ব্রাহ্মণকুলমিত্যত্রাপি।
প্রিরত্যিকো তু সমস্তদ্য স্ত্রীলিক্ষতা স্ত্রীতি তু অন্ত্রীলিকে বর্ততে ন
ভবত্যাদেশঃ।

- (৩৮৬)। প্রিয়ত্ত্রবাণামিত্যত্ত্রান্তপদার্থে সমাসে সমুদায়ক্ত স্ত্রীছেংপি ত্রিশব্দোংশীলিক ইতি ভবত্যের ত্রাদেশঃ।
- (৩৮৭)। অপ্রধানার্বস্থান্তিরাৎ বর্ত্তমানস্ত ত্রে: আমি পরে ত্ররা-দেশোন ভবভীতি কাতপ্রস্। নৈতদশাকং মতং এতত্ব প্রিক্তরালামি-

্৩৮৮। সংখ্যানাস্তো দীর্ঘশ্চ।
আমি পরে সংখ্যানাস্তো দীর্ঘো ভবতি। পঞ্চানাং পরমপঞ্চানাম্
৩৮৯। নাপ্রধানার্থঃ।
প্রিয়পঞ্ঞাম্।

৩৯০। কুই ষট্চতুর্ভ্যাম্। আমি পরে, ষট্চতুর্ভ্যাম্ত্ররে কুর্ভবতি। ষঞ্চাং পরমধ্রাঃ চতুর্গাং পরমচতুর্গাম্।

৩৯১। ষষঃ ষোনে নশ্চ।

ষপ্তাং

ত্যাদাহবণেনৈব স্বচিতম্। প্রিয়ত্তীণামিতি প্রিয়ান্তরঃ প্রিয়াণি ত্রীণি যেযাং যাসাং বা ইত্যান্ত্রিরের্থ প্রয়োগোহরম্। যদা তৃ প্রিয়ান্ত্রিপ্রো যেবামিতি বাক্যমবধার্যতে তদা প্রিয়তিস্থামিতি কাতন্ত্রাণামিণি সন্মতম্। অন্তিরামিতি কিম্? তিস্থাম্। যদ্যান্ত্রিয়ামিতি ন ক্বতং স্যাৎ তদা কিং সামান্তেন বিহিতন্তিস্রাদেশঃ আম্যানেন বাধ্যতে অথবা শিক্ষসামান্তবিহিতন্ত্রন্থাদেশঃ। ন্তিরাং পূর্কযোগেনৈব বাধ্যত ইতি সন্দেহঃ স্যাৎ।

- (৩৮৮) । সংখ্যাবাচকশ্চাসৌ নাস্তশ্তেতি সংখ্যানাস্তঃ। পরমপঞ্চানা-মিতি বিশেষণসমাসঃ। সংখ্যেতি কিষ্? ব্রহ্মণাম্। নাস্ত ইতি কিম? বঞ্জাম্।
- (৩৮৯)। অপ্রধানার্থ: সংখ্যানান্ত আমি দীর্ঘোন ভবতি। প্রির-পঞ্ঞামিতি বছব্রীহি: শসাদ্যচ্যত ইত্যাদিনা অকারপূক্। চবর্গাঞ্ঞ ইতি নকারস্ত ঞ:।
- (৩৯০)। আমাকো সুর্ণীর্ষশ্চেতাস্থানস্করং বদ্যেতন্ত্রক্ষণং ক্রিরতে তদা মুগ্রহণং লক্যমকর্ত্ত্ব্যু কিন্তু দীর্ঘ ইত্যমুবৃত্তিশক্ষা স্থাৎ তরিরাসার্থং সংখ্যাপ্রকরণামুরোধার্থকাত্রৈতন্ত্রকণং ক্রতম্।
- (৩৯১)। ধবঃ ধকারো নে পরে নকারো ভবতি। চকারঃ পূর্ব-বিধিসমূত্যার্থঃ উদাহরণমক্ত পূর্ববিশ্ব এব উক্তম্। ধ্যামিতি ধবে ভা ইঙ্যাদিনা গমস্।

৩৯২। নাপ্রধানার্থাভ্যাম্। অভিযয়ং প্রিরচতুরাম্।

৯৩। দশন্যাদেকাতদাধিক্যে। ভদাধিক্যে গশ্যমানে দশনি শব্দে পরে একশব্দার্ভুরে আন্তব্ডি। একাদশ।

৩৯৪। দ্বাফীস্তোহশীতিশতাদিবজ্জ'ং সংখ্যায়ামবছ-ত্রীহোঁ।

দ্বাদশ শ্বাবিংশতি: শ্বাদশ অফাবিংশতি: অফাত্রিংশৎ। অশীতি-শতাদ্যোস্তা। দ্বাশীতি: দ্বিশতং দ্বিসহস্রংঅফসহস্রং দ্বিলক্ষং অফ্র-কোটিঃ। বছত্রীহোঁ তু। দ্বিত্রাঃ দ্বিদশাঃ।

⁽৩৯২)। অপ্রধানার্ধাজ্যাং ষ্ট্রচতুর্জ্যামুক্তরো হুন ভবতি।

⁽৩৯৩)। দীর্ঘবিধানমুক্তরার্থম্ণ একশ্চ দশ চেতি ৰন্ধ: একেনা-প্যাধিকা দশ ইভ্যর্থ: অস্শসোলু কিতিপঞ্চাদেরিতি জস্শসোলু ক্ নোনাস্ত-খ্যেতি নলুক্।

⁽৩৯৪)। শতাদীত্যাদিশকেন শতাত্ত্রাঃ সংখ্যা গৃহন্তে। অশীতিশক্ষ শতাদিসংখ্যাশক্ষ বর্জ্জিবা সংখ্যায়াং প্রভৃতায়াং বিশক্ষ অন্তন্ত্রন্শক্ষ চাম্ভ আত্তবতি অবছ্রীহো। বছরীহিং বর্জমিবা সমাসে নঞ্সমাসেন সদৃশ প্রতীতেঃ সমাস এবৈত্বিধানম্। দাদশ ইতি দৌ চদশ চ ইতি বিগৃহ দক্ষে ক্রতে সংখ্যায়ায়্রপদার্থে চেতি বিশক্ষ প্রাণ্ডাবঃ। এবমূত্তর্জ্ঞাপি। দ্বিজা ইতি দৌ বা জ্রেরা বেতি চার্থে দিদশা ইতি দিদশি জিদশি ইতি বিগৃহ স্প্রত্যায়ার্থে সংখ্যেয়র্ত্তিসংখ্যয়াব্যয়াসয়াদ্য়াধিকসংখ্যানামিতি বছরীহিঃ পূজার্থস্বতিবন্ধ মব্যয়াসয়াদিপূর্বসংখ্যয়র্ত্তাবহুগণসংখ্যায়াইতি ভঃ দশসন্বন্ধিনী আর্ত্তিদ শশক্ষেন লক্ষ্যমাণা দিশক্ষেনাখ্যায়তে। এবং সন্তি দিদশা ইতি দৌ দশবর্গাবিত্যয়মর্থো বেদিত্বঃ। সমাস এব স্থ্বপ্রত্যয়ার্থিং গময়িত্বং সমর্থ ইতি স্থপ্রত্যয়্মত্বা বেদিত্বঃ। সমাস এব স্থপ্রত্যয়ার্থিং গময়িত্বং সমর্থ ইতি স্থপ্রত্যয়্মত্বা বেদিত্বঃ। অসমাসে তু ন ভর্তি। অন্ত দশ ব্রাজ্ঞলাঃ। সংখ্যায়ামিতি কিম্ ? অন্তপ্ননী। কালাগৈত্ব সপ্রশক্ষাভাত্যমিব্যতে সপ্তাবিংশতিঃ।

७৯৫। তেরয়স্চ।

ত্রয়োদশ ত্রয়োবিংশভিঃ ত্রয়ন্ত্রিংশৎ। **অণীভিশভান্তোন্ত। ত্র্যানীভি**ত্রশভং ত্রিসহস্রম্। বহুব্রীহে তু। ত্রিচভুরাঃ ত্রিদশাঃ।

७৯७। ह्यादिः भमारमी व।।

বিচন্ধরিংশৎ বাচন্ধারিংশৎ অইচন্ধারিংশৎ অইচিন্ধারিংশৎ ত্রিচ।
ারিংশৎ ত্রমশ্চন্ধারিংশৎ বিপঞ্চাশৎ বাপঞ্চাশৎ অইপঞ্চাশৎ
অইচাপঞ্চাশৎ ত্রিপঞ্চাশৎ ত্রমংপঞ্চাশৎ বিনত্রতিঃ বানবতিঃ অইনবতিঃ অইচানবতিঃ ত্রিনবতিঃ ত্রমোনবতিঃ। অশীতিশতাভোগ্র । দ্বাশীতিঃ দ্বিশতং ত্রাশীতিঃ ত্রিশতম্ ।

৩৯৭। ষষঃ ষোদে । ডশ্চ।
তদাধিক্যে গম্যমানে দশনি শব্দে পরে বষঃ বোর্ভবতি। দকারোডশ্চ ষোড়শ।

⁽৩৯৫)। প্রে ত্ররস্ ইত্যত্র বিসর্গো ন ক্লতঃ সন্দেহনিরাসার্থঃ অশ্রথা ত্ররাদেশো ভবতীতি সন্দেহঃ স্থাৎ। অশীতিং শতাদিক বন্ধ মিদা সংখ্যারাং পরভূতায়ামবছত্রীহৌ ত্রিশব্দ ত্ররসাদেশো ভবতি। ত্রেরোদশেভি ত্রোরি-ত্যাদিনা বিসর্গঃ ওরতাত্যকাদাবিত্যোত্বস্। ত্ররজিংশদিতি চড়েটঠেতথে ইতি বিসর্গন্ত সকারঃ। ত্রিচন্ত্রা ইতি চত্রঃ স্থুত্তিনঞ্ব্যুণাদিত্যৎ।

⁽৩৯৬)। চন্ধারিংশদানো সংখ্যাশন্দে পরে বিশক্তাইন্শবভ ত্রিশক্ত চ পূর্বস্তেব্যেন ব্যাহিতং ভবা ভবতি। শদ্ভসংখ্যারাং পরভূতারাব্। দশবিংশতি ত্রিংশদভসংখ্যারাং পরভূতারাব্। অলীতিশতাদিবর্জি তারাং বিধিরয়ং প্রবর্তন্ত ইত্যাভিপ্রারোহনেনৈব স্থাচতঃ। পূর্ব্যাকশ্বরেনামীবাং ত্রেরাণাং শব্দানাং দশবিংশতি ত্রিংশংক্ত পরেব্ নিত্যবেব বিধানব্ অনেন তু বিক্রঃ।

⁽७৯१)। प्रकातक प्रमन्गरेकरप्रमणक्यावितिरक्षांश्य न मचन्दौष्ठि म धर शानी छर्चि।

৩৯৮। দতরি চ। বোজন।

৩৯৯। ধাপ্রত্যয়ে বা ধো চন্চ। বোড়া বড্ঢা বড়ধেতি কজ্জট:।

৪০০। জস্শসোপুক্ কতিপঞ্চাদে:।
কভে: পঞ্চাদেশ্যেত্তরয়োর্জস্শসোপুণ্ ভবতি। কতি পুরুষাঃ
কতি দ্রিয়ঃ কতি ধনানি পঞ্চ ষট্ পরমপঞ্চষট্।

৪০১। নাপ্রধানার্থাৎ। প্রিয়পঞ্কান প্রিয়বনঃ প্রিয়পঞ্কঃ। পঞ্চাদিরকীদশান্তঃ।

⁽৩১৮)। দত্তবি চ পরে ষয়: স্থানে ষোর্ডবতি। দকারশ্চ ডো নিতাম্। যোড়য়িতি বট্ দস্তা অস্তেতি বহুব্রীহৌ বয়ি স্বসংখ্যাভ্যাং দস্তস্ত দত্বিতি দত্তাদেশ: ধকাব উপিৎকার্যার্থ: স্বট্যুগিত্যাদিনা মুম্ যুক্তাস্তম্বাং স্বশুক্ তপুক্।

⁽৩৯৯)। ধাপ্রতারে পরে ববং স্থানে বোর্বা ভবতি! ধকারো চল্চ নিতাং ভবতি। বোচেতি সংখ্যারা ধা ইতি প্রকাবে ধা ষড্চেতি বস্ত ইতি বস্ত টঃ অপনান্তেহপীত্যাদিনা টস্ত ডঃ। বড়্ধেতি কজ্ফট ইতি বোবিধান-সন্নিবোগশিষ্টনেব ঢকারমাহ এবং পক্ষে বড়্ধেতি ভবতি। প্রতার ইতি কিম্? ইহ মান্ত্র বড়্দধাতি ধরতি বা বড়্ধেতি আদস্তাদমাদেরপ্রামেরি-তাঙ্ দ্বিরামাৎ।

⁽৪০০) কতীতি কিম্পলাৎ কিম: সংখ্যাপ্রশ্নে ডতিরিতি ডতি: ইমো পূক্। অসোপুক্ কতিপঞ্চাদেবিতি ক্বতেংপি অসিত্যনেন অস্পসোগ্র-হণে সিদ্ধে অস্পসোরিতি ক্বতং তৎ প্রাগেব সূগ্ভবতীতি স্চনার্থম্। তেন স্থাট শীর্ষবিধানাৎ প্রাগেব সূগ্ভবতীতি।

⁽৪০১)। অপ্রধানার্থাৎ কতিপঞ্চাদের্জনসোলুর্থ ভবতি প্রিরপঞ্চান ইতি প্রিরাঃ পঞ্চ বেষাং ক্ষে প্রিরপঞ্চানঃ স্থৃটি দীর্ঘঃ ব্রীস্ংসরোরিতি দীর্ঘঃ। পঞ্চাদিগদং বিরুণোতি পঞ্চাদিরষ্টাদশান্ত ইতি।

৪০২। ুওৰাফীন্তঃ।

बन्गरमाः भवरतावर्षेन्भक्षणाख थेवा खर्वि । बन्गरमान् क् ह बाके बाको भवमाके भवमारको ।

৪০৩। নাপ্রধানার্থত্বে। অত্যক্টানঃ প্রিয়াক্টানঃ অত্যক্টো প্রিয়াক্টাবিত্যেকে।

৪০৪ প স্বাদে হল্যাদ্বা।
অক্টভি: অক্টাভি: প্রিয়াক্টভি: প্রিয়াক্টভা: প্রিয়াক্টভা: প্রিয়াক্টভা: প্রিয়াক্টভা: প্রিয়াক্টভা: অক্টভা: অক্টভা:

⁽৪০২)। পৃথিধানেন সহ বেতি ন সম্বধাতে। পৃৰ্বাহ্যত্ত্ৰণ কন্শনোপুঁকি সিছে যদনেন পৃথিধানং তদৌদিধানস্থ পুকা সহ সন্নিযোগশিষ্ট্যস্চনাৰ্থন্। অতএব যত্ত্ৰানেন অস্পাসাৰ্থিধীয়তে তত্ত্ৰবৌদ্ধতি।
তেনাষ্টপুত্ৰা ইত্যত্ত্ৰ পুক্ স্থােহনাজ্বন্তাদেরিতি অস্পুকি ক্লতে উত্থং ন
ভবতি।

⁽৪০৩)। অপ্রধানার্থন্থে সতি অষ্টন্শক্তান্ত ঔর ভবতি। অস্-শসোশ্চ ন সূক্। প্রিয়াস্টান্ ইত্যত্র অচ্যপীত্যেক ইতি পক্ষে প্রিয়াষ্টা ইতি রূপম্। অত্যপ্রে প্রিয়াস্টাবিত্যেক ইতি নাপ্রধানার্থন্থে ইতি কক্ষণমেকে ন বস্তুত্ব ইত্যভিপ্রায়:।

⁽৪০৪)। স্বাদাবিতি বর্গাজ্ঞাত্যাদিভি: পৃথকরণে ইতি সপ্তমী।

যতো হলপি জাতিরেব। বিরুতকরণা: স্বরান্তেভ্য ঐ ও বিরুততরাবিভ্যত্ত

জাত্যা পৃথকরণাং স্বীক্ষতমেব। স্বাদৌ মধ্যে যো হল্ তন্মিন্ পরে অইনিত্যন্তান্ত আবা ভবভি। অথ বা স্বাদৌ হলীতি বিশেষণবিশেষ্যভাব:
হলাদৌ স্বাদাবিত্যর্থ:। নাপ্রধানার্থদ ইভি প্রতিষেধাহত্ত নান্তীতি স্ক্চরিতৃং
প্রবাহীভি: প্রিরাষ্টাভিরিত্যুদাস্থতম্। অইড ইভি ক্ষন্থ হাকোবিত্যদিনা
ভিনি:। উভরাকাক্ষালক্ষণপ্রকরপনিষ্মাদেব স্বাদৌ পরে ইভি প্রান্তে

স্বাদাবিতি কৃতং স্পত্তার্থন্।

৪০৫। অচ্যপীত্যেকে। সাক্টে শভে স্থবর্ণানাম্।

ইতি বাদীন্দ্রচক্রচ ড়ামণিমহাপণ্ডিত শ্রীক্রমদীশ্বরাচার্য্যক্বতে সংক্রিপ্তদারে মহারাজাধিরাজ-শ্রীমজ্মরনন্দি-পরিশোধিতায়াং রসবত্যাং বৃত্তো ষষ্ঠঃ স্থাবস্তপাদঃ সমাপ্তঃ।

(৪০৫)। অজাদাবপি স্বাদৌ পরেষ্টন্নিতাসান্ত আষা ভবতি। সাই ইতি সহাষ্টাভিব ব্ ইতি তৃতীয়ান্তেন সহস্য তৃল্যযোগ ইতি বছত্রীহি:। সর্বাক্ষণসিদ্ধং সর্বাশান্তাবিক্ষণ এতদেব মতমিতি বিস্পষ্টার্থমুদাহরণানি দর্শান্তে। প্রিরাষ্টা প্রিয়ান্ত্রী প্রিয়ান্ত্রী প্রেয়ান্তান্ প্রিয়ান্তাই। প্রায়ান্তাই। প্রায়ান্তাই। প্রায়ান্তাই। প্রায়ান্তাই। প্রায়ান্তাই। প্রয়ান্তাই। প্রযান্তাই। প্রয়ান্তাই। প্রয়ান্তাই। প্রযায়ান্তাই। প্রয়ান্তাই। প্রযায়ান্তাই। প্রযায়ান্

ইতি মহাপশ্চিতশ্রীক্রমদীশরাচার্যাক্সতে সংক্রিপ্তসারে মহারাজাধিরাজ-শ্রীমজ্মরনন্দিপরিশোধিতারাং রসবত্যাং বৃত্তৌ ঔথাসনিক-

অগোরীচন্দ্রবিরচিতারাং বিবরণীনামটীকারাং ষঠঃ স্থবস্তপাদঃ সমাপ্তঃ।

সমাসপাদঃ।

১। তৎপুরুযো বা নঞঃ সমাসঃ।

স্বস্তেন সহ নঞ্জেশ্বের্যসংজ্ঞকঃ সমাসো বা ভবতি। স চ স্বভাবাত্তরপ্রদার্থপ্রধান: । সমাসো বেত্যধিকার: । ন ব্রাহ্মণো-হব্রাহ্মণ: । সমাসোহনেকপদক্তৈত্বপদবতা তেন সমস্তেনাপি পুনঃ সমাস: । অব্রাহ্মণপণ্ডিতঃ অস্র্যংপশ্যানি মুখানি অপুনর্গেরাঃ শ্লোকাঃ অপ্রাহ্মভোজী ব্রাহ্মণ: । স্র্যাং ন পশ্যন্তি পুনন গীয়ন্তে শ্রাহ্মং ন ভুঙক্তে ইত্যর্থা যথাক্রমম্ ।

⁽১:২)। নামাধিকারো বিদাত এব স্বস্তপাদ-চানস্তরমুক্ত: স'ন্নহিত-ত্বাৎ সমাসবিধানং তদেবাপেক্ষতে অত আহু স্থবন্তেন সহেতি। নঞিত্যে-তত্ত্ প্রথমৈকবচনান্তং সমস্ততে বিভক্তান্তরস্থাভাবাৎ তথাচোকং, লিঙ্গ-সংখ্যাবিনিমুক্তাৎ স্থঃ পদত্বার্থনব্যমাদিতি অত আহ স্থবজ্ঞেন সহ নঞ্চত্তৎ-পুরুষ ইত্যাদি। তৎপুরুষসংজ্ঞক: সমাস ইত্যানেন তৎপুরুষসংজ্ঞয়া সহ সমাসসংজ্ঞারা: সমাবেশ উক্ত:। বথা অপরসামান্তেন সহ পরসামান্তত। এবমব্যয়ীভাবাদিসংজ্ঞয়াপি সহ সমাসসংজ্ঞারাঃ সমাবেশে। জ্ঞাতব্যঃ। সমাস সংজ্ঞারাঃ প্রান্তনং প্রাদের্যচ্ সমাসে ইতি। তৎপুরুষসংজ্ঞারাঃ প্রয়ো-জনং নঞ্জৎপুরুষ ইত্যাদি। পূর্দ্নাচার্য্যপরম্পরাধিগতাভি: প্রদি**দ্ধাভি:** সংজ্ঞাভিরেব প্রায়েণাস্ত গ্রন্থকভো ব্যবহার:। এতাবতা তংপুরুষাদিসংজ্ঞৈ-বানেন স্বীকৃতা তদিহ সংজ্ঞাগোরবপর্যান্ত্রযোগময়মাচার্য্যো নাহ তি। অনেকপদল্যৈকপদবতা সমাস: তত্র পূর্ব্বপদার্থস্যোত্তরপদার্থস্থ সর্বপদার্থ-স্তান্তপদার্থন্ত বা প্রাধান্যং ভবন্ধিতি শঙ্কারামাহ স চ স্বভাবাহত্তরপদার্থপ্রধান ইতি। স চ ইতানেন তৎপুরুষত পরামর্শ:। উত্তরপদার্থ প্রাধান্তে হেতু-ষতঃ প্ৰানাম্থাভিধান্বাবস্থাহেতুঃ স্বভাব এব। মাহ স্বভাবাদিতি। উত্তরপদার্থপ্রধানতা চ তৎপুক্ষল প্রারেশোক্তা কুত্রাপি বাভিচারদর্শনাৎ

২। ইদস্ত নেষ্যতে।

কিঞ্চিন্ন কুর্ববাণোহকিঞ্চিৎকুর্কাণঃ মাষং ন হরমাণোহমাষংহরমাণঃ গাধান্নোৎসপ্তোহগাধাত্রৎস্পু ইত্যাদি।

তগাহি পূর্ব্বকান্ব ইত্যাদৌ পূর্ব্বপদার্থপ্রধানতৈবাবগম্যতে। সমাসো বেত্য-ধিকার ইতি আ বহুত্রীহেরিতি শেষ:। তৎপুরুষাধিকারুচাব্যন্ধীভাবং যাবদবগস্তব্যঃ। বিকল্পেন সমাসবিধানং বাক্যশ্রুত্যর্থম্। অব্ৰাহ্মণ ইত্য-স্তোত্তরপদার্থপ্রধানত্ত্বহুপি ত্রাহ্মণো নাভিধেয়:। এবং হি পূর্ব্বপদবিশিষ্ট-ব্বেনোক্তরপদস্ত কিমপি ন কৃতং স্থাৎ তত্মাৎ সাদৃশ্রজনিতভ্রমনিবন্ধনা ক্ষত্রি-রাদৌ ব্রাহ্মণশব্দপ্রবৃত্তিরত্র নঞাধ্যায়তে। অভক্ষ্যা গৌঃ অপেয়া স্থরা ইত্যাদৌ চ ইতরাভ্যবহার্ষ্যসাদৃখ্যারোপিতমভ্যবহার্য্যন্থং নিষিধ্যতে। অসিত-মধর্মোংনিক্রিত্যাদৌ চ রা ঢ়বিষয়ত্যা ম তদন্যশাখাায়তে। এবমনেক-মিত্যত্রৈকবচনমূত্তরপদার্থপ্রধানত্বে স্ত্রিধান্তি তথাছত্ত্ব ভ্রমবশাৎ দ্বিত্বাদাবর্থে একত্বস্থারোপিত্রসাভিধাতা একশব্দ উপাত্তসংখ্য এব দিঘাদীমাভিদ্ধাতীতি একবচনমুপপদ্যতে। অনেকশক্ত সামানাধিকরণাদপ্যেকবচনমেব নির-তম্। যথা অনেক: প্রাকৃতঃ ক্রমঃ করেণু: প্রাস্থিতানেকা ইতি। অনেকে অনেকেধামিতি ব**হুবচনমণি কৈন্চিৎ সমাধীয়তে।** কিন্তু তদ্ভর্তৃহরিণা ন ব্যবস্থিতমিতি বুত্তিকৃতা নাঙ্গীকৃতং যতো ভবস্তানেকে জলধেরিবোর্দ্ময় ইতাপপাঠ ইতি বৃত্তিকতোক্তম্। যদা তু বিজাতীয়ানামৰ্থানাং প্ৰত্যেক-মনেকত্বং বিবক্ষাতে তদা অনেকক্ষৈবানেকত্বে দ্বিবচনবছবচনেহপি ভবতঃ। ধবশ্চ থদিরশ্চ উভাবনেকো ধবশ্চ থদিরশ্চ প্রদাশশ্চ প্রত্যেকতন্ত্র। ইমে অনেকে ধ্বথদিরপ্লাশা ইত্যতানেকশকপ্রয়োগো নাস্ত্যেব স্বন্দাদেবাধিগতে:। অনেকৈরাচার্টিয়ঃ থণ্ডশঃ প্রণীতং শাস্ত্রমিত্যেকত্বরত্তে-বেকস্ত ন বিদ্যাতে একস্বং বেশ্বিতি বাক্যে বছব্রী/হঃ কার্যা:। নঞ্সমাসং কালাপাঃ কর্ম্মধারয়সমাসে অন্তর্জাবয়স্তি তদসৎ উভয়গতবিশেষণবিশেষ্যভাব-স্থাপ্রসিদ্ধন্বাৎ অনীশমিত্যত্র বিশেষণবিশেষ্যভাবস্থানিয়তদ্বাৎ পূর্ব্বনিপাতা-নিষম: স্যাৎ। সমাস ইত্যাদিনা সমাস ইত্যৰ্থস্যাদ্বৰ্থতা ব্যাখ্যাতা সংপূৰ্ব্বস্যা-. স্যাতেরেকীকরণার্থতাৎ। ওথাছি সমসনং সমাসঃ সমসনমেকীকরণং ভচ্চানে-**ক্ষ্যোব সম্ভব্**তি অত আহ সমাসোধনেকপদ**দাৈকপদৰভেতি। বংকরণ**ং

৩। ঈষদ্গুণবচনেন। ঈষৎপিক্ল: ঈষদ্বিকটঃ ঈষতুন্নতঃ ঈষৎপীত ইত্যাদি।

স্বাভ্রয় কার্য্যসিদ্ধার্থং তেস ভিন্নপদাশ্রয়কার্য্যমপি তবতি। রাজপুরুষ ইত্যাদৌ नत्नाभानिः मधिरमकै रेजामो यवनित्यधानि চ छर्वजि। भत्रमितिस ইত্যাদৌ উত্তরপদে তু ভিরপদাশ্ররং মলোপাদি ন ভবতি অনপেক্ষিত-বিধিত্বাং। অব্রাহ্মণ ইতি নঞ্সমাদে ক্লতে অব্রাহ্মণশ্চাদৌ পণ্ডিতশ্চেডি সমাসো ভবতু ন বেতি মল্পধিয়াং শঙ্কানিরাসার্থমাহ তেন সমস্তেনেত্যাদি সমাপহেতোরব্যাহতপ্রসরত্বাদিতি ভাব:। দ্বিবিধো হি নঞ্ভবতি পর্যু-नामः अमञ् अित्रभक्त । जनात्ताकः, अभानषः वित्पर्येव अित्रत्यः প্রধানতা। পর্যাদাস: স বিজ্ঞেয়ো যত্তোতরপদেন নঞ্। অপ্রাধান্তং বিধের্বত্র প্রতিষেশেহপ্রধানতা। প্রসঞ্প্রতিষেধাহসৌ ক্রিমুয়া সহ যত্র নঞ্ ইতি। অত্রাহ্মণ ইত্যাদৌ উত্তরপদার্থসাদুশুবিধেয়ত্বাৎ বিষেরেব প্রাধাস্তং তদর্থত্বেন শব্দ প্রয়োগাৎ। প্রতিষ্পেইপ্রধানতা প্রতিষ্পোংশে তাৎপর্যা-ভাবাং ৷ অতএব উত্তরপর্দেন সহ প্রুদাসস্থ পরস্পরব্যপেক্ষালকণসবন্ধস্ত বিদ্যমানত্বাং সমাসো ভবত্যেব। কিঞ্চিন্ন কুর্ব্বাণ ইত্যাদে তুর্বিধ্যংশস্থা-প্রাধান্তং তদর্থে তাৎপর্য্যাভাবাদত্র প্রতিষেধে প্রধানতা তদর্থেন শব্দ-প্রয়োগাং। অতএবোত্তরপদেন সহ ন নঞঃ পরস্পরব্যপেকালক্ষণসম্বদ্ধঃ কিন্তু ক্রিয়ন্না সহ। তথাহি নঞেছিত্র করোত্যর্থেন সহ সম্বন্ধ:। এবঞ সতি অগমকত্বাৎ সমাসো ন ভর্বতি যদি প্রসম্প্রতিষ্ঠেন নঞা ন সমাস: কথং তহি অমূর্যাংপশ্রানি মুধানীত্যাদৌ সমাস: যতোহত্র নঞ: ক্রিরয়া সহ সম্বন্ধঃ তথাহি সূর্যাং ন পশুস্তীত্যাদিরত্রার্থঃ। অত্যোচাতে। অগমকরং হি সমাসনিষেধকারণং নতু ক্রিক্রা সহ সম্বন্ধঃ অত্র তু গমকত্বাৎ সমাসো ভরত্যের ষথা অনুগুত্তরপদে। নম্বত্র গমকম্বনের কুতঃ সভাবাৎ অতএবাহ -ইদম্ভ নেষ্যতে ইতি কিঞ্চিন্ন কুর্বাণেছকিঞ্চিৎকুর্বনাণ ইতি।

(৩)। গুণমুক্ত্বা বো গুণিনি বর্ত্ততে স গুণবচন:। ঈযদিতি স্থগোহব্যয়াদিতি বঁচীলুক্। ঈযদিতি শক্ষম্বপশু গুণবচনেন স্থবস্তেন সহ তৎপুরুষসংক্রক: সমাসো বা ভবতি। গুণবচনেনেতি কিম্। ঈয়নুগার্গ্যঃ সমং জাতিশকো দ্রব্যবচন: গার্গদ্রব্যাশ্রিতগুণক্রিম্মো: স্থোক্তাং

৪। অংশিষষ্ঠ্যা পূর্ব্বাদেং প্রথমায়াঃ।
পূর্ব্বাদের ত্তরক্তাঃ প্রথমায়াঃ পূর্ব্বাদ্যংশিনঃ ষষ্ঠ্যা সহ তৎপুরুষো
ভবতি। পূর্ববং কায়ত পূর্ব্বকায়ঃ অপরকায়ঃ অধরকায়ঃ উত্তরকায়ঃ পূর্ববাস্ত্রঃ মধ্যাস্ত্রঃ অপরাস্ত্রঃ সায়াক্তঃ পশ্চিমরাত্রঃ। তথাচ,
উপারতাঃ পশ্চিমরাত্রগোচরাদিতি ভারবিঃ। পূর্ব্বাদিরাক্তি
গণঃ।

গময়িতৃমী,ৰ শেকঃ প্ৰযুদ্ধতে নথা গোতর ইতি জাতাবুৎকৰ্যাভাবাৎ তদ্ব্যঞ্জ-কম্ম দ্ৰব্যস্থ গুণস্থা প্ৰকৰ্ষং গময়িতুং প্ৰকৰ্মপ্ৰত্যয়ঃ

(৪)। অংশোহবয়বঃ যস্তান্তীতি সোহংশী তম্ম ষঠ্যা সহ তৎপুৰুষো ভৰতি। ষ্ঠী চ সমূদে বিহিতা। অংশিনা চ সহ সম্বন্ধাংশাংশিশ্বরূপ এব সম্ভবতি অতোহর্থবশাদের পূর্বাদগ্রেহংশবচনাঃ অতএবাহ পূর্বাদ্যংশিন ইতি। যদাপি পুর্বাদেঃ প্রথমারাঃ অংশিষ্ঠাা সহ সমাগ উক্তঃ তথাপি ষষ্ঠান্তেন সহ প্রথমান্তম্ভ সমাদো ভবতি। এবাৈহর্থো লভাতে যভা বিভ-ক্তয়ে। নিতামের নামগুণীভূতাঃ এবমূত্তরতাপি। সমাসো বেতাধিকার ইতি পূর্বস্ব এনোক্তমাৎ সমাসো বেতি প্রতিলক্ষণং নোক্তম্। পূর্বাং কায়ন্ত পূর্বকার ইতি বঁচীসমাসস্যাপবাদোহয়ং পূর্বাদিপদশু পূর্বানিপাতার্থঃ। কায়ত্ত পূর্দমিতি ষ্ঠীসমাদে নতি কায়পূর্বমিত্যেবং স্থাৎ অভস্তৎপ্রাপ্তৌ অপবাদরণঃ প্রথমাসমাসঃ। ক্রিয়াদ্যাকাজ্জভাভাবাং পৃথক্করণ ইত্য-স্যাবিষয়:। নমু বাধিকারাৎ পাক্ষিকোহয়ং সমাস:। তদেতত্তাক্তে পক্ষে ষ্ঠীসমাস: কথং ন ভবতি ভক্তাপি পাক্ষিকত্বেন বাক্যেনাপি ভবিতব্যমেব। উত্তরস্থত্তে বা গ্রহণেন জ্ঞাপিতমেব মহতা বাধিকারেণ বাক্যমেব স্থাপ্যতে নতু সমাসাম্ভরং সাধ্যতে। অক্তথা অপরবাগ্রহণমনর্থকং স্তাং। নৱেকদেশে সমুদায়োপচারাৎ পূর্বেণ্ডাসৌ কায়ণ্ডেতি বিশেষণ-সমাদেনৈব পূর্মকায় ইতি ভবিষাতি কিং লক্ষণেনেতি এবং তর্হি ষষ্ঠা-সমাসপক্ষে কামপূর্কমিত্যনিষ্টরূপং দ্যাৎ। পূর্কাক্ত মধ্যাক্ত দায়াক্ত ইতি क्रिश्नावर्कः (उट्णाश्स्काश्क्रणामगाशाः हेणाः सङ्गातमणः (गराः वृद्धाः দ্যিত সায়মো মকারসুক্ চ। পশ্চিমরাত্র ইতি সর্কৈকদেশসংখ্যাতপুণাচ্চ

৫: নপুংসকাৰ্দ্ধিতীয়তৃতীয়চতুর্থতুর্যোভ্যো বা।

শর্দ্ধার কায়স্থ অর্দ্ধকায়ঃ কায়ার্দ্ধা দিতীয়া ভিক্ষায়াঃ দিতীয়া ভিক্ষায়াঃ তৃতীয়া ভিক্ষায়াঃ তৃতীয়া ভিক্ষায়াঃ তৃতীয়া ভিক্ষায়াঃ তৃত্তীয়া ভিক্ষায়াঃ তৃত্তিকা
ভিক্ষাতৃর্যাম্ তুরীয়াদিতি কাতস্ত্রম্। তুরীয়া ভিক্ষায়াঃ তুরীয়া ভিক্ষা ভিক্ষাতৃরীয়ম্।

রাত্রেরিতাৎ অদিল গিতীকার কুক্ রাত্রাস্তাদয়: পুংগীতি পুংলিকতা। অংশীতি কিম্ ? রাজ্রঃ পূর্ব্বো দেশ:। অংশিনা সহ পূর্বাদেঃ সমাসে সতি সমাসাদ্রামর্থাদেবাংশবচনাঃ পূর্বাদয়: অংশাংশিসম্বন্ধে চ ষষ্ঠাস্ততা নিয়তৈব তৎ যঠা। ইতি কৃতং স্পার্থাধ্য। স্থায়ল ভ্যাছ্যাক্ষী প্রতীতিঃ স্পার্থা ভবতি।

(৫)। নপুংসকার্দ্ধশন্দ্বিতীয় তৃতীয় চতুর্থ তুর্য্যে ভ্যম্ভেরস্যাঃ প্রথমায়া: নপুংসকার্দ্ধান্যং শিন: ষষ্ঠ্যা সহ তৎপুরুষো বা ভবতি। পার্দ্ধং ময়া ভক্ষিতমিতি ভাষ্টোদাহরণদর্শনেনার্দ্ধশ্রপি পাক্ষিকসমাস উক্ত:। দিতায়মিত্যাদি দ্বেস্তীয়স্তৎপুরণে ইতি ত্রেষ্ঠুশ্চেতি তীয়ঃ বটু কতিপরেভান্থ-ড়িতি এট চতুরো বে যৌ চলোপশ্চেতি যঃ চলোপশ্চ। পূর্ব্বাদেরাক্বতিগণ-ত্মানের সমাসে সিদ্ধে বিকল্পার্থমিদং বচনং তেন পক্ষে ষষ্ঠীসমাসো ভবতি। সমবিভাগেহর্দ্ধশন্দো নপুংসকলিঙ্গ:। নমু পূরণার্থস্ত শত্রাদৌ পাঠাৎ ভিক্ষা-षि शैविभि ज्ञारिको कथा विक्रीमभामः। **উচাছে। अस्ति विक्रीबादिकद्वत** সমাসবিধানং পূরণে ষষ্ঠীসমাসনিষেধক প্রায়িকদ্বং স্বচয়তি তেন ষষ্ঠীসমাসো-'২পাত্র ভবতি। বর্মপঞ্চমাদিপ্রয়োগসিদ্ধিরপাতএব। **মপুংসকার্দ্ধেতি** किमर्थः একদেশে ममुनारमाभनाता । विस्थिनमारमरेनवार्क्तकाम हे जि छिन-ষাতি এবং সভি পুংলিঙ্গেনাপার্দ্ধশব্দেনার্দ্ধপ্রাম ইতি স্থাৎ নারং বিরোধঃ তস্তাপীপ্তত্বাৎ যতো ভাষ্যকারেলার্দ্ধং নপুংসকমিতি। পাণিনিলক্ষণমেব নিরস্তম্। তত্মাদিহাপি নপুংসকার্দ্ধেতি ক্লডং স্পষ্টার্থম্। একদেশে সমু-দায়োপচারো মন্দ্রধিয়াং ঝাটভাববোধার ন ভবতি। অগ্রভোজনং ভোজনা-প্রমিত্যা দিমিদ্বার্থং অগ্রশন্ধোংগ্যক্তৈরত পঠাতে তদিশেষণীসমাসাদ্যামের

७। नाः निर्माश्तकएष ।

পূৰ্ববং ছাত্ৰাণাং পূৰ্ববং বৰ্ষাণাম। পূৰ্ববৰ্ষা ইতি তু। বৰ্ষাখ্যস্তাংশিন একত্বাং। এবমৰ্দ্ধরাশিরিত্যাদি। কাৰ্দ্ধপিপ্ললা ইতি তু।
অৰ্দ্ধপিপ্ললী চাৰ্দ্ধপিপ্ললী চেত্যেকশেষাং।

৭। পরিমাণিষষ্ঠ্যা কালাৎ।

মাসো জাতস্থ মাসজাতঃ দ্বাহো জাতস্থ দ্বাহজাতঃ দ্বে অহনী জাতস্থ দ্বাহজাত ইত্যপীয়তে।

সাধনীয়ম্ ৷ অর্ধশ্রেংতোহর্দ্ধবৃদ্ধা অর্বজরতীতাসাকলাবত্তেরপর্ণদ্ধস্য তৃতীয়া-সমাসঃ ধ্রুবমনয়োর দ্বেন বৈশষং ভবতীতি বাক্যেগপি তৎপ্রয়োগো দুশাতে। (৬)। অংশিনোহনেকত্বে ুসতি অংশিষষ্ঠোত্যাদিলক্ষণবিহিতঃ সমাসো ন ভবতি। পূর্কাং ছাত্রাণামিতাত্রাংশিনো বছযাদনেকত্বম্। নমু অংশিঙ্কদা পূর্ন্বাদেরিতি ক্রিয়তাং এবং সতি এতলক্ষণমক্বতং স্থাৎ ইতি চোদাং স্কৃদি নিধায়াহ পূৰ্ববং বৰ্ষাণাং পূৰ্ববৰ্ষা ইত্যত্ৰ তু বৰ্ষাথাস্থাংশিন একম্বাদিতি অত্র যদ্যপি ঙদ নাস্তি তথাপি একমন্ত্র বিদ্যাত এব তথাচোকং আপো দারা বর্ধাঃ সিকতা জলৌকস ইত্যাদেরবছত্বেহপি বছবচনমিতি। এবমর্দ্ধরাশিরিতি যদ্যনেকদ্রব্যসমুদায়ো রাশিস্তথাপি যোহংশী রাশিশকবাচ্যঃ স এক এব। নম্ব অর্দ্ধপিপ্লা ইত্যতানেকত্বমংশিচনা বিদ্যুত এব তৎ कर्भः नमान देखाल आह अर्फ्सिश्रमा हेलामि। नसू यमाः मिरनाश्रतकरण-श्रि এक मार्सि भिन्न है । श्रिकारिश करा कि मर्श कि नाः नि-নোহনেকত্ব ইতি নিষেধঃ। অত্যোচ্যতে। অর্থতেলো হি মহান বিদ্যতে অর্দ্ধপিপ্লনী ইতানেন খণ্ডরপাণামেব পিপ্ললীনাং বছত্বমূচ্যতে। যদা তু অক্ষতানামেব পিপ্লশীনামর্দ্ধং বাচ্যং ভবতি তদার্দ্ধপিপ্লল্য ইতি প্রয়োগো মাভূৎ। স্মার্কপিপ্পলীত্যত্র পিপ্পলীশক্রাপ্রধানতে বৃতি ব্রীপ্রভাষস্য চেডি হ্রাম্থে ন, ভবতি। অর্দ্ধ পিপ্লল্যাদিদ ভেডি প্রতিশেষাং।

⁽৭)। কালবাচিনঃ শলাও ক্রান্ত প্রথমায়াঃ পরিমাণিষষ্ঠ্যা সহ তৎপূক্ষো ভবতি। পরিমাণমস্তাকাতি প্রিমণি তেন সহ কালবাচিনঃ

৮। প্রাপ্তাপরাভাগ দ্বিতীয়য়া বা। প্রাপ্তো জীবিকাং প্রাপ্তজীবিকঃ জীবিকাপ্রাপ্তঃ আপরো জীবি-কাম আপরজীবিকঃ জীবিকাপরঃ 1

১। স্বয়ংসামি ক্তেন।

শ্মানদামর্থ্যাদের কালবাচিনঃ শকাঃ পরিমাণবচনা এর বিজ্ঞারস্তে অন্ত-থোত্তরপদশু পরিমাণিরমের ন শুাং। যদাপি পরিমাণজং দ্রোণাঢ়কাদীনামের প্রদিন্ধং তথাপারচ্ছেদহেতৃত্বাং কালপ্রাত্র গৌণং প্রারিমাণজম্। তথাছি মাসো জাতশুত্যাদৌ মাসাদয়ো জাতশু সম্বন্ধনীরাদিত্যগতীর্গময়স্তীতি ভবস্তারচ্ছেদহেতবঃ। দ্বাহ ইতি দ্বারহেন্থাঃ সমাহার ইতি তন্ধিতার্থে সমাহারে দিগুঃ সংখ্যায়া ইতি দিগুসমাসঃ। অহঃ পুংসীতি রাজাদিরাট্রঃ অনীতদ্বিতাচ্যয়োশ্চেতি নকারলুক্ অদিল গিতাকারলুক্ অমমপি ষষ্ঠী-সমাসাপর্বাদে। যোগঃ। দেহহুনী জাতৃশু ইত্যত্র কথং ত্রিপদস্তৎপুরুষঃ দক্ষ্বত্রীহিবজং পদবহুত্বে চেতি প্রতিষ্কোদত আহ ইত্যপীয়াত ইতি ইত্ত-সিদ্ধার্থক বহুলবচনাদিকং কিমপি ধ্রান্তর্মশ্বীকরণীয়েম্ দ্বান্থ্যাত ইতি উত্তর-পদে চেতি দ্বিগুঃ একপুণাবর্জং তেভ্যোহক্ষোহন্থ-শ্বাসাহারে ইত্যদক্ষা-

- (৫)। প্রাপ্তাপন্নভ্যামৃত্রয়্পাঃ প্রথমায়া দিতীয়য়া সহ তৎপুরুষো বা ভবতি। অনেন তাক্তে পক্ষে দিনীয়ায়া গতাদারিতি সমাসঃ। নমু তদি বিশেষবিধানং লক্ষণসামর্থ্যাদেবোভয়ং ভবিয়তি কিং বেত্যনেন তং ক্রিয়তে স্পষ্টার্থম্। প্রাপ্তো জীবিকাং প্রাপ্তজীবিক ইতি শেষতৎপুরুষ-দ্বাবস্তম্থপদলিক্ষকাবিত্যস্তম্পদলিক্ষতে প্রাপ্তে প্রাপ্তাপন্নালমুপসর্গপূর্বত্বে চেতি প্রতিষেবঃ তেন প্রাপ্তাপন্নয়োর্যন্নিক্ষং তংসমুদায়য়্ম ভবতি গোরপ্রান্যস্তান্তর্বে রীপ্রভায়য়্ম চেতি ক্রয়ঃ। যদা ভূ প্রাপ্তা জীবিকামিতি বাক্যং তদা প্রাপ্তজীবিকেত্যত্র পূর্ব্বপদে ক্ষচিদক্তত্রাপীতি প্রেছারঃ। দিতীয় ভিক্রায়াঃ দিতীয়ভিক্ষেত্যত্রাপোর্যমেব পুরবদ্ধারঃ। বছরীহিণা-পোভাৎ সিধাতি কিন্তু প্রাপ্ততন্ত্রীরিত্যত্র অনিযুবর্থন্ত্রীদ্দিতি ঝলাদিছাৎ কঃ স্যাৎ। প্রাপ্তগব ইতাত্র গৌরভিন্তি কুলুকীতি রাজাদিছাভাবাৎ টো ন স্যাৎ।
 - (»)। স্বয়মিভ্যেতন্মান্তমব্যর্শ্ আত্মনা ইত্যস্যার্থে বর্ত্ততে। সামীভ্যে-

স্থাংধীত: তক্তেদং স্বায়ংধীতং সামিকৃতং সাম্যর্থ ইত্যেকে। নেমিকৃতন্ অর্দ্ধকৃতন্। সর্বত্র কৃত্পাদানে কারকোপসর্গপৃর্ববস্থ চ
কৃতো গ্রহণন্। তেন স্বয়ংচিরবিলীন: স্বয়ংধর্মগতঃ।

২০। বিতীয়ায়া গতালৈঃ।

গতাঁছেঃ শব্দৈঃ সহ দ্বিতীয়ায়াস্তৎপুরুষো ভবতি। ুগানং গতো
নামগতঃ বেদং বিশ্বান্ বেদবিশ্বান্। তথাচ, বিপ্রায় বেদবিহুবে
স্বহ্মাতায় ইতি ব্যাসং। গত বিশ্বস্ প্রিত অতীত পতিত
সতাস্ত প্রাপ্ত আপন্ন গমিন্ গামিন্ বুজুৎস্থ বুজুকু ইত্যাদি।

তদব্যরশ্ অর্দ্ধপর্যারঃ পঞ্চয়ান্তমেতং, পদম্। স্বরং সামি ইত্যেতাভাামুক্তব্যাঃ প্রথমারাঃ জান্তেন সহ তংপুক্ষো ভবতি। স্বরংধীত ইতি ধাবু গতিশুদ্ধাঃ জ্বজ্বত্যারিত্যাদিনা ইঙ্নিষেঃ উর্দ্ধন্তবান্তমেরতান্তর্বত্তী অতো বৃদ্ধিক্চিতি উর্বৃদ্ধিক। সমাসৈকপদত্বে সতি ফলং দর্শয়তি সায়ংধীতি তিত্র ভবে তস্যেদমিতি বা টণ্ বহুলং তদ্ধিত ইতি বৃদ্ধিঃ জ্বেন কমাসাসম্ভবাং তদন্তগ্রহণং তাবদ্ভবতু সোপসর্বেণ কথং সমাসঃ অত আহ সর্বত্রেত্যাদি রুত্বপাদানে রুদ্গ্রহণে সতি কারকপূর্বস্যোপসর্গপূর্বস্য চ রুতো গ্রহণম্। কারকোপসর্বো পূর্বেণ ক্ষাং তাভ্যাং সহ সমস্তোহপি রুৎ সর্বত্র রুদ্গ্রহণেন গৃহতে ইত্যর্থঃ অত এব স্বরং চির্বালীন ইত্যাদ্যবগন্তব্যন্। বিলীন ইতি লীঙ্গুরেণ জ্বঃ ক্রনজানিনা তদ্য নঃ। সাম্যর্থ ইত্যেক ইতি সামার্থে বর্ত্তমানঃ সামিশকোহত্র স্থতে গৃহীত ইত্যেকে মন্তন্তে। বিশেষণসমাসেনের সিদ্ধে সামিশকাস্ব্য পূর্বনিপাতার্থং সামিগ্রহণম্।

(:•)। গ্রামং গত ইত্যাদৌ জন্য বসোরুপ্রতারস্য চ ছানিছাং কর্ত্রুলাদিরন্তিরিতি ষষ্ঠী ন ভবতি। বেদবিশ্বানিতি বস্থবে ত্তেল জ্ব্চেতি বস্থ: স্ট্রাগিত্যাদিনা সুষ্ দীর্ঘো মহৎসাস্তোনাবিতি দীর্ঘ:। কঠা প্রতঃ কট্টপ্রতঃ বনমতীতো বলাতীতঃ নরকং পজিতো নরক-

১১। তুলন কেপে খট্বায়াঃ।

খট্বারচ়ো জাল্ম: উৎপথপ্রস্থিত ইত্যর্থ:। বাক্যে ক্ষেপো ন গম্যত ইতি বাক্যাভাব:। অক্ষেপে তু। খট্বামারট্রো রাজা।

১২। কাল্লার্থগুচ।

অহরতিস্তা মুহূর্রাঃ অহংসংক্রান্তাঃ রাত্রিসংক্রান্তাঃ রাত্র্যার্কার।
মাদপ্রনিতশ্চন্দ্রমাঃ মাসং প্রমাত্র্যার্ক ইতার্থঃ।

পতিতঃ তরঙ্গমত্যন্তঃ তরঙ্গাত্যন্তঃ স্বথং প্রাপ্তঃ স্বধ্প্রাপ্তঃ চর্থমাপরঃ চর্থাপরঃ গতার্থতাং গতিভূজার্থেত্যানিনা দর্শব্র কর্তরি ক্তঃ। প্রামং গমী গ্রামগামী ভবিষ্যতি গমাদেরিতি নিন্ গমিন্ গামিন্ উ তরোগণে পাঠাং পাক্ষিকং কুল্বছং বহুলবচনাং। ভবিষ্যাদৃণিনোর্শিনিতি জানিতাং যঠ্যভাবঃ। শান্তঃ বৃভূৎস্বঃ শান্তবৃভূৎস্বঃ বৃধ্ অবগমনে দন্ ভূগান্তি ইত্যানিনা বসা ভঃ বর্গস্যোত্যাদিনা ধস্য তঃ সন্ভিক্ষাশংসেক্ররিতি উ:। ওদনং বৃভূক্ষঃ ওদনবৃভূক্ষঃ ভূজ্ পালনাভ্যবহারয়োঃ। সর্প্রং পূর্দ্বেং। গতাদেরাক্তিগণত্বাং স্বথমীপ্তঃ স্বথেপ্তঃ স্বথমিছে; স্বথেছঃ। হংসমণ্ডলত্তিভিঞ্বিত্যাদ্যপি সম্বক্ষীয়ম্।

- (১১)। কেন সহ ধটায়া উত্তরস্যা বিতীয়ায়াস্তংপুরুষো ভবতি ক্ষেপে গম্যমানে। বেত্যধিকারে সভ্যপি নিত্যসমাসোহয়ন্। অত্র কারণমাহ বাক্যে ক্ষেপো ন গম্যত ইতি বাক্যাভাব ইতি। খট্যামার ইতি বাক্যে আরোহণমাত্রমবগম্যতে নতু ক্ষেপঃ। ধট্যার ইত্যনেন ন কেবলং ধট্যাব্রাহণমাত্রমবগম্যতে নতু ক্ষেপঃ। ধট্যার ইত্যনেন ন কেবলং ধট্যাব্রাহণমাত্রেণ বস্য নিক্ষ্যতা সোহভিধীয়তে কিন্তু যেন কেনাপ্যকুচিতাচরণেন অত্রবাহ উৎপথ প্রস্থিত ইত্যর্থ ইতি।
- (>२)। অর্থগ্রহণং স্করপগ্রহণনিরাসার্থম্। ক্তান্তেন সহ কালার্থস্য দিনীরারান্তৎপূর্ববো ভবতি। উত্তরস্ত্রেণৈবাবিচ্ছেদে সিধ্যতি বিচ্ছেদার্থং বচনন্। অহরতি স্থতা মৃহুর্তা ইতি সমাসেহিচি চেতি অক্ষো নকারস্য সঃ বিসর্গ: অংকাহরপাদাবিতি বিসর্গস্য রেকঃ অহর্মতা ইত্যর্থ:। মৃহুর্তা হিকাহিদিহর্গচ্ছন্তি ক্লাচিদ্রাত্রিমিতি। বিচ্ছেদঃ সংযোগাভাবঃ। সংক্রান্ত

১७। जातिरुक्टंमश्रेरेग्र**म्ह**।

বৰ্মং ভোগ্যো বৰ্মভোগ্যঃ মুহূৰ্ত্তং স্থখং মুহূৰ্ত্তস্থখং সৰ্ব্যৱাত্ৰং কল্যাণী সৰ্ব্যাত্ৰকল্যাণী সৰ্ব্যাত্ৰং শোভনা সৰ্ব্যাত্ৰশোভনা।

১৪। অর্থানৈন্ত ভীয়ায়া:।

অর্থাজ্য: শক্তৈঃ সহ তৃতীয়ায়ান্তৎপুরুষো ভবতি। ৢ ধান্তেনার্থো ধান্তার্থঃ। অর্থ পূর্বব সদৃশ সম উনার্থ কলহ নিপুণ সপ্রাদ্যপ্রাদি-মিশ্রা শ্লক্ষ অবরেত্যাদি।

ইতি সংপূর্বাৎ ক্রমু পাদবিক্ষেপে ইত্যন্থাৎ ক্তঃ ক্রক্তবন্ধোরিত্যাদিনা ইঙ্ নিষেধঃ অভিভ্রথোশ্চ পঞ্চমালুকীতি দীর্ঘ:। রাত্র্যার্ক্রচা ইতি আঙ্ পূর্ব্বক্সহেঃ ক্তঃ হোঢ়ঃ ইত্যাদিনা হস্য চঃ ধোহধাতুর্ব্যাদিতি তস্য ধঃ ঘটবর্গাদিত্যাদিনা ধস্য চঃ ঢ্রোরিত্যাদিনা চলুক্ দীর্ঘশ্চ অথিতি ক্বতি বা রাত্রেরিতি ম বিধ্য-ভাবঃ ম পক্ষে তু রাত্রিমার্ক্রঢ়া ইতি। মাসপ্রমিতশ্চস্রমা ইতি মাঙ্ মানে আরম্ভে ক্তঃ দোষোমাস্থাং কিন্তে চেতি ইঙ্ ইঙাদাবিত্যাকারলুক্ মাসং প্রমাত্রমার্ক ইতি মাসৈকদেশস্য প্রতিপদশ্জ্রমসা সম্বন্ধং দর্শয়ন্ মাসস্য তেন সহাবিচ্ছেদসংযোগো নাস্তীতি দর্শয়তি।

- (১৩)। অবিচ্ছেদোহত্যস্তসংযোগঃ কালস্যার্থন সম্বন্ধিনা ব্যাপ্তিঃ। অত্যন্তসংযোগে গন্যমানে ক্রান্তেন অক্তৈঃ লবৈশ্চ সহ কালার্থস্য দিতীয়ারান্তৎপুরুষো ভবতি। বর্ষং ভোগ্য ইতি কালাধ্বভাামবিচ্ছেন ইতি দিতীয়া
 বর্ষভোগ্য ইতি ক্রিব্রয়া কালস্যাবিচ্ছেনঃ। মুহুর্জস্থমিত্যাদৌ গুণেন
 কালার্থস্য চেতি দামান্তবিধানাদবিচ্ছেদেহিপ ক্রান্তেন দমাসঃ দিখাতি
 অবিচ্ছেন ইত্যস্য তু ক্রান্তব্যতিরিক্রো বিষয়ো ভবিষ্যতি অক্তৈশ্চেতি ক্রতং
 স্পর্টার্থম্।
- (১৪)। মাসেন পূর্ব্বো মাসপূর্বঃ শুরুসদৃশঃ পিতৃসমঃ মাসোনঃ অর্থ গ্রহণাৎ মাসবিকলঃ বারুলহঃ কার্যানিপুণঃ। মিশ্রকানুপস্গ সম্বনা-বিতি পাণিনীয়ম্বরস্ত্রেণামুপসর্গে মিশ্রসন্দে উত্তরপদেহস্তোদান্তবিধানাৎ সোপমর্গেণ চ মিশ্রসন্দেন সমাস উক্তঃ স্কতে আহ সপ্রাদ্যপ্রাদিমিশ্র ইতি

১৫। ভৃতীয়াকুতেন গুণবচনেন।

শব্ধুনয়া কৃতঃ খণ্ডঃ শক্ষু লাখণ্ডঃ গিরিকাণঃ প্রমাদকাণঃ প্রমাদমূর্থঃ তৃতীয়াক্ততেনেতি কিম্। অক্ষা কাণঃ। অক্ষিকাণ ইতি তু ভাগরন্তিঃ। অগুণবুচনেন তু। ধনেন ধনবান্ গোভির্বাপাবান্।

তেন গুড়মিশ্রঃ গুড়বিমিশ্রঃ আচারগ্লক্ষঃ বাক্শ্লক্ষঃ মাসাবরঃ। নামগ্রহণে লিক্সবিশিপ্টক্তাপি গ্রহণমিতি পরিভাষাবচনাৎ গুরুসদৃশী। উনার্থ ইত্যত্রা-র্থগ্রহণেন সপ্রাদ্যপ্রাদিমিশ্র ইতি সপ্রাদ্যপ্রাদিগ্রহণেন চ এতজ্জাপিতম্। অত শাস্ত্রে শন্দোপালানেনার্থঃহণং সপ্রাদিগ্রহণক প্রায়েণ ন ভবতীতি। সমসদৃশন্দভাগাং বোগে তু তুল্যার্থৈরতুলোপনৈবে তি তৃতীয়া। অক্সোং যোগে অস্মাদেব তৃতীয়াসমাসবিধানসামর্থ্যাৎ তৃতীয়া। অথবা ভবতার্থ-মপেক্ষ্য করণত্বান্ধেতৃত্বালা তৃতীয়া। নম্ম গুরুসদৃশাদয়ঃ ষ্টাসমাসেনাপি সিধান্তি এবং সতি লাসসদৃশালে ক্ষেপে ষ্ট্র্যা ইত্যলুক্ স্যাৎ। অর্থসমকলইনিপ্ণোনার্থশ্লক্ষাবরাঃ সদৃশপ্রেণী সপ্রাদিশ্যপ্রাদিমিশ্রেহর্থাদয়ঃ। প্রয়োগতোহন্যহপি ভয়বিহরলো হস্তশৃশ্রঃ প্রকটজরা গমনমন্থরো বয়োজ্যেষ্ঠঃ বিরহক্তশং স্বেলার্ডো গুণাধিকো বন্ধবিধুরণ্ড। একেন ন বিংশতি একাল্ল-বিংশতিঃ একাল্লবিংশতিঃ একাল্লবিংশিত্যাদাৰপ্যনেন্বৰ স্মাসঃ কার্য্যঃ।

(>৫)। তৃতীয়াক্বতেন গুণবচনেল সহ তৃতীয়ায়াস্তৎপুক্ষরো ভবতি।
গুণমুক্তবান্ গুণবচনঃ বাচ্যলিক্ষং কাপি কারকে চেতি কর্ত্তরি গুনট্ যঃ
পূর্কাং গুণে বর্ত্তিরা পশ্চাদ্রেরো বর্ততে স গুণবচনঃ যদি গুণমাত্রাভিধায়কঃ শব্দো গুণবচনেনাপেক্ষিতঃ স্যাৎ তদা গুণেনেতি বিদধ্যাৎ এবং
সতি ব্যতেন পাটবমিত্যাদাবপি সমাসঃ প্রসজেৎ। তৃতীয়েত্যনেন তৃতীয়াস্তং
গৃহতে। তৃতীয়াস্তেন গুণবচনস্য করণং ন সম্ভবতীতি তৃতীয়াক্বতেনেতি
সামর্থ্যান্তব্যভ্তয়োরপার্থদারা সম্বন্ধঃ। শক্ষ্ণয়া ক্ষতঃ থণ্ড ইত্যাদি থণ্ডশবঃ
কাণশব্দতাত্র থণ্ডনে নিমীলনে চ গুণে বর্ত্তিয়া পশ্চাদর্শ আদ্যতয়া মন্বর্ণীয়াৎ
প্রতায়েন অভেদোপদারাদ্বা তম্বতি দ্রব্যে পুরুষে চ বর্ততে ইতি গুণবচনো
ভবতি। স চ তৃতীয়াস্তশঙ্ক লাবাচ্যেন তৃতীয়ান্তনিরিবাচ্যেন চ ক্বতঃ
তৎপ্রবৃত্তিনিমিন্তস্যার্থপ্ত তেন করণাৎ। গিরিঃ শিশুক্রীড়নজবাম্। জ্ব্যগুণীভূতত্বাৎ ক্রিয়াপি গুণ ইতি বৈয়াকরণানাং মতম্। মূর্থশব্দেহিপি

পরভ্তধ্বনিম্থরঃ শরদন্তরাদয়ন্ত বভীসমাদেন। প্রতীতিবিষয়মপ-হরতীতি স্থায়াদর্থব্যবস্থা।

১৬। কৃতা কর্তৃকরণয়োব হলম্।

অহিনা হত: অহিহত: নথলূন: দোলাযান: দোলাগতি:। বছল-গ্রহণাদিহ স্থাৎ। গলেচোপক: পাদহারক: ইহ ন স্থাৎ। দাত্রেণ লুনবান্ পরশুনা ছিল্লবান্।

জড়পর্যায়ো জাড়ো গুণে বর্তিষা দ্রব্যে বর্ততে। অক্ষিকাণ ইতি ভাগর্ত্তিরিতাত্রাপি তৃতীয়াস্কেনাক্ষা যস্য কাণ্ডমিতান্তি তস্য তৃতীয়াক্কতন্তমিতি
সমাসে৷ তবিতি ভাগর্ত্তিরিত্যুক্তং কুরাদিত্যসাাররসস্ট্রনার্থম। তেন হি
তৃতীয়াক্কতেন ইত্যস্য প্রত্যুদাহরণমক্ষা কাণ ইত্যুপদর্শিতং ন হি তৃতীয়ান্তে
নাক্ষা দেবদন্তক্ত কাণ্ডং কুতং কিন্তু অন্তোন কেনাপি দ্রব্যেণ। অক্ষা প্নঃ
কেবলং কাণ্যুক্তো দেবদন্তো লক্ষ্যতে ইতি ন্যাসক্তাপি ব্যাথ্যাতম্।
ধনেন ধনবানিতি দ্রব্যব্দনাহয়ং ন গুণব্দনা। পরভূত্তধ্বনিমুথরঃ শরদন্তর
ইত্যত্র কথং সমাসং ন হি মুথরদন্তরশক্ষে। গুণব্দনা ইতি চোদ্যং হুদি
নিধায় সিদ্ধান্তমাহ পরভূত্তধ্বনিমুথরঃ শরদন্তরাদমন্ত ষদ্ধীসমাসেনেতি। নম্থ
সম্বন্ধবিক্ষায়াং ষ্ঠাসমাসে সতি পদমাত্রনিম্পত্তির্ভবিতি বাক্যার্থব্যবন্ত্রতি
প্রতীতিরর্থবিশেষাবগতিং বিষয়ং অর্থবিগতিনিমিত্তং শক্ষ্যদিন্তা: কৃতমন্বয়ন্দির্যমপহরতীতি অতিক্রামতীত্যর্থং। তথাহি মণ্ডপশক্ষাছৎপ্রার্থবিশেষাবগতিঃ মণ্ডং পিবতীতি শক্ষিক্ষে কৃতমব্যুমতিক্রামতীত।

(১৬)। রুদন্তেন সহ কর্ত্রবগ্রোবিহিতায়াস্ত্রীয়ারাস্তৎপ্রুবো ভবতি বছলম্। অহিনা হত ইতি হস্তে: জ্বং তথোশ্চাঙিভীত্যাদিনা নকারলুক্ নথলুন ইতি লুঞ্ছেদনে জ্বং জ্বুক্তবংদ্যারিত্যাদিনা তক্ত নং বছলবচনাদিহ স্যাদিতি তৃতীয়য়া বিহিতঃ সমামো বিভক্তান্তরভাপি ভবতি। তেন গলেচোপক ইতি গলে চুপাতে ইতি চুপ্মশায়াং গতে

১৭। কৃত্যৈস্ততিনিন্দয়োঃ।

বিশৈকপান্ডো বিশোপান্ডঃ শস্তু; শুনা লেছঃ শলেছঃ কৃপঃ কাকপেয়া নদী করপ্রচেয়ানি পুস্পাণি দাতচ্চেদ্যঃ প্রস্তরঃ পূর্ব-স্থৈবারং প্রপঞ্চঃ। তেন তৃণোপেক্ষ্যং বুষোপেক্ষ্যমিত্যাদি।

১৮। ভক্ষোণ সংক্ষারস্থা। দগ্রা সংস্কৃত ওদনঃ দধ্যোদনঃ গুড়ধানাঃ।

ণকঃ তৎপুরুষে কৃতি বছলিমিতি সপ্তম্যা অনুক্। পাদহারক ইতি পাদাভ্যাং ছিয়তে ইতি চতুথী প্রশুমী বা কর্ত্তরি বিহিতো ণকো বছলবচনাৎ কর্ম্মণ্যত্র বিহিতঃ। কর্ত্তরণয়োরিতি কিম্? ভিক্ষাভিক্ষয়িতঃ হেতাবত্র ভূতীয়া।

- (১৭)। ক্রত্যৈঃ সহ কর্ত্তরি করণে চ বিহিতায়াস্তৃতীয়ায়াস্তৎপুরুষো ভবতি। স্ততো নিন্দায়াঞ্চ গম্যমানায়াম্। বিশ্বোপাস্য ইতি
 ঋহলোণ্য ইতি পাঃ স্কৃতিরত্র গমতে। শ্বলেছঃ কুপ ইতি নিন্দার গমতে।
 অনানেয়ভোরাবনং নিন্দা এবমনাদেয়োহয়ং যতঃ শ্বভিরপি লিছতে অথবা
 অরাপি স্কৃতির্গমতে এবং নামাসলোদকঃ কুপঃ যতঃ শ্বভিরপি লিছতে।
 করপ্রচেয়ানি পূজ্পাণীতি ইণঃ সহাদের্যন্তিতি যতু স্কৃতিরত্র গম্যতে এবং নাম্
 নম্রাণি পূজ্পাণী বিষগ্জাতানি যতঃ করেণাপি প্রচীয়স্তে নতু দণ্ডাদিনা।
 দাত্রচ্ছেদ্যঃ প্রস্তর ইতি নিন্দার গম্যতে। ক্রিনছং হি প্রস্তর্মা গুণঃ
 এবং নামাসারোহয়ং যতো দাত্রেণাপি ছিদ্যতে। প্রথমোদাহরণদ্বয়ে কর্ত্তরি
 ভৃতীয়া শেষে করণে ক্বত্যা অপি ক্বত এব তৎপূর্বস্থিতেণ সিদ্ধে নিয়মার্থমেতত্তবিষ্যতি। ক্রত্যাং সহ স্কৃতিনিন্দ্রোরেব সমাসো ভবতি নান্তর।
 এতর বাচাং এবং সতি ভূণোপেদ্ধাং ব্রোপেদ্ধামিতি ন স্যাৎ নার স্কৃতিনিন্দা ব্রেগমতে। উপেদ্ধামিতি উপপূর্ব ঞি ইন্ধী দীপ্রৌ পূর্ববং ণ্য
 ইতি চোদ্যং হৃদি নিধায়াহ পূর্দ্বিস্যবায়ং প্রপঞ্চ ইতি অর্থবিশেষনিয়তত্বং
 বহলবচনাদেব।
- (১৮)। ভক্ষাবাচকেন শব্দেন সহ সংস্কারবাচকস্য ভৃতীয়ারাস্তৎ-পুরুষো ভবতি। সংস্কারস্য ভক্ষ্যেণ সহ সমাসবিধানাদেব ভক্ষাশু সংস্কার্যাত্ব-

১৯। চতুর্থ্যা বল্যাদ্যৈ:।
বল্যাদ্যে: শব্দৈ: সহ চতুর্থ্যান্তৎপুরুষো ভবতি। বক্ষায় বলি:
বক্ষবলি:। বলি হিত সুখ বক্ষিত ইত্যাদি।

২০। প্রকৃত্যা বিকৃতেন্তাদর্থ্যে। যুগায় দারু যুপদারু। অভত্ত। রশ্ধনায় স্থালী। রশ্ধনস্থালীতি তু ষঠীসমাসঃ।

মায়াতি। দ্বা সংস্কৃত ওদনঃ দধ্যাদন ইতি তংপুক্ষাদো সংস্কৃতাদেনিতামিতি সংস্কৃতশব্দলোপঃ। শুড়ধানা ইতি শুড়েন মিশ্রিতা ধানা ইতি বাকাং তক্ষ্যেপ সংস্কারস্যেতি ষয়মন্ত্রোপলক্ষণং কথিঞিং সম্বন্ধনাত্রমূপলক্ষ্যতে তেনাখেন বুক্ষো রথোহখরপঃ গোমানমিত্যাদি। অত্র বানেন রথাদিনা বাহনস্য মণিমুকুটকং কুকুমবল্রং অক্ত মঞ্জনীয়েন মগুনস্য। জলগর্মনী দ্বিভাঞ্চং ধাক্তকুশূলঃ অত্র ভাণ্ডেন সহ তদবস্থিতদ্রব্যা তৃতীয়ায়াঃ সমাসঃ মথবা শাকপার্থিবাদিবদিহ কর্মধারয়ং ক্ষতা অত্র মধ্যপদলোপঃ করণীয়ঃ।

- (১৯)। যক্ষায় বলিরিতি তদর্থীদিতি চতুর্থী প্রকৃতিবিক্তার্থাভাবাৎ উত্তর্গরেশেন প্রাপ্রোতীতি বিধানম্। নোভ্যোর ক্তমিতাত্রাপি
 তদর্থাদিতি চতুর্থী কেচিদত্র সম্প্রাদানচতুর্থীং বদস্তি গোভ্যোরক্ষিতং
 পীতং দীয়তে ইতি এবং সত্যগমকত্বাৎ সমাস এব ন প্রাপ্রোতি। হিতবোগে হিতেন বেতি চতুর্থী আশিষি তু হিতম্বধয়ার্যোগে আশিষি
 হিতাদার্থৈরিতি চতুর্থী পক্ষে ষঠানয়োর্যোগে ভবতি তৎ ষঠীসমাসেনৈব
 সিদ্ধে হিতম্বর্ধয়াঃ পাঠঃ স্পন্তার্থঃ অথবা ক্ষেপবিবক্ষায়ামাশীরর্থে সমাসার্থমিদং প্রমাদার্থং চাঞালম্ব্রং তে ভ্রাদিতি ষঠীসমাসবিধানে তু তর
 সিধ্যতি ক্ষেপে ষঠা। ইতি অনুথিধানাং। বরপ্রদেয়া ক্রপ্রা গুরুপ্রদেয়াধিকনিস্প্রেহার্থী পিত্রদানমিত্যাদি। প্রয়োগদর্শনাদেতদপ্যাদিপদেন সংগ্রহশীয়ম্।
 - (২০)। প্রক্নতা সহ তাদর্থ্যে বিহিতারা বিক্লভেক্তর্থ্যান্তৎ-পুরুটো ভবতি। যুপার দার্বিতি দাক প্রকৃতিঃ যুপো বিক্লতিঃ তাদর্থাঃ

- ২১। কচিৎ প্রকৃতিবিক্ত্যবিক্ষায়াঞ। অধায় ঘাসঃ অধ্যাস: শশ্রৈ; শশুর: শশ্রুবশুর: কেলয়ে গৃহং কেলিগৃহষ্।
- ২২। প্রয়োজনবাচ্যর্থেন নিত্যং বাচ্যলিকতা চ.। ব্রাক্ষণার্থং পয়ঃ ব্রাক্ষণার্থঃ সূপঃ ব্রাক্ষণার্থা ধ্বাগৃং।
 - २७। यूकारेषाः शक्षमाः।

চতুর্থ্যা বোবিতং সমাসে তু সমাসেনৈব। রন্ধনায় স্থালীত্যত্র তদর্থতা বিদ্যত এব নতু প্রশ্নতিবিক্কতী ষদ্যত্র সমাসো ন ভবতি কথং রন্ধনস্থালীতি অত আহ বন্ধীসমাস ইতি।

- (২১)। প্রকৃতিবিক্ত্যবিবক্ষায়াঞ্চ কুত্রাপি তাদর্থ্যমাত্রে বিহিতায়া
 শচতুর্থ্যা: পদান্তরেণ সহ তৎপুরুষো ভবতি শিষ্টপ্রেক্ষাগদর্শনাৎ। রন্ধনগৃহং নাট্যশালা ক্রীড়াতড়াগ: শয়নপর্যন্ধ: বিশ্রামন্থলীত্যাদাবপ্যেবং
 সমাদ:। অব্বাদাদয়: বতীসমাদ ইতি বদাপি ভাষাং তথাপি সাধাবিশেষাচ্চতুর্থীসমাসোহত্র বৃত্তিক্রতী দর্শিত: রন্ধনন্থালীতি তু বতীসমাদ
 ইতি পুর্ন্বেণিব দর্শর তা অব্বাদানাপি বতীসমাদেনাপি সিধ্যতি প্রকারান্তরোহপি প্রেষণ স্চিত:।
- (২২)। প্রয়েজনবাচিনা অর্থশন্দেন সহ চতুর্থ্যান্তংপুরুষো ভবতি
 নিত্যং বাচ্যলিকতা চ। এতেন বাচ্যার্থপ্রধানতা অন্ত তংপুরুষস্তাপ্যক্তা।
 অতএব যত্র বাচ্যার্থতা নান্তি ন তত্র সমাস: তথাচ আনিবি হিতাদ্যথৈরিত্যত্র
 প্রয়েজনার্থস্যার্থশন্দশ্ত বোগে অর্থো নৃপায় ইত্যুদান্ততং অক্তথা নিত্যসমাসে বাক্যপ্রয়েগোহসাধু: স্তাৎ। সমাসো বেত্যধিকারাং প্রাপ্তক্ত বিকরম্ভ বাধনার্থং নিত্যগ্রহণন্। প্রয়োজনবাচীতি বিশেষণং কিমর্থং নহাপ্রয়েজনবাচিনোহর্থশন্দশ্ত প্রয়োগে চতুরী বিদ্যুতে ন চ বাচ্যালিকতা চ সম্ভবতি তদেতংকতং স্পট্টার্থম্। অর্থশন্দশ্ত শরুপুমেব স্পষ্টং কৃতং নহত্যান্তার্থনির্তিঃ।
 মশকার্থো ধুম ইত্যত্রাপি অর্থশন্দ: প্রয়োজনবাচ্যেব নির্ভিশ্বরূপমেবাত্র
 প্রয়েজনম্ অথবা মশকশন্দ এবাত্র মশকনির্ত্তো বর্ততে। তথাচ নঞ্
 ক্রের স্তাসকারেণোক্তং অব্রাহ্মণ ইত্যত্রার্থজনিতনির্ভিপদার্থকোহত্র ব্রাহ্মণ-শন্দ ইতি।
 - (২৫) পাপালুক ইতি চলৎপ্রাগ্ভূরপানানমিত্যপাদানসংস্কা।

মুক্তাদ্যৈঃ শক্ষৈ: সহ পঞ্চম্যান্তংপুরুষো ভবতি। পাপাশুক্তঃ পাপমুক্তঃ দিতাদিতরঃ দিতেতরঃ। তগাচ ভারবিঃ, ক্ষিপামাণ-মদিতেতরভাদা শস্তুনেব করিচর্ম চকাশে। মুক্ত ইতর অপেত অপোঢ় পতিত অপত্রস্ত ভয় ভীতি ভীত ভী নির্গত জুগুপদা গাদি

২৪। কচিন্ন স্থাৎ। মহাপ্রাসাদাৎ পতিতঃ মহাভোজনাদপত্রস্ত ইত্যাদি। '

२৫। अक्रत्नामाव भवारेमाः वर्षाः।

শারাদ্যকৈঃ শক্তিঃ সহ করণাদ্যক্তিয়ারর্থে বিহিতায়াঃ ষষ্ঠ্যাস্তৎ-পুরুষো ভবতি। রাজ্ঞঃ পুরুষো রাজপুরুষঃ ইদংস্ত্রী গোস্বামী গ্রীপ্রঃ এধোরশ্চনঃ। অকারণাদিবিতি কিম্ণু সর্পিষো জ্ঞানং

সিতাদিতর ইতি আরাদানৈরিতি পঞ্চমী স্থাপেতঃ হ্রষ্থাপোঢ়ং স্বর্গ-পতিতঃ তরঙ্গপেত্রস্থঃ বননির্গত এযাং পূর্স্রবদপাদানসংজ্ঞা বুকভয়ং অহিজীতঃ গজতীতিঃ বকতীরিতাল ভালার্থয়োভীহেত্রিতাপাদানসংজ্ঞা। আদিপদেনাধশাজ্ঞপ্রঃ তদন্তঃ বৃক্ষচাতঃ ভাসদ্গাবোদ্গতঃ বেদবহিষ্কৃত ইত্যাদয়ঃ সমসনীয়াঃ। মুক্তালৈরিতি কিম্ ৪ প্ররোরধ্যেতা।

- ° (২৪)। পূর্দ্দলক্ষণেন বিভিত্তঃ সমাসঃ কচিন্ন স্থাৎ। শিষ্টপ্রয়োগামু-সারেণ নিংমধন্যবস্থা। মহাপ্রাসাদাৎ পতিত ইতি চলংপ্রাগ্ভূরপাদান-মিত্যপাদানসংজ্ঞা।
- (২৫)। ইদংস্ত্রীতি সম্বন্ধবিবক্ষায়াং যতী কর্তৃকাস্থাদিকজিরিতানেন চ বিহিতা ষতী করণাদাভাবিহিতা। গোলামী গ্রীশ্বর ইত্যতাপি স্বামানি বিরতি নেন সম্বন্ধত্যের প্রতিপ্রস্থতে সপ্মীতি তু বিধীয়তে। এধো-ত্রশুন ইতি গুরুস্চু ছেদনে রুণ্ডাতেখনেনেতি বাচ্যালিঞ্চং কাপি কারকে চেতি জনট কর্তুরিত্যাদিনা কর্মণি যতী। সর্পিষো জ্ঞানমিত্যত্র জ্ঞোখনবোধার্যন্ত করণাদিতানেন ক্লানাং তৃপ্ত ইত্যত্র তৃপ্তার্থত চেত্যনেন ক্রণে ষত্রী বিধীয়তে। যদ্যেবং কথং প্রাত্তভূত্ম্বরণং গুরুব্চন-ধ্যানমিত্যত্র সমাসং অত্র হি শ্ব ত্যথত চেত্যনেন কর্মণি যতী অত আহ

ফলানাং ভৃপ্তঃ মাভুঃ স্মরণম্। পূর্কামুভূতক্মরণং গুরুচরণধ্যান-মিত্যাদিযু ভু সম্বন্ধষ্ঠ্যাঃ সমীসঃ।

২৬। পৃথক্করণে। মতুষ্যাণাং ক্ষত্রিয়ঃ শ্রতম:।

২৭। কর্তৃকর্মপ্রাপ্তো কর্মণি। প্রেশি কর্মণালকেন গবাং দোহ:। অশত্রাভৈরিতি কিম্ ? দেবস্থ কুর্ব ন্ দেবস্থ কুর্ব গি:।

সম্বন্ধবর্ত্তাঃ সমাস ইতি নাত্র কর্ম্মবিবক্ষা করণীয়া কিন্তু সম্বন্ধবিবক্ষা এবং পটজোপস্কারঃ চৌরস্তা রোগঃ চৌরস্তোজ্জাসনমিত্যাদো গুণোৎকর্ষে রুঞঃ রুজার্থস্ত স্বার্থকর্ত্ত্বে জাস্তাদেহিংসায়ামিতি ষদা ষষ্ঠী ওদা ন সমাসঃ সক্ষ-বিবক্ষায়ান্ত ভবত্যেব।

- (২৬)। পৃথক্তরণে বিহিতা ষষ্ঠা করণা দিউবিত। বর্গাজ্জাত্যাদিডিঃ পৃথকরণে ইতানেন সপ্তমী বিধীয়তে সম্বন্ধয় তু প্রতিপ্রস্থাতে এতাবতা করণাদিপদেন গ্রহণং ন ভবতীতি পৃথক্ লক্ষণম্।
- (২৭)। কর্ত্তরি কর্মাণ চ ষষ্ঠাাঃ প্রাপ্তৌ সত্যাং কর্ম্মণি বিহিতা ষষ্ঠা করণাদির্ভবিতি। গোপালকেন গবাং দোহ ইত্যত্র কর্ত্তৃশাঘাদিরুভিরিতি কর্ত্তরি কর্ম্মণি চ ষষ্ঠাং প্রাপ্তারাং কর্তৃকর্মপ্রাপ্তৌ কর্মণ এবৈকরতীতি নিরমাৎ কর্মণি বিহিতা ষষ্ঠা কর্ত্তরি প্রতিষিদ্ধা ইক্স্ভক্ষিকা বিপ্রস্ত অর্থেহা দরিদ্রাণামিতাত্র তুন কর্ত্তরি কর্মণি চ ষষ্ঠাঃ প্রাপ্তিমাত্রং কিন্তু বিধানমেন এতাবতা নাস্ত বিধরঃ। ওদনপাকঃ স্পকারস্তেত্যত্র তুন কর্তৃকর্মপ্রাপ্তৌ কর্মণি বিহিতা ইব্ছী কিন্তু ওদনক্ষেতি সম্বাবিক্ষায়াং স্পকারস্তেত্যত্র কর্তরি। দেবদন্তস্ত কুর্মান দেবদন্তস্ত কুর্মাণ ইতি কর্ম্পাদারিভিরিত্যানন বিহিতা বন্ধী ন তবতি শত্শাদরোভ্যাদিছাৎ তত্মাৎ সম্বাবিক্ষায়াং ষষ্ঠাত্র কর্মনীয়া কুর্ম নিতানেন কুর্মণ ইত্যানেন চ প্রকরণনিরমাৎ ভ্ত্যাদিরেবাভিধেরঃ। চৌরস্ত ছিবন্ ইত্যত্র তু ছিবঃ শত্রম্ভতি কর্মণি ষষ্ঠ্যা অবরণাদাবিভানেন নিবেরঃ বিছঃ।

২৮। অব্যরক্থ। ৰাক্ষণস্থ কৰা ব্রাক্ষণস্থ প্রকৃত্য। অনুব্যরক্তু। স্বস্পরি মন্ত্র-পরি। তথাচ, বংক্তেহ্রীন্ ব্যগৃহীম সমুদ্রমতরাম চেতি ভট্টিঃ।

২৯। পূরণার্থঃ।

বিপ্রাণাং দশমः।

৩০ ে গুণবিশেষণম্। স্তস্থ তীত্ত্রো গদ্ধঃ চন্দনস্থ মৃত্যুঃ স্পর্শঃ। ৩১ । অগস্কাদিগুণঃ।

- (২৮)। অব্যয়ক্তং শত্রাদির্ভবতি। ব্রাহ্মণশু কৃত্যা ব্রাহ্মণস্য প্রকৃত্যেতি
 নবত্র ষঠ্যের ন প্রাণ্ডোতি ছাদিরাৎ অথবা কার্য্যনিত্যধ্যাহৃত্য সম্বর্জবিবক্ষারামেব ষটা করণীয়া এবমপি সাপেক্ষজেনাগমকত্বাৎ সমাসো ন প্রাপ্নোতি
 তন্মাৎ কর্ম্মণ এব সম্বন্ধবিবক্ষায়ামিয়ং ষটা। অহপরি মহপরীতি তবোপরি
 মন্মোপরীতি বাক্যং ঘাত্রৈরিতি ষটা। যৎকৃত ইতি যদ্যাঃ ক্লতে ইতি
 বাক্যং ক্লতে ইত্যব্যরং নিমিভপর্য্যায়ঃ।
- (২৯)। পূরণমর্থো যস্য স পূরণার্থ: পূরণার্থ: শত্রাদির্ভবতি। বিপ্রাণাং দশম ইতি দশন্ ইত্যান্থাৎ দশানাং পূরণে ইন্ডার্থে নাস্তান্মট্ ইতি মট্ সমুদার-সমুদারিসম্বন্ধে ষষ্ঠা।
- (৩০)। গুণস্য বিশেষণং শত্রাদির্ভবতি। গুণা রূপরসগদ্ধস্পর্শাদয়ঃ। মত্বস্য তীরো গদ্ধ ইতি তীরো গদ্ধস্য বিশেষণং চন্দ্রনস্য মৃত্যু স্পর্শ ইতি মৃত্যু স্পর্শম্য বিশেষণম্। রাজপ্জ্যো রাদ্ধাঃ রাজমন্ত্রী বিপ্রাইত্যাদাব-গুণবিশেষসাপেক্ষেণাণি বিশেষণেন সহ সমাসস্পেষ্টম্বাং ইহাপি সমাস-প্রাপ্তৌ প্রতিষেধার্থং বচনম্। নমু রাজপ্রিয়ো গদ্ধ ইত্যাদৌ গুণবিশেষণেনাপি সমাসদর্শনাৎ রাজ্ঞঃ শোভনঃ পূত্র ইত্যাদৌ চাগুণবিশেষণেনাপি সমাসদর্শনাৎ ক্রাজ্ঞঃ শোভনঃ পূত্র ইত্যাদৌ চাগুণবিশেষণেনাপি সমাসদর্শনাত্তয়মপোতমাভিচরতি তদসা লক্ষণস্য প্রায়িক্ষাদিয়মত্র ব্যবস্থা বিশেষণস্যান্তরপনার্থস্য পূত্রপনার্থাস্ত্রে সমাসঃ। অনশ্বয়ে তু অসমাস এব।
 - (७১)। शक्तानियां जित्रका छनः मंजानिर्छवि । काकमा काकृति

কাকন্ত কাষ্ট্যং বলাকারাঃ শৌক্রাং পটন্ত শুক্রঃ। গন্ধাদিস্ত। চন্দনগন্ধঃ খদিরসারঃ গোরূপং পুরাণশতম্ অর্থগোরবম্ অজমান কবং বচনকোশলমিত্যাদি।

৩২। সমানাধিকরণম্। এজভা রাজ্ঞাং পুরুষটে।

৩৩। ু বর্ত্তমানক্তঃ।

রাজ্ঞাং মতঃ। রাজমত ইতি তু সম্বন্ধষ্ঠ্যাঃ কর্তৃতীয়ায়া বা সমাসঃ। তথাচ ভট্টিং, কলহংস রামমহিতঃ ক্লতবানিতি'।

বলাকারাঃ শৌক্রামিতাত্র সমাসনিষেধম্ অর্থগৌরব মত্যাদৌ চ সমাসং দর্শরতা এবং স্থচিতং কাষ্ণ্যাদিব্যতিরিক্তা ভাবপ্রত্যরাস্তাঃ সর্ব্ধ এব গন্ধাদিগ্রহণেন গৃহ্নস্তে তথাচ ভাব্যে উক্তং ভাবপ্রত্যরাস্তেনাপি শৌক্রাদীনাং
প্রতিষেধ ইতি। পট্যা শক্ষ ইতাত্র সমাসনিষেধং চন্দনগন্ধইতাত্র চ সমাসং
দর্শরতা এবং স্থচিতং স্থরভিশুক্ষমধুরোফাদিবিশেষরহিতা গন্ধরপরসম্পর্শনদা
গন্ধাদিপ্রহণেন গৃহস্তে। প্রাণশত মতাত্র সমাসং দর্শরতা এবং স্থচিতং
সংখ্যাদয়ঃ পরিশিষ্টা বৈশেষকশাস্ত্রীয়াঃ সর্ব্ধ এব গন্ধাদিগ্রহণেন গৃহ্নস্তে
অতএব পটসংযোগঃ পটবিভাগঃ মংস্থাং মদ্পাং স্ত্রীদ্বেষ ইত্যাদৌ সমাসঃ।

- (৩২)। সমানাধিকরণং শতাদির্ভবিতি। ঋদ্ধশু রাজ্ঞঃ পুরুষ ইতাত্র ঋদ্বশ্রেতাশু রাজ্ঞ ইতাত্র চ সমানমেকমেবাধিকরণম্। নমু শত্রাদিত্বশু ষ্টাসমাসনিবেধকলং তচ্চাপ্ররোজনকং বিশেষণশু বিশেষাঃ কর্মধারর হতি সামানাধিকরণো বিশেষণসমাসেনাত্র ভবিতব্যমেব ঋদ্ধরাজ্ঞ পুরুষ ইত্যাচাতে। যদি বহাসমাসঃ স্থাং ভদা উভয়োরেব পদয়োঃ ষষ্ঠান্তত্বাং প্রাক্তমিতি পূর্ব্বনিপাতানিরমঃ সাাং উভয়োরপি ষষ্ঠাা স্বত্রিতত্বাং রাজঋদ্বসা পুরুষ ইতাত্রাপি স্যাং। বিশেষণসমাসে তুন দোহঃ বিশেষণ-সৈয়ৰ ঋদ্বন্থ ষষ্ঠাা স্বত্রিতত্বাং।
- (৩৩)। বর্ত্তমানকালে বিহিতঃ ক্তঃ শত্রাদির্ভবতি। রাজ্ঞাং মত ইতি পুজেচ্ছাবুদ্বার্থ ঞীতো বর্ত্তমানে চেতি ক্তঃ বর্ত্তমানবাচিনা ক্তেনেতি কর্ত্তিশ্বি

১৪। অধিকরণক্তঃ। ইদমেবামুপগতম্ ইদমেবামার্গতম্।

৩৫। অযাজকাদির্ণকভৃত্তন্তঃ।

ভবতঃ শায়িকা ওদনস্থ ভোজকঃ পুরাং ভেত্তা অপাং শ্রেষ্টা। যাজকাদিস্তা। শূদ্রযাজকঃ। ষাজক পূজক পরিচারক পরিবেশক পরিবেষ্টক স্নাপক অধ্যাপক উৎসাদক উম্বর্ত্তক বাচকৃ প্রয়োজক রথপঙ্ ক্তিপরগণক পভার্থ ভত্ত্ হোতৃ হস্ত ইত্যাদি।

- (৩৪)। অধিকরণে বিহিতঃ ঔঃ শত্রাদির্ভবতি। ইদমেষামূপগ চমিতি গতার্থাৎ ইদমেষামাসিতমিতি অকর্মকত্বাৎ গতিভুজার্থাকর্মকাদধিকরণে চেতি কঃ। অধিকরণবাচিনা চেতি কর্ত্তরি ষঠা।
- (৩৫)। যাজকাদিব্যতিরিক্তো ণককান্তিস্তৃ ওস্তল্চ শত্রাদির্ভবতি। ভবতঃ শায়িকেতি ণকস্যাদিচ্চেতি ভাবে আদিধানসামর্থ্যান্তাবে পকঃ অকারস্য ইকারঃ কর্ত্ব লামাদিরুদ্ধিরিতি কর্ত্ররি ষষ্ঠা। ওদনস্য ভোজক ইতি ণক্তৃঙ্রী কর্ত্তরীতি পকঃ কর্মণি ষষ্ঠা। প্রাং ভেত্তেতি কর্ত্তরি ভূঙ্ কর্মণি ষষ্ঠা। শৃদ্রবাজক ইতি যাজিনা অবিবক্ষিতকর্মণা পকান্তেন শৃদ্রস্য প্রয়োজ্য-কর্মণঃ ষষ্ঠ্যাঃ সমাসঃ। রগপঙ্ ক্রিপরগণক ইতি রথপরঃ পঙ্ ক্রিপরলচ গণক ইত্যর্থঃ এবং সতি রথগণকঃ পঙ্ ক্রিপরগণক ইতি ভবতি। রথপঙ্ ক্রিপর ইতি ক্রতম্ অন্তপরস্য সমাসনিবেধার্থঃ তেন গ্রহাণাং গণক ইত্যাদৌ সমাসো ন ভবতি। পত্যর্থেতি বিশেষণাৎ বক্সস্য ভর্তা বক্সস্য ধারক ইত্যর্থঃ। আদিপদমাক্বতিগণস্বস্টনার্থং তেন চিত্তগ্রাহকঃ সম্পূদানবোধর্ম ইত্যাদয়ঃ। কর্মণি বিহিতায়াঃ ষষ্ঠ্যাঃ ভাববিহিতেন গকেন সহ সমাসো ভবত্যেব তদগ্যাদিপদেন স্টনীয়ম্। তেন ইক্তৃভক্ষিকা বিপ্রস্যেত্যত্ত সমাসো ভবত্যেব।

ষষ্ঠা। যদি শত্রাদিত্বারান্তি সমাসন্তং কথং রাজমত ইত্যত আছ সম্বন্ধষষ্ঠা ইত্যাদি অন্নমভিপ্রান্তঃ বর্ত্তমানক্তম্ম শত্রাদিত্বমুক্তং নতু ভূতবিহিতক্তস্য
তদ্যোগে শেষবিবক্ষারাং সম্বন্ধষষ্ঠী কর্ত্ত্বিবক্ষারাং কর্ত্তরি ভূতীন্না উভয়থৈব
সমাসসিদ্ধিঃ। এবং রামেণ মহিতো রামমহিত ইত্যাদি।

৩৬। ক্রীড়ান্ধীবিকযোর্নিভ্যস্। পুস্পভঞ্জিকা শালভঞ্জিকা চিত্রলেখক:।

०१। मध्याः त्नी छोत्माः ।

শোণ্ডাজ্যৈঃ শকৈঃ সহ সপ্তমান্তিৎপু ক্ৰো ভবতি। অক্ষেষু শোণ্ডঃ
অক্ষণোণ্ডঃ। শোণ্ড ধূর্ব কিতব ব্যাড় প্রবীণ সংবাত মধ্যার্থান্তর অধি পট্ট পণ্ডিত কুশল চপল নিপুণ সিদ্ধ শুষ্ক সক্ক বন্ধ
ইত্যাদি।

⁽৩৬)। ক্রীড়ায়াং জাবিকায়াঞ্চ গমামানায়াং পকান্তস্ত স্তশ্চ বাজকাদিনি তাং ভবতি। যদি শত্রাদিন্তং প্রক্রাস্তমাদিধেয়ং স্যাৎ তদা লক্ষণমনথাকং স্যাৎ পূর্ববাগেনৈব সিদ্ধাং। নিত্যগ্রহণং বালুর্ত্ত্যা প্রাপ্তম্য
বাক্যমা নিরাসার্থম্। পূপান্ত প্রকা শালভাগ্রিকেতি গকতৃত্তৌ কর্ত্তরীতি
গকঃ ক্রীড়াত্রার্থাং। চিত্রলেথক ইত্যত্রাপি পূর্ববিশ্বকঃ জীবিকাত্রার্থাং তৃত্ত্
চ ক্রীড়াজাবিকয়োন স্তিতি অক এবোদান্ত ইতি ক্ষয়াদিত্যেনাক্তম্।
অকে জীবিকার্থ ইতি স্বরস্ত্রে তু র্মণীয়কর্তেতি নিত্যং ক্রীড়াজীবিকয়োরিতি স্মাস ইতি বামনেনোক্তম্। বৃত্তিক্তা তু সংক্ষিপ্তসারস্বাং অভাবাদেব
বা তৃত্ত নোদান্ত ইতি ন নিশ্চীয়াত।

^{(:}৭)। অক্ষেরু শৌও ইতাত্র কেন বিহিতায়াঃ সপ্রমাঃ সমাসঃ।
উচাতে। অধিকরণান্ ভিওস্মপ ইতানেন। নত্র অধিকরণসংজ্ঞৈর কগং
বৈষয়িকাদ্যধিকরণমিতানেন চেং সা হি সংজ্ঞা ক্রিয়াপেক্ষৈর ভবতি অত্র
তু বাক্যে ক্রিয়া ন শ্রামতে। উচাতে। অন্তোবাত্র প্রসক্রিয়া সা তু
সমাস এবান্তভূতিতি ন প্রযুজাতে তস্যা যৎ সাধনং তদধিকরণং তত্র
সপ্রমীতাদোষঃ। শৌওশকঃ ম্রাপবচনঃ উপচারাদিহাম্ভ্রাণীতি বর্ততে।
মধ্যার্থান্তর ইতি মধ্যবাচকান্তর ইতার্থাঃ স চ স্বভাবাদধিকরণার্থপ্রধানঃ।
তৎ সামানাধিকরণ্যমের সপ্তম্যাঃ কারণম্। বনেহন্তর্বনান্তঃ রনে মধ্যে
বসতীত্যর্থাঃ। প্রস্বপদার্থপ্রধানে তু অব্যয়ীভাবসমাস এব অন্তর্বণং বনমধ্যবর্তী বনবাতিরিক্রো মধ্যভাগ উচাতে। তৎপুরুষে তু বনমের মধ্যভূতমিত্যর্থাঃ। অধিশক্ষেহ্র পঠাতে ত্র্যাপ্যধিকরণপ্রাধান্তেহপাব্যয়ীভাবঃ
অধিন্তি। অধিশক্ষেহ্র পঠাতে ত্র্যাপ্যধিকরণপ্রাধান্তেহপাব্যয়ীভাবঃ
অধিন্তি। আধ্রেমপ্রাধান্তে তু তৎপুরুষঃ ব্রাদ্ধণেষু অধি ব্রায়্লাধীন ইছি

७৮। यक्ष निश्रम।

মাস এব দেয়ং মাসদেয়খুণম্। অনিয়মে তু। মাসে দেয়া ভিকা।

৩৯। কচিদন্যত্রাপি।

মাসকরণীরং দিবসকরণীয়ং জন্মকৃতম্।

৪ । ক্তেনাছোরাত্রাবয়বানাম।

মধ্যাহুগতঃ স্থায়াহুগতঃ অপররাত্রগতঃ। অনবয়বানাস্তু। অহি কৃতং রাজ্রো কৃতম্। রাত্রিকৃতাঃ সিন্ধেয়ুঃ রাত্রিরত্তমাবেদয় ইত্যাদৌ তু কৃতাকর্তৃকরণয়োব তুলমিতি সমাসঃ।

ব্রাহ্মণাধিশক্ষা কেবলো ন প্রযুক্তাতে অষড়ক্ষাশিতস্থান কর্মালং পুরুষাধাস্তাচ্চেতি নিতামীনবিধানাং। শৌণ্ডো ব্যাড়োহস্তরধিপ্রবীণসংবীতকিতবপট্ধুর্তাঃ। পণ্ডিতকুশলো সিদ্ধন্দপলনিপুণশুকপকবদ্ধান্দ। শৌণ্ডাদিরাক্তিগণঃ। তেনামিন্ দক্ষচতুরসাহসিকাঃ কার্য্যদক্ষঃ শাস্তচতুরঃ
বণসাহসিকঃ। শৌণ্ডাইম্বরতি কিম্ ? গ্রামে বসন্ রণে যুধামানঃ।

(৩৮।৩৯)। যন্তত্তেন সহ সপ্তম্যাস্তংপুরুষো ভবতি নিয়মে গমামানে।
অত্রাবশুকরণীয় বং নিয়ম:। মাস ইতি ঔপগ্রেষকমধিরণং মাসে হতীতে
যোহনস্ত:রা দিবস: মাসং প্রতি স উপশ্লিষ্টো ভবতি অথবা ক্রিয়ায়া তৎকাললক্ষণা দিতি সপ্তমী। মাসসমাপ্তিক্রিয়া দেয়ক্রিয়াকালো লক্ষাতে।
কেয়মিতি খনাদস্তাদস্ত এচেতি যন্ত, এত্বক্ষ এবং পূর্কাত্র এব গেয়ং সাম
পূর্বাত্রগেয়মিত্যাদি বোদবাং ক চল্মত্রাপীতি যন্তা সমাস উক্তঃ অনীয়ন্তা
ক্রেন চ ভবতি। যন্তেতি কিম্ ? পর্বাণি এব স্নাতব্যম্।

(৪০। জ্ঞাস্কেন সহ অহরবয়বানাং রাজ্যবয়বানাক সপ্তম্যাস্তংপুরুষো ভবতি। অহি কতং রাত্রৌ কতমিতি নাজাহরবয়বাঃ রাজ্যবয়বাশ্চ সন্তি কিস্তহি কংল্মহঃ কংলা চ রাজিঃ তেন সমাসো ন ভবতি। কণং তহি রাজিরতা ইত্যাদি অত্রাহ কতাকর্তৃকরণয়োর্বহলমিতি সমাস ইতি নামং সপ্তমীসমাসঃ কিন্ত কুতাকর্তৃকরণয়োর্বহলমিতি ভৃতীয়াসমাসঃ

৪১। তলে শব্দেশ্য চ।

ভত্তকুতং ত্তেদং তাত্রকৃতম্।

8२। (कर्म।

প্রবাহে মৃত্রিতং নিক্ষলমমুষ্ঠানমিতার্থ;।

८७। क्षा एकादर्थन।

ছীর্থে ধ্রাক্তম ইব ভার্থধ্যাঞ্জ্যঃ ডীর্থকাকঃ নগরবায়সঃ।

রাত্র্যা ক্বতমিতি বাকাং করণে তৃতীয়া দিনপকং দিনগুদ্ধং রাত্মিসিদ্ধমিত।দি শৌগুদিছাং পূর্বেণ সমাসঃ।

- (৪১)। তত্ত্ৰপক্ষ চ সপ্তমান্তদ্য কান্তেন সহ সপ্তমান্তৎপূর্না ভবতি। শব্দস্য চেতি ক্লতং স্পষ্টার্থম্। অভ্যথা ডত্তেত্যর্থনিদে শোহরমিতি শব্দ স্যাৎ। তত্ত্তেতি। তদ্শকাৎ সপ্তমী অধ্যাদিসর্কনামবহুভাঃ সপ্ত-ম্যান্ত্রো বেভি ত্রঃ তৎপুরুষে ক্লতি বহুলমিতি সপ্তমা অলুক্ ত্ন্যেদং তাত্র-ক্লতনিতি সমাসবিধানস্ত ফলং দর্শিতবান্ একপদত্বে সতি তন্তেদমিতি টণি ক্লতে আদৌ বৃদ্ধির্ভবভি।
- (৪২)। কেপো নিন্দা। ক্লেপে গন্যমানে সপ্তমান্ত্রস্য ক্লান্তেন সহ সপ্তমান্তিৎপুরুষা ভব'ত। প্রবাহে মৃত্রিতমিতি মৃত্র প্রস্ত্রবণে চুরাদিঃ প্রবাহশনেন মৃত্রিত্শকেন চ মুখানর্থমপহায় অর্থান্তরমভিধীয়তে এবং বিধা ছি শলা মুখার্থে প্রমুজামানা ন ক্লেপং গময়ি নাপি পূজাং অতএব সিংহান্তঃ শলা যে পূজায়াং প্রবর্তন্তে কাকানয়োহিপি কুৎসায়াং তেহপি গৌণাা বৃত্তা অন্তথা পূজাক্লেপয়ারন্ধিগন্ধঃ অতএবাহ নিজ্লমন্ত্রানমিতার্থঃ প্রবাহ ইবানাদেয়ে কার্য্যে মৃত্রিতমিব নিস্কল্যং প্রবর্তনমিত্যভয়পদয়োরের মুখার্থপরিত্যাগারিকা গ্রাকে পূর্ববদ্রবৃত্। এবং ভ্রম্নি হতং উদকে বিশীর্ণং অক্রাবে নটিতমিত্যাদ্যবগন্ধ্রাম্।
 - (৪০)। ধ্বাজ্জার্থেন গ্রেল্ সৃহ সপ্তমান্তংপুক্রে ভবতি কেণে গ্নান্
 মানে। জীর্থধাজ্জ ইত্যাদৌ পূর্ববং মুখ্যার্থপরিত্যাগেন তীর্থাদিন
 লবানাং ধ্বাজ্জানিশলানাক গৌণেহর্থে বৃত্তিঃ। তীর্থধাজ্জ ইতি যথেব
 ভার্থে ধ্বাজ্জোন চিন্নং স্থাতা তম্বদক্ষোহণি মন্তীর্থ ইব কর্তব্যে ধ্বাজ্জ্জ্জ্জ্জাইব জনবৃত্তিঃ সৃ তীর্থধাজ্জ্জ ইত্যুচাতে কার্যাং প্রভানবৃত্তিভ্নেবাঞ্জ্পেং।

88। পাত্রে দমিতাদয় ।

পাত্র এব সমিতা: সঙ্গতা ন পুন: কচিৎকার্য্যে পাত্রেসমিতা: পাত্রবছলাঃ উড়ুম্বরে মশকা ইব একস্থা অদৃষ্টবিস্তরাঃ উড়ুম্বর-মশকা: উড়ুম্বরকৃমিঃ কৃপে মণ্ডুক ইব কৃপর্মণ্ডুকঃ কৃপকছ্পঃ প্রতিষিদ্ধসেবী মাতরিপুরুষ: কিঞ্চিৎ কর্ত্তুমক্ষমঃ পিঞীশূর: গেছেনদী গেছেনদ্রী গেহেখেড়ী গেহেবিজিতী সেহেবাড়ঃ গেছেতৃপ্তঃ গেডেপ্তঃ গোর্চ্চেপ্রাড়ঃ গোর্চেপ্রিতঃ গোর্চেপ্রাড়ঃ গোর্চেপ্রাড়ঃ গোর্চেপ্রাড়ঃ গোর্চেপ্রতঃ গোর্চেপ্রাণঃ আথনিকবকঃ গেহেমেহী গেহেদাহী গেহেপ্রগল্ভঃ কর্ণেটিরটিরাঃ কর্ণেচুরচুরাঃ। পাত্রেসমিতাদীনামেষাং সমাসাম্ভরং ন ভবতি। তেন পরমাঃ পাত্রে সমিতাঃ। বহুব্রীহিস্ত ভবংত্যের। বহুপাত্রেসমিতাঃ।

^{(88)।} ক্ষেপে গমামানে পাত্রেদমিতাদয়ঃ শকাঃ সমুনায়া এব তৎপুরুষস জ্ঞকা নিপাত্যন্তে। পাত্র এব সমিতা ইতি এবকারেণ ক্ষেপোহত্র গমাতে অতএবাহ ন পুনঃ কচিং কার্য্যে ইতি। একস্থা অদূষ্টবিস্তরা
ইতি উপমন্ত্রাত্র ক্ষেপঃ যথা উদ্ধারমধ্যে মশকা একস্থা এব নামুৎ কিঞ্চিৎ
পশ্চান্ত তথা যঃ পুরুষোহদৃষ্টদেশাস্তরঃ স উদ্ধারমশকাদিপদৈরুচাতে।
প্রাতিবিদ্ধসেবীতি যঃ প্রতিবিদ্ধমাচরতি স মাতরিপুরুষ উচাতে। মাতরি
পুরুষত্বং নিবিদ্ধং তদ্ বদম্পা নিবিদ্ধাচরতেন ক্ষেপো গমাতে। কিঞ্চিং কর্ত্বমক্ষম ইতি পিণ্ড্যামেব শুর ইতি অন্তক্ষার্য্যাক্ষম ইত্যর্থঃ। গেহেনদীত্যাদয়ো
নিনস্তাঃ। বিজিতমস্যান্তীতি বিজিতী। আথনিকবক ইতি থকু অবদারণে
খনোর্ডর ইত্যমুর্ত্তে করণাধিকরণয়োর্ডরেকেকবকডান্টেতি ইকঃ আথনিকঃ থাতঃ আথনিকবক ইতি যথা বকঃ থাতগত্যেৰ ভক্ষরতি নাম্ভত্র
গচ্ছতি তদ্বস্তোহপি যো গৃহগত্মেব ভক্ষরতি নাম্ভত্র গচ্ছতি স উচাতে।
যন্ত ইকবকপ্রত্যান্তঃ আথনিকবকশকঃ স আথনিকপর্যায় এব।
এবং কর্ণেচুরাইরঃ সুর্বৈরেব ক্ষেপো গম্যতে। গণপাঠসাম ধ্যাৎ

- ৪৫। বনেকশের কাদয়ঃ সংজ্ঞাম। বনেকশেরকঃ পুরুষোত্তনঃ নগাধিরাজঃ।
- ৪৬। নিত্যং কুপ্রাদে:।
 কুপ্রাদেনিতাং তৎুপুরুষো ভবতি। নিত্যসমাসে স্বপদবিগ্রহো
 নাস্তীতি পদাস্তরেণার্থকথনম্। কুৎসিতঃ পুরুষঃ কুপুরুষঃ
 ছুজনিঃ স্কুজনঃ।

যথাপাঠমলুগত্র দ্রস্টিবাঃ বছবচনাস্ততা চ। তথাচ, বৃতত্ত্বং পানেসমিতৈরিতি ভট্টিঃ। পাত্রেসমিতাদীনামেষাং সমাদাস্তরং ন ভবতীতি বছলাধিকারাদবগন্তবাং বছত্রীহির্ভবত্যেবেতি এতদপি বছলাধিকারত্তৈব ফলম্।

- (৪৫)। বনেকশে একাদয়: শকা: সংজ্ঞায়ামেব নিপাত্যন্তে নতু কেপে। গোহলস্তাদস্তানাং সংজ্ঞায়াং সপ্তম্যা ইত্যনেন হলাদৌ কারনামি ' চেত্যনেন চ যেখপুক্ বিধাতব্যন্তে বনেকশেরুকাদয়ন্তে চ তত্ত্বৈর জন্তব্যাঃ। বনেকশেরুকাদয়ো ন পাত্রেসমিতাদাস্তর্ভু তাঃ তেনাত্র সমাসাস্তরং ভবত্যেব। প্রুষোত্তমো নগাধিরাজ ইতি পৃথক্ষরণ ইতি নিষেধাৎ ষটাসমাসো ন্ প্রাপ্রোতীতি তত্মান্তনেকশেরুকাদিপাঠাৎ সংজ্ঞায়াং সমাসঃ কর্ণীয়ঃ।
- (৪৬)। প্রাদীনামবায়ানাং সাহচর্ঘাৎ কুশব্দোহপাবায়ং গৃহতে ন তু পূথ্বীবচনঃ। বাধিকারপ্রাপ্তস্থ বিকল্পন্ত বাধনার্থং নিত্যগ্রহণম্। কুৎদিত ইতার্থোপদর্শনং নতু নিয়মং তেনেষদর্থে কোঞ্চমিত্যাদাবিপি নিত্যসমাসো তবতি। কুপুরুষ ইত্যত্র সমাসে নৈকপদ্যে কোপুরুষমিত্যাদৌ
 বৃদ্ধিং। ছর্জন ইতি ছুনিন্দায়াম্। স্থজন ইতি স্থ পূজায়াম্। অপরমপোবং জ্ঞেয়ম্। অতিরাজা অতিপদ্য ইতি পূজায়াম্। আপিঙ্গল ইতি
 অল্লার্থে অপশব্দং ছুল্পুরুষং ছুল্পথং বিমংশুঃ বিজাতিরিতি নিন্দায়াম্।
 বিদেশো বিদ্বে নিন্দায়াঞ্চ। বিদিগিতি দিগ্রুয়মধ্যে রুট্রেজ্যা। অধিরাজ্ঞঃ
 অধিপতিঃ অধীশ্বর ইত্যাধিক্যে। উপমাতা উপপতিরিত্যসাক্ষায়াবে।
 উৎপথং বিহিমং বিপ্রিয়ং নিরাকুলং নিরুৎস্ক্ কমিতি নঞ্চর্থে অভিনবং ব্যাকুলং বিপাণ্ড বিলীনং সমাকুলং সমুৎস্ক্রং পরিক্রশং পরি-

- 89। প্রাদেঃ কৃষ্টাদে প্রথময়া। প্রকৃষ্টঃ প্রগতঃ প্রপতিতো বা পুরুষঃ প্রপুরুষঃ বিশিষ্টো বিরুদ্ধো বা পুরুষঃ বিপুরুষঃ।
- ৪৮। বিতীয়য়া অত্যাদে: ক্রান্তাদে। অতিক্রান্তো বেলামতিবেল: উদগতো বিদ্যামুদ্দির্দ্য:।
- ৪৯। তৃতীয়য়া অবাদেঃ ক্রুফীদে । ত্রু অবক্রুফ: কোকিলেন অবকোকিলো রক্ষা সন্নদ্ধে। বর্দ্মণা সংকর্দ্মা প্রিণদ্ধো বারুদ্ধি: পরিবীরুৎ মন্ধ্রতমশনেন সমশনম্।

পাওরং পরিধৃদরং পর্যাক্লমিত্যতিশরে। এবমন্তদপি শিষ্টপ্রয়োগদর্শনা-দমুদরণীয়ম্।

- (৪৭)। ক্নষ্টাদাবর্থে বর্ত্তমানস্ত প্রাদেং প্রথময়া সহ নিত্যং তৎপুরুষো: ভবতি।
- (৪৮)। ক্রাস্তাদাবর্থে বর্ত্তমানস্থাত্যাদেশ্বি তীয়য়া সহ নিত্যং তৎপুরুষো ভবভি। অভিবেল ইতি স্তীপ্রভায়য় চেতি হ্রমঃ। নরপ্রধানস্য
 তেন হ্রমো বিধীয়তে উন্তর্মদার্থপ্রধানস্তৎপুরুষঃ। উচাতে। তক্ত
 ব্যভিচারঃ প্রাণের প্রভিপাদিতঃ। ধো বেলামতিক্রাম্বঃ স এবাত্র প্রধান
 নম্। বদ্যেবং অভিবেলঃ উদ্বিদ্য ইতি বছরীহিণাপি সিধাতি অর্থভেলাহিপি নান্তি কিমনেন লক্ষণেন মৈবং যদি বছরীহিঃ স্যাত্তদা অভি
 নদি অভিভর্তা ইত্যাদৌ কাদির্খ দাদেরিভি নিত্যং কঃ স্যাৎ। অভিরাক্ত
 ইত্যাদৌ টো ন স্তাৎ। অভিধর্ম ইত্যত্র জারতসমাসাম্ভরাদ্ধাদিরিভি অন্
 স্যাৎ। অভিকার ইত্যত্র জায়ায়া ইক্জানতে ভি ইক্জানত স্থাৎ।
- (৪৯)। কুটাদাবর্থে বর্তমানস্যাবাদেন্ত তীষয়া সহ নিতাং তৎপুরুষো ভবভি। অবক্র ই: কোকিলেন অবকোকিলো বৃক্ষঃ সশকঃ কৃত
 ইতার্থঃ। বদা তু অবক্র ইমিভি ভাবে ক্তঃ তদাবক্র ইং কোকিলেন অবকোকিলমিভি ক্রয়তে। সমশনপদমত্তে সমশক্ষা অশনশকে প্রে
 শকাদেরকাদাবিতাকারলোপং কৃষা সাধ্যন্তি প্রকারান্তর্সাধনের তক্

- ৫০। চতুর্থ্যা পর্যাদের নিদে । পরিগ্রানোহধ্যয়নায় পর্যাধ্যয়নঃ অলং কুমার্য্যে অলংকুমারিং উদ্-যুক্তো যুদ্ধায় উদ্যুদ্ধ অভিগতঃ শ্রুতায় অভিশ্রুতঃ।
- ৫১। পঞ্চম্যা নিরাদেঃ ক্রান্তাদৌ। নিজ্ঞান্তো বনাৎ নির্বপঃ অপগতো গ্রামাদপগ্রামঃ অন্তর্গতো মুধাৎ ৃঅন্তর্মুখঃ ঃ
 - ৫২। শ্রদাদেঃ কৃতা। শ্রদায় উরীক্তা অচ্ছগত্য।
- ্ ৫৩। তন্ধিমিত্তোপপদস্য চ। কুস্তং করোতীতি কুস্তুকার: শক্তিগ্রহ:।
 - ৫৪। তন্নিমিত্রোপপদস্যাত্রবস্তুস্য কচিদিত্যেকে।

অস্বরসঃ স্থাচিতঃ এবৰধিগতোহকেণ অধ্যক্ষো ঘটঃ ক্ষক্ষণকোহকারাস্তোহস্থি প্রতীতোহকেণ প্রত্যক্ষো ঘটঃ স্থসংগতো বেলয়া স্থবেলঃ।

- (৫০)। শ্লানাদাবর্থে বর্জমানস্য পর্যাদেশ্চতুর্থ্যা সহ নিত্যং তৎ-পুরুষো ভবতি। বছপি নিত্যসমাদোহয়ং তথাপি নমঃস্বস্তীত্যাদিনা চতুর্থী-বিধানস্ত্রে অলং পর্যাপ্তঃ প্রভূরিত্যলংশক্ষপাঠসামর্থাচ্চতুর্থাস্তবাক্যমপি পাক্ষিকং ভবতি। অলং কুমার্ব্যে ইতি। অস্তে তু চতুর্থী সমাসমেব পাঠকলং বর্ণরস্তি।
- (৫১)। ক্রান্তাদাবর্থে বর্ত্তমানস্য নিরাদেঃ পঞ্চম্যা সহ নিত্যং তৎ-পুরুষো ভবতি। নির্ম্বণ ইতি প্রকাদৌ বনস্যেতি পত্বম্।
- (e২)। প্রদাদে: ক্লন্তেন সহ নিত্যং তৎপুরুষো ভবতি। প্রদাদে-শ্চেত্যারভ্য অন্তর্ধানে তির ইতি ধাবৎ রুৎপাদোক্তা: প্রদাদর:।
- (৫০)। তদিত্যনেন ক্বতঃ পরামর্শ: ক্বছংপত্তিনিমিন্তস্যোপপদস্য ক্লন্তেন সহ নিত্যং তৎপুক্ষো ভবতি। কুম্ভকার ইতি কর্মণো গড়িতি গট্ট শক্তিগ্রহ ইতি শক্ত্যাতাদ্গ্রহাদেরপ্তিত্যঙ্ কর্ত্যু ভাষাদিক্তিরিতি কর্মণি বিহিতায়াঃ ষঠ্যাঃ সমাসঃ।
 - (৫৪)। পূর্বলকণপ্রাপ্তমেব সমাসং বিশিনষ্টি ত্রিমিত্তোপপদম্য

মাষকুন্তং বপতা মাষকুন্তবাপেণ।

एए। किनिग्रजाने।

পু নারাজ: পু নর্গব: অনুবাচলৎ প্রাবর্গৎ ভৃতপূর্বর: যথাতথেত্যাদি।

৫৬। ন বিতীয়াদিনিনিতক্ষ। ু প্রতি রক্ষং বিছোততে নিহাৎ।

৫৭। সমুদ্ধাদাববায়সাবায়ীভাবঃ।

চেত্যনেন তংপুক্ষ: কচিনস্থতক তবতি। মাষক্ষবাপেণেত্যত্ব নামো-হন্তো বিজ্ঞিকশ্চেতি গত্বং ভবতি। যদি কুন্তুলকেন স্বত্তন সহ সমাসঃ স্যান্তদা অনাঙ্পাব্যবায়েহগীতি গত্বনেষেধঃ স্যাৎ। কচিদিতি বচনাৎ ঝাজনায় ইত্যাদো স্বত্তিয়েৰ সমাসঃ ডেন পদাস্ত্তাৎ নো নান্তস্যেতি নলুগ্ভবতি।

- (৫৫)। পূর্ববিধিভর্যত্রাপ্রাপ্তঃ সমাসঃ সোহয়ত্রত্যনেন উচাতে। অন্তর্ত্রাপি কচিৎ তৎপুরুষো ভবতি কচিদিতি বচনাৎ শিষ্টপ্রয়োদর্শনেন ব্যবস্থা। প্রারাজ ইতি রাজাদেষ্টাদিরিতি টঃ সমাসবিধানপ্রয়োচনম্। প্রন্থবি ইতি গৌরতদ্বিত্রকৃষীতি রাজাদিঘাটঃ। এবং প্রাংশিলী অবিনাভূতম্ অবিনাভাবঃ সহভাবঃ অন্তথাৎপদ্ধিঃ স্কুদ্গতঃ অধ্বা গস্তব্যোহধ্বগন্তব্য ইত্যাদ্যপি সমসনীয়ম্। অনুবাচলদিভাত্র ইকল্যাসবর্ণে নিভাসমাসবর্জ হিত্যাদ্যপি সমসনীয়ম্। অনুবাচলদিভাত্র ইকল্যাসবর্ণে নিভাসমাসবর্জ দিত্যবৃত্তিদর্শনাৎ গতার্থতিকল্যারেনােদাহত্রম্ অত্র হি স্বর্থিানাদন্তৎ-সমাসকার্য্যং ন বিদ্যতে। ভূতপূর্ক ইতি ভূতঃ পূর্বমিভার্থঃ। ঘথাতথে-ভাত্র সমাসপ্রয়োজনং যাথাত্র্থামিত্যাদাবাদিপদে বৃদ্ধিঃ।
- (৫৬)। নিভাং কুপ্রাদেরিত্যনেন প্রাপ্তঃ সমাসো দিতীরাদিনিমিত্তস্য "ন ভবতি। প্রতি বৃক্ষং বিদ্যোততে বিহ্যাদিতি লক্ষণেহতিপ্রতিপর্য্যনব ইতি হাদিখাং দিতীরা। আদিপদেন পঞ্চমীনিমিন্তস্য চ গ্রহণম্। অভি-মন্ত্রারকুনিতঃ প্রতি স্থিদ্ধা গতঃ। ত্রিগর্তেড্যঃ পরিষিক্তা মেঘো গতঃ। '
 - (৫৭)। অনুমণি সমাসঃ স্বাস্তেম সহ ভবতি। অত্র কারণানি প্রাপেব ব্যাখ্যাতানি। পূর্ব্যপদার্থস্য প্রধানৎস্য প্রায়িক্তম্। অনুজ্যেষ্ঠং

সমৃদ্যাদাবর্থে গম্যমানে হব্যয়স্ত নিত্যমব্যয়ীভাবো ভবতি। স চ স্বভাবাৎ পূর্ববপদার্থপ্রধানঃ। ভিক্ষাণাং সমৃদ্ধি: স্থভিক্ষং সমৃদ্ধি-ম দ্রাণাং স্থমদ্রং বর্ত্ততে। সমৃদ্ধা মদ্রা: স্থমদ্রা ইতি তু প্রাদি-সমাসঃ।

৫৮। সমীপে।
কুন্তস সমীপং উপকুন্তম্।
৫৯। সপ্তম্যর্থে।
ক্রীম্ববিক্তা কথা প্রবর্ত্তে অধিক্রি।

প্রবিশত যথারুদ্ধং প্রাদ্ধণান্তিষ্ঠন্তীত্য উত্তরপদার্থপ্রাধান্যপ্রতীতে:। স্বমন্ত্রনিতি অব্যরীভাবেংদন্তাৎ স্থপোংপঞ্চম্যা ইতি সোঃ স্থানে মঃ। প্রাদ্দমাস ইতি নিত্যং কুপ্রাদেরিত্যনেন। নম্বনীয়াঃ সমাসয়োঃ কীদৃশী বিষয়ভেদ্ধরবার। উচ্যতে। বদা মধ্রৈবিশেষ্যমাণত্বাৎ সমৃদ্ধেঃ প্রাধান্তঃ ভবতি তদা পূর্ববিদার্থপ্রাধান্তেংব্যয়ীভাবঃ। স্বমন্ত্রমিতি মদ্রাণামাধিক্যে অদ্ধিব ব্রত্ত ইত্যর্থঃ। বদা তু মদ্রাঃ সমৃদ্ধা বিশেষ্যমাণাঃ প্রধানজেনাভিধীয়ত্তে তদা উত্তরপদার্থপ্রাধান্তে তৎপুক্ষঃ। স্থমদ্রা ইতি ঋদ্ধিমুক্তা মদ্রা বর্তন্ত ইত্যর্থঃ। নিত্যসমাসে বাকাং নাতীতি সমৃদ্ধিরিতি পদান্তরেণ বাকাং দার্শভবান্।

- (৫৮)। আদিপদসংগৃহীতং বিরুণোতি। সমীপেহর্থে বর্তমানক্তাব্যয়ক্ত নিত্যমব্যয়ীভাবো ভবতি। উপকুজমিতি সমীপার্থেনোপশব্দেনোপজনিতব্যতিরেকে কুস্তশব্দাৎ বর্তী তদন্তক্ত সমাসঃ। গৃহক্তোপরি তিষ্ঠতি
 উপরিঃশরসো ঘট ইতি সামীপাস্তাবিবক্ষিতত্বাৎ যথা বিরুক্তিন ভবতি তথা
 দামীপ ইত্যনেনাব্যয়ীভাবোহিপি ন ভবতি। পুরো রামস্য জুহ্বাঞ্চকার
 অলনে বপুঃ। শরভঙ্গঃ প্রদিখ্যারাৎ স্থতীক্ষম্নিকেতনমিতি। অত সমীপঘার্চনঃ আরাচ্ছক্তাব্যয়স্যাগমকত্বাৎ ন সমাসঃ। নগুকান্ দক্ষিণেনাহং
 পরিতোহন্তীন্ বনানি চেতাত্র এনবধরাচ্চেতি এনপ্প্রভারস্য চ ভদ্ধিতবদাদিত্বাদ্ব্যয়ন্তম্ । অত্রাপি সমীপ ইত্যগমকত্বাৎ সমাসো ন ভবতি।
 এবমাদিপ্রয়োগদর্শনাদপর্মিপ ব্যবস্থেষ্য্য।
 - (৫৯)। সপ্তমার্থে গমামানেংবারসা নিতামবারীভাবে ভবতি।

৬০। ঝদ্ধাভাবে।

ঋদ্ধাভাবো যবনস্য দুর্ঘবনং দুর্ভিক্ষম্ !

৬১। **অর্থাভাবে।** অভাবো মক্ষিকাণাং নিম ক্ষিকম্।

৬২। অত্যয়ে।

অত্যয়ঃ শীতস্য অতিশীতং অত্যয়ো বসস্তস্য অতিবসস্তম্।

৬৩। গতোপভোগে।

অধিস্ত্রীতি ভিঙ্কত্তিজিতসমাসৈরেবােক্তে প্রথমেতি নির্মাদধিনা দ্যোভি-তেহিপি বৈষয়িকসপ্তম্যর্থে ন প্রথমেতি সপ্তমান্তন্যৈব সমাসঃ। অব্যয়েনােক্ত-ত্বঞ্চ দৃশ্যতে ইতি তু লক্ষ্যস্থিত্যমুদ্ধোধাৎ কচিদেবাপ্রিয়তে অব্যয়ীভাবে চানত ইতি বিভক্তিপুক্ অব্যয়ীভাবস্য ক্লীবদ্বাৎ হ্রস্বোহস্তঃ ক্লীবে ইতি হ্রস্থঃ।

- (৬০)। ব্বদ্ধাতাবে গমামা:নহব্যয়সা নিত্যমবাবীভাবো ভবতি।
 নবর্থাভাব ইত্যনেনৈবাত্রাপি সমাস: সিদ্ধন্তথাহি অর্থাভাবো বন্ধভাব
 ইতি ঝাদ্ধিবিগমোহপি বন্ধভাবো ভবতোর কিমর্থং পৃথগ্ লক্ষণম্। উচাতে।
 আতি বিশেষ: উত্তরপদার্থাভাবো হুর্থাভাবং তথাহি নিম ক্ষিকমিতি মক্ষিক্ষামা অভাব উচাতে। হুর্যবনমিত্যত্র তু ন ব্যবনানামভাবঃ কিন্তুর্হি
 তদীগ্রামা প্লব্ধে:। হুর্ভিক্ষমিত্যত্রাপি ন ভিক্ষাভাব উচাতে কিন্তু ভিক্ষামা
 ক্ষ্যেরে:।
- (৬১)। অর্থাভাবে গম্মানেহব্যম্য নিজ্যমব্যমীভাবো ভবতি।
 অত্তার্থগ্রহণং কিমর্থং ধর্মাভাবে প্রসন্ধ্রপ্রতিষেধে মা ভূৎ ত্রাহ্মণো ন
 ভবতীতি ত্রাহ্মণন্ধং ধর্মোহত্র প্রতিষিধ্যতে নান্তাত্র বন্ধুভাব ইভরেভরাভাবে চ মা ভূৎ গৌরখো ন ভবতীতি অর্থান্তরং নিষিধ্যতে নান্তাত্রাণি
 বন্ধুভাবঃ।
- (৬২)। অত্যন্তে গম্যমানেহব্যরস্য নিতামব্যরীভাবো ভবতি।
 অভ্যন্তেহিকমং প্রধ্বংসাভাব ইত্যর্থ:। অর্থাভাবন্ত সর্ববৈধব কচিৎ
 প্রদেশে কন্তনং সংস্গাভাবং নতু বন্তনং প্রধ্বংসং অতোহতারোহত্রার্থ।
 ভাবান্তিদাতে।
 - (৩০)। গ্রোপভোগেহর্থে গদামানেহবারদা নিভামবারীভাবে

অভিযৌবনং যৌবনস্থায়মুপভোগকালো ন ভবতীত্যর্থঃ।

৬৪। শব্দপ্রকাশনে।

ইতিপাণিনিঃ। পাণিনিরিত্যয়ং শব্দো লোকে প্রকাশত ইত্যর্থঃ।

७৫। श्रम्डानर्थ।

রথানাং পশ্চাদসুরথ্ম।

৬৬। যোগ্যতায়াম্।

অনুরূপং চেইতে রূপস্থ যোগ্যাং চেইটাং করোজীত্যর্থঃ।

৬৭। **বঁ**পি্সায়াম্। প্রত্যর্থং অর্থমর্থং প্রতীতি বাক্যং বীপ্সায়ামিতি দ্বিতীয়া-বিধানাৎ।

ভবতি । অতিযৌবনমিতি যৌবন্সায়মূপভোগকালো ন ভবতীত্যনেনার্থাভাবাদস্থ ভেদং দর্শয়তি । অর্থাভাবো হি কচিং প্রদেশে সর্বদৈব
বন্ধনোহভাবঃ । গতোপভোগে তু বৌবনস্থ বর্ত্তমানকালোপভোগো
নিষিধ্যতে ইত্যনয়োরস্থি বিশেষঃ । অত্যয়ো হি প্রধ্বংসাভাবঃ গতোপভোগস্থ বিদ্যমানস্থৈব বর্ত্তমানকালে উপভোগাভাব ইত্যত্যয়াদিপি
গতোপভোগো ভিদ্যতে ।

- (७৪)। শব্দপ্রকাশনে গম্যমানেংবারক্ত নিতামবারীভাবো ভবতি।
- (৬৫)। পশ্চাণর্থে গম্যমানেহব্যয়স্ত নিতামব্যয়ীভাবো ভবতি। নমু কথং তদমুসহ সাধিরেতি ষষ্ঠীসমাসঃ কর্ত্তবাঃ।
 - (৬৬)। যোগ্যতায়াং গমামানায়ামব্যব্রস্থ নিত্যমব্যরীভাবো ভব্তি।
- (১৭)। বীপ্পায়াং গমামাননাবামব্যয়ন্ত নিতামব্যয়ীভাবে। তবতি।
 নমু যদি নিতাসমাসোহয়ং নিতাসমাসে অপদবিপ্রহো নাজীত্যক্তং তৎ
 কথমর্থমর্থং প্রকীতি বাকামিতি চোদ্য পরিহারার্থমাহ বীপ্পায়ামিতি
 বিতীয়াবিধানাদিতি। যদ্যত্র নিতাসমাসঃ তাৎ তদা বীপ্পায়ামিতি
 বিতীয়াবিধানমনর্থকং তাৎ করোতি চেৎ বিতীয়াবিধানং তম্মানুক্য-

৬৮। অনুক্রমে।

সমুজ্যেষ্ঠং প্রবিশত।

७२। योगभरमा।

সচক্রং নিধেহি যুগপচ্চক্রং নিধেহীত্যর্থঃ।

१०। माप्रणा

সদৃশ: কিখ্যা: সকিথি কিখিবানরী।

৭১। অঁমুরূপাত্মলাভে।

সক্ষত্রং দালক্ষায়নানাং ক্ষত্রিয়াণাং ক্ষত্রখাসুরূপাত্মলাভ ইত্যর্থঃ।

१२। माकत्ना।

সতৃণং ভুঙ্ক্তে কিঞ্চিদভাবহার্যাশেষং ন তাজতীতার্থ:।

- (৬৮)। অমুক্রমে গম্যমানেহব্যয়স্ত নিত্যমব্যয়ীভাবো ভবতি। অমুজ্যেষ্ঠং প্রবিশত ইতি অমুনৈবালুক্রমস্ত দ্যোতিতত্বাৎ ধিরমুক্রম ইতিন দি:।
- (৬৯)। থৌগপদ্যে গম্যমানেহবায়ক্ত নিত্যমব্যয়ীভাবো ভবতি। সচক্রং নিধেহীতি অব্যয়ীভাবে চাকালে ইতি সহস্থানে সভাবঃ।
- (१०)। সাদৃশ্যে গম্যমানেহবায়য় নিত্যমবায়ীভাবো ভবতি। সকিথীতি পূর্ববিৎ সভাবং। কিখিং শৃগালভেদ ইতি তু শক্ষহার্ণবং। তথাহি
 থেঁথী শৃগাল ইতি লোকপ্রসিদ্ধিং। নমু পূর্বপদার্থপ্রাধান্তে হ্ববায়ীভাব
 ইতি যদা প্রধানভূতং সাদৃশ্যং সম্ভবতি তদৈবাবায়ীভাবেন ভবিতবাং
 সাদৃশ্যং কিখ্যাং সকিথীতি ন তু গুণভূতে সাদৃশ্যে নৈতদন্তি যথেতাজ্ঞাসাদৃশ্যে ইতি সাদৃশ্যপ্রতিষেধাদবগম্যতে গুণভূত্বেশে সাদৃশ্যে সমাসো
 ভবতীতি অতো যথা বৃদ্ধস্তথা যুবেতাত্র গুণভূত্বেশে সাদৃশ্যে ।
- (৭১)। অনুরপাত্মণাত গম্যমানেংব্যয়ত নিতামব্যরীভাবে। ভবতি।
 - (৭২)। সাকল্যে গমামানেহবারশু নিতামবারীভাবো ভবতি।

মপ্যত্র ভবতাতি। প্রত্যর্থমিতাত্র তু সমাসেনৈব বীপ্সা দ্যোক্যতে ইতি ন ছিফকি:।

१०। अखनहरन।

সালোকমধীতে আলোকাস্তমধীত ইতার্থ:।

৭৪। যথেত্যস্থাসাদৃশ্যে।

যথাশক্তি শক্তান্তি ক্রমেণেতার্থঃ। যে যে বৃদ্ধা যথাবৃদ্ধং ব্রাক্ষণাস্তিষ্ঠস্তি যে যে যথাভূতা যথাতখন্। সাদৃশ্যে তু। যথা বৃদ্ধন্তথা যুবা।

৭। যাবতোহবধারণে।

সাকল্যমশেষমিত্যর্থঃ। যো হি সতৃণং ভুঙ্জে স কিমপ্যভ্যবহার্যান্ত শেষং ন ত্যঙ্গভীতি সাকল্যং গ্যাতে।

- (१०)। অন্তবচনে গ্রমবানহবায়ক্ত নিভামবায়ী লাবে। ভবতি। সালোকমধীত ইভি অত্রাধায়নত্ত সাকলাং নাজীতি পৃথগুপাদানং যভোহদাকল্যেহপাধায়নে আলোকাুন্তেনাধ্যয়নসমাথিঃ অবায়ীভাবে চাকালে ইভি সহস্ত সঃ।
- (৭৪)। যথেতাক্সার্য্যাদাদ্শা বর্ত্তমানস্য নিতামব্য়ীভাবে ভবতি। যথাশক্তি ইতি শক্তান িক্রমোহসার্থ:। যথাবৃদ্ধনিত্যত্রাম্ব্রুন্থের যার্থ:। যথাপারুক্রমে ইত্যনেনাক্র সমাসঃ দিধাতি তথাপি বিশেষবিধিয়ানস্যাত্রেলম্লাহরণম্পঞ্জঃ লক্ষণমেতদনতিক্রমার্থ: সাদৃশু-প্রতিষেধার্থশাবশ্রমের করণীরং তদমুক্রমার্থমিপি ভবতীতি। যে যে তথাভূতা ইত্যর্থোপদর্শনং যথাতথমিতাুস্য সমস্ত্রস্য। যথা বৃদ্ধশুধা যুবেতি বৃদ্ধদৃশ্লা যুবেত্যর্থ:। নমু যথা বৃদ্ধ ইত্যুপমানং তথা বুবেত্যুপ-মেরমপেক্যাতে সাপেক্ষত্বং গমকত্বঞ্চ ন ভবতীতি নাগমকত্ব ইতি প্রতি বেধেনৈর সমাসো ন ভবিষ্যতীতি কিমসামৃশ্র ইত্যনেন নৈতদন্তি অক্র হি সমুদারস্য সাপেক্ষত্বং নৈকদেশস্য। সমুদারস্য সাপেক্ষত্বেংগমকত্বং নাম্ভি সমসনীয়াবর্ত্তপাস্য হি সাপেক্ষত্বে হুগমকত্বং ভবতীতি এবংবিধা-ক্রেব ত্রোদাহরণান্যুপশ্রস্তানি। কথং যথাক্রত্বস্য শীলং নাক্র ক্রতন্ত্রদ্দমিতি বাক্যং কিন্তু শ্রুণত্রোগ্যমিতি যোগ্যভারাঞ্চ সাদৃশ্রার্যোণক্রপদ্ধ নতু মুখ্যভ্রা।
 - (१¢)। ধাবদিতাদ্যাব্যয়দ্যাব্ধারণে গ্যামানে নিতামব্য**য়ীভা**ঝে

যাবধু জং যাৰস্তো বৃদ্ধা ইভ্যৰ্থ:।

৭৬ ় অল্লছেইনব্যম্বস্ত চ প্রতিনা। সৃপপ্রতি সৃপশ্ত জোকমিতার্থা।

৭৭। **অকশলাকৈ**কদ্বিত্রিচভুরাং পরিণা কিতখ-পরাজ্ঞারে। অকপরিহারিতং অকেণ পরিহারিতমিত্যর্থঃ। এবং শলাকাপরি একপরি বিপরি ত্রিপরি চতুষ্পরি।

৭৮। অপপরিবহিরঞান্তঃ পঞ্চম্যা বা।
অপত্রিগর্ভেরা রুষ্টো দেবঃ অপত্রিগর্ভম্। অপগতঃ শব্দদিভবতি। অনব্যর্থাবচ্ছেন্সমানার্থো থাবছেবন্দাদৌ পঠতে অবধারণমিযন্তাপরিছেন্য ইয়ন্দেবেতি নিশ্চয় ইত্যর্থঃ। থাবদ্ধমিতি ক্রিয়া
কণাচিদধ্যাহরণীয়া থাবন্ধো রুদ্ধাঃ পঞ্চ বা বড় বা সম্ভবন্তি তাবদেবানয়।
অবধারণ ইতি কিম্? ধাবদন্তং তাবভুক্তমিতি নাবধারিতম্। যতো
ধাৰব্রাবচ্ছকাভ্যামেককালতা দ্যোতাতে নতু দ্তমবধার্যতে।

- (१৬)। অরত্বে বর্ত্তমানেন প্রতিনা সহাব্যরস্যানব্যরস্য চ নিত্য-মব্যরীভাবো ভবতি। অব্যরস্য তুন স্বঃপ্রতি সারংপ্রতি। অরত্ব ইতি কিম্? বৃক্ষং প্রতি বিদ্যোততে বিদ্যাং। অত্ত লক্ষণে প্রতিশ্বো বর্ততে লক্ষণেহভিপ্রতিপর্যানব ইতি হাদিম্বাদ্বিতীয়া!
- (৭৭)। অক্স শলাকা এক বি ত্রি চডার ইন্ট্যেতেরাং বর্রাং শবানাং কিতবপরাজরে গম্যমানে পরিণা সহ নিত্যমবায়ীভাবো ভবতি। এক-পরীত্যাত্যদাহরণেহপি একাদিশকৈরক্ষ এবাভিনীয়তে। কিতবপরাজয় ইত্যস্যাপি প্রয়োগাৎ। তথাহ্যমর্থাই একেনাক্ষেণ হারিতং তথাহি পঞ্চিকা নাম দ্যুতং পঞ্চত্তিরকৈঃ শলাকাভিব ভবতি। যদা পঞ্চ উন্তানাঃ গতন্তি অবাঞ্চো বা তদা পাতয়িতা জয়তি। জন্তথাপাতে পাতরিতা হারহতি অক্ষশলাক্ষোরেকত্বে বর্তমানয়োরেবায়ং সমাসঃ স্বভাবাৎ ন হি স্বভাবো নিমিত্যান্তরমপেকতে।
 - (৭৮)। অপ পরি বহিদ্ অন্চু আঙ্ ইত্যেতেযাং পঞ্চ্যা সহ অব্যয়ীভাবো ভবতি। সমাসো বেতাধিকারেণৈব বিক্লে সিজে বাগ্রহণং

শশব্দঃ অপধর্দ্মঃ অপস্থায়: অপচার ইত্যাদৌ তু ক্রান্তাদ্যর্থহাৎ প্রিক্রিগর্জেন্ড বহিপ্রামং বহিপ্রাদিসমাসঃ। পরিক্রিগর্জং পরিক্রিগর্জেন্ড: বহিপ্রামং বহিপ্রামাৎ বহিরক্ষং বহিরক্সাৎ। যদা তু বহির্ব তিশ্বাদ্বহিন্দ তদক্রক্ষেতি বহিরক্ষং তদোত্তরপদার্থপ্রধানস্থাৎ কর্ম্মধারয়ঃ। বহিরক্ষো
শুণ ইত্যাদৌ বন্সপদার্থপ্রধানস্থাক্ত্রীহিঃ। প্রাণ্গ্রামং প্রাণ্গ্রামাৎ
আপাটলিপুত্রঃ আপাটলিপুত্রাৎ।

৭৯। তৎসমীপে তদ্দৈর্ঘ্যে চানোঃ। অমুরক্ষং নদী অমুযমুনং মথুরা যমুনেব মথুরা দীর্ঘেভ্যর্থঃ।

নিত্যপদান্তবৃত্তিশকানিরাসার্থন। অপত্রিগর্তমিতি বর্জনার্থাপপরী ইত্যা-রাদিয়াদার্বাদ্যরিতি পঞ্চমী। অব্যরীভাবসমাসে সত্তি অব্যরীভাব ইত্যাদিনা ম:। ক্রাম্বাদ্যর্থয়াৎ প্রাদিসমাস ইতি এতেনৈতৎ প্রতিশাদিতং ক্রাম্বাদ্যর্থবাতিরিকোহদ্য বিষয়:। বহিপ্রামাং বহিপ্রামাদিতি বহির্যুক্তাৎ ষষ্ঠাপঞ্চম্যাবিতি পঞ্চমী। যদা তু বহির্যুত্তিয়াদিত্যাদিনা উত্তরপদার্থপ্রধানত্বমুপদর্শিত্রান্ তদা কর্ম্বধারয়সমাসে সতি বিবচন-বহুবচনাদৌ বিশেষো দ্রপ্রত্য:। এবং প্রাক্ চাসৌ প্রামশেচতি প্রাগ্তামঃ। প্রাগ্রামাং প্রাগ্রামাদিতি প্রপ্রাদেশতেঃ কিপ্ ওদস্তাৎ প্রাগাদেরত্ত্বরুক্ চেতি অং তল্লুক্ চ তদ্বিত্রদাদিব্যায় অশৌ ক্লীবেহ্যায়ত্বে চেতি নলুক্ অন্চূত্তরপদ ইত্যায়াদাদিত্বাৎ পঞ্চমী। আপাটলিপ্রেমিতি সীমাভিব্যাস্থ্যোয়াভিত্যায়াদাদিত্বাৎ পঞ্চমী অঞ্চতেরায়াদিশ্বাদ্যা সাহচর্য্যাদাভোহিশি যন্যায়াদাদিত্বং তন্য গ্রহণং তেন ঈষদর্শতি প্রামান সমাসঃ আজ্বায়া আগতঃ ঈষ্ট্যায়ারা আগত ইত্যর্থঃ। অথবা ঈ্রদর্থস্যাঙ্বঃ পঞ্চমাক্রেম নহ স্মাসো ন সম্বর্গতি সাংপক্ষত্বেন নাগসকত্বাং।

(१৯)। তস্য সমীপঃ তৎসমীপং তদিতানেনোত্তরণদার্থঃ পরা-মূখতে তদৈর্ঘামিব দৈর্ঘামস্য তদৈর্ঘাং উট্টমুখবংসাধনং অত্তাপি তদিতানেন উত্তরপদার্থঃ পরামূখতে। তৎসমীপে তুদৈর্বা চ বর্তমান-

- ৮০। অভিপ্রত্যোরীভিমুখ্যে লক্ষণদ্বিতীয়য়া বা i অভাগ্নি পড়নাঃ পতন্তি অভাগ্নিং প্রতাগ্নি প্রতাগ্নিম্।
- চিঠা তিঠাদ্থাদিশ্চ।
 তিঠান্তি গাবো যান্মন্ কালে স তিঠাদ্ত কালবিশেষ: এবং বহদ্ত । আয়তাগবং নিপাতনাচছত্ঃ খলেযবং খলেবুষং সপ্তম্যা
 আলুক । লুয়মানযুবং লুয়মানবুবং সংস্কৃত্যবং সংজ্যাগ্যবং লুংবিয়মাণবুবং
 শান: । লুন্যবং লুন্বুষং সংস্কৃত্যবং সংস্কৃত্বুষং স্বভাবাদেতে
 কালবিশেষবাচিদঃ । সমত্বং ভূমে: সমভূমি সমপদাতি
 সমংপদাতি । পক্ষে মান্তব্য । শোভনহং সমস্ত স্ব্যাং বিষয়ং

স্যাব্যয়দ্যানোঃ স্থবস্তেন সহাব্যয়ীভাবো ভবভি। অন্তি সমাপশকো ধর্মিবচনো যথা গ্রাম্স্য সমীপো বৃক্ষঃ। আন্ত চ ধর্মবচনো যথা গ্রাম্স্য সমীপমিতি। ইছ তু ধর্মিবচনস্যানোরনেন সমাসঃ। অনুবৃক্ষং নদীতি বুক্ষ্প্য সমীপা নদীত্যর্থঃ। ধর্মবিচন্স্য তু সমীপ ইত্যনেন সমাসো যথা অনুবৃক্ষং বৃক্ষ্প্য সমীপমিত্যর্থঃ। ভৎসমীপে তলৈর্ঘ্যে চৈতি কিম্ ? বৃক্ষমন্থ বিদ্যোততে বিহাৎ ইহানুশকো লক্ষালক্ষণসম্বন্ধং দ্যোত্য়তি।

- (৮০)। লক্ষ্যলক্ষণসন্ধন্ধে বিহিতা যা ধিতীয়া সা চ লক্ষণাদেব ভবতি অভি প্রতি ইত্যেত্রারাভিমুখ্যে বন্ধমানয়াল ক্ষণবিহিত্যা দ্বিতীয়া সহ অব্যয়াভাবো বা ভবতি। অভারীতি অত্যাগ্রিল ক্ষণং তেন পভলানাং পাতো লক্ষ্যতে ভয়োল ক্ষ্যলক্ষণসন্ধন্ধাহভিনা দ্যোভ্যতে লক্ষণেহভিপ্রতিপর্যানব ইতি হাদিছাদ্বিতীয়া এতৌ অভিপ্রতী শব্দলক্ষিত্রভাবাৎ যথা লক্ষ্যলক্ষণসন্ধন্ধ দ্যোভয়তস্তথাভিমুখ্যমপি অভ্যতারােরেভিমুখ্যমব পভলাঃ পভন্তি ন পার্যহাে ন পৃষ্ঠত ইত্যর্থাহব্দসাতে। আভিমুখ্য ইতি কিম্ গলামভিবসতি অত্যাভিনা লক্ষ্যলক্ষণসন্ধন্ধা দ্যেতাতে ন্মাভিমুখ্যম্। লক্ষ্যছিতীয়ার্মতি কিম্ গ্রুছাং প্রতিপ্রত্রতি ক্ষরাম্যুরাং চলিতাে দিও্মোহাৎ ক্ষর্মেব নিবর্ততে নাত্র লক্ষণবিতীয়া কিছ্ক কর্মণি আভিমুখ্যং পুনরত্র বিদ্যত এব।
- (৮১)। অব্যয়াভাবসংজ্ঞকতিষ্ঠদ্য্যাদিসমুদায়ে নিপাত্যতে। নিপাতনাক্ত্রিতি সর্ক্ষমুকরণে বেতি বিকরবিধানাৎ ঋত আৎ স্থনেতি ন

নিঃবমং ত্রংবমং অপরসমং আয়তী আয়ত্যা বা সমা সংব্ৎসরঃ আয়তীসমং পুণ্যসমং পাপসমং প্রগতহমহজঃ প্রাহুং প্ররথং প্রমৃগং প্রদক্ষিণং অপদক্ষিণং সংপ্রতি অসংপ্রতি।

প্রবর্ততে বছলং প্রথমাসমানাধিকরণ ইতানেন প্রতিনিয়ন্তবিষয় এব শতৃ-প্রতায়বিধানাদিহ ন প্রাপ্নোতীতি নিপাতনাচ্ছত্রিত্যুক্তম্। তিঠদ্ভ বহদ্ ও ইতি গোর প্রধানসাস্তস্তেতি হ্রস্ব:। আয়তীগবমিতি আয়ত্তি গাবো যত্মিন্ কালে ইতি ইণ্গতাবিত্যত্মাৎ নিপাতীনাচ্ছত্রপুংবদ্ধাবন্চ। গৌরতদ্ধিতনুকীতি তৎপুরুষে সমাসাস্তো বিহিতোহবায়ীভা:ব ন প্রাপ্তো-জীতি নিপাতনাদিধীয়তে। শান ইতি নিপাতনাদিতি শেবঃ। কাল-বিশেষবাচিন ইতি তিষ্ঠদ্থাদয়: সংস্কৃতবুষপর্য্যস্তা:। সমত্বং ভূমেরিভি ৰাক্যোপদৰ্শনেন পূৰ্বপৰাৰ্থপ্ৰাধান্তবিবক্ষায়ামব্যয়ীভাব ইতি দৰ্শিতম্। উত্তরপদার্থপ্রাধান্তবিৰক্ষায়াং তু ক্ষমভূমিঃ সমপদাতিরিতি কৃশ্বধারর এব। পক্ষে মান্তমনিতি নিপাতনাদবগন্ধবাম্। সমাঃ পদাতয়ো বিষিদ্ কালে দেশে বা সমংপদ,তাতি ধাতৃপারায়নম্। শোভনতং সমস্ত হুষম-মিতি বাকোনাপি পূর্ব্বপদার্থপ্রধানতা সমাসন্ত দর্শিতা। এবং বিষম-মিত্যাপাৰপি বিসদৃশত্বং সমস্তেতি এঃমাদিবাক্যমূহনীরম্। স্থ্যম-মিতাাদৌ নিঃস্কৃত্যঃ সামসেধস্থীনামিত্যস্কৃত্তী বেশ্চ স্তিসম্প্রপা-মিতি মৃদ্ধিয়:। উত্রপদার্থপ্রাণাতে তু প্রাণে: রুণ্টাণৌ প্রথময়েতি সমাস:। অপরসমামতাত্র তু বিশ্ববদ্য সং। আয়তী আয়ত্যা বেতা-रनन अथमारक्षन वृ डोवारक्षन वा का.कडीनरक्षन वश्मतवाद्यिः ममानक्ष সমাস, है कि क् र्वेडम्। এ उत्पद भाभनमः भ्वाममिकादशक्राम्। প্রগত হম হ: প্রাহ্নিতা বালি পুর্লপদার্থ প্রধান হং অন্তাচ্চেতা হ্রভৌ क्रीरत वा हे ठावायो जावमभागार छारः व्यक्तामण्ड खरभूकरम विशिष्ठा-হবারীভাবে ন প্রান্থোতাতি নিপাতনাদিধেয়:। উত্তরপদার্থ গ্রাধান্তে ডু প্রাদে: কুপ্রাদৌ প্রথমরেতি তৎপুরুষ এব এবং প্ররথং প্রমৃগং প্রদৃক্ষিণ-अभिकामभाषा । अर्था अभिताका अभिताका का अर्थ । পুরুবং রুখা বছরীছিলা সাধ্যা:। অব্যয়ীভাবে কুতে সমাসাক্ষরাভাবাৎ

৮২। ইচ্প্রত্যরান্তঃ।

দণ্ডাদণ্ডি। তিষ্ঠদ্থাদীনামেবামব্যয়ীভাবাদন্তঃ সমাসো ন ভবভি। পরমং তিষ্ঠদ্গু। অব্যয়ীভাবস্ত ভবত্যেব। তথাচ ভট্টিঃ— আতিষ্ঠদ্গু জপন্ সন্ধ্যাং প্রক্রাস্তামায়তীগবমিতি।

৮০। পারে মধ্যে ষষ্ঠ্যা বা।
পারং গঙ্গায়াঃ পারেগঙ্গন্। অব্যয়ীভাবে নিপাতনাদেওম্।
পুনর্বাবচনাৎ ষষ্ঠাসমাসশ্চ। গঙ্গাপারম্। এবং মধ্যং গঙ্গায়া
মধ্যেগঙ্গং গঙ্গামধ্যম্।

নঞ্সমাসো ন প্রাণ্নোভীত্যেতাবতা সম্প্রতিশব্দং পঠিছা অসংপ্রতীতি পঠিতম্।

⁽৮২)। ইচ্প্রতাষাস্ততিষ্ঠিদ্যাণিভবিত। দণ্ডাদণ্ডীতি দণ্ডেশ্চ
দশ্ডেশ্চ প্রস্কৃত্য ইদং যুদ্ধং বৃক্তমিতি তৃতীযাসপ্তমান্তয়োঃ স্বন্ধপ্যোর্থ্দ্দ
ক্রিয়াবাতীহার ইতি বছবাহিঃ ইচ্ক্রিযাবাতীহাকে ইতি ইচ্ সমাসাস্তঃ
ক্রিমাবাতীহার ইতি বছবাহিঃ ইচ্ক্রেযাবাতীহাকে ইতি ইচ্ সমাসাস্তঃ
ক্রিমাবাতীহার দার্থঃ অব্যয়ীভাবে চানত ইক্তি বিভক্তিপুক্ তিষ্ঠদ্পাদীনামেবামবারীভাবাদক্তঃ সমাসো ন ভবতীতি এভচ্চ চকাবক্সাবধাবপার্থহাদবন্ধস্ববাম্। এবংরূপা এব স্বামী নিপাতিতা। অবধারণেন
সমাসাস্তর্নির্জিঃ ক্রিয়তে নতু সজাভীযনিবৃত্তিঃ তেনাবায়াভাবসমাসো
ভবত্যেব। আতিষ্ঠদ্ধ্য ইতি অপপ্রবিহিবঞ্গাঙঃ পঞ্চমান। ইত্যবায়ীভাবসমাসঃ। অত্যে তু বদন্তি অব্যয়ীভাবসমাসো ন ভবতীতি আতিষ্ঠদ্ধ্য
ক্রপন্ সন্ধ্যামিতি তু স্বসমস্থনেব স্বব্যয়ীভাবে চানত ইতি পঞ্চমান লুক্।

⁽৮০)। পাবে মধ্যে ইতি দৌত্রখাল্ল গুৰ্ষ্ঠাবিভক্তিকো নিদেশঃ।
পারে মধ্যে ইত্যেতয়োঃ ষষ্ঠাঃ সহাব্যয়ীভাবো বা ভবতি। পারমধ্যবক্রোরের যদ্যেরং নিপাত্যতে ওদা বধীসমাসে এবং স্থাৎ অভ আহ
অব্যরীভাবে নিপাতনাদের্দ্ধাতি। বা ইত্যস্বৃত্তিরের বিকরে সিদ্ধে
কিমর্থং বাগ্রহণং অভ আহ পুনর্ববিচনাৎ ষ্ট্রীসমাসশ্চেতি অভএর
বিকর্ষমেন রূপত্ররমুপদর্শিতবান্।

৮৪। বিদ্যাজন্মক্ষেত্রি। তিশ্চ সংখ্যারাঃ।
বর্ষ মুনী ব্যাকরণস্থ বংশ্যো দ্বিমুনিব্যাকরণস্থ দ্বে মুনী অস্থ
ব্যাকরণস্য দ্বিমুনিব্যাকরণম্। ত্রিমুনিরাগম ইভ্যাদে হত্যপদার্থপ্রধানহাদ্বভত্তীহিঃ। স্প্রানাং গল্পানাং সমাহারঃ সপ্তগল্পং দ্বিষ্মুনং
ত্রিষ্মুনং স্বভাবাদেতে সমাহারর্ত্তয়ঃ। অসমাহারে তু—সর্ব্বেমকনদাতীর্মিন্ডি।

৮৫। নিতাং নদী ভিরক্তপদার্থে সংজ্ঞায়াম্। উন্মত্তগঙ্গং লোহিতগঙ্গং ভূফীংগঙ্গং শনৈগঙ্গং এতানি দেশনামানি।

⁽৮৪)। विमाश क्याना वा একো বোগো यक न विमास्त्रीयक-যোগঃ তদাচিভির্নদীবচনৈ চ সহ সংখ্যায়া অব্যয়ীভাবো বা ভবতি। ষিমুনিব্যাকরণসোতাত্র বিদায়া পাণিনিকাত্যায়নয়োমু ভোরেকযোগঃ ব্যাকরণস্ভেত্যত্র তু সহন্ধলক্ষণা ষষ্ঠী। কথং ভর্হি ছিমুনিব্যাকরণমিতি নাত্র পূর্বাপদার্থপ্রধানতং বিবক্ষিতং পূর্বাপদার্থপ্রধানত্বে হুব্যমীভাবো ভবতীতি অত আহ অন্তপদার্থপ্রধানখাদ্দ্রীহিরিতি অবায়াভাবাদ্যত্ত-স্চনায় ত্রিমুনিরাগম ইতি জ্ঞায়মাণবিভক্তিকং দিভীয়মুদাহরণমুপক্তস্তবান্। জয়াদিতান্ত দিমুনিব্যাকরণমিতাত্রাব্যয়ীভাবএব। বিদায়া সহ বিদ্যাবতা-মভেদবিবক্ষায়াং সামানাধিকরণামিত্যক্তবান্। জবৈষকযোগে তু-এক-বিংশতিভারদার অত্ত ভাবদালানাং জন্মনা একযোগত্বং এতর্চুদাহরণস্ক অসমৃদ্ধিনদীসংখাবিয়বেভাঃ সপ্তমা। তেতাত্র বৃত্তিকৃৎ প্রত্যাদাস্থতবান। স্বভাবাদেতে সমাহারবৃত্তয় ইত্যেতেন সমাহার এবায়ং নদীভিরবারীভাব ইতি প্রতিপাদিতম। এতদেব কথমত্র হেতুমুক্তবান এৰ স্বভাবাদিতি স্বভাব এবান্ত সমাসস্ত ভত্ত বৃত্তি: নহুর্থা অতিদিখ্যন্তে তেবাং স্বভাব-াসদ্ধানাং লোকত এব প্রতাতে:। সপ্তগদং হিযমুনমিতি স্ত্রীপ্রতারস্য চেভি হ্রম্ম: একনদীতি একাদীনাঞ্চেতি কর্মধারয়:।

⁽৮৫)। নদীবাচকৈঃ শক্ষৈ: সহাক্রপদার্থে বর্ত্তমানক স্থবস্তক্ত নিজ্ঞানরায়ীভাবো ভবতি সংজ্ঞারাং বিষয়ে। এতানি দেশনামানীভানে-

৮৬। বিশেষণতা বিশেষা কর্মধারয়ঃ।
বিশেষণদা বিশেষা: সহ কর্মধারয়ো ভবতি। স চ সামানাধিকরণায়। ভিন্নপ্রবৃত্তিনিমিন্তরোরেক্সিমর্থে র্ভিঃ সামানাধিকরণায়। যথ সামালাকারেণ প্রবৃত্ত্যনেকপ্রকারবছত্ত প্রকারান্তরেভ্যো ব্যবচ্ছিদ্যকত্র প্রকারে ব্যবস্থাপয়তি ভল্তেদকং বিশেষণং তল্তেদ্যঞ্জ বিশেষাম্। শীলঞ্জ ব্যক্ত্রপল্লেন্ডি নীলোৎপলং কুদ্ধ কুণ্ঠঃ কুণ্ঠকুদ্ধা।

নৈৰাগ্ৰপৰাৰ্যক উন্মন্তগঙ্গমিত্যাদীনাং দৰ্শিতবান্। নিত্যসমাস্থাধাক্যমেষাং ন বিদ্যতে। অক্সপদাৰ্থ ই তৈ কিম্ ? কুঞা চাদৌ ধেৰা চেতি কুফুধেয়া। সংজ্ঞায়ামিতি কিম্ ? শীঘ্ৰগজ্ঞা দেশঃ। ৰাক্যে সংজ্ঞাপ্ৰতীত্যভাবাদেৰ নিতাতে সিকে নিতামিতি কুতং স্পষ্টাৰ্থম্।

৮৬)। স চ সামানাধিকরণা ইতি এতচ্চ পারিশিয়ালভাতএব यरका विस्मयनविर्मवारमधिनाधिकत्रनात्व त्राक्षत्रक्ष हेकारिको नमानाखत्रक বিষয়: ৷ নীলোৎপূর্ব স্থাত মুলীলমিড্যেত্ৎ কাককোকিলোৎপূর্ণাদি-ণতথাং সামান্তাকা রণ সামান্তরপত্রা প্রতুত্তং উৎপলমিত্যেতৎ রক্ত-নীলাভিরিক্তপ্রকারেভো ক্ষায়নীলাগনেকপ্রকারবদ্ধ अकारत नीत्न वावश्राभग्निक एरसम्बन्ध वित्मयनम् हेक्टतराङ्या वाव-(क्रिकरोर्डिकर একত अकारत वावशायकपादिम्बनम् । विश्वती< निव् বিশেষণে ইত্যশ্বাৎ শিষ্ অসংক্ষাপযোগে ইত্যশ্বাৎ যুজাদেবা ইতি করণে ওন্ট বিশেষ্যতে অনেনেতি বিশেষণং ভয়েদ্যং বিশেষ্যমিতি তেন নীৰেন ভেদাং প্ৰকারাম্ভরেভ্যো ব্যবচ্ছিদা একত্ৰপ্ৰকারে ব্যবস্থাপনীয়ং বিশেষামু প্ৰম্। ননুৎপ্ৰমপি সামাল্যাকারেণ প্রবৃত্তং নীলমে ভদনেক-প্রকারবছন্ত প্রকারাম্বরেভ্যে ব্যবচ্ছিদা একত্র প্রকারে ব্যবস্থাপয়-कीं कि विरामिश शार मीनक विरामशः अवक मांक विरामवनविरामशोधा-নিয়মে নীলোৎপ্লমিভাত পূর্বনিপাতানিয়ম: ভাৎ। অক্রোচ্যতে – ৰুমোরেব বিশেষণবিশেষ্যতে সমাসোহয়মিতি নিম্নতমেব। তথাছি লোকে क्ष अक्षानः वित्यवनः ध्रवानक वित्यवामिकि वावहातः मीनम्दना हि

৮৭। পূর্বকালস্থাপরকালেন। স্রাতাসুলিপ্তঃ।

bb। धकानीनां**क**।

একশাটী সর্ববেদাঃ জরদ্ধন্তী পুরাণপুরুষঃ নবাবসথঃ কেবলাবসথঃ পূর্ববপুরুষঃ অপরপ্রিষঃ প্রথমপুরুষঃ চরমপুরুষঃ জঘত্যপুরুষঃ সমানপুরুষঃ মধ্যপুরুষঃ মধ্যমপুরুষঃ বীরপুরুষঃ।

শুণবৃত্তা দ্রব্যে বৃত্তিত্বাদ প্রধানং উৎপলশব্দম্ভ জ্ঞাতিবৃত্তা দ্রব্যে বৃত্তিবাৎ প্রধানং যতো গুণঃ সত্যেব দ্রব্যে প্রবর্ততে নিবর্ততে চ অতঃ গুণঃ সদ্রব্যক্তানা অভ্তত্বাদ প্রবানং জাতিছি দ্রব্যক্তোংপণ্ডে: প্রভৃত্যাবিনাশাৎ দ্রব্যং ন জহাতি অতঃ সা দ্রব্যক্তা অত্যাহ প্রেতি প্রধানম্। এত চে শ্বতং ছাগমালভেত ইত্যত্র এবং ব্যবস্থিতং তথাছি শ্বেতগুণযুক্ত ছাগস্তাভাবে বর্ণান্তর্যুক্তোহিস ছাগ আলভ্যত এব নতু শ্বেতগুণযুক্ত দ্রব্যান্তর্ম। কুজক্ঠঃ কুঠকুজ্ঞ ইত্যত্রত্ব উভয়োরপি গুণশব্দমাদিশেষণবিশেষাভাবস্থানিয়নতরে পূর্কনিপাতানিয়মঃ স্থাদিতি যুক্তমের যহকতং গুণক্রিয়াশব্দমার-প্রধানত্বাৎ নিয়তং শেষণমিতি।

(৮৭)। পূর্বকালভাগরকালেন সহ কর্মধাবয়ে। ভবতি। পূর্বকাণ ইতি অপরকাল ইতি চার্থনিদে শি:। যদি স্বরপগ্রহণ ভাও তদা একাদীনাঞ্চেতানেন পৃথন্ যোগং ন ক্র্যাও। স্বরপাগ্রহণে ভূ উপচারাও পূর্বকালসিদ্ধক্রিয়াবাচিনঃ অপরকালসিদ্ধক্রিয়াবাচিনণ্ড শবা গৃহুত্তে। পূর্বকালভেত্যনেনৈব সম্বন্ধিশব্দাদগরকালো লভাতে এতামূশুপরকালেনেভি কৃতং স্পষ্টার্থন্। ভায়লভাছোকো হুর্থঃ স্পত্তো ভবতীভি। মাতান্নিশ্ব ইভি পূর্বং মাতঃ পশ্চাদমূলিপ্ত ইভি ষ্ঠাা স্ব্রিভদ্বাও পূর্বকালভ পূর্বনিগাভঃ। এবং লুনপ্ররদঃ বদ্ধতাড়িতঃ মাপিডভোজিতাম্বাং। মাভশ্চানৌ অমুলিপ্তণ্ডেও পূর্বনিগাতানিরমঃ ভাও।

্(৮৮)। একাদীনাঞ্চ স্থান্তেন সহ্ কর্মধারয়ে ভর্তি। একপাটীতি একাতদ্বিভাত্তরপদ্মোরিতি পূংবভাবঃ। পুরাণশক্তাত্ত সামাজশঙ্গেনো- ৮৯। मिक्मःशार्यानीमि।

পূর্বেব্কামশনী নাম প্রাচাং গ্রামঃ পঞ্চান্রাং সপ্তর্ধয়ঃ চতুর্বিদ্যাঃ।
অনাম্নি তু—অন্টো ব্রাহ্মণা:। পর পুরাণে: পঞ্পুরাণানাং
দশদিক্ষু ইত্যাদয়োহসাধবঃ। চতুদিগীশানবমন্ত মানিনী বিচন্দ্রজ্ঞানমিত্যাদে চতুর্দিক্ বিচন্দ্রজ্ঞানমিত্যাদ্যো বিশুসমাসাৎ।

৯০। জাতিপ্রশ্নএব কতরকত্ময়োঃ। « কতরকঠঃ কতমকঠঃ।

পাত্তমাৎ কার্যা শণবচনশু ন গ্রহণম্। একসর্বজ্ঞবংপূর্বা পুরাণনবকেবলা:।
মধ্যমধ্যমধীরাশ্চ সমানচবমাপরা:। জঘল প্রথমৌ চৈকাদয়: পঞ্চদশ ঝুডা:।
পূর্দ্দেশের সমানে সিদ্ধে বচনমেতং এক গ্রহণ এক শণ্ডিত: সর্বশুক্র:
সর্দ্দেশিন্তিতঃ জরংপাচক ইত্যাদৌ পূর্ব্যনিপাতনিয়মার্থম্।

(৮৯)। দিখাচকানাং সংখ্যাবাচকানাঞ্চ স্থবেদ্ধন সহ সংস্থায়ং কর্ম্বারয়ে ভবতি। সমাস এব সংজ্ঞাপ্রতিত্রের বাক্যাভাবঃ। পঞ্চাম্রা ইণ্যাদীনাং পঞ্চানিকং যে ব্যাক্তিছেন বিশেষনিষ্ঠছাৎ সংজ্ঞাজ্ব। বিশেষণশু বিশেষনিশ্র চনম্। বিশেষণশু বিশেষনিল নিক্তাদিনা সিদ্ধে বচনমিদং নিক্ষার্থং বচনম্। তেনানামি সমাসো ন ভবতি অভএবাছ আনামি ছিত্যাদি। পূর্বাম্র হবাম্র ভবং পৌর্ব বার্ষিক্মিত্যাদৌ তু বিশেষণসমাসো ভবত্যেব। ন ছি পূর্বশক্ষশু দিখাচিছং কিন্তু কালবাচিত্বম্। একাদীন ক্ষেত্যত্র পূর্বাপন্ধ-গ্রহণং কালার্থং দিখাচকুরোল্বনেন সমাসঃ। বদ্যনামি নায়ং সমাসঃ তদা কবং চকুদিশীশানবম্ম মানিনীত্যাদৌ সমাসঃ অত আহ চতুদিগিত্যাদি চতক্রণং দিশাং সমাহারঃ চতুর্দিক্ চতুর্দিশ ইলাশচভূদিগীলা ইতি পশ্বজ্ঞাহার মাহার ইতি দিচন্দ্রং পারাদিদ্বাৎ স্থাজাভাবঃ। কথং ভর্হি পঞ্চপুরুষগামিশ্র ইতি ছান্দ্র্যোহাং প্রয়োগ ইতি বাচাং অথবা শিষ্টপ্রেরাস্ক্র বাহাং কাল্যনাম্রাপ সংখ্যায়াঃ ল্মাসোল্ভবিভ বিশ্বজ্বর্বর্বঃ বড়বর্গাদয়ঃ বচ্চীসমাসেন অথবা ত্রিসংখ্যো

(৯০)। কতরকতমরো: স্বস্তেন সহ জাতিপ্রর এব কর্মারয়ো

- ৯১। কিমো নিন্দায়াম্। কিংরাজা যোন রক্ষতি মহীম্।
- ৯২। নিন্দাগতৈত্তথা নিন্দ্যস্থ। বৈয়াকরণথস্চি: বকধ্রঃ। জনযতি কুমুদজান্তিং ধ্র্রকো হি বালমৎস্থানামিত্যত্র ধূর্বক ইত্যসাধুঃ।
- ভবতি। কছবকঠ: কতম কঠ ইতি বহুনাং জাত্যা পৃথকবণেহর্থে কিমস্ববক্ষেতি তব হুনো। জাতি প্রশ্ন এবেতি কিম ? কতর: পাঠক: ক্রিয়াস্থানজ্ঞাভিদ্ব ধ্যাবেকস্ত পৃথকারে তবো বা তদাদেবিটি তবং পক্ষে তমশ্চ
 এবকাবকবণমিদং স্পটার্থম্। জাতি প্রশ্নে বর্তমানয়ো: কতবকতময়ো:
 সমাসে। ভবন্ জাতিবাচিনৈব পদান্তবেশ সহ ভবতি তজ্জাত্যেতি কর্ত্তব্যে
 প্রেশ্রপদম্পি স্পটার্থম।
- (৯১)। কিমিত্যেত স্থানিকারাং গম্যমানাষাং স্থবন্তেন সহ কর্মধাব্যা ভবতি। নিকার্থঃ কিমশকোহন্তাযম্। কিংবাজেতি বাঙ্গাদেষ্টাদিবিতি টোন স্থাৎ কিমো নিকায়ামিতি প্রতিষ্কোৎ যোন রক্ষতীত্যক্তং নিকাস্চনার্থ, মহীবক্ষণং হি বাজ্ঞোধর্ম, তদকরণাত্ত নিকা। নিকাষামিতি বিমৃণ কো বাজা পাটলিপুত্রে প্রক্রিইছ কিম্শক্ষঃ।
- (৯২)। বছবচননিদেশি: স্বরপগ্রহণনিবাদার্থঃ। নিন্দাগতিঃ শলৈঃ সহ তথা তেন প্রবৃত্তিনিমিত রুৎসাপ্রকারেণ নিন্দাস্য কর্ম্মধারয়ো ভবতি। বৈয়াকবণথস্থ চিরিতি থস্চিশকো নিন্দাগর্ভঃ যং পৃষ্টঃ সন্ থং স্চয়তি নিরীক্ষাতে দেহি ভিধীয়তে ন হি থস্চনমেব নিন্দা কিন্তু নিপ্রতিভহয়ের নিন্দাক্ষাতে গোর্হভিত্তীয়তে নিম্প্রতিভতয়া হি বৈয়াকয়ণো নিন্দ্যো ভবতি য়ত্যে ব্যাকবণাধায়নসংবেদনসম্বন্ধেন বৈয়াকরণশক্ষক্ত প্রবৃত্তঃ। বকধূর্ব ইতার ধৃর্তাশকো নিন্দাগর্ভঃ ধৃর্তাহক্ষপ্রসক্ত উচাতে। তেন প্রচ্ছয়পাপাচরণং নিন্দাগর্ভরপা প্রতীয়তে তয়া বকো নিন্দাঃ বকশকোত্র বক ইব পুরুষোহিণাবার্তি কিন্ ? বৈয়াকবণশেচীবঃ। ন ছি চৌবিকয়া বৈয়াকবণস্যা নিন্দা ভবতি এতৎপ্রবৃত্তিনিমিত্তনিন্দায়া অভাবাং। বিশেষণস্যা বৈয়াকবণস্যা নিন্দা ভবতি এতৎপ্রবৃত্তিনিমিত্তনিন্দায়া অভাবাং। বিশেষণস্যা বিশেষয়ঃ কর্মধারয় ইত্যনেন সমাসে সিদ্ধে পূর্মনিপাতার্থং বচনং অতএবাহ ধৃপ্রবক ইত্যসাক্ষিতি এতংপ্রজ্যানাহবণবিষয়ে বিশেষণসমাসো নাজবিত্তীতাভিপ্রায়ঃ।

- ৯০। পাপাণকয়ো: কৃৎসিতৈতঃ । পাপনাপিত: অণকনাপিত: ।
- ৯৪। উপমানানাং সামান্তবাচিভিঃ। শস্ত্রীব শ্যামা শস্ত্রীশ্যাম৷ হংসশ্যেনী। অসামান্তবাচিভিস্ত। পর্বতা ইব বলাহকাঃ।
- (৯৩)। পাপাণকশন্দো কুৎসাবচনো উয়ো: কুৎসিউবচনৈ: সহ কর্ম্মধারয়ো ভবভি। পাপশন্দে অণকশন্দে চ স্বর্ত্ত্যা পরিজ্ঞানরপা নিলা গর্ভিতা অন্তি। তেন প্রকারেণ নাপিতো নিল্য ইতি পূর্বস্ত্রেণ সমাসে সিদ্ধে পাপাণকশন্দরো: পূর্বনিপাতার্থং লক্ষণম্। অন্তথা নিল্যস্য পূর্বনিপাতঃ স্থাৎ।
- (৯৪)। উপমীয়তে অনেনেতি উপমানং দাদৃশ্রেন যেনার্থঃ পরিচ্ছি ছতে তত্ত্বশান্মিতার্থ:। গৌরিব গ্রন্থ ইত্যত্র গ্রাং সাদৃশ্রেন গ্রন্থ: পরি-চ্ছিল্পতে অতো গৌরুপমানং উপমান্দ্র নিয়নেন উপমেয়মপেক্ষতে তেনায়-মধ্যে ভবতি। উপমানবাচিনাং সামাত্যবাচিত্তিরূপমেরৈঃ সহ কর্মধারয়ে। ভবতি। দ্রুপি সাধারণো ধন্ম: সামান্তমিত্যনেকপ্রকারমেব সাধারণ্যং সম্ভবতি তথাপ্যমানশক্ষ্য উপমেরাপেক্ষ্যভাৎ উপমানোপমেযযোরেব সাধাবণো ধর্ম্ম: সামান্যমত্রাপেক্ষিতং সামান্যৎ বক্তুং শীলং যেষাং তে সামান্তবাচিন:। বে সামান্তং ধর্মমভিধায় সামান্যবতি দ্রব্যে বর্ত্তন্তে তেহভিধীয়ন্তে। যথা শস্ত্রীব খ্রামা ইত্যত্ত খ্রামানক উপমানোপমেয়য়োঃ সাধারণধর্মবচনঃ তদর্ম্ব-যুক্তায়াং দেবদত্তায়াং মন্তর্থীয়ালোপাদভেদোপচারাদা বর্ত্ত ইতি ভবতি সামান্যবাচা। হংগাঁব শ্বেনী হংসশ্বেনী ইতি শ্বেতশব্দাব্বোপাস্তাভ্রন্স ন ইতি ঈপ্রতায়: তম্ম চ নঃ উক্তপুংস্কান্ স্ত্রীপুংবৎ দ্বিরামিতি পুংবদ্ধাব:। मामानाधिकतरण कर्यधावय देशि वाविष्ठः कथमज देवधिकतरण विधी রভে। উচ্যতে। ভেদবতো বচনদামথ্যাং বৈয়াধিকরণ্যেঞ্পি নমাসো ভ্ৰতীক্তি৷ অথবা স্থামতভণমুপাদার শত্তীশন্দোহপি দেবদভাষাং বর্ততে এবঞ্চ শত্রী চাসৌ স্থামা চেডি উপহানোপমেরয়োরপি সামানাধিকরপ্যং বিশ্বত এবেতি। পর্বতা ইব বলাহকা ইত্যত্র বর্বাহৰণক উপমানোপ-মেরয়েন সাধারণধর্মবারী।

৯৫। শাস্তিশন্তণস্তাভা।

পুরুষোহয়ং ব্যাত্র ইব পুরুষব্যাত্রঃ। ব্যাত্র সিংহ বৃষক্ত হস্তিন্ কুঞ্জর কড়ার পক্ষ কমল কিশলয় পল্লব চন্দ্র ইঙ্যাদি।

৯৬। সামান্যবাচিপ্রয়োগ ন তাৎ। পুরুষোহয়ং বাজ ইব শুরুঃ।

৯৭। চ্যুর্থে প্রেণ্যাদীনাং ক্তাদিভিঃ। অত্যেণয়ঃ শ্রেণয়ঃ কৃতাঃ শ্রেণিকৃতাঃ। শ্রেণি ভূত উদক পূগ কৃত্রিম কুকুম রাশি কুসুন নিচয় কৃট নিধন মূক ইক্স দেব মূণ্ড ভূণ প্রাণ পঞ্জিত চপল নিপূণ কুশল

⁽৯৫)। ব্যান্তাকৈঃ শকৈঃ সহ তদ্ গুণস্কত্যক্ত কর্মধারয়ে ভবতি।
ভদিতানেন ব্যান্তাদেঃ পরামর্শঃ। নহি উপমানোপমেরভাবং বিনা অক্সপ্রশেন
অক্সস্য স্বত্যতা ভবতি। অতঃ সামর্থ্যাত্বপ্রানবচনৈর্ব্যান্তাদিভিঃ সহ তদ্গুণেন স্বত্যক্ত উপমেন্ত্রস্য সমাসো ভবতীতি লভ্যতে অতএব পুরুষোহরং
ব্যান্ত ইবেতি বাকাং দর্শিতবাম্। পুরুষব্যান্ত ইতি শ্রমাদিভির্যান্তগুণকপমেরক্ত স্বত্যতা গমাতে বিশেষণক্ত বিশেষ।রিত্যাদিনা সমাসে সিদ্ধে
বিশেষক্ত প্রতিনিপাতার্থোহ্যমারস্তঃ। সামানাধিকরণ্যঞ্চ পূর্ববদেবাত্রাপ্যান
হনীরম্।

⁽৯৬)। পূর্বলকণবিহিতঃ সমাসঃ সামান্তবাচিনঃ প্ররোগে সভি ন ভবতি। পুরুষোহরং ব্যান্ত ইব শ্র ইত্যত্ত পুরুষবাান্তরোরূপমানোপমেররোঃ সামান্তধর্মবাচী শ্রশকঃ। নতু সামান্তল গুণল্ভ সমাসেহস্তৃত্বাৎ ভবা-চিনঃ প্ররোগ এব ন সম্ভবতি কিং প্রতিষেধন নৈতদন্তি সাধারণো ধর্মঃ সামান্তং সমাসেহস্তৃতিং নতু তবিশেষঃ ভত্তাসভি প্রতিষেধে বিশেষসাধারশ-ধর্মবাচিনঃ প্ররোগেহ প ভাদেব সমাসন্তৎপ্রতিষেধার্থং লক্ষণম্।

⁽৯৭)। চ্যুর্থে শ্রেণ্যাধীনাং শব্দানাং কুতাদিভিঃ সহ কর্মধার্থের ভবজি। অভূতকভাবো হি চ্যুর্থঃ। অভএবাহ অলেণয়ঃ শ্রেণয়ঃ কুতাঃ

দৃশদ্ ৰদাত্য প্ৰাক্ষণ কজিয়ে পটু অধ্যাপক বিশিষ্ট শ্ৰেণ্যাদয়: । ক্বত ভূত উক্ত মত গত কণিত সমাজ্ঞাত সমাম্বাত সমাধ্যাত সম্ভাবিত অবকল্লিত অবধানিত কল্লিত নিরাকৃত উপকৃত উপাকৃত ইত্যাদি। চ্যুন্তানান্ত শ্রাদাদেঃ স্থাতিত সমাস:। শ্রেণীকৃতঃ পূগীভূতঃ।

৯৮। অনঞঃ ক্রান্তস্থ তেন সনঞী। কৃতঞ্চাত্রতঞ্চেতি কৃতাকৃতং ক্লিফাক্রিশিতমু।

শ্রেণিকতা ইতি যদা শ্রেণ্যাদিশব্দানামর্থা অপবিনিপানা এব নিপ্পাদ্যন্তে তথা সমাসঃ শ্রেণিকতা গাবং যদা ভূ নিপানার্থা এব কপাস্তবেণ ক্রিয়ন্তে তদা শ্রেণাঃ কতা ইতি। দণ্ডিতাঃ সৎক্রতা বা ইত্যর্থবিবক্ষাযাণ ন ভবতি কত-শব্দু দণ্ডিতাল্যর্থতা কবোতেঃ সামান্তবাচিত্বাৎ অনেকার্থতান্ধান্ধান্দ্র গ্রুত্বা এবং শ্রেণ্যন্তবাং পুগতমা ইত্যাদি। শ্রেণিবান্ধণনিপ্রাঃ পট্পণ্ডিত-কুশলচপলমুণ্ডাশ্চ দেবক্ষপ্রিয়ন্কাঃ শ্রবণাদককৃত্ব মবাশীক্রকটনিধনানি দুশদবদান্ধনিচরাধ্যাপকবিশিষ্টক্রব্রিমপূগভূতকৃত্বমানি শ্রেণ্যাদ্য় ইতি নিয়তাঃ। কুলাদিরাক্ষতিগণো বাচ্যঃ। কুলুমবিশিষ্টহ্বানে পদার্থবিষয়ে কচিৎ পঠ্যেতে কচিদ্যি পুত্তকভেদে মৃতক্রপণাবিপ ।দৃশ্রেতে। কুত্মতভূতান্মক্রং গতমিতি বৈ নিরাক্তঃ কণিতং সন্তাবিত্রবধাবিত্রমবক্ষিত্ত-মশ্যপাক্রতাপক্তে স্নাত্ব্যাভিজ্ঞাভান্তর স্বাভ্র্তানি পঠ্যন্তে। যদি চ্যুর্থে সমাসোহ্যং তদা চি প্রভাষান্তানাং শ্রেণ্যাদীনামভূততন্তাবেহর্থেহ্বপতে কগং সমাসঃ অত আহ চ্যুন্তানান্ধ শ্রদাদেঃ ক্রতেতি সমাস ইতি শ্রেণীকতঃ পূনীভূত ইতি অভ্ততন্তবাবে কৃত্তিষ্ চি রগন্তাদী চেতি চিঃ ক্রকারশ্চ লুক্ চিক্রেথিক্তেতি চিনুক্। ক্রতভূতন্তাতিরিক্রক্ত চি প্রত্যম্বৈবাভাবঃ।

(৯৭)। কো ছি ধাতোবিধীয়তে সোহস্তো যভেতি কাস্তো ধাতৃরক্ত-পদার্থঃ। অবিদ্যমাননঞঃ কান্তত্ত ধাতোন্তেন কাস্তেন ধাতৃনা নঞ্সহি-তেন কর্মধানয়ো ভবতি। নন্ কৃতাকৃতমিত্যাদৌ কথং সামানাধিকরণ্যথ ন হেকং বস্তু কৃতং ভাদকৃতক। উচ্যতে—অবয়বধর্মেণ সমুদায়ত চ তথা ব্যপদেশাদদোবঃ। কৃতভাগসম্বন্ধাৎ কৃতমকৃতভাগসম্বাভদেবাকৃত্তিভূ-

৯৯। কুভাদীনামপকুভাদিভিঃ।

কৃতাপকৃতং ভুক্তবিভুক্তং পীতবিপীতং গতপ্রত্যাগতং বাতাসুযাতং ক্রমন্চাসো ক্রয়িকা চেতি ক্রয়াক্রয়িকা। ক্রয়াল্পকরয়েক্তয়রূপ-সমুদায় উচ্যতে নিপাতুনাদ্দীর্ঘঃ। এবং প্টাপ্টিকা ফলাফলিকা মনোন্মানিকা।

১০০। সদাদীনাং পূজ্যমানেঃ। সংপুরুষঃ। সং মহৎ পরম উত্তম উৎকৃষ্ট।

চাতে। ক্লিপ্টাক্লিশিতমিতি ক্লিশিশ্চেতি বৈক্তব্যমিত্যনেন 'ক্লশেরধাদিশ্বাৎ পাক্ষিকস্যেঙে বিষয়ে জ্বন্তব্যেরিগুপায়েঙ্ছ ইতি ব্যচাদিখাদিট্রুতেহিশি ক্রান্তপ্রকাতত্বমবিক্ষমেবেতি ন কশ্চিদিরোধঃ।

- (৯৯)। ক্লতাদানাং স্বব্যানামপর তাদিভি: সহ কর্মধারয়ো ভবভি।
 কৃতাপক্বতমিতি অভিমন্তানভিমতয়োর্ভাগবো: করণাকরনাৎ ক্লতাপক্তম্।
 ভূকবিভূকমিতি ভূকঞ্চ ওদভাবস্থতখাৎ বিভূক্তঞ্চাশোভনহাৎ ভূকবিভূক্তং
 বিশব্দোহত্রাশোভনহং দ্যোতয়তি বিরূপবং। এবং পীতবিপীতম্। গতপ্রত্যাগতমিতি কিয়লগতং কিয়ৎ প্রত্যাগতকেতি পর্বাং গতং গশ্চাং প্রত্যাগতমিতি বাক্যে ভূ পূর্বাকালস্যাপবকালেন ইত্যাসৈর্ব বিষয়ং। ক্রয়াক্রমিষ্টা
 ইতি ক্রীণাতেঃ ইণস্ত ইতি দৃঙাদিখাৎ ওঃ ক্রয়শকাৎ কোহলাদাবিতি কঃ
 স্ত্রীজ্ববিক্লায়ামাৎপ্রত্যাঃ জদিৎ স্ত্রাদ্যেকে ইতি অকারস্য ইকারঃ।
 ক্রয়ালক্রমোক্রভয়োরপসমুদায় উচাতে ইতি ক্রয়াব্যবহাৎ ক্রয়ঃ ক্রয়্নিকার্বার্থ
 য়বস্বাৎ ক্রমিকেতি। অবয়রধন্মেণ সমুদায়শ্র তথা বাপদেশাদভেদক্রপতা
 ক্রম্নায়সোচ্যতে ইত্যর্থঃ। এবং প্টাপ্টকেত্যাদি প্টশ্চাসৌ
 পৃটিকা চেতি, কলক তং ফলিকা চেতি ম নক্ষ ভং উন্মানিকা চেতি
 বাক্যম্। সর্বাং পূর্কবং।
- (>••)। সং মহৎ পরম উত্তম উৎকৃষ্ট ইত্যেতেবাং স্থবস্তানাং পূজ্য-মানবচনৈ: সহ কর্মধারয়ো ভবতি। পূজামানৈর্কিতি বচনাৎ পূজাবচ্না: সহাধ্যা: লকা বিজ্ঞায়ত্তে। এবং হি উত্তরপদস্য পূজামানকং ভবতি। সম্মহৎ পরমোৎকৃষ্টোত্তমা: পঞ্চ সহাদয়:। পূজামানৈরিতি কিন্ ৪ সন্

১০১। বৃন্দারকনাগকুঞ্জরৈঃ পৃদ্ধানস্থ। গোরন্দারক: গোনাগঃ গোকুঞ্জরঃ।

>০২। পোটাদিভিজাতে:।
ইভাপোটা ইভাষুবভিঃ তিলস্তোক: দধিকতিপয়ম্। জাভাবিবকায়াস্তা। কতিপয়সহকারপ স্পরমামিতি ভারিবি:। গোগৃষ্টি:
গোধেমু: গোবশা গোবেহৎ গোবস্বয়নী কঠপ্রবক্তা কঠশ্রোত্রিয়:
কঠাধ্যায়ক: কঠধূর্ত্ত:। ধূর্ত্তকঠ ইত্যসাধু:।

ভূতা: বিদ্যমান ইত্যর্থ:। উৎক্লণ্ডো গোঃ পঙ্কাহদ্তা ইত্যর্থ:। নিত্তা-সাপেক্ষে সমাসো ব্যবস্থাপনীয় এব।

(১০১)। বুন্দারক নাগ কুঞ্জর ইত্যেতৈ: সহ পূজামানস্য কম্মধারবো ভবভি। বুন্দারক ইত্যাদয়ো জা।উপন্যান্তে চোপমানতে সতি পূজাবচনা ভবস্তি। ব্যান্থাদ্যস্যাক্ষতিগুল্বাদেব ব্যান্থ।দাৈত্তদ্ গুণস্বত্যস্যেতি সমাসে সিদ্ধে সামান্তবাচিপ্রবােগে ন স্যাদিতি প্রতিষেধবাধনার্থ: বচনং তেন নব-বুন্দাবক: শুর ইত্যাদি। পূজ্যমানস্যেতি কিম্পু মৈত্রো নাগো মূর্ব্যাং।

(১০২)। পোটাদিভি: স্থবকৈ: সহ জাতিবাচিন: কর্মধারয়ো ভবতি।
পোটা ব্রীপ্ংসলক্ষণধাবিণী দ্বী অভিধীয়তে। গৃষ্টবেকবাৰপ্রস্তা। ধেপুঃ
প্রত্যপ্রপ্রপ্রতা। বলা বর্মা। বেছৎ গর্জোপথাতিনা। বহয়নী তরুণধ্বংসা। ইভ্য আটো করেণান্ত ভবেদিভা চ শলকাবিতি বিশ্বঃ। বিশেষণস্যোভাাদিনৈব সমাসে দিকে পূর্মনিপাতার্থং বচনম্। গুণশন্ধা হেতে যদি
তেন সমান: স্যাৎ ভণা পোটাদানাং পূর্মনিপাতঃ প্রসজেৎ। অধ্যাবক
ইতি অধিপূর্মাদিগো গকঃ স্কিরায়াদেশত। নন্ত পোটাদিগণে ধৃর্তশকঃ
কিমর্থঃ গৃ যতো নিন্দাগর্জৈপ্রধা নিন্দাসোতি সমাসঃ লিম্ক এব। উচ্যতেঅনিন্দার্থং ধৃত্যন্ত্রন্ম। কঠপুর্ত ইত্যক্র কাতেরয়মকুৎসিতায়া ধৃত্তমন্তর
বিবিক্ষিতঃ নতু তেন শন্তপ্রতিনিমিত্রায়া: কঠজাতেনিন্দা গ্রাভে। ধৃত্তব্য
ইত্যসাধুরিতি কঠশক্ষ্য জাতিশক্ষাৎ যদি অনেন সমাসঃ ভগণি পৃর্তশক্ষ্য
ন পূর্মনিপাত ইত্যতিপ্রায়ঃ।

১০৩। প্রশংসাবচনৈশ্চ। গোমভল্লিকা গোমচর্চিকা গোপ্রকাণ্ডং বিপ্রোদ্যঃ বিপ্রভল্লজঃ।

১০৪। জরৎপলিতখলতিবলিনৈযুনঃ।

যুবজরন্। প্রায়ো নামগ্রহণে জীলিজবিশিফকাপি গ্রহণমিতি।

যুবজরতী। যুবপলিতঃ যুবপলিতা যুবখলতিঃ যুবখলতী যুববলিনঃ

যুববলিনা। • • •

পোটা যুবতি স্তোকং বঙ্কমনী শ্রোতিয় বশা বেহৎ ধেম প্রবক্তৃ কতিপয়া-ধ্যায়ক গৃষ্টি ধূর্ত্তা-চ পোটাদয়:।

(১০৩)। জাতেরিতামুবর্ততে প্রশংসাবচনৈঃ স্থবকৈঃ সহ জাতিবাচিনঃ কর্মধারয়ো ভবতি। ত্রিপ্রকারা হি প্রশংসাশলাঃ কেচিৎ
জাতিশলাঃ পরপদার্থে প্রযুক্তামানাঃ প্রশংসামাচক্ষতে। যথা সিংহো
দেবদক্ত ইতি। কেচিৎ গুণযুক্তশলা গুণিসম্বক্ষেন প্রশংসাবাচকাঃ।
যথা বমণীয়ো গ্রামঃ। কেচি দ্রন্থিশলা এব মতলিকাদয়ঃ যেষাং প্রশংসব
পদার্থ: অত্র হু বচনগ্রহাণে রুটিশলা এব গৃহত্তে যতত্তে প্রশংসামাত্রবচনা এব তেন বিশিষ্টলিক্ষভাদভালিক্ষেত্রপি জাতিশকে ক্ষলিকোপাদানাদেব সমানাধিকরণা ভবস্থি। গোমতলিকেত্যেবমাদীনাং শোভনঃ
প্রশক্তা গৌরিতার্থঃ। মতলিকা মচর্চিকা প্রকাণ্ডমুদ্বতরকৌ প্রশন্তবাচকান্তম্ব্যাদাহরম্ভি পঞ্চ বৈ।

(১০৪)। জরং পালিত থলতি বলিন ইত্যেতিঃ সহ যুবন্শক্ষ কর্মধারয়ো ভবতি। যুবজরারতি এক: শক্ষেত্র মুখোহপর ঔপচারিক:। জুষ্ ঝুম্ ব্রোহানৌ পৃষাদেরদিতাং স্কট্যানিংপ্রত্যান্তর্ম ফ্ ইতি মুম্। জরজ্বলো যুবন্শক্ষ হতে পঠিত:। তৎ কথং যুবজনরতীত্যত্র সমাস: অভ আহ প্রামো নামগ্রহণে ইজ্যাদি নামো গ্রহণে উপাদানে সতি ততৈর স্ত্রীলিক্ষাপি গ্রহণং ভবতি। স্ত্রী লিক্সতে স্চাতে বেন তৎ স্ত্রীলিক্ষ স্ত্রীপ্রত্যান্তং প্রামোগ্রহণার ভবত্যপি তেনানড্যান্তর সাবনড্র ইতি মুম্ ন ভবত্তি ভবদাদের্মাবতো স্পাতি অব্তীশকার ভবতি। দিত্যদিতি ব্যাদিক্যান্তর, ইতি দিত্তীশকার ভবতি।

১০৫। কুত্যভূল্যার্থয়োরজাত্যা।

ट्याटकारकः भानीयमीलम्, मीलभानीराखभानीयानरयाध्याधना

১०७। जूनार्थः।

ভুলাখেতঃ ভুলামহান্ সদৃশখেতঃ সদৃশমহান। জাতা। ভু। ভোজা ওদনঃ।

১০৭। বর্ণস্ত বর্ণের। কৃষ্ণশারক: কৃষ্ণশবল:।

তদেরণাদৈতের ইতি সিধাতি। তন্ত্রাৎ প্ররোগদর্শনালাং প্রারিকথন্থনীরম্। যুবজরতীতি স্ত্রীথবিবক্ষারাং যুনস্তিরিতি তিঃ উক্তপুণস্থান্স্ত্রীপ্রেৎ স্ত্রিয়ামিতি পুংবদ্ভাবাৎ স্ত্রীপ্রভারনিবৃদ্ধিঃ। যুবখনতীতাত্র
প্রে যুবজরিরিতি ভাষ্টে নোদাহ্যক্রম্। অনুপদকারেণ পুনরেতরিন্দিতমেব এতৎ কাতন্ত্রীকার্যস্যুক্তং যুবখনতীতি ইদ্যান্যম্যাকাতেরিতি স্থা

(১-৫।১০৬)। কৃত্যপ্রতায়ালাং তুলার্থানাঞ্চ অন্নতিবাচিনা
সংকর্মধারয়ো ভবতি। ভোক্সমিতি তু তুক্ পালনাভ্যবহারয়েরিঙ
ঝহলো বা ইতি বাঃ ভাক্স তুক্ ইতি ঝচাদিঘাং ব্যেহনুচাদেরিতি জঞ্জ
গকারো ন ভবতি। পালীয়নাতমিত তবাঙ্ সনায়ঙাবিতি অনীয়ঙ্
কৃত্যান্তবাঙ্ অনীয়ঙ্বায়ঙাদয় ইতি কৃত্যসংজ্ঞা তবাঙাদীনামুকা।
ভোজ্যোফমিত্যাদৌ উষ্ণাদয়ং শকাঃ সর্বে গুণবচনাঃ তত্রাসত্যমিন্
যো.গ বিশেষণস্তেত্যাদিনা সনাসে কৃতে তেয়ঃ পুক্রনিপাতঃ স্থাৎ
অত্যেহপুক্রনিপাভার্থোহয়মারস্তঃ অতএবাহ নাতপানীয়েয়য়পানী াদয়োহসাধব ইতি। তুলায়য়্নিভ্যাদৌ সদাদীনাং পুক্রমানেরিহ্যনেন্ব
সমাসঃ প্রাম্মোতি অপেক্ষিতবিধিছাওসানেন বাধা এয়তে ইতি স্বচনার্থং
তুলায়য়্নিভ্যাদান্তম্। তক্ত পুনবতুল্যার্থেন সমাসো মহাপুক্ষ ইত্যাদিবিষয়ঃ। ভোজা ওদন ইতি ওদনশকাহের জাতিবচনঃ। অজাভ্যেতি
বিশেষপ্রামর্থাৎ বিশেষগ্রেয়াটাদিন্পি সমাসো ন ভবতি।

(১০৫)। বর্ণবাচিনঃ শব্দক্ষ বর্ণবাচিনা সহ ক'্ধারয়ো ভবতি।

১০৮। কুমার্য্যা: শ্রমণাদিভি:।
কুমারশ্রমণা শ্রম্ তপসি খেদে চ ডন:। শ্রমণা শ্রমজিত।
কুলটা গর্ভিণী বন্ধকী দাসী তাপসী।

১০৯। কুরারস্য চ মৃদ্বাদ্যৈ। কুমারমৃদ্যঃ কুমারমৃদ্বী। মৃদ্ধ পটু পণ্ডিত কুশল চপল নিপুণ অধ্যাপক অভিরূপ।

১১০। গর্ভিণ্য চতুষ্পাজ্জাতেঃ। গোগভিণী অজগভিণী *

কৃষ্ণণারকঃ কৃষ্ণশংস ইতি শারক্ষণবলশকৌ মুখ্যয়া বৃদ্ধা সমুদারবৃদ্ধ অবয়বপ্রমিদ্ধে সমুদারপ্রপ্রসিদ্ধির্গরীয়সীতি ভারাৎ কৃষ্ণাবয়বসম্বর্গাৎ কৃষ্ণ-শারে বর্ততে ইতি সামানাধিকরণ্যমস্ত্যেব কিন্তু মুখ্যগৌণ-ব্যান্তদিতি বিশেষণস্যেতাদিনা ন প্রাপ্রোতি লক্ষণকরণসামর্থ্যাদনেন ভবত্যেব গৌণন্থেন বিশেষণত্বাৎ কৃষ্ণশক্ষিত্র নিয়তঃ প্রাণ্ডাবঃ। ষত্র স্বশ্বসম্বন্ধাৎ দ্বাবিপ সমুদারবৃদ্ধী তত্ত্ব কামচারেণ প্রাণ্ডাবঃ শুক্রকৃষ্ণঃ কৃষ্ণশুক্র ইতি।

- (১০৮)। কুমারীশব্দশু প্রমণাদিভিঃ সহ কর্মধারয়ো ভবতি। প্রামণেতি কর্ত্তরি রমাদেওনি ইতি ওনঃ। প্রমণা কুলটা দাসী তাপসী বন্ধকী তথা। গর্ভিণাপি প্রব্রজিতা সপ্ত স্থাঃ প্রমণাদয়ঃ।
- (১০৯)। কুমারীশবস্ত কুমারশবস্ত চ মুছাদিভিঃ সহ কর্মধারয়ো ভবতি। কুমারমূরীতি গুণবচনাছদস্তাদধর্মযুক্তোপাস্তাদিতি স্থা। মৃচপট্-গঞ্জিতকুশলাধ্যাপকনিপ্ণচপলান্চ। অভিরপন্চেত্যটো কথিতামুদ্বাদরেগ নির্তা:॥
- (১১০)। চতুস্পাদিতি চন্ধার: পাদা যন্তা: সা চতুস্পাৎ স্থসংখ্যাগুঢ়ার্চেতি অস্ত্যাকারপুক্। গর্ভিনীশক্ষেন সহ চতুস্পাজ্ঞাতিবাচিনঃ
 স্থবন্ধ্যা কর্মধারয়ো ভবতি। জাতেরিতি কিম্ ? শবনী গর্ভিনী নামং
 জাতিবাচক: শব্দ: কিন্তু গুণব্দনা:। চতুস্পাদিতি কিম্ ? ব্রাহ্মনী গর্ভিনী।
 যদ্যেবং তর্হি পশুপদং ক্রিয়তাম্ এবং সতি শরভী গর্ভিনীতাত্রাপি সমাসঃ
 ক্রাং শরভীজাতিরইপদী।

- ১১১। শয়্রব্যংসকাদয়শ্চ।

 শয়্রশ্চাসে ব্যংসকো ধৃতিশ্চৈতি শয়্রব্যংসকঃ ছাত্রবাংসকঃ

 কিমোজমুণ্ডঃ ঘবনমুণ্ডঃ।
- ১:২। এহীহাদয়োহ অপদার্থে।
 এহি ইহেতি যত্র কর্মাণি বর্ত্ততে তহ্চাতে এহীহং বর্ত্তত। এহি
 যবৈরিতি যত্র তত্তচাতে এহিয়বম্ এহি যাণিজৈতি যন্তাং ক্রিয়ায়াং
 সা এহিবাণিজা। অপৈহিবাণিজা প্রেহির্মাণিজাত যন্তাং
 ক্রিয়ায়াং সা অপেহিবাণিজা প্রেহির্মাণিজা এহিস্বাসাতমিতি যন্তাং
 ক্রিয়ায়াং সা এইস্বাগতা প্রোহকটমিতি যন্তাং ক্রিয়ায়াং সা
 প্রোহকটা প্রোহকর্দমা আহরবসনা আহরচেলা আইরবিভতা
 উদ্ধরচ্ডা। ভিদ্ধিলবণমিত্যুচাতে যন্তাং ক্রিয়ায়াং সা
 কৃষ্ধিবিচক্ষণা উদ্ধরোৎসজেতি যন্তাং ক্রিয়ায়াং সা উদ্ধরোৎস্কা

দিশ উত্তরপদে তদ্ধিতার্থে চেতি বক্তব্যম্। দিশো বিশেষণশু বিশেষাঃ সহ উদ্ভরপদে পরে তদ্ধিতপ্রয়োজনকে চ বিষয়ে কর্মধারয়ে। তবতি। উত্তরগবপ্রিয় ইতি উত্তরা গোঃ প্রিয়া যক্তেতি বছ্ত্রীহৌ রুতে সমাসে সর্কান্তপদত্বাৎ উত্তরপদে প্রিয়ে পরে উত্তরগো ইত্যেতয়োঃ কর্ম-ধারয়ে। ভবতি। গৌমতদ্ধিতলুকীতি রাজাদিঘাটঃ। পূর্বস্যাং শালায়াং ভবঃ পৌর্বশালঃ দিক্ পূর্ব্বপদাদনামীতি গঃ।

⁽১১১)। সম্নারা এব নিপাতান্তে ময়্রবাংসকাদর: শকাঃ কর্ম-ধাররসংজ্ঞকা ভবস্তি। ময়ুরবাংসক ইত্যাদৌ ব্যংসকাদিপদানাং পূর্ব-নিপাতে প্রাপ্তে পর্যনিপাতাথঃ পাঠঃ। অংস সমাঘাতে চুরাদিঃ বিপূর্বেঃ ব্যংসরতি ছলয়তীতি বা ব্যংসকো ধূর্তঃ। বিগতাবংসাবস্য ব্যংসক ইতি কণ্টিৎ ভ্রাম্বরসো বৃত্তিক্রতা স্টিতঃ।

⁽১১২)। মর্রবাংসকাদিগণে পঠিতা এহীহাদরোহম্মপদার্থে বর্ত্ত-মানাঃ কর্মধারয়সংজ্ঞকা ভবস্তি। আহর ইত্যাদি লোড়ভস্। তেকাঃ

উদ্ধানিধনা উৎপত্তনিপতা অপেহিপ্রেখনা। উদক্ চ অবাক্ চ উচ্চাব্চম্ উচ্চেশ্চ নীতৈশ্চ উচ্চনীচন্ আচিতঞ্চ পরাচিতঞ্চ আচ-প্রাচন্ আচিতঞ্চোপচিতঞ্চ আচোপচং নিশ্চিতঞ্চ প্রচিতঞ্চ নিশ্চ-প্রচং ন কিঞ্চন অত্যে বা কিঞ্জান্তীতি অকিঞ্চনঃ সাহাকালকঃ পীহান্থিরকঃ ভুক্তবৃদ্ধহিত্কঃ প্রোষ্যপাপীয়ান্ ইহপঞ্চনী ইহদ্বিতীয়া উৎপত্যপাকলা ক্রাতা নিপভারোহিণী জাতা নিম্মশ্যানা জাতা।

১১০। ে ড্রুমধ্যমপুরুষেকবচনস্য কর্মণা বহুল:
ম:ভাফ্যে কর্ত্রারমাচষ্টে।

জহি ক্লোডং দাসং খ্যানং বেত্যাভীক্ষ্যং য আহ স জোহিজোডঃ জহিস্তব্যঃ উপ্তহিস্তব্যঃ।

১১৪। শাকপার্থবাদয়শ্রত।
শাকপ্রধানঃ পার্থবঃ শাকপার্থবঃ মেরুনামা মহীভূৎ মেরুমহীভূৎ।
তথাত ভাববিঃ — মণ জয়ায় মু মেরুমহীভূত ইতি। বাভটপ্রাহ

বসং বিত্তং বিস্তৃত্য উদ্ধানেংস্কেত্যাদীনাং তিওপ্তিও। ক্রিয়াসাতত্যে চ্নানেনব সমাসে প্রাপ্তেহ্য।তত্যার্থং গণে পাঠা। ন কিঞ্চনেত্যবাদ্ধেনাপি সমাসে নিশাতমাদভিধেয়লিকতা। অকিঞ্চনাঃ পুরুষাঃ। ক্রপ্তানকালকা ইদৌ সমাসে সত্যেকপদত্তে তদ্ধিতোৎপত্তিঃ স্নাত্মকালকিঃ স্লাকালকীয়ং ধনং ভূক্যাস্থাইতকং ধনম। প্রোধ্যপাদীবসঃ এবং নিতাপ্তক্মা প্রিগান্তরুশা বিষ্পান্তপট্নিত্যাদৌ সমাসঃ ক্রণীয়া।

⁽১১৩)। লোট্নংজ্ঞকনা মধ্যমপুরুবৈকবচনান্তমা পদস্য কর্মণা সহ বহুলং ক মধাবয়ো ভবতি আভীক্ষো গ্রমানে সমাবে ক্র্যু মুক্তি ধাষতে। জহীতি হৌ হন জ ইতি হয়ের্জঃ ম

⁽১৯৪)। শাকপার্থবাদরং সমুদারা এব শক্ষাঃ কর্মধাররসংক্ষক।
নিপাতাত্তে। শাকং প্রধানং পার্থবং শাকপার্থব ইতি তৎপুকর্মনেই
সংস্কৃতাদেনিতিমতি প্রধানপদলোপোহত করণীয়ং। শাক্ষঃ শক্তিঃ

মেরুলব্দত বাজ্যে মহীভূমিতি। ঋণে অধর্ম: অধর্মর্প: ঋণৈ
ভৈত্তমঃ উত্তমর্প:। ভূবনতাধঃ অধ্যোভূবনম্।

১১৫'। তিওঁন্তিঙা ক্রিয়াদীততো।

অন্নীত পিবতেতি সততমূচ্যতে যস্থাং 'জিরারাং, সা অন্নীতপিবতা।
আকৃতিগণোহরম্। গণপাঠাদত্র 'রূপসিন্ধিঃ। মরুরব্যংস্কানীনাইমবাং
সমাসাস্তরং 'ন ভবতি। তেন পরমো মযুরব্যংসকঃ।

`১১৬। বাঁহুল্যাৎকচিন্নিত্যম্। কৃষ্ণদর্শঃ লোহিতশালিরিত্যাদি।

প্রধানমদোতি শাক প্রধান: পূথোরপত্যং পার্থবঃ তস্যাপত্যে ইতি টণ্ গুণাবাদেশে। শাকপার্থব ইতি তু পাতঞ্জলাঃ পৃথিবাাঃ স্বামী তত্র বাগাত: পার্থিব ইতান্তে। ত্রিক্পা জগতী ত্রিজগতী ত্রিবলী অদ্ধাবলী। व्यक्तीरिनेष्ठेः मुरुः व्यक्तमृत्रम् । मूथ्यूका नामिका मूथनाणिका बाज्ञनवहत्ना গ্রামঃ ব্রাহ্মণগ্রামঃ ইত্যাদি সমসনীয়ম। ঋণমেকেন প্রথমং গৃহীত্বা কালান্তরে সর্দ্ধং দীয়তে অপরেণ তু প্রথমং দক্ষা কালান্তরেণ সর্দ্ধং গৃহতে ইত্যুভযোরের ঋণনম্বন্ধ:। তত্র প্রথমোক্তোহধর্মণ: অনন্তবে ক্ত-স্তৃত্বর্মণ:। ভূবনভাধোহধোভূবনম্। পূর্ব্বনিপাতব্যবস্থার্থোহমীবাং পাঠ:। (১১৫।১১৬।১১৭।১১৮)। তিওপ্তস্ত তিওপ্তেন সহ ক্রিযা-সাততো গমামানে অন্তপদার্থে কর্মধারয়ো ভবতি। আর ডিগণোহয়ং গণপাঠাদত্র রূপদিদ্ধিরিতি। এতেনৈতৎ প্রতিপাদিত্য আবিহিত লক্ষণ-সমাসো ময় বাংসকাদৌ ডাইবা:। অতএব সন্ধিপদে অবশুকর্তবাং व्यवश्रः वक्कवारकाकृ। मत्र्ववाश्मकापिश्वार ममारम। विकन्न हेकुरक्रम्। ষণাচ রূপসিদ্ধির্ভবতি তৎ করণীয়ন। এবঞ্চ সতি অহমেব পুরুষোহত্তেতি म्बारमात्राम् चार्टा १ क्रिका । चरः भृक्तम्बाष्ठि चाविकित्रात्रा म्चरः-পূর্ব্বিকা। অহং প্রধানমত্ত্রেতি অহং ক্বতৌ অহমহমিকা। নাস্য কুষ্ঠো ভর্মকীতি প্লাক্ষরাম্ অকুতোভর্মিভ্যাদিরূপা সিদ্ধিঃ

'ऽ इव । किष्क' कार्या

न्त्रीत्या कामनग्राः अर्ज्जूनः कार्त्वोर्याः वामः श्रीतानर्था हेजानि।
'১১৮। किनग्रेकािश।

মহার্জন: মহোদধিরিত্যাদি। ন ছত্র প্রস্কামানতাস্তি। বিশেষণবিশেষ্যোপাদানাদ্দ্রেরির বিশেষণবিশেষ্যতেইয়ং সমাসত্তেনেই

সমাসাধিকারে সর্ব্বত্র বাশকামুবু:তঃ সর্ব্বত্র বিকল্পে প্রাপ্তে আহু বাছল্যাৎ-কচিল্লিডামিতি। কচিদিক্সনেন তদেব গ্রাহ্ণ যত্র সমাসে রুঢ়িত্তথাহি ক্লম্ব-সর্প ইতি রুঢ়া শব্দবুত্তিরিয়ম্। অত এব কর্মধারয়াদপি ইহমতুপ্রতায়ে! ভবতি কৃষ্ণদর্শবান পর্বত ইতি। নহি বছবীহিণা দোহর্থ: প্রতিপাদন্তিতুং শকাতে। কৃষ্ণদর্শ: পর্বত ইতি এবং লোহিতশালিরিত্যাদাপি কৈচিৎ নীলোৎপ্ৰমিতাত্ৰাপি নিতামেব সমাসং মন্তব্তে যতগুদ্পি রুচ্ম। নালোংপলবৎসর ইতি ভবতি 'নতু নীলোংপলং সবঃ। কচি**র স্থাদিতি** বাহুল্যাদি ভারুষঞ্জনীয়ন্। ব্লামো জামদগ্যঃ 'অর্জুন: কার্ডবীর্যা ইত্যত্ত রামার্জ্জনশন্দয়োরনেকার্থতে উভয়োরেব ব্যবচ্ছিনাব্যবচ্ছেদকত্বাধিশেষ্যভাবে বিদ্যামানেহপি ন সমাসঃ। কচিদগুতাপীতি সুর্বোক্তিঃ কর্মধারম্বলকণৈর্যত সমাসো ন প্রাগ্নেতি তথ্রাপি বাছগাঁাছবভি। অতএবাছ ন ক্র্ত্রাপি পুজামানতান্তীতি পুজারাং 'হি স্বালীনাং পুঞামানৈরিতি সমাসো বিহিতঃ সোহত্ত ন প্রাপ্নোতীতি। মহাজনো মহোদধিরিতাত্ত প্রমাণাতিরেকেণৈব পূজা গমাতে ইতি কৈশ্চিহ্চাতে। ন চৈতাদুক যতো মহাক্রুরো মহাস্থামো মহাবিপদিত্যাদাবতিশয়েহপি সমাস:। মহাবিটো মহাদেবো মহামূলো महाज्ञ अरहक हेजाति क्रज़ाविन नमानः। बत्यादादवजािन । ভরপদোপাদানেনৈব সম্বন্ধিশক্তাৎ অপরপ্রসম্বন্ধে লভাভ এব এভাদুশি ' পূর্ব্বপক্ষে বিশেষণশু বিশেষােরিতি যৎ পদখয়ােপাদানং ক্বতং তৎসামর্থাাদরং বিশেষো লভাতে অত্র ঘরোরেব 'বিশেষণবিশেষ্যছেইয়া সমাস ইতি। শঝঃ পাণ্ডর: লোহিতত্তক্ষক: বৃক্ষ: শিংশপা ইতি বৃক্ষো হি শিংশপান্ধ: ব্যক্তি-· চরতি যতঃ প্রকারান্তরেভ্যঃ প্রকাশাদিভাস্তং 'ব্যবচ্ছিনত্তীতি ভবতি ত**ন্ত** भिःमशाविरमध्यः म 5 वृक्ष्मा वित्यक्षः। मिःमशार्थक कृष्णकः नि ন ভবতি। শব্দ: পাণ্ডর: লোহিতস্তক্ষক: বৃক্ষ: শিংশপা 1 ১১৯। তদ্ধিতার্থে সমাহারে দ্বিগুঃ সংখ্যায়াঃ। ভদ্ধিতপ্রয়োজনকে বিষয়ে সমাহারে দ্ব বাচ্যে সংখ্যায়াঃ সামানাধি-করণ্যে দ্বিগুর্ভবতি। পঞ্চস্থ কপালেষু সংস্কৃতঃ পঞ্চকপালঃ

ব্যভিচরতীতি ন বৃক্ষে: বিশেষণং ন শিংশপার্থো বিশেষ্য ইতি প্রভাকং দ্বরো-রেব বিশেষণ বিশেষ্য প্রভাবার সমাসঃ। তৎ কথং শিশংপার্ক্ষঃ আত্রবৃক্ষ ইতি বিশেষণ মাসেন ভবিভব্যমেব। উচ্যতে। যদা শিংশপাদিশকানাং বিশেষবৃত্তিন বিধারিতা তদা শিংশপাদিশকাঃ ফলস্ত বৃক্ষপ্ত চ সামান্তশকা ইতি তদর্থানাং রুক্ষার্থপ্ত ব্যভিচারাঃ বৃক্ষোহপি বিশেষণং শিংশপা বিশেষ্য ইতি সমাসো ভবত্যেব। যদা তু কৃতশ্চিদর্থাৎ প্রকরণাদ্বা বৃক্ষার্থ এবাবগতঃ তদা ন ভবিতব্যমেব সমাসেন। নম্ম বৃক্ষার্থপ্রাধিগভত্বাৎ বৃক্ষশক্ত প্রয়োগ এব নে,পপদ্যতে ইতি কৃতঃ সমান্ত্রশক্ষঃ। নৈতদপি বাচ্যম্। উক্তার্থানামপি হি লোকে প্রয়োগো দৃশুতে যথা অপূপৌ দ্বাবিতি। লোহিতস্কক্ষ ইতাত্র তক্ষোতাতি তক্ষক ক্রিয়াশক্ষ ব্যবচ্ছিত্তমন্ত্রীতি ন চোদ্যম্। ন'হ সংজ্ঞাশক্ত ক্রিয়াশকেন তুল্যার্থাভিধানসামর্থাম্। অন্য্রবার্থাত্বসারেণ ছি ক্রিয়াশক্ষেত্র ক্রিয়াশক্ষের তুল্যার্থাভিধানসামর্থাম্। অন্য্রবার্থাত্বসারেণ ছি ক্রিয়াশক্ষের্থং বোধন্থতি সমুদায় এব তু সংজ্ঞা অবস্বপ্রসিদ্ধেঃ সমুদায়-প্রসিদ্ধির লীয়সীতি নহি গোপক্ষমগুণাদ্বো বুৎপঞ্জা বাচ্যং বদস্তীতি।

(১১৯)। অর্থকাহত প্রয়েজনবাচী অতএব ব্যাচকার ভদ্ধিতপ্রােজনকে বিষয় ইতি। সমাহারে ইতি তু বাচ্চা সপ্তমী। অমুমেবার্থভেদং প্রতিপাদয়িতুং সপ্তমা রপদদ্বয়ং পৃণগ্লক্ষণেন দর্শিতম্। ভিন্নপ্রজিনিমি-ভর্মেরেকম্মির্থে বৃদ্ভিঃ সামানাধিকরণাম্। তত্র দ্বিভর্ভবন্ সংখ্যায়াঃ পদা-ভরেণ সহ ভবতীতি অর্থাক্ষেপাদেব লভ্যতে। সমান্ধতিঃ সমাহারঃ পুংসি বণ্ কারকে চেতি ভাবে যণ্। পঞ্চকপাল ইতি সমাসে কতে ভক্ষো সংস্কৃত ইতি টণ্ দিয়ালাট্রণাদের্ লাবিতি টণ্ লুক্। নত্র পঞ্চানাং গ্রাং সমাহারে বৃন্দমিত্যর্থে টণ্ তম্ব লাদাদাবিতি টণি কতে দ্বিদ্যাদিত্যাদিনা ভল্লি চ ক্তে গৌরতন্ধিতল্কীতি য়ালাদিত্যাবাং পঞ্জিরিতানেন ভবিত্যাং মতু পঞ্চাব ইত্যনেন ভাব্যম্। উচ্যতে। স্মাহারো বৃন্দমেৰ

পিঞ্চানাং পূলানাং সমাহার: পঞ্চপূলী পঞ্চরাজী পিঞ্চরাজমিতি ভাষ্যম্। একস্থিপীতি তুঁ দানসংক্রমাভ্যামেকস্থাপ্যধ্যারোণিত-বর্ত্তবাৎ সমাহার:।

' ২০ উত্তরপদে চ'। পঞ্চ গাবো ধনমন্ত্রী পঞ্চগবর্ধনঃ।

তত্ত্ব তৃ তিছিতার্থ ইত্যনেন 'সিছে ইং সমাহার' ইতি 'কুতং তত্ত্ব ক্লে তিছিতার্থে সমাসনিরাকরণার্থক্ক অতো নায়ং দোবঃ। 'মন্থর্যতিছিতবিষয়ে দিওনের্যতে। পঞ্চকপালাঃ পঞ্চপ্তিরিত্যাদৌ মন্থর্যতিধানশক্তেরভাবাং।
পঞ্চপূলীতি প্রকং 'ঈমাহারে 'ইত্যেকত্বং স্ত্রীদ্বিগুরদস্ভোহপাত্রাদিরিতি স্ত্রীত্বং দিগোরিতি ঈপ্রতায়ঃ। যথা গোরালভ্যেত ইত্যত্র জ্লাতেরালন্তনাভাবাং তদভিব্যঞ্জক্ত দ্রব্যভাগন্তন্ম্ । তথা পঞ্চপূলীমানমেত্যত্র
ধর্মজ্ঞানমনাসন্তবাং দ্রব্যজ্ঞানয়নম্। 'পঞ্চরাজীভ্যত্র রাজাদেষ্টাদিরিতি টঃ।
ভাষ্যকারস্ক পা গাদাবক্ত পাঠমিচ্ছতি অত্তর্বাহ পঞ্চরাজমিতি ভাষ্যমিতি।
অত্তর্বে পাত্রাদে পঞ্চরাজমিতি বৃত্তিক্লদেব দর্শয়িষ্যতি। নম্থ সমাহারোহপ্যনেকত্তৈব ভবতি তৎ কথম্ একাদ্পীত্যত্র দ্বিগুঃ অত আহ একাপূপীত্যাদি দানক্রিয়য়া সং ভ্রমেণ বা একস্থাপি বহুত্বমধ্যারোপ্য সমাহারঃ।
একস্ত দানক্রিয়ায়াং ত্বরায়াঞ্চ বহুত্বং সন্তব্তেরে।

(১২০)। 'পৃথগ্মোগকরণং পদ্মপ্তমীয়মিতি বিশেষার্থম্। উত্তরপদে চ পরে সংখ্যায়াঃ সামানাধিকরণ্যে দ্বিগুর্ভবিত। সমাসে সর্ব্বান্তর-পদম্চ্যতে। পঞ্চ গাবো ধনমন্তেতি প্রথমং ত্রিন্তিঃ পদৈর্ব হ্রীহিঃ পণ্চা-দ্বনশন্তে উত্তরপদে পরে পূর্বয়োঃ পদরোদি গুঃ ভাষ্মন্ সতি গৌরতন্বিত-পুকীতি রাক্ষাদিশ্বাট্রঃ। 'আমেন সমাক্ষা বাধিকারেহিপি নিত্য এব বতা বাকাক্রত্যর্থমেব বাধিকার উক্তঃ। তেন পঞ্চগোধন ইতি ন ভবতি। পঞ্চগবেত্যক্র ব্রীন্ধিগুরদন্তোহপাক্রাদিরিতি দ্রীষ্ণং নান্তি সমাহারদ্বিগৌ ত্রি-ধানাৎ। শেষতৎপুক্র ইত্যাদিনা অস্কঃস্থপদলিকতা নান্তি ন দ্বিগাবিতি নিম্বোধ। পঞ্চগবাথতাপি দ্রীষ্ণং নান্তি অক্তপদার্থে নৈকার্থীভাবাৎ। অতঃ ক্রেম্বানিবিভিত্ত প্রত্যযোক্তোৎপত্তিরিহ নাশ্বনীয়া। পঞ্চনাব্ধন ইক্ত্রা-

১२)। बटन्हांश्टलाश्नारयादग।

একক্রিয়ায়ামত্যোহগুযোগে সমাহারে চ গম্যমানে ধশ্বো ভবতি। স চোভাপদার্থপ্রধানঃ। রামশ্চ লক্ষ্মণশ্চ রামলক্ষ্মণো জাডৌ ধবশ্চ খদিরশ্চ পলাশশ্চ ধ্বখদিরপলাশান্তিষ্ঠন্তি কার্স্তদৃশদম্।

:২২। অন্যপদার্থো বহু ব্রীহিঃ। সমস্তমানভ্যোং সমস্যমানেভ্যশ্চান্তস্য পদস্যার্থো বত্রোপলভ্যতে স বহুবাহির্ভবতি স চ বিশেষণবিশেষ্যথে।

হরণনত যুক্তম্। যতো নৌরভদ্ধিতলুকি দিগাবিতি রাজাদিখং দিগুসংজ্ঞা-মিমিত্রকমত বিভাত।

(১২১)। সমাহার ইত্যন্থবর্ততে। অন্তোহন্তবোগঃ পরস্পরসম্বনঃ
পরস্পরাপেক্ষত্বমিতানর্থান্তরম্ অন্তোহন্তবোগন্তে কল্ঠামেব ক্রিয়ারাং সন্তবতীতি এক ক্রিয়ারামিত্যুক্তন্। এত কুপলক্ষণং শক্ষপ্রতিপাল্লসম্বন্ধাতে এব
পরস্পরাপেক্ষা গ্রহীতব্যা তেন দেন্দন্তবক্ষদন্তবিক্ষুমিতাঃ পণ্ডিতা ইত্যাদৌ
সমাসো ভবতি ক্রিয়াবাদিনান্ত ক্রিয়েব শকার্থ ইতি। তন্মতে পণ্ডিতাদয়োহিপি ক্রিয়াবাচকাঃ। স চোভয়পদার্থপ্রধান ইতি। উভর ইত্যপলক্ষণং সর্ম্বপদার্থপ্রধান ইত্যবগস্তব্যম্। অভএব উদাহরণমুপক্সন্তং ধববিদরপলাশান্তির্ভগীতি। অল্ডোহন্তবাগাধ্যো মন্দেহাই রনভেদার্থান্ধিনতঃ
আভোহবয়বপ্রধান্যাৎ ছিবচনাদির্ভবিত। সমাহারাধ্যন্ত তিরোহিতাহবয়বার্থভেদঃ তত্র একং সমাহারে ইত্যেক্সাদেকবচনম্। বাক্যে
চক্ষারেরেবাল্ডোহন্তবোগঃ সমাহারশ্চ জোত্যতে সমাসে তু উক্তার্থস্থাৎ চকারা
ক্রপ্রক্রন্তে। কার্চদৃশদ্মিতি চবর্গদশহান্তাৎ সমাহারে ইত্যৎ।

(১২২।১২৩,১২৪।১২৫)। স চেত্যাদি স বছগ্রীহি:শমস্তমানয়োঃ সমস্তমানানাঞ্পদানাং বিশেষণবিশেষাদ্ধে সতি ভবতি। দিতীরাক্ষপদার্থ ইত্যাচার্য্যা ই.ত। পাণিনিপ্রভূতরঃ তত্মতাত্ম্যারিনামস্বাক্মপ্যেতদেব মতম্। বিশেষণবিশেষাদ্রেম সামানাধিকরণো ইত্যাপি লভাতে। মধ্যেত- ১২৩। দ্বিতীয়াদ্যন্যপদার্থ ইব্যাচার্যাঃ। আরটো বানরো যং বৃক্ষং স আরটবানরো বৃক্ষঃ আরটা বৃদ্ধা বইবো বানরা যং বৃক্ষং স আরটবৃদ্ধবহুবানরো বৃক্ষঃ।

২২৪। ভৃত্তীয়াদ্যন্যপদার্থঃ খল্বপি।
নিজি তিঃ কামো যেন স নিজি তিকামঃ উপনীতং ভোজনং যদৈ
স উপনীতভোজনঃ নিঃস্তো জনো যকাৎ স্ত নিঃস্তজনা শুক্রঃ
পটো যস্য স শুক্রপটঃ উষিতো বিহুগো যত্র স উষিতবিহুগঃ
উচ্চৈমু খং নী চৈমু খন্ অস্তিক্ষীরা নাস্তিদোষঃ অস্তিনাস্তীভ্যব্যয়ন্।
সঙ্গতং সংপ্রাপ্তমশনং যশ্বিদ কালে স সমশনঃ কালঃ।

১২৫। শমস্তদ্যাদমস্তেন নিত্যাপেকেণ দঙ্গতিঃ।

দেব কথম। উচাতে। ব্যধিকরণানাং বছরীহোঁ ক্লুতে বিবিক্ষিত্যার্থভানধিগমাং। অভিধানগম্যা হি ক্লুফিত্সমাসা ভবজ্ব। ন হি
পঞ্জিভুক্তমদ্যেতি বাক্যে বাহর্থ: প্রভারতে স পঞ্চভুক্তশন্ধাং।
অতএব সপ্তভুক্তবস্থোহন্ত সপ্তভুক্তবস্থোহন্মাদিতাত্র সামানাধিকরণ্যেহিপি
ন সমাস:। প্রথমান্তপদার্থে চানভিধানার জবতি। ন হি রুপ্তে দেবে যো
গত ইতি বাক্যে যোহর্থ: প্রতীরতে স বৃষ্টদেবশদাং। নির্দ্ধিকরাম ইত্যাদীনি তৃতীরাদিপঞ্চরিভক্তীনাং ক্রুমেণোদাহরণানি জ্যোনি। উট্চেমুপ্রমিত্যাদৌ অব্যয়েনাপি সামানাধিকরণামভাপগন্ধবাম্। অথবা উঠিতঃশন্ধাদীনামসন্থবিচিন্নাং মুখ্যকেন রহ সামানাধিকরণায়ভাবেহিপি সমক্ত্রিং
সমাস:। বন্ধ নামাধিকারাং ক্রমন্তি নাজীতানেন তিপ্তস্তেন সহ সমাস
ইতি চৌল্লং ক্লুদি নিধারাহ অন্তি নাজীতারারমিতি তিপ্তপ্রতিরপকাণ্যব্যরানি সন্তোব। সমশন ইত্যুত্ত সন্ধতার্থঃ সংশ্বোহবিদ্যান্ত্রা
সরপ্রতীত্যুত্ত সর্কাং গুক্রেঃ বহাঃ সা স্ক্রিক্রা স্ক্রা সংস্প্রেহিতিশ্বভক্তা
ইত্যর্থ:। বন্ধ বথা তৎপুক্রাদিসংজ্ঞা সহ সমাসসংজ্ঞারাঃ সমাবেশ উক্তঃ
তথা বহুবীহিসংজ্ঞানি কর্মধারয়সংজ্ঞারাঃ সমাবেশঃ ক্রার ভব্তি

রাজ্ঞা দত্তধনঃ দত্তক্রিয়য়া নিজ্ঞাং দাতাগেক্ষতে দাতা চাত্র রাজা।।
১২৬। পূর্ববার্থসম্বান্ধান্তরপদবিশেষণস্য স্থিতাদে-

লে পিঃ।

কঠে স্থিতঃ কালো যস্য স: কঠেকালঃ উদ্ভুমুখমিব মুখং বস্য স উদ্ভুমুখঃ শান্ত্ৰভক্তনমেব ধনঃ বস্য স শাক্তধনঃ কেশসমূহক্তৃ ভা যস্য

উভয়োরপি বিশেষণবিশেষাত্বে বিধানাৎ। এবং সতি চিত্রগুদে বদন্ত ইত্যত্র গৌরভদ্ধিতপুকীতি রাজাদিখাট্ট: স্থাৎ। নৈবং বাচ্যম্। ভাবে হি সমাবেশ:। তথাহি তৎপুরুষমংজ্ঞাব্যতিরিক্তসমাসসংজ্ঞায়া বিষয়ো নাস্টীতি সমাবেশো যুক্তাত এব বছত্রীহিকর্মধারয়য়োস্ত স্পষ্ট, এব বিষয-বিভাগ:। ধত্র বিশেষণবিশেষ্যছেইন্য পদার্থ প্রধানতা স বছব্রীহে বিষয়:। যত্র তু বিশেষণবিশেষাত্বে উত্তরপদার্থপ্রধানতং স কর্মধারব-ভেতি। বসু রাজ্ঞা দত্তং ধনমন্মৈ ইতি দত্তধন ইত্যত্র সমাদে গুণীভূত-স্তান্তপদার্থে বর্ত্তমানস্ত দত্তশব্দস্য কথং রাক্ষেত্যনেন সহ পঙ্গতিঃ সম্বন্ধো ভবন্বিতি চোঞ্চং হাদি নিধার সিদ্ধান্তমাহ সমস্তব্যেত্যাদি। নিত্যাপেক্ষতা চ কারকাণাং ক্রিয়াপেক্ষয়। যতঃ ক্রিয়ন্না নিতাং কারকাণ্যপেক্যস্তে। স্বাধিশকানাক স্বাদ্ধান্তরাপেক্ষয়। তথা রাজ্ঞা দত্তধন ইত্যত্র দানক্রিয়য়। নিত্যং দাতা তৎ ক্রিয়াকারকমপেক্ষতে। এবং মুদ্দারত প্রহারেণ রথাৎ পতিত্যার্থিরিত্যাদৌ সংগতিদ্র প্রবা। মমেয়ং ভ্রাক্তন্তারা মমেদং দাসধন-মিত্যাদৌ ভ্রান্তুদাদাদিন্তির্নি তাং সম্বদ্ধান্তরমণেক্যতে। অহাত তু নিত্যা-পেক্ষতা নান্তীতি সমত্তের সংগত্যভাব:। পাটলিপুত্রগু রাজপুরুষ ইত্যাদৌ ৰ ভবতি ন হি রাজপদেন নিতাং পাটলিপুত্রস্যেতাপেক্ষতে। নিতাসাপেক্ষেত্রপর্যাভিধানশক্তেঃ সভাবসিদ্ধর্যাৎ । ত্যানত অক্সত্ৰ ভক্তাসম্ভবাৎ।

(>२७)। পূর্বার্থসম্বদ্ধ তৎ উদ্ভরপদবিশেষণঞ্চেত পূর্বার্থসম্বদ্ধোত্তরপদবিশেষণং তেন্ত হিতাদেশে পা ভবতি। সমাসং সিদ্ধ এব লোপার্থদ্ধ
ব্যানম্। কর্মেন্থিত ইন্ধি মধ্যমীভংগুরুষঃ তৎপুরুষে ক্লক্তি বহুলমিতালুক্।

म (कान्यूक्यः स्वर्विकारताक्ष्मकारता कम्म म न्यूवर्गानकातः छल-महिका हुका यमा म इक्काह्यः ।

-১২৭। প্রাদেং কুদন্তস্য বা। প্রপতিতং পত্রং ষক্ষাৎ স প্রপত্রঃ প্রপতিতপত্রো বা।

১২৮। নজোহস্ত্যর্থানাঞ্চ। অবিদ্যমান: পুজো বস্ত মোহপুজ্ঞ: অবিদ্যমানপুজো বা।

১২৯। তৎপুরুষাদে সংস্তাদেনি ত্রম্।

দগ্গ সংস্ত ওদনঃ দধ্যোদনঃ শাকপ্রধানশ্চাসে পার্থবশেচভি
শাকপার্থবঃ।

কঠে ছিতঃ কালো বদ্যেতি স কঠেকালঃ। পূর্বার্থসম্বন্ধাইত্র ছিতলবঃ উত্তরপদস্ত কাললক্ষ্প বিশেষবৈকদেশভাদ্বিশেষণম্। এবমপ্রোদাহবনেদ্রবাপ্রবামিতি। এবং চক্রস্কুলুলং মুখং যন্তাঃ সা চক্রম্বী
পল্মদূলং মুখং বক্তাঃ সা পল্লম্খী ইন্স্নহিতা চূড়া বক্স স ইন্স্তঃ
ইন্স্পেথরঃ। ছিতাদেবিজ্যনেন প্রতিনিম্নতবিষয়তা অক্যোক্তা তেন
যদ্যপি পূর্কপদমিহ নির্বিশেষণমুক্তং তথাপি সপ্তম্যস্তমুপ্রানং সমূহদম্বিবিকারসক্ষ্যের গ্রাহ্মিতি স্বাক্রৈয়র্হ্লাহ্রণঃ স্চিত্ম্। অত্যক্ষ
লম্বকর্ণপুত্রঃ রাজহৃহিত্তার্য্য ইত্যাদে। ন কর্ণদিপদ্লোপঃ।

(১২৭)। উপদর্গাহন্তবক্ত ক্রমন্ত পূর্বার্থসম্বনোন্তরপদবিশেষণক্ত লোপো বা ভবতি। প্রপতিতং পত্রং যশাদিতি প্রাণন্তেন সম্বন্ধক্ত ক্রদন্তক্ত পত্রিত্রশক্ষক্ত উত্তবপদবিশেষণক্ত লোপঃ।

(১২৮,। নঞ উত্তরেষাং জন্তার্থানাঞ্চ পূর্কার্থনসভোত্তরপদ-বিশেষণানাং লোপো বা ভবতি।

(১২৯)। নিত্যগ্রহণং বারুবৃত্তিশঙ্কানিবাসার্থন্। তৎপুরুষানৌ সমাসে পূর্বার্থসফরোজরপদবিশেষণক্ত সংস্কৃতাদের্লোগে। নিতাং ভবতি। দধ্যোদন ইতি ভক্ষেণ সংস্কারভেতি তৎপুরুষ:। শাকণার্থব ইতি মন্ত্র্বাংসকাদরশ্চেতি কর্ম্বার্য়ঃ। বস্তবহুত্রীহিবর্ত্মং পদবহুতে চেডি প্রতিষ্কেন দর্যা সংস্কৃত ওদন ইতাত্ত তিপ্দত্বাৎ অপ্রান্থাহিশি তংগপ্রবিষ্কানের লোপবিধানসাম্বার্ণাৎ স্বানীরঃ। ক্ষাব্য ন্যাস ইতি

- ১৩০। দিছাধ্যনাদ্ধি পূর্বাদে: প্রথমাক্তপদার্থঃ।
 পূর্ববিভাগ্য দক্ষিণস্যান্ত দিশোর্মধ্যা বা দিক্ তা পূর্ববিদ্যাণ।
 পূর্ববাদেরিতি কিন্ ? ঐক্ত্যান্ড কোবের্য্যান্ড দিশোর্মধ্যা বা দিক্।
- ১৩১। ভৃতীয়াসপ্তম্যন্তয়োঃ সরূপুয়োধু দ্ধে জিয়া-ব্যতীহারে।

দত্তৈশ্চ দত্তিশ্চ প্রস্নত্য ইদং যুদ্ধং বৃত্তং দণ্ডাদণ্ডি কেশের্ চ কেশের্ চ গৃহীতা আক্রয় বা ইদং যুদ্ধং বৃত্তং কেশাকেশি। অসরপয়োস্তা। হলৈশ্চ মুবলৈশ্চ প্রস্নতা ইদং যুদ্ধং বৃত্তম্।

রিবর্গপ্রমী সমাস্বিবর্জাং সমাস্বিধানাৎ প্রাগেব লোপঃ কর্মীরঃ। ততো দিপদে সমাসঃ। লুগুপদার্থাবগতিস্ক সনাসে লোপ-বিধানসামর্থ্যাদেব।

- (১৩০)। পূর্কাদেরিতানেন পূর্কা দক্ষিণা পশ্চিমা উত্তরা ইত্যেতে শক্ষা গৃহু:স্ত নতু যৌগিকা ঐস্থাদর:। দিশোর্মধ্যং দিম্বধ্যং তন্নারি বাচ্যে পূর্কাদের স্থাহিত্বিতি। ষ চ প্রথমান্তপদার্থঃ। দিম্বধ্যনামীতি কিম্ পূর্কস্থান্ড দক্ষিণস্থান্ড দিশোর্মধ্যা ভূমি:।
- (১৩১)। তুলীরাজয়ো: সপ্তমাজয়ো: সমানয়পরো: পদরোর্ছে বাচ্যে ক্রিরারটারে গমামানে বহুবীহির্জবিত। দক্তৈশত দক্তিশত ইজাক্র পরম্পবপ্রহবণাদিরপ: ক্রিরাবারটাহার:। তৎক্রিরাসাধনছেন করণে তৃতীরা। কেশের চ কেশের চ ইতাক্র পরম্পরগাহণাদিরপ: ক্রিরাবারটাহার:। তৎক্রিরাবারজেন সপ্তমী। দণ্ডাদণ্ডীত্যাদৌ ইচ্কিরাবারটাহারে ইতি ইচ্ কচিদপ্রবাণীতি পূর্দপদে দীর্ঘ:। তির্দ্ধাদিয়াদবারীলাবে অব্যরীলাবে চানত ইতি বিক্তিপুত্। মুদ্ধমিত্যক্রং কর্ম। কর্তুছে হি ভিন্নকর্তৃক্তাৎ জ্বান স্থাৎ। অগমক্তাৎ কর্জুজ্বীরাজয়োর্ল কর্বতি সমাস:। ক্রিরেণ চ ক্রেরেণে চ ক্রেরেণ চ ক্রেরেণ চ প্রস্ক্রেরেণ হ প্রস্ক্রেরেণ চ প্রস্করেণ হ রূপে হি ভিন্নকর্তৃক্রারের চন ভবতি। রথে চ রথে চ

>७२। ए श्रीप्रांट्सन महना जूनात्वादन ।

পুত্রেণ সহাগতঃ সপুত্র: । অত্রাগমনমূত্রোজ্বলাম্। অত্লা-বোগে তু— সহৈব দশভিঃ পুত্রেভারং বহুতি গর্দভা। বিদ্যমানেষু দশস্থ পুত্রেবিভার্থঃ। বিদ্যমানী পক্ষাবস্ত সপক্ষঃ সধর্ম্মা সলোমকঃ সদর্পঃ সকর্মকঃ সমদ ইজাদে বস্তপদার্থে বহুবীহিরিভি সমাসঃ।

১৩০। সংখ্যের্ত্তিসংখ্যয়াব্যয়াসন্নাদুরাধিকসংখ্যা-নাম্।

नमीत्र प्रमानाभित्य উপप्रमाः छेशविः माः खानन्ना प्रमानाभित्य चानन्नप्रमाः चमृत्र प्रमानाभित्य चमृत्रप्रमाः चिथका प्रमानाभित्य

ছিছা ইদং বৃদ্ধং বৃত্তম্। যুদ্ধ ইতি কিম্ ? হত্তে চ হতে চ গৃছীত্বা ইদং স্থাম।

(১৩২)। সহলক্ষাবারসায়করণিবিদ্য। তুলাবোগে বর্ত্তরানগ্রন্থ সহলক্ষ্য তৃতীয়াজেন সহ বছত্রীহির্ত্তবিত। তুলাবোগঃ সমানস্বত্ধঃ সোহর সহলক্ষন দ্যোতিতঃ অতএবাহ অত্যাগ্যমনমুভয়োগ্রলাসিতি। পুরেণ সহাগত ইতি ক্রিয়াদিগোণাৎ সহাবৈত্রিতি তৃতীয়া। সহঃ সো বেতি সহলক্ষ্য সঃ। যদি তুল্যযোগে বর্ত্তমানগ্র সহলক্ষ্য সমাসঃ তথা কথং সপক্ষ ইত্যাদৌ সহলক্ষ্যাত্র বিদ্যমানার্বহাৎ অত আহ অঞ্চলদর্থো বহুত্রীহিরিতি সমাস ইতি। এতেনৈতৎ প্রতিশাদিতং জনেন সমাসো না তৃৎ। প্রান্তরেণ তৃ প্রাপ্তঃ সমাসঃ কেন নিরাক্ষরনীয়ঃ য় খৎ পুনর্জয়া-দিত্যেনোজং প্রান্নিক্ষতৎ তুল্যবোগ ইতি বিশেষণং অঞ্জ্ঞাণি সমাসো লগ্রুত ইতি তদ্বিন্ সিদ্ধান্তেহসজোবো ঘর্লিতঃ। অন্যান্তর সহং সামানা-ধিকরণাং প্রাণ্ডের দর্শিত্ত। সমর্গ্রেতি অক্তলমাসাক্ষরাম্বাদিমিত্যন্।

(১৩০)। সংখ্যেরন্তিসংখারা সহ অব্যানাং আসর অদ্র অধিক ইত্যেতেবাং সংখ্যাবাচিনাক বছত্রীহির্তবন্তি। উপদশা ইতি উপদশঃ সমীপবাচী অভএবাহ সমীপে ক্পানামিষে ইতি তে চ নব একাবন বা উচাবে। পূর্বপদার্থপ্রধানতা চাস্য বছত্রীহেন্দপি স্টিতা। কথং ভাই অব্যায়ীভাবের সূহাসা বিবর্বিভাগাঃ। স্থোহণি ক্রব্যরন্য সমীপে বর্জনাক্ষয় অধিকদশাং ছোঁ ৰা 'ত্ৰয়ো বা ৰিক্ৰা: ত্ৰিচতুবা: পঞ্চৰা: । অসংখ্যেয়বৃত্তিসংখ্যয়া ভু অধিকা ৰিংশতিৰ্গবাস্।

১১৪। উভয়ো: প্রাপ্তাবিষ্টস্ত।

নাগযুৰতিঃ বৃদারকযুৰতিঃ তুল্যসন্ তুল্যমহান্ ভ্জাসন্ ভৃত্যমহান্। নাখেয়ঃ সান্রোছপ্যস্তস্ত সদ্ভ্ত্যশালিন

পূর্ব্বপদার্থপ্রধানে এব বিধীয়তে। অত্যোচ্যতে। যদা সমীপিপ্রাধান্তঃ তলা বছবীছি:। যদা সামীপ্যপ্রাধান্তং তদা অব্যয়ীভাব: ইভ্যেব বিষয়-পূজার্থস্থতিবর্জ্জমব্যরাসগ্নাদিপূর্ব্বসংখ্যেরবৃত্ত্যবছগণসংখ্যায়া ইন্ডি ডঃ জিতি স্বৰভচ্ছেবলোনু গিতি অন্পূক্। উপবিংশা ইভি তেশ্চ বিংশভের্ডিতীতি ভিলুক্। আসমদশাঃ অদ্রদশা ইতি তে চ নব একা-দশ বা বোদ্ধব্যা:। অধিকদশা ইতি একাদশ উচ্যন্তে এতাবনাত্রেণৈবা-विकर्णेत निकार कालभागानिकार कार्याभागाना वा वा वा वा वा विक्रा देखि हार्ल सहर्थ ध्वराहर नमामा च्छावाद र बार्यक नगनरका न दिकद्वार्थः। विष विक्कार्थ वा हेर आश्रीवर् जना को छवजः छना बक्रवहमः म नार जन्नार मः नाया वार्यः मः नामा वार्यः वहवहमः जवि । বণা কভি ভৰত: পুঞা ইত্যুক্তঞ্ ভাষ্যে অবিজ্ঞাতেংর্থে বছৰচন: প্রয়োক্তবামিতি। তৎ কথম্ ? উচ্যতে। সংশর্জানস্যোত্রপক্ষণরা भर्मत्यम वह्नवहनविवस्याः । मञ्जू यपि बार्व्यक्षः ममानः छवा अञ्चनवार्य-चार भूटकरेनव निधाकि। देनकः बाह्यम्। विजीवानाक्यभवादर्भ भूटकरेनव गमामः थावमाज्ञभवाधीमवः तहमम्। विका विकि भूक्तिर एः। बिक्क्ता ইতি চভুর:স্কৃত্তিন ঞ্বুগাদিভাং। অধিক। বিংশতির্থবামিতি বিংশতি-मास्मारुज मश्यास्य वर्षत्य मञ् मश्यास खर्या।

(১৯৪)। উভরো: প্রাপ্তৌ সভ্যাং ইউস্য বিধির্তবভি। মাগার্বভি:
'খুন্দারকর্বজিবিভাত বুন্দারকনাগক্ষরেঃ পূজামানস্তোনের পোটাদিভির্মান্তরিভানেন চ কর্মধাররপ্রাপ্তৌ ইউস্য নান ইভাসা কুনাক্ষ ইভাসা
চ পদান্তরেশ সহ সমান্য। তুলাসন্ ভুলাসহাদ্ ইভাত ভ্রুতাসন্
ভূকামহান্' ইভাতে চ সমানীনাং পূজামানৈরিভানেন ক্লজা-

ইত্যত্র ভট্টো সংশ্চাসোঁ ভৃত্যশালী চেভি সমাসঃ। পুরাণৈকঃ দীরৈকঃ। স্বপদেকবীর ইত্যসাধুঃ। রীরপুরুষকো গ্রাম ইত্যাদি।

১৩৫। নাগমকছে।

পাশ্য দেবদত্ত কট্টং গ্রিতো বিষ্ণুমিত্রো গুরুকুলং গচ্ছ গৃহাত্তয়ং

ইন্ডানেন চ কর্মধারয়প্রাপ্টো ইপ্তয়োম্বল্যভূত্তা-কুল্যার্থবোরনাভ্যা শব্দরো: পরাস্তরেণ সহ ^{*}সমাস:। সংশ্চাসো ভূত্যশালী চেতি স্মাস हेि এट्टरेनड९ প্র'ডপাদিডং নাত্রোভয়োঃ প্রাপ্তি:। কিন্তু সদাদীনাং शृक्षामारिन त्रिकारेक्यावर विवष्तः। প্রাণৈকং বীরেক ইতার একাদীনা-ক্ষেত্যনেন ইপ্তস্ত প্ৰাণশক্ষ বীরশক্ষ চ একশক্ষেন সহ সমাসঃ। নছেক-শক্ত বীরপুরাণাভ্যাম্। এতেনাত্র পূর্মনিপাতানিয়মো নৃভবতি উক্তো-দাহরণাভ্যানেতৎ হুচিত্তম্। একাদিগণপঠিতানামন্তোহন্তসমাসে পূর্বপঠিতা-ছত্তরপঠিতলৈয়ৰ পূর্ব্বনিপাতঃ তেন পূর্ব্ব জবন্ মধ্যম নৰ ইত্যাদয়:। ননু-ভন্মপ্রাপ্তৌ পরদ্যৈব কন্মার কৃতং পোটানিভিজ ভেবিতাভ কুতাতুলার্থনাব-জাত্যা ইত্যস্য চ পর্যাদেব বিধানং ভবিষাতি। একাদীনামপি গণপঠিত-ক্রমেণ প্রবস্থ বিদ্যাত এব। নৈবং বাচ্যায়। এবং সতি স্বাহতিব প্র-विधानवावश्वता शामास्रत्व वित्वांधः छाए। मन् बगानतेमव शामास्रत्वरूणि ব্যবস্থা তলা অপেক্ষিতবিধেৰনপেক্ষিতবিধান ছব্লমিভ্যনেন সহাস্য কো বিষয়বিভাগঃ ? সত্যা নান্তি তস্যা এব পবিভাষায়াঃ প্রপঞ্চোহযমলুবাদরূপঃ। বীবপুস্বকো গ্রাম ইত্যাদীনি এতেনৈতৎ প্রতিপাদিতং কর্মধাররসমাদে ষদ্য পূর্ব্বনিপাভনিরমো দৃষ্টক্তদ্যৈর বছব্রীহাবপি ইষ্ট:। তেন বীবশক্ত একানৌ পাঠাং পূর্বনিপাতো নিয়ত তথৈব বছব্রীহান্নপি ভবতীতি ক্রবিশে-ৰণে ইত্যাদিনা বীরশক্ত যথা পূর্মনিপাতো ন প্রাণ্ডোতি তৎ ভটেত্রব বাাথাাসাামঃ।

(১৩৫)। পূর্মশ্বৈর্ধ: সমাসো বিহিতঃ সোহগমকত্বে ম ভবতি।
সর্বে বামেৰ পদানাং স্বার্থাববোধনে গমক্বমন্তি ভঙ্গাবিশেষো বৈদিতবঃ
বাক্যসার্থার্থ গমরতি বোধরতীতি গমকঃ। কটা প্রিত ইত্যাদিবাক্যে
বোহর্যা: প্রতীয়তে স এব কট্টপ্রিত ইত্যাদি 'সমাসেহপীতি ক্মক্ত্মশৃ। ম্ব গমাকাহগমকঃ বাক্যার্যবোধনায় অসমর্থ ইত্যর্থা। প্রস্তু বের্দ্বন্ত ক্রি- পোষদন্তত যজ্ঞদতাৎ ভার্মা রাজ্ঞ পুরুষো দেবদন্তত রাজ্ঞো বাজ্ঞাং বা পুরুষঃ। মহৎ কন্টং জ্রিভঃ উপদ্রিশিয়সঃ পুরোরামত।

১০৬। ছন্দ্রবছ্ত্রীহিবজার পদবছ্জে চ। রাজ্ঞা গো: ক্ষীরং রাজ্ঞে মৌশ্চারণ্ট পুকরশ্ভেত্যাদি। পঞ্চ ব্রাক্ষণা ভূকেবস্তোহক্ত পঞ্জিভূ ক্রিয়াসভ্যাদি ন ভ্রতানভিধানাৎ।

মিভ্যেকং বাক্যং প্রিতো বিষ্ণুমিত্রো গুরুকুলমিতি দিভীন্নম। অত্র দিতীয়ারা গভালোরিতি তৎপুক্ষো ন ভবতি অগমকত্বাৎ। বত্ত ছি সমস্তমানয়োঃ পদরোঃ পরস্পরব্যপেকালকণঃ স্থন্ধে বিদ্যতে ভবৈত্ব গমকত্বম্। যত্র পুনৰ ক্যিভেমাং প্ৰস্পুৰ্বাপেকালকণসম্বদ্ধা নান্তি ভজাগ্ৰকত্বন্। সমাসে তু দতি একার্থীভাবলক্ষণঃ সম্বন্ধঃ ভদ্বিবেচনন্ত পরম্পরবাপেক্ষারাং বিদ্যত এব রাজ্যে রাজ্ঞাং বা পুরুষ ইত্যত্ত বাক্যে বোহর্থোহবগম্যতে নাসৌ রাজপুক্ষণকাং। সমাসে দণ্ডি দ্বিচনবছবচনদ্বোরনধিগমাং অতোহত্ত সভাপি সমস্যমানয়ো: প্ৰস্পবন্যপেক্ষালকণস্থৰে বাক্যাৰ্থবোধনাসম্বৰ্ সমাদঃ। মহৎ কটা প্রিত ইতাত্র কপ্রপদেন প্রিতপদেন চ পরস্পরব্যপেকা नकनः मश्राक्षा विकाल এव । किन्न जरमाः ममारम मि मह १ करेम महान বলেষণবিলেষাভাপ্রতীতেবগমকত্বম। এবং ছতীয়াতৎপুরুষাদাবপি বৌদ্ধ-ব্যম্। উপরিশিরস ইতি সামীপ্যাৰিবক্ষয়া উপর্যধোধয়ঃ সামীপ্যে ইতি ন বিক্ষক্তিঃ। প্ৰোৱামন্তেতি প্ৰোবামন্য জুহ্বাঞ্কাব জননে বপুঃ। শব-ভঙ্গঃ প্রদিপ্তাবাৎ স্থতীকুমুনিকেতনমিতি ভট্টিগ্লোকৈকদেশঃ প্রমাণছেন ন্ধৰ্মিতঃ। সত্ৰাপি প্রস্পাববাপেকালকণসম্বন্ধে বভাবাদেব বাক্যার্থবাধনা-সম্ভত্তেলাগ্ৰকতাৎ ল ষ্ঠাস্বাস: তলাধা ক্যাৰ্থবাধকৰ্মেব গ্ৰকতং স্বাস-কারণমিত্যবগন্তবাম।

(১৩৬)। ধন্দসমাসং বছরীহিসমাসঞ্চ বন্ধ রিম্বা পদবছম্বে সমাসো ন ভবতি। রাজ্যে পো: ক্ষীরমিতাত্র বন্ধীতংপুরুষো ন ভবতি। বদি ভাৎ তথা রাজনোক্ষীরমিতি গুলং গৌরভদ্বিতপুকীতি সমাসাভাগ্রাখে:। ক্ষমা হু রাজ্যে গৌরিতি প্রথমং স্থাসং ক্ষমা ভঙ্গাঃ ক্ষীরমিতি পুনঃ বজী- ১৩৪। সুক্ স্পোহনোজকীদে:।

সমাসে সভি ওলংপ্রভৃতেকীদিং বজ য়িহা স্থাে পুগ্ভবিভ।

পূর্ববিকায়ঃ নীলোহপলম্। অনোজকীদেশিভি কিম্প ওলসা
ক্তমিত্যাদি।

১৩৮। ওজ্ঞাহোহস্কল্ডেনাম্প্রদামন্তরপদভূতানাম-লুক্ ভৃতীয়ায়াঃ।

ন্দমাগঃ ক্রিয়তে তলা রাজগবীকীব মতি ভর্বতি। এবং মহচ্চ তৎ নীলক তৎ উৎপলক্ষেতি পটী, চাসৌ শ্রামা চাসৌ কছকা চেভি পদবহুৰে ম ভবতি কর্মারয়ঃ। যদি ভাৎ তদা সমানাধিকবণোভরপদে চেভি মহতক্ত লোগঃ আর্ঞ ম দ্যাৎ উক্তপুজানুষীপুরেৎ ক্রিয়ামিতি পটী,শবস্য পুরু তাবো ম দ্যাৎ উত্তরপদপর্যভাবাং। সমাসে পর্বাপ্তপদম্ভরপদম্চ্যতে যদা ভূ কর্মধারয়ঃ ক্রদা পুনং কর্মধারয়ঃ তদা মহানীলোৎপলং পটুশ্রামক্রতেতি বিপদ এব সমাসঃ। রাজ্যো গোলেজ্যাদি পঞ্চিভূ ক্রমজেত্যাদি নির্বাপনীয়ম্।

(২০৭ । অর্থনক তিবিরোধদর্শনাৎ সমাস ইতি বিভক্তি বিপরিণামাৎ
 নপ্রমান্ত নির্মিত । সমাসে সঁতি তৎস্বা সংশো দৃগ্ভবতীতার্থ:।
 প্রকার ইতি সমাসে সতি তদস্তত্তিয়াঃ স্বভ্নোঃ স্থায়াং তরিমিত্র । কারপুকর ইত্যালী বিভক্তৌ বৃপ্তায়াং তরিমিত সঃ কার্য স্যাপ্যপারে প্নরপি রাজনিভ্যসাবস্থিতি:। ওক্টালীন্ বির্ণোতি।

(১:৮)। অনুতরপরত্তানামিতাপুঁগতি চ প্রাক্ বণ্ঠাা স্থিতিমিতাতঃ প্রাগন্ধতি । ওজন মহম্ অন্তন্ তমন্ অরুন্ ইত্যেভেবামমুভরপদভূতানা তৃতীয়ায়া অনুগ্ভরতি । ওজনাক্তমিতালৌ কৃতাকর্জ্করণরোর্ব্রলমিতি তংপ্রকা । ওজনাক্তমিতালা সমানেনৈকপদ্যে শতি ওজনাক্তপুত্র ইত্যার পূবঃ বতীনমানঃ ভঙ্তিতোহনি ভবতি । ভক্তনাক্তলা ইনং
উজনাক্তং ওজলাদেরিত্যাদিশদেন চাসমানক্রণনা একবচননৈত্র গ্রহণং ন
বির্দ্দনবৃহ্বচন্দোরতাতি অনুধিব্যেকেব্যুলনৈত্র সমান ইতি ভাষাম্ ।
ভত্তে প্রাচার্থা বয়বি অন্তিথানাৎ বিব্যুলবৃহ্বচন্দ্রোঃ সমান গ্রহ

ওজসাকৃতং ওজসাকৃতপুত্র: সহসাভুক্তং অন্তসার তং তমসালি-হিতং শঞ্জমানিস্পাদিতম্। ভপস ইতি চাক্রাঃ। তপসাকৃতম্। উত্তরপদভূতানাস্ত্র — মহোজঃকৃতং অত্যোজঃকৃতম্। ভথাচ ভারবিঃ —সত্তনৈশতমোবৃত্তমন্ত ইতি।

~

ভবিতি। यठः मृतात्म वित्ययग्यमानि এकानिमःथाः विराम प्राटनमःथाः व्यक्तिभगुरस्य । त्रा भूनः मःशानमाज्यसूभाखमःशावित्यसः मामान्यः कथन्निष्ठ শ্বধা সম্ভদ্যে শুক্লানিভেদরহিতং দ্মপমাত্রং প্রকাশতে। প্রকবণাদিভিরবগত-রোস্ত দ্বিচনবহুবচনয়োবপি সমাসো ভবত্যেব। অনুক্ পুনরেকবচনস্যৈর ভন্মতে দ্বিচনবহুৰচনয়োস্তমোর ভমি ভাাদি ভবত্যের। যে তু বছ স্বাবাভিচা-রিণপ্তেষাং বছবচনদামর্থ্যাদপ্দ্রোনিরিজ্যানৌ সমাদোহলুক্ চ ভবতি। নিত্য-মামো দেবগা প্রির ইতাত্র আনু এবোপাত্ত ইতি তস্য সমাগেহলুক্ চ যুক্ত এব। তপদ ইতি চাক্রা ইতি। তে হি তমদঃ স্থানে তপদ ইতি পঠিষ্টি। ষ্ডু ভি: প্রকারেঃ সন্তারামনুপদারিভ্⊲তি। অভিগ্রিকর্ষাৎ অতিবি-क्षकर्वा९ देखियरमोर्वन्ताः ज्यमावृद्धाः मृद्या प्रक्षांनाः मनुनदास्क्रि ভাবোংতিস্রিক্র্বাদিত্যাদি একপদোপাত্তহেতু প্রকরণে তমসারত বাদিতাসা দর্শনাং। তপ:রশামভাগপত্তিমৈছেং তপ:রূপতরেরকৈবি ।াদি মহাকবি-লোকাত চাক্রাণাং মতমদংগতমেব প্রতিভাতি। মহৌঞঃরুতমিতি মহৌঞ हेजातो अवःभत्तः। तेनगठम हेठाउ जमःभन्नत्काखत्रवनकृष हेि नृत्-ভবত্যের। তথাচ, উদন্তদন্ত:পরিবীতমূর্তিরিতি মাঘ:। অক্তে ত্বেবং ন সমর্থরত্তে বতো বেন বিধিন্ত বস্তুদ্যেতি অত্র ভাষো উক্তং পদাঙ্গাধিকারে ত্তম্য তত্ত্তরপদস্য চেতি চন্মতে মহৌজসাক্তমিতি ভবতি। সততনৈশ-্ভনোবৃতং বর্ত্তমানং বশ্বিদ্ধিতি বছবীহিণা তু সততনৈশতমোবৃতমিতি সাধ্য-মিতি রক্ষিত:। বৃতমিতি ইজুপান্ত ইত্যাদিন। অং। অন্মিশ্বতে স্ত্রার্থো-स्ताथा चारियातः। यत्रिन् नमारमध्नुशियात जित्रात्राम्खन्मकृष्ठामा-ব্মাজ: প্রভূতীনাং ভূতীয়ায়া অনুগ্ভরতি ভেনাত্র লুগের ভরতি। সহ ক্তমনা বৰ্ততে সতম: অস্ত্ৰো তু তমোভিত্ৰতং তমোগুতমিতি নিৰাপ্তমন্তি।

১৩৯। পুংজমুষোরমুজান্ধয়ে। পুংসামুজ: জমুধানঃ।

় ১৪০। মনসো নামি। মনসাদেবী মনসাগুপ্তা মনসাসঙ্গতা

১৪১। আ জায়িনি চ। মনসাজ্ঞাতুং শীলমক্ত মৰসাজ্ঞায়ী।

১৪২। আত্মনঃ পূরণে। আত্মনাষষ্ঠা। জনার্দ্দনশ্চাত্মচতুর্থ এবেত্যত্র তু আত্মা চতুর্থোছ-স্যেতি বছত্রীহিঃ।

- (.58°)। মনসত্তীরারাঃ সংজ্ঞারামলুগ্তবতি। মনসানেবীতি দিবঃ করণং যুগপৎ কর্ম চেতি কর্মসংজ্ঞারাং কর্মণো বড়িতি গট্। কর্পড়াৎ তৃতীরা। নামীতি কিন্? মনোদন্তা কক্স।
- (১৪১)। আজারিস্যতরপদে পরে মনসন্ত ভীয়ারা অনুগ্তবৃতি। অসংজ্ঞার্থমিনম্। শিন্ ভজ্ঞীনামৌ স্পীতি শিন্ তরিমিত্তোপপদক্ত চেভি সমাসঃ।
- (১৪২)। পৃষ্পেশ্ব বিহিতঃ প্রভারঃ পৃষ্পশব্দেন গৃহতে। স সংখ্যাবাচকেবেব বিহিত্তখাৎ আত্মন উদ্ধরে ন সন্তবভীতি তপজো গৃহতে। আত্মনত তীমানাঃ পৃৰণপ্রভানাজে পরে অপুগ্তবভি। আত্মনা বঠ ইতি বট্কতিপরেভার্ছিতি প্রপে থট্ মুট্বর্গাধিতাাধিনা পক্ষ ঠঃ হেতুচিছা-পোত্রাক্রিতি ভূতীয়া জন্মাধেবাস্থিয়ানাৎ স্যাসঃ। কৃষ্ণিয়াহ সমুক্ষে

⁽১০৯)। পুমদ্ জন্মদ্ ইভোড:রাজ্তীরারা অনুজান্ধরোঃ প্ররোর্বির । সংসাম্প ইতি অনু পশ্চাজ্ঞাতোহমূলঃ অন্ততাহিপি নৃশ্যত ইতি ডঃ পৃংসেতি অনুষিধানসামর্থাদের বঠার্মে তৃতীরা হেতৌ বা। প্রাংসং প্রক্রম্মান পংসো হেতুক্র্। বদা তু পুমানসমন্ত্রাভ ইতি তদা বিতীরারাদনাবিতি ডপ্রতারেন পুমন্ত্র ইতি তবতি। জন্মান ইতি অনুষ্ঠিত ক্রমান হৈতি ক্রমান হৈতি ক্রমান হৈতি ক্রমান হৈতি ক্রমান হৈতি ক্রমান ইতি রক্ষিতঃ।

১৪৩। ব্যাকরণাখ্যায়ামায়পরবাশ্চতুর্থ্যাঃ। আজুনেপদং আজুনেভাষঃ পরস্কৈপদং পরস্কৈভাষঃ। অভএব বচনাৎ প্রকৃতি- বিকৃত্যভাবেহপি সমাসং।

তৃতীয়াপ্যপৃথিধানাদেব। আত্মা চতুর্বোহস্তেতি বছব্রীহিরিতি। নবন্ধ-পদার্বৌ বছব্রীহিরিত্যচাতে অন্যপনার্থক সমস্তমানেজ্যোহতিরিজ্ঞো তবতি বথা চিত্র ভঃ ন চেহ ব্যতিরিজ্ঞাক্তঃ কশ্চিদর্থোহন্তি নৈবদোবঃ অব্যতি-রিক্তার্থেহপ্যন্যপদার্থতঃ ভবতি ব্যপদেশ্রবাপদেশিবস্তাবাৎ। বথা শোভন-শরীরঃ শিলাপুদ্রক ইতি।

(১৪৩)। আখ্যা সংজ্ঞা ব্যাকরণে ব্যবস্থিয়মাণা আখ্যা ব্যাকরণাখ্যা তন্তাং গম্যমানায়াং আয়্রনঃ পরস্ত চ চতুর্থ্যা অলুগ্ভবতি। আয়্রনে-পদমিত্যাদৌ তদর্থাদিতি চতুর্থী। আয়্রনেপদং এবং পরশৈপদং লড়াদীনাং বিশেবে ইমে সংজ্ঞে আয়্রনেপদে ভাষা উক্তিরস্তোতি আয়্রনেভাষঃ এবং পরশৈশ্বায় পদশকলোপো নিপাতনাং । ধাতৃবিশেষাণামিমে সংজ্ঞে অতএব বচনাং প্রকৃতিবিক্নতাভাবেহপি সমাস ইতি। এতহচনং সামানাজ্ঞাপকং কর্মীয়ম্। তেন রন্ধনস্থানী অব্যাস ইত্যানৌ অর্মণি দ্বিতীয়সিদ্যাস্থ্যে ভবজি।

(১৪৪)। তোকমন্তিকং দ্রমর্থো যেবামিতি বছবীহিং রূঘা পশ্চাৎ রুচ্ছে, প সহ স্বস্থা। তোকার্থপ্ত অন্তিকার্থপ্ত দ্রার্থপ্ত রুচ্ছে, প সহ স্বস্থা। তোকার্থপ্ত অন্তিকার্থপ্ত দ্রার্থপ্ত ইতি ভোকাদে-ধর্মবাচিনং করণাদিতি পঞ্চমী। অন্তিকার্মুক্তঃ দ্রার্মুক্ত ইতি ধর্মবাচিন্দ্রনিকটার্থান্তাঃ সগুমী চ তদ্যুক্তাৎ ষ্ঠীপঞ্চমান্তি পঞ্চমী মুক্তাদ্যোঃ পঞ্চমা ইতি সমাসঃ। ভোকাদাগতঃ অন্তিকার্মিগতঃ দ্রান্দ্ ইঃ রুচ্ছার্ম ইত্যানারশি অভাদেবাস্থিধানাৎ সমাসঃ। এবঞ্চ সতি দ্রানীনাং পঞ্চমান্তানাং বেম কেনচিৎ জ্বান্তেন সহ সমাসেহসূগ্ ভবতীত্যস্থাবস্থা। ন্যাসকা-ব্রম ভোকাদপ্তঃ বৃদ্ধান্তিঃ ইত্যানারশাদাসপঞ্চম্যাঃ স্থাসেহসূগ্ ভবতী-

১৪৫। ব্রাহ্মণস্থ শংসিনি। ব্রাহ্মণাদ্গৃহীকা শংসজি ব্রাহ্মণাচহংগী ঋষিগ্রেদঃ। অভএব বচনাৎ সমাসঃ।

১৪৬। কেপে বর্ত্তাঃ। মাস্যা: পভিঃ চৌরস্য কুলম্।

> ४१। शूटन स।

मामाः भूकः मामीभूकः। व्यक्तः पू । विक्रभूकः।

১৪৮। বাগিদক্পশাতাং যুক্তিদগুহরেষু নিত্যম্। বাচোযুক্তিঃ দিশোদগুঃ পশাতোহরঃ।

জ্ঞাহ তনিহ ভাষাণদিথিরোধারাকী কতন্। ক্লচ্ছ্রলন্ধ ইতি তু ভূতীয়াসমাসেন। ক্ক ইতি কিনু ৪ কচ্ছ ভয়স্।

- (১৪৫)। ব্রাহ্মণশক্ত পঞ্চমাঃ শংসিনি পরেহনুগ্ভবতি। ব্রাহ্মণান্গৃহীতা শংস্তীতি গ্রাহ্মত ততোহপাদানসংজ্ঞা। বধা বলেনানরতীত্য-তৈবাকর্ষণাপেক্ষাং করণত্বন্। বাঞ্গো বেদৈকদেশঃ ভত উদ্বৃত্য শংসিতৃং শীলমস্যেতি পিন্ তচ্ছীলাদৌ স্পীতি পিন্ ব্রাহ্মণাচ্ছংশীতি ঋষিথিশেবজ্ঞ ক্ষড়িঃ। বলাংকাবাসহিষ্ণবো হি প্রজা ভবক্তীত্যাদি শিপ্তপ্রয়োগদর্শনাৎ বলাংকাব ইত্যত্র বচলাধিকারাদলুগ্ডেইব্যঃ। বলাদনৌচিত্যাৎ কর্মণং বলাৎকারঃ।
- (১৪৬)। কেপ আক্রোশ: অধিকেপ ইত্যনর্থান্তরম্। কেপে গম্মানে অমুত্তরপ্রভায়া: বঠ্য অনুগ্ ভবতি। স্বরূপ্থ্যানে তু ধার্মী-পতিরিত্যের ভবতি।
- (১৪৭)। পুরশব্দে পরে কেপে গমামানেংফ্তরপদভূতারাঃ বঁচা। অনুধা ভবতি।
- (১৪৮)। বাচ্ দিশ্ পশ্বং ইত্যেতেবাং বঠা বণাক্রমং বৃজ্জিদও-হরের পরের নিভামলৃগ্ভবভি। নিভামিতি কতং বাম্বৃত্তিশভানিরা-মার্ব। পশাভোহর ইতি পশুভোষ্টো হরতীতি অভঃ প্রথমে বঁটা তৎপুরবালো সংস্কৃতানেনিভামিতি অপ্রেপদলোপঃ অথবা বঁটা চানালুভে

>৪৯। अन्तरमा नायस्य। । आम्ब्रह्मस्याः।

>৫০। গকপরক্লপুক্তয়োঃ। শাম্যাকুলিকা আম্যাপুক্তিকা।

১৫১। শুনঃ শেষপুচ্ছলাঙ্গু নোক্স। শুনঃশেষঃ। শেষসীতি কেচিৎ। শুনঃশেকাঃ শুনঃপুচ্ছঃ শুনো-লাজ্লঃ।

ইতি বন্ধী পশুস্তমনাদৃত্য হরতীভার্থঃ। হর ইতি ক্ঞ্ হরণে হ প্রসঞ্করণে বা ইত্যন্ত্রাং জনাদেশ্চ পচাদেশ্চেতি বা ৬ঃ।

- (১৪৯)। অদশ্ ইতাস্য ষষ্ঠা। পারনে পবেংলুগ্ ভবতি। আম্যারণ ইতি অদসো ওস্ হল্লুক্ সর্কানার ইতি সলুক্ টাভিদ্ভেওসিওসামিনৈ-বারাংস্যা ইতি স্যাদেশ: ম: শেষে ইতি দস্য ম: অন্যসিদ্ধাবিত্যাদিনা অকারস্যোকার: ইচ্ ক্রাদিত্যাদিমা সূর্দ্ধন্য: অমুয়ে তাখাদিগণের পঠাতে। বন্ধান্তপাঠসামর্থ্যাৎ বিভক্তান্তাদেব অখাদেশারন ইতি গায়ন: প্রখ্যাত-পিতৃকোহভিধীরতে। নমু সমাসে বিভক্তিলুগুক্ত: কথমত্র প্রাপ্রোতি দ উচ্যতে। তস্য পৌল্রাদাবর্থে তদ্ধিতো বিহিত: তেনৈব সম্বদ্ধাাক্তবাং ষষ্ঠ্যা অপ্রয়েগ: স্যাৎ তদ্বাধনার্থমপুষিধানং নৈবং বদ্যক্ত পুক্ স্যাৎ ষষ্ঠ্য-স্বস্য গণে পাঠোহনর্থক: স্যাৎ অদসিত্যেব পঠাতে তত্মাৎ লক্ষণমেতৎ স্পষ্টার্থম্।
- (১৫০)। ণকঃ পরো ষমান্তবিষ্যতীতি ভাবার্থস্য ভূতবদলীকারাৎ শক্ষপর ইতি বিশেষণম্। পকপরে কুলশন্দে প্রেশন্দে চ পরেহদসঃ বন্ধ্যা অনুগ্ ভবতি। আমুযাকুলিকা আমুযাপুত্রিকেতি অমুযাকুলং অমুযা-পুত্র ইতি মনোজ্ঞানিগণে পঠাতে অমুযা কুলস্য অমুযাপুত্রস্য ভাব ইতার্থে মনোজ্ঞানেশ্চেতি গঝঃ আনৌ বৃদ্ধিঃ জ্রীষমস্য স্বভাবাৎ আতি ক্বতে অনিৎ-স্ক্রান্তব্রেকে ই।ত অকার্ম্য ইকারঃ। আমুয়াকুলিকা আমুয়াপুত্রিকা ইতি প্রেখ্যাতকুলতা প্রধ্যাতপিতৃক্তা চাভিধীয়তে।
- (১৫১)। শুনঃ ষ্ঠ্যাঃ শেকপুজ্লাসুলেরু সরেরু নারি অনুগ্-ভবতি। ন্যাদেঃ প ইঙি শীঙঃ পপ্রভারাতো বছলবচনাৎ ককারাকেশে গুণে ৪ ক্তে অকারাজোইরং শেকশকঃ। কেঁচিব্রবি প্রাদেরসিজাসি

३६२। निवम्ह मोटम। निर्वामानः।

১৫৩। ঋতঃ পূর্বোত্তরপদ্বিদ্যাযোনিসম্বন্ধবাচিছে। হোড়:শিষ্য: স্বস্থুপ্র: হোড়ুপুক্র: পিতৃরস্তেবাসী। অপূর্বপদ-বিদ্যাযোনিসম্বন্ধবার্চিছে তু। দাতৃপুক্র:। অমূত্তরপদ্বিদ্যাযোনি-সম্বন্ধবাচিছে তু। হোড়ধন্ম।

১৫৪। বা স্বস্পত্যো:। মাতৃষ্ণা মাতৃঃষ্ণা পিতৃষ্ণা পিতৃঃষ্ণা ছহিতৃপতি: ছহিতু:পতি:।

কতে বছলবচনাৎ শুণে কতে ফকারাগমে চ ষঃ শেফস্শব্দো ব্যুৎপাদিতঃ
ন এবান্মিন্ নির্দ্দোদিহ লুগুসকারঃ করণীয়ঃ। অতএব বৃত্তিরুগাহ শেফ-দীতি কেচিদিতি। শুনঃশেফ ইত্যাদি শ্বধীণাং নামত্রয়ন্।

- (> e २)। विदः मर्छा नाटम পরে নামি अनुभ् उन्छि। विदानाटमा नुभक्तिदित्यः।
- (১৫০)। ঋকারাস্ত্রস্য ষষ্ঠা অক্সন্তরপদভ্তায়াঃ পূর্ব্বোত্রপদরেনবিদ্যাযোনিসম্বন্ধবাচিতে সতি অলুগ্ ভবতি। বিদ্যাসম্বন্ধা যোনিসম্বন্ধত
 ধার্ত্তিনিমিত্তমর্থাভিধানং যেষাং তে বিদ্যাযোনিসম্বন্ধবাচিনঃ। হোতুঃ নিষ্
 ইতি পূর্ব্বোত্তরপদয়োবিদ্যাসম্বন্ধবাচিত্ব । স্বস্থংপুত্র ইতি পূর্ব্বোত্তরপদরারোনিসম্বন্ধবাচিত্বন্। পূর্বেপদস্য বিদ্যাসম্বন্ধবাচিত্বে উত্তরপদস্য কোনিসম্বন্ধবাচিত্বে পূর্বেপদস্য যোনিসম্বন্ধবাচিত্বে উত্তরপদস্য বিদ্যাসম্বন্ধবাচিকে চালুগ্ভবতীতি স্বনার্থং হোতুঃপুত্রঃ পিতৃরব্বেবাসীত্যুদাহরপ্ষমপরমুপস্থত্বন্
 এতেন ক্রমনির্মোহত্র নিরন্তঃ। শুত্র ইতি কিম্ । মাতৃলপ্তাঃ। কথং
 ল্যাতৃপ্তাঃ লাতৃরেক্ত্বেহসাধুরেব। ধিব্দনব্ব্বচনান্ধর্মোলুর্গ্ভবভোবেতি
 প্রাণেব ব্যাথ্যাত্ম্। অমরকোবে ত্ব কথং পিতামহঃ পিতৃপিজেতি ।

 চিক্ত্যন্।
- (১৫৪)। ঝকারারদা ষ্ঠাাঃ স্বন্ধ পতি ইত্যেতরোঃ প্রয়োঃ পূর্বোতরপদ্যোবিশ্যাযোনিসম্বর্গাচিতে স্ত্যসূত্র ভবতি। মানুক্পক্ষে

. ১৫৫। নিত্যমামো দেবদ্য প্রিয়ে। দেবানাং প্রিয়ঃ।

১৫৬। **কচিদনাত্ত্রাপি।** বাচম্পতিঃ দিবস্পতিঃ বাস্তোম্পতিরিজ্যাদি।

১৫৭। গোহলস্তাদস্তানাং সংজ্ঞায়াং সপ্তম্যাং। গবিতির: যুধিতির: ছচিসার: অরণ্যেভিক্ষকাঃ বনেবল্লজাঃ কূপে-পিশাচিকাঃ।

শ্বস্থব। মাতৃ: পিতৃজ্যামিতি বিকল্পেন যথং লুক্পক্ষে তু মাতৃষদা পিতৃষদা ইতি অগ্নাদেন্তদাদাবিতি নিজাং যন্ত্ৰ গ্ৰুত ইত্যেব। আচাৰ্য্যশ্বদা। অপূৰ্ব্বপদবিদ্যাযোনিসম্বাচিত্ৰে তু। দাতৃশ্বদা। অনুত্ত্ৰবপদবিদ্যাযোনিসম্বাচিত্ৰে তু। অধ্যেতৃপতিঃ। পতিশকোহত্ৰ প্ৰধানবচনঃ।

- (১৫৫)। আম ইতি বচীবছবচনস্য গ্রহণম্। দেবশক্ষস্য আমঃ
 প্রিয়ে পরে নিভামলুগ্ভবতি। নিভাগ্রহণং বামুর্ভিশকানিরাসার্থম্।
 দেবানাং প্রিয় ইতি নিন্দিতবচনঃ। কর্ত্বুশাত্বাদিক্ষম্ভিরিতি কর্মণি বচী
 প্রাণাতীতি প্রিয়: ইজুপাস্তপ্র্যাদেরদিত্যং।
- (১৫৬)। কচিদক্রতাপি ষষ্ঠা। অনুগ্ ভবজীতি শেষঃ। বাচস্পতি-রিত্যাদৌ করাদিঘাদিসর্গাভাবঃ। বাডোম্পতিরিতি নপুংসকত্বেহপি গণ পাঠদামর্থ্যাই বান্তলমুক্ত পৃংলিকতা করাদেশেতি মুর্দ্ধক্তঃ। আদিপদেন শিষ্টপ্রয়োক্ষ উহনীয়ঃ।
- (১৫৭)। গোশকত হলজানামকারাজানাঞ্চ অমুভরপদভ্তানাং সপ্রম্যা অনুগ্ভবতি সংজ্ঞারাম্। গবিষ্ঠির যুধিষ্টির ইতি বনেকশেরুকাদয়ঃ সংজ্ঞারামিতি সমাসঃ অয়্যাদেরুলাদাবিতি বছম্। অক্সাররজুপরিপুরণলজ্জাতিরিতি তু অক্সারোহতেতি বহুত্রীইলা। অরুণোতিলকা ইত্যাদের বনেকশেরুকাদয়ঃ সংজ্ঞারামিতি গণপাঠসামর্থাৎ সমাসঃ। গোহলভামজানা-মিতি কিম্ ? নদ্যাং কুক্টিকা নদীকুকুটিকা। সংজ্ঞারামিতি কিম্ ? অক্ষেম্ব্রোগুঃ অক্ষেম্বর্তি বিধানমসংক্রার্থম্।

>৫৮। **यशाखरत्राच** दत्री। , मरशुकुकः **चरत्रकुकः**।

১৫৯। অমূর্দ্ধমন্তকন্ত হলস্তাদন্তাক্রতাকামে।
উর্গোলোমা কঠেকালঃ। কায়ন্তেনোদরন্তেন নোদরস্থা হরীতকীত্যত্র উদরন্তেতাসাধুঃ। রক্ষিতেন পুনরন্ত সাধুষমভাূপগতম্। মূর্দ্ধমন্তকয়োস্তা। মূর্দ্ধনিখা মন্তকচ্ড়ঃ। অহলন্তাদন্তাক্রত তু। অকুলিত্রাণঃ জজ্বাবলিঃ। কামে তু। মূখকামঃ।

১৬০। যদ্যোনিমতিম্বপাম্। অপ্সূভবোহপ্সব্যঃ অপ্সুধোনিঃ অপ্সুমতিঃ।

⁽১৫৮)। মধ্য অস্ত ইত্যেতরোঃ সপ্তম্যা শুরৌ পরেংলুগ্ ভবতি। অসংজ্ঞার্থং বচনম্। মধ্যে শুরুঃ অন্তেগুরুরিতি অস্থাদেবালুখিধানাৎ সমাসঃ। অথবা শৌগুদেরারুতিগণদ্ধাই তৎপুরুষ এবারমিয়তে। যদা তু মধ্যে স্থিতো গুরুরস্তেতি অস্তে স্থিতো গুরুরস্তেতি মধ্যপদলোপী বছ-বীহিন্তদা মধ্য গুরুরগুগুরুরিতি ভবতি। কাপি ন মধ্য গুরুরগুগুরুরিতি ছন্দোলক্ষণম্।

⁽১৫৯)। মৃর্জমন্তকবন্ধি তন্ত হলস্কভাদন্তত চ অন্ধবাচিনঃ শক্ত কামবর্জিতে শব্দে পরে সপ্তমা। অনুগ্ ভবতি। পূর্ব্ধিবেণ হলস্তাদন্তাহ্ বৃত্তৌ গোশবাহপাহ্বর্জতে ইতি পৃথগ্ বোগকরণম্। গোশকত চ্নেন্তির-বাচকতাদকবাচিতা সম্ভবতোব। উরসিলোমা ইতি উরসি হিতানি লোমান্তত্তোতি বছরীহিঃ পূর্বার্থসম্বোকরপদবিশেষণক্ত ছিতাদেলে পি ইতি হিতপর্বলোপং। উদরব্বেতাসাধুরিতি উদরশকভাদবাচিতাৎ অনুগেবাত্র ভবতি। নাহ্নদিব্ স্বাক্ত হে ইত্যনেন তৎপূক্ষরে কৃতি বহলমিতি প্রাপ্তভালুকো নিবেধঃ শ অনেন প্রাপ্তেনাক্তা ভবিতব্যমেবেত্যভিপ্রায়ঃ। রক্ষিতেন পূনঃ ত্বে পরে নিবেধঃ সামান্তেনেবোক্তঃ ভেনাত্রাপ্যনৃমিবেধ ইতি খাবহিতম্। অভএব কঠেকালঃ কপালেন কর্মহ্নেন্দুশেখর ইতি শুরী।

⁽१७०)। चंश् रेटाउछ मध्यां १९अकात लानिनटक मिलन्द

১৬১। শরৎপ্লার্ট্কালদিবাং ভাত্তে জনি। শর্দজঃ প্রার্ধিজঃ কালেজঃ দিবিজঃ।

७७२। শরবর্বর্বকরাণাং বা।

শরেজः শরজः বরেজः বরজः বর্ষেজঃ বর্ষজঃ করেজঃ করেজ। :

১৬০। হলস্তাদন্তবার্যগন্তবন্ধে। উরসিবন্ধঃ উরোবন্ধঃ লোমিবন্ধঃ হস্তেবন্ধঃ হস্তেবন্ধঃ চত্রেবন্ধঃ। অহলস্তাদস্তয়োস্ত । গুপ্তিবন্ধঃ কারাবন্ধঃ।

চ সরেহনুগ্ ভবতি। অপ্সব্য ইতি অপ্ শক্ষান্নিতাবহুবচনান্তাং দিবাদে

বিভবাদাবিতি বং বাচোঞ্চল্ডণ ইতি ওকারঃ তদ্ধিত্যে চৈতি অবাদেশঃ।
নমু নান্নভদ্ধিতো বিবীয়তে জুর্থবিশেষঃ প্রত্যায়ন দ্যোতাতে তং কথং
সপ্তমান্তাং বংপ্রত্যায়ঃ কথকানুক্প্রাপ্তিঃ সমাসে সতি অনুধিধানাং।
উচাতে। অস্থাদেব বতি পরেহনুধিধানাং স্প্রমান্তাং বংকরণীরোহনুক্
চ। অপ্ন্যানিঃ অপ্ন্যতিরিতি শৌভাদেরাক্ষ্ভিগণতাং অনুধিধানসামর্ধ্যাদা তংপুরুষঃ। বছবাইে। তু অব্যোনিঃ অস্ত্রিঃ।

- (১৬১)। শরদ্ প্রার্ষ্ কাল দিব্ ইত্যোতেবাং সপ্তম্যা ডাত্তে জনি পরেহলুগ্ ভবতি। শরদিজ ইত্যাদি শরদি জাত ইত্যর্থে জনী প্রাত্তাব ইত্যন্ত্বাং সপ্তম্যন্তাজ্জনো ভূতে ইতি জঃ ডিব্রাদন্দুক্। শরৎপ্রার্ট্কাল-দিবামিতি কিন্ ? মন্ধুজঃ।
- (১৬২)। শর বন্ধ বর্ধ ক্ষর ইত্যেতেবাং সংখ্যা ভাত্তে জনি পরেহলুগ্-ভবতি বা ।
- (১৮০)। হলস্তাদন্তেভাস্থ্যক্তী অক্সাণগ্যসূত্ৰীজ্ঞ সাং ইতি হলস্তাদন্তয়োরিতি ক্বতং হলস্তভাদন্তস্য চ সপ্তমা। বণজে বীশ্বনক্ষে পরেহলুখা
 ভবতি। হল্ডেবন্ধ ইন্ডাক্ত বছত্রীহৌ পাভি অমুর্দ্ধমন্তক্ত 'ইন্ডাদিনা নিজ্যে
 প্রাপ্তে বিকল্প:। তৎপুরুষে সভি অক্সাচিনোহনঙ্গর্বাচিনশ্চ নিজনিক্ষবন্ধেখিভি প্রতিষেধে প্রাপ্তে বিভাষা। বর্জ্যানেন বন্ধন্তান্তিন্ বা বন্ধঃ
 বণস্ত ইতি বিশেষণ্য ধাতুপ্রহণশকানিরাসার্থান্। অন্তথা নিনন্তসিদ্ধবন্ধেশি

১৬৪। हलाति कांत्रनान्नि छ।

হলে হলে ছিপদিকা দাতব্যা হলেদিপদিকা হলছিপদিকা বৃথে বৃধে শশুর্দাতব্যঃ শৃথেপশুঃ যৃথপশুঃ। অহলাদো তু। অবিকটে অবিকটে উরণো॰ দেয়ঃ অবিকটোরণঃ। অহলস্তাদস্তয়োস্তা। নদ্ধ্যাং দোহনঃ নদ্ধীদোহনঃ।

>৬৫। হলাদে প্রাচ্যকারনাম্নি নিত্যমিতি বামনঃ। স্ত্রেশানঃ মুকুটেকার্ষাপণঃ দৃশদিমাধকাঃ হলেদ্বিপদিকা হলে-ত্রিপদিকা।

ত্যনেন সহ বিষয়বিভাগ:স্পষ্টো ন স্যাৎ। অতএব পচাদেশ্চেতি ঙেন সিদ্ধে বন্ধশব্দে পরে ণিনস্তেত্যাদিনা নিত্যো নিষেধ এব ভবতি।

(১৬৪।১৬৫)। গোহলস্বেত্যাদিনা নিত্যে প্রাপ্তে বিভাষা। বণিক্
কর্ষকপশুপালাদ্যৈ রক্ষার্থং রাজ্ঞা দেয়ঃ করঃ কর এব কারঃ প্রজ্ঞাদেশেচতি স্বার্থিকট্টণ্। কারনামি বাচ্যে হলাদো পরে হলগুস্যাদন্তস্য চ সপ্তম্যা
অনুষা ভবতি। হলেদিপনিকা ইতি দ্বৌ দ্বৌপাদৌ দলাতীত্যর্থে সংখ্যাদেরাভীক্ষ্যে অকঃ পাদ্য পচ্চেতি তদ্ধিতার্থে সমাসং কৃষ্যা অকঃ পাদঃ পচ্চাদেশঃ
স্বভাবাদ্য্য স্ত্রীলিকতা প্রত্যায়েনাভীক্ষ্যং দ্যোতিতমিতি ন দিক্জিঃ।
অবিকটোরণ ইতি সজ্জাতে কট ইতি কটঃ বহুলবচনাদত্র গোহলস্তেত্যাদিনাপ্যলুগ্ধ ভবতি। হলাদাবিত্যাদি। প্রাচ্যে প্রাক্তনামি
বাচ্যে অলুমিত্যং ভবতীতি বাষনঃ। তন্মতে গোহলস্বেত্যাদিনা নিত্যে
দিদ্ধে নিয়মার্থং বচনম্। কারনাম্যের প্রাচামের হলাদাবের ইতি ত্রিবিধোহত্র নির্মার্থং বচনম্। কারনাম্যের প্রাচামের হলাদাবের ইতি ত্রিবিধোহত্র নির্মার্থ বচনম্। কারনামি চ হলাদাবপ্যপ্রমিন্ পরে কুলের ভরতি।
তদ্বপা অভাহিতপশুরিতি প্রাচাং কারাদন্যস্য দেশস্য এতন্তম্য। যুর্পশুব্রিতি প্রার্থভ্যাহন্যস্য কারস্ত। অনিকটোরণ ইতি অহলাদৌ পরে

১৬৬। কালবাচিনস্তরতমতনকালেয়।
পূর্ববাহুতরে পূর্ববাহুতমে পূর্ববাহুতমে পূর্ববাহুতমে পূর্ববাহুতনঃ
পূর্ববাহুতনঃ পূর্ববাহুকালঃ পূর্ববাহুকালঃ।

১৬৭। অকালবাচিনঃ শয়বাসবাসিষু।
বেশয়ং খশয়ঃ গ্রামেবাসঃ গ্রামবাসঃ। রক্ষন্ বনেবাসকৃতান্তয়ারানিতি ভট্টিং। গ্রামেবাসী গ্রামবাসী।

প্রাচামেতং কারনাম। যে তু কারনামীতি নিবিশেষণং পঠন্তি তেষামপি স্তুপেশান ইত্যাহ্যদাহরণং ভবত্যেব কিন্তু বিকল্পেনালুগিতি পরং বিশেষ:।

(১৬৭)। হলস্তস্যাদস্তস্য চ অকালবাচিনঃ মপ্তম্যাঃ শক্ষ বাস বাসিন্
ইত্যেতের পরেষ্ অনুগ্ তবতি বা। ধেশয় ইতি শেতেরধিকরণাদিতাঙ্
গ্রামেবাস ইতি ভাবে ঘণ্ গ্রামেবাসীতি গ্রামে বসভীতি পিন্ তচ্ছীলাদে।
স্থপীতি পিন্। কালবাচিনস্ত। পূর্বাহুশয়ঃ। অহলস্তাদস্তরোক্ত। ভূমিশয়ঃ
ঘট্যাশয়ঃ।

১৬৮। তৎপুরুষে কৃতি ব**ছল**মৃ।

স্তম্বেরম: কর্ণেজপ: কলেগ্রহিঃ গোমুচর: অপ্স্চর: বর্যাস্কজঃ
অপ্স্তজঃ হুদিস্পৃক্ দিবিস্পৃক্ হুদিস্থ: দিবিষ্ঠঃ। তথাচ ভট্টি:।
পর্যাশাপদীদিবিষ্ঠান্ত্রো সন্দর্শ্য ভয়দং কপুরিতি। সব্যেষ্ঠঃ সম্ব্যেষ্ঠা
শক্ষেক্রহমিত্যাদো নিত্যম্। সরসিজং সরোজং শিরসিজঃ শিরোজঃ
সরসিক্রহং সরোক্রহমিত্যাদো বিকল্প:। হুদিস্থ: হুৎস্থ ইত্যেকে।
কুক্রচরঃ মন্ত্রচর ইত্যাদো নিষেধঃ।

(১৬৮)। অনুতরপদভূতানাং সপ্তম্যা: ক্বতি পরে তৎপুরুষে সমাসে সতি বহুলমলুগ্ ভবতি। কেবলসা কৃতঃ পরস্বাসম্ভবাৎ ক্রদিতানে**ন কুদম্ভস্য** গ্রহণম্। নিত্যবিকল্পনিষেধাত্মকং বছলার্থমুদাহরণৈরেব ব্যাচকার। স্তব্ধে-রম: কর্ণেজপ ইতি স্তম্বেকর্ণেভ্যাং রমিজপোর্যন্তিস্চকরোরিতাঙ্। ফলে-গ্রহিরিতি ইঙ্ধাতুকথনে তিঙ্বতিঙ্বা ইতি ইঙ্ফলেগ্রহিরবন্ধারুক্ষ:। গোনুচর: অস্চর ইতি অধিকরণাচেতি টঙ্। বর্গাস্তর: অপ্সূত্র ইতি বর্যাত্ম জাত ইতার্থে সপ্রমান্তাজ্জনো ভূতে ইতি ডপ্রতায়:। এতে শকা নির্তবহুবচনাম্বা এব তনর্থাভিধানে শক্তা ইতি বহুবচনাম্বানামপি ভবতি সমাস:। গোশন্দো জলবাচকো নিয়তবছবচনান্ত:। স্থাদিশ্ৰু দিবিম্পু-গিতি হৃদয়ং স্শতীতি হৃদিপ্ত দিবং স্পশতীতি দিবিস্পৃগিতি ভাষ্য-দর্শনাৎ কর্মণি সপ্তমীয়ং বক্তবা। স্পূশোহতুদকে স্থপীতি কিপ্। ছদিস্থ ইতি স্থোহধিকরণাব্যয়া ভ্যামিত্যাদিনা অঙ্ এবং দিবিষ্ঠঃ অম্বামেত্যাদিনা যত্তম্। হাদিস্পৃক্ হাদিস্থ ইত্যতা হাজ্তক্সা মনোবাচিত্বং ন পুনরঙ্গবাচিত্বং তেনামুদ্ধনস্তকদ্যেত্যাদিনা অলুক্ ন প্রাপ্নোতি। পঙ্কেরুহমিতি ইজু-পান্তপ্রাদেরদিতাং। আদিগ্রহণং শিষ্টপ্রয়োগোপসংগ্রহণার্থম্। অগ্রেসর: জ্বনেফ্লা: কাণ্ডেক্ছ ইত্যাদাবপি নিত্যম্। সর্সিকৃহং সরোক্ষমিত্যাদে বিকল্প ইতি অত্রাপ্যাদিগ্রহণং শিষ্টপ্রদ্যো-উর্সিজ: লোপসংগ্রহণার্থং তেন বনেচরঃ বনচরঃ निविष भाषिकारने विकन्नः। अभाज हैकि निरकानाभ्यरनमू যৎ পঠাতে তৰিকলপ্ৰকরণে দ্ৰষ্টবাং তেন অজমিতাাদাপি ভৰ্ডি.

১৬৯। নাহ্ন দ্ব সব্সত্ত ছে।

সমস্থ: মধ্যম্থ: কারম্থ: বয়স্থ: ইত্যাদি। হৃদ্ধিব স্ব্যাস্ত তু। হৃদিস্থ:

দিবিষ্ঠ: স্ব্যেষ্ঠ: ।

১৭০। **ণিনন্ত সিদ্ধৰদ্বেষ্**। স্থান্তলশায়ী সংকাশ্যসিদ্ধা চক্ৰবন্ধা।

নমু শরংপ্রার্ট্কাবদিবাং ডান্তে জনি শরবর্বক্ষরাণাং বা অকালবাচিনঃ
শরবাসবাসিষু ইন্ডি কিমর্থমেভানি লক্ষণানি যতো নিয়তং বহুলবচনাদেব
তলক্ষণোদাহরণানি সিধ্যন্তোব। ন চ বাচ্যম্। সিদ্ধে হি তানি লক্ষণানি
নিয়মার্থানীতি এবং বর্ষাস্কজক্তেত্র ব্যাবৃত্তিঃ স্থাৎ সরসিজং সরোজমিত্যত্র বিকরেহিপি ব্যাবৃত্তিঃ প্রসক্ষেৎ কুশেশরং জলেশর্মিত্যাদৌ চ নিত্যমনুগ্রি যধ্যেৎ। তত্মাৎ প্রপঞ্চার্থানি প্রতানি স্ক্রাণি। তথাচাহঃ তে বৈ
বিধ্যঃ স্কুসংগৃহীতা ভবস্তি যেবাং লক্ষণং সপ্রপঞ্চমিতি।

উপমানশু সর্ব্ধবিভক্তীনামিবে চেতি বক্তব্যম্। উপমানশু সর্ব্ধবিভক্তীনামিবশন্দে পরেহসুগ্ ভবভি। অগ্নিরিব সিংহমিব বায়ুনের ইতি পরমুকৈরিত্যাদিবদব্যরমেতং। অস্মাদেবালুগ্বিধানসামর্থাং তংপুরুষ-সমাসোহত্র ভবভি। নমু কিং ফলং সম্যাস্থাগুধিধানস্য চ বাক্যমেবাস্ত । উচ্যতে। অগ্নিরিবরাজ ইত্যত্র কর্ম্মধারয়ে রাজাদেওাদিরিত্যত্র টো ব্ধাস্যাং অগ্নিরিবপাশ ইত্যত্র পাশো নিন্দ্য ইতি পাশো ঘণা শুণং ইত্যেবনাদি প্রয়োজনমপশ্রম্ভিরনভিজে: সংশ্রেভ্যেতল্লক্ষণমপসারিতং নহেবং বিধো ভ্রম: স্ত্রকৃত: সম্ভবতি।

- (১৬৯)। বছলবচনাদেব সিদ্ধে লক্ষণমেতন্ত্রিয়মার্থং বচনম্। ছদ্দিব্ স্ব্যব্যতিরিক্তস্য সপ্তমা: স্থে প্রেহলুয় ভবশ্যেব। হাদ্দিব্সব্যস্য তৎ-পুরুষে পূর্বব্যোগেনালুক্।
- (১৭০)। নিন্প্রত্যাত্তে সিদ্ধান্তে বন্ধথাতো চ পরে সপ্তমা অনুগ্ন ভবতি। ক্লন্তবাৎ প্রাপ্তে নিষেধঃ। 'ছণ্ডিলশায়ীতি ব্রতে ইতি নিন্ তন্নিমিজাপেদন্য চেতি তৎপুরুষঃ। লিঙ্গনিস্টিস্যাপি গ্রহণাৎ স্থণ্ডিল-শান্নিনী। নাংকাশ্রসিদ্ধ ইতি ক্লান্তঃ চক্রন্তক ইতি পচাদিঘাৎ শ্লাশ্কঃ

১৭১। উক্তার্থানামপ্রয়োগঃ। ধবশ্চ খদিরক পলাশশ্চ ধবধদিরপলাশাঃ। দ্বৌ বা ত্রয়ো বা বিত্রাঃ ত্রিচ হুরাঃ ত্রিধষ্ঠাঃ। ত্রিদশি এষাং ত্রিদশা ইত্যাদি।

১৭২। প্রাক্ ষষ্ঠা সূত্রিতম্ । সাক্ষাৎ ষষ্ঠান্তেন পদেন বৎ সূত্রিতং তৎ প্রাগ্ভবতি।

১৭৩। তৎপুরুষো বা নঞঃ সমাসঃ। অব্রাহ্মণঃ।

১৭৪ । আংশিষষ্ঠ্যা পূর্কানেঃ প্রথমীয়াঃ পূর্ববকার ইত্যাদি।

শোগাদিখাৎ সমাস: চক্রবন্ধ ইতি ক্রসন্ত: শোগুদেরাক্রতিগণখাৎ সমাস:।
অহাদিব্সব্যাল্য ইত্যাল্বন্থে হৃদিশায়িল্যো হৃদিসিদ্ধং হৃদিবদ্ধ ইত্যাদাবলুগ্ভবতীতি কেচিং।

(১৭১)। উল্লেখর্থা যেবাং তে উক্রার্থা: তেবামপ্রয়োগোহমুচ্চারণং ভবতি। অর্থপ্রতিপাদনার্থা হিশক্ষঃ প্রায়ৃজ্যতে তদ্য চ প্রতীতৌ ভূতারাং লাধ্যাভাবাদেবাপ্রয়োগ ইত্যর্থ: স্তায়লকোংয়মর্থো দর্শিতো নহেতরক্ষণম্ । নহি স্বতঃপ্রমাণভূতে লক্ষণে হেভূপলাসো বিধীরতে। ধবন্চ থানিরন্চ প্রলাশন্চ ইত্যত্রাক্তাহস্তরোগন্চকারস্যার্থা:। স চাক্তোহস্তযোগবিহিতেম দন্দেনৈবাক্তঃ ইত্যুক্তার্থতা অভন্তনপ্রমাণে ধবর্ণনিরপ্রলাশা ইতি। বৌ বা ত্রয়ো বা ইত্যত্র সংশয়ার্থো বাশক্ষঃ তদ্য চার্থঃ সমাসেনৈবোক্তঃ। ত্রিদ শি এবা মতি দ্বিত্রিচতুর্জ্যঃ স্থরিতি বারে গম্যমানে স্ক্রিবিতঃ বারোহজ্যানুবিত্তঃ তদ্য চার্থঃ সমাসেনৈবোক্তঃ ইতি স্থপ্রতার্থিবিত্তঃ।

(১৭২।১৭৩।১৭৪)। স্থান ক্ষতিং ব্যক্তিং বঠান্তেম পদেন স্ত্রে নির্দিষ্টমিত্যর্থ:। প্রক্রান্তত্তাং সমাস্থিধারকমেব স্ক্রমিহ প্রাহ্মন্। আনি-রমে প্রাপ্তে নির্মার্থং বচনম্। সাক্ষান্ত্যক্তং সমাসে গুণীভূতসা বঠা-শুসা নিব্তার্থম্। অংশিনং বঁটা অংশিবটী অংশিপদম্পি বঁঠা ক্রিতং

১৭৫। রাজদন্তাদিবু পরমু।

দস্তানাং রাজা রাজদস্তঃ লিপ্তবাসিতং সক্তসংমৃষ্টং লগ্নমৃবিতং ভৃষ্টলুচিতং অবক্লিরপকং অপিতোদস্তঃ তপ্তগাঢ় ইত্যাদৌ পূর্বেকালস্থ পরনিপাতঃ। অলাবৃশ্চ কর্কস্কুশ্চ অলাবৃকর্কস্কো তে চ দৃন্ভূশ্চ অলাবৃকর্কস্কুদৃন্ভ্রণ তাসাং ফলং অলাবৃকর্কস্কুদৃন্ভূফলং শতাৎ পরং পরংশতং পরংসহস্রমিত্যাদি।

১৭৬। নঞোহং। সমাদে সতি নঞ:-স্থানে২ন্তৰতি। স্মত্ৰাহ্মণ: অপুক্ৰ:।

ভবত্যের কিন্তু গুণীভূতরা ষষ্ঠ্যা এতচ্চ প্রধানাপ্রধানরোঃ প্রধানে কার্যা-সম্প্রতায় ইতি ক্যায়েনৈর লক্ষ্।

(১৭৫)। যথালকণং পূর্ব্বনিপাতে প্রাপ্তে রাজদন্তাদিযু পরং ভবতি। পূর্ব্বকালস্য পরনিপাত ইতি লিগুণাস্ভিমিত্যাদিষু তথগাঢ়াত্তেরু। সুচিত-बिकि नुन्ह् वर्णनद्रत्न कः व्यमानू निर्वापिक्ष निरंशाखातः। व्यनाद्वर्कका-বিতি ঈদুতোর ভিরপদ ইতি হ্রম্ম: তে চ দুন্ভূশ্চ ইতি সমাসে প্রাণন্নায়াদি-রিতি দৃন্ভূশদদ্য প্রাঙ্গিতে প্রাপ্তে পরনিপাত: পূর্ব্বৎ হ্রন্থ:। यদি ত্রিভিদ্ব ন্থ: স্যাৎ তদা পূর্ব্বপদস্য হ্রন্থো ন স্যাৎ উত্তরপদস্বাভাবাৎ। মুখলা-দেরুদ্ধলাদিরিতি অত্তৈব কথমেতলোদাক্তমিতি চিজ্ঞান্। শতাৎ পরং পর:শতমিতি মুক্তাদাদ্যাকৃতিগণভাৎ মুক্তাদ্যৈ: পঞ্চম্যা ইতি তৎপুরুষ: পরাক্তসম্প্রারিতি ছট্ আদিপদমাকৃতিগণস্চনার্থম্। তেন যত্ত শিষ্ট-প্রয়োগে পূর্ব্বনিপাতব্যভিচারো দৃশুতে স রাজদন্তাদিয় ডাষ্টবা:। তেন वनमार्श चरश्वनः त्रांबीनाः गर्मा भनताबः गर्मनमम मरशांनाहरूषां সংখ্যাবারাদস,লেরদিভামুরভৌ সর্বৈকদেশসংখ্যাতপ্ণাচ্চ রাত্রেরিতাৎ। কঠে প্রীর্বস্য স প্রীকণ্ঠ: অপ্সূ পূলো পুলাণ: গগাদেরং সর্ব্বতেতি অং পুল ইভি ইজুপান্তপ্রাদেরদিত্যং। বাণস্য বারো বারবাণ বার ইভি ঘণস্ত: অন্তরং গৃহং গৃহান্তরং অন্তরণস্বোহস্তার্থঃ এবং তৎপুরুষান্তরং ৰো ভাবিদিনং ক্তমাৎ পরং পরৰ ইত্যাদি।

(>१७)। व्यक्त्रशनिश्चमार नमानाकृत्रकर्ग नमान वर्ग विधानम्।

১৭৭। তিঙি চাক্ষেপে। অপচসিদ্ধ জান্ম।

১৭৮। নগস্থাপ্রাণিনি বা।

নগঃ অগঃ। প্রাণ্মিন তু। অগো ব্যল: শীতেন।

১१३। जहान्।

अष्ठि भरत मभारम मि नक्षः श्वात्मश्चन् खर्जि । अन्यः।

১৮০। একাদূনার্থনঞোহনাদ্ধে সংখ্যামা। একারবিংশতিঃ একাদ্বিংশতিঃ একারাশীতিঃ একাদ্যশীতিঃ।

এবমন্তরাপি অতন্তকারো মৃথস্থপার্থ:। অব্রাহ্মণ ইতি তৎপুরুষ: অপুর ইতি বছরাহি: ঞকারামুবরূনিদেশাৎ পামনপুত্র ইতাত্র ন ভবতি।

⁽১৭৭)। অসম্ভবাদসমাসে বিধানমু। আক্ষেপে বিষয়ে তিওক্তে চ পরে নঞ: স্থানেহন্তবতি। অমানোনা নিষেধবাচকা ইতি বচনাৎ অকারেণ প্রতিষেধবাচকেনাপি অপচসীতি সিধ্যতি কিন্তাক্ষেপে ন পচ-সীতি প্ররোগনিরাসার্থং লক্ষণম।

⁽১৭৮)। নগশবস্থ নঞোহপ্রাণিনি বাচ্যে অস্বা ভবতি। নগঃ পর্বতো বৃক্ষণ্ড অন্তর্তাহপি দুখাতে ইতি ডঃ।

⁽১৭৯)। অয়মপি সমাসে সতি তিঙি চাক্ষেপে ইতাসুবর্ত্তভে।
আক্ষেপে বিষয়ে তিঙি চাচি চ পরে নঞাংন্ ভবতি। অনেধস্ব পাপ
মোংনচান্থস্বার ইত্যেবনির্দ্দেশসামর্থ্যাং অনি বিহিতে হুস্বান্তগনা ছিঃ
স্বরে ইতি ছিম্বং ন ভবতি। অথবা যদি বিষয়পেক্ষিতং স্থাৎ তদা অল্লিভি
ছিনকারমেবাদেশং বিদধ্যাৎ এবং সত্যর্জমাত্রাক্বতং গৌরবং স্থাং ইভি
চেৎ নৈবং বাচ্যম্ অয়মাচার্যাঃ বর্ণগৌরবাৎ প্রক্রিয়াগৌরবমেব গৌরবং
মঞ্জতে অন্বিধানান্তরং বিশ্ববিধানেন প্রক্রিয়াগৌরবং স্থাৎ।

⁽১৮•)। একশনাহত্তরক্ত উনার্থক্ত নঞ: স্থানে সংখ্যারাং পরভ্তা-রাম অর অনু ইত্যোতাবাদেশৌ তবতঃ। একার্নবিংশতিরিতি ন বিংশতি-রিতি নঞ্সমাস: একেন ন বিংশতিরিতি অর্থাক্তৈক্তৃতীয়ারা ইতি সমাসঃ। পরিক্ত্যাপবাদবিবরমুৎসর্কোহভিনিবিশত ইতি প্রথমং প্রান্থোহপার ভবতি।

১৮১। न नशिएकः।

নান্তি খমত নথং এবং নকুলং নাকং ন ক্ষরতি ন ক্ষীয়তে বা নক্ষজ্ম। অসমস্তমপ্যোণাদিকমন্তি। ন ক্রামতি নক্রং। ন মুঞ্জি নমুচিং। ন বেত্তি নবেদাং। ন আজতে নজাঁট্ ন পাতিনপান্। শত্রত্তঃ। তথাচ ভট্টিং, তন্নপান্তং প্রজ্বহাতীতি। কন্চিদাহ ন পাতর্য়তি নপাৎ ক্লিবস্তঃ। তথাচ, তন্নপাতমপশ্যদিতি। সংস্থা সাধবং সত্যাং ন সত্যাং অসত্যাং ন অসত্যাং নাসত্যাং। বহুবচন-বিষয় এবায়মিতি রক্ষিতঃ। তিকাণ্ডে তু নাসত্যোং দেবভিষজাবিতি পাঠঃ। ন ল্রী ন পুমান্ নপুংসকম্। সংজ্ঞাশব্দাং সর্ম্ম এতে ব্যুৎপত্তিরেষাং যথাকথঞ্জিমিপাতনাদিষ্টসিদ্ধিং। বর্ষান্তপদমূতরপদং সর্বাদিপদং পূর্ববপদমিত্যন্মা ব্যবস্থ্যা অস্মিন্ পাদে ব্যবহর্তব্যম্।

অথবা অতিক্কতে তত্তিব স্থানে অন্নাদাবাদেশে করণীয়ে। যদ্যপি সংখ্যায়ামিতি সামাজেনোক্তং তথাপি বিংশতি ত্রিংশং চত্বাবিংশং পঞ্চাশং ষষ্টি সপ্ততি অশীতি নবতি শত সহস্রাদাবেব পরেহণ্ণাদ্যাবাদেশো ভবতঃ নম্মুখিন্ সংখ্যাশক্ষে পরেহনভিধানাং।

(১৮১)। নথাদেঃ সমাসনিষ্পন্নস্ত নঞা স্থানে যথাযথং প্রাণ্ডের অৎ অন্ ইত্যেতো ন ভবতঃ। নাস্তি থমস্যেতি বছরীহিঃ থমিক্রিন্নন্। এবং নকুলনাকাবিতি নাস্ত কুগমন্তীতি নকুলঃ নাস্তি অকমন্থিন্ নাকঃ স্বর্গঃ অকং ছম্পং নক্ষত্রমিতি ন ক্ষরতি ন ক্ষীয়তে বা ইতি ক্ষর্ সঞ্চলনে ক্ষি নিবাসগত্যোঃ ক্ষিষ্ হিংসারাং বা স্থাদেস্ত্রভিতি অভ্ ধাতোঃ ক্ষান্দেশত অসমস্তমপ্যোণাদিকমন্তীতি প্রকারাস্তরমাহ নক্ষতীতি নক্ষত্রং দৃক্ত্ পক্ গতৌ অমাদের ইত্যে প্রত্যায়ঃ। ন ক্রামতীতি নকঃ অন্তত্তাহিপি দৃশ্রত ইতি ডঃ ন মুঞ্চীতি নম্চিরিতি মৃচ্ মোক্ষণে ক্রঞাদেরিরিতি ইপ্রস্তারঃ ন বেন্ধি ন বেদা ইতি বিদ্ জ্ঞানে প্রাণের-দিতি অস্ অন্তত্তাহার বিদ্ ক্ষানে প্রাণের-দিতি অস্ অন্ত্রাসক্ষ্যাধাতোরিতি দীর্ঘঃ ন ব্রাড়িতি ব্রাক্ দীথে

তেন নৈকং যশো যাত্র স নৈক্ষশাঃ নৈক্কীর্ন্তিরিতি ত্রিপদে বহুত্রীহো নঞােহন্ন ভবতি। একশব্দস্থানুত্তরপদ্বাৎ। এবং হোতা চ পােতা চ নেফা চ হােতৃপােতৃনেফারঃ।

১৮२ । **উদাদিরুদকাদে**ব সাদে।

কিপ্ অনুজাদীত্যাদিনা জক্ত ষঃ ষষ্ট ইতি ষদ্য টঃ সত্যা হতি তত্ৰ সাধাবিতি যৎ বহুবচনবিষয় এবায়মিতি রক্ষিত ইতি বহুবচনান্তক্তৈব গণে পাঠাৎ। ন खी न পুমাन नपुरमक्मिकि निभाजनार नखीलनत्नालः कैकविधानक जेबात्नी চেতি পুংসোহল ক। নথ নকুল নাক নক্রা নক্ষত্র নলাট্ নমুচিন পাচ্চ নাসত্যাঃ নপুংসকং নবেদা নথাদয়োহমী সমুদ্দিপ্তাঃ।পীড়ায়াঞ্চ ইতি দ্বিককো সমাসবত্ত্বে সতি ন ন ইতাদ্য নথাদিষু পাঠো ডাইবাঃ। নঞোহত্ত্তরপদ ইতি বৃত্তিক্বতা সংস্কৃতেহপি স্থত্তে পূর্ব্ববৃত্তিসংস্কাৰব্যাকুলবৃদ্ধিনা কেনাপি উত্তরপদগ্রহণং নিরস্তং তদ্ব্যাখ্যানমিদম্। সর্বান্তপদমুক্তরপদমিত্যাদি ষদা প্রাত্তরপদমিতি শ্রয়তে তথাপি সর্বান্তপদমূত্ররপদমিতি ব্যবহর্তবাম। উপক্ষেপাগতমপরমপি দর্শয়তি যত্ত্র পূর্ব্বপদমিতি শ্রায়তে তত্ত্ব সর্বাদিপদং পূর্ব্বপদমিতি ব্যবহর্তবাম। এতৎ প্রয়োজনং দর্শয়তি। নৈকং যশো যক্ত স নৈক্যশা ইত্যত্র যশ ইত্যন্ত সর্বাস্তপদক্ত একশব্দেন ব্যবধানাৎ একশব্দন্ত দ্বান্তপদ্বাভাবাং অং অন ইত্যেতো ন ভবতঃ। হোড়পোড়নেপ্টার ইত্যতাপি ত্রিপদে দলে গত আদৃদস্তপ্তরো: পূর্দোভরপদবিভাযোনি-সম্বন্ধবাচিত্বে ইত্যানেনাঝ্রং ন ভবতি। সর্বাদিপদশু হোতৃপদশু সর্বান্ত-পদস্য নেষ্ট্ৰপদসা চ পোভূপদেন বাবধানাং পোভূশদে চাৰং ন ভবতি। স্বাদিপদ্বাভাবাং হোতৃশব্দে চ ন ভবতি। পোতৃশব্দশু সর্বান্তপদ্বা-ভাবাৎ অতএব অলাবুণ্ড কৰ্কন্ধূ শু দৃন্ভূশেততে যদা ত্ৰিপদে দদ্য ক্ৰিয়তে তদা অলাবুকর্কর্দৃনভ ইভাত্র অলাবৃশব্দে ঈদ্ভোবে ত্রিপদ ইতি হ্রস্তং ন সম্ভবতি সর্বাস্তিপদশ্ত কর্কস্কুশন্দেন ব্যবধানাৎ।

(১৮২)। উনবাস ইতি ষষ্ঠীসমাস:। উদপেষং পিনষ্টীতি উদকেন পিনষ্টীত্যর্থে স্নেহার্থাং পিন ইতি ক্রাস্থানে এন্ পিষেরস্থারোগত। উদধিরিতি উদকং ধীয়তেহস্মিন্ শ্রাদেগ্নিন্ ইতি ইন্ তারৈবোক্তম্ আঙ্ সমাসে সতি বাসাদৌ পরে উদকাদে: স্থানে উদাদির্ভবতি। উদ-বাসঃ উদপেষং পিনপ্তি উদধিঃ উদবাহনঃ।

১৮৩। সংজ্ঞায়ীমূ। উদমেঘঃ উদবাহঃ উদপানমূ।

১৮৪। ক্ষীরোদাদিশ্চ। ক্ষীরোদঃ লোহিতোদঃ লবণোদ ইত্যাদি।

১৮৫। মন্থাদো বা। "
উদকমন্থ: উদমন্থ:। ওদন শক্তু বজু বিন্দু ভার হার বীৰধ
গাহ।

পূর্ব্ব ড্ধাঞ্ ধারণে আলু গিতি তত্ত্ব আঙ্পূর্ব্ব ইত্যুপলক্ষণং প্রাদিপূর্ব্বে কর্মপূর্বের চ ভবতি তেন নিধিঃ বিধিঃ শরধিঃ বালধিঃ বাণধিরিত্যাদি। মতএব তল্লিমিজোপদ্বাং নিত্যুসমাসঃ কর্মোপপদে অধিকরণাদক্তবানভিধানার ভবতি। উদ্ধিরিত্যুসংজ্ঞারাং তেনোদ্ধির্ঘটাদিরপি ভবতি। বংজ্ঞারান্ত উত্তরস্ত্রক্ত বিষয়ঃ। উদ্বাহন ইতি ষ্টাসমাসঃ। বাসাদীত্যনেন বাস পেষং ধি বাহনা গৃহুন্তে। উদকার্থ উদশক্ষোহপান্তি তত্মাদেব প্রয়োগসিক্ষো উদকবাসাদিনিরাকরণার্থানি লক্ষণানি।

- (১৮৩)। সংজ্ঞারাং বিষয়ে উদকস্ত উদ ইত্যায়মানেশো তবতি।
 উত্তক্ষা মেঘঃ উদমেঘঃ উদকং বহতীতি উদবাহঃ কর্মণো ণড়িতি গটু।
 অনপেক্ষিতাবয়বার্থা সংক্রেমন্। উনপানমিতি উদকং পীয়তেহক্ষিন্
 উদপানং কৃপঃ বাচালিঙ্গং কাপি কারকে চেতি ওনট্ উদ্ধিরিতি যুদ্র নোদায়তং তদ্বংজ্ঞায়ামপি সাধুরিতি স্চনার্থম্।
- (১৮৪)। ক্ষীরোদাদিক সংজ্ঞায়াং নিপাত্যতে। ক্ষীরমেব উদক্ষ মক্ষেতি বছরীহিঃ। বাসাদাকিত্যসূত্বতেঃ পূর্কাস্ত্রেণোত্তরপদে পরে বিধানম্। উত্তরপদক্ত তুন প্রাপ্নোতি ইতি লক্ষণমেতং। অথবা উত্তর-পদে পরে উত্তরপদক্ত চ স্থানে সংজ্ঞায়াং বিষয়ে সামাক্তনৈব উদাদেশ ইতি স্থচনার্থং ক্ষীরোদাদিশে তুলাহরণমূপক্ততং নেদং লক্ষণম্।
- (১৮৫)। মন্থাদৌ পরে উদক্ত স্থানে উদ ইত্যরমাদেশো বা ভবতি। মধ্যতেহনেনেতি অসমে মথ্যতে ইতি বা মন্থ: জ্বজ্যাযুক্তাঃ শক্তব উচাস্থে। উদক্ষয় ইতি উদক্ষেন মন্থ ইতি কৃতা ক্তুক্রণ্যো

১৮৬। একহলাদে পূর্ব্যে। উদককুস্ত: উদকৃষ্ণ: উদকপাত্রম্ উদপাত্রম্। অনেকহলাদে তু। উদকস্থালী। অপূর্ব্যে তু। উদকপুষ্পাম্।

১৮৭। হৃদয়স্য হালাসাদো। ক্ষান্য লাসঃ হালাকা কদয়ং লিখতি হালেখা। ঘণি তু হৃদয়লেখা। যতি—কভম্। টণি হাদিম্।

৮৮। সুহ্নিত্র।

ব হুলমিতি সমাসঃ ওদমশক্ত ভাগং ভক্ষোণ সংস্কারশু ইতি সমাসঃ। বিন্দু-বক্সবীবধৈঃ ষষ্ঠীসমাসঃ ধীবধো ভারঃ। উদকং বিভর্তি হরতি গাহতে ইতি যা গড়কৈ ভারহারগাহৈন্তরিমত্তোপপদশু চেতি সমাসঃ।

(১৮৬)। একোহসহায়ে হল্ আদৌ যশু তশ্বিন্নেকহলাদৌ পুর্মিত-বাবাচিনি পরে উদকশু স্থানে উদ ইত্যুমাদেশো বা ভবতি। অসহায়তা চ হল্বর্ণশু তুলাজাতীয়সান্নিগাভাবাৎ অগ্রথা অসহায়তা ন সম্ভবত্যে । সংখ্যাবাচিনি ছেকশকে ব্যাবৃত্ত্যভাব এব হল্বয়ং ক্স্যাপ্যাদৌ ন সম্ভব-তীতি! পুর্যাঞ্চাধিকরণভূতবিশিষ্টমেব লোকপ্রসিদ্ধং কুস্তাদি প্রাহ্ম। উদকুস্ত ইতি ব্যাসমাসঃ।

(১৮৮)। স্থল্পতি নিপাতাতে মিত্রে বাচ্যে। শোভনং হৃদর্মস্যেতি ব্ছুব্রীছিঃ। মিত্র ইতি কিম্যু স্থল্পরঃ সঞ্জনঃ। ১৮৯। ছুহ্ন চ্ছত্রো। স্ব্রোগঃ স্বদয়রোগঃ স্থান্তোকঃ স্বদয়শোকঃ স্বচ্ছল্যং স্বদয়শলাং সৌহাদ্যিং সৌহদ্যামিতি স্বদ্যান্তাাং রূপম্।

১৯০। বহুব্রীহাবন্তস্ত ককুদস্যাল্লুগ্রস্থাম্। অসংজাতং ককুদমস্ত অসংজাতককুদ্বৎসং পূর্ণককুত্ররুণং সন্নককু-দৃদ্ধঃ

১৯১ ! ন, ত্রেরগিরো ! ত্রিককুদং ক্ষেত্রম্। গিরো তু—ত্রিককুমাম পর্বতঃ। ভাত্ত হি ককুদমিব ককুদং শুক্লাদি।

(১৮৯)। ছহ্ব দিতি নিপাতাতে শক্রো বাচ্যে। ছহ্ব দিতি তুইং হৃদয়মন্যেতি বহুত্রীহিঃ। শত্রাবিতি কিম্ ? হৃহ্ব দয়শ্চৌরঃ। সৌহার্দ্যমিতি
বাক্ষণাদিঝাৎ ব্রাক্রণাদি গুণব্চনাদিত্যাদিনা ট্যপ্ হৃৎ সিন্ধ্ভগাস্তদ্যভয়পদে বৃদ্ধিঃ। সোমি ত্রে হুরঃ শত্রাবিতি কর্তব্যে যদিপাতনং করোতি তৎ
পূর্বোত্তরপদ্বিভাগনিরাসার্থাং তেন সৌহৃদ্য মেত্যেকে।

(১৯০)। বছব্রীহো সমাসেইস্ত স্থিত সক্দস্যাকারলুগ্ভবতি অবস্থায়াং গমামানায়াম্। অস্প্রেত্তায়ৢগিতানেনাপি সম্বধাতে তেনাস্তাকারস্য
লুগ্ভবতি। কালাদিকতো বয়োবিশেষো ধর্মবিশেষশ্চাবস্থা। স্থলককুদলবংন্ বস্তীককুং নাতিসুলো নাতিবলবান্ ইত্যর্থঃ অত্র ধর্মবিশেষো গমাতে।
বছরীছাবিতি কিম্? পূর্ণঞ্চ তৎ ককুদঞ্চেতি পূর্ণককুদম্ অনেনাপি
তাকণাং গমাতে এব। পূর্দস্থিত্রকত্তরপদে পরে বিশানাৎ তদস্বত্তেরস্তস্য
ন প্রাপ্রোতীতি অস্তস্যেতি ক্তম্। ককুছেকে নিজে ককুদশক্ষ্য প্রয়োগো
মাভূদিতি প্রয়োজনম্। অবস্থায়ামিতি কিম্? বেডককুদঃ।

(১৯১)। ন ত্রেরগিরাবিতি স্ত্রং প্রমাদক্তম্। ত্রিককুদং ক্ষেত্র-মিত্যত্রাবস্থায়া অনধিগমাৎ অকারলুগেব ন প্রাপ্নোতী'ত কিং প্রতি-ধেধেন তত্মাৎ ত্রের্গিরাবিতি লক্ষণম। ত্রেকত্তরস্য ককুদশ্দস্য বস্ত্রবীহো ১৯২। উদ্বিভ্যাং কাকুদন্ত। উৎকাকুৎ বিকাকুৎ।

১৯৩। পূৰ্ণাদ্বা

পূর্ণকাকুৎ পূর্ণকাকুদঃ।

১৯৪। উপমানাদহস্তাদেঃ পাদক্ত।

ব্যাত্রপাৎ। হস্তাদেস্ত । হস্তিপাদ কটোলপাদঃ কণ্ডোলপাদঃ। হস্তিন্ কটোল কণ্ডোল গণ্ডোল কুশূল গণিকা দাসী মহৎ।

১৯৫ স্থাসংখ্যাসূত্ৰাক্ষ। শোভনৌ পাদাবভা প্ৰশাৎ শ্বিপাৎ গৃত্পাৎ।

সমাসে গিরৌ বাচ্চে ্কারলুগ্ভবতি । জীণি কর্দান্তভা জিকর্ৎ পর্বতঃ
শৃক্ষেব কর্দাকারভাগ কক্দমিব কর্দং পর্বতিবিশেষভা সংভেয়ম্।
গিবাবিতি কিন্ ? গ্রিক সুদং ক্ষেত্রম্।

- (১৯২)। উং বি ইত্যেতাভ্যামুত্তরস্থান্তস্ত কাকুদস্ত বছরী**হৌ** সমাসেহকারলুর ভ্রতি । উলাতং কাকুদমস্যেতি উৎকার্**ৎ কা**কুদং তালু ভগতে।
- (১৯৩)। পূর্ণকাং প্রস্যা**ন্তত্ত কা**ক্দসা বহুব্রী**হৌ স্মানে**হকার-লগা ভবতি।
- (১৯৪)। উপমানাং হস্তাদিবিদ্ধি তাং পরস্থান্তম্য পাদশব্দ্য বহুরীহৌ সমাদে অকারনৃগ্ভবতি। বাাদ্রপাদা ইব পাদাবস্থেতি বহুরীহিঃ
 পূর্বার্থনদ্বিশেশণ্ড স্থিতাদের্লোপ ইতি পাদশন্দােশাং। হস্তি
 মহবৈগণিকাকটোলকণ্ডোলপ্রেশ্ব দান্তঃ।
- (১৯৫)। স্থানাৎ সংখ্যাবাচকাৎ গৃঢ়াচ্চোত্তরস্তান্ত পাদশনস্ত বহুীনৌ সমাসে অকারলুগ্ ভবতি। গৃঢ়পাদিত্যত্ত লক্ষণাভাবাৎ পৃযোদরাদিবাৎ অকারলোপং পানিনীয়ান্চান্দ্রান্চ বদন্তি। পাদয়তীতি পাৎ পাদক্রতেঃ কিপ্ গৃঢ়পাৎ ভুক্তর ইতি হুর্গসি হ। পাদম্ভাচ্চেতি ত্রিয়ামীপ্রভায়ঃ

১৯৬। কু স্তাদেঃ স্ত্রিয়াম্। কুস্তপদী। কুন্ত শফন এক জাল শত মুনি শিভি সূত্র গোধা কলস দাসী বি নির্ অর্দ্ধ দ্রোণ কুণি কৃষ্ণ শূকর সকৃৎ সূচী।

১৯৭। দ্ব্যস্তর্ভ্যামৃপামীপঃ।
দ্বিগতা আপোহস্মিন্নিতি দ্বীপঃ অন্তর্গতা আপোহস্মিন্নিতি অন্তরীপম।

১৯৮। অনদন্তাত্পদর্গাৎ।

ত্রীপম্ অধীপং দ্মীপং প্রতীপম্। অদন্তাত্তু— প্রাপং পরাপং
সমাপং নাম দেবযজনম্।

মতো নান্তি সমাসক্ক লোপত্ত পাদস্তত্ত গ্রহণাৎ গৃঢ় পাৎ সপী। যে তু মক।রলে।পং কুর্যান্ত তৈগু ঢ়পদীব্যার্ত্তরে যত্ন: করণীয়ঃ।

⁽১৯৬)। কুন্তাদের তরস্যান্তস্য পাদশক্ষ্য স্তিরামকারলুগ্ ভবতি।
কুন্তাদৌ য উপমানশন্ধঃ সংখ্যাশকন্চ তন্মান্তরস্য পাদশক্ষ্যা পূর্কযোগাভ্যানে নকারলোপে সিদ্ধে কুন্তাদৌ পাঠঃ কুন্তাদেঃ পাদন্তাদিতি নিত্যমীবিধানার্থঃ। কুন্তপদীতি পাদন্তাচ্চেতি পাক্ষিকমীপ্রত্যয়ং বাধিতা কুন্তাদেঃ
পাদন্তাদিতি নিত্যমীপ্রত্যয়ঃ ভদ্ধিত্যাচৌ শসাদী ইতি ঈপ্রত্যয়স্য শসাদিল্লাৎ সমাসক্রভালোপসা পাদঃ শসাদ্যটি তদ্ধিত্যে চেতি হসঃ
কুন্তাইজালশতম্নিস্ত্রকৃষ্ণকুণিশিতিকল্সাঃ বিনির্দ্ধসক্ত্রিশ্করদাস্যেকদ্যোণগোধান্ট।

⁽১৯৭)। দ্বি অস্তর ইত্যেতাভ্যামুত্তরস্য অপ্ইত্যস্য স্থানে ঈপ ইত্যয়মাদেশো ভর্বি। দ্বীপ ইতি শ্বগাদেরৎ সর্প্রেত্যং।

⁽১৯৮)। অকারান্তবজি তাহুপদর্গাহুত্তরদ্য অপ্ইত্যদ্য স্থানে ঈপ ইত্যুয়মাদেশো ভবতি। ছর্গতা অপোহত্রেতি হরীপং এবমন্থীপমিত্যাদি ভবতি। অপ্শব্ধ প্রতি ক্রিয়াহুগতত্বাভাবাৎ উপদর্গগ্রহণং প্রাহ্যুপলক্ষ-ণার্থন্। সমাপমিতি দমাঙ্পূর্বস্য অপ্শব্দ্য রূপং সংজ্ঞাত্দ্য লোক-প্রসিদ্ধমেব জ্রেয়ন্। অতএবাহ দমাপং নাম দ্বৈব্যুজনমিতি। তন্ধাৎ স্মাপো নামীতি চক্রাক্ষণমন্থ্বিদ্।

১৯৯। উপোহনোদে শৈ অনুপ:।

২০০। দীর্ঘো বলাদে কৃষ্যাদেঃ। বলাদে পরে কৃষ্যাদেই স্বো দার্মো ভরতি। কৃষীবলঃ দন্তাবলঃ আস্মতীবলঃ।

२०)। न अम्छेखा

প্রতিবলঃ। স্থাসক্রম্বাহ—নাসংজ্ঞাযাম্। প্রতিবলঃ প্রতেবলঃ। উৎসাহবলঃ উৎসঙ্গবল ।

২০২। কর্ণে চিহ্নার্থস্থারিস্টাদেঃ।

দাত্রমিব কর্ণে চিহ্নং যক্ষা সা দাত্রাকর্ণা গোঃ দ্বিগুণাকর্ণ: দ্বাঙ্গলাকর্ণ:। রিফ্টাদেস্ত — রিফ্টকর্ণঃ। রিফ্ট অফ্টন্ পঞ্চন্ ভিন্ন

ছিন্ন ছিদ্র স্বস্তিক ক্রাব। অচিহ্নার্মস্থ তু—শোভনকর্ণ:।

⁽১৯৯)। অনোক্তরস্যাপ্ইত্যস্দেশে বাচ্যে উপ ইত্যুম্মাদেশো ভৰতি। ঈপ ইত্যস্যাপ্বাদঃ।

⁽২০০।২০১)। অপেক্ষিতবিধিন্বাৎ বছলাধিকারাদ্বা প্রত্যন্তির বলদা গ্রহণং ন নাম:। ক্ষীবল ইত্যাদৌ স্ত্রীধর্মিণ্যাদৌ রজন্বলাদিরিতি বলং ক্ষীবলং কুটুন্ধী দস্তাবলো হস্ত্রী আন্ত্রাবলং শৌশুকং। আন্ত্রিরিজি আঙ্ পূর্ব্ব যুঞ্ অভিযবে জ্যন্তঃ। ক্ষিদস্তান্ত্রিলি আঙ্ পূর্ব যুঞ্ অভিযবে জ্যন্তঃ। ক্ষিদস্তান্ত্রিলি গ্রহ ক্ষাদিপদেন গৃহত্তে নাজে। এতদেব জ্যামিত্নাহ স্তাসক্ষিত্যাদি। যতঃ ক্ষীবলাদ্য এব সংজ্ঞাশকান তু লাত্বলাদয়ঃ। লাত্বল ইতি প্রাদেবল ইতি বলঃ তন্মার ঋদস্তদ্যতি লক্ষণং লিপিকরপ্রমাদক্তম্।

⁽২০২)। কর্ণিন্দে পরে রিষ্টাদিবজি তিস্য চিক্স্বাচিন: শব্দস্য দীর্ঘো ভবতি। যৎ পশ্নাং স্বামিবিশেষসম্বন্ধজ্ঞাপনার্থং দাত্রাকারাদি ক্রিয়তে তদিহ চিক্তং গৃহতে নাগ্রৎ শ্রামত্বমহত্ত্বদীর্ঘণ্ড্রাদিব্যাধ্যানতো বিশেষার্থ প্রতিপত্তে:। দাত্রাকর্ণ ইতি বছরীহি:। ছৌ শুণৌ যস্য স দ্বিশুণঃ

৩০৩। বিশ্বস্ত বদৌ।

বিশ্বাবস্থঃ।

২০৪। রাজি টাদেশে। বিশারাট্। অটাদেশে তু—বিশ্বরাজো বিশ্বরাজঃ।

২০৫। অপীত্রাদেরিগন্ত স্য বহে। মুনীবহং কপীবহম্। পীলাদেস্ত। পালুবহং চারুবহং রুচিবহং দারুবহমিত্যাদি।

২০৬ । ইণস্তোপদর্গন্য কাশে। নীকাশঃ অনুকাশঃ প্রতীকাশঃ ইজুপান্তপ্র্যাদেরদিত্যৎ।

- (২০০)। বিশ্বদা বদৌ পরে দীর্ঘো ভবতি। বিশ্বং বস্তু অদ্যোতি বশ্বাবস্থঃ বিশ্বদা বস্থনরনিত্রেষিতি ন ক্রডং অন্যাসংজ্ঞাবিষয় হস্চনার্থম্।
- (২০৪)। শ্বিদ্য টাদেশে রাজি ণরে দীর্ঘো ভবতি। টকার আদেশেহত্রেতি টাদেশঃ বিশ্বন্দ্রিরজতে ইতি বিশ্বারাট্ কিপ্ অস্জাদী-ল্যাদিনা জদ্য যথং ষষ্ট ইতি বদ্য টঃ পদাস্তেহগুষে চ পরে যকারাদীনাং বিকালাণাং বিধানাৎ বিশ্বরাজে বিশ্বরাজ ইত্যত্র তুন টাদেশঃ।
- (২০৫)। পীৰাদিবজি তিস্য ইপস্তস্য বহে পরে দীর্ঘো ভবতি।
 মুনীবহমিতি মুনিং বহতীতি পদাদেশ্চেতি ঙঃ স্থাসকারেণ করণে ঙেনাপ্যয়ং
 সাধিতঃ ক্লীবেহস্য উপাহরণানি সর্সতি দৃশুন্তে তত্মাৎ লোকাশ্রয়ত্মাৎ ক্লীবত্বং
 বাচ্যম্।
- (২০৬)। ইনজোপদর্গদ্য কাশে পরে দীর্ঘো ভবতি। নীকাশ ইতি কাশৃ দীখো ইজুপান্তপ্রাদেরদিতাদিতি যৎ বৃত্তৌ দৃষ্ঠতে দ লিপিকর-প্রমাদপাঠ: নায়মিজুপান্তো ন চ প্রাদেরাক্বতিগণত্বমূক্তং তন্মাৎ পচা-দেশ্চেতি ও: তন্মাক্তিগণতাৎ। ইণস্ত ইতি কিমৃ ? প্রকাশ:।

তদাকার নপি চিহ্নং দ্বি গুণং গুণশদোহন মববচনঃ। দ্বয়োরস্বুল্যোঃ সমাহার: দ্যুস্বুলং সংখ্যাব্যয়াদস্বেরদিতাৎ। বিষ্ট ছিন্ন ছিড্র স্বস্থিক তিন্ন ক্রান্তপঞ্চাপি রিষ্টাদি।

২০৭। দাদে চি তাদেশে। নীতঃ অনূতম্।

২০৮। কিবস্ত রুচাদাবৃপদর্গকারকপূর্ববিদ্য চ। অভীরুক্ বাধ্ মর্মাবিৎ বৃত্ব নীবৃৎ বৃষ্ প্রাবৃট্ সহ্ ঋতীষাট্ তন্ত্ব পরীতৎ নহ্ উপান্ত। অনুপদর্গকারকপূর্ব দ্য তু—তিগারুক্ পটুরুক্ ভাতুরুক্। •

(২০৭)। দাদাবিত্যেনেন দোদান্দাঞ্দেঙাং গ্রহণম্। তকারাদেশো-হত্রেতি তাদেশঃ। তাদেশঃ দাদৌ চ পরে ইণস্তোপসর্গস্য দীর্ঘো ভবতি। নীরমিতি ক্তঃ দদান্দাঞ্চদেঙামিত্যমুর্থ্রে মরুৎপ্রাদ্যচন্টোবানারন্তে ইতি দাস্থানে তকারঃ। অনিণপ্রোপসর্গস্য তু। প্রতঃ অবত্তম্। তাদেশ ইতি কিম্ ? স্থদতম্। দদাতৌ চ তাদেশে ইতি যত্র দৃশুতে স প্রমাদপাঠঃ শাস্তান্তরে বিরোধাৎ।

(२०৮। উপদর্গ: কারকঞ্চ পূর্বাং যন্ত্রাণ তদ্য সমাদশ্র কিবন্তকচাদৌ পরে দীর্ঘো ভবতি। অর্থাদেবোপদর্গদ্য কারকদ্য চ দীর্ঘো
ভবতি। অভীক্ষণিতি কচ্ দীপ্তৌ অভিপূর্বাং অভিরোচতে ইতি উপদর্গপূর্বাং কিপ নিতাংকুপ্রাদেরিতি সমাদ্য চাজাঃ ক ইতি চদ্য কঃ। মার্মাবিদিতি ব্যধতাড়নে মার্ম বিধ্যতীতি কারকপূর্কাৎ কিপ্ বশাদেকশাদিরিতি
ব্যধা বিধাদেশঃ তরিমিত্তোপপদশ্র চেতি সমাদঃ। নীর্দিতি নিবর্ততে ইভি
কিপ্ রুতু বর্ত্তনে। প্রারুডিভি প্রবর্ষতীতি কিপ্ রুষু পৃষু মুষু সেচনে যথ
ইতি ষশ্র টঃ। ঝতীবাড়িতি বহু মর্বাণে ঝতিং সহতে ইতি কিপ্ দীর্মাঃ হোর্
ইত্যাদিনা হক্ত চঃ বর্গদ্যাদিরিত্যাদিনা চদ্য টঃ অনিচ্কান্ত সাহপ্ততে ইতি
প্রীতদিতি তন্ত্র বিস্তারে কৌগমাদেরিতি নলুক্ ক্রমান্ত্র্যরাদাবিতি তুক্।
উপানদিতি গহ্ বক্তনে নহোধাহত্ত্রে ইতি হদ্য ধঃ ধদ্য চ তঃ। তিগাকক্
তিন্মা কক্ ষশ্র দ তিগাঞ্জ্ব নাজোপদর্গপূর্বাদ্য কারকপূর্বাদ্য চ কচেঃ কিবস্থাতা। ক্রি রুতি রুষি সহি ভনি নহি বিধ্যতরাহ্নী ক্রাদ্যঃ সপ্ত।

२०२। हिडिः (क।

একচিতীকঃ।

২১০। শুনো দন্তদংষ্ট্রাকর্ণকুচ্পদেরু। শাদন্তঃ শাদংষ্ট্রা শাকর্নঃ শাকুদ'ঃ শাপুচ্ছং শাপদম্।

২১১। বরাহেহপীত্যেকে।

খাবরাহে ।

২১২। পদপুচ্ছয়োবে তি চাক্রাঃ। শাপদং শপদং খাপুচ্ছঃ শপুচ্ছঃ।

২১৩। প্রাদের্ঘণি বহুলম্।

নীক্লেদঃ বীমার্গঃ অপামার্গঃ নীহারঃ নীশারঃ নীবারঃ প্রাকারো ক্লতো প্রাসাদো গৃহভেদ ইত্যাদো নিত্যম্। প্রতিবেশঃ প্রতীবেশঃ প্রতিকারঃ প্রতীকারঃ প্রতিহারঃ প্রতীহারঃ নিকারঃ নীকারঃ প্রতিরোধঃ প্রতীরোধঃ অতিসারঃ অতীসারঃ পরিহাসঃ পরীহাসঃ

⁽২০৯)। প্রকরণনিয়মাৎ সমাসাধিকারাদ্বা সমাসবিহিতঃ কোহমু-ক্ষতঃ। চিতিশব্দস্য কে পরে দীর্ঘো ভবতি। কেবলায়াশ্চিতেঃ কপ্রত্যয়ো ন সম্ভবতীতি তদন্তোদাহরণম্। একা চিতিরস্তেতি একচিতীকঃ অক্ত-সমাসান্তাদ্বেতি কঃ।

⁽২>• । ২>>)। খন্ ইত্যক্ত দস্তাদিবু পরেষু দীর্ঘো ভবতি। শুনো দস্ত: খাদন্ত ইতি ষষ্ঠীমমাস:। এবং সর্ব্যন্ত । খাবরাহাবিতি ছন্ত:। খাদং-ট্রেব দংট্টা অস্য ইতি বছত্রীহিব্ । পূর্ব্যর্থসম্বন্ধোত্তরপদবিশেষণস্য স্থিতা-দেলেশিপ ইতি মধ্যপদলোপ: ।

⁽২১২)। পদে পুচ্ছে চ পরে দীর্ঘো বা ভবতীতি চান্দ্রা ব্যাচক্ষতে। মতু চক্রব্যৈতন্ত্রকণম্। কিন্তু বহুলানুবৃত্তাবন্তেষামপীতি।

⁽২১০)। প্রাদের্ঘণ্যরতা ন সম্ভবতীতি বণস্তাবৈ গ্রহণম্। প্রাদের্ঘণত্তে পরে বহুলং দীর্ঘো ভবতি। নীক্লেদ ইতি ক্লীদ্ আর্দ্রীভাবে নক্লিন্যতাতি কর্ত্তির ঘন্ অপমৃজস্তানেন করণে বণ্ অপামার্গ ইতি ওবধি-বিশেষঃ নীহারো হিমং নীশারঃ প্রাবরণং নীবারো ধান্তবিশেষঃ প্রাকারো

প্রতিহাস: প্রতীহাস ইত্যাদে বিকল্প:। প্রকার: প্রসার: বিসার: প্রসাদ: প্রসেব: বিবাদ: অবসাদ ইত্যাদে নিষেধ:।

২১৪। প্রায়েণ মসুষ্যাভিধানেহপি ন স্যাৎ। নিষাদশ্চাণ্ডাল:।

২১৫। কৃতিদন্যত্রাপি। পূর্ববামুখং পশ্চিমামুখং বিক্লাৎ বীরুৎ বিরুধং বীরুধং পুরুষ: পুরুষ নরকঃ নারক: কেশাকেশি কচাকচীত্যাদি।

বৃতাবিতি বেষ্টনে বাচ্যে প্রাসাদে। গৃহভেদ ইতি দেবানাং ভূভ্জাঞ্চ গৃহবিশেষঃ। প্রক্রিরত ইতি কর্মানি ঘণ্ প্রসীদন্তাত্র ইতাধিকরণে ঘণ্ অর্থভেদে নিবেষসনস্তবং দর্শবিষাতি প্রকারঃ প্রসাদ ইতি প্রকারো বিশেষঃ
প্রসাদস্তাহ্যা দানম্। প্রতিবিশকীতি কর্তার ঘণ্ প্রতিবেশঃ প্রতিকরণং
প্রতীকার ইতে ভাবে ঘণ অথনা প্রতিক্র্যনেন ইতি করণে প্রতিহরন্তি ভাগের ইতে ভাবে ঘণ অথনা প্রতিক্র্যানেন ইতি করণে প্রতিহরন্তি ভাগেরা হাজা। নিকরণং নিকারঃ কু বিক্ষেপে।
প্রতিব্যান্তানেতি প্রতিহাবো হাজা। নিকরণং নিকারঃ কু বিক্ষেপে।
প্রতিব্যান্তাননতি প্রিয়োগের বৃণ্ অবসমনে। অভিসরণমতীসারঃ স্থ
গতৌ। প্রীহসনং পরীহাসো হসে হসনে। বিসর্জীতি বিসারো মৎসাঃ।
প্রসীবাজীতি প্রসেধাে ধ্যেতকটঃ ধিবু তন্তুসন্তানে এবং বিধাদ অবসাদ
ইত্যাদাবিপি ন ভবতি।

- (২১৪)। প্রায়েণ বাহলোন মনুষ্যাভিধানেংপি বহলবচনাদীর্ঘে।
 ন ভবিতি। এতেনৈতৎ প্রতিপাদিতং পূর্ব্বোক্তান্যাদাহরণানি মনুষ্যেতরবাচকালোব।
- (২১৫)। যেযু দীর্ঘবিধানলকণানি ন সম্ভবস্তি ততোহক্সত্রাপি বছলং কচিন্দীর্ঘো ভবভি। শিন্ত প্রয়োগদর্শনাদিতি ভাব:। পূর্ব্ধাযুধমিতি পূর্ব্বং সুথমস্ভেতি বছরীহি:। বিরুণদ্ধীতি বীরুৎ লতা বিপূর্বরুধিরাবরণে বিবধ ইতি বধঃ সৌত্রো ধাতু: পচাদেশ্চেতি ও:। কেশাকেশীতি কেশেরু কেশেষু গৃহীত্বা ইদং যুদ্ধং বৃত্তমিতি তৃতীয়াসপ্রয়ান্তর্জাদিনা বছরীহি: ইচ্-ক্রিয়ায়তীহার ইতি ইচ্-ম্নাসান্তঃ তিঠদ্যাদিপাঠাদব্যরীভাবত্বে অব্যন্ধীভাবে

২১৬। বহুবচোহনজিরাদের তোঁ নামি।
উড়ুম্বরাবতী মশকাবতী বীরপাবতী পুন্ধরাবতী। অবহুবচস্তা।
ব্রীহিমতী। অজিরাদেস্ত—অজিরবতী। অজির খদির খপুর
খপুর পুলিন মলয় কলহংস চক্রবাক কারগুব। অনামি তু—
বলয়বতী।

২১৭। শরাদেশ্চ। শরাবতী বংশাবতী। শর বংশ পদ্ম ধৃম অহি কপি মণি মুনি। অনান্ধি তু—শর্বতী।

২১৮। কোটরাদেব নৈ। কোটরাবণম্। কোটর মিশ্রক সিধুক শারিক পূরগ। অনাম্মি তু—কোটরবণম্।

চানত ইতি বিভক্তিলোপঃ। সর্ব্বিম চক্তমতে আদত্র বিধীয়তে তল্পতে মুঠামুখিতি। এবং সতি ভূভূতা ভূভূতা প্রস্থাত্যেদং যুদ্ধং বৃত্তমিতি ভূতৃতাভূভূ-তাতি লক্ষ্যতে মাথে তু সর্বাপ্তকে এব স্বস্থো বাহুবাহবি ব্যাসজ্বোমিতি পাঠঃ।

(২১৬)। অজিরাদিব্যতিরিকস্থ বহ্বচো মতৌ পরে দীর্ঘো ভবতি সংজ্ঞায়াং বিবয়ে। উড়ুপরা অস্যাং সন্তীতি উড়ুপরাবতী অস্বাস্তাদেনদ্যামিতি মতু:। এবং মশকাবতী বীরণাবতী পুকলবতী। ব্রীহিমতীতাত্র
সংজ্ঞাঘেহপি অবহ্বচন্দার দীর্ঘ: যবাদ্বিন্দার মতুমো ব:। বলয়ব্তীতি
ভলস্থান্তীতাশ্বির্থে মতু:। অমস্তত্রপাস্তাদবাদেম তুমো ব ইতি মস্য ব:
ঋত্গিদিত্যাদিনা ক অজিব থদির থপুর পুলিন কারগুব চক্রবাক কালহংসাঃ। মলগ্রশ্চতি অজিরাদিমহন্তো ভবতি পুর্নম।

(২১৭)। শরাদেশ মতৌ পরে দীর্ঘো তবতি সংজ্ঞায়াম্ । আবছরজর্থং বচনম্। শরাবতীত্যাদৌ পূর্মবৎ মতু: মতুমদ্য বকার:। শরবংশ
পল্পধ্মা অহিকপিমণয়ো মুনি: শরাদিগণ:। হনুশব্দং কেটিং পঠন্তি তেন
হন্মান্ হনুমানিতি চ তবতি। অতএব হন্মন্তং দক্তৈদেশিতি কুপিতোঃ
রাক্ষপগণ:। হনুমতি লঙ্কাপুরোদেশা ইতি হরং দৃশ্যতে।

্ (২১৮)। কোটরাদীনাং বনে পরে দীর্ঘো ভবতি সংজ্ঞায়াম্।

২১৯। কিংশুলুকাদের্গিরো। কিংশুলুকাগিরি:। কিংশুলুক অঞ্জন ভঞ্জন লোহিত কুৰুট। অনাম্মি ডু—অঞ্জনগিরি:।

২২০। বিশ্বস্য নর্মিত্রয়োঃ। বিশানর: বিশামিত্র:।

২০১। অফনো বক্রাদো।
অফীবক্রো নাম ঋষি:। অফীপদং স্থবর্ণম্। বক্র পদ বন্ধুর
ইত্যাদি। অনাম্মি তু—অফীবক্রঃ কশ্চিৎ। অবক্রাদো তু। অফীভার্যা:।

২২২। **মহতস্তলোপ*চ জাতী**য়ে । মহাজাতীয়:।

কোটরাবণমিতি কোটরাণাং বমমিতি ষষ্ঠীসমাসঃ। এবং সর্বাত্ত। বন-স্থেত্যসূত্রতৌ অত্যে মিশ্রকেত্যাদিনা শত্ম। কোটরমিশ্রকসিপ্রকশারি-কপুরগাইশ্চব পঞ্চামী কোটরাদয়ঃ।

- (২১৯)। কিংগুলুকাদীনাং গিরে পরে দীর্ঘো ভবতি সংজ্ঞায়াম্। কিংগুলুকাগিরিরিতি ষষ্ঠাসমাসঃ। এবং সর্ক্ত্র। অঞ্জনগিরিরিতি বিশেষণ-সমাসঃ রুঞ্গর্কত ইতার্থঃ। কিংগুলুকাঙ্গনলোহিতভঞ্জনকুরুটাশ্চ পঞ্চৈব।
- (২২০)। বিশ্বশক্ষ্যা নরে মিত্রে চ পরে দীর্ঘো ভবতি সংজ্ঞারাং বিষয়ে। অসংজ্ঞারান্ত। বিশ্বে নরা যস্যাস বিশ্বনরো রাজা বিশ্বং মিত্রং যন্ত্র স বিশ্বমিত্রো দিজাতি:। সংজ্ঞারামপ্যেবং সমাসঃ কিন্তু তত্র যথা-কথঞ্জিদ্বয়:।
- (২২১)। অন্তন্ইত্যন্ত বক্লাদে পরে দীর্ঘো ভবতি সংজ্ঞায়াম্।
 আন্তাবক্র ইতি অন্তৌ বক্লাণাশুতি বক্রীহিঃ। অন্তভার্যা ইতি মথাক্র
 বক্রাদিপরতা নাস্তি তথাপাত্র নামাপি ন ভবতি। ঘ্যুসবিকলং প্রত্যাদাহরণম্। তন্মাদ্যকাণাবিতি কৃতং স্পষ্টার্থম্। অন্তভার্যা ইতি কন্তাপি সংজ্ঞা
 ইতি কল্পনা তুন ক্রদয়ক্ষমা।
- (২২২)। মহদিত্যক্ত জাতীয়ে গ্ৰন্থে তলোপো ভৰতি দীৰ্ঘশ্চ। মহা-জাতীয় ইতি প্ৰকারৰতি জাতীয় ইতি জাতীয়ঃ।

২২৩। সমানাধিকরণোত্তরপদে চ।
মহাদেবঃ মহাবাহুঃ। মহতী প্রিয়া অস্তেতি মহতীপ্রিয় ইত্যাদৌ
তু প্রায়ো নামগ্রহণে দ্রীলিঙ্গতাপি গ্রহণমিত্যস্ত প্রায়িকরাৎ।

২২৪। ঘাদকরবিশিষ্টেযু পুংবচ্চ।

মুক্তা ঘাদা মহাঘাদা মহত্যা: করা মহাকরা মহত্যা বিশিষ্টা
মহাবিশিষ্টা।

২২৫। ৄনাভূততন্তাবে । অমহান্ মহান্ ভূতো মহন্তুতক্রমাঃ মহন্তুতা বাক্ষণী ।

⁽২২৩)। সমানাধিকরণে উত্তরপদে চ পরে মহতন্তলোপো তর্বতি দীর্ঘন্ট। মহাদেব ইতি মহাংশ্চাসৌ দেবশ্চেতি মহাদেবঃ কচিদন্ত এপিতি কর্মধারয়ঃ সদাদীনাং পূজামানৈরিতি বা। মহাবাহুরিতি মহান বাহুরস্তোতি বছরীহিঃ সমাসদ্বরহিপি সমানাধিকরণোত্তরপদপরতা। মহতীপ্রিয় ইতি পূংবল্প প্রিয়াদাবিতি পুংবদ্ভাবনিবেধঃ। অস্থানাধিকরণোত্তরপদে তৃঃ মহতঃ পুজ্রো মহৎপুল্রঃ।

⁽২২৪)। ঘাস কর বিশেষ্ট ইত্যেতেরু পরেরু মহতন্তলোপো দীর্ঘন্চ ভবতি। পুংবদ্ধাবন্দ। সমানাধিকরণোত্তরপদে বিহিত্যাত্ত্ব অসমানাধিকরণোত্তরপদে বিহিত্যাত্ত্ব অসমানাধিকরণোত্তরপদে ন প্রাপ্নোতাতি কম্মণার্থ্যক্ত্রীক্ষোঞ্জক্তঃ পুংবদ্ধার্থার্য সমানান্তরেণ প্রাপ্রোতীতি বচনম্। অতএব মহত্যা ঘাস মহাঘাস ইতি ষ্ঠাসমাসস্থ বাক্যমুপদশিতবান্।

২২৬। অফ্টনঃ কপালে হবিষি। অফ্টস্থ কপালেষু সংস্কৃতং অফ্টাকপালং হবিঃ। অহবিষি তু— অফ্টকপালং ব্রাহ্মণস্থা।

১২৭। গবি-যুক্তে। স্ফাগবং শক্টম্ স্ফাভির্গোভিযুক্তিমিত্যর্থঃ। স্যুক্তে তু। স্পষ্ট-গবং ব্রাহ্মণস্থা •

২২৮। ব্রস্থশ্চিতাদাবিষ্টকাদেঃ। চিতাদো পরে ইন্টকাদেদীর্ঘো ব্রস্থো ভবতি। ইন্টকয়া চিতং ইন্টকচিতং ইন্টাকতূলং মালভারী।

স্পষ্টা ভবতি বহুণ এবোক্তং কিঞ্চাত্রাপি মুখ্য: শব্দপ্ররোগঃ মহজ্জপেণ ভূতত্বাচ্চক্রমস:। ন হি স্বার্থে বর্ত্তমানো গৌণো ভবতি। যথা ঘটীভূত ইত্যত্র ত্যক্তমৃৎপি গুাবস্থো ঘটজপমাপল এবাভিধীয়তে নত্বপরিত্যক্তমৃং-পিগুাবস্থ ইতি তন্মুখ্য এবাভূততভাবে শব্দপ্রয়োগঃ।

(২২৬)। অন্টন্ইত্যস্ত কপাশে পরে হবিষি চ বাচ্যে দীর্ঘো ভবতি।
অষ্টাকপালমিতি তদ্ধিতার্থে সমাহারে ইত্যাদিনা দিখা:। ভক্ষো সংস্কৃত
ইতি টণ্ দিখাদ্যোট্ণাদের নাদাবিতি টণ্লুক্। অন্তকপালং ব্রাহ্নণস্তেতি
অন্তানাং কপালানাং সমাহার ইতি দিখা পাত্রাদিখাৎ স্ত্রীদাভাব:।

(২২৭)। গোশকে পরে অষ্টন্ ইত্যক্ত দীর্ঘো ভবতি যুক্তে বাচ্যে।
অস্টাগবং শক্টমিতি অষ্টানাং গবাং সমাহার ইতি অষ্টগবং গৌরত্দিতলুকীতি রাজাদিস্বাট্টঃ অষ্টগবেন যুক্তমিত্যর্থে অষ্টগবমস্তান্তীতি অর্শ আদিস্থাদং যদা বিধীয়তে তদা অষ্টাগবং শক্টম্।

(২২৮)। ইপ্তকাভিশ্চিতমিষ্টকচিতমিতি ক্বতা কর্তৃকরণয়োর্ব হল-মিতি সমাস:। ইবীকতুলমিতি ইষু ইচ্ছারাং ইষুক্ষাদেরীক ইতি স্থাকেন ইবীকা শরশলাকা বীরনশলাকা কাশ্শলাকা চোদ্যতে যতীসমাস:। মাল-ছাব্রীতি মালাং ভর্তুং শীলমস্তেতি ণিন্ ত্রিমিছোপপদ্যা চেতি সমাস:। · ২২৯। তদন্তস্থ চ।

পকেষ্টকচিতং মুঞ্জেষীকতুলম্। মল্লিকা মালভারিণ্যঃ সর্বাঞ্জীনার্দ্র -চন্দনা ইতি দণ্ডী।

২০০। পাদস্যাজাত্যুপহতগেষু। পদাজিঃ পদাতিঃ পদোপহতঃ পদগঃ।

২৩১। অতদর্থে যতি।
পাদে বিধ্যস্তীতি পদ্যা: শর্করা:। তদর্থে তু—পাদার্থমিদং
পাদ্যম্।

২৩২। নানস্বার্থস্থ। দ্বিপালং ত্রিপাল্ম।

⁽২২৯)। তদিতি ইউকাদেঃ পরামর্শঃ। ইউকাদ্যস্তদ্য চিতাদে পরে হ্রমো ভবতি।

⁽২৩০)। আজি আতি উপহত গ ইত্যেতের পরের পাদশক্ষ্য হুষো ভরতি। পাদাভ্যামজতীতি পদাজিঃ অজ গতিক্ষেপণয়োঃ পাদাভ্যাম-ততীতি পদাতিঃ অত্ দাতত্যগমনে প্রাদেরিনিত্যপপদেহিপ ইণ্ বাহল্যাৎ অজোবীর্ম্যাৎ পাদেনোপহতঃ পদোপহতঃ পাদাভ্যাং গচ্ছতীতি পদ্যঃ অস্তাদের্গমো ড ইত্যুহুরুটো অক্সতোহিপ দৃশুতে ইতি ডঃ ভিত্তাদম্লুক্। পদোপহত ইতি কতা কর্তৃকরণয়োর্বহলমিতি সমাসঃ। অক্সত্র তরিমিত্তোপ-পদ্স্য চেতি সমাসঃ পাদস্মানার্থেন পদশক্ষেনাপি সিধ্যতি। পাদাজি-পাদাতিনিরাকরণার্থং বচন্ম।

⁽২৩১)। অতদর্থে যতি পরে পাদস্য হস্বো ভবতি। পদ্যা: শর্করা ইতি স্বয়ং তদ্বিধ্যতী ত যং। পাদ্যমিতি পাদার্ঘাভ্যাঞ্চেতি তাদর্থো বং অদিল্ল,গিতি অকারসূক্।

⁽২০২)। উভাভ্যাং যোগাভ্যাং বিহিতং কার্য্যস্থাভিধারকতাৎ পাদশবাদগুদ্য ন ভবতি। দ্বিপাদ্যমিতি হয়োঃ পাদরোঃ সমাহার ইতি দ্বিশুঃ পণপাদমাষশতাদ্য ইতি য:। পণাদিভিঃ পরিমাণবচনৈঃ সাহ-চর্যাৎ পরিমাণবচনস্যৈব পাদশব্দশু তত্ত্র গ্রহণম্। যদ্যপ্যাভ্যাতিগেরু গ্রমনার্থেষু উপহত্দকে চ হননার্থে পরে প্রাণ্যক্ষবাচকস্যৈব করণভারাগ্র-

২৩৩। ইকে চলনার্থে। পাদাভ্যাং চলতি পদিক:।

২০৪। সমাসকৃতাল্লোপস্য পাদঃ শসভিচি তদ্ধিত্য চ। ব্যাত্রপদঃ ব্যাত্রপদা বৈয়াত্রপদাম্। অসমাসকৃতালোপস্ত তু। হাস্তিপাদিঃ।

২০:। ঈদ্তোবৈ তিরপদে।
গ্রামণিপুত্র: গ্রামণীপুত্র: ব্রহ্মবন্ধুপুত্র: অলাবুকক্রুদন্ভুফলম্ অলাব্ কর্কন্দুন্ভুফলম্।

এব সম্ভবতি তথাপি ষতি পরে বিহিতশ্চ হুস্বো যে পরে ন সম্ভবতি তক্ষালক্ষণমেতৎ ক্বতং মন্দধিয়াং ঝটিত্যবব্ধেনার্থম্।

- (২৩%)। চলনার্থে বিছিতে ইকে পরে পাদক্ত হ্রেরা ভবতি। পদিক ইতি তেন চলতীত্যক্রবৃত্ত্বৌ পর্পাদেষ্টিক ইতি টিক:। এতল্লকণং লাস্তেন কেনাপি গর্পাদেষ্টিক: ইত্যত্র পাদঃ পচেডতি গণলক্ষণমন্মরতাত্র লিখিতম।
- (২৩৪)। সমাসে ক্তোহকারলোপো বস্তু তস্তু পাদ: শসান্তচি তদ্ধিত্বে পরে রুম্বো ভবতি। ব্যাপ্রদান ইতি উপমানাদহস্ত্যাদেঃ পাদস্যেত্যকারলুক্ শদ্। বৈরাপ্রপদামিতি ব্যাপ্রপাজকাৎ গর্গাদের্যণিতি ষণ্ বৃদ্ধিত্বাদ্য পূর্দরা প্রথম বিরাপ্রদানিতি বাজ্যাদিনা বকারদ্য স্থানে এবঃ। বিপূর্কাদাঙ্গুর্দাৎ জিপ্রভেঃ ব্যাপ্রশক্ষিদ্ধিঃ। যে অব্যুৎপন্নং বাপ্রশক্ষিত্তি ভেষাং বাদেরিত্যাদিনা এবঃ। হাস্তিপাদিরিতি হস্তিপাদস্থাপত্যম্ অদ্যাক্তেতি ইণ্ অদিল্পিত্যকারলুক্ নাস্ত সমাসনিমিত্তা।
- (২৩৫)। ঈকারাস্কস্ত উকারাস্কস্ত চ উত্তরপদে পরে হ্রস্থো বা ভবতি। গ্রামণিপুত্র ইতি গ্রামং নয়তীতি উপপদে প্রাদেশ চেতি কিপ্ নিয়ো গ্রামাগ্রাভ্যানিতি শবং গ্রামণ্যাঃ পুত্র: ব্রহ্মবন্ধাঃ পুত্র ইতি ষষ্ঠী-সমাসঃ। অলাবুকর্কন্ত্র্কলং প্রাণেব বৃংপাদিতম্। অতএব পরিণত-লম্মুকলোপভোগভুট্টেতি ভারবিঃ। উদুভোরিতি কিম্? ভার্যাইস্কঃ।

২৩৬। ন তদ্ধিতেদিযুবর্থাব্যয়ানাম্। গার্গীপুত্র: জ্রীকুলং শ্রীকুলং জ্রকুলং সৃতীপুত্র: কাণ্ডীভূতং বৃষলী-ভূতম্।

২৩৭। জকুংসাদীনাং হ্রস্বাতো। জ্রুকুংসঃ অকুংসঃ জ্রুকিঃ অকুটিং। স্বমরকোন্তে তু। জকুংস-জ্রুটিশন্দো দীর্ঘান্তপূর্ব্বপদাবসাধু।

২৩৮। তদ্ধিকেৎজ্যাতোঃ সংজ্ঞায়াং বহুলম্।
কন্মকুজো দেশঃ শেলবহং শিলপ্রশৃঞ্জ নগরং মন্দুরজোহশঃ
বেরবভিমিত্র: রোহিণিপুল ইত্যদৌ নিত্যম্। প্রমদবনং প্রমদাবনং
বেরবভিপুল্র: রেবতীপুল্রঃ শিংশপস্থলং শিংশপাস্থলমিত্যাদৌ

⁽২০৬)। তদ্ধিতসংজ্ঞকন্ত দিত ইর্থন্ত উবর্থনা অব্যর্মা চ পূর্বন্দকণপ্রাপ্তো ব্রন্ধোন ভবতি। অর্থনিকঃ কারণবাচী ইর্কারণন্ত উব্কারণন্ত ইত্যর্থা। গার্গীপুলাঃ স্ত্রীকুলাং শ্রীকুলাং ক্রকুলমিতি ষষ্ঠীসমাসাঃ। গর্গসাপতাং স্ত্রী গর্গাদের্যন্ পৌত্রাদাবিতি যণ্ জাতিত্বাদী হলতদ্বিতসোতি যলুক্ সর্বাদীং প্রপ্রেত্যারস্তারো সংপ্রুষ ইতি যুসহিত্যাতাং স্থানে আদিইস্যেতস্তদ্ধিতত্বাং। স্ত্তীপ্তাঃ কাণ্ডীভূতমিতি অকাণ্ডং কাণ্ডং ভূত-মিতি অভ্তত্তাবে কৃত্বন্তিয় চিবুরিতি চিবুঃ স্কট্ তদ্ধিতবদাদিতাং চ্যন্তমানবার্থং তদ্ধিতেত্বাদেবাত্রসিদ্ধে এতং প্রমাদোদাহরণম্। উরীক্ততাতি দ্রন্তব্বান্। অব্যর্ম্বানে চিব্রহণং কুর্বাণশ্চন্দ্রো ভ্রান্তঃ।

⁽২৩৭)। জকুংসাদীনামবয়বে উত্তরপদে পরে ব্রস্থাতো ভবতঃ।
জকুংস ইতি অক তকার্যায়োঃ প্রক্তেরকুকরণং ব্রস্থাকুরত্তো প্রাপ্তায়াং ব্রস্থগ্রহণং বালর্ভিনিরাসার্থম্। অয়মর্থো বামনবিনীতকীর্ত্যাদিভিরিপ্তো
রক্ষিতেনাপি ব্যাখ্যাতঃ। ভবে কুংসয়তীতি জকুংসঃ কুসিন্চুরানৌ দওকে
ভাষার্থঃ পঠাতে পচাদিখান্তঃ। ভবোঃ কুটিঃ ভকুটিঃ কুট্ কোটিল্যে
জ্ঞাদেরিরিতি ইঃ।

⁽২৩৮)। তদ্ধিতসংজ্ঞকদা ঈত: স্তাধিকারবিহিতস্যাতশ্চ সংজ্ঞায়াং বহুলং হুৰো ভবতি। ক্সা কুজা অনিমিতি ক্যুকুজ: শিলাং বহুতীভি

বিকল্পঃ। লোমকাগৃহং লোমকাবণ্ডঃ নান্দীকরঃ নান্দীঘোষঃ নান্দীবিশাল ইত্যাদো নিষেধঃ।

২০৯। গোরপ্রধানস্থান্তস্য । সভিগঃ চিত্রগুঃ।

২৪০। স্ত্রীপ্রত্যয়স্য চ।

বহুখটু: কুতক্ষম: স্থনদি: অতিপ্রেয়সিঃ।

২৪১। ন কুদীতঃ।

অতিতন্ত্রী: অতিলক্ষী:।

শিলবহং পচাদেশ্চেভি ঙঃ শিলাপ্রস্থোষ্টের্যাতি শিলপ্রস্থং মন্দ্রায়াং জাতো মন্দ্রজ ইতি দপ্রমান্তাজ্জনো ভূত ইতি ডঃ তরিমিত্তোপপদস্য চেতি সমাসঃ। রেবতী মিত্রমস্যেতি রেবতিমিত্রঃ রোহিণ্যাঃ পুত্রো রোহিণিপুত্রঃ শিংশপা-স্থলমিত্যাদি ষঠীসমাসঃ। নান্দীকর ইতি নিশাদেঃ ক্লুক ইতি উঙ্

- (২৩৯। অপ্রধানস্যান্তন্থিতস্য গোশক্স্য হ্রপ্রো ভবতি। গাম্তিক্রান্তোহতিও বিতীয়ন্না অত্যাদেঃ ক্রান্তাদাবিতি তৎপুরুষঃ। তৎপুরুষস্যোভরপদার্যপ্রধানত্বং প্রান্তিকমিতি প্রাণেবোক্তম্। চিত্রগুরিতি
 বছপ্রীহিঃ। অন্তদ্যতি কিম্

 ং গোক্রম্। অপ্রধানস্যেতি কিম্

 ইংগাঃ।
- (২৪০)। প্রত্যরস্যেতি কৃতং স্বরূপগ্রহণনিরাসার্থন্। অপ্রধানস্যেতি বিশেষণসামর্থাৎ স্ত্রীপ্রত্যরাস্ত্রস্যেতি গ্রহণন্। স্ত্রীপ্রত্যরস্যাপ্রধানস্যাস্ত্র-স্থিত হবে ভবতি। বহুধট্ ইতি বহুব্রীহিঃ। স্থনদিরিভি অতিপ্রের-সিরিভি স্থাতো নদীন্ অতিক্রাস্তঃ প্রেরসীং দিতীয়য়া অত্যাদেঃ ক্রাস্তাদা-বিতি তৎপুরুষঃ। অত্র পূর্ম্বপদার্থপ্রধানতা তৎপুরুষস্য। অপ্রধানস্যেতি কিন্? রাজকুমারী। অস্তর্য্যেতি কিন্? নদীতীরস্।
- (২৪১)। কুদধিকারবিহিতস্য স্ত্রীপ্রত্যরদ্য চ উত্তো হ্রো ন ভবতি। অতিক্রান্তো লক্মীন্ অতিলক্ষীরিতি লক্ দর্শনাকরোজানেরী

২৪২। অর্দ্ধপিপ্লল্যাদিষু চ। অর্দ্ধপিপ্ললী অর্দ্ধনারী অর্দ্ধনগরী পূর্ববনগরী অর্দ্ধালাবুরিত্যাদি।

२-७। ঈश्रमार्व इद्धीरही।

বহুভোয়সী।

2881 (क ह।

বহুকুমারীকঃ অল্পনদীকঃ বহুব্রহ্মবন্ধূকঃ।

২৪৫। খাতো বা।

বহুবিদ্যাক: বহুধিগুকঃ।

२९७। कूत्रकारमी कामिः।

নিয়ামিতি ঈ লক্ষাদেশশ্চ। অতিতল্পীরিতি তত্তি কুট্মধারণে ইদিক্সানুম্। ঈত ইতি কিম্? রুদাতোহপি নিষেধঃ স্যাৎ। অতিপচঃ গভেহঃ। বিভিদাদেরিত্যাদিনা গুর্বাদীত্যাদিনা চ স্তিয়ামাদিহিতঃ।

- · ২৪২।। অর্দ্ধপিপ্রল্যাদির চ স্ত্রীপ্রত্যরস্য চ হ্রন্থোন ভবতি। অর্দ্ধনি কর্দ্ধনাবীতি নপুংসকার্দ্ধ ইত্যাদিনা তৎপুরুষঃ নৌল্লেম্বিতি রাজাদিভাট্টঃ লীছে টিস্থাদী। পূর্ব্যনগরীতি অংশি ষষ্ঠ্যা ইত্যাদিনা সমাসঃ পূর্ব্যার্থপ্রধানভাস্য প্রাগেব ব্যাথ্যাতা। অর্দ্ধালাব বিতি পঙ্গাদেরারিতি অলাব্শক্ষাদৃঃ।
- (২৪০)। সিয়দো: স্ত্রীপ্রতায়স্য হ্রস্থো ন ভর্বত বছরীরুই। বছপ্রেয়সীতি প্রশাসন্দাৎ গুণাদীয়স্বিষ্ঠোবেতি ঈয়স্থা প্রাদি: প্রিয়াদেরি-মেঠেয়সাবিতি প্রশাসন্দাস প্রা: উদীবাদী ঈয়সোন্টেতি প্রতিষেধাৎ কো ন ভবতি। অবছরীথে তু। অভিপ্রেয়সিঃ।
- (২৭৪)। ক ইতি বিষয়সপ্তমী কে প্রত্যয়ে বিষয়ে বছব্রীছে) ছ্রন্থোন - ভবতি। বছকুমারীক ইতি অনিবুবর্থ: স্ত্রীদুদিতি ঝদাদিত্বাৎ কঃ।
 - (২৪৫)। স্ত্রীপ্রত্যরদ্যাকারদ্য কে পরে হ্রস্বো বা ভবন্তি। অস্য কলং পূর্ব্ববং।
 - (२८७)। উত্তরস্ত্রে श्रेयमर्थ देखि वित्मयनामवात्रमा कार्यादनर

অক্ষাদে পরে কু: কাদির্ভবতি। কুৎসিতমক্ষি কাক্ষং কুৎসিতমক্ষি যদ্য স কাক্ষো বিপ্র: কুৎসিতঃ পন্থা: কাপথম্। কুপথমিত্যসাধু:।

२८१। जेमनर्पर्भनकारमी छ।

কালবণং কাম্লং কাক্ষং কাপ কৃষয়। ঈষদ্বাদো যস্য স কাবাদং।
এবং কাকারং। তথাচ ভারবি:—দেবাকানিনিকাবাদে কাকারেভভরে কাকা ইতি।

২৪৮। পুরুষে বানীষদর্থে।
কুপুরুষঃ কাপুরুষঃ। ঈষদর্থে চ বেতি ভাগর্তিঃ। ঈষৎপুরুষঃ
কুপুরুষঃ কাপুরুষঃ।

নতু পৃথিবীবাচকস্য। যতুক্তং সম্ভবব্যভিচারেতি বিশেষণমনর্থবদ্ভবতি। অনীষদর্থোহরমারস্তঃ। অক্ষপথশন্ধরোরেব পরয়োরনেন বিধানম্। কুৎ- সিতমক্ষি কাক্ষমিতি পাঠো রুত্তৌ লিপিকর প্রমাদঃ। স্বাঙ্গাভ্যাং সক্থ্য- ক্ষিভ্যামিতি বছরীহৌ টবিধানাৎ। ক্ৎসিতমক্ষং কাক্ষমিতি দ্রষ্ঠব্যম্। অক্ষ- শন্দ ইন্দ্রিরবচনঃ। কাক্ষো বিপ্রে ইত্যত্রাপি সমাসাস্তে ক্বতে অক্ষপরতা বিদ্যুত এব। কাপথমিতি ঋগাদেরৎ সর্কত্রেতি অৎ সংখ্যাব্যয়াৎপথ ইতি নপ্ংসকত্বম্। কুপথমিত্যসাধুরিতি পথিশক্ষেন সমাসে নিত্যং কাদেশঃ। পথিশক্ষসমানার্থন পথশক্ষোপি ক্লীবন্ধাভাব ইত্যভিপ্রায়ঃ।

(২৪৭)। ঈষদর্থে বর্ত্তমান: কুশব্দ: অক্লাদৌ অনক্ষাদৌ চ পরে কা ভবতি। কালবণমিতি নিডাং কুপ্রাদেরিতি তৎপুরুষ: কাক্ষমিতি কদাদেশোহপ্যনেনাপেক্ষিতবিধিত্বাৎ বাধ্যতে এতদেব সাধরিত্বং ভার-রিল্লোকোপস্থাস:। ঈষদাকারোহস্তেতি কাকার:।

(২৪৮)। অনীষদর্থে বর্ত্তমানঃ কুশবঃ পৃশ্বস্থাদে পরে কা বা ভবতি।
অপ্রাপ্তে বিভাবেয়ন্। ঈষদর্থে চ বেতি মতান্তরোপদর্শনং নাত্ত প্রক্তঃ
শ্বরদো বছভিক্সেক্সিডখাং।

২৪৯। কৎস্বরত্রিবদরথেষু তৎপুরুষে।
কদমং কত্রয়ঃ কদদঃ কদ্রথঃ।

২৫০। তৃণে জাতো। কত্বণং নাম জাতিঃ।

২৫২। রাজাদেক্টাদিঃ। রাজাদেরুত্তরে টার্দিভবতি।

২৫৩। সূচ তদ্ধিত**স্তৎপুরুষে।** মগধরাজঃ মগধরাজী।

⁽২৪৯)। স্বরে পরে ত্রি বদ রথ ইন্ড্যেতেয়ুচ পরের্ তৎপুরুষ-সমাযে কু: কদ্ভবতি। কুৎসিতমর্লং কদলং কুৎসিতাস্ত্রয়: কল্রয়: জস্-ডিতোরপিবাদেরিতি গুণ: অয়াদেশঃ। বদতীতি বদঃ প্চাদিত্বাৎ ঙঃ। স্বরত্রিবদর্থেষিতি কিম্? কুরাক্ষণ:। তৎপুরুষ ইতি কিম্? কৃষ্ট্রো রাজ্ঞা।

⁽২৫০)। তৃণশক্ষৈ পরে জাতৌ বাচ্যায়াং কু: কন্তবতি। অজাতৌ তু—কুৎসিতানি তৃণানি কৃতৃণানি।

⁽২৫১)। ঈষদর্থেহনীষদর্থে চ বর্তমানঃ কুশন্দঃ উঞ্চে পরে কদ্ভবতি। কাকবৌ চ। কিন্দত্র প্রথমঞ্চকারং ন পঠতি তন্মতে ঈষদর্থ এব বিধানসূ।

⁽২৫০)। অরুতসমাসাস্তাদ্বতি লক্ষণং বক্ষাতি। রুতঃ সমাসাস্তো বেষু তে রুতসমাসাস্তাঃ সমাসাস্তপদেন চ টাদীনাং গ্রহণম্। অবর্ধছাচ্চ সমাসস্তান্তে বিধীয়তে ইতি ভবতি। তেন স্থিপুরুষ ইত্যাদৌ অনস্ত-স্থিতস্বাৎ স্থান্দেন বিধানম্।

⁽২৫০)। চকারো ভিন্নক্রমে স টাদিতদ্বিতসংজ্ঞকল ভবতি। তৎপুক্ষে বিধীয়তে। টাদিরিত্যনেন আপাদপরিসমাপ্তের্বিহিতানাং সর্বোধামেব প্রত্যয়ানাং গ্রহণম্। তেনোভয়াদস্তীত্যাদৌ অলুগাদির্ভবিত। তৎপুরুষ ইত্যক্ত তু প্রতিযোগিদর্শনাদনমুবৃত্তিঃ ধেনোরন্ডুহো ছদ্ফে ইত্যক্তঃ

२०४। विश्वकर्मभात्राता व उपश्चलायो।

षয়ো: রাজ্ঞো: সমাহার: ঘিরাজ: বাজ্যা: রাজভ্যা: ক্রীতঃ ঘিরাজ: ঘিরাজী মহারাজ: মহারাজী। মহারাজীতি তু প্রায়ো নামপ্রহণে স্ত্রীলিঙ্গতাপি গ্রহণুমিত্যশু প্রায়িক্তাৎ। রাজস্থ:।

২৫৫। গৌরতদ্ধিতলুকি। রাজগবং রাজগবী পুস্ববং বড়্গবম্। তদ্ধিতলুকি তু—পঞ্চি-র্গোভিঃ ক্রীতঃ পঞ্চঞঃ।

প্রাথিহিতেম্বের সম্বধ্যতে। তদ্ধিতপানং বিহায়াত্র টাদীনাং বিধানং সমাসাব্যবস্থ স্চনার্থন্। তেন দিরাজমিত্যাদৌ টেহপি কতে সমাুহারনিমিত্তং
পাত্রাদিখাৎ স্ত্রীম্বাভাবে ক্রীব্রুন্। দিপুরীত্যত্র তু স্ত্রীদ্বিগুরদস্তোহপাত্রাদিরিতি স্ত্রীম্বে দিগোরিতি স্থা। উপুরাজমিত্যাদৌ সমীপে ইত্যবায়ীভাবঃ
অনস্তাচ্চেতি অভিকৃতে অব্যয়ীভাবেহদস্তাৎ স্থপোহপঞ্চম্যা ইতি ম:।
এবমপরমপি। বিজয়ী রাজা বেষাং তে বিজয়িরাক্রানো লোকাঃ বায়ুং স্থা
বস্তু স বায়ুস্থা ইত্যাদৌ সমাসান্তরে নায়ু সমাসান্তঃ। মগধরাজ ইতি
মন্তীতৎপুঞ্ধঃ উপ্ত তদ্ধিতত্বে অনীতদ্ধিতাচ্যয়োশ্যতি নলুক্ অদিল্পুগিত্যকারলক। মগধরাজীতি টিরাদী।

২৫৪ দিন্তঃ কণ্মধাররণ সমাসঃ তৎপুক্ষসংজ্ঞকে। ভবতি। তৎপুকুষবিহিতন্তা দিন্ত ভবতীতার্থঃ। দিরাজমিতি তদ্ধিতার্থে সমাহারে
দিন্তঃ সংখ্যায়া ইতি দিন্তঃ পাত্রাদিরাৎ স্ত্রীদিন্তরিত্যাদিনা ন স্ত্রী'লঙ্গতা
একং সমাহার ইতি ক্লীবন্তম্। এক ষড়গবং দিনাবং দিখারং দ্বাঞ্জলমিত্যাদ্যাপি দ্রন্থবিংম্। দাত্যাং রাজভ্যাং ক্রীত ইতি তদ্ধিতাথে দিন্তঃ ক্রীতার্থে
টিকণ্ দিখাখাট্টনংদের্ নাদাবিতি টিকণ্লুক্। মহারাক ইতি মহাংশ্চামৌ
রাজ্ঞা চেতি মহারাজঃ দদাদীনাং পূজামানৈরিতি কণ্মধারয়ঃ। মহতী চাসৌ
রাজ্ঞী চেতি উক্তপ্ংস্কান্ত্রীপ্রবং দ্রিয়ামিতি প্রবংভাবাং ক্লীপ্রত্যক্ষনিবৃদ্ধিঃ
সমানাধিকরণোত্রপদে চেতি তলোপো দীর্ঘন্ত। রাজ্ঞঃ দখা রাজ্যস্বাহ

(২৫৫)। অত্দ্বিতলুকীতি বিষয়সপ্রনী গৌশকস্তৎপুরুষে রাজাদি-

৫৬। অহঃ পুংসি। অন্ধাহঃ দ্বয়োরকো: সমাহার: দ্বাহ: একাহ।

২৫৭। পুণ্যস্থদিনাভ্যাং ক্লীবে। পুণ্যাহং স্থদিনাহং মঙ্গলাহ ইত্যৰ্থ:।

২**৫৮ । প্রধানার্থমুরঃ ।** অক্ষানামুরঃ অক্ষোরসম্ অক্ষানাং প্রধানমিত্যর্থ: ।

২৫৯। অনোহশায়ঃসরাং দি জাতিসংজ্ঞরোঃ।

র্ভবতি। স চেত্তদ্বিত্তপুণ্ বিষয়োন ভবতি। রাজ্ঞো গৌঃ রাজগবঃ
পূক্ব ইতি ব্যাদ্রাফিরিত্যাদিনা কর্মধারয়ঃ। ষয়াং গবাং সমাহারঃ ষড়্গবম্। পঞ্জরিতি সব ং পূর্বেবং। তদ্ধিত ইতি কিম্ ? রাজগবতি ইতি
আয়ারুক্যপি প্রতিষেধঃ স্থাং। লুকীতি কিম্ ? রাজগবময়ম্।

- (২৫৬)। অহঃশব্দো রাজাদির্ভবিত। স ক্বলসাসাস্তঃ পুংলিক্ষে বর্ততে। অর্জাহ ইতি তৎপুক্ষঃ দ্বাহঃ ত্রাহ ইতি দ্বিপ্তঃ একাহ ইতি কর্ম্মধারয়ঃ অন্তস্থপদলিক্ষণারপুংসক্ষে স্ত্রীদিগুরিত্যাদিনা স্ত্রীদ্বে প্রাপ্তে প্রাপ্তে প্রাপ্তিক্ষণম্ব। অনীতদ্ধিতাচ্যরোক্ষেতি নকারলুক্। নমু উনেহক্ ইজি নিয়মেন ব্যার্ভ্রথাৎ কথং নলুক্। উচ্যতে। একপুণ্যবর্জং ভেভ্যোহকো-হক্ষণসমাহার ইতি বদক্ষাদেশং করোতি তজ্জ্ঞাপয়তি ঈনেহক্ ইতি নিয়মঃ সমাসাস্তব্যতিরেকেণ বর্ততে। একপুণ্যবর্জং তেড্যোহকোহক্ষণাস্থাহার ইত্যনেনাত্মক্ষাদেশক বক্ষাতি তথ্যতিরিক্রোহন্ত বিষয়ঃ। অর্জাহ ইত্যত্র কথমক্ষাদেশো ন ভবতীতি নিয়পণীয়ম্।
- (২৫৭)। পুণাস্থদিনাভ্যাম্তরোহহঃশব্দো রাজাদির্ভবতি। স চ রতস-মাসাস্তঃ ক্লীবে বর্ততে। পূর্কেণ পুংক্সিদ্ধে প্রাপ্তে বিধানম্। পুণ্যাহং স্থাদিনাহমিতি কর্মধারয়ঃ। স্থাদিনাহমিত্যত্র স্থাদিনশব্দ এব ত্যক্তাবয়বার্থো মঙ্গলবাচী।
- (২৫৮)। প্রধানার্থ উর:শব্দো রাজাদির্ভবতি। উর:শকো মুখ্যরা বৃত্ত্যা হৃদয়ন্ত বাচক:। লক্ষণরা তু প্রধানার্থত। যথা উর: শরীরাবয়বানাং প্রধানং তথা য: প্রধানং স উচ্যতে। প্রধানার্থমিতি কিম্? মৈত্রক্ত উরো মৈত্রোর:।
 - (২৫৯)। অনস্ অধ্যন্ অয়স্ স্রস্ ইড্যেতে জাতৌ সংজ্ঞায়াঞ

উপানসম্ অমৃতাশাঃ কালায়সং মণ্ডুকসরসং মহানসং পিণ্ডিতাশাঃ লোহিতায়সং জালসরসম্। অফাত্র। সদনং সদশা চক্রসরঃ বৈতবনসরঃ। অতা পূর্ববিপদে সংজ্ঞা।

২৬০। তকা আমকেটিভাগ্ন। গ্রামতক্ষঃ কোটভকঃ।

২৬১। **অতে > শ্বা।** অতিশঃ অতিশী।

২৬২। উপমানঞ্চাপ্রাণিনি। -আকর্মশ্বের আকর্মশ্বঃ ফলকথের ফলকখাঃ। প্রাণিনি তু। বানর-শ্বের বানরখা।

রাজাদয়ঃ স্থা। উপানসমিতি উপগতমন ইতি প্রাদিসমাসঃ অমৃতাশঃ
কালায়সমিতি বিশেষণসমাসঃ। মত কসরসমিতি ষষ্ঠীসমাসঃ। এতজ্ঞাতিবাচকম্। মহানসমিতি সদাদীনাং পূজামানৈরিতি কর্ম্মারয়ঃ পিতিতাশঃ লে হিতায়সামতি বিশেষণসমাসঃ। জালসরসমিতি ষষ্ঠীসমাসঃ এতং
সংজ্ঞাবাচকম্। চল্রসরো হৈতবনসর ইত্যক্র অভ্যব্যার বং সরো বিশেষমেবাভিধতে। যো যোগর্তিমি তরক্রাপহায় বিশেষে বর্ততে স এব
সংজ্ঞাবাঃ নভতে ইতি চোলাম হ অক্র পূর্বাপদে সংক্রেতি বিশেষনিষ্ঠত্বেন
সংজ্ঞাশক্ষ পূর্বাপদ্য সমন্ধাত্তরপদম্পি বিশেষবৃত্তিন ত্ সম্বায়ঃ সংজ্ঞাশিক্ষাহ্য বিভাজি প্রায়ঃ।

- (২৬০)। গ্রান্ধকোটাভ্যাং শরস্তক্ষা রাজাদির্জবতি। গ্রান্তক্ষ ইতি বর্চাদনাসং বহুনাং সাধারণ ইত্যর্থং। কুট্যাং তবং কোটং কোটশ্চাস্টো তক্ষা চেতি কোটতক্ষং স্বতন্ত্রকর্মজীবী ন কপ্সচিং প্রতিবন্ধঃ।
- (২৬১)। অতঃ পর: খা রাজাদি র্তবিত। খানমতিক্রান্তঃ পূর্ব্ববিৎ সমাস:।
- ২৮২)। অপ্রাণিনি বর্তমানমুপমানং খা রাজাদিং আছে। আকর্মখ ইতি ব্যাঘ্রাদ্যৈস্তদ্ গুণস্বতাতেতি কর্মধারয়:। অত্যোপমানং খা অপ্রাণি-ভাকর্ষে বর্ততে। বানরখা ইত্যব্রাপানেন সমাসঃ। উপমান্থিতি কিম্? নখা অধা লোবু:। এবং সতি পৃশ্ধবোগং প্রাণ্যুধ্য আছে। অতিৰো বর্জিং

२७१। मक्षि छ। निनामक्षीत निनामक्थः कनकमक्षम्।

২৬৪। পূর্ব্বমূগোত্তরাচ্চ। পূর্ব্বসক্থং মৃগসক্থম্ উত্তরসক্থম্।

২৬৫। নৌরতদ্ধিতলুকি দিগো

দ্বিনাবং দ্বে নাবে ধনমস্ত দ্বিনাবধনঃ। ওদ্ধিতলুকি ভূ। পঞ্চভি-নৌভিঃ ক্রীতঃ পঞ্চনোঃ।

২৬৬। খাঁরা বা। দিখারং দিখারি। ভাসক্তাহ। দিখারিজিখারিরিতি জ্রিয়াম্।

⁽২৬০)। অপ্রাণিনি বর্তমানমুপমানং সক্থি চ রাজাদি: স্থাৎ।
শিশাসক্থমিতি পূর্দ্রবৎ সমাসঃ যোগবিভাগ উত্তরার্থ: একযোগে হি
উভয়োরপ্যমুবৃত্তিঃ স্থাৎ।

⁽২৬৪)। পূর্ব মৃগ উত্তর ইত্যেতেতাঃ পরঃ দক্থিশব্দো রাজাদিঃ তাং। দক্থা পূর্বাদিঃ পূর্বাদেঃ পূর্বাদিঃ পূর্বাদেঃ প্রথমায়া ইতি তংপুরুষঃ কর্মধারয়ো বা এবমুত্তরসক্থমপি মৃগদক্থমিতি বচীদমাদঃ।

⁽২৬৫)। দ্বিগো সমাসে নৌশকো ঝাজাদিঃ স্থাৎ। স চেন্দ্রিগুন্ত ক্রিবরোন ভবতি। দ্বেরানাবোঃ সমাহার ইতি সমাহারে দিশুং দে নাবো ধনমন্তেতি ত্রিপদে বছত্রীহো উত্তরপদে চেতি দিশুঃ পঞ্নোরিতি তদ্বিতার্থে দিশুঃ তেন ক্রীতে মৃশ্যানাবিতি চিকণ্। দিখান্যাট্ণাদের্ন্দা-দাবিতি চিকণ্। দিখান্যাট্ণাদের্ন্দা-দাবিতি চিকণ্নুক্।

⁽২৬৬)। ছিগৌ থারীশবো রাজাদিব। সাং। স চেদ্দ্ শুস্ত দ্বিতসৃধি ৰয়ো ন ভবতি। দ্বিথারমিতি অনিল গিছীকারপুক্ দ্বিথারি ইতি
ক্লীবন্তে হুস্বোহস্তঃ ক্লীব ইতি হুস্বঃ। স্থাসক্তব্নু দ্বিথারিঃ ত্রিথারিরিতি
স্ক্রিরামিতি লোকাশ্রয়ভালিকস্ত দ্বিগোর্ন পৃংসকতং ব্যভিচরতাপি তেন
দ্বিথারিঃ ত্রিথারিরিতাত দ্বীহুং স্থাসকতোহভিপ্রেতং তরতে গোরপ্রধানস্থান্ত স্তেতা স্বৃত্তী শ্রীপ্রতারস্ক চেতি হুস্বঃ। দ্বিথারিরিতান্ত সাধনা-

২৬৭। ক্লীবে চার্দ্ধাৎ। অর্দ্ধধারী অর্দ্ধধারম্।

২৮৮। নৌস্তিষ্। অৰ্দ্ধনাবঃ অৰ্দ্ধনাবম্।

২৬৯। দ্বিত্রিভ্যামঞ্জলিব।।

দ্বয়োরঞ্জল্যোঃ সমাহারঃ স্বাঞ্চলং ব্যঞ্জলি ত্রাঞ্চলং ত্রাঞ্চলি দ্বাবঞ্চলী জলমস্য দ্বাঞ্চলজনঃ দ্বাঞ্চলিজলঃ। দ্বিগাবিত্যের। দ্বয়োরঞ্জলিঃ দ্বাঞ্চলিঃ। অতদ্ধিতলুকীত্যের। দ্বাভ্যামঞ্চলিভ্যাং ক্রীতঃ দ্বাঞ্চলিঃ।

২৭০। ব্রহ্মা জনপদাৎ। স্থবাষ্ট্রকাঃ।

- (২৬৭)। অর্জাহন্তর: ধারীশব্দে। রাজাদিব আছে। ক্লীবে চ বর্ততে। রাজানিত্বসনিযোগশিল্প ক্লীবত্বন্। অর্জধারীতি নপুংসকার্ক ইত্যাদিনা তৎপুকর: অর্জপিপ্রশ্যাদিয়ু চেতি ক্লম্বতনিষেধা। অর্জধারমিতাত্র শেযতৎ-পুরুষদ্বন্ধ স্থান স্থানিক কাবিতি স্থালিক্ল প্রাপ্তে ক্লীবত্বন্।
- ্(২৬৮)। বেণ্ডাত্র নামুবর্ততে উত্তরস্ত্রে বাগ্রহণাৎ অন্তথা তদনর্থকং স্থাৎ অনুবৃত্তিয়ব ভৎসিঙ্কো। অদ্ধান্তব্বা নৌ রাজাদিঃ স্থাৎ। সা চ ত্রিযু নিম্বেরু বর্ততে। অদ্ধনাব ইন্ডাদৌ সর্বাং পূর্ববং।
- (২৬৯)। দিনৌ বিজিন্তাং পরোহন্ত্রনিশবো রাজাদির্বা স্থায়। স চেদ্বিশুস্থবিদ্যোন ভবজি। বাঞ্চনজন ইতি উত্তরপদে চেতি বিশুঃ ব্যঞ্জনিরিতি পূর্ববৈত্তবিভ্রনুক্।
- (২৭০)। বিগাবিতি নিবৃত্তং প্রক্রান্তত্তংশ্বন্ধ এবাস্থ্যতিতে। তৎপূক্ষবে জনপদ্বাচকাচ্ছকান্ত্তরো ব্রন্ধা রাজাদির্ভবতি। ত্বরাইব্রন্ধ ইতি
 স্থাই ইতি জনপদ্বিশেষ্ডাথা। স্থনাইে ব্রন্ধা স্থাইব্রন্ধ ইতি শৌগুবে রাক্তিপ্রথাং সংখ্যা ইতি বােপ্রস্থাগাধা সমাসঃ। স্থাবা স্থাইস্থ

নম্ভবং ক্রাদক্ষতা এবমপ্যক্ষম্। কচিং দ্বিধারী **দ্রিধারীতি পাঠঃ। হ্রন্থকে** ক্লতে সর্ক্ষতোহক্যমাদিত্যেকে ইতি ডীপ**্**।

২৭১। কুমহদ্ভ্যাং বা। কুত্রকা কুত্রকা: মহাত্রকা মহাত্রকা:।

২৭২। সংখ্যাব্যয়াদঙ্গুলের । বে সঙ্গুলা পরিমাণনতা দ্বাজুলা কেবং ব্যঙ্গুলা ভূমি: নিগত-মঙ্গুলি ভা নিরঙ্গুলম্। ভূমেরপার্কমঙ্গুলমিতি তু যবমানবচনো-২ঙ্গুলশকঃ। তথাচামরমালা। অজুলন্ত যবে। মতমিতি।

২৭৩। সুবৈত্যিকদেশসংখ্যাতপুণ্যাচ্চ রাত্ত্যে। ছয়ো রাত্যো: সমাহার: হিরাত্র: তিরাত্র: পঞ্চরাত্র:

ত্রক্ষেতি ষ্ঠীসমাসঃ ব্রহ্মন্শক্ষো ত্রাহ্মণবচনঃ। জনপদাদিতি কিম্ ? দেব-ত্রহ্মা নারদঃ।

(২৭১)। তৎপুরুষে কুমহন্ত্যামুন্তরো ব্রহ্মা রাজাদিব বিসাৎ। কুব্র-ক্ষেত্রি নিতাং কুপ্রাদেরিতি সমাসং। মহাব্রহ্মেতি সদাদানাং পূজামানৈ-রিতি কম্মধারয়ঃ সমানাধিকরণোত্তরপদে চেতি মহতপ্তলোণো দীর্ঘন্চ।

(২৭২)। সংখ্যাবাচকাব্যয়াচোত্তরালক লিশকাৎ তৎপুরুষেহন্তবি।
ঘ্রাক্ষুলং ক্ষেত্রমিতি ভব্ধিতার্থে দিন্তঃ মানং মাত্রড়িতি মাত্রট্ মানে ইতি
মাত্রট্ লুক্। দ্বাক্ষুলেতি অটিবাদী প্রভায়াভাবঃ নিরক্লামিতি পঞ্মা।
নিরাবেঃ কান্তাদাবিতি তৎপুরুষঃ। যদি সমাসেহত্তবিতি তদা কথমক লিশকাৎ কেবলাদ ভাতে ভূমেরপার্দ্ধমক লমিতি অতাহ যবমানবচনোহক লশক প্রতি শকান্তর এবায়ং নহক লিশকাং দিন্ধঃ। অথবা অক লশক এব
বিদ্যাতে তত্মাদের ধ্যাক লমিতি ভবিষ্যতি অক লিশকা ভূ অনভিধানাদেবান্মিন্ বিষয়ে প্রেয়োগো ন বক্তব্যঃ কিং লক্ষণেন অমিন্ চোদ্য আহ
যবমানবচনোহক লশক ইতি। অর্থভেদাদের নৈতচ্চোদ্যং প্রসক্তীতি
ভবিঃ। অতৎপুরুষে ভূ। ষড়ক লিই ভঃ।

(২৭৩)। চকার: সংখাব্যেয়দিত্যমুকর্ষণার্থ:। সংখাবাচকাদব্যয়াৎ সর্স্কাশকাং অবরববাচিন: সংখ্যাতশকাৎ পুণ্যশকাচ্চোত্তরস্থা রাত্রেন্তৎ-পুরুষেহন্তবতি। দ্বিরাত্তঃ অতিরাত্ত ইতি পুর্স্কাবং সমাসঃ। সর্বরাত্ত অতিক্রান্তো রাত্রিং ব: সোহতিরাত্রঃ সর্বরাত্রঃ পূর্ববরাত্রঃ অর্দ্ধ-রাত্রঃ সংখ্যাতরাত্রঃ পুণ্যরাত্রঃ।

২৭৪। একপুণবের্জং তেভ্যোহস্লোইক্ষণ্টাসমাহারে।
ভাফোরকোর্ভবঃ ভাফঃ নিরত্ন সববিত্ন পূর্ববিত্ন অপরাত্নঃ সংখ্যাভাফঃ। একপুণ্যভিয়ান্ত। একাহঃ পুণ্যাহম্। সমাহারে তু
ভয়োরক্রোঃ সমাহারঃ ভাষ্ণ গ্রাহঃ।

ইতি একানীমাঞ্জে কর্মধারয়:। পূর্বরাত্তঃ অর্নরাত্র ইতি রাত্রেঃ পূর্বরং রাত্রের্দ্ধ মতি অংশিষ্ঠা। ইত্যাদিনা নপুংসকার্দ্ধ ইত্যাদিনা চ তৎপুরুষঃ সংখ্যাত্রাত্রঃ পুণারাত্র ইতি কর্মধারয়:। অতৎপুরুষে তু। পুণারাত্রি-হেম্মঃ।

(২৭৪)। তেন্তা ইতানেন সংখ্যাদীনাং প্রামর্শঃ। সমাহারণজিতে তংপুরুষে একশন্ধং পুণাশন্ধ বজ বিদ্ধা সংখ্যাদিন্তা উত্তরাৎ অহন্ ইত্যাল্যত্তরেহন্তরি। তংসরিষোগেহহন্ ইত্যাল্স স্থানে অহ্যাদেশক। দ্বাহ্ন ইতি তদ্ধিতার্থি বিশুঃ তত্র ভব ইত্যার্থে কালাট্টকণিতি টিকণ্। দিখান্দার্যালাবিতি টিকণ্লুক্। নির্ফু ইতি নির্গতোহফঃ পঞ্চম্যানিরাদেঃ ক্রান্তাদাবিতি সমসেঃ সর্বাহ্ন ইতি সর্বঞ্চ তং অহশেন্তি একাদীনাঞ্চেতি কর্মধারত্বঃ। অন্যত্বহুহুগুতি গৃহম্। পুর্দাহ্ন ইতি পূর্বিবং সংখ্যালাফ ইতি কর্মধারত্বঃ। রাত্রান্তাদ্ধার প্র্ণীতি পুংলিকতা। নির্গতাহু ইতি নিরহা বেলা ইতি রক্ষিতেন ব্যবস্থিতম্। একাহ ইতি অহঃ পুংসীতি টঃ পুংলিকতা চ এবং দ্বাহঃ। পুণাহ্মিতি পুণাহ্মদিনাত্যাং ক্লীব ইতি ক্লীবজন্। কেচিং সংখ্যাতাহ ইত্যপীক্তম্ভীতি জ্য়াদিত্যঃ।

বিষায়ং সংখ্যাভ্যোহন্ত্র্যা ভারিতি রক্তব্যম্। অবায়াভাাং বিসায়ং শকাভাাং সংখ্যাবাচকেতাক পরস্বাদকো বিহিত্ত্রাতো ভৌ পরে বৃধা ভরতি। ব্যক্তি রাহনি নিমিত্তাপায়াবকাদেশাভারং পকে ব্যক্তে সারাক্তি সায়াহনি সায়াকে শেষো বৃদ্ধাণিতি মশোপঃ ছাক্তি ঘাহনি ছাক্তে। বিসামিং খ্যাভা ইতি কিন্? পূর্বাহে। ভাবিতি কিন্, বাক্তঃ।

२ १ १। श्रुक्यानाञ्चरः।

श्रुक्षायुषम् ।

২৭৬। খোনির্জ্যাং **শুভে প্রেয়স:।** শংশ্রেয়সং নিংশ্রেয়সম্।

২৭৭। গোষ্ঠাচছুন:।

গোষ্ঠে খেব গোষ্ঠশ:।

২৭৮। শ্বদোবসীয়**দ:**। শ্বোবসীয়দং শ্রদ্ধন্তং বস্তুমদিত্যর্থ:।

২৭৯ : শব্যমাৎ সংখ্যায়া ডিচ্চ।

(২৭৫)। তৎপুক্ষে পুরুষাত্তরালায়ুংশকাত্তরেহল্পবতি। পুরুষায়ু-ষমিতি পুরুষভায়্রিতি যটাসমাশঃ। সমাসান্তরে ন ভবতি। পুরুষক্ কার্দ্র পুরুষায়ুয়ী

(২৭৬) । তৎপুরুষে খদ্ নির্ইত্যেতাভ্যামুত্তরাৎ শ্রেরসোহদুর্গতি।
সমুদায়ত চেৎ শুভং বাচাং ভবতি। খংশ্রেরসমিতি ময়ুরলাংলকাদিংাৎ
কশ্বধারয়: । যদ্যপি খং শদ্ধ কলিবচনঃ প্রশক্তশক্ষণ গুণালীয়পিচি বৈতি
দিয়স্থং প্রাদিঃ প্রিয়াদেরিমেষ্ঠয়সাি তি প্রশক্তশু শ্রং। শ্রেষংশক্ষেনাতিপ্রশক্যোহভিদীয়তে। তথাপাত্র সমুদারেনোজ্বিতাবয়বাথেন শুভমভিনায়তে
সভাবাৎ। অতাে নিশ্চিতং শ্রেয়া নিশ্রেয়সং নিতাং কুপ্রাদেরি তি সমাদঃ।
বছরীহৌ তু । নিশ্চিতং প্রেয়াহনেনেতি নিংশ্রেয়ান্ দ্রিয়ালেনিত কপ্রত্যেধনিবেধঃ। নহতেশ্বেতাতঃ শেষাদিভাযেতাত্র চকারাহমুবর্ততে স
চাকুক্রসমুচ্চয়ার্থঃ তেন প্রতিবেধবিষয়েহপি কঃ নিংশ্রেয় ইতি ভাগীবৃত্তিন্ত্যাসকারাশ্রেয়া রক্ষিতঃ।

(২৭৭ । গোঠাছত্তরাৎ শুনস্তৎপুরুষেহন্তবতি 1 গোঠাছ ইতি ক্ষেপ ইতি সপ্তমীতংপুরুষ:।

(২ °৮)। খস্ ইত্যশাহন্তরাৎ বসীয়:শব্দাৎ তৎপুরুষেহন্তবিত। বস্থ-মংশব্দারছন্তাৎ মত্বিন্ভ্যাং তল্লুক্ চেতি ঈশ্বস্থঃ মতুলুক্ চ। অন্ধেকাচ ইমেঠেয়সাবিতি উকারলোপ:। অত্রাপি খঃশব্দঃ প্রশন্তবচনঃ স্বভাবাৎ মগ্রবাংসক।দিছাৎ কর্মধারয়:।

(২৭৯)। অব্যরাহত্তরাৎ সংখ্যাবাচকাদন্তবৃত্তি স্চ ডিচ্চ। নিঞ্জিংশ

নির্গতন্তিংশতোহল লিভা: নিজিংশ: খড়লা নিল্ডমারিংশানি বর্ষাণি।
২৮০। নঞ: পথো বা।

অপথম্ অপস্থাঃ।

২৮১। উদ্ধো জ্ঞাতমহন্দ্ধাৎ কর্মধারয়ে। জাডোক্ষ: মহোক্ষ: র্দ্ধোক্ষ:।

২৮২। ভিত্তিজ্যামায়ুমো ছিগো।
ভায়ুবং ত্যায়ুবম ।

২৮৩। ধেনোরনজুংখা বন্ধে। ধেরনজুংখা।

২৮৪। স্ত্রিয়াঃ পুংসঃ।

श्रीशुःरभो ।

ইতি থকা উচাতে। অব্যয়াদিতি কিম্ ? গোস্থিংশং সামান্তাভিগানেহপি বিশেষবাবস্থাত্রাস্থীকরণীয়া তেন নিরঃ পরঃ শদস্ত এব সংখ্যাবাচকশন্দাহন্ত বিষয়:। অতএব ভাগবৃত্তিকতোক্তম্ নিস্তিংশাদ্যর্থমিতি তথাচ চক্রবামনয়োঃ স্ত্রং নিরঃ শতো ডজিতি।

- (২৮০)। ঋগাদেরং সর্বত্তিত অং প্রাপ্তো নঞ্জৎপুরুষ ইতি নিষিদ্ধঃ। অভো বিকল্পবিধানম্। তৎপুরুষে নঞ্জ উত্তরাৎ পথোহন্তবিতি বা। অপথমিতি সংখ্যাবায়াৎ পথ ইতি ক্লীবত্তম্।
- ে (২৮১)। জাতমহদ্দ ইত্যেতেতা উত্তরাৎ উক্ষন্শকাৎ কর্মধারয়েহ-স্তবতি। মহোক্ষ ইতি সমানাধিকরণোত্তরপদে চেতি ভবুক্ দীর্ঘন্চ। বছরীহো তু। জাতোক্ষা বিপ্রঃ।
- (২৮২)। দ্বি তি ইত্যেতাভ্যামুত্তরাদায়: শকাং দ্বিগৌ অন্তবতি। দ্যায়-বমিভি দ্বে আয়ুখী সমান্ততে ইভি সমাহার্দিগুঃ। অদিগৌ তু। দুয়োরায়ঃ দ্যায়ঃ।
- (২৮০)। ধেনোরুত্তরাদনভাহ ইত্যন্তাং ঘদ্দেহম্ভবতি। ধেষনজুহা-াবিতি চতুরনভূহোবে ত্যাদিনা বা ইভাসা উৎ।
 - (২৮৪)। বিয়া উত্তর: পুমদ্ ইতাত্মাৎ ছন্দেহম্ভবজ্ঞি। জীপুংসা-

২৮৫ । ঋচঃ সাম।

ঋক্সামে।

২৮৬। বাচো মনসঃ।

বাদ্মনসে ।

২৮৭। অহেণ রাত্রে: 1

অহোরাত্র:।

२৮৮। मात्राम्राः।

`দারগবম্।

২৮৯। অহন ক্রিং রাত্রিভ্যো দিবাশব্দাৎ। অহর্দিবং প্রতিদিনামত্যর্থং। নক্তন্দিবং রাত্রিন্দিবম।

বিতি কাদৌ শদানাবিচ চাত ইত্যকারলোপ:। প্ংসোহপদাতে চেত্যকু-স্বার:। অন্তক্ত তু। গ্রিয়াঃ পুমানিতি স্ত্রীপুমান্।

(২৮৫)। ঋচ উত্তরাৎ সামো ছন্দেহছবতি।

(২৮৬)। বাচ উত্তরাৎ মনসো খন্তেহন্তবতি। বাশ্মনসে ইতি ন দ্বিপয়: প্রভূতীত্যেকবদ্ধাবনিষেধঃ।

(২৮৭ । অহন্ ইত্যম্মাত্তরাৎ রাত্রিশকাং দ্বন্ধেষ্ট্রতি । আহোরাত্র ইতি রাত্রাস্তাদয়ঃ প্ংসীতি পুংলিঙ্গতা। সমাদেহচি চেতি অহন্ ইত্যস্য নকারস্য সং।

(২৮৮)। দারশকঃ স্ত্রীবাচকঃ পুংলিঙ্গং এক্ষিবছ্বচনাস্তো নিত্যু-বছবচনাস্তশ্চ বিদ্যতে স্ত্রে লিঞ্বচন্মতন্ত্রমিতি ছয়োরপি গ্রহণম্। দারা-ছত্তরাং গোশসাদ্ধন্দেহস্তবতি।

(১৮৯)। অহরাদিত্য উত্তরাং দিবাশদাং বন্ধেছত্তবতি। অহর্দিবমিতি অহনি চ দিবা চ স্বভাবাৎ সপ্তম্যর্থর্ত্তা দিবাশকোহব্যয়ম্। নক্তংদিব্মিতি নক্তঞ্চ দিবা চ নক্তন্দিবম্ অত্তাপি ছে আধারপ্রধানে সপ্তম্প্র্ব্র্র্তিহ্বর্ত্তহার প্রস্কর এব । নম্ব অহ্নিব্র্নির্ত্তহ্বর্ত্তহ্বর্ত্তহ্বর্ত্তহ্বর্ত্তহার প্রস্কর এব । নম্ব অহ্নিব্র্নির্ত্তহ্বর্ত্তহ্বর্ত্তহ্বর্তহ্বর্ত্তহান্তহ্বর্তহ্বর্ত্তহ্বর্তহ্বর্তহ্বর্ত্তহ্বর্ত্তহ্বর্ত্তহ্বর্ত্তহ্বর্ত্তহ্বর্ত্তহ্বর্ত্তহ্বর্ত্তহ্বর্তহ্বর্ত্তহ্বর্ত্তহ্বর্তহ্বর্তহ্বর্তহ্বর্ত্তহ্বর্তহ্বর্তহ্বর্তহ্বর্তহ্বর্তহ্বর্তহ্বর্তহ্বর্তহ্বর্তহ্বর্ত্তহ্বর্তহ্বর্তহ্বর্তহ্বর্বর্তহ্বর্তহ্বর্তহ্বর্তহ্বর্তহ্বর্তহ্বর্তহ্বর্ত্তহ্বর্তহ্বর্তহ্বর্তহ্বর্ত্তহ্বর্তহ্বর্তহ্বর্তহ্বর্ত্তহ্বর্তহ্

২৯০। ঋচোযজুষঃ। ঋগ্যজুষম্।

২৯১। চবর্গদধহান্তাৎ সমাইটির।

বাক্রচম্। বাক্রচেনাভিসবে ণৈতি ভটি:। স্থাক্ স্থাচ্ছং বাগ্জ প্রক্ষিপদং বাথিপ্রফাং ছত্রোপানহম্। অসমাহারে তু। প্রার্ট্শরদে।

२৯२। **घटको** क्वरः। यक्किक्करम्।

লক্ষাং বিভীয়প্রয়োগে। নান্তীতি অহংপর্যায় এব দিবাশকঃ তৎ কথমূভয়শক্ষপ্রয়োগঃ অমিন্ চোল্য আহ প্রতিদিনমিত্যর্থ ইতি বীপ্সার্থ ইতি ভাবঃ।
বীপ্যার্থদোতনার্থক উক্তার্থস্তাপি প্রয়োগো দৃশ্রতে। বীপ্সার্থ চ দল্লোহদ্বিধানসামর্থাদেবাবগস্করাঃ। অহর্দিবমিতি অক্ছোহরূপাদাবিভি বিসর্গস্থ রেকঃ রাত্রিন্দির্বামতি মধ্যাদেদি নাদাবিতি পূর্ব্বপদাৎ মঃ। অব্যয়াৎ পরা নেয়ং বিভক্তিঃ কিন্তু সমাসান্তাদত ইতি। অত্যে বিভক্তিশোপ্রেয় নাশক্ষনীয়ঃ।

- (১৯•)। ঋচ উত্তরাং যজুষো দদ্বেছত্বতি। বছব্রীহো তু। ঋগ্যজু-রহা উরুপতা স ঋগ্যজুরুরাপুথ: য উলুপড়াৎ ঋচো বজুংবি মন্ততে স উচ্যতে।
- ্(২৯১)। চবর্গান্তাৎ দকার্যকারহকারান্তান্ত সমাহারে বন্ধে হত্তবি । বাক্ষচমিতি প্রাণান্ধমিতান্তর্ত্তী অন্তসহিতঞ্চেতি গবাখাদিশ্বাৎ সমাহারে ক্লীবন্ধম্ একত্বল । স্থাক্ স্প্রাক্তমিতি প্রক্ ভীপারাং কিপ্ দীর্ঘণ্ট। বাগ্র্জমিতি উর্জ্বল্পানারোঃ কিপ্ রমুর্দ্ধোণন্তান্ত্রন্দর্জমিতি প্রতি বেধাৎ ন জকার্ত্ব । প্রার্ট্শরদাধিতি অন্তোহন্তবাগে বন্ধঃ অত্র বছপি সমাসান্তেহপি বিশেষো নান্তি তথাপি প্রার্ট্শর্ভ্তামিত্যাদৌ জন্তব্যঃ। হন্দ ইত্যেব। সমাহার্দ্বিগৌ মাভূৎ পঞ্চ বাচঃ সমাহতাঃ পঞ্চবাক্। চবর্গক্ষহান্তাদিতি কিম্ পু বাক্সমিৎ ধকারান্তমেতৎ।
- (২৯২)। অক্ষ উত্তরাৎ ভ্রশকাৎ সমাহারে হল্বেহন্তবতি। অক্ষিক্রব-মিতি অক্ষিণী চ ক্রবৌ চ প্রাণ্যক্ষমিতি গ্রাখাদিখন্।

২৯৩। উরোরন্ঠীবতস্তলুক্ চ। ভব স্থীবন্।

২৯৪। পাদাৎ পচ্চ। পদন্ঠীযম্।

२৯৫। भन्नमारमत्रवाशीकारव।

উপশব্দং প্রতিদরদং প্রতিদিশং বহির্দিশ্ম। অনব্যরীভাবে তু চতুর্দিক্। তথাচু, চতুর্দিগীশানবমক্ত মানিনীতি কালিদাসঃ। চতুর্দিশমিত্যসাধৃ:। শরদ দিশ দৃশ্ বিপাশ্ উপানহ্ অনত্বাহ্ উপসদ্ তদ্ যদ্ কিয়ৎ হিমবৎ দিব্ অনস্ পথি চছার।

২৯৬। জরায়া জরস্চ। উপজরসমূ।

২৯৭। উপাচ্ছুনোব¸উন্চ। উপাতনম্॥

२ तम्। महौत्रकमः।

⁽২৯৩)। উক্লব্জাহত্তরাদ্ধীবভো খন্তেইপ্তৰতি। তকারপুক্ চ।

⁽২৯৪)। পাদাহন্তরাদন্তীবতো **যদ্ভেরতি। তপুক্** চ। পাদস্ত স্থানে পদাদেশশ্চ।

⁽২৯৫)। শরদাদেরজ্বরেহবারীভাবেহস্তবি । উপশরদমিতি শরদঃ
সমীপং সমৃদ্ধাদাবিত্যাদিনা সমীপে ইত্যবারীভাবং। প্রতিদিশমিতি বীপ্সাযামিত্যবারীভাবং। চতুদি গিতি সমাহারে বিশুং। চতুদি শমিত্যগাধুরিতি
অব্যরীভাবসমাসন্তারাভাবাৎ। শরদাদিগণে যেহঙ্ যাস্তাং পঠান্তে তেভ্যোহঙ্যান্তাচ্চতি বিকরেনাতিপ্রাপ্তে নিত্যার্থং পাঠঃ।

⁽२>५)। कतानकानवादीकारवश्ववि । कत्रनारमण्ट ।

⁽২৯৭)। উপাহতরক্ষাৎ খন্ ইত্যাদ্বাদবারীভাবে হয়বতি। বকারক্ষ উনাদেশক। অনীতদ্বিতাচয়নোক্ষেতি প্রক্রতিনকারপুক্ অনন্তাদিতাতি প্রাপ্তে আলেশার্বং বচনং নির্মার্থক উপাদেব গুনো নাক্সাদিতি।

⁽২৯৮)। সহেত্যব্যরং নাঞ্চপদার্থে শক্ষামুকরণে চেতি প্রতিবেধাৎ

সরজসম্। বছরীহোঁ তু। সরজসং পদ্মমিজসাধুঃ। সরজসতা-মবনেরপাং নিপাত ইতি কিরাতে চিন্তাম্।

২৯৯। প্রাত্তেরুরসঃ সপ্তম্যর্থে। প্রত্যুরসম্ উরসীভার্থঃ।

৩০০। অসুগোটদ র্য্যে। অসুগবং শকটম্।

৩০১। সমসুপ্রতেরক্ষঃ। সমক্ষং অয়ক্ষং প্রত্যক্ষম।

০০২। পরেঃ পরস্চ। অক্ষি অক্ষি পরি পরোহক্ষম্।

স্থপো লুগ্ন ভবতি। সহাত্তরাদ্রজ্ঞসোহব্যরীভাবে>স্তবতি। সরজসমিজি সাকল্যেহবায়ীভাবঃ অবায়ীভাবে চাকালে ইতি সহস্ত সঃ।

- (২৯৯)। প্রতেক্তরাৎ উর:শব্দাৎ সপ্তম্যর্থেছবারীভাবেহন্তবৃতি।
 প্রত্যুরসমিতি সপ্তমার্থেছবারীভাব:। অসপ্তমার্থে তু। উর: প্রতি প্রত্যুর:
 বীপ্সায়মিতাবায়ীভাব:।
- (৩০০)। অমুপূর্বাদৈর্ঘ্যে বাচ্যে গোঞ্জরেহবায়ীভাবেহস্কবন্ডি । তৎসুমীপে তদৈর্ঘ্যে চানোরিভাবায়ীভাবোহস্ত বিষয়:। অমুগবং শকট-মিতি গৌরিব শকটমপি দীর্ঘমিতার্থ:। দৈর্ঘ্যে ইতি কিমৃ ? গবাং পশ্চাদমুগু পশ্চাদর্থে ইত্যবায়ীভাব:।
- (৩০১)। সম্ অনু প্রতি ইতোতেভা উত্তরাদক্ষোহনারীভাবেহস্কবিতি।
 সমক্ষমক্ষমিতি সমাপে ইত্যবারীভাবঃ প্রত্যক্ষমিতি অভিপ্রত্যোরাভিমুখ্যে
 লক্ষণদ্বিতীয়রা বেতি সমাসঃ। কথং প্রত্যক্ষো ঘটঃ অক্ষশবেদ ইন্দ্রিয়ার্থেন
 প্রাদিসমাসাৎ।
- (৩০২)। পরেক্তরাদক্ষোহ্যায়ীভাবেহয়বতি। পরে: স্থানে প্রস্ চ আদেশ:। অকি অকি পরীতি বাক্যোপদর্শনং বীঞ্চায়ামিভানেনা-ব্যয়ীভাবপ্রচনার্থম্।

७०७। व्यवसाक।

প্রত্যাত্ম অধ্যাত্ম । অনব্যয়ীভাবে তু। পরমাত্ম।

৩০৪। ক্লীৰে বা।

উপচর্ম্ম উপচর্ম।

৩০৫। নদীপৌর্শসাগ্রহায়ণীগিরিভ্যশ্চ।
উপনদম্উপনদি উপপৌর্শমন্ উপপোর্শাসি উপাগ্রহায়ণম্
উপাগ্রহায়ণি।, অন্তর্গিরম্ অন্তর্গিরি। অনব্যয়ীভাবে তু।
পর্মনদী।

৩০৬। অঙ্যান্তাচচ। উপসমিধম্ উপসমিতৎ উপদৃশদম্ উপদৃশৎ। ঙ্যান্তানু। উপসত্যভাণ্।

৩০৭। প্রধানপূরণপ্রত্যয়ান্তাদহ বীহে। কল্যাণী পঞ্চনী রাত্রিরাসাং রাত্রীণাং কল্যাণীপঞ্চমা

⁽৩-৩)। অনস্তাদৰ্যশ্নীভাবেংস্তৰতি। প্ৰতাশ্নমিতি পূৰ্ববিদ্ব্যশ্নী-ভাবঃ। অধ্যাশ্বমিতি সপ্তমাৰ্থে ইত্যবাগীভাবঃ।

⁽৩০৪)। অব্যয়ীভাবস্ত নিয়ত্কাবত্বাৎ ক্লীব ইত্যুত্তরপণবিশেষণম্। ক্লীবে বর্ত্তমানদনস্তাত্ত্তরপদাদব্যয়ীভাবেহদা ভবতি।

⁽৩০৫)। নদ্যাদিভা উত্তরেহব্যক্ষীভাবেহনা ভবতি। উপনদ্মিত্যাদের স্মাপে ইতাব্যক্ষীভাবঃ অন্তর্গির্মিতি সপ্তমার্থে অন্তঃশন্থেহ্বায়ং স্প্তমার্থে বৃত্তি:।

⁽৩৭৮)। অঙ্বাস্তাক্তোত্তরেহবায়ীভাবেহছা ভবতি। অঙ্বাস্তাৎ শ্যসহাস্তাদপি অর ভবতীতি পাণিনিচক্সাদীনাং রহুনাং সম্মতম্। উপ-, বিট্ অমুদ্বিট্ উপপন্ন: অনুপ্রশ্ববাট্ অম্মাদপি পাক্ষিকোহদিতি সর্বশ্ব-মতামুবারিনাং মতম্।

⁽৩০৭)। দ্বে জীরস্তৎপূর্ণ ইত্যাদিতিঃ স্কৈর্বে পূর্বে বিহিতাতে পূর্বপ্রতায়াঃ। প্রধানং পূর্বপপ্রভায়েছস্থো বত্র তত্মান্দ্রাফৌ সম্ভবতি। মন্দ্রি বহুরীহৌ কল্পদার্থ এব প্রধানং তথাপি কল্যানী পৃঞ্চমী তাত্রি-

রাত্রয়া কল্যাণীষষ্ঠাঃ কল্যাণীদশমাঃ। অপ্রধানপূরণপ্রত্যয়া-স্তাত্ত্ব কল্যাণী পঞ্চমী ডিথিরস্থ পক্ষস্থ কল্যাণপঞ্চমীকঃ পক্ষঃ

৩০৮। প্রমাণ্যাশ্চ। ক্রী প্রমাণী এষাং ক্রীপ্রমাণাঃ কুটুম্বিনঃ।

৩০৯। তারানান্ধে নেতৃঃ। মূগো নেতা সম্ভাঃ মা.মগনেতা রাক্তি পুয়ানেতাঃ।

৩১০। লোম্মো বহিরন্তর্ভ্যাম্। বহির্গতানি লোমায়স্য বহিলে।মঃ অন্তর্লোমা নাসিকা

৩১১। চতুরঃ স্থত্তিনঞ্ৰ্যুপাৎ। স্থচতুবঃ ত্রিচ হুরাঃ সচতুরঃ বিচতুবঃ উপচতুরাঃ।

রাসামিতানে অব্যবেন বিগ্রহঃ ক্রিয়তে। রাত্রর এব পঞ্মা রাত্রান সহ সমূদিতা অন্তপদার্থঃ নতু তাতিঃ বাত্রিভিরাবন্ধমর্থান্তবং অতাহত্ত পূবণপ্রত্যযান্তক্ত প্রাধান্তং প্রধানপূবণপ্রত্যযান্তক্তে প্রিয়াদিভাৎ ন পূংবদ্ধাবনিধেনঃ। ক্র্যাণপঞ্চমীকঃ পক্ষ ইত্যে তু তাতিবাবলঃ সমূদায়ঃ পক্ষাথ্যোহনাপ্রাণঃ। পূবণপ্রত্যমান্তন্ত সম্দামাব্যবভূত্যেহপ্রধানম্ অক্রত্মমানান্তাবেতি কঃ। অপ্রবানপূবণপ্রত্যায়ন্তনা পুংবদ্ধাবনিধেরঃ।

(.৩০৮)। প্রমাণ্যাশ্চ বহুব্রীহাবদ্ধবতি। প্রমাণশক্ষেব সিন্ধে প্রমাণীগ্রহণং কাদিখ দাদেরিতি কশু বাধনাধন্।

(৩০৯)। তারা নক্ষরম্। তলাম উত্তবালে চুশকাদ্দ্রীহাবস্তব্তি। মুগো মৃগ শবঃ।

(৩১০)। বহিদ্ লন্তর্ ইত্যে ভাভ্যামূত্রশালোমো বছ্তীহাবভবিভ।

(৩১১)। স্থ্প্রত্তিকা উত্তরাক্তবার্ ইত্যামাধ্র্ত্রীহাবদ্ভবতি।
স্তরামশু চথারি বিষয়ীভবন্তি স্থচতুর ইতি শোক্তনানি চথারি কাদ্য বিষয়ীভবন্তীতি বা নাদ্য চথারি বিষয়ীভবন্তি অচতুরঃ, বিধিমশু চথারি বিষয়ীভবন্তি বিচতুরঃ। অথবা স্থান্তী চতুর্ণামিতি বিগ্রহঃ সংখ্যেয়বৃত্তিসংখ্যার
ইত্যাদিনা বহুত্রীহিঃ। চথারীত্যস্য বিশেষাণ্যক্ষরাণি বদন্তি গ্রহ্কারাঃ

৩১২। উপদর্গান্ধাসিকার। নস্চ। প্রগজ নাসিকা যম্ম তৎ প্রশসং মুখ্ম উন্নসম্।

৩১৩। বেঃ থশ্চ।

বিনসঃ বিশ্ব:। বেগ্র ইতি জয়াদিত্য:। বিনসা হতবান্ধবা ইতি ভট্টি:। অক্রিয়াসুগতানাং প্রাদীনামুপসর্গহাভা-বাদিহ ন স্থাৎ। শোভনা নাসিকা যাস্থা স স্থনাসিকঃ। অনু-পশ্চায়াসিকা ষম্ম সোহনুসাসিক ইত্যাদি।

৬১৪। নান্দ্র চাস্লাৎ।

চতুর্ণামিত্যশু চন্ধারঃ প্রন্যার্থা ইতি কৈশ্চিত্বকৃষ্। এয়ো বা চন্ধারো বা ইতি ত্রিচতুরাঃ চতুর্বাৎ সমীপে ইমে উপচতুরাঃ পূজার্থস্বতিবজ মিত্যাদিনা ডে প্রাপ্তে বিধানম্।

্ (৩১১)। উপসর্গাছন্তরস্থা নাসিকায়া বছত্রীহাবন্তবতি নদাদেশন্ত। প্রগতেত্যাদি প্রাদেঃ রুদন্তস্থ বেতি গতপদলোপঃ প্রণস ইতি প্রাদৌ নস ইতি গত্বমূ।

(৩১৩)। বেরুত্তরন্থা নাসিকায়া বছরীছাবন্তবতি। নসাদেশঃ খ্রাদেশশান । ভাষ্যকারমতমঙ্গীরুত্য মতাস্তরং দর্শয়তি বের্ঘ ইতি জ্যাদিত্য ইতি তয়তে বিরা ইত্যানাহরণয়ৣ। নসাদেশং বাবিতা প্রাদেশ এব নিত্যং ভবতীতি চাক্রাদিনতং তয়য়াসার্যং বিনসা হতবাদ্ধবা ইতি ভায়প্রমানার্য বিনসা হতবাদ্ধবা ইতি ভায়প্রমানার্য বিভিন্নতা দর্শিতঃ। নাগিকাং প্রত্যাপসর্গতামন্তবাং উপসর্গগ্রহণং প্রাদ্যাপলক্ষণার্থমিতি স্থাসকারেণাক্রং তয়াৎ প্রাদেরের কিমিতি ন ক্রতমিত্যাশস্বামাহ অক্রিয়ান্ত্রগতানামিত্যাদি। ষদ্যাপ নাসিকাং প্রত্যাপসর্গত্বং ন সম্ভবতি তথাপ্যাপসর্গপদসামর্থ্যাদ্ গতাদিক্রিয়ান্ত্রণতত্বাদের প্রাদীনামুপসর্গত্বং যেবাং তেবামেবাক্র গ্রহণং যক্ক তু ক্রিয়ান্ত্রণতত্বং প্রাদীনাং নান্তি তথায় ভবতি। শোভনা নাসিকা যদ্য স স্থনাসিক ইত্যক্র শোভনার্থঃ স্থাক্বং নতু ক্রিয়ান্ত্রণত ইতি।

(৩১৪)। সংজ্ঞায়াং গমামানায়াং বুদশস্বতাতিরিক্তাচ্চোন্তরভা নাসিকায়া বছত্রীহাবস্করতি। নসাদেশক। জ্ঞানস ইত্যাদৌ সমুদায়েন ক্ররিব নাসিকা যস্ত স ক্রণস: গোনসঃ বাদ্বীণসং। অনান্ধি তু। ভূকনাসিকঃ। স্থলাত্ত্ব। স্থলনাসিকো বরাহঃ।

৩১৫। খর খুরাভ্যাং প্রত্যয়লুখা। খরণাঃ খরণসং খুরণাঃ খুরণসং।

ু ১৬। নঞ্সূত্রি হলিসক্থিসক্তিভা বা।
শবিভমানো গুলির্যন্ত সোহহলঃ অহলিঃ সুসক্থঃ সুসক্থিঃ
হঃষক্তঃ হৃপক্তিঃ।

দংলা গমাতে পূর্বপদে চাবনভোতি সংজ্ঞায়াং পথম। গোনস ইতি গোন নাসিকেব নাসিকা যস্যেতি বছবীহিঃ বাদ্ধীণস ইতি বুপুধাতোঃ ক্ষায়াদের ইতি বং বছলবচনাদ্ গুণঃ তম্ভ বিকার ইতি টণ্ বাদ্ধীব নাসিকা যসোতি বৃদ্ধার্থতিদ্ধিতাম্বোহবঞ্জনবিকাবয়োরিতি ন পুংবদ্ধাবঃ।

- (৩)৫)। খবপুব ইত্যেতাভাামুত্তরস্থা নাসিকায়া বছত্রীহাবদ্ভবতি।
 নসাদেশক। বিভিত্ত প্রত্যয়স্ত লুখা স্যাৎ। খরখুবাভাাং বেতি ক্বতে
 নসাদেশভাপি পান্ধিকত্বং ভাৎ তলিরাসার্থং প্রত্যয়লুয়েতি কৃতম্। খরণা
 ইতি খরা তীক্ষা থরভোব বা নাসিক। অস্যেতি বছত্রীহিঃ অত্বস্তান্ধত্তি দার্ঘ:।
- তেওভ)। নঞ্ স্থ ছব্ ইত্যেতেভ্যো বথাক্রমং হলি সক্থি সক্তিইত্যেতেভ্যো বছরীহাবন্তবতি বা। বাগুর্ত্তৌ প্রাপ্তাযাং বাগ্রহণমূত্রত্র বাগুর্তিশঙ্কা নিবাসার্থম্। নমু হলহলিশকাভ্যাং সক্থসক্থিশকাভ্যামেব রূপরয়িরিরি উভয়োরর্থভেদো বিদ্যুত এব কিঞ্চ অক্তসমাসান্তামেরি কবাধনার্থম্। চক্রস্ত কথং প্রত্যাচন্ত ইতি নাবধার্যামঃ। জয়াদিত্যাদয়স্ত ক্রমং নির্স্য ত্রহণঃ স্থল ইত্যপীক্রন্তি তদিহ নেইং প্রত্যক্ষক্রতিভাবাবিরোধাৎ। তঃষ্কিরিতি ধন্ত্র পরিবন্ধে জিঃ স্থাদের্থি রঙ্ব্যবায়েহপীতি ্বন্ধং দন্ত্যাদিরপি কাপি দুর্গতে তদা সন্ত সমবামে ইত্যক্ত রূপম্।

७১१:। श्रामित्जा निर्वातः!

শোভনং দিবা বস্তু স স্থাদিবঃ স্থাদিবা শারিরিব কুন্দির্যস্ত স শারি-কুক্ষঃ চতত্যোহপ্রায়ঃ কোটয়ো ষম্ভ স চতুরপ্রাঃ এণ্যা ইব পাদাবস্থ এণীপদঃ এবম্ অঙ্গপদঃ।

৩১৮। দ্বিতেমূর্দ্ধ্র ফিঃ। দিমৃদ্ধঃ দিমৃদ্ধী তিমৃদ্ধী।

৩১৯। সোঙ্গাভ্যাং সক্থ্যক্ষিভ্যাম্।
দীর্ঘসক্থা দীর্ঘসক্থী উচ্চৈ:সক্থা উচ্চি:সক্থা বিশালাক্ষঃ বিশালাক্ষী মৃগাক্ষা মৃগাক্ষা। অবহুব্রীহো তু। প্রমসক্থি কল্যাগাক্ষি। অস্বান্ধান্যান্ধ। দীর্ঘসক্থি শকটং স্থলাক্ষিরিক্ষুঃ।

(৩১৮)। দ্বি ত্রি ইত্যেতাভ্যামৃত্রান্মুর্ক্ন উত্তরে বছরীহে টো ভবতি। দ্বিমূর্কীতি ট্রাদী স্থাসকারেণ বিকল্পমন্তোক্তং ন তদ্বসম্মতম্ । (৩১৯)। অন্তবং মৃতিমৎ স্থাকং প্রাণিস্থমবিকারজম্। অতৎস্থং

তত্ত্ব দৃষ্টক তস্য চেত্তভগায়্তমিতি যদ্বাবস্থিতং তৎ স্বাঙ্গমিহ গৃহতে। স্বাঙ্গ-বাচকাভ্যাং সৃক্থি অকি ইত্যেতাভ্যাং বছবীহোঁ টো ভবতি। প্রম-

⁽৩১৭)। স্থাদিত্য উত্তরেভা দিবাদেব হুত্রীহাবৎ স্যাৎ'। দিবাশব্দেহয়ং 'স্বভাবাদধিকরণার্থপ্রধানোহবায়ম্। শোভনং দিবা অস্যেতি
শোভনমিতি কর্মণো বিশেষণং শোভনং দিবাকালে কর্মান্তেত্যর্থ:। বছব্রীহো সমাসাস্তত্ত বিধানসামর্থাদসামানাধিকরণ্যে সাপেকত্বেহিপি সমাসঃ।
স্থানিবতি ব্রিয়ামাৎ। শারিরিতি শৃ হিংসায়াং শাদেরিণিতি ইণ্ রুদ্ধিঃ
শারি: পক্ষী। অপ্রিরিতি নঞ্পূর্দ শ্রাপাকে ইঙ্ ধাতৃকথনে ইত্যাদিনা
ইঙ্ অপ্রি: কোটিঃ স্থাদিব ইত্যাদীপ্রেব পঞ্চোদাহরণানি প্রতিনিয়তান্যায়।
এণীপদ ইতি উপমানাদহস্ত্যাদেং পাদস্তেত্যকারলুক্ স্থাসক্রতান্তোপস্য
পাদং শ্যাদ্যিতি তদ্ধিত্যে চেতি হুস্থ:। প্রোষ্ঠপদভন্রপদশ্বনবৈত্তঃ পঠিতৌ
তাবপ্যক্র দ্রন্থনা। প্রোষ্ঠো গৌস্বস্যেব পাদাবস্য প্রোষ্ঠপদং ভদ্রো পাদাব্র্যান্ত ভদ্রপদং পাদসমানার্থেন পদশব্দেন এবাং সিদ্ধিরিতি চাক্রাঃ। ন
তদ্বস্থাত্ম।

৩^২০। অঙ্গুলেদ†রুণি। পেঞ্চাঙ্গুলং দারু।

৩২১ । সোঃ শ্বঃপ্রতির্ভ্যাং ডঃ। শোভনং গোহস্ত স্থশঃ স্থপ্রাতঃ স্থপ্রাতা রাত্রিঃ।

৩২২। পূজা শ্বিতিবজ মব্যয়াসরাদিপূর্বসংখ্যেয়র্ত্ত্যবহুগণসংখ্যায়াঃ।
উপদশাঃ উপবিংশাঃ আসরদশাঃ আসর্ত্রিংশাঃ দ্বিত্রাঃ পঞ্চষাঃ।
পূজার্থপ্রতিভাগ্ত । স্তদশা ব্রাহ্মণঃ অতিদশা। অসংখ্যেয়র্ত্তিসংখ্যায়াস্ত । সাফ্টশতন্ । বহুগণাভ্যাম্ত উপবহরঃ উপগণাঃ।

ন ংখীতি প্রমক্তং মক্থি চেতি কর্মধারয়:। দীর্ঘনক্থি শকটং স্থুলা-ক্ষিরিক্ষুরিতি অন্ত্রাসক্থাজিশকো ন স্থীক্ষবাচকো ভবতঃ শকট্স্য কন্চিদ-বয়বঃ ইন্যোশ্যাক্ষিসায়গ্রাৎ তথাভিধীখতে।

⁽৩২০)। বহুরীহাবদ্বনেথ্রে ভবতি দারণি বাচো। পঞ্চাদ্পুলয়ো যথিন্ তং পঞ্চাদ্পাণ অলুলিদদৃশাব্যবং ধান্তানাং বিকেপণকাঠমুচাতে। দার্গণ বাচো মুখ্যাভিরস্কিলিভিঃ বধজো ন সন্তবতীতি সাদৃশ্যাদস্পিসদৃশেষ্ দাব্বয়বেষু অস্কুলিশংগো বর্তমান আশীয়তে।

⁽৩২১)। ফ ইত্যেত্সাত্তরাভ্যাং শ্বদ্ প্রাতর্ ইত্যেতাভ্যাং বছ-ব্রীহৌ ভো ভবতি। শোভনং শ্বোহস্যেতি স্থাইতি স্থানিবশন্ধবং ব্যাথ্যের ডিপ্রান্দ্র্ব্ এবং স্থপাতা কচিদব্যয়ানাং স্বর্ভচ্ছেষ্যোল্গিত্যেব ল্কি দিদ্ধে ডবিধানং প্রকরণান্তরবিহিত্তাদ্র লোপোন ভবতীতি মন্দ্রিয়াং শক্ষানিরাগার্থম্।

⁽০২২)। পূজাথোঁ স্বতী বর্জয়িম্বা অব্যরপূর্বকার আসন্নাদিপূর্বন্যাশ্চ
সংখ্যেরবৃত্তির ত্রণবঞ্জি তারাঃ সংখ্যারা উত্তরে বছত্রীহো ডো ভবতি।
আসন্নাদিপদেনাসন্নাদ্রাধিকসংখ্যানাং গ্রহণম্। উপদশা ইতাদৌ সংথেরবৃত্তিসংখ্যারা ইত্যাদিনা বছত্রীহিঃ স্বদশা ইতি শোভনা দশ অত স্কৃদশাঃ
অক্তপদার্থো বছত্রীহিরিতি বছত্রীহিঃ। সাঙ্গশত্মিতি সহাষ্টাভিব র্ত্তিত ইতি

नश्किश्चनां बना क्यांन

৩২৩। ভৃতিপ্রত্যয়পূর্ববাদ্মাদাদিকঃ। পঞ্চকো মাসোহত পঞ্চমাদিকঃ দশক্মাদিকঃ।

৩২৪। ঋগাদেশ্বৎ সর্বব্রে। অর্দ্ধমূচঃ অর্দ্ধর্চ: অর্দ্ধর্চ মৃ।

७२৫। अमृता यांगवत्कः।

৩২%। বহর চ**শ্চ**রণে।

অন্তত্ত্ব । অনৃকং সাম বহব কং স্ক্রম্। রাজপ্রং দিপুরী ত্রিপুরী বহবপং তড়াগম্ অত্যপং রাজধুরা মহাধুরা অর্দ্ধধুরা দিধুরী।

ভৃতীয়াস্তেন সহস্ত তুলাবোগে ইতি বছবীছিঃ সহঃ সো বেতি সঃ হলশ্চামো ল্গিডি স্থলুক্ নোনাস্তদ্যেতি নলুক্ অত্রাষ্টন্শব্দঃ সংখ্যানবৃত্তি নতু সংখ্যোব বৃত্তিঃ। উপবহবঃ উপগণা ইভি সংখ্যাবাধেতাত্র বহুগণ ইতি ডত্যন্তাদিশ্চ সংখ্যোতানস্তবং অপ্রচুরার্থবহুসংঘাতার্থপণ ইত্যুক্তম্ অত্তব সংখ্যাবাচকরা-দন্মোঃ পূর্ববং সমাসঃ। উপগণা ইত্যন্ত্র সমাসাস্তক্ষাভাবাদক্তদ্যাসান্তা-দেভি বিক্রেন কো ভবতি তেন উপগণাঃ উপগণকা ইতি।

- (৩২৩)। ভৃতিবের্তনং তত্র বিহিতঃ প্রত্যায়ো ভৃতিপ্রত্যয়স্তৎ পূর্বা-মাসশুদাঘহরীহাবিকো ভবতি। পঞ্চক ইতি পঞ্চ অস্ত ভৃতিরিত্যর্থে সংখ্যায়াঃ কস্তিংশছর্জ মিতি ক:।
- (৩২৪)। দর্কজেতি বছত্রীহাবিত্যস্থান্তিশক্কানিরাসার্থম্। ঋগা-দেরুত্তরে দর্কত্র সমাসেহঙ্কতি। অর্দ্ধর্চ ইতি নপুংসকার্দ্ধেত্যাদিনা তৎ-পুরুষঃ। অর্দ্ধর্চাদয়ঃ ক্লীবে চেভি দিলিকতা।
- (৩২৫।৩২৬)। পূর্বেণ প্রাণ্ডে নিয়মার্থং বচনম্। অন্চ ইতি
 মাণবকে বাচ্যে বহুত ইতি চরণে বাচ্যে মাণবকো বট্ট চরণং বেদশাধা
 ন বিদ্যুতে ধান্ যশ্মিন্ বহুরা ঋণো যশ্মিরিতি বহুরীহিঃ। অনুকঃ বহু কমিতি অক্কতসমাসাধেতি কঃ। রাজপুরমিতি ষষ্ঠীসমাসঃ। যদ্যপ্যকারাস্কোৎ পুরশকাৎ রাজপুরমিতি ভবত্যেব তথাপি ব্যঞ্জনাজেন সমাসে রাজপুরিতি প্রয়োগনিরাসার্থং পুরো গ্রহণম্। দ্বিপুরীতি দ্বিশ্বঃ দিবোন

৩২৭। নাক্ষাবয়ববাচিনঃ। অক্ষন্ত ধৃঃ অক্ষধৃঃ দৃঢ়া ধৃরত্ত দৃঢ়ধৃরক্ষঃ রাজপথঃ কুলপথঃ।

৩২৮। অবাসুপ্রতেঃ সামলোজঃ। অবসামন্ অবসোমন্ অনুসামন্ অনুলোমং প্রচিসামং প্রক্রি-লোমন্।

৩২৯। অনেত্রার্থাদক্ষঃ। লবণাক্ষং পুদ্ধরাক্ষং গবাক্ষঃ।

বিতি নিধামী। বহবপমিতি বহুৱা আপোহত্রেভি বহুব্রীছিঃ অত্যপমিতি অপোহতিক্রান্তমিতি তৎপ্রক্ষসমাসঃ। বাজধুবেতি নদীসমাসঃ অন্তন্তপদ-াগস্থাৎ বীণিঞ্জ্য । মহাধুবেতি বহুবীহিঃ কর্মধারয়ো বা সমানাধিকব-ণোত্তবপদে চেতি মহত স্তলোপো দীর্ঘন্ট ।

- (৩২৭)। অক্ষাবয়ববাচিনো ধুংশব্দানর ভাব। ধুংশব্দ জিবাক্ষাবয়ব-বাচিতা সম্ভবতীতি তমাদয়ং নিযেশঃ। দৃচধ্রক্ষ ইত্যত্রাপি বহ[্]শহৌ শৃংশব্দেনাক্ষাব্যব এবাভিধীষতে। চক্রসংব ্লং বাঙবিশেবঃ শকটাবয়বো-০ক্ষ ইতি বক্ষিতঃ। বাজপথ ইতি ষ্টাসমাসঃ। স্থ্লপথ ইতি স্তৃলঃ পদ্ধা যত্র দেশে স স্থ্লপথো দেশঃ। ঋক্পুরাপো ধৃশ্চ পদ্ধাঃ পঞ্চামী স্থান্ধ বি
- (৩২৮)। অব অনু প্রতি ইত্যেতেতা উত্তরাৎ লোম: সামণ্চ সর্ব্বঞ্জ সমাসেহত্বতি। অবসামমিতি অবগতং সামেতি প্রাদে: কুষ্টাদৌ প্রথম-রেতি তৎপ্রুষঃ অবগতং সাম অক্টেতি বছরীহিব। এবমপরোদাহরণেছিপ। প্রতিসামমিতাত্রাব্যমীতাব: বীপ্পায়াং সাম সাম প্রতীত্যর্থ:।
- (৩২৯)। নেত্রার্থব্যতিরিক্তাভিধারকাদক্ষিশবাৎ সর্ক্তি সমাসে-হস্তবতি। লবণাক্ষং পুদ্ধরাক্ষমিতি লবণম্ফীব পুদ্ধরম্ফীব ইতি ব্যাদ্ধা-লৈন্তিংগুণস্বত্যভেতি কর্মধারয়ঃ। গ্যাক্ষ ইত্যত্রাপি কৃট্নিক্ষে অনেনৈব অং। নেত্রার্থান্ত,। ত্রাহ্মণভাক্ষি ত্রাহ্মণাক্ষি। পুদ্ধরাক্ষমিত্যাদৌ তুবহু-ত্রীহোঁ শাক্ষাভ্যাং সক্থ্যকিভ্যামিতি টঃ।

৩৩। রাজপল্যহন্তিব্রহ্মণো বর্চ সং।

ন্রাজবর্চ সং পল্যবর্চ সং হস্তিবর্চ সং ত্রহ্মবর্চ সম্।

৩৩১। সমবান্ধাত্রসঃ।

সন্ত্যসম্ অবত্যসম্ অন্ত্যসম্।

৩৩২। অবাসুতপ্তাদ্রহসঃ।

অবরহসম্ অমুরহসং তপ্তরহসম্।

৩৩৩ ৷ প্রাদেরধ্বনঃ ।

প্রাধ্বঃ। কেচিদাহঃ।

৩৩৪। ক্ষাদকপাগুসংখ্যাভ্যো ভূমেরংপ্রতায়ঃ শ্বেতঃ। গোদাব্যাশ্চ নদ্যাশ্চ সংখ্যায়া উত্তরে যদি।

- (৩৩॰)। রাজাদি হা উত্তরাদ্বর্জ শাদাদ্তবিত্ত। রাজবচ সমিত্যাদে ষ্ঠীসমাসঃ বর্চ:শক্ষো দীপ্রিবচনঃ। যত্ত্র পলালরজা ত্রাহিং বেইরিড়া স্থাপ-যুক্তি তৎ কিল পল্যমূচ্যতে ইতি ধাতুশারায়ণম্।
- (৩০১)। সম অব অর ইত্যেতেতা উত্তরান্তমনোহত্বতি। সন্তমসমিতি তমদা সন্ততং সপ্ততং তম ইতি বা প্রাদিদ্যাদঃ। অবত্যসমিতি
 তমদা অবহীনং অবহীনং তম ইতি বা প্রাদিদ্যাদঃ। অবত্যসমিতি অবং
 করোতীতি নামপ্তকরোত্যাদাবিত্যাদিনা পিঙ্ অব্যাহতঃ প্রাদিদ্যান্তঃ
 বিঙ্লোপন্ত অবংশ তৎ তমশ্চেতি কর্মপারয়ঃ যন্তমোহনং করোতি তত্ত্বচাতে তমাদেরদ্ ইত্যদ্প্রায়ান্তেন অদপ্তত্যস্থকেন সন্তম্পাদিসিদ্ধৌ
 কর্মপমিবং সন্তম ইত্যাদিরপ্নিধৃত্যর্থম্।
- (৩৩২)। তাৰ অনু তথ ইত্যেতেতা উত্তরান্তহংশশাদন্তৰতি। অত্র রহংশব্দোহ প্রকাশবচনঃ। অবরহসমিতি পূর্ব্ববং সমাসঃ অথবা অবহীনং নিন্দিতং রহোহশ্বিরি'ত বছরীহিং অনুরহসমিতি পূর্ব্ববং সমাসঃ তথ্যহ-সমিতি তথ্যক তৎ রহশেতি কর্মধারয়ঃ যদতাস্তং রহো ন কেনচিদ্বগম্যতে তত্তপ্রবহসমিতি তথ্যমিব তথ্যম্।
- (৩৩৩)। প্রাদেরত্রাদ্ধনোহত্তবতি। প্রাধ্ব ইতি প্রাদেঃ রুষ্টাদৌ প্রথমরেতি তৎপুরুষঃ অনীতদ্বিতাচ্যয়োন্ডেতি নলুক্। অপ্রাদেস্ত। পর-মাধ্বা।
 - (৩০৪)। ক্রম্ভ উদক পাশুশব্দেজ্য: সংখ্যাবাচকেভ্যক্তোন্তরভা

কৃষ্ণভূমা উদগ্ভূমা পাগুভূমা বিভূম: ত্রিভূম: সপ্তগোদাবরং পিঞ্নদম্।

৩০ঃ। কচিদ গুত্রাপি।

পদ্মনাজঃ উর্ণনাজঃ। উর্ণনাজিরিত্যেকে। তথাচ জটুবার্ত্তিকম্। প্রবৃত্তিনো বিনা কার্য্যুমূর্ণনাজেরপীয়তে। গোর্গুলির্যম্মিন্ কালে স গোধূলঃ কালবিশেষঃ। গোধূলিরেষ কথিতো ভৃগুজেন যোগ ইত্যত্র গোধূলিরিত্যসাধুরিতি পশুপতিঃ। দীঘা চাসো রাত্রিশ্রেজি দীর্যরাত্রঃ বর্ষাণাং রাত্রিঃ বর্ষরাত্রঃ।

৩০৬। বেদ্যাং দ্বিস্ত্রিভ্যাং তাবত্যান্তীলুক্ চ।

ভূমেরংপ্রত্যয়ঃ য়ৃতঃ । যদি গোদাবরী নদীশদৌ সংখ্যায়া উত্তরে ভবতঃ তদা আভ্যামৃত্তরে অংপ্রত্যয়ঃ য়ৃতঃ । ক্ষভ্মা ইতি ক্ষা ভূমিরস্তাং নগ্র্যামিতি বছরীহিঃ ক্ষা চাসৌ ভূমিশেচতি কর্মধারয়ো বা । উদগ্ভূমেজি উনীচী ভূমিরস্তামিতি উদীচী চাসৌ ভূমিশেচতি বা পূর্ববং সমাসঃ এবং পাণ্ড,ভূমা । বিভূম ইতি বে ভূমী অত্রেতি বছরীছিঃ । লপ্তগোদাবরং পঞ্চামাতি সপ্তানাং গোদাবরীবাং সমাহার ইতি পঞ্চানাং নদীনাং সমাহার ইতি বিলাজবৈত্রক্যোগৈন দীভিশ্চ সংখ্যায়া ইত্যবায়ীভাবঃ । একনদীতার একাদীনাঞ্চেতি কর্মধারয়ঃ স্মাহারো বা অর স্তাদদভিশানাং একাপূথাকং স্মাহারবিক্সায়াম্ । অত্যে এক দদমেকনদীতি চ ভবতীতাছিঃ ।

(৩০৫)। কচিং কৃষ্ণভূমাদিভাংজতাপি কেচিদতমিছন্তি। পদ্মমাড ইতি পদ্মং নাভিরভেতি অথবা পদ্মং নাভাবভেতি বাধিকরণে বছব্রীছিঃ এবমূর্বনাভঃ ভদ্ধিতেং স্ত্র্যাতোঃ সংজ্ঞাদ্ধাং বহুদমিতি পূর্বপদে হ্রস্থঃ। উর্ব-নাভিরিত্যেক ইতি সমাসান্ত্রোংজন ভবতীত্যভিপ্রাদ্ধঃ। এতহুপ্রক্ষশং পদ্মনাভিরপি ভবতি। দীর্ঘরাক ইতি কর্মধারদ্ধঃ।

্ (৩০১)। বেদ্যামভিধেরায়াং দিরিরিভ্যেতাভ্যামুত্তরক্সাঞ্চানত্যা

षिস্তানা ত্রিস্তানা নেদিঃ। যাবতী পঠিতা ততো দিগুণা ত্রিগুণা বেতার্থঃ। ময়ুরব্যংসকাদিহাৎ সমাদঃ।

৩০৭। ন বছত্রীহিষজং পূজার্থস্বতিভ্যাম্। স্থান্তা অভিরাজা। বছত্রীহোঁ তু। স্বক্ষা সভাকা।

৩৩৮। কিমো নিন্দায়াম্। কিংরাজা কিংগোঃ।

०० । नक्छरभूक्राय।

উত্তরে সমাসেহস্থবতীতি তীলুক্ চ। দিন্তাবা ত্রিস্তাবা বেদিরিতি ক্রিয়া সামানাধিকরণো দিত্রিচত্র্ভাঃ স্থরিতি স্থং যাবতী পঠিতেতি ইয়ৎপ্রমাণা প্রাক্তে যজে বেদিঃ করণীয়া ইতি পঠিতমন্তি ততো দিগুণা তিগুণা ইতি বা অপদ্যে যক্তে কবণীয়েতার্থঃ। তাবতীশবেন তু যাবত্যপেক্ষেণ দ্রবার্ত্তিনা সংখ্যাশব্দস্থ সামানাধিকরণ্যাভাবাৎ বিশেষণসমাসো ন ভবতীত্যত আহ ময়্ববাংসকাদিশ্বাৎ সমাস ইতি অবেদ্যান্ত সমাসো ন ভবতি প্রতায়-বিবাবেবাত্রংসমাসন্তেইস্থাৎ দিস্তাবতী ত্রিস্তাবতী রক্ষ্তাঃ।

- (৩০৭)। পূর্কবোগৈর্বিছিতঃ সমাসান্তো বছরীছিং বজনিতা পূজার্থ-বিভিন্নামূররেজাঃ শব্দেজ্যোন ভবতি। স্থরাফা অভিরাজেতি নিতাং কুপ্রাদেরিতি সমাসঃ রাজাদেষ্টাদিরিতি প্রাপ্তান্তোন ভখতি। স্বক্ষঃ অভ্যক্ষ ইভি স্বাসাজাাং সক্থাক্ষিভ্যামিতি টঃ। পূজার্থেতি কিম্'? অভিক্রান্তো রাজানমতিরাজঃ স্থপথমিতি অত্রাভিশরবাচী স্থশকো ত্রন্থবাঃ। স্বভিত্যা-মিতি কিম্? পরমরাজঃ।
- (৩৩৮)। নিলারাং বং কিম্লকং তহত্তরাচ্ছকাৎ সমাসান্তো ন স্থাৎ।
 কিংরাজা কিংগোরিতি কিমো নিলারামিতি কর্মধাররং। নিলারামিতি
 কিম্ ? কন্ত রাজা কিংরাজ: কিম্শকোহত্ত প্রশ্নে বন্তীসমাসং। বহুত্তীহিবন্ধমিতাত্ত্ব নাছ্বর্ততে। তেন নিন্দিতা ধুরস্ত শকটন্ত কিংধু: শক্টমিজ্যত্রাপি নিষেধং।

অবাক্সা অসখা অগে:। অতৎপুরুবে তু। অধুরং শকটম্ অনুচ্যে মাণবকঃ।

৩৪০। উপজ্ঞাদি ক্লীবম্। তৎপুক্ষে উপজ্ঞাদি ক্লীবম্ ভবতি।

৩৪১। উপজোপক্রমাবাদিকথনে।
উপজ্ঞাযতে ইত্যুপজ্ঞা দর্বজ্ঞিতোপজ্ঞা দর্বজ্ঞোপজ্ঞা দর্বজ্ঞাপজ্ঞা দর্বজ্ঞাপজ্ঞা দর্বজ্ঞানার্পজ্ঞাযত ইত্যুর্থঃ। উপক্রম্যত ইত্যুপক্রমঃ সাদ্য-স্থোপ ক্রমান্ত্রাপ ক্রমঃ যজ্ঞঃ স্থান্তোনাদার্পক্রম্যত ইত্যুর্থঃ।

৩১ । বহুনা° ছায়া। বৃক্ষাণাং ছামা বৃক্ষকভাবন্।

বহু ত্রীং: ২০০ দেবৎ সর্প্রতি অং। নায়ং ধু:শন্ধোংক্ষাবয়ববাচী কিন্তু ভাববাচাতি নাক্ষাব্যববাচিন ইতি প্রতিষেধাভাব:। অনুচো মাণ্যক ইতি অকুসংজ্ঞাগতং প্রত্যাক্তবাম্ অনুচো মাণ্যক ইতাস্য বিষয়ান্তরাভাবাদেবাত্র প্রতিষেধা ন ভবিষ্যতি। মুখান্যৈর ভংপুরুষস্যাত্র গ্রহণং নাভিদেশিকস্য তেনোভবস্ত্রেষস্তরভেন তৎপুরুষ ইত্যানেন কর্মধাব্যস্য গ্রহণং ন ভবতি। অতএব প্রমা চাসে সেনা চেতি প্রমসেনা মহতী চাসৌ নিশা চেতি মহানিশেত্যাদৌ ক্লীবহং ন স্যাং।

- ·· (৩৪০)। শেষতৎপুরুষদ্বাবস্তম্পদলিক্ষকাবিতি অরম্প্রদালিক্ষতা তৎপুরুষদ্য বক্ষাতি। তত্ত্বৈব বিশেষবিধানার্থনেতানি লক্ষণানি। এতা-বতা তৎপুরুষদ্য বিশিষ্ট্রানামেবোশজ্ঞাদীনাং ক্লীবছবিধানম্।
- (৩৪১)। উপজারত ইত্যুপজা ইতি প্রাদেরাদস্তাদিত্যাৎ ক্রাধিকার-বিহিত্তাদস্য স্ত্রীলিক্ষরম্। উপক্রমাত ইত্যুপক্রম ইতি ঘণত্ত:। উপজ্ঞোপ-ক্রমাবিত্যেতৌ অন্তহিতৌ তৎপুরুষে আদিকথনে স'ত ক্লীবে স্যাতাম। সর্বক্ষোপজ্ঞমিতি ক্লীবভাৎ জ্রীপ্রভাষনিবৃত্তি:। উপজ্ঞোপক্রমাবিতি কিম্ ? বাল্মীকিল্লোক: এতদপ্যাদিকথনমেব। অনাদিকথনে তু। মৈত্রোপজ্ঞা বেদ: মৈত্রেণ জ্ঞারতে নৈতৎ প্রথমক্ষনম।
 - (৩৪২)। দেনাছরেত্যাদিনা বিকরং বক্ষাতি ডম্মিন্ প্রাপ্তে নিত্যার্থ্য

৩৪৩। অমনুষ্যাৎ সভা।

অমনুষ্য ইহ রক্ষ:পিশাচাদয় উচ্যস্তে। রক্ষ:সভং পিশাচসভুম্।।

৩৪৪। অরাজ্বরাজার্থাক:।

ইণসভ্য স্থরসভ্য । অরাজার্থাত । চক্রপুপ্তসভা নৃপতি--সভা । তথাচ কীচকবধঃ । নূপতিসভামগমন্তবপমান ইতি ।:
কেচিদত্র নূপাদিশব্দানামপি: রাজার্থজ্যিচছান্তি । তথাচামরকোরঃ ।।
দাসীসভং নৃপসভং রক্ষাসভ্যিমা দিশঃ ।
গ্রীসভং রাজসভ্য ।

৩৪৫। সর্বতঃ সংঘাতে।

বচনম্। তৎপূক্ষে অস্তস্থিতশ্ছায়াশকঃ ক্লীবং ভবন্তি। সা যদি ছায়া বহুনাং ভবতি। অতএব বৃক্ষাণামিতি বহুবচনে বাক্যং দশিতবান্। প্রক-রণাদিভিররগতে তু বহুত্বে প্রাণ্ডে বহুবচনাস্তস্যাপি, সমাদো ভবত্যেবেতি প্রাক্ প্রতিপাদিতমেব। অনস্তস্থিতস্য তু। ছায়াতরবঃ।

- (২৪০)। তৎপুরুষেহমমুষ্যবাচকাচ্ছকাত্তর। সভা ক্রীবং ভবতি।
 যদি ন মন্থ্যোহমনুষ্য ইতি তৎপুরুষঃ তদা কার্চসভেত্যক্র প্রাণ্নোত্যত,
 আহ অমনুষ্যা ইহেত্যাদি রুড়িশকোহয়মিত্যভিপ্রায়ঃ। ইহেত্যুক্তং স্থানাভারে রুড়িগ্রহণশন্ধানিরাসার্থম্। তেনামনুষ্যকর্তৃকাদিত্যক্র পিতসং প্রয়
 ইতি যছদায়তং তিরিক্ষক্ষং ন ভবতীতি।
- (২৯৪)। রাজশব্যতিরিকাৎ রাজার্থাৎ পরা সভা তৎপুরবে ক্লীবং ভবভি। চন্দ্রগুপ্তসভেতি ন হি চন্দ্রগুপ্তশব্দো রাজপর্যায়ঃ। কিন্তু রাজ-বিশেষস্য ডিখাদিবৎ সংজ্ঞাশবাঃ নৃপতিশব্দোহপি ন রাজপর্যায়ঃ কিন্তু নরাণাং পতিবেহপি যৌগিকঃ। কেচিদিভ্যাদি এতেনৈত্রহক্তং ন নৃপাদিশলা বৌপিকাঃকিন্তু রাজার্থা এবেতি কেবাধিনাত্রম্। অরাজেতি কিম্ন্রাক্ষতা।
- (288)। তৎপুরুষে সর্বত উত্তর: সংঘাতেইর্থে বর্তমান: সভাশক: ব্লীর: ভবতি। সর্বত ইতি ক্বতং অমনুষ্যাদরাজার্থাচেতি: অমুবৃতিশকাঃ

ন্ত্রীসভদ্ রাজসভদ্।

৩৪৬। কছোশীনরনামস্থ সৌষ্মিকস্থম্ আহ্বন্ধিকস্থম্ অসুশীনরনামস্থ তু। দাক্ষিকস্থা নামগ্রামঃ।

৩৪৭। সংখ্যাব্যয়াৎ পথঃ। দ্বিপথং ত্রিপথং চতুষ্পঞ্জ উৎপথং বিপথং কাপথম। ৩৪৮। অপথম।

নিবাসার্থম্। স্ত্রীসভমিতি স্ত্রীসমূহ ইত্যর্থ:। অসংঘাতে তু। অনাথসভা অনাথকুটীতার্থ:।

(৩৪৬)। উপীনরদেশেষু নামানি উপীনরনামানি তেরু বাচ্যেষু কম্বাশকস্তৎপুরুষে ক্লীবং ভবতি। সৌষমীত্যাদি শোভনঃ সমোহত্তেতি স্থমন্তত্তাপতাং সৌষমিঃ। হ্বেমতেরাঙ্পূর্বাৎ প্রাদেরাদন্তাদিত্যৎ আহবঃ নাত্রাহ্ববিভ্রমো বিধেরঃ ভাত্যাং ষষ্টীসমীসঃ। দাক্ষিকন্থা নাম গ্রাম ইতি শেষতৎপুক্ষবন্দাবন্তম্বপদলিক্ষাবিতি অস্তন্ত্রপদলিক্তা।

(৩৪৭)। পথ ইতি কৃতসমাসাঠে কদেশো নির্দিষ্টিঃ। সংখ্যাবাচকাদব্যয়াচ্চোত্তরঃ পথস্তংপুক্ষে ক্লীবং ভবতি। দিপথং চতুষ্পথমিতি ষষ্ঠীসমাসঃ। সমাহারদিগৌ তু। একং সমাহাবে ইত্যনেনৈব ক্লীবন্ধং সিদ্ধং
ভবতি। উংপথমিত্যাদৌ নিত্যং কুপ্রাদেরিভি তৎপুক্ষরঃ ক্লগাদেরৎ সর্ব্বক্রেভি বমাসাজোহং। কাপথমিতি কুরক্ষাদৌ কাদিরিভি কাদেশঃ কৃতসমাসাজনিদেশিং। স্থপন্থাঃ অতিপহা ইত্যত্ত ন ক্লীবন্ধন্। সংখ্যাব্যয়াৎ
পহা ইতি যং পাঠো বহুরু পুস্ককেরু দৃশ্রতে স প্রমাদক্ষতঃ।

(৩৪৮)। অপথমিতি নঞঃ পণো বেতি ক্বতসমাসাক্তং নির্দি ইন্।
অপথমিতি তৎপুক্ষবে ক্লীবন্ধং ভবতি। অপথমিতি নঞ্তৎপুক্ষয় মঞো ।
ইবার্মাৎ সংখ্যাব্যমাৎ পথ ইত্যানের ক্লীবন্ধে সিদ্ধে বচনমিদং নির্মার্থন্।
উপজাদৌ বিহিতং ক্লীবন্ধং মঞ্সমানে ক্লমনৈত্ব কবতি নাম্ব্র কেন অনে-নেত্যাদৌ অসেন্নিতি ন ভবতি। অতৎপুক্ষবে তৃ। অপথো দেশঃ। অক্লভসমাসান্তে তৃ ন ক্লীবন্ধন্। অপথাং, নঞঃ পথোবেতি বিকরেন স্মাসাভোষ্ক। ৩৪৯। সেনাস্থরাশালানিশাচছায়া ব।।
ব্রাহ্মণসেনা ব্রাহ্মণসেনং যবস্থরা যবস্থরং গোশালা গোশালং
গোনিশা গোনিশং বৃক্ষচছায়। বৃক্ষচছায়ন্।

৩৫০। একং সমাহারে। সমাহারে দ্বিগো দক্ষে চ একং ক্লাবঞ্চ ভবতি। পঞ্চত্রপু কাষ্ঠ-দৃশদম্।

৩৫১। অব্যয়াভাবোহ শ্য়বিশেষণঞ্জীবম্। অধিন্তি উপবধু অক্ষয়ং সঃ।

⁽ ৩৪৯)। তৎপুক্ষেহ হস্থি হাঃ সেনাদ্যঃ শব্দাঃ ক্লীবং ভবস্তি বা।

⁽৩৫০)। সমাহার ইতি তদ্ধিতার্থ ইত্যাদিনা বন্ধোংক্রোংবোগ ই চ্যানেম চ দ্বি ওদন্বাবেৰ বিহিতো ভ্ৰতঃ অতঃ সমাধাৰ ইত্যস্যাৰ্থং বাচ-ঞাব সমাহাবে ছিগো দল্বে চোত একং ভবতীতার্থ ভৈকত্বং বিধীনতে। ে চন সমাহাববিশেষণঞ্চাপ্যেকত্বমুপপদাতে। প্ৰমং প্ৰকৃত্পকাঠদশদ শোভনমিতি। নমু অনেকার্থাভিধাবিনঃ শবস্ত একার্থাভিধাবিদ্ধং বচন-শতৈবপি কর্ণ্ন শক্যতে শন্ধানামর্থাভিধানত স্বাভাবিকত্বাং তত্মাদ্বন সামর্থ্যাণতিদেশোহয়ং বিজ্ঞাবতে সমাহাবে একং ভবতি একবছবভি এক-বদর্থো ভবতীত্যর্থঃ নম্বেকস্বমেব বিধীয়তে। নমু সমাহরণং সমাহাবঃ সমুদায়ঃ স চৈক এব তত্ত্ৰ ভাষপবিপ্ৰাপ্তমেবৈকত্বং কিং লক্ষণেন নৈজ্ঞপ্তি भभूमांत्रिट्याभ्ने अन्तर्भावः देखात्रिन् वर्गत्न व्यत्नक स्वारं प्रकश्चार भभूमात्र-देशक वहनः न निधाजी कि नक्षणभावसम्। नमुमायित आहे अनुमाय हेला क जु पर्नातन लक्षणियः म्योशेर्थम् । ज्ञायनज्ञाक्काटकार्श्या मन्यविद्याः स्र श्रद्धाः ভবতীতি। পঞ্জপু ইতি ক্লীব ইতাহবৃত্তে হলকামো বুগিতি সুলুক্। কাৰ্ডদুশৰ্মাতি চবৰ্গদবহান্তাৎ সমাহাৰ ইত্যাৎ সমাসাম্ভ: সোম ইতি সকারত ম:। একশেয়ে তু অনেকসমূলরাভিধানাবছবচনং ভবভোব পঞ্চত্রপূপি।

⁽৩৫১)। অন্যন্নীভাশ: সমাসোহনান্দিশেশক ক্লীবং ভৰতি। অন্যন্নানানলিক্ষাৎ অধিন্তি ইত্যাদৌ পূর্বপদার্থপ্রধানভাগ্যন্নীভাষভাশিক-ভানাং প্রান্তানাং উন্মন্তনক্ষিত্যাদৌ অঞ্জদার্থপ্রধানভাদভালিকভারাং

৬৫২। জ্রীবিগুরদদেখাহপাত্রাদিঃ। তিবেদী বিধুরী। পাত্রাদিস্ত। বিপাত্রং ত্রিভুবনং পঞ্চরং বিচন্দ্রং চতুর্যুগং পঞ্চরাজমিত্যাদি।

৩৫০। জ্রাদন্তো বা। ত্রিখট্বং ত্রিখট্ব।

৩ ' ৪ । অনন্তশ্চ ন লুগিত্যম্ । পঞ্চক্ষং পঞ্চকী।

৩৫৫। গৰাখাদির্ঘদে। ছল্ছে গৰাখাদিবেকং ভৰতি ক্লীবঞ্চ। গৰাখং গৰাবিকং গৱৈ-

প্রাপ্তাযাং ক্লাবন্থবিধানম্। ক্লীবনিত্যস্যামূর্ত্তো পুল: ক্লীবগ্রহণং একমিত্যক্ত নিরন্তার্থম্। তেন সোৎকর্ষাণি সপ্তত্তঃ ক্রমেণ গছতি পুণাক্কদিত্যাদি ভবতি অব্যবস্যালিক্ষমেব তন্তাপি ক্লীবন্ধবিধানে প্রাক্ চ প্রাচী চ প্রাক্পাচ্যা-বিভ্যাদে ক্লাবাক্ষীবয়োঃ ক্লীবঃ সচৈকবদ্ধা ইত্যেকবন্তাবঃ স্থাং।

- (৩৫০)। সমাহাবো দিগুরকাবান্তঃ পা এানিগণবজি তঃ স্ত্রীলিকো ভবতি। সদৃশব্যাবর্ত্তকতং হি বিশেষবিধানং ভবতীতি ক্লীবন্ধব্যাবর্ত্তকং স্বীহবিবানমেকত্বঞ্চ পূর্বলক্ষণেনৈর সিদ্ধন্ । হিপুরীতি স্প্রগাদেরৎ স্কুত্তেতাৎ সমাসাত্তঃ দিগে বিতি প্রিয়ামী সমাসাত্তত্ত সমাসাব্যবন্ধানিগোরদন্ততেতি স্ফ-দিরুং বিধুবীতাুদাহত্তম্ । পঞ্চপবমিতি গৌরতদ্বিতস্কীতি টঃ পঞ্চরান্ধমিতি বান্ধদেল্ডাদিরিতি টঃ । সমাহার ইত্যেব । হিপুরং ধনম ।
- (৩৫৩)। দ্বিয়াং বিহিত আং ক্র্যাৎ ক্র্যাংপ্রত্যন্নাম্ভো দ্বিগুর্বা ক্রীলিকো ভবতি। স্ত্রীগ্রহণং সম্পেষ্টনিবাসার্থন্। আদম্ভ ইতি ক্তে আকারাম্বস্ত পুংলিক্স্য গ্রহণমিতি শক্ষা স্যাৎ। ত্রিখট্বমিতি হ্রম্বেংক্স্রাইতি হ্রম্বন্ধং ত্রিখট্বতি স্ত্রীপ্রত্যন্নস্ত চেতি হ্রম্বন্ধং দ্বিগোরিতি দ্ব।
 - (৩৫৪)। অনতক বিতঃ জীবিলো বা ভবতি। নত পৃথিতানেব।
- (০৫৫)। প্ৰাৰমিত্যায়ে গোৰ দিয়াব: পদাদাচীতি অবস্তানাদেশঃ গৰাধাদৌ বথোচ্চারিতে এবারং বিশ্লিং নতু স্থপাত্তরে। তেন অধস্তা-বামেশাভাবপক্ষে ব্যয়নেত্যাদিনা পঞ্চমাধিকর এব ভব্তি। গোহধা

ড়কম্ অজৈড়কম্ কুজবামনং কুজকৈরাতং পুত্রপোঞ্জং শচাণ্ডালং দালীমাণবকম্ উষ্ট্রথরম্ উষ্ট্রশশং মৃত্রশক্ত মৃত্রপুরীবং মাংস-শোণিতং শকুনোদঃ দর্ভশরং দর্ভপৃতিকং তৃণোলুপম্ অর্জ্রনুর দালিশাটং দালীদাসং কুটীকুটং ভাগবজীভাগ্রতং প্রীকুমারং শালিশাটং শাটিপিচ্ছিটম্।

৩৫৬। প্রাণ্যঙ্গমৃ। শিরোত্রীবম্। -

গো অখৌ গোর্বা সিক্তি পদাদ্যতীতি অতো দুক্ পক্ষেৎসন্থিত। গ্রাখান্দীনাং অজৈড়কপর্যন্তানাং চতুর্পাং উষ্ট্রশ্বমুট্রশশমিত্যেতরোঃ পশুবদ্দে বিকরে প্রাপ্তে দর্ভশবাদীনাং চতুর্পাং তুগদ্বন্দে বিকরে প্রাপ্তে কুজবামনান্দীনাং অরাগাং দাসাদাসাদীনাঞ্চাপ্রাপ্তে বিধানম্। মৃত্রশক্ষদিলি। ফুর্গাং শাটীপিচ্ছিট্স্য চ নিয়তক্রব্যার্থঃ পাঠঃ ইহ ছানে মৃত্রশক্ষদিতি। খচাগুলিমিত্যক্ত চ নিত্যবিরোধীত্যনেনৈর সিদ্ধে অবিরোধার্থঃ পাঠঃ। বদা ঘল্যে বিরোধার ন প্রযুক্ততে কিন্তু স্বরূপমাত্রাভিধানায় তদা অনয়োরবিরোধিছম্। খচাগুলমিহাক্তাতি দাসীদাসাদীনাং অরাগাং স্থীপৃংসরোক্তমাত্রকৃতভেদরোক্রেকশেরঃ পুমানিতি একশেরো ন ভবতি জ্বাদের গণপাঠাং। একং সমাহার ইত্যেকছং ক্লীবছঞ্চ প্রাপ্তমের কিন্তু গরাখাদির সমাহারদ্দ এব ভবতি। নাক্তোহত্যবাগ ইতি ব্যবস্থার্যমেতানি লক্ষণানি অন্যোহন্যবোগেহপ্যেকত্মার্থং ক্লীবছার্থনিত তুন কলনীরম্। এবঞ্চ সক্তি অন্থিছচং বাক্তচমিত্যাদী চর্বগদ্বহান্তাং সমাহারে ইতি সমাসান্তোহন স্থাং।

(৩৫৬)। প্রাণ্যকং গ্রাথাদির্ভবিত। প্রাণি চ তৎ অক্ষেতি
অ্থবা প্রাণিনেংকং উভর্থাপি প্রাণ্যোগাৎ অকমণি প্রাণি ভবত্যের
অতোহপ্রাণিক্রবাজাতিরনিরতজ্বাম্ব ইত্যপ্রাপ্তে বিধানম্। নহু কথং
ম্থনাদিকাজ্যাং বো বার্নিজ্বান্তীতি প্রয়োগঃ। উচাতে। ম্থনহিতে
নাদিকে ম্থনাদিকে ইতি সমাসঃ প্ট্রুরভেদান্ত বিবচনম্। ম্থনাদিকাভ্যানিতি দ্বিপর্যাদির পাঠাদিকি রক্ষিতঃ।

۲, ۴

৩৫৭। অন্মসহিতঞ।

বাক্ষচম্। তথাচ, বাক্ষচেনাতিস্কেশেভি ভটিঃ

००४। वृद्याक उरक्षतीत्न।

শঙ্পটহং মাদ জিকপাণবিকম্।

७৫२। ভ্রিমলিসনদীনগরদেশাঃ।

গঙ্গাশোণম্ উদ্ধোরাবভি মথুরাপাটলিপুত্রং রাঢ়ামগধম্।

৩৬০। অব্যয়ননিমিতং সমিহিতং নাম। পদকক্রমকং ছাত্রোপাধ্যায়ম্।

(৩৫৮)। তৃর্যাকং প্রবীশশ্চ দ্বন্দ্র গৰাখাদিঃ স্যাং। শব্ধপ্টছ্নিন্ডি অপ্রাণিদব্যজাতি থালেব সিজে তৃর্যাক্ষগ্রহণং ব্যতিকরনিবাসার্থম্। তেন শব্দীশ্র্মাবিত্যত্র ন ভবতি। মার্শাক্ষপাণবিক্ষিতি ম্দল্বাধনং শিল্পমস্যোতি তদ্যা শিল্পবিক্ষিতি ট্রকণ্।

(৩৬০)। অধ্যয়ননিমিক্ত সরিহিতং নাম ছন্দে গ্রামাণির্ছবিত। পদক্রমকমিতি পদমধীতে বেত্তি বা পদানেরক ইত্যক: পাঠঃ পদানাং ক্রমন্ত চ প্রত্যাসন্তঃ। অধ্যয়ননিমিক্তমিতি কিন্? পিতাপ্ত্রো জনননিমিক্তং সন্তিন্তিমেতরোন মি। সন্নিহিতমিতি কিন্? যাজ্ঞিকবৈশ্লাকরণো ব্যাকরণ-বিদ্যা প্রথমাধ্যেরা যজ্ঞবিদ্যা চাধী ত্রবিদ্যাস্য শেষাধ্যেরা নান্ধােঃ ক্রিশ্লাপ্রজ্ঞানক্ষেত্রিকাপি গ্রন্থত্যান জিঃ।

⁽৩৫৭)। অপ্রাণ্যঙ্গসহিতঞ্চ প্রাণ্যঙ্গং দ্বন্দে গবাগাদির্ভবতি।

৩৬১। অনিরবসিতশুদ্রঃ।

রজকতন্ত্রবারং ুভিরণীবরং ওক্ষারকারম্। নিরবসিতপ্তস্তার। চাণ্ডালহভিতপৌ। এখন ভুক্তে বিনা পাত্রং সংস্কাবেণ ন শুখ্রিচ স নিরবসিতশূক্রঃ।

৬৬২। নিত্যবিষ্ণোধী।

অশ্মহিষং কাকোল কৃষ্ অহিনকুলম । অনিতাবিরোধী তু। দেবাস্থবাং কুরুপাগুরাং। তথাচ, দেবাস্থবৈবম্তমন্ত্রিধিম সন্থ ইতি ভাববিঃ।

৩৬০। স্থেণোলুডি শাখাবানসুবাদে।
প্রভাষ্ঠাৎ কঠকালাপম্ উদগাৎ কঠকোথুমম্। স্বনসুবাদে তু।
উদগ্য কঠকালাপা:।

⁽৩৬১)। অনিবৰ্ণ ভশুদ্ৰবাদ্ধী গৰাখাদিভবিত। যোহস্তকশ্বণি বি ক্ বন্ধনে বা নিবপুৰ্বে বহিন্ধবাণাৰ্থ: নিবৰসিতো বহিন্ধতঃ কুল্তা বৃগিন্ধতঃ পাত্ৰাৎ অভএবাহ যেন ভূক্তে ইতি সংস্কাবেণাপি ন ভাগতীতি পুনৰ্ঘটনেন বিনা ন ভাগতীত্যৰ্থ:। ইতি মে যাস্তি নিবসাং শৃষং বন্ধকনাপিতৈবিভোক-শেষেণ।

⁽৩৬২)। নিতাবিনেগনী গবাখাদির্ভবতি। নিতাবিবোধীতি ণিন্
তচ্চীলালো স্থপিতি নিন্ নিতাবিবোধশীল উচাতে। নিতাবিবোধি চ কর বং
প্রাণিনো মুখ্যং অপ্রাণিনন্তে শুণচাবিকম্। মুখ্যাভাবে হি গৌণভ প্রহণনিতি
ভাষাৎ সহানবস্থানশক্ষণবিবোধভাত্র গ্রহগং তেনেহ ছাষাতপো অগ্নিজ্বলে
ইত্যর ন ভবতি। পশুপক্ষিদ্দপ্রাপ্তমপি বিকরং বাধিষা অবমেব বিধিঃ
প্রবর্ত্তে ইতি স্চয়িতুং অশ্নহিষং কাকোক্কমিতি উদান্তব্। দেবাক্ষরাঃ কুকপাশুবা ইতি অনরোনৈ মিদ্ধিকা বিরোধঃ।

⁽৩৯৩)। তিঠতেরিণ্ধাতোশ্চ কুঙি সজি অনুবালে ধম্যাননে শাবাবান্ গ্রাথাদি ভ্রতি। প্রমাণান্ধরাবগতভার্থস্য শব্দেন সংকীর্তনমন্বাদ:। শাবা বেলৈকদেশ: তদ্যুক্ত: শাবাবান্। প্রত্যন্তাৎ কঠকলাপং উদগাৎ কঠকৌবুমমিজি কঠেন প্রোক্তং ছলোহয়ীরতে কঠা:

৩৯৪। রজুর্বিহিতলোমনাগোচ্ফ্রীবঃ:
কর্কাখনেধন্। অবজুবিহিতত্ত্ব। ইযুবজুৌ। অক্রোমস্ত্র। দর্শ-পৌর্ণমার্মো। ক্রীবস্তা। রাজসূত্রবালপেয়ে।

७७৫। (मनाक्रम्।

হস্তিনশ্চ ঘোটকা**ল**চ হস্তিঘোটকং রথিকাশারোহম্।

৩৬৬। অপ্রাণিদ্রব্যজাতিরনিয়ত্তুদ্রব্যত্তে।

অকলাপিনো বৈশস্পায়নশিয়াদিতি প্রোক্তার্থে নিন্ত্ত তথে তি বা ইতি টণ্ কঠচবণ্যাভ্যাং বেদে প্রোক্ত চেতি টণো নিনশ্চ লুক্ কলাপিনা প্রাক্তং ছন্দোহধীয়তে কালাপাঃ তেন প্রোক্ত ইতি টণ ততন্তথে জি
তন্দীতে বেতি টণ্ প্রোক্তাদিতি তল্পুক্ কঠাদানাং প্রক্তিটা উদবশ্চ
প্রমাণা তথাবগতা যদা শব্দেনান্দ্যতে তদৈবম্দাহবণম্। যদা তু প্রথমমেবোপদেশস্তদা প্রত্যুদাহক্ষাং অতু এবাহ অন্মুবাদে তু উদগুঃ কঠকালাপা ইতি। প্রভাগদিতি সঙ্পুনিণাদেবিতি সঙ্পুক্ স্থাদেবিত্যাদিনা
বহম্। ডালাদিতি ইনিকোর্না ইতি গাদেশঃ পূর্ববিংস ঙ্লুক্। স্থোবিতি
কিম্। আনন্দিরুঃ কঠকালাপাঃ। লুড়ীতি কিম্। তিঠিতি কঠকোখুমাঃ।

(৩৬৪)। যজুবে দিবিছিতঃ সোমপানোপলাক্ষতো বাগোহক্লীবো ণ্রা-শাদিভবতি। ইযুবজ্ঞাবিতি সামবেদবিহিত্তো।

(৩৬৫)। সেনাঙ্গং গণাখাদিউবতি। অবহুত্বে সেনাঙ্গে নিবেধং
বক্ষাতি এতাবতা বহুত্বেহুপাত্র বাক্যোপগ্রাসং। একবচনাস্তং সেনাঙ্গং
হস্তাখাদিগতিবিকরতা বিষয়ং নহুবহুত্বে পশুঘন্তে নিবেধো বিদ্যুত্তে
হস্তাখাদির বহুত্বেহুপি পশুঘন্তে বিভাববৈদ্ধ ভবিতব্যমিতি জ্বাদিতাঃ ন
তদিহেছিং বহুনামসম্বহুত্বাং। ইয়ান্তে পৃতনাঙ্গানি হস্তাখবপত্তর ইতি কাজ্যাবনঃ ক অভ্যান্ত হস্তাখবন্ধপাদাতং সেনাঙ্গং আচত্তুইয়্মিত্যমন্তঃ। ভেদ
ধর্মেন্ত্রশাদ্ধিনিব্রাণান্তরাগ্রহণন্। র্থিক ইতি প্র্পাদেষ্টিক ইতি চরত্যুত্বে টিকঃ।

(৩৬৬)। অনিষভ্রবাধে সভি প্রাণিবাভিরিকো লবাকাভিবাচ্ক: শক্ষো গবাধাবির্দ্ধবভি। ধানাশঙ্গি আরাশুরীতি হবোধয়ঃ ক্লীরে, ইভি খানাশক কি আরাশন্তি। রঞ্জিতং মু বিবিধং তর্কশৈলমিতি ভারবিঃ। বাভটন্ত পঠতি। রঞ্জিতাপু বিবিধান্তরূশৈলা ইতি। ভরুপ্রধানাঃ শৈলান্তরূশৈলা ইতার্থঃ। অদ্রব্যঞ্জাতিস্তা। কপবদ-পদ্দশশাং গমনাকৃঞ্চনপ্রসারণানি। নিয়তন্তব্যবে তু। ত্রীণি বদরামলকানি সম্ভীহ ভাতে।

৩৬৭। কুদ্রান্তঃ।

দংশমশকং যুকালিকী । কুদ্রজন্তুবনন্থিবশোণিতো যৎ সহজ্র-মঞ্জলির্ঘদ্গোচশ্মপ্রমাণরাশিহননার পাতকম্। নকুলপর্যন্তমিতি পঞ্চধা।

'হ্রম্ব: ধানা ভ্রষ্টবা: শক্ষা পিটকবিশেষ: আরা চর্মপ্রভেদিনী শকী ছুনিকা। তর্মপেন মিতি বিশিষ্টনৈতজ্ঞাভাবাৎ তর্মণাম প্রাণিষং তরুপধানা: বৈশাস্তর্কশৈলা ইত্যর্থ: ইত্যমেন ইন্মনাসোহত্র নিবস্তবান্ মযনব্যংস-কাদিছাং শাকপার্থবাদিবং কর্মধার্যোহ্যমিত্যভিপ্রায়:। অদ্ব্যভাশিষ্টি ত্যাদি রূপান্বো গুণজ্ঞাতিবচনা: গমনাদিকঞ্চ ক্রিমাঞাতিবচনম। ত্রীণী ত্যাদি অত্র সংখ্যানিদেশেন দ্ব্যক্ত চ নিযত্ত্বম্। প্রাণিজাতিস্ত। বাদ্ধ ক্রিম্নের বিট্পুর্নে। জাতিরিতি কিম্। নন্দকপাঞ্জ্ঞো সংজ্ঞাশকাবেতে। বতু জাতিবাচকো।

(৩৬१)। কুল ইতি কুদির সংপ্রেরণে ইত্যন্তাং ক্ষায়ানের ইতি বং অন্নপরিমাণঃ কুলঃ কুদলাসো জন্তকেতি কুদ্রজন্ত্র্গবাধানির্ভ্রতি। অন্ন
পরিমাণতা হাপেকাভেদাদনবন্থিতেতি পঞ্চপ্রকাবাদি লক্ষণাস্থাপতাতি।
অনান্থিবিত্যাদি ষত্যান্থি ন বিদ্যুতে কেবলন্ত চর্মাশোণিতমাংসমাত্রমন্তি।
অশোণিত ইতি যতান্থীয়ং লোণিতং নান্তি স পুন্ম শকাদিবং। যৎ
সহত্রমঞ্জলিবিতি যেবাং সহত্রেণাঞ্জলিঃ পূর্যতে এতেনান্নপরিমাণিয়মেব
ব্যবচ্ছিরম্। যদ্গোচর্মপ্রমাণরাশিহননার পান্তক্রিতি এতেন ধর্মণান্তে
ব্যবন্থিত এব সর্বলোকপ্রসিদ্ধঃ কুদ্রজন্তরক্তঃ। নকুলপর্যন্তনিতি নকুলপরিমাণপর্যন্তো জন্তঃ কুদ্রজন্তরিতি। মন্যুপি পঞ্চবা লক্ষণমুপত্তন্তং তথান্থি
কর্মোপন্যপ্রাহক্ষণাং নকুলপর্যন্তমিত্যেতক্তনের লক্ষণমাদরণীরম্।

৩৬৮। বিরুদ্ধনদ্রব্যং বা।
শীতোকং শীতোকে জন্মনরণং জন্মনরণে। অবিরুদ্ধস্তা। কামকোধো। ক্রবাস্তা। শীতোকে উদকে।

৩৬৯। ব্যুদ্ধনরক্ষপক্ষিমৃগপশুধাশুতৃণানি।
দধিন্বতং দধিন্বতে ধবখদিরং ধবখদিরাং বককন্ধং বককনাং রুক্তপৃষতং রুক্তপৃষতাং। মূগোপাদানাৎ পশুস্কার ন স্থাৎ। রুক্তমহিধাং। গোহক্ষ গোহকো।

৩৭০। অখেনৈব বড়বা। অখবড়বং অখবড়বো। অন্তত্ত্ৰ। হয়বড়বে। মুদ্গমাধং মুদ্গমাধাঃ কুশকাশং কুশকাশাঃ।

⁽৩৬৮)। অক্টোহন্তবোপসমাহাব্যাভ্যামের বিকরে সিদ্ধে বিকর-বিধানং নিম্নার্থম্। প্রক্ষাব্যবিক্ষমন্তব্যবাচ্যের গ্রবারাদির্বা ভরতি। অবৈবান্তোহন্তবোগে সমাহাবে চ ছদ্যে ভরতীতার্থঃ। তেন নীতাক্ষে উদকে ইত্যত্রান্তোহন্তবোগ এব হন্তঃ। নীভাক্ষমিত্যাদি শীভোক্ষপ্রবাজ জন্মবণবোশ্চ ক্রিববে: সহানবস্থানলক্ষণেন বিবোধেন বিক্ষম্বন্। কার-ক্রোধাবিতি কুলোহিদি সন্ কামমাচবতীতি নানয়োঃ পরস্পরবিক্ষম্বন্।

⁽৩৬৯)। প্রত্যেকং বাকাপরিসমাথে: সপ্ত বাকানি ভবস্তি ।
ব্যঙ্গনবাচী গবাখাদির্ভবতি বা। এবং বৃক্ষবাচীত্যাদাপ্যবগন্তবাম্। তেনৈরা
বিভাষা তুলাজাতীরেবেবাবতিষ্ঠতে ন তু পবস্পরব্যতিকরে। অত্যাপ্রাণিদ্ববালাতীনামিতি নিত্যে প্রাপ্তে পরিশিষ্টানাঞ্চাপ্রাপ্তে বিকরার্থং বচনম্ ।
পর্যাদ্যাপাদানত পূর্ববং বিকরে প্রাপ্তে বাতিকরনিরসার্থম্ । তেন পশ্নাং
তভোহকৈং সহ ন সমাহারত্তম্য ভবতি। নতু সর্বাপা হল্যাভাবং। তথাচ
ভটিঃ, হত্মন্ কীদৃশং স্থাং নরবানয়রক্ষসামিতি। নতু পঞ্জাহনেন মুগগ্রহবে
সিত্তে কিম্বর্থং পৃথস্তগাদানম্ অত আহ মুর্গোপান্যানাং পর্যব্রে ন ভালিতি
থদা মুগবাচকত পর্যস্তরবাহিনা সহ হল্যে ভবতি তদা গ্রাখাদিনং ম
ভবতীতার্থং।

⁽७१०)। नशासिन्य निष्क विद्यमार्थः सहन्यः। व्ययनास्योगस् ऋत्यः

৩৭১। পূর্বাপরাধরোত্তরে চ। পূর্বাপরং পূর্বাপরো অধবোত্তরম্ অধরোত্তরো।

৩৭২। কচিদভাচ। তিহাপুনর হ তিবাপুনর দবঃ দধিহ্বমনঃ দধিহ্বমনসঃ শূলাগ্রাং শূলার্ফা।

৩৭৩। ন দ্বিপারঃ প্রভৃতিঃ। দিববৈশ্রবণী দ্বিপারদী মধুসপিষী সপিম ধুনী ত্রক্ষপ্রজাপতী দিববৈশ্রবণী ক্ষক্ষিশাখো হবিকোশিকো স্বর্গাপবর্গে। শুক্লকৃষ্ণো আভবসানে শ্রন্ধানেধে শক্সানে উদুখলমুষলে অধায়নতপ্রী মেধাতপ্রী দীক্ষাতপ্রী ইথ্যাতপ্রী ইথ্যাবহিষী। দীর্ঘো বলাদাবিতি দীর্ঘ:।

বডবা গৰাখাদিব। ভবতি নাভাশকেন। অশ্ববড়বাবিতি প্রকলিপ্রমেখবড-বন্ধেরিতি পূর্কলিঞ্করং হ্যবডবে ইত্যারাভোহন্তবোগ এব দলঃ।

⁽৩৭১)। পূর্কাপবমধবোত্তবঞ্চ গবাখাদিবর্ণ ভবতি।

⁽৩৭২)। কুত্রচিম্বিরে পূর্কোক্তলক্ষণাদস্যক্ত গ্রাম্থানির্ভবিত বা।
তিয়া এক: পুনর্ব প্রে তিয়াপুনর্বস্থ। তিয়াপুনর্ব সব ইত্যাপপাঠ:
তিয়াপুনর্ব স্থ ইতি পঠনীয়ন। পুয়ার্থপুনর্ব স্থনাং বহুত্বে দ্বিবচনং নিত্যানিতি বহুত্বে পক্ষে বিবচনেনৈর নিত্যং ভারামিতি। অভত্বে এতহুবাহবণ্মিজি বিশেষস্থ কুতো লক্ষরাং। কাবকপাদে তু তিরাপুনর্ব স্থ ইত্যানালতা
সমাহার্বস্তৈক্ষাদ্তিকত্বমিতি বহুক্তং তব্ প্রকার্যান্তবোপদর্শনিস্যা বিকল্পপ্রক্রণস্য স্পত্তীর্থ ভাস্ক্রনার্থম্য। অল্লোহস্ক্রবোগে সমাহাবে চ দ্বন্স্যা
বিধানাদের স্ব্রে বিকল্পন্য প্রাপ্তেবিতি নিম্বার্থং।

^{(●}१७)। দ্ধিপর: প্রভৃতি দ্বন্ধে একং ক্লীবঞ্চ ন কবজি। দ্ধিপর-দীত্যাদিত্ররাগাং ব্যঞ্জনভাৎ বিকরে প্রান্থে গুরুক্কাবিত্যক্ত বিরুক্তমন্তব্যং বৈত্যনেন বিকরে প্রাণ্ডে উদ্থলস্বলে ইগ্নাবর্ষিনী জনরোর প্রাণিত্রব্য-কাতিবনিরত্রব্যাহে ইভানেন নিত্যে প্রাণ্ডে শেরাগানেকং সমাহার ইতানে-বৈর ক্লীবন্ধে এককে চ প্রান্থে প্রতিবেধবিধানম্। মধুমূর্পিবী সর্পিন গুনী

৩৭৪। **অবহুত্বে বৃক্ষপক্ষি**মৃগ**ফলদেনাঙ্গ**ধান্তত্**ণ** কুদ্ৰজন্তবঃ।

প্লক্ষতগ্রাধে হংসচজ্রবাকে রুক্পৃষতে বদরামলকে রিধকাশা-রোহে ব্রীহিষরো কুশকাশো যুকালিকে।

७१৫। कि निगक।

গ্রীবাকুক্ষিললাটানি। তথাচ বৈদ্যকং, গ্রীবাকুক্ষিললাটের নিত্যং স্বেদঃ প্রশস্ততে। কক্ষোকভগদূর্দ্ধানঃ। তথাচ কামশাস্ত্রং; সংখ্যে চুয়ো ললাটাক্ষিকক্ষোক্ষভগদূর্দ্ধস্থ।

৩৭৬। ইয়ত্তায়াঞ্চ। দশ দক্তোষ্ঠাঃ ইমডে। মাদ ক্লিকপাণবিকাঃ।

৩৭৭। স্পামীপ্যায়াং বা।

- (298)। রক্ষাদবোহবছতে গৰাখাদরো ন ভবতি। অবহুত্বেহজো-হক্তবোণ এব বন্দঃ নতু সমাহার ইতার্থঃ। অপ্রাণিডব্যজাতিরপ্যবহুত্ব প্রকৃতিন গ্রাখাদিভবতীতি স্থাসকারমতমিহ নাক্ষীকৃতম্। এবং ব্লুভি ফ্রাদীনামুপাদানমন্বকিং স্যাৎ।
- ় (৩৭৫)। কুত্রচিদ্বিরেছজ্ঞদপি গ্রাম্বাদিন ভবতি। পূর্ব্বোজ্ঞেল কলৈবিভিতং গ্রাম্বাদিমমুদাহবণদর্শনাম্ব্যভিচরতীত্যর্থঃ। অভএব শিষ্টানাং
 বচনানি উদাহবণম্বেনোপজ্ঞবান্।
- (৩৭৬)। ইবং মানমসোতি কিনিদন্তাং বতুবেতি যতু: কিনিদমোর্যতৌ প্রকলেতি ইক্মশ্বানে জ ক্রক তভাবে তাগমিতি তা। ইকভাষাং সমানানায়াং করাকাদিক ক্লীবভ্তমেকত্বক ন ভবতি। বেবাং করোবিধেবভোষাং ক্লাক্সবানাং ক্লাক্সবানাং ক্লানানাক বদা ইক্লা গম্যতে তদা
 কল দক্রোকা ইতি প্রাণাক্ষমন্তা প্রশাসিকং প্রতিবিধ্যতে। ইরজ্যে
 মার্গ ক্রিকণাশ্বিকা ইভাতে তৎপ্রবীনভাত গ্রামাদিকং প্রাথক।

(७१९)। मृत्रामीनग्रावाविक्रकाक्षक त्रत्रामानाकार नवानाविकः क्रीकेंक-

ইত্যান পশার্থাদাব্ভরমিতি প্রাণ্ভাব: । প্রক্সামে বাঙ্মনসে ইতি কঃ সালঃ বাচা মনস ইত্যংপ্রত্যয়: ।

উপদশং দক্ষেতিম্ উপদশাঃ দক্ষেতিঃ। ' একবন্তাৰপক্ষেত্ব্যরী-ভাৰ এব বিশেষণম্। অশুত্র বছক্ষীহিনেব।

৩৭৮। শেষতৎপুরুষদ্বাবস্তত্পদলিক্সকে। পূর্বকার: অর্ধপিপ্লনী পত্নীপুত্রো।

মেকত্বঞ্চ বা ন ভবতি। উপদশমিত্যাদি দশানাং সমীপে ইয়দিতি বদা
সমীপিপ্রাধান্তং তৃদা সংখ্যের রতিসংখ্যা ইত্যাদিনা বছব্রছিঃ পূজার্থঅতিবর্জ্জমিত্যাদিনা ডঃ সমীপি প্রাধান্তাছহবচনমের উপদশা ইতি। বদা
সামীপ্যপ্রাধান্তং তদা অব্যয়ীভাবঃ অনস্তাচ্চতি অৎ সামীপ্যপ্রাধান্তাদেকবচনমের উপদশমিতি। এবঞ্চ সতি একবদ্ভাবপক্ষে বিশেষণকৈত্বভ্ মপি প্রাপ্নোত্যত আহ একবদ্ভাবপক্ষে ইত্যাদি ইদমত্র তাৎপর্যাঃ একবদ্ভাবপক্ষে একার্থস্য দল্প্য সামীপ্রাধান্যাদেকার্থ এবাব্যয়ীভাবো বিশেষণং
বুজাতে বহর্থস্য হন্দ্স্য সমীপিপ্রাধান্তাৎ বৃহ্বর্থো বছরীহিরের ভবতি।

(৩৭৮)। উপজ্ঞাদিক্লীবমিন্তাদিভিন্তৎপূর্বে একং সমাহার ইত্যাদিভিদ্ধ কৈ ক্লীবন্ধমুক্তং তদিতরং শেবং। শেবতৎপূর্কয়ং শেবদ্ধক্ষণ অন্তত্তপদলিঙ্গকো ভবভি। অন্তত্তং পদমন্তত্বপদং তদ্য দিঙ্গং অন্তত্তপদিলিঙ্গং
আন্তত্তপদলিজনের লিঙ্গং ধরোন্তে আন্তত্তপদলিঙ্গকৌ পূর্বার্থসন্থনোত্তরপদবিশেবণসোত্যাদিনা লিঙ্গপদলোপঃ অন্তত্তসমাসালাকেতি কং। উত্তরপদার্থপ্রধানে ভৎপূর্করে প্রধানভাবেরেক্সেশসান্তাব মন্ত্রিকং তত্তবিহাতি তং
প্রতি অনর্থকং বিধানং কন্ত পূর্বেপদার্থপ্রধানঃ ভক্ত পূর্বেপদস্য মন্তিক্
ভদ্মিন্ প্রসক্তে অন্তত্তপদলিকতা বিধীয়তে অভ্যান্ত পূর্বেকায় ইত্যদান্তবান্।
বন্ধে উভন্তপদার্থপ্রধান ইত্যুক্তং সমানলিকাবরবে বন্ধে বিধানমনর্থকং স
মদা ভিন্নলিফাবন্ধনো ভবতি তদা পূর্বেশান্তরপদ্যোজিন্তলিকন্তান্ত্রার্থপ্রাহক্ষেকং
দিলং নাল্ডি যেন সম্পানো বাপ্রিক্ততে উভাজ্যাং কুপেন্ধসন্ত্রাদ্ধক্রো বাসক্রেন্তি অতঃ পর্য্যায় ক্রমক্রেৎ ক্ষর হন্দে নিম্নার্থং বচনম্ অভএব পত্নীপ্রাবিভ্যানাত্তবান্। সমাসার্থন্য বিশ্বমার্থং বচনম্ অভএব পত্নীপ্রাবিভ্যানাত্তবান্। সমাসার্থন্য বিশ্বমার্থং বচনম্ অভএব পত্নীপ্রাবিভ্যানাত্তবান্। সমাসার্থন্য বিশ্বমার্থি তথিনেরণমণি
ভিন্নিরং ভবত্যেব। ন দিগানিতি প্রতিষ্কাশ আত্তিদেশিকভাণি তৎপূক্তবভাক গ্রহণম্। তেন কর্মধার্মেকপ্যক্তবাদ্ধিকতা মুন্যভন্তঃ।

०१क। न विदर्भ।

পঞ্চকপাল: পুরোড়াশ: পঞ্চকপালা ববাগু:।

৩৮০। প্রাপ্তানরালমুপসর্গপূর্বত্বে চ। প্রাপ্তজীবিক: আগুরজীবিক: অলংকুমারিং অভিজ্ঞর: নির্ছোশা-বিরাগত:।

৩৮১। পূৰ্ববিদিশ্বসম্ববড়বয়োঃ। অশ্ববড়বো অশ্বড়বান্ সম্বৰড়বৈঃ। শেষ ইত্যেঁব। অশ্বড়বম্।

⁽৩৭৯)। দিনো সমানে হত্তপ্শলিকতা ন তবতি। দি গুকর্মণাররো চ তৎপুক্ষাবিতি দিনোরপি তৎপুক্ষদাদ হত্তপদলিকতা ক তবতি। দি গুকর্মণাররো চ তৎপুক্ষাবিতি দিনোরপি তৎপুক্ষদাদ হত্তপদলিকতে প্রাথে প্রতিষেধঃ। পঞ্চকপালঃ পুরোডাশ ইতি পঞ্জ কপালে যু সংস্কৃত ইতি তদিতার্থে সমাহারে ইত্যাদিনা দিগুঃ ভক্ষে সংস্কৃত ইতি টণ্ দিখাদ্যাট্টপাদের্কাণাবিতি টণ্ পুক্। পঞ্চকপালা যবাগ্রিত্তত্ত্বে পরিমাণাদবিত্তাচি তক্ষল্যান্তদিতলোপ ইতি নিষমাৎ দিগোরিতি ক্রপ্রভাষো ন তবতি। সমাহারে বিহিতো দিগুর-শেবভারাস্য বিষয়ঃ।

⁽৩৮০)। পূর্বনিকঃ প্রভাবেদভিদ্যধাতে। প্রাপ্তপর্বে আগরপুর্বে আলংপূর্বে উপদর্গপূর্বে চ ডংপুরুবেংকছপদনিকতা ন ভবতি। অন্তহ্য-পদনিকতায়াং নিবিভারাং সমাসবাচ্চদ্যের নিকং তবতি তৎপ্রয়োজনভ বিশেবণে। নিকৌশান্বিরাগত ইন্তি সমাসাবরবসা তু অবস্থপদস্য নিজ-নিজনেবেতি ন ব্রীপ্রভাৱনিবৃদ্ধিঃ। প্রাপ্তভাবিকঃ আপরজীবিকঃ ইতি প্রাপ্তাপমাভ্যাং বিভীন্তমা বেভি ডংপুরুবঃ ব্রীপ্রভারস্য চেওি হুলঃ। অলংকুমারিরিতি চতুর্থা পর্ব্যাদেঃ স্লামামারিতি তংপুরুবঃ অভিনর ইতি বিভীর্মাৎত্যাদেঃ ক্রামাদারিতি ডংপুরুবঃ নিকৌশানিকিতি পঞ্চ্যা নিরাদেঃ ক্রাম্ভানবিভি ডংপুরুবঃ।

⁽७৮২)। পূर्याशनमा निषयः शृतिनिषम् व्यवक्तरताः त्यवराष्ट्र भूर्यानिषमः व्यव्धि। शृत्याशमा विषयः व्यव्येकार्यः। त्यकाम्-

ত৮২। রাত্রাস্তাদয়ঃ পুংসি। অহোরাত্রঃ দিরাত্রঃ তিরাত্রঃ পূর্বাহ্রঃ অপদাহুঃ দ্বাহঃ ত্রাহঃ অফু--বাকঃ সূক্তবাক ইভ্যাদি।

৩৮৩। অর্দ্ধর্চাদয়ঃ ক্লীবে চ। অর্দ্ধর্চং অর্দ্ধর্চঃ কার্যাপণং কার্যাপণঃ। অর্দ্ধর্চ কার্যাপণ গোময় সরক চয়ক সীধু রুচক শব্ম পদ্ম গৃহ দিবল চক্রবাক ধর্ম্ম কর্মন্

বৃষ্ণাবস্তম্পদলিকতে এতিবেশে কতেশি পূর্ব্বলিকত্বং নিখ্যত্যের পূর্ব্ব-লিকত্বমিতি কতং স্ত্রীপ্রত্যরস্যাপি নিবৃত্ত্যর্থম্ অক্সথা উভরপদার্থপ্রধানে বন্দে গোরপ্রধানভাত্তত্যেত্রত্তা স্ত্রীপ্রত্যরভ চেতি ফ্রন্সতং ন স্যাৎ। অশ্ববড্বয়োবিতি দ্বিচননির্দেশোহত্রাভন্ত্রং তেন বহুবচনেশ্পি ভবতি। এতথ্য সর্বাং স্কচন্ত্রিতৃং অশ্বভ্রান্ অশ্ববড্ববিত্যুদাস্তম্।

(৩৮২)। ক্লতসমাসটিভকদেশট্রের রাত্র ইত্যস্থাযুক্বণম্। বাত্র ইত্যন্তো যন্ত্র স রাত্রান্তঃ অহোবাত্র ইত্যাদ্যঃ শক্ষাঃ পৃংলি ভাষ্যন্তে। অহোবাত্ত ইতি অহল বাত্তিকেতি ছবং অহে৷ বাত্তবিত্য: সমাসেহচি-চেত্তি নকাবস্য সকার: বিসর্গঃ ওবতাত্যকাদাবিতি ওকাবঃ। একং স্থা-হাবে ইতি ক্লীবত্বে প্রাপ্তে বিধানন্। দ্বিবাত্র ইতি হবোঃ বাত্রোঃ সমা-হার ইতি তদ্ধিতার্থে সমাহাবে ইত্যাদিনা দিও:। সংখ্যাব্যয়াদিত্যহুর্ত্তৌ সর্কৈকদেশসংখ্যাতপুণ্যাচ্চ রাত্রেবিতাৎ স্ত্রীদিগুরদক্তোহপাত্রাদিবিতি স্ত্রীদ্ধে প্রাথে বিধানম্। পূর্বাহু ইতি অংশিষ্ঠ্যা পূর্কাদেঃ প্রথমায়া ইতি তৎঃ পুরুষঃ একপুণাবর্জ্জমিতাাদিনা অং অহ্নাদেশক সদস্তেহহুতেতি গতং অহঃ-শব্দ নপুংসক্ষাৎ নপুংসক্ষে প্রাপ্তে বিধানম্। অমুবাক ইতি বচ্ ধাতোর্ঘণন্তঃ অমুক্রান্তো বাকোহনয়া ব্রাহ্মণাা অনেন বাহ্মণকুলেন বা ইভি ভূতীররা অবানেং ক্রুটালাবিভি সমাস: প্রাপ্তাপন্নালমূপদর্গপূর্বছে চেডি অস্তর্গদলিকভারাং নিষিদারাং পুঃলিকজং ন প্রাথোভীতি বিধানম্। অথবা বছত্রীতৌ বাচালিক চারতি প্রাপ্তারাই বিধানম্। এবং সঞ্চবাক: অন্চাচেহনেনতি অম্বাকো গ্রহবিশেষত বভাষাং পুংশিকঃ কিত্ত नक्रांभ्य ।

(७००)। वर्षकीमग्रः भक्तः श्राम क्रीति ह कागासः। भवेत्रशास्त्रा

শোদক মান বিমান নলিন মলিন অলীন খলীন চরণ স্কুর্ব বর্ণ বক্র বক্ত ছব্র পবিত্র সার স্বত সৈদ্ধব ঔষধ আঢ়ক জোণ বারবাণ কবচ বেণু ইত্যাদি। দিখাত্রমিদং লিকন্ত লোকত এব জ্রেয়ম্।

৩৮৪। শ্রাগঙ্গাদিঃ। হন্দেংল্লাচ্ প্রভৃতিঃ প্রাগ্ভবতি। প্লক্ষ্যগ্রোধৌ।

৩৮৫। ভ্রাতা জ্যায়ান্। যুধিষ্ঠিরাঁৰ্জ্জনো।

চেরং দিলিপতা কচিদর্থভেদেনাপি ব্যবভিষ্ঠভে। যথা পদ্মশন্দাকৌ
নিধিবাচকৌ পৃংলিকৌ জলজে তু উভয়লিকৌ। ধর্মণক আত্মগুলিকেঃ
পৃংলিকঃ তংসাধনে বাগানো নপৃংস্কুলিকঃ। সার্মাক উৎকর্ষে পৃংলিকঃ
চন্দনসার ইকি ফ্রায়াধনণেতে নপৃংস্কুলিকঃ নৈতৎ সার্মিভি। সৈন্ধবশন্দো লবণে উভয়লিকঃ যদা তু সিন্ধুবেশোন্তবে বর্জন্তে তদা বাচালিকঃ।
বাবস্য বারো বারবাণঃ রাজ্মন্তাদিছাং পরনিপাতঃ। অভ্যাক্তিগণন্ধাৎ
শতস্য মানং শতমানং শতমানঃ অষ্টাপদং অষ্টাপদং এবমন্তাদি বোদ্ধবাদ্ধ
দিয়াত্রমিদমিতি অন্যা দিশা অপ্রমপূহনীয়মিত্যভিপ্রায়ঃ। নহুনন্তানাং
শক্ষানাং নিকোপন্তাসঃ শক্ষো বিধাকুং কথং তত্তি জ্বেরং অত আহ নিক্ত
লোকত এব জ্বেরমিতি তথাচাহুঃ লিক্সশিষাং লোকাশ্রন্থাদিতি।

(৩৮৪)। স্তে ষষ্ঠ্যা অনিদি ইছাৎ অনিয়মে প্রাণ্ডে বিধানম্। অপেক্ষাক্তমনাচ্ছং ডচ্চ সমাসাবয়বং পদান্তরমপেক্যতে। প্রক্ষত্তরোধা-বিতি ভযোধাপেকং প্রকশ্বভারাচ্ছম্ ।

(৩৮৫)। জারানিতি বৃদ্ধকাৎ গুণাদীরস্থিতাবিতি ঈরস্থা প্রশন্ত বৃদ্ধকার বিদ্যাদিপুক্চের্সোরিতি জাবেশঃ ঈরসোরাদিপুক্ চ। ববে জার্জ-ক্রাতা প্রাগ্তবতি"। বিশেষ রধানাৎ সর্বাপবাদোহরং বোগঃ জাবো ত্রাত্বাচকং পদং জার ইত্যাদেরোচ্যতে পদাত্রবাদক্ত বিধাননা। বৃধিষ্টিরার্জ্নাবিতি জন্নাচ্ সাধ্যাদক্ষদাক্ষাজ্নশক্ষ প্রাগ্তবাব ক্রাতে ক্রাত্ব

৩৮৬। বর্ণক্রমেণ। ব্রাহ্মণক্ষক্রিয়বিট্শূদ্রাঃ।

৩৮৭। ঋতুনক্ষত্তে চ সমানাক্ষরে। হেমস্তশিশিরবসস্তা: ভরণীকৃত্তিকারোহিণ্য:। স্মসমানাক্ষরে ডু । গ্রীশ্বসস্তো চিতার্ছিগ্রো।

০৮৮ । অজাদ্যদন্তাক লঘুক্ষরম্। বিষয়েক্রিয়ে কুশক্লাশম্। কাশকুশাবলন্ত্রনাধুং অ্সমানা-করে ছু। পুত্রজনকো নিম্মণিরো।

৯৮৯। অভ্যহিতঃ সর্ববতঃ। মাতাপিতরো।

(৩৮৬)। ঘদে বর্ণবাচকং পদং ক্রমেণ প্রাগ্ভবতি। ক্রমো বর্ণা-নামাণ্যপ্রাহর্ভাবক্কতঃ স চ ক্রত্যাদিপ্রসিদ্ধ এব অলাচ্ছাৎ প্রাপ্তঃ প্রাগ্-ভাবো বাধ্যতে। ক্রমেণেতি পদং ব্যতিক্রমনিরাসার্থং নতু যথাপ্রসিদ্ধান্দ-ক্রম এবাস্য বিষয়ঃ তেন ব্রাহ্মণশৃস্থাবিতি ভবতি।

(৩৮৭)। অক্সরশব্দেনাত্র স্বরোহজিধীয়তে সমানতা চ সংখ্যাকতা।

দ্বন্দে সমসংখ্যস্তরং ঋতুবাচকং নক্ষত্রবাচকঞ্চ পদং ক্রেমেণ প্রাগ ভবতি।

ঋতুনাং ক্রমঃ প্রাত্তবিক্বতঃ নক্ষত্রাণামুদরপরক্রতঃ। ঋতুপদেন মাসোহপ্যপশক্ষাতে তেন পৌৰমাঘৌ।

(৩৮৮)। বন্ধেংজান্যদ্ধাদনকান্যদন্তাক্ত শবৃক্ষরং সমসংখ্যস্বরং প্রাগ্ভবভি। অজান্যদন্তবিহিতং প্রাগ্ভাবমপ্যরং বাধত ইত্যর্থ:। বিবরে-ক্রিরে ইতি ইন্দ্রিরশব্দোহজান্যদন্ত: যুক্তান্তত্বাৎ গুরুত্বক বিষয়শবদ্ধ শব্দুক্রঃ।

(৩৮৯)। অভাহিতিঃ পূজাঃ হন্দে সর্বতঃ প্রাণ্ডবভি। মাতা-পিতরাবিতি পিতৃর্যাতা সহস্রেণ গৌরবেণাতিরিচাতে ইত্যাদি স্বতেমাতৃ-রিতি গুরুত্বং দর্বত ইতি কৃতং অল্লাকাদেঃ সর্ববিতাহিপি পূজামানক প্রাণ্-ভাবার্থং দীক্ষাত্রপদী গুদ্ধাত্রপদী ইত্যত্রাপি দখ্করাদভাহিতিস্য প্রাণ্-ভাবাঃ। দীক্ষাগ্রহান্তপ্রোহস্প্রেহিত্বমিভাচার্যাঃ। ৩৯০। ইন্তুদক্ষো। ছুন্দুভিশৰো বিষ্ণুশিবো কবিগুৰ্গো।

৩৯১। ইতুদন্তাকা**জাত্বদন্তঃ।** উদ্ভৈশবম্ উষ্ট্ৰশ**শম**ুইক্ৰাগ্নী ইক্ৰবায়ু।

৩৯২। মুষলাদের দৃথলাদিঃ।
উদৃথলম্বলে তণ্ডুলরি রু: চিত্ররথবাহলীক বিষক্সেনার্জ্জুনে
আক্ষিত্র দারগবং চিত্রাস্বাভী জায়াপতী ভার্যাপতী পুত্রপজ্মো
পুত্রপ্রসো কেশশা হা। বিশেষণবিশেষ্য ইত্যাদি। বিশেষ্যবিশেষ্য বিশেষ্য বিশ্বরূপ বিশ্বর বিশ

⁽৩৯০)। ইকারাস্ত উকারাস্কণ্ড ছন্দে প্রাণ্ডবতি। তুন্দ্ভিশ্ধা বিতি যদ এদাস্কতং তৎ প্রমাদকতং ঘদাল্লাচোহণীত্বনতঃ প্রাণ্ডবতি ভদা কথমেকসা নিরম ইত্যাদি করে শুলুভবিনা ইত্যাদ্ভতং তৎপ্রমাদকতম্ একসা নিয়ম ইত্যাদি করে শুলুভবিন স্থাৎ। অক্ষিক্রবমিতাত্র ইনস্তাদে বা'ক্ষণকস্য প্রাণ্ডাবে সিদ্ধে উদ্ধ্বাদিপাঠোহনর্থকঃ স্যাৎ। তত্মাণ সমানাচ্ এবামীখাং বিষয়ঃ। বিষ্ণুশিবাবিতি যদত্রোদক্তভং তদপি প্রশাদকতম্ । যত ইত্নস্তাভালাদ্দত্তঃ অভাদাদত্তাত লঘুক্ষবমিতান্যা ব্যবস্থরা ইত্নস্তমজাদাদ স্থক বাধিতা লঘুক্ষরমের প্রাণ্ডবতি। কবিপ্রপাবিত্যালাদ্দত্তাত লঘুক্ষবমিতানেনে কবিশক্ষা প্রাণ্ডাবঃ সিধাতি ভত্মাত জালাদ্দত্তাত কবিনটো তুলুভিম্নসাবিতি। কথং স্ক্রস্থারে স্থিমতৌ পিতৃপতী প্রিপিভরাবিত্যতাপি নির্বঃ কচিন্তাভিচবতাপীত্তা-স্যায়ং বিষয়ঃ।

⁽০৯১)। অজাদিশ্চাসৌ অধ্যতেতি অজাদাদস্তঃ। -বন্ধে ইকারান্তাহকারাঝাদনিহদন্তাদিশি অজাদাদস্তঃ প্রাপ্তবৃতি। ইছদন্তাবিত্যস্যাপারমপরাধ ইভার্যঃ। কথাদুই বর্মিক্যুদাস্তম, অজাদাদস্তাশ্চ কাশুকরমিত্যক্তম। উচ্যতে। গ্রাধাদিশ্বদে উট্রপরং উট্ট শ্লমিতি পাঠাং কাশুক কর্মিতাস্য বাধকত্মেত্রোঃ শ্লারেনি রন্তম্ এবং স্তানিরমে প্রাণ্ডে ইছ্শ্রোচাজাদাদ্য ইতাস্যের ইনস্নাস্থাশ স্কাতে।

⁽७৯२)। स्रनाटनकप्रवासिः श्रीनकविः विष्वनत्रनामिन्हिक

৩৯০। ধর্মার্থাদার্ভয়ম্। ধর্মার্থে অর্থর্মো কামার্থে অর্থকার্মো গুণর্কী বৃদ্ধিগুর্নো আছত্তো অন্তাদী মধুসর্পিয়ী সর্পিম্ধুনী।

৩৯৪। সংখ্যাল্পান্যপদার্থে চ। একাদশ ছাদশ ত্রিচভুরাঃ।

তক। এক্তি নিয়মোখনেকক প্রাপ্তাবনিয়মঃ শেষে। শমহন্তিবীণা: শমবীণাছন্ত্যঃ পট্শুক্রমূদবং পট্কুড্শুক্রা: সম্বংগ্রা: অশ্বেদ্বংগা:।

আরাচ্ চিত্র স্বাতী ইত্যানি পঞ্চকে ইত্নস্তৌ বিশেষণ্বিশেষ্যে ইত্যত্রারাচ্ন প্রাগ্তবতি। প্রয়োগদর্শনাদপরমপ্যহনীয়ন্। স্নাতকরাজানো প্রতিষ্ঠানিপ্রে শুদ্রার্থ্যে হস্তার্থী মর্যান্নাভিত্তিনী শিরোজান্ মেধাতপদী পাণ্ডুর্বত-রাষ্ট্রবিত্যাদি।

- (০৯০)। ধর্মার্থাদাবুভয়ং প্রাগ্ভবতি। ক্রমেণানরোঃ প্রাগ্ভাব ইত্যর্থ:। ধর্মাথোঁ অর্থন্মো কামাথোঁ অর্থকামো আদ্যন্তাবিত্যতাজাদ্য-দক্তমা গুণর্দ্ধী সর্পিম ধুনীতাত্র চ ইত্নস্তম্যোত প্রাগ্ভাবে প্রাপ্তেইনিয়মঃ। এবমর্কচন্দ্রৌ চন্দ্রাকোঁ ইন্দ্রামী অগ্নীন্দ্রৌ অগ্নিসমীরণো সমীরণাগ্রী আকাশবায় বায়্বাকাশো র্দ্ধিক্রেটা ক্রয়র্দ্ধী লঘুণীর্ঘো দীর্ঘলয় গতিহিংসে হিংসাগতী সীধুস্তরে স্বরাসীধ্নীতাদি।
- (৩৯৪)। অরা সংখ্যা দ্বন্দেহক্রপদার্থে চ প্রাণ্ডবতি। একাদশেত্যাদি একণ্ড দশ চ দৌ চ দশ চ ইতি দলঃ দশক্তাদেকান্তদাধিক্যে ইত্যনেন
 দ্বাস্থানেশীতিশতাদিবর্জ ং সংখ্যায়ামবছত্রীহাবিত্যনেন চ আৎ জস্শসোলুক্কতিপঞ্চাদেরিতি জস্লুক্। ত্রিচত্রা ইতি সংখ্যায়েবৃত্তিসংখ্যায়ত্যাদিনা বছবাহিঃ চতুরঃ স্ব্রিন্ঞ শ্রুপাদিতাং।
- (৩৯৫)। অনেক শব্দা প্রাগ্ ভাবে প্রাপ্তে প্রক্রা নির্মা ভবতি। শেষেথনিরম:। শঙ্জুকুভিবীণা ইত্যক প্রক্রা শঙ্গান্ধ স্বালাচঃ প্রাগ্ ভাবঃ ভুকুভিবীণয়োজুনিরম এব। বলা একস্য বীণাশবস্য নিরমন্তদা ভুকুভিন শুঞ্জান্ধনিরমঃ এবং পটু শুকুমুদ্ব ইন্তাক প্রক্রা ভিন্তম্য নিরমঃ। এবং

৩৯৬। কচিদ্যভিচরত্যপি। শুমাগ্নী লক্ষণহেতৃ সমুদ্রান্ত্রে।

৩৯৭। দ্যাবাদিদি বাদেঃ পদে। উত্তরপদে পরে দুব্দে দিবাদেঃ স্থানে জাবাদির্ভবতি। ভাবাস্থ্যী ভাবাক্ষমে।

৩৯৮। দিবস্*চ পৃথিব্যাম্। ভাবাপৃথিব্যো দিবস্পৃথিকো।

বা স্ত্রার্থে ব্যাখ্যের: একস্য শব্দ্য যত্ত প্রাণ্ডাব: শব্দ্যতে কিমরং প্রাণ্ডাবং ভাবত্ত্বং বেতি তত্ত্ব পূর্বেলকলৈনি মা:। মত্র মনেকস্য শব্দ্যা প্রাণ্ডাবং শব্দেত তামন্ লেবেংনিবমঃ নিয়ম্যাপ্রান্তিবিত্যথ:। এতেনাযমর্থে ভবাত দিপদ এব মন্দে, পূর্বেলকলৈর্যস্থা ন বছপদে কিফানেন লফণেন বাদ্যাক্ষি এবংবিট্শুদ্যাঃ হেমন্তলিশিরকস্থা ইত্যত্রানেকস্য নিয়মোংনিবমো বা ক্রিয়তে ইতি প্রতিভাগতে ব্রাক্ষণক্ষিরেটা হেমন্তলিশিবাবিত্যেবং পূর্বেলকলোদাহলণম্ অখবথেকা ইত্যুদাহবণম্পদর্শবত্রা বৃত্তিকাবস্য দিজীযালি ব্যাখ্যানমভীষ্টম্। প্রথমব্যাখ্যানে দি বণশক্ষৈত্রে প্রতিকাবস্য দিজীয়ন্ত উক্তং অলাদ্যদন্তাক এঘুক্ষবমিতি এবংবিধব্যাখ্যানভেদং বছ্রু স্থানেয়ু ব্যক্তিবিশ্ব পশ্চছিম হাকবিভিত্রপি মন্দে, প্রাণ্ডাবব্যব্দ্য পবিস্তা।

- (৩৯৬)। কচিব্যবে প্রাগ্ ভাবে ব্যভিচবতাপি। ধুমাগীতাত ইছ-দক্তে লক্ষণহেতু ইত্যত্র উদস্থোহরাচ সমুদ্রাব্রে ইত্যত্র অক্ষাদ্যনস্থোহরাচ্ ন প্রাগ্ ভাবে। ভবতি। ব্যভিচাবে শক্ষণহেছোঃ ক্রিয়ায়া ইতি লক্ষণমেব কাবণম্।
- (৩৯৭)। প্রাক্পদাম্ব্রেরের ছন্দে প্রাগবস্থিতস্য দিবাদের্দ, াবাদি-র্ভবতাত, রমর্থো লভাতে কিং পদগ্রহণেন ভদেতৎ স্কৃতং বিশিষ্টস্য পদস্য গ্রহণার্থম্। অভএব বৃত্তিক্ষাচকার উত্তরপদে পরে ইতি। সর্বাস্তপদ-মৃত্তবপদ্মিত্যক্তমেব তেন ছাত্মিম্ব্যা ইন্ডাদৌ ন ভবতি।
- (৩৯৮)। পৃথিবীশব্দে উত্তরগন্তে পরে দিব: স্থানে বন্দ্র দ্যাবারেদে।
 ভবতি দিবস্ চ। দিবস্ চেডাবিশর্দনিদে শঃ সকাস্যাবিকতাবস্থানস্ক্রমার্থঃ
 অধবা ক্রাফো পাঠোছসা এইবাঃ।

- ৩৯৯। ঊষস ঊষাসা। ভীষাসানক্তম্ উষাসাসূর্য্যো।
- 8 । দেবতার্থানামেব বেদে সহদানোক্তানাম্।
 অক্তত্ত্ব। হাসরসী হাস্থ্যো। ঐক্যা ভিন্দুন হাস্থ্যোরিডি
 স্থাশতকম্।
- ৪০১। আইঃ পূর্বক্য।
 ইক্রাসোনো ইক্রাপুষণো ইক্রাবহস্পতী ইক্রাবরুণো নিত্রাবরুণো
 সূর্যাচক্রমসো অগ্নাবিষ্ণু। সহদানোক্তানামিত্যেব। ব্রহ্মপ্রজাপতী শিববৈশ্রবণো স্বন্দবিশাপো বাষ্গ্রী অগ্নিবায় রবিচক্রো।
 তথাচ, রবিচক্রাবপি নোপলক্ষিতাবিতি ঘটকর্পরঃ।

⁽৩৯৯)। উত্তরপদে পরে জন্দে উষস: স্থানে উষাসাদেশো ভবতি। উষাসানক্তমিতি উষশ্চ নক্তঞ্চ ইতি বিগ্রহ:।

⁽৪৭০)। দ্যাবাদিবিধানস্য নিম্নার্থং লক্ষণন্। বেদে সহদানোক্তানাং দেবতাবাচকানানেব ছন্দ্রে দ্যাবাদির্ভবতি। যেবামেকেন মস্ত্রেণ বেদে দানস্ক্রং তে সহদানোক্রাঃ। হাসবসীতাত্র হল্যর ইতি বকারস্যোকারঃ দেবতাবাচকত্বং বাচকত্বং নান্তি এতদ্বিষ্ঠান্ত্রী মন্ত্রমন্ত্রী বা দেবতা। যদা তু দেবতাবাচকত্বং ভবতি তদা দ্যাবাভূমী ইত্যেব ভবতি। অথবা থৈরেব পদেঃ সহদানম্ক্রং তেবামেব ছন্ত্রে দ্যাবাদিত্বং ভবতি। দ্যাবাভূমী ইত্যেত্র ভূমিশকঃ শুমুত্তে ভূমীশক্ষে চ পরে ন ভবতি। অত এব স্থ্যাচক্রমন্যাবিত্যক্রাত্বং ভবতি নতু ভ্রম্বপ্রতিপাদকে পদান্তরে রবিচক্রাবিত্যক্র।

⁽৪০১)। বেদে সহদানোকানাং দক্ষে উত্তরপদে পরে সূর্কাণদলাক্ষে।
বর্ণ আন্তর্বাত। পূর্বদ্যেতি কৃতং স্থানিকিছে শার্থং অঞ্ডথা পদে পরে আগরদ্বাকারোহন্তো ভবতীতি শয়া তাং। অত্তর্গহলং সর্বাদেশনিরামার্থন্। দেবতা নামবাদ্নাং বেদে সহক্রতানামিতি চক্রস্ত্রে বারেরঃ
ক্রাক্রিয়েগের বক্তব্য ইতি বার্কিকে চ বারোঃ অভিবেদেন বাব্রেয়ারের্ক্রে

४०२। जातातीय त्मायवस्ति। जातीतात्मे जातीवस्ति।

৪০৩। নাদীতো বৃদ্ধিমত্য বৈষ্ণবে। আগ্নিমারুতম্ আগ্নিবারুণম্। অবৃদ্ধিমতি তৃ। আংগ্রেম্। বৈষ্ণবে তৃ। আগাবৈষ্ণবশ্।

৪০৪। ঋত আঁদৃদন্তপুত্রয়েঃ প্র্কোতরপদবিদ্যা-যোনিস্ক্রমবাচিত্র।

হোতা চ পোতা চ হোতাপোতারো নেফা চ উদ্যান্তা চ নেফো-
দ্যাতারো হোতাপোতারো চ নেফোন্সাতারো চ হোতাপোতানেফোন্সাতার: । হোতা চ পোতা চ নেফা চ হোত্পোত্নেফারঃ
হোত্পোত্নেফারন্চ উদ্যাতা চ হোতৃপোত্নেফোন্যাতার: মাজাপিতরো মাতাপুর্বো ।

সহদানোক্তথমস্তীতি লক্ষ্যতে তত্মাৎ বাযুগী **অ**থিবায়ু ইভি প্রভূদোহর**শ্ব-**যুক্তন্ এতদর্থং বহুলবচনমান্তেরম্।

⁽৪০২)। সোমে বরুপে চোন্তরপদে পরে ছন্দেইটোরস্কঃ ইন্তর্জীত।
আদপবাদঃ। অগ্নীষোমানিভি আগেদীর্ঘাৎ সোমস্রেভি বন্ধম্। বহুলক্ষনাৎ কুলীলবৌ।

⁽৪০০)। বৈশ্ববশ্ববর্জিতে বুদ্ধিমত্যন্তরপদে পরে অধ্যেরস্কঃ আদ্মীত্থে ন ভবতঃ। আগ্নিমান্কতম্ আগ্নিবান্ধশমিতি অগ্নিমন্ধতা অগ্নিবন্ধনেই দেবতেহস্ত ইতি তদ্দৈবতে ইতি টণ্ দেবতাগদে স্কেহনিবােরিছ্যভারপদ-বৃদ্ধি:। পূর্ববােগাল্যাং প্রান্ধাবাদীতো নিবিছো। আগ্রেমিভি নেক্রভা পরত্বে ইতি উভয়পদয়ুদ্ধিনিবেশঃ আগ্নাবৈশ্বমিতি আগদ ইত্যানিনা আগদ্

⁽৪০৪।৪০৫)। ঝকারায়ে প্রশবে চ পরে ঘন্দে গতঃ ছানে আছি-বভি। পূর্ব্বোন্তরপদরোবিদ্যাবোনিসম্বর্গাচিমে সভি। হোত্রাম্য অফিনিশ্বান্তেমাং বিশ্বা সহ সম্বন্ধ তেচ কাত্যারনপুত্রে মর্শিতাঃ ৫

৪০৫। পুত্রার্থ ইত্যেকে। তথাচ, পুক্রো চ ছহিতালুজাবিভি।

৪০৬। মাতৃম'তিরশ্চ পিতরি। মাতাপিতরো মাতরপিতরো।

৪০৭। পিতুশ্চ পিতর ইতি ক্ষপণর্কঃ। মাতরপিতরাভ্যাং মাুওবপিতবযোঃ। ,

৪০৮। ত্ত্রীপুংস্যোক্তন্মাত্রকৃতভেদ্যোরেকশেষঃ পুমান্। •

তদ্বশা, ব্রন্ধোল্যাত্ হোতৃ অধ্বর্গ ব্রান্ধণাচ্ছংসাতি প্রশ্নেত্ শোতৃ মৈত্রাবন্ধণ প্রতিপ্রস্থাত পোতৃ প্রতিচ্চতৃ অচ্চাবাক্ নেইপ্নীএম্বা গ্ণাগ্রাবন্ধছল্লেন্তনে গুল্ বির্ণোতীতি। সর্বান্তপদমূত্রবপদমিতি বাবন্থিতম্এবঞ্চ সতি কথং
হোতাপোতালেষ্টোল্যাতাব ইন্ডি চোল্যং স্থাদি নিধার সিদ্ধান্ত বাক্যেন দশরতি হোডাপোতাবের চেত্যাদি। নমন্তনোবের পদরোঃ প্নর্দ্ধণ্দে পূর্বোেভ্রন্ধন্ধন্ধান্ধ ক্ষাবিশ্বন্ধন ইন্ডান্ডিপ্রায়ঃ। হোতৃপোত্নেরার ইন্ডান্ত ক্রিপদর্বা
হল্প পূর্বোন্তর্গদরেঃ পোতৃশবেন ব্যবধানাৎ আব্রান্তাবঃ। গোতৃশবেনহিপি নাব্রং পূর্ক্রান্তবাহাব। শতঃ পূর্বোন্তর্গদবিদ্যাযোনিসম্বন্ধবাচিত্বে
ইত্যক্র বথা হে,ছুঃ বৃত্র ইত্যাদান্তবং তথেহাপি হোতাপ্রাবিচি ভবিতব্যমের উচ্যতে। যক্র পূর্বোন্তরপদরোঃ প্রদর্ধণ্দে একন্ত বিদ্যাদন্ধন্ধনবাচিন্ধন্ অপরন্ত যোনিসম্বন্ধবান্তিতং তন্ত্রাবং নেয়তে বহুলবচনাদনভিধানারা। বেদিতৃশকো জাতৃবচনঃ বন্ধ্নশাভিষাত্বচনঃ তেনাধ্যেত্বেদিক্রোবিতি বন্ধ্নাত্রোবিতি স্থানে মীমাংশারাক্ষ পাঠোহবিক্ষ এব। পূত্রার্ধ
ইত্যক ইতি স্ত্রে বং প্রপদং তদর্থগ্রাহকং পূত্রবাচকে পদে পরে
ইত্যর্থং।

(৪০৬।৪০৭। চকাবো বিকরার্থবচন:। পিত্র ত্রিরপদে পরে ছক্ষে
মাজুরক্ষ আন্তরভি পক্ষে মাজু: স্থানে মাজরাক্ষেশ্চ। পিতৃক্চ পিতর ইতি
ক্ষপণক ইতি মাতুর্যাতরশ্চ পিতরীতালৈবারং শেষঃ ভেনোভরোরেকলৈব
মাজবিপিভরানেশো ভবত ইতার্থো লভাতে। তবাচ ভাষান্, প্র্বোতরপার্রোর্থ বারজারভাবেশ ইতি।

(३०৮)। जीभूगामात्रिकि जी क भूमाधन्तिक व्यक्ताश्व्यसार्य वन्द्रः

বান্দাশত বান্দাণী চ বান্দাণা পটী চ পট্লচ পট কারকন্চ কারিকা চ কারকো গোমাংশ্চ গোমতী চ গোমতো গোশ্ডেরং গাশ্চারং গাবাবিমো। অতস্মাত্রকৃতভেদরোস্তা। কুকুটশ্চ ময়ুরী চ কুকুটমযুর্যো। অত্রহি জাভিরপকৃতভাহিপি ভেদঃ। বান্দাণ-বংসন্ড বান্দাণীবংসা চ বান্দাণবংসবান্দাণীবংসে। অত্রাপ্যপ্রধানবা্ত্রীপৃংসকৃতভাহিপি ভেদং। ইন্দ্রাকিত্যেকে। তথাচাহ বরুণাণবিদ্রো ভবৌ সুরৌ মুড়াবিভি।

ব্রিরা: পুশ্দ ইতাৎ সমুদাবলকবেরং ষষ্ঠী নির্দ্ধারণে বা। ব্রীলিঞ্চপুংলিকরো: শক্ষোন্ত মাত্রকভভে বরোবেক: পুমান শিষাতে স্ত্রীচ নিবর্ত্ততে। তদিত্য-त्नन श्रीशंशनत्यानित्न नः। <u>भावनक है जनवानत्त्वक करवां जिल्लां</u> ২ক্তম্বং তেনাবমর্থো ভবন্তি খ্রীপুংসক্ষতমের কেবলং যদ্যক্তম্বং ভব্তি ইতক-প্রকৃত্যাদিকং দর্রমেব সমানমিতি শেষশদ্বোহ্যমন্ত্রনিবৃত্তিবিশিষ্টমবস্থান-মাত্রমাহ অতএনেক্তং পুমান শিষ্যতে স্ত্রী নিবর্ততে ইতি। নামাধিকারাৎ প্রথমমেকশেষঃ একশেষসামর্থ্যাৎ একশ্বাদের নামো শ্ববোর্বছুনাঞ্চাভিধার-ক হাৎ তদৰ্থপ্ৰতিশাদকবিভক্ত্যুৎপত্তিঃ সবিভক্তিকেনাৰ্থকখনত্ত প্ৰপ্তপ্ৰতী-তার্থং বৃত্তিকতা কতম্। এবমুত্তরত্রাপি। ব্রাহ্মণী চেত্যাদি জাতেবস্ত্রী-নি্যতাদযোপাস্তাদিতি ঈ পটীতি গুণনচনাগুদস্তাদথকযুক্তো শাস্থাদিতি ঈ कांविरकि अपिश्यामिखरक देखि अकांवरमाकावः। (भागानिखि छम-স্যাস্ত্যবিদ্ বা মতুবিতি মতু: স্থট্যনিদিত্যাদিনা মুম্ অন্বস্তাস্থায়তোবিতি ৰীৰ্য:। গোমতীতি গছনিকিভাদিনা ঈ জাতিভ্ৰব্যগুণপ্ৰিয়াযোগনিমিছেৰু ব্রাহ্মণাদিবু শকেষমীবু স্ত্রীপুংসমাত্তক্ত এক ভেদঃ অন্তৎ সর্বং সমানম্। পৌল্চারং পৌল্ডেরমিতি অন্ত বদ্যপি দ্বীপুংসকৃতং বৈরূপ্যং শব্দে নান্তি অর্থে তু বিদাত এব ইতি ভবজ্যেকশেষ:। কুকুটমর্ধানিতি একশেষাভাবে বিভক্তৌ কুতারাং যন্ত্র এব। অত্যাপ্রধানস্তীপুংসকুতোহণি ভিেদ ইতি সমাসে গুণীভূতয়োর কিণবাদ্ধণীশক্ষােডিভার্যঃ। অব্যোলর্থকতােছপি ছেন্ ইতি ই সালেরানতে চারাবিভি উচারাং ক্রিরামীপ্রভারণা আনসা চ বিধা-

৪০৯। যুবগোত্রতদ্ধিতান্তয়োতগোত্রতদ্ধিতান্তঃ।

মার্গ্যান্দ সার্গ্যারণক সার্গ্যো। অযুবগোত্রতদ্ধিতান্তয়োদ্ধ। গর্গমার্গ্যায়নৌ গর্গগার্গ্যো। ভক্ষাত্রক্তভেদয়োরিত্যেব। গার্গ্যবাৎভায়নৌ। অত্র জাতিরূপক্তোহিপ ভেদঃ। ভাগবিত্তিভাগবিভিকৌ অত্র কুৎসাসৌবীরবঞ্চ ভেদঃ। ভাগবিত্তীত্যেকে।

৪১০। দ্রীপুংবচ্চ।
নার্গী চ গার্গায়ণে চ পার্গো গর্গান্ পশ্য গার্গী চ গার্গায়ণী চ
গার্গো গার্গাভাগি। তন্মাত্রকৃতভেদয়োবিত্যেব। গার্গীবাৎভায়নে ।

নাৎ। ইক্লাবিভাকে ইতি ন হেকশেষনিমিন্তলৈয়ৰ খ্ৰীন্বস্য বিশেষশং ভেদকং ভবভাতি ভেষাং মতম শত্ৰপ্ৰৰ ভাগবিস্তীভোক ইতি চ বক্ষাভি।

⁽৪১০)। চকারাৎ যুবগোত্রেন্তাদি শক্ষণং সর্ব্বমন্থবর্তন্ত। বুৰ-ছড়িভারগোত্রভিভাররোক্তরাত্রকৃতভেদরোর্যোত্রভড়িভান্তঃ স্ত্রী শিব্য-তে। পুংসু ইব চাস্যাঃ কার্যাং ভবতি। স্তর্গু ইস্যুব বৈদ্ধপাকারণস্যাধিক্যাৎ

- ৪১৯। ক্লীবাক্লীবয়ো: ক্লীবঃ স চৈকবদ্ব।
 ভক্লফ শুক্লানি শুক্লম্। ভন্মাত্রকৃতভেদদ্বেশবিত্যেব। সিত্ধবলশুক্লানি হিমঞ্চ হিমানী চ হিমহিমান্তো।
- ৪ ২। স্কুস্ভাব্যোর্জা। ভাতরো।
- ×১৩। পুত্রঃ পুত্রত্বহিত্তো:। পুত্রো।
- ৪:৪। গ্রাম্যপশুসংঘেহনে কশফেহতর নে ক্রী। ইমে গ্রজান্চ ইমা অজান্চ অজা ইমাঃ ইমে গাবন্চ ইমা গাবন্দ গাব ইমাঃ। অগাম্যপশুসংঘে তু। ইনা রুরবন্দ ইমে রুরবন্দ ইমে করবং। অসংঘে তু। গৌন্চেখং গোন্চায়ম্ এতো গাবৌ।

পূর্বেণ ন সিধ্য ীতার্থং বচনম্। স্থ্যর্থসা পুংবত্তমনেন ক্রিয়তে এবঞ্চ সতি গর্মান্ পশ্যেত্যত্র পীপ্রত্যয়নিবৃত্তিঃ বছতে বাচ্যেহাস্ত্রয়ং বিহিতো ধ্যক্তি ধণ্নুক্ প্রংসি বিহিত্সা শসঃ সসা নশ্চ ভবতি।

⁽৪১১)। ক্লীবার্কাবয়োন্তর াত্রবুভভেদরোঃ ক্লীবঃ শিষ তে স চৈক্ষ-বনা ভবতি। সিত্রবলগুরানীতাত্র ক্পক্তোহপি ভেদঃ। হিমক হিমানী ক হিমহিমান্তাবিভাগ তিমাবগাভাগে মহন্ত ইতি মহন্ত্রহার্লে ভেদঃ।

⁽৪১২)। তথাত্রকুওভেদবোরিত্যতঃ প্রছতিনাসুবর্ততে। স্ক্-শক্তরাভূশক্ষোপ্রভিশক্ষঃ শিষ্যতে। কথং তহি, স্বস্ত্রাত্রোমি দৈশিঃ অমুক্রণহাৎ।

⁽৪১০)। পুদ্রশক্ত্হিভূশকরো: পুত্রশক: শিবাতে।

⁽৪১৪)। গ্রামাণাং পশ্নাং সংবো গ্রামাপওসংঘঃ। অন্তেক্ত শক্ত খুরো যসা সোহনেকশক্ষঃ। গ্রামাপওসংঘহনেকশকেভক্তকে জীলিক্তং শিষাতে। জীপুংসরোরিভাগিনা পুংস একশেরে প্রাহক্তরাথে চ ,বিধা-নম্। এতভাগবৃত্তিকারপ্রভূতীনাং সম্মন্তম্। অন্যে ভু সম্পান্তম্মা-নেনৈকশেব ইতি মন্তব্ধ ক্ষাবিভাগিনামপ্রকম্।, পুংসঃ শেবে প্রাপ্তে

একশকে ছু। অশা ইমে গৰ্মভা ইমে। ভক্লণে ছু। বৎসা ইমে বৰ্করা ইমে।

C

৪১৫। সর্বত্র ত্যদাদিঃ। সচবিপ্রশচ তৌস চবদ্ধ তৌবৌবা।

৪১৬। ত্যাদাদির পরমিত্যেকে। সচৰত যোসচকত কো।

8) नज़्लिय यिषक्य।

রক্ষণ্ট বৃক্ষণ্ট বৃক্ষণ্ট বৃক্ষণ্ট বৃক্ষণ্ট বৃক্ষণ্ট ঝক্ চ ঋক্ চ ঋক্ চ ঋক্ চ ঋক্ চ ঋক্ চা ঋগ্ ভ্যাম্। গার্গান্ট গার্গান্ট গার্গান্ট গার্গান্ট গার্গান্ট গার্গান্ট গার্গান্ট গার্গান্ট অক্ষা বিভীতক অক্ষো রথাবয়বং তে অক্ষা। পাদশ্চরণঃ পাদশ্চতুর্বো ভাগঃ পাদঃ প্রভাস্ত

শ্রীশেষা বিধীরত ইতি। সংখ্যা নাতরুণন্ধং সম্ভবতি নাগি তদ্যবজেদাং ভরুণন্ধং ভবতি অতো বিশেষণকরণসামর্থাৎ অন্তর্জণ গ্রহণং পশুবিশেষণম্। ইনে রুর্ব ইত্যক্ত গ্রাম্যপশুষং নান্তি এতো গাবাবিত্যক্ত সংখ্বাচকতা নান্তীতি গ্রাম্যপশুসংঘ ইত্যা প্রভাগাহরণদ্ধং পূর্বালক্ষণেনাক্ত পুমানে ব শিষাতে। বদাপি দরোরপি সংঘা ভবত্যেব তথাপ্যক্ত বহুবেরবো বিবন্ধিতঃ। অন্তথা ব্যবজেদ্যাভাবাং।

⁽৪১৫। ৪১৬)। সর্ব্যেহণং সাকল্যার্থং তারাদির অক্তের্ চ তারাদিঃ শিব্যতে তানাদির পর্মিভোকে ইতি তারাদির মধ্যে পরং শিব্যতে। পরস্কার গণশাঠাপেক্ষাং অতা কিম্পক্ষাস্বস্তারাদিঃ তেন ভবাংশ্চ কণ্ড কাবিভি।

⁽৪১৭)। সমানং ক্লণং বেবাং তে সক্লপাঃ সমানো স্গাদ/বিভি
সমানত সভাবঃ ক্লপাকেছিক শভাবে বর্ততে। সক্লণেবিভি পৃথক্তরে
সপ্তমী। সমানক্লপেব্ নামক বিভিন্নেকং তং শিবাতে। বাকৌ পদার্থে
প্রভাকং শক্ষবিনিবেশাং বাবস্ততে পদার্থাঃ ভারতাং শক্ষানাং প্ররোগে
প্রাপ্তে এক্লেব্রিধানং ক্ষণ ক্ষণা একলেবো বিধীরতে ইতি মন্ধ্রিয়াং

পর্ব ভ: তে পালা:। মাবো ব্রীছিং মাবো মূর্য: মাবো মাবক: তে মাবা:। অনভিধানাদিহ ন স্থাৎ। মাতা জননী মাতা ধাক্তস্থ ভৌ মাত্মাতরো।

८७८। ममानार्थिष् छ। यक्तमधन्छ कृष्टिनमिथन्छ (छो यक्तमर्था कृष्टिनमर्था वा।

৪১৯। মাতা**প্রিত্রো: পিতা বা**। মাতাপিতরো পিতরো।

৪২০। শতাশতরয়ো: শতর:। শতাশতরো শতরো।

৪২১। গৌরাদিব কর্মধারয়ে।

সলেহনিরাসার্থং খচে খণ্ড্যামিত্যুদাছতম্। যদে হি সমাসারোৎং তাং।
পর্গা ইতি বছছে যণো পুক্ অর্থভেদে হি নামাং সমানরপতা বিদ্যুত এম
ইত্যুদাকহার। অক্ষাং পাদাং মাষা ইতি। মাতা জননী মান্ পূজারাং
ছং লংসাদেরিতি ছং নকারপুক্ মাতা ধান্তস্যেতি মা মানে ছঙ্ অত্র ব্রন্ধতা বিদ্যুত এবেতি প্রান্তিঃ। ইউন্ত লেষাং। কৌরবন্দ রাজা কৌরবন্দ লোকং কৌরবন্দ ভৃত্য ইত্যুদ্ধ রাজি শিষ্যমাণে লোপ্যনোপিনাং বেজি
রাজনি বাচ্যে বিহিত্ত বা দুক্ তেন ক্রবং কৌরবাং অভান্দ্ শিষ্যমাণে

(৪১৮)। সমানার্থের চ শব্দের বিষ্টিমেকং তৎ শিব্যতে। সর্রপদ্ধা-ভাবাৎ পুর্ফেণ ন আথ্যোডীভি বিধানম্। ইউছাৎ কলাপি বক্রমণ্ডশব্দঃ কলাপি কুটিলন্তশব্দত একঃ শিব্যতে।

(৪১৯)। পিতৃষাতৃশব্দয়েঃ পিতৃপকো বা নিবাতে। নাতাপিতরা-বিতি বাড়ুমাড়রশ্চ পিতরীতি বাচ আকারঃ খবং পিত্রাদেরিতি ঋণঃ।

(৪২ -)। শক্রশকর্পারন্ধরাঃ খণ্ডর্শকো বা লিখাতে।

(१२) । (श्रीवाष्ट्या धनन्याः धनन्यानाक वित्नवनकाट्या विवृक्तः

কর্মধার্ময়ে গৌরাদি: প্রাগ্ বা ভবতি। গৌরবিপ্রা: বিপ্রগৌর:। গৌর কড়ার কপিল জঠর শিল্প মড়ুল কাণ খোড খঞ্চ কুঁজ কুঠ খল খলতি বৃদ্ধ ভিকুক তনু।

৪২২। উ শপুংস্কানৃদ্রীপুংশৎ জিয়াম্।

একন্মিন্ প্রবৃত্তিনিমিতে উক্তঃ পুমান্ ফেন তহর্কুপুংস্কম্। কর্ম্মধাবয়ে উক্তপুংস্কম্বার্জ তং স্ত্রীলিক্ষং ক্রিয়ামুত্রপদে পরে পুংবছবতি। বৃদ্ধভার্যা মহান্তমী মহানবমী পাচক্র্মাবিকা দেবদত্তভার্যা পঞ্চমভার্যা শ্রেমা ছার্মা প্রক্রম্থভার্যা। কঠভার্যা। অনুরিতি

অতো বিশেষণদা ষঠ্যা স্থিত্ত্বাং নিতো প্রাণ্ডাতে প্রাণ্ডে বিকরাবধানম্। কর্মধানশ ইতি কিম ? গৌবপুক্ষকো গ্রামঃ।

(৪২২)। কোহপি শব: কচিৎ প্রবান্তনিমিত্তে প্রনাংসমুক্ত্রা প্রবৃত্তি নিমিতা গরে প্রিমমভিধনে কোহপ্যেকশ্বিয়েব প্রবৃত্তিনিমিত্তে গুম ংসনভিধাধ ব্রিষম ভাগতে। ভিনে পার্ভিনিমিতে উভযার্থা। ছথানং বিপ্রকৃষ্টং বৃদ্ধিইয়-গ্রাহ্যাৎ এক প্রবৃত্তিনি মত্তে উভয়ার্থাভিধানং স্নির্ভুট্মেকপুদ্ধি গ্রাহ্থাৎ 'মতস্তদ্ৰ্যহ্ৰমেৰ বুজাতে অত্তৰাহ একখিন প্ৰবৃত্তিনিমন্ত ইতি। 'বৃদ্ধ-ভার্মোতি কম্মধাব্যঃ বুছ ২ং নাম সামাক্রনিশেটো বুদ্ধান্মত প্রবৃতিনিচিতং ত্যেকমর্থমুপানায় অসে পুংসি প্রিয়াক বর্ততে। বৃদ্ধঃ প্রশ্বো বৃদ্ধা স্ত্রীত্ ভশ্বাদেকশ্বিন্ প্রবৃত্তিনিমিত্তে বৃদ্ধশন উক্ত পুংস্কো ভবতি প্রিয়াঞ্চ বর্ততে। ভার্ষ্যাশন্দে ন্মীলিকে উত্তৰপদে পবে প্ংলিকশকন্তেব রূপং ভবতি। পৃংবর श्रित्र।काविकापिणकरेलवंका मार्गाष्ट्रीय निरुद्धावक विषयः देखि मन्त्रियाः তথপ্ৰতীয়াৰ্থ গুণ ক্লিয়াসংজ্ঞাপুরণদেশবিশেষনিবাসসদৃশগুণযোগজাতীঃ প্রবৃত্তিনিমিত্তার্থামুপাদার জিয়াং পৃংসি চ শকা ঋমী শ্রবুত্তা ইত্যপি স্চর্নিতুং ু বুজিক্কতা মধাইমী ক্লাছাদাহরশাছাপক্তজান। স্বাইমীতি সমানাধি-कद्रांशेखद्रभट्ट दिक्ति खालांटमा दीर्घन्छ । यद्यकी हारमी वृक्तांत्रका दिल् বততাদ্যণ্ আজিরকামিতি ত্রিয়াং বিহিত্ত মণো সুক: ৫ভ্যাসতি: রাজগ্যবৃন্দীরি কা গাগ্যামণী চাসৌ ভার্যা চেভি গাগ্যভাষোভাত বিষাং

ি কিম্ ? ব্রহ্মবন্ধূ বালা। একন্মিন্ প্রবৃত্তিনিমিত ইতি কিম্ ? ভোণীভার্বা। কৃটীভার্যা। অন্তিয়ান্ত—কুমারীতন্তক:।

8२७। किननाजीि ।

প্রাপ্তো জীবিকাং প্রাপ্তজীবিকা দ্বিতীয়া ভিক্ষায়াঃ দিতীয়ভিক্ষা দর্শনীযাং মগ্রতে ভার্য্যাং পুমান্ দর্শনীয়মানীভার্য্যায়াঃ।

828। कूक्**रा नैत्र था**रनी।

ক্রুট্যা অগুং করুটাগুং মৃগ্যাং ক্ষারং মৃগক্ষীরম্ এবং মৃগপদং কাকশাবক:।

প্রাধনো বেতি গ্রাধনান্তক্ষ পংবছাবাদ্ধীণজ্যে গার্গাশক্ষঃ এবমপ্রমপৃত্ধ। উক্তপুংস্থেতি কিম্পু থটা ভাগো। ব্রহ্মবন্ধু বালেতি উপস্থান্মু হাজাতে-বিক্তি ব্রিষাম্য। লোণীভার্য্যতি ছোণীশক্ষেনাপ্যক্ত এব প্রান্ প্র-বেকিমিন্ প্রতিনিমিত্তে যন্ত্রাৎ পরিমাণবিশেষং প্রবৃত্তিনিমিত্তমুপাদার পরিমাণি ন পৃংগি এক ত। জাতিবিশেষকু গাদায় হিয়াং গ্রাণভাং বইজে যত্র গাবোহদন্তি সা গ্রাদনী জোণীশক্ষেনোচ্যতে তন্ত্রার জোণীশক্ষঃ এক স্থিক্ প্রত্তিনিমিত্তে উক্তপ্রাধ্য। কুমারীতিশ্বক ইতি প্রশংসাবচনৈশ্বেতি কর্মাণ্যায়।

- (৪২৩)। কর্মধাররে বছরীহো চ স্ত্রীলিক উত্তরপদে পরে পৃংবঙাৰ উজোহক্তরাপি ভবতি। প্রাপ্তকীবিকেতি প্রাপ্তাপ্রাক্তরাপি দিতীয়বা ক্রবিত তৎপুক্ষ:। দশনীয়াং মক্ততে ভার্যাং পুমানিতি মক্ততেম্প্রনে ইতি গিন্ ভার্মিছোপপদক্ত চেতি তৎপুক্ষ: মানিকাজ্বপদে পরে স্ক্রের প্রেডাপে ক্রেরা উদাহবণস্ক দিলাত্রস্তর। এবসুরানা শেতে উত্তানশ্রা কর্ত্রক্তানাদেরিত্যন্ত্র।
- (৪২৪)। অপ্রানে পরে কুঞ্জাদিঃ পুংবছাতি। কর্মাব্যবহ্বী ই সমাসাক্তাৎ অস্ত্রীলিকান্তরপদ্যাক্তাপ্রাধ্যে বিধানম।

৪২৫। একাতদ্বিতোত্তরগদয়ো:।

একস্থা আগতম্ একরপাস্ একমন্ত্রী একসরস্ একস্থা: স্পীরস্

একস্থাস্ একদুম্ম: একশাটা একচোটী।

. ৪২৬। ন সপক্সাদিব ছব্রীহে) চ।
সপত্মীর্ন্দারিকা সপত্মীভার্যঃ। আগ্রহায়ণী অনতৃহী অনতৃষ্ঠী
রোহিণী প্রভাবরোহিণা রেবতী পৃথিবী।

৪২৭। ক্তবিশেষণে চ বহুত্রীহোঁ। বহুত্রীহোঁ ক্তাস্তঃ বিশেষণঞ্চ প্রাগ্ভবতি। উক্তপ্যক্ষমূবজি কি ব্রীলিঙ্গা ব্রিয়ামূত্রপদে পরে পশুংশচ্চ ভবতি। কুডা কটো বেনা

⁽৪২৫)। একা তদ্ধিতে উত্তবপদে চ পরে পূংবছরতি। একরপ্য-নেকময়মিত্যাদি হেতুনরাভাগে ক্লগ্যং বা ময়ট্চেতি রূপ্যময়টো একশক্ষা সর্বনামত্বাং পুংবত্রাধাবিত্যসূত্বত্তৌ সমাসে চেতি পুংবস্তাবেনৈব সিদ্ধে এক-ক্ষীরাদিসিক্ষৌ উত্তরপদগ্রহণং প্রপঞ্চার্থম।

⁽৪২৬)। সপদ্যাদিং কর্মধাররে বছরীহোঁ চন পুংবছবতি। সমানং পাতিরন্তাঃ সপদ্ধী একাদিপূর্বাচেতি ইকারস্য নকারঃ দ্ব চ সমানো দুগানাবিতি সমানস্য সঃ। ভাগ্রহারনীতি ভংগ্রাংহারনোহস্যা ইতি সার্বিকরণ পূর্বপদে চাবনস্যেতি পদ্ধঃ। ভানত্হী ভানত্হীতি দ্বিরামনভ হা বেভি পক্ষে বাছানে উকারঃ গণে যথা পঠিছস্তাধৈব কার্যাং ভবতীতি স্চনার্থম্ভ-রোরুপানানম্ ভত্তব গ্রাহাদির্ঘদ্ধে ইতি ক্লীক্ষং গোহখাবিত্যন নভবতি।

⁽৪২৭)। প্রাগলালানিরতাতঃ প্রাগিতাল্বর্গতে তেন বছরীটো কাজং বিশেবণক প্রাগ্ভবভীতোকং কাক্যন্। উক্তপৃংখানুরীপৃংবৎ প্রিলামিতি লামুবর্গতে তেন উক্তপৃংখানুরিপির প্রামিতি লামুবর্গতে তেন উক্তপৃংখানুরিপির প্রামিতি লামুবর্গতে বিভাগত বিভাগ

স কৃতকটা চিত্ৰপ্তঃ কঠেকালঃ কৃতস্কাকটা কৃতসর্বপ্রসঃ মৃৰ'জানিঃ পলিতভার্যাঃ কুমারভার্যাঃ কল্যাণভার্যাঃ। জন্মিত্যেব।
ক্রমাবদ্ধ্ ভার্যাঃ। ক্রিয়ামিড্যেব। তক্ষণী প্রধানং বেবাং তে
ভক্ষণীপ্রধানাঃ।

ৰচনম। চিত্ৰগুবিতি চিত্ৰশব্দো গুণবচনো দ্ৰবাস গোৰিশেষণং কর্ম্বে স্থিতঃ কালো যভেতি ক্রিয়াশনো ৩৭ছ বিশেষণং পূর্মার্থেত্যাদিনা স্থিত-পদলোপ:। নমু কৃত: কটো যেন স কৃতকট ইতাতাপি কৃতশব্দ ক্রিরা-बहन: प्रवास करेल वित्मवंश वित्मवंशिश खांश चाद शिष्क किः कश्वर-ণেন। উচাতে। কৃতস্ক্ষকট ইত্যত কৃতস্ক্ষশকরোরপি বিশেষণরোঃ ক্ষাস্তব্যৈব পোগ ভাবার্থম। ব্রত্যক্ষরক্লাদৌ চ দর্কনামপ্রাণিতি দর্শনায়: প্রাগ্ভাবে প্রাপ্তে ততাহিদি ক্তান্তদ্য প্রাগ্ভাবার্থক ক্তপ্ততাহিদ ক্রপ্ত धानः दिएमवर्गः श्रिधानस्य विरमधात्रिकि कर्षधात्रस्वकर्वाणि वावन्ता। ध्वरः মতি যথা কর্তুলালঃ প্রধানগিরিং অস্তসমূত্র কর্তৃপুত্ররং পূর্কবিপ্র: আদি-हु इं रेजाएने कर्यधात्रस कूनानात्मवित्नवनश्य कर्वाविनमानाः शान जावः। कथः विभवी उवह बीरही कुनानक इंटिंग बर्छेः शिवि शथाना दिनः प्रमुखासा प्रशे शृक्षवकर्त्त क्षा विश्वभूकी वर्षाः कृषायता वृक्षाः । षेठाए । कर्म-ধাবরে হি কর্ত্রাদিপদানাং সিদ্ধরূপাধামন্ত্রাদপ্রাধান্ত মব। স্বত্ত তেবাং সাধ্যরপেণোপাদানাৎ প্রাথাক্তং তথালি কুলাল: কর্তা যশ্মিন ঘটে ইভি 'কুলালন্ত কর্ত্তমহ সাধ্যং এবমপবোৰাহরণেছপি বোদ্ধবাম। অভএব ধর্ম-পরা: সন্ত: দ্বতোত্তর: সূপ: রুফস্বামিকা গোপা ইত্যাঘাপি অবিরুদ্ধের। ৰুবজানিবিভি যুবভিজারা যজেতি যুবদং নাম বরসঃ সামারুবিশেষো ৰ্বশক্ত প্ৰবৃত্তিনিমিতঃ তমেকমৰ্থমুপাদায়াদৌ পুংসি জিয়াক বৰ্ততে। অত পুংবস্তাবাৎ ক্রাধিকারবিহিত্ত বুনভিরিতি তিপ্রভারনিরভি: জারারা ইজ্বান-শ্চেতি ইৎ জানাদেশত। এবং পশিকী ভার্যা বল্প পশিভভার্যা: কুমার-ভাষা ইতি বয়সচরমে ইতি বিহিতক ইপ্রভারসা নিবৃদ্ধি:। কুমার্ডবৃব্ভ-বুৰবাদীনামকাডিবং যে মক্ততে ওক্ষতমান্ত্ৰিতা এডছুদাক্তৰ। যে তু কাডিবং সভতে ভন্মতমাজিত্য আভিল্ডেতাত নিবেধমুদাহরিয়তি আভিল্পপঞ্চ ছক্ষি-

82 । किमनाखालि।

্প্রকাতভার্যাঃ প্রসূতভার্যাঃ গর্ভিণিভার্যাঃ।

8२२ । 'शूरवन श्रियारमी।

তরুণীপ্রিয়:। প্রিয়া মনোজ্ঞা স্থভগা হুর্ভগা কল্যাণী 🛎 জি সচিবা সদা কাস্তা কাস্তা দমা চপলা ছুহিতা বামনা। দৃঢ়ভক্তি-রিত্যাদিস্থবিবক্ষিড্জীবাৎ পূর্ববপদস্থা। আর্মধীদিতি ভাগর্তিঃ।

তপাদ এৰ ব্যবস্থিতম্। কল্যাণভাষ্য ইতি শোণাদেৰে তি ঈ। স্ত্ৰী ইত্যেব। গ্রামণি তান্ধণকুলং দৃষ্টিরভোতি গ্রামণিদৃষ্টিঃ অত সর্বমন্তি নতু গ্রামণা-শবোহন থালিক:। পুংৰজাবে হ্ৰেষাহন্তঃ ক্লীব ইতি ক্বত্যা হ্ৰম্বস্ত নিবৃদ্ধি: ভাং। উক্তপুংস্ক ইভ্যেৰ। এটাভাৰ্য্যঃ ধটাশকো নোক্তপুংস্কঃ নিয়ত-স্ত্রীত্বাৎ। সর্ব্বান্তপদমুত্তরপদং তেনেই ন ভবতি। শোভনাগট্যভাষ্যঃ পটী,মৃল্যে ভার্য্যে হয়কেভি ছম্বনর্ডে পটী, মৃদী ভার্য্যা যভেতি ত্রিপদে চ বছত্রীহো যহতরপদং তত্র পুংবভাবাৎ পটা মুহভার্য্য ইতি।

- । ৪২৮)। শিষ্টপ্রয়োগদর্শনাদিতি শেষঃ। নম্বপ্রাপ্তিরেব কথং এক-ম্মিন্ গ্রন্তিনিমিত্তে উদ্ভেপ্ংস্কথাভাবাং। তথাহি প্রজাত গ্রন্তশকো গভনিৰ্মোকং প্ৰবৃত্তিনিমিত্তমুপাদায় ক্ষিয়াং বৰ্তেতে পুংদি তু গভাধানং গর্ভিণীশক্ষোহপি অনবয়বভূতাশ্ববর্ত্তিবস্তবিশেষসম্বন্ধন স্তিয়াং বর্ততে স্ত্রী-গর্ভিণীতি। বছরীহিস্ত অস্তর্ব স্তাবন্ধবভূতবস্তবদ্বদ্দন গর্ভী ইত্যভিধীয়তে ইতাত্তি স্ত্রীপুংসয়োঃ প্রবৃত্তিনিমিত্তভেদ ইতি 1
- (৪২৯)। বছব্রীহৌ প্রিন্নাদৌ পরে পুংবন ভ্রতি। পুংবদিতি কৃতং প্রাণ্ভাবস্থাপি বাধনার্থমিতি শহানিরাসার্থন্। ভক্তিশক্স্থাপি প্রিয়াদৌ পাঠাৎ পুংবভাবনিষেধে দৃঢ়ভক্তিরিভি ন প্রাপ্নোতীভি চোণ্য আহ मृष्डिकितिणापि। পূर्वभिष्ठ मृष्ट्रभक्त की परमव न विवक्तीतः খ্রীৎস্যভাবাৎ পুংবভাবভৈবায়মবিষয়ঃ কিং প্রতিষেধনিরূপণেনেত্যভি-প্রায়ঃ। দৃঢ়শব্দো হত্রাদার্চ্চনিবৃত্তিপর: প্রযুক্তঃ তদহক্ষ্যকুক্তস্য লিঙ্গ-বিশেষোপাদানমধ্পকার্য্যে বেতি দ্রীঘমিহ ন বিবক্ষিতম্। আর্যনাদিতি

৪০০। প্রধানপূরণপ্র**্যান্ত দ্ট**। ব্বতিপঞ্চমাং দ্রিয়া। স্ক্রেধানপ্রণপ্রতীয়াক্তম্ভ। স্ক্রাণপঞ্চ মীকা পক্ষা।

80२ । न जिल्लाशृत्रात्ना । दमर्वेमखानार्याः दमर्वेमखामानिमी शक्तमीनार्याः शक्तमीमानिमी ।

উনিবৃত্তিরিতি সিদ্ধান্তান্তরং নহার্যপর্নই স্থানিদ্ধো প্রমাণভূতই লক্ষণমপেক্ষাতে ইত্যান্তি প্রায়ঃ।

- (৪৩০)। পূরণপ্রতায়েইন্ডো যন্ত স পূরণপ্রতায়ান্ত: প্রধানক তিং
 পূরণপ্রতায়ান্ত চিতি প্রধানপূরণপ্রতায়ান্ত: স চ প্রিয়াদির্ভবতি। ব্বতিপক্ষমা: প্রিয় ইতি নাস্তায়াড়িতি মট পূরণপ্রতায়: প্রধানপূরণপ্রতায়ান্তা
 হিন্দ্রীহানিতাং। বিশ্বতি: পঞ্চমী বিসাং ক্রীণা নিতাল সমানে কিন্তিটার্কা
 ঘেনান্তর্ভাবাং পূরণপ্রতায়ান্তন্ত প্রাধান্তং যতোহত সমুদায় এবাবরবাদভিয়:
 সমাসার্থ: অত হি যথা প্রথমা বিতীয়ী তৃতীয়া চতৃথী চাভিধীয়তে তথা
 পঞ্চমাপি স্ত্রীতি ভবতি পূর্ণপ্রতায়ান্তন্ত প্রোধান্তম্ব। কল্যাপপঞ্চমীক: পক্ষ
 ইত্যত্র তু তিরোহিতাবয়বভেদ: পক্ষ এবান্তপদার্থ: পঞ্চমী তু অত্র পক্ষে
 অন্তপদার্থেইত্যক্তমন্ত্রনের্ব্যব নিছভিধেয়া যথা কুক্ষশক্ষেন মূলাদয়ন্তথাত্র পঞ্চমান্ত্রিকারবানন্।
- (৪৫:)। সংজ্ঞাপকঃ পূরণী চ বঁছরীটো পুংবর ভবতি। কথং পুনং নংজ্ঞাপন্দ পুংবভাবপ্রাপ্তিঃ বাবলা উক্তপুংস্বস্ত পুংবভাব উক্তঃ ন চ রিরাং ষঃ সংজ্ঞাপন্দ বউতে স উক্তপুংস্কঃ। একদ্রব্যাতিনিবেশিতাং সংজ্ঞাপন্দানাই নৈতদন্তি। নহুরং নিয়সঃ একদ্রব্যাতিনিবেশিতিঃ সংজ্ঞাপনৈতবিভব্যাতি। তথাহি দেবদন্তাদিশন্দোহনেকদ্রবাসংজ্ঞাভূতঃ প্রযুজ্ঞানানে। লোকে উপপদতে বথা শারেহিপি ধাতাদিশন্ধা বা তেকদ্রব্যাভিনিবেশিনী সংজ্ঞা তাং প্রতি নৈবারং নিবেষঃ ক্রিয়তে ইত্যাবারং চোদ্যায়। ভবত্ত সংজ্ঞাশন্দা অনেক্ত্রবারতবঃ উক্তপুংস্থাত্তিক স্থানাক্রতী কথা ন হি তেনাং কিঞ্ছিৎ-প্রতিনিভিন্তি বদ্দ্রাশন্দ্রাণ এতদপ্রানারং বতন্তেবারশি কেমাঞ্চিৎ প্রতিনিভিন্তি বদ্দ্রাশিবক। ব্রাপার্থান্তর্থনাতি ত্রাণি ব্ররণমেক্ত্রের সংপ্রাণিরক। ব্রাপার্থান্তর্থনাতি ত্রাণি ব্ররণমেক্ত্রের ভানিমন্ত্র্যুক্তানারাভিবেরে বর্তত্তে ত্রাপ্যতিকে প্রতিনিমিত্ত্র ব্রের্ভিনিমিত্ত্র ব্রহ্নিমিত্ত্র্যুক্তানারাভিবেরে বর্তত্তে ত্রোপ্যতিকে প্রত্তিনিমিত্তে ব্রেক্ত্রের তিনিমিত্ত্র্যুক্তিনিমিত্ত্র ক্রের্ভিনিমিত্ত্র ব্যর্ভিনিমিত্ত্র ব্যর্ভিনিমিত্ত্র ব্যর্ভিনিমিত্ত্র ব্যর্ভিনিমিত্ত্র ব্যর্ভিনিমিত্ত্র ব্যর্ভিনিমিত্ত্র ব্যর্ভিনিমিত্ত্র ব্যর্ভিনিমিত্ত্র ব্যর্ভিনিমিত্র ক্রেক্ত্রের বর্ততে ত্রোপ্যতিকর প্রবৃত্তিনিমিত্তে ক্রেক্ত্রের ক্রিক্তিক্র ব্রহ্নিমিত্র ক্রেক্ত্রের বর্ততে ত্রাপ্যতিকর ব্যর্ভিনিমিত্তে ব্যর্ভিনিমিত্তে ক্রেক্ত্রিকর ব্যর্ভিনিমিত্তে ব্যর্ভিনিমিত্তর ব্যর্ভিনিমিত্ত ব্যর্ভিনিমিত্র ব্যর্ভিনিমিত্র ব্যর্ভিনিমিত্ব বিশ্বতিকর বিভাগান্তি বিশ্বতিকর বিশ্বতার বিশ্বতিকর বিশ্বতার বি

৪৩২। তদ্ধিতকোপান্ত:। স্বাজিকাভার্য্য মন্ত্রিকামানিনী ব্রজিকাভার্য্য ব্রজিকামানিনী।

৪৯০। অকণকঙকট্ওকাস্তশ্চ। লিখিকাভার্য্য: পাচিকাভার্য্য: খনকীভার্য্য: লবিকাভার্য্য:। অক্সত্র। পাকা বালা ভার্য্যা যক্ত স পাকভার্য্য:।

পুমান্ তে উক্তপৃংকা ই তি কিমআফুপপন্নং দেবদন্তপশোহনং দেবদানক্রিয়াসক্ষপ এব প্রবৃত্তি নমিত্তে উক্তপৃংক্ষ: দেবদন্তমানিনীতি দেবদন্তাং মক্তন্তে
বক্তব্যামির মতি মন্ততেম ননে ইতি শিন্ তরিমিন্তোপপদন্ত চেতি তৎপুক্ষঃ ।
নম্ব বছরীহাবরং নিষেধঃ কথং তৎপৃক্ষরে ভবতৃ । উচ্যতে । জমানিনি স্বাঙ্গাঘীত্যক্র মানিনি পরে বছরীহেরভাবেহিশি বদমানিনীতি পুংবছাবক্ত নিষেধং
বক্ষাতি তক্তব্যাপরতি মানিনি পরৈহবছরীহাবিপি পুংবছাবক্ত নিষেধং
ভবতীতি স্ত্রীলিক উত্তরপদেহরং নিষেধঃ তেন দেবদন্তামানিনী মন্তিকামানিনীতি উদাহরণং কচিদন্তব্যাপ্যানং স্বর্ত্তিকাত্রকভিতি ভাষ্যদর্শনাদিহ নাজীক্তত্বামিতি রক্তিব্যাপ্যানং স্বর্ত্তিকাত্রকভিতি ভাষ্যদর্শনাদিহ নাজীক্তত্বিতি স্বর্থবৈ নিষেধঃ ।

- (৪৩২)। ওদিতাধিকারবিহিতপ্রতায়সম্বী ককার উপাস্তো বস্ত ওস্ত বছরীহো পুংবর ভবতি। মক্রিকাভার্য ইতি ব্রন্ধিকাভার্য ইতি মৃত্রের্ ভবা ইতি ব্রন্ধের্ব ভবা ইতি মন্তব্রন্ধাভ্যাং ক ইতি কং ব্রিয়ামাৎ অধিং-স্থ্যাদক্ষেকে ইতি অকারস্ত ইকারঃ।
- (৪০৩)। অকণকঙকট্ওকান্তক বছরীহৌ প্রের ভবতি। লিবিকা-ভার্য্য ইতি লিবাবেরক ইত্যোণাদিক্ষাহক: পাচিকেতি পকতৃটো কর্ত্তরীতি পক্ষ: ধনকীতি নৃতীধন্যোওকট্শিরিনি রন্ত্রা রলক্ষেতি ওকট্ লবিকেতি প্রক্রেক্সপ্রত্যা ওক: সক্ষৎ সাধাবিতি ওক:। অন্যত্রেতি অরম্ভিপ্রার: এতরক্ষণবর্ষক্ষা কোপান্ত ইত্যেবং ক্রিরভাং কিম্বেবং পাকভার্য্য ইভ্যত্রাপি নিবেবেহতিব্যাপ্রিবোব: ভাৎ পাকশক্ষেহ্রমব্যুৎপন্ন এব শিশুব্চন: এবং ভক্তার্য্য ইভ্যত্রাপি।

৪৩৪। বৃদ্ধার্থতদ্বিতান্তোহরঞ্জনবিকারয়ো:। বৈদেশীভার্যা:। অবৃদ্ধার্থতদ্বিতান্তন্ত। তাবস্তার্য্য: বৈয়াকরণ-ভার্মা:। রঞ্জনে ভূ। কাষায়চোটিক:। বিকারে ভূ। লোহবিকারো লৌহ: লৌহী ঈশাুযুক্ত স লৌহেশ:।

৪৩৫। অমানিনি স্বাঙ্গাদী।

দীৰ্ঘকেশীভাৰ্যা:। মানিনি তু। দীৰ্ঘকেশীং মন্তভে ভাৰ্য্যাং দীৰ্ঘকেশমানীভাৰ্য্যায়াঃ দীৰ্ঘকেশমানিনী ভাৰ্য্যা।

⁽৪ · ৪ । সাপেকস্থাপাত্র সমাস:। রঞ্জনব্যতিরিক্তে বিকারব্যতিরিক্তে চার্বে বিহিতো র্ছিনিমিন্তং ভছিভোহক্তো খদা দ বছবীহো পুংবর ভবতি। বৈদেশীভার্যা ইতি বিদেশে ভবা বিদেশে নিবাসোহদ্যা বেতি তক্ত ভবে ইতি তরিবাদে ইতি বা টণ্ বৃদ্ধি: টিকাদী। তাবভার্যা ইতি তচ্ছক্ষাৎ বন্ধদেতদ্যো বতুরিতি বতু: বতৌ চ যন্তদেতদামিতি আকার: উ'গল্পাদী তাবতী ভার্যা অস্তেতি নাত্র বৃদ্ধিনিমিন্তং ভদ্ধিত: আকারদ্য বৃদ্ধিনোনাজ্ঞিনাং। বৈরাকরণভার্যা ইতি বিপূর্বাদাঙ্ পূর্বাং ক্রেণা ওণ্টা দিছাৎ ব্যাকরণশ্বাৎ তদ্বেত্তি তদধীতে বা ইতি টণ্ বৃদ্ধিং বাধিলা বৃদ্ধিনাম্য পূর্ব্যান্তৎসম্বন্ধিনো: পদান্তব্যোনিত্যৈরোবানিতি মকারদ্য স্থানে ঐবাদেশঃ বৃদ্ধের্যিত্তপারাত্র বৃদ্ধেনিমিন্তং ভদ্ধিভাত্তঃ। কাষার্যটোটক ইতি ক্রান্ধেণ রক্তারের বৃদ্ধিনিমিন্তং ভদ্ধিভাত্তঃ। কাষার্যটোটক ইতি ক্রান্ধেণ রক্তারের ইতি টণ্ গোহবিকারো লৌহ ইতি ভদ্যা বিকারে ইতি উণ্। ভদ্ধিভাত্ত ইতি কিন্ প্ কাণ্ডেলাবভার্যা: বৃদ্ধার্যক্তিং-প্রভারে পভ্ততঃ।

⁽৪০৫)। ঈ ইতি ইকারাশ্বস্য গ্রহণম্। বছরীহো বানিনি ব্যক্তি-রিজে পরে স্বাল্বাচকাছন্তরমীকারাশ্বং শ্রীলিলং পৃংবর ভবতি। নীর্ম-কেশীতার্য্য ইতি স্বালালিত্যাদিনা ঈ ১৯৯০ জনীকারশ্ব। দীর্ঘকেশা ভার্য্যা জন্য স দীর্ঘকেশভার্যাঃ। দীর্ঘকেশমানী ভার্য্যায়া ইতি দীর্ঘকেশীং মনাজ্যে ভার্য্যারিতি মন্যতের্ম ননে ইতি পিন্ দীর্ঘকেশমানিনীতি দীর্ঘকেশীমান্ধানং মন্যতে ইতি থাশ্বান্থমননে ইতি পিন্ ত্রিমিন্তোপশদস্য চেতি ভংগুরুষং কচিদনাজাপীতি নানিনি পরে প্রাথ্যস্য পৃংবভাবন্য নিবেশে র ভবতি।

৪৩৬। জাতি ।

कूक जिलाया: কুমাবী ভাষ্য: যুবতী ভাষ্য: নাড়ায়নী ভাষ্য: কঠী ভাষ্য:। অমানিনীতোব। কঠমানিনী কঠীমানিনীতি ভাগবৃত্তি:।

৪৩+। যাজাদিতদ্ধিতোক্তবজং স্থানান্তরোক্তস্থাপি পুংবদ্ধাবায় নিষেধপ্রকরণমিদম্।

দন্তায়তে ' প্রকল্পা দন্তাপাশা পঞ্চমীয়তে 'পঞ্চমীদেশীয়া পঞ্চমী-জাতাযা গাচিকাযুতে পাচিকারপা বৈদেশীয়তে বৈদেশীদেশ্যা

(৪৩৬৪ ১৭ । হু'ভিবিছিত: স্ত্রীপ্রতায়োহমানিনি পরে বছব্রীহৌ পুংবর ভণতি। কুকুটীভাগ্য ইতি আতেরিত্যাদিনা के নাডাফনাতি নড-শৰাৎ নডস্যাপ নাত । ত্রাদিবিত্যাম্মর্থে অশ্বাদেশীয়ন ইতি গায়ন:। কঠা-মানিনাতি ভাণবৃত্তিবিতি অমানিনীতীদ্যামুবৃত্তিমদৌ নাঙ্গীকরোতীতাভি-প্রায়: অনম্বন্যা বিবির্ব ভবভি প্রতিষেধে ব্যতি ন্যায়াৎ অনম্বশেক্ত সাব পু•বস্তাবনিষেধার্থং পকবণামদমিতি নিবাং সূমাহ যাজাদিতভিতোক্তবর্জ-যকাবাদাব খাদৌ চ তদ্ধিতে উকং পংবস্তাবং বজ গ্রিছা পানা-স্বরোক্তস্যাপি প্রংবঙাবদ্য নিষেধকং প্রাকরণমিদম। এতেনৈতৎ প্রচিত্রম অন্যত্রাপি যৎ পুংবছাববিধানং ক্রমতে ভদ্যাপি নিষেধপ্রকরণম। উক্ত-পৃংস্কৃবজি তং জীলিক্ষেব তত্তাপি পৃংবস্কবতি। মন্যেবমনস্ক্রোক্ত দ্য কম্মধাব্যবিভিত্তিয়ব।পূ•বদ্ধাব্যা নিষেধপ্রকরণমিদং কমান ভবতি। উচাতে ৷ নিষেধপ্রকবণে বছবীহাবিতাক ব্যুত্তব ছব্রীহাবেব যদি কর্মধারম-বিহিতস্যাপি নিবেধপ্রকরণমিদং স্যাৎ ডার্ম বছব্রীহাবিত্যমুব্রভিরপার্থিকা স্যাৎ। দত্তায়ত ইতি দত্তেব আনুহাতি চেইছে বা কর্ত্তবায় ইত্যাদিনা আয়্ পুংৰম্ভাবক বিহিত: সংজ্ঞাপুৰণামবিতি নিবিদ্ধা। নৰজে পুংৰম্ভাবেখিপ কতে কো দোষঃ আয়াকাবেণাপি দভায়ত ইতি ভবত্যেৰ পুৰৱবন্যায়েনৈত-क्षाक्षक शासम्बद्ध शक्ष्मीक हेलाको विषाक अब अखानवात्रविधावनि সমাসেহপঃবভাবদা পুংবর স্যাদিত্যনেন শাহীরুজনু। দস্তাকরা ইতারে ম্না-क्रां कहातकारमनीयां देखि कद्यानयः नखानारमकि नात्मा नित्ना देखि नानः দীর্ঘকেশীয়তে দীর্ঘকেশীকরা। কঠায়তে কঠাকরা যাঞ্চাদিড্রিডো-ক্তস্ত স্থাদেব। বর্মিণ্যা অপত্যং বার্ম্যঃ হস্তিনীনাং সমূহো হাস্তিকম্।

৪৩৮। সুলনাম প্রাক্। সর্বক্তকুঃ সর্বব্ধঃ।

৪৩৯। ততেশ্পি সংখ্যা। দ্বাসঃ ত্রাণ্যঃ সপ্তঞ্চঃ।

পঞ্মীয়ত ইতি হলিজ্ভ্যামিত্যাদিনা আয় আকারলুক্ পঞ্চমীজাতীয়েতি প্রমাদঃ জাতীয়দেশীয়ো প্রতিবেধবিষয়ো পাচিকায়ত ইতি অকণকে-ত্যাদিনা নিযেধঃ পাচিকারূপেতি রূপ স্থতৌ তিঙ্গুণ্চতি রূপঃ। তর তম চরট্ জাতীয় কর দেশ্র দেশীয় রূপ পাশ খ্য থা দা হি ইত্যেতেষু পরেষু পুংবভাবস্তদ্ধিতপাদে উক্ত: তদ্যায়ং নিষেধ উদাহত:। বাম্য ইতি বম-ন্নিতি গৰ্গাদৌ পঠ্যতে লিঙ্গবিশিষ্টস্যাপি গ্ৰহণাৎ বৰ্মিণীশন্ধাৎ ষণ্ হাস্তিক-মিতি হস্তিনীশন্বাৎ হস্তাচিত্তাদিতি টিকণ্ যাজাদিরণেয় ইতি তরাদিশ্বাৎ পুংবদ্ধাবো জাভিশ্চেতি ন নিষিদ্ধ:। যদ্যত্র পুংবদ্ধাবো ন স্যাৎ তদা অদি-ल जिजीकातन्कि केटल नमुक् न मार यटला नायः नकातासः किन्छ क्रेका-রাস্তঃ পুংবভাবে সতি স্ত্রীম্বাপগমাণীনিবুত্তৌ নাস্তমানশুক ভবত্যেব যদ্যবয়ব-- ৰোপে নাস্ততা স্যাৎ তদা ধনীভাত্রাপি অদিলুগিত্যকারলুপ্তে ধনশক্ষ্যা নান্তবে নকারলোপ: স্যাৎ। তদ্ধিতকোপান্ত: অকণকঙকটুঙকান্তশ্ভেতি প্রতিষেধন্ত যাকাদিতদ্বিতো ক্রমপি বাধ্যতে ইতি বামনস্যেষ্ঠং চন্দ্রস্য চ তেন विलिशिकाश धर्माः देवत्विशिकाशिक व्यव महिवारम्हेनिकि इत्क श्रातंकात्वा ন ভবতি প্ৰেদ্ৰাবে দতি অধিৎস্ত্ৰাদত্তেক ইতি কৃত্ৰসা ইনিতাসা নিবৃত্তিঃ 1 21E

(৪০৮)। বহুত্রীহৌ সর্বনাম প্রাগ্ভবর্তী। যত্ত গুণবচনেন সহ সমাসঃ সোহণ্য বিধরঃ যত ভু জবাবাচিনা তত্ত সর্বনামো বিশেষণদ্ধাৎ পূর্বেশৈব প্রাগ্ভাবঃ সিদ্ধঃ।

(४०३)। नर्सनातारग्रहार्रार्शन मःशा शान्वरित । वाक हैवि

880। সর্বতঃ প্রিয়ো বা।

প্রিয়পুত্র: পুত্রপ্রিয়ঃ প্রিয়সর্ব: সর্বপ্রিয়: প্রিয়ত্তি: ত্রিপ্রিয়: ।

88)। গড়াদে: मश्रमाखः পরম্।

গড়কঠঃ অর:শিরা ছহিত্গর্ভা পদাহস্ত কমগুলুপাণি-রিত্যাদি।

88২। প্রহরণার্গাৎ ক্রান্তঞ্চ। দশুপাণিঃ চক্রপাণিঃ শ্লপাণিঃ অস্থাদ্যতঃ চক্রোদ্যতঃ গদোদ্যতঃ।

ষাবস্তো মন্মাৎ সপ্তগুরিতি সপ্ত গাবোহসোতি বছরীহি:। যদ্যপান্ততঃ সংখ্যায়াঃ প্রাগ্ভাবঃ পূর্বেশৈব সিদ্ধঃ তথাপাপীতি কৃতং স্পট্টার্থম্। ততঃ সংখ্যোতি লক্ষণে কৃতে সর্বনাম এব সংখ্যা প্রাগ্ভবতীতি নান্যমাদিতি মন্দ্রিয়াং শক্ষা স্যাৎ।

- (88৮)। সর্কশব্দেন সর্কনামসংখ্যা ভদিতরোপসংগ্রহো মন্দ্রিয়াং স্পৃষ্টাববোধার্থঃ। সর্কতঃ প্রিয়শব্দো বহু হাইে। বা প্রাণ্ডবৃতি।
- (৪৪১)। বহুত্রীহো গড়াদে: শলাং সপ্তম্যন্তং পদং পরম্ভবতি। কঠে ছিতো গড়্রস্যেতি পূর্সার্থেলাদিনা ছিতপদলোপে কতে জবিশেষণে চেত্যনেন প্রাণ্ডাবে প্রাপ্তে পরনিপাতার্থং বচনম্। কেচিদেবং ব্যাচক্ষতে এতদেব বহুত্রীহো সমাসে গড়াদে: শলাৎ সপ্তম্যস্তম্য পরস্ববিধানং ব্যোধর্মতি বৈর্ধিকরণাহিশি সপ্তম্যস্তেন সহ বহুত্রীহির্ভবন্ড্যেব সপ্তম্যস্তম্ম তু প্রাণ্ডাবং। এবঞ্চ সতি কঠে কালোহন্তেতি উরসি লোমান্তস্যেতি বাক্যনাপি কঠেকাল: উরসিলোমা ইত্যাদিপ্রয়োগং সিধ্যতি। গর্ভে ছিতা ছহিতা বস্তাঃ হস্তে ছিতং পদ্মং বন্দ্র পাণে ছিতঃ ক্ষণ্ডলুর্থম্য ইত্যাদি বাক্যম্। অথবা গর্ভে ছহিতা বস্যা ইত্যাদি বাক্যং ক্রমা ছহিত্যুক্তেরাদিপদসিদ্ধিঃ।
- (৪৪২)। প্রহরণমর্থো যক্ত স প্রহরণার্থ: তত্মাৎ সপ্তমান্তঃ জান্তঞ্চ পরং ভরতি।

नवानभातः।

৪৪০। জাতিকালস্থাদিভ্যশ্চ।
শারক্ষন্ধী পলাগুভক্ষিতী মাসজাতা সংবৎসরজাতা স্থজাতা
ত্য্থজাতা অলীকজাতা।

888। প্রায়িকোইয়ং পরনিপাতঃ।
কঠে গড়ঃ প্রাপ্তোদক্রঃ উপাহতপশুঃ উদ্যতাসিঃ। তথাচ,
তমুদ্যতনিশাতাসিং প্রত্যাচ জিজীবিষুরিতি ভট্টিঃ। উদ্পূর্ণলোষ্ট্রনগুড়ৈঃ পরিতোহসুবিদ্ধমিতি প্রামাণিকপ্রয়োগঃ।

৪৭৫। অহিতাদিব গিয়াদে:।
আহিতাগ্নিঃ অগ্নাহিতঃ জাতপুত্রঃ পুত্রজাতঃ জাতদন্তঃ দন্তজাতঃ
জাতশাশ্রুঃ শাশ্রুজাতঃ পীততৈলঃ তৈলপীতঃ পীতম্বতঃ মৃতপীতঃ
উঢ়ভার্যাঃ ভার্যােঢ়ঃ গতভার্যাঃ ভার্যাগতঃ গতার্থঃ অর্থগতঃ।

৪৪৬। কাদিখা দাদেঃ।
বহুত্রীহো সমাসে ঋদাদেরুত্তরে কাদির্ভবতি। রুদ্ধপিতৃকঃ।
৪৪৭। অনিয়ুবর্থস্ত্রীতুৎ।

⁽৪৪৩)। বছত্রীহৌ জাত্যাদিভাঃ কান্তং পরং ভবতি। শারদ-দ্মীতি অস্বাদপূর্কাৎ কান্তাদন্তোদাতাদ্বত্রীহেরিতি দ।

^{(888)।} গড়াদেরিত্যাদিভির্বোগৈরুক্তঃ পরনিপাতঃ প্রায়িকঃ
নিষ্টপ্রযোগদর্শনাদ্যভিচরতীত্যর্থঃ। অতএবাহ প্রামানিকপ্রয়োগ ইতি।
উদকশন্ত জাতিবাচিয়াৎ ক্রাব্তস্ত পরনিপাতপ্রাপ্তিঃ।

⁽৪৪৫)। বছরীহৌ জয়াদে: শব্দাৎ আহিতাদি: পরং বা ভবতি। ক্রাক্ত প্রাণ্ডাবে বিকরার্থং বচনমু।

⁽ ৪৪৯)। অবছত্রীহো তু রূপবদ্ধিত।।

⁽৪৪৭)। অর্থশন্ধ: কারণবাচী ইয়ুবকারণব্যভিরিক্তঃ স্ত্রীলিক্সা

বহুকুমারীকঃ অস্ততন্ত্রীকঃ। তথাচ, বিভক্ষ্য নক্তং দিবমস্ততন্ত্রি-ণেতি কিরাতে হস্বেকারাস্ততন্ত্রিশব্দত্য প্রয়োগঃ। বহুব্রহ্মবন্ধুকঃ। ইয়ুবর্থন্ত্রীদৃত্যু। মঞ্জুশীঃ স্থ্রাঃ।

৪৪৮। উরঃপ্রভৃতিশ্চ।

বৃঢ়োরক: প্রিয়দর্পিক:। উরদ্ দর্পিন্ উপানহ্ দধি মধু শালি।

৪৪৯। নাবাদিরেকার্থঃ।

লকা নৌর্ধেন স লকনোকঃ। নো পুমস্ পয়স্ অনজাহ্ লক্ষী। অনেকার্থপ্ত। দিনোঃ দিপুমান্। রজনিজবনিকাপায়সংলক্ষ্য-লক্ষ্মীরিতি সূর্যাশতকম্।

ঈকার উকারশ্চ ঝদাদির্ভণত। বছকুমারীক ইতি কুমারশক্ষাদ্যস্থ চরমে ইতি প্রিয়ামী অন্ততন্ত্রীক ইতি তৎপূর্ব দ্রাতের্ক্র ঞাদেরিতি ইপ্রতায়ান্ত-স্কল্রিশক্ষঃ তত ইদস্তাদক্ত্যর্থাদিতি প্রিয়ানী অন্তা তন্ত্রী যেম দোহন্ততন্ত্রীকঃ হবেকারান্ত্রস্য তন্ত্রিশব্দ প্রয়োগ ইতি দীর্ঘান্তস্যানেন কবিধানাৎ প্রাপ্তি-রেব নাস্তীত্যর্থঃ।

(৪৪৮)। উর:প্রভৃতিশ্চ ঝ্লাদির্ভবিত। প্রভৃতিশকো আন্দর্যঃ। বাঢ়োরস্ক ইতি বাূঢ়মুরো যস্যেতি বছবাঁহি: কাম্যকল্পাশেত্যাদিনা অব্য়ন-, সকারস্য প্রদাস্তবত্ত্বহন্ত্যসকারস্য প্রদাস্তবত্ত্বাভাবাছিস্গাভাবঃ। প্রির-সর্পিক ইতি কস্কাদেশ্চেতি মূর্জ্জঃ। অবিযুক্তে উপানহৌ যেন সোহবি-যুক্তোপানৎক: নহোধোহঙ্ঘে ইতি হস্য ধঃ। স্ত্রীশক্ষেহত্ত্র প্রমাদাৎ পতিতঃ তেন বছব্রীক: ইতি ইষুবর্ধতারপ্র প্রোতাতি পাঠঃ।

(৪৪৯)। একার্থো নাবাদিখাদাদির্ভবিত। লক্ষা নোর্থেন ইতি বাকোন একার্থতাং ব্যাচকার। অনির্বর্থস্তীদ্দিতি সিদ্ধে লক্ষ্যীশক্ষ্য পাঠো নির্মার্থঃ। একার্থ এব ঋদাদিন দ্বিত্বর্থঃ। হিনোরিতি কে নাবৌ যন্ত স দ্বিনোঃ অক্তর্মসাসাস্তাদেত্যভায়ং বিষয়ঃ সংলক্ষ্যলক্ষ্যীরিত্যক্তাপি শোক্ষানামনেকতাৎ সংলক্ষ্যা লক্ষ্যো ব্যোতি বছ্তীছিঃ। উরঃ সূর্পি-

৪৫০। অর্থে নঞঃ। অনর্থকঃ।

৪৫১। ইনন্তঃ দ্রিয়াম্। বহবো বাগ্থিনো বস্থাং সভায়াং সা বছবাগ্থিকা সভা। অদ্রি-য়াস্ত্র। বত্দন্তী র্জা।

৪৫২। অকৃতদুসাসান্তাদ্ধ।
বহুমালঃ বহুমালকঃ বহুপয়াঃ বহুপয়কঃ বহুযোগী বহুযোগিকঃ।
কৃতসমাসান্তানু। প্রিয়পথঃ প্রিয়ধুরঃ।
• .

রুপানৎ স্ত্রা দবি শালি মধুনি চ। উরঃপ্রভৃতয়ো জ্ঞেয়াঃ নৌরনজ্বান্ পুমান্
পরঃ। লক্ষ্যীশেচভি সমুদ্দিষ্টাঃ পঞ্চ নাবাদহো গণে।

(৪৫•)। নঞঃ পরো যোহর্থশক্ষঃ স ঝদাদির্ভবতি। **অনর্থক ইতি** অচ্যন ইত্যনাদেশঃ।

(৪৫১)। প্রিয়ামভিধেরায়ানিনম্ভ ঝলাদির্ভবতি। বছবাগ্থিকেতি বাচো থিন্ ইতি থিন্। বহদণ্ডী রাজেতি পক্ষে অকতসমাসান্তাদ্বৈতি কঃ বহদন্তিকঃ।

(৪৫২)। অক্তদমাদান্তাদ্বর্ত্ত্রাহোঁ কো বা ভবতি। বহুমাল ইতি প্রাপ্রভায়ন্ত চেতি হ্রম্ম বহুমালক ইতি আতো বেতি হ্রম্ম পক্ষে বহুমালক ইতি আতো বেতি হ্রম্ম পক্ষে বহুমালক ইতি আতো বেতি হ্রম্ম পক্ষে বহুমালাকঃ বহুপরাং বহুপরস্থ ইতি একার্থঃ পর্য়শক্ষ ঝাদো পঠিতঃ অতো বহুর্থত্বাদ্রাক্রতসমাদান্তত্ব্ব । বহুযোগী বহুযোগিক ইত্যন্তাপ্যম্মাভিধায়ক্ত্বাং অক্তসমাদান্তত্ব্ব । অসমাদান্তাদ্বিত কর্তুব্যে বদক্রতসমাদান্তাদ্বৈতি মহৎ পুরুং কুতং তেন সমাদান্তম্মত্র পুরে ইত্যাচার্যান্তাভিপ্রায়ো লক্ষ্যতে। অক্ততঃ সমাদাক্ষে বত্রেতি সোহক্রতসমাদান্তঃ যত্র সমাদাক্ত্রত প্রদক্ষ বিষয়ঃ। বহুমালং বহুমালক ইতি বদা তু ন ক্রতসমাদান্তোহক্রতসমাদান্তপ্রকাণ যত্র সমাদান্ত্রত্বলৈ সতি কেনাপি হেতুনা অপ্রাপ্তিঃ গোহক্ত বিষয়ঃ। বহুপরাঃ বহুপরস্থ ইত্যাদি অনেন ব্যাখ্যানেন কল্যাণপ্রকাশিকঃ পক্ষ ইত্যত্র অনিধূর্থ স্থীদ্দিতি ঋণাদিত্বাং প্রাপ্তঃ কং বাধিত্বা প্রধানপূরণ প্রত্যয়ান্তান্ত্রন্ত্রীহাবিত্যং প্রদক্ত এব অপ্রধানত্বাৎ ন প্রবৃত্তঃ অত্যাপ্তানেন পাক্ষিকঃ কো ভবতি নতু পূর্মনিরত্যে নিত্যবিহিতঃ এতচ্চ

৪৫৩। ভ্রাতুন স্ত**ে।** স্ত্রাতা বিপ্র: বিপ্রস্থ প্রশস্ত্রাতা ইত্যর্থ:। অস্তর্তো তু। চৌরভ্রাতৃকঃ।

8৫৪। স্বাঙ্গনাড়ীতন্ত্রীভ্যাঞ্চ।
বহুনাড়িঃ কায়ঃ বহুতন্ত্রীঃ গ্রীবা। অস্বাঙ্গাভ্যান্ত্র। বহুনাড়ীকো
দিবসঃ বহুতন্ত্রীকা বীণা।

৪৫৫। নিরঃ প্রবাণ্যাঃ। নির্গতা প্রবাণী শলাকা যম্মাৎ স নিষ্পুবাণিঃ পটঃ।

ভাসকৃতা দর্শিতং রক্ষিতেনাভ্যপগতং অন্তে তু ব্যাথ্যানমেতদনভ্যপগম্য কল্যাণপঞ্চমীকঃ পক্ষ ইতাত্রাপি নিত্যমের কমিচ্ছন্তি। ক্রতসমাসাপ্তান্ত্র্ । প্রিয়পথং প্রিয়ধুর ইত্যভায়মভিপ্রায়ঃ। যদা বেতি স্ক্রং ক্রিয়তে তদা বছ্রীহে। কো বা ভবতি ইতি স্কার্থং এবঞ্চ সতি প্রিয়পথং প্রিয়ধুর ইত্যক্র সমাসাপ্তোংপত্তেঃ প্রাণেব কো বা ভাৎ এতৎপরিত্য কপক্ষে ধাগাদেরৎ সংগ্রেতি অন্তবিষ্যতি। অৎপ্রত্যায়ান্তাদের কোহপি ত্যাদিতি ব্যাথ্যানত্ত ন ক্ষরসম্ম। এক্মিরের সমাসে একদৈর সমাসান্তব্যন ভবিত্রামতি ন সংগচ্ছতে উভয়োঃ প্রত্যায়ারারেকদা সমাসান্তব্যবিহাবে সমান্তব্যক্রিত্যাদাবাদেশ এব সমাসান্তঃ অসংজাতককুদিত্যাদো অলুগের সমাসান্তঃ অত্যে ন কপ্রত্যয়ঃ।

(৪৫০)। স্ততি: প্রশংসা। স্ততৌ গম্যমানায়াং ভ্রাতৃশকাছহত্ত্রীহৌ কোন ভবতি। স্ততিরত্র ভ্রাতৃবাচ্যস্থৈৰ ভবতি। স্থ্ভ্রাতা ইত্যত্র ঋদাদিছাৎ কপ্রান্থিঃ।

(৪৫৪)। বাঙ্গে চ তে নাড়ীতন্ত্রো চেতি স্বাঙ্গনাড়ীতন্ত্রো তাভ্যামূক্তরে কো ন ভবতি। বহুনাড়িরিতি স্ত্রীপ্রতায়স্থ চেতি হ্রস্থ: বহুতন্ত্রীরিতি
ত্রাদেরী স্ত্রিয়ামিতি ঈপ্রতায়াস্তক্তরীশক্ষো ধমনীবচনঃ ন রুদীত ইতি হ্রস্থনিষেধঃ। বহুনাড়ীক ইতি কেটিং হ্রস্থনিষেধঃ নাড়ীতি দিনস্থ ঞিংশো ভাগঃ।

(৪৫৫)। নির: উত্তরস্থা: প্রবাণ্যা বছরীহো কো ন ভবতি।

80%। अग्रतमान्छ।

বহুতোয়ান্ বহুবাঃ শ্রোয়স্তো বস্তাঃ সা বহুতোরসী।

৪৫৭। নান্দিচ।

विश्वाप्तवः विश्वयनाः।

৪৫৮। নঞ্জুতুর্ভ্যোহস্ প্রজামেধাভ্যাম্। অপ্রজাঃ তুপ্রজাঃ তুপ্রজাঃ অমেধাঃ স্থামধাঃ দুর্মেধাঃ।

৭৫৯। অন্যতোহপীত্যেকে। অল্লমেধাঃ মন্দমেধাঃ।

প্রবাণাতি বেঞ্ভন্তানে ইত্যমাদ্ধিকরণে ওনট্রুতোহত উত্তর ইতি । পথং যস্তাং শলাকায়াং বন্ধং যুজ্ঞতে সা প্রবাণাতি।

(১৫৬)। বছরীইে সিয়স্থানার উত্তরে কোন স্থাৎ। বছপ্রেরানিতি প্রশন্তশকাদীয়স্থা: প্রাদিঃ প্রিরাদেরিমেটেরসাবিতি প্রশন্তশকাদীয়স্থা: প্রাদিঃ প্রিরাদেরিমেটেরসাবিতি প্রশন্তশক্ষ স্থানে প্রাং বছরের শেরাংসাহস্তেতি বহুরীছিঃ বছপ্রেরংশকাৎ অক্তসমাসাম্ভাছেতি প্রাপ্ত কন্ত নিষেধঃ স্ট্রানিদিত্যাদিনা মুম্ দীর্ঘোমহৎসাস্তোনাবিতি দীর্ঘঃ বছপ্রেরসীতি উনিবাদী কাদিশ দাদেরিতি প্রাপ্তত্ত কন্ত প্রায়ো নামগ্রহণে কিন্তবিশিপ্তস্থাপি গ্রহণমিতি নিষেধঃ শ্বীপ্রত্যর্বা চেতি প্রাপ্তসা হুম্বস্য ক্রাহাবিতি নিষেধঃ।

- (৪৫৭)। বছত্রীকো বিহিতঃ কঃ সংজ্ঞাগাং বিষয়ে ন স্যাৎ। বিশ্ব-দেব ইতি বিশ্বো দেবো যস্যেতি এবং বিশ্বযশাং।
- ় (৪৫৮)। নঞ্ স্থ গুর্ ইত্যেতেভা উত্তরাভাং প্রজামেধাভাামৃত্তরে বছরীহাবদ্ ভবতি। অপ্রজা ইতি অবিদামানা প্রজা যুগোত বছরীহিঃ নঞোহস্থানাঞ্চেতি বিদামানপদলোপঃ অদিল গিতাকারলুক্। স্থপ্রজা ইতি স্বস্থিতা প্রজা অন্যোতি বছরীহিঃ প্রাদেঃ ক্বন্তুস্য বেতি স্থিতপদলোপঃ এবং চুম্ম্রজাঃ।
- (৪৫৯)। অন্ততাহিপি উত্তরাভ্যাং প্রস্থামেধাভ্যাং বছব্রীহাবস্ ভবতি।
 বেক ইত্যুক্তম্ অবস্থান্তিস্থচনাথম্। নিয়তোনাহরণবিষয়কৈতং। তথাহি
 মন্দালাভ্যাং মেধায়া ইতি চক্রবর্দ্ধমানস্থান্। প্রোত্তিগগৈর তে রাজন্
 মন্দক্স্যাল্লমেধসং। অমুবাকহতা বৃদ্ধিনৈ যা সন্দোপদর্শিনীতি শিপ্তপ্রযোগো
 জ্যাদিভ্যনাপি দর্শিতঃ।

৪৬০। অকৃতসমাসান্তরাদ্ধর্মাদন্। প্রিয়ধর্মা সাক্ষাৎকৃতো ধর্ম এতিঃ সাক্ষাৎকৃতধর্মাণো বেদিতবা ইতি ভাষ্যম্। ^{*} কৃতসমাসান্তরাত্ত্র। প্রমঃ স্থর্মেরা যস্য স প্রমস্থর্মার। অমুপালিতকুলধর্মাঃ।

৪৬**১। ধনুষঃ সলোপশ্চ।** চক্রধন্বা।

৪৬২। নান্নি বা। পুষ্পাধন্বা পৃষ্পাধকুঃ

৪৬৩। স্থংরিততৃণদোমেভো জম্ভাদন্তাহারয়োঃ। শোভনো জম্ভো২স্থ স্কন্তা হরিতজম্ভা তৃণজম্ভা সোমজম্ভা।

⁽৪৬০)। অরুতং সমাসান্তরং যত্র তমাদ্বর্শশদাধ্বরীহাবন্ ভবতি। প্রেরধর্মেতি স্থাট দীর্ঘ ইত্যাদিনা দীর্ঘ নোনান্তস্যেতি নলুক্ সাক্ষাংক্তো ধর্ম এতৈরিতি বাক্যোপদর্শনং ত্রিপদে বছরীহাবন্ ভবজীতি হুচনার্থং কেবলাং পুর্রপদাৎ পরো যো ধর্মশন্ধঃ তমাদন্ ভবতি ন পদসমুদায়াৎ অভিন্নপদে বছরীহৌ ন ভবতীতে চক্রবর্দ্ধমানজয়াদিত্যাদয়ঃ তন্নিরাসায় ভাষামিত্যক্তং ন হি প্রত্যক্ষমৃতিব্যধনীয়া ভবতি। পরমঃ স্থধন্মেহস্যোত ধর্মশন্দেন দহ প্রথমং তৎপুরুষঃ ততো বছরীহিঃ পরমঃ শোভনো ধর্মো-হস্যেতি ত্রিপদে বছরীহৌ তু গরমস্কর্মদা ইত্যেব ভবতি। অমুপালিতক্রলং ধর্মোহিন্যেতি বছরীহাবন্ ভবতি। রুতসমাসান্তরোহত কুলশন্ধো নতু ধর্মশন্ধঃ চক্রবর্দ্ধমানী বিকরেনানমিচ্ছতঃ।

⁽৪৬১)। বহুবীহো ধন্ম:শব্দাদন্ ভবতিং সলোপশ্চ। চক্ৰধৰা ইতি চক্ৰমিব ধন্মরদ্যেতি বহুবীহিঃ চক্ৰবদাক্ষর্যেণ কুণ্ডলীভূতত্বাং। ধন্ময়ঃ সম্যোতি ন কুডং বৈচিত্র্যার্থম্।

⁽३७२ । वहदारो मः आत्राः सङ्ग्यनामन् उवि व। मानापकः।

⁽৪৬৩)। স্থ্যরিত তুণ সোম ইত্যেতেভা উত্তরাৎ দম্ভে আহারে

৪৬৪। দক্ষিণাদীম দ্বিধ্বণিতদক্ষিণাকে ম্গে। দক্ষিণেম কুরঙ্গকঃ।

ৰকানিঃ ব্ৰজানি<u>।</u>

৪৬৬। স্থরভূত্রপৃতিস্তভ্যো গুণবাচিগন্ধাৎ।
স্থরাভর্গন্ধাংশ্য স স্থরভিগন্ধিঃ উদ্গন্ধিঃ পৃতিগন্ধিঃ স্থানিঃ।
অহাত্র। তুর্গন্ধাং। তুর্গন্ধিরিভ্যসাধুং। অগুণবাচিনস্তা। শোভনানি গন্ধদ্রব্যাণি অস্থাং সা স্থান্ধা বিপণিং। ওথাত ভটিং, আফ্রামিন্
বান্ গন্ধবহং। স্থান্ধস্তেনারবিন্দব্যতিষঙ্গবাংশ্চেতি।

চ বর্তমানাৎ জন্তশকাৰ্চ্ত্রীগাবন্ ভবতি। তৃণজন্তেতি অত্র তু দন্তে ৰাচ্যে তৃণমিব জন্তোহস্যেতি বাক্যম্। আহাঁরে তু তৃণং জন্তোহস্যেতি। এবং সোমজন্তা ইত্যত্রাপি। এভ্যোহগুতন্ত পতিতজন্তঃ। দন্তাহারমোরিত্যর্থো-পদর্শনং স্পটার্থং নত্ব্যান্তরনিরাসার্থং তদিতরাস্তবাৎ দল্তে জন্তাশকঃ জীলিক ইতি বর্দ্ধানে। নত্তে ।

- (৪৬৪)। দক্ষিণশকাত্ত্তরাৎ স্বর্ম ইত্যন্তাৎ ব্যাধব্রণিতদক্ষিণাক্ষে মৃধ্যে বাচ্যে বছরীহাবন্ ভবতি। ব্যাধব্রণিতদক্ষিণাক্ষ ইতি কিন্? স্বয়ং জাতে ব্রেণে, দক্ষিণের্মো মৃগঃ। মৃগ ইতি কিন্? দক্ষিণের্মো বরাহঃ। মৃগ ইত্যুপলক্ষণং তেন ব্যাধব্রণিতদক্ষিণাক্ষেহ্নাম্বাণি ভবতীতি কেচিৎ।
- (৪৬৫)। বছরীহো জায়ায়া: উত্তরে ইছবতি। জা**য়ায়াঃ স্থানে** জানাদেশ-চঃ। তকারো মুথস্থার্থঃ। বৃদ্ধজানিরিতািউক্তপ্ংসান্**রী** ইতাকুবুক্তৌ ক্তবিশেষণে চ বছরীহাবিতি পুংবড়াবঃ।
- (৪৬৬)। স্থরতি উৎ পৃতি স্থ ইত্যেতেতা উত্তরাৎ গুণবাচিগদশদা-হত্তরে বহুত্রীহাবিস্তবতি। স্থানা বিপণিরিতি। অত্র গদ্ধশনো দ্বব্যে বর্ততে ইতি ন গুণবাচী গদ্ধ: স চ বিপণে: সম্ভবতি অস্যা পদ্ধবতীশ্বাৎ। আত্রায়িবানিত্যাদি পৃথিব্যা এব গদ্ধবতীশ্বাৎ ন গদ্ধবহো গদ্ধবান্ ভবতি কিশ্বরবিন্দব্যতিষস্পবহাৎ সংযুক্তসমবায়েন স্থাদ্ধ ইতি বিশেষণং ভশ্মাদ্ধ

८४०। ब्यझार्थाक।

অব্লং স্বতমত্র ভোজনে স্বতগন্ধি ভোজনম্।

865 । **উ**পমানাচ্চ।

পৰাগন্ধ ইব গন্ধোহস্যেতি পদাগন্ধি:।

৪৬৯। ইচ্ ক্রিয়াব্যতীহারে। দণ্ডাদণ্ডি।

৪৭০। ক্রিয়াবিশেষণান্দিদগুদেঃ। বৌদগুবস্থাং ক্রিয়ায়াং দ্বিদণ্ডি প্রহরতি বিমুবলি একপদি সংহতপুচ্ছি।

গন্ধশকোহরবিন্দমাচটে। মাঘে তু, ভয়বাণসহকারস্থগন্ধী মধুনি ইতি খাণবাচ্যের গন্ধশক্ষঃ সহকারজব্যসংক্রমণাৎ মধু গুণবং। তথাচ ভট্টবার্ত্তিকং, তিলাশ্চম্পকসম্পর্কাং প্রাপ্নুবস্তাধিবাসতাম্। রসালগন্ধাস্তদ্গন্ধং সর্ব্বে সাংক্রামিকা গুণাঃ। পবনে তু গন্ধসংক্রান্তিনান্তি তদ্যাপার্থিবত্বাং যে তু বৈশেষিকাদয়ে গুণসংক্রান্তিং ন মন্তন্তে তন্মতে ভল্লবাণসহকারস্থগন্ধ ইতি ভবতি অতএব গন্ধান্তে চান্দ্রাঃ।

- (৪৬৭) অন্নার্থাচ্চ গন্ধশন্দাছন্তরে বছত্রীহাবিদ্ধবৃতি।
- (৪৬৮)। উপমানবাচকাচ্চ পরো যো গন্ধশন্তব্যাবহুত্রীহাবিস্তবতি। পদাগন্ধি রতি পূর্বার্থেত্যাদিনা গন্ধপদলোশ:।
- (৪৬৯)। ক্রিয়াব্যতীহারে বছরীহাবিজ্ভবতি। পূর্বেস্ত্রাদেব ইদন্থ-বৃত্তো প্রাপ্তায়ামত ইজিতি ল্রান্তঃ প্রদেশান্তরে প্রয়োজনমপশুদ্তিরপান্তম্। তথাহি তিষ্ঠালা দিশ্চেত্যক্র ইচ্প্রত্যয়ান্ত ইতি তিষ্ঠাদ্যাদিয়াদব্যায়ীভাবেন স্পণ্লুক্প্রয়োজনমন্ত্যেব। তে হি ল্রান্ত্রাপি ইৎপ্রত্যয়ান্ত ইতি পঠন্তি এবক সতি স্বর্ভিগন্ধিরিত্যাদৌ অব্যয়ীভাবঃ স্যাৎ। দ্যাদণ্ডীতি দথ্যেশ্চ দক্ষৈত প্রহৃত্য ইদং যুক্ষং বৃত্তমিতি ভৃতীয়াসপ্রমান্তয়োরিত্যাদিনা বছরীহিঃ কচিদন্ত্রাপীতি দীর্ষঃ।
- (৪৭০)। ক্রিয়াবিশেষণাদ্ দিদগুদ্ দেব ছত্রীহাবিজ্ভবতি। দিদগু প্রহরতীতি পূর্ববিৎ।

৪৭১। উভয়াদন্তহন্তকর্ণাঞ্জলিপাণিভ্য উভয়স্থোভো বা।

উভয়াদন্তি উভাদন্তি উভয়াহন্তি উভাহন্তি উভয়াকর্ণি উভাকর্ণি উভয়াঞ্চলি উভাঞ্চলি উভয়াপাণি উভাপাণি।

8৭২। বাহোলুক্ চ।
উভয়াবাহু উভাবাহু। অক্রিয়াবিশেষণাতু। দিদণ্ডা শালা একপাদ্রদ্রঃ। নিকুচ্যকর্ণি ধাবতীত্যাদ্যপি দৃশ্যতে নিকুচ্যকর্ণাবিত্যর্থঃ।
প্রোহ্যপাদি হস্তিনং বাহয়তি প্রোহ্যপাদাবিত্যর্থঃ।

৪৭৩। সহ: সো বা। বহুত্রীহো সমাসে সহশব্দঃ সো বা ভবতি। সহপুত্রঃ সপুত্রঃ সহ সমানমুদরমস্থেতি সহোদবঃ সোদরঃ। তথাচ ভট্টিঃ, স্বং সোদর-

⁽৪৭১)। উভয়াছন্তরেভ্যো দস্তাদিক্তা: ক্রিয়াবিশেষণেজ্যো বছ-ব্রীহাবিজ্ভবতি। উভয়স্থ স্থানে ষ্ট্রভাদেশক বা। পক্ষে কচিদন্যত্রাপীতি দার্ঘ:। দ্বিচনস্থিতাবুভ: প্রয়োক্ত্যোভয়মিতি লক্ষণেন নিয়মাদক্র উভপ্রয়োগো নাস্তীতি উভাদেশবিধানম্।

⁽৪৭২)। ক্রিয়াবিশেষণাছভয়াছতরাদ্বাহোব ছব্রীহাবিজ্ভবতি তর্ক্ চ। উভয়ভ স্থানে উভাদেশক বা। লুপ্তঞালুপ্তবং কচিদিতি ইচ্প্রভা-য়াস্তাদব্যয়ীভাবঃ। একপাদিতি একঃ পাদোহভোতি বছব্রীহিঃ স্বসংখা-গ্ঢ়াচ্চেত্যকারলুক্। নিকুচাকর্দি ধাবতীত্যাদ্যপি দৃশ্যত ইতি বছল-বচনাদিতি শেষঃ। বছব্রীহো বিহিত ইচ্ কর্মধারয়ে ন প্রপ্রোতীতি বিধানম্। নিকুচাকপৌ প্রোহ্বপাদাবিতি বিগ্রহেণ ময়ুরবাংসকাদিশাং সমাসঃ।

⁽৪৭৩)। সপ্ত ইতি প্রেণ সহ বর্ততে তৃতীয়ান্তেন সহস্ত তৃলা-বোগে ইতি বছরীহিঃ সোদর ইতি অন্তপদার্থো বছরীহিরিতি বছরীহিঃ। সপক্ষ ইত্যাদো চানেন সমাসঃ সধর্মা ইতি অক্সতসমাসাভরাজর্মাদমিতি অন্। ভাপবৃত্তিরিত্যুক্তঃ নৈত্যামনসন্মত্মিতি অ্চমিতৃং ভ্যাতত্ত সমানো দুগাদাবিত্যক্ত দর্শমিব্যতি। সহক্ষত্তি সহাৎ কৃঞ্ বৃধ ইতি বন্

স্থাতিমদোদ্ধতস্থেতি। এবং সপক্ষঃ সধর্মা সঙ্গাতীয় ইতি ভাগ-বৃত্তিঃ। অবহুত্রীহোঁ তু। সহকৃত্বা সহযুধ্বা।

৪৭৪। গোবৎসহলেন্ধাশিষি। স্বস্তি চৈত্রায় সহগবে সগ্মবে সহবৎসায় স্বংসায় সহহলায়। সহলায়। অন্যত্র তু। স্বস্তি ভবতে সহপুক্রায় দহভৃত্যায় সহবন্ধবে।

৪৭৫। নিত্যং সংজ্ঞারাম্। সশিংশপং স্থলং স্বাহ্মথং সপলাশম্।

৪৭৬। আধিক্যে। সকাকলীকো দ্রোণঃ।

তরিমিত্তোপপদশু চেতি তৎপুরুষঃ প্রির: সহরুছা যশু স সহরুছপ্রির: প্রিয়সহরুছা সর্বান্ত: প্রিয়ো বেতি পঞ্চে পূর্বানপাত: । অত্র কথং সাদেশো ন
ভবতি। উচ্যতে। বছ বীহাবিত্যশু বিভক্তিবিপারণামাৎ ষঠ্যস্তত্বমঙ্গীকরণীরং অবয়বাবয়বিসপ্রের ষধী বছরীহেরবয়বে। যং সহশব্দঃ তশু সাদেশঃ
প্রোপ্রোতি নাত্র বছরীহেরবয়বেঃ সহশব্দঃ কিন্তু সহরুছশক্ষঃ অবয়বাবয়বস্ত্র
সমুদারাবয়বো ন ভবতীতি ব্যবস্থিতম্।

(৪৭৪)। পূর্বেণ প্রাপ্তে নিয়মার্থং বচনম্। আশিষি বিষয়ে গো-বৎসহলেদেব পরেষু সহশন্ধঃ সো বা ভবতি। দগব ইত্যাদৌ পূর্বেবং সমাসঃ গোরপ্রধানভান্তভেতি ব্রস্বাহে ক্ততে নমঃস্বাধীত্যাদিনা তৃথী জন্ভিতোরিত্যাদিনা তৃণঃ। অন্তত্ত্ব তিতি অভেষু পরেষু নিয়মাৎ পূর্বেণ প্রাপ্তঃ সভাবোন ভবতি।

(৪৭৫)। বহরীহো সংজ্ঞায়াং বিষয়ে সহ: সো নিত্যং ভবতি। নিত্যগ্রহণং স্পষ্টার্থং পূর্বেণ প্রাণ্ডে শক্ষণারস্ভাদেব নিত্যবিধানং বভাতে।

(\$9)। আধিকো গম্যমানে বছত্রীছো নিতাং সহ: সো ভবতি । সকাকলীকো ডোণ ইতি কাকল্যা অধিকো লোণ ইত্যর্থ:। এবং স্মাসঃ কার্যাপণ:। ৪৭৭ : গ্রন্থসমাপ্তো । সাঙ্গাদ্ বেদানধীতে ।

৪৭৮। অনুমেরে।
সাগ্রিঃ কপোতঃ গৃত্তে কপোতপাতাদগ্রিতানুমীরতে ইত্যগ্রির্দুমেয়ঃ এবং সপিশাচা বাত্যা।

৪৭৯। অব্যয়ীভাবে চাকালে। সচক্রং নিধেহি। যুগপচ্চক্রং সমারোপয়েত্যর্থ;। কালে তু— সহপূর্ববাহুম্।

৪৮০। সমানো দৃগাদে ।

দৃগাদে পরে সমানশব্দঃ সো ভবতি। সমানং দর্শনমস্থ সমানমাত্মানং পশ্যতি বা সদৃক্ সদৃশঃ সদৃক্ষঃ। দৃক্ দৃশ দৃক্ষ ক্যোতিস্

⁽৪৭৭)। গ্রন্থসমাণ্ডো গম্যুমানায়াং বছত্রীহো নিত্যং দহঃ সো ভবতি। সাঙ্গান্ বেদানধীত ইতি অঙ্গানাং সমাপ্তিং যাবদিত্যর্থঃ।

⁽৪৭৮)। বছরীহৌ সমাসে অনুমেরে গ্রামানে নিতাং সহ: সো ভবতি। অন্থমেরে চানুমাপকেনাবশুস্তাবামিতি কপোতঃ প্রযুক্তঃ। সপি-শাচা বাত্যেতি বাত্যরা অনুমানভৃতরা সাক্ষাদন্পলভামানোহত্ত পিশাচো-২ন্দুমীরতে। অনুসুমেরে তু—বিকর এব সহবিহান্মেবঃ।

⁽৪৭৯)। অব্যরীভাবে চ সমাদেহকালবাচিনি পরে সহ: সো নিত্যং ভবতি। সচক্রং নিধেহীতি যৌগপদ্য ইত্যব্যসীভাব: অব্যসীভাবেহদস্তাৎ স্থপোহপঞ্চম্যা ইতি ম:।

⁽৪৮০)। বছরীহাবিতি নির্ত্তম্। উপদর্শিতবাক্যবরার্থেন সমানতাদানেদ্ শিষ্টসোঁ চ কর্মোপমারামিতি কিপ্ পক্ষে টকারসকারো চ কোহস্ত
ইত্যাদিনা শস্য ক:। সদৃক্ষ ইতি ইচ্কোদিত্যাদিনা বছং তরিমিকোপপ দ্যা
চেতি তৎপুরুষং সজ্যোতিরিত্যাদে সমানং জ্যোতিরস্যেতি বছরীছিঃ
অথবা সমানং জ্যোতিরিতি একাদীনাক্ষেতি কর্মধারয়ঃ ব্রদ্ধ বেদস্তদ্ধারনার্থং বদ্বতং তদপি ব্রদ্ধ তক্তরভীতি শিন্ ক্রন্সচারী সমানো ব্রন্সচারী

জনপদ নাভি রাত্রি নামন্ গোত্র রূপ স্থান বর্থ বয়স্ বচন সেভূ বন্ধু ব্রন্ধাচারিন্ তীর্থ্য পিঞ্চ পত্নী। বামনস্ত পুনঃ প্রক্ষধর্মজাতীয়া-অপি পঠতি।

. ৪৮১। উদর্ব্যে বা। সমানোদর্য্যঃ সোদর্য্যঃ।

৪৮২। নামগোত্ররপস্থানবর্ণবয়োবচনজাতীয়ে বেতি চান্দ্রাঃ।

সনামা সমাননাম। সীগোত্রঃ সমানগোত্রঃ সরূপঃ সমানরূপঃ সন্থানঃ সমানস্থানঃ স্বর্ণঃ সমানবর্ণঃ স্বয়াঃ সমানবয়াঃ স্বচনঃ সমানবচনঃ স্ভাতীয়ঃ সমানজাতীয়ঃ।

৪৮৩। ক্যাদিঃ কিমাদেঃ।
দৃক্দৃশদৃক্ষেয়ু পরেয়ু কিমাদেঃ স্থানে কী ইত্যেবমাদির্ভবতি।
কিমিব দর্শনমশু কিমিব পশুতি বা কীদৃক্ কীদৃশঃ কীদৃকঃ।

সত্রন্ধচারীতি তদ্যৈব বেদাখাস্য ত্রন্ধণো সদৃশং ত্রতং চরতীত্যর্থ:। তীর্থা ইতি পঠাতে সমানে তীর্থে ২সতীতি সতীর্থা: তীর্থশব্দেন গুরুক্ষচাতে সমানতীর্থাত্তর বাসিনীতি যং। পদ্মীতি পঠাতে সমান: পতির্যন্তা ইতি সপত্নী পত্যুরিদ্বশ্লোঢ়ায়ামিতামুর্ত্তৌ একাদিপূর্বাচেতি ঈ ইকারস্য নকার:। দৃক্ দৃশ দৃক্ষ জ্যোতি: স্থান বন্ধো বর্ণ রূপ বচনানি স্থার্ত্র সচারি-পত্নী জনপদগোত্রাণি নাম নাজী চ সেতৃবন্ধুরাতিপিগুর্গ্তীর্থাশ্চ দৃগাদয়ে। নিয়তা অমী। এভাছেক্সত্র সমানশীল:।

⁽৪৮১)। উদর্য্যে পরে সমানঃ সো ভবতি। সমানোদর্য্যঃ সোদর্য্য ইতি সোদরসমানোদরাক্তর শবিতরি ইতি যৎপ্রতায়াস্তনিদেশাং সমানোদরতা।

⁽ ৪৮২)। চক্রলক্ষণমেতত্পক্তস্তং বিকরার্থম্।

⁽ ४৮०)। पृशापाविष्ठि यरबास्यास्य (उन पृक् पृत्र पृत्राक्षत्रं व्याक्र

86-81 देनम जैंड।

ञेष्क् ञेष्ट्यः ञेष्ट्यः ।

৪৮৫। কিমিদমোর্যতো ব্রস্থান্ত।

কিয়ান ইয়ান্। 🍒

८५७। बालानारमञ्ज्ञः।

ত।াদৃক্ তাদৃক্ যাদৃক্ অঁগ্ৰাদৃক্ ভবাদৃক্ অমৃদৃক্ খাদৃক্ মাদৃক্।

৪৮৭। বতো চ ষত্তদেতদাম।

যাবান্ তাবান্ এতাবান্।

৪৮৮। অহাতাহাশাদে।

গৃহত্তে। ব্যাখ্যানতো বিশেষার্ধপ্রতিপত্তে:। যথা লোকা ইত্যুক্তে কাপি সপ্ত গৃহত্তে কাপি ত্রন্ধ: পন্নোধর ইত্যুক্তে কাপি সপ্ত কাপি চন্ধার: তথেহাপি ব্যবহর্তবাম্।

- (৪৮৪)। দৃক্ দৃশ দৃক্ষেযু পরেষু ইদমঃ স্থানে ঈর্ভবতি।
- (৪৮৫)। কিম্ ইদম্ ইত্যেতরোর্যতৌ পরে কী ঈ ইত্যেতাবাদেশী ভবতঃ। হস্ত্রত। কিয়ান্ ইয়ানিতি কিং পরিমাণমস্ত ইদং পরিমাণমস্য ইতি বাক্যে কিমিদস্তাং যতুরে তি যতুঃ উগিভানু মু অপ্তরেত্যাদিনা দীর্মঃ।
- (৪৮৬)। দৃক্ দৃশ দৃক্ষেষ্ পরেষ্ তাদাদেরস্তো বর্ণ আন্তবতি।
 তাদাদিঃ সর্বাদ্যস্তর্গণঃ। অমৃদ্গিতি অদস ইতাস্য থাদে। চেতি দস্য মঃ
 অন্তসিদ্ধার্দ্তো মাদীর্ঘানারিত্যাকারস্ত উকারঃ এবং তাদৃক্ তাদৃশঃ
 তাদৃক্ ইত্যাদয়েহপি। তথৈব তাদৃক্ এতাদৃক্ ষুমাদৃক্ অমাদৃগাদ্যোহপি জ্যোঃ। কিমিদমোস্ত পূর্ববিধেরেবাপবাধকঃ।
- (৪৮৭)। বতো চ পরে যন্তদেতদ্ ইত্যেতেষামন্তো বর্ণ আন্তৰ্তি। যাবানিত্যাদি যন্তদেতভ্যে। বভুন্নিতি বভু মুম্ দীর্ঘশ্চ।
- (৪৮৮)। আশাদৌ পরে অস্তর্শকত স্থানে অন্তদাদেশো ভবতি। অক্তা আশা অক্তদশা ইতি একতা বিগ্রহদর্শনেন সর্কাত্রৈব বিশেষণসমাগঃ

জন্মা আশা অন্যদাশা অন্যদাশী: অন্যদাশ্ব। অন্যো হন্তং বা স্থিতঃ অন্যদাশ্বিতঃ অন্যদুৎসুক: অন্যদৃতিঃ অন্যদাগঃ।

৪৮৯। ষষ্ঠীতৃতীয়য়োর্নেষ্ট আশীরাদিষু সপ্তস্থ।
অক্সন্থ আশা অন্যাশা অন্যেনান্থিতঃ অক্যান্থিতে। অক্সত্র। অন্যেনান্যয় বা কারকঃ অন্যৎকারকঃ অন্যুদীয়া। ক্যাশা আশিস্
আস্থা আস্থিত উৎস্থক উতি রাগ কারক ঈয়।

৪৯০। ত্র্রথি বা। অন্যাস্থ্য অয়মর্থ: অন্যার্থ: অন্যদর্থ:।

৪৯১। ষষ্ঠীভৃতীয়য়োর্নেফীঃ। অন্যস্থান্যেন বা অর্থঃ অন্যার্থঃ।

স্টিত: অন্তোহন্তং বা স্থিত ইতি বিগ্রহং কুর্বন্ মৃত্তিকং গতাদেরাক্তিগণ
 খাং দিতীয়ায়া গতাদৈয়নিতি তৎপুরুষমুপদর্শিতবান্। উতিরিতি অবধাতোঃ

 জি: কিবস্তন্সেত্যাদিনা বকারস্য উ:।

⁽৪৮৯)। বঠ্যাস্থতীয়ায়াশ্চ যদা সমাসন্তদা আশীরাদিয়ু সপ্তস্থ পরেষ্
অক্সদাদেশো নেষ্টঃ নাতিমতঃ। আশীরাদিয়ু সপ্তস্থিতি পাঠন্ধ শাস্তান্ত্ররদর্শনাৎ প্রমাদক্তঃ। আশেত্যাদিয়ু সপ্তস্থিতি দ্রষ্ঠবাম্। অক্সভাশেতি
অকরণাদাবশ্রাদ্যৈঃ ষঠ্যা ইতি, সমাসঃ। অক্সনান্তি ইতি কৃতা কর্ত্ত্বক্রণয়োর্ব ল্লমিতি সমাদাঃ। সপ্তস্থিতি নিয়মাৎ কারকে ঈয়ে চ পরে
ষষ্ঠাতৃতীয়য়োরপি ভবতি। অক্সদীয় ইতি তাদাদেরীয় ইতি ঈয়ঃ। আশীবাশাস্থান্থিত উত্যুৎস্করাগ্বারকা ঈয়য়চ।

⁽৪৯০)। অর্থলন্দে পরেহত্যশব্দস্তাষ্ট্রানাদেশো বা ভবতি। অত্যার্থ ইতি প্রয়োজনবাচ্যর্থেন নিত্যং বাচ্যলিক্ষতা চেতি তৎপুক্ষ: নিত্যসমাসে স্থপদবিগ্রহো নাস্টীতি পদাস্তরেণার্থকখনং ক্লডম।

⁽ ৪>>)। বঠাাং ভৃতীয়ারাঞ্চ সত্যাং যদা সমাসস্তদা আর্থে পরে-

৪৯২। শেষো রন্ধাৎ।

যদক্র লক্ষণে সর্বর্থা ন সম্ভবতি স শেষ: । বৃদ্ধানভিজ্ঞতরামুপজীব্য যথাসম্ভবং প্রকৃতিপ্রত্যয়ে তিদ্ধিলারাশ্চ পরিকল্পা ব্যুৎপাদনীয়া: । পৃষত্বদর্মক্ত পৃষোদর: পৃষদ্ধান্ বারিবাহকো বলাহকঃ
জীবনস্ত মূতো জীমূত: শ্বানাং শয়নং শাশানম্ উদ্ধৃং মুখমস্ত উদ্খলম্ উল্থলং পিশিতাশ: পিশাচঃ ক্রুবস্তোহস্তাং সীদন্তি বৃষী
মহাং রৌতি ময়ুরঃ দ্বীব তিষ্ঠতি দ্ধিলঃ অশ্লম্ক কপিলঃ অহৈব

২থস্থান্ত দেশে ন তবতি। অন্তম্ভার্থ ইতি ষ্টা সমাস:। অন্তেমার্থ ইঙি অর্থান্যেতৃতীয়ায়া ইতি সমাস:।

⁽৪৯২) ৷ বছত্র লক্ষণ ইভি লক্ষণমুদাগড়াং শাস্ত্রস শাস্ত্রমেব লক্ষণম্ শ্মিন্ শাল্পে ইত্যর্থ:। সর্বাবেতি সর্বপ্রেকারেণ মুখালক্ষণেন সমুচ্যোর্থ-ত্মন চকারেণ চ যোগবিভাগেন বছলবচনেন বা ন সম্ভবতি ন সিধ্যতী-তার্থ: ৷ বুদ্ধাদিতি যজ্গর্ভাদেরিতি পঞ্চনী অতএব ব্যাচকার বৃদ্ধানভিজ্ঞ-ভরাত্বপঞ্চাত্ব্য ইন্ডি কে পুনরভিজ্ঞতরাঃ যে অবিসংবাদিনো বিদিত্বিদ্যাঃ। তথাটোকেং, বর্ণাগমো বর্ণবিপর্যায়শ্চ ছৌ চাপরৌ বর্ণবিকারনাশে। ধাতো-স্তদর্থাতিশয়েন যোগস্তত্বচ্যতে পঞ্চবিধং নিঞ্ক্তমিতি। পুষত্বরমস্ত পুরোদর ইতি ওক।রলোপঃ পৃষ্ধানিতি বিকারশ্চ ক্রিয়তে বারিবাহকো বলাহক ইতি পূর্ব্বপদস্থ বকারাদেশঃ উত্তরপদাদের কারন্ত লছং বিকারঃ জীবন্ত 🔻তা জীমৃত ইতি মৃঙ্বহুনে ইতাত্বাৎ জঃ বন ইতাত লোপ: শ্বানাং শরনং শ্রশানমিতি শবশক্ষ স্থানে শাদেশঃ শরনস্ত শানঃ উদ্থলমিতি উদ্ধি-শব্দম্পৰক্ষোঞ্দুখন উড়ুখন ইত্যেতাবাদেশৌ ভবতঃ: ভো লো বা লক ড ইতি ডভ লে কতে উল্খলম্। পিশিতাশঃ পিশাচ ইতি পিলিতঃখা-তীতি কৰ্মণো ণড়িতি গট্পিশিত আশ ইত্যেতনোঃ পিশ আচ হত্যেতা-বাদেশৌ ভবত:। বুষাতি সদেরধিকরণে অক্তরোহাপ দৃশুত ইতি ডঃ अवश्यम प्रश्न व हे हैं है जारिक्या विषय में अवश्व । अयूत है कि है विषय है कि

ভূতম্ অন্তুতং কং ন দর্পয়তি কন্দর্প: কানপি দিশং ন পশ্যতি.
কান্দিশীক: জায়াপতী জন্পতী দন্পতী তৃষ্টুপ্ ত্রিষ্টুপ্ । তথাচ
ছন্দ:শাস্ত্রে, স্বাগতা ভবতি তৃষ্টুবিয়ং সেতি। উৎপূর্বস্থিতেঃ
কিপ্ উষ্ণিক্ দে দশ বিংশতি: ত্রীণি দশ ত্রিশ্রাদিত্যাদি।

দুঙাদিত্বাৎ রৌতেঙে ক্লৈতে উকারলোপ: মহীশীকত স্থানে মহুভাব:। দধিথ ইত্যাদি দ্বি অব কপি ইত্যেতেভাঃ প্রদ্য তিঠতে স্থেহিধিকরণাবায়াভ্যা-মিত্যাদিনা অঙি ক্রতে সকারশু তকার: মহিথোহত্র পঠ্যতে তত্র ব্রেখাংপি। অন্ততমিতি অলৈয়ৰ ভূতমিতি বাকো অদ্যালক্ষ্যা আদাদেশ: ভূতশব্দে চ হুস্ব-ত্বম। কলপ ইতি নশকলোপ: দিতীয়ায়া অলুক্চ। কালিশীক ইতি অত্রাপ্যলুক্ দিশ ঈকাদেশণ্ট। জম্পতী দম্পতীভ্যত্ত জায়ায়া জংভাংৰা দংভাব-চ। তৃষ্ঠ,রিতি ত্রিপুর্বস্তন্ত: কিপ্উপসর্গপরতাভাবাৎ উপসর্গস্য মুনোতীত্যাদিনা অপ্রাপ্তং ষত্বং বিধীইতে পক্ষে তে: স্থানে তৃভাবণ্চ ষদীহ ভূভাবো ন স্যাৎ তদা যুক্তান্তবান্তবান্তবন্তসমূ গুরুষে সতি ছন্দোভঙ্গঃ স্যাৎ ভদর্থং স্বাগতেতাাছাদাহতম্। উঞ্জিগিতাত পূর্কাপদসা তলুক্ নিহে: যত্তঞ্চ কোহন্ত ইত্যাদিনা হস্য ক:। ছে দশেত্যাদিসমাহারে দিও: শতি প্রত্যয়ে ক্ততে দিদশস্থানে বিমাদেশত এবং শৎপ্রতায়ঃ ত্রিদশস্থানে ত্রিমাদেশঃ আদিগ্রহণাৎ চত্বারিংশদাদরঃ চত্বারিংশৎ পঞ্চাশৎ চতুর্দশ পঞ্চদশ ইত্যো-ভয়ো: স্থানে চ্থারিমাদেশঃ পঞা ইত্যাদেশত পূর্দ্মৰৎ শংপ্রভায়ত ৰষ্টি-রিতি তিপ্রতারঃ ষড়্দশস্থানে ষ্বাদেশশ্চ এবং সম্ভতিরশীতিঃ নবতিঃ সপ্ত দশঃ অষ্ট্রদশঃ নবং দশ ইত্যেতেষাং স্থানে স্প্রাশীনব ইত্যেতে আদেশস্তি প্রত্যয়শ্চ পূর্ববং শতুমিতি পূর্ববং তপ্রত্যরঃ দশ দশস্থানে শাদেশ:। এবং দশশতানি সহত্রং দশসহত্রং লক্ষং কোটরিভ্যাদ্যপি ব্যাকপঞ্চিৎ ব্যুৎপত্তিরিয়সুপদর্শিতা। এবং বিধা এব অমী শব্দাঃ সংখ্যোরে সংখ্যানে চ বুতুর: শিক্ষসংখ্যাবিধানঞ্চামীষাং স্বাভাবিকম্। তথাছি, বিংশত্যাদিনবত্য-স্তানাং কোটেণ্ড ন্ত্ৰীলিপ্ৰম্ অন্তেষ্ণং ক্লীবত্বম্ ইদস্তাদক্ত্যৰ্থাদিতি স্প্ৰভাৱেন বংশতী পুরুষা ইত্যপ্রি। উনা চামৌ বিংশতিশেতি বাক্যে উনবিংশতিঃ ৰ্য়েৰ সংখ্যরা বিংশভিসংখ্যা পূরিতা তরৈবোনা উনবিংশভি: বাচ্যা ভব- ৪৯০। ইণিবাদে বাঙোহস্তফীবগ'ড়তীয়ো বাদো বলশ্চ।

বাধাদস্থাপত্যং বাড্বলিঃ।

৯৯৪। তুরোহস্ত উ**দ্দাশে দে। ডশ্চ।** তুষ্থেণ দাশ্যত<u>ে দু</u>ড়াশ:।

৪৯৫। দন্ভে নলোপশ্চ।

ধ্য্থেণ দভ্যতে দূড়ঙ্গ।

ছুষ্খেণ ধ্যায়তি দুঢ্যঃ।

৪৯৬। নামে নো ণশ্চ।

হ্বংগেণ নাশ্যতে দুণাশ:। ৪৯৭। ধ্যে ধো দশ্চ।

তীতি সামর্থ্যালভাতে। সা চৈকৈব একোনা চাসৌ বিংশতিশ্চেতি বাব্যে একোনবিংশক্তি: এবমন্ত্রাসি।

- (৪৯৩)। ইণি সতি এদে পরে বাচোহস্তো বর্ণ প্রবর্গস্য তৃতীরে। ভবতি। বাদো বনশ্চ। বাচং বদতীতি কর্মণো পড়িতি এটা কাথাদঃ বাথাদস্যাপতামিতাখিরর্থে অদন্তাচ্চেতীন্। ড ইতি কর্ত্তব্য ট্রগতৃতীর ইতি কৃত্তং বৈচিত্র্যার্থম্।
- (৪৯৪)। গ্রোহস্ত উদ্ভবতি দাশে পরে দকারশ্চ ডঃ। দাশ ইতি।
 সপ্তম্যক্তং বিভক্তিবিপরিণামাৎ ষষ্ঠান্তমপীতি দকার ইত্যনেন সম্বধ্যতে তেন
 দাশস্য দকারো ডকারশ্চ ভবতীতি সম্বধ্যতে। স্ব্বেণ দাশভ ইতি
 দাশু দানে ইত্যমাং মণ্।
- (৪৯৫)। ছরোহস্ত উদ্ভবতি দন্তে পরে দকারো ডকারঃ নকার-লোপশ্চ। অত্রাপি পূর্ববং বিভক্তিবিপরিণামেন ব্যবস্থা। দূড়ভ ইতি দন্ত দন্তে পূর্ববং ঘণ্।
- (৪৯৬)। গুরোহস্ত উদ্বৃতি নাশে পরে নকারণ্ট ণকার:। অত্রাপি পূর্ববিদ্যবস্থা। দৃণাশ ইতি শশ্ অদর্শনে নাদিধাভোরস্তরি চেতি শব্ধ প্রোপ্তং হর ইতি মুবাধিদায় প্রাপ্রোহীতি গছবিধানম।
- (৪৯৭)। থাৈ চিস্তাহামিতাস্য কুতাব্সা প্রাদেরাদন্তাদিতাতি কৃতে হৎ ধা ইতি ক্লপং তদমুক্তরণমিদন্। ধাে পরে হরেছেও উত্তরতি। ধাে চত

৪৯৮। দ্বেরিদদ্বিশ্চ রহস্থাদৌ। বন্দ্রং মন্ত্রয়তে রহস্তং মন্তরতে ইত্যর্থং।

৪৯৯। মর্যাদায়াম্।

আচতুরং দ্বন্দং মিথুনাঃ পশবঃ। মাতা পুত্রেণ পোত্রেণ প্রপো-ক্রেণ চ মিথুনং যাতীতি মর্যাদা।

৫००। (छान।

দদ্দং ব্যুৎক্রাস্থা: ছো ছো ভিন্না ইত্যর্থ:।

৫০১। যজ্জীপাত্রযোগে। দক্ষং যজ্জপাত্রাণ্যানয় দে দে আনয়েতার্থং।

৫০২। অত্যন্তসহচরিতে লোকবিজ্ঞাতে।

দক্ষং সন্ধর্যনাস্থদেবো সাহচর্য্যেণ লোকে দ্বাবভিব্যক্তাবিত্যর্থ:।

অনত্যন্তসহচরিতে তু। দ্বো যুধিন্তিরার্চ্জুনো অলোকবিজ্ঞাতে

তু। দ্বো দেবদন্তযজ্জদত্তো নহি দেবদন্তযজ্জদন্তয়ে: সাহচ্যাং
সর্বলোকবিজ্ঞাতম।

৫০৩। কচিদশ্যত্রাপীত্যেকে।

(৪৯৮ ৪৯৯।৫০০।৫০১ ৫০২)। রহসাদো বাচ্যে দিশন্দ্য ইকারোহ
দ্বব্যিত দিশ্য। দল্যমতি মধ্যাদেদিনাদাবিতি মঃ। রহো গুপ্তিজ্ঞ তবং
রহসাং দিগাদেশদিতি যং রহস্যাং দল্ম্যা বাচ্যমিতি ইতরেতরবিষরভূত্যে

দিশকো রহস্যেহপুক্তঃ স্বার্থ এব মর্যাদাদৌ চ যুগ্মাথমাত্রযুক্তা দিশকোহ্বাৎপরোহরমেবা এরতে জ্বতএবাত্র ন দিবচনং লোকাশ্ররমালিক্ষ্যা নপৃংসকত্সন্তঃ। মর্যাদা স্থিতানতিক্রমঃ। আচতুৎমিতি দীমাতিব্যাপ্ত্যোরাদ্তিতি সীমার্থসাত্ত প্রারাদাদিশ্বাৎ পঞ্চমী জ্বপরবিহিরঞ্চাত্তঃ পঞ্চম্যা বেতাবার্মীভাবঃ শর্লাদেরবায়ীভাবে ইতাৎসমাসাত্তঃ। মিথুনশকোহরং মিথুননিপ্তাননীরে কর্মানি উপচারাষ্টতে:

(৫ • ৩ ।। দলানি সহত ইতি শীতাতপাদিক্লেশা দলং শ্বকীরা-স্বরুস্ত্নার এক ইত্যুক্তং যতো পতাত্ত্তিক ধ্রা কাৰাণাম্বেষ্ দশ্বং ঘন্দং যুদ্ধং খন্দানি সহতে কলহান্ সহত ইভার্পং। ঘন্দোহন্যোন্য-যোগ ইভ্যাদি। যে বে স্বে ষথাস্বং যে যে যথাভূভা: যথাযথং যাথার্থে যথাযথম্। তথাচ, যথাযথং তাঃ সহিতা নভশ্চরৈরি।ত ভারবিঃ।

৫০৪। দিক্শব্দান্তীরস্তারো বা। দক্ষিণতীরং দক্ষিণতারশ্ব।

৫০৫। প্রসংভাগ্ন জাসুনো জ্ঞা বহুবীহোঁ। প্রজ্ব প্রজ্ব সজ্ব সংজ্ঞা।

যুদ্ধনিতি প্রয়োগো দৃশ্যতে নতু শ্বতৌ প্রমাণম্। অথবা মর্যাদৈবাত্রার্থঃ ঈদৃশী মর্যাদা ক্ষত্রিয়াণাং যতঃ স্পর্দ্ধানা বন্দং মনাস্তে। দ্বদানি সহত ইতি অত্ত রূপ বিপ্রতিপত্তির্যতো দক্দশেকাহয়ং দকারাস্তে। দুংখপর্যায় ইত্যায়ঃ অত্ত দক্ষিতি শ্বরপমেব নাস্তি। মাঘে তু, ন দক্ষর্থমিছ কিঞ্চিদকিঞ্চনোহপীতি দেশাস্তরপ্তকেরু দকারাস্তৈব লিপিদৃশ্যতে। দক্ষেহপ্রাহস্তযোগ ইতি দক্ষশক্তংপ্রসমজাদিবৎ সংজ্ঞাশকোহবাংপর্ম এব কিমস্য বাৎপাদনেন অত্তব ক্ষ্মিল্যতাপ্রীতাত্র ন বহুনাং শ্বরমঃ। যে যে যথা সমিতি যথেত্যস্যাদৃশ্যে ইত্যানেন বীপ্সায়ামব্যমীভাবং যে বে আয়ায়া যে যে আয়ায় ইতি বার্ষ্য যথা অর্থেহর্থে বথায়পমিতি যথেত্যস্য দিকক্তিং অব্যয়ীভাবসমাসঃ ক্লীবত্তক ছুলোহন্ত ক্লীব ইতি ছুশ্বং। ঘথামণং তাং সহিতা নভশ্চরৈরিতি যে যে আয়্মীয়াঃ তৈং সহিতা ইত্যর্থঃ। জ্ঞাতাঃ পদার্থাঃ যথাতথ্মিত্যক্র তু যথাশ্বরূপমিত্যর্থঃ।

- (६०৩)। দিখাচবাৎ শব্দাগ্নন্তর্স্য তীরশব্দারাদেশো বা ভবভি।
 দাক্ষিণস্যান্তীরমিতি সর্বনাম ইত্যমূর্ন্তৌ সমাসে চেতি পুংব্দ্বাবঃ অথবা
 দক্ষিণশব্দস্যৈব তীরশব্দেন ষষ্ঠীসমাসঃ কর্মধার্য্যো বা।
- (৫০৫)। প্র সম্ ইত্যেতাভ্যামুত্তরস্য জানুশক্স্য ছানে বছরীহো জু জ ইত্যেতাবাদেশে ভবতঃ। প্রজু: প্রক্স ইতি প্রগতে জামুনী অসেতি বছরীহিঃ আকারাস্তোহরমাদেশে বছডিঃ রুডঃ উকারাস্তোহশি

৫०७। छन्नावा।

উদ্ধন্ত: উদ্ধন্ত: উদ্ধন্ত । এতৎপাদোক্তা: প্রভারা: সমাসা-বয়বা এব। তেন দিধুরী অৎপ্রভারস্য দিগুরাদী। উপরাজ: অৎপ্রভারস্থাব্যয়ীভাবরাদব্যয়ন্ত: ক্লীবন্ধ। দুস্পদিপদিনী অৎ-প্রভারস্য দক্ষহাদিন। অদ্ধর্ম অৎপ্রভারস্য তৎপুরুষদাদন্তত্ব-পদলিক্ষতা ইড্যাদি:।

৫০৭। তে চানিত্যে। বহ্বাম্পি তড়াগানি সবধ্ সত্রক্ষবদুঃ ভদ্রবাহুঃ রস্তোরঃ স্থতনৃঃ বরতনৃঃ আয়াতে মধুরাজনীত্যাদি।

কন্চিৎ। তথাচ মন্নাং প্রয়োগঃ, ভিন্ধ জুরিতি মতদয়ালীকারাদিহাদেশদমবিধানম্।

- (৫০৬)। উদ্ধাশবাৎ পরস্য জামুশব্দস্য ষত্ত্রীষ্টো জ্ব্ জো বা ভবতঃ।
 এতদিত্যাদি এত্রমিন্ পাদে উক্তাঃ প্রত্যয়াঃ সমাসদ্যৈকদেশা ভবস্তি
 সমাসক্তা অপি তদবরবা ভবস্তি। সম্পরিপদিনীতি চবর্গদ্বহাস্তাৎ সমাহারে ইত্যৎ প্রাণিস্থাদম্বাক্ষাদিপ্রেব দন্দে ইতি ইণ্। এতৎপাদোকা ইতি
 কৃতং পাদাস্তরপ্রত্যমনিরাসার্থন্। তেন রাধামুরাধীয় ইত্যম দ্বাদীয়
 ইতি ক্রয়ে কৃতে অস্তম্পদ্লিক্তা ন ভবতি।
- (৫০৭)। তে ইত্যেতৎ পাদোক্তানাং প্রত্যানাং পরামর্শঃ। তে চানিত্যাণ্চ ভবন্ধি। বহুবাম্পীতি প্রথাদেরৎ সর্ব্যক্তি সমাসান্ধস্যাত্যোহভাব: জস্মশোরিত্যাদিনা শিঃ ভেদোহস্তোদ ইতি দীর্ঘঃ শাবচোহঙ্যাস্তস্যেতি হুঃ। স্বধ্রিতি তৃতীরান্ধেন সহস্য তুল্যযোগে ইতি বহুব্রীহৌ অনিযুবর্ধস্ত্রীদ্দিতি প্রদাদিখাৎ কো ন ভবতি। ব্রহ্মবন্ধ্রিতি
 ব্রহ্মা বন্ধ্র্যাঃ উদস্কান্মযান্ধাতেরিতি উঃ। ভদ্রবাহ্রিতি বাহ্মপ্রাচেতি উঃ। রপ্রোর্রিতি উত্তরপদাদৌপম্যে ইতি ব্রিয়াম্ঃ। স্তন্ঃ
 বরতন্রিতি দীর্ঘাক্ষতন্বরতন্শক্ষোরপি কঃ। মধুরাজনীতি রাজাধেইাদিরিতি ন টঃ। মন্থ্রাহ্মীব্যাক্ষণেনাম্পপর্মণি প্রকৃতিপ্রভার-

সবৈরেষা প্রয়োক্তব্যা ভাষা বৃদ্ধানুসারতঃ। বালব্যুৎপত্তিদিঙ্মাত্রদর্শনার্থস্ত লক্ষণস্থ।

ইতি বাদীক্রচক্রচ্ড়ামণিমহাপণ্ডিত ঐক্রমদীশ্বরাচার্য্যকৃতে সংক্ষিপ্তসারে মহারাজাধিরাজ শ্রীমঙ্জুমরনন্দিপরি-শোধিতায়ীং রসবত্যাং বৃত্তো সপ্তমঃ " সমাসপাদঃ সমাপ্তঃ।

বিকারাদিকং পরিকল্প বাংপাদনীরং লক্ষণেন প্রাপ্তমণি কার্য্যং প্রবেগদর্শনাল প্নংপ্রবর্জনীয়ন্। নহুৰমে ব্যতিরেকে চ প্রাপ্ত্যভাবাল্লকণ্ডমেৰ বিবিক্ষিতং বিরচিতলক্ষণানাং ব্যভিচারদর্শনাং অত আহ সর্কৈরেয়া প্রবোজনা ইত্যাদি। এবা লৌকিকী ভাষা স্বর্কিরেব বৃদ্ধান্ত্রসায় প্রভাগে বালয়ব্যতিরেকাব্যভিচারালক্ষণন্। বালব্যুৎপত্তিদিয়াত্র-দর্শনার্থন্ধ লক্ষণমিতি বালস্যাক্ষ্যা ব্যুৎপত্তেং সাধ্বসাধুপদবিবেক্স্য দিল্মান্ত্রোপদর্শনার্থম্পদেশমাত্রবিজ্ঞাপনার্থং পুনর্লক্ষণং কৃতং পুনরব্যব্যতিরেকাব্যভিচারাং প্রমাণভূতন্। যদ্যেবং বৃদ্ধপ্রেলাগান্ত্রসারেণ পদসাধনমেবাস্ত কিং পুনং লক্ষণপ্রবর্জন উচ্যতে। বিমলভরবিজ্ঞানানাং বৃদ্ধোপদিইপদ্বর্দ্ধাণাং নাস্ত্যেব মন্ত্রক্ষীনাং প্রস্তদ্প্রহণম্বরণাসমর্থানাম্পদেশমাত্রজ্ঞাশনার্থমিক্ষ্।

নিভ্যৈকস্থবিশ্বরূপপ্রদর্শনমাত্রসংক্ষিপ্তস্কলসন্দেহস্। হরিমিব পরিচিত্তরত ব্যাকরণমিদং মুদে স্থবিরঃ।

ইতি মহাপণ্ডিতশ্রীক্রমদীশরাচার্যক্রতে সংক্রিপ্রসারে মহারাজাধিরাজ-শ্রীমজ্জুমরনন্দিশরিশোধিতারাং রসবত্যাং বৃত্তো ঔথাসনিক-শ্রীনোরীচক্রবিরচিতারাং বিবরণীনামটীকারাং সপ্রমঃ স্মাসপাদঃ স্মাপ্তঃ।

--থোক্তপাদঃ।

অরকার্যাম্।

भिक्ष भित्रमं क्यां दिन का निवास ।

স্থিতী দৈয়াদিরকার আছা ভবতি। লোকান্তসারাৎ প্রাক্ততে। সমিনী সামিনী আতিপৎ সদৃক্ষ সদৃশ প্রস্থান্ত আহিলাত মনবিনী প্রতিপৎ সদৃক্ষ সদৃশ প্রস্থান্ত আহিলাভি (১১)।

२। हैं शकादणः।

निवास विक्रिक्त हैं हैं देखि। निकम्। जेवर दिखन विक्र वायन मुनक

৩। লুগরণ্যস্থা।

। বল্

: 8। अयादमत् ।

শূলবাজেরাপিন্ন্র পূহবতি। সেজা। আশ্রেগ পর্যান্ত সৌনর্যা উৎকর বিশ্বনিব্র বিশ্বক্ষার বৃত্ত (-) ইত্যাদি।

ा केन श्राम ।

COUNTY NOW A

⁽১)। প্ৰত্ৰ গাঁঅতন, অহিজাই আহিজাই, মাণংসিণী মণাংগ্ৰিণী, পড়িবআ পাড়িবআ, সরিছেং সারিছেং, সরিস সারিস, পহুতন্ পাহতম্, পসিত্রী পাসিত্রী, প্রতিসিত্তী সাডিসিত্তী, পঞ্জিক্ষী পাডিক্ষণী।

⁽२)म विकित्या मिनिरना विकास विकेश विकास ।

⁽प्रीकृष्टिक स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स्

```
ao। श्राप्तर्वहः।
```

नग्रहाः कः। सन्रहाः यः। न्हानरा यः। किन्हरः

৯)। स्र्या यकातः।

সোণ্হাণোহা।

३२। थाण्डर्णिश्मानाः इः।

বিহ্না পচ্ছিমো কুচ্ছিও অন্ধরো।

৯৩। নোৎস্থকোৎসৰয়োঃ।

ওস্থও উসবো।

৯৪। शारिक्य् €ः।

शिम्दरा। यः। विम्रुखा यः। नम्दरा।

२०। व्हा स्वया

কল্হারো।

৯৬। মৃহো ক্ষন্ত।

ব্মহণো ৷

৯৭। ৰ্ভোহ্বত।

গব ভরো।

৯৮। শোশভ।

উন্মতো।

় ৯৯। প্রেছেও।

वण्टा।

১००। क्लाम्लद्याः भ्यः।

शून्कः भ्रःरमा ।

১০১। প্রত্যে ম্পশ্য দিব। ।

পড়িপ रूकी भनिनिकी वा।

১०२ । खारताव : I

करवा कक्षर ।

১००। भवत्ताः मः।

भिमा विमः।

>०८। त्या मनारमः।

मट्यं भनाटम भारात्मा ।

১০৫। সঞ্জায়াং বা দিবসক্ত চ।

एड्रटा एम्यट्रा वा । पिकट्रा पिकट्रा वा ।

১০৬। ণোহযুগ্রস্থা।

बिशक्राना ।

२०१। जात्मी वा।

वके नके वा।

১০৮। দ্বিনার্জা প্রাগ্রুক্তোহরাদিঃ।

পূর্দ্মপ্রক্নতাৰস্বায়াং মুক্তোহনাদৌ বর্ত্তমানো বর্মো রাদিবর্জাং বির্ভবতি।
জুগ্গো। দিট্ঠ। আদৌ সু—পড়ো পলিজাং। জ্বাদিবুগিতি কিন্।
তুরং জীহা দীহো দাণদেণী।

O

১০৯। আঙ্পুর্বেরা **জ্ঞা।** আলা আগস্কী।

১১০। নজশ্চরহরিশ্চন্দ্রোরস্তটাদো নিপাশুঃ। গহলবো হরিঅলো উরঅবো।

১১১। দ্বিনীডাত্যপাস্তো ধৌবনৰ*চ। ণেড্ডং লোকাং। অভিদ্ ব্যাহত কলু আছু বুবন্ হুল প্ৰেম চলিত (১)

১১२। दनवादमर्।।

সেবা সেবা বা। দৈব নথ এক শিব তৈল ক্রণ হেম নিহিত সংগ্রু তুফীক (২)।

১১৩। তুম্মৃহতুস্সঞ্রত্ব্থিতানাং সদ্ধো। হস্সংহা দ্সংহা বা। দ্সঞ্রো হন্সঞ্রো দৃহিও হক্থিও।

১১৪। जून जातम् लन्छ।

⁽১) (সাভো, বাহভো, तिष्कृ, बशु: बदवा, धूशः, পেশ, চলিভো।

⁽২) দইবং দইবাং, গণো, গকুখো, একো একো, সিও সিবো, ভেলং, ভেলং, ভূণো ভূ'না, হেমং হেমাং, নিছিভং শিহিত্তং, মেণ্ডুও দেওুকো, তুন্হিও ভূণ্হিকো।

ছনহো দ্লহো। হুৰ্জন জৈলোক্য অধ্যন্ কৰিনাৰ নীৰ্মাত্ত পূপা অঞ্জ ঈৰ্মায় শক্ৰ মিত্ৰ বিখাস মুখ্যি ইত্যাদি (১)।

>>१ । जमारत वा। रमवर्षे सम्बद्धे वा।

১১৬। তৎপুর্জাদাৰযুক্তন্চোতরপদাদিং। বহুহলং বহুশৃঞ্চলং বা।

>>१। मार्जानिम र्ह्वीरमैः।

দংখ্রীদে: স্থানে দাটাদির্ভবিতি। দাটা। ছহিতা, ধূআ। ভ্রঃ, ভূমআ। বৈদ্র্যাং, বেরুণিঅং। ললাটং, গড়ালং। উভয়ং, অভ্তহং। পার্যং, পাসং। বৃহৎ, বাহু। স্তম্ম, লক্ষো। চিহ্নুং, চিগ্নং। বধঃ, বন্ধো। কবন্ধঃ, কবন্ধো। বৃহস্পতিঃ, ভ্রমপ্কস্ট। আলানং, আণালং। ভন্ম, ছারং। গৃহং, করং।

১১৮। ন গৃহপতে। গহৰঈ।

১১৯। করেণো রণোর্ব্যভায়ঃ দ্রিয়ান্। কুণেক।

ির ১২১। ওনোহ ল্যমুস্বার: । হলি পরে ওনো: ছানেহত্বারো ভ্ৰতি। গং**ভী** মং**ভী** ।

>২২। অশু।দেরাদিমধ্যগুর্ব করপর:। অংসু। বক্তা: বক্তো। শুক্ত স্পর্শ মনস্থিনী ভঙ্ক বর্ণনেত্যাদি (২)।

⁽১) ছহগো ছব্ভগো, তেলোজং তেলোকাং, জাঁথো অন্ধা, কাণি-আরো করিআরো, নীহরত্বো, দিগ্ধরত্বো, পুণ্কং পুণপং, আহু অস্হ, ক্রমরো ক্রম্করো, (ব্যবন্থিতবিভাষরা সভ্, ইতি নিভাং) নীভং মিছং, বীসাসো বিস্থাগো, রসো রাস্থী।

⁽२) मःष्, भ् कःरमा, मानःमिनै, ऋरक्थः, ममनः।

३२७। न्तरसा रन्।

चर्डा रुन् नृत्र् छवछि। मञ्ज चळ्डतव्यर्गा।

>২৪। ন নিছুরোরতি।

নিরাসে। হুরাসো।

>২৫। প্ররো নোকে।

পূর্ণকত্তং।

१२७। किषिशिश्वि।

পুণোবি পুণৰি পুনরবি বা।

১২৭। মাংসাদেরফুস্বারো বা।

মংসং মাংসং বা কহ কহং বা । নৃরং কিংপ্নঃ ইদানীং সন্মুখেত্যাদি। (১)।

>२৮। खिग्रामा९।

স্ত্রীলিকেংকো হল্ আকারো ভবতি। সরিআ।

১২৯। ন বিদ্বাতঃ।

विष्क्र,।

>७०। সমাসপুংলিক্সয়োরকারঃ।

वाषकषः श्वां ।

>७)। मिक्भात्रः शातुरवाश्मराणि ।

मिटना नवदबा शांखेदना ।

१७२। शृक्षीमिर्व।

পৃষ্ঠাদিঃ ব্রিয়াং বা ভবভি। পুট্ঠং পুট্ঠী। অক্লি, প্রবাং (২)।

১৩৩। পুংসি প্রারুট্শরন্বসস্তা:।

প্রার্ট্ শরং নকারসকারাত্তাত পুংসি ভবন্তি। পাউসো সরদো কলো জনো।

२०८। न निद्रतान्छमो।

সিরং পহং ।

^{(&}gt;) नृन नृनः, किউলো किःউলো, देशनैः देशनी,, मम्हः मःम्हः । (२) जब्दी, जब्दि । नन्हा, नन्हा ।

२७४। **ख्नुटम्**ख्नु गढामिः।

হোতৃণ গংতৃণ।

১৩৬। স্তঃ।

(21:81 I

১৩৭। শ্রমশ্র বা।

(ववरका (ववमार्गा वा।

২৩৮। তুভেরিরঃ।

গমিরো।

১৩৯। ठाष्ट्रप्ताम जिल्ली।

মৃত্বা মুটতুবং।

১৪০ 🛔 भरङाविद्यापिः।

धनवेदला निष्माल, निष्मामा छेदशकक्षः श्रुश्वरस्था त्रीमवेदला ।

১৪১। সন্ধিবা প্রাপ্তঃ।

নিত্য প্ৰাপ্তোছপি সন্ধিৰ্কাভবতি। আসইসী বাসেসী ৰা। কুসঅগ্গী কুসাগ্গীবা। দেবং ইমং দেবমিমং ৰা। ভিইয়ং তীয়ং ৰা।

१८१ किन शास्त्र।

वाला व।

১৪৩। দীর্ঘো বা স্বভগাদেঃ।

प्रश्य प्रश्य वा। विमः वीमः वा। (वन्द्रनः (वन्द्रनः वा।

১৪৪। কচিমিত্যম।

मानीवगः नीन्यवः।

>८८। यपितृञ्ज्ञश्रदाश्चरन ।

षामा वीमामा छम्दा।

১৪৬। তুল ভানাবতুৰ্ খিতেহছিছে বা।

इनहां मृनहां वा । इब् चिट्ड कु -मृहिल । बिट्ड कु-इक्थिल इज्ञहां ।

> 89 । विः भङ्गादमी मामिनुक् ।

रीमन्ने जीमना।

১৪৮। श्रखारिष ७वा।

गथि माथि वा। मधर माधः वा। वक्षश्तिकः वाश्तिकः वा।

> १३ । किन्द्रिया वा।

वहरमारका वज्रतमारका।

১৫০। তেন্ত্রয়সঃ।

তেরহ তেরীসং।

১৫>। नुषा वादमधीवमादमी।

জা কাৰ বা। তা তাব বা। ভাগং ভাঅণং বা, জীঅং জীবিঅং বা। মূল-প্লাডী মূলোপ্লাডী বা। চক্কাও চক্কবাও বা। কেপৰি কেপাৰি বা। ইত্যাদি।

১৫২। উত্নমের দোর্নিত্যমূ। উম্বরো।

১৫৩। মন:শিলাদে স ওঘা।
মণিদিলা মণোদিলা বা। মণরছো মণোরছো বা। সরক্ষহং সবোক্ষয় বা।
পুণসুণো পুণোপুণো বেডাাদি। (ইভি ছল্কার্যাম্।)

অথ সুবন্তকার্য্যম্।

)। श्वारित्वामानिः।

ত্ম প্রভৃতেঃ স্থানে ওদাধির্ভবতি।

२। जा भारतीय।

बटक्टा।

৩। এডদোবা।

बरमा धम वा।

৪। এপফী।

क्क्टथन ।

৫। वहराजन मर्विदेखर विराजन ।

७। कन्ड जातामका भन ५९।

क्ष्मा बराइ।

```
৭। ভি'েশ হিমত এচ্চ।
```

बष्फ्रिहिः मानाहिः।

৮। ভসেদে ভিহর: প্রাণদীর্ঘণ ।

विकारना। जाग्तीश जाग्नाहि वा।

৯। সবর্বনাক্ষ্ম ন দীর্ঘো দোপরাপাম।

তবো জলো সকলো।

১০। পুরতোহগ্রভ: প্রভৃতেন্চ।

श्रवान जन नाम शृहेश्या।

১)। ভাসো হিস্তো হুস্তোহত এদাভৌ চ।

ৰচ্ছেহিন্তো বজাক্সভো সাছহিন্তো সাছস্থতো।

>২। জন: স্ম:।

বিপ্পদ্ম ধণং।

১৩। আমোণঃ প্রাগদীর্ঘন্চ।

বচ্চাণ অগ্গীণ।

১৪। সর্ববত্র ষষ্ঠীৰচচতুর্ব্যাঃ।

বিপ পদ দেহি।

२८। ८७ चिं:।

বচ্ছন্মি অগ্ গিন্মি।

२७। व्यटेज्या।

वटष्ड् डेटम वा।

>१। ইশः শস্ভসোর্ণো:।

ইণ উত্তরকোঃ শস্ভসোঃ স্থানে ণোর্ভবতি। অগ্ গিণো সাহণো।

১৮। ७मः म्मनः।

অগ্ গিস্স সাহস্স।

১৯। জন ও রোরিণশ্চাৎ।

ইণ উত্তরস্য জস: স্থানে ওর্ভবতি। ইণ উত্তরস্য জস: স্থানে স্নোর্বা ধ্বতি।

देवः द्वारतरुक्त । अन् गुड कान् गुरुता वा । माद छ माद्रता वा ।

२०। (पार्का।

অপথিগো সাহণো বা।

২)। জসো দুখা সোনিত্যং ভিন্তুপোরপি দীর্ঘন্ট।

अग् भी अव्वति अक्षरे वा। अग् भीहिः माह्य ।

२२। अग्निवंद मंथां किछा दिने।

শহিণা পহিণা।

২৩। ব্রিয়ামুদোৎ শসশ্চ।

খ্রীলিকে জন: শসক স্থানে উত্তবতি ওচ্চ। মালুগ্র সালাও। ণঈউ ণঈও।

२८। जामा नुषा।

वङ्क व्यव्हरिष्ठ । •

२৫। इत्याध्मा।

অমি পরে রিয়াং দীর্ঘো হস্বো ভবঙি। সালং বহুং।

२७। ठोडमडोनामित्ममण्डः।

প্লিয়াং টাঙস্তীনাং স্থানে ইত্ এত্ অত্ আত্ ইত্যেতে আদেশা ৬বি । গুলুইকঅং শন্ধুএ শুলুঅ শন্ধুআ বা। ৬স্ডোরপ্যেবম্।

२१। आमञ्जामित्रकः।

মালাঅ মালাই মালাএ।

२४। त्नित्रिः त्नाग् मीर्घन्छ।

নপুংসকে জদ্শসাদেশসা শেঃ স্থানে ইং কবভি। প্রাদীর্ঘণ্ট। ধণাইং জসাইং দহীহং। প্রাগনুস্থারো বেভ্যেকে। ধণাংইং বণাংইং।

২৯। স্বমোরসুস্বার:।

महिং भट्रः।

७०। अभातः श्वारमी।

খাদো পরে গড় আরো ভবতি। ভদ্ধারো কতারো।

७)। भिजारमञ्जरः।

शिषातः शिषादान ।

৩২। আৰাসো।

পিজরো পিজা বা।

৩৩। শাতুঃ স্বাদৌ নিতাম্।

শ্বালা দাকং নাজাই।

৩৪। অস্ শস্টাঙস্ভিরবা। ভত্তজহি ভত্রক্থই ভড়কঅং ভড়ুধণং।

৩৫। রাজ্যে বা অসামোর্ণো ণং প্রাগদীর্মন্ত। রাজ্ঞ উত্তরধোর্জ সামো: স্থানে বধাক্রমং গো গং ইজ্যেকৌ বা ছবড:। প্রাগদীর্থন্য। ব্রাআ রাজাগো বা। রাজাগা রাজাগং বা।

৩৬। সৌচদীর্ঘ:। রাজা।

৩৭। সমুদ্ধাবমুস্বারো বা। হে রাআ হে রাজং বা। ণং বাস্ততোহপীত্যেকে ব বল্লরীণং সূহং।

৩৮। শস্ভসিভসামদিচ্চ। রাজ্ঞ: শস্ভসিভসাং স্থানে গোর্ভবতি। অকারশ্বেষা বাইশো পেক্ব। রাইণো গেণ হদি। রাইণো ধণং।

ু ৯। পক্ষান্তরেহর কু বির্ণোশ্চ বা। রাজণোররো বা।

৪০। টাণাধাবা। রাণারাইণারাইগারগাবা।

8>। आज्ञारमञ्ज्ञशामिक।

আজন্ত্রস্বন্শকানাং স্থানে অপ্পণবম্ছণজুবাণা বা ভবস্তি। অপ্পণো অপ্পণেন। পকাস্তরে ইদ্দিছাল যুক্তিং রাজবত্। অপ্পা অপ্পণা অপ্-পণো ধবং। আমি। অপ্পাণো অপ্পাশং।

৪২। ঙে: স্সিংস্সিত্থা: সর্ববনাম্ন:। সর্বানামা ভীতাস্য স্থানে স্সিংস্সি খা ভবতি। ভস্সিং ভস্সি ভখ।

৪০। হিং বা কিংফতদাস্। কিংঘতনাং ভীত্যস্য স্থানে হিং বা ভবতি। কহিং কস্সিং। ভহিং জস্সিং। ভহিং তস্সিং।

88। অহে হিআ চ কালে। কাহে কহিআ বা। কহিং কন্দিং চ।

Be । जित्रामीक हमः म्मः त्म ।

वीनित्य किश्वक्रमाः स्थाः शास्त्र म्यां त्य हैर्ल्डाको स्थवः। अहोकः।

किम्मा कीम । शकाखरत । कीर्र कींव कीम कीजा।

৪৭। অন্তিরামাসো বা।

কৰ্মন কালো বা।

8b । **इ**प्पा डमा जियु वा तम ।

ভিস্মা তস্ম। সে বা।

⁸৯। তোদো জুদেশ্চ।

কিংবত তদাং ওসে: স্থানে স্থো দো ইত্যোতো ভবত:। কল্লো কলো।

৫০। তচ্ছবদশ্য দো ওর্বা।

ততো তদে। তদও বা।

৫>। এতদস্তোদাহ্হয়:। তোদোত্থেষ ভলোপত। এতো এদো এদাহ এদাহি এখ।

৫२। इम्रायक्ताकारमाद्वित्पतिः।

ইদমেতদো: কিংযন্তদাং চ দা আম্ ইত্যেতয়ো: স্থানে ইবা এসিং ইভ্যেতৌ বা ভবত:। ইমেণ ইমিণা ইমেসিং বা। এদেণ এদিণা এদেসিং বা। কেশ কিণা কেসিং বা। ইমাণ ইমিণা ইমেসিং বা। এদাণ এদিণা এদেসিং বা। কাণ কিণা কেসিং বা।

৫०। रेममात्मत्रल्क ।

८। এতদ এদাহি ইমা।

००। देशम देमः।

স্বাদৌ পরে ইদম: স্থানে ইমো ভবতি। ইমে অছই।

৫৬। স্সস্সিমোবদা।

अन्न देवन्त रा। अन्तिः देवन्तिः व।।

৫१। अभजामिनमापि क्रीटन।

हैनः धनः हेनस्या हैनः वा । त्थं श्रासांशीकावः।

१५। अमरमा जा मृः स्ना अरश वा।

বাদৌ পরে অবসো দকারো মুর্জবতি। স্থলা সহ আহো বা। অমু অফ্ট অহোবা। অমুণো অমৃহিং।

৫৯। यूजनयामितः स्मानी।

সংস্কৃতাহসারাত্ স্থ্রপা সহ যুগ্দশ্মদোঃ স্থানে তং হমাদী ভবতঃ।

७०। यूम्रलख्डः जूमः स्था।

তং হোসি তুমং বা।

৬ । তুং চামা।

তুং প্জামি, তং তুমং বা।

৬২। তুজ ঝোতুম্হে জ্বসা।

তুজ্বে ভণহ তুম্হে বা।

৬৩। শসা বোশ্চ।

পুচ্ছামি বো তুজ্বে তুম্হে বা।

৬৪। টাঙিভ্যাং তই ডএ তুমএ। ভিনা তুমস্মি চ। তই ক্ষং তই ট্ঠিষং তুমমি বা।

৬৫। ঙদা তুমোতৃইতুজ বাতুমহতুৱাঃ। তুমোধণং।

৬৬। তে দে চ টাঙ্বস্ভ্যাম্। টয়া তুমাই চ। তে কলং তে ধণং তুমাই কলং।

্৬৭। তুকোহিং তুৱেহিং ভিসা।

जूरक्रिश कथा जूरद्धिश वा।

৬৮। ওসিনা তত্তো তইত্তো তুমাহ তুমাহি। ভত্তো পদিও।

৬৯। ভ্যমাতুত্তাহিন্তো তুত্তাস্থন্তো। ^{*} ভূত্তাহিন্তো পডিও।

৭০। ৰো ভূক্ঝাণং ভূক্ষাণমামা। ধশং ৰো।

৭>। স্থা ভুজ্বেম্থ ভুক্ষেম্থ। ভূজ্বেম্থ ভূমেম্বং ট্ঠিমং। १२ । ञ्चान्त्रामा दः बदः वः दवः वज्रहि । एः गुकामि ।

৭৩। আমা অন্তি অসন্মি।

অশ্বি পুছে।

981 अट्स अमा।

অন্ধে জাণিমো।

৭৫। শসা অম্হেণো চ।

व्यक्त शुद्ध व्यक्तत्वा रां।

१७। देश (म मिय में अ।

মে কজং।

৭৭। অকোহিং ভিসা।

काम दर्शहर कथार।

৭৮। ঙসিনা মত্তোমইত্তোমনাদোমমাতুমমাহি।

মত্তো পডিও।

৭৯। ভাসা অম্হাহিস্তো অম্হাস্থতো।

অম হাহিস্তো পডিও।

৮০। মেমমমহমজ্বা ওসা।

थवः (म ।

৮)। আমা মজ ্বাণং অম্হে। অম্হ অম্হাণো।

मक् सांगः धगः।

৮२। डिना ममन्त्रिमरूमधा

ममित्र है है जर

৮০। সুপা অম্হেমুৎ।

व्यम् रहन्द्रः समह ।

४८। बिट्यांस्मिश

স্বাদৌ পরে দিক্রোঃ স্থানে দো তী ইন্ডোতৌ ভবডঃ। দোহিং ভীহিং জীস্থরো।

৮৫। দোণ হৈ ভিণ্ ছ জস্শসভ্যাস্।

জনো: স্থানে অস্পস্ভ্যাং সহ দোণ্হি তিণ্হি ইভ্যেকোঁ ভবভ: দোণ্হি অফ্টিড তিণ্হি ভণাৰ।

৮৬। হৈছ বৈ দোণী চ।

হবে ভণস্তি।

৮৭। চহুর শ্চত্বারো চত্বারি।

চতুব: স্থানে জদ্শস্ভ্যাং সম্ভ চন্থারো চন্ধারি ইন্ড্যেতৌ ভবতঃ। চন্ধারে! ভণস্থি চন্ধানি ভণস্থি।

৮৮। চউরন্মত্ত। **চউ**হিং চউন্মধ্যো।

৮৯। তেষামামো ণ্ছং।
তেষাং দিকিচতুর্ণামামঃ স্থানে ণ্ছং ভবতি। দোপ্ছং তিণ্ছং চউণ্ছং।
(ইতি স্থবস্তকার্যাম।)

অথ তিঙন্তকার্য্যম্।

>। প্রথমাদে রকমিদাদির্দ্ধরাঃ।

ছরোঃ পবদৈরপদা মনেপদবোঃ প্রথমপুরুষাদেরেকবচনং ইণাদির্ভবাই।
প্রথমপুরুষস্থাক্ষরস্থান প্রচই সক্ষয়।

২। এরা।

শ পর্ত সক্ষ ।

৩। সিসয়ো মধ্যমশ্য।

পচসি পচদে সক্ষম সক্ষমে।

৪। মিঙ্উত্মস্থ।

পচামি সন্থামি।

व। वह्र खानिः।

वृत्याः श्रापमादार्वहरुकनः स्तापिर्धरितः । श्रापमा । नहित नविता

छ। इत्थी मधामण

क्टर शहल मुक्र मुक्त ।

৭। উত্তমশ্য মোমুমাঃ।

পচামো পচামু পচাম। সহ্বামো সহামু সহাম।

দিঙ মিঙ্ভাং সহ অত্তে: স্থানে দি মৃহি ইত্যেতৌ ভবত:। জইদি গওম্ছি।

৯। উত্তমবহুনামৃ হোম্হো।

আগআম্হো আগআম্হ্ বা।

১०। वाष्ट्रशिया ।

বছই অছম্বি অছহ,অছথ বা।

১১। ভূতবিহিতৈকবচনেনাসিঃ।

আসি রাজা তং বা হং বা।

১২। यकन्नेगरेएको।

बकः शास क्रिय हेब्ब हेराजारजी चारमरमी छवजः। महीक्रहे महिब्बहे ना।

১৩। গমাগুলো বকা ছিন্ন।

नमारे कक्षरे नमीकरे नमिक्करे वा।

> । शारित्राञ्च ।

त्रीषाई शिष्परे।

১৫। नुषामि हिछ्।

লুট্ল্ট্ল্ড্কু পরের ধাডোঞ্তরে হিঙ্ ভবতি। হোহিই হোহিবি হোহিখ।

३७। म्मा श (हां हरम।

নুড়াদিষু উত্তমে পুৰুষে পরে স্স হা হিঙ্চ ভবতি। হোস্সামি হোহামি হোহিমি।

১৭। মিঙা সহ স্সং হিদ্সং বা। হোস্যং হোহিন্সং বা।

১৮।মোমুমের ছিল্সা হিত্থা বা।মোমুমৈর্কেত্যেকে। হোদ্যানো হোহানো হোহিদ্যানে হোহিত্থানো হেহিদ্যা হোহিত্থা।

১০। ক্রাদেঃ কাহ্মাদিমি তা।

পুড়াদৌ পরে মিঙা সহ ক্ঞানেঃ স্থানে কাহণাদিওবিতি। কাহং। যা দাহং। বচ্বোজং। শ্রু সোজং। সমু গজং। কদ্ ক্জ্ং। মৃচু যোজং। বিশ্ বিজ্ঞং।

२०। विष्णुं मिर्व हारमरह न् श्वा।

পুড়াদৌ পরে বচাদে: স্থানে বচ্ছ্যানির্জবতি। গুত্র হেপুঝা ভবতি। বচ্ছি-হিই বচ্ছিই বা। বচ্ছিছিভিনচ্ছিত্তি বা। সোচ্ছিই পচ্ছিই কচ্ছিই মোচ্ছিই বিচ্ছিই।

२)। नुश गिष्ड मा

শক্তিহিমি বক্তিমি বক্তি বা।

२२। नुडारमत्रीयः।

শঙ্গুঙ্লিটাং স্থানে ঈও ভবতি। হনীআ।

२ । भारत हो यः कृष्ण्यर्कम्।

মরীঅ। কুঞ্সত্ত। কাহীঅ।

২৪। অজন্তাদ্ধীঅঃ।

অৰম্ভাদ্ধাতোকত্তবস্য লভাদে: স্থানে হীঅ ইত্যয়মাদেশো ভবতি। হোহীঅ।

· ए। नारनकाठः।

क्लिकां के या।

২৬। উদ্দশ্ম লিঙ্লোটোরেকত্বে।

্ৰপ্ৰথমপুৰুষাদেৱেকত্বে লিঙ্লোটোঃ স্থানে বথাক্ৰমণ্ উদ্দন্দ ইভ্যেতে ভবস্তি। হুন্ত হৃদদ্দ হৃদ্ধা।

২৭। স্সভাদা।

হস বহ ভিন্দ।

২৮। স্ত হ মো বহুয়।

ৰছৰু লিঙ্লোটোঃ স্থানে যথাক্ৰমং স্ক হ মো ইত্যেতে ভবস্তি। হোন্ত হোহ হোমো।

२२। ज्ज ज्जा वाजसानपारमी।

न हेन इ. तृड् निहिनिङ् (नाहे तूषाको । शहरकडोबाष्ट्राक्ट क का है एका एको वा क्वकः । नहें । दाहे होक्करे होक्कारे वा । नहें नृङ् निष्। (हारीय द्रांकेय राष्ट्रकेय राष्ट्रकेय राष्ट्रकेय वा। निष् ताष्ट्र। हार्के राष्ट्रकेटराष्ट्रकेय वा। नृष् नृष् नृष् । राहिरे राष्ट्रकेटराष्ट्रकेटरा

७०। नड्नूड्निড्ভिर्1।

হোই হোহীম হোজ হোজা বা।

७)। नात्नकाहः।

मिकाई।

৩২। ঋতদ্ধল্ভ্যঃ শঙ্লডাদো ।

লট্লোট্লঙ্লিঙ্বু পবেষু ঋদস্তোদস্তহলক্তেডা ধাতৃভা উভবে শঙ্

क्वि । यवह ववह (मनह।

৩০। কচিৎ শঃ।

भूवहे क् द्रहे।

७८। मारमज्ञास्य ।

नफामो भरत नामनरक खर्वि । एस्ट्रे (धरे।

৩৫। ইদস্তস্য ণেগ্নঃ।

এন্বই কাবেন্বই।

७५। षहेनू जाती।

मर्देश्हे ।

७१। चरम् ।

नफारिनो পরে অকাব এঙ্বা ভবতি। হসই হসেই বা। চঅই চএই বা।

৩৮। হাবিঙ ঋদ্ধল্ভ্যাম্।

হৌ পবে ঋতো চনশ্চোন্তবে ইঙ্ভণতি। এঙ্বা। মরিহিই মবেহিই বা। পডিহিই পাডহিই বা।

৩৯। সেঙ্দ্যাং তুংতবাংক্ত্রাস্থ।

হসিউং হসেউং বা। হসিঅবং হসেঅবং বা। হসিতৃণ হসেতৃণ বা। মরিউং মরেউং বা।

৪০। প্রায়েণেড ্ঝতঃ কে।

ধবিও ওসবিও।

8)। कहिए न महाए।

অমুকাং কজং।

8২। বহুত্তেম। বছবচনে উভ্নে পরে ইঙ্ভবভি বা। হসিমো হসামো বা।

৪০। মিঙ্যদীর্ঘো বা।

হসামি হসমি বা।

88। ণিঙশ্চারে এ**ঙ**্বা। ণিঙঃ স্থানে আরে ভবতি [†] এঙ্বা। কারারেই কারেই বা।

৪৫। ঙারিব্বা ক্তভাবকর্মস্থ। কারিও কারারিও বা। কারিজ্জই কারারিজ্জই বা।

८५। জল্লাদেজ भोतिः।

জন্ম। ত্ব লালে জলাদিভবতি। জলাই। ঘূর্ণ যোগ। ছরা তুবর।
গুল গোগ। দৃঙ্দুল্ম ! পাটি ফাল কাল ! জ্ভি জন্তা স জিন্তা আ

গুল গোগ। দৃঙ্দুল্ম ! পাটি ফাল কাল ! জ্ভি জন্তা স জিন্তা আ

গুল গোগ। দৃঙ্দুল্ম ! পাটি ফাল কাল ! জ্ভি জন্তা স জিন্তা আ

গুল গিপ্প থেপা। ধটি গঢ় ৷ শুল ঘদ। চিঞ্ চিণ। কি ঝিঞা।
কিপ বিজ্ঞা। ভিদ ভিলা। ছিদ ছিলা। কথ কড্ট। বুধু বুড়ট। হন

লম্ম হহা। ব্ৰজ বচ্চ। নৃতী পচ্চ। বুধ বুজ্জা। থ্ৰছ্
পুচ্ছ। শুলু স্তৃট। পংল পড়। পঠ পট ভক্ষ। বপ্প বচ্ছ। ভঙ্গু
ভ্যা তহা। খিদ বিহর। জেনুধ বুজ্ঝা। ক্রেলা জর। ব্রস বজ্জা। ওজা
বিহল। চর্মা চক্র চকা। চচ্চ চপ্প। শ্রংপ্রের ধা সক্ষহ। উৎপূর্ম খা
উদ্ধৃত্ব। অবপূর্বের গাহ ওবাড়। অব কাস ওবাদ। নির্মাঙ্ শিশ্বাণ।
উদ্ধিত্ব ওকোবা। মুদ মল। পরিমুজ্ব প্রিম্ইল

৪৭। জো জানআণো।

জাণই আণ্ট বা।

८৮। जीरमा जा-गीरही।

ভাবীই হই।

৪৯। স্মরতেভরস্মরো। ভরই স্মরই বা।

৫০। কুপঃ **বি**প্লঃ। বিপ্ৰস্থা

৫১। यक्र एक। वृष्ण्यूरभी। वुड्डरे थूश्शरे।

(২। রুধো রুন্তরুক্রো।

कछई कक्ष है।

৫০। মূজেলু ভহুপো।

नुष्ट अपरे।

৫৪। কুঞঃ করকুণো।

করই কুণঈ।

৫৫। হীঅ হি-তুং তব্য-ক্ত্ৰাস্থ কা।

কাহীঅ কাহিই কাউং কাঅব্ধং কাতৃণ। ৫৬। ভুবো হোহুবৌ।

হোই ছবই।

¢१। क्रुः एङ।

হুতাং।

७५। श्राप्तर्वः।

পহবই।

৫৯। দ্বিরস্তো লগাদে:।

লগ্ৰহ ভুটুই।

৬০। শকেশ্চ অ-তরতীরাশ্চ।

मक्तरे हवारे जतरे जीतरे।

७)। ऋ उठलार्ग।

कृष्ठे कृष्ठे बा। हमहे हबहे वा।

७२। প্রাদেমীলন্চ।

भमीनरे भमिलरे वा।

७०। वारहर्ग न्इः।

#श्रिक् इर्टे.।

৬৪। হে জু-তব্য ক্রান্থ। নেউং।

৬৫। স্লোবাবাঅশ্চ। • া বাই বাঅই বা।

৬৬। দৃশের্ণি স্ক্র-পুণ অবজ্ব-পেচছ সচছ র-পেক্খাঃ।

৬৭। বেটোবেক্টেবে লঃ সম্ভ্রাম্। •

७৮। ऋगादनमीर्घः।

क्यरे इसरे जुमरे मुमरे।

৬৯। ধুবাদিধ বিদেঃ।

धूत्रे धूत्रहे (धावरे। क्रम, क्रवरे क्रवहे त्रावरे तावरे क्रवहे।

৭০ ক্রীঞঃ কিণঃ।

কিণই।

৭১। বেঃ কেবা দ্বিশ্চ কঃ।

বিক্লিণ্ট বিক্লেট বা।

१२। शाट ठांश्तित्र घाटमः।

विदिन्दे। कृष मृष कृष।

१०। वार्तिर्गा इयन्छ।

नृगरे। नृ अक् इ जि पृथ्यः।

98 । यथा वव × 5 1

नुनिष्क्रहे नुकारे।

৭৫। ঠাত্মআদিঃ ষ্ঠাদেঃ।

ঠাঅন্তি। ধাৈ ধাঅন্তি। গৈ গান্ধন্তি।

१७। ठामिटेर्वक्वानाः

ঠাই ঠাজই বা।

৭৭। খাদেঃ খা নিজ্যম্। । ৰাই

৭৮। তুং-তব্য-ক্ত্ৰাস্বস্তল্গ ভুজাদেঃ। ভোউং রোজং ভোতধং ভোতৃণ ইত্যাদি।

৭৯। হীরাদি <u>হ্রাদে ভাবক র্মণোঃ।</u> ভাবে কর্মণি চ বাচ্চে ছঞাদে: স্থানে হীরাদির্ভবিঙি। হীরী অই হীরিজ্ঞ ই। জুষ জীর। রুঞ্কীয়া বদ বচছ। হহ হচছ হহ হত্ত। লিহ লিব্ভ। বহ বব্ভ।

৮০। বা**সয়কাচ।** হীরীষই হীরই বা।

৮১। জোমা পজ্জণকো সয়কশ্চ। জাণাজই। আণীজই। গজ্জীমই পকীজই। গজ্জই পক্ষই বা।

৮২। গ্রহের্পেপো বা সয়ক শ্চ। গেণ্হিজ্জই বেপ্পিজ্জই বেপ্পই বা।

৮৩। मारमिशिमिः दिन।

দিয়ং। রাদ রুয়মিত্যাদি। প্রাকৃতং গাথাদে। সংস্কৃতবচনবিশেষং। সলিলং বছসি। কংদানপৃচ্ছানিবারপের্*। তিজ ছে অবধাবণে। ও পশ্চান্তাপস্চনা রোপণবিতর্কের্। ইর-কির-কিলা জনিশ্চিতাখ্যানে। কুথু নিশ্চরবিতর্কস্পচনাস্থ। ই জে বা পাদপূরণে। গব্দ কেবলে। তুরং হার্যো।
পুরি আনন্তর্যো। উভয়বিশ্বয়াক্ষেপবিতর্কস্পচনাস্থ। কীস কীণৌ প্রস্নে।
অব্বো হংশস্পচনাসম্ভাষণের্। অণাহি নিবারণে। আই, হ ব গে, সম্ভাবনে। গবি বৈপরীত্যো। বের্কে আমন্ত্রণে। খু কুৎসাধান্। রে অরে
হরে সম্ভাষণরতিকলহাক্ষেপের্। পিব-মিব-বিব-বর্বা ইবার্থে। ইন্ড্যাদিদেশীসারো নিপাভঃ।

(ইতি তিঙন্তকাৰ্যাম্)।

নিদ্ধারণেষু ইতি বা পাঠঃ।

অপভংশার্ড।

১। অযুক্তানাদিবগাদেয়াল্লিচজুথোঁ।

অষুক্তানাদিবগাদেয়াঃ স্থানে ত্রিচজুথোঁ ভবজঃ। লোকানুসারাদপজ্রংশ।

বকঃ বগঃ। স্থাকীঃ স্থাদিঃ। অযুকানাদীতি কিমৃ ? শক্রঃ শকঃ।

কার্য্যং কজ্ঞং।

২। অধোরো লুখা। অধ: স্বিডস্য রেফস্ত লুখা ভবতি। পুত্র পুত্রোবা।

থা অযুক্তানাদেঃ কচিৎ কদ্য।
 কঞ্জিকং কঞ্জিঅং।

৪। তক্ষ**া।** গদোগওবা।

৫। ব্রাসাদিব্যা সাদেও।

ব্যাসাদেঃ স্থানে ব্রাসাদির্ভবিতি। ব্রাস ভণ্ই। ভাষা হ্রাস। মৃক বট। সংখ্যা সহ। এবং এ। মৃথে কুরই। এবংবিধ অজ্ঞাহ। কিল কির। লুব জু।
ততঃ তো। কুতঃ ক্তঃ যত্র জেপু। তত্র তেপু। কুত্র কেপু অত্র প্রথা বাবং জাম। তাবত তাম। ১

৬। ইবস্য ক্লেব্ৰজণ্যাদিঃ।
শূৰজ্বেৰ ৰণি বা।

৭। নূনং ণড ণডা ণাবই।

৮। এহাদিরেতদন্ত্রিসমঃ। এহ নারী, শরু, ধণু বা। এহো এছে বা।

১। জেহাদির্ঘাদৃশাদেঃ স্ত্র্যাদৌ।
(क्दी ণারী, ক্লেহে ণক্ক ক্লেছ ধণু। তাদৃক্তেহী। কীদৃক্ কেহী। স্বদৃক্ এহী।

১०। हेमग हेम् नश्रू अटक । हेम् थर्।

>>। कथः (क्यूकिस्मी।

```
(क्यू क्रंड्डे किम् क्रड्डे।
```

১২। জিমতিমাদিয থাতথাদেঃ।

জিম বমূহণ তিম পদ্ধ। জিম তিম, জেম তেম, জিধ ভিধ, ক্লধা ভধা।

১৩। কিমঃ কিম্পাদিঃ।

किन्न छन्हें। किन करहरे। किम करहरे। किम कर कि कि कून नि

> । शाक्नामिश्रीथादमत्रह्मादमी।

পাহলী বহুবতি।

७०। (अटक ।

हिष्मणा कृष्ठेमरे উত্তব্ত ।

১৬। ঋদ্তোরযুক্তানাদ্যোরধঃস্থথোরদা।

अक्र अप्रकार स्का था। क्षा क्षा क्षा विश्व

३१। मीर्घामिः मञ्जूष्को।

সম্বুদ্ধৌ যথাসম্ভবং দীর্ঘাদিউবতি। ঢোকা হিঅডা।

১৮। কচিদ্ধ সং।

मिन्रम्म श्रुखि।

১৯। किटिनख्य।

हरण जगरग।

२०। असा त्रा

সমুদ্ধৌ জসঃ স্থানে হো ভবভি। অগি গছো মহিলাহো।

২১ । লুক্ প্রথমা দিতীয়য়োঃ।

প্রথমাবিতীয়য়োলু গ্ভবতি। নর গছই। মহিলা পুছেই।

২২। অতা স্বমোরুদ্বা।

चका मह श्रदमाक्रधा खबकि। १क वहरे। ४१ (१) छ्रहे।

२०। शुःरमाक।

পদো মেহো।

२८। धः छ।

অতা সহ টা এং ভবতি। দইএণ দইএং বা।

২৫। অনুসারশ্চেণঃ।

हेन उच्चत्रहो धः खद्छि। अञ्चात्रकः। दहेवः दहेः वा। महधः महः वा।

२७। श्रृःमि भावा।

অগ্গিএং অগ্গিং অগ্গিণা বা।

२१। इश् मश्रमा।

সপ্তম্যা: স্থানে হিং ভুবতি। অগ্রিসিইং মন্থ্রিং।

२५। ८७ त्रिमिट को काला।

ষরহিং ঘরি ঘরে বা। সুরহিং সুরি স্থারে বা।

২৯। ভাদোহতো হং।

ষ্মত উত্তর্বস্য ভাস: স্থানে হং ভষ্তি। ককৃপত্বং পতিদো।

অত উত্তরশু ভগে: স্থানে হে অদু ইত্যেতৌ ভবত:। রুচ্ছাহে রুচ্ছাদু।

৩১। হোহদ্দা ওদঃ।

ষ্ণত উত্তবন্ত ওসঃ স্থানে হো-ত্ স্না ভবস্তি। কক্ৰছো কক্ৰত্ন কক্ৰস্ম।

৩২। আমোহং।

অত উত্তবক্ত আমো হেং ভৰতি। কুকুৰ্বহং।

৩৩। হেং চেত্রন্তাম।

ইহস্কাস্তরভামে। হং ভবতি। হং চ। বইহেং বইহং বা। জন্তেং জনহং বা।

७८। छाटमा इः।

- 'कक्ट' (बरु ।

৩৫। হো হং ওসিওসোঃ।

ইছন্ত্যাসুত্তররোভ সিঙসো: স্থানে হো হং ইত্যেকো ভবতঃ। অগ্গিছো অগ্গিহং।

७७। (रः जियाम्।

ব্লিছাং ভসিভসো: স্থানে হের্ভবভি। পটংছে।

२१। शूःमकोरदाविष्ठ्रहाम्।

चन्न निर्देशकर्रः।

०৮। कम् भरमाक्ररतारको।

ব্রিরাং কস্পসো: স্থানে উলোভো ভবত: । বটাউ অঞ্জি। নালাও পেছেহ। কুমারীউ অফ্সন্তি।

० । छ। ज।

বিশাং টা এ ভবভি। পট্টাএ কুমারীএ।

৪০। তৃহংহমুমাদিযু স্মদম্মদোঃ স্থপাঠঃ

ন্থপা সহ যুত্মদক্ষদোঃ স্থানে তৃহং হমুমিত্যাদিওবৃতি। তৃহং পুচ্ছ হরুং পুচ্ছামি।

৪১। তুকো অকো জসা। তুকো পুচ্ছহ অকো পুৰ্ছামো।

৪২। শদা তুকাহং অকাহং।

् भूक्षरः श्रूकामि अक्षरः श्रूकर ।

৪৩। অম্ভেটাভিত্তইং অইং।

छहेर भूक्कामि। इहेर भूक्छ।

৪৪। তুসোহিং অসোহি; ভিসা। তুমেহিং দিঃ।

৪৫। তুহ তুহং মজ্ঝ মহং ঙদিঙদ্ভাাম।

৪৬। যুম্মদঃ তুজ্ঝ তুব্ভশ্চ।

कूर कारना।

৪৭। তুম্হাম্হো ভাদাস্তাম্।

ভুম্হ জাদো।

৪৮। সুপা তুলাম্ব অলাম্ব।

कुकायु र्वहेरिकाः।

৪৯। জুং ত্রুং যত্তদোরমা।

ন্দমা সহ বত্তদোঃ স্থানে জুং ক্রং ইত্যেতো ভবতঃ। জুং চিত্তেসি ক্রংপাবসি।

৫০। সপ্তম্যা যক্ত তব্দ।

मश्रमा मह यहालाः श्रांत यक फक्त देखारको खबकः। यक वनि ।

৫১। তাত্ববাদ ত্রিপ্রনাঃ।

हैन ७ - ज्याः कात्व वा-कून-अना छवछि । मन्जवा मन्जक्न मन्जलन ।

৫২। তব্য ইক্কভ্।

७ या हेकाड ् ७ वर्षि । ं क्रिक्वर्ड ्।

৫৩। ক্ত্রু এব্যাদি।

জ্ব; স্থানে এব্যাদির্ভবতি। রমেরি রমেপ্পি। রমেপ্পির।

৫৪। यह**े** हथः।

ভবিষ। পরিভবিষ। বুআহলিক। পড়ি পড়িম পউঠ্ গাঁদি।

aa! जुरगार्गमानिका

ছুম: স্থানেহণমাণিউবভি। এব্যাদিশ্চ। লহেৰি লহেপ্ৰুপি লহেপ্পিণু ল্হণং লহতুং লহেবাডুং।

৫৬। ঋতোহটি গুণঃ। ম্যবপ্পি।

৫१। উতোহল্বাদেরুব:।

क्षवगबुः। वाष्त्रसः। नृराम्भा।

०४। अद्याश्चित्नातत्त्व क्ष्यक्थः।

ক্রঞ উত্তররোরেপ্পি এপ্পিণে।রেলুগ্ ভবতি। বোপ্পি রোপ্পিণু।
৫৯। কুগমোর্বা।

ক্লমোরেপ্পি এপ্পিণ্যের মুখা ভবতি। করেপ্পি কৃপ্পি ৰা। গমেপ্পি গংপ্পি বা।

७०। र्रुशिक्तः शास्तः।

স্থাদে: স্থানে ঠ্ঠানি উবতি । ঠ্ঠাদি ঠ্ঠেপ্পি । স্থান আৰ । মৃঙ্ মরে মৃঙ্ ধরে । দুশ্পস্স । ব্ৰুক্ক । ক্ৰুজ্বো ।

৬)। হো ভুবোহনুপদর্গে তিঙি।

स्थिति। छेशमर्ल जू। वन्हर्वति।

৬২। ভূঙ্ক্ত্যেশ্চ গ্রহো গেণ্ই:।

গেণ্হেপ্পি গেণ্হেপ্পিণ্ গেণ্ছেদি।

৬৩। যগিজোবা।

वक रेखा वा चवि । स्मितिसमि स्मितिसमि वा।

- ७८। হিস্বাবিদাদি:।

हित्यो देशांबिर्च्यक्ति। कत्रि कत्रि क्रूक क्रवि।

७१। উन्तरभाः।

শোটস্কথাৰো: স্থানে উর্ভবন্তি। থেউ সম্বত।

৬৬। হং ভামভামহৈ।

লোটো ভাম ভামহৈ ছং ভবতি। দেহং মকহং।

৬৭। কুঞ্কাসাচ শুভাল্টি মস্মহে 🟳

শ্টি মদ্মহে চ হং ভবতি। ভঙা সহ কৃঞ্ কাুদাচ। কাদাহং।

৬৮। স্তঃ সিঃ।

न है: छड: म्तिर्डवित् । अयितम्तिनि ।

७৯। यूजािषिय् वा घटाति।

আচটাদিরপল্ংশভেদঃ। তত্র ব্রাচটাদৌ যুক্তরেফসমুচ্চারণম্। সপিরেৰ সপিঃ জ্বংক্রং প্রভৃতি প্রযোজনাম্। জঃ এপ্পি এপ্পিণু।

१०। শেষো নাগরে বা স কাদো।

দ প্রাক্কতবিশ্রঃ উপনাগরে গাথাদৌ। মহারাষ্ট্র্যাং।

৭১। কদধভয়া: প্রকৃত্যা বা।

মোঅই মোদদে বা। মধুকরি হারভি মলরে।

१२। यिखिकामियायमारमः।

বেত্তিকা তেত্তিকা।

१७। कु: इत्रः।

জানিঅ।

৭৪। কুঞঃ ক্ত্রো ছুম:।

কছঅ।

१८। शरमा मलूक् छ।

গহুবা।

৭৬। কোৰা আক্ষণ্যাভিজ্ঞককাদিণ্যাদে:। ৰুষ্হন্ধ বৃষ্ঠ্য গ্ৰহ্ম কৰিকো কৰা ক্ৰা

৭৭। তোলঃ প্রভেক্ত:।

প্ৰিকা।

৭৮। ক্লীবে ণিৰ্বা জস্পলো:।

স্পাইং কুখোণি বা।

हेब क न्यासाः

```
१०। उरमार्गः भत्रम्।
```

भू त्रिमादमा यहिनातमा व्यन् गीतमा ।

৮০। সর্বত্র পরক্রৈ।

जःकिति।

৮১। ভুক্তেভাঠিট্ঠো।

ভোদি हि ऐठेमि।

৮২। অসেরপিন্তিভা।

শ্বি পুরিদো।

৮৩। ভাঙো হসস্সা:।

৮8। इनीएजं यकि छ।

পটিমদি পটাহদি পটিসদি পঠিমদি করিমদি করীমাণ

৮৫। স্থাঙো মিঙা সং নিতামীঙ চ।

করীসং।

৮৬। মাগধ্বাং ধনোঃ শঃ।

ৰোশ শাহ ।

৮१। (तालः।

৮৮। ষ্টবর্গযুক্তা মনাগুচ্চার্য্যা

४२। अपराय अपरका।

৯০। স্জে। যুক্তযজয়ো:।.

. ৯১। ज्ला जिला।

৯২। ক্তম্ম নিআ।

৯৩। मीर्यः मञ्जूरको।

৯৪। গুসো হুং স্বমদ

२८। हिंदेः इः।

৯৬। পৈশাচিত্রে

৯৭। হকে হা

পঞ্চার ছিলে মহাল

व्यग थता । ग रह

ab। महाताष्ट्रीभिट्यार्कमागवी।

२०। भवरत (मारतक्रम्।

মংশ ইত্যালি কথকিত্তেদা মহারাষ্ট্রাদেঃ। লকাভীইক্রবিজ্যেক্সন-গ্রন্থিপ্রাচ্চেনীরসেনীবাহ্লিকীদাক্ষিণাত্যাদিভাষাভেদাশ্চ নাটকাদৌ চা দেশোকির্যথাদর্শনমুগ্রয়া।

লাপনবিশ্বরেষ বপ্পে। পুস্তরে যোদনা। গৌরবে মারিবে। বংস্তার্থে। স্থমিত্রসম্বন্ধে। ক্রোপোপশমনপ্রোৎসাহপ্রসাদ-উনাই সাহ ঢোকাঃ প্রিরার্থে। অস্মো-অস্মি অস্ম े সন্ধিতগ্গবুত্তা বজ্জ্বট্টিতা সন্ধিতা রগু। মন্দভাগ্যাস্থ । া অবট বেল অবিদয়ে। ভডিল ভণ্ডা বিঅচ্ছ হো দ সম্বোধনে। স্থহলে স্থহে পিয়া:। রে পরিহাসে বিশ্বংর চ। মক্ড হমারি অহহ ∙সকটাক বিশ্বয়ে। ाल वरहवरह वहवह ऋलभल वहहे भननरवननायाम्। ই আবিডং গৌরবাতিশয়ে। কোজী শ্লীবি-জে জি ইবার্যে। হেজাতং এৰমর্থে। ডং বারিঅ মারুরা দোহা ধুকা ওরাক কর ই পর্যান্ডো সমসীমসরিসৌ তুলাতায়াম। াজ মার্গচিহ্নে। গছঈমর পরিহাসে ামেপলাস্থ। কেউরয়প্তো গোমহিধী-বিটাণো গৃহসম্পর্করো:। নিশ্বভা नी পরিহাসে वन न ह। ন। বহিণি বহিতা মহিলো ভূগি-निम देवल्का। लिक्स डेक्श-য উপরি। যদি তত্তার্থে। 'গ। ইত্যাদি দেশোসার:।

ঢোলা মিলিআ স। উপ সঅইং। হ্ৰছম্। মিলিআ উসভইং। লোক দীৰ্ঘক্ত।

্ ১,০২।
ক্ব বর্গাদেশী ত্রিচতুর্থরো:।
বর্গতিচতুর্থরো: স্থানে বর্গাদেশী ভবত:। বোকারুসারাং গৈশ
গগণং ককণং।
ক্ব বন্ধা। জাতং চাতং। ঝফার: ছফালে
টিম্পো। গণ্ড: কণ্টো। কুর্গা তুকা। সাধু সাথু। বিসং বি
ক্তং। ভূতং ফৃতং।

২০০। প্রাকৃতসিদ্ধত্রি**চতুর্থ**য়োশ্চ। বস্তুনং জঙ্গং চচণং।

['] ১৭৪। কচিন্নাদ্যো। সর্বঃ শগ্লো।

>০ । লুগ্য: পরম্। যকারস্থ পরং কেবলং লুগ্ভর্তি। জয়: চও।

১০৬। নাগ্ৰস্থ। কাক: কাকো।

১৯৭। গনোল ।

ঙণভি ফলতি। ধ্বনতি থুলতি। ভণিং

১০৮। প্রাকৃতণশ্চ।

वनः भनः।

. ১০৯। রাদেল দি:। রাদে: স্থানে লাদির্ভবন্তি। চরণং দ উষ্ণ: উদণো। প্রশ্ন: পদণো।

১১০। নগোঞে বা কনকং কঞ্জং। বৰ্ণং বঞ্

১১১। এবেবয়ো; হরিরেব হলিরেব। হরি^দ ১১২। হৃদয়^দ্

শঞ্সপ্তমুখিছি,তটহিত গ্ৰ

ত্রগ্ধর।। তুল

'ক বুলগং স্থ নে তৃশ্চতুপ্ফোবাভবত:। যুদ্ধ ভৰথ। তুল্ফ কলছ। গ্ৰা। তুম্হেবা।

१८। ज्यारामार्थे

দ: স্থানেহন্দো বা ভবতি। বরং ভণাম: আক ফলামো অম হে ৰ।

। ভূবঃ ফোফুরো। ে ে ভূবি নৈ ফোফুরো ভবতঃ। ফোতি ফুরভি। প্রাকৃত্বনচেছ্যা।

প্হিং। ইতিক ১নিমোএহিং। তাবহামি। বঞ্জারো -

ক্ষণীনিবদ্ধা যাবৎসম্ভবাঃ।

পিছপো বর**ই অগ্রে থেডেবুতা গাইহোছে**) **ঘব**ণি

ন অণ্টাং ণাহীত্তি।

ভেদোহমুফী,বাদি।

ক্রণবৃক্তমনিয়মোহসুষ্ট্ বাদিছ্যন্দো ভবতি।

' হলন্তঞ্চ সামুম্বারং বিসর্গবৎ। শীর্ষং গুরু: গুাদিতর্ব্রঘু॥ দযু সপ্তমং দিচতর্পক্ষোঃ। য়ে চ বঙং সর্কেষয়স্কৃতি॥

· ≱তীয়য়োঃ ষঠসপ্তমলবুতা বেতোকে।

ত্বং ক্রিভিঃ পাদৌঃ। প নির্মাতে a

```
মণিমধ্যা ।
```

সর্বাজগবৈচিত্রকর:। ১।

মতা।

भूगाभूग अनगनर हुः।

মদনবিলাসিনী।

ত ক্যানতজননোকোপায়: १।

স্থাগ্রা।

দেবকার্যাক গজনাবিশেষঃ।

দোধকম।

সর্ব্বস্থরাস্থরবন্দিতপাদঃ।

উপস্থিতা।

পীতাম্বর: কৌস্তভুশোভিবকাঃ।

রুতা।

বিবিধকু প্রমণনমালেছে:।

ভদ্রিকা।

গৰুজ্জবন্ধনতুৰ্গদমঃ।

रं नत्वा।

শঝং গদাং চক্রমসিং দধান:।

্ উপেন্দ্রবক্স।

সরস্বতী বৈণকলৈকচিত্তঃ। মিলে

রণোদ্ধতা।

পারিজাতহ্বতর্গুশক্রজিৎ।৮।

ভোটকম্।

ক্ষণাক্রচামরচামরিডঃ 🕌

यमूना ।

नकम्युर्विकः। जनभः

ত্রগৃধরা।

```
ণবজন্মহতকংসবল:।
```

ात्रमा ।

र्कृष्ट्र-न्यर्भाषः ।

গসিনী।

র্জিতগোহ**স্ভোভব: ।** কগতি: ।

। জিতোগ্রবলবন্ধরে স্থবদন।

ছি:।

इः ।

व हेट व्यवश्रम्।

্চতুদশকরতি:। পৃথীং ধর্তুং সকলনিলরাং কৃর্মক্রশ:। অপরাজিতা।

স্থাসপ্তর ি ত্রিপুরবিজয়রুদ্ধর ভলপঞ্চর: । ।

मानिनी। २५ 📗

बहेमश्रविः। काँगविष्मरेहरनां छार्वीवकृष्टिः।

ममूजकम्।

নরস্থরভূমিকামবলদেবরূপগ:।

কুত্বস্তম্।

কলিচরমেহনুতৈকপরলোকাস্তককন্ত্রী।

প্রবরললিতম্।

ৰট্ৰুদশক্ষতি:। বড়ঙ্গে সাভ্যাসো ব্যন্থ গতবানিই ি শিখরিণী।

ৰজেকাদশয়তিঃ। বলব্যহাভ্যাসন্থিরটিহিতদিব্যাস

অষ্ট্রনবয়তিঃ। জয়তামরসংহতেরপি চ পরাপ[্] মন্দাক্রান্তা।

চতৃষ্ণষ্ট্কসপ্তকষ্তিঃ। ধর্মং দিৎস্ক্র্বিদিত্রন্ত্র্ণ নন্দনম্।

খগ্যজু:প্রণবাদিবিধিশক্ষরৈকতরোদিত:;
নারাচকম্।

প্রবারক্তদনলোথচণ্ডানিলোৎপাণ দৈ;
মেঘবিস্ফূর্জিতা।

ষ্ট্ৰট্সপ্তরকিং। জগৎক্ষিং দ শান্দৃলবিক্রীড়িতম্।.

বাদশসপ্তর্নতি:। উদ্যৎসক্ষ স্থবদনা।

সপ্তসপ্তৰভ্য়ভিঃ। সধীক ভ্ৰুগ্ধৱা। গদপ্তনপ্তর তি:। পঞ্চাশদর্শবিক্ষ্ রামনিশনিকতা সম্পৃট্ধ্যানগদ্ধা:। ১।
ংশতিবর্ণপর্যান্তনার্যন্তন্। তদৃদ্ধাং দঙ্কা:। আর্থ্যাচ প্রারো ভাষা
তদপি কিঞ্চিদত্রোদাক্তন্। বিষমনুত্রী প্রথমবিতীয়বভূতীয়চভূথোঁ।
ভগা।

রীরচেড্সঃ স্থিরনাসাঞ্চুশোহধিরস্তি বম্। 💝

াথিলকর্দ্ম। নিজপরজীবসমোহয়মুপৈতি। নম্ব

ननीटना यनिवाधाम्नि त्रविर्यश यूटेश्यः।

। বাদেহ রতি ভরঞ্চ ততোহপি বস্তু নাম:।

> াদ্দলো নানাসগাপর্বতিপ্রান্তপত্রঃ কিষক ও এক িগো নাভিপত্রঃ চতুবিবিষম্।

মাত্রয়ার্য্যাদয়ো মতা:।

াদ্বিতীয়ে>প্লাদশৈব তু 🛭

न्दिशः शाशाधारताः कृष्टि।

भारती विमाजित्की ॥

ৰ্দ্ধন্ত চতুল যুঃ।

ं नेशकमश्चमाः॥

निष्रामा मण्डः।

ুক্তন: 🛚

F4

'ৰখং গঞ্জাখিলপাৰহারি

ত্তি ধণোক্তনবৰাতং পূৰ্কাৰ্ডং পূৰ্কবিপন্নীক্তন্। ত্তিংশলাত্তং কতা অপরা বন্ধ সা তদোদনীতিঃ।

অপরোহপ্যার্য্যাভেদ:।

পূর্বাদ্ধপরাদ্ধিংশয়াতঃ প্নক সকলছরেইত।

মাত্রাঘর দি শ্রিভশেষা যা সা ভবেদিহার্যা ভীতি:। উদাহাতং চৈতদ্বিত্রম্। গাণাদীঅম্। মাত্রা: বোড়শ পজ্ঝটাাং পাদশো: যমকং দ্বিশ:। ওমিতি বাদে হদয়ং রুজা ভবভয়মূজ্ঝতি কাষ্ণং

আত্র চতুর্মাত্রা এব স্কর্মবন্ধা:। যমকমাত্রং চতুপ্পদ্যাম্। মাত্রো মাত্রাদম:। ত্রুয়োদশৈকাদশমাত্রো দোধক:। পাক্তৌ লঘুগুরুকৌ বমকৌ চ।

ব্রনা'দভিরপি যোহয়ং বুদ্ধ: রতক্সপেন।
কন্তং বদিতুং শক্তঃ কথমপি গুরুদর্পেন
অন্তং প্রানতো জীবৃহক্তে উই স্বরবিহরে
ক্রেস্ম নো সক্ষমি একো মুখ্থো কহি
সর্বাঞ্জিপিকমনপ্রমা যে তে ন
ক্রেলভিপদবিশ্বাসমনিয়ভবৃত্তং গ
ইতি ছন্দোলিঙ

সামু প্রাসা পতিগোঁড়ো বৈ
তত্ত্ব প্রাণা বথা চিত্রে নে
লেষঃ প্রসাদঃ সমতা মা
অর্থবাজিকদারস্বমোজ
অর্থাণের বর্মে যু নি
মহাপ্রাণন্ত চ প্লেনে
স্ববাধং স্থপ্রসিদ
বথা গ্রীষ্মতবং
বর্ধা প্রবন্ধনিন
ব্যামেহাদপ

সামুপ্রাস্থ্যমাভাবত মধুরো এবং 🔻 ৰধানজন্ত দুজানাসহন্তা হন্তি নামসৌ॥ 8.4 কোৰলাক্ষরবাহ্ন্যং বদস্তি স্কুমারভাম। यथा मधुकतालारेशम रेनाइत्रमिषः वनम् ॥ ६ ॥ বাবদাচ্যাভিধানং যন্তপর্থব্যক্তিলকণ্য यथा रुतिकशक्षेः कालिस्ता सम्माहरम् ॥ ७ । ভচ্দারং গুণঃ কোহপি ধনির জে প্রভীরতে। খা ত্রাবছরীরং মে যাবস্তুং পিহিতাননা ॥ १ ॥ জা বছ্নমাসত্তং শ্লেকে গল্যে চ দুখতে। বৈরিশিরোরক্তধারাক্তোহয়মসিস্তব ॥ ৮ ॥ হাক্তিশুভা যা সা কান্তিরভিধীয়তে। ভারতান্তং বক্ষতে পরিতঃ প্রিয়ে # a # মগ্রত্র নীতং তদ্ধর্মযোগত:। ভাগাাদ্যবাচা দহসি মন্মধ ॥ ১০ ৫ ইতি দশ প্রাণা:। ज्वेशिकिजार**अध्यम**निवर । া রূপকং দীপকারতী। গাসে ব্যক্তিরেকো বিভাবনা : দা হেতু: শূন্মো লব: ক্রম: । ণয়োজং সমাহিতম্। রাম্বল্যযোগিতা 🗈 । জন্তুতিনিদর্শনে। ोर्वमथ ভाविकम् ॥ निकः स्था । विश्वनः मुचन ॥>॥ ^१ मूथम्। २। श्रीर्जनम्। . ন্নী তবাৰুকে।। ite:

দীপকং তদ্বপা নারী মন্সং হসতি বীক্ষতে। ত্রী করিচম হাত্রী কান্তিরথ ধীর তিশোভনা ॥।।।। ভবত্যর্থান্থ শন্ত পুনরার্ত্তিরার্তি: 🔻 যম্বধার বসস্তান্মিন প্রস্থানং নিয়তং তব ॥৫॥ ধিক্ স্বাং স্থং বন্দনীয়োহনীত্যাক্ষেপা এবমাদর:।।। উক্তেই 🗻 🕍 ন্তবং সোহর্থান্তরক্তাদো যথান জম্ ॥ প্রাত্তবিক্সাভ খাতঃ কো ন সিত্রোদয়ে ভবেৎ। जूनारबाक करमा र्जा -रेवनमा शकिशान-म्॥ ব্যতিরেকে। যথা চ কতুল্যোহসৌ স পরং জ্বডঃ প্রসিদ্ধহেডুবলবুজ্ঞা দষ্টং যক্ত স্বভাবত:॥ **८था**का विज्ञावना नाय, मोट्डाश्यः मिक्ना ममारमाञ्चा (५४) छात्यथा मकनशानशः ক্ষুধার্কেন ময়েদানীং ত্বয়াগতা শ্রিত: প্র অত্যুক্তিরতিশয়ঃ কাপি তৎসমো নাথি উৎপ্রেক: সা মতা লোকে যদগ্রচন ষ্থা সূরভান্নীনং মত্যে ধ্বাস্তং গৃহ ' বিবক্ষিতার্থ সন্ধার্থং কারণং যৎ ৫ স হেতুঃ স্থান্যথাস্তোজসঙ্গেন 🛠 ইঙ্গিতাকারগমোহর্গঃ সংস্থা পৃষ্ঠা কিং রোদিঘীত্যাস্তমালে লবো লেশাছদীর্ণস্থ ভাবস্থা যথা লিষ্টাধ্বনা বালা সাহ ভব কেশধ্বনী বালে চ্য हेजानिका यशामधाः প্রেয়ো গুরুতরপ্রীতি ৰথা মৃত্যুরপি শ্লাছে রসবৎকার্যাসিকিং ধার্করাষ্ট্রা গ্রহীং পৌরুষাভিশয়া মুখা পরাগ্য,

भगा बोक्ट मंदर हिट्डाबम्बरिक केटिनम् यथा । बोक्षु ममानि छी छो के औं शहनय छीम् ॥२ •॥ कियमार्ग क हिटेक्स वीटक्रकृषी अमाशिखः। यथा क्षेत्री अमार्गाम शांककाटन लिक स् िः ॥२ >॥ ন্ণাং পৌক্ষমত্যুকৈবিভূতিবসুদান্ততা। গণা ভাতাজ্য়া পৃথী ভাক্ত রামেণ রক্ত্রীনিংই সিদাপক্রো হেতুপুর্বক: খ্রাদপহু হি:। ' ন পুজ্জাতানি স্ব্ৰাণা হি নিাশ্তম্॥২৩॥ ত্মপি নানার্থং বাকাং তৎ শ্লিষ্টমূচ্যতে। ান্তকলাধার দিজরাজ নমোহস্ত তে ॥২৪॥ ি সাধনাধিক্যং বিনা তদ্যোগসাধনৈ:। ্যথা সর্বামুদাতৈককরো জয়েং॥২৫॥ .নকত্র কথনং তুলাযোগিতা। িঃ শীক্তবং যম: ক্ষয়কারকঃ ॥২৬॥ ভাবা বিরুদ্ধাঃ সা বিরোধিতা। ু পিনাকী কাম্বিটু কিমুমাপ্রিয়ঃ ॥২ १॥ -মপ্রকীর্ণেছপি তৎস্তাভিম্। ্চ্যা মুগা প্রভা বনেচ্রাঃ ॥২৮॥ ্য ব্যাজস্তুতি প্ৰদান্তা। s মুভোহপার্থং ন মুঞ্চনি **ম**২না ামে নিদর্শনম্। মীত ভো জনাঃ ১৩০% **म्डलाकोलस्याः**। अङ कांकिनाः ॥७३॥ ্রর্ভনম । প্রিয়াহগ্রহীৎ ॥৩২॥ ^বিষ্মতং বলুম**্।)৩**০। 5,08#

'n